पुंड्रक—पु० [सं० पुड्र+कन्]१. माधवी लता। २. टीका। तिलक। ३ तिलक का वृक्ष। ४. पुड्र या पौडा नामक ईख। ५. रेशम के कीडे पालनेवाला व्यक्ति। ६. घोडे के शरीर का एक चिह्न या लक्षण जो रोएँ के रग के भेद से होता है और जो शख, चक्र, गदा, पद्म, खड्ग अकुश या धनुप के आकार का होता है।

पुंड्र-केलि—पु० [व०स०] हाथी।

पुंड्र-वर्द्धन—पु० [प०त०] प्राचीन पुड्र देश की राजधानी जो तीर्थ भी थी।

पुंध्वज—पु० [प०त०] नरपशु।

पुंनक्षत्र—पु० [स० कर्म०स०] वह नक्षत्र जिसके स्थिति काल मे नर सतान उत्पन्न हो। नर नक्षत्र।

पुंनाग—पु० [स० उपमि०स०]१. सुलताना चपा। २. श्वेत कमल। ३. जायफल। ४ श्रेष्ठ पुरुप।

पुंनाट—पु० [स० पुस्√नट् (नृत्य)+णिच्+अच्] १. चक्रमर्द। चकवड का पौधा। २. कर्नाटक के निकट का एक देश। ३. दिगवर जैन सप्रदाय का एक सघ।

पुंनाड—पु०=पुनाट।

पुंनिम†—स्त्री०=पूर्णिमा।

पुंमंत्र—पु० [प० त०] ऐसा मत्र जिसके अत मे 'स्वाहा' या 'नम.' न हो।

पुंयान—० [पुस० मध्य०स०] पालकी।

पुंरत्न—पु० [उपमि०स०] पुरुप रत्न। श्रेष्ठ पुरुप।

पुंराशि—पु० [कर्म०स०] कोई नर राशि। जैसे—मकर, कुभ आदि।

पुंलिंग—पु० [ष०त०]१. पुरुप का चिह्न। २. पुरुप का शिश्न, लिंग। ३. व्याकरण मे सज्ञा शब्दो के दो वर्गो मे से एक, जिसकी सज्ञाएँ नरो की सूचक होती हैं अथवा ऐसी चीजो की सूचक होती है जो पुरुप वर्ग की समझी जाती है। (मैसकुलिन)
वि० नर या पुरुप वाचक (शब्द)।

पुंवृष—पु० [स० पुस्√वृष् (बरसना)+क] छछूँदर।

पुंश्चली—वि०, स्त्री० [स० पुस्√चल् (चलना)+अच्+ङीप्] परपुरुषो से गुप्त सबध रखनेवाली (स्त्री)। व्यभिचारिणी। कुलटा।
स्त्री० कुलटा या व्यभिचारिणी स्त्री।

पुंश्चलीय—पु० [स० पुश्चली+छ—ईय] पुश्चली का पुत्र या सन्तान। व्यभिचारिणी से उत्पन्न व्यक्ति।

पुंश्चिह्न—पु० [स० ष०त०] पुरुष का लिंग, शिश्न।

पुंस्—पु० [स०√पू (पवित्र करना) + डुम्सुन्] पुरुप। नर। मर्द।

पुं-संतति—स्त्री० [स०] वह सतान या वशज जो पुरुप हो (स्त्री न हो)।

पुंसत्व—पु=पुस्त्व।

पुंसवन—वि० [स० पुस्√सू (प्रसव करना)+ल्युट्—अन] पुत्र उत्पन्न करनेवाला।
पु० १. द्विजातियो के सोलह सस्कारो मे से दूसरा सस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने इस उद्देश्य से किया जाता है कि गर्भिणी स्त्री पुत्र प्रसव करे। २ वैष्णवो का एक प्रकार का व्रत। ३. दूध।

पुंसवान (वत्)—वि० [स० पुस+मतुप्, वत्व?] [स्त्री० पुसवती] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

पुंसी—स्त्री० [स० पुम्+अच+ङीप] ऐसी गाय जिसके आगे बछडा हो। सवत्सा गौ।

पुंस्त्व—पु० [स० पुस्+त्व]१ नर होने की अवस्था या भाव। पुरुपत्व। २ पुरुप की काम-शक्ति। ३ शुक्र। वीर्य। ४ व्याकरण मे शब्द के पुंलिग होने की अवस्था या भाव।

पुंस्त्व-विग्रह—पु० [स० व० स०] भूतृण नाम की सुगधित घास।

पुआ†—पु०=पूआ (पकवान)।

पुआई—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का सदावहार पेड जिसकी लकडी चिकनी और पीले रग की होती है। २ उक्त पेड की लकडी।

पुआल—पु० [देश०] एक ऊँचा जगली पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत और पीले रग की होती है और इमारतो मे लगती है।
†पु०=पयाल (धान का)।

पुकार—स्त्री० [हिं० पुकारना]१. पुकारने अर्थात् जोर से नाम लेकर सबोधित करने की क्रिया या भाव। २. कही उपस्थित होने के लिए किसी का जोर से लिया जानेवाला नाम। जैसे—कचहरी मे पुकार होने पर कैदी न्यायाधीश के सामने लाया गया। ३. आत्मरक्षा, सहायता आदि के लिए दूसरो को बुलाने की क्रिया या भाव।
मुहा०—पुकार उठाना या मचाना=कोई काम कराने या अनौचित्य, अन्याय आदि रोकने के लिए सबसे चिल्लाकर कहना या आदोलन करना।
४ किसी चीज का अभाव होने पर उसके लिए जन-साधारण द्वारा की जानेवाली बहुत जोरो की माँग। जैसे—शहर मे चीनी की पुकार मची है। ५. अपना कष्ट जतलाते हुए किसी से न्याय करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। फरियाद। ६. किसी काम या बात के लिए दिया जानेवाला निमत्रण। बुलावा। ७ जोर देते हुए किसी काम या बात के लिए किया जानेवाला निवेदन या प्रार्थना। ८ किसी बात का अभाव या आवश्यकता सूचित करने के लिए कही जानेवाली बात।
क्रि० प्र०—मचना—मचाना।
९. सगीत मे, कठ या वाद्य से निकाला हुआ कोई ऐसा बहुत ऊँचा स्वर जिसका क्रम अपेक्षया अधिक समय तक चलता रहे। जैसे—शहनाई की यह पुकार बहुत ही सुन्दर हुई है।

पुकारना—स० [स० प्रकुश]१. किसी को बुलाने, सबोधित करने या उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए जोर से उसका नाम लेना। २. रक्षा, सहायता आदि के लिए किसी का आवाहन करना। जैसे—भारतमाता नवयुवको को पुकार रही है। ३ किसी के नाम का जोर से उच्चारण करना। धुन लगाना। रटना। जैसे—ईश्वर का नाम पुकारना। ४. लोगो का ध्यान आकृष्ट करने के लिए जोर से किसी पद या शब्द का उच्चारण करना। उदा०—हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मे। ५. कोई वस्तु पाने के लिए आकुल होकर बार बार उसका नाम लेना। चिल्लाकर माँगना। जैसे—प्यास के मारे सब 'पानी पानी' पुकार रहे है। ६. छुटकारे, बचाव, रक्षा आदि के लिए जोर से आवाज लगाना या चिल्लाना। ७ किसी नाम या सज्ञा से किसी को अभिहित करना। कहना। नाम धरना। (क्व०) जैसे—यहाँ तो इसे 'तीतर' पुकारते है।

पुक्कश—पु०=पुक्कस।

पुक्कस—वि० [सं० पुक्√कस् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि] अधम। नीच।
पु० एक प्राचीन जाति जिसकी उत्पत्ति निषाद पिता और शूद्रा माता से कही गई है।

पुक्कसी—स्त्री० [सं० पुक्कस+ङीप्] १. कालापन। कालिमा। २. नील का पौधा।

पुक्की†—स्त्री० [हिं० पुकारना या फूंकना ?] सीटी।

पुखा†—पुं० =पुष्य (नक्षत्र)।

पुखता—वि०=पुख्ता।

पुखर (रा)†—पु०=पोखरा (तालाब)।

पुखराज—पु० [सं० पुष्पराग] नौ प्रकार के रत्नों में से एक जो पीले रंग का होता है तथा जो धारण किये जाने पर बृहस्पति ग्रह का दोष हरता है। अन्य आठ रत्न ये है—मोती, हीरा, लहसुनिया, पद्मराग, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूंगा।

पुख्ता—वि० [फा० पुख्त.] [भाव० पुख्तगी] १. गठन, प्रकार, रचना आदि की दृष्टि से उच्च कोटि का, टिकाऊ और दृढ़। पक्का। मजबूत। २. जानकार। अनुभवी। ३. पूरी उम्र का। प्रौढ़। ४ पूरी तरह से निश्चित या स्थिर किया हुआ।

पुगना—अ० १ =पूजना। २ =पूगना।

पुगाना—स० [हिं० पूगना (पूजना) का स०] १. उद्दिष्ट सीमा, स्थान आदि तक पहुँचाना। २. नियत या स्थिर अवधि या सीमा तक पहुँचाना। जैसे—गोली के खेल मे गोली पुगाना=नियत गड्ढे मे उसे प्रविष्ट करना। ३. जो उचित हो उसे पूरा करना, देना या भरना। जैसे—महाजन का रुपया पुगाना।

पुचकार—स्त्री० [हिं० पुचकारना] पुचकारने की क्रिया या भाव। प्यार जताने के लिए होठो से निकाला हुआ चूमने का-सा शब्द। चुमकार।

पुचकारना—स० [अनु० पुचपुच से] प्यार जतलाते हुए मुँह से पुच-पुच शब्द करना।

पुचकारी—स्त्री० [हिं० पुचकारना] १. पुचकारने की क्रिया या भाव। पुचकार। २ मुँह से किया जानेवाला पुचपुच शब्द।
क्रि० प्र०—देना।

पुचपुचा—स्त्री०=पुचकारी।

पुचरस—पु० [देश०] एसी धातु जिसमे कई और धातुओ की मिलावट हो। मिश्रधातु।

पुचारना—स० [हिं० पुचारा] १. पुचारा देना। पोतना। २. उजला या साफ करना। चमकाना। ३. सज्जित करना। सजाना। (क्व०)

पुचारा—पु० [अनु० पुचपुच=भीगे कपडे को दबाने का शब्द या हिं० पोतना से पुचारा] १ किसी चीज पर पतला लेप करने या पोतने का काम। २ भीगे हुए कपडे से जमीन रगडकर पोछने का काम।
क्रि० प्र०—देना।—फेरना।
३ वह कपडा या और कोई ऐसी चीज जिससे उक्त क्रिया की जाय। ४ वह घोल या तरल पदार्थ जो किसी दूसरी चीज पर पोता या लेपा जाय।
क्रि० प्र०—फेरना।—लगाना।
५. उक्त प्रकार के लेप से किसी चीज पर चढी हुई तह या परत। ६. छोडी या दगी हुई तोप या बंदूक की गरम नली ठढी करने के लिए उस पर गीला कपडा फेरने की क्रिया। ७. किसी को पुचकारने या प्रसन्न करते हुए कही जानेवाली ऐसी बात जो उसे अपने अनुकूल करने या किसी के विरुद्ध उभारने के लिए कही जाय।
क्रि० प्र०—देना।

पुच्छ—स्त्री० [सं०√ पुच्छ् (प्रसन्न होना)+अच्] १. दुम। पूंछ। २. किसी चीज का पिछला और प्रायः नुकीला या लंबा भाग।

पुच्छकंटक—पु० [ब० स०] बिच्छू, जिसकी दुम मे, डंक होता है।

पुच्छदा—स्त्री० [सं० पुच्छ√दै (शोधन करना)+क+टाप्] लक्ष्मणा कद।

पुच्छ-फल—पु० [सं० ब० स०] बेर का पेड।

पुच्छल—वि० [हिं० पुच्छ] १. जिसमे या जिसके पीछे पूंछ या दुम हो। पूंछवाला। २. जिसमें पूंछ की तरह पीछे कोई लंबा और प्रायः व्यर्थ का अग लगा हो। जैसे—पुच्छलवाला।

पुच्छल तारा—पु० [सं०] सूर्य के चारो ओर घूमनेवाला एक चमकीला पिंड जिसका मध्यवर्ती केन्द्र ठोस पदार्थ का बना होता है और साथ मे गैस की एक पूंछ भी लगी रहती है। (कॉमेट)

पुच्छिका—स्त्री० [सं० पुच्छ+क+टाप्, इत्व] माषपर्णी।

पुच्छी (च्छिन्)—वि० [सं० पुच्छ+इनि] पूंछवाला। दुमदार।
पुं० १. आक। मदार। २. मुरगा।

पुछना—अ० [हिं० पोछना का अनु०] १. पुचारे से स्थान आदि का पोछा जाना। २. न रह जाना। मिट जाना। उदा०—पुछ गया प्रतिगेह से दो एक का सिंदूर।—दिनकर।

पुछल्ला—पु० [हिं० पूंछ+ला (प्रत्य०)] १. [illegible]ी या लंबी दुम। २. पूंछ की तरह पीछे जोड़ी या लगी हुई कोई [illegible]ी चीज या धज्जी। जैसे—गुड्डी या पतग का पुछल्ला। ३. वह जो प्रायः अनावश्यक रूप से या व्यर्थ किसी के पीछे या साथ लगा रहता हो और जल्दी उसका सग न छोड़ता हो। जैसे—वह जहाँ जाता है, अपने भाई को भी पुछल्ला बनाकर अपने साथ ले जाता है। ४. करघे मे लपेटन की बाईं ओर का खूंटा। (जुलाहे)

पुछवैया—वि० [हिं० पुछवाना] किसी से कुछ पुछवानेवाला।
वि० [हिं० पूछना] १. पूछनेवाला। पुछैया। २. खोज-खबर लेनेवाला।

पुछार—पुं० [हिं० पूछना] १. पूछनेवाला। २. खोज-खबर लेनेवाला। ३. आदर करनेवाला।
†पु० =पुछार (मोर)।

पुछारी—पुं० [हिं० पूंछ] मोर। मयूर।

पुछिया—पु० [हिं० पूंछ] दुबा मेढा।

पुछैया†—पु०=पुछवैया।

पुजंता—वि० [सं० पूजा+हिं० अंता (प्रत्य०)] पूजा करनेवाला।

पुजना—अ० [हिं० पूजना] १. दूसरो द्वारा पूजित या सेवित होना। पूजा जाना। २. आदर, सम्मान आदि का भाजन होना। ३. पूजा, भेंट आदि का अधिकारी या पात्र बनना। जैसे—देहातो मे नीम हकीम ही पुजते है।

पुजवना—स० [हिं० पूजना] १. पूरा करना। २. पूर्ण करना। जैसे—किसी की आस पुजवना। २. भरना। ३. देवी, देवता आदि की पूजा दूसरे से कराना। ४. सफल या सिद्ध करना। जैसे—कामना पुजवना।

पुजवाना—स० [हिं० 'पूजना' का प्रे०] १. किसी को पूजा करने में प्रवृत्त करना। आराधन या पूजन कराना २. किसी से धन प्राप्त करने के लिए उससे किसी की पूजा कराना। जैसे—पुजारी का मदिर में बैठकर पुजवाना। ३. अपनी या अपने किसी अग की औरो से पूजा करवाना। जैसे—वे शिष्यों से पैर पुजवाते है।

पुजाई—स्त्री० [हिं० पूजना=पूजा करना] १. पूजने की क्रिया या भाव। जैसे—गगा पुजाई। २. पुजाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

स्त्री० [हिं० पूजना=पूजा होना] १. पूरा करने या होने की क्रिया या भाव। २. पूरा करने या कराने का पारिश्रमिक

पुजाना—स० [हिं० पूजना=(पूजन करना) का प्रे०] १. दूसरे से देवी-देवता आदि का पूजन या पूजा कराना। किसी को पूजा मे प्रवृत्त या नियुक्त करना। जैसे—पुजारी से ठाकुर पुजाना। २. किसी से अपनी पूजा, प्रतिष्ठा या आदर-सम्मान कराना अथवा देवतुल्य बनकर किसी से अपनी पूजा कराना और उनसे भेंट आदि प्राप्त करना। जैसे—आज कल पडित जी यजमानो से पुजाते फिरते है। ३. किसी तरह से डरा-धमका या दबाकर अथवा उसके मन मे किसी प्रकार का पूज्यभाव उत्पन्न, करके उससे कुछ धन या भेंट प्राप्त करना। दबा और फुसलाकर वसूल करना।

सयो० क्रि०—लेना।

स० [हिं० पूजना= पूरा होना] १. पूरा करना। पूर्ति करना। २. भरना। जैसे—दवा से घाव पुजाना। ३. सफल या सिद्ध करना। जैसे—किसी के मनोरथ पुजाना।

†अ०=पुजना (पूरा होना) ?

पुजापा—पु० [स० पूजा+पात्र] पूजन की सब सामग्री। जैसे—फल, फूल, धूप आदि।

मुहा०—पुजापा फैलाना=(क) देव-पूजा आदि की आडवर पूर्ण व्यवस्था करना। (ख) बहुत-सी व्यर्थ की चीजें इधर-उधर फैलाना या बिखेरना। २. पूजा की सामग्री रखने का झोला। पुजाही।

पुजारी—पु० [स० पूजा+हि० कारी (प्रत्य०)] १. किसी देवी-देवता की मूर्ति या प्रतिमा की पूजा पूरनेवाला व्यक्ति। विशेष रूप से ऐसा व्यक्ति जो किसी देवमूर्ति की पूजा, सेवा आदि करने के लिए नियुक्त किया गया हो। जैसे—उन्होने अपने मदिर मे दो पुजारी भी रख दिये थे। २. किसी को देव-तुल्य मानकर उसकी भक्ति करनेवाला व्यक्ति। जैसे—धन या लक्ष्मी के पुजारी।

पुजाही†—स्त्री० [हिं० पूजा+आही (प्रत्य०)] पूजन की सामग्री रखने की थैली या पात्र। पुजापा।

पुजेरी—पु०=पुजारी।

पुजेला—पुं०=पुजारी।

पुजैया—वि० [हिं० पूजना=पूजा करना] पूजा पूरनेवाला। पूजनेवाला। पूजक।

स्त्री० किसी विशेष उद्देश्य और समारोहपूर्वक की जानेवाली पूजा। पुजाई। जैसे—गगा-पुजैया।

वि० [हिं० पूजना =भरना] पूरा करनेवाला। भरनेवाला।

स्त्री० पूरा करने या करने की क्रिया या भाव।

पुजौरा—पु० [हिं० पूजा] १ अर्चना और पूजा। पूजन। २. पूजा के समय देवता के सामने रखी जानेवाली सामग्री।

पुट—पु० [स०√पुट् (=मिलना)+क] १ किसी चीज को मोडकर लगाई हुई तह या बनाई हुई परत। २. पत्तों आदि को मोडकर बनाया हुआ पात्र। दोना। ३ खाली या खोखली जगह या स्थान। ४. किसी प्रकार का बना या बनाया हुआ आधान या पात्र। जैसे—अजलि-पुट, श्रवण-पुट आदि। उदा०—पियत नयन पुट रूप पियूखा।—तुलसी।

५. आच्छादित करने या ढकनेवाला आवरण या चीज। जैसे—नेत्र पुट (पलक), रद पुट (होंठ)। ६. वैद्यक मे, वह मुँह बद बरतन जिसके अन्दर रखकर कोई ओषधि या दवा पिलाई, फूँकी या सिद्ध की जाती है। ७. वैद्यक मे, औषध सिद्ध करने या भस्म, रस आदि बनाने की उक्त प्रकार की कोई प्रक्रिया। जैसे—गज-पुट, भाड पुट, महापुट आदि।

विशेष—इसमे प्राय: एक पात्र मे दवा रखी जाती है और उसके मुँह पर दूसरा पात्र रखकर चारो ओर से वह मुँह इस प्रकार बद कर दिया जाता है कि न तो उसके अदर कोई चीज जा सके और न अन्दर की कोई चीज बाहर आ सके। इसी लिए इसे 'सपुट' भी कहते है।

८. घोडे की टाप। ९ जायफल। १०. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण, एक मगण और एक यगण होता है। ११. अत:पट। अँतरौटा। १२ कली के आकार का पौधे का वह अग जिसमे से नये कल्ले फूटकर निकलते है।

पु० [स० पुट=तह या परत] १. किसी चीज के ऊपर किसी दूसरी चीज की चढाई, जमाई या लगाई हुई तह या परत। जैसे—इस पर गुलाबी रग का एक पुट चढा दो। २. किसी चीज मे किसी दूसरी चीज का वह थोडा-सा अश जो हलकी मिलावट के लिए उसमे डाला जाता है। जैसे—(क) शीरा पकाते समय उसमे दूध का पुट भी देते चलते हैं। (ख) इस शरबत मे सतरे का भी पुट है।

मुहा०—पुट देना=कपडे पर माँडी का छीटा देना। (जुलाहे)

३. लाक्षणिक रूप मे, किसी बात की हलकी मिलावट या थोडा सा मेल। जैसे—उनके भाषण मे परिहास का भी कुछ पुट रहता है।

पु० [अनु०] किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला 'पुट' शब्द। जैसे—उँगलियाँ चटकाने या कलियों के चटकने के समय होनेवाला पुट शब्द।

पुट-कद—पु० [स० ब०स०] कोलकद। बाराही कद।

पुटक—पु० [स० पुट√कै (भासित होना)+क] कमल।

पुटकिनी—स्त्री० [स० पुटक+इनि—ङीप्] १. पद्मिनी। कमलिनी। २. कमलों का समूह। पद्म-जाल। ३ ऐसा स्थान जहाँ कमल अधिकता से होते हों।

पुटकी—स्त्री० [स० पुटक=दोना] छोटी गठरी। पोटली।

स्त्री० [पुट से अनु०] १. कीडे-मकोडों की तरह होनेवाली आकस्मिक तथा तुच्छतापूर्ण मृत्यु। २. आकस्मिक दैवी विपत्ति। बहुत बडी आफत। गजब।

मुहा०—(किसी पर) पुटकी पड़ना=(क) आकस्मिक दुर्घटना, रोग आदि के कारण चटपट मर जाना। (ख) बहुत बडी दैवी विपत्ति आना या पडना। (स्त्रियों की गाली या शाप) जैसे—पुटकी पड़े ऐसी मजदूरनी पर।

स्त्री०[हिं० पुट+हलका मेल] वह बेसन या आटा जो तरकारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के लिए मिलाया जाता है। आलन।

पुट-ग्रीव—पुं०[सं० ब०स०] गगरा। कलसा।

पुट-पाक—पुं०[तृ० त०] १. पत्तों के दोने या और किसी प्रकार के पुट में रखकर औषध पकाने अथवा भस्म या रस बनाने की क्रिया या विधान। (वैद्यक)

पुट-भेद—पुं०[सं० पुट√भिद् (फाड़ना)+अण्] १. जल का भँवर। २. नगर। पत्तन। ३. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

पुटरिया†—स्त्री०=पोटली।

पुटरी—स्त्री० =पोटली।

पुटालु—पुं०[सं० पुट-आलु, कर्म० स०] कचालू।

पुटास—पुं० =पोटास।

पुटिका—स्त्री०[सं० पुट+ठन्—इक, टाप्] १. पुड़िया। २. इलायची।

पुटित—भू० कृ०[सं० पुट+इतच्] १. जो किसी प्रकार के पुट के रूप में आया या लाया गया हो। २. जो सिमटकर दोने के आकार का हो गया हो। ३. संकुचित। सिकुड़ा हुआ। ४. फटा हुआ या फाड़ा हुआ। ५. सिला हुआ। ६. चारों ओर से बन्द किया हुआ। ७. (औषध) जो पुटी के रूप में किसी आवरण के अंदर हो। (कैप्सूल्ड)

पुटिया—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

पुटियाना—स०[हिं० पुट देना] फुसला या समझा-बुझाकर किसी को अनुकूल या राजी करना।

पुटी—स्त्री० [सं० पुट+ङीष्] १. छोटा दोना। छोटा कटोरा। २ खाली स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। जैसे—नासापुटी। ३. पुड़िया। ४. लँगोटी। ५. खाने के लिए गोली या टिकिया के रूप में, वह औषध जो किसी ऐसे आवरण में बंद हो जो औषध के साथ खाया जा सके। (कैप्सूल)

वि० (औषध) जो पुट-पाक की विधि से प्रस्तुत हो। (समस्त पद के अन्त में) जैसे—सहस्रपुटी अभ्रक।

पुटीन—पुं०[अं० पुटी] लकड़ी की संधियों या छेदों आदि में भरने का एक तरह का मसाला जो अलसी के तेल में खड़िया मिट्टी मिलाकर बनाया जाता है।

पुटोटज—पुं०[सं० पुट-उटज, उपमि०स०] सफेद छाता।

पुटोदक—पुं०[सं० पुट-उदक, ब०स०] नारियल।

पुट्ठी—स्त्री०[देश०] मछलियाँ पकड़ने का बड़ा जाबा।

पुट्ठा—पुं०[सं० पृष्ठ] १. कमर के पास का चूतड़ का ऊपरी भाग। २. चौपाये, विशेषतः घोड़े का चूतड़।

मुहा०—पुट्ठे पर हाथ न रखने देना=(क) चंचलता और तेजी के कारण सवार को पास न आने देना। (घोड़ों के लिए) (ख) अपना दोष छिपाने के लिए चतुर व्यक्ति का कौशलपूर्वक कोई ऐसी बात न होने देना जिससे वह पकड़ में आ सके।

३. उक्त अंग पर का चमड़ा जो अपेक्षया अधिक मजबूत होता है। (मोची) ४. घोड़ों की संख्या का सूचक शब्द। रास। जैसे—इस साल उसने चार पुट्ठे खरीदे हैं। ५. किसी पुस्तक की जिल्द या सोटाई का वह पिछला भाग, जिसके अन्दर उसकी सिलाई रहती है।

पुठवार—अव्य० [हिं० पुट्ठा] १ पीछे। २ बगल में।

पुठवाल—पुं०[हिं० पुट्ठा+वाला (प्रत्य०)] १. गाँवों के दल का वह आदमी जो गाँव के मुड़ाने पर पीछे के लिए खड़ा रहता है। २. पृष्ठ-पोषक। ३. मददगार। सहायक।

पुड़ा†—स्त्री० दे० 'पीट'।

पुड़ी†—स्त्री०[हिं० पुट्ठा] वे लकड़ियाँ जो पहिये के घेरे का वह भाग जिसमें आरा और नाह घुसे रहते हैं। किसी पहिये के ऐसे पूरे घेरे में ८ और किसी में ६ भाग होते हैं।

पुड़†—पुं०[सं० पुट]दोना। पत्ता। (डिं०) उदा०—सुकन छत्रो सगरी पुड़ भैरें।—प्रिथीराज।

पुड़ा—पुं०[सं० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुड़िया, पुड़ी] १. बड़ी पुड़िया या बंडल। २. गौ का गर्भाशय।

मुहा०—पुड़ा टूटना=गौ का गर्भवती होना।

पुं० [हिं० पूरी=ढोल पर का चमड़ा] ढोल पर मढ़ा जानेवाला चमड़ा।

पुं० पुट्ठा।

पुड़िया—स्त्री०[सं० पुटिका] १. कागज के टुकड़े को कुछ विशिष्ट प्रकार से मोड़कर तथा उसके किनारे पर विशिष्ट प्रकार से इस प्रकार ऐसा रूप देना कि उसमें रखी जानेवाली चीज बंद हो जाय। जैसे—(क) सोंठ या धनिये की पुड़िया। (ख) दवा की पुड़िया। २. पुड़िया में लपेटी हुई दवा या ऐसी ही और कोई चीज। जैसे—एक पुड़िया आज और दो पुड़िया कल खानी होंगी। ३. उक्त के आकार की ऐसी चीज जो रूप में छोटी-सी हो परन्तु प्रभाव की दृष्टि से उग्र या प्रबल। जैसे—यह लड़का जहर की पुड़िया है। ४. मुसलमानों में लौंग, गुलाल आदि की वह पुड़िया जो किसी कब्र या मजार पर भेंट के रूप में चढ़ाई जाती है।

मुहा०—पुड़िया उड़ाना=मनौती या मन्नत पूरी होने पर कब्र या मजार पर लौंग, गुलाल आदि उड़ाना या चढ़ाना।

५. किसी के पास होनेवाली सारी पूँजी या सम्पत्ति। जैसे—अब तो उनके पास पचास हजार की पुड़िया हो गई है।

पुड़ी—स्त्री० १. पुड़िया। २. पूरी। ३. पुट्ठा।

पुड़ई†—स्त्री० पूरी।

पुढ़ाई—स्त्री० प्रौढ़ता।

पुणग—अव्य० [सं० पुन] भी। (राज०)। उदा०—प्राण दिये पाणी पुणग, स्याम न दिए केस।—बाँकीदास।

पुं०—पनग।

पुणच†—स्त्री०[सं० प्रत्यंचा] धनुष की डोरी। प्रत्यंचा। उदा०—संग्रहि धनुष पुणच सर संधि।—प्रिथीराज।

पुणिंद—पुं०=फणीन्द्र।

पुणि—अव्य०[सं० पुनर्]पुन। फिर। उदा०—परमेसर प्रणवि सरसति पुणि।—प्रिथीराज।

पुण्य—वि०[सं०√पू(पवित्र करना)+यत्, णुक्-आगम, ह्रस्व] १. पवित्र। शुद्ध। जैसे—पुण्य-स्थान। २. मंगलकारक। शुभ। जैसे—पुण्य दिन। ३ धर्म विहित और उत्तम फल देनेवाला। जैसे—पुण्य-काम। ४. प्रिय और सुन्दर या सुखद। जैसे—पुण्य-लक्ष्मी।

पुं० वह धर्म विहित कर्म जिसका फल शुभ हो। सुकृत। जैसे—उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति पुण्य-खाते में दे दी थी। २ अच्छा या भला कार्य।

जैसे—दीनों को दान देना पुण्य का कार्य है। ३ कोई धार्मिक कृत्य, विशेषतः वह कृत्य जो स्त्रियाँ अपने पति और पुत्र की मगल-कामना से करती है। ४. धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट अवसरो पर कुछ विशिष्ट कर्म करने से प्राप्त होनेवाला शुभ फल। जैसे—कार्तिक स्नान का पुण्य, कथा सुनने का पुण्य आदि। ५ अच्छे और शुभ कर्मो का सचित रूप जिसका आगे चलकर उत्तम फल मिलता हो। जैसे—ऐसा सुशील लड़का बड़े पुण्य से मिलता है। ६. परोपकार का काम।

पुण्यक—पु०[स० पुण्य√कै (भासित होना)+क] १. व्रत, अनुष्ठान आदि धार्मिक कृत्य जिनके सम्पादन से पुण्य होता है। २ वे व्रत जो स्त्रियाँ पति तथा पुत्र के कल्याण की कामना से रखती है। ३. विष्णु।

पुण्य-कर्ता (र्तृ)—पु०[प०त०] पुण्य कर्म करनेवाला।

पुण्य-कर्म (न्)—पु०[कर्म० स०] ऐसा कर्म जिसे करने से पुण्य होता हो। भला या शुभ कर्म।

पुण्य-कर्मा (र्मन्)—पु०[ब०स०] अच्छे और शुभ कर्म करनेवाला।

पुण्य-काल—पु०[मध्य०स०] धार्मिक दृष्टि से वह शुभ समय जिसमे दान आदि करने से पुण्य का विशेष फल मिलता है। जैसे—पूर्णिमा, सक्रान्ति आदि।

पुण्य-कीर्तन—पु०[ब०स०] १ विष्णु। २ [प० त०] पुराणो या धार्मिक ग्रन्थों का पाठ या वाचन।

पुण्य-कीर्ति—वि०[ब०स०] जिसकी कीर्ति के वर्णन से पुण्य हो।
स्त्री०[कर्म० स०] ऐसी कीर्ति जो पुण्यात्मक हो।

पुण्यकृत—पु०[स० पुण्य √ कृ (करना)+क्विप्] पुण्य करनेवाला।

पुण्य-कृत्य—पु०[कर्म०स०]=पुण्य कर्म।

पुण्य-क्षेत्र—पु०[प०त०] वह स्थान, विशेषत कोई तीर्थ-स्थान जहाँ जाने और धार्मिक कृत्य करने से विशेष पुण्य होता हो।

पुण्य-गध—पु०[ब०स०] चपा।

पुण्य-गधा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] सोनजुही का फूल।

पुण्य-जन—पु०[कर्म०स०]१ धर्मात्मा। सज्जन। २. राक्षस। ३ यक्ष।

पुण्यजनेश्वर—पुं० [पुण्यजन-ईश्वर, प० त०] कुबेर।

पुण्य-जित्—वि०[तृ० त०] पुण्य कर्मो के द्वारा जीता या प्राप्त किया जानेवाला।

पुण्य-तिथि—स्त्री०[कर्म०स०]१. ऐसा शुभ दिन जिसमे धर्म, लोकोपकार आदि की दृष्टि से अच्छे कर्म (जैसे—दान, स्नान आदि) करने का विधान हो। २ कोई शुभ कार्य करने के लिए उपयुक्त दिन। ३ किसी महापुरुष के निधन की वार्षिक तिथि। जैसे—महात्मा गाधी या लोकमान्य तिलक की पुण्य-तिथि।

पुण्य-तृण—पु०[कर्म०स०] सफेद कुश।

पुण्य-दर्शन—वि० [ब०स०] १. जिसके दर्शन मात्र से पुण्य होता हो। २ ऐसा जीव जिसके दर्शन का फल शुभ या अच्छा माना जाता या अच्छा होता हो।
पु० नीलकठ नामक पक्षी जिसका लोग विजयादशमी के दिन दर्शन करना पुण्यात्मक और शुभ समझते हे।

पुण्य-पुरुष—पु०[कर्म०स०] धर्मात्मा और पुण्यात्मा मनुष्य।

पुण्य-प्रताप—पु०[प० त०] किये हुए पुण्य से प्राप्त हुई विशेष कीर्ति या शक्ति। जैसे—बडो के पुण्य-प्रताप से सब काम ठीक हो जाते हैं।

पुण्य-फल—पु०[प०त०]१ धार्मिक कर्मो का शुभ फल। २. [ब०स०] लक्ष्मी के निवास करने का उद्यान।

पुण्यभाक् (ज्)—वि०[स० पुण्य√ भज् (सेवा)+ण्वि] धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

पुण्य-भूमि—स्त्री०[कर्म०स०]१. तीर्थ-स्थान। २. आर्यावर्त देश। ३. पुत्रवती स्त्री।

पुण्य-योग—पु०[प०त०] पूर्वजन्म मे किये हुए शुभ कर्मो का मिलनेवाला फल।

पुण्य-लोक—पु०[मध्य०स०] स्वर्ग जहाँ पुण्य अर्थात् शुभ कर्म करनेवाले लोग रहते है या मरने के बाद जाते हैं।

पुण्यवान् (वत्)—वि०[स० पुण्य+मतुप्, वत्व] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य अर्थात् शुभ कर्म करनेवाला।

पुण्य-शील—वि०[ब०स०]=पुण्यात्मा।

पुण्य-श्लोक—वि०[ब०स०] [स्त्री० पुण्यश्लोका] जिसका चरित्र या यश बहुत शुभ और सुन्दर हो। शुभ-चरित्र।
पुं० १ राजा नल। २ युधिष्ठिर। ३. विष्णु।

पुण्य-श्लोका—स्त्री०[स० पुण्य-श्लोक+टाप्]१. सीता। २ द्रौपदी।

पुण्य-स्थान—पु०[मध्य० स०] १. अच्छे कर्म करने से मिलनेवाला स्थान या लोक। २ तीर्थ-स्थान जहाँ पुण्य-कर्म करने का विधान है। ३ जन्मकुडली मे लग्न से नवाँ स्थान जिसमे कुछ विशिष्ट ग्रहो की स्थिति से यह जाना जाता है कि अमुक व्यक्ति पुण्यवान होगा या नही।

पुण्या—स्त्री०[स० पुण्य+टाप्] १. तुलसी। २ पुनपुना नदी।

पुण्याई—स्त्री०[हिं० पुण्य+आई (प्रत्य०)] पुण्य का परिणाम, प्रभाव या फल।

पुण्यात्मा (त्मन्)—वि० [पुण्य-आत्मन्, ब० स०] प्राय पुण्यकर्म करनेवाला। पुण्यशील।

पुण्यार्थ—वि०[पुण्य-अर्थ, ब० स०]१ (कार्य) जो पुण्य की प्राप्ति के विचार से किया गया हो। २ (धन) जो लोकोपकारी कार्यों के लिए दान रूप मे दिया गया हो। (चैरिटेबुल)
अव्य० पुण्य अर्थात् परोपकार या शुभ फल की प्राप्ति के विचार से।
पु०१ लोकोपकार की भावना। २ लोकोपकार की भावना से दिया जानेवाला धन।

पुण्यार्थ-निधि—स्त्री० [कर्म०स०] वह निधि या धन-सपत्ति जो पक्की-लिखा पढी करके किसी धार्मिक या सामाजिक लोकोपकारी शुभ कार्य के लिए दान की गई हो। (चैरिटेबुल एन्डाउमेन्ट)

पुण्याह—पु०[पुण्य-अहन्, कर्म स०] मगल कारक या शुभ दिन।

पुण्याह-वाचन—पु०[प०त०] १. मागलिक कार्य के अनुष्ठान के पहले मगल की कामना से तीन बार 'पुण्याह' शब्द कहना। २ कर्म-काड मे उक्त से सम्बद्ध एक प्रकार का कृत्य जो विवाह आदि शुभ कार्यों से पहले किया जाता है।

पुण्योदय—पु०[पुण्य-उदय, प० त०] शुभ कर्मो के फलस्वरूप होनेवाला सौभाग्य का उदय।

पुत्—पु०[स०√पृ(पूर्ति)+डुति, पृषो० सिद्धि] एक नरक का नाम जिससे पुत्र होने पर ही उद्धार होता हो या हो सकता है।

पुतना—अ० [हिं० पोतना का अ०] पुताई होना। जैसे—दीवार पुतना।
†स्त्री० =पूतना।
पुतरा†—पु० =पुतला।
पुतरिका—स्त्री० =पुत्रिका।
पुतरिया†—स्त्री० =पुतली।
पुतरी —स्त्री० =पुतली।
पुतला—पु० [सं० पुत्रक] [स्त्री० अल्पा० पुतली] किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए उसकी अनुपस्थिति में, बनाई जानेवाली धातु, कागज, कपड़े आदि की आकृति।
विशेष—जब कोई आदमी विदेश में या किसी ऐसी स्थिति में मर जाता है कि उसका शव प्राप्त न हो सकता हो तब हिन्दू लोग उसका पुतला बनाकर दाह कर्म करते हैं।
मुहा०—किसी का पुतला बाँधना=किसी की निंदा करते फिरना। किसी की अपकीर्ति फैलाना।
विशेष—मध्य-युगीन भारत में, भाट आदि जिससे असंतुष्ट होते थे, उसकी उक्त प्रकार की आकृति बनाकर गली-गली उसका उपहास और निन्दा करते फिरते थे। इसी से यह मुहावरा बना है।
मुहा०—पुतला जलाना=(क) मृत व्यक्ति का पुतला बनाकर उसका दाह-कर्म करना। (ख) किसी को अपमानित या तिरस्कृत करने अथवा उसकी मृत्यु की कामना करने के लिए उसका पुतला बनाकर जलाना।
पुतली—स्त्री० [हिं० पुतला] १. लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति विशेषतः वह जो विनोद या क्रीडा (खेल) के लिए हो। गुड़िया। २ उक्त प्रकार की पुरुष या स्त्री की आकृति जिसका अभिनय या नृत्य मनोविनोद के लिए होता है। इसके अंगों में डोरे, तार या बाल बंधे रहते हैं, जिनके संचालन से इसके अंग तरह तरह से हिलते-डुलते हैं।
पद—पुतली का नाच=उक्त प्रकार की आकृतियों का अभिनय जो एक प्रकार की कला है।
४. बहुत ही सुन्दर, सजी हुई और सुकुमार स्त्री। ५. आँख का वह काला भाग जिसके बीच में वह छेद होता है जिससे होकर प्रकाश की किरणें अन्दर जाती हैं और मस्तिष्क में पदार्थों का प्रतिबिंब उपस्थित करती हैं। नेत्र के ज्योतिष्केन्द्र के चारों ओर का काला मंडल।
मुहा०—पुतली फिर जाना=(क) आँखें पथरा जाना या नेत्र स्तब्ध होना जो किसी के मर जाने या मरणासन्न होने का लक्षण होता है। (ख) अभिमान, विरक्ति आदि के कारण पहले का सा स्नेहपूर्ण संबंध न रह जाना। रुख बदल जाना।
५. उक्त के आधार पर ऐसी चीज जिसे सुरक्षित रूप में रखा जाय। जैसे—बना राखूँ पुतली दृग की निर्धन का यही प्यार सखी।—दिनकर।
६ घोड़े की टाप का उभरा हुआ मांस पिंड।
पुतली-घर—पु० [हिं०] १. वह कारखाना जहाँ कलों या यंत्रों से सूत बनाया और कपड़ा बुना जाता हो।
विशेष—पहले प्रायः ऐसे कारखानों के मुख्य-द्वार पर पुतली की आकृति बनाकर खड़ी की जाती थी, उसी से इसका यह नाम पड़ा था।
२ आज-कल कोई बहुत बड़ा कारखाना जहाँ कलों या यंत्रों से कोई चीज बनती हो।

पुताई—स्त्री० [हिं० पोतना+आई (प्रत्य०)] १. किसी चीज पर कोई दूसरी चीज का घोल पोतने की क्रिया या भाव। २ उक्त का पारिश्रमिक।
पुतारा—पु० [हिं० पुतना] १. जमीन, चूल्हा आदि गीले कपड़े से पोंछकर साफ करने की क्रिया या भाव। २. पोतने का कपड़ा। पोतनी। ३ दे० 'पुचारा'।
पुत्तल—पु० [सं० पुत्त (गति)+घञ्, √ला (लेना)+क] [स्त्री० अल्पा० पुत्तली] पुतला।
पुत्तलक—पु० [सं० पुत्तल+कन्] [स्त्री० पुत्तलिका] पुतला।
पुत्तलिका—स्त्री० [सं० पुत्तल+टाप्+कन्+टाप्, इत्व] १. पुतली। २ गुड़िया।
पुत्तिका—स्त्री० [सं० पुत्√तन् (विस्तार)+ड+क,+टाप्, इत्व] १. एक प्रकार की मधुमक्खी। २. दीमक।
पुत्र—पु० [सं० पुत्√त्रै (रक्षा करना)+क] [स्त्री० पुत्री] १. विवाहिता स्त्री से उत्पन्न नर सन्तान। बेटा। २ लड़का। ५
पुत्र-कंदा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] लक्ष्मणकंद जिसके [illegible] से गर्भाशय के दोष दूर होते हैं।
पुत्रक—पु० [सं० पुत्र+कन्] १. पुत्र। बेटा। ३ पतंगा। ३. दौने का पौधा। ४. एक प्रकार का चूहा जिसके काटने से [illegible] पीड़ा और सूजन होती है।
पुत्रकामेष्टि—पु० [सं० पुत्र-काम, ष० त०, पुत्र√काम-इष्टि, मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाता है।
पुत्र-कृतक—पु० [ब० स०, कप्] बनाया हुआ पुत्र। दत्तक पुत्र।
पुत्रघ्नी—स्त्री० [सं० पुत्र√हन् (मारना)+टक्+ङीप्] एक प्रकार का योनि रोग जिसके कारण गर्भ नहीं ठहरता।
पुत्र-जात—वि० [ब० स०] जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो। पुत्रवान्।
पुत्रजीव—पु० [सं० पुत्र√ जीव् (जीना)+अण्] इगुदी से मिलता-जुलता एक प्रकार का बड़ा और सुन्दर पेड़ जिसके बीज सूखने पर रुद्राक्ष की तरह हो जाते हैं, साधु लोग उसकी माला पहनते हैं।
पुत्रजीवक—पु० [ष०त०] पुत्रजीव।
पुत्रद—वि० [सं० पुत्र√ दा (देना)+क] [स्त्री० पुत्रदा] जिसके कारण या द्वारा पुत्र प्राप्त हो। पुत्र देनेवाला।
पुत्रदा—स्त्री० [सं० पुत्र+टाप्] १ वंध्या कर्कोटकी। बाँझ ककोड़ा या खेखसा। २ लक्ष्मणकंद। ३. श्वेत कटकारि। सफेद भटकटैया। ४. जीवंती।
पुत्र-दात्री—स्त्री० [ष० त०] १ एक प्रकार की लता। २. श्वेत कटकारि। ३. भ्रमरी।
पुत्र-धर्म—पु० [ष०त०] पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य या धर्म।
पुत्र-पौत्रीण—वि० [सं० पुत्रपौत्र, द्व० स०,+ख—ईन] पुत्र से पौत्र और इसी प्रकार आगे भी क्रम क्रम से प्राप्त होनेवाला। आनुवंशिक।
पुत्र-प्रतिनिधि—पु० [ष० त०] गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक पुत्र।
पुत्रप्रदा—स्त्री० [सं० पुत्र+प्र√दा (देना)+क+टाप्] १. सफेद कटकारि। २. क्षुविका।
पुत्र-प्रसू—वि० [ष०त०] पुत्र उत्पन्न करनेवाली (स्त्री)।
पुत्र-प्रिय—पु० [ब०स०] एक प्रकार का पक्षी।

वि० पुत्र का प्यार।
पुत्र-भद्रा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] बड़ी जीवती।
पुत्र-भांड—पु०[ष० त०] दत्तक पुत्र।
पुत्र-भाव—पु० [ष० त०]१ पुत्र का भाव। पुत्रत्व। २ फलित ज्योतिष मे, लग्न से पचम स्थान का विचार जिसके द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि किसके कितने पुत्र या कन्याएँ होगी।
पुत्र-लाभ—पु०[ष०त०] घर मे पुत्र उत्पन्न होना। पुत्र की प्राप्ति।
पुत्रवती—स्त्री०[स० पुत्र+मतुप, म–व, +ङीप्] स्त्री जिसके आगे पुत्र हो। पुत्रवाली। पूती।
पुत्र-वधू—स्त्री०[ष० त०] पुत्र की पत्नी। पतोहू।
पुत्रवल—वि०[स० पुत्र+वलच्] पुत्रवाला।
पुत्र-श्रृंगी—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] अजश्रृगी।
पुत्र-श्रेणी—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] मूसाकानी।
पुत्र-सख—पु०[ष० त०,+टाच्] बच्चो का प्रेमी।
पुत्र-सप्तमी—स्त्री०[मध्य०स०] आश्विन शुक्ला सप्तमी।
पुत्रसहम—पु० [स० पुत्र+अ० सहम] ५० प्रकार के सहमो मे से एक जिससे पुत्र लाभ का विचार किया जाता है।
पुत्रसू—वि०[स० पुत्र√सू (प्रसव करना)+क्विप्] पुत्र उत्पन्न करने वाली (स्त्री)।
पुत्र-हीन—वि० [तृ० त०] [स्त्री० पुत्रहीना] जिसके घर पुत्र न हो या न हुआ हो।
पुत्राचार्य—वि० [पुत्र-आचार्य, ब०स०] अपने पुत्रो से विद्या पढनेवाला।
पुत्रादिनी—वि०, स्त्री [स० पुत्र√अद् (खाना)+णिनि+ङीप] पुत्रो को स्वय खा जानेवाली। जैसे—व्याघ्री, सर्पिणी आदि।
पुत्रादी (दिन्)—वि० [स० पुत्र√अद्+णिनि] [स्त्री० पुत्रादिनी] पुत्रभक्षक। बेटे को खानेवाला। (गाली)
पुत्रान्नाद—पु०[पुत्र-अन्न, ष० त०, √अद् (खाना)+अण्]१ पुत्र की कमाई खानेवाला व्यक्ति। २ यतियो का एक भेद। कुटीचक।
पुत्रार्थी (र्थिन्)—वि०[पुत्र-अर्थिन्, ष०त०] जिसे पुत्र की कामना हो।
पुत्रिक—वि०[स० पुत्र+ठन्—इक] पुत्रवाला।
पुत्रिका—स्त्री० [स० पुत्र+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] १ लडकी। बेटी। २ पुत्र न होने की दशा मे वह पुत्री या लडकी जो पुत्र के समान मानकर ही रखी गई हो। ऐसी कन्या का पुत्र अपने नाना को पिंडदान देने और उसकी सपत्ति पाने का अधिकारी होता है। ३ गुडिया। पुतली। ४ आँख की पुतली।
पुत्रिका-पुत्र—पु० [ष०त०] १ वह कन्या जो पुत्र के समान मानी गई हो और जो आगे चलकर पिता की सपत्ति की अधिकारिणी होने को हो। २ पुत्रिका का पुत्र।
पुत्रिणी—वि०, स्त्री०[स० पुत्र+इनि+ङीप्] पुत्रवाली। पुत्रवती।
पुत्रिय—वि०[स० पुत्रीय] पुत्र-सबधी।
पुत्री (त्रिन्)—वि०[स० पुत्र+इनि] [स्त्री० पुत्रिणी] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।
पुत्री—स्त्री०[स० पुत्र+ङीप्] बेटी। लडकी।
पुत्रीय—वि०[स० पुत्र+छ—ईय] पुत्र-सबधी। पुत्र का।
पुत्रीया—स्त्री०[स० पुत्र+क्यच्, ईत्व,+अ+टाप्] पुत्रलाभ की इच्छा।
पुत्रेप्सु—वि०[पुत्र-ईप्सु, ष०त०] पुत्र प्राप्त करने का इच्छुक।
पुत्रेष्टि, पुत्रेष्टिका—पु०[स० पुत्र-इष्टि, मध्य० स०, पुत्रेष्टि+कन्+टाप्] पुत्र की प्राप्ति के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
पुत्र्य—वि०[स० पुत्र+यत्]पुत्र-सबधी।
पुदीना—पु० [फा० पोदीन] एक छोटा पौधा जो या तो जमीन पर ही फैलता है अथवा अधिक से अधिक एक बित्ता ऊपर जाता है। इसकी पत्तियो मे बहुत अच्छी गध होती है इससे लोग इसे चटनी आदि मे पीसकर मिलाते है। यह तीन प्रकार का होता है—साधारण, पहाडी और जलपुदीना।
पुद्गल—पु०[स० पुत्-गल, कर्म० स०] १. जैन शास्त्रानुसार ६ द्रव्यो मे से एक। स्पर्श, रस और वर्णवाला अर्थात् रूपवान पदार्थ। २. देह। शरीर। (बौद्ध) ३. परमाणु। ४ आत्मा। ५ गवतृण। ६ शिव।
वि० सुन्दर।
पुद्गलास्तिकाय—पु०[पुद्गल-अस्तिकाय, ष० त०] जैनो के अनुसार पाँच प्रकार के द्रव्यो मे से एक।
पुनः—अव्य० [स०√ पन् (स्तुति)+अर, उत्व] १ फिर। दोबारा। दूसरी बार। २ अनतर। पीछे। उपरात। ३ इसके अतिरिक्त। जैसे—तुम्हे पुन ऐसा सहायक नही मिलेगा।
पद—पुनः पुनः—बार बार। कई बार।
पुनःकरण—पु०[स० मध्य० स०] १. फिर से कोई काम करना। २. दोहराना।
पुन'कल्पन—पुं०[स०] [भू० कृ० पुन कल्पित] किसी पदार्थ विशेषत पुराने यत्र आदि को जाँचकर और उसके कल-पुर्जे अलग-अलग करके फिर से उसकी मरम्मत करते हुए उसे ठीक करना। (ओवरहालिग)
पुनः खुरी(खुरिन्)—पु० [स० पुन खुर, मध्य० स०,+इनि] घोडो के पैर का एक रोग जिसमे उनकी टाप फैल जाती है और वे चलने मे लडखडाते हैं।
पुनःपाक—पु० [मध्य०स०] पकाई हुई चीज दोबारा पकाने की क्रिया या भाव।
पुन.सधान—पु० [मध्य०स०] अग्निहोत्र की बुझी हुई अग्नि फिर से जलाना।
पुन.सस्कार—पु० [मध्य०स०] कोई ऐसा सस्कार फिर से करना जिसका पुराना महत्त्व या मान नष्ट हो गया हो। फिर से किया जानेवाला सस्कार।
पुन.स्तोम—पु०[स० मध्य०स०] एक प्रकार का योग।
पुन*—पु०=पुण्य।
अव्य०[स० पुन] १ फिर। २ भी। ३ दे० 'पुन'।
पुनना—स०[हिं० पूरना]गालियाँ देना। दुर्वचन कहना। उदा०—माँ-बहने पुनी जा रही हो, और ये खुश है, बाछें खिली जा रही है।—मिरजा रुसवा।
†स०=छानना। (पश्चिम)
+अ०[स० पूर्ण] पूरा होना। पूजना। उदा०—पाप करता मरि गइआ, अउध पुनि खिन माहि।—कबीर।

शब्द-संख्या—२३६५३

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

तीसरा खंड

[झ—प]

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए , पी-एच. डी.

शकाब्द १८८६ : सन् १९६४

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रथम संस्करण

मूल्य
पच्चीस रुपये

मुद्रक
रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

मानक हिन्दी कोश का यह तृतीय खण्ड हिन्दी-जगत् के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमे विशेष प्रसन्नता है। हिन्दी-प्रेमियो ने जिस स्नेह और प्रेम से इसके पूर्व प्रकाशित दो खण्डो का स्वागत किया है और जिस उत्सुकता से वे इसके शेष तीन खण्डो की प्रतीक्षा कर रहे हैं उससे हमे अपने प्रयास के महत्व का अनुभव हुआ है और हमारा उत्साह-वर्धन हुआ है। इसके लिए हम सहज ही हिन्दी-प्रेमी महानुभावो के अनुगृहीत है और उन्हे विश्वास दिलाना चाहते हैं कि मानक हिन्दी कोश के शेष चौथे और पाँचवे खण्डो के प्रकाशन मे हम यथासम्भव शीघ्रता करेंगे। सकलित सामग्री सपादित होकर तैयार है केवल मुद्रण-कार्य वाकी है।

कोश का काम निरतर गतिशील और वर्धमान वना रहता है। हिन्दी-जैसी विकासशील और प्रगतिशील भाषा मे वडे वेग से नये शव्द आते जा रहे हैं। भारत के विभिन्न प्रदेशो मे तो इसका प्रचार एव प्रसार हो ही रहा है, विदेशो मे भी इसके पाठको की सख्या वढती जा रही है। हिन्दी-क्षेत्र मे भी इसके लेखको और साहित्यकारो की सख्या वढ रही है। सरकारी और गैरसरकारी हलको मे भी जो अनुवाद और शव्द-चयन का काम हो रहा है उससे भी हिन्दी का शव्द-भण्डार भरता जा रहा है। इन सवको पाँच खण्डो के शव्दकोश मे सीमित समय के भीतर समाविष्ट करने का प्रयास हम कर रहे है। जिस वेग से हिन्दी मे नित्य नये शव्द आते जा रहे है उस वेग से उन्हे सकलित करना कितना श्रमसाध्य कार्य है इसका अनुभव कोश-प्रणयन-कार्य से सम्वद्ध लोगो को है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपने इस गुरुतर कर्त्तव्य के प्रति जागरूक है। हम विनम्रतापूर्वक हिन्दी-सेवियो को यह आश्वासन देना चाहेगे कि इस काम मे कोई वात न उठा रखी जायगी। हमारा यह काम मानक हिन्दी कोश के पांचो खण्डो के प्रथम सस्करण के वाद भी जारी रहेगा क्योकि उसके वाद ही प्रथम सस्करण के दोषादि का निराकरण किया जा सकेगा। हम अपने इस कार्य मे उन सभी विचारवान व्यक्तियो की सहायता चाहेगे जो कोश की भूलचूक तथा उसमे नये शव्दो के प्रवेश के विषय मे सुझाव देना चाहेगे।

हम इस कोश के प्रधान सपादक, उनके सहयोगी तथा अन्य सभी लोगो के प्रति कृतज्ञ है जिन्होने इसके मुद्रण और प्रकाशन मे विशेष योगदान किया है। सम्मेलन मुद्रणालय के प्रवन्धक और कर्मचारी अपने ही हैं फिर भी उन्हे साधुवाद देना आवश्यक है क्योंकि कठिन परिस्थिति मे विशेष सतर्कता के साथ उन्होने इसके मुद्रण का कार्य सपन्न किया है।

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव
प्रथम शासन निकाय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अगरेजी भापा
अ०—(कोष्ठक मे) अरवी भापा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शव्द
अप०—अपभ्रश
अर्द्ध० मा०—अर्घ-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियो की बोली
इव०—इवरानी भापा
उग्र०—पाण्डेय वेचन शर्मा 'उग्र'
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कवीर०—कवीरदास
कश०—कश्मीरी भापा
केशव०—केशवदास
कोक०—कोकणी भापा
कौ०—कौटिलीय अर्थशास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भापा
चन्द्र०—चन्द्रवरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावाद्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भापा
ढो० मा०—ढोला मारू रा दूहा
त०—तमिल भापा
ति०—तिव्वती
तु०—तुरकी भापा
तुलसी०—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगु भापा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारीसिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखे
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपु०—नपुसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—प० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भापा
प०—पजावी भापा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भापा
पु०—पुलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली भापा
पू० हिं०—पूर्वी हिंदी
पैशा०—पैशाची भापा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भापा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भापा
फ्रा०—फ्रासीसी भापा
वग०—वगाली भापा
वर०—वरमी भापा
वहु०—वहुवचन
विहारी—कवि विहारीलाल
वु० ख०—वुन्देलखण्डी वोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक सज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवाँ-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिन्दुस्तानी जहाजियो की बोली
लै०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृ०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
प० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनो पाणिनीय व्याकरण के संकेत है। इनके अर्थ है, 'पृषोदर' आदि शब्दो की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दो की सिद्धि। जिन शब्दो की सिद्धि पाणिनीय सूत्रो से सम्भव नही होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियो का प्रयोग किया जाता है। इन विधियो से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णो के आगम व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते है।

मानक हिन्दी कोश

तीसरा खण्ड

थ

थ—देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का दूसरा वर्ण। उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से यह दंत्य, अघोष, महाप्राण और स्पर्शी व्यंजन है।
पुं० [सं०] १. रक्षण। २. मंगल। ३. भय। डर। ४ पहाड़। पर्वत। ५. भय से रक्षा करनेवाला। भय-रक्षक। ६ आहार। भोजन।

थका—पुं० [?] ऐसा पट्टा जिसके अनुसार निश्चित लगान घटाया-बढ़ाया न जा सके। बिल्मुकता।

थंडिल†—पुं० [सं० स्थंडिल] १. यज्ञ की वेदी के लिए तैयार की हुई भूमि। २ यज्ञ की वेदी। ३ ऐसी जमीन जिस पर आदमी सो सकता हो या सोता हो।

थंब—पुं० [सं० स्तम्भ] [स्त्री० अल्पा० थंबी] १. खंभा। २. सहारा। टेक। ३ राजपूतों का एक भेद।

थंभ—पुं० [सं० स्तम्भ] [स्त्री० अल्पा० थंभी] १ खंभा। २ चाँड़। टेक। थूनी।

थंभन—पुं०=स्तम्भन।

थँभना†—अ०=थमना।

थँभवाना—स० =थमवाना।

थँभाना†—स०=थमाना (पकड़ाना)।

थंभित*—वि०=स्तंभित।

थई—स्त्री० [हिं० ठाँव, ठाँई] ठाँव। जगह।
स्त्री० =थही।

थइली—स्त्री०=थैली।

थक†—पुं०=थाक।

थकन†—स्त्री० =थकान।

थकना—अ० [सं० स्था+कृ, प्रा० थक्कन] १. अधिक समय तक कोई काम या परिश्रम करने तथा शारीरिक शक्ति के अत्यधिक व्यय हो जाने के कारण ऐसी स्थिति में आना या होना जिसमें अंग-अंग शिथिल होने लगते हैं। शरीर की शक्तियों का मन्द पड़ना और शिथिल होना। श्रांत होना।
विशेष—इस क्रिया का प्रयोग स्वयं व्यक्ति के लिए भी होता है और उसके शरीर के अंगों अथवा शरीर के सम्बन्ध में भी। जैसे—(क) चलते-चलते हम थक गये। (ख) दिन भर की दौड़-धूप से टाँगें या सारा शरीर थक गया है।
२. कोई काम करते-करते ऐसी स्थिति में आना कि मन में वह काम और अधिक या फिर करने का उत्साह न रह जाय। हार जाना। जैसे—हम समझाते-समझाते थक गये, पर वह कुछ सुनता ही नहीं। ३. वृद्धावस्था के कारण शरीर का बहुत-कुछ शिथिल हो जाना और पूरा काम करने के योग्य न रह जाना। जैसे—वृद्धावस्था के कारण अब हम बहुत थक चले हैं।
अ० [सं० स्थग्] चकित या मोहित होने के कारण स्तब्ध हो जाना।

थकर†—स्त्री०=थकान।

थकरी†—स्त्री० [हिं० थाक] खस आदि कुछ विशिष्ट पौधों की सीकों की कूँची जिससे स्त्रियाँ बाल झाड़ा करती थीं।

थकाथक†—अव्य० [अनु०] १ थक-थक शब्द करते हुए। २ निरंतर। लगातार। ३ अधिक मात्रा में।
वि० ढेर-सा। यथेष्ट।

थकान—स्त्री० [हिं० थकना] १ थके हुए होने की अवस्था या भाव। २. थकने के कारण होनेवाला शारीरिक शक्ति का ऐसा क्षय जिसकी पूर्ति विश्राम करने से आप से आप हो जाती है। जैसे—जरा बैठ कर रास्ते की थकान मिटा रहे हैं।

थकाना—स० [हिं० थकना] ऐसा काम करना या कराना जिससे कोई थक जाय।

थका-माँदा—वि० [हिं० थकना+फा० माँद] जो इतना अधिक थक गया हो कि अशक्त और अस्वस्थ-सा जान पड़ने लगे।

थकार—पुं० [सं०] 'थ' अक्षर या वर्ण।

थकाव†—पुं० [हिं० थकना] थकावट।

थकावट—स्त्री० [हिं० थकना+आवट (प्रत्य०)] थकने के कारण होनेवाली वह अनुभूति या अवस्था जिसमें अंग टूटने लगते हैं और कोई काम करने को जी नहीं चाहता।
क्रि० प्र०—आना।—मिटाना।

थकाहट—स्त्री०=थकावट।

थकित—वि० [हिं० थकना] १ थका हुआ। २ चकित। ३. मुग्ध। मोहित।

थकिया—स्त्री० [हिं० थक्का] १ गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। छोटा थक्का। २. वह पिंड जो गली हुई धातु ठंढी होने पर बनता है।

थकौंही†—स्त्री०=थकावट।

थकौहाँ—वि० [हिं० थकना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० थकौंही] थका हुआ। शिथिल।

पद–थकौहें ढार*=इस रूप में कि मानो बहुत थका हुआ हो।

थक्करा—पु० [हिं० थाक] १ दे० 'थक्का'। २ झुंड। समूह।

थक्का—पु० [सं० स्था+क्त, बँग० थाकना=ठहरना] [स्त्री० थक्की, थकिया] १ गीले और गाढ़े द्रव पदार्थ की जमी हुई मोटी तह या पिंड। जैसे—खून का थक्का, दही या मक्खन का थक्का। २ गलाई हुई धातु के जमने से बना हुआ पिंड। जैसे—लोहे या सोने का थक्का।

क्रि०प्र०—जमना।—बँधना।

थगित—वि० [हिं० थकित] १ ठहरा या रुका हुआ। २ ढीला पड़ा हुआ। शिथिल। ३ धीमा। मंद। ४ दे० 'थकित'।

थट्ट†—पु० १=ठाठ। २ =ठट्ठ।

थड़ा—पु० [सं० स्थल] १ बैठने की जगह। बैठक। २ वह स्थल जहाँ बैठकर दूकानदार सौदा बेचता है। ३ मकान के मुख्य द्वार के आगे की ऊँची तथा समतल रचना जिस पर प्रायः लोग बैठते है। चौंतरा। (पश्चिम)

थण†—पु० [सं० स्तन] १ कुच। स्तन। उदा०—थापै थूल नितंब थण।—प्रिथीराज। २ मादा पशुओं का थन।

थति*—स्त्री०=थाती।

थतिहार—पु० [हिं० थाती+हार (प्रत्य०)] वह जिसके पास थाती रखी गई या रखी हुई हो।

थत्ती—स्त्री० [हिं० थाती] ढेर। राशि।

थथोलना†—स०=टटोलना।

थन—पु० [सं० स्तन] १ गाय, भैंस, बकरी इत्यादि चौपायों का वह अंग जिसमें दूध जमा रहता है। २ उक्त अंग का फली के समान का उपांग जिसे दबा तथा खींचकर दूध दूहा जाता है।

थनकुटी—स्त्री० [देश०] एक तरह की नीले रंगवाली छोटी चिड़िया।

थनगन—पु० [बरमी] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जो मध्यभारत में बहुतायत से होता है।

स्त्री०=ठन-गन।

थन-टूटू—वि० [हिं० थन+टूटना] (मादा पशु) जिसके थन का दूध टूट गया हो, अर्थात् दूध आना या उतरना बन्द हो गया हो।

थनी—स्त्री० [सं० गलस्तन] १ गलथना। (दे०) २ हाथी के कान के पास गलथने की तरह निकला हुआ मांस-पिंड। ३ घोड़े की लिंगेंद्रिय में थन के आकार का लटकता हुआ मांस जो ऐब समझा जाता है।

थनु—पु०=थन।

थनुसुत*—पु० [सं० स्थाणु+सुत] शिव के पुत्र गणेश और कार्तिकेय।

थनैला—पु० [हिं० थन+ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० थनैली] १ स्तन पर विशेषतः स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला एक तरह का फोड़ा। २. एक तरह का कीड़ा जिसके गाय आदि के थन पर काटने से उनका दूध सूख जाता है।

थनैत—पु० [हिं० थान] १ किसी स्थान का अधिकारी देवता या शासक। २ गाँव का मुखिया। ३ वह अधिकारी जो जमींदारों की ओर से गाँवों में लगान वसूल करता था।

थपक—स्त्री० [हिं० थपकना] १ थपकने की क्रिया या भाव। २ थपकने के लिए किया जानेवाला आघात। थाप।

थपकना—स० [अनु० थप-थप] १ इस प्रकार हलका आघात करना कि थप-थप शब्द हो। थपकी देना। २ हथेली से इस प्रकार थप-थप करते हुए किसी पर हलका आघात करना कि उसे अच्छा लगे। थपथपाना। जैसे—बच्चे को थपककर सुलाना। ३ किसी चीज पर बिना जोर लगाये हलका आघात करते चलना। ४ किसी को उत्साहित करने अथवा किसी का आवेश या क्रोध शान्त करने के लिए उसकी पीठ पर हथेली से धीमा आघात करना।

सयो० क्रि०—देना।

थपका—पु० दे० 'थपकी'।

थपकी—स्त्री० [हिं० थपकना] १ थपकने की क्रिया या भाव। २ थपकने के लिए हथेली से स्नेहपूर्वक किया जानेवाला हलका आघात। जैसे—चौंटे या बच्चे को थपकी देना। ३ किसी को उत्साहित करने के लिए या आशीर्वाद देने के समय उसकी पीठ पर स्नेहपूर्वक किया जानेवाला हलका आघात।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

४ दे० 'थापी'।

थपड़ी—स्त्री०=थपोड़ी।

थपथपी—स्त्री०=थपकी।

थपन*—पु०=स्थापन।

थपना—स० [सं० स्थापन] १ स्थापित करना। बैठाना। २ धीरे-धीरे ठोंकना या पीटना। ३ दे० 'थोपना'। ४. दे० 'छोपना'। (पश्चिम)

अ० १ स्थापित होना। बैठना। २ ठोंका या पीटा जाना।

पु० थापी, जिससे राज-मजदूर गच या छत पीटते है। पिटना।

थपरा—पु०=थप्पड़।

थपाना*—स० [हिं० थपना] किसी को कुछ थपने में प्रवृत्त करना।

थपुआ—पुं० [?] मिट्टी को पाथकर पकाया हुआ वह चौरस चिपटा खपड़ा जो छत छाने के काम आता है। दो थपुओं के जोड़ पर नरिया रखकर उनकी सन्धि ऊपर से बन्द की जाती है।

थपेटा—पु०=थपेड़ा।

थपेटना—स० [हिं० थपेटा] १ थपेड़ा लगाना। २ थप्पड़ लगाना। ३ आघात करना।

थपेड़ा—पु० [अनु० थप-थप] १. किसी चीज के वेग से आकर टकराने या लगने का ऐसा आघात जिससे थप-थप शब्द हो। जैसे—नदी या समुद्र की लहरों के थपेड़ों से नाव उलट गई।

क्रि० प्र०—लगना।

२ दे० 'थप्पड़'।

थपोड़ी—स्त्री० [अनु० थप-थप] १. दोनों हथेलियों से बजाई जानेवाली ताली। २. बेसन की बनी हुई एक प्रकार की मसालेदार पूरी या पकवान।

थपोरी†—स्त्री०=थपोड़ी।

थप्पड़—पु० [अनु० थप-थप] १. गाल पर हाथ के पंजे से किया जानेवाला आघात। झापड़। तमाचा।

क्रि० प्र०—कसना।—देना।—मारना।—लगाना।

२. ऐसी बात जिससे किसी की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचे।

३ दाद या फुसियो का चकत्ता। ४ दे० 'थपेडा'।
थप्पन—वि० [हि० थपना] स्थापित करनेवाला।
पु०=स्थापन।
थप्पा—पु० [लश०] एक तरह का जहाज।
थम—पु० [स० स्तम्भ, प्रा० थभ] १ खभा। स्तम्भ। २ चॉड। थूनी। ३ धरहरा। मुनारा। ४ पूरियो, मिठाइयो आदि का वह ढेर या थाक जो मागलिक अवसरो पर देवता या देवी के आगे रखा जाता है। (पश्चिम)
थमकारी—वि० [सं० स्तभन, हि० थामन+कारी] १ थामनेवाला। २ स्तम्भन करने अर्थात् रोकनेवाला।
थमना—अ० [स० स्तभन] १ चलते-चलते किसी चीज का रुकना या गतिहीन होना। जैसे—कोल्हू या गाडी का थमना। २ आड, सहारे आदि के कारण किसी आधार पर ठहरा रहना और नीचे की ओर न आना या न गिरना। जैसे—चॉड लगने से छत का थमना।
३ किसी प्रकार की क्रिया, गति या प्रवाह का वन्द होना। जैसे—(क) युद्ध थमना। (ख) वरसता या वहता हुआ पानी थमना।
४ सब्र करके या यो ही किसी काम मे लगने से कुछ समय के लिए ठहरना। धीरज धरना। जैसे—हमारे कहने से वह थम गया है; नही तो अब तक दावा कर देता।
अ० [हि० थामना का अ०] थाम लिया जाना। थामा जाना।
थमवाना—स० [हि० थामना का प्रे०]=पकडवाना।
थमाना—स० [हि० थामना का प्रे०]=पकडाना।
थमाव—पु० [हि० थमना+आव (प्रत्य०)] थमने या ठहरने की क्रिया, भाव या स्थिति। ठहराव।
थमुआ—पु० [हि० थामना] चप्पू या डॉड का वह भाग जहाँ से उसे नाव खेते समय पकडा जाता है।
थर—पु० [स० स्तर] १ जमी हुई परत। तह। २. दीवारो की चुनाई मे लगाई जानेवाली ईंटो की प्रत्येक पक्ति या परत। ३. ब्राह्मणो मे, जाति या वर्ग का वाचक शब्द। जैसे—पहले उनसे उनका थर तो पूछ लो।
पु० [स० स्थल] १ स्थल। २ सिंध देश का एक प्रदेश या विभाग। ३ जगली जानवरो की माँद। चुर।
थरकना†—अ० १ =थर्राना। २ =थिरकना।
थरकाना—स० [हि० थरकना] १ थरकने या थरथराने मे प्रवृत्त करना। २ थिरकने मे प्रवृत्त करना।
थरकौहाँ—वि० [हि० थरकना] १ भय आदि से जो थर-थर कॉप रहा हो। २ हिलता-डुलता हुआ। चचल।
थर-थर—स्त्री० [अनु०] डर से कॉंपने की मुद्रा। थरथराहट।
क्रि० वि० डरकर कॉंपते हुए।
थर-थराना—अ० [अनु० थर-थर] [भाव० थरथराहट, थरथरी] १ डर से कॉपना। २ कॉंपना।
स० किसी को इतना अधिक भयभीत करना कि वह थर-थर कॉंपने लगे।
थरथराहट—स्त्री० [हि० थरथराना] १ थरथराने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ निरतर कुछ समय तक कॉंपते या थरथराते रहने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—चढना।
थरथरी—स्त्री०=थरथराहट।
थरना†—स० [हि० थर] १ रह-रहकर हलका आघात या चोट करना। २ कोई चीज गढने या बनाने के लिए उसे धीरे-धीरे हथौडी आदि से पीटना। ३ अच्छी तरह मारना या पीटना। थूरना। ४ दीवारो की चनाई मे एक थर के ऊपर दूसरा थर लगाना।
पु० कसेरो का एक औजार जिससे वे नक्काशी या फूल-पत्तियाँ वनाते है।
थरमामीटर—पु० [अ०] ताप-मापक यत्र।
थरसना—अ० [स० त्रसन] १ त्रस्त होना। २ दु खी होना।
स० १ त्रस्त करना। २ दु खी करना।
थरसल†—वि० [हि० थरसल] त्रस्त। पीडित।
थरहर†—स्त्री०=थरथराहट।
थरहराना†—अ०, स० [भाव० थरहरी]=थरथराना।
थरहाई†—स्त्री० [?] एहसान।
थरिया†—स्त्री०=थाली।
थरी—स्त्री० [स० स्थली] जगली पशुओ की माँद। चुर।
थरु†—पु०=थल।
थरुलिया—स्त्री० [हि० थारी] छोटी थाली।
थरुहट—पु० [हि० थारू] थारू जाति के लोगो की वस्ती।
थर्मस—पु० [अ०] एक तरह का छोटा वर्तुल डिव्वा जो वायु अनुकूलित होता है तथा जिसमे रखी हुई चीज का ताप-मान कुछ समय तक प्राय ज्यो का त्यो वना रहता है।
थर्मामीटर—पु० [अ०] ताप-मापक यत्र।
थर्राना—अ० [अनु० थर-थर] १ डर के मारे थर-थर कॉंपना। जैसे—सिपाही को देखते ही चोर थर्रा गया। २ वहुत अधिक भयभीत होना। दहलना।
संयो० क्रि०—उठना।—जाना।
स० किसी को इतना अधिक डराना कि वह थर-थर कॉंपने लगे।
थल—पु० [स० स्थल] १ जगह। स्थान।
मुहा०—**थल से वैठना**=शात या स्थिर होकर वैठना। चचलता, विकलता आदि से रहित होकर सुख से वैठना।
२ किसी देवता का अथवा कोई पवित्र स्थान। ३ ऐसी सूखी जमीन जहाँ या जिसमे जल न हो। स्थल। 'जल' का विपर्याय। ४ वह ऊँची भूमि जहाँ वर्षा का पानी इकट्ठा न होता हो। ५ वह स्थान जहाँ वहुत-सी रेत पड गई हो। भूड। रेगिस्तान। जैसे—थर पर खर। ६ जगली जानवरो की माँद। चुर। ७ वादले का एक प्रकार का छोटा गोल साज जिसे वच्चो की टोपी आदि पर टॉका जाता है। ८ फोडे के घाव के चारो ओर का लाली लिये हुए सूजा हुआ स्थान। थाला।
क्रि० प्र०—वॅंधना।
थलकना—अ० [स० स्थूल, हि० थूला, थुल थुल] १ शरीर के क्षीण होने पर त्वचा तथा मास का ढीला पडना तथा लटकने लगना। २ भारी चीज का रह-रहकर कुछ ऊपर उठना और नीचे होना या हिलना।

थल-चर—पु० [सं० स्थलचर] १ पृथ्वी पर रहनेवाले जीव (जल या वायु मे रहने या विचरनेवाले जीवो से भिन्न)।
थल-चारी—वि० [सं० स्थलचारी] भूमि पर चलने या विचरण करनेवाला।
थल-थल—वि० [सं० स्थूल, हिं० थूला] (व्यक्ति, उसका शरीर अथवा शरीर का कोई अग) मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।
थलथलाना—स० [अनु०] ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज का तल थल-थल शब्द करता हुआ रह-रहकर कुछ ऊपर उठे और फिर नीचे गिरे। थल-थल शब्द करता हुआ।
अ०=थलकना।
थल-पति—पु० [सं० स्थलपति] राजा।
थल-बेड़ा—पु० [हिं० थल+बेडा] नाव या जहाज के ठहरने की जगह। मुहा०—थल-बेडा लगाना=शान्तिपूर्वक ठहरने या रुकने के लिए उपयुक्त स्थान मिलना। ठिकाना लगना।
थल-भारी—पु० [हिं० थल+भारी] १ ऐसा स्थल जिस पर चलना कठिन हो। २ रेतीला मैदान।
थलरुह*—वि० [सं० स्थलरुह] धरती पर उत्पन्न होनेवाले जतु, वृक्ष आदि। स्थल अर्थात् भूमि पर जन्म लेनेवाला।
थलिया†—स्त्री०=थाली।
थली—स्त्री० [सं० स्थली] १. स्थान। जगह। २ वनस्थली। ३ जलाशय, नदी आदि के नीचे का तल। ४. सुख से ठहरने या बैठने की जगह। ५ परती जमीन। ६. बालू का मैदान। रेतीली जमीन। ७. ऐसी ऊँची जमीन जहाँ वर्षा का पानी न ठहरता हो।
थवई—पु० [सं० स्थपति, प्रा० थवइ] मकान बनाने विशेषत जोडाई करनेवाला कारीगर। राज।
थवन—पु० [देश०] दुलहिन का तीसरी बार अपने पति के घर जाने की क्रिया।
थवाना†—पु० [सं० स्थापन, हिं० थपना] कच्ची मिट्टी का वह गोला जिसमे लगी हुई लकडी के छेद मे चरखी की लकडी पडी रहती है। चरखी के घूमने से नारी भरी जाती है। (जुलाहे)
थह*—पु० [सं० स्थल या हिं० घर?] माँद। उदा०—जागै नह थह मे जितै, सझ हाथल सादूल।—बाँकीदास।
†स्त्री०=थाह।
थहना*—स० [हिं० थाह] १. थाह लेना। पता लगाना। २ थाह लेने के लिए गहराई मे उतरना या जाना।
थहरना— अ०=थर्राना।
थहराना—अ० [अनु० थर थर] १ दुर्बलता, भय आदि से अगो का काँपना। २. काँपना। ३ दे० 'थर्राना'।
थहाना—स० [हिं० थाह] १. पानी की गहराई का पता लगाना। थाह लगाना या लेना। २ किसी के ज्ञान, विचार आदि की थाह या पता लेना।
थहारना†—स० १. =ठहराना। २ थहना।
थही†—स्त्री० [सं० स्तर; हिं० तह] १ तह। परत। २ चीजो का लगा हुआ थाक। ढेर। राशि।
थाँग—स्त्री० [हिं० थान] १ चोरो या डाकुओ के रहने का गुप्त स्थान। २ चोरो या चोरी गई हुई चीजो का लगाया जानेवाला पता। ३ किसी प्रकार के रहस्य की प्राप्त की हुई जानकारी या लिया हुआ भेद। ४. खोज। तलाश।
क्रि० प्र०—लगाना।
थाँगी—पु० [हिं० थाँग] १. चोरो का सरदार। २. वह जो चोरो से माल खरीदता और अपने पास रखता हो। ३. चोरो या चोरी के माल का पता लगानेवाला व्यक्ति। ४. रक्षा करने या आश्रय देनेवाला व्यक्ति। उदा०—निगुणाएँ वह गए, थाँगी नाँही कोइ।—कबीर।
थाँगीदारी—स्त्री० [हिं० थाँगी+फा० दार] थाँगी का काम या पद।
थाँन†—पु०=थान।
थाँभ—पु० [सं० स्तम्भ] १. खभा। २ चाँड। थूनी।
थाँभना —स०=थामना।
थाँवला—पु० दे० 'थाला'।
थाँवा—पु० [श० स्तभ] दादूदयाल का चलाया हुआ एक उप-संप्रदाय।
थाँह†—स्त्री० [स० स्थान] १. जगह। २. दे० 'थाह'।
थाँहैं†—अव्य० [हिं० थाह] ठीक उसी स्थान पर। वही। (पश्चिम) जैसे—थाँहैं मारना।
था—अ० [सं०√स्था] हि० 'होना' क्रिया अथवा वर्तमान कालिक 'है' का एक भूतकालिक रूप। एक शब्द जिससे भूत-काल मे होना सूचित होता है। रहा। जैसे—मै उस समय वही था।
थाई—वि० [सं० स्थायी] बहुत दिनो तक चलने या बना रहनेवाला। स्थायी।
स्त्री० १. सुख से बैठने की जगह। २ बैठने का कमरा या कोठरी। अथाई। बैठक। ३. दे० 'अस्थायी' (सगीत की)।
थाक—पु० [सं०√स्था] १. एक के ऊपर एक करके रखी हुई चीजो का ढेर। राशि। जैसे—कपडो या किताबो का थाक।
†स्त्री०=थकन (थकावट)।
क्रि० प्र०—लगना।
थाकना—अ० [सं० स्थगन] १. ठहरना। रुकना। २ दे० 'थकना'।
थाका*—पु० [सं० स्तवक] गुच्छा। (पूरब) उदा०—अवर निमाल मधुरि फुल थाका।—विद्यापति।
थाकु†—पु०=थाक।
थाट†—पु० १. =ठाठ। २. =ठट्ठ (समूह)। उदा०—नमस्कार सूराँ नराँ भारथ गज थाटाँ मिडै अडै भुजाँ उरसाँह।—बाँकीदास।
थाण—पु० [सं० स्थान; प्रा० थाण] थाला। आलवाल।
थात*—वि० [सं० स्थात्, स्थाता] जो बैठा या ठहरा हुआ हो। स्थित।
थाति—स्त्री० [हिं० थात] ठहराव। स्थिति।
स्त्री०=थाती।
थाती—स्त्री० [हिं० थात] १ समय पर काम मे लाने के लिए बचाकर रखी हुई चीज या धन। जमा। पूंजी। २. किसी के विश्वास पर उसके पास रखी हुई वह चीज या धन जो माँगने पर तुरन्त वापस मिल सके। धरोहर। अमानत।
थान—पु० [सं० स्थान] १. जगह। स्थान। जैसे—(क) काली या

भैरव का थान। (ख) यहाँ भाभी माँ के थान होती है। २ ठहरने या रहने की जगह। ३ चौपायों, विशेषत. घोड़ों को बाँधकर रखने का स्थान।

पद—थान का टर्रा—(क) वह घोड़ा जो खूँटे या खूँटों से बँधा रहने पर भी नटखटी करता हो। घुड़साल में भी उपद्रव करनेवाला घोड़ा। (ख) वह व्यक्ति जो अपने स्थान पर (या घर में) ही सारी अकड़ या ऐंठ दिखाता और घर के लोगों से ही लड़ना-झगड़ना रहता हो। थान का सच्चा= वह घोड़ा जो कहीं से छूटने पर फिर सीधा अपने खूँटे पर आ जाय।

४ कुल। वंश। जैसे—अच्छे थान का घोड़ा। उदा०—संभरि नरेस चहुआन थान, प्रिथिराज तहाँ राजत भान।—चंदबरदाई।

५ वह घास जो घोड़े के नीचे बिछाई जाती है।

मुहा०—थान में आना=घोड़े का थकावट मिटाने के लिए घास या जमीन पर लोटना।

६ कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लंबाई प्रायः निश्चित होती है। जैसे—किनारी या गोटे का थान; नैनसुख या मलमल का थान। ७. कुछ विशिष्ट पदार्थों के संबंध में उनकी स्वतंत्र सत्ता के आधार पर संख्या का वाचक शब्द। जैसे—चार थान गहने, दस थान धोती।

थानक—पुं० [सं० स्थानक] १. स्थान। २. नगर। ३ वृक्ष का थाला। आल-वाल। ४ झाग। फेन।

थाना—पुं० [सं० स्थान; हि० थान] १. टिकने, ठहरने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. किसी का उद्गम या मूल निवास-स्थान। ३. बाँसों की कोठी। ४ आज-कल वह स्थान जहाँ पुलिस के कुछ सिपाही और उनके वरिष्ठ अधिकारी स्थायी रूप से कार्य करते हैं और जहाँ से आस-पास के स्थानों का प्रबंध होता है। पुलिस-कार्यालय। नाका।

मुहा०—(किसी स्थान पर) थाना बैठाना=अव्यवस्था, उपद्रव आदि के स्थानों पर शांति बनाये रखने के लिए पुलिस के कुछ सिपाही और अधिकारी नियत करना। थाने चढ़ना=थाने में पहुँचकर किसी के विरुद्ध कोई सूचना देना। पुलिस में इत्तला या रपट लिखाना।

थानापति—पुं० [सं० स्थानपति] ग्राम देवता।

थानी—पुं० [सं० स्थानिन्] १. किसी स्थान का प्रधान अधिकारी या स्वामी। २. दे० 'थानैत'। ३. दे० 'दिक्पाल'।

वि० १ थान या ठिकाने पर पहुँचा हुआ। २. (काम) जो पूरा किया जा चुका हो। संपन्न या संपादित। ३. ठिकाने लगाया हुआ।

थानु*—पुं० १ स्थाणु। २=थान।

थानेत—पुं०=थानैत।

थानेदार—पुं० [हि० थाना+फा० दार] [भाव० थानेदारी] थाने का विशेषतः पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी। दारोगा।

थानेदारी—स्त्री० [हि० थाना+फा० दारी] १. थानेदार का कार्य। २. थानेदार का पद।

थानैत—पुं० [हि० थान+ऐत (प्रत्य०)] १. किसी स्थान का अधिपति। २ किसी चौकी या अड्डे का मालिक। ३ ग्राम-देवता।

थाप—स्त्री० [सं० स्थापन] १ थापने की क्रिया या भाव। २ ढोलक, तबले, मृदंग आदि के बजाने के समय उन पर हथेली से किया जानेवाला विशिष्ट प्रकार का आघात।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगाना।

३. एक चीज पर दूसरी चीज के भरपूर बैठने के कारण बननेवाला चिह्न। जैसे—बालू पर पड़ी हुई पैरों की थाप। ४. धाक। तमाचा। ५ कसम। शपथ। सौगंध। जैसे—तुम्हें देवी की थाप है, वहाँ मत जाना। ६. जमाव। स्थिति। ७. मान-मर्यादा आदि का दूसरों पर पड़नेवाला प्रभाव। धाक। ८. पंचायत। (क्व०)

थापन—पुं० [सं० स्थापन] १. स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन।

थापना—स० [सं० स्थापन] १ स्थापित करना। २. कोई चीज कहीं बैठाना, लगाना या स्थिर करना। ३. हाथ के पंजे की मुद्रा अंकित करना या छापना। थापा लगाना।

स्त्री० १. स्थापित करने या होने की क्रिया या भाव। स्थापना। प्रतिष्ठा। २. नव-रात्र में देवी के पूजन के लिए किया जानेवाला घट-स्थापन।

थापर†—पुं०=थप्पड़।

थापरा—पुं० [देश०] छोटी नाव। डोंगी। (लश०)

थापा—पुं० [हि० थाप] १ थापने की क्रिया या भाव। २. हाथ के पंजे का वह चिह्न जो गीली पीसी हुई मेंहदी, हल्दी आदि मांगलिक द्रव्यों से शुभ अवसरों पर दीवारों आदि पर लगाया जाता है। हाथ के पंजे का छापा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

३. खलिहान में अनाज की राशि पर गोबर, मिट्टी आदि से लगाया जानेवाला हाथ के पंजे का चिह्न या किसी प्रकार की लकीर। ४. वह ठप्पा जिससे चिह्न आदि अंकित किये जाते हैं। छापा। ५. वह साँचा जिसमें कोई गीली सामग्री दबाकर या डालकर कोई वस्तु बनाई जाय। जैसे—ईंट का थापा, सुनारों का थापा। ६ ढेर। राशि। ७ देहातों में देवी-देवता आदि की पूजा के लिए लिया जानेवाला चंदा। पुजौरा।

पुं० [?] नेपाली क्षत्रियों की एक जाति या वर्ग।

थापिया—स्त्री०=थापी।

थापी—स्त्री० [हि० थापना] १. थापने की क्रिया या भाव। २ काठ का वह उपकरण जो चिपटे सिरेवाले एक छोटे डंडे के रूप में होता है और जिससे कुम्हार मिट्टी के घड़े पीटकर बनाते हैं। ३. उक्त आकार का वह डंडा जिससे राज या मजदूर छत पीटकर उसमें का मसाला जमाते हैं। ४. आशीर्वाद, शाबाशी आदि देने के लिए धीरे-धीरे किसी की पीठ ठोकने या थपथपाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।

थाम—पुं० [सं० स्तंभ, प्रा० थंभ] १ खंभा। स्तंभ। २. मस्तूल। (लश०)

स्त्री० [हि० थामना] थामने की क्रिया या भाव।

*पुं० थन (स्तन)।

थामना—स० [सं० स्तंभन, प्रा० थंभन संभरना] १. हाथ से लेना या हाथ में पकड़ना। जैसे—लड़के की उँगली या हाथ थामना।

२. वेगपूर्वक आती, गिरती या आगे बढती हुई चीज को हाथ से पकडकर या और किसी प्रकार से रोकना। पकडना। जैसे—मारनेवाले का हाथ थामना। ३. गिरती हुई चीज को पकडकर या उसके नीचे सहारा लगाकर उसे गिरने से रोकना। सँभालना। जैसे—चाँड ने ही यह छत थाम रखी है। ४. बीच मे आ या पडकर किसी बिगडती हुई स्थिति को और अधिक बिगडने से रोकना। सँभालना। जैसे—समय पर वर्षा ने आकर थाम लिया, नही तो अभी अनाज और महँगा होता। ५ किसी काम या बात का उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर लेना। ६ किसी चीज का दूसरी चीज पर लग या सटकर उस पर चिपक या जम जाना। जैसे—लकडी या लोहे को रग जल्दी थामता है। ७ चलती हुई चीज को रोककर खड़ा करना। जैसे—गाडी थामना। ८ किसी को पकडकर पहरे या हिरासत मे लेना। (क्व०)

थामा†—पु० [स० स्तभ] खभा।

थाम्हना†—स०=थामना।

थायी†—वि०=स्थायी।

थार†—पु०=थाल।

थारा†—सर्व० [हि० तिहारा] तुम्हारा।

†पु०=थाला।

थारी—स्त्री०=थाली।

सर्व०=तुम्हारी।

थारू—पु० [देश०] नेपाल की तराई मे रहनेवाली एक अर्द्धसभ्य जाति।

थाल—पु० [हि० थाली] [स्त्री० अल्पा० थाली] भोजन आदि परोसने का धातु का बना हुआ चौडा, छिछला तथा गोल बर्तन। बडी थाली।

थाला—पु० [स० स्थल, हि० थल] १. पेड, पौधे आदि के चारो ओर का वह गोल गड्ढा जिसमे पानी भरा जाता है। आल-वाल। २. किसी चीज के चारो ओर का उभरा हुआ गोलाकार दल या भाग। जैसे—इस फोडे ने बहुत थाला बाँधा है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पु० [?] दरवाजे की कुडी जिसमे ताला लगाया जाता है। (लश०)

थालिका—स्त्री० [हि० थाला] वृक्ष का थाला। आलवाल।

थाली—स्त्री० [स० स्थाली=बटलोई] १. धातु का बना हुआ गोलाकार छिछला, बडा बरतन जिसमे खाने के लिए भोजन परोसा जाता है।

पद—**थाली का बैगन**=ऐसा व्यक्ति जिसका स्वय कोई सिद्धात न हो और जो उसी की प्रशसा तथा समर्थन करे जिससे उसे खाने को मिल जाता हो। **थाली जोड**=थाली और उसके साथ कटोरा या कटोरी।

मुहा०—**थाली फिरना**=किसी स्थान पर इतनी अधिक भीड होना कि यदि ऊपर से उस भीड पर थाली फेकी जाय तो वह ऊपर ही ऊपर घूमती-फिरती रह जाय, जमीन पर गिरने न पाये। जैसे—उस मेले मे तो थाली फिरती थी। **थाली बजना**=थाली बजाते हुए साँप का विष उतारना। **थाली बजाना**=(क) साँप का विष उतारने के लिए थाली बजाकर मत्र पढना। (ख) नवजात शिशु के समक्ष उसका भय दूर करने के लिए थाली बजाकर कुछ जोर का शब्द करना। **थाली भेजना**=किसी के यहाँ थाली मे रखकर भोजन, मिठाई आदि भेजना।

२. नाच की एक गत जिसमे बहुत थोडे से घेरे के अदर नाचना पडता है।

थाव—स्त्री०=थाह।

थावर—पु० [स० स्थावर] १ जो अपने स्थान से कभी न हटे। २. शात। ३ ठहरा हुआ। स्थिर। ४. दे० 'स्थावर'।

थाह—स्त्री० [स० स्था] १ किसी चीज की ऐसी अधिकता, गहराई, ज्ञान, महत्त्व आदि की सीमा जिसका पता लगाने के लिए प्रयत्न करना पडे। जैसे—उनके धन (या विद्या) की थाह पाना सहज नही है।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

मुहा०—**थाह लगाना या लेना**=यह जानने का प्रयत्न करना कि अमुक चीज की गहराई कितनी है। जैसे—किसी के पाडित्य, मन या विचार की थाह लेना।

२ उक्त के आधार पर किसी चीज की अधिकता, महत्त्व, रहस्य आदि का होनेवाला ज्ञान या परिचय। जैसे—वे आपके मन की थाह लेने आये थे। ३. जलाशय (झील, नदी, समुद्र आदि) मे पानी के नीचे की जमीन या तल। जैसे—इस घाट पर पानी की थाह मिलना कठिन है।

क्रि० प्र०—मिलना।

मुहा०—**डूबते को थाह मिलना**=सकट मे पडे हुए हताश व्यक्ति को कही से कुछ सहारा मिलना या मिलने की आशा होना।

४ पानी की गहराई की वह स्थिति जिसमे चलते हुए आदमी का पैर जमीन पर पडता हो। जैसे—जहाँ थाह न हो, वहाँ तैरना ही पडता है। उदा०—चरण छूते ही जमुना थाह हुई।—लल्लूलाल।

थाहना—स० [हि० थाह] १ किसी प्रकार की गहराई की थाह लेना या पता चलाना। २ किसी के मन के छिपे हुए भावो या विचारो का पता लगाना। थाह लेना।

थाहर—पु०=थर (माँद)। उदा०—सूनी थाहर सिंघरी, जाय सके नहि कोय।—बाँकीदास।

थाहरा†—वि० [हि० थाह] १ जिसकी थाह मिल चुकी हो अथवा सहज मे मिल सकती हो। २. (नदी-नाले के सबध मे) कम गहरा। छिछला।

थाहे†—अव्य० [हि० थाह] (नदी, नाले की) गहराई मे।

थिति†—स्त्री०=तिथि।

थिएटर—पु० [अ०] [वि० थिएटरी] १ रगभूमि। नाट्यशाला। रगशाला। २ नाटक का अभिनय।

थिएटरी—वि० [अ० थिएटर] थिएटर अर्थात् रगशाला-सबधी।

थिगली—स्त्री० [हि० टिकली] कपडे, चमडे आदि का छेद बद करने के लिए उसके ऊपर टाँका जानेवाला कपडे, चमडे आदि का दूसरा टुकडा। चकती। पैवद।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—**आसमान या बादल में थिगली लगाना**=(क) बहुत ही कठिन या दुष्कर काम पूरा करना या उसके लिए प्रयत्न करना। पहुँच के बाहर का कार्य करना। (ख) अनहोनी और असम्भव बाते कहना या काम करने का प्रयत्न करना।

थित*—वि० [स० स्थित] [भाव० थिति] १ ठहरा हुआ। २ स्थापित। रखा हुआ।
†स्त्री०=तिथि। (पश्चिम)

थिति—स्त्री० [स० स्थिति] १ ठहराव। स्थायित्व। २ ठहरने या विश्राम करने की जगह। ३ स्थिर रूप मे होनेवाला निवास। ४ वने रहने की अवस्था या भाव। ५ अवस्था। दशा। हालत।
†स्त्री०=तिथि।

थितिभाव—पु० [स० स्थितिभाव]=स्थायीभाव।

थिबाऊ† —पु० [देश०] मध्ययुग के ठगो की परिभाषा मे, शरीर के दाहिने अंग मे होनेवाली फडकन जिसे वे लोग अशुभ समझते थे।

थियासोफिस्ट—पु० [अ०] वह जो थियासोफी के सिद्धान्तो को मानता तथा उनका अनुसरण करता हो।

थियासोफी—स्त्री० [अ०] १ ब्रह्म-विद्या। २ एक आधुनिक पाश्चात्य सम्प्रदाय जो यह मानता है कि आत्मा और परमात्मा अथवा जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सबध का सच्चा ज्ञान भौतिक साधनो से नही, वल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने से ही होता है।

थिर—वि० [स० स्थिर] १ जो चलता या हिलता-डुलता न हो। ठहरा हुआ। स्थिर। २ जिसमे चचलता न हो। थिर और शात। ३ सदा वहुत-कुछ एक ही अवस्था मे चलने या वना रहनेवाला। (विशेष दे० 'स्थिर')

थिरक—पु० [हि० थिरकना] थिरकने की क्रिया, अवस्था, ढग या भाव।

थिरकना—अ० [स० अस्थिर+करण] [भाव० थिरक] १ शरीर के किसी अग का रह-रहकर और धीरे-धीरे किसी आधार या जमीन से कुछ ऊपर उठना और फिर जमीन पर आना। जैसे—नाचने मे पैर (या मृदग वजाने मे हाथ) थिरकना। २ व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे होना कि उसका सारा शरीर, मुख्यत पैर रह-रहकर जमीन से कुछ ऊपर उठे। जैसे—नाचनेवालो का थिरकना।

थिरकौहाँ†—वि० [हि० थिरकना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० थिरकौही] १ रह-रहकर थिरकनेवाला। २ थिरकता हुआ।
वि० [हि० थिर=स्थिर] जो अपने स्थान पर स्थिर हो। ठहरा हुआ। स्थिर।

थिरजीह—पु० [स० स्थिरजिह्व] मछली।

थिरता (ई)† —स्त्री० [स० स्थिरता] १ ठहराव। स्थिरता। २ स्थायित्व। ३ धीरता। ४ शाति।

थिरथानी* —वि० [स० स्थिर+स्थान] जो किसी स्थान पर स्थिर होकर रहे।
पु० लोकपाल। दिग्पाल।

थिरथिरा—पु० [देश०] वुलवुलो की एक जाति।

थिरना—अ० [स० स्थिर, हि० थिर+ना (प्रत्य०)] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना वद होना। शात और स्थिर होना। २ जल या द्रव पदार्थ की उक्त अवस्था होने पर उसमे घुली या मिली चीजो का नीचे तह मे एकत्र होना या वैठना। ३. उक्त स्थिति मे जल या द्रव पदार्थ का निर्मल या स्वच्छ होना। ४ दे० 'निथरना'।

थिरा—स्त्री० [स० स्थिरा] पृथ्वी।

थिराना—स० [हि० थिरना] १ क्षुब्ध जल या द्रव पदार्थ को इस प्रकार स्थिर होने देना कि उसमे घुली हुई चीज नीचे वैठ जाय और जल या द्रव पदार्थ अपेक्षया साफ हो जाय।
विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग स्वय जल के पक्ष मे भी होता है और उसमे घुली हुई चीज के पक्ष मे भी।
२ किसी प्रकार शात या स्थिर करना।

थी†—विभ० [स० त, पु० हि० ते] से। (राज०) उदा०—जब थी हम तुम वीछुडे ।—ढोलामारू।
सर्व० पु० हि० मे 'तू' या 'तुझ' का एक रूप। उदा०—जो मै थी कौ साँचा व्यास।—कवीर।
अ० हि० भूतकालिक क्रिया 'था' का स्त्री०।
*वि०=स्थित।

थीकरा* —पु० [स० स्थिति+कर] किसी स्थिति को सँभालने का भार अथवा कोई कार्य करने का (अपने ऊपर) लिया जानेवाला दायित्व या भार।
विशेष—मध्ययुग मे किसी गाँव या वस्ती मे किसी प्रकार की विपत्ति की सम्भावना होने पर वहाँ के रहनेवाले लोग वारी-वारी से रक्षा या सहायता का जो भार अपने ऊपर लेते थे, वह 'थीकरा' कहलाता था।

थीता—पु० [स० स्थित, हि० थित] १ स्थिरता। २ शाति। ३ कल। चैन।
वि० १.=स्थित। २ =स्थिर।

थीति—स्त्री०=स्थिति।

थीथी* —स्त्री० [स० स्थिति] १. स्थिति। २ शाति। ३ धैर्य। धीरज। ४ चैन। सुख।

थीर (1)*—वि०=थिर।

थुकवाना—स० [हि० थूकना का प्रे०] १ किसी को कही अथवा कुछ थूकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के द्वारा दूसरे को परम घृणित और निन्दनीय सिद्ध करना। ३. उगलवाना।

थुकहाया †—वि० [हि० थूक+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० थुकहाई] जिस पर सव लोग थूकते हो, अर्थात् जिसकी सव लोग वहुत निंदा करते हो।

थुकाई—स्त्री० [हि० थूकना] थूकने की क्रिया या भाव।

थुकाना—स०=थुकवाना।

थुकायल, थुकेल—वि० दे० 'थुकहाया'।

थुक्का-फजीहत—स्त्री० [हि० थूक+अ० फजीहत] ऐसी कहा-सुनी या झगडा जिसमे दोनो पक्षो की खूव दुर्दशा और वेइज्जती हो तथा दोनो एक दूसरे का घोर तिरस्कार करते हुए थू-थू कहते हो।

थुक्की† —स्त्री० दे० 'थुडी'।

थुडना—अ० [हि० थोडा] १ थोडा या कम होना। २ थोडा या कम पडना। (पश्चिम)

थुडी—स्त्री० [हि० थू थू से अनु०] १ एक परम घृणासूचक और धिक्कार का शब्द जो वहुत ही निन्दनीय काम करनेवाले के प्रति यह वतलाने के लिए प्रयुक्त होता है कि हम तुम पर थूकते है। जैसे—उनके इस आचरण पर सव लोग थुडी-थुडी कर रहे है। २ धिक्कार। लानत।

थुत—भू० कृ० [स० स्तुत] जिसकी स्तुति हुई या की गई हो।

थुतकार—स्त्री०=थुथकार।

थुतकारना—स०=थुथकारना।

थुत्कार—पु० [स० √कृ (करना)+घञ्=कार, थुत्—कार ष० त०] १ थूकने की क्रिया या भाव। २ थूकने से होनेवाला शब्द।

थुथकार—स्त्री० [हि० थू थू से अनु०] १ किसी के परम घृणा और धिक्कार का सूचक थू-थू शब्द। २. परम घृणित स्त्री। ३ पैर की जूती। ४ पैरो मे डाली जानेवाली बेडी। ५. छिपकली। (मुसल० स्त्रियाँ)

थुथकारना—स० [हि० थुथकार] थू थू या थुडी थुडी करते हुए किसी को परम घृणित या निंद्य ठहराना या बतलाना।

थुथना†—पु०=थूथन।

थुथाना—अ० [हि० थूथन] १ थूथन फुलाना अर्थात् नाराज होकर मुँह फुलाना। (व्यग्य) २. उदासीन भाव से मुँह फुलाकर चुपचाप बैठे रहना।

थुनी*—स्त्री०=थूनी।

थुनेर—पु० [स० स्थूण, हि० थून] गठिवन का एक भेद जो वद्यक मे त्रिदोष नाशक तथा वीर्यवर्धक माना जाता है।

थुन्नी†—स्त्री०=थूनी।

थुपथुपी—स्त्री०=थपकी।

थुपरना—स० [स० स्तूप, हि० थूप] महुए की वालो का ढेर इस उद्देश्य से लगाना कि उनमे गर्मी आवे और वे कुछ पक जायँ।

थुपरा—पु० [स० स्तूप] महुए की वालो का ढेर जो दवाकर औसने के लिए रखा जाय।

थुरना—अ० [स० थुर्वण=मारना, हि० 'थूरना' का अ० रूप] थूरा (अर्थात् कूटा या मारा-पीटा) जाना।
†अ०=थुडना (कम पडना)।

थुर-हथा—वि० [हि० थोड+हाथ] [स्त्री० थुर-हथी] १. जो अपने छोटे-छोटे हाथो के कारण चगुल, मुट्ठी या हथेली मे अधिक चीज न ले सकता हो। उदा०—कन देवो सौंप्यो ससुर वहू थुर-हथी जानि।—विहारी। २. जो इतना कजूस हो कि दूसरो को उठाकर थोडी-सी चीज ही दे सकता हो, अधिक न दे सकता हो। ३ मितव्ययी। कजूस।

थुलथुल—वि० [अनु०] अधिक क्षीण होने के कारण जिसके शरीर का कोई मासल अग झूलने या हिलने लगे।

थुलमा—पु० [स० उल्वण ?] एक प्रकार का पहाडी मोटा कवल जिसमे एक ओर रोएँ ऊपर उठे हुए होते है।

थुली—स्त्री० [स० स्थूल; हि० थूला] मोटे कणो के रूप मे दले हुए अन्न के दाने। दलिया।

थूंक—पु०=थूक।

थूंकना—स०=थूकना।

थू—अव्य० [अनु०] १. थूकने का शब्द। २ एक घृणासूचक शब्द।

थूआ†—पु० [स० स्तूप; प्रा० थूप, थूव] १. मिट्टी आदि का ऊँचा टीला। डूह। २. गीली मिट्टी का लोंदा। धोंधा। ३ मिट्टी का वह डूह या मेंड जो सीमा आदि सूचित करने के लिए बनाई जाती है। ४ गीली मिट्टी का वह ढेर या लोंदा जो टेकली आदि की लकड़ी पर भार के रूप मे रखा जाता है। ५ किसी गीले पदार्थ का गोलाकार ढेर। जैसे—गीले के तमाकू का थूआ जो तमाकू की दुकानो पर रहता है। ६ वह बोझ जो कपडे मे बँधी हुई राव के ऊपर उसकी जूसी निकालने के लिए रखा जाता है।

थूक—पु० [अनु० थू थू] १. वह गाढा, लसीला सफेद पदार्थ जो मुँह से प्रयत्नपूर्वक निकालकर वाहर गिराया या फेंका जाता है।
पद—थूक है=(तुम्हे) धिक्कार या लानत है।
मुहा०—थूक उछालना=व्यर्थ की वकवाद करना। थूक बिलोना=व्यर्थ की कहा-सुनी या वकवाद करना। (किसी को) थूक लगाना=बुरी तरह से नीचा दिखाना या परास्त करना। (अशिष्ट और बाजारू) थूक लगाकर रखना=बहुत बुरी तरह से जोड-जोडकर इकट्ठा करना या रखना। बहुत कजूसी से जमा करना। थूकों सत्तू सानना=कजूसी के कारण बहुत थोड़े व्यय मे बहुत बडा काम करने का प्रयत्न करना।

थूकना—स० [हि० थूक+ना (प्रत्य०)] १ मुँह मे आई हुई थूक अथवा रखी हुई कोई चीज बाहर गिराना या फेंकना।
मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना=इतना अधिक घृणित समझना कि उस पर थूकने तक को जी न चाहे। थूक कर चाटना=(क) कोई वचन देकर मुकर जाना। (ख) किसी को कोई वस्तु देकर बाद मे फिर ले लेना। (ग) फिर कभी वैसा घृणित काम न करने की प्रतिज्ञा करना।
२. किसी के प्रति अपनी परम घृणा प्रकट या प्रदर्शित करना।

थूथन—पु० [देश०] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओं का लबोतरा और कुछ आगे की ओर निकला हुआ मुँह। जैसे—घोडे, बैल या सूअर का थूथन। २. रुष्ट व्यक्ति का फूला हुआ और रोषसूचक मुँह। (व्यग्य)
मुहा०—थूथन फुलाना=किसी से बहुत रुष्ट होकर बिलकुल चुप हो जाना। मुँह फुलाना। (व्यग्य)

थूथनी—स्त्री० [हि० थूथन] १ छोटा थूथन। २ हाथी के मुँह का एक रोग जिसमे ऊपर के तालू मे घाव हो जाता है। ३ दे० 'थूथन'।

थूथरा—वि० [हि० थूथन] जो आकार-प्रकार या रूप-रग मे थूथन की तरह का हो।

थुथून†—पु०= थूथन।

थून—स्त्री० [स० स्थूण] थूनी। खभा।
पु० दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का मोटा गन्ना।

थूना—पु० [देश०] मिट्टी का वह लोदा जिसमे रेशम, सूत आदि फेरने का परेता खोसा जाता है।

थूनि†—स्त्री०=थूनी।

थूनी—स्त्री० [स० स्थूण] १ लकडी आदि का खडा गडा हुआ बल्ला। खभा। २. भारी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाई जानेवाली मोटी और लबी लकडी। चाँड। ३. वह गडी हुई लकडी जिसमे रस्सी के फदे से मथानी का डडा खडा रखा जाता है। ४. आश्रय या रक्षा का स्थान। उदा०—कबीर थूनी पाई थित भई सति गुरु बाँधी धीर।—कबीर।

थून्हीं†—स्त्री०=थूनी।

थूबी—स्त्री० [देश०] साँप के काटे हुए स्थान को गरम लोहे से दागकर विष दूर करने की क्रिया या प्रकार।

थूर—पुं० [स० तूवर] अरहर।

स्त्री० [हिं० थूरना] थूरने की क्रिया या भाव।

थूरना†—स० [स० थुवर्ण=मारना] १. अच्छी तरह कूटना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना। ३ खूब कसकर भरना। ४. खूब कस कर और भर पेट भोजन करना। (व्यग्य) उदा०—कैसी गधी हो, बच्चो का खाना हो हूँसती। रातिव तो तीन टट्टू का जाती हो थूर आप।—जान साहब।

थूल*—वि० [स० स्थूल] १. मोटा। भारी। २ भद्दा।

थूला—वि० [स० स्थूल] [स्त्री० थूली] १ मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ भारी और मोटा।

थली—स्त्री० [हिं० थूला=मोटा] १ किसी अनाज के दले हुए मोटे दाने। दलिया। २ पकाया हुआ दलिया। ३. सूजी।

थूवा—पु०=थुआ। (देखे)

थूहड़—पु०=थूहर।

थूहर—पु० [स० स्थूल] एक प्रकार का झाड या पौधा जिसमे लचीली टहनियों की जगह प्राय बडी गुल्ली या छोटे डडे के आकार के मोटे और गाँठदार डठल निकलते है और जिसके पत्तों मे से एक प्रकार का कडुआ दूध निकलता है। सेहुड।

थूहा—पु० [स० स्तूप, प्रा० थूब] [स्त्री० अल्पा० थूही] १. छोटा टीला। ढूह। २ ढेर। राशि। ३ कूओ आदि पर मिट्टी के वने हुए वे दोनों खभे जिन पर वह लकडी या लोहे का छड रखा जाता है जिसमे गराडी पहनाई हुई होती है।

थेई-थेई—स्त्री० [अनु०] १. नृत्य का ताल सूचक शब्द। २. थिरक-थिरककर नाचने की मुद्रा।

क्रि० प्र०—करना।

थेगली—स्त्री०=थिगली।

थेथर†—वि० [स० शिथिल] १. वहुत अधिक थका हुआ। २ जो कष्ट, दुर्दशा आदि भोगता-भोगता हद से ज्यादा तग या परेशान हो गया हो।

थेथरई†—स्त्री० [हिं० थेथर] १ थेथर होने की अवस्था या भाव। २ निर्लज्जतापूर्वक किया जानेवाला दुराग्रह। ३ अपने दोषो, भूलो आदि पर ध्यान न देकर निर्लज्जतापूर्वक सव के सामने सिर उठाकर उद्दडतापूर्वक की जानेवाली वात।

थेवा—पु० [देश०] १ अँगूठी मे जडा हुआ नगीना। २ अँगूठी के ऊपर लगा हुआ वह घर जिसमे नगीना जडा या वैठाया जाता है।

थें—अव्य० [पु० हिं० ते] से। उदा०—वेद वड कि जहाँ थें आया।—कवीर।

थैचा—पु० [देश०] खेत मे वनी हुई मचान का छप्पर।

थै-थै—अ० य० [स० अव्यक्त शब्द] नृत्य, वाद्य आदि का अनुकरणात्मक शब्द।

थैला—पुं० [स० स्थल=कपडे का घर] [स्त्री० अल्पा० थैली] १ कपडे या ऐसी ही और किसी चीज के लम्बे टुकडे को दोहरा करके और दोनों ओर से सीकर छोटे वोरे की तरह वनाया हुआ वह आधान जिसमे चीजें भरकर रखते है। एक प्रकार का झोला।

मुहा०—(किसी को) थैला करना=मारते-मारते वेदम कर देना।

विशेष—पहले कही-कही टाट के वडे थैलो मे या वोरों मे अपराधियो को भरकर और ऊपर से थैले का मुँह वंद करके घूँसो, ठोकरो आदि से खूव मारते थे। इसी से यह मुहावरा वना है।

२ पायजामे का वह भाग जो जघे से घुटने तक और देखने मे वहुत कुछ उक्त आधान की तरह होता है।

थैली—स्त्री० [हिं० थैला] १. छोटा थैला। २ एक विशेष प्रकार की छोटी थैली जिसमे रुपए आदि रखे जाते है।

मुहा०—थैली खोलना या थैली का मुंह खोलना=यथेष्ट धन व्यय करने के लिए प्रस्तुत होना।

३ वह धन जो थैली मे भरकर किसी वडे आदमी को समर्पित किया जाता है। जैसे—काग्रेस अध्यक्ष को वहाँ दस हजार की थैली भेट की गई है। ४ उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी चीज जिसके अदर कोई दूसरी चीज सुरक्षापूर्वक वद हो अथवा रहती हो। जैसे—गर्भकाल मे वच्चा झिल्ली की थैली मे वद रहता है।

थैलीदार—पु० [हिं० थैली+फा० दार] १ वह आदमी जो खजाने मे रुपयो की थैलियाँ उठाकर रखता या लाता है। २. तहवीलदार। रोकडिया।

थैली-वरदारी—स्त्री० [हिं० थैली+वरदारी] दूसरो की थैली (या धन) उठाकर इधर-उधर ले जाना।

थोक—पु० [स० स्तोक या स्तोमक, प्र० थोवँक, हिं० थोक] १ एक ही तरह की वहुत सी चीजो का ढेर या राशि। थाक। (देखें)

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

२. चीजें वेचने का वह प्रकार जिसमे एक ही तरह की वहुत-सी चीजें एक साथ या इकट्ठी और प्राय दूकानदारो या वडे ग्राहको के हाथ कम मुनाफे पर वेची जाती है। 'खुदरा' या 'फुटकर' का विपर्याय। ३ जत्था। झुड। दल। ४ वह स्थान जहाँ कई गाँवो की सीमाएँ मिलती हो। ५. जमीन का वह वडा टुकडा जो एक ही मालिक के हाथ मे हो।

थोकदार—पु० [हिं० थोक+फा० दार] वह व्यापारी जो थोक का कार्य करता हो।

थोड़†—स्त्री० [हिं० थोडा] १ थोड़े होने की अवस्था या भाव। कमी। जैसे—यहां खाने-पीने की कोई थोड नही है। २ ऐसा अभाव या कमी जिसकी पूर्ति की आवश्यकता जान पड़ती हो। जैसे—हमारे यहाँ भी वच्चों की थोड है। (पश्चिम)

थोड़न—पु० [म० थुड् (ढाँकना)] ढाँकने या लपेटने की क्रिया या भाव।

थोड़ा—वि० [स० स्तोक; पा० थोअ+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० थोडी] १. जो मात्रा, मान आदि मे आवश्यक या उचित से वहुत कम हो। अल्प। जैसे—यह कपडा कुर्ते के लिए थोडा होगा।

मुहा०—(व्यक्ति का) थोडा थोड़ा होना=लज्जित या सकुचित होना या होता हुआ जान पडना।

पद—थोड़ा वहुत=अधिक या यथेष्ट नही। कुछ-कुछ। **थोड़े में**=सक्षेप मे। **थोड़े ही**=विलकुल नही। जैसे—हम वहाँ थोडे ही गये थे।

२ केवल उतना, जितने से किसी तरह काम चल जाय। जैसे—कही से थोड़ा नमक ले आओ।

क्रि० वि० अल्प मात्रा या मान मे। कुछ। जरा। जैसे—थोडा ठहरकर चले जाना।

थोती†—स्त्री०=थोथी।

थोथ—स्त्री० [हिं० थोथा] १. थोथे होने की अवस्था या भाव। थोथापन। २. खोखलापन। ३. निस्सारता।

†स्त्री०=तोंद।

थोथरा—वि०=थोथा।

थोथा—वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १. जिसके अदर का सार भाग नष्ट हो गया हो या निकल गया हो। २. जिसमे कुछ भी तत्त्व या सार न हो। निःसार। जैसे—थोथी बाते, थोथा विवाद। ३. निकम्मा, बेढगा और भद्दा। ४. (पक्षी या पशु) जिसकी दुम कटी हो। बाँडा। ५. (शस्त्र) जिसकी धार कुठित हो गई हो या घिस गई हो। भोथरा।

थोथी—स्त्री० [हिं० थूथन] थूथन का अगला छोटा नुकीला भाग।

†स्त्री० [?] एक प्रकार की घास।

थोपड़ी—स्त्री० [हिं० थोपना] चाँद अर्थात् खोपडी के बीचवाले भाग पर लगाई जानेवाली हलकी चपत या धौल। थोपी।

थोपना—स०[स० स्थापन; हिं०थापना] १. किसी चीज पर कोई गाढी गीली चीज इस प्रकार कुछ जोर से फेकना या रखना कि उसकी मोटी तह-सी जम जाय। मोटा लेप लगाना। जैसे—(क) कच्ची दीवार की मरम्मत करने के लिए उस पर गीली मिट्टी थोपना। (ख) शरीर के किसी पीडित अग पर कोई गीली पिसी हुई दवा थोपना।

सयो० क्रि०—देना।

२. अभियोग, उत्तरदायित्व, भार आदि बलपूर्वक किसी पर रखना या लगाना। आरोपित करना। मत्थे मढना। जैसे—किसी के सिर कोई कलक (या काम) थोपना। ३. दे० 'छोपना'।

थोपी—स्त्री० [हिं० थोपना] वह हलकी चपत या धौल जो प्राय बच्चे खेलते समय आपस मे एक दूसरे के सिर पर लगाते हैं। थोपडी।

थोबड़ा—पु० [देश०] १. जानवरो का निकला हुआ लम्बा मुँह। थूथन। २. व्यक्ति के मुँह की वह आकृति जो मन ही मन बहुत रुष्ट होने पर होती है। फूला हुआ मुँह। ३. दे० 'तोबडा'।

थोभ—स्त्री० [स० स्तोम] बाधा। रुकावट।

पु० [देश०] केले की पेडी के बीच का गाभा।

थोर†—पु०=थूहर।

†वि०=थोडा।

†स्त्री०=थोड़।

थोरा—वि०=थोड़ा।

थोरिक—वि० [हिं० थोरा+एक] थोडा-सा। तनिक-सा।

थोरी—स्त्री० [देश०] एक अनार्य जाति।

थौंद—स्त्री=तोंद।

थ्यावस—पु० [सं० स्थेयस] १. ठहराव। स्थिरता। २ धीरता। धैर्य।

द

द—देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का तीसरा वर्ण, जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से घोष, अल्पप्राण, स्पर्शी, दन्त्य व्यंजन है।

प्रत्य० [स०√दा (दान करना+क] [स्त्री० दा] शब्दों के अत मे लगकर यह प्रत्यय के रूप मे 'देनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे—करद, जलद, फलद और कामदा, धनदा आदि।

दंग—वि० [फा०] अप्रत्याशित अथवा अनोखी बात देखकर जो बहुत अधिक चकित या स्तब्ध-सा हो गया हो।

क्रि० प्र०—रह जाना।—हो जाना।

पु० १. डर। भय। २. घबराहट।

†पु० दे० 'दगा'।

दंगई—वि० [हिं० दगा] १ दगा या लडाई-झगडा करनेवाला। उपद्रवी। झगड़ालू। २ उग्र। तीव्र। प्रचड। ३. बहुत बडा या भारी। दगल। (क्व०)

स्त्री० १ दगा-फसाद या लडाई-झगडा करने की प्रवृत्ति। २. दगा-फसाद। उपद्रव।

दंगल—पु० [फा०] १. पहलवानो की वह प्रतियोगिता, जिसमे प्रतिद्वन्द्वी को कुश्ती मे जीतने पर प्राय पुरस्कार के रूप मे विशिष्ट धन-राशि मिलती है। २. उक्त के आधार पर कुश्ती लडने का अखाडा जिसमे उक्त प्रकार की बहुत-सी प्रतियोगिताएँ होती है। ३ कोई ऐसी प्रतियोगिता जिसमे बहुत-से प्रतियोगी सम्मिलित हुए या होते हो। जैसे—कवियो या गवैयो का दगल। ४. मोटा गद्दा। तोशक।

वि० सामान्य आकार-प्रकार से बहुत अधिक या बडे आकार-प्रकार-वाला। जैसे—दगल मकान।

दंगली—वि० [फा०] १ दगल-सबधी। २. दगलो मे सम्मिलित होने-वाला। (पूरब) ३. जिसने दगलो मे विजय प्राप्त की हो। ४. बहुत बडा या भारी।

दंगवारा†—पु० [हिं० दगल+वारा (प्रत्य०)] एक किसान द्वारा दूसरे किसान को हल-बैल आदि देकर की जानेवाली सहायता। जिता। हरसीत।

दंगा—पु० [फा० दगल] १. ऐसा झगडा या लडाई, जिसमे मार-पीट भी हो। उपद्रव। उदा०—जियत पिता से दगम-दगा। मुए पिता पहुँचाये गगा। —कबीर। २ विधिक क्षेत्र मे, ऐसा उपद्रव, जिसमे बहुत-से लोग विशेषत विभिन्न दलो के लोग आपस मे मार-पीट, लूट-पाट आदि करके सार्वजनिक शाति भग करते हो। ३ गुल-गपाड़ा। हो-हल्ला। शोर।

दंगाई—पु० [हिं० दगा] दगा या उपद्रव करनेवाला व्यक्ति।

स्त्री०=दगई।

दंगैत†—पुं०=दगाई।

दंड—पु० [स०√दड् (दड देना)+घञ्] १. बाँस, लकडी आदि का वह गोलाकार लबा डडा, जो प्राय. चलने के समय सहारे के लिए हाथ मे रखा जाता अथवा किसी को मारने-पीटने के काम आता है। लाठी। सोटा। २. उक्त आकार की कोई लबी लकडी, जो कुछ चीजों मे

उन्हे चलाने, पकडने आदि के लिए लगी रहती है। डडा। डाँडी। जैसे—तुला का दड, ध्वजा या पताका का दड, मथानी का दड, हल मे का दड आदि। ३. उक्त प्रकार की वह पतली, लबी लकडी जो सन्यासी सदा हाथ मे रखते हैं।

मुहा०—**दंड ग्रहण करना**=सन्यास-आश्रम ग्रहण करना या उसमे प्रवेश करना।

४. उक्त आकार-प्रकार की कोई पतली, लबी चीज। जैसे—भुज-दड, मेरु-दड। ५ जहाज या नाव का मस्तूल। ६ लबाई की एक पुरानी नाप जो प्राय चार हाथ की होती थी। ७ समय का एक मान जो ६० पलो का होता है। घडी। ८ वास्तुशास्त्र मे, ऐसा आँगन जिसके उत्तर और पूर्व मे कोठरियाँ हो। ९ ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग। १०. एक प्रकार की कसरत, जो जमीन पर हाथो और पैरो के पजो के बल उलटे लेटकर की जाती है और जिससे भुज-दडो की शक्ति बढती है।

क्रि० प्र०—करना।—पेलना।—मारना।—लगाना।

११ अश्व। घोड़ा। १२. उत्पात, उपद्रव आदि का दमन या शमन। शासन। १३. कोई अनुचित काम या अपराध करनेवालो को उसके बदले मे दी जानेवाली सजा। (पनिशमेन्ट)। १४ सेना, जो प्राचीन काल मे अपराधियो को दड देने के उद्देश्य से रखी जाती थी। १५ अर्थ-दड। जुरमाना। १६ कोई अपराध, प्रतिज्ञा-भग अथवा किसी का कोई अपकार या हानि करने के बदले मे दिया या लिया जानेवाला धन। हरजाना। (पैनेल्टी)

क्रि० प्र०—पडना।—भोगना।—लगना।—सहना।

मुहा०—(**किसी पर) दंड डालना**=यह कहना या निश्चित करना कि अमुक व्यक्ति दड के रूप मे इतना धन दे। **दंड भरना**=किसी के अपकार या हानि के बदले मे अथवा प्रतिकार-स्वरूप कुछ धन देना।

१७ यमराज जो मरने पर प्राणियो को दड या सजा देते है। १८ विष्णु। १९ शिव। २० कुबेर के एक पुत्र का नाम। २१. इक्ष्वाकु के सौ पुत्रो मे से एक। २२ दे० 'दडवत्'। २३ दे० 'दड-व्यूह'।

दंड-कदक—पु [स० ब० स०, कप्] सेमल का मुसला। धरणी-कद।

दंडक—वि० [स०√दड्+णिच्+ण्वुल्—अक] दड देने या दडित करनेवाला।

पु० १ डडा। सोटा। २ दड देनेवाला व्यक्ति। ३ राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनके नाम पर दडकारण्य का नामकरण हुआ था। ४ छदशास्त्र के अनुसार (क) ऐसा मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ से अधिक मात्राएँ हो अथवा (ख) ऐसा वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २६ से अधिक वर्ण हो। ५ एक प्रकार का वात-रोग जिसमे हाथ, पैर, पीठ, कमर आदि अग स्तब्ध होकर ऐंठ-से जाते हैं। ६ सगीत मे शुद्ध राग का एक प्रकार या भेद। ७ दे० 'दडकारण्य'।

दडक-ज्वर—पु० [स०] मच्छरो के दश से फैलनेवाला एक प्रकार का ज्वर जिसमे सारे शरीर मे पीडा होती है और शरीर तथा आँखे लाल हो जाती हैं। (डेग्यु)

दडकला—स्त्री० [स०] दुर्मिल छद का एक भेद, जिसके अत मे एक गुरु अथवा सगण होता है।

दंडका—स्त्री० [स० दण्यक+टाप्]=दडकारण्य। (दे०)

दंडकारण्य—पु० [स० दण्डक-अरण्य मध्य० स०] एक प्रसिद्ध बहुत बडा वन, जो विध्यपर्वत और गोदावरी नदी के बीच मे पड़ता है। सीता का हरण रावण ने इसी वन मे किया था। आज-कल इसका कुछ अश साफ करके मनुष्यो के बसने योग्य किया जाने लगा है।

दडकी—स्त्री० [स० दण्डक+ङीप्] १. छोटा डडा। २ छड़ी।

दंडगौरी—स्त्री० [स०] एक अप्सरा।

दंडघ्न—वि० [स० दण्ड√हन् (चोट पहुँचाना)+टक्] १. डडे से मारनेवाला। २. दड या सजा न मानने या उसकी परवाह न करनेवाला।

दंडचारी (रिन्)—पु० [स० दण्ड√चर् (घूमना)+णिनि] सेना का अध्यक्ष। सेनापति। (कौ०)

दंड-ढक्का—पु० [मध्य० स०] एक तरह का ढोल या नगाडा।

दंड-ताम्र—स्त्री० [मध्य० स०] जलतरग बाजा, जिसमे पहले ताँबे की कटोरियाँ काम मे लाई जाती थी।

दंड-दास—पु० [मध्य० स०] वह व्यक्ति जो अर्थ-दड न दे सकने पर उसके बदले मे किसी की दासता करता हो।

दंड-धर—वि० [ष० त०] १ हाथ मे डडा या लाठी रखनेवाला। २ दड धारण करनेवाला।

पु० १. यमराज। २ शासक। हाकिम। ३ सन्यासी। ४ प्राचीन भारत मे एक प्रकार के राजपुरुष जो शासन आदि की व्यवस्था मे सहायता देते थे। ५ वह, जो लाठियो से मार-पीट या लडाई-झगडा करते हो। लठैत। लठबद।

दंडधारी (रिन्)—वि० [स० दण्ड√धृ (धारण करना)+णिनि] डडा रखनेवाला।

पु०=दडधर।

दंडन—पु० [स०√दण्ड्+ल्युट्—अन] [वि० दडनीय, दडित, दड्य] १ दड देने अथवा किसी को दडित करने की क्रिया या भाव। दड देना। २. शासन।

दंडना†—स० [स० दडन] किसी को दड देना या किसी पर दड लगाना। दडित करना।

दड-नायक—पुं० [प० त०] १. वह शासनिक अधिकारी जो प्राचीन भारत मे अपराधियो को दड देने तथा राज्य मे सुव्यवस्था तथा शान्ति बनाये रखने का काम करता था। २ शासक। हाकिम। ३. सेनापति। ४ सूर्य के एक अनुचर का नाम।

दड-नीति—स्त्री० [प० त०] १ अपराधी को दडित करने की नीति। २ दंड देकर किसी को वश मे लाने या रखने की नीति। ३ दे० 'दड-विज्ञान'।

दंडनीय—वि० [स०√दण्ड्+अनीयर्] १ (व्यक्ति) जिसे दड दिया जाने को हो। २. जिसे दड दिया जा सकता हो। दडित किये जाने के योग्य। ३ (कार्य) जिसे करने पर दड मिल सकता हो। जैसे—दडनीय अपराध।

दड-पाशुल—पु० [तृ० त०] द्वारपाल।

दंड-पाणि—वि० [ब० स०] १. जिसके हाथ मे दड या डडा हो। पु० १. यमराज। २ काशी मे भैरव की एक मूर्ति। ३ दडनायक। (दे०)

दंड-पात—पु० [ब० स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे रोगी को नीद नही आती और वह पागलो की तरह इधर-उधर दौडता-फिरता है।

दंड-पारुष्य—पु० [ष० त०] १. उचित से अधिक और बहुत ही कठोर दड या सजा।

विशेष—प्राचीनो ने इसे भी राजाओ के सात मुख्य दुर्व्यसनो मे माना था।

२ आक्रमण। चढाई।

दडपाल—पु० [स० दण्ड√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ न्यायाधीश। २. वह पहरेदार, जो हाथ मे डडा लेकर घूमता हो। ३ ड्योढीदार। द्वारपाल। ४. एक प्रकार की मछली।

दंडपालक—पु० [दण्डपाल+कन्]=दडपाल।

दंडपाशक—पु० [ब० स०, कण्] १. दड देनेवाला अधिकारी या कर्मचारी। २ फाँसी देनेवाला कर्मचारी। जल्लाद।

दड-प्रणाम—पु० [मध्य० स०] भूमि मे डडे के समान पडकर प्रणाम करने की मुद्रा। दडवत्।

दंडवालधि—पु० [ब० स०] हाथी।

दंडभृत—वि० [स० दण्ड√भृ (धारण करना)+क्विप्] डडा रखने, चलाने या घुमानेवाला।

पु० कुम्हार। कुभकार।

दंड-मत्स्य—पु० [उपमि० स०] एक तरह की मछली। बाम मछली।

दंड-माथ—पु० [मध्य० स०] मुख्य और सीधा रास्ता।

दडमान*—वि० [स० दड+हिं० मान (प्रत्य०)] दे० दडनीय।

दड-मानव—पु० [मध्य० स०] १ वह व्यक्ति जिसे अधिक या बराबर दड दिया जाता हो। २. बालक।

दंड-मुख—पु० [ब० स०] सेनापति।

दंड-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १. तत्र की एक मुद्रा, जिसमे हाथ के बीच की उँगली दड के समान खडी रहती है और शेष उँगलियाँ बँधी या मुँदी रहती है। २ साधुओ के दो चिह्न—दड और मुद्रा।

दंड-यात्रा—स्त्री० [च० त०] १. सेना की वह चढाई, जो किसी देश या राजा को दड देने के उद्देश्य से हो। २ दिग्विजय के लिए होनेवाली यात्रा। ३ किसी प्रकार का सैनिक आक्रमण या चढाई। ४. वर-यात्रा। बरात।

दंडयाम—पु० [स० दण्ड√यम् (नियत्रण करना)+अण, उप० स०] १. यम। २. अगस्त्य मुनि। ३ दिन। दिवस।

दडरी—स्त्री० [स० दण्ड√रा (देना)+क–ङीप ?] एक तरह का ककडी की जाति का फल। डँगरी फल।

दंडवत्—पु० [स० दण्ड+वति] दड के समान सीधे होकर तथा पृथ्वी पर औंधे लेटकर किया जानेवाला नमस्कार। साष्टाग प्रणाम।

वि० डडे के समान, खड़ा या सीधा।

दड-वध—पु० [तृ० त०] वध करने या किये जाने का दड। प्राण-दड। मृत्यु-दड।

दंडवासी (सिन्)—पु० [स० दण्ड√वस् (बसना)+णिनि] १ द्वारपाल। दरवान। २ गाँव का हाकिम या मुखिया।

दंडवाही (हिन्)—पु० [स० दण्ड√वह् (वहन करना)+णिनि] वह प्राचीन कर्मचारी जो हाथ मे डडा रखकर शान्ति की व्यवस्था करता था (आज-कल के पुलिस-सिपाही की तरह का)।

दंड-विज्ञान—पु० [ष०त०] समाज शास्त्र की वह शाखा, जिसमे इस बात का विचार होता है कि अपराधियो पर दड का कैसा उल्टा परिणाम होता है और अपराधियो को दड न देकर किस प्रकार सहानुभूति-पूर्वक अन्य उपायो से सुधारा जा सकता है। (पेनॉलोजी)

दंड-विधान—पु० [ष०त०] १ दड देने के लिए किया जानेवाला विधान या व्यवस्था। २ दे० 'दडविधि'।

दड-विधि—स्त्री० [ष०त०] वह विधि या विधान जिसमे विभिन्न अपराधो तथा उनके अनुरूप दडो का अभिदेश होता है।

दंड-वृक्ष—पु० [मध्य०स०] सेंहुड या थूहर का पेड, जिसकी डालियाँ डंडे की तरह मोटी और सीधी होती है।

दंड-व्यूह—पु० [मध्य०स०] एक प्रकार की प्राचीन व्यूह-रचना, जो प्राय डडे के आकार की होती थी और जिसमे आगे बलाध्यक्ष, बीच मे राजा, पीछे सेनापति, दोनो ओर हाथी, हाथियो के बगल मे घोड़े और घोड़ो के बगल मे पैदल सिपाही रहते थे।

दंड-शास्त्र—पु० [ष०त०] १ वह शास्त्र, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि किसे अथवा कौन-सा अपराध करने पर कितना अथवा क्या दड दिया जाना चाहिए। २ दे० 'दड-विधान'।

दंड-संधि—स्त्री० [मध्य०स०] लडाई मे सेना का सामान लेकर की जानेवाली सधि।

दंड-संहिता—स्त्री० [ष०त०] वह ग्रथ जिसमे किसी देश मे अपराधो के के लिए दिये जानेवाले दडो का विधान हो। दड-विधि। (पेनल-कोड)

दंड-स्थान—पु० [ष०त०] १ वह स्थान जहाँ लोगो को दड दिया जाता हो। २ वह जनपद या राष्ट्र जिस पर मुख्यत. सेना के बल पर ही शासन होता हो। (कौ०)

दंड-हस्त—पु० [ब०स०] तगर का फूल।

वि० जिसके हाथ मे डडा हो।

दंडा†—पु०=डडा।

दंडाकरन*—पु०=दडकारण्य।

दंडाक्ष—पु० [सं०] चपा नदी के किनारे का एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

दंडाजिन—पु० [दण्ड-अजिन, द्व०स०] १ वह दण्ड और मृगचर्म जो साधु-सन्यासी अपने पास रखते है। २ व्यर्थ का आडबर। ३ लोगो को धोखा देने के लिए धारण किया जानेवाला वेष। ४ एक प्रकार का बहुत सूक्ष्म उद्भिज जो तृणाणु से कुछ बडा होता है और जिसका प्रजनन-प्रकार भी उससे कुछ भिन्न होता है।

दंडात्मक—वि० [दण्ड-आत्मन्, ब०स०, कप्] दड-सबधी। २ दड के रूप मे होनेवाला।

दंडादंडि—स्त्री० [दण्ड-दण्ड, ब० स० (इच् समा० पूर्वपद दीर्घ)] डडो की मार-पीट। लट्ठबाजी।

दंडादेश—पु० [दण्ड-आदेश, ष०त०] किसी को उसके अपराध के फलस्वरूप मिलनेवाले दड की दी जानेवाली सूचना।

दंडादेशित—भू० कृ० [स० दण्डादेश+इतच्] जिसे दंडादेश दिया जा चुका या मिल चुका हो।

दंडाधिकारी (रिन्)—पु० [दण्ड-अधिकारिन्, ष०त०] वह राजकीय

अधिकारी, जिसे आपराधिक अभियोगो का विचार करने और अपराधियो को दड देने का अधिकार होता है। (मजिस्ट्रेट)
दडाधिप—पु०[दण्ड-अधिप, प०त०] कोई स्थानीय प्रधान शासक।
दंडापूपन्याय—पु०[दण्ड-अपूप, मध्य० स०, दण्डापूप-न्याय मध्य०स०?] एक प्रकार का न्याय जिसके अनुसार दो परस्पर सबधित बातो में से एक के सिद्ध होने पर दूसरे की सिद्धि उसी प्रकार निश्चित मान ली जाती है, जिस प्रकार डडे के चूहे द्वारा खा लेने पर उसमे बँधे हुए पूए का भी चूहे द्वारा खा लिया जाना निश्चित होता है।
दडायमान— वि०[स० दण्ड+क्यङ्+शानच्] जो डडे की तरह सीधा खड़ा हो।
क्रि० प्र०—होना।
दंडार—पुं०[स० दण्ड√ऋ (जाना)+अण्]१. रथ। २. नाव। ३ कुम्हार का चाक। ४ धनुष। ५. ऐसा हाथी, जिसके मस्तक मे मद वह रहा हो।
दंडार्ह—वि०[स० दण्ड√अर्ह्+अण्] जिसे दण्ड दिया जाना उचित हो। दड पाने योग्य।
दडालय—पु०[स० दण्ड-आलय, प०त०]१ न्यायालय, जहाँ अपराधियो के लिए दड का विधान होता है। २ वह स्थान जहाँ अपराधियो को शारीरिक दड दिया जाता है। ३ दडकला छद का दूसरा नाम।
दंडाश्रम—पु०[सं० दण्ड-आश्रम, मध्य०स०] वह आश्रम या स्थिति, जिसमे तीर्थयात्री हाथ मे डडा लेकर पैदल चलते हुए तीर्थों की ओर जाते थे, अथवा अब भी कही-कही जाते है।
दंडाश्रमी (मिन्)—पु०[सं० दण्डाश्रम+इनि] सन्यासी।
दंडाहत—वि०[दण्ड-आहत, तृ०त०] डडे से मारा हुआ।
पु० छाछ। मट्ठा।
दडिका—स्त्री०[स० दण्डक+टाप्,इत्व] बीस अक्षरो की एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे एक रगण के उपरान्त एक जगण, इस प्रकार के गणो के जोडे तीन बार आते है और अत मे गुरु-लघु होता है। इसे वृत्र और गडका भी कहते है।
दडित—भू० कृ०[स०√दण्ड् (दण्ड देना)+क्त] जिसे किसी प्रकार का दड दिया गया हो। दडप्राप्त।
दंटिनी—स्त्री०[स० दण्डिन्+ङीप्] क्षाग। दटोत्पला।
दंडी (डिन्)—पु०[स० दण्ड+इनि]१. दड धारण करनेवाला व्यक्ति। २. यमराज। ३. राजा। ४. द्वारपाल। ५ दड और कमडलु धारण करनेवाला संन्यासी। ६. सूर्य के एक पार्श्वचर। ७ जिनदेव। ८. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ९ दौने का पौधा। १०. मजुश्री। ११ शिव। १२ दशकुमार चरित के रचयिता एक प्रसिद्ध सस्कृत कवि।
दडोत्पल—पु० [दण्ड-उत्पल मध्य०स०] एक प्रकार का पौधा जिसे गूमा, कुकरौंधा, सहदेया भी कहते है।
दडोत्पला—स्त्री०[स० दण्डोत्पल+टाप्]=दडोत्पल।
दडोपनत—वि०[दण्ड-उपनत, तृ० त०] (राजा या शासक)जो पराजित या परास्त हो चुका हो।
दंड्य—वि०[स०√दण्ड+ण्यत्] दड पाने के योग्य। दंडनीय।
दंत—पु०[स०√दम् (दण्ड देना)+तन्] १ दाँत। २. ३२ की सख्या। ३. गाँव की हिस्सेदारी मे बहुत ही छोटा हिस्सा, जो पाई से भी कम होता था। (कौड़ियो मे दाँत के जो चिह्न होते हैं, उनके आधार पर स्थित मान) ४. कुज। ५. पर्वत की चोटी।
पु०[स० दन्ती] हाथी। उदा०—खाग त्याग करि दीपतो, के वी दत कुदाल।—जटमल।
दंतक—पु०[स० दन्त+कन्]१. दाँत। २. पहाड की चोटी। ३ एक तरह का पत्थर।
दंत-कथा—स्त्री०[मध्य०स०] कोई ऐसी अप्रामाणिक अथवा कल्पित कथा, जिसे लोग परम्परा से सुनते चले आये हो।
दंतकर्षण—पु०[सं० दन्त√कृष् (खीचना)+ल्यु-अन] जभीरी नीबू।
दंतकार—पु०[स० दन्त√कृ (करना)+अण्] टूटे या निकाले हुए दाँत नये सिरे मे बनानेवाला चिकित्सक। दाँतो का डाक्टर। (डेन्टिस्ट)
दंत-काष्ठ—पु०[मध्य०स०] दतुवन। दातुन।
दंत-काष्ठक—पु०[ब०स०, कप्]आहुल्य वृक्ष। तरवट का पेड।
दंतकूर—पु०[ब०स०] युद्ध। सग्राम।
दंतक्षत—पु०[स०] दाँत काटने से अग पर बननेवाला चिह्न या निशान।
दँतखोदनी—स्त्री०[हिं० दाँत+खोदना] धातु का वह छोटा पतला, लवा टुकडा जिससे दाँतो की सधियो मे फँसी हुई चीजे खोदकर बाहर निकाली जाती है।
दंत-घर्ष—पु०[प०त०]१ ऊपर और नीचे के दाँतो मे होनेवाली रगड। २ उक्त रगड से होनेवाला शब्द। ३. दे० 'दाँता-किटकिट'।
दंतच्छद—पुं० [स० दन्त√छद्(ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] होठ।
दंतच्छदोपमा—स्त्री०[स० दन्तच्छद-उपमा, ब०स०] विबाफल। कुँदरू।
दंत-जात—वि०[ब०स० (पर निपात)]१. (बच्चा) जिसके दाँत निकल आए हो। २ बच्चो के नये दाँत निकलने के लिए उपयुक्त (काल या समय)।
दंत-ताल—पु०[ब०स०] ताल देने का एक तरह का प्राचीन बाजा।
दंत-दर्शन—पु०[प०त०] (क्रोध या चिडचिड़ाहट मे) दाँत निकालने की क्रिया या भाव। दाँत दिखाना।
दत-धावन—पु०[प०त०] १. दातुन, मजन आदि से दाँत और मुँह का भीतरी भाग साफ करने की क्रिया। २ दातुन। ३ करज का पेड। ४ खैर का पेड। ५ मौलसिरी।
दत-पत्र—पु० [ब० स०] कान मे पहनने का एक गहना।
दत-पत्रक—पु०[ब०स०, कप्] कुद का फूल।
दत-पवन—पु०[प०त०]१ दाँत शुद्ध करने की क्रिया। दतधावन। २ दतुवन। दातुन।
दंतपार—स्त्री०[हिं० दत+उपारना] दाँत की पीडा। दाँत का दर्द।
दंत-पुप्पुट—पुं०[प०त०?] एक रोग, जिसमे मसूडो मे सूजन आ जाती है और पीडा होती है।
दतपुर—पु०[स० मध्य०स०] एक प्राचीन नगर, जिसमे राजा ब्रह्मदत्त ने महात्मा बुद्ध का एक दाँत स्थापित करके उस पर एक मदिर बनवाया था।
दंत-पुष्प—पु०[ब०स०]१ निर्मली। २. [उपमि०स०] कुद का फूल।
दंत-फल—पु० [ब०स०]१. कनकफल। निर्मली। २. कपित्थ। कैथ।
दंतफला—स्त्री०[स० दन्तफल+टाप्] पिप्पली।

दंत-मास—पु०[मध्य०स०] मसूडा।
दंतमूल—पु०[प०त०]१. दाँत की जड। २. दाँत का एक रोग।
दत-मूलिका—स्त्री०[व०स०, कप्+टाप् (इत्व)] जमालगोटे का पेड। दती वृक्ष।
दंतमूलीय—वि०[स० दन्तमूल+छ–ईय] (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग दत-मूल को स्पर्श करता हो। जैसे—त, थ, द और ध वर्ण।
दंत-लेखन—पु०[प०त०] एक तरह का यत्र जिसमे प्राचीन काल मे मसूडो मे से मवाद निकाली जाती थी।
दंतवक्र—पु०[व०स०] शिशुपाल के भाई का नाम, जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।
दंत-बीज—पुं०[व०स०] अनार।
दत-वस्त्र—पु०[प०त०] होठ। ओष्ठ।
दंत-वीणा—स्त्री०[मध्य०स०] १. एक तरह का बाजा। २. दाँत किटकिटाने की क्रिया या उससे होनेवाला शब्द।
दंत-वेष्ट—पु०[प०त०] १ एक प्रकार का दत-रोग। २ मसूडा। ३ हाथी के दाँत पर चढाया जानेवाला धातु का छल्ला।
दंत-वैदर्भ—पु०[प०त०] दाँत का एक रोग।
दंतव्यसन—पु०[प०त०] दाँतो का टूटना।
दंत-शकु—पु० [मध्य०स०] चीर-फाड करने का एक उपकरण जो जौ के पत्तो के आकार का होता था। (सुश्रुत)
दंत-शठ—पु०[स०त०] वे वृक्ष जिनके फल खाने से खटाई के कारण दाँत गुठले हो जायँ। जैसे—कैथ, कमरख, जभीरी नीबू आदि।
दंत-शठा—स्त्री०[स०त०, टाप्]१ खट्टी नोनिया। अमलोनी। २ चुक। चूक।
दंत-शर्करा—स्त्री०[प०त०] दाँतो का एक रोग।
दंत-शाण—पु०[प०त०] दाँतो पर लगाने का रगीन मजन। मिस्सी।
दंत-शूल—पु०[प०त०] दाँत की जड मे होनेवाली पीडा।
दंत-शोफ—पु०[प०त०] दाँत के मसूडो मे होनेवाला एक प्रकार का फोडा। दतार्बुद।
दत-हर्ष—पु० [व० स०] दाँतो की वह टीस, जो अधिक ठढी या खट्टी वस्तु खाने से होती है। दाँतो का खट्टा होना।
दंतहर्षक—पुं० [स० प० त०] जभीरी नीबू।
दंताघात—पु० [दन्त-आघात, तृ० त०] दाँत से किया जानेवाला आघात। पु० [दन्त+आ√हन् (पीडा पहुँचाना)+अण्] नीबू, जिससे दाँतो को आघात पहुँचता है।
दंताज—पु० [स० दन्त+आ√जन् (प्रादुर्भाव)+ड] १ दाँतो की जडो या सधियो मे लगनेवाले कीडे। २ उक्त कीडो के कारण होनेवाला दाँतो का रोग, जिसमे मसूड़ो मे मवाद निकलता है। (पायरिया)
दंतादंति—स्त्री० [दन्त-दन्त, व० स० (नि० सिद्धि)] ऐसी लडाई, जिसमे दोनो पक्ष, एक दूसरे को दाँत काटें। दाँत-कटौअल।
दंतायुध—पु० [दन्त-आयुध, व० स०] जगली सूअर।
दँतार—वि० [हिं० दाँत+आर (प्रत्य०)] जिसके बडे-बडे दाँत हो।
दंतारा—वि०=दँतार।
दंतार्बुद—पु० [दन्त-अर्बुद, प० त०] मसूडे मे होनेवाला फोडा।
दंताल—पु० [हिं० दँतार] हाथी।
दंतालय—पु० [दन्त-आलय, प० त०] मुख।
दंतालिका—स्त्री० [स०√अल् (पर्याप्ति)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व, दन्त-आलिका, प० त०] लगाम।
दंताली—स्त्री० [स० दन्त√अल्+अण्+ङीप्] लगाम।
दंतावल—पु० [स० दन्त+वलच् (पूर्वपद दीर्घ)] हाथी।
दंताहल*—पु० [स० दतावल] हाथी। (डिं०)
दतिका—स्त्री० [स० दन्ती+कन्—टाप्, ह्रस्व] जमाल-गोटा। दती।
दतिया—स्त्री० [हिं० दाँत+इया (प्रत्य०)] बच्चो के छोटे-छोटे दाँत।
पु० [देश०] एक तरह का पहाडी तीतर। नीलमोर।
दती—स्त्री० [स० दन्त+ङीप्] अडी की जाति का एक पेड। दती दो प्रकार की होती है—लघुदती और वृहद्दती।
दंतीबीज—पु० [व० स०] जमालगोटा।
दंतुर—वि० [स० दन्त+उरच्] जिसके दाँत आगे निकले हो। दतुला। दाँतू।
पु० १. हाथी। २. सूअर।
दंतुरक—वि० [स० दन्तुर+कन्] जिसके दाँत निकले हो।
दंतुरच्छद—पु० [व० स०] बिजौरा नीबू।
दंतुरिया*—स्त्री० [हिं० दाँत] बच्चो के छोटे-छोटे दाँत। दँतिया।
दतुल—वि० [स० दतुर] दाँतोवाला।
दंतुला—वि० [स० दतुर] [स्त्री० दँतुली] बड़े-बडे दाँतोवाला।
दंतोद्भेद—पु० [दन्त-उद्भेद, प० त०] बच्चो के मुँह मे दाँतो का निकलना।
दतोलूखलिक—पु०[स० दन्त-उलूखल, उपमि० स०, दन्तोलूखल+ठन्—इक] एक प्रकार के सन्यासी जो केवल फल और बीज खाते है, काटी, कूटी या पीसी हुई चीजे नही खाते।
दंतोष्ठ्य—वि० [स० दन्त-ओष्ठ, द्व० स०,+यत्] दाँतो और होठो की सहायता से उच्चरित होनेवाला (वर्ण)। जैसे—'व्'।
दत्य—वि० [स० दन्त+यत्] १ दाँत-सबधी। दाँतो का। जैसे—दत्य रोग। २ (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँतो की सहायता से होता हो।
विशेष—त् थ् द् और ध् दत्य वर्ण कहे गये है। 'न्' वर्त्स्य है।
३ (औषध) जो दाँत के रोगो के लिए हितकारी हो।
दंद—स्त्री० [स० दहन, दन्दह्यमान] गरम चीज या जगह मे से निकलनेवाली गरमी। वैसी गरमी, जैसी तपी हुई भूमि पर पानी पडने से निकलती या खानो के अन्दर होती है।
†पु०=दाँत। (पजाब)
पु० [स० द्वन्द्व] १ उत्पात या उपद्रव। २ लडाई-झगडा। ३ हो-हल्ला। शोर।
क्रि० प्र०—मचाना।
ददन*—स्त्री० [हिं० दद=दाँत] एक रोग जिसमे मनुष्य के ऊपर नीचे के दाँत आपस मे कुछ समय के लिए सट जाते है और वह मूर्च्छित हो जाता है। (पश्चिम)
क्रि० प्र०—पडना।

वि० [स० दमन] [स्त्री० ददनी] दमन करनेवाला।
दंदश—पु० [स०√दश् (काटना)+यङ्, +अच्] दाँत।
दंदशूक—पु० [स०√दश्+यङ्,+ऊक] १ सूर्य । २ एक राक्षस।
दंदह्यमान—वि० [स०√दह (जलना) +यङ+शानच्,] दहकता हुआ।
दंदा—पु० [देश०] ताल देने का पुरानी चाल का एक तरह का वाजा।
दंदान—पु० वहु० [फा० ददाँ] दाँत
दंदाना—पु० [हिं० दन्दान] [वि० ददानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई नोको की पक्ति। जैसे—कघी या आरे के ददाने।
†अ० [हिं० दद=द्वन्द्व] १ गरमी के प्रभाव मे आना या पडना। गरम होना। जैसे—धूप मे सारा घर ददाने लगता है।
स० सरदी से वचने के लिए आग के पास वैठकर या कवल, रजाई आदि ओढकर अपना शरीर गरम करना।
दंदानेदार—वि० [फा०] जिसमे ददाने हों।
दंदारु—पु० [हिं० दद+आरु (प्रत्य०)] छाला। फफोला।
दंदी—वि० [हिं० दद] १ झगडालू। २. उपद्रवी।
दंपति—पु०=दपती।
दंपती—पु० [स० जाया-पति, द्व० स० (जाया शब्द को दम् आदेश)] पति-पत्नी का जोडा।
दपा*—स्त्री० [हिं० दमकना] विजली।
दंभ—पु० [स०√दम्भ् (पाखड करना)+घञ्] अपनी योग्यता, शक्ति आदि का उचित मात्रा से अधिक होनेवाला असद् अभिमान।
दंभक—वि० [स०√दम्भ्+ण्वुल्—अक] दभी।
दभान*—पु०=दभ।
दंभी (भिन्)—वि० [स०√दम्भ्+णिनि] जिसमे दभ हो। असद् अभिमानी।
दंभोलि—पु० [स०√दम्भ्+असुन्, दम्भस् (प्रेरणा) √अल् (पर्याप्ति)+इन्] १ इद्र का अस्त्र। वज्र । २ हीरा।
दँवरिया—स्त्री०=दँवरी।
दँवरी—स्त्री० [स० दमन, हिं० दाँवना] कटी हुई फसल को इस उद्देश्य से वैलो से रौंदवाना कि उसमे के वीज डठलो से अलग हो जायँ।
दँवारि*—स्त्री० दे० 'दवाग्नि'।
दश—पु० [स०√दश् (काटना)+घञ्, अथवा अच्] १. दाँत से काटने की क्रिया या भाव। २ वह क्षत या घाव, जो किसी के दाँतो से काटने पर होता है। दत-क्षत। ३. किसी कीड़े या जानवर के काटने से होनेवाला क्षत या घाव। जैसे—सर्प-दश। ४ दाँत। ५. जहरीले जानवरो का डक। ६ एक प्रकार की मक्खी, जिसके डक मे जहर होता है। डाँस। ७ कोई ऐसी वहुत कठोर और चुभती हुई वात जिससे मन को वहुत अधिक कष्ट हो। कष्टप्रद कटूक्ति। ८ द्वेष। वैर।
क्रि० प्र०—रखना।
९ लडाई मे पहना जानेवाला वखतर। वर्म। १० महाभारत के अनुसार सत्ययुग का एक असुर, जो भृगु मुनि की पत्नी को उठा ले गया था और जो उक्त मुनि के शाप से मल-मूत्र का कीडा हो गया था।
दंशक—वि० [स०√दश् (काटना)+ण्वुल्—अक] दाँतो से काटनेवाला।
पु० डाँस या दश नाम की मक्खी।
दशन—पु० [स०√दश्+ल्युट्—अन] [वि० दशित, दशी] १ दाँतो से काटने की क्रिया या भाव। २. वर्म। वखतर।
दशना—स० [स० दशन] १ दाँत से काटना। २. डक मारना। डसना।
दंशभीरु—पुं० [प० त०] भैंस या भैंसा, जो मच्छरो से वहुत डरता है।
दंश-मूल—पु० [व० स०] सहिंजन का पेड।
दशित—भू० कृ० [स०√दश्+णिच्+क्त] १. जिसे किसी ने दाँत से काटा हो। दाँत से काटा हुआ। २ जिसे किसी ने डक मारा या डसा हो।
दंशी (शिन्)—वि० [स०√दश्+णिनि] [स्त्री० दशिनी] १. दाँत से काटने या डसनेवाला। २. कड़ी और चुभती या लगती हुई वात कहनेवाला। ३. द्वेष या वैर का भाव रखकर हानि पहुँचानेवाला।
स्त्री० [स० दश+ङीप्] एक प्रकार का छोटा मच्छर।
दंशूक—वि० [स०√दश् (डसना) + ऊक (वा०)] डँसनेवाला (जीव)।
दंष्ट्र—पु [स० दश्+ष्ट्रन्] दाँत, विशेषत मोटा और वडा दाँत।
दंष्ट्रा—स्त्री० [स० दष्ट्र+टाप्] १ दाढ। चौभर। २. विच्छू नाम का पौधा।
दंष्ट्रा-नखविष—वि० [व० स०] (जन्तु) जिसके दाँतो और नखो मे विष हो।
दष्ट्रायुध—वि० [दष्ट्रा-आयुध, व० स०] जो अपने दाँतो से ही आयुध या अस्त्र का काम लेता हो।
पु० सूअर।
दंष्ट्राल—वि० [स० दष्ट्रा+ल] जिसके वडे-वडे दाँत हो।
पु० एक राक्षस का नाम।
दष्ट्रास्त्र—वि०, पु०=दष्ट्रायुध।
दंष्ट्रिक—वि० [स० दष्ट्रा+ठन्—इक] दाढोवाला।
दंष्ट्रिका—स्त्री० [स० दष्ट्रा+क+टाप् (ह्रस्व, इत्व)]=दष्ट्रा।
दंष्ट्री (ष्ट्रिन्)—वि० [स० दष्ट्रा+इनि] वडे-वडे दाँतोवाला।
पु० १. सूअर। २ साँप।
दस*—पु०=दश।
दँहगल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चितकवरी चिड़िया; जिसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच काली, और पैर गाढे सिलेटी रग के होते है।
दइअ*—पु०=दैव (ईश्वर)।
दइउ —पु०=दैव।
दइजा†—पु०=दायजा।
दइत*—पु०=दैत्य।
दइमारा—वि०=दईमारा।
दई—पु० [स० दैव] १ ईश्वर।
पद—दई का खोया, घाला या मारा=जिस पर ईश्वर का कोप हो। दईदई=हे दैव ! हे दैव ! (रक्षा के लिए ईश्वर से की जानेवाली पुकार)
२ दैव-सयोग। ३. अदृष्ट। प्रारब्ध।
वि० [स० दया] दयालु।

दईमारा—वि० [हिं० दई+मारना] [स्त्री० दईमारी] १. जिस पर दई (दैव) या ईश्वर का कोप हो। २. अभागा।

दउरना—अ०=दौड़ना।

दउरा†—पु०=दौरा।

दक—पु० [स० उदक, पृषो० सिद्धि] जल। पानी।

दकन—पु० [स० दक्षिण से फा०] १. दक्खिन दिशा। २ दक्षिणी भारत।

दकनी—वि० =दक्षिणी।

स्त्री० उर्दू भाषा का वह आरम्भिक रूप जो दक्षिण हैदराबाद मे विकसित हुआ था। विशेष दे० 'दक्खिनी'

दकार—पु० [स० द+कार] तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'।

दकार्गल—पु० [स० दक-अर्गल ष० त०]=दगार्गल।

दकियानूस—पु० [यू० से अ०] एक रोमन सम्राट् जो ३४९ ई० मे सिंहासनारूढ हुआ था तथा जो अपने अत्याचारो के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

वि०=दकियानूसी।

दकियानूसी—वि० [अ०] १. दकियानूस के समय का, अर्थात् बहुत पुराना। २ नवीनता का विरोधी और पुरानी तथा अनद्यतन विचारधाराओ का समर्थक।

दकीका—पु० [अ० दकीक] १ कोई सूक्ष्म वात या विचार। २ उपाय। उक्ति।

मुहा०—कोई दकीका बाकी न रखना=प्रयत्न करते समय अपनी ओर से कोई कमी या त्रुटि न करना।

३. बहुत थोडा समय। क्षण। पल।

दक्काक—वि० [अ० दक्काक] १ आटा पीसनेवाला। २ कूटनेवाला।

दक्खिन—पु० [स० दक्षिण] [वि० दक्खिनी] १ दक्षिण दिशा। २ उक्त दिशा का कोई प्रदेश। ३. भारत का दक्षिणी भाग।

दक्खिनी—वि० [हिं० दक्खिन] १ दक्षिण की ओर या दिशा का। दक्खिन का। २ दक्षिण देश का।

पु० दक्षिण दिशा मे पडनेवाले देश का निवासी।

स्त्री० १ दक्षिण देश की भाषा। २ मध्ययुग मे दक्षिण भारत मे प्रचलित हिंदी का वह रूप जिसमे मुसलमान कवि कविता करते थे और जिससे आधुनिक उर्दू के विकास का घनिष्ठ सबध है।

दक्ष—वि० [स०√दक्ष् (शीघ्रता से करना)+अच्] [भाव० दक्षता] १ जिसमे कोई या सब काम तुरन्त, सहज मे और सुन्दरतापूर्वक करने की योग्यता हो। कुशल। निपुण। होशियार। २ दाहिनी ओर का। दाहिना।

पु० १ एक प्रजापति, जिनसे देवता उत्पन्न हुए है। २. विष्णु। ३ महादेव। शिव। ४ शिव की सवारी का बैल। नन्दी। ५ अत्रि ऋषि का एक नाम। ६ बल। शक्ति। ७ वीर्य। ८. कुक्कुट। मुरगा। ९ राजा उशीनर का एक पुत्र।

दक्ष-कन्या—स्त्री० [ष० त०] सती।

दक्षक्रतुध्वसी (सिन्)—पु० [स०दक्ष-क्रतु, ष०त०,√ध्वस् (नष्ट करना)+णिनि] १ दक्ष प्रजापति के यज्ञ का ध्वस या नाश करनेवाले शिव। २ शिव के अश से उत्पन्न वीरभद्र, जो शिव के उक्त कार्य मे सहायक हुए थे।

दक्षता—स्त्री० [स० दक्ष+तल्—टाप्] १. दक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव। २ निपुणता।

दक्षता-अर्गल—पु० दे० 'प्रगुणता अर्गल'।

दक्ष-दिशा—स्त्री० [मध्य० स०] दक्षिण की दिशा।

दक्ष-विहिता—स्त्री० [तृ० त०] एक प्रकार का गीत।

दक्ष-सावर्णि—पु० [मध्य० स०] नवें मनु का नाम।

दक्षाड—पु० [स० दक्षा-अड, ष० त०] मुर्गी का अडा।

दक्षा—वि० स्त्री० [स० दक्ष+टाप्] कुशला। निपुणा।

स्त्री० पृथ्वी।

दक्षाय्य—पु० [स०√दक्ष्+आय्य] १ गरुड़। २ गिद्ध पक्षी।

दक्षिण—वि० [स०√दक्ष् (गति)+इनन्] १. दाहिना। 'बायाँ' का विपर्याय। २ उस ओर या दिशा का जिधर दाहिना हाथ पडता है, जब हम सूर्य की ओर मुँह करके खडे होते है। ३ आचरण, व्यवहार मे अनुकूल, कृपालु और प्रसन्न रहनेवाला। किसी प्रकार का अपकार, द्वेष या विरोध न करनेवाला। ४ दक्ष। निपुण। होशियार।

पु० १. वह दिशा जो उस समय हमारे दाहिने हाथ की ओर पडती है जब हम सूर्य की ओर मुँह करके खडे होते है। २ साहित्य मे, वह नायक जिसका प्रेम अपनी सभी प्रेमिकाओ के साथ एक-सा होता है। ३. तत्र मे, एक प्रकार का आचार या मार्ग जो वाममार्ग से बिलकुल भिन्न और विपरीत होता है। ४ विष्णु का एक नाम। ५. परिक्रमा। प्रदक्षिणा।

दक्षिण-गोल—पु० [कर्म० स०] विषुवत् रेखा से दक्षिण पडनेवाली ये छ राशियाँ—तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुभ और मीन।

दक्षिण-नायक—पुं० [कर्म० स०] साहित्य मे, शृंगार रस का आलबन वह नायक जो अनेक नायिकाओ से अनुराग का व्यवहार समान रूप से करता हो।

दक्षिण-प्रवण—पुं० [स० त०] वह स्थान, जो उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर अधिक नीचा या ढालुआँ हो। मनु के अनुसार श्राद्ध आदि के लिए ऐसा ही स्थान उपयुक्त होता है।

दक्षिण-मार्ग—पु० [कर्म० स०] [वि० दक्षिणमार्गी] १ वैदिक धर्म या मार्ग, जिसके विपरीत होने के कारण तात्रिक मत या धर्म 'वाममार्ग' कहलाता है। २ परवर्ती तात्रिक मत के अनुसार एक प्रकार का आचार जो वैदिक वैष्णव और शैव मार्गों से निम्न कोटि का बताया गया है। ३ आधुनिक राजनीति मे, वह मार्ग या पक्ष जो साधारण और वैधानिक रीति तथा शान्त उपायो से उन्नति तथा विकास चाहता हो और उग्र उपायो से क्राति करने का विरोधी हो। (राइट विंग)

दक्षिणा—स्त्री० [स० दक्षिण+टाप्] १ दक्षिण दिशा। २ वह धन, जो ब्राह्मणो को कर्मकाड, यज्ञ आदि कराने के बदले मे अथवा दान देने, भोजन कराने आदि के उपरान्त या साथ दिया जाता है। ३ वह धन जो किसी के प्रति आदर-सम्मान प्रकट करने के लिए उसे भेट किया जाता है। ४ लाक्षणिक रूप मे, किसी को नकद दिया जानेवाला धन। ५ साहित्य मे वह नायिका,जो नायक के दूसरी स्त्रियो के साथ सबध करने पर भी उससे पूर्ववत् प्रेम रखती है और किसी प्रकार का द्वेष या रोष नही करती।

दक्षिणाग्नि—पु० [दक्षिण-अग्नि, कर्म० स०] गार्हपत्य अग्नि के दक्षिण मे रखी जानेवाली अग्नि।
दक्षिणाग्र—वि० [दक्षिण-अग्र, ब० स०] जिसका अग्रभाग दक्षिण की ओर हो।
दक्षिणाचल—पु० [दक्षिण-अचल, मध्य० स०] मलयगिरि पर्वत।
दक्षिणाचार—पु० [दक्षिण-आचार, कर्म० स०] १ अच्छा और शुद्ध आचरण। सदाचार। २ वाममार्ग का एक पथ या शाखा जिसमे उपासक अपने आपको शिव मानकर पच तत्वो से शिव की पूजा करता है।
दक्षिणाचारी (रिन्)—वि० [स० दक्षिणाचार+इनि] १. दक्षिण अर्थात् अच्छे और शुद्ध मार्ग पर चलनेवाला। २ धर्मशील और सदाचारी।
दक्षिणा-पथ—पु० [स० दक्षिणा, दक्षिण+आच्, दक्षिणापथ, स० त०] १ दक्षिण दिशा की ओर जानेवाला पथ। २ दक्षिण भारत या उसमे के प्रदेश।
दक्षिणापरा—स्त्री० [दक्षिणा-अपरा, ब० स०] नैर्ऋत कोण।
दक्षिणाभिमुख—वि० [दक्षिणा-अभिमुख ब० स०] १. जिसका मुंह दक्षिण की ओर हो। २ जो दक्षिण की ओर उन्मुख हो।
दक्षिणा-मूर्ति—पु० [ब० स०] तत्र के अनुसार शिव की एक मूर्ति।
दक्षिणायन—वि० [दक्षिण-अयन ब० स०] १ जो दक्षिण की ओर हो। २ भू-मध्य रेखा से दक्षिण की ओर का। जैसे—दक्षिणायन सूर्य।
पु० [स० त०] १ सूर्य की वह गति जो कर्क रेखा से दक्षिण और मकर रेखा की ओर होती है। २ वह छ महीनो का समय, जिसमे सूर्य की गति उक्त प्रकार की रहती है।
दक्षिणावर्त—वि० [स० दक्षिणा+आ√वृत् (वरतना)+अच्, उप० स०] जिसका घुमाव, प्रकृति या मुँह दाहिनी दिशा की ओर को हो। जैसे—दक्षिणावर्त शख।
पु० एक प्रकार का शख, जिसका घुमाव या मुँह (साधारण के विपरीत) दक्षिण या दाहिने हाथ की ओर होता हे।
दक्षिणावर्तकी—स्त्री० [स० दक्षिणावर्त्त√कै (शब्द करना)+क—ङीप्] वृश्चिकाली नाम का पौधा।
दक्षिणावह—पु० [स० दक्षिणा√वह् (वहना)+अच्] दक्षिण दिशा से आनेवाली वायु। दक्खिनी हवा।
दक्षिणाशा—स्त्री० [स० दक्षिणा-आशा, कर्म० स०] दक्षिण दिशा।
दक्षिणाशा-पति—पु० [ष० त०] १ यम, जो दक्षिण-दिशा के स्वामी माने गये है। २ मगल ग्रह।
दक्षिणी—वि० [स० दक्षिणीय] १ दक्षिण दिशा-सबधी। २. दक्षिण प्रदेश मे होनेवाला।
पु० दक्षिण प्रदेश का निवासी।
स्त्री० भारत के दक्षिण प्रदेश की भाषा।
दक्षिणी-ध्रुव—पु० [हिं० दक्षिणी+ध्रुव] पृथ्वी के गोले का दक्षिणी सिरा। कुमेरु। (साउथ पोल)
दक्षिणीय—वि० [स० दक्षिण+छ—ईय] १ दक्षिण का। दक्षिण-सबधी। २ दक्षिण देश का। ३ [दक्षिणा+छ-ईय] जिसे दक्षिणा दी जानी चाहिए अथवा दी जाने को हो।
दक्षिण्य—वि० [स० दक्षिणा+यत्]=दक्षिणीय।

दक्षिन—पु०=दक्षिण।
दक्षिनी—वि०, पु०, स्त्री०=दक्षिणी।
दखन—पु०=दकन।
दखनी—वि०, स्त्री० १=दकनी। २=दक्खिनी।
दखमा—पुं० [फा० दख्म.] पारसियो का कब्रिस्तान, जो गोलाकार खोखली इमारत के रूप मे होता है और जिसमे कौओं, चीलो आदि के खाने के लिए शव फेंक दिये जाते हैं।
दखल—पु० [अ० दख्ल] १. प्रवेश। २. पैठ। पहुँच। ३. जानकारी। ४ अधिकार। जैसे—वह मकान आज-कल हमारे दखल मे है। ५ अनधिकार-पूर्वक या अनुचित रूप से किया जानेवाला हस्तक्षेप। जैसे—तुम उनकी बातो मे दखल मत दिया करो।
दखल-दिहानी—स्त्री० [अ० दख्ल+फा० दिहानी] विधिक क्षेत्र मे, अधिकारियो या शासन द्वारा ऐसी सपत्ति पर किसी को कब्जा दिलाना जिस पर किसी दूसरे का दखल चला आ रहा हो।
दखल-नामा—पुं० [अ० दखल+फा० नाम] वह पत्र जिसमे दखलदिहानी की आज्ञा लिखी हुई हो।
दखिन†—पु०=दक्षिण।
दखिनहरा—पु० [हिं० दखिन+हारा (प्रत्य०)] दक्षिण दिशा से आनेवाली हवा।
दखिनहा—वि० [हिं० दखिन+हा (प्रत्य०)] १. दक्षिण मे होनेवाला। दक्षिण का। २. दक्षिण से आनेवाला।
दखिना—पु० [हिं० दखिन+आ (प्रत्य०)] दक्षिण से आनेवाली हवा।
†स्त्री०=दक्षिणा। (पश्चिम)
दखील—वि० [अ० दखील] १. जो दखल देता हो। हस्तक्षेप करनेवाला। २. जिसकी कही पहुँच हो। ३. जिसने कही या किसी चीज पर दखल या कब्जा कर रखा हो। काबिज।
दखीलकार—पु० [अ० दखील+फा० कार] वह असामी, जो पिछले बारह वर्षो अथवा उससे अधिक समय से जमीदार का खेत जोत-बो रहा हो और इस प्रकार जिसे सदा के लिए वह खेत जोतने-बोने का अधिकार मिल गया हो। (आकुपेन्सी टेनेन्ट)
दखीलकारी—स्त्री० [अ० दखील+फा० कारी] १ दखीलकार होने की अवस्था, पद या भाव। २ वह जमीन, जिस पर दखीलकार का अधिकार हो।
दगइल—वि० १=दगैल। २=दगाई।
दगड़—पुं० [?] १. लडाई मे बजाया जानेवाला बडा ढोल। जगी ढोल। (राज०) २ पत्थर। (मराठी)
दगड़ना—अ० [हिं० दगड] १ दगड़ बजाना। २ सच्ची बात पर विश्वास करना।
दगदगा—पु० [अ० दगदग] १ डर। भय। २ कोई अप्रिय घटना या बात होने की आशका। खटका। ३ पुरानी चाल की एक प्रकार की कंडील।
दगदगाना—अ० [भाव० दगदगाहट]=चमकना।
स०=चमकाना।
दगदगी—स्त्री०=दगदगा।
दगध†—वि०=दग्ध।

†पु०=दाह।

दगधना—स०[सं० दग्ध+हिं० ना (प्रत्य०)] १. दग्ध करना। जलाना। २ बहुत अधिक दुःखी या सन्तप्त करना। दाहना।

अ० १. जलना। २ दुःखी या सतप्त होना।

दगना—अ०[सं० दग्ध+ना (प्रत्य०)] १ दाग, चिह्न आदि से दागा जाना या अंकित होना। २ गरम लोहे, तेजाब, दवा आदि से किसी अग का इस प्रकार जलाया जाना कि उस पर दाग पड़ जाय। ३ झुलस जाना। ४ (तोप, बदूक आदि के सबध मे) दागा, चलाया या छोड़ा जाना। ५ दाग या कलक से युक्त होना। कलकित होना। ६. किसी नये या विशिष्ट नाम से प्रसिद्ध होना। उदा०—लोक वेदहूँ लौं दगो नाम भले को पोच।—तुलसी।

†स०=दागना।

दगर—पु० =दगरा।

दगरा—पु० [?] देर। विलब।

†पु० = डगर (रास्ता)।

दगरी—स्त्री० [?] ऐसा दही जिस पर मलाई न जमी या लगी हुई हो।

दगल—पु० [अ० दगल] फरेब। धोखा। छल। उदा०—पहिरहु राता दगल सोहावा।—जायसी।

पु० [?] रुईदार ढीला अँगरखा।

दगलना—अ० [अ० दगल] छल करना। धोखा देना।

दगल-फसल—पु० [अ० दगल+अनु० फसल या हिं० फँसाना] कपट। छल। धोखा। फरेब।

दगला—पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० दगली] रुईदार ढीला-ढाला अगरखा। दगल। उदा०—वाह वाह मियाँ बाँके, तेरे दगले मे सौ सौ टाँके।—कहा०।

दगवाना—स० [हिं० दागना का प्रे०] दागने का काम किसी से कराना। (दागना के सभी अर्थों मे)

दगहा—वि० [हिं० दगना+हा (प्रत्य०) अथवा स० दग्ध] १. जिसमे दाग हो। दागवाला। २ (पशु) जो किसी उद्देश्य से दग्ध किया या दागा गया हो। जैसे—दगहा घोड़ा, दगहा साँड। ३.(व्यक्ति) जिसके शरीर पर कोढ के सफेद दाग हो।

वि० [हिं० दाह=प्रेतकर्म+हा (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसने अभी हाल मे किसी मृतक का दाह-सस्कार किया हो और जो अभी तक अशौच मे हो।

दगा—पु० [अ० दगा] १ छल। कपट। धोखा। २ विश्वासघात।

क्रि० प्र०—देना।

पद—दगाबाज, दगादार आदि।

दगाई—स्त्री० [हिं० दागना] १ दागने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दागे जाने का चिह्न।

वि० [अ० दगा] दगा देनेवाला।

*स्त्री० = दगा।

दगादार—वि० [अ० दगा+फा०दार] दगा देनेवाला। धोखेबाज।

दगाबाज—वि० [फा० दगाबाज] [भाव० दगाबाजी] दगा देनेवाला। धोखेबाज।

दगाबाजी—स्त्री० [फा०दगाबाजी] १ दगाबाज होने की अवस्था या भाव। २ दगा देने की क्रिया या भाव। ३. कोई ऐसा कार्य जो किसी को धोखा देने के लिए किया गया हो।

दगार्गल—पु० [सं० दकार्गल (पृषो० सिद्धि)] एक प्राचीन विद्या, जिसके अनुसार भूमि के ऊपरी लक्षण देखकर यह बतलाया जाता था कि उसके नीचे जल है या नहीं।

दगैल—वि० [अ० दाग+हिं० ऐल (प्रत्य०)] १. जिसमे किसी प्रकार के दाग या धब्बे हों। २ जो किसी रूप मे दग्ध करके अंकित या चिह्नित किया गया हो। ३. जिसमे कोई दाग लगा हो। दूषित। कलंकित। ४. जो कारागार का दड भोग चुका हो।

†वि० = दगाबाज।

दग्ध—वि० [सं० दह् (जलाना)+क्त] १. जला या जलाया हुआ। २. जिसके शरीर पर दागे जाने का कोई चिह्न हो। ३. जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट या सताप हुआ हो। परम दुःखी और संतप्त। ४. अशुभ।

दग्ध-काक—पुं० [कर्म० स०] डोम कौवा।

दग्ध-मंत्र—पुं० [कर्म० स०] तत्र के अनुसार वह मत्र जिसके मूर्द्धा प्रदेश मे वह्नि और वायु-युक्त वर्ण हो।

दग्ध-रथ—पुं० [ब० स०] इद्र का सारथी चित्ररथ गधर्व।

दग्ध-रुह—पु० [सं० दग्ध+√रुह् (उगना)+क] तिलक वृक्ष।

दग्ध-रुहा—स्त्री० [स० दग्धरुह+टाप्] कुरु नामक वृक्ष।

दग्धा—स्त्री० [स० दग्ध+टाप्] १. सूर्य के अस्त होने की दिशा। पश्चिम दिशा। २. कुरु नामक वृक्ष। ३. ज्योतिष मे कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त होने पर कुछ विशिष्ट तिथियो की सज्ञा।

वि०, पुं० [स०√दह् (जलाना)+तृच्] जलानेवाला।

दग्धाक्षर—पुं० [सं० दग्ध-अक्षर, कर्म० स०] पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचो अक्षर, जिनका छद के आरभ मे रखना वर्जित है।

दग्धाह्व—पु० [स० दग्ध-आह्वा, ब० स०] एक तरह का वृक्ष।

दग्धिका—स्त्री० [सं० दग्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व]=दग्धा।

दग्धित*—वि० =दग्ध।

दग्धेष्टका—स्त्री० [स० दग्धा-इष्टका, कर्म० स०] झाँवाँ।

दचक—स्त्री० [हिं० दचकना,] १. दचकने की क्रिया या भाव। २ झटके या दबाव से लगी हुई चोट। ३ धक्का। ठोकर। ४ दबाव।

दचकना—अ० [अनु०] [भाव० दचक, दचकन] १. ठोकर या धक्का खाना। २. झटका खाना। ३. भार के नीचे पड़कर इस प्रकार दबना कि ऊपरी अश कुछ कट या फट जाय।

स० १. ठोकर या धक्का लगाना। २ झटका देना। ३ इस प्रकार दबाना कि ऊपरी अश कुछ क्षत-विक्षत हो जाय।

दचका—पुं० दे० 'दचक'।

दचना—अ० [देश०] एकाएक ऊपर से नीचे आ पड़ना। गिरना।

अ०, स०=दचकना।

दच्छ—वि०, पु० = दक्ष।

दच्छकुमारी—स्त्री० =दक्षकुमारी (सती)।

दच्छना—स्त्री० =दक्षिणा।

दच्छसुता—स्त्री० [स० दक्ष+सुता] दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन—वि० =दक्षिण।
दज्जाल—वि० [अ०] बहुत बड़ा धोखेबाज या धूर्त।
पु० मुसलमानो के मतानुसार वह व्यक्ति जो कयामत से पहले जन्म लेगा और खुदा होने का झूठा दावा करेगा।
दज्झना†—अ० [सं० दहन] १ दहन होना। जलना। २. बहुत अधिक दु खी या संतप्त होना।
स० १. दहन करना। जलाना। २ बहुत अधिक दु.खी या संतप्त करना।
दड़घल—पु० [सं० दण्डोत्पल] सहदेई नामक पौधा।
दड़बा†—पु० =दरबा।
दड़ोकना—अ० [अनु०] दहाड़ना। गरजना।
दड़ोबड़†—अव्य० =धड़ाधड़।
दढ़ना*—अ० [स० दग्ध] जलना। उदा०—भई देह जो खेह करम बस ज्यों तट गंगा अनल दटी।—सूर।
स० =दढाना।
दढ़ाना—स० [हिं० दढना] जलाना।
दढ़ियल—वि० [हिं० दाढ़ी+इयल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसे दाढी हो। दाढीवाला।
दढ्ढ*—वि० [स० दग्ध] दग्ध। जला हुआ।
दणियर—पुं० [स० दिनमणि] सूर्य। (डिं०)
दतना†—अ० [स० दत्तचित्त] १ किसी काम मे दत्तचित्त होकर लगना। २ मग्न या लीन होना।
† अ० = डटना।
दतवन—स्त्री० =दातुन।
दतारा—वि० =दँतार।
दतिसुत—पु० [स० दितिसुत] दैत्य। राक्षस। (टिं०)
दतुअन— स्त्री० = दातुन।
दतुवन†—स्त्री० =दातुन।
दतून—स्त्री० =दातुन।
दतौन—स्त्री० =दातुन।
दत्त—वि० [न०√दा (देना)+क्त] [स्त्री० दत्ता] १ जो किसी को दिया जा चुका हो। २. जिसका कर, देन, परिव्यय आदि चुकता कर दिया गया हो। (पेड)
पु० १ दान। २ चदे, सहायता आदि के रूप मे किसी सस्था को दी जानेवाली रकम। (डोनेशन) ३. दत्तक सतान। ४ दत्तात्रेय। ५ जैनो के नौ वासुदेवो मे से एक।
दत्तक—पु० [स० दत्त+कन् (स्वार्थे)] सतान न होने पर दूसरे कुल और परिवार का वह लडका जो विधिवत् गोद लेकर अपना पुत्र बनाया गया हो। मुतबन्ना। (एडाप्टेड सन)
विशेष—ऐसा पुत्र धर्म और विधि (या कानून) दोनो के अनुसार हर तरह से औरस या स्वजात पुत्र के समान माना जाता है।
दत्तक-ग्रहण—पु० [स० प० त०] किसी लडके को अपना दत्तक पुत्र या मुतबन्ना बनाने की क्रिया या विधान। (एडाप्शन)
दत्तक-ग्राही—वि० [स० दत्तक-ग्राहिन्] जो किसी दूसरे के लडके को अपना दत्तक पुत्र बनावे।
दत्त-चित्त—वि० [ब० स०] जो किसी कार्य के सपादन मे मनोयोग-पूर्वक लगा हुआ हो। जो किसी काम मे पूरा मन लगा रहा हो।
दत्ततीर्थकृत—पु० [सं०] गत उत्सर्पिणी के आठवें अर्हत। (जैन)
दत्तस्यानपा कर्म—पु० [स० व्यस्त पद] दी हुई चीज फिर वापस ले लेना।
दत्ता—पु० =दत्तात्रेय।
दत्तात्मा (त्मन्)—पु० [स० दत्त-आत्मन्, ब० स०] वह अनाथ अथवा माता-पिता द्वारा त्यक्त बालक जो स्वय किसी के पास जाकर उसका दत्तक बने। स्वय अपने आपको किसी का दत्तक पुत्र बनानेवाला बालक या व्यक्ति।
दत्तात्रेय—पु० [स० दत्त-आत्रेय, कर्म० स०] अत्रि मुनि और अनुसूया के पुत्र अवधूत-वेषधारी महात्मा जिनकी गिनती २४ अवतारो मे होती है।
दत्ताप्रदानिक—पु० [स० दत्त-अप्रदान, ष० त०+ठन्—इक] दान किये हुए किसी पदार्थ को अन्यायपूर्वक फिर से प्राप्त करने का प्रयत्न जो व्यवहार मे अठारह प्रकार के विवाद-पदो मे से पाँचवाँ विवाद पद माना गया है।
दत्तावधान—वि० [सं० दत्त-अवधान, ब० स०] १. किसी ओर अवधान या ध्यान देनेवाला। २ सावधान।
दत्ति—स्त्री० [स० द०+क्तिन्] दान।
दत्ती—स्त्री० [?] विवाह-सबध या सगाई पक्की होना।
दत्तेय—पु० [स० दत्ता+ढक्-एय)] इंद्र।
दत्तोपनिषद्—पु० [स० दत्त-उपनिषद्, मध्य० स०] एक उपनिषद् का नाम।
दत्तोलि—पु० [स०] पुलस्त्य मुनि का एक नाम।
दत्र—पु० [सं०√दा+कत्रन् (बा०)] १ धन। २ सोना। ३ दान।
दत्रिम—पु० [स०√दा+क्त्रि (मप्)] दत्तक पुत्र।
ददन—पु० [स०√दद् (दान)+ल्युट्—अन] कुछ देने अथवा दान देने की क्रिया या भाव। देना।
ददमर—पुं० [स०] एक प्रकार का वृक्ष।
ददरा†—पु० [देश०] [स्त्री० ददरी] वह महीन कपडा जिससे बारीक पीसा हुआ चूर्ण छाना जाता है।
ददा†—पु० = दादा।
ददिऔर (1)†—पु० =ददिहाल।
ददिता (तृ)—वि० [सं०√दद्+तृच्] देनेवाला। दाता।
ददियाल—पु०=ददिहाल।
ददिया ससुर—पु० [हिं० दादा+ससुर] जो सबध मे ससुर का बाप हो।
ददिया सास—स्त्री० [हिं० दादी+सास] जो सबध मे सास की सास हो।
ददिहाल—पु० [हिं० दादा+स० आलय] १ वह घर, नगर या प्रदेश जिसमे दादा अथवा उसके पूर्वज या वशज रहते चले आये हो अथवा रह रहे हो। २ दादा का कुल या वश।
ददोड़ा—पु०, = ददोरा।
ददोरा—पु० [हिं० दाद] १ त्वचा मे होनेवाला एक प्रकार का विकार जिसमे उसका कोई अग सूजकर लाल हो जाता है। चकत्ता

उदा०—हँसी करति औषधि सखिनु देह ददोरनु भूलि।—बिहारी। २ मच्छर, बर्रें आदि के काटने पर बननेवाला उक्त प्रकार का चकत्ता। क्रि० प्र०—पडना।
ददौरा† पु० =ददोरा।
दद्रु—पु० [स०√दद्+रु (व०)] १. दाद नामक चर्म रोग। २. कछुआ।
दद्रुक—पु० [स० दद्रु+कन्] दद्रु। (दे०)
दद्रुघ्न—पु० [स० दद्रु√हन् (मारना)+टक्] चकवँड़। चकमर्दा।
दद्रुण—वि० [स० दद्रु+न] जिसको दाद निकली हुई हो। दाद रोग से पीडित।
दद्रू—पु० [स० दरिद्रा+उ (नि० सिद्धि)] दाद नामक रोग।
दद्रूण—वि० =दद्रुण।
दध*—पु० =दधि।
दधना*—अ० [स० दग्ध] जलना।
स० जलाना।
दधसार*—पु० =दधिसार।
दधि—पु० [स०√धा (धारण करना)+कि (द्वित्व)] १. दही। २ वस्त्र। कपडा।
†पु० [स० उदधि] १. समुद्र। २. छोटा दह या तालाव। उदा०—और रवि होहु कँवल दधि माहाँ—जायसी।
दधि-काँदो—पु० [स० दधि+हिं० काँदो=कीचड़] जन्माष्टमी के अवसर पर होनेवाला एक उत्सव जिसमे हल्दी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेका जाता है। (कृष्ण-जन्म के अवसर पर आमोद-सूचक)
दधि-कूर्चिका—स्त्री० [मध्य० स०] फटे या फाडे हुए दूध का सार भाग। छेना।
दधिचार—पु० [स० दधि√चर् (चलना)+णिच्+अण्] मथानी जिससे मथने के समय दही चलाया जाता है।
दधिज—वि० [स० दधि√जन् (पैदा होना)+ड] दही से उत्पन्न। पु० मक्खन।
दधि-जात—वि० पु० [प० त०] दधि या दही से उत्पन्न या बना हुआ।
*पु० [स० उदधि+जात] चद्रमा।
दधित्थ—पु० [स० दधि√स्था (ठहरना) + क, पृषो० सिद्धि] कैथ।
दधित्थाख्य—पु० [स० दधित्थ-आ√ख्या (कहना)+क] लोबान।
दधिधेनु—स्त्री० [मध्य० स०] पुराणानुसार दान के लिए कल्पित गौ जिसकी कल्पना दही के मटके मे की जाती है।
दधि-नामा (मन्)—पुं० [स० ब० स०] कैथ का पेड।
दधि-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्+टाप्, इत्व)] सफेद अपराजिता का वृक्ष।
दधि-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] सेम।
दधि-पूप—पु० [मध्य० स०] साठी के चावल के चूर्ण को दही मे मिलाकर और घी मे तलकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।
दधि-फल—पु० [ब० स०] कैथ।
दधि-बरी†—स्त्री० [स०+हिं०] दही मे डाली हुई बरी या पकौडी।
दधि-मंड—पु० [प० त०] दही का पानी।
दधि-मडोद—पु० [दधिमड-उदक, ब० स०, उद—आदेश] दही का समुद्र। (पुराण)
दधि-मुख—पु० [ब० स०] सुग्रीव का मामा जो मधुवन का रक्षक था।
दधियार—पु० [देश०] अर्कपुष्पी। अधाहुली।
दधिषाय्य—पु० [स० दधि√सो (नाश करना)+आय्य पत्व] घी।
दधि-सागर—पु० [प० त०] दही का समुद्र। (पुराण)
दधिसार—पु० [प० त०] मक्खन।
दधि-सुत—पु० [प० त०] मक्खन। नवनीत।
* पु० [स० उदधि-सुत] १. कमल। २ मोती। ३. जहर। विष। ४ चन्द्रमा। ५ जालधर नामक दैत्य।
दधि-सुता—स्त्री० [स० उदधि-सुता] १ लक्ष्मी। २. सीपी।
दधि-स्नेह—पु० [प० त०] दही की मलाई।
दधि-स्वेद—पु० [प० त०] छाछ। मठा।
दधीच—पु० [स० दध्यन्च्] =दधीचि।
दधीचि—पु० [स० दध्यन्च्] एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जो परोपकार और उदारता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्होंने इन्द्र के माँगने पर अपनी हड्डियाँ इसलिए उन्हें दे दी थी जिनसे वे अस्त्र बनाकर वृत्रासुर को मार सके।
दधीच्यस्थि—पु० [स० दधीचि-अस्थि, प० त०] १ वज्र। २ हीरा। हीरक।
दध्न—पु० [स०√दध् (दान)+न (बा०)] चौदह यमो मे से एक यम।
दध्यानी—पु० [स० दधि-आ√नी (लेजाना)+क्विप्] सुदर्शन वृक्ष।
दध्युत्तर—पु० [स० दधि-उत्तर, प० त०] दही की मलाई।
दन—पु० [स० दिन] दिन। (डिं०)
पु० [अनु०] बदूक, तोप आदि चलने से होनेवाला शब्द।
पद—दन से=चट-पट। तुरत। जैसे—दन से यह काम कर डालो।
दनकर—पु० [स० दिनकर] सूर्य। (डिं०)
दनगा—पु० [देश०] खेत का छोटा टुकडा।
दनदनाना—अ० [अनु०] १ दन दन शब्द होना। २ खुशी मनाना। आनद करना।
स० दन-दन शब्द उत्पन्न करना।
दनमणि—पु० [स० दिनमणि] सूर्य। (डिं०)
दनादन—अव्य० [अनु०] १. दन-दन शब्द करते हुए। २ निरतर। लगातार। ३ चटपट। तुरत।
दनियाँ†—वि०=दानी। उदा०—अग अग सुभग सकल सुख दनियाँ।—सूर।
दनु—स्त्री० [स०√दा (दान)+नु (नि० सिद्धि)] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप की पत्नी थी तथा जिसके गर्भ से चालीस पुत्र उत्पन्न हुए थे, जो सब के सब दनुज या दानव कहलाये।
दनुज—वि० [स० दनु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] दनु के गर्भ से उत्पन्न। पु० दानव। राक्षस।
दनुज दलनी—स्त्री० [प० त०] दुर्गा।
दनुजराय—पु० [स० दनुज+हिं० राय] दनुजो अर्थात् राक्षसो का राजा हिरण्यकश्यप।
दनुजारि—पु० [दनुज-अरि, प० त०] दानवो के शत्रु, देवता।

दनुजेंद्र—पु० [दनुज-इन्द्र, ष० त०] दानवों का राजा रावण।
दनुसम्भव—पुं० [ष० त०] दनु से उत्पन्न, दानव।
दनू—स्त्री० [स० दनु+ऊङ्०] =दनु।
दन्न—पु० [अनु०] =दन (शब्द)। (दे०)
दपट—स्त्री० = डपट।
दपटना—अ० =डपटना।
दपु*—पु० =दर्प।
दपेट—स्त्री० = डपट।
दपेटना—अ० = डपटना।
दप्प*—पुं० = दर्प।
दफ—स्त्री० [फा० दफ] बडी डफली।
दफतर—पु० = दफ्तर।
दफतरी—पु० = दफ्तरी।
दफतरी खाना—पु० =दफ्तरी खाना।
दफती—स्त्री० =दफ्ती।
दफदर†—पु० = दफ्तर।
दफन—पु० [अ० दफ़्न] १ किसी चीज को जमीन मे गाडने की क्रिया या भाव। २ मृत शरीर को बनाए हुए गढे मे रखकर उसे मिट्टी से तोपने की क्रिया।
वि० १ जमीन के नीचे गाडा हुआ। २ कब्र के अन्दर रखा या गाडा हुआ।
दफनाना—स० [अ० दफन+हि० आना (प्रत्य०)] १ मृत शरीर को कब्र मे रखकर उसे मिट्टी से ढकना। २ जान-बूझकर कोई बात इस प्रकार दबाना जिसमे वह दूसरो पर प्रकट न हो सके।
दफरा—पु० [देश०] काठ का वह टुकडा जो नाव के दोनो ओर इसलिए लगा दिया जाता है कि किसी दूसरी नाव की टक्कर से उसका कोई अग टूट न जाय। हौस। (लश०)
दफराना—स० [देश०] १. किसी नाव को किसी दूसरी नाव के साथ टक्कर लगने से बचाना। २ (पाल) खडा करना। (लश०) ३ रक्षा करना। बचाना।
दफा—स्त्री० [अ० दफ़ऽ] १ क्रम, सख्या आदि के विचार से किसी परम्परा मे का वह अवसर या काल जिसमे कोई ऐसा काम या बात हुई हो जिसकी फिर भी आवृत्ति हो या होने को हो। बार। बेर। जैसे-(क) वे दिन मे तीन दफा भोजन करते हैं। (ख) आज कलकत्ते मे पुलिस ने चार दफा भीड पर गोली चलाई। २. बिना किसी क्रम, परम्परा या शृखला के विचार से, वह अवसर या काल जिसमे कोई विशिष्ट तथा स्वतत्र घटना घटित हुई हो या होने को हो। बार। बेर। जैसे—(क) एक दफा की बात है कि हम लोग मसूरी गये थे। (ख) एक दफा तो मैं भी उन्हें यहाँ बुलाकर समझाना चाहता हूँ। ३ विधिक क्षेत्र मे, किसी कानून, विधान, विधि आदि का वह कोई ऐसा पूरा तथा स्वतत्र अग या खड जिसमे किसी एक विषय की सब आवश्यक बातें कही या लिखी हो। धारा। जैसे—इस कानून की ७वी दफा गवाहो की पात्रता या योग्यता (अथवा लगान चुकाने के प्रकार) से सबद्ध है। ४ साधारण लोक-व्यवहार मे दड-विधि का उक्त प्रकार का वह अग या खड जिसमे किसी विशिष्ट अपराध और उसके लिए नियत दड का उल्लेख या विवेचन होता है। धारा। जैसे—(क) आज-कल शहर मे १४४ वी दफा लगी हुई है। (ख) पुलिस ने उन पर दफा १०९ का मुकदमा चलाया है।
मुहा०—(किसी पर कोई) दफा लगाना=अभियुक्त के सबध मे यह कहना कि इसने अमुक दफा से सम्बद्ध अपराध किया है। जैसे—उस पर चोरी की नही, बल्कि डकैती की दफा लगाई गई है।
वि० [अ० दफअ] तिरस्कारपूर्वक दूर किया या हटाया हुआ। जैसे—इस पाजी को तो किसी तरह यहाँ से दफा करना चाहिए।
पद—दफा दफान करना=(क) किसी व्यक्ति को तिरस्कृत करके दूर करना या हटाना। (ख) किसी बात या विषय का उपेक्षापूर्वक अत या समाप्ति करना। रफा दफा। (देखे स्वतत्र पद)।
दफादार—पु० [अ० दफअ+फा० दार] [भाव० दफादारी] पुलिस या सेना का एक छोटा अधिकारी।
दफादारी—स्त्री० [हि० दफादार+ई (प्रत्य०)] दफादार का काम या पद।
दफाली—पु० = डफाली।
स्त्री० = डफली।
दफीना—पु० [अ० दफीन] जमीन मे गड़ा हुआ धन का खजाना या निधि।
दफ्तर—पु० [फा० दफ्तर] १ वे सब कागज-पत्र जिनमे आय-व्यय के विवरण अथवा काम-काज के विवरण आदि लिखे हो। २ बहुत लबी-चौडी चिट्ठी या पत्र जिसमे कोई विस्तृत विवरण हो। ३ वह स्थान जहाँ बैठकर कुछ लोग लिखने-पढने या हिसाब-किताब रखने का काम करते हो। कार्यालय। (आफिस)
दफ्तरी—पु० [फा०दफ्तरी] १ किसी दफ्तर या कार्यालय का वह कर्मचारी जो कागज आदि ठीक तरह से रखने, सभालने आदि का काम करता हो। २ वह कारीगर जो पुस्तको आदि की जिल्द बाँधता या प्रतियाँ बनाकर तैयार करता हो।
दफ्तरी खाना—पु० [फा० दफ्तरी+खान]वह स्थान जहाँ दफ्तरी लोग बैठकर पुस्तको की जिल्दे बाँधते या प्रतियाँ तैयार करते हो।
दफ्ती—स्त्री० [अ० दफ्तीन] एक तरह का बहुत मोटा, कडा और प्राय रूखा कागज जो जिल्द बाँधने आदि के काम आता है।
दबग—वि० [हि० दबाव या दबाना] १ जो बिना भयभीत हुए विशेषत अधिमूलक अथवा विरोध-सूचक कोई काम करता हो। बिना किसी से दबे हुए और दृढतापूर्वक सब काम करनेवाला। २ प्रभावशाली।
दबक—स्त्री० [हि० दबकना] १ दबकने या छिपने की क्रिया या भाव। २ सिकुडन। शिकन। ३ लबा तार या पत्तर बनाने के लिए धातुओ को पीटने की क्रिया।
दबकगर—पु० [फा० तबकगर] तबक अर्थात् धातु को पीटकर उसके पत्तर बनानेवाला कारीगर।
दबकना—अ० [हि० दबना] १ भय के कारण किसी के सामने से हट और छिप जाना। दुबकना। २ लुकना। छिपना।
क्रि० प्र०—जाना।—रहना।
स० धातु का पत्तर पीटकर चौडा करना।

दवकनी—स्त्री० [हिं० दवना] भाथी का मुँह जिसके द्वारा हवा उसके अदर आती है।

दवका—पु० [हिं० दवकाना=तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला या रुपहला चिपटा तार।

पद—दवके का सलमा=एक प्रकार का सलमा जो वहुत चमकीला होता है।

† पुं० = दवदवा।

दवकाना—स० [हिं० दवकना] १. छिपाना। लुकाना। २. आड मे करना।

दवकिया†—पु० = दवकगर।

दवकी—स्त्री० [देश०] सुराही की तरह का मिट्टी का एक वरतन जिसमे पानी रखकर खेतिहर आदि खेत पर ले जाते है।

†स्त्री० [हिं० दवकना] १. दवकने की क्रिया या भाव। २. धातु पीटकर तार, पत्तर आदि वनाने की क्रिया या मजदूरी।

दवकैया†—पु० = दवकगर।

वि० १ दवकने या छिपनेवाला। २. दवकाने या छिपानेवाला।

दवगर—पु० [देश०] १ ढाल वनानेवाला। २. चमडे के कुप्पे वनानेवाला।

दवड़ू-घुसड़ू—वि० [हिं० दवाना+घुसाना] हर वात मे दवकर कही घुस या छिप जानेवाला। वहुत वडा कायर या डरपोक।

दव-दवा—पु० [अ० दव्दव] किसी व्यक्ति के सवध की वह महत्त्वपूर्ण स्थिति जिसमे उसके अधिकार, प्रभाव तथा भय से सव लोग सहमते हो और उसके विरुद्ध कुछ कर या कह न सकते हो। रोव।

दवन—स्त्री० [हिं० दवना] दवने की क्रिया, अवस्था या भाव।

दवना—अ० [स० दमन] [भाव० दवाव, दाव] १ किसी प्रकार के भार के नीचे आ या पडकर ऐसी स्थिति मे होना कि या तो इधर-उधर न हो सके या कुछ क्षति-ग्रस्त हो। जैसे—(क) सदूक के नीचे किताव या कपडा दवना। (ख) पत्थर के नीचे उँगली या हाथ दवना। २ ऐसी अवस्था मे पडना या होना जिसमे किसी ओर से वहुत जोर या दवाव पडे। दाव मे आना। जैसे—भीड मे वहुत से लोग दव गये। ३ ऐसी सकटपूर्ण स्थिति मे आना या होना कि इच्छानुसार कोई या यथेष्ट गति-विधि न हो सके। जैसे—आज-कल मँहगी से सव लोग वे-तरह दवे हुए हैं। ४. किसी चीज का ऐसी स्थिति मे पड या पहुँच जाना कि जल्दी वहाँ से निकल न सके। जैसे—उनके यहाँ हमारे वहुत-से कपड़े या कितावें दव गई। ५ किसी के उत्कृष्ट गुण, प्रभाव, शक्ति आदि की वरावरी या सामना करने मे असमर्थ होने के कारण उसकी तुलना मे ठहर न सकना अथवा अपनी इच्छा के अनुसार अपने अधिकार का प्रयोग या ऐसा ही और कोई कार्य न कर सकना। जैसे—(क) जव से ये नये अध्यापक आये है, तव से कई पुराने अध्यापक दव गये है। (ख) वडो के सामने छोटो को दवना ही पडता है। ६. किसी अच्छी चीज के सामने उस वर्ग की दूसरी साधारण चीज का अपनी शोभा या सौन्दर्य दिखाने अथवा देखनेवालो पर प्रभाव डालने मे असमर्थ होना। अच्छा या ठीक न जँचना। जैसे—इस नये मकान के आगे मुहल्ले के पुराने मकान दव गये है। ७ किसी चीज या वात का विशेष कारणवश अधिक फैल या वढ़ न सकना और धीमा या मंद पडना। जैसे—रोग का प्रकोप दवना। ८. किसी मनोविकार या मनोवेग का मद, मद्धिम या शान्त होना। कम होना। घटना। जैसे—क्रोध या वैर-विरोध दवना। ९. अधिक समय वीत जाने के कारण किसी वात का पहलेवाला प्रवल रूप न रह जाना या लोगो के ध्यान से उतर जाना। जैसे—दवी हुई वात फिर से नही उठानी चाहिए। १०. किसी वात का अपनी प्रकृत या साधारण अवस्था या मान से कुछ कम, रुका हुआ या हलका होना। जैसे—आमदनी कम होने (या नौकरी छूट जाने) के कारण किसी का हाथ दवना।

मुहा०—दवी आवाज (या जवान) से कोई वात कहना=ऐसे अस्पष्ट या मद रूप मे कहना जिसमे यथेष्ट दृढता, शक्ति, साहस आदि का अभाव दिखाई देता हो। **दवे-दवाये पड़े रहना**=भय, लज्जा, सकोच आदि के कारण क्रिया-शीलता से रहित होकर या शात भाव से अपने स्थान पर पडे या वने रहना। **दवे पाँव या पैर (चलना)**=इस प्रकार धीरे-धीरे पैर रखते हुए चलना कि दूसरो को आहट न मिले या किसी प्रकार का शब्द न होने पावे।

दवमो—पु० [देश०] एक प्रकार का वकरा जो हिमालय मे होता है।

दववाना—स० [हिं० दवना का प्रे०] किसी को कुछ दवाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—टाँगे दववाना।

दवस—पु० [?] जहाज पर की रसद तथा दूसरा सामान। जहाजी गोदाम मे का माल।

दवाई—स्त्री० [हिं० दवाना] १ दवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. अनाज निकालने के लिए वालो या डठलो को वैलो के पैरो से रौंदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

दवाऊ—वि० [हिं० दवाना] १ दवानेवाला। २. (गाडी आदि) जिस का अगला हिस्सा पिछले हिस्से की अपेक्षा अधिक वोझिल हो।

दवाना—स० [हिं० दवना का स०] [भाव० दवाव, दाव] १. ऐसा काम करना जिसमे कुछ या कोई दवे। २ किसी के ऊपर कोई भार रखकर उसे ऐसी स्थिति मे लाना कि वह कुछ क्षतिग्रस्त हो जाय अथवा हिल-डुल न सके। जैसे—सव कपड़े या कागज दवाकर रख दो जिससे हवा से उड या विखर न जायँ। ३ किसी चीज पर कोई भार डाल या रखकर ऐसी स्थिति मे लाना कि उसका ऊपरी तल अथवा सव अग वहुत नीचे जायँ। जैसे—गड्ढे मे या जमीन के नीचे रखकर ऊपर से मिट्टी आदि इस प्रकार डालना कि ऊपर या वाहर से दिखाई न दे। गाडना। ४ इस प्रकार अपने अधिकार मे करके या छिपाकर रखना कि और लोग देख न सकें। जैसे—इस नौकरी मे उन्होने वहुत से रुपए दवाकर अपने पास रख लिये थे। ५ अनुचित रूप से या वलपूर्वक अपने अधिकार मे कर के रख लेना। जैसे—वाजारवालो के वहुत से रुपए उन्होने दवा लिये थे।

सयो० क्रि०—वैठाना।—रखना।—लेना।

६. किसी पर किसी ओर से ऐसा जोर या दाव पहुँचाना कि उसे अपने स्थान से वहुत-कुछ पीछे हटना पडे। जैसे—सिपाही भीड को दवाते हुए सडक के उस पार तक ले गये। ७ शरीर के किसी अग पर उसकी थकावट, पीडा आदि कम करने के लिए अथवा उसमे रक्त का सचार करने के लिए रह-रहकर हाथो से उस पर कुछ हलका भार डालना। जैसे—किसी के पैर या सिर

दवाना। ८. ऐसी स्थिति में डालना या पहुँचाना कि मनुष्य वहुत कुछ दीन-हीन वनकर या विवश होकर रहे अथवा समय विताये। जैसे—आपस के झगडो (या नित्य की वीमारियों) ने उन्हें आज-कल वहुत कुछ दवा रखा है। ९. अपने प्रभाव, शक्ति आदि से किसी को ऐसी स्थिति मे लाना कि वह अपनी इच्छा के अनुसार कोई काम न कर सके अथवा अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करने के लिए विवश हो। जैसे—उन्ही के दवाने से हमे सौ रुपए छोडने पडे (या उनकी तरफ से गवाही देनी पडी)। १०. अपने गुण, महत्त्व, विशेषता आदि से किसी को कुछ घटकर या हलका सिद्ध करना। जैसे—हाट के इस नगीने ने और सव नगीनो को दवा दिया है। ११ कोई विशेष उपाय या प्रयत्न करके किसी चीज या वात को उभरने, फैलने या वढने से रोकना। दमन करना। जैसे—(क) अराजकता या विद्रोह दवाना (ख) अपमान या कलंक दवाना। १२ कुछ रुक या सोच-समझकर अथवा सकीर्णता या संकोचपूर्वक कोई काम करना। जैसे—हाथ दवाकर खरच करना।

दवावा—पु० [देश०] मध्य युग मे, वह सदूक जिसमें कुछ आदमी वैठाकर गुप्त रूप से शत्रु-पक्ष मे उपद्रव आदि कराने के लिए पहुँचाये या ले जाये जाते थे।

दवाव—पु० [हिं० दवाना] १ दवाने की क्रिया या भाव। दाव। २. किसी वड़े या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का ऐसा प्रभाव जिससे दवकर लोग कोई काम करते हो।

क्रि० प्र०—डालना। पडना।—मानना।—मे आना।—

दविला—पुं० [देश०] हलवाई का एक उपकरण जिससे भूनते समय खोआ, वेसन आदि चलाते हैं।

दवीज—वि० [फा० दवीज़] जिसका दल मोटा हो। सगीन। जैसे—दवीज कपडा या कागज।

दवीर—पु० [फा०] १. लिखनेवाला। मुंशी। २. एक प्रकार के महाराष्ट्र ब्राह्मणो की उपाधि।

दवूसा†—पु० [देश०] १. जहाज का पिछला भाग। पिच्छल। २ नाव का वह अश जिसमे पतवार लगी होती है। ३. जहाज का कमरा। (लश०)

दवैला—वि० [हिं० दवना+एला (प्रत्य०)] १. दवा हुआ। जिस पर दवाव पड़ा हो। २ (काम) जो जल्दी-जल्दी पूरा किया जाने को हो। (लश०) ३. दे० 'दवैल'।

दवैल—वि० [हिं० दवना+ऐल (प्रत्य०)] १ जिस पर किसी का प्रभाव या दवाव हो। २ किसी से वहुत दवने या डरनेवाला। ३ किसी के आतक, उपकार आदि से दवा हुआ। ४ कमजोर। दुर्वल।

दवोचना—स० [हिं० दवाना] १. किसी को सहसा झपटकर पकडते हुए दवा लेना। घर दवाना। २. छिपाना।

सयो० क्रि०—लेना।

दवोरना†—स० = दवाना।

दवोस—पु० [देश०] चकमक पत्थर।

दवोसना†—स० [देश०] अधिक मात्रा मे कोई चीज पीना। जैसे—शराव दवोसना।

दवौनी—स्त्री० [हिं० दवाना+औनी (प्रत्य०)] १ कमेरों का लोहे का एक औजार जिससे वे वरतनो पर फूल-पत्ते आदि उभारते हैं। २. करघे मे की वह लकडी जो भँजनी के ऊपर लगी रहती है।

दव्व—पु० = द्रव्य।

दव्वू—वि० [हिं० दवाना] [भाव० दव्वूपन] जो स्वभावत. दूसरों से डरता और दवकर रहता हो।

दभ्र—वि० [स० √दम्भ् (कपट करना)+रक्] अल्प। थोड़ा।

दमँगल—पुं० [फा० दगल?] युद्ध। उदा०—दमँगल विण अपचौ दियण वीर वणी रो वान।—कविराजा सूर्यमल।

दमंस†—स्त्री० [हिं० दाम+अग] खरीदी या मोल ली हुई चीज, विशेपत जायदाद या सपत्ति।

दम—पु० [स०√दम् (दमन करना)+घञ्] १. दमन करने की क्रिया या भाव। २. वह काम जो किसी का दमन करने के लिए किया जाय। ३ शरीर की इद्रियो को वश मे रखने और उन्हें अनुचित कामो या वातो मे लगाने से रोकने की क्रिया। ४. दड। सजा। ५ घर। मकान। ६ एक प्राचीन महर्षि जिनका उल्लेख महाभारत मे है। ७ पुराणानुसार मरुत् राजा के पौत्र जो वभ्रु की कन्या इद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और जो वेद-वेदागो के वहुत अच्छे ज्ञाता तथा धनुर्विद्या मे वहुत प्रवीण थे। ८ वुद्ध का एक नाम। ९ विष्णु। १० दवाव। ११. कीचड।

पु० [फा०] साँस। श्वास।

क्रि० प्र०—आना।—चलना।—रुकना।—लेना।

मुहा०—**दम अटकना**=साँस रुकना। **दम उखड़ना**=वहुत देर-देर पर साँस आना या सहसा चलना जो मृत्यु के वहुत पास होने का लक्षण माना जाता है। **दम उलझना या उलटना**=इतनी अधिक घवराहट या विकलता होना कि ठीक तरह से साँस न लिया जा सके। **दम खींचना**=(क) साँस अदर की ओर खीचना, चढ़ाना या लेना। (ख) विलकुल चुप या शात रह जाना। **दम खाना**=कुछ भी उत्तर न देना। विलकुल चुप रह जाना। (क्व०) **दम घुटना**=साँस का इस प्रकार रुकना या रुककर आना कि जीवित रहना कठिन और कष्टप्रद जान पडे। **दम घोटकर मारना**=(क) गला घोंट या दवाकर मारना। (ख) वहुत अधिक शारीरिक कष्ट देकर मारना। **दम चढ़ना**=दम फूलना। **दम चुराना**=जान-वूझकर इस प्रकार साँस रोकना कि दूसरे को आहट न मिले। **दम-टूटना**=(क) वहुत अधिक थक जाने के कारण और अधिक काम करने के योग्य न रह जाना। (ख) साँस का आना-जाना या चलना वद हो जाना। मृत या मृतप्राय हो जाना। **दम तोड़ना**=मरने के समय वहुत ठहर-ठहर या रुक-रुककर साँस लेना। **(किसी के सामने) दम न मारना**=किसी की उपस्थिति मे वहुत ही चुपचाप और विनीत तथा शात भाव से रहना। **दम पचाना**=निरतर कोई परिश्रम या काम करते रहने से ऐसा अभ्यास हो जाना कि अधिक या जल्दी साँस न फूलने लगे। **दम फूलना**=(क) अधिक परिश्रम करने या तेज चलने, दौडने आदि के कारण साँस जल्दी जल्दी-चलना। हाँफना। (ख) दमे या श्वास का रोग होना। **दम फूंकना**=मुँह से किसी चीज के अदर हवा भरना। **दम भरना**=परिश्रम करते-करते इतना थक जाना कि और अधिक काम न हो सकें। **(किसी वात या व्यक्ति का) दम भरना**=अभिमानपूर्वक यह विश्वास प्रकट करना कि हम अमुक काम या वात

कर सकेंगे, अथवा अमुक व्यक्ति से हमें कभी धोखा न होगा या सहारा मिलता रहेगा। जैसे—अपनी बहादुरी या किसी की दोस्ती (अथवा प्रेम) का दम भरना। **दम मारना**=बहुत अधिक परिश्रम के उपरांत कुछ विश्राम करना। सुस्ताना । **दम साधना**=(क) साँस रोकने का अभ्यास करना। (ख) बिलकुल चुप या मौन रह जाना। कुछ भी उत्तर न देना। (ग) निश्चेष्ट होकर चुपचाप पड़ जाना या पड़े रहना । (किसी की) **नाक में दम करना**=बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना। बहुत तंग या परेशान करना।

२ साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने की क्रिया। ३ जादू-टोना करने के लिए मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूँक मारने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—करना।—पढ़ना।—फूँकना।

३ गाँजे, चरस, तमाकू, आदि का धूआँ (नशे के लिए) साँस के साथ अंदर खींचने की क्रिया।

मुहा०—दम लगाना=चिलम पर गाँजा रखकर उसका धूआँ साँस के साथ अंदर खींचना ।

४ संगीत में किसी स्वर का ऐसा लंबा उच्चारण जो एक ही साँस में पूरा किया जाय। जैसे—(क) गवैये के गले का दम। (ख) बाँसुरी या शहनाई का दम।

मुहा०—दम भरना=गाने के समय साँस रोककर एक ही स्वर का देर तक लंबा उच्चारण करते रहना।

५ कुछ विशिष्ट प्रकार के खाद्य पदार्थ पकाने की वह क्रिया जिसमें उन्हें किसी बरतन में रखकर और उसका मुँह ढककर या बंद करके आग पर चढ़ा देते हैं या उनके ऊपर कुछ जलते हुए कोयले रख देते हैं।

पद—दम आलू।

मुहा०—दम खाना=खाद्य पदार्थ का उक्त प्रकार की क्रिया से पकना। जैसे—चावल अभी कुछ कच्चा है, जरा दम खा जाता तो ठीक हो जाता। **दम देना**=किसी चीज को बरतन में रखकर इसलिए उसका मुँह बंद करके आग पर चढ़ा देना कि वह अंदर की भाप से ही पक जाय। (किसी चीज का) **दम पर आना**=पूरी तरह से पकने में इतनी ही कसर रह जाना कि थोड़ा दम देने से ही अच्छी तरह पक जाय।

६ कलंदरों की वह क्रिया जिसमें वे भालू के मुँह पर लकड़ी या हाथ रखकर साँस खींचना सिखाते हैं। (कहते हैं कि इससे भालू की पाचन-क्रिया ठीक होती और वह शांत रहता है।) ७ उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। क्षण। पल।

पद—दम के दम=बहुत थोड़ी देर। क्षण (या पल) भर। जैसे—दम के दम ठहर जाओ मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। **दम पर दम**=बहुत थोड़ी-थोड़ी देर पर । जैसे—वहाँ दम पर दम शराब का दौर चलता था। **दम-ब-दम**=दम पर दम। **हर दम**=प्रति क्षण। हर समय । सदा। हमेशा। जैसे—मैं तो आपकी सेवा के लिए हर दम तैयार रहता हूँ।

९ जान। प्राण। जैसे—अब इसका दम निकलने में अधिक देर नहीं है।

मुहा०—दम खुश्क होना=दे० नीचे 'दम सूखना'। **दम चुराना**=काम या परिश्रम करने से अपने आप को बचाना। जी चुराना। **दम निकलना**=जीवन का अंत होना। प्राण निकलना। मरना। (किसी पर) **दम निकलना**=किसी पर इतना अधिक प्रेम होना कि उसके वियोग में प्राण निकलने का-सा कष्ट हो। (कोई काम करने में) **दम निकलना**=किसी काम के प्रति परम अरुचि या विरक्ति होना। जैसे—लिखने-पढ़ने (या पैसा खर्च करने) में तो इनका दम निकलता है। **दम पर आ बनना**=ऐसी नौबत या स्थिति आना कि मानों अब जीवित नहीं बचेंगे। बहुत ही परेशान या हैरान होना। **दम फड़क उठना या जाना**=किसी चीज का गुण, रूप आदि देखकर चित्त का बहुत प्रसन्न होना। **दम फना होना**=दे० नीचे 'दम सूखना'। **दम में दम आना**=घबराहट, भय आदि दूर होने पर चित्त कुछ शांत और स्थिर होना। **दम में दम रहना या होना**=जीवित रहना। जिंदगी बनी रहना। **दम सूखना**=बहुत अधिक भय के कारण ऐसी अवस्था होना कि खुलकर साँस भी न लिया जा सके।

१०. किसी बड़े आदमी के संबंध में, उसके महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व का सूचक पद। जैसे—अतिथियों का यह सारा आदर-सत्कार बस आपके दम से ही है (अर्थात् आप ही ऐसा कर सकते हैं, आपके बाद और कोई ऐसा आदर-सत्कार करनेवाला दिखाई नहीं देता)।

मुहा०—किसी का दम गनीमत होना=किसी प्रकार के अभाव की दशा में किसी का अस्तित्व और व्यक्तित्व ही दूसरों के लिए बहुत-कुछ आशा-प्रद, उत्साहवर्द्धक या संतोष की बात होना। जैसे—पुराने रईसों में अब आपका ही दम गनीमत है (अर्थात् और सब तो चले गये, आप ही बच रहे हैं)।

११. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ ठीक तरह से बना रहता और अपना पूरा काम देता है। जीवनी-शक्ति । जैसे—अब इन कुरते (या उनके शरीर) में कुछ भी दम नहीं रह गया। १२ तत्त्व। सार। जैसे—तुम्हारी इन बातों में कुछ भी दम नहीं है। १३ तलवार या छुरी आदि की बाढ़। धार।

पद—दम-खम। (देखें)

१४. किसी को छलने या धोखा देने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिससे उसके भी मन में आशा, धैर्य, साहस आदि का संचार हो।

पद—दम-झाँसा, दम-दिलासा, दम-पट्टी। (देखें)

क्रि० प्र०—देना।—में आना।—में लाना ।

मुहा०—दम खाना=किसी के धोखे में आना।

पु० [देश०] दरी बुननेवालों की एक प्रकार की तिकोनी कमाची जिसमें तीन लंबी लकड़ियाँ एक साथ बँधी रहती हैं।

दमक—स्त्री० [हिं० 'चमक' का अनु०] चमक-दमक। जैसे—चमक दमक।

दमकना—अ० [हिं० दमक (चमक का अनु०)] १ चमकना। २ प्रज्वलित होना। सुलगना। (क्व०)

दमकल—स्त्री० [हिं० दम+कल] १. वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ किसी ओर जोर या झोंके से फेंका जा सके। (पंप) २ उन यंत्रों का वर्ग या समूह जिनके द्वारा कारखानों, घरों आदि में लगी हुई आग बुझाई जाती है। ३ उक्त सिद्धांत पर बना हुआ वह यंत्र जिससे कूओं आदि का पानी निकाला जाता है। ४ दे० 'दमकला'।

दमकला—पु० [हिं० दम+कल] १ वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी से महफिलों आदि में लोगों पर गुलाब-जल छिड़का जाता है।

२. जहाज मे, वह यत्र जिससे पाल खड़े करते है। ३. दे० 'दम-चूल्हा'। ४. दे० 'दमकल'।

दम-खम—पु० [फा० दम=जीवनी-शक्ति+खम=वक्रता या बाँकपन] १ कोई विशिष्ट कार्य करने की शक्ति जो अब भी किसी मे यथेष्ट रूप मे हो। २ दृढता। मजबूती। ३. तलवार के सबध मे, उसकी धार तथा लचीलापन।

विशेष—तलवार की धार और लचीलेपन से ही यह पता चलता है कि वह कितना और कैसा वार या काट कर सकती है।

४ मूर्ति की सुदरता और सुडौल गठन। ५ चित्र मे, विशेष आकर्षण लाने के लिए खीची जानेवाली कोई गोलाई लिये लंबी रेखा।

दमघोख—पु०=दमघोष।

दमघोष—पु०=शिशुपाल के पिता।

दमचा†— पु० [?] मचान।

दम-चूल्हा—पु० [देश०] लोहे का बना हुआ एक प्रकार का बडा गोल चूल्हा जिसमे कोयला जलाया जाता है।

दमजोड़ा—पु० [?] तलवार। (डिं०)

दम-झांसा—पु० [फा० दम+हिं० झांसा] =दम-पट्टी।

दमड़ा—पु० [हिं० दाम+ड़ा (प्रत्य०)] १. दमडी। दाम। २. रुपया-पैसा। धन।

दमड़ी—स्त्री० [सं० द्रविण और धन] १. एक प्रकार का पुराना सिक्का जिसका मूल्य एक आने के बत्तीसवें अंश के बराबर होता था। पैसे का आठवाँ भाग।

मुहा०—दमड़ी के तीन होना=बहुत ही तुच्छ या हीन होना।

पद—दमड़ी का पूत=बहुत ही अयोग्य तथा हीन व्यक्ति। उदा०—लपट धूत पूत दमरी को विषय जाप को जापी।—सूर।

२. चिल-चिल नाम का पक्षी।

दमथ—वि० [सं० √दम् (दमन)+अथच्] (मनोवेगो आदि का) दमन करने या दबानेवाला।

दमथु—वि० [सं०√दम्+अथु]=दमथ।

दम-दमडी—स्त्री० [फा० दम+हिं० दमडी] शक्ति और धन-सपत्ति। जैसे—हमारे पास दम-दमडी तो है ही नही, हम वहाँ जाकर क्या करेंगे!

दमदमा—पु० [फा० दमदम] १ किले के चारो ओर की चहारदीवारी। २ वह कृत्रिम चहारदीवारी जो युद्ध के समय बोरो मे बालू, मिट्टी आदि भरकर तथा उन्हे एक दूसरे पर रखकर खडी की जाती है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

दमदार—वि० [फा०] १ जिसमे अधिक दम अर्थात् जीवनी-शक्ति हो। २ दृढ। पक्का। मजबूत। ३. जो अच्छी तरह और पूरा काम करने या देने के योग्य हो।

दम-दिलासा—पु० [फा० दम+हिं० दिलासा] समय पर किसी के सहायक होने के लिए उसे दिया जानेवाला आश्वासन और उसमे किया जानेवाला उत्साह या बल का सचार।

दमन—पु० [स०√दम् (दड देना)+ल्युट्—अन] १. इद्रियो, मनोवेगो आदि को किसी ओर प्रवृत्त होने अथवा कोई काम करने से रोकना। निग्रह। जैसे—इच्छा या वासना का दमन। २. उठते, उभरते या बढते हुए किसी प्रकार के विरोध-मूलक कार्य तथा उसके कर्ताओ को बल तथा कठोरतापूर्वक दबाना, कुचलना या नष्ट करना। ३ किसी को नियत्रण मे रखने के लिए दिया जानेवाला दंड। ४ विष्णु। ५. शिव। ६ एक ऋषि जिनके आश्रम में दमयती का जन्म हुआ था। ७ एक राक्षस का नाम। ८. दमनक। दौना। ९ कुद (पौधा और फूल)। १०. द्रोणपुष्पी।

स्त्री० दमयती का वह विकृत नाम जिसमे वह उर्दू-फारसी साहित्य मे प्रसिद्ध है।

दमनक—वि० [स० दमन+कन्] दमन करने या दबानेवाला।

पु० १ दौना नाम का पौधा। २ एक प्रकार छद जिसके प्रत्येक चरण मे तीन नगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

दमनपापड—पु० दे० 'पित्त पापडा'।

दमन-शील—वि० [स० ब० स०] [भाव० दमनशीलता] जो दमन करता हो। जिसका स्वभाव दमन करने का हो।

दमना*—अ० [फा० दम] काम करते-करते थक जाना और फलत दम या साँस फूलने लगना।

स० [सं० दमन] दमन करना।

†पु० दे० 'दौना'।

दमनी—स्त्री० [स० दमन+ङीप्] अग्निदमनी नाम का क्षुप।

वि० [स० दमन] दमन करनेवाला।

†स्त्री० लज्जा। सकोच।

दमनीय—वि० [सं० √दम् (दमन)+अनीयर्] १. जिसका दमन किया जा सके। २ दमन किये जाने के योग्य।

दम-पट्टी—स्त्री० [फा० दम=धोखा+हिं० पट्टी=तख्ती] किसी को धोखे मे रखकर अपना काम निकालने के लिए उससे कही जानेवाली आशापूर्ण मीठी-मीठी बातें।

क्रि० प्र०—देना।—पढाना।

दम-पुख्त—वि० [फा०] १ दम देकर पकाया हुआ (खाद्य पदार्थ)। पु० हाँडी अथवा देग का मुँह बद करके पकाया जानेवाला मास या पुलाव।

दम-बाज—वि० [फा० दम+बाज] [भाव० दमबाजी] १. चकमा या दम-बुत्ता देनेवाला। २ गाँजे आदि का दम लगानेवाला।

दमबाजी—स्त्री० [हिं० दमबाज] दमबाज होने की अवस्था या भाव।

दम-बुत्ता—पु० [हिं० दम] किसी को फुसलाने या कुछ समय के लिए शात रखने के लिए दिया जानेवाला झूठा आश्वासन।

दम-मार—पु० [हिं०] वह जो गाँजे या चरस का दम लगाता हो। गाँजा या चरस (का धूआँ) पीनेवाला। उदा०—दम-मार यार जिसके, दम लगाया और खिसके। (कहा०)

दमयतिका—स्त्री० [स० दमयन्ती+कन्—टाप्, ह्रस्व] मदनवान (लता)।

दमयंती—स्त्री० [स०√दम् (दमन करना)+णिच्+शतृ+ङीप्, नुम्] १. पुराणानुसार विदर्भ देश की एक राजकुमारी जो राजा भीमसेन की पुत्री थी और जिसका विवाह राजा नल से हुआ था। २ एक तरह की लता। मदनवान।

दमयिता (तृ)—वि० [स०√दम्+णिच्+तृच्] दमन करनेवाला।

दमरक (ख) †—स्त्री० दे० 'चमरख'।

दमरी†—स्त्री०=दमड़ी।

दमशील—वि०=दमन-शील।

दमसना—स० [स० दमन] १ दमन करना। २. आघात करना।

दमसाज—पु० [फा०] १ किसी के साथ रहकर उससे सहानुभूति रखने और उसकी सहायता करनेवाला व्यक्ति। २. संगीत मे, वह व्यक्ति जो किसी गवैये के साँस लेने पर उसके बोल के स्वरो को दोहराता या पूरा करता हो।

दमा—पु० [फा०] फेफड़ो मे कुछ विशिष्ट प्रकार का विकार होने पर उत्पन्न होनेवाला एक प्रसिद्ध रोग जिसमे साँस बहुत अधिक तेजी से फूलने लगता है और जिसके फलस्वरूप रोगी को बहुत अधिक और बराबर खाँसते रहना पड़ता है।

दमाग†—पु०=दिमाग।

दमाज—पु० [फा० दमामा ?] धौंसा। नगाड़ा।

दमाणक†—स्त्री०=दमानक।

दमाद—पु० [स० जामातृ] सबध के विचार से वह व्यक्ति जिसको कन्या ब्याही गई हो। जामाता। दामाद।

दमादम—अव्य० [अनु०] १. दमदम शब्द करते हुए। २ निरतर। बराबर। लगातार।

दमान—पु० [देश०] पाल का कपड़ा। (लश०)

दमानक—स्त्री० [देश०] युद्ध के समय तीरो, गोले-गोलियो आदि की कुछ समय तक बराबर होनेवाली बौछार या मार। उदा०—ज्यों कमनैत दमानक मे फिर तीर सो मारि लै जात निसानो।—रहीम।

दमाम—पु० =दमामा।

दमामा—पु० [फा० दमाम'] बहुत बड़ा नगाड़ा। धौंसा।

दमार—स्त्री०=दमारि (दावानल)।

दमारि*—पु० [स० दावानल] जगल की आग। दावानल।

दमायति—स्त्री०=दमयती।

दमाह—पु० [हिं० दमा] १ बैलो के हाँफने का एक रोग। २. वह बैल जिसे उक्त रोग हो।

दमित—भू० कृ० [स० दम्+णिच्+क्त] १. (मनोवेग या वासना) जिसका दमन किया गया हो। २ (उपद्रव, विद्रोह या उसका कर्त्ता) जो बलपूर्वक प्रयोग करके दबाया गया हो।

दमी (मिन्)—वि० [स० दम+इनि] दमनशील।

वि० [फा० दम] दम लगाने या साधनेवाला।

पु० १ गँजेड़ी। २. हुक्के का एक प्रकार का छोटा सफरी नैचा जो जेब मे भी रखा जा सकता है।

पु० [हिं० दमा] वह जिसे दमे या श्वास का रोग हो।

दमुना†—पु० [स० दावानल] अग्नि। आग।

दमैया†—वि० [हिं० दमन+ऐया (प्रत्य०)] दमन करनेवाला।

दमोड़ा—पु० [हिं० दाम+ओड़ा (प्रत्य०)] दाम। मूल्य। (दलाल)

दमोदर—पुं०=दामोदर।

दमोय†—पु० [दमोह, मध्य प्रदेश का एक स्थान] एक प्रकार का बैल जो बोझ ढोने के लिए अच्छा समझा जाता है।

दम्य—वि० [स०√दम् (दमन करना)+यत्] १ जिसका दमन किया जा सके या हो सके। दमन किये जाने के योग्य। २. (पशु) जो बधिया किया जा सकता हो या किये जाने के योग्य हो।

दयत—पुं०=दैत्य।

दयनीय—वि० [स०√दय्+अनीयर्] १ जिसे देखकर मन मे दया उत्पन्न होती हो। २. जैसे—दयनीय स्थिति। घोर विपत्ति या सकट मे पड़ा हुआ।

दया—स्त्री० [स०√दय्+अङ्—टाप्] १. मन मे स्वत उठनेवाली वह मनुष्योचित सात्त्विक भावना या वृत्ति जो दुखियो और पीड़ितो के कष्ट, दुख आदि दूर करने मे प्रवृत्त करती है। २ अपने व्यक्ति या अपने से दुर्बल व्यक्ति के साथ किया जानेवाला उक्त प्रकार का कोमल व्यवहार। मेहरबानी। (मरसी) ३. दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी थी।

दया-कूर्च—पु० [स० त०] बुद्धदेव।

दया-दृष्टि—स्त्री० [मध्य० स०] किसी के प्रति होनेवाली अनुग्रहपूर्ण दृष्टि या भावना।

दयानत—स्त्री० [अ०] १ देने की भावना। २ ईमानदारी। सत्य-निष्ठा।

दयानतदार—वि० [अ० दयानत+फा० दार] [भाव० दयानतदारी] ईमानदार। सच्चा।

दयानतदारी—स्त्री० [अ० दयानत+फा० दारी] ईमानदारी। सचाई।

दयाना*—अ० [हिं० दया+ना (प्रत्य०)] दयापूर्ण व्यवहार करने मे प्रवृत्त होना। दयालु होना।

दया-निधान—पु० [ष० त०] दया-निधि।

दया-निधि—पु० [ष० त०] १. बहुत बड़ा दयालु। २. ईश्वर का एक विशेषण जो सज्ञा, संबोधन आदि के रूप मे भी प्रयुक्त होता है। जैसे—दयानिधि, तोरी गति लखि न परै।

दया-पात्र—वि० [ष० त०] जो दया प्राप्त करने का अधिकारी या पात्र हो। जिस पर दया करना उचित हो।

दयामय—वि० [स० दया+मयट्] १. दया से पूर्ण। परम दयालु। २ ईश्वर का एक विशेषण।

दयार—पु० [फा०] प्रदेश। अत। भू-खड।

*वि०=दयालु।

†पु०=देवदार (वृक्ष)।

दयार्द्र—वि० [दया-आर्द्र, तृ० त०] [भाव० दयार्द्रता] जिसका मन दया से आर्द्र हो गया हो।

दयाल—पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया जो बहुत मधुर स्वर मे बोलती है।

† वि०=दयालु।

दयालु—वि० [स०√दय् (पालन करना)+आलुच्] [भाव० दयालुता] जो सब पर दया करता हो। दयावान्।

दयालुता—स्त्री० [स० दयालु+तल्—टाप्] दयालु होने की अवस्था, गुण या भाव।

दयावत—वि० [स० दयावत्] [स्त्री० दयावती] दयावान्।

दयावती—वि० स्त्री० [स० दयावत्+ङीप्] दया करनेवाली।

दयावना—अ०=दयाना।

वि०=दयापात्र।

दयावान्(वत्)—वि० [स० दया+मतुप्] जिसके चित्त मे दया हो। दयालु।

दयावीर—पु० [तृ० त०] वह जो दया करने मे वीर हो। वह जो दूसरो पर दया करने मे सबसे बढ-चढकर हो।

दया-शील—वि० [ब० स०] जो स्वभावत दूसरो पर दया करता हो।

दया-सागर—पु० [ष० त०] जिसके चित्त मे अगाध दया हो। अत्यत दयालु मनुष्य।

दयित—वि० [स०√दय् (दान, रक्षण)+क्त] [स्त्री० दयिता] प्रिय। प्यारा।

पुं० विवाहिता स्त्री का पति। स्वामी।

दयिता—स्त्री० [स० दयित+टाप्] १ प्रियतमा। २ पत्नी।

दयित्नु—वि० [स०√दय् +इत्नु] दया-शील।

दरंग—पु० [?] टीला। (राज०)

दर—पु० [स०√दृ (भय, विदारण)+अप्] १ डर। भय। २ शख। ३ कदरा। खोह। गुफा। ४ गड्ढा। ५ दरार। ६. चीरने या फाडने की क्रिया। विदारण। ७ जगह। स्थान। ८ ठौर-ठिकाना।

वि० चीरने या फाडनेवाला। (यौ० के अत मे।) जैसे—पुरदर।

वि० किंचित्। थोडा।

स्त्री० [हिं०] १ किसी चीज का वह दाम जिस पर वह हर जगह मिलती हो अथवा खरीदी या बेची जाती हो। जैसे—गेहूँ (या सोने) की दर बराबर चढ रही है। निर्ख। भाव। २ महत्त्व आदि के विचार से होनेवाला आदर या कदर। प्रतिष्ठा। जैसे—इस जगह अपनी दर घटाओ।

*पु०=दल।

*पु० [फा०] १. दरवाजा। द्वार।

मुहा०—दर दर मारा मारा (या मारे मारे) फिरना=बहुत दुर्दशा मे पडकर इधर-उधर घूमते और ठोकरे खाते रहना।

२ कमरे, खाने, दालान आदि के रूप मे किया हुआ विभाग। जैसे—अलमारी के दर। ३. वह स्थान जहाँ जुलाहे ताना फैलाने के लिए डडियाँ गाडते है।

स्त्री० [स० दारु=लकडी] ईख। ऊख।

दर-कंटिका—स्त्री० [ब० स०, कप् टाप्, इत्व] सतावर नाम की ओषधि।

दरक—वि० [स०√दृ+वुन्—अक] डरपोक। भीरु।

स्त्री० [हिं० दरकना] दरकने के कारण होनेवाला अवकाश या चिह्न। दरार।

दरकच—स्त्री० [हिं० दरकचना] १ दरकचने की क्रिया या भाव। २ दरकचने के कारण किसी चीज पर पडनेवाला चिह्न या उसके कारण होनेवाला क्षत।

दरकचना—स० [अनु०] १ हलके आघात से थोडा दबाना या पीसना। कूटकर मोटे-मोटे टुकडे करना।

अ० उक्त क्रिया से दबना या क्षत होना।

दरकटी—स्त्री० [हिं० दर (भाव)+काटना] १ किसी चीज की दर या भाव मे की जाने या होनेवाली कमी। २ दर या भाव के सबध मे किया जानेवाला निश्चय।

दरकना—अ० [स० दर=फाडना] आघात लगने या दबने के कारण किसी चीज का कुछ कट या फट जाना।

स० हलके आघात या दाब से कोई चीज काटना, कुचलना या तोडना।

दरका—पु० [हिं० दरकना] १ दरकने की क्रिया या भाव। २. दरकने के कारण पडा हुआ चिह्न या लकीर। दरार। ३ ऐसा आघात जिससे कोई चीज दरक या फट जाय।

दरकाना—स० [हिं० दरकना] दरकने मे प्रवृत करना। थोडा काटना, कुचलना या पीटना।

दरकार—वि० [फा०] किसी काम मे लाने के लिए जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो। जैसे—इस समय हमे सौ रुपए दरकार है।

स्त्री० अपेक्षा। आवश्यकता। जैसे—जितनी दरकार हो ले जाओ।

दरकारी—वि० [फा० दरकार] जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो। आवश्यक। जरूरी। जैसे—सब दरकारी चीजे अपने साथ रख लो।

दर किनार—वि० [फा०] किसी प्रकार के क्षेत्र से अलग या बाहर किया हुआ।

पद—दर किनार=अलग या दूर रहे। चर्चा ही छोड दी जाय। जैसे—इनाम देना तो दर किनार, वे तनख्वाह तक नही देते।

दरकूच—क्रि० वि० [फा०] बराबर कूच या यात्रा करते हुए। यात्रा मे बराबर आगे बढते हुए।

दरखत—पु० = दरख्त (वृक्ष)।

दरखास्त—स्त्री० [फा० दरख्वास्त] १ किसी काम या बात के लिए किसी से किया जानेवाला निवेदन या प्रार्थना। २ प्रार्थना-पत्र।

मुहा०—(किसी पर) दरखास्त पड़ना=किसी के विरुद्ध अधिकारी के सामने कोई अभियोग-पत्र उपस्थित किया जाना। नालिश या फरियाद होना।

दरखास्ती—वि० [फा० दरख्वास्त] दरखास्त या प्रार्थना-पत्र-सबधी। जैसे—दरखास्ती कागज=ऐसा चिकना, बढिया और मोटा कागज जिस पर दरखास्त लिखी जाती है।

दरख्त—पु० [फा० दरख्त] पेड। वृक्ष।

दरगाह—स्त्री० [फा०] १. चौखट। दहलीज। २ कचहरी। ३. राज-सभा। दरबार। ४. किसी पीर या बहुत बडे फकीर का मकबरा। मजार।

दर-गुजर—वि० [फा० दर-गुजर] जो गुजर या बीत चुका हो। व्यतीत।

पु० १ किसी मे अवगुण या दोष देखकर भी उसे अनदेखा करना अर्थात् उस पर ध्यान न देना।

मुहा०—(कोई बात) दर-गुजर करना=बीती हुई घटना या बात को उपेक्षापूर्वक भूल जाना। ध्यान न देना। जाने देना।

२ क्षमा। माफी।

दर-गुजरना—अ० [फा० दर-गुज़र] उपेक्षापूर्वक छोडकर अलग होना। रहित रहने मे ही अपना कल्याण समझना। बाज आना। जैसे—माफ कीजिए हम ऐसी दावत (या मेहमानदारी) मे दर-गुजरे।

दरज—स्त्री० [फा० दर्ज] १ वह पतला लबा अवकाश जो दो चीजो को एक दूसरी से सटाने पर बीच मे बच रहे या दिखाई दे। दरार। २. दीवार आदि ठोस रचनाओ के बीच मे फटने के कारण उसमे टेढी-मेढी रेखा के समान बननेवाला चिह्न जिसमे पानी समाता है।

वि०=दर्ज (लिखा हुआ)।

दरज-बंदी—स्त्री० [हिं० दरज+फा० बदी] दीवार आदि की दरजे बद करने के लिए उसमे मसाला लगाना।

दरजन—पु० [अं० डजन] १ गिनती में बारह वस्तुओ का समूह। २. उक्त को एक इकाई मानकर चीजो की की जानेवाली गिनती। जैसे—चार दरजन सतरे (अर्थात् १२×४=४८ सतरे)।

†स्त्री० = दरजिन।

दरजा—पु० [अ० दर्ज] १. प्रतिष्ठा, महत्त्व या सम्मान का पद या स्थान। २. ऐसा स्थान जहाँ रहकर अधिकारपूर्वक किसी कर्तव्य का पालन या किसी प्रकार का प्रबध आदि करना पडे। ओहदा। पद। जैसे—अब तो उनका दरजा बढ गया है। ३ ऐसा वर्गीकरण या विभाजन जो गुण, योग्यता आदि की कमी-बेशी के विचार से किया गया हो अथवा जिसमे ऊँचे-नीचे, छोटे-बडे आदि का भाव निहित या सम्मिलित हो। श्रेणी। जैसे—यह पुस्तक उससे हजार दरजे अच्छी (या बढकर) है। ४ पाठशालाओ, विद्यालयो आदि मे उक्त दृष्टि से स्थिर किये हुए ऐसे विभाग जिनमे से प्रत्येक मे समान योग्यता रखनेवाले या समान परीक्षा मे उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियो को एक साथ और एक ही तरह की शिक्षा दी जाती हो। श्रेणी। जैसे—इस विद्यालय मे १० वे दरजे तक पढाई होती है।

मुहा०—दरजा चढ़ाना=विद्यार्थी को परीक्षा मे उत्तीर्ण होने अथवा योग्य समझे जाने के कारण आगे या बादवाले बडे दरजे मे पहुँचाना।

५ किसी रचना के अन्तर्गत सुभीते आदि के विचार से बनाये हुए खाने या किये हुए विभाग। जैसे—पाँच दरजोवाली अलमारी, तीन दरजोवाला सदूक। ६ धातु की बनी हुई चीजो की ढलाई मे, कोई चीज ढालने का वह साँचा (फरमे से भिन्न) जो मौलिक या स्वतत्र रूप से न बनाया गया हो, बल्कि फरमे से ढाली हुई चीज के अनुकरण और आधार पर तैयार किया गया हो। जैसे—ये मूर्तियाँ तो दरजे की ढली हुई है, हमे तो फरमे की ढली हुई मूर्तियाँ चाहिए।

विशेष—जो चीजे मौलिक या स्वतत्र रूप से नये बनाये हुए साँचे मे (जिसे पारिभाषिक क्षेत्रो मे 'फरमा' कहते हैं) ढली होती है, वे रचना-कौशल, सफाई, सुदरता आदि के विचार से अच्छी होती है। परतु इस प्रकार ढली हुई चीज से अथवा उसके अनुकरण पर जो दूसरा साँचा बनाया जाता है, वह 'दरजा' कहलाता है। दरजे की ढली हुई चीजे अपेक्षया घटिया या निम्न वर्ग की समझी जाती है।

दरजावार—अ०य० [अ०+फा०] क्रमश एक दरजे या श्रेणी से दूसरे दरजे या श्रेणी मे होते हुए।

वि० जो दरजो या श्रेणियो के रूप मे विभक्त हो। श्रेणीबद्ध।

दरजिन—स्त्री० [हिं० दरजी का स्त्री०] १ कपडे सीने का काम करनेवाली स्त्री। २. दरजी की पत्नी। ३. दरजी जाति की स्त्री।

दरजी—पु० [फा० दर्जी] [स्त्री० दरजिन] १ वह व्यक्ति जो दूसरो के कपड़े सीकर जीविका उपार्जित करता हो। सूचिक।

पद—दरजी की सूई=ऐसा आदमी जो कई प्रकार के काम कर सके या कई बातो मे योग दे सके।

२. कपडा सीने का काम करनेवाले लोगो की एक जाति। ३ एक प्रकार की चिडिया जो अपना घोसला पत्ते सीकर बनाती है।

दरण—पु० [स०√दृ (विदारण)+ल्यट्+अन] १. दलन करने अर्थात् चक्की मे डालकर कोई चीज पीसने की क्रिया या भाव। २ ध्वस। विनाश।

दरणि—स्त्री० [स०√दृ+अनि] =दरणी।

दरणी—स्त्री० [स० दरणि+ङीप्] १. भँवर। २. लहर। ३. प्रवाह।

दरथ—पु० [स०√दृ+अर्थ] १ गुफा। २. पलायन। ३ चारे की तलाश मे किसी दूसरे स्थान पर जाना।

दरद—वि० [स० दर√दा (देना)+क] भयदायक। भयकर।

पु० १. काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। २ उक्त देश मे रहनेवाली एक पुरानी म्लेच्छ जाति। ३ [दर (किचित) दै (शुद्धि)+क] ईगुर। शिंगरफ।

पु० [फा० दर्द] १ शारीरिक कष्ट। पीडा। २. प्रसव के समय स्त्रियो को होनेवाली पीडा। ३ किसी प्रकार की अप्रिय या दु खद हार्दिक अनुभूति। जैसे—मेरो दरद न जाने कोय।—मीराँ। ४ कोई ऐसी विशेषता जो हृदय को अभिभूत कर ले। हृदय मे होनेवाली एक प्रकार की मीठी टीस। जैसे—उसके स्वर या गले मे दरद है।

दरदमंद—वि० [फा० दर्दमद] [भाव० दरदमदी] १. जिसे दर्द हो। पीडित। २ जो दूसरो का दर्द या पीडा समझकर उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता हो। सहानुभूति करनेवाला।

दर-दर—अव्य० [फा० दर=दरवाजा] १. दरवाजे-दरवाजे। २ प्रत्येक स्थान पर। जगह-जगह।

मुहा०—दर-दर की ठोकरें खाना=सब जगहो से तिरस्कृत होते हुए इधर-उधर घूमना। मारे-मारे फिरना।

†वि० दरदरा।

दरदरा—वि० [स० दरण=दलना] [स्त्री० दरदरी] [भाव० दरदरापन] (दला हुआ पदार्थ) जिसके कण महीन चूर्ण के कणो की अपेक्षा कुछ मोटे तथा कठोर होते है। जैसे—दरदरा आटा।

दरदराना—स० [स० दरण] १ इस प्रकार कोई चीज पीसना जिससे उसके कण दरदरे बनते हो। †२ दाँत कटकटाना।

दरदरी—स्त्री० [स० धरित्री] पृथ्वी। भूमि। (डिं०)

वि० हिं० 'दरदरा' का स्त्री०।

दरदवंत—वि० [हिं० दरद+वत (प्रत्य०)] १ दूसरो का दरद समझने और उसे दूर करने की मनोवृत्ति या सहानुभूति रखनेवाला। २ जिसे कष्ट या व्यथा हो। पीडित।

दरदवंद—वि० =दरदवत।

दर-दालान—पुं० [फा०] एक दालान के अदर का दूसरा दालान। दोहरा दालान।

दर-दामन—पु० [फा०] ओढनी, चादर आदि का दामन अर्थात् आँचल का भाग।

दरदावन†—पु०=दर-दामन। उदा०—बादले की सारी दरदावन जगमगी जरतारी झीने झालरि के साज पर।—देव।

दरदीला—वि० [हिं० दरद+ईला (प्रत्य०)] १. जिसमे या जिसे दरद हो। २ दूसरो का दर्द अर्थात् कष्ट या पीडा समझनेवाला। उदा०—नारायन दिल दरदीले।—नारायण स्वामी।

दरद्द—पु० = दर्द।
दरध—पु० = दर्द।
दरन*—पु० = दरण।
दरना†—स० [स० दरण] १ दलना। पीसना। २. ध्वस्त या नष्ट करना। ३ शरीर पर रगडकर लगाना। मलना। उदा०—कहँ रत्नाकर धरँगी मृगछाला अस धूरि हूँ दरैंगी जऊ अग छिलि जाइगै।—रत्ना०।
दरप*†—पु० = दर्प।
दरपक—पु० [स० दर्पक] कामदेव्। उदा०—ऐसे जैसे लीने सग दरपक रति है।—सेनापति।
पुं० =दर्प।
दरपन—पु० [स्त्री० अल्पा० दरपनी] =दर्पण।
दरपना*—अ० [स० दर्पण] १ दर्प से युक्त होना। क्रोध करना। २ अहकार या अभिमान करना।
दरपनी—स्त्री० [हि० दरपन] चौखटे मे मढा हुआ छोटा शीशा।
दर-परदा—वि० [फा० दर-पर्द]जो परदे या आवरण के अदर या पीछे हो।
अव्य० १. परदे की आड या ओट मे। २ दूसरो की दृष्टि वचाकर। छिपकर।
दर-पेश—अव्य० [फा०] किसी के समक्ष। मामने। जैसे—कोई मामला दर-पेश होना।
दर-बंद—पु० [फा०] १ चहार-दीवारी। २ पुल। ३ दरवाजा।
दरबंदी—स्त्री० [फा० दर+वदी] १ चीजो की दर या भाव निश्चित करने की क्रिया। २ जमीन की लगान की दर निश्चित करने की क्रिया। ३ अलग-अलग दर (खाने या विभागो के) निश्चित करने या वनाने की क्रिया।
†स्त्री० = दरवद।
दरव†—पु० [स० द्रव्य] १. द्रव्य। धन। २ धातु। ३ चीज। वस्तु। ४. एक प्रकार की मोटी चादर।
दरवर†—वि० [?] १ दरदरा। २ (जमीन या रास्ता) जिसमे ककर, ठीकरे आदि अधिक हो। (कहार)
दरवराना—स० [हि० दरवर] १. थोडा पीसना। दरदरा करना। २ दवाना। ३. किसी को इस प्रकार भयभीत करना कि वह खडन या विरोध न कर सके। ४ किसी प्रकार का दवाव डालना।
दरवहरा—पु० [देश०] एक तरह की शराव।
दरवा—पु० [फा० दर] १ काठ आदि की खानेदार अलमारी या सदूक जिसमे कवूतर, मुरगियाँ आदि रखी जाती है। २. दीवारो, पेडो आदि मे का वह कोटर जिसमे पक्षी रहते हैं।
दरवान—पु० [फा० मि० स० द्वारवान्] वह व्यक्ति जो दरवाजे पर चौकसी करता हो। द्वारपाल।
दरवानी—स्त्री० [फा०] दरवान (द्वारपाल) का काम या पद।
दरवार—पु० [फा०] [वि० दरवारी] [भाव० दरवारदारी] १. वह स्थान जहाँ राजा या सरदार अपने मुसाहवो के साथ वैठते और लोगो के निवेदन या प्रार्थना सुनते है। राज-सभा।
क्रि० प्र०—करना। —लगना।—लगाना।
मुहा०—(किसी के लिए) दरवार खुलना=दरवार मे आते-जाते रहने का अधिकार या सुभीता मिलना। (किसी के लिए) दरवार वद होना=प्राय: राजा के अप्रसन्न होने के कारण दरवार मे आने-जाने का निपेध होना।
२. दरवार करनेवाला प्रधान व्यक्ति अर्थात् राजा। (राज०) ३. किसी ऋपि या मुनि का आश्रम। ४ दरवाजा। द्वार। (क्व०) ५ दे० 'दरवार साहव'।
दरवारदार—पु० = दरवारी।
दरवारदारी—स्त्री० [फा०] १ प्राय दरवार मे उपस्थित होकर राजा के पास वैठने और वात-चीत करने की अवस्था। २. किमी वडे आदमी के यहाँ वरावर आते-जाते रहने की वह अवस्था जिसमे वडे आदमी का चित्त प्रसन्न करके उसका अनुग्रह प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। खुशामद करने के लिए दी जानेवाली हाजिरी।
दरवार-विलासी*—पु० [फा० दरवार+स० विलासी] द्वारपाल। दरवान।
दरवार साहव—पु० [फा०+अ०] अमृतमर मे सिक्खो का वह प्रधान गुरुद्वारा जिसमे 'गुरुग्रन्थ माहव' का पाठ होता है और जो सिक्खो का प्रधान तीर्थ है।
दरवारी—पु० [फा०] १ वह जो किसी के दरवार मे सम्मिलित होता हो। २ वडे आदमियो के पास वैठकर उनकी खुशामद करनेवाला व्यक्ति। दरवार-दार।
वि० १ दरवार-सम्वन्धी। दरवार का। २ दरवार के लिए उपयुक्त या शोभन।
दरवारी-कान्हड़ा—पु० [फा० दरवारी+हि० कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है।
दरवी†—स्त्री० [स० दर्वी] कलछी। उदा०—दरवी लै कै मूढ जरावत हाथ को।—हित हरिवश।
दरभ—पु० [?] वदर।
†पु० १. = दर्भ। २. =द्रव्य।
दरम—पु० =दिरम।
दरमन—पु० [फा० दर्मा] १ उपचार। इलाज। २ औषध। दवा।
दर माँदा—वि० [फा० दरमाँद] [भाव० दरमाँदगी] १ जो वहुत अधिक थककर किसी के दरवाजे पर पडा हो। २ दीन-हीन। वेचारा। ३ विवश। लाचार। उदा०—दरमाँदे ठाढे दरवार।—कवीर।
दरमा—स्त्री० [देश०] वाँस की वह चटाई जो वगाल मे झोपडियो की दीवार वनाने के काम आती है।
†पु० [स० दाडिम] अनार (वृक्ष और फल)।
दरमाहा—पु० [फा० दरमाह] हर महीने मिलनेवाला वेतन।
दरमियान—पु० [फा०] मध्य। वीच।
अव्य० वीच या मध्य मे।
दर-मियाना—वि० [फा० दरमियान.] १ वीचवाला। २ जो आकार मे न वहुत वडा हो न वहुत छोटा। मँझला। मझोला।
दरमियानी—वि० [फा०] वीच या मध्य का।
पु० १ वह जो दो दलो या पक्षो के वीच मे पड़कर उनका झगडा निपटाता या मामला तै कराता हो। मध्यस्थ। २. दलाल।
दरया—पु० = दरिया (नदी)।

दरयाई—वि०, स्त्री० =दरियाई।
दरयाफ्त—भू० कृ०=दरियाफ्त।
दररना—स० १. = दरना (दलना)। २ = दरेरना।
दरराना*—अ० [अनु०] १ वेगपूर्वक आना। २. इस प्रकार आगे बढना कि आस-पास के लोगो को दबना पडे या उन्हे धक्का लगे।
दरवाजा—पु० [फा० दरवाजा] १ कुछ विशिष्ट प्रकार से बना हुआ वह मुख्य अवकाश जिसमे से होकर कमरे, कोठरी, मकान, मैदान आदि मे प्रवेश करते हैं। द्वार।
मुहा०—(किसी के) दरवाजे की मिट्टी खोद डालना = इतनी-अधिक बार किसी के यहाँ आना-जाना कि वह खिन्न हो जाय या उसे बुरा लगने लगे।
२. वह चौखट जो उक्त अवकाश मे लगा रहता है और जिसमे प्राय किवाड या पल्ले जडे रहते है। ३ किवाड। पल्ला।
क्रि० प्र०—खडखडाना।—खोलना।—बद करना।—भेडना।
४. लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसा उपाय या साधन जिसकी सहायता से अथवा जिसे पार करके कही प्रवेश किया जाता हो।
दरवी—स्त्री० [स० दर्वी] १ कलछी। २ सडसी। ३. साँप का फन।
दरवीकर†—पु० = दर्वीकर।
दरवेश—पु० [फा०] [वि० दरवेशी] १ भिखारी। २ मुसलमान साधुओ का एक सप्रदाय।
दरश—पु० = दर्श या दर्शन।
दरशन—पु० = दर्शन।
दरशनी—वि० [स० दर्शन] दर्शन या देखने से सबध रखनेवाला। जैसे—दरशनी हुडी।
स्त्री० दर्पण।
दरशनी हुंडी—स्त्री० [हि०] १ महाजनी लेन-देन मे ऐसी हुडी जिसे देखते ही महाजन को उसका धन चुकाना या भुगतान करना पडे। २ ऐसी हुडी जिसका भुगतान तुरंत करना पडे। ३ कोई ऐसी चीज जिसे दिखाते ही कोई उद्देश्य सिद्ध हो जाय या उसके बदले मे कोई दूसरी चीज मिल जाय।
दरशाना—अ० = दरसाना।
दरस—पु० [स० दर्श] १. देखा-देखी। दर्शन। २ भेट। मुलाकात। ३ खूबसूरती। सुदरता। ४. छवि। शोभा।
दरसन†—पुं० दर्शन।
दरसना*—अ० [स० दर्शन] दिखाई पडना। देखने मे आना।
स० = देखना।
दरसनिया†—पु० [स० दर्शन] १. मदिरो मे लोगो को दर्शन करानेवाला पडा। २. शीतला आदि की शाति के लिए पूजा-पाठ करनेवाला व्यक्ति।
दरसनी*—स्त्री० [स० दर्शन] दर्पण।
वि० = दरशनी।
दरसनीय†—वि० = दर्शनीय।
दरसाना—स० [स० दर्शन] १ दर्शन कराना। दिखलाना। २. प्रकट या स्पष्ट रूप मे सामने रखना। ३. स्पष्ट रूप मे बिना कुछ कहे केवल आचरण, व्यवहार आदि के द्वारा जतलाना। झलकाना। जैसे—उन्होंने अपनी बात-चीत से दरसा दिया कि वे सहमत नही हैं।
†अ० दिखाई देना।
दरसावना—स० = दरसाना।
दर-हकीकत—अव्य० [फा०+अ०] हकीकत मे। वास्तव मे। वस्तुत.।
दरहम—वि० [फा०] अस्त-व्यस्त।
पद—दरहम-बरहम=अस्त-व्यस्त।
दराँती—स्त्री० [स० दात्री] घास, फसल आदि काटने का हँसिया नाम का औजार।
मुहा०—(खेत में) दराँती पड़ना या लगना= फसल की कटाई का आरभ होना।
दराई—स्त्री० = दलाई।
दराज—वि० [फा० दराज़] [भाव० दराजी] १. बहुत बडा या लबा। दीर्घ। जैसे—दराज कद, दराज दुम। २ दूर तक फैला हुआ। विस्तृत।
क्रि० वि० अधिक। बहुत।
स्त्री० [अ० ड्राअर] मेज मे लगा हुआ सदूकनुमा वह लबा खाना जिसमे वस्तुएँ आदि रखी जाती है और जो प्राय. खीचकर आगे या बाहर निकाला जा सकता है।
†स्त्री० = दरार।
दरार—स्त्री० [स० दर] किसी तल के कुछ फटने पर उसमे दिखाई देनेवाला रेखाकार अवकाश। दरज।
दरारना—अ० [हि० दरार+ना (प्रत्य०)] विदीर्ण होना। फटना।
स० विदीर्ण करना। फाड़ना।
दरारा—पु० १ =दरेरा। २ =दरार।
दरिंदा—पु० [फा० दरिन्द] वह हिंसक जतु या पशु जो दूसरे जीवो को चीर-फाडकर खा जाता हो। जैसे—चीता, भालू, शेर आदि।
दरि—स्त्री० [स० √दृ (विदारण)+इन्] =दरी।
दरित—भू० कृ० [स० दर्+इतच्] १ डरा हुआ। २ फटा हुआ।
दरिद—वि०, पु० =दरिद्र।
पु० = दरिद्रता।
दरिद्दर†—वि०, पु० =दरिद्र।
पु० = दरिद्रता।
दरिद्र—वि० [स०√दरिद्रा (दुर्गति)+अच्] [स्त्री० दरिद्रा] [भाव० दरिद्रता] १ जिसके पास निर्वाह के लिए कुछ भी धन न हो। निर्धन। कगाल। २ बहुत ही घटिया या निम्न कोटि का। ३ सार-हीन। पु० कगाल या निर्धन व्यक्ति।
दरिद्रता—स्त्री० [स० दरिद्र+तल्+टाप्] दरिद्र होने की अवस्था या भाव। कगाली। निर्धनता।
दरिद्रायक—वि० [स०√दरिद्रा +ण्वुल्—अक] = दरिद्र।
दरिद्रित—वि० [स० √दरिद्रा+क्त] १ दरिद्र। २ दुखी।
दरिद्री†—वि० =दरिद्र।
दरिया—पु० [फा० दर्या] १ नदी। २ समुद्र। सागर।
†पुं० = दलिया।
वि० [हि० दरना] १ दलनेवाला। २ नाश करनेवाला।
†पु० = दलिया।

दरियाई—वि० [फा० दर्याई] १ दरिया अर्थात् नदी-संबंधी। दरिया या नदी का। २ नदी मे या उसके आस-पास रहने या होनेवाला। जैसे—दरियाई घोडा। ३ समुद्र-संबंधी। समुद्र का।
स्त्री० पतंग उडाने मे वह क्रिया जिसमे एक आदमी उसे पकड़कर पहले कुछ दूर ले जाता है और तब वहाँ से ऊपर आकाश मे छोडता है। छुडैया।
स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपडा। (पश्चिम) उदा०—केसरी चीर दरयाई को लेंगो।—मीराँ।

दरियाई घोडा—पु० [फा० दरियाई+हि० घोडा] अफ्रीका के जगलो मे मिलनेवाला घोडे के आकार का एक तरह का जंगली जानवर जो नदियो के किनारे झाडियो मे रहता है।

दरियाई नारियल—पु० [फा० दरियाई+हिं० नारियल] १ समुद्र के किनारे होनेवाला एक प्रकार का नारियल (वृक्ष) जिसके फल साधारण नारियल से बहुत बडे होते है। २ उक्त वृक्ष का फल।

दरियादास—पु० [?] विक्रमी १७वी-१८वी शती मे वर्तमान एक हिंदू (परंतु जन्म से मुसलमान) संत जिन्होंने दरिया नामक सम्प्रदाय चलाया था।

दरियादासी—पुं० [हिं० दरियादास+ई० (प्रत्य०)] दरियादास का चलाया हुआ पथ जिसमे निर्गुण की उपासना का विधान है।

दरियादिल—वि० [फा०] [भाव० दरियादिली] जिसका हृदय नदी की तरह विशाल और उदार हो। परम उदार।

दरियादिली—स्त्री० [फा०] उदारता।

दरियाफ्त—भू० कृ० [फा० दर्याफ़्त] जिसके सबध मे पूछ-ताछ करके जानकारी प्राप्त कर ली गई हो। पता लगाकर जाना हुआ।

दरिया-बुर्द—पु० [फा०] ऐसा खेत या जमीन जो किसी नदी के बहाव या बाढ के कारण कट या डूबकर खराब या निरर्थक हो गयी हो।

दरियाव†—पु० १ =दरिया (नदी)। २ =दरिया (समुद्र)।

दरी—वि० [स० दरि+ङीप्] १. फाड़नेवाला। विदीर्ण करनेवाला। २. डरनेवाला। डरपोक।
स्त्री० [स०दरि+ङीप्] १ खोह। गुफा। २ पहाड के नीचे का वह खड्ड जिसमे कोई नदी गिरती या बहती हो।
स्त्री० [स० दर=चटाई] मोटे सूतो का बुना हुआ मोटे दल का एक प्रकार का बिछौना। शतरंजी।
स्त्री० [फा०] ईरान देश की एक प्राचीन भाषा।

दरीखाना—पु० [फा० दर+खाना] १. ऐसा कमरा या मकान जिसके चारो ओर बहुत से दरवाजे हो। २ बारह-दरी।

दरीचा—पुं० [फा० दरीच] [स्त्री० दरीची] १ छोटा दरवाजा। २ खिडकी। ३ रोशनदान।

दरीबा—पु० [हिं० दर या दरबा ?] १. वह स्थान जहाँ एक ही तरह की बहुत-सी चीजें इकट्ठी बिकती हो। जैसे—पान का दरीबा। २. बाजार।

दरी-भृत्—पु० [स० दरी√भृ (धारण करना)+क्विप्] पर्वत। पहाड।

दरी-मुख—पु० [प० त०] १ गुफा का मुख। २ राम की सेना का एक बदर।

दरती—स्त्री० [स० दर-यंत्र] छोटी चक्की।
† स्त्री० = दराँती।

दरेक—पु० [स० द्रेक] बकायन (वृक्ष)।

दरेग—पु० [अ० दरेग] कसर। त्रुटि।

दरेज—स्त्री० [?] एक प्रकार की छपी मलमल या छीट।

दरेर—स्त्री० [हिं० दरेरना] १. दरेरने की क्रिया या भाव। २. दरेरे जाने के कारण होनेवाला क्षत या क्षति। ३. नाश। बरबादी।

दरेरना—स० [सं० दरण] १. किसी पदार्थ के तल के साथ इस प्रकार अपना तल रगडते हुए उसे दबाना कि उसमे कुछ क्षत हो जाय अथवा उसकी कुछ क्षति हो। २ रगड़। ३ नाश करना।

दरेरा—पु० [सं० दरण] १ दरेरने के लिए दिया जानेवाला धक्का। २. दबाव। चाप। ३ बहाव का तोड़।

दरेस—स्त्री० [अ० ड्रेस] एक प्रकार की फूलदार छीट।
वि० [भाव० दरेसी] जो बना-बनाया तैयार हो और तुरत काम मे लाया जा सके।

दरेसी—स्त्री० [अ० ड्रेसिंग] १. कोई चीज हर तरह से उपयुक्त और काम मे आने योग्य बनाने की क्रिया या भाव। तैयारी। २ इमारत के काम मे, ईंटो के फरश मे, मसाले से दरज भरना।

दरैया†—पु० [स० दरण] १. दलनेवाला। जो दले। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला।

दरोग—वि० [अ० दुरोग] असत्य। झूठा।
पु० असत्य कथन।

दरोग-हलफी—स्त्री० [अ०दुरोग हल्फी] १ सच बोलने की कसम खाकर या शपथ लेकर भी झूठ बोलना जो विधिक क्षेत्रो मे दडनीय अपराध माना गया है।

दरोगा—पु० = दारोगा।

दरोदर—पु० [स० दुरोदर (पृषो० सिद्धि)] १ जुआरी। २ पासा।

दर्कार—स्त्री० = दरकार।

दर्गाह—स्त्री० = दरगाह।

दर्ज—वि० [अ०] जो स्मृति, हिसाब-किताब आदि के लिए अपने उपयुक्त स्थान (कागज, किताब, बही आदि) पर लिखा गया हो।
† स्त्री० दे० 'दरज'।

दर्जन—पुं०=दरजन।
स्त्री० =दरजिन।

दर्जा—पु० =दरजा।

दर्जावार—वि०, क्रि० वि० =दरजावार।

दर्जिन—स्त्री० =दरजिन।

दर्जी—पु० =दरजी।

दर्द—पु० =दरद (कष्ट या पीडा)।

दर्दमंद—वि० =दरदमद।

दर्दर—वि० [सं०√दृ (विदारण)+यङ्+अच् (पृषो० सिद्धि)] फटा हुआ।
पु० १. थोडा टूटा या चटका हुआ कलसा। २ पहाड़।

दर्दरीक—पु० [स०√दृ+णिच्+ईकन्] १. मेढक। २ बादल। ३. एक तरह का बाजा।

दर्दी—वि० = दरदमद।

दर्दुर—पु० [स०√दृ+उरच् (नि० सिद्धि)] १. मेढक। २ बादल। मेघ। ३ अवरक। अभ्रक। ४. एक प्रकार का पुराना बाजा। ५. कवित्त का एक प्रकार या भेद। ६ बहुत से गाँवों का समूह। ७. नगाडे का शब्द। ८. एक राक्षस का नाम। ९. पश्चिमी घाट पर्वत का एक भाग। मलय पर्वत मे लगा हुआ एक पर्वत। १० उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश।

दर्दुरक—पु० [स० दर्दुर+कन्] १. मेढक। २. [दर्दुर√कै (शब्द)+क] २ एक तरह का बाजा।

दर्दुरच्छदा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] ब्राह्मी बूटी।

दर्द्रु—पु० [स०√दरिद्रा (दुर्गति)+उ, नि० सिद्धि] दाद (रोग)।

दर्प—पु० [स०√दृप् (गर्व करना)+घञ्] १. अभिमान। घमड। २. वह तेजस्वितापूर्ण राग या क्रोध जो स्वाभिमान पर अनुचित आघात होने या उसे ठेस लगने पर उत्पन्न होता है और जिसके फल-स्वरूप वह अभिमान तथा दृढतापूर्वक प्रतिपक्षी को फटकार बताता है। जैसे—महिला ने बहुत दर्प मे उस गुडे की भर्त्सना की। ३. अहकार करनेवाले के प्रति मन मे होनेवाला क्षणिक विराग। मान। ४. अक्खडपन। उद्दडता। ५. वैभव, शक्ति आदि का आतक। रोब। ६. कस्तूरी।

दर्पक—वि० [स० √दृप्+ण्वुल्—अक] दर्प करनेवाला।
पु० [√दृप्+णिच्+ण्वुल] कामदेव।

दर्पण—पु० [स०√दृप् (चमकना)+णिच्+ल्यु—अन] १. मुँह देखने का शीशा। आईना। २. आँख। नेत्र। ३. ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। ४ उत्तेजित या उद्दीप्त करने की क्रिया या भाव।

दर्पन—पु० =दर्पण।

दर्पित—भू० कृ० [स० दृप् (गर्व)+णिच्+क्त] १ जो दर्प से युक्त हुआ हो। जिसने दर्प दिखलाया हो। २. अभिमानी। घमडी।

दर्पी (र्पिन्)—वि० [स० दर्प+इनि] १. जिसमे दर्प हो। जो दर्प दिखलाता हो। २. अभिमानी। घमडी।

दर्ब*—पु० [स० द्रव्य] १. द्रव्य। धन। २ चीज। पदार्थ। ३. धातु।

दर्बान—पु० =दरबान।

दर्बार—पु० =दरबार।

दर्बारी—पु० =दरबारी।

दर्बी—स्त्री० =दरवी।

दर्भ—पु० [स०√दृभ्+घञ्] १ एक प्रकार का कुश। डाभ। २. कुश का बना हुआ बैठने का आसन।

दर्भ-केतु—पु० [ब० स०] राजा जनक के भाई, कुशध्वज।

दर्भट—पु० [स०√दृभ् (निर्माण करना)+अटन् (बा०)] घर का वह कमरा जिसमे गुप्त रूप से विचार-विमर्श आदि किया जाता हो।

दर्भण—पु० [स०√दृभ्+ल्युट्—अन] कुश की बनी हुई चटाई।

दर्भ-पत्र—पु० [ब० स०] काँस नामक घास।

दर्भांकुर—पु० [दर्भ-अकुर, ष० त०] डाभ का नोकीला अग।

दर्भासन—पु० [दर्भ-आसन, मध्य० स०] दर्भ या कुश का बना हुआ आसन। कुशासन।

दर्भाह्वय—पु० [स० दर्भ+आ√ह्वे (बुलाना)+श] मूँज।

दर्भेपिका—स्त्री० [दर्भ-ईपिका, ष० त०] कुश का डठल।

दर्मयान—पु० =दरमियान।

दर्मयानी—वि० =दरमियानी।

दर्याव†—पु० =दरिया (नदी)।

दर्रा—पु० [फा० दर्र:] पहाडो के बीच का सँकरा तथा दुर्गम मार्ग।
पु० [हि० दलना] १ किसी चीज का मोटा पीसा हुआ चूर्ण। जैसे—गेहूँ या दाल का दर्रा। २ ऐसी मिट्टी जिसमे बहुत-से छोटे-छोटे ककड-पत्थर हो। (ऐसी मिट्टी प्राय सडको पर बिछाई जाती है।)
† पु० = दरार।

दर्राज—स्त्री० [फा० दराज=लबा] बढइयो का एक उपकरण जिससे वे लकडी सीधी करते है।

दर्राना—अ० [अनु० दड-दड, धड-धड़] तेजी से और बेधडक चलते हुए आगे बढना या कही प्रवेश करना। जैसे—दर्राते हुए किसी के घर मे घुस या चले जाना।

दर्व—पु० [स०√दृ (विदारण)+व] १ हिंसा करनेवाला मनुष्य। २. राक्षस। ३ उत्तरी पजाब के एक प्रदेश का पुराना नाम। ४. उक्त देश मे बसनेवाली एक प्राचीन जाति।
† पु० = द्रव्य।

दर्वरीक—पु० [स०√दृ+ईकन्, नि० सिद्धि] १ इद्र। २ वायु। ३. एक बाजा।

दर्वा—स्त्री० [स०] उशीनर की पत्नी।

दर्विक—पु० [स०√दृ+विन्+कन्] करछुल।

दर्विका—स्त्री० स० दर्विक+टाप्] १ घी की बत्ती जलाकर बनाया जानेवाला काजल। २ वनगोभी।

दर्विदा—स्त्री० [स० दर्वि√दो (खण्डन)+ड+टाप्] कठफोडवे की तरह की एक चिडिया।

दर्वी—स्त्री० [स० दर्वि+ङीप्] १. करछी। कलछी। २ साँप का फन।

दर्वी-कर—पु० [स० ब० स०] फनवाला साँप।

दर्श—पु० [स०√दृश् (देखना)+घञ्] १ दर्शन। २ अमावास्या तिथि जिसमे चद्रमा और सूर्य का सगम होता है, अर्थात् वे एक ही दिशा मे रहते है। ३. अमावास्या के दिन होनेवाला यज्ञ। ४ चाद्र मास की द्वितीया तिथि। दूज। ५ नया चाँद।

दर्शक—वि० [स०√दृश्+ण्वुल्—अक] १. (वह) जो कोई चीज देख रहा हो अथवा देखने के लिए आया हो। जैसे—खेल आरभ होने से पहले मैदान दर्शको मे भर चुका था। २ [दृश्+णिच्+ण्वुल्] दिखलाने या दर्शानेवाला। (यौ० के अत मे) जैसे—मार्ग-दर्शक।
पु० १ वह व्यक्ति या व्यक्तियो का वह समूह जो कही बैठकर कोई घटना, तमाशा दृश्य आदि देखता हो। २ द्वारपाल। दरबान।

दर्शन—पु० [स० √दृश्+ल्युट्—अन्] १ देखने की क्रिया या भाव। २ नेत्रो द्वारा होनेवाला ज्ञान, बोध या साक्षात्कार। ३ प्रेम, भक्ति और श्रद्धापूर्वक किसी को देखने की क्रिया या भाव। जैसे—किसी देवता या महात्मा के दर्शन के लिए कही जाना।
क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना।—मिलना।—होना।
विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग सस्कृत के आधार पर बहुधा बहुवचन मे ही होता है। जैसे—अब आप के दर्शन कब होगे?

४. आपस मे होनेवाला आमना-सामना या देखा-देखी। भेट। मुलाकात। ५ आँख या दृष्टि के द्वारा होनेवाला ज्ञान या बोध। ६. आँख। नेत्र। ७ स्वप्न। ८ अक्ल। बुद्धि। ९ धर्म या उसके तत्त्व का ज्ञान। १० दर्पण। शीशा। ११ रग। वर्ण। १२ नैतिक गुण। १३ विचार या उसके आधार पर स्थिर की हुई सम्मति। १४. किसी को कोई बात अच्छी तरह समझाते हुए बतलाना। १५ कोई बात ध्यान या विचारपूर्वक देखना और अच्छी तरह समझना। १६ वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे प्राणियो को होनेवाले ज्ञान या बोध, सब तत्त्वो तथा पदार्थों के मूल और आत्मा, परमात्मा प्रकृति, विश्व, सृष्टि आदि से सबध रखनेवाले नियमो, विधानो, सिद्धातो, आदि का गभीर अध्ययन, निरूपण तथा विवेचन होता हे। सब बातो के रहस्य, स्वरूप आदि का ऐसा विचार जो तत्त्व, नियम आदि स्थिर करता हो। दर्शन-शास्त्र।

विशेष—तर्क और युक्ति के आधार पर व्यापक दृष्टि से सब बातो के मौलिक नियम ढूँढनेवाले जो शास्त्र बनाते है, उन सब का अतर्भाव दर्शन मे होता है। हमारे यहाँ साख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमासा (पूर्व मीमासा) और वेदात (उत्तर मीमासा) ये छ दर्शन बने है, जिनमे अलग-अलग ढग से उक्त सब बातो का विचार और विश्लेपण हुआ है। इनके सिवा चार्वाक, बौद्ध, आर्हत, पाशुपत, शैव आदि और भी अनेक गौण तथा साप्रदायिक दर्शन है। अनेक पाश्चात्य देशो मे भी उक्त सब बातो की जो बिलकुल स्वतत्र रूप से और गहरी छान-बीन हुई है, वह भी दर्शन के अतर्गत ही हे।

१७ किसी प्रकार की बडी और महत्त्वपूर्ण क्रिया या ज्ञान के क्षेत्र के सभी मौलिक तत्त्वो, नियमो, सिद्धान्तो आदि का होनेवाला विचार-पूर्ण अध्ययन और विवेचन। जैसे—जीवन, धर्म, नीति शास्त्र आदि का दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, भारतीय दर्शन आदि। १८ उक्त विपय पर लिखा हुआ कोई प्रमाणिक और महत्त्वपूर्ण ग्रथ। १९ कोई विशिष्ट प्रकार की तात्त्विक या सैद्धातिक विचार-प्रणाली। जैसे—गाधी-दर्शन।

दर्शन-प्रतिभू—पु० [च० त०] वह प्रतिभू या जमानतदार, जो किसी व्यक्ति की किसी विशिष्ट समय तथा स्थान पर उपस्थित होने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता हो।

दर्शनीय—वि० [स०√दृश्+अनीयर्] १ जिसके दर्शन करना उचित या योग्य हो। २ देखने योग्य। मनोहर। सुदर।

दर्शनी हुडी—स्त्री० = दरशनी हुडी।

दर्शाना—स० = दरसाना।

दर्शित—भू० कृ० [स०√दृश्+णिच्+क्त] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

दर्शी (र्शिन्)—वि० [स०√दृश्+णिनि] १ देखनेवाला। जैसे—आकाशदर्शी। २ मनन या विचार करनेवाला। जैसे—तत्त्वदर्शी।

दर्स—पु० [अ०] १ पठन। पढना। २ उपदेश। ३. शिक्षा।

दल—पु० [स०√दल् (भेद करना)+अच्] १ किसी वस्तु के उन दो सम खडो मे से हर एक जो एक दूसरे से स्वभावत जुडे हो पर जरा-सा दवाव पडने से अलग हो जायँ। जैसे—अरहर, उरद, चने आदि के दानो के दो दल। २ पौधो के कोमल छोटे पत्ते। जैसे—तुलसी-दल। ३ फूलो के वे अग जो छोटे कोमल पत्ते के रूप मे होते है। पखडी। जैसे—कमल

या गुलाव के फूल के दल। ४ किसी बडी इकाई के अलग-अलग छोटे खड या टुकडे जो स्वतत्र रूप से काम करते हो। जैसे—सैनिको के कई दल नगर मे घूम रहे है। ५. ऐसे व्यक्तियो का वर्ग या समूह जो किसी विशिष्ट (अच्छे चाहे बुरे) उद्देश्य की सिद्धि के लिए सघटित हुआ हो और साथ मिलकर काम करता हो। (पार्टी) जैसे—डाकुओ या स्वयसेवको का दल। ६ एक ही जाति या वर्ग के प्राणियो का गरोह या झुड। जैसे—कबूतरो, च्यूँटियो या बदरो का दल। ७ आधुनिक राजनीति मे, किसी विशिष्ट विचार-धारा के अनुयायियो का वह सघटित समूह जो देश, सस्था आदि का शासन सूत्र सभालने के लिए चुनाव आदि लडता है। ८ परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई। जैसे—दल का शीशा। ९. फुसी, फोड़े आदि के आस-पास कुछ दूर तक होनेवाली वह सूजन जिससे वहाँ का चमडा मोटा हो जाता है। जैसे—इस फोडे ने बहुत दल बाँध रखा है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

१०. अस्त्र के ऊपर का आच्छादन। कोप। म्यान। ११ धन। दौलत। १२ जलाशयो मे होनेवाला एक प्रकार का तृण। १३ तमालपत्र।

दलक—स्त्री० [हिं० दलकना] १ दलकने की क्रिया या भाव। २ कुछ देर तक होता रहनेवाला बहुत हलका कप। थरथराहट। ३. रह-रह-कर होनेवाली हलकी पीडा। टीस।

पु० छुरी की तरह का एक उपकरण जिससे राजगीर नक्काशी के अदर का मसाला साफ करते है।

स्त्री० [फा०] गुदडी।

दलकन—स्त्री० [हिं० दलकना] १. दलकने की क्रिया या भाव। दलक। २ थरथराहट। ३ आघात आदि के कारण लगनेवाला झटका।

दलकना—अ० [स० दल या दलन] १ किसी चीज के ऊपर के दल या मोटी तह का रह-रहकर कुछ ऊपर उठते और नीचे गिरते हुए काँपना या हिलना। जैसे—चलने मे तोद दलकना। २ डर से काँपना या थर्राना। ३ उद्विग्न या विकल होना। घबराहट से बेचैन होना। उदा०—दलकि उठेउ सुनि हृदै कठोरू। —तुलसी।

†अ० दरकना।

स० [स० दलन] डराकर या भयभीत करके कँपाना।

दल-कपाट—पु० [ब० स०] हरी पँखडियो का वह कोश जिसमे कली बद रहती है।

दल-कोश—पु० [ब० स०] कुद का पौधा।

दल-गंजन—वि० [स०√गञ्ज् (नाश करना)+ल्यु—अन, प० त०] अनेक दलो या व्यक्तियो के समूहो को नष्ट करने या मारनेवाला, अर्थात् बहुत बडा वीर।

पु० एक प्रकार का धान।

दल-गंध—पु० [ब० स०] सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन।

दल-घुसरा—पु० [हिं० दाल+घुसडना] वह रोटी जिसमे दाल या पीठी भरी हो।

दल-थंभ†—पु० [स० दल+हिं० थामना] सेनापति।

दलथंभन—पु० [हिं० दल+थामना] १ कमखाब बुननेवालो का एक

औजार जो बाँस का होता है और जिसमे अँकुडा और नकशा बँधा रहता है। २ दलथभ।

दल-दल—स्त्री० [स० दलाढ्य] १. बहुत गीला और मुलायम निम्नतल जिसमे मिट्टी के साथ इतना अधिक पानी मिला हो कि उस पर आदमी का वोझ टिक या ठहर न सके, वल्कि नीचे धँस जाय। (मार्श) २. लाक्षणिक रूप मे, वह विकट या सकटपूर्ण स्थिति जिसमे हर प्रकार से खरावी या बुराई होती हो तथा जिससे जल्दी छुटकारा या बचाव न हो सके। क्रि० प्र०—मे पडना (या फँसना)।

स्त्री० [अनु०] कहारो की परिभाषा मे, बुड्ढी स्त्री (जो डोली या पालकी पर सावर हो)।

दलदला—वि० [हिं० दलदल] [स्त्री० दलदली] (प्रदेश) जिसमे दलदल बहुत अधिक हो।

दलदार—वि० [हिं० दल+फा० दार] जिसकी तह, दल या परत मोटी हो। जैसे—दलदार आम।

दलन—पु० [स०√दल् (भेदन)+ल्युट्—अन] [वि० दलित] १. पीसकर छोटे-छोटे टुकडे करने की क्रिया। चूर-चूर करने का काम। २. ध्वस। विनाश। सहार।

वि० ध्वस या नाश करनेवाला। (यौ० के अत में) जैसे—दुष्ट-दलन।

दलना—स० [स० दलन] १. चक्की, जाँते आदि मे डालकर बीज आदि पीसना। जैसे—गेहूँ या जौ दलना। २ दरदरा पीसना। ३. बुरी तरह से कुचल, मसल या रौंदकर नष्ट करना। ४ बहुत अधिक कष्ट देना या दमन करना। ५ पत्तियाँ, फूल आदि तोडना। ६. झटके से कई खड या टुकडे करना। (क्व०)

दलनि—स्त्री० = दलन।

दल-निर्मोक—पु० [स० ब० स०] भोजपत्र का पेड।

दलप—पु० [स० दल√पा (रक्षण)+क] १ दल का नायक, प्रधान या मुखिया। दलपति। २ [√दल्+कपन्] अस्त्र। ३. सोना। स्वर्ण।

दल-पति—पु० [प० त०] १ दल का नायक। यू-थप। २ सेनानायक।

दल-पुष्पा—स्त्री० [सं० ब० स०+टाप्] केतकी का पौधा।

दल-बंदी—स्त्री० [हिं० दल+फा० बदी] १ दलो का निर्माण तथा सघटन करना। (क्व०) २ किसी दल के अतर्गत अथवा किसी सस्था के कार्यकर्ताओ मे प्राय फूट, राग-द्वेष के कारण छोटे-छोटे समूह वनाने की क्रिया या भाव।

दल-बल—पु० [स० मध्य० स०] १ लाव-लश्कर। फौज। २ अनुयायी, सगी-साथी, नौकर-चाकर आदि। जैसे—मत्री महोदय दल-बल सहित पहुँचे थे।

दलवा—पु० [हिं० दलना] वह अशक्त पक्षी (जैसे—तीतर, बटेर आदि) जिसे उसका स्वामी दूसरे पक्षियो से लडाकर और मार खिलाकर दूसरे पक्षियो का साहस बढाते है।

दल-बादल—पु० [हिं० दल+बादल] १. बादलो का समूह। २ किसी के साथ चलने या रहनेवाले बहुत से लोगो का समूह। ३ बहुत बडी सेना। ४ एक प्रकार का बहुत बडा खेमा या शामियाना।

दलमलना—स० [हिं० दलना+मलना] १ किसी चीज को खूब दलना और मलना। २ अच्छी तरह कुचलना, मसलना या रौंदना। ३. पूरी तरह से ध्वस्त या नष्ट करना।

दलमलाना—स० हिं० 'दलमलना' का प्रे० रूप।

अ०= दलमलना।

दलवाना—स० [हिं० दलना का प्रे० रूप] १. दलने का काम दूसरे से कराना। २. ध्वस्त कराना। ३ दमन कराना।

दलवाल—पु० [स० दलपाल] सेनापति। फौज का सरदार।

दलवैया—वि० [हिं० दलना] दलनेवाला।

दलसारिणी—स्त्री० [स० सार+इनि+ङीप्, दल-सारिणी, स० त०] केमुआ। वंडा। कच्चू।

दल-सूचि—पु० [स० ब० स०] १. ऐसा पौधा जिसके पत्तो मे काँटे हों। २ [प० त०] उक्त प्रकार के पत्तो का काँटा। ३ किसी प्रकार का काँटा।

दलसूसा†—स्त्री० [स० दलज्वसा] पत्तो की नसे। दलो की शिराएँ।

दलहन—पु० [हिं० दाल+अन्न] ऐसे बीज जिनकी दाल बनाई जाती है। जैसे—अरहर, उडद, चना, मूंग आदि।

दलहरा—पु० [हिं० दाल+हारा] १ वह जो दलहन पीसकर दाल बनाता हो। २. केवल दालें वेचनेवाला रोजगारी।

दलहा—पु० [स० थल, हिं० थारहा] थाला। आलबाल।

दलाढक—पु० [स० दल-आढक, तृ० त०] १ जगली तिल। २ गेरू। ३ नागकेशर। ४. सिरिस का पेड। ५ कुद का पौधा या फूल। ६. एक प्रकार का पलाश जिसे गजकर्णी भी कहते है। ७ फेन। ८ खाईं। ९. ववडर। १० गाँव का मुखिया। ११ हाथी का कान।

दलाढ्य—पु० [स० दल-आढ्य, तृ० त०] नदी के किनारे का कीचड़।

दलादली—स्त्री० [स० दल+अनु०] आपस मे होनेवाली दल-बदियाँ और उनकी लाग-डाँट या होड।

दलान†—पु० = दालान।

दलाना—स० [हिं० दलना का प्रे० रूप] कोई चीज दलने मे किसी को प्रवृत्त करना।

†अ० दला जाना।

दलामल—पु० [स० दल-अमल, तृ० त०] १ दौना। २ मरुआ। मैनफल।

दलाम्ल—पु० [स० दल-अम्ल, ब० स०] लोनिया साग। अमलोनी।

दलारा—पु० [देश०] एक तरह का झूलनेवाला विस्तरा। (लश०)

दलाल—पु० [अ० दल्लाल] १ वह व्यक्ति जो किसी चीज के लेन-देन के समय क्रेता और विक्रेता के बीच मे पड़कर उस वस्तु का दर या भाव निश्चित कराता या सौदा पक्का कराता हो और एक या दोनो पक्षो से अपनी सेवा के प्रतिफल मे कुछ धन लेता हो। २ वह व्यक्ति जो कामुक पुरुषो को पर-स्त्रियो से मिलाता और उनसे धन प्राप्त करता है। ३. जाटो, पारसियो आदि मे एक जाति या वर्ग।

दलाली—स्त्री० [फा०] १ दलाल का काम। क्रेता-विक्रेता के बीच मे पडकर सौदा तै कराने का काम। २ दलाल को उसके परिश्रम या सेवा के वदले मे मिलनेवाला धन या पारिश्रमिक।

दलाह्वय—पु० [स० दल-आह्वय, ब० स०] तेजपत्ता।

दलि—स्त्री० [स०√दल् (भेदन)+इन्] = दलनी।

दलिक—पु० [स० दलि+कन्] काष्ठ।

दलित—भू० कृ० [स०√दल्+क्त] १ जिसका दलन हुआ हो। २. जो कुचला, दला, मसला या रौदा गया हो। ३ टुकडे-टुकडे किया हुआ। चूर्णित। ४ जो दबाया गया हो अथवा जिसे पनपने या बढने न दिया गया हो। हीन-अवस्था मे पडा हुआ। ५. ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।

दलित वर्ग—पु० [स०] समाज का वह निम्न-तम वर्ग जो उच्च वर्ग के लोगो के उत्पीडन के कारण आर्थिक दृष्टि से बहुत ही हीन अवस्था मे हो। जैसे—दास प्रथावाले देशो मे दास, सामत-शाही व्यवस्था मे कृषक, या पूँजीवादी व्यवस्था मे मजदूर दलित वर्ग मे माने जाते है। (डिप्रेस्ड क्लासेज)

दलिद्दर—वि० [स० दरिद्र] १ दरिद्र। २ बिलकुल गया-बीता और बहुत ही निम्न कोटि का। परम निकृष्ट।

पु० १. दरिद्रता। २ कूडा-करकट। झाड-झखाड। बिलकुल निकम्मी और रद्दी चीजें। जैसे— दीवाली पर घर का सारा दलिद्दर निकाल कर फेका जाता है।

दलिद्र—पु० = दरिद्र।

दलिया—पु० [हि० दलना] १ किसी खाद्यान्न के बीजो का पीसा हुआ मोटा या दानेदार चूर्ण। २ उक्त का दूध आदि मे पकाया हुआ गाढा रूप।

दली (लिन्)—वि० [स० दल+इनि] १ जिसमे दल या मोटाई हो। २. जिसमे दल या पत्ते हो। ३ जो किसी दल (वर्ग या समूह) मे मिला हुआ या उसके साथ हो।

दलीप—पु० = दिलीप।

दलील—स्त्री० [अ०] १ कोई ऐसी पूर्ण उक्ति या विचार जिससे किसी बात या मत का यथेष्ट समर्थन या खडन होता हो। युक्ति। २. वाद-विवाद। बहस।

दले-गंधि—पु० [स० ब० स०] सप्तपर्णी वृक्ष।

दलेपंज—पु० [हि० ढलना+पजा] वह घोडा जिसकी उमर ढल गई हो या ढल चली हो।

वि० जिसकी उमर ढल गई हो या ढल चली हो।

दलेल—स्त्री० [अ० ड्रिल] १. सिपाहियो को दिया जानेवाला एक प्रकार का दड या सजा जिसमे उन्हें पूरी वर्दी पहनाकर और कई प्रकार के हथियारो से युक्त करके टहलाते है। २ वह कवायद जो सजा की तरह पर कराई जाती हो।

मुहा०—दलेल बोलना = सजा की तरह पर कवायद करने या उक्त प्रकार से टहलते रहने की आज्ञा या दड देना।

दलैं†—अव्य० [अनु०] फीलवानो का एक शब्द जिसका उच्चारण वे हाथी से उसका मुँह खुलवाने के लिए करते हे।

दलैया—पु० [हि० दलना] १ दलन या नाश करनेवाला। २ दलने या पीसनेवाला।

दल्भ—पु० [स० दल् (भेदन) +भ] १ छल। धोखा। प्रतारणा। २ पाप। ३ चक्र।

दल्भि—पु० [स०√दल्+भि] १ शिव। २ इन्द्र का वज्र।

दल्लाल—पु० = दलाल।

दल्लाला—स्त्री० [अ०] कुटनी।

दल्लाली—स्त्री० = दलाली।

दवँगरा—पु० [स० दव+अगार?] पावस ऋतु की पहली वर्षा।

दवँरी—स्त्री० = दवनी।

दव—पु० [स०√दु (जलाना)+अच्] १ वन। जंगल। २ जगल मे प्राकृतिक रूप से लगनेवाली आग। दावाग्नि। ३. अग्नि। आग।

दवथु—पु० [स०√दु+अथुच्] १ जलन। दाह। २ कष्ट। दु ख। पीडा।

दवन—पु० १ = दमन। २ = दमनक (दौना)।

दवन-पापडा—पु० [स० दमनपर्पट] पित पापडा।

दवना*—स० [स० दव] जलाना।

अ० = जलना।

†पु० = दौना।

दवनी—स्त्री० [स० दमन] कटी हुई फसल को इस प्रकार बैलो मे रौंदवाना जिससे बीज डठलो से अलग हो जायँ। मिसाई। मिंडाई।

दवरिया†—स्त्री० = दवारि।

दवा—स्त्री० [फा०] १ वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २ कोई ऐसा उपचार या चिकित्सा जिससे रोग शात हो। ३ किसी प्रकार का अनिष्ट, दोष या बुराई दूर करने या किसी बिगडी हुई बात को ठीक करने का उपाय, युक्ति या साधन। जैसे—इस बेवकूफी की कोई दवा नही है।

* स्त्री० [स० दव] दावानल।

दवाई†—स्त्री० = दवा (औषधि)।

दवाईखाना—पु० = दवाखाना।

दवाखाना—पु० [फा०] १ वह स्थान जहाँ ओषधियाँ बनती या बिकती हो। २ अस्पताल। चिकित्सालय।

दवागि*—स्त्री० [स० दावाग्नि] वनाग्नि। दावानल। दावाग्नि।

दवागिन—स्त्री० = दावाग्नि।

दवाग्नि—स्त्री० [स० दव-अग्नि, कर्म० स०] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

दवात—स्त्री० [अ०] १ मिट्टी, धातु, शीशे आदि का वह छोटा पात्र जिसमे लिखने की स्याही घोली जाती है। मसि-पात्र। २ स्याही से भरा हुआ उक्त पात्र।

दवान*—पु० [देश०] एक तरह का अस्त्र।

दवानल—पु० [स० दव-अनल, कर्म० स०] दावाग्नि।

दवामी—वि० [अ०] बराबर बना रहनेवाला। स्थायी। चिरस्थायी।

दवामी काश्तकार—पु० [अ० दवामी+फा० काश्तकार] वह जिसे स्थायी रूप से काश्तकारी का अधिकार प्राप्त हो।

दवामी पट्टा—पु० [अ० दवामी+हि० पट्टा] वह पट्टा जिसके अनुसार स्थायी रूप से किसी चीज के भोग का अधिकार किसी को मिले।

दवामी बंदोबस्त—पु० [फा०] वह अवस्था जिसमें जमीन की सरकारी मालगुजारी चिरकाल के लिए निश्चित हो जाती है।

दवार—स्त्री० = दवारि।

दवारि—स्त्री० [स० दावाग्नि, हि० दवागि] १ वनाग्नि। दावानल। २ सताप।

दश (न्)—वि० [स०√दश् (हिंसा करना)+कनिन् (बा०)] दस। (संख्या)

दश-कंठ—वि० [ब० स०] दस कंठोंवाला।
पुं० रावण।

दशकंठारि—पुं० [दशकंठ-अरि, ष० त०] (रावण के शत्रु) श्रीरामचंद्र।

दश-कंध—पुं० [स० दश-स्कंध, हिं० कंध] रावण।

दश-कंधर—पुं० [ब० स०] रावण।

दशक—पुं० [स० दशन्+कन्] १. दस का समूह। २. दस वर्षों का समूह। ३ सन्, संवत् आदि में हर एक इकाई से दहाई तक के दस-दस वर्षों का समूह। (डीकेड) जैसे—बीसवीं शताब्दी का तीसरा दशक अर्थात् १९२१ से १९३० तक के वर्षों का समूह।

दश-कर्म (न्)—पुं० [मध्य० स०] गर्भाधान से लेकर विवाह तक के हिंदू-धर्म के अनुसार बालक के दस संस्कार—गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह।

दश-कुलवृक्ष—पुं० [मध्य० स०] तंत्र के अनुसार ये दस वृक्ष—लिसोड़ा, करंज, बेल, पीपल, कदंब, नीम, बरगद, गूलर, आँवला और इमली।

दश-कोषी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] संगीत में, रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

दश-क्षीर—पुं० [मध्य० स०] १ सुश्रुत के अनुसार दूध देनेवाले ये दस जीव—गाय, बकरी, ऊँटनी, भेड़, भैंस, घोड़ी, स्त्री, हथनी, हिरनी और गदही। २ उक्त जीवों का दूध।

दश-गात्र—पुं० [द्विगु० स०] १ शरीर के दस प्रधान अंग। २. कर्म-कांड में, वे कृत्य जिनमें किसी के मरने पर दस दिनों तक दस पिंड इस उद्देश्य से बनाकर दिये जाते हैं कि मृतात्मा के दसों अंग फिर से बन जायँ और उसका शरीर पूरा हो जाय।

दश-ग्राम-पति—पुं० [दश-ग्राम, द्विगु स०, दशग्राम-पति, ष० त०] प्राचीन भारत में दस गाँवों का अधिकारी या स्वामी।

दश-ग्रीव—पुं० [ब० स०] रावण।

दशति—स्त्री० [स० दश-दश (नि० सिद्धि)] सौ। शत।

दशद्वार—पुं० [मध्य० स०] शरीर के ये दस छिद्र—२ कान, २ आँखें, २ नाक, १ मुख, १ गुदा, १ लिंग और १ ब्रह्मांड।

दशधा—वि० [स० दशन्+धा] दस प्रकार का। दस रूपोंवाला।
अव्य० दस प्रकार से।

दशधा भक्ति—स्त्री० [स०] नवधा भक्ति और उसमें सम्मिलित की हुई दसवीं प्रेम-लक्षणा भक्ति का समाहार।

दशन—पुं० [स०√दंश् (काटना)+ल्युट्—अन, नलोप] १. दाँत। २. कवच। ३ चोटी। शिखर।

दशनच्छद—पुं० [स० दशन√छद् (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] होंठ।

दशन-बीज—पुं० [सं० ब० स०] अनार।

दशनांशु—पुं० [दशन-अंशु, ष० त०] दाँतों की चमक।

दशना—वि० [स० दशन से] दाँतोंवाली (स्त्री)।

दशनाढ्य—स्त्री० [दशनाढ्य, ब० स०, टाप्] लोनिया शाक।

दश-नाम—पुं० [स० द्विगु स०] तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी संन्यासियों के ये दस भेद।

दशनामी—पुं० [हिं० दस+नाम] संन्यासियों का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शंकराचार्य के शिष्यों से चला है और जिसमें दशनाम (देखें) वर्ग के दस भेद हैं।
वि० १. दशनाम-संबंधी। २. दशनाम वर्ग के अंतर्गत किसी नामधारी शाखा या भेद से संबंध रखनेवाला।

दशप—पुं० [स० दशन्√पा (रक्षण)+क] =दशग्रामपति।

दश-पारमिता-धर—पुं० [दश-पारमिता द्विगु स०, दशपारमिता-धर ष० त०] बुद्धदेव।

दशपुर—पुं० [स० दशन्√पॄ (पूर्ण करना)+क] १. केवटी मोथा। २. मालव देश का एक प्राचीन विभाग जिसमें दस मुख्य नगर थे।

दश-पेय—पुं० [स० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

दश-बल—पुं० [ब० स०] बुद्धदेव।

दश-बाहु—पुं० [ब० स०] महादेव।

दश-भूमिग—पुं० [दश-भूमि, द्विगु स०,√गम् (जाना)+ड] बुद्धदेव (जो दस भूमियों या बलों से युक्त समझे जाते हैं)।

दश-भूमीश—पुं० [दशभूमि-ईश ष० त०] =दश भूमिग।

दशम—वि० [स० दशन्+डट् मट्—आगम] १. गिनती में १० के स्थान पर पड़नेवाला। २ जो किसी चीज का दसवाँ भाग हो।

दशम-दशा—स्त्री० [कर्म० स०] साहित्य में वियोगी की वह दसवीं और अंतिम दशा जिसमें वह परम दुःखी होकर प्राण त्याग देता है।

दशम-भाव—पुं० [कर्म० स०] जन्म कुंडली में लग्न के स्थान से दसवाँ घर। (ज्यो०)

दशमलव—पुं० [स०] १. गणित में वह बिंदु जो किसी इकाई, का दसवें, सौवें आदि के बीच का कोई अंश सूचित करने के लिए उससे पहले लगाया जाता है। जैसे—.६ (६।१० भाग); .०६ (६।१०० भाग) २ उक्त चिह्न लगाकर सूचित की जानेवाली संख्या। (विशेष देखें 'दशमिक प्रणाली')

दशमलवकरण—पुं० [स०] गणित में इकाई से कम मान सूचित करनेवाले अंशों को दशमलव का रूप देना। (डेसिमलाइजेशन)

दशमांश—पुं० [दशम-अंश, कर्म० स०] किसी चीज के दस समान भागों में से हर एक। दसवाँ भाग या हिस्सा।

दशमाल—पुं० =दशमालिक।

दशमालिक—पुं० [सं०] एक प्राचीन देश।

दशमास्य—वि० [स० दश-मास, द्विगु स०,+यत्] दस मास की अवस्थावाला।
पुं० बालक, जो दस महीने गर्भ में रहता है।

दशमिक—वि० [स०] दशमलव भाग से संबंध रखनेवाला।

दशमिक प्रणाली—स्त्री० [स०] नाप, तौल, मान आदि स्थिर करने की वह गणितीय पद्धति या प्रणाली जिसमें हर मान अपने से निकटस्थ बड़े मान का दसवाँ भाग और निकटस्थ छोटे मान का दस गुना होता है। (डेसिमल सिस्टम) जैसे—(क) यदि दस पैसों का एक आना और दस आनों का एक रुपया मान लिया जाय अथवा दस तोले की एक छटाँक, दस छटाँक का एक सेर और दस सेर का एक मन मान लिया जाय तो यह

अवस्था दशमिक प्रणाली के अनुसार होगी। इससे आना तो पैसे का दस-गुना और और रुपये का दसवाँ भाग होगा। इस प्रकार सेर तो छटाँक का दस गुना होगा और मन का दसवाँ भाग। (ख) आज-कल भारत मे तौल, दूरी, सिक्के आदि के नये मान इसी प्रणाली के अनुसार स्थिर होने लगे है।

दशमिक-भग्नांश—पु० [स०] दशमलव। (दे०)

दशमी—स्त्री० [स० दशम+ङीप्] १ चाद्र मास के प्रत्येक पक्ष की दसवी तिथि। २ विजया दशमी। ३. मनुष्य की दसवी और अतिम दशा, अर्थात् मरण। मृत्यु। मौत। ३ सासारिक आवागमन और बधनो से मुक्त होने की अवस्था। मुक्ति।
वि० [स० दशम+इनि] जो अपने अस्तित्व या जीवन के ९० वर्ष पार कर के सौ वर्षों के लगभग हो रहा हो, अर्थात् बहुत पुराना या बुड्ढा।

दश-मुख—पु० [स० ब० स०] रावण, जिसके दस मुख थे।

दश-मूत्रक—पु० [स० द्विगु स० +क] वैद्यक मे हाथी, भैस, ऊँट, गाय, बकरा, मेढा, घोडा, गदहा, मनुष्य और स्त्री इन दस जीवो का मूत्र।

दश-मूल—पु० [स० द्विगु स०] १ सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, बडी कटाई, गोखरू, बेल, सोनपाठा, गभारी, गनियारी और पाठा इन दस वृक्षो की जड।२ उक्त पेडो की छाल। ३ उक्त पेडो की जडो या छालो का बनाया हुआ काढा।

दश-मौलि—पु० [स० ब० स०] रावण।

दश-योग-भग—पु० [स० ष० त०] एक नक्षत्रवेध जिसमे विवाह आदि शुभ कर्म नही किये जाते। (फलित ज्योतिष)

दश-रथ—पु० [स० ब० स०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवशी राजा जिनके राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न ये चार पुत्र थे।

दश-रश्मि-शत—पु० [स० ब० स०] सूर्य।

दश-रात्र—पु० [स० द्विगु स०,+अच् समा०] एक प्रकार का यज्ञ जो दस रातो मे समाप्त होता था।

दश-वक्त्र—पु० [स० ब० स०] रावण।

दश-वदन—पु० [स० ब० स०] रावण

दश-वाजी—(जिन्) पु० [स० ब० स०] चद्रमा, जिसके रथ मे दस घोडे जुते हुए माने जाते है।

दश-वीर—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

दश-शिर (रस्)—पु० [स० ब० स०] रावण।

दस-शीर्ष—पु० [स० ब० स०] १ रावण। २ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, जिससे दूसरो के चलाये हुए अस्त्र व्यर्थ किये जाते थे।

दशशीश—पु० =दश-शीर्ष।

दश-स्पंदन—पु० [स० ब० स०] राजा दशरथ जिनके यहाँ दस रथ थे।

दशहरा—पु० [स० दश हि०हरा] १ वह उत्सव जिसमे गगा नदी की पूजा तथा आराधना की जाती हे। २ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, जिस दिन उक्त उत्सव मनाया जाता हे। ३ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक के दस दिन। ४ विजया दशमी।

दश-हरा—स्त्री० [स०] १ गगा नदी जो दस प्रकार के पापो की विनाशिनी मानी गई है।

दशांग—पु० [स० दशन्-अग, ब० स०] दस प्रकार के सुगधित द्रव्यो के योग से बननेवाला एक तरह का धूप।

दशांग-क्वाथ—पु० [स० मध्य० स०] दस प्रकार की ओषधियो के योग से बननेवाला काढा।

दशागुल—पु० [स० दशन्-अगुलि, ब० स०,+अच्] खरबूजा।

दशात—पु० [स० दशा-अत ष० त०] अतिम दशा या वय, अर्थात् वृद्धावस्था। बुढापा।

दशांतर—पु० [स० दशा–अतर, ष० त०] जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ।

दशा—स्त्री० [स०√दश् (काटना)+अङ, नलोप, टाप्] १ कुछ समय तक बराबर चलने या बनी रहनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट अवस्था जिसमे कोई घटना अथवा बात हुई हो, होती हो अथवा हो सकती हो। हालत। जैसे—देश की आर्थिक दशा का चित्रण। २ मनुष्य के जीवन मे घटित होनेवाली घटनाओ, परिवर्तनो आदि के विचार से भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ जो सख्या मे कही ४, कही ८ (जन्म, शैशव, बाल्य, कौमार, पौगड, यौवन, जरा और मरण) और कही १० (अभिलाषा चिता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, सताप, उन्माद, व्याधि, जडता और मरण) कही गई है। ३ साहित्य मे, रस के अतर्गत विरही या विरहिणी की अवस्था या हालत। ४ फलित ज्योतिष मे, अलग-अलग ग्रहो का नियत या निश्चित भोग-काल जिसका प्रभाव मनुष्य के जीवन-यापन पर पडता है। जैसे—आज-कल उनके जीवन मे शनिश्चर (अथवा मगल, बुध आदि) की दशा चल रही है। ५ कपडे का छोर या सिरा। पल्ला। ६ दीए की बत्ती। उदा०—ज्योति बढावति दशा उनारि।—केशव। ७ चित्त या मन। ९ प्रज्ञा। ८ कर्मो का फल। १० भाग्य। ११ दे० 'दशिका'।

दशाकर्ष—पु० [स० दशा+आ√कृष् (खीचना)+अच्] १ कपडे का छोर या सिरा। २ दीआ। दीपक।

दशाकर्षी (र्षिन्)—पु० [स० दशा+आ√कृष्+णिनि] =दशाकर्ष।

दशाक्षर—पु० [स० दशन्-अक्षर, ब० स०] एक तरह का छद।

दशाधिपति—पु० [स० दशा-अधिपति, ष० त०] १ दशाओ के अधिपति ग्रह। (ज्योतिष) २ वह अधिकारी जिसके अधीन दस सैनिक रहते थे।

दशानन—पु० [स० दशन्-आनन, ब० स०] रावण।

दशानिक—पु० [स०√अन् (जीना)+घञ् आन+ठक्—इक, दशा-आनिक स० त०] जमाल-गोटा।

दशा-पवित्र—पु० [स० उपमि० स०] वस्त्र के वे टुकडे जो श्राद्ध आदि मे दान दिये जाते हे।

दशाब्द—पु० [सं० दशन्-अब्द, द्विगु स०] दस वर्षो का समूह। दशक।

दशामय—पु० [स० दशन्-आमय, ब० स०] रुद्र।

दशारुहा—स्त्री० [स० दशन्+आ√रुह (उगना)+क—टाप्] कैवर्तिका नाम की लता जिसके पत्तो से तैयार किये हुए रग से कपडे रगे जाते है।

दशार्ण—पु० [स० दशन्-ऋण, ब० स०, वृद्धि] १ विध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण के उस प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती हे। विदिशा (आधुनिक भिलसा) इसी प्रदेश की राजधानी थी। २ जैन पुराणो के अनुसार उक्त प्रदेश का राजा। जिसका अभिमान तीर्थंकर ने चूर्ण किया था। ३ तत्र मे एक दशाक्षर मत्र।

दशार्णा—स्त्री० [स० दशार्ण+अच् – टाप्] विध्य पर्वत से निकली हुई धसान नामक नदी।

दशार्द्ध—पुं० [सं० दशन्√ऋध् (बढ़ना)+अण्] बुद्धदेव, जो दस बलों से युक्त माने जाते है।
दशार्ह—पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश जिस पर किसी समय वृष्णियों का अधिकार था। २. उक्त देश का राजा वृष्णि। ३. राजा वृष्णि के वंश का व्यक्ति। ४. विष्णु। ५ बौद्ध।
दशावतार—पुं० [सं० द्विगु स०] विष्णु के दस अवतार।
दशावरा—स्त्री० [सं०] दस सदस्यों की शासन-सभा।
दशाश्व—पुं० [सं० दशन्-अश्व, ब० स०] चद्रमा (जिसके रथ मे दस घोड़े लगते है)।
दशाश्वमेध—पुं० [सं० दशन्-अश्वमेध, ब० स०] १. काशी के अंतर्गत एक प्रसिद्ध घाट और तीर्थ। २ प्रयाग के अंतर्गत एक घाट और तीर्थ। विशेष—कहते हैं कि किसी समय वाकाटकों ने उक्त दोनों स्थानों पर दस-दस अश्वमेध यज्ञ किये थे।
दशास्य—पुं० [सं० दशन्-आस्य, ब० स०] दशमुख। रावण।
दशाह—पुं० [सं० दशन्-अहन्, द्विगु स०, टच् समा०] १ दस दिन। २ मृतक की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाले कृत्य।
दशिका—स्त्री० [सं० दशा+कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व] कपड़े के थान का छोर या सिरा। छीर। दसी।
दशी—स्त्री० दे० 'दशक'।
दशेंधन—पुं० [सं० दशा-इंधन, ब० स०] दीपक।
दशेर(क)—पुं० [सं० दशेर+कन्] १. मरु देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ ऊँट का बच्चा।
दशेश—पुं० [सं० दशन-ईश, ष० त०] १ दस ग्रामों का नायक। २ [दशा-ईश] सूर्य।
दष्ट—भू० कृ० [सं० √दश्+क्त, पत्व] जो किसी द्वारा डसा गया हो।
दष्पना*—स० =देखना।
दस—वि० [सं० दश] १ जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। पाँच का दूना। २ अनेक। कई। जैसे—वहाँ दस तरह की बातें होती रहती है।
पुं० १ नौ और एक के योग की सूचक संख्या। २ उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०.
दसखत†—पुं० =दस्तखत।
दसठौन—पुं० [सं० दश+स्थान] बुंदेलखंड मे प्रचलित एक रीति जिसमे बच्चा जनने के दसवें दिन प्रसूता स्त्री नहाकर सौरीवाली कोठरी से निकलकर दूसरी कोठरी या कमरे में जाती है।
दस-तपा—पुं० [हिं० दस+तपना] जेठ महीने मे मृगशिरा नक्षत्र के अंतिम दस दिन जिनके खूब तपने पर आगे चलकर अच्छी वर्षा की आशा की जाती है।
दसन—पुं० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाड़ी जो पंजाब, सिंध, राजपूताने आदि में होती है। दसरनी।
†पुं० = दशन।
दसना—अ० [हिं० डसना] हिं० 'दसाना' का अ० रूप। बिछाया जाना। बिछना।
स० दे० 'दसाना' (बिछाना)।
पुं० बिछौना। बिस्तर।
स० दे० 'डसना'।
दसवदन—पुं० =दशवदन (रावण)।
दस-मरिया—स्त्री० [हिं० दस+मढ़ना] एक साथ दस तख्ते लंबाई के बल मे जोड़कर बरसाती नदी मे तैरने के लिए बनाई जानेवाली एक तरह की बड़ी रचना।
दसमाथ*—पुं० [हिं० दस+माथ] रावण।
दसमी—स्त्री० =दशमी।
दसरंग—पुं० [हिं० दस+रंग] मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।
दसरनी—स्त्री० दे० 'दसन' (झाड़ी)।
दसरान—पुं० [हिं० दस+रान?] कुश्ती का एक पेंच।
दसवाँ—वि० [सं० दशम] गिनती मे दस के स्थान पर आने, पड़ने या होनेवाला। जैसे—महीने का दसवाँ दिन।
मुहा०—दसवाँ द्वार खुलना=(क) मृत्यु के समय ब्रह्मांड (मस्तक का ऊपरी भाग) खुलना या फटना, जिसमे से होकर आत्मा का शरीर से निकलना माना जाता है। (ख) लाक्षणिक रूप मे अक्ल या होश-हवास गुम हो जाना।
पुं० हिंदुओं मे वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें दिन होता है।
दसहरा—पुं० =दशहरा।
दसहरी—पुं० [हिं० दसहरा] एक तरह का बढ़िया आम।
दसांग†—पुं० =दशांग (एक तरह की धूप)।
दसा—पुं० [हिं० दस] अग्रवाल वैश्यों के दो प्रधान भेदों मे से एक। (दूसरा भेद 'बीसा' कहलाता है।)
†स्त्री०=दशा।
दसाना*—स०=डसाना (बिछाना)।
दसारन—पुं०=दशार्ण। (दे०)
दसारी—स्त्री० [देश०] एक तरह का छोटा जल-पक्षी।
दसी—स्त्री० [सं० दशा या दशिका=कपड़े का छोर] १. कपड़े के थान, दुपट्टे, धोती आदि मे लंबाई के बल मे दोनों सिरों पर भिन्न रंगों के डोरों से बने हुए चिह्न जो थान के पूरे होने के सूचक होते हैं। छीर। २. ओढ़ने या पहनने के कपड़े का आंचल या पल्ला। ३ चिह्न। निशान। ४ बैल-गाड़ी मे दोनों ओर लगी हुई पटरियाँ। ५ चमड़ा छीलने की रांपी।
दसेंई—पुं० [देश०] तेंदू का पेड़।
दसैं—स्त्री० [सं० दशमी, हिं० दसई] दशमी तिथि। (पूर्व)
दसोतरा—वि० [सं० दशोत्तर] गिनती मे जो दस से अधिक हो।
पुं० प्रति सौ मे दस।
क्रि० वि० दस प्रतिशत।
दसौंधी—पुं० [सं० दास=दानपत्र+बंदी=भाट] बंदियों या चारणों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण मानती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।
दस्तंदाज—वि० [फा०] [भाव० दस्तंदाजी] बीच मे हाथ डालने अर्थात् दखल देनेवाला। हस्तक्षेप करनेवाला।
दस्तंदाजी—स्त्री० [फा०] किसी काम मे हाथ डालने की क्रिया या भाव। किसी होते हुए काम मे की जानेवाली छेड़-छाड़ जो प्राय अनुचित समझी जाती है। हस्तक्षेप।
दस्त—पुं० [सं० हस्त से फा०] १ हस्त। हाथ।

पद—दस्तकार, दस्तखत, दस्तबरदार आदि।
२ पेट मे विकार होने के कारण निकलनेवाला असाधारण रूप से पतला मल। प्राय पानी की तरह पतला शौच होने की क्रिया।
मुहा०—दस्त लगना=वार-बार बहुत पतला मल निकलना या शौच होना।

दस्तक—स्त्री० [फा०] १. हाथ से किया हुआ हलका आघात। २ ताली। ३ किसी को बुलाने के लिए उसके दरवाजे पर उक्त प्रकार से खटखटाने की क्रिया।
क्रि० प्र०—देना।
४ अधिकारियो द्वारा किसी के नाम निकाला हुआ वह आज्ञा-पत्र जिसमे उससे अपना देन चुकाने के लिए कहा गया हो।
क्रि० प्र०—भेजना।
पद—दस्तक सिपाही=वह सिपाही जो किसी से मालगुजारी आदि वसूल करने या किसी को पकडने के लिए दस्तक (आज्ञा-पत्र) देकर भेजा जाय।
मुहा०—दस्तक माफ करना=(क) क्षमा करना। (ख) उत्तरदायित्व से मुक्त करना।
५ कही से कोई माल ले आने या ले जाने के लिए मिला हुआ वह अधिकारपत्र जो कुछ विशिष्ट स्थानो पर दिखाना पडता है। निकासी या राहदारी का परवाना। ६ कर। महसूल।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
७. ऐसा आकस्मिक अनावश्यक काम जिसमे कुछ व्यय करना पडे।
मुहा०—दस्तक बाँधना या लगाना=व्यर्थ का व्यय ऊपर डालना। नाहक का खर्च जिम्मे लगाना या लेना। जैसे—तुमने यह चदे की अच्छी दस्तक बाँध ली है।

दस्तकार—पु० [फा०] [भाव० दस्तकारी] वह कारीगर जो हाथ से छोटे-मोटे उपकरणो की सहायता से (मशीनो से नही) चीजे तैयार करता हो। शिल्पी।

दस्तकारी—स्त्री० [फा०] १ हाथ से चीजे बनाकर तैयार करने का काम। २. इस प्रकार तैयार की हुई कोई वस्तु।

दस्तकी—स्त्री० [फा०] १ वह छोटी वही जो याददाश्त के लिए वात आदि टाँकने के काम आती और प्राय' हर-दम पास रखी जाती है। २ वहेलियो का दस्ताना जो शिकारी पक्षियो के वार को रोकने के लिए हाथ मे पहना जाता है।

दस्तखत—पु० [फा०] १ किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर। २ (लेख के अत मे) हाथ से लिखा हुआ अपना नाम जो इस वात का सूचक होता है कि उक्त लेख मेरी इच्छा से लिखा गया है और मैं उससे अनुवद्ध होता हूँ। हस्ताक्षर।

दस्तखती—वि० [फा० दस्तखत] जिस पर दस्तखत हो। २ (लेख) जिस पर लिखने या लिखानेवाले का नाम उसी के हाथ का लिखा हो। हस्ताक्षरित। जैसे—दस्तखती चिट्ठी।

दस्तगीर—पु० [फा०] [भाव० दस्तगीरी] किसी का हाथ विशेषत सकट के समय किसी का हाथ पकडने अर्थात् उसका सहायक होनेवाला।

दस्तगीरी—स्त्री० [फा०] दस्तगीर अर्थात् सहायक होने की अवस्था या भाव।

दस्तपनाह—पु० [फा०] चिमटा।

दस्तवरदार—वि० [फा०] [भाव० दस्तवरदारी] १. जिसने किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या स्वत्व छोड दिया या हटा लिया हो। २. किसी चीज या वात से विलकुल अलग रहनेवाला।

दस्तवरदारी—स्त्री० [फा०] किसी चीज से अपना अधिकार हटाकर सदा के लिए छोड या त्याग देने की क्रिया या भाव।

दस्त-वस्ता—अव्य० [फा० दस्त वस्त.] १ किसी के आगे हाथ वाँधे अर्थात् जोडे हुए (प्रार्थना करना)। २ विनम्रतापूर्वक।

दस्तयाव—वि० [फा०] [भाव० दस्तयावी] हाथ मे आया या मिला हुआ। प्राप्त। हस्तगत।

दस्तर—स्त्री०=दस्तार (पगडी)।

दस्तरखान—पु० [फा० दस्तरख्वान] वह कपडा जिसके ऊपर खाने के लिए भोजन के थाल आदि सजाये या रखे जाते है।

दस्ता—पु० [फा० दस्त] १ हाथ मे पकडने या रखने की चीज। जैसे—गुल-दस्ता। २ औजारो, हथियारो आदि का वह अग जो उन्हे काम मे लाने या चलाने के समय हाथ से पकडा जाता है। वेंट। मूठ। जैसे—आरी, चाकू, तलवार या हथौडी का दस्ता। ३ किसी चीज का उतना अश या भाग जो सहज मे हाथ मे रखा या लिया जा सकता हो। ४ कागज के २४ या २५ तावो की गड्डी। ५ हाथ मे रखने का डडा। सोटा। ६ कवा, चोगे आदि मे की वह घुडी जो प्राय वद मे लगी रहती है। ७ सिपाहियो या सैनिको का छोटा दल। टुकडी। ८ चपरास। ९ गोट। मगजी। सजाफ। १० एक प्रकार का वगला जिसे हर-गिला भी कहते है।
†पु० दे० 'जस्ता' (कपडो आदि का)।

दस्ताना—पु० [फा० दस्तान] १ पजे और हथेली मे पहनने का वुना हुआ कपडा। हाथ का मोजा। २ उक्त प्रकार का लोहे का वह आवरण जो युद्ध के समय हाथो पर (उनकी रक्षा के लिए) पहना जाता था। ३ वह लवी किर्च या सीधी तलवार जिसकी मूठ के ऊपर कलाई तक पहुँचनेवाला लोहे का आवरण लगा रहता है।

दस्तावर—वि० [फा० दस्त आवर] (औषध या खाद्य पदार्थ) जिसे खाने से दस्त आने लगे। रेचक। जैसे—हर्रे दस्तावर होती है।

दस्तावेज—स्त्री० [फा०] विधिक क्षेत्र मे, वह कागज जिस पर दो या अधिक व्यक्तियो के पारस्परिक लेन-देन, व्यवहार समझौते आदि की शर्ते लिखी हो और जिस पर सवद्ध लोगो के हस्ताक्षर प्रमाण स्वरूप अकित हो। लेख्य। (डीड) जैसे—तमस्सुक, दानपत्र, वैनामा, रेहननामा आदि।

दस्तावेजी—वि० [फा० दस्तावेज] दस्तावेज-सवधी। दस्तावेज का। जैसे—दस्तावेजी कागज।

दस्ती—वि० [फा० दस्त=हाथ] १ हाथ मे रहने या होने अथवा उससे सवध रखनेवाला। जैसे—दस्ती रुमाल। २ जो किसी व्यक्ति के हाथ दिया या भेजा गया हो। जैसे—दस्ती, खत, दस्ती वारट।
स्त्री० १ छोटा दस्ता। छोटी वेंट या मूठ। २ वह वत्ती या मशाल जो हाथ मे लेकर चलते हो। ३ छोटा कलमदान। ४ वह इनाम या भेट जो राजा-महाराजा स्वय अपने हाथ से सरदारो आदि को दिया करते थे। ५ कुश्ती का एक पेच जिसमे पहलवान अपने विपक्षी का दाहिना

हाथ दाहिने हाथ से अथवा बायाँ हाथ बाए हाथ से पकडकर अपनी ओर खीचता है और तब झटके से उसे गिरा या पटक देता है।

दस्तूर—पु० [फा०] १ बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा या रीति। चाल। परिपाटी। २ कायदा। नियम। विधि। ३ पारसियो के धर्म-पुरोहितो की उपाधि जो दस्तूर (नियम या प्रथा) के अनुसार सब कृत्य करते-कराते है। ४ जहाज के वे छोटे पाल जो सबसे ऊपरवाले पाल के नीचे की पक्ति मे दोनो ओर होते हे। (लश०)

दस्तूरी—वि० [फा०] दस्तूर अर्थात् नियम-सबधी।
स्त्री० वह धन जो सौदा खरीद कर ले जानेवाले नौकर को दूकानदारो से (कोई सौदा लेनेपर) पुरस्कार रूप मे मिलता है।

दस्पना†—पु०, [फा० दस्तपनाह] चिमटा।

दस्म—पु० [स०√दस् (ऊपर फेकना)+मक्] १. यजमान। २ चोर। ३ दुष्ट व्यक्ति। ४ अग्नि।

दस्यु—पु० [स०√दस् +युच्] [भाव० दस्युता] १ एक प्राचीन अनार्य जाति। २ अनार्य या म्लेच्छ जो पहले प्राय यज्ञो मे लूट-मार करके निर्वाह करते थे। ३ डाकू। लुटेरा। ४. खल। दुष्ट।

दस्युता—स्त्री० [स० दस्यु+तल्+टाप्] १ दस्यु होने की अवस्था या भाव। २ डकैती। लुटेरापन। ३. क्रूरता और खलता। दुष्टता।

दस्युवृत्ति—स्त्री० [प० त०] १ डकैती। लुटेरापन। २ चोरी।

दस्युहन्—पु० [स० दस्यु√हन् (मारना)+क्विप्] (असुरो को मारने-वाले) इद्र।

दस्र—वि० [स०√दस्+रक्] १ दोहरा। २ क्रूर। ३ ध्वसक। ४. असभ्य। जगली।
पु० १ दो की सख्या। २ दो का जोडा। युग्म। ३ अश्विनी कुमार। ४ शिशिर ऋतु। ५ गधा।

दस्सी—स्त्री० [स० दशा या दशिका] थान के सिरे पर का अश। छीर।

दह—पु० [स० ह्रद (आद्यत विपर्यय)] १ नदी मे वह स्थान जहाँ पानी गहरा हो। नदी के अदर का गहरा गड्ढा। पाल। जैसे—काली-दह। २ पानी का कुड। हौज।
स्त्री० =दाह (जलन)।
वि० [स० दश से फा०] नौ और एक। दस।

दहक—स्त्री० [हि० दहकना] १ दहकने की क्रिया या भाव। २. आग की लपट। धधक। ३. जलन। दाह। ४ पश्चात्ताप या उसके कारण होनेवाली लज्जा।

दहकन—स्त्री० [हि० दहकना] दहकने की क्रिया या भाव। दहक।

दहकना—अ० [स० दहन] १ आग का इस प्रकार जलना कि लपट ऊपर उठने लगे। धधकना। २ तापमान के अत्यधिक बढने के कारण शरीर का जलने लगना। तपना। ३ दु खी या सतप्त होना।

दहकान—पु० [फा०] १ देहात या गाँव का रहनेवाला व्यक्ति। २ किसान। ३ मूर्ख व्यक्ति।

दहकाना—स० [हि० दहकना] १ आग या और कोई चीज दहकने अर्थात् अच्छी तरह जलने मे प्रवृत्त करना। इस प्रकार जलाना कि लपटें निकलने लगे। जैसे—कोयला या लकडी दहकाना। २ उत्तेजित करना। भडकाना।
सयो० क्रि०—देना।

दहकानियत—स्त्री० [फा०] दहकान होने की अवस्था या भाव। गँवारपन।

दहकानी—पु० [फा०] दहकान।
वि० दहकानो या गँवारो की तरह का।

दहगी—स्त्री० [हि० दाह+आग] गरमी। ताप।

दहड-दहड़—क्रि० वि० [स० दहन या अनु०] (आग की लपटो के सबध मे) दहड-दहड शब्द करते हुए।

दहदल†—स्त्री० =दलदल।

दहन—पु० [स०√दह् (जलना, जलाना)+ल्युट्—अन] [वि० दहनीय, दह्यमान] १. जलने की-क्रिया या भाव। दाह। जैसे—लका-दहन। २ [√दह+ल्यु—अन्] अग्नि। आग। ३. एक रुद्र का नाम। ४. ज्योतिष मे एक योग जो पूर्वाभाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद और रेवती नक्षत्रो मे शुक्र ग्रह के आने पर होती है। ५ उक्त के आधार पर तीन की सख्या। ६ कृत्तिका नक्षत्र। ७ क्रूर, क्रोधी और दुष्ट स्वभाववाला मनुष्य। ८ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ९ भिलावाँ। १०. कबूतर।
†वि० १. जलानेवाला। २. नष्ट करनेवाला। (यौ० के अत मे) जैसे—त्रिपुरदहन।
पु० [फा०] मुँह। मुख।
†पु० [स० दैन्य] दीनता (पूरब)। उदा०—दहन मानै, दोष न जानै. ।—विद्यापति।
†पु० [?] कजा नाम की कँटीली झाडी या पौधा।

दहन-केतन—पु० [प० त०] धूम। धूआँ।

दहनर्क्ष—पु० [दहन-ऋक्ष, कर्म० स०] कृत्तिका नक्षत्र।

दहन-शील—वि० [ब० स०] जो जल्दी या सहज मे जलता या जल सकता हो।

दहना—स० [स० दहन] १ दहन करना। जलाना। २ बहुत अधिक दु खी या सतप्त करना। कुढाना या जलाना।
अ० १ दहन होना। जलना। २ बहुत अधिक दु खी या सतप्त होकर मन ही मन कुढना या जलना।
वि०=दाहिना।
अ० [हि० दह] नीचे बैठना। धँसना।
वि०=दाहिना।

दहनागुरु—पु० [दहन-अगुरु, च० त०] धूप।

दहनाराति—पु० [दहन-अराति, प० त०] पानी।

दहनि†—स्त्री० [हि० दहना] दहन होने अर्थात् जलने की क्रिया या भाव। २ जलन। ताप। ३ मन ही मन होनेवाला सताप। कुढन।

दहनीय—वि० [स०√दह्+अनीयर्] जलने या जलाये जाने के योग्य। जो जलाया जा सके या जलाया जाने को हो।

दहनोपल—पु० [दहन-उपल, च० त०] सूर्यकातमणि। सूर्यमुखी। आतशी शीशा।

दहपट—वि० [हि० दह=दहन+पट=समतल] १ गिराकर जमीन के बराबर किया हुआ। ढाया हुआ। ध्वस्त। २ चौपट, नष्ट या बरबाद किया हुआ। ३ कुचला, मसला या रौंदा हुआ।

दहपटना—स० [हिं० दहपट] १. ध्वस्त करना। ढाना। २ चौपट, नष्ट या बरबाद करना। ३ कुचलना। रौंदना।
†स०=डपटना। (क्व०)

दहबाट†—वि० [हिं० दह=दस+बाट=रास्ता] छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

दहबासी—पुं० [फा० दह=दस+बाशी (प्रत्य०)] दस सिपाहियों का नायक।

दहर—पु० [स०√दह् +अर] १. छोटा चूहा। चुहिया। २ छछूदर। ३ भाई। ४ बालक। लडका। ५ नरक। ६ वरुण।
वि० १ छोटा या हलका। २ कम। थोडा। ३ बारीक। महीन। सूक्ष्म। ४ गहन। दुर्बोध।
पु० [स० ह्लद (वर्ण-विपर्यय)] १ जलाशय के अदर का गहरा गड्ढा। दह। २ जल का कुड। हौज।

दहर-दहर—क्रि० वि०=दहड-दहड।

दहरना†—अ०=दहलना।
†स०=दहलाना।

दहराकाश—पुं० [स० दहर-आकाश, कर्म० स०] १. चिदाकाश। ईश्वर। २. हठयोग के अनुसार, हृदय मे स्थित वह छोटा सा अवकाश या स्थान जिसमे विशुद्ध आकाश व्याप्त है, और जिसमे निरतर अनाहत नाद होता रहता है।

दहरौरा—पु० [हिं० दही+बडा] [स्त्री० अल्पा० दहरौरी] १ दही मे पडा हुआ बडा। दही-बडा। २. एक तरह का गुलगुला।

दहल—स्त्री० [हिं० दहलना] १ दहलने की क्रिया या भाव। २ किसी बडे या विकट काम या चीज को देखकर मन मे उत्पन्न होनेवाला वह भय जो सहसा उस काम या चीज की ओर बढने न दे।

दहलना—अ० [स० दर=डर+हिं० हलना=हिलना] १. किसी बडे या विकट काम या चीज को देखकर इस प्रकार कुछ डर जाना कि वह काम करने अथवा उस चीज की ओर बढने का साहस न हो। इतना डरना कि आगे बढने की हिम्मत न हो। जैसे—शेर की दहाड या हाथी की चिंघाड सुनकर जी दहलना। २ भय से स्तभित होकर रुक जाना।
सयो० क्रि०—उठना।—जाना।
विशेष—इस क्रिया का प्रयोग स्वय व्यक्ति के लिए भी होता है और उसके कलेजे या जी के सबध मे भी। जैसे—सिपाही का दहलना, और सिपाही का कलेजा या जी दहलना।

दहला—पु० [फा० दह=दस+ला (प्रत्य०)] ताश या गजीफे का वह पत्ता जिस पर दस बूटियाँ हों। दस बूटियोंवाला ताश का पत्ता।
†पु०=थाँवला (वृक्ष का)।

दहलाना—स० [हिं० दहलना का स०] ऐसा काम करना जिससे कोई दहल जाय या डरकर आगे बढने से रुक जाय।
सयो० क्रि०—देना।

दहली—स्त्री०=दहलीज।

दहलीज—स्त्री० [हिं० देहरी या देहली का उर्दू रूप] द्वार के चौखट के नीचेवाली लकडी जो जमीन पर रहती है। देहरी। डेहरी। देहली।

दहशत—स्त्री० [फा० दह्शत] किसी भयकर या विकट आकृति, कार्य या पदार्थ को देखने पर होनेवाला ऐसा डर या भय जो आदमी का साहस छुडा दे। जैसे—शेर या साँप की दहशत बहुत जबरदस्त होती है।

दह-सनी—स्त्री० [फा० दह=दस+सन्=सवत्] ऐसा खाता या बही जिसमे दस-दस सनो (अर्थात् सवतो) के लेखे या हिसाब अलग-अलग लिखे हो या लिखे जाते हो।

दहा—पु० [स० दश से फा० दह] १ मुहर्रम मास के प्रारम्भिक दस दिन जिनमे मुसलमान ताजिया रखते और मातम करते हैं। २ ताजिया। ३ मुहर्रम का महीना।

दहाई—स्त्री० [फा० दह+आई (प्रत्य०)] १ गिनती मे दस होने की अवस्था, भाव या मान। जैसे—पाँच दहाई पचास। २ गिनती के विचार से लिखे हुए अको का दाहिनी ओर से (बाईं ओर से नहीं) दूसरा स्थान जिस पर लिखे हुए अक का मान उसकी अपेक्षा ठीक दस गुना अधिक माना जाता है। जैसे—१२६ मे का ६ इकाई के स्थान पर, २ दहाई के स्थान पर और १ सैंकडे के स्थान पर है।

दहाड़—स्त्री० [अनु०] १ दहाडने की क्रिया या भाव। २. शेर के जोर से गरजने का शब्द। ३. जोरो की ऐसी चिल्लाहट जो दूसरो को डरा दे।

दहाड़ना—अ० [हिं० दहाड+ना (प्रत्य०)] १ शेर का जोर से शब्द करना। २ इस प्रकार जोर से चिल्लाना कि लोग डर जायँ।

दहाना—पु० [फा० दहान] १ किसी चीज का मुँह विशेषत चौडा और बडा मुँह। २ मशक का मुँह। ३ घोडे की लगाम जो उसके मुँह मे रहती है। ४. भिश्ती की मशक का मुँह। ५ पनाला। मोरी। ६ दे० 'मुहाना' (नदी का)।

दहार†—पु० [अ० दयार=प्रदेश] १ प्रात। प्रदेश। २. गाँव के आस-पास की भूमि।
स्त्री०=दहाड।

दहिऔरी†—स्त्री०=दहरौरी।

दहिंगल—पु० [देश०] कीडे-मकोडे खानेवाली एक छोटी चिड़िया जिसके परो पर सफेद और काली लकीरें होती है। यह रह-रहकर अपनी पूँछ ऊपर उठाया करती है।

दहिजरा†—वि० १ =दारी-जार। २ =दाढी-जार।

दहिजार†—वि० १ =दारी-जार। २ =दाढी-जार।

दहिना—वि०=दाहिना।

दहिनावर्त्त—वि०=दक्षिणावर्त्त।

दहिने—अव्य० =दाहिने।

दहियक—पु० [फा० दह=दस] दशमाश। दसवाँ भाग या हिस्सा।

दहियल†—पु०=दहला।

दही—पु० [स० दधि] दूध मे जामन लगाकर जमाये जाने पर उसका तैयार होनेवाला रूप जो थक्के की तरह होता है।
पद—दही का तोड़=दही का वह पानी जो उसे कपडे मे बाँधकर रखने पर निकलता है।
मुहा०—**दही-दही करना**=कोई चीज देने या बेचने के लिए चारो ओर घूम-घूमकर लोगो से उसे लेने के लिए कहते फिरना।

दहीला†—वि० [सं० दाह] [स्त्री० दहीली] १. जला या जलाया हुआ। २ परम दुखित। सतप्त। उदा०—तातै नहिन काम-दहीली।—सूर।

दहुँ*—अव्य० [सं० अथवा] १ अथवा। या। किंवा। २ कदाचित्। शायद।
वि० [सं० दश] पुं० हिं० दह (दस) का समष्टि-वाचक रूप। दसों। उदा०—बिनु चरनन को दहुँ दिसि धावै बिनु लोचन जग सूझै।—कबीर।

दहेंगर—पुं० [हिं० दही+घड़ा] दही रखने का घड़ा या मटका।

दहेंड़ी—स्त्री० [हिं० दही+हाँडी] दही रखने की हाँडी। उदा०—कहै दहेड़ी जनि धरै, जनि तू लेहि उतार।—बिहारी।

दहेज—पुं० [अ० जहेज़] कन्या-पक्ष की ओर से विवाह के अवसर पर कन्या को दिया जानेवाला वह धन और वस्तुएँ जो वह अपने साथ ससुराल ले जाती है। दायजा।

दहेला—वि० [हिं० दहना+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २ दुःखी। संतप्त। दहीला।
वि० [?] १ भीगा हुआ। आर्द्र। २ ठिठुरा या सिकुड़ा हुआ। ३. जिसने किसी रस का अनुभव या भोग किया हो। उदा०—जिनकी मति की देह दहेली।—केशव।

दहोतरसौ—पुं० [सं० दशोत्तरशत] एक सौ से दस ऊपर; अर्थात् एक सौ दस।

दह्य—वि० [सं० दाह्य] जो जल सकता या जलाया जा सकता हो। (कम्बस्टिबल)

दह्यमान—वि० [सं०√दह्+शानच्] जो जल रहा हो। जलता हुआ।

दह्यौ†—पुं०=दही।

दाँ—अ० [सं० दा (प्रत्य०) जैसे, एकदा] दफा। बार। बारी।
वि० [फा०] जाननेवाला। ज्ञाता। (यौ० के अंत में) जैसे—फारसी-दाँ=फारसी भाषा जाननेवाला।

दाँई—वि०=दाई।

दाँग—स्त्री० [फा०] १ छः रत्ती की तौल। २ किसी चीज का छठा भाग। ३ ओर। दिशा।
पुं० [हिं० डूंगर] १ टीला। २ पहाड़ की चोटी।
पुं० [हिं० डंगा ?] नगाड़ा।

दाँगर—वि०, पुं०=डाँगर।

दाँगी—स्त्री० [सं० दंडक=डंडा] जुलाहों की कंघी में लगी रहनेवाली लकड़ी।

दाँजा—स्त्री० [सं० उदाहार्य?] १ तुलना। बराबरी। २. स्पर्धा। होड़।

दांड़—वि० [सं० दण्ड+अण्] दंड से संबंध रखनेवाला। दंड का।

दांडक्य—पुं० [सं० दण्डक+ष्यञ्] 'दंडक' होने की अवस्था या भाव। (दे० 'दंडक')

दाँडना—स० [सं० दंडन] १ दंड या सजा देना। २ अर्थ-दंड या जुरमाना लगाना।

दांडाजिनिक—पुं० [सं० दण्डाजिन+ठञ्—इक] वह जो दंड और अजिन धारण करके अपना अर्थ-साधन करता फिरे। साधु के वेष में लोगों को धोखा देने या ठगनेवाला व्यक्ति।

दाँड़ा-मेड़ा—पुं०=डाँडामेड़ा।

दांडिक—वि० [सं० दण्ड+ठक्—इक] दंड देनेवाला।
पुं० जल्लाद।

दाँड़ी—स्त्री०=डाँड़ी।

दाँत—पुं० [सं० दंत, प्रा० दंद] १ अधिकतर रीढ़वाले प्राणियों के मुँह में नीचे और ऊपर की अर्ध-चंद्राकार पंक्तियों में के वे छोटे-छोटे अंग जो हड्डियों की तरह के और अंकुर के रूप में उठे हुए होते हैं और जिनसे वे काटने, खाने, चबाने जमीन खोदने, आदि का काम लेते हैं।
विशेष—कुछ रीढ़वाले प्राणी ऐसे भी होते हैं जिनके गले, तालू या पेट में उक्त प्रकार के कुछ अंग या रचनाएँ होती हैं।
२. मानव जाति के बालकों और वयस्कों के जबड़ों में मसूड़ों के साथ जुड़े हुए वे उक्त अंकुर या अंग जिनकी संख्या प्रायः ३२ (१६ नीचे और १६ ऊपर) होती है; और जिनसे खाने-चबाने आदि के सिवा कुछ वर्णों के उच्चारण में भी सहायता मिलती है।
विशेष—अनेक मुहावरों के प्रसंगों में 'दाँत' कोई चीज पाने या लेने, क्रोध, दीनता, प्रसन्नता आदि प्रकट करने अथवा किसी को कष्ट या हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति के भी प्रतीक अथवा सूचक होते हैं।
मुहा०—दाँत उखाड़ना=(क) मसूड़े से दाँत निकालकर अलग करना। (ख) किसी पर ऐसा आघात या प्रहार करना अथवा उसे दंड देना कि वह फिर कोई उपद्रव या दुष्टता करने के योग्य न रह जाय। (किसी से) दाँत काटी रोटी होना=इतनी अधिक घनिष्ठ मित्रता या मेल-जोल होना कि एक दूसरे के साथ बैठकर एक थाली में भोजन करते हों। दाँत काढ़ना=दाँत निकालना। (देखें नीचे) दाँत किरकिराना=कुछ खाने के समय दाँतों के नीचे कंकड़ी, रेत आदि पड़ने के कारण भोजन चबाने में बाधा होना। दाँत किरकिरे होना=प्रतियोगिता, विरोध आदि में कष्ट भोगते हुए बुरी तरह से विफल होना। (किसी के पास) दाँत कुरेदने को तिनका तक न होना=सर्वस्व नष्ट हो जाने के कारण बिल्कुल कंगाल हो जाना। (किसी के) दाँत खट्टे करना=किसी को प्रतियोगिता, लड़ाई, विरोध आदि में बुरी तरह से परास्त करना। बुरी तरह से पूरा हराना। (किसी चीज पर) दाँत गड़ाना=कोई चीज अपने अधिकार में करने या पाने के लिए निरंतर उस पर दृष्टि लगाये रहना। दाँत चबाना=दाँत पीसना। (देखें नीचे) दाँत टूटना=(क) दाँत का अपने स्थान पर से निकलकर अलग होना। (ख) बुढ़ापा या वृद्धावस्था आना। (ग) किसी को कष्ट देने या हानि पहुँचाने की शक्ति से रहित या हीन होना। (किसी के) दाँत तोड़ना=किसी को ऐसी स्थिति में पहुँचाना कि वह कष्ट देने या हानि पहुँचाने के योग्य न रह जाय। (अपने) दाँत दिखाना=तुच्छता और निर्लज्जतापूर्वक हँसना। दाँत निकालना। (किसी को) दाँत दिखाना=इस प्रकार क्रोध प्रकट करना मानो काट ही लेंगे या खा ही जायँगे। (पशुओं के) दाँत देखना=घोड़े, बैल आदि की अवस्था या उमर का अंदाज करने के लिए उनके दाँत गिनना। दाँत निकालना=ओछेपन से या निर्लज्जतापूर्वक हँसना। (किसी के आगे या सामने) दाँत निकालना=(क) बहुत ही दीन बनकर कोई प्रार्थना या याचना करना। गिड़गिड़ाना। (ख) तुच्छतापूर्वक अपनी अयोग्यता, असमर्थता या हीनता प्रकट करना। दाँत निपोरना=दाँत निकालना। (देखें ऊपर) दाँत पीसना=बहुत अधिक क्रोध में आकर दाँतों पर दाँत रखकर ऐसी मुद्रा दिखलाना कि मानो खा या चबा ही

जायँगे। **दांत बनवाना**=गिरे या टूटे हुए दाँतो के स्थान पर नये नकली दाँत बनवाकर लगवाना। **दांत बैठना या बैठ जाना**=पक्षाघात, मिरगी, मूर्छा आदि रोगो के आक्रमण की दशा मे पेशियो की स्तब्धता के कारण दाँतो की ऊपर और नीचेवाली पक्तियो का परस्पर इस प्रकार मिल या सट जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। नीचे ऊपर के जबडो का सट जाना। **दांत मसमसाना या मिसना**=दाँत पीसना। (देखें ऊपर) **(किसी चीज पर) दांत लगना**=(क) दात चुभने का घाव या निशान होना। (ख) (किसी चीज पर) दाँत गडना। (देखें ऊपर) **(किसी चीज पर) दांत लगाना**= (क) दाँत गडाना या धँसाना। (ख) कोई चीज पाने के लिए उसकी घात या ताक मे लगे रहना। **दांत से दांत बजना**=बहुत अधिक सरदी लगने पर दाढो का इस प्रकार काँपना कि नीचे और ऊपर के दाँत आपस मे हलका कट-कट शब्द करते हुए टकराने या बजने लगें। **(किसी चीज पर) दांत होना**=कोई चीज पाने या लेने की बहुत अधिक इच्छा होना। **(किसी व्यक्ति पर) दांत होना**=(क) बदला चुकाने आदि के उद्देश्य से किसी पर क्रूर दृष्टि होना और उसे हानि पहुँचाने की घात या ताक मे रहना या होना। (ख) किसी से अनुचित लाभ उठाने की ताक मे होना। **दांतों उँगली काटना या दबाना**=बहुत अधिक अचरज मे आना। चकित हो जाना। दग रह जाना। **(किसी के) दांतों चढना**=ऐसी स्थिति मे होना कि कोई हर दम कोसता, गालियाँ देता या बुरा मानता रहे। **दांतों तले उँगली दबाना**=दाँतो उँगली काटना या दबाना। (देखें ऊपर) **दांतों धरती पकड़कर**=(क) अत्यत दीनता और नम्रतापूर्वक। (ख) अत्यत कष्ट और विवशता या सकीर्णता से। **(बच्चे का) दांतो पर आना या होना**=उस अवस्था को पहुँचना जिसमे दाँत निकलनेवाले हो या निकलने लगे हो। **दांतों पर मैल तक न होना**=अत्यत निर्धन होना। कगाल या बहुत गरीब होना। **दांतो पसीना आना**=इतना अधिक परिश्रम होना कि मानो दाँतो तक मे पसीना आ गया हो। **(किसी का) दांतो में जीभ की तरह होना**=उसी प्रकार सब ओर से विरोधियो या शत्रुओ से घिरे रहना जिस प्रकार जीभ हर तरफ दाँतो से घिरी रहती है। **दांतो में तिनका गहना, पकडना या लेना**=दया के लिए उसी प्रकार गौ बनकर अर्थात् दीन-भाव से प्रार्थना या याचना करना जिस प्रकार गौ मुँह मे तिनका लेकर सामने आती है। **(कोई चीज) दांतो से उठाना या पकड़ना**=बहुत कजूसी से बचाकर इकट्ठा या सचित करना। **(किसी के) तालू में दांत जमना**=दुर्भाग्य के कारण किसी का इस प्रकार आवश्यकता से अधिक उद्दड, क्रूर या स्वेच्छाचारी होना कि लोगो को उसके पतन या विनाश के दिन पास आते हुए जान पडें।

३ कुछ विशिष्ट पदार्थो मे उक्त आकार-प्रकार के वे अश जो एक पक्ति मे अकुरो के रूप मे उठे, उभरे या निकले हुए होते है। ददाना। दाँता। जैसे—आरी या कघी के दाँत, कुछ पौधो के पत्तो मे दोनो ओर निकले हुए दाँत, यत्रो मे के चक्करो या पहियो के दाँत। ४. उक्त प्रकार का कोई चिह्न या रूप।

मुहा०—(किसी वस्तु का) दांत निकालना=जोड, तल, सीअन का इस प्रकार उखड, उधड या फट जाना कि जगह-जगह दाँत की तरह के चिह्न दिखाई देने लगे। जैसे—इस जूते ने तो दो ही महीनो मे दाँत निकाल दिये।

दांत—वि० [स० दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। २ वश मे किया या लाया हुआ। ३ जिसने इद्रियो को वश मे कर लिया हो। जितेंद्रिय।
वि० [स० दन्त से] १ दाँत का। दाँत-सबधी। २ दाँत का बना हुआ।
पुं० १. मैनफल। २ पहाड के ऊपर का जलाशय या बावली। ३ विदर्भ के राजा भीमसेन के दूसरे पुत्र जो दमयती के भाई थे।

दांत-घुंघनी—स्त्री० [हिं० दाँत+घुँघनी] पोस्ते के दाने की घुँघनी जो बच्चे का पहला दाँत निकलने पर बाँटी जाती है।

दांतना—अ० [हिं० दाँत] १ दाँतो से युक्त होना। २ जवान होना। ३. किसी अस्त्र के ताँतो का कुठित होना।

दांतली—स्त्री० [हिं० डाट] डाट। काग।

दांता—पु० [हिं० दाँत] दाँत के आकार का बडा और नुकीला सिरा। ददाना।
मुहा०—दांता पड़ना=किसी हथियार की धार में गुठले होने के कारण कही कुछ उभार और कही कुछ गड्ढे हो जाना, जिससे वह ठीक काम करने के योग्य नही रह जाता।

दांता—स्त्री० [स० दान्त्,√दम् (दमन)+क्त+टाप्] एक अप्सरा का नाम। (महाभारत)

दांता-किटकिट—स्त्री० [हिं० दाँत+किटकिट (अनु०)] १ प्राय: होती रहनेवाली कहा-सुनी या जबानी लडाई। कलह।

दांता-किलकिल—स्त्री०=दाँता-किटकिट।

दांति—स्त्री० [सं०√दम् (वश मे करना)+क्तिन्], [वि० दात] १. इद्रियो को वश मे रखना। इद्रियनिग्रह। २ अधीनता। वश्यता। ३ नम्रता। विनय।

दांतिक—वि० [स० दत+ठक्—इक] १ दाँत का बना हुआ। २ हाथी-दाँत का बना हुआ।

दांतिया—पु० [?] रेह का नमक जो पीने के तबाकू मे उसे तेज करने के लिए मिलाया जाता है।

दांती—स्त्री० [स० दात्री] घास, फसल आदि काटने की हँसिया।
स्त्री० [?] १ किनारे पर का वह खूँटा जिसमे रस्से से नाव बाँधी जाती है। २ काली भिड। ३ छोटा दरी।
†स्त्री० [हिं० दाँत] दतावलि। बत्तीसी।
मुहा०—दांती बैठना या लगना=दाँत बैठना या बैठ जाना। (दे० 'दाँत' के अतर्गत मुहा०)

दांना—स० [स० दमन] १ कटी हुई फसल के डठलो से दाने या बीज अलग करना। २ उक्त काम के लिए डठलो को बैलो मे रौंदवाना। दँवरी करना।

दांपत्य—वि० [स० दम्पती+यञ्] वि० दपती-सबंधी। दपती या पति और पत्नी मे होनेवाला। जैसे—दांपत्य प्रेम।
पु० १ दपती होने की अवस्था या भाव। २ एक प्रकार का अग्निहोत्र जो दपती अर्थात् पति और पत्नी दोनो मिलकर करते है।

दांभ—वि० [स० दम्भ+अण्] दाभिक। (दे०)

दांभिक—वि० [स० दम्भ+ठक्—इक] १ जिसे दभ हो। दभ करनेवाला। २ अभिमानी। घमडी। ३ ठग। वचक। ४. पाखडी। ५ धोखेबाज।

पु० बगला (पक्षी)।
दाँयँ†—स्त्री० [अनु०] बदूक, तोप आदि छूटने का शब्द।
†स्त्री=दँवरी।
दाँयाँ†—वि०=दाहिना।
दाँव—पुं० [स० दा (दाच्), जैसे—एकदा] १ दफा। वार। मरतबा। २ क्रम, परम्परा, योग्यता आदि की दृष्टि से कोई काम करने के लिए आनेवाली पारी। वारी। जैसे—जब हमारा दाँव आवेगा, तव हम भी समझ लेंगे। ३ खेल मे प्रत्येक खेलाडी के खेलने का अवसर या समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की वारी।
मुहा०—**दाँव देना**=लडको का खेल मे हारने पर नियत दड भोगना या परिश्रम करना। **दाँव पूरना**=(क) ठीक तरह से वाजी खेलकर अपना पक्ष निभाना। (ख) अपना कर्त्तव्य पूरा करना। उदा०—अव की वार जो होय पुकारा कर्हाह कवीर ताको पूर दाँव। —कवीर। **दाँव लेना**=खेल मे हारनेवाले से नियत दड भोगवाना या परिश्रम कराना।
४ जूए के खेलो मे, कौडी, पाँसे आदि के पडने का वह रूप या स्थिति जिससे किसी खेलाडी या पक्ष की जीत होती है। हाथ।
मुहा०—(किसी का) **दाँव कहना**=किसी के कथन का यो ही समर्थन करना। हाँ मे हाँ मिलाना। उदा०—रहिमन जो रहिवो चहै, कहै वाहि कै दाँव।—रहीम। (अपना) **दाँव चलना**=खेल मे अपनी पारी या वारी आने पर कौडी, गोटी, पत्ता या पाँसा आगे वढाना, फेंकना या सामने रखना। जैसे—अव तुम्हारी वारी है, तुम अपना दाँव चलो। **दाँव पर (कुछ) रखना या लगाना**=(क) जीत-हार के लिए कुछ धन अथवा कोई वस्तु सामने रखना। किसी चीज की वाजी लगाना। जैसे—(क) उसने ताव मे आकर सौ रुपए का एक नोट (या सोने का छल्ला) दाँव पर रख (या लगा) दिया। (ख) कोई ऐसा जोखिम या साहस का काम करना जिसका परिणाम या फल विलकुल अनिश्चित हो। जैसे—इस रोजगार (या सौदे) मे उन्होने अपनी सारी सपत्ति दाँव पर रख दी थी। **दाँव फेंकना**=अपनी वारी आने पर कौडी या पाँसा फेंकना।
५ किसी काम या वात के लिए अनुकूल या उपयुक्त अवसर, समय या स्थिति। ठीक जगह, मौका या हालत। जैसे—वहाँ से उसके वच निकलने का कोई दाँव नही रह गया था।
मुहा०—**दाँव चूकना**=ठीक अवसर या मौके पर आवश्यक या उचित काम करने से रह जाना या वचित होना। **दाँव ताकना**=अवसर या मौके की ताक मे रहना। **दाँव पड़ना**=अनुकूल या उपयुक्त अवसर प्राप्त होना। उदा०—पूरव पुन्यनि दाँव पर्यौ अव राज करी ··· ·· ···। —कवीर। **दाँव लगना**=उपयुक्त अवसर या मौका हाथ आना।
६. अपना काम निकालने का अच्छा ढग या युक्ति। 'सोच-समझकर निकाली हुई तरकीव।
मुहा०—(किसी के) **दाँव पर चढना**=किसी की युक्ति के जाल मे इस प्रकार पडना या फँसना कि उसका उद्देश्य सिद्ध हो जाय। **(किसी को) अपने दाँव पर चढाना या लाना**=किसी को अपनी युक्ति के जाल मे इस प्रकार फँसाना कि सहज मे उससे काम निकाला जा सके। जैसे—कुश्ती मे हर पहलवान अपने प्रतिद्वद्वी को दाँव पर लाने की तरकीव करता है। (किसीके) **दाँव में आना**=(किसी के) दाँव पर चढना। (देखे ऊपर)
७ अपना काम निकालने का ऐसा ढग या युक्ति जिसमे कुछ कुटिलता या चालवाजी हो। कपट या छल से भरी हुई तरकीव। चालाकी।
मुहा०—(किसी के साथ) **दाँव करना या खेलना**=चालाकी से भरी हुई तरकीव करना। चालवाजी या धूर्तता करना। (किसी से) **दाँव लेना**=जिसने वुरा व्यवहार किया हो, उपयुक्त अवसर आने पर उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करना। वदला चुकाना, निकालना या लेना।
विशेष—यद्यपि इस शब्द का उच्चारण सदा 'दाँवँ' ही होता है; फिर भी लिखने मे 'दाँव' रूप ही प्रशस्त और शिष्ट-सम्मत है।
दाँवना—स०=दाँना।
दाँवनी†—स्त्री० १ =दावनी (गहना)। २ =दँवरी। ३.=दाँवरी।
दाँवरी—स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। डोरी।
स्त्री०=दँवरी।
दा—अव्य० [हि०] दफा। वार (यौ० के अत मे) जैसे—एकदा।
प्रत्य० [स०] समस्त पदो के अत मे, देनेवाला। जैसे—धनदा, पुनदा।
पु० [अनु०] सितार का एक वोल। उदा०—दा दि दाडा इत्यादि।
विभ० [प०] 'का' विभक्ति का पजावी रूप। जैसे—मिट्टी दा पुतला।
दाइ*—पु० १ =दाय। २ =दाँव।
दाइज—पुं०=दायजा (दहेज)।
दाइजा—पु०=दायजा।
दाई—स्त्री० [स० दाक् या दा] दफा। वार।
वि० हि० 'दायाँ' (दाहिना) का स्त्री० रूप।
स्त्री० =दाँज (वरावरी)। जैसे—देखो तुम्हारी दाई का लडका कैसा काम करता है।
दाई—स्त्री० [स० धात्री, मि० फा० दाय] १ दूसरे के वच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री। धाय। दाया। २ वच्चो की देख-रेख करने और उन्हे खेलानेवाली दासी या नौकरानी। ३ घर का चौका-वरतन तथा इसी तरह के दूसरे छोटे काम करनेवाली नौकरानी। मजदूरनी। ४ वह स्त्री जो प्रसव-काल मे वच्चा जनाने का काम जानती और करती है। प्रसूता की उपचारिका।
मुहा०—**दाई से पेट छिपाना**=अच्छी तरह जाननेवाले से कोई वात छिपाना। ऐसे व्यक्ति से कोई वात छिपाना जो सारा रहस्य जानता हो।
†स्त्री० [हि० दादी] १. पिता की माता। दादी। २. वडी-बूढी स्त्रियो के लिए सवोधन।
वि० देनेवाला। जैसे—सुखदाई।
दाउँ*—पु०=दाँव।
दाउ*—स्त्री०=दावानल।
पु०=दाँव।
दाउनी*—स्त्री०=दावनी (सिर पर का गहना)।
दाउर*—पु० [स० दारु] कपडा धोने का काठ का डडा। पिटना।
दाऊ—पु० [स० देव] १. वडा भाई। २ वलदेव या वलराम (कृष्ण के वडे भाई)।
दाऊद—पु० [अ०] एक पैगवर जिनका स्वर वहुत मधुर था।

दाउदखानी—पु० [फा०] १ एक प्रकार का चावल। २ एक प्रकार का वढिया गेहूँ। दाऊदी। गगाजली।

दाऊदिया—पु० [अ० दाऊद] १. एक प्रकार का गेहूँ। दाऊदी। २ गुलदावदी का फूल। ३ एक प्रकार की आतिशवाजी जिसमे उक्त फूल के सदृश चिनगारियाँ निकलती हैं। ४ एक प्रकार का कवच।

दाऊदी—पु० [अ० दाऊद] १ एक प्रकार का वढिया जाति का गेहूँ जिसका छिलका वहुत नरम तथा सफेद रग का होता है। २. एक प्रकार का नरम छिलकेवाला वढिया आम।

दाक—पु० [स०√दा (देना)+क, कलोपाभाव] १ यजमान। २ दाता।

दाक्ष—वि० [स० दक्ष+अण्] दक्ष-सवधी।

पु० दक्षिण दिशा।

दाक्षायण—वि० [स० दाक्षि+फक्—आयन] १ दक्ष-सवधी। दक्ष का। २ दक्ष से उत्पन्न या उसके वश का। ३ दक्ष के गोत्र का।

पु० १ सोना। स्वर्ण। २ सोने की मोहर। अशरफी। ३ सोने का वना हुआ गहना। ४. एक यज्ञ जो वैदिक काल मे दक्ष प्रजापति ने किया था।

दाक्षायणी—स्त्री० [स० दक्ष+फिञ्—आयन, +ङीप्] १. दक्ष की कन्या। सती। २ दुर्गा। ३. कश्यप की पत्नी अदिति। ४ अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि नक्षत्र। ५. दती वृक्ष।

दाक्षायणी-पति—पु० [प० त०] चद्रमा।

दाक्षायण्य—पु० [स० दाक्षायणी+यत्] सूर्य।

दाक्षि—पु० [स० दक्ष+इञ्] दक्ष का पुत्र।

दाक्षि-कथा—स्त्री० [प० त०] वाह्लीक देश।

दाक्षिण—वि० [सं०] दक्षिण दिशा मे होनेवाला। दक्षिण-सवधी।

पु० एक होम का नाम। (शतपथब्राह्मण)

दाक्षिणक—पु० [स० दक्षिणा+वुञ्—अक] वह वध जो दक्षिणा की कामना से इष्टापूर्ति आदि कर्म करने पर प्राप्त होता है।

दाक्षिणात्य—वि० [स० दक्षिणा+त्यक्, नि० आदि पद वृद्धि] दक्षिण दिशा मे होनेवाला। दक्षिणी।

पु० १. दक्षिण भारत। २. उक्त प्रदेश का निवासी। ३. उक्त प्रदेश मे होनेवाला नारियल।

दाक्षिणिक—वि० [स० दक्षिण+ठक्—इक] दक्षिण-सवधी। दक्षिणी।

दाक्षिण्य—वि० [स० दक्षिण+ष्यञ्] दक्षिण-सवधी।

पु० १. दक्षिण होने की अवस्था या भाव। २ अनुकूल या प्रसन्न आदि होने की अवस्था या भाव। ३ दूसरे को प्रसन्न करने का भाव अथवा योग्यता। (साहित्यशास्त्र)

दाक्षी—स्त्री० [स० दाक्षि+ङीप्] १ दक्ष की कन्या। २. पाणिनि की माता का नाम।

दाक्षेय—पु० [स० दाक्षी+ढक्—एय] पाणिनि मुनि।

दाक्ष्य—पु० [स० दक्ष+ष्यञ्] दक्षता।

दाख—स्त्री० [स० द्राक्षा] १. अगूर नामक लता और उसका फल। २. मुनक्का। ३ किशमिश।

वि०=दक्ष। उदा०—ताको विहित वखानही, जिनकी कविता दाख। —मतिराम।

दाखना—स० १=दिखाना। २.=देखना।

दाख-निर्विषी—स्त्री० [हिं० दाख+स० निर्विषी] हर-जेवडी नामक झाडी जिसकी पत्तियो और जडो का औषध के रूप मे व्यवहार होता है। पुरही।

दाखिल—वि० [फा०] १ जो किसी विशिष्ट क्षेत्र या स्थान की सीमा लाँघ कर उसमे प्रविष्ट हो चुका हो। २ कही आया या पहुँचा हुआ। ३. जो कही दिया या पहुँचाया गया हो। (फाइल्ड)

दाखिल खारिज—पु० [अ०] किसी वस्तु पर से किसी का स्वामित्व वदलने पर पुराने स्वामी का नाम काटकर नये स्वामी का नाम सरकारी कागज-पत्रो पर चढाया जाना।

दाखिल दफ्तर—वि० [फा० दाखिल] (निवेदन, याचना आदि सवधी पत्र) जो विना किसी प्रकार का निर्णय या विचार किये, परतु रक्षित रखने के लिए दफ्तर के कागज-पत्रो, नत्थियो आदि मे रख दिया गया हो।

दाखिला—पु० [फा० दाखिल] १. किसी व्यक्ति के कही दाखिल या प्रविष्ट होने की क्रिया या भाव। २ नियत शुल्को आदि के अतिरिक्त वह धन जो पहले-पहल किसी सस्था मे दाखिल या सम्मिलित होकर उसके सदस्यो मे नाम लिखाने के समय अथवा विद्यालयो आदि मे भरती होने के समय विद्यार्थियो को देना पडता है। प्रवेश-शुल्क। ३ वह पत्र जो कही कुछ चीजे दाखिल या जमा करने पर उसके प्रमाण के रूप मे लिखा जाता है और जिन पर उन चीजो का विवरण या सूची और दाखिल करनेवाले का नाम, पता आदि वातें लिखी रहती है।

दाखिली—वि० [अ०] १ आतरिक। भीतरी। अतरग। 'खारिजी' का विपर्याय। २ दिली। हार्दिक।

दाखी†—स्त्री० =दाक्षी।

दाग—पु० [स० दाह] १. जलाने की क्रिया या भाव। दाह। २ हिंदुओं मे मृतक का शव जलाने की क्रिया या भाव।

मुहा०—दाग देना=मृतक का दाह कर्म करना। मुरदे का शव जलाना।

३ जलने के कारण अग या वस्तु पर पडनेवाला चिह्न या दाग। ४. जलन। ताप। ५ ईर्ष्या। डाह।

पु० [फा० दाग] [वि० दागी] १ किसी वस्तु के तल पर वना या लगा हुआ वह चिह्न जो उसका सौन्दर्य कम करता या घटाता हो। धव्वा। जैसे—धोती या कमीज पर लगा हुआ स्याही या रग का दाग।

पद—सफेद दाग। (देखें)

२ किसी प्रकार के भीतरी विकार का सूचक ऐसा चिह्न जो किसी वस्तु के वाहरी तल पर दिखाई देता हो। जैसे—इस मेव पर सडने का दाग है। ३ मुगल शासन-काल की एक प्रथा जिसके अनुसार सैनिको के घोड़ो के पुट्ठो पर, पहचान के लिए गरम लोहे से जलाकर चिह्न या निशान वना दिया जाता था। ४ चरित्र, यश आदि पर (अपराध, दोष आदि के कारण) लगनेवाला कलक। धव्वा। लाछन। जैसे—उसने अपने खानदान पर दाग लगाया है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

५ किसी प्रकार की दुर्घटना आदि के कारण मन को होनेवाला ऐसा कष्ट या दु:ख जो जल्दी दूर न हो सके या भुलाया न जा सके। जैसे—जवान लडके के मरने का दाग।

पद—दागे जिगर=सतान का शोक।

दागदार—वि० [फा०] १. जिस पर किसी तरह का दाग या धब्बा लगा हो। २. जो किसी अपराध या दोष में दंडित या सम्मिलित हो चुका हो। ३ जिस पर कोई कलंक लगा या लग चुका हो।

दागना—स० [फा० दाग] १ किसी चीज का तल गरम लोहे आदि से उस प्रकार जलाना या झुलसना कि उस पर दाग पड़ जाय। जैसे—शरीर पर शंख, चक्र आदि की मुद्राएँ दागना।
विशेष—प्राय किसी को दंड या कष्ट देने, भूत-प्रेत की बाधा या यम-यातना आदि से बचाने के लिए यह क्रिया की जाती है।
२. तेजाब, दाहक औषध आदि से किसी घाव या फोड़े पर इस उद्देश्य से लगाना जिसमें उसका विषाक्त अंश जल जाय और इधर-उधर फैलने न पावे। ३ तोप, बंदूक आदि की प्याली में के बारूद में इसलिए आग लगाना कि उसके फल-स्वरूप गोली निकलकर अपने निशाने पर जा लगे। ४ आज-कल (यांत्रिक और रासायनिक प्रक्रियाओं में) चलनेवाली तोप, बंदूक आदि चलाना। ६. पहचान आदि के लिए किसी चीज पर कोई अंक, चिह्न या निशान बनाना। अंकित या चिह्नित करना। जैसे—बजाजी का कपड़े का थान दागना; अर्थात् उन पर मूल्य आदि अंकित करना। संयो० क्रि०—देना।

दाग बेल—स्त्री० [फा० दाग+हि० बेल] वे रेखाएँ या चिह्न जो किसी जमीन पर इमारत आदि की नींव खोदने के समय अथवा किसी प्रकार के विभाग सूचित करने के लिए बनाये या लगाये जाते है।

दागर†—वि० [हि दागना] १ नष्ट करनेवाला। २ दागदार।

दागल†—वि० [फा० दाग] दागदार। उदा०—अकबरिये, इकबार, दागल की सारी दुनी।—दुरसा जी।

दागी—वि० [फा० दाग] १. जिसपर किसी तरह का दाग या धब्बा लगा हो। २ जिसके ऊपर कोई ऐसा चिह्न हो जो भीतरी विकार, सड़न आदि का सूचक हो। जैसे—दागी फल। ३. जिस पर कोई कलंक या लाञ्छन लगा हो या लग चुका हो। ४ जिसे न्यायालय से कारावास का दंड मिल चुका हो। जो किसी अपराध में जेल की सजा भोग आया हो।

दाघ—पु०[स०√दह् (जलाना)+घञ्] १ गरमी। ताप। २ जलन। दाह।

दाज—पु० [?] १. अँधेरी रात। २. अधकार। अँधेरा।
†पु०=दहेज। (पश्चिम)
†स्त्री०=दाझ।

दाजन—स्त्री०=दाझन।

दाजना—अ०, स०=दाझना।

दाझ—स्त्री० [सं० दाह] जलन। ताप। उदा०—धूप दाझ तैं छाँह तकाऊं मति तरवर सचुपाऊं।—कबीर।

दाझन†—स्त्री० [सं० दग्ध] दाझने अर्थात् दग्ध करने की क्रिया या भाव।

दाझना—अ० [स० दग्ध या दाहन] १. जलना। २ ईर्ष्या या डाह करना। स० १. जलाना। २ बहुत अधिक दुःखी, पीड़ित या संतप्त करना।

दाझनि—स्त्री०=दाझन।

दाटक†—वि० [?] १ दृढ़। पक्का। २. बलवान्। बलिष्ठ। उदा०—दाटक अनड़ दट नह दीधो, दोयण घट गिर दाब दियों।—दुरसा जी। ३. पराक्रमी।

दाटना—स०=डाँटना।
अ० [?] जान पड़ता। प्रतीत होना।

दाड़क—पु० [स०√दल् (दलन करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. दाढ़। डाढ़। २ दाँत।

दाड़व—पुं० [?] पुराणानुसार काशी से दो योजन पश्चिम एक गाँव जिसमें कल्कि भगवान अधर्मी म्लेच्छों का नाश करने के उपरान्त शांति-पूर्वक निवास करेंगे।

दाड़स—पु० [हि० दाढ] एक प्रकार का साँप।
†पुं०=ढारस।

दाड़िब—पु० [स० दाडिम] अनार का वृक्ष और उसका फल।

दाड़िम—पु० [स०√दल् (भेदन)+घञ्, दाल+इमप्, ल—ड] १. एक प्रसिद्ध पौधा और उसका फल। अनार। २. इलायची।

दाड़िम-पुष्पक—पु० [ब० स०, कप्] रोहितक नामक वृक्ष। रोहेड़ा।

दाड़िम-प्रिय—पु० [ब० स०] शुक। तोता।

दाड़िमाष्टक—स्त्री० [दाड़िम-अष्टक, मध्य० स०] वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जिसमें अनार का छिलका तथा कुछ और चीजें पड़ती हैं।

दाड़िमीसार—पु०=दाड़िम।

दाड़ी†—स्त्री० [√दल् (भेदन)+घञ्+ङीप्] दे० 'दाड़िम'।
†स्त्री=दाढ़ी।

दाढ़—स्त्री० [स० दंष्ट्रा; प्रा० डड्ढा या स० दाढ़क] जबड़े के भीतर के मोटे चौखूँटे दाँत जो दोनों ओर दो-दो ऊपर नीचे होते है। चौभर।
मुहा०—दाढ़ गरम गरम होना=अच्छी-अच्छी चीजें अधिक मात्रा में खाने को मिलना।
†स्त्री०=दहाड़।

दाढ़ना—स०=दाहना (जलाना)।
†अ०=दहाड़ना।

दाढ़ा—पुं० [स० दाह] १. वन की आग। दावानल। २. अग्नि। आग। ३. जलाने के लिए लकड़ियों, पत्तों आदि का बनाया या लगाया हुआ ढेर। ४ गरमी। ताप। ५. जलन। दाह।
मुहा०—दाढ़ा फूँकना=बहुत अधिक जलन या दाह उत्पन्न करना।
पु० [हि० दाढ़ी] ऐसी बड़ी दाढ़ी जिसमें बहुत अधिक घने और लंबे बाल हों। बड़ी दाढ़ी।
†पु० = दाढ़।
†पु० = डाढ़ा।

दाढ़िका—स्त्री० [स० दाढ़ा+क+टाप्, इत्व] दाढ़ी।

दाढ़ी—स्त्री० [स० दाढ़िका] १ मनुष्यों में पुरुष जाति के लोगों की ठोढ़ी पर उगनेवाले बाल जो या तो मुँडवाकर साफ किये जाते हैं या बढ़ाकर बड़े बड़े किये जाते है।
मुहा०—दाढ़ी घुटवाना या बनवाना=दाढ़ी पर के बाल उस्तरे से मुँडवाना।
२. ठोढ़ी। चिबुक। ३ कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओं की ठोढ़ी पर के वे बाल जो प्रायः बढ़कर झूलने या लटकने लगते है। जैसे—बकरे की दाढ़ी।

दाढ़ीजार—पु० [हिं० दाढ़ी+जलना] स्त्रियो की एक गाली जो वे बहुत क्रुद्ध होने पर पुरुषो को देती है, और जिसका अर्थ होता है—जिसकी दाढी जलाई गई हो अथवा मुँह झुलसा या फूँका गया हो।
विशेष—कुछ लोग इसको स० 'दारी-जार' (अर्थात् दुश्चरित्रा स्त्री का यार और सगी-साथी) से व्युत्पन्न मानते हैं।

दाण†—पु० = दान।

दात*—पु० [स० दातव्य] १. दान के रूप मे शुभ अवसर पर किसी को दिया जानेवाला पदार्थ। २ दान।
†वि० = दाता।

दातन—स्त्री० = दातुन।

दातव्य—वि० [स०√दा (देना)+तव्यत्] १ जो दिया जाने को हो या दिया जा सकता हो। २ दान-सवधी। दान का। ३. जहाँ से दान रूप मे कुछ दिया जाता हो। जैसे—दातव्य औषधालय।
पु० १. दान। २ दानशीलता। ३. वह धन जो चुकाना या देना आवश्यक हो। (ड्यू) जैसे—कर या महसूल।

दाता (तृ)—वि० [स०√दा+तृच्] [स्त्री० दात्री] १ समस्त पदो के अत मे, देनेवाला। जैसे—सुखदाता। २ बहुत अधिक दान करनेवाला। दानशील।
पु० १ ईश्वर या परमात्मा जो सब को सब-कुछ देता है। २. बहुत बडा दानी व्यक्ति।

दातापन—पु० [स० दाता+हिं० पन] बहुत बडा दाता होने की अवस्था या भाव। दानशीलता।

दातार—वि० [स० दाता का बहु०] दाता। देनेवाला। बहुत दान देनेवाला। बहुत बडा दाता।

दाति—स्त्री० [स०√दा (दान)+क्तिच्] १ देने की क्रिया या भाव। २ वितरण। ३. किसी दूसरे स्थान से किसी के नाम आई हुई वस्तु उसे देना या पहुँचाना। (डिलिवरी)

दाती*—स्त्री० [हिं० 'दाता' का स्त्री०] देनेवाली।

दातुन—स्त्री० [हिं० दाँत+अवन (प्रत्य०)] १ किसी पेड की पतली नरम टहनी का वह टुकडा जिसका अगला सिरा कुचलकर दाँत साफ किये जाते है। २ दाँत और मुँह अच्छी तरह साफ करने की क्रिया।

दातुन—स्त्री० [स० दती] १. दती की जड। २ जमालगोटे की जड।
† स्त्री० = दातून।

दातृता—स्त्री० [स० दातृ+तल्+टाप्] दाता होने की अवस्था या भाव। दानशीलता।

दातृत्व—पु०]स० दातृ+त्व] दानशीलता। दातृता।

दातौन—स्त्री० = दतुवन।
स्त्री० = दातुन।

दात्यूह—पु० [स० दाति√ऊह् (वितर्क)+अण्] १ पपीहा। चातक। २. बादल। मेघ।

दात्योनि*—स्त्री० = दातुन।

दात्यौह—पु० [स० दात्यूह (पृषो० सिद्धि)] १. पपीहा। २ बादल।

दात्र—पु० [स० √दो (काटना)+ष्ट्रन्] [स्त्री० अल्पा० दात्री] घास, फल आदि काटने की दराती। दाँती। हँसिया।

दात्री—स्त्री० [स० दातृ+ङीप्] देनेवाली।
स्त्री० दराँती या हँसिया नामक औजार।

दात्व—पु० [स०√दा (दान)+त्वन्] १ दाता। २ यज्ञ का अनुष्ठान। ३. यज्ञ।

दाद—स्त्री० [स० दद्रु] एक प्रसिद्ध चर्म रोग जिसमे शरीर के किसी अग मे ऐसे चकत्ते पड जाते है, जिनमे बहुत खुजली होती है।
वि० [फा०] समस्त पदो के अत मे दिया हुआ। जैसे—खुदादाद।
स्त्री० १. इसाफ। न्याय।
क्रि० प्र०—चाहना।—देना।—माँगना।
२ न्याय के लिए की जानेवाली प्रार्थना। ३ न्यायपूर्वक (अर्थात् बिना किसी प्रकार के पक्षपात के) किसी द्वारा किये हुए किसी काम और उसके कर्ता की भी की जानेवाली प्रशसा। सराहना।
मुहा०—दाद देना=न्यायपूर्वक और बिना पक्षपात किये किसी की उक्ति, कार्य आदि की प्रशसा करना। दाद पाना= उचित अनुग्रह, न्याय, सत्कार आदि का पात्र या भाजन बनना। उदा०—सदा सर्वदा राज राम की सूर दादि तहँ पाई।—सूर।

दाद-ख्वाह—वि० [फा०] न्याय चाहनेवाला। फरियाद करनेवाला।

दादगर—वि० [फा०] न्याय करनेवाला।

दादनी—स्त्री० [फा०] १. वह जो दिया जाने को हो। दातव्य। २. वह धन जो किसी काम के लिए अग्रिम या पेशगी दिया जाय, विशेषत वह धन जो खेतिहरो को अनाज पैदा होने के पहले बनिया या महाजन इसलिए पेशगी देता है कि अनाज दूसरो के हाथ न बिकने पावे।

दादमर्दन—पु० [स० दद्रुमर्दन] चकवँड नामक पौधा, जिसकी पत्तियाँ पीसकर दाद पर लगाई जाती हैं।

दाद-रस—वि० [फा०] न्याय करनेवाला।

दादरा—पु० [?] सगीत मे एक प्रकार का चलता गाना (पक्के या शास्त्रीय गानो से भिन्न)।

दादस—स्त्री० [हिं० दादा+सास] सास की सास। ददिया सास।

दादा—पु० [स० तात] [स्त्री० दादी] १ पिता का पिता। पितामह। २ बडे-बूढो के लिए आदरसूचक सबोधन।
पु० [स्त्री० दीदी] बड़ाभाई।

दादि†—स्त्री० =दाद (न्याय)।

दादी—पु० [फा० दाद] वह जो दाद (अर्थात् कष्ट का प्रतिकार) चाहता हो। दाद या न्याय का प्रार्थी।
स्त्री० हिं० 'दादा' (पितामह) का स्त्री०।

दादु†—स्त्री० [स० दद्रु] दाद।

दादुर—पु० [स० दर्दुर] मेढक। मडूक।

दादुल*— पु० = दादुर (मेढक)।

दादू—पु० [अनु० दादा] १ दादा के लिए सबोधन या प्यार का शब्द। २ बड़े भाई के लिए स्नेहसूचक सबोधन।
पु० दे० 'दादू दयाल'।

दादूदयाल—पु० एक प्रसिद्ध सत जिनके नाम पर दादू नाम का पथ चला है। कहते है कि ये अहमदाबाद के धुनिया थे। जो अकबर के शासन-काल मे हुए थे। कबीर-पथी इन्हें कबीर का अनुयायी कहते हैं।

दादूपंथी—पु० [हिं० दादू+पथी] दादू दयाल नामक मत के चलाये हुए पथ या सप्रदाय का अनुयायी।

दाध*—स्त्री० [स० दाह] जलन। दाह।

दाधना*—स० [स० दग्ध] जलाना। भस्म करना।

दाधिक—वि० [स० दधि+ठक्—इक] दही से बना हुआ। जिसमें दही डाला गया हो।

दाधिचि—पु० =दाधीच।

दाधीच—पु० [स० दधीचि+अण्] दधीचि ऋषि का वंशज।

दान—पु० [स०√दा (देना)+ल्युट्—अन] १. किसी को कुछ देने की क्रिया या भाव। देन। २. धर्म, परोपकार, सहायता आदि के विचार से अथवा उदारता, दया आदि से प्रेरित होकर किसी को कुछ देने की क्रिया या भाव। खैरात। ३. उक्त प्रकार से दिया हुआ धन या कोई वस्तु।

क्रि० प्र०—देना। —पाना। —मिलना। —लेना।

४. राजनीति के चार उपायों में से एक, जिसमें किसी को कुछ देकर शत्रु का पक्ष निर्बल किया जाता है अथवा किसी को अपनी ओर मिलाया जाता है। ५. कर। महसूल। ६. हाथी के मस्तक से निकलनेवाला मद। ७. शुद्धि। ८. छेदने की क्रिया या भाव। छेदन। ९. एक प्रकार का मधु या शहद।

वि० [फा०] १. जाननेवाला। जैसे—कद्र-दान। २. (यौ० के अंत में संज्ञा रूप से प्रयुक्त) आधार या पात्र बनकर अपने अंतर्गत रखनेवाला। जैसे—कलमदान, पानदान।

दानक—पु० [स० दान+कन्] कुत्सित या निकृष्ट दान। बुरा दान।

दान-कुल्या—स्त्री० [ष० त०] हाथी का मद।

दान-धर्म—पु० [मध्य० स०] दान देने का धर्म।

दान-पति—पु० [ष० त०] १. बहुत बड़ा दानी। २. अक्रूर का एक नाम जो स्यमंतक मणि के प्रभाव से सदा बहुत अधिक दान करता रहता था।

दान-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसमें अपनी संपत्ति सदा के लिए किसी को दान रूप में देने का उल्लेख किया जाता है।

दान-पात्र—पु० [ष० त०] वह व्यक्ति जिसे दान देना उचित हो। दान प्राप्त करने का अधिकारी।

दान-प्रतिभू—पुं० [ष० त०] किसी के द्वारा लिये जानेवाले धन की जमानत करनेवाला व्यक्ति।

दान-प्रतिष्ठा—स्त्री० [ष० त०] किसी दान की हुई सपत्ति के साथ दक्षिणा रूप में दिया जानेवाला धन। दक्षिणा। उदा०—पुनि कछु गुनि बोले अब दान-प्रतिष्ठा दीजै।—रत्ना०।

दान-लीला—स्त्री० [स० मध्य० स०] १. कृष्ण की वह लीला जिसमें वे ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल करते थे। २. वह पुस्तक जिसमें उक्त लीला का विस्तृत वर्णन हो।

दानलेख—पु० = दान-पत्र।

दानव—पु० [स० दनु+अण्] दनु (कश्यप की स्त्री) के वे पुत्र जो देवताओं के घोर शत्रु थे। असुर। राक्षस।

दानव-गुरु—पु० [ष० त०] शुक्राचार्य।

दानवध्न—पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्रकार के घोड़े जो देवताओं और गंधर्वों की सवारी में रहते हैं, कभी बुड्ढे नहीं होते और मन की तरह वेगवान् होते हैं।

दान-वारि—पु० [कर्म० स०] हाथी का मद।

दानवारि—पु० [स० दानव-अरि, ष० त०] १. दानवों का नाश करनेवाले, विष्णु। २. देवता। ३. इंद्र।

दानवी—वि० [स० दानवीय] दानवों का। दानव-संबंधी। जैसे—दानवी माया।

स्त्री० [स० दानव+ङीप्] दानव जाति की स्त्री। राक्षसी।

दान-वीर—पु० [स० स०] वह जो सदा बहुत बढ़-चढ़कर दान करता रहता हो और दान करने में कभी पीछे न हटता हो।

दानवेंद्र—पु० [स० दानव-इंद्र, ष० त०] राजा बलि।

दान-शील—वि० [स० ब०] [भाव० दानशीलता] जो स्वभावतः बहुत कुछ दान देता रहता हो। बहुत बड़ा दानी।

दान-शीलता—स्त्री० [स० दानशील+तल्+टाप्] दानशील होने की अवस्था या भाव।

दान-सागर—पु० [ष० त०] एक प्रकार का बहुत बड़ा दान जिसमें भूमि, आसन आदि सोलह पदार्थों का दान किया जाता है। ([illegible])

दानांतराय—पु० [दान-अंतराय, ष० त०] जैनशास्त्र के अनुसार अंतराय या पाप-कर्म जिसके उदय होने पर मनुष्य दान करने में असमर्थ होता है।

दाना—पु० [फा० दान] १. अन्न का कण या बीज। २. अन्न जो पकाकर खाया जाता है। अनाज।

पद—दाना-पानी। (देखें)

मुहा०—दाने-दाने को तरसना या मोहताज होना = कुछ भी भोजन न मिलने के कारण बहुत ही दीन भाव से कष्ट भोगना। दाना बदलना = एक पक्षी का अपने मुँह का दाना दूसरे पक्षी के मुँह में डालना। चारा बाँटना। दाना भरना या भराना = पक्षियों का अपने छोटे बच्चों के मुँह में अपनी चोंच से दाना डालना या रखना।

३. भाड़ में भूँजा हुआ अन्न। ४. वनस्पतियों आदि के बीज। जैसे—राई या सरसों का दाना। ५. कुछ विशिष्ट प्रकार की छोटी गोलाकार चीजों का वाचक शब्द। जैसे—घुँघरू, मूँगे या मोती का दाना, गले में पहनने के कंठे या माला के दाने। ६. कुछ विशिष्ट प्रकार के पदार्थों का गोलाकार छोटा कण। जैसे—घी, चीनी, दही या मलाई के ऊपर दिखाई देनेवाले दाने। ७. उक्त प्रकार की गोलाकार छोटी चीजों के साथ प्रयुक्त होनेवाला संख्या-सूचक शब्द। जैसे—चार दाना आम, तीन दाना काली मिर्च, दो दाना मुनक्का। ८. रोग, विकार आदि के कारण शरीर के चमड़े पर होनेवाले गोलाकार छोटे उभार। जैसे—खुजली या शीतला के दाने। ९. किसी तल पर दिखाई देनेवाले छोटे गोलाकार उभार। जैसे—नारंगी के छिलके पर के दाने, नक्काशीदार बरतनों पर के दाने।

वि० [फा०] [भाव० दानाई] बुद्धिमान। अक्लमंद। जैसे—नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है।

दानाई—स्त्री० [फा०] अक्लमंदी। बुद्धिमत्ता।

दाना-चारा—पु० [फा० दाना+हिं० चारा] जीव-जंतुओं को दिया जानेवाला भोजन।

दाना-चीनी—स्त्री० [हिं०] वह चीनी जो महीन चूर्ण के रूप में नहीं, बल्कि कुछ मोटे कणों या दानों के रूप में होती है।

दानादेश—पु० [स० दान-आदेश, च० त०] १ किसी को कुछ दान दिये जाने की आज्ञा। २ 'देयादेश'।

दानाध्यक्ष—पु० [स० दान-अध्यक्ष, ष० त०] मध्ययुग मे किसी देशी राज्य का वह अधिकारी जो यह निश्चय करता था कि राजा या राज्य की ओर से किसे कितना दान दिया जाना चाहिए।

दाना-पानी—पु० [फा० दाना+हिं० पानी] १ जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक खाने-पीने की चीजें। अन्न-जल। २ पेट भरने के लिए कुछ चीजे खाने या पीने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—छोडना।—मिलना।

३ भरण-पोषण का आयोजन। जीविका। ४ भाग्य की वह स्थिति जिसके कारण किसी को कही जाकर रहना और वहाँ कुछ खाना-पीना पडता हो, अथवा वहाँ रहकर जीविका का निर्वाह करना पडता हो। अन्न-जल।

मुहा०—(कहीं से किसी का) **दाना-पानी उठना**=भाग्य या विधि का ऐसा विधान होना जिससे किसी व्यक्ति को किसी स्थान से (कही और जाने के लिए) हटना पडे।

दाना-बंदी—स्त्री० [फा० दान+बंदी] खडी फसल से उपज का अदाज करने के लिए खेत को नापने का काम।

दानिनी—स्त्री० [स०] दान करनेवाली स्त्री।

दानिया—पु० [स० दान] १ वह जो दान अर्थात् कर उगाहता हो। २ दानी। दाता।

वि० १ दान-संबधी। २ दान लेनेवाला। जैसे—दानिया ब्राह्मण।

दानिश—स्त्री० [फा०] १ अक्ल। बुद्धि। विवेक। २ विद्या।

दानिस†—स्त्री० [फा० दानिस्त] १ समझ। बुद्धि। २ राय। सम्मति।

†स्त्री० = दानिश।

दानी(निन्)—वि० [स० दान+इनि] [स्त्री० दानिनी] १ बहुत दान करनेवाला। दानशील। २ देनेवाला। (यौ० के अत मे)

पु० १ वह जो दान देने मे बहुत उदार हो। बहुत बड़ा दाता या दान-शील।

पु० [स० दानीय] १ कर आदि उगाहनेवाला अधिकारी। २ नेपालियो की एक जाति या वर्ग।

स्त्री० [फा० दान से] कोई चीज रखने का छोटा आधान या पात्र। (यौ० के अत मे) जैसे—चूहेदानी, बालूदानी, सुरमेदानी।

दानीय—वि० [स०√दा (देना)+अनीयर्] दान किये जाने योग्य। जो दान के रूप मे दिया जा सके।

दानु—वि० [स०√दा+नु] १. दाता। २ विजयी। ३ वीर। बहादुर।

पु० १ दान। २ दानव। ३ वायु। हवा। ४ तृप्ति। तुष्टि। ५ अभ्युदय। ६ पानी आदि की बूंद।

दानेदार—वि० [फा०] जिसके अश दानो अर्थात् कणो के रूप मे हो। जैसे—दानेदार घी, दानेदार चीनी।

दानो†—पु० =दानव।

दाप—पु० [स० दर्प प्रा० दप्प] १. अभिमान। घमड। २ बल। शक्ति। ३ दबदबा। रोब। ४ तेज। प्रताप। ५. बल। शक्ति। ६ क्रोध। गुस्सा। ७ जलन। ताप।

दापक—पु० [हिं० दापना] १. दबानेवाला। २ रोकनेवाला।

दापना—स० [हिं० दाप] १. दबाना। २ मना करना। रोकना।

दापित—भू० कृ० [स०√दा (देना)+णिच्+क्त] १ जो देने के लिए बाध्य किया गया हो। २ जिस पर अर्थ-दड लगाया गया हो। ३ जिसका निर्णय या फैसला किया गया हो।

दाब—स्त्री० [हिं० दबाना] १ दबाने की क्रिया या भाव। २ ऐसी स्थिति जिसमे किसी प्रकार का दबाव या भार पडता हो। दबने या दबे हुए होने की अवस्था।

क्रि० प्र०—पहुँचाना।—रखना।—लगाना।

३ वह भारी वस्तु जो किसी दूसरी चीज के ऊपर उसे दबाये रखने के लिए रखी जाती है। भार।

क्रि० प्र०— डालना।— रखना।

४ पत्थर, शीशे आदि का वह छोटा टुकडा जो कागजो को उडने से बचाने या उन्हें दबाये रखने के लिए उन पर रखा जाता है। (पेपर वेट) ५ नैतिक, वैयक्तिक या शारीरिक दृष्टि से प्रबल व्यक्ति का किसी दूसरे व्यक्ति पर पडनेवाला प्रभाव या दबाव।

मुहा०—**किसी की दाब तले होना** = किसी के वश मे या अधीन होना। **(किसी की) दाब मानना** = किसी बडे का अधिकार या प्रभाव मानना और उसकी आज्ञा, इच्छा आदि के वशवर्ती होकर रहना। **(किसी को) दाब में रखना** = नियत्रण, वश या शासन मे दबाकर रखना।

६ यत्रो आदि मे किसी चीज पर यत्र के किसी ऊपरी, बडे भाग का इस प्रकार आकर पडना कि उसके फल-स्वरूप उस चीज पर कुछ अकित हो या किसी प्रकार का अभीष्ट फल हो। जैसे—छापे के यत्र मे कागज पर पडनेवाली दाब।

†पु० = द्रव्य।

दाबकस—पु० [हिं० दाब+कसना] लोहारो के छेदने के औजारो (किरकिरा, बरदुआ आदि) का एक हिस्सा।

दाबदार—वि० [हिं० दाब+फा० दार] रोबदार। आतक रखनेवाला। प्रभावशाली। प्रतापी।

दाबना—स० १ =दबाना। २ =गाडना।

दाब-मापक—पु० [हिं०+स०] वह यत्र जिसमे यह जाना जाता है कि किसी चीज पर दूसरी चीज का कितना दाब या भार पड रहा है। (मैनो मीटर, प्रेशर गेज)

दाबा—पु० [हिं० दाब] कलम लगाने के लिए पौधो की टहनी को मिट्टी मे गाडने या दबाने की क्रिया या पद्धति।

पु० [?] नदियो मे रहनेवाली एक प्रकार की छोटी मछली।

दाबिल—पु० [हिं० दाब] एक प्रकार की बड़ी सफेद चिडियाँ जिसकी चोच दस बारह अगुल लबी और सिरे पर गोल और चिपटी होती है। यह प्राय जलाशयो के कीडे-मकोडे और छोटी मछलियाँ खाती है।

दाबी—स्त्री० [हिं०] कटी हुई फसल के बँधे हुए एक-जैसे पूले जो मज-दूरी मे दिए जाते है।

दाभ—पु० [स० दर्भ] कुश की जाति का एक तरह का तृण जिसकी पत्तियाँ सूई की नोक के समान नोकदार होती है। डाभ।

दाम्य—पु० [स०] जो इस योग्य हो कि नियत्रण या शासन मे रखा जा सके। जो दबाकर रखा जा सके।

दाम (न्)—पु० [स०√दो (खण्ड करना)+मनिन्] १. रस्सी। रज्जु। २ माला। हार। ३ ढेर। राशि। ४ भुवन। लोक। ५ राजनीति की चार प्रकार की युक्तियो मे से वह जिसमे शत्रु को धन देकर वश मे किया जाता है। जैसे—साम, दाम, दड और भेद सभी तरह से वे अपना काम निकालते हैं।

विशेष—यद्यपि 'दाम' का एक अर्थ धन भी है, पर जान पडता है कि राजनीतिक क्षेत्रवाला 'दाम' का उक्त अर्थ उसके 'रस्सी' वाले अर्थ के आधार पर विकसित होकर लगा है, और इसका आशय रहा होगा—किसी को धन देकर अपने जाल मे फँसाना या बाँधकर अपनी ओर करना। यहाँ यह भी ध्यान रहे कि फारसी मे 'दाम' का एक अर्थ जाल या फदा भी है।

पु० [यू० ड्रैम (चाँदी का एक सिक्का) से स० द्रम्म, फा० दाम] १. प्राचीन भारत का एक छोटा सिक्का जो एक दमडी के तीसरे भाग और एक पैसे के चौबीसवें भाग के बराबर होता था।

मुहा०—दाम-दाम भर देना= जितना देन या ऋण हो, वह सब पूरा पूरा चुका देना। कुछ भी बाकी न रखना।

२. सिक्को आदि के रूप मे वह धन जो कोई चीज खरीदने पर बदले मे उसके मालिक को दिया जाता है। कीमत। मूल्य।

विशेष—यह शब्द अपने पुराने अर्थ के आधार पर बहुवचन मे बोला जाता था। जैसे—इस कपडे के कितने दाम होंगे? अर्थात् दाम नाम के कितने सिक्के देने पडेंगे? परतु आज-कल इसका प्रयोग अधिकतर एकवचन रूप मे ही होता है। जैसे—इस पुस्तक का क्या दाम है?

मुहा०—दाम उठना= किसी चीज का जो उचित मूल्य हो या उसमे जो लागत लगी हो, वह बिकने पर मिल जाना। **दाम करना**= कोई चीज खरीदने के समय कुछ घटा-बढाकर उसका दाम या भाव निश्चित करना। दाम तै या निश्चित करना। **दाम खड़ा करना या खड़े करना**=उचित मूल्य प्राप्त करना। कीमत ले लेना। **दाम चुकाना** = (क) कीमत या मूल्य दे देना। (ख) दाम करना। (देखें ऊपर) **दाम भरना**= कोई चीज खो जाने या टूट-फूट जाने पर उसके मालिक को उसका दाम चुकाना या देना। **दाम भर पाना**=पूरा- पूरा मूल्य प्राप्त कर लेना।

३. धन। रुपया-पैसा। जैसे—दाम खरचने पर सब काम हो जाते है। ४ सिक्का।

मुहा०—चाम के दाम चलाना = अपने अधिकार या प्रभुत्व के बल पर अनोखे और विलक्षण काम या मनमाना अधेर करने लगना। (एक भिश्ती के राजा बन जाने पर चमडे के सिक्के चलाने के प्रवाद के आधार पर)

५ जाल। पाश फदा।

*स्त्री० दामिनी। उदा०—मुकुट नव-घन दाम।—सूर।

दाम-कंठ—पु० [व० म०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

दामक—पु० [स० दाम+क] १ गाडी के जुए मे बाँधी जानेवाली रस्सी। २. बाग-डोर। लगाम।

दाम-ग्रंथि—पु० [ब० स०] महाभारत मे वर्णित राजा विराट के सेनापति का नाम।

दाम-चंद्र—पु० [स० ब० स० ?] राजा द्रुपद के एक पुत्र का नाम।

दामन—पु० [फा०] १. गले मे या वक्ष स्थल पर पहने हुए अगरखे, कुरते आदि का कमर से नीचे का वह भाग जो झूलता या लटकता रहता है।

मुहा०—दामन छुड़ाना—सबध छोडकर अलग होना। **(किसी का) दामन पकड़ना**= सकट आदि के समय किसी ऐसे व्यक्ति का आश्रय लेना जो सकट के समय पूर्ण रूप से सहायक हो सके।

२. पहाड के नीचे का कुछ ढालुआँ भाग। ३ जहाज का पाल। ४. नाव या जहाज के जिस ओर हवा का झोका लगता हो उसके सामने की दिशा। (लश०)

दामनगीर—वि० [फा०] १. न्याय, सरक्षण, सहायता आदि के लिए किसी का दामन या पल्ला पकडनेवाला। २ अपना कोई काम कराने या अपना प्राप्य लेने के लिए किसी का दामन या पल्ला पकडने या पीछे पडनेवाला।

दामन-पर्व (न्)—पु० [स० दमन+अण्, दामन-पर्वन्, ब० स०] १. दमन-भजन तिथि। चैत्र शुक्ल-चतुर्दशी। २ चैत्र शुक्ल की द्वादशी तिथि।

दामनी—स्त्री० [स० दामन+अण् + ङीप्] रस्सी। डोरी। स्त्री०[फा० दामन] १ ओढने की चादर विशेषत वह चादर जो मुसलमान औरतो के जनाजे पर डाली जाती है। २ घोडो की पीठ पर डाला जानेवाला कपडा।

दामर—स्त्री० [देश०] १. राल जो दरार भरने के लिए नावो मे लगाई जाती है। २ वह भेड़ जिसके कान छोटे हो। (गडेरिये)

*स्त्री० [स० दामन] रस्सी।

पु० = डामर।

दामरि—स्त्री० =दामर।

दामरी—स्त्री० [स० दाम] १. रस्सी। रज्जु। २. छोटा जाल।

दामलिप्त—पु० [स० ताम्रलिप्त (पृषो० सिद्धि)] दे० 'ताम्रलिप्त'।

दामांचल—पु० [स० दामन्-अचल ष० त०] वह रस्सी जिसे घोडे के पिछले पैरो मे फँसाकर खूँटे मे बाँधते है।

दामांजन—पु० = दामाचल।

दामा—पु० [?] एक प्रकार का पक्षी जो प्राय अपनी दुम नीचे-ऊपर उठाता-गिराता रहता है। नर दामा का रग काला और मादा का बादामी होता है। इसे कलचिरी भी कहते है।

*स्त्री० = दावा (दावानल)।

दामाद—पु० [स० जामातृ से फा०] सबध के विचार से वह व्यक्ति जिसे कन्या व्याही गई हो। जँवाई। जामाता। दमाद।

दामादी—वि० [हिं० दामाद] १ दामाद-सबधी। जैसे—दामादी धन। २ दामादो की चाल-ढाल जैसा। दामादो की तरह का। जैसे—दामादी ऐंठ।

स्त्री० दामाद या जामाता होने की अवस्था, पद या भाव।

मुहा०—(किसी को) दामादी में लेना =किसी के साथ अपनी कन्या

का विवाह करके उसे अपना जँवाई या दामाद बनाना। (मुसल०)

दामासाह—पु० [हि० दाम+साहु=बनिया] वह दिवालिया महाजन जिसकी सपत्ति लहनदारो मे उनके लहने के अनुपात मे बराबर बँट गई हो, अर्थात् जिससे लोगो को बहुत-कुछ पावना मिल गया हो।

दामासाही—स्त्री० [हि० दामासाह] १ किसी दिवालिए महाजन की सपत्ति का लहनदारो के बीच मे होनेवाला बँटवारा। २ पावने का वह अश जो उक्त बँटवारे के अनुसार लहनदारो को मिले या मिलने को हो।

दामिनी—[स० दामा+इनि+ङीप्] १ बिजली। विद्युत्। २ दावनी नामक आभूषण।

दामिल—स्त्री० [?] प्राचीन भारत की एक स्थानिक भाषा। (कदाचित् आधुनिक तमिल भाषा)

दामी—स्त्री० [हि० दाम] कर। मालगुजारी।

वि० १ अधिक दाम या मूल्य का। २. मूल्यवान।

दामोद—पु० [स०] अथर्ववेद की एक शाखा का नाम।

दामोदर—पु० [स० दामन्-उदर, ब० स०] १ श्रीकृष्ण।

विशेष—यशोदा ने एक बार बालक कृष्ण की कमर और पेट मे रस्सी बाँध दी थी, इसी से उनका यह नाम पडा।

२ विष्णु। ३. एक जैन तीर्थंकर। ४ बगाल का एक प्रसिद्ध नद जो छोटा नागपुर के पहाडो से निकलकर भागीरथी मे मिलता है।

वि० इन्द्रियो को वश मे रखनेवाला।

दायँ—पु० १ = दाँव। २ = दाँज (बराबरी)।

स्त्री० १ = दाई। २ = दवँरी।

वि० दायाँ (दाहिना)।

दाय—वि० [स०√दा (देना)+घञ्] १ (धन या पदार्थ) जो किसी को दिया जाने को हो अथवा दिया जा सकता हो। २ जिसका दिया जाना आवश्यक या कर्त्तव्य हो।

पुं० १ देने की क्रिया या भाव। दान। २ वह अवस्था जिसमे किसी को कुछ देना या किसी के लिए कुछ करना आवश्यक, उचित अथवा कर्त्तव्य हो। दायित्व। उदा०—सिर धुनि धुनि पछतात मीजि कर, कोउ न मीत हित दुसह दाय। —तुलसी। ३ ऐसा धन या सपत्ति जिसका बँटवारा या विभाजन उत्तराधिकारियो मे होने को हो या न्यायत होना उचित हो। ४ बँटवारा होने पर हिस्से मे आने या मिलनेवाला धन या सपत्ति। ५ ऐसा धन या पदार्थ जो अनिवार्य रूप से किसी को मिलने को हो या मिल सकता हो। उदा०—और सिंगार म्हारे दाय न आवै।—मीराँ। ६ कन्या को उसके विवाह के समय दिया जानेवाला धन और पदार्थ। दहेज। दायजा।

† स्त्री० =दाई।

* पु० [स० दायित्व] १ जिम्मेदारी। दायित्व। २ उत्तर-दायित्व। जवाब-देही। जैसे=जमदाय=यमराज के सामने उपस्थित होनेवाला लेखा और उसका दिया जानेवाला उत्तर।

पु० १ = दाँव। २ = दाव।

दायक—वि० [स०√दा (दान)+ण्वुल्—अक] १ समस्तपदो के अत मे लगने पर, देनेवाला। जैसे—सुखदायक, दु खदायक, पिंडदायक। २ (कार्य) जिसमे आर्थिक दृष्टि मे लाभ होता या हो रहा हो। (पेइन्ग)

दायज†—पु० = दायजा।

दायजा—पु० [स० दायसे फा०] दहेज। वह धन जो विवाह के उपरान्त कन्या को विदा करते समय अपने साथ ले जाने के लिए दिया जाता है।

दाय-भाग—पु० [स० प० त०] १ धर्म-शास्त्र का वह अश या विभाग जिसमे यह बतलाया गया है कि पिता अथवा पूर्वजो का धन उसके उत्तराधिकारियो अथवा सबधियो मे किस प्रकार और किन सिद्धान्तो के अनुसार बाँटा जाना चाहिए। २ पैतृक सपत्ति का वह अश जो उक्त व्यवस्था के आधार पर किसी उत्तराधिकारी को मिले। उदा०—सोचो यह स्वार्थ क्या तुम्हारा दायभाग है ?—गुप्त।

दायम—अव्य० [अ० दाइम] सदा। हमेशा।

दायमी—वि० [अ० दाइमी] नित्य या सदा बना रहनेवाला।

दायमुलहब्स—पु० [अ० दाइमुल हब्स] १ जन्म भर के लिए दी जाने-वाली कैद की सजा। आजीवन कारावास का दड।

दायर—वि० [अ० दाइर] १ घूमता या चलता-फिरता हुआ। २ जारी। प्रचलित। ३ (अभियोग या मुकदमा) जो निर्णय या विचार के लिए न्यायालय मे उपस्थित किया गया हो। जैसे—किसी पर कोई मुकदमा दायर करना।

दायरा—पु० [अ० दाइर] १ गोल घेरा। २ वृत्त। ३ कक्षा। ४. मडली। ५ क्रिया या व्यवहार का क्षेत्र। हल्का। ६. खँजडी, डफली आदि बाजे जिनमे मेडरा लगा होता है।

दायाँ—वि० = दाहिना।

दाया—स्त्री० [फा० दाय] १ वह स्त्री जो दूसरो के बच्चो को अपना दूध पिलाकर पालती हो। २ बच्चा जनाने की विद्या जाननेवाली स्त्री। बच्चाजनाने वाली स्त्री। ३ † नौकरानी।

† स्त्री० = दया।

दायागत—वि० [स० दाय-आगत, तृ० त०] जो दाय अर्थात् पैतृक सपत्ति के बँटवारे मे मिला हो।

पु० पन्द्रह प्रकार के दासो मे से वह जो दाय अर्थात् पैतृक सपत्ति के बँटवारे मे मिला हो।

दायागरी—स्त्री० [फा० दाय गरी] १ दाई का पेशा या काम। २ बच्चा जनाने की विद्या या वृत्ति। धात्रीकर्म।

दायाद—वि० [स० दाय+आ√दा (देना)+क] [स्त्री० दायादा] जो दाय का अधिकारी हो। जिसे पैतृक सबध के कारण किसी की जायदाद मे हिस्सा मिले।

पु० १ कुटुब का ऐसा व्यक्ति जो सपत्ति के उक्त प्रकार के बँटवारे मे हिस्सा पाने का अधिकारी हो। सपिड कुटुंबी। पुत्र। बेटा।

दायादा—स्त्री० [स० दायाद+टाप्] १ उत्तराधिकारिणी। २ कन्या।

दायादी—स्त्री० [स० दाय√अद् (भक्षण)+अण्+ङीप्] कन्या।

पु० ऐसा सबधी जो पैतृक सपत्ति मे हिस्सा बँटवा सकता हो। दायाधिकारी।

स्त्री० लोगो मे परस्पर उक्त प्रकार का सबध होने की अवस्था या भाव।

दायाद्य—पु० [स० दायाद+ष्यञ्] वह सपत्ति जिस पर सपिड कुटुंबियो का अधिकार माना जाय या माना जा सकता हो।

दायाधिकारी—पुं० [सं० दाय-अधिकारिन्, ष० त०] वह जो किसी का उत्तराधिकारी होने के नाते उसकी संपत्ति का कुछ अंश पाने का न्यायत अधिकारी हो। उत्तराधिकारी। वारिस। (हेयर)

दायापवर्तन—पुं० [सं० दाय-अपवर्तन, ष० त०] किसी जायदाद में मिलनेवाले हिस्से की जब्ती।

दायित—भू० कृ० [√दय् (देना)+णिच्+क्त] १ दिलाया हुआ। २ दान के रूप में सदा के लिए दिलाया हुआ।

दायित्व—पुं० [सं० दायिन्+त्व] १ दायी (जवाबदेह) होने की अवस्था या भाव। जिम्मेदारी। (ऑब्लिगेशन) २ देनदार होने की अवस्था या भाव। (लायबिलिटी)

दायिनी—वि०, स्त्री० [सं० दायिन्+ङीप्] सं० दायी का स्त्री० रूप। देनेवाली। जैसे—जन्मदायिनी, सुखदायिनी।

दायी(यिन्)—वि० [सं०√दा+णिनि] [स्त्री० दायिनी] १. देनेवाला। २ (व्यक्ति) जिस पर किसी कार्य या बात का दायित्व या जवाबदेही हो। जैसे—इस गड़बड़ी के लिए आप ही दायी है।

दायें—क्रि० वि० [हिं० दायाँ] दाहिनी ओर। दाहिने।
मुहा० के लिए दे० दाहिना के मुहा०।

दायोपगतदास—पुं० [सं० दाय-उपगत, तृ० त०, दायोपगत-दास, कर्म० स०] वह दास जो बँटवारे मे मिला हो।

दार—स्त्री० [सं०√दृ (विदारण करना)+णिच्+अच्] पत्नी। भार्या।
पुं० [√दृ+घञ्] १ चीरना। विदारण। २ छेद। ३ दरार।
पुं० दारु।
वि० [फा०] [भाव० दारी] एक विशेषण जो कुछ शब्दो के अंत मे प्रत्यय के रूप मे लगकर 'रखने वाला' या 'वाला' का अर्थ देता है। जैसे—(क) किरायेदार, दुकानदार। (ख) छज्जेदार, छायादार।

दारक—पुं० [सं०√दृ+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० दारिका] १. पुत्र। बेटा। २. बालक। लड़का।
वि० विदीर्ण करने या फाड़नेवाला।

दार-कर्म (न्)—पुं० [ष० त०] दार अर्थात् भार्या ग्रहण करने की क्रिया या भाव। पुरुष का विवाह।

दारचीनी—स्त्री० [सं० दारु+चीन] १. तज की जाति का एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिण भारत और सिंहल मे होता है। सिंहल मे ये पेड सुगंधित छाल के लिए बहुत लगाए जाते है। यह दो प्रकार की होती है—जीलानी और कपूरी। कपूरी की छाल मे बहुत अधिक सुगंध होती है और उसमे बहुत अच्छा कपूर निकलता है। भारतवर्ष, अरब आदि देशो मे पहले इसकी सुगंधित छाल चीन देश से आती थी, इसी से इसे दारु चीनी कहने लगे। २ उक्त पेड की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम मे आती है।

दारण—पुं० [सं०√दृ (विदारण करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १ चीरने-फाड़ने या विदीर्ण करने की क्रिया या भाव। चीर-फाड। विदारण। २. फोडा या व्रण चीरने की क्रिया या भाव। चीर-फाड। शल्य-चिकित्सा। ३ चीरने-फाड़ने आदि का अस्त्र या औजार। ४. ऐसी चीज या दवा जिसके लगाने से फोडा फट या फूट जाय। ५. निर्मली का पेड।

दारणी—स्त्री० [सं० दारण+ङीप्] दुर्गा।

दारद—पुं० [सं० दरद+अण्] १ एक प्रकार का विष जो दरद देश मे होता है। २ पारद। पारा। ३. ईंगुर।
वि० दरद देश का।

दारन—वि० = दारुन।
पुं० = दारण।

दारना*—स०[सं दारण] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। २ नष्ट करना। न रहने देना। ३ मार डालना। उदा०—दारहि दारि मुरादहि मारिकै, संगर साह सुजै बिचलायौ।—भूषण।

दार-परिग्रह—पुं०[ष० त०] विवाह करके किसी को अपनी पत्नी बनाना। पाणि-ग्रहण।

दार-मदार—पुं० [फा० दारोमदार]१. आश्रय। सहारा। २. ऐसा अवलंब या आधार जिस पर दूसरी बहुत-सी बातें आश्रित हों। जैसे—अब तो सारा दार-मदार आपके न या हाँ करने पर ही है।

दारव—वि०[सं० दारु+अञ्]१. दारु अर्थात् लकडी से संबंध रखनेवाला। २. काठ या लकडी का बना हुआ।

दार-संग्रह—पुं०[ष०त०] पुरुष का अपना विवाह करके किसी स्त्री को पत्नी या भार्या के रूप मे ग्रहण करना। दार-परिग्रह। पाणि-ग्रहण।

दारा—स्त्री०[सं० दार+टाप्] पत्नी। भार्या।
स्त्री०[?] एक प्रकार की समुद्री मछली जो प्रायः तीन हाथ तक लम्बी होती है।
पुं०[?] किनारा। तट। (लश०)

दाराई—स्त्री० [फा०] पुरानी चाल का एक प्रकार का रेशमी कपडा। दरियाई।

दारि†—स्त्री०=दारी।
स्त्री० = दाल।

दारिउँ†—पुं० = दाड़िम।

दारिका—स्त्री० [सं० दारक+टाप्, इत्व] १ वह युवती स्त्री जिसका अभी तक विवाह न हुआ हो। कुँवारी लडकी। कुमारी। २. बालिका। लडकी। ३. पुत्री। बेटी। ४ कठ-पुतली।

दारिका सुन्दरी—स्त्री० [सं०] वेश्या की वह लडकी जिसका अभी तक किसी पुरुष से संबंध न हुआ हो। नथिया-बंद।

दारित—भू० कृ० [सं०√दृ (विदारण)+णिच्+क्त] १. चीरा-फाडा हुआ। विदीर्ण किया हुआ। २. विभक्त किया हुआ।

दारिद्र†—पुं० दारिद्रय (दरिद्रता)।

दारिद्र*—पुं० = दारिद्रय।

दारिद्रय—पुं० [सं० दरिद्र+ष्यञ्] दरिद्र होने की अवस्था या भाव। दरिद्रता।

दारिम*—पुं० =दाडिम।

दारी—स्त्री० [सं०√दृ० +णिच्+इन्—ङीप्] पैर के तलवे का चमड़ा फटने का एक रोग। बिवाई।
स्त्री० [सं० दारिका] १ दासी या लौंडी विशेषतः ऐसी दासी या लौंडी जो लड़ाई मे जीतकर लाई गई हो। २. परम दुश्चरित्रा स्त्री। छिनाल। पुंश्चली। उदा०—चंचल सरस एक काहू पै न रहै दारी ।—भूषण।

पद—दारी-जार। (देखे)

स्त्री० [फा०] दार अर्थात् रखनेवाला होने की अवस्था या भाव। जैसे—किरायेदारी, दूकानदारी आदि।

दारीजार—पु० [हिं० दारी+स० जार] १ लौंडी का उपपति या पति। (गाली) २ दासी-पुत्र। ३ परम दुश्चरित्र से अनुचित सबध रखनेवाला पुरुष। परम व्यभिचारी।

विशेष—हिं० का 'दाढीजार' सभवत इसी 'दारीजार' का विकृत रूप है।

दारु—पु० [स०√दृ (चीरना)+उण्] १ काष्ठ। काठ। लकडी। २ देवदारु। ३. कारीगर। शिल्पी। ४ पीतल।

वि० १ दानशील। दानी। २ उदार। ३ जल्दी टूटने-फूटनेवाला।

दारुक—पुं० [सं० दारु+कन्(स्वार्थे)] १ देवदारु। २ काठ का पुतला। ३. श्रीकृष्ण के सारथी का नाम। ४ एक योगाचार्य जो शिव के अवतार कहे गए है।

दारु-कदली—स्त्री० [उपमि० स०] जगली केला। कठ-केला।

दारुका—स्त्री० [स० दारु√कै (शब्द करना)+क+टाप्] कठपुतली।

दारुका-वन—पु० [मध्य० स०] एक वन जो पवित्र तीर्थ माना गया है।

दारु-गधा—स्त्री० [ब० स० टाप्] विरोजा जो चीड से निकलता है।

दारुचीनी—स्त्री० =दारचीनी।

दारुज—वि० [स० दारु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ दारु अर्थात् लकडी मे (या से) उत्पन्न होनेवाला। २ दारु अर्थात् लकडी का बना हुआ।

पु० मृदग की तरह का एक प्रकार का बाजा। मर्दल।

दारुण—वि० [स०√दृ (भय)+णिच्+उनन्] [भाव० दारुणता] १ भयानक। भीषण। २ घोर। विकट। ३ उग्र। प्रचड। ४. जिसे सहना बहुत कठिन हो। जैसे—दारुण कष्ट या विपत्ति। ५ (रोग) जो बहुत बढ गया हो और सहज मे अच्छा न हो सकता हो। (सीरियस) ६ फाड डालनेवाला। विदारक।

पु० १ चित्रक वृक्ष। चीते का पेड। २ रौद्र नामक नक्षत्र। ३ साहित्य मे, भयानक रस। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ राक्षस। ७ पुराणानुसार एक नरक का नाम।

दारुणक—पु० [स० दारुण√कै (मालूम होना)+क] सिर मे होनेवाला रूसी (देखें) नामक रोग।

दारुणता—स्त्री० [स० दारुण+तल्+टाप्] दारुण होने की अवस्था या भाव। दारुण्य।

दारुणा—स्त्री० [स० दारुण+टाप्] १ नर्मदा खड की अधिष्ठात्री देवी का नाम। २ अक्षय तृतीया।

दारुणारि—पु० [स० दारुण+अरि, ष० त०] विष्णु।

दारुण्य—पु० [स० दारुण+ष्यञ्] दारुण होने की अवस्था या भाव। दारुणता।

दारुन*—वि० = दारुण।

दारु-नटी—स्त्री० [स० मध्य० स०] कठपुतली।

दारु-नारी—स्त्री० [मध्य० स०] कठपुतली।

दारु-निशा—स्त्री० [मध्य०स०] दारु हलदी।

दारु-पत्री—स्त्री० [ब०स०, ङीप्] हिंगुपत्री।

दारु-पर्वतक—पु० [स०] वह नकली पर्वत जो राजप्रसाद के उद्यान मे क्रीडा आदि के लिए बनाया जाता था।

दारु-पात्र—पु० [ष०त०] काठ का बना हुआ बरतन।

दारु-पीता—स्त्री० [तृ० त०] दारु हलदी।

दारु-पुत्रिका—स्त्री० [मध्य०स०] कठपुतली।

दारु-फल—पु० [मध्य०स०] पिस्ता।

दारुमय—वि० [स० दारु+मयट्] [स्त्री० दारुमयी, दारुमय+ङीप्] सिर से पैर तक काठ का बना हुआ।

दारुमुच्—पु० [स० दारु√मुच् (त्यागना)+क्विप्] एक प्रकार का स्थावर विष।

दारुमूषा—स्त्री० [स० मध्य०म०] एक प्रकार की जडी।

दारु-योषित्—स्त्री० [मध्य०स०] कठपुतली।

दारुल्-शफा—पु० [अ० दारुश्शिफा] १. चिकित्सालय। २ आरोग्य-शाला।

दारुल्-सलतनत—स्त्री० [अ० दारुस्सलतनत] राजधानी।

दारु-सिता—स्त्री० [स० त०] दार-चीनी।

दारु-हरिद्रा—स्त्री० [स०त०] दारु हलदी।

दारु हलदी—स्त्री० [स० दारुहरिद्रा] गुल्म जाति का सात-आठ हाथ लबा एक सदाबहार झाड जिसके पत्ते दतयुक्त, फल पीपल के फलो जैसे, और फूल पीले रग के छ छ दलोवाले होते है। यह हिमालय के पूर्वी भाग से लेकर आसाम तक होता है। इसकी लकडी दवा के काम मे आती है।

दारू—स्त्री० [फा०] १ उपचार। चिकित्सा। २ दवा। औषध। ३ मद्य। शराब। ४. बारूद।

विशेष—यह शब्द मूलत स्त्री० ही है, फिर भी लोक मे प्राय पु० ही बोला जाता है।

दारूकार—पु० [फा० दारू+हिं० कार] शराब बनानेवाला। कलवार।

दारूड़ा†—पु० [फा० दारू] मद्य। शराब। (राज०)

दारूड़ी—स्त्री० =दारूडा।

दारूधरा—पु० [फा० दारू=बारुद+हिं० धरना] तोप या बदूक चलानेवाला। उदा०—जुर्रा रु बाज कूही गुहा, धानुक्की दारूधरा।—चदवरदाई।

दारो*—पु० =दार्‌यो (दाडिम)।

दारोगा—पु० [फा० दारोग] १ निगरानी रखनेवाला अफसर। देख-भाल रखनेवाला या प्रबध करनेवाला अधिकारी। जैसे—चुगी या जेल का दारोगा। २. पुलिस-विभाग का वह अधिकारी जिसके अधीन बहुत से सिपाहियो की टुकडी और प्राय एक थाना होता है।

दारोगाई—स्त्री० [हि० दारोगा] दारोगा का काम, पद या भाव।

दारोमदार—पु० [फा०] दार-मदार। (देखें)

दार्ढ्य—पु० [स० दृढ+ष्यञ्] दृढ होने की अवस्था या भाव। दृढता।

दार्दुर—वि० [स० दर्दुर+अण्] दर्दुर-सबधी। दर्दुर का।

पु० एक प्रकार का दक्षिणावर्त्त शख।

दार्दुरिक—पु० [स० दर्दुर+ठञ्—इक] कुम्हार।

दार्भ—वि०[स० दर्भ+अण्] १. दर्भ अर्थात् कुश-सबधी। २ दर्भ या कुश का बना हुआ। जैसे—दार्भ आसन।

दार्यों*—पु०=दाडिम (अनार)।

दार्वंड—पु०[स० दारु-अड, ब०स०] [स्त्री० दार्वंडी] मयूर या मोर पक्षी (जिसका अडा काठ की तरह कडा होता है)।

दार्व—पु०[स० दारु+अण्] एक प्राचीन प्रदेश जो कूर्म विभाग के ईशान कोण मे और आधुनिक कश्मीर के अन्तर्गत था।

दार्वट—पु० [स० दारु√अट्(भ्रमण)+क] मत्रणा करने का गुप्त स्थान। मत्रणा गृह।

दार्वाघाट—पु०[स० दारु आ√हन् (चोट करना)+अण्, नि० टत्व] कठफोडवा।

दार्वाट—पु०[फा० 'दरवार' से] मत्रणा-गृह।

दार्विका—स्त्री०[स० दार्वी+क (स्वार्थे)-टाप्, ह्रस्वत्व]१. दारुहल्दी से निकाला हुआ तूतिया। २ वन-गोभी।

दार्वि-पत्रिका—स्त्री०[स० व०स०, +कन्+टाप्, इत्व] गोजिह्वा। गोभी।

दार्वी—स्त्री०[स० √दृ (विदारण करना)+णिच्+उण्+ङीप्] दारुहलदी।

दार्श—वि०[स० दर्श+अण्] दर्श-अमावास्या के दिन होनेवाला।

दार्शनिक—वि०[स० दर्शन+ठञ्—इक]१ दर्शन-शास्त्र सबधी। दर्शन-शास्त्र की तरह का।

पु० वह जो दर्शनशास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पडित हो।

दार्षद—वि०[स० दृषद्+अण्]१ पत्थर पर पीसा हुआ। २. पत्थर का बना हुआ। ३ खान से निकला हुआ। खनिज।

दार्षद्वत—पु०[स० दृषद्वती+अण्] कात्यायन श्रौतसूत्र के अनुसार एक यज्ञ जो दृषद्वती नदी के किनारे किया जाता था।

दार्ष्टांतिक—वि०[स० दृष्टान्त+ठञ्—उक] १ दृष्टान्त-सबधी। २ जो दृष्टान्त के रूप मे हो।

दाल—स्त्री०[स० दालि]१ अरहर, उरद, चना, मसूर, मूंग आदि अन्न जिनके दाने अन्दर से दो दलो मे विभक्त होते है, और जिन्हे उबाल कर खाते है, या जिनसे पकौडी, वरी आदि बनते है।

क्रि० प्र०—दलना।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना=किसी का प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। जैसे—ये बाते किसी और से करना यहाँ तुम्हारी दाल नही गलेगी।

२ हल्दी, मसाला आदि के साथ पानी मे उबाला हुआ कोई उक्त दला हुआ अन्न जो भात, रोटी आदि के साथ सालन की तरह खाया जाता है।

पद—दाल-दलिया, दाल-रोटी। (देखें)

मुहा०—दाल चप्पू होना=एक का दूसरे से उसी प्रकार गुथ या लिपट जाना जिस प्रकार बरतन में से दाल निकालने के समय चप्पू (कलछी) के साथ लिपट जाती है। दाल में कुछ काला होना—ऐसी अवस्था होना जिससे खटके या सदेह की कोई बात हो। जूतियों दाल बाँटना =आपस मे खूब लडाई-झगडा और थुक्का-फजीहत होना।

३ चेचक, फोडे, फुन्सी आदि के ऊपर का चमडा जो सूखकर छूट जाता है। खुरड। पपडी।

क्रि० प्र०—छूटना।—बँधना।

४ सूर्यमुखी शीशे में से होकर आयी हुई किरणों की वह गोलाकार छाया जो दाल के आकार की हो जाती है और जिससे आग पैदा होने लगती है।

मुहा०—दाल बँधना—धूप मे रखे हुए सूर्यमुखी शीशे का ऐसी स्थिति मे होना कि उसकी किरणों का समूह एक केन्द्र मे स्थित होकर दाल का-सा रूप बना दें।

५. अडे की जरदी (अपने पीले रग और द्रव रूप के कारण)।

पु०[स० दल+अण्]१. पेड के खोडर मे मिलनेवाला शहद। २ कोदो नामक कदन्न।

पु०[?] पंजाब और हिमालय मे होनेवाला तुन की जाति का एक पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत होती है।

दालचीनी—स्त्री० =दारचीनी।

दाल-दलिया—पु०[हिं०] गरीबों के खाने का रूखा-सूखा भोजन। जैसे—जो कुछ दाल-दलिया मिल जाय, वही खाकर गुजर कर लेते है।

दालन—पु०[स० √दल् (नाश करना)+णिच् ल्युट्—अन] दाँत का एक रोग।

दालना*—स०=दलना।

दालभ्य—पु० =दाल्भ्य।

दाल-मोठ—स्त्री० [हि० दाल+मोठ=एक कदन्न] घी, तेल आदि मे तली तथा नमक, मिर्च लगी हुई मोठ (अथवा चने मूंग या मसूर आदि) की दाल जिसकी गिनती नमकीन खानो मे होती है।

दाल-रोटी—स्त्री० [हि० पद] १. नित्य का साधारण भोजन। जैसे—किराए की आमदनी मे ही उनकी दाल-रोटी चलती है।

पद—दाल-रोटी से खुश=जिसे साधारण भोजन मिलने मे कोई कष्ट न होता हो।

२ जीविका या उसका साधन।

मुहा०—दाल-रोटी चलना=जीविका निर्वाह होना।

दालव—पु०[स० √दल् (दलन करना)+उन्, दलु+अण्] एक तरह का स्थावर विष।

दाला—स्त्री०[सं० √दल् +घञ् (कर्मणि)+टाप्] महाकाल नामक लता।

दालान—पु०[फा०]किसी भवन या मकान के अन्तर्गत वह लम्बी वास्तु-रचना जिसके तीन ओर दीवारे, ऊपर छत और सामनेवाला भाग बिलकुल खुला होता है। बरामदा।

दालि—स्त्री०[स०√दल्+इन्, नि० सिद्धि] १ दाल। २ देवदाली लता। ३ अनार। दाडिम।

दालिद*—पु०=दारिद्र्य (दरिद्रता)।

दालिम—पु०[स० दाडिम, नि० लत्व] दाडिम। अनार।

दाली—स्त्री०[स० दालि+ङीप्] देवदाली नामक पौधा।

दाल्भ्य—वि०[स० दल्भ+यञ्] दल्भ ऋषि के गोत्र का।

पु०वृक मुनि का दूसरा नाम।

दाल्मि—पु०[स०√दल्(नाश करना)+णिच्+मि (बा०)] इद्र।

दावँ—पु०=दाँव।

दाव—पु०[स०√दु (पीडित करना) +ण]१ वन। जगल। २ जगल

मे लगी हुई आग। दावानल। ३ अग्नि। आग। ४ जलन। ताप। ५ धावरा नामक वृक्ष। ६ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

†पु०=दाँव।

*पु० [स० दर्भ] कुश। घास। दाभ।

दावत—स्त्री०[अ० दअवत] १ किसी को कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला निमत्रण । आवाहन। २ भोजन के लिए दिया जानेवाला निमत्रण। ३ ज्योनार। भोज। जैसे—विवाह पर दावत भी देनी चाहिए।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—मिलना।

पद—दावत नामा=निमत्रण-पत्र।

दावदी—स्त्री०=गुलदावदी।

दावन—वि०[स० दमन] [स्त्री० दावनी] दमन करनेवाला। उदा०—त्रिविघ दोप दुख दारिद दावन।—तुलसी।

पु० १ दमन। २ ध्वस। नाश। ३ खुखडी नाम का हथियार। ४ दराँती या हँसिया नाम का औजार।

स्त्री०[स० दाम] खाट या चारपाई मे पैताने की ओर बाँधी जानेवाली रस्सी। उनचन।

†पु०=दामन।

दावना—स०=दाँवना (दाँना)।

स० [हिं० दावन, स० दमन] दमन करना।

स० [स० दाव]१. आग लगाना। २ प्रकाशमान करना। चमकाना। उदा०—दामिनि दमकि दसो दिसि दावति छूटि छुवत छिति छोर। —भारतेन्दु।

दावनी—स्त्री०[सं० दामनी=रस्सी] माथे पर पहनने का एक तरह का झालरदार लवोतरा गहना।

दावरा—पु०[देश०] धावरा नामक पेड।

दावरी*—स्त्री०=दाँवरी।

दावा—स्त्री०[स० दाव] दावानल।

पु०[अ०]१. किसी वस्तु पर अपना अधिकार या स्वत्व करने की क्रिया या भाव। यह कहते हुए किसी चीज पर हक जाहिर करना कि यह हमारी है या होनी चाहिए। २ अधिकार। स्वत्व। हक। जैसे—उस मकान पर तुम्हारा कोई दावा नही है। ३ न्यायालय मे प्रार्थना-पत्र उपस्थित करते हुए यह कहना कि अमुक व्यक्ति से हमे इतना धन अथवा अमुक वस्तु मिलनी चाहिए जो हमारा प्राप्य है अथवा न्यायत. जिसके अधिकारी हम है। ४ दीवानी अदालत का अभियोग। नालिश। जैसे—महाजन ने उन पर दो हजार रुपयो का दावा किया है। ५ फौजदारी अदालत मे कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे उपस्थित किया जानेवाला उक्त प्रकार का अभियोग। जैसे—किसी पर मानहानि (अथवा लडका भगा ले जाने) का दावा करना। ६ नैतिक अथवा लौकिक दृष्टि से किसी वस्तु या व्यक्ति पर होनेवाला अधिकार, जोर या वग। जैसे—तुम पर हमारा कोई दावा तो है नही जो हम तुम्हे वहाँ जवरदस्ती भेज सके। ७. अभिमान या गर्वपूर्ण कही जानेवाली वात। जैसे—वे इस वात का दावा करते है कि हमने कभी झूठ नही वोला।

दावागीर—पु०[अ० दावा+फा० गीर] दावा करनेवाला। अपना अधिकार या हक जतानेवाला।

दावाग्नि—स्त्री०[स० दाव-अग्नि, मघ्य०स०] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

दावात—स्त्री०=दवात।

दावादार—पु०=दावेदार।

दावानल—पु०[स० दाव-अनल, मघ्य०स०] वन की भीपण आग जो वाँसो, वृक्षो आदि की टहनियो की रगड से उत्पन्न होती है और दूर तक फैलती है। वनाग्नि।

दावित—भू० कृ०[स०√दु (पीडित करना)+णिच्+क्त] पीडित।

दाविनी*—स्त्री०[स० दामिनी] १ विजली। तडित्। २ वेंदी नाम का गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती है।

दावी—पु०[स० धव] धव का पेड।

दावेदार—पु०[अ० दावा+फा० दार]१ वह जिसने किसी पर दावा किया हो। २ किसी चीज पर अपना अधिकार या हक जतलानेवाला व्यक्ति ।

दाश—पु०[स०√दश् (मारना)+ट, आत्व]१ मछलियाँ मारकर खानेवाला। मछुआ। २ केवट। मल्लाह। ३ नौकर। सेवक।

दाश-पुर—पु०[प०त०] १ धीवरो या मछुओ की वस्ती। २ [दाश √पृ (पूर्ति)+क] केवटीमोथा। कैवर्त मुस्तक।

दशमिक—वि०[स०] १. दशम सवधी। २ दशमिक। दशमलव सवधी)।

दाशरथ—वि०[स० दशरथ+अण्] १ दशरथ-सवधी। दशरथ का। २ दशरथ के कुल मे उत्पन्न।

पु० दशरथ के चारो पुत्रो मे से कोई एक, विशेपत श्रीरामचन्द्र।

दाशरथि—पु०[स० दशरथ+इञ्]=दाशरथ।

दाशरात्रिक—वि०[स० दशरात्र+ठञ्–इक] दशरात्र सवधी।

दाशार्ण—पु०[स० दशार्ण+अण्] १ दशार्ण देश। २ उक्त देश का निवासी।

वि० दशार्ण देश का।

दाशार्ह—पु० [स० दशार्ह+अण्] दशार्ह के वश का मनुष्य। यदुवशी।

दाशेय—वि०[स० दाशी+ढक्–एय] दाश से उत्पन्न।

पु० दाश का पुत्र।

दाशेयी—स्त्री०[स० दाशेय+ङीप्] सत्यवती।

दाशेर—पु०[स० दाशी+ढक्–एय, यलोप] धीवर की सतति।

दाशेरक—पु० [स० दाशेर+कन्] १ मरु-प्रदेश। मारवाड देश। २ उक्त प्रदेश का निवासी। मारवाडी। ३. दशपुर का निवासी।

दाशौदनिक—वि० [स० दशन्ओदन व०स०, दशौदन+ठञ्–इक] दशोदन यज्ञ सवधी।

पु० दशोदन यज्ञ मे मिलनेवाली दक्षिणा।

दाश्त—स्त्री०[फा०] किसी को अपने पास रखने की क्रिया या भाव। जैसे—याद-दाश्त। २ अपने पास रखकर पालन-पोषण तथा देख-रेख करने की क्रिया या भाव।

वि०[स्त्री० दाश्ता] अपने पास रखा हुआ।

दाश्ता—स्त्री०[फा० दाश्तः] उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री। रखनी। रखैली।

दाश्व—वि०[सं० √दाश् (दान करना) +क्वन्] १. देनेवाला। २. उदार।

दास—पुं०[सं० √दास् (दान)+अच्] [स्त्री० दासी]१. ऐसा व्यक्ति जिसे किसी ने धन-संपत्ति आदि की तरह अपने अधिकार या स्वामित्व में रखा हो और जिससे वह अपनी छोटी-मोटी सेवाएँ कराता रहता हो। गुलाम।

विशेष—प्राचीन काल में योद्धा लोग और धनवान् लोग गरीबों को खरीदकर अपना दास बना लेते थे और अपने ही घर में तुच्छ सेवकों की तरह रखते थे। ऐसे लोगों की संतान भी दास वर्ग में ही रहती थी। कभी-कभी लोग अपने ऋण या देन न चुका सकने के कारण, जुए में हार जाने के कारण या अकाल में अपना या अपने परिवार का भरण-पोषण न कर सकने के कारण भी अपनी इच्छा से ही दूसरे के दास बन जाते थे। पाश्चात्य देशों में प्रबल जातियाँ दुर्बल जाति के लोगों को पकड़कर और विदेशों में ले जाकर दास रूप में बेचने का व्यवसाय भी करती थीं। ऐसे लोगों को किसी प्रकार की विधिक या सामाजिक स्वतंत्रता नहीं होती थी। हमारे यहाँ मनु ने सात प्रकार के और परवर्ती स्मृतिकारों ने पन्द्रह प्रकार के दास बतलाये हैं। हमारे यहाँ भी विधान था कि ब्राह्मण न तो कभी दास बन सकता था और न तो बनाया जा सकता था। क्षत्रिय और वैश्य कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में दासत्व से मुक्त भी हो सकते थे, परन्तु शूद्र कभी दासत्व के बंधन से मुक्त नहीं हो सकता था।

२. ऐसा व्यक्ति जो अपने आपको किसी की सेवा करने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित कर दे। उदा०—(क) दास कबीरा कह गए सबके दाता राम।—कबीर। (ख) देश या जाति का दास। ३. वह जो हर तरह से किसी के अधिकार, प्रभाव या वश में हो। जैसे—इंद्रियों या दुर्व्यसनों का दास, परिस्थितियों का दास।

४. वह जो वेतन लेकर दूसरों की छोटी-मोटी सेवाएँ करता हो। चाकर। नौकर। सेवक। ५ शूद्र। केवट। ६. धीवर। ७. डाकू या लुटेरा। दस्यु। ८. वृत्रासुर का एक नाम। ९ वह जो किसी दान या विषय मुख्यतः दान का उपयुक्त पात्र हो। १०. वह जिसने आत्मा और ब्रह्म का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। आत्म-ज्ञानी।

†पुं०=दासन (बिछौना)। उदा०—सेज सवाँरि कीन्ह भल दासू।—जायसी।

दासक—पु०[सं० दास+कन्] १. दास। सेवक। २. एक प्राचीन गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

दासता—स्त्री०[सं० दास+तल्—टाप्] १ दास होने की अवस्था या भाव। गुलामी। २ दास का काम।

दासत्व—पु०[सं० दास+त्व]=दासता।

दास-नंदिनी—स्त्री० [सं० ष०त०]धीवर की कन्या सत्यवती जो व्यास की माता थी।

दासन—पु०=दासन (बिछौना)।

दासपन—पुं०[सं० दास+पन (प्रत्य०)] दासत्व। सेवाकार्य।

दासमीय—वि०[सं० दसम+छण्—ईय]१ दसम देश में उत्पन्न। २. दसम देश-संबंधी।

पुं० दसम देश का निवासी।

दासमेय—वि०=दासमीय।

पु०[सं०] एक प्राचीन जनपद।

दासा—पु० [सं० दासी=वेदी] १. दीवार से सटाकर उठाया हुआ वह ऊँचा बाँध या पुश्ता जिसपर घर की चीजें रखी जाती हैं। २ आँगन के चारों ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ वह चबूतरा जो आँगन के पानी को घर या दालान में जाने से रोकने के लिए बनाया जाता है। ३ वह पत्थर या मोटी लकड़ी जो दरवाजे के चौखटे के ठीक ऊपर रहती है और जिससे दीवार का बोझ चौखट पर नहीं पड़ने पाता। ४. पत्थरों की वह पंक्ति जो दीवार के नीचेवाले भाग में लवाई के बल बैठाई जाती है।

†पु०[सं० दशन] हँसिया।

दासानुदास—पु० [सं० दास+अनुदास, ष० त०] १ दासों का भी दास। २. अत्यन्त या परम तुच्छ दास। (नम्रता सूचक)

दासायन—पु०[सं० दास+फक्—आयन] दास पुत्र।

दासिका—स्त्री०[सं० दासी+क+टाप्, ह्रस्व] दासी।

दासी—स्त्री० [सं० दास+ङीप्] १ दास वर्ग की स्त्री। २ सेवा करनेवाली स्त्री। टहलनी। लौंडी। ३ मजदूरनी। ४. शूद्र वर्ण की स्त्री। ५. काक-जंघा। ६ कटसरैया। ७. काला कारोंठा या नीलाम्लान नाम का पौधा। ८. वेदी।

दासेय—वि०[सं० दासी+ढक्—एय] [स्त्री० दासेयी] दासी का वंशज।

पु० १. दास। गुलाम। २ धीवर। मल्लुआ।

दासेयी—स्त्री०[सं० दासेय+ङीप्] व्यास की माता सत्यवती, जो धीवर कन्या थी। दासनंदिनी।

दासेर—पु०[सं० दासी+ढ्रक्—एय, यलोप] १ दास। २. केवट। धीवर। मल्लुआ। ३. ऊँट।

दासेरक—पु०[सं० दासेर+कन्]१. दासी पुत्र। २. ऊँट।

दास्तान—स्त्री०[फा०]१ ऐसा विस्तृत विवरण या वृत्तान्त जिसमें किसी के जीवन के उतार-चढ़ावों की भी चर्चा हो। २. वृत्तान्त। हाल। कथा। कहानी। ३. बहुत लंबा-चौड़ा वर्णन।

दास्य—पु० [सं० दास+ष्यञ्] १. दासता। दासत्व। २ भक्ति के नौ भेदों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उसका दास समझता है।

दास्यमान्—वि०[सं०√दा (देना)+लृट्—शानच्] जो दिया जानेवाला हो। जिसे दूसरे को देना हो।

दास्र—पु०[सं० दस्र+अण्] अश्विनी नक्षत्र।

दाह—पु०[सं०√दह् (जलाना)+घञ्]१. जलाने की क्रिया या भाव। २ हिन्दुओं में शव को जलाने की क्रिया या कृत्य।

क्रि० प्र०—देना।

३ जलन। ताप। ४. किसी प्रकार के रोग के कारण शरीर में होने-वाली ऐसी जलन जिसमें खूब प्यास लगती और मुँह सूखता हो। ५. शोक। संताप। ६. ईर्ष्या या डाह के कारण मन में होनेवाली जलन।

पु०[फा०] दास।

दाहक—वि०[स० √दह् (जलाना)+ण्वुल्–अक] [भाव० दाहकता] १ जलानेवाला। २ दाह-कर्म करनेवाला।

पु०१ अग्नि। आग। २ चित्रक या चीता नाम का पेड।

दाहकता—स्त्री०[स० दाहक+तल्–टाप्] जलने या जलाने की क्रिया, गुण या भाव।

दाहकत्व—पु० [स० दाहक+त्व]=दाहकता।

दाह-कर्म (न्)—पु०[ष० त०]१. मृत शरीर या शव जलाने का कृत्य। २ दाह-सस्कार। (दे०)

दाह-काष्ठ—पु०[च० त०] अगर, जिसे सुगध के लिए जलाते हैं।

दाह-क्रिया—स्त्री०[प० त०] दाह कर्म। (दे०)

दाह-गृह—पु०[प० त०] शव जलाने के लिए श्मशान से भिन्न वह स्थान जहाँ मृत शरीर किसी यत्र मे रखकर विद्युन् आदि की सहायता से जलाये जाते है। (क्रिमेटोरियम)।

दाह-ज्वर—पु०[मध्य०स०] वह ज्वर जिसमे शरीर मे वहुत अधिक जलन होती है।

दाहन—पु०[स० √दह् +णिच्+ल्युट्–अन] १ जलाने की क्रिया या भाव।

दाहना—स० [स० दाहन] १ जलाना। भस्म करना। २ वहुत अधिक कष्ट देना।

†वि०=दाहिना।

दाह-सस्कार—पु०[प०त०] हिन्दुओ के दस सस्कारो मे से एक और अतिम सस्कार जिसमे मृत शरीर चिता पर रखकर जलाया जाता है।

दाह-सर—पु०[सर,√सृ (गति)+अप्, दाह-सर, प०त०] मरघट। श्मशान।

दाह-हरण—पु० [स०] खस।

दाहा—पु०[स० दश से फा० दह्=दस]१ मुहर्रम के दस दिन, जिनमे ताजिया रखा जाता और जिनकी समाप्ति पर दफन किया जाता है। दहा। २ ताजिया।

दाहागुरु—पु० [दाह-अगुरु, च०त०] वह अगरु जिसकी लकडी सुगधि के लिए जलाई जाती है।

दाहिन†—वि०=दाहिना।

दाहिना—वि०[स० दक्षिण] [स्त्री० दाहिनी] १ मानव-वर्ग के प्राणियो मे उस हाथ की दिशा या पार्श्व का , जिस हाथ से वह साधारणत खाता-पीता और अपने अधिकतर काम करता है। मनुष्य के शरीर मे जिधर हृदय होता हैं, उसके विपरीत पक्ष या पार्श्व का । दायाँ। 'वायाँ' का विपर्याय। जैसे—दाहिनी आँख।

विशेष—(क) जव हम पूर्व अर्थात् सूर्योदयवाली दिशा की ओर मुँह करके खडे होते है, तव हमारा जो अग या पार्श्व दक्षिण दिशा की तरफ पडता है, वही हमारा 'दाहिना' कहलाता है। और इसके विपरीत जो अग या पार्श्व उत्तर की ओर पडता है, वह हमारा 'वाँया' कहलाता है। (ख) शरीर-शास्त्र की दृष्टि से अधिकतर प्राणियो मे दाहिनी ओर की पेशियाँ ही अपेक्षया अधिक सवल होती है, और फलत उसी ओर के अगो मे सव तरह के काम करने की अधिक तत्परता और शक्ति होती है। इसी लिए सव लोग खाने, पकडने मारने, लिखने आदि के काम दाहिने हाथ से ही करते है। कुछ लोग वाएँ हाथ से भी उक्त सव काम करते हैं। पर उनकी गिनती अपवाद मे होती है। (ग) जीव-जतुओ के शरीर मे दाहिने-वाएँ अगो या पार्श्वो का निरूपण भी उक्त सिद्धात के आधार पर ही होता है।

मुहा०—**(किसी का) दाहिना हाथ होना**=किसी का वहुत वडा सहायक होना। जैसे—इस काम मे वही तो हमारे दाहिने हाथ रहे है।

पद—**दाहिने वाएँ**=(क) किसी की दाहिनी और वायी ओर। दोनो तरफ। जैसे—उनके दाहिने वाएँ राजे-महाराजे खडे थे। (ख) चारो ओर।

२. मनुष्य के दाहिने हाथ की दिशा मे स्थित। जैसे—आगे वढकर दाहिनी गली मे घूम जाना। ३ अचल, जड या स्थावर पदार्थो के सवध मे, वह अग या पार्श्व जो उनके मुँह या सामनेवाले भाग का ध्यान रखते हुए अथवा उनकी गति, प्रवृत्ति आदि के विचार से उक्त सिद्धान्त के आधार पर निश्चित या स्थिर होता है। जैसे—(क)पडित जी का मकान हमारे मकान की दाहिनी ओर पडता है। (ख) पटना और वाँकीपुर दोनो गगा के दाहिने किनारे पर स्थित हैं। (ग) रगमच पर नायिका दाहिने कक्ष से आई थी और नायक वाएँ कक्ष से आया था। ४ जड परन्तु चल पदार्थो के सवध मे (उस स्थिति मे जव वे हमारे सामने आते या पडते हो) उस दिशा या पार्श्व का जो हमारे दाहिने हाथ के ठीक सामने या पास पडता है। जैसे—(क) उर्दू लिपि दाहिनी ओर से लिखी जाती है। (ख) अलमारी के नीचेवाले खाने मे दाहिने सिरे पर जो किताव रखी है वह उठा लाओ।

विशेष—ऐसी स्थिति मे उस पदार्थ या वस्तु का जो अग या पार्श्व उक्त आधार पर वास्तव मे दाहिना होता हे, वह हमारे लिए वायाँ ही जाता है। उदाहरणार्थ, यदि किसी चित्र मे दस आदमी एक पक्ति मे खडे हो और हमे उन दसो आदमियो के नाम उस चित्र के नीचे लिखने पडें तो हम लिखेंगे—'चित्र मे खडे हुए लोगो के नाम वाईं ओर से इस प्रकार हैं।' यहाँ उक्त सिद्धान्त के आधार पर चित्र का जो वास्तविक दाहिना पार्श्व होगा, वह हमारे लिए वायाँ हो जायगा और उसके वाएँ पार्श्व को हम अपनी दृष्टि से दाहिना कहेगे। परन्तु पहनने की कुछ चीजें जव हमारे सामने आवेंगी, तव भी हम उनके दाहिने-वाएँ का निरूपण अपने शरीर के अगो के विचार से ही करेंगे। जैसे—(क) दरजी ने इस कुरते की दाहिनी आस्तीन कुछ टेढी (या तिरछी) काटी है। (ख) हमारा दाहिना जूता एडी पर से घिस गया है। (ग) हमारा दाहिना दास्ताना (या मोजा) खो गया।

५. जो आचरण, व्यवहार आदि मे अनुकूल, उदार, प्रसन्न अथवा कार्यो मे विशिष्ट रूप से सहायक हो। उदा०—सदा भवानी दाहिने, गौरी पुत्र गणेश।

पु० गाडी, हल आदि मे जोडी के साथ जोता जानेवाला वह पशु जो सदा दाहिने ओर रखा जाता हो।

दाहिनावर्त्त—वि०, पु०=दक्षिणावर्त।

†पु०=परिक्रमा।

दाहिनी—स्त्री०[हिं० दाहिना] देवता आदि की वह परिक्रमा जो उन्हे अपने दाहिने हाथ की ओर रखकर की जाती है। दक्षिणावर्त परिक्रमा। प्रदक्षिणा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

मुहा०—दाहिनी लाना=दक्षिणावर्त परिक्रमा करना। प्रदक्षिणा करना।

दाहिने—क्रि० वि०[हिं० दाहिना]१ दाहिने हाथ की ओर। उस तरफ जिस तरफ दाहिना हाथ हो। जैसे—उनका मकान हमारे मकान के दाहिने पडता है। २ आचरण, व्यवहार आदि मे अनुकूल, उदार या प्रसन्न रहकर। जैसे—हम तो यही चाहते है कि आप सदा दाहिने रहे।

दाही (हिन्)—वि० [स०√दह् (जलाना)+णिनि] [स्त्री० दाहिनी दाहिन्+ङीप्] १ जलानेवाला। भस्म करनेवाला। २. दु ख देनेवाला।

दाहुक—वि० [स०√दह+उकञ् (वा०)] दाही। (दे०)

दाह्य—वि० [स०√दह+ण्यत्] जलाने योग्य।

दिंक—पु० [स० दिङ√कै (शब्द करना)+क] जूँ।

दिंड—पु० [?] एक तरह का नृत्य।

दिंडि—पु० [स० तिण्डि (पृषो० सिद्धि)] दिंडिर। (दे०)

दिंडिर—पु० [स० हिण्डिर (पृषो० सिद्धि)] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

दिंडी—पु० [स० दिण्डि+ङीप् ?] उन्नीस मात्राओ का एक छद, जिसमे नौ और दस मात्राओ पर विश्राम होता है और अत मे दो गुरु होते है।

दिंडीर—पु० [स० हिण्डीर, पृषो० सिद्धि] समुद्रफेन।

दिअना—पु० दीया (दीपक)। उदा०— सबके महल मे दिअना जरतु है, हमारी झोपडिया प्रभु कीन्ह अँधेरा।—गीत।

† स० दीया जलाना।

दिअरी†—स्त्री० = दिअली।

दिअला†—पु० = बडी दिअली। दे० 'दिअली'।

दिअली—स्त्री० [हि० दीया (छोटा कसोरा) का स्त्री० अल्पा०] १ मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरे के आकार का पात्र, जिसमे प्राय बत्ती जलाई जाती है। २. चमकी, बादले आदि की अथवा धातुओ आदि की बनी हुई वह छोटी कटोरी जो झालर आदि बनाने के लिए कपडो मे टाँकी जाती है। ३ चेचक, सूखे हुए घाव आदि के मुँह पर जमी हुई पपडी। खुरड। ४ मछली के ऊपर का गोलाकार छोटा चमकीला छिलका। मेहरा।

दिआ—पु० = दीया (दीपक)।

दिआना†— स० = दिलाना।

दिआबत्ती—स्त्री० = दीया-बत्ती।

दिआर—पु० = दयार।

दिआरा—पु० [?] १ दे० 'दयार'। २ दे० 'दियारा'।

दिआसलाई—स्त्री०=दिया-सलाई।

दिउला—पु० = बडी दिउली।

दिउली—स्त्री० = दिअली।

दिक् (श्)—स्त्री० [स०√दिश्+क्विन्] दिशा। ओर। तरफ।

विशेष—दिक् शब्द का मूल रूप दिश् है, किन्तु समस्त शब्दो मे सन्धि के अनुसार कही इसके रूप दिक्, कही दिग् और कही दिङ् दिखाई पडेंगे।

दिक—वि० [अ० दिक] १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तंग। जैसे—तुम तो बहुत दिक करते हो। २ अस्वस्थ। बीमार।

पु० क्षय नामक रोग। तपेदिक।

दिकचन—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊख जिसका गुड बहुत अच्छा बनता है।

दिकदाह—पु० दे० 'दिग्दाह'।

दिकली†—स्त्री० [?] चने की दाल।

दिकाक—पु० [अ० दकीक = बारीक] किसी चीज का कटा हुआ छोटा टुकडा। कतरन। धज्जी।

वि० [अ० दकियानूस] बहुत बडा चालाक। गुरुघंट।

† स्त्री० [?] बर्रे। भिड।

दिक्क—पु० [स० दिग्√कै (शब्द करना)+क] हाथी का बच्चा।

वि०, पु० = दिक।

दिक्कत—स्त्री० [अ०] १. दिक होने की अवस्था या भाव। २. कष्ट। तकलीफ। ३ परेशानी। हैरानी। ४. कठिनता। मुश्किल। जैसे—यह काम बहुत दिक्कत से होगा।

दिक्-कन्या—स्त्री० [सं० कर्म० स०] दिशारूपी कन्या। प्रत्येक दिशा जो ब्रह्मा की कन्या के रूप मे मानी गई है।

दिक्कर—पु० [स० दिक्√कृ (करना)+टच्] [स्त्री० दिक्करिका] १. महादेव। शिव। २. नवयुवक। जवान।

दिक्करवासिनी—स्त्री० [स० दिक्कर√वस् (बसना)+णिनि+ङीप्] पुराणानुसार दिक्कर अर्थात् महादेव मे निवास करनेवाली एक देवी।

दिक्किर—पु० = दिक्करी।

दिक्करिका—स्त्री० [स० दिक्करिन्√कै (शोभित होना)+क+टाप्] पुराणानुसार एक नदी जो मानसरोवर के पश्चिम मे बहती है। यह नदी दिग्गजो के क्षेत्र से निकली हुई मानी गई है।

दिक्करी (रिन्)—पु० [स० दिश् (क्)-करि (री) न्, ष० त०] आठो दिशाओ के ऐरावत आदि आठ हाथी। दिग्गज।

दिक्कांता—स्त्री० [स० कर्म० स०] दिक् कन्या।

दिक्-कुमार—पु० [ष० त०] जैनियो के अनुसार भवनपति नामक देवताओ मे से एक।

दिक्-चक्र—पु० [ष० त०] आठो दिशाओ का समूह।

दिक्-पति—पु० [ष० त०] १ ज्योतिष के अनुसार दिशाओ के स्वामी ग्रह। २ दे० 'दिक्पाल'।

दिक्पाल—पु० [स० दिक्√पाल् (पालना)+णिच्+अण्] १. पुराणानुसार दसो दिशाओ का पालन करनेवाला देवता। यथा—पूर्व के इन्द्र, अग्निकोण के वह्नि, दक्षिण के यम, नैऋत्यकोण के नैऋत, पश्चिम के वरुण, वायु कोण के मरुत्, उत्तर के कुबेर, ईशान कोण के ईश, ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधो दिशा के अनत। २ चौबीस मात्राओ का एक छद जिसमे १२ मात्राओ पर विराम होता है। उर्दू का रेख्ता यही छंद है।

दिक्-शूल—पु० [स० त०] = दिशा शूल।

दिक्-साधन—पु० [ष० त०] वह उपाय या क्रिया जिससे दिशाओ का ठीक ज्ञान हो।

दिक्-सुन्दरी—स्त्री० [कर्म० स०] दे० 'दिक्कन्या'।

दिक्-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] = दिक्पति।

दिक्षा—स्त्री० = दीक्षा।
दिक्षागुरु—पु० = दीक्षा गुरु।
दिक्षित—भू० कृ०=दीक्षित।
दिखणी—वि० [स० दक्षिणी]। दक्षिणी। उदा०—झूठा पाट पटवरा रे, झूठा दिखणी चीर।—मीराँ।
दिखना—अ० [हि० देखना] दिखाई देना। देखने मे आना।
दिखराना†— स० = दिखलाना।
दिखरावना†— स० = दिखलाना।
दिखरावनी—स्त्री० = दिखावनी।
दिखलवाई—स्त्री० [हि० दिखलाना] १ दिखलवाने की क्रिया, या भाव या पारिश्रमिक। २ दे० 'दिखलाई'।
दिखलवाना—स० [हि० दिखलाना का प्रे० रूप] किसी को कोई चीज दिखलाने मे प्रवृत्ति करना।
† स० = दिखलाना।
दिखलाई—स्त्री० [हि० दिखलाना] १ दिखलाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ वह चीज या धन जो कुछ देखने या दिखाने के वदले मे दिया जाय। दिखाई।
दिखलाना—स० [हि० देखना का प्रे० रूप] = दिखलवाना।
दिखलावा—पु० [हि० दिखलाना] १ दिखलाने या दिखलवाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दे० 'दिखावा'।
दिखवैया—पु० [हि० दिखाना+वैया (प्रत्य०)] १ वह जो किसी को कुछ दिखलाये। २. स्वय जिसने कुछ देखा हो। देखनेवाला।
दिखहार*—वि० [हि० देखना+हार (प्रत्य०)] १. देखनेवाला। द्रष्टा। २ जिसे दिखाई देता हो।
दिखाई—स्त्री० [हि० दिखाना+आई (प्रत्य०)] १ देखने की क्रिया या भाव। २ देखने के वदले मे दिया जानेवाला धन, पारिश्रमिक, या पुरस्कार। जैसे—नई आई हुई वहू को दी जानेवाली मुँह-दिखाई। ३ दिखाने की क्रिया या भाव। ४ दिखाने के वदले मे दिया जाने वाला धन, पारिश्रमिक या पुरस्कार। ५ देखे जाने की अवस्था या भाव।
दिखाऊ—वि० [हि० दिखाना या देखना+आऊ (प्रत्य०)] १. (चीज) जो दिखाई जाय। २ देखे जाने के योग्य। दर्शनीय। ३. जो देखने या दिखाने भर मे अच्छा हो, परन्तु जिसमे वास्तविक सार या तत्त्व कुछ भी न हो। दिखौआ। दिखावटी। † ४. दिखानेवाला।
दिखादिखी†—स्त्री० =देखा-देखी।
दिखाना—स० [हि० देखना का प्रे० रूप] १ किसी को कुछ देखने मे प्रवृत्त करना। जैसे—मुँह दिखाना, हाथ दिखाना। २. स्पष्ट रूप मे सामने उपस्थित करना। जैसे—नफा या नुकसान दिखाना। ३. अभिव्यक्त या प्रगट करना। जैसे—गुस्सा या रोव दिखाना। ४ वास्तविक रूप छिपाकर केवल ऊपर से प्रगट करना। जैसे—उन्होने ऐसा भाव दिखाया कि मानो सचमुच अप्रसन्न हो। ५. लोगों के सामने दृश्य रूप मे उपस्थित या प्रदर्शित करना। जैसे—खेल या नाटक दिखाना। ६ अच्छी तरह समझाकर वतलाना या सिद्ध करना। जैसे—हम अव यह दिखायेंगे कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कैसे करती है।
दिखाव—पु० [हि० देखना+आव (प्रत्य०)] १. देखने का भाव या क्रिया। २ ऊपर का वाहर से दिखाई देनेवाला दृश्य या रूप। नजारा। (व्यू) ३. दे० 'दिखावा'।
दिखावट—स्त्री० [हि० देखना+आवट (प्रत्य०)] १ कुछ दिखाने या दिखलाने की क्रिया, ढग या भाव। २ ऊपर या वाहर से दिखाई देनेवाला आकार-प्रकार या रूप-रग। ३ ऊपरी या वाहरी तडक-भड़क। ४. ऐसा आचरण या व्यवहार जो दिखाने भर के लिए हो, और जिसके अन्दर तथ्य या वास्तविकता का वहुत कुछ अभाव हो। वनावट।
दिखावटी—वि० [हि० दिखावट+ई (प्रत्य०)] १ जो देखने मे भडकीला हो, परन्तु जिसमे कुछ सार या तत्त्व न हो। २ केवल औपचारिक रूप से और दूसरो को दिखलाने भर के लिए होनेवाला। नाम मात्र का। दिखौआ। जैसे—दिखावटी शिष्टाचार। ३ झूठा। मिथ्या।
दिखावा—पु० [हि० देखना + आवा (प्रत्य०)] १. दिखलाने की क्रिया या भाव। जैसे—दहेज का दिखावा। २ झूठा ठाठ-वाट। ऊपरी तडक-भडक। आडवर। ३ ऐसा काम जो केवल दूसरो को दिखाने के लिए किया गया हो, पर जिसमे तत्त्व या सार कुछ भी न हो।
दिखैया*—वि० [हि० देखना+ऐया (प्रत्य०)] देखनेवाला।
वि० [हि० दिखाना] दिखानेवाला।
दिखौआ—वि० [हि० देखना+औआ (प्रत्य०)] १ जो केवल देखने योग्य हो, पर काम मे न आ सके। वनावटी। २ जो केवल दूसरो को दिखलाने भर को हो और जिसमे तथ्य, वास्तविकता, सत्यता आदि का अभाव हो। जैसे—दिखौआ व्यवहार।
दिखौवा†—वि०=दिखौआ।
दिग्—स्त्री० [स० दिक्] दिशा।
दिगंगना—स्त्री० [स० दिक्-अगना, कर्म० स०] = दिगागना।
दिगंत—पु० [स० दिक्-अत, प० त०] १ दिशा का अत, छोर या सिरा। २ आकाश की अतिम सीमा या छोर। क्षितिज। ३ ओर। दिशा। ४ चारो दिशाएँ। ५ दसो दिशाएँ।
पु० [स० दृक्+अत] आँख का कोना।
दिगतर—पु० [स० दिक्-अतर, प० त०] दो दिशाओ के वीच का कोना। कोण।
दिगवर—वि० [स० दिक्-अम्वर, व० स०] जिसका अवर दिशाओ के सिवा और कुछ न हो, अर्थात् विलकुल नगा। नग्न।
पु० १ अधकार जो दिशाओ का अम्वर कहा गया। २ महादेव। शिव। ३ एक प्रकार के जैन साधु जो सदा नगे रहते है।
दिगंवरता—स्त्री० [स० दिगम्वर+तल् + टाप्] दिगवर होने की अवस्था या भाव। नगापन। नग्नता।
दिगवरी—स्त्री० [स० दिगम्वर+ङीप्] दुर्गा।
दिगंश—पु० [स० दिक्-अश, प० त] खगोल विद्या मे, क्षितिज वृत्त का ३६० वाँ अश। (गणना मे इसका उपयोग आकाश मे रहनेवाले ग्रहो, नक्षत्रो आदि की स्थिति जानने के लिए होता है।
दिगंश यंत्र—पु० [मध्य० स०] वह यत्र जिसके द्वारा किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगश जाना जाय।
दिगशीय—वि० [स०दिगश+छ–ईय] दिगश-सवधी।
दिगधिप—पु० [स० दिक्+अधिप, प० त०] दिक्पाल।

दिगपाल†—पु०=दिक्पाल।
दिगमग*—वि०=डगमग।
दिगर—वि० [फा० दीगर] दूसरा। अन्य।
दिगवस्थान—पु० [सं० दिक्+अवस्थान, ब० स०] वायु।
दिगशूल—पु०=दिशा-शूल।
दिगागत—वि० [स० दिक्+आगत, प० त०] दूर से आया हुआ।
दिगिभ—पु० [स० दिक्+इभ, प० त०] दिग्गज।
दिगीश—पु० [सं० दिक्+ईश, प० त०] दिक्पाल।
दिगीश्वर—पु० [स० दिक्+ईश्वर, प० त०] १. आठों दिक्पाल। २. सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह।
दिगेश—पु० [स० दिगीश] दिक्पाल।
दिग्गज—पु० [स० दिक्+गज, प० त०] पुराणानुसार वे आठो हाथी जो चारो दिशाओ और चारो कोणो मे पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओ की रक्षा करने के लिए स्थापित है।
वि० हाथी की तरह बहुत बडा या भारी। जैसे—दिग्गज पडित, दिग्गज भवन।
दिग्यद—पु० = दिग्गज।
दिग्गी—स्त्री० = दीघी।
दिग्घ†—वि० = दीर्घ।
दिग्घी—स्त्री० [सं० दीर्घिका] बडा तालाब। दीघी।
दिग्जय—पु० [स० प० त०] दिग्विजय।
दिग्जया—स्त्री० [स० प० त०] दिगश। (दे०)
दिग्दंत—पु० = दिग्दती (दिग्गज)।
दिग्दंती (तिन्)—पु० [स० प० त०] दिग्गज।
दिग्दर्शक—वि० [स० प० त०] १. दिशा बतलाने अथवा उसका ज्ञान करानेवाला। २. दिग्दर्शन कराने वाला।
दिग्दर्शक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] दिशाओ का ज्ञान करानेवाला घड़ी के आकार का एक छोटा यत्र। कुतुबनुमा। (कपास)
दिग्दर्शन—पु० [प० त०] १. दिशा या ओर दिखलाना। २. किसी को यह बतलाना कि किस ओर, किस काम मे अथवा किस प्रकार आगे बढ चलना या बढना चाहिए। ३. यह बतलाना कि किस ओर अथवा दिशा मे क्या-क्या है अथवा हो रहा है। ४. वह तथ्य जो उदाहरण-स्वरूप उपस्थित किया जाय। ५. अभिज्ञता। जानकारी। ६. दे० 'दिग्दर्शक यत्र।'
दिग्दर्शनी—स्त्री० [दिग्दर्शन+ङीप्] दिग्दर्शक यत्र।
दिग्दाह—पु० [स० प० त०] क्षितिज मे होनेवाली एक प्राकृतिक विलक्षण घटनाएँ जिनमे कोई दिशा ऐसी लाल दिखाई देती है कि मानो आग-सी लगी हो। यह अशुभ मानी जाती है।
दिग्देवता—पु० [सं० प० त०] = दिक्पाल।
दिग्ध—वि० [सं०√दिह् (लेपन) +क्त] १. जहर में बुझा या बुझाया हुआ। २. लिप्त। लीन। ३. दीर्घ। लबा।
पु० १. जहर मे बुझाया हुआ तीर या बाण। २. तेल। ३. अग्नि। आग। ४ निबन्ध।
दिग्पट—पु० [सं० दिक्+पट, कर्म० स०] दिक् रुपी वस्त्र। २. दे० 'दिगंबर'।
दिग्पति—पु० [सं० दिक्+पति, प० त०] = दिक्पाल।
दिग्पाल—पु० दिक्पाल।
दिग्बल—पु० [स० प० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार आदि पर स्थित ग्रहो का बल। फलित ज्योतिष मे वह बल जो ग्रहो के किसी विशिष्ट स्थिति मे रहने पर प्राप्त होता है।
दिग्बली (लिन्)—पु० [स० दिग्बल+इनि] १ फलित ज्योतिष मे वह ग्रह जो किसी दिशा के लिए बली हो। २. वह राशि जिसे किसी ग्रह से बल प्राप्त हो रहा हो।
दिग्भू—स्त्री० [स० द्व० स०] दिशाएँ और पृथ्वी। उदा०—कपित दिग्भू अबर, ध्वस्त अहंमद डबर। —पंत।
दिग्भ्रम—पु० [स० प० त०] दिशाओ के सबध मे होनेवाला भ्रम। जैसे—भूल से पश्चिम को दक्षिण या पूर्व समझना।
दिग्मंडल—पु० [स० दिङ्+मडल, प० त०] दिशाओ का समूह। समस्त दिशाएँ।
दिग्राज—पुं० [स० प० त०,+टच्] = दिक्पाल।
दिग्वसन—पु० [स० ब० स०] दिग्वस्त्र। (दे०)
दिग्वस्त्र—पु० [स० ब० स०] १ महादेव। शिव। २ लग्न। ३. दिगबर जैन यति।
दिग्वान् (वत्)—पु० [स० दिग्+मतुप्, म–व] चौकीदार। पहरेदार।
दिग्वारण—पु० [स० प० त०] दिग्गज।
दिग्वास (स्)—पु० [स० ब० स०] दिग्वस्त्र। (दे०)
दिग्विन्दु—पुं० [सं० मध्य० स०] वह विन्दु या निश्चित-स्थान जो सीध या ठीक उत्तर, दक्षिण, पूर्व या पश्चिम मे पडता है। (कार्डिनल प्वाइंट)
दिग्विजय—स्त्री० [स० प० त०] १. प्राचीन भारतीय महाराजाओ की एक प्रथा जिसमे वे अपना पौरुष और बल दिखाने के लिए सेना सहित निकलकर आस-पास विशेषत चारो ओर के देशो और राज्यो को अपने अधीन करते चलते थे। २ किसी बहुत बडे गुणी या पडित का दूसरे स्थानो पर आकर वहाँ के गुणियो और विद्वानो को अपनी कलाओ, गुणो आदि से परास्त करके उन पर अपनी विशिष्टता का सिक्का जमाना।
दिग्विजयी (यिन्)—वि० [स० दिग्विजय+इनि] [स्त्री० दिग्विजयनी दिग्विजयिन्+ङीप्] जिसने दिग्विजय प्राप्त की हो।
दिग्विभाग—पु० [स० प० त०] दिशा। ओर। तरफ।
दिग्विभावित— वि० [स० स० त०] जिसकी प्रसिद्धि सभी दिशाओ मे अर्थात् सब जगह हो।
दिग्व्यापी (पिन्)—वि० [स० दिक्+वि√आप् (पहुँचना)+णिनि] [स्त्री० दिग्व्यापिनी दिग्व्यापिन्+ङीप्] सब दिशाओ मे व्याप्त रहने या होनेवाला।
दिग्व्याप्त—वि० [स० स० त०] सब दिशाओ मे व्याप्त।
दिग्व्रत—पु० [स० मध्य० स०] एक तरह का व्रत जिसमे कुछ निश्चित समय के लिए किसी निश्चित दिशा मे नही जाया जाता। (जैन)
दिग्शिखा—स्त्री० [स० प० त०] पूर्व दिशा।
दिग्शूल—पुं० = दिशा शूल।
दिग्सिधुर—पु० [स० प० त०] गिदग्ज।
दिघी—स्त्री० = दीघी।

दिघोच—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसके डैने कुछ काले तथा सुनलहे रग के होते हैं।
दिघ्घ—वि० =दीर्घ।
दिङ-नक्षत्र—पु० [स० मध्य० स०] चारो दिशाओ से सबधित कुछ विशिष्ट नक्षत्रो का समूह।
विशेष—प्रत्येक दिशा मे ऐसे सात-सात नक्षत्र माने गये हैं।
दिङ्नाग—पु० [स० प० त०] १ दिग्गज। २ एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य जो ईसवी चौथी शती मे हुए थे।
दिङ्-नाथ—पु० [स० प० त०] १. दिग्गज। २. एक प्राचीन बौद्ध आचार्य जो कालिदास के समकालीन और प्रतिद्वद्वी कहे जाते हैं।
दिङ्-नारी—स्त्री० [स० मध्य० स०, वा प० त०] १. वेश्या। रडी। २ कुलटा या दुश्चरित्रा स्त्री। पुश्चली।
दिङ्-मंडल—पु० [स० प० त०] दिशाओं का समूह।
दिङ्-मातंग—पु० [स० प० त०] दिग्गज।
दिङ्-मात्र—पु०[स० दिक्+मात्रच्]१. उदाहरण मात्र। २. सकेत मात्र।
दिङ्मूढ़—वि० [स० प० त०] १. जिसे दिशाओ का ज्ञान न होता हो। २ बेवकूफ। मूर्ख।
दिङ्-मोह—पु० [स० प० त०] दिग्भ्रम।
दिच्छा† —स्त्री० =दीक्षा।
दिच्छित—भू० कृ०=दीक्षित।
दिजराज*—पु० = द्विजराज।
दिजोत्त*—पु० = द्विजोत्तम।
दिट्ठ*—वि० =दृष्ट।
दिट्ठि*—स्त्री० =दृष्टि।
दिठवन†— स्त्री० = देवोत्थान एकादशी।
दिठादिठी'—स्त्री० [हिं० दीठ] देखादेखी। उदा०—लहि सूतै घट करु गहत दिठादिठी की ईठि।—बिहारी।
दिठाना† —स० [हिं० दीठ+आना (प्रत्य०)] १ नजर लगाना। दृष्टि लगाना। २ दिखाना। (क्व०)
अ० १. नजर लगना। २ दिखाई देना। (क्व०)
दिठियार—वि० [हिं० दीठ=दृष्टि + इयार (प्रत्य०)] १. देखनेवाला। २ जिसे दिखाई देता हो। ३ समझदार। बुद्धिमान।
दिठौना—पु० [हिं० दीठ =दृष्टि+औना (प्रत्य०)] काजल का वह वेढगा चिह्न या बिंदी जो लोग छोटे बच्चों के माथे या गाल पर उन्हें दूसरो की बुरी नजर से बचाने के लिए लगाते है।
क्रि० प्र० —लगाना।
दिढ़ †—वि० =दृढ।
दिढ़ता† —स्त्री० =दृढता।
दिढाई† —स्त्री० = दृढता।
दिढ़ाना—स० [स० दृढ+हिं० आना (प्रत्य०)] १ दृढ अर्थात् ठीक और पक्का करना या बनाना। २ पूर्ण रूप से निश्चित या स्थिर करना।
अ० १ दृढ या पक्का होना। २ निश्चित या स्थिर होना।
दिढ़ाव—पुं० [हिं० दिढाना] १ दृढ या निकुचत करने की क्रिया या भाव। २ दृढता। उदा०—है दिढाइबे जोग जो ताको करत दिढ़ाव।—भूषण।

दिणयर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।
दित—भू० कृ० [स०√दो (खण्डन करना)+क्त इत्व] १ कटा हुआ। २ विभक्त। ३ खडित।
दितवार†—पु० = आदित्यवार (रविवार)।
दिति—स्त्री० [स०√दो +क्तिच्, इत्व] १ कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या और दैत्यो की माता थी। २. काटने, तोडने-फोडने आदि की क्रिया या भाव।
वि० देनेवाला। दाता।
दिति-कुल—पु० [प० त०] दैत्यो का कुल या वश।
दितिज—वि० [स० दिति√जन् (उत्पन्न होना)+ड, उप० स०] [स्त्री० दितिजा] दिति से उत्पन्न।
पु० =दैत्य।
दिति-सुत—पु० [प० त०] दैत्य। राक्षस।
दित्य—पु० [स० दिति+यत्] दैत्य।
वि० काटे या छेदे जाने के योग्य। जो काटा या छेदा जा सके।
दित्सा—स्त्री० [स०√दा (देना) +सन्+अ +टाप्] १ दान करने या देने की इच्छा। २ वह व्यवस्था जिसके अनुसार कोई अपनी सपत्ति का बँटवारा अमुक-अमुक लोगो मे अपने मरने के उपरात चाहता है। (विल)
दित्साक्रोड़—पु० [प० त०]१. दित्सापत्र के अत मे लिखा हुआ परिशिष्ट रूप मे कोई सक्षिप्त लेख या टिप्पणी जो किसी प्रकार की व्यवस्था या स्पष्टीकरण के रूप मे होती है। २ दित्सा-पत्र का वह अश जिसमे उक्त प्रकार का लेख हो। (कोडिसिल)
दित्सापत्र—पु० [प० त०] वह पत्र या लेख जिसमे यह निर्देश होता है कि मेरे मरने के उपरात मेरी सपत्ति अमुक-अमुक लोगों को अमुक-अमुक मात्रा मे दी जाय। वसीयतनामा। इच्छापत्र। (विल)
दित्सु—वि० [स० √दा (देना)+सन्+उ] १ जो दान करने या देने को इच्छुक हो। २ जिसने अपनी सपत्ति के सबध मे दित्सा-पत्र लिखा हो। वसीयत करनेवाला।
दित्स्य—वि० [स०√दा+सन्+ण्यत्] जो दान किया जा सके। किसी को दिये जाने के योग्य।
दिदार† —पु० = दीदार।
दिदृक्षा—स्त्री० [स०√दृश् (देखना)+सन्+अ+टाप्] देखने की अभिलाषा या इच्छा।
दिदृक्षु—वि० [स०√दृश्+सन्+उ] देखने की अभिलाषा या इच्छा रखनेवाला।
दिदृक्षेण्य—वि० [स० √दृश्+सन्+केन्य] दिदृक्षेय। (दे०)
दिदृक्षेय—वि०[स० दिदृक्षा+ढक्—एय (वा०)] देखने योग्य। दर्शनीय।
दिद्यु—पु० [स० दिद्युत् मे] १ वज्र। २. तीर। बाण।
दिद्युत्—पु० [सं० √ द्युत् (चमकना) + क्विप् (नि० सिद्धि)] वज्र।
दिधि—पु० [स०√धा (धारण करना)+कि] १ धारण करने की क्रिया या भाव। २ धैर्य। ३ दृढता।
दिधिषु—पुं० [स० दिधि√सो (नष्ट करना)+कु] १ पहले एक बार व्याही हुई स्त्री का दूसरा पति। दोबारा व्याही हुई स्त्री का दूसरा

पति। २ गर्भाधान करनेवाला व्यक्ति। ३ स्त्री की दृष्टि से उसका दूसरा पति।

दिधिषू—स्त्री० [स० दिधि√सो+कू] १. वह स्त्री जिसके दो व्याह हुए हो। २ वह स्त्री जिसका विवाह उसकी बड़ी बहन के विवाह से पहले हुआ हो।

दिधिषू-पति—पु० [ष० त०] विधवा भावज से अनुचित सबध रखनेवाला व्यक्ति।

दिन—पु० [स०√दो (खण्ड करना)+इनन्] १ उतना पूरा समय जितने मे सूर्य हमारे ऊपर अर्थात् आकाश मे रहता है। सूर्य के उदय से लेकर अस्त तक का अर्थात् सवेरे से सन्ध्या तक का सारा समय। दिवस।

मुहा०—दिन उतरना=दिन ढलना। दिन को तारे दिखाई देना=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना या विह्वल होना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। उदा०—तारे ही दिखायी दिये दिन मे विपक्ष को।—मैथिलीशरण। दिन को दिन और रात को रात जानना या न समझना=कोई बडा काम करते समय अपने आराम, सुख, विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। दिन चढ़ना=सूर्य निकलने के उपरान्त कुछ और समय बीतना। दिन छिपना या डूबना=दिन का अत होने पर सूर्य का अस्त होना। दिन ढलना=दोपहर बीत जाने पर दिन का अत अर्थात् सूर्यास्त का समय पास आने लगना। दिन दूना या रात चौगूना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत अधिक बढना। खूब उन्नति पर होना। दिन निकलना=सूर्य का उदय होना। दिन चढना। दिन बूडना या मुँदना=दिन डूबना। (देखे ऊपर)

पद—दिन दहाडे या दिन दोपहर=ऐसे समय जब कि दिन पूरी तरह से निकला हो और सब लोग जागते और देखते हों। दिन धौले=दिन दहाडे।

दिन रात=(क) हर समय। सदा। (ख) उतना सब समय जितने मे पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर पूरा घूमती है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। दिन और रात दोनो का सारा समय जो २४ घटो का होता है।

विशेष—(क) ज्योतिष मे दिन की गणना या विचार दो प्रकार से होता है—एक तो नक्षत्र के विचार से, जिसे नाक्षत्र दिन कहते है और दूसरा सूर्य के विचार से जिसे सौर या सावन कहते है। नाक्षत्र दिन उतने समय का होता जितने मे एक नक्षत्र याम्योतर रेखा पर से होता हुआ आगे बढता और फिर याम्योतर रेखा पर आता है। यही समय पृथ्वी को एक बार अपने अक्ष पर घूमने मे लगता है। नक्षत्र के याम्योत्तर रेखा पर दोबारा आने और पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने मे सदा एक-सा समय लगता है। उसमे कभी क्षणमात्र का भी अतर नही पडता। सौर या सावन दिन उतने समय का होता है, जितना समय सूर्य को एक बार याम्योत्तर रेखा पर से होकर आगे बढने और फिर दोबारा या याम्योत्तर रेखा पर आने मे लगता है। यह समय बराबर थोडा-बहुत घटता-बढ़ता रहता है, इसी लिए चाद्र वर्ष और सौर वर्ष मे कुछ अतर पडता है जो किसी विशिष्ट युक्ति से दूर किया जाता है। हमारे यहाँ तथा अनेक प्राचीन जातियो मे एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का सारा समय एक पूरा दिन माना जाता था और आज-कल भी एशिया तथा यूरोप के अनेक देशो मे ऐसा ही माना जाता है। परन्तु आज-कल पाश्चात्य देशो के प्रभाव के कारण नागर कार्यों के लिए और वैधिक क्षेत्रो मे एक मध्य रात्रि से दूसरी मध्य रात्रि तक का समय दिन माना जाता है। आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिष एक मध्याह्न से दूसरे मध्याह्न तक के समय को पूरा दिन मानते हैं। (ग) दिनो की गिनती सप्ताह, महीनो और वर्ष के हिसाब से भी की जाती है।

पद—दिन-दिन या दिन पर दिन=नित्यप्रति। सदा। हर रोज। दिन-ब-दिन=दिन-दिन या दिन पर दिन।

३ वार। जैसे—आज कौन दिन है?

क्रि० प्र०—काटना।—गवाना।—बिताना।

४. प्रस्तुत परिस्थितियों या वर्तमान स्थितियो के विचार से बीतनेवाला काल या समय। समय। काल। वक्त। जैसे—उनके अच्छे दिन तो चले गये, अब बुरे दिन आ रहे है।

मुहा०—(किसी पर) दिन पडना=कष्ट या विपत्ति के दिन आना। दिन पूरे करना=जैसे तैसे कष्ट का समय बिताना। दिन फिरना या बहुरना=कष्ट या विपत्ति के दिन निकल या बीत जाने पर अच्छे और सौभाग्य के दिन आना। दिन बिगडना=कष्ट या विपत्ति के दिन आना। दिन भरना या भुगतना=दिन पूरे करना। (देखे ऊपर)

पद—दिनों का फेर=भाग्य बिगडे हुए होने का समय। अच्छे दिनो के बाद बुरे दिन आना।

५. नियत या उपयुक्त काल। निश्चित या उचित समय।

मुहा०—(किसी काम या बात का) दिन आना=उचित या नियत समय आना। जैसे—मृत्यु का दिन आना; स्त्री के रजस्वला होने का दिन आना। (किसी काम या बात के लिए) दिन धरना=तिथि या दिन निश्चित करना।

६ ऐसा समय जिसमे कोई विशिष्ट घटना या बात हो अथवा होती हो। मुहा०—(स्त्रियों के पक्ष में) दिन चढना या लगना=स्त्री का रजस्वला होने का समय निकल जाने पर भी कुछ और दिन बीतना जो उसके गर्भवती होने का सूचक होता है। जैसे—उसकी बहू को दिन चढे (या लगे) हैं। दिनो से उतरना=युवावस्था बीत जाना। जवानी ढलना।

*अव्य० १ नित्य-प्रति। हर रोज। २ निरतर। बराबर। सदा।

उदा०—दिन दूलह मेरो कुवर कन्हैया।—गदाधर भट्ट।

दिनअर*—पुं० = दिनकर (सूर्य)।

दिनकंत—पु० [स० दिन+हि० कत (कात)] सूर्य।

दिनकर—पु० [स० दिन√कृ(करना)+ट्च्] १ सूर्य। २ आक या मदार का पौधा।

दिनकर-कन्या—स्त्री० [ष० त०] यमुना।

दिनकर-कांति—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

दिनकर-सुत—पु० [ष० त०] १. यम। २ शनि। ३. सुग्रीव। ४ कर्ण। ५ अश्विनीकुमार।

दिन-कर्त्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] = दिनकर (सूर्य)।

दिन-कृत्—पु० [स० दिन√कृ (करना)+क्विप्] = दिनकर।

दिन-केसर—पु० [ष० त०] अधकार। अँधेरा।

दिन-क्षय—पु० [प० त०] तिथि-क्षय। (दे०)
दिनचर्या—स्त्री० [प० त०] नित्य प्रति किये जानेवाले कार्यो का क्रमिक-रूप। नित्य किये जानेवाले सब काम। जैसे—नहाना-धोना, खाना-पीना, काम-धधे या नौकरी पर जाना आदि।
दिनचारी (रिन्)—पु० [स० दिन्√चर् (गति)+ णिनि] सूर्य।
दिन-ज्योति (स्)—स्त्री० [प० त०] १ दिन का उजाला या प्रकाश। २ धूप।
दिन-दानी (निन्)—पु० [प० त०] प्रतिदिन दान करनेवाला। सदा या हमेशा देनेवाला।
दिन-दीप—पु० [प० त०] सूर्य।
दिन-दुःखित—पु० [स० त०] चकवा (पक्षी)।
दिन-नाथ—पु० [प० त०] सूर्य।
दिन-नायक—पु० [प० त०] सूर्य।
दिननाह*—पु० =दिननाथ (सूर्य)।
दिन-पंजी—स्त्री० [प० त०] दे० 'दैनदिनी'।
दिनप—पु० [स० दिन√पा (रक्षा करना) + क, उप० स०]=दिन-पति (सूर्य)।
दिन-पति—पु० [प० त०] १ दिन या वार के पति या स्वामी। २. सूर्य। ३ आक। मदार।
दिन-पत्र—पु० [प० त०] वह पत्र या पत्र-समूह जिसमे अलग-अलग दिन या वार, तिथियाँ, तारीखें, आदि क्रम से दी रहती है। तिथि- पत्र। (कैलेंडर)
दिन-पाकी अजीर्ण—पु० [स० दिन पाकी, दिन√पच् (पचना) +णिनि, दिनपाकी और अजीर्ण व्यस्त पद] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे एक वार का किया हुआ भोजन आठ पहर मे पचता है, वीच मे भूख नही लगती।
दिन-पात—पु० [प० त०] तिथि-क्षय। (दे०)
दिन-पाल—पु० [स० दिन√पाल् (रक्षा) +णिच्+अण्] सूर्य।
दिन-बंधु—पु० [प० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार।
दिन-बल—पु० [व० स०] दिन के समय सवल पडनेवाली राशि। (ज्यो०)
दिन-भृति—स्त्री० [प० त०] वह मजदूरी जो काम करने के दिनो के अनुसार मिले। (मासिक वेतन से भिन्न)
दिन-मणि—पु० [प० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार।
दिन-मनि*—पु०=दिन-मणि।
दिन-मयूख—पु० [व०स०] १ सूर्य। २ आक। मदार।
दिन-मल—पु० [प०त०] मास। महीना।
दिन-मान—पु० [प० त०] ज्योतिप मे, काल-गणना के लिए, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय अर्थात् पूरे दिन का मान, जो घडियो और पलो अथवा घटो और मिनटो मे निश्चित होता है। और वरावर कुछ न कुछ घटता-वढता रहता है।
*पु०=दिन-मणि (सूर्य)। उदा०—गिरि-शिखर पर थम गया है डूवता दिन-मान।—दिनकर।
दिनमाली (लिन्)—पु० [स० दिनमाला, प० त०,+इनि] सूर्य।
दिन-मुख—पु० [प० त०] प्रभात। सवेरा।
दिन-रत्न—पु० [प० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार।
दिनराई*—पु०=दिन-राज (सूर्य)।
दिनराउ—पु०=दिन-राज (सूर्य)।
दिन-राज—पु० [ष० त०, टच् समा०] सूर्य।
दिनरी—स्त्री० [?] वुदेलखड मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ चैती फसल काटते समय गाती है।
दिन-शेष—पु० [प० त०] सायंकाल। सध्या।
दिनाक—पु० [दिन-अक, प० त०] वह क्रमिक सख्या जो किसी विशिष्ट वर्ष के विशिष्ट मास के दिन का ठीक-ठीक वोध कराती हो। तारीख। तिथि। (डेट)
दिनांकित—भू० कृ० [स० दिनाक+इतच्] जिस पर दिनांक लिखा हुआ या लिखा गया हो।
दिनांड—पु० [स० दिनात] अधकार। अँधेरा।
दिनात—पु० [दिन-अत, प० त०] सायकाल। सध्या। शाम।
दिनांतक—पु० [दिन-अतक, प० त०] अधकार। अँधेरा।
दिनांध—वि० [दिन-अध, स० त०] जिसे दिन मे कुछ दिखलाई न पडता हो।
दिनांश—पु० [दिन-अश, प० त०] १ दिन के अंश या विभाग। २ दिन के प्रात काल, मध्याह्न और सायकाल ये तीन अश या विभाग।
दिनाइ—पु० [देश०] दाद (रोग)।
दिनाई—स्त्री० [स० दिन, हिं० आना] कोई ऐसी विपाक्त वस्तु जिसे खा लेने के कुछ समय उपरात मृत्यु हो जाय। अतिम दिन (मृत्यु-काल) लानेवाली चीज।
† स्त्री० = दाद (रोग)।
दिनागम—पु० [दिन-आगम, प० त०] प्रभात। तडका।
दिनाती—स्त्री० [हिं० दिन + आती (प्रत्य०)] १ मजदूरो विशेपत. खेत मे काम करनेवालो का एक दिन का काम। २ उक्त प्रकार के एक दिन का पारिश्रमिक या मजदूरी। दिहाडी।
दिनातीत—वि० [दिन-अतीत, द्वि० त०] १ जिसका चलन या प्रचलन न रह गया हो। जिसके दिन वीत चुके हों। २ रुचि, शैली आदि के विचार से पिछडा हुआ। (आउट ऑफ डेट)
दिनात्यय—पु० [दिन-अत्यय, प० त०] सूर्यास्त।
दिनादि—पु० [दिन-आदि, प० त०] = दिनागम।
दिनाधीश—पु० [दिन-अधीश, प० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार।
दिनानुदिन—क्रि० वि० [दिन-अनुदिन, अव्य० स०] दिन पर दिन। नित्य प्रति। प्रति दिन।
दिनाप्त—वि० [दिन-आप्त, द्वि० त०] आज-कल या वर्तमान काल की आवश्यकता, रुचि, प्रचलन, शैली आदि के अनुसार ठीक। अद्यावधिक। (अपटुडेट)
दिनाय—स्त्री० = दाद (चर्मरोग)।
दिनार—पु० = दीनार।
दिनारु—वि० [स० दिनालु] वहुत दिनो का। पुराना।
दिनार्द्ध—पु० [दिन-अर्द्ध, प० त०] मध्याह्न। दोपहर।
दिनावा—स्त्री० [देश०] पहाडी नदियो मे होनेवाली एक तरह की मछली।
दिनास्त—पु० [दिन-अस्त, प० त०] सूर्यास्त। संध्या।

दिनिआ*—पुं० [स० दिनकर] सूर्य।
दिनिका—स्त्री० [स० दिन+ठन्—इक,+टाप्] एक दिन का पारिश्रमिक या मजदूरी। दिनाती। दिहाडी।
नियर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।
दिनी—वि० [हिं० दिन+ई (प्रत्य०)] १. कई या वहुत दिनो का पुराना। २. वासी।
दिनेर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।
दिनेश—पु० [दिन-ईश, प० त०] १. सूर्य। २. किसी विशिष्ट दिन का अधिपति ग्रह। ३ आक। मदार।
दिनेशात्मज—पु० [स० दिनेशात्मन् (प० त०)√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ शनि। २ कर्ण। ३. सुग्रीव। ४. यम।
दिनेशात्मजा—स्त्री० [स० दिनेशात्मज+टाप्] १ यमुना। २. तापती।
दिनेश्वर—पु० [दिन-ईश्वर, प० त०] = दिनेश।
दिनेस—पु० = दिनेश।
दिनौंधी—स्त्री० [हिं० दिन+अंध +ई (प्रत्य०)] एक रोग जिसमे रोगी को दिन के समय वहुत कम दिखलाई पडता है। दिवाधता।
दिप†—स्त्री० = दीप्ति (चमक)।
दिपति*—स्त्री० = दीप्ति।
दिपना*—अ० [स० दीपन] चमकना। प्रकाशमान होना।
अ० [हिं० दीपा = मन्द] १ मद पडना। २ वुझना। ३ धुंधला पडना या होना। उदा०—इस घने कुहासे के भीतर, दिप जाते तारे इन्दु पीत। —पन्त।
दिपाना—स० [हिं० दिपना] दीप्त करना। चमकाना।
† स० [हिं० दीपा = मन्द] १ वुझाना। २. धुंधला करना। ३. मद करना।
†अ० = दिपना।
दिव—पु० १ = दिव्य (परीक्षा)। २. = दिवस।
वि० =दिव्य।
दिमकर सो†—वि० [स० द्वि—उत्तर—शत] सौ और दो। एक सौ दो।
दिमांक†—पु० = दिमाग।
दिमाकदार†—वि० = दिमागदार।
दिमाग—पु० [अ०] १ सिर का गूदा। भेजा। २ सोचने-समझने आदि की शक्ति, जिसका निवास सिर के भीतरी भाग मे माना गया है। मस्तिष्क।
मुहा०—दिमाग आसमान पर होना=ऐसा घमड होना जो साधारण वातो, व्यक्तियो आदि की ओर प्रवृत्त न होने दे अथवा उन्हें उपेक्ष्य समझे। **दिमाग ऊँचा होना**= ऐसी मानसिक स्थिति होना, जिसमे केवल वडी-वडी वातो की ओर ही ध्यान रहे। **(किसी का) दिमाग खाना या चाटना**= व्यर्थ की वातें कहना जिससे किसी के सिर मे दर्द होने लगे। वहुत वकवाद करना। **(किसी का) दिमाग खाली करना** = दिमाग चाटना। ऐसा काम करना, जिससे किसी की मानसिक शक्ति का वहुत अधिक व्यय हो। **(किसी काम में) दिमाग खाली करना**=सोच-विचार आदि मे पडकर अपनी मानसिक शक्ति का क्षय या व्यय करना। **दिमाग चढना**= दिमाग आसमान पर होना। **(किसी का) दिमाग न पाया जाना या न मिलना**=किसी मे इतना अधिक अभिमान होना कि वह साधारण लोगों से वात करना तक पसद न करे। **दिमाग परेशान करना**= दे० ऊपर 'दिमाग खाली करना'। **दिमाग में खलल होना**= मस्तिष्क मे ऐसा विकार होना, जिससे वह ठीक तरह से काम करने के योग्य न रह जाय। पागल होना।
(किसी काम में) दिमाग लड़ाना=कोई काम पूरा करने के लिए वहुत अधिक सोच-विचार से काम लेना।
३. मानसिक शक्ति। वुद्धि। समझ। जैसे—वह वहुत वडे दिमाग का आदमी है।
पद—दिमागदार। (देखें)
४. अभिमान। घमड। शेखी। जैसे—वस रहने दीजिए; वहुत दिमाग मत दिखलाइए।
मुहा०—दिमाग झड़ना= अभिमान या घमड दूर हो जाना।
दिमाग-चट—वि० [अ० दिमाग+हिं० चट (चाटना)] वहुत अधिक वकवाद करके दूसरो का दिमाग चाटने अर्थात् उन्हें व्याकुल करने-वाला। वहुत वडा वकवादी।
दिमागदार—वि० [अ० दिमाग+फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसका दिमाग या मानसिक शक्ति वहुत अच्छी हो। वहुत वडा समझदार। २. अभिमानी। घमडी।
दिमाग रौशन—पु० [अ० दिमाग+फा० रौशन] मगज-रौशन नास। सुंघनी। (परिहास और व्यग्य)
दिमागी—वि० [अ० दिमाग] १ दिमाग या मस्तिष्क-सवंधी। दिमाग का। मानसिक। जैसे—दिमागी मेहनत। २. जिसे दिमाग हो। दिमागवाला। ३ घमंडी।
दिमात*—वि० [स० द्विमातृ] दो माताओंवाला। जिसकी दो माताएँ हों।
वि० [स० द्विमात्र] दो मात्राओंवाला।
दिमान†—पु० = दीवान।
दिमाना†—वि० = दीवाना।
दिम्मस—स्त्री० [हिं० दुरमट] घासदार ढेलो मे से घास अलग करने के लिए उन्हें दुरमद से पीटने की क्रिया।
दियट—स्त्री० = दीअट।
दियत—स्त्री० [हिं० देना] वह धन जो किसी अन्य व्यक्ति को मार डालने या अग-भग करने के वदले मे दिया जाय।
दियना†—पु० = दीया।
अ० दीप्त होना।
स० दीप्त करना।
दियरा—पुं० [हिं० दीया = दीपक] १ वह वडा-सा लुक जो शिकारी हिरनो को आकर्पित करने के लिए जलाया जाता है। उदा०—सुभग सकल अग अनुज वालक मग देखि नरनारि रहैं ज्यों कुरग दियरे।——तुलसी। २ [स्त्री० अल्पा० दियरी] दे० 'दीया'।
पु० [?] एक तरह का पकवान।
दियरी—स्त्री० [हिं० दियरा का स्त्री० अल्पा०] छोटा दीया। दिअली।
दियला†—पु० [स्त्री० अल्पा० दियली] = दीया।
दियवा†—पु० = दीया।
दियाँर—स्त्री० = दीमक।

दिया‡ पु० = दीया।
स० हिं० देना क्रिया का भूत० का० एक वचन रूप।
दियानत—स्त्री० = दयानत।
दियानतदार—वि० = दयानतदार।
दिया-बत्ती—स्त्री० = दीया-बत्ती।
दियारा‡—पु० [फा० दयार = प्रदेश] १. नदी के किनारे की जमीन। कछार। खादर। दरियावरार। २ दयार। प्रदेश।
पु० [स० दिवाकर] १ मृगतृष्णा। २. रात के समय मैदान मे दिखाई पड़नेवाला अगिया वैताल। छलावा। लुक।
दियासलाई—स्त्री० = दीया-सलाई।
दिर—पु० [अनु०] सितार का एक बोल। जैसे—दिर दा दिर दारा।
दिरद*—पु० = द्विरद।
दिरम—पु० [अ० दरहम से फा०] १ मिश्र देश का चाँदी का एक पुराना सिक्का। दिरहम। २ साढे तीन माशे की एक तौल।
दिरमान—पु० [फा० दरमान] चिकित्सा। इलाज।
दिरमानी—पु० [फा० दरमान = चिकित्सा+ई (प्रत्य०)] इलाज करनेवाला व्यक्ति। चिकित्सक।
दिरहम—पु० [फा० दर्हम] दिरम नाम का सिक्का और तौल।
दिरानी‡—स्त्री० = देवरानी (देवर की पत्नी)।
दिरिस*—पुं० = दृश्य।
दिरेस—स्त्री०, पु० = दरेस।
दिर्हम—पु० = दिरम।
दिल—पुं० [फा०] १ शरीर के अदर का हृदय नामक अग, जिसकी सहायता से शरीर मे रक्त का संचार होता है। कलेजा। (मुहा० के लिए दे० 'कलेजा' के मुहा०) २ लाक्षणिक रूप मे चित्त। जी। मन। **पद—दिल की फाँस**=मन मे खटकता रहने वाला कष्ट, दु ख या पीड़ा। **मुहा०—(किसी से) दिल अटकना**=शृगारिक क्षेत्र मे, प्रेम या स्नेह होना। **(किसी पर) दिल आना**= किसी के प्रति अनुराग या प्रेम होना। **दिल उमड़ना**= चित्त का दया, स्नेह आदि कोमल मनोविकारो के कारण द्रवीभूत होना। **दिल उलटना**=(क) जी घबराना। (ख) जी मिचलाना। **दिल कड़ा या कड़ुवा करना** = कोई काम या वात करने के लिए मन मे साहस या हिम्मत करना। **दिल कबाब होना** = बहुत अधिक मानसिक कष्ट या सताप होना। जी जलना। **(किसी काम, चीज या बात के लिए) दिल करना**= मन मे प्रवृत्ति उत्पन्न होना। जी चाहना। **दिल का कँवल या कमल खिलना**=चित्त या मन बहुत प्रसन्न होना। **दिल का गुबार या बुखार निकालना**=मन मे दबा हुआ कष्ट कुछ कटु शब्दो मे किसी के सामने प्रकट करना। **दिल की गाँठ या घुंडी खोलना**= (क) मन मे छिपाकर रखी हुई बात किसी से कहना। (ख) मन मे दबा हुआ द्वेष या वैर दूर करना। **दिल कुढना** = चित्त या मन अन्दर ही अन्दर दु खी होना। **दिल के फफोले फोड़ना** = दिल का गुबार या बुखार निकालना। (देखें ऊपर) **दिल को करार होना** = चित्त मे शाति होना। चैन मिलना। **(कोई बात) दिल को लगना** = किसी बात का चित्त या मन पर ऐसा प्रभाव पडना जो सहज मे भुलाया न जा सके। **दिल खोलकर** = (क) पूरी उदारता से। (ख) बिलकुल शुद्ध हृदय से। जैसे—दिल खोलकर किसी से बातें करना। **(किसी काम या बात में) दिल गवाही देना**= अंत.करण या विवेक से किसी काम या बात का अनुमोदन या समर्थन होना। जैसे—जिस काम मे दिल गवाही न दे, वह काम नही करना चाहिए। **दिल जमना** = (क) किसी काम मे चित्त या मन लगना। जी लगना। (ख) किसी बात की ओर से मन संतुष्ट होना। **दिल ठिकाने होना**=चित्त शात या स्थिर होना। **दिल ठोंककर** = चित्त या मन मे दृढता और साहस रखकर (कोई काम करना)। **(किसी का) दिल देखना** = किसी प्रकार यह पता लगाना कि इसके मनमे क्या बात या विचार है अथवा यह क्या करेगा। **(किसी को) दिल देना**=किसी से अत्यधिक प्रेम करना। पूरी तरह से अनुरक्त होना। **दिल दौड़ाना**=चित्त या मन को किसी ऐसे काम या बात की ओर प्रवृत्त करना, जिसकी प्राप्ति या सिद्धि दूर हो अथवा सहज न हो। **(हाथो मे या से) दिल पकड़े फिरना**=ममता, मोह आदि के कारण बहुत ही विकल होकर इधर-उधर घूमना। **(कोई बात) दिल पर नक्श होना**—=मन मे अच्छी तरह अकित होना या बैठ जाना। **दिल में मैल लाना**= मन मे दुर्भाव, द्वेष आदि को स्थान देना। मन ही मन बुरा मानना। **दिल पसीजना या पिघलना**=मन मे उदारता, दया, स्नेह आदि कोमल वृत्तियो का आविर्भाव होना। **दिल फटना**=(क) आघात, कष्ट आदि के कारण मन मे असह्य वेदना होना। (ख) पहले का सा-सद्भाव या स्नेह न रह जाना। **(किसी की ओर से) दिल फिरना या फिर जाना**=चित्त या मन हट जाना। विरक्ति होना। **दिल फीका होना**= जी खट्टा होना। पहले का-सा अनुराग या सद्भाव न रह जाना। **दिल भटकना**=चित्त का व्यग्र या चचल होना। मन मे इधर-उधर के विचार उठना। **दिल मसोसना या मसोसकर रह जाना**= क्रोध, दु ख आदि तीव्र मनोविकारो को मन मे दबाकर रह जाना। **(किसी के) दिल पर घर या जगह करना**=किसी के अनुराग, आदर आदि का पात्र बनना। **दिल में बल पड़ना**=दिल मे फरक आना। (देखें ऊपर) **दिल मे फरक आना** =पहले का-सा अनुराग या सद्भाव न रह जाना। मन मे दुर्भाव की सृष्टि होना। **दिल मैला करना**=मन मे दुर्भाव, द्वेष आदि दूषित मनोविकार उत्पन्न करना। **(किसी का) दिल रखना**=किसी की इच्छा के अनुसार कोई काम करके उसे प्रसन्न या सतुष्ट करना। **(किसी का) दिल लेना**=(क) किसी के मन की बातो की थाह या पता लेना। (ख) किसी को पूरी तरह से अपनी ओर अनुरक्त करना। **दिल से**= अच्छी तरह, चित्त या मन लगाकर। **(कोई बात) दिल से उठना**= मन मे किसी बात की प्रवृत्ति या स्फूर्ति होना। जैसे—जब तुम्हारा दिल ही नही उठता, तब तुम्हारा उनसे मिलने जाना व्यर्थ है। **(कोई बात) दिल से दूर करना**=उपेक्ष्य समझकर कुछ भी ध्यान न देना या बिलकुल भूल जाना। **(किसी का) दिल हाथ मे करना या लेना**= किसी को पूरी तरह से अपनी ओर अनुरक्त करके उसके विश्वास, स्नेह आदि के भाजन बनना। **दिल हिलना**=(क) चित्त या मन का दयार्द्र होना। (ख) मन मे कुछ भय होना। जी दहलना। **दिल ही दिल में**=अन्दर ही अन्दर। मन ही मन। **दिलोजान से**= पूरी शक्ति और सामर्थ्य से, अथवा अच्छी तरह मन लगाकर।
३ ऐसा हृदय, जिसमे उत्साह, उदारता, उमग, स्नेह आदि कोमल भाव यथेष्ट मात्रा मे हो। जैसे—वह दिल और दिमाग का आदमी है।

पद—दिल का बादशाह=(क) बहुत बड़ा उदार या दानी। (ख) मनमौजी।

मुहा०—दिल टूटना=किसी दु:खद या विपरीत घटना के कारण मन का सारा उत्साह या उमंग का कम होना या दब जाना। (किसी का) दिल तोड़ना=ऐसा काम करना, जिससे किसी का सारा उत्साह या उमंग दब जाय या नष्ट हो जाय। दिल बढ़ना=अनुराग, उत्साह, उमंग आदि में ऐसी वृद्धि होना जो किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त करे। दिल बुझना=मन में अनुराग, उत्साह, उमंग आदि बिलकुल न रह जाना। (किसी से) दिल मिलना=प्रकृति या स्वभाव की समानता के कारण परस्पर अनुराग और सद्भाव होना।

पद—दिल-चला, दिल-दार, दिलबर आदि।

विशेष—दिल के शेष मुहा० के लिए देखें 'चित्त', 'जी' और 'मन' के मुहा०।

दिलगीर—वि० [फा०] [भाव० दिलगीरी] १. उदास। २. खिन्न। दु:खी।

दिलगीरी—स्त्री० [फा० दिलगीर+ई (प्रत्य०)] १. उदासी। २. मानसिक खिन्नता या दु:ख।

दिल-गुरदा—पु० [फा० दिल+गुरदा] १ हिम्मत। सहारा। २. बहादुरी। वीरता।

दिल-चला—वि० [फा० दिल+हि० चलना] १. हिम्मतवाला। दिलेर। साहसी। २ बहादुर। वीर। ३. मनमौजी। ४ रसिक।

दिलचस्प—वि० [फा०] [भाव० दिलचस्पी] (काम, चीज या बात) जिसमें दिल रमता या लगता हो। चित्ताकर्षक। मनोरंजक।

दिलचस्पी—स्त्री० [फा०] १ दिलचस्प होने की अवस्था या भाव। मनोरंजकता। २. किसी काम या बात के प्रति होनेवाला ऐसा अनुराग, जिसके फलस्वरूप कुछ सुख मिलता या स्वार्थ सिद्ध होता हो। रस। जैसे—इन बातों में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं है।

दिल-चोर—वि० [फा० दिल+हि० चोर] १ जो काम करने से जी चुराता हो। कामचोर। २ चित्त या मन हरण करनेवाला।

दिल-जमई—स्त्री० [फा० दिल+अ० जमअ+ई (प्रत्य०)] किसी काम या बात की ओर से मन में होनेवाली तसल्ली या सन्तोष। अच्छी तरह जी भरने की अवस्था या भाव। इतमीनान। जैसे—अच्छी तरह अपनी दिल-जमई करके तब मकान खरीदें।

दिल-जला—वि० [फा० दिल+हि० जलना] जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा हो। अत्यंत दु:खी।

दिल-दरिया—वि०=दरिया-दिल।

दिल-दरियाव—वि०=दरिया-दिल।

दिलदार—वि० [फा०] [भाव० दिलदारी] १. अच्छे दिल और स्नेह-पूर्ण स्वभाववाला। २. जिसके प्रति अनुराग किया जाय और जिसे दिल या मन दिया जाय। ३. रसिक। ४. उदार। दाता। दानी।

दिलदारी—स्त्री० [फा० दिलदार+ई (प्रत्य०)] १. दिलदार होने की अवस्था या भाव। २. प्रेमिक होने की अवस्था या भाव। प्रेमिकता। ३. रसिकता।

दिलदौर*—वि०=दिलदार।

दिलपसंद—वि० [फा०] जो दिल को पसंद हो। चित्ताकर्षक।

दिल-फेंक—वि० [फा० दिल+हि० फेंकना] (व्यक्ति) जो बिना समझे-बूझे जगह-जगह या कभी इस पर और कभी उस पर अनुरक्त या आसक्त होता फिरे। जो मिल जाय, उसी को अपना प्रेम-पात्र बनानेवाला।

दिलबर—वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।

पुं० प्रेमपात्र।

दिलबस्त—वि० [फा०] [भाव० दिलबस्तगी] जिसका दिल या मन किसी ओर या किसी से बँधा अर्थात् लगा हो।

दिलबस्तगी—स्त्री० [फा०] ऐसी स्थिति, जिसमें दिल या मन किसी काम या बात में सुखद रूप से बँधा अर्थात् लगा हो या लगा रहे। जैसे—चार मित्रों के आ जाने से हमारी भी दिलबस्तगी रहती (या होती) है।

दिल-बहार—पु० [फा० दिल+बहार] खशखाशी रंग का एक भेद।

दिलरुबा—वि० [फा०] मनोरंजक। रमणीय।

पु० १ प्रेमी। माशूक। २ एक प्रकार का बाजा, जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं।

दिलवल—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड़।

दिलवाना—स०=दिलाना।

दिलवाला—वि० [फा० दिला+हि वाला (प्रत्य०)] १ जिसमें दिल हो अर्थात् बहुत उदार और सहृदय। २ रसिक। ३. साहसी।

दिलवैया—वि० [हि० दिलवाना+ऐया (प्रत्य०)] जो किसी को किसी दूसरे से कोई चीज दिलवाने में सहायक होता हो। दिलानेवाला।

दिलशाद—वि० [फा०] १ जिसका दिल सदा प्रसन्न रहे। प्रसन्नचित्त। २. चित्त या मन को प्रसन्न करने या रखनेवाला।

दिलहर*—वि० [फा० दिल+हि० हरना] मन हरनेवाला। मनोहर।

†वि०=दिलेहेद (दिल्लेदार)।

दिलहा†—पु०=दिल्ला।

दिलहेदार†—वि०=दिलहेदार।

दिलाना—स० [हि० देना का प्रे०] १. किसी को किसी दूसरे से कुछ प्राप्त कराना। दिलवाना। २. किसी को कुछ प्राप्त करने में सहायता देना। संयो० क्रि०—देना।

दिलारा—वि० [फा०] १. दिल की प्रसन्नता बढ़ानेवाला। २. मनोहर। लुभावना। २ परमप्रिय। (शृंगारिक क्षेत्र में)

पु० प्रेम-पात्र। माशूक।

दिलावर—वि० [फा०] [भाव० दिलावरी] १ बहादुर। वीर। २ हिम्मत या हौसलेवाला। साहसी।

दिलावरी—स्त्री० [फा०] १. बहादुरी। वीरता। २. साहस। हिम्मत।

दिलावेज—वि० [फा० दिलावेज] सुन्दर। प्रियदर्शन।

दिलासा—पु० [फा० दिल+हि० आसा] क्षुब्ध या दु:खित हृदय को दिया जानेवाला आश्वासन। ढारस। तसल्ली। धैर्य।

क्रि० प्र०—दिलाना।—देना।

दिली—वि० [फा०] १ दिल या हृदय से संबंध रखनेवाला। हार्दिक। जिससे बहुत अधिक अभिन्नता और घनिष्ठता हो। घनिष्ठ। जैसे—दिली दोस्त।

दिलीप—पु० [सं०] इक्ष्वाकु-वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो अंशुमान् के पुत्र राजा सगर के परपोते तथा भगीरथ के पिता थे। (वाल्मीकि)

विशेष—कालिदास ने इन्हे रघु का पिता वतलाया है।
२ चद्रवशी राजा कुरु के वशज एक राजा।

दिलीर—पु०[स०√दल् (नष्ट करना)+ईर, पृषो० सिद्धि] भुइँफोड। ढिंगरी।

दिलेर—वि० [फा०] [भाव० दिलेरी] १. वहादुर। वीर। २. हिम्मत-वाला। साहसी। ३ उदारता-पूर्वक देनेवाला। दाता।

दिलेरी—स्त्री०[फा०]१. वहादुरी। वीरता। २. साहस। हिम्मत। ३ दानशीलता। उदारता।
क्रि० प्र०—दिखाना।

दिल्लगी—स्त्री०[फा० दिल+हिं० लगना]१. दिल लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २ परिहास। मनोविनोद।
मुहा०—(किसी की) दिल्लगी उड़ाना=हास-परिहास की वातें कहकर तुच्छ सिद्ध करने का प्रयत्न करना। उपहास करना।
पद—दिल्लगी में=केवल दिल्लगी के विचार से। यो ही। हँसी मे।
३. ऐसी घटना या वात, जिससे लोगो का मनोरजन होने के सिवा उन्हे हँसी भी आवे। जैसे—कल सडक पर एक दिल्लगी हो गई , एक आदमी के कन्धे पर कही से एक वन्दर आ कूदा। ४. ऐसा काम या वात, जो हास-परिहास की तरह सुगम हो या जो सव लोग कर सकें। जैसे—कविता करना क्या तुमने दिल्लगी समझ रखा है।

दिल्लगीवाज—पु०[हिं० दिल्लगी+फा० वाज] [भाव० दिल्लगीवाजी] वह जो प्राय दूसरो को हँसानेवाली वाते कहता हो। हँसी या दिल्लगी करनेवाला। ठठोल। हँसोड।

दिल्लगीवाजी—स्त्री०[हिं० दिल्लगी+फा० वाजी]१ दिल्लगी करने की क्रिया या भाव। २. दे० 'दिल्लगी'।

दिल्ला—पु०[देश०] दरवाजे के पल्ले के ढांचे मे कसा तथा जड़ा हुआ लकडी का चौकोर टुकड़ा, जो प्राय उसे सुन्दर रूप देने के लिए होता है। दिलहा।

दिल्ली—स्त्री०[इन्द्रप्रस्थ के मयूरवशी राजा दिलू के नाम पर ?] पश्चि-मोत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नगरी जहाँ मध्ययुग मे वहुत दिनो तक हिन्दू राजाओ तथा मुगल वादशाहो की राजवानी थी, और जिसे सन् १९१२ मे अगरेजो ने फिर से राजवानी वनाया था। इस समय स्वतन्त्र भारत की राजधानी भी यही है।

दिल्लीवाल—वि०[हिं० दिल्ली+वाल (प्रत्य०)]१ दिल्ली- संवधी। दिल्ली का। २ दिल्ली का रहनेवाला। ३ दिल्ली मे वनने या होनेवाला।
पु० एक प्रकार का देशी जूता, जो पहले दिल्ली मे वनता था।

दिल्लेदार—वि० [देश० दिलहा+फा० दार] (दरवाजे का पल्ला)जिसमे दिल्ले लगे हो।

दिव्—पु०[स०√दिव् (चमकना)+डिवि (वा०)]=दिव।

दिवंगत—वि० [स० द्वि० त०] जिसकी आत्मा इस लोक को छोडकर स्वर्ग चली गई हो, अर्थात् परलोकवासी। स्वर्गीय।

दिवंगम—वि०[स० दिव√गम+खच्, मुम्] स्वर्गगामी।

दिव—पु० [स०√दिव्+क] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ दिन। ४. जगल। वन।

दिवगृह—पु०=देवगृह।

दिव-दाह—पु०[प०त०]१. आकाश का जलता हुआ-सा जान पडना। दिक्दाह। २ वहुत वडा आन्दोलन, उत्पात या क्रांति।

दिवराज—पुं०[प०त० (टच् समा०)] स्वर्ग के राजा इद्र।

दिवरानी—स्त्री०=देवरानी।

दिवला—पुं०[स्त्री० अल्पा० दिवली]=दीया।

दिवस—पु०[स०√दिव्+असच्] दिन। वासर। रोज।

दिवस-अंध —वि०, पु० [म० दिवमान्ध, स० त०]=दिवाध।

दिवस-कर—पु०[प०त०]१. सूर्य। दिनकर। २. आक। मदार।

दिवस-नाथ—पु०[प०त०] सूर्य।

दिवस-मणि—पु०[प०त०] सूर्य।

दिवस-मुख—पु०[प०त०] प्रात काल। सवेरा।

दिवस-मुद्रा—स्त्री०[मध्य०स०] एक दिन की मजदूरी या वेतन।

दिवस-स्वप्न—पु०[स०त०] दिवास्वप्न। (दे०)

दिवसांतर—वि०[दिवस-अतर व०स०] जो सिर्फ एक दिन का हो।

दिवसेश—पु०[दिवस-ईश, प०त०] सूर्य।

दिवस्पति—पु०[स० दिव>दिवस-पति प०त० (अलुक् समास)]१. सूर्य। २ तेरहवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

दिवस्पृश—पु०[स० दिव√स्पृश् (स्पर्श करना)+क्विन्] (वामनावतार मे) पैर से स्वर्ग को छूनेवाले, विष्णु।

दिवांध—वि०[स० दिवा-अंध, स०त०] जिसे दिन मे दिखाई न देता हो। पु० १. एक प्रकार का रोग, जिसमे मनुष्य को दिन के समय दिखाई नही देता। दिनौंधी। २. उल्लू जिसे दिन मे दिखाई नही देता।

दिवांधकी—स्त्री०[स० दिवान्ध+क (स्वार्थे)—ङीप्] छछूँदर।

दिवा—पुं०[स०√दिव् (चमकना)+का]१ दिन। दिवस। २. एक वर्णवृत्त, जिसे मालिनी और मदिरा भी कहते हैं।
†पु०=दीया।

दिवाकर—पु०[स० दिवा√कृ (करना)+ट्च्]१ सूर्य। २. आक। मदार। ३. कौआ। ४ एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

दिवा-कीर्ति—पु० [व०स०]१ नापित। नाई। हज्जाम। २ उल्लू। ३ चाडाल।

दिवा-कीर्त्य—पु०[स०त०] गवानयन यज्ञ मे विषुव सक्रान्ति के दिन गाया जानेवाला एक सामगान।

दिवाचर—वि०[स० दिवा√चर् (गति)+ट] दिन मे विचरण करने-वाला।
पु० १. चिडिया। पक्षी। २. चाडाल।

दिवाटन —पु०[स० दिवा√अट् (घूमना)+ल्यु—अन] काक। कौआ।

दिवातन —पु० [स० दिवा+ट्यु—अन, तुट् आगम] एक दिन काम करने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी।
वि० पूरे एक दिन का। दिन भर का।

दिवान†—पु०=दीवान।

दिवाना†—स०=दिलाना।
पु०=दिवाना (पागल)।

दिवा-नाथ—पु०[प०त०] दिन के स्वामी, सूर्य।

दिवानी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का पेड़, जो वरमा मे अधिकता से

होता है। इसकी लकड़ी से मेज, कुर्सियाँ आदि बनती हैं।
स्त्री०=दीवानी।
दिवा-पुष्ट—पु०[स०त०] सूर्य।
दिवाभिसारिका—स्त्री०[सं० दिवा-अभिसारिका, स०त०] साहित्य मे वह नायिका जो दिन के समय शृंगार करके प्रिय से मिलने सकेत-स्थान पर जाय।
दिवा-भीत—वि०[स०त०] दिन (अर्थात् दिन के प्रकाश) से डरनेवाला।
पु० १. चोर। २ उल्लू।
दिवा-मणि—पुं०[प०त०] १ सूर्य। २. आक। मदार।
दिवा-मध्य—पु० [प० त०] मध्याह्न। दोपहर।
दिवार—स्त्री०=दीवार।
दिवा-रात्र—क्रि० वि०[द्व०स० ,अच्] दिन-रात। हर समय।
दिवारी†—स्त्री०[हिं० दीवाली]१. कुआर-कार्तिक मे विशेपत' दीवाली के अवसर पर गायेजानेवाले एक तरह के लोक-गीत। (बुंदेल)२. दीपमालिका। दीवाली।
दिवाल—वि०[हिं० देना+वाल (प्रत्य०)] देनेवाला। जो देता हो। जैसे—यह एक पैसे के दिवाल नही हैं। (बाजारू)
†स्त्री०=दीवार।
दियालय†—पु०=देवालय (मंदिर)।
दिवाला—पु०[हिं० दिया +वालना=जलाना]१. महाजन या व्यापारी की वह स्थिति जिसमे वह विधिवत् यह घोपित करता है कि मेरे पास अब यथेष्ट धन नही बचा है और इसलिए मैं लोगो का ऋण चुकाने मे असमर्थ हूँ।
क्रि० प्र०—बोलना।
विशेष—ऐसी स्थिति मे लेनदार न्याय की दृष्टि से या तो उससे कुछ भी वसूल नही कर सकते या उसके पास जो थोडा-बहुत धन बचा होता है, वही सब लेनदार अपने-अपने हिस्से के मुताबिक बाँट लेते हैं।
मुहा०—दिवाला निकालना या मारना=दिवालिया बन जाना। ऋण चुकाने मे असमर्थ हो जाना।
२ किसी पदार्थ का कुछ भी बचा न रह जाना। पूर्ण अभाव। जैसे—उनकी अकल का तो दिवाला निकल गया है।
दिवालिया—वि०[हिं०दिवाला+इया (प्रत्य०)]जिसने दिवाला निकाला हो। जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ भी न बच रहा हो।
दिवाली—स्त्री० [देश०] वह तसमा या पट्टी, जिसे खीचकर खराद, सान आदि चलाई जाती है।
स्त्री०=दीवाली।
दिवा-स्वप्न—पु०[स०त०] अकर्मण्य, निराश या विफल व्यक्ति का बैठे-बैठे तरह-तरह के हवाई किले बनाना या मसूबे बाँधना और यह सोचना कि इस बार हम यह करेंगे, हम वह करेंगे अथवा आगे चलकर हमारा यो उत्थान होगा और हम यो सुखी होगे आदि आदि। (डे ड्रीम)
दिवि—पु०[स०√दिव् (चमकना)+कि (बा०)] १. नीलकठ पक्षी। २. दे० 'दिव'।
दिविज—पु०[स० दिवि√जन् (उत्पन्न होना)+ड, (अलुक् समास] देवता।
दिविता—स्त्री०[स० दीप+इतच् (बा०),पृपो० सिद्धि] दीप्ति। चमक।
दिविदिवि—पु०[देश०] एक प्रकार का छोटा पेड, जो दक्षिण अमेरिका से भारतवर्ष मे आया है। इसकी पत्तियाँ चमडा सिझाने और रगने के काम मे आती है।
दिविरथ—पु०[स०] महाभारत के अनुसार पुरुवशी राजा भूमन्यु के पुत्र का नाम।
दिविषत्—पु०[स० दिवि√सद् (बैठना)+क्विप्, षत्व,(अलुक् समास)] देवता।
वि० स्वर्गवासी।
दिविष्ट—पु०[स० इष्ट, √यज् (देवपूजन)+क्त, दिव्-इष्ट, च०त०] यज्ञ।
दिविष्ठ—पु०[स० दिवि√स्था (स्थित होना)+क, षत्व] १ स्वर्ग मे रहनेवाला, देवता। २. पुराणानुसार ईशान-कोण का एक देश।
दिविस्थ—पु० [स० दिविष्ठ] देवता।
दिवेश—पु० [स० दिव-ईश, ष० त०] दिक्पाल।
दिवैया—वि०[हिं० देना+वैया (प्रत्य०)] जो देता हो। देनेवाला। दाता।
वि०[हिं० दिवाना=दिलाना] दिलानेवाला। दिलवैया।
दिवौका (कस्)—पु० [स० दिव-ओकस, ब०स०] दिवौका (दे०)।
दिवोदास—पु० [स० दिवस् दास, ब० स०] १ चद्र वशी राजा भीमरथ के एक पुत्र, जो इद्र के उपासक और काशी के राजा थे और धन्वन्तरि के अवतार माने जाते हैं। महादेव ने इन्ही से काशी ली थी। कहते हैं कि देवताओ ने इन्हे आकाश से पुष्प, रत्न आदि दिये थे, इसी से इनका यह नाम पड़ा। २. हरिवश के अनुसार ब्रह्मर्षि इद्रसेन के पौत्र का नाम, जो मेनका के गर्भ से अपनी बहन अहल्या के साथ ही उत्पन्न हुए थे।
दिवोद्भवा—स्त्री० [स० दिव-उद्√भू (पैदा होना)+अच्+टाप्] इलायची।
दिवोल्का—स्त्री० [स०दिव-उल्का, मध्य०स०] दिन के समय आकाश से गिरनेवाला चमकीला पिंड या उल्का।
दिवौका (कस्)—पु०[स० दिव-ओकस, ब० स०] १ वह जो स्वर्ग मे रहता हो। २. देवता। ३. चातक पक्षी।
दिव्य—वि०[स० दिव्+यत्] [भाव० दिव्यता] १ स्वर्ग से सबंध रखनेवाला। स्वर्गीय। २. आकाश से सबध रखनेवाला। आकाशीय। ३. अलौकिक। लोकोत्तर। ४. प्रकाशमान। चमकीला। ५ मनोहर। सुन्दर। ६. तत्त्वज्ञ।
पुं० [स०] १ यव। जौ। २ गुग्गुल। ३. आँवला। ४. सतावर। ५. ब्राह्मी। ६ सफेद दूब। ७. लौग। ८ हर्रे। ९ हरिचदन। १० महामेदा नाम की औषधि। ११ कपूर कचरी। १२ चमेली। १३. जीरा। १४ सूअर। १५ धूप के समय बरसते हुए पानी मे किया जानेवाला स्नान। १६ आकाश मे होनेवाला एक प्रकार का दैवी उत्पात। १७. कसम। शपथ। सौगध। १८ प्राचीन काल मे, एक प्रकार की परीक्षा, जिससे किसी का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था।
क्रि० प्र०—देना।
१९. तांत्रिक उपासना के तीन भेदो मे से एक, जिसमे पच मकार,

श्मशान और चिता का साधन किया जाता है। २०. तीन प्रकार के केतुओ मे से एक जिनकी स्थिति भूवायु से ऊपर मानी गई है। २१. साहित्य मे, तीन प्रकार के नायको मे से एक। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो। जैसे—इद्र, राम, कृष्ण आदि।

दिव्यक—पु०[स० दिव्य+कन्]१ एक प्रकार का सांप। २ एक प्रकार का जतु।

दिव्य-कर—पु०[स० व०स०?] पश्चिम दिशा का एक प्राचीन देश। (महाभारत)

दिव्य-कवच—पुं०[कर्म०स०] १ अलौकिक तनत्राण। देवताओं का दिया हुआ कवच। २ ऐसा स्तोत्र जिसका पाठ करने से सब अगों की रक्षा होती है।

दिव्य-क्रिया—स्त्री०[मध्य०स०] दे० 'दिव्य' १८।

दिव्य-गंध—पु०[व०स०]१ लौग। २. गधक।

दिव्य-गंधा—स्त्री० [म०] १ वडी इलायची। २ वडी चेंच का साग।

दिव्य-गायन—पु०[व०स०] स्वर्ग मे गानेवाले, गधर्व जाति के लोग।

दिव्य-चक्षु (स्)—पु०[व०स०]१. वह जिसे दिव्यदृष्टि प्राप्त हो। २. दे० 'तेजोन्वेष'। ३. एक प्रकार का गध द्रव्य। ४ वदर। ५ अंधा (परिहास और व्यग्य)

दिव्य-तरंगिणी—स्त्री०[स०]सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

दिव्यता—स्त्री० [स० दिव्य+तल्+टाप्] १ दिव्य होने की अवस्था या भाव। २. देवता होने की अवस्था या भाव। देवत्व। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता। ४ मनोहरता। सुन्दरता।

दिव्य-तेज (स्)—स्त्री०[व०स०] ब्राह्मी बूटी।

दिव्य-देवी—स्त्री०[कर्म०स०] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

दिव्य-दोहद—पु०[कर्म०स०] मनोकामना की पूर्ति के हेतु किसी इष्टदेव को चढाई जानेवाली भेंट या वस्तु।

दिव्य-दृष्टि—स्त्री०[कर्म०स०]१ ऐसी अलौकिक दृष्टि जिससे मनुष्य भूत, भविष्य और वर्तमान की अथवा परोक्ष की सब बातें प्रत्यक्ष की तरह देख सकता हो। जैसे—उन्होंने दिव्य-दृष्टि से देख लिया कि स्वर्ग मे देवताओं की सभा हो रही है, अथवा कलियुग मे कैसे-कैसे अनर्थ और पाप होंगे। २. ज्ञानदृष्टि।

दिव्य-धर्मा (र्मिन्)—वि० [स० दिव्य-धर्म, कर्म०स० + इनि] १. जिसका आचरण, कर्म और व्यवहार बहुत ही निष्कलक और पवित्र हो। परम शुभ धर्म का पालन करनेवाला। २ सदाचारी और सुशील।

दिव्य-नगर—पु०[कर्म०स०] ऐरावती नगरी।

दिव्य-नदी—स्त्री०[कर्म०स०]१ आकाश गगा। २. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

दिव्य-नारी—स्त्री०[कर्म०स०] अप्सरा।

दिव्य-पंचामृत—पु० [स०दिव्यपचामृत, कर्म०स०] घी, दूध, दही, मक्खन और चीनी इन पाँच चीजो को मिलाकर बनाया हुआ पचामृत।

दिव्य-पुरुष—पु०[कर्म०स०] अलौकिक या पारलौकिक व्यक्ति। जैसे—देवी, देवता, गधर्व, यक्ष आदि।

दिव्य-पुष्प—पुं०[व०स०] करवीर। कनेर।

दिव्य-पुष्पा—स्त्री०[स०] वड़ा गूमा नामक वृक्ष, जिसमे लाल फूल लगते हैं। वड़ी द्रोणपुष्पी।

दिव्यपुष्पिका—स्त्री०[स० दिव्यपुष्प+कन्+टाप्, इत्व] लाल रंग के फूलोवाला मदार का पौधा।

दिव्य-यमुना—स्त्री०[कर्म०स०] कामरूप देश की एक नदी, जो बहुत पवित्र मानी गई है।

दिव्य-रत्न—पु०[कर्म०स०] चिंतामणि नामक कल्पित रत्न, जो सब कामनाओ की पूर्ति करने मे समर्थ माना जाता है।

दिव्य-रथ—पु०[कर्म०स०] देवताओं का विमान।

दिव्य-रस—पु०[कर्म०स०] पारद। पारा।

दिव्य-लता—स्त्री०[कर्म०स०] मूर्वा लता। मूरहरी। चुरनहार।

दिव्य-वस्त्र—पु०[कर्म० स०]१ सुन्दर वस्त्र। वढिया कपडा। २. सूर्य का प्रकाश।

दिव्य-वाक्य—पु०[कर्म०स०] देववाणी। आकाशवाणी।

दिव्य-श्रोत्र—वि० [कर्म०स०] जो अपने कानो से हर जगह की सब बातें सुन लेता हो।

पु० ऐसा कान जिससे दूर-दूर तक की सब बातें सुनाई दें।

दिव्य-सरिता—स्त्री०[स० दिव्य-सरित्] आकाश गंगा।

दिव्य-सानु—पुं०[व०स०] एक विश्वदेव।

दिव्य-सार—पु०[व०स०] साखू का पेड। साल वृक्ष।

दिव्य-सूरि—पुं०[कर्म० स०] रामानुज सम्प्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम ये है—कासार, भूत, महत्, भक्तसार, शठारि कुलशेखर, विष्णु चित्त, भक्ताघिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविन्द्र, रामानुज और गोदादेवा या मधुकर कवि।

दिव्य-स्त्री—स्त्री०[कर्म०स०] दिव्य नारी। अप्सरा।

दिव्यांगना—स्त्री०[दिव्य-अगना, कर्म०स०] १ अप्सरा। २ देवता की स्त्री। देव-पत्नी।

दिव्यांवरी—स्त्री०[सं०] संगीत मे कर्नाट की पद्धति की एक रागिनी।

दिव्यांशु—पु०[दिव्य-अंशु, व०स०] सूर्य।

दिव्या—स्त्री०[स० दिव्य+टाप्]१. साहित्य मे, तीन प्रकार की नायिकाओ मे से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायिका। जैसे—पार्वती, सीता, राधिका आदि। २ महामेदा। ३ शतावर। ४ आँवला। ५ ब्राह्मी। ६. सफेद दूब। ७. हर्रे। ८ कपूरकचरी। ९ बडा जीरा। १०. वाँझककोडा।

दिव्यादिव्य—पु०[दिव्य-अदिव्य, कर्म०स०] साहित्य मे, तीन प्रकार के नायको मे से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिनमे देवताओ के भी गुण हो। जैसे—नल, पुरुरवा, अभिमन्यु आदि।

दिव्यादिव्या—स्त्री० [दिव्या-अदिव्या, कर्म०स०] साहित्य मे, तीन प्रकार की नायिकाओ मे से एक। वह इहलौकिक नायिका जिनमे स्वर्गीय स्त्रियो के भी गुण हो। जैसे—दमयती, उर्वशी, उत्तरा आदि।

दिव्याश्रम—पुं०[दिव्य-आश्रम, कर्म०स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ विष्णु ने तपस्या की थी। कुरुक्षेत्र का दर्शन करके बलदेव जी यही से होते हुए हिमालय गए थे।

दिव्यासन—पु० [दिव्य-आसन, कर्म०स०] तत्र के अनुसार एक प्रकार का आसन।

दिव्यास्त्र—पु०[दिव्य-अस्त्र, कर्म०स०]१ देवताओं का दिया हुआ अस्त्र या हथियार। २. मत्रो के प्रभाव से चलनेवाला अस्त्र या हथियार।

दिव्येलक—पु० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप ।
दिव्योदक—पु० [दिव्य-उदक, कर्म०स०] वर्षा का जल जो सबसे अधिक पवित्र और शुद्ध होता है।
दिव्योपपादुक—पु० [दिव्य-उपपादुक (उप√पद् (गति) + उकञ्) कर्म० स०] देवता, जिनका जन्म बिना माता-पिता के माना जाता है।
दिव्योषधि—स्त्री० [दिव्य-ओषधि कर्म०स०] मैनसिल।
दिश्—स्त्री० [स० √दिश्+क्विन्] दिशा। दिक्।
पु० [स०√ दिश् (बताना, देना) +क] एक देवता जो कान के अधिष्ठाता देवता माने जाते है।
दिशा—स्त्री० [स० दिश +टाप्] १. क्षितिज वृत्त के चार मुख्य कल्पित विभागों में से प्रत्येक विभाग।
विशेष—ये चार कल्पित विभाग उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम कहलाते है। इनके निरूपण का मूल आधार वह है, जिधर से नित्य सूर्य निकलता है। इन चारो दिशाओं के बीच के चार कोणों और ऊपर तथा नीचे की कुल छ. दिशाएँ और भी मानी जाती है।
२. किसी नियत स्थान से उक्त चारो विभागों में से किसी ओर के विभाग का सारा विस्तार। जैसे—काशी के पूर्व की अथवा हिमालय के उत्तर की दिशा। ३. दिशाओं की उक्त संख्या के आधार पर १० की संख्या। ४ रुद्र की एक पत्नी का नाम। ५. पाखाने या शौच जाने की क्रिया जो पहले घर से निकलकर और किसी ओर अथवा दिशा में जाकर की जाती थी। (दे० 'दिसा')
दिशा-गज—पु० [मध्य०स०] दिग्गज।
दिशा-चक्षु (स्)—पुं० [ब०स०] गरुड़ के एक पुत्र का नाम। (पुराण)
दिशाजय—पु० [प०त०] दिग्विजय।
दिशापाल—पु० [सं० दिशा√ पाल् (पालना)+णिच्√अण् उप०स०] दिक्पाल।
दिशा-भ्रम—पु० [प०त०] दिशाओं का ठीक-ठीक ज्ञान न होना। दिक्-भ्रम।
दिशावकाश—पु० [दिशा-अवकाश प०त०] दो दिशाओं के बीच का अवकाश या विस्तार।
दिशावकाशक व्रत—पु० [स० दिशावकाश+क (स्वार्थ), दिशावकाशक-व्रत मध्य०स० ?] एक प्रकार का व्रत जिसमें यह निश्चित किया जाता है कि आज अमुक दिशा में इतनी दूर से अधिक नहीं जायेंगे। (जैन)
दिशा-शूल—पुं० [स०त०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह घड़ी, पहर या दिन जिसमें किसी विशिष्ट दिशा की ओर जाना बहुत अनिष्टकर माना जाता हो और इसी लिए उस दिशा मे जाना वर्जित हो।
दिशासूल—पु०=दिशा-शूल।
दिशि—स्त्री०=दिशा।
दिशि-नियम—पु० दिशावकाशव्रत (दे०)।
दिशेभ—पुं० [दिशा-इभ प०त०] दिग्गज।
दिश्य—वि० [स० दिश् +यत्] दिशा-सम्बन्धी। दिक् या दिशा का। वि० दे० 'निर्दिष्ट'।
दिष्ट—वि० [स०√दिश् बताना, दान)+क्त] १ निश्चित। निर्दिष्ट। २. दिखलाया या बतलाया हुआ।
पु० १ भाग्य। किस्मत। २ उपदेश। ३. काल। समय। ४. वैवस्वत मनु के एक पुत्र। ५ दारुहल्दी।
दिष्ट-बंधक†—पु०=दृष्ट-बंधक।
दिष्टांत—पु० [सं० दिष्ट-अंत ब०स०] मृत्यु। मौत।
†पु०=दृष्टांत।
दिष्टि—स्त्री० [सं०√दिश्+क्तिन] १. भाग्य। २. उत्सव। ३. प्रसन्नता। ४. दे० 'दिष्ट'।
†स्त्री०=दृष्टि।
दिसंतर—पु० [स० देशांतर] १. देशांतर। विदेश। परदेश। २. देश-देशांतरो का पर्यटन। भ्रमण।
पु०=दिगंतर।
दिसंबर—पु० [अ० डिसेंबर] अँगरेजी वर्ष का बारहवाँ महीना।
दिस—स्त्री०=दिशा।
दिसना—अ०=दिखना (दिखाई देना)।
दिसा—स्त्री० [सं० दिशा=ओर] १. मल त्याग करने की क्रिया। पैखाने जाना। झाड़ा फिरना।
क्रि० प्र०—जाना।—फिरना।
२. दे० 'दिशा'।
†स्त्री०=दशा।
दिसाउर†—पु० दिसावर।
दिसादाह—पु०=दिग्दाह।
दिसावर—पु० [सं० देशांतर] [वि० दिसावरी] १. दूसरा देश। परदेश। विदेश। २. व्यापारियों की बोलचाल में वह स्थान या देश जहाँ कोई माल भेजा जाता हो या जहाँ से आता हो।
पद—दिसावरी माल =ऐसा माल जो दिसावर से आया हो या दिसावर जाने को हो।
दिसावरी—वि० [हि० दिसावर+ई (प्रत्य०)] १. दिसावर-संबंधी। दिसावर का। २. दिसावर से आया हुआ।
दिसाशूल—पुं०=दिशा-शूल।
दिसासूल†—पु०=दिशा-शूल।
दिसि†—स्त्री०=दिशा।
दिसिटि*—स्त्री०= दृष्टि।
दिसिदुरद*—पु० = दिग्गज।
दिसिनायक—पु०=दिक्पाल।
दिसिप*—पु०=दिक्पाल।
दिसिराज*—पुं०=दिक्पाल।
दिसैया—वि० [हि० दिसना=दिखना+ऐया प्रत्य०)] १ देखनेवाला। २. दिखानेवाला।
दिस्टि*—स्त्री०=दृष्टि।
दिस्टि-बंध*—पु० [स० दृष्टिबंध] इंद्रजाल। जादू। उदा०—राघव दिस्टिबंध कल्हि खेला। सभा माँझ चेटक अस मेला।—जायसी।
दिस्टिवंत—वि० [स० दृष्टि-वंत] १. जिसे दिखाई देता हो। २ ज्ञानी। उदा०—दिरिटवत कहँ नियरे, अंध मूरुख कहँ दूरि।—जायसी।
दिस्ता†—पुं०=दस्ता।
दिहंदा—वि० [फा० दिहन्द] देनेवाला।
दिहरा—पु० [सं० देव+हिं० घर=देवहर] १ देवालय। देवमंदिर। २. ग्राम-देवता, स्थान देवता आदि का स्मारक चिह्न।

दिहला—स्त्री०=दहलीज।
दिहाड़ा—पु०[हिं० दिन+हार (प्रत्य०)] दिन। दिवस।
दिहाड़ी—स्त्री०[हिं० दिहाडा+ई (प्रत्य०)] १. दिन। दिवस। २. उतना पूरा समय जिसमे कोई मजदूर दैनिक पारिश्रमिक लेकर काम करता हो। ३ मजदूरो आदि को दिया जानेवाला दैनिक पारिश्रमिक या मजदूरी।
दिहात—पु०=देहात।
दिहाती—वि०, पु०=देहाती।
दिहातीपन—पु०=देहातीपन।
दिहुढ़ी†—स्त्री०=ड्योढी।
दिहुला†—पु०[देश०] एक प्रकार का धान जो विहार मे होता है।
दिहेज†—पु०=दहेज।
दी†—स्त्री०=दीमक।
दीअट—स्त्री०=दीयट।
दीआ—पु०=दीया। (दीपक)
दीक—पु०[देश०] एक प्रकार का तेल, जो काटू या हिजली के पेड़ की छाल से निकलता है और जाल मे माजा देने के काम आता है।
दीक्षक—पु०[स०√ दीक्ष् (शिष्य बनाना)+ण्वुल्–अक] १. दीक्षा देनेवाला। मत्र का उपदेश करनेवाला। २ शिक्षक। गुरु।
दीक्षण—पु०[स०√दीक्ष+ल्यु–अन] [वि० दीक्षित] दीक्षा देने की क्रिया या भाव।
दीक्षणीय—वि०[स०√दीक्ष+अनीयर्]१ दीक्षा दिये जाने या पाने के योग्य। २. (विशिष्ट तत्त्व या सिद्धान्त) जो उसी को वतलाया जा सके जो दीक्षा ग्रहण करके किसी समाज या सप्रदाय मे सम्मिलित हो। (एसोटेरिक)
दीक्षात—पु०[स० दीक्षा-अत प०त०] वह अवभृथ यज्ञ जो किसी यज्ञ के अन्त मे उसकी त्रुटि, दोप आदि की शाति के लिए किया जाता है। २. किसी सत्र की पढाई का सफलतापूर्ण अत।
वि० दीक्षा के अत मे होनेवाला। जैसे—दीक्षात भापण।
दीक्षांत-भापण—पु०[स०त०] आज-कल विश्वविद्यालयो मे किसी विद्वान् का वह भापण जो उच्च परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियो को उपाधि, प्रमाण-पत्र आदि देने के उपरान्त होता है। (कान्वोकेशन एड्रेस)
दीक्षा—स्त्री०[स०√दीक्ष् (यज्ञ करना)+अ-टाप्] १. सोमयागादि का सकल्प-पूर्वक अनुष्ठान करना। २ यज्ञ करना। यजन। ३. किसी पवित्र मत्र की वह शिक्षा जो आचार्य या गुरु से विधिपूर्वक शिष्य बनने अथवा किसी सप्रदाय मे सम्मिलित होने के समय ली जाती है।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
४. उपनयन सस्कार, जिसमे विधिपूर्वक गुरु से मन्त्रोपदेश लिया जाता है। ५ गुरुमत्र। ६ पूजन।
दीक्षा-गुरु—पु० [स० त०] वह गुरु जो धार्मिक दृष्टि से कान मे मत्र फूंकता हो। मत्रोपदेश करनेवाला गुरु।
दीक्षा-पति—पु० [प० त०] दीक्षा या यज्ञ का रक्षक, सोम।
दीक्षित—वि० [स०√दीक्ष् (यज्ञ करना) +क्त वा दीक्षा+इतच्] जिसने सोमयागादि का सकल्पपूर्वक अनुष्ठान करने के लिए दीक्षा ली हो।
पु० कई प्रदेशो मे ब्राह्मणो का एक भेद या वर्ग।
दीखना—अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने मे आना। दृष्टिगोचर होना।
क्रि० प्र०—पडना।
दीगर—वि० [फा०] अन्य। दूसरा।
दीघी—स्त्री० [स० दीर्घिका] १. बडा तालाव। जैसे—कलकत्ते की लाल दीघी। २ वावली।
दीच्छा*—स्त्री०=दीक्षा।
दीच्छित* वि०=दीक्षित।
दीठ—स्त्री० [स० दृष्टि, प्रा० दिट्ठि] १ देखने की वृत्ति या शक्ति। दृष्टि। निगाह।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।
पद—दीठवंद, दीठवंदी। (हिं०)
मुहा०—दीठ करना या फेंकना=देखना। दीठ फेरना =दृष्टि या निगाह हटाकर दूसरी तरफ कर लेना। दीठ बचाना=(क) इस प्रकार किसी के सामने से हट जाना कि उसकी निगाह न पडने पावे। (ख) इस प्रकार कोई चीज छिपा या दवा लेना कि उसे कोई देखने न पावे। (किसी को) दीठ बाँधना=इद्रजाल, जादू-मतर, टोने-टोटके आदि से ऐसा उपाय करना कि कोई विशिष्ट चीज किसी के देखने मे न आवे। दीठ में आना या पड़ना=दिखाई पडना। (किसी ओर या किसी की ओर) दीठ लगाना=(क) दृष्टि या निगाह जमाकर देखना। अच्छी तरह या ध्यान से देखना (ख) किसी प्रकार की आशा से प्रवृत्त या युक्त होकर देखना। कुछ पाने या मिलने के विचार से देखना।
२. देखने की इद्रिया। आँख। नेत्र।
मुहा०—(किसी की ओर) दीठ उठाना=देखने के लिए किसी की ओर आँखें या निगाह करना। दीठ गड़ाना या जमाना=कोई चीज देखने के लिए उस पर टक लगाना। स्थिर दृष्टि से देखना। दीठ चुराना=जहाँ तक हो सके किसी का सामना करने से वचना। (किसी से) दीठ जुडना या मिलना=(क) देखा-देखी या सामना होना। (ख) शृंगारिक क्षेत्र मे, प्रेम या स्नेह होना। दीठ जोड़ना या मिलाना=आँखें मिलाना या सामना करना। दीठ भर देखना=अच्छी तरह या जी भर कर देखना। दीठ मारना=आँखें या पलकें हिलाकर इशारा या सकेत करना। (किसी से) दीठ लगना=शृंगारिक क्षेत्र मे प्रेम या स्नेह का सबध होना।
३ आँख या दृष्टि की वह वृत्ति या स्थिति, जिसमे कोई विशिष्ट उद्देश्य, क्रिया या फल अभीष्ट या निहित हो। ४. अनुग्रह, कृपा, स्नेह आदि से युक्त दृष्टि या मनोवृत्ति।
मुहा०—(किसी की) दीठ पर चढना=किसी का ऐसी स्थिति मे होना कि लोगो का ध्यान प्राय या वरावर उसकी ओर वना या लगा रहे। निगाह पर चढना (देखें 'निगाह' का मुहा०)। (किसी की ओर मे) दीठ फेरना=पहले का-सा ध्यान, भाव या सवंध न रखना। आँखें फेरना। (किसी के आगे या रास्ते में) दीठ विछाना =(क) अत्यत आदरपूर्वक स्वागत करना। (ख) वहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। (किसी को) दीठ में समाना=वहुत अच्छा लगने के कारण वरावर किसी

के ध्यान पर चढ़ा रहना। नजरों में समाना। (किसी की) दीठ से उतरना या गिरना=ऐसी स्थिति में आना कि पहले का-सा अनुराग या आदर न रह जाय।

५. अच्छी या सुंदर चीज पर किसी की पड़नेवाली ऐसी दृष्टि, जिसका परिणाम या फल बहुत ही अनिष्टकारक या घातक सिद्ध हो। बुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली दृष्टि। नजर। जैसे—इस बच्चे को तो उस बुढ़िया की दीठ लग गई। (स्त्रियाँ)

मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना=टोने-टोटके, मंत्र-तंत्र आदि के बल से किसी की उक्त प्रकार की दृष्टि या नजर का बुरा प्रभाव दूर या नष्ट करना। दीठ जलाना=टोना-टोटका करके कपड़े का टुकड़ा, राई नोन आदि इस उद्देश्य से जलाना कि बुरी दीठ या नजर का कुपरिणाम दूर या नष्ट हो जाय।

६. देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ७ गुण-दोष आदि समझने की योग्यता या शक्ति। परख। पहचान।

क्रि० प्र०—रखना।

विशेष—और मुहा० के लिए देखें 'आँख', 'नजर' और 'निगाह' के मुहा०।

दीठना*—अ० [हि० दीठ] दिखाई देना।

स० देखना।

दीठबंद—पुं० =दीठबंदी।

दीठबंदी—स्त्री० [हि० दीठ+सं० बंध] इन्द्र-जाल, टोने-टोटके आदि की वह माया जिसमें लोगों की दृष्टि इस प्रकार बाँध दी जाती अर्थात् प्रभावित कर दी जाती है कि उन्हें और का और या कुछ का कुछ दिखाई पड़ने लगे। नजर-बंद।

दीठवंत—वि० [हि० दीठ+वंत (प्रत्य०)] १ जिसे दिखाई पड़ता हो। २. जिसे दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो।

दीठि*—स्त्री०=दीठ।

दीत*—पुं० [सं० आदित्य] सूर्य। (डि०)

दीद—वि० [फा०] देखा हुआ।

स्त्री० देखने की क्रिया या भाव। दर्शन।

दीदबान—पु० [फा०] १. बंदूक की नली पर का वह छोटा गोल टुकड़ा जिसकी सहायता से निशाना साधा जाता है। बंदूक की मक्खी। २ भेदिया। ३ निगरानी करनेवाला व्यक्ति।

दीदा—पु० [फा० दीद] १. आँख का ढेला। २. आँख। नेत्र।

क्रि० प्र०—फूटना।—मटकाना।

मुहा०—दीदे का पानी ढल जाना=बुरा काम करने में लज्जा का अनुभव न होना। निर्लज्ज हो जाना। दीदे-गोड़ों के आगे आना=किसी किये हुए बुरे काम का बुरा फल मिलना। (स्त्रियों का शाप) जैसे—तू मेरे साथ जो-जो कर रही है, वह सब तेरे दीदे-गोड़ों के आगे आवेगा अर्थात् उसका बुरा फल तुझे इस रूप में मिलेगा कि तू अंधी और लूली-लँगड़ी हो जायगी या बहुत कष्ट भोगेगी। (किसी की तरफ) दीदे निकालना=क्रोध की दृष्टि से देखना। आँखें नीली-पीली करना। दीदे पट्टम होना=आँखों का फूट जाना। अंधा हो जाना। (स्त्रियाँ) दीदे फाड़कर देखना=अच्छी तरह आँखें खोलकर अर्थात् ध्यानपूर्वक देखना।

२. दृष्टि। नजर। ३. कोई काम करने के समय ध्यानपूर्वक उसकी ओर लगनेवाली दृष्टि या लगनेवाली नजर।

मुहा०—(किसी काम में) दीदा फोड़ना=दृष्टि जमाकर ऐसा बारीक काम करना जिससे आँखों को बहुत कष्ट हो। (किसी काम में) दीदा लगना=काम में जी या ध्यान जमना। जैसे—तुम्हारा दीदा तो किसी काम में लगता ही नहीं।

४. ऐसा अनुचित साहस जिसमें भय, लज्जा, संकोच आदि का कुछ भी ध्यान न रहे। ढिठाई। धृष्टता। जैसे—इस लड़की का दीदा तो देखो, कैसा बढ़-बढ़कर बातें करती है। (स्त्रियाँ)

दीदा-फोई—स्त्री० [हि०] ऐसी स्त्री जिसकी आँखों में शर्म न हो। बेशर्म। निर्लज्ज।

दीदाफटी—स्त्री०=दीदा-फोई।

दीदार—पु० [फा०] १. दर्शन। देखा-देखी। साक्षात्कार। (प्रिय या बड़े के संबंध में प्रयुक्त) २. छवि। सौंदर्य।

दीदारबाजी—स्त्री० [फा०] किसी प्रिय व्यक्ति से आँखें लड़ाना।

दीदारू—वि० [फा० दीदार] दर्शनीय। देखने योग्य।

दीदा व दानिस्ता—अव्य० [फा० दीद व दानिस्त.] अच्छी तरह देखते हुए और जान-बूझ या जान-समझकर।

दीदी—स्त्री० [हि० दादा (बड़ा भाई) का स्त्री०] बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द। ज्येष्ठ भगिनी के लिए संबोधन का शब्द।

दीधिति—स्त्री० [सं०√दीधी (चमकना)+क्तिन्] १ सूर्य, चद्रमा आदि की किरण। २. उँगली।

दीन—वि० [सं० √दी (क्षय होना)+क्त (न त्व)] [भाव० दीनता] १. जो बहुत ही दयनीय तथा हीन दशा में हो। २ गरीब। दरिद्र। ३ जो बहुत दुःखी या संतप्त हो। ४. जिसमें उत्साह, प्रसन्नता आदि का अभाव हो। उदास। खिन्न। ५ जो डर, भय आदि के कारण बहुत नम्र हो रहा हो।

पु० तगर का फूल।

पु० [अ०] धार्मिक मत या संप्रदाय। धर्म। मजहब।

पद—दीन-दुनिया=धार्मिक विश्वास के कारण मिलनेवाला परम पद और यह लोक या संसार। जैसे—दीन-दुनिया दोनों से गये (रहित हुए)।

मुहा०—दीन-दुनिया दोनों से जाना=न इस लोक के काम का रह जाना और न परलोक सुधार सकना।

दीन-इलाही—पु० [अ०] मुगल सम्राट् अकबर का चलाया हुआ एक धार्मिक संप्रदाय जो अधिक समय तक न चल सका था।

दीनक—वि० [सं० दीन+क (स्वार्थ)] दीन।

दीनता—स्त्री० [सं० दीन+तल्—टाप्] १ दीन होने की अवस्था या भाव। २. कातरता। ३ उदासीनता। खिन्नता। ४ नम्रता। विनय।

दीनताई—स्त्री०=दीनता।

दीनत्व—पु० [सं० दीन+त्व] दीनता।

दीनदयाल—वि०=दीनदयालु।

दीन-दयालु—वि० [स० स० त०] दीनों पर दया करनेवाला।

पु० ईश्वर। परमात्मा।

दीनदार—वि० [अ० दीन+फा० दार] [भाव० दीनदारी] जिसे अपने धर्म पर पूर्ण विश्वास हो, और जो उसके नियमो, शिक्षाओ आदि का ठीक तरह से पालन करता हो। धार्मिक। जैसे—दीनदार मुसलमान।

दीनदारी—स्त्री० [फा०] दीनदार होने की अवस्था या भाव। धार्मिकता।

दीनदुनी—स्त्री०=दीन-दुनिया (दे० 'दीन' के अन्तर्गत)।

दीन-बंधु—वि० [स० प० त०] दीनो और दुखियो का सहायक।
पु० ईश्वर। परमात्मा।

दीन-वास—पु० [स०] बहुत ही गरीबी मे या गरीबो की तरह रहकर दिन बिताना।

दीना—स्त्री० [सं० दीन+टाप्] मूपिका। चुहिया।

दीनानाथ—पु० [स० दीन-नाथ प० त० दीर्घ] १ वह जो दीनो का स्वामी या रक्षक हो। दुखियो का पालक और सहायक। २. ईश्वर। परमात्मा।

दीनार—पु० [स०√दी (क्षय करना)+आरक् (नुट्))] १. सोने का गहना। २ सोने का एक पुराना सिक्का जो ईरान मे प्रचलित था। ३ एक निष्क की तौल।

दीनारी—पु० [स० दीनार] लोहारो का ठप्पा।

दीपंकार—पु० [स०] बुद्ध के अवतारो मे से एक।

दीप—पु० [स०√दीप् (चमकना)+क] १. दीया। चिराग। २ दस मात्राओ का एक छद जिसके अत मे तीन लघु फिर एक गुरु और फिर एक लघु होता है।
†पु०=द्वीप (टापू)।

दीपक—वि० [स० √दीप्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० दीपिका] १. उजाला या प्रकाश करनेवाला। २. कीर्ति, यश आदि बढानेवाला। जैसे—कुल-दीपक। ३. दीप्त करने अर्थात् पाचन-शक्ति बढानेवाला। जैसे— अग्निदीपक औपध। ४ शरीर मे उमग, ओज, तेज आदि बढानेवाला।
पु० [दीप+कन्] १ चिराग। दीया। २. साहित्य मे,एक प्रकार का अलकार जिसमे प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म कहा जाता है। अथवा बहुत सी क्रियाओ का एक ही कारक होता है। ३ सगीत मे, छ. मुख्य रागो मे से एक। ४ सगीत मे एक प्रकार का ताल। ५. अजवायन, जो अग्नि-दीपक होती है। ६. केसर। ७. बाज नामक पक्षी। ८ मोर की चोटी या शिखा। ९. एक प्रकार की आतिशबाजी।

दीपक-माला—स्त्री० [प० त०] १ एक प्रकार के वर्ण-वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण, जगण और एक गुरु होता है। २ दीपक अलकार का एक भेद।

दीप-कलिका—स्त्री० [प० त०] दीये की टेम। चिराग की लौ।

दीप-कली—स्त्री० [स० दीपकलिका] चिराग की टेम। दीपशिखा। दीए की लौ।

दीपक-वृक्ष—पु० [प० त०] वह बडा दीवट जिसमे दीए रखने के लिए कई शाखाएँ इधर-उधर निकलती हो। झाड।

दीपक-सुत—पु० [प० त०] कज्जल। काजल।

दीप-काल—पु० [मध्य स०] दीया जलाने का समय। सध्या।

दीपकावृत्ति—स्त्री० [दीपक-आवृत्ति] १. दीपक अलकार का एक भेद। २. पनशाखा।

दीप-किट्ट—पुं० [प० त०] कज्जल। काजल।

दीप-कूपी—स्त्री० [सं० प० त०] दीये की बत्ती।

दीपग*—पु०=दीपक।

दीपगर†—पु० [स० दीपगृह] दीयट।

दीपत†—स्त्री० [स० दीप्ति] १. चमक। दीप्ति। २ शोभायुक्त सौंदर्य। ३. कीर्ति। यश।

दीपता—वि० [स० दीप्ति] १. प्रकाशित। चमकीला। २ शोभित। ३ प्रसिद्ध।

दीपति—स्त्री०=दीप्ति (प्रकाश)।

दीप-दान—पु० [प० त०] १. देवता के सामने दीपक जलाने का काम जो पूजन का एक अग है। २. कार्तिक मे राधा-दामोदर के उद्देश्य से बहुत से दीपक जलाने का कृत्य। ३. हिंदुओ मे एक रसम जिसमे मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से जलते हुए दीपक का दान कराया जाता है।

दीपदानी—स्त्री० [स० दीप-आधान] पूजा के लिए घी, बत्ती आदि (दीपक जलाने की सामग्री) रखने की डिबिया।

दीप-ध्वज—पु० [प० त०] काजल।

दीपन—पु० [स० दीप् (प्रकाशित करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्त, दीप्य] १ प्रकाश करने के लिए दीपक या और कोई चीज जलाना। २. जठराग्नि तीव्र और प्रज्वलित करना। पाचन-शक्ति बढाना। ३ किसी प्रकार का मनोवेग उत्तेजित और तीव्र करना। उत्तेजन। ४ [√दीप्+णिच्+ल्यु—अन] एक सस्कार जो मत्र को जाग्रत और सक्रिय करने के लिए किया जाता है। ५. पारा शोधने के समय किया जानेवाला एक सस्कार। ६ तगर की जड या लकडी। ७ मयूरशिखा नाम की बूटी। ८ केसर। ९. प्याज। १०. कसौंधा। कासमर्द।
वि० १ अग्नि को प्रज्वलित करनेवाला। आग भडकानेवाला। २. जठराग्नि तीव्र करके पाचन-शक्ति बढानेवाला।

दीपन-गण—पु० [प० त०] जठराग्नि को तीव्र करनेवाले पदार्थो का एक गण या वर्ग। भूख लगानेवाली ओपधियो का वर्ग।

दीपना*—अ० [स० दीपन] प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना। स० तीव्र या प्रज्वलित करना।

दीपनी—स्त्री० [स० दीपन+ङीप्] १. मेथी। २. पाठा। ३. अजवायन।

दीपनीय—वि० [स०√दीप् (दीप्ति)+अनीयर्] १ जो दीपन के लिए उपयुक्त हो। जो जलाया या प्रज्वलित किया जा सके। २. जो उत्तेजित, तीव्र या प्रबल किये जाने के योग्य हो।

दीपनीयक—वि० [स०]=दीपन।

दीपनीय-वर्ग—पु० [प० त०] चक्रदत्त के अनुसार एक ओपधि वर्ग जिसके अतर्गत जठराग्नि तीव्र करनेवाली ये ओपधियाँ हैं—पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चीता और नागर।

दीप-पादप—पु० [प० त०] दीयट।

दीप-पुष्प—पुं० [ब० स०] चपक-वृक्ष। चपा।

दीप-माला—स्त्री० [प० त०] १ जलते हुए दीपो की पक्ति। जगमगाते हुए दीयो की श्रेणी। २ आरती या दीपदान के लिए जलाई जानेवाली बत्तियो की पक्ति या समूह।

दीप-मालिका—स्त्री० [ष० त०] १. दीयों की पक्ति। जलते हुए दीपो की श्रेणी। २ दीवाली का त्योहार जो कार्तिक की अमावास्या को होता है।

दीप-माली—स्त्री० [स० दीपमालिका] दीवाली।

दीपवती—स्त्री० [स० दीप+मतुप्-ङीप्] कालिका पुराण के अनुसार एक नदी जो कामाख्या मे है और जिसके पूर्व मे शृंगार नाम का प्रसिद्ध पर्वत है।

दीप-वृक्ष—पु० [ष० त०] दीअट।

दीप-शत्रु—पु० [ष० त०] पतग या फतिंगा (जो दीपक को बुझा देता है)।

दीप-शिखा—स्त्री० [ष० त०] १. दीपक की लौ। टेम। २ दीपक से निकलनेवाला धूआँ।

दीप-सुत—पु० [ष० त०] कज्जल। काजल।

दीप-स्तंभ—पु० [ष० त०] १. वह आधार या स्तभ जिसके ऊपर रखकर दीया जलाया जाता है। दीयट। २. समुद्र में जहाजो को रात के समय रास्ता दिखाने और उन्हें चट्टानो आदि से बचाने के लिए बना हुआ उक्त प्रकार का स्तभ जिसके ऊपरी भाग मे रात को बहुत तेज रोशनी होती है। (लाइट हाउस)

दीपांकुर—पु० [दीप-अकुर ष० त०] दीए की लौ।

दीपा—वि० [?] १. मद। धीमा। २. फीका।

दीपाग्नि—पु० [दीप-अग्नि ष० त०] १. दीये की लौ। २. उक्त की आँच या ताप।

दीपाधार—पु० [दीप-आधार ष० त०] वह आधार या स्तभ जिस पर रखकर दीये जलाये जायँ। दीयट।

दीपान्विता—स्त्री० [दीप-अन्विता तृ०त०] कार्तिक मास की अमावास्या। दीवाली की रात।

दीपाराधन—पु० [दीप-आराधन तृ० त०] दीप जलाकर तथा उन्हे किसी के सम्मुख घुमाते हुए आराधन करना। आरती करना।

दीपालि, दीपाली—स्त्री० [स० ष० त०] १ दीपमाला। २. दीपावली। दीवाली।

दीपावती—स्त्री० [स० दीप+मतुप्—ङीप् (दीर्घ)] एक रागिनी जो दीपक और सरस्वती रागो के योग से बनी है।

दीपावली—स्त्री० [दीप-आवली ष० त०] १. दीप-श्रेणी। दीयों की पक्ति। २ दीवाली।

दीपिका—स्त्री० [स० दीप+क—टाप्, इत्व] १. छोटा दीया। २. [√दीप्+णिच्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] चाँदनी। ३. सध्या के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जो हिंडोल राग की पत्नी कही गई है। ४ किसी कठिन ग्रथ का सरल आशय बतानेवाली टीका या पुस्तक।
वि० स्त्री० [हिं० दीपक का स्त्री०] समस्त पदो के अत मे, दीपन अर्थात् उजाला या प्रकाश करनेवाली।

दीपिका-तैल—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का आयुर्वेदोक्त तेल जो कान की पीड़ा दूर करता है।

दीपित—भू० कृ० [स०√दीप्+णिच्+क्त] १ दीप्त किया अर्थात् जलाया हुआ। २ दीपो से युक्त। ३ उजाले या प्रकाश से युक्त किया हुआ। प्रकाशित। प्रज्वलित। ४. चमकता या जगमगाता हुआ। ५. जिसे उत्तेजना दी गई हो या मिली हो। उत्तेजित।

दीपी (पिन्)—वि० [स०उत्तरपद मे] १ जलता हुआ। २. चमकता हुआ। ३ दीपन करनेवाला।

दीपोत्सव—पु० [दीप-उत्सव, ष० त०] १. दीप जलाकर मनाया जानेवाला उत्सव। २ दीवाली।

दीप्त—वि० [स०√दीप्+क्त] [स्त्री० दीप्ता] १. जलता हुआ। प्रज्वलित। २. चमकता या जगमगाता हुआ। प्रकाशित।
पु० १. सोना। स्वर्ण। २. हीग। ३ नीबू। ४. सिंह। शेर। ५. एक रोग जिसमें नाक मे जलन होती है तथा उसमे से गरम हवा निकलती है।

दीप्तक—पु० [स० दीप्त+क (स्वार्थे)] १ सोना। सुवर्ण। २. दे० 'दीप्त' (नाक का रोग)।

दीप्त-किरण—पु० [ब० स०] १. सूर्य। २ आक। मदार।

दीप्त-कीर्ति—पु० [ब० स०] कार्तिकेय।

दीप्त-केतु—पुं० [ब० स०] दक्ष सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम। (भागवत)

दीप्त-जिह्वा—स्त्री० [ब० स०] १ मादा गीदड। सियारिन। २. लाक्षणिक अर्थ मे, झगडालू स्त्री।

दीप्त-पिंगल—पु० [उपमि०स०] सिह।

दीप्त-रस—पुं० [ब० स०] केंचुआ।

दीप्त-रोमा (मन्)—पु० [ब० स०] एक विश्वदेव का नाम। (महाभारत)

दीप्त-लोचन—पु० [ब० स०]। बिल्ला।

दीप्त-लोह—पु० [कर्म० स०] कांसा।

दीप्त-वर्ण—वि० [ब० स०] चमकते या दमकते हुए वर्णवाला।
पु० कार्तिकेय।

दीप्त-शक्ति—पु० [ब० स०] कार्तिकेय।

दीप्तांग—वि० [दीप्त-अग ब० स०] जिसका शरीर चमकता हो।
पु० मोर पक्षी। मयूर।

दीप्तांशु—पु० [दीप्त-अशु ब० स०] १. सूर्य। २. आक। मदार।

दीप्ता—वि० स्त्री० [स० दीप्त+टाप्] चमकती हुई। प्रकाशमान। जैसे—सूर्य के प्रकाश से दीप्ता दिशा।
स्त्री० १. ज्योतिष्मती। मालकगनी। २. कलियारी। ३ सातला (थूहर)।

दीप्ताक्ष—वि० [दीप्त-अक्षि ब० स० (षच् समा०)] चमकती हुई आँखोंवाला।
पु० बिल्ला। बिडाल।

दीप्ताग्नि—वि० [दीप्त-अग्नि ब० स०] १. जिसकी जठराग्नि बहुत तीव्र हो। जिसकी पाचन-शक्ति अत्यत प्रबल हो। २ जिसे बहुत भूख लगी हो। भूखा।
पु० अगस्त्य मुनि जो वातापि राक्षस को खाकर पचा गये थे और समुद्र का सारा जल पी गये।
स्त्री० प्रज्वलित अग्नि।

दीप्ति—स्त्री० [स०√दीप्+क्तिन्] १ दीप्त होने की अवस्था या भाव। प्रकाश। उजाला। रोशनी। २. आभा। चमक। ३. छवि। शोभा।

४ योग में ज्ञान का प्रकाश जिससे हृदय का अधकार दूर होता है। ५ लाक्षा। लाख। ६ काँसा। ७. थूहर। ८. एक विश्व-देव का नाम।

दीप्तिक—पु० [स० दीप्ति√कै (मालूम पडना)+क] शिरशोला। दुग्धपाषाण वृक्ष।

दीप्तिमान्(मत्)—वि० [स० दीप्ति+मतुप्] [स्त्री० दीप्तिमती] १ दीप्तयुक्त। प्रकाशित। चमकता हुआ। २. काति या शोभा से युक्त।

पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र, जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

दीप्तोद—पु० [दीप्त-उदक ब० स०, उद आदेश] एक प्राचीन तीर्थ-क्षेत्र जिसमे बहनेवाली बधूसर नामक नदी मे स्नान करके परशुराम ने अपना खोया हुआ तेज फिर से प्राप्त किया था। इसी क्षेत्र मे महर्षि भृगु ने भी कठोर तपस्या की थी।

दीप्तोपल—पु० [स० दीप्त-उपल कर्म० स०] सूर्यकात मणि।

दीप्य—वि० [स०दीप्+यत्] १ जो जलाया जाने को हो। प्रज्वलित किया जानेवाला। २ जो जलाकर प्रकाश से युक्त किया जा सके। ३ जठराग्नि अर्थात् भूख बढानेवाला।

पु० १. अजवायन। २. जीरा। ३. मयूर-शिखा। ४ रुद्र-जटा।

दीप्यक—पु० [स० दीप्य+कन्] १ अजवायन। २ अजमोदा। ३ मयूरशिखा। ४ रुद्रजटा।

दीप्यमान—वि० [स०+दीप् (चमकना) +शानच् (यक्)] चमकता हुआ। दीप्त।

दीप्या—स्त्री० [स० दीप्य+टाप्] पिड खजूर।

दीप्र—वि० [स०√दीप्+र] दीप्तिमान।

दीबाचा—पु० [फा० दीबाच] ग्रथ की भूमिका। प्रस्तावना।

दीबो†—पु० [हिं० देना] देने की क्रिया या भाव। उदा०—दीनदयाल दीबो ई भावै जाचक सदा सोहाही।—तुलसी।

दीमक—स्त्री० [फा०] च्यूँटी की जाति का सफेद रग का एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो समूहो मे रहता है और लकडी, कागज, पौधो आदि को खा जाता है।

दीयट—स्त्री० [स० दीवस्थ, प्रा दीवट्ठ] पुरानी चाल का धातु, लकडी आदि का बना हुआ वह छोटा स्तम्भ या आधार जिस पर दीया रखकर जलाया जाता है।

दीयमान—वि० [सं० दा (देना)+शानच् (यक्)] जो दिया जाने को हो या दिये जाने के लिए हो।

दीया—पु० [स० दीपक, प्रा० दीअ] १ बत्ती तथा तेल अथवा घी से युक्त छोटा पात्र।

क्रि० प्र०—जलना।—जलाना।—बलना।—बालना।—बुझना। —बुझाना।

मुहा०—**दीया जलाना**=दीवाला निकालना (पहले जो लोग दीवाला निकालते थे वे अपनी कोठी या दूकान का टाट उलटकर उस पर एक चौमुखा दीया जलाकर रख देते थे और काम-धधा बद कर देते थे)। **दीया ठंढा करना**=दीया बुझाना। (किसी के घर का) **दीया ठंढा होना**=किसी के मरने के फल-स्वरूप उसके परिवार मे अँधेरा छा जाना। **दीया दिखाना**=मार्ग मे प्रकाश करने के लिए दीया सामने करना। **दीया बढ़ाना**=दीया बुझाना। **दीया बत्ती करना**=संध्या होने पर दीया जलाना। **दीया सँजोना**=दीया जलाकर प्रकाश करना। **दीये का हँसना**=दीये की बत्ती से फूल या गुल झडना। **दीये से फूल झड़ना**=दीये की जलती हुई बत्ती से चमकते हुए गोल पुचड़े या रवे निकलना। गुल झडना।

पद—**दीये बत्ती का समय**=सध्या का समय जब दीया जलाया जाता है।

२. [स्त्री० अल्पा० दियली] बत्ती जलाने का छोटी कटोरी के आकार का बरतन। वह बरतन जिसमे तेल भरकर जलाने के लिए बत्ती डाली जाती है। ३. उक्त प्रकार की कटोरी के आकार का मिट्टी का छोटा पात्र।

मुहा०—**दीये मे बत्ती पड़ना**=संध्या का समय होने पर दीया जलाया जाना।

दीया-सलाई—स्त्री० [हिं० दीया+सलाई] लकडी की वह छोटी सलाई या सीक जिसके एक सिरे पर लगा हुआ मसाला रगडने से जल उठता है। आग जलाने की सीक या सलाई।

दीरघ†—वि०=दीर्घ।

दीर्घ—वि० [स०+दृ (विदारण)+घञ्] १ काल-मान, दूरी आदि के विचार से अधिक विस्तारवाला। अधिक अवकाश या समय मे व्याप्त। जैसे—दीर्घ काय, दीर्घ क्षेत्र। २ लबी अवधि या भोगकालवाला। जैसे—दीर्घ आयु, दीर्घ निद्रा, दीर्घ श्वास। ३ (अक्षर या वर्ण) जो दो मात्राओ का अर्थात् गुरु हो। जिसका उच्चारण अपेक्षया अधिक खीचकर किया जाता हो। 'ह्रस्व' का विपर्याय। जैसे—'इ' का दीर्घ 'ई' और 'उ' का दीर्घ 'ऊ' है।

पु० १ ऊँट। २ ताड का पेड। ३ लता शाल नामक वृक्ष। ४ रामशर। नरकट। ५ ज्योतिष मे, पाँचवी, छठी, सातवी और आठवी अर्थात् सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक राशियो की सज्ञा।

दीर्घ-कंटक—पु० [ब० स०] बबूल का पेड।

दीर्घ-कठ—वि० [ब० स०] [स्त्री०दीर्घ कठी, दीर्घकण्ठ+ङीप्] जिसकी गरदन लबी हो।

पु० १ बगला पक्षी। २ एक राक्षस का नाम।

दीर्घ-कंद—पु० [ब० स०] मूली।

दीर्घ-कंदिका—स्त्री० [ब० स०,कप्—टाप् (इत्व)] मुसली। ताल-मूली।

दीर्घ-कंधर—वि० [ब० स०] [स्त्री० दीर्घकधरी] लबी गरदनवाला।

पु० बगला पक्षी।

दीर्घ-कणा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] सफेद जीरा।

दीर्घ-कर्ण—वि० [ब० स०] बडे-बडे कानोवाला।

पु० एक प्राचीन जाति का नाम।

दीर्घ-कांड—पु० [ब० स०] १ गुडतृण। गोदला। २ पाताल गारुडी लता। ३. तिक्तागा।

दीर्घ-कांडा—स्त्री० [स० दीर्घकाड+टाप्] दीर्घकाड। (दे०)

दीर्घ-काय—वि० [ब० स०] जिसकी काया अर्थात् शरीर दीर्घ या बहुत बडा हो। शारीरिक दृष्टि से बडे डील-डौलवाला।

दीर्घ-कील—पु० [ब० स०] दीर्घकीलक। (दे०)

दीर्घ-कीलक—पु० [स० दीर्घकील+कन्] अंकोल का पेड।

दीर्घ-कुल्या—स्त्री० [ब० स०, टाप्] गजपिप्पली।

दीर्घ-कूरक—पु० [कर्म० स०] आन्ध्र प्रदेश मे होनेवाला एक तरह का धान। रजान्न।

दीर्घ-केश—वि० [ब० स०] [स्त्री० दीर्घकेशी, दीर्घकेश+ङीप्] जिसके केश दीर्घ अर्थात् बडे या लंबे हों।
पुं० १ भालू। रीछ। २. बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो कूर्म विभाग के पश्चिमोत्तर मे है।

दीर्घ-कोशिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप् (इत्व)] शुक्ति नामक जल-जतु। सुतुही।

दीर्घ-गति—पु० [ब० स०] ऊँट।
वि० तेज या बहुत चलनेवाला।

दीर्घ-ग्रंथिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप्] गजपिप्पली।

दीर्घ-ग्रीव—वि०[ब० स०] [स्त्री० दीर्घग्रीवी] जिसकी गरदन लबी हो।
पु० १ सारस पक्षी। २. बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो कूर्म विभाग के दक्षिण-पश्चिम मे है।

दीर्घ-घाटिक—वि० [सं० दीर्घा—घाटा कर्म० स०,+ठन्—इक] लबी गरदनवाला।
पु० ऊँट।

दीर्घच्छद—वि० [ब० स०] जिसके लंबे-लबे पत्ते हो।
पु० ईख। ऊख। गन्ना।

दीर्घ-जंगल—पु० [कर्म० स०] एक तरह की मछली। बटा झींगा।

दीर्घ-जंघ—वि० [ब० स०] जिसकी टाँगे लबी हो।
पु० १. बगला पक्षी। २. ऊँट।

दीर्घ-जिह्व—वि० [ब० स०] जिसकी जीभ लबी हो।
पु० १. साँप। २. एक राक्षस का नाम।

दीर्घजिह्वा—स्त्री० [स० दीर्घ जिह्व+[टाप्] १. विरोचन की पुत्री एक राक्षसी जिसे इद्र ने मारा था। २. कार्तिकेय की एक अनुचरी या मातृका।

दीर्घजीवी (विन्)—वि० [स० दीर्घ√जीव् (जीना)+णिनि] बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घ जीवनवाला।

दीर्घतपा (पस्)—वि० [ब०स०] जिसने बहुत दिनों तक तपस्या की हो।
पु० उतथ्य ऋषि के एक पुत्र का नाम।

दीर्घतरु—पु० [कर्म०स०] ताड का पेड़।

दीर्घता—स्त्री०[स० दीर्घ+तल्-टाप्] दीर्घ होने की अवस्था, गुण या भाव। लबाई और चौडाई।

दीर्घ-तिमिषा—स्त्री० [तिमिषा, √तिम् (गीला होना)+किषन् (बा०) टाप् दीर्घ तिमिषा कर्म०स०] ककड़ी। कर्कटी।

दीर्घ-तुंडा—वि० स्त्री०[ब० स०, टाप्] जिसका मुँह लबा हो।
स्त्री० छछूँदर।

दीर्घ-तृण—पु०[कर्म०स०] एक प्रकार की घास जिसके खाने से पशु निर्बल हो जाते है। पल्लिवाह तृण। ताम्रपर्णी।

दीर्घ-दंट—पु०[कर्म०स०] दीर्घदटक। (दे०)

दीर्घदंटक—पु०[सं० दीर्घदण्ड+क (स्वार्थे)] १. अडी का पेड़। रेंड। २. ताड़।

दीर्घ-दंडी—स्त्री०[स० दीर्घदण्ड+ङीप्] गोरख इमली।

दीर्घदर्शी (र्शिन्)—वि०[स० दीर्घ√दृश (देखना)+णिनि] [भाव० दीर्घदर्शिता] बहुत दूर तक की बातें सोचने-समझनेवाला। दूरदर्शी।
पुं० १. भालू। २. गीध।

दीर्घ-द्रु—पुं०[कर्म०स०] ताड का पेड।

दीर्घ-द्रुम—पु०[कर्म०स०] सेमल का पेड। शाल्मली।

दीर्घ-दृष्टि—वि०[ब०स०] १. जिसकी दृष्टि दूर तक जाय। २. दूर-दर्शी।
स्त्री० दूरदर्शिता।
पु० गिद्ध पक्षी।

दीर्घ-द्वार—पु०[ब०स०] विशाल देश के अतर्गत एक प्राचीन जनपद जो गडकी नदी के किनारे कहा गया है।

दीर्घ-नाद—वि०[ब०स०] जिससे जोर का या भारी शब्द निकलता हो।
पु० शंख।

दीर्घ-नाल—पुं०[ब० स०] १. रोहिस घास। २ गुड तृण। गोंदला। ३. यवनाल। ज्वार।

दीर्घ-निद्रा—स्त्री०[कर्म०स०] मृत्यु। मौत। मरण।

दीर्घ निःश्वास—पु० [कर्म०स०] चिता, दुख, भय आदि के कारण लिया जानेवाला गहरा या लबा साँस।

दीर्घ-पक्ष—वि०[ब० स०] बड़े-बड़े परोंवाला।
पु० कलिंग (पक्षी)।

दीर्घ-पत्र—वि० ब० स०] जिसके पत्ते बहुत लंबे होते हो।
पुं०१. हरिदर्भ जो कुश का एक भेद है। २. विष्णुकद। ३. लाल प्याज। ४. कुचला। ५. एक प्रकार की ईख या ऊख।

दीर्घ-पत्रक—पु० [स० दीर्घपत्र+कन्] १. लाल लहसुन। २. एरड। रेंड। ३. बेंत। ४. समुद्र-फल। हिजल। ५ करील। टेंटी। ६. जलमहुआ।

दीर्घपत्रा—स्त्री० [स० दीर्घपत्र+टाप्] १. केतकी। २. चित्रपर्णी। ३. जगली जामुन। ४. शालपर्णी।

दीर्घपत्रिका—स्त्री०[सं० दीर्घपत्र+कन्-टाप् (इत्व)]१ सफेद वच। २ घीकुआँर। ३ शालपर्णी। सरिवन। ४. सफेद गदहपूरना। श्वेत पुनर्नवा।

दीर्घपत्री—स्त्री०[स० दीर्घपत्र+ङीप्]१. पलाशी लता। बौरिया पलाश। वह पलाश जो लता के रूप मे फैलता है। २. बडा चेंच या चेना। (साग)

दीर्घ-पर्ण—वि०[ब० स०] लंबे-लंबे पत्तोवाला।

दीर्घपर्णी—स्त्री०[स० दीर्घपर्ण+ङीप्] पिठवन। पृश्निपर्णी।

दीर्घ-पल्लव—वि०[ब०स०] बडे-बड़े फूलोंवाला।
पु० सन का पौधा।

दीर्घ-पाद—वि०[ब० स०] लबी टागोवाला।
पु० १. कक पक्षी। सफेद चील। २ सारस।

दीर्घ-पादप—पुं०[कर्म० स०]१. ताड़ का पेड़। २ सुपारी का पेड़।

दीर्घ-पृष्ठ—पु०[ब० स०] सर्प। साँप।

दीर्घ-प्रज्ञ—वि०[ब०स०] दूरदर्शी।
पुं० पुराणानुसार द्वापर के एक राजा जो असुर के अवतार कहे गयेहै।

दीर्घ-फल—पु०[व० स०] अमलतास।
दीर्घ-फलक—पु०[स० दीर्घफल+कन्] अगस्त का पेड़।
दीर्घफला—स्त्री० [स० दीर्घफल+टाप्] १. जतुका लता। पहाडी नाम की लता। २. लवे दाने का अगूर।
दीर्घ-फलिका—स्त्री०[व० स०, कप्–टाप् (इत्व)] १. कपिल द्राक्षा। लवा अगूर। २ जतुका लता।
दीर्घ-वाली—स्त्री०[व० स०, ङीप्] चमरी। सुरागाय।
दीर्घ-वाहु—वि०[व० स०] जिसकी भुजा लवी हो।
पुं० १ शिव का एक अनुचर। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दीर्घ-मारुत्—पुं०[व० स०] हाथी।
दीर्घ-मुख—वि०[व० स०] वडे मुँहवाला।
पु०१ हाथी। २ शिव के एक अनुचर का नाम।
दीर्घ-मूल—पु०[व० स०] १ मोरट नाम की एक लता। २ लामज्जक तृण। ३ विल्वातर नामक वृक्ष।
दीर्घ मूलक—पु०[व० स०, कप्] मूलक। मूली।
दीर्घ-मूला—स्त्री०[स० दीर्घमूल+टाप्]१ शालिपर्णी। सरिवन। २ श्यामा लता। कालीसर।
दीर्घ-मूली—स्त्री०[स० दीर्घमूल+ङीप्] धमासा।
दीर्घयज्ञ—वि०[व० स०] जिसने वहुत दिनो तक यज्ञ किया हो।
पु० अयोध्या के एक राजा जो पुराणानुसार द्वापर युग मे हुए थे।
दीर्घ-रत—वि० [व० स०] अधिक समय तक मैथुन मे रत रहनेवाला।
पु० कुत्ता।
दीर्घ-रद—वि०[व० स०] जिसके दाँत लवे और वाहर निकले हुए हो।
पु० सूअर। शूकर।
दीर्घ-रसन—पु०[व० स०] सर्प। साँप।
दीर्घ-रागा—स्त्री०[व०स०, टाप्] हरिद्रा। हल्दी।
दीर्घ-रोमा (मन्)—पु०[व० स०] १ भालू। २ शिव का एक अनुचर।
दीर्घ-रोहिषक—पुं०[कर्म० स०+कन्] एक तरह का सुगधित तृण।
दीर्घ-लोचन—वि० [व० स०] वडी आँखोवाला।
पुं०१. शिव का एक अनुचर। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दीर्घ-वंश—पुं० [कर्म० स०] नरसल। नरकट।
दीर्घ-वक्त्र—वि० [व० स०] [स्त्री० दीर्घवक्ता, दीर्घवक्त्र–टाप्] लवे मुँहवाला।
पु० हाथी।
दीर्घवच्छिका—स्त्री०[स० दीर्घवत्√शीक् (सीचना)+क–टाप्, पृपो० सिद्धि] कुभीर। घडियाल।
दीर्घ-वल्ली—स्त्री०[कर्म० स०]१ वडा इंद्रायन। महेद्रवारुणी। २. पाताल-गारुड़ी लता। छिरेटा। ३. पलाशी लता। वौरिया पलास।
दीर्घ-वृंत—पु०[व०स०] १ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। २. लताशाल।
दीर्घवृता—स्त्री०[स० दीर्घवृत+टाप्] इद्रचिर्मिटी लता।
दीर्घवृंतिका—स्त्री०[स० दीर्घ-वृत+कन्–टाप् (इत्व)] एलापर्णी।
दीर्घ-शर—पु०[कर्म० स०] ज्वार।
दीर्घ-शाख—पु०[व० स०] १. सन। २ शाल (वृक्ष)। साखू।
दीर्घ-शिंविक—पु० [व० स०, कप् (ह्रस्वत्व)] एक तरह की राई। क्षव।
दीर्घ-शूक—पु०[व० स०] एक तरह का धान।
दीर्घश्रवा (वस्)—पु० [व० स०] एक ऋषिपुत्र जिन्होंने अनावृष्टि होने पर वाणिज्य वृत्ति स्वीकार की थी। (ऋग्वेद)
दीर्घ-सत्र—वि०[व०स०] जिसने वहुत दिनो तक यज्ञ किया हो।
पु० [कर्म० स०] १ जीवन भर किया जानेवाला अग्निहोत्र। २. एक प्रकार का यज्ञ। ३ एक प्राचीन तीर्थ।
दीर्घ-सुरत—वि०[व० स०] वहुत देर तक रति करनेवाला।
पु० कुत्ता।
दीर्घ-सूक्ष्म—पु०[कर्म० स०] प्राणायाम का एक भेद।
दीर्घ-सूत्र—वि०[व० स०] दीर्घसूत्री। (दे०)
दीर्घ-सूत्रता—स्त्री० [स० दीर्घसूत्र+तल्–टाप्] दीर्घसूत्र या दीर्घसूत्री होने की अवस्था, भाव या स्थिति।
दीर्घ-सूत्री (त्रिन्)—वि०[स० दीर्घ-सूत्र कर्म०स०,+इनि] [भाव० दीर्घ-सूत्रिता] (व्यक्ति) जो हर काम मे आवश्यकता से वहुत अधिक देर लगाता हो। वहुत धीरे-धीरे और देर मे काम करनेवाला।
दीर्घ-स्कंध—पुं०[व० स०] ताड का पेड़।
दीर्घ-स्वर—पु०[कर्म०स०] ऐसा स्वर जो साधारण से कुछ अधिक खीच-कर उच्चारित होता हो। दो मात्राओवाला स्वर।
दीर्घा—स्त्री० [स० दीर्घ+टाप्]१. पिठवन। पृश्निपर्णी। २ पुरानी चाल की वह नाव जो ८८ हाथ लवी, ४४ हाथ चौडी और ४४ हाथ ऊँची होती थी। ३ आने-जाने के लिए कोई लवा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग। ४ आज-कल किसी भवन के अदर कुछ ऊँचाई पर दर्शको आदि के वैठने के लिए वना हुआ स्थान। (गैलरी)
दीर्घाकार—वि०[दीर्घ-आकार, व० स०] दीर्घ आकारवाला। लवा-चौड़ा।
दीर्घाध्वग—पु०[दीर्घ-अध्वग कर्म०स०]१ दूत। २. हरकारा।
दीर्घायु (स्)—वि०[दीर्घ-आयुस् व० स०] दीर्घजीवी। चिरजीवी।
पु० १ मार्कंडेय ऋषि। २ जीवकवृक्ष। ३ सेमल का पेड। ४. कौआ।
दीर्घायुध—पु०[दीर्घ-आयुध कर्म० स०] १ कुभास्त्र। २ [व० स०] सूअर। शूकर।
दीर्घायुष्य—वि०, पु० [दीर्घ-आयुष्य व० स०]=दीर्घायु।
दीर्घालर्क—पु०[दीर्घ-अलर्क कर्म० स०] सफेद मदार।
दीर्घास्य—वि०[दीर्घ-आस्य] वडे मुँहवाला।
पु० १ शिव का एक अनुचर। २ पुराणानुसार पश्चिमोत्तर दिशा का एक देश। ३ हाथी।
दीर्घाह (न्)—वि०[दीर्घ-अहन्] वडे दिनवाला।
पु० १ वडा दिन। २ ग्रीष्मकाल।
दीर्घिका—स्त्री०[स० दीर्घ+कन्–टाप्, इत्व] १ छोटा जलाशय या तालाव। वावली। २ हिंगुपत्री। ३ एक प्रकार की पुरानी नाव जो ३२ हाथ लवी, ४ हाथ चौडी और ३½ हाथ ऊँची होती थी।
दीर्घीकरण—पु०[स० दीर्घ+च्वि √कृ+ल्युट्–अन] किसी वस्तु को पहले से अधिक दीर्घ करना। विस्तार वढाना। (एलागेशन)
दीर्घेर्वारु—पु०[दीर्घा-इर्वारु कर्म० स०] लवी ककड़ी। डँगरी।
दीर्ण—वि०[स०√दृ (विदारण)+क्त] फटा हुआ। विदारित। दरका हुआ।
दीली—स्त्री० १.=दिल्ली। २ =दिली।

दीवँक—स्त्री०=दीमक।
दीवट†—स्त्री०=दीयट।
दीवला—पु०[हिं० दिवाला (प्रत्य०)][स्त्री० दिवली, दिल्ली] दीया।
दीवा—पु०=दीया।
पुं०=धव (वृक्ष)।
दीवान—पु० [अ०] १. राजसभा। न्यायालय। कचहरी। २. मंत्री। वजीर। ३. अर्थ-मत्री। ४. उर्दू मे किसी कवि या शायर की रचनाओ का सग्रह। जैसे—गालिव का दीवान।
दीवान-आम—पु०[अ०] १ ऐसा दरवार जिसमें राजा या वादशाह से सव लोग मिल सकते थे। आम दरवार। २. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार का दरवार लगता हो।
दीवान-खाना—पु० [फा० दीवानखानः] १ वैठक। कमरा। २. बड़े-वडे लोगो के वैठने का स्थान।
दीवान-खास—पु० [फा०+अ०] १. ऐसी सभा जिसमे राजा या वादशाह, मत्रियो तथा चुने हुए प्रधान लोगो के साथ वैठता है। खास दरवार। २. वह स्थान जिसमें उक्त दरवार लगता हो।
दीवाना—वि० [फा० दीवान.] [स्त्री० दीवानी] [भाव० दीवानापन] १. पागल। विक्षिप्त। २. ,जो किसी के प्रेम में पागल रहता हो। ३. किसी काम मे तन्मय।
दीवानापन—पु० [फा० दीवाना+पन (प्रत्य०)] दीवाने होने की अवस्था या भाव।
दीवानी—स्त्री० [फा०] १. दीवान का पद। दीवान का ओहदा।
वि० [फा०] १. दीवान-सवधी। दीवान का। २. आर्थिक।
स्त्री० १. दीवान का कार्य और पद। २. न्याय का वह विभाग जिसमे केवल आर्थिक विवादों पर विचार होता है। ३. वह अदालत या कचहरी जिसमें उक्त प्रकार के विवादो का विचार होता है।
वि० हिं० दीवाना का स्त्री० रूप।
दीवार—स्त्री० [फा०] १ मिट्टी, ईंटों, पत्थरो आदि की प्राय. लंवी, सीधी और ऊँची रचना जो कोई स्थान घेरने के लिए खडी की जाती है। भीत।
क्रि० प्र०—उठाना।—खडी करना।
२. उक्त रचना का कोई पक्ष या पहलू। जैसे—दीवार पर चूना करना। ३. कोई ऐसी रचना, जो सुरक्षा के लिए वनी या वनाई गई हो। जैसे—लोहे की दीवार। ४. किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो। जैसे—जूते, टोपी या थाली की दीवार।
दीवारगीर—स्त्री० [फा०] १. दीया, मोमवत्ती, लम्प आदि रखने का आधार जो दीवार मे जटा जाता है। २. उक्त प्रकार से जलनेवाला दीया, लम्प आदि। ३. दीवार पर टाँगा जानेवाला रंगीन विशेषत छपा हुआ परदा।
दीवार-दंड—पु० [फा० दीवर + हिं० दंड] एक प्रकार की दंड नाम की कसरत जो दीवार पर हाथ रखकर की जाती है।
दीवाल†—स्त्री०=दीवार।
दीवाला†—पु० = दिवाला।
दीवाली—स्त्री० [स० दीपावली] १. कार्तिक की अमावास्या को होनेवाला वैश्यों का एक प्रसिद्ध त्योहार जिसमे सध्या के समय घर मे सव जगह वहुत से दीपक जलाये जाते और लक्ष्मी की पूजा की जाती है।
विशेष—(क) भगवान राम १४ वर्षो के वनवास के उपरांत कार्तिकी अमावास्या को अयोध्या लौटे थे, उन्ही के आगमन के उपलक्ष्य मे यह उत्सव आरभ हुआ था। (ख) पुराणानुसार दीवाली वस्तुतः वैश्यों का त्योहार है, परन्तु अव इसे सभी वर्णों के लोग मनाते हैं।
२. लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसा शुभ अवसर या घडी जिसमें लोग खुशियाँ मनायें।
दीवि—पु० [स० दे० दिवि] नीलकठ (पक्षी)।
दीवी—स्त्री० [हिं० दीवा] दीयट। चिरागदान।
दीसना†—अ० [स० दृश = देखना] दिखाई देना या पड़ना।
दीह†—पु० [स० दिवस] दिन। दिवस। उदा०—त्रिणि दीह लगन वेला घाडा तैं। —प्रिथीराज।
वि० = दीर्घ।
दुंका—पु० [स० स्तोक] (अनाज का) छोटा कण। कन। दाना।
दुंगरी—स्त्री० [देश०] पुरानी चाल का एक तरह का मोटा कपड़ा।
दुंडुक—वि० [सं० दुंडुभ√कै (मालूम होना)+क, पृषो० भलोप] १. व्यक्ति जो ईमानदार न हो। वेईमान। २ दुष्ट। ३ जालसाज।
दुंडुभ—पु० [सं०√द्रुड् (डूवना)+उभ, नुम्, रलोप] एक तरह का विषहीन सर्प। डुडुभ।
दुंद—पु० [स० द्वंद्व] १ दो मनुष्यों के वीच होनेवाला झगडा या युद्ध। द्वद्व। २. उत्पात। उपद्रव। ऊधम। ३. हो-हल्ला। शोर-गुल।
क्रि० प्र० —मचना।—मचाना।
४. जोडा। युग्म।
†पु०=दुदुभि (नगाडा)।
दुंदका—पु० [देश०] वह कोल्हू, जिसमे ऊख पेरी जाती है।
दुंदभ*—पु० [सं० द्वद्व] मरणादि का क्लेश।
दुंदम—पुं० [स० दुद√मण् (शब्द करना)+ड] एक तरह का नगाडा।
दुंदु—पुं० [स०] १. एक तरह का नगाडा। २ भगवान् कृष्ण के पिता वसुदेव का एक नाम।
पु०* = दुदभ।
दुंदुभ—पु० [स० दुदु √भण् (शब्द) + ड] वडा नगाडा। धौंसा।
दुंदुभि—स्त्री० [सं० दुदु√भा (शोभित होना)+कि] १ एक तरह का नगाड़ा। २. विष्णु। ३. कृष्ण। ४ वरुण। ५. एक प्राचीन पर्वत। ६. पुराणानुसार क्रौंच द्वीप का एक विभाग। ७ जूए मे पासे का एक दाँव। ८. एक राक्षस जिसे वलि ने मारा था। ९. जहर। विष।
दुंदुभिक—पु० [स०] एक तरह का विषैला कीड़ा।
दुंदुभि-स्वन—पु० [स० व० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की विष-चिकित्सा।
दुंदुभी—स्त्री०= दुदुभि।
दुंदुमा—स्त्री० [स०] दुदुभि पर आघात लगने से होनेवाली ध्वनि।
दुंदुमार—पु० दे० 'धुधुमार'।
दुंदुह—पुं० [स० डुडुभ] पानी मे रहनेवाला साँप। डेड़हा।
दुंबक—पु० [स०] १ एक तरह का मेढा। दुवा।
दुंबा—पुं० [फा० दुवाल'] मेढो की एक जाति जिनकी दुम चक्की की पाट की तरह गोल और भारी होती है। २. उक्त जाति का मेढ़ा।

दुंबाल—पु० [फा० दुवाल.] १. चौड़ी पूंछ। २ नाव की पतवार। ३. जहाज या नाव का पिछला भाग।

दुंबुर—पु० [स० उदुबर] गूलर की जाति का एक पेड़ जिसकी टहनियो पर कुछ विशिष्ट कीड़े लाख वनाते है।

दुःकुंत†—पु० = दुष्यत।

दु.ख—पु० [स० √दु ख (क्लेश) +अच्] [भू० कृ० दु खित, वि० दु खी] १. मन मे होनेवाली वह अप्रिय और अवाछित अनुभूति जो किसी प्रकार के अपकार, आघात, आपत्ति, दुर्घटना, दुष्कर्म, निराशा, व्याधि, हानि आदि के फलस्वरूप होती है। अनिष्ट, बुरी या विरोधी मानी जानेवाली वातो के कारण उत्पन्न होनेवाली मन की वह स्थिति जिससे आदमी छूटना या वचना चाहता है। 'सुख' का विपर्याय। (ग्रीफ, सारो) **विशेष**—(क) शास्त्रो मे 'दु ख' का विवेचन और स्वरूप-निर्धारण अनेक प्रकार से किया गया है, उसके कई प्रकार के वर्गीकरण किये गये हैं। और उसके निवारण के अलग-अलग उपाय वताये गये हैं। साख्य ने उसे चित्त का धर्म माना हे, पर न्याय और वैशेपिक ने उसे आत्मा का धर्म कहा है। योग के अनुसार वे सभी वातें दु ख है जो समाधि मे वाधक होती हैं। गौतम वुद्ध ने तो जन्म से मृत्यु तक की सभी वातो को दु ख माना है, और उसे चार आर्य सत्यो मे पहला स्थान दिया है। (ख) लौकिक दृष्टि से 'सुख' का अभाव या विनाश ही दु ख है और वह मानसिक तथा शारीरिक दोनो प्रकार का होता है। कारण या मूल के विचार से यह शास्त्रो मे तीन प्रकार का कहा गया है—आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक। (ग) आर्थी दृष्टि से इसके कष्ट, क्लेश, खेद, पीडा, विपाद, वेदना, व्यथा, शोक, सताप आदि ऐसे भेद-विभेद है, जो मुख्यत अलग-अलग प्रकार की मानसिक या शारीरिक परिस्थितियो के सूचक हैं और जिनमे यह अनुभूति या मन स्थिति कभी कुछ हलकी, कभी कुछ तेज और कभी वहुत तेज होती है।

क्रि० प्र० —देना।—पहुँचना।—पाना।—भोगना।—मिलना।—सहना।

मुहा०—**दुःख उठाना** = दु ख भोगना या सहना। **(किसी का) दुःख वँटाना** = दु ख, विपत्ति आदि के समय किसी की सहायता करके उसका दु ख कम करना। **दुःख भरना**=कष्ट या दु ख भोगना या सहना। २ आपत्ति। विपत्ति। सकट। जैसे—इधर वरसो से उन पर वरावर दु ख पर दु ख आते रहे है। ३ वीमारी। रोग। (क्व०)

दुःखकर—वि० [स० दु ख√कृ (करना)+ट] दु खद। दु खदायक।

दुःख-ग्राम—वि० [व० स०] दु खो से भरा हुआ।

पु० ससार।

दुःखजीवी (विन्)—वि० [स० दु ख√जीव् (जीना) + णिनि] दु खो मे पलने तथा रहनेवाला।

दुःख-त्रय—पु० [स० प० त०] आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक ये तीन प्रकार के दु ख।

दुःखद—वि० [स० दु ख√दा (देना)+क] १. दु ख या कष्ट देनेवाला। २ जिसके कारण या फलस्वरूप मन को दु ख पहुँचे। जैसे—मृत्यु का दु खद समाचार।

दु.ख-दग्ध—वि० [तृ० त०] वहुत अधिक दु खी।

दुःखदाता (तृ)—वि० [स० प० त०] दु ख पहुँचानेवाला (मनुष्य)।

दु.खदायक—वि० [प० त०] १. =दु खदायिन्। २. =दु खद।

दुःखदायी (यिन्)—वि० [स० दु ख√दा + णिनि] [स्त्री० दु खदायनी] १ (व्यक्ति) जो दूसरो को दु ख देता हो। २ दु खद।

दुःखदोह्या—वि०, स्त्री० [तृ० त०] गाय या भैंस जिसे कठिनता से दूहा जा सके।

दुःख-निवह—वि० [व० स०] दु सह।

दु.ख-प्रद—वि० [प० त०] = दु खद।

दुःख-वहुल—वि० [व० स०] जिसमे वहुत अधिक दु ख (कष्ट या क्लेश) हो। दु खमय।

दु.खमय—वि० [स० दु ख+मयट्] वहुत अधिक दु ख या दु खो से भरा हुआ। दु खो से परिपूर्ण। जैसे—दु खमय जगत।

दुःख-लभ्य—वि० [तृ० त०] १ जो दु ख या कष्ट से प्राप्त होता हो। २. जो कठिनता से मिले।

दुःख-लोक—पु० [प० त०] ससार।

दुःख-वाद—पु० [स० प० त०] यह मत या सिद्धात कि यह सारा ससार और इसमे का जीवन दु खमय है। 'सुखवाद' का विपर्याय।

दुःखवादी (दिन्)—वि० [स० दु खवाद+इनि] दु खवाद-सवधी। दु खवाद का।

पु० वह जो दु खवाद का पोपक या समर्थक हो।

दुःख-सागर—पु० [प० त०] संसार, जो दु खो का घर माना गया है।

दुःख-साध्य—वि० [तृ० त०] (कार्य) जिसके साधन मे अनेक प्रकार के दु ख सहने पड़े हो।

दुःखांत—वि० [दु ख-अत व० स०] जिसका अत या अतिम अश दु खद, दु खमय या दु खो से परिपूर्ण हो। जैसे—दु खात नाटक या कहानी।

पु० १. दु ख की समाप्ति। २ दु.ख की पराकाष्ठा।

दुःखातीत—वि० [दु ख-अतीत द्वि० त०] दु खो से जिसे मुक्ति मिली हो।

दुःखान्वित—वि० [दु ख-अन्वित तृ० त०] १ दु खमय। २. वहुत अधिक दु खी।

दुःखायतन—पु० [दु ख-आयतन प० त०] दु खसागर। ससार।

दुःखार्त—वि० [दु ख-आर्त तृ० त०] वहुत अधिक दु खी।

दुःखित—भू० कृ० [स० दु ख +इतच्] जिसे वहुत अधिक दु ख (कष्ट या क्लेश) हुआ हो।

दु खी (खिन्)—वि० [स० दु ख+इनि] १ जिसे दु ख मिला या पहुँचा हो। २ जिसके मन मे किसी प्रकार का दु ख हो। (विशेप दे० 'दु खी')

दु शकुन—पु० [स० प्रा० स०] वुरा शकुन।

दुःशला—स्त्री० [स०] सिंधु देश के राजा जयद्रथ की पत्नी का नाम जो धृतराष्ट्र की पत्नी गाधारी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

दुःशासन—वि० [स० दुर्√शास् (शासन करना)+युच्—अन्] जिस पर शासन करना वहुत अधिक कठिन हो।

पु० १ वुरा शासन। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो अपने वडे भाई राजा दुर्योधन का मत्री था। इसी ने द्रौपदी का वस्त्र खीचकर उसे नग्न करने का प्रयत्न किया था।

दुःशील—वि० [स० ब० स०] [भाव० दु शीलता] दुष्ट या बुरे स्वभाव-वाला।

दुःशीलता—स्त्री० [स० दु शील+तल्—टाप्] दु शील होने की अवस्था या भाव। दु.स्वभाव।

दुःशोध—वि० [स० दुर्√शुध् (शुद्धि)+ खल्] १ जिसका सुधार कठिन हो। २. (धातु) जिसका शोधन बहुत कठिन हो।

दुःश्रव—पु० [स० दुर्√श्रु (सुनना)+खल्] काव्य मे वह दोष जो उसमे कर्णकटु वर्णों के आने से होता है। श्रुतिकटु दोष।

दुःषम (स्)—पु० [स० अव्य० स०] निंदा।

दुःषेध—वि० [स० दुर्√सिध् (गति)+खल्] जिसका निवारण कठिन हो।

दुःसंकल्प—वि० [स० ब० स०] बुरा विचार या सकल्प करनेवाला।
पु० बुरा सकल्प।

दुःसंग—पु० [स० ब० स०] बुरी सगत या सोहबत। बुरा साथ। कुसंग।

दुःसंधान—पु० [स० ब० स०] १. दु साध्य कार्य का साधन। २ केशव के अनुसार काव्य मे एक रस जो उस स्थल पर होता है जहाँ एक व्यक्ति तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल।

दुःसह—वि० [स० दुर्√सह (सहना)+खल्] जिसे सहन करना बहुत कठिन हो।

दुःसहा—स्त्री० [स० दु.सह +टाप्] नागदमनी। नागदौन।

दुःसाध—वि० = दु साध्य।

दुःसाधी (धिन्)—पु० [स० दुर्√साध्(सिद्ध करना)+णिच्+णिनि] द्वारपाल।

दुःसाध्य—वि० [स० सुप्सुपा समास] १. (कार्य) जिसका साधन या पूरा करना कठिन हो। जैसे—दु साध्य परिश्रम। २. जिसका उपाय या प्रतिकार करना बहुत कठिन हो। ३ (रोग) जिसका उपचार या चिकित्सा बहुत कठिनता से हो।

दुःसाहस—पु० [स० प्रा० स०] ऐसा साहस जो साधारणत. अनुचित हो या न किया जाने के योग्य हो।

दुःसाहसिक—वि० [स० दु साहस+ठन्—इक] १. (कार्य) जिसे करने का साहस करना अनुचित या निष्फल हो। जैसे—दुःसाहसिक कार्य। २. दे० 'दु साहसी'।

दुःसाहसी (सिन्)—वि० [स० दु साहस+इनि] दु साहस अर्थात् अनुचित साहस करनेवाला।

दुःस्थ—वि० [स० दुर्√स्था (ठहरना)+क] १. जिसकी स्थिति बुरी हो। दुर्दशाग्रस्त। २ दरिद्र। निर्धन। ३ मूर्ख।

दुःस्थिति—स्त्री० [स० प्रा० स०] बुरी अवस्था। दुरावस्था। दुर्दशा।

दुःस्पर्श—वि० [स० दुर्√स्पृश् (छूना)+खल्] जिसे छूना कठिन हो। २. जिसे पाना कठिन हो।
पु० १ केवाँच। कौछ। २. लता करज। ३. कंटकारी। ४. आकाश-गगा।

दुःस्पर्शा—स्त्री० [स० दु स्पर्श+टाप्] काँटेदार मकोय।

दुःस्फोट—पु० [सं० दुर्√स्फुट (फूटना) + णिच् + अच्] प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

दुःस्वप्न—पु० [स० प्रा० स०] १. ऐसा स्वप्न जिसमें दु खद घटनाएँ दिखलाई पड़े। २ ऐसा स्वप्न जिसका परिणाम या फल बुरा हो।

दुःस्वभाव—वि० [स० ब० स०] बुरे स्वभाववाला। बद-मिजाज।
पु० बुरा स्वभाव।

दुःस्वरनाम—पु० [स०] वह पाप कर्म जिसके उदय मे प्राणियों के कठ-स्वर कठोर और कर्कश होते है। (जैन)

दु—वि० [हिं० दो] दो का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदों के आरंभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—दुभाषिया, दुसूती।

दुअ—अव्य० [स० द्रुत] शीघ्र।
वि०=दो

दुअन—वि०, पु०=दुवन।

दुअन्नी—स्त्री० [हिं० दो+आना] पुराने दो आने अर्थात् ८ पैसों के मूल्य का एक छोटा सिक्का जो पहिले चाँदी का होता था, पर बाद मे निकल का बनने लगा था।

दुअरवा†—पुं० = दुआर (द्वार)।

दुअरा†—पुं० = द्वार।

दुअरिया†—स्त्री० = दुआरी (छोटा दरवाजा)।

दुआ—स्त्री० [अ०] १. किसी बड़े अथवा ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना। निवेदन। विनती। २ किसी के कल्याण या मगल के लिए ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना।
क्रि० प्र०—करना।—माँगना।
३. आशीर्वाद। असीस।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—(किसी को) दुआ लगना=आशीर्वाद फलीभूत होना।
पु० [हिं० दो] १. गले मे पहनने का एक गहना। २ दे० 'दूआ'।

दुआदस*—पु० = द्वादश।

दुआदसी†—स्त्री० =द्वादशी।

दुआब—†पु० =दुआबा।

दुआबा—पु० [फा० दोआब] १. दो नदियों के बीच का प्रदेश। २. गगा और यमुना के बीच का प्रदेश।

दुआर†—पु० [स्त्री० दुआरी] =द्वार।

दुआरा†—पु० = द्वार।

दुआरामती—स्त्री० [सं० द्वारावती] द्वारिका। उदा०- देव सु आ दुआरामती।—प्रिथीराज।

दुआरी—स्त्री० [हिं० दुआर] छोटा दरवाजा।

दुआल—स्त्री० [फा०] १. चमड़े का तसमा। २ रिकाब का तस्मा।

दुआला—पुं० [देश०] लकडी का एक बेलन जो सुनहरी छपी हुई छींटो के छापो को बैठने के लिए उन पर फेरा जाता है।

दुआली—स्त्री० [फा० द्वाल= तसमा] खराद का तसमा। सान की बद्धी।

दुआह—पु० [हिं० दु+ स० विवाह] १. पहली पत्नी के मरने के उपरात पुरुष का होनेवाला दूसरा विवाह। २. पहले पति के मरने पर स्त्री का होनेवाला दूसरा विवाह।

दुइ†—वि० = दो।

दुइज—स्त्री० = दूज (द्वितीया तिथि)।

दुई†— वि० [हिं० दु (दो)+ई (प्रत्य०)] १ दो। २ दोनों।

स्त्री० १. दो होने की अवस्था या भाव। २ अपने को ईश्वर से भिन्न समझने की अवस्था या भाव। द्वैत-भाव। †३. किसी को दूसरा या पराया समझकर उसी के अनुसार उससे व्यवहार करना। दुजायगी। भेद-भाव।

दुऊ†—वि० = दोनो।

दुओ†—वि० =दोनो।

दुकडहा—वि० [हिं० दुकडा + हा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकडही] १ जिसका मूल्य दुकड़े के बराबर हो, फलत बहुत ही तुच्छ और हीन। २ बहुत ही तुच्छ और हीन प्रकृतिवाला। कमीना। नीच।

दुकड़ा—पुं० [स० द्विक+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० दुकड़ी] १. एक मे या एक साथ लगी हुई दो चीजो का जोड़ा। युग्म। जैसे—धोतियो का दुकडा, मोतियों की दुकडी। २ एक पैसे का चौथाई भाग।

दुकड़ी—स्त्री० [हिं० दुकडा] १ एक साथ जुडी या मिली हुई दो चीजें। २ चारपाई की वह बुनावट जिसमे दो-दो रस्सियाँ एक साथ बुनी जाती हैं। ३ ऐसी गाडी या बग्घी जिसमे दो घोडे एक साथ जुतते हों। ४ घोडो का दोहरा साज। ५ दो कडियोवाली लगाम। ६. एक साथ दिये या लिये जानेवाले दो रुपए। (दलाल) ७ दे० 'दुक्की'।

दुकना—अ० [देश०] लुकना। छिपना।

दुकम—वि० [स० दुष्क्लम्प] १ जिस पर आक्रमण करना कठिन हो। २. जिसे पार करना या लाँघना कठिन हो।

दुकान—स्त्री० [फा०] १ वह कमरा या भवन जहाँ से किसी एक अथवा कई प्रकार की चीजें ग्राहको के हाथ प्राय फुटकर बेची जाती हैं। जैसे—घी की दुकान, मिठाई की दुकान। २ ऐसा स्थान जहाँ कोई व्यक्ति कुछ पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए दूसरो की सेवाएँ करता हो। जैसे—दरजी या हज्जाम की दुकान।

मुहा०—**दुकान करना या खोलना** = दुकान लेकर किसी चीज की बिक्री आरभ करना। दुकान खोलना। **दुकान चलना** = दुकान मे होनेवाले व्यवसाय की वृद्धि होना। **दुकान बढाना** = दुकान मे बाहर रखा हुआ माल उठाकर अदर रखना और किवाडे बद करना। दुकान बद करना। **दुकान लगाना**=(क) दुकान का सामान फैलाकर यथास्थान बिक्री के लिए रखना। (ख) बहुत-सी चीजें चारो ओर फैलाकर रखना।

दुकानदार—पु० [फा०] १. वह जो दुकान करता हो। २ वह जो उस कमरे का स्वामी हो जिसमे कोई दुकान लगाये हो। ३ बहुत अधिक मोल-भाव करनेवाला व्यक्ति। (व्यग्य) ४ वह जिसने अपनी आय का साधन बनाने के लिए कोई ढोग रच रखा हो। ५. चालाक व्यक्ति।

दुकानदारी—स्त्री० [फा०] १. दुकान लगाकर सौदा आदि बेचने का काम। २. ऐसा ढोग जो केवल अपनी आय का साधन बनाने के लिए रचा जाय। ३. बहुत अधिक मोल-भाव करना।

दुकाना—स० [हिं० दुकना] छिपाना। (बुदेल०)

दुकाल—पु० [स० दुष्काल] अकाल। दुर्भिक्ष।

क्रि० प्र०—पडना।

दुकुल्ली—स्त्री० [देश०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जिस पर चमडा मढा होता है।

दुकूल—पु० [स०√दु+ऊलच्, कुक्] १. सन या तीसी के रेशे का बना हुआ कपडा। क्षौम-वस्त्र। २ बढिया और महीन कपडा। ३ कपडा। वस्त्र। ४. स्त्रियो के पहनने की साडी। ५. बौद्धो के अनुसार एक प्राचीन मुनि।

दुकेला—वि० [हिं० दुक्का+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो, बल्कि किसी के साथ हो।

पद—अकेला-दुकेला। (दे०)

दुकेले—अव्य० [हिं० दुकेला] किसी एक के साथ। दूसरे को साथ लिये हुए।

दुक्कड़—पु० [हिं० दो+कूंड] १. तबले की तरह का एक बाजा, जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २ एक प्रकार का छोटा नगाडा जो एक डुगी के साथ रखकर बजाया जाता है। ३ दो बड़ी नावों का एक साथ जोड या बाँधकर बनाया हुआ बेड़ा।

दुक्कना—अ० [स० दोष] किसी को दोष देना। दोषी ठहराना।

दुक्का—वि० [स० द्विक] [स्त्री० दुक्की] १ जिसके साथ कोई और भी हो। दुकेला। २ जो एक साथ दो हो। जोडा। युग्म।

पद—इक्का-दुक्का।

पु० ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ होती है। दुक्की।

दुक्की—स्त्री० [हिं० दुक्का] ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ होती हैं। दुक्का।

दुखंडा—वि० [हिं० दो+खड] १ जिसमे दो खड या विभाग हो। २ (घर या मकान) जिसमे ऊपर एक और खड या तल्ला भी हो। दो मरातिबवाला।

दुखंत'—पुं० = दुष्यत।

वि० =दु खांत

दुख—पु० [स० दु ख] १. दु ख। (दे०)

क्रि० प्र०—देना।—पहुँचाना।—पाना।— भोगना।—मिलना।

मुहा०—**दुख उठाना**=कष्ट या तकलीफ भोगना या सहना। ऐसी स्थिति मे पडना जिसमे सुख या शाति न हो। **दुख बँटाना**=किसी के कष्ट या सकट के समय उसका साथ देना। **दुख भरना** = कष्ट या सकट के दिन जैसे-तैसे बिताना।

२ आपत्ति। विपत्ति। सकट।

मुहा०—**(किसी पर) दुख पड़ना** = आपत्ति आना। सकट उपस्थित होना।

३ मानसिक कष्ट। खेद। रज। जैसे—उन्हें लडके के मरने का बहुत दुख है।

मुहा०—**दुख मानना** = खिन्न या सतप्त होना। दु खी होना।

४. पीडा। व्यथा। दर्द। ५. बीमारी। रोग।

मुहा०—**दुख लगना** = ऐसा रोग होना जो बहुत दिनो तक कष्ट देता रहे।

दुखड़ा—पु० [हिं० दुख+ड़ा (प्रत्य०)] १ ऐसी विस्तृत बातें जिनमे अपने कष्टो, दु खो, विपत्तियों आदि का उल्लेख या चर्चा हो। तकलीफो का हाल।

मुहा०—**(अपना) दुखड़ा रोना** = अपने दु ख का वृत्तात दीन भाव से कहना। अपने कष्टो का हाल सुनाना।

२ कष्ट। तकलीफ। विपत्ति।

क्रि० प्र०—पड़ना।

मुहा०—दुखड़ा पीटना या भरना=बहुत कष्ट से जीवन बिताना।
दुखद—वि० = दुःखद।
दुखदाई†—वि० = दुःखदायी।
दुखदानि*—वि० स्त्री० [सं० दुःखदायिनी] दुःख देनेवाली। तकलीफ पहुँचानेवाली। उदा०—यह मुनि गुरु बानी धनु गुन तानी जानी द्विज दुखदानि।—केशव।
दुखदायक—वि० १.=दुःखद। २.=दुःखदाता।
दुख-दुंद—पु० [सं० दुःखद्वंद्व] अनेक प्रकार के दुःख, कष्ट और विपत्तियाँ।
दुखना—अ० [सं० दुःख] १. (किसी अंग का) पीड़ित होना। दर्द करना। पीड़ा युक्त होना। जैसे—आँखें या सिर दुखना। २. किसी पीड़ित अंग या व्रण पर आघात आदि लगने से उसकी पीड़ा बढ़ना। जैसे—घाव या फोड़ा दुखना।
दुखरा†—पु० = दुखड़ा।
दुखवना†—स० = दुखाना।
दुखहाया†—वि० [हिं० दुःख+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखहाई] दुःख से भरा हुआ। परम दुःखी।
दुखांत—वि० = दुःखांत।
दुखाना—स० [सं० दुःख] १. कष्ट या पीड़ा पहुँचाना। दुःखित या व्यथित करना। जैसे—किसी का जी या मन दुखाना। २. किसी के पीड़ित अंग पर कोई ऐसी क्रिया करना जिससे उसकी पीड़ा फिर से बढ़े। जैसे—किसी का घाव या फोड़ा दुखाना।
† अ० = दुखना।
दुखारा—वि० [हिं० दुख+आर (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखारी] दुःखी। पीड़ित।
दुखारी†—वि० = दुखारा।
दुखित—वि० = दुःखित।
दुखिनी—वि० स्त्री० हिं० 'दुखिया' का स्त्री०।
दुखिया—वि० [हिं० दुख+इया (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखिनी] १. जो दुःख या कष्ट में पड़ा हो। जिसे किसी प्रकार की व्यथा हो। २. जिसके मन में बराबर किसी तरह का दुःख बना रहता हो। ३. बीमार। रोगी।
दुखियारा—वि० = दुखिया।
दुखी—वि० [सं० दुःखिन्] [स्त्री० दुखिनी] १. जिसे बहुत दुःख हुआ हो। २. जिसे बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट पहुँचा हो। ३. जो अधिकतर या सदा कष्टों में रहता हो। दीनहीन। ४. बीमार। रोगी।
दुखीला—वि० [हिं० दुख+ईला (प्रत्य०)] १. दुःख से युक्त। दुःखी। २. मन में दुःख का अनुभव करनेवाला।
दुखौंहाँ†—वि० [हिं० दुख+औंहाँ] [स्त्री० दुखौंही] १ दुःख देनेवाली। दुःखदायी। २. मन में बराबर दुःखी बना रहनेवाला।
दुगंछा†—स्त्री० [सं० दु.+कांक्षा ?] ग्लानि।
दुग†—स्त्री० =धुक।
वि० = दो।
दुगई†—स्त्री० [देश०] घर के आगे का ओसारा। दालान या बरामदा। (बुंदे०)
दुगदा†—वि० दुर्गम।
दुगदुगी—स्त्री० [अनु० धुक धुक] १. मनुष्य के शरीर में गरदन के नीचे और छाती के ऊपर बीचों-बीच में होनेवाला छोटा गड्ढा।
मुहा०—दुगदुगी में दम होना = प्राण का कंठगत होना। मरणासन्न होना।
२ गले में पहनने का धुकधुकी नाम का गहना। ३. दे० 'धुकधुकी'।
दुगध*—पुं० = दुग्ध (दूध)।
दुगध-नदीस—पुं० = क्षीर-सागर।
दुगधा†—स्त्री० = दुविधा।
दुगन—वि० = दूना।
दुगना—वि० [सं० द्विगुण] [स्त्री० दुगनी] = दूना।
† अ० [?] छिपाना।
दुगाड़ा—पुं० [दो+गाड़ = गड्ढा] १ दुनाली बंदूक। दोनली बंदूक। २. दोहरी गोली।
दुगाना—वि० उभय० [फा० दोगान] जो दो एक में मिले हों। जुड़वाँ। युग्म। जैसे—दुगाना केला = ऐसा केला जिसमें दो फलियाँ एक साथ जुड़ी हों। दुगाना सिंघाड़ा = एक में जुटे हुए दो सिंघाड़े।
स्त्री० १. मुसलमान स्त्रियों में एक विशिष्ट प्रकार का सहेलियों का-सा संबंध जो प्रायः बहुत आत्मीयता या घनिष्ठता का सूचक होता है।
विशेष—यह संबंध इस प्रकार स्थापित होता था कि एक स्त्री भुलावा देकर अपनी सखी को कोई दुगाना चीज या फल देती थी। यदि वह चीज या फल लेने के समय। वह सखी कह देती — 'याद है' तब तो ठीक था। पर यदि वह 'याद है' कहना भूल जाती, तब चीज या फल देनेवाली स्त्री कहती —'फरामोश' अर्थात् तुम 'याद है' कहना भूल गई। उस दशा में फल या चीज देनेवाली स्त्री को वही चीज या फल गिनती में दो सौ गुनी या दो हजार गुनी देनी पड़ती थी जो संबंधियों और सहेलियों में बाँटी जाती थी और इस प्रकार दोनों में दुगाना का संबंध स्थापित होता था।
२. उक्त प्रकार का संबंध स्थापित हो जाने पर परस्पर किया जाने-वाला संबोधन। ३. वे दो सखियाँ या सहेलियाँ जो आपस में अप्राकृतिक मैथुन करती अर्थात् भग-संघर्षण करती या चपटी लड़ाती हों।
† पु० = दोगाना।
दुगामरा—पु० [सं० दुर्ग+आश्रय] वह गाँव जो किसी दुर्ग के नीचे या पास हो और इसी लिए उसके आसरे या रक्षा में हो।
दुगुण†—वि० = द्विगुण।
दुगुन†—वि० = दुगना।
दुगून—वि० [सं० द्विगुण] दो-गुना। दूना।
स्त्री० गाने-बजाने में वह बढ़ी हुई लय जो आरंभिक लय से दूनी गतिवाली होती है और जिसमें आरंभिक लय में लगनेवाले समय से अपेक्षया लगभग आधा समय लगता है। गाने-बजाने की आरंभिक गति से कुछ और आगे बढ़ी हुई या तेज गति।
विशेष—यही गति और आगे बढ़ने या तीव्र होने पर क्रमात्, तिगून और चौगून कहलाती है।
दुगूल—पुं० = दुकूल।
दुग्ग*—पु० = दुर्ग।
दुग्गम*—वि० = दुर्गम।

दुग्ध—वि० [स०√दुह् (दुहना)+क्त] १ दूहा हुआ। २ भरा हुआ। पु० १ दूध। २. कुछ विशिष्ट पौधो, वृक्षो आदि मे से निकलनेवाला दूध जैसा सफेद तथा लसीला पदार्थ। (दे० 'दूध')

दुग्ध-कल्प—पु० [ष० त०] वैद्यक मे, एक प्रकार की चिकित्सा जिसमे रोगी को केवल दूध पिलाकर नीरोग किया जाता है।

दुग्ध-कूपिका—स्त्री० [स० दुग्ध-कूप ष० त०, + ठन्—इक, टाप्] एक प्रकार का पकवान जो पिसे हुए चावल और दूध के छेने से बनता था।

दुग्ध-तालीय—पु० [सं० दुग्ध-ताल ष० त०, छ-ईय] १ दूध का फेन। झाग। २ मलाई।

दुग्ध-पाषाण—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का वृक्ष जिसे बगाल की ओर शिरगोला कहते हैं।

दुग्ध-पुच्छी—स्त्री० [ब० स० ङीष्] एक प्रकार का वृक्ष।

दुग्ध-फेन—पुं० [ष० त०] १. दूध का फेन। झाग। २ [ब० स०] क्षीर हिंडीर नाम का पौधा।

दुग्ध-फेनी—पु० [ब० स० ङीष्] एक प्रकार का छोटा पौधा। पयस्विनी। जाय।
स्त्री० दूध मे भिगोई हुई फेनी।

दुग्ध-बीजा—स्त्री० [ब० स० टाप्] ज्वार।

दुग्ध-मापक—पु० [ष० त०] शीशे की वह नली जिसमे भरे हुए पारे के उतार-चढाव से पता चलता है कि दूध में पानी की कितनी मिलावट है। (लैक्टोमीर)

दुग्ध-शर्करा—स्त्री० [ष० त०] दूध मे से चूर्ण के रूप मे निकाला हुआ उसका मीठा सार भाग। (मिल्क-शूगर)

दुग्धशाला —स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ गौएं आदि रखकर वेचने के लिए दूध आदि तैयार किया जाता है।

दुग्ध-समुद्र—पुं० [ष० त०] पुराणानुसार सात समुद्रो मे से एक। क्षीर-सागर।

दुग्धांक—पु० [दुग्ध-अक ब० स०] एक तरह का पत्थर जिस पर दूध के रग के सफेद छोटे चिह्न होते हैं।

दुग्धाक्ष—पु० [दुग्ध-अक्ष ब० स०] एक तरह का सफेद छीटोवाला नग।

दुग्धाग्र—पु० [दुग्ध-अग्र ष० त०] मलाई।

दुग्धाब्धि—पु० [दुग्ध-अब्धि ष० त०] क्षीर समुद्र।

दुग्धाब्धि-तनया—स्त्री० [ष० त०] लक्ष्मी।

दुग्धाश्मा (श्मन्)—पुं० [दुग्ध-अश्मन् ब० स०] शिरगोला (वृक्ष)।

दुग्धिका—स्त्री० [स० दुग्ध+ठन्—इक, टाप्] १ दुद्धी नाम की घास या जडी। २ गधिका नाम की घास।

दुग्धिनिका—स्त्री० [सं०] लाल चिचडा। रक्तापामार्ग।

दुग्धी (ग्धिन्)—वि० [स० दुग्ध+इनि] जिसमे दूध हो। दूध से युक्त।
पु० क्षीर वृक्ष।
स्त्री० [दुग्ध+अच्+ङीष्] दुद्धी नाम की घास या जडी। दूधिया।

दुग्धोद्योग—पुं० [दुग्ध-उद्योग, ष० त०] दूध या उसमे विभिन्न पदार्थ (मक्खन, घी आदि) तैयार करने का उद्योग।

दुघ—वि० [स०] १. दुहनेवाला। २ देनेवाला। (प्राय. समासात मे)

दुघड़िया—वि० [हिं० दो-घड़ी] दो घड़ियो का। दो घड़िया। जैसे—दुघड़िया मुहूर्त।

दुघड़िया मुहूर्त्त—पु० [हिं० दो घडी+स० मुहूर्त्त] दो घडियो का ऐसा मुहूर्त्त जो विशेष आवश्यकता पड़ने पर तत्काल काम चलाने के लिए निकाला जाता है। द्विघटिका मुहूर्त्त।
क्रि० प्र०—देखना।—निकालना।

दुघरी—स्त्री० = दुघड़िया मुहूर्त्त।

दुचद—वि० [फा०] दूना। दुगना।

दुचल्ला—पु० [हिं० दो +चाल] ऐसी छत जिसके दोनो ओर ढाल हो।

दुचित—वि० [हिं० दो+स० चित्त] १. जिसका चित्त दो बातो मे लगा हुआ हो। जो असमजस या दुविधा मे पड़ा हो। २ सदेह मे पडा हुआ।

दुचितई—स्त्री० = दुचिताई।

दुचिताई—स्त्री० [हिं० दुचित] १ दुचित्ते होने की अवस्था या भाव। २. चित्त की अस्थिरता। असमजस। दुविधा। ३ सदेह।

दुचित्ता—वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० भाव० दुचित्ती] १ जिसका चित्त या मन किसी एक बात पर स्थिर न हो। जो असमंजस या दुविधा मे पडा हो। २ आशका या खटके के कारण जिसका मन शात या स्थिर न हो। ३. दो कठिनाइयाँ सामने होने पर जो कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर ध्यान देता हो।

दुचित्ती—स्त्री० [हिं० दुचित्ता] दुचित्ते होने की अवस्था या भाव।

दुच्छक—पु० [स० दु (ताप) +क्विप्, तुक्, दुत्√शक् (सकना)+अच्] कपूरकचरी।

दुछण—पु० [स० द्वेषण= शत्रु] सिंह। (डि०)

दुज†—पु० = द्विज। (दुज के यौगिक शब्दो लिए दे० 'द्विज' के यौ०)

दुजड़—स्त्री० [[देश०] [स्त्री० अल्पा० दुजड़ी] तलवार। (डि०)

दुजडी—स्त्री० [देश०] कटारी। (डि०)

दुजन्मा†—पु० = द्विजन्मा।

दुजानू—क्रि० वि० [फा० दुज़ानू] दोनो घुटनो के बल।

दुजायगी—स्त्री० [हिं० दो+फा० जायगाह ?] १. जिनके साथ आपस-दारी का व्यवहार रहा हो, उनके साथ किया जानेवाला परायेपन का व्यवहार। २. जिनके प्रति समान व्यवहार करना आवश्यक या उचित हो उनमे से किसी एक के साथ किया जानेवाला भेद-भाव।

दुजिह्व—वि०, पु० = द्विजिह्व।

दुजीह†—पु० = द्विजिह्व।

दुजेश†—पुं० = द्विजेश।

दुज्ज†—पु० = द्विज।

दुज्जन†—वि० = दुर्जन।

दुझारना*—स० [हिं० झाड़ना] झटकारना। झाड़ना।

दुटूक—वि० [हिं० दो+टूक] दो टुकड़ो मे किया या तोडा हुआ।
पद—दुटूक बात = थोड़े मे कही हुई ऐसी बात जिसमे साफ-साफ यह बतलाया गया हो कि हम या तो यह काम या बात करेंगे अथवा वह काम या बात करेंगे। (प्रश्न, विवाद आदि के प्रसंग मे)

दुड़ि—स्त्री० [स०] दुलि। कच्छपी।
†स्त्री० = दुक्की (ताश की)।

दुड़ियंद—पुं० [?] सूर्य। (डि०)
दुड़ी†—स्त्री० = दुक्की (ताश की)।
दुत—अव्य० [अनु०] एक शब्द जो उपेक्षा, तिरस्कार या निरादर-पूर्वक दूर करने या हटाने के समय कहा जाता है। दुतकारने का शब्द।
†स्त्री०=द्युति। उदा०—गुण भूषण भुरजालरो, जस मैं दुत जागत।—बाँकीदास।
दुतकार—स्त्री० [अनु० दुत+कार] १. दुतकारने की क्रिया या भाव। २. वह बात जो किसी को उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक 'दुत' कहते हुए दूर करने या हटाने के लिए कही जाय।
क्रि० प्र०—बताना।
दुतकारना—स० [हिं० दुतकार] १. उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दुत् दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से अलग या दूर करना। बुरी तरह से अपमानित करके दूर हटाना। २. तिरस्कृत करना।
दुतर†—वि० = दुस्तर।
दुतरणि—वि० [स० दुस्तरण] १. कठिन। २. दुःखदायक। (राज०)
दुतरफा—वि० [फा० दुतर्फ] [स्त्री० दुतरफी] जो दोनो ओर हो। इधर भी और उधर भी होने या रहनेवाला। जैसे—कपड़े की दुतरफा छपाई। २. (आचरण या व्यवहार) जो निश्चित रूप से किसी एक ओर न हो, बल्कि आवश्यकतानुसार दोनो तरफ माना या लगाया जा सकता हो। जैसे—दुतरफा काट या चाल।
दुतावी—स्त्री० [हिं० दो+फा० ताव] पुरानी चाल की एक तरह की दुधारी तलवार।
दुतारा—पु० [हिं० दो+तार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा जिसमे दो तार लगे होते हैं और जो तर्जनी उँगली से बजाया जाता है।
दुति†—स्त्री० = द्युति।
दुतिमान—वि० = द्युतिमान्।
दुतिय†—वि० =द्वितीय।
दुतिया—वि० = द्वितीय।
स्त्री० = द्वितीया।
दुतिवंत*—वि० [हिं० दुति + वत (प्रत्य०)] १. आभायुक्त। चमकीला। प्रकाशमान्। २. शोभायुक्त। सुदर।
दुती†—वि० = द्वितीय।
स्त्री० = द्युति (चमक)।
दुतीय†—वि० = द्वितीय।
दुतीया†—वि० = द्वितीय।
स्त्री० = द्वितीया।
दुत्तर†—वि० = दुस्तर।
दुयन—स्त्री० [?] पत्नी। जोरू। (कुमाऊँ)
दुयरी—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।
दुदल—वि० [स० द्विदल] फूटने या टूटने पर जिसके दो बराबर दल या खड हो जायँ। द्विदल।
पुं० १. एक प्रकार का पहाडी पौधा जिसे कान-फूल और बरन भी कहते हैं। २. दें० 'दाल'।
दुदलाना†—स० [अनु०] दुतकारना।
दुदहेंड़ी†—स्त्री० = दुधहँडी।
दुदामी—स्त्री० [हिं० दो +दाम] पुरानी चाल का एक तरह का सूती कपड़ा। (मालवा)
दुदिला—वि० [हिं० दो +फा० दिल] १. असमजस या दुविधा मे पडा हुआ। २. जिसका मन कभी एक ओर कभी दूसरी ओर होता हो। दुचित्ता। ३. चिंतित और व्यग्र।
दुदुकारना†—स० = दुतकारना।
दुद्धी—स्त्री० [स० दुग्धी] १. एक प्रकार की घास जिसके डठलो मे थोडी थोड़ी दूर पर गाँठें होती है और जिनके दोनो ओर एक-एक पत्ती होती है। २. थूहर की जाति का एक छोटा पौधा जो भारतवर्ष के सब गरम प्रदेशो मे होता है। इसका दूध दमे या श्वास के रोग मे दिया जाता है। ३. सारिवा नाम की लता। ४ जगली नील। ५. एक प्रकार का बडा पेड़ जो मध्य प्रदेश और राजस्थान मे होता है।
स्त्री० [हिं० दूध] १. दूधिया नाम की मिट्टी। खड़िया। २. एक प्रकार का धान।
दुद्रुम—पु० [स० दुर्-द्रुम प्रा० स, पृषो० रलोप] प्याज का हरा पौधा।
दुध—पु० [हिं० दूध] १. 'दूध' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—दुध-मुँहाँ, दुध-हँडी।
† २ दूध। (पश्चिम)
दुध-कट्टू—वि० [हिं० दूध+काटना] वह शिशु जिसकी माँ को दूसरी सतान हो गई हो और इस कारण या अन्य कारण से जो माँ का दूध उचित अवधि तक न पी सका हो।
दुध-पिठवा—पु० [सं० दुग्ध, हिं० दूध+स० पिष्टक, हिं० पीठा] एक प्रकार का पकवान जो गुधे हुए मैदे की लबी-लंबी बत्तियो को दूध मे उबाल कर बनाया जाता है।
दुधमुख—वि० = दुध-मुहाँ।
दुध-मुँहाँ—वि० [हिं० दूध +मुँह] (शिशु) जो अभी तक अपनी माँ का दूध पीता हो। माँ का दूध पीनेवाला (छोटा बच्चा)।
दुधहँड़ी—स्त्री० [हिं० दूध+हाँडी] मिट्टी की वह हाँड़ी जिसमे दूध गरम किया जाता है।
दुधाँड़ी†— स्त्री० = दुधहँडी।
दुधा—अव्य० [स० द्विधा] दो प्रकार से। दो तरह से। उदा०—एकहि देव दुदेह दुदेहरे देव दुधायक देह दुहू मैं।—देव।
†स्त्री० = दुविधा।
दुधार—वि० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] १. दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। जैसे–दुधार गौ। २. जिसमे दूध रहता या होता हो।
† वि० = दुधारा।
दुधारा—वि० [हिं० दो + धार] [स्त्री० दुधारी] जिसमे दोनो ओर धार हो (तलवार, छुरी आदि)। जैसे—दुधारा खाँडा।
पु० एक प्रकार का चौड़ा खाँडा जिसमे दोनो ओर धार होती है।
दुधारी—स्त्री० [हिं० दूध +आर (प्रत्य०)] एक प्रकार की कटार जिसमें दोनो ओर धार होती है।
वि० १. = दुधार। २. 'दुधारा' का स्त्री०।
दुधारू—वि०, स्त्री० = दुधार।
दुधित—वि० [स०] १. पीड़ित। २. व्याकुल।
दुधिया—वि०, पु०, स्त्री० = दूधिया।

विशेष—'दुधिया' के यौ० के लिए देखें 'दूधिया' के यौ०।

दुधेली†—स्त्री० [स० दुग्धी] थूहर की जाति का दुद्धी नाम का पौधा।

दुधैल—वि० = दुधार।

दुध्र—वि० [स० दुर्√ धृ (धारण)+क, पृषो० सिद्धि] हिंसक।

दुनया—पु० [स० द्वि०, हिं० दो+स० नदी, प्रा० णई] दो नदियो का सगम-स्थान।

दुनरना—अ०, स० = दुनवना।

दुनवना—अ० [हिं० दो+नवना = झुकना] नरम या लचीली चीज का इस प्रकार झुकना कि उसके दोनो छोर एक दूसरे से मिल जायँ अथवा पास-पास हो जायँ। लचकर दोहरा हो जाना।

स० १ झुका या लचाकर दोहरा करना। २ कुचल या रौदकर नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—तरनि जवार नभवार नभतरनि जै तरनि दैव तरनि कै दुखत्तम दुने है। —देव। ३. धुनना।

दुनहुँ—वि० = दोनो।

दुनाली—वि० स्त्री० [हिं० दो +नाल] जिसमे दो नल या नलियाँ हो।

स्त्री० एक प्रकार की बदूक जिसके आगे दो नलियाँ होती हैं और जिसमे से दो गोलियाँ एक साथ छूटती या निकलती है।

दुनावा—वि० [हिं० दो+नाव = खाँचा] [स्त्री० दुनावी] (कटार, तलवार आदि का फल) जिस पर दो खाँचे बने हो।

दुनियवी—वि० = दुनियावी (सासारिक)।

दुनिया—स्त्री० [अ० दुन्या] १ जगत। ससार।

मुहा०—**दुनिया की हवा लगना**= (क) सासारिक बातो का अनुभव होना। (ख) ससार मे होनेवाले अनुचित कार्यो की ओर प्रवृत्त होना। **दुनिया से उठ जाना या चल बसना** = मर जाना।

पद—**दुनिया के परदे पर**=सारे ससार मे। **दुनिया भर का** = बहुत अधिक परंतु व्यर्थ का अथवा इधर-उधर का।

२. ससार के लोग। लोक। जनता। जैसे—जरा यह तो सोचो कि दुनिया क्या कहेगी। ३ ससार और घर—गृहस्थी के झगडे-बखेडे।

दुनियाई—वि० [अ० दुन्या+हिं० ई० (प्रत्य०)] सासारिक। लौकिक।

†स्त्री० = दुनिया।

दुनियादार—पु० [फा०] [भाव० दुनियादारी] १ सासारिक प्रपच मे फँसा हुआ मनुष्य। ससारी। गृहस्थ। २ जो सासारिक आचरण, व्यवहार आदि मे कुशल या दक्ष हो।

दुनियादारी—स्त्री० [फा०] १. सासारिक कार्यो और घर-गृहस्थी का निर्वाह। २. सासारिक कार्यो और घर-गृहस्थी के झगड़े-बखेडे या प्रपच। ३ ससार मे रहकर उचित ढग से आचरण या व्यवहार करने का कौशल या योग्यता। ४. लोकाचार। ५ ऐसा आचरण या व्यवहार जो केवल लौकिक दृष्टि से या लोगो को दिखलाने भर के लिए किया जाय।

दुनियावी—वि० [अ० दुन्यवी] दुनिया का। ससार-सबधी। सासारिक।

दुनियासाज—पु० [अ० दुन्या+फा० साज] [भाव० दुनियासाजी] लोगो के रग-ढग देखकर उन्ही के अनुसार आचरण या व्यवहार करते हुए अपना काम चलाने या निकालनेवाला व्यक्ति।

दुनियासाजी—स्त्री० [हिं० दुनियासाज] १. दुनियासाज होने की अवस्था या भाव। २ लोगो के रग-ढग देखकर उन्ही के अनुसार आचरण या व्यवहार करके अपना काम निकालने का कौशल।

दुनी—स्त्री० [अ० दुन्या] ससार। जगत।

दुनो (नो)ना—अ०, स० = दुनवना।

दुपटा—पु० [स्त्री० अल्पा० दुपटी] = दुपट्टा।

दुपटी—स्त्री० [हिं० दुपटा] १ छोटा दुपट्टा। २ चादर।

दुपट्टा—पु० [हिं० दो +पाट] [स्त्री० अल्पा० दुपट्टी] १ स्त्रियो के सिर पर ओढने का वह कपडा जो दो पाटो को जोडकर बना हो। दो पाट की ओढने की चद्दर।

मुहा०—(**मुँह पर**) **दुपट्टा तान कर सोना** = निश्चित होकर सोना। बेखटके सोना। (**किसी से**) **दुपट्टा बदलना** = किसी को अपनी सहेली बनाना।

२ कधे या गले पर डालने का लबा कपडा।

दुपद†—पु० = द्विपद।

दु-परता—वि० [हिं० दो+ परत] [भाव० दुपरती] जिसमे दो परतें हो।

दुपर्दी—स्त्री० [हिं० दो +फा० पर्दा] एक तरह की बगलबदी।

दु-पलिया†—वि० [हिं० दो +पल्ला] जिसमे दो पल्ले हो।

दु-पल्ला—वि० [हिं० दो +पल्ला] [स्त्री० दुपल्ली] जिसमे दो पल्ले एक साथ जुडे या लगे हो। जैसे—दुपल्ला दरवाजा, दुपल्ली टोपी।

दुपहर†—स्त्री० = दोपहर।

दुपहरिया—स्त्री० [हिं० दो + पहर] १ मध्याह्न का समय। दोपहर। २ गुल-दुपहरिया नाम का पौधा और उसका फूल।

वि० जिसका गर्भाधान दोपहर को हुआ हो, अर्थात् बहुत दुष्ट या पाजी। (बाजारू)

दुपहरी—स्त्री० = दुपहरिया।

दु-पासिया—पु० [हिं० दो +पाँसा] चौपड का वह खेल जो चार आदमियो के साथ बैठकर खेलने पर इस प्रकार खेला जाता है कि आमने-सामने के दोनो खेलाड़ी अपने-अपने पाँसो मे एक दूसरे के साथी होते हैं।

दुपी—पु० [स० द्विप] हाथी। (डि०)

दुफसला—वि० [हिं० दो+अ० फस्ल] [स्त्री० दुफसली] दोनो फसलो मे उत्पन्न होनेवाला। जो रबी और खरीफ दोनो मे हो।

दुफसली—वि० [हिं० दुफसला] १. जिसके दो रुख या पक्ष हो। दोनो तरह का। जैसे—तुम तो हमेशा दुफसली बातें करते हो। २. दे० 'दुफसला'।

दुबकना—अ० = दबकना।

दु-बगली—स्त्री० [हिं० दो +बगल] मालखभ की एक कसरत।

दुब-ज्यौरा—पु० [हिं० दूब+जेवरी] गले मे पहनने का एक गहना।

दुबडा—पु० [हिं० दूब] एक तरह की घास।

दुबधा—स्त्री० = दुविधा।

दुबया†—पु० दे० 'हुदहुद' (पक्षी)।

दुबरा†—वि० [भाव० दुबराई] = दुबला।

दुबराना†—अ०, स० = दुबलाना।

दुबराल गोला—पु० [हिं० दो+अ० बैरल + हिं० गोला] तोप का लबोतरा गोला।

दुवराल पलंग—पु० [हिं० दुवराल+अ० पुलिंग] पाल की वह डोरी जिसे खीचकर पाल के पेट की हवा निकालते है।

दुवला—वि० [स० दुर्बल] [स्त्री० दुवली, भाव० दुवलापन] १. क्षीण शरीरवाला। हलके और पतले वदनवाला। कृश। २. कम शक्ति वाला। निर्वल।

दुवलाना—अ० [हिं० दुवला] दुवला होना। जैसे—चार दिन के बुखार मे लडका दुवला गया है।

स० किसी को दुवला करना। जैसे—चिन्ता ने उन्हें दुवला दिया है।

दुवलापन—पु० [हिं० दुवला +पन] दुवले होने की अवस्था या भाव।

दुवाँहिया—वि० [स० द्विवाहु] जो दोनों हाथों से कोई काम समान रूप से कर सकता हो।

पु० वह योद्धा जो दोनों हाथों से तलवार चलाता या चला सकता हो।

दुवाइन—स्त्री० [हिं० 'दूवे' का स्त्री०] १ दूवे जाति की स्त्री। २ 'दूवे' की पत्नी।

दुवागा—पु० [हिं० दो+फा० वाग = लगाम] सन की वटी हुई मोटी रस्सी।

दुवारा—क्रि० वि० [फा० दुवार] दोवारा। (दे०)

दुवाला†—वि० = दोवाला।

दुविद—पु० = द्विविद (वानर)।

दुविध—स्त्री० = दुविधा।

दुविधा—स्त्री० = दुविधा।

दुविसी—स्त्री० [हिं० दो+वीच] ऐसी स्थिति जिसमे मनुष्य कुछ निर्णय न कर पा रहा हो। दुविधा की स्थिति।

दुवीचा—पु० [हिं० दो+वीच] १. दो परस्पर विरोधी वातो आदि के वीच की ऐसी स्थिति जिसमे सहसा किसी पक्ष मे निर्णय न हो सके। असमजस। दुविधा। २ अनिष्ट की आशंका। खटका।

दुवे—पु० = दूवे (द्विवेदी)।

दुभाखी—पु० = दुभापिया।

दुभालिया—पु० [हिं० दो +भाला] एक तरह का दो फलोवाला अस्त्र।

दुभापिया—वि० [स० द्विभापी] दो भापाएँ जानने और वोलनेवाला।

पुं० ऐसा व्यक्ति जो दो विभिन्न भापा-भापियो को एक दूसरे की वातें समझाता और उनके भावो के आदान-प्रदान का माध्यम वनता हो। मध्यस्थ।

दुभापी—वि०, पु० [स० द्विभापिन्] दुभापिया।

दुभिख†—पु० = दुर्भिक्ष।

दुभुज—वि० = द्विभुज।

दुमंजिला—वि० [फा०] [स्त्री० दुमजिली] (घर या मकान) जिसमे दो मजिल अर्थात् खड या तल्ले हो।

दुम—स्त्री० [फा०] १ पशुओ तथा रीढवाले अन्य जतुओ के पिछले भाग मे लटकता रहनेवाला लचीला मासल लवा अग जिस पर प्राय. वाल भी होते है। पूँछ। जैसे—हाथी या शेर की दुम, चूहे या नेवले की दुम।

विशेष—(क) पक्षियों का उक्त भाग कडे तथा घने पखो का वना होता है। (ख) सरी-सृपो आदि मे उनका पिछला अग दूसरे भाग की अपेक्षा पतला होता है। जैसे—साँप की दुम।

मुहा०—(किसी की) दुम के पीछे लगे फिरना = किसी के पीछे-पीछे लगे फिरना। दुम दवाकर भागना = डरपोक कुत्ते की तरह टरकर पीछे हटना या भागना। दुम दवा जाना=(क) डर के मारे पीछे हट जाना। डर से भाग जाना। (ख) टरकर चुपचाप जहाँ के तहाँ वैठे रहना। (किसी के सामने) दुम हिलाना=कुत्ते की तरह दीन वनकर किसी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करना।

२. लाक्षणिक रूप मे, किसी वस्तु का अतिम या पिछला लवा तथा लचीला सिरा जो देखने मे दुम के समान जान पडे। जैसे—गुड्डी या पतग की दुम।

मुहा०—(किसी वात का) दुम में घुसना=गायव हो जाना। दूर हो जाना। जैसे—सारी शेखी दुम मे घुस गई। (किसी की) दुम मे घुसा रहना = खुशामद के मारे पीछे-पीछे घूमना या लगे रहना।

३. किसी वडे तारे के पीछे के छोटे-छोटे तारे जो एक पक्ति मे हों। ४. किसी के पीछे-पीछे लगा रहनेवाला हीन व्यक्ति। ५ किसी काम या वात का अतिम और तुच्छ अश या भाग।

*पु० = द्रुम (वृक्ष)।

दुमची—स्त्री० [फा०] १. घोडे के साज मे वह तसमा जो पूँछ के नीचे दवा रहता है। २. कमर के नीचे दोनों चूतड़ों के वीच की हड्डी। ३. पतली या हलकी डाल अथवा शाखा।

दुमदार—वि० [फा०] १ जिसे दुम हो। पूँछवाला। पुच्छल। २ जिसके पीछे या साथ दुम की तरह कोई पतली लवी चीज लगी हो। जैसे—दुमदार तारा।

दुमन—वि० दे० 'दुचित्ता'।

दुमात†—स्त्री० = दुमाता।

दुमाता—स्त्री० [स० दुर्मातृ] १. बुरी माता। २ सौतेली माँ। विमाता।

दुमाला—पु० [हिं० दो+माला] पाश। फंदा।

दुमाहा—वि० [हिं० दो + माह] १. दो महीने की अवस्थावाला। २ हर दो महीने पर होनेवाला।

दुमुँहा—वि० [हिं० दो+मुँह] १ जिसके दो मुँह हो। २ जिसके दोनो ओर मुँह हों।

दुर्—उप० [स०√दु (पीडित करना)+रुक् या सुक्] १ एक संस्कृत उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दो के आरभ मे नीचे लिखे अर्थ या भाव सूचित करने के लिए होता है—(क) अनुचित, दूपित या बुरा। जैसे—दुरात्मा, दुर्जन, दुर्भाव। (ख) जो सहज मे न हो सके अर्थात् कठिन या कष्ट-साध्य। जैसे—दुर्गम, दुर्वोध, दुर्वह। (ग) अभावपूर्ण। जैसे—दुर्वल।

दुरंग—पु० [स० दुर्ग] किला। गढ। (राज०) उदा०—लड नह लीधो जाय ओ दीधो जाय दुरग।—वाँकीदास।

वि० = दुरगा।

दुरंगा—वि० [हिं० दो + रग] [स्त्री० दुरंगी, भाव० दुरगापन] १ दो रगोवाला। जिसमे दो रग हो। २ दो तरह या प्रकार का। ३. दो तरह का अर्थात् दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी—स्त्री० [हिं० दोरगा] १ दो रगो या प्रकारो के होने का भाव। दोरंगापन। २ दो तरह का अर्थात् कभी इस पक्ष के अनुकूल और कभी उस पक्ष के अनुकूल किया जानेवाला आचरण या व्यवहार।

दुरंत—वि० [स० दुर्-अत प्रा० ब० स०] १ जिसका अत या पार पाना कठिन हो। अपार। उदा०—द्रौपदी का यह दुरत दुकूल है।—पत। २. वहुत कठिन। दुस्तर। ३ तीव्र। प्रचड। ४ वहुत विकट। घोर। ५ खल। दुष्ट। ६ जिसका अत या परिणाम वहुत वुरा हो या होने को हो।

दुरंतक—पु० [स० दुरत+कन्] शिव।

दुरंतर—वि० [स० दुरत] १. कठिन। २ दुर्गम।

दुरधा*—वि० [स० द्विरध्र] १ जिसमे दो छेद हों। २. जिसके दोनो ओर छेद हो। ३. आर-पार छिदा हुआ।

दुर—अव्य० [हिं० दूर] एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी को तिरस्कार पूर्वक दूर हटाने के लिए होता है और जिसका अर्थ है–'दूर हो'।

पद—दूर दूर फिट फिट = वहुत वुरी तरह से या परम तुच्छ और हीन समझकर किया जानेवाला तिरस्कार।

मुहा०— (किसी को) दुर दुर करना= तिरस्कारपूर्वक कुत्ते की तरह हटाना या भगाना।

पु० [फा०] १ मोती। मुक्ता। २. नाक मे पहनने का मोती का लटकन। वुलाक। लोलक। ३ कान मे पहनने की ऐसी छोटी वाली जिसमे मोती पिरोये हो।

दुरक्ष—वि० [स० दुर्-अक्षि ब० स०] १. जिसे कम दिखाई पडता हो। २ वुरी या दूपित निगाहवाला।

पु० [दुर्-अक्ष प्रा० स०] १ जूए मे बेईमानी करने के लिए खास तौर से वनाया हुआ पासा। २. उक्त पासे पर खेला जानेवाला जूआ।

दुरखा—पु० [देश०] [स्त्री० दुरखी] एक प्रकार का फतिगा जो गेहूँ, तमाकू, नील, सरसो आदि की खेती को हानि पहुँचाता है।

दुरचुम—पु० [देश०] दरी के ताने के दो-दो सूतो को इसलिए एक मे वाँधना कि वे उलझ न जायँ।

दुरजन=पु० = दुर्जन।

दुरजोधन—पु० = दुर्योधन।

दुरति—स्त्री० [हिं० दु+स० रति] १ दो परस्पर विरोधी या विभिन्न वातो के प्रति होनेवाली रति या अनुराग। २ द्वैध-भाव। उदा०—दुरति दूर करो नाथ, अशरण हूँ गहो हाथ—निराला।

दुरतिक्रम—वि० [स० दुर्-अति √क्रम (गति)+खल्] १ जिसका अतिक्रमण या उल्लघन सहज मे न हो सके अर्थात् प्रवल या विकट। २ जिसका या जिससे पार पाना वहुत कठिन हो।

दुरत्यय—वि० [स० दुर्-अति√इ (गति)+खल्] १. जिसका या जिससे पार पाना कठिन हो। २ जिसका अतिक्रमण सहज न हो। दुस्तर।

दुरथल*—पु० [स० दुस्थल] १ वुरा स्थान। २ कुठाँव। उदा०—दुरदिन परे रहीम कहि दुरथल जैयत भाग।—रहीम।

दुरद—पु० = द्विरद।

दुरदाम*—वि० =दुर्दम।

दुरदाला—पु० [स० द्विरद] हाथी।

दुरदुराना—स० [हिं० दुरदुर] दुरदुर कहते हुए तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान करते हुए भगाना या हटाना।

सयो० क्रि०—देना।

दुरदृष्ट—वि० [स० दुर्-अदृष्ट प्रा० ब० स०] अभागा।

पु० १ दुर्भाग्य। २. पाप।

दुरधिगम—वि० [स० दुर्-अधि√गम् (जाना) +खल्] १. जिसके पास पहुँचना वहुत कठिन हो। २ जिसे प्राप्त करना वहुत कठिन हो। दुर्लभ। दुष्प्राप्य। ३ जो जल्दी समझ मे न आवे। दुर्वोध।

दुरधिष्ठित—वि० [स० दुर्-अधि√स्था (स्थिति)+क्त] १ वुरी तरह से किया हुआ। २. अव्यवस्थित।

दुरधीत—पु० [स० दुर्-अधीत प्रा० स०] वेदो का अशुद्ध उच्चारण तथा अशुद्ध स्वर से किया जानेवाला अध्ययन या पाठ।

वि० वुरी तरह से पढा जानेवाला या पढा हुआ।

दुरधुरा—स्त्री० [यू० दुरोयोरिया] वृहज्जातक के अनुसार जन्म कुडली का एक योग जिसमे अनफा और सुनफा दोनो योगो का मेल होता है।

दुरध्व—वि० [स० दुर्-अध्वन् प्रा० स०, अच्] जिस पर चलना कठिन हो।

पु० १. कुमार्ग। १ विकट मार्ग। वीहड रास्ता। उदा०—चलना होगा कव तक दुरध्व पर हृदय वाल।—दिनकर।

दुरना—अ० [हिं० दूर] १. किसी का आँखो से दूर होना। आड या ओट मे होना। २ प्रत्यक्ष या सामने न होना। छिपना।

सयो० क्रि०—जाना।

दुरन्वय—वि० [स० दुर्-अनु√इ (गति)+खल्] दुष्प्राप्य।

पु० अशुद्ध निष्कर्ष।

दुरपदी†— स्त्री० = द्रौपदी।

दुरपवाद—पु० [स० दुर्-अपवाद प्रा० स०] १ निंदा। २ वदनामी।

दुरवचा—पु० [फा० दुर+हिं० वच्चा] ऐसी छोटी वाली जिसमे एक ही मोती हो।

दुरबल†—वि० = दुर्वल।

दुरबस*—पु० =दुर्वासा।

दुरबार*—वि० [स० दुर्वार] जिसका निवारण न किया जा सके।

दुरबास†—स्त्री० [स० दुर्वास] वुरी गध। दुर्गंध।

दुरबीन—स्त्री० =दूरवीन।

दुरबेस—पु० =दरवेश।

दुरभिग्रह—वि० [स० दुर्-अभि√ग्रह् (पकडना)+खल्] जो सरलता से पकडा न जा सके।

पु० अपामार्ग। चिचडा।

दुरभिग्रहा—स्त्री० [स० दुरभिग्रह+टाप्] १. केवाँच। कौछ। २. धमासा।

दुरभिसधि—स्त्री० [स० दुर्-अभिसधि प्रा० स०] दुष्ट उद्देश्य से की जानेवाली मत्रणा या सलाह। कुमत्रणा। षड्यत्र।

दुरभेव—पु० = दुर्भाव।

दुरमति†—वि० स्त्री० = दुर्मति।

दुरमुट—पु० = दुरमुस।

दुरमुस—पु० [स० दुर (उप०) +मुस = कूटना] जमीन पीटकर समतल करने का पत्थर का गोल टुकडा जो लवे डडे मे जडा रहता है।

दुरलभ—वि० = दुर्लभ।

दुरवग्रह—वि० [स० दुर्-अव √ग्रह (पकडना) खल्] जिसे रोकना अथवा नियत्रित करना कठिन हो।

दुरवधार्य—वि० [सं० दुर्-अव √धृ (धारण) +ण्यत्] १. जिसका अवधारण सहज में न हो सके। २. जो ठीक तरह से ठहरा या बना न रह सके। ३. (भार) जो सहज में सँभाला न जा सके।

दुरवस्थ—वि० [सं० दुर्-अवस्था प्रा० ब० स०] हीन अवस्था में पड़ा हुआ।

दुरवस्था—स्त्री० [सं० दुर्-अवस्था प्रा० स०] १. बुरी दशा। २. कष्ट, दरिद्रता आदि के कारण होनेवाली हीन अवस्था। ३. दुर्दशा।

दुरवाप—वि० [सं० दुर्-अव √आप् (प्राप्त) +खल्] दुष्प्राप्य।

दुरवार—वि० = दुर्वार।

दुरसा†—पुं० [हिं० दो +औरस] सहोदर भाई।

दुराउ†—पुं० =दुराव।

दुराक—पुं० [सं०] १. एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। २. एक प्राचीन देश जिसमें उक्त जाति रहती थी।

दुराक्रम—वि० [सं०] दुर्जेय।

दुराक्रमण—पुं० [सं० दुर्-आक्रमण प्रा० स०] १. कपटपूर्ण आक्रमण। २. ऐसा स्थान जहाँ जाना या पहुँचना कठिन हो।

दुरागम—पुं० [सं० दुर्-आ√गम् (जाना)+खल्] अनुचित या अवैध रूप से आना, मिलना या प्राप्त होना।

दुरागमन—पुं० = द्विरागमन।

दुरागौन—पुं० [सं० द्विरागमन] वधू का दूसरी बार अपनी ससुराल जाना। द्विरागमन। गौना।

क्रि० प्र० —करना।—कराना।—लाना।

मुहा०—दुरागौन देना = लड़की को दूसरी बार ससुराल भेजना।

दुराग्रह—पुं० [सं० दुर्-आ√ग्रह (ग्रहण)+अल्] १. किसी काम या बात के लिए ऐसा आग्रह जो उचित या उपयुक्त न हो। अनुचित जिद या हठ। २. अपना कथन या मत ठीक न होने पर भी जिद करते हुए उसे ठीक कहते या मानते रहने की अवस्था या भाव।

दुराग्रही (हिन्)—वि० [सं० दुराग्रह+इनि] दुराग्रह या अनुचित हठ करनेवाला।

दुराचरण—पुं० [सं० दुर्-आचरण प्रा० स०] = दुराचार।

दुराचार—पुं० [सं० दुर्-आचार प्रा० स०] अनुचित और निंदनीय आचरण। बुरा चाल-चलन।

दुराचारी(रिन्)—वि० [सं० दुराचार+इनि] [स्त्री० दुराचारिणी] दुराचरण या दुराचार करनेवाला। बदचलन।

दुराज—पुं० [सं० द्विराज्य] १. ऐसा राज्य या शासन जिसमें दो राजा मिलकर एक साथ शासन करते हों। २ ऐसा प्रदेश या स्थान जहाँ उक्त प्रकार का राज्य या शासन हो।

पुं० [सं० दुर+राज्य] १. बुरा राज्य। २ बुरा शासन।

दुराजी—वि० [सं० दुराज्य] १. जिस पर दो राजाओं का अधिकार हो। २. जिसमें दो राजे हों।

पुं० = दुराज।

दुरात्मा (त्मन्)—वि० [सं० दुर्-आत्मन् प्रा० ब० स०] नीच। दुष्ट प्रकृतिवाला।

दुरादुरी—स्त्री० [हिं० दुरना=छिपना] छिपाव। दुराव।

दुराधन—पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधर—पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधर्ष—वि० [सं० दुर्-आ√धृष् (दबाना) +खल्] १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. जो बहुत कठिनाई से जीता जा सके। ३ उग्र। प्रचंड। प्रबल।

पुं० १. विष्णु का एक नाम। २. पीली सरसों।

दुराधर्षता—स्त्री० [सं० दुराधर्ष+तल्—टाप्] १ दुराधर्ष होने की अवस्था या भाव। २. प्रचंडता। प्रबलता।

दुराधर्षा—स्त्री० [सं० दुराधर्ष+टाप्] कुटुंबिनी का पौधा।

दुराधार—पुं० [सं० दुर्-आ √धृ (धारणा) +णिच् +खल्] महादेव।

दुरानम—वि० [सं० दुर्-आ √नम् (झुकना) +णिच् +खल्] जिसे कठिनाई से झुकाया या दबाया जा सके।

दुराना—अ० [हिं० दूर] १ दूर होना। हटना। २. आड़ या ओट में होना। छिपना।

स० १. दूर करना। हटाना। २. गुप्त रखना। छिपाना। ३. छोड़ना। त्यागना।

दुराप—वि० [सं० दुर् √आप् (प्राप्ति) +खल्] जिसे प्राप्त करना कठिन हो। दुर्लभ। दुष्प्राप्य।

दुराबाध—पुं० [सं० दुर्-आ √बाध् (पीड़ा) +खल्] शिव।

दुराराध्य—वि० [सं० दुर्-आ √राध् (सिद्धि) +ण्यत्] जिसे आराधन से प्रसन्न या संतुष्ट करना बहुत कठिन हो।

पुं० विष्णु।

दुरारुह—पुं० [सं० दुर्-आ √रुह् (चढ़ना) +क] १ बेल। २ नारियल।

दुरारुहा—स्त्री० [सं० दुरारुह + टाप्] खजूर का पेड़।

दुरारोह—वि० [सं० दुर्-आ +रुह +खल्] जिस पर कठिनता से चढ़ा जा सके।

पुं० ताड़ का पेड़।

दुरारोहा—स्त्री० [सं० दुरारोह+टाप्] १. सेमल का पेड़। २ खजूर का पेड़।

दुरालंभ—वि० [सं० दुर्-आ √लभ् (पाना) + खल्, नुम्] = दुरालभ।

दुरालभ—वि० [सं० दुर्-आ √लभ् +खल्] दुर्लभ। दुष्प्राप्य।

दुरालभा—स्त्री० [सं० दुरालभ+ टाप्] १ जवासा। धमासा। हिंगुवा। २. कपास।

दुरालाप—पुं० [सं० दुर्-आलाप प्रा० स०] [वि० कर्ता दुरालापी] १. अनुचित या बुरी बातचीत। २ गाली। दुर्वचन।

दुरालापी(पिन्)—वि० [सं० दुरालाप +इनि] बुरी बातें या दुर्वचन कहनेवाला।

दुरालोक—वि० [सं० दुर्-आलोक प्रा० स०] जो सरलता से देखा न जा सके।

दुराव—पुं० [हिं० दुराना+आव(प्रत्य०)] १ कोई भेदपूर्ण बात अथवा मनोभाव गुप्त रखने की क्रिया या भाव। छिपाव। २ किसी के प्रति होनेवाली कपटपूर्ण भावना।

दुरावार—वि० [सं० दुर्-आ √वृ (वर्जन) +घञ्] जिसका वारण करना बहुत कठिन हो।

दुराश—वि० [सं० दुर्-आशा ब० स०] जिसे दुराशा हो।

दुराशय—पुं० [सं० दुर्-आशय प्रा० स०] [भाव० दुराशयता] दुष्ट या बुरा आशय। बुरी नीयत।

वि० दुष्ट या बुरे आशयवाला। बद-नीयत।

दुराशा—स्त्री० [स० दुर्-आशा प्रा० स०] १ अनुचित या बुरी आशा। २ व्यर्थ की आशा।

दुरासद—वि० [स० दुर्-आ√सद् (प्राप्ति)+खल्] १. दुष्प्राप्य। २ कठिन। दुस्साध्य।

दुरासा†—स्त्री० = दुराशा।

दुरित—पु० [स० दुर्-इत प्रा० ब० स०] १. पाप। २. पापी। ३. पातक। ४. पातकी।

दुरित-दमनी—स्त्री० [ष० त०] शमी वृक्ष।

दुरियाना—स० [स० दूर] १ दूर करना या हटाना। २. दे० 'दुरदुराना'।

अ० दूर हटना या होना।

दुरिष्ट—पु० [स० दुर्-इष्ट प्रा० स०] १ पाप। पातक। २. उच्चाटन, मारण, मोहन आदि अभिचारों की सिद्धि के लिए किया जानेवाला यज्ञ।

दुरिष्टि—स्त्री० [स० दुर्-इष्टि प्रा० स०] दुरिष्ट यज्ञ। अभिचारार्थ यज्ञ।

दुरी—स्त्री० [स० ड:] बुरे दिन। दुर्दिन। उदा०—दिन नेडद् आइयाँ दुरी।—प्रिथीराज।

वि० खराब। बुरा। (राज०)

दुरीषणा—स्त्री० [स० दुर्-ईषणा प्रा० स०] १ किसी के अहित की कामना। अनुचित या बुरी इच्छा। २ शाप।

दुरुक्त—वि० [स० दुर्-उक्त प्रा० स०] बुरी तरह से कहा हुआ।

स्त्री० = दुरुक्ति।

दुरुक्ति—स्त्री० [स० दुर्-उक्ति प्रा० स०] १. खराब या बुरी युक्ति अथवा कथन। २ गाली। दुर्वचन।

दुरुखा—वि० [फा० दुरुख] [स्त्री० दुरुखी] १ जिसके दो रुख या मुँह हो। २ जिसके दोनो ओर मुँह हो। ३ जिसके दोनो ओर किसी एक प्रकार का अकन या चिह्न हो। जैसे—दुरुखी छीट, दुरुखा शाल। ४. जिसके दोनो ओर दो प्रकार के अकन, चिह्न या रग हो। जैसे—दुरुखा कपड़ा, दुरुखा किनारा, दुरुखी छपाई।

दुरुच्छेद—वि० [स० दुर्-उद्√छिद् (काटना)+खल्] जिसका उच्छेदन कठिनता से हो सके।

दुरुत्तर—वि० [स० दुर्-उद्√तृ (पार होना)+खल्] जिसका पार पाना कठिन हो। दुस्तर।

पु० [दुर्-उत्तर प्रा० स०] दुष्ट या बुरा उत्तर।

दुरुत्साहक—पु० [स० दुर्-उत्साह प्रा० ब० स०] वह जो किसी को किसी अनुचित या नियम के विरुद्ध कार्य मे या किसी दुष्ट उद्देश्य से प्रवृत्त करे या लगावे। (एबेटर)

दुरुत्साहन—पु० [स० दुर्-उत्साहन प्रा० स०] किसी को कोई अनुचित या विधि-विरुद्ध कार्य के लिए उत्साहित या प्रवृत्त करना। (एबेटमेन्ट)

दुरुत्साहित—भू० कृ० [स० दुर्-उद्√सह् (सहना)+णिच्+क्त] जिसे किसी ने किसी अनुचित कार्य के लिए उकसाया हो।

दुरुद्वह—वि० [स० दुर्-उद्√वह (ढोना)+खल्] जिसे वहन या सहन करना बहुत कठिन हो। दुर्वह।

दुरुपयोग—पु० [स० दुर्-उपयोग प्रा० स०] किसी चीज या बात का ठीक ढग या प्रकार से अथवा उपयुक्त अवस्था या समय मे उपयोग न करके अनुचित रूप से किया जानेवाला या बुरा उपयोग। जैसे—अधिकारो का दुरुपयोग।

दुरुपयोजन—पु० [सं० दुर्-उप√युज् (योग)+णिच्+ल्युट्-अन] दुरुपयोग करने की क्रिया या भाव।

दुरुफ—पु० [?] नीलकठ ताजिक के मतानुसार फलित ज्योतिष मे एक योग।

दुरुम—पु० [देश०] एक प्रकार का गेहूँ जिसका दाना पतला और लबा होता है।

पु० = द्रुम (वृक्ष)।

दुरुस्त—वि० [फा०] [भाव० दुरुस्ती] १ जिसमे भूल, दोष या विकार न हो अथवा निकाल या दूर कर दिया गया हो। २. जो अच्छी या ठीक दशा मे हो।

मुहा०—(किसी को) दुरुस्त करना = इस प्रकार किसी को दडित करना कि वह सीधे रास्ते पर आ जाय।

३ उचित। उपयुक्त। ४. यथार्थ।

दुरुस्ती—स्त्री० [फा०] १ दुरुस्त होने की अवस्था या भाव। २. दुरुस्त करने की क्रिया या भाव। शुद्धि। सशोधन। सुधार।

दुरुह—वि० [स० दुर्√ऊह् (वितर्क)+खल्] जो जल्दी समझ मे न आ सके। दुर्बोध।

दुरेफ—पु० = द्विरेफ।

दुरोदर—पुं० [स०] १. जुआरी। २. जूआ। द्यूत। ३. पासा। ४. पासे से खेला जानेवाला खेल।

दुरौंधा—पु० [सं० द्वारोर्द्ध] दरवाजे के ऊपर की लकडी। भरेठा।

दुर्कुल—पु० =दुष्कुल।

दुर्गंध—स्त्री० [स० दुर्-गध प्रा० स०] १. बुरी गध या महक। बदबू। २. लोक मे, किसी बुराई का होनेवाला प्रसार।

पु० [प्रा० ब० स०] १ आम का पेड। २ प्याज। ३ काला नमक।

दुर्गंधता—स्त्री० [स० दुर्गंध+तल्-टाप्] १ वह अवस्था जिसमे किसी वस्तु मे से बदबू निकल रही हो। २ वह तत्त्व जिसके कारण दुर्गंध फैलती हो।

दुर्ग—वि० [स० दुर्√गम् (जाना)+ड] (स्थान) जहाँ तक पहुँचना बहुत कठिन हो। दुर्गम।

पु० १ दुर्गम पथ। २ बहुत बडा किला (विशेषत किसी पहाड़ी पर स्थित)। ३ एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध दुर्गा ने किया था।

दुर्ग-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] दुर्ग बनाने का काम।

दुर्ग-कारक—पु० [ष० त०] १ दुर्ग बनानेवाला कारीगर। २ एक तरह का वृक्ष।

दुर्ग-कोपक—पु० [स० त०] किले मे बगावत फैलानेवाला विद्रोही।

दुर्गच्छा—स्त्री० [स०] एक प्रकार का मोहनीय कर्म जिसके उदय से मलिन पदार्थों से ग्लानि उत्पन्न होती है। (जैन)

दुर्गत—वि० [स० दुर्√गम्+क्त] १ जिसकी दुर्गति हुई हो। २ गरीब। दरिद्र।

†स्त्री० = दुर्गति।

दुर्ग-तरणी—स्त्री० [ष० त०] १ एक देवी का नाम। २. सावित्री।

दुर्गति—स्त्री० [सं० दुर्√गम्+क्तिन्] १. दुर्गम होने की अवस्था या भाव। २. दुर्दशाग्रस्त होने की अवस्था या भाव। ३. दुर्दशाग्रस्त करने की क्रिया या भाव।

दुर्ग-पाल—पुं० [सं० दुर्ग√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] दुर्ग अर्थात् किले का प्रधान अधिकारी और रक्षक। किलेदार।

दुर्ग-पुष्पी—पुं० [ब० स०, ङीष्] एक तरह का वृक्ष।

दुर्गम—वि० [सं० दुर्√गम्+खल्] [भाव० दुर्गमता] १. जिसमें गमन करना अर्थात् जाना, चलना या आगे बढ़ना बहुत कठिन हो। २. जिसे जानना या समझना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. कठिन। विकट।
पुं० १. दुर्ग। किला। गढ़। २ जंगल। वन। ३ संकटपूर्ण स्थान या स्थिति। ४. विष्णु का एक नाम। ५. एक असुर का नाम।

दुर्गमता—स्त्री० [सं० दुर्गम+तल्—टाप्] दुर्गम होने की अवस्था, गुण या भाव।

दुर्गमनीय—वि० [सं० दुर्√गम्+अनीयर्] दुर्गम।

दुर्ग-रक्षक—पुं० [ष० त०] दुर्गपाल। किलेदार।

दुर्ग-लंघन—पुं० [ष० त०] (रेतीले दुर्गम पथ को पार करनेवाला) ऊँट।

दुर्गल—पुं० [सं०] एक प्राचीन देश।

दुर्ग-संचर—पुं० [ष० त०] वह जिसके द्वारा या माध्यम से दुर्गम पथ पार किया जाय। जैसे—पुल, बेड़ा, सीढ़ी इत्यादि।

दुर्गा—पुं० [सं० दुर्ग+टाप्] १. आदि शक्ति के रूप में मानी जानेवाली एक प्रसिद्ध देवी जिनका यह नाम दुर्ग राक्षस का वध करने के कारण पड़ा था। २. नौ वर्षों की अवस्थावाली कन्या। ३ नील का पौधा। ४ अपराजिता। ५ श्यामा पक्षी। ६. गौरी, मालश्री, सारंग और लीलावती के योग से बनी हुई एक संकर रागिनी।

दुर्गा-कल्याण—पुं० [सं०] ओड़व संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

दुर्गाढ़, दुर्गाध,—वि० [सं० दुर्√गाह् (थाह लेना)+क्त दुर्-गाध प्रा० ब० स०] जिसकी थाह कठिनता से मिल सके।

दुर्गाधिकारी (रिन्)—पुं० [सं० दुर्ग-अधिकारिन् ष० त०] [स्त्री० दुर्गाधिकारिणी] दुर्ग का प्रधान अधिकारी। किलेदार।

दुर्गा-नवमी—स्त्री० [मध्य० स०] १ कार्तिक शुक्ल नवमी जिस दिन दुर्गा के पूजन का विधान है। २ चैत्र शुक्ल नवमी। ३. आश्विन शुक्ल नवमी।

दुर्गापाश्रया भूमि—स्त्री० [सं० दुर्ग-अपाश्रया ष० त०, दुर्गापाश्रया भूमि व्यस्त पद] वह भूमि जिसमें अनेक किले हों।

दुर्गा-पूजा—स्त्री० [ष० त०] १. दुर्गा का पूजन। २. चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें लोग दुर्गा या देवी की प्रतिमा स्थापित करके उसका पूजन करते हैं।

दुर्गाष्टमी—स्त्री० [दुर्गा-अष्टमी मध्य० स०] १. आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी। २ चैत्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी।

दुर्गाह्य—वि० [सं० दुर्√गाह्+ण्यत्] जिसका अवगाहन करना बहुत कठिन हो।

दुर्गाह्व—पुं० [सं० दुर्गा-आह्वा ब० स०] भूमि गूगल।

दुर्गुण—पुं० [सं० दुर्-गुण प्रा० स०] १ व्यक्ति में होनेवाली ऐसी दूषित स्वभावजन्य क्रियाशीलता जिसके कारण वह बुरे कामों में प्रवृत्त होता है। ऐब। २. किसी पदार्थ में होनेवाला ऐसा दोष जिससे विकार उत्पन्न होता हो।

दुर्गुणी (णिन्)—वि० [सं० दुर्गुण+इनि] जिसमें दुर्गुण या ऐब हों।

दुर्गेश—पुं० [सं० दुर्ग-ईश ष० त०] १ दुर्ग का स्वामी। २. दुर्ग का प्रधान अधिकारी।

दुर्गोत्सव—पुं० [सं० दुर्गा-उत्सव मध्य० स०] चैत्र तथा आश्विन के नवरात्रों में मनाया जानेवाला उत्सव जिसमें दुर्गा का पूजन किया जाता है।

दुर्ग्रह—वि० [सं० दुर्√ग्रह् (पकड़ना)+खल्] १. जिसे कठिनता से पकड़ा अर्थात् अधिकार में किया जा सके। २. कठिनता से समझ में आनेवाला। दुर्बोध।
पुं० १. अपामार्ग। चिचड़ा। २. [दुर्-ग्रह प्रा० स०] बुरा या अनिष्टकारक ग्रह।

दुर्ग्राह्य—वि० [सं० दुर्√ग्रह्+ण्यत्] दुर्ग्रह।

दुर्घट—वि० [सं० दुर्√घट् (घटित होना)+खल्] जिसका घटित होना प्रायः असंभव हो। बहुत कठिनता से घटित होनेवाला।

दुर्घटना—स्त्री० [सं० दुर्-घटना प्रा० स०] १. ऐसी घटना जिसके फलस्वरूप किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को क्षति या हानि पहुँचे। २. आफत। विपत्ति।

दुर्घोष—वि० [सं० दुर्-घोष प्रा० ब० स०] जो बुरा स्वर निकाले। कटु, कर्कश या बुरा घोर अथवा शब्द करनेवाला।
पुं० भालू। रीछ।

दुर्जन—पुं० [सं० दुर्-जन प्रा० स०] [भाव० दुर्जनता] वह व्यक्ति जो दूसरों का अपकार, अपकीर्ति या हानि करता रहता हो। खल या बुरा आदमी।

दुर्जनता—स्त्री० [सं० दुर्जन+तल्—टाप्] दुर्जन होने की अवस्था या भाव।

दुर्जय—वि० [सं० दुर्-जय प्रा० ब० स०] जिस पर विजय पाना बहुत कठिन हो।
पुं० १. विष्णु का एक नाम। २ एक राक्षस का नाम।

दुर्जय-व्यूह—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का व्यूह जिसमें सेना चार पंक्तियों में खड़ी की जाती थी। (कौ०)

दुर्जर—वि० [सं० दुर्√जॄ (जीर्ण होना)+अच्] १. जो सदा तरुण या युवा बना रहे। २ (अन्न) जिसे सरलता से न पचाया जा सके।

दुर्जरा—स्त्री० [सं० दुर्जर+टाप्] ज्योतिष्मती लता। मालकँगनी।

दुर्जात—वि० [सं० दुर्-जात प्रा० स०] १ जिसका जन्म बुरी रीत से हुआ हो। जैसे—दोगला या वर्णसंकर। २ जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो। ३ नीच। कमीना। ४ अभागा। बद-किस्मत।
पुं० १ व्यसन। २. विपत्ति। संकट। ३ असमंजस। दुविधा। ४. अनौचित्य।

दुर्जाति—स्त्री० [सं० दुर्-जाति प्रा० स०] बुरी जाति। नीच जाति।
वि० १. बुरी जाति या कुल का। २ जिसकी जातीयता बिगड़ गई या नष्ट हो चुकी हो।

दुर्जीव—वि० [स० दुर्-जीव प्रा० ब० स०] १ दूसरे के दिये हुए अन्न पर पलनेवाला। २ बुरी तरह से जीविका उपार्जित करनेवाला।
पु० [प्रा० स०] निंदनीय या बुरा जीवन।

दुर्जेय—वि० [स० दुर्√जी (जीतना) +अच्] दुर्जय।

दुर्ज्ञेय—वि० [स० दुर्√ज्ञा (जानना)+यत्] १ जिसे जानना बहुत कठिन हो। २ जो जल्दी समझ मे न आ सके। दुर्बोध।

दुर्दम—वि० [स० दुर्√दम् (दमन करना) +खल्] १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २ प्रचड। प्रबल।
पु० वसुदेव के एक पुत्र का नाम जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

दुर्दमन—पु० [स० दुर्-दमन प्रा० ब० स०] जनमेजय के वश मे उत्पन्न शतानीक राजा का पुत्र।
वि० = दुर्दम।

दुर्दमनीय—वि० [स० दुर्√दम् +अनीयर्] १ जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। दुर्दम। २ प्रचड। प्रबल।

दुर्दम्य—वि० [स० दुर्√दम् +यत्] दुर्दम।
पु० [स०] गाय का बछडा।

दुर्दर *—वि०=दुर्धर।

दुर्दर्श—वि० [स० दुर्√दृश् (देखना) +खल्] १ जिसका दर्शन करना या होना अत्यत कठिन हो। २. जिसे देखने से डर लगे या घृणा हो। ३ देखने मे खराब या बुरा। कुरूप। भद्दा। ४. जिसे देखने से कोई बुरा परिणाम या फल होता हो।

दुर्दर्शन—वि० [स० दुर्-दर्शन प्रा० ब० स०] दुर्दर्श।
पु० [स०] कौरवो का एक सेनापति।

दुर्दशा—स्त्री० [स० दुर्-दशा प्रा० स०] बुरी और हीन दशा। खराब हालत।

दुर्दांत—वि० [सं० दुर्√दम्+क्त] १ जिसका दमन या वश मे करना कठिन हो। दुर्दमनीय। २ प्रचड। प्रबल।
पु० १ शिव का एक नाम। २ गौ का बछडा। ३ लडाई-झगडा। कलह।

दुर्दान—पु० [?] चाँदी। (अनेकार्थ)

दुर्दिन—पु० [स० दुर्-दिन प्रा० स०] १. खराब या बुरा दिन। २ दुर्दशा के दिन या समय। ३ ऐसा दिन जिसमे प्रात काल से ही खूब बादल घिरे हो, पानी बरसता हो और कही आना-जाना कठिन हो।

दुर्दुरूढ़—पु० [स० √दुल् (फेकना) +ऊढ पृषो० सिद्धि] नास्तिक।

दुर्दृष्ट—वि० [स० दुर्-दृष्ट प्रा० स०] (व्यवहार) १ जिस पर ठीक और पूरा ध्यान न दिया गया हो। २ जिसका ठीक तरह से फैसला या न्याय न हुआ हो।

दुर्दैव—पु० [स० दुर्-दैव प्रा० स०] १ दुर्भाग्य। अभाग्य। बुरी किस्मत। २ बुरे दिन। बुरा समय।

दुर्द्धर—वि० [स० दुर्√धृ (धारण)+खल्] १ जिसे कठिनता से पकड सके। जो जल्दी पकड मे न आ सके। २ प्रचड। प्रबल। ३ जल्दी समझ मे न आनेवाला। दुर्बोध।
पु० १ पारा। २ भिलावाँ। ३ एक नरक का नाम। ४. महिषासुर का एक सेनापति। ५ शबरासुर का एक मत्री। ६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ७ रावण की सेना का एक राक्षस जो हनुमान् को पकड़ने के लिए अशोक-वाटिका मे भेजा गया था और वही उनके हाथ से मारा गया था। ८ विष्णु का एक नाम।

दुर्द्धर्ष—वि० [स० दुर्√धृष्(दबाना) +खल्] १ जिसका दमन करना कठिन हो। जिसे जल्दी दबाया या वश मे न किया जा सके। २. जिसे परास्त करना या हराना कठिन हो। ३. प्रचड। प्रबल।
पु० १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ रावण की सेना का एक राक्षस।

दुर्द्धर्षा—स्त्री० [स० दुर्द्धर्ष+टाप्] १ नागदौना। २ कथारी नाम का पेड।

दुर्धी—वि० [स० दुर्-धी प्रा० ब० स०] १ बुरी बुद्धिवाला। २ मद बुद्धिवाला।
स्त्री० बुरी बुद्धि।

दुर्धुरूढ—पु० [स० दुर्+धुर्व् (हिंसा) +डट्, पृषो० सिद्धि] वह शिष्य जो गुरु की आज्ञा का पालन सहज मे न करता हो।

दुर्द्रिता—स्त्री० [स०] एक प्रकार की लता।

दुर्द्रुम—पु० [स० दुर्-द्रुम प्रा० स०] हरित्पलाडु। हरा प्याज।

दुर्धर—वि० [स० दुर्√धृ (धारण)+खल्] १. जिसे धारण करना कठिन हो। २ प्रचड। विकट।

दुर्धर्ष—वि० = दुर्द्धर्ष।

दुर्नय—पु० [स० दुर्=नी (ले जाना)+अच्] १ निकृष्ट या बुरा आचरण। खराब चाल-चलन। २ अनीति। अनैतिकता। ३ अन्याय।

दुर्नाद—वि० [स० दुर्-नाद प्रा० ब० स०] १. बुरे नाद या स्वरवाला। २. कर्कश ध्वनिवाला।
पु० राक्षस।

दुर्नाम (न्)—वि० [स० दुर्-नामन् प्रा० ब० स०] १. बुरे नामवाला। २ बदनाम।
पु० [प्रा० स०] १ बुरा नाम। कुख्याति। बदनामी। २ गाली। दुर्वचन। ३ [प्रा० ब० स०] बवासीर नामक रोग। ४ शुक्ति। सीपी।

दुर्नामक—पु० [स० दुर्-नामन् प्रा० ब० स०, कप्] अर्श रोग। बवासीर।

दुर्नामारि—पु० [स० दुर्नामन्-अरि ष० त०] (बवासीर को दूर करनेवाला) सूरन। जिमीकद।

दुर्नाम्नी—स्त्री० [स० दुर्-नाम् प्रा० ब० स०, ङीप्] शुक्ति। सीप।

दुर्निग्रह—वि० [स० दुर्-नि√ग्रह् (पकडना)+खल्] जिसे वश मे करना बहुत कठिन हो।

दुर्निमित्त—पु० [सं० दुर्-निमित्त प्रा० स] अपशकुन।

दुर्निरीक्ष—वि० [स० दुर्-निर्√ईक्ष (देखना))+खल्] १ जिसे देखना या देखते रहना बहुत कठिन हो। २ भयकर। भीषण। ३ कुरूप। भद्दा।

दुर्निवार—वि० [स० दुर्-नि√वृ (वारण)+घञ्] =दुर्निवार्य।

दुर्निवार्य—वि० [स० दुर्-नि√वृ+ण्यत्] १ जिसका निवारण कठिनता से होता हो। जो जल्दी रोका न जा सके। २ जो जल्दी दूर किया या हटाया न जा सके। ३. जिसका घटित होना प्राय निश्चित हो। जो जल्दी टल न सके।

दुर्नीत—वि० [स० दुर्√नी+क्त] नीति विरुद्ध आचरण करनेवाला। †स्त्री० =दुर्नीति।

दुर्नीति—स्त्री० [स० दुर्-नीति प्रा० स०] १. निंदनीय और वुरी नीति। २ नीति विरुद्ध आचरण।

दुर्वल—वि० [स० दुर्-वल प्रा० व० स०] [भाव० दुर्वलता] १. जिसमे शारीरिक शक्ति की कमी हो। कमजोर। २. दुवला-पतला। कृश। ३. जो मानसिक, नैतिक आदि शक्तियो से रहित हो। जैसे—दुर्वल चरित्र।

दुर्वलता—स्त्री० [स० दुर्वल+तल्-टाप्] १ दुर्वल होने की अवस्था या भाव। २ दुवलापन। ३. कमजोरी।

दुर्वला—स्त्री० [सं० दुर्वल+टाप्] जलसिरीस का पेड।

दुर्वाल—पु० [स० दुर्-वाल प्रा० व० स०] १ सिर का गजापन। २. गज नामक रोग।

दुर्वुद्धि—वि० [स० दुर्-वुद्धि प्रा० व० स०] नीच या हीन वुद्धिवाला। स्त्री० दुष्ट या नीच वुद्धि।

दुर्वोध—वि० [स० दुर्-वोध प्रा० व० स०] (विषय) जिसका वोध कठिनता से हो सकता हो। जो जल्दी समझ मे न आवे।

दुर्भक्ष—वि० [स० दुर्√भक्ष् (खाना)+खल्] १ (पदार्थ) जिसे खाना कठिन हो। जो जल्दी न खाया जा सके। २. जो खाने मे खराव या बुरा लगे।

पु० दुर्भिक्ष। अकाल।

दुर्भग—वि० [स० दुर्-भग प्रा० व० स०] [स्त्री० दुर्भगा] जिसका भाग्य वुरा हो। खराव किस्मत या प्रारव्धवाला। अभागा।

दुर्भगा—स्त्री० [स० दुर्भग+टाप्] ऐसी स्त्री जो अपने पति का प्रेम या स्नेह न प्राप्त कर सकी हो।

वि० सं० 'दुर्भग' का स्त्री०।

दुर्भर—वि० [सं० दुर्√भृ (भरण) +खल्] १. जिसे उठाना वहुत कठिन हो। जो सहज मे उठाया न जा सके। २. भारी। वजनी।

दुर्भाग—पु०=दुर्भाग्य।

दुर्भागी—वि० =अभागा।

दुर्भाग्य—पु० [स० दुर्-भाग्य प्रा० स०] वुरा भाग्य। खराव किस्मत।

दुर्भाव—पु० [स० दुर्-भाव प्रा० स०] १. वुरा भाव। २. किसी के प्रति मन मे होनेवाला द्वेप या वुरा भाव। दुर्भावना।

दुर्भावना—स्त्री० [स० दुर्-भावना प्रा० स०] १. वुरी भावना या विचार। २. आशका। खटका।

दुर्भाव्य—वि० [स० दुर्√भू (होना)+ण्यत्] जो जल्दी ध्यान मे न आ सके।

दुर्भृत्य—पु० [सं० दुर्-भृत्य प्रा० स०] वुरा या दुष्ट नौकर।

दुर्भिक्ष—पु० [स० दुर्-भिक्षा अव्य० स०] १ ऐसा समय जिसमे भिक्षा या भोजन वहुत कठिनता से मिले। २. अकाल।

दुर्भिच्छ*—पु० =दुर्भिक्ष।

दुर्भिद—वि० [स० दुर्√भिद् (फाड़ना)+क] जिसका भेदन कठिनता से हो सके।

दुर्भेद—वि० [सं० दुर्√भिद्+खल्] =दुर्भेद्य।

दुर्भेद्य—वि० [सं० दुर्√भिद्+ण्यत्] १. जो जल्दी भेदा न जा सके। जो कठिनता से छिदे। २ जो जल्दी पार न किया जा सके। ३ जिसके अन्दर पहुँचना वहुत कठिन हो। जैसे—दुर्भेद्य किला।

दुर्मंत्रणा—स्त्री० [स० दुर्-मत्रणा प्रा० स०] वुरी मत्रणा।

दुर्मति—वि० [सं० दुर्-मति प्रा० व० स०] १ वुरी मति या वुद्धिवाला। २ खल। दुष्ट।

स्त्री० [प्रा० स०] वुरी या दुष्ट वुद्धि।

पु० साठ सवत्सरो मे से एक सवत्सर, जिसमे अकाल पड़ता है। (फलित ज्योतिप)

दुर्मद—वि० [स० दुर्-मद प्रा० व० स०] १. जो नशे मे वुरी तरह से चूर हो। २. उन्मत्त। पागल। ३. जिसमे वहुत अधिक मद या घमड हो। उदा०—दुर्मद दुरस्त धर्म दस्युओ की त्रासिनी।—प्रसाद।

दुर्मना (नस्)—वि० [स० दुर्-मनस् प्रा० व० स०] १ वुरे चित्त या मनवाला। २. दुष्ट। पाजी। ३ उदास। खिन्न।

दुर्मनुष्य—पु० [सं० दुर्-मनुष्य प्रा० स०] दुष्ट मनुष्य। दुर्जन।

दुर्मर—वि० [स० दुर्-मर प्रा० व० स०] जिसकी मृत्यु सहज मे न हो। वहुत कठिनता या कष्ट से मरनेवाला।

दुर्मरण—पु० [स० दुर्-मरण प्रा० व० स०] वुरे प्रकार से होनेवाली मृत्यु।

दुर्मरा—स्त्री० [स० दुर्मर+टाप्] दूर्वा। दूव।

दुर्मर्ष—वि० [स० दुर्√मृष् (सहना)+खल्] जिसे सहन करना कठिन हो। दु:सह।

दुर्मल्लिका—स्त्री० [स०] चार अकोवाला एक तरह का हास्य-रस-प्रवान उपरूपक।

दुर्मल्ली—स्त्री० =दुर्मल्लिका।

दुर्मित्र—पु० [स० दुर्-मित्र प्रा० स०] वुरा मित्र।

दुर्मिल—वि० [स० दुर्√मिल् (मिलना)+क] जो सहज मे न मिल सके। दुष्प्राप्य।

पु० १. भरत के सातवें लड़के का नाम। २. एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण में १०, ८ और १४ के विराम से ३, २ मात्राएँ होती हैं।

दुर्मुख—वि० [स० दुर्-मुख प्रा० व० स०] १. खराव या वुरे मुँहवाला। २. कुरूप या भद्दे मुँहवाला। ३ कड़वी और वुरी वातें कहने या वोलनेवाला।

पु० १ भगवान रामचन्द्र का वह गुप्तचर जो प्रजा के भीतरी समाचार उन्हें सुनाया करता था। २ रामचद्र की सेना का एक वदर। ३. महिषासुर के एक सेनापति का नाम। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५. एक नाग का नाम। ६. शिव का एक नाम। ७ साठ सवत्सरो मे से एक। ८, एक यक्ष का नाम। ९ गणेश के एक गण का नाम। १० घोडा। ११. गुप्तचर। जासूस। १२ ऐसा घर या मकान जिसका दरवाजा उत्तर की ओर हो।

दुर्मुखी—स्त्री० [स० दुर्मुख+ङीप्] एक राक्षसी जिसे रावण ने जानकी को वहकाने के लिए अशोक-वाटिका मे रखा था।

वि० हिं० 'दुर्मुख' का स्त्री०।

दुर्मुट†—पुं० =दुर्मुस।

दुर्मुस—पु० [स० दूर्+मुस= कूटना] गदा के आकार का मिट्टी,

पत्थर, सडक आदि पीटने का एक उपकरण जिसके लवे डडे के निचले सिरे मे पत्थर का भारी गोल टुकडा लगा रहता है।

दुर्मुहूर्त—पु० [स० दुर्-मुहूर्त प्रा० व० स०] अशुभ या बुरा मुहूर्त्त।

दुर्मूल्य—वि० [स० दुर्-मूल्य प्रा० व० स०] वहुत अधिक मूल्यवाला। वहुमूल्य।

दुर्मेध (धस्)—वि० [स० दुर्मेधस् प्रा० व० स०] मंद बुद्धि। नासमझ।

दुर्मोह—पु० [स० दुर्√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्] काकतुडी। कौआ-ठोठी।

दुर्मोहा—स्त्री० [सं० दुर्मोह+टाप्] १ कौआ-ठोठी। २. सफेद घुंघची।

दुर्यस (स्)—पु० [स० दुर्-यशस् प्रा० स०] बुरा यश। अपयश।

दुर्योध—वि० [स० दुर्√युध् (लडना)+खल्] जिससे युद्ध करना और विजय पाना वहुत कठिन हो।

दुर्योधन—पुं० [स० दुर्√युध्+युच्-अन] एक प्रसिद्ध कुरुवशीय राजा जो धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र था तथा जो महाभारत के युद्ध मे मारा गया था।

दुर्योनि—वि० [सं० दुर्-योनि प्रा० व० स०] जिसका जन्म निम्न या नीच कुल मे हुआ हो।

दुर्रा—पु० [फा०] कोडा। चावुक। जैसे—मरे पर सौ दुर्रे। (कहा०)

पु० [अ० दुर्र] वडा मोती।

दुर्रानी—पु० [फा०] १ अफगानो की एक जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

दुर्लंघ्य—वि० [स० दुर्√लघ् (लाघना)+ण्यत्] जिसे लाँघना वहुत कठिन हो।

दुर्लक्ष्य—वि० [स० दुर्√लक्ष् (देखना)+ण्यत्] जो कठिनता से दिखाई पडे या देखा जा सके।

पु० दुष्ट अथवा वुरा लक्ष्य या उद्देश्य।

दुर्लभ—वि० [स० दुर्√लभ् (पाना)+खल्] १ जो कठिनता से प्राप्त होता हो। दुष्प्राप्य। २ जो वहुत कम मात्रा मे, कभी-कभी अथवा कही-कही मिलता हो। (रेयर) ३ जिसके जोड या तरह का दूसरा जल्दी मिलता न हो। वहुत वढिया और अनोखा। ४ प्रिय।

पु० १ कचूर। २. विष्णु का एक नाम।

दुर्लभ-मुद्रा—स्त्री० [स० दुर्लभा-मुद्रा कर्म० स०] आधुनिक अर्थशास्त्र मे वह विदेशी मुद्रा जो कठिनाई से प्राप्त होती हो।

विशेष—जव एक देश दूसरे देश को अधिक मूल्य का सामान निर्यात करता है और उस देश से कम मूल्य का सामान आयात करता है तो उसके लिए तो दूसरे देश की मुद्रा सुलभ रहती है (क्योकि इसका उधर पावना होता है) परतु दूसरे देश के लिए उस देश की मुद्रा दुर्लभ होती है (क्योकि उसे पहले ही देना अधिक होता है)।

दुर्ललित—वि० [स० दुर्√लल् (चाहना)+क्त] १ जिसका वुरी तरह से लालन या लाड-प्यार किया गया हो और इसीलिए वह विगड़ गया हो। २. दुष्ट। नटखट। पाजी। ३ खराव। दूपित। बुरा। उदा०—उठती अतस्तल से सदैव दुर्ललित लालसा जो कि कात।—प्रसाद।

पु० उद्धत या उद्दड होने की अवस्था या भाव। उद्धतता।

दुर्लेख्य—वि० [स० दुर्-लेख्य प्रा० स०] १ (लेख) जो खराव लिखा हुआ हो। जिसकी लिखावट वुरी हो। २ जो ऐसा लिखा हो कि जल्दी पढा न जा सके। (स्मृति)

पुं० वह लेख्य जो विधिक व्यवहार मे अप्रामाणिक तथा विधि-विरुद्ध माना जाय। (इनवैलिड डीड)

दुर्वच—वि० [स० दुर्√वच् (वोलना)+खल्] १ (वचन) जो सहज मे न कहा जा सके। जिसे कह सकना कठिन हो। २. जिसे कहने मे कष्ट हो।

पु० गाली। दुर्वचन।

दुर्वचन—पुं० [सं० दुर्-वचन प्रा० स०] १ वुरा वचन। वुरी उक्ति या दूपित कथन। २ गाली।

दुर्वर्ण—वि० [सं० दुर्-वर्ण प्रा० व० स०] वुरे या हेय वर्णवाला।

पु० १. चाँदी। रजत। २ [प्रा० स०] वुरा वर्ण।

दुर्वर्णा—स्त्री० [स० दुर्वर्ण+टाप्] १. चाँदी। २ एलुआ नामक औषधि।

दुर्वह—वि० [स० दुर्√वह् (ढोना)+खल्] जिसे वहन करना वहुत कठिन हो।

दुर्वाक (च्)—पु० [स० दुर्-वाच् प्रा० स०] =दुर्वचन।

दुर्वाद—पुं० [स० दुर्-वाद प्रा० स०] १ अपवाद। निंदा। वदनामी। २. अनुचित अथवा उपयुक्त विवाद। तकरार। हुज्जत। ३ ऐसी वात जो अच्छी होने पर भी वुरे ढग से कही जाय।

दुर्वादी (दिन्)—वि० [स० दुर्वाद+इनि] १ दूसरो की वदनामी करनेवाला। २ तकरार या हुज्जत करनेवाला। ३ दुर्वाद कहने-वाला।

दुर्वार—वि० [स० दुर्√वृ (वारण) +णिच्+खल्] जिसका निवारण करना कठिन हो।

दुर्वारि—पु० [स० दुर्-वारि = वारण प्रा० व० स०] कवोज देश का एक योद्धा जो महाभारत की लडाई मे लडा था।

दुर्वार्य—वि० [स०दुर्√वृ+णिच्+यत्] =दुर्वार। (देखें)

दुर्वासना—स्त्री० [स० दुर्-वासना प्रा० स०] १ वुरी इच्छा, कामना या वासना। २ ऐसी कामना या वासना जो कभी अथवा जल्दी पूरी न हो सके।

दुर्वासा (सस्)—पु० [सं० दुर-वासस् प्रा० व० स०] अत्रि और अनुसूया के पुत्र एक प्रसिद्ध ऋषि जो वहुत ही क्रोधी स्वभाव के थे और जराजरा-सी वात पर शाप दे वैठते थे।

दुर्वाहित—वि० [स० दुर्-वाहित प्रा० स०] जिसका वहन करना वहुत मुश्किल हो।

पु० भारी वोझ।

दुर्विगाह—वि० [स० दुर्-वि√गाह् (थाह लेना)+खल्] जिसका अवगाहन करना अर्थात् थाह पाना वहुत कठिन हो।

दुर्विज्ञेय—वि० [स० दुर्-वि√ज्ञा (जानना)+यत्] जिसका ज्ञान प्राप्त करना वहुत कठिन हो। जिसे जल्दी जान न सकें।

दुर्विद—वि० [स० दुर्√विद् (जानना)+क] जिसे जानना तथा समझना वहुत कठिन हो।

दुर्विदग्ध—वि० [सं०दुर्-विदग्ध प्रा० स०] १ जो अच्छी तरह जला न

हो। अधजला। २. जो पूरी तरह से पका न हो ३. अभिमानी। घमंडी।

दुर्विदग्धता—स्त्री० [सं० दुर्विदग्ध तल्—टाप्] दुर्विदग्ध होने की अवस्था या भाव। पूरी निपुणता का अभाव। अधकचरापन।

दुर्विध—वि० [सं० दुर्-विधा प्रा० ब० स०] १. दरिद्र। धन-हीन। २. खल। दुष्ट। ३. बेवकूफ। मूर्ख।

दुर्विधि—स्त्री० [सं० दुर्-विधि प्रा० स०] खराब या बुरी विधि। दूषित या बुरा ढंग या रीति।

पुं० दुर्भाग्य।

दुर्विनय—वि० [सं० दुर्-विनय प्रा० ब० स०] १ जिसमे विनय का अभाव हो। २. उद्दंड।

स्त्री० [प्रा० स०] १ अविनय। २ उद्दंडता।

दुर्विनीत—वि० [सं० दुर्-विनीत प्रा० स०] जो विनीत न हो। अविनीत।

दुर्विपाक—पुं० [सं० दुर्-विपाक प्रा० स०] १. बुरा परिणाम। बुरा फल। २. बुरा सयोग। जैसे—दैव-दुर्विपाक से उन्हें पुत्र-शोक सहना पड़ा।

दुर्विभाव्य—वि० [सं० दुर्वि√भू (होना)+ण्यत्] जिसका अनुमान कठिनता से हो सके।

दुर्विलास—पुं० [सं० दुर्-विलास प्रा० स०] भाग्य का विपरीत होना।

दुर्विवाह—पुं० [सं० दुर्-विवाह प्रा० स०] बुरा या निंदनीय विवाह।

दुर्विष—वि० [सं० दुर्-विष प्रा० ब० स०] दुराशय।

पुं० महादेव।

दुर्विषह—वि० [सं० दुर्-वि√सह (सहना)√खल्] जिसे सहना बहुत कठिन हो। दुःसह।

पुं० १. महादेव। शिव। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुर्वृत्त—वि० [सं० दुर्-वृत्त प्रा० ब० स०] [भाव० दुर्वृत्ति] १ जिसका आचरण बुरा हो। दुश्चरित्र। दुराचारी। २. जो दूषित या निंदनीय उपायों से जीविका चलाता हो। बुरी वृत्तिवाला।

पुं० [प्रा० स०] निन्दनीय और बुरा आचरण। बद-चलनी।

दुर्वृत्त-फलक—पुं० [ष० त०] दे० 'इति-वृत्तक'।

दुर्वृत्ति—स्त्री० [सं० दुर्-वृत्ति प्रा० स०] १. बुरी वृत्ति। २. बुरा आचरण या स्वभाव।

दुर्वृष्टि—स्त्री० [सं० दुर्-वृष्टि प्रा० स०] १. आवश्यक या उचित से कम वृष्टि। २. अनावृष्टि। सूखा।

दुर्वेद—वि० [सं० दुर्√विद् (जानना)+खल्] १. जिसे समझना बहुत कठिन हो। २ जो वेदों का अध्ययन न करता हो। ३. वेदों की निंदा करनेवाला।

दुर्व्यवस्था—स्त्री० [सं० दुर्-व्यवस्था प्रा० स०] खराब या बुरी व्यवस्था। अव्यवस्था।

दुर्व्यवहार—पुं० [सं० दुर्-व्यवहार प्रा० स०] १. अनुचित और बुरा व्यवहार। बुरा बरताव। २. अनुचित या बुरा आचरण। ३. ऐसा व्यवहार या मुकदमा जिसका फैसला (अनुचित प्रभाव, घूस आदि के कारण) ठीक न हुआ हो।

दुर्व्यसन—पुं० [सं० दुर्-व्यसन प्रा० स०] कोई बुरा या दूषित काम करने का चसका जो बहुत कठिनता से छूट सके।

दुर्व्यसनी (निन्)—वि० [दुर्व्यसन+इनि] जिसे किसी प्रकार का दुर्व्यसन हो। जिसे बुरी तरह से कोई लत या कई लतें लगी हों।

दुर्व्रत—वि० [सं० दुर्-व्रत प्रा० ब० स०] जिसने कोई अनुचित या बुरा व्रत लिया हो। बुरे मनोरथों वाला। नीचाशय।

पुं० [प्रा० स०] निन्दनीय, नीच अथवा बुरा आशय, मनोरथ या व्रत।

दुर्हृद्—वि० [सं० दुर्-हृदय प्रा० ब० स०] जो सुहृद् न हो। बुरे हृदयवाला।

पुं० विरोधी या शत्रु।

दुर्हृदय—वि० [सं० दुर्-हृदय प्रा० ब० स०] खोटे हृदयवाला। कपटी।

दुर्हृषीक—वि० [सं० दुर्-हृषीक प्रा० ब० स०] जिसकी ज्ञानेंद्रियों में कुछ खराबी या विकार हो।

दुलकन—स्त्री० [हिं० दुलकना] दुलकने की क्रिया या भाव।

†वि० दुलकनेवाला।

दुलकना—अ० [हिं० दलकना] (घोड़ो आदि का) अलग-अलग हर पैर उठाकर कुछ उछलते हुए चलना।

अ०, स० =दुलखना।

दुलकी—स्त्री० [हिं० दुलकना] टट्टू, घोड़े आदि की एक प्रकार की चाल जिसमें वह हर पैर अलग-अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ दौड़ता है।

क्रि० प्र०—चलना।—जाना।

दुलखना—स० [हिं० दो+लक्षण] १. बार-बार बतलाना। बार-बार कहना। बार-बार दोहराना। २. किसी की कही हुई ठीक बात पर भी आपत्ति करते हुए उसका तिरस्कार करना जो अविनय, उद्दंडता आदि का सूचक है।

अ० मुकर जाना।

दुलखी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फतिंगा जो गेहूँ, ज्वार, तमाखू नील, सरसों आदि की खेती को नुकसान पहुँचाता है।

दुलड़ा—वि० [हिं० दो+लड] [स्त्री० दुलडी] जिसमें दो लड़ या लड़ियाँ हों। दो-लड़ों का।

पुं० दो लड़ोवाली माला या हार।

दुलड़ी—स्त्री० [हिं० दो+लड] दो लड़ो की माला।

दुलत्ती—स्त्री० [हिं० दो+लात] १ गाय, घोड़े आदि का किसी पर प्रहार करने के लिए पिछली दोनो टाँगें एक साथ उठाने तथा झटकारने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—चलाना।—झाड़ना।—फेंकना।—मारना।

२. उक्त प्रकार से किया जाने या लगनेवाला आघात।

मुहा०—दुलत्ती झाड़ना=बहुत बिगड कर अलग या दूर होते हुए ऐसी बातें कहना मानो गधों या घोड़ों की तरह अथवा पशुओं का-सा आचरण या व्यवहार कर रहे हो। (परिहास और व्यंग्य)

३. मालखंभ की एक कसरत जिसमे दोनों पैरो से मालखंभ को लपेटकर बाकी बदन मालखंभ से अलग झुलाकर ताल ठोंकते हैं।

दुलदुल—पुं० [अ०] १. वह खच्चरी (मादा खच्चर) जो इसकदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को भेंट की थी। २ मुहर्रम की आठवीं तारीख को जलूस के साथ निकाला जानेवाला वह कोतल घोड़ा जिसके साथ शीया मुसल्मान मातम करते हुए चलते हैं।

विशेष—मुख्यत यह उसी उक्त खच्चरी का प्रतीक होता है, जो मुहम्मद साहब को भेट मे मिली थी। पर लोग इसे भूल से खच्चर या घोडा समझते है, और इसी लिए उस शब्द का प्रयोग पु० रूप मे करते हैं।

दुलन†—पु० = दोलन।

दुलना†—अ० = डुलना।

दुलभ*—वि० = दुर्लभ।

दुलरा†—वि० = दुलारा।

दुलराना—स० [हि० दुलारना] १ बच्चों से दुलार करना। २ बहुत अधिक दुलार कर बच्चो को बिगाडना।
मयो० क्रि०—डालना।
अ० दुलारे बच्चो की-सी चेष्टा या व्यवहार करना। (परिहास और व्यग्य)

दुलरी—स्त्री० = दुलडी।

दुलरुआ†—वि० = दुलारा।

दुलहन—स्त्री० [हि० दुलहा का स्त्री०] १ वह स्त्री जो अभी व्याह कर लाई गई हो। वधू। २ पत्नी। (पूरब)

दुलहा—पु० [स० दुर्लभ] [स्त्री० दुलहन] १. वर जिसका विवाह तुरत होने को हो या हुआ हो। वर। २ पति। (पूरब) ३ रहस्य-सप्रदाय मे, परमात्मा।

दुलहाई†—स्त्री० [हि० दुलहा] विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। (पूरब)

दुलहिन—स्त्री० = दुलहन।

दुलहिया†—स्त्री० = दुलहन।

दुलही†—स्त्री० = दुलहन।

दुलहेटा—पु० [स० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह+हि० बेटा] १. दुलहा। २ दुलारा बेटा।

दुलाई—स्त्री० [स० तूल=रूई, हि० तुलाई, तुराई] कपडे की दो परतो-वाला सिला हुआ वह मोटा ओढना जिसमे रूई भरी होती है। हलकी रजाई।

दुलाना†—स० = डुलाना।

दुलार—पु० [हि० दुलारना] १ छोटे बच्चो के प्रति किया जानेवाला ऐसा स्नेहपूर्ण व्यवहार जो उन्हें खूब प्रसन्न रखने के लिए किया जाता है। २. वह धृष्टतापूर्ण आचरण जो बच्चे उमग मे आकर बडो के प्रति करते है।
मुहा०—किसी का दुलार रखना=अपने से छोटे का आग्रह या हठ मानना। उदा०—राखा मोर दुलार गोसाई।—तुलसी।

दुलारना—स० [स० दुर्लाल, प्रा० दुल्लाउन] १ बच्चो मे दुलार करना। २ बहुत दुलार करके बच्चो को बिगाडना।

दुलारा—वि० [हि० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार किया गया हो या किया जाता हो। लाडला।

दुलारी—वि० हि० 'दुलारा' का स्त्री०।
† स्त्री० = दुलाई (ओढने की)।
† स्त्री० = दुलारो (चेचक या माता)।

दुलारो—स्त्री० [हि० दुलार ?] एक प्रकार की माता या चेचक।

दुलाल—पु० [?] एक प्रकार का चपा (फूल)।
† पु० = दुलार।

दुलि—स्त्री० [स०=डुलि] कच्छपी।

दुलीचा—पु० [हि० गलीचा का अनु०] १. गलीचा। कालीन। २ छोटा ऊनी आसन।

दुलेहटा†—पु० =दुलहेटा।

दुलैचा—पु० = दुलीचा।

दुलोही†—स्त्री० [हि० दो+लोहा] एक प्रकार की तलवार जो लोहे के दो टुकडो को जोडकर बनाई जाती है।

दुल्लभ†—वि० = दुर्लभ।

दुल्ली—स्त्री० = दुल्लो।

दुल्लो—स्त्री० [हि० दो+ला (प्रत्य०)] लडको के खेल मे वह गोली जो मीर या पहली गोली के बाद ठहरी या पडी हो। दूर तक जानेवाली गोलियो मे पहली के बादवाली गोली।

दुल्हन, दुल्हैया†—स्त्री० = दुलहन।

दुव †—वि० [स० द्वि] दो।

दुवन्—पु० [स० दुर्मनस्] १ दुष्ट चित्त का मनुष्य। खल। दुर्जन। २ दुश्मन। वैरी। शत्रु। ३. राक्षस।

दुवन्नी—स्त्री ० = दुअन्नी (सिक्का)।

दु-वरकी—स्त्री० [हि० दो+वरक = पन्ना या पृष्ठ] स्त्री की भग। योनि। (बाजारू और अश्लील व्यग्य)
मुहा०—दु वरकी का सबक पढ़ाना = (क) स्त्रियो का आपस मे भग-सघर्ष के द्वारा मैथुन करना। चपटी लडना। (मुसलमान स्त्रियाँ) (ख) मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

दुवा—पु० = दूआ (दुक्की)।
स्त्री० = दुआ (प्रार्थना)।

दुवाज—पु० [?] एक प्रकार का घोडा।

दुवाद—वि० = द्वादश।

दुवाद बानी—वि० [स० द्वादश = सूर्य +वर्ण] स्वर्ण जो सूर्य के समान दमकता हुआ हो अर्थात् बिलकुल खरा। बारहबानी (सोना)।

दुवादसी †—स्त्री० = द्वादशी।

दुवार†—पु० =द्वार।

दुवारिका†—स्त्री० = द्वारका।

दुवाल—स्त्री० [फा०] १ चमडे का तसमा। २ रकाब का तसमा।

दुवालबद—पु० [फा०] १ चमड़े का चौडा तसमा जो कमर आदि मे लपेटा जाय। चपरास या पेटी का तसमा। २ वह जो पेटी बाँधता हो अर्थात् सिपाही।

दुवाली—स्त्री० [देश०] रगे या छपे हुए कपडो पर चमक लाने के लिए घोटने का बेलन। घोटा। २ वह परतला जिसमे तलवार या बन्दूक लटकाई जाती है।

दुवालीबंद—पु० [फा०] परतला आदि लगाये हुए तैयार सिपाही।

दुविद†—पु० = द्विविद।

दुविधा—स्त्री० [स० द्विविधा] ऐसी मन स्थिति जिसमे दो या कई बातो मे से किसी बात का निश्चय न हो रहा हो। दुबधा।

दुवो†—वि० [हि० दुव = दो + उ = ही] दोनों।

दुशमन—पु० = दुश्मन।
दुशवार—वि० [फा० दुश्वार] [भाव० दुशवारी] १ कठिन। मुश्किल। २. दु.सह।
दुशवारी—स्त्री० [फा०] १. दुशवार होने की अवस्था या भाव। २. कठिन काम। ३. विपत्ति या सकट की अवस्था।
दुशाला—पु० [फा० दोशाल] पशमीने की वढिया चादरों का जोटा जिसके किनारो पर पशमीने की रग-विरगी वेल वनी रहती है।
मुहा०—दुशाले मे लपेटकर मारना या लगाना = इस प्रकार आडे हाथ लेना कि ऊपर से देखने में अनुचित न जान पड़े अथवा अप्रिय न लगे। मीठी-मीठी वाते कहते हुए कठोर व्यग्य करना।
दुशाला-पोश—वि० [फा०] जो दुशाला ओढे हो। जो अच्छे कपडे पहने हो।
पु० अमीर। धनवान।
दुशासन—पु० = दु शासन।
दुश्चर—वि० [स० दुर्√चर् (गति)+ खल्] [भाव० दुश्चरण] = दुष्कर।
दुश्चरित—वि० = दुश्चरित्र।
दुश्चरित्र—वि० [स० दुर्-चरित्र प्रा० व० स०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] १. वुरे या खराव आचरण या चाल-चलनवाला। वद-चलन। २. जिस पर या जिसमे चलना कठिन हो।
पु० [प्रा० स०] १ निंदनीय या वुरा आचरण। वद-चलनी। २ पाप। गुनाह।
दुश्चर्मा—(चर्मन्) पु०[स० दुर्-चर्म्मन, प्रा० व० स०] वह पुरुष जिसकी लिंगेन्द्रिय के मुख पर ढाकनेवाला चमड़ा न हो।
दुश्चलन—पु० [स० दु. + हिं० चलन] दुराचरण। खोटी चाल।
दुश्चित्य—वि० [स० दुर्√चिन्त् (ध्यान)+यत्] जिसका चितन कठिनता से हो सके।
दुश्चिकित्स—वि० = दुश्चिकित्स्य।
दुश्चिकित्सा—स्त्री० [स० दुर्-चिकित्सा प्रा० स०] आयुर्वेद-सवधी चिकित्सा के नियमो के विरुद्ध की जानेवाली चिकित्सा। दूषित चिकित्सा।
दुश्चिकित्स्य—वि० [स० दुर्√कित्+सन्, द्वित्वादि, +यत्] १ जिसकी चिकित्सा करना वहुत कठिन हो। २. असाध्य। (रोग और रोगी दोनो के सम्वन्ध मे)
दुश्चिक्य—पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से तीसरा स्थान।
दुश्चित्—पु० [स० दुर्-चित् प्रा० स०] १. आशका। खटका। २ घवराहट। विकलता।
दुश्चेष्टा—स्त्री० [स० दुर्-चेष्टा प्रा० स०] [वि० दुश्चेष्टित] कुचेष्टा। वुरी चेष्टा।
दुश्चेष्टित—पु० [सं० दुर्-चेष्टित प्रा० स०] १. निंदनीय या वुरा काम। दुष्कर्म। २ छोटा या नीच काम। ३. पाप। गुनाह।
दुश्च्यवन—वि० [स० दुर्-च्यवन प्रा० व० स०] १ जो जल्दी च्युत न हो सके। २ जो जल्दी विचलित न हो।
पु० इन्द्र।
दुश्च्याव—वि० [स० दुर्-च्याव प्रा० व० स०] जो जल्दी च्युत न किया जा सके।
पुं० शिव। महादेव।
दुश्मन—पु० [फा०] [भाव० दुश्मनी] वैरी। शत्रु।
दुश्मनी—स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।
दुष्कर—वि० [स० दुर्√कृ(करना)+खल्] (काम) जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दु साध्य।
पु० आकाश। आसमान।
दुष्कर्ण—पु० [स० दुर्-कर्ण प्रा० व० स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुष्कर्म (न्)—पु० [सं० दुर्-कर्मन् प्रा०स०] [वि० दुष्कर्म्मा] १. ऐसा काम जिसे करना वहुत कठिन हो। २. अनुचित, निंदनीय, तथा वुरा काम।
दुष्कर्मा (र्मन्)—वि०[स० दुर्-कर्मन् प्रा० व०स०] दुष्कर्म करनेवाला।
दुष्कर्मी (र्मिन्)—वि०[स० दुष्कर्म+इनि] १ दुष्कर्म या वुरे काम करनेवाला। २ दुराचारी।
दुष्काल—पु०[स० दुर्-काल प्रा०स०] १. वुरा वक्त। कुसमय। २. अकाल। दुर्भिक्ष। ३. शिव का एक नाम।
दुष्काव्य—पु०[स० दुर्-काव्य प्रा०स०] १. ऐसा काव्य जिसकी रचना वहुत कठिन हो अथवा जो सहज मे समझा न जा सके। २ घटिया दरजे का या वुरा काव्य।
दुष्कीर्ति—स्त्री०[स० दुर्-कीर्ति प्रा०स०] वुरी कीर्ति। वदनामी।
दुष्कुल—वि०[स० दुर-कुल प्रा० व० स०] नीच कुल का। तुच्छ घराने का।
पु०[प्रा०स०] नीच कुल। खराव खानदान या घराना।
दुष्कुलीन—वि० [स० दुष्कुल+ख—ईन] निम्न कुल या नीच घराने का।
दुष्कुलेय—वि०[स० दुष्कुल+ढक्—एय] दुष्कुलीन।
दुष्कृत—पु०[स० दुर्-कृत प्रा० स०] दुष्कर्म।
दुष्कृति—वि०[स० दुर्-कृति प्रा० व०स०] दुष्कृत्य करनेवाला। कुकर्मी।
पु०[प्रा०स०] वुरा काम। कुकर्म। दुष्कृत्य।
दुष्कृती (तिन्)—वि०[स० दुष्कृत+इनि] दुष्कर्म करनेवाला।
दुष्क्रम—पु०[स० दुर्-क्रम प्रा०स०] १. अनुचित या कठिन क्रम। २. साहित्य मे, किसी उक्ति या रचना के अन्तर्गत लोक विहित या शास्त्र विहित क्रम की उपेक्षा या उल्लघन जो अर्थ-सवधी एक दोष माना गया है।
दुष्क्रीत—वि०[स० दुर्√क्री (खरीदना)+क्त] १. जो वहुत कठिनाई से खरीदा गया हो। २. महँगा।
दुष्खदिर—पुं०[सं० दुर्-खदिर प्रा०स०] एक प्रकार का खैर का पेड़ जिसका कत्था घटिया दरजे का होता है। क्षुद्र खदिर।
दुष्ट—वि० [स०√दुष् (विकृति)+क्त] [स्त्री० दुष्टा] १ जिसमे दोष हो। दूषित। २ जो जान-वूझकर दूसरों को कष्ट देता अथवा तग या परेशान करता हो। दूषित मनोवृत्तिवाला। ३. पित्त आदि दोषो से युक्त (रोग या व्यक्ति)।
पु० कुष्ठ या कोढ नाम का रोग।
दुष्टचारी (रिन्)—वि०[स० दुष्ट√चर् (गति)+णिनि] [स्त्री० दुष्टचारिणी] १. वुरा आचरण करनेवाला। दुराचारी। २. खल दुर्जन।

दुष्ट-चेता (तस्)—वि०[स० ब०स०]१. बुरी बात सोचनेवाला। २. दूसरों का अहित या बुरा चाहनेवाला। अशुभ-चिन्तक । ३. कपटी। छली। धोखेबाज।

दुष्टता—स्त्री०[स० दुष्ट+तल्—टाप्]१ दुष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. दोष। ऐब। ३. खराबी। बुराई। ४. पाजीपन। शरारत। ५. बदमाशी।

दुष्टत्व—पु०[स० दुष्ट+त्व]=दुष्टता।

दुष्टपना—पु०[हिं० दुष्ट+पन (प्रत्य०)] दुष्टता।

दुष्टर†—वि०=दुस्तर।

दुष्टव्रण—पु०[कर्म०स०]१. वह व्रण या घाव जिसमे से दुर्गंध निकलती हो। २. असाध्य व्रण या घाव।

दुष्ट-साक्षी (क्षिन्)—पु० [स० कर्म० स०] वह गवाह जो गलत या झूठी गवाही दे। बुरा गवाह।

दुष्टा—वि०[स० दुष्ट+टाप्] 'दुष्ट' का स्त्री० ।

दुष्टाचार—पु०[दुष्ट-आचार कर्म०स०]१. खराब या बुरा आचरण। २. अनुचित और निंदनीय काम। दुष्कर्म।
वि०=दुराचारी।

दुष्टाचारी (रिन्)—वि०[स० दुष्टाचार+इनि] [स्त्री० दुष्टाचारिणी] १. अनुचित या बुरे काम करनेवाला। २. जिसका आचरण अच्छा न हो।

दुष्टात्मा (त्मन्)—वि०[दुष्ट-आत्मन् ब०स०] बुरे अन्त.करण या विचारोवाला।

दुष्टान्न—पु०[दुष्ट-अन्न कर्म०स०]१ विगड़ा हुआ या खराब अन्न। २ बासी या सडा हुआ अन्न अथवा भोजन। ३ कुत्सित उपायो से प्राप्त किया हुआ अन्न या भोजन। पाप की कमाई का अन्न या भोजन। ४ कुत्सित कमाई करनेवाले या नीच व्यक्ति का अन्न या भोजन।

दुष्टि—स्त्री०[स०√दुष् (विकृति)+क्तिच्]=दोष।

दुष्पच—वि०[स० दुर्√पच् (पाक)+खल्]१ (फल आदि) जो कठिनता से पके। २ (खाद्य पदार्थ) जो कठिनता से पचे।

दुष्पत्र—पु०[स० दुर्-पत्र प्रा० ब०स०] चोर या चोरक नामक गध द्रव्य।

दुष्पद—वि०[स० दुर्√पद् (गति)+खल्]=दुष्प्राप्य।

दुष्पराजय—वि०[स० दुर-पराजय प्रा० ब० स०] जिसे पराजित करना कठिन हो।
पु० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्परिग्रह—वि०[स० दुर्-परि√ग्रह् (पकड़ना)+खल्] जिसे पकडना अर्थात् अधिकार या वश मे करना कठिन हो।

दुष्परिमेय—वि०[स० दुर्-परि√मा(नापना)+यत्] जिसे नापना सहज न हो।

दुष्पर्श—वि०[स० दुर्-स्पृश् (छूना)+खल्] १ जिमे स्पर्श करना कठिन हो। जिसे छूना सहज न हो। २ जो जल्दी मिल न सके। दुष्प्राप्य।

दुष्पर्शा—स्त्री०[सं० दुष्पर्श+टाप्] जवासा।

दुष्पार—वि०[स० दुर्√पार् (पार होना)+खल्]१. जिसे कठिनता से पार किया जा सके। २. (कार्य) जो बहुत कठिन या दुस्साध्य हो।

दुष्पूर—वि० [स० दुर्√पूर (भरना)+खल्] १. जिसे भरना कठिन हो। २. जो जल्दी पूरा न हो सके। कठिनता से पूरा होनेवाला। ३ जिसका जल्दी या सहज मे निवारण न हो सके।

दुष्प्रकृति—वि०[स० दुर्-प्रकृति प्रा० बा० स०] बुरी प्रकृति या खराब स्वभाववाला (व्यक्ति)।
स्त्री० खराब या बुरी प्रकृति अथवा स्वभाव।

दुष्प्रधर्ष—वि०[स० दुर-प्र√धृष् (दबाना)+खल्] जिसे कठिनता से पकड़ा जा सके।
पु० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्प्रधर्षा—स्त्री०[सं० दुष्प्रधर्ष+टाप्]१. जवासा। हिंगुवा। २. खजूर।

दुष्प्रधर्षिणी—स्त्री० [स० दुष्प्रधर्ष+इनि—ङीप्] १. कटकारी। भटकटैया। २ बैंगन। भंटा।

दुष्प्रयोग—पु०[सं० दुर्-प्रयोग प्रा० ब० स०] =दुरुप्रयोग।

दुष्प्रवृत्ति—स्त्री०[स०दुर्-प्रवृत्ति प्रा०ब०स०] अनुचित या बुरी प्रवृत्ति।
वि० दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुष्प्रवेशा—स्त्री० [स० दुर्-प्र√विश् (प्रवेश)+खल्-टाप्]) कथारी वृक्ष।

दुष्प्राप्य—वि०[स० दुर्-प्र√आप् (प्राप्त करना)+ण्यत्] जो कठिनता से प्राप्त किया जा सके। जो आसानी से या जल्दी प्राप्त न हो सकता हो।

दुष्प्रेक्ष—वि०[सं० दुर्-प्र√ईक्ष् (देखना)+खल्]=दुष्प्रेक्ष्य।

दुष्प्रेक्ष्य—वि०[सं० दुर्-प्र√ईक्ष्+ण्यत्] १. जिसे देखना कठिन हो। जो सहज मे न देखा जा सके। २ जो देखने मे बहुत बुरा लगे। कुरूप। भद्दा। ३ भीषण। विकराल।

दुष्मंत*—पु०=दुष्यत।

दुष्यंत—पु०[स०] महाभारत मे वर्णित एक प्रसिद्ध पुरुवशी राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' मे इसी दुष्यत तथा शकुन्तला की प्रेम-गाथा लिखी है।
*पु०[स० दु ख+अत] दु ख का अत।

दुष्योदर—पु०[स० दुष्य-उदर ब०स०] एक प्रकार का उदर रोग जो प्राय. असाध्य होता है।

दुसत*—पु०=दुष्यत।

दुसट†—वि० [स० दुष्ट] १. बुरा। खराब। २. नीच। उदा०—दुसट सासना भली दइ।—प्रिथीराज।

दुसराता—स०=दोहराना।

दुसरिहा†—वि०[हिं० दूसरा+ हा (प्रत्य०)] १ अन्य। दूसरा। २ सगी। साथी। ३ दूसरी बार होनेवाला। ४ अपर या विरोधी पक्ष का। प्रतिद्वंद्वी। प्रतियोगी। (पूरब)

दुसह—वि०[स० दु सह]जो सहज मे सहा न जाय। दुस्सह।

दुसही—वि०[हिं० दुसह+ई (प्रत्य०)] १. जिसे सहना बहुत कठिन हो। २ जो दूसरो की उन्नति, भलाई आदि देख या सह न सके; अर्थात् ईर्ष्या या डाह करनेवाला।

दुसाखा—पु०=दोशाखा।

दुसाध—पु०[स० दोषाद वा दु साध्य] हिंदुओं में एक जाति जो सूअर पालती

दुहेल†—पुं०[स० दुर्हेल] दु ख। विपत्ति। मुसीवत।
दुहेलरा†—वि०[स्त्री० दुहेलरी]=दुहेला।
†पु०=दुहेला।
दुहेला—वि०[स० दुर्हेल= कठिन खेल] [स्त्री० दुहेली] १ कष्ट-प्रद। दु खदायी। २. दु साध्य। कठिन। उदा०—भगति दुहेली राम की।—कवीर। ३ कष्ट या विपत्ति मे पडा हुआ। दीन। दुखिया। उदा०—दरस विनु खडी दुहेली।—मीराँ। ४. दु खमय। दु खपूर्ण।
पु० विकट या दु खदायक कार्य।
दुहैया†—वि०[हिं० दुहना] गौ, भैंस आदि दूहने का काम करनेवाला।
†स्त्री०=दुहाई।
दुहोतरा†—वि०[हिं० दो+स० उत्तर] गिनती मे दो से अधिक।
पु०=दोहतरा (नाती)।
दुह्य—वि०[स०] [स्त्री० दुह्या] १. जिसे दूहा जा सके। दूहे जाने के योग्य। २ जो दूहा जाने को हो।
दुह्यु—पुं०[स०] शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा के एक पुत्र का नाम।
दूंगड़ा —पु०=दौंगरा।
दूंगरा†—पु०=दौगरा।
दूंद—पु०[स० द्वद्व]१ ऊधम। उपद्रव।
क्रि० प्र०—मचाना।
२ दे० 'द्वद्व'।
दूंदना—अ०[हिं० दूंद]१ उपद्रप करना। ऊधम मचाना। २ जोर का शब्द करना।
दूंदर†—वि०[स० द्वद्व] वलवान्। शक्तिशाली।
दूंदि*—स्त्री०=दूंद।
दू†—वि०=दो।
दूआ—पु०[हिं० दो+आ (प्रत्य०) १ ताश या गजीफे मे वह पत्ता जिस पर दो वूटियाँ या विंदियाँ हों। दुक्की। २ पासे, सोलही आदि का ऐसा दाँव जिसमे दो विंदियाँ ऊपर रहती अथवा दो कौडियाँ चित्त पडती है। (जुआरी)
†वि०=दूसरा।
पु० [देश०] कलाई पर सब गहनो के पीछे की ओर पहना जानेवाला पिछेली नामक गहना।
†स्त्री०=दुआ।
दूइ†—वि०=दो।
दुइज—स्त्री०=दूज (द्वितीया तिथि)।
दूई—वि०=दो।
स्त्री०=दुई।
दूक—वि०[स० द्वैक]दो एक, अर्थात् कुछ या थोडे से।
दूकान—स्त्री०=दुकान।
दूकानदार—पु०=दुकानदार।
दूकानदारी—स्त्री०=दुकानदारी।
दूख†—पुं०=दु ख।
दूखन†—पु०=दूषण।
दूखना†—स० [स० दूषण+ना (प्रत्य०)] किसी पर दोप लगाना। किसी को वुरा ठहराना या वताना।
अ०[?] नष्ट होना।
स० नष्ट करना।
अ०=दुखना।
दूखित†—वि०१ =दूषित। २.=दु.खित।
दूगला—पु०[देश०] एक तरह का वडा टोकरा।
†वि०, पु०=दोगला।
दूगुन—वि०=दूना (दुगुना)।
स्त्री०=दुगून।
दूगू—पु०[देश०] एक तरह का पहाडी वकरा।
दूज—स्त्री० [स० द्वितीया, प्रा० दुइय, दुइज], चाद्रमास के हर पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।
पद—दूज का चाँद=ऐसा व्यक्ति जो वहुत दिनो पर दिखाई देता या मिलता हो। (परिहास और व्यग्य)
दूजा—वि० [स० द्वितीया, प्रा० दुइय] [स्त्री० दूजी] १ दूसरा। (पश्चिम) २. पराया।
दूझना†—स०[स० दु ख] कष्ट या दु ख देना।
दूझा†—वि०=दूजा।
दूत—पु०[स०√दू(दु खी होना)+क्त][स्त्री० दूती]१. वह व्यक्ति जो किसी का सदेश लेकर कही जाय। दूसरो के सदेश अभिप्रेत व्यक्ति तक पहुँचानेवाला। २ प्रेमी और प्रेमिका के सदेश एक दूसरे को पहुँचानेवाला व्यक्ति। ३. वह जो एक दूसरे की वाते इधर-उधर लगाकर दोनो पक्षो मे लडाई-झगडा कराता हो। (क्व०) ४ दे० 'राजदूत'।
दूतक—पु०[स० दूत+कन्]१ प्राचीन भारत मे, वह कर्मचारी जो राजा की दी हुई आज्ञा का सर्व-साधारण मे प्रचार करता था। २ दूत।
दूतकत्व—पु०[स०दूतक+त्व]१ दूतक का काम, पद या भाव। २ दूत का काम, पद या भाव।
दूत-कर्म (न्)—पु०[प० त०] दूत का काम। दूतत्व।
दूत-काव्य—पु०[मघ्य०स०] ऐसा काव्य जिसमे मुख्यत किसी दूत के द्वारा प्रिय के पास विरह निवेदन भेजा गया हो। जैसे—मेघदूत, पवनदूत।
दूतघ्नी—स्त्री० [स० दूत√हन् (हिंसा)+टक्—ङीप्] गोरखमुडी। कदवपुष्पी।
दूतता—स्त्री० [स० दूत+तल्—टाप्] दूत का काम, पद या भाव। दूतत्व।
दूतत्व—पु०[स० दूत+त्व] दूत का काम, पद या भाव। दूतता।
दूतपन—पु०[स० दूत+हिं० पन (प्रत्य०)] दूतत्व।
दूत-मडल—पु०[प०त०] आधुनिक राजनीति मे, एक देश से दूसरे देश को किसी काम के लिए भेजे हुए दूतो का दल या समूह।
दूतर†—वि०=दुस्तर।
दूतायन—पु० दे० 'दूतावास'।
दूतावास—पु० [दूत-आवास प०त०] वह भवन या क्षेत्र जिसमे किसी

दूसरे राज्य के राजदूत तथा उसके साथ के कर्मचारी रहते तथा काम करते हों। राजदूत का कार्यालय। (लीगेशन)

दूति—स्त्री०[सं०√दू+ति]=दूती।

दूतिका—स्त्री०[सं० दूति+कन्—टाप्] दूती।

दूती—स्त्री० [सं० दूति+ङीप्] १. संदेश पहुँचानेवाली स्त्री। २. साहित्य में, वह स्त्री जो प्रेमिका का संदेश प्रेमी तक और प्रेमी का संदेश प्रेमिका तक पहुँचाती है। इसके उत्तमा, मध्यमा और अधमा तीन भेद हैं। ३. दे० 'कुटनी'।

दूत्य—पुं०[सं० दूत+य] दूत का काम, पद या भाव।

दूद—पुं०[फा०] धूआँ।

दूदकश—पुं०[फा०]१. धूआँ बाहर निकालने की चिमनी। २. एक प्रकार का दमकला जिससे धूआँ देकर पौधों में लगे हुए कीड़े नष्ट किये जाते हैं।

दूदला—पुं०[देश०] एक तरह का पेड़। डुडला।

दूदुह—पुं०[सं० दुंदुभ] पानी का साँप। डेड़हा। (डि०)

दूध—पुं०[सं० दुग्ध] १. सफेद या हलके पीले रंग का वह पौष्टिक तरल पदार्थ जो मादा स्तनपायी जीवों के स्तनों में शिशु के जन्म लेने पर उत्पन्न होता है, तथा जिसे वे नवजात शिशुओं को पिलाकर उनका पालन-पोषण करती हैं।

मुहा०—**दूध उतरना**=संतान होने के समय मादा के स्तन में दूध का आविर्भाव होना। (किसी के मुँह से) **दूध की बू आना**=अवस्था या वय के विचार से दूध पीनेवाले बच्चों से कुछ ही बड़ा होना। अल्पवयस्क होना। **दूध चढ़ना**=दुहते समय गाय, भैंस आदि का अपने दूध को स्तनों में ऊपर की ओर खींच ले जाना जिससे दुहनेवाला उसको खींचकर बाहर न निकाल सके। (बच्चे का दूध) **छुड़ाना**=बच्चे की दूध पीने की प्रवृत्ति इस प्रकार धीरे-धीरे कम करना कि वह माता का दूध पीना छोड़ दे। (बच्चे का) **दूध टूटना**=स्तनों से निकलनेवाले दूध की मात्रा कम होना। **दूध डालना**=बच्चे का दूध पीते ही उसे उगलकर बाहर निकाल देना। जैसे—दो तीन दिन से यह बच्चा दूध डाल रहा है। (मादा का) **दूध दुहना**=स्तनों को बार बार दबाते हुए उनमें से दूध बाहर निकालना। **दूध बढ़ाना**=दे० 'दूध छुड़ाना'। (देखें ऊपर)

पद—**दूध का बच्चा**=वह छोटा बच्चा जो केवल दूध पीकर रहता हो। **दूध के दाँत**=छोटे बच्चे के वे दाँत जो पहले-पहल दूध पीने की अवस्था में निकलते हैं और छ. सात वर्ष की अवस्था में जिनके गिर जाने पर दूसरे नये दाँत निकलते हैं। **दूध-पीता बच्चा**=गोद में रहनेवाला वह छोटा बच्चा जिसका आहार अभी तक केवल दूध हो। **दूधों नहाओ, पूतों फलो**=धन-संपत्ति और संतान आदि की ओर से खूब सुखी रहो। (आशीष)

२. गाय, बकरी, भैंस आदि के थनों को दुहकर निकाला जानेवाला उक्त तरल पदार्थ।

मुहा०—**दूध उछालना**=खौलते हुए दूध को ठंढा करने के लिए कड़ाही आदि में से निकालकर बार-बार ऊपर से नीचे गिराना। (किसी को) **दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकाल देना**=किसी मनुष्य को परम अनावश्यक और तुच्छ अथवा हानिकारक समझकर अपने साथ या किसी कार्य से बिलकुल अलग कर देना। **दूध तोड़ना**=गरम दूध खूब हिलाकर ठंढा करना। (किसी चीज का) **दूध पीना**=बहुत ही सुरक्षित अवस्था में बना रहना। जैसे—आपके रुपए दूध पीते हैं, जब चाहें तब ले लें। **दूध फटना**=दूध में किसी प्रकार का रासायनिक विकार होने अथवा विकार उत्पन्न किये जाने पर जलीय अंश का उसके सार भाग से अलग होना। **दूध फाड़ना**=खटाई आदि डालकर ऐसी क्रिया करना जिससे दूध का जलीय अंश और सार भाग अलग हो जाय।

पद—**दूध का दूध और पानी का पानी**=ऐसा ठीक और पूरा न्याय जिसमें उचित और अनुचित बातें एक दूसरे से बिलकुल अलग होकर स्पष्ट रूप से सामने आ जायँ। ठीक उसी तरह का न्याय जिस तरह पानी मिले हुए दूध में से दूध का अंश अलग और पानी का अंश अलग हो जाता हो। **दूध का-सा उबाल**=उसी प्रकार का कोई क्षणिक आवेग, आवेश या मनोविकार जो उबलते हुए दूध के उबाल की तरह बहुत थोड़ी देर में धीमा पड़ जाता या शांत हो जाता हो।

३. कई प्रकार के पत्तों, फलों, बीजों आदि में से निकलनेवाला गाढ़ा सफेद रस। जैसे—गेहूँ, बरगद या मदार का दूध।

मुहा०—(किसी चीज में) **दूध आना या पड़ना**=उक्त प्रकार से रस का आविर्भाव होना जो दानों, बीजों आदि के तैयार होने या पकने का सूचक होता है।

४. रासायनिक क्रिया से दूध का बना हुआ सूखा चूर्ण जो प्रायः डिब्बों में बंद किया हुआ मिलता है।

दूध-चढ़ी—वि०[हिं० दूध+चढ़ना] जो बहुत अधिक दूध देती हो।

दूध-पिलाई—स्त्री०[हिं० दूध+पिलाना]१. दूध पिलानेवाली दाई। २. दूसरे के बच्चे को अपने स्तन का दूध पिलाने के बदले में मिलनेवाला धन। ३. विवाह के समय की एक रसम जिसमें वर की माँ उसे (वर को) दूध पिलाने की-सी मुद्रा करती है। ४. उक्त रसम के समय माता को मिलनेवाला नेग।

दूध-पूत—पुं०[हिं० दूध+पूत=पुत्र] धन और संतति।

दूध-फेनी—स्त्री०[सं० दुग्धफेनी] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

स्त्री० [हिं० दूध+फेनी] दूध में भिगोई या पकाई हुई फेनी।

दूध-बहन—स्त्री०=दूध-भाई का स्त्री० (दे० 'दूध-भाई')।

दूध भाई—पुं०[हिं० दूध+भाई] [स्त्री० दूध-बहन] ऐसे दो बालक में से कोई एक जो किसी एक स्त्री के स्तन का दूध पीकर पले हों फि भी जो अलग-अलग माता-पिता से उत्पन्न हुए हों।

दूध-मलाई—स्त्री०[हिं०] पुरानी चाल की एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

दूध-मसहरी—स्त्री० [हिं० दूध+मसहरी] एक तरह का रेशमी कपड़ा।

दूधमुँहाँ—वि०=दुध-मुँहाँ।

दूधमुख—वि०=दुध-मुँहाँ।

दूधराज—पुं०[देश०]१. एक प्रकार की बुलबुल जो भारत, अफगानिस्तान और तुर्किस्तान में पाई जाती है। इसे शाह बुलबुल भी कहते हैं। २. बहुत बड़े फनवाला एक प्रकार का साँप।

दूध-सार—पुं०[हिं० दूध+सं०सार]१ एक प्रकार का बढ़िया केला। २. रासायनिक क्रियाओं से बनाया हुआ दूध का सत जो सूखे चूर्ण के रूप में बाजारों में बिकता है।

दूध हंडी—स्त्री०[हिं० दूध+हंडी] वह हाँड़ी जिसमे दूध गरमाया अथवा रखा जाता हो।

दूधा—पु०[हिं० दूध]१ एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है और जिसका चावल वर्षों तक रह सकता है। २ अन्न के कच्चे दानो मे से निकलनेवाला दूध की तरह का सफेद रस।

दूधाधारी—वि०=दूधाहारी।

दूधा-भाती—स्त्री०[हिं० दूध+भात] विवाह के उपरात की एक रसम जिसमे वर और कन्या एक दूसरे को दूध और भात खिलाते है।

दूधाहारी—वि०[हिं० दूध+आहारी] जो केवल दूध पीकर निर्वाह करता हो, अन्न, फल आदि न खाता हो।

दूधिया—वि०[हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १ जिसमे दूध मिला हो अथवा जो दूध के योग से बना हो। जैसे—दूधिया भाँग, दूधिया हलुआ। २ जिसमे दूध होता हो। जैसे—दूधिया सिघाड़ा। ३. जो दूध के रूप मे हो। जैसे—दूधिया निर्यास। ४. दूध के रग का। ५ ऐसा सफेद जिसमे कुछ नीली झलक हो। (मिल्की)

पु०१ एक तरह का सोहन हलुआ जो दूध के योग से बनता है। २. एक प्रकार का सफेद रत्न। ३ एक प्रकार का सफेद तथा मुलायम पत्थर। ४ ऐसा सफेद रग जिसमे नीली झलक हो। ५ एक तरह का बढिया आम।

स्त्री० [सं० दुग्धिका]१. दुद्धी नाम की घास। २ एक प्रकार की चरी या ज्वार। ३ खड़िया या खड़ी नामक सफेद खनिज मिट्टी। ४ एक प्रकार की चिड़िया जिसे लटोरा भी कहते हैं।

दूधिया-कंजई—पु०[हिं०] एक प्रकार का रग जो नीलापन लिये हुए भूरा अर्थात् कजे के रग से कुछ खुलता होता है।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

दूधिया खाकी—वि०[हिं० दूधिया+खाकी] सफेद राख के से रंगवाला।

पुं० उक्त प्रकार का रग।

दूधिया-पत्थर—पु०[हिं० दूधिया+पत्थर] १ एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिससे कटोरियाँ, प्याले आदि बनते है। २ एक प्रकार का बहुत चमकीला और चिकना बडा पत्थर जिसकी गिनती रत्नो मे होती है।

दूधिया-विष—पु०[हिं० दूधिया+विष] कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुन्दर पौधे काश्मीर तथा हिमालय के पश्चिमी भाग मे मिलते हैं। इसे 'तेलिया विष' और 'मीठा जहर' भी कहते हैं।

दूधी†—स्त्री०=दुद्धी।

दून—स्त्री०[हिं० दूना] १ दूने होने की अवस्था या भाव।

मुहा०—**दून की लेना या हाँकना**=अपनी शक्ति, सामर्थ्य आदि के सबध मे बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी हाँकना। **दून की सूझना**=ऐसी बात सूझना जो सहज मे पूरी न हो सकती हो।

२. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय आगे चलकर लय बढाते हुए उससे आधे समय मे उसे पूरा करना। ३ ताश के खेल मे, वह स्थिति जब कोई खिलाडी या पक्ष बदी हुई सख्या मे सरें आदि न बना सकने के कारण दुगनी हार का भागी समझा जाता है।

वि० = दूना।

पुं०[देश०] दो पहाडों के बीच का मैदान। तराई। घाटी। जैसे—देहरादून।

दूनर—वि०[स० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दून-सिरिस—पु०[देश०] एक तरह का सफेद सुगंधित फूलोवाला सिरिस का पेड़।

दूना—वि०[स० द्विगुण] जितनी कोई संख्या या चीज हो, उससे उतने ही और अधिक अनुपात मे होनेवाला। दुगना। दोगुना। जैसे—४ का दूना ८ होता है।

दूनो†—वि०=दोनो।

दूब—स्त्री०[सं० दूर्वा] एक तरह की प्रसिद्ध घास जिसका व्यवहार हिंदू लोग लक्ष्मी, गणेश आदि के पूजन मे करते हैं।

दू-बदू—क्रि० वि० [फा०] १ आमने-सामने। मुहाँ-मुँह। जैसे—उनसे मिलकर दू-बदू बातें कर लो। २ मुकाबले मे। जैसे—तुम तो अपने बडो से भी दू-बदू कहा-सुनी करते हो।

दूबर†—वि०=दूबरा (दुबला)।

दूबरा—वि० [सं० दुर्बल] १ दुबला-पतला। क्षीण-काय। कृश। २. कमजोर। दुर्बल। ३ किसी की तुलना मे कम योग्यता या शक्ति-वाला अथवा हीन।

दूबला†—वि०=दुबला।

दूबा†—स्त्री० =दूब।

दूबिया—पुं०[हिं० दूब+इया (प्रत्य०)] एक तरह का हरा रग। हरी घास का-सा रग।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

दूबे—पु०[स० द्विवेदी] द्विवेदी ब्राह्मण।

दूभर—वि० [स० दुर्भर]१ जो कठिनता से सहन किया जा सके। २ कठिन। मुश्किल। जैसे—आज का दिन कटना दूभर हो रहा है।

दूमना—अ०[स० द्रुम] हिलना-डोलना।

दूमा—पु०[स०] एक प्रकार का पुरानी चाल का चमड़े का छोटा थैला जिसमे तिब्बत से चाय भर कर आती थी।

दूमुहाँ—वि०=दुमुँहाँ।

दूरंग†—पु०=दुर्ग (किला)। उदा०—सवा लष्प उत्तर सयल, कमऊँ गढ़ दूरग।—चदवरदाई।

दूरंगम—वि०[स० दूर√गम् (जाना)+खच्, मुम्]=दूरगामी।

दूरंतरी—अव्य०[स० दूरातरे] दूर से। उदा०—दुरंतरी आवतौ देखि।—प्रिथीराज।

दूरंदेश—वि०[फा० दूरअदेश] [भाव० दूरदेशी] अग्र-शोची। दूरदर्शी।

दूरंदेशी—स्त्री०[फा०] दूरदर्शिता।

दूर—वि०[स० दूर्√इ (गति)+रक्, धातु का लोप, रलोप, दीर्घ][फा० दूर] [भाव० दूरत्व, दूरी] जो देश, काल, सबध, स्थिति आदि के विचार से किसी निश्चित वस्तु, बिंदु, व्यक्ति आदि से बहुत अंतर या फासले पर हो। जो निकट, पास या समीप अथवा किसी से मिला हुआ न हो।

पद—**दूर का**=जो पास या समीप का न हो। जिससे घनिष्ठ लगाव या सबध न हो। जैसे—(क) वे भी हमारे दूर के रिश्तेदार है। (ख) ये सब तो बहुत दूर की बातें हैं। **दूर की बात**=(क) बहुत आगे

चलकर आनेवाली वात। (ख) वहुत कठिन और प्राय अनहोनी-सी वात। (ग) दूरदर्शिता और समझदारी की वात।

मुहा०—दूर की कहना=वहुत समझदारी की वात और दूरदर्शिता की वात कहना। दूर की सूझना=दूरदर्शिता की वात ध्यान मे आना। (ख) ऐसी वात का ध्यान मे आना जो प्राय अनहोनी या असभव हो। (व्यग्य)

क्रि० वि०१ देश, काल, सवध आदि के विचार से किसी निश्चित विंदु से वहुत अतर पर। वहुत फासले पर। 'पास' का विपर्याय। जैसे—उनका मकान यहाँ से वहुत दूर है। २. अलग। पृथक्। जैसे—वे झगडो से दूर रहते हैं।

मुहा०—दूर करना=(क) अलग या जुदा करना। अपने पास से हटाना। (ख) न रहने देना। नष्ट कर देना। जैसे—वीमारी दूर करना। दूर खिंचना, भागना या रहना=उपेक्षा, घृणा, तिरस्कार आदि के कारण विलकुल अलग रहना। पास न जाना। वचना। जैसे—इस तरह की वातो मे सदा दूर रहना चाहिए। दूर तक पहुँचना=दूर की या वहुत वारीक वात सोचना। दूर दूर करना=उपेक्षा, घृणा आदि के कारण तिरस्कारपूर्वक अपने पास से अलग करना या हटाना। दूर होना=(क) पास से अलग हो जाना। लगाव या सवध न रह जाना। जैसे—अव वे पुरानी आदतें दूर हो गई है। (ख) नष्ट हो जाना। मिट जाना। जैसे—वीमारी दूर हो गई है।

पद—दूर क्यों जायँ या जाइए=अपरिचित या दूर का दृष्टात न लेकर परिचित और निकटवाले का ही विचार करे। जैसे—दूर क्यो जायँ, अपने भाई-वदो को ही देख लीजिए।

दूरक—वि०[स० दूर+णिच्+ण्वुल्—अक] १. दूर करने या हटानेवाला। २ दूर या अलग रखनेवाला, और फलत विरोधी। उदा०—ये उभय परस्पर पूरक है अथवा दूरक यह कौन कहे।—मैथिलीशरण।

दूरगामी (मिन्)—वि०[स० दूर√गम् (जाना)+णिनि] दूर तक गमन करनेवाला।

दूर-चित्र—पु०[मध्य०स०] [वि० दूर-चित्री] वह चित्र या प्रतिकृति जो विद्युत् की सहायता से दूरी पर प्रस्तुत की जाती है। (टेलिफोटोग्राफ)

दूर-चित्रक—पु०[स० दूरचित्र+क्विप्+णिच्+ण्वुल्—अक] वह यत्र जिसकी सहायता से दूरचित्र प्रस्तुत किये जाते है। (टेलिफोटोग्राफ)

दूर-चित्रण—पु०[स० त०] दूर-चित्रक यत्र की सहायता से दूर-चित्र प्रस्तुत करने की क्रिया या प्रणाली। (टेलिफोटोग्राफी)

दूरता—स्त्री० [स० दूर+तल्—टाप्]=दूरी।

दूरता-मापक—पु०[ष०त०] एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से भू-मापन, युद्ध-क्षेत्र आदि मे वस्तुओ की दूरी जानी जाती है। (टेलिमीटर)

दूरत्व—पु०[सं० दूर+त्व] दूर होने की अवस्था या भाव। दूरी।

दूर-दर्श—पु०[प०त०] रेडियो की तरह का एक उपकरण जिसमे अभिनय प्रसारण, भाषण आदि करनेवाले व्यक्तियों के कथन सुनाई पड़ने के साथ-साथ उनके चित्र भी दिखाई पडते है। (टेलीविजन)

दूर-दर्शक—वि०[प०त०]१ दूरदर्शी। २ वुद्धिमान।

पु०दूर-वीन। दूर-वीक्षक। (दे०)

दूरदर्शक-यत्र—पु०[कर्म०स०] दूर-वीन। दूर-वीक्षक।

दूर-दर्शन—पु० [प०त०] १. दूर की चीज देखना या वात सोचना, समझना। २. [व०स०] गिद्ध। ३ वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसमे विद्युत् तरगों की सहायता से वहुत दूर के दृश्य प्रत्यक्ष रूप से सामने दिखाई देते हैं। ४. दे० 'दूर-दर्श'।

दूर-दर्शिता—स्त्री०[स० दूरदर्शिन्+तल्—टाप्] दूरदर्शीहोने की अवस्था, गुण या भाव। दूरदेशी।

दूरदर्शी (र्शिन्)—वि०[स०] वहुत दूर तक की वात पहले ही सोच तथा समझ लेनेवाला।

पुं०१. पडित। विद्वान्। २. वुद्धिमान्। ३. गिद्ध नामक पक्षी।

दूर-दृष्टि—स्त्री०[स०त०] भविष्य की वातो के सवध मे पहले से ही सोचने-समझने की शक्ति।

दूर-पात—वि०[व०स०] दूर से आने के कारण थका हुआ।

दूर-पार—अव्य०[हिं०]इसे दूर करो, और इसका नाम तक न लो।(स्त्रियाँ) उदा०—गाल पर ऊँगली को रखकर यूँ कहा। मैं तेरे घर जाऊँगी। ऐ दूर-पार।—रगी।

दूर-प्रसर—वि०[व०स०] दूर तक फैलनेवाला। उदा०—वे है समृद्धि की दूर-प्रसर माया मे।—निराला।

दूर-प्रहारी (रिन्)—वि० [स० दूर-प्र√हृ (हरण)+णिनि] १. दूर तक प्रहार करनेवाला। २. (तोप या वदूक) जिसके गोले-गोलियो की उडान का पल्ला अधिक लवा होता है, अर्थात् जो वहुत दूर तक मार करे।

दूरबा†—स्त्री०=दूर्वा।

दूरबीन—वि०[फा०] दूर तक देखनेवाला।

स्त्री० दे० 'दूरवीक्षक' (यत्र)।

दूर-बोध—पु०[प०त०] शारीरिक इद्रियों की सहायता लिये विना केवल आध्यात्मिक या मानसिक वल से दूसरे के मन की वाते या विचार जानने की क्रिया या विद्या। (टेलिपैथी)

दूर-बोधी (धिन्)—पु०[स० दूरवोध+इनि] वह जो दूरवोध की कला या विद्या जानता हो। (टेलिपैथिस्ट)

वि० दूर-वोध की कला या विद्या से सवध रखनेवाला। (टेलिपैथिक)

दूर-भाषक—पु०[प०त०] [वि०-दूर-भाषिक] एक प्रसिद्ध यत्र जिसकी सहायता से दूर वैठे हुए लोग आपस मे वात-चीत करते है। (टेलिफोन)

दूर-भाषिक—वि०[स०] दूर-भाषक यत्र सवधी या उसके द्वारा होने-वाला। (टेलीफोनिक) जैसे—दूर-भाषिक सवाद।

दूर-मुद्र—पु०[स०] दूर-मुद्रक यत्र की सहायता से अकित दूर-लेख। (टेलिप्रिंट)

दूर-मुद्रक—पु०[स०] एक आधुनिक यत्र जिसकी सहायता से दूर-लेख (तार से आये हुए सदेश, समाचार आदि) कागज पर छपते चलते हैं। (टेलिप्रिंटर)

विशेष—वस्तुत यह दूर-लेखक यत्र के साथ लगा हुआ एक प्रकार का टकन यत्र होता है, जिससे आये हुए सदेश आदि हाथ से लिखने की आवश्यकता नही रह जाती, वे आप से आप कागज पर टकित होते रहते या छपते चलते हैं।

दूर-मुद्रण—पु०[स०] दूर-मुद्रक यत्र के द्वारा सदेश टकित करने या छापने की प्रक्रिया या प्रणाली। (टेलीप्रिंटिंग)

दूर-मूल—पुं० [व०स०] मूँज।

दूर-लेख—पु०[प० त०] दूर-लेखक यंत्र की सहायता से (अर्थात् तार द्वारा) आया हुआ संदेश या समाचार। (टेलिग्राम)

दूर-लेखक—पु० [प० त०] १ एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कुछ विशिष्ट संकेतों के द्वारा दूरी पर समाचार आदि भेजे जाते हैं। तार द्वारा समाचार भेजने का यंत्र। (टेलिग्राफ) २. वह जो उक्त यंत्र के द्वारा समाचार भेजने और प्राप्त करने की विद्या जानता हो। (टेलिग्राफिस्ट)

दूरलेखतः (तस्)—क्रि० वि० [स० दूरलेख+तस्] दूर-लेखक यंत्र की प्रक्रिया अथवा सहायता से। (टेलिग्रफिकली) जैसे—उत्तर दूर-लेखत. भेजेंगे।

दूर-लेखी (खिन्)—वि०[सं० दूरलेख+इनि] दूर-लेख के द्वारा होने या उससे संबंध रखनेवाला। (टेलिग्राफिक) जैसे—दूर-लेखी धनादेश। (टेलिग्राफिक मनीआर्डर)

दूरवर्ती (र्तिन्)—वि०[स० दूर√वृत (बरतना)+णिनि] जो अधिक दूरी पर स्थित हो। दूर का।

दूर-वाणी—स्त्री० दे० 'दूर-भापक'।

दूर-विक्षेपक—पु०दे० 'प्रेपित्र'।

दूर-वीक्षक—पु०[प०त०] नल के आकार का एक प्रसिद्ध उपकरण जिसे आँखो के सामने सटाकर रखने पर दूर की चीजें कुछ पास और फलत. स्पष्ट दिखाई देती है। दूर-बीन। (टेलिस्कोप)

दूर-वीक्षण—पु०[प० त०] दूर की चीजें दूर-वीक्षक की सहायता से देखने की क्रिया या भाव।

दूरस्थ—वि०[स० दूर-√स्था (ठहरना)+क]१. जो दूरी पर स्थित हो। २ (घटना) जिसके वर्तमान मे घटित होने की संभावना न हो।

दूरांतरित—वि०[दूर-अतरित]१. दूर किया हुआ। २ दूरस्थ।

दूरागत—भू० कृ० [दूर-आगत प० त०] दूर से आया हुआ। उदा०—'माँ'। फिर एक किलक दूरागत गूँज उठी.कुटिया सूनी।—प्रसाद।

दूरान्वय—पु०[दूर-अन्वय तृ० त०] रचना का वह दोप जो कर्त्ता और क्रिया, विशेष्य और विशेपण आदि के पास-पास न रहने अर्थात् परस्पर अनावश्यक रूप से दूर रहने के कारण उत्पन्न होता है।

दूरापात—पु०[दूर-आपात व०स०] वह अस्त्र जो दूर से फेंककर चलाया जाय।

दूरारूढ़—वि०[दूर-आरूढ स० त०] १ बहुत आगे बढा हुआ। २ तीव्र। ३ बद्धमूल। ४ प्रगाढ।

दूरि—वि०=दूर।
स्त्री०=दूरी।

दूरी—स्त्री०[स० दूर+ई (प्रत्य०)]१. दूर होने की अवस्था या भाव। २. दो वस्तुओं, बिंदुओं आदि के बीच का पारस्परिक अंतर। ३ दो वस्तुओं, बिंदुओं आदि के बीच का अवकाश, विस्तार या स्थान।
स्त्री०[?] खाकी रंग की एक प्रकार की लवा (चिड़िया)।

दूरीकरण—पु०[स० दूर+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] दूर करने या हटाने की क्रिया या भाव।

दूरे-अमित्र—पु०[व०म० अलुक् समास] उनचास मरुतों मे से एक मरुत् का नाम।

दूरोह—पु०[स०दुर्√रुह् (चढना)+खल्, दीर्घ] आदित्य लोक जहाँ चढकर जाना बहुत कठिन है।

दूरोहण—पु०[स० दुर्-रोहण प्रा० व० स०] सूर्य।

दूर्य—पु०[स० दूर+यत्]१ छोटा कचूर। २ गुह। मल। विष्ठा।

दूर्वा—स्त्री० [स०√दूर्व् (हिंसा)+अच्—टाप्] एक प्रसिद्ध पवित्र घास जो देवताओं को चढाई जाती है। दूब।

दूर्वाक्षी—स्त्री० [स०] वसुदेव के भाई वृक की स्त्री का नाम। (भागवत)

दूर्वा-क्षेत्र—पु० [प०त०] १ वह क्षेत्र जिसमे दूब होती हो। २ खेल का वह मैदान जिसमे छोटी-छोटी घास लगी हुई हो। (लान)

दूर्वाद्य घृत —पु०[दूर्वा-आद्य व०स०, दूर्वाद्य-घृत कर्म०स०] वैद्यक मे, एक प्रकार की बकरी का घी जिसमे दूब, मजीठ, एलुआ, सफेद चंदन आदि मिलाया जाता है और जिसका व्यहार आँख, मुँह, नाक, कान आदि से रक्त जानेवाला रक्त रोकने के लिए होता है।

दूर्वाष्टमी—स्त्री०[दूर्वा-अष्टमी मध्य०स०] भादो सुदी अष्टमी जिस दिन हिंदू व्रत करते हैं।

दूर्वासोम—पु० [स०] एक तरह की सोमलता। (सुश्रुत)

दूर्वेष्टिका—स्त्री०[स० दूर्वा-इष्टिका मध्य०स०] एक तरह की ईंट जिससे यज्ञ की वेदी बनाई जाती थी।

दूलन†—पु०=दोलन।

दूलभ†—वि०=दुर्लभ।

दूलह—पु०[स० दुर्लभ,प्रा० दुल्लह] [स्त्री० दुलहिन]१ वह मनुष्य जिसका विवाह अभी हाल मे हुआ हो अथवा शीघ्र ही होने को हो। दुल्हा। वर। नौशा। २. स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी। ३ बहुत बना-ठना आदमी। ४ मालिक। स्वामी।
वि० जो दुलहे के समान बना-ठना हो। उदा०—दूलह मेरो कुँवर कन्हैया।—गदाधर भट्ट।

दूलिका—स्त्री०=दूली।

दूलित*—वि०=दोलित।

दूली—स्त्री०[स०दूर+अच्—ङीप्, लत्व] नील का पेड।

दूल्हा†—पु०=दूलह।

दूवा†—पु०=दूआ।

दूवौ—स्त्री० [अ० दुआ] १. दुआ। प्रार्थना। २ आज्ञा। हुकुम। उदा०—राणी तदि दूवौ दीघ रुपमणी।—प्रिथीराज।
वि०=दोनो।

दूश्य—पु० [सं०√दू(ताप)+क्विप्, दू√श्यै (दूर करना)+क] खेमा। तंबू।

दूषक—वि० [स०√दूष् (विकार)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. [स्त्री० दूपिका]१ दोप निकालने या लगानेवाला। २ आक्षेप या दोपारोपण करनेवाला। ३ दोप या विकार उत्पन्न करनेवाला।

दूषण—पु०[स०√दूष्+णिच्+ल्युट्—अन]१ दोप लगाने की क्रिया या भाव। २ दोप। ३ अवगुण। बुराई। ४ जैनियो के सामयिक व्रत मे ३२ त्याज्य बातें या अवगुण जिनमे से १२ कायिक, १० वाचिक और १० मानसिक हैं। ५ रावण का एक भाई जिसका वध रामचन्द्र ने पंचवटी मे किया था।
वि०[√दूष्+णिच्+ल्यु—अन]नष्ट करने या मारनेवाला। विनाशक।

सहारक। उदा०—लक्षमण अरु शत्रुघ्न रीह दानव-दल दूषण।—केशव।

दूषणारि—पु०[स० दूषण-अरि ष०त०] दूषण नामक राक्षस को मारनेवाले रामचद्र।

दूषणीय—वि०[स० √दूष+णिच्+अनीयर्] १ जिसमे दोष निकाला जा सके। २. जिस पर दोष लगाया जा सके।

दूषन†—पु०=दूषण।

दूषना—स०[स० दूषण] १ दोष लगाना। २. ऐब लगाकर निन्दा या बुराई करना।

अ० दोष या अवगुण मे युक्त होना।

दूषि—स्त्री०[स०√दूष्+इन्]=दूषिका।

दूषिका—स्त्री० [स० दूषि+कन्—टाप्] १. चित्र बनाने की कूची। २. आँख मे से निकलनेवाली मैल।

वि० स० 'दूषक' का स्त्री०।

दूषित—वि०[स०√दूष्+क्त]१. जिसमे दोष हो। दोष से युक्त। २. जिस पर दोष लगाया गया हो। ३. बुरा। खराब।

दूषीविष—पु०[स०√दूष्+ई, दूषी-विष कर्म०स०] शरीर मे होनेवाला एक तरह का विष जो धातु को दूषित करता है। इसे हीन विष भी कहते हैं। (सुश्रुत)

दूष्य—वि०[स०√दूष्+णिच्+यत्]१. जिस पर या जिसमे दोष लगाया जा सके। जो दूषित कहे जाने योग्य हो। २ निंदनीय। बुरा। ३. तुच्छ। हीन।

पु०१. कपडा। वस्त्र। २. प्राचीन काल की एक प्रकार का ऊनी ओढना या चादर। धुस्सा। ३. खेमा। तबू। ४. हाथी बाँधने का रस्सा। ५ जहर। विष। ६ पूय। मवाद। ७. प्राचीन भारतीय राजनीति मे, ऐसा व्यक्ति जो राज्य या शासन को हानि पहुँचानेवाला हो।

दूष्य-महामात्र—पु०[कर्म०स०] ऐसा न्यायाधीश या महामात्र जो अदर ही अदर राज्य का शत्रु हो या शत्रु-पक्ष से मिला हो। (कौ०)

दूस्सना†—स०, अ०=दूषना।

दूसर†—वि०=दूसरा।

दूसरा—वि०[हि० दो+सर (प्रत्य०)पु० हि० दोसर] [स्त्री० दूसरी] १. जो क्रम या सख्या के विचार से दो के स्थान पर पडता हो। पहले के ठीक बादवाला। जैसे—(क) यह उनका दूसरा लडका है। (ख) उसके दूसरे दिन वे भी चले गये। २ दो या कई मे से कोई एक, विशेषत प्रस्तुत अथवा उस एक से भिन्न जिसका उल्लेख या चर्चा हुई हो। जैसे—एक पुस्तक तो हमने छाँट ली है, दूसरी कोई आप भी ले लें। ३ प्रस्तुत से भिन्न। जैसे—यह तो दूसरी बात हुई। ४. अतिरिक्त। अन्य। और। जैसे—वह दूसरे साधनो से कही अधिक धन कमाता है।

सर्व० १. जिसकी चर्चा न हुई हो। बचा हुआ। जैसे—कोई दूसरा इसका आनन्द क्या जाने। २. जिसका दोनो पक्षो मे से किसी के साथ कोई लगाव या सबंध न हो। जैसे—आपस की बात-चीत (या लडाई) मे दूसरो को नही पड़ना चाहिए।

दूहना—स०[स० दोहन] १. कुछ स्तनपायी मादा जीवो के स्तनो मे से उन्हे निचोड़ते तथा दबाते हुए दूध निकालना। जैसे—गाय, भैंस या बकरी दूहना। २. अदर का तरल पदार्थ खीचकर या दबाकर बाहर निकालना। जैसे—थूहर या पपीते का दूध दूहना। ३. किसी वस्तु मे से पूरी तरह से या अधिक मात्रा मे तत्व या सार निकालना। ४ किसी को धोखे में रखकर उससे खूब रुपए या कोई चीज वसूल करना। जैसे—किसी से रुपए दूहना। उदा०—सूर स्याम तब तैं नहिं आए, मन जब त लीन्हों दोही।—सूर।

विशेष—इसका प्रयोग (क) उस आधार या व्यक्ति के सबध मे भी होता है जिसे दूहते हैं और (ख) उस पदार्थ के सबध मे भी होता है जो दूहा जाता है।

दूहनी†—स्त्री०=दोहनी।

दूहा†—पु०=दोहा।

दूहिया—पुं०[देश०] एक प्रकार का चूल्हा।

दृक—पु०[स०√दृ (विदारण)+कक्] छिद्र। छेद।

पु०[?] हीरा।

दृकाण—पु०=दृक्काण।

दृक्कर्ण—पु०[स० दृश्-कर्ण ब०स०] साँप।

दृक्कर्म(न्)—पु० [स० दृश्-कर्मन् मध्य० स०] वह सस्कार या क्रिया जो ग्रहो को अपने क्षितिज पर लाने के लिए की जाती है। यह सस्कार दो प्रकार का होता है, आक्षदृक् और आपनदृक्। (ज्यो०)

दृक्काण—पु० [यू० डेकानस] फलित ज्योतिष मे एक राशि का तीसरा भाग जो दस अंशो का होता है।

दृक्क्षेप—पु० [स० दृश्-क्षेप ष० त०] १. दृष्टिपात। अवलोकन। २. दशम लग्न के नताश की भुज-ज्या जिसका विचार सूर्यग्रहण के स्पष्टीकरण मे किया जाता है।

दृक्पथ—पु० [स० दृश्-पथिन् ष० त०] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि-पथ।

मुहा०—दृक्पथ मे आना=दिखाई देना। सामने होना।

दृक्पात—पु० [स० दृश्-पात ष० त०] दृष्टिपात। अवलोकन।

दृक्प्रसादा—स्त्री० [स० दृश्-प्र√सद्+णिच्+अण्-टाप्] कुलत्था। कुलत्थांजन।

दृक्शक्ति—स्त्री० [दृश्-शक्ति ष० त०] १ देखने की शक्ति। २ प्रकाशरूप चैतन्य। ३. आत्मा।

दृक्श्रुति—पु० [स० दृश्-श्रुति ब० स०] साँप।

दृखत*—पु० [स० दृषत्] पत्थर।

†पु० =दरख्त (वृक्ष)।

दृगंचल—पु० [स० दृश्-अचल ष० त०] १. पलक। २. चितवन।

उदा०—चचल चारु दृगचल सो।—केशव।

दृगंबु—पु० [सं० दृश्-अंबु ष० त०] १ आँखो से निकलनेवाला पानी। २. अश्रु। आँसू।

दृग—पुं० [स०] १ आँख। नेत्र। (मुहा० के लिए देखो 'आँख' के मुहा०) २. देखने की शक्ति। दृष्टि। ३. दो आँखो के आधार पर, दो की सख्या।

दृगध्यक्ष—पु० [स० दृश-अध्यक्ष ष० त०] सूर्य।

दृग-मिचाव—पु० [हि० दृग +मीचना] आँख-मिचौली नाम का खेल।

दृग्गणित—पु० [स० दृश्-गणित मध्य० स०] ज्योतिष मे गणित की वह क्रिया जो ग्रहो का वेध करके उनकी यथार्थ या वास्तविक स्थिति के आधार पर की जाती है।

दृग्गणितैक्य—पु० [स० दृग्गणित्-ऐक्य ष० त०] ग्रहो को किसी समय पर गणित से स्पष्ट करके फिर उसे वेधकर मिलाना और न्यूनता या अधिकता जान पडने पर उसमे ऐसा सस्कार करना जिससे ग्रहो के वेध और स्पष्ट स्थिति मे फिर अतर न पड़े।

दृग्गति—स्त्री० [स० दृश्-गति ष० त०] १ दृष्टि की गति या पहुँच। २ दशम लग्न के नताश की कोटि-ज्या।

दृग्गोचर—वि० [स० दृश्-गोचर ष० त०] जो आँखो से दिखाई देता हो।

दृग्गोल—पु० [स० दृश्-गोल मध्य० स०] गणित ज्योतिष मे, वह कल्पित वृत्त जो ऊर्ध्व स्वस्तिक और अध स्वस्तिक मे होता हुआ माना जाता है और जिसे ग्रहो के उदित होने की दिशा मे रखकर उनकी यथार्थ स्थिति का पता लगाया जाता है।

दृग्ज्या—स्त्री० [स० दृश्-ज्या मध्य० स०] दृक्-मडल या दृग्गोल के खस्वस्तिक से किसी ग्रह के नताश की ज्या। (देखे 'नताश')

दृग्भू—पु० [स० दृश्√भू (होना)+क्विप्] १ वज्र। २ सूर्य। ३ साँप।

दृग्लवन—पु० [स० दृश्-लवन ब० स०] वह पूर्वापर सस्कार जो ग्रहण स्पष्ट करने मे सूर्यचद्र गर्भाभिप्राय से एक सूत्र मे आ जाने पर उन्हे पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र मे लाने के लिए किया जाता है।

दृग्विष—पु० [स० दृश्-विष ब० स०] ऐसा साँप जिसकी आँखो मे विष होता हो, अर्थात् जिसके देखने मात्र से छोटे-मोटे जीव मर जाते या मूर्च्छित हो जाते हो।

दृग्वृत्त—पु० [स० दृश्-वृत्त ष० त०] क्षितिज।

दृङ्नति—स्त्री० [स० दृश्-नति ष० त०] गणित ज्योतिष मे याम्योत्तर सस्कार जो ग्रहण स्पष्ट करने के समय चद्रमा और सूर्य को एक सूत्र मे लाने के लिए किया जाता है।

दृङ्मडल—पु० [स० दृश्-मडल ष० त०] दृग्गोल।

दृढ—वि० [स०√दृह् (मजबूत होना)+क्त] १ जो शिथिल या ढीला न हो। प्रगाढ। जैसे—दृढ आलिंगन, दृढ बधन। २ जो जल्दी टूट-फूट न सकता हो। पक्का। मजबूत। ३ बलवान और हृष्ट-पुष्ट। ४ जो जल्दी अपने स्थान से इधर-उधर या विचलित न हो। जैसे—दृढ मनुष्य, दृढ विश्वास। ५ जिसमे किसी प्रकार का परिवर्तन या हेर-फेर न हो सकता हो। ध्रुव। जैसे—दृढ निश्चय।

पु० १ लोहा। २ विष्णु। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ तेरहवे मनु का एक पुत्र। ५ सगीत मे, सात प्रकार के रूपको मे से एक। ६ गणित मे, ऐसा अक जिसे विभाजित करने पर पूरे या समूचे विभाग न हो सके, केवल खडित विभाग हो। ताक अदद। जैसे—३, १, ७, २५ आदि।

दृढ़-कंटक—पु० [ब० स०] क्षुद्रफलक वृक्ष।

दृढ-कर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०] जो अपना काम दृढता-पूर्वक अर्थात् धैर्य और स्थिरता से करता हो।

दृढ़क-व्यूह—पु० [स० दृढ+कन्, दृढक-व्यूह कर्म० स०] ऐसी व्यूह-रचना जिसमे पक्ष तथा कक्ष कुछ-कुछ पीछे हटे हो। (कौ०)

दृढ़-काड—पु० [ब० स०] १ बाँस। २ रोहिस घास।

दृढ़-काडा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] पातालगारुडी लता। छिरेटा।

दृढ़कारिता—स्त्री० [स० दृढकारिन्+तल्-टाप्] किसी चीज या बात को दृढ या पक्का करने की क्रिया या भाव।

दृढ़कारी (रिन्)—वि० [स० दृढ√कृ (करना)+णिनि] [भाव० दृढकारिता] १ दृढता से काम करनेवाला। २. किसी चीज या बात को दृढ या मजबूत करनेवाला।

दृढ़क्षत्र—पु० [स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़-क्षुरा—स्त्री० [ब० स० टाप्] बल्वजा तृण। सागे-बागे।

दृढ़-गात्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] १ राव। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

दृढ़-ग्रंथि—वि० [ब० स०] जिसकी गाँठे मजबूत हो।

पु० बाँस।

दृढ़-चेता (तस्)—वि० [ब० स०] दृढ या पक्के विचारो अथवा सकल्पो-वाला।

दृढ़च्छद—पु० [ब० स०] दीर्घरोहिष तृण। बडी रोहिस।

दृढ़-च्युत—पु० [स०] परपुरजय नामक राजा की कन्या के गर्भ से उत्पन्न अगस्त्य मुनि के एक पुत्र।

दृढ-तरु—पु० [कर्म० स०] धव का पेड।

दृढता—स्त्री० [स० दृढ+तल्-टाप्] १ दृढ होने की अवस्था, गुण या भाव। २. पक्कापन। मजबूती। ३ अपने विचार, प्रतिज्ञा आदि पर जमे रहने का भाव।

दृढ़-तृण—पु० [ब० स०] मूँज नाम की घास।

दृढ़-तृणा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बल्वजा तृण।

दृढ़त्व—पु० [स० दृढ+त्व] = दृढता।

दृढ़-त्वच्—वि० [ब० स०] जिसकी त्वचा या छाल कडी हो।

पु० ज्वार का पौधा।

दृढ़-दशक—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का जल-जतु।

दृढ़-दस्यु—पु० [स०] एक ऋषि जो दृढच्युत के पुत्र थे।

दृढ-धन—पु० [ब० स०] शाक्य मुनि। बुद्ध।

दृढ़-धन्वा (न्वन्)—पु० [ब० स०, अनङ् आदेश] वह जो धनुष चलाने मे दृढ हो या जिसका धनुष दृढ हो।

दृढ़धन्वी (न्विन्)—वि० [कर्म० स०] जिसका धनुष दृढ हो।

दृढ-नाभ—पु० [ब० स०] वाल्मीकि के अनुसार अस्त्रो का एक प्रकार का प्रतिकार जो विश्वामित्र जी ने रामचन्द्र को बताया था।

दृढ़-निश्चय—वि० [ब० स०] अपने निश्चय अर्थात् विचार या सकल्प पर दृढतापूर्वक अडा या जमा रहनेवाला। जो अपने निश्चय से जल्दी न टलता हो।

दृढ़-नीर—पु० [ब० स०] नारियल, जिसके भीतर का जल धीरे-धीरे जम जाता है।

दृढ़-नेत्र—पु० [ब० स०] विश्वामित्र जी के चार पुत्रो मे से एक। (वाल्मीकि)

दृढ-नेमि—वि० [ब०स०] जिसकी नेमि दृढ हो। जिसकी धुरी मजबूत हो।

पु० अजमीढ वशीय एक राजा जो सत्यधृति के पुत्र थे।

दृढ़-पत्र—वि० [ब० स०] जिसके पत्ते दृढ या मजबूत हो।

पु० बाँस।

दृढ़-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] बल्वजा तृण। सागे-बागे।

दृढ़-पद—पु० [ब० स०] तेइस मात्राओ का एक प्रकार का मात्रिक छद। उपमान।

दृशद्—स्त्री० = दृषद्।
दृशद्वती—स्त्री० = दृषद्वती।
दृशा—स्त्री० [स० दृश +टाप्] आँख।
दृशाकांक्ष्य—पु० [स० दृश्-आकाक्ष्य तृ० त०] कमल।
दृशान—पु० [स० √दृश् + आनच्] १ उजाला। प्रकाश। २ आभा। चमक। ३ गुरु। शिक्षक। ४. प्रजा का भली-भाँति पालन करनेवाला राजा। ५. ब्राह्मण। ६ विरोचन दैत्य का एक नाम।
दृशि—स्त्री० [स० √दृश् +इन्] = दृशी।
दृशी—स्त्री० [स० दृशि + ङीप्] १ दृष्टि। २. उजाला। प्रकाश। ३ शास्त्र। ४ शरीर के अदर का चेतन पुरुष।
दृशोक—वि० [स०] १ ध्यान देने योग्य। २ सुदर।
दृशोपम—पु० [स० दृशा-उपमा ब० स०] सफेद। कमल। पुडरीक।
दृश्य—वि० [स० √दृश्+क्यप्] १ जो देखने मे आ सके या दिखाई दे सके। जिसे देख सकते हो। चाक्षुस। (विजुअल) जैसे—दृश्य जगत् या पदार्थ। २ जो दिखाई देता हो। ३ जो ठीक तरह से जाना जाता या समझ मे आता हो। ज्ञेय और स्पष्ट। ४ जो देखे जाने के योग्य हो। ५ दर्शनीय। मनोरम। सुदर।

पु० १ वह घटना, पदार्थ या स्थल जो आँखो से दिखाई देता हो। दिखाई देनेवाली चीज या बात।

विशेष—भारतीय श्रौत दर्शनो मे दो तत्त्व माने गये है—द्रष्टा और दृश्य। ज्ञान स्वरूप चैतन्य को द्रष्टा और अचेतन अनात्मभूत जड को दृश्य कहा गया है। यह दृश्य तीन प्रकार का माना गया है— अव्याकृत, मूर्त और अमूर्त।

२ दिखाई देनेवाली घटना, वस्तु या स्थल। (व्यू) ३ ऐसी प्राकृतिक, कृत्रिम अथवा अकित घटना या स्थल जो विशेष रूप से देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय स्थान। (सीनरी) ४ साहित्य मे, ऐसा काव्य या रचना जिसका अभिनय हो सकता या होता हो। नाटक। ५ नाटक के किसी अक का वह स्वतत्र विभाग जिसमे कोई एक घटना दिखाई जाती है। (सीन) ६ कोई ऐसा तमाशा या मनोरजक व्यापार जो आँखो के सामने हो रहा हो या होता हो। ७. गणित मे वह ज्ञात सख्या जो अको के रूप मे दी गई हो। ८ दे० 'दृश्य जगत्'।

दृश्य-जगत्—पु० [कर्म० स०] वह जगत् या ससार जो हमे अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई देता है। वास्तविक जगत्। (फिनामेनल वर्ल्ड)
दृश्यता—स्त्री० [स० दृश्य+तल्—टाप्] १ दृश्य होने या दिखाई देने की अवस्था या भाव। २ वह स्थिति जिसमे देखने की शक्ति अपना काम करती है। (विजिबिलिटी)
दृश्यमान—वि० [स० √दृश्+शानच्, यक, मुक्] १. जो दिखाई पड रहा हो। २ प्रत्यक्ष या स्पष्ट रूप मे दिखाई देनेवाला। ३ मनोहर। सुन्दर।
दृषत् (द्)—स्त्री० [स० √दृ (विदारण)+अदि, षुक, ह्रस्व] १. पर्वत की चट्टान। शिला। २ मसाले आदि पीसने की सिल या चक्की।
दृषद्—स्त्री०=दृपत्।
दृषद्वती—स्त्री० [स० दृषत् +मतुप्—ङीप्] १ थानेश्वर के पास की एक प्राचीन नदी जिसका नाम ऋग्वेद मे आया है। इसे आज-कल घग्घर और राखी कहते हैं। २. विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम।

वि० 'दृषद्वान्' का स्त्री०।

दृषद्वान (वत्)—वि० [सं० दृषद् +मतुप्] [स्त्री० दृषद्वती] पाषाण युक्त। शिलामय। पथरीला।
दृष्ट—वि० [स० √दृश् (देखना) +क्त] १ देखा हुआ। २ दिखाई पड़नेवाला। ३ प्रकट या व्यक्त होनेवाला।

पु० १. दर्शन। २ साक्षात्कार। ३ साख्य मे प्रत्यक्ष प्रमाण की सख्या।

दृष्ट-कूट—पु० [कर्म० स०] १ पहेली। २. साहित्य मे, ऐसी कविता जिसका अर्थ या आशय उसके शब्दो के वाच्यार्थ से नही, बल्कि रूढ अर्थो से निकलता हो और इसी लिए जिसे साधारणत सब लोग नही समझ सकते।
दृष्ट-नष्ट—वि० [स०] जो एक बार जरा-सा दिखाई देकर ही नष्ट या लुप्त हो जाय।
दृष्ट-फल—पु० [कर्म० स०] दार्शनिक मत से, किसी काम या बात का वह फल जो स्पष्ट रूप से दिखाई देता या प्राप्त होता हो। जैसे—अध्ययन करने से हमे जो ज्ञान होता है, वह अध्ययन का दृष्ट-फल है।

विशेष—यदि कहा जाय कि अमुक ग्रथ का पाठ करने से स्वर्ग मिलेगा, तो यह उसका अदृष्ट-फल माना जायगा।

दृष्टमान्—वि० [स० दृश्यमान्] १ जो दिखाई दे रहा हो। २. प्रकट। व्यक्त।
दृष्टवत्—वि० [स० दृष्ट +वति] १ जो प्रत्यक्ष के समान हो। २. लौकिक। सासारिक।
दृष्टवाद—पु० [ष० त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमे केवल प्रत्यक्ष क्रियाओ, घटनाओ, चीजो आदि की सत्ता मानी जाती है, आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग आदि अदृश्य चीजो की सत्ता नही मानी जाती।
दृष्टवान्—वि० [स० दृष्टवत्] प्रत्यक्ष के समान। प्रत्यक्षतुल्य।
दृष्टांत—पु० [स० दृष्ट-अन्त, ब० स०] १ किसी चीज या बात का अतिम, निश्चित और प्रामाणिक रूप देखना। २. कोई नई बात कहने अथवा मत प्रकट करने के समय उसकी प्रामाणिकता या सत्यता के पोषण या समर्थन के लिए उसी से मिलती-जुलती कही जानेवाली कोई ऐसी पुरानी और प्रामाणिक घटना या बात जिसे प्राय लोग जानते हो। मिसाल। (इन्स्टेन्स) जैसे—भाइयो के पारस्परिक प्रेम का उल्लेख करते हुए उन्होंने राम और लक्ष्मण का दृष्टात दिया।

विशेष—उदाहरण और दृष्टात मे मुख्य अतर यह है कि उदाहरण तो बौद्धिक और व्यावहारिक तथ्यो, पदार्थो, विचारो आदि के सबध मे नियम या परिपाटी के स्पष्टीकरण करने के लिए होता है, परन्तु दृष्टात प्राय आचरणो और कृतियो के सबध मे आदर्श और प्रमाण के रूप मे होता है। 'उदाहरण' का क्षेत्र अपेक्षाया अधिक विस्तृत और व्यापक हैं, इसी लिए 'दृष्टात' तो 'उदाहरण' के अन्तर्गत हो जाता है, पर 'उदाहरण' सर्वथा 'दृष्टात' के अन्तर्गत नही होता। इसके सिवा उदाहरण का प्रयोग तो साधारण बातचीत के अवसर पर होता है, परन्तु दृष्टात का प्रयोग नियम, मर्यादा, विधि, विधान आदि के पालन के प्रसग मे होता है।

३. उक्त के आधार पर साहित्य मे, एक प्रकार का सादृश्य-मूलक अर्था-

अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान दोनों से संबंध रखनेवाले वाक्यों में से धर्म की पारस्परिक समानता और बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव दिखाया जाता है।

विशेष—(क) 'उदाहरण' और 'दृष्टांत' अलंकारों में यह अंतर है कि उदाहरण में तो साधारण का विशेष से और विशेष का साधारण से समर्थन होता है, पर 'दृष्टांत' में साधारण की समता साधारण से और विशेष की समता विशेष से होती है। इसके सिवा उदाहरण में मुख्य लक्ष्य उपमेय वाक्य (वाक्य का पूर्वार्द्ध) होता है; पर दृष्टांत में मुख्य लक्ष्य उपमान वाक्य (वाक्य का उत्तरार्द्ध) होता है। (ख) दृष्टांत और प्रतिवस्तूपमा में यह अंतर है कि दृष्टांत में तो कही हुई बातों के सभी धर्मों में समानता होती है, परन्तु प्रतिवस्तूपमा में किसी एक ही धर्म की समानता का उल्लेख होता है। इसी लिए कुछ लोगों का मत है कि इन्हें एक ही अलंकार के दो भेद मानना चाहिए।

४. शास्त्र। ५. मरण। मृत्यु।

दृष्टार्थ—पुं० [दृष्ट-अर्थ ब० स०] १ किसी शब्द का वह अर्थ जो बिलकुल स्पष्ट हो और सबकी समझ में आता हो। २. ऐसा शब्द जिसका अर्थ बिलकुल स्पष्ट हो और सबकी समझ में आता हो। ३ ऐसा शब्द जिसका बोध करानेवाला तत्त्व या पदार्थ संसार में वर्तमान हो और प्रत्यक्ष दिखाई देता या देखा जा सकता हो। जैसे—गाय, मनुष्य, सूर्य।

दृष्टि—स्त्री० [सं० √दृश्+क्तिन्] १ आँखों से देखकर ज्ञान प्राप्त करने या जानने-समझने का भाव, वृत्ति या शक्ति। अवलोकन। नजर। निगाह। २ देखने के लिए खुली हुई अथवा देखने में प्रवृत्त आँखें। जैसे—जहाँ तक दृष्टि जाती थी, वहाँ तक जल ही जल दिखाई देता था।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—फेरना।—रखना।

मुहा०—दृष्टि चलाना किसी ओर ताकना या देखना। (किसी से) दृष्टि चुराना या बचाना - लज्जा, संकोच आदि के कारण जान-बूझकर किसी के सामने न आना या न होना। जान-बूझकर अलग, दूर या पीछे रहना। (किसी से) दृष्टि जुड़ना = देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से) दृष्टि जोड़ना--आँखें मिलाते हुए देखा-देखी या सामना करना। दिखाई देना। साक्षात्कार करना। (किसी की) दृष्टि बाँधना =ऐसा जादू करना कि लोगों को और का और दिखाई दे। (किसी को) दृष्टि भर देखना -जितनी देर इच्छा हो, उतनी देर खूब देखना। जी भरकर ताकना। दृष्टि मारना-- आँख या पलकें हिलाकर इशारा या संकेत करना। (किसी ओर) दृष्टि लगाना = ध्यानपूर्वक या स्थिर दृष्टि से देखना।

३ मन में कोई विशेष उद्देश्य या विचार रखकर किसी की ओर देखने की क्रिया या भाव। जैसे—अच्छी या बुरी दृष्टि, आशा, कृपा या प्रेम की दृष्टि, अनुसंधान, निरीक्षण या रक्षा की दृष्टि।

क्रि० प्र०—रखना।

मुहा०—(किसी की) दृष्टि पर चढ़ना = (क) देखने में बहुत अच्छा लगने के कारण ध्यान में सदा बना रहना। भाना। जैसे—(क) यह किताबें हमारी दृष्टि पर चढ़ी हुई है। (ख) दोष आदि के कारण आँखों में खटकना। निगाह पर चढ़ना। जैसे—जब पुलिस की दृष्टि पर चढ़ा है, तब उसका बचना कठिन है। (किसी पर) दृष्टि रखना किसी को इस प्रकार देखते रहना कि वह इधर-उधर न हो जाय। निगरानी रखना। (किसी पर) दृष्टि लगाना = ईर्ष्या, द्वेष आदि की दृष्टि से देख प्रभाव डालना। नजर लगाना।

४ अनुग्रह या कृपा के भाव से युक्त होकर देखने की क्रिया, भाव या वृत्ति। मेहरबानी की नजर। उदा०—राम की दृष्टि [illegible] भई तबहिं [illegible]।—तुलसी।

मुहा०—(किसी से) दृष्टि फिरना = पहले की-सी कृपा-दृष्टि न रहना। प्रीति या स्नेह न रहना। अप्रसन्न या विरक्त होना। (किसी से) दृष्टि फेरना = (किसी पर) पहले की-सी कृपा-दृष्टि न रखना। अप्रसन्न, खिन्न या विरक्त होना।

५. अनुराग या प्रेम के भाव से युक्त होकर देखने की क्रिया, भाव या वृत्ति।

मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना = अनुराग या प्रेम का संबंध स्थापित होना। (किसी से) दृष्टि फिरना = पहले जैसा अनुराग या प्रेम न रह जाना। (किसी से) दृष्टि लगना = (किसी से) दृष्टि जुड़ना। अनुराग या प्रेम का संबंध स्थापित होना।

६ मन में कोई बात सोचते हुए अथवा उसका ध्यान रखते या विचार करने की विशिष्ट प्रक्रिया या शक्ति। जैसे—सभी इस बात (या विषय) पर अपनी दृष्टि से विचार करना चाहिए। ७ कोई चीज देखकर उसकी उपयोगिता, अच्छाई, बुराई, गुण-दोष, योग्यता, हेतु आदि जानने या समझने की शक्ति। किसी विषय में होनेवाली पैठ। जैसे—(क) साहित्य रचना का सौंदर्य तो समीक्षक की पैनी दृष्टि ही देखती है। (ख) इन-सब बातों में उसकी दृष्टि बहुत पैनी है। ८ फलित ज्योतिष में, ग्रहों की कुछ विशिष्ट प्रकार की वह स्थिति जिसके फल-स्वरूप एक राशि अथवा जन्म-कुंडली के एक घर में स्थित किसी ग्रह का दूसरी राशि अथवा जन्म-कुंडली के दूसरे घर में स्थित किसी ग्रह पर कुछ विशेष प्रकार का प्रभाव होता माना जाता है।

दृष्टि-कूट—पुं० = दृष्टकूट।

दृष्टिकृत्—पुं० [सं० दृष्टि√कृ (करना)+क्विप्] १ कमल। २ स्थल पद्म।

दृष्टि-कोण—पुं० [ष० त०] किसी बात या विषय को किसी विशिष्ट दिशा या पहलू से देखने अथवा सोचने-समझने का ढंग या वृत्ति। (प्वाइंट ऑफ व्यू) जैसे—(क) आप अपने ही दृष्टि-कोण से देखिए, आप के दृष्टि-कोण से, उनका उत्तम है। (ख) इस विषय में हमारा दृष्टि-कोण कुछ और ही है।

दृष्टि-क्रम—पुं० [ष० त०] चित्रांकन आदि में ऐसी अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर, ठीक तुलनात्मक मान में और यथा-क्रम स्थित दिखाई दे। सुनासिबत। (पर्सपेक्टिव) उदाहरणार्थ यदि एक वृक्ष और उस पर बैठा हुआ तोता अंकित किया जाय, तो तोते का आकार उतना ही होना चाहिए जितना साधारणतः एक वृक्ष के अनुपात में उसका आकार होता है। यदि वृक्ष तो दो बित्ते भर का और तोता हो आधे या चौथाई बित्ते का तो चित्र का दृष्टि-क्रम ठीक नहीं माना जायगा।

दृष्टि-क्षेप—पुं० [ष० त०] दृष्टिपात।

दृष्टि-गत—भू० कृ० [द्वि० त०] दृष्टि में आया हुआ। देखा हुआ।

पु० १. वह जो देखने का विषय हो या जिसे देख सकें। २ आँखो का एक रोग। ३. सिद्धात।
दृष्टि-गोचर—वि०[प० त०] १ जिसे आँखो से देखा जा सके। २. जो दिखाई देता हो।
दृष्टि-दोष—पु०[प० त०] १. आँखो मे होनेवाला कोई दोष या विकार। २. पढने-लिखने, देखने-भालने या कोई काम करने मे होनेवाला ऐसा अनवधान, असावधानी या जल्दी जिसके कारण कोई चूक या भूल हो जाय। (ओवर साइट) जैसे—इस पुस्तक मे दृष्टि-दोष मे छापे की बहुत-सी भूलें रह गई है।
दृष्टिधृक्—पु०[स०] राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र।
दृष्टि-निपात—पु०=दृष्टिपात।
दृष्टि-पथ—पु०[प० त०] वह सारा क्षेत्र जहाँ तक निगाह जाती या पहुँचती हो। दृष्टि का प्रसार। नजर की पहुँच।
दृष्टि-परपरा—स्त्री०=दृष्टि-क्रम।
दृष्टिपात—पु०[प०त०]१. देखने की क्रिया या भाव। २ सरसरी निगाह से देखना।
दृष्टि-पूत—वि०[स० त०] १ जो देखने मे शुद्ध हो। २. जिसे देखने से आँखें पवित्र या सफल हों।
दृष्टि-फल—पु०[प० त०] फलित ज्योतिष मे, वह फल जो एक राशि मे स्थित किसी ग्रह की दृष्टि (दे० 'दृष्टि') किसी दूसरी राशि मे स्थित किसी ग्रह पर पडने से होता हुआ माना जाता है।
दृष्टि-बंध—पु०[प०त०] १. इद्रजाल, सम्मोहन आदि के द्वारा किया जानेवाला ऐसा अभिचार जिसके फल-स्वरूप लोगो को कुछ का कुछ दिखाई पडने लगता हो। २ हाथ की ऐसी चालाकी जो दूसरो को धोखा देने के लिए की जाय।
दृष्टि-बधु—पु०[प० त०] खद्योत। जुगनूँ।
दृष्टि-भ्रम—पु०[प०त०] देखने के समय होनेवाला ऐसा भ्रम जिससे चीज कुछ हो, पर दिखाई पडे और कुछ।
दृष्टिमान् (मत्)—वि० [स० दृष्टि+मतुप्] [स्त्री० दृष्टिमती] १. जिसे दृष्टि हो। आँखवाला। २. समझदार। दृष्टिवत। ३ ज्ञानी।
दृष्टि-रोध—पु०[प०त०] १. दृष्टि या देखने के कार्य मे होनेवाली रुकावट। २. आड। ओट। व्यवधान।
दृष्टिवंत—वि०[स० दृष्टिमत्]१. जिसमे देखने की शक्ति हो। जिसे दिखाई देता हो। २. जिसमे किसी चीज या बात को अच्छी तरह जाँचने, परखने या समझने की शक्ति हो। जानकार। ३ ज्ञानी।
दृष्टि-वाद—पु०[प० त०]दृष्टवाद। (दे०)
दृष्टि-विष—पु०[व०स०] ऐसा साँप जिसके देखने से ही कुछ छोटे-मोटे जीव-जन्तु या तो मर जाते या मूर्च्छित हो जाते हो।
दृष्टि-स्थान—पु०[स०]कुडली मे वह स्थान जिस पर किसी दूसरे स्थान मे स्थित ग्रह की दृष्टि पडती हो। (देखें 'दृष्टि')
दें'वका†—स्त्री०=दीमक।
दे†—स्त्री० [स० देवी] स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। देवी। पु० बगाली कायस्थो के एक वर्ग की उपाधि।
देई—स्त्री०[स० देवी]१. देवी। २. 'देवी' का वह विकृत रूप जो प्राय. स्त्रियो के नाम के अत मे लगता है। जैसे—हीरादेई।(पश्चिम)
देउ†—पु०=देव।
देउर†—पु०[स्त्री० देउरानी]=देवर।
देख—स्त्री०[हिं० देखना] देखने की क्रिया या भाव। अवलोकन। (यौ० पदो के आरम्भ मे) जैसे—देख-भाल, देख-रेख।
मुहा०—देख मे=(क) आँखो के सामने। (ख) निरीक्षण या देख-रेख मे।
देखन—स्त्री०[हिं० देखना] देखने की क्रिया, ढग या भाव।
देखनहारा—वि०[हिं० देखना+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।
देखना—स०[स० दृश का रूप द्रक्ष्यति प्रा० देक्खइ] १ किसी पदार्थ के रूप-रग, आकार-प्रकार आदि का ज्ञान या परिचय कराने के लिए उसकी ओर आँखें करना। दृष्टि-शक्ति अथवा नेत्रो से किसी चीज की सब बातो का ज्ञान प्राप्त करना। अवलोकन करना। निहारना। जैसे—यह लडका बहुत दूर तक की चीजें देख सकता है।
सयो० क्रि०—पाना।—लेना।—सकना।
पद—देखते देखते=(क) आँखो के सामने से। देखते रहने की दशा मे। जैसे—देखते देखते किताब गायब हो गई। (ख) तत्काल। तुरत। जैसे—देखते देखते उसके प्राण निकल गये। (किसी के) देखते या देखते हुए=किसी के उपस्थित या वर्तमान रहते हुए। विद्यमानता मे। समक्ष। सामने। देखने मे=(क) बाह्य लक्षणो के आधार पर या बाहरी चेष्टाओं से। जैसे— देखने मे तो वह बहुत सीधा है। (ख) आकार-प्रकार, रूप-रग आदि के विचार से। जैसे—यह फल देखने मे तो बहुत अच्छा है।
मुहा०—देखते रह जाना=कोई अनोखी या विलक्षण बात होने पर चकित भाव से किंकर्तव्य-विमूढ होकर रह जाना। जैसे—सब लोग देखते रह गये, और चोर गठरी उठाकर चलता बना।
२ मानसिक शक्ति के द्वारा किसी बात या विषय के सब अगो का ठीक और पूरा ज्ञान अथवा परिचय प्राप्त करना। बुद्धि से समझना और सोचना। जैसे—(क) आपने देख लिया होगा कि तर्क मे कुछ भी दम (या सार) नही है। (ख) लाओ, जरा हम भी देखें कि यह पुस्तक कैसी है।
पद—देखना चाहिए, देखा चाहिए या देखिये=न जाने क्या होगा। कौन जाने। कह नही सकते कि ऐसा होगा या नही। जैसे—देखिए, आज भी उनका उत्तर आता है या नही।
३ पुस्तक, लेख, समाचार आदि ध्यान से पढना। जैसे—आज का अखबार तो आप देख ही चुके होंगे। ४ त्रुटियाँ, भूलें आदि निकालने अथवा गुण, विशेषताएँ आदि जानने के लिए कोई चीज पढना। जैसे —(क) जब तक हम देख न लें, तब तक अपना लेख छपने के लिए मत भेजना। (ख) परीक्षक परीक्षार्थियों की कापियाँ देखते है। ५ दर्शक के रूप मे कही जाकर उपस्थित होना या पहुँचना अथवा किसी से मिलना या भेंट करना। जैसे—(क) आज घर के सभी लोग नाटक देखने गये है। (ख) डाक्टर रोगी देखने गये है। ६ किसी प्रकार की स्थिति मे रहकर उसका अनुभव या ज्ञान प्राप्त करना अथवा उस स्थिति का भोग करना। जैसे—(क) उन्होंने अपने जीवन मे कई बार बहुत अच्छे दिन देखे थे। (ख) हम लोगों ने दो-दो महायुद्ध

देखे हैं। (ग) आपस के वैर-विरोध का परिणाम तो तुम भी देख ही चुके हो। (घ) तुम्हारा जी चाहे तो तुम भी ऐसी एक दूकान कर देखो। पद—देखा जायगा=अभी चिंता करने की आवश्यकता नहीं, जब जैसी स्थिति होगी तब वैसा किया जायगा।
७ जानकारी प्राप्त करना या पता लगाना। जैसे—जरा एक बार उनसे भी बातें करके देख लो कि वे क्या चाहते हैं। ८. जानकारी प्राप्त करने या पता लगाने के लिए कहीं या किसी के पास जाना या उससे मिलना। जैसे—उस बीमारी में उनके प्रायः सभी मित्र उन्हें देखने गये थे। पद—देखना-सुनना=जानकारी प्राप्त करना। समझना-बूझना। पता लगाना। जैसे—बिना देखे-सुने मकान नहीं लेना चाहिए।
९ कार्य प्रणाली, गुण-दोष, स्थिति आदि का पता लगाने के लिए कहीं जाना या पहुँचना। जाँच या निरीक्षण करना। जैसे—निरीक्षक महोदय हर महीने यह विद्यालय देखने आते हैं। १०. पता लगाने या प्राप्त करने के लिए खोज या तलाश करना। ढूँढना। जैसे—(क) वे महीनों से अपने रहने के लिए किराये का एक अच्छा मकान (या कन्या के लिए वर) देख रहे हैं। (ख) सारा घर देख डाला पर किताब का कहीं पता न चला। ११ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, मुकाबला या सामना होने पर प्रतिद्वंद्वी की सब बातें सहने और उसका पूरा जवाब देने में समर्थ होना। जैसे—हम भी देख लेंगे कि वे कितने बहादुर हैं। १२. बरदाश्त करना। सहन करना। जैसे—हम यह अंधेर (अथवा अत्याचार) नहीं देख सकते। १३. किसी काम, बात या स्थिति का ठीक और पूरा ध्यान रखना। जैसे—(क) देखना, लड़का कहीं भीड़ में खो या दब न जाय। (ख) हमारे पीछे यह मकान देखते रहिएगा।
पद—देखो=(क) ध्यान दो। विचार करो। जैसे—देखो, लोग अपना काम किस तरह निकालते हैं। (ख) ध्यान रखो। सावधान रहो। जैसे—देखो, यह हाथ से निकलने न पावे। (ग) सुनो। जैसे—देखो, कोई सड़ी-गली तरकारी मत उठा लाना। (घ) प्रतीक्षा करो। जैसे—देखो, वह कब घर लौटता है।

देखनि†—स्त्री०=देखन।

देख-भाल—स्त्री०[हिं० देखना+भालना] १. अच्छी तरह देखने या भालने की क्रिया या भाव। जैसे—रुपए देख-भालकर लेना, कोई खोटा न ले लेना। २. देखा-देखी। साक्षात्कार। ३ देख-रेख। हिफाजत।

देखराना—स०=दिखलाना।

देखरावना†—स०=दिखलाना।

देख-रेख—स्त्री०[हिं० देखना+सं० प्रेक्षण] इस प्रकार किसी पर दृष्टि रखना कि (क) कोई किसी विशिष्ट अवस्था या स्थिति में रहे। जैसे—चोरों या कैदियों की देख-रेख रखना। और (ख) किसी की स्थिति अच्छी बनी रहे और बिगड़ने न पावे। जैसे—रोगी की देख-रेख करना।

देखाऊ†—वि०=दिखाऊ।

देखा-देखी—स्त्री०[हिं० देखना]१ आँखों से देखने की अवस्था या भाव। २ दर्शन। साक्षात्कार।
अव्य० दूसरों को कोई काम करते हुए देखने के फलस्वरूप। अनुकरणवश। जैसे—लड़के देखा-देखी गाली बकते हैं।

देखाना—स० दिखाना।

देखा-भाली—स्त्री० देख-भाल।

देखाव†—पुं० दिखाव।

देखावट†—स्त्री० दिखावट।

देखावना—स० दिखाना।

देखौआ†—वि० दिखौआ।

देग—पुं०[फा०] [स्त्री० अल्पा० देगची]१ चौड़े मुँह और चौड़े पेट का वह बहुत बड़ा बरतन जिसमें चावल, दाल आदि खाद्य पदार्थ पकाये जाते हैं। २ दे० 'देगचा'।
पुं०[?] एक प्रकार का बाज पक्षी।

देगचा—पुं०[फा० देगच.] [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।

देगची—स्त्री०[हि० देगचा] छोटा देगचा।

देदन†—पुं०[सं० दृष्टि, कृत]१. सामना। साक्षात्कार। उदा०—देखत्ने दुखी दस्सो दुँह।—पृथ्वीराज। २. दिखावा।

देदीप्यमान—वि०[सं०√दीप्(चमकना)+यङ्+शानच्] जिसका स्वरूप प्रकाशपूर्ण हो। चमकता हुआ। दमकता हुआ।

देन—स्त्री०[हि० देना]१ देने की क्रिया या भाव। २. वह जो दिया जाय। ३. कोई ऐसी महत्त्वपूर्ण चीज या बात जो किसी बड़े व्यक्ति, ईश्वर आदि से मिली हो तथा जिससे विशेष उपकार या हित होता हो। जैसे—(क) उनकी इस देन से हिन्दी जगत् सदा ऋणी रहेगा। (ख) पुत्र-पुत्रियाँ तो भगवान की देन है। ४. काल के आधार पर कोई ऐसी चीज या बात जो किसी दूसरे से प्राप्त हुई हो और जिसका कोई व्यापक परिणाम या फल हो। जैसे—राजकीय विभागों में घूस और पक्षपात ब्रिटिश शासन की देन है। ५ किसी प्रकार का देना चुकाने का दायित्व या भार। (लायबिलिटी)

देनदार—पुं०[हिं० देना+फा० दार]१ ऋणी। कर्जदार। २. वह जिसके जिम्मे कुछ देना बाकी हो। वह जिससे किसी को आवश्यक रूप में कुछ मिलने को हो।

देनदारी—स्त्री०[हिं० देन+फा० दारी] देनदार होने की अवस्था या भाव।

देन-लेन—पुं०[हिं० देना+लेना] १ किसी को कुछ देने और उससे कुछ लेने की क्रिया या भाव। २ विनिमय। ३ इष्ट-मित्रों या संबंधियों में प्रायः कुछ न कुछ एक दूसरे के यहाँ भेजते रहने का व्यवहार। ४. ब्याज पर रुपया उधार देने का व्यापार। महाजनी का व्यवसाय।

देनहार—वि०=देनहारा।

देनहारा—वि०[हिं० देना+हारा (प्रत्य०)] देनेवाला।

देना—स०[सं० दान] १. (अपनी) कोई चीज पूर्णतः और सदा के लिए किसी के अधिकार या नियंत्रण में करना। सुपुर्द करना। हवाले करना। जैसे—लड़की को ब्याह में मकान देना। २. बिना किसी प्रकार के प्रतिदान या प्रतिफल के किसी को कोई चीज अंतरित या हस्तांतरित करना। जैसे—प्रसाद देना। ३ श्रद्धापूर्वक अथवा किसी की सेवाओं आदि से प्रसन्न होकर उसे कुछ अर्पित या समर्पित करना। जैसे—(क) आशीर्वाद देना। (ख) भगवान का भक्त को दर्शन देना। ४ कोई चीज कुछ समय के लिए अपने पास से अलग करके दूसरे के हवाले करना। सौंपना। जैसे—उसने अपना सारा असबाब

कुली को (ढोने के लिए) दे दिया। ५ कोई चीज किसी के हाथ पर रखना। थमाना। पकड़ाना। जैसे—भिखमंगे को पैसा देना। ६. धन या और किसी पदार्थ के बदले मे, अपनी चीज किसी के अधिकार मे करना। जैसे—सौ रुपए देने पर भी ऐसी अँगूठी तुम्हे नही मिलेगी। ७. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी को कुछ प्राप्त हो। पाने, मिलने या लेने मे सहायक या साधक होना। जैसे—(क) किसी को उपाधि या मान-पत्र देना। (ख) नौकर को छुट्टी या तनख्वाह देना। (ग) गौ या भैस का दूध देना। ८ किसी व्यक्ति, कार्य आदि के लिए उत्सृष्ट, निछावर या प्रदान करना। जैसे—(क) किसी सस्था को अपना जीवन, धन या समय देना। (ख) किसी को परामर्श, प्रमाण या सुझाव देना। (ग) किसी के लिए अपनी जान देना। ९. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी को कुछ कष्ट या दड मिले अथवा कोई दुष्परिणाम भोगना पडे। जैसे—दु ख देना, सजा देना। १० आघात या प्रहार करना। जडना। मारना। जैसे—थप्पड़ या मुक्का देना।

मुहा०—(किसी को) दे मारना=उठाकर जमीन पर गिरा या पटक देना।

११ पहनी जानेवाली कुछ चीजो के सबध मे, यथा-स्थान धारण करना। पहनना। जैसे—सिर पर टोपी या मुकुट देना। १२. कुछ विशिष्ट पदार्थों के सबध मे, बद करना। जैसे—किवाड देना, अगे का बद या कुरते का बटन देना। १३. अकन, लेखन आदि मे, अकित करना। चिह्न बनाना। जैसे—१ के आगे बिंदी देने से १० हो जाता है। उदा० —बक विकारी देत ज्यो दाम रुपैया होत।—विहारी।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

विशेष—सयोज्य क्रिया के रूप मे 'देना' का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियो मे होता है—(क) सप्रदान कारक मे 'पडना' क्रिया की तरह, जैसे—उसे दिखाई नही देता। (ख) अकर्मक अवधारण-बोधक क्रियाओ के साथ सप्रत्यय कर्त्ता कारक मे, जैसे—वह मुस्करा दिया। (ग) अनुमति-बोधक रूप मे, जैसे—उसे भी यहाँ बैठने दो। (घ) 'चलना' क्रिया के साथ विकल्प से, कर्त्तरि या भावे प्रयोग मे; जैसे—वह रुपए उठाकर चल दिया। (च) 'देना' क्रिया के साथ कार्य की पूर्ति सूचित करने के लिए। जैसे—उसने पुस्तक मुझे दे दी।

पु० १. किसी से लिया हुआ वह धन जो अभी चुकाया जाने को हो। ऋण। कर्ज। जैसे—उन्हे बाजार के हजारो रुपए देने है। २. वह धन जो किसी को किसी रूप मे चुकाना आवश्यक या कर्तव्य हो। देय धन। देन। जैसे—अभी तो घर का भाडा, नौकर की तनख्वाह, बिजली का हिसाब और न जाने क्या-क्या देना बाकी पडा है।

देमान†—पु०=दीवान।

देय—वि०[स०√दा (देना)+यत्] १ जो दिया जा सके। २ जो दिये या लौटाये जाने को हो।

देयक—पु० [स० देय+कन्] वह पत्र जिसमे किसी के नाम विशेषत बक के नाम यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते मे से इतने रुपए दे दो। (चेक)

देय-धर्म—पु०[प० त०] दानधर्म।

देयादेय-फलक—पु० [देय-अदेय द्व०स०, देयादेय-फलक प०त०] दे० 'आय-व्यय फलक'।

देयादेश—पु०[स० देय-आदेश प० त०] वह पत्र जिसमे यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को इतना धन दिया जाय। (पे-आर्डर)

देयासी†—पु०[स० देवोपासिन् ?] [स्त्री० देयासिन] झाड़-फूक करने-वाला ओझा।

देर—स्त्री०[फा०]१ किसी काम या व्यापार मे आवश्यक, उचित या नियत समय से अधिक लगनेवाला समय। विलंब। जैसे—लड़का देर से घर लौटता है। २ समय। वक्त। जैसे—यह काम कितनी देर मे होगा।

देरा†—पु०=डेरा।

देरानी*—स्त्री०=देवरानी।

देरी—स्त्री०=देर।

देवँक —स्त्री०=दीमक।

देव—पु० [स०√दिव् (क्रीडा आदि)+अच्] [स्त्री० देवी] १. स्वर्ग मे रहनेवाला अमर प्राणी। देवता। सुर। २ तेजोमय और पूज्य व्यक्ति। ३ बडे और सम्मानित लोगो के लिए एक आदर-सूचक सबोधन। जैसे—देव, मैं तो आप ही आ रहा था। ४. ब्राह्मणो की एक उपाधि या सज्ञा। ५ प्रेमी। ६ विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसका देवर। पति का छोटा भाई। ७ बच्चा। बालक। ८ ऋत्विक्। ९ ज्ञानेद्रिय। १०. दैत्य। राक्षस। ११. बादल। मेघ। १२ पारा। १३ देवदार का पेड।

देव-अंशी (शिन्)—वि०[प० त०] जो देवता के अश से उत्पन्न हो। जो किसी देवता का अवतार हो।

देव-ऋण—पु०[प०त०] देवताओ के द्वारा किया हुआ ऐसा उपकार जिसका बदला तर्पण, दान-पुण्य, यज्ञ आदि धार्मिक कृत्य करके चुकाया जाता है।

देव-ऋषि—पु० [प०त०] देवताओ के लोक मे रहनेवाला और उनका समकक्ष माना जानेवाला ऋषि। देवर्षि।

देवक—पु०[स०]१. देवता। २ एक यदुवशी राजा जो उग्रसेन के छोटे भाई, देवकी के पिता और श्रीकृष्ण के नाना थे। ३ युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम।

देव-कन्या—स्त्री०[प० त०] १ देवता की पुत्री। २ देवी।

देव-कपास—स्त्री०[देश०]नरमा या मनवा नाम की कपास। राम कपास।

देव-कर्दम—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का गध द्रव्य जो चदन, अगर, कपूर और केसर को एक मे मिलाने से बनता है।

देव-कर्म (न्)—पु०[मध्य०स०] देवताओ को प्रसन्न करने के लिए किया जानेवाला कर्म। जैसे—यज्ञ, बलि, वैश्वदेव आदि।

देवकांडर—पु०[स० देव-काड] जल-पीपल नामक क्षुप।

देव-कार्य—पु०[मध्य० स०] देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किये जाने-वाले कार्य। जैसे—होम, पूजा आदि।

देव-काष्ठ—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का देवदारु।

देवकिरि—स्त्री० [स० देव√कृ (बिखेरना)+क-ङीप्] एक रागिनी जो मेघ राग की भार्या मानी जाती है।

देवकी—स्त्री० [स० देवक+ङीप्] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता।

देवकी-नंदन—पु०[प०त०] श्रीकृष्ण।

देवकी-पुत्र—पु०[ष०त०] श्रीकृष्ण।
देवकी-मातृ—पु०[ब०स०] श्रीकृष्ण (जिनकी माता देवकी हैं)।
देवकीय—वि०[स० देव+छ—ईय, कुक्] देवता-संबंधी। देवता का।
देव-कुंड—पु०[मध्य०स०]१ आप से आप बना हुआ पानी का गड्ढा या ताल। प्राकृतिक जलाशय। २ किसी तीर्थ या देव-मंदिर के पास का पवित्र कुंड, जलाशय या तालाव।
देव-कुरुबा—स्त्री०[मध्य०स०] बडा गूमा। गोमा।
देवकुरु—पु०[स०] जैन पुराणों के अनुसार जम्बूद्वीप के छः खडों मे से एक जो सुमेरु और निषध के बीच मे स्थित माना गया है।
देव-कुल—पु०[स०देव√कुल् (संघात)+क]१ वह देवमंदिर जिसका द्वार बहुत छोटा हो। २ देव-मंदिर। ३ देवताओं का वर्ग।
देव-कुल्या—स्त्री०[मध्य०स०]१ गंगा नदी। २. मरीचि की एक कन्या जो पूर्णिमा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।
देव-कुसुम—पु०[ब० स०] लौंग (वृक्ष और फल)।
देव-कुसुमावलि—स्त्री० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
देव-कूट—पु०[स०]१ कुबेर के आठ पुत्रों मे से एक जो शिव पूजन के लिए सूंघकर कमल ले गया था और इसी लिए जो दूसरे जन्म मे कंस का भाई हुआ और श्रीकृष्ण चंद्र के द्वारा मारा गया। २ एक प्राचीन पवित्र आश्रम जो वशिष्ठ मुनि के आश्रम के पास था।
देव-कृच्छ्र—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे लपसी, शाक दूध, दही, घी मे से क्रमश एक-एक चीज तीन-तीन दिन खाने और उसके बाद तीन-तीन दिन निराहार रहने का विधान है।
देव-केसर—पु०[ब०स०] एक प्रकार का पुन्नाग। सुरपुन्नाग।
देवक्रिय—पु०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
देव-खात—पु०[तृ० स०] प्राकृतिक गड्ढा या जलाशय।
देव-गंग—स्त्री०[स०] असम प्रदेश की एक नदी। दिवंग।
देव-गंधा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] महामेदा नामक ओषधि।
देवगढ़ी—स्त्री०[देवगढ (स्थान)] एक तरह की ईख।
देव-गण—पु०[ष०त०]१. किसी जाति या धर्म के सभी देवी-देवताओं का वर्ग या समूह। (पैन्थियन)२. अश्विनी, रेवती, पुष्य, स्वाती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा और श्रवण नक्षत्रों का समूह (फलित ज्यो०) ३ किसी देवता का अनुचर।
देव-गति—स्त्री०[ष०त०] मरने के उपरांत प्राप्त होनेवाली उत्तम गति। देव-योनि अथवा स्वर्ग की प्राप्ति।
देवगन—पु० =देव-गण।
देव-गर्भ—पु०[ब० स०] वह जिसका जन्म देवता के वीर्य से हुआ हो। जैसे —कर्ण।
देव-गांधार—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है।
देव-गांधारी—स्त्री०[सं०] एक रागिनी जो श्रीराग की भार्या कही गई है। यह शिशिर ऋतु मे तीसरे पहर मे आधी रात तक गाई जाती है।
देव-गायक—पु०[ष०त०]गंधर्व।
देव-गायन—पुं०[ष०त०] गंधर्व।
देव-गिरा—स्त्री०[ष०त०] देवताओं की भाषा अर्थात् संस्कृत। देववाणी।
देवगिरि—पु०[स०] १. रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २ दक्षिण भारत के आधुनिक प्रमुख नगर का पुराना नाम।
देवगिरी—स्त्री०[?]हेमंत ऋतु मे दिन के पहले पहर मे गाई जानेवाली षाडव संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।
देव-गीर्वाणी—स्त्री०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
देव-गुरु—पु० [ष० त०] १ देवताओं के गुरु अर्थात् बृहस्पति। २. देवताओं के पिता, कश्यप।
देवगुही—स्त्री०[स०] सरस्वती।
देव-गृह—पु०[ष०त०]१. देवताओं का घर। २. देवालय। मंदिर।
देवघन—पु०[देश०] एक तरह का पेड।
देव-घनाक्षरी—स्त्री०[सं०] ३३ वर्णो का एक वृत्त जो मुक्तक दण्डक का एक भेद है।
देव-चक्र—पु०[ष०त०] गवामयन यज्ञ के एक अभिप्लव का नाम।
देवचाली—पुं०[स०] इद्रताल के छ भेदों में से एक।
देव-चिकित्सक—पु०[ष०त०]१ अश्विनीकुमार। २. उक्त के अनुसार दो की संख्या।
देवच्छद—पु०[स० देव√छद् (आकांक्षा)+घञ्] पुरानी चाल का एक तरह का बडा हार जिसमे ८१, १०० या १०८ लड़ियाँ होती थी।
देवज—वि०[स० देव√जन् (उत्पत्ति)+ड] देवता से उत्पन्न। देवसंभूत। पुं० एक प्रकार का साम गान।
देव-जग्ध—पु०[तृ०त०] रोहिष तृण। रोहिस घास।
देव-जन—पु०[मध्य०स०] गंधर्व।
देवजन-विद्या—स्त्री०[ष०त०] संगीत शास्त्र।
देव-जुष्ट—वि०[तृ०त०] देवता का जूठा किया हुआ अर्थात् उन्हे चढाया हुआ।
देवट—पु०[स०√दिव् (क्रीडा आदि)+अटन्]कारीगर। शिल्पी।
देवठान†—पु० दे० 'देवोत्थान'।
देवडोंगरी—स्त्री०[स० देव+देश० डोंगरी] देवदाली लता। बंदाल।
देवढ़ी†—स्त्री०=ड्योढी।
देव-तरु—पु०[मध्य०स०] कल्पवृक्ष।
देव-तर्पण—पुं०[ष०त०] देवताओ के उद्देश्य से किया जानेवाला तर्पण।
देवता —पु०[स० देव+तल्—टाप्] १. स्वर्ग मे रहनेवाले प्राणी जो पूज्य तथा जरा और मृत्यु से रहित माने गये है। २ देव-प्रतिमा। ३ ज्ञानेंद्रिय।
विशेष—संस्कृत मे 'देवता' स्त्री० होने पर भी हिन्दी मे पुंलिंग माना जाता है।
देवतागार—पु०[स० देवता-आगार ष०त०] देवागार। (दे०)
देव-ताड़—पु० [स० देव-ताल कर्म० स०, ल को ड] १. एक प्रकार का बडा तृण या पौधा जो देखने मे घीकुँआर के पौधे की तरह होता है। इसे रामबांस भी कहते हैं। २. दे० 'देव-ताडी'।
देवताड़ी—स्त्री० [सं० देव+हिं० ताड़] १ देवदाली लता। बंदाल। २. तुरई। तोरी।
देवतात्मा (त्मन्)—वि०[स० देवता-आत्मन् ब०स०]१. पवित्र। पावन। २. देवताओं की तरह का।
पुं० १. अलौकिक शक्ति। २. पीपल।

देवताधिप—पु० [स० देवता-अधिप ष० त०] देवताओ के राजा, इद्र।

देवताध्याय—पु०[स० देवता-अध्याय व० स०] सामवेद का एक ब्राह्मण।

देवता-मंगल—पु०[स०] रग-मच पर देवता को प्रसन्न करने के लिए होनेवाला मगलात्मक नृत्य।

देव-तीर्थ—पु०[प०त०] १ देवपूजन का उपयुक्त समय। २ देव-पूजा का स्थान। ३ दाहिने हाथ की एक साथ सटी हुई चारो उँगलियो का अग्रभाग जिससे तर्पण का जल छोडा जाता है।

देवत्त—वि०[स० देव-दत्त तृ० त०] देवता या देवताओ द्वारा दिया हुआ।

देव-त्रयी—पु० [स० त०] ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीन देवताओ का वर्ग।

देवत्व—पु०[स० देव+त्व]देवता होने की अवस्था, गुण, पद और भाव।

देव-दंडा—स्त्री० [व०स०] गँगेरन। नागवला।

देव-दत्त—वि० [स० तृ० त०] १ देवता का दिया हुआ। देवता से प्राप्त। २ [च०त०] जो देवता के निमित्त अलग किया या निकाला गया हो।

पु० १ ऐसी सपत्ति, जो किसी देवता के निमित्त अलग की गई हो। २ शरीर की पाँच वायुओ मे से एक जिससे जँभाई आती है। ३. अर्जुन के शख का नाम। ४ नागो के आठ कुलो मे से एक कुल। ५. शाक्य वशीय एक राजकुमार जो गौतम बुद्ध का चचेरा भाई था और उनसे बहुत द्वेप रखता था। यशोधरा के साथ यही विवाह करना चाहता था।

देव-दर्शन—पु० [ष० त०] १ देवता का किया जाने या होनेवाला दर्शन। २ एक प्राचीन ऋपि।

देवदानी—स्त्री० [?] वडी तोरई।

देवदार—पु० [स० देवदारु] एक प्रसिद्ध सीधे तने वाला ऊँचा पेड जिसके पत्ते लबे और कुछ गोलाई लिये होते हैं तथा जिसकी लकडी मजबूत किंतु हलकी और सुगधित होती है, और इमारतो मे काम आती है। इसके स्निग्ध और काष्ठ दो भेद है। काष्ठ दारु लोक मे अशोक वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। स्निग्ध देवदारु की लकडी और तैल दवा के काम भी आता है।

देव-दारु—पु० [प० त०] देवदार।

देवदार्वादि—पु० [स० देवदारु-आदि ब० स०] जच्चा अर्थात् प्रमूता स्त्री को दिया जानेवाला एक तरह का क्वाथ। (भाव प्रकाश)

देवदालिका—स्त्री० [स० देवदाली√कै (प्रतीत होना) +क-टाप्, ह्रस्व] महाकाल वृक्ष।

देव-दाली—स्त्री० [ब० स०, डीप्] एक तरह की लता जो तोरी की बेल से मिलती-जुलती होती है। इसके फल ककोडे (खेखसे) की तरह काँटेदार होते है। घघरबेल। बदाल।

देवदासी—स्त्री० [स० देव√दास् (हिंसा)+अण्-डीप्] १ प्राचीन भारत मे वह कन्या जो देवता को अर्पित कर दी जाती थी और उसके मदिर मे रहकर नाचती-गाती थी। २ नर्तकी। ३ रडी। वेश्या। ४ विजौरा नीबू।

देव-दीप—पु० [मध्य० स०] १. किसी देवता के सम्मुख अथवा किसी देवता के निमित्त जलाया जानेवाला दीपक। २ आँख। नेत्र।

देव-दुंदुभि—पु० [ष० त०] लाल तुलसी।

देव-दूत—पु० [ष० त०] [स्त्री० देवदूती] १. देवता या देवताओ का सदेश पहुँचानेवाला दूत। फरिश्ता। २ ऐसा व्यक्ति जो कु-समय मे किसी का उद्धार या सहायता करे।

देव-दूती—स्त्री० [प० त०] १ स्वर्ग की अप्सरा। २ विजौरा नीबू।

देव-देव—पु० [स० त०] १ शिव। २. ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ गणेश। ५ इद्र।

देवद्युर—पु० [स०] भरतवशीय एक राजा जो देवाजित् के पुत्र थे। (भागवत)

देव-द्रुम—पु० [प० त०] १ कल्पवृक्ष। २ देवदार।

देव-द्रोणी—प० [प० त०] १ देवयात्री। २ शिवलिंग का अरघा।

देव-धन—पु० [मध्य स०] देवता के निमित्त उत्सर्ग किया या अलग निकाला हुआ धन।

देव-धान्य—पु० [मध्य० स०] ज्वार।

देव-धाम (न्)—पु० [प०त०] तीर्थस्थान। देवस्थान।

देव-धुनी—स्त्री० [प० त०] १ गगा नदी। २ कोई पवित्र नदी।

देव-धूप—पु० [मध्य० स०] गुग्गुल। गूगुल।

देव-धेनु—स्त्री० [प० त०] कामधेनु।

देवनंदी (दिन्)—पु० [स० देव√नन्द् (समृद्धि) +णिनि] इद्र का द्वारपाल।

देवन—पु० [स० √दिव्+ल्युट्-अन] १ किसी से आगे बढ जाने की कामना। जिगीपा। २ क्रीड़ा। खेल। ३ उपवन। बगीचा। ४ कमल। पद्म। ५ काति। चमक। ६ प्रगसा। स्तुति। ७ गति। चाल। ८ जूआ। द्यूत। ९ खेद। रज।

देव-नदी—स्त्री०]ष० त०]] १ गगा। २ दृपद्वती नदी। ३ सरस्वती नदी।

देव-नल—पु० [उपमि० स०] एक तरह का सरकडा। नरसल।

देवना—स्त्री० [स० √दिव् +युच्-अन, टाप्] १ क्रीडा। खेल। २ जूआ। ३ टहल। परिचर्या। सेवा।

देव-नागरी—स्त्री० [स०] आधुनिक भारत की प्रसिद्ध राष्ट्रीय लिपि, जिसमे सस्कृत, हिंदी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं। हिंदी मे इसके ४५ ध्वनि चिह्न हैं जिनमे ३२ व्यजनो के और १३ स्वरो के हैं। सयुक्त ध्वनियो के चिह्न इनके अतिरिक्त है।

देव-नाथ—पु० [प० त०] शिव। महादेव।

देवनामा (मन्)—पु० [स०] कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम।

देव-नायक—पु० [प० त०] देवताओ के नायक, इद्र।

देवनाल—पु० [उपमि० स०] एक तरह का सरकडा। नरसल।

देव-निकाय—पु० [प० त०] १ देवताओ का समूह। २ देवताओ के रहने का स्थान, अर्थात् स्वर्ग।

देव-निर्मिता—स्त्री० [तृ० त०] गुडूची। गुरुच।

देव-पति—पु० [प० त०], इद्र।

देवपत्तन—पु० [स०] काठियावाड का वह क्षेत्र जिसमे सोमनाथ का मदिर है।

देव-पत्नी—स्त्री० [प० त०] १ देवता की स्त्री। २. मध्वालु नाम का कद।

देव-पथ—पु० [प० त०] १ देवताओ के चलने का मार्ग, आकाश।

२ देव-मन्दिर की ओर जाने का रास्ता। ३. प्राचीन भारत मे, वह ऊँचा मार्ग जो किले की दीवार के ऊपर चारो ओर आने-जाने के लिए होता था। ४ दे० 'देव-यान'।

देवपद्मिनी—स्त्री० [स०] आकाश मे बहनेवाली गगा का एक नाम।

देव-पर—पु० [व० स०] ऐसा भाग्यवादी पुरुष जो सकट पडने पर भी उद्यम न करता हो, बल्कि किसी देवता के भरोसे बैठा रहता हो।

देव-पर्ण—पु० [व० स०] माचीपत्र।

देव-पशु—पु० [च० त०] १ वह पशु जो देवता को बलि चढाया जाने को हो। २. देवता का उपासक।

देव-पात्र—पु० [प० त०] अग्नि, जिसमे देवताओ को अर्पित की जाने-वाली चीजे डाली जाती है।

देव-पान—पु० [प० त०] सोमपान करने का एक प्रकार का पात्र।

देवपाल—पु० [स०] शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम।

देव-पालित—वि० [तृ० त०] (क्षेत्र) जिसमे सिंचाई के अन्य साधन दुर्लभ होने पर भी केवल वर्षा के जल से अन्न उत्पन्न होता हो।

देव-पुत्र—पु० [प० त०] [स्त्री० देव-पुत्री] देवता का पुत्र।

देव-पुत्रिका—स्त्री० =देव-पुत्री।

देव-पुत्री—स्त्री० [प० त०] १. देवता की पुत्री। २. इलायची। ३ कपूरी साग।

देव-पुर—पु० [प० त०] अमरावती।

देव-पुरी—स्त्री० [प० त०] देवताओ की नगरी जो स्वर्ग मे इन्द्र की राजधानी मानी गई है। अमरावती।

देव-पूजा—स्त्री० [प० त०] देवताओ का किया जानेवाला पूजन।

देव-प्रयाग—पु० [स०] हिमालय मे, गगा और अलकनंदा नदियो के सगम पर स्थित एक तीर्थ।

देव-प्रश्न—पु० [प० त०] १ फलित ज्योतिष मे, वह प्रश्न जो ग्रह, नक्षत्र, ग्रहण आदि के सबध मे हो। २. भविष्य-सबधी प्रश्न।

देव-प्रस्थ—पु० [स०] एक प्राचीन नगरी जो कुरुक्षेत्र से पूर्व की ओर थी।

देव-प्रिय—पु० [प० त०] १ अगस्त (पेड और फूल)। २. पीली भँगरैया।

देवबंद—पु० [स० देववद] घोडो की एक भँवरी जो उनकी छाती पर होती है और शुभ मानी जाती है।

देव-बला—स्त्री० [क्ष० म०, टाप्] सहदेई (बूटी)।

देवबाँस—पुं० [स०] एक तरह का बाँस जिसके नरम हरे कल्लो का अचार डाला जाता है।

देव-ब्रह्मन्—पु० [उपमि० स०] नारद।

देव-ब्राह्मण—पु० [मध्य० स०] देवताओ का पूजन करके जीविका निर्वाह करनेवाला ब्राह्मण।

देव-भवन—पु० [प० त०] १ देवताओ का घर या स्थान। देव-मंदिर। २ स्वर्ग। ३. अश्वत्थ या पीपल जिसमे देवताओ का निवास माना जाता है।

देव-भाग—पु० [प० त०] किसी चीज विशेषत सपत्ति का वह भाग जो किसी देवता के निमित्त अलग किया गया हो।

देव-भाषा—स्त्री० [प० त०] सस्कृत भाषा।

देव-भिषक् (ज्)—पु० [स० प० त०] अश्विनी कुमार।

देव-भू—स्त्री० [प० त०] स्वर्ग।

देव-भूति—स्त्री० [प० त०] १ देवताओ का ऐश्वर्य। २ मंदाकिनी।

देव-भूमि—स्त्री० [प० त०] देवताओ की भूमि अर्थात् स्वर्ग।

देव-भृत्—पुं० [स० देव√भृ (भरण)+क्विप्] देवताओ का भरण करनेवाले (क) इद्र, (ख) विष्णु।

देव-भोज्य—पु० [प० त०] देवताओ का भोजन। अमृत।

देव-मंजर—पु० [स०] कौस्तुभ मणि।

देव-मदिर—पु० [प० त०] देवता का मदिर। देवालय।

देव-मणि—पु० [स० त०] १. सूर्य। २ [कर्म० स०] कौस्तुभ मणि। ३ महामेदा। ४. घोडो की गरदन पर की एक प्रकार की भौंरी।

देव-मनोहरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देवमाता (तृ)—स्त्री० [प० त०] देवताओ की माता (क) अदिति, (ख) दाक्षायणी।

देव-मातृक—वि० [व० स०, कप्] दे० 'देवपालित'।

देव-मादन—वि० [प० त०] देवताओ को मत्त करनेवाला। पु० सोम।

देव-मान—पु० [प० त०] काल-गणना मे वह मान जो देवताओ के सबंध मे काम मे लाया जाता है। जैसे—देव-मान के विचार मे मनुष्यो का एक सौ वर्ष देवताओ का एक दिन होता है।

देव-मानक—पु० [व० स०, कप्] कौस्तुभ मणि। देवमणि।

देव-माया—स्त्री० [प० त०] १ देवताओ की माया। २ वह ईश्वरीय या प्राकृतिक माया जो अविद्या के रूप मे रहकर जीवो को सासारिक बधनो मे फँसाये रखती है।

देव-मार्ग—पु० [प० त०] देवयान।

देव-मालवी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देव-मास—पु० [च० त०] १ गर्भ का आठवाँ महीना। २ तीन हजार वर्ष के बराबर का समय जो देवताओ की काल-गणना के अनुसार एक महीने के बराबर होता है।

देव-मित्र—पु० [व० स०] शाकल्य ऋषि का एक नाम।

देव-मीढ—पु० [सं०] मिथिला के एक राजा जो महाराजा जनक के पूर्वजो मे से थे।

देव-मीढुष—पु० [स०] वसुदेव के पितामह।

देव-मुखारी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देव-मुख्या—स्त्री० [सं०] कस्तूरी।

देव-मुनि—पुं० [कर्म० स०] १ नारद ऋषि। २. सूर नामक ऋषि।

देवमूक—पु० [स०] एक पर्वत का नाम। (गर्गसहिता)

देव-मूर्ति—पु० [प० त०] किसी स्थान पर प्रतिष्ठित देवता की प्रतिमा या मूर्ति।

देव-यजन—पु० [प० त०] यज्ञ की वेदी।

देव-यजनी—स्त्री० [प० त०] पृथिवी।

देव-यज्ञ—पु० [प० त०] होमादि कर्म जो पचयज्ञो मे से एक है तथा जिसे करना गृहस्थो का प्रतिदिन का कर्तव्य माना गया है।

देवयात्री-(त्रिन्)—पु० [स०] पुराणानुसार एक दानव।

देव-यान—पु० [प० त०] १ देवताओ की ओर ले जानेवाला मार्ग।

२ शरीर के अलग होने के उपरात जीवात्मा के जाने के दो मार्गो मे से एक जिसमे से होता हुआ वह ब्रह्म-लोक को जाता है। ३ उत्तरायण।

देवयानी—स्त्री० [स०] राजा ययाति की पत्नी जो शुक्राचार्य की कन्या थी।

देव-युग—पु० [मध्य० स०] सत्ययुग।

देव-योनि—स्त्री० [व० स०] स्वर्ग, अतरिक्ष आदि में रहनेवाले उन जीवो का वर्ग जो देवताओ के अतर्गत माने जाते है। जैसे—अप्सरा, किन्नर, गधर्व, यक्ष आदि।

देव-रंजनी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देवर—पु० [स०, √दिव्+अर] [स्त्री० देवरानी] १. विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति का छोटा भाई। २ पति का कोई भाई, चाहे उससे छोटा हो या वडा। (क्व०) ३ रहस्य सप्रदाय मे (क) भ्रम या सशय, (ख) कामदेव।

देव-रक्षित—वि० [तृ० त०] जो देवताओ द्वारा रक्षित हो।
पु० राजा देवक के एक पुत्र का नाम।

देवरक्षिता—स्त्री० [स०] देवक राजा की एक कन्या।

देव-रथ—पु० [प० त०] १ देवताओ का रथ। विमान। २ सूर्य का रथ।

देवरा—पु० [स० देव] [स्त्री० अल्पा० देवरी] १ छोटा-मोटा देवता। २ उक्त प्रकार के देवता का मदिर। ३ ऊँचे शिखरवाला देव-मदिर। ४ किसी महापुरुष की समाधि।
पु० [?] एक प्रकार का पटसन जिससे रस्सियाँ वनती है।

देवराज—पु० [प० त०] देवताओ के राजा, इद्र।

देव-राज्य—पु० [प० त०] देवताओं का राज्य, स्वर्ग।

देव-रात—पु० [तृ० त०] १ देवताओं द्वारा रक्षित राजा परीक्षित। २ शुन शेप का वह नाम जो विश्वामित्र के आश्रम मे पड़ा था। ३. याज्ञवल्क्य ऋषि के पिता का नाम। ४ निमि के वश के एक राजा। ५ एक प्रकार का सारस।

देवरानी—स्त्री० [हिं० देवर] देवर अर्थात् पति के छोटे भाई की स्त्री।
†स्त्री० देवराज इद्र की पत्नी शची। इद्राणी।

देवराय†—पु० =देवराज।

देवरी†—स्त्री० [हिं० देवरा] छोटी-मोटी देवी।

देवर्द्धि—पु० [स०] जैनो के एक प्रसिद्ध स्थविर जिन्होने जैन सिद्धान्त लिपिवद्ध किये थे।

देवर्षि—पु० [स० देव-ऋषि प० त०] देवताओ मे ऋषि। जैसे—नारद।

देवल—पु० [स० देव√ला (लेना)+क] १ वह ब्राह्मण जो देवताओ पर चढाई हुई चीजो से अपनी जीविका निर्वाह करे। पडा। २ धार्मिक व्यक्ति। ३ नारद मुनि। ४ एक प्राचीन स्मृतिकार। ५ देवालय। मदिर। ६ पति का छोटा भाई। देवर।
पु० [देश०] एक प्रकार का चावल।
स्त्री० दीवार।

देवलक—पु० [स० देवल+कन्] =देवल। (दे०)

देव-लता—स्त्री० [मध्य० स०] नवमल्लिका। नेवारी।

देव-लांगुलिका—स्त्री० [स० देव= व्यथाकारक लाङ्गूलिक =शूक व० स०, टाप्] वृश्चिकाली लता।

देवला†—पु० [हिं० दीवा] [स्त्री० अल्पा० देवली] मिट्टी का छोटा दीया।

देव-लोक—पु० [प० त०] स्वर्ग।

देव-वक्त्र—पु० [प० त०] अग्नि, जिसके द्वारा देवताओ का भाग उन तक पहुँचता है।

देववती—स्त्री० [स०] ग्रामणी नामक गधर्व की कन्या जो सुकेश राक्षस की पत्नी और माल्यवान, सुमाली तथा माली की माता थी।

देव-वधू—स्त्री० [प० त०] १ देवता की स्त्री। २. देवी। ३. अप्सरा।

देव-वर्णिनी—स्त्री० [स०] भरद्वाज की कन्या और कुबेर की माता जो विश्रवा मुनि की पत्नी थी।

देव-वर्त्म (न्)—पु० [प० त०] आकाश।

देववर्द्धकि—पु० [प० त०] विश्वकर्मा।

देव-वर्द्धन—पु० [स०] पुराणानुसार राजा देवक का एक पुत्र जो देवकी का भाई और श्रीकृष्ण का मामा था।

देव-वर्ष—पु० [प० त०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।
पु० = दैव वर्ष।

देव-वल्लभ—वि० [प० त०] देवताओ को प्रिय लगनेवाला।
पु० १ केसर। २ सुरपुन्नाग नामक वृक्ष।

देव-वाणी—स्त्री० [प० त०] १ सस्कृत भाषा जो देवताओ की भाषा कही गई है। २ देवता के मुँह से निकली हुई वात। ३ देवताओ की ओर से होनेवाली आकाशवाणी।

देववात—पु० [स०] एक वैदिक ऋषि।

देववायु—पु० [स०] वारहवे मनु के एक पुत्र का नाम।

देव-वाहन—पु० [स० देव=हवि √वह्+णिच्+ल्यु—अन] अग्नि (जो देवताओ का हव्य उनके पास पहुँचाती है)।

देव-विद्या—स्त्री० [मध्य० स०] निरुक्त।

देव-विसर्ग—पु० [च० त०] १ देवताओ के लिए विसर्ग या अर्पण करना। २ वह चीज जो देवताओ को समर्पित की गई हो।

देव-विहाग—पु० [स० देवविभाग] सगीत मे, एक राग जो कल्याण और विहाग अथवा कुछ लोगो के मत से सारग और पूरवी के योग से वना है।

देव-वृक्ष—पु० [मध्य० स०] १ मदार का पौधा। आक। २ गूगुल। ३ सतिवन।

देव-व्रत—पु० [मध्य० स०] १ कोई धार्मिक सकल्प। २ एक प्रकार का सामगान। ३. [व० स०] भीष्म पितामह। ४ कार्तिकेय।

देव-शत्रु—पु० [प० त०] देवताओ का शत्रु, राक्षस।

देव-शाक—पु० [स०] एक सकर राग जो शकराभरण, कान्हडा और मल्लार के योग से वना है।

देव-शिल्पी (ल्पिन्)—पु० [प० त०] विश्वकर्मा।

देव-शुनी—स्त्री० [उपमि० स०] देवलोक की कुतिया, सरमा।

देव-शेखर—पु० [व० स०] दौने का पौधा। दमनक।

देव-श्रवा (वस्)—पु० [स०] १. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ वसुदेव के एक भाई का नाम।

देव-श्रुत—पु० [स० त०] १ ईश्वर। २ नारद ऋषि। ३ शुक्राचार्य के एक पुत्र। ४ एक जिन देव। ५ शास्त्र।

देव-श्रेणी—स्त्री० [ष० त०] १ देवताओ का वर्ग। २. मरोड-फली। मूर्वा।
देव-श्रेष्ठ—वि० [स० त०] देवताओ मे श्रेष्ठ।
पुं० बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।
देव-सखा—पु० [स०] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (वाल्मीकि रा०)
देव-सत्र—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ।
देव-सदन—पु० [ष० त०] १. देवताओ के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. देव-मन्दिर।
देव-सद् (-सद्)—पु० [ष० त०] देवस्थान।
देव-सभा—स्त्री० [ष० त०] १. देवताओं की सभा या समाज। २. सुधर्मा नाम का वह सभास्थल जो मय दानव ने अर्जुन और युधिष्ठिर के लिए बनाया था। ३ राज-सभा। ४. जूआ खेलने का स्थान।
देव-समाज—पु० [ष० त०] १ देवताओ का समाज। २. सुधर्मा नाम का सभास्थल।
देवसरि(त्)—स्त्री० [ष० त०] गगा।
देव-सर्षप—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार की सरसो।
देवसहा—स्त्री० [स० देव√सह् (सहना)+अच्–टाप्] सफेद फूलोवाला दर्डोत्पल।
देवसाक—पु० =देवशाक (राग)।
देवसार—पु० [स०] सगीत मे, इद्रताल के छ भेदो मे से एक।
देवसावर्णि—पु० [स०] भागवत के अनुसार तेरहवें मनु।
देव-सृष्टा—स्त्री० [च० त०] मदिरा। शराब।
देव-सेना—स्त्री० [ष० त०] १. देवताओ की सेना। २. देवताओ के सेनापति स्कद की पत्नी जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या मानी तथा मातृकाओ मे श्रेष्ठ कही गई है।
देव-सेनापति—पु० [ष० त०] कार्तिकेय। स्कद।
देव-स्थान—पु० [ष० त०] १ देवताओ के रहने की जगह या स्थान। २ देवमन्दिर। ३ एक ऋषि जिन्होंने पाडवो को वनवास के समय उपदेश दिया था।
देवस्व—पु० [ष० त०] १. वह सपत्ति जो किसी देवता को अर्पित की गई हो और उसकी सपत्ति मानी जाती हो। २. यज्ञ करनेवाले धर्मात्मा का धन।
देवहंस—पु० [देश०] हसो की एक जाति।
देवहरा†—पुं० [देव+स० घर] देवालय। मदिर। उदा०—गिरिस देव हरैं उतरा सोई।—नूर मुहम्मद।
देवहरिया†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नाव।
देवहा—स्त्री० [स० देववहा] सरयू नदी।
पु० [?] एक प्रकार का बैल।
देवहूति—स्त्री० [स०] १. देवताओ का आवाहन। २. कर्दम मुनि की पत्नी जो स्वयभुव मनु की कन्या थी।
देव-हेति—स्त्री० [ष० त०] दिव्य अस्त्र। देवास्त्र।
देवह्रद—पुं० [स०] एक सरोवर जो श्रीपर्वत पर स्थित माना गया है।
देवांगना—स्त्री० [देव-अगना ष०त०] १. देवता की स्त्री। २. स्वर्ग मे रहनेवाली स्त्री। ३. अप्सरा।
देवांतक—पु० [देव-अतक ष० त०] रावण का एक पुत्र जिसे हनुमान् ने युद्ध मे मारा था।
देवांध (स्)—पु० [देव-अधस् ष०त०] १ अमृत। २. देवता का नैवेद्य या भोग।
देवांश—पु० [देव-अश ष०त०] १. किसी वस्तु का वह अश जो देवताओ को समर्पित्त किया गया हो अथवा किया जाना चाहिए। २. ईश्वर का अशावतार।
देवा—स्त्री० [स० देव+टाप्] १. पद्मचारिणी लता। २ पटसन।
*पु०=देव।
†वि० [हिं० देना] देनेवाला। देवैया।
देवाक्रीड—पु० [देव-आक्रीड ष०त०] देवताओ और इन्द्र का बगीचा, नदनवन।
देवागार—पु० [देव-आगार ष०त०] १. देवताओ के रहने का स्थान; स्वर्ग। २. देवालय, मदर।
देवाजीव—पु० [सं० देव-आ√जीव् (जीना)+अच्]=देवाजीवी।
देवाजीवी (विन्)—पु० [स० देव-आ√जीव्+णिनि] १ वह जिसकी जीविका देवताओं के द्वारा या उनके सहारे चलती हो। २. पडा या पुरोहित।
देवाट—पु० [स० देव-आट ब० स०] हरिहर-क्षेत्र तीर्थ का पुराना नाम।
देवातिदेव—पु० [स० देव-अति√दिव+अच्] विष्णु।
देवात्मा (त्मन्)—पु० [देव-आत्मन् ब०स०] १. वह जिसकी आत्मा देवताओ की तरह पवित्र और शुद्ध हो। २. अश्वत्थ। पीपल।
देवाधिदेव—पु० [स० देव-अधिदेव ष०त०] १. विष्णु। २. शिव।
देवाधिप—पु० [स० देव-अधिप ष०त०] १. परमेश्वर। २. देवताओं के अधिपति, इन्द्र। ३. द्वापर के एक राजा।
देवान†—पु०=दीवान।
देवानां-प्रिय—वि० [स० अलुक् स०] १ देवताओं को प्रिय। २. बड़ो के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक आदर-सूचक विशेषण पद जो उनके परम भाग्यशाली और श्रेष्ठ होने का सूचक होता है। ३. मूर्ख। बेवकूफ।
पुं० बकरा, जो देवताओ को बलि चढाया जाता था।
देवाना†—पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।
वि०=दीवाना।
स०=दिलाना।
देवानीक—पु० [देव-अनीक ष०त०] १. देवताओ की सेना। २ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम। ३ सगर के वशज एक राजा।
देवानुग—पु० [देव-अनुग ष०त०] १ देवता का सेवक। २. विद्याधर, यक्ष आदि उपदेव जो देवताओ का अनुगमन करते हैं।
देवानुचर—पु० [देव-अनुचर ष०त०]=देवानुग।
देवानुयायी (यिन्)—पुं० [देव-अनुयायिन् ष०त०]=देवानुग।
देवान्न—पु० [देव-अन्न ष०त०] हवि। चरु।
देवाब—स्त्री० [देश०] धौंमर, गोंद, चूने, बीजन आदि के योग से बनाई जानेवाली एक तरह की लेई।
देवाभरण—पु० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

देवाभियोग—पु०[देव-अभियोग प० त०] जैनो के अनुसार वह स्थिति जिसमे कोई देवता शरीर मे प्रविष्ट होकर अनुचित कामो की ओर प्रवृत्त करता है।

देवाभीष्टा—स्त्री०[देव-अभीष्टा प०त०] पान की लता। तावूली।

देवायतन—पु०[देव-आयतन प०त०] १ देवता के रहने का स्थान, स्वर्ग। २ देवालय। मदिर।

देवायु (स्)—स्त्री०[देव-आयुस् प०त०] देवताओ का जीवनकाल जो वहुत लवा होता है।

देवायुध—पु०[देव-आयुध प०त०]१ देवताओ का अस्त्र। दिव्य-अस्त्र। २ इन्द्र-धनुष।

देवारण्य—पु०[देव-अरण्य प०त०]१ देवताओ का वन या उपवन। २ एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

देवाराधन—पु० [देव-आराधन प०त०] देवताओ का आराधन, पूजन आदि।

देवारि—पु०[देव-अरि प०त०] देवताओ के शत्रु, असुर।
†स्त्री०=दीवार।

देवारी—स्त्री०[स० दावाग्नि] कछारो मे दिखाई देनेवाला लुक। छलावा। उदा०—जानहुँ मिरिग देवारी मोहे।—जायसी।
†स्त्री०=दीवाली।

देवार्पण—पु०[देव-अर्पण च०त०] देवताओ के निमित्त किया जानेवाला अर्पण या उत्सर्ग।

देवार्ह—पु०[स०देव√अर्ह् (योग्य होना)+अण्] सुरपर्ण। माचीपत्र।

देवाल—वि०[हिं० देना] १ देनेवाला। देवैया। २ दूसरो को कुछ देने की प्रवृत्ति रखनेवाला।
†स्त्री०=दीवार।

देवालय—पु०[देव-आलय प०त०] १ देवताओ के रहने का स्थान, स्वर्ग। २ वह स्थान जहाँ किसी देवता की प्रतिमा प्रतिष्ठित हो। मदिर।

देवाला—पु० १ दिवाला। २. देवालय।

देवाली—स्त्री०=दीवाली।

देवा-लेई—स्त्री०[हिं० देना+लेना]१ किसी को कुछ देने और उससे कुछ लेने की क्रिया या भाव। २. बरावर परस्पर कुछ लेते-देते रहने का वरताव। लेन-देन का व्यवहार।

देवावसथ—पु०[देव-आवसथ प०त०]१. देवता के रहने का स्थान। २. मदिर।

देवावास—पु०[देव-आवास प०त०]१ देवता का मदिर। २. पीपल का पेड।

देवावृध्—पु० [स० देव√वृध् (वढना)+क्विप्] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

देवाश्व—पु०[देव-अश्व प०त०] इद्र का घोडा। उच्चैःश्रवा।

देवाहार—पु०[देव-आहार प०त०]१ देवताओ का आहार या भोजन। २ अमृत।

देविक—वि०[स० दैविक] १ देवताओ मे होनेवाला। देवता-सवधी। २. देवताओ द्वारा होनेवाला। दैवी। ३ दिव्य। स्वर्गीय।
पु० धर्मात्मा।

देविका—स्त्री० [स०√दिव्+ण्वुल्—अक, टाप, इत्व] घाघरा नदी।

देवी—स्त्री० [स०देव+ङीप्] १ स्त्री देवता। २ देवता की पत्नी। ३ दुर्गा, सरस्वती, पार्वती आदि स्त्री-देवताओ का नाम। ४ श्रेष्ठ गुणोवाली और सुशीला स्त्री। ५ प्राचीन भारत मे राजा की वह पत्नी जिसका राजा के साथ अभिषेक होता था। पटरानी। ६ स्त्री के लिए एक आदरसूचक सज्ञा या सवोधन। ७ स्त्रियो के नाम के अत मे लगनेवाला शब्द। जैसे—शीला देवी, कृष्णा देवी। ८ सफेद इद्रायन। ९ असवर्ग। पृक्का। १०. अडहुल। आदित्यभक्ता। ११. लिंगनी नाम की लता। पँचगुरिया। १२ वन-ककोडा। १३ शालपर्णी। सरिवन। १४ महाद्रोणी। वडा गूमा। १५. पाठा। १६ नागरमोथा। १७ हरीतकी। हर्रे। १८ अलसी। तीसी। १९ श्यामा नाम की चिडिया। २० सूर्य की सक्राति।
पु०[स० देविन्] जूआ खेलनेवाला व्यक्ति। जुआरी।
स्त्री०[अ० डेविट्स]१. लकडी का वह चौखटा जिसमे दो खडे खभो के ऊपर आडा बल्ला लगा रहता है। २ जहाज के किनारे पर वाहर की ओर निकले या झुके हुए वे खभे जिनमे घिरनियाँ लगी होती हैं।

देवीकोट—पु०[स०] वाणासुर की राजधानी। शोणितपुर।

देवी-गृह—पु०[प०त०]१. देवी या भगवती का मदिर। २ राज-प्रासाद मे राज-महिषी के रहने का निजी कमरा।

देवीदह—पु०[स०]१ देवी का कुड। २. देवी का स्थान।

देवी-पुराण—पु०[मध्य०स०] एक उपपुराण जिसमे दुर्गा का माहात्म्य वर्णित है।

देवीवीज—पु०[स० देवीवीर्य] गधक।

देवी-भागवत—पु०[मध्य०स०] एक पुराण जिसमे भगवती दुर्गा का माहात्म्य वर्णित है। कुछ लोग इसे उपपुराण मानते है।

देवी-भोया—पु० [हिं० देवी+भोयना=भुलाना] वह ओझा जो देवी का ही उपासक हो और उसी के द्वारा सव काम करता-कराता हो।

देवी-वीर्य—पु०[प०त०] गधक।

देवी-सूक्त—पु० [मध्य०स०] ऋग्वेद शाकल सहिता का एक देवी विषयक सूक्त।

देवेंद्र—पु०[देव-इद्र प०त०] देवताओ के अधिपति, इद्र।

देवेज्य—पु०[देव-इज्य प०त०] वृहस्पति।

देवेश—पु०[देव-ईश प०त०] देवताओ के राजा इद्र। २ ईश्वर। ३. शिव। ४ विष्णु।

देवेशय—पु०[स० देवे√शी (सोना)+अच्, अलुक् स०]१ परमेश्वर। २ विष्णु।

देवेशी—स्त्री०[देव-ईश प०त०, ङीप्]१ पार्वती। २ देवी।

देवेष्ट—वि०[देव-इष्ट प०त०] जिसे देवता चाहते हो।
पु० गुग्गुल।

देवेष्टा—स्त्री०[स० देवेष्ट+टाप्] वडा विजौरा नीवू।

देवैया—वि०[हिं० देना]१ देनेवाला। २ दूसरो को कुछ देने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

देवोत्तर—पु०[देव-उत्तर प०त०?]देवता को अर्पित अथवा उसके निमित्त उत्सर्ग की हुई सपत्ति।

देवोत्थान—पु०[देव-उत्थान प०त०] कार्तिक शुक्ला एकादशी (विष्णु का शेष की शय्या पर से सोकर उठना, जो पर्व का दिन माना जाता है)।

देवोद्यान—पु०[देव-उद्यान प०त०] नदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र देवताओ के उद्यान।

देवोन्माद—पु०[स०] एक प्रकार का उन्माद जिसमे रोगी, पवित्रता पूर्वक रहता है, सुगधित फूलो की मालाएँ पहनता है और प्राय' मन्दिरो मे दर्शन और परिक्रमा करता फिरता है।

देवौक (स्)—पु०[देव-ओकस् प०त०] देवताओ का वासस्थान।

देव्युन्माद—पु०[स०] एक प्रकार का उन्माद जिसमे शरीर सूख जाता है, मुँह और हाथ टेढे हो जाते है और स्मरण-शक्ति जाती रहती हैं।

देश—पु०[स०√दिश् (वताना)+अच्]१ सब ओर फैला हुआ वह विस्तृत अवकाश जिसके अतर्गत दिखाई देनेवाली सभी चीजें रहती है। २ उक्त का कोई परिमित या सीमित अश या भाग। जैसे—तारो का देश। ३ जगह। स्थान। ४ किसी अग या पदार्थ के आस-पास का स्थान। जैसे—उदर देश, कटि देश, ललाट देश। ५ कोई विशिष्ट भू-भाग या खड जिसका प्राकृतिक या कृत्रिम आधारो पर विभाजन हुआ हो तथा जहाँ कुछ विशिष्ट जातियाँ, कुछ विशिष्ट भाषा-भाषी तथा कुछ विशिष्ट परपराओ और सस्कृतियोवाले लोग रहते है। ६ उक्त लोग। ७ किसी का अथवा उसके पूर्वजो का जन्म स्थान। जैसे—छुट्टियो मे वे देश चले जाते है। ८ सगीत मे सपूर्ण जाति का एक राग। ९ जैन शास्त्रानुसार चौथा पचक जिसके द्वारा अर्थानुसधानपूर्वक तपस्या अर्थात् गुरु, जन, गुहा, श्मशान, और रुद्र की वृद्धि होती है।

देशक—पु०[स०√दिश्+ण्वुल्—अक] १ देश का शासक। २. मार्ग दर्शक। ३ उपदेश करनेवाला। उपदेशक।

देश-कली—स्त्री०[स०] एक रागिनी जिसमे गाधार, कोमल और वाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

देशकारी—स्त्री० [स०] सगीत मे, सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो मेघराग की भार्या कही गई है। यह वर्षाऋतु मे दिन के पहले पहर मे गाई जाती है।

देशगाधार—पु०[स०] एक राग जो सबेरे एक दड से पाँच दड तक गाया जाता है।

देश-चरित्र—पु० [प०त०] देश की प्रथा। रवाज। (कौ०)

देश-चारित्र—पु० [प०त०] जैन शास्त्रानुसार गार्हस्थ्य धर्म जिसके वारह भेद है।

देशज—वि०[स० देश√जन् (उत्पत्ति)+ड] (शव्द) जो देश मे ही उपजा या वना हो। जो न तो विदेशी हो और न किसी दूसरी भाषा के शव्द से वना हो।

पु० ऐसा शव्द जो न सस्कृत हो, न सस्कृत का अपभ्रश हो और न किसी दूसरी भाषा के शव्द से वना हो, वल्कि किसी प्रदेश के लोगो ने वोल-चाल मे यो ही वना लिया हो।

विशेष—यह शव्दो के तीन प्रकारो या विभागो मे से एक है। शेष दो विभाग तत्सम और तद्भव हैं।

देशज्ञ—पु० [स० देश√ज्ञा (जानना)+क] किसी देश की दशा, रीति, नीति आदि सब वातें जाननेवाला।

देश-धर्म—पु० [प०त०] किसी विशिष्ट देश की रीति, नीति, आचार, व्यवहार आदि।

देशना—स्त्री०[स०]१ उपदेश। (जैन) २. कोई ऐसी वात जिसके अनुसार कोई काम करने को कहा जाय। हिदायत।

देश-निकाला—पु० [हि० देश+निकालना]१ देश मे निकालने की क्रिया या भाव। २. अपराधी विशेषत' देशद्रोही को दिया जानेवाला वह दड जिसमे वह देश के वाहर निकाल दिया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

देश-पति—पु० [प०त०]१ देश का स्वामी, राजा। २. देश का प्रधान शासक। राष्ट्रपति।

देश-पाली—स्त्री०[स०] देशकारी (रागिनी)।

देश-पीड़न—पु०[प०त०] सारी प्रजा पर होनेवाला अत्याचार। राष्ट्र को कष्ट पहुँचाना। (कौ०)

देश-भक्त—पु०[प०त०] वह व्यक्ति जिसे अपना देश परम प्रिय हो तथा जो उसकी स्वतन्त्रता और स्वार्थो को सर्वोपरि समझता हो। ऐसा व्यक्ति किसी अच्छे उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सब-कुछ उत्सर्ग करने को प्रस्तुत रहता है।

देश-भक्ति—स्त्री०[प०त०] देशभक्त होने की अवस्था, गुण या भाव।

देश-भाषा—स्त्री०[प०त०] वह भाषा जो किसी विशिष्ट देश या प्रात मे ही वोली जाती हो। जैसे—पजावी, वँगला, मराठी आदि।

देश-मल्लार—पु०[स०] सपूर्ण जाति का एक राग।

देशराज—पु०[स०] राजा परमाल (प्रमर्दि देव) के एक सामत जो आल्हा और ऊदल के पिता थे।

देशस्थ—वि०[स० देश√स्था (ठहरना)+क] १. देश मे स्थिति। २ देश मे रहनेवाला।

पु० महाराष्ट्र व्राह्मणो का एक भेद।

देशाकी—स्त्री०[?]एक प्रकार की रागिनी।

देशांतर—पु०[स० देश-अतर; मयू० स०] [वि: देशातरी, भू० कृ० देशातरित]१ अपने अथवा प्रस्तुत देश से भिन्न, अन्य या दूसरा देश। परदेश। विदेश। २. दे० 'देशातरण'। ३ भूगोल मे, याम्योत्तर रेखा के विचार से निश्चित की हुई किसी स्थान की पूर्वी या पश्चिमी दूरी जो अक्षाश की तरह सख्या-सूचक अशो मे वताई जाती है। (लागी-च्यूड)

देशांतरण—पु०[स० देशातर+णिच्+ल्युट्—अन]१ एक देश को छोडकर दूसरे देश मे जाना तथा उसमे जाकर रहना। २ राज्य की ओर से दिया जानेवाला निर्वासन का दड।

देशातर सूचक यंत्र—पु०[स०] किसी स्थान का देशातर सूचित करनेवाला एक प्रकार का यत्र जिसका उपयोग मुख्यत समुद्री जहाजो पर देशातर जानने के लिए किया जाता है। (क्रोनोमीटर)

देशांतरित—भू० कृ०[सं० देशातर+णिच्+क्त]१ जो किसी दूसरे देश मे जा वसा हो। २. जिसे देश-निकाले का दड मिला हो। ३ जो किसी दूसरे देश मे पहुँचा या भेज दिया गया हो।

देशांतरित-पण्य—पु०[कर्म०स०] दूर देश से आया हुआ माल। विदेशी माल। (कौ०)

देशांतरी (रिन्)—वि०, पु०[स० देशातर+इनि] विदेशी।

देशाश—पु०=देशातर।

देशाका—पु०[स०] एक प्रकार की रागिनी।

देशाक्षी—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देशाखी—स्त्री०[स०] पाडव जाति की एक रागिनी जो हनुमत् के मत से हिंडोल की दूसरी रागिनी है।

देशाचार—पु०[स० देश-आचार ष०त०] किसी विशिष्ट देश के रीति-रवाज।

देशाटन—पु०[स० देश-अटन स०त०] भिन्न-भिन्न देशो मे घूम-घूमकर की जानेवाली यात्रा या पर्यटन।

देशावकाशिक (व्रत)—पु० [स०] जैन शास्त्रानुसार, एक प्रकार का शिक्षा-व्रत जिसमे स्वार्थ के लिए सव दिशाओ मे आने-जाने के जो प्रतिवध है उनको और भी कठोरता तथा दृढता से पालन किया जाता है।

देशावली—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देशिक—वि०[स० देश+ठन्—इक]किसी विशिष्ट देश या प्रदेश से सवध रखने या उसकी सीमा मे होनेवाला। (इन्टरनल)
पु० पथिक। वटोही।

देशित—भू० कृ०[स० √दिश्+णिच्+क्त]१ जिसे आदेश दिया गया हो। आदिष्ट। २ जिसे उपदेश दिया गया हो। उपदिष्ट। ३ जिसे कोई वात वतलाई या समझाई गई हो।

देशिनी—स्त्री० [स०√दिश्+णिनि—ङीप्] १ सूची। सूई। २ तर्जनी उँगली।

देशी—वि०[स० देशीय]१ देश-सवधी। देश का। जैसे—देशी भाषा। २ किसी व्यक्ति की दृष्टि से, स्वय उसके देश मे वनने, रहने या होने-वाला। स्वदेशी। जैसे—देशी माल।
पु०१ सगीत के दो भेदो मे से एक (दूसरा भेद 'मार्गी' कहलाता है)। २. एक प्रकार का ताण्डव नृत्य जिसमे अभिनय कम और अग-विक्षेप अधिक होता है।
स्त्री० एक रागिनी जो हनुमत् के मत से दीपक राग की भार्या है और जो ग्रीष्मकाल मे मध्याह्न के समय गाई जाती है।

देशी-राज्य—पु० दे० 'रियासत'।

देशीय—वि०[स० देश+छ—ईय] देश मे होने अथवा उसके भीतरी भागो से सवध रखनेवाला।

देश्य—वि०[स०]१ किसी देश, प्रान्त या स्थान से सवध रखने या उसमे होनेवाला। देशी। २ प्रान्तीय या स्थानीय। ३. [√दिश्+ण्यत्] (तथ्य) जो प्रमाणित किया जाने को हो।
पु०१. देश का निवासी। २ ऐसा गवाह जिसने कोई घटना अपनी आँखो से देखी हो। प्रत्यक्षदर्शी। ३ न्याय मे ऐसा कथन या तथ्य जो प्रमाणित किया जाने को हो। पूर्व-पक्ष।

देसतर†—पु०[स० देशान्तर] दूसरा देश। विदेश।

देस†—पु० देश।

देसकार† —पु०=देशकार।

देसवाल—वि०[हिं० देस+वाला] स्वदेश का, दूसरे देश का नही (मनुष्य के लिए)। जैसे—देसवाल वनिया।
पु० एक प्रकार का पटसन।

देसावर—पु०[स० देश+अपर] [वि० सावरी] अपने देश से भिन्न कोई दूसरा देश।

देसावरी—वि०[हि० देसावर] देसावर अर्थात् अन्य देश का।

देसी†—वि०=देशी।

देहंभर—वि०[स० देह√भृ (पोषण)+खच्, मुम्]१. अपने ही शरीर का पोषण करनेवाला। २ परम स्वार्थी।

देह—स्त्री०[स०√दिह(वृद्धि)+घञ्] [वि० देही]१. शरीर। तन। वदन।
मुहा०—देह छोड़ना या त्यागना =मृत्यु होना। देह धरना या लेना= जन्म लेकर शरीर धारण करना। देह विसरना=तन-वदन की सुध न रहना।
२ शरीर का कोई अग। ३ जिंदगी। जीवन। ४ देवता आदि की मूर्ति। विग्रह।
पु०[फा०]गाँव। खेडा।
विशेष—'देहात' वस्तुत इसी 'देह' का वहु० है।

देहकान—पु०=दहकान।

देहकानी—वि०=दहकानी।

देह-त्याग—पु०[ष०त०] मरण। मृत्यु।

देहद—पु०[स० देह√दै (शोधन)+क] पारा।

देह-धारक—वि०[ष०त०] शरीर को धारण करनेवाला। देह-धारी।
पु० अस्थि। हड्डी।

देह-धारण—पु०[ष०त०]१. शरीर प्राप्त करना। जन्म लेना। २. शरीर प्राप्त होने पर उसका पालन और रक्षा करना। शरीर के धर्मो का निर्वाह करना।

देहधारी (रिन्)—वि०[स० देह√धृ (धारण)+णिनि] [स्त्री० देहधारिणी]१. जन्म लेकर शरीर धारण करनेवाला। २ जिसे शरीर हो। शरीरी।
पु० जीव। प्राणी।

देहधि—पु०[स० देह√धा+कि]चिड़ियो का पख। डैना।

देहवृज्—पु०[सं०देह√वृज् (सचरण)+क्विप्] वायु, जिससे शरीर बना रहता है।

देहली—पु०[स०]१ जीवित व्यक्ति। प्राणी। २ मनुष्य।
स्त्री० पत्नी। (राज०)

देह-पात—पु०[ष०त०]देह अर्थात् शरीर का नाश। मृत्यु।

देहभुज्—पु०[स० देह√भुज्(भोगना)+क्विप्] १. जीव। प्राणी। २. आत्मा। ३ सूर्य। ४ मरण। मृत्यु।

देहभृत्—पु०[स० देह√भृ (भरण) +क्विप्] जीव। प्राणी।

देह-यात्रा—स्त्री०[च० त०] १ भोजन। भरण-पोषण आदि ऐसे काम जिनसे शरीर चलता रहे। २ [ष०त०] मृत्यु। मौत।

देहर—स्त्री०[स० देवह्रद] नदी के किनारे की वह नीची भूमि जो वाढ के समय जलमग्न रहती है।

देहरा—पु०[हिं० देव+घर] [स्त्री० अल्पा० देहरी] देवालय। मदिर।
†पु०=देह (शरीर)।

देहरि*—स्त्री० =देहली।

देहरी—स्त्री०=देहली।

देहला—स्त्री०[स०]मदिरा। शराव।

देहली—स्त्री०[स० देह√ला (ग्रहण)+कि—ङीप्]१ दीवार मे लगे हुए दरवाजे मे चौखट के नीचे की लकडी। दहलीज। २ उक्त

लकड़ी के आस-पास का स्थान अथवा वह स्थान जहाँ पर उक्त लकडी रहती है।

देहली-दीपक—पु०[मध्य० स०]१ देहरी पर रखा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनो ओर प्रकाश फैलाता है। २ उक्त के आधार पर प्रचलित एक न्याय का सिद्धात जिसका प्रयोग ऐसे अवसरो पर होता है, जहाँ एक ही चीज या बात दोनो पक्षो पर प्रकाश डालती हो। ३ साहित्य मे, एक अर्थालकार जिसमे किसी एक बीचवाले शब्द का अर्थ पहले और बाद के अर्थात् दोनो पदो मे समान रूप से लगता है। जैसे—'हम न आप' मे का 'न' जिसके कारण पद का अर्थ होता है—न हम और न आप।

देहवत—वि०[स० देहवान् का बहु०] जिसका देह हो। शरीरधारी।

देहवान् (वत्)—वि०[स०देह+मतुप्] शरीरधारी।
पु० जीव। प्राणी।

देह-शकु—पु०[स०] पत्थर का खभा।

देह-सचारिणी—स्त्री० [स० देह-सम्√चर् (गति) +णिनि—ङीप्] कन्या। लडकी।

देह-सार—पु०[प०त०] शरीर मे की मज्जा नामक धातु।

देहांत—पु०[देह-अत प०त०] देह का अत। शरीरात। मृत्यु।

देहातर—पु०[देह-अतर मयू० स०]एक शरीर छोडने पर प्राप्त होनेवाला दूसरा शरीर। जन्मातर।

देहातरण—पु०[स० देहातर+णिच्+ल्युट्—अन][भू० कृ० देहातरित] आत्मा का एक शरीर छोडकर दूसरे शरीर मे जाना। नया देह या शरीर धारण करना।

देहात—पु०[फा० देह (गाँव) का बहु०] [वि० देहाती] १. गाँव। ग्राम। २ देश के वे विभाग जिनमे अनेक गाँव हो।

देहाती—वि० [हिं० देहात] [भाव० देहातीपन] १. देहात-सबधी। २ देहात अर्थात् गाँव मे रहनेवाला। ३ उक्त लोगो की प्रकृति, रुचि, व्यवहार आदि के अनुरूप। जैसे—देहाती पहनावा या रहन-सहन।
पु० गँवार।

देहातीत—वि०[स० देह-अतीत द्वि० त०] १. जो शरीर से परे या स्वतन्त्र हो। २ जिसे देह का अभिमान, ममता आदि न हो।

देहातीपन—पु०[हिं० देहाती+पन (प्रत्य०)] देहाती होने की अवस्था या भाव।

देहात्म-ज्ञान—पु०[प०त०] देह और आत्मा के अभेद का ज्ञान।

देहात्म-वाद—पु०[प०त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार देह को ही आत्मा मानते है और देह से भिन्न आत्मा नाम का कोई पदार्थ नही मानते।

देहात्मवादी (दिन्)—पु०[स० देहात्मवाद+इनि] देहात्मवाद का अनुयायी और समर्थक।

देहात्मा (त्मन्)—पु०[स० देह-आत्मन् द्व०स०] देह और आत्मा।

देहाध्यास—पु०[देह-अध्यास प०त०] देह को ही आत्मा समझने का भ्रम।

देहावरण—पु०[देह-आवरण प०त०]१ शरीर पर पहनने के या उसे ढकने के कपडे। २ जिरह। बक्तर।

देहावसान—पु०[देह-अवसान प०त०] देह का अवसान अर्थात् अत या नाश। देहात। मृत्यु।

देहिका—स्त्री०[स०√दिह्+ण्वुल्—अक, टाप् इत्व] एक प्रकार का कीडा।

देही (हिन्)—वि०[स० देह+इनि]देह को धारण करनेवाला। शरीरी।
पु०जीवात्मा। आत्मा।

देहेश्वर—पु०[देह-ईश्वर प०त०] आत्मा।

देहोद्भव, देहोद्भूत—वि०[देह-उद्भव ब०स०, देह-उद्भूत प० त०] १. देह से उद्भूत या प्राप्त होनेवाला। २. जन्मजात।

दैं—अव्य०[अनु०]से। (किसी क्रिया के प्रकार का सूचक) जैसे—चपाक दैं।

दैंती—स्त्री०=दराँती।

दैअ*—पु०=दव।

दैआ*—स्त्री०=दैया।

दैउ*—पु०=दैव।

दैजा—पु०=दायजा (दहेज)।

दैतारि*—पु०=दैत्यारि।

दैतेय—वि० [स० दिति+ढक्—एय]दिति से उत्पन्न।
पु० १ दिति का पुत्र। दैत्य। राक्षस। २ राहु का एक नाम।

दैत्य—पु० [स० दिति+ण्य] [स्त्री० दैत्या] १ कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम्नी स्त्री से पैदा हुए थे। असुर। राक्षस। २ लाक्षणिक रूप मे, बहुत बडे डील-डौलवाला और कुरूप या भद्दा आदमी। ३. राक्षसो के आकार-प्रकार और रग-ढग का व्यक्ति। ४ दुराचारी और नीच। ५. लोहा।

दैत्य-गुरु—पु० [प० त०] दैत्यो के गुरु; शुक्राचार्य।

दैत्यज—वि० [स० दैत्य√जन् (उत्पत्ति)+ड [स्त्री० दैत्यजा] दैत्य से उत्पन्न।
पु० दैत्य का वशज।

दैत्य-देव—पु० [प० त०] १ दैत्यो के देवता। २ वरुण। ३ वायु।

दैत्यद्वीप—पु० [स०] गरुड का एक पुत्र। (महाभारत)

दैत्य-धूमिनी—स्त्री० [स०] हथेलियो के पृष्ठ भागो को मिलाने तथा उँगलियो को एक दूसरे मे फँसाने पर बननेवाली एक मुद्रा। (तत्र)

दैत्य-पुरोधा (धस्)—पु० [स० प० त०] दैत्यो के पुरोहित शुक्राचार्य।

दैत्य-माता (तृ)—स्त्री० [प० त०] दैत्यो की माता, दिति।

दैत्य-मेदज्—पु० [दैत्य-मेद प० त०, दैत्यमेद√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. पृथ्वी। २. गुग्गुल। गूगुल।

दैत्य-युग—पु० [प० त०] दैत्यो का युग जिसकी अवधि देवताओ के बारह हजार बरसो और मनुष्यो के चार युगो के बराबर मानी गई है।

दैत्य-सेना—स्त्री० [स०] प्रजापति की कन्या जो देवसेना की बहन थी, जिसका विवाह केशव दानव से हुआ था।

दैत्या—स्त्री० [स० दैत्य+टाप्] १ दैत्य जाति की स्त्री। २ कपूर कचरी। मुरा। ३ चदौषधि। ४ मदिरा। शराब।

दैत्यारि—पु० [दैत्य-अरि प० त०] १ दैत्यो के शत्रु, विष्णु। २ देवता। ३. इद्र।

दैत्याहोरात्र—पु० [दैत्य-अहोरात्र प० त०] दैत्यो का एक दिन और एक रात जो मनुष्यो के एक वर्ष के बराबर कहा गया है।

दैत्येंद्र—पु० [दैत्य-इद्र प० त०] १ दैत्यो का राजा। २ गधक।

दैत्येज्य—पु० [दैत्य-इज्य ष० त०] दैत्यो के गुरु; शुक्राचार्य।

दैनंदिन—वि० [स० दिनदिन+अण् नि० सिद्धि] [स्त्री० दैनंदिनी] प्रतिदिन होनेवाला। नित्य का।
क्रि० वि० १ प्रतिदिन। नित्य। २ दिनो-दिन। लगातार।
पु० [स०] पुराणानुसार एक प्रकार का प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है। मोहरात्रि।

दैनंदिनी—वि० [स० दैनंदिन] दैनिक।
स्त्री०=दैनिकी (देखें)।

दैन—वि० [स० दिन+अण्] दिन सबधी। दिन का।
पु० [स० दीन+अण्] दीन होने की अवस्था या भाव। दीनता।
†स्त्री०=देन।
†प्रत्य० [स० दायिन्] देनेवाला। जैसे—सुखदैन।

दैनिक—वि० [स० दिन+ठञ्–इक] १ दिन-सबधी। दिन का। जैसे—दैनिक समाचार। २ एक दिन मे होनेवाला। ३. प्रति दिन या हर रोज किया जाने या होनेवाला। जैसे—दैनिक चर्या। ४. नित्य या बराबर होता रहनेवाला। रोज-रोज का। जैसे—दैनिक चिंता, दैनिक झगडा।
पु० १. एक दिन काम करने का पारिश्रमिक, मजदूरी या वेतन। २ वह समाचार-पत्र जो प्रति दिन या रोज प्रकाशित होता हो। (डेली)

दैनिक-पत्र—पु० [कर्म० स०] वह समाचार-पत्र जो प्रति दिन या नित्य प्रकाशित होता हो। हर रोज छपनेवाला अखबार।

दैनिकी—स्त्री० [स० दैनिक+ङीप्] जेब मे रखी जानेवाली वह छोटी पुस्तिका जिसमे रोज के किये जानेवाले कामो का उल्लेख होता है। (डायरी)

दैन्य—पु० [स० दीन+ष्यञ्] १ दीन होने की अवस्था या भाव। दीनता। २. गरीबी। दरिद्रता। ३. नम्रता। ४ साहित्य मे, एक प्रकार का सचारी भाव जिसमे कष्ट, दु ख आदि के कारण मनुष्य कातर, दीन और नम्र हो जाता है।

दैयत†—पु०=दैत्य।

दैया—पुं० [हिं० दई] दई। दैव।
मुहा०—**दैयन कै**†=दैव दैव करते हुए। बहुत कठिनता से या किसी प्रकार।
†स्त्री० [हिं० दाई] १ माता। माँ। २ दाई।
अव्य० आश्चर्य, भय, दु ख आदि का सूचक शब्द। हे परमेश्वर! (स्त्रियाँ)

दैयागति†—स्त्री०=दैवगति।

दैर—पु० [फा०] १ वह स्थान जहाँ लोग धार्मिक दृष्टि से पूजा, उपासना आदि करते हों। २ देव-मदिर। बुतखाना। ३ गिरजा।

दैर्घ्य—पु० [स० दीर्घ+ष्यञ्] दीर्घ का भाव। दीर्घता। लबाई।

दैव—वि० [स० देव+अण्] [स्त्री० दैवी] १ देवता सबधी। जैसे—दैव-कार्य। २ देवताओ की ओर से होनेवाला। जैसे—दैव-गति। ३. देवता को अर्पित किया हुआ।
पु० १. अर्जित शुभ और अशुभ कर्म जो फल देनेवाले होते है। प्रारब्ध। होनी। २ विधाता। ईश्वर।
मुहा०—**(किसी को) दैव लगना**=(किसी पर) ईश्वर का कोप होना।
३ आकाश।

मुहा०—**दव बरसना**=पानी बरसना।
४ योगियो के योग मे होनेवाले पाँच प्रकार के विघ्नो मे से एक जिसमे योगी उन्मत्तो की तरह आँखें बद करके चारो ओर देखता है। (मार्कं-डेय पु०)

दैव-कृत-दुर्ग—पु० [स० दैव-कृत तृ० त०, दैवकृत-दुर्ग कर्म० स०] वह स्थान जो चारो ओर से पर्वतो, नदियो आदि से घिरा होने के कारण सुरक्षित हो।

दैव-कोविद—पु० [स० ष० त०] १ देवताओ के विषय की सब बातें जाननेवाला। २. ज्योतिषी। दैवज्ञ।

दैव-गति—स्त्री० [कर्म० स०] १. ईश्वरीय या दैवी घटना। २. भाग्य। प्रारब्ध।

दैवग्य†—पु० = दैवज्ञ।

दैव-चिंतक—पु० [ष० त०] ज्योतिषी।

दैवज्ञ—वि० [स० दैव√ज्ञा (जानना)+ क] [स्त्री० दैवज्ञा] दैव-सबधी सब बातें जाननेवाला।
पु० १ ज्योतिषी। २ बगाली ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।

दैव-तंत्र—वि० [ब० स०] भाग्य पर आश्रित या उसके अधीन रहने-वाला।

दैवत—वि० [स० देवता+अण्] देवता-सबधी।
पु० १ देवता। २ देवता की प्रतिमा या मूर्ति। विग्रह। ३ यास्क मुनि के निरुक्त का तीसरा काड।

दैवत-पति—पु० [ष० त०] देवताओ का राजा इद्र।

दैव-तीर्थ—पुं० [मध्य० स०] उँगलियो के अग्रभाग या नोकें जिनसे आचमन किया जाता है।

दैवत्य—पु० [स० देवता+ष्यञ्] देवता।

दैवत्व—पु० [स० दैव+त्व] दैव होने की अवस्था, गुण या भाव।

दैव-दुर्विपाक—पु० [ष० त०] १ ऐसी स्थिति जिसमे होनेवाली खराबी दैव के प्रतिकूल होने पर होती है। २ भाग्य की खोटाई या दोष।

दैव-प्रमाण—पु० [ब० स०] ऐसा व्यक्ति जो पूर्णत भाग्य के भरोसे रहे।

दैव-युग—पु० [कर्म० स०] देवताओ का एक युग जो मनुष्यो के चारो युगो के बराबर होता है।

दैव-योग—पु० [ष० त०] ईश्वरकृत सयोग। इत्तिफाक। जैसे—दैव-योग से आप ठीक समय पर यहाँ आ गये।

दैवल—पु० [स० देवल+अण्] देवल ऋषि का वशज।

दैव-लेखक—पु० [ष० त०] ज्योतिषी।

दैव-वर्ष—पुं० [कर्म० स०] देवताओ का वर्ष जो १३१५२१ सौ दिनो के बराबर होता है।

दैव-वश—अव्य० [ष० त०] १ दैवयोग से। २ सयोगवश।

दैव-वशात्—अव्य० = दैववश।

दैव-वाणी—स्त्री० [कर्म० स०] १ देवताओ की भाषा, सस्कृत। २ देवताओ द्वारा कही हुई बात जो आकाश से सुनाई पडती है। आकाशवाणी।

दैववादी (दिन्)—वि० [स० दैव√वद् (बोलना)+णिनि] १ मुख्यत दैव या भाग्य के भरोसे रहनेवाला। ३ आलसी।

दैवविद्—पु०]स० दैव√विद् (जानना)+क] ज्योतिषी।

दैव-विवाह—पु० [कर्म० स०] स्मृतियो मे वर्णित आठ प्रकार के विवाहो से एक जिसमे कन्या यज्ञ करानेवाले ऋत्विक् को व्याह दी जाती थी।

दैव-श्राद्ध—पुं० [कर्म० स०] देवताओ के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।

दैव-सर्ग—पु० [कर्म० स०] देवताओ की सृष्टि जिसके ब्राह्म, प्राजापत्य, ऐंद्र, पैत्र, गाधर्व, यक्ष, राक्षस और पैशाच ये आठ भेद माने गये हैं।

दैवाकरि—पु० [स० दिवाकर+इञ्] १. दिवाकर अर्थात् सूर्य के पुत्र; (क) यम। (ख) शनि।

दैवाकरी—स्त्री० [स० दिवाकर+अण्–ङीप्] (सूर्य की पुत्री) जमुना नदी।

दैवागत—वि० [स० दैव-आगत प० त०] १. दैव-योग से होनेवाला। २. सहसा होनेवाला। आकस्मिक।

दैवात्—अव्य० [स० विभक्तिप्रतिरूपक अव्यय] १. दैवयोग से। इत्तिफाक से। २. अकस्मात्। अचानक।

दैवात्यय—पु० [दैव-अत्यय मध्य० स०] १. दैवी उपद्रव। २. आकस्मिक उत्पात या उपद्रव।

दैवाधीन—वि० [दैव-अधीन प० त०] भाग्य के भरोसे रहनेवाला।

दैवायत्त —वि० [दैव-आयत्त प० त०] दैवाधीन।

दैवारिप—पु० [स० देवारि√पा (रक्षा)+क, देवारिप = समुद्र+अण्] शख।

दैवासुर—पु० [स० देवासुर+अण्] देवताओ और असुरों का पारस्परिक वैर।

दैविक—वि० [स० देव+ठक—इक] १. देवता-संबधी। देवताओं का। जैसे—दैविक श्राद्ध। २ देवताओं का किया हुआ। जैसे—दैविक ताप।

दैवी—वि० [स० दैव+ङीप्] १. देवता-सबधी। २. देवताओ की ओर से होनेवाला। ३. सात्त्विक। ४. आप से आप, प्रारब्ध या सयोगवश घटित होनेवाला। आकस्मिक। ५. दिव्य। स्वर्गीय।

स्त्री० १. दैव विवाह द्वारा व्याही हुई पत्नी। २. एक प्रकार का दैविक छद।

पुं० [सं०] ज्योतिषी।

दैवीगति—स्त्री० [स० व्यस्त पद] १. ईश्वर की की हुई बात। २. भावी। होनहार।

दैवोपहत—वि० [दैव-उपहत तृ० त०] भाग्य का मारा हुआ। अभागा।

दैव्य—वि० [स०देव+यञ्] देवता-सबधी।

पु० १. दिव्य होने की अवस्था या भाव। दिव्यता। २. दैव। ३. भाग्य।

दैशिक—वि० [स० देश+ठञ्–इक] १. देश या स्थान-सबधी। देश का। २ देश अर्थात् राज्य मे होनेवाला। ३ राष्ट्रीय।

दैष्टिक—वि० [स० दिष्ट+ठक्-इक] भाग्य मे बदा हुआ।

पु० भाग्यवादी।

दैहिक—वि० [स० देह+ठञ्–इक] १. देह-सबंधी। शारीरिक। २. देह या शरीर से उत्पन्न।

दैहिकी—स्त्री० [स० दैहिक+ङीप्] वह विद्या या शास्त्र जिसमे जीवधारियों के भिन्न-भिन्न अगो के कार्य, स्वरूप आदि का विवेचन होता है। शरीर-शास्त्र। (फिजियालोजी)

दैह्य—वि० [स० देह+ष्यञ्] देह-सबधी। शारीरिक।

पुं० आत्मा।

दोंकना—अ० [अनु०] गुर्राना।

दोंकी†—स्त्री० १. =धौंकनी। २. =गुर्राहट।

दोंच†—स्त्री० दोच।

दोंचना—स० = दोचना।

दोंर—पु० [देश०] एक प्रकार का साँप।

दो—वि० [स० द्वि] १. जो गिनती मे एक से एक अधिक हो। तीन से एक कम।

पद—दो-एक=एक से एक या दो अधिक। कुछ। जैसे—उनसे दो-एक बातें कर लो। दो चार=दो, तीन अथवा चार। कुछ। थोड़ा। जैसे—दो-चार दिन बाद आना। दो दिन का=बहुत थोड़े समय का। हाल का। जैसे—यह तो अभी दो दिन की बात है। किसके दो सिर हैं?=किसे फालतू सिर है? कौन व्यर्थ अपने प्राण गवाना चाहता है।

मुहा०—(आँखें) दो-चार होना = सामना होना। (किसी से) दो-चार होना = भेंट या मुलाकात होना। दो दो बातें करना=सक्षिप्त परतु स्पष्ट प्रश्नोत्तर करना। साफ-साफ कुछ बातें पूछना और कहना। दो नावो पर पैर रखना=दो आश्रमों या दो पक्षों का अवलबन करना। ऐसी स्थिति में रहना कि जब जिधर चाहें, तब उधर मुड़ या हो सकें।

२. विभिन्न या परस्पर-विरोधी। जैसे—देश की सुरक्षा के सबध मे दो राय हो ही नही सकती।

पु० १. एक के ठीक बादवाली सख्या। एक और एक का जोड़। २. उक्त का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२ ३. जोडा। ४. दुक्की।

दो-आतशा—वि० [फा०] जो दो बार भभके से खीचा या चुआया गया हो। दो बार का उतारा हुआ। जैसे—दो आतशा अरक या शराब।

दोआब—पु० = दोआबा।

दोआबा—पु० [फा० दोआब] दो नदियो के बीच का अथवा उनसे घिरा हुआ प्रदेश।

दोइ†—वि०, पु० = दो।

दोउ†—वि० [हिं० दो] दोनो।

दोऊ—वि० [हिं० दो] दोनो।

दोक—पु० [हिं० दो+का (प्रत्य०)] दो वर्ष की उम्र का बछेड़ा।

दोकड़ा†—पु० [हिं० दो+टुकड़ा] टुकडा।

दो कला—वि० [हिं० दो +कल] दो कलो या पेचोवाला।

पु० १. वह ताला जिसके अदर दो कलें या पेच होते हैं। २ उक्त प्रकार की बेडी जो साधारण बेडी से अधिक मजबूत होती है।

दोका—पु०=दोक।

दो-कोहा—पु० [हिं० दो+कोह = कूबड] वह ऊँट जिसकी पीठ पर दो कूबड होते है।

दो-खंभा—पुं० [हिं० दो+खभा] एक प्रकार का नैचा जिसमे कुलफी नही होती।

दोख†—पु० = दोष।

दोखना—स० [हिं० दोष + ना (प्रत्य०)] किसी पर दोष लगाना।

दोखी†—वि० [हिं० दोष] १ अपराधी। दोषी। २. ऐबी। ३ दुष्ट। पाजी। ४. वैरी। शत्रु। (डिं०)

दो-गंग—पु० [हिं० दो+गगा] दो नदियो के बीच का प्रदेश। दोआवा।

दोगडी—स्त्री० [हिं० दो+गडी = गोल घेरा या चिह्न] १ वह चित्ती कौडी या इमली का चीआँ जिसे लडके जूआ खेलने मे बेईमानी करने के लिए दोनो ओर से घिस लेते हैं। २ उक्त प्रकार की कौडियो से खेलनेवाला अर्थात् बेईमान आदमी। ३. उपद्रवी या शरारती आदमी।

दोगर†—पु० = डोगरा।

दोगला—पु०[फा० दोगल] [स्त्री० दोगली] १. ऐसा जीव जो दो विभिन्न जातियो या नस्लो के माता-पिता के योग से उत्पन्न हुआ हो। वर्ण-सकर। २ उक्त के आधार पर उत्पन्न होनेवाला ऐसा जीव जो प्राय कुरूप तथा अशक्त होता है। ३ ऐसा मनुष्य जो अपनी माता के गर्भ से परन्तु उसके उपपति या यार के योग से उत्पन्न हुआ हो। जो ऐसे व्यक्ति की सतान हो जिससे उसकी माता का विवाह न हुआ हो। जारज।

पु० [हिं० दो + कल] बाँस की कमाचियो का बना हुआ एक प्रकार का गोल और कुछ गहरा पात्र जिससे किसान खेतो मे पानी उलीचते है।

दोगा—पु० [स० द्विक, हिं० दुक्का] १ लिहाफ के काम आनेवाला एक तरह का मोटा कपडा। २. पानी मे घोला हुआ चूना, सीमेट आदि जिसे दीवारो, छतो आदि पर पोतकर उन्हें चिकना बनाया जाता है।

दोगाड़ा—पु० [हिं० दो+?] दोनली बंदूक।

दोगाना—पु० [हिं० दो +गाना]| एक तरह का गीत जिसके एक चरण मे एक व्यक्ति कुछ प्रश्न करता है और दूसरे चरण मे दूसरा व्यक्ति उसका उत्तर देता है।

† स्त्री० = दुगाना। (देखें)

दोगुना†—वि० = दुगना (दूना)।

दोग्ध्री—स्त्री० [स० √दूह (दुहना)+तृच्-ङीप्] १. दूध देनेवाली गाय। २ दूध पिलानेवाली दाई। धाय।

दोघ–वि० [स०] गौ आदि दुहनेवाला।

दोघरा—वि० [हिं० दो+घर] १. जिसमे दो घर (खाने या विभाग) हो। २. दो घरो से सवध रखनेवाला।

दोचंद—वि० [फा० दुचद] दुगना। दूना।

दोच†—स्त्री० = दोचन।

दोचन—स्त्री० [हिं० दवोच] १ दुवधा। असमजस। २. कष्ट। तकलीफ। दु ख। ३ विपत्ति। सकट। ४. किसी ओर से पडनेवाला दवाव।

दोचना—स० [हिं० दोच] कोई काम करने के लिए किसी पर बहुत जोर देना। दवाव डालना।

दोचल्ला—पु० [हिं० दो + चल्ला (पल्ला) ?] वह छाजन जो बीच मे उभरी हुई और दोनो ओर ढालुई हो। दो-पलिया छाजन।

दो-चित्ता—वि० [हिं० दो + चित्ता] [स्त्री० दोचित्ती] जिसका चित्त एकाग्र न हो, वल्कि दो कामो या वातो मे वँटा या लगा हुआ हो।

दोचित्ती—स्त्री० [हिं० दो+चित्त] १ 'दो-चित्ता' होने की अवस्था या भाव। ध्यान का दो कामो या वातो मे वँटा रहना। २ चित्त की उद्विग्नता या विकलता।

दो-चोवा—पु० [हिं० दो+फा० चोव] वह वडा खेमा जिसमे दो दो चोवें लगती हो।

दोज—स्त्री० [हिं० दो] चांद्र मास के किसी पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।

पु० [स०] सगीत मे, अष्टताल का एक भेद।

वि० [फा०] १. सिलाई करने या सीनेवाला। जैसे—जरदोज। २. किसी के साथ बिलकुल मिला या सटा हुआ। जैसे—जमीन दोज मकान, अर्थात् ऐसा मकान जो ढहकर जमीन के बरावर हो गया हो।

दोजई—स्त्री० [देश०] वह उपकरण जिससे नक्काश लोग वृत्त आदि वनाते है।

दोजख—पु० [फा० दोज़ख़] १. इस्लामी धर्म के अनुसार नरक जिसके सात विभाग कहे गये हैं और जिसमे दुष्ट तथा पापी मनुष्य मरने के उपरात रखे जाते है। २ नरक।

†पु० [?] सुदर फूलोवाला एक प्रकार का पौधा।

दोजखी—वि० [फा०] १. दोजख-सवधी। दोजख का। २. दोजख मे जाने या रहनेवाला। नारकी। ३ बहुत बडा दुष्ट और पापी।

दो-जरबा—वि० [फा०] दो बार भभके मे खीचा या चुआया हुआ। दो-आतशी।

दोजर्बी—स्त्री० [फा०] १. दोनली बदूक। २ दो बार चुआई हुई शराब।

दोजा—पु० [हिं० दो] [स्त्री०दोजी] पुरुष जिसका दूसरा विवाह हुआ हो।

†वि० = दूजा (दूसरा)।

दोजानू—अव्य० [हिं० दो+स० जानु (घुटना)] घुटनो के बल या दोनो घुटने टेककर।

दोजिया—स्त्री० = दोजीवा।

दोजी—स्त्री० [फा०] सीने का काम। सिलाई। जैसे–जरदोजी।

दोजीरा—पु० [हिं० दो+जीरा] एक प्रकार का चावल।

दोजीवा—स्त्री० [हिं० दो+जीव] वह स्त्री जिसके पेट मे एक और जीव या बच्चा हो। गर्भवती स्त्री।

दोढ़—वि० = डेढ।

दोत†—पु० =दूत।

स्त्री० = दवात।

दो-तरफा—वि० [फा० दुतर्फ] [स्त्री० दोतरफी] दोनो तरफ का। दोनो ओर से सवध रखनेवाला।

क्रि० वि० दोनो ओर। दोनो तरफ। इधर भी और उधर भी।

दोतर्फा—वि० = दो-तरफा।

दोतला†—वि० = दो-तल्ला।

दो-तल्ला—वि० [हिं० दो+तल्ला] (घर या मकान) जिसमे दो खंड या मजिलें हो। दो-मजिला।

दोतही—स्त्री० [हिं० दो+तह] एक प्रकार की देशी मोटी चादर जो दोहरी करके विछाने के काम आती है। दोसूती।

दोता†—पु० = दोहता (दौहित्र)।

दोतारा—पु० [हिं० दो+तार] १. एक प्रकार का दुशाला। २ सितार की तरह का एक वाजा, जिसमे दो तार लगे होते हैं।

दोदना—स०[हिं० दो(दोहराना)] १ किसी की कही हुई बात सुनकर भी यह कहना कि तुमने ऐसा नही कहा था। २ किसी के सामने एक बार कोई बात कहकर भी बार-बार यह कहना कि हमने ऐसा नही कहा था।
वि० दोदने या मुकरनेवाला।

दोदरी—स्त्री० [नैपाली] एक तरह का सदाबहार पेड जो पूर्वी बगाल, सिक्किम और भूटान मे होता है।

दोदल—पु० [स० द्विदल] १ चने की दाल और उससे बनी हुई तरकारी। २ कचनार की कलियाँ जिनकी तरकारी बनती और अचार पडता है।

दोदस्ता—वि० [फा० दुदस्त.] १ दोनो हाथो से किया जानेवाला या होनेवाला।

दोदा—पु० [देश०] एक तरह का डेढ-दो हाथ लबा कौआ।

दोदाना—स० [हिं० दोदना] किसी को दोदने मे प्रवृत्त-करना। (दे० 'दोदना')

दोदामी†—स्त्री० = दुदामी।

दोदिन—पु० [देश०] रीठे की जाति का एक प्रकार का पेड़ जिसके फलो की फेन से कपडे साफ किये जाते है।

दोदिला—वि० [हिं० दो +फा० दिल] [भाव० दोदिली] दोचित्ता (दे०)।

दोध—पु० [स० √दुह् +अच, नि० सिद्धि] [स्त्री० दोधी] १. ग्वाला। अहीर। २. गौ का बच्चा। बछडा। ३ पुरस्कार के लोभ से कविता करनेवाला कवि।

दोधक—पु० [स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसमे तीन भगण और अत मे दो गुरु वर्ण होते है। इसे 'बधु' भी कहते है।
वि० दूहनेवाला।

दोधार (ा)—वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दोधारी] जिसके दोनो ओर धार या बाढ हो।
पु० बरछा। भाला।
पु० [देश०] एक प्रकार का थूहर।

दोन—पु० [हिं० दो] १ दो पहाडो के बीच की नीची जमीन। दून। २ दो नदियो के बीच का प्रदेश। दो आबा। ३. दो नदियो का सगम स्थान। ४ दो वस्तुओ का एक मे होनेवाला मेल या सगम।
पु० [स० द्रोण] काठ का वह खोखला लबा टुकड़ा जिससे धान के खेतो मे सिचाई की जाती है।

दोनली—वि०[हिं० दो+नल्] जिसमे दो नलियाँ या नल हो।
स्त्री० दो नलोवाली बदूक या तोप।

दोना—पु०[स० द्रोण][स्त्री० अल्पा० दोनियाँ, दोनी] १ पलास, महुए आदि के पत्ते या पत्तो को सीको से खोसकर बनाया जानेवाला अजली या कटोरे के आकार का पात्र। २ उक्त मे रखी हुई वस्तु। जैसे—एक दोना उन्हे भी तो दो।
मुहा०—**दोना चढ़ाना**=समाधि आदि पर फूल-मिठाई चढाना। **दोना या दोनें चाटना**=बाजार से पूडी, मिठाई आदि खरीदकर पेट भरने का शौक होना। **दोना देना**=(क) किसी बडे आदमी का अपने भोजन के थाल मे से कुछ भोजन किसी को देना जिससे देनेवाले की प्रसन्नता और पानेवाले का सम्मान प्रकट होता है। (ख) दोना चढाना। (देखे ऊपर) **दोना लगाना**=दोने मे रखकर फूल-मिठाई आदि बेचने का व्यवसाय करना। **दोनो की चाट पडना या लगना**=बाजारी चीजें खाने का चस्का पडना।
†पु०=दौना (पौधा)।

दोनों—वि०[हि० दो+नो (प्रत्य०)] दो मे से प्रत्येक। यह भी और वह भी। उभय। जैसे—दोनो भाई काम करते है।

दोपट्टा†—पु०=दुपट्टा।

दोपलका—पु०[हिं० दो+फलक या पलक] १ वह दोहरा नगीना जिसके अन्दर या नीचे नकली या हलका नग हो और ऊपर या चारो ओर असली या बढिया नग हो। दोहरा नगीना जो कम मूल्य का और घटिया होता है। २ एक प्रकार का कबूतर।

दोपलिया†—वि०=दोपल्ला।
स्त्री०=दोपल्ली।

दोपल्ला—वि०[हिं० दो+पल्ला] [स्त्री० दोपल्ली] १ जिसमे दो पल्ले हो। २. दो परतोवाला। दोहरा।

दोपल्ली—वि०[हिं०दो+पल्ला+ई (प्रत्य०)] दो पल्लोवाला। जिसमे दो पल्ले हो। जैसे-दोपल्ली टोपी।
स्त्री० मलमल आदि की पुरानी चाल की एक प्रकार की टोपी जो कपडे के दो टुकडो या पल्लो को एक मे सीकर बनाई जाती थी।

दोपहर—स्त्री०[हिं० दो+पहर] १ दिन के ठीक मध्य का समय। मध्याह्न। २. दिन के बारह बजे और उसके आस-पास का कुछ समय।
क्रि० प्र०—चढना। —ढलना।

दोपहरिया†—स्त्री०=दोपहर।

दोपहरी—वि० स्त्री० [हिं० दो+पहर] हर दो पहरो पर होनेवाला। जैसे—दोपहरी नौबत।
†स्त्री०=दोपहर।

दो-पीठा—वि०[हिं० दो+पीठ] १ जो दोनो पीठो अर्थात् दोनो ओर समान रग-रूप का हो। दोरुखा। २ (छापेखाने मे, ऐसा कागज) जो दोनो ओर छपा हो।

दो-पौआ—पु०[हिं० दो+पाव] १. किसी वस्तु का दो पाव, आधा अश या भाग। २ दो पाव का बटखरा। अध-सेरा। ३ पान की आधी ढोली। (तमोली)

दो-प्याजा—पु०[फा०] अधिक मात्रा मे प्याज डालकर पकाया हुआ मास।

दो-फसली—वि० [फा० दुफस्ली] १. (पौधा या वृक्ष) जो वर्ष मे दो बार फलता और फूलता हो। २ दोनो फसलो से सबध रखनेवाला। ३. (खेत या जमीन) जिसमे रबी और खरीफ दोनो फसले होती हो। ४. (बात) जो दोनो पक्षो मे लग सके। जिसका उपयोग दोनो ओर हो सके फलत अनिश्चित और सदिग्ध।

दोबल—पु०[?] दोप। अपराध। लाछन।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

दोबा†—पु०=दुविधा।

दो-बाजू—पु०[हिं० दो+फा० बाज] १ वह कबूतर जिसके दोनो पैर सफेद हो। २ एक प्रकार का गिद्ध।

दोबारा—क्रि० वि०[फा० दुबार] एक बार हो चुकने के उपरान्त फिर दूसरी बार। दूसरी दफा। पुन । फिर।
वि० दूसरी बार होनेवाला।

पु० १ वह अरक या शराब जो एक बार चुआने के बाद फिर दूसरी बार भी चुआई गई हो और फलत बहुत तेज हो। दो-आतशा।
स्त्री० १ एक बार साफ करने के बाद फिर दूसरी बार साफ की हुई चीनी। २ एक बार तैयार करने के उपरान्त उसी तैयार चीज से फिर दूसरी बार तैयार या ठीक की हुई चीज।
दोबाला—वि० [फा० दुबाला] दूना। दुगना।
दोभाषिया †—पु०=दुभाषिया।
दोमंजिला—वि० [फा० दुमंजिल] (इमारत) जिसमें दो खड या तल्ले हो।
पु० दो खडोवाला मकान।
दोमट—स्त्री० [हिं० दो+मिट्टी] ऐसी जमीन जिसकी मिट्टी मे बालू भी मिला हुआ हो। बलुई जमीन।
दो-मरगा—पु० [हिं० दो+मार्ग] १ पुरानी चाल का एक प्रकार का देशी मोटा कपडा।
दो-महला—वि० दे० 'दोमंजिला'।
दोमुँहा—वि० [हिं० दो+मुँह] १ जिसके दो मुँह हों। २ जिसके दोनों ओर मुँह हों। जैसे—दो मुँहा साँप। ३ दो तरह की बातें करने-वाला। ४. दोहरी चाल चलनेवाला।
दोमुँहा साँप—पु० [हिं० दो+मुँहा+साँप] १ एक प्रकार का साँप जो प्राय हाथ भर लबा होता है और जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। इसमे न तो विष होता है और न यह किसी को काटता है। २ एक तरह का साँप जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि छ. महीने इसके एक तरफ मुँह रहता है और छ महीने दूसरी तरफ। (चुकरैंड) ३ ऐसा व्यक्ति जो दोहरी चालें चलकर बहुत अधिक घातक सिद्ध होता हो।
दोमुँही—स्त्री० [हिं०दो+मुँह] नक्काशी करने का सुनारो का एक उपकरण।
दोय†—वि०, पु०=दो।
वि०=दोनो।
दोयण—पु० [फा० दुश्मन?] शत्रु। उदा०—दाटक अनड़ दड नह दीवो, दोयण घड़ सिर दाव दियो।—दुरसाजी।
दोयम—वि० [फा०] १ जो क्रम या गिनती मे दूसरे स्थान पर पडे। दूसरा। २ जो महत्त्व, मान आदि के विचार से द्वितीय श्रेणी का हो।
दोयरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जंगली पेड जिसकी लकडी का कोयला बनाया जाता है।
दोयल—पु० [देश०] बया पक्षी।
दोरगा—वि० [हिं० दो+रग] [स्त्री० दोरगी] १ दो रगोवाला। जिसमे दो रग हो। जैसे—दोरगा कागज। २ जिसमे दोनों ओर दो रग हो। ३ (कथन) जो दोनो पक्षो मे समान रूप से लग सके। ४ दे० 'दोगला'।
दोरंगी—स्त्री० [हिं० दोरगा] १ दो रगोवाला होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी बात या व्यवहार जो दोनो पक्षो मे लग सके।
दोर—पु० [स० दो या दोषा] हाथ। भुजा। (राज०) उदा०—दोर सु वरुण तणा किरि डोर।—प्रिथीराज।
स्त्री० [हिं० दौड] १ पहुँच। २ स्थान। उदा०—मेरे आगा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर।—मीराँ।
†पु०=द्वार।
†पु० [स० द्वार] दरवाजा। (बुन्देल०) उदा०—रोको बीरन मोरे दोर बहिन तोरी कहाँ चली।—लोक-गीत।
स्त्री० [हिं० दो] दो बार जोती हुई जमीन। वह जमीन जो दो दफे जोती गई हो।
स्त्री०=डोर (रस्सी)।
दोरक—पु० [स०=डोरक नि० ड को द] ? वीणा के तारो को बाँधने की ताँत। २ डोरी।
दोरदड †—वि०=दुर्दंड।
दोरस—स्त्री० [हिं० दो+रस] ऐसी जमीन जिसकी मिट्टी मे बालू मिला हुआ हो।
दो-रसा—वि० [हिं० दो+रस] १ दो प्रकार के रस या स्वादवाला। जिसमे दो तरह के रस या स्वाद हो। जैसे—दो-रसा तमाकू (पीने का)। २ (दिन या समय) जिसमे थोडी-थोडी गरमी या सरदी दोनो पडती हो। ऋतु परिवर्तन के समय का। जैसे—दो-रसे दिन। ३ (स्त्रियो के सबध मे स्थिति) जिसमे दो अथवा अनेक प्रकार के भाव या विचार मन मे उठते हो (अर्थात् गर्भवती होने के दिन)।
पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू जिसका धूआँ कुछ कडुआ और कुछ मीठा होता है।
दोरा—पु० [देश०] हल की मुठिया के पास लगी हुई बाँस की वह नली जिसमे बोने के लिए बीज डाले जाते है।
दोराब—स्त्री० [देश०] एक तरह की छोटी समुद्री मछली।
दो-राहा—पु० [हिं० दो+राह] वह स्थान जहाँ से दो मार्गो की ओर जाया जा सकता हो।
दोरी—स्त्री०=डोरी।
दो-रुखा—वि० [फा०] [स्त्री० दोरुखी] १ जिसके दोनो ओर समान रग या बेल-बूटे हो। जैसे-कपडे का दोरुखा छापा। २ जिसमे एक ओर एक रग और दूसरी ओर दूसरा रग हो। जैसे—ओढने की दोरुखी चादर। ३ (आचरण या व्यवहार) जिसका आशय दोनो ओर या दोनो पक्षो मे प्रयुक्त हो सकता हो।
पु० सुनारो का एक उपकरण।
दो-रेजी—स्त्री० [फा० दोरेजी] नील की वह फसल जो एक फसल कट जाने के उपरान्त उसकी जडो से फिर होती है।
दोर्ज्या—स्त्री० [सं० दोस्-ज्या उपमि० स०] सूर्य सिद्धात के अनुसार वह ज्या जो भुज के आकार की हो।
दोर्दंड—पु० [स० दोस्-दड ष० त०] भुजदड।
दोर्मूल—पु० [सं० दोस्-मूल ष० त०] भुज-मूल।
दोर्युद्ध—पु० [स० दोस्-युद्ध तृ० त०] कुश्ती।
दोल—पु० [स०√दुल् (झुलाना)+घञ्] १ झूला। हिंडोला। २ डोली।
दो-लडा—वि० [हिं० दो+लड] [स्त्री० दोलडी] जिसमे दो लडे हो। दो लड़ोवाला।
दोलत्ती—स्त्री०=दुलत्ती।
दोलन—पु० [स० दुल्+ल्युट्—अन] झूलना।
दोल-यात्रा—स्त्री० [मध्य० स०]=दोलोत्सव।
दोला—स्त्री० [स० दोल+टाप्] १ झूला। १ हिंडोला। २ डोली

दोषग्राही (हिन्)—पुं० [सं० दोष√ग्रह् (ग्रहण)+णिनि] १ वह जो केवल दूसरों के दोषों पर ध्यान दे। २. दुर्जन। दुष्ट।

दोषघ्न—पुं० [सं० दोष√हन् (मारना)+टक्] वह औषध जिससे शरीर के कुपित कफ, वात और पित्त का दोष शांत हो।

दोषज्ञ—पुं० [सं० दोष√ज्ञा (जानना)+क] पंडित।

दोषण—पुं० [सं०√दुष्+णिच्+ल्युट्—अन] दोषारोपण।

दोषता—स्त्री० [सं० दोष+तल्—टाप्] दोष का भाव।

दोषत्व—पुं० [सं० दोष+त्व] दोष का भाव।

दोषन—पुं० [सं० दूषण] १. दोष। २. दूषण।

दोषना—स० [हिं० दूषण+ना (प्रत्य०)] किसी पर दोषारोपण करना। दोष लगाना।

दोष-पत्र—पुं० [ष० त०] वह पत्र जिसमें अपराधी के अपराधों, दोषों आदि का विवरण लिखा होता है।

दोष-प्रमाणित—वि० [ब० स०] जिसका दोष प्रमाणित हो चुका हो। जो दोषी सिद्ध हो चुका हो।

दोषल—वि० [सं० दोष+लच्] दोष या दोषों से भरा हुआ। दूषित।

दोषसिद्ध—वि० दे० 'दोष-प्रमाणित'।

दोषा—स्त्री० [सं०√दुष्+आ] १ रात्रि का अंधकार। २. रात्रि। रात। ३. सायंकाल। संध्या। ४ बाहु। भुजा।

दोषाकर—पुं० [सं० दोष-आकर ष० त०] १. दोषों का केन्द्र या भंडार। २. [दोषा√कृ+ट] चन्द्रमा।

दोषाक्लेशी—स्त्री० [सं० दोषा√क्लिश् (कष्ट देना)+अण्-ङीप्] वन-तुलसी।

दोषाक्षर—पुं० [सं० दोष-अक्षर ब० स०] किसी पर लगाया हुआ अपराध। अभियोग।

दोषा-तिलक—पुं० [ष० त०] दीपक। दीया।

दोषारोपण—पुं० [सं० दोष-आरोपण ष० त०] १ यह कहना कि उसमें अमुक दोष है। २. यह कहना कि इसने अमुक दोष किया है।

दोषावह—वि० [सं० दोष-आ√वह् (वहन)+अच्] जिसमें दोष हो। दोषपूर्ण।

दोषिक—पुं० [सं० दोष+ठन्-इक्] रोग। बीमारी।
वि० १=दोषी। २. दूषित।

दोषिन†—वि०=दूषित।

दोषिता—स्त्री० [सं० दोषिन्+तल्—टाप्] दोषी होने की अवस्था या भाव। (गिल्ट)

दोषिन—स्त्री० [हिं० दोषी का स्त्री०] १ अपराधिनी। २ पापपूर्ण आचरणवाली स्त्री। ३. दुष्ट स्वभाववाली और दूसरों पर दोष लगाती रहनेवाली स्त्री। ४. वह कन्या जिसने विवाह से पहले ही किसी से संबंध स्थापित कर लिया हो।

दोषी (षिन्)—पुं० [सं० दोष+इनि] १ जिसने कोई अपराध या दोष किया हो। २ जिस पर कोई दोष लगा हो। ३ दोषपूर्ण। ४. दुष्ट। ५. पापी।
वि० [सं० द्वेष] द्वेष करनेवाला। उदा०—गुरु-दोखी सम की मृतु पाव।—गुरु गोविंद सिंह।

विशेष—यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि 'दोष' का प्रयोग 'द्वेष' के अर्थ में गोस्वामी तुलसीदास ने भी किया है। (दे० 'दोस')

दोस†—पुं०=दोष।

दोसदार†—पुं०=दोस्तदार (मित्र)।

दोसदारी—स्त्री०=दोस्ती।

दोसरना†—पुं० [हिं० दूसरा+ना (प्रत्य०)] द्विरागमन। गौना।
†पुं०=दुजायगी। (भेद-भाव)

दोसरा†—वि० [स्त्री० दोसरी] =दूसरा।

दोसरी†—स्त्री० [हिं० दो] दो बार जोती हुई जमीन।

दोसा—पुं० [देश०] जल में होनेवाली एक तरह की घास जिसमें एक प्रकार के दाने अधिकता से होते हैं।
†पुं० [?] मदरास देश में बननेवाला एक प्रकार का पकवान जो उलटे या चीले की तरह का होता है और जिसके अन्दर कुछ तरकारियाँ आदि भी भरी होती हैं।
स्त्री०=दोषा (रात)।

दोसाध—पुं०=दुसाध।

दोसाल—पुं० [?] एक तरह का हाथी।

दोसाला—वि० [हिं० दो+साल=वर्ष] १. जिसकी अवस्था दो वर्ष की हो। २. जिसके दो वर्ष बीत चुके हों। ३ (विद्यार्थी) जो दो वर्षों तक प्राय. अनुत्तीर्ण होने के कारण एक ही कक्षा में रहे।

दोसाही—वि० [हिं० दो+?] (जमीन) जिसमें साल में दो फसलें पैदा हों। दो-फसला।

दोसी†—पुं० [देश०] दही।
†पुं०=घोसी।
वि०=दोषी।

दोसूती—स्त्री०=दुसूती।

दोस्त—पुं० [फा०] १. प्राय समान अवस्था का तथा साथ रहनेवाला वह व्यक्ति जिससे किसी का स्नेहपूर्ण संबंध हो। मित्र। २ वह जिससे किसी का अनुचित संबंध हो। (बाजारू)

दोस्तदार—पुं०=दोस्त।

दोस्तदारी—स्त्री०=दोस्ती।

दोस्ताना—पुं० [फा० दोस्तानः] १. दोस्ती। मित्रता। २ मित्रता का आचरण या व्यवहार।
वि० दोस्तों या मित्रों का-सा। दोस्तों या मित्रों की तरह का। जैसे—दोस्ताना बरताव।

दोस्ती—स्त्री० [फा०] १. दोस्त अर्थात् मित्र होने की अवस्था या भाव। २ स्त्री और पुरुष का होनेवाला पारस्परिक अनुचित संबंध। (बाजारू)

दोस्तीरोटी—स्त्री० [फा० दोस्ती+हिं० रोटी] दो तहोंवाला एक तरह का पराठा जो दो लोइयाँ बेलकर और साथ मिलाकर बनाया जाता है। दुपड़ी।

दोहँ†—पुं०=द्रोह।

दोहगा†—पुं०=दोहगा। (स्त्रा०)

दोहदा—स्त्री० [सं० दुर्भगा] पर-पुरुष के साथ पति के रूप में रहनेवाली विधवा स्त्री।

दोहज—पुं० [सं०] दूध।

दौर्जन्य—पु०[सं० दुर्जन+ष्यञ्] दुर्जनता।
दौर्बल्य—पु०[सं० दुर्बल+ष्यञ्] दुर्बल होने की अवस्था या भाव। दुर्बलता।
दौर्भाग्य—पु०[सं० दुर्भग+ष्यञ्] दुर्भाग्य।
दौर्भ्रात्र—पु०[सं० दुर्भ्रातृ+अण्] भाइयों का परस्पर का झगडा या विवाद
दौर्मनस्य—पु०[सं० दुर्मनस्+ष्यञ्] १ 'दुर्मनस' होने की अवस्था या भाव। २. दुर्जनता।
दौर्य—पु०[सं० दूर+ष्यञ्] 'दूर' का भाव। दूरता। दूरी।
दौर्योधनि—पु०[सं० दुर्योधन+इञ्] दुर्योधन के कुल मे उत्पन्न व्यक्ति। दुर्योधन का वशज।
दौर्वृत्य—पु०[सं० दुर्वृत्त+ष्यञ्] १ दुर्वृत्त होने की अवस्था या भाव। २ दुराचार।
दौर्हार्द—पु०[सं० दुर्हृद्+अण्] १. दुर्हृद होने की अवस्था या भाव। २ दुष्ट स्वभाव। ३ किसी के प्रति मन मे होनेवाला दुर्भाव, द्वेष या वैर।
दौर्हृद—पु०[सं० दुर्हृद्+अण्] दुर्हृदय होने की अवस्था या भाव। २ मन या हृदय की खोटाई। दुष्टता। ३ दे० 'दोहद'।
दौर्हृदय—पु०[सं० दुर्हृदय+अण्] १ दुर्हृदय होने की अवस्था या भाव। २ शत्रुता।
दौर्हृदिनी—स्त्री०[सं० दौर्हृद+इनि-ङीप्] गर्भवती स्त्री। गर्भिणी।
दौलत—स्त्री०[अ०] १ वे अधिकृत सभी वस्तुएं जिनका आर्थिक मूल्य हो। धन और सपत्ति। २. उक्त प्रकार की वे बहुत-सी वस्तुएँ जिनके अधिकार मे होने पर कोई गरीब या धनी कहलाता है। ३. लाक्षणिक अर्थ मे कोई अमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण चीज। जैसे—लेखनी ही उनकी दौलत है।
दौलत-खाना—पु०[फा० दौलतखान] १ सपत्ति रखने का स्थान। २ निवास स्थान। (बडो के लिए आदर सूचक) जैसे—आपके दौलत-खाने पर हाजिर होऊँगा।
दौलत-मद—वि० [फा०] [भाव० दौलतमदी] अमीर। धनवान। माल-दार।
दौलति†—स्त्री०=दौलत।
दौलतावादी—पु०[दौलतावाद, दक्षिण भारत का नगर] एक प्रकार का बढिया कागज जो दौलतावाद (दक्षिण भारत का एक प्रदेश) मे बनता है।
दौलेय—पु०[सं० दुलि+ढक्—एय] कच्छप। कछुआ।
दौल्मि—पु०[सं० दुल्म+इञ्] इद्र।
दौवारिक—पु०[सं० द्वार+ठक्—इक] [स्त्री० दौवारिकी] १ द्वारपाल। २ एक प्रकार के वास्तुदेव।
दौवालिक—पु०[सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी।
दौश्चर्म्य—पु०[सं० दुश्चर्मन्+ष्यञ्] दुश्चर्मा होने की अवस्था या भाव। दे० 'दुश्चर्मा'।
दौश्चर्य—पु०[सं० दुश्चर+ष्यञ्] १ दुराचरण। २ दुष्टता। ३. दुष्कर्म।
दौष्कुल—वि०[सं० दुष्कुल+अण्] बुरे या हीन कुल मे उत्पन्न।
दौष्मंत—पु०[सं० दुष्मत+अण्] दुष्मत के कुल मे उत्पन्न व्यक्ति।
दौष्मति—पु०[सं० दुष्मत+इञ्] =दौष्मत।
दौष्यंति—पु०[सं० दुष्यत+इञ्] दुष्यत का शकुतला के गर्भ मे उत्पन्न पुत्र, भरत।
दौहित्र—पु०[सं० दुहितृ+अञ्] [स्त्री० दौहित्री] १. लडकी का लडका। दोहता। नाती। २ तलवार। ३ तिल। ४ गौ का घी।
दौहित्रक—वि०[सं० दौहित्र+ठक्—क] दौहित्र-संबंधी।
दौहित्रायण—पु०[सं० दौहित्र+फक्-आयन] दौहित्र का पुत्र।
दौहित्री—स्त्री०[सं० दौहित्र—ङीप्] बेटी की बेटी। नतनी।
दौहृद—पु०[सं० दौर्हृद] गर्भवती की इच्छा। दोहद। (दे०)
दौहृदिनी—स्त्री०[सं० दौर्हृदिनी] गर्भवती स्त्री।
द्याना*—स०=दिलाना।
द्यावना*—स०=दिलाना।
द्यु—पु०[सं०√दिव् (चमकना)+डु] १ दिन। दिवस। २ आकाश। ३ स्वर्ग। ४ सूर्य लोक। ५ अग्नि। आग।
द्युक—पु० [सं० द्यु+कन्] उल्लू।
द्युकारि—पु०[सं० द्युक-अरि ष० त०] कौआ।
द्युग—वि० [सं० द्यु√गम् (गति)+ड] आकाश मे गमन करनेवाला। पु० चिडिया। पक्षी।
द्यु-गण—पु० [सं० ष० त०] दे० 'अहर्गण'।
द्युचर—वि० [सं० द्यु√चर (गति)+ट] आकाश मे चलने या विचरण करनेवाला।
पु० १ चिडिया। पक्षी। २ ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशस्थ पिंड।
द्यु-ज्या—स्त्री० [सं० उपमि० स०] अहोरात्र वृत्त की व्यासरूप ज्या।
द्युत—वि०[सं०√द्युत् (प्रकाश)+क] जिसमे द्युति या प्रकाश हो। चम-कीला।
पु० किरण।
द्युति—स्त्री०[सं०√द्युत्+इन्] १. प्रकाशमान होने की अवस्था, गुण या भाव। चमक। २. शारीरिक सौन्दर्य। शरीर की काति। ३. लावण्य। छवि। ४. किरण।
पु० चतुर्थ मनु के समय के एक ऋषि। (पुराण)
द्युति-कर—वि० [ष० त०] प्रकाश उत्पन्न करनेवाला। चमकनेवाला।
पु० ध्रुव।
द्युतित—भू० कृ०=द्योतित।
द्युति-धर—वि०[ष० त०] प्रकाश या काति धारण करनेवाला।
पु० विष्णु।
द्युतिमंत—वि०=द्युतिमान्।
द्युतिमा—स्त्री०[हिं० द्युति+मा (प्रत्य०)] १. प्रकाश। रोशनी। २. चमक। द्युति। ३ तेज।
द्युतिमान (मन्)—वि०[सं० द्युति+मतुप्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमे चमक या आभा हो। प्रकाशवाला।
पु० १ स्वायभुव मनु के एक पुत्र। २ महाभारत काल मे शाल्व देश के एक राजा जिन्हे क्रौंच द्वीप का राज्य मिला था।
द्युन—पु०[सं०] जन्मकुडली मे लग्न से सातवाँ स्थान।
द्यु-निश—पु०[सं० द्व० स०] दिन और रात।
द्यु-पति—पु०[ष० त०] १ सूर्य। २ इन्द्र।
द्युपथ—पु०[सं०] आकाशमार्ग।

द्यु-मणि—पु०[स० प० त०] १ सूर्य। २. आक। मदार। ३. वैद्यक मे शोधा हुआ तावा।

द्युमत्सेन—पु०[स०] शाल्व देश के एक राजा जो सत्यवान् के पिता थे और दुर्भाग्य से अंधे हो गये थे।

द्युमद्गान—पु०[स०] एक प्रकार का सामगान।

द्युमयी—स्त्री०[स०] विश्वकर्मा की कन्या जो सूर्य को व्याही थी।

द्युमान् (मत्)—वि०[स० दिव्+मतुप्, उत्व]=द्युतिमान्।

द्युम्न—पु०[स० द्यु√म्ना (अभ्यास)+क] १ सूर्य। २. अन्न। ३ धान ४ वल। शक्ति।

द्यु-लोक—पु०[स० कर्म० स०] स्वर्गलोक।

द्युवा (वन्)—पु०[स०√द्यु (आगे वढना)+कनिन्] १. सूर्य। २. स्वर्ग।

द्युषद्—पु०[स०द्यु√सद्(गति)+क्विप्] १ देवता। २ ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशचारी पिंड।

द्यु-सद्म (न्)—पु०[स० व० स०] स्वर्ग।

द्यु-सरित्—स्त्री०[स० प० त०] स्वर्ग की मदाकिनी नदी।

द्यू—पु० [स०√दिव् (क्रीडा)+क्विप्, ऊठ्] जूआ खेलनेवाला। जुआरी।

द्यूत—पु० [स०√दिव्+क्त, ऊठ्] ऐसा खेल जिसमे दाँव पर धन लगाया जाय और उसकी हार-जीत हो। जूआ।

द्यूत-कर, द्यूतकार—वि० [स० प०त०, द्यूत√कृ (करना)+अण्] जूआ खेलनेवाला। जुआरी।

द्यूत-दास—पु०[मध्य० स०] [स्त्री० द्यूतदासी] जूए मे जीतकर प्राप्त किया हुआ व्यक्ति, जिसे अपने विजेता का दास वनकर रहना पडता था।

द्यूत-पूर्णिमा—पु०[च० त०] आश्विन की पूर्णिमा। कोजागरी। प्राचीन काल मे लोग इस रोज रात भर जागकर जूआ खेलते थे।

द्यूत-फलक—पु०[प०त०] वह चौकी या तख्ता जिस पर विसात विछाई जाती थी और कौडी या पासा फेंका जाता था।

द्यूत-बीज—पु० [प० त०] जूआ खेलने की कौडी।

द्यूत-भूमि—स्त्री०[प० त०] जूआ खेलने का स्थान। जुआरियो का अड्डा।

द्यूत-मंडल—पु०[प० त०] १ जुआरियों की मडली। २ वह स्थान जहाँ वैठकर लोग जूआ खेलते हो। जूआखाना।

द्यूत-समाज—पु०[प० त०] जुआरियो का जमघट।

द्युताध्यक्ष—पु०[द्यूत-अध्यक्ष प० त०] प्राचीन भारत मे वह राजकीय अधिकारी जो जूए का निरीक्षण करता था और जुआरियो से राजकीय प्राप्य भाग लिया करता था। (कौ०)

द्यूताभियोग—पु०[द्यूत-अभियोग प० त०] जूआ खेलने के अपराध मे चलाया जानेवाला अभियोग या मुकदमा।

द्यूतावास—पु०[द्यूत-आवास प० त०] जूआखाना।

द्यूति प्रतिपदा—स्त्री०[स० द्यूतप्रतिपत्] कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा जिस दिन लोग जूआ खेलते है।

द्यून—पु०[स०√दिव्+क्त, ऊठ्, नत्व] जन्म-कुडली मे लग्न स्थान से सातवी राशि।

द्यो—स्त्री०[स०√द्युत्+डो] १. स्वर्ग। २ आकाश। ३ शतपथ ब्राह्मण के अनुसार आठ वसुओं मे से एक।

द्योकार—पु०[स० द्यो०√कृ+अण्] भवन वनानेवाला राज।

द्योत—पु०[स०√द्युत् (चमकना)+घञ्] १. प्रकाश। २. धूप।

द्योतक—वि०[स०√द्युत्+णिच्+ण्वुल्-अक] १ द्योतन करनेवाला। २. जो किसी चीज को प्रकाश मे लावे। ३ प्रकट करनेवाला। ४. अभिव्यक्त या व्यक्त करनेवाला।

द्योतन—पु०[स०√द्युत्+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० द्योतित] प्रकाश से युक्त करने की क्रिया या भाव। २ दिखाने की क्रिया या भाव। दिग्दर्शन। ३. प्रकट या व्यक्त करने की क्रिया या भाव। ४. [√द्युत्+युच्-अन] ४ दीआ। दीपक।

वि० चमकीला। प्रकाशमान।

द्योतनिका—स्त्री०[सं० द्योतन+ङीप्+कन्-टाप्, ह्रस्व] किसी ग्रन्थ की टीका या व्याख्या।

द्योतित—भू० कृ०[स०√द्युत्+णिच्+क्त] १ द्युति या प्रकाश से युक्त किया हुआ। २ प्रकट या व्यक्त किया हुआ।

द्योतिरिंगण—पु० [स० ज्योतिरिंगण पृषो० सिद्धि] खद्योत। जुगनूँ।

द्यो-भूमि—पु०[स० ब० स०] पक्षी।

द्योषद्—पु०[स० द्यो√सद्+क्विप्] देवता।

द्योहरा†—पुं०=देवहरा (देवालय)।

द्यौ—स्त्री० [स० द्यो] १ स्वर्ग। २ आकाश।

द्यौस—पु०[स० दिवस्] दिन।

द्यौसक—पु०[हिं० द्यौस=दिवस+एक] दो-एक दिन। कुछ ही दिन।

द्रक्षण—पु०[स०√द्राक्ष् (आकाक्षा)+ल्युट्-अन, पृषो० ह्रस्व] तौल का एक पुराना मान जो दो कर्ष अर्थात् एक तोले के वरावर होता था। इसे 'कोल' और 'वटक' भी कहते थे।

द्रग—पु०[स०] वह नगर जो पत्तन से वडा और कर्वट से छोटा हो।

द्रग†—पु०=दृग।

द्रगणा—पु०[स०] एक प्रकार का पुराना वाजा। दगडा।

द्रग्ग†—पु०=दृग।

द्रढिमा—स्त्री० [स० दृढ+इमनिच्] दृढता।

द्रढिष्ठ—वि०[स० दृढ+इष्ठन्] खूव दृढ। वहुत मजवूत।

द्रप्पन†—पु०=दर्पण।

द्रप्स—वि०[स०√दृप् (गति)+क्स, र आदेश] तेज चलनेवाला।

पु० १ वह तरल पदार्थ जो अधिक गाढा न हो। २ तक्र। मठा। ३. रस। ४ वीर्य।

द्रप्स्य—पु०=द्रप्स।

द्रव—पु०=द्रव्य।

द्रमिल—पु०[स०] तमिल देश का पुराना नाम।

द्रम्म—पु०[अ० फा० दिरम] १. एक प्रकार का पुराना सिक्का, जिसका मान या मूल्य भिन्न-भिन्न समयो मे अलग-अलग था। २. उक्त सिक्के के वरावर की तौल।

द्रवंती—स्त्री०[स०√द्रु (गति)+शतृ-ङीप्] १. नदी। २. मूसाकानी (वनस्पति)।

द्रव—वि०[सं०√द्रु+अप्] १ पानी की तरह पतला। तरल। २ आर्द्र। गीला। तर। ३. पिघला हुआ।
पु० १ द्रव या तरल पदार्थ का चूना, वहना या रसना। द्रवण । २ आसव। ३ रस। ४ वहाव। ५ दौडने या भागने की क्रिया। पलायन। ६. तेजी। वेग। ७ हँसी-ठट्ठा। परिहास। ८ दे० 'द्रवत्व'।
द्रवक—वि०[सं०√द्रु+ण्वुल्-अक] १. भागनेवाला। भगेडू। भग्गू। २ चूने, वहने या रसनेवाला। ३ द्रवित करने या होनेवाला।
द्रवज—वि०[सं० द्रव√जन्(उत्पत्ति)+ड] द्रव पदार्थ से निकला या वना हुआ।
पु० किसी प्रकार के रस से वनी हुई वस्तु। जैसे—गुड, चीनी आदि।
द्रवड़ना *—अ०=दौडना। (राज०)
द्रवण—पु०[सं०√द्रु+ल्युट्-अन] [वि० द्रवित] १. गमन। २ दौड। ३ रसना या वहना। क्षरण। ४ पिघलना या पसीजना। ५ चित्त के द्रवित या दयापूर्ण होने की वृत्ति। ६ कामदेव का एक वाण जो हृदय को द्रवित करनेवाला कहा गया है। उदा०—परठि द्रविण सोखण सरपच। —प्रिथीराज।
द्रवण-शील—वि०[व० स०] [भाव० द्रवणशीलता] १ पिघलनेवाला। २ (व्यक्ति) जिसके हृदय मे दूसरो का कष्ट देखकर दया उत्पन्न होती हो और फलत जो उनके प्रति कठोर व्यवहार नही करता और दूसरो को वैसा करने से रोकता है। पसीजनेवाला।
द्रवणांक—पु० [सं० द्रवण-अक ष० त०] ताप का वह मान जिस पर कोई ठोस चीज पिघलने लगती है। (मेल्टिंग प्वाइंट)
विशेष—विभिन्न वस्तुओ का द्रवणाक विभिन्न होता है।
द्रवता—स्त्री०[सं० द्रव+तल्-टाप्] द्रवत्व।
द्रवत्पत्री—स्त्री० [सं० व० स०, ङीप्] चँगोनी नामक पौधा।
द्रवत्व—पु० [सं० द्रव+त्व] द्रव होने की अवस्था, गुण या भाव।
द्रवना—अ० [सं० द्रवण] १ द्रवित होना अर्थात् पिघलना। २ प्रवाहित होना। वहना। ३ हृदय मे किसी के प्रति दया उपजना। दयार्द्र होना।
द्रव-रसा—स्त्री० [सं० व० स०, टाप्] १ लाख। लाह। २ गोद।
द्रवाधार—पु० [सं० द्रव-आधार ष० त०] १ छोटा पात्र। २ अजलि। ३ चुल्लू।
द्रविड—पु० [सं० द्रामिल ?] १ दक्षिण भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक विस्तृत प्रदेश का पुराना नाम। आधुनिक आध्र और मदरास इसी प्रदेश मे है। २ उक्त प्रदेश का निवासी। ३ ब्राह्मणो का एक विभाग जिसके अतर्गत आध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड और महाराष्ट्र ये पाँच वर्ग है।
वि० द्रविड प्रदेश अथवा उसके निवासियो से सवध रखनेवाला। द्राविड।
द्रविड़-नाशन—पु० [ष० त०] सहिजन का पेड। शोभाजन।
द्रविडी—स्त्री० [सं० द्रविड+ङीप्] एक प्रकार की रागिनी।
द्रविण—पु० [सं० √द्रु+इनन्] १. धन। द्रव्य। २ सोना। स्वर्ण। ३ पराक्रम। पौरुष। ४. पुराणानुसार कुश द्वीप का एक पर्वत। ५ क्रौंच द्वीप का एक वर्ष या देश। ६. राजा पृथु का एक पुत्र।
पु० =द्रवण (अस्त्र)।
द्रविण-पद—पु० [ष० त०] विष्णु।
द्रविणाधिपति—पु० [द्रविण-अधिपति ष० त०] कुवेर।
द्रविणोदा (स्)—पु० [सं०] १ वैदिक देवता। २ अग्नि।
द्रवीभवन—पु० [सं०] [भू० कृ० द्रवीभूत] १ किसी घन पदार्थ का द्रव रूप धारण करना। २ भाप से पानी वनने की क्रिया जिसमे या तो भाप का घनत्व या ताप-क्रम कम हो जाता है।
द्रवीभूत—भू० कृ० [सं० द्रव+च्वि√भू+क्त] १. द्रव या तरल रूप मे आया या लाया हुआ। २ पिघला या पिघलाया हुआ। ३ (व्यक्ति) जिसके हृदय मे दया उत्पन्न हुई हो। ४ दया से विह्वल (हृदय)।
द्रव्य—वि० [सं० √द्रु+यत् नि० सिद्धि] १ द्रुम-सवधी। पेड़ का। २ पेड से निकला हुआ। ३ पेड की तरह का।
पु० १. चीज। पदार्थ। वस्तु। २ दार्शनिक क्षेत्र मे, वह पदार्थ जिसमे किसी प्रकार की क्रिया या गुण अथवा दोनो हो और जो किसी का समवाय कारण हो, अर्थात् जिससे कोई चीज वनती हो।
विशेष—वैशेषिको ने जो सात पदार्थ माने है, उनमे से द्रव्य भी एक है। रामानुजाचार्य ने इसे तीन प्रभेदो मे से एक प्रभेद माना है, और इसके ये छ भेद कहे है—ईश्वर, जीव, नित्य, विभूति, ज्ञान, प्रकृति और काल।
३. लौकिक व्यवहार मे, वह उपादान या सामग्री जिससे और चीजें वनती है। सामान। जैसे—चाँदी, ताँवा, मिट्टी, रूई आदि वे द्रव्य हैं जिनसे गहने, कपडे, वरतन आदि वनते है। ४ धन-दौलत, रुपए आदि। जैसे—उन्होने व्यापार मे वहुत-सा द्रव्य कमाया था। ५ पीतल। ६ जडी-वूटी अथवा ओषधि। ७ मद्य। शराव। ८ गोद। ९ लेप। १० लाख। लाक्षा।
द्रव्यक—वि० [सं० द्रव्य+कन्] द्रव्य या कोई पदार्थ उठाने या वहन करनेवाला।
द्रव्यत्व—पु० [सं० द्रव्य+त्व] 'द्रव्य' होने की अवस्था, गुण या भाव। द्रव्यता।
द्रव्य-पति—पु० [ष० त०] १ वहुत से द्रव्यो या पदार्थो का स्वामी। २ धन का मालिक। धनवान्। ३ आकाशस्थ राशियाँ, जो विभिन्न पदार्थो की स्वामी मानी गई है। (फलित ज्योतिष)
द्रव्यमय—वि० [सं०द्रव्य+मयट्] १ द्रव्य अर्थात् पदार्थ से युक्त। २ पदार्थ सवधी। ३ धन से परिपूर्ण। सपत्तिवान्।
द्रव्य-वन—पु० [मध्य० स०] लकडियो के लिए रक्षित वन। (कौ०)
द्रव्यवन-भोग—पु० [ष० त०] वह जागीर या उपनिवेश जिसमें लकडी तथा अन्य वन्य पदार्थो की अधिकता हो। (कौ०)
द्रव्यवान (वत्)—वि० [सं० द्रव्य+मतुप्] [स्त्री० द्रव्यवती] १. द्रव्य अर्थात् पदार्थ से युक्त। २ धनवान्। सम्पन्न।
द्रव्य-सार—पु० [ष० त०] वहुमूल्य पदार्थ। उपयोगी पदार्थ।
द्रव्यातर—पु० [द्रव्य-अतर मयू० स०] प्रस्तुत द्रव्य से भिन्न कोई और द्रव्य।
द्रव्याधीश—पु० [द्रव्य-अधीश] १ धन के स्वामी, कुवेर। २ वहुत वडा धनवान्।
द्रव्यार्जन—पु० [द्रव्य-अर्जन ष० त०] धन अर्जित करने की क्रिया या भाव।

द्रव्याश्रित—वि० [द्रव्य-आश्रित ष० त०] द्रव्य मे वर्तमान या विद्यमान रहनेवाला।

द्रष्टव्य—वि० [स०√दृश् (देखना)+तव्यत्] १ दिखाई देने या पडनेवाला। दृष्टिगोचर। २ देखने मे बहुत अच्छा लगनेवाला। दर्शनीय। ३ देखने, जानने अथवा निरीक्षण किये जाने के योग्य। ४ जो दिखाया, बतलाया या समझाया जाने को हो। ५. जिसे कुछ दिखाना, बतलाना या समझाना हो। ६ जो निश्चित और प्रत्यक्ष रूप से किया जाने को हो। कर्त्तव्य।

द्रष्टा (ष्टृ)—वि० [स०√दृश्+तृच्] १ देखनेवाला। २ साक्षात् या सामना करनेवाला। ३ दिखलाने या बतलानेवाला।

पु० १ साक्षी। २ साख्य के अनुसार पुरुष और योग के अनुसार आत्मा जिसे दार्शनिक लोग सब प्रकार के सासारिक कार्यों को केवल देखनेवाला मानते है, करने या भोगनेवाला नही मानते।

द्रष्टार—पु० [स०] विचारपति। न्यायाधीश।

द्रह—पु० [स० ह्लद, पृषो० सिद्धि] १ बहुत गहरी झील। २. जलाशय मे वह स्थान जो बहुत गहरा हो। दह।

द्राक्ष-शर्करा—स्त्री० [स० अगूर के रस को रासायनिक प्रक्रिया से सुखा कर बनाई जानेवाली चीनी। (ग्लूकोज)

द्राक्षा—स्त्री० [स०√द्राक्ष् (चाहना)+अ—टाप्] अगूर। दाख।

द्राघिमा (मन्)—स्त्री० [स० दीर्घ+इमनिच्] १ दीर्घता। लबाई। २ अक्षाश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्य रेखा के समानातर पूर्व-पश्चिम को मानी गई है। ३ किसी तरह की वह स्थिति जिसमे वह पृथ्वी से अधिकतर दूरी पर होता है। (एपेजी)

द्राण—भू० कृ० [स०√द्रा (सोना, भागना)+क्त] भागा हुआ। २ सोया हुआ। सुप्त।

पु० १ पलायन। भागना। २ स्वप्न। सपना।

द्राप—पु० [स०√द्रा+णिच्, पुक+अच्] १ आकाश। २ कौडी। ३ शिव। ४ मूर्ख व्यक्ति।

द्रामिल—वि० [स०द्राविड] द्रामिल वा द्रविड देशवासी।

पु० चाणक्य का एक नाम।

द्राव—पु० [स०√द्रु (गति)+घञ्] १ जाने या भागने की क्रिया या भाव। २ वेग। गति। ३ चूना, बहना या रसना। क्षरण। ४. गलना या पिघलना। ५ ताप। ६ अनुताप। पछतावा।

द्रावक—वि० [स०√द्रु+णिच्+ण्वुल्—अक] १ द्रव रूप मे करने या लानेवाला। ठोस चीज को पानी की तरह पतला करने और बहानेवाला। २ गलाने या पिघलानेवाला। ३ हृदय मे दया आदि कोमल भाव उत्पन्न करनेवाला। ४ पीछा करनेवाला। ५ चुरानेवाला। ६ दौडाने या भगानेवाला। ७ चतुर। चालाक। ८ चालबाज। धूर्त्त। ९ दिवालिया।

पु० १. चद्रकातमणि। २ बहुत बडा चालाक आदमी। ३ चोर। ४ व्यभिचारी व्यक्ति। ५ मोम। ६ सुहागा।

द्रावक-कंद—पु० [व० स०] तैलकद। तिलकदरा।

द्रावकर—वि० [स० द्राव√कृ (करना)+ट] द्रवित करनेवाला।

पु० मुहागा, जो सोने को गलाता या पिघलाता है।

द्रावण—पु० [स०√द्रु+णिच्+ल्युट्—अन्] १ द्रवीभूत करने का कार्य या भाव। गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव। २. दौडाने या भगाने की क्रिया। ३. रीठा।

द्राविका—स्त्री० [स०√द्रु+ण्वुल्—अक्, टाप्, इत्व] १. थूक। लार। २ मोम।

द्राविड़—वि० [स० द्रविड़+अण्] [स्त्री० द्राविडी] १. द्रविड देश-सबधी। द्रविड का। २ द्रविड देश मे रहने या होनेवाला।

पु० १ कचूर। २ आवा हलदी। ३ द्रविड। ४. दक्षिण भारत की भाषाओ का सामूहिक परिवार।

द्राविड़क—पु० [स० द्राविड+कन्] १. विट् लवण। सोचर नमक। २. आँवा हलदी।

द्राविड़-गौड़—पु० [कर्म० स०] रात्रि के समय गाया जानेवाला एक राग।

द्राविड-प्राणायाम—पु० [सं० कर्म० स०] कोई काम ठीक प्रकार से और सीधे रास्ते न करके वही काम घुमा-फिराकर तथा उलटे ढग से करना।

द्राविड़ी—स्त्री० [सं० द्राविड+ङीप्] छोटी इलायची।

वि० [स०] द्रविड-संबधी।

स्त्री० १ द्रविड़ प्रदेश की स्त्री। २ छोटी इलायची।

द्राविड़ी-प्राणायाम—पु० =द्राविड-प्राणायाम।

द्रावित—भू० कृ० [स०√द्रु+णिच्+क्त] १ द्रव किया हुआ। २ गलाया या पिघलाया हुआ। ३. दयार्द्र किया हुआ। ४ भगाया हुआ।

द्राह्यायण—पु० [स०द्रह+यञ्+फक्—आयन] द्रह ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न एक ऋषि।

द्रिठि*—स्त्री० [स० दृष्टि] नजर। दृष्टि। उदा०—वेलखि अणी मूठि द्रिठिवधि—प्रिथीराज।

द्रिढ*—वि० =दृढ।

द्रिव्व*—पु० = द्रव्य।

द्रिष्टि*—स्त्री० =दृष्टि।

द्रु—पु० [स०√द्रु+डु] १. वृक्ष। पेड। २. वृक्ष की शाखा। पेड की डाल।

द्रु-किलिम—पु० [स०√किल् (श्वेत होना)+किमच्, द्रु-किलिम स० त०] देवदारु।

द्रुगा—पु० =दुर्ग।

द्रुग्ध—भू० कृ० [स०√द्रुह (दोह)+क्त] जिसके विरुद्ध षडयत्र रचा गया हो। ३ जिसे द्वेष आदि के कारण हानि पहुँचाई गई हो।

द्रुघण—पु० [स० द्रु√हन् (मारना)+अप्, घनादेश णत्व] १ लोहे का मुगदर। २. कुठार। कुल्हाडा। ३ परशु या फरसे की तरह का एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४ भू-चपा। ५ ब्रह्मा।

द्रुण—पु० [स०+द्रुण (हिंसा)+क] १ धनुष। कमान। २. खड्ग। तलवार। ३ बिच्छू। ४. भृगी नाम का कीडा।

द्रुणा—स्त्री० [स० द्रुण+अच्—टाप्] धनुष की डोरी। ज्या।

द्रुणी—स्त्री० [स०√द्रुण+इन्—ङीप्] १ मादा कछुआ। कछुई। २ कन-खजूरा। ३ कठवत। कठौता।

द्रुत—वि० [स०√द्रु+क्त] १. पिघला हुआ। २ शीघ्रतापूर्वक और वेग से आगे बढने या कोई काम करनेवाला। ३ जो भागकर

वच निकला हो। ४ (संगीत मे स्वर, लय आदि) जिसकी गति साधारण की अपेक्षा द्रुत हो। जैसे—द्रुत लय या द्रुत विलंबित।

क्रि० वि० जल्दी। शीघ्र। उदा०—फिर तुम तम मे, मैं प्रियतम मे हो जावें द्रुत अंतर्धान।—पंत।

पु० १ विच्छू। २ बिल्ली। ३ वृक्ष। पेड। ४ संगीत मे, उतने समय का आधा जितना साधारणत. एक मात्रा का होता या माना जाता है। लेखन मे इसका चिह्न है। ५ संगीत मे, गाने की वह लय जो मध्यम से भी कुछ और तीव्र होती है।

द्रुत-गति—वि० [ब० स०] जल्दी या तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी।

द्रुतगामी (मिन्)—वि० [स० द्रुत√गम् (जाना) +णिनि] [स्त्री० द्रुतगामिनी] जल्दी या तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी।

द्रुत-त्रिताली—स्त्री० = जल्द तिताला (ताल)।

द्रुत-पद—पु० [कर्म० स०] १ शीघ्रगामी चरण। २ १२-१२ अक्षरो के चार चरणोवाला एक प्रकार का छंद जिसका चौथा, ग्यारहवाँ और बारहवाँ अक्षर गुरु और शेष अक्षर लघु होते हैं।

द्रुत-मध्या—स्त्री० [ब० स०] एक अर्द्ध-सम-वृत्ति जिसके प्रथम और तृतीय पद मे ३ भगण और दो गुरु होते हैं।

द्रुत-विलंबित—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश १ नगण २ भगण और १ रगण होता है। इसे 'सुंदरी' भी कहते हैं।

द्रुति—स्त्री० [स० √द्रु+क्तिन्– १. तरल पदार्थ। द्रव। २. द्रवित होने की अवस्था या भाव। ३. गति। चाल।

द्रुतं*—अव्य० [स० द्रुत] शीघ्रता से। जल्दी।

द्रु-नख—पु० [स० ष० त०] काँटा।

द्रुपद—पु० [स०] उत्तर पांचाल के एक प्रसिद्ध राजा जिनकी कन्या कृष्णार्जुन आदि पांडवो को ब्याही गई थी। २ खंभे का आधार या पाया। ३. खडाऊँ।

द्रुपदा—स्त्री० [स० द्रुपद+अच्–टाप्] एक वैदिक ऋचा जिसके आदि मे द्रुपद शब्द है।

†स्त्री० = द्रौपदी।

द्रुपदात्मज—पु० [द्रुपद-आत्मज ष० त०] [स्त्री० द्रुपदात्मजा] १ शिखंडी। २ धृष्ट-द्युम्न।

द्रुपदादित्य—पु० [द्रुपदा-आदित्य मध्य० स०] काशी खंड के अनुसार सूर्य की एक प्रतिमा जो द्रौपदी द्वारा प्रस्थापित मानी जाती है।

द्रुम—पु० [स० द्रु+म] १ वृक्ष। पेड। २ पारिजात। परजाता। ३ कुबेर। ४ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

द्रुम-वटिका—स्त्री० [ष० त०] सेमर का पेड।

द्रुम-नख—पु० [ष० त०] पेड का नाखून, काँटा।

द्रुम-मर—पु० [स० द्रुम√मृ० (मरना)+अप्] काँटा। कटक।

द्रुम-व्याधि—स्त्री० [ष० त०] १. पेडो के होनेवाले रोग। २. लाख। लाक्षा। ३ गोंद।

द्रुम-शीर्ष—पु० [ष० त०] १ पेड का ऊपरी भाग या सिरा। २. [ब० स०] वास्तु शास्त्र मे गोल मंडप के आकार की एक प्रकार की छत।

द्रुम-श्रेष्ठ—पु० [स० त०] ताड का पेड।

द्रुम-सार—पु० [ष० त०] अनार का पेड।

द्रुम-सेन—पु० [स०] महाभारत का एक योद्धा जो धृष्टद्युम्न के हाथों मारा गया था।

द्रुमामय—पु० [द्रुम-आमय ष० त०] १ पेडो को होनेवाले रोग। २ लाख। लाक्षा।

द्रुमारि—पु० [द्रुम-अरि ष० त०] पेड का शत्रु, हाथी।

द्रुमालय—पु० [द्रुम-आलय ष० त०] वृक्ष का घर। जंगल।

द्रुमाश्रय—वि० [द्रुम-आश्रय ब० स०] वृक्षो पर निवास करनेवाला। पु० गिरगिट।

द्रुमिणी—स्त्री० [स० द्रुम+इनि–ङीप्] १ वृक्षो का समूह। २. जंगल। वन।

द्रुमिल—पु० [स०] १ एक दानव जो सौभ देश का राजा था। २. नौ योगेश्वरो मे से एक।

द्रुमिला—स्त्री० [स०] एक प्रकार का छंद जिसके चरणो मे ३२-३२ मात्राएँ होती हैं।

द्रुमेश्वर—पु० [स० द्रुम-ईश्वर ष० त०] १. चंद्रमा। २ पारिजात। परजाता। ३ ताड का पेड।

द्रुमोत्पल—पु० [स० द्रुम-उत्पल ब० स०] कर्णिकार वृक्ष। कनकचंपा। कनियारी।

द्रुवय—पु० [स० द्रु+वय] लकडी की एक पुरानी माप।

द्रु-सल्लक—पु० [स० स० त०] चिरौंजी का पेड।

द्रुह—पु० [स०√द्रुह् (अनिष्ट चाहना) +क] [स्त्री० द्रुही] १. पुत्र। बेटा २ वृक्ष। पेड।

द्रुहण—पु० [स० द्रु√हन् (हिंसा)+अच्] ब्रह्मा।

द्रुहिण—पु० [स० √द्रुह+इनन्] ब्रह्मा।

द्रुही—स्त्री० [स० द्रुह+ङीप्] कन्या।

द्रुह्यु—पुं० [स०] १. एक वैदिक जाति। २ राजा ययाति का शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

द्रू—पु० [स०√द्रु (पिघलना)+क्विप्] सोना। स्वर्ण।

द्रूण—पु० [स० =द्रुण, पृषो० सिद्धि] विच्छू।

द्रेका—स्त्री० [स०] बकायन। महानिंब।

द्रेक्क—पु० [यू० डेकनस] राशि का तृतीयांश।

वि० दे० 'दृक्काण'।

द्रेक्काण—पु० [यू० डेकनस] ज्योतिष मे, राशि का तृतीयांश।

द्रोण—पु० [स०√द्रु (गति)+न] १ लकडी का वह घडा या बरतन जिसमे वैदिक काल मे सोम रखा जाता था। २. लकडी का बडा बरतन। कठवत। ३. एक प्रकार की पुरानी तौल जो चार आढक या सोलह सेर अथवा किसी-किसी के मत से बत्तीस सेर की होती थी। ४. नाव। नौका। ५ अरणी की लकडी। ६. रथ। ७ पत्तो का दोना। ८ डोम कौआ। ९. विच्छू। १० पेड। वृक्ष। ११. नील का पौधा। १२ केला। १३. दीर्घिका और पुष्करिणी से बडा वह तालाब जो चार सौ धनुष लंबा और इतना ही चौडा होता था। १४ मेघो का एक नायक जिसके भोगकाल मे खूब वर्षा होती है। १५ दे० 'द्रोणाचल'। १६ दे० 'द्रोणाचार्य।'

द्रोण-कलश—पु० [उपमि० स०] यज्ञ आदि मे सोम छानने का वैकंक लकडी का बना हुआ एक प्राचीन पात्र।

द्रोण-काक—पु० [उपमि० स०] डोम कौआ।
द्रोण-गंधिका—स्त्री० [ब० स० टाप्, इत्व] रासना।
द्रोण-गिरि—पु० [मध्य० स०]द्रोणाचल।
द्रोण-पदी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] कुंभपदी।
द्रोण-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] एक छोटा पौधा। गूमा।
द्रोण-मुख—पु० [ब० स०] वह गाँव जो ४०० गाँवों मे प्रधान हो।
द्रोण-मेघ—पु० [ब० स०] बहुत अधिक जल बरसाने वाला मेघ।
द्रोण-शर्मपद—पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)
द्रोणस—पु० [स०] एक दानव का नाम।
द्रोणा—स्त्री० [स० द्रोण+अच्—टाप्] गूमा। द्रोणपर्णी।
द्रोणाचल—पु० [स० द्रोण-अचल मध्य० स०] एक प्रसिद्ध पर्वत जहाँ से लक्ष्मण के लिए हनुमान सजीवनी बूटी लाये थे। रामायण के अनुसार यह क्षीरोद सागर के किनारे था। द्रोणगिरि।
द्रोणाचार्य—पु० [स० द्रोण-आचार्य मध्य स०] ऋषि भारद्वाज के पुत्र तथा परशुराम के शिष्य एक प्रसिद्ध योद्धा जो कौरवों और पांडवों के गुरु थे और महाभारत के युद्ध मे कौरवों की ओर से लडे थे। इनका वध राजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने किया था।
द्रोणायन—पु० [स० द्रोण+फक्—आयन, द्रोण+फिञ्—आयन] द्रोणाचार्य के पुत्र, अश्वत्थामा। २ आठवे मन्वतर के एक ऋषि।
स्त्री० = द्रोणी।
द्रोणिका—स्त्री० [स० द्रोणि√कै (मालूम पडना)+क—टाप्] नील का पौधा।
द्रोणी—स्त्री० [स० द्रोणि+ङीष्] १ छोटी नाव। डोंगी। २ पत्तों का छोटा दोना। दोनियाँ। ३. लकडी का बना हुआ गोल चौडा पात्र। कठवत। कठौता। ४. लकडी की छोटी कटोरी या प्याली। डोकी। ५. दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ६ दो पर्वतों के बीच का मार्ग। गिरि-सकट। दर्रा। ७ एक प्राचीन नदी। ८ द्रोण की पत्नी, कृपी। ९ एक प्रकार का नमक। १० एक प्रकार का पुराना परिमाण जो दो सूर्प या १२८ सेर का होता था। ११. शीघ्रता। जल्दी। १२. नील का पौधा। १३ केला। १४. इन्द्रायन।
द्रोणी-दल—पु० [ब० स०] केतकी का फूल।
द्रोणी-लवण—पु० [मध्य० स०] कर्णाटक देश के आस-पास होनेवाला एक तरह का नमक। विरिया।
द्रोणोदन—पु० [स०] सिंहहनु के पुत्र, जो शाक्य मुनि बुद्ध के चाचा थे।
द्रोण्याश्रय—पु० [स० द्रोणी-आश्रम मध्य स०] शरीर के अदर का एक प्रकार का रोग।
द्रोन—पु० १ =द्रोण। २ =द्रोणाचार्य।
द्रोबा—स्त्री०=दूर्वा (दूब)। उदा० —हरी द्रोब केसर हल्द्रि।—प्रिथीराज।
द्रोह—पु० [स० √द्रुह+घञ्] [स्त्री० द्रोही] १ मन की वह वृत्ति जिसके फलस्वरूप मनुष्य किसी से असतुष्ट और दु खी होकर उसका अहित करते हुए उससे बदला चुकाना चाहता है। २ द्वेषवश षड्यत्र रचकर किसी को हानि पहुँचाने की क्रिया या भाव।
द्रोहाट—पु० [स०द्रोह√अट् (गति)+अच्]१ ऐसा व्यक्ति जो ऊपर से देखने पर भला या सीधा-सादा जान पडे, परन्तु जो अदर से कपटी या दुष्ट हो। पाखण्डी। २. झूठा व्यक्ति। ३. शिकारी। ४. वेद की एक शाखा।
द्रोही(हिन्)—वि० [स० √द्रुह+घिनुण्] [स्त्री० द्रोहिणी] १. द्रोह करनेवाला। किसी के विरुद्ध षड्यत्र रचनेवाला।
पु० वैरी। शत्रु।
द्रौणि—पु० [स० द्रोण+इञ्] अश्वत्थामा।
द्रौणिक—वि० [स० द्रोण+ठक्—इक] द्रोण सबधी। द्रोण का।
पु० वह खेत जिसमे एक द्रोण (३८ सेर) बीज बोया जाय।
द्रौणिकी—स्त्री० [स० द्रौणिक+ङीप्] १. १६ सेर की एक पुरानी तौल। २. नापने का वह पात्र जिसमे १६ सेर अनाज आता था।
द्रौपद—वि० [स० द्रुपद+अण्] द्रुपद सबधी।
पु० [स्त्री० द्रौपदी] द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न।
द्रौपदी—स्त्री० [स० द्रौपद+ङीप्] पांचाल देश के राजा द्रुपद की कन्या जिसका वरण स्वयवर मे अर्जुन ने किया था।
द्रौपदेय—पु० [स० द्रौपदी+ढक्—एय] द्रौपदी का पुत्र।
द्वद—पु० [द्वद्व] दो चीजो का जोडा। युग्म।
पु० [स० द्वद्व] घड़ियाल जिस पर आघात करके समय सूचित किया जाता है।
पु० [स० द्वन्द्व] १. जोडा। युग्म। २ दो आदमियों मे होनेवाली लडाई। ३. उत्पात। उपद्रव। ४. झगडा। बखेडा। ५ उलझन। झझट।
क्रि० प्र०—खडा करना।—मचाना।
६ कष्ट। दु ख। ७. आशका। खटका। ८ डर। भय। ९ असमजस। दुविधा। १०. दे० 'द्वद्व'।
स्त्री०=दुंदुभी।
द्वंदज—वि०=द्वद्वज।
द्वंद-युद्ध—पु०=द्वद्व-युद्ध।
द्वंदर—वि० [स० द्वद्वालु] झगडालू। लड़ाका।
द्वद्व—पु० [स० द्वि शब्द से नि० सिद्धि] १. जोडा। युग्म। २ ऐसे दो गुण, पदार्थ या स्थितियाँ जो परस्पर विरोधी हो। जैसे—सुख और दु ख ताप और शीत। ३ प्राचीन काल मे दो शस्त्र योद्धाओं मे होनेवाला सघर्ष जिसमे पराजित को विजेता की आज्ञा माननी पडती थी अथवा उसके वश मे होकर रहना पडता था। ४. दो विरोधी अथवा विभिन्न शक्तियों, विचार धाराओं आदि मे स्वय आगे बढने और दूसरी को पीछे हटाने के लिए होनेवाला सघर्ष। ५. मानसिक सघर्ष। ६ उत्पात। उपद्रव। ७ झगड़ा। बखेडा।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।
८ व्याकरण मे एक प्रकार का समास जिसमे के दोनों अथवा सभी पदों की समान रूप से प्रधानता होती है और जिसका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है। जैसे—सुख-दु ख यों ही आते-जाते रहते है। ९. गुप्त बात। रहस्य। १०. किला। दुर्ग।
द्वद्वचर—वि० [स० द्वद्व√चर् (गति) +ट] (पशु या पक्षी) जो अपने जोडे के साथ रहता हो।
पु० चकवा या चक्रवाक पक्षी।

द्वंद्वचारी (रिन्)—पु० [स० द्वद्व √चर्+णिनि] [स्त्री० द्वद्वचारिणी] चकवा।

द्वंद्वज—वि० [स० द्वद्व√जन्(उत्पत्ति)+ड] किसी प्रकार के द्वद्व से उत्पन्न। जैसे—(क) कफ और वात के प्रकोप से उत्पन्न द्वद्वज रोग। (ख) राग-द्वेष से उत्पन्न द्वद्वज कष्ट या दूषित मनोवृत्ति।

द्वंद्व-युद्ध—पु० [ष० त०] १ वह युद्ध या लडाई जो दो दलो, व्यक्तियो आदि मे हो और जिसमे कोई तीसरा सम्मिलित न हो। २ दो आदमिओ मे होनेवाली हाथा-पाई या कुश्ती।

द्वंद्वी (द्विन्)—वि० [स० द्वद्व+इनि] १ परस्पर मिलकर युग्म बनानेवाले (दो)। २. परस्पर विरुद्ध रहनेवाले (दो)। ३ द्वद्व (उपद्रव या झगडा) करने या मचानेवाला।

पु० झगडालू व्यक्ति।

द्वय—वि० [स० द्वि+तयप्] दो।

पु० जोडा। युग। (समस्त पदो के अन्त मे) जैसे—देवता-द्वय।

द्वयवादी (दिन्)—वि० [स०द्वय√वद् (बोलना)+णिनि] दो तरह की या दोरंगी बातें कहनेवाला।

पु० गणेश।

द्वय-हीन—वि० [स० तृ० त०] जो न पुलिंग हो और न स्त्री-लिंग, अर्थात् नपुसक (शब्द)।

द्वयाग्नि—पु० [स० द्वय अग्नि ब० स०] लाल चीता।

द्वयाहिग—वि० [स०] (सिद्ध पुरुष) जिसके सत्वगुण ने शेष दोनो गुणो (रज और तम) को दवा लिया हो।

द्वाःस्थ—पु० [स०] [द्वार√स्था (ठहराना)+क] १ द्वारपाल। २ नदिकेश्वर।

द्वाचत्वारिंश—वि० [स० द्वाचत्वारिंशत्+डट्] बयालीसवाँ।

द्वाचत्वारिंशत्—वि० [स० द्वि० चत्वारिंशत् मध्य स०] बयालिस।

पु० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४२।

द्वाज—पु० [स० द्वि√जन्+ड पृषो० सिद्धि] किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके पति से नही, बल्कि किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ हो। जारज। दोगला।

द्वात्रिंश—वि० [स० द्वात्रिंशत्+डट्] बत्तीसवाँ।

द्वात्रिंशत्—वि० [स० द्वि-त्रिंशत् मध्य स०] जो सख्या मे तीस और दो हो। बत्तीस।

पु० बत्तीस की सख्या या उसका सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३२।

द्वादश—वि० [स० द्वि-दशन् मध्य स०] १. जो सख्या मे दस और दो हो। बारह। २ क्रम के विचार से बारह के स्थान पर पडनेवाला। बारहवाँ।

पु० बारह का सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१२

द्वादशक—वि० [स० द्वादस+कन्] बारहवे स्थान पर पडनेवाला। बारहवाँ।

द्वादश-कर—वि० [ब० स०] जिसके बारह हाथ हो।

पु० १ कार्तिकेय। २ कार्त्तिकेय के एक अनुचर। ३ बृहस्पति।

द्वादश-बानी—वि०=बारहबानी (खरा)।

द्वादश-भाव—पु० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे जन्म कुडली के बारह घर जिनके नाम क्रम से तनु, धन आदि फलानुसार रखे गये है।

द्वादश-रात्र—पु० [द्विगु स०] बारह दिनो मे पूरा होनेवाला एक यज्ञ।

द्वादस-लोचन—पु० [ब० स०] कार्तिकेय।

द्वादश-वर्गी—स्त्री० [द्विगु स० ङीप्] क्षेत्र, होरा आदि बारह वर्गो का समूह जिसके आधार पर ग्रहो का बलाबल जाना जाता है। (फलित ज्यो०)

द्वादश-वार्षिक—वि० [स० द्वादश-वर्ष द्विगु स०,+ठक्—इक] बारह वर्षो मे होनेवाला।

पु० एक तरह का व्रत जो ब्रह्म-हत्या लगने पर उसके पाप से मुक्ति पाने के लिए बारह वर्षो तक जगल मे रहकर किया जाता था।

द्वादश-शुद्धि—स्त्री० [मध्य० स०] वैष्णव सप्रदाय मे तत्रोक्त बारह प्रकार की शुद्धियाँ। जैसे—देवता की परिक्रमा करने से होनेवाली पदशुद्धि, देवता को स्पर्श करने से होनेवाली हस्त-शुद्धि, नाम कीर्त्तन से होनेवाली वाक्य-शुद्धि, देव-दर्शन से होनेवाली नेत्र-शुद्धि आदि।

द्वादशांग—वि० [द्वादश-अग ब० स०] जिसके बारह अंग या अवयव हो।

पु० एक तरह की धूप जो गुग्गल, चदन आदि बारह गध द्रव्यो के योग से बनती है।

द्वादशांगी—स्त्री० [द्वादश-अग ब० स०, ङीप्] जैनो के द्वादश अग ग्रथो का समूह।

द्वादशांगुल—वि० [द्वादश-अगुल ब० स०] १ जो नाप मे बारह अगुल हो। २ बारह उँगलियोंवाला।

पु० बारह अगुल की माप। बित्ता। बालिश्त।

द्वादशांशु—पु० [द्वादस-अशु ब० स०] बृहस्पति।

द्वादशाक्ष—पु० [द्वादश-अक्षि ब० स०] १ कार्त्तिकेय।

वि० [स०] जिसकी बारह आँखें हो।

पु० १ कार्तिकेय। २ गौतम बुद्ध।

द्वादशाक्षर—पु० [द्वादश-अक्षर ब० स०] विष्णु का एक मत्र जिसमे बारह अक्षर है और जो इस प्रकार है—ओं नमो भगवते वासुदेवाय।

द्वादशाख्य—पु० [द्वादश-आख्या ब० स०] बुद्धदेव।

द्वादशात्मा† (त्मन्)—पु० [द्वादश-आत्मन् ब० स०] १ सूर्य। २ आक। मदार।

द्वादशायतन—पु० [द्वादश-आयतन मध्य० स०] पाँच ज्ञानेद्रियो, पाँच कर्मेद्रियो तथा मन और बुद्धि इन बारह पूज्य स्थानो का समूह। (जैन)

द्वादशाह—पु० [द्वादश-अहन् द्विगुस०] १ बारह दिनो का समूह। २ एक यज्ञ जो बारह दिनो मे पूरा होता था। ३ मृतक के उद्देश्य से उसकी मृत्यु के बारहवे दिन किया जानेवाला श्राद्ध।

द्वादशी—स्त्री० [स० द्वादश+ङीप्] चाद्रमास के किसी पक्ष की बारहवी तिथि।

द्वादसबानी†—वि०=बारहबानी (खरा)।

द्वापर—पु० [स० द्वि पर=प्रकार ब० स०, पृषो० सिद्धि] पुराणानुसार त्रेता और कलियुग के बीच का युग जिसका मान ८६४००० वर्षो का कहा गया है। भगवान् कृष्ण ने इसी युग मे अवतार लिया था।

द्वामुष्यायण—पु० [स०=द्वयामुष्यायण पृषो० सिद्धि] १ वह व्यक्ति जो दो पिताओं का (एक का औरस और दूसरे का दत्तक) पुत्र हो। २ वह व्यक्ति जो दो ऋषियों के गोत्र मे हो। ३ उद्दालक मुनि का एक नाम। ४. गौतम बुद्ध का एक नाम।

द्वालवद—पु०=दुआलवद ।
द्वाला—पु० [स० द्विधारा] डिंगल भाषा का एक प्रकार का छद ।
द्वाली†—स्त्री०=दुआली ।
द्वाविश—वि० [स० द्वाविंशति+डट्] बाईसवें स्थान पर पडनेवाला।
द्वाविंशति—वि० [स० द्वि-विंशति मध्य० स०] जो सख्या मे बीस और दो हो। बाईस ।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२२
द्वाषष्ठ—वि० [स० द्वाषष्ठि+डट्] बासठवाँ ।
द्वाषष्ठि—वि० [स० द्वि-षष्ठि मध्य० स०] जो गिनती मे साठ से दो अधिक हो। बासठ।
पु० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६२
द्वासप्तत—वि० [स० द्वासप्तति+डट्] बहत्तरवाँ ।
द्वासप्तति—वि० [स० द्वि-सप्तति मध्य० स०] जो गिनती मे सत्तर और दो हो। बहत्तर ।
पु० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७२
द्वास्थ—पु० [स० द्वार्√स्था+क, विसर्गलोप] द्वारपाल ।
द्वि—उप० [स०√द्वृ (सवरण)+डि] दो।
द्विक—वि० [स० द्वि+कन्] १ जिसमे दो अग या अवयव हो। २ दोहरा ।
पु० [द्वि०-क ब० स०] १ कौआ । २ चकवा ।
द्वि-ककार—पु० [ब० स०] १ कौआ । २ चकवा ।
द्वि-ककुद्—पु० [ब० स०] ऊँट ।
द्वि-कर्मक—वि० [ब० स०, कर्म] (क्रिया) १ दो कर्मोवाला । (व्याकरण मे, क्रिया) जिसके साथ दो कर्म लगे हो। ३ (व्याकरण मे, क्रिया) जो अकर्मक और सकर्मक दोनो रूपो मे चलती हो। जैसे—खुजलाना ।
द्वि-कल—पु० [हिं० द्वि+कला] दो मात्राओ का समूह। (पिंगल)
द्वि-क्षार—पु० [द्विगु स०] शोरा और सज्जी का समूह ।
द्विगु—वि० [ब० स०] जिसके पास दो गौएँ हो ।
पु० तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमे पूर्वपद सख्या वाचक होता है। जैसे—त्रिभुवन, पचकोण, सप्तदशी आदि।
विशेष—पाणिनि ने इसे कर्मधारय के अतर्गत रखा है, पर और लोग इसे स्वतत्र समास मानते है।
द्विगुण—वि० [स० द्वि√गुण (गुणा करना)+अच् (कर्म मे)] दुगना । दूना।
द्वि-गुणित—भू० कृ० [तृ० त०] १ दो से गुणा किया हुआ। २ जिसे दुगना किया हो। ३ दूना।
द्वि-गूढ—पु० [स० त०] नाट्यशास्त्र के अनुसार लास्य के दस अगो मे से एक, जिसमे सब पद सम और सुदर होते है, सधियाँ वर्त्तमान होती है तथा रस और भाव सुसपन्न होते हैं।
द्विघटिका—स्त्री० [द्विगुस-] दु-घडिया मुहूर्त्त।
द्विचत्वारिंश—वि० [स० द्विचत्वारिंशत+डट्] बयालीसवाँ।
द्विचत्वारिंशत्—वि० [मध्य० स०] जो चालीस से दो अधिक हो। बयालीस।
पु० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४२
द्वि-चर्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०] १ वह जिसे कोई चर्म रोग हुआ हो। २ कोढ़ी।
द्विज—वि० [स० द्वि√जन् (उत्पत्ति)+ड] जिसका जन्म दो बार हुआ हो। जो दो बार उत्पन्न हुआ हो।
पु० १ अडे से उत्पन्न होनेवाले जीव-जतु जो एक बार अडे के रूप मे और दूसरी बार अडे मे से बाहर निकलने के समय (इस प्रकार दो बार) जन्म लेते हैं। २ चिड़िया। पक्षी। ३ हिंदुओ मे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है और यज्ञोपवीत के समय जिनका दूसरा जन्म होना माना जाता है। ४ ब्राह्मण। ५ चद्रमा, जिसका पुराणानुसार दो बार जन्म हुआ था। ६ दाँत, जो एक बार लडकपन मे टूट चुकने पर फिर दोबारा निकलते है। ७ नेपाली धनियाँ। तुबुरु।
द्विज-दपति—पु० [स० द्विज-दपती] दान,पूजा आदि के लिए बना हुआ धातु का वह पत्तर जिस पर स्त्री और पुरुष या लक्ष्मी और नारायण की युगल मूर्तियाँ बनी होती है।
द्वि-जन्मा (न्मन्)—वि० [ब० स०] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
पु० = द्विज।
द्विज-पति—पु० [ष० त०] १ ब्राह्मण। २ चद्रमा। ३ गरुड। ४ कपूर।
द्विज-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] सोमलता।
द्विज-बंधु—पु० [ष० त०] १ नाममात्र का वह द्विज जिसका जन्म तो द्विज माता-पिता से हुआ हो पर जो स्वय द्विजो के सस्कार और कर्म न करता हो। २ नाम मात्र का ब्राह्मण।
द्विज-ब्रुव—पु० [द्विज√ब्रू (बोलना)+क, उप० स०] =द्विज-बधु।
द्विज-राज—पु० [ष० त०] १ श्रेष्ठ ब्राह्मण। २ चद्रमा। ३ गरुड। ४ कपूर।
द्विजलिंगी (गिन्)—पु० [स० द्विज-लिंग ष० त०, +इनि] १ वह जो किसी हीन वर्ण का होने पर भी ब्राह्मणो की तरह या उनके वेश मे रहता हो। २ क्षत्रिय।
द्विज-वाहन—पु० [ब० स०] विष्णु, जिनका वाहन गरुड (पक्षी) है।
द्विज-व्रण—पु० [ष० त०] दाँत का एक रोग। दतार्बुद।
द्विज-शेप्त—पु० [तृ० त०] बर्बट या भटवाँस, जिसे खाना ब्राह्मणो के लिए वर्जित है।
द्विजागिका—स्त्री० [स० द्विज-अग ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] कुटकी।
द्विजागी—स्त्री० [स० द्विज-अग ब० स०, ङीप्] कुटकी ।
द्विजा—स्त्री० [स० द्विज+टाप्] १.ब्राह्मण या द्विज की स्त्री। २. पालक का साग जो एक बार काट लिये जाने पर भी दोबारा बढ जाता है। ३ सभालू का बीज। रेणुका। ४ नारगी।
द्विजाग्रज—पु० [स० द्विज-अग्रज ष० त०] श्रेष्ठ ब्राह्मण।
द्विजाति—पु० [स० ब० स०] = द्विज। (देखें)
द्विजानि—पु० [स० द्वि-जाया ब० स०, नि आदेश] ऐसा व्यक्ति जिसकी दो पत्नियाँ हो।
द्विजायगी—स्त्री० = दुजायगी।
द्विजायनी—स्त्री० [स० द्विज-अयन ष० त०, ङीप्] यज्ञोपवीत।
द्विजालय —पु० [स० द्विज-आलय ष० त०] १. द्विज का घर। २. घोंसला।

द्विजावंती—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
द्वि-जिह्व—वि० [स० व० स०] १ जिसे दो जीभे हों। २ इधर की बाते उधर और उधर की इधर कहने या लगानेवाला। ३ कठिन या दु साध्य।
पु० १ साँप। २ खल। दुष्ट। ३ चोर। ४ एक प्रकार का रोग।
द्विजेंद्र—पु० [स० द्विज-इंद्र प० त०] १ चद्रमा। २. ब्राह्मण। ३. गरुड। ४ कपूर।
द्विजेश—पु० [स० द्विज-ईश प० त०] = द्विजेंद्र।
द्विजोत्तम—पु० [स० द्विज-उत्तम स० त०] द्विजों मे श्रेष्ठ, ब्राह्मण।
द्विट्(ष्) —वि० [स०√द्विष् (शत्रुता)+क्विप] शत्रु-भाव रखनेवाला।
पु० दुश्मन। वैरी। शत्रु।
द्विट्सेवी (विन्) —पु० [स० द्विट्-सेवा प० त०,+इनि] वह जो राजा के शत्रु से मिला हो या मित्रता रखता हो।
द्विठ—पु० [स० व० स०] १ विसर्ग। २ स्वाहा।
द्वित—पु० [स०] १ एक देवता का नाम। २ एक प्राचीन ऋषि।
द्वितय—वि० [स० द्वि+तयप्] १ दो अगों या अवयवोंवाला। २. जो दो प्रकार की चीजो से मिलकर बना हो। ३ दोहरा।
द्वितीय—वि० [स० द्वितीय], [स्त्री० द्वितीया] १ गिनती मे दूसरा। २ महत्त्व, मान आदि की दृष्टि से दूसरी श्रेणी का। मध्यकोटि का।
पु० पुत्र, जो अपनी आत्मा का ही दूसरा रूप माना जाता है।
द्वितीयक—वि० [स० द्वितीय+कन्] १ दूसरा। २ किसी एक चीज के अनुकरण पर या अनुरूप बना हुआ वैसा ही दूसरा। (डुप्लिकेट)।
द्वितीय-त्रिफला—स्त्री० [स० कर्म० स०] गभारी।
द्वितीया—स्त्री० [स० द्वितीय+टाप्] १ चाद्रमास के प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज। २. वाम-मार्गियो की परिभाषा मे, खाने के लिए पकाया हुआ मास।
द्वितीयाकृत—वि० [स० द्वितीय+डाच्] कृतके योग मे (खेत) जो दो बार जोता गया हो।
द्वितीयाभा—स्त्री० [स० द्वितीया-आ√भा (दीप्ति) + क—टाप्] दारुहल्दी।
द्वितीयाश्रम—पु० [स० द्वितीय-आश्रम कर्म० स०] गार्हस्थ्य आश्रम जो ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद पड़ता है।
द्वित्व—पु० [स० द्वि+त्व] १. एक साथ दो होने की अवस्था या भाव २ दोहरे होने की अवस्था या भाव। ३ व्याकरण मे एक ही व्यजन का एक साथ दो बार या दोहरा होनेवाला सयोग। जैसे—'विपन्न' मे का 'न्न' और 'सम्पत्ति' मे का 'त्त' द्वित्व है। ४ भाषा विज्ञान मे, जोर, देने के लिए किसी शब्द का दो बार होनेवाला उच्चारण। जैसे—जल्दी जल्दी काम पूरा करो।
द्वि-दल—वि० [स० व० स०] १ (अन्न) जिसमे दो दल या खड हो। जैसे—अरहर, चना, आदि। २ दो दलो या पत्तोवाला। ३ दो पटलो या पखडियोवाला।
पु० १. वह जिसमे दो दल (खड, पत्ते या पखडियाँ) हो। २ ऐसा अन्न जिससे दाल बनती हो। जैसे—अरहर, चना, मूग आदि। ३. दाल।
द्वि-दल-शासन-प्रणाली—स्त्री० [स० द्वि-दल द्विगु स०; द्विदल-शासन प० त०, द्विदल शासन-प्रणाली प० त०] वह शासन प्रणाली जिसमे शासन-अधिकार दो व्यक्तियों (या दलों अथवा वर्गों) के हाथ मे रहता है। दुहत्था-शासन। दे० 'द्वैधशासन प्रणाली'। (डायार्की)
द्वि-दाम्नी—स्त्री० [स० द्वि-दामन् व० स० ङीप्] वह नटखट गाय जो दो रस्सियों से बाँधी जाय।
द्वि-देवता—वि० [स० व० स०] १. दो देवताओं से सबध रखनेवाला (चरु आदि) २ जिसके दो देवता हों। जो दो देवताओं के लिए हो।
पु० विशाखा नक्षत्र।
द्वि-देह—वि० [स० व० स०] दो देहों या शरीरोंवाला।
पु० गणेश (जिनका सिर एक बार कट गया था, फिर हाथी का सिर जोडा गया था।)
द्वि-द्वादश—पु० [स० द्व० स०] फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का योग जो विवाह की गणना मे अशुभ माना गया है।
द्विधा—क्रि० वि० [स० द्वि-धाच्] १. दो प्रकार से। दो तरह से। २ दो खडों, टुकडो या भागों मे। ३. दोनों ओर।
स्त्री० = दुविधा।
द्विधा-करण—पु० [प० त०] दो भागो मे विभाजित करना। दो खड करना।
द्विधा-गति—पु० [व० स०] जल और स्थल दोनों मे विचरण करनेवाला। प्राणी। जैसे—केकडा, मगर, मेढक आदि।
द्विधातविक—वि० [स०द्विधातु+ठन्—इक] १. दो अलग-अलग धातुओं से सबध रखनेवाला (बाइमेटेलिक)
द्वि-धातु—वि० [स० व० स०] जो दो धातुओं के योग से बना हो।
पु० १ दो धातुओं के मेल से बनी हुई मिश्रित धातु। २ गणेश।
द्विधातुता—स्त्री० [स० द्विधातु+तल्—टाप्] द्विधातु होने की अवस्था या भाव।
द्विधातुत्व—पु० [स० द्विधातु+त्व] = द्विधातुता।
द्विधातु-वाद—पु० [प० त०] अर्थशास्त्र का एक सिद्धात जिसके अनुसार किसी देश मे दो विभिन्न धातुओं के सिक्के चलते है और दोनो की गिनती वैध मुद्रा मे होती है। (बाइमेटलिज्म)
द्विधात्मक—पु० [स० द्विधा-आत्मन् व० स०, कप्] जायफल।
द्विधालेख्य—पु० [स० द्विधा√लिख्+ण्यत् (आधा के)] हिंताल का पेड।
द्वि-नग्नक—पु० [स० द्वि= द्वितीय-नग्नक] वह व्यक्ति जिसकी सुन्नत हुई हो।
द्वि-नवति—वि० [स० मध्य० स०] बानवे।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९२
द्वि-नेत्रभेदी (दिन्)—पु० [स० द्वि-नेत्र द्विगु स०, द्विनेत्र√भिद् (फाडना) +णिनि] वह जिसने किसी की दोनो आँखे फोड दी हो।
द्वि-पंचमूली—स्त्री० [स० मध्य० स०] दशमूल।
द्वि-पंचाशत्—वि० [स० द्विगु स०] बावन।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—५२
द्विप—पु० [स० द्वि√पा (पीना)+क] १ हाथी। २ नागकेसर।
द्वि-पक्ष—वि० [स० व० स०] दे० 'द्विपक्षी'।
पु० १. दो पक्षो का समय अर्थात् पूरा चाद्र मास। २ चिडिया।

पक्षी ३ महीना। मास। ४ वह स्थान जहाँ दो रास्ते मिलते हों। दो-राहा।

द्विपक्षी (क्षिन्)—वि० [स० द्वि-पक्ष द्विगु स०,+इनि] १ सौर मास के दो पक्षो अर्थात् एक महीने मे होनेवाला। २ कुछ एक पक्ष मे और कुछ दूसरे पक्ष मे पड़नेवाला जैसे —गया का द्विपक्षी श्राद्ध। ३ दो दलो, पक्षो या पार्श्वो से सबध रखनेवाला। (बाई-लेटरल) जैसे—द्विपक्षी निर्णय या समझौता।

द्विपट-वान—पु० [स० पट-वान प० त०, द्वि पटवान ब० स०] १ दोहरे अरज का कपडा। २ बडे अरज का कपडा। (की०)

द्वि-पद —वि० [स० ब० स०] १. जिसके दो पद या पैर हों। जैसे—मनुष्य, पक्षी आदि। २ जिसमे दो पद या शब्द हों। समस्त। यौगिक। ३ (गणित मे ऐसी सख्या) जिसमे दो अलग-अलग अक या सख्याएँ एक साथ मानी और ली जायँ। (बाईनेमिअल) जैसे—$\frac{3}{5}+\frac{1}{2}$।

पु० १ दो पैरोवाला जतु या जीव। २ आदमी। मनुष्य। ३ ज्योतिष के अनुसार मिथुन, तुला, कुभ, कन्या और धनु लग्न का पूर्व भाग। ४ वास्तु मडल मे का एक कोठा या घर।

द्वि-पदा—स्त्री० [स० द्विपद+टाप्] दो पदोवाली ऋचा।

द्वि-पदिक—पु० [स० द्विपदी+कन्, ह्रस्व] शुद्धराग का एक भेद।

द्वि-पदी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] १ प्राकृत भाषा का एक प्रकार का छद। २ दो चरणो की कविता या गीत। ३ एक तरह का चित्र काव्य।

द्वि-पर्णा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] एक प्रकार के जगली बेर का पेड।

द्वि-पाद—पु०, वि० = द्विपद।

द्विपाद-वध—पु० [प० त० या तृ० त०] अपराधी के दोनो पैर काट लेने का दड।

द्वि-पायी (यिन्)—पु० [स० द्वि√पा (पीना)+णिनि] [स्त्री० द्विपायिनी] हाथी।

द्वि-पार्श्विक—वि० [स० द्वि-पार्श्व द्विगु स०,+ठन्–इक] १ दो या दोनो पार्श्वो से सबध रखनेवाला। २ दो या दोनो पक्षो की ओर से होने वाला। द्विपक्षी।

द्वि-पास्य—पु० [स० द्विप-आस्य ब० स०] गणेश (जिनका मुख हाथी के मुख के समान है)।

द्वि-पृष्ठ—पु० [स० ब० स०] जैनो के नौ वासुदेवो मे से एक।

द्वि-बाहु—वि० [स० ब० स०] जिसके दो बाहु हों। द्विभुज।

पु० दो हाथोवाले जीव या प्राणी।

द्वि-भा—स्त्री० [स० द्विगु० स०] १ प्रकाश। २ प्रभा। चमक। उदा०—जगत ज्योति तमस द्विभा।—पन्त।

द्वि-भाव—वि० [स० ब० स०] १ जिसमे दो भाव हो। २ कपटी। छली।

पु० १ किसी से रखा जानेवाला द्वेषभाव। २ दुराव। छिपाव। ३ कपट। छल।

द्वि-भाषी (षिन्)—पु० [स० द्वि√भाष् (बोलना)+णिनि] दो भाषाएँ जानने और बोलनेवाला। २ दे० 'दुभाषिया'।

द्वि-भुज—वि० [स० ब० स०] १ जिसके दो हाथ हो। दो हाथोवाला। २ (क्षेत्र या आकृति) जिसकी दो भुजाएँ हो।

पु० मनुष्य।

द्वि-भूम—वि० [स० ब० स० अच्] दो खडोवाला (मकान)।

द्वि-मातृ—वि० [स० ब० स०] १ जिसकी दो माताएँ हों। २ जो दो माताओ के गर्भ से उत्पन्न हो।

पु० १ जरासंध। २ गणेश।

द्विमातृज—वि० पु० [स० द्वि-मातृ द्विगु स०,√जन् (उत्पत्ति)+ड] = द्विमातृ।

द्वि-मात्र—वि० [स० ब० स०] दो मात्राओवाला।

पु० दीर्घ स्वर और उसका चिह्न।

द्विमीढ—पु० [स०] हस्तिनापुर के राजा हस्ति का एक पुत्र जो अजमीढ का भाई था। (हरिवंश)

द्वि-मुख—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० द्विमुखी] जिसके दो मुख हों। दो मुँहोवाला।

पु० १ पेट मे से निकलनेवाला एक प्रकार का सफेद कीडा। २ दो-मुँहा साँप।

द्वि-मुखा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] जोक।

द्वि-मुखी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] १ वह गाय जो बच्चा दे रही हो। (अर्थात् जिसके एक ओर एक तथा दूसरी ओर दूसरा मुँह हो)।

वि० स० 'द्विमुख' का स्त्री०।

द्वि-यजुष—स्त्री० [स० ब० स०] यज्ञ-मडप आदि बनाने की एक तरह की ईंट।

पु० यजमान।

द्वि-रद—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतोवाला।

पु० १ हाथी। २ दुर्योधन के भाई का नाम।

द्विरदांतक—पु० [स० द्विरद-अतक प० त०] हाथी को मार डालनेवाला, सिंह।

द्विरदाशन—पु० [स० द्विरद-अशन ब० स०] सिंह।

द्वि-रसन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० द्विरसना] १ दो जिह्वाओ वाला। २ कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला। जिसकी बात का विश्वास न किया जा सके।

पु० साँप।

द्विरागमन—पु० [स० द्विर्-आगमन सुप्सुपा स०] १ दूसरी बार आना। पुनरागमन। २ वधू का अपने पति के साथ दूसरी बार अपनी ससुराल मे आना। गौना।

द्विराज-शासन—पु० [स०] [भू० कृ० द्विराज-शासित] किसी देश या प्रदेश पर दो राज्यो या दो राष्ट्रो का होनेवाला सम्मिलित शासन। (कान्डोमीनियम)

द्वि-रात्र—पु० [स० द्विगु स०, अच्] दो रातो मे पूर्ण होनेवाला एक तरह का यज्ञ।

द्विराप—पु० [स० द्विर्-आ√पा (पीना)+क] हाथी।

द्विरुक्त—वि० [स० द्विर्-उक्त सुप्सुपा स०] [भाव० द्विरुक्ति] १ दो बार कहा हुआ। २ दुबारा कहा हुआ। ३ दो प्रकार से कहा हुआ और फलत अनावश्यक या निरर्थक।

पु० पुनर्कथन।

द्विरुक्ति—स्त्री० [स० द्विर्-उक्ति सुप्सुपा स०] १ कोई बात दुबारा या दूसरी बार कहना। पुनरुक्ति। २. दे० 'द्वित्व'।

द्विरूढ़ा—स्त्री० [स० द्विर्-ऊढ़ा सुप्सुपा स०] वह स्त्री जिसके एक विवाह के बाद दूसरा विवाह हुआ हो।

द्वि-रेता (तस्)—पु० [स० ब० स०] १. दो भिन्न जातियों के पशुओं से उत्पन्न पशु। जैसे—खच्चर। २ दोगला। वर्ण-सकर।

द्वि रेफ—पु० [स० ब० स०] १ भ्रमर। भौरा। २ बर्बर।

द्वि-वज्रक—पु० [स० मध्य० स०, +कन्] ऐसा घर जिसमे सोलह कोण हो। सोलह कोनोवाला घर।

द्वि-विंदु—पु० [स० ब० स०] विसर्ग।

द्विविद—पु० [स०] १ एक बदर जो रामचद्र जी की सेना का एक सेनापति था। २ पुराणानुसार एक बदर जिसे बलदेव ने मारा था।

द्वि-विध—वि० [स० ब० स०] दो प्रकार का। दो तरह का।
क्रि० वि० दो तरह या प्रकार से।

द्वि-विधा—पु० [स० द्विगु स०] दुबधा। असमजस।

द्वि-विवाह—पु० [स० द्विगु स०] वह सामाजिक प्रथा जिसमे कोई स्त्री या पुरुष एक ही समय मे एक साथ दो पुरुषों या स्त्रियों के साथ विवाह सबध स्थापित करके दाम्पत्य जीवन बिताता हो। (बाइगैमी)

द्वि-वेद—वि० [स० द्विगु स०,+अण्—लुक्] दो वेदों का ज्ञाता।

द्विवेदी (दिन्)—पु० [स० द्विवेद+इनि] १ दो वेदो का ज्ञाता। २ ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

द्विवेशरा—स्त्री० [स० द्वि-वेश द्विगु स०√रा (दान)+क—टाप्] दो पहिया की छोटी गाडी।

द्वि-व्रण—पु० [स० मध्य० स०] एक ही व्यक्ति को होनेवाले दो प्रकार के व्रण या घाव।

द्वि-शफ—पु० [स० ब० स०] ऐसा पशु जिसके खुर फटे हो। जैसे—गाय, हिरन आदि।

द्वि-शरीर—पु० [स० ब० स०] ज्योतिष के अनुसार कन्या, मिथुन, धनु और मीन राशियाँ, जिनका प्रथमार्द्ध स्थिर और द्वितीयार्द्ध चर माना जाता है।

द्विशिर—वि० [स० द्विशिरस्] जिसके दो सिर हो। दो सिरोवाला।
मुहा०— कौन द्विशिर = कौन अपनी जान देना चाहता है? किसे अपने मरने का भय नही है?

द्वि-शीर्ष—वि० [स० ब० स०] जिसके दो सिर हो।
पु० १ वैरी। शत्रु। २. अग्नि।

द्विषतप—वि० [स० द्विषत्√तप् (सताप)+णिच्+खच्, मुम्, ह्रस्व] अपने द्वेषियो या शत्रुओ को कष्ट पहुँचानेवाला।

द्विष्—वि० [स०√द्विष् (शत्रुता)+क्विप्] द्वेष रखनेवाला।

द्विष्ट—वि० [स०√द्विष्+क्त] १. जो द्वेष से युक्त हो। द्वेषपूर्ण। २ जिसके प्रति द्वेष किया जाय या हो।
पु० ताँबा।

द्विसदनात्मक—वि० [स० द्वि-सदन द्विगु स०, द्विसदन-आत्मन ब० स०, कप्] (शासन प्रणाली) जिसमे कानून, या विधान आदि बनानेवाली एक की जगह दो सस्थाएँ (विधानमडल) होती है। (बाइकेमरल)

द्वि-सदस्य निर्वाचीक्षेत्र—पु० [स० द्वि-सदस्य, द्विगु स०, द्विसदस्य निर्वाचिन् ष० त०, क्षेत्र व्यस्त पद] ऐसा निर्वाचन-क्षेत्र जिसमे से एक साथ दो सदस्य निर्वाचित होते हों। (डबल मेंबर कांस्टिट्यूएन्सी)

द्वि-सप्तति—वि० [स० मध्य० स०] १ बहत्तर। २. बहत्तरवाँ।
पु० बहत्तर की सख्या या उसका सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७२।

द्विसहस्राक्ष—पु० [स० द्वि-सहस्र द्विगु स०, द्विसहस्र-अक्षि ब० स०] शेषनाग।

द्विहन्—पु० [स० द्वि√हन्] (मारना)+क्विप्] हाथी (जो सूँड से मारता है)।

द्वि-हरिद्रा—स्त्री० [स० मध्य० स०] दारुहल्दी।

द्वि-हृदया—वि०, स्त्री० [स० ब० स०] गर्भवती (स्त्री)।

द्वीन्द्रिय—वि० [स० द्वि-इंद्रिय ब० स०] (जतु) जिसके शरीर मे दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप—पु० [स० द्वि-अप् ब० स०, अच्, ईत्व] १. चारो ओर समुद्र से घिरा हुआ कोई प्रदेश या भू-भाग। जल के बीच का स्थल। टापू।
विशेष—द्वीप कई प्रकार के होते और कई प्राकृतिक कारणो से बनते है। बहुत-से छोटे-छोटे द्वीपों के समूह को द्वीपपुज और बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप कहते है।
२. पुराणानुसार पृथ्वी के सात बहुत बड़े-बड़े विभागों मे से प्रत्येक विभाग, जिनके नाम इस प्रकार है—जबू द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप। ३. वह जिसका अवलबन किया जा सके। आधार। आश्रय। ४. बाघ का चमड़ा।

द्वीप-कर्पूर—पु० [ष० त०] चीनी कपूर।

द्वीप-पुंज—पु० [ष० त०] समुद्र मे होनेवाले बहुत-से छोटे-छोटे और पास पास के द्वीपों का समूह। (आर्की पैलेगो)

द्वीपवत्—पु० [स० द्वीप+मतुप्] १. समुद्र। २ मद।

द्वीपवती—स्त्री० [स० द्वीपवत्+ङीप्] १ एक प्राचीन नदी का नाम। २ भूमि। जमीन।

द्वीपवान् (वत्)—वि० [स० द्वीप+मतुप्] जिसमे द्वीप हो।
पु० समुद्र।

द्वीप-शत्रु—पु० [ष० त०] शतावरी। सतावर।

द्वीप-समूह—पु० [स० ब० त०] = द्वीप-पुज।

द्वीपांतर—पु० [स० द्वीप-अतर मयू० स०] प्रस्तुत से भिन्न कोई दूसरा द्वीप।

द्वीपांतरण—पु० [स० द्वीपातर+क्विप् +ल्युट्—अन] १. एक द्वीप (अथवा देश) से दूसरे द्वीप मे होनेवाला अतरण। २. किसी भीषण अपराधी को दड-स्वरूप किसी दूसरे और दूर के द्वीप मे ले जाकर रखना। काले पानी की सजा।

द्वीपिका—स्त्री० [स० द्वीप+ठन्—इक, टाप्] शतावरी। सतावर।

द्वीपि-नख—पु० [स० ष० त०] व्याघ्रनख एक गधद्रव्य।

द्वीपि-शत्रु—पु० [स० ष० त०] शतमूली।

द्वीपी (पिन्)—वि० [स० द्वीप्+इनि] १ द्वीप-सबधी। द्वीप का। २ द्वीप मे रहनेवाला
पु० १ बाघ। व्याघ्र। २. चीता। ३. चित्रक नामक वृक्ष। चीता।

द्वीप्य—वि० [सं० द्वीप+यत्] १ द्वीप-सम्बन्धी। २ द्वीप मे उत्पन्न। ३ द्वीप मे रहने या होनेवाला।
पु० १ व्यास। २. रुद्र।

द्वीश—वि० [सं० द्वि-ईश ष० त०] १ जो दो का स्वामी हो। २ [ब० स०] जिसके दो स्वामी हो। ३ (चरु) जो दो देवताओ के लिए हो।
पु० विशाखा नक्षत्र।

द्वेष—पु० [सं०√द्विष् (शत्रुता)+घञ्] १ किसी को दूसरा या पराया समझने और उससे पार्थक्य का व्यवहार करने का भाव। २ किसी के प्रति होनेवाले विरोध, वैमनस्य, शत्रुता आदि के फल-स्वरूप मन मे रहनेवाला ऐसा भाव, जिसके कारण मनुष्य उसका बनता या होता हुआ काम विगाड देता है अथवा उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है।

द्वेषाग्नि—स्त्री० [सं० द्वेष-अग्नि कर्म० स०] = द्वेषानल।

द्वेषानल—पु० [सं० द्वेष-अनल कर्म० स०] द्वेष या वैर रूपी अग्नि। द्वेष का उग्र या प्रबल रूप।

द्वेषी (षिन्)—वि० [सं०√द्विष्+घिनुण्] [स्त्री० द्वेषिणी] द्वेष करने या रखनेवाला।
पु० वैरी। शत्रु।

द्वेष्टा (ष्टृ)—वि० [सं०√द्विष्+तृच्] [स्त्री० द्वेष्ट्री] = द्वेषी।

द्वेष्य—वि० [सं०√द्विष्+ण्यत्] १ जिससे द्वेष किया जाय। २ जिसके प्रति द्वेष रखना उचित हो।
पु० वैरी। शत्रु।

द्वेष्य-पक्ष—पु० [कर्म० स०] क्रोध, ईर्ष्या आदि जो द्वेष के अवातर भेद है।

द्वै—वि० [सं० द्वय] १ दो। २ दोनो।

द्वैक*—वि० [हिं० द्वै+एक] दो-एक। थोड़े-से। कुछ।

द्वैगुणिक—वि० [सं० द्विगुण+ठक्-इक] दूना सूद खानेवाला (महाजन)।

द्वैगुण्य—पु० [सं० द्विगुण+ष्यञ्] १ द्विगुण या दूने होने की अवस्था या भाव। २ दूनी रकम या परिमाण। ३ सत्त्व, रज और तम मे से दो गुणो से युक्त होने की अवस्था या भाव। ४ दे० 'द्वैत'

द्वैज—स्त्री० [सं० द्वितीय, प्रा० दुइय] द्वितीया तिथि। दूज।

द्वैत—पु० [सं० द्वि-इत तृ त०, +अण्] १ दो होने की अवस्था या भाव। २ जोड़ा। युग्म। ३ किसी को अन्य या पराया समझने का भाव ४ असमजस। ५ अज्ञान। ६ एक वन का नाम। ७ 'द्वैतवाद' दे०।

द्वैत-चिंतामणि—पु० [सं०] सगीत मे, कर्नाटक की पद्धति का एक राग।

द्वैत-परिपूर्णी—स्त्री० [सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

द्वैतवन—पु० [सं० द्वि= शोक, मोह—इत=नष्ट ब० स०,+अण्, द्वैत-वन कर्म स०] एक तपोवन, जिसमे युधिष्ठिर वनवास के समय कुछ दिनो तक रहे थे।

द्वैत-वाद—पु० [ष० त०] १. वह दार्शनिक सिद्धान्त, जिसमे आत्मा-परमात्मा अर्थात् जीव और आत्मा अथवा आत्मा और अनात्मा मे भेद माना जाता है। अद्वैतवाद से भिन्न और उसका विरोधी मत या सिद्धात। २ उक्त के अतर्गत वह सूक्ष्म भेद, जिसमे ओर चित् शक्ति अथवा आत्मा और शरीर दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।
विशेष—उत्तर मीमामा या वेदात का यह मत है कि आत्मा और पर-मात्मा दोनो एक हैं, परतु शेष पाँचो दर्शन इस मत के विरोधी है। ३. दो स्वतत्र और विभिन्न सिद्धान्त एक साथ माननेवाली विचार-शैली।

द्वैतवादी (दिन्)—वि० [सं० द्वैतवाद+इनि] [स्त्री० द्वैतवादिनी] ईश्वर और जीव मे भेद मानने वाला। द्वैतवाद का अनुयायी।

द्वैतानदी—स्त्री० [सं०] सगीत मे, कर्नाटक की पद्धति की एक रागिनी।

द्वैती (तिन्)—वि० [सं० द्वैत+इनि] द्वैतवादी।

द्वैतीयीक—वि० [सं० द्वितीय+ईकक्] दूसरा।

द्वैध—पु० [सं० द्वि+धमुञ् या द्विधा+अण्] १. दो प्रकार के होने की अवस्था या भाव। २ दो मे होनेवाली भिन्नता या भेद-भाव। ३ दो तरह की चालें चलने या नीतियाँ बरतने की अवस्था, गुण या भाव।
विशेष—प्राचीन भारतीय राजनीति मे इसे छ गुणो के अतर्गत माना गया है। ऊपर से कुछ और प्रकार का व्यवहार करने और अदर-अदर कुछ और प्रकार का व्यवहार करने की नीति ही द्वैध है। यह आधुनिक डिप्लो-मेसी के सम-कक्ष है।
३ वह शासन-प्रणाली जिसमे कुछ विभाग सरकार के हाथ मे और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियो के हाथ मे हो। (डायार्की)

द्वैधीकरण—पु० [सं० द्वैध+च्वि √कृ० +ल्युट +अन] किसी चीज के दो टुकडे करना।

द्वैधीभाव—पु० [सं० द्वैध+च्वि√भू+घञ्] १ द्विधा भाव। अनिश्चय। दुवधा। २ ऊपर से कुछ और मन मे कुछ और भाव रखने की अवस्था या गुण। ३ दोनो ओर मिलकर चलने या रहने की अवस्था या भाव।

द्वैप—वि० [सं० द्वीपिन्+अञ्] १ बाघ या व्याघ्र से सबध रखनेवाला। २ व्याघ्र के या बाघ के चमडे का बना हुआ।
पु० बाघ का चमडा। व्याघ्र-चर्म।
वि० दे० 'द्वैप्य'।

द्वैपायन—वि० [सं० द्वीप-अयन ब० स०,+अण्] द्वीप मे जन्म लेनेवाला।
पु० १ वेदव्यासजी का एक नाम। २ कुरुक्षेत्र के पास का एक ताल जिसमे युद्ध से भागकर दुर्योधन छिपा था।

द्वैप्य—वि० [सं० द्वीप्+यञ्] १ द्वीप सबधी। टापू-का। २ द्वीप मे उत्पन्न होन या रहनेवाला।

द्वैमातुर—वि० [सं० द्विमातृ+अण्, उत्व] जिसकी दो माताएँ हो।
पु० १ गणेश। २ जरासध।

द्वैमातृक—पु० [सं० द्वि-मातृ ब० स० कप्,+अण्] वह प्रदेश जहाँ खेती नदी के जल (सिंचाई) द्वारा भी की जाती है और वर्षा मे भी होती है।

द्वैयह्निक—वि० [सं० द्वि-अहन् द्विगु स०,+ठञ्-इक] १ दो दिन की अवस्थावाला। २ दो दिन मे किया जानेवाला।

द्वैराज्य—पु० [सं० द्विराज+ष्यञ्] वह शासन-प्रणाली, जिसमे किसी एक दुर्बल या पराजित राज्य पर अन्य दो शक्तिशाली राज्य मिल-जुल कर शासन करते हो। (कॉन्डोमीनियम)

द्वैवार्षिक—वि० [सं० द्विवर्ष+ठञ्-इक] प्रति दो वर्षो पर होनेवाला। (बाईनियल)

द्वैविध्य—पु० [सं० द्विविध+ष्यञ्] १ द्विविध अर्थात् दो प्रकार के होने की अवस्था या भाव। २. असमंजस। दुवधा।

द्वैषणीया—स्त्री० [सं० द्वेषण+अण्+छ-ईय, टाप्] नागवल्ली का एक भेद।

द्वैसमिक—वि० [सं० द्विसमा+ठञ्-इक] दो वर्षो का।

द्वैहायन—पु० [सं० द्विहायन+अण्] [वि० द्वैहायनिक] दो वर्ष। का समय

द्वैहायनिक—वि० [स० द्विहायन+ठक्-इक] १ दो वर्षों मे होनेवाला। २ प्रति दो वर्षों पर (या मे) होनेवाला।

द्वौ†—वि० [हि० दो+ऊ, दोउ] दोनों।
† स्त्री० =द्व।

द्व्यक्ष—वि० [स० द्वि-अक्ष ब० स०] दो नेत्रोंवाला। द्विनेत्र।

द्व्यणुक—वि० [स० द्वि-अणु ब० स०, कप्] जिसमे दो अणु हों। दो अणुओंवाला।
पु० वह द्रव्य जो दो अणुओं के सयोग से उत्पन्न हो। वह मात्रा, जो दो अणुओं की हो।

द्व्यर्थ, द्व्यर्थक—वि० [स० द्वि-अर्थ ब० स०] कप् विकल्प से जिसमे से दो या दो प्रकार के अर्थ निकलते हों।

द्व्यशीति—वि० [स० द्वि-अशीति मध्य० स०] जो गिनती मे अस्सी से दो अधिक हो। बयासी।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या—८२

द्व्यष्ट—पु० [स० द्वि√अश्(व्याप्ति)+क्त] ताम्र। ताँबा।

द्व्याक्षायण—पु० [स०] एक ऋषि का नाम।

द्व्याग्नि—पु० [स०] लालचीता (वृक्ष)।

द्व्यातिग—वि० [स० द्वि-आ-अति√गम् (जाना)+ड] जो रजोगुण तथा तमोगुण से रहित, परन्तु सत्त्वगुण से युक्त हो।

द्व्यात्मक—पु० [स० द्वि आत्मन् ब० स०, कप्] दो स्वभाव की राशियाँ जो, जो ये हैं—मिथुन, कन्या, धनु और मीन।

द्व्यामुष्यायण—पु० [स० अमुष्य+फक्-आयन, द्वि-आमुष्यायण ष० त०] किसी व्यक्ति का वह पुत्र, जो दूसरे के द्वारा दत्तक के रूप मे ग्रहण किया गया हो और जिसे दोनो पिता अपना, अपना पुत्र मानते हों।

ध

ध—देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यजन जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से दत्य, घोष, महाप्राण और स्पर्शी है।
पु० धैवत स्वर का सूचक सक्षिप्त रूप। (सगीत)

धंका*—पु० =धक्का।

धंगर—पु० [देश०] १. चरवाहा। २ ग्वाला। अहीर।

धंगा†—पु० [देश०] खाँसी।

धंदर—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

धंद*—पु० [स० द्वद्व] झझट। बखेड़ा।

धधक—पु० [हि० धधा] झझट। बखेड़ा।
पु० [?] एक प्रकार का ढोल।

धधक-धेरी—पु० = धधक-धोरी।

धंधक-धोरी—पु० [हि० धधक+धोरी] सासारिक झझटों या बखेड़ों मे फँसा रहनेवाला व्यक्ति।

धँधका—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा धँधकी] एक प्रकार का ढोल।

धँधरक—पु० [हि० धधा] काम-धधे का जजाल, बखेड़ा या बोझ।

धँधरक-धोरी—पु० = धधक-धोरी।

धँधला—पु० [हि० धाँधल] १ कपटपूर्ण आचरण या व्यवहार। छल-छद। २. आडबर। ढोंग। ३ बहाना। मिस। हीला। (स्त्रियाँ) ४ दे० 'धाँधली'।

धँधलाना—अ० [हि० धँधला] १ छल छद करना। ढग रचना।
अ० [हि० धाँधली] १ धाँधली करना। २ जल्दी मचाना।

धंधा—पु० [स० धन-धान्य] १ वह उद्योग या कार्य जो जीविका-निर्वाह के लिए किया जाय। जैसे—अब उन्होंने वकालत (या वैद्यक) का धधा छोड़ दिया है। २ व्यवसाय। व्यापार। ३ ऐसा काम जिसमे कुछ समय तक लगा रहना पड़े। जैसे—घर का भी कुछ धधा किया करो। ३. दूसरों का चौका-बरतन करने की नौकरी।
†पु० = द्वद्व। (राज०)

धँधार—स्त्री० [हि० धूँआ] १ आग की लपट। २ बहुत अधिक मानसिक सताप।
†वि० अकेला। एकाकी।
पु० भारी लकड़ियाँ, पत्थर आदि उठाने के काम आनेवाला लकड़ी का एक तरह का लबा डडा।

धंधारि*—स्त्री० १ =धँधार। २ =धधारी।

धंधारी—स्त्री० [हि० धधा] गोरखपथी साधुओं का गोरख धधा।
स्त्री० [?] १. अकेलापन। २. एकान्त या सुनसान स्थान। ३ निस्तब्धता। सन्नाटा।

धधाला—स्त्री० [हि० धधा] कुटनी। दूती।

धंधालू—वि० [हि० धधा] जो किसी काम या धधे मे लगा रहता हो।

धँधेरा—पु० [देश०] राजपूतों की एक जाति।

धंधोरा—पु० [अनु० धाँय-धाँय=आग दहकने का शब्द] १. होलिका। होली। २ आग की लपट। ज्वाला।

धँवना*—स० [हि० धौंकना] आग सुलगाने के लिए भाथी से हवा करना।
उदा०—बिरहा पूत लोहार का धवै हमारी देह।—कबीर।

धँवरश—स्त्री० [देश०] पडुक (चिड़िया)।

धँस†—स्त्री० =धँसना।

धँसन—स्त्री० [हि० धँसना] १ धँसने की क्रिया, ढग या भाव। २. ऐसा स्थान जिसमे कोई धँस सकता हो। ३ दलदल।

धँसना—अ० [स० दशन] १. किसी नुकीली या भारी चीज का स्वय अपने भार के कारण अथवा दाब आदि पड़ने के फलस्वरूप अपेक्षाकृत किसी नरम तल मे नीचे की ओर जाना। जैसे—दल-दल मे धँसना। २ दीवार, मकान आदि के सबध मे, उसके किसी पक्ष का जमीन मे किसी प्रकार की कमजोरी होने के कारण प्रसम स्तर से नीचे जाना। ३ किसी प्रकार की कड़ी तथा नुकीली वस्तु का किसी तल मे प्रविष्ट होना। गड़ना। जैसे—हाथ मे सूई या पैर मे काँटा धँसना। ४ नेत्रों के

संबंध मे, उनका शारीरिक निर्बलता के कारण कुछ दबा हुआ या अंदर की ओर घुसा हुआ-सा प्रतीत होना। ५. व्यक्ति का भीड-भाड मे लोगों को दबाते या हटाते हुए आगे की ओर बढ़ना। ६ किसी चीज का वेगपूर्वक किसी दूसरी चीज मे प्रविष्ट होना। जैसे—शरीर मे गोली या तीर धँसना। ७. बात या विचार के संबंध मे, समझ मे आना। जैसे—उनके दिमाग मे तो कोई बात धँसती ही नही।

†अ० [स० ध्वंसन] ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना।

†स० ध्वस्त या नष्ट करना। मिटाना।

धँसनि†—स्त्री० १. धँसन। २ धँसान।

धँसान—स्त्री० [हिं० धँसना] १ धँसने की क्रिया, ढग या भाव। २ कीचड या दल-दल से भरी वह जमीन जिसमे सहज मे कोई धँस सकता हो। ३ ढालुआँ स्थान। (क्व०) ४ भीड-भाड मे वेगपूर्वक लोगो को इधर-उधर ढकेलते या हटाते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव। जैसे—भेडिया धँसान।

धँसाना—स० [हिं० धँसना] १ किसी चीज को धँसने मे प्रवृत्त करना। २ गडाना। चुभाना। ३ जोर लगाकर अन्दर प्रविष्ट करना या कराना। ४ किसी तल पर ऐसा दबाव डालना कि वह नीचे की ओर धँसे।

धँसाव—पु० [हिं० धँसना] १ धँसने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान, जिसमे कुछ या कोई सहज मे धँस सके। ३ दे० 'धँसान'।

धई—स्त्री० [देश०] एक तरह का जगली कद, जिसे पहाडी जातियो के लोग खाते है।

धउरहर†—पुं० =धौरहर।

धक—स्त्री० [अनु०] १ भय आदि के कारण कलेजे के सहसा धडकने से होनेवाला परिणाम। जैसे—चोर को देखते ही कलेजा धक-धक करने लगा।

मुहा०—जी धक-धक करना=कलेजा धड़कना। जी धक होना=(क) भय या उद्वेग से जी धड़क उठना। डर से जी दहल जाना। (ख) चौक पडना।

२ मन की उमग या भाव। ३ साहस। हिम्मत। उदा०—तौ भी सौ धक कत्तरी, मूँछाँ भूह मिलाय।—कविराजा सूर्यमल। ४ तृष्णा। लालसा।

क्रि० वि० १ एक-बारगी। अचानक। सहसा। २ वेगपूर्वक। तेजी से। उदा०—दरैं कति कुप्पि धर धक दाव भरैं कति भूरि मरैं मृत भान।—कविराजा सूर्यमल।

स्त्री० [देश०] सिर मे पडनेवाली एक प्रकार की जूँ।

धकधकना—अ० =धक धकाना।

धकधकाना—अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का धक-धक शब्द करना। कलेजा या हृदय धड़कना। २. (आग) दहकना। सुलगना।

स० (आग) दहकाना या सुलगाना।

धकधकाहट†—स्त्री० =धकधकी।

धक-धकी—स्त्री० [अनु० धक] १. कलेजे के धक-धक करने की अवस्था, क्रिया या भाव। हृदय की धडकन। २ आशंका। खटका। ३ आगा-पीछा। असमजस। दुबधा। ४. दे० 'धुकधुकी'।

धक-पक—स्त्री० [अनु०] १. कलेजे की धड़कन। धकधकी। २. मन मे होनेवाली आशका। खुटका।

क्रि० वि० १ धक-धक या धक-पक करते हुए। २ धडकते हुए कलेजे से।

धकपकाना—अ० [अनु० धक] जी मे दहलना। मन मे डरना।

† स० किसी को डरने या दहलने मे प्रवृत्त करना।

धकपेल—स्त्री० =धका-पेल।

धका—पु० =धक्का।

†स्त्री० =धाक।

धका-धकी—स्त्री० =धका-पेल।

धका-धूम—स्त्री० =धका-पेल।

धकाना—स० [हिं० दहकाना] (आग) दहकाना। सुलगाना।

†अ० =(आग) दहकना। सुलगना।

धका-पेल—स्त्री० [हिं० धक्का+पेलना] भीड़भाड़ मे होनेवाली धक्के-बाजी। धक्कमधुक्का।

क्रि० वि० दूसरो को धक्के देकर हटाते हुए। जैसे—सब लोग धका-पेल घुसते चले जा रहे थे।

धकार—पु० [देश०] १. कान्यकुब्ज और सरजूपारी ब्राह्मणो के वर्ग का वह ब्राह्मण, जो उनकी दृष्टि मे निम्न कुल का हो। २. एक राजपूत जाति। ३. कम या थोड़े पानी मे होनेवाला एक तरह का धान। (पंजाब)

†स्त्री० =धिक्कार।

† वि० =दोगला।

धकारा—पुं० [अनु० धक] धकधकी। आशका। खटका।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगना।

धकियाना—स० [हिं० धक्का] १ धक्का देना। ढकेलना। २ धक्का देकर बाहर निकालना। ३ आगे बढने के लिए विशेष रूप से प्रेरित तथा प्रोत्साहित करना।

धकेलना—स० [हिं० धक्का] १ धक्का देना। ढकेलना। २. इस प्रकार किसी को धक्का देना कि वह गिर पडे। ३ पशु यान आदि के संबंध मे, पीछे से इस प्रकार धक्का देना कि वह आगे बढने या चलने लगे। ४. आगे बढने मे प्रवृत्त करना। आगे बढाना।

धकेलू—पु० [हिं० धकेलना] १. ढकेलने या धक्का देनेवाला। २. स्त्री का उपपति या यार। (बाजारू)

धकैत—वि० [हिं० धक्का+ऐत (प्रत्य०)] धक्कम धक्का करनेवाला।

धकोना†—स० =धकियाना।

धक्क—स्त्री० =धक।

धक्क-पक्क—स्त्री०, क्रि० वि०=धक-धक।

धक्कम-धक्का—पु० [हिं० धक्का] १. बार-बार बहुत अधिक या बहुत-से आदमियो का परस्पर धक्का देने की क्रिया या भाव। २ ऐसी भीड, जिसमे लोगो को बार-बार उक्त प्रकार से धक्के लगते हो।

धक्का—पु० [स० धम, हिं० धमक या स० धक्क=नष्ट करना] १. किसी को धकेलने या आगे बढाने के लिए उसके पीछे की ओर से डाला जानेवाला दबाव या किया जानेवाला आघात। जैसे—दरवाजा धक्के से खुलेगा। २. किसी ओर से वेगपूर्वक आकर लगनेवाला वह आघात जो किसी

को ढकेलता या दबाता हुआ उसके स्थान से आगे बढ़ा, हटा या गिरा दे। जैसे—गाड़ी के धक्के से वह जमीन पर गिर पड़ा।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
३. किसी को अनादर या उपेक्षापूर्वक कहीं से निकालने या हटाने के लिए किया जानेवाला उक्त प्रकार का आघात। जैसे—कुछ लोग तो वहाँ से धक्का देकर निकाले गये।
क्रि० प्र०—देना।—मारना।—सहना।
मुहा०—धक्के खाना = बार-बार धक्के का आघात सहते हुए हटाया जाना। जैसे—बहुत दिनों तक वह जगह-जगह धक्के खाता रहा। (किसी को) धक्का (या धक्के) देकर निकालना = बहुत ही अनादर या तिरस्कारपूर्वक दूर करना या हटाना।
४. किसी को दुर्दशाग्रस्त करने या हीन स्थिति में पहुँचाने के लिए किया जानेवाला कोई कार्य। जैसे—अँगरेजी शासन को एक धक्का और लगा। ५. जन-समूह या भीड़ की वह स्थिति, जिसमें चारों ओर से लोगों को धक्के लगते हों। जैसे—मेले-तमाशों में धक्का बहुत होता है। ६. लाक्षणिक रूप में, किसी दुःखद बात के परिणामस्वरूप होनेवाला मानसिक आघात; जैसे—लड़के की मृत्यु के धक्के ने उन्हें बहुत दुर्बल कर दिया है।
क्रि० प्र०—पहुँचना।—लगना।
७. कोई ऐसा आघात जिसमें किसी प्रकार की विशेष क्षति हो। जैसे—(क) आप की बातों के फेर में हमें भी सौ रुपए का धक्का लगा। (ख) बाहर से माल आ जाने के कारण बाजार (या व्यापारियों) को बहुत धक्का लगा है।
क्रि० प्र०—बैठना।—लगना।
८. कुश्ती का एक पेंच, जिसमें बायाँ पैर आगे रखकर विपक्षी की छाती पर दोनों हाथों से धक्का देते हुए उसे नीचे गिराते हैं। ढाल। ठेढ।

धक्काड़—वि० [हिं० धाक] १. चारों ओर जिसकी महत्ता की खूब धाक जमी हो। २. अपने विषय का बहुत बड़ा-बड़ा विशेष ज्ञाता या पंडित। ३. बहुत बड़ा।

धक्का-मार—वि० [हिं०] १. धक्का देने या बल-प्रयोग करनेवाला। २. उद्दंडतापूर्ण आघात करनेवाला (आचरण या व्यवहार)।

धक्का-मुक्की—स्त्री० [हिं० धक्का+मुक्का] ऐसी लड़ाई, जिसमें एक दूसरे को धक्के देते हुए घूँसों से मारें। मुठ-भेड़।

धगड़—पु० = धगड़ा।

धगड़बाज—वि० स्त्री० [हिं० धगड़ा+फा० बाज] धगड़ा या उपपति बनाने या रखनेवाली। कुलटा। व्यभिचारिणी।

धगड़ा—पु० [स० धव = पति] [स्त्री० धगड़ी] १. किसी स्त्री का जार। उपपति। २. वह जिसे किसी स्त्री ने बिना विवाह किये अपना पति बना लिया हो। ३. बदमाश। लुच्चा।

धगड़ी—स्त्री० [हिं० धगड़ा] १. व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा स्त्री। २. उपपत्नी। रखेली। ३. धाय। (पूरब)

धग-धगाना—अ० [हिं०] १. धड़कना। २. दहकना।
†स० (आग) दहकाना। सुलगाना।

धगरा—पु० = धगड़ा।

धगरिन—स्त्री० [हिं० धांगर] धांगर जाति की स्त्री, जो प्रसूता के जनमे हुए बच्चे की नाल काटती है।
†स्त्री० धगड़ी।

धगरी†—वि० [हिं० धगड़ा पति या यार] १. पति से झगड़नेवाली और मुँह-जोरी। २. कुलटा। व्यभिचारिणी।

धगा†—पु० = धागा (तागा)।

धगुला†—पु० [देश०] हाथ में पहनने का एक आभूषण।

धगड़—पु० [?] आटे आदि की वह टिकिया, जो फोड़े, गुमड़ आदि पर उन्हें दबाने के लिए बाँधी जाती है।
†पु० धगड़ा।

धचकचाना—स० [देश०] डराना। धमकाना।
†अ० धचकना।

धचकना—अ० [देश०] १. दलदल में धँसना। २. गड्ढे में गिरना।
स० हलका आघात करते हुए दबाना।

धचका—पुं० [हिं० धचकना] १. धचकने की क्रिया या भाव। २. धक्का। ३. क्षति। नुकसान। हानि।
क्रि० प्र०—उठाना।

धचकाना—स० [हिं० धचकना] १. दलदल में फँसाना। २. गड्ढे में डालना। ३. दबाने के लिए हलका आघात करना।

धचना†—अ० [देश०] शान्त या स्थिर होना। ठहरना।

धज—स्त्री० [सं० ध्वज चिह्न, पताका] १. शोभित करनेवाली सुंदर चाल-ढाल या रंग ढंग। २. कोई काम करने का सुंदर ढंग या प्रकार। ३. बनाव-सिंगार। उदा०—वाह! क्या धज है मेरे भोंदे की। खाल मोटे की हूँट मोटे की।—अकबर। ४. ठसक। नखरा। ५. शोभा।

धजबड़—स्त्री० [?] तलवार। (डिं०)

धजा—स्त्री० [सं० ध्वज] १. ध्वजा। पताका। २. कपड़े की कतरन या धज्जी।

धजीला†—स्त्री० = धज।
वि० [हिं० धज+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० धजीली] १. आकर्षक। मनोहर अथवा सुन्दर धजवाला। २. बनाव-सिंगार किया हुआ।

धज्जी—स्त्री० [सं० पटी] कपड़े, कागज, चादर, धातु पत्थर, लकड़ी, आदि का वह पतला लंबा टुकड़ा या पट्टी, जो उन्हें काटने, चीरने, फाड़ने आदि पर निकलती है।
मुहा०—(किसी चीज की) धज्जियाँ उड़ाना = काट, चीर, तोड़ या फाड़कर इतने छोटे-छोटे टुकड़े करना कि वे किसी काम के न रह जायँ। (किसी व्यक्ति की) धज्जियाँ उड़ाना = (क) बहुत अधिक मारना-पीटना। (ख) दोषों या बुराइयों की इतने जोरों से चर्चा करना कि लोग उसका वास्तविक स्वरूप समझकर उसके प्रति उपेक्षा या घृणा का व्यवहार करने लगें। (किसी बात या सिद्धांत की) धज्जियाँ उड़ाना = गलत या दोषपूर्ण सिद्ध करते हुए उसका सारा महत्त्व नष्ट करना। निरर्थक सिद्ध करना। (किसी को) धज्जियाँ लगना = इतना अधिक दीन-हीन या दरिद्र हो जाना कि चीथड़े लपेटकर रहना पड़े। (किसी का) धज्जियाँ लेना = (किसी की) धज्जियाँ उड़ाना। (किसी व्यक्ति का) धज्जी हो जाना = बहुत ही कृश, क्षीण या दुर्बल हो जाना।

घट—पु० [सं० घ=घन√अट् (प्राप्ति)+अच्, पररूप] १ तुला। तराजू। २. तुला राशि। ३. तुलापरीक्षा। ४. धर्म।

घटक—पु० [स० घट्√कै (प्रकाशित होना)+क] ४२ रत्तियो के वरावर की एक पुरानी तौल।

घटिका—स्त्री० [स० घटी+कन्+टाप्, ह्रस्व] १ पाँच सेर की एक पुरानी तौल। पसेरी। २ कपडे की धज्जी। चीर। ३. कौपीन। लँगोटी।

घटी—पु० [सं० घट्+डीप्] १. तुला राशि। २ शिव।

वि० [स० घटिन] [स्त्री० घटिनी] तराजू की डडी पकडकर चीजे तौलनेवाला। तुला-धारक।

स्त्री० १. कपडे की धज्जी। छीर। २. कौपीन। लँगोटी। ३ वे वस्त्र जो प्राचीन काल मे स्त्रियो को गर्भवती होने पर पहनने के लिए दिये जाते थे।

घड़ंग—वि० [हिं० धड+अग] नगा। जैसे—नग-धडग खडे हो जाना।

घड़—पु० [स० धर+धारण करनेवाला] १ मनुष्य के शरीर का वह बीचवाला अश, जिसके अतर्गत छाती, पीठ और पेट होते है। सिर और हाथ-पैर को छोड शरीर का बाकी भाग। कमर से ऊपर और गले के नीचे का भाग। २ पशु-पक्षियो आदि मे हाथ, पैर दुम, पर और सिर को छोड़कर शरीर के बीच का बाकी सारा भाग।

मुहा०—(कोई चीज) घड़ में डालना= निगल या खा जाना। पेट मे उतारना। **(किसी का) घड़ रह जाना**=लकवे या ऐसे ही किसी रोग के कारण देह या शरीर निष्क्रिय और स्तब्ध हो जाना। **धड से सिर अलग करना**=सिर काट लेना, जिससे मृत्यु हो जाय।

३. पेड का वह सबसे मोटा और कड़ा भाग, जो जड से कुछ दूर ऊपर तक रहता है और जिसके ऊपरी भाग मे से निकलकर डालियाँ इधर उधर फैलती रहती हैं। पेड़ी। तना।

पु० [अनु०] एक प्रकार का वडा ढोल या नगाडा।

पु० [अनु०] किसी चीज के जोर से गिरने का शब्द। धडाम। जैसे—वह धड़ से गिर पडा।

पद—घड़ से=चटपट। तुरत। जैसे—तुम भी घड़ से नहा लो।

घड़क—स्त्री० [हिं० धडकना] १ धड़कने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. अनाभ्यास, भय, सकोच आदि के कारण कोई काम करने से पहले या करते समय मन मे होनेवाला असमजस या आशका।

मुहा०—(किसी काम या बात में) धड़क खुलना=पहले की-सी आशका, भय या सकोच न रह जाना।

पद—बेधड़क= बिना किसी प्रकार के भय या सकोच के। भय रहित या निस्सकोच होकर।

३ दे० 'धडकन'।

घड़कन—स्त्री० [हिं० धडक] १ धडकने की क्रिया या भाव। २. हृदय की गति बहुत तीव्र होने पर उसका तीव्र और स्पष्ट स्पंदन। ३ हृदय का एक रोग जिसमे वह प्राय धडकता रहता है। धडकी। ४ दे० 'धडक'।

घड़कना—अ० [अनु०] १ धड-धड शब्द उत्पन्न होना। २ आशका, उद्वेग, आदि तीव्र मनोविकारो अथवा कुछ रोगो के कारण हृदय मे इस प्रकार जोर की गति होना कि उसमे से धड़-धड या हलका शब्द होने लगे। कलेजा धक-धक करना। जैसे—डाकुओ को देखते ही स्त्रियो का कलेजा (या दिल) धडकने लगा।

† अ०, स० = धडधडाना।

घड़का—पु० [अनु० घड] १ दिल की धडकन। २. दिल धडकने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ३ आशका। खटका। भय। जैसे—चलो मार खाने का धडका छूटा। ४ खेतो मे से चिडियो को उडाकर भगाने के लिए खड़ा किया जानेवाला वह पुतला या बाँस, जिसे खट-खटाने से धड-धड शब्द होता है। धोखा।

† पु० = धडाका।

घड़काना—स० [हिं० धडक] १ किसी के दिल मे धडक पैदा करना। धडकने मे प्रवृत्त करना। २. किसी के मन मे आशका या खटका उत्पन्न करके उसे दहलाना।

सयो० क्रि०—देना।

३ धड-धड शब्द उत्पन्न करना।

घड़क्का—पु० १ धडका। २. धडाका। ३. 'धूम' का निरर्थक अनुकरणात्मक शब्द।

घड़-टूटा—वि० [हिं० धड+टूटना] १ कमर झुकने के कारण जिसका धड आगे की तरफ लटकता हो। २ कुबडा।

घड़-घड़—स्त्री० [अनु०] किसी भारी वस्तु के वेगपूर्वक या एक बारगी गिरने, फेंके जाने या छूटने से उत्पन्न होनेवाला धड-धड शब्द। जैसे—गोलियो की धड-धड सुनकर हम लोग घर से बाहर निकल आये।

क्रि० वि० १ धड-धड शब्द करते या होते हुए। जैसे—उस पर धड-धड़ मार पडने लगी। २ दे० 'धडाधड'।

घड़धड़ाना—स० [अनु० धडधड] १ इस प्रकार कोई काम करना कि उससे धड-धड शब्द हो। २ किसी प्रकार धड-धड शब्द करना।

अ० धड-धड शब्द होना।

घड़ल्ला—पु० [अनु० धड] १ वेग के साथ गिरने, पडने आदि का धड-धड शब्द। धडाका। २ तेजी। वेग। ३ निर्भीकता तथा उत्साह-पूर्वक कोई काम करने की उत्कट प्रवृत्ति।

पद—घड़ल्ले से=(क) बिना झिझके और खूब तेजी से। जैसे—वह ससुर से धडल्ले से बातें करती है। (ख) एक बारगी। जैसे—लडके ने अपना सारा पाठ धडल्ले से सुना दिया। ४ धूम-धाम। ५ बहुत अधिक भीड। कश-मकश।

घड़वा†—पु० [देश०] मैना के आकार का एक तरह का पक्षी।

घड़वाई†—पु० [हिं० धडा] अनाज आदि तौलनेवाला। बया।

घड़ा—पु० [स० घट] [स्त्री० धडी] १ एक प्रकार की पुरानी तौल जो कही चार सेर की और कही पाँच सेर की मानी जाती थी। २ तौलने का बटखरा। बाट। ३ तराजू। तुला।

मुहा०—घड़ा उठाना=तौलने के लिए तराजू उठाकर हाथ मे लेना। **घड़ा करना**= तौलने से पहले तराजू उठाकर यह देखना कि दोनो पलडे बराबर हैं या नही और यदि दोनो मे कुछ अतर हो, तो किसी ओर पासग रखकर वह अतर दूर करना। **धडा बाँधना**=(क) धडा करना। (देखें ऊपर) (ख) लाक्षणिक रूप मे, ऐसी युक्ति करना कि कोई दूसरा आदमी दोषी सिद्ध हो।

पु० जत्था। झुंड। दल।

धनंजय—वि० [स० धन√जि (जीतना)+खच्, मुम्] धन जीतने अर्थात् प्राप्त करनेवाला।
पुं० १. विष्णु। २ अग्नि। आग। ३ चित्रक या चीता नाम का वृक्ष। ४ पाँचो पाडवो मे के अर्जुन का एक नाम। ५. अर्जुन वृक्ष। ६ एक नाग जो जलाशयो का अधिपति कहा गया है। ७ शरीर मे रहनेवाली पाँच वायुओं मे से एक, जिसकी गिनती उप-प्राणो मे होती है और जिससे जँभाई आती है। ८ एक गोत्र का नाम। ९ सोलहवें द्वापर के व्यास का नाम।

धनंतर—पु० [स० धन्वतरु = सोम का एक भेद] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ मोटी और फूल नीले होते हैं।
†पुं० = धन्वतरि।

धन—पु० [स० √धन् (शब्द)+अच्] १. वह मूल्यवान् पदार्थ, जिससे जीवन-निर्वाह मे यथेष्ट सहायता मिलती हो और जिसे अर्जित या प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना और पूँजी तथा समय लगाना पडता हो। जैसे—खेत, जमीन, मकान, रुपया-पैसा। २ यथेष्ट मात्रा या सख्या मे उक्त प्रकार की कोई चीज। उदा०—गो-धन, गज-धन वाजि-धन और रतन-धन खान। जब आवै सतोष-धन सब धन धूरि समान।—तुलसी। ३ लोक-व्यवहार मे मुख्य रूप से चाँदी, ताँबे, सोने आदि के सिक्के। रुपया-पैसा। जैसे—व्यापार मे धन लगाना।
क्रि० प्र०—कमाना।—भोगना।—लगाना।
४ प्राणो के समान परम प्रिय व्यक्ति। जैसे—भगवान ही हमारे जीवन-धन हैं। ५ जन्म, कुंडली मे जन्म-लग्न से दूसरा स्थान, जिसे देखकर यह विचार किया जाता है कि अमुक व्यक्ति धनी होगा या निर्धन। ६ लेन-देन मे उधार दी हुई वह रकम, जिसमे अभी व्याज का सूद न जोडा गया हो। मूल। ७ गणित मे, जोड़ने या मिलाने का वह चिह्न, जो इस प्रकार लिखा जाता है—+। ८ व्यवहार मे, वह स्थिति, जिसमे किसी विशिष्ट गुण, तथ्य, तत्त्व या वस्तु की सत्ता वर्तमान होती है, अभाव नही होता। 'ऋण' का विपर्याय। जैसे—धन विद्युत्। ९ खनकों की परिभाषा मे, खान से निकली और बिना साफ की हुई कच्ची धातु।
वि० १. लेखे आदि मे जो 'हाँ' के पक्ष का हो। २ हिसाब-किताब मे जो जोडा या बढाया जाने को हो। ३ किसी के यहाँ से अमानत या उधार के रूप मे आया हुआ। जो हिसाब-किताब मे किसी के नाम से जमा हो। (क्रेडिट) ४ दे० 'सहिक'।
†वि० =धन्य। उदा०—धन धन भारत की छत्रानी।—भारतेंदु।
स्त्री० [स० धन्या] १. पत्नी या वधू। २. सुदर या स्नेह-पात्र युवती या स्त्री।
†पु० हि० 'धान' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—धन कटी, धन-कर, धन कुट्टी आदि-आदि।

धनई†—स्त्री० = धनुई (छोटा धनुष)।

धनक—पु० [स०] १. धन पाने की इच्छा। २ लालच। लोभ। ३ राजा कृतवीर्य के पिता का नाम।
†स्त्री० [स० धनुष] स्त्रियो की एक प्रकार की ओढनी।
†पुं० १. धनुष। २. इद्र धनुष।

धन-कटी—स्त्री० [हि० धान+ कटना] १. धान की कटाई या उसका समय। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का कपडा।

धन-कर—पु० [हि० धान+कर (प्रत्य०)] १. वह कड़ी मिट्टी, जिसमे धान बोया जाता है और जिसमे बिना अच्छी वर्षा हुए हल नहीं चल सकता। २ वह खेत जिसमे धान होता हो।

धन-कुट्टी—स्त्री० [हि० धान+कूटना] १. धान कूटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ धान कूटने का ऊखल या मूसल। ३. खूब अच्छी तरह मारने-पीटने की क्रिया या भाव। (परिहास और व्यग ४ लाल रग का एक तरह का फतिगा जो अपना धड इस प्रकार ऊपर नीचे हिलाता है, जिस प्रकार धान कूटने की ढेकली हिलती है।

धन-कुबेर—पु० [हि० धन = कुबेर] बहुत बड़ा धनवान् और सम्पन्न व्यक्ति।

धन-केलि—पु० [ब० स०] कुबेर।

धन-कोटा—पु० [देश०] हिमालय के कुछ भागो मे होनेवाला एक तरह का पौधा जो कागज बनाने के काम आता है। चमोई सतबग्गा। सतपुरा।

धनखर†—पु० [हि० धान] धान बोने का खेत। धनऊँ।

धन-चिडी—स्त्री० [हि० धान+चिडी] एक तरह की चिड़िया।

धन-जन—पु० [स० धन+जन] १ वह व्यक्ति जिसके पास धन-दौलत हो। उदा०—करत रहत धन-जन के, चरन की गुलामी। —हरिश्चद्र। २. धन-सपत्ति और व्यक्ति। जैसे—इस आँधी पानी मे धन-जन का भी कुछ नाश हुआ है।

धन-तेरस—स्त्री० [स० धन = हि० तेरस (त्रयोदशी)] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन धन की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी का पूजन करने का विधान है।

धन-दंड—पुं० [तृ० त०] अर्थ-दड। जुरमाना।

धनद—वि० [स० धन√दा (देना)+क] [स्त्री० धनदा] १. धन देनेवाला। २. उदार तथा दानी (पुरुष)।
पु० १ कुबेर। २ अग्नि। आग। ३ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ४. समुद्र-फल। हिज्जल। ५ धनपति नामक वायु। ६. हिमालय में उत्तरा खड के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ।

धनद-तीर्थ—[स० कर्म० स०] कुबेर तीर्थ जो व्रज मडल मे है।

धनदा—स्त्री० [स० धनद+टाप्] आश्विन कृष्ण एकादशी।
स्त्री० सं० 'धनद' का स्त्री०।

धनदाक्षी—स्त्री० [स० धनद-अक्षि ब० स०, अच्+ङीप्] लता करज।

धनदायन—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके काढे से ऊनी कपडो पर माडी लगाते हैं।

धन-देव—पु० [ष० त०] धन के स्वामी, कुबेर।

धन-धानी—स्त्री० [ष० त०] कोष। खजाना।

धन-धान्य—पु० [द्व० स०] धन और खाद्य पदार्थ।

धन-धाम—पु० [द्व० स०] घर-बार और धन-सपत्ति।

धन-धारी (रिन्)—पु० [स० धन√धृ (धारण) +णिनि] १. कुबेर। २. धनवान।

धननंद—पु० [स०] सिहल के महावश (ग्रथ) के अनुसार मगध के नंद वश का अतिम राजा, जिसका नाश चाणक्य ने किया था।

धन-नाथ—पु० [ष० त०] कुबेर।

धन-नाशकी—स्त्री० [सं०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

धन-पक्ष—पुं० [ष० त०] १ बही-खाते आदि मे का वह पक्ष या विभाग

३. वह जो लोगो को धन उधार देता हो। महाजन। ४ [धनिन् √कै+क] धनिया।

धनिक-तंत्र—पु० [ष० त०] [वि० धनिक तंत्री] आधुनिक राजनीति मे, ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमे शासन का वास्तविक सूत्र प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से देश के बडे-बडे धनवानो के ही हाथ मे रहता हो। (प्लुटो कैसी)

विशेष—(क) ऐसी प्रणाली राजसत्ताक देशो मे भी हो सकती है और प्रजासत्ताक देशो मे भी। (ख) इगलैंड और अमेरिका की आधुनिक शासन-प्रणालियाँ मुख्यत धनिक-तंत्री ही मानी जाती हैं।

धनिका—स्त्री० [स० धनिक+टाप्] १. धनी स्त्री। २ युवती और सुदर स्त्री। ३. पत्नी। वधू। ४. प्रियगु वृक्ष।

धनिता—स्त्री० [स० धनिन्+तल्—टाप्] धन-सम्पन्न होने की अवस्था या भाव।

धनियाँ †—पु०, स्त्री० = धनिया।

धनिया—पु० [स० धन्याक, धनिका] एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसके सुगधित बीज मसाले के काम मे आते हैं, और इसकी सुगधित पत्तियो की चटनी बनाई जाती है। २. उक्त पौधे के बीज, जो मसाले के रूप मे बाजार मे मिलते हैं। वैद्यक मे इसे त्रिदोषनाशक, तथा खाँसी और कृमिघ्न माना गया है।

मुहा०—**(किसी को) धनिये की खोपड़ी का पानी पिलाना** = बहुत तग या परेशान करना। (स्त्रियाँ)

†स्त्री० [स० धन्या] १ पत्नी। वधू। २ सुदर और स्नेह पात्र स्त्री। प्रेमिका। उदा०—कोठवा पर से झाँकैली बारी से धनियाँ, से नासि अइलैना। (पूरबी लोकगीत)

धनिया-माल—स्त्री० [हिं० धनी+माला] गले मे पहनने का एक तरह का गहना।

धनिष्ट—वि० [स० धनिन्+इष्ठन्, इन—लोप] [स्त्री० धनिष्ठा] धनी। धनाढय।

धनिष्ठा—स्त्री० [सं० धनिष्ठ+टाप्] सत्ताईस नक्षत्रो मे से तेंइसवाँ नक्षत्र जो ९ ऊर्ध्वमुख नक्षत्रो मे से एक है और जिसमे पाँच तारे है।

धनी (निन्)—पु० [स० धन+इनि] १ जिसके पास धन हो। धनवान्। मालदार। दौलतमद। २ मालिक। स्वामी। ३ वह जो किसी चीज का मालिक हो अथवा उसे अपनी समझकर उसकी देख-रेख करता हो।

पद—**धनी-धोरी**= मालिक और रक्षक। जैसे—जान पडता है कि इस मकान का कोई धनी-धोरी ही नही है। **धनी सिर जोखिम**=दे० 'जोखिम' के अतर्गत 'जोखिम धनी सिर'। **बात का धनी** = अपनी कही हुई बात या दिए हुए वचन पर दृढ रहनेवाला।

५. स्त्री का पति। शौहर। ६. वह जो किसी प्रकार के कौशल, गुण आदि मे बहुत श्रेष्ठ हो। जैसे—तलवार का धनी= तलवार चलाने मे बहुत कुशल। बात का धनी = अपनी बात या वचन का पक्का और पूरी तरह से पालन करनेवाला।

स्त्री० [स० धन+अच्—ङीप्] १ पत्नी। वधू। २ स्नेह-पात्री युवती। प्रेमिका।

धनी-मानी—वि० [हिं०] जिसके पास यथेष्ट धन भी हो और जिसका अच्छा मान या प्रतिष्ठा भी हो।

धनीयक—पु० [सं० धन+छ—ईय+कन्] धनिया।

धनुःपट—पु० [स० धनुस्-पट ब० स०] पयाल वृक्ष। चिरौंजी का पेड़।

धनुःशाखा—पु० [स० धनुस्-शाखा ब० स०] पयाल वृक्ष।

धनुःश्रेणी—स्त्री० [स० धनुस्-श्रेणी, ष० त०] १ मूर्वा। मुर्रा। २. महेंद्र-वारुणी।

धनु—पु० [स०√धन (शब्द)+उ] १ धनुष। चाप। कमान। २. चार हाथ लबी एक पुरानी नाप। ३. किसी गोलाकार क्षेत्र का आधे से कम भाग जो धनुष के आकार का होता है। ४. ज्योतिष की बारह राशियो में से नवी राशि, जिसके अतर्गत मूल और पूर्वाषाढ नक्षत्र तथा उत्तराषाढ़ा का एक चरण आता है। इसे तौक्षिक भी कहते हैं। ५ फलित ज्योतिष मे एक लग्न। ६ हठ योग मे, एक प्रकार का आसन। ७ पयाल वृक्ष। ८ नदी का रेतीला किनारा।

धनुआ—पु० [स० धन्वन्, धन्वा] [स्त्री० अल्पा० धनुई] १ धनुष। कमान। २ धनुष के आकार का वह उपकरण जिसमे धुनिए रूई धुनते है। धुनकी। धन्वा।

धनुई†—स्त्री० [स० धनु+ई(प्रत्य०)] १ छोटा धनुष। २ धुनकी।

धनुक†—पु० [स० धनुष] १. कमान। धनुष। उदा०—भौंहें धनुक साँधि सर फेरी।—जायसी। २ इद्रधनुष।

धनुकना† —स० = धुनकना।

धनुक-बाई—स्त्री० [हिं० धनुक+बाई] लकवे की तरह का एक वायु रोग जिसमे जबड़े आपस मे सट जाते है और मुंह नही खुलता।

धनु-पानि*—पु० [स० धनुष+पाणि = हाथ] १ वह जिसके हाथ मे धनुष हो। २ धनुर्द्धर। ३ रामचन्द्र।

धनुर्गुण—पु० [स० धनुष्-गुण, ष० त०] धनु की डोरी। पतचिका। चिल्ला।

धनुर्गुणा—स्त्री० [सं० धनुस्-गुण ब० स०, टाप्] मूर्वा। मरोड-फली।

धनुर्ग्रह—पु० [स० धनुस्√ग्रह्, (पकड़ना)+अच्] १. धनुष चलानेवाला योद्धा। २ धनुर्विद्या। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

धनुर्द्धर—पु० [स० धनुस्√धृ (धारण)+अच्] १ धनुष धारण करनेवाला और चलानेवाला व्यक्ति। कमनैत। तीरदाज। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम

धनुर्द्धारी (रिन्)—वि० [स० धनुस्√धृ+णिनि] [स्त्री० धनुर्द्धारिणी] धनुष धारण करनेवाला।

पु० [स०] धनुष रखने और चलानेवाले योद्धा।

धनुर्द्रुम—पु० [स० धनुस्-द्रुम, ष० त०] बाँस।

धनुर्भृत्—पु० [स० धनुस्√भृ, (धारण)+क्विप्] धनुष धारण करनेवाला योद्धा।

धनुर्मख—पु० [स० धनुस्-मख, मध्य० स०] धनुर्यज्ञ।

धनुर्माला—स्त्री० [स० धनुस्-माला, ष० त०] मूर्वा। मरोडफली।

धनुर्यज्ञ—पु० [स० धनुस्-यज्ञ, तृ० त०] १ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का उत्सव जिसमे धनुष का पूजन तथा उसे चलाने की प्रतियोगिता होती थी। २ उक्त प्रकार का वह समरोह जो जनक ने सीता के स्वयंवर के समय किया था।

धनुर्यासा—पु० [स० धनुस्-यास, उपमि० स०] जवासा।

धनुर्लता—स्त्री० [सं० धनुस्-लता, उपमि० स०] सोमलता।

धनुर्वक्त्र—पु० [सं० धनुष्-वक्त्र, ब० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

धनुर्वात—पु० [सं०] १ एक प्रकार का वायु रोग, जिसमें शरीर धनुष की तरह झुककर टेढ़ा हो जाता है। २. धनुक-बाई नामक रोग। ३ शरीर के घाव या व्रण के विषाक्त होने पर होनेवाला उक्त रोग। धनुष टकार। (टिटैनस)

धनुर्विद्या—स्त्री० [सं० धनुस्-विद्या ष० त०] धनुष चलाने की विद्या। तीरदाजी।

धनुर्वृक्ष—पु० [सं० धनुष्-वृक्ष ष० त०] १ धामिन का पेड़। २. बाँस। ३. भिलावाँ। ४ पीपल का वृक्ष।

धनुर्वेद—पु० [सं० धनुष्-वेद ष० त०] यजुर्वेद का उपवेद जिसमें विशेष रूप से धनुष चलाने की विद्या का निरूपण है।

धनुष (स्)—पु० [सं०√धन् (शब्द)+उस्] १ अर्ध गोलाकार एक तरह का उपकरण जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर और उनके दोनों छोरों के बीच डोरी या ताँत बाँधकर बनाया जाता है। और जिस पर तान कर तीर दूर फेंका जाता है। कमान। २ दूरी की चार हाथ की एक पुरानी नाप। ३. रहस्य संप्रदाय में, परमात्मा का ध्यान। ४ हठ योग का एक आसन। ५ चिरौंजी का पेड़। पयाल।

धनुष-टकार—पु० [सं०] १ धनुष की प्रत्यंचा के हिलने से होनेवाला शब्द। २ एक घातक रोग जिसमें व्रण आदि के विषाक्त होने पर शरीर अकड़ कर धनुष के समान टेढ़ा हो जाता है। धनुर्वात। (टिटैनस)

धनुष-यज्ञ—पु० = धनुयज्ञ।

धनुष्कोटि—पु० [सं०] रामेश्वर से दक्षिण पूर्व का एक स्थान, जहाँ समुद्र में स्नान करने का माहात्म्य है।

धनुष्मान (ष्मन्)—पु० [सं० धनुष+मतुप्] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (बृहत्संहिता)

धनुस—पु० = धनुष।

धनुस्स्वन—पु० [सं०] धनुष की टकार।

धनुहाई—स्त्री० [हिं० धनु+हाई] १. धनुष से तीर चलाने की कला या विद्या। २ तीर-धनुष से होनेवाला युद्ध या लड़ाई।

धनुहिया†—स्त्री० = धनुही।

धनुही†—स्त्री० [हिं० धनु+ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने की छोटी कमान।

धनू—स्त्री० [सं०√धन् (शब्द) +ऊ] धनुष।

पु० अन्न का भंडार।

धनूयक—पु० [सं०] धनिया।

धनेश—पु० [सं० धन-ईश, ष० त०] १ धन का स्वामी। २ कुबेर। ३. विष्णु। ४ जन्म-कुंडली में लग्न से दूसरा स्थान जिसके अनुसार व्यक्ति की धन-संपन्नता का विचार होता है।

धनेश्वर—पु० [सं० धन-ईश्वर, ष० त०] १. धन का स्वामी। २ कुबेर। ३ विष्णु।

धनेस—पु० [देश०] लंबी गरदन तथा लंबी चोंचवाली एक तरह की बगले के आकार की चिड़िया।

धनैषणा—स्त्री० [सं० धन-एषणा ष० त०] धन पाने की इच्छा।

धनैषी (षिन्)—वि० [सं० धन√इष् (चाहना)+णिनि] धन पाने का उत्सुक। धन चाहनेवाला।

धनोष्मा (मन्)—स्त्री० [सं० धन-ऊष्मन्, ष० त०] धन की गरमी या घमंड।

धन्न*—वि० = धन्य।

धन्ना†—पु० = धरना।

पु० १. दे० 'धन्ना भगत'। २. दे० 'धन्ना सेठ'।

धन्नाभगत—पु० [?] राजस्थान के एक प्रसिद्ध जाट भक्त जो ई० १५वीं शताब्दी में हुए थे।

धन्नासिका—स्त्री० [सं०] एक रागिनी जिसका ग्रह षड्ज है और जिसमें ऋ वर्जित है।

धन्ना सेठ—पु० [हिं० धन+सेठ] बहुत बड़ा धनवान् व्यक्ति। (परिहास और व्यंग्य

पद—धन्ना सेठ का नाती = अमीर घराने में पैदा व्यक्ति। (परिहास और व्यंग्य)

धन्नि †—स्त्री० = धन्या।

धन्नी—स्त्री० [सं० (गो) धन] १ गायों, बैलों की एक जाति जो पंजाब में होती है। २. घोड़ों की एक जाति।

†पु० [?] वह आदमी जो किसी काम के लिए बेगार में पकड़ा गया हो।

धन्यमन्य—वि० [सं० धन्य√मन् (मानना)+खश्, मुम्] अपने को धन्य या भाग्यशाली माननेवाला।

धन्य—वि० [सं० धन+यत्] [स्त्री० धन्या] [भाव० धन्यता] १. जिसमें कोई ऐसी बहुत बड़ी योग्यता या विशेषता हो, जिसके कारण सब लोग उसका अभिनंदन और प्रशंसा करें। अच्छे काम करनेवाला और पुण्यवान्। सुकृति। २. कृतार्थ। जैसे—आपके इस कुटिया में पधारने से हम धन्य हुए। ३. धन देनेवाला। धनद।

पु० १ विष्णु। २. नास्तिक। ३. धनिया। ४. अश्वकर्ण वृक्ष।

धन्यता—स्त्री० [सं० धन्य+तल्—टाप्] धन्य होने की अवस्था या भाव।

धन्य-वाद—पु० [सं० ष० त०] १. किसी को धन्य कहना या मानना। प्रशंसा। वाह-वाही। साधुवाद। २. एक प्रकार का औपचारिक या हार्दिक कथन जिसमें किसी के प्रति उसके द्वारा किए हुए अनुग्रह, कृपा आदि के लिए कृतज्ञता का भाव निहित होता है। जैसे—(क) आपका पत्र मिला, एतदर्थ धन्यवाद। (ख) इस उपहार के लिए धन्यवाद।

धन्या—स्त्री० [सं० धन्य+टाप्] १. वन-देवी। २. उप-माता। विमाता। ३ ध्रुव की पत्नी जो मनु की कन्या थी। ४ धनिया। ५ छोटा आँवला।

वि० स्त्री० 'धन्य' का स्त्री रूप।

धन्याक—पु० [सं०√धन्+आकन्, नि० सिद्धि] धनिया।

धन्वंग—पु० [सं० धनु-अंग, ब० स०] धामिन का पेड़।

धन्वंतर—पु० [सं०] चार हाथ की एक प्राचीन माप।

धन्वंतरि—पु० [सं० धनु-अंत, ष० त०, धन्वंत√ऋ (गति)+इ] १ देवताओं के प्रधान चिकित्सक जिनके संबंध में प्रसिद्ध है कि वे समुद्र मंथन के समय हाथ में अमृत का पात्र लिये हुए उनमें से प्रकट हुए थे। २. विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक।

धन्व—पु० [स०√धन् (शब्द)+वन्] १ धनुष। २ मरु-प्रदेश। रेगिस्तान।

धन्वज—वि० [स० √जन् (उत्पत्ति)+ड] रेगिस्तान मे उपजने या जनमनेवाला।

धन्व-दुर्ग—पु० [स० मध्य० स०] मरुभूमि मे स्थित दुर्ग।

धन्वन—पु० [स०√धन्व्+ल्यु—अन] धामिन का पेड।

धन्व-यवास—पु० [स० मध्य० स०] दुरालभा। जवासा।

धन्वा (न्वन्)—पु० [स०√धन्व् (गति)+कनिन्] १ धनुष। कमान। २ मरु भूमि। रेगिस्तान। ३ सूखी जमीन (स्थल)। ४ आकाश।

धन्वाकार—वि० [स० धन्वन्-आकार, व० स०] कमान या धनुष के आकार का। अर्द्ध चद्राकार।

धन्वायी (यिन्)—वि० [स० धन्वन्√इ (गति)+णिनि] धनुर्द्धर। पु० रुद्र का एक नाम।

धन्विन्—पु० [स०√धन्व्+इनन्] शूकर। सूअर।

धन्वी (न्विन्)—वि० [स० धनु+इनि] १ धनुष धारण करनेवाला। २ चतुर। होशियार।

पु० १ पाँचो पाडवो मे से अर्जुन का एक नाम। २ अर्जुन वृक्ष। ३ बकुल। मौलसिरी। ४. जवासा। ५ विष्णु। ६ शिव। तामस मनु का एक पुत्र।

धप—स्त्री० [अनु०] १ भारी चीज के मुलायम चीज पर गिरने से होने-वाला शब्द। २ सिर पर मारा जानेवाला थप्पड। धौल।

क्रि० प्र०—जडना।—देना।—मारना।—लगाना।

धपना—अ० [स० धावन, या हिं० धाप] १ जल्दी-जल्दी या तेजी से चलना। २ झपटना।

स० [हिं० धप+ना (प्रत्य०)] १ सिर पर थप्पड मारना। २ मारना। पीटना।

धपाड़|—स्त्री० [हिं० धपना] धपने की क्रिया या भाव। जैसे—दौड-धपाड।

धपाना—स० [हिं० धपना] १ जल्दी जल्दी या तेजी से चलाना। २ झपटने मे प्रवृत्त करना। झपटाना।

धप्पड़|—पु० = थप्पड।

धप्पा—पु० [अनु० धप] १ हाथ से किसी को किया जानेवाला हलका आघात। हलका थप्पड। (पश्चिम) २ ऐसा आघात जिससे आर्थिक हानि हो।

क्रि० प्र०—बैठना।—लगना।

धप्पाड़|—स्त्री० = धपाड।

धबकना*—अ० [अनु०] चमकना। उदा०—धडि धड़ि धबाकि धार धारू जलू।—प्रिथीराज।

स० (थप्पड आदि) जडना। मारना। जैसे—पीठ पर मुक्का या मुँह पर थप्पड़ धबकना।

धब-धब—स्त्री० [अनु०] १ भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द। २ भारी और मोटे आदमी के चलने के समय जमीन पर पैर पडने का शब्द।

धबला—पु० [देश०] १. कमर के नीचे के अग ढकने का कोई ढीला-ढाला पहनावा। २ स्त्रियो का घाघरा। लहँगा।

धब्बा—पु० [?] १ किसी तल पर लगा हुआ किसी रग का ऐसा चिह्न, जिसमे उस तल की शोभा बहुत कुछ घटे या नष्ट हो जाय। जैसे—कपडे पर लगा हुआ स्याही का धब्बा, दीवार पर लगा हुआ तेल का धब्बा। २ प्राय रँगे हुए कपडे के सबध मे, ऐसा चिह्न जो कही अधिक और कही कम रग चढने के कारण बना हो। ३ कलक। दाग।

धमकना*—स० [हिं० धौंकना] १ न रहने देना। नष्ट करना। उदा०—काटित पातक व्यूह विकट जम-जूह धमकति।—रत्नाकर। २ दे० 'धौंकना'।

धम—स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका। जैसे—धम से गिरना।

पद—धमसे=(क) धम शब्द करते हुए। धडाम से। (ख) धमाधम। (ग) निरतर। लगातार।

पु० [स०] १ ब्रह्मा। २ यम। ३ चद्रमा। ४ श्रीकृष्ण का एक नाम।

धमक—स्त्री० [हिं० धमकना] १ धमकने की क्रिया या भाव। २. किसी भारी चीज के जमीन पर गिरने के कारण होनेवाला वह धम शब्द जिसके साथ जमीन मे हलका कपन भी हो। जैसे—फरश पर किसी चीज के गिरने या किसी के चलने से होनेवाली धमक। ३ वह कप जो भारी चीज के गिरने, चलने आदि से आस-पास के स्तर पर होता है। जैसे—रेल के चलने से आस-पास की जमीन मे होनेवाली धमक। ४ आघात। प्रहार। ५ रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अग मे होनेवाला हलका कष्ट-दायक कप या सवेदन। जैसे—बुखार के कारण सिर मे (या सारे शरीर मे) होनेवाली धमक। ६ रास्ते में पडनेवाला गड्ढा। (पालकी ढोने वाले कहारो की परिभाषा मे)

वि० [स०] [स्त्री० धमिका] धौंकनेवाला।

पु० लोहार।

धमकना—अ० [हिं० धमक] १ गिरने आदि के कारण धम शब्द होना। २ उक्त प्रकार के शब्द के कारण कुछ-कुछ काँपना या हिलना। ३ सहसा भारी बोझ पडने से हिलते हुए दबना। उदा०—चरण भार से सुदृढ धरा कँप गई धमक कर।—मैथिली शरण। ४ यौगिक क्रिया के रूप मे, आना और जाना क्रियाओ के साथ लगने पर वेगपूर्वक इस प्रकार गमन करना कि लोग कुछ डर या सहम जायँ। जैसे—इतने मे पुलिसवाले वहाँ आ धमके। ५ रह-रहकर हलका आघात और उसके कुछ साथ कप-सा होता हुआ जान पडना। जैसे—बुखार मे सिर धमकना।

स० इस रूप मे आघात करना या दड देना कि वह कुछ अनुचित या उग्र-सा जान पडे। जैसे—(क) उन्होंने बिना सोचे-समझे उसे एक मुक्का धमक दिया। (ख) अदालत ने उन्हे सौ रुपये जुरमाना धमक दिये।

|स०=धौंकना।

धमका—पु० [स० धमा] उमस। गरमी। उदा०—धमका विषम ज्यौं न पात खरकत हैं।—सेनापति।

धमकाना—स० [हिं० धमकी+आना (प्रत्य०)] यह कहना कि यदि तुम ऐसा काम करोगे (अथवा अमुक काम न करोगे) तो हम तुम्हे अमुक प्रकार का कष्ट या दड देंगे।

धमकी—स्त्री० [हिं०] वह बात जो किसी को धमकाते हुए कही जाय।

इस प्रकार का कथन कि यदि तुम आगे से ऐसा करोगे (अथवा अमुक काम न करोगे) तो हम तुम्हें अमुक प्रकार का कष्ट या दंड देंगे।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—(किसी की) धमकी में आना=किसी के धमकाने या धमकी देने पर उससे डरते हुए उसके अनुकूल आचरण या व्यवहार करना।

धमधका†—पुं०=धमाका।

धम-गजर—पुं० [अनु० धम+स० गर्जन] १. उत्पात। ऊधम। उपद्रव। २. ऐसी लड़ाई-झगड़ा, जिसमें मार-पीट भी हो।

धम-धम—पुं० [स०] कार्तिकेय के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे। (हरिवंश)
क्रि० वि०=धमाधम।

धमधमाना—स०[अनु० धम] १. कूद-फाँद या चल-फिर कर धम-धम शब्द उत्पन्न करना। २. धम-धम शब्द करते हुए घूँसे मुक्के आदि लगाना।
अ० धम-धम शब्द होना।

धम-धूसर—वि० [अनु० धम+स० धूसर=मटमैला, या धसरना] बहुत भद्दा और मोटा। स्थूल और बेडौल।

धमन—पुं० [स०√धम् (शब्द)+ल्युट्—अन] १. किसी चीज में हवा फूँककर भरना। २. भाथी से हवा करना। धौंकना। ३. उक्त काम के लिए बनी हुई पोली नली। ४. धौंकनी। ५. नरसल।

धमन-भट्टी—स्त्री० [स० धमन+हि० भट्ठी] धातुएँ आदि गलाने की एक विशेष प्रकार की भट्ठी, जिसमें आग सुलगाने के लिए हवा बहुत तेजी से पहुँचाई जाती है। (ब्लास्ट फर्नेस)

धमना†—स० [स० धमन] १. धौंकना। २. नल आदि से भरकर हवा के जोर से कोई चीज अंदर पहुँचाना।

धमनि—स्त्री० [स० धम्+अनि] १. प्रह्लाद के भाई ह्लाद की स्त्री जो वातापि और इल्वल की माता थी। २. वाक्-शक्ति। वाणी। ३. धमनी। नाड़ी।

धमनिका—स्त्री० [स०] १. छोटी और पतली धमनी। (आर्टरीयोल) २. तुरही नाम का बाजा। (को०)

धमनी—स्त्री० [स० धमनि+ङीप्] १. गर्दन। गला। २. शरीर के अन्दर की उन नलियों या नसों का समूह जिनके द्वारा हृदय से निकलकर चलनेवाला रक्त सारे शरीर में पहुँचता या फैलता है। (आर्टरी)
विशेष—सुश्रुत में इनकी संख्या २४ बतलाई गई है और कहा गया है कि इनकी छोटी-छोटी हजारों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई है। इन छोटी-छोटी शाखाओं को धमनिका कहते हैं।
३. गमन या यातायात का कोई मुख्य मार्ग या साधन। जैसे—नदियाँ अथवा रेलें और सड़कें हमारे देश की धमनियाँ हैं।

धमसा†—पुं०=धौंसा।

धमाका—पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने से होनेवाला धम शब्द। वेगपूर्वक नीचे कूदने या गिरने का शब्द। २. बहुत जोर से होनेवाला 'धम' का सा शब्द। जैसे—बंदूक छूटने का धमाका। ३. धक्का। ४. आघात। प्रहार। ५. पथर कला बंदूक। ६. वह तोप जो हाथी पर लादकर चलती थी।

धमा-चौकड़ी—स्त्री० [अनु० धम+हिं० चौकड़ी] १. ऐसी उछल-कूद, उपद्रव या ऊधम जिसमें रह-रहकर धम-धम शब्द भी होता हो। २. ऐसी मार-पीट जिसमें उछल-कूद भी होती हो। ३. उपद्रव। ऊधम।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

धमा-धम—क्रि० वि० [अनु० धम] १. धम-धम शब्द करते हुए। (क) लड़के धमाधम कूद रहे थे। (ख) उस पर धमाधम घूँसे और मुक्के पड़ने लगे। २. लगातार। निरंतर।
स्त्री० १. लगातार होनेवाला धम-धम शब्द। लगातार गिरने, पड़ने आदि की आवाज। २. ऐसा आघात, प्रहार या मार-पीट जिसमें धम-धम शब्द भी होता हो।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

धमार—स्त्री० [अनु०] १. उछल-कूद। धमा-चौकड़ी। २. उत्पात। उपद्रव। ३. नटों की उछल-कूद, कलाबाजी आदि। ४. एक विशेष प्रकार की कलाबाजी, जो मुहर्रम के जुलूस में की जाती है। अब इसका प्रयोग सांगीतिक धमार के अर्थ में भी हो गया है।
मुहा०—धमार खेलना=उछल-कूद और कलाबाजी करना।
५. होली में गाया जानेवाला एक गाना। ६. वह खेल, जिसमें कुछ लोग मंत्र-बल से जलती हुई आग या जलते हुए अंगारों पर चलते हैं।

धमारिया—पुं० [हिं० धमार] १. वह जो प्रायः उछल-कूद किया करता है। २. उत्पाती या उपद्रवी व्यक्ति। ३. वह जो धमार गाने में निपुण हो। ४. वह जो मंत्र-बल आदि से जलती हुई आग या जलते हुए अंगारों पर चलता हो।

धमारी—वि० [हिं० धमार] =धमारिया।
स्त्री० धमा-चौकड़ी।

धमाल†—स्त्री० =धमार।

धमाला†—पुं० [सं० धूमालय] [स्त्री० अल्पा० धमाली] दीवार में बना हुआ वह छेद, जिसका ऊपरी मुँह छत में खुलता है और जिसमें से धुआँ निकलकर बाहर जाता है।

धमाली—स्त्री० [हिं० धमार] होली के अवसर के एक प्रकार के अश्लील गीत।

धमासा—पुं० [सं० यवासा] एक हाथ ऊँचा एक तरह का क्षुप, जिसमें लोहित पत्ते होते हैं। इसकी जड़ तामसी होती है।

धमिका—स्त्री० [सं०] लोहार जाति की स्त्री। लोहारिन।

धमिल्ल—पुं० [सं०] सिर के बालों का बँधा हुआ जूड़ा।

धमूका†—पुं० [अनु० धम] १. धमाका। २. घूँसा। मुक्का।

धमेख—स्त्री० [सं० धर्म-चक्र] सारनाथ (काशी) के पास का वह स्तूप जो उस स्थान पर बनाया गया था, जहाँ बुद्धदेव ने अपना धर्मचक्र अर्थात् धर्मोपदेश आरंभ किया था।

धम्मन—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे पलवा भी कहते हैं।

धम्माल—स्त्री०=धमार।

धम्मिल्ल—पुं० [स०√धम(शब्द)+विच्,√मिल्(मिलना)+क, पृषो० सिद्धि] सिर के बालों को लपेटकर बनाया जानेवाला जूड़ा।

धम्हा†—पुं० दे० 'धमन-भट्ठी'।

धयना—अ०=धाना (दौड़ना)।

धरंता—वि० [हिं० धरना=पकड़ना] १. धरने या पकड़नेवाला। २. दे० 'धरता'।

धर—वि० [स०√धृ (धारण)+अच्] १. धारण करने या अपने ऊपर

लेनेवाला। २ समस्त पदों के अंत मे, उठाने या धारण करनेवाला। हाथ मे पकडने या रखनेवाला। जैसे—गिरिधर, चक्रधर, महीधर।
पु० १ कच्छप जो पृथ्वी को अपने ऊपर धारण किये हुए हैं। २ विष्णु। ३. श्रीकृष्ण। ४ पर्वत। पहाड। ५. एक वसु का नाम। ६ व्यभिचारी। ७. कपास का डोडा। ८ तलवार।
स्त्री० [हिं० धरना] धरने अर्थात् पकडने की क्रिया या भाव।
पद—धर-पकड। (देखें)
†स्त्री० [सं० धरा] पृथ्वी। उदा०—मानहुँ शेष अशेष धर धरनहार बरिवंड।—केशव।
पद—धर-अबर=पृथ्वी से आकाश तक।
†पु०=धड।
धरक—पु० [सं०] अनाज तौलने का काम करनेवाला।
†स्त्री०=धडक।
धरकना*—अ०=धडकना।
धरका†—पु०=धडका।
धरकार—पु० [?]एक जाति जो बाँसो आदि की टोकरियाँ बनाने का काम करती है।
धरण—पु० [सं०√धृ+ल्युट्—अन] १. धारण करने की क्रिया या भाव। धारण। २ एक प्रकार की पुरानी तौल जो कही २४ रत्ती की, कही १६ मासे की और कही १० पल की कही गयी है। ३ जगत्। ससार। ४ सूर्य। ५ छाती। स्तन। ६ धान। ७ जलाशय का बाँध। ८ पुल। ९ एक नाग का नाम।
*स्त्री०=धरणी (पृथ्वी)।
धरणि—स्त्री० [सं०√धृ+अनि]=धरणी।
धरणि-धर—पु० [ष० त०] धरणीधर।
धरणी—स्त्री० [सं० धरणि+ङीप्] १ पृथ्वी। २. नस। नाड़ी। ३ सेमल क पेड। शाल्मली। ४ शहतीर।
धरणी-कद—पु० [मयू० स०]एक प्रकार का कद जिसे वनकद भी कहते है।
धरणी-कीलक—पु० [ष० त०] पर्वत। पहाड।
धरणी-धर—वि० [ष० त०] पृथ्वी को धारण करनेवाला।
पु० १ शेषनाग। २. कच्छप। कछुआ। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ पर्वत। पहाड।
धरणी-पुत्र—पु० [ष० त०] १ मगल ग्रह। २. नरकासुर।
धरणीपूर—पु० [सं० धरणी√पूर (पूर्ति)+अण्] समुद्र।
धरणीभृत्—पु० [सं० धरणी+भृ (धारण)+क्विप्] १ शेषनाग। २. विष्णु। ३ पर्वत। पहाड। ४ राजा।
धरणीय—वि० [सं० धृ+अनीयर] १ धारण किये जाने के योग्य। २ जिसे पकडकर सहारा ले सकें।
धरणीश्वर—पु० [सं० धरणी-ईश्वर, ष० त०] १ शिव। २ विष्णु। ३ राजा।
धरणी-सुत—पु० [ष० त०] १. मगल ग्रह। २ नरकासुर राक्षस।
धरणी-सुता—स्त्री० [ष० त०] सीता। जानकी।
धरता—वि० [हिं० धरना] [स्त्री० धरती] १ धारण करनेवाला। २ अपने ऊपर किसी कार्य का भार लेनेवाला।
पद—करता-धरता=सब-कुछ करने धरनेवाला।
पु० १ वह जिसने किसी से कुछ धन उधार लिया हो। ऋणी। कर्जदार। २ वह बँधा हुआ अंश जो किसी को कोई रकम देने के समय धर्मार्थ अथवा किसी उद्देश्य से काट लिया जाता हो। कटौती।
धरति†—स्त्री०=धरती (पृथ्वी)।
धरती—स्त्री० [सं० धरित्री] १. पृथ्वी। जमीन।
मुहा०—धरती बहाना=(क) खेत जोतना। (ख) हल जोतने की तरह का बहुत अधिक परिश्रम करना।
पद—धरती का फूल=(क) खुमी। छत्रक। (ख) मेढक। (ग) ऐसा व्यक्ति जो अभी हाल मे अमीर हुआ हो।
२ जगत्। ससार।
धरधर—पु० [सं० धराधर] पर्वत। उदा०—धरधर शृग सधर सुपनि पयोधर।—प्रिथीराज।
†स्त्री०=धड-धड।
†पु०=धरहर।
धरधरा†—पु० [अनु०] १ कलेजे की धडकन। २ धडकी।
धरधराना—अ०, स०=धडधडाना।
धरन—स्त्री० [हिं० धरना] १. धरने की क्रिया, ढग या भाव। पकड। २ अपनी बात पर दृढतापूर्वक अडे रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। हठ। जिद। टेक।
मुहा०—धरन धरना*=अपनी बात पर अडे रहना। हठ या जिद न छोड़ना।
स्त्री० [सं० धरणी] १ आमने-सामने की दीवारो के सिरे पर रखा जानेवाला लकडी का वह मजबूत मोटा लट्ठा या छोटा शहतीर, जिसके सहारे पर ऊपर की छत टिकी रहती या पाटी जाती है। कडी। धरनी। २ स्त्रियों के गर्भाशय के ऊपरी भाग की वह नस, जो उसे इधर-उधर से रोके रखकर यथास्थान स्थित रखती है।
मुहा०—धरन खिसकना, टलना या सरकना=गर्भाशय की उक्त नस का अपने स्थान से कुछ इधर-उधर हो जाना, जिससे गर्भाशय के आस-पास बहुत पीडा होती है।
३ गर्भाशय।
†पु०=धरना।
†स्त्री०=धरणी (पृथ्वी)।
†वि०=धरण (धारण करनेवाला)।
धरनहार†—वि० [हिं० धरना+हार (प्रत्य०)] धारण करनेवाला।
वि० [हिं० धरना=पकडना] धरने या पकड़नेवाला।
धरना—स० [सं० धारण] १ कोई चीज इस प्रकार दृढता से पकडना या हाथ मे लेना कि वह जल्दी छूट न सके अथवा इधर-उधर न हो सके। पकडना। थामना।
सयो० क्रि०—लेना।
२ ग्रहण या धारण करना। ३ अधिकार या रक्षा मे लेना।
मुहा०—धर दबाना=(क) पकडकर वश मे कर लेना। आक्रात करना। जैसे—बिल्ली ने कबूतर को धर दबाया। (ख) लाक्षणिक रूप मे, वेगपूर्वक कोई ऐसी बात कहना जिससे विपक्षी दब जाय या चुप

धरा-धरन†—पुं०=धराधर।
धरा-धरी—स्त्री०=धर-पकड़।
धराधार—पुं० [धरा-आधार ष० त०] शेषनाग।
धराधिप, धराधिपति—पुं० [धरा-अधिप, ष०त०, धरा-अधिपति, ष० त०] राजा।
धराधीश—पुं० [धरा-अधीश ष० त०] राजा।
धराना—स० [हिं० 'धरना' का प्रे०] १. पकड़ाना। थमाना। २ पकड़वाना। ३ किसी को कहीं कुछ धरने या रखने में प्रवृत्त करना। जैसे—चोरों से माल धराना। ३ रखवाना। रखाना। ४ नियत, निश्चित या स्थिर कराना। जैसे—किसी काम या बात के लिए दिन धराना; अर्थात् निश्चित कराना। जैसे—मुहूर्त धराना।
धरा-पुत्र—पुं० [ष० त०] १ मंगल ग्रह। २ नरकासुर।
धराभृत—पुं० [सं० धरा√भृ (धारण)+क्विप्, तुक्—आगम] पर्वत। पहाड़।
धरामर—पुं० [सं०] ब्राह्मण।
धरावत—स्त्री० [हिं० धरना] १ धरने की क्रिया, ढंग या भाव। २ जमीन की वह माप या क्षेत्र-फल जो कूतकर मान लिया गया हो।
धरावना†—स०=धराना।
धराशायी (यिन्)—वि० [सं० धरा+शी (सोना)+णिनि] [स्त्री० धराशायिनी] १ जमीन पर पड़ा, लेटा या सोया हुआ। जैसे—युद्ध में वीरों का धराशायी होना, अर्थात् गिर पड़ना या गिरकर मर जाना। २ गिर, ढह या टूटकर जमीन के बराबर हो जाना। जैसे—भवन या स्तूप धराशायी होना।
धरा-सुत—पुं० [ष० त०] १ मंगल ग्रह। २ नरकासुर।
धरा-सुर—पुं० [स० त०] ब्राह्मण।
धरास्त्र—पुं० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, जिसका प्रयोग विश्वामित्र ने वशिष्ठ पर किया था।
धराहर†—पुं० [हिं० धुर=ऊपर+घर] =धौरहर (मीनार)।
धरिगा—पुं० [देश०] एक तरह का चावल।
धरित्री—स्त्री० [सं०] धरती। पृथ्वी।
धरिमा (मन्)—स्त्री० [सं०√धृ (धारण)+इमनिच्] १ तराजू। २ रूप। शकल।
धरी—स्त्री० [हिं० धरना] १ अवलंब। आश्रय। उदा०—अब मौको धरि (धरी) रहीन कोऊ तातें जाति भरी।—सूर। २ अर्थात् उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री। रखेली।
स्त्री० [हिं० ढार] कान में पहनने का ढार या बिरिया नाम का गहना।
†स्त्री०=घड़ी।
†स्त्री० [हिं० धार] १ जल की धार। २ वर्षा की झड़ी।
धरौचा—वि० [हिं० धरना] धरा या पकड़ा हुआ।
पुं० दे० 'धरेला'।
धरुण—वि० [सं०√धृ+उनन्] धारण करनेवाला। १ ब्राह्मण। २. स्वर्ण। ३ जल। ४ राय। ५ वह स्थान जहाँ कोई वस्तु सुरक्षित अवस्था में रखी जा सके। ६ अग्नि। ७ दुधमुँहा बछड़ा।
धरेचा—वि०, पुं०=धरेला।
धरेजा—पुं० [हिं० धरना=रखना+एजा (प्रत्य०)] किसी विधवा स्त्री को पत्नी की तरह घर में रखने की क्रिया या प्रथा।
स्त्री० इस प्रकार रखी हुई स्त्री।
धरेला—वि० [हिं० धरना] [स्त्री० धरेली] जो किसी रूप में धर या पकड़कर अपने पास रखा या अपने अधिकार में लिया गया हो।
पुं० १ किसी स्त्री की दृष्टि में, वह पुरुष जिसे उसने अपना पति बनाकर अपने पास या साथ रखा हो। २ कुछ जातियों में प्रचलित वह प्रथा, जिसमें बिना विवाह किये ही लोग विधवा स्त्री की सगाई आदि करके अपनी पत्नी बनाकर रख लेते हैं, और उनके समाज में उनका ऐसा संबंध विधि-संगत माना जाता है।
धरेली—स्त्री० [हिं० धरेला] रखेली। उपपत्नी।
धरेवा—पुं० दे० 'करेवा'। (विवाह का एक प्रकार)।
धरेश—पुं० [सं० धरा-ईश, ष० त०] राजा।
धरेस—पुं०=धरेश।
धरैया—वि० [हिं० धरना] १. धरने या पकड़नेवाला। २. धारण करनेवाला।
पुं० कच्छप, शेषनाग आदि जो पृथ्वी को धारण करनेवाले कहे जाते हैं।
स्त्री० वह प्रथा जिसके अनुसार कोई व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) किसी दूसरे व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) को अपना जीवन-सहचर बनाकर रखता है।
धरोड़†—स्त्री०=धरोहर।
धरोहर—स्त्री० [हिं० धरना] १ वह धन या संपत्ति, जो किसी विश्वस्त व्यक्ति के पास कुछ समय तक सुरक्षित रखने के लिए रखी जाय। अमानत।
क्रि० प्र०—धरना।—रखना।
२ वह वस्तु या गुण जो निधि के रूप में हमें पूर्वजों से मिला हो। थाती। जैसे—हमें यह संस्कृति अपने पूर्वजों से धरोहर के रूप में मिली है।
धरौंआ—पुं० [हिं० धरना] बिना विधिपूर्वक विवाह किये स्त्री या पुरुष को पत्नी या पति बनाकर रखने की प्रथा। धरैया।
वि० उक्त प्रथा के अनुसार अपने साथ या पास रखा हुआ (व्यक्ति)।
धरौना—पुं०=धरैया (प्रथा)।
धरौली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़, जो भारतवर्ष में प्रायः सब जगह विशेषतः हिमालय की तराई में पाया जाता है। उसमें सफेद, लाल या पीले फूल लगते हैं।
धर्ता (र्तृ)—वि० [सं०√धृ (धारण)+तृच्] १ धारण करनेवाला। २ अपने ऊपर किसी काम या बात का भार लेनेवाला।
पद—कर्ता-धर्ता। (दे० 'कर्ता' के अंतर्गत)
धर्ती—स्त्री०=धरती।
धर्तूर—पुं० [सं० धुस्तूर पृषो० सिद्धि] धतूरा।
धर्त्र—पुं० [सं०√धृ+त्र] १ घर। गृह। २ सहारा। टेक। ३. यज्ञ। ४. पुण्य। ५ नैतिकता।
धर्म—पुं० [सं०√धृ+मन्] [वि० धार्मिक] १ पदार्थ मात्र का वह प्राकृतिक तथा मूलगुण, विशेषता या वृत्ति, जो उसमें बराबर स्थायी रूप में वर्तमान रहती हो, जिससे उसकी पहचान होती हो और उससे कभी अलग न की जा सकती हो। जैसे—आग का धर्म जलना और

उत्पन्न हुआ हो। २ धर्मराज युधिष्ठिर, जो धर्म के पुत्र माने गये है। ३ एक बुद्ध का नाम। ४. नर-नारायण।

धर्म-जन्मा (न्मन्)—पु०[स० ब०स०] युधिष्ठिर का एक नाम।

धर्मजीवन—पु०[स० ब०स०] धार्मिक कृत्य कराकर जीविका उपार्जित करनेवाला ब्राह्मण।

धर्मज्ञ—वि०[स० धर्म√ज्ञा (जानना)+क] १ धर्म-सबधी नियमो तथा सिद्धातो का ज्ञाता। २. धर्मात्मा।

धर्मण—पु० [स० धर्म√नम् (झुकना)+ड] १ धामिन वृक्ष। २ धामिन साँप। ३ धामिन पक्षी।

धर्मणा—क्रि० वि०=धर्मत ।

धर्म-तंत्र—पु०[प०त०] ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमे किसी विशिष्ट धर्म या मजहब का ही प्रभुत्व होता और शासन व्यवस्था प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धर्म-पुरोहितो के हाथ मे रहती है। (थियोक्रेसी)

धर्मत' (तस्)—अव्य०[स० धर्म+तस्]१ धार्मिक सिद्धातो के अनुसार। २. धर्म की दुहाई देते हुए। ३. धर्म के आधार पर ।

धर्मद—वि०[स० धर्म√दा (देना)+क] अपने धर्म का पुण्य या फल दूसरो को दे देनेवाला।

धर्म-दान—पु०[मध्य०स०] बिना किसी प्रकार की फल-प्राप्ति के निहित उद्देश्य से और केवल परोपकार की दृष्टि से दिया जानेवाला दान।

धर्म-दारा—स्त्री०[मध्य०स०] धर्मपत्नी। व्याहता स्त्री।

धर्म-देशक—पु०[ष०त०] धर्मोपदेशक।

धर्मद्रवी—स्त्री०[ब०स०, ङीप्] गगा नदी।

धर्म-धक्का—पु०[स०+हिं०] १ ऐसा कष्ट जो धर्मानुसार कोई कार्य सपादित करते समय अथवा उसके फलस्वरूप सहना या उठाना पडे। ३ अच्छा काम करने पर भी मिलनेवाली आपत्ति या बुराई।

धर्म-धातु—पु०[स० धर्म√धा (धारण)+तुन्] गौतमबुद्ध।

धर्म-ध्वज—पु०[ब०स०]१ ऐसा व्यक्ति जो धर्म की आड लेकर स्वार्थ-साधन तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करता हो। २ मिथिला के एक ब्रह्मज्ञानी राजा जो राजा जनक के वशजो मे से थे।

धर्म-ध्वजता—स्त्री०[स० धर्मध्वज+तल्—टाप्] १ धर्म-ध्वज होने की अवस्था या भाव। २ धर्म की आड मे किया हुआ आडबर।

धर्म-ध्वजी—पु०=धर्मध्वज।

धर्म-नंदन—पु०[प०त०] युधिष्ठिर।

धर्मनदी (दिन्)—पु०[स०] अनेक बौद्धशास्त्रो का चीनी भाषा मे अनुवाद करनेवाले एक बौद्ध पडित।

धर्म-नाथ—पु०[प०त०]१ न्यायकर्त्ता। २ जैनो के पन्द्रहवे तीर्थंकर।

धर्म-नाभ—पु०[धर्म-नाभि ब०स०, अच्] १. विष्णु। २ एक प्राचीन नदी।

धर्म-निरपेक्ष—वि०[प० त०] (राज्य अथवा शासन-प्रणाली) जहाँ अथवा जिसमे किसी धार्मिक सम्प्रदाय का पक्षपात या प्रभुत्व न हो। (सेक्युलर)

धर्म-निष्ठ—वि०[ब०स०] [भाव० धर्मनिष्ठा] जिसकी अपने धर्म मे निष्ठा हो।

धर्म-निष्ठा—स्त्री०[स०त०] अपने धर्म के प्रति होनेवाली निष्ठा या दृढ विश्वास।

धर्मपट्ट—पु०[प०त०] शासन अथवा धर्माधिकारी की ओर से किसी को भेजा हुआ पत्र।

धर्म-पति—पु० [प० त०] १ धर्म पर अधिकार रखनेवाला पुरुष। धर्मात्मा। २ वरुण देवता।

धर्म-पत्तन—पु०[स०] १ बृहत्सहिता के अनुसार कूर्मविभाग मे दक्षिण का एक जन-स्थान जो कदाचित् आधुनिक धर्मापटम (जिला मलाबार) के आस-पास रहा हो। २ श्रावस्ती नगरी। ३ काली या गोल मिर्च।

धर्म-पत्नी—स्त्री० [च० त०] सबध के विचार मे वह स्त्री, जिसके साथ धर्मशास्त्र द्वारा निर्दिष्ट रीति से विवाह हुआ हो।

धर्म-पत्र—पु०[ब०स०] गूलर।

धर्म-परायण—वि० [धर्म-पर-अयन, ब०स०] [भाव० धर्म-परायणता] धर्म द्वारा निर्दिष्ट ढग से काम करनेवाला। धर्म के विधानो के अनुसार निष्ठापूर्वक काम करनेवाला। (रेलिजस)

धर्मपरायणता—स्त्री०[स० धर्मपरायण+तल्—टाप्] धर्म-परायण होने की अवस्था या भाव। (रेलिजसनेस)

धर्म-परिणाम—पु० [प०त०] १ योग-दर्शन के अनुसार सब भूतो और इद्रियो के एक रूप या स्थिति से दूसरे रूप या स्थिति मे प्राप्त होने की वृत्ति। एक धर्म की निवृत्ति होने पर दूसरे धर्म की प्राप्ति। २ धर्म।

धर्म-परिषद्—स्त्री०[प०त०] न्याय करनेवाली सभा। धर्मसभा।

धर्म-पाठक—पु० [प०] धर्म-ग्रथो का अध्ययन करनेवाला व्यक्ति।

धर्मपाल—वि०[स० धर्म√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] धर्म का पालन या रक्षा करनेवाला।

पु० १ वह जो धर्म का पालन करता हो। २ दड या सजा, जिसके आधार पर धर्म का पालन किया या कराया जाता है। ३ राजा दशरथ के एक मत्री।

धर्म-पिता (तृ)—पु०[तृ० त०] वह जो धार्मिक भाव से किसी का पिता या सरक्षक बन गया हो, (जन्मदाता पिता से भिन्न)।

धर्म-पीठ—पु०[प०त०]१ वह स्थान, जो धार्मिक दृष्टि से प्रधान या मुख्य माना जाता हो। २ वह स्थान, जहाँ से लोगो को धर्म की व्यवस्था मिलती हो। ३ काशी नगरी का एक नाम।

धर्म-पीड़ा—स्त्री०[प०त०]१ धर्म या न्याय का उल्लघन। २ अपराध।

धर्म-पुत्र—पु०[प० त०]१ धर्म के पुत्र युधिष्ठिर। २ नर-नारायण। ३ वह जो अपना औरस पुत्र तो न हो, परन्तु धार्मिक रीति या विधि से अथवा धर्म को साक्षी रखकर अपना पुत्र बना लिया गया हो।

धर्म-पुरी—स्त्री० [प०त०] १ धर्मराज या यमराज की यमपुरी, जहाँ शरीर छूटने पर प्राणियो के किये हुए धर्म और अधर्म का विचार होता है। २ कचहरी। न्यायालय।

धर्म-पुस्तक—स्त्री०[प०त०]=धर्म-ग्रथ।

धर्म-प्रतिरूपक—पु०[प०त०] मनु के अनुसार ऐसा दान, जो अपने सगे-सम्बन्धियो के दीन-दुखी रहते हुए भी केवल नाम या यश कमाने के लिए दूसरो को दिया जाय। (ऐसा दान निन्दनीय और धर्म की विडम्बना करनेवाला कहा गया है।)

धर्म-प्रभास—पु०[स०] गौतम बुद्ध।

धर्म-प्रवचन—पु० [धर्म-प्र√वच् (बोलना)+ल्युट्—अन] १ कर्तव्य-शास्त्र। २ बुद्धदेव।

धर्म-बुद्धि—स्त्री०[स०त०] धर्म-अधर्म का विवेक। भले-बुरे का विचार।

धर्म-भगिनी—स्त्री०[मध्य०स०]१. वह स्त्री जो धर्म को साक्षी करके बहन बनाई जाय। २ गुरु-कन्या।

धर्म-भागिनी—स्त्री०[स०त०]=धर्मपत्नी।

धर्म-भाणक—पु०[ष०त०] धर्म का बखान करनेवाला व्यक्ति। कथा-वाचक।

धर्म-भिक्षुक—पु०[च०स०] मनु के अनुसार नौ प्रकार के भिक्षुको मे से वह जो केवल धार्मिक कार्यो के लिए भिक्षा माँगता हो।

धर्म-भीरु—वि० [स०त०] [भाव०] धर्म भीहता (व्यक्ति) जो धर्म के भय के कारण अधर्म या दूपित काम न करता हो।

धर्मभृत्—पु०[स० धर्म√भृ (धारण)+क्विप्]१. राजा। २ धर्म-परायण व्यक्ति।

धर्म-भ्रष्ट—वि०[प० त०] [भाव०धर्म भ्रष्टता] जो अपने धर्म से गिरकर भ्रष्ट हो गया हो। धर्म-च्युत।

धर्म-मत—पु०[मयू० स०] धर्म के रूप मे प्रचलित मत या सप्रदाय। मजहब (धर्म के व्यापक अर्थ और रूप से भिन्न)।

धर्म-मति—स्त्री०=धर्म-बुद्धि।

धर्म-मूल—पु०[ष०त०] धर्म का मूल, वेद।

धर्ममेघ—पु०[स० धर्म√मिह (वरसना)+अच्, घ आदेश] योग मे वह स्थिति, जिसमे वैराग्य के अभ्यास से चित्त सब वृत्तियो से रहित हो जाता है।

धर्म-यज्ञ—पु०[तृ०त०] ऐसा यज्ञ जिसमे पशुओ की वलि न दी जाती हो।

धर्म-युग—पु०[मध्य०स०] सत्ययुग।

धर्म-युद्ध—पु०[तृ ०त०] १. ऐसा युद्ध जिसमे छल-कपट या धोखा-धडी न हो, वल्कि नैतिक दृष्टि से उच्च स्तर पर हो और किसी की दुर्वलता का अनुचित रूप से लाभ न उठाया जाय। २ धर्म की रक्षा के लिए अथवा किसी बहुत अच्छे उद्देश्य से किया जानेवाला युद्ध।

धर्म-योनि—पु०[प०त०] विष्णु।

धर्मराई†—पु०=धर्मराज।

धर्मराज—पु०[धर्म√राज् (शोभित होना)+अच्]१ धर्म का पालन करनेवाला, राजा। २ युधिष्ठिर। ३ यमराज। ४ जैनो के जिन देव। ५ न्यायाधीश।

धर्मराज परीक्षा—स्त्री०[ष०त०] स्मृतियो के अनुसार एक प्रकार की दिव्य परीक्षा,जिसमे यह जाना जाता था कि धर्म की दृष्टि मे अभियुक्त दोपी है या निर्दोप।

धर्मराय†—पु०=धर्मराज।

धर्म-लिपि—स्त्री०[प०त०]१. वह लिपि जिसमे किसी धर्म की मुख्य पुस्तक लिखी हो। २ भिन्न-भिन्न स्थानो पर खुदे हुए सम्राट् अशोक के धार्मिक प्रज्ञापन।

धर्म-लुप्ता उपमा—स्त्री० [धर्म-लुप्ता तृ० त०, धर्म-लुप्ता और उपमा व्यस्त पद] उपमा अलकार का एक भेद, जिसमे धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय मे समान रूप से पाई जानेवाली वात का कथन या उल्लेख नही होता।

धर्मवर्त्ती (र्तिन्)—वि०[स० धर्म√वृत् (वरतना)+णिनि] धर्म के अनुकूल आचरण करनेवाला।

धर्म-वर्धन—पु०[प०त०] शिव।

धर्मवान्(वत)—वि०[स० धर्म+मतुप्] धर्मात्मा। धर्मनिष्ठ।

धर्म-वासर—पु०[प०त०] पूर्णिमा तिथि।

धर्म-वाहन—पु० [प०त०]१. धर्म के सवध मे किया जानेवाला चिंतन या विचार। २. धर्मराज का वाहन, भैंसा।

धर्मविजयी (यिन्)—पु०[तृ०त०] वह जो नम्रता या विनय से ही सतुष्ट हो जाय।

धर्म-विवाह—पु०[तृ०त०] धार्मिक सस्कारो से किया हुआ विवाह।

धर्म-विवेचन—पु०[प० त०]१ धर्म के सवध मे किया जानेवाला चिंतन या विचार। २ धर्म और अधर्म का विचार। ३ इस वात का विचार कि अमुक काम अच्छा है या वुरा।

धर्म-वीर—पु०[स०त०] वह जो धर्म करने मे सदा तत्पर रहता हो।

धर्म-वृद्ध—वि०[तृ०त०] जो निरन्तर धर्माचरण करने के कारण श्रेष्ठ माना जाता हो।

धर्म-वैतंसिक—पु०[स०त०] वह जो पाप के द्वारा धन कमाकर लोगो को दिखाने और धार्मिक बनने के लिए बहुत दान-पुण्य करता हो।

धर्म-व्याध—पु०[मध्य०स०] मिथिला का निवासी एक प्रसिद्ध व्याध जिसने कौशिक नामक वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्त्व समझाया था।

धर्मव्रता—स्त्री०[स०] विश्वरूपा के गर्भ से उत्पन्न धर्म नामक राजा की कन्या, जिसने पातिव्रत्य की प्राप्ति के लिए घोर तप किया था, और मरीचि ने जिसे परम पतिव्रता देखकर अपनी पत्नी बनाया था।

धर्म-शाला—पु०[च०त०]१ वह स्थान, जहाँ धर्म और अधर्म का निर्णय होता हो। न्यायालय। विचारालय। २ वह स्थान, जहाँ नियमपूर्वक धर्मार्थ के विचार से दीन-दुखियो को दान दिया जाता हो। ३. परोपकार की दृष्टि से वनवाया हुआ वह भवन, जिसमे हिंदू-यात्री आदि विना किसी प्रकार का शुल्क दिये कुछ समय तक ठहर या रह सकते हो।

धर्म-शास्त्र—पु० [प०त०] प्राचीन भारतीय समाज तथा हिन्दुओं मे, पारस्परिक व्यवहार से सवध रखनेवाले वे सव नियम या विधान, जो समाज का नियत्रण तथा सचालन करने के लिए वडे-वडे आचार्य तथा महापुरुप वनाते थे और जो लोक मे धार्मिक दृष्टि से विशेप महत्त्वपूर्ण और मान्य समझे जाते थे। जैसे—मानव धर्म-शास्त्र।

धर्म-शास्त्री (स्त्रिन्)—पु०[स० धर्मशास्त्र+इनि] वह जो धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देता हो।

धर्म-शील—वि०[ब०स०] [भाव० धर्मशीलता] जिसकी प्रवृत्ति धर्म मे हो। धार्मिक।

धर्म-संकट—पु०[प०त०] असमजस या दुवधा की ऐसी स्थिति जिसमे धर्म का अनुसरण करनेवाला व्यक्ति यह समझता है कि दोनो मे से किसी पक्ष मे जाने पर धर्म का कुछ न कुछ उल्लघन करना पडेगा। उभय सकट। (डिलेम्मा)

धर्म-संगीति—स्त्री०[प०त०] दे० 'सगायन'।

धर्म-सभा—स्त्री०[प०त०]१ वह सभा या सस्था जिसमे केवल धार्मिक वातो या विपयो का विचार और विवेचन होता हो। (सिनॉड) २ कचहरी। न्यायालय। ३ दे० 'सगायन'।

धर्मसारी†—स्त्री०=धर्मशाला।

धर्म-सावर्णि—पु०[मय० स०] पुराणो के अनुसार ग्यारहवे मनु।

धर्म-सुत—पु०[प० त०] युधिष्ठिर।

धर्मसू—वि०[सं० धर्म√सू (प्रेरणा)+क्विप्] धर्म की प्रेरणा करने-वाला।
पु० एक पक्षी।

धर्म-सूत्र—पु०[प०त०] जैमिनि प्रणीत धर्मनिर्णय-सबधी एक ग्रथ।

धर्म-सेतु—वि० [प०त०] सेतु की तरह धर्म को धारण करने, अर्थात् धर्म का पालन करनेवाला।

धर्मसेन—पु०[स०]१ एक प्राचीन महास्थविर या बौद्ध महात्मा, जो ऋषिपत्तन (सारनाथ, काशी) सघ के प्रधान थे। २ जैनो के बारह अगविदो मे से एक।

धर्मस्कध—पुं०[स०] धर्मास्तिकाय पदार्थ। (जैन)

धर्म-स्थ—वि०[स० धर्म√स्था (ठहरना)+क] धर्म मे स्थित।
पु० धर्माध्यक्ष। न्यायाधीश।

धर्मस्थीय—पु०[स०] न्यायालय।

धर्मस्व—वि०[च०त०] धर्मार्थ कामो मे लगाया या समर्पित किया हुआ (धन आदि) पुण्यार्थ।
पु० ऐसा समाज या सस्था, जिसकी स्थापना धार्मिक उद्देश्यो की सिद्धि के लिए हुई हो।

धर्मांग—पु०[धर्म-अग, ब० स०] बगला (शरीर के सफेद रग के आधार पर)।

धर्मांतर—पु०[धर्म-अतर, मयू०स०] स्वकीय या प्रस्तुत धर्म से भिन्न कोई और धर्म।

धर्मांतरण—पु०[स० धर्मांतर+क्विप्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० धर्मांत-रित] अपना धर्म छोडकर दूसरा धर्म ग्रहण करना।

धर्मांध—वि०[धर्म-अध तृ० त०]१. (व्यक्ति) जो अपने धर्मशास्त्रो मे बतलाई हुई बातो के अतिरिक्त दूसरी अथवा दूसरे धर्मो की अच्छी बातें भी मानने को तैयार न होता हो। २. स्वधर्म मे अध-श्रद्धा होने के फलस्व-रूप दूसरे धर्मो के प्रति तिरस्कार या द्वेष की भावना रखनेवाला। ३ धर्म के नाम पर दूसरो से लडने को अथवा अनुचित काम करने को तैयार होनेवाला।

धर्मागम—पु०[धर्म-आगम, प०त०] धर्म ग्रथ।

धर्माचरण—पु०[धर्म-आचरण, प०त०] [कर्त्ता धर्माचारी] किया जाने-वाला पवित्र और शुद्ध आचरण।

धर्माचार्य—पु० [धर्म-आचार्य, स०त०] किसी धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु विशेषत प्रधान गुरु।

धर्मात्मज—पु०[धर्म-आत्मज, प०त०]१ धर्मपुत्र। २ धर्मराज। युधि-ष्ठिर।

धर्मात्मा (त्मन्)—वि०[धर्म-आत्मन्, ब०स०] १ धर्म-ग्रथो द्वारा प्रति-पादित सिद्धातो के अनुसार आचरण करनेवाला। २ बहुत ही नेक और भला (व्यक्ति)।

धर्मादा—पु०[स० धर्म-दाय]धर्मार्थ निकाला हुआ धन।

धर्माधर्म—पु०[धर्म-अधर्म, द्व० स०]१ धर्म और अधर्म। २ धर्म और अधर्म का ज्ञान या विचार।

धर्माधिकरण—पु०[धर्म-अधिकरण, प०त०] वह स्थान, जहाँ राजा व्यव-हारो (मुकदमो) पर विचार करता है। विचारालय।

धर्माधिकरणिक—पु०[स० धर्माधिकरण+ठन्-इक] धर्म-अधर्म का निर्णय करनेवाला राज-कर्मचारी। न्यायाधीश।

धर्माधिकरणी (णिन्)—पु० [स० धर्माधिकरण+इनि] न्यायाधीश।

धर्माधिकारी (रिन्)—पु० [स० धर्म-अधि √कृ (करना) + णिनि] १ धर्म और अधर्म की व्यवस्था देनेवाला, विचारक। न्यायाधीश। २. भारतीय देशी रियासतो और बडे-बडे धनवानो के यहाँ का वह अधिकारी जो यह निश्चय करता था कि धर्म के किस काम मे कितना धन व्यय किया जाय।

धर्माधिकृत—पु०[धर्म-अधिकृत, स० त०]=धर्माध्यक्ष।

धर्माधिष्ठान—पु०[धर्म-अधिष्ठान, प०त०] न्यायालय।

धर्माध्यक्ष—पु० [धर्म-अध्यक्ष, स०त०] १ धर्माधिकारी। २ विष्णु। ३. शिव।

धर्मानुष्ठान—पु० [धर्म-अनुष्ठान, प०त०]=धर्माचरण।

धर्मापेत—वि०[धर्म-अपेत] जो धर्म के अनुकूल न हो। अधार्मिक। अन्याय सगत।
पु०१ अधर्म। २ अन्याय। ३ पाप।

धर्माभास—पु० [स० धर्म+आ√भास् (दीप्ति)+अच्] ऐसा असद् धर्म जो नाम-मात्र के लिए धर्म कहलाता हो, पर वस्तुत श्रुति-स्मृतियो की शिक्षाओ के विपरीत हो।

धर्मारण्य—पु०[धर्म-अरण्य, मध्य०स०]१. तपोवन। २. पुराणानुसार एक प्राचीन वन, जिसमे धर्म उस समय लज्जा के मारे जा छिपा था, जब चद्रमा ने गुरुपत्नी तारा का हरण किया था। ३ गया के पास का एक तीर्थ। ४ पुराणानुसार कूर्म विभाग का एक प्रदेश।

धर्मार्थ—वि० [धर्म-अर्थ, ब०स०]१ धार्मिक कार्यो के लिए अलग किया या निकाला हुआ (धन)। २ (कार्य) जो धर्म, परोपकार, पुण्य आदि की दृष्टि से किया जाय।
क्रि० वि० केवल धर्म, अर्थात् परोपकार या पुण्य के उद्देश्य या विचार से। जैसे—वे हर महीने १०, धर्मार्थ देते है।
पु० धार्मिक दृष्टि से किया हुआ दान।

धर्मार्थी (र्थिन्)—पु०[धर्म-अर्थिन्, प० त०] वह जो धर्म और उसके फल की इच्छा या कामना रखता हो।

धर्मावतार—पु०[धर्म-अवतार प० त०]१ वह जो इतना बडा धर्मात्मा हो कि धर्म का साक्षात् अवतार जान पडे। परम धर्मात्मा। २ धर्म और अधर्म का निर्णय करनेवाला। न्यायाधीश। ३ युधिष्ठिर।

धर्मावस्थायी (यिन्)—पु०[स० धर्म-अव√स्था (ठहरना)+णिनि] धर्माधिकारी।

धर्मासन—पु०[धर्म-आसन, च०त०] न्यायाधीश का आसन।

धर्मास्तिकाय—पु०[धर्म-अस्तिकाय, प०त०] जैन शास्त्रानुसार छ द्रव्यों मे से एक जो अरूपी है और जीव तथा पुद्गल की गति का आधार या सहायक माना गया है।

धर्मिणी—स्त्री०[स० धर्म+इनि+ङीप्]१ पत्नी। २. रेणुका।
वि० स० 'धर्मी' का स्त्री०।

धर्मिष्ठ—वि०[स० धर्म-इष्ठन्]१. धर्म पर आरूढ या स्थित रहनेवाला। २. पुण्यात्मा।

धर्मी (र्मिन्)—वि०[स० धर्म+इनि] [स्त्री० धर्मिणी]१. किसी विशिष्ट

धर्म, गुण आदि से युक्त। जैसे—ताप-धर्मी, द्रव-धर्मी। २ धर्म की आज्ञाएँ और सिद्धान्त माननेवाला। ३ किसी विशिष्ट धर्म या मत का अनुयायी। जैसे—सनातन-धर्मी।

पु०१. वह जो किसी विशिष्ट धर्म, गुण या तत्त्व का आधार हो। २. धर्मात्मा व्यक्ति। ३ विष्णु।

स्त्री० धर्म का भाव। जैसे—हठ-धर्मी।

धर्मीपुत्र—पु० [स०] १. नाटक का कोई पात्र या अभिनय कर्त्ता। २ नट।

धर्मेन्द्र—पु०[धर्म-इन्द्र, स०त०]१. यमराज। २. युधिष्ठिर।

धर्मेयु—पु०[स०] पुरुवशी राजा रौद्राश्व का एक पुत्र। (महाभारत)

धर्मेश, धर्मेश्वर—पु०[धर्म-ईश प०त०, धर्म-ईश्वर प०त०] यमराज।

धर्मोत्तर–वि० [धर्म-उत्तर ब०स०] जो धर्म-अधर्म का बहुत ध्यान रखता हो। अति धार्मिक।

धर्मोन्माद—पु०[धर्म-उन्माद, तृ० त०] १. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का उन्माद या पागलपन, जिसमे मनुष्य दिन-रात धर्म-सबधी कार्यो या विचारो मे मग्न रहता है। २ मनुष्य की वह मानसिक अवस्था जिसमे वह धर्म के नाम पर अधा होकर भले-बुरे का विचार छोड़ देता है। (थियोमेनिया)

धर्मोपदेश—पु०[धर्म-उपदेश प०त०]१. धर्म-सबधी तत्त्वों, शिक्षाओं, सिद्धान्तों आदि से सबध रखनेवाला वह उपदेश जो दूसरो को धर्मनिष्ठ बनाने के लिए दिया जाय। २ धर्मशास्त्र।

धर्मोपदेशक—पु० [धर्म-उपदेशक, प०त०] लोगो को धर्म-सबंधी उपदेश देनेवाला व्यक्ति।

धर्मोपाध्याय—पु०[धर्म-उपाध्याय, प०त०] पुरोहित।

धर्म्य—वि०[स० धर्म+यत्]१ धर्म-सबधी। २ धर्म-सगत। न्यायपूर्ण।

धर्म्य-विवाह—पु०[कर्म०स०]=धर्म-विवाह।

धर्ष—पु०[स०√धृष् (झिडकना, दबाना)+घञ्] १. ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे शिष्टता, शील आदि का पूरा अभाव हो। अविनय और धृष्टता का व्यवहार। गुस्ताखी। २ असहन-शीलता। ३ अधीरता। ४. अनादर। अपमान। ५. (किसी स्त्री का) सतीत्व नष्ट करने की क्रिया।६ हिंसा।७ अशक्तता। असमर्थता।८ प्रतिबन्ध। रुकावट। रोक। ९. नपुसकता। १० नपुसक। हिजडा।

धर्षक—वि०[स०√धृष्+ण्वुल्—अक] दबानेवाला। दमन करनेवाला। २. अनादर या अपमान करनेवाला। ३. असहिष्णु। ४. स्त्रियो का सतीत्व नष्ट करनेवाला। व्यभिचारी। ५ अभिनेता। नट।

धर्षकारी (रिन्)—वि० [स० धर्ष√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० धर्षकारिणी]=धर्षक।

धर्ष-कारिणी—वि० [स० धर्षकारिन्+ङीप्] (स्त्री) जिसका सतीत्व नष्ट हो चुका हो। व्यभिचारिणी।

धर्षण—पु०[स०√धृष्+ल्युट्—अन] [वि० धर्षणीय, धर्षित]१. किसी को जोर से पकडकर दबाने या दबोचने की क्रिया या भाव। २. किसी को परास्त करते हुए नीचा दिखाना। ३. अनादर। अपमान। ४. असहिष्णुता। ५ स्त्री के साथ किया जानेवाला प्रसग। सम्भोग। ६. एक प्रकार का पुराना अस्त्र। ७ शिव का एक नाम।

धर्षणा—स्त्री०[स०√धृष्+णिच्+युच्—अन, टाप्]१. धर्षण करने की क्रिया या भाव। धर्षण। २ अपमान। अवज्ञा। ३. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ४. स्त्री-प्रसग। सभोग।

धर्षणी—स्त्री० [स० √कृष् (खीचना)+अणि—ङीप्, क— ध.] असती स्त्री। कुलटा।

धर्षणीय—वि०[स०√धृष्+अनीयर्] जिसका धर्षण किया जा सकता हो या किया जाना उचित हो।

धर्षित—भू०कृ० [स०√धृष्+क्त] [स्त्री० धर्षिता]१. जिसका धर्षण किया गया हो। दबाया या दमन किया हुआ। २. पराभूत। हराया हुआ। ३. जिसे नीचा दिखाया गया हो।

पु० प्रसग। मैथुन।

धर्षिता—स्त्री०[स० धर्षित+टाप्]१. व्यभिचारिणी स्त्री। २ वेश्या।

धर्षी (र्षिन्)—वि०[स० √धृष् +णिनि] [स्त्री० धर्षिणी]१ धर्षण करनेवाला। २. दबाने या दबोचनेवाला। ३. अपमान या तिरस्कार करनेवाला। ४. परास्त करने या हरानेवाला। ५. नीचा दिखाने-वाला।

धलंड—पु०[स०] अकोल का पेड़। ढेरा।

धव—पु०[स०√धु (कंपन)+अच्]१. एक प्रकार का जंगली पेड जिसकी पत्तियां अमरूद या शरीफे की पत्तियो की-सी होती है। इन पत्तियो से चमडा सिझाया जाता है। इसकी पत्ती फल और जड तीनो दवा के काम मे आते है। धौ। २ स्त्री का पति या स्वामी। जैसे—माधव। ३. पुरुष। मर्द। ४ चालाक। धूर्त। ५ एक वसु का नाम।

धवई—स्त्री०[स० धातकी, धवनी] एक प्रकार का पेड जो उत्तरीय भारत मे अधिकता से होता है। इसे धाय भी कहते हैं। इससे एक प्रकार का गोंद भी निकलता है।

धवनी—स्त्री०[स०] शालिपर्णी। सरिवन।

†स्त्री० [स० धवल] १ धौंकनी। भाथी। २ दे० 'धमनी'।

धवर—पु०[स० धवला] पडुक की तरह का एक प्रकार का पक्षी जिसका गला लाल और सारा शरीर सफेद होता है।

†वि०=धवल (सफेद)।

धवरहर†—पुं० धौरहर।

धवरा†—वि०[स० धवल] [स्त्री० धवरी] उजला। सफेद।

धवराहर†—पु०=धौरहर।

धवरी—स्त्री०[हिं० धवर]१. धवर पक्षी की मादा। २. सफेद रग की गौ।

वि० हिं० 'धवर' का स्त्री०।

धवल—वि०[स०√धाव् (गति, शुद्धि)+कल, ह्रस्व]१ उजला। सफेद। २. निर्मल। कुफ। स्वच्छ। ३. मनोहर। सुन्दर।

पु०१. सफेद कोढ। २ श्वेत कुष्ठ। २ धौ का पेड़। ३. चिनिया कपूर। ४. सिंदूर। ५. सफेद गोल मिर्च। ६ अर्जुन वृक्ष। ७ सफेद परेवा या धौरा नामक पक्षी। ८ बहुत बडा बैल। ९ छप्पय छन्द का ४२ वाँ भेद। १० एक राग जो भरत के मत से हिंडोल राग का ८ वाँ पुत्र है। ११. राजस्थान मे गाये जानेवाले एक प्रकार के मगल गीत।

धवल-गिरि—पु०[कर्म०स०]हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी, जो सदा बरफ से ढकी रहती है।

धवल-गृह—पु०[कर्म०स०]१ प्राचीन भारत मे राजप्रासाद का वह ऊपरी और कुछ ऊँचा उठा हुआ खड, जिसमे राजा और रानियाँ रहती थी और जो प्राय सफेद रग का होता था। २. प्रासाद। महल।
धवलता—स्त्री०[सं० धवल+तल्+टाप्] धवल होने की अवस्था, गुण या भाव।
धवलत्व—पु०[स० धवल+त्व =धवलता।
धवलना—स०[स० धवल] उज्ज्वल करना। चमकाना।
अ० उज्ज्वल होना।
धवल-पक्ष—पु०[कर्म०स०] १. चाद्र मास का शुक्ल पक्ष। उजला पाख।
२. हस।
धवल-मृत्तिका—स्त्री०[कर्म०स०] सफेद अर्थात् खरिया मिट्टी। दुद्धी।
धवल-श्री—स्त्री०[कर्म०स०] ओड़व जाति की एक रागिनी जो सध्या समय गाई जाती है।
धवलहर—पु० [स० धवल-गृह] १ प्रासाद। महल। उदा०—धवला गिरि कि ना धवलहर। —प्रिथीराज। २ दे० 'धौरहर'।
धवलांग—वि० [धवल-अग, ब० म०] धवल अर्थात् सफेद अगोवाला।
पुं० हस।
धवला—स्त्री०[स० धवल+टाप्] सफेद गाय।
पु०[स० धवल] सफेद बैल।
वि० स० 'धवल' का स्त्री०।
धवलाई*—स्त्री०=धवलता।
धवलागिरि—पु०[स० धवल+गिरि]=धवलगिरि।
धवलित—भू०कृ० [स० धवल+इतच्] १. जो धवल अर्थात् सफेद किया गया हो। उज्ज्वल। जैसे—तुषार धवलित 'पर्वत'। २. खूब साफ या स्वच्छ किया हुआ।
धवलिमा(मन्)—स्त्री०[सं० धवल+इमनिच्] १. श्वेता। सफेदी।
२. उज्ज्वलता।
धवली—स्त्री०[स० धवय+ङीप्]१. सफेद गाय। २. सफेद गोल मिर्च। ३. समय से पहले बाल सफेद होने का रोग।
धवलीकृत—भू० कृ०[स० धवल+च्वि √कृ(करना)+क्त]जो धवल अर्थात् सफेद किया या बनाया गया हो।
धवलीभूत—भू०कृ०[स० धवल+च्वि√भू (होना)+क्त] जो सफेद हो गया हो।
धवलोत्पल—पु०[स० धवल-उत्पल, कर्म०स०] सफेद कमल।
धवा†—पु०=धव (वृक्ष)।
धवाना†—स०[हिं० धाना का प्रे०] किसी को धाने या दौडने मे प्रवृत्त करना। दौडाना।
*अ०[स० ध्वनि]१. ध्वनि या शब्द होना। २ ध्वनित होना।
स० ध्वनि या शब्द उत्पन्न करना।
धवित्र—पु०[म०√धू (कपन)+इत्र] हिरन की खाल का बना हुआ पखा, जिससे यज्ञ की आग सुलगाई जाती थी।
धस—स्त्री०[?] एक प्रकार की जमीन जिसकी मिट्टी भुरभुरी होती है।
†स्त्री०[हिं० धँसना] धँसने की क्रिया या भाव। धँसान।
धसक—स्त्री०[हिं० धसकना]१ धसकने की क्रिया या भाव। २ ईर्ष्या, द्वेप, भय आदि कारणो से कलेजा या दिल धँमने या बैठने की अवस्था या भाव। ३ कोई काम करने मे झिझकने या दहलने की अवस्था या भाव।
स्त्री०[अनु०]१. खाँसने के समय गले मे होनेवाला खस-खस या घस-घस शब्द। २ सूखी खाँसी।
धसकन—स्त्री०[हिं० धसकना] १ धसकने की क्रिया, भाव या स्थिति।
२ धसक (डर या भय)।
धसकना—अ०[हिं० धँसना]१. नीचे की ओर धँसना या दबना। २. ईर्ष्या आदि के कारण मन का दुखी होना। ३. (कलेजा या दिल) बैठना। उदा०—उठा धसक जिउ औ सिर धुन्न। —जायसी। ४. भय आदि के कारण झिझकना। ५ दहलना।
धसका—पु०[हिं० धसक] चौपायो के फेफडो का एक सक्रामक रोग।
धसना—अ०[म० ध्वसन] ध्वस्त या नष्ट होना। मिटना।
स० ध्वस्त या नष्ट करना। मिटाना।
†अ०=धँसना।
धसनि—स्त्री०=धँसनि।
धसमसाना†—अ०=धँसना।
†स०=धँसाना।
धसान—स्त्री०[स० दशार्ण] पूर्वी मालवा और बुदेलखंड की एक छोटी नदी।
†स्त्री०=धँसान।
धसाना—स०=धँसाना।
धसाव—पु०=धँवसा।
धाँक—पु०[देश०] भीलो की तरह की एक जगली जाति।
†स्त्री०=धाक।
धाँकना†—अ० स०=धाकना।
धाँगड़—पुं०[देश०]१. एक अनार्य जगली जाति जो विंध्य और कैमोर की पहाडियो पर रहती है। २ एक जाति, जो कुएँ, तालाब आदि खोदने का काम करती है।
धाँगर—पु०=धाँगड।
धाँधना—स०[देश०]१ बन्द करना। भेड़ना। २ बहुत अधिक खाना। पेट मे भोजन ठूँसना। ३ नष्ट-भ्रष्ट करना। ध्वस्त करना। ४. त्रस्त या परेशान करना। उदा०—धर कर धरा धूप ने धाँधी। धूल उडाती है यह आँधी।—मैथिलीशरण गुप्त।
†अ० दौड-धूप करना।
धाँधल†—स्त्री०=धाँधली।
धाँधलपन—पु०[हिं० धाँधल+पन (प्रत्य०)]१. पाजीपन। शरारत।
२. दे० 'धाँधली'।
धाँधली—स्त्री०[अनु०]१ उत्पात। उपद्रव। ऊधम। २ पाजीपन। शरारत। ३ कपट। छल। धोखा। ४ ऐसा कार्य या प्रयत्न जो उचित या न्यायसगत तथ्य या वास्तविकता का ध्यान न रखकर मनमाने ढग से और बुरे उद्देश्य से किया जाय। ५ जबरदस्ती अपनी गलत बात भी ठीक ठहराने या सबसे ऊपर रखने का प्रयत्न करना। ६. शीघ्रतापूर्वक कोई काम करने अथवा किसी काम के लिए दूसरों को उद्यत करने के लिए की जानेवाली जल्दबाजी या ताकीद।
क्रि० प्र०—मचाना।

धांवा—स्त्री०[स०] इलायची।
धांय—स्त्री०[अनु०] बदूक, तोप आदि के चलने से होनेवाला शब्द। धायँ।
धांस—स्त्री०[अनु०] कटु तथा तीक्ष्ण वस्तुओ की वह उत्कट गध, जिसके फलस्वरूप आँख, नाक, फेफडे आदि मे सुरसुराहट होने लगती है, या उनमे से कुछ पानी निकलने लगता है। जैसे—तमाकू या सुंघनी की धांस, मिर्च या प्याज की धाँस।
धांसना—अ०[अनु०]१. घोडे आदि पशुओ का खाँसना। २ घोडे आदि की तरह जोर-जोर से खाँसना। ढाँसना।
धांसी—स्त्री०[अनु०]१ घोडो की खाँसी। २ दे० 'ढाँसी'।
धा—वि०[स० √धा (धारण)+क्विप्] धारक। धारण करनेवाला।
पु० १. ब्रह्मा। २ बृहस्पति।
प्रत्य० तरह का। प्रकार का। भाँति का। जैसे—नवधा भक्ति।
पु०[स० धैवत] सगीत मे धैवत स्वर का वाचक शब्द।
पु०[अनु०] तवले, मृदग आदि का एक बोल। जैसे—कुडान धा।
†स्त्री०=धाय (दाई)।
†पु०=धव (धौ वृक्ष)।
धाइ—स्त्री०=धाय (दाई)।
पु०=धौ (वृक्ष)।
धाई—स्त्री०=धाय(दाई)।
धाउ†—पु०=धाव।
धाऊ—पु०[स० धाना=दौडना] वह जो आवश्यक कामो के लिए इधर उधर दौडाया जाय। हरकारा।
†पु०=धव (वृक्ष)।
धाक—पुं०[स० √धा+क]१ वृष। साँड। २ आहार। भोजन। ३. अन्न। अनाज। ४ खभा। ५ आधार। सहारा। ६. पानी का हौज। ७ ब्रह्म।
स्त्री०[?]१. किसी व्यक्ति के ऐश्वर्य, गुण, पद आदि का वह प्रभाव जिससे और लोग दबे तथा भयभीत रहते और उसका सामना करने से डरते हों। आतक। दबदबा। जैसे—आज-कल बाजार मे उनकी धाक है।
मुहा०—धाक जमना या बँधना=रोब या दबदबा होना। आतक छाना। धाक जमाना या बाँधना=ऐसा काम करना जिससे लोगों पर दबदबा या रोब छा जाय।
२. ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत।
†पु०=ढाक (पलास)।
धाकड़—वि०[हिं० धाक] १. जिसकी धाक या दबदबा चारो ओर हो। २. ख्यात। प्रसिद्ध। ३. हृष्ट-पुष्ट। तगडा। बलवान।
पु० १. साँड। २. बैल।
†पु०=धाकर।
धाकना*—अ०[हिं० धाक+ना (प्रत्य०)]१. धाक या रोब जमाना। २ किसी की धाक से प्रभावित होना।
धाकर—पु०[?]१. कुलीन ब्राह्मण। २. राजपूतो की एक जाति। ३. एक तरह का गेहूँ जिसकी फसल को जल की आवश्यकता नही होती।
†वि०[?] वर्ण-सकर। दोगला।
†वि०, पु०=धाकड।
धाकरा—पु०=धाकड।
धाख†—पु०[हिं० धाक] १. डर। भय। २. दुख। उदा०—कि सखि कहब कहेते धाख।—विद्यापति।
*पु०=ढाक (पलास)।
धाखा*—पु०=ढाक। (पलास)।
धागा—पु०[हिं० तागा]१. बटा हुआ महीन सूत जो प्राय सीने-पिरोने के काम आता है। २ लाक्षणिक अर्थ मे, दो पक्षों को जोडनेवाली बात या वस्तु। सूत्र।
धाड़—स्त्री०[हिं० धार] १. डाकुओ का आक्रमण। २. आक्रमण। चढाई। उदा०—महि अवण मेवाड़, राड धाड अकबर रचै।—दुरसाजी।
क्रि० प्र०—पड़ना।
३. जीव-जन्तुओ का ऐसा दल या समूह जो दूर तक पक्ति के रूप मे चला गया हो। जैसे—च्यूँटियो या बन्दरों की धाड।
†स्त्री० १. डाढ। २. ढाड।
स्त्री०[हिं० दहाड] जोर-जोर से चिल्लाकर रोने का शब्द।
क्रि० प्र०—मारना।
धाड़ना†—अ०=दहाड़ना।
धाड़स†—पु०=ढारस।
धाड़ी—स्त्री०[हिं० धाड]१. डाकुओं या लुटेरो का जत्था या दल। २. उक्त जत्थे का कोई व्यक्ति। डाकू। लुटेरा।
धाणक—पु०[स०√धा+आणक] एक प्राचीन परिमाण या मुद्रा।
†पु० दे० 'धानुक'।
धात†—स्त्री०=धातु।
धातकी—स्त्री०[स० धातु+णिच्, टिलोप + ण्वुल्—अक + ङीप्] १. एक प्रकार का झाड जिसके फूलो का व्यवहार रँगाई के काम मे होता है। २. धव या धौ का पेड़ और उसका फूल।
धातविक—वि०[स० धातु+ठक्—इक]=धातवीय।
धातवीय—वि० [स० धातु+छ—ईय] १ धातु-सबधी। धातु का। २. धातु का बना हुआ।
धाता (तृ)—वि० [स०√धा+तृच्]१ धारण करनेवाला। २ पालन-पोषण करनेवाला। पालक। ३ रक्षक।
पु०१ विधाता। ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४ शेषनाग। ५ बारह सूर्यों मे से एक। ६ ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ८ भृगु मुनि के एक पुत्र का नाम। ८ उनचास वायुओ मे से एक। ९ साठ सवत्सरो मे से एक। १० टगण का आठवाँ भेद। ११ सप्तर्षि। १२ उपपति।
धातु—स्त्री०[स०√धा+तुन्]१ वह मूल तत्त्व जिससे कोई चीज बनी हो। पदार्थ या वस्तु का उपादान। २. पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँचों महाभूतो मे से प्रत्येक जो अलग-अलग या मिलकर पदार्थों की रचना या सृष्टि करते हैं। ३. शरीर को धारण करने या बनाये रखनेवाले तत्त्व जिनकी सख्या वैद्यक मे ७ कही गई है। यथा—रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।
विशेष—कहा गया है कि जो कुछ हम खाते-पीते है, उन सबसे क्रमात्

उक्त सात धातुएँ बनती है, जिनसे हमारा शरीर बनता है। कुछ लोग वात, पित्त और कफ की गणना भी धातुओ मे ही करते है। कुछ लोग इन सात धातुओ मे केश, त्वचा और स्नायु को भी सम्मिलित करके इनकी सख्या १० मानते हैं।

४ कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज पदार्थ जिनकी सख्या हमारे यहाँ ७ कही गई है। यथा—चाँदी, जस्ता, ताँबा, राँगा, लोहा, सीसा, और सोना।

विशेष—उक्त सात धातुओं के सिवा हमारे यहाँ वैद्यक मे सात उप-धातुएँ भी कही गई हैं—काँसा, तूतिया, पीतल, रूपामक्खी, सोनामक्खी शिलाजीत, और सिंदूर। इनके सिवा खडिया, गंधक, मैनसिल, आदि सभी खनिज पदार्थों की गिनती हमारे यहाँ धातुओ मे होती है। परन्तु आधुनिक विज्ञान की परिभाषा के अनुसार धातु उस खनिज पदार्थ को कहते हैं; जो चमकीला तो हो, परन्तु पारदर्शी न हो, जिसमे ताप, विद्युत् आदि का सचार होता हो, जो कूटने, खीचने, पीटने आदि पर बढ सके अर्थात् जिसके तार और पत्तर बन सकें। इन सात धातुओ के सिवा काँसा, पीतल आदि धातु ही हैं। समय-समय पर अनेक नई धातुएँ भी मिलती रहती हैं। खानों मे ये धातुएँ अपने विशुद्ध रूप मे नही निकलती, बल्कि उनमे अनेक दूसरे तत्त्व भी मिले रहते हैं। उन मिश्रित रूपो को साफ करने पर धातुएँ अपने बिलकुल शुद्ध रूप मे आती हैं।

५ सस्कृत व्याकरण मे, क्रियाओं के वे मूल रूप जिससे उनके भिन्न-भिन्न विकारी रूप बनते हैं। जैसे—अस्, कृ, घृ, भू आदि।

विशेष—इन्ही के आधार पर अब हिन्दी मे भी कर, खा, जा, आदि रूप धातु माने जाने लगे है। ६ गौतम बुद्ध अथवा अन्य बौद्ध महापुरुषो की अस्थियाँ जिनको उनके अनुयायी डिब्बो मे बन्द करके स्मारक रूप मे स्थापित करते थे। ७ बौद्ध-दर्शन मे वे तत्त्व या शक्तियाँ जिनसे सब घटनाएँ होती हैं। ८ पुरुष का वीर्य। शुक्र।

मुहा०—धातु गिरना या जाना=पेशाब के रास्ते या उसके साथ वीर्य का पतला होकर निकलना जो एक रोग है।

९. परमात्मा। परब्रह्म। १०. आत्मा। ११ इंद्रिय। १२ अंग, खड या भाग। १३ पेय पदार्थ।

धातु-काशीस (कसीस)—पु०[मध्य०स०] दे० 'कसीस'।

धातु-क्षय—पु०[प०त०]१ खासी का रोग जिससे शरीर क्षीण होता है। २ प्रमेह आदि रोग जिनसे धातु अर्थात् वीर्य का क्षय होता है। ३ क्षयरोग।

धातु-गर्भ—पु०[ब०स०] वह डिब्बा या पिटारी जिसमे बौद्ध लोग बुद्ध या अपने अन्य साधु महात्माओ के दात या हड्डियाँ आदि सुरक्षित रखते हैं। देहगोप।

धातुगोप—पु०=धातु-गर्भ।

धातुघ्न—वि०[स० धातु√हन् (मारना)+टक्] धातु को नष्ट करने या मारनेवाला।

पु० वह पदार्थ जिसमे शरीर का धातु नष्ट हो। जैसे—काँजी, पारा आदि।

धातु-चैतन्य—वि० [ब०स०] धातु को जाग्रत तथा। चैतन्य करनेवाला।

धातुज—वि०[स० धातु√जन् (उत्पत्ति)+ड] धातु से उत्पन्न, अर्थात् निकला या बना हुआ।

पु० खनिज या शैलज तेल।

धातु-द्रावक—वि०[प०त०] धातु को गलाने या पिघलानेवाला।

पु० सुहागा जिसके योग से सोना आदि धातुएँ गलाई जाती है।

धातु-नाशक—वि०, पु०[प०त०]=धातुघ्न।

धातुप—पु०[स० धातु√पा (रक्षा)+क] वैद्यक के अनुसार शरीर का वह रस या पतला धातु जो भोजन के उपरात तुरन्त बनता है और जिससे शरीर की अन्य धातुओं का पोषण होता है।

धातु-पाठ—पु० [ब०स०] पाणिनि कृत सस्कृत व्याकरण के अनुसार उन धातुओ अर्थात् क्रियाओ के मूलरूपों की सूची जो सूत्रो से भिन्न है। (यह सूची भी पाणिनि की ही प्रस्तुत की हुई मानी जाती है।)

धातु-पुष्ट—वि०[ब०स०] शरीर का वीर्य बढाने तथा पुष्ट करनेवाला।

धातु-पुष्पिका—स्त्री० [ब०स०, ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] धव या धौ का फूल।

धातु-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीप्]=धातु-पुष्पिका।

धातु-प्रधान—पु०[स०त०] वीर्य। (डिं०)

धातुवैरी—पु० [स० धातुवैरिन्] गधक।

धातुभृत्—वि०[स० धातु√भृ (पोषण)+क्विप्] जिससे धातु का पोषण हो।

पु० पर्वत। पहाड।

धातुमत्ता—स्त्री०[सं० धातुमत्+तल्—टाप्] धातुमान होने की अवस्था, गुण या भाव।

धातुमय—वि० [स० धातु+मयट्] १. जिसमे धातु मिली हो। धातु से युक्त। २ (प्रदेश या स्थान) जिसमे धातुओ आदि की खाने हो।

धातु-मर्म—पु०=धातुवाद। (देखें)

धातु-मल—पु०[प०त०]१ शरीरस्थ धातुओं के विकारी अश जो कफ, नख, मैल आदि के रूप मे शरीर से बाहर निकलते है। २. धातुओ आदि को गलाने पर उनमे से निकलनेवाला फालतू या रद्दी अश। खेडी। (स्लैग)

धातु-माक्षिक—पु०[मध्य०स०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

धातु-मान्(मत्)—वि०[स० धातु+मतुप्] जिसमे या जिसके पास धातुएँ हो।

धातुमारिणी—स्त्री०[स० धातुमारिन्+ङीप्] सुहागा।

धातु-मारी (रिन्)—पु०[स० धातु√मृ (मरना)+णिच्+णिनि]गँधक।

धातुयुग—पु० [प०त०]मानव जाति के इतिहास मे वह युग जब उसने पहले पहल धातुओ का उपयोग करना प्रारभ किया था। और जो प्रस्तर-युग के बहुत बाद आया था। (मैटलिक एज)

धातुराग—पु० [मध्य०स०] ऐसा रग, जो धातुओ मे से निकलता हो अथवा उनके योग से बनाया जाता हो। जैसे—ईंगुर, गेरू आदि।

धातु-राजक—पु०[प० त०+कन्] प्रधान या श्रेष्ठ शरीरस्थ धातु—शुक्र (वीर्य)।

धातु-रेचक—वि०[प०त०] (वस्तु) जिसके सेवन से धातु का स्खलन हो।

धातु-वर्द्धक—वि०[प०त०] धातु (वीर्य) का अभिवर्द्धन करनेवाला।

धातु-वल्लभ—पु०[स०त०] सुहागा।

धातु-वाद—पु०[प०त०]१. वह कला या विद्या जिससे खान से निकली हुई कच्ची धातुएँ साफ की जाती और एक मे मिली हुई कई धातुएँ अलग-अलग की जाती है। (इसकी गिनती ६४ कलाओ मे की गई है) २. भिन्न-भिन्न धातुओ से सोना बनाने की विद्या। कीमियागरी। ३. रसायन शास्त्र।

धातुवादी (दिन्)—पु०[स० धातुवाद+इनि]१. वह जो धातुवाद का अच्छा ज्ञाता हो। २ रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

धातु-विज्ञान—पु०[पु० त०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता हे कि धातु मे क्या-क्या गुण या विशेपताएँ होती है, उसकी भौतिक रचना कैसे हुई है, किस प्रकार परिष्कृत या शुद्ध की जाती है और उन्हे किस प्रकार मिलाकर भिन्न धातुएँ बनाई जाती है। (मेटलर्जी)

धातु-वैरी (रिन्)—पु०[प०त०] गधक।

धातु-शेखर—पु०[प०त०]१ कसीस। २ सीसा।

धातु-सज्ञ—पु०[व०स०] सीसा।

धातु-स्तभक—वि०[प०त०](औपध या पदार्थ) जो वीर्य को शरीर मे रोक रखे और जल्दी से निकलने या स्खलित न होने दे।

धातुहन—पु०[स० धातु√हन् (नष्ट करना)+अच्] गधक।

धातू—स्त्री०=धातु।

धातूपल—पु० [धातु-उपल, मध्य०स०] घडिया मिट्टी।

धातृका—स्त्री० [स० धात्रिका] वह स्त्री जो रोगियो की सेवा-शुश्रूपा विशेषत जच्चा और वच्चा की देख-रेख करती हो और ऐसे कार्य करने मे प्रशिक्षित हो। (नर्स)

धातृ-पुत्र—पु०[स० प०त०] ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार।

धातृ-पुष्पिका (पुष्पी)—स्त्री० [स० व० स०, डीप्, +कन्+टाप्, ह्रस्व] धवर्क या धौ के फूल।

धात्र—पु०[स०√धा+ष्ट्रन्]१ पात्र। वरतन। २ आधान।

धात्रिका—स्त्री०[स० धात्री+कन्—टाप्, ह्रस्व] छोटा आँवला। आमलकी।

धात्री—स्त्री०[स० धात्र+डीप्]१. माता। माँ। २ वच्चे को दूध पिलानेवाली दाई। धाय। ३ गायत्री स्वरुपिणी भगवती और माता। ४ पृथ्वी जो सव की माता हे। ५ गौ, जिसका दूध माता के दूध के समान होता हे। ६ गगा नदी। ७ आँवला। ८ फौज। सेना। ९ आर्या छन्द का एक भेद।

धात्री-पत्र—पु०[व०स०]१ तालीस-पत्र। २ आँवले की पत्ती।

धात्री-पुत्र—पु०[प०त०] धाय का लडका।

धात्री-फल—पु०[प०त०] आँवला।

धात्री-विद्या—स्त्री० [प०त०] वह विद्या जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि गर्भवती स्त्रियो को किस प्रकार प्रसव कराना चाहिए और प्रसूता तथा शिशु की किस प्रकार देख-रेख करनी चाहिए। (मिडवाइफ़री)

धात्रेयी—स्त्री० [स० धात्री+ढक्—एय+डीप्]१ धात्री की वेटी। २ धात्री। दाई।

धात्वर्थ—पु०[स० धातु-अर्थ] शब्द या वह पहला या मूल अर्थ जो उसकी धातु (पद या शब्द की प्रकृति) से निकलता हो। प्राथमिक अर्थ। जैसे—प्रभाकर का धात्वर्थ है—प्रभा या प्रकाश करनेवाला।

धात्वीय—वि०[स० धातु+छ—ईय] १. धातु-सवधी। धातु का। २. धातु का वना हुआ।

धाधना †—स०[?] देखना।

अ०, स०,=धाँधना।

धान—पु०[स० धान्य]१. तृण जाति का एक प्रसिद्ध पौवा जिसके बीजो का चावल होता है। व्रीहि। शालि। (इसकी सैकडो जातियाँ या प्रकार होते है)२. चावल का वह रुप जिसमे उसके चारो ओर छिलका लगा रहता है।

विशेष—जव धान कूटा जाता है, तव उसका छिलका या भूसी उतर जाती है और अन्दर से चावल निकल आता है।

३. अन्न। अनाज। ४ किसी का दिया हुआ भोजन।

धानक—पु०[स० धन्याक, पृपो० सिद्धि] १ धनियाँ। २. एक रत्ती का चौथाई भाग।

पु०[स० धानुष्क]१. धनुर्धर। २. रुई धुननेवाला। धुनिया। ३. एक पहाडी जाति।

धानकी—पु०[हिं० धानुक]१ धनुर्धर। धनुर्द्धारी। २. कामदेव। (डिं०)

धानजई—पु०[हिं० धान+जई] धान की एक किस्म।

धान-पान—पु०[हिं० धान+पान] विवाह से कुछ ही पहले होनेवाली एक रसम जिसमे वर-पक्ष से कन्या के घर धान और हल्दी भेजी जाती हैं।
वि० धान और पान की तरह वहुत ही कोमल अथवा दुवला-पतला। नाजुक। उदा०—चोटी का वोझ ऊई, उठाये जो यह कमर, वूता नही है इतना मुझ धान-पान मे।—जान साहव।

धानमाली—पु०[स०?] दूसरे के चलाये हुए अस्त्र का प्रतिकार करने या उसे रोकने की एक क्रिया।

धाना—अ०[स० धावन] १ दौडाना। २. वहुत तेजी से चलते हुए आगे वढना।

मुहा०—धाय पूजना=(क) धाकर और दौडते हुए जाकर किसी को पूजना। (ख) विलकुल अलग या वहुत दूर रहना। (परिहास और व्यग्य)

३ किसी काम के लिए प्रयत्न करते समय इधर-उधर दौड-धूप करना।

स्त्री०[स०√धा(धारण)+न—टाप्]१. भुना हुआ जौ या चावल। वहुरी। २ अन्न का कण या छोटा दाना। ३. सत्तू। ४. धान। ५ अनाज। अन्न। ६ पौधो आदि का अकुर। ७ धनियाँ।

धाना-चूर्ण—पु०[प०त०] सत्तू।

धाना-भर्जन—पु०[प०त०] अनाज भूनना।

धानी—स्त्री० [स०√धा+ल्युट्—अन+डीप्]१ जगह। स्थान। २. ऐसा स्थान जिसमे किसी का निवास हो या कोई रहे। जैसे—राजधानी। ३. ऐसी जगह जो किसी के लिए आधार या आश्रय का काम दे। उदा०—सका तै सकानी, लका रावन की राजधानी, पजरट पानी धूरि धानी भयो जात है।—सेनापति। ४. ऐसा आधार जिसमे या जिस पर कोई चीज रखी जाय। (स्टैंड) जैसे—शूकधानी। ५ धनियाँ। ६. पीलू वृक्ष।

वि० [स० धारण] धरण करनेवाला।

स्त्री०[स० धाना] भुना हुआ गेहूँ या जौ। जैसे—गुडधानी।

स्त्री०[?] सपूर्ण जाति की एक रागिनी।
वि० [हिं० धान] धान की हरी पत्तियो के से रग का। हलका हरा। जैसे—धानी दुपट्टी।
पु० उक्त प्रकार का हलका हरा रग जो धान की पत्तियो के रग से मिलता-जुलता है।
धानुक—पु०[सं० धानुष्क]१. धनुष चलाने मे कुशल व्यक्ति। कमनैत। धनुर्द्धर। उदा०—धानुक आयु वेझ जग कीन्हा।—जायसी। २. एक जाति जो प्राय कहारो की तरह सेवा-कार्य करती है। ३. इस जाति का व्यक्ति।
धानुक्की†—पु०=धानुक (धनुर्धारी)।
धानुर्दंडिक—पु० [स० धनुर्दंड+ठक्—इक] =धानुष्क।
धानुष्क—पु० [स० धनुस्+ठक्—क] कमनैत। धनुर्धर।
धानुष्का—स्त्री० [स० धानुष्क+टाप्] अपामार्ग। चिचडा।
धानुष्य—पुं० [सं० धनुस्+ष्यञ्] एक प्रकार का बाँस जिससे धनुष बनते थे।
धानेय—पु० [स० धाना+ढक्—एय] धनियाँ।
धान्य—पु० [स० धान+यत्] १. अनाज। अन्न। गल्ला। २. ऐसा चावल जिसका छिलका निकाला न गया हो। धान।
पद—धन-धान्य=आर्थिक संपत्ति और खाने-पीने के समस्त पदार्थ या साधन।
३ धनियाँ। ४ प्राचीन काल की चार तिलो के बराबर एक तौल या परिमाण। ५. केवटी मोथा। ६ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
धान्यक—पुं० [स० धान्य+कन्] १. धनियाँ। २ धान।
धान्य-कूट—पु०=धान्य-कोष्ठक।
धान्य-कोष्ठक—पु० [प० त०] अनाज रखने के लिए बना हुआ बडा बरतन। कोठिला। गोला।
धान्य-चमस—पु० [मयू० स०] चिडवा।
धान्यचारी (रिन्)—पुं०[स० धान्य√चर् (गति)+णिनि] चिडिया। पक्षी।
धान्यजीवी (विन्)—वि० [स० धान्य√जीव् (जीना)+णिनि] धान्य खाकर जीवन-निर्वाह करनेवाला।
पु० चिडिया। पक्षी।
धान्यतुषोद—पु० [स०] काँजी।
धान्य-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] अन्न की ढेरी जिसे गौ मानकर दान किया जाता था।
धान्य-पंचक—पु० [प० त०] १ शालि, व्रीहि, शूक, शिंबी, और क्षुद्र ये पाँच प्रकार के धान। २. वैद्यक मे एक प्रकार का तैयार किया हुआ पानी जो पाचक कहा गया है। ३. वैद्यक मे एक प्रकार का औषध।
धान्य-पति—पुं० [प० त०] १ चावल। २ जौ।
धान्य-पानक—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का पन्ना या पेय पदार्थ जो धनिये के योग से बनाया जाता है।
धान्य-बीज—पु० [प० त०] धनिये के बीज।
धान्य-भोग—पुं० [स०] ऐसी उपजाऊ भूमि जिसमे अन्न बहुत अधिक मात्रा मे उत्पन्न होता हो।
धान्यमालिनी—स्त्री० [म०] रावण के दरबार की एक राक्षसी जिसे उसने जानकी को बहकाने के लिए नियुक्त किया था।
धान्यमाप—पु० [स०] अन्न मापने का एक प्राचीन परिमाण।
धान्य-मुख—पुं० [ब० स०] चीर-फाड करने का एक प्राचीन उपकरण। (सुश्रुत)
धान्य-मूल—पु० [ब० स०] काँजी।
धान्य-यूष—पु० [प० त०] काँजी।
धान्य-योनि—स्त्री० [ब० स०] काँजी।
धान्य-राज—पु० [प० त०] जौ।
धान्य-वर्धन—पुं० [ब० स०] अन्न उधार देने की वह रीति जिसमे मूल और ब्याज दोनो अन्न के रूप मे ही लिया जाता था।
धान्य-वाप—पु० [ब० स०] ऐसी उपजाऊ भूमि जहाँ अन्न बहुतायत से पैदा होता हो।
धान्य-बीज—पु० [प० त०] १. धान का बीज। २ [ब० स०] धनियाँ।
धान्य-वीर— पु० [स० त०] उडद। माष।
धान्य-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] चीनी मिला हुआ धनिए का पानी जो अतर्दाह शात करने के लिए पीया जाता है।
धान्य-शीर्षक—पु० [प० त०] गेहूँ, धान आदि पौधो की बाल।
धान्य-शैल—पु० [मध्य० स०] दान करने के निमित्त लगाई हुई अन्न की बहुत बडी ढेरी।
धान्य-सार—पु० [प० त०] चावल।
धान्या—स्त्री० [स० धान्य+टाप्] धनिया।
धान्याक—पु० [स० धान्य√अक् (गति)+अण्] धनिया।
धान्याचल—पु० [धान्य-अचल, मध्य० स०] =धान्य-शैल।
धान्याभ्रक—पुं०[सं०] १. वैद्यक मे भस्म बनाने के लिए धान की सहायता से शोधा और साफ किया हुआ अभ्रक। २ उक्त प्रकार से अभ्रक शोधने की क्रिया।
धान्याम्ल—पु० [धान्य-अम्ल, मध्य० स०] काँजी।
धान्याम्लक—पु० [स० धान्याम्ल+कन्] धान से बनी हुई काँजी।
धान्यारि—पु० [धान्य-अरि, प० त०] धान का शत्रु, चूहा।
धान्यार्थ—पु० [धान्य-अर्थ, मध्य० स०] अन्न या धान के रूप मे होनेवाली संपत्ति।
धान्याशय—पु० [धान्य-आशय, प० त०] अन्नशाला। अन्न का भडार।
धान्यास्थि—स्त्री० [धान्य-अस्थि प० त०] धान का छिलका। भूसी।
धान्योत्तम—पु० [धान्य-उत्तम, म० त०] उत्तम प्रकार का धान; शालि।
धान्वंतर्य—पु० [स० धन्वन्तरि+ष्यञ्] धन्वतरि देवता के उद्देश्य से होनेवाले होम आदि।
धान्व—वि० [सं० धन्व+अण्] १ धन्व से सबध रखनेवाला। २. धन्व देश मे होनेवाला। ३ मरुदेश सबधी।
धान्वन—वि० [स०]=धान्व।
धाप†—पु० [हिं० धापना] १. धापने की क्रिया या भाव। २. दूरी की प्राय एक अनिश्चित नाप। उतनी दूरी जितनी प्राय. एक साँस मे दौडकर पार की जा सके।
पद—धाप भर=थोड़ी दूर पर। पास ही मे।
३. लबा-चौड़ा मैदान।

पु० [?] पानी की धार। (लश०)
स्त्री० [?] तृप्ति।
धापना—अ० [स० धावन] १ दूर तक चलना। २. किसी काम के लिए इधर-उधर आना-जाना या दौड-धूप करना। ३. दौडना। ४ परेशान या हैरान होना।
अ० [?] तृप्त होना। अघाना।
स० तुष्ट या तृप्त करना।
धावरी—स्त्री० [देश०] कबूतरो का दरबा।
धावा—पु० [देश०] १ छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २. वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी-पकाई कच्ची रसोई बैठकर खाने को मिलती हो। बासा।
धा-भाई—पु० [हिं० धा=धाय+भाई] दो विभिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न वे बच्चे जो एक ही धाय या दाई का दूध पीकर पले हों। दूध-भाई।
धाम(मन्)—पु० [स०√धा (धारण)+मनिन्] १ रहने का स्थान। २ घर। मकान। ३ कोई बहुत बडा तीर्थ, देवस्थान या पुण्य-स्थान। जैसे—चारो धाम।
पद—परम धाम=स्वर्ग।
४. ब्रह्मा। ५ परलोक। ६ स्वर्ग। ७ विष्णु। ८ आत्मा। ९. देह। शरीर १० जन्म। ११ किरण। उदा०—धाम की है निधि, जाके आगे चद मद-दुति ....।—सेनापति। १२. ज्योति। उदा०—भाल मध्य निकर दहन दिन धाय के।—सेनापति। १३. तेज। १४ शोभा। १५. प्रभाव। १६ अवस्था। दशा। १७. बागडोर। लगाम। १८ चारदीवारी। प्राचीर। १९ देवताओं का एक वर्ग। (महाभारत) २० फौज। सेना। २१. समूह। २२ कुटुब या परिवार का आदमी।
पु० [देश०] फालसे की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड जो मध्य और दक्षिण भारत मे पाया जाता है।
धामक—पु० [स० धानक, पृषो० सिद्धि] माशा (तौल)।
धामक-धूमक†—स्त्री०=धूम-धाम।
धामन—पु० [देश०] १ फालसे की एक जाति। २. एक प्रकार का बाँस।
स्त्री० रेतीली भूमि मे होनेवाली एक प्रकार की घास।
स्त्री०=धामिन।
धामनिका—स्त्री०=धामनी।
धाम-निधि—पु० [ष० त०] सूर्य।
धामनी—स्त्री० =धमनी।
धामभाज्—पु० [स० धामन्√भज् (पाना)+ण्वि] अपना भाग लेने के लिए यज्ञ मे सम्मिलित होनेवाले देवता।
धामश्री—स्त्री० [स०] एक रागिनी जिसके गाने का समय दिन मे २५ दड से २८ दड तक माना गया है।
धामस-धूमस†—स्त्री०=धूम-धाम।
धामा—पु० [हिं० धाम] १ ब्राह्मणो को मिलनेवाला भोजन का निमत्रण। खाने का नेवता। २ बेत का बुना हुआ एक प्रकार का टोकरा या बडी डौरी। ३ अनाज आदि रखने का बडा बरतन। (पश्चिम)
धामार्गव—पु० [स० धा-मार्ग ष० त०, धामार्ग√वा (गति)+क] १ लाल चिचडा। २. घीआ-तोरी।
धामासा†—पु०=धमासा।
धामिन—स्त्री० [हिं० धाना=दौडना] हरे रग की झलक लिये हुए सफेद रग का साँप जो बहुत तेज चलने या दौड़ने के लिए प्रसिद्ध है।
पु०=धामन।
धामिया—पु० [हिं० धाम] १. एक आधुनिक पंथ या सम्प्रदाय। २. उक्त पथ का अनुयायी व्यक्ति।
धायँ—स्त्री० [अनु०] १ बदूक, तोप आदि चलने से होनेवाला भीषण शब्द। २ आग की लपटों से हवा के टकराने से होनेवाला शब्द।
पद—धायँ धायँ=धायँ धायँ शब्द करते हुए। जैसे—चिता धायँ धायँ जल रही थी।
धाय—स्त्री० [स० धात्री] वह स्त्री जो किसी के बच्चे को दूध पिलाती हो। दूध पिलानेवाली दाई।
पु० [स०] पुरोहित।
पु०=धव (वृक्ष)।
धायक—वि० [स०√धा+ण्वुल्—अक] धारण करनेवाला।
वि० [हिं० धाना]=धावक (दौडनेवाला)।
धयना—अ०=धाना (दौडना)।
धाया—स्त्री० [स०] वह वेद मत्र जो अग्नि प्रज्वलित करते समय पढा जाता है।
स्त्री०=धाय (दाई)।
धार—पु० [स० धारा+अण्] १ जोरों से होनेवाली वर्षा। २ वर्षा का इकट्ठा किया हुआ जल। ३ उधार लिया हुआ धन या पदार्थ। ऋण। कर्ज। ४. प्रदेश। प्रात। ५ विष्णु। ६ आमेला। ७. सीमा। ८. एक प्रकार का पत्थर।
वि० [√धृ (धारण)+अण्] १. धारण करनेवाला। २ सहारा देनेवाला। ३ बहता हुआ या बहनेवाला। ४. गहरा। गभीर।
स्त्री० [स० धारा] १ किसी तरल पदार्थ के किसी दशा मे निरतर बहते हुए होने की अवस्था। धारा। जैसे—पानी-कल की धार के नीचे बैठकर नहाना।
मुहा०—धार टूटना=धार का प्रवाह बीच मे खडित होना या रुकना। (कोई चीज) धार पर मारना=(किसी चीज पर) धार मारना। धार बँधना=तरल पदार्थ का इस प्रकार गिरना या बहना कि उसकी धार बन जाय। (किसी चीज पर) धार मारना=इतनी अधिक उपेक्षा सूचित करना कि मानो उस पर पेशाब कर रहे हो। जैसे—ऐसी नौकरी पर हम धार मारते है।
२ पानी का सोता। चश्मा। ३ जल-डमरू-मध्य। (लश०) ४ पशु आदि का स्तन दबाने पर उसमे से धारा के रूप मे निकलनेवाला दूध।
मुहा०—धार चढाना=पवित्र नदी, देवता आदि को दूध चढाना। धार देना=धार चढाना। (मादा पशु का) धार देना=दुहने पर दूध देना। धार निकालना=मादा पशुओ को दुहकर उसके स्तनो से दूध की धार निकालना।

५. काट करने वाले हथियार का वह तेज या पैना किनारा जिससे कोई चीज काटते है। बाढ। जैसे—चाकू या तलवार की धार।

मुहा०—(किसी हथियार की) धार बाँधना=मत्र बल से ऐसा प्रभाव उत्पन्न करना कि हथियार की धार काट करने मे असमर्थ हो जाय।

६. किनारा। छोर। सिरा। ७. सेना। फौज। ८ बहुत से लोगों के द्वारा कुछ लोगो पर होनेवाला आक्रमण अथवा उक्त प्रकार के आक्रमण के लिए होनेवाला अभियान। धाड।

मुहा०—धार पड़ना=उक्त प्रकार का आक्रमण होना।

९. बहुत बड़ा दल या समूह। जैसे—धार की धार बदर आ गये। १०. ओर। तरफ। दिशा। ११. जहाज के फर्श पर तख्तो के बीच का जोड़ या सधि जो सीधी रेखा के रूप मे होती है। कस्तूरा। (लश०) १२. पहाडो की श्रृखला। पर्वत-माला। १३ रेखा। लकीर।

पु० [स० धारण] १ चोबदार या द्वारपाल। (डिं०) २. लकड़ी का वह टुकड़ा जो कच्चे कूएँ के मुंह पर इसलिए लगाया जाता है कि ऊपर की मिट्टी कूएँ मे न गिरने पावे।

प्रत्य० [स०] १. एक प्रत्यय जो कुछ सस्कृत शब्दों के अंत मे लगकर 'धारण करनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे—कर्ण-धार। २. एक प्रत्यय जो कुछ हिन्दी धातुओं के अत मे लगकर 'कर्ता', 'धारक' आदि का अर्थ देता है। जैसे—लिखधार=लिखनेवाला।

धारक—वि० [स०√धृ+ण्वुल्—अक] १. धारण करनेवाला। धारनेवाला। २. रोकनेवाला। ३ उधार लेनेवाला। ४. (व्यक्ति) जो कोई चीज कही लेकर जाय। वाहक। जैसे—इस चेक या हुडी के धारक को रुपए दे दें।

पुं० कलश। घड़ा।

धारका—स्त्री० [स० धारक+टाप्] १. स्त्री की मूत्रेंद्रिय। २. भग। योनि।

धारण—पुं० [स०√धृ+णिच्+ल्युट्—अन] १. कोई चीज ठीक तरह उठाना, पकडना या सँभालना। जैसे—शस्त्र धारण करना। २. आभूषण, वस्त्र आदि के सबध मे अगो पर रखना, लपेटना या चढाना। पहनना। ३. स्मृति मे रखना। याद रखना। ४. कोई बात, विचार या सकल्प मन मे स्थिर करना। जैसे—व्रत धारण करना। ५. अगीकार करना। ६. खाद्य के रूप मे सेवन करना। खाना। ७. उधार या ऋण लेना। ८. शिव। ९ कश्यप के एक पुत्र का नाम।

धारणक—पुं० [स०] ऋणी। कर्जदार।

धारणा—स्त्री० [स०√धृ+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ धारण करने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव। २. वह आतरिक शक्ति जिसके द्वारा जानी, देखी या सुनी हुई बात का ज्ञान या ध्यान मन मे स्थायी रूप से रहता है। ३. किसी कार्य, विषय या प्रसग के सबध मे मन मे बना हुआ कोई व्यक्तिगत विचार या विश्वास। जैसे—हमारी तो अब तक यही धारणा है कि रुपए वही चुरा ले गया है। ४. मर्यादा। ५ याद। स्मृति। ६. योग के आठ अगो मे से एक जिसमे प्राणायाम करते हुए मन को सब ओर से हटाकर निर्विकार, शांत और स्थिर किया जाता है। ७. मन की दृढता और स्थिरता। ८ बृहत्सहिता के अनुसार ज्येष्ठ मास की शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक पड़नेवाला एक योग, जिसमे वायु की गति देखकर यह निश्चित किया जाता है कि इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी या नही।

धारणावान् (वत्)—वि० [स० धारण+मतुप्] [स्त्री० धारणावती] जिसकी धारणा-शक्ति बहुत प्रबल हो। मेधावी।

धारणिक—पु० [स० धारण+ठक्—इक] १. ऋणी। कर्जदार। २. धन जमा कर के रखने की जगह। खजाना। ३. वह व्यक्ति जिसके पास कोई चीज अमानत या धरोहर के रूप मे जमा की जाय। महाजन।

धारणी—स्त्री० [स०√धृ+णिच्+ल्युट्—अन, ङीप्] १ नाडिका। नाडी। २. पक्ति। श्रेणी। ३ सीधी रेखा या लकीर। ४. पृथ्वी जो सबको धारण किये रहती है। ५. बौद्ध-तत्र का एक अग।

धारणीमति—स्त्री० [स०] योग मे एक तरह की समाधि।

धारणीय—वि० [स०√धृ+णिच्+अनीयर] [स्त्री० धारणीया] जो धारण किये जाने के योग्य हो। जिसे धारण करना आवश्यक या उचित हो।

पु० १. धरणीकंद। २ तान्त्रिको का एक प्रकार का मत्र।

धार-धूरा—पु० [हिं० धार+धूरा (धूल)] नदी के उतरने पर निकलनेवाली जमीन। गंगबरार।

धारना—स० [स० धारण] १. अपने ऊपर रखना या लेना। धारण करना। २. ग्रहण करना। लेना। उदा०—दड छोड़ कोदड-कमडलु, धार चला था। —मैथिली शरण। ३ ऋण या कर्ज लेना। ४. मन मे कुछ निश्चय करना। धारणा बनाना।

स० =ढारना या ढालना।

†स्त्री०=धारणा।

†स०[हिं० धरना] स्थापित करना। रखना। उदा०—जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम धारा।—तुलसी।

धारयिता (तृ)—वि० [स०√धृ+णिच्+तृच्] [स्त्री० धारयित्री] १. धारण करनेवाला। २. ऋण लेनेवाला।

धारयित्री—वि० स्त्री० [स० धारयितृ+ङीप्] 'धारयिता' का स्त्री०। स्त्री० पृथ्वी।

धारयिष्णु—वि० [स०√धृणिच्+इष्णुच्] धारण करने मे समर्थ। जो धारण कर सकता हो।

धारस†—पु०=ढारस।

धारांकुर—पु० [स० धारा-अकुर ष० त०] १. सरल का गोंद। २. आकाश से गिरनेवाला ओला। घनोपल।

धारांग—पु० [स० धारा-अग ब० स०] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २. खड्ग।

धारा—स्त्री० [स०√धृ+णिच्+अङ्—टाप्] १. पानी या किसी तरल पदार्थ की तेज और लगातार बहनेवाली धार। तरल पदार्थ का एक रेखा मे निरंतर चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—नदी की धारा, रक्त की धारा। २. पानी या तरल पदार्थ का रेखा के रूप मे ऊपर से निरतर गिरता रहनेवाला क्रम। जैसे—बादलो मे धारा के रूप मे जल बरस रहा था। ३. लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज या बात का निरतर चलनेवाला क्रम। ४. किसी का निरतर प्रवाह या स्रोत। जैसे—विद्युत् की धारा। ५ पानी का झरना। सोता। चश्मा। ६ घड़े आदि मे पानी गिरने के लिए बनाया हुआ छेद। ७ किसी चीज

का किनारा या छोर। ८ हथियार की धार। बाढ़। ९. शब्दों की पंक्ति। वाक्यावली। १० बहुत जोरों से होनेवाली वर्षा। ११. झुंड। दल। समूह। १२. सेना का अगला भाग। १३ औलाद। संतान। १४. उत्कर्ष। उन्नति। तरक्की। १५. रथ का पहिया। १६. कीर्ति। यश। १७. मध्य भारत की एक प्राचीन नगरी जो मालवा की राजधानी थी। १८. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ। १९ रेखा। लकीर। २०. पहाड़ की चोटी। २१ घोड़े की गति या चाल। २२. आज-कल किसी नियम, नियमावली, विधान आदि का वह स्वतंत्र अंश जिसमें किसी एक विषय से संबंध रखनेवाली सब बातों का एक अनुच्छेद में उल्लेख होता है और जिसके पहले क्रमात् संख्या-सूचक अंक लगे होते हैं। दफा। (सेक्शन) जैसे—भारतीय संविधान की १४४ वीं धारा।

धारा-कदंब—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का कदम का पेड़।

धारा-गृह—पु० [मध्य० स०] १ प्रासाद या महल का वह कमरा जिसमें राज-परिवार के लोगों के नहाने के लिए फुहारे आदि लगे रहते थे। २ स्नानागार।

धाराग्र—पु० [स० धार-अग्र प० त०] तीर या बाण का आगेवाला चौड़ा सिरा।

धाराट—पु० [स० धारा√अट् (गति)+अच्] १. चातक पक्षी। २. बादल। मेघ। ३ घोड़ा। ४ मस्त हाथी।

धारा-धर—पु० [प० त०] १ धाराओं को धारण करनेवाला, बादल। २. तलवार।

धारा-पूप—पु० [धारा-अपूप मध्य० स०] दूध में सने हुए मैदे का बना हुआ पूआ।

धारा-प्रवाह—पु० [प० त०] धारा का बहाव। धारा का वेग। क्रि० वि० नदी आदि की धारा के प्रवाह के रूप में या उसकी तरह। निरंतर तथा अटूट क्रम से। जैसे—वे संस्कृत में धारा-प्रवाह भाषण करते थे।

धारा-फल—पु० [ब० स०] मदनवृक्ष। मैनफल वृक्ष।

धारा-यंत्र—पु० [प० त०] वह यंत्र जिसमें धारा के रूप में जल निकले। जैसे—पिचकारी, फुहारा।

धाराल—वि० [स० धारा+लच्] (अस्त्र) जिसकी धार चोखी या तेज हो।

धाराली—स्त्री० [स० धाराल] १ तलवार। २. कटार। (डिं०)

धारावनि—पु० [स० धारा-अवनि प० त०] वायु। हवा।

धारावर—पु० [स० धारा √वृ (आच्छादन) + अच्] मेघ। बादल।

धारा-वर्ष—पु० [तृ० त०] धारा के रूप में होनेवाली बहुत तेज वर्षा।

धारावाहिक—वि० [स० धारावाहिन्+कन्] १ जिसका क्रम धारा की तरह निरंतर चलता रहे। २ (पत्र, पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित होनेवाला लेख) जो क्रमशः खंडों के रूप में बराबर कई अंशों में प्रकाशित होता रहे।

धारावाही (हिन्)—वि० [स० धारा√वह (बहना)+णिनि]=धारावाहिक।

धारा-विष—पु० [ब० स०] खड्ग। तलवार।

धारा-संपात—पु० [ब० स०] बहुत तेज और अविरल वृष्टि। जोरों की बारिश।

धारा-सभा—स्त्री० [प० त० ?] आधुनिक लोक-तंत्री शासन में, प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है। विधान-सभा। विधायिका।

धारासार—वि० [धारा-आसार प० त०] धारा के रूप में लगातार होता रहनेवाला। जैसे—धारासार वर्षा।

धारा-स्नुही—स्त्री० [स० मध्य० स०] सिवान थूहर।

धारि—स्त्री० [स० धारा] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण और एक लघु होता है। २. झुंड। समूह। ३. दे० 'धार'।

धारिणी—स्त्री० [स०√धृ (धारण)+णिनि—ङीप्] १. पृथ्वी। २. सेमल का पेड़। ३ एक प्रकार की पुरानी नाव जो १६० हाथ लंबी, ३० हाथ चौड़ी और १६ हाथ ऊँची होती थी। ४. चौदह देवताओं की स्त्रियाँ जिनके नाम ये हैं—शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृति, सिनीवाली, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा, सेला और वेला। वि० स० 'धारी' (धारण करनेवाला) का स्त्री०।

धारित—भू० कृ० [स०√धृ+णिच्+क्त] १. धारण किया हुआ। २. अपने ऊपर लिया या सँभाला हुआ।

धारिता—स्त्री० [स० धारिन्+तल्—टाप्] १. धारण करने का गुण योग्यता या सामर्थ्य। २ वस्तु, व्यक्ति आदि की उतनी पात्रता जितने में वह कुछ धारण कर सके। समाई। (कैपैसिटी) जैसे—इस हौदे में एक मन पानी की धारिता है।

धारी (रिन्)—वि० [सं०√धृ+णिनि] १. धारण करनेवाला। जैसे—चक्रधारी। २ पहननेवाला। जैसे—खद्दर धारी। ३. जिसकी धारणा-शक्ति प्रबल हो। ४. ऋण लेनेवाला। ५ ग्रंथों आदि का तात्पर्य समझानेवाला।

†वि० [हिं० धार] १. किनारदार। २. तेज धारवाला।

स्त्री० [स० धारा] १. एक ही सीध में दूर तक गई हुई रेखा या लकीर। २ किसी एक रंग के तल पर खींची हुई किसी दूसरे रंग की सीधी रेखा। जैसे—कपड़े या कागज पर की धारियाँ।

पद—धारीदार।

३. धातुओं, वनस्पतियों आदि में दिखाई देनेवाली (नसों की तरह की) लंबी रेखा। (वीन) ४. झुंड। दल। ५. फौज। सेना। ६. जलाशय के किनारे बना हुआ पुश्ता या बाँध।

पु० १. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पहले तीन जगण और तब एक यगण होता है। २. पीलू का पेड़। ३. दे० 'धारि'।

धारीदार—वि० [हिं० धारी+फा० दार] १. जिसमें कोई रेखाकार चिह्न बना हो। जैसे—धारीदार कागज। २. (कपड़ा) जिसकी जमीन एक रंग की और धारियाँ दूसरे रंग की हों।

धारुजल—स्त्री० [स० धारा—जल] जल की तरह उज्ज्वल धारवाली तलवार। उदा०—घड़ि घडि धवकि धार धारु जल। —प्रिथीराज।

धारोष्ण—वि० [स० धारा-उष्ण स० त०] (दूध) जो तुरत का दूहा हुआ और इसी लिए कुछ गरम भी हो।

धार्त्तराष्ट्र—वि० [स० धृतराष्ट्र+अण्] [स्त्री० धार्त्तराष्ट्री] १.

धृतराष्ट्र-संबंधी । धृतराष्ट्र का । २. धृतराष्ट्र के वश का । पु० १. एक नाग का नाम । २. एक प्रकार का हस जिसकी चोच और पैर काले होते है।

धार्त्तराष्ट्र-पदी—स्त्री० [स० ब० स० ङीप्] हसपदी लता। लाल रग का लज्जालु।

धार्म—वि० [सं० धर्म+अण्] धर्म-सबधी। धर्म का ।

धार्मपत—वि० [स० धर्मपति+अण्] धर्मपति-सबधी।

धार्मिक—वि० [स० धर्म+ठक्—इक] [भाव० धार्मिकता] १. (व्यक्ति) जो धर्म का सदा ध्यान रखता तथा पालन करता हो। धर्मशील । पुण्यात्मा । २. (कथन या विषय) जो धर्म से सबध रखता हो। जैसे—धार्मिक ग्रथ, धार्मिक भाषण। ३ (कार्य) जो धर्मशास्त्रो के अनुसार उचित और कर्तव्य हो। जैसे—धार्मिक कृत्य ।

धार्मिकता—स्त्री० [स० धार्मिक+तल्—टाप्] धार्मिक होने की अवस्था, गुण या भाव ।

धार्मिक्य—पु० [स० धार्मिक+यक्] =धार्मिकता।

धार्मिण—पु० [स० धर्मिन्+अण्] धार्मिक व्यक्तियो की मडली या समूह।

धार्मिणेय—पु० [स० धर्मिणी+ढक्—एय] [स्त्री० धार्मिणेयी] धर्मवती स्त्री का पुत्र।

धार्य—वि० [स०√धृ+ण्यत्] [भाव० धार्यत्व] १ जो धारण किये जाने के योग्य हो। जिसे धारण कर सके। धारणीय। २. जिसे धारण करना उचित या आवश्यक हो। ३. जिसे धारणा-शक्ति ग्रहण कर सके।

पु० पहनने का कपड़ा। पोशाक।

धार्यत्व—पु० [स० धार्य+त्व] १. धार्य होने का भाव। ऋण, देन आदि जिसका चुकाना आवश्यक हो। (लायबिलिटी)

धार्ष्ट, धार्ष्ट्र्य—पु० [स० धृष्ट+अण्, धृष्ट+ष्यञ्] धृष्टता।

धाव—पु० [स० धव] एक प्रकार का लबा और बहुत सुदर पेड जिसे गोलरा, धावरा और बकली भी कहते हैं।

धावक—वि० [स०√धाव् (दौडना)+ण्वुल्—अक] दौडकर चलनेवाला। पु० १. हरकारा। २ कपडे धोनेवाला। धोबी। ३. सस्कृत के एक प्राचीन आचार्य और कवि।

धावड़ा†—पु० [हिं० धव] धव या धौ का पेड।

धावण—पु० [स० धावन] दूत। हरकारा। (डिं०)

धावन—पु० [स०√धाव्+ल्युट्—अन] १ बहुत तेजी से या दौडकर जाना। २. दूत। हरकारा। जैसे—धारा धर धावन। ३. कपडे धोने और साफ करने का काम। कपडो की धुलाई। ४ धोबी। ५. वह चीज जिसकी सहायता से कोई चीज धोकर साफ की जाय।

धावना—अ० [स० धावन=गमन] वेग से चलना। दौडना। धाना।

धावनि—स्त्री० [स०√धाव्+अनि] पिठवन। पृश्निपर्णी लता। स्त्री० [हिं० धावना=दौडना] १. धावने अर्थात् दौडने की क्रिया या भाव। जल्दी-जल्दी चलना या दौडना। २. चढ़ाई। धावा। †स्त्री हिं० धावन (हरकारा) का स्त्री०।

धावनिका—स्त्री० [स० धावनि+कन्—टाप्] १ कटकारिका। कटेरी। २. पृश्निपर्णी। पिठवन। ३ काँटेदार मकोय।

धावनी—स्त्री० [स० धावनि+ङीप्] १ पृश्निपर्णी लता। पिठवन। २ कटकारी। ३. धौ का फूल।

धावमान—वि० [स०√धाव्+लट्—शानच्] १ दौडनेवाला। २. दौड़ता हुआ। ३ चढाई करनेवाला।

धावरा—वि० [स्त्री० धावरी]=धौरा (धवल)।

पु०=धव।

धावरी†—स्त्री०=धौरी (सफेद गाय)।

धावल्य—पु० [स० धवल+ष्यञ्] धवलता।

धावा—पु० [हिं० धाना=तेजी से चलना] १. किसी काम के लिए बहुत तेजी से चलते हुए कही दूर जाने की क्रिया या भाव। द्रुत गमन।

मुहा०—धावा मारना=बहुत तेजी से चलते हुए कही दूर जाना अथवा दूर से आना। जैसे—हम तो चार कोस से धावा मार कर यहाँ आये, और आपने ऐसा कोरा जवाब दिया।

२. शत्रु पर आक्रमण करने के लिए दल-बल सहित उसकी ओर बढने की क्रिया या भाव। आक्रमण या चढाई के लिए जल्दी-जल्दी चलना या जाना। ३. हमला।

मुहा०—(किसी पर) धावा बोलना=अपने साथियो या सैनिको को यह आज्ञा देना कि शत्रु पर चढ चलो और उसका नाश करो।

धावित—वि० [स०√धाव्+क्त] १. बहुत तेज दौडता हुआ। २. धोया और साफ किया हुआ।

धाह—स्त्री० [अनु०] १. जोर से चिल्लाकर रोना। धाड। २. जोर से चिल्लाना। चीत्कार करना।

मुहा०—धाह मेलना=जोर से आवाज करना। चिल्लाना। उदा०—धाह मेलि कै राजा रोवा।—जायसी।

३ आवाज। शब्द।

धाही†—स्त्री०=धाय (दाई)।

धिंग†—स्त्री०=धींगा-धींगी।

धिंगरा†—पु०=धींगडा।

धिंगा—पु० [स० दृढाग] १. उपद्रवी। शरारती। २ दुष्ट। पाजी। बदमाश। ३ निर्लज्ज। बेशरम।

धिंगाई—स्त्री० [हिं० धिंगा] १ धींगापन। धींगा-मस्ती। २ उपद्रव। शरारत। ३ पाजीपन। बदमाशी। ४. निर्लज्जता। बेशरमी।

धिंगा-धिंगी—स्त्री०=धींगा-धींगी।

धिंगाना†—अ० [हिं० धिंगा] धींगा-धींगी करना।

स० किसी को धींगा-धींगी करने मे प्रवृत्त करना।

धिंगी—स्त्री० [स० दृढागी] १ बदमाश स्त्री। दुश्चरित्रा। २. निर्लज्ज स्त्री। ३ दे० 'धिंगाई'।

धि—प्रत्य० [स०√धा (धारण)+कि (उत्तर पद होने पर] जो समस्त पदो के अत मे लगकर निधि या भडार का अर्थ देता है। जैसे—जलधि, वारिधि आदि।

धिआ—स्त्री० [स० दुहिता, प्रा० धीआ] १ पुत्री। बेटी। २ कन्या। लडकी।

धिआन†—पुं०=ध्यान।

धिआना—स०=ध्याना (ध्यान करना)।

धिक्—अव्य० [स०√धक्क् (धरण या नाश)+डिकन्] घृणा और

भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखता हो तथा जो क्षमावान्, गभीर, दृढ़-प्रतिज्ञ और विनयी हो। जैसे—उत्तर रामचरित का नायक राम। २ वीर रस प्रधान नाटक का मुख्य नायक।
धीरोद्धत—पु०[स० धीर-उद्धत कर्म० स०] साहित्य मे, वह नायक जो बहुत असहिष्णु, उग्र स्वभाव का तथा सदा अपने गुणो का बखान करता रहता हो।
धीरोष्णी (ष्णिन्)—पुं०[सं०] एक विश्वदेव।
धीर्य—पु० [सं० धीर+यत्] कातर।
†पु०=धैर्य।
धीलटि, धीलटी—स्त्री०[स० धी√लट् (बच्चा बनना)+इन्] पुत्री। बेटी।
धीवर—पु०[स०√धा (धारण)+ष्वरच्] [स्त्री० धीवरी] १. एक जाति जो प्राय नाव खेने, मछली पकड़ने और मछली बेचने का काम करती है। मछुआ। मल्लाह। केवट। २ पुराणानुसार एक प्राचीन देश। ३. उक्त देश का निवासी। ४ काले रंग का आदमी। ५. नौकर। सेवक।
धीवरी—स्त्री०[स० धीवर+ङीप्] १ धीवर जाति की स्त्री। मल्लाहिन। २. मछली फँसाने की कटिया या बसी।
धीहड़ी†—स्त्री०=धी (बेटी)। उदा०—माई कहे सुन धीहडी।—मीराँ।
धुँआँ—पु०=धूआँ।
धुँआँस—स्त्री०=धुवाँस।
धुँआँसा†—पु०[हिं० धूआँ]बहुत अधिक धूआँ लगने के कारण जमनेवाली कालिख।
वि० धूएँ की गध या स्वाद से युक्त।
धुँआना—अ०[हिं० धूआँ+ना (प्रत्य०)] अधिक या निरतर धूआँ लगने के कारण किसी चीज का रग काला पड़ जाना और उसमे से धूएँ की गध या स्वाद आना। जैसे—खीर या दूध का धुँआना।
स० अधिक धूआँ लगाकर किसी चीज का धूएँ की गध या स्वाद से युक्त करना।
धुँआयँध—वि०[हिं० धुआँ+गध] जिसमे धूएँ की महक आ गई हो। धूएँ की तरह महकनेवाला। जैसे—धुँआयँध डकार आना।
स्त्री०१. धूएँ के कारण उत्पन्न होनेवाली गध। २. अन्न न पचने की दशा मे, पेट के अंदर धूआँ-सा उठने की अनुभूति।
धुँआरा†—वि०[हिं० धूआँ] धूएँ के रग का काला। धूमिल।
पुं० छत मे धूआँ निकलने के लिए बना हुआ छेद या नल। चिमनी।
वि०=धुँधला।
धुँई†—स्त्री०=धूनी।
धुँकार—पु० [सं० ध्वनि कार] जोर का शब्द। गड़गड़ाहट।
धुँकारना—अ०[हिं० धुँकार] हुंकारना।
धुँगार—स्त्री०=बघार (छौंक या तड़का)।
धुँगारना—स०[हिं० धुँगार]१. खाने की चीज मे तडका देना। छौंकना। बघारना। २. अच्छी तरह मारना-पीटना।
धुँज†—वि०=धुँधला।
पु०=धुँध।
धुंद—पु० १.=धुंध। २. द्वंद (द्वन्द्व या द्वंद्व)।
धुंदुल—पु०[देश०] एक तरह का मझोले कद का पेड़।
धुंध—पु०[स० धूम्र-अंध]१. वह स्थिति जिसमे धुँधलापन हो। २. गरदे और धूल से भरी हुई हवा चलने के कारण वातावरण मे छानेवाला अँधेरा।
पद—अंधाधुंध। (देखें)
३ हवा मे उड़ती हुई धूल। ४. आँख का एक रोग जिसमे दृष्टि या देखने की शक्ति कम हो जाती है और आकृतियाँ, चीजें आदि धुँधली दिखाई देने लगती हैं।
धुंधक†—पु०=धुंध।
धुंधका—पु०[हिं० धूआँ] दीवार, छत आदि मे का वह छेद या मार्ग जिसमे होकर धूआँ कमरे आदि से बाहर निकलता हो।
धुंधकार—पु०[हिं० धुंकार]१. गरज। गडगडाहट। धुंकार। २. अंधकार। अँधेरा।
धुंधमार—पु०=धुंधुमार।
धुंधमाल†—पु०=धुंधुमार।
धुंधर—स्त्री० [हिं० धुंध] १. हवा के साथ उड़नेवाली धूल। गरदा। गुबार। २ उक्त प्रकार की धूल के कारण छानेवाला अँधेरा।
धुंधरा—वि०[स्त्री० धुंधरी]=धुँधला।
धुंधराना—अ०, स०=धुँधलाना।
धुंधरी—स्त्री०[हिं० धुंधरी]१. गर्द-गुबार से उत्पन्न अँधेरा। २. धुँधलापन। ३. आँख का धुंध नामक रोग।
धुंधलका—वि०[हिं० धुंधला]=धुँधला।
पु० वह समय या स्थिति जिसमें धुँधला प्रकाश हो। जैसे—सायकाल का धुंधलका।
पद—धुँधलके का समय=सवेरे या सध्या का ऐसा समय जिसमे चीजें स्पष्ट रूप से दिखाई नही देती।
धुँधला—वि० [हिं० धुंध+ला] [स्त्री० धुँधली] १. धुंध से भरा हुआ।
२ धूएँ की तरह का, कुछ-कुछ काला। ३.(नेत्र) जिसमे धुंध नामक रोग होने के कारण चीजें अस्पष्ट दिखाई पड़ती हो। ४. (दर्पण) जिसकी चमक खराब हो जाने के कारण प्रतिबिंब स्पष्ट न दिखाई पड़े। ५. लाक्षणिक अर्थ मे, (बात) जो अब ठीक-ठीक स्मरण न हो। जैसे—धुँधली स्मृतियाँ।
धुँधलाई†—स्त्री०=धुँधलापन।
धुँधलाना—अ०[हिं० धुँधला]धुँधला पड़ना या होना।
स० धुँधला करना।
धुँधलापन—पुं०[हिं० धुँधला+पन]धुँधले या अस्पष्ट होने की अवस्था या भाव।
धुँधली†—स्त्री०=धुंध।
धुँधाना—अ०[हिं० धुंध] धुँधला पड़ना या होना।
स० धुँधला करना।
धुंधार—वि०१ =धुँधला। २ धूआँधार।
धुंधि—स्त्री०=धुंध।
धुंधियारा—वि०=धुँधला।
धुंधु—पु०[सं०] एक राक्षस जो मधु नामक राक्षस का पुत्र था।

धुंधुआना—अ०[स० धूम्र, हिं० धूआँ] इस प्रकार जलना कि खूब धूआँ उठे। धूआँ देते हुए जलना।
स० इस प्रकार जलाना कि खूब धूआँ उठे।
धुधकार—पु०[हिं० धुधु+कार]१. अधकार। अँधेरा। २ धुंधलापन। ३ नगाड़ा बजने का शब्द। ४ आग के धू-धू करके जलने का शब्द।
धुंधुमार—पु०[स० धुधु√मृ (मरना)+णिच्+अण्] १. राजा त्रिशकु का पुत्र। २. कुवलयाश्व का एक नाम।
धुंधुरित—वि०[हिं० धुंधुर]१ धुंधला। २ धूमिल।
धुंधुरी†—स्त्री०=धुंधरी।
धुंधुराना†—अ०, स०=धुंधुआना।
धुंधेरी—स्त्री०=धुंधरी।
धुंधेला—वि० [हिं० धुध+ऐला (प्रत्य०)]१ दुष्ट। पाजी। २ धोखेबाज।
†वि०=धुंधला।
धुंवाँ†—पुं०=धूआँ।
धुंवांकश†—पु०=धूआँकश।
धुंवांदान†—पु०=धूआँदान।
धुंवाधार—वि०, क्रि० वि०=धूआँधार।
धु—स्त्री० [स०] कपन
धुअ†—वि०, पुं=ध्रुव।
धुआँ—पु०=धूआँ।
धुआँकश—पु०=धूआँकश।
धुआँदान—पु०=धूआँदान।
धुआँधार—वि० क्रि०, वि०=धूआँधार।
धुआँना—अ०=धुंआना।
धुआँयँध—वि०, स्त्री० =धुंआयँध।
धुआँस—पु०=धुवाँस।
धुआँ—पु०=धूआँ (शव)।
धुकता†—वि०[हिं० धुकना=दहकना] [स्त्री० धुकती] धुकता अर्थात् दहकता हुआ।
धुकती†—स्त्री०[हिं० धुकना=दहकना] मन मे निरतर होता रहनेवाला बहुत अधिक मानसिक कष्ट या सताप।
धुक—स्त्री०[देश०] कलाबत्तू बटने की सलाई।
धुकड़-पुकड़—स्त्री०[अनु०]१ भय आदि की आशका से होनेवाली मन की वह स्थिति जिसमे रह-रहकर कलेजे मे हलकी धडकन होती हो। २ आगा-पीछा। असमजस।
धुकड़ी—स्त्री०[देश०] छोटी थैली। बटुआ।
स्त्री०=धुकड-पुकड।
धुकधुकी—स्त्री०[अनु०] १ पेट और छाती के बीच का भाग जो कुछ गहरा-सा और छोटे गड्ढे की तरह होता है। २ कलेजा। हृदय। ३ भय, सकोच आदि के कारण होनेवाली कलेजे या हृदय की धडकन। ४ डर। भय।
क्रि० प्र०—लगना।
५. गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसका लटकन छाती के बीचवाले भाग पर पडता है।
धुकना—अ०[हिं० झुकना]१ नीचे की ओर ढलना। झुकना। २. गिरना। ३ वेगपूर्वक किसी ओर या किसी पर झपटना। टूट पडना।
अ०[हिं० धुकधुक] धुक-धुक करना। धडकना।
†स०[स० धूम+करना] धूनी देना।
अ०१ =दहकना। २=धुकरना।
धुकनी†—स्त्री०१.=धौंकनी। २ =धूनी।
धुकरना†—अ०[अनु०] धुक-धुक शब्द होना।
धुकान—स्त्री०[हिं० धुकना]१ धुकने की क्रिया या भाव। २ आक्रमण। चढ़ाई। उदा०—सैयद समर्थ भूप अली अकबर दल, चलत बजाय मारू दुदुभी धुकान की।—गुमान।
†स्त्री०=धुकार।
धुकाना—स०[हिं० धुकना] १ झुकाना। नवाना। २. गिराना। ३. ढकेलना। ४ पछाडना। पटकना। ५. दहकाना। सुलगाना। ६. धूनी देना।
धुकार—स्त्री०[धू से अनु०]१ जोर का शब्द। २ नगाडे का शब्द।
धुकारी—स्त्री०=धुकार।
धुक्कन†—स्त्री०=धुकार।
धुक्कना —अ०=धुकना।
धुक्कारना—स०=धुकाना।
धुगधुगी†—स्त्री०=धुकधुकी।
धुज†—पु०=ध्वज।
†स्त्री०=ध्वजा।
धुजा†—स्त्री०=ध्वजा।
धुजानी†—स्त्री०[सं० ध्वजिनी]सेना।
धुजिनी—स्त्री०=धुजानी।
धुडंगा—वि०[हिं० धूर+अगी][स्त्री० धुडगी]१. जिसके शरीर पर धूल ही धूल हो, वस्त्र न हो। नगा-धड़गा। २ जिस पर धूल पड़ी हो।
धुडंगी†—वि०=धुड़गा।
धुड़ी†—स्त्री०=धूल।
धुत†—अव्य०=दुत।
धुतकार—स्त्री०=दुतकार।
धुतकारना—स०=दुतकारना।
धुताई*—स्त्री०=धूर्तता।
धुतारा*—वि०[स्त्री० धुतारी]=धूर्त।
धुतू†—पु०=धूतू।
धुतूरा†—पु०=धतूरा।
धुत्त—वि०[अनु०] नशे मे चूर। बेसुध।
†अव्य०=धुत (दुत)।
धुत्ता†—पु०[स० धूर्तता] १ धूर्तता। २ कपट। छल। दगाबाजी।
मुहा०—(किसी को) धुत्ता देना या बताना=कपट, छल या धूर्तता का व्यवहार करके किसी को दूर हटाना।
स्त्री०[?] एक प्रकार की मछली।
धुधुकार—स्त्री०[धू धू से अनु०]१ धू धू का-सा जोर का शब्द, जैसा आग जलने पर होता है। २ जोर का शब्द। गडगडाहट। गरज। उदा०—सीमा पर बजनेवाले धौंसों की अब धुधुकार नही।—दिनकर।

घुघुकारी—स्त्री०=घुघुकार।

घुघुकी†—स्त्री० १.=घुघुकार। २=घुकघुकी।

घुन—पुं०[स०] १. आवाज या शब्द करना। २. रह-रहकर हिलना। कांपना। ३. सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं। स्त्री०[हिं० धुनना, मि० सं० धुन]१ धुनने की क्रिया या भाव। २ कोई विशिष्ट काम प्राय करते रहने की स्वभावजन्य प्रवृत्ति या मनोदशा। ऐसी लगन जिसमे उद्देश्य को छोड़कर और किसी बात का ध्यान न रहे। जैसे—(क) आज-कल उन्हे नई-नई पुस्तकें पढने (या रुपए कमाने) की धुन है। (ख) रामधुन लागी, गोपाल-धुन लागी।—लोकगीत।

पद—धुन का पक्का=वह जो अपनी धुन से सहसा विरत न हो। कोई काम आरभ करने पर उसे बिना पूरा किये न छोडनेवाला अथवा बार बार करता रहनेवाला।

२ किसी काम या बात की ओर जाग्रत होनेवाली प्रबल प्रवृत्ति। मन की तरग या मौज। जैसे—जब धुन आई (या उठी) तब घूमने निकल पडे। ३. किसी काम या बात का ऐसा चिंतन या मनन जो और कामो या बातो की ओर से ध्यान बिलकुल अलग कर दे। जैसे—आज-कल न जाने वे किस धुन मे रहते है कि जल्दी लोगो से बात ही नहीं करते।

क्रि० प्र०—चढना।—लगना।—समाना।—सवार होना। (उक्त सभी अर्थो मे)

४. सगीत मे कोई चीज गाने या बजाने का वह विशिष्ट ढंग, प्रकार या शैली जिसमे स्वरो का उतार-चढ़ाव अन्य प्रकारो या शैलियो से बिलकुल अलग और निराला होता है। जैसे—(क) रामायण की चौपाइयाँ अनेक धुनो मे गाई जाती हैं। (ख) यह गजल सोहिनी की धुन मे भी गाई जाती है और भैरवी की धुन मे भी।

धुनक—स्त्री०[हिं० धुनकना] धुनकने की क्रिया या भाव।

†पुं०=धनुप।

धुनकना—स०=धुनना।

धुनकी—स्त्री०[स० धनुस्, हिं० धुनकना]१ लडकों के खेलने का छोटा धनुप। २ धुनियो का एक प्रकार का प्रसिद्ध उपकरण, जिससे वे रूई धुनते है। पिंजा। फटका।

धुनना—स०[स० धूनन] १. धुनकी की सहायता से रूई पर इस प्रकार बार बार आघात करना कि उसके तार या रेशे अलग-अलग हो जायँ और बिनौले निकल जायँ।

विशेप—अब मशीनो द्वारा भी रूई धुनी जाने लगी है।

२. लाक्षणिक अर्थ में, इस प्रकार निरन्तर आघात या प्रहार करना जिससे किसी को अत्यधिक शारीरिक कष्ट हो।

मुहा०—सिर धुनना=दे० 'सिर' के अतर्गत।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

स० [हिं० धुन]१. धुन मे आकर अपनी ही बात कहते चलना। २. कोई काम लगातार करते चलना।

अ०[?]१. अधिकता या बहुतायत होना। २ ऊपर या चारों ओर से घिर आना। आच्छादित होना। छाना। उदा०—धामधाम धूपनि की धूम धुनियतु है।—देव।

धुनवाई—स्त्री०[हिं० धुनवाना]१. धुनवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० 'धुनाई'।

धुनवाना—स०[हिं० धुनना]१. धुनने का काम किसी दूसरे से कराना। जैसे—रूई धुनवाना। २ खूब पिटवाना। मार खिलवाना।

धुनवी†—स्त्री०=धुनकी।

धुना†—पु०=धुनियाँ।

धुनाई—स्त्री०[हिं० धुनना] धुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

धुनि—स्त्री०[स०√धु (कपन)+नि]नदी।

†स्त्री०१ =ध्वनि। २ =धूनी।

धुनियाँ—पु० [हिं० धुनना] [स्त्री० धुनियाइन] वह व्यक्ति जो धुनकी की सहायता से रूई धुनने का काम या पेशा करता हो। बेहना।

धुनिहाव†—पु०[?] हड्डी मे का दर्द।

धुनी—स्त्री०[स० धुनि+ङीप्] नदी।

पद—सुर-धुनी। (दे०)

†स्त्री० १ =ध्वनि। २. =धूनी।

धुनी-नाथ—पु०[प० त०] धुनी (नदी) के स्वामी, सागर।

धुनेचा—पु० [देश०] सन की जाति का एक पौधा, जो बगाल मे काली मिर्च की बेलों पर छाया रखने के लिए लगाया जाता है।

धुनेहा†—पु०=धुनियाँ।

धुप-धुप—वि० [हिं० धूप]१. साफ। स्वच्छ। २. उज्ज्वल। चमकीला।

धुपना—अ०[हिं० धूप] धूप आदि के धूएँ से सुगधित किया जाना या होना।

अ०[स० धूपन=श्रात होना]१. दौड़ना। २. हैरान होना। जैसे—दौडना-धुपना (धूपना)।

†अ०=धुलना। (पश्चिम)

धुपाना—स०[हिं० धूप=सुगधित द्रव्य] धूप आदि के सुगधित धूएँ से वासना।

स० [हिं० धूपना] किसी को धूपने मे प्रवृत्त करना।

†स०[हिं० धूप] सुखाने के लिए धूप में रखना या धूप दिखाना।

†स०=धुलवाना।

धुपेना†—पु०=धूपदानी।

धुपेली†—स्त्री०[हिं० धूप+एला(प्रत्य०)] धूप मे अधिक घूमने अथवा गरमी के प्रभाव के कारण शरीर मे निकलनेवाले छोटे-छोटे दाने। पित्ती।

धुप्पल—स्त्री०[हिं० धोपा=धोखा]१. अपना काम निकालने के लिए किसी को आतकित करते हुए दिया जानेवाला धोखा। धुप्पस। (ब्लफ) २. छल। धोखा।

धुप्पस†—स्त्री०=धुप्पल।

धुबला—पु०[?] घाघरा। लहँगा।

धुमई†—वि०[धूम्र+ई (प्रत्य०)] धूएँ के रंग का।

स्त्री० एक प्रकार का रग जो देखने मे धूएँ जैसा होता है।

पु० उक्त रग का बैल, जो प्राय. अन्य बैलो की अपेक्षा अधिक सशक्त होता है।

धुमरा†—वि०=धुँआरा (धूमिल)।

धुमला†—वि०[सं० धूम्र+ला (प्रत्य०)]१. धूमिल। २. अंधा। (क्व०)

धुमलाई†—स्त्री०=धुमिलाई।
धुमारा †—वि०=धुआँरा।
धुमिलना*—स०[हिं० धूमिल+आना (प्रत्य०)]१ धूमिल करना। २ धुंधला करना।
अ० १ धूमिल होना। २. धुंधला होना। मद पड़ना।
धुमिला†—वि०=धूमिल।
धुमिलाई†—स्त्री० [हिं० धूमिल+आई (प्रत्य०)]१ धूमिल होने की अवस्था या भाव। २ धुंधलापन। ३ अधकार। अंधेरा।
धुमिलाना—अ०[हिं० धूमिल] १ धूमिल होना। २ काला पडना।
स०=धूमिल करना।
धुमैला†—वि०=धूमिल।
धुम्मर*—वि०=धूमिल।
पु०=धूम्र (धूआँ)।
धुर्—स्त्री० [स० धुर्व् (हिंसा)+क्विप्]१. बैलो आदि के कधे पर रखा जानेवाला जूआ। २. बोझ। भार। ३. गाडी के पहियों का धुरा। अक्ष। ४ खूंटी। ५ ऊँचा और श्रेष्ठ स्थान। ६. उँगली। ७ चिनगारी। ८ अश। भाग। ९ धन-सपत्ति। १० गगा का एक नाम। ११ रथ का अगला भाग।
धुरंधर—वि०[स० धुर√धृ (धारण)+खच्, मुम्] १. धुर अर्थात् जूआ धारण करनेवाला। २ भार आदि से लदा हुआ। ३ जो बहुत अधिक अच्छे गुण या विद्याएँ धारण किए हो। किसी विषय में औरो से बहुत अधिक बढा-चढा या श्रेष्ठ। जैसे—धुरधर पडित। ४. प्रधान। मुख्य।
पु० १. वह, जो बोझ ढोता हो। २ ऐसा पशु जिस पर बोझ लादा जाता हो। ३ एक राक्षस जो प्रहस्त का मत्री था। ४. धौ का पेड़। धव।
धुर—पु०[स० √धुर्वी+क] १ गाडी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। २. ऊँचा और श्रेष्ठ स्थान। ३. बोझ। भार। ४ गाड़ी का धुरा। ५. बैलो के कधे पर रखने का जूआ। ६ जमीन की एक नाप, जो बिसवे के बीसवे भाग के बराबर होती है। धूर। बिस्वासी।
अव्य०[स० धुर् या ध्रुव] एक अव्यय जो कई प्रकार के प्रयोगो मे किसी नियत स्थान की अतिम सीमा या सिरा सूचित करता है। ठेठ। जैसे—धुर ऊपर की छत। उदा०—(क) मोती लादन पिय गये, धुर पाटन गुजरात। —गिरधर। (ख) हमको तो सोई लखे जो धुर पूरब का होय।—कबीर।
पद—**धुर का**=हद दरजे का। परम। **धुर सिर से**।=बिलकुल आरभ से। **धुर से**=धुर सिर से
वि०[स० ध्रुव]१. दृढ। पक्का। २. ठीक। दुरुस्त।
पु०[?]बीच। मध्य।
†स्त्री०=धरा (पृथ्वी)। उदा०—अज्ज गही प्रथिराज, बोल बुलत गजत धुर।—चदबरदाई।
धुरई†—स्त्री०[हिं० धुर] कूएँ के खभे आदि के बीच मे आड़े टिकाए हुए वे दोनो बाँस या लकडियाँ, जिनके नीचेवाले सिरे आपस मे सटाकर मजबूती से बँधे रहते थे।
धुरकट—पु०[हिं० धुर=सिर(आरभ)+कट=कटौती] वह लगान जो असामी अपने जमीदार को जेठ मे पेशगी देते थे।

धुर-किल्ली—स्त्री० [हिं० धुरा+कील] गाडी मे वह कील जो धुरी की आँक मे अटकाने के लिए अन्दर की ओर धुरी के सिरे पर लगी रहती है।
धुरचुट†—स्त्री० [?] अधिकता। प्रचुरता।
धुरजटी—पु०=धूर्जटी (शिव)।
धुरड्डी†—स्त्री०=धुलेंडी।
धुरना—स० [स० धूर्वण] १. मारना-पीटना। २ बाजो आदि के सबंध में आघात करते हुए बजाना। ३. कोदो, धान आदि के सूखे डठलो का भूसा बनाने के लिए उसे दाँना।
धुरपद†—पु०=ध्रुपद।
धुरमुट†—पु०=दुरमुस।
धुरवा†—पु० [स० धुर्+वाह] बहुत दूरी पर दिखाई पडनेवाला धुँधला बादल। उदा०—धुरवा होहि न अलि इहै धुआँ धरनि चहुँ ओर।—बिहारी।
धुरा—पु० [स० धुर+टाप्] [स्त्री० धुरी] १ लकड़ी या लोहे का वह छड़ या डडा जो पहियो की गराडी के बीचोबीच रहता है और जिसके सहारे ठहरा रहकर पहिया चारों ओर घूमता है। अक्ष। (एक्सिस) २. वह मुख्य या मूल आधार जिसके सहारे कोई चीज ठहरी रहती और चक्कर लगाती या अपना काम करती है।
पु० [स० धुर] १. बोझ ढोनेवाला पशु। २ बोझ। भार।
धुरिया-धुरंग—वि० [?] १ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला। २. जिसके साथ उसके आवश्यक अग-उपाग न हो। ३. (गीत) जिसके साथ कोई बाजा या साज न बजता हो।
धुरियाना—स० [हिं० धूर] १. किसी वस्तु को धूल से ढकना या युक्त करना। किसी वस्तु पर धूल डालना। २. ऊख का खेत पहले-पहल गोडना। ३. किसी कलक, खराबी या बुराई पर धूल या मिट्टी डालना; अर्थात् उसे दबाना और फैलने न देना।
अ० १ किसी चीज का धूल पड़ने के कारण दबना या मैला होना। २. ऊख के खेत का पहले-पहल गोडा जाना। ३. कलक, दोष आदि का छिपाया या दबाया जाना।
धुरिया मलार—पु०=धूरिया मलार।
धुरी—स्त्री० हिं० 'धुरा' का स्त्री० अल्पा० रूप (दे० 'धुरा')।
धुरीण—वि० [स० धुर+ख—ईन] १ जो बोझ या भार सँभालने या ले चलने के योग्य हो। २ प्रधान। मुख्य। ३ दे० 'धुरधर'।
धुरीन†—वि०=धुरीण।
धुरीय—वि० [स० धुर+छ—ईय] १. बोझ लादकर ले चलनेवाला। २. धुर या धुरे से सबंध रखनेवाला।
धुरी राष्ट्र—पु० [हिं० धुरी+स० राष्ट्र] दूसरे महायुद्ध से पहले सार्वराष्ट्रीय राजनीति मे जरमनी, इटली और जापान ये तीनो राष्ट्र, जिनका एक गुट था।
धुरेंडी†—स्त्री०=धुलेंडी।
धुरेटना—अ० [हिं० धूर+एटना (प्रत्य०)] १. धूल मे लेटना। २ इस प्रकार लेटकर वस्त्र, शरीर आदि गदे करना। धूल से युक्त करना।
स० धूल लगाना।
धुर्य—वि० [स० धुर+यत्] १ जिस पर बोझ या भार लादा जा सके।

बोझ ढोने के योग्य। २. जो अपने ऊपर उत्तरदायित्व या भार ले सके। ३ दे० 'धुरवर'।

पु० १. भार ढोनेवाला पशु। २. बैल। ३. विष्णु। ४. ऋषभ नामक ओषधि।

धुर्री—पु० [हिं० धूर=धूल] १ धूल का कण। २. किसी चीज का छोटा या सूक्ष्म कण या टुकडा।

मुहा०—(किसी चीज के) धुर्रे उड़ाना=बहुत छोटे-छोटे खड या टुकडे करके बेकाम कर देना। छिन्न-भिन्न करना। (किसी के विचारो आदि के) धुर्रे उड़ाना=पूरी तरह से खडन करके तुच्छ सिद्ध करना। (किसी व्यक्ति के) धुर्रे उड़ाना या उड़ा देना=बहुत अधिक मारना-पीटना।

धुलना—अ० [हिं० धोना] १ वस्त्र आदि के सबध मे; जल, साबुन आदि की सहायता से स्वच्छ किया जाना। धोया जाना। जैसे—सिर धुलना। २. गदगी आदि के बह या हट जाने के फलस्वरूप किसी चीज का साफ होना। जैसे—वर्षा के जल से सड़क धुलना। ३. लगे हुए कलक, दोप, बुराई आदि का छूटना, मिटना या न रह जाना। नष्ट होना। जैसे—पाप या बदनामी धुलना।

धुलवाना—स० [हिं० धोना का प्रे०] धोने का काम किसी दूसरे से कराना।

धुलवाई—स्त्री० [हिं० धुलवाना] १. धुलवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० 'धुलाई'।

धुलाई—स्त्री० [हिं० धोना] १. धुलने या धोये जाने की क्रिया या भाव। २. धोने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक।

धुलाना—स०=धुलवाना।

धुलियापीर—पु०=धूलिया-पीर।

धुलिया-मिटिया—वि० [हिं० धूल+मिट्टी] १. जिस पर धूल या मिट्टी पडी हो अथवा डाली गई हो और इसी लिए जो बिलकुल खराब या निकम्मा हो गया हो। जैसे—कपडे धुलिया-मिटिया करना। २ दबाया या शात किया हुआ (झगड़ा, बखेडा आदि)। ३. नष्ट, बरबाद या मटियामेट किया हुआ।

धुलेंडी—स्त्री० [हिं० धूल+उडाना] १ हिंदुओ का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन चैत बदी १ को होता है और जिसमे सबेरे के समय लोगो पर कीचड, धूल आदि और सध्या को अबीर, गुलाल आदि डालते है। २ उक्त त्योहार का दिन।

धुव—पु० [?] कोप। क्रोध। गुस्सा। (डि०)

† पु०=ध्रुव।

धुवका—पु० [स० धुवक] गीत का पहला पद। टेक।

धुवन—वि० [स०√धु+क्युन्—अन] १. चलानेवाला। २ कँपाने या हिलानेवाला।

पुं० अग्नि। आग।

धुवाँ†—पु०=धूआँ।

धुवाँकश†—पु०=धूआँकश।

धुवाँधार—वि० क्रि०, वि०=धूआँधार।

धुवाँधज*—पु० [स० धूमध्वज] अग्नि। (डि०)

धुवाँरा—पु० [हिं० धूआँ] छत मे बना हुआ वह छेद जिसमे से रसोईघर का धूआँ बाहर निकलता है।

वि०=धुआँरा।

धुवाँस—स्त्री० [हिं० धूर+माष; या धूमसी] उरद का आटा जिससे पापड, कचौड़ी आदि पकवान बनाते है।

धुवाना—स०=धुलाना।

धुवित्र—पुं० [स०√धु+इत्र] प्राचीन काल का एक प्रकार का पंखा जो हिरन के चमडे आदि से बनाया जाता था और जिसका व्यवहार यज्ञ की आग को सुलगाने मे होता था।

धुस्तूर—पु० [स०√धु+उर, स्तुट् आगम] धतूरा।

धुस्स—पु० [स० ध्वस] १. गिरे हुए मकान की मिट्टी, ईंटो, पत्थरो आदि का ढेर। ऊँचा ढेरा। टीला। २. जलाशय पर बाँधा हुआ बाँध। ३. मिट्टी की ऊँची और मोटी दीवार, जो किले की पक्की दीवारो के आगे सुरक्षा के लिए खड़ी की जाती थी।

धुस्सा—पु० [स० दूष्यम्, प्रा० दुस्स=कपडा, पाली०, दुस्स] घटिया किस्म के ऊन की बुनी हुई मोटी लोई।

धूँआँ—पु०=धूआँ।

धूँका†—पु०=धोखा।

धूँध†—स्त्री० १. =धुध। २. =धोखा।

धूँधना—स० [हिं० धूध] धोखा देना।

धूँधर†—स्त्री० [हिं० धुंध] १. धुध। २. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला अँधेरा।

वि०=धुँधला।

धूँधला†—वि०=धुँधला।

धूँसना*—अ० [?] जोर का शब्द करना। उदा०—प्रबल वेग सो धमकि धूँसि दसहूँ दिसि दूसहि।—रत्नाकर।

स० [स० ध्वसन] १. नष्ट या बरबाद करना। २. मारना-पीटना।

धूँसा†—पुं०=धौसा।

धू†—वि० [स० ध्रुव] स्थिर। अचल।

पुं० १. ध्रुव तारा। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र जो प्रसिद्ध ईश्वर-भक्त था। ३. गाड़ी का धुरा।

धूआँ—पुं० [सं० धूम] १. काले या नीले रग का वह वातीय पदार्थ जो किसी चीज के जलने पर उसमे से निकलकर ऊपर चढता और हवा के साथ इधर-उधर फैलता है। धूम।

क्रि० प्र०—उठना।—देना।—निकलना।

पद—धूएँ का धौरहर=ऐसी चीज या बात जो धूएँ की तरह थोड़ी देर मे नष्ट हो जाय। अस्थायी और क्षणभगुर चीज या बात।

धूएँ के बादल=(क) ऐसे बादल जो देखने भर को हो पर जिनसे वर्षा न हो। (ख) कोई ऐसी चीज जो देखने मे बहुत बड़ी जान पड़े पर जिसमे सार कुछ भी न हो।

मुहा०—(किसी चीज का) धूआँ देना =जलने पर किसी चीज का अपने अन्दर से धूआँ निकालना। जैसे—यह कोयला (या तेल) बहुत धूआँ देता है। (किसी चीज को किसी दूसरी चीज का) धूआँ देना=कोई चीज जलाकर उसका धूआँ किसी दूसरी चीज पर लगाना। धूएँ के प्रभाव से युक्त करना। जैसे—(क) सिर के बालो को गूगल (या धूप) का धूआँ देना। (ख) बवासीर के मस्सो को वायविडग का धूआँ देना। (ग) किसी की नाक मे

मिरचों का धूआँ देना। (अपने अन्दर का) धूआँ निकालना=(क) मन में दबा हुआ कष्ट या रोष अपनी बातों से प्रकट करना। मन की भड़ास निकालना। (ख) अपने सबध मे बहुत बढ-बढकर बातें करना। डींग या शेखी हाँकना। धूआँ रमना=चारो ओर धूआँ छाना, फैलना या भरना। धूएँ के बादल उड़ाना=बिलकुल निरर्थक और व्यर्थ की बातें कहकर बहुत बडा आडम्बर खडा करना। झूठ-मूठ की बहुत बडी-बडी बातें खड़ी करना या बनाना। धूएँ-सा मुँह होना या मुँह धूआँ होना=ग्लानि, लज्जा आदि के कारण चेहरे का रग काला या फीका पडना। चेहरे की रंगत उड़ जाना।

२ किसी चीज के उडनेवाले ऐसे बहुत-से कण जो धूएँ की तरह चारो ओर फैलते हों।

पद—धूआँ-धार। (देखें स्वतंत्र शब्द)

३. किसी चीज या बात की उडती हुई धज्जियाँ या धुर्रे।

मुहा०—(किसी चीज के) धूएँ उड़ाना या बिखेरना=छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट करना। धज्जियाँ या धुर्रे उड़ाना।

४ मृत शरीर। लाश। शव। उदा०—धूआँ देखि खर-दूषन केरा। जाइ सुपनखा रावन प्रेरा।—तुलसी।

धूआँ-कश—पु० [हिं० धूआँ+फा० कश=खीचना] भाप के जोर से चलनेवाली नाव या जहाज। अगिनबोट। (स्टीमर)

धूआँदान—पु० [हिं० धूआँ+फा० दान] छत आदि मे बना हुआ वह छेद या नल जिसमे से होकर घर के अन्दर का धूआँ बाहर निकलता है। चिमनी।

धूआँधार—वि० [हिं० धूआँ+धार] १ धूएँ से भरा हुआ। २. धूएँ की तरह के गहरे काले रगवाला। ३. तडक-भड़कवाला। ४. खूब जोरो का। घोर। प्रचंड। ५ मान, मात्रा आदि मे बहुत अधिक।

क्रि० वि० निरतर और जोरो से। जैसे—धूआँधार गोले या पानी बरसना।

धूई—स्त्री०=धूनी।

धूक—पु० [स०] १. वायु। २ काल।

वि० चालाक। धूर्त्त।

पु०[फा०दूक=तकला] कलाबत्तू बटने की लोहे की पतली गोल सीख।

धूकना*—अ० [हिं० ढुकना] १. किसी ओर बढना या झुकना। २. दे० 'ढुकना'।

धूजट*—पुं०=धूर्जटि (शिव)।

धूजना—अ० [स० धूत] १ हिलना। २ काँपना।

धूत—वि० [स०√धू (कपन)+क्त] १. काँपता, थरथराता या हिलता हुआ। कपित। २ जिसे डाँटा-डपटा या धमकाया गया हो। ३. छोड़ा या त्यागा हुआ। त्यक्त।

†वि०=धौत। उदा०—धो दिया श्रेष्ठ कुल-धर्म धूत।—निराला।

†वि०=धूर्त्त।

धूतना—स० [स० धूर्त] १ किसी के साथ धूर्त्तता करना। २ किसी को ठगना। ३ धूर्ततावश किसी की कोई चीज नष्ट करना। उदा०—अवधू ह्वै कै या तन धूर्तो, बधिका ह्वै मन मारूं।—कबीर।

धूत-पाप—वि० [ब० स०] जिसके पाप धुलकर दूर या नष्ट हो चुके हों।

धूत-पाया—स्त्री० [ब० स०, टाप्] काशी की एक प्राचीन नदी, जो पचगगा घाट के समीप गंगा मे मिली थी।

धूता—स्त्री० [स० धूत+टाप्] पत्नी। भार्या।

धूताई†—स्त्री०=धूर्तता।

धूतार (ा) —वि०=धूर्त।

धूति—स्त्री० [स√धू+क्तिन्] १. हिलते रहने या हिलने देने की अवस्था या भाव। २. हठयोग मे शरीर शुद्ध करने की एक क्रिया।

धूती—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

धूतुक—पु०=धूतू।

धूतू—पु० [अनु०] १. कल-कारखाने आदि की सीटी का शब्द। २. तुरही। ३. नरसिंहा।

धूधू—पु० [अनु०] वस्तुओ के जलने के समय होनेवाला धूधू शब्द।

धून—वि० [स०√धू+क्त, नत्व] कपित।

†पु०=दून।

धूनक—वि० [स०√धू+णिच्, नुक्+ण्वुल्—अक] १. हिलाने-डुलाने-वाला। २ चालाक। धूर्त।

पु० सरल या साल का गोद। राल।

धूनन—पु० [स०√धू+णिच्, नुक्+ल्युट्—अन] १ हवा। २ कंपन। ३. क्षोभ।

धूनना—स० [हिं० धूनी] १ आग मे कोई ऐसी वस्तु छोडना जिसके जलने से सुगधित धूआँ निकले। २ उक्त प्रकार के धूएँ से कमरा, घर आदि सुवासित करना। धूनी देना।

स० दे० 'धुनना'।

धूना—पुं० [हिं० धूनी] आसाम आदि की पहाडियो पर होनेवाला एक तरह का गुग्गुल की जाति का बड़ा पेड़। इसकी छाल आदि से बारनिश बनाई जाती है।

धूनि—स्त्री० [सं०√धू+क्तिन्, नत्व] हिलने की क्रिया। कपन।

धूनी—स्त्री० [हिं० धूआँ या धूई] १. वह आग जो साधु लोग या तो ठढ से बचने के लिए या शरीर को तपाकर कष्ट पहुँचाने के लिए अपने सामने जलाये रखते हैं।

मुहा०—धूनी जगाना, रमाना या लगाना =(क) साधुओं का अपने सामने धूनी जलाकर तपस्या करना। (ख) अपना शरीर तपाने या अपना वैराग्य प्रकट करने के लिए साधु होकर या साधुओं की तरह अपने सामने धूनी जलाये रखना।

२ सुगधित धूआँ उठाने के लिए, गूगल, धूप, लोबान आदि गध द्रव्य जलाने की क्रिया। जैसे—ठाकुर जी की मूर्ति के आगे की धूनी।

क्रि० प्र०—जलाना।—देना।

३. धूआँ उठाने के लिए कोई चीज जलाने की क्रिया। जैसे—मिरचो की धूनी देकर किसी के सिर पर चढा हुआ भूत भगाना।

क्रि० प्र०—देना।

धूप—पु०[सं०√धूप (तपाना)+अच्] १. कोई ऐसा गध द्रव्य या सुगधित पदार्थ जिसे जलाने पर सुगधित धूआँ निकलता हो। जैसे—अगर, चन्दन का चूरा, लोबान आदि। २. देव-पूजन, वायु-शुद्धि, सुगध-प्राप्ति आदि के लिए उक्त प्रकार के पदार्थो को जलाने पर उनमे से निकलनेवाला सुगधित धूआँ।

धूम-गंधिक—पु० [धूम-गव, व०स०, इत्व, धूमगन्धि+कन्] रोहिष तृण। रूसा घास।

धूम-ग्रह—पु० [मध्य०स०] राहु नामक ग्रह।

धूमज—वि० [स० धूम√जन् (उत्पत्ति)+ड] धूएँ से उत्पन्न।
पु० १ वादल या मेघ जो धूएँ से उत्पन्न माना गया है। २ मुस्तक। मोथा।

धूम-जांगज—पुं० [स० धूमज-अंग ष०त०, धूमजाग+जन्√ड] नौसादर।

धूम-दर्शी (र्शिन्)—पु० [स० धूम√दृश (देखना)+णिनि] वह व्यक्ति जिसे आँखो के दोष के कारण सब चीजें धुधली दिखाई देती है।

धूम-धडक्का—पु० [हिं० धूम+अनु० धडक्का] आनद, प्रसन्नता, हर्ष आदि के कारण होनेवाली चहल-पहल और हो-हल्ला।

धूम-धर—पु० [ष०त०] अग्नि। आग।

धूम-धाम—स्त्री० [हिं० धूम+धाम (अनु०)] उत्साह तथा उल्लास से युक्त होनेवाला ऐसा आयोजन या तैयारी, जिसमे खूब चहल-पहल और ठाठ-वाट हो।
पद—धूम-धाम से=ठाठ-वाट और सज-धज के साथ। जैसे—धूम-धाम से जलूस, वरात या सवारी निकलना।

धूमधामी—वि० [हिं० धूमवाम] १ धूम-वाम से काम करनेवाला। २ धूम-धाम या आडवर से युक्त। जैसे—धूमवामी आयोजन या समारोह। ३ नटखट। उपद्रवी।

धूम-ध्वज—पु० [व०स०] अग्नि। आग।

धूम-नेत्र—पुं०=धूम्र-नेत्र।

धूम-पट—पु० [ष०त०] १ धूएँ की वह दीवार, जो युद्ध-क्षेत्र मे विपक्षियो की नजर से अपनी तोपें आदि छिपाने के निमित्त खड़ी की जाती थी। २ वास्तविक स्थिति या तथ्य छिपाने के लिए उसके सामने खड़ी की जानेवाली कोई आड या परदा। (स्मोक स्क्रीन)

धूम-पथ—पु० [मध्य०स०] १ वह रास्ता जिससे किसी स्थान का धूआँ वाहर निकलता है। धुआँरा। २. दे० 'पितृयान'।

धूम-पान—पु० [ष०त०] १ साधुओ आदि का आग के धूएँ मे पड़े रहना। २. सुश्रुत के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार की ओषधियो का धूआँ जो नल द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता था। ३. तमाकू, सुरती आदि को सुलगाकर (नशे आदि के लिए) वार-वार खीचकर मुँह मे लेना और वाहर निकालना। तमाकू, वीडी, सिगरेट आदि पीना।

धूम-पोत—पु० [मध्य०स०] धूएँ या भाप की सहायता से समुद्र मे चलनेवाला आधुनिक ढंग का जहाज। धूआँ-कश।

धूम-प्रभा—स्त्री० [व०स०] नरक, जो सदा धूएँ से भरा रहता है।

धूम-यान—पु० [व०स०] पुराणानुसार, पृथ्वी के नीचे की ओर का वह मार्ग जिससे होकर पापियो की आत्माएँ नीचे या अध लोक की ओर जाती हैं।

धूम-योनि—पु० [व०स०] वादल, जिसकी उत्पत्ति धूएँ से मानी गई है।

धूमर—वि०=धूमिल।

धूम-रज (स्)—पुं० [ष०त०] १ घर का धूआँ। २. छतो और दीवारो मे लगनेवाली धूएँ की कालिख।

धूमरा—वि०=धूमर (धूमिल)।

धूमरी†—स्त्री० १.=धूम। २.=धूम्र।

धूमल—वि० [स० धूम√ला (लेना)+क] धूएँ के रग का। लाली लिये काले रग का।
†वि०=धूमिल।

धूमला†—वि०=धूमिल।

धूमवान् (वत्)—वि० [स० धूमवत्] [स्त्री० धूमवती] जिसमे या जहाँ धूआँ हो। धूएँ से युक्त।

धूम-सार—पु० [ष०त०] घर का धूआँ।

धूमसी—स्त्री० [सं०] उरद का आटा या चूर्ण। धुआँस।

धूमांग—वि० [धूम-अग व०स०] धूएँ के रग के-से अगोवाला।
पु० शीशम का पेड़।

धूमाक्ष—वि० [धूम-अक्षि व०स०, अच्] [स्त्री० धूमाक्षी] जिसकी आँखें धूएँ के रंग जैसी हो।

धूमाग्नि—स्त्री० [धूम-अग्नि मध्य०स०] ऐसी आग जिसमे से धूआँ ही निकलता हो, लपट न उठती हो।

धूमाभ—वि० [धूम-आभा व०स०] धूएँ के रग जैसा।

धूमायन—पु० [स० धूम+क्यड्+ल्युट्—अन] १ धूआँ उठाना या उत्पन्न करना। २ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह भाप वनकर उडने लगे। ३ गरमी। ताप।

धूमायमान†—वि० [स० धूम+क्यङ्+शानच्, मुक्] १. जो धूएँ के रूप मे हो। २ धूएँ से भरा हुआ। धूएँ से युक्त या व्याप्त।

धूमाली—स्त्री० [स० धूम+आली] आकाश मे चारो ओर छाया हुआ धूआँ। उदा०—माली की मड़ई से उठ नभ के नीचे नम सी धूमाली।

धूमावती—स्त्री० [स० धूम+मतुप्—ङीप्, वत्व, दीर्घ] दस महाविद्याओं मे से एक।

धूमिका—स्त्री० [स० धूम+ठन्—इक, टाप्] कोहरा।

धूमित—वि० [स० धूम+इतच्] १ धूएँ से ढका हुआ। २. जिसमे धूआँ लगा हो।
पु० तंत्र शास्त्र मे, सादे अक्षरो का मत्र जो दूषित समझा जाता है।

धूमिता—स्त्री० [स० धूमित+टाप्] वह दिशा जिसमे सूर्य पहले-पहल उन्मुख या प्रवृत्त होता हो।

धूमिनी—स्त्री० [स० धूमिन्+ङीप्]=धूमी।

धूमिल—वि० [स० धूम+इलच्] १ धूएँ के रग का। लाली लिये काले रग का। २. जिसमे इतना कम प्रकाश हो कि साफ दिखाई न पडे। धुँधला। ३ मलिन। गदा।

धूमी (मिन्)—वि० [स० धूम+इनि] धूएँ से भरा हुआ।
स्त्री० १ अजमीढ की एक पत्नी का नाम। २ अग्नि की एक जिह्वा का नाम।

धूमोत्थ—वि० [सं० धूम-उद्√स्था (ठहरना)+क] धूएँ से निकला हुआ।
पुं० नौसादर। वज्रक्षार।

धूमोद्गार—पुं० [धूम-उद्गार ष०त०] अजीर्ण या अपच के कारण आनेवाला धूएँ का-सा खट्टा डकार।

धूमोपहत—भू० कृ० [धूम-उपहत तृ० त०] धूएँ के फलस्वरूप जिसका गला घुट गया हो।
पुं० एक तरह का रोग।

धूमोर्णा—स्त्री०[सं०]१ यम की पत्नी का नाम। २. मार्कण्डेय की पत्नी का नाम।

धूम्या—स्त्री०[स० धूम+य—टाप्] १. धूम-पुज। २. धूएँ का गहरा और घना बादल।

धूम्याट—पु०[स० धूम्या√अट (गति)+अच्] एक पक्षी । भृग।

धूम्र—वि०[स० धूम√रा (देना)+क, पृषो० सिद्धि] धूएँ के रग का। लाली लिये काले रग का।

पु०१. धूएँ का या धूएँ का-सा रग। लाली लिये काला रग। २. मानिक या लाल का धुँधलापन जो एक दोप माना गया है। ३. महादेव। शिव। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर। ५. राम की सेना का एक भालू। ६. फलित ज्योतिप मे एक प्रकार का योग। ७ मेढा। ८. शिला-रस नामक गध द्रव्य।

धूम्रक—पु०[स० धूम्र√कै (प्रकाशित होना)+क] ऊँट।

धूम्र-कांत—पु०[कर्म० स०] एक प्रकार का रत्न या नग।

धूम्र-केतु—पु०[ब०स०] राजा भरत के एक पुत्र का नाम। (भागवत)

धूम्र-केश—पु०[ब०स०] १ राजा पृथु का एक पुत्र। २ कृष्णाश्व का एक पुत्र, जो उसकी अर्चि नाम की स्त्री से उत्पन्न हुआ था। (भागवत)

धूम्र-नेत्र—पु०[ब०स०] छत या दीवार मे से धूआँ निकलने का छेद। धुआँरा। धूआँदान।

धूम्र-पट—पु०=धूमपट।

धूम्र-पत्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] एक प्रकार का पौधा जो आयुर्वेद मे तीता, रुचिकारक, गरम, अग्निदीपक तथा शोथ, कृमि और खाँसी को दूर करनेवाला माना गया है। सुलभा। गृध्रपत्रा।

धूम्र-पान—पु०=धूम-पान।

धूम्र-मूलिका—स्त्री०[ब०स०, कप्, टाप्, इत्व] शूली नामक तृण।

धूम्र-लोचन—पु०[ब०स०] १. कबूतर। २ शुभ दानव का एक सेना-पति।

धूम्र-वर्ण—वि० [ब० स०] धूएँ के रग का। ललाईपन लिये काला। धूमिल।

पु० उक्त प्रकार का रग।

धूम्रवर्णा—स्त्री०[स० धूम्रवर्ण+टाप्] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।

धूम्र-शूक—पु०[ब०स०] ऊँट।

धूम्रा—स्त्री०[धूम्र+अच्—टाप्] एक प्रकार की ककडी।

धूम्राक्ष—वि०[धूम्र-अक्षि ब०स०, अच्] जिसकी आँखें धूएँ के रग की हो।

पुं० रावण का एक सेनापति।

धूम्राट—पु०[स० धूम्र√अट् (गति)+अच्] धूम्याट पक्षी। भिंगराज।

धूम्राभ—पु० [धूम्र-आभा ब०स०]१. वायु। २. वायुमडल।

धूम्रार्चि (स्)—स्त्री०[धूम्र-अर्चिस ब०म०] अग्नि की दस कलाओ मे से एक।

धूम्राश्व—पु०[धूम्र-अश्व ब० स०] इक्ष्वाकु वशीय एक राजा।

धूम्रिका—स्त्री० [स० धूम्रा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व]शीशम की तरह का एक प्रकार का पेड।

धूम्रीकरण—पु० [स० धूम्र+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] (रोग के कीटाणुओ से मुक्त करने के लिए या हवा की गदगी दूर करने के लिए) कमरे आदि मे सुगंधित धूप, संक्रमणनाशक वाष्प आदि प्रसारित करना। (फ्यूमिगेशन)

धूर—स्त्री० [स० धुर] जमीन की एक नाप जो एक बिस्वासी के बराबर होती है। बिस्वे का बीसवाँ भाग।

स्त्री० [?]एक प्रकार की घास।

†स्त्री०=धूल।

अव्य०=धुर।

पु० [?]बादल।

धूरकट—पुं० दे० 'धुरकुट'।

धूरजटी—पु०=धूर्जटि।

धूर डाँगर—पु०[देश०] पशु, विशेपत. सीगोंवाला पशु।

धूरत†—वि०=धूर्त।

धूर-धान—पु०=धूल-धानी।

धूर-धानी†—स्त्री०=धूल-धानी।

धूर-यात्रा†—स्त्री०=धूलियात्रा।

धूर-संझा—स्त्री०[स० धूलि+सध्या] गोधूलि का समय।

धूरा—पु०[हिं० धूर]१ धूल। गर्द। २. महीन चूर्ण। बुकनी। ३. रोगी के हाथ-पैर ठढे हो जाने पर गरम राख या सोठ आदि के चूर्ण से वे अग धीरे-धीरे मलने की क्रिया, जिससे हाथ-पैर मे फिर गरमाहट आ जाती है।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

४. अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए की जानेवाली चापलूसी या मीठी-मीठी बातो से दिया जानेवाला भुलावा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

धूरि—स्त्री०=धूल। उदा०—जब आवत सतोप धन, सब धन धूरि समान।—तुलसी।

धूरि-छेत्र*—पु०[स० धूलि+क्षेत्र] जगत। संसार। उदा०—धूरि क्षेत्र मे आइ कर्म करि हरिपद पावै।—नंददास।

धूरिया-बेला—पुं०[हिं०धूर+बेला]एक प्रकार का बेला (पौधा और फूल)।

धूरिया-मलार—पु० [धूरिया? +सं०मल्लार] सपूर्ण जाति का एक प्रकार का मल्लार जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

धूरे—अव्य० १. धीरे। २. धीरे।

धूर्जटि—पु० [स० धूर्—जटि ब० स०] शिव। महादेव।

धूर्त—वि० [स०√धूर्व् (हिंसा)+तन्] [भाव० धूर्तता] १. जो कपट या छलपूर्ण आचरण करके अथवा चालाकी या दाँव-पेंच के द्वारा अपना काम इस प्रकार निकाल लेता हो कि लोगो को सहसा उसके वास्तविक स्वरूप का पता तक न चलने पाता हो। बहुत बडा चालाक। २. कपटी। छली। धोखेबाज। ३. दुष्ट। पाजी।

पु० १ साहित्य मे, शठ नायक का एक भेद। २ जुआरी जो तरह-तरह के दाँव-पेच करता है। ३. चोर नामक गंध-द्रव्य। ४. लोहे की मैल या मोरचा। ५. धतूरा। ६. विट् लवण।

धूर्तक—पु [स० धूर्त+कन्] १. जुआरी। २. गीदड़। ३. कौरव्य कुल का एक नाग।

धूर्त-चरित—पु० [प० त०] १. धूर्तो का चरित्र। २ [ब० स०] सकीर्ण नाटक का एक भेद।

धूर्तता—स्त्री० [स० धूर्त+तल्—टाप्] धूर्त होने की अवस्था, गुण या भाव। दुष्ट उद्देश्य से की जानेवाली चालाकी।

धूर्त-मानुषा—स्त्री० [धूर्त=हिंसित-मानुष व० स०, टाप्] रास्ना लता।

धूर्त-रचना—स्त्री० [प० त०] छल-कपट।

धूर्धर—वि० [स० धूर्-धर ष० त०] १. बोझ ढोनेवाला। भारवाही। २. दे० 'धुरधर'।

धूर्य—पु० [स०=धुर्य पृषो० सिद्धि] विष्णु।

धूर्वह—वि० [स० धुर्-वह ष० त०, पृषो० दीर्घ] १ भार वहन करनेवाला। २ कार्य का दायित्व अपने ऊपर लेनेवाला।

पु० बोझ ढोनेवाला पशु।

धूर्वी—स्त्री० [स० धूर्√अज् (गति)+क्विप्, वी आदेश] रथ का अग्र-भाग।

धूल—स्त्री० [स० धूलि] १. सूखी मिट्टी के वे सूक्ष्म कण जो हवा या आँधी के समय वातावरण मे उड़ते रहते हैं। गर्द। रज। जैसे—लडके धूल उडाते है।

क्रि० प्र०—उडना।

मुहा०—(किसी जगह) धूल उड़ना या बरसना=ध्वस्त या नष्ट हो जाने के कारण या चहल-पहल न रहने के कारण बहुत उदासी छाना। तबाही या बरबादी के लक्षण स्पष्ट दिखाई देना। **(किसी व्यक्ति की) धूल उड़ाना**=(क) किसी की त्रुटियो, दोषो, बुराइयो आदि की खूब चर्चा करके उसे परम तुच्छ ठहराना। (ख) खूब उपहास करना। दिल्लगी उडाना। **(किसी का) धूल उड़ाते या फाँकते फिरना**=दुर्दशा भोगते हुए इधर-उधर मारे-मारे फिरना। **धूल की रस्सी बटना**=(क) बिना किसी आधार या तत्त्व के कोई बडा काम करने का प्रयत्न करना। (ख) अनहोनी या व्यर्थ की बात के लिए परिश्रम या प्रयत्न करना। **(किसी के आगे) धूल चाटना**=बहुत गिड़गिडाकर अपनी अधीनता या दीनता प्रकट करना। **(जगह-जगह की) धूल छानना**=किसी काम के लिए जगह-जगह दुर्दशा भोगते हुए या मारे-मारे फिरना। **(किसी की) धूल झडना**=मारे-पीटे जाने पर भी इस प्रकार ज्यो के त्यो रहना कि मानो कुछ हुआ ही न हो। (परिहास और व्यग्य) जैसे—अच्छा जाने दो, तुम्हारे शरीर की धूल झड गई।

२. किसी वस्तु पर पडे हुए उक्त कण। जैसे—कपडे पर बहुत धूल पडी है।

क्रि० प्र०—पडना।

मुहा०—धूल झाड़कर अलग या चलता होना=अपमान, आघात आदि सहकर भी उसकी उपेक्षा करना। **(किसी की) धूल झाड़ना**=(क) (किसी को) मारना-पीटना। (विनोद) (ख) बहुत ही तुच्छ या हीनभाव से किसी की चापलूसी और सेवा-शुश्रूषा करना। **(किसी बात पर) धूल डालना**=(क) उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर जाने देना। ध्यान न देना। (ख) अनुचित और निंदनीय समझकर किसी बुरी बात की चर्चा फैलने न देना। जान-बूझकर छिपाने या दबाने का प्रयत्न करना। **धूल फाँकना**=(क) दुर्दशा भोगते हुए व्यर्थ का प्रयत्न करना। (ख) जान-बूझकर सरासर झूठ बोलना। **(अपने) सिर पर धूल डालना**=कोई अनुचित काम हो जाने पर बहुत पछताना और सिर धुनना। **(किसी के) सिर पर धूल डालना**=बहुत ही तुच्छ या हीन समझकर उपेक्षा करना या दूर हटाना।

पद—पैरों की धूल=अत्यत तुच्छ या हीन। परम उपेक्ष्य। जैसे—वह तो आपके पैरो की धूल है।

३. मिट्टी।

मुहा०—धूल में मिलना=(क) पूर्णतया नष्ट हो जाना कि नाम-निशान तक न रहे। (ख) चौपट हो जाना।

४. धूल के समान तुच्छ वस्तु। जैसे—इस कपडे के सामने वह धूल है।

क्रि० प्र०—समझना।

धूलक—पुं० [स० √धू (काँपना)+लक] जहर। विष।

धूल-कूप—पु० [स०] हिम-नदी के तल पर कही-कही दिखाई देनेवाले वे गहरे गड्ढे जो कडी धूप पडने से बनते हैं और जिनमे ऊपर पडी हुई धूल समाकर नीचे बैठ जाती है। (डस्ट वेल)

धूल-धक्कड़—पु० [हिं० धूल+धक्का] १. चारो ओर उडनेवाली धूल। २. चारो ओर मचनेवाला निंदनीय उत्पात या उपद्रव। जैसे—चुनाव के समय हर जगह एक-सा धूल-धक्कड दिखाई देता था।

धूल-धान—पु०=धूल-धानी।

धूल-धानी—स्त्री० [हिं० धूल+धान?] १ गर्द या धूल का ढेर। २ चूर-चूर करके धूल की तरह बनाने की क्रिया या भाव। ३. ध्वस। विनाश। ४ सर्वनाश।

धूल-यात्रा—स्त्री०=धूलि-यात्रा।

धूला†—पु० [देश०] टुकड़ा। खड। कतरा।

†पु०=धूल।

धूलि—स्त्री० [स०√धू+लि] धूल। गर्द।

धूलि-कदंब—पु० [ब० स०] एक प्रकार का कदब का वृक्ष और उसका फल।

धूलिका—स्त्री० [स० धूलि+कन्—टाप्] १. महीन जल-कणो की झड़ी। फुहार। २. कोहरा।

धूलि-गुच्छक—पु० [प० त०] अबीर-गुलाल आदि, जो होली मे एक-दूसरे पर डाले जाते है।

धूलि-चित्र—पु० [मध्य० स०] वे आकृतियाँ या कोष्ठक, जो रगो के चूर्ण जमीन पर भुरक कर बनाये जाते है। साँझी। (देखें)

धूलि-धूसर—वि०=धूलि-धूसरित।

धूलि-धूसरित—वि० [तृ० त०] धूल पडने के कारण जिसका रग धूसर या मटमैला हो गया हो।

धूलि-ध्वज—पु० [ब० स०] वायु। हवा।

धूलि-पुष्पिका—स्त्री०[ब० स०, कप्—टाप्, इत्व] केतकी।

धूलि-यात्रा—स्त्री० [मध्य० स०?] किसी देवता के धाम मे पहुँचने पर उसके मन्दिर मे जाकर किया जानेवाला वह दर्शन जो रास्ते मे पैरो पर पडी हुई धूल बिना धोये अर्थात् सीधे मन्दिर मे पहुँचकर किया जाता है। (पैदल यात्री)

धूलिया-पीर—पु० [हिं० धूल+फा० पीर] एक कल्पित पीर जिसका नाम बच्चे खेलो आदि मे लिया करते हैं। जैसे—तुम्हे धूलिया-पीर की कसम है, वहाँ मत जाना।

धूर्वा—पु०=धूर्आ।

धूसना—स० [स० ध्वसन] १. खराब या निकम्मा करने के लिए कुचलना, दबाना या मलना-दलना। दलन या मर्दन करना। २. दे० 'ठूसना'।

धूसर—वि० [स०√धू+सरन्] १. धूल के रग का। भूरे या मटमैले रग का। खाकी। २. जिसमे धूल लगी या लिपटी हो।

पु० १ पीलापन लिये सफेद अर्थात् भूरा या मटमैला रग। २. गधा। ३ ऊँट। ४ कबूतर। ५ एक व्यापारिक जाति, जिसे कुछ लोग वैश्यो मे और कुछ लोग ब्राह्मणो मे मानते है। ढूसर।

धूसरच्छदा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] एक प्रकार का पौधा, जिसे बुहना या बोहना भी कहते है।

धूसर-पत्रिका—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप् +कन्, टाप्, ह्रस्व] हार्थीसूँड का पौधा।

धूसरा—वि० [स० धूसर] [स्त्री० धूसरी] १. धूल के रग का। मटमैला। खाकी। २ जिस पर धूल पडी या लगी हो। धूल से सना हुआ।

स्त्री० [स०] पाडुफली।

धूसरित—वि० [स० धूसर+इतच्] १. धूल लगने के कारण जो मैला-कुचैला हो गया हो। धूल से लिपटा हुआ। २. भूरे या मटमैले रंग का।

धूसरी—स्त्री० [स०] किन्नरियो का एक वर्ग।

धूसला†—वि०=धूसरा।

धूस्तूर—पु० [स०√धूस् (कान्ति)+क्विप्,√तूर् (शीघ्रता)+क, धूस्-तूर कर्म० स०] धतूरा।

धूहा—पु० [हि० ढूह] १ ढूह। २. बाँस पर टाँगी जानेवाली काली हाँडी या पुतला, जो खेतो मे पक्षियो को डराकर दूर रखने के लिए खड़ा किया जाता है।

धृक—अव्य०=धिक्।

धृग—अव्य०=धृक।

धृत—वि० [स०√धृ (धारण)+क्त] १. हाथ से धरा या पकड़ा हुआ। २ गिरफ्तार किया हुआ। ३ धारण किया हुआ। ४. निश्चित या स्थिर किया हुआ। ५ पतित।

पु० १. ग्रहण या धारण करने का भाव। २. कुश्ती लडने का एक ढग। ३ तेरहवें मनु रौच्य के पुत्र का नाम। ४ पुराणानुसार द्रुह्य-वशीय धर्म का एक पुत्र।

धृतकेतु—पु० [सं०] वसुदेव के बहनोई का नाम। (गर्ग सहिता)

धृत-दंड—वि० [ब० स०] १. जिसे दड मिला हो। दडित। २. दड देनेवाला।

धृतदेवा—स्त्री० [स०] देवक की एक कन्या।

धृतमाली—पु० [स०] अस्त्रो को निष्फल करनेवाला एक प्रकार का अस्त्र। अस्त्रो का एक सहार। (रामायण)

धृत-राष्ट्र—पु० [ब० स०] १ ऐसा देश जिसे कोई अच्छा और योग्य राजा धारण करता अर्थात् अपने शासन मे रखता हो। २. ऐसा राजा जिसका राज्य और शासन दृढ हो, अर्थात् जो देश को पूर्णत: अपने अधिकार या वश मे रखता हो। ३ महाभारत काल के एक प्रसिद्ध राजा, जो विचित्रवीर्य के पुत्र और दुर्योधन के पिता थे। ये अन्धे थे। ४. एक नाग का नाम। ५ बौद्धो के अनुसार एक गधर्व राजा। ६. जनमेजय के एक पुत्र। ७. एक प्रकार का हस, जिसकी चोच और पैर काले होते है।

धृतराष्ट्री—स्त्री० [स० धृतराष्ट्र+ङीप्] १. कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओ मे से एक, जो हसो की आदि माता थी। २. धृतराष्ट्र की पत्नी।

धृत-वर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०] जिसने वर्म अर्थात् कवच धारण किया हो।

पु० त्रिगर्त्त का राजकुमार, जिसके साथ अर्जुन को उस समय युद्ध करना पडा था जब वे अश्वमेध के घोडे की रक्षा के लिए उसके साथ गये थे।

धृत-विक्रय—पु० [मध्य० स०] तौलकर चीजें बेचने का ढग या प्रकार। (कौ०)

धृतव्रत—वि० [ब० स०] जिसने कोई व्रत धारण किया हो।

पु० पुरुवशीय जयद्रथ के पुत्र विजय का पौत्र।

धृतात्मा (त्मन्)—वि० [धृत-आत्मन् ब० स०] १. जो अपनी आत्मा या मन को अच्छी तरह वश में और स्थिर रखता हो। २ धीर।

पु० विष्णु।

धृति—स्त्री० [स०√धृ+क्तिन्] १ धारण करने की क्रिया या भाव। २ धारण करने का गुण या शक्ति। धारणा-शक्ति। ३. चित्त या मन की अविचलता, दृढ़ता या स्थिरता। ४ धीर होने की अवस्था या भाव। धैर्य। ५ साहित्य मे, एक सचारी भाव जिसमे इष्टप्राप्ति के कारण इच्छाओ की पूर्ति होती है। ६. दक्ष की एक कन्या, जो धर्म की पत्नी थी। ७. अश्वमेध की एक आहुति। ८. सोलह मातृकाओ मे से एक। ९ अठारह अक्षरोवाले वृत्तो की सज्ञा। १० चद्रमा की सोलह कलाओ मे से एक कला का नाम। ११. फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग।

पु० १. जयद्रथ राजा के पौत्र का नाम। २ एक विश्वेदेव का नाम। ३. यदुवशी बभ्रु का पुत्र।

धृतिमान (मत्)—वि० [स० धृति+मतुप्] [स्त्री० धृतिमती] १ धैर्यवान्। २ तुष्ट। तृप्त।

धृत्वरी—स्त्री० [स०√धृ+क्वनिप्+ङीप्, र आदेश] पृथ्वी।

धृत्वा (त्वन्)—पुं० [स०√धृ+क्वनिप्] १ विष्णु। २ ब्रह्मा। ३. धर्म। ४. आकाश। ५. समुद्र। ६ चतुर आदमी।

धृषित—वि० [स०]=धृषु।

धृषु—वि० [स०√धृष्+कु] १ पराजित करनेवाला। वीर। २. आक्रमण करनेवाला।

पु० राशि। समूह।

धृष्ट—वि० [स०√धृष्+क्त] [भाव० धृष्टता] १ बड़ो के समक्ष लज्जा या सकोच त्यागकर ओछा या बेहूदा काम करनेवाला। २. ऐसा काम करनेवाला जिससे बडो के सम्मान को कुछ धक्का लगता हो। ३. जो अनुचित काम करने से भयभीत या सकुचित न होता हो। दुस्साहसी।

पु० १. साहित्य मे, वह नायक जो बार-बार वही काम करता हो जिससे प्रेमिका खिन्न होती हो और मना किये जाने पर भी न मानता हो।

२ चेदिवशीय कुति का पुत्र। (हरिवंश) ३ सातवें मनु का एक पुत्र। ४. अस्त्रों का एक प्रकार का प्रतिकार या सहार।

धृष्टकेतु—पु० [स०] १ चेदि देश के राजा शिशुपाल का एक पुत्र जिसका वध द्रोणाचार्य ने महाभारत के युद्ध में किया था। २. नवें मनु रोहित के पुत्र। ३ जनक-वशीय सुध्वति के पुत्र।

धृष्टता—स्त्री० [स० धृष्ट+तल्—टाप्] १. धृष्ट होने की अवस्था या भाव। २. स्वभाव की ऐसी उद्दडता जो शील-सकोच के अभाव के कारण होती है। ३. धृष्ट बनकर किया जानेवाला आचरण या व्यवहार। ४ बडो के सामने किया जानेवाला ओछा या बेहूदा आचरण। गुस्ताखी।

धृष्टद्युम्न—पु० [स०] राजा द्रुपद का एक पुत्र, जिसने पिता का बदला चुकाने के लिए महाभारत के युद्ध मे द्रोणाचार्य का वध किया था।

धृष्टा—स्त्री० [स० धृष्ट+टाप्] दुश्चरित्रा स्त्री।
वि० 'धृष्ट' का स्त्री०।

धृष्टि—पु० [स०√धृष्+क्तिच्] १ एक प्रकार का यज्ञ-पात्र। २ हिरण्याक्ष का एक पुत्र। ३ दशरथ का एक मत्री।

धृष्णक्—वि० [स०√धृष्+नजिङ्]=धृष्ट।

धृष्णि—पु० [स०√धृष्+नि] प्रकाश की रेखा। किरण।

धृष्णु—वि० [सं०√धृष्+क्नु]=धृष्ट।
पु० १. वैवस्वत मनु के एक पुत्र। २. सावर्णि मनु के एक पुत्र। ३. एक रुद्र का नाम।

धृष्णोजा (जस्)—पु० [स०] कार्तवीर्य के एक पुत्र।

धृष्य—वि० [स०√धृष्+क्यप्] १. जिसका धर्षण हो सके या होना उचित हो। धर्षणीय। २ जिस पर आक्रमण किया जा सके। आक्रमण किये जाने के योग्य। ३. जीते जाने के योग्य।

धेड़ी कौआ—पु० [धेड़ी ? +हिं० कौआ] बड़ा काला कौआ। डोम कौआ।

धेन—पु० [स०√धे (पान)+नन्] १. समुद्र। २ नद।
†स्त्री०=धेनु।

धेना—स्त्री० [स० धेन+टाप्] १ नदी। २. वाणी। ३ दुधारू गाय।

धेनिका—स्त्री० [स० धेन+कन्—टाप्, इत्व] धनिया।

धेनु—स्त्री० [स०√धे+नु] १. दुधारू गाय। सवत्सा गौ। २. गाय। गौ। ३. पृथ्वी। ४. भेंट।

धेनुक—पु० [स० धेनु+कन्] १ एक प्राचीन तीर्थ। २ वह राक्षस जिसे बलदेव जी ने मारा था। ३ दे० 'धैनुक' (आसन)।

धेनुका—स्त्री० [सं० धेनुक+टाप्] १ धेनु। गौ। २ कोई मादा पशु। ३. कामशास्त्र मे, हस्तिनी स्त्री। ४ पार्वती। ५ छोटी तलवार। कटार।

धेनु-दुग्ध—पु० [प० त०] १ गाय का दूध। २. [ब० स०] चिर्भिटा नामक वनस्पति।

धेनु-दुग्ध-कर—पुं० [प० त०] गाजर, जिसे खाने से गौओ का दूध बढ़ता है।

धेनु-धूलि—स्त्री० दे० 'गो-धूलि'।

धेनु-मक्षिका—स्त्री० [मध्य० स०] बड़े मच्छड़, जो चौपायो को काटते हैं। डांस। डस।

धेनुमती—स्त्री० [स० धेनु+मतुप्—ङीप्] गोमती नदी।

धेनु-मुख—पु० [ब० स०] गोमुख नाम का बाजा। नरसिंहा।

धेनुष्या—स्त्री० [सं० धेनु+यत्, षुक्, टाप्] वह गाय जो बधक या रेहन रखी गई हो।

धेय—वि० [स०√धा (धारण)+यत्, ईत्व] १. जो धारण किये जाने के योग्य हो। जिसे धारण कर सकें। धार्य। २. जो पीया जा सके। पेय। ३ जिसका पालन-पोषण किया जा सके या किया जाने को हो। पाल्य।
प्रत्य० एक प्रत्यय जो सज्ञाओ के अन्त मे लगकर अधिकारी, पात्र, वाला आदि का अर्थ देता है। जैसे—नामधेय, भागधेय।

धेयना*—अ०=ध्यान करना।

धेर—पु० [देश०] एक अनार्य्य जाति; जो मरे हुए जानवरो का मांस खाती है।

धेरा—वि० [हिं० डेरा=भेंगा] भेंगा।
पु० [हिं० धेरी] १. पुत्र। २. लड़की का पुत्र। नाती।

धेरी—स्त्री० [सं० दुहिता] पुत्री।

धेलचा†—पु० [हिं० अधेला] आधा पैसा। अधेला। धेला।
वि० एक अधेले अथवा धेले के मूल्य का। उदा०—मानों कोई धेलचा कनकौआ गडेवाले कनकौवे को काट गया हो।—प्रेमचन्द।

धेला—पु०=अधेला। (पश्चिम)

धेली—स्त्री० [हिं० आधा] आधा रुपया या उसका सिक्का। अठन्नी।

धेवता†—पु० [स्त्री० धेवती] दोहता (नाती)।

धैं†—अव्य० [हिं० दुहाई] दुहाई। जैसे—राम-धैं।

धैताल†—वि०=धौताल।

धैनव—वि० [स० धेनु+अण्] १. धेनु अर्थात् गौ से सबध रखनेवाला। २. गौ से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला। जैसे—धैनव दुग्ध।
पु० धेनु अर्थात् गौ का बच्चा। बछड़ा।

धैना†—पु० [हिं० धरना=पकडना] १. पकड़ा या ग्रहण किया हुआ काम। २. पकड़ी या ग्रहण की हुई आदत। टेव। ३. जिद। हठ।
†स०=धरना (पकडना)।

धैनुक—पु० [स० धेनु+ठक्—क] १. गौओ का दल। २ कामशास्त्र मे, एक प्रकार का आसन या रति-बध।

धैर्य—पु० [स० धीर+ष्यञ्] १. मन का वह गुण या शक्ति जिसकी सहायता से मनुष्य कष्ट या विपत्ति पड़ने पर भी विचलित या व्यग्र नही होता और शान्त रहता है। सकट के समय भी उद्विग्नता, घबराहट, विकलता आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। धीरज। सब्र।
क्रि० प्र०—धरना।

धैवत—पु० [स० धीमत्+अण्, पृषो० म को व] सगीत मे, सात स्वरो मे से छठा स्वर जो मदती, रोहिणी और रम्या नाम की तीन श्रुतियो के योग से बनता है। पचम और निषाद के बीच का स्वर। इसका सकेत-चिह्न 'ध' है।
विशेष—कहते हैं कि इस स्वर का उच्चारण मूलत. नाभि से होता है; और किसी के मत से घोड़े के हिनहिनाने और किसी के मत से मेढक के टरटराने के समान होता है। यह षाड्व जाति का, क्षत्रिय वर्ण

का और पीले रंग का माना गया है और भयानक तथा वीभत्स रस के लिए उपयुक्त कहा गया है।

धैवत्य—पु० [स० धीवन्+ष्यञ्, न को त] चतुराई। चालाकी।

धोंकना†—अ० [?] काँपना, थरथराना या बार-बार हिलना। स०=धौंकना।

धोंडाल—वि० [हिं०] (जमीन या मिट्टी) जिसमें कंकड़-पत्थर आदि मिले हों।

धोंधया†—पु० [हिं० धूआँ] [स्त्री० अल्पा० धोंधकी] वह मार्ग जो घर का धूआँ बाहर निकालने के लिए छत या दीवार में बनाया जाता है।

धोंधा—पु० [अनु०] १. मिट्टी आदि का बे-डौल पिंड। लोंदा। २. भद्दी और बे-डौल आकृति, पिंड या शरीर।

वि० १ बे-डौल। बे-ढंगा। २ मूर्ख। मूढ़।

पद—धोंधा बसंत=बहुत मोटा और वज्र मूर्ख। (व्यंग्य)

धो†—पु० [हिं० धोना] एक बार किसी वस्त्र के धुलने या धोये जाने का भाव। धोव। जैसे—दो धो में धोती फट गई।

धोई—स्त्री० [हिं० धोना] १. वह दाल जो भिगो और धोकर छिलके से अलग कर ली गई हो। २. अफीम बनाने के बरतन की धोवन।

धोकड़ (ा)†—वि० [देश०] मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा।

धोका†—पु०=धोखा।

धोख†—पु०=धोखा।

धोखा—पु० [स० द्रोघः प्रा० दोह] १. किसी को बहला या बहकाकर उसके स्वार्थ और अपने वचन के विरुद्ध किया जानेवाला अनैतिक आचरण। जैसे—आज भी वे समय पर धोखा देंगे।

मुहा०—धोखा खाना=ठगा जाना। धोखा देना=किसी के साथ छलपूर्ण व्यवहार करना।

२. पहचानने, समझने आदि में होनेवाली भूल। भ्रम। जैसे—आँखें धोखा खा गईं और रस्सी को साँप समझ बैठी।

क्रि० प्र०—खाना।

३. भ्रम उत्पन्न करनेवाली कोई बात। ऐसी चीज जिसे देखकर धोखा होता हो।

पद—धोखे की टट्टी=(क) वह टट्टी या आवरण जिसकी आड़ से शिकारी शिकार करते हैं। (ख) दूसरों को भ्रम में डालनेवाली चीज या बात।

मुहा०—धोखा खड़ा करना=आडंबर रचना।

४. अनजान या अज्ञान से होनेवाली भूल।

पद—धोखे में या धोखे से=भूल से। जैसे—यह प्रश्न धोखे से छूट गया।

५. अनिष्ट की संभावना। जैसे—इस काम में धोखा है। ६ आशा या विश्वास के विरुद्ध होनेवाला कार्य या फल।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) धोखा दे जाना=असमय में ही मर जाना। जैसे—भाई साहब बहुत बुरे समय में धोखा दे गये।

७ बेसन, मैदे आदि का एक पकवान, जिसमें रूई आदि मिलाकर दूसरों को छकाने या बेवकूफ बनाने के लिए खिलाया जाता है। ८ दे० 'बिजूका'। ९. दे० 'खट-खटा'।

धोखेबाज—वि० [हिं० धोखा+फा० बाज] [भाव० धोखेबाजी] जो प्राय. लोगों को धोखा देता रहता है। छली। धूर्त।

धोखेबाजी—स्त्री० [हिं० धोखेबाज] धोखेबाज होने की अवस्था, गुण या भाव। छल। धूर्तता।

धोटा†—पु० [स्त्री० धोटी]=ढोटा (पुत्र या बालक)।

धोड़—पु० [सं०] एक प्रकार का साँप।

धोतर—पु० [सं०] १. एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो गाढ़े की तरह का होता है। अधोतर। २ पहनने की धोती। (महाराष्ट्र)

धोतरा†—पु० [?] १.=धोतर। २.=धतूरा।

धोती—स्त्री० [स० अधोवस्त्र] प्राय. नौ-दस हाथ लम्बा और दो ढाई हाथ चौड़ा कपड़ा, जो कमर और उसके नीचे के अंग ढकने के लिए पहना जाता है।

विशेष—स्त्रियाँ इससे कमर के नीचे के अंग ढकने के सिवा ऊपर के अंग भी ढक लेती हैं।

मुहा०—धोती ढीली होना=साहस छूट जाना।

स्त्री० दे० 'धौति'।

धोना—स० [स० धावन=धोना] १. जल या कोई तरल पदार्थ डालकर गंदगी, धूल, मैल आदि दूर करना। जल की सहायता से साफ या स्वच्छ करना।

विशेष—इस क्रिया का प्रयोग उस आधार के संबंध में भी होता है जिस पर कोई अवांछित तत्त्व या पदार्थ पड़ा हो; जैसे—कपड़ा, बरतन, या हाथ-पैर धोना; और उस अवांछित तत्त्व या पदार्थ के संबंध में भी होता है, जिसे किसी आधार या चीज पर से हटाना अभीष्ट होता है; जैसे—कालिख, मैल या रंग धोना।

पद—धोया-धाया=(क) धोकर बिलकुल साफ या स्वच्छ किया हुआ। (ख) सब प्रकार के दोषों आदि से रहित।

२. कपड़ों आदि के संबंध में, खार, सज्जी, साबुन आदि की सहायता से अच्छी तरह मल या रगड़कर गंदगी, दाग, मैल आदि दूर करना। जैसे—यह धोबी कपड़े ठीक नहीं धोता। ३. जल या किसी तरल पदार्थ का किसी तल पर होते हुए चलना या बहना अथवा उसे स्पर्श करते हुए इधर-उधर होना। जैसे—(क) समुद्र हमारे देश के चरण धोता है। (ख) वह दिन-रात आँसुओं से मुँह धोती रहती थी। ४. इस प्रकार दूर करना या हटाना कि मानो जल से अच्छी तरह रगड़कर नष्ट या समाप्त कर दिया गया हो। जैसे—आपके अनुग्रह ने मेरे सब पाप धो दिये।

मुहा०—धो बहाना=पूरी तरह से दूर, नष्ट या समाप्त करना। नाम को भी न रहने देना। जैसे—आपने तो उनके सारे उपकार धो बहाये। (किसी चीज से) हाथ धोना या धो बैठना=सदा के लिए या स्थायी रूप से किसी चीज से रहित या वंचित होना। बिलकुल गवाँ देना। जैसे—अपनी जरा-सी भूल से वे इतनी बड़ी संपत्ति से हाथ धो बैठे। हाथ धोकर (किसी काम या बात के) पीछे पड़ना=और काम या बातें छोड़कर पूरी तरह से एक ही काम या बात में लग जाना। जैसे—आज-कल वह हाथ धोकर मुकदमे के पीछे पड़े हैं। हाथ धोकर (किसी आदमी के) पीछे पड़ना=किसी को पूरी तरह से अपमानित, दु खी या पीडित करने के प्रयत्न में लग जाना। जैसे—तुम तो जिससे नाराज होते हो, हाथ धोकर उसी के पीछे पड़ जाते हो।

धोप—स्त्री० [?] तलवार। खग।
पु०=धो (धोव)।
धोपा—पु० १=धोखा। २. =धोपेबाजी।
धोपेबाजी—स्त्री० [हिं० धोपा+फा० बाजी] किसी की आँख मे धूल झोककर या उसे मूर्ख बनाकर धोखा देने की क्रिया या भाव।
धोब†—पु०=धो या धोव।
धोबइन†—स्त्री०=धोबिन।
धोबन—स्त्री०=धोबिन।
धोबिन—स्त्री० [हिं० धोबी का स्त्री०] १. कपडे धोने का व्यवसाय करनेवाली अथवा धोबी जाति की स्त्री। २. दस-बारह अगुल लबी एक प्रकार की सुन्दर चिडिया, जो जलाशयो के किनारे रहती है। इसकी बोली बहुत मीठी होती है। ३ बीर-बहूटी नाम का कीडा। ४. शीशम की जाति का एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसकी लकडी परतदार होती और इमारत के काम मे आती है।
धोबिया-पाट—पु०=धोबीपाट।
धोबी—पुं० [हिं० धोना] [स्त्री० धोबिन] १. एक जाति जो मैले कपड़े धोकर साफ करने का काम करती है। २. उक्त जाति का व्यक्ति। **पद**—**धोबी का कुत्ता**=ऐसा तुच्छ, निकम्मा और व्यर्थ का व्यक्ति, जिसका कही ठौर-ठिकाना न हो। (धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का, वाली कहावत के आधार पर)
धोबी-घाट—पु० [हिं० धोबी+घाट] वह घाट जहाँ धोबी कपडे धोते हैं।
धोबी-घास—स्त्री० [हिं०] बड़ी दूब। दूबा।
धोबी पछाड़—पु०=धोबीपाट।
धोबी-पाट—पु० [हिं०] कुश्ती का एक पेच जिसमे जोड का हाथ पकडकर अपने कधे की ओर खीचते है और उसे कमर पर लाद कर उसी तरह जमीन पर पटकते है जिस प्रकार धोबी कपडे पछाडने के समय उन्हे पत्थर पर पटकता है।
धोम†—पु०=धूम (धूआँ)।
धोमय†—वि० [स० धूममय] १. धूसर। धूमिल। २. गदा। मैला।
धोर†—पु० [?] किनारा। तट। उदा०—अड को धोर ह्याँ ते रहाई।—कबीर।
अव्य०=धौरे (पास)।
धोरण—पु० [स०√धोर् (गति)+ल्युट्—अन] १. सवारी। २ घोडे की सरपट चाल। ३ दौड। ४ कार्य करने का ढग या नीति। (महाराष्ट्र)
धोरणि—स्त्री० [स०√धोर्+नि] १. शृखला। २ श्रेणी। ३ परपरा।
धोरा†—वि०[स्त्री० धोरी]=धौरी (धवल या सफेद)।
धोरित—पु०[स० √स० धोर्+क्त]१ गमन। चाल। २ घोडे की दुलकी चाल।
धोरी—वि०[हिं० धुरा ?]१ धुरा अर्थात् मूल भार सँभालनेवाला। २ प्रधान। मुख्य।
पु०१ वह जो स्वामी के रूप मे पूरी तरह से देख-भाल, रक्षण आदि करता हो। जैसे—इस मकान का कोई धनी-धोरी नही है। उदा०—काहू को सरन है, कुबेर ऐसे धोरी को।—हठी। २. वह जो निरतर कोई विशेष काम करता रहता हो। जैसे—धधक-धोरी। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति। ४. नेता। ५ बैल।
धोरे—अव्य०[सं० धार=किनारा] निकट। पास। समीप।
धोला—पु०[स० दुरालभा] जवासा। धमासा।
धोलाना†—स०=धुलाना।
धोव—पु०[हिं० धोना] कपडा साफ करने के लिए होनेवाली उसकी प्रत्येक बार की धुलाई। वस्त्र के एक बार धुलाने का भाव। धो। जैसे—इस धोती पर अभी चार धोव भी नही पडे कि यह फट गई।
क्रि० प्र०—पडना।
धोवत†—पु०=धोबी।
धोवती†—स्त्री०=धोती।
धोवन—स्त्री०[हिं० धोवना=धोना]१ धोने की क्रिया या भाव। २ वह पानी जो कोई चीज धोने पर निकला हो। जैसे—चावलों की धोवन।
धोवना*—स०=धोना।
धोवा—पु०[हिं० धोवना=धोना]१. कोई चीज धोने पर निकला हुआ गदा या मैला पानी। धोवन। २ जल। पानी। ३. अरक।
धोवाना†—स०=धुलाना।
अ०=धुलना।
धोसा†—पु०[?] गुड आदि का सूखा हुआ पिंड। भेली।
धौं—अव्य०[स० अथवा]अवधी, ब्रज आदि बोलियो का एक अव्यय, जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों और रूपो मे होता है—१ विकल्पात्मक कथन मे, अनिश्चय या सशय के साथ किंचित् कुतूहल का भाव सूचित करने के लिए । ठीक कहा नही जा सकता कि ऐसा है या वैसा, अथवा यह है या वह। उदा०—गुनत सुदामा जात मनहिं मन चीन्हिंगे धौ नाही।—सूर। २. न जाने। पता नही। मालुम नही। उदा०—अब धौं कहा करिहि करतारा।—तुलसी। ३. 'तो' 'भला' आदि की तरह किसी बात या शब्द पर केवल जोर देने के लिए । उदा०—(क) जड पच मिलै जेहि देह करी, करनी लखु धौं धरनीधर की।—तुलसी।(ख)तुम कौन धौ पाठ पढे हौ लला।—घनानद। ४ तुम्ही कहो या बताओ तो सही। उदा०—(क)अब धौं कहाँ कौन दर जाऊँ।—सूर। (ख) कृपा सो धौ कहाँ बिसारी राम।—तुलसी। ५. सयोजक अव्यय 'कि' की तरह या उसके स्थान पर। उदा०—हमहुँ न जानै धौ सो कहाँ।—जायसी। ६ खाली'तो' की तरह या उसके स्थान पर। जैसे—कि धौ या की धौ। ७ निश्चित या स्पष्ट रूप से। अच्छी तरह। उदा०—तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौ जियँ भामिनी।—तुलसी।
धौंक—स्त्री०[हिं० धौंकना]धौंकने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०[हिं० धधकना] आग की लपट। लौ।
धौंकना—स०[स० धमन या धम्?]१. आग दहकाने के लिए पखे, भाथी आदि की सहायता से, उस पर निरन्तर जोर की हवा पहुँचाते रहना। (ब्लोइग)२ उग्रता या कठोरतापूर्वक किसी पर कोई भार रखना या लादना। जैसे—तुमने भी तो छोटे-से लडके पर मन भर का भार धौक दिया। ३ दड के सबध मे उग्रता या कठोरतापूर्वक आदेश देना। जैसे—किसी पर जुरमाना धौंकना।

धौताल—वि०=धौंताल।

धौति—स्त्री०[स० √धाव्+क्तिन्]१. धोकर साफ करने की क्रिया। धुलाई। २. योग की एक क्रिया जिसमे दो अगुल चौडी और आठ-दस हाथ लंबी कपड़े की धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं, और फिर पानी पीकर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालते है। इस क्रिया से पेट और आँतें धुलकर साफ हो जाती हैं। ३ उक्त क्रिया के लिए काम मे लाई जानेवाली कपड़े की धज्जी या पट्टी।

धौम्य—पु०[स० धूम+यभ्]१. एक ऋषि, जो देवल के भाई और पाडवो के पुरोहित थे। और जो अब पश्चिमी आकाश मे स्थित एक तारे के रूप में माने जाते हैं। २ एक ऋषि जो महाभारत के अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषि के पुत्र और बहुत बडे शिव-भक्त थे। और शिव के प्रसाद से अजर, अमर और दिव्य ज्ञान सपन्न हो गये थे। ३ एक ऋषि का नाम जिन्हे आयोद भी कहते थे। इनके आरुणि, उपमन्यु और वेद नामक तीन शिष्य थे। ४. एक ऋषि, जो पश्चिम दिशा मे तारे के रूप मे स्थित माने जाते है।

धौम्र—वि०[स० धूम्र+अण्]धूएँ के रंग का।
पु० उक्त प्रकार का रग।

धौर—पुं०[हिं० धौरा=सफेद] सफेद परेवा।

धौरहर—पु०[सं० धवलगृह]१. मकान का वह ऊपरी भाग, जो खभे की तरह बहुत ऊँचा गया हो और जिस पर चढने के लिए अन्दर-अन्दर सीढियाँ बनी हों। धरहरा। २ उक्त मे बना हुआ कमरा। ३. दे०'धरहरा'।

धौरा—वि०[स० धवल] [स्त्री० धौरी]१. श्वेत। सफेद। २ उजला। साफ।
पु०१. सफेद रंग का बाल। २. धौ का पेड़। ३ पडुक की तरह की एक चिड़िया, जो उससे कुछ बड़ी और खुलते रग की होती है।
†पुं०[स० धव]वाकली की तरह का एक प्रकार का वृक्ष जो मध्यभारत मे अधिकता से होता है।

धौरादित्य—पु०[सं०] शिवपुराण के अनुसार एक तीर्थ।

धौराहर—पुं०=धौरहर।

धौरितक—पु०[स० धोरित+अण्+कन्] घोड़े की पाँच प्रकार की चालो मे से एक।

धौरिय—पु०[स० धौरेय] बैल।

धौरी—स्त्री०[हिं० धौरा]१ सफेद रग की गाय। कपिला। २. एक प्रकार की चिड़िया।
स्त्री०=वाकली।

धौरे—अव्य०= धोरे (निकट या पास)। उदा०—धरि रहे हाथ माथ के धौरे।—नन्ददास।

धौरेय—वि०[स० धुरा+ढक्—एय] धुर (रथ आदि) खीचनेवाला।
पु० रथ मे जोता जानेवाला बैल।

धौर्तक—पु०[स० धूर्त+वुञ्—अक]=धूर्तता।

धौर्त्य—पु०[स० धूर्त+ष्यञ्] धूर्तता।

धौर्य—पु०[स० धुर+ण्यत्] घोडे की एक प्रकार की चाल।

धौल—स्त्री०[अनु०]१. हाथ के पजे या हथेली से सिर पर किया जाने-वाला आघात।
क्रि० प्र०—जडना।—जमाना।—देना।—पड़ना।—मारना।—लगाना।
पद—धौल-धप्पा या धौल-धप्पड़=परस्पर धौल और धप्पड़ मारना।
२. आर्थिक आघात या धक्का। जैसे—दस रुपए की धौल तुम्हे भी लगी।
क्रि० प्र०—पडना।—लगना।
स्त्री० [सं० धवल] कानपुर, बरेली आदि मे होनेवाली एक प्रकार की ईख।
पुं० [सं० धवल] धौ का पेड। धव।
वि० १. उजला। सफेद। २. बहुत बडा। जैसे—धौल धूर्त=बहुत बडा धूर्त।
†पु=धवलगृह (धौरहर)।

धौलाई—स्त्री०=धवलता।

ध्मात—वि० [स०√ध्मा (शब्द)+क्त] १. बजाया हुआ। २ क्षुब्ध किया हुआ।

ध्मान—पु० [स०√ध्मा+ल्युट्—अन] बजाने की क्रिया।

ध्मापन—पु०[स०√ध्मा+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन][भू० कृ० ध्मापित] १. फूंककर कोई चीज फुलाने का कार्य। २. जलाकर राख करना।

ध्यात—भू० कृ० [स०√ध्यै (चिंतन)+क्त] १ जिसका ध्यान किया गया हो। २. जो ध्यान मे लाया गया हो। विचारा या सोचा हुआ।

ध्यान—पु० [सं०√ध्यै+ल्युट्—अन] १. अत करण या मन की वह वृत्ति या स्थिति जिसमे वह किसी चीज या बात के सबध मे चिंतन, मनन या विचार करने मे अग्रसर या प्रवृत्त होता है। किसी विषय को मानस-क्षेत्र मे लाने या प्रत्यक्ष करने की अवस्था, क्रिया या भाव। मन का किसी विशिष्ट काम या बात की ओर लगना या होना। खयाल। जैसे—(क) हमारी बात ध्यान से सुनो। (ख) अभी वे किसी और ध्यान मे हैं, उन्हें मत छेडो।
क्रि० प्र०—आना। —जाना। —दिलाना। —देना। —लगना। —लगाना।
विशेष—मानसिक और शारीरिक क्षेत्रो के अधिकतर कामो मे हम मुख्यत. ध्यान की प्रेरणा और बल से ही प्रवृत्त होते है। कभी तो बाह्य इद्रियो का कोई व्यापार हमारा ध्यान किसी ओर लगाता है,(जैसे—कोई चीज दिखाई पड़ने पर उसकी ओर ध्यान जाना) और कभी मन स्वत. किसी प्रकार के ध्यान मे लग जाता है; (जैसे—कोई बात याद आने पर उसकी ओर ध्यान जाना या लगना)। यह हमारे अत.करण या चेतना की जाग्रत अवस्था का ऐसा व्यापार है जिससे कोई बात, भाव या रूप हमारे विचार का केंद्र बन जाता या हमारे मन मे सर्वोपरि हो जाता है।
मुहा०—(किसी चीज या बात पर) ध्यान जमना=चित्त का एकाग्र होकर किसी ओर उन्मुख होना। किसी काम या बात मे मन का समुचित रूप से प्रवृत्त होकर स्थित होना। ध्यान बँटना=जब ध्यान एक ओर लगा हो, तब कोई दूसरा काम या बात सामने आने पर उसमे बाधा या विघ्न होना। ध्यान बँधना या लगना=(क) दे० ऊपर 'ध्यान जमना'। (ख) किसी प्रकार के मानसिक चिंतन का क्रम बराबर चलता रहना। जैसे—जब से उनकी बीमारी का समाचार मिला है, तब से हमारा ध्यान उन्ही की तरफ बँधा (या लगा) है। (किसी के)

ध्यान में डूबना, मग्न होना या लगना=किसी के चिंतन, मनन या विचार मे इस प्रकार प्रवृत्त या लीन होना कि दूसरी बातों की चिंता, विचार या स्मरण ही न रह जाय। उदा०—कब की ध्यान-लगी लखै, यह घरु लगिहै काहि ।—बिहारी। **(किसी को) ध्यान में लाना**=(क) किसी को अपने मानस-क्षेत्र मे स्थान देना या स्थापित करना। बराबर मन मे बनाये रखना। उदा०—(क) ध्यान आनि ढिग प्रान-पति रहति मुदित दिन राति।—बिहारी। (ख) किसी का कुछ महत्त्व समझाते या सम्मान करते हुए उसके संबंध मे कुछ विचार करना या सोचना। चिंता या परवाह करना। जैसे—वह तुम्हारे भाई साहब को तो ध्यान मे लाता ही नही, तुम्हे वह क्या समझेगा! **(किसी काम, चीज या बात का) ध्यान रखना**=इस प्रकार सतर्क या सावधान रहना कि कोई अनुचित या अवाञ्छनीय काम या बात न होने पावे अथवा कोई क्रम इष्ट और यथोचित रूप मे चलता रहे। जैसे—(क) ध्यान रखना, यहाँ से कोई चीज गुम न होने पावे। (ख) हमारी अनुपस्थिति मे रोगी का ध्यान रखना।

पद—ध्यान से=तत्पर, दत्तचित्त या सावधान होकर। जैसे—चिट्ठी जरा ध्यान से पढ़ो।

२. अंतःकरण या मन की वह वृत्ति या शक्ति जो उसे किसी चीज या बात का बोध कराती, उसमे कोई धारणा उत्पन्न करती अथवा कोई स्मृति जाग्रत करती है। जैसे—हमने उन्हे एक बार देखा तो है, पर उनकी आकृति हमारे ध्यान मे नही आ रही है।

मुहा०—ध्यान पर चढ़ना=किसी बात का चित्त या मन मे कुछ समय के लिए अपना स्थान बना लेना। जैसे—अब तक वही दृश्य हमारे ध्यान पर चढा है। **ध्यान से उतरना**=ध्यान के क्षेत्र से बाहर हो जाना। याद न रह जाना। जैसे—आपकी पुस्तक लाना मेरे ध्यान से उतर गया।

३. धार्मिक क्षेत्र में उपासना, पूजा आदि के समय अपने इष्टदेव अथवा अध्यात्म-संबंधी तत्त्वों या विषयों के संबंध मे भक्ति और श्रद्धा से मन मे शांतिपूर्वक किया जानेवाला चिंतन, मनन या विचार। उदा०—बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू।—तुलसी।

क्रि० प्र०—करना।—छूटना।—टूटना।—लगना।—लगाना।

विशेष—इसका मुख्य उद्देश्य यही होता है कि ध्याता अपने ध्येय के विचार मे तन्मय और लीन होकर उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न करे। शृंगारिक क्षेत्र मे प्रिय का किया जानेवाला ध्यान भी बहुत-कुछ इसी प्रकार का होता है। यथा—पिय कै ध्यान गही गही, रही वही ह्वै नारि।—बिहारी।

मुहा०—(किसी का) ध्यान करना=अपने मन के सामने किसी की मूर्ति या रूप रखकर उसके चिंतन या मनन मे लीन होना। परमात्मा-चिंतन के लिए मन एकाग्र करके बैठना। जैसे—अपने इष्टदेव या ईश्वर का ध्यान करना।

४ योगशास्त्र मे, आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करने के लिए चित्त या मन पूरी तरह से एकाग्र और स्थिर करने की क्रिया या भाव।

विशेष—योग के आठ अंगो मे 'ध्यान' सातवाँ अंग कहा गया है। यह 'धारणा' नामक अंग के बाद आनेवाली वह स्थिति है जिसमे धारणीय तत्त्व के साथ चित्त एक-रस हो जाता है। इसी की चरम तथा पूर्ण अवस्था 'समाधि' कहलाती है। जैन और बौद्ध मे भी इस प्रकार के 'ध्यान' का विशेष महत्त्व है।

५. किसी अमूर्त तत्त्व को व्यक्ति के रूप मे मानकर उसके कल्पित गुण, मुद्रा, स्थिति आदि के आधार पर स्थिर की हुई वह प्रतिकृति या मूर्ति जो हम अपने मानस-क्षेत्र मे उसके प्रत्यक्ष दर्शन या साक्षात्कार के लिए कल्पित या निरूपित करते हैं।

विशेष—धार्मिक ग्रंथों मे देवी-देवताओं, तांत्रिक ग्रंथों मे मंत्र-यंत्रों, संगीतशास्त्र के ग्रंथों मे राग-रागिनियों और साहित्यिक ग्रंथों मे ऋतुओं, रसों आदि के इस प्रकार के विशिष्ट ध्यान छंदोबद्ध रूप मे निरूपित हैं जिनके आधार पर उनके चित्र, मूर्तियाँ आदि बनाई जाती हैं।

ध्यान-योग—पु० [मध्य० स०] योग अर्थात् कार्य-साधन का वह प्रकार जिसमे ध्यान की प्रधानता हो।

ध्यानस्थ—वि० [स० ध्यान√स्था (ठहरना)+क] जो ध्यान करने मे मग्न या लगा हुआ हो। ध्यान मे लीन।

ध्याना—स० [सं० ध्यान] १ किसी विषय, व्यक्ति आदि का ध्यान करना। २ ईश्वर का चिंतन करना।

ध्यानावस्थित—वि० [ध्यान-अवस्थित, स०त०]=ध्यानस्थ।

ध्यानिक—वि० [स० ध्यान+ठक्—इक] १. ध्यान-संबंधी। ध्यान का। २. जो ध्यान के द्वारा प्राप्त या सिद्ध हो सके। ध्यान-साध्य।

ध्यानिक बुद्ध—पु० [स०] एक प्रकार के अशरीरी बुद्ध जिनकी संख्या १० कही गई है।

ध्यानी (निन्)—वि० [स० ध्यान+इनि] १. ध्यान करनेवाला। २. जो ध्यान लगाकर बैठता या बैठा हो। ३. समाधि लगानेवाला (योगी)।

ध्येय—वि० [स०√ध्यै+यत्] १. जिसे ध्यान मे लाया जा सके। २. जो ध्यान का विषय हो। जिसका ध्यान किया जा रहा हो।

पु० वह तत्त्व, कार्य या बात जिसे ध्यान मे रखकर उसकी सिद्धि के लिए प्रयत्न किया जाय।

ध्रगध्रगी†—स्त्री०=धगधगी (धुकधुकी)।

ध्रम, ध्रम्म*—पु०=धर्म।

ध्रिग†—स्त्री०=धिक्कार।

ध्रुपद—पु० [स० ध्रुवपद] राग-रागिनियाँ गाने की एक विशिष्ट शैली या प्रकार जिसमे लय और स्वर बिलकुल बँधे हुए होते है और जिसमे नियत रूप से कुछ भी विचलन नही हो सकता। इसका प्रचलन ई० १५ वी शती के अंत मे ग्वालियर के राजा मान तोमर ने किया था।

ध्रुपदिया—पु० [हिं० ध्रुपद+ईया (प्रत्य०)] वह गवैया जो ध्रुपद मे गाने गाता हो।

ध्रुव—वि० [स०√ध्रु (स्थिर होना)+क] [भाव० ध्रुवता] १ सदा एक स्थान पर अथवा ज्यो का त्यों बना रहनेवाला। अचल। अटल। २. सदा एक ही अवस्था या रूप मे बना रहनेवाला। नित्य। शाश्वत। ३ जिसमे किसी प्रकार का अंतर न पड सके या परिवर्तन न हो सके। बिलकुल निश्चित और दृढ या पक्का।

पु० १ आकाश। २ शंकु। ३. पर्वत। ४ सभा। ५. वट वृक्ष। ६ आठ वसुओं मे से एक। ७. विष्णु। ८. ध्रुपद नामक गीत।

९. नाक का अगला भाग। १०. फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का शुभ योग, जिसमे जन्म लेनेवाला वालक ज्योतिषियो के मत से बहुत ही वुद्धिमान्, विद्वान् और यशस्वी होता है। ११ भूगोल मे, पृथ्वी के वे दोनो नुकीले सिरे जिनके वीच की सीधी रेखा अक्ष-रेखा कहलाती है।

विशेष—ये दोनो सिरे उत्तरी ध्रुव या सुमेरु और दक्षिणी ध्रुव या कुमेरु कहलाते हैं। इन ध्रुवो के आस-पास के प्रदेश वहुत अधिक ठढे हैं। जव सूर्य उत्तरायण होता है तव उत्तरी ध्रुव मे छ महीने तक दिन रहता है, और दक्षिणी ध्रुव मे रात रहती है। सूर्य के दक्षिणायन होने पर दक्षिणी ध्रुव मे छ महीने तक दिन रहता है; और उत्तरी ध्रुव मे रात होती है। १२. एक प्रसिद्ध तारा जो सदा उत्तरी ध्रुव या सुमेरु के ठीक ऊपर रहता है।

विशेष—वास्तव मे यह तारा शिशुमार नामक तारकपुज के सात तारो मे से एक है। इस तारक-पुज का जो तारा पृथ्वी के अक्ष-विंदु की सीध से परम निकट होता है, वही पृथ्वी के निवासियो की दृष्टि मे ध्रुव (अर्थात् अचल और अटल) होता है। परतु ज्योतिषियो का कहना है कि अयन वृत्त के चारो ओर नाडी मंडल के मेरु की जो गति होती है उसके फलस्वरूप वारह हजार वर्ष वीतने पर आज-कल का ध्रुव तारा मेरु की सीध से दूर हट जायगा और तव शिशुमार तारक-पुज का अभिजित् नामक दूसरा तारा हम लोगो का ध्रुव तारा हो जायगा। आज-कल हमारे मेरु से वर्तमान ध्रुव का व्यवधान-अतर केवल १ अश ३ कला है; पर आज से दो हजार वर्ष पहले यह अतर १२ अश था। इसी आधार पर यह पता चलता है कि आज से ५ हजार वर्ष पहले कोई दूसरा तारा हमारा ध्रुव था। यह भी कहा जाता है कि उत्तरी ध्रुव तारे की तरह एक दक्षिणी ध्रुव तारा भी है जो कुमेरु की ठीक सीध मे है।

१३ पुराणानुसार राजा उत्तानपाद के एक पुत्र, जो उनकी सुनीति नामक पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

विशेष—कहते है कि इनकी एक विमाता भी थी, जिसका नाम सुरुचि था, और जिसके पुत्र का नाम उत्तम था। एक दिन जव उत्तम अपने पिता की गोद मे वैठा खेल रहा था तव ध्रुव भी पिता की गोद मे जा वैठा। इस पर सुरुचि ने अवज्ञापूर्वक ध्रुव को वहाँ से हटा दिया। इससे खिन्न होकर ध्रुव घर से निकल गये और वन मे जाकर तपस्या करने लगे। विष्णु ने इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर इन्हे वरदान दिया था कि तुम सव ग्रह-नक्षत्रो तथा लोको के ऊपर और उनके आधार वनकर एक जगह अचल भाव से रहोगे और तुम्हारे रहने का स्थान ध्रुवलोक कहलायेगा। तभी से पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव के ऊपर ये ध्रुव तारे के रूप मे अचल और अटल भाव से स्थित है।

१४ फलित ज्योतिष मे नक्षत्रो का एक गण, जिसमे उत्तराफाल्गुनी, उत्तरापाढा, उत्तरभाद्रपद और रोहिणी नामक नक्षत्र है। १५. सोम रस का वह भाग जो सवेरे से सन्ध्या तक किसी देवता को अर्पित हुए विना यो ही पडा रहे। १६ एक प्रकार का यज्ञ-पात्र। १७ मुँह का एक रोग, जिसमे तालू मे पीडा, लाली और सूजन होती है। १८. छदशास्त्र मे, रगण का अठारहवाँ भेद, जिसमे पहले एक लघु, तव एक गुरु और तव फिर तीन लघु होते है। १९ घोडो के शरीर के कुछ विशिष्ट स्थानो मे होनेवाली भौरी या चक्र। दे० 'ध्रुवावर्त्त'

ध्रुवण—पु० [स०] १ किसी वस्तु की ध्रुवता का पता लगाना या उसकी ध्रुवता स्थिर करना। २ वैज्ञानिक प्रक्रियाओ मे, विद्युत्, सूर्य आदि का प्रकाश ऐसी स्थिति मे लाना कि क्षैतिज या वेडे वल मे फैलनेवाली किरणें भिन्न-भिन्न तत्त्वो मे भिन्न-भिन्न प्रकार के निश्चित रूप धारण करे। (पोलराइजेशन)

विशेष—साधारणत प्रकाश की किरणें सव ओर समान रूप से पडती है परतु जव उन्हे एक निश्चित दिशा और निश्चित रूप मे लाना अभीष्ट होता है तव उनका ध्रुवण किया जाता है।

ध्रुवता—स्त्री० [स० ध्रुव+तल्—टाप्] १. ध्रुव होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, पदार्थो, पिंडो आदि का वह गुण या स्थिति, जो उनके दो परस्पर-विरोधी अगो या दिशाओ के वीच एक सीध मे वर्तमान रहती और परस्पर विरोधी तत्त्वो, शक्तियो आदि से मुक्त रहती है। (पोलेरिटी)

ध्रुव-दर्शक—पु० [ष० त०] १ सप्तर्षि मडल। २ कुतुवनुमा।

ध्रुव-दर्शन—पु० [ष० त०] १ वर-वधू को विवाह-सस्कार के उपरान्त ध्रुव तारे का कराया जानेवाला दर्शन। २ उक्त प्रथा या रीति।

ध्रुव धेनु—स्त्री० [कर्म० स०] वहुत ही सीधी गाय, जो दूहे जाने के समय हिले तक नही।

ध्रुवनंद—[स०] राजा नद का एक भाई।

ध्रुवपद—पु०=ध्रुपद।

ध्रुवमत्स्य—पु० [कर्म० स०] दिशाओं का वोध करानेवाला यत्र। कुतुवनुमा।

ध्रुवरत्ना—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

ध्रुव-लोक—पु० [मध्य० स०] सत्यलोक के अतर्गत एक प्रदेश जिसमे ध्रुव स्थित है। (पुराण)

ध्रुवा—स्त्री० [स० ध्रुव+टाप्] १. एक प्रकार का यज्ञ-पात्र। २. मूर्वा। मरोड़फली। ३ शालपर्णी। सरिवन। ४ ध्रुपद नामक गीत। ५ सती और साध्वी स्त्री।

ध्रुवाक्ष—पु० [ध्रुव-अक्ष, मध्य० स०] ज्योतिष्क यत्रो का वह अक्ष जो आकाशस्थ ध्रुव की सीध मे पडता अथवा उसकी ओर अभिमुख रहता है। (पोलर एक्सिस)

ध्रुवाक्षर—पु० [ध्रुव-अक्षर, कर्म० स०] विष्णु।

ध्रुवावर्त्त—पु० [ध्रुव-आवर्त्त, मध्य० स०] १ घोडो के शरीर के कुछ विशिष्ट अगो मे होनेवाली भौरी या चक्र।

विशेष—घोडो के अपान, भाल, मस्तक, रध्र या वक्षःस्थल पर होनेवाली भौरियाँ 'ध्रुवावर्त्त' कहलाती है।

२ वह घोडा जिसके शरीर पर उक्त भौरी हो।

ध्रुवीय—वि० [स० ध्रुव+छ—ईय] [भाव० ध्रुवीयता] १. ध्रुव (तारा) सवधी। २ ध्रुव-प्रदेश का। (पोलर)

ध्रुवीयक—पु० [स० ध्रुव से] वह उपकरण या तत्त्व जो ध्रुवीयण करता हो। (पोलराइजर)

ध्रुवीयण—पु० [स० ध्रुव से] ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कही से आनेवाले ताप या प्रकाश का किसी लव के दोनो सिरो पर भिन्न-भिन्न तत्त्वो का सूचक अलग-अलग प्रकार का प्रभाव या रूप दिखाई पड़े। (पोलराइजेशन)

ध्रू—पु० [स० धुर] मस्तक। सिर। उदा०—ध्रू माला सकर धरी। —प्रिथीराज।

ध्रौव्य—पु० [स० ध्रुव+ष्यञ्] = ध्रुवता।

ध्वस—पु० [स०√ध्वस् (नष्ट होना)+घञ्] १. इमारत, भवन आदि का गिर तथा ढहकर खड-खड हो जाना। मिट्टी मे मिल जाना। २. पूरी तरह से होनेवाला विनाश। ३. न्याय मे, अभाव का एक प्रकार का भेद।

ध्वंसक—वि० [स०√ध्वस्+ण्वुल्—क०] ध्वस या विनाश करनेवाला। विध्वसक।

ध्वसन—पु० [स०√ध्वस्+ल्युट्—अन्] १. ध्वस करने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज को दुष्ट उद्देश्य से इस प्रकार गिराना कि वह नष्टप्राय हो जाय। तोड-फोड। (सेबोटेज)

ध्वसावशेष—पु० [स० ध्वस-अवशेष, प० त०] १ किसी चीज के टूट-फूट जाने पर उसके बचे हुए रद्दी टुकडे या अश। (रेकेज) २ इमारतो के वे अश जो उनके टूटने या ढह जाने पर बच रहते है। खँडहर।

ध्वंसी (सिन्)—वि० [स०√ध्वस्+णिनि]=ध्वसक।

ध्वज—पु० [स०√ध्वज् (गति)+अच्] १. बाँस आदि की तरह की कोई लबी, सीधी लकडी। डडा। २. वह डडा जिसके सिरे पर कपडा लगाकर झडा बनाया जाता है। ३. झडा। ध्वजा। पताका। ४. किसी वस्तु या व्यक्ति का चिह्न या निशान। जैसे—देव-ध्वज, मकर-ध्वज, सीम-ध्वज आदि। ५. व्यापारियो आदि का परिचायक वह चिह्न या निशान, जो उनकी वस्तुओ आदि पर अकित हो। (ट्रेड मार्क) ६. सन्तान उत्पन्न करने की इद्रियाँ—भग और लिंग। ७. अपने कुल या वर्ग का ऐसा प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति, जो उसका भूषण अथवा मान-मर्यादा बढानेवाला हो। (यौ० पदो के अन्त मे) जैसे—वशध्वज। ८. वह जो ध्वजा या पताका लेकर राजा, सेना आदि के आगे-आगे चलता हो। ९. मद्य बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति। शौंडिक। १० वह घर या मकान जो किसी विशिष्ट पदार्थ या स्थान के पूर्व मे स्थित हो। ११ वह डडा जिस पर साधु आदि प्राचीन काल मे खोपड़ी टाँग कर अपने साथ ले चलते थे। १२ खाट या चारपाई की पाटी। १३. आडबर। ढोग। १४. मिथ्या अभिमान।

ध्वजक—पु० [स० ध्वज+कन्] सैनिक या नौ-सैनिक झडा। (स्टैंडर्ड)

ध्वज-दंड—पु० [प० त०] वह डडा जिसके सिरे पर पताका का कपड़ा लगा रहता है।

ध्वज-पट—पु० [प० त०] झडा। पताका।

ध्वज-पात—पु० [प० त०]=ध्वज-भग।

ध्वज-पोत—पु० [मध्य० स०] बेड़े का वह जहाज जिस पर उसका नौ-सेनापति यात्रा करता है और जिस पर उसका झडा फहराता है। (फ्लैगशिप)

ध्वज-भंग—पु० [प० त०] १ वह स्थिति जिसमे पुरुष मे स्त्री-सभोग की शक्ति नही रह जाती। २. क्लीवता। नपुसकता। हिजडापन।

ध्वज-मूल—पु० [प० त०] चुगीघर की सीमा। (कौ०)

ध्वज-यष्टि—स्त्री० [प० त०]=ध्वज-दड।

ध्वजांशुक—पु० [ध्वज-अशुक, प० त०] दे० 'ध्वज-पट'।

ध्वजा—स्त्री० [सं० ध्वज] १. झंडा। पताका। २. मालखंभ की एक प्रकार की कसरत। ३. छन्दशास्त्र मे ठगण का पहला भेद, जिसमे पहले लघु और तब गुरु होता है।

ध्वजादि—पु० [ध्वज-आदि, ब० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार की गणना, जिसमे नौ कोष्ठको का ध्वजा के आकार का एक चक्र बनाया जाता है और तब उसके आधार पर प्रश्नो के उत्तर या फल कहे जाते हैं।

ध्वजारोपण—पु० [ध्वज-आरोपण, प० त०] झंडा गाड़ना या लगाना।

ध्वजाहृत—पु० [ध्वज-आहृत, तृ० त०] १. वह धन जो शत्रु को युद्ध मे जीतकर प्राप्त किया गया हो। २. पद्रह प्रकार के दासो मे से वह दास जो लड़ाई मे जीतकर प्राप्त किया या लाया गया हो।

ध्वजिक—पु० [स० ध्वज+ठन्—इक] ढोगी। पाखंडी।

ध्वजिनी—स्त्री० [स० ध्वजिन्+ङीप्] १. सेना की एक टुकड़ी जिसका परिमाण कुछ लोग 'वाहिनी' का दूना बताते है। २ पाँच प्रकार की सीमाओ मे से वह सीमा, जिस पर वृक्षों आदि के रूप मे चिह्न या निशान लगे हो।

ध्वजी (जिन्)—वि० [स० ध्वज+इनि] [स्त्री० ध्वजिनी] १ जो हाथ मे ध्वजा या पताका लिये हुए हो। २ जिस पर कोई चिह्न या निशान हो।

पु० १. वह जो सेना के आगे ध्वजा लेकर चलता हो। २. युद्ध। लड़ाई। सग्राम। ३. ब्राह्मण। ४ घोडा। ५. मोर। ६. साँप। ७. पर्वत। पहाड।

ध्वजोत्थान—पु० [ध्वज-उत्थान, प० त०] १ ध्वजा उठाना या फहराना। २. प्राचीन भारत का इन्द्रध्वज नामक महोत्सव।

ध्वन—पु० [स०√ध्वन् (शब्द)+अप्] १. शब्द। २. गुजार।

ध्वनन—पु० [स०√ध्वन्+ल्युट्—अन] १. ध्वनि या शब्द करना। २. ध्वनि के रूप मे कुछ अभिव्यक्त करने की क्रिया या भाव। ३. व्यग्यार्थ के बोध कराने की क्रिया या भाव। ४. अस्पष्ट शब्द।

ध्वनि—स्त्री० [सं०√ध्वन्+इ] १ वह जो कानो से सुनाई पड़े या सुना जा सके। श्रवणेंद्रिय का विषय। आवाज। शब्द।

विशेष—किसी प्रकार का आघात होने से जो स्वर-लहरी उत्पन्न होकर वायु, जल आदि मे से होती हुई हमारे कानो तक पहुँचती है, वही ध्वनि कहलाती है। कुछ आचार्य तो उसी को ध्वनि कहते हैं जो केवल अवर्णात्मक हो, अथवा जिसके वर्ण अलग-अलग और स्पष्ट न सुनाई पडते हो; और कुछ लोग वर्णात्मक तथा अवर्णात्मक दोनो प्रकार के शब्दो को ध्वनि कहते हैं। जो लोग केवल अवर्णात्मक शब्दो को ध्वनि मानते हैं, वे वर्णात्मक शब्दो से उत्पन्न होनेवाले परिणाम को 'स्फोट' कहते हैं।

२. ऐसी आवाज, नाद या शब्द जिसका कुछ भी अर्थ या आशय न हो। जैसे—पशु-पक्षियो के कठ की ध्वनि; बादल गरजने से होनेवाली ध्वनि। ३. बाजे आदि बजने से उत्पन्न होनेवाले शब्द। जैसे—घटे या घडियाल की ध्वनि। ४. किसी उक्ति या कथन का वह गूढ और व्यग्यपूर्ण आशय, जो उसके वाच्यार्थ से भिन्न तथा स्वतंत्र हो और वक्ता का कोई विशिष्ट अभिप्राय या मनोभाव ऐसे रूप मे व्यक्त करता हो, जो सहज मे और साधारणत. सब लोगो की समझ मे न आवे।

विशेष—कथन का जो आशय व्यजना नामक शब्द-शक्ति से निकलता

है वही साहित्य के क्षेत्र मे 'ध्वनि' कहलाता है। जैसे—यदि किसी झूठे या वहानेवाज आदमी से कहा जाय, 'आप वहुत सत्यवादी हैं।' तो इस वाक्य का व्यंग्यार्थ यही होगा कि 'आप वहुत झूठे हैं।' और इस प्रकार निकलनेवाला व्यग्यार्थ ही 'ध्वनि' कहलाता है। साहित्य मे इस प्रकार का व्यग्यार्थवाला काव्य, वहुत ही चमत्कारपूर्ण होने के कारण, परम उत्कृष्ट और प्रथम श्रेणी का माना जाता है।

ध्वनिक—वि० [सं० ध्वनि से] ध्वनि-सवधी। (फोनेटिक)

ध्वनि-क्षेपक—वि० [प० त०] ध्वनि को चारो ओर फैलानेवाला।

ध्वनि-क्षेपक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] एक प्रसिद्ध यत्र जिसके माध्यम से वक्ता की ध्वनि दूर स्थित लोगों को सुनाई जाती है। (माइक्रोफोन)

ध्वनि-क्षेपण—पु० [प० त०] किसी स्थान पर उत्पन्न होनेवाली ध्वनि का एक विशेप प्रकार के वैद्युत्यत्र की सहायता से चारो ओर वहुत दूर तक फैलाना या पहुँचाना।

ध्वनि-ग्राम—पु० [प० त०] ध्वनि-विज्ञान मे, मनुष्य के गले से निकलनेवाली ध्वनि के भिन्न-भिन्न रूप जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे वनते हैं। (फोनीम) जैसे—का, की, कू, के आदि के उच्चारण मे 'क' की ध्वनि के रूप कुछ अलग-अलग होते हैं।

ध्वनित—वि० [स०√ध्वन्+क्त] १. जो ध्वनि के रूप मे प्रकट हुआ हो। २. किसी वाक्य आदि मे झलकता हुआ (कोई गूढ़ आशय)।

ध्वनि-तरंग—स्त्री० [प० त०] हवा की वह लहर जिसमे किसी स्थान मे होनेवाली ध्वनि के फलस्वरूप एक विशेप प्रकार का कपन होता है तथा जो कानो को उस ध्वनि का ज्ञान कराती है। (साउड वेव)।

ध्वनि-विज्ञान—पु० [प० त०] वह विज्ञान जिसमे इस वात का विवेचन होता है कि वोलते समय मनुष्य के स्वर-यंत्र से किस प्रकार ध्वनियाँ या शब्द उत्पन्न होते हैं, उनके कैसे और कितने भेद-प्रभेद होते हैं। (फोनोटिक्स)

ध्वन्यात्मक—वि० [सं० ध्वनि-आत्मन्, व० स०, कप्] ध्वनि से युक्त।

ध्वन्यार्थ—वि० [स० ध्वन्यर्थ] किसी शब्द या पद का व्यग्यार्थ।

ध्वन्यालेख—पु० [स० ध्वनि-आलेख, प० त०] वह उपकरण जिसमे किसी की वक्तृता, गीत आदि अभिलिखित होता है और विशेप प्रक्रिया से उसी स्वर मे फिर से वजाया जा सकता है। (रिकार्ड)

ध्वन्यालेखन—पु० [सं० ध्वनि-आलेखन, प० त०] किसी की ध्वनि को इस प्रकार किसी विशेप प्रक्रिया से सुरक्षित करना कि फिर उसकी पुनरावृत्ति की जा सके। (रिकार्डिंग)

ध्वांत—पु० [स०√ध्वन्+क्त] अधकार।

ध्वांत-धाम—पुं० [प० त०] नरक।

ध्वांतारांति—पुं० [ध्वात-अराति, प० त०] १. सूर्य। २. चद्रमा। ३. अग्नि। ४. श्वेत वर्ण।

ध्वांतोन्मेष—पु० [ध्वांत-उन्मेष, व० स०] खद्योत। जुगनूँ।

ध्वान—पु० [सं०√ध्वन्+घञ्] १. शब्द। आवाज। नाद। २. गुंजन।

न

न—देवनागरी वर्णमाला का २० वाँ वर्ण जो व्याकरण और भापा-विज्ञान की दृष्टि से घोप, अल्पप्राण, अनुनासिक तथा वर्त्स्य व्यजन है।

अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग आज्ञा, विधि, हेतुहेतुमद्भाव आदि के प्रसंगो मे नीचे लिखे अर्थो मे होता है। १ नकारात्मक या निपेधात्मक कथनो मे 'नहीं' की जगह। जैसे—(क) वहाँ न जाना ही ठीक है। (ख) यदि उसे कुछ भी न दिया जाय तो भी वह अपना काम चला लेगा। २. प्रश्नवाचक वाक्यो के अत मे, कि नही। या नही। जैसे—(क) तुम कल तो यहाँ आओगे न ? (ख) वह चला जायगा न ?

विशेष—ऐसे अवसरो पर इसमे किंचित् आशा, निश्चय या विश्वास का भाव भी निहित रहता है।

३. कहीं-कही एक ही क्रिया की पुनरावृत्ति के वीच मे आने पर प्राय' उसी समय या तुरत। थोड़े समय मे। उदा०—चौंककर सोते न सोते उठ पड़ेंगे।—मैथिलीशरण।

प्रत्य० व्रज भापा मे सज्ञाओ के अत मे लगकर उन्हे वहु व० का रूप देनेवाला प्रत्यय। जैसे—कटाछ से कटाछन।

पु० १. सोना। स्वर्ण। २. मणि। रत्न। ३. उपमा। ४ गौतम बुद्ध।

नंग—वि० [हिं० नगा] १. नंगा। २. वदमाश। लुच्चा।

पु० १. नंगे होने की अवस्था या भाव। नंगापन। नग्नता। २. पुरुप अथवा स्त्री का गुप्त अंग।

पु० [फा०] प्रतिष्ठा। इज्जत।

नंगटा—वि०=नगा।

नंग-धड़ंग (।)—वि० [हिं० नगा+धडग (अनु०)] [वि० स्त्री० नगधड़गी] (व्यक्ति) जो सव वस्त्र उतारकर विलकुल नंगा हो गया हो।

नंग-पैरा—वि० [हिं० नंगा+पैर+आ (प्रत्य०)] १. नगे पैरोवाला। २. नंगे पैर चलनेवाला।

क्रि० वि० विना जूता या पादत्राण पहने। नगे पैरो।

नंग-मनुंगा—वि०=नग-धड़ंग।

नंगर†—पु०=लगर।

नंगर वारी—स्त्री० [हिं० लगर+वाला] वह छोटी समुद्री नाव जो तूफान के समय किसी रक्षित स्थान पर लगर डालकर ठहर जाती है। (लश०)

नंगा—वि० [स० नग्न] [वि० स्त्री० नगी] १. (व्यक्ति) जिसने गोप्य अग वस्त्र आदि के द्वारा न ढके हुए हों। जो कोई कपड़ा न पहने हो। दिगवर।

पद—नंगा उघाड़ा=जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हों। विवस्त्र। अलिफ नंगा=वैसा ही नगा जैसा उर्दू या फारसी लिपि का अलिफ वर्ण होता है। मादरजाद-नंगा=वैसा ही नगा, जैसा शिशु अपनी माता के गर्भ से जन्म लेने के समय रहता है। विलकुल नगा।

२. (शरीर का कोई अग) जिस पर कोई आच्छादन या आलकारिक वस्तु न हो। जैसे—नगा गला या हाथ (आभूषण-रहित), नगा सिर (टोपी या पगडी से रहित)। ३. (पदार्थ) जिस पर कोई आवरण न हो। आच्छादन-रहित। खुला हुआ। जैसे—दही या दूध कभी नगा नही रखना चाहिए। ४. निर्लज्ज। वेहया। वेशर्म। ५. ऐसा दुष्ट, लुच्चा या पाजी जो कलक, वदनामी आदि से कुछ भी न डरता हो।

पद—नंगा लुच्चा। (देखें)

६. (वात या विषय) जिसका वास्तविक स्वरूप स्पष्ट रूप से व्यक्त हो रहा हो।

पु० १. शिव। महादेव। २. कश्मीर की सीमा पर का एक वड़ा पर्वत।

नंगा-झोरी—स्त्री०=नगा-झोली।

नंगा-झोली—स्त्री० [हिं० नगा+झोरना] खोई हुई चीज ढूंढने के उद्देश्य से सदेहवश किसी के कपडे आदि उतरवाकर अथवा यो ही अच्छी तरह यह देखना कि उसने कोई चीज अदर छिपाकर रखी तो नही है। जामा-तलाशी।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

नंगा-धड़ंगा—वि० [हिं०] जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र या आवरण न हो। विलकुल नगा।

नंगा-नाच—पु० [हिं० नगा+नाच] निर्लज्ज होकर किया जानेवाला परम दूषित और हेय आचरण।

नंगा-बुंगा—वि० [हिं० नगा+वुगा (अनु०)] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। विलकुल नगा। २. जिस पर कोई आच्छादन या आवरण न हो।

नंगा-बुच्चा—वि०=नगा-बूचा।

नंगा-बूचा—वि० [हिं० नगा+बूचा=खाली] जिसके पास कुछ भी न हो। परम निर्धन।

नंगा-मुनंगा—वि०=नगा-धडंगा।

नंगा-लुच्चा—वि० [हिं० नगा+लुच्चा] (व्यक्ति) जो निर्लज्ज होकर दूसरो की प्रतिष्ठा पर आघात करता हो। निर्लज्ज। दुष्ट।

नंगियाना—स० [हिं० नगा+इयाना] [भाव० नगियावन] १. नगा करना। शरीर पर वस्त्र न रहने देना। २. किसी का इस प्रकार सब-कुछ छीन लेना कि उसके पास कुछ भी न वच रहे। ३ वास्तविक रूप मे प्रकट करना।

नंग्याना *—स०=नँगियाना।

नंचना—अ०=नाचना।

नंजन *—पु०=नर्तन (नाचना)।

नंदत—वि० [स०√नन्द्+झच्—अन्त] प्रसन्न करनेवाला।

पु० १. पुत्र। वेटा। २. मित्र। ३ राजा।

नंदन—वि०, पु०=नदन।

नंद—वि० [स०√नन्द्+अच्] [स्त्री० नदा] १. आनद या सुख देनेवाला। २. उत्तम श्रेष्ठ। ३. शुभ।

पु०[स०] १. आनद। हर्ष। २. सच्चिदानद परमात्मा। ३. विष्णु। ४. वासुदेव का एक पुत्र जो मदिरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ५. कार्तिकेय का एक अनुचर। ६. एक नाग का नाम। ७. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ८. नदन। पुत्र। वेटा। ९. क्रौंच द्वीप का एक वर्ष-पर्वत। १०. एक प्रकार का मृदग। ११. चार प्रकार की वाँसुरियो मे से एक जो ग्यारह अगुल लवी होती और श्रेष्ठ समझी जाती है। इसके देवता रुद्र कहे गये हैं। १२. सगीत मे, एक प्रकार का राग जिसे कुछ लोग मालकोश राग का पुत्र मनते हैं। १३. पुराणानुसार नौ निधियो मे से एक। १४. मेढक। १५ गोकुल मे गौओं के नायक या मुखिया जिनके पास वासुदेव श्रीकृष्ण को जन्म के समय पहुँचा गये थे और जिनके यहाँ उनकी वाल्यावस्था वीती थी। १६. गौतम बुद्ध के एक भाई जो उनकी विमाता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। १७ पिंगल में ढगण के दूसरे भेद का नाम जिसमे एक गुरु और एक लघु होता है और जिसे ग्वाल भी कहते है। जैसे—काम, नाम, लाम। १८. मगध का एक प्रसिद्ध राजवश। दे० 'नद वश'।

†स्त्री०=ननद (स्त्री के पति की वहन)।

नंदक—वि० [स०] १. आनंद और सुख या सतोष देनेवाला। २. अपने कुल या परिवार का पालन करनेवाला।

पु० १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २. कार्तिकेय का एक अनुचर। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४. एक नाग का नाम। ५. श्रीकृष्ण के पालक नंद। ६. मेढक। ७. दे० 'नद वंश'।

नंदकि—स्त्री० [स०] पीपल।

नंद-किशोर—पुं० [स०] नद के पुत्र श्रीकृष्ण।

नंदकी (किन्)—पु० [स० नदक+इनि] विष्णु।

नंद-कुँवर—पु०=नदकुमार।

नंद-कुमार—पु० [प० त०] नद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंद-गाँव—पु० [स० नद+हिं० गाँव] वृदावन के पास का एक गाँव जहाँ नद-गोप रहते थे।

नंद-गोपिता—स्त्री० [च० त०] रास्ना या रायसन नामक वनस्पति।

नंद-ग्राम—पु० [प० त०] १=नद गाँव। २.=नंदि ग्राम।

नंदथु—पु० [स०√नन्द्+अथुच्] प्रसन्नता।

नंदद—वि० [स० नद√दा (देना)+क] आनंद देनेवाला।

पुं० पुत्र। वेटा।

नंद-नंद (न)—पु० [प० त०] नद के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र।

नंद-नंदिनी—स्त्री० [प० त०] नद की कन्या। योगमाया।

विशेष—श्रीकृष्ण को नद के घर रखकर इसी को उनके वदले मे अपने साथ ले गए थे।

नंदन—वि० [स० नन्द+णिच्+ल्यु—अन] आनद देने या प्रसन्न करने-वाला।

पु० १. पुत्र। वेटा। २. राजा। ३ दोस्त। मित्र। ४ नदन कानन। (दे०) ५. कामाख्या देश का एक पर्वत जहाँ लोग इन्द्र की पूजा करते हैं। ६. कार्तिकेय का एक अनुचर। ७ शिव। महादेव। ८. विष्णु। ९. एक प्रकार का विष। १० केसर। ११. चंदन। १२. वादल। मेघ। १३ मेढक। १४. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। १५ वह मकान जो षट्कोण हो, जिसका विस्तार वत्तीस हाथ हो और जिसमे सोलह शृंग हो। (वास्तु) १६. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, जगण, भगण, जगण और दो रगण होते है। १७ साठ सवत्सरो मे से छव्वीसवाँ सवत्सर।

कहते हैं कि इस संवत्सर मे अन्न खूब होता है, गौएँ खूब दूध देती हैं और लोग नीरोग रहते हैं।

नंदनक—पु० [स० नदन+कन्] पुत्र।

नंदन-कानन—पुं० [मध्य० स०] स्वर्ग मे स्थित इन्द्र का प्रसिद्ध उपवन या वगीचा जो परम सुन्दर और सुखद माना गया है। नदन।

नंदनज—पु० [स० नदन√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. हरिचदन। २. श्रीकृष्ण।

नंदन-प्रधान—पु० [प० त०] नदन के प्रधान, इन्द्र।

नंदन-माला—स्त्री० [कर्म० स०] एक प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण को वहुत प्रिय थी। (पुराण)

नंदन-वन—पु० [मध्य० स०] १ नदन-कानन। २. कपास।

नंदना—अ० [स०√नंद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] आनदित होना। प्रसन्न होना।

स्त्री० [नदन+टाप्] पुत्री। वेटी।

स० आनदित या प्रसन्न करना।

स्त्री० [स० नद=वेटा] १. पुत्री। वेटी। २ लडकी।

नंदनी—स्त्री० [स० नदन+ङीप्] १.=नदना। २ =नदिनी।

नंदपाल—पु० [स० नद√पाल् (रक्षा)+णिच्+अच्] वरुण।

नंद-पुत्री—स्त्री० [प० त०] नद नदिनी।

नंदप्रयाग—पुं० [?] वदरिकाश्रम के निकट का एक तीर्थ जो सात प्रयागो मे से एक है।

नंदरानी—स्त्री० [स० नद+हिं० रानी] नंद की स्त्री। कृष्ण की माता। यशोदा।

नंद रूख—पु० [हिं० नद+रुख=वृक्ष] अश्वत्थ की जाति का एक पेड जिसकी पत्तियाँ रेशम के कीड़े खाते हैं।

नंदलाल—पु० [स० नद+हिं० लाल] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंद-वंश—पु० [प० त०] मगध का एक प्राचीन राजवश जिसका नाश कौटिल्य ने किया था।

नंदा—वि० स्त्री० [स०√नन्द्+अच्—टाप्] १. आनद देनेवाली। २. शुभ।

स्त्री० [स०] १. दुर्गा। २. गौरी। ३. धन-सपत्ति। ४. एक प्रकार की कामधेनु। ५ एक प्रकार की सक्राति। ६ आनद या प्रसन्नता की अधिष्ठात्री देवी जो हर्ष की पत्नी कही गई है। ७. सगीत मे, एक मूर्च्छना। ८ स्वर्ग की एक अप्सरा। ९. विभीषण की कन्या। १० पानी रखने का मिट्टी का घड़ा। ११. पुराणानुसार शाकद्वीप की एक नदी। १२ स्त्री के पति की वहन। ननद। १३ चाद्र मास के किसी पक्ष की प्रतिपदा, पष्ठी और एकादशी तिथियों की सज्ञा। १४. पुराणानुसार कुवेर की पुरी के पास वहनेवाली एक नदी। १५ जैन पुराणो के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के दसवे अर्हत् की माता का नाम। १६ पिंगल मे वरवै छद का एक नाम। १७ एक मातृका या वाल-ग्रह जिसके विपय मे यह माना जाता है कि इसके कारण वालक अपने जीवन के पहले दिन, पहले मास और पहले वर्ष मे ज्वर से पीड़ित होकर वहुत रोता और अचेत हो जाता है। १८ दे० 'नदा-तीर्थ'।

नंदातीर्थ—पु० [स०] हेमकूट पर्वत पर स्थित एक तीर्थ। (महाभारत)

नंदात्मज—पुं० [नद-आत्मज, प० त०] नद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदात्मजा—स्त्री० [नंद-आत्मजा, प० त०] नद की पुत्री। योगमाया।

नंदा-देवी—[स०] यमुनोत्तरी के पूर्व दक्षिणी हिमालय की एक चोटी जो समुद्र तल से २५००० फुट ऊँची है।

नंदा-पुराण—पु० [सं०] एक उपपुराण जिसमे नदा का माहात्म्य वर्णित है और जिसके वक्ता कार्तिक कहे गये हैं। मत्स्य और शिवपुराण के मत से यह तीसरा उपपुराण है।

नंदार्य—पु० [स०] शाकद्वीपी ब्राह्मणो की एक जाति।

नंदाश्रम—पु० [नद-आश्रम, प० त०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

नंदि—पु० [स०√नन्द्+इन्] १. आनद। २. वह जो पूर्णत आनदमय हो। ३. सच्चिदानद परमात्मा। ४. शिव। ५ दे० 'नदिकेशर'।

नंदिक—पु० [स० नद+ठन्—इक] १. नंदी वृक्ष। तुन का पेड। २. धव का पेड। धौ। ३. आनद।

नंदिकर—पु० [स०] शिव।

नंदिका—स्त्री० [सं० नदिका+टाप्] १ पानी रखने की मिट्टी की नाँद। २ चाद्रमास के प्रत्येक पक्ष की प्रतिपद, षष्ठी और एकादशी तिथियाँ। ३. हँसमुख स्त्री। ४. नदनकानन।

नंदिकावर्त्त—पु० [स०] एक प्रकार का रत्न। (वृहत्सहिता)

नंदि-कुंड—पु० [स० मध्य० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महा०)

नंदिकेश—पु० [स०] नदिकेश्वर।

नंदिकेश्वर—पु० [सं०] १ शिव के द्वारपाल वैल का नाम। नदि। २. नदी द्वारा उक्त एक पुराण। ३ नदि के स्वामी, शिव।

नंदिग्राम—पु० [सं०] अयोध्या के निकट का एक प्राचीन गाँव जहाँ राम-वनवास के समय भरत १४ वर्षो तक रहे थे।

नंदि-घोष—पु० [स० व० स०] अर्जुन का एक रथ जो उन्हे अग्निदेव से मिला था।

नंदित—वि० [स०√नन्द्+क्त] आनदित। सुखी। आनदयुक्त। प्रसन्न।

वि० [हिं० नाद] नाद करता या वजाता हुआ।

नंदि-तरु—पु० [स० कर्म० स०] धव। धौ।

नंदि-तूर्य—पु० [स० मध्य० स०] एक पुराना वाजा।

नंदिन—स्त्री० [स० नदिनी] एक तरह की वडी मछली।

नंदिनी—स्त्री० [स०√नन्द्+णिनि—ङीप्] १ पुत्री। वेटी। २. उमा। ३. गगा। ४. दुर्गा। ५ कार्तिकेय की मातृका। ६ व्याडि मुनि की माता। ७ जोरू। पत्नी। ८ स्त्री के पति की वहिन। ९ जटामासी। वाल-छड। १० रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ११ वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। १२ तेरह अक्षरो का एक वर्ण-वृत जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, एक जगण, फिर दो सगण और अत मे एक गुरु होता है। इसे कलहस और सिंहनाद भी कहते है।

नंदि-मुख—पु० [व० स०] १. शिव। महादेव। २ एक प्रकार का चावल। ३. एक प्रकार का पक्षी।

†पु०=नादी मुख (श्राद्ध)।

नंदिमुखी—पु० [?] ऐसा पक्षी जिसकी चोच का ऊपरी भाग वहुत कडा और गोल हो। ऐसे पक्षी का मांस पित्तनाशक, चिकना, भारी, मीठा

और वायु, कफ, बल तथा शुक्रवर्धक कहा गया है। (भाव प्रकाश) स्त्री० तद्रा।

नंदिरुद्र—पुं० [स०] शिव का एक नाम।

नंदि-वर्द्धन—पुं०[स०नदि√वृध् (बढना)+णिच्+ल्यु—अन]नदिवर्धन ।

नंदि-वर्धन—वि० [स०] आनद बढानेवाला।

पु० १. शिव। २. पुत्र। बेटा। ३. दोस्त। मित्र। ४. एक तरह का प्राचीन विमान। ५. प्राचीन वास्तु शास्त्र के अनुसार कुछ विशिष्ट विस्तारवाला मदिर। ६. विवसार का पुत्र।

नंदिवारलक—पु० [स०] एक तरह की समुद्री मछली। (सुश्रुत)

नंदिषेण—पुं० [सं०] कुमार के अनुचर का नाम।

नंदी (दिन्)—वि० [स०√नद्+णिनि] आनदित रहनेवाला। प्रसन्न।

पु० १ शिव के एक प्रकार के गण, जिनके ये तीन भेद कहे गये हैं—कनक नदी, गिरिनदी, और शिवनदी। २. शिव के द्वारपाल बैल का नाम। ३. शिव के नाम पर उत्सर्ग किया हुआ सांड। ४. वह बैल जिसके शरीर पर बहुत-सी गाँठें हो। ऐसा बैल खेती के काम का नही होता। इसे फकीर लोग लेकर घुमाते और लोगो को उसके दर्शन कराके पैसे माँगते हैं। ५ विष्णु। ६ जैनो के एक श्रुत पारग। ७. उड़द। ८ धौ का पेड। धव। ९. गर्दभाड या पाखर नाम का पेड। १०. बरगद। वट। ११. तुन नाम का पेड। १२. बगाल के कायस्थो, तेलियो आदि की कुछ जातियो की उपाधि।

नंदीगण—पुं० [सं० नदिगण] १. शिव के द्वारपाल बैल। २. शिव के नाम पर दागकर खुला छोड़ा हुआ बैल। साँड।

नंदीघंटा—पुं० [स० नदी+हिं० घटा] बैलो के गले मे बाँधने का बिना डाँडी का घटा।

नंदीपति—पुं० [सं० नंदिपति] नदि के स्वामी, शिव। महादेव।

नंदीमुख—पु० [सं०] १.=नदि-मुख। २.=नांदी-मुख।

नंदीवृक्ष—पु० [स०] १. मेढा-सिगी। २. तुन नाम का पेड।

नंदीश—पु० [स० नदिन्-ईश प० त०]=नंदीश्वर।

नंदीश्वर—पु० [स० नदिन्-ईश्वर, प० त०] १. शिव। २. सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। ३. वृदावन का एक तीर्थ। ४. शिव का एक प्रसिद्ध गण जो पुराणानुसार काले रग का, बौना, बदर के-से मुँह और मुँडे हुए सिरवाला माना गया है।

नंदेऊ—पु०=नदोई।

नंदोई—पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] सबध के विचार से ननद का पति।

नँदोला*—पु० [हिं० नाँद का अल्पा०] मिट्टी की छोटी नाँद।

नंदोसी—पुं०=नदोई।

नंद्द*—पु० १.=नाद। २.=नद।

नंद्यावर्त्त—पु० [सं० नंदि-आवर्त्त, ब० स०] १. ऐसा भवन जिसमे पश्चिम ओर द्वार न हो। २. तगर नाम का पेड।

नंबर—वि० पु० [अ०] [वि० नबरी] १. सख्या-सूचक अंक।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२. अदद। सख्या। ३. गणना। गिनती। ४. कपडे आदि नापने का गज जो ३६ इच लबा होता है। ५. सामयिक पत्र या पत्रिका का कोई स्वतंत्र अंक।

नंबरदार—पुं० [अ०+फा०] ब्रिटिश शासन मे गाँव का वह जमीदार जो अपनी पट्टी के दूसरे हिस्सेदारो से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता देता था।

नंबरदारी—स्त्री० [अं०+फा०]नंबरदार होने की अवस्था, पद या भाव।

नंबरवार—क्रि० वि० [अ० नबर+हिं० वार] १. अंक या संख्या के क्रम से। २. सिलसिलेवार।

नंबरी—वि०[अं० नबर] १.जिस पर नबर या अंक लगा हो। २. नंबर सबंधी। जैसे—नंबरी गज। ३. बहुत बडा और मशहूर। जैसे—नबरी चोर, नंबरी गुडा।

नंबरी गज—पुं० [अं०+हिं०] कपड़े आदि नापने का अंगरेजी गज जो ३६ इच लबा होता है।

नंबरी चोर—पुं० [हिं०] वह कुख्यात चोर जिसका उल्लेख पुलिस के अभिलेखो में विशेष रूप से हो।

नंबरी तह—स्त्री० [हिं०] कपड़े के थान की इस प्रकार लगी हुई तह कि उसकी प्रत्येक परत एक एक गज लंबी हो और क्रमात् एक दूसरी के ऊपर पडती हो।

विशेष—ऐसी तह उस तह से भिन्न होती है जो पहले दोहरी, तब चौहरी आदि करके लगाई जाती है।

नंबरी नोट—पुं० [हिं०] १. ब्रिटिश भारत में, सौ या इससे अधिक रुपयोंवाला कोई बडा नोट जिसका नबर लेन-देन के समय बही खातों मे लिख लेने की प्रथा थी। २. आज-कल सौ रुपयो का नोट।

नंबरी सेर—पु० [हिं०] तौलने का वह सेर जो ब्रिटिश शासन मे ८० अँगरेजी रुपयों के बराबर अर्थात् ८० भर होता था। अभी तक (अर्थात् दशमलव पद्धति प्रचलित होने के पहले तक) यही सेर मानक माना जाता था।

नंबूरी—पुं० [?] मालाबार प्रात के ब्राह्मणो की एक जाति।

नंशुक—वि० [सं०√नश् (नाश)+णुकन्, नुमागम] १. नाश करनेवाला। २ हानिकारक। ३. भटकनेवाला। ४. बहुत छोटा। ५. सूक्ष्म।

नंस*—पुं०=नाश।

वि०=नष्ट।

नंसना†—स० [सं० नाश] नष्ट करना।

अ० नष्ट होना।

नइया†—स्त्री०=नाव (नौका)।

नइहर—पुं० [सं० मातृगृह, पु० हिं० मैहर] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। पीहर। मैका।

नई†—वि० [स० नयी=नयवान्] नीतिमान। नीतिज्ञ।

स्त्री०=नदी।

वि० हिं० 'नया' का स्त्री०।

नउँजी— स्त्री०=लीची (फल)।

नउ*—वि० १.=नव (नया)। २.=नौ (संख्या)।

नउआ—पुं० [स्त्री० नउनिया]=नाऊ (नापित या हज्जाम)।

नउका—स्त्री०=नौका (नाव)।

नउज †—अव्य०=नौज।

नउन †—वि०=नत (झुका हुआ)।

नउनियाँ—स्त्री० [हिं० नाऊ] नाई जाति की स्त्री। नाउन।
नउरंग—पु० १ =नारंग। २.=नौरंग।
स्त्री०=नारंगी।
नउर—पु०=नकुल (नेवला)।
नउरा†—पुं० [स्त्री० नेउरी]=नौकर।
†पुं०=नेवला।
नउलि†—वि०=नवल (नया या विलक्षण)।
नएपंज—पु० [हिं० नया+पाँच] पाँच वर्ष की अवस्था का घोड़ा। जवान घोड़ा।
नओढ़†—वि०, पु०=नवोढ।
वि० स्त्री०=नवोढ़ा।
नओढा †—वि० स्त्री०=नवोढा।
नक—पु० [?] १. आकाश। नभ। २ स्वर्ग।
स्त्री० हिं० 'नाक' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—नक-कटा, नक-चढा, नक-छिकनी, नक-वेसर आदि।
† स्त्री०=नख (नाखून)।
नक-कटा—वि० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नक-कटी] १. जिसकी नाक कटी हुई हो। २ दूसरो द्वारा विदित होने पर भी जो लज्जा का अनुभव न करे। वहुत वडा निर्लज्ज।
नक-कटी—स्त्री० [हिं० नाक+कटना] १. नाक कटने की अवस्था या भाव। २ दुर्दशापूर्ण अपमान।
नक-घिसनी—स्त्री० [हिं० नाक+घिसना] १ जमीन पर नाक घिसने अर्थात् रगडने की क्रिया या भाव। २. वहुत अधिक दीनतापूर्वक की जानेवाली क्षमायाचना, प्रतिज्ञा अथवा प्रार्थना।
नक-चढ़ा—वि० [हिं० नाक+चढ़ना] १. जिसकी नाक हर समय चढी रहती हो या वात-वात मे चढ जाती हो। २ जो जल्दी अप्रसन्न या रुष्ट हो जाता हो। चिडचिड़ा। वद-मिजाज।
नक-चोटी—स्त्री०=नख-चोटी।
नक-छिकनी—स्त्री० [हिं० नाक+छीकना] एक पौधा जिसके घुडी के आकार के फूलो के सूँघने से छीकें आती हैं।
नकटा—वि० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नकटी] १. जिसकी नाक कट गई हो। २. निर्लज्ज। वेशरम। ३. अपमानित और दुर्दशा-ग्रस्त। उदा०—नकटा जीया, वुरे हवाल।—कहा०।
पुं० [हिं० नटका से व० वि०] १. मगल तथा शुभ अवसरो पर गाये जानेवाले एक तरह के गीत। २ वत्तख की जाति का एक तरह का पक्षी जिसके नर की चोच पर काला दाना या मास-खड उभरा रहता है।
नकटेसर—पु० [?] एक प्रकार का पौधा जिसमे सुगधित सुन्दर फूल लगते हैं।
नकड़ा—पु०[हिं० नाक] वैलो का एक रोग जिसमे उनकी नाक मे सूजन आने के फल-स्वरूप उन्हे साँस लेने मे कष्ट होता है।
नक-तोड़ा—पुं० [हिं० नाक+तोडना] ऐसा अभिमान या नखरा जो दूसरो का नाक तोड़नेवाला अर्थात् वहुत ही कष्टप्रद अथवा असह्य जान पड़े।
महा०—(किसी के) नक-तोड़े उठाना=वहुत ही अनुचित और अप्रिय जान पड़नेवाले नखरे भी वरदाश्त करना या सहना।
नकंद—पु० [?] एक प्रकार का वढिया चावल जो काँगडे मे होता है।
नकद—वि०, पुं०=नगद।
नकदावा—पु० [?] ऐसी पकी हुई दाल जिसमे वडियाँ भी पड़ी हो।
नकदी—वि०, स्त्री०=नगदी।
नकना—स० [स० लघन, हिं० नाकना] १ उल्लघन करना। डाकना। लाँघना। २ छोड़ना। त्यागना।
अ० गमन करना। चलना।
अ० [हिं० नाक] इतना दु खी और परेशान होना कि मानो नाक मे दम आ गया या हो रहा हो।
नकन्याना†—अ० [हिं० नाक] नाक मे दम होना। तग या परेशान होना। उदा०—हाय वुढापा तुम्हरे मारे हम तो अव नकन्याय गयन।—प्रतापनारायण मिश्र।
स० नाक मे दम करना। तग या परेशान करना।
नकपोड़ा—पुं० [हिं० नाक+पकौडा] वहुत वडी तथा फूली हुई नाक। (परिहास या व्यग्य)
नकफूल—पु० [हिं० नाक+फूल] नाक मे पहनने का एक प्रकार का फूल। लौंग।
नकव—स्त्री० [अ० नक्व] चोरी करने के उद्देश्य से दीवार मे किया हुआ वड़ा छेद जिसमे से होकर मकान मे घुसा जाता है। सेंध।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
नकवजनी—स्त्री० [अ० नक्व+फा० जनी] चोरी करने के लिए किसी के घर मे नकव या सेंध लगाने की क्रिया।
नकवानी—स्त्री० [हिं० नाक+वानी ?] नाक मे दम करने अर्थात् वहुत तग या परेशान करने की क्रिया या भाव।
नकवेसर—स्त्री० [हिं० नाक+वेसर] नाक मे पहनने की छोटी नथ। वेसर।
नकमोती—पु० [हिं० नाक+मोती] नाक मे पहनने का मोती जिसे लटकन भी कहते हैं।
नकल—स्त्री० [अ० नकल] १. किसी को कुछ करते हुए देखकर उसी के अनुसार कुछ करने की क्रिया या भाव। अनुकरण। जैसे—अव तुम भी उनकी नकल करने लगे।
क्रि० प्र०—उतारना।
२ परीक्षा मे, एक परीक्षार्थी का दूसरे परीक्षार्थी द्वारा लिखी हुई वात छल से देखकर अपनी पुस्तिका मे लिखना।
क्रि० प्र०—मारना।
३ ऐसी कृति जो किसी दूसरी कृति को देखकर उसी के ढग पर या उसी की तरह वनाई गई हो। अनुकृति। जैसे—यह खिलौना उसी विलायती खिलौने की नकल है।
क्रि० प्र०—उतारना।—वनाना।
४. किसी की रहन-सहन, वेश-भूषा, हाव-भाव आदि का ज्यो का त्यो किया जानेवाला अभिनयात्मक अनुकरण जो उसे उपहासास्पद सिद्ध करने अथवा लोगो का मनोरंजन करने के लिए किया जाय। स्वाँग। जैसे—अफीमची की नकल, गुडे-वदमाशो की नकल।

क्रि० प्र०—उतारना।

५. किसी प्रकार की विलक्षण और हास्यास्पद कृति, रूप-रंग, व्यवहार आदि। जैसे—जब देखो तब आप एक नई नकल बनाकर आ पहुँचते है। ६. हास्यरस का कोई छोटा अभिनय, कथा, कहानी, चुटकुला आदि। ७ किसी प्रकार के अकन, चित्र, लेख, लेख्य, साहित्यिक कृति आदि की ज्यो की त्यो की हुई प्रतिलिपि। जैसे—इस पत्र की एक नकल अपने पास रख लो।

विशेष—नकल मे मुख्य भाव यही होता है कि इसमे नवीनता, मौलिकता, वास्तविकता, सजीवता आदि का अभाव है। केवल बाहरी रूप-रग किसी के अनुकरण पर या उसे देखकर बनाया गया होता है।

नकलची—वि० [हिं० नकल+ची (प्रत्य०)] १. जो तुच्छतापूर्वक दूसरों का अनुकरण करता हो। नकल करनेवाला। २. (वह विद्यार्थी) जो अपने सहपाठी की पुस्तिका मे लिखे हुए लेख आदि की नकल करता हो।

नकल-नवीस—पु० [अ० नकल+फा० नवीस] [भाव० नकलनवीसी] कार्यालय आदि का वह लिपिक जो दस्तावेजो आदि की नकल तैयार करता हो।

नकलनोर—पु० [?] मुनिया (चिड़िया)।

नकलपरवाना—पु० [अ० +फा०] पत्नी का भाई। साला।

विशेष—इस पद का प्रयोग केवल परिहास और व्यग्य के रूप मे यह सूचित करने के लिए होता है, कि अमुक की पत्नी का जो रूप-रग है, उसी की अनुकृति का परिचायक या सूचक उसका भाई है।

नकल वही—स्त्री० [हिं०] १ वह वही जिसमे भेजे जानेवाले पत्रो की नकल या प्रतिलिपि रखी जाती थी। २. वह पजिका या फाइल जिसमे पत्रो की प्रतियाँ रखी जाती हैं।

नकली—वि० [अ० नक्ली] १. जो किसी की नकल भर हो। किसी के अनुकरण पर बना हुआ। २. उक्त के आधार पर जो मौलिक न हो। कृत्रिम। ३ (पदार्थ) जो महत्त्व, मान, मूल्य आदि के विचार से घटकर हो और प्राय. दूसरो को धोखा देने के उद्देश्य से बनाया गया हो। ४. काल्पनिक। ५. झूठ। मिथ्या।

नकलोल—वि० [हिं० नाक+लोल (प्रत्य०)] १. (ऐसा व्यक्ति) जिसकी जिधर चाहे नाक घुमाई जा सके। २. निर्बुद्धि। मूर्ख। पु०=नकलनोर।

नकवाँ— पु० [हिं० नाक ?] नया निकला हुआ अकुर। कल्ला। पु० १ =नाक। २ नाका (तराजू, सूई आदि का छेद)।

नकश—पुं० १. दे० 'नक्श'। २. दे० 'नकश-मार'।

नकश-मार—स्त्री० [अ० नक्श +हिं० मारना] ताश के पत्तों का एक प्रकार का खेल जिसकी गिनती जूए मे होती है।

नकशा—पु० [अ० नक्श.] १. रेखाओ आदि के द्वारा किसी वस्तु की अकित की हुई वह आकृति या प्रतिकृति जो उस वस्तु के स्वरूप का सामान्य परिचय कराती हो।

क्रि० प्र०—उतारना।—खीचना।—बनाना।

मुहा०—(किसी चीज या बात का) नकशा खींचना=ऐसा यथातथ्य और सविस्तार वर्णन करना कि सारा रूप या स्थिति स्पष्ट हो जाय।

२. किसी आकृति, वरन् आदि का परिचय या बोध करानेवाले चिह्न, रेखाएँ आदि जो उसके उतार-चढ़ाव, स्वरूप आदि का ज्ञान कराती हों। आकृति या ढाँचा। रूप-रेखा। जैसे—तोड़-फोड़ और नई बस्तियों से तो सारे शहर का नकशा ही बदल गया है।

पद—नाक-नकशा—किसी व्यक्ति के चेहरे की गठन। जैसे—भले ही उनका रूप साँवला हो, पर नाक-नकशा बहुत अच्छा है, अर्थात् रूप देखने मे सुन्दर है।

३. पृथ्वी अथवा उसके किसी विशिष्ट अग और उस पर स्थित मुख्य-मुख्य वस्तुओ आदि का परिचायक चित्र। मानचित्र। (मैप)

क्रि० प्र०—खीचना।—बनाना।

विशेष—(क) ऐसे नकशों में जलाशय, नगर, नदियाँ, पहाड़, अनेक प्रकार के विभाजन (जैसे—खेती, जर्मीन, बाग, सड़कें आदि) सभी मुख्य बातें अकित होती है। (ख) नकशे किसी जिले, तहसील, नगर, बस्ती, भवन आदि के भी बनते हैं। (ग) किसी देश के भिन्न-भिन्न भागो की आबादी, पैदावार, वर्ष-मान आदि के भी सूचक नकशे बनते है। (घ) पृथ्वी के सिवा समूचे आकाश या उसके किसी अंग के भी ऐसे नकशे बनते हैं, जिनमे भिन्न-भिन्न ग्रहो, तारो, नक्षत्रो आदि की स्थितियाँ दिखाई जाती है।

४ कोई ऐसा अकन जो किसी प्रकार की स्थिति बतलाने या स्पष्ट करने मे सहायक होता हो। जैसे—शतरज के अच्छे खिलाड़ी शतरंज के ऐसे नये-नये नकशे बनाकर लोगो के सामने रखते हैं कि उनकी शर्तो के अनुसार चलकर विपक्षी को मात करना बहुत ही कठिन होता है।

विशेष—ऐसे नकशो मे दोनो पक्षो के भिन्न-भिन्न मोहरे कुछ विशिष्ट घरो मे रखे हुए दिखाए जाते हैं।

५ किसी चीज का आकार-प्रकार, रूप-रेखा आदि बतलानेवाला वह रेखा-चित्र जो वह चीज बनाने से पहले यह सूचित करने के लिए बनाया जाता है कि बनकर तैयार होने पर वह चीज कैसी होगी अथवा उसका रूप क्या होगा। जैसे—(क) जब तक कारखाने (या मकान) का नकशा अधिकारी मजूर न कर लें, तब तक कारखाना (या मकान) बनाने का काम शुरू नहीं हो सकता। (ख) अच्छे कारीगर कोई चीज बनाने से पहले उसका नकशा तैयार करते है। ६ कोई ऐसी आकृति या क्रिया, घटना या स्थिति जिसका स्वरूप प्रत्यक्ष और स्पष्ट दिखाई देता हो। जैसे—उस दिन के जलसे का नकशा अभी तक हमारी आँखो के सामने है।

मुहा०—नकशा जमाना=ऐसे अच्छे ढग से कोई काम कर दिखाना कि सब लोग उससे प्रभावित और मुग्ध होकर उसकी प्रशसा करने लगें। जैसे—उस सगीत सम्मेलन मे कई गवैयो ने अच्छा नकशा जमाया था।

७. किसी व्यक्ति के आचार-व्यवहार, चाल-चलन, रहन-सहन आदि का बाह्य रूप जो उसकी प्रवृत्ति, मनोवृत्ति, स्थिति आदि के सिवा उसके भविष्य का भी परिचायक होता है। जैसे—(क) आज-कल इस लडके का नकशा अच्छा नही दिखाई देता। (ख) अब तो धीरे-धीरे आपके भाई साहब का नकशा भी बदलने लगा है। ८. दे० 'सारिणी'।

नकशानवीस—पु० [अ० नक्श+नवीस] वह व्यक्ति जो चीजो (देशो, घरो, कारखानो) आदि के नकशे बनाता हो।

नकशी—वि० [अ० नक्शी] जिस पर नक्श अर्थात् वेल-बूटे अंकित हो अथवा खुदे या वने हो।

नकशीदार—वि०=नकशी।

नकशीमैना—स्त्री० [अ०+हिं०] तेलिया नामक मैना।

नकस—पु०=नकशा।

नकसमार—स्त्री०=नकश-मार।

नकसा—पु०=नकशा।

नकसीर—स्त्री० [हिं० नाक+स० क्षीर=जल] १ एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे गरमी आदि के कारण नाक मे से खून वहता है। २ उक्त रोग के कारण नाक मे से वहनेवाला खून।

क्रि० प्र०—फूटना।—वहना।

नका †*—पु०=निकाह (विवाह)। उदा०—घण पडियाँ साँकडिया घड़ियाँ ना धीहडियाँ पढी नका।—दुरसाजी।

नकाना—अ० [हिं० नाक] नाक मे दम होना। वहुत परेशान होना। स० नाक मे दम करना। तग या परेशान करना।

† स०=नकियाना।

नकाब—स्त्री० [अ० निकाव] १. अपने को छिपाये रखने के लिए चेहरे पर डाला जानेवाला जालीदार रगीन कपडा। मुखावरण।

क्रि० प्र०—उठाना।—डालना।

विशेष—इसका प्रयोग प्राय. स्त्रियाँ अपना रूप दूसरो की दृष्टि मे पडने से वचाने के लिए और चोर, डाकू आदि अपनी आकृति छिपाये रखने के लिए करते हैं।

२. स्त्रियो की साडी या चादर का वह भाग जिससे उनका मुख ढका रहता है। घूंघट।

मुहा०—नकाब उलटना=नकाव ऊपर उठाकर इस प्रकार पीछे उलटना या हटाना कि लोग आकृति देख सकें।

३. लोहे की वह जाली जो झिलम मे नाक की रक्षा के लिए लगी रहती है।

नकाबपोश—वि० [अ० निकाव+फा० पोश] (व्यक्ति) जिसने अपने चेहरे पर नकाव अर्थात् जालीदार कपडा डाल रखा हो।

नकार—पु० [स० न+कार] १. ‘न’ अक्षर या वर्ण। २. न या नही का वोधक शब्द या वाक्य।

स्त्री० [हिं० नकारना] किसी काम या बात के लिए नही करने या कहने की क्रिया या भाव। इन्कार।

नकारची—पुं०=नक्कारची।

नकारना—अ० [हिं० न+कारना (प्रत्य०)] १. असहमति प्रकट करते हुए ‘न’ या ‘नही’ कहना। २. न मानना। अस्वीकृत करना।

नकारा—वि० [फा० नाकार] [स्त्री० नकारी] १ जिसे कोई काम न हो। निष्कर्म। २ जो किसी काम का न हो। निकम्मा। ३ खराव। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। ४ खराव। वुरा।

† पु०=नक्कारा।

नकारात्मक—वि० [स० नकार-आत्मन्, व० स०, कप्] १. (उत्तर या कथन) जिसमे कोई वात न मानी गई हो या कुछ करने से इन्कार किया गया हो। ‘सकारात्मक’ का विपर्याय। २. दे० ‘नहिक’।

नकाश—पु०=नक्काश।

नकाशना—स० [अ० नक्श] किसी चीज पर नक्श करना या बनाना अर्थात् उस पर वेल-बूटे आदि खोदकर अंकित करना या उकेरना। नक्काशी करना।

नकाशी—स्त्री०=नक्काशी।

नकाशीदार—वि०=नकशी।

नकास—पु० १.=नक्काश। २.=नखास।

नकासना—स०=नकाशना।

†स०=निकासना (निकालना)।

नकासी—स्त्री०=नक्काशी।

†स्त्री०=निकासी।

नकासीदार—वि० दे० ‘नकशी’।

न-किंचन—वि० [स० सहसुपा समास]=अकिंचन।

नकियाना—अ० [हिं० नाक] १ नाक से कुछ श्वास निकालते हुए शब्दो का इस प्रकार उच्चारण करना या वोलना कि मात्राएँ, वर्ण, आदि अनुनासिक से जान पडें। २. नाक मे दम होना। वहुत ही तग या परेशान होना।

स० किसी की नाक मे दम करना। वहुत ही तग या परेशान करना।

नकीब—पु० [अ० नक्कीव] १. प्राचीन काल मे राजा-महाराजा की सवारी के आगे-आगे चलनेवाला और उनके आगमन की उच्च स्वर मे घोपणा करनेवाला चोवदार। २ भाट। चारण। ३. कडखा गानेवाला व्यक्ति। कडखैत।

नकुच—पु० [?] मदार (पेड)।

†पु०=लकुच (वृक्ष और फल)।

नकुट—पु० [स० न√कुट् (कुटिल होना)+क]=नाक।

नकुड़ा—पु० [स० नकुल] नेवला (जन्तु)।

पु० [हिं० नाक] १ नाक विशेपत' उसका अग्र भाग। २. नथना।

नकुल—पु० [स० व० स०] १ नेवला। २. माद्री के गर्भ से उत्पन्न युधिष्ठिर, अर्जुन, और भीम के सौतेले भाई। ३ पुत्र। वेटा। ४. शिव। ५ एक प्रकार का पुराना वाजा।

†पु०=दे० ‘नुकल।’

नकुल-कद—पु० [मध्य० स०] गवनाकुली या रास्ना (कद)।

नकुलक—पु० [स० नकुल+कन्] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का गहना। २. रुपए आदि रखने की एक प्रकार की थैली।

नकुल-तैल—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का तैल जो नेवले के मास मे वहुत सी दूसरी औपधियाँ मिलाकर वनाया जाता है। इसका उपयोग आमवात, अगो का कप और कमर, पीठ, जाँघ आदि के दर्द मे होता है।

नकुलांध—पु० [नकुल-अध, उपमित स०] सुश्रुत के अनुसार आँख का एक रोग जिसमे आँखें नेवले की आँखो की तरह चमकने लगती हैं और चीजें रग-विरगी दिखाई देने लगती है।

वि० जिसे उक्त प्रकार का रोग हो।

नकुलांधता—स्त्री० [स० नकुलाध+तल्—टाप्] नकुलाध रोग होने की अवस्था या भाव।

नकुला—स्त्री० [स० नकुल+टाप्] पार्वती।
वि० स० 'नकुल' का स्त्री०।
†पु०=नाक।

नकुलाढ्या—स्त्री० [स० नकुल-आढ्या, तृ० त०] गंधनाकुली। नकुलकद।

नकुली—स्त्री० [स० नकुल+ङीप्] १. जटामासी। २. केसर। ३. शखिनी। ४. नेवले की मादा।

नकुलीश—पु० [स०] नकुलेश।

नकुलेश—पु० [स०] तान्त्रिको के एक भैरव का नाम।

नकुलेष्टा—स्त्री० [स० नकुल-इष्टा, ष० त०] रास्ना। रायसन।

नकुलौष्ठी—स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा, जिसमे बजाने के लिए तार लगे हुए होते थे।

नकुवा—पु० १.=नाक। २.=नाका।

नकेल—स्त्री० [हिं० नाक+एल (प्रत्य०)] १. ऊँट, बैल आदि के नथने मे से आर-पार निकाली हुई वह रस्सी जो लगाम का काम देती है, और जिसके सहारे वह चलाया जाता है। मुहार। २. किसी को अपने अधिकार या वश मे रखने की युक्ति या शक्ति।
मुहा०—(किसी की) नकेल हाथ में होना=किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना। किसी से बलपूर्वक मनमाना काम करा लेने की शक्ति होना। जैसे—उनकी नकेल तो हमारे हाथ मे है।

नक्कना†—स०[स० लघन] लाँघना।

नक्कल†—पु० [अ० नुवल=गजक] जल-पान।

नक्का—पु० [हिं० नाक] १. सूई का वह छेद जिसमे डोरा डाला जाता है। २ कौडी। ३. दे० 'नाका'। ४. दे० 'नक्कीमूठ'।

नक्कादूआ—पु०=नक्कीमूठ।

नक्कार—पु०=नकारा।

नक्कारखाना—पु० [अ० नक्कार+फा० खान.] वह स्थान जहां नक्कारा या नौबत बजती है। नौबतखाना।
पद—नक्कारखाने मे तूती की आवाज=(क) बहुत भीड़-भाड या शोर-गुल मे कही गई कोई सामान्य-सी बात जो सुनाई नही पडती। (ख) बडे-बडे लोगो के सामने छोटे आदमियो की बात।

नक्कारची—पु० [अ० नक्कार.+फा० ची (प्रत्य०)] नगाडा बजानेवाला। वह जो नक्कारा बजाता हो।

नक्कारा—पु० [अ० नक्कार.] नगाडा नाम का वाजा। (दे० 'नगाडा')

नक्काल—पु० [अ०] १. वह जो केवल नकल या अनुकरण करता हो अथवा जिसने किसी की नकल या अनुकरण मात्र किया हो। २. वह जो केवल दूसरो का मनोरजन करने अथवा दूसरो को उपहासास्पद सिद्ध करने के लिए तरह-तरह की नकले करता हो। जैसे—बहुरुपिये, भाँड आदि।

नक्काली—स्त्री० [अ०] १. नकल या अनुकरण करने की क्रिया या भाव। २. दूसरो की नकल उतारने की कला या विद्या। ३. भाँडपन।

नक्काश—पु० [अ०] नक्काशी का काम करनेवाला कारीगर। वह जो धातुओं आदि पर खोदकर बेल-बूटे बनाता हो।

नक्काशी—स्त्री० [अ०] १. धातु, पत्थर, लकडी आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या कला। २. उक्त प्रकार से बनाये हुए बेल-बूटे आदि।

नक्की—स्त्री० [हिं० नक्का=कौड़ी या एक?] १. जूए के खेल में वह दाँव जिसके लिए 'एक' का चिह्न नियत हो अथवा जिसकी जीत किसी प्रकार के 'एक' चिह्न से सबद्ध हो। २. दे० 'नक्की-मूठ'।
स्त्री० [हिं० नाक] मनुष्य के गले से होनेवाला ऐसा उच्चारण जिसमे श्वास का कुछ अश नाक से भी निकलता हो और जिसका उच्चारण अनुनासिक-सा होता है। जैसे—यह लडका इतना बडा हो गया; पर अभी तक नक्की बोलता है।
क्रि० प्र०—बोलना।
वि० [हिं० एक?] १. (काम) जो हर तरह से ठीक और पूरा हो चुका हो। २. (बात) जिसका दृढ निश्चय हो चुका हो। ३. (ऋण या देन) जो अदा या चुकता हो गया हो। जैसे—किसी का हिसाब नक्की करना।

नक्कीपूर—पु०=नक्कीमूठ।

नक्कीमूठ—स्त्री० [हिं०] जूए का एक प्रकार का खेल जो प्रायः स्त्रियाँ और बालक कौडियों से खेलते हैं। इसमे एक दूसरे को काटती हुई दो सीधी लकीरें खीची जाती हैं। एक खिलाड़ी अपनी मुट्ठी मे कुछ कौडियाँ लेकर अपने दाँव पर रख देता है। तब बाकी खिलाड़ी अपने अपने दाँव पर कौड़ियाँ लगाकर हार-जीत करते हैं।

नक्कू—वि० [हिं० नाक] १. बडी नाकवाला। जिसकी नाक बडी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित या औरो से बढकर समझनेवाला। ३. जिसका कोई आचरण या कृत्य औरो से बिलकुल भिन्न और असाधारण हो; और इसी लिए जिसकी ओर लोग उपेक्षापूर्वक उँगलियाँ उठाते हो। जैसे—हम तुम्हारी सलाह मानकर नक्कू नही बनना चाहते।

नक्खय*—पु०=नक्षत्र।

नक्तंदिन, नक्तंदिव—अव्य० [स० नक्तम्-दिन, द्व० स०, नक्तमृदिवा, द्व० स०] रात-दिन।

नक्त—वि० [स०√नज् (लजाना)+क्त] जो शरमा गया हो। लज्जित।
पु० [स०] १. वह समय जब दिन का केवल एक मुहूर्त बाकी रह गया हो। बिलकुल सध्या का समय। २. रात। रात्रि। ३. शिव। ४. राजा पृथु के एक पुत्र का नाम। ५ दे० 'नक्त व्रत'।
स्त्री० रात।

नक्तक—पु० [स० नक्त+कन्] फटा-पुराना और मैला कपड़ा।

नक्तचर—वि० [स० नक्त√चर् (गति)+ट] १. रात को घूमने, चलने या विचरण करनेवाला।
पु० १. शिव। २. राक्षस। ३. उल्लू। ४. बिल्ली।

नक्तचारी (रिन्)—वि०, पु० [स० नक्त√चर्+णिनि]=नक्तचर।

नक्तमाल—पु० [स० नक्तम्-आ√अल् (पर्याप्ति)+अच्] करज वृक्ष। कंजे का पेड।

नक्त-मुखा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] रात।

नक्त-व्रत—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का व्रत जो अगहन के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को किया जाता है। इसमे दिन के समय बिलकुल

भोजन नही करते केवल रात को तारे देखकर और विष्णु की पूजा करके भोजन करते है।

नक्तांध—वि० [स० नक्त-अंध, स० त०] जिसे रात को न दिखाई देता हो। जिसे रतौंधी हो।

पु०=नक्ताध्य।

नक्तावता—स्त्री० [स० नक्ताव+तल्—टाप्]=नक्ताघ्य।

नक्तांध्य—पु० [स० नक्त-अध्य, स० त०] आँख का रतौंधी नामक रोग।

नक्ता—स्त्री० [स० नक्त+टाप्] १. कलियारी नामक विपैला पौधा। २ हलदी। ३. रात। रात्रि।

नक्ताह—पु० [स०] करज वृक्ष। कजा।

नक्ति—स्त्री० [स०√नज्+क्तिन्] रात।

नक्द—वि०, पु०=नगद।

नक्दी—स्त्री० दे० 'नगदी'।

नक्र—पु० [स०न√क्रम् (गति)+ड] १ नाक नामक जल-जन्तु। मगर। २. कुभीर या घडियाल नामक जल-जतु।

नक्र-राज—पु० [प० त०] १. घडियाल। २. मगर (जलजतु)।

नक्रा—स्त्री० [स० नक्र+टाप्] नाक।

नक्ल—स्त्री०=नकल।

विशेष—'नक्ल' के यौ० पदो के लिए दे० 'नकल' के यौ० पद।

नक्श—वि० [अ० नक्श] जिस पर नक्काशी का काम हुआ हो।

पु० १. वे चिह्न, वेल-बूटे आदि-जो पत्थर, लकड़ी आदि पर खोदकर बनाये गये हो। २ छाप या मोहर जिस पर कोई अक, चित्र, नाम आदि खुदा रहता है। ३. विभिन्न शारीरिक अगो मुख्यत चेहरे की सामूहिक गठन और उनसे अभिव्यक्त होनेवाला सौदर्य। जैसे—लडकी का रग तो साँवला है परन्तु नक्श ठीक है। ४ कागज, भोज-पत्र आदि पर सारिणी या कोष्ठक के रूप मे लिखा हुआ एक तरह का यत्र।

विशेष—यह अनेक रोगो का नाशक माना जाता है और इसे बाँह पर या गले मे पहना जाता है।

५. जादू। टोना। ६ एक तरह के गीत। ७ 'ताश' से खेला जानेवाला एक तरह का खेल। नकश-मार।

नक्श-निगार—पु० [अ० नक्श+फा० निगार] खोदकर बनाया हुआ चित्र या बेल-बूटा।

नक्शमार—पु०=नकशमार।

नक्शा—पु०=नकशा।

नक्शानवीस—पु०=नकशानवीस।

नक्शानवीसी—स्त्री०=नकशानवीसी।

नक्शी—वि०=नकशी।

नक्षत्र—वि० [स०√नक्ष् (गति)+अत्रन्] जो क्षत न हो।

पु० १. रात के समय आकाश मे दिखाई पडनेवाले सभी चमकते हुए पिंड या तारे, अथवा उनमे से प्रत्येक तारा या सितारा। २ विशिष्ट रूप से, वे २७ तारक-पुज जो पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चद्रमा के भ्रमण-मार्ग मे पडते है, और जिनके रूप-रेखाओं के आधार पर कुछ विशिष्ट आकृतियाँ मानकर ये सत्ताइस नाम रखे गये है।—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तर भाद्रपद और रेवती।

विशेष—आधुनिक ज्योतिषियो का मत है कि इन २७ तारकपुजो मे सब मिलाकर लगभग सवा दो सौ तारे है जो वास्तव मे हैं तो बहुत बडे-बड़े, परन्तु वे हमारे सौर जगत् से बहुत दूर पर स्थिति होने के कारण हमे बहुत ही छोटे तारो के रूप मे और बिलकुल स्थिर दिखाई देते हैं। इन्ही नक्षत्रो मे से कुछ नक्षत्रो के नाम पर हमारे यहाँ के १२ महीनो के नाम रखे गए हैं। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर रहता है, उसी नक्षत्र के नाम पर उस महीने का नाम रखा गया है। यथा—महीने का चैत्र नाम इसलिए पडा है कि उसकी पूर्णिमा को चन्द्रमा प्राय: चित्रा नक्षत्र पर रहता है। इसी प्रकार पूर्णिमा के दिन उसके विशाखा, ज्येष्ठा आदि नक्षत्रो पर रहने के कारण वैशाख, ज्येष्ठ आदि नाम पड़े हैं। नक्षत्रो के सबंध मे ध्यान रखने की एक बात और है। जिन उक्त तारों के बीच से होकर चद्रमा परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है, उन्ही मे से होकर चलता हुआ सूर्य भी दिखाई देता है। सूर्य का भ्रमणमार्ग जिन १२ राशियो मे विभक्त है, वे भी वस्तुत उक्त तारो के ही वर्गीकरण हैं। अन्तर यही है कि नक्षत्र उन तारो के अपेक्षया छोटे वर्ग हैं; और राशियाँ उनके बडे वर्गो के रूप मे है, इसी-लिए राशियो मे दो-दो, तीन-तीन नक्षत्र आ जाते हैं।

३ सत्ताइस मोतियो की माला। ४. मोती।

नक्षत्र-कल्प—पु० [प० त०] अथर्ववेद का एक परिशिष्ट जिसमे चद्रमा की स्थिति आदि का वर्णन है।

नक्षत्र-काति-विस्तार—पु० [स० नक्षत्र-काति, प० त०, नक्षत्रकांति-विस्तार, ब० स०] सफेद ज्वार।

नक्षत्र-गण—पु० [प० त०] कुछ विशिष्ट नक्षत्रो के अलग-अलग समूह या गण। (फलित ज्योतिष)

नक्षत्र-चक्र—पु० [प० त०] १. सत्ताइस नक्षत्रो का वह चक्र जिसमे से होकर चन्द्रमा २७-२८ दिनो मे पृथ्वी की परिक्रमा करता है। २. राशिचक्र। ३ तात्रिको का एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार दीक्षा के समय नक्षत्रो आदि के विचार से गुरु यह निश्चय करता है कि शिष्य को कौन सा मत्र दिया जाय।

नक्षत्र-चिंतामणि—पु० [उपमि० स० ?] एक प्रकार का कल्पित रत्न जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि उससे माँगी हुई चीजें प्राप्त हो जाती हैं।

नक्षत्र-दर्श—पु० [स० नक्षत्र√दृश् (देखना)+अण्] १. वह जो नक्षत्र देखता हो। २ ज्योतिषी।

नक्षत्र-दान—पु० [स० त०] पुराणानुसार भिन्न-भिन्न नक्षत्रो के उद्देश्य से किया जानेवाला भिन्न-भिन्न पदार्थो का दान।

नक्षत्र-नाथ—पु० [प० त०] चन्द्रमा।

नक्षत्र-पति—पु० [प० त०] चद्रमा।

नक्षत्र-पत्र—पु० [स० नक्षत्र√पा (रक्षा)+क] चन्द्रमा।

नक्षत्र-पथ—पु० [प० त०] नक्षत्रो के चलने का मार्ग।

नक्षत्र-पद-योग—पु० [प० त० ?] जन्मकुडली का वह योग जब सूर्य जन्म राशि से छठे स्थान पर या मेप राशि मे होता है और चद्रमा वृप राशि मे।

नक्षत्र-पुरुष—पु० [मुप्सुपा स०] विभिन्न नक्षत्रो को विभिन्न शारीरिक अगो के रूप मे मानकर उनके आधार पर बननेवाला कल्पित पुरुष।

नक्षत्र-माला—स्त्री० [मध्य० स०] वह हार जिसमे सत्ताइस मोती हो।

नक्षत्र-याजक—पु० [प०त०] ग्रहो और नक्षत्रो आदि के दोषो की मत्र-जाप आदि की सहायता से शाति करानेवाला ब्राह्मण।

नक्षत्र-योग—पु० [प० त०] नक्षत्र के साथ ग्रहो का योग।

नक्षत्र-योनि—स्त्री० [प० त०] वह नक्षत्र जो विवाह के लिए निषिद्ध हो।

नक्षत्र-राज—पु० [प० त०] नक्षत्रो के स्वामी, चद्रमा।

नक्षत्र-लोक—पु० [प० त०] १. सितारो की दुनिया। २. पुराणानुसार एक लोक जो चद्रलोक से ऊपर स्थित माना गया है।

नक्षत्र-वीथि—स्त्री० [प० त०] नक्षत्रो मे गति के अनुसार तीन-तीन नक्षत्रो के बीच का कल्पित मार्ग।

नक्षत्र-वृष्टि—स्त्री० [प० त०] तारे का टूटना। उल्कापात।

नक्षत्र-व्यूह—पु०[प० त०] फलित ज्योतिष में वह चक्र जिसमे यह दिखलाया जाता है किन-किन पदार्थों, जातियो आदि का कौन-कौन नक्षत्र स्वामी है।

नक्षत्र-व्रत—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार किसी विशिष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जानेवाला ऐसा व्रत जिसमे उसके स्वामी की आराधना की जाती है।

नक्षत्र-शूल—पु० [उपमि० स०] कुछ विशिष्ट नक्षत्रो का किसी विशिष्ट दिशा मे रहने का ऐसा काल या समय जिसमे यात्रा आदि निषिद्ध हो।

नक्षत्र-संधि—स्त्री० [प० त०] ग्रहो का नक्षत्र के पूर्व पक्ष से उत्तर पक्ष मे प्रविष्ट होने की सधि या समय।

नक्षत्र-सत्र—पु० [मध्य० स०] वह यज्ञ जो नक्षत्रो के उद्देश्य से विशेषत. दुष्ट ग्रहो की शाति के लिए किया जाय।

नक्षत्र-साधन—पु० [प० त०] किसी नक्षत्र मे किसी ग्रह के रहने का समय जानने के लिए की जानेवाली गणना।

नक्षत्र-सूचक—पुं० [प० त०] ऐसा व्यक्ति जो बिना शास्त्रो का अध्ययन किये ही ज्योतिषी बन बैठा हो।

नक्षत्र-सूची (चिन्)—पु० [स० नक्षत्र√सूच् (बताना)+णिनि]= नक्षत्र-सूचक।

नक्षत्रामृत—पु० [नक्षत्र-अमृत, स० त०] किसी विशिष्ट दिन मे किसी विशिष्ट नक्षत्र का होनेवाला उत्तम योग जो यात्रा आदि के लिए शुभ माना जाता है।

नक्षत्रिय—वि० [स० नक्षत्र+घ+इय] १ नक्षत्र-सबधी। २. सत्ताइस (नक्षत्रो की सख्या के आधार पर)।

नक्षत्री—वि० [स० नक्षत्र+हिं० ई (प्रत्य०)] १. जिसकी जन्मकुडली मे अच्छे नक्षत्र हो। अच्छे नक्षत्रो मे जन्म लेनेवाला। २ बहुत बडा भाग्यवान।

पु० [स० नक्षत्रिन्] १ चद्रमा। २. विष्णु।

नक्षत्रेश—पु० [नक्षत्र-ईश, प० त०] १. चद्रमा। २. कपूर।

नक्षत्रेश्वर—पु० [नक्षत्र-ईश्वर, प० त०] नक्षत्रो का स्वामी, चद्रमा।

नक्षत्रेष्टि—पु० [नक्षत्र-इष्टि, मध्य० स०] नक्षत्रो की तुष्टि के निमित किया जानेवाला यज्ञ।

नख—पु० [स०√नह् (बधन)+ख, हलोप] १ हाथो तथा पैरो की उँगलियो के ऊपरी तल का वह सफेद अश जो अधिक कड़ा तथा तेज धार या तेज नोकवाला होता है। २ उक्त का वह चन्द्राकार अगला भाग जो कैंची आदि से काटकर अलग किया जाता है। ३. घोंघे या सी की जाति के कीडो का वह मुखावरण जो नाखून के समान चन्द्राक होता है। ४ खंड। टुकडा।

स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार का बटा हुआ महीन रेशमी तागा जिस गुड्डी उडाते और कपडा सीते है। २. गुड्डी उडाने का डोरा या तागा जिस पर मांझा दिया होता है। डोर।

नख-कर्तनि—स्त्री० [प० त०] नहरनी। (दे०)

नख-कुट्ट —वि० [सं० नख√कुट्ट् (काटना)+अण्] नाखून काटने वाला।

पु० नाई। हज्जाम।

नख-क्षत—पु० [तृ० त०] १. वह क्षत या चिह्न जो शरीर मे नाखू गड़ने या उसकी खरोच लगने के कारण बना हो। २. शृगारिक क्षे में स्त्री के शरीर पर का विशेषत: स्तन आदि पर का वह चिह्न ज पुरुष के गर्दन आदि के कारण उसके नाखूनो से बन जाता है। औ जो यह सूचित करता है कि पुरुष के साथ इसका समोग हुआ है।

नखखादी (दिन्)—पु० [स० नख√खाद् (खाना)+णिनि] दाँतो से अपने नाखून काटनेवाला व्यक्ति (जो अभागा समझा जाता है)

नखचारी (रिन्)—वि० [स० नख√चर् (गति)+णिनि] पजों के बल चलनेवाला (जीव या प्राणी)।

नखचीर—पु० [फा० नख्चिर] १. आखेट। शिकार। २ वह जगली जानवर जिसका शिकार किया गया हो। मारा हुआ शिकार।

नख-चोटी—स्त्री० [स० नख=नाखून+चोटना=तोडना] हज्जामो का मोचना, जिससे बाल नोचे या उखाड़े जाते है।

नखच्छत†— पु०=नख-क्षत।

नख-छोलिया—पु०=नख-क्षत।

नखजाह—पु० [स० नख+जाहच्] नाखून का सिरा।

नखत—पु०=नक्षत्र।

नखतर†—पु०=नक्षत्र।

नखतराज*—पु०=नक्षत्रराज (चद्रमा)।

नखतराय*—पु०=नक्षत्रराज (चन्द्रमा)।

नखता—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जो विभिन्न ऋतुओ मे विभिन्न स्थानो पर रहती है।

नखतेस*—पु०=नक्षत्रेश (चन्द्रमा)।

नख-दारण—पु० [प० त०] नहरनी। (दे०)

नखना—स० [स० लघन] १ उल्लघन करना। लाँघना। २ पार उतरना या जाना। पारण।

अ० उल्लघन होना। लाँघा जाना।

स० [स० नाशन] नष्ट करना।

नखनिष्पाव—पु० [स० नख-निर्√पू (अनुकरण्)+अण्] एक तरह की सेम का पौधा।

नख-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] विच्छू नामक घास।

नख-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] पृक्का नामक गन्ध-द्रव्य।

नखपूर्विका—स्त्री० [स०] हरी सेम।

नखवान*—पु० [स० नख+वाण] नख। नाखून।

नखमुच—पु० [स० नख√मुच् (छोडना)+क] चिरौंजी (वृक्ष)।

नख-रंजनी—स्त्री० [ष० त०] नहरनी। (दे०)

नखर—पुं० [स० नख√रा (देना)+क] १ नख। नाखून। २ एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसका अगला भाग नाखूनो की तरह नुकीला होता था। ३. उक्त प्रकार की कोई पकड़नेवाली चीज। जैसे—चिमटी, सँड़सी आदि। ४. चीता, भालू, शेर आदि जन्तु।

नखरा—पु० [फा० नखर.] १ खुशामद कराने की भावना। २. लाड-प्यार आदि के कारण की जानेवाली ऐसी हठपूर्ण परन्तु सुकुमारतापूर्ण चेष्टा जिसमे किसी के आग्रह को न मानने या टालने का भाव निहित होता है।

विशेष—नखरा प्राय: स्त्रियाँ दूसरो को रिझाने अथवा उन्हें अपना अभिमान दिखाने के लिए करती हैं।

क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।—निकालना।—बघारना।

३. किसी का आग्रह टालने के लिए झूठ-मूठ की बनाकर कही जानेवाली बात।

नखरा-तिल्ला—पु० [फा०+हिं० (अनु०)] नखरा और इसी तरह की दूसरी चेष्टाएँ जो झूठा बडप्पन दिखाने, रिझाने आदि के लिए की जाती हैं।

नखरायुध—पु० [नखर-आयुध, ब० स०] १ शेर। २. चीता। ३ कुत्ता।

नखराह्व—पु० [नखराह्वा, ब० स०] कनेर।

नखरी—स्त्री० [स० नखर+अच्—ङीप्] नख नामक गध-द्रव्य।

नखरीला—वि० [फा० नखरा+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नखरीली] बहुत अधिक या हर काम मे नखरा दिखानेवाला।

नख-रेखा—स्त्री० [ष० त०] १. शरीर मे लगा हुआ नाखूनो का चिह्न जो साहित्य मे सभोग का चिह्न माना जाता है। नखरीट। २. कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो बादलो की माता थी।

नखरेबाज—वि० [फा०] [भाव० नखरेबाजी] प्राय. नखरे दिखानेवाला। नखरीला।

नखरेबाजी—स्त्री० [फा०] नखरा करने या दिखाने की क्रिया या भाव।

नखरौट—स्त्री० [स० नख+हिं० खरोंट] शरीर पर होनेवाला वह घाव जो नाखून गडने से बना हो। नख-क्षत।

नख-बिंदु—पु० [मध्य० स०] नाखून पर महावर, मेहदी आदि का बनाया हुआ चिह्न।

नख-विष—वि० [ब० स०] (जीव) जिसके नाखूनो मे विष हो। जैसे—कुत्ता, छिपकली, बदर आदि।

नख विष्कि—पु० [स० नख-वि√कृ+क, सुट्] ऐसे पशु-पक्षी जो अपना शिकार नाखून से फाडकर खाते है। जैसे—शेर, बाज आदि।

नख-वृक्ष—पु० [उपमि० स०] नील का पेड।

नख-शंख—पु० [उपमि० स०] छोटा शख।

नख-शस्त्र—पु० [मध्य० स०] नहरनी।

नख-शिख—पु० [स०] पैर के नाखून से लेकर सिर के बालो तक के सब अग।

पद—नख-शिख से=सिर से पैर तक। ऊपर से नीचे तक। जैसे—वह नख-शिख से दुरुस्त है। नख-शिख से ठीक या दुरुस्त= आदि मे अत तक सब अगो या बातो मे ठीक और दुरुस्त।

२. साहित्य मे वह कवित्वमय वर्णन जिसमे किसी के नख से शिख तक या नीचे से ऊपर तक के सब अगो का सौंदर्य बतलाया गया हो। जैसे—किसी देवता या नायिका का नख-शिख।

नख-शूल—पु० [ष० त०] एक रोग जिसके फल-स्वरूप नाखूनो मे विकार होने के कारण कष्ट होता है।

नख-हरणी—स्त्री० [ष० त०]=नहरनी।

नखांक—पु० [नख-अक, ब० स०] १. व्याघ्र का नख। २. नख-क्षत।

नखांग—पु० [नख-अग, ब० स०] १. नख नामक गध-द्रव्य। २. नलिका या नली नामक गन्ध-द्रव्य।

नखाघात—पु० [नख-आघात, तृ त०] नख-क्षत।

नखानखि—स्त्री० [नख-नख, ब० स०] ऐसा द्वन्द्व जिसमे विपक्षी पर नखो से प्रहार किया जाय।

नखायुध—पु० [नख-आयुध, ब० स०] १ शेर। २. चीता। ३. कुत्ता।

नखारि—पु० [नख-अरि, ष० त०] शिव का एक अनुचर।

नखालि—पु० [स०] छोटा शख।

नखालु—पु० [स० नख+आलुच्] नील (वृक्ष)।

नखाशी (शिन्)—वि० [स० नख√अश् (खाना)+णिनि] जो नाखूनो की सहायता से खाता हो।

पु० उल्लू।

नखास—पु० [अ० नख्खास] १ वह बाजार जिसमे दासो, पशुओ आदि का क्रय-विक्रय होता हो। जैसे—घर घोडा नखास मोल। (कहा०) २. बाजार।

मुहा०—कोई चीज नखास पर चढाना या भेजना=बेचने के लिए कोई चीज बाजार भेजना।

पद—नखास की घोड़ी या नखासवाली=बाजार मे बैठनेवाली स्त्री, अर्थात् कसबी।

नखित्र†—पु०=नक्षत्र।

नखिद्ध†—वि० [स० निषिद्ध] १. निषेध किया हुआ। २. तुच्छ कोटि या प्रकार का। निकृष्ट।

नखियाना—स० [हिं० नख] नख चुभाकर घाव करना।

नखी (खिन्)—पु० [स० नख+इनि] १ वह जानवर जो नाखूनो से किसी पदार्थ को चीर या फाड सकता हो। २. शेर। ३. चीता। ४ नख नामक गन्ध-द्रव्य।

नखेद*— पु०=निषेध।

नखोटना—स० [हिं० नख] नाखून से खरोचना या नोचना।

नखोरा†—पु०=निमोना।

नख्खास—पु०=नखास।

नग—वि० [स० न√गम् (जाना)+ड] १ न गमन करनेवाला। न चलने-फिरनेवाला। २ अचल। स्थिर।

पु० १. पर्वत। पहाड। २ पेड। वृक्ष। ३. साँप। ४. सूर्य।

पु० १. अ० नगीना का सक्षिप्त रूप। २ अदद या सख्या का सूचक एक शब्द। जैसे—चार नग गाँठे आई हैं।

नग-चाना—अ०, स०=नगिचाना।

नगज—वि० [स० नग√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो पहाड़ से उत्पन्न हो। जैसे—गेरू, शिलाजीत आदि।

पु० हाथी।

नगजा—स्त्री० [सं० नगज+टाप्] १ पार्वती। २ पाषाणभेदी लता। पखानभेद।
नगण—पु० [सं० प० त०] तीन लघु अक्षरों का एक गण। (पिंगल) जैसे—कमर, परम, मदन।
विशेष—इस गण से छन्द का आरंभ करना अशुभ माना गया है।
नगणा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] मालकँगनी।
नगण्य—वि० [सं० अगण्य] १ जो गिनने या गिने जाने के योग्य न हो। जो किसी गिनती में न हो। २ बहुत ही तुच्छ या हीन।
नगदंती—स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री का नाम।
नगद—पुं० [अ० नक्द] १. सोने-चाँदी का सिक्का। २. रुपया-पैसा। ३ सिक्कों आदि के रूप में होनेवाला खड़ा धन जो देन आदि के बदले में तुरत चुकाया जाता हो। 'उधार' का विपर्याय।
वि० १. (रुपया) जो तैयार या सामने हो। २. जिसका मूल्य रुपए-पैसे आदि के रूप में तुरन्त दिया या चुकाया जाय। ३. बढ़िया।
क्रि० वि० तुरत दिये हुए रुपए के बदले में।
नगद-नारायण—पु० [हिं०+सं०] नगद रुपए।
नगदी—क्रि० वि० [हिं० नगद+ई (प्रत्य०)] नगद या सिक्के के रूप में। (इन्कैश)
पु०, वि०=नगद।
नगधर—पु० [सं०] पर्वत धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण। गिरिधर।
नगधरन†—पु०=नगधर।
नग-नंदिनी—स्त्री० [सं० प० त०] हिमालय पर्वत की पुत्री, पार्वती।
नगन†—वि०=नग्न (नंगा)।
पु०=नगण।
नग-नदी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] पहाड़ी नदी (बरसाती नदी से भिन्न)।
नगना—स्त्री०=नग्ना।
नगनिका—स्त्री० [सं०] १ संकीर्ण राग का एक भेद। २. क्रीडा नामक वृत्त का दूसरा नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण और एक गुरु होता है।
नगनी—स्त्री० [सं० नग्न] १. ऐसी छोटी लड़की जिसमें अभी यौवन का कोई लक्षण न दिखाई देता हो और इसी लिए जो अपने शरीर का ऊपरी भाग नंगा रखकर घूम सकती हो। कन्या। लड़की। २. पुत्री। बेटी। ३ नंगी स्त्री।
नगन्निका—स्त्री०=नगनिका।
नग-पति—पुं० [सं० प० त०] १. पर्वतों का राजा, हिमालय। २. शिव। ३ सुमेरु पर्वत। ४ चन्द्रमा।
नगपुंग—पु० [सं० नागपाश] असमंजस की या विकट स्थिति। अड़स। उदा०—हाँ भले नगपुंग-परे गढीवै अब ए गढ़न महरि मुख जोए। —तुलसी।
नगफनी†—स्त्री०=नागफनी।
नगभिद्—पु० [सं० नग√भिद् (विदारण)+क्विप्] १. पखानभेद-लता। २. इन्द्र।
वि० [सं०] पत्थर तोड़नेवाला।
नग-भू—वि० [सं० ब० स०] जो पहाड़ से उत्पन्न हुआ हो।
पु० १. पहाड़ी जमीन। २. पाषाण-भेदी लता। पखान-भेद।
नगमा—पु० [अ० नग्म] १. सुरीली आवाज। २ गाया जानेवाला किसी प्रकार का मनोहर और सुरीला गीत या राग-रागिनी।
नगर—पु० [सं० नग+र] १. मनुष्यों की वह बस्ती जो गाँवों, कस्बों आदि की तुलना में बहुत बड़ी हो। शहर। २. उक्त बस्ती का कोई मुहल्ला जो एक स्वतंत्र बस्ती के रूप में हो। जैसे—कमलानगर, नेहरूनगर, राजेन्द्रनगर।
नगर-कीर्तन—पु० [सं० त०] नगर की गलियों, सड़कों आदि में घूम-घूमकर किया जानेवाला सामूहिक कीर्तन।
नगर-कोट—पु० दे० 'परकोटा'।
नगरघात—पु० [सं० नगर√हन् (नष्ट करना)+अण्] हाथी।
नगरतीर्थ—पु० [सं०] गुजरात प्रदेश में स्थित एक प्राचीन तीर्थ जहाँ किसी समय शिव का निवास माना जाता था।
नगर-नायिका—स्त्री० [मध्य० स०] वेश्या। रंडी।
नगर-नारी—स्त्री० [मध्य० स०] रंडी। वेश्या।
नगर-निगम—पु० [प० त०] दे० 'नगर-महापालिका'।
नगरपाल—पुं० [सं० नगर√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] १. प्राचीन भारत में वह अधिकारी जिसका कर्तव्य नगर की शांति और सुरक्षा की देख-रेख करना होता था। २. आधुनिक भारत में किसी नगर की नगरपालिका का चुना हुआ सदस्य।
नगर-पालिका—स्त्री० [सं०] आधुनिक नगर व्यवस्था में नगर निवासियों के निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह संस्था जो सारे नगर के यातायात, स्वास्थ्य, जल, नल, रोशनी आदि का प्रबन्ध करने के लिए बनाई जाती है। (म्यूनिस्पैलिटी)
नगर-पिता (तृ)—पुं०=नगर-प्रमुख।
नगर-प्रमुख—पु० [प० त०] नगरपालिका या नगर-महापालिका का प्रधान प्रशासनिक अधिकारी। (मेयर)
नगरमर्दी (र्दिन्)—पु० [सं० नगर√मृद् (कुचलना)+णिच्+णिनि] मतवाला हाथी।
नगर-महापालिका—स्त्री० [सं०] किसी बड़े नगर की स्वायत्त संस्था जिसे नगरपालिका की अपेक्षा कुछ अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं। (कारपोरेशन)
नगर-मार्ग—पु० [प० त०] नगर का सबसे बड़ा तथा चौड़ा बाजार।
नगर-मुस्ता—स्त्री० [सं०] नागरमोथा।
नगरवा—पु० [?] ईख की एक प्रकार की बोआई जो मध्यप्रदेश के उन प्रान्तों में होती है जहाँ की मिट्टी काली या करैली होती है। इसमें खेतों को सींचने की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि बरसात के बाद जब ईख के अंकुर फूटते हैं तब जमीन पर इसलिए पत्तियाँ बिछा देते हैं कि उसका पानी सूख न जाय। पलवार।
नगरवासी (सिन्)—पु० [सं० नगर√वस् (बसना)+णिनि] १. नगर या शहर में रहनेवाला। पुरवासी। २ नागरिक।
नगर-विवाद—पु० [सं० त०] घर-गृहस्थी और संसार के झगड़े-बखेड़े।
नगर-वृद्ध—पु० [सं० त०] आधुनिक भारत में किसी नगरमहापालिका या नगरनिगम का वह अधिकारी जिसका दरजा नगर-प्रमुख से कुछ छोटा और उसके चुने हुए सदस्यों से कुछ बड़ा होता है। (एल्डरमैन)

नगर-सन्निवेश—पु० [प० त०] नये नगर बनाने और उसके मार्ग, भवन, विभाग आदि निरूपित करने की कला या विद्या। (सिटी प्लैनिंग)

नगर-सेठ—पु० [स०+हिं०] नगर का सबसे बडा महाजन, सेठ या सपन्न व्यक्ति।

नगरहा—वि० [हिं० नगर+हा (प्रत्य०)] शहर मे रहने या होनेवाला। पु० नगर का निवासी। नागरिक। शहरी।

नगरहार—पु० [स०] उत्तर-पश्चिमी भारत के एक प्राचीन कपिश राज्य के अतर्गत की एक नगरी जिसका वर्णन ह्वेन-साग ने किया है।

नगराई—स्त्री० [हिं० नगर+आई (प्रत्य०)] १ नागरिकता। शहरातीपन। २. चतुराई। चालाकी।

नगराधिप—पु० [नगर-अधिप, प० त०] नगर का प्रधान शासक। प्रशासक।

नगराध्यक्ष—पु० [नगर-अध्यक्ष, प० त०] नगर का प्रधान शासक। प्रशासक।

नगरी—स्त्री० [स० नगर+ङीप्] छोटा नगर या शहर।
पु० [स० नगरिन्] नगर मे होने या रहनेवाला व्यक्ति। नागरिक।

नगरी-काक—पु० [प० त०] बक।

नगरीय—वि० [स० नगर+छ—ईय] १ नगर-सबधी। २. नगर मे बनने या होनेवाला।

नगरोत्था—स्त्री० [नगर-उत्थान, ब० स०] नागरमोथा।

नगरोपांत—पु० [नगर-उपांत, ष० त०] नगर के आस-पास का क्षेत्र या स्थान। उप-नगर। (सबर्ब)

नगरौका (कस्)—पु० [नगर-ओकस्, ब० स०] नागरिक। नगरवासी।

नगरौषधि—स्त्री० [नगर-ओषधि, मध्य० स०] केला।

नगवास†—पु०=नाग-पाश।

नगवासी†—स्त्री०=नागपाश।

नग-वाहन—पु० [ब० स०] शिव का एक नाम।

नग-स्वरूणी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक जगण, एक रगण, एक लघु और एक गुरु होता है। इसे प्रमाणी और प्रमाणिका भी कहते है।

नगाटन—वि० [स० नग√अट् (गति)+ल्युट्—अन] पहाड पर विचरण करनेवाला।
पु० बदर।

नगाड़ा—पु० [अ० नक्कार'] डुगडुगी की तरह का चमडा मढा हुआ एक प्रकार का बहुत बडा प्रसिद्ध बाजा जो कभी तो अकेला और कभी ठीक उसी तरह के दूसरे छोटे बाजे के साथ प्राय चोब (लकडी का छोटा डडा) का आघात करके बजाया जाता है। डका। धौसा।

नगाधिप—पु० [स० नग-अधिप, प० त०] १ पर्वतराज, हिमालय। २. सुमेरु पर्वत।

नगारा—पु०=नगाडा।

नगारि—पु० [स० नग-अरि, प० त०] इन्द्र।

नगावास—पु० [स० नग-आवास, ब० स०] मोर।

नगाश्रय—वि० [स० नग-आश्रय, ब० स०] पहाड पर रहनेवाला।
पु० हस्तिकद।

नगी—स्त्री० [स०] १ पर्वतराज हिमालय की कन्या, पार्वती। २ पहाड पर रहनेवाली स्त्री।
†स्त्री० [हिं० नग] छोटा नग या रत्न।

नगीच—क्रि० वि०=नजदीक।

नगीना—पु० [स० नग से फा० नगीन] १ बहुमूल्य पत्थर आदि का वह रगीन चमकीला टुकडा जो शोभा के लिए गहनो मे जडा जाता है। मणि। रत्न।
पद—नगीना-सा=बहुत छोटा और सुदर। अँगूठी का नगीना=किसी बडी चीज के साथ अथवा उसमे रहनेवाली कोई छोटी सुन्दर, बहुमूल्य और आरदणीय वस्तु (प्राय. व्यक्तियो के लिए भी प्रयुक्त)।
२ पुरानी चाल का एक प्रकार का चारखानेदार कपडा।

नगीनागर—पु० दे० 'नगीनासाज।'

नगीनासाज—पु० [फा०] [भाव० नगीनासाजी] आभूषणो आदि मे नगीने जडनेवाला कारीगर।

नगेंद्र—पु० [स० नग-इन्द्र, प० त०] पर्वतराज, हिमालय।

नगेश—पु० [स० नग-ईश, प० त०]=नगेंद्र।

नगेशर†—पु० १.=नागेश्वर। २ =नाग-केसर।

नगोड़ा—वि०=निगोडा।

नगौक (स्)—पु० [स० नग-ओकस्, ब० स०] १. पक्षी। चिडिया। २. शेर। सिह। ३ कौआ।

नग्न—वि० [स०√नज् (लजाना)+क्त] [भाव० नग्नता] नगा (सभी अर्थो मे, देखें)।
पु० १ एक प्रकार के दिगम्बर जैन साधु जो कौपीन पहनते है। २. ऐसी साहित्यिक रचना जिसमे कोई अलकार और चमत्कार न हो।

नग्नक—पु० [स० नग्न+कन्]=नग्न।

नग्नकरण—पु० [स० नग्न+च्वि√कृ+ल्युट्-अन, मुम्] किसी को नगा करने की क्रिया या भाव।

नग्न-क्षपणक—पु० [कर्म० स०] बौद्ध भिक्षुओ का एक भेद या सप्रदाय।

नग्नजित्—पु० [स०] १. वैदिककाल मे, गान्धार के एक राजा। २. पुराणानुसार कोशल के एक राजा जिसकी सत्या नाम की कन्या श्रीकृष्ण को ब्याही थी।

नग्नता—स्त्री० [स० नग्न+तल्—टाप] १. नगे होने की अवस्था या भाव। नगापन। २. सब कुछ प्रकट कर देने की अवस्था या स्थिति।

नग्नपर्ण—पु० [ब० स०] एक प्राचीन देश का नाम।

नग्न-वाद—पु० [प० त०] वह सिद्धान्त या दृष्टिकोण जिसमे यह माना जाता है कि मनुष्य को नीरोग रहने के लिए कुछ समय तक अवश्य नगे रहना चाहिए। (न्यूडिज्म)

नग्न-वादी (दिन्)—पु० [स० नग्नवाद+इनि] जो नग्नवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (न्यूडिस्ट)

नग्नाट—पु० [स० नग्न√अट् (गति)+अच्] ऐसा जीव या प्राणी जो सदा नगा रहता हो।

नग्निका—स्त्री० [स० नग्न+कन्—टाप्, इत्व] १. निर्लज्ज स्त्री। २ वह लडकी जो रजस्वला न हुई हो।

विशेष—पुराने राज-दरवारो मे राजाओ आदि को अपनी हथेली पर रुपया,अशरफी, तलवार आदि रखकर उनके आगे उपस्थित करने की प्रथा थी, जिसे कभी तो वे ले लेते थे और कभी केवल छूकर छोड देते थे।

महा०—नजर-गुजारना या देना=उक्त प्रकार से हथेली पर कोई चीज रखकर किसी वडे के सामने उपस्थित करना।

पद-नजर-गुजर=नजर या इसी प्रकार की और कोई वात। जिसके सवध मे लोगो का यह विश्वास हो कि इसका वुरा प्रभाव पडता है।

नजरना—अ० [हिं० नजर+ना (प्रत्य०)] दृष्टिपात करना। देखना।
स० १. नजर अर्थात् भेट के रूप मे कोई पदार्थ किसी को देना। २ वुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली दृष्टि से देखना। नजर लगाना।

नजरवद—वि० [अ० नजर+फा० वद] [भाव० नजरवदी] किसी को इस प्रकार वदी के रूप मे कही रखना कि उसकी चेष्टाओं पर नजर रखी जा सके।
विशेष—ऐसी अवस्था मे न तो नजरवद व्यक्ति को घर या किसी नियत स्थान से वाहर जाने दिया जाता है और न लोगो को उससे स्वतन्त्रतापूर्वक मिलने-जुलने दिया जाता है।
पु० जादू या इन्द्रजाल का ऐसा खेल जिसके विपय मे लोगो का यह विश्वास है कि वह लोगो की दृष्टि मे ऐसा भ्रम उत्पन्न कर देता है कि उन्हे कुछ का कुछ दिखाई देने लगता है।

नजरवदी—स्त्री० [अ० नजर+फा० वदी] १. नजरवद होने की अवस्था या भाव। २ किसी को नजरवद करने का आदेश। ३ इद्रजाल आदि के द्वारा लोगो की दृष्टि मे भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

नजरवाग—पु० [अ०] प्रासाद या महल के आगे या चारो ओर का वाग।

नजरवाज—वि० [अ० नजर+फा० वाज (प्रत्य०)] [भाव० नजरवाजी] १. शृगारिक क्षेत्र मे अनुराग प्रकट करने अथवा अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए आँखें लडानेवाला। २ ताक-झाँक करनेवाला। ३ पारखी।

नजरवाजी—स्त्री० [अ० नजर+फा० वाजी] १ आँखे लडाने का व्यापार। २. ताकना-झाँकना। ३ परख।

नजर-सानी—स्त्री० [अ० नजरेसानी] १ कोई किया हुआ काम इस दृष्टि से दोवारा देख जाना कि उसमे कही कोई त्रुटि या भूल तो नही रह गई है। २. विधिक क्षेत्र मे किसी मुकदमे का उसी अदालत मे होनेवाला पुनर्विचार। (रिवीजन)

नजरहाया†—वि० [हिं० नजर+हाया (प्रत्य०)] १ जिसकी कुदृष्टि से दुष्परिणाम होता हो। २ जिसे किसी की वुरी नजर लग गई हो। जो नजर के प्रभाव से पीडित हुआ हो।

नजरा—वि० [अ० नजर] जिसमे अच्छाई-बुराई, गुण-दोप आदि पहचानने की शक्ति हो। पारखी।
पु० [देश०] एक तरह का देशी आम जो आकार-प्रकार मे वम्बई के आम जैसा परन्तु स्वाद मे उससे घटकर होता है।

नजराना—स० [अ० नजर] नजर करना। भेंट स्वरूप देना।
अ०=नजराना।

नजराना—अ० [अ० नजर] किसी की कुदृष्टि लगना जिसके फलस्वरूप कोई क्षति या हानि होती है।
स० १. नजर करना। भेट स्वरूप देना। २ नजर लगाना।
पु० १ वह चीज जो किसी को नजर की जाय अर्थात् भेंट-स्वरूप दी जाय। २ आज-कल वह धन जो कोई सुभीता प्राप्त करने के लिए उसे उचित के अतिरिक्त और काम होने से पहले दिया जाय। पगडी। जैसे—यह दुकान किराये पर लेने के लिए दस हजार नजराना देना पडा।

नजरि—स्त्री०=नजर।

नजला—पु० [अ० नज्ल:] यूनानी हिक्मत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे गरमी के कारण सिर का विकारयुक्त पानी ढलकर भिन्न-भिन्न अगो की ओर प्रवृत्त होता, और जिस अग की ओर ढलता है उसे खराव कर देता है। जैसे—अगर वालो पर नज़ला गिरे तो वे समय से वहुत पहले सफेद हो जाते है, और अगर आँखों पर गिरे तो दृष्टि मन्द पड जाती है।
क्रि० प्र०—उतरना।—गिरना।
मुहा०—(किसी पर किसी का) नजला गिरना=किसी के क्रोध, भर्त्सना आदि का पात्र होना।
२. जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग। सरदी।

नजलावंद—पु० [अ० नज्ल:+फा० वद] अफीम और चूने आदि का वह फाहा जो नजले को गिरने से रोकने के लिए कनपटी पर लगाया जाता है।

नजाकत—स्त्री [अ० नजाकत] १. शारीरिक कोमलता या सुकुमारता। २ सुकुमार अगो की कोई मृदु चेष्टा।

नजात—स्त्री० [अ०] १ दृढ वधनो, कठोर यातनाओ या कठिन दायित्वो से होनेवाली मुक्ति। २. ऐसी स्थिति जिसमे कोई अपने को हर प्रकार के कष्टो, झझटो आदि से अलग या दूर समझे।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

नजामत—स्त्री० [अ० निजामत] १. शासन सवधी प्रवध या व्यवस्था। २ नाजिम का कार्य, पद या भाव। ३. नाजिम का कार्यालय या विभाग।

नजारत—स्त्री० [अ० नजारत] १ नाजिर अर्थात् दर्शक या निरीक्षक होने की अवस्था पद, या भाव। २ नाजिर का कार्यालय या विभाग।

नजारा—पु० [अ० नज्जार:] १. वह जो दिखाई दे। २. अद्भुत और सुदर दृश्य। ३ दृष्टि। नजर। ४ किसी (पराये पुरुप या स्त्री) को वार-वार दूर से अनुरागपूर्ण दृष्टि से अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए देखने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—मारना।—लडना।—लडाना।
५. तमाशा।

नजारेवाज—वि० [अ० फा० नज्जार वाज] जो पर-पुरुप या पर-स्त्री से आँखे लडाता हो।

नजारेवाजी—स्त्री० [अ० फा० नज्जार वाजी] स्त्री या पुरुप का पराये पुरुप या स्त्री को लालसा या प्रेम की दृष्टि से वार-वार देखना। आँखें लडाना।

नजासत—स्त्री० [अ०] १. नजिस होने की अवस्था या भाव। २. गदगी। मैलापन। ३ अपवित्रता।

नजिकाना—स० [हिं० नजीक=नजदीक] नजदीक अर्थात् निकट या पास पहुँचना।
स० नजदीक अर्थात् निकट या पास पहुँचाना।

नजिस—वि० [अ०] १. अपवित्र। अशुद्ध। २ गदा। मैला।
नजीक†—क्रि० वि०=नजदीक (निकट या पास)।
नजीब—वि० [अ०] श्रेष्ठ कुल मे उत्पन्न। कुलीन।
पुं० सिपाही। सैनिक।
नजीर—स्त्री० [अ० न जीर] १. उदाहरण। दृष्टात। मिसाल। २. विधिक क्षेत्र मे, किसी पुराने मुकदमे के सबध मे किसी उच्च न्यायालय का वह निर्णय जो अपना पक्ष पुष्ट करने के उद्देश्य से न्यायालय के सम्मुख उपस्थित किया जाय।
क्रि० प्र०—दिखलाना।—देना।
३. कोई बारीक काम करने के समय देर तक उसकी ओर लगी रहनेवाली दृष्टि जो आँखो को जल्दी थका देती है।
क्रि० प्र०—लगाना।
नजूमी†—पु० [अ० नुजूम] ज्योतिष विद्या।
नजूमी—पु [अ० नुजूमी] ज्योतिषी।
नजूल—पु० [अ० नुजूल] १ ऊपर से नीचे आने, उतरने या गिरने की क्रिया या भाव। अवतरण। २ सामने आकर उपस्थित होना। उपस्थिति। ३ वह भूमि जिसका कोई स्वामी न रह गया हो। और इसी लिए जो नगर-पालिका या सरकार के हाथ मे आ गई हो। ४. नजला नामक रोग। ५ उक्त रोग के फल-स्वरूप होनेवाला मोतिया-विंद।
नज्म—पु० [अ०] आकाश का तारा या नक्षत्र।
स्त्री० [अ० नज्म] १ कविता। २. पद्य।
नट—पु० [स०√नट् (नृत्य)+अच्] [स्त्री० नटी] १. अभिनय मे वह व्यक्ति जो किसी का रूप धारण करके उसकी चेष्टाओ का अभिनय करता हो। २. सूत्रधार। ३ मनु के अनुसार क्षत्रियो की एक जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य क्षत्रियो से कही गई है। ४ पुराणानुसार एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति मालाकार पिता और शूद्रा माता से कही गई है। ५. प्राचीन भारत की एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौचिकी स्त्री और याज्ञिक पुरुष से कही गई है और जिसका पेशा गाना-बजाना था। ६ [स्त्री० नटिन्, नटिनी] एक आधुनिक जाति जो गाने-बजाने और तरह-तरह के शारीरिक कौशल और बाजीगरी के खेल दिखाने का पेशा करती है। ७. एक नाग जिसे गौतम बुद्ध ने बौद्धधर्म की दीक्षा दी थी। ८ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है तथा जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है। ९. अशोक वृक्ष। १०. श्योनाक वृक्ष। सोनापाटा।
नटई†—स्त्री० [?] १ गला। गरदन। २ गले के अदर की श्वास-नली। ३. गले के अदर का घटी। कौआ।
नटक—पु० [स० नट+कन्] नट।
नटका—पु० [स० नट] [स्त्री० नटकी] नट जाति का पुरुष। (तुच्छता-सूचक) उदा०—मोती मानिक परत न पहरूँ मै कब की नटकी।—मीराँ।
नट-कुंडल—पु० [स० नट+कुडल] [स्त्री० अल्पा० नट-कुडली] बेंत, धातु आदि का वह गोल चक्कर जिसमे से होकर नट एक ओर से दूसरी ओर कूद जाते है।
नट-खट—वि० [हि० नट+खट (अनु०)] [भाव० नट-खटी] १. जो स्वभावत या जान-बूझकर कुछ न कुछ शरारत करता रहता हो। २. जो दूसरों को तग करने की नियत से कुछ ऊल-जलूल काम करता हो।
नट-खटी—स्त्री० [हि० नट-खट] १. नटखट होने की अवस्था या भाव। २. बदमाशी। शरारत। पाजीपन।
नट-चर्या—स्त्री० [प० त०] अभिनय।
नटता—स्त्री० [स० नट+तल्—टाप्] १. नट होने की अवस्था या भाव। २. नट का काम।
नटन—पु० [स०√नट्+ल्युट्—अन] १. नाचना। २. अभिनय करना।
नटना—अ० [स० नटन] १. नाट्य करना। अभिनय करना। २. कही हुई बात या की हुई प्रतिज्ञा निभाने से पीछे हटना या आना-कानी करना। प्रतिज्ञा, वचन आदि से मुकरना।
अ० [स० नर्तन] नृत्य करना। नाचना।
अ० [स० नष्ट] नष्ट या बरबाद होना।
स० नष्ट या बरबाद करना।
पुं० १. बाँस की बनी छलनी जिससे रस छाना जाता है। २. मछली पकड़ने का वह झाबा या टोकरा जिसका पेंदा कटा हुआ होता है। टाप।
नट-नागर—पु० [स०] श्रीकृष्ण।
नट-नारायण—पु० [प० त०] सगीत मे, एक प्रकार का राग जो हनुमत् के मत से मेघराग का तीसरा पुत्र और भरत के मत से दीपक राग का पुत्र है।
नटनि—स्त्री० [स० नटन] १. नृत्य। नाच।
२ अपनी प्रतिज्ञा या बात मे नटने अर्थात् पीछे हटने की क्रिया या भाव। मुकरना।
स्त्री० [हि० नट] नट जाति की स्त्री। नटिन।
नटनी—स्त्री० [हि० नट] १. अभिनेत्री। २. नट जाति की स्त्री।
नट-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप्, इत्व] बैंगन। भाँटा।
नट वंदिनी—स्त्री० दे० 'नटनी'।
नट-भूषण—पु० [ब० स०] हरताल।
नट-मंडक—पु=नटमडन।
नट-मंडन—पु० [प० त०] हरताल।
नटमल—पु० [स०] एक प्रकार का राग।
नट मल्लार—पु० [स०] नट और मल्लार के योग से बना हुआ सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।
नट-राज—पु० [प० त०] १ नटो मे प्रधान या श्रेष्ठ नट। कुशल और निपुण नट। २ शिव। महादेव। ३. शिव की एक विशिष्ट प्रकार की मूर्ति या रूप जिसमे वे ताडव नृत्य करते हुए दिखाई देते है। ४. श्रीकृष्ण।
नटवना—अ० [हि० नट] १ नाचना। २ अभिनय करना।
स० १. नचाना। २. अभिनय कराना।
नट-वर—पु० [स० त०] १. नाट्य-कला मे बहुत कुशल और प्रवीण व्यक्ति। २. श्रीकृष्ण का एक नाम।
वि० बहुत अधिक चतुर या चालाक।
नटवा—पु० [हि० नाटा] छोटे कद या कम उमर का बैल।

पुं० [हिं० नट] एक प्रकार का गीत जिसे नट जाति के लोग ढोलक आदि के साथ नाचते हुए गाते है।
†वि०=नाटा।
†पु०=नट।
नटवा सरसों—पु० [हिं० नाटा+सरसो] साधारण सरसो।
नट-संज्ञक—पु० [व० स०, कप्] १. गोदती हरताल। २. नट।
नटसार—स्त्री०=नाट्य शाला।
नटसाल—स्त्री० [हिं० नट?+सालना] १. कांटे का वह अश जो धँसते पर टूटकर शरीर के अदर रह जाता है और सालता या कसकता रहता है। २ तीर या वाण की गाँसी का वह अश जो शरीर के अदर टूटकर रह गया हो। ३. ऐसी मानसिक पीड़ा या व्यथा जो अन्दर ही रह-रहकर वहुत दु खी करती हो। कसक।
नटांतिका—स्त्री० [नट-अतिका, ष० त०] १. लज्जा। शरम। २. नम्रता। विनय।
नटाई—स्त्री० [हिं० नट] जुलाहो का वह उपकरण जिससे वे किनारे का ताना तानते हैं।
नटि—स्त्री० [हिं० नटना] नटने की क्रिया या भाव। नटनि।
स्त्री०=नटी।
नटित—पु० [स०√नट्+क्त] अभिनय।
नटिन—स्त्री० [हिं० नट] नट जाति की स्त्री।
नटी—स्त्री० [स० नट+ङीप्] १ नाटक मे, अभिनेत्री। २. सूत्रधार की स्त्री। ३ नर्तकी। ४. नट जाति की स्त्री। ५. रडी। वेश्या। ६. नखी नामक गन्ध द्रव्य।
नटुआ—पु० १.=नट। २.=नटई (गला)।
नटेश—पु० [नट-ईश, ष० त०] १. नटो मे सर्वश्रेष्ठ। २. महादेव। शिव।
नटेश्वर—पु० [नट-ईश्वर, ष० त०]=नटेश।
नटैया*—स्त्री०=नटई (गरदन या गला)।
नट्ट—पुं०=नट।
नठना—अ० [स० नष्ट] नष्ट होना।
स० नष्ट करना।
अ० [?] १. भागना। (पश्चिम) २. किसी बात या व्यक्ति से घबराना तथा दूर भागना।
नड—पु० [स०√नल् (महँकना)+अच् ल को ड] १. एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि का नाम। २ नरकट। नरसल। ३. एक आधुनिक जाति जो चूडियाँ आदि बनाने का पेशा करती है।
†पु०=नद।
नडक—पु० [स० नड+कन्] १. हड्डी के अदर का छेद। २ कधो के बीच की हड्डी।
नड-मीन—पु० [मध्य० स०] झीगा नाम की मछली।
नडिनी—स्त्री० [स० नड+इनि—ङीप्] ऐसी नदी जिसमे सरपत (घास) बहुत अधिक उगी हुई हो।
नडी—स्त्री० [सं० नड] नरकट के छोटे-छोटे टुकडो में मसाला भरकर बनाई जानेवाली आतिशबाजी जो आग लगाकर छोडने पर हवा मे उड़ती है।

नड्वल—पु० [स० नड+ड्वलच्] १. सरपत की बनी हुई चटाई। २. ऐसा प्रदेश जहाँ सरपत अधिकता से होता हो। ३. एक वैदिक देवता का नाम।
स्त्री० पुराणानुसार वैराज मनु की पत्नी का नाम।
नड्वला—स्त्री० [स०] १. वैराज मनु की पत्नी। २. नरकट का ढेर।
नढ़ना—स० [हिं० नाधना का स्था० रूप] १. गूँथना। पिरोना। २. कसकर बाँधना।
नत—वि० [स०√नम् (झुकना)+क्त] [भाव० नति] १. झुका हुआ। २. जो किसी के सामने नम्र होकर झुक गया हो। ३ नम्र। विनीत। ४. कुटिल। टेढा।
पु० १. तगर-मूल। २. गणित ज्योतिष मे मध्यदिन रेखा से किसी ग्रह की दूरी।
*अव्य०=नतु।
नतइत—पुं०=नतैत।
नतकुर†—पु० दे० 'नाती'।
नत-गुल्ला†—पु० [?] घोघा।
नत-नाड़ी—स्त्री० [स०] फलित ज्योतिष मे, मध्याह्न और मध्यरात्रि के बीच का जन्म-काल।
नतनी—स्त्री० [हिं० 'नाती' का स्त्री०] बेटी की बेटी।
नतपाल—पु० [सं० नत√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] वह जो अपने सामने आकर नत या विनीत होनेवाले अर्थात् शरण मे आये हुए व्यक्ति का पालन या रक्षा करे।
नतम—वि० [सं० नत] टेढा। बाँका।
नत-मस्तक—वि० [ब० स०] जिसने किसी के आगे सिर झुका दिया हो। नम्र या विनीत होनेवाला।
नतमी—स्त्री० [?] एक तरह का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत चिकनी होती है।
नतर—क्रि० वि०=नतरु।
नतरक†—क्रि० वि०=नतरु।
नतरकु—क्रि० वि०=नतरु। उदा०—नतरकु इन विय लगत कत उपजत विरह-कृसानु।—बिहारी।
नतरु*—क्रि० वि० [सं० न+तु] नही तो। अन्यथा। उदा०—नतरु लखन सिय राम वियोगा।—तुलसी।
नतांग—वि० [नत-अग, व० स०] जिसका वदन झुका हुआ हो।
नतांगी—स्त्री० [स० नताग+ङीप्] स्त्री। औरत।
नतांश—पु० [नत-अश] ग्रहो आदि की स्थिति निश्चित करने मे काम आनेवाला एक प्रकार का वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर होता है और जो विषुवत् रेखा पर लव होता है।
नताउल—पु० [?] १. एक तरह का वृक्ष जिसकी लकडी मुलायम तथा चिकनी होती है। २. उक्त पेड़ की राल जो विषैली होती है और इसी लिए जिसे तीरो के फलो पर लगाया जाता था।
नति—स्त्री० [सं०√नम्+क्तिन्] १ नत होने अर्थात् झुकने की क्रिया या भाव। २ झुके हुए होने की अवस्था या भाव। ३. किसी ओर होनेवाली मन की प्रवृत्ति। (इन्क्लिनेशन) ४. ढालुएँ होने की अवस्था

या भाव। उतार। ढाल। ५. नमस्कार। प्रणाम। ६. नम्रता। विनयशीलता। ७. ज्योतिष मे एक विशिष्ट प्रकार की गणना।

नतीजा—पु० [अ० नतीज.] १. परिणाम। फल।
क्रि० प्र०—निकलना।—पाना।—मिलना।
२. परीक्षाफल। ३. जाँच का फल। ४. अंत। आखीर।

नतु—क्रि० वि० [सं० न-तु, द्व० स०] नही तो। अन्यथा।

नतैत—पु० [हिं० नाता+ऐत (प्रत्य०)] वह जिसके साथ कोई नाता (अर्थात् रिश्ता या पारिवारिक संबंध) हो। नातेदार। रिश्तेदार। संबंधी।

नतोदर—वि० [सं० नत-उदर] जिसका ऊपरी भाग या तल कुछ नीचे या अंदर की ओर हो। अवतल। (कॉनकेव)

नत्थ—स्त्री०=नथ।

नत्थी—स्त्री० [हिं० नाथना] १. नाथने की क्रिया या भाव। २. छोटे-मोटे बहुत से कागजों आदि को एक साथ (आलपीन, डोरे, आदि से) नाथने की क्रिया। ३. उक्त प्रकार से नाथकर एक साथ किए हुए कागज आदि।

नत्यूह—पु० [सं०] कठफोड़वा।

नत्वर्थक—वि० [सं० नतु-अर्थ ब० स०, कप्] १. जिसमे किसी वस्तु या बात का अस्तित्व न माना गया हो। २. जिसमे कोई प्रस्ताव या सुझाव न मान्य किया गया हो। नकारात्मक। नहिक। (नेगेटिव)

नथ—स्त्री० [हिं० नाथना] १. सोने के तार आदि का बना हुआ एक प्रकार का गोलाकार गहना जो स्त्रियाँ नाक मे पहनती हैं। इसमे प्रायः गूंज के साथ चंदक, बुलाक या मोतियो की जोड़ी पहनाई रहती है। इसकी गिनती हिन्दुओ मे सौभाग्य-चिह्नो मे होती है। २. तलवार की मूठ पर लगा हुआ धातु का छल्ला। ३. दे० 'नथनी'।

नथना—पु० [सं० नस्त+हिं० ना (प्रत्य०)] नाक का अगला भाग जिसमे दोनों ओर दो छेद होते है।
मुहा०—(किसी से) नथना फुलाना=आकृति से असंतोष, रोष आदि के लक्षण प्रकट करना।
अ० [हिं० नाथना का अ०] १. नाथा जाना। २. नत्थी होना। ३. किसी के साथ जोड़ा, बाँधा या लगाया जाना। ४. छेदा या भेदा जाना। छिदना। भिदना। जैसे—पैर मे काँटा नथना।

नथनी—स्त्री० [हिं० नथ] १. नाक मे पहनने की छोटी नथ।
मुहा०—नथनी उतरना=वेश्याओ की परिभाषा मे वेश्या बननेवाली लड़की का पहले-पहल किसी वेश्यागामी से सम्पर्क या संबंध होना। नथनी उतारना=वेश्या बननेवाली स्त्री के साथ पहले-पहल संभोग करना।
२ बुलाक। बेसर। ३. नथ के आकार का वह छल्ला जो तलवार की मूठ पर लगा रहता है। ४. नथ के आकार की कोई गोलाकार छोटी चीज। ५ वह रस्सी जिससे बैल नाथे जाते है। नाथ।

नथि—स्त्री०=नथ।

नथिया†—स्त्री०=नथ।

नथी†—अव्य०=नही।

नथुना—पु० [स्त्री० नथुनी]=नथना।

नथ्थ†—स्त्री०=नथ।

*पुं०=अनर्थ।

नद—पुं० [सं०√नद् (शब्द करना)+अच्] १. बहुत बड़ी नदी जिसका नाम प्रायः पुं० होता है। जैसे—दामोदर, ब्रह्मपुत्र, सिंधु, सोन आदि। २. एक प्राचीन ऋषि।
†पु०=नाद।

नदन—पु० [सं०√नद्+ल्युट्-अन] १. नाद या शब्द करना अथवा होना। २. नाद। शब्द।

नदना—अ० [सं० नाद] १. नाद अर्थात् आवाज या शब्द होना। २. बाजो आदि का बजना। ३. पशुओं आदि का नाद या शब्द करना। बोलना। ४. गरजना।

नदनु—वि० [सं०√नद्+अनुङ्] १. नाद या जोर का शब्द करने अर्थात् गरजनेवाला।
पु० १. नाद। शब्द। २. शेर। सिंह। ३. बादल। मेघ।

नदम—स्त्री० [?] कपास की एक किस्म।

नदर—पु० [सं० नद+र] नद या नदी का निकटवर्ती प्रदेश।
†वि०=निडर।

नद-राज—पु० [सं० ष० त०] समुद्र।

नदान†—वि०=नादान।

नदारत—वि०=नदारद।

नदारद—वि० [फा० न+दारद=नदारद] १. जो न रह गया हो। २. गायब। लुप्त। ३. खाली।

नदि—स्त्री० [सं०√नद्+इ] स्तुति।
†स्त्री०=नदी।

नदिया—पु० [सं० नवद्वीप] बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर जो न्यायशास्त्र का विद्यापीठ माना जाता है।
†स्त्री०=नदी।

नदी—स्त्री० [सं० नद+ङीप्] १. जल का वह लंबा प्राकृतिक प्रवाह जो चौडाई मे नाले, नहर आदि से अधिक बड़ा होता है और दूर तक चला जाता है।
पद—नदी नाव संयोग=संयोगवश होनेवाली मुलाकात।
२. वह भूमि जिसमे उक्त जल प्रवाहित होता है। ३. किसी तरल पदार्थ का बहाव। जैसे—रक्त की नदी। ४. रहस्य संप्रदाय मे, आराधन के समय ध्यान और जप के समय नाम का होनेवाला प्रवाह।

नदी-कदंब—पु० [ब० स०] बड़ी गोरखमुंडी।

नदी-कांत—पुं० [ष० त०] १. समुद्र। २. [ब० स०] समुद्र-फल। ३. सिंदुवार नामक वृक्ष।

नदी-कांता—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. जामुन का पेड़। २. काक-जघा।

नदीकुकंठ—पु० [सं० ?] नैपाल का एक तीर्थस्थल। (बौद्ध)

नदी-गर्भ—पु० [ष० त०] नदी के दोनों किनारो के बीच का अवकाश।

नदी गूलर—पु० [?] लिसोड़ा।

नदीज—वि० [सं० नदी√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो नदी से उत्पन्न हुआ हो।
पु० १. समुद्र-फल। २. अर्जुन वृक्ष। ३. सेंधा नमक। ४. सुरमा। ५. महाभारत के अनुसार गंगा के गर्भ से उत्पन्न एक राजा।

नदीजा—स्त्री० [सं० नदीज+टाप्] अरणी का वृक्ष।

नदी जामुन—स्त्री० [स०+हिं०] छोटा जामुन।
नदी तर—पुं० [सं० नदी√तृ (तैरना)+अच्] १. वह स्थान जहाँ से नदी पार की जाय। २. घाट।
नदी-तल—पु० [ष० त०] पृथ्वी का वह गहरा भाग जिस पर होकर नदी बहती है। (बेसिन)
नदी-दत्त—पु० [स०] बुद्धदेव का एक नाम।
नदी-दुर्ग—पु० [मध्य०स०] नदी के बीच मे या द्वीप मे बना हुआ दुर्ग। (कौ०)
नदी-दोह—पु० [मध्य० स०] वह कर या महसूल जो नदी पार करने के समय देना पडता है।
नदी-धर—पु० [ष० त०] गगा नदी को मस्तक पर धारण करनेवाले, शिव। महादेव।
नदीन—पु० [नदी–ईन ष० त०] १. समुद्र। २. वरुण देवता। ३. वरुण या बन्ना नामक जंगली वृक्ष जो प्रायः पलास की तरह का होता है।
नदी-निष्पाव—पुं० [मध्य० स०] बोरो नाम का धान जिसका चावल कवड़ा होता है।
नदी-पति—पुं० [ष० त०] १. समुद्र। २. वरुण।
नदीपत्र—पुं०=नदीतल।
नदी-भल्लातक—पु० [मध्य० स०] भिलावें की जाति का एक वृक्ष और उसका फल।
नदीभव—वि० [सं० नदी√भू (होना)+अच्] जो नदी मे उत्पन्न हुआ हो।
पु० सेंधा नमक।
नदी-मातृक—वि० [ब० स०, कप्] ऐसा प्रदेश जिसमे नदियो के जल से खेतो की सिंचाई होती हो। 'देवमातृक' से भिन्न।
नदीमाषक—पु० [स०] मानदड या मानकच्चू नामक कद।
नदी-मुख—पु० [ष० त०] वह स्थान जहाँ नदी समुद्र मे गिरे। नदी का मुँहाना।
नदी-वट—पु० [मध्य० स०] वट वृक्ष।
नदीश—पुं० [नदी–ईश, ष० त०] समुद्र।
नदीश-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] लक्ष्मी।
नदीश्वर—पुं० [नदी–ईश्वर, ष० त०]=नदीश।
नदीसर—पु०=नदीश्वर (समुद्र)।
नदी-सर्ज—पु० [ष० त०] अर्जुन वृक्ष।
नदेया—स्त्री० [सं० नदी+ढक्–एय, टाप्] छोटा जामुन।
नदेयी—स्त्री० [सं० नदी+ढक्–एय, ङीष्] छोटा जामुन।
नदोला—पु० [हिं० नाँद] मिट्टी की छोटी नाँद।
नद्द—पु० १ =नदी। २ =नाद।
नद्दी—स्त्री०=नदी।
नद्ध—वि० [स०√नह (बंधन) क्त] १. नधा या नाथा हुआ। २. बँधा या बाँधा हुआ।
नद्धना—अ०=नदना।
नद्धी—स्त्री० [हिं० नांधना] १ चमड़े की डोरी। ताँत। २. दे० 'नत्थी'।
नद्य—वि० [स० नदी+यत्] नदी-सबंधी। नदी का।
नद्याम्र—पुं० [नदी–आम्र, ष० त०] एक तरह का पौधा। कोकुआ। समष्ठिला।
नद्यावर्त्तक—पु० [नदी–आवर्त्तक, ष० त०] एक योग जो यात्रा के लिए शुभ माना जाता है। (फलित ज्यो०)
नद्युत्सृष्ट—पु० [नदी–उत्सृष्ट, तृ० त०] गग बरार। (दे०)
नधना—अ० [हिं० नथना] १. नाथा जाना। २. नाक मे रस्सी डाल कर बाँधा जाना। जैसे—बैल नधना। ३. किसी के साथ जबरदस्ती जोड़ा, बाँधा या लगाया जाना। ४. तत्परतापूर्वक किसी काम मे लगना या लगाया जाना। ५. किसी कार्य का अनुष्ठित या आरब्ध होना। काम का ठनना। जैसे—जब वह काम नध गया है तब उसे पूरा ही कर डालना चाहिए।
नधाव—पु० [हिं० नधना] नाधे जाने की क्रिया या भाव।
पु० [?] वह गड्ढा जिसमे से पानी उलीचकर सिंचाई के लिए ऊँचाई पर स्थित गड्ढे में फेंका जाता है।
ननंद—स्त्री०=ननद।
ननंदा—स्त्री० [स० न√नन्द् (सतुष्ट होना)+ऋन्] ननद।
ननका†—वि० [हिं० नन्हा] [स्त्री० ननकी] अवस्था, आकार आदि मे सबसे छोटा या बहुत छोटा। जैसे—ननका बबुआ।
ननकारना†—अ०=नकारना।
ननकिरवा†—वि०=ननका।
पु० छोटा लड़का।
ननद—स्त्री० [स० ननंदा] किसी विवाहिता स्त्री के सबध के विचार से उसके पति की बहन।
पद—ननद के वीर या भैया=(क) पति। (ख) रहस्य सप्रदाय मे, परमात्मा।
ननदी†—स्त्री०=ननद।
ननदोई—पु० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] विवाहिता स्त्री के सबध के विचार से वह व्यक्ति जिससे उसके पति की बहन व्याही हुई हो। ननद का पति।
ननसार†—स्त्री०=ननिहाल (नाना का घर)।
नना—स्त्री० [स० न√नम् (झुकना)+ड–टाप्] १ माता। २ पुत्री। बेटी। ३. कन्या। लडकी।
ननिअउरा(आउर)†—पुं०=ननिहाल।
ननिया—वि० [हिं० नाना] सबध के विचार से नाना या नानी के स्थान पर पडनेवाला। जैसे—ननिया ससुर, ननिया सास।
ननिया ससुर—पुं० [हिं०] [स्त्री० ननिया सास] १ पति की दृष्टि मे, उसकी पत्नी का नाना। २ स्त्री की दृष्टि मे, उसके पति का नाना।
ननिया सास—स्त्री० [हिं०] १ पति की दृष्टि मे, उसकी पत्नी की नानी। २. स्त्री की दृष्टि मे, उसके पति की नानी।
ननिहारी—स्त्री० [हिं० नन्हा] पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी ईंट।
ननिहाल—पुं० [हिं० नाना+स० आलय] १. नाना का घर या घराना। ननसार। २. वह गाँव, नगर या प्रदेश जिसमे किसी के नाना का घर या मूल-निवास स्थान हो।
ननु—अव्य० [स० न√नुद् (प्रेरणा)+डु] एक अव्यय जिसका व्यवहार

कुछ पूछने, कोई सदेह प्रकट करने अथवा वाक्य के आरभ मे यो ही किया जाता है। (क्व०)

ननु-नच—पुं० [द्व० स०] किसी बात मे की जानेवाली छोटी-मोटी आपत्ति।

ननोई—स्त्री०=तिन्नी (धान और उसका चावल)।

नन्ना†—वि०=नन्हा।

†पु०=नाना।

नन्यौरा†—पु०=ननिअउरा (ननिहाल)।

नन्हा—वि० [प्रा० लाण्हा] [स्त्री० नन्ही] १. अवस्था, आकार आदि में बहुत या सब से छोटा। जैसे—नन्हा बच्चा, नन्हे महाराज। २. पतला। महीन।

मुहा०—नन्हा कातना=(क) महीन सूत कातना। (ख) बहुत ही बारीक या कठिन काम करना।

पद—नन्हा मुन्ना=बहुत छोटा बच्चा।

नन्हाई—स्त्री० [हिं० नन्हा+ई (प्रत्य०)] १. 'नन्हा' अर्थात् 'छोटा' होने की अवस्था या भाव नन्हापन। २. तुच्छ या हीन होने की अवस्था या भाव। अप्रतिष्ठा। हेठी।

नन्हिया—स्त्री०=तिन्नी (धान और उसका चावल)।

नन्हैया†—वि०=नन्हा।

नपत—स्त्री० [हिं० नापना] नापे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। नपाई।

नपता—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसके डैनो पर काली या लाल चित्तियाँ होती हैं।

†पु० [स० नप्तृ] लड़की का लड़का। नाती।

नपना—अ० [हिं० 'नापना' का अ०] नापा जाना।

पद—नपा-तुला। (दे०)

पु० वह पात्र जिसमे डाल कर कोई चीज विशेषत: कोई तरल पदार्थ नापा जाय। जैसे—दूध या तेल का नपना।

नपरका—पुं० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसकी गरदन तथा पेट लाल रग का और पैर तथा चोच पीले रग की होती है।

न-पराजित—पुं० [स० सहसुपा स०] शकर। शिव।

नपाई—स्त्री० [हिं० नाप+अई (प्रत्य०)] १ नापने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†२.=नाप।

नपाक—वि०=नापाक (अपवित्र)।

नपात्—पु० [स० न√पा (रक्षा)+शतृ] देवयान।

नपुंसक—वि० [स० न स्त्री न पुमान्, नि० नपुसक आदेश] [भाव० नपुंसकता] १ (वह व्यक्ति) जिसमे काम-वासना या स्त्री-समोग की शक्ति बिलकुल न हो अथवा बहुत ही कम हो। क्लीव।

विशेष—वैद्यक मे, नपुसक पाँच प्रकार के माने गये है—आसेव्य, सुगधी, कुभीक, ईर्ष्यक और षढ।

२. कायर।

पुं० १. वह पुरुष जिसमें स्त्री-समोग की शक्ति न हो। नामर्द। २. ऐसा मनुष्य जिसमे न तो पूर्ण पुरुषो के चिह्न हो न स्त्रियो के ही। हिजड़ा।

विशेष—वैद्यक के अनुसार जब पुरुष का वीर्य और माता का रज समान होता है तब नपुसक सतान उत्पन्न होती है।

३. दे० 'नपुसक लिंग'।

नपुंसकता—स्त्री० [सं० नपुसक+तल्—टाप्] १. नपुंसक होने की अवस्था या भाव। हिजड़ापन। २. वैद्यक में, एक प्रकार का रोग जिसमें मनुष्य का वीर्य इस प्रकार नष्ट हो जाता है कि वह स्त्री के साथ सभोग करने के योग्य नहीं रह जाता। नामर्दी।

नपुंसकत्व—पुं० [सं० नपुसक+त्व]=नपुसकता।

नपुंसक-मंत्र—पु० [स० कर्म० स०] जैनो के अनुसार वह मत्र जिसके अंत मे 'नमः' हो।

नपुंसक-लिंग—पु० [सं० मध्य० स०] १. संस्कृत व्याकरण मे तीन प्रकार के लिंगो मे से एक जिसमे ऐसे पदार्थों का अतर्भाव होता है जो न तो पुलिंग हो और न स्त्री लिंग।

विशेष—सस्कृत के सिवा अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओ मे भी यह तीसरा लिंग होता है, परन्तु हिन्दी, पजाबी आदि भाषाओ में नही होता।

पुंसक-वेद—पु० [स० मध्य० स०] जैनियो के अनुसार एक प्रकार का मोहनीय कर्म जिसके उदय होने पर स्त्री के सिवा बालक या पुरुष के साथ भी सभोग करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

नपुआ†—पुं०=नपना।

नपुत्रा†—वि० [स्त्री० नपुत्री]=निपूता।

नप्ता (प्तृ)—स्त्री० [सं० न√पत् (गिरना)+तृच्] लड़के या लड़की की संतान।

नप्तृका—स्त्री० [स० नप्तृ+कन्—टाप्] वैद्यक मे ऐसा पक्षी जिसका मांस दोष नाशक माना जाता है।

नप्त्री—स्त्री० [सं० नप्तृ+ङीप्] १. पौत्री। २. नतनी।

नफर—पु० [फा० नफर] १. आदमी। व्यक्ति। (विशेषत. सख्या सूचित करने के समय) जैसे—चार नफर मजदूर और बढ़ाओ। २. तुच्छ सेवाएँ करनेवाला सेवक। खिदमतगार। दास। ३. श्रमिक। मजदूर।

नफरत—स्त्री० [अ० नफ़त] १. किसी के प्रति होनेवाली अरुचिपूर्ण भावना या विरक्ति। २. घृणा।

नफरी—स्त्री० [फा० नफर=आदमी] १ नफर अर्थात् मजदूर का दिन भर का काम। २. काम या मजदूरी के दिनो की वाचक सज्ञा। जैसे—चार नफरी मे यह दरवाजा बनेगा। ३. एक दिन काम करने का पारिश्रमिक। जैसे—इस राज की नफरी ३) है।

नफस—पु० [अ० नफस] १. श्वास। साँस। २. क्षण। पल।

पुं० [अ० नफ्स] १. अस्तित्व। २. सत्यता। ३. काम-वासना। ४ लिंगेन्द्रिय। ५. आत्मा के दो भेदो मे से एक जो निम्नकोटि का माना जाता है। (सूफी-सम्प्रदाय)

नफसा-नफसी—स्त्री० [अ० नफ्सी नफ़्सी] १. आपा-धापी। २. वैमनस्य।

नफसानी—वि० [अ० नफसानी] १. भौतिक और शारीरिक। २. काम-वासना या भोगेच्छा सबधी।

नफा—पुं० [अ० नफ़्अ] १ लाभ। हित। २. आर्थिक लाभ। ३. किसी प्रकार की प्राप्ति। ४. व्याज। सूद।

नफासत—स्त्री० [अ० नफासत] १ नफीस (अर्थात् उत्तम कोटि का) और सुन्दर होने की अवस्था या भाव। २. कोमलता। ३. निर्मलता।
नफीरी—स्त्री० [फा० नफीरी] १. बाँसुरी की तरह का एक प्रकार का बाजा जो शहनाई के साथ बजता है। २. शहनाई।
नफीस–वि० [फा० नफीस] [भाव० नफासत] १. जो उत्तम होने के सिवा देखने मे भी बहुत प्रिय या मनोहर हो। २. निर्मल। स्वच्छ।
नफ्फेरी†—स्त्री०=नफीरी।
नफ़्स—पु०=नफ़स।
नफसा-नफसी—स्त्री० [अ०] आपा-धापी।
नफसानियत—स्त्री० [अ०] १. स्वार्थपरता। २ अभिमान।
नबी—पुं० [अ०] पैगंबरी धर्मो मे ईश्वर का दूत। पैगंबर।
नबेड़ना—स०=निबेडना।
नबेड़ा—पुं=निबेड़ा।
नबेरना—स० दे० 'निबेडना'।
नबेरा—पु०=निबेड़ा।
नब्ज—स्त्री० [अ० नब्ज] हाथ की वह रक्तवाहिनी नलिका जिसके कलाई पर पडनेवाले अश की गति से शारीरिक आरोग्य, बल आदि की स्थिति जानी जाती है। नाडी।
क्रि० प्र०—चलना।—देखना।—दिखाना।
नब्दीगर—पु० [फा० नमद+गर] शामियाना बनानेवाला कारीगर।
नब्बे–वि० [स० नवति] जो गिनती मे अस्सी से दस अधिक हो। सौ से दस कम।
पुं० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९०।
नभःकेतन—पु० [स० ब० स०] सूर्य।
नभः क्रांती (तिन्)—पु० [स० नभ. क्रांत+इनि] सिंह।
नभः पांथ—पु० [स० ष० त०] सूर्य।
नभः प्रभेद–पु० [स०] एक वैदिक ऋषि जो विरूप के वशज थे।
नभः प्राण—पु० [स० ष० त०] वायु। हवा।
नभः श्वास—पु० [स० ष० त०] वायु।
नभः सद्—वि० [स० नभस्√सद् (नगति)+क्विप्] आकाश मे विचरनेवाला।
पुं० १ देवता। २ पक्षी।
नभः सरित्—स्त्री० [स० ष० त०] आकाश गगा।
नभः सुत—पुं० [स० ष० त०] पवन। हवा।
नभः स्थित—वि० [सं० स० त०] आकाश मे स्थित।
पु० एक नरक।
नभ (स्)—पु० [स०√नह् (बधन)+असुन्, भ आदेश] १ आकाश। आसमान। २ बिलकुल खाली या शून्य स्थान। ३ शून्य का सूचक चिह्न। बिन्दु। सुन्ना। सिफर। ४ सावन और भादो के महीने जिनमे आकाश से पानी बरसता है। ५. बादल। मेघ। ६. जल की वर्षा। ७ जल। पानी। ८. आधार। आश्रय। ९ पुराणानुसार चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम। १० शिव। ११. अबरक। १२ जन्मकुडली में लग्न स्थान से दसवाँ स्थान। १३ कमल नाल। १४. राजा नल का एक पुत्र।
वि० हिंसक।
अव्य० निकट। पास।
नभग—वि० [स० नभ√गम् (गति)+ड] १. आकाश मे चलनेवाला। आकाशचारी। २ अभागा। बद-किस्मत।
पु० १ चिड़िया। पक्षी। २. वायु। हवा। ३ बादल। मेघ। ४. भागवत के अनुसार वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।
नभग-नाथ—पुं० [स०] पक्षियो के राजा, गरुड़।
नभगामी (मिन्)—वि० [स० नभ√गम्+णिनि] आकाश मे चलनेवाला। नभचर।
पुं० १ सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. देवता। ४. चिडिया। पक्षी।
नभगेश—पु० [सं० नभग–ईश ष० त०] गरुड़।
नभचर—वि० [स० नभश्चर] आकाश मे चलनेवाला।
नभ-ध्वज—पु० [स० नभोध्वज] बादल। मेघ।
नभनीरप—पु० [स० नभोनीरप] चातक। पपीहा।
नभयान—पु० [स० नभोयान] आकाश मे उडनेवाला यान। वायुयान।
नभश्चक्षु (स्)—पुं० [स० ष० त०] सूर्य।
नभश्चमस—पु० [स० ष० त०] १ चद्रमा। २ इद्रजाल।
नभश्चर—वि० [स० नभस्√चर् (गति)+ट] आकाश मे चलनेवाला। आकाशचारी।
पु० १ देवता। २ पक्षी। ३ बादल। मेघ। ४ वायु। हवा। ५. ग्रह, नक्षत्र आदि।
नभसंगम—पु० [सं० नभस√गम् (जाना)+खच्, मुम्] पक्षी।
नभस—पु० [स०√नभ् (शब्द)+असच्] दसवें मन्वतर के एक सप्तर्षि। (हरिवंश)
नभस्थल—पु० [स० नभ स्थल] १ आकाश। २ शिव।
नभस्थित—वि० [सं० नभ स्थित] आकाश मे स्थित।
पु० पुराणानुसार एक नरक का नाम।
नभस्य—पु० [सं० नभस्+यत्] १. हरिवंश के अनुसार स्वारोचिष मनु के एक पुत्र का नाम। २ भाद्रपद। भादो।
नभस्वान् (स्वत्)—वि० [स० नभस्+मतुप्] कुहरे या बादलो से भरा हुआ।
पु० वायु।
नभा—स्त्री० [स०] पीकदान।
नभाक—पुं० [सं०√नभ्+आक] १. अँधेरा। अधकार। २ राहु। ३. एक प्राचीन ऋषि।
नभि—स्त्री० [स०] चक्र। पहिया।
नभोग—पुं० [सं० नभस्√गम् (जाना)+ड] १ आकाश मे चलनेवाले देवता, पक्षी, ग्रह आदि। २ जन्म-कुडली मे लग्न से दसवाँ स्थान। ३. दसवें मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक।
नभोगज—पु० [स० नभोग√जन् (उत्पत्ति)+ड] बादल।
नभोगति–वि० [स० नभस्–गति ब० स०] जिसकी गति या पहुँच आकाश मे हो।
पु० देवता, पक्षी, ग्रह आदि जो आकाश मे चलते है।
नभोगामी (मिन्)—वि० [स० नभस्√गम् (जाना)+णिनि] नभ मे चलनेवाला।
नभोद—पु०[स०] एक विश्वदेव। (हरिवंश)

नभोदुह—पुं०[नभस्√दुह् (भरना)+क] बादल। मेघ।
नभोदृष्टि—वि०[सं० नभस्-दृष्टि, ब०स०] १. जिसकी दृष्टि आकाश की ओर हो। २. अंधा।
नभोद्वीप—पुं०[सं० नभस्-द्वीप, स०त०] बादल।
नभोधूम—पुं०[सं० स०त०] बादल।
नभोध्वज—पुं०[सं० नभस्-ध्वज, स०त०] बादल।
नभो नदी—स्त्री०[सं० नभस्-नदी, प०त०] आकाश-गंगा।
नभोमंडल—पुं०[सं० नभस्-मंडल प०त०] मंडलाकार आकाश।
नभोमणि—पुं०[सं० नभस-मणि, प०त०] सूर्य।
नभोयोनि—पुं०[सं० नभस्-योनि, ब०स०] महादेव। शिव।
नभोरज (स्)—पुं०[सं० नभस्-रजस्, प०त०] अंधकार।
नभोरूप—वि०[सं० नभस्-रूप, ब०स०] नभ अर्थात् आकाश के रंग का। आसमानी या हल्का नीला।
नभोरेणु—पुं०[सं० नभस् -रेणु, स० त०] कुहासा। कोहरा।
नभोलय—वि०[सं०नभस्-लय, ब०स०] जो आकाश में लीन हो जाय। पुं० धूआँ।
नभोलिह—वि०[सं० नभस्√लिह् (चाटना)+क] गगनचुंबी।
नभोवट—पुं०[सं०] आकाश-मंडल
नभोवीथी—स्त्री०[सं० नभस्-वीथी, स०त०] छायापथ। (दे०)
नभौका (कस्)—पुं०[सं० नभ-ओकस, ब० स०] १. पक्षी। २. देवता। ३. ग्रह आदि जो आकाश में चलते हैं।
नभ्य—पुं०[सं० नाभि+यत् नभ्रादेश] १. पहिये के नीचे का भाग। २ पहियों में दी जानेवाली चिकनाई या तेल। ३. अक्ष। धुरी। वि० मेघाच्छन्न।
नभ्यसी—पुं०[सं० नभस] १. आकाश। २. सावन का महीना।
नभ्राट् (ज्)—पुं०[सं० न√भ्राज् (दीप्ति)+क्विप्, नि० सिद्धि] बादल। मेघ।
नम (स्)—पुं०[सं०√नम (झुकना)+असुन्] १. नमस्कार। २. त्याग। ३. अन्न। ४. वज्र। ५. यज्ञ। ६. स्तोत्र।
वि०[फा०] भीगा हुआ। आर्द्र। गीला।
नमक—पुं०[फा०] एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जो मुख्यत. खारे जल से तैयार किया जाता है और कहीं-कहीं चट्टानों के रूप में भी मिलता है। लवण।
पद—नमक-हराम, नमक-हलाल। (देखें)
मुहा०—(किसी का) नमक अदा करना=किसी के किये हुए उपकारों का कृतज्ञतापूर्वक पूरा पूरा प्रतिफल देना। (किसी का) नमक खाना=किसी का दिया हुआ अन्न खाना। किसी के आश्रय में रहकर पलना। (किसी का) नमक फूटकर निकलना=स्वामी या आश्रयदाता के प्रति कृतघ्न होने या उसकी बुराई करने का दंड मिलना। कृतघ्नता का बुरा फल मिलना। (किसी बात में) नमक-मिर्च मिलाना या लगाना=कोई बात बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा कर और अतिरंजित तथा आकर्षक बनाकर कहना। कटे पर नमक छिड़कना=ऐसा काम करना या ऐसी बात कहना जिससे दुःखी व्यक्ति और अधिक दुःखी हो।
२. लावण्य। सलोनापन।
नमक-ख्वार—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसने किसी का नमक खाया हो। किसी के द्वारा पालित होनेवाला।
नमकदान—पुं०[फा०] [स्त्री० अल्पा० नमकदानी] पिसा हुआ नमक रखने का पात्र।
नमकसार—पुं०[फा०] १ वह स्थान जहाँ से नमक निकलता हो। २. वह खेत जिसमें समुद्र-जल से नमक तैयार किया जाता है।
नमक-हराम—वि०[फा०+अ०] [भाव० नमक-हरामी] जो अपने आश्रयदाता, उपकारक या स्वामी के प्रति कृतज्ञ न रहकर उसका अहित करता हो या चाहता हो। कृतघ्न।
नमक-हरामी—स्त्री०[फा० नमक+अ० हराम+ई (प्रत्य०)] १. नमक हराम होने की अवस्था या भाव। २. नमक हराम का अन्नदाता या आश्रयदाता के प्रति किया जानेवाला कोई द्रोहपूर्ण कार्य।
†वि०=नमक-हराम।
नमक-हलाल—वि०[फा०+अ०] [भाव० नमक-हलाली] जो अपने आश्रयदाता, उपकारक या स्वामी की कृपा के लिए उसका उपकार मानने और उसकी भलाई करने के लिए सदा तत्पर रहे।
नमक हलाली—स्त्री०[फा०नमक+हलाल +ई (प्रत्य०)] १.नमक-हलाल होने का भाव। स्वामिनिष्ठा। स्वामिभक्त। २. ऐसा कार्य जिससे उपकारक या स्वामी के प्रति कृतज्ञता और भक्ति प्रकट होती है।
नमकीन—वि० [फा०] [भाव० नमकीनी] १. जिसमें नमक पड़ा या मिला हो। जैसे—नमकीन समोसा। २. जो स्वाद में नमक के स्वाद जैसा हो। ३ (व्यक्ति) जो देखने में साँवला होने पर भी सुन्दर हो।
नमगीरा—पुं०[फा० नमगीर.] १. एक तरह का छोटा शामियाना जो ओस से बचने के लिए ताना जाता है। २. तिरपाल या पाल जो धूप, वर्षा आदि में रक्षित रहने के लिए किसी स्थान के ऊपर टाँगते या फैलाते हैं।
नमत—वि०[सं०√नम्+अतच्] १. झुका हुआ। २. नम।
पुं० १. नट। २. स्वामी। ३. बादल। ४. धूआँ।
नमदा—पुं०[फा० नमद] एक प्रकार का ऊनी कंबल जो गद्दे की तरह विछाया जाता है।
नमन—पुं०[सं०√नम्+ल्युट्—अन] [वि० नमनीय, नमित] १. झुकने की क्रिया या भाव। २. नमस्कार। प्रणाम।
नमना—अ०[सं० नमन] १. नत होना। झुकना। २. नमस्कार या प्रणाम करना। ३. नम्र होना।
नमनि†—स्त्री०[हिं० नमना] १. नमन। २. नम्रता।
नमनीय—वि०[सं०√नम्+अनीयर्] [भाव० नमनीयता] १. जो झुक सके या झुकाया जा सके। २ जिसके आगे झुकना उचित हो, अर्थात् पूज्य या मान्य।
नमश—स्त्री०[फा०] दूध का वह फेन जो ठंडक के कारण जम-सा गया हो। निमस।
नमसित—भू० कृ०[सं० नमस्+क्यङ्+क्त, यलोप] १ जिसे नमस्कार किया गया हो। २. पूजित।
नमस्कार—पुं०[सं० नमस्√कृ (करना)+घञ्] १ किसी पूज्य व्यक्ति के आगे झुककर उसका अभिवादन करना। २. [नमस्-कार, ब०स०] एक प्रकार का विष।
नमस्कारी—स्त्री०[सं० नमस्कार+अच्—ङीप्] १. लज्जावंती। २. वराह-क्रान्ता। ३. खदरी या खदरिका नामक क्षुप।

नमस्कार्य—वि०[स० नमस्√कृ+ण्यत्] १. जिसके सामने नमस्कार करना उचित हो। नमस्कार किये जाने के योग्य। २. पूज्य। वदनीय।

नमस्क्रिया—स्त्री०[सं० नमस्√कृ+श—इयङ्, टाप्] नमस्कार।

नमस्ते—[स० नमस् ते व्यस्त पद] एक पद जो अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है और जिसका अर्थ है—मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

नमस्य—वि०[स० नमस्+क्यङ्+यत्, अ और य् का लोप] नमस्कार करने के योग्य। पूज्य। वदित।

नमस्या—स्त्री०[स०√नमस्य+अ—टाप्]१ पूजा। २. नम्रता।

नमाज—स्त्री०[अ० नमाज] मुसलमानो की एक विशिष्ट प्रकार और रूप की ईश्वर-प्रार्थना जो दिन मे पाँच बार करने का विधान है।
क्रि०प्र०—अदा करना।—गुजारना।—पढना।

नमाजगाह—स्त्री०[अ०+फा०]१ नमाज पढने का स्थान। २. मसजिद।

नमाजबंद—पुं०[अ० नमाज+फा० वद] कुश्ती का एक पेंच।

नमाजी—पुं०[अ० नमाज़ी] मुसलमानी धर्म के अनुसार समय पर नमाज पढनेवाला व्यक्ति। धर्मनिष्ठ मुसलमान।
पुं० वह वस्त्र जिस पर बैठकर नमाज पढी जाय।

नमाना—स०[सं० नमन]१ झुकाना। २. अपने अधीन या वश मे करना।

नमित—वि०[स०√नम्र+णिच्+क्त] १. झुका हुआ। २ झुकाया हुआ।

नमिस—स्त्री०[फा० नमश या नमिश्क] एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन जो प्राय. जाड़े मे बनता और बहुत स्वादिष्ट होता है।

नमी—स्त्री०[फा०]१. आर्द्रता। तरी। २. सीड़।
वि०[स० नमिन्]१. झुकनेवाला। २ जो झुक सकता हो।

नमुचि—पु०[स० न √मुच्(छोड़ना)+इन्]१. एक ऋषि का नाम। २. एक दानव जिसे इन्द्र ने मारा था। ३ एक दैत्य जो शुभ और निशुभ का छोटा भाई था। ४. कामदेव।

नमुचि-रिपु—पु० [ष० त०] इद्र, जिन्होने नमुचि का वध किया था।

नमुचिसूदन—पु०[सं० नमुचि√सूद् (मारना)+ल्यु—अन] इद्र।

नमूद—स्त्री०[फा० नमूद]१ आविर्भाव। प्रकट होना। २. अस्तित्व। ३. धूम-धाम। तडक-भडक।

नमूदार—वि०[फा० नुमूदार] [भाव० नमूदारी] आविर्भूत। प्रकट।

नमूना—पु०[फा० नमून]१ किसी वस्तु की बहुत-सी इकाइयो मे से कोई इकाई जो उस वस्तु का स्वरूप बतलाने के लिए दिखाई जाती है। जैसे—पुस्तक की नमूने की प्रति आपको भेजी गयी थी। २. किसी पदार्थ का कोई ऐसा अश जो उसके गुण और स्वरूप का परिचय कराने के लिए निकाला गया हो। बानगी। जैसे—चावल का नमूना। ३. वह जिसे देखकर उसके अनुसार वैसा ही कुछ और बनाया जाय। प्रतिमान। जैसे—इस बेल का नमूना कागज पर उतार लो। ढाँचा।
†पु० दे० 'निमोना'(सालन)।

नमेरु—पु०[√नम्+एरु]१. रुद्राक्ष का पेड़। २. एक तरह का पुन्नाग (वृक्ष)।

नम्र—वि०[सं० √नम्+र]१ (पदार्थ) जो झुका हो। २ (व्यक्ति) जिसमे नम्रता और विनय हो।

नम्रक—पु०[सं० नम्र√कै (प्रतीत होना)+क] बेंत।

नम्रता—स्त्री०[स० नम्र+तल्—टाप्] नम्र होने की अवस्था, गुण या भाव।

नम्रांग—वि०[स० नम्र-अग, ब०स०]१. झुका हुआ। २ झुके हुए अगोवाला।

नम्रित—वि०=नमित।

नय—वि०[सं०√नी (ले जाना)+अच्?]१. किसी को किसी ओर ले जानेवाला। २. मार्ग-दर्शक। ३. उचित। ठीक। वाजिब।
पु०[√नी+अप्]१ बरताव। व्यवहार। २. जीवन बिताने का ढग। आचरण। ३. अच्छा या श्रेष्ठ आचरण। सदाचार। ४. दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता। ५. नम्रता। विनय। ६. न्यायपूर्वक और समझदारी से उचित या ठीक काम करने का ढंग और योग्यता। नीति। ७ प्रबध, व्यवस्था और शासन करने का कोई व्यक्तिगत और कौशलपूर्ण ढग या नीति। राजनीति। ८. अच्छी तरह से काम करने के लिए बनाई हुई योजना। ९. दार्शनिक मत या सिद्धान्त। १०. एक प्रकार का खेल या जूआ। ११. विष्णु का एक नाम। १२. जैन दर्शन मे, प्रमाणो द्वारा निश्चित अर्थ या तत्त्व ग्रहण करने की वृत्ति जो सात प्रकार की कही गई है। यथा—नैगम, सग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र शब्द, समभिरूढ और एवंभूत।
स्त्री०[स० नद या नदी] नदी। उदा०—केते औगुन जग करत नय वय चढ़ती बार।—बिहारी।

नय-ऋति*—पु०=नैर्ऋत।

नयक—वि०[स० नय+वुन्—अक] कुशल। चतुर।
पु०१ कुशल कार्यकर्ता। २ राजनीति मे निपुण व्यक्ति। कुशल राज-नीतिज्ञ। ३. नेता।

नयकारी—पु०[?]१. नर्तको के दल का नायक। नाचनेवालो का मुखिया। २. नाचनेवाला। नर्तक।

नयज्ञ—वि०=नीतिज्ञ।

नयण*—पुं०=नयन।

नयन—पु०[स०√नी+ल्युट्—अन]१ किसी को कही या किसी ओर ले जाने की क्रिया या भाव। २. प्रबन्ध, व्यवस्था या शासन करने की क्रिया या भाव। ३ समय बिताने या व्यतीत करने की क्रिया या भाव। ४ आँखें या नेत्र जो हमे कही या किसी ओर ले जाने मे सहायक होते हैं।

नयन-गोचर—वि०[ष०त०]१ जो आँखो मे दिखाई देता हो। दिखाई देनेवाला। २ जो आँखो के सामने हो। समक्ष।

नयनच्छद—पु०[ष०त०] आँख को ढकनेवाली पलक।

नयन-जल—पु०[ष०त०] आँखो से बहनेवाला पानी अर्थात् आँसू। अश्रु।

नयनता—स्त्री०[हि०]'नयन' का भाव। उदा०—कुछ कुछ खुली नयनता से, कुछ रुकी मुस्कान से, छीनते किस भाँति हो तुम धैर्य को।—पत।

नयन-पट—पुं०[ष०त०]=पलक।

नयन-पथ—पु०[ष०त०] १. दृष्टि का मार्ग। २. वह सारा विस्तार जो [illegible] र देखने पर आँखो के सामने आता या होता है।
[illegible] ा०त०] वह कोटर या गड्ढा जिसमे आँख स्थित रहती है।

नयन-वारि—पु०[ष०त०] नयन-जल। आँसू।
नयन-सलिल—पु०[ष० त०] नयन-जल। आँसू।
नयनांबु—पु०[नयन-अंबु, ष०त०] आँसू।
नयना—अ०[स० नमन]१. झुकना। २. किसी के आगे नम्र या विनीत होना।
स०१ झुकाना। २. लाक्षणिक अर्थ में न रहने देना या कम करना। उदा०—अंबर हरत द्रौपदी राखी ब्रह्म इन्द्र को मान नयो।—सूर।
†पु०=नयन (आँख)।
नय-नागर—वि०[स० स०त०]१ नय अर्थात् नीतिशास्त्र में निपुण। नीतिज्ञ। २. चतुर। चालाक।
नयनाभिराम—वि०[सं० नयन-अभिराम, ष०त०] जो देखने में प्रिय तथा सुन्दर हो।
नयनिमा—स्त्री०[स० नयन ने]१ आँख का भाव। आँख पन। नेत्रता। २. चितवन। उदा०—कहाँ नयनिमा ने पाये ये फूलों के मादक शर।—पन्त।
नयनी—स्त्री०[स० नयन] आँख की पुतली।
वि० स्त्री० नयनों या आँखोंवाली। (यौ० के अन्त में।) जैसे—मृग नयनी।
नयनू-पु०[नवनीत] १. मक्खन। २ पुरानी चाल की एक प्रकार की बूटीदार मलमल।
नयनोत्सव—पु०[स० नयन-उत्सव, ब०स०] १. ऐसी सुन्दर वस्तु जिसे देखने से नेत्रों को बहुत सुख मिले। २. दीपक। दीया।
नयनौषध—पु०[स० नयन-औषध, ष०त०] पुष्पकासीस। पीला कसीस।
नयर—पु०=नगर।
नय-वाद—पु०[स० ष०त०] एक दार्शनिक वाद या सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि आत्मा एक भी है और अनेक भी।
नयवादी (दिन्)—पु०[स० नयवाद+इनि]१ नयवाद का अनुयायी या ज्ञाता। २ नीतिज्ञ। ३. राजनीतिज्ञ।
नयशाली (लिन्)—वि०[स० नय√शाल् (शोभित होना)+णिनि]=नय-शील।
नय-शास्त्र—पुं०[ष०त०]=राजनीति शास्त्र।
नय-शील—वि०[स० ब०स०]१. जो झुक सकता या झुकाया जा सकता हो। २. बुद्धिमान। विचारशील। ३. नीतिज्ञ। ४. नम्र। विनीत। ५ विजयी।
नया—वि०[स० नव] [स्त्री० नयी, नई] १. जिसका अस्तित्व पहले न रहा हो, बल्कि जो अभी हाल में निकला, बना या हुआ हो। जो कुछ ही समय पहले प्रस्तुत हुआ हो। नवीन। जैसे—शहर में बहुत से नये मकान बने हैं।
मुहा०—(कोई पदार्थ) नया कर देना=खराब या नष्ट कर डालना। निकम्मा या रद्दी बना देना। (मंगल-भाषित रूप में प्राय. स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त) जैसे—इस लड़के को जो कपड़ा दो, वह दो दिन में नया करके रख देता है, अर्थात् जला देता, फाड़ डालता या मैला कर देता है।
२ जिसकी उत्पत्ति या उपज अभी हाल में हुई हो। नई पैदावार में का। जैसे—नया आलू, नया चावल, नया पान।
मुहा०—(अनाज या फल) नया करना=प्रस्तुत ऋतु में होनेवाला अनाज, तरकारी या फल पहले-पहल खाना। जैसे—इस साल हमने आज ही गोभी नई की है; अर्थात् पहले-पहल खाई है।
३. जिसका आविर्भाव, रचना या सृजन हुए अधिक समय न बीता हो। थोड़े दिनों का। हाल का। ताजा। जैसे—नई जवानी, नया नियम, नई सभ्यता। ४ जिसका अस्तित्व या सत्ता तो पहले से रही हो, परन्तु जिसका अविष्कार, ज्ञान या परिचय हाल में प्राप्त हुआ हो। जैसे—(क) ये यह मकान छोड़कर किसी नये मकान में चले गये हैं। (ख)—ज्योतिषी नित्य नये तारों का पता लगाते रहते हैं। (ग) हमारे लिए तो यह अनुभव (या विचार) नया ही है। ५. जो पहले किसी के उपयोग या व्यवहार में न आया हो। जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। जैसे—यह लड़का रोज नये कपड़े पहनना चाहता है। ६ जो पहले था, उससे भिन्न और उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। जैसे—(क) अब नये अधिकारी आकर इस विषय का निर्णय करेंगे। (ख) विद्यालय में कई नये अध्यापक आये है।
मुहा०—(कोई पुराना पदार्थ) नया करना या कर देना=टूट-फूट जाने अथवा निकम्मे या रद्दी हो जाने पर उसके स्थान पर दूसरा नया लाकर रखना। जैसे—आपका जो शीशा हमसे टूट गया है, वह हम नया कर देंगे।
७. परिवर्तन, मरम्मत, सुधार आदि करके ऐसे रूप में लाया हुआ जो पहले से बिल्कुल भिन्न जान पड़े। नये अथवा हाल में बने हुए के समान। जैसे—(क) दो हजार रुपये खरच करो तो यह मकान बिल्कुल नया हो जायगा। (ख) इस रफू में घड़ी-साज ने घड़ी बिल्कुल नई कर दी है। (ग) इस बार की धुलाई में यह कोट बिल्कुल नया हो गया है।
८. जो किसी काम में अथवा किसी पद या स्थान पर पहले-पहल आकर लगा हो। जैसे—(क) नये आदमी को काम सँभालने और समझने में कुछ समय लगता ही है। (ख) इस यंत्र का नया पुरजा कुछ खड़बड़ करता है। ९. जो एक बार बहुत कुछ नष्ट या समाप्त होने की दशा में पहुँचकर भी फिर से बना या काम में आने के योग्य हुआ हो। जैसे—इस बीमारी में लड़के की नई जिंदगी हुई है या इसे नया जीवन मिला है। १०. जिसका क्रम या चक्र फिर से चलने लगा हो। जैसे—नया चद्रमा, नया वर्ष। ११. जो अपने वर्ग के दूसरों की तुलना में अभी हाल का या औरों के बाद का हो और जिसका नामकरण किसी पूर्ववर्ती के अनुकरण पर हुआ हो। (प्राय. बस्तियों, महल्लों आदि के नामों के संबंध में) जैसे—नई दिल्ली, नई बस्ती, नया बाजार। १२ ऐसा अजनबी या पराया जो पहले कभी न देखा गया हो। जैसे—नये आदमी को देखकर कुत्ते भूँकने लगते हैं (या लड़के घबरा जाते है)।
विशेष—यह शब्द सभी अर्थों में 'पुराना' का विपर्याय है।
नयापन—पुं० [हिं० नया+पन (प्रत्य०)]१. नये होने की अवस्था या भाव। नवीनता। नूतनत्व। २. कोई ऐसा नवीन गुण या विशेषता, जिसके फलस्वरूप किसी चीज में कोई चमत्कार या सौंदर्य उत्पन्न हो जाय।
नयाम—पु०[फा० नियाम] तलवार की म्यान। कोष।
नरंग—पुं०[स० नारंग] नारंगी का पेड़।
नरंघि—पु० [स० नर√धा (धारण)+कि, पृषो० मुम्] लौकिक या सांसारिक जीवन।

नरंधिप—पु० [स०] विष्णु।

नर—वि० [स०√नृ(नय)+अच्] १. जिसमे वे सब शारीरिक अवयव हो जो किसी विशिष्ट वर्ग के वीर्यवान् जीवो मे होते है। (रज युक्त जीवो को मादा कहते है) जैसे—नर व्यक्ति, नर हाथी। २ बहादुर। वीर। ३ जो अपने वर्ग मे सबसे बढकर, बडा या श्रेष्ठ हो। जैसे—नर हीरा।

पु० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। ३ अर्जुन। ४ एक प्रकार की देव-योनि। ५. पुराणानुसार एक ऋषि जिनके भाई का नाम नारायण था, और जो धर्मराज के पुत्र थे। ६. गय राक्षस का एक नाम। ७ पुरुष। मर्द। ८. नौकर। सेवक। ९ वह खूंटी जो छाया की दिशा, गति आदि जानने के लिए गाडी जाती है। लव। शकु। १०. दोहे का एक भेद जिसमे १५ गुरु और १८ लघु होते है। ११. छप्पय का एक भेद जिसमे १० गुरु और १३ लघु होते है। १२. एक प्रकार का क्षुप जिसे गधैल, राय-कपूर, रोहिस और सेधिया भी कहते है।

पुं० १.=नरकट। २=नल।

नरई—स्त्री० [?] १ वनस्पति का कोई ऐसा डठल जो अदर से खोखला या पोला हो। २. जलाशयो के पास होनेवाली एक प्रकार की घास।

नरकंत—पु०=नरकात (राजा)।

नरक—पु०[स०√नृ(क्लेश देना)+अच्] [वि० नारकीय] १ वह स्थान जहाँ मृत्यु के उपरात दुष्ट जीवो की आत्माओ को रहना तथा यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। (पुराण)

क्रि० प्र०—भोगना।

२. वहुत गदा और दुर्गंधपूर्ण स्थान। ३. ऐसा स्थान जहाँ अनेक प्रकार के कष्ट होते हो। ४ किसी चीज का वहुत ही गदा और मैला अश। ५ पुराणानुसार कलि के पौत्र का नाम जो कलि के पुत्र भय और पुत्री मृत्यु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और जिसने अपनी वहन यातना के साथ विवाह किया था। ६. विप्रचित्त दानव के एक पुत्र का नाम। ७ 'नरकासुर'।

पुं० [स०] राजा।

नरक-गति—स्त्री० [स० त०] वह दूषित कर्म जिसके फलस्वरूप नरक मे वास होता है। (जैन)

नरकगामी (मिन्)—वि० [सं० नरक√गम् (जाना)+णिनि] जिसे अपने पापो का फल भोगने के लिए नरक जाना पडे।

नरक-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जिस दिन घर का सारा कूडा-कतवार निकालकर बाहर फेंका जाता है।

विशेष—नरकासुर इसी दिन मारा गया था।

नर-कचूर—पु०=कचूर।

नरक-चौदस—स्त्री०=नरक-चतुर्दशी।

नरकट—पु० [हिं०] वेंत की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके डठल मजबूत किंतु खोखले होते है और अनेक प्रकार के कामो मे लाये जाते है।

नर-कटिया†—वि० स्त्री० [हिं० नार+काटना] नवजात शिशु को नाल काटनेवाली (स्त्री)।

स्त्री० चमारिन।

नरक-भूमिका—स्त्री० [प० त०] नरक। (जैन)

नरकल†—पुं०=नरकट।

नरकस—पु० =नरकट।

नरकस्था—स्त्री० [स० नरक√स्था (स्थित होना)+क—टाप्] वैतरणी नदी।

नरकांतक—पु० [स० नरक-अतक प० त०] विष्णु।

नरका—पु० [स० नरकट] हल के पीछे की वह नली जिसमे बोने के लिए बीज डाले जाते हैं।

नरकामय—पु० [स० नरक-आमय, व० स०] प्रेत।

नरकारि—पु० [स० नरक-अरि, प० त०] श्रीकृष्ण।

नरकावास—वि० [स० नरक-आवास, व० स०] नरक मे रहनेवाला।

पु० नरक मे होनेवाला वास या निवास।

नरकासुर—पु० [स० नरक-असुर मध्य स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जो पृथ्वी का एक पुत्र था तथा जिसे विष्णु ने प्रागज्योतिषपुर का राज्य दिया था। इसके अत्याचारो से क्षुब्ध होकर भगवान कृष्ण ने इसका सिर सुदर्शन से काटा था।

नरकी—वि०=नारकी।

वि० [स० नारकिन्] वहुत वडा पापी जो नरक मे जाने योग्य कर्म करता हो।

नरकुल—पु०=नरकट।

नर-केशरी—पु०[स० मयू० स०] १. वह जो पुरुषो मे सिंह के समान वीर और साहसी हो। २. विष्णु का नृसिंह अवतार।

नर-केसरी—पु० =नरकेशरी।

नर-केहरि—पु० [स० नर +हिं केहरि] नर केशरी (नृसिंह)।

नर-कौतुक—पु० [स० व० स०] कोई चमत्कारपूर्ण या जादू-भरा खेल।

नरखड़ा—पुं० [?] गला।

नर-गण—पु० [स० व० स०] उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ, पूर्वभाद्रपद, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा नक्षत्रो का एक गण जिसमे जन्म लेनेवाला बुद्धिमान् तथा सुशील होता है। (फलित ज्यो०)

नरगा—पु० [यू० नर्ग] १. शिकारी पशुओ को घेरने के लिए बनाया जानेवाला मनुष्यो का घेरा। २ जन-समूह। ३. विपत्ति।

नरगिस—स्त्री० [फा० नर्गिस] १ एक प्रकार का पौधा जो ठीक प्याज के पेड का-सा होता है। २. उक्त पौधे का फूल जो कटोरी के आकार का गोल तथा काला धब्बा लिये सफेद रग का होता है। ३ आँख जिसका उक्त फूल उपमान माना जाता है।

नरगिसी—वि० [फा० नर्गिस] १ नरगिस-सबधी। २ नरगिस के आकार-प्रकार, रूप-रग आदि का।

पु० १. पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा जिस पर नरगिस के फूलो के आकार की बूटियाँ होती थी। २. एक तरह का कबाब जो अडो पर कीमा चढाकर बनाया जाता है।

नरचा—पु० [स०] पटसन की एक जाति।

नरजना—अ० [फा० नाराज] नाराज होना।

स० [अ० नज़र से वि०] कोई चीज नापना या तौलना।

नरजा—पु० [हिं० नरजना] पलडा (तराजू का)।

नरजी—पु० [हिं० नरजना] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो। बया।

नरतक* —पु०=नर्तक।

नर-तात—पु० [सं० ष० त०] राजा।

नर-त्राण—पु० [सं० ष० त०] १. मनुष्यों का रक्षक, राजा। २. श्रीकृष्ण।

नरत्व—पु० [स० नर+त्व] नर होने की अवस्था, गुण या भाव। नरता।

नरदवा†—पु०=नरदमा।

नरद—स्त्री० [फा० नर्द] १ चौसर का खेल। २ चौसर खेलने की गोटी।

पु० [स० नर्द] नाद। शब्द।

नरदन—पु० [स० नर्दन] शब्द करने की किया या भाव।

नरदमा—पु० [?] नाबदान। पनाला।

नरवा†—पु०=नाबदान (पनाला)।

नर-दारा—पु० [स० नर और दारा] १. जनखा। हिजड़ा। २. वह जो पुरुष होने पर भी स्त्रियो के से हाव-भाव दिखाता या रूप-रग रखता हो। जनाना। ३. डरपोक व्यक्ति।

†स्त्री०=नर-नारि (द्रौपदी)।

नर-देव—पु० [स० उपमि० स०] १. राजा। २. ब्राह्मण।

नर-नाथ—पु० [स० उपमि० स०] नरदेव। (दे०)

नर-नायक—पु० [स० उपमि० स०] राजा।

नर-नारायण—पु० [स० द्व० स०] नर और नारायण नामक दो भाई जो प्रसिद्ध ऋषि हुए है और विष्णु के अवतार माने जाते हैं। (महाभारत)

नर-नारि—स्त्री० [स०] नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी।

नरनाह—पु० [स० नरनाथ] राजा।

नर-नाहर—वि० [स० नर+हिं० नाहर (सिंह)] जो पुरुषों में शेर के समान वीर और साहसी हो।

पु० नृसिंह नामक अवतार।

नरनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा।

नर-पति—पु० [स० ष० त०] राजा। नृपति।

नर-पद—पु० [स० ष० त०] १ जनपद। २. देश।

नर-पशु—वि० [स० उपमि० स०] जो मनुष्य होने पर भी पशुओ का-सा आचरण करता हो।

पु० १ आचार-विचार हीन व्यक्ति। २ नृसिंह नामक अवतार।

नरपाल—पु० [स० नर√पाल् (बचाना)+णिच्+अण्] राजा। भूपति।

नरपालि—पु० [स० नर√पाल्+णिच्+इन्] छोटा शख।

नर-पिशाच—पु० [स० उपमि० स०] मनुष्य होने पर भी जो पिशाचो के-से निकृष्ट कर्म करता हो। परम क्रूरतापूर्ण और हेय कर्म करनेवाला व्यक्ति।

नर-पुर—पु० [स० ष० त०] मनुष्य-लोक। पृथ्वी।

नर-प्रिय—पु० [स० ष० त०] नील का पेड।

नरबदा—स्त्री०=नर्मदा।

नरभक्षी (क्षिन्)—वि० [स० नर√भक्ष् (खाना)+इनि] मनुष्यो को खानेवाला।

पु० दैत्य। राक्षस।

नर-भू, नर-भूमि—स्त्री० [स० ष० त०] भारतवर्ष।

नरम—वि० [फा० नर्म] १. (पदार्थ) जिसमे कड़ापन न हो। जो दबाये जाने पर सहज मे दब सके। मुलायम। २. जिसमे उग्रता या कठोरता न हो। जैसे—नरम स्वभाव। कोमल। मृदुल। ३. पिलपिला या लचीला। ४. मंद। धीमा। ५. जल्द पचनेवाला। ६. जिसमें पौरुष या पुंसत्व न हो।

पु० [स० नर्मन्] १. हँसी-दिल्लगी। २. साहित्य मे, सखाओ का एक प्रकार या भेद। दे० 'नर्म-सचिव।'

नरमट—स्त्री० [हिं० नरम+मिट्टी] ऐसी जमीन, जिसकी मिट्टी नरम हो।

नरमदा—स्त्री०=नर्मदा।

नरम रोआँ—पु० [हिं० नरम+रोआँ] बुनाई के लिए भेंड-बकरियों का लाल या सफेद रग का रोआँ जो प्रायः बहुत मुलायम होता है।

नरम लोहा—पु० [हिं० नरम+लोहा] आग मे तपाया हुआ लोहा, जिसे पीटकर सहज मे दूसरा रूप दिया जा सकता है।

नरमा—स्त्री० [हिं० नरम] १. एक प्रकार का विदेशी पौधा जिसमे कपास होती है। २. उक्त पौधे की रूई। ३ सेमल की रूई।

पु० कान के नीचे का कोमल अश।

नरमाई—स्त्री०=नरमी।

नरमाना—स० [हिं० नरम+आना (प्रत्य०)] १. नरम अर्थात् कोमल या मुलायम करना। २. धीमा, मद्धिम या शात करना।

अ० १ नरम अर्थात् कोमल या मुलायम होना। २. धीमा, मद्धिम या शात होना।

नरमानिका—स्त्री०=नरमानिनी।

नरमानिनी—स्त्री० [स० नर√मन् (मनना)+णिनि—ङीप्] ऐसी स्त्री जिसके चेहरे पर मूँछ और दाढी के कुछ बाल हों।

नरमावड़ी—स्त्री० [हिं० नरमा] वन-कपास।

नरमाहट—स्त्री०=नरमी।

नरमी—स्त्री० [फा० नर्मी] १. नरम या नर्म होने की अवस्था, गुण या भाव। २. कठोरतापूर्ण व्यवहार न करने का गुण।

पद—नरमी से=शाति तथा ठढे स्वभाव से।

नर-मेध—पु० [स० ब० स०] १ प्राचीन काल मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ जिसमे मनुष्य के मास की आहुति दी जाती थी। २ बहुत अधिक मनुष्यो का प्राय. एक साथ होनेवाला सहार या हत्या।

नर-यंत्र—पु० [स०] ज्योतिष मे एक प्रकार का शकु-यत्र जिसकी सहायता से धूप की छाया देखकर समय का बोध होता था।

नरर्षभ—पु० [स० नर-ऋषभ स० त०] राजा।

नर-लोक—पु० [स० ष० त०] मनुष्य-लोक। मृत्यु-लोक। ससार।

नर-वध—पु० [स० ष० त०] मनुष्य को मार डालना। नर-हत्या।

नरवरी—स्त्री० [?] क्षत्रियों की एक जाति।

नरवा—पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

नरवाई—स्त्री० [?] घास-फूस।

नर-वाहन—पु० [स० मयू० स०] १. ऐसी सवारी जिसे मनुष्य खीचता या ढोता हो। जैसे—डोली, पालकी आदि। २. [ब० स०] कुबेर। ३ किन्नर।

नरवै*—पु०=नरपति (राजा)।

नर-व्याघ्र—पु० [स० उपमि० स०] १. वह जो मनुष्यो मे व्याघ्र की तरह वीर और साहसी हो। २ वह जो मनुष्यो मे परम श्रेष्ठ हो। ३. राजा। नृपति। ४. एक समुद्री जतु जिसका निचला भाग मनुष्य के आकार का और ऊपरी भाग सिंह के आकार का होता है।

नर-शक्र—पु० [स० उपमि० स०] राजा।

नरसल†—पुं०=नरकट।

नर-सार—पु० [स० ब० स०] नौसादर।

नरसिंग—पु० [?] एक प्रकार का विलायती फूल।

नरसिंगा—पु०=नरसिंहा।

नरसिंघ—पु०=नृसिंह।

नरसिंघा—पु० [हिं० नर=बड़ा+सिंघा] तुरही के आकार का फूँककर बजाया जानेवाला ताँबे का एक बाजा।

नर-सिंह—पुं० [स० उपमि० स०] =नृसिंह।

नरसिंह-ज्वर—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का ज्वर जो एक-एक दिन का नागा कर लगातार तीन-तीन दिन तक चढ़ा रहता है। (वैद्यक)

नरसिंह-पुराण—पु० [स० मध्य० स०] =नृसिंह पुराण।

नरसी मेहता—पु०[?] गुजरात के एक प्रसिद्ध भक्त (सवत् १४७२–१५३८ वि०) जो दिन-रात भगवान का कीर्तन किया करते थे।

नरसेज—पु० दे० 'तिधारा' (वृक्ष)।

नरसों—अव्य० [हिं० परसो का अनु०] १ परसो के बाद आनेवाले दिन मे। २. (बीते हुए) परसो के पहलेवाले दिन मे। दे० 'अतरसों'।

नर-हत्या—स्त्री० [प० त०] १. मनुष्य की हत्या। २. विधिक क्षेत्र मे, किसी के द्वारा अनजान मे होनेवाली मनुष्य की ऐसी हत्या जो कानून की दृष्टि मे विशेष अपराधपूर्ण नही होती। (होमीसाइड)

नरहर—स्त्री०[हिं० नल] पैर की वह हड्डी जो पिंडली के ऊपर होती है।

नर-हरि—पु० [स० उपमि० स०] नृसिंह भगवान जो दस अवतारो मे से चौथे अवतार हैं। नृसिंह (अवतार)।

नरहरी—पु० [स०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ और ५ के विराम से १९ मात्राएँ और अंत मे एक नगण और एक गुरु होता है।

नरहा†—पु० [देश०] एक प्रकार का जगली वृक्ष जिसे चिल्ला (देखें) भी कहते है।

नर हीरा—पु० [हिं० नर=बडा+हिं० हीरा] वह बड़ा हीरा जिसके छ या आठ पहल हो।

नरांतक—पु० [स० नर-अतक, प० त०] रावण का एक पुत्र जो युद्ध मे अगद के हाथो मारा गया था।

नरा—पु० [हिं० नल या नरकट] १ नरकट की वह छोटी नली जिसके ऊपर सूत लपेटा जाता है। २. खेत का वह गड्ढा जिसमे पानी भरा हो।

नराच—पु० [स० नाराच] १ तीर। बाण। २ चार चरणो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अत मे एक गुरु होता है। इसे पचचामर और नागराज भी कहते हैं।

नराचिका—स्त्री० [स०] छन्द शास्त्र मे वितान वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण, लघु और गुरु होता है।

नराज—वि०=नाराज।

नराजगी†—स्त्री०=नाराजगी।

नराजना—स० [हिं० नराज] अप्रसन्न या नाराज करना।
अ० अप्रसन्न या नाराज होना।

नराट—पु० [स० नरराट्] राजा।

नराधम—पु० [स० नर-अधम, स० त०] मनुष्यो मे अधम या नीच व्यक्ति। बहुत बडा अधम या नीच।

नराधार—पु० [स० नर-आधार, ष० त०] महादेव। शिव।

नराधिप—पु० [स० नर-अधिप, ष० त०] राजा।

नरायन†—पु० =नारायण (विष्णु)।

नराश, नराशन—वि० [स० नर√अश् (खाना)+अण्, नर-अशन ब० स०] मनुष्यो को खानेवाला।
पुं० राक्षस।

नरिंद*—पु०=नरेन्द्र (राजा)।

नरि†—स्त्री०=नदी। उदा०—दुसह जमुना नरि एलहु भाँगि।—विद्यापति।

नरियर—पु०=नारियल।

नरियरि—स्त्री०=नरेली।

नरियल†—पु०=नारियल।

नरिया—पु० [हिं० नाली] मिट्टी का एक प्रकार का खपडा जो मकान की छाजन पर रखने के काम मे आता है। यह अर्द्धवृत्ताकर और नली की तरह लबा होता है और इसे "थपुआ" खपडे की सधियो पर औंधाकर इसलिए रखते है कि उन सधियो मे से पानी नीचे न चूने पावे।

नरियाना—अ०=नर्राना।

नरी—स्त्री०[?] १. बकरी या बकरे का रँगा हुआ चमडा। २. लाल रग का चमड़ा। ३. सिझाया हुआ मुलायम चमडा।
स्त्री० [हिं० नल] १ नली। २ जुलाहो की ढरकी मे की वह नली जिस पर सूत लपेटा रहता है। नार। ३ जलाशयो के किनारे होनेवाली एक प्रकार की घास।
स्त्री० [फा०] =नरपन।
स्त्री० [स० नर=पुरुष] औरत। स्त्री।
पु० [?] एक प्रकार का बगला।

नरु*—पु० =नर (मनुष्य)।

नरुआ†—पु० [हिं० नल] [स्त्री० अल्पा० नरुई] अनाज के पौधो का पतला डठल जो अंदर से पोला होता है।

नरेंद्र—पु० [स० नर-इंद्र, प० त०] १. राजा। नरेश। २ वह जो बिच्छू, साँप आदि का विष दूर करने की कला या विद्या जानता हो। विष-वैद्य। ३. श्योनाक। सोना-पाढा। ४ सार नामक छद का दूसरा नाम।

नरेन्द्र-मंडल—पु० [प० त०] अँगरेजी शासन-काल मे देशी रियासतो के राजाओ की एक सस्था जो देशी रियासतो की हित-रक्षा के उद्देश्य से बनी थी। (चैम्बर ऑफ प्रिंसेज)

नरेतर—पु० [स० नर-इतर, प० त०] मनुष्य से भिन्न श्रेणी का प्राणी अर्थात् जानवर या पशु।

नरेवी—स्त्री० [?] शिवसागर और सिल्हट प्रदेशों में होनेवाला एक तरह का पेड़ जिसकी छाल से खाकी रंग निकलता है।
नरेली—स्त्री० [हिं० नारियल] १. छोटा नारियल। २. नारियल की खोपड़ी या उसका ऊपरी कड़ा आवरण। ३. नारियल की खोपड़ी का बना हुआ हुक्का।
नरेश—पुं० [सं० नर-ईश, ष० त०] मनुष्यों का स्वामी, राजा।
नरेश्वर—पुं० [सं० नर-ईश्वर, ष० त०] राजा।
नरेस—पुं०=नरेश।
नरों—अ० य०=नरसों (अतरसों)।
नरोत्तम—वि० [सं० नर-उत्तम, स० त०] नरों या मनुष्यों में उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ।
पुं० ईश्वर।
नर्क—पुं० दे० 'नरक'।
नर्कट†—पुं०=नरकट।
नर्कुटक—पुं० [सं०] नासिका। नाक।
नर्गिस—स्त्री० [फा०] नरगिस।
नर्गिसी—वि० [फा०] =नरगिसी।
नर्त—पुं० [सं०√नृत् (नाचना)+अच्] नर्तक।
नर्तक—पुं० [सं०√नृत्त+ण्वुल्—अक] [स्त्री० नर्तकी] १. वह जो नाचता या नृत्य करता हो। नाचनेवाला व्यक्ति। नचनियाँ। २. नट। ३. चारण। ४. खड्ग की धार पर नाचनेवाला व्यक्ति। केलक। ५. राजा। ६. महादेव। शिव। ७. पुराणानुसार एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति धोबी पिता और वेश्या माता से कही गई है। ८. हाथी। ९. महुआ। १०. नरकट।
नर्तकी—स्त्री० [सं० नर्तक+ङीष्] १. नाचने का पेशा करनेवाली स्त्री। २. नटी। ३. रंडी। वेश्या। ४. नली नामक गन्ध द्रव्य।
नर्तन—पुं० [सं० √नृत्+ल्युट्—अन] १. नाचने की क्रिया या भाव। २. नाच। नृत्य।
नर्तन-शाला—स्त्री० [सं० ष० त०] नृत्यशाला। नाचघर।
नर्तना*—अ० [सं० नर्तन] नाचना। उदा०—उरत कहूँ पायक मुमट कहूँ नर्तत नटराज।—केशव।
नर्तयिता (तृ)—पुं० [सं०√नृत्+णिच्+तृच्] १ नाचनेवाला। २. नाच सिखलानेवाला।
नर्तित—वि० [सं०√नृत्+णिच्+क्त] १. नचाया हुआ। २. नाचता हुआ। ३. जो नाच चुका हो या नचाया जा चुका हो।
नर्तु—पुं० [सं०√नृत्+तुन्] वह जो तलवार की धार पर नाचता हो।
नर्तू—स्त्री० [सं नर्तु+ऊङ्] १. नर्तकी। २. अभिनेत्री।
नर्द—स्त्री० [फा०] १. चौसर का खेल। २. चौसर की गोटी।
नर्दकी—स्त्री० [देश०] एक तरह की कपास। इसे कटील-निमरी और बगई भी कहते हैं।
नर्दन—पुं० [सं०√नर्द् (शब्द)+ल्युट्—अन] भीषण ध्वनि या नाद। गरज।
नर्दबाज—पुं० [फा० नर्दबाज] चौसर का खिलाड़ी।
नर्दबाजी—स्त्री० [फा०] १. चौसर का खेल। २. चौसर खेलने का व्यसन।
नर्दबान—पुं० [फा०] १. सीढ़ी, विशेषतः काठ की सीढ़ी। २. मार्ग। रास्ता।
नर्दमा—पुं० [हिं० नल] वह नल जिसमें से कीचड़ और मैला पानी बहता हो। गंदा नाला।
नर्दा†—पुं०=नर्दमा।
नर्दित—वि० [सं०√नर्द+क्त] १. गरजा हुआ। २. गरजता हुआ। पुं० १. एक तरह का पासा। २. पासा फेंकने का एक ढंग।
नर्बदा—स्त्री०=नर्मदा।
नर्म (न्)—पुं० [सं०√नृ (ले जाना)+मनिन्] १. परिहास। हँसी-ठट्ठा। मजाक। २. साहित्य, में नायक का ऐसा सखा जो हँसी-ठट्ठा करके उसे प्रसन्न रखता हो।
वि० दे० 'नरम'।
नर्मट—पुं० [सं० नर्मन्+अटन्, पृषो० सिद्धि] सूर्य।
नर्मठ—पुं० [सं० नर्मन्+ अठन्, पृषो० सिद्धि] १. वह जो परिहास आदि में कुशल हो। दिल्लगीबाज। ठठोल। २. स्त्री का उपपति या यार। ३. ठोड़ी। ४. स्तन।
नर्मद—वि० [सं० नर्मन्√दा (देना)+क] १. आनंद देनेवाला। २. सुख देनेवाला।
पुं० १. परिहास-प्रिय। दिल्लगीबाज। ठठोल। मसखरा। २ भाँड़।
नर्मदा—स्त्री० [सं० नर्मद+टाप्] १. अमर-कंटक से निकलनेवाली एक प्रसिद्ध नदी जो भड़ौच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है। २. पुराणानुसार एक गन्धर्व स्त्री जो केतुमती, वसुदा और सुन्दरी की माता थी। ३. असवर्ग या पृक्का नामक गन्ध-द्रव्य।
नर्मदेश्वर—पुं० [सं० नर्मदा-ईश्वर, मध्य० स०] एक प्रकार के अंडाकार शिव-लिंग जो नर्मदा नदी में से निकलते हैं।
नर्म-द्युति—स्त्री० [सं०] नाट्यशास्त्र के अनुसार प्रतिमुख संधि के तेरह अंगों में से एक।
नर्म-सचिव, नर्म-सुहृद्—पुं० [सं० स० त०] राजा का वह सखा जो उसका मन बहलाने और उसे हँसाने के लिए उसके साथ-साथ रहता हो। विदूषक।
नर्मी—स्त्री० =नरमी।
नर्राना—अ० [हिं० नला (गले का)] गला फाड़कर चिल्लाना।
नर्री—स्त्री० [?] १. एक प्रकार की बारहमासी घास जो ऊसर जमीन में भी होती है। २. हिमालय में होनेवाला एक प्रकार का बाँस।
नल—पुं० [सं० नाल] [स्त्री० अल्पा० नली] १. ऐसा वर्तुलाकार लंबा खंड या रचना जिसका भीतरी भाग खोखला या पोला हो और जिसके अंदर एक सिरे से दूसरे सिरे तक चीजें आती-जाती हों। जैसे—घरों में पानी पहुँचाने का (धातु का) नल। २. जल-कल का वह सिरा जिसमें टोंटी लगी होती है और जिसका पेंच दबाने या घुमाने से पानी निकलता है। जैसे—नल के पानी से कूएँ का पानी अच्छा होता है।
पद—नल-कूप। (देखें)
३. आधुनिक नगरों आदि में उक्त आकार-प्रकार की वह वास्तु-रचना जिसमें से होकर घरों का मल-मूत्र और गंदा पानी नगर के बाहर कहीं दूर ले जाकर गिराया या पहुँचाया जाता है। नाला। ४. पेड़,

के अदर की वह नाली जिसमे होकर पेशाब नीचे उतरता है। नला।

मुहा०—नल टलना=किसी प्रकार के आघात आदि के कारण पेशाव की उक्त नाली मे किसी प्रकार का व्यतिक्रम होना जिससे पेट मे वहुत पीड़ा होती है।

पुं० [स०√नल् (महँकना, बाँधना)+अच्] १. नरकट। २. कमल। ३. निषध देश के चद्रवशी राजा वीरसेन के एक पुत्र जिनका विवाह विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री दमयती से हुआ था। (साहित्य मे, इन पति-पत्नी के सबध मे अनेक आख्यान और कथाएँ प्रसिद्ध है) ५ राम की सेना का एक वदर जो विश्वकर्मा का पुत्र था तथा जिसने पत्थरो को तैराकर रामचद्र की सेना के लिए समुद्र पर पुल बाँधा था। ६. एक दानव का नाम जो विप्रचित्ति का चौथा पुत्र था और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ७ यदु के एक पुत्र का नाम। ८. प्राचीन क़ाल का (धौसे की तरह का) एक प्रकार का वाजा जो युद्ध के समय घोड़े की पीठ पर रखकर वजाया जाता था।

*पु० [स० नर] आदमी। उदा०—कहहिं कबीर नल अजहुँ न जागा।—कबीर।

नलक—पु० [स० नल√कै (मालूम पड़ना)+क] शरीर की कोई लवी हड्डी।

नलका†—पु० [हिं० नल] १ एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से जमीन मे से पानी ऊपर खीचा जाता है। (पश्चिम) २ वह नल जिसमे से नहाने, पीने आदि का पानी घरो मे पहुँचता है। ३. वड़ी नली। नल।

नलकिनी—स्त्री० [स० नलक+इनि—ङीप्] १. जाँघ। रान। २ घुटना। जानु।

नलकी—स्त्री० [हिं० नलका] १. छोटा नल। नली। २ हुक्के के पेचवान, सटक आदि का वह अगला भाग जिसे मुँह मे लगाकर धूआँ खीचा जाता है।

नल-कूप—पु० [हिं० नल+स० कूप] एक विशेप प्रकार का आधुनिक यत्र जिसके द्वारा सिंचाई के लिए जमीन के अदर से पानी निकाला जाता है। (ट्यूववेल)

नल कूबर—पु० [स०] १. कुवेर का एक पुत्र। (महाभारत) २ ताल का एक भेद जिसमे चार गुरु और चार लघु मात्राएँ होती है।

नलकोल—पु० [देश०] एक तरह का वैल।

नल दंवु—पु० [स०] नीम (पेड)।

नलद—पु० [स० नल√दो (टुकडा करना)+क] १. पुष्प रस। मकरद। २. जटामासी। वालछड। ३ उशीर। खस।

नलदा—स्त्री० [स०] जटामासी। वालछड।

नलनी*—स्त्री०=नलिनी।

नलनीरुह—पु०=नलिनीरुह।

नलपुर—पुं० [स०] वौद्ध ग्रथो मे उल्लिखित एक प्राचीन नगर।

नलबाँस—पु० [हिं० नल+वाँस] हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का बाँस जिसे विधुली और देववाँस (देखें) भी कहते हैं।

नलमीन—पु० [स०] झीगा मछली।

नलवा—पु० [हिं० नल] १ वाँस की टोटी जिससे वैलो को घी पिलाया जाता है। चोगा। २. वाँस आदि की कोई वडी और मोटी नली।

नलवाही—वि० [स० नाल+वाहिन्] वदूक धारण करनेवाला। पु० सिपाही।

नल-सेतु—पु० [स० मध्य० स०] नल नामक वदर का वनाया हुआ वह पुल जिस पर से रामचद्र की सेना ने लका प्रवेश के समय समुद्र पार किया था।

नला—पुं० [हिं० नल] १ वहुत वड़ा नल। नाली। २ पेडू के अंदर की वह नाली जिसमे से होकर पेशाव नीचे उतरता है।

मुहा०—नला टलना=आघात आदि के कारण पेशाव की उक्त नाली का अपने स्थान से खिसक जाना जिसके फलस्वरूप पीडा होती है।

३ हाथ और पैर की वे लवी हड्डियाँ जो वडी नली के आकार की होती है।

नलाना—स०=निराना।

नलाई—स्त्री०=निराई (खेत की)।

नलिका—स्त्री० [स० नल+ठन्—इक, टाप्] १. नल के आकार की कोई वर्तुलाकार, पोली, लवी चीज। चोंगी। नली। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिसके विषय मे कुछ लोगो का अनुमान है कि यह आज-कल की वदूक की तरह का होता था और इसके द्वारा लोहे की वहुत छोटी-छोटी गोलियाँ या तीर छोडे जाते थे। ३ तीर रखने का तरकश। तूणीर। ४.करेमू नामक साग। ५ पुदीना। ६ प्राचीन भारतीय वैद्यक मे एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से जलोदर के रोगी के पेट मे का पानी वाहर निकाला जाता था। ७ मूँगे की तरह का एक प्रकार का गध-द्रव्य जो वैद्यक मे कृमि, अर्श और शूल रोग का नाशक तथा मलशोधक माना जाता है।

नलित—पु० [स०√नल् (बाँधना)+क्त] एक तरह का साग जो वैद्यक मे पित्तनाशक और शुक्रवर्धक माना गया है।

नलिन—पु० [स०√नल्+इनच्] [स्त्री० अल्पा० नलिनी] १ पद्म। कमल। २. नीलिका। नील। ३ जल। पानी। ४ नीम। ५. करौंदा। ६ सारस पक्षी। ७ नाडिका नामक साग।

नलिनी—स्त्री० [स० नल+इनि—ङीप्] १ कमलिनी। कमल। २. वह देश या स्थान जहाँ कमल अधिकता से होते हो। ३. नदी। ४. पुराणानुसार गगा नदी की एक धारा या शाखा। ५ एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य। ५ नाक का वायाँ नथना। ७. नारियल की शराव। ८ सेमल की फली जो लाल रग की और रुई से भरी हुई होती है। ९ एक तरह का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच-पाँच सगण होते हैं।

नलिनीनंदन—पु० [स० नलिनी√नन्द् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्यु—अन] कुवेर का उपवन।

नलिनीरुह—पु० [स० नलिनी√रुह (उत्पत्ति)+क] १ कमल का नाल। मृणाल। २ ब्रह्मा, जो कमल की नाल से निकले हुए माने जाते हैं।

नलिनेशय—पु० [स० नलिने√शी (सोना)+अच्] ब्रह्मा।

नलिया—पु० [हिं० नल] वहेलिया जो नली की सहायता से तोते आदि पक्षी पकडता है।

नली—स्त्री० [स०√नल्+अच्—ङीप्] १ मैनसिल। २ नलिका नाम का गन्ध-द्रव्य।

नवधा-अंग—पु० [स० सहसुपा स०] शरीर के ये नौ अग, दो आँखें, दो कान, दो हाथ, दो पैर, और एक नाक।

नवधा-भक्ति—स्त्री० [स० सहसुपा स०] १ भक्ति के ये नौ प्रकार—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन। २. उक्त नवो प्रकारो से की जानेवाली भक्ति।

नवन†—पु०=नमन।

नवना—अ० [स० नमन] १ नत होना। झुकना। २ किसी के सामने नम्र या विनीत होना।

नवनि*—स्त्री० [स० नमन] १ झुकने की क्रिया या भाव। २ नम्रता। विनय।

नव-निधि—स्त्री० [स० द्विगु स०] कुवेर की ये नौ निधियाँ—पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप, मुकुद, कुद, नील और खर्व।

नवनी—स्त्री० [स० नव√नी (ले जाना)+ड—डीष्] नवनीत।

नवनीत—पु० [स०√नी+क्त, नव-नीत, ष० त०] १ मक्खन। २ श्रीकृष्ण।

नवनीतक—पु० [स० नवनीत+कन्] १ घृत। घी। २ मक्खन।

नवनीत-गणप—पु० [स० उपमि० स०] एक गणपति। (पुराण०)

नवनीत-धेनु—स्त्री० [स० मध्य० स०] मक्खन की वह ढेरी जो धेनु के रूप मे मान कर दान दी जाती है।

नव-पत्रिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] केले, अनार, धान, हलदी, मानकच्चू, कच्चू, वेल, अशोक और जयती इन नौ वृक्षो की पत्तियाँ।

नव-पद—पु० [सं० व० स०] जैनो की एक उपास्य मूर्ति।

नवपदी—स्त्री० [स० व० स०, डीप्] चौपाई या जनकरी छद का एक नाम।

नव-प्रसूत—वि० [स० कर्म० स०] नव-जात।

नव-प्राशन—पु० [स० ष० त०] नई फसल का अन्न या फल पहली वार खाना।

नवफलिका—स्त्री० [स० व० स०, कप्, टाप्, इत्व] नवकलिका।

नव-भक्ति—स्त्री० [स० मध्य० स०] दे० 'नवधा-भक्ति'।

नवम—वि० [स० नवन्+डट्—मट्] नौ के स्थान पर पडनेवाला। नवाँ।

नव-मल्लिका—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ चमेली (पौधा और उसका फूल)। २ नेवारी (पौधा और फूल)।

नवमांश—पु० [स० नवम-अश, कर्म० स०] १ किसी पदार्थ का नवाँ अश या भाग। २ दे० 'नवाश'।

नव-मालिका—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक एक नगण, जगण, भगण, और यगण होता है। इसे 'नव-मालिनी' भी कहते है। २ नेवारी (पौधा और फूल)।

नव-मालिनी—स्त्री० [स० कर्म० स०]=नवमल्लिका।

नव-युवक—पु० [स० कर्म० स०] [स्त्री० नवयुवती] जो अभी हाल मे युवक हुआ हो। नौजवान। तरुण।

नव-युवती—स्त्री० [स० कर्म० स०] नौजवान स्त्री। तरुणी।

नव-युवा (वन्)—पु०=नवयुवक।

नव-योनिन्यास—पु० [स०] तत्र मे एक प्रकार का न्यास।

नव-यौवन—पु० [स० कर्म० स०] नई जवानी।

नव-यौवना—स्त्री० [सं० व० स०, टाप्] वह स्त्री, जिसमे युवावस्था के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे हो। नौजवान स्त्री।

नव रंग—वि० [स० नव और रग] १ नवीन अथवा निराली शोभा-वाला। सुदर। २ नये ढग का। नवेला।
पु०=नारगी।

नवरंगी—वि० [हिं० नवरग] १ सुदर। २. रगीला।
स्त्री०=नारगी।

नव-रत्न—पु० [स० द्विगु स०] १ मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनियाँ, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २. गले मे पहनने का एक प्रकार का हार जिसमे उक्त नौ प्रकार के अथवा अनेक प्रकार के रत्न जड़े होते हैं। ३ धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, वेताल भट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि इन नौ महान् व्यक्तियो की सामूहिक सज्ञा।
विशेष—किवदती के अनुसार ये महाराज विक्रमादित्य की सभा के सदस्य माने जाते हैं। परतु ऐतिहासिक तथ्यो के अनुसार यह वात अप्रामाणिक सिद्ध होती है।
४. एक प्रकार की मीठी चटनी जो कई तरह के मसालो के योग से वनती है।

नव-रस—पु० [स०] हिन्दी साहित्य मे, श्रृगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शात ये नौ प्रकार के रस।

नवरा†—वि०=नेवला।
वि०=नवल।

नवराता†—पु०=नौराता (नवरात्र)।

नवरात्र—पु० [स० नवन्-रात्रि, द्विगु स०,+अच्] १. नौ दिनो का समय। २ नौ दिनो मे समाप्त होनेवाला एक तरह का यज्ञ। ३ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन। वसती नवरात्र। ४ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन। शारदीय नवरात्र।
विशेष—उक्त वसती और शारदीय नवरात्रो मे दुर्गा का व्रत तथा पूजन किया जाता है।

नवल—वि० [स०] १. नया। नवीन। २ ऐसा नया या नवीन जिसमे कोई नया आकर्पण या नई विशेपता हो। अनोखा और वढिया। ३. नव-युवक। जवान। ४ उज्ज्वल।। स्वच्छ।
पु० [अ० नैवेल] वह भाडा जो सामान ढोने के वदले मे जहाज के अधिकारी लेते है।

नवल-अनंगा—स्त्री० [स०] मुग्धा नायिका का एक भेद। (केशव)

नवल-किशोर—पु० [स०] श्रीकृष्णचद्र।

नवल-वधू—स्त्री० [स०] दे० 'नवल-अनगा'।

नवला—स्त्री० [स०] जवान स्त्री। तरुणी। युवती।

नवलेवा—पु० [स० नव+हिं० लेवा=कीचड का लेप] वह कीचड जो वढी हुई नदी के उतरने पर वच रहता है। नदी के किनारे की दलदल।

नववरि (री)*—स्त्री० दे० 'निछावर'।

नव-वर्ष—पु० [स० कर्म० स०] १ नया वर्ष। २. नये वर्ष के आरंभिक दिन।

नव-वल्लभ—पु० [स०] अगर नामक गन्ध-द्रव्य का एक भेद।

नव-वासुदेव—पु० [स० मध्य० स०] त्रिपृष्ठ, द्विपष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, सिंहपुरुष, पुडरीक, दत्त, लक्ष्मण और श्रीकृष्ण ये नौ वासुदेव। (जैन)

नव-वास्तु—पु० [स० व० स०] वैदिक काल के एक राजर्षि।

नव-विंश—वि० [स० नवविंशति+डट्], उन्तीसवाँ।

नव-विंशति—वि०[स० मध्य०स०] बीस और नौ। तीस से एक कम। पु० उक्त के सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२९।

नव-विष—पु०[स० द्विगु स०] वत्सनाभ, हारिद्रिक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृगक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र ये नौ प्रकार के विष।

नव-शक्ति—स्त्री०[स० मध्य०स०] प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा ये नौ शक्तियाँ। (पुराण)

नव-शायक—पु०[स० मध्य०स०] ग्वाला, माली, तेली, जुलाहा, हलवाई, बरई, कुम्हार, लोहार और हज्जाम ये नौ जातियाँ। (पाराशर सहिता)

नव-शिक्षित—वि०[स० कर्म०स०] [स्त्री० नव-शिक्षिता]१. जिसने अभी हाल मे कुछ पढना-लिखना सीखा हो। २. नवीन शिक्षा पद्धति के अनुसार जिसे शिक्षा मिली हो।

नव-शोभ—वि०[स० ब०स०] नई शोभावाला।

नव-संगम—पु०[स० कर्म०स०]१ नया मिलन। २. पति और पत्नी की प्रथम भेंट या समागम।

नवसत—वि०[हिं० नव=नौ+सात] जो गिनती मे नौ और सात अर्थात् १६ हो।
पु० स्त्रियो के होनेवाले सोलहो श्रृंगार।

नव-सप्त (न्)—पु०[स० द्व०स०]=नवसत।

नवसर—पु०[हिं० नौ+सर=लडी] एक प्रकार का हार जिसमे नौ लड़ियाँ होती है।
वि०[स० नव-वत्सर] नई उमर का। नव वयस्क।
†पु०=नौसर।

नवससि*—पु०[स० नव-शशि] नया अर्थात् दूज का चद्रमा।

नवसिखा*—वि०, पु०= नौसिखुआ।

नवाँ—वि०[स० नव] नौ के स्थान पर पडनेवाला।

नवांग—पु०[स० नवन्-अग, मध्य०स०] सोठ, पीपल, मिर्च, हड, बहेडा आँवला , चाव, चीता और वायविडग ये नौ पदार्थ।

नवांगा—स्त्री०[ब०स०] काकडासिंगी।

नवांश—पु०[स० नव-अंश, कर्म० स०]१. किसी पदार्थ का नवाँ भाग। नवमाश। २. फलित ज्योतिष, मे एक राशि का नवाँ भाग जिसका विचार किसी नवजात बालक के चरित्र, आकार और चिह्न आदि निश्चित करने मे होता है।

नवा—वि०[स्त्री० नवी]=नया।
पु०[फा०]१ आवाज। शब्द। २. गाना-बजाना। सगीत।

नवाई—स्त्री०[हिं० नवना]१ नवने अर्थात् झुकने की क्रिया या भाव। नमन। २ किसी के आगे नम्र या विनीत होना।
स्त्री०[स० नव=नया] नयापन। नवीनता।
वि०=नवा (नया)।

नवागत—वि०[स० नव-आगत, कर्म०स०]१. नया आया हुआ। २. जो अभी आया हो। जैसे—नवागत अतिथि। ३. जिसका आविर्भाव अभी हाल मे हुआ हो। जो कुछ ही पहले अस्तित्व मे आया हो। जैसे—नवागत सेना अर्थात् नई भरती की हुई सेना।

नवाजना—स० [फा० नवाजिश] अनुग्रह या कृपा करना।

नवाजिश—स्त्री०[फा० नवाज़िश] अनुग्रह। कृपा। मेहरबानी।

नवाडा—पुं०[हिं० नाव]१. एक प्रकार की छोटी नाव। २. बीच धारा मे नाव को इस प्रकार खेना कि वह चक्कर खाने लगे।

नवान†—पु०=नवान्न।

नवाना—स०[सं० नवन्]१. झुकाना। जैसे—किसी के आगे सिर नवाना। २ किसी को नम्र या विनीत होने मे प्रवृत्त करना।

नवान्न—पु०[स० नव-अन्न, कर्म०स०]१. फसल का नया आया हुआ अनाज। २. ताजा पका या बना हुआ अन्न। ३ एक प्रकार का श्राद्ध जिसमे नया उपजा हुआ अन्न पितरो के नाम पर दिया या बाँटा जाता था। ४. पहले-पहल नई फसल का अन्न मुंह लगाने अर्थात् खाने की क्रिया या भाव।

नवाब—पु०[अ०नव्वाब]१ बादशाह की ओर से नियुक्त किसी प्रदेश का प्रधान शासक। २ किसी प्रदेश का मुसलमान शासक। जैसे—रामपुर के नवाब। ३. मुसलमान रईसो को अँगरेजी शासन की ओर से मिलनेवाली एक उपाधि। ४ आवश्यकता से अधिक अपना अधिकार, ठाठ-बाट या प्रभुत्व दिखलानेवाला व्यक्ति। (व्यग्य)

नवाबजादा—पु०[अ० नव्वाब+फा० जाद:]१. नवाब का पुत्र। नवाब का बेटा। २. वह जो बहुत बडा शौकीन हो तथा रईसो की तरह रहता हो।

नवाबपसंद—पु०[फा०]१. भादो के अतिम और क्वार के आरंभिक दिनो में होनेवाला एक प्रकार का धान। २. उक्त धान का चावल जो बढिया होता है।

नवाबी—वि०[हिं० नवाब+ई]१. नवाबो का। जैसे—नवाबी शासन। २. नवाबो के रग-ढग जैसा। नवाबो के अनुकरण पर किया हुआ। जैसे—नवाबी शान।
स्त्री०१ नवाब होने की अवस्था या भाव। २. नवाब का कार्य या पद। ३ नवाबो का शासन-काल। ४. नवाबो की तरह ठाठ-बाट से रहने और खूब खरच करने की अवस्था या भाव। ५. नवाबो का सा मनमाना आचरण और ठसक या हुकूमत।
पु० पुरानी चाल का एक प्रकार का बढिया कपडा।

नवाभ्युत्थान—पु०[स० नव-अभ्युत्थान, कर्म०स०] नया अर्थात् दोबारा होनेवाला उत्थान।

नवार†—वि०=नया।

नवारना—अ०[?]१. चलना। टहलना। २. यात्रा या सफर करना।
स०=निवारना (निवारण करना)।

नवारा—पु०=नवाड़ा।

नवारी —स्त्री०=नेवारी (पौधा और उसका फूल)।

नवार्चि (स्)—पुं०[स०] मगल ग्रह।

नवासा—पु०[फा० नवास.] बेटी का बेटा। नाती।

नवासी—वि०[सं० नवाशीति] जो संख्या मे अस्सी से नौ अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—८९
†स्त्री० हिं० 'नवासा' का स्त्री०।

नवाह—पु०[स०] चाद्र मास के किसी पक्ष का नया दिन।
पु० [स० नवाह्न] नौ दिनो का समूह।
वि० नौ दिनो तक चलता रहने या नौ दिनो मे पूरा होनेवाला। जैसे—भागवत या रामायण का नवाह पाठ।
पु०[अ०] आस-पास या चारो ओर का क्षेत्र, प्रदेश या स्थान।

नवि—अव्य०=नही। उदा०—मारूँ नवि काढूँ मगर, यही भाव मन आणिया।—जटमल।

नविश्ता—वि०[फा० नविश्त.] लिखा हुआ। लिखित।

नवी†—स्त्री०=नोई (वछड़े के गले मे वाँधने की रस्सी)।
वि०[फा०]१ नवीन। २. आधुनिक। ३ पाश्चात्य।

नवीन—वि०[स० नव+ख—ईन] [भाव० नवीनता]१. जो अभी का या थोडे समय का हो। नया। नूतन। 'प्राचीन' का विपर्याय। २ जो पहले-पहल या मूल रूप मे वना हो। जैसे—नवीन आदर्श। ३. अपूर्व और विचित्र या विलक्षण। अनोखा। ४. तरुण। नव-युवक।

नवीनता—स्त्री०[सं० नवीन+तल्—टाप्] नया होने की अवस्था या भाव। नूतनता।

नवीनीकरण—पु०[स० नवीन+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १ नवीन रूप देने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज या वात की अवधि समाप्त होने पर उसे फिर से नियमित तथा वैध नया रूप देना या उसकी अवधि वढाना। (रिन्यूअल)

नवीस—वि०[फा०] समस्त पदो के अत मे, लिखनेवाला। लिपिक। जैसे—अर्जी नवीस।

नवीसी—स्त्री०[फा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद—पुं०[स० निवेदन से फा०]१ शुभ सूचना। २ निमत्रण। ३ निमत्रण-पत्र।

नवेरड़ा†—वि०[स्त्री० नवेरडी] नवेला।

नवेला—वि०[स० नव] [स्त्री० नवेली] १ नवीन और सुन्दर। २ जिसमे औरो से अधिक कोई विशेपता हो और इसी लिए जो दूसरो से अच्छा या वढा-चढा समझा जाता हो।

नवैयत—स्त्री०[अ०] किसी वस्तु की विशिष्टता सूचित करनेवाला प्रकार या भेद। जैसे—इस वैनामे मे खेत (या जमीन) की नवैयत तो लिखी ही नही है; अर्थात् यह नही लिखा है कि वह किस प्रकार या वर्ग की है।

नवोढ़—वि०[स० नव-ऊढ, कर्म० स०] [स्त्री० नवोढा] जिसका विवाह हाल मे हुआ हो।
पु०१. विवाहित पुरुष। २ नौजवान आदमी। नवयुवक।

नवोढ़ा—स्त्री०[स० नवा-ऊढा, कर्म०स०]१. नव-विवाहिता स्त्री। वधू। २ नौजवान स्त्री। नव-युवती। ३ साहित्य मे नव-विवाहिता लज्जा-शीला नायिका, जिसे आचार्यो ने मुग्धा का और कुछ ने ज्ञातयौवना का एक स्वतन्त्र भेद माना है।

नवोदक—पु०[स० नव-उदक, कर्म०स०]१ नया जल अर्थात् पहली वर्षा का जल अथवा नया कूआँ खोदने पर उसमे से पहले-पहल निकाला जाने-वाला जल।

नवोद्धृत—वि०[स० नव-उद्धृत, कर्म० स०] नया उद्धृत किया हुआ।
पु० मक्खन।

नव्य—वि०[स० नव+यत्] १. नया। नवीन। २ आधुनिक। ३. जिसके आगे नमन करना उचित हो।
पु० लाल गदहपूरना।

नव्वाव—पु०=नवाव।

नव्वावी—वि०, स्त्री०=नवावी।

नशन—पु०[सं०√नश (नाश होना)+ल्युट्—अन] नष्ट होना। नाश। विनाश।

नशना—अ०[स० नशन] नष्ट होना।
स०=नाशना (नष्ट करना)।

नशा—पु०[फा० नश्श]१. वह मानसिक विकृति जो अफीम, गाजा, भाँग, शराव आदि मादक द्रव्यो का सेवन करने से उत्पन्न होती है। मादक द्रव्यो का उपयोग या व्यवहार करने पर उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमे मनुष्य वदहवास हो जाता है।
विशेष—ऐसी स्थिति मे मनुष्य थोडे समय के लिए प्राय. कष्ट और दु ख भूलकर निश्चित और मस्त हो जाता है, ज्ञान अथवा वुद्धि पर उसका नियत्रण शिथिल पड जाता है, मानसिक सतुलन विगड जाता है, वह ऐसे काम या वातें करने लगता है, जो साधारण स्थिति मे नही होते। नशे की मात्रा वढने पर आदमी वेहोश हो जाता है और कुछ अवस्थाओ मे मर भी सकता है। यह कुछ समय के लिए शारीरिक क्लाति दूर करके मन मे नई-नई उमगें पैदा करता है।
क्रि० प्र०—उतरना।—चढना।—जमना।—टूटना।
मुहा०—नशा किरकिरा होना=कोई अप्रिय घटना या वात होने पर नशे के आनद या मस्ती मे वाधा पड़ना। नशा हिरन हो जाना=कोई विकट घटना या वात होने पर नशा विलकुल दूर हो जाना।
२ वह पदार्थ जिसके सेवन से मनुष्य की उक्त प्रकार की मानसिक स्थिति होती हो। मादक द्रव्य। ३. कोई मादक पदार्थ सेवन करते रहने की प्रवृत्ति या वान। ४ किसी प्रकार के अधिकार, प्रवृत्ति, वल मनोविकार आदि की अधिकता, तीव्रता या प्रवलता के कारण उत्पन्न होनेवाली उक्त प्रकार की अनियत्रित अथवा असंतुलित मानसिक अवस्था। मद। जैसे—जवानी, दौलत या मुहव्वत का नशा!
मुहा०—(किसी का) नशा उतारना=कष्ट, दड आदि देकर घमड या मद दूर करना।
५ ऐसी स्थिति जिसमे मनुष्य आनन्दपूर्वक किसी धुन मे लगा रहना चाहता हो। मस्ती।

नशाखोर—पुं०[फा० नश्श+खोर][भाव० नशाखोरी] वह जो किसी मादक पदार्थ का सेवन करता हो।

नशाना—स०[स० नाशन] नष्ट करना। वरवाद करना।
अ०१ नष्ट होना। २ खो जाना। गुम होना।
†पु०=निशाना।

नशावन—वि०[स० नाश] नष्ट या नाश करनेवाला।

नशीन—वि०[फा० नशी] [भाव० नशीनी]१ समस्त पदो के अत मे,

बैठनेवाला। जैसे—तख्तनशीन (तख्त पर बैठनेवाला)। २. स्थित।
नशीनी—स्त्री०[फा०] नशीन अर्थात् बैठे हुए या स्थित होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—तख्तनशीनी।
नशीला—वि०[फा० नशश.+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नशीली]१. (पदार्थ) जिसके सेवन से नशा चढता हो। मादक। २ (व्यक्ति) जो किसी मादक पदार्थ के प्रभाव से बेसुध या मस्त हो। ३. (शारीरिक अग) जिसमे मादक वस्तु के सेवन के फलस्वरूप कोई विकार दृष्टि-गोचर हो रहा हो। जैसे—नशीली आँखें।
नशेड़ी†—वि०[हिं० नशा, भँगेडी का अनु०] नशेबाज।
नशेब—पु०[फा० निशेब]१. नीची भूमि। २ निचाई।
नशेबाज—पु०[अ० नश्श +फा० बाज] [भाव० नशेबाजी] जो अभ्यास-वश कोई नशा किया करता हो। जिसे कोई मादक पदार्थ सेवन करने की आदत पडी हो।
नशोहर—वि०[स० नाश+हिं० ओहर] नाश करनेवाला। नाशक।
नश्तर—पु०[फा० निश्तर]१. वह उपकरण जिससे शारीरिक अगो की चीर-फाड की जाती है।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
२. लोहे की वह बडी धारदार पट्टी जिसकी सहायता से दफ्तरी लोग कागज काटते है।
नश्यत्प्रसूतिका—स्त्री०[स० नश्यन्ती-प्रसूति, ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] वह प्रसूता या जच्चा जिसका बच्चा मर गया हो।
नश्र—पु०[अ०]१ मृतक का पुन जीवित होना। २ किसी बात का चारो ओर फैलाया जाना । प्रसार।
नश्वर—वि०[स० √नश्+क्वरप्] [भाव० नश्वरता] जिसका किसी दिन नाश होने को हो। जो सदा बना न रह सकता हो। नाश वान्।
नश्वरता—स्त्री०[स० नश्वर+तल्—टाप्] नश्वर होने की अवस्था या भाव।
नष†—पु०=नख।
नषत*—पु०=नक्षत्र।
नषना—स०[म० नक्ष]१ फेंकना। २ डालना। ३ रोकना।
नष-शिष*—पु०=नख-शिख।
नष्ट—वि०[स० √नश्+क्त]१. जो आँखो से ओझल हो गया हो। २. जो दिखाई न देता हो। अदृश्य। ३ जो इस तरह टूट-फूट या बिगड गया हो कि फिर काम मे न आ सके। चौपट। बर-बाद। जैसे—बाढ मे बहुत से गाँव नष्ट हो गये। ४. जो मर या मिट चुका हो। जैसे—हमारी कई पीढियाँ गुलामी मे नष्ट हो चुकी हैं। ५. जो पूरी तरह से निष्फल या व्यर्थ हो गया हो। जैसे—तुमने हमारा सारा परिश्रम नष्ट कर दिया। ६ (व्यक्ति) जिसका चरित्र बहुत अधिक भ्रष्ट हो चुका हो। पतित और हीन। ७ धन-हीन। दरिद्र। पु०१ नाश। विनाश। २ अदृश्य या तिरोहित होना।
नष्ट-चंद्र—पु०[कर्म० स०] भादो के दोनो पक्षो की चतुर्थी तिथियों के चद्रमा जिनके दर्शन का निषेध है। कहते हैं कि उक्त तिथियो मे चन्द्रमा का दर्शन करने पर कलक लगता है।
नष्ट-चित्त—वि०[ब०स०]१ जिसका विवेक नष्ट हो चुका हो। २. मद से उन्मत्त या बेसुध।
नष्ट-चेत (स्)—वि०[ब०स०] बे-सुध। बे-होश।
नष्ट-चेष्ट—वि०[ब०स०] जिसकी चेष्टाएँ करने की शक्ति नष्ट हो चुकी हो। जो कोई चेष्टा न कर सकता हो। चेष्टाहीन। निश्चेष्ट।
नष्टचेष्टता—स्त्री०[स० नष्टचेष्ट+तल्—टाप्]१. नष्टचेष्ट होने की अवस्था या भाव। २ बेहोशी। मूर्च्छा। ३. साहित्य मे, एक प्रकार का सात्त्विक भाव जिसमे व्यक्ति ध्यान या प्रेम मे लीन होकर निश्चेष्ट हो जाता है।
नष्ट-जन्मा (न्मन्)—पु०[ब०स०] जारज। दोगला।
नष्ट-जातक—पु०[सं० कर्म०म०]=नष्ट-जन्मा।
नष्टता—स्त्री०[स० नष्ट+तल्—टाप्]१. नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश। २. चरित्र आदि की भ्रष्टता।
नष्ट-दृष्टि—वि०[ब०स०] जिसमे देखने की शक्ति न रह गई हो।
नष्ट-निधि—वि०[ब०स०]१. जो अपनी मपत्ति गँवा चुका हो। २ जो अपने जीवन की सबसे प्रिय वस्तु खो चुका हो। पु० दिवालिया।
नष्ट-प्रभ—वि०[ब०स०] जिसकी प्रभा नष्ट हो चुकी हो। जो काति या तेज से रहित हो चुका हो।
नष्ट-प्राय—वि०[सुप्सुपा स०] जो बहुत-कुछ नष्ट हो चुका हो। जो पूरी तरह से नष्ट होने के पास पहुँच चुका हो।
नष्ट-बुद्धि—वि०[ब०स०]१. जिसकी बुद्धि नष्ट हो चुकी हो। २. जिसकी बुद्धि बहुत बुरी हो।
नष्ट-भ्रष्ट—वि० [कर्म० स०] १. जो कट-फट या टूट-फूटकर किसी काम के लायक न रह गया हो। २. सब तरह से खराब और बरबाद।
नष्ट-राज्य—पु०[ब०स०] एक प्राचीन देश।
नष्ट-रूपा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] अनुष्टुप् छन्द का एक भेद।
नष्ट-विष—वि० [ब०स०] (जीव) जिसमे विष न रह गया हो। जिसका विष नष्ट हो चुका हो।
नष्ट शुक्र—वि०[ब०स०](व्यक्ति) जिसका शुक्र (वीर्य) नष्ट हो चुका हो।
नष्टा—स्त्री०[स० नष्ट+टाप्] (स्त्री) जिसका चरित्र या सतीत्व नष्ट हो चुका हो।
स्त्री०१. कुलटा। दुराचारिणी। २. रडी। वेश्या।
नष्टाग्नि—पु०[नष्ट-अग्नि, ब०स०] वह साग्निक ब्राह्मण या द्विज जिसके यहाँ की अग्नि आलस्य, प्रमाद आदि के कारण बुझ चुकी हो।
नष्टात्मा (त्मन्)—वि०[नष्ट-आत्मन्, ब०स०]१ जिसकी आत्मा नष्ट हो चुकी हो। २ बहुत बडा दुष्ट तथा नीच।
नष्टाप्तिसूत्र—पु० [नष्ट-आप्ति, ष०त०, नष्टाप्ति-सूत्र, ष०त०] वह सूत्र या सुराग जिससे खोई या चोरी गई हुई चीज की खोज की जाती है।
नष्टार्त्तव—पु०[स० नष्ट-आर्तव, ब०स०] एक रोग जिसमे स्त्री का मासिक धर्म-बन्द हो जाता है।
वि० [स्त्री०] जिसे मासिक-धर्म न होता हो या जिसका मासिक-धर्म होना बद हो चुका हो।

नष्टार्थ—वि०[नष्ट-अर्थ, ब०स०]१. (व्यक्ति) जिसका धन नष्ट हो चुका हो। २ (शब्द) जिसका कोई अर्थ उससे बिलकुल छूट चुका हो।

नष्टाश्वदग्धरथन्याय—पु० [नष्ट-अश्व, ब०स०, दग्ध रथ, ब०स०, नष्टाश्व-दग्धरथ द्व०स०, रथ-न्याय ष०त०] घोड़ों के खोने और रथ के जलने की एक कथा पर आधारित एक न्याय जिसका आशय यह है कि दो व्यक्ति आपसी सहयोग से किसी काम मे सफल हो सकते है।
विशेष—दो व्यक्ति अपने अपने रथों पर कही जा रहे थे। किसी पडाव पर एक व्यक्ति के घोडे खो गये और दूसरे का रथ जल गया। तब एक के रथ मे दूसरे के घोडे जोतकर वे दोनों गतव्य स्थान पर पहुँचने मे समर्थ हुए थे।

नष्टि—स्त्री०[स०नश्+क्तिन्] नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश।

नष्टेन्द्रिय—वि०[नष्ट-इन्द्रिय, ब०स०] जिसकी इंद्रियाँ नष्ट अर्थात् अचेष्ट हो चुकी हो।

नष्टेंदुकला—स्त्री०[नष्टा-इन्दुकला, ब० स०]१. प्रतिपदा। २. अमावस्या की रात।

नसंक—वि०=नि.शक।

नस—स्त्री०[स० स्नायु]१ शरीर-शास्त्र की परिभाषा मे, शरीर के अदर का वह ततु-जाल जिसकी सहायता से मासपेशियाँ आपस मे भी और हड्डियो के साथ भी बँधी या सटी रहती है। २ साधारण बोल-चाल मे, शरीर के अदर की कोई रक्त-वाहिनी नली या नाडी।
मुहा०—नस चढ़ना=खिचाव, तनाव, दवाव आदि के कारण किसी नस का अपने स्थान से कुछ इधर-उधर हो जाना, जिससे कुछ पीडा और कभी-कभी कुछ सूजन भी होती है। (किसी की) नस ढीली होना=(क) अधिक परिश्रम करने के कारण शरीर इस प्रकार शिथिल होना कि मन मे कुछ उत्साह या उमग बाकी न रह जाय। (ख) किसी के द्वारा दडित या पीडित होने पर अथवा सकट की स्थिति मे पडने पर ओज, तेज आदि का ऐसा ह्रास होना कि मनुष्य निराश और हतोत्साह हो जाय। जैसे—इस मुकदमे मे उनकी नस ढीली हो गई है। नस नस फड़क उठना=कोई अच्छी चीज या बात देख या सुनकर सारे शरीर मे प्रसन्नता की लहर दौड जाना। नस पर नस चढ़ना=दे० ऊपर 'नस-चढना'। नस भड़कना=(क) दे० ऊपर 'नस-चढना'। (ख) उन्मत्त या पागल हो जाना (जो मस्तिष्क की किसी नस के विकृत होने का परिणाम माना जाता है)।
पद—घोडा नस-(दे० स्वतन्त्र पद) नस नस मे=सारे शरीर और उसके सब अगो तथा उपांगों मे। जैसे—पाजीपन तो उसकी नस नस मे भरा है।
३ पुरुष या स्त्री की जननेंद्रिय। लिंग या भग।
मुहा०—नस ढीली पडना या होना=काम-वासना, सभोग-शक्ति आदि का अभाव या ह्रास होना।
४. पत्तो आदि मे चारों ओर फैले हुए वे मोटे तन्तु या रेशे जो उसके तल पर उभरे हुए दिखाई देते है।
†पु०=नसवार या नस्य।
स्त्री०[अ०]१ कुरान की वह सूक्ति जिसका आशय स्पष्ट हो। २. ऐसी बात जिससे किसी प्रकार का भ्रम या सदेह न होता हो।

नस-कट—वि०[हिं० नस+काटना]१ नस या नसें काटनेवाला। २ जिससे नस कटती हो।
पद—नस-कट खाट=ऐसी छोटी खाट जिससे एड़ी के ऊपर की नस मे रगड लगे।

नस-कटा—पु०[हिं० नस+काटना]१ जिसकी नस अर्थात् लिंगेंद्रिय काट ली गई हो। खोजा। २. नपुसक। हीजड़ा।

नस-तरंग—पु०[हिं०नस+तरग]पुरानी चाल का शहनाई की तरह का एक बाजा।

नसतालीक—वि०, पु०=नस्तालीक।

नसना—अ०[स० नशन]१ नष्ट होना। बरबाद होना। २. खराब होना। बिगडना।
†अ०[हिं० नटना]भागना। (पश्चिम)

नस-फाड़—पु०[हिं० नस+फाडना] हाथियों के पैर सूजने का एक रोग।

नसब—पु०[अ०]१ कुल। खानदान। वश। २ वशावली।

नसर—स्त्री०[अ० नस्र] गद्य।

नसरी—स्त्री०[?]१ एक तरह की मधुमक्खी। २ उक्त मक्खी के छत्ते का मोम।

नसल—स्त्री०[अ० नस्ल]१ वश। २ सतति।

नसवार—स्त्री०[हिं० नास+वार (प्रत्य०)] तमाकू के पत्तो की बुकनी जो प्राय. सूँघी जाती है। सूँघनी।

नसहा—वि०[हिं० नस+हा (प्रत्य०)] जिसमे नसें हों। नसोंवाला।

नसा—स्त्री०[स०] नासिका। नाक।
†पु०=नशा।

नसाना—स०[स० नाशन]१. नष्ट करना। २. खराब करना। बिगाड़ना।
†अ०१ नष्ट होना। २ खराब होना। बिगडना।
स० [हिं० नसना]१ दूर करना या हटाना। २ भगाना।

नसावन—वि०[हिं० नसाना]१ नसाने अर्थात् भगानेवाला। दूर या नष्ट करनेवाला।

नसावना—स०, अ०=नसाना।

नसी—स्त्री० [?] १ हल की कुसी या फार की नोक। २ हल।
पद—नसी-पूजा (दे०)।

नसीठ—पु० [देश०] बुरा शकुन। असगुन।

नसीत* †—स्त्री०=नसीहत।

नसीनी †—स्त्री०=निसेनी (सीढ़ी)।

नसी-पूजा—स्त्री० [हिं० नसी+स० पूजा] हल की वह पूजा जो खेत मे बीज बोने के उपरात की जाती है।

नसीब—पु० [अ०] १ भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। तकदीर। २. हिस्सा।
मुहा०—नसीब आजमाना=भाग्य की परीक्षा के भरोसे कोई काम करना। नसीब खुलना, चमकना, जागना या सीधा होना=भाग्य का उदय होना। किस्मत चमकना। नसीब टेढ़ा होना=बुरे दिन आना। नसीब पलटना=भाग्य की स्थिति बदलना।
वि० अच्छे भाग्य के कारण मिला हुआ। सौभाग्य मे प्राप्त। (प्राय नहिक वाक्यों मे प्रयुक्त) जैसे—भला ऐसा मकान हमें कहाँ नसीब होगा।

नसीब-जला—वि० [अ० नसीब+हिं० जलना] [स्त्री० नसीब-जली] अभागा।

नसीववर—वि० [अ०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।
नसीवा—पुं० [अ० नसीवः] नसीव। भाग्य।
नसीम—स्त्री० [अ०] धीमी और ठढी हवा। समीर।
नसीर—पु० [अ०] १. वह जो दूसरो की सहायता करता हो। २. ईश्वर।
नसीला†—वि० [स्त्री० नसीली] १.= नशीला। २.=नसहा।
नसीहत—स्त्री० [अ०] १. अच्छी सम्मति। सत्परामर्श। २. सदुपदेश। ३ ऐसा दड जिससे आगे के लिए कोई अच्छी शिक्षा मिलती हो। ४. उक्त दड के फल-स्वरूप होनेवाला ज्ञान या मिलनेवाली शिक्षा। क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।
नसीहा—पु० [देश०] एक प्रकार का हलका हल जिससे नरम जमीन जोती जाती है।
नसूड़िया—वि० [हिं० नासूर+इया (प्रत्य०)] १. नासूर-संवधी। २ वहुत ही उग्र और भीपण। ३. अमागलिक। ४. जिसकी उपस्थिति या सपर्क से काम विगड जाता हो। जैसे—नसूड़िया हाथ मत लगाओ।
नसूर†—पु०=नासूर।
नसेनी†—स्त्री०=निसेनी (सीढी)।
नस्त—पु० [स०√नस् (टेढ़ा होना)+क्त] १. नाक। २. नसवार। सुँघनी।
नस्तक—पुं० [स० नस्त+कन्] १. पशुओ की नाक मे किया हुआ छेद जिसमे रस्सी डाली जाती है। २. नाक मे का छेद।
नस्त-करण—पु० [प० त०] नाक मे दवा डालने का एक प्राचीन उपकरण।
नस्तन—पु० [फा०] १. सेवती (सफेद गुलाव) का पौधा और उसका फूल। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।
नस्ता—पु० [स० नस्त+टाप्] नस्तक (दे०)।
नस्तालीक—वि० [अ० नस्तऽलीक] जिसकी चाल-ढाल या रूप-रंग वहुत आकर्पक तथा सुन्दर हो।
पु० अरवी और फारसी लिपि लिखने का वह ढग या प्रकार जिसमे अक्षर वहुत ही साफ, सुडौल और सुपाठ्य रूप मे लिखे जाते हैं। (उर्दू पुस्तको की छपाई इसी लिपि मे होती है)।
नस्तित—वि० [स० नस्त+इतच्] १. (पशु) जिसे नाथ पहनाया गया हो। २. नत्थी मे लगाया हुआ। (फाइल्ड)
पुं० एक तरह का वैल।
नस्य—पु० [स० नासिका+यत्, नस् आदेश] १ सुँघनी। नसवार। नास। २. वह औपधि जिसे नाक के रास्ते दिमाग मे चढाया जाता है। ३. वैलो की नाक मे वाँधी जानेवाली रस्सी। नाथ।
नस्या—स्त्री० [स० नस्य+टाप्] १ नाक। २. नाक का छेद। नथना।
नस्याधार—पुं० [स० नस्य-आधार प० त०] सुँघनी रखने का पात्र। नासदानी।
नस्ल—स्त्री० दे० 'नसल'।
नस्वर†—वि०=नश्वर।
नहँ—पुं० [देश०] उत्तर प्रदेश मे होनेवाला एक प्रकार का वढिया चावल।
पुं०=नख (नाखून)।
†अव्य०=नही।
नह—पुं०=नख (नाखून)।
नहछू—पु० [सं० नखक्षौर] १. एक प्रथा जिसमें विवाह से पहले वर के वाल, नाखून आदि काटे जाते हैं और उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है। २. द्वार-पूजा के वाद की एक रीति जिसमे कन्या के नाखून काटे जाते और उसे नहलाया जाता है।
नहट्टा—पुं० [हिं० नहँ=नाखून] नख-क्षत।
नहन—पुं० [हिं० नाँधना] मोट या पुरवट खीचने की मोटी रस्सी। नार।
नहना—स० [हिं० नाँधना] १. नाधना। २. वैलो आदि को हल मे जोतना। ३. किसी को काम में लगाना।
नहनी†—स्त्री०=नहरनी।
नहर—स्त्री० [फा०] [वि० नहरी] १. सिंचाई और यातायात के निमित्त वनाया हुआ कृत्रिम जल-मार्ग। २. कोई ऐसी नाली जिसमे से द्रव पदार्थ चलता या वहता हो।
नहरनी—स्त्री० [हिं० नँह=नख] १. नाखून काटने का धारदार एक छोटा उपकरण। २. उक्त के आकार जैसा एक उपकरण जिससे पोस्ते की ढोढी चीरते हैं।
नहरम—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।
नहरी—वि० [फा० नहर+हिं० ई(प्रत्य०)] नहर-सवधी। नहर का। जैसे—नहरी पानी।
स्त्री० वह जमीन जिसकी सिंचाई नहर के पानी से होती हो।
नहरुआ†—पु०=नारू (रोग)।
नहरू†—पुं०=नारू (रोग)।
नहला—पुं० [हिं० नौ] ताश का वह पत्ता जिसमे नौ वूटियाँ होती हैं।
पु० [?] धातु, लकडी आदि का करनी की तरह का एक औजार जिससे राज मिस्तरी, दीवारो पर वेल-वूटे का काम वनाने मे सहायता लेते हैं।
नहलाई—स्त्री० [हिं० नहलाना+ई] १ नहलाने की क्रिया या भाव। २. नहलाने के वदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक या पुरस्कार। ३. नहलानेवाली दाई या दासी। जैसे—खिलाई, दाई और नहलाई अलग अलग नियुक्त थी।
नहलाना—स० [हिं० नहाना का स० रूप] [भाव० नहलाई] किसी को नहाने मे प्रवृत्त करना।
नहवाना†—स०=नहलाना।
नहस—वि० [अ० नह्स] अमागलिक। अशुभ।
नहसुत—पुं० [स० नख+सूत्र] नख की रेखा। नखक्षत।
पुं० [स० नख (वृक्ष)] पलास की तरह का एक पेड। फरहद।
नहाँ—पु० [स० नख, हिं० नँह] १. पहिए के ठीक वीच का वह गोल छेद जिसमे धुरी पहनाई जाती है। २ घर के आगे का आँगन। ३ नख। नाखून।
वि० नहँ अर्थात् नाखूनोवाला या नाखूनो की तरह का। जैसे—वघनहाँ।
नहान—पुं० [हिं० नहाना] १. नहाने की क्रिया या भाव। २. नहाने का शुभ अवसर या पर्व। जैसे—छठी का नहान, सक्रान्ति का नहान। ३. किसी शुभ अवसर पर वहुत से लोगो का एक साथ नहाना।

नहाना—अ० [सं० स्नान, प्रा० हारण, बुंदे० हनाना] १. खुले जल से पूरे शरीर को तर करना और धोना। स्नान करना।

विशेष—(क) शरीर को स्वच्छ रखने के निमित्त नहाया जाता है। (ख) नहाने से आलस्य और थकान दूर होती है।

पद—दूधों नहाओ पूतो फलो=धन और परिवार से समृद्ध होओ। (आशीर्वाद)

२. रजोधर्म से निवृत्त होने पर स्त्री का स्नान करना। ३ किसी तरल पदार्थ से शरीर का लथ-पथ होना। जैसे—पसीने या लहू से नहाना।

नहानी—स्त्री० [हिं० नहाना] १. रजस्वला स्त्री, जिसे चौथे दिन नहाकर शुद्ध होना पड़ता है। २. स्त्री के रजस्वला होने की स्थिति।

नहार—वि० [स० निराहार से फा० नाहार] १. निराहार। २. वासी मुँह।

मुहा०—नहार तोड़ना=सवेरे के समय जलपान या हल्का भोजन करना। नहार रहना=निराहर या भूखे रहना।

पद—नहार-मुंह=सवेरे के समय विना कुछ खाये या जलपान किये। जैसे—नहार-मुंह उठकर चल पड़े थे।

नहारी—स्त्री० [हिं० नहार] १. वह हल्का भोजन जो एक दिन निराहार रहने पर दूसरे दिन वासी मुँह किया जाता है। २. जलपान। नाश्ता। ३. वह धन जो नौकरो-मजदूरो आदि को जल-पान कराने के वदले मे दिया जाता है। ४. घोडो को खिलाया जानेवाला गुड़ मिला हुआ आटा। ५ एक प्रकार का शोरवेदार गोश्त।

नहिं*—अव्य०=नही।

नहिअन—पु० [हिं० नहँ=नख] पैर की छोटी उँगली मे पहनने का विछिया के आकार का एक गहना।

नहिक—वि० [स० नहि =नही+हिं० क (प्रत्य०)] १. अस्वीकृत करने या न माननेवाला। 'नही' कहने या करनेवाला। नकारात्मक। २. जिसमे किसी विशेष वस्तु का अभाव हो। किसी विशिष्ट वस्तु, तत्त्व या वात से रहित। ३ जो किसी तत्त्व या वात का अवरोधक, वाधक या मारक हो। ४. (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमे मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो। 'सहिक' का विपर्याय। (अपोजिट; उक्त सभी अर्थो के लिए)

पुं० १. वह कथन या वात जिसमे कोई दूसरी वात न मानी गई हो या किसी वात से इनकार किया गया हो। असम्मति-सूचक वात। २. किसी विषय, निश्चय आदि का वह अश, अग या पक्ष जिसमे उसके सहिक या सकारात्मक पक्ष का खडन या विरोध हो। ३ किसी की वह प्रतिकृति या मूर्ति जिसमे मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो। ४. छाया-चित्र मे, वह शीशा जिस पर किसी वस्तु का उलटा प्रतिविंव या आकृति अकित होती है और जिससे कागज पर उसकी सही प्रतियाँ छापी जाती हैं। 'सहिक' का विपर्याय। (नेगेटिव, उक्त सभी अर्थो के लिए)

नहियाँ—स्त्री० दे० 'नहिअन'।

नहिरनी†—स्त्री०=नहरनी।

नहीं—अव्य० [स० नहि] एक अव्यय जिसका प्रयोग असहमति, अस्वीकृति, विरोध आदि प्रकट करने के लिए होता है।

मुहा०—नहीं तो=अमुक काम या वात न होने पर। अन्य या विपरीत अवस्था मे।

नहुष—पु० [स०√नह् (वन्धन)+उषच्] १. अयोध्या के एक इक्ष्वाकु वशी राजा जो अवरीष का पुत्र और ययाति का पिता था। महाभारत मे इसे चद्रवशी आयु राजा का पुत्र कहा गया है। २ एक प्राचीन ऋषि जो मनु के पुत्र कहे गए हैं और जो ऋग्वेद के कुछ मत्रो के द्रष्टा हैं। ३ एक नाग का नाम। ४. कुशिक वशी एक ब्राह्मण राजा का नाम। ५. वैदिक काल के एक राजर्षि। ६. पुराणानुसार एक मरुत् का नाम। ७. विष्णु का एक नाम।

नहुषाख्य—पु० [स० नहुष-आख्या, व० स०] तगर पुष्प।

नहुषात्मज—पु० [स० नहुष-आत्मज, प० त०] ययाति।

नहूर—स्त्री० [देश०] एक तरह की तिव्वती भेड़।

नहूसत—स्त्री० [अ०] नहस या मनहूस होने की अवस्था या भाव। मनहूसियत।

नाँउँ*—पु०=नाम।

नाँखना—स० [स० नक्ष्] १ फेंकना। २ नष्ट करना।

स० [स० रक्षण ?] १ रखना। २. डालना। (डिं०) उदा०—रजतिणि सिर नाँखे गज-राज। —प्रिथीराज।

नाँगा†—वि० [स्त्री० नाँगी] =नगा।

पु० [हिं० नगा] वह साधु जो नगा रहता हो। दे० 'नागा'।

नाँघना†—स०=लाँघना।

नाँठना—अ० [स० नष्ट] नष्ट होना।

नाँद—स्त्री० [स० नदक] चौडे मुँह तथा गोल पेंदेवाला मिट्टी का एक प्रकार का पात्र जिसमे गाय, भैंस आदि को चारा खिलाया जाता है।

नाँदना—अ० [स० नदन] १. आनदित या प्रसन्न होना। २. दीपक का वुझने के पहले कुछ भभककर जलना। ३. दीपक की लौ का रह-रहकर नाचना या हिलना।

अ० [स० नाद] १ नाद या शब्द करना। २. शोर मचाना। चिल्लाना। ३ छीकना।

नांदिकर—पु० [स० नादी√कृ+ट, ह्रस्व] सूत्रधार जो नादी का पाठ करता है।

नांदी—स्त्री० [स० √नन्द् (समृद्धि) +घञ्, पृषो० सिद्धि] १ अभ्युदय। समृद्धि। २ नाटक मे वह आशिर्वादात्मक पद्य जो सूत्रधार अभिनय आरभ करने से पहले मगलाचरण के रूप मे उच्च स्वर मे गाता या पढता है। मगलाचरण।

नांदीक—पु० [स० नादी√कै (प्रकाशित होना)+क] १ तोरण स्तभ। २. दे० 'नादीमुखश्राद्ध'।

नादी-पट—पु० [प० त०] लकडी की वह रचना जिससे कूएँ का ऊपरी भाग ढका जाता है।

नांदी-मुख—पु० [व० स०] १ कूएँ के ऊपर का ढकना। २. परिवार मे किसी प्रकार की वृद्धि होने के शुभ अवसर पर पितरो का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए किया जानेवाला श्राद्ध। वृद्धि श्राद्ध।

वि० (पितर) जिनके उद्देश्य से नादी-मुख श्राद्ध किया जाता है।

नांदीमुखी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते है।

नांघना—सं०=लाँघना।

नांव—पु० [स०] अपने आप उगनेवाला धान।

नांवँ†—पु०=नाम।

†अव्य०=नहीं।

नांवँ†—पु०=नाम।

नांवगर—पु० [स० नौका+घर] मल्लाह।

नांवाँ—पु० [हिं० नाम] १. नाम। २. वही-खाते में किसी के नाम पड़ी हुई चीज या रकम। ३ नगद रुपए-पैसे जो दिये या लिये जाने को हों। ४. दाम। मूल्य।

नांहं†—पुं० [स० नाथ] पति। स्वामी।

अव्य०=नहीं।

ना—अव्य० [स० न] एक प्रत्यय जिसका प्रयोग किसी को कोई काम करने से या निषेध करने के लिए 'न' या 'नहीं' की तरह होता है। जैसे—ना, ऐसा मत करो।

विशेष—कुछ अवस्थाओं मे लोग इसका प्रयोग भी 'न' की तरह केवल आग्रह करने या जोर देने के लिए करते हैं। जैसे—अभी बैठो ना, अर्थात् बैठो न।

*पु० [स० नाभि] नाभि।

*पु०=नर (मनुष्य)।

उप० [स० न से फा०] एक उपसर्ग जिसका प्रयोग विशेषणो और सज्ञाओं से पहले अभाव, नहिकता अथवा विरोधी भाव प्रकट करने के लिए होता है। जैसे—ना-लायक, ना-समझी आदि।

ना इत्तिफाकी—स्त्री० [फा०] १ इत्तिफाक अर्थात् मैत्रीपूर्ण एकता का अभाव होना। २ मतभेद।

नाइन—स्त्री० [हिं० नाई] १ नाई जाति की स्त्री। २. नाई की पत्नी।

नाइब—पु०=नायब

नाई—स्त्री० [स० न्याय] समान दशा।

अव्य० १. तुल्य। समान। २. की तरह। जैसे। उदा०—कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई।—तुलसी। ३. लिए। वास्ते। उदा०—अल्लह राम जिवउ तेरे नाई।—कबीर।

नाई—पुं० [स० नापित] वह जो लोगो के बाल काटता और हजामत बनाता हो। नापित। हज्जाम।

स्त्री० [?] नाकुलीकद।

स्त्री० [हिं० नखना=डालना] =नरका (हल के पीछे की नली)।

नाउ—स्त्री०=नाव।

†पुं०=नाम।

नाउन—पु० [देश०] ओझा। सयाना।

नाउन†—स्त्री०=नाइन।

ना-उमेद—वि० =ना-उम्मीद।

ना-उम्मीद—वि० [फा०] [भाव० ना-उम्मीदी] जिसे आशापूर्ण होने की सभावना न दिखाई पड़ती हो।

नाऊ†—पु०=नाई।

नाकंद—वि० [फा० ना+कंद] १. (बछड़ा) जिसके दूध के दाँत अभी न टूटे हों। २. मूर्ख।

नाक—स्त्री० [सं० नासिका] १. जीव-जंतुओं या प्राणियों के चेहरे पर का वह उभरा हुआ लबोतरा अग जो आँखो के नीचे और मुख-विवर के ऊपर बीचो-बीच रहता है और जिसमे दोनों ओर वे दो नथने या छिद्र रहते हैं; जिनसे वे सास लेते और सूँघते है। साँस लेने और सूँघने की इद्रिय।

विशेष—(क) नाक से बोलने और स्वरो आदि का उच्चारण करने में भी सहायता मिलती है। (ख) मस्तक या मस्तिष्क के अदर के मल का कुछ अश प्राय कफ आदि के रूप मे दोनो नथनो के रास्ते बाहर निकलता है। (ग) लोक व्यवहार मे, नाक को प्राय प्रतिष्ठा, मर्यादा, सौंदर्य आदि के प्रतीक के रूप मे भी मानते है, जिसके आधार पर इसके अधिकतर मुहावरे बने है।

पद—नाक का बाँसा=नाक के दोनो नथनो के बीच का भीतरी परदा। (किसी की) नाक का बाल=ऐसा व्यक्ति जो किसी बडे आदमी का घनिष्ठ समीपवर्ती हो और साथ ही उस बडे आदमी पर अपना यथेष्ट प्रभाव रखता हो। जैसे—उन दिनो वही खवास राजा साहब की नाक का बाल हो रहा था। नाक की सीध में=बिना इधर-उधर घूमे या मुडे हुए और ठीक सामने या सीधे। जैसे—नाक की सीध मे चले जाओ, सामने ही उनका मकान मिलेगा। बैठी हुई नाक=चिपटी नाक।

मुहा०—नाक कटना=प्रतिष्ठा या मर्यादा नष्ट होना। इज्जत जाना। (किसी की) नाक काटना=(क) प्रतिष्ठा या मर्यादा नष्ट करना। इज्जत बिगाड़ना। (ख) अपनी तुलना मे किसी को बहुत ही तुच्छ या हीन प्रमाणित अथवा सिद्ध करना। जैसे—यह मकान मुहल्ले भर के मकानों की नाक काटता है। नाक-कान (या नाक-चोटी) काटना=बहुत अधिक अपमानित और दडित करने के लिए शरीर के उक्त अग काटकर अलग कर देना। (किसी के आगे या सामने) नाक घिसना या रगड़ना=बहुत ही दीन-हीन बनकर और गिडगिडाते हुए किसी प्रकार की प्रार्थना प्रतिज्ञा या याचना करना। नाक (अथवा नाक भौं) चढ़ाना या सिकोड़ना=आकृति से अरुचि, उपेक्षा, क्रोध, घृणा, विरक्ति आदि के भाव प्रकट या सूचित करना। जैसे—आप तो दूसरो का काम देखकर यों ही नाक (अथवा नाक-भौं) चढाते या सिकोडते है। नाक तक खाना=इतना अधिक खाना या भोजन करना कि पेट में और कुछ भी खा सकने की जगह न रह जाय। (किसी स्थान पर) नाक तक न दी जाना=इतनी अधिक दुर्गंध होना कि आदमी से वहाँ खडा न रहा जा सके। नाक पकड़ते दम निकलना=इतना अधिक दुर्बल होना कि छू जाने से गिर पडने या मर जाने का डर हो। अधिक अशक्त या क्षीण होना। नाक पर उँगली रख कर बातें करना=स्त्रियों या हिजडों की तरह नखरे से बातें करना। नाक पर गुस्सा रहना या होना=ऐसी चिड़चिड़ी प्रकृति होना कि बात-बात पर क्रोध प्रकट होता रहे। जैसे—तुम्हारी तो नाक पर गुस्सा रहता है, अर्थात् तुम जरा सी बात पर बिगड़ जाते हो। (कोई चीज) किसी की नाक पर रख देना=किसी की चीज उसके मागते ही तुरत या ठीक समय पर उसे लौटा या दे देना। तुरत दे देना। जैसे—हम हर महीने किराया उनकी नाक पर रख देते हैं। नाक पर दीया बाल कर आना=यशस्वी, विजयी या सफल होकर आना। (अपनी) नाक पर मक्खी न बैठने देना=इतनी खरी या साफ प्रकृति का होना कि किसी को भी कुछ भी कहने-सुनने का अवसर न मिले। (किसी की) नाक पर सुपारी तोड़ना या

फोड़ना=बहुत अधिक तग या परेशान करना। नाक फटना या फटने लगना=कही इतनी अधिक दुर्गंध होना कि आदमी से वहाँ खडा न रहा जा सके। नाक-भौं चढाना या सिकोड़ना=दे० ऊपर 'नाक चढाना या सिकोडना'। नाक में तीर करना या डालना=खूब तग या हैरान करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना=दे० ऊपर 'नाक घिसना'। नाक मे बोलना=इस प्रकार बोलना कि श्वास का कुछ अश नाक से भी निकले, और उच्चारण सानुनासिक हो। नकियाना। नाक लगाकर बैठना=अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित या बडा समझते हुए औरो से बहुत-कुछ अलग या दूर रहना। (किसी का) नाक मे दम करना या लाना=बहुत अधिक तग या हैरान करना। बहुत सताना। जैसे—इस लडके ने हमारी नाक मे दम कर दिया है। नाक मारना=दे० ऊपर 'नाक चढाना या सिकोडना'। नाक सिकोडना=दे० ऊपर। 'नाक चढाना या मिकोडना। (किसी से) नाको चने चबवाना=किसी को इतना अधिक तग या दु.खी करना कि मानो उमे नाक के रास्ते चने चबाकर खाने के लिए विवश किया जा रहा हो। नाकों दम करना=दे० ऊपर 'नाक मे दम करना'।

२ मस्तिष्क का वह तरल मल जो नाक के नथनो से होकर बाहर निकलता है। नेटा। रेंट।

मुहा०—नाक छिनकना या सिनकना=नाक के रास्ते इस प्रकार जोर से हवा बाहर निकालना कि उसके साथ अदर का कफ दूर जा गिरे। नाक बहना=सरदी आदि के कारण नाक से पतला कफ या पानी निकलना।

३. गौरव, प्रतिष्ठा या सम्मान की चीज, बात या व्यक्ति। जैसे—वही तो इस समय हमारे महल्ले की नाक है। उदा०—नाक पिनाकहि सग सिधाई।—तुलसी। ४ किसी चीज के अगले या ऊपरी भाग मे आगे की ओर निकला हुआ कुछ मोटा, नुकीला और लबा अग या अश। ५. चरखे मे लगी हुई वह खूँटी या हत्था जिसकी सहायता से उसे घुमाते या चलाते है। ६ लकडी का वह डडा जिस पर रखकर पीतल आदि के बरतन खरादे जाते हैं।

पु० [स० न-अक=दु ख, ब० स०] १ स्वर्ग। २ अतरिक्ष। आकाश। ३. अस्त्र चलाने का एक प्रकार का ढग।

पु० [स० नक्र] मगर की तरह का एक प्रकार का जल-जतु। घडियाल।

वि० [फा०] १ भरा हुआ। पूर्ण। (प्रत्यय के रूप मे यौगिक शब्दो के अत मे) जैसे—खौफनाक, दर्दनाक।

नाक-कटैया†—स्त्री० [हिं० नाक+काटना] १ नाक कटने या काटे जाने की अवस्था या भाव। २ रामलीला का वह प्रसग जिसमे लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी थी और जिसके स्वाँग प्राय राम-लीला के समय निकलते हैं।

नाक-चर—पु० [स०] देवता।

नाकड़ा—पु० [हिं० नाक] नाक के पकने का एक रोग।

ना-कदर—वि० [फा० ना+अ० कद्र] [भाव० ना-कदरी] १. जिसकी कोई कदर न हो। जिमकी कोई प्रतिष्ठा न हो। २. जो किसी की कदर या आदर करना न जानता हो। जो गुण-ग्राही न हो।

ना-कदरी—स्त्री० [फा० ना+अ० कद्र] ऐसी स्थिति जिसमे किसी का पूरा-पूरा या उचित आदर या सम्मान न हुआ या न किया गया हो।

नाक-नटी—स्त्री० [सं०] स्वर्ग की नटी। अप्सरा।

नाकना—स० [स० लघन, हिं० नाँघना] १ उल्लघन करना। डाँकना। लाँघना। २. दौड, प्रतियोगिता आदि मे किसी से आगे बढ जाना।

स० [हिं० नाक+ना (प्रत्य०)] १ चारो ओर से नाके या रास्ते रोकना। नाकाबदी। करना। २. आने-जाने के सब द्वार या रास्ते बद करके किसी को घेरना। ३ कठिनता या बाधा को दूर या पार करना। उदा०—मै नहिं काहू की कछु घाल्यो पुन्यनि करबर नाक्यो।—सूर।

नाक-नाथ—पु० [स० ष० त०]=नाक-पति।

नाक-पति—पु० [स० ष० त०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

नाक-पृष्ठ—पु० [स० ष० त०] स्वर्ग।

नाक-बुद्धि—वि० [हिं० नाक+बुद्धि] १. जो नाक से सूँघकर या गध द्वारा ही भक्ष्याभक्ष्य, भले-बुरे आदि का विचार कर सके, बुद्धि द्वारा नही। अर्थात् क्षुद्र या तुच्छ बुद्धिवाला।

स्त्री० उक्त प्रकार की क्षुद्र या तुच्छ बुद्धि।

नाक-वनिता—स्त्री० [स० ष० त०] अप्सरा।

नाक-वास—पु० [सं० ष० त०] स्वर्ग मे होनेवाला वास।

नाक-वेधक—पु० [स० ष० त०] इन्द्र।

नाका—पु० [हिं० नाकना] १ रास्ते आदि का वह छोर जिससे होकर लोग किसी ओर जाते, बढते या मुडते है। प्रवेश-द्वार। मुहाना। २. वह स्थान जहाँ से दुर्ग, नगर आदि मे प्रवेश किया जाता है। जैसे—नाके पर पहरेदार खड़े थे।

क्रि० प्र०—छेंकना।—बाँधना।

पद—नाकेबंदी। (दे०)

३ उक्त के अतर्गत वह स्थान जहाँ चौकी, पहरे आदि के लिए रक्षक या सिपाही रहते हो, अथवा जहाँ प्रवेश-कर आदि उगाहे जाते हो। ४ चौकी। थाना। ५ सूई के सिरे का वह छेद जिसमे डोरा या तागा पिरोया जाता है। ६ करघे का वह अश जिसमे तागे के ताने बँधे रहते है।

†पु० [स० नक्र] घडियाल या मगर की तरह का एक जल-जतु।

स्त्री० [अ० नाक] मादा ऊँट। ऊँटनी।

नाकादार—वि०, पु०=नाकेदार।

नाका-बंदी—स्त्री०=नाकेबदी।

ना-काबिल—वि० [फा० ना+अ० काबिल] [भाव० ना-काबिलियत] जो काबिल अर्थात् योग्य न हो। अयोग्य।

ना-काम—वि० [फा०] [भाव० नाकामी] जिसे अपने प्रयत्न मे सफलता न मिली हो। ना-कामयाब।

ना-कामयाब—वि० [फा०] [भाव० ना-कामयाबी]=ना-काम।

नाकारा—वि० [फा० नाकार] १ निष्कर्म। २ (व्यक्ति) जो किसी काम का न हो। निकम्मा। ३ (पदार्थ) जो काम मे न आ सके। निष्प्रयोजन।

†पु०=नकुल (नेवला)।

नाकिस—वि० [अ० नाकिस] १ जिसमे कोई नुक्स या दोष हो, अर्थात् खराब या बुरा। २ जिसमे अपूर्णता या त्रुटि हो। ३ निकम्मा। रद्दी।

पुं० अरबी भाषा में वह शब्द जिसका अंतिम वर्ण अलिफ, वाव या ये हो।
नाकी (किन्)—वि० [सं० नाक+इनि] स्वर्ग में वास करनेवाला।
पुं० देवता।
स्त्री०=नक्की।
नाकु—पुं० [सं०√नम् (झुकना)+उ, नाक् आदेश] १. दीमकों की मिट्टी का ढूह। विभौट। वल्मीक। २. टीला। भीटा। ३. पर्वत। पहाड़। ४. एक प्राचीन ऋषि।
नाकुल—वि० [सं० नकुल+अण्] १. नकुल-संबंधी। नेवले का। २. नेवले की तरह का।
पुं० १. नकुल के वंशज या सन्तान। २. चव्य। चाव। ३. यवतिक्ता। ४ सेमल का मूसला। ५. रास्ना।
नाकुलक—वि० [सं० नकुल+ठञ्—क] नेवले की पूजा करनेवाला।
नाकुलि—पुं० [सं० नकुल+इञ्] १ नकुल का पुत्र। २. नकुल गोत्र का मनुष्य।
नाकुली—वि० [सं०] नकुल-संबंधी। नकुल का। नाकुल।
स्त्री० [सं० नकुल+अण्—ङीप्] १. एक प्रकार का कद जो सब प्रकार के विषों, विशेषकर सर्प के विष को दूर करनेवाला कहा गया है। नाकुली दो प्रकार की होती है। एक नाकुली, दूसरी गंध-नाकुली जो कुछ अच्छी होती है। २. यवतिक्ता। ३. रास्ना। ४. चव्य। चाव। ५. सफेद भटकटैया।
नाकू—पुं० [सं० नक्र] घड़ियाल। मगर।
नाकेदार—वि० [हिं० नाका+फा० दार] जिसमें कोई चीज पहनाने या पिरोने के लिए नाका या छेद हो।
पुं० १. वह रक्षक या सिपाही जो किसी नाके पर चौकी, पहरे आदि के लिए नियुक्त हो। २. वह अफसर या कर्मचारी जो आने-जाने के मुख्य स्थानों पर किसी प्रकार का कर, महसूल आदि वसूल करने के लिए नियत रहता हो।
नाकेबंदी—स्त्री० [हिं० नाका+फा० बंदी] १. ऐसी व्यवस्था जो नाका अर्थात् कहीं आने-जाने का मार्ग रोकने के लिए हो। २ आधुनिक राजनीति में, विपक्षी या शत्रु के किसी तट, बंदरगाह अथवा स्थान को इस प्रकार घेरना कि न तो उसके अंदर कोई प्रवेश करने पावे और न वहाँ से कोई बाहर निकलने पावे। (ब्लाकेड)
नाकेश—पुं० [सं० नाक-ईश, ष० त०] इंद्र।
नाक्षत्र—वि० [सं० नक्षत्र+अण्] १. नक्षत्र-संबंधी। २. नक्षत्रों की गति आदि के विचार से जिसका मान निश्चित हो। जैसे—नाक्षत्र दिन, नाक्षत्र मास।
पुं० चांद्र मास।
नाक्षत्र-दिन—पुं० [कर्म० स०] उतना समय जितना चंद्रमा को एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र तक पहुँचने अथवा एक नक्षत्र को एक बार याम्योत्तर रेखा से होकर फिर वहीं आने में लगता है। नाक्षत्र-मास का पूरा एक दिन।
विशेष—यह ठीक उतना ही समय है जितना पृथ्वी को एक बार अपने अक्ष पर घूमने में लगता है। यह समय कभी घटता-बढ़ता नहीं, सदा एक-सा रहता है; इसलिए ज्योतिषी लोग दिन-मान का ठीक और पूरा विचार करने के समय इसी का व्यवहार करते हैं।
नाक्षत्र-मास—पुं० [कर्म० स०] वह समय जितने में चंद्रमा को एक नक्षत्र से चल कर क्रमशः सब नक्षत्रों पर होते हुए फिर उसी नक्षत्र पर आने में लगता है और जो प्रायः २७-२८ दिनों का होता है।
नाक्षत्र-वर्ष—पुं० [कर्म० स०] १२ नाक्षत्र मासों का समूह।
नाक्षत्रिक—वि० [सं० नक्षत्र+ठक्—इक] [स्त्री० नाक्षत्रिकी] नक्षत्र संबंधी। नाक्षत्र।
पुं० १. नाक्षत्र अर्थात् चांद्रमास। २. छंद शास्त्र में २७ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
नाख—स्त्री० [फा० नाख़] एक प्रकार की बढ़िया नाशपाती और उसका वृक्ष।
नाखना—स० [सं० नाशन] १. नष्ट करना। २. बिगाड़ना। ३. गिराना, टालना, फेंकना या रखना। ४. (शस्त्र) चलाना।
स०=नाकना।
नाखुदा—वि० [फा० नाखुदा] खुदा को न माननेवाला। नास्तिक।
पुं० १. मल्लाह। नाविक। २. कर्णधार।
नाखुन—पुं०=नाखून।
नाखुना—पुं० [फा० नाखुन.] १. आँख का एक रोग जिसमें उसके तल पर खून की बिंदी या दाग पड़ जाता है। २. घोड़ों का एक रोग जिसमें उनकी आँखों में लाल डोरे या धारियाँ पड़ जाती हैं। ३. एक प्रकार का अंगुश्ताना जिसे पहनकर चीराबंद लोग चीरा बनाते या बाँधते थे।
पुं०=नाखूना (कपड़ा)।
नाखुर—पुं०=नहछू।
ना-खुश—वि० [फा०] [भाव० ना-खुशी] जो खुश या प्रसन्न न हो। अप्रसन्न। नाराज।
नाखून—पुं० [फा० नाखुन] १ हाथों तथा पैरों की उँगलियों के ऊपरी तल का वह सफेद अंश जो अधिक कड़ा तथा तेज धारवाला होता है। २. उक्त का वह चंद्राकार अगला भाग जो कैंची आदि से काटकर अलग किया जाता है। ३. चौपायों के पैरों का वह अगला भाग जो मनुष्य के नखों के समान कड़ा होता है।
मुहा०—नाखून लेना=नाखून काटकर अलग करना। (घोड़े का) नाखून लेना=चलने में घोड़े का ठोकर खाना।
नाखूना—पुं० [हिं० नाखून] एक तरह का कपड़ा जिसका ताना सफेद होता है और बाने में कई रंगों की धारियाँ होती हैं। यह आगरे में बहुत बनता था।
पुं०=नाखुना।
नाग—पुं० [सं० नग=पर्वत+अण्] [स्त्री० नागिन] १. सर्प। साँप। २. काले रंग का, बड़ा और फनवाला साँप। करैत।
मुहा०—नाग खेलाना=नागों या साँपों को खेलाने की तरह का ऐसा विकट काम करना जिसमें प्राण जाने का भय हो।
३. पुराणानुसार पाताल में रहनेवाला एक उप-देवता जिसका ऊपरी आधा भाग मनुष्य का और नीचेवाला आधा भाग साँप का कहा गया है। ४. कद्रु से उत्पन्न कश्यप की संतान जिनका निवास पाताल में माना गया है। इनके वासुकि, तक्षक, कुलक, कर्कोटक, पद्म, शंख चूड़, महापद्म और धनंजय ये आठ कुल हैं। ५. एक प्राचीन देश। ६. उक्त देश में बसनेवाली एक प्राचीन जाति।

विशेष—नाग जाति संभवत भारत के उत्तर मे और हिमालय के उस पार रहती थी, क्योंकि तिब्बतवाले अपने आपको नाग-वंशी कहते हैं। महाभारत काल तक ये लोग भारत में आ गये थे। और उत्तर भारतीय आर्यों से इनका बहुत वैमनस्य था। इसी लिए जनमेजय ने बहुत से नागो का नाश किया था। बाद मे ये लोग मध्यभारत मे आ कर फैल गए थे; जहाँ नागपुर, छोटा नागपुर आदि नगर और प्रदेश इनके नाम की स्मृति के रूप मे अब तक अवशिष्ट हैं। ये लोग नागो (बड बडे फनदार साँपो) की पूजा करते थे। इसी से इनका यह नाम पड़ा था। बगाल मे अब तक हिंदुओं मे 'नाग' एक जाति का नाम मिलता है।

७ एक प्राचीन पर्वत। ८ हाथी। ९ एक प्रकार की घास। १०. नागकेसर। ११ पुन्नाग। १२ नागर-मोथा। १३ ताबूल। पान। १४. सीसा नामक धातु। १५. ज्योतिष के करणो मे से तीसरा करण, जिसे 'ध्रुव' भी कहते हैं। १६. बादल। मेघ। १७ दीवार मे लगी हुई खूँटी। १८. कुछ लोगो के मत से 'सात' की और कुछ के मत से 'आठ' की सख्या। १९ आश्लेषा नक्षत्र का एक नाम। २०. शरीर मे रहनेवाले पाँच प्राणो या वायुओं मे से एक जिससे डकार आता है।

वि० १. (व्यक्ति) जो बहुत अधिक क्रूर, घातक और दुष्ट हो।

२ यौ० के अत मे, सब मे श्रेष्ठ। जैसे—पुरुष नाग।

नाग-कंद—पु० [ब० स०] हस्तिकद।

नाग-कन्या—स्त्री० [प० त०] नाग जाति की बालिका या स्त्री।

नाग-कर्ण—पुं० [प० त०] १ हाथी का कान। २ एरड या रेंड जिसका पत्ता हाथी के कान के आकार का होता है।

नाग-किंजल्क—पु० [ब० स०] नागकेसर।

नाग-कुमारिका—स्त्री० [प० त०] १. गुरुच। गिलोय। २. मजीठ। ३. नाग-कन्या।

नाग-केसर—पु० [ब० स०] एक सदाबहार वृक्ष और उसके सुगधित फूल। इसके बीजो की गिनती गध द्रव्यो मे होती है।

नाग-खंड—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार जंबू द्वीप के अतर्गत भारतवर्ष के नौ खडो मे से एक खड।

नाग-गंधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] नकुलकद।

नाग-गति—स्त्री० [सं०] किसी ग्रह की अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रो से होकर निकलने की अवस्था या गति।

नाग-गर्भ—पु० [ब० स०] सिंदूर।

नाग-चंपा—पु० [स०] नागकेसर (पेड और उसका फूल)।

नाग-चूड़—पु० [ब० स०] शिव।

नागच्छत्रा—स्त्री० [स०] नागदती (वृक्ष)।

नागज—वि० [स० नाग√जन् (उत्पत्ति)+ड] नाग से उत्पन्न।

पु० १. सिंदूर। २. राँगा।

नाग-जिह्वा—स्त्री० [स० प० त०] १. अनतमूल। २. सारिवा।

नाग-जिह्विका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] मैनसिल नामक खनिज द्रव्य।

नाग-जीवन—पु० [ब० स०] फूंका हुआ राँगा।

नाग-झाग—पु० [स० नाग+हि० झाग] १. साँप की लार। अहिफेन। २. अफीम।

नाग-दंत—पु० [प० त०] १. हाथी दाँत। २ [नागदन्त+अच्] दीवार पर गड़ी हुई खूँटी।

नाग-दंतिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] वृश्चिकाली नामक पौधा।

नाग-दंती—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] कुभा नामक औषधि।

नाग-दमन—पु० [प० त०] नागदौना (पौधा)।

नाग-दमनी—स्त्री०=नागदमन (नागदौना)।

नागदला—पु० [सं० नाग-दल] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी लकडी बहुत कड़ी और मजबूत होती है और पानी मे भी जल्दी नही सड़ती। इसलिए इसकी लकड़ी से नावें बनती है। इसके बीजो का तेल जलाने के काम आता है।

नागदुमा—वि० [सं० नाग+फा० दुम] जिसकी दुम या पूँछ नाग के फन के समान हो।

पु० उक्त प्रकार की दुमवाला हाथी जो ऐबी माना जाता है।

नागदौन (ा)—पुं० [स० नागदमन] १. छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़। २. एक प्रकार का पौधा जिसमे डालियाँ नही होती, केवल हाथ-हाथ भर लबे-लबे पत्ते होते हैं जो देखने मे साँप के फन की तरह होते हैं। कहते हैं कि इसके पास भी साँप नही आता। ३. एक प्रकार का कँटीला पेड जिसकी सूखी पत्तियाँ लोग कागजो और कपडो की तहों मे उन्हे कीड़ो से बचाने के लिए रखते हैं।

नाग-द्रु (द्रुम)—पु० [मध्य० स०] १. सेहुड़। थूहर। २. नागफनी।

नाग-द्वीप—पुं० [मध्य० स०] भारतवर्ष के नौ खंडो मे से एक खड। (विष्णु पुराण)

नाग-धर—वि० [प० त०] नाग को धारण करनेवाला।

पुं० शिव।

नाग-ध्वनि—स्त्री० [सं०] मल्लार और केदार या सूहा अथवा कान्हड़े और सारग के योग से बनी हुई एक सकर रागिनी।

नाग-नक्षत्र—पुं० [मध्य० स०] आश्लेषा नक्षत्र।

नाग-नग—पु० [स० नाग+हि० नग]=गज मुक्ता।

नाग-नामक—पुं० [ब० स०, कप्] राँगा।

नाग-नामा (मन्)—पुं० [ब० स०] तुलसी।

नाग-पंचमी—स्त्री० [मध्य स०] श्रावण शुक्ला पचमी जिस दिन नागो की पूजा करने का विधान है।

नाग-पति—पुं० [प० त०] १. सर्पो के राजा, वासुकि। २. हाथियो के राजा, ऐरावत।

नाग-पत्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्]=नागदमनी (नागदौना)।

नाग-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] लक्ष्मणा (कंद)।

नाग-पद—पुं० [स०] एक प्रकार का रतिबंध जो सोलह रतिबंधो मे से दूसरा माना जाता है।

नाग-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] पान।

नाग-पाश—पु० [उपमि० स०] १. वरुण का एक अस्त्र जिससे वे शत्रुओं को लपेटकर उसी प्रकार बाँध लेते थे जिस प्रकार नाग या साँप किसी चीज को अपने शरीर से लपेटकर बाँध लेता है। २. सर्पो का फदा

जो वे किसी चीज के चारों ओर अपना शरीर लपेटकर बनाते हैं। ३. डोरी आदि का ढाई फेर का फंदा। नाग-बंध।

नाग-पुर—पुं० [ष० त०] १. नागों का पुर, पाताल। २. हस्तिना नामक पुर जहाँ पर्वत के रूप में स्वलील दानव ने गंगा का मार्ग रोका था।

नाग-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. नागकेसर। २. पुन्नाग। ३. चंपा।

नाग-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] १. पीली जूही। २. नागदौन।

नाग-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १. नागदौन। २. मेढा सींगी।

नागपूत—पुं० [सं० नागपुत्र] कचनार की जाति की एक प्रकार की लता।

नागफनी—स्त्री० [हिं० नाग+फन] १. थूहर की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं, केवल साँप के फन के आकार के गूदेदार मोटे दल एक दूसरे के ऊपर निकलते चले जाते हैं। इन दलों में बहुत से काँटे होते हैं जिनसे किसी स्थान को घेरने के लिए इसकी बाढ़ लगाई जाती है। २. नागफनी के दल के आकार की एक प्रकार की कटार जिसका फल आगे की ओर चौड़ा और पीछे की ओर पतला होता है। ३. नरसिंघे की तरह का एक प्रकार का नेपाली बाजा। ४. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. वह कौपीन या लँगोटी जो नागा साधु पहनते या बाँधते हैं।

नाग-फल—पुं० [ब० स०] परवल।

नागफाँस—पुं० [सं० नाग+हिं० फाँस] नाग-पाश। (दे०)

नाग-फेन—पुं० [ष० त०] १. साँप की लार। २. अफीम।

नाग-बंध—पुं० [उपमि० स०] किसी चीज को लपेटकर बाँधने का वह विशेष प्रकार जो प्रायः वैसा ही होता है जैसा नाग का किसी जीव-जंतु या वृक्ष आदि को अपने शरीर से लपेटने का होता है। उदा०—सेस नाग को नाग-बंध तापर कसि बाँध्यौ।—रत्ना०।

नाग-बंधु—पुं० [ष० त०] पीपल का पेड़।

नाग-बल—वि० [ब० स०] हाथी की तरह बलवान्।

पुं० भीम।

नाग-बला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] गँगेरन।

नागबेल—स्त्री० [सं० नागवल्ली] १. पान की बेल। पान। २. किसी चीज पर बनाई जानेवाली वह लहरियेदार बेल जो देखने में साँप की चाल की तरह जान पड़े। ३ घोड़े आदि पशुओं की टेढ़ी-तिरछी चाल।

नाग-भगिनी—स्त्री० [ष०त०] जरत्कारु (वासुकि की बहन)।

नाग-भिद्—पुं० [नाग√भिद् (विदारण)+क्विप्] १ सर्पों की एक जाति। २. उक्त जाति का सर्प, जो बहुत ही जहरीला और भीषण होता है।

नाग-भूषण—पुं० [ब०स०] शिव।

नागमंडलिक—पुं० [सं० नाग-मंडल, ष०त०,+ठन्-इक] सँपेरा।

नागमरोड़—पुं० [हिं० नाग+मरोड़ना] कुश्ती का एक पेंच जिसमें प्रतिद्वंद्वी को अपनी गर्दन के ऊपर से या कमर से एक हाथ से घसीटते हुए गिराते हैं।

नाग-मल्ल—पुं० [सं० त०] ऐरावत।

नाग-माता (तृ)—स्त्री० [ष०त०] १. नागों की माता, कद्रु। २. सुरसा नाम की राक्षसी। ३ मनसा देवी। ४ मैनसिल।

नाग-मार—पुं० [नाग√मृ (मरना)+णिच्+अण्] काला भँगरा।

नाग-मुख—पुं० [ब०स०] गणेश।

नाग-यष्टि—स्त्री० [मध्य०स०] तालाब के बीचोबीच गड़ा हुआ लकड़ी या पत्थर का खंभा।

नाग-रंग—पुं० [ब०स०] नारंगी।

नागर—वि० [सं० नगर+अण्] [स्त्री० नागरी, भाव० नागरता] १. नगर-संबंधी। नगर का। (अर्बन) २. नगरवासियों में होने अथवा उनसे संबंध रखनेवाला। (सिविल) जैसे—नागर अधिकार। (सिविल राइट) ३ नगरपालिका, महापालिका या नगर परिषद् से संबंध रखनेवाला। (म्युनिस्पल) जैसे—नागर निधि। (म्युनिस्पल फंड) ४. नागरिकों और उनके अधिकारों तथा कर्तव्यों से संबंध रखनेवाला। (सिविक) ५ चतुर। होशियार।

पुं० १. नगर में रहनेवाला व्यक्ति। नागरिक। २. चतुर, शिष्ट और सभ्य व्यक्ति। ३. विवाहिता स्त्री का देवर। ४. सोंठ। ५. नागर मोथा। ६. नारंगी। ७. गुजरात प्रदेश में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति। ८ नागरी लिपि का कोई अक्षर।

पुं० [?] दीवार का टेढ़ापन।

नागरक—पुं० [सं० नगर+वुञ्—अक] १. नगर का प्रबंध या शासन करनेवाला अधिकारी। २. कारीगर। शिल्पी। ३. चोर। ४. कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रतिबंध। ५. सोंठ।

वि०=नागर।

नाग-रक्त—पुं० [मध्य०स०] १. सर्प का रक्त। २. हाथी का रक्त। ३. सिंदूर।

नागर-घन—पुं० [मयू० स०] नागर मोथा।

नागरता—स्त्री० [सं० नागर+तल्—टाप्] नागर होने की अवस्था, गुण या भाव। (सिटिज़नशिप) २. आचार, व्यवहार आदि का वैसा सभ्यतापूर्ण और शिष्ट प्रकार जैसा साधारणतः शिक्षित और सभ्य नगरवासियों में प्रचलित हो। (सिविलिटी) ३. चतुरता। ४ दे० 'नागरिकता'।

नागरनट—पुं०=नटनागर।

नागर बेल—स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान की बेल।

नागर-मुस्ता—स्त्री० [उपमि०स०] =नागरमोथा।

नागरमोथा—पुं० [सं० नागरोत्थ] एक प्रकार का तृण जिसकी पत्तियाँ मूँज या शर की पत्तियों की तरह होती और दवा के काम आती हैं।

नाग-राज—पुं० [ष०त०] १ बहुत बड़ा सर्प। २. शेषनाग। ३. ऐरावत। ४ नराच या पंचामर छंद का एक नाम।

नागराह्वन—पुं० [सं० नागर-आह्वा ब०स०] सोंठ।

नागरिक—वि० [सं० नगर+ठञ्—इक] [भाव नागरिकता] १. (व्यक्ति) जिसने नगर में जन्म लिया हो और नगर में ही जिसका पालन-पोषण हुआ हो। २ चतुर। चालाक।

पुं० किसी राज्य में जन्म लेनेवाला वह व्यक्ति जिसे उस राज्य में रहने, नौकरी या व्यापार करने, संपत्ति रखने तथा स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार आदि प्रकट करने के अधिकार जन्म से ही स्वतः प्राप्त होते हैं। (सिटिजन)

विशेष—अन्य राज्यों में जन्म लेनेवाले व्यक्ति भी कुछ विशिष्ट

अवस्थाओं मे तथा कुछ विशिष्ट शर्तें पूरी करने पर किसी दूसरे राज्य के नागरिक वन सकते हैं।

नागरिकता—स्त्री० [स० नागरिक+तल्—टाप्] १ नागरिक होने की अवस्था, पद या भाव। २. नागरिक होने पर प्राप्त होनेवाले अधिकार तथा सुविधाएँ।

नागरिक-शास्त्र—पु० [प०त० या मध्य०स०] वह शास्त्र जिसमे नागरिको के अधिकारो और कर्तव्यो का उल्लेख और उसके देश, जाति आदि के परस्पर सवधो पर विचार होता है। (सिविक्स)

नाग-रिपु—पु०[प० त०] शेर। सिंह।

नाग-रिपुछाला—स्त्री० दे० 'बाघबर'।

नागरी—स्त्री० [स० नागर+ङीप्] १. नगर की रहनेवाली स्त्री। शहर की औरत। २ चतुर या होशियार स्त्री। ३. पशु आदि की मादा। जैसे—नाग-नागरी=हथिनी। ४. थूहर। ५. पत्थर की मोटाई नापने की एक नाप। ६ पत्थर का वहुत वडा और मोटा चौकोर टुकडा। ७ देव-नागरी नाम की लिपि। दे० 'देवनागरी'।

नागरीट—पु०[स० नागरी√इट् (गति)+क]१. कामुक और व्यसनी पुरुष। २ स्त्री का उपपति। जार। ३. विवाह करानेवाला व्यक्ति। घटक।

नागरुक—पु०[स० नाग√रु (गति)+क वा०]नारगी (वृक्ष और फल)।

नाग-रेणु—पु०[प०त०]सिंदूर।

नागरेयक—वि० [स० नगर+ठकञ्—एय] १. जो नगर मे उत्पन्न हुआ हो। २. नागरिक सवधी। जैसे—नागरेयक अधिकार।

नागरोत्थ—पु०[स० नागर-उद्√स्था (स्थिति)+क] नागरमोथा।

नागर्य्य—पु०[स० नागर+ष्यञ्] १ नागरता। २ नगरवासियों की-सी चतुराई या चालाकी।

नागल—पु०[देश०]१ हल। २ वह रस्सी जिससे वैल जूए मे जोड़े या वाँधे जाते हैं।

नाग-लता—स्त्री०[उपमि०स०] पान की वेल।

नाग-लोक—पु०[प०त०] नागो का देश, पाताल।

नाग-वंश—पु०[प०त०]१. नागो का वश। २ शक जाति की एक शाखा।

नागवंशी (शिन्)—वि०[स० नागवश+इनि] १. नागवश मे उत्पन्न। २ नागवंश-सवधी।

नाग-वल्लरी—स्त्री०[उपमि०स०] पान।

नाग-वल्ली—स्त्री०[उपमि० स०] पान की लता।

ना-गवार—वि०[फा० ना+गवार=अच्छा लगनेवाला] [भाव० नागवारी] अच्छा न लगनेवाला। अप्रिय या अरुचिकर।

ना-गवारा—वि०=नागवार।

नाग-वारिक—पु० [स० नाग-वार, प०त० +ठक्—इक] १ राज-कुजर। २ हाथियो का झुड। ३ महावत। ४ गरुड़। ५ मोर।

नाग-वीथी—स्त्री०[प०त०] १. चन्द्रमा के मार्ग का वह अश जिसमे अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र पड़ते हैं। २ कश्यप की एक पुत्री।

नाग-वृक्ष—पु० [मध्य०स०] नागकेसर नामक पेड।

नाग-शत—पु०[व०स०] एक प्राचीन पर्वत। (महाभारत)

नाग-शुंडी—स्त्री० [स० नाग-शुड प०त०,+अच्—ङीप्] एक प्रकार की ककडी।

नाग-शुद्धि—स्त्री०[प०त०] मकान की नीव रखते समय इस वात का रखा जानेवाला ध्यान कि कही पहला आघात सर्प के मस्तक या पीठ पर न पड़े।

विशेष—फलित ज्योतिष मे, विशिष्ट समयो मे सर्प का मुख निश्चित दिशाओ मे माना जाता है। भादो, कुआर और कार्तिक मे पूरब की ओर, अगहन, पूस और माघ मे दक्षिण की ओर आदि आदि सर्प का मुख होता है। कहते है कि सर्प के मस्तक पर पहला आघात लगने से स्वामिनी की मृत्यु होती है। पेट पर होनेवाला आघात शुभ माना जाता है।

नाग-संभव—पुं०[व०स०]१ सिंदूर। २ एक प्रकार का मोती।

नाग-संभूत—पु०[प० त०]=नाग-सभव।

नाग-साह्वय—पु०[व०स०] हस्तिनापुर।

नाग-सुगंधा—स्त्री०[व०स०, टाप्] एक प्रकार की रास्ना।

नाग-स्तोकक—पु०[स०] वत्सनाभ नामक विष।

नाग-स्फोता—स्त्री०[उपमि०स०]१ नागदती। २ दतीवृक्ष।

नाग-हनु—पु०[प०त०] नख नामक गध द्रव्य।

ना-गहाँ—क्रि० वि०[फा०] १ अचानक। अकस्मात्। एकाएक। २. कुसमय मे।

ना-गहानी—वि०[फा०] अकस्मात् या अचानक आकर उपस्थित होनेवाला। जैसे—नागहानी आफत, वला या मौत।

नागांग—पु०[नाग-अग, व०स०] हस्तिनापुर।

नागांगना—स्त्री०[ना-गअगना प०त०] हथिनी।

नागांचला—स्त्री०[नाग-अचल, व०स०, टाप्] नाग-यष्टि।

नागांजना—स्त्री० [नाग-अजन, व० स०, टाप्] १. नाग-यष्टि। २ हथिनी।

नागांतक—वि०[नाग-अतक, प०त०] नागो का अत या नाश करनेवाला। पु० १. गरुड। २ मोर। ३ सिंह।

नागा—वि०[स० नग्न] १. नगा। २ खाली। रहित। रीता। उदा०—नागे हाथे ते गए जिनके लाख करोड।—कबीर।
पु०१. शैव साधुओ का एक प्रसिद्ध सप्रदाय। २ उक्त सप्रदाय के साधु जो प्राय विलकुल नगे रहते है।
पु०[स० नाग]१. असम देश की एक पर्वत-माला। २. एक प्रकार की अर्द्ध-सभ्य जगली जाति जो उक्त पर्वत-माला मे रहती है।
पु०[तु० नाग]१. वह दिन जिसमे कोई व्यक्ति अपने काम पर उपस्थित न हुआ हो। जैसे—नौकर ने इस महीने मे चार नागे किये हैं। २ वह दिन जिसमे परम्परा आदि के कारण कोई काम नही किया जाता अथवा काम पर उपस्थित नही हुआ जाता। जैसे—रविवार को प्राय नौकर नागा करते हैं। ३ वह दिन जिसमे कोई नित्य किया जानेवाला काम छूट या रह जाय। जैसे—पढाई का नागा, दूकान का नागा। ४ अनवधान के कारण होनेवाली चूक या व्यतिक्रम। उदा०—नागा करमन कौ करत दुरि छिपि छिपि।—सेनापति।
क्रि० प्र०—करना।—देना।—पडना।

नागाख्य—पुं०[नाग-आख्या, व०स०] नागकेसर।

नागानंद—पु०[स०] हर्ष का एक प्रसिद्ध नाटक।

उल्लेख, उत्तेजन, परीवाद, नीति, अर्थ विशेषण, प्रोत्साहन, सहाय्य, अभिमान, अनुवृत्ति, उतकीर्तन, याचा, परिहार, निवेदन, पवर्तन, आख्यान, युक्ति, प्रहर्ष और शिक्षा।

नाट्योक्ति—स्त्री० [नाट्य-उक्ति, स० त०] भारतीय नाट्यशास्त्र मे विशिष्ट पात्रो के लिए वतलाई हुई कुछ विशिष्ट रूप की उक्तियाँ या कथन-प्रकार, यथा—ब्राह्मणो को 'आर्य', राजा को 'देव', पति को 'आर्यपुत्र' आदि कहकर सवोधित करने का विधान।

नाट्योचित—वि० [नाट्य-उचित, प० त०] १ जो नाट्य या नाटक के लिए उचित या उपयुक्त हो। २ जिसका अभिनय हो सके।

नाठ—पु० [स० नष्ट, प्र० नट्ठ] १. नाश। ध्वस। २ अभाव। कमी। ३. ऐसी सपत्ति, जिसका कोई अधिकारी या स्वामी न रह गया हो।

मुहा०—नाठ पर वैठना=ऐसी संपत्ति का अधिकार पाना, जिसका कोई स्वामी न रह गया हो।

नाठना—स० [स० नष्ट, प्रा० नण्ट] नष्ट करना, ध्वस्त करना।

अ० नष्ट होना।

अ० दे० 'नटना'।

नाठा—पु० [हिं० नाठ] वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न रह गया हो।

†पु० [स० नासिका] नाक।

नाड़—स्त्री० [स० नाल, डस्म ल.] १ ग्रीवा। गर्दन। २ दे० 'नार'। ३ दे० 'नाल'।

नाड़क—वि० [स०] नली या नल के आकार का और लवा।

पु० एक प्रकार की वडी और वहुत लवी मछली।

नाडा—पु० [स० नाड] १. सूत की वह मोटी डोरी, जिससे स्त्रियाँ घाघरा वाँधती हैं। इजारवद। नीवी।

मुहा०—नाड़ा खोलना=किसी के साथ सभोग करने के लिए उद्यत होना। (वाजारू)

२. वह पीला या लाल रँगा हुआ गडेदार सूत जिसका उपयोग देव-पूजन आदि मे होता है। मौली।

मुहा०—नाड़ा वाँधना=किसी को कोई कला या विद्या सिखलाने के लिए अपना शिष्य वनाना।

३. पेट की अदर की वह नली जिसमे होकर मल आँतो की ओर आता है।

मुहा०—नाड़ा उखडना=उक्त नली का अपने स्थान से कुछ खिसक जाना, जिसके फलस्वरूप दस्त आने लगते हैं। **नाडा वैठाना**=झटके आदि से उक्त नली को फिर अपने स्थान पर लाना।

नाडिंधम—वि० [स० नाडी√ध्मा (शब्द)+खश्, मुम् धमादेश ह्रस्व] १ नली के द्वारा हवा फूंकनेवाला। २. नाडियो को हिला देनेवाला। ३ श्वास-प्रश्वास की क्रिया को तीव्र करनेवाला।

पु० सुनार।

नाडिंधय—वि० [स० नाडी√धे (पीना)+खश्, मुम्, ह्रस्व] नाडी के द्वारा पान करनेवाला।

नाडि—स्त्री० [स०√नड्+णिच्+इन्] १ नाड़ी। २ नली।

नाडिक—पु० [स० नाडि+कन्] १ एक प्रकार का साग जिसे पटुआ भी कहते हैं। २. समय का घटिका या दड नामक मान। ३ दे० नाडी।

नाड़िका—स्त्री० [स० नाडी+कन् –टाप्, ह्रस्व] एक घडी का समय। घटिका।

नाड़िकेल—पु० [स०=नारिकेल+रस्य ड] नारियल।

नाड़िपत्र—पु० [स०] एक प्रकार का साग। पटुआ नामक साग।

नाड़िया—पु० [हिं० नाड़ी] नाडी देखकर रोग का पता लगानेवाला अर्थात् वैद्य।

नाड़ी—स्त्री० [स० नाडि+ङीप्] १. नली। २ शरीर के अंदर मांस और ततुओ से मिलकर वनी हुई वहुत-सी नालियो मे से कोई या हर एक जो हृदय से शुद्ध रक्त लेकर सव अगो मे पहुँचाती है। धमनी। ३ कलाई पर की वह नाडी, जिसकी गति आदि देखकर रोगी की शारीरिक अवस्था विशेषत. ज्वर आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। (वैद्य)

मुहा०—नाड़ी चलना=कलाई की नाडी मे स्पदन या गति होना, जो जीवित रहने का लक्षण है। **नाडी छूटना**=उक्त नाड़ी का स्पदन वद हो जाना जो मृत्यु हो जाने का सूचक होता है। **नाड़ी देखना**=कलाई की नाड़ी पर उगलियाँ रखकर उनकी गति देखना और उसके आधार पर रोग का निदान करना। (वैद्यो की परिभाषा) **नाड़ी धरना या पकड़ना**=नाडी देखना। **नाड़ी वोलना**=नाडी मे गति या स्पंदन होता रहना। जैसे—अभी नाडी वोल रही है, अर्थात् अभी शरीर मे प्राण हैं।

४. वदूक की नली। ५. काल का एक मान जो ६ क्षणो का होता है। ६ गाँडर दूव। ७ वशपत्री। ८ कपट। छल। ९ फोड़े आदि का मुँह। १० फलित ज्योतिष मे, वैवाहिक गणना मे काम आनेवाले चक्रो मे वैठाये हुए नक्षत्रो का समूह। ११. तृण या वनस्पति का पोला डठल।

नाड़ीक—पु० [स० नाडी√कै (मालूम पडना)+क] एक प्रकार का साग। पटुआ साग।

नाड़ी-कलापक—पु० [स० व० स०, कप्] सर्पाक्षी या भिड़नी नाम की घास।

नाड़ीका—स्त्री० [स० नाड़ी+कन्—टाप्] श्वास-नलिका।

नाड़ी-कूट—पु० [स० व० स०] नाडी-नक्षत्र।

नाडी-केल—पु० [स०=नारिकेल, पृषो० सिद्धि] नारियल।

नाडीच—पु० [स० नाडी√चि (चयन)+ड] पटुआ (साग)।

नाड़ी-चक्र—पु० [स०] १. हठयोग के अनुसार नाभिदेश मे कल्पित एक अडाकार गाँठ, जिससे निकलकर सव नाडियाँ फैली हुई मानी गई है। २ फलित ज्योतिष मे वह चक्र जो वैवाहिक गणना के लिए वनाया जाता है और जिसके भिन्न-भिन्न कोष्ठो मे भिन्न-भिन्न नक्षत्रो के नाम लिखे होते हैं।

नाडी-चरण—पु० [स० व० स०] पक्षी।

नाड़ी-जंघ—पु० [स० व० स०] १ महाभारत के अनुसार एक वगला जो कश्यप का पुत्र, व्रह्मा का अत्यत प्रिय-पात्र और दीर्घ-जीवी था। २ एक प्राचीन ऋषि। ३ कौआ।

नाड़ी-तरग—पु० [स० व० स०] १. काकोल। २ हिंडक।

नाड़ी-तिक्त—पु० [तृ० त०] नेपाली नीम। नेपाल निंब।
नाड़ी-देह—वि० [ब० स०] अत्यंत दुबला-पतला।
पु० शिव का एक द्वारपाल।
नाड़ी-नक्षत्र—पु० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष में, वैवाहिक गणना के काम के लिए बनाए हुए कल्पित चक्रों मे स्थित नक्षत्र।
नाडी मंडल—पु० [स०] विषुवत् रेखा। (दे०)
नाड़ी-यंत्र—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का प्राचीन उपकरण, जिससे नाडियो की चीर-फाड की जाती थी और उनमे घुसी हुई चीजें निकाली जाती थी। (सुश्रुत)
नाड़ी-वलय—पु० [ष० त०] समय का ज्ञान करानेवाली एक प्रकार का प्राचीन उपकरण।
नाड़ी-व्रण—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का घाव जो नली के छेद के समान होता है तथा जिसमे से मवाद निकलता रहता है। नासूर। (साइनस)
नाड़ी-शाक—पु० [मध्य० स०] पटुआ (साग)।
नाड़ी-हिंगु—पु० [मध्य० स०] १ एक तरह का वृक्ष जिसके गोंद मे हीग की सी गंध होती है। २. उक्त वृक्ष का गोंद जो ओषधि के काम आता है।
नाडूदाना—पु० [देश०] मैसूर राज्य मे होनेवाले एक तरह के बैल, जो कद मे छोटे होने पर भी अधिक परिश्रमी होते है।
नाणक—पु० [स०√अण् (शब्द)+ण्वुल्—अक, न० त०] १. धातु। २. निष्क नाम का पुराना सिक्का। ३. सिक्का।
नात—स्त्री० [अ० नअत] १. मुहम्मद साहब की छंदोबद्ध स्तुति। २. प्रशंसा। स्तुति।
†पु० १.=नाता (संबंध)। २.=नातेदार (संबंधी)।
नातका—पु० [अ० नातिक] बोलने की शक्ति। वाक्-शक्ति।
मुहा०—(किसी का) नातका बंद करना=वाद-विवाद मे निरुत्तर और परास्त करना।
ना-तमाम—वि० [फा०] १. जो अभी पूरा न हुआ हो। अपूर्ण। २. जिसका कुछ अंश अभी पूरा होने को बाकी हो। अधूरा।
नातरि—अव्य०=नातरु।
नातरु—अव्य० [हिं० न+तो+अरु] नही तो। अन्यथा।
नातवाँ—वि० [फा० नातुवाँ] [भाव० नातवानी] शारीरिक दृष्टि से अशक्त। दुर्बल।
नातवानी—स्त्री० [फा० नातुवानी] शारीरिक अशक्तता। दुर्बलता।
नाता—पु० [स० ज्ञाति, प्रा०, णाति, हिं०, नात] १ मनुष्यों मे होनेवाला वह पारिवारिक लगाव या संबंध जो रक्त-संबंध के कारण अथवा विवाह आदि सूत्रो के कारण स्थापित होता है। रिश्ता। जैसे—वे नाते मे हमारे भतीजे होते हैं।
पद—नाता-गोता, नातेदार। (दे०)
२ वैवाहिक संबंध का निश्चय। जैसे—अभी उनके लड़के का नाता कहीं पक्का नही हुआ है। ३ किसी प्रकार का लगाव या संबंध। जैसे—प्यार या मुहब्बत का नाता, दोस्ती का नाता।
क्रि० प्र०—जोडना।—तोडना।—लगाना।

ना-ताकत—वि० [फा० ना०+अ० ताकत] [भाव० नाताकती] जिसमें ताकत न हो। अशक्त।
ना-ताकती—स्त्री० [फा० ना+अ० ताकत+ई (प्रत्य०)] नाताकत होने की अवस्था या भाव। कमजोरी। दुर्बलता।
नाता-गोता—पु० [हिं० नाता+गोता] वंश और गोत्र के कारण होनेवाला पारस्परिक संबंध।
नातिन†—स्त्री० हिं० 'नाती' का स्त्री०।
नातिनी—स्त्री०=नातिन।
नाती—पु० [स० नप्तृ] [स्त्री० नतिनी, नातिन] १. लड़की का लडका। बेटी का बेटा। †२ लडके का लडका। उदा०—उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती।—तुलसी।
नाते—अव्य० [हिं० नाता] १. लगाव या संबंध के विचार से। २. किसी प्रकार के संबंध के विचार से। व्याज से। जैसे—चलो इसी नाते उनका आना-जाना तो शुरू हुआ। ३. वास्ते। हेतु।
पद—किस नाते=किस उद्देश्य से। किस लिए।
नातेदार—वि० [हिं० नाता+दार] [भाव० नातेदारी] (व्यक्ति) जिससे कोई नाता हो। रिश्तेदार। संबंधी।
नात्र—पु० [स०√नम् (प्रणाम करना)+ष्ट्रन्, आत्व] शिव।
नाथ—पु० [स०√नाथ (ऐश्वर्य)+अच्] १. प्रभु। स्वामी। जैसे—दीनानाथ, विश्वनाथ। २. अधिपति। मालिक। ३. विवाहिता स्त्री का पति। ४. शिव। ५. आदिनाथ और मत्स्येन्द्रनाथ के अनुयायियों या गोरखपंथियों का संप्रदाय। ६. उक्त संप्रदाय के अनुयायी साधुओं के नाम के अंत मे लगनेवाली उपाधि। ७. उक्त संप्रदाय के अनुयायियों के अनुसार वह सबसे बड़ा योगीश्वर जो सब बातों से अलिप्त रहकर मोक्ष का अधिकारी हो चुका हो। ८ साँप पालनेवाले एक प्रकार के मदारी।
स्त्री० [सं० नाथ या हिं० नाथना] १. नाथने की क्रिया या भाव। २. वह रस्सी जो ऊँटों, बैलो, आदि के नथनो मे उन्हे वश मे रखने के लिए डाली या बाँधी जाती है।
†स्त्री०=नथ (नाक मे पहनने की)।
नाथता—स्त्री० [स० नाथ+तल्—टाप्] 'नाथ' होने की अवस्था या भाव। नाथत्व।
नाथत्व—पु० [स० नाथ+त्व] =नाथता।
नाथ-द्वारा—पु० [स० नाथद्वार] उदयपुर के अंतर्गत वल्लभ-संप्रदाय के वैष्णवो का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।
नाथना—स० [स० नस्तन] १. कुछ विशिष्ट पशुओ के नथने मे छेद करना। जैसे—ऊँट या बैल नाथना। २. इस प्रकार किए हुए छेद मे लंबी रस्सी पहनाना जो लगाम का काम करती है तथा जिससे पशु को वश मे रखा जाता है।
मुहा०—नाक पकड़कर नाथना=बलपूर्वक वश मे करना!
३ किसी चीज के सिरे मे छेद करके उसे डोरे, रस्सी आदि से बाँधना। ४ कई चीजे एक साथ रखने की लिए उन मे उक्त प्रकार की क्रिया करना। नत्थी करना। ५. लडी के रूप मे गूँथना, जोड़ना या पिरोना।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।
नाथ-पंथ—पु० [स०] गुरु गोरखनाथ और उनके शिष्यो का चलाया हुआ

एक सप्रदाय जिसकी ये बारह शाखाएँ है—सत्यनाथी, धर्मनाथी, रामपथ, नटेश्वरी, कन्हण, कपिलानी, वैरागी, माननाथी, आईपथ, पागलपथ, धजपथ, और गगानाथी। ये सभी शिव के भक्त है।

नाथपंथी—पु० [स०] नाथ पथ का अनुयायी।

नाथवान् (वत्)—वि० [स० नाथ+मतुप्] पराधीन।

नाथ-हरि—पु० [स०नाथ√हृ (हरण)+इन्] पशु।

नाद—पु० [स०√नद् (शब्द)+घञ्] १ आवाज। शब्द। २ जोर की वह आवाज या ध्वनि, जो कुछ समय तक बराबर होती रहे। ३ वेदात मे, विश्व मे उत्पन्न होनेवाला वह क्षोभ जो उपाधियुक्त चैतन्य से उपाधियुक्त शक्ति का सयोग होने के समय होता है। इसे 'परनाद' भी कहते है। ४ हठयोग मे, अतरात्मा मे होती रहनेवाली एक प्रकार की सूक्ष्म ध्वनि या शब्द जो एकाग्र चित्त होकर अभ्यास करने पर सुनाई पडती है और जिसे सुनते रहने से चित्त अत मे नाद-रूपी ब्रह्म मे लीन हो जाता है। ५ वर्णो का अव्यक्त मूल-रूप। ६. भाषा-विज्ञान और व्याकरण मे वर्णो के उच्चारण मे होनेवाला एक विशेष प्रकार का प्रयत्न जिसमे कठ से वायु का स्वर निकालने के लिए न तो उसे बहुत फैलाना ही पडता है और न बहुत सिकोडना ही पडता है। ७ गाना-बजाना। सगीत।

पद—नाद-विद्या=सगीत शास्त्र।

८ कुछ-कुछ अनुस्वार के समान उच्चरित होनेवाला वर्ण या स्वर जो अर्द्ध-चद्र पर बिंदु देकर इस प्रकार लिखा जाता है ँ। ९ सिंगी नामक बाजा। उदा०—सेली नाद बभूत न बटवो अजूँ मुनी मुख खोल।—मीराँ।

नादना—अ० [स० नाद] १ ध्वनि या शब्द होना। २ बजना। ३ गरजना, चिल्लाना या शोर मचाना।

स० १ ध्वनि या शब्द उत्पन्न करना। २. बजाना।

अ० [स० नदन] १ दीए की लौ का हवा लगने से रह-रहकर हिलना। २ प्रसन्नतापूर्वक इधर-उधर हिलना-डोलना। उदा०—उठति दिया लौ, नादि हरि लिये तिहारो नाम।—बिहारी। ३ लहराना।

नाद-मुद्रा—स्त्री० [स० मध्य० स०] तत्र मे हाथ की वह मुद्रा जिसमे दाहिने हाथ का अँगूठा सीधा और खडा रखा जाता है और मुट्ठी बधी रहती है।

नादली—स्त्री० [अ० नादे अली] सग यशब नामक पत्थर की वह चौकोर टिकिया जिसे रोग या बाधा दूर करने के लिए गले मे या बाँह पर पहनते है। हौल-दिली। (दे०)

नादान—वि० [फा०] [भाव० नादानी] १ अवस्था मे कम होने के कारण जिसे समझ न आई हो। ना-समझ। २ जो अकुशल या अनाडी हो। ३ मूर्ख।

ना-दानिस्ता—क्रि० वि० [फा० नादानिस्त] १ बिना जाने या समझे हुए। २ अनजान मे।

नादानी—स्त्री० [फा०] १ नादान होने की अवस्था या भाव। २ अकुशलता। अनाडीपन। ३ मूर्खता या मूर्खतापूर्ण कोई कार्य।

नादार—वि० [फा०] [भाव० नादारी] जिसके पास कुछ न हो। परम निर्धन। कगाल।

पु० गजीफे के खेल मे; बिना रग या बिना मीर की बाजी।

नादारी—स्त्री० [फा०] 'नादार' होने की अवस्था या भाव। निर्धनता। गरीबी।

नादि—वि० [स० नादिन] १ शब्द करनेवाला। २ गरजनेवाला।

नादित—भू० कृ० [स० नाद+इतच्] १ जो नाद से युक्त किया गया हो अथवा हुआ हो। २ शब्द करता हुआ। बजता हुआ। ३ गूँजता हुआ।

नादिम—वि० [अ०] [भाव० नदामत] १ लज्जित। शर्मिदा। २. पश्चात्ताप करनेवाला।

नादिया—पु० [स० नदी] १ नदी। २ वह विकृत, विलक्षण, या अधिक अग या अगोवाला साँड़, जिसे जोगी अपने साथ लेकर भीख माँगने निकलते हैं।

नादिर—वि० [फा० नादिर] १ विचित्र। विलक्षण। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

नादिरशाह—पु० [अ०] पारस (फारस) देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसने मुहम्मद शाह के समय मे भारत पर आक्रमण किया था।

विशेष—यह अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध है। इसने एक छोटी-सी बात पर क्रुद्ध होकर दिल्ली के लाखो निवासियो की हत्या करवा डाली थी।

नादिरशाही—स्त्री० [हिं० नादिरशाह] १ नादिरशाह का वह बर्बरता पूर्ण व्यवहार जो उसने दिल्ली मे किया था और जिसके फल-स्वरूप लाखो आदमी मारे गए थे। २ ऐसा आचरण, व्यवहार या शासन, जो बहुत ही निर्दयतापूर्वक और मनमाने ढग से किया जाय।

वि० वैसा ही उग्र, कठोर और मनमाना, जैसा दिल्ली मे नादिरशाह का आचरण या व्यवहार था। नादिरी।

नादिरी—वि० [अ०] १ नादिरशाह-सबधी। २ अत्याचार और क्रूरतापूर्ण।

स्त्री० १ एक प्रकार की कुरती या सदरी जो मुगल बादशाहो के समय मे पहनी जाती थी।

पु० गजीफे का वह पत्ता जो खेल के समय निकालकर अलग रख दिया जाता है।

मुहा०—(किसी पर) नादिरी चढाना=बहुत बुरी तरह से मात करना या हराना।

नादिहंद—वि० [फा०] जो किसी की चीज या धन लेकर जल्दी लौटाता न हो। देन लौटाने मे बराबर टाल-मटोल करता रहनेवाला।

नादिहंदी—स्त्री० [फा०] नादिहद होने की अवस्था या भाव। देन लौटाने मे टाल मटोल करना।

नादी—वि० [स० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १ नाद या शब्द-सबधी। २. नाद या शब्द करनेवाला। ३ बजानेवाला।

नादेअली—स्त्री० दे० 'नादली'।

नादेय—वि० [स० नदी+ढक्—एय] [स्त्री० नादेयी] १ नदी-सबधी। २ नदी मे होनेवाला।

पु० १ सेधा नमक। २ सुरमा। ३ जलबेत। ४ काँस नामक घास।

नादेयी—स्त्री० [स० नादेय+ङीप्] १ जलबेत। २ भुइँ जामुन।

३. नारंगी। ४. वैजयन्ती। ५ जपा। अड्हुल। ६. अग्निमथ। अँगेथू।
वि० स० 'नादेय' का स्त्री०।
नादेहंद—वि०=नादिहद।
नाद्य—वि० [स० नदी+ढ्यण्] नदी-सबधी।
†कमल।
नाधन—स्त्री० [हिं० नाधना] १. नाधने की क्रिया या भाव। २. चरखे के तकले मे लगा हुआ गत्ते, चमडे आदि का वह गोल टुकडा जो तागे को इधर-उधर होने से रोकता है।
नाधना—स० [स० नद्ध] १ कोई कार्य अनुष्ठित या आरभ करना। ठानना। २ दे० 'नाथना' (सभी अर्थों मे)।
नाधा—पु० [हिं० नाधना] वह रस्सी या चमडे की पट्टी जिससे जुए मे कोल्हू, हल आदि बाँधे जाते है।
पु० [?] वह स्थान जहाँ जलाशय से पानी निकाल कर फेंका जाता है और जहाँ से नालियों मे होता हुआ वह सिंचाई के लिए खेतो मे जाता है।
नान—स्त्री० [फा०] १ मोटी बड़ी रोटी।
पद—नान-नुफका=रोटी और कपडा; अर्थात् खाने-पीने और पहनने आदि की सामग्री।
२. तदूर मे पकाई जानेवाली एक प्रकार की मोटी खमीरी रोटी। ३. खमीरी रोटी।
नानक—वि० [प० नानका=ननिहाल] [स्त्री० नानकी] जो ननिहाल मे उत्पन्न हुआ हो।
पु० कबीर के समकालीन एक प्रसिद्ध निर्गुण ज्ञानी भक्त जो सिक्ख सप्रदाय के आदि गुरु माने जाते है। (वि० स० १५२६-९७)
नानक-पंथ—पु० [हिं०] गुरु नानक का चलाया हुआ सिक्ख-सप्रदाय।
नानक-पंथी—वि० [हिं० नानक+पथ] १. नानक पथ-सबधी। २ नानक का अनुयायी।
नानकशाह—पु०=नानक (महात्मा)।
नानकशाही—वि०=नानकपथी।
नानकार—स्त्री० [फा० नान=रोटी+कार (प्रत्य०)] वह जमीन जो सेवक को पुरस्कार रूप मे जीविका-निर्वाह के लिए दी जाती थी।
नानकीन—पु० [चीनी नानकिङ] चीन के नानकिङ नगर मे बननेवाला एक तरह का बढ़िया सूती कपडा, जो अब सभी देशो मे बनने लगा है और 'मारकीन' के नाम से प्रसिद्ध है।
नान-खताई—स्त्री० [फा० नान=रोटी+खता (एक प्रदेश का नाम)] १ खता नामक प्रदेश मे बननेवाली एक प्रकार की मीठी खस्ता रोटी। २. मैदे, सूजी आदि का बना हुआ एक तरह का मीठा खस्ता पकवान।
नानबाई—पु० [फा० नान+बा=बेचनेवाला] वह जो नान अर्थात् रोटियाँ बेचता हो।
नानस—स्त्री० [?] ननिया सास का सक्षिप्त रूप।
नाना—वि० [स० न+नाञ्] [भाव० नानात्व] १ अनेक प्रकार के। बहुत तरह के। विविध। (बहु०) २. अनेक। बहुत।
पु० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता या मातामह।
†स० [स० नमन] १ नवाना। झुकाना। २. प्रविष्ट करना। घुसाना। ३ अन्दर रखना। डालना। ४. सयो० क्रि० के रूप मे, पूरा करना। उदा०—अस मनमथ महेश कै नाई।—तुलसी।
पु० [अ० नअ्नाअ्] पुदीना। जैसे—अर्कनाना=पुदीने का अरक।
नानाकंद—पु० [स०] पिंडालू।
नानात्मवादी (दिन्)—वि० [स० नाना-आत्मन्, कर्म० स०, नानात्मन् √वद् (बोलना)+णिनि] साख्य दर्शन का अनुयायी जो यह मानता हो कि व्यक्ति की आत्मा विश्वात्मा से अलग अस्तित्व रखती है।
नानार्थ—वि० [स० नाना-अर्थ, ब० स०] १. (शब्द) जिसके अनेक अर्थ हों। २. (वस्तु) जो अनेक कामो मे प्रयुक्त हो सके।
नानिहाल—पु०=ननिहाल (नाना का घर)।
नानी—स्त्री० [हिं० नाना का स्त्री०] माँ की माँ। माता की माता। मातामही।
मुहा०—नानी मरना या मर जाना=(क) इतना उदास, खिन्न या दुःखी हो जाना कि मानो नानी मर गई हो। (ख) बहुत अधिक विपत्ति या झझट मे पडना। नानी याद आना=ऐसी विपत्ति या सकट मे पडना कि मानो बच्चो की तरह नानी की सहायता या सरक्षण की अपेक्षा कर रहे हो। (परिहास और व्यग्य)
पद—नानी की कहानी=पुरानी और व्यर्थ की लबी-चौडी बातें।
ना-नुकर—पु० [हिं० न+करना] 'नहीं', 'नहीं' कहने की क्रिया या भाव। इन्कार।
नानुसारी—वि० [हिं० न+अनुसारी] अनुसरण न करनेवाला।
नान्हा—वि० [प्रा० लान्हा] १ नन्हा। छोटा। २. तुच्छ या हीन कुल अथवा वश का। ३. पतला। बारीक। महीन।
मुहा०—नान्ह कातना=ऐसा बारीक या सूक्ष्म काम करना जिसमे बहुत अधिक परिश्रम और समझदारी की आवश्यकता हो।
नान्हक—पु०=दे० 'नानक'।
नान्हरिया—वि०=नान्हा (नन्हा)।
नान्हा—वि० दे० 'नन्हा'। २ दे० 'नान्ह'।
नाप—स्त्री० [हिं० नापना] १ नापने की क्रिया या भाव। किसी पदार्थ के विस्तार का निर्धारण। जैसे—यह थान नाप मे पूरा बीस गज उतरेगा।
पद—नाप-जोख, नाप-तौल। (दे०)
२ किसी चीज की ऊँचाई, लबाई, चौड़ाई, गहराई-मोटाई आदि के विस्तार का वह परिमाण जो उसे नापने पर जाना जाता या निकलता है। माप। जैसे—इस जमीन की नाप १०० गज लबी और चौड़ाई ५० गज है। ३ वह निर्दिष्ट परिमाण जिसे इकाई मानकर कोई चीज नापी जाती है। जैसे—कपड़े के गज की नाप ३६ इच की और लकडी के गज की नाप २४ इच की होती है। ४ वह उपकरण जो उक्त प्रकार की इकाई का मानक प्रतीक हो और जिससे चीजें नापी जाती हो। जैसे—कपडा या लकडी नापने का गज, तेल या दूध नापने का नपना या नपुआ।
नापत†—स्त्री० १=नाप। २ =नपत।
नाप-जोख—स्त्री० [हिं० नापना+जोखना] १. किसी चीज की लबाई-चौडाई आदि नापने अथवा किसी चीज या बात का गुरुत्व, मान, शक्ति आदि आँकने अथवा समझने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) आज-कल

देहातो मे खेतो की नाप-जोख हो रही है। (ख) किसी से लडाई छेडने (या ठानने) से पहले उसके वल, सावनो आदि की नाप-जोख कर लेनी चाहिए। २. दे० 'नाप-तौल'।

विशेष—साधारण वोल-चाल मे 'नाप-जोख' पद का प्रयोग मूर्त पदार्थो के सिवा अमूर्त तत्त्वो या वातो के सवंध मे भी देखने मे आता है, जैसा कि ऊपर के (ख) उदाहरण से स्पष्ट है। अत. कहा जा सकता है कि अर्थ की दृष्टि से 'नाप-तौल' की तुलना मे 'नाप-जोख' पद अधिक व्यजक तथा व्यापक है।

नाप-तौल—स्त्री० [हिं० नापना+तौलना] १ कोई चीज नापने या तौलने की क्रिया या भाव। २ दे० 'नाप-जोख' और उसके अतर्गत विशेष टिप्पणी।

नापना—स० [स० मापन] १. नियत या निर्वारित नाप, मान या माप-दड की सहायता से किमी चीज की लवाई-चौड़ाई, गहराई-ऊँचाई आदि अथवा किसी प्रकार के आयत या विस्तार का ठीक ज्ञान प्राप्त करना या पता लगाना। मापने की क्रिया करना। जैसे—गज, वित्ते, हाथ आदि से कपडा नापना। (गरदन नापना, रास्ता नापना आदि मुहावरो के लिए देखें गरदन, रास्ता आदि के मुहा०)।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

विशेष—चीजें नापने के लिए सुभीते के अनुसार अलग-अलग प्रकार की इकाइयाँ स्थिर कर ली जाती हैं। जैसे—अँगुल, वित्ता, हाथ, गज आदि, और तव उन्ही इकाइयो के आवार पर चीजो की नाप की जाती है। जैसे—यह धोती नापने पर पौने पाँच गज निकली, अथवा यह रस्सी नापने पर वीस हाथ ठहरी।

२ कुछ विशिष्ट तरल पदार्थो के सवध मे, किसी नियत इकाई की सहायता से उसके परिमाण, भार आदि का पता लगाना या स्थिर करना। जैसे—नपने से तेल या दूध नापना।

विशेष—वास्तव मे इस क्रिया का उद्देश्य किसी पदार्थ को तौलना ही होता है; परतु इसके लिए कोई ऐसा पात्र स्थिर कर लिया जाता है, जिसमे कोई चीज तौल के हिसाव से किसी विशिष्ट इकाई के वरावर आती हो, और तव वही पात्र (जिसे नपना या नपुआ कहते हैं) वार-वार भरकर उस चीज की तौल या मान स्थिर करते हैं। इससे तौलने की झझट से वचत होती है। आज-कल अधिकतर तरल पदार्थ इसी प्रकार नापे (वस्तुत तौले) जाते हैं। कुछ ही दिन पहले अनाज आदि भी इसी तरह नाप (वस्तुत तौल) कर बेचे जाते थे।

३ अदाज करना।

नाप-मान—पु०=मान-दड।

ना-पसन्द—वि० [फ़ा०] जो पसन्द न आवे। जो अच्छा न जान पडे। जो पसन्द न हो। अप्रिय। अरुचिकर।

नापाक—वि० [फ़ा०] [भाव० नापाकी] १ अपवित्र। अशुचि। २ गदा या मैला।

नापाकी—स्त्री० [फ़ा०] १. अशुचिता। २ गदगी।

ना-पायदार—वि० [फ़ा० नापाइदार] [भाव० नापायदारी] १ जो अधिक समय तक ठहरने या चलनेवाला न हो। जो टिकाऊ न हो। क्षण भगुर। २ जो दृढ या मजवूत न हो। ३. जिस पर भरोसा न किया जा सके। जैसे—नापायदार जिंदगी।

ना-पास—वि० [हिं० ना+अ० पास] १ जो पास अर्थात् स्वीकृत न किया गया हो। २ जो परीक्षा मे पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण।

नापित—पुं० [स० न√आप् (व्यक्ति)+तन्, इट् आगम] नाई। हज्जाम।

नापित्य—पु० [स० नापित+ष्यञ्] १ नापित होने की अवस्था या भाव । २ नापित का लडका। ३ नापित का काम या पेशा।

नापैद—वि० [फ़ा० ना+पैदा] १ जो कभी पैदा ही न हुआ हो। २. जो अव पैदा न होता हो। ३ जो इतना अप्राप्य या दुर्लभ हो कि मानो कही पैदा ही न होता हो।

नाफ—स्त्री० [स० नाभि से फ़ा० नाफ] १. नाभि। २ किसी चीज का केंद्र या मध्य-भाग।

ना-फरमाँ—पु० [फ़ा०] गुले लाला का एक भेद जो कुछ नीले रग का होता है।

वि० दे० 'ना-फरमान'।

ना-फरमान—वि० [फ़ा०] [भाव० नाफरमानी] जो वडो की आज्ञा न मानता हो।

ना-फरमानी—स्त्री० [फ़ा०] वडो की आज्ञा न मानने की वृत्ति।

नाफा—पु० [स० नाभि से फ़ा० नाफ] मृगनाभि।

नाव-दान—पु० [फ़ा०] मकान की मोरी। पनाला।

मुहा०—नाववान में मुँह मारना=वहुत ही घृणित और निंदनीय काम करना।

ना-वालिग—वि० [अ०+फ़ा०] [भाव० नावालिगी] १ जो वालिग अर्थात् वयस्क न हो। २. विधिक क्षेत्र मे, जो अभी उस नियत अवस्था या वय तक न पहुँचा हो, जिस अवस्था या वय तक पहुँचने पर कोई सव वातें समझने और अपना घर-वार सँभालने के योग्य समझा जाता हो। (साधारणत २१ वर्ष से कम की अवस्था का व्यक्ति ना-वालिग माना जाता है)।

ना-वालिगी—स्त्री० [फ़ा०] नावालिग होने की अवस्था या भाव।

नाबूद—वि० [फ़ा०] १. जो अस्तित्व मे न रह गया हो। २ वरवाद। विध्वस्त। ३ गायव। लुप्त।

नाभ—पु० [स०] नाभि का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के अन्त मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पद्मनाभ। २. शिव का एक नाम। ३ भगीरथ के एक पुत्र। ४ अस्त्रो का एक संहार।

नाभक—पु० [स० √नभ् (नष्टकरना)+ण्वुल्—अक] हर्रे।

नाभस—वि० [स० नभस्+अण्] [स्त्री० नाभसी] १ नभ-सवधी। २ स्वर्गीय।

नाभा—पुं०=नाभादास।

नाभाग—पु० [स०] १. वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे और जिनके पुत्र अज थे। परन्तु रामायण के अनुसार नाभाग के पुत्र अवरीप थे। २ कारुपवशीय राजा दिष्टि के एक पुत्र। ३. वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

नाभादास—पु० सत्रहवी शताब्दी के छठे और सातवें दशक मे वर्तमान एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जो जाति के डोम थे। उन्होंने अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से 'भक्तमाल' नामक प्रसिद्ध ग्रथ लिखा था।

नाभारत—स्त्री०[स० नाभ्यावर्त] घोडे की नाभि के नीचे की भौरी जो अशुभ मानी जाती है।

नाभारिष्ट—पु०[स०] वैवस्वत मनु के एक पुत्र

नाभि—स्त्री०[स०√नह (बधन)+इञ्, भ आदेश] १ जरायुज जतुओ के पेट के बीचो-बीच वह छोटा गड्ढा, जिससे गर्भावस्था मे जरायु नाल जुडा रहता है। ढोंटी। धुन्नी। तुन्नी। तुदी। २. कस्तूरी। ३. उक्त प्रकार का कोई छोटा गड्ढा। ४ पहिए के बीच का वह गड्ढा जिसमे धुरा पहनाया या बैठाया जाता है। नाह।

विशेष—यद्यपि सस्कृत मे नाभि इस अतिम या तीसरे अर्थ मे पु० है, फिर भी हिंदी मे इस अर्थ मे यह स्त्री० रूप मे ही प्रयुक्त होता है।

पु०१ किसी चीज का केंद्र या मध्य-भाग। ऐसा भाग जिसके चारो ओर वस्तुएँ आकर इकट्ठी होती या हुई हों। २. प्रधान या मुख्य व्यक्ति। नेता। मुखिया। ३. परम स्वतन्त्र और बहुत बडा राजा। ४. वह पारस्परिक सबध जो एक ही कुल, गोत्र या परिवार मे उत्पन्न होने पर होता है। ५ क्षत्रिय। ६. महादेव। शिव। ७. भागवत के अनुसार आग्नीध्र राजा के पुत्र जिनकी पत्नी मेरु देवी के गर्भ से ऋषभ देव की उत्पत्ति हुई थी। ८. राजा प्रियव्रत के एक पौत्र का नाम।

नाभि-कंटक—पु०[प०त०] नाभि का उभरा हुआ या मासल अश। निकली हुई तुदी।

नाभिका—स्त्री०[स० नाभि√कै (मालूम पडना)+क—टाप्] १. नाभि के आकार का छोटा गड्ढा। २. कटभी (वृक्ष)।

नाभिगुलक—पु०[स०]नाभिकटक।

नाभि-गोलक—पु०[प०त०] नाभिकटक। (दे०)

नाभि-छेदन—पु० [प० त०] गर्भ से निकले हुए जरायुज जीवो का जरायु नाल काटने की क्रिया या भाव। नाल काटना।

नाभिज—वि०[स० नाभि√जन् (उत्पत्ति)+ड] नाभि से उत्पन्न। पु० ब्रह्मा।

नाभि-नाड़ी—स्त्री०[प०त०] नाभि की नाडी जो गर्भ काल मे माता की रसवहा नाडी से जुडी रहती है।

नाभि-पाक—पु०[प०त०] नाभि पकने का राग।

नाभिल—वि०[स० नाभि+लच्]१. नाभि से युक्त। जिसमे नाभि हो। २ (जीव) उभरी हुई नाभिवाला।

नाभि-वर्द्धन—पु०[प०त०] नाभि बढ़ाना अर्थात् काटना।(मगलभाषित)

नाभि-वर्ष—पु०[प०त०] जबूद्वीप का वह भाग (आधुनिक भारत) जो राजा नाभि को उनके पिता राजा आग्नीध्र ने दिया था।

विशेष—नाभि के पौत्र भरत हुए जिसके नाम से हमारे देश का नाम भारत हुआ।

नाभि-संबंध—पु०[प०त०] व्यक्तियो का वह पारस्परिक संबध जो उनके किसी एक गोत्र मे जन्म लेने पर होता है।

नाभी—स्त्री०[स० नाभि+ङीप्]=नाभि।

नाभील—पु० [स० नाभी√ला (लेना)+क] १. स्त्रियो की कमर के नीचे का भाग। उरु-सधि। २ नाभि का गड्ढा। ३. कष्ट तकलीफ।

नाभ्य—वि०[स० नाभि+यत्] नाभि-संबधी।
पु० महादेव। शिव।

ना-मजूर—वि०[फा० ना+अ० मजूर] [भाव० ना-मजूरी] जो मजूर या स्वीकृत न हुआ हो।

ना-मंजूरी—स्त्री०[फा०+अ०] ना-मजूर या अस्वीकृत होने की अवस्था या भाव।

नाम (न्)—पु०[स०√म्ना (अभ्यास)+मनिन्]१. वह शब्द या पद जिसका प्रयोग किसी तत्त्व, प्राणी या वस्तु अथवा उसके किसी वर्ग या समूह का परिज्ञान अथवा बोध कराने के लिए उसके वाचक के रूप मे किया जाता है और जिससे वह लोक मे प्रसिद्ध होता है। आख्या। सज्ञा। जैसे—(क) इस रग का नाम लाल है। (ख) इस फल का नाम आम है। (ग) इस लडके का नाम मोहनलाल है।

विशेष—हर चीज का कुछ न कुछ नाम इसी लिए रख लिया जाता है कि उसकी पहचान हो सके तथा औरो को सहज मे उसका ज्ञान या बोध कराया जा सके। किसी वस्तु या व्यक्ति का नाम लेते ही उसका स्वरूप अथवा उसके सबध की सब बातें सुननेवाले के ध्यान मे आ जाती हैं। प्रयोगो तथा मुहावरो के विचार मे नाम कई विशिष्ट तत्त्वों और स्थितियो का भी बोधक होता है। यथा—(क)जब कोई व्यक्ति कुछ अच्छा या बुरा काम करता है, तब लोग उसका नाम लेकर ही कहते हैं कि उसने अमुक काम किया है। इसलिए 'नाम' किसी की ख्याति अथवा प्रसिद्धि (अथवा कुख्याति या कुप्रसिद्धि) का भी प्रतीक या वाचक हो गया है। (ख) विशिष्ट प्रसंगो मे लोग ईश्वर या उपास्य देव का नाम लेते हैं, इसलिए कभी-कभी यह ईश्वर या देवता का भी वाचक या सूचक होता है। (ग) नाम किसी तत्त्व, वस्तु या व्यक्ति का वाचक मात्र होता है ; स्वयं उस तत्त्व, वस्तु या व्यक्ति से उसका कोई आधारिक या तात्त्विक सबध नही होता, इसलिए कुछ अवस्थाओ मे यह केवल वाह्य आकृति या रूप अथवा अस्तित्व या सत्ता का ही बोधक होता है, अथवा यह सूचित करता है कि उसे कुछ कहा या किया गया है, वह नामधारी के उद्देश्य या हेतु-मात्र से है। इसी आधार पर लेन-देन आदि व्यवहारो मे उस अश या पक्ष का भी वाचक हो गया है जिसमे किसी को दी हुई या किसी के जिम्मे लगाई हुई कोई चीज या रकम लिखी जाती है। यहाँ जो पद और मुहावरे दिए जाते है, वे उक्त सब आशयो के मिले-जुले रूपो से संबद्ध हैं।

पद—(किसी के)नाम=किसी के उद्देश्य या हेतु से अथवा किसी के प्रति या उसे लक्ष्य करके। जैसे—(क) पितरो के नाम दान करना। (ख) विधिक क्षेत्र मे, किसी के अधिकार या स्वामित्व मे। जैसे—उसके कई मकान तो उसकी स्त्री के नाम है। नाम का (या को)=दे० 'नाम मात्र का' (या को)। नाम-चार का (या को)=दे० 'नाम मात्र का' (या को)। नाम पर=(क) किसी का नाम लेते हुए उसके उद्देश्य या हेतु से। जैसे—बडो के नाम पर (या भगवान के नाम पर) कोई काम करना या किसी को कुछ देना। नाम मात्र=नाम लेने या कहने भर के लिए, अर्थात् यथेष्ट और वास्तविक रूप मे नही, बल्कि जरा-सा या बहुत थोडा। जैसे—उनके कथन मे नाम मात्र सत्यता है। नाम मात्र का (या को)=उचित, पूर्ण या वास्तविक रूप मे नही, बल्कि यो ही कहने-सुनने या दिखलाने भर के लिए, और फलत जरा-सा या थोडा-सा। जैसे—दाल मे घी तो नाम मात्र का (या को) था। नाम मात्र के लिए=नाममात्र का (या को)। (किसी का) नाम लेकर=

नाम का उच्चारण करके। जैसे—जब तुम्हारा नाम लेकर कोई पुकारे तब यहाँ आना। (ईश्वर, देवी-देवता का) **नाम लेकर**=श्रद्धापूर्वक नाम का उच्चारण और स्मरण करते हुए और शुद्ध हृदय से। जैसे—भगवान का नाम लेकर चल पड़ो। **नाम से**=(क) नामधारी को जिम्मेदार ठहराते या बतलाते हुए और उसके नाम का उपयोग करते हुए। जैसे—(क) किसी के नाम से खाता खोलना या मकान खरीदना। (ख) नाम का उच्चारण होते ही। नाम भर लेने पर। जैसे—अब तो वह तुम्हारे नाम से कांपता है। (ग) दे० ऊपर 'नाम पर'।

मुहा०—(किसी का) नाम उछलना=बहुत अपकीर्ति, निंदा या बदनामी होना। **(अपना या बड़ों का) नाम उछालना**=ऐसा घृणित या निंदनीय काम करना कि अपनी या पूर्वजों की बदनामी हो। **नाम उठ जाना**=अस्तित्व या सत्ता न रह जाना। जैसे—आज-कल ससार से भलमनसत का नाम ही उठ गया है। **नाम कमाना**=कीर्ति या यश सपादित करते हुए ख्यात या प्रसिद्ध होना। **नाम करना**=कीर्त्ति या यश सपादित करते हुए प्रसिद्ध या मशहूर होना। ऐसी उत्कृष्ट स्थिति मे होना कि लोग बहुत दिनो तक याद रखें। जैसे—यह धर्मशाला बनवाकर वह भी अपना नाम कर गए। **(किसी बात में किसी दूसरे का) नाम करना**=दे० नीचे '(किसी दूसरे का) नाम लगाना।' **(किसी के) नाम का कुत्ता न पालना**=किसी को इतना घृणित, तुच्छ या नीच समझना कि उसका नाम तक लेना या सुनना भी बहुत अप्रिय या बुरा लगे। जैसे—हम तो उसके नाम का कुत्ता भी ना पालें। **(कोई काम अपने) नाम के लिए करना**=कोई काम केवल कीर्त्ति या प्रसिद्धि प्राप्त करने अथवा मर्यादा की रक्षा के उद्देश्य से करना। **(कोई काम) नाम के लिए या नाम मात्र के लिए करना**=मन लगाकर या वास्तव मे नही, बल्कि केवल कहने-सुनने या दिखलाने भर के लिए थोड़ा-सा या यो ही करना। **नाम को मरना**=नाम की मर्यादा या लज्जा रखने अथवा कीर्ति या यश बनाये रखने के लिए यथासाध्य प्रयत्न करते रहना। **(किसी का) नाम चमकना**=चारो ओर कीर्ति या यश फैलाना। प्रसिद्धि होना। **(किसी का) नाम चलना**=कीर्ति परपरा, वश आदि का अस्तित्व या क्रम चलता या बना रहना। **नाम जगना**=(क) ख्याति या प्रसिद्धि होना। (ख) फिर से किसी के नाम की ऐसी चर्चा या प्रचार होना कि लोगों मे उसकी स्मृति जाग्रत हो। **(किसी का) नाम जगाना**=ऐसा काम करना जिससे किसी की याद या स्मृति बनी रहे। **(किसी का) नाम जपना**=प्रेम, भक्ति श्रद्धा आदि से प्रेरित होकर बराबर किसी का नाम लेते रहना या उसे याद करते रहना। **(कोई चीज या रकम किसी के) नाम डालना**=बही-खाते मे, किसी के नाम के आगे लिखना। यह लिखना कि अमुक चीज या रकम अमुक व्यक्ति के जिम्मे है या उससे ली जाने को है। जैसे—यह रकम हमारे नाम डाल दो। **नाम डुबाना**=कलक या लाछन के पात्र बनकर प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि नष्ट करना। **नाम तक मिटना या मिट जाना**=कही कुछ भी अवशेष या चिह्न बाकी न रह जाना। **(किसी के) नाम देना**=खाते मे किसी के नाम लिखकर कुछ देना। **(किसी को कोई) नाम देना**=किसी का नामकरण करना। नाम रखना। (दे० नीचे) **(किसी को किसी देवता का) नाम देना**=धार्मिक क्षेत्रो मे, गुरु बनकर किसी को किसी देवता के नाम या मत्र का उपदेश देना। **(किसी वस्तु या व्यक्ति का) नाम धरना**=(क) नाम रखना या स्थिर करना। नामकरण करना। (ख) कोई ऐब या दोष लगाकर बुरा ठहराना या बतलाना। निंदा या बदनामी करना। **नाम धराना**=(क) नाम स्थिर कराना। (ख) लोगो मे निंदा या बदनामी कराना। **नाम न लेना**=अरुचि, घृणा, दु ख, भय आदि के कारण चर्चा तक न करना। बिलकुल अलग या दूर रहना। मन में विचार न करना। जैसे—अब वह कभी वहाँ जाने का नाम न लेगा। **नाम निकलना या निकल जाना**=किसी बात के लिए नाम प्रसिद्ध हो जाना। किसी विषय मे ख्याति हो जाना। (अच्छी और बुरी सभी प्रकार की बातो के लिए युक्त) **नाम निकलवाना**=(क) किसी प्रकार की ख्याति या प्रसिद्धि कराना। (ख) कोई चीज चोरी जाने पर टोने-टोटके, मत्र-यत्र आदि की सहायता से यह पता लगाना कि वह चीज किसने चुराई है। **नाम निकालना**=(क) किसी काम या बात के लिए नाम प्रसिद्ध करना (ख) टोने-टोटके, मत्र-यत्र आदि की सहायता से अपराधी या दोषी के नाम का पता लगाना। **नाम पड़ना**=नाम निश्चित होना या रखा जाना। नामकरण होना। **(कोई चीज या रकम किसी के) नाम पड़ना**=बही-खाते आदि मे यह लिखा जाना कि अमुक चीज या रकम अमुक व्यक्ति को दी गई है और वह चीज या उसका मूल्य उससे लिया जाने को है। **(किसी के) नाम पर बैठना**=(क) किसी के भरोसे या विश्वास पर सतोष करके चुपचाप तथा धैर्य-पूर्वक पड़े रहना या बैठे रहना। जैसे—हम तो ईश्वर के नाम पर बैठे ही हैं, जो चाहेगा सो करेगा। (ख) किसी की प्रतिष्ठा की रक्षा के विचार से शात स्थिर भाव से दिन बिताना। जैसे—उसे विधवा हुए दस वर्ष हो गए, पर आज तक वह अपने पति के नाम पर बैठी है। **(किसी के) नाम पर मरना या मिटना**=किसी की प्रतिष्ठा या मान-रक्षा के लिए अथवा किसी के प्रेम के आवेग मे बहुत-कुछ कष्ट या हानि सहना। जैसे—जाति या देश के नाम पर मरना या मिटना। **नाम पाना**=कोई अच्छा काम करके ख्यात या प्रसिद्ध होना। **नाम बद या बदनाम करना**=ऐब या कलंक लगाना। बदनामी करना। **(किसी का) नाम बिकना**=ख्याति या प्रसिद्धि हो चुकने पर आदर, प्रचार आदि होना। **नाम भर बाकी रहना**=और सब बातो का अत हो जाने पर भी कीर्ति, यश आदि के रूप मे केवल नाम की याद या स्मृति बच रहना। जैसे—अब तो इद्रप्रस्थ का नाम भर बाकी है। **(किसी का) नाम रखना**=(क) नाम निश्चित करना। नामकरण करना। कीर्ति या यश सुरक्षित रखना। (ग) किसी चीज या बात मे कोई कलक या दोष निकालना या लगाना। बदनाम करना। (अपकार, अपराध आदि के संबंध मे, **किसी का) नाम लगना**=झूठ-मूठ यह कहा जाना कि अमुक व्यक्ति ने यह अपकार या अपराध किया है। किसी के सिर झूठा कलक मढा जाना। जैसे—किताब फाड़ी तो उस लड़के ने और नाम लगा तुम्हारा। **(किसी का) नाम लगाना**=किसी अपराध या दोष के सबध मे किसी के सिर झूठा कलक मढना। अपराध का कलक लगाना। जैसे—तुम्ही ने सारा काम बिगाड़ा, और अब दूसरो का नाम लगाते हो। **(कोई चीज या रकम किसी के) नाम लिखना**=दे० ऊपर (कोई चीज या रकम किसी के) नाम डालना। **(किसी का) नाम लेना**=(क) नाम का उच्चारण करना। नाम जपना या रटना। जैसे—सवेरे-सध्या कुछ देर तक

ईश्वर का नाम लिया करो। (ग) किसी के उपकार आदि के बदले में कृतज्ञतापूर्वक उसके नाम का [illegible] करना। जैसे—हम तो उनका घर भर तुम्हारा ही नाम लेता है। (घ) दोषी या अपराधी रूप से उल्लेख या चर्चा करना। जैसे—[illegible] मुझे [illegible] का नाम लिया, सो ठीक न होगा। नाम से पुकारना या चिढ़ना [illegible] पास हो [illegible] सम्मान या आदर [illegible]। नाम होना (क) [illegible] प्रसिद्धि होना। (ख) [illegible] नाम [illegible] नहीं - [illegible] कुछ या हीन समझा [illegible]। जैसे—यदि मैं [illegible] नाम नहीं।

नामक—वि० [सं०] उत्तर पद में, [illegible] नाम का या, [illegible] नाम वाला। जैसे—यहाँ कोई राम नामक लड़का रहता है?

नाम-करण—पु० [सं० ष० त०] १. किसी का नाम रखने की क्रिया या भाव। जैसे—इस नगर का नाम-करण उसके नाना के नाम पर हुआ है। २. हिन्दुओं में एक संस्कार, जिसमें विधि-वत् पूजा-पाठ करके बच्चे का नाम रखा जाता है।

नाम-कर्म (न्)—पु० [सं० ष० त०] नामकरण (संस्कार)।

नाम-कीर्तन—पु० [सं० ष० त०] कीर्तन का वह प्रकार जिसमें भगवान के किसी एक नाम या कुछ नामों का बराबर उच्च स्वर से जाप किया जाता है।

नाम-कोश—पु० [सं० ष० त०] ऐसा कोश जिसमें नामवाचक शब्दों का संग्रह और उनके अर्थ या व्याख्याएँ हों। ([illegible])

नाम-चढ़ाई—स्त्री० [हिं० नाम+चढ़ाना] वह क्रिया जिसमें सरकारी कागज-पत्रों आदि पर मालिक आदि के स्वामित्व पद से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढ़ाया जाता है। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नाम-जद—वि० [फा० नामज़द] [भाव० नामज़दगी] १. नामांकित। २. मनोनीत। ३. प्रसिद्ध। ४. (वाणिज्य) जिसकी मंगनी हो चुकी हो।

नाम-ज़दगी—वि० [फा० नामज़दगी] नामज़द अर्थात् नामांकित या मनोनीत करने या होने की क्रिया या भाव।

नामतः (तस्)—अव्य० [सं० नामन्+तस्] नाम से। नाम के द्वारा।

नामदार—वि० [फा०] नामवर। प्रसिद्ध।

नामदेव—पु० १. नामदेव के दौहित्र एक प्रसिद्ध भक्त जो भगवान कृष्ण (मूर्ति) के दूध न पीने पर आत्म-हत्या करने पर उतारू हो गए थे। कहते हैं कि अन्त में भगवान ने स्वयं प्रकट होकर दूध पीया और उन्हें आत्म-हत्या करने से रोका। २. महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त कवि। (संवत् १३२६—१४०७ वि०)

नाम-द्वादशी—स्त्री० [सं०] देवी पुराण के अनुसार अगहन सुदी तीज को रखा जानेवाला व्रत, जिसमें गौरी, काली, उमा, भद्रा, कांति, सरस्वती मंगला, वैष्णवी, लक्ष्मी, शिवा और नारायणी इन बारह देवियों की पूजा की जाती है।

नामधन—पु० [सं०] एक प्रकार का संकर राग जो मल्लार, शंकराभरण, विलावल, सूहे और केदारे के योग से बना है।

नाम-[illegible]—पु० [हिं० नाम+[illegible]] [illegible] कोई [illegible] या [illegible]। [illegible]।

नाम-धराई—स्त्री० [हिं० नाम+धरना] १. नाम [illegible] २. बदनामी।

नाम-धाम—पु० [हिं० नाम+धाम] व्यक्ति का नाम और उसका निवास-स्थान। नाम और पता ठिकाना।

नाम-धारक—वि० [सं० ष० त०] जो केवल नाम के लिए हो, पर जिसमें कोई [illegible] न हो। [illegible]।

नामधारी (रिन्)—वि० [सं० नामन्+धृ (धारण)+णिनि] नाम धारक।

पु० [हिं० नाम+धारना] १. सिक्खों का एक सम्प्रदाय, जिसके [illegible] २. [illegible] सम्प्रदाय का अनुयायी सिक्ख।

नामधेय—वि० [सं० नामन्+धेय] नामवाला।

पु० १. नाम। २. नाम-करण।

नाम-निक्षेप—पु० [सं० ष० त०] नाम बताना। ([illegible])

नाम-निर्देशन—पु० [सं० ष० त०] मनोनयन।

नाम-निर्देश-पत्र—पु० [सं० नाम-निर्देश, ष० त०, नाम-निर्देश-पत्र ष० त०] नामांकन पत्र।

नाम-निर्देश—पु० [सं० ष० त०] १. नाम, हस्ताक्षर आदि के रूप [illegible]। (नॉमिनेशन) २. दे० 'नाम-चढ़ाई'।

नाम-निशान—पु० [फा०] किसी वस्तु का नाम और उसके सूचक चिह्न या पता-ठिकाना। ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे किसी चीज या बात के अस्तित्व का पता चलता या प्रमाण मिलता हो। जैसे—अब तो उस गाँव का नाम-निशान भी नहीं रह गया है।

नाम-पट्ट—पु० [सं० ष० त०] वह पट्ट या तख्ता जिस पर व्यक्ति, संस्था, दुकान आदि का नाम लिखा होता है। (साइनबोर्ड)

नाम-पत्र—पु० [सं० ष० त०] कागज की वह चिट जो किसी चीज पर लगाई जाती है उसका परिचय बताती है। (लेबल)

नामपत्रित—भू० कृ० [सं० नामपत्र+इतच्] जिस पर नामपत्र लगाया गया हो।

नाम-बोला—पु० [हिं० नाम+बोलना] ऐसा व्यक्ति, जो ईश्वर या देवता के नाम का उच्चारण या जप करता हो।

नाम-माला—स्त्री० [सं० ष० त०] १. बहुत से नामों की अवली, माला या शृंखला। २. दे० 'नाम-कोश'।

नाम-यज्ञ—पु० [सं० मध्य० स०] ऐसा यज्ञ जो नाम कमाने के लिए किया जाय।

नाम-राशी—वि० [हिं० नाम+सं० राशि] किसी की दृष्टि से उसी के नाम और राशिवाला। हम-नाम।

नाम-रूप—पु० [सं० द्व० स०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति का वह नाम और रूप जिससे उसकी पहिचान होती हो। २. मन से युक्त दृश्यमान् शरीर। ३ बौद्ध दर्शन में, गर्भ में स्थित एक महीने के भ्रूण की संज्ञा।

नामर्द—वि० [फा०] [भाव० नामर्दी] १. जो मर्द अर्थात् पुरुष न हो। २ जिसमें पुरुष की शक्ति न हो। नपुंसक। ३. जिसमें पुरुषों जैसा हौसला न हो। भीरु।

नामर्दी—स्त्री० [फा०] १ नामर्द होने की अवस्था या भाव। २ वह रोग या स्थिति जिसमे पुरुष स्त्री से सभोग करने मे असमर्थ होता है। नपुसकता। ३ कायरता। भीरुता।

नाम-लिखाई—स्त्री० [हिं० नाम+लिखना] १. किसी सस्था आदि के सदस्य वनने पर उसकी पजी, तालिका आदि मे नाम लिखा जाना। २ वह धन या शुल्क जो उक्त अवसर पर देना पडता है।

नाम-लेवा—पु० [हिं० नाम+लेवा=लेनेवाला] १ ऐसा व्यक्ति जो किसी का विशेषत: उसके मरने पर उसका स्मरण करे। २ औलाद। सतान।

नामवर—वि० [फा०] [भाव० नामवरी] जिसका नाम आदर से लिया जाता हो। अति प्रसिद्ध।

नामवरी—स्त्री० [फा०] प्रसिद्धि।

नाम-शेष—वि० [स० व० स०] १ जो अस्तित्व मे न रह गया हो, वल्कि जिसका केवल नाम ही लोग जानते हो। २. ध्वस्त। ३ मृत।

ना-महरम—वि० [फा०+अ०] १ अनजान। अपरिचित। २ पराया। गैर। ३. (व्यक्ति) जिसके सामने स्त्रियाँ न हो सकती हो और जिनसे वात-चीत करना उनके लिए धर्म-शास्त्रानुसार निषिद्ध हो। जिससे परदा करना स्त्रियो के लिए उचित तथा विहित हो। (मुसल०)

नाम-हँसाई—स्त्री० [हिं० नाम+हँसना] लोगो मे किसी के नाम की हँसी उडना या उपहास होना। उपहास करानेवाली वदनामी।

नामांक—पु० [स० नामन्-अक, व० स०] वह सख्या जो किसी सूची मे लिखित नामो पर क्रमश लगाई गई हो।

वि०=नामाकित।

नामाकन—पु० [स० नामन्-अकन, प० त०] १. नाम अकित करने की क्रिया या भाव। २ किसी का किमी पद, स्थान, निर्वाचन आदि के लिए आधिकारिक रूप से नाम प्रस्तावित किया जाना। ३. वह स्थिति जिसमे किसी को किसी पद, सेवा आदि के लिए आधिकारिक रूप से नियुक्त किया जाता है। (नामिनेशन, उक्त सभी अर्थो मे)

नामांकन-पत्र—पु० [स० प० त०] वह पत्र जिसमे सवद्ध अधिकारी को यह सूचित किया जाता है कि अमुक पद के लिए अमुक व्यक्ति उम्मेदवार के रूप मे खडा हो गया है, और उस अधिकारी से तत्सवधी स्वीकृति की प्रार्थना की जाती है। (नामिनेशन पेपर)

नामांकित—वि० [स० नामन्-अकित व०, स०] १ जिस पर नाम अकित किया अर्थात् लिया या खुदा हो। २. जिसका किसी काम या पद के लिए नामाकन हुआ हो। नामजद। (नामिनेटेड) ३ प्रसिद्ध।

नामाकित—पु० [स० नामाकित] वह जो किसी चुनाव, पद, कार्य मे नामाकित किया गया हो। (नामिनी)

नामांतर—पु० [स० नामन्-अतर, मयू०स०] १ किसी एक ही व्यक्ति का दूसरा नाम। २ उपनाम। ३ पर्याय।

नामांतरण—पु० [स० नामान्तर+णिच्+ल्युट्—अन] १ नाम वदलने की क्रिया या भाव। २. किसी सपत्ति पर स्वामी के रूप मे लिखा हुआ पुराना नाम हटाकर उसकी जगह किसी दूसरे नये व्यक्ति का स्वामी के रूप मे नाम चढाया जाना। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नामातरित—भू० कृ० [स० नामातर+णिच्+क्त] १ जिसका नामातरण हुआ हो। २ जिसका नाम किसी पुराने स्वामी के नाम की जगह नये सिरे से चढा या लिखा गया हो।

नामा—वि० [स० नाम] नामधारी।

पु० प्रसिद्ध भक्त नामदेव का सक्षिप्त रूप।

†पु० [हिं० नाम (पड़ी हुई रकम)] १ किमी से प्राप्य धन। पावना। २ रुपया-पैसा। नावाँ।

पु० [फा० नाम] पत्र। चिट्ठी।

ना-माकूल—वि० [फा० ना+अ० माकूल] [भाव० नामाकलियत] १ जो माकूल अर्थात् उचित, उपयुक्त या ठीक न हो। २ अपूर्ण। अधूरा। ३ वेढंगा। वेढव। ४ अयोग्य। ५ नालायक।

नामानुशासन—पु० [स० नामन्-अनुशासन, प० त०] शब्दकोश।

नामाभिधान—पु० [स० नामन्-अभिधान, प० त०] शब्दकोश।

ना-मालूम—वि० [फा० ना+अ० मालूम] जो मालूम अर्थात् ज्ञात न हो। अज्ञात।

नामावली—स्त्री० [स० नामन्-आवली, प० त०] १ ऐसी सूची जिसमे चीजो या व्यक्तियो के नाम दिए हुए हो। २ भक्तो के ओढने-पहनने का वह कपडा जिसपर कृष्ण, राम, शिव आदि देवताओ के नाम छपे होते है।

नामि—पु० [स०] विष्णु।

नामिक—वि० [स०] १. नाम या सज्ञा-सवधी। २ जो केवल नाम के लिए या सकेत रूप मे हो और जिसका वास्तविक तथ्य से कोई विशेष सवध न हो। नाम भर का। (नॉमिनल)

नामित—वि० [स०√नम् (झुकना)+णिच्+क्त] झुकाया हुआ।

नामी—वि० [फा०] १. नामवाला। २ जिसका नाम या प्रसिद्धि हो। नामवर। प्रसिद्ध। मशहूर।

नामी-गिरामी—वि० [फा०] प्रसिद्ध और पूजनीय।

ना-मुआफिक—१ [फा० नामुआफिक] जो मुआफिक या अनुकूल न हो। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. जो किसी से सहमत न हो। अ-सहमत।

ना-मुनासिव—वि० [फा०+अ०] जो मुनासिव अर्थात् उचित न हो। अनुचित।

ना-मुमकिन—वि० [फा० ना+अ० मुम्किन] जो मुमकिन अर्थात् सभव न हो। असभव।

ना-मुराद—वि० [फा०] [भाव० ना-मुरादी] १ जिसकी मुराद अर्थात् कामना पूरी न हुई हो। विफल मनोरथ। २ अभागा। वद-नसीव।

ना-मुवाफिक—वि०=ना-मुआफिक।

नामूद—स्त्री० [फा० नमूद] १ आविर्भाव। २ धूम-धाम। तडक-भडक। ३ ख्याति। प्रसिद्धि।

†वि० प्रसिद्ध। मशहूर। (अशुद्ध प्रयोग)

नामूसी—स्त्री० [अ० नामूस=इज्जत] १ वेइज्जती। अप्रतिष्ठा। २ वदनामी। निंदा।

ना-मेहरवान—वि० [फा० नामेहवाँ] [भाव० नामेहवानी] जो मेहरवान अर्थात् अनुकूल या प्रसन्न न हो।

नामोल्लेख—पु० [स० नामन्-उल्लेख, प० त०] किसी प्रसग या विषय मे किसी के नाम का होनेवाला उल्लेख।

ना-मौजूँ—वि० [फा०] १ जो मौजूँ या उपयुक्त न हो। अनुपयुक्त।

२. अनुचित। ना मुनासिब। ३. (शेर का पद अर्थात् चरण) जो वजन से खारिज हो अर्थात् जिसमें मात्राएँ या वर्ण कम-बेशी हों।

नाम्ना—वि० [सं० नामन् शब्द के तृतीया विभक्ति का एक वचन रूप ?] [स्त्री० नाम्नी] नामवाला। नामक।

नाम्य—वि० [सं०√नम्+णिच्+यत्] १ झुकाये जाने के योग्य। २ जो झुकाया जा सके। लचीला।

नायँ—पु० नाम।
अव्य० नहीं।

नाय—पु० [सं०√नी(ले जाना)+घञ्] १. नय। नीति। २ उपाय। युक्ति। ४ अगुआ। नेता। ४ नेतृत्व।
†स्त्री० =नाव।

नायक—पु० [सं०√णी+ण्वुल्—अक] १. लोगों को अपनी आज्ञा के अनुसार चलानेवाला व्यक्ति। जैसे—सामाजिक या राजनैतिक नेता। २ अधिपति। स्वामी। जैसे—गण-नायक। ३. प्रधान अधिकारी। जैसे—सेनानायक। ४. साहित्य-शास्त्र के अनुसार किसी साहित्यिक रचना का प्रधान पुरुष पात्र। धीरललित, धीरप्रशांत, धीरोदात्त और धीरोद्धत इसके ये चार प्रमुख भेद हैं। ५ शृंगार रस की कविताओं या पद्यों में आलंबन विभाव। इसके पति, अनुकूल पति, दक्षिणनायक शठनायक, धृष्टनायक, उपपति, वैशिक, मानी, वचन-चतुर, क्रियाचतुर, प्रोषित आदि अनेक भेद हैं। ६ बंजारा। ७ हार के मध्य की मणि या रत्न। ८ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ९ एक राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है। १०. संगीत-कला में निपुण व्यक्ति। ११ एक जाति जिसके पुरुष नाचने-गाने आदि की शिक्षा देते हैं और स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति भी करती हैं।

नायका—स्त्री० [सं० नायिका] १ वह वयस्क या वृद्धा स्त्री, जो युवती स्त्रियों को अपने पास रखकर उनसे गाने-बजाने का पेशा और व्यभिचार कराती हो। २ कुटनी। ३ दे० 'नायिका'।

नायकी—वि० [सं० नायक] नायक संबंधी। नायक या नायकों का। जैसे—नायकी कान्हड़ा।
स्त्री० नायक होने की अवस्था, पद या भाव। नायकत्व।

नायकी कान्हड़ा—पु० [हिं० नायकी+कान्हड़ा] एक प्रकार का कान्हड़ा (राग) जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

नायकी मल्लार—पु० [सं० नायक+मल्लार] संपूर्ण जाति का एक प्रकार का मल्लार (राग) जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

नायत—पु० [?] वैद्य। (डिं०)

नायन—स्त्री० [हिं० नाई का स्त्री० रूप] १ नाई जाति की स्त्री। २ नाई की पत्नी।

नायब—वि० [अ० नाइब] १. (अधिकारी) जो किसी प्रधान अधिकारी का सहायक हो। जैसे—नायब तहसीलदार। २. स्थानापन्न। ३ किसी का प्रतिनिधि बनकर काम करनेवाला।

नायबी—स्त्री० [हिं० नायब+ई (प्रत्य०)] नायब होने की अवस्था, पद या भाव।

नायाब—वि० [फा०] [भाव० नायाबी] १. जो न मिलता हो। अप्राप्य। २ जो सहज में न मिलता हो। दुष्प्राप्य। ३ बहुत बढ़िया या श्रेष्ठ।

नायिका—स्त्री० [सं० नायक+टाप्, इत्व] १. स्वामिनी। २. पत्नी। ३ साहित्य शास्त्र में, किसी नाटक की प्रधान पात्री। ४. शृंगार रस में पुरुष से संबंध रखनेवाली पात्री जिसके धर्म के विचार से स्वकीया, परकीया और सामान्या ये तीन प्रमुख भेद। स्वभाव के अनुसार उत्तमा, मध्यमा और अधमा तथा अन्य अनेक दृष्टियों से दूसरे बहुत-से भेद माने गए हैं। ४. कहानी उपन्यास आदि की मुख्य पात्री।

नायिकाधिप—पुं० [सं० नायिका-अधिप, ष० त०] राजा।

नारंग—पु० [सं०√नृ (ले जाना)+अगच्, वृद्धि] १. नारंगी। २. गाजर। ३. पिप्पलिरस। ४. यमज प्राणी।

नारंगी—स्त्री० [सं० नागरंग, अ० नारंज] १ नीबू की जाति का एक प्रकार का मझोला पेड़, जिसमें मीठे सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. उक्त पेड़ का फल।
वि० नारंगी (फल) के छिलके की तरह के पीले रंग का।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

नार—वि० [सं० नर+अण्] १ नर या मनुष्य-संबंधी। नर का। २. आध्यात्मिक।
पु० १ गौ का बछड़ा। २ जल। पानी। ३ मनुष्यों का झुंड, दल या समूह। ४ सोंठ।
स्त्री० [सं० नाल] १. गला। २. गरदन। ग्रीवा।
मुहा०—नार नवाना या नीची करना=लज्जा संकोच आदि से अथवा आदर-सम्मान प्रकट करने के लिए किसी के आगे गरदन या सिर झुकाना।
३. वह नाड़ी या नली जिससे नव-जात शिशु माता के गर्भ से बँधा रहता है। नाल। (दे०)
पद—नार-बेवार। (दे०)
४ छोटा रस्सा। ५ वह डोरी जो घाघरे, पाजामे आदि के नेफे में पिरोई रहती है और जिसकी सहायता से वे कमर में बाँधे जाते हैं। नाड़ा। नाला। ६ पौधों के वे डंठल जो बालें काट लेने के बाद बच रहते हैं। ७. मैदानों में चरनेवाले चौपायों का झुंड।
†स्त्री०=नारि (स्त्री)। उदा०—नीके है छीके छुए ऐसे ही रह नार।—बिहारी।

नारक—पु० [सं० नरक+अण्] १. नरक। २ नरक में रहनेवाला प्राणी।

नारकिक—वि० =नारकी।

नारकी—वि० [सं० नारकिन्] १. नरक में पड़ा हुआ। जो नरक भोग रहा हो। २ जिसका नरक में जाना निश्चित हो, अर्थात् परम दुराचारी या पापी।

नारकीट—पु० [सं०] १. एक प्रकार का कीड़ा। अश्मकीट। २ वह जो किसी को आशा में रखकर निराश करे, फलत अधम या नीच।

नारकीय—वि० [सं० नरक+छण्—ईय] १. नरक-संबंधी। २. नरक में रहने या होनेवाला। ३. बहुत ही अधम या पापी (व्यक्ति)।

नारद—पु० [सं० नार=आत्मज्ञान√दा (देना)+क] १. एक प्रसिद्ध देवर्षि और भगवान के परम भक्त जो ब्रह्मा के पुत्र कहे गए हैं, और जिनका नाम अनेक आख्यानों, कथाओं आदि में आता है। २. उक्त के आधार पर ऐसा व्यक्ति जो प्राय. लोगों में लड़ाई-झगड़े कराता

रहता हो। ३ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ४ एक प्रजापति। ५ चौवीस बुद्धो मे से एक बुद्ध। ६ कश्यप ऋषि की सतान, एक गन्धर्व। ७ शाक द्वीप का एक पर्वत।

नारद-पुराण—पु० [स० मध्य स०] १ अठारह महापुराणो मे से एक जिसमे सनकादिक ने नारद को सबोधन करके अनेक कथाएँ कही हैं और उपदेश दिए है। इसमे तीर्थों और व्रतो के माहात्म्य वहुत अधिक हैं। २ एक-उपपुराण, जिसे बृहन्नारदीय भी कहते हैं।

नारदी (दिन्)—पु० [स० नारद+इनि] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

नारदीय—वि० [स० नारद+छ—ईय] नारद का। नारद-सवधी। जैसे—नारदीय पुराण।

नारन—पु० [स० नार+हिं० न (प्रत्य०)] नर-समूह। मनुष्यो का समुदाय। उदा०—मर्नो तज्यो तारन विरद, वारक नारन तारि। —विहारी।

नारना—स० [सं० ज्ञान, प्रा० णाण+हिं० न] थाह लगाना। पता लगाना। भाँपना। नाड़ना।

नारफिक—पु० [अ०नारफिक] इग्लैण्ड के नारफॉक प्रदेश मे होनेवाले घोडो की एक जाति।

नार-बेवार—पु० [हिं० नार+स० विवार=फैलाव] तुरंत के जनमे हुए वच्चे की नाल, खेडी आदि।

नारमन—पु० [अ०] १ फ्रास के नारमडी प्रदेश का निवासी, व्यक्ति या इन व्यक्तियो की जाति। २ जहाज पर का वह खूँटा जिसमे रस्सा वाँधा जाता है।

स्त्री० फ्रास के नारमडी प्रदेश की वोली या भापा।

ना-रसा—वि० [फा०] [भाव० ना-रसाई] १ जो पहुँच न सके। २ जिसकी पहुँच न हो।

ना-रसाई—स्त्री० [फा०] पहुँच न होने की अवस्था या भाव।

नारसिंह—पु० [स० नरसिंह+अण्] १ नरसिह रूपधारी विष्णु। २. एक उप-पुराण जिसमे नृ-सिंह अवतार की कथा है। ३. एक तान्त्रिक ग्रथ।

नारसिंही—वि० [स० नारसिंह] १. नारसिंह-सबधी। नारसिंहका। २ वहुत उग्र, प्रवल या विकट। जैसे—नरसिंही टोना-टोटका।

नारातक—पु० [स०] रावण का एक पुत्र।

नारा—पु० [स० नाल, हिं० नार] १ घाघरे, पाजामे आदि के नेफे मे की वह मोटी डोरी जो पहनावे पहनते समय कमर मे वाँधी जाती है। २. रँगा हुआ लाल रग का वह सूत जो प्राय. पूजन के अवसर पर देवताओ को चढाया जाता है। ३. हल के जूए मे वँधी हुई रस्सी।

पु० [स्त्री० नारी] वडी नाली। नारा।

पु० [अ० नडारः] १ जोर का शब्द। २ किसी दल, समुदाय आदि की तीव्र अनुभूति और इच्छा का सूचक कोई पद या गठा हुआ वाक्य जो लोगो को आकृष्ट करने के लिए उच्च स्वर से वोला और सब को सुनाया जाता है। जैसे—भारत माता की जय।

नाराइन—पु०=नारायण।

नाराच—पु० [स० नार-आ√चम् (खाना)+ड] १. ऊपर से नीचे तक लोहे का वना हुआ तीर या वाण। २. ऐसा दिन जिसमे वादल घिरे रहे। मेघो से आच्छादित दिन। दुर्दिन। ३. एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २४ मात्राएँ होती हैं। ४. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और चार रगण होते हैं। इसे महामालिनी और नारका भी कहते हैं।

नाराच घृत—पु० [सं०] चीते की जड़, त्रिफला, भटकटैया, वायविडंग आदि एक साथ मिलाकर तथा घी मे पकाकर तैयार किया हुआ एक औषध जो मालिश, लेप आदि के काम आता है।

नाराचिका—स्त्री० [स० नाराच+ठन्—इक,टाप्] सुनारो आदि का छोटा काँटा या तराजू।

नाराची—स्त्री० [स० नाराच+अच्—ङीप्] सुनारो आदि का छोटा काँटा।

नाराज—वि० [फा० नाराज़] [भाव० नाराजगी] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

नाराजगी—स्त्री० [फा०] नाराज होने की अवस्था या भाव।

नाराजी†—स्त्री०=नाराजगी।

नारायण—पु० [स० नार-अयन, व० स०] १ ईश्वर। परमात्मा। भगवान। २ विष्णु। ३ कृष्ण यजुर्वेद के अतर्गत एक उपनिषद्। ४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ५. 'अ' अक्षर की सज्ञा। ६ पूस का महीना। पौष मास।

नारायण-क्षेत्र—पु० [ष० त०] गगा के प्रवाह से चार हाथ तक की भूमि।

नारायण तैल—पु [स०] आयुर्वेद मे एक तरह का तेल जो मालिश करने के काम आता है।

नारायण-प्रिय—पु० [ष० त० या ब० स०] १. महादेव। शिव। २ पाँचो पाडवो मे के सहदेव। ३ पीला चदन।

नारायण-बलि—स्त्री० [मध्य० स० या च० त०] आत्म-हत्या आदि करके मरे हुए व्यक्ति की आत्मा की शाति तथा शुद्धि के लिए उसके दाह-सस्कार से पहले प्रायश्चित्त के रूप मे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यम और प्रेत के उद्देश्य से दी जानेवाली वलि।

नारायणी—स्त्री० [स० नारायण+अण्—ङीप्] १ दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३ गगा। ४ मुद्गल ऋषि की पत्नी का नाम। ५ श्रीकृष्ण की वह प्रसिद्ध सेना जो उन्होंने महाभारत के युद्ध मे दुर्योधन को उसकी सहायता के लिए दी थी। ६ शतावर। ७ सगीत मे, खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

†वि०=नारायणी। जैसे—नारायणी माया।

नारायणीय—वि० [स० नारायण+छ—ईय] नारायण-सवधी। नारायण का।

पु० महाभारत के शाति-पर्व का एक उपाख्यान जिसमे नारद और नारायण ऋषि की कथाएँ है।

नाराशंस—वि० [स० नर-आ√शस् (स्तुति)+घञ्, नाराशस=पितर+अण्] मनुष्यो की प्रशसा या स्मृति से सवध रखनेवाला।

पु० १ वेद मे के रुद्र दैवत्य मत्र, जिनमे मनुष्यो की प्रशसा की गई है। २ ऊम, और्व और काव्य, ये तीन पितृगण। ३ उक्त पितृगणो के नि[illegible] मे छोडा जानेवाला सोमरस। ४. एक तरह का पात्र [illegible] क्त उद्देश्य से सोमरस छोडा जाता था। ५. [illegible]

[illegible] नार-आशसी, ष० त०] १ मनुष्यो [illegible]

या स्तुति। २ वेदों का वह मंत्र-भाग जिसमें अनेक राजाओं के दानों आदि का प्रशंसात्मक उल्लेख है।

नारि—स्त्री० [हिं० नाल] १ बड़ी तोप, विशेषत. हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। २. दे० 'नाड़' । ३ गरदन। उदा०—अति अधीन सुजान कनौडे गिरिवर नारि नवावति।—सूर।
स्त्री० [सं० नार] १ समूह। झुंड। २. आगार। भंडार।
स्त्री०=नारी (स्त्री)।

नारिक—वि० [सं० नार+ठक्—इक] १ जल का। जल-संबंधी। २ जल से युक्त। आध्यात्म-संबंधी। आध्यात्मिक।
पुं० [?] पीतल, फूल आदि के वे पुराने बरतन जो दूकानदार लोग मरम्मत करके फिरसे नये के रूप में बेचते हैं। (कसेरे)

नारिकेर—पुं०=नारिकेल (नारियल)।

नारिकेरी—स्त्री० =नारिकेली।

नारिकेल—पुं० [सं०√किल् (क्रीडा)+घञ्, नारी-केल, ष० त०, पृषो० ह्रस्व] नारियल नामक वृक्ष और उसका फल।

नारिकेल-क्षीरी—स्त्री० [सं०] दूध में गरी डालकर बनाई जानेवाली खीर।

नारिकेल-खंड—पुं० [सं०] नारियल की गरी से बनाई जानेवाली एक तरह की ओषधि। (वैद्यक)

नारिकेली—स्त्री० [सं० नारिकेल+अण्—ङीप्] नारियल के पानी से बनाई जानेवाली एक तरह की मदिरा।

नारिदान†—पुं०=नावदान (पनाला)।

नारि-माला†—स्त्री० [हिं० नली+माला] हल के पीछे लगी हुई वह नली और उसके ऊपर बना हुआ कटोरी के आकार का पात्र जिसमें बीज बोने के लिए छोड़े जाते हैं। नली को नारि और उसके मुँह पर के पात्र को माला कहते हैं।

नारियल—पुं० [सं० नारिकेल] १ समुद्र के किनारे और उसके आस-पास की भूमि में होनेवाला खजूर की जाति का एक तरह का ऊँचा बड़ा पेड़ जिसके फल की ऊपरी खोपड़ी को तोड़ने पर अंदर से गरी निकलती है। २ उक्त पेड़ का फल।
पद—नारियल की जटा=नारियल के फल के ऊपर के कड़े और मोटे रेशे जिनसे रस्से आदि बनाये जाते और गद्दे भरे जाते हैं।
मुहा०—नारियल तोड़ना=मुसलमानों की एक रीति जो गर्भ रहने पर की जाती है। नारियल तोड़कर उसमें लड़का या लड़की होने का शकुन निकालते हैं।
३ नारियल की खोपड़ी में बनाया हुआ हुक्का।

नारियल पूर्णिमा—स्त्री० [हिं०+सं०] बम्बई प्रदेश में मनाया जानेवाला एक उत्सव जिसमें समुद्र में नारियल फेंकते हैं।

नारियली—स्त्री० [हिं० नारियल+ई (प्रत्य०)] १ नारियल की खोपड़ी। २ उक्त खोपड़ी का बना हुआ हुक्का। ३. नारियल की ताड़ी।

नारी—स्त्री० [सं० नृ+अञ्—ङीन्] [भाव० नारीत्व] १ सं० 'नर' का स्त्री० रूप। मनुष्य जाति का लिंग के विचार से वह वर्ग जो गर्भधारण करके प्राणियों को जन्म देता है। २ विशेषतः वह स्त्री जिसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा आदि गुणों की प्रधानता हो। ३ युवती तथा वयस्क स्त्रियों की सामूहिक संज्ञा। ४ धार्मिक क्षेत्र में तथा साधकों की परिभाषा में (क) प्रकृति और (ख) माया। ५ तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति।
स्त्री० [हिं० नार] वह रस्सी जिससे जुए में हल बाँधा जाता है।
*स्त्री० [सं० नारीष्टा] चमेली। मल्लिका।
†स्त्री० [?] जलाशयों के किनारे रहनेवाली एक तरह की भूरे रंग की चिड़िया।
†स्त्री० १=नाड़ी। २=नाली।

नारी-कवच—पुं० [ब० स०] एक सूर्यवंशी राजा जिसे स्त्रियों ने अपने बीच में घेर कर परशुराम से वध किये जाने से बचा लिया था। क्षत्रियों का वंश विस्तार इन्हीं से माना जाता है।

नारीकेल—पुं०=नारिकेल (नारियल)।

नारीच—पुं० [सं० नाडीच, ड=र] नालिता नाम का शाक।

नारी-तरंगक—पुं० [ष० त०] १. वह व्यक्ति जो नारी का हृदय तरंगित करे। २. प्रेमी। ३ व्यभिचारी व्यक्ति।

नारी-तीर्थ—पुं० [मध्य० स०] एक तीर्थ जहाँ अर्जुन ने ब्राह्मण के शाप से ग्राह बनी हुई पाँच अप्सराओं का उद्धार किया था।

नारी-मुख—पुं० [ब० स०] पुराणानुसार कूर्म विभाग से नैर्ऋत् की ओर का एक देश।

नारीष्टा—स्त्री० [नारी-इष्टा, ष० त०] चमेली। मल्लिका।

नारुंतुद—वि० [सं० न-अरुन्तुद] जिसके शरीर पर कोई आघात न लगता हो।

नारू—पुं० [देश०] १. जूँ। ढील। २. एक प्रसिद्ध रोग जिसमें शरीर में होनेवाली फुंसियों में से सफेद रंग के सूत के समान लंबे-लंबे कीड़े निकलते हैं। ये कीड़े त्वचा के तंतु-जाल में से निकलते हैं, रक्त में से नहीं।
पुं० [हिं० नाली, पुं० हिं० नारी] क्यारियों में की जाने या होनेवाली बोआई।

नार्दल†—पुं० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

नार्पत्य—वि० [सं० नृपति+ष्यञ्] नृपति अर्थात् राजा से संबंध रखने-वाला।

नार्मद—वि० [सं० नर्मदा+अण्] नर्मदा-संबंधी। नर्मदा नदी का।
पुं० नर्मदा में से निकलनेवाले एक प्रकार के शिव लिंग।

नार्मर—पुं० [सं०] ऋग्वेद में वर्णित एक असुर जिसका वध इन्द्र ने किया था।

नार्यंग—पुं० [सं० नारी-अंग, ब० स०] नारंगी।

नार्यतिक्त—पुं० [सं०] चिरायता।

नालंदा—पुं० [सं०] मगध में स्थित एक जगत्-विख्यात प्राचीन विश्व-विद्यालय जो पाटलिपुत्र से ३० कोस दक्षिण में था।

नालंब—*वि० [स्त्री० नालंबा] निरवलंब। उदा०—पर हाय आज वह हुई निपट नालंबा।—मैथिलीशरण गुप्त।

नालंबी—स्त्री० [सं०] शिव की वीणा।

नाल—स्त्री० [सं०√नल् (बंधन)+ण] १. कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी। डाँडी। २ पौधों में डंठल। कांड। ३ गेहूँ, जौ आदि की वह डंडी जिसमें बालें निकलती हैं। ४. नल या नली। २. बंदूक के आगे निकला हुआ पोला लंबा अंश जिसमें से गोली निकलती है। ७ जुलाहों की नली जिसमें वे सूत लपेटकर रखते हैं। छूँछा। कैंडा। छुज्जा। ८. वह रेशा जो कलम बनाते समय छीलने पर निक-

लता है। ९ रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है। आँवला। मुहा०—नाल काटना=बच्चे का जन्म होने पर नाल काटकर उसे माता के शरीर से अलग करना। (किसी की कहीं) नाल गडी होना=(क) किसी स्थान से अति घनिष्ठ प्रेम या संबध होना। (ख) किसी स्थान पर कोई स्वत्व होना।

१०. बाँस या मोटे कागज की वह नली जो आतिशबाजी की चरखियो मे लगी रहती है और जिसमे विस्फोटक मसाले भरे रहते है। ११. छोटा नाला या पनाला।

स्त्री० [अ० नअल] १ लोहे का वह अर्द्ध-चद्राकार टुकडा जो घोडो की टाप मे नीचे की ओर जडा जाता है।

क्रि० प्र०—जडना।

२ उक्त आकार का लोहे का पतला टुकडा जो जूतो के नीचे उनकी एडी घिसने से बचाने के लिए लगाया जाता है। ३. पत्थर का वह भारी कुडलाकार टुकडा जिसे कसरत करनेवाले अभ्यास के लिए उठाते है। ४ लकड़ी का वह कुडलाकार घेरा या चक्कर जिसके ऊपर कूएँ की जोडाई की जाती है। ५ वह धन जो जूआ खेलनेवाला व्यक्ति हर बार जीतनेवाले व्यक्ति से वसूल करता है।

क्रि० वि० [?] सग या साथ मे। (पश्चिम)

नालक—पु० [देश०] १ पीतल की एक किस्म। २ उक्त किस्म के पीतल का बना हुआ पात्र। ३. एक प्रकार का बाँस।

नाल-कटाई—स्त्री० [हिं०] तुरन्त के जन्मे हुए बच्चे की नाक काटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नालकी—स्त्री० [स० नाल=डडा] एक तरह की लबी पालकी जिसमे वर को बैठाकर बरात निकाली जाती है।

विशेष—कुछ नालकियाँ खुली होती हैं और कुछ पर मेहराबदार छाजन होती है।

नालकेर—पु० [स० नारिकेल] नारियल।

नालबंद—प० [अ०+फा०] [भाव० नालबदी] १ वह व्यक्ति जो घोडो के खुर मे नाल जडता हो। २ ऐसा मोची जो जूतो मे नाल लगाता हो।

नालबंदी—स्त्री० [अ० नाल+फा० बदी] जूतो की एडी अथवा घोडो के खुर मे नाल जडने का काम।

पु० मुसलिम शासन-काल मे एक प्रकार का कर जो जमीदार और छोटे राजा अपनी प्रजा मे, उनकी रक्षा के लिए घुडसवार रखने के बदले मे लिया करते थे।

नाल-बाँस—पु० [स० नल+हि० बाँस] एक तरह का बढिया और मजबूत बाँस।

नालवश—पु० [स० उपमि० स०] नरसल। नरकट।

नाल-शतीरी—पु० [अ० नाल+फा० शहतीर] लकडी की एक तरह की मेहराब जिसमे अनेक छोटी-छोटी मेहराबें कटी होती हैं।

नाल-शाक—पु० [स०] सूरन की नाल जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

नाला—पु० [स० नाल] [स्त्री० अल्प० नाली] १ वह गहरा तथा लबा कृत्रिम जल-मार्ग जो नहर आदि की अपेक्षा कम चौडा होता है तथा जिसमे बरसाती, गदा या फालतू पानी बहकर किसी नदी आदि मे जा गिरता है। २ रगीन गडेदार सूत। ३ दे० 'नाड़ा'।

स्त्री० [स० नाल+टाप्] १ कमलदड। २ पौधे का कोमल तना।

पु० [अ० नाल.] आर्तनाद। चीत्कार।

नालायक—वि० [फा० ना+अ० लाइक] १ जिसमे योग्यता का अभाव हो। २ जो मूर्खतापूर्वक दुष्ट आचरण या व्यवहार करता हो।

नालायकी—स्त्री० [हिं० नालायक+ई (प्रत्य०)] १ नालायक होने की अवस्था या भाव। अयोग्यता। २ मूर्खतापूर्वक किया हुआ कोई दुष्ट आचरण।

नालि—स्त्री० [स० √नल्+णिच्+इन्] १ नालिका। नली। उदा०—जुआलि नालि तसु गरम चेहवी।—पृथीराज। २. बदूक।

नालिक—पु० [स० नाल+ठन्—इक] १ कमल। २ बाँसुरी। ३ भैसा। ४ प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसकी नली मे कुछ चीजे भरकर चलाई या फेंकी जाती थी।

नालिका—स्त्री० [स० नाला+कन्—टाप्, इत्व] १ छोटी नाल या डठल। २ नली। ३ पानी आदि बहने की नाली। ४ करघे मे की वह नली जिसके अदर लपेटा हुआ सूत रहता है। ५. पटुआ नाम का साग। ६ एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य।

नालिकेर—पु०=नारिकेल (नारियल)-

नालि-केरी—स्त्री० [स० नालिकेर+ङीप्] एक तरह का शाक।

नालि-जंघ—पु० [स० ब० स०] डोम कौआ।

नालिता—स्त्री० [स०] १ पटसन। पटुआ। २ उक्त के कोमल पत्तो का बनाया जानेवाला शाक।

नालिनी—स्त्री० [स०] तत्र मे नाक का छेद।

नालिश—स्त्री० [फा०] १ किसी के सबध मे की जानेवाली फरियाद। २ किसी के विरुद्ध दायर किया जानेवाला मुकदमा।

नाली—स्त्री० [हिं० नाला का स्त्री० अल्पा० रूप] १ गदा पानी बहने का घर, गली आदि मे का पतला और छिछला मार्ग। छोटा नाला। मोरी। २ जल-मार्ग जो प्राय कम चौडा और छिछला होता है। जैसे—खेत मे की नाली। ३ वह गहरी लकीर जो तलवार की बीचो बीच पूरी लबाई तक गई होती है। ४ पतला। नल। नली। ५. पुरानी चाल की बदूक। उदा०—बान नालि हथनाल, तुपक तीरह सब सज्जिय।—चदबरदाई। ६ कुम्हार के आँवे का वह नीचे की ओर गया हुआ छेद जिससे आग डालते है। ७ घोडे की पीठ पर का गड्ढा। ८ चोगा। ढरका।

स्त्री० [स० नालि+ङीप्] १ नाडी। २ करेमू का साग। ३ कमल का डठल। ४ एक उपकरण जिससे हाथी का कान छेदा जाता है। ५ एक तरह का बाघ। ६. घडी।

नालीक—पु० [स० नाली√कै (शब्द)+क] १ पुरानी चाल का एक तरह का तीर जो बाँस की नली मे रखकर चलाया जाता था। तुफग। २. भाला। ३ कमलो का जाल या समूह। ४ कमल-नाल। ५ कमडलु।

नालीकिनी—स्त्री० [स० नालीक+इनि—ङीप्] १ पद्म समूह। २ कमलो से पूर्ण जलाशय।

नालीदार—वि० [हिं० नाली+फा० दार] जिसमे नाली या नालियाँ बनी या लगी हो।

नालीप—पु० [स०] कदब।

नाली-व्रण—पु० [स० मध्य० स०] नासूर।
नालूक—वि० [स०] कृश। दुबला।
पु० एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य।
नालौट—वि० [हिं० ना+लौटना] बात कहकर पलट जानेवाला। मुकरनेवाला।
नालौर—वि०=नालौट।
नावँ†—पु०=नाम।
नाव—स्त्री०[स० नौ से फा०] १. नदी से पार उतरने की एक प्रसिद्ध सवारी जिसे मल्लाह डाँडों या पतवारों से खेते हैं। किश्ती। नौका। २. तलवार आदि मे रेखाकार बना हुआ चिह्न। खाँचा। नाली। जैसे—दुनावी तलवार या चौनावा खाँचा।
नावक—पु० [फा०] १ पुरानी चाल का एक तरह का तीर जो बहुत गहरी चोट करता था। २. मधुमक्खी का डंक।
†पु०=नाविक।
नाव का पुल—पु० [हिं०] नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक लगा हुआ आपस मे बँधी हुई नावों का क्रम या शृखला, जो पुल का काम देती है। (बोट ब्रिज)
ना-वक्त—अव्य० [फा०+अ०] १. अनुपयुक्त समय मे। २. देर करके।
नाव-घाट†—पु० [हिं०] नदी, झील आदि का वह स्थान जहाँ नावें रहती है।
नावण†—पु०=नहान।
नावना—स० [स० नामन] १ किसी के अदर कुछ गिराना, डालना या रखना। २. प्रविष्ट करना। घुसाना।
†स०=नवाना (झुकाना)।
नावनीत—वि० [स० नवनीत+अण्] १ नवनीत-संबधी। २ मुलायम।
नावर—स्त्री० [हिं० नाव] १. नाव। नौका। २. नाव को नदी के बीच मे जाकर चक्कर खेलाने की क्रीडा।
नावरा—पु० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक तरह का पेड़ जिसकी लकडी चिकनी तथा मजबूत होती है।
नावरि—स्त्री०=नावर।
नावाँ—पु०=नाँवाँ।
ना-वाकिफ—वि० [फा० ना+अ० वाकिफ] [भाव० नावाकिफीयत] १. जिसे किसी से वाकिफीयत अर्थात् जान-पहचान न हो। २. अनजान। ३. अज्ञात।
ना-वाजिब—वि० [फा० ना+अ० वाजिब] जो वाजिब अर्थात् उचित न हो। अनुचित।
नावाधिकरण—पु०[स० नौ-अधिकरण, प० त०=नावधिकरण] १ राज्य या राष्ट्र का वह विभाग जो जहाजी बेड़ो से सबधित हो और नौ-सेना आदि का सचालन करता हो। २. उक्त विभाग के अधिकारियो का वर्ग। ३ राज्य के जहाजी बेड़े। (एडमिरलटी; उक्त सभी अर्थो मे)
नाविक—पुं० [सं० नौ+ठन्—इक] वह जो नौका खेता हो। मल्लाह। माँझी।
नावी (विन्)—पुं० [स० नौ+इनि] नाविक। मल्लाह।
नावेल—पु० [अ० नावेल] उपन्यास। (देखें)
नाव्य—वि० [स० नौ+यत्] १. जिसे नाव से पार किया जा सके। २ नाव से पार करने योग्य। ३. प्रशसनीय।
नाव्य-जलमार्ग—पु० [स० कर्म० स०] वह जल मार्ग जिसमे नावें चलती या चल सकती हों। नावों के यातायात के लिए उपयुक्त जल-मार्ग। (नैविगेबुल)
नाश—पुं० [स०√नश् (नष्ट होना)+घञ्] [कर्ता० नाशक, भू० कृ० नष्ट] १. ऐसी स्थिति जिसमे किसी वस्तु की सत्ता मिट चुकी होती है। २. सत्ता से च्युत या रहित करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३. रचनाओं का टूट-फूटकर ध्वस्त होना। ४. चौपट होने की अवस्था या भाव।
नाशक—वि० [स०√नश्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. ध्वंस या नाश करनेवाला। मिटाने या दूर करनेवाला। २. मारने या बध करनेवाला।
नाशकारी (रिन्)—वि० [सं० नाश√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० नाश कारिणी] नाश करनेवाला। नाशक।
नाशन—पु० [स०√नश्+णिच्+ल्युट्—अन] नाश करना।
वि० [स्त्री० नाशिनी] नाश करनेवाला।
नाशना†—स० [स० नाश] नाश करना।
नाशपाती—स्त्री० [फा० नाशपाती] सेब की जाति का एक प्रसिद्ध पेड और उसका फल जो काश्मीर में बहुत होता है।
नाश-वाद—पुं० [स० प० त०] १. यह वाद या सिद्धान्त कि ससार मे जो कुछ है, उसका नाश अवश्य होगा। २. एक आधुनिक पाश्चात्य सिद्धात जिसके अनुसार सभी धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक मान्यताएँ तथा व्यवस्थाएँ बुरी समझी जाती हैं। (निहलिज्म)
ना-शाइस्ता—वि० [फा० नाशाइस्त:] १. अनुचित। नामुनासिब। २. अशिष्ट। ३. असभ्य। ४. अश्लील।
ना-शाद—वि० [फा०] १. जो शाद अर्थात् खुश या प्रसन्न न हो। दुखी। २. अभागा। बदनसीब।
नाशित—भू० कृ० [सं०√नश्+णिच्+क्त] जिसका नाश हो चुका हो। नष्ट।
नाशी (शिन्)—वि० [सं० नाश+इनि] [स्त्री० नाशिनी] १. नाश करनेवाला। नाशक। २. नष्ट होनेवाला। नश्वर।
नाशुक—वि० [सं०√नश्+उकञ्] नष्ट होनेवाला। नश्वर।
ना-शुदनी—वि० [फा०] १. (घटना या बात) जो कभी न हो सके। असंभव। २. (व्यक्ति) जो बहुत ही अभागा या बुरा हो।
स्त्री० ऐसी अनिष्टकारी या अप्रिय घटना जो असभाव्य होने पर भी अचानक घटित हो जाय।
नाश्ता—पुं० [फा० नाश्त] सवेरे अथवा दोपहर के भोजन से कुछ समय पहले बासी मुँह किया जानेवाला जल-पान। कलेवा।
नाश्य—वि० [सं०√नश्+णिच्+यत्] १ जिसका नाश हो सके या होने को हो। २. जिसका नाश किया जाना उचित हो।
नाष्टिक—वि० [सं० नष्ट+ठञ्+इक] १. जो नष्ट हो चुका हो।
पुं० वह व्यक्ति जिसकी कोई चीज नष्ट हो चुकी हो।
नाष्ठिक—वि० [सं० नष्ट+ठञ्—इक] जो नष्ट हो चुका हो।

पु० वह व्यक्ति जिसकी कोई चीज नष्ट हो चुकी हो।

नाष्टिक-धन—पु० [स० कर्म० स०] खोया हुआ धन। (स्मृति)

नास—स्त्री० [स० नासा] १. वह चूर्ण जो नाक मे डाला जाय। वह औषध जो नाक से सूंघी जाय। नस्य।

क्रि० प्र०—लेना।—सूंघना।

२. नसवार। सुंघनी।

†पु०=नाश।

नासत्य—पुं० [सं० नअसत्य, नञ्समास, प्रकृतिवद्भाव] अश्विनीकुमार।

नासत्या—स्त्री० [स० नासत्य+टाप्] अश्वनी नक्षत्र।

नासदान—पु० [हिं० नास+फा० दान] सुंघनी रखने की डिबिया।

नासना—स० [सं० नाशन्] १ नष्ट या बरबाद करना। २ न रहने देना। अन्त कर देना। ३ मार डालना।

नासपाली—पुं० [?] अनारी रग। (टार्टन गोल्ड)

वि० उक्त प्रकार के रग का।

नास-पीटा—वि० [सं० नाश+हिं० पीटना] [स्त्री० नास-पीटी] ऐसा परम नीच और हीन, जिसका कष्ट हो जाना ही अभीष्ट हो। (व्रज में, स्त्रियो की गाली या शाप)

ना-समझ—वि० [हिं० ना+समझ] [भाव० ना-समझी] १ (व्यक्ति) जिसे समझ न हो। मूर्ख। २ कम समझवाला। नादान।

ना-समझी—स्त्री० [हिं० ना-समझ] ना-समझ होने की अवस्था या भाव।

नासा—स्त्री० [स०√नास्+अ—टाप्] [वि० नास्य] १. नासिका। नाक। २. नाक के दोनो छेद। नथना। ३. दरवाजे मे चौखट के ऊपर की लकड़ी। ३. अजूसा। वासक।

नासाखत*—पुं० दे० 'नक-घिसनी'।

नासाग्र—पुं० [स० नासा+अग्र ष० त०] नाक का अगला नुकीला अश या भाग।

ना-साज—वि० [फा० नासाज] [भाव० नासाजी] (शारीरिक स्थिति) जिसमे किसी प्रकार की बेचैनी, रोग या शिथिलता न हो।

नासा-ज्वर—पु० [मध्य० स०] नाक मे एक प्रकार की गाँठ होने के फल-स्वरूप चढ़नेवाला बुखार।

नासानाह—पुं०[स०] एक तरह का रोग जिसमे कफ से नथने रुँधे रहते हैं।

नासा-परिशोष—पुं० [ष० त०] नासाशोष रोग।

नासा-पाक—पु० [ष० त०] नाक के पकने का एक रोग।

नासा-पुट—पु० [ष० त०] नाक का वह चमड़ा जो छेदो के किनारे परदे का काम देता है। नथना।

नासा-योनि—पु० [ब० स०] वह नपुसक जिसे घ्राण करने पर उद्दीपन हो। सौगधिक नपुसक।

नासालु—पु० [स०] कायफल।

नासा-वंश—पु० [उपमि० स०] नाक की हड्डी।

नासा-वेध—पु० [ष० त०] १. नथ आदि पहनने के लिए नाक मे छेद करने की रसम। २ उक्त काम के लिए नाक के अगले भाग मे किया हुआ छेद।

नासामणि—पुं० [स०] सगीत मे, कर्नाट की पद्धति का एक राग।

नासा-शोष—पु० [ष० त०] एक रोग जिसमे नाक मे कफ जम तथा सूख जाता है।

नासा-स्राव—पु० [ष० त०] नाक मे से कफ या पानी निकलना।

नासिकंधम—वि० [स० नासिका√ध्मा (शब्द)+खश्, मुम्, ह्रस्व] बोलते समय जिसके नाक से भी ध्वनि निकलती हो।

नासिक—स्त्री० [स० नासिक्य] बम्बई राज्य मे गोदावरी के तट पर की एक प्रसिद्ध नगरी जो तीर्थ मानी जाती है।

नासिका—स्त्री० [स०√नास्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ नाक। नासा। २. नाक की तरह आगे निकली हुई कोई लबी चीज। ३. हाथी की सूंड। ४ दरवाजे मे, चौखट के ऊपर की लकड़ी।

नासिका-भूषणी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नासिक्य—वि० [सं० नासिका+ष्यञ्] नासिका से उत्पन्न।

पु० १ नासिका। नाक। २. अश्विनीकुमार। ३ दक्षिण भारत का नासिक नामक तीर्थ। ४ अनुनासिक स्वर।

नासिर—पुं० [अ०] नस्र अर्थात् गद्य लिखनेवाला लेखक। गद्य-लेखक।

नासी—वि०=नाशी।

नासीर—वि० [स०√नास्+क्विप्, नास√ईर् (गति)+क] आगे आगे चलनेवाला।

पु० सेना का अगला भाग।

नासूत—पु० [अ०] इहलोक। मर्त्यलोक। (सूफी सप्रदाय)

नासूर—पु० [?] एक प्रकार का घाव जिसका मुँह नली के आकार का होता है और जिसमे से बराबर मवाद निकलता रहता है। नाड़ी व्रण। (साइनस)

क्रि० प्र०—पडना।

मुहा०—(किसी के) कलेजे या छाती में नासूर डालना=किसी को बहुत अधिक दु खी करना।

नास्तिक—पु० [सं० नास्ति+ठक्—क] [भाव० नास्तिकता] ईश्वर, परलोक, मत-मतांतरो आदि को न माननेवाला। 'आस्तिक' का विपर्याय।

नास्तिकता—स्त्री० [स० नास्तिक+तल्—टाप्] नास्तिक होने की अवस्था या भाव।

नास्तिक्य—पु० [स० नास्तिक+ष्यञ्] नास्तिकता।

नास्तिद—पु० [स०] आम का पेड़।

नास्तिवाद—पुं० [स० मध्य०स०] १ नास्तिको का तर्क। २ नास्तिकता।

नास्य—वि० [स० नासा+यत्] १ नासिका-सबधी। नाक का। २. नासिका से उत्पन्न।

पु० बैल के नथनो मे नाथी या बाँधी जानेवाली रस्सी। नाथ।

नाह—पु० [स० नाथ] १ नाथ। स्वामी। मालिक। २. स्त्री का पति। ३ बन्धन। ४ हिरन आदि फँसाने का जाल या फदा।

†पु० [स० नाभि] पहिए के बीच का छेद। नाभि।

†अव्य०=नही।

नाहक—क्रि० वि० [फा० ना+अ० हक] अनुचित रूप से और अकारण। व्यर्थ।

नाहट—वि० [देश०] १ बुरा। २ नटखट।

नाह-नूंह—स्त्री० [हिं० नाही] १. कई बार किया जानेवाला 'ना' 'ना' या 'नही' 'नही' शब्द। २ कुछ-कुछ दबी जबान से किया जानेवाला इन्कार।

नाहर—पु० [स० नरहरि] १. सिंह। शेर। २. बाघ। ३. बहुत बडा वीर और साहसी पुरुष।
पु० [?] टेसू का पौधा और फूल।
नाहर-मुखी—पु० दे० 'शेर-मुखी'।
नाहर साँस—पु० [हिं० नाहर+साँस] घोडों के साँस फूलने का एक रोग।
नाहरू†—पु० १.=नाहर। २.=नारू (रोग)।
नाहिन*—अव्य० [हिं० नाही] नही।
नाहीं—अव्य० दे० 'नही'।
स्त्री० [हिं० नही] नही करने या कहने की क्रिया या भाव।
नाही†—पु० [स० नाथ] स्वामी।
नाहुष—वि० [स० नहुष+अण्] नहुष-सबधी। नहुष का।
पु० नहुष के पुत्र ययाति।
नाहुषि—पु०=नाहुष।
निंत—क्रि० वि०=नित्य।
निंद†—वि०=निंद्य।
निंदक—वि० [स०√निंद (कलक लगाना)+ण्वुल्—अक] निंदा-करनेवाला।
निंदना—स० [स० निंदन] निंदा करना। बुरा कहना।
निंदनीय—वि०[स०√निंद्+अनीयर] (व्यक्ति अथवा उसका आचरण) जिसकी निंदा की जानी चाहिए। निंदा किए जाने के योग्य।
निंदरना—स० [स० निंदा] १ निंदा करना। बुरा कहना। २. बदनाम करना।
निंदरा—स्त्री०=निद्रा।
निंदरिया—स्त्री०=निद्रा।
निंदा—स्त्री० [स०√निंद्+अ—टाप्] [भू० कृ० निंदित, वि० निंद-नीय] १ किसी के दोषों, बुराइयों आदि का दूसरो के समक्ष किया जानेवाला वह बखान जो उसे दूसरो की नजरो मे गिराने या हेय सिद्ध करने के लिए किया जाय। २ व्यक्ति अथवा उसके किसी कार्य की इस उद्देश्य से की जानेवाली कटु आलोचना कि लोग उसे बुरा समझने लगें। ३ अपकीर्ति। बदनामी।
निंदाई—स्त्री०=निराई (खेतों की)।
निंदाना—स०=निराना।
निंदा-प्रस्ताव—पु० [स० प० त०] किसी सभा मे उपस्थित किया जाने-वाला वह प्रस्ताव जिसमे किसी अधिकारी, कार्यकर्ता या सदस्य के किसी काम के सबध मे अपना असतोष प्रकट करते हुए उसकी निंदा का उल्लेख किया जाता है। (सेन्सर मोशन)
निंदारा—वि०=निंदासा।
निंदासा—वि० [हिं० नीद] १ (जीव) जिसे नीद आ रही हो। २ (आँखे) जिनमे नीद भरी हुई हो।
निंदा-स्तुति—स्त्री०=व्याज स्तुति।
निंदित—भू० कृ० [स०√निंद्+क्त] १ जिसकी निंदा हुई हो या की गई हो। २ दे० 'निंदनीय'।
निंदिया— स्त्री०=नीद।
निंदु—स्त्री०[स०√निंद्+उ]वह स्त्री जिसे मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ हो।
निंद्य—वि० [स०√निंद्+ण्यत्] निंदा किये जाने के योग्य। निंदनीय।
निंब—स्त्री० [स० निन्व् (सीचना)+अच्, बवयोरभेदात् नस्य म.] नीम का पेड।
निंबकौरी†—स्त्री०=निमकौडी।
निंबरिया†—स्त्री० [हिं० नीम+बरी] वह उपवन जिसमे नीम के बहुत से पेड हों।
निंबादित्य—पु० [स०] दे० 'निंबार्काचार्य'।
निंबार्क—पु० [स०] १. निंबादित्य का चलाया हुआ वैष्णव सप्रदाय। २ निंबार्काचार्य।
निंबार्काचार्य—पु० [स०] भक्तमाल मे उल्लिखित एक प्रसिद्ध कृष्णभक्त जो निंबार्क सप्रदाय के सस्थापक थे। कुछ लोग इन्हे श्री राधिका जी के कगण का अवतार और कुछ लोग इन्हे सूर्य के अश से उत्पन्न मानते है। [स० ११७१-१२१९ वि०]
निंबू†—पु०=नीबू (पौधा और उसका फल)।
नि —उप० [स० निस्] एक उपसर्ग जो शब्दो के पहले लगकर उन्हे नहिक भाव या राहित्य का सूचक बनाता है। जैसे—नि शुल्क, नि दोष आदि।
निःकपट—वि०=निष्कपट।
निःकाम—वि०=निष्काम।
निःकारण—वि०=निष्कारण।
नि.कासन—पु० [वि० नि कासित]=निष्कासन।
नि.कासित—वि० [स०] निष्कासित। (दे०)
निःक्षत्र—वि० [स० निर्-क्षत्र, ब० स०] (स्थान) जिसमे क्षत्रिय न रहते हो। क्षत्रिय रहित। क्षत्रिय शून्य।
निःक्षेप—पु० [स० निर्√क्षिप् (प्रेरणा)+घञ्] निक्षेप। (दे०)
निःक्षोभ—वि० [स०] जिसमे क्षोभ अर्थात् खलबली या घबराहट न हो।
निःछल—वि० [स० निर्-क्षोभ, ब० स०] निश्छल। (दे०)
निःपक्ष—वि० [स०] निष्पक्ष। (दे०)
निःपाप—वि० [स०] निष्पाप।
नि.प्रभ—वि० [स०] निष्प्रभ। (दे०)
निःप्रयोजन—वि० [स०] निष्प्रयोजन। (दे०)
नि.फल—वि० [स०] निष्फल। (दे०)
नि.शंक—वि०[स० निर्-शका, ब० स०] १ जिसे किसी प्रकार की शका न हो। २ निधडक।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की शका या डर के।
नि.शत्रु—वि० [स० निर्-शत्रु, ब० स०] जिसका कोई शत्रु न हो।
निःशब्द—वि० [स० निर्-शब्द, ब० स०] १. (स्थान) जिसमे शब्द न हो रहा हो। २. जो शब्द न करता हो।
नि.शब्दक—पु० [स० नि शब्द+णिच्+ण्वुल्—अक] यत्रो मे रहनेवाला एक उपकरण जो यत्रो के कुछ पुरजो को अधिक जोर का शब्द या शोर नही करने देता। (साइलेन्सर)
नि.शम—पु० [स० निर्-शम, प्रा० स०] १ असुविधा। २. चिता।
निःशरण—वि० [स० निर्-शरण, ब० स०] जिसे कोई शरण देनेवाला न हो। असहाय।
निःशलाक—वि० [स० निर्-शलाका, ब० स०] एकात। निर्जन।

निःशल्य—वि० [स० निर्-शल्य, व० स०] [स्त्री० नि शल्या] १ जिसके पास शल्य अर्थात् तीर न हो। २ जिसमे शल्य न हो। कटक रहित। ३ जिसमे कोई खटकनेवाली बात न हो। ४ जिसमे कोई बाधा या रुकावट न हो। निष्कटक।

निःशाख—वि० [स० निर्-शाखा, व० स०] जिसमे शाखाएँ न हो। बिना शाखाओ का।

निः शुक्र—वि० [स० निर्-शुक्र, व० स०] १. शक्तिहीन। २ निरुत्साह।

निःशुल्क—वि० [स० निर्-शुल्क, व० स०] १ जिस पर कोई शुल्क न लगता हो या न लगा हो। २ (व्यक्ति) जो नियत शुल्क न देता हो या जिसका शुल्क क्षमा कर दिया गया हो।

नि.शूक—पु० [स० निर्-शूक, व० स०] एक तरह का धान।

नि.शून्य—वि० [स० निर्-शून्य, प्रा० स०] बिलकुल खाली।

नि.शेष—वि० [स० निर्-शेष, व० स०] १ जिसका कुछ भी अश बाकी न बचा हो। जिसका कुछ भी न रह गया हो। २ पूरा। समूचा। ३ पूरी तरह से समाप्त या सम्पन्न किया हुआ (काम)।

नि.शोक—वि० [स० निर्-शोक, व० स०] शोक रहित।

निःशोध्य—वि० [स० निर्-शोध्य, व० स०] जिसका शोधन न किया जा सके।

निःश्रयणी (यिणी)—स्त्री० [स० निर्√श्रि+ल्युट्-अन, डीप्, निर्√श्रि+णिनि—डीप्] नि श्रेणी।

निःश्रीक—वि० [स० निर्-श्री, व० स०, कप्] श्री से रहित। कातिहीन।

निःश्रेणी—स्त्री० [स० निर्-श्रेणी, व० स०] सीढी विशेषत. काठ या बाँस की बनी हुई सीढी।

निःश्रेयस—पु० [स० निर्-श्रेयस्, प्रा० स०, अच्] १. मोक्ष। मुक्ति। २. कल्याण। मगल। ३ विज्ञान। ४ भक्ति।

निःश्वसन—पु० [स० निर्√श्वस् (साँस लेना)+ल्युट्-अन] साँस बाहर निकालने की क्रिया।

वि० [स्त्री० नि श्वसना] साँस बाहर निकालने या फेकनेवाला। उदा०—जीवन-समीर शुचि नि श्वसना।—निराला।

निःश्वास—पु० [स० निर्√श्वस्+घञ्] वह हवा जो साँस लेने पर नाक के रास्ते बाहर निकाली जाती है।

पद—दीर्घ नि.श्वास=गहरा और ठढा साँस।

निःशील—वि० [स०]=निश्शील।

निःसंकोच—अव्य० [स० निर्-सकोच, व० स०] सकोच बिना। बे-धडक।

नि संख्य—वि० [स० निर्-सख्या, व० स०] जो गिना न जा सके। अनगिनत। बे-शुमार।

निःसंग—वि० [स० निर्-सग, व० स०] १ जिसका किसी से सग न हो। किसी से सबध न रखनेवाला। निर्लिप्त। २ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला।

नि.संचार—वि० [स० निर्-सचार, व० स०] १ सचरण न करनेवाला २ घर के अन्दर ही पडा रहनेवाला।

निःसज्ञ—वि० [स० निर्-सज्ञा, व० स०] जिसमे सज्ञा न हो या न रह गई हो। सज्ञा रहित।

नि सतान—वि०=निस्सतान।

निःसदेह—वि० [स० निर्-सदेह, व०स०] जिसमे कुछ भी सदेह न हो। सदेह-रहित।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के सन्देह के। २. निश्चित रूप से। अवश्य। बेशक।

निःसधि—वि० [स० निर्-सधि, व० स०] १ सधि से रहित। २. जिसमे कही छेद दरज या ऐसा ही और कोई अवकाश न हो। ३ जिसमे कही जोड न हो या न लगा हो। ४ दृढ। पक्का। मजबूत। ५ अच्छी तरह कसा य गठा हुआ।

नि संपात—वि० [स०निर्-सपात, व० स०] जिसमे आना-जाना न हो सके।

पु० रात का अधकार।

निः सबल—वि० [स० निर्-सबल, व० स०] १ जिसके पास सबल न हो। जिसे कोई सबल या सहायता देनेवाला न हो।

अव्य० बिना किसी सबल या सहारे के।

नि.संबाध—वि० [स० निर्-सबाधा, व० स०] १ विस्तृत। २ बडा।

निःसशय—वि० [स० निर्-सशय, व० स०] जिसमे या जिसे कुछ भी सशय न हो।

अव्य० किसी प्रकार के सशय के बिना।

नि.सत्व—वि० [स० निर्-सत्व, व० स०] १ जिसमे सत्व या सार न हो। थोथा। २ नि सार। जिसमे कुछ भी बल या शक्ति न रह गई हो। ३ जो अस्तित्व मे न रह गया हो।

निः सपत्न—वि० [स० निर्-सपत्न, व० स०] १ (व्यक्ति) जिसका कोई प्रतिद्वद्वी या शत्रु न हो। २ (वस्तु) जिसका केवल एक अधिकारी हो। ३ (स्त्री) जिसकी कोई सपत्नी या सौत न हो।

निःसरण—पु० [स० निर्√सृ (गति)+ल्युट्—अन] १ बाहर आना या निकलना। २ बाहर निकलने का मार्ग या रास्ता। निकास। ३ कठिनाई से निकलने का मार्ग या युक्ति। ४ मोक्ष। निर्वाण। ५ मरण। मृत्यु। मौत।

निःसार—वि० [स० निर्-सार, व० स०] १ (पदार्थ) जिसमे कुछ भी सार न हो। थोथा। २ जिसका कुछ भी महत्त्व न हो। महत्त्वहीन। ३. जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध न हो सके। निरर्थक। व्यर्थ।

पु० १ शाखोट या सिहोर नामक वृक्ष। २ सोनपाढा।

निःसारण—पु० [स० निर्√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० नि सारित] १ कोई चीज निकालने, विशेषत बाहर निकालने की क्रिया या भाव। २ निकलने का मार्ग। निकास। ३ वनस्पतियो की गाँठो या शरीर की गिल्टियो का अपने अदर से कोई तत्त्व या तरल अश बाहर निकालना जो अगो को विशुद्ध और ठीक दशा मे रखने या ठीक तरह से चलाने के लिए आवश्यक होता है। ४ इस प्रकार निकलनेवाला कोई पदार्थ। (सीक्रेशन)

नि सारा—स्त्री० [स निर्-सार, व० स०, टाप्] कदली। केला।

निःसारित—भू० कृ० [स० निर्√सृ+णिच्+क्त] १ निकला हुआ। २. बाहर किया हुआ।

नि.सारु—पु० [स० निर्-सीमन्, व० स०] ताल के साठ भेदो मे से एक।

निःसीम (न्)—वि० [सं० निर्—सीमन्, ब० स०] १ जिसकी कोई सीमा न हो। २. बहुत अधिक ।

नि.सुकि—पु० [सं०] १ एक तरह का गेहूँ का पौधा, जिसकी बालो मे टूँड (बाल का ऊपरी नुकीला भाग) नही लगता । २ उक्त पौधे मे से निकलनेवाला गेहूँ ।

निःसृत—भू० कृ० [सं० निर्√सृ (गति)+क्त] जिसका नि सरण हुआ हो। बाहर निकला हुआ ।

निःस्नेह—वि० [सं० निर्—स्नेह, ब० स०] जिसमे स्नेह (क) तेल या (ख) प्रेम न हो।

निःस्नेहा—स्त्री० [सं० नि स्नेह+टाप्] अलसी। तीसी ।

निःस्पद—वि० [सं० निर्—स्पद, ब० स०] स्पदनहीन। निश्चल ।

निःस्पृह—वि० [सं० निर्—स्पृहा, ब० स०] १. जिसे किसी बात की स्पृहा अर्थात् आकाक्षा न हो। कामनाओ, वासनाओ आदि से रहित। २ स्वार्थ आदि की दृष्टि से जो किसी के प्रति उदासीन हो। नि' स्वार्थ भाववाला । जैसे—नि स्पृह सेवक ।

निःस्रव—पु० [सं० निर्√स्रु (गति)+अप्] १. निकलने का मार्ग। निकास। २ बचा हुआ अश। अवशेष। ३ बचत ।

निःस्राव—पु० [सं० निर्√स्रु+अण्] १ बहकर निकला हुआ। अश। २ माड ।

निःस्व—पु० [सं० निर्—स्व, ब० स०] १ जो स्व अर्थात् आपा या अपनापन छोड या भूल चुका हो। २. जिसे सुध-बुध न रह गई हो। ३. दरिद्र। धनहीन ।

निःस्वादु—वि० [सं० निर्—स्वाद, ब० स०] बिना स्वाद का। जिसमे कुछ भी स्वाद न हो।

निःस्वार्थ—वि० [सं० निर्—स्वार्थ, ब० स०] १ जिसमे स्वार्थ-साधन की भावना न हो। २. जो बिना किसी स्वार्थ के कोई काम विशेषत परोपकार करता हो। ३. (काम) जो बिना किसी स्वार्थ से किया जाय ।

अव्य० बिना किसी प्रकार के स्वार्थ के ।

नि—उप० [सं०√नी (ले जाना)+डि] एक उपसर्ग जो कुछ शब्दो के आरभ मे लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है—(क) नीचे की ओर। जैसे—निपात। (ख) सग्रह या समूह । जैसे—निकर, निकाय। (ग) आदेश । जैसे—निदेश (घ) नित्यता । जैसे—निवेश । (ङ) कौशल। जैसे—निपुण । (च) बधन । जैसे—निबधन । (छ) अतर्भाव । जैसे—निपीत। (ज) सामीप्य। जैसे—निकट। (झ) अपमान। जैसे—निकार। (ञ) दर्शन। जैसे—निदर्शन । (ट) आश्रम। जैसे—निकुज, निलय, निकेतन। (ठ) अलग होने का भाव। जैसे—निवृत्त, निवृत्ति। (ड) सपूर्ण। जैसे—निखिल। (ढ) अच्छी तरह से। जैसे—निगूढ, निग्रह। (त) बहुत अधिक। जैसे—नितात, निपीड़ना।

पु० सगीत मे, निषाद स्वर का सूचक सक्षिप्त रूप।

उप० [हिं०] रहित। हीन। जैसे—निकम्मा, निछोह,

निअर—अव्य० [सं० निकट, प्रा० निअड] निकट। पास। समीप।

वि० तुल्य। बराबर। समान ।

निअराना—स० [हिं०निअर] निकट या समीप पहुँचाना या ले जाना। अ० निकट या पास जाना अथवा पहुँचना ।

निअरे†—अव्य०=निकट (पास)।

निआउ†—पु० =न्याय ।

निआथि†—स्त्री० [सं० नि+अर्थता] निर्धनता। गरीबी। उदा०—साथी आथि निआथि भै, सकेसि न साथ निबाहि ।—जायसी।

वि० निर्धन ।

निआन†—पु० [सं० निदान] निदान। अन्त। उदा०—देखेन्हि बूझि निआन न साथा। ।—जायसी।

अव्य० अन्त मे। आखिर।

निआना*—वि०=१. निआरा (न्यारा)। उदा०—अनुराजा सो जरै निआना।—जायसी। २. अनजान।

निआमत—स्त्री० [अ० नेअमत] १. ईश्वर द्वारा प्रदत्त अथवा उसकी कृपा से प्राप्त होनेवाली धन-सपत्ति या कोई बहुमूल्य गुण अथवा पदार्थ। २. किसी के द्वारा प्रदत्त बहुत ही बहुमूल्य पदार्थ ।

निआरा†—वि० [स्त्री० निआरी]=न्यारा।

निआर्थी*—स्त्री० [सं० नि'+अर्थता] १. अर्थहीनता। २. दरिद्रता। गरीबी।

वि० धन-हीन। दरिद्र।

निउँजी†—स्त्री०=न्योजी (लीची का वृक्ष और फल)।

निऋति—स्त्री० [सं० निर्-ऋति,] दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी। २. अधर्म की पत्नी। ३ अधर्म की कन्या। ४ लक्ष्मी की बहन अलक्ष्मी। दरिद्रा देवी। ५ भारी विपत्ति। ६ मृत्यु।

निकंटक†—वि०[सं० निष्कटक] १. कटक रहित । २. अबाध।

निकंदन—पु० [सं०नि√कद् (विकलता)+णिच्+ल्युट्—अन] १. नाश। २ संहार।

निकंदना*—स० [सं० निकदन] १ नष्ट करना। न रहने देना। २ सहार करना।

अ० १. नष्ट होना। २. सहार होना।

निकंद रोग—पु० दे० 'योनि कद'।

निकट—अव्य० [नि√कट् (जाना)+अच्] १ कुछ या थोडी दूरी पर। पास ही मे। २ किसी की दृष्टि या विचार मे। ३. किसी के लेखे या हिसाब से। जैसे—तुम्हारे निकट भले ही यह काम बहुत बडा न हो, पर सब लोग ऐसा नही कर सकते।

वि० लगाव या सबध के विचार से समीप-स्थित। पास का। जैसे—निकट-सबधी।

निकटता—स्त्री० [सं० निकट+तल्—टाप्] १. 'निकट' होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी स्थिति जिसमे किसी से निकट सबध हो।

निकटपना—पु०=निकटता।

निकट-पूर्व—पु० [सं० कर्म०स०] योरपवालो की दृष्टि से, एशिया महाद्वीप का पश्चिमी भाग, जो भारत की दृष्टि से 'निकट पश्चिम' होगा।

निकटवर्ती (तिन्)—वि० [सं० निकट√वृत् (रहना)+णिनि]= निकटस्थ।

निकटस्थ—वि० [सं० निकट√स्था (ठहरना)+क] १. (वह) जो

किसी के निकट रहता या होता हो। २ सबध आदि के विचार से पास का।

निकती—स्त्री० [स० निष्क+मिति ?] छोटा तराजू। काँटा।

निकम्मा—वि० [स० निष्कर्प, प्रा० निकम्मा] १. जिसके हाथ मे कोई काम न हो। काम-धन्धे से खाली या रहित। जैसे—आज-कल वे निकम्मे बैठे हैं। २ जो कोई काम-धधा करने के योग्य न हो। अयोग्य। जैसे—ऐसा निकम्मा आदमी लेकर हम क्या करेंगे। ३ (पदार्थ) जो किसी काम मे आने के योग्य न हो। रद्दी। जैसे—निकम्मी बातें।

निकर—पु० [स० नि√कृ (व्याप्ति)+अच्] १ झुड। समूह। जैसे—रवि-कर-निकर। २ ढेर। राशि। ३ निधि। खजाना।

क्रि० वि० निकट।

पु० [अ०] कमर मे पहनने का एक प्रकार का चौडी मोहरीवाला अँगरेजी पहनावा जो घुटनो तक लवा होता है।

निकरना†—अ०=निकलना।

निकर्तन—पु० [स० नि√कृत् (छेदन)+ल्युट्—अन] काटना।

निकर्मा—वि० [स० निष्कर्मा] १ जो कोई कर्म या काम न करे। जो कुछ उद्योग-धधा न करे। २ आलसी। ३. दे० 'निकम्मा'।

नि-कर्षण—पु० [स० ब० स० ?] १ खेल का मैदान। २ परती जमीन। ३. आँगन। ४ पडोस।

निकलंक—वि० [स० निष्कलक] जिसे या जिसमे कोई कलक न हो।

निकलंकी—वि०=निष्कलक।

पु०=कल्कि (अवतार)।

निकल—स्त्री० [अ०] एक तरह की सफेद मिश्रित धातु, जिसके सिक्के आदि ढाले जाते हैं।

निकलना—अ० [हि० 'निकालना' का अ०] १ अदर या भीतर से बाहर आना या होना। निर्गत होना। जैसे—आज हम सवेरे से ही घर से निकले हैं।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।—पडना।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का घर से) निकल जाना=इस प्रकार कही दूर चले जाना कि लोगो को पता न चले। जैसे—कई बरस हुए, उनका लडका घर मे निकल गया था। (किसी स्त्री का घर से) निकल जाना=पर-पुरुष के साथ अनुचित सबध होने पर उसके साथ चले या भाग जाना। (कोई चीज कहीं से) निकल जाना=इस प्रकार दूर या बाहर हो जाना कि फिर से आने या लौटने की सभावना न रहे। जैसे—गली, मुहल्ले या शहर की गदगी निकल जाना।

२ कही छिपी, दबी या रुकी हुई चीज प्राप्त होना या सामने आना। पाया जाना। मिलना। जैसे—(क) उसके घर चोरी का माल निकला था। (ख) जगलो और पहाडो मे से बहुत-सी चीजे निकलती है। (ग) इस प्रणाली मे बहुत से दोष निकले, इसलिए इसका परित्याग कर दिया गया।

सयो० क्रि०—आना।

३ किसी प्रकार की परिधि, मर्यादा, सीमा आदि मे से छूटकर या और किसी प्रकार बाहर आना या होना। जैसे—(क) जेल मे से कैदी निकलना। (ख) कूएँ मे से पानी निकलना। (ग) किसी प्रकार के दोष आदि के कारण दल, बिरादरी, सस्था आदि से निकलना।

मुहा०—(कोई चीज हाथ से) निकल जाना=खोने, चोरी जाने आदि के कारण अधिकार, स्वामित्व आदि से इस प्रकार बाहर हो जाना कि फिर से प्राप्त होने की सभावना न रहे। जैसे—अँगूठी या कलम हाथ से निकल जाना। (कोई अवसर, कार्य या बात हाथ से) निकल जाना=असावधानता, प्रमाद, भूल आदि के कारण अधिकार, कृतित्व आदि से इस प्रकार बाहर हो जाना कि फिर उसके संबध से कुछ किया न जा सके। जैसे—अब तो वह बात हमारे हाथ से निकल गई; हम उसके लिए कुछ नही कर सकते।

४ किसी प्रकार के अधिकार, नियत्रण, बधन आदि से रहित होने पर किसी ओर प्रवृत्त होने के लिए बाहर आना। जैसे—(क) कमान मे से तीर या बदूक मे से गोली निकलना। (ख) फदे से गला निकलना।

५ किसी चीज मे पडी, मिली या लगी हुई अथवा व्याप्त वस्तु का उससे छूटकर या और किसी प्रकार अलग, दूर या बाहर होना। जैसे—(क) कपडे मे से मैल या रग निकलना। (ख) पत्तियो या फलो मे से रस अथवा बीजो मे से तेल निकलना। (ग) दूध या मलाई मे से घी या मक्खन निकलना।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।

६ उत्पत्ति या निर्माण के स्थान अथवा उद्गम के स्थान से बाहर होकर प्रकट या प्रत्यक्ष होना। सामने आना। जैसे—(क) अडे या गर्भ मे से बच्चा निकलना। (ख) पेड मे से डालियाँ या डालियो मे से पत्तियाँ अथवा मसूडो मे से दाँत निकलना। (ग) विश्वविद्यालय मे से योग्य स्नातक निकलना।

सयो० क्रि०—आना।—पड़ना।

७ किसी अज्ञात स्थान, स्थिति आदि से बाहर होकर सामने आना। आगे आकर उपस्थित होना या दिखाई देना। जैसे—आज न जाने कहाँ से इतनी च्यूँटियाँ (या मक्खियाँ) निकल आई (या निकल पडी) हैं।

सयो० क्रि०—आना।—पडना।

८ किसी पदार्थ या स्थान मे से कोई नई रचना, वस्तु या स्थिति उत्पन्न अथवा प्राप्त होना। जैसे—(क) इस कपडे मे से दो कुर्तों के सिवा एक टोपी भी निकलेगी। (ख) यह दालान तोड दिया जाय तो इसमे तीन दूकानें निकलेगी। (ग) जगल कट जाने पर खेती-बारी और बस्ती के लिए जगह निकल आती है।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।

९ शरीर मे छिपे या दबे हुए विकार या विष का रोग के रूप मे प्रकट या प्रत्यक्ष होना। जैसे—गरमी, चेचक, या मुँहासा निकलना।

विशेष—इस अर्थ मे इस क्रिया का प्रयोग कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे ही रोगो या विकारो के सबध मे ही होता है जो किसी प्रकार के विस्फोट के रूप मे होते हैं।

१० शरीर अथवा उसके किसी अग से कोई तरल पदार्थ बाहर आना। जैसे—(क) शरीर से पसीना निकलना। (ख) फोडे मे से पीब या मवाद निकलना। (ग) नाक या मुँह से खून निकलना।

११ किसी बडी राशि मे से कोई छोटी राशि कम होना या घटना। जैसे—(क) इस रकम मे से तो सौ रुपए ब्याज के निकल गए। (ख) सेर भर घी तो टीन मे से चूकर निकल गया।

सयो० क्रि०—जाना।

१२. किसी गूढ तत्त्व, बात या विषय के आशय, उद्देश्य, रहस्य या रूप का स्पष्टीकरण होना। कोई बात खुलना या प्रकट होना। जैसे—(क) किसी पद, वाक्य या श्लोक का अर्थ निकलना। (ख) किसी काम के लिए मुहूर्त निकलना।
सयो० क्रि०—आना।
१३ किसी ऐसी चीज या बात का नये सिरे से आविर्भूत, प्रगट या प्रत्यक्ष होना जो पहले न रही हो या सामने न आई हो। जैसे—(क) किसी प्रदेश मे ताँबे या सोने की खान निकलना। (ख) नया कानून, कायदा, प्रथा या हुकुम निकलना। (ग) उपाय तरकीब या युक्ति निकलना।
संयो० क्रि—आना। —जाना।
१४ किसी नई वास्तु-रचना का प्रस्तुत होकर उपयोग मे आने के योग्य होना। जैसे—(क) कही से कोई नहर या सड़क निकलना। (ख) दीवार मे नई खिड़की निकलना। (ग) यातायात के सुभीते के लिए किसी प्रदेश या प्रात मे रेल निकलना। १५. किसी चीज के किसी अग या अश का असाधारण रूप से आगे या बाहर की ओर बढ़ा हुआ होना अथवा सब की दृष्टि के सामने होना। जैसे—(क) उस मकान मे दाहिनी तरफ एक बरामदा निकला है। (ख) उनकी दीवार मे एक नई खिड़की निकली है।
सयो० क्रि०—आना।
१६. अपने कर्तव्य, निश्चय, वचन आदि का ध्यान छोडकर अलग या दूर हो जाना। लगाव या सपर्क बाकी न रहने देना। जैसे—तुम तो यो ही दूसरो का गला फँसाकर (या वादा करके) निकल जाते हो।
सयो० क्रि०—जाना।—भागना।
१७ पुस्तको, विज्ञापनो, समाचार-पत्रो आदि के सवध मे छपकर प्रकाशित होना या सर्वसाधारण के सामने आना। जैसे—(क) किसी विषय की कोई नई पुस्तक निकलना। (ख) समाचार-पत्रो मे विज्ञापन या सूचना निकलना। (ग) कही से कोई नया मासिक-पत्र निकलना। १८. बिकनेवाली चीजो के सवध मे, खपत या बिक्री होना। जैसे—उनकी दूकान पर जितना माल आता है, सब निकल जाता है। १९ किसी स्थान पर स्थित किसी तत्त्व या बात का अपने पूर्व मे बना न रहना। अलग, दूर या नष्ट हो जाना। जैसे—इस एक दवा से ही हमारे कई रोग निकल गए।
सयो० क्रि०—जाना।
२०. कुछ पशुओ के सवध मे सधाये या सिखाये जाने पर इस योग्य होना कि जुताई, ढुलाई, सवारी आदि के काम मे ठीक तरह से आ सकें। जैसे—यह घोडा अच्छी तरह निकल गया है, अर्थात् गाड़ी मे जोते जाने या सवारी के काम मे आने के योग्य हो गया है। २१ हिसाब-किताब होने पर कोई रकम किसी के जिम्मे बाकी ठहरना। जैसे—अभी सौ रुपए और तुम्हारे नाम निकलते है। २२ कोई अभिप्राय या उद्देश्य सफल या सिद्ध होना। मनोरथ पूर्ण होना। जैसे—किसी से कोई काम या मतलब निकलना।
सयो० क्रि०—आना।—जाना।
२३ किसी जटिल प्रश्न या समस्या की ठीक मीमासा होना। हल होना। जैसे—गणित के ऐसे प्रश्न सब लोगो से नही निकल सकते।
सयो० क्रि०—आना।—जाना।—सकना।
२४. कंठ से उच्चरित होना। जैसे—गले मे स्वर निकलना, मुंह से आवाज या बात निकलना।
सयो० क्रि०—आना।—जाना।
विशेष—उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे इस क्रिया का प्रयोग बाजो आदि के सबंध मे भी होता है। जैसे—मृदग मे से शब्द या सारगी मे से राग अथवा स्वर निकलना।
मुहा०—(कोई बात मुंह से) निकल जाना=असावधानी के कारण या आकस्मिक रूप से उच्चरित होना। जैसे—मुंह से कोई अनुचित बात निकल जाना।
२५. चर्चा, प्रसग या बात के सबध मे, आरभ होना। छिड़ना। जैसे—(क) बात-चीत या व्याख्यान मे वहाँ और भी कई प्रसग निकले। (ख) बात निकलने पर मुझे भी कुछ कहना ही पडा।
सयो० क्रि०—आना। —जाना।
२६ ग्रह, नक्षत्र आदि का आकाश मे उदित होकर क्षितिज से ऊपर और आँखो के सामने आना। जैसे—चद्रमा, तारे या सूर्य निकलना।
सयो० क्रि० आना।—जाना।
२७ किसी व्यक्ति या कुछ लोगो का किसी मार्ग से होते हुए किसी ओर चलना, जाना या बढना। जैसे—जलूस, बरात या यात्रियो का दल (किसी ओर से) निकलना। २८ समय के सबध में, व्यतीत होना। गुजरना। बीतना। जैसे—(क) हमारे दिन भी जैसे-तैसे निकल ही रहे हैं। (ख) अब बरसात निकल जायगी।
सयो० क्रि०—जाना।
२९ निर्विवाद और स्पष्ट रूप से ठीक ठहरना। प्रमाणित या सिद्ध होना। जैसे—(क) उनका यह लड़का तो बहुत लायक निकला। (ख) आपकी भविष्यद्वाणी ठीक निकली।

निकलवाना—स०[हिं० निकालना का प्रे०] १. किसी को कुछ निकालने मे प्रवृत्त करना। २ जोर या जबरदस्ती से किसी को छिपाकर रखी हुई कोई चीज उपस्थित करने के लिए बाध्य करना।

निकलाना†—स०=निकलवाना।

निकष—पुं०[सं० नि √कष् (घिसना)+घ] १. कसने, घिसने, रगडने आदि की क्रिया या भाव। २ सान, जिस पर रगड़कर हथियारो की धार तेज की जाती है। ३. कसौटी, जिस पर परखने के लिए सोना कसा या रगडा जाता है।

निकषण—पु०[स० नि√कष्+ल्युट्—अन]१ कसने, घिसने, रगडने आदि की क्रिया या भाव। २. हथियारो की धार तेज करने के लिए उन्हे सान पर चढ़ाना। ३ परखने के लिए कसौटी पर सोना कसना या रगडना। ४ गुण, योग्यता, शक्ति आदि परखने की क्रिया या भाव।

निकषा—स्त्री०[स० नि √कष् (हिंसा)+अच्—टाप्]रावण की माता।

निकषात्मज—पुं०[सं० निकषा+आत्मज, ष० त०]१ राक्षस। २ रावण अथवा उसका कोई भाई।

निकषोपल—पु०[सं० निकष-उपल मध्य०स०]१. कसौटी (पत्थर)। २ कोई ऐसा साधन जिससे कोई चीज परखी जाय।

निकस—पु०[सं०]=निकष।

निकसना—अ०=निकलना।

निका†—पुं०=निकाह।
निकाई—स्त्री०[हिं० नीका=अच्छा]१ अच्छापन। २. अच्छाई। ३. खूबसूरती। सुन्दरता।
स्त्री०[हिं० निकाना] खेत में से घास-पात काटकर अलग करने की क्रिया, भाव या मजदूरी। निराई।
पु०=निकाय।
निकाज—वि०[हिं० नि+काज]=निकम्मा।
निकाना—स०[?] नाखून गड़ाना या चुभाना।
स०=निराना (खेत)।
निकाम—वि०[हिं० नि+काम]१. जिसे कोई काम न हो। २ निकम्मा।
वि०=निष्काम।
*क्रि० वि० व्यर्थ।
*वि० [?] प्रचुर।
निकाय—पु० [सं० नि√चि (चयन)+घञ्, कुत्व]१. झुड। समूह। २. प्राचीन भारत मे कुछ विशिष्ट सप्रदाय, विशेषत बौद्ध धर्म के वे संप्रदाय जिनकी संख्या अशोक के समय मे १८ तक पहुँच चुकी थी। ३. दे० 'समुदाय'। ४ एक ही प्रकार की वस्तुओं का ढेर या राशि। ५. रहने का स्थान। निवास स्थान। निलय। ६ परमात्मा।
निकाय्य—पु०[सं० नि √चि+ण्यत् नि० मिद्धि]घर। गृह।
निकार—पु०[सं० नि √कृ (करना)+घञ्] १ पराभव। हार। २. अपकार। ३. अपमान। ४. तिरस्कार। ५ ईख या गन्ने का रस पकाने का कडाहा। ६ दे०'निकासी'।
निकारण—पुं०[सं०नि√कृ(मारना)+णिच्+ल्युट्—अन] मारण।वध।
निकारना—स०=निकालना।
निकारा—†वि०[फा० नाकार] [स्त्री० निकारी] १ तुच्छ। निकम्मा। २ खराब। बुरा। उदा०—हरी चंद काहु नहिं जान्यो मन की रीति निकारी।—भारतेन्दु।
निकाल—पु०[हिं० निकालना]१ निकलने की क्रिया, ढग या भाव। २ निकलने का मार्ग। निकास। ३. कठिनाई, सकट आदि मे निकलने का ढंग या युक्ति। जैसे—कुश्ती मे किसी दाँव या पेंच का निकाल। ४. विचार, विवेचन आदि के फलस्वरूप निकलनेवाला परिणाम या सिद्धान्त।
निकालना—स०[सं० निष्कासन, पु० हिं० निकासना]१. जो अंदर हो, उसे बाहर करना या लाना। निर्गत या बहिर्गत करना। जैसे—अलमारी मे से किताबें, बरतन मे से घी या सदूक मे से कपड़े निकालना।
सयो० क्रि०—देना।—लेना।
२. किसी को किसी क्षेत्र, परिधि, मर्यादा, सीमा आदि मे से किसी प्रकार या रूप में अलग, दूर या बाहर करना। जैसे—किसी को दल, बिरादरी, संस्था, समाज आदि से निकालना।
सयो० क्रि०—देना।
मुहा०—(किसी को कहीं से) निकाल ले जाना =किसी प्रकार के घेरे, बधन सीमा आदि मे से छल या बल-पूर्वक अपने अधिकार मे करके अपने साथ ले जाना। जैसे—(क) किसी स्त्री को उसके घर से निकाल ले जाना। (ख) कैदी को जेल से निकाल ले जाना। (ग) किसी के यहाँ से कुछ माल निकाल ले जाना।
३. कही छिपी, ठहरी, दबी या रुकी हुई चीज किसी प्रकार वहाँ से हटाकर अपने हाथ मे लाना या लेना। बाहर करना या लाना। जैसे—(क) कूएँ मे से पानी, खान मे से सोना, फोडे मे से मवाद या म्यान मे से तलवार निकालना। (ख) किसी के यहाँ से चोरी का माल निकालना। ४ किसी चीज मे पड़ी या मिली हुई अथवा उसके साथ जुड़ी, बंधी या लगी हुई कोई दूसरी चीज अलग या दूर करना अथवा हटाना। जैसे—(क) चावल या दाल में से कंकड़ियाँ निकालना। (ख) कान मे से बाली या नाक मे से नथ निकालना। ५. किसी वस्तु में से कोई ऐसी दूसरी वस्तु किसी युक्ति से अलग या दूर करना, जो उसमे ओत-प्रोत रूप मे मिली हुई या व्याप्त हो। जैसे—(क) कपड़ो में की मैल, बीजो मे से तेल या पत्तियो मे से रस निकालना। ६. किसी को किसी कठिन, विकट या संकटपूर्ण स्थिति आदि मे बाहर करके उसका उद्धार करना। जैसे—आपने ही मुझे इस विपत्ति से निकाला है।
मुहा०—(किसी को या कोई चीज कहीं से) निकाल ले जाना=चुरा-छिपाकर या युक्ति-पूर्वक सकटो आदि से बचाते हुए सुरक्षित रूप में कही ले जाना। जैसे—शिवाजी के साथी उन्हें औरंगजेब की कैद से निकाल ले गये।
७ किसी चीज, तत्त्व या बात को उसके स्थान से इस प्रकार हटाकर अलग या दूर करना कि उसका अत, नाश या समाप्ति हो जाय। न रहने देना। अस्तित्व मिटाना। जैसे—(क) दवा से शरीर का रोग या विकार निकालना। (ख) शहर से गदगी निकालना। (ग) किसी वस्तु या व्यक्ति के दुर्गुण या दोष निकालना। (घ) किसी की चालाकी या शेखी निकालना। ८ किसी कार्य या पद पर नियुक्त व्यक्ति को वहाँ से हटाकर अलग या दूर करना। पद, नौकरी, सेवा आदि से हटाना। जैसे—छँटनी मे दस आदमी इस विभाग से भी निकाले गये हैं। ९ एक मे मिली हुई बहुत-सी चीजो मे से कोई चीज या कुछ चीजें किसी विशिष्ट उद्देश्य से बाहर करना या सामने लाना। जैसे—दूकानदार अपने यहाँ की तरह-तरह की चीजें निकाल कर ग्राहकों को दिखाते हैं।
संयो० क्रि०—देना।—लाना।—लेना।
१० किसी बडी राशि मे से कोई छोटी राशि अलग, कम या पृथक् करना। जैसे—इसमे से सेर भर दूध (या गज भर कपड़ा) निकाल दो।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।
११ कहीं रखी हुई अपनी कोई चीज या उसका कुछ अंश वहाँ से उठा या लेकर अपने अधिकार या हाथ मे करना। जैसे—(क) किसी के यहाँ से अपनी धरोहर निकालना। (ख) बक से रुपए निकालना। १२ देन, प्राप्य आदि के रूप मे किसी के जिम्मे कोई रकम ठहराना। बाकी लगाना। जैसे—वे तो अभी और सौ रुपए तुम्हारी तरफ निकालते हैं। १३ कोई चीज बेचकर या और किसी रूप मे अपने अधिकार, नियत्रण, वश आदि से अलग या बाहर करना। जैसे—(क) वे यह मकान भी निकालना चाहते हैं। (ख) यह दूकानदार अपने यहाँ की पुरानी और रद्दी चीजें निकालने मे बहुत होशियार है। १४. कोई ऐसी चीज या बात नये सिरे से आरभ करके प्रचलित या प्रत्यक्ष करना, जो पहले न रही हो। नवीन रूप मे जारी या प्रचलित करना। जैसे—नया कानून, कायदा या रीति निकालना। १५ आविष्कार, उपज्ञा, सूझ आदि के फलस्वरूप कोई नई चीज या बात बनाकर या और

किसी प्रकार प्रस्तुत करना या सबके सामने लाना। जैसे—(क) आज-कल के वैज्ञानिक नित्य नये यत्र (या सिद्धात) निकालते रहते है। (ख) आपके तर्क (या मत) मे उसने बहुत-से दोष निकाले है। १६ उपाय, युक्ति आदि के सबध मे, सोच-विचारकर नये सिरे से और ऐसे रूप मे कोई बात सामने रखना या लाना जो पहले अपने आपको या औरो को न सूझी हो। जैसे—उद्देश्य पूरा करने की कोई नई तरकीब या नया रास्ता निकालना। १७ किसी गूढ तत्त्व, बात या विषय का आशय, रहस्य या रूप स्पष्ट करना, सामने रखना या लाना। खोलकर प्रकट करना। जैसे—(क) किसी वाक्य या शब्द का अर्थ निकालना। (ख) कही जाने के लिए मुहूर्त निकालना।
सयो० क्रि०—देना।—लेना।
१८ किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर या समाधान प्रस्तुत करना। मीमासा या हल करना। जैसे—(क) गणित के प्रश्नो के उत्तर निकालना। (ख) किसी मामले का कोई हल निकालना। १९ अपना उद्देश्य, कार्य या मनोरथ सफल या सिद्ध करना। जैसे—अभी तो किसी तरह उनसे अपना काम निकालो, फिर देखा जायगा।
सयो० क्रि०—लेना।
२०. कोई ऐसी नई वास्तु-रचना प्रस्तुत करना, जो किसी दिशा मे दूर तक चली गई हो। जैसे—कही से कोई नई नहर, रेल की लाइन या सडक निकालना। २१. किसी प्रकार की रचना करने के समय उसका कोई अग इस प्रकार प्रस्तुत करना कि वह अपने प्रसम या साधारण रूप अथवा नियत रेखा से कुछ आगे बढा हुआ हो। जैसे—मिस्तरी ने इस दीवार का एक कोना कुछ आगे निकाल दिया है। २२ किसी पदार्थ को छेदते या भेदते हुए कोई चीज एक दिशा या पार्श्व से उसकी विपरीत दिशा या पार्श्व मे पहुँचाना या ले जाना। किसी के आर-पार करना। जैसे—पेड के तने पर तीर (या गोली) चलाकर उसे दूसरी ओर निकालना। २३ पुस्तको, समाचार-पत्रो, सूचनाओ आदि के सबध मे छापकर अथवा और किसी प्रकार प्रचारित करना या सब के सामने लाना। जैसे—अखबार या विज्ञापन निकालना। २४. शब्द या स्वर कठ या मुँह (अथवा वाद्य-यत्रो आदि) से उत्पन्न या बाहर करना। जैसे—(क) गले से आवाज या मुँह से बात निकालना। (ख) तबले, सारगी या सितार से बोल निकालना। २५ किसी प्रकार की चर्चा, प्रसग या विषय आरभ करना। छेडना। जैसे—अपने भाषण मे उन्होंने यह प्रसग भी निकाला था। २६ सलाई, सूई आदि से बनाये जानेवाले कामो के सबध मे, कढाई, बुनाई आदि के रूप मे बनाकर तैयार या प्रस्तुत करना। जैसे—(क) दिन भर मे एक गुलूबद या मोजा निकालना। (ख) कसीदे के काम मे बेल-बूटे निकालना। २७ दल आदि के रूप मे कुछ लोगो को साथ करके किसी ओर से या कही ले जाना। जैसे—जलूस या बरात निकालना। २८ जुताई, सवारी आदि के कामो मे आनेवाले पशुओ के सम्बन्ध मे उन्हे सधा या सिखाकर इस योग्य बनाना कि वे जुताई, ढुलाई, सवारी आदि के काम मे ठीक तरह से आ सकें। जैसे—यह घोडा (या बैल) अभी निकाला नही गया है, अर्थात् अभी सवारी (या हल मे जोते जाने) के योग्य नहीं हुआ है। २९ समय, स्थिति आदि के सम्बन्ध मे किसी प्रकार निर्वाह करते हुए उसे पार या व्यतीत करना। जैसे—यह जाडा तो हम इसी कोट से निकाल ले जायँगे।
सयो० क्रि०—देना।—ले जाना।—लेना।

निकाला—पु०[हिं० निकालना] १. निकलने या निकालने की क्रिया, ढग या भाव। जैसे—अब घर से जल्दी निकाला नही होता। २. किसी स्थान से बाहर निकाले जाने का दड या सजा। जैसे—देश-निकाला।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

निकाश—पु०[स० नि√काश् (चमकना)+घञ्]१ दृश्य। २ क्षितिज। ३. समीपता। ४. अनुरूपता।

निकाष—पु०[स० नि √कष् (खरोचना)+घञ्] १. खुरचना। २. रगडना।

निकास—पु०[स० निष्कास, हिं० निकसना]१ निकसने अर्थात् निकलने की क्रिया या भाव। २ वह उद्गम स्थान जहाँ से कोई चीज निकल या बढकर पूर्णतया प्रकट रूप मे सामने आती हो। ३ वह मार्ग या विस्तार जिसमे से होकर कोई चीज जाती हो। ४. घर आदि से निकलने का द्वार, विशेषत मुख्य द्वार। ५ खुला हुआ स्थान। मैदान। ६ आमदनी या आय का रास्ता। ७ आमदनी। ८ विपत्ति, सकट आदि से बचने की युक्ति। ९. दे० 'निकासी'।
पु०[स० निकाश]समानता। उदा०—सनीर जीमूत-निकाश सोभहिं। —केशव।

निकासना†—स०=निकालना।

निकास-पत्र—पु० [हिं० निकास+स० पत्र] वह पत्र जिसमे किसी दुकान, सस्था आदि के जमा खरच, बचत आदि का विवरण दिया हो। खर्रा।

निकासी—स्त्री०[हिं० निकास] १ निकलने या निकालने की क्रिया, ढग या भाव। २ व्यक्ति का घर से बाहर निकलने विशेषतः काम-काज या यात्रा के लिए बाहर निकलने का भाव। ३. दुकान मे रखे हुए अथवा कारखानो आदि मे तैयार होनेवाले माल का बिकना और बाहर आना। ४ वह माल जितना उक्त रूप मे निकलकर बाहर जाय। खपता। बिक्री। ५ आय। आमदनी। ६ ब्रिटिश शासन मे, वह धन जो सरकारी मालगुजारी देने के उपरात जमीदार के पास बच रहता था। बचत। ७. चुगी। ८ दे० 'निकासी-पत्र'।

निकासी-पत्र—पु०[हिं० निकासी+स० पत्र] वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कही से निकल कर बाहर जा सके। (ट्रानजिट पास)

निकाह—पु०[अ०] इस्लाम की धार्मिक पद्धति से होनेवाला विवाह।

निकाही—वि०[अ० निकाह] (स्त्री०) जो निकाह अर्थात् धार्मिक पद्धति से विवाह करके घर मे लाई गई हो। मुसलमान की विवाहिता (पत्नी)।

निकियाई—स्त्री०[हिं० निकियाना] निकियाने की क्रिया, भाव और मजदूरी।

निकियाना—स०[देश०] किसी चीज को इस प्रकार से नोचना कि उसका अग या अवयव अलग हो जाय। जैसे—पक्षी के पर या पशु के बाल निकियाना।

निकिष्ट—वि०=निकृष्ट।

निकुंच—पु०[स० नि√कुच् (कुटिलता)+अच्] १. कुजी। ताली।

निकुंचक—पु०[स० नि√कुच्+ण्वुल्—अक]१ एक तरह का पुराना माप जो कुडव के चौथाई अश के बराबर होता था। २ जल-बेत।

निकुंचन—पु०[स० नि√कुच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निकुचित] सकुचन।

निकुंज—पु०[स० नि-कु√जन्(उत्पत्ति)+ड, पृषो० सिद्धि] उपवन, वन, वाटिका आदि मे का वह प्राकृतिक स्थल जो वृक्षो तथा लताओ द्वारा आच्छादित तथा कुछ पार्श्वों से घिरा होता है। कुज।

निकुंभ—पु०[स० नि√कुभ (ढाँकना)+अच्] १ कुभकरण का एक पुत्र जो रावण का मत्री था। २ भक्त प्रह्लाद के एक पुत्र का नाम। ३. शतपुर का एक असुर राजा जिसने कृष्ण के मित्र ब्रह्मदत्त की कन्याओ का हरण किया था इसी लिए कृष्ण ने इसे मार डाला था।४ हरिवश के अनुसार, हर्यश्व राजा का एक पुत्र।५ एक विश्वेदेव। ६. कौरवो की सेना का एक सेनापति। ७ कुमार का एक गण। ८. महादेव का एक गण। ९ दती (वृक्ष)। १० जमालगोटा।

निकुंभित—पु०[स० नि√कुम्भ+क्त] नृत्य का एक विशेष प्रकार या मुद्रा।

निकुभिला—स्त्री० [स०] १ लका के पश्चिम भाग मे की एक गुफा। २. उस गुफा की अधिष्ठात्री देवी (कहते है कि युद्ध करने से पहले मेघनाद इसी देवी का पूजन किया करता था)।

निकुभी—स्त्री०[सं० निकुंभ+ङीप्] १ कुभकरण की कन्या का नाम। २. दती वृक्ष।

निकुटना—अ०[हिं० निकोटना का अ०] निकोटा जाना। स०=निकोटना।

निकुही—स्त्री०[देश०] एक तरह की चिडिया।

निकुरंब—पु०[स० नि√कुर् (शब्द)+अम्बच् (बा०)]समूह।

निकुलीनिका—स्त्री०[स०]१ वह कला जो किसी ने अपने पूर्वजो से सीखी हो। २ वह कला जिसमे किसी जाति विशेष के लोग निपुण तथा सिद्धहस्त समझे जाते है।

निकूल—पु०[स०] वह देवता जिसके निमित्त नरमेध और अश्वमेध यज्ञो मे छठे यूप मे बलि चढाया जाता है।

निकृतन—पु०[स० नि √ कृत्+ल्युट्—अन]१ काटना। २ नष्ट करना।

निकृत—भू० कृ०[स० नि √ कृ+क्त]१ अपमानित या तिरस्कृत किया हुआ। २ जो दूसरो द्वारा ठगा गया हो। प्रतारित। ३ अधम। नीच। ४. दुष्ट।

निकृति—स्त्री०[स० नि √ कृ+क्तिन्]१ अपमान। तिरस्कार। २. दूसरो को ठगने की क्रिया या भाव। ३ दुष्टता। ४ दीनता। ५.पृथ्वी। ६. धर्म का पुत्र एक वसु जो सौध्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

निकृत्त—वि०[स० नि √ कृत्+क्त] १ जड या मूल से कटा हुआ। २. छिन्न। विदीर्ण।

निकृष्ट—वि०[स० नि √ कृष् (खीचना)+क्त] [भाव० निकृष्टता] जो महत्त्व, मान आदि की दृष्टि से निम्न कोटि का और फलत तिरस्कृत हो। जैसे—निकृष्ट विचार, निकृष्ट व्यक्ति।

निकृष्टता—स्त्री०[स० निकृष्ट+तल्—टाप्] निकृष्ट होने की अवस्था या भाव।

निकेत—पु०[स० नि √कित् (बसना)+घञ्] रहने का स्थान। घर।

निकेतन—पु०[स० नि √कित्+ल्युट्—अन]=निकेत।

निकोचक—पु०[स० नि√कुच् (शब्द)+वुन्—अक] अकोल (वृक्ष)।

निकोचन—पु०[स० नि √ कुच्+ल्युट्—अन] सिकुडने की क्रिया या भाव।

निकोटना—स०[हिं० बकोटना का अ०]१ नाखूनो की सहायता से तोड़ना। २ नोचना। ३ दे० 'बकोटना'।
स०[हिं० नि+कृत] कोई चीज गढने या बनाने के लिए खोदना, तराशना आदि। (राज०)

निकोठक—पु०[स० निकोचक, पृषो० सिद्धि] अंकोल (वृक्ष)।

निकोसना—स० १ दाँत निकालना। २ दाँत किटकिटाना या पीसना।

निकौड़िया—पु०[हिं० नि+कौडी] [स्त्री० निकौडी]१ व्यक्ति, जिसके पास कौडी भी न हो। २ परम निर्धन या दरिद्र व्यक्ति।

निकौनी†—स्त्री० [हिं० निकाना=निराना] निराई (खेत की)।

निक्का—वि०[स० न्यक्क=नत, नीचा] [स्त्री० निक्की]१ (व्यक्ति) जो वय मे अपने सभी भाइयो से छोटा हो। २. अवस्था मे बहुत छोटा। जैसे—निक्का काका। (पश्चिम)

निक्रीड़—पु०[स० नि√क्रीड (खेलना)+घञ्] क्रीडा। खेल।

निक्वण—पु० [स० नि√क्वण् (शब्द)+अप्]१ वीणा की झकार या शब्द। २. किन्नरो का शब्द या स्वर।

निक्षण—पु०[स० निक्ष् (चूमना)+ल्युट्—अन] चुबन। चुम्मा।

निक्षा—स्त्री०[स०√निक्ष्+अच्—टाप्] जूँ का अडा। लीख।

निक्षिप्त—भू० कृ०[स० नि√क्षिप् (प्रेरणा)+क्त] १ फेका हुआ। २ डाला या रखा हुआ। ३ छोडा या त्यागा हुआ। त्यक्त। ४. अमानत या धरोहर के रूप मे किसी के पास जमा किया या रखा हुआ। (डिपाजिटेड) ५ भेजा हुआ। (कन्साइड) ६ बधनो आदि से छूटा हुआ।

निक्षिप्तक—पु०[स० निक्षिप्त+कन्]१ वह वस्तु जो कही भेजी जाय। (कन्साइनमेंट) २ वह धन जो किसी कोश, खाते या मद मे इकट्ठा किया जाय।

निक्षिप्ति—स्त्री०[स० नि√क्षिप्+क्तिन्] निक्षेप। (दे०)

निक्षिप्ती—पु०[स० निक्षिप्त]वह व्यक्ति जिसके नाम कोई वस्तु, विशेषत पारसल के रूप मे भेजी गई हो। (कनसाइनी)

निक्षुभा—स्त्री०[स० निक्षुभ (हलचल)+क—टाप्] १ ब्राह्मणी। २ सूर्य की एक पत्नी।

निक्षेप—पु०[स० नि√क्षिप् (प्रेरणा)+घञ्] [भू० कृ० निक्षिप्त]१ फेकने, डालने, चलाने, छोडने आदि की क्रिया या भाव। २. किसी के पास कोई चीज भेजने की क्रिया या भाव। ३ इस प्रकार भेजी जाने-वाली वस्तु। ४ वह धन या वस्तु जो किसी के यहाँ अमानत या धरोहर के रूप मे रखी गई हो। ५. वह धन जो कही जमा किया गया हो। (डिपाजिट) ६ कोई चीज कही जमा करने अथवा किसी के पास अमानत या धरोहर के रूप मे रखने की क्रिया या भाव।

निक्षेपक—वि०]स० नि√क्षिप्+ण्वुल्—अक] फेकने, चलाने या छोडने-वाला।

पु०१. वह जो किसी को कोई वस्तु विशेपत' पारसल करके भेजता हो। (कन्साइनर) २. वह जो किसी के पास धन जमा करे। ३. धरोहर के रूप मे रखा हुआ पदार्थ। (कौ०)

निक्षेपण—पु०[स० नि√ क्षिप्+ल्युट्—अन] [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य] १. कोई चीज चलाना, छोड़ना, डालना या फेंकना। २. धन आदि किसी के पास जमा करना। ३ अमानत या धरोहर के रूप मे कोई चीज किसी के पास रखना।

निक्षेप-निर्णय—पु०[स० तृ० त०] सिक्का आदि उछालकर उसके चित या पट गिरने के आधार पर किया जानेवाला किसी प्रकार का निर्णय। (टॉस)

निक्षेपित—भू० कृ० [स० निक्षिप्त] जिसका निक्षेपण हुआ हो। निक्षिप्त।

निक्षेपी (पिन्)—वि०[स० नि√क्षिप्+णिनि]१. चलाने, छोडने, डालने या फेंकनेवाला। २. अमानत या धरोहर के रूप मे किसी के पास कोई चीज रखनेवाला।

निक्षेप्ता (प्तृ)—पु०[स० नि√क्षिप्+तृच]=निक्षेपी।

निक्षेप्य—वि०[स० नि√क्षिप्+णिनि]१. चलाये, छोडे, डाले या फेंके जाने के योग्य। २. अमानत या धरोहर के रूप मे रखे जाने के योग्य। ३. जमा किये जाने के योग्य।

निखंग†—पु०=निपग (तरकश)।

निखंगी—वि०=निपगी (तरकश धारण करनेवाला)।

निखंड—वि० दो विन्दुओं या कालो के ठीक बीच मे होनेवाला। जैसे—निखड वेला।

निखटक—क्रि० वि०=वेखटके।

निखट्टर—वि०[हि० नि+कट्टर=कडा] कठोर हृदयवाला। निर्दय और निष्ठुर।

निखट्टू—वि०[हि० नि+खटना=कमाना]१. (व्यक्ति) जो कुछ भी कमाता न हो। २ वेकार।

निखनन—पु० [स० नि√खन् (खोदना)+ल्युट्—अन] १. खनना। खोदना। २ खोदने पर निकलनेवाली मिट्टी। ३ गाडना।

निखरक—क्रि० वि०=निखटक (वेखटके)।

निखरचे—क्रि० वि० [हि० नि+खरच] विना किसी प्रकार का खरच विशेपत माल आदि का दलाली, ढुलाई, रेल-भाडा, डाक-व्यय आदि जोडे या मिलाये हुए। जैसे—आपको यह माल ५०) मन निखरचे मिलेगा। अर्थात् ऊपरी खरच विक्रेता के जिम्मे होगे।

निखरना—अ०[स० निक्षरण=छँटना] १. ऊपर की मैल आदि हट जाने के कारण खरा या साफ होना। २. स्वच्छ करनेवाली किसी क्रिया के फल-स्वरूप वास्तविक तथा अधिक सुन्दर रूप प्रकट होना। ३. रगत, रूप आदि का खिलना या साफ होना। ४. कला-पूर्ण ढग से संपादित होने के कारण किसी कार्य या वस्तु का ऐसे उत्कृष्ट या निर्दोष स्थिति या रूप मे सामने आना कि वह यथेष्ट सजीव तथा सौंदर्यपूर्ण जान पडे। जैसे—दूसरे सस्करण मे जो सशोधन तथा सुधार हुए है उनके कारण यह ग्रथ और भी निखर गया है। (दे० 'निखार' और 'निखारना')

संयो० क्रि०—आना।—उठना।—जाना।

निखरवाना—स० [हि० निखारना] किसी को कुछ निखारने में प्रवृत्त करना। निखारने का काम दूसरे से कराना।

निखरी—स्त्री०[हि० निखरना] घी की पकी हुई रसोई। पक्की रसोई। 'सखरी' का विपर्याय।

निखर्व—वि०[स०]१. जो गिनती मे दस हजार करोड़ हो। 'खर्व' का सौ-गुना। २. बौना। वामन।

पु० दस हजार करोड या सौ खर्व की सूचक सख्या या अक।

निखवख*—वि०, क्रि० वि० [स० न्यक्ष=सारा, सव] विलकुल। निरा।

निखात—भू० कृ०[स० नि√खन्+क्त]१ (जमीन या गड्ढा) खोदा हुआ। २. खोदकर निकाला हुआ। ३. गाडा हुआ।

निखाद—पु०=निषाद।

निखार—पु० [हि० निखरना] १. निखरने की क्रिया या भाव। २. निर्मलता। स्वच्छता। ३. सजावट।

निखारना—स० [हि० खारना] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज निखर उठे। २. निर्मल, पवित्र या शुद्ध करना।

विशेष—प्राय कई विशिष्ट प्रकार के कारीगर चीज तैयार कर लेने पर उसे कई तरह के खारो (क्षारो) आदि के घोल मे डालकर उसे सुन्दर और स्वच्छ बनाते है। यही क्रिया कही 'खारना' और कही 'निखारना' कहलाती है।

निखारा—पु० [हि० निखारना] वह वडा कडाहा जिसमे ऊख का रस उवाल कर निखारा जाता है।

निखालिस—वि०=खालिस। (असिद्ध रूप)

निखिउ*— वि०=निक्षिप्त।

निखिद्ध†—वि०=निपिद्ध।

निखिल—वि० [स० नि-खिल=शेप, व० स०] १. अखिल। सपूर्ण। २. समस्त। सारा।

निखुटना—अ० [स० निक्षित ?] १ उपयोग मे लाई जानेवाली वस्तु का कोई काम पूरा होने से पहले ही समाप्त हो जाना। वीच में ही समाप्त हो जाना। जैसे—पत्र भी न लिखा गया और स्याही निखुट गई। २ वाकी न वचना।

निखेद—पु०=निपेध।

निखेधना—स० [स० निपेध] निपेध या वर्जन करना। मना करना।

निखोट—वि० [हि० नि०+खोटा] १. (वस्तु) जो विलकुल शुद्ध, खरी या खालिस हो। जिसमे कोई खोट न हो। खरा। साफ। २. (व्यक्ति) जो खोटा अर्थात् दुष्ट-प्रकृति का न हो। खरा। साफ। ३. (वात) छल-कपट से रहित और स्पष्ट।

क्रि० वि० खुलकर और स्पष्ट रूप से।

निखोड़ना†—स० [हि० नि+खोदना] १. खोदना, विशेपत नाखून से खोदना। २ नोचकर अलग करना।

निखोड़ा—वि० [हि० नि+खोड=आवेश] [स्त्री० निखोड़ी] १. वहुत जल्दी या अधिक आवेश मे आनेवाला। २. आवेशयुक्त होकर काम करनेवाला। ३ क्रूर। निर्दय।

निखोरना†—स०=निखोदना।

निगंद—पु० [स० निर्गंध] औपधि के काम आनेवाली एक रक्त-शोधक वूटी।

निगदना—स० [हिं० निगदा] रूई भरे हुए कपड़े के दोनो परतो मे सूई-धागे से इसलिए बड़े-बडे टाँके लगाना कि उसके अदर की रूई इधर-उधर न होने पाये।

निगंदा—पु० [फा० निगद] उक्त प्रकार के कपडो मे लगा हुआ वडा टाँका। वखिया।

निगंध—वि०=निर्गंध (गध हीन)।

निगड़—स्त्री० [स० नि√गल् (वधन)+अच्, लस्य ड] १ जजीर, जिससे हाथी के पैर वाँधे जाते है। आँदू। २. अपराधियों के पैरो मे पहनाई जानेवाली बेड़ी।

निगड़न—पु० [स० नि√गल्+ल्युट्—अन, लस्य ड.] निगड पहनाने या वाँधने की क्रिया या भाव।

निगड़ित—वि० [स० निगड+इतच्] निगड से वाँधा हुआ।

निगण—पु० [स० निगरण, पृषो० सिद्धि] यज्ञाग्नि या आहुति के जलने से उत्पन्न होनेवाला धूआँ।

निगति—वि० [हिं० नि+स० गति] १ जिसकी गति अर्थात् मुक्ति न हुई हो। २ जिसकी गति या मुक्ति न हो सकती हो, अर्थात् वहुत वड़ा पापी।

निगद—पु० [स० नि√गद् (कहना)+अप्] १. कहना या वोलना। भापण। २ उक्ति। कथन। ३. ऐसा जप जिसका उच्चारण जोर-जोर से किया जाय। ४. पढने का वह ढग जिसमे कोई पाठ विना अर्थ समझे हुए पढा या रटा जाता है।

निगदन—पु० [स० नि√गद्+ल्युट्—अन] १ कहना। २ रटा, सीखा या स्मरण किया हुआ पाठ दोहराना।

निगदित—भू० कृ०[स० नि√गद्+क्त] जिसका निरादर किया गया हो।

निगना†—अ० [स० निगमन्] चलना। (राज०)

निगम—पु० [स० नि√गम् (जाना)+अप्] १ पथ। मार्ग। रास्ता। २ प्राचीन भारत मे, वह पथ या रास्ता जिस पर होकर व्यापारी लोग अपना माल लाते और ले जाते थे। ३ उक्त के आधार पर रोजगार या व्यापार। ४ वेद जिसकी, शिक्षाएँ सव के चलने के लिए सुगम मार्ग के रूप मे हैं। ५ वेद का कोई शव्द, पद या वाक्य अथवा इनमे से किसी की टीका या व्याख्या। ६ ऐसा ग्रथ जिसमे वैदिक मतो का निरूपण या प्रतिपादन हो। ७ विधि या विधान के अनुसार अस्तित्व मे आई हुई ऐसी सस्था जो शरीरधारी व्यक्ति की तरह काम करती है और जिसके कुछ निश्चित अधिकार, कृत्य तथा कर्तव्य होते है। ८ दे० 'नगर महापालिका'। ९ मेला। १० कायस्थो की एक शाखा।

निगमन—सज्ञा—[स० नि√गम्+ल्युट्—अन] १ किसी सस्था या को निगम का रूप देने की क्रिया या भाव। २ न्याय मे, वह कथन प्रतिज्ञा, जो हेतु, उदाहरण और उपनय तीनो से सिद्ध हुई या होती हो। (डिडक्शन)

निगमनिवासी (सिन्)—पु० [स० निगम नि√वस् (वसना)+णिनि] विष्णु।

निगमपति—पु० [स० प० त०] १. निगम का प्रधान अधिकारी। २ दे० 'नगर-प्रमुख'।

निगम-बोध—पु० [स० व० स०] पृथ्वीराज रासो मे उल्लिखित एक पवित्र स्थान जो यमुना नदी के तट पर तथा दिल्ली के पास था।

निगम-संचारी—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

निगमागम—पु० [स० निगम-आगम, द्व० स०] वेद और शास्त्र।

निगमित—वि० [स०] जिसे निगम का रूप दिया गया हो। (इन्कार-पोरेटेड)

निगमी (मिन्)—वि० [स० निगम+इनि] वेदज्ञ।

निगमीकरण—पु० [सं० निगम+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] किसी सस्था को निगम का रूप देना। (इन्कारपोरेशन)

निगमीकृत—भू० कृ० [स० निगम+च्वि, ईत्व√कृ+क्त]= निगमित।

निगर—पु० [स० नि√गॄ (निगलना)+अप्] १ निगलने की क्रिया या भाव। २ भोजन। ३. गला। ४ एक प्रकार की पुरानी तौल जो ५५ मोतियों के वरावर होती थी।

†वि० [स० निकर] कुल। सव।

†पु० समूह।

निगरण—पु० [स० नि√गॄ+ल्युट्—अन] १. खाना या निगलना। २. गला। ३ यज्ञाग्नि का धूआँ।

निगरना†—स०=निगलना।

निगरभर—वि० [स० नि+गह्वर] वहुत ही घना।

क्रि० वि० घने रूप मे।

निगराँ—वि० [फा०] १ निगरानी करनेवाला। जो चौकस होकर किसी की देखभाल करे। २ निरीक्षक।

निगरा—स्त्री० [स० निगर] ५५ मोतियो की वह लडी जो तौल मे ३२ रत्ती हो।

वि० [हिं० नि+गरण] (ऊख का रस) जिसमे पानी न मिलाया गया हो।

निगराना—स० [स० नय+करण] १. निर्णय करना। २ छाँट कर अलग या पृथक् करना। ३ स्पष्ट करना।

अ० १ अलग होना। २ स्पष्ट होना।

निगरानी—स्त्री० [फा०] १ व्यक्ति के सवध मे उसके कार्य, गति-विधि आदि पर इस प्रकार ध्यान रखना कि कोई अनौचित्य या सीमा का उल्लघन न होने पाये। २ वस्तु के सवध मे, इस प्रकार ध्यान रखना कि उसे किसी प्रकार की क्षति या व्यतिक्रम न होने पाये।

निगरू—वि० [हिं० नि+स० गुरु] जो गुरु अर्थात् भारी न हो। हलका।

†वि०=निगुरा।

निगलन—पु० [स०]=निगरण।

निगलना—स० [स० निगरण, निगलन] कोई कडी या ठोस चीज विना चवाये ही गले के अदर उतार लेना।

सयो० क्रि०—जाना।

निगह—स्त्री०=निगाह।

निगहबान—वि० [फा०] १. निगाह रखने अर्थात् देख-रेख करनेवाला। २ रक्षक।

निगहवानी—स्त्री० [फा०] निगहवान होने की अवस्था या भाव। देख-रेख। रक्षण।

निगाद—पु० [स० नि√गद्+घञ्] निगद। (दे०)

वि० वक्ता।

निगार—पु० [स० नि√गॄ+घञ्] १ निगलने की क्रिया या भाव। २ भक्षण।
पुं० [फा०] १ प्रतिमा। मूर्ति। २ ऐसा चित्रण जिसमे बेल-बूटे भी हों। ३ फारस देश का एक राग।
वि० १ अकित करनेवाला। २ लिखनेवाला।

निगाल—पु० [देश०] १ एक प्रकार का पहाडी बाँस जिसे रिंगाल भी कहते हैं। २ [स०निगार, रस्य ल] घोडे की गरदन।
स्त्री०=निगाली।

निगालवान (वत्)—पु० [स० निगाल+मतुप्] घोडा।

निगालिका—स्त्री० [स०] आठ अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश जगण, रगण और लघु-गुरु होते है। इसे 'प्रमाणिक' और 'नाग स्वरूपिणी' भी कहते हैं।

निगाली—स्त्री० [हि० निगार] १. बाँस की पतली नली। २ हुक्के की वह नली जिसे मुँह मे लगाकर धूआँ खीचा जाता है।

निगाह—स्त्री० [फा०] १. दृष्टि। नजर। २ कृपा-दृष्टि। ३ किसी बात की देख-रेख के लिए उस पर रखा जानेवाला ध्यान। ४ किसी काम, चीज या बात के सबध मे होनेवाली परख। सूक्ष्म दृष्टि।

निगिभ—वि० [स० निगुह्य] अत्यत गोपनीय।

निगीर्ण—भू० कृ० [स० नि√गॄ+क्त] १. निगला हुआ। २ अतर्भूत। समाविष्ट।

निगुंफ—पु० [स० नि√गुम्फ (गूँथना)+घञ्] १ समूह। २ गुच्छा।

निगुण†—वि०=निर्गुण।

निगुना†—वि० १ =निर्गुण। २ =निगुनी।

निगुनी—वि० [हि० नि+गुनी] जिसमे कोई गुण न हो।

निगुरा†—वि० [हि० नि+गुरु] जिसने धार्मिक दृष्टि से किसी को अपना गुरु न बनाया हो, जिसने किसी से दीक्षा न ली हो। फलत गुण-रहित और हीन।
विशेष—सतो के समाज मे, और उसके आधार पर लोक मे भी ऐसा व्यक्ति अपटु, अयोग्य और निकृष्ट माना जाता है।

निगूढ—वि० [स० नि√गुह् (छिपाना)+क्त] १ जिसका अर्थ छिपा हो। २ अत्यत गुप्त।

निगूढार्थ—वि० [स० निगूढ-अर्थ, ब० स०] जिसका अर्थ छिपा हो।
पु० [कर्म० स०] छिपा हुआ अर्थ।

निगूहन—पु० [स० नि√गुह्+ल्युट्—अन] गुप्त रखने या छिपाने की क्रिया या भाव।

निगृहीत—भू० कृ० [स० नि√ग्रह् (पकडना)+क्त] [भाव० निगृहीति] १ धरा, पकडा या रोका हुआ। २ जिस पर आक्रमण हुआ हो। आक्रमित। ३ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद में हारा हुआ। ४ जिसे दड मिला हो। दडित। ५. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीडित।

निगृहीति—स्त्री० [स० नि√ग्रह+क्तिन्] १ धरने, पकडने या रोकने का भाव। २ आक्रमण। ३ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद मे होनेवाली हार। ४. दड। ५ कष्ट।

निगोड़ा—वि० [हि० नि+गोड़=पैर] [स्त्री० निगोडी] जिसके गोड़ अर्थात् पैर न हों अथवा टूटे हुए हों। फलत अकर्मण्य। (स्त्रियो की एक प्रकार की गाली)
वि० दे० 'निगुरा'।

निगोल—स्त्री० [?] किसी मकान के ऊपरी भाग मे सीढियो के ऊपर की वह छायादार रचना जो आस-पास की छतों और रचनाओं मे सबसे ऊँची हो।

निग्रह—पु० [स० नि√ग्रह+अप्] १. नियत्रण, बधन, रोक आदि के द्वारा किसी आवेग, क्रिया, वस्तु या व्यक्ति को स्वतत्रतापूर्वक आचरण न करने देना। २ उक्त का इतना अधिक उग्र या कठोर रूप कि किसी बात या वृत्ति का दमन हो जाय। ३. रोककर या वश मे रखनेवाली चीज या बात। अवरोध। रोक। ४ चिकित्सा, जिससे रोग आदि दबाये या रोके जाते हैं। ५ दड। सजा। ६ पीडित करना। सताना। ७ बाँधनेवाली चीज या बात। बधन। ८ डाँट-डपट। ९ भर्त्सना। १० सीमा हद। १० शिव। ११ विष्णु।

निग्रहण—पु० [स० नि√ग्रह्+ल्युट्—अन] १. निग्रह करने की क्रिया या भाव। (दे० 'निग्रह') २ पराजय। ३. युद्ध। लडाई।

निग्रहना—स० [स० निग्रहण] १. निग्रह करना। २. नियत्रण, बधन या रोक मे रखना। ३. दमन करना। ४ दडित करना।

निग्रह-स्थान—पु० [स० प० त०] तर्क मे वह स्थल या स्थान जहाँ वादी के अतर्क-सगत बातें कहने पर वाद-विवाद बद कर देना पडे।

निग्रही (हिन्)—वि० [स० निग्रह+इनि] १ निग्रह करनेवाला। २ नियत्रण, बधन या रोक मे रखनेवाला। दमन करनेवाला। ३. दड देनेवाला।

निग्राह—पु० [स० नि√ग्रह+घञ्] १. आक्रोश। शाप। २. दड। सजा।

निग्राहक—वि० [स० नि√ग्रह+ण्वुल्—अक] निग्रह करनेवाला।
पु० वह प्राचीन शासनिक अधिकारी जो अपराधियो, आततायियो आदि को दड देता था।

निग्रोध—पु० [स० न्यग्रोध] राजा अशोक के भाई का पुत्र।

निघटिका—स्त्री० [स० नि√घट् (शोभित होना)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] गुलचा नाम का कद।

निघंटु—पु० [स० नि√घट्+कु] १ शब्दो की सूची, विशेषत यास्क द्वारा उल्लिखित वैदिक शब्दो की सूची। २ कोई ऐसा कोश, जिसमे किसी प्राचीन भाषा के अथवा बहुत पुराने और अप्रचलित शब्दो के अर्थ और विवेचन हों (लेक्सिकन)। ३ शब्द-सग्रह अथवा शब्द-कोश।

निघ—वि० [स० नि√हन् (जानना)+क नि० सिद्धि] जो लबाई और चौडाई मे बराबर हो।
पु० १ गेंद। २. पाप।

निघटना—स० [हि० नि+घटना] न घटे हुए के समान करना।
अ० १. उत्पन्न होना। २ घटित होना। ३. युक्त या सपन्न होना।

निघर-घट—वि० [हि० नि+घर घाट] १ जिसका कही घर-घाट या ठौर-ठिकाना न हो। २ निर्लज्ज। बेहया।
मुहा०—(किसी को) निघर-घट देना=बुरी तरह से झिडकते या फटकारते हुए लज्जित करना। उदा०—दुरै न निघर-घटौ दियें, यह रावरी कुचाल।—बिहारी।

निघरा—वि० [हि० नि+घर] १ जिसका घर-द्वार न हो। २ जिसकी घर-गृहस्थी न हो अर्थात् तुच्छ और हीन।

निघर्ष—पु० [सं० नि√घृष् (घिसना)+घञ्] १ घर्षण। रगड। २. पीसने का भाव।

निघस—पु० [स० नि√अद् (खाना)+अप्, घस् आदेश] आहार। भोजन।

निघात—पु० [स० नि√हन्+घञ्] १. आघात। प्रहार। २. सगीत मे, अनुदात्त स्वर।

निघाति—स्त्री० [स० नि√हन्+इञ्, कुत्व] १ लोहे का डंडा। २ हथौड़ा। ३. निहाई जिस पर धातु के टुकडे रखकर पीटते है।

निघाती (तिन्)—वि० [स० निघात+इनि] [स्त्री० निघातिनी] १. आघात या प्रहार करनेवाला। २. वध या हत्या करनेवाला।

निघृष्ट—भू० कृ० [स० नि√घृष्+क्त] १. रगड़ खाया हुआ। २. पराजित।

निघोर—वि० [स० नि-घोर, प्रा० स०] अत्यंत या परम। घोर।

निघ्न—वि० [स० नि√हन्+क] १ अधीन। २ अवलवित। ३ आश्रित। ४. गुणा किया हुआ। गुणित।

निचंत†—वि०=निश्चित।

निचद्र—पु० [स०] एक दानव का नाम।

निचक्र—पु० [स०] हस्तिनापुर के एक राजा जिन्होने वाद मे कौशावी मे राजधानी बनाई थी।

निचय—पु० [स० नि√चि (चयन)+अच्] १. ढेर। राशि। २ समूह। ३. सचय। ४. निश्चय। ५. किसी विशेप कार्य के लिए इकट्ठा किया जानेवाला धन। निधि। (फड)

निचयन—पु० [स० नि√चि+ल्युट्—अन] १. निचय अर्थात् किसी काम के लिए धन जमा या इकट्ठा करने की क्रिया या भाव। २. किसी के हिसाव या खाते मे उसकी ओर से या उसके लिए कुछ धन जमा करना। (फडिंग)

निचर†—वि०=निश्चल।

निचल†—वि०=निश्चल।

निचला—वि० [हिं० नीचा] [स्त्री० निचली] अवस्था, पद, स्थिति आदि के विचार से निम्न स्तर पर या नीचे होनेवाला। नीचेवाला। जैसे—(क) मकान का निचला (अर्थात् नीचेवाला) खड। (ख) निचला अधिकारी।

†वि० [स० निश्चल] जो निश्चल या शात भाव से एक जगह वैठ न सके। चचल और चिलबिल्ला।

क्रि० वि० निश्चल और शात भाव से। जैसे—वहुत हो चुका, अव निचले वैठो।

निचाई—स्त्री० [हिं० नीचा] १ निम्न स्थल पर होने की अवस्था या भाव। २. निम्न स्थल की ओर का विस्तार।

*स्त्री० नीचता।

निचान—स्त्री० [हिं० नीचा+आन (प्रत्य०)] १ नीचेवाले स्तर पर होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. ऐसी भूमि जो अपेक्षया नीचे की ओर हो। ३. भूमि आदि की नीचे की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। ढाल।

निचाय—पु० [स० नि√चि+घञ्] ढेर। राशि।

निचिंत†—वि० [स्त्री० निचिंतता]=निश्चित।

निचिकी—स्त्री० [स० नि√चि+डि=निचि=शिरोभाग, निचि√कै (शोभा)+क—ङीप्] अच्छी गाय।

निचित—भू० कृ० [स० नि√चि+क्त] १. ढका या छाया हुआ। २. इकट्ठा किया हुआ। सचित। ३. पूरित। व्याप्त। ४. वनाया हुआ। निर्मित। ५ संकीर्ण।

निचुड़ना—अ० [हिं० निचोड़ना का अ० रूप] आर्द्र या रस से भरी वस्तु मे से तरल अश का दवाकर निकाला जाना। निचोडा जाना।

निचुल—पु० [स० नि√चुल् (ऊँचा होना)+क] १. वेंत। २. हिज्जल नामक वृक्ष। ३. ओढने या ढकने का वस्त्र। आच्छादन।

निचुलक—पु० [स० निचुल+कन्] १ युद्ध के समय छाती पर वाँधा जानेवाला लोहे का तवा। २ छाती ढकने का कपडा।

निचेत—वि०=अचेत।

निचै†—पु०=निचय।

निचोड़—पु० [हिं० निचोडना] १. निचोडने की क्रिया या भाव। २. वह अश जो निचोडने पर निकले। ३ किसी लवी-चौडी वात का सक्षिप्त और सार अंश। साराश।

निचोड़ना—स० [हिं० नि+स० च्यवन] १ आर्द्र वस्तु का जल अथवा रस से भरी हुई वस्तु मे से उसका तरल अश या रस निकालने के लिए उसे ऐंठना, घुमाना, दवाना या मरोड़ना। जैसे—गीली धोती निचोडना, आम का रस निचोटना। २ उक्त प्रकार से पीड़ित करते हुए किसी चीज का सार भाग निकालना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी की जमा-पूँजी या सार-भाग पूरी तरह से लेकर उसे खोखला या नि सार करना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

निचोना†—स०=निचोडना।

निचोर†—पु० १ =निचोड। २ =निचोल।

निचोरना†—स०=निचोड़ना।

निचोल—पु० [स० नि√चुल्+घञ्] १. शरीर ढाँकने का कपडा। आच्छादन। २. स्त्रियों की ओढनी या चादर। ३ उत्तरीय वस्त्र। ४ स्त्रियो का घाघरा या लहँगा। ५ कपडा। वस्त्र।

निचोलक—पु० [स० निचोल√कै (मालूम पडना)+क] १. प्राचीन भारत का कचुकी या चोली नाम का पहनने का कपडा जो अगे की तरह का होता था। २ वख्तर। सन्नाह।

निचोवना†—स०=निचोडना।

निचौंहाँ—वि० [हिं० नीचा+औहाँ (प्रत्य०)] १ नीचे की ओर झुका हुआ या प्रवृत्त। नत। नमित। २ जिसकी नीचे की ओर जाने की प्रवृत्ति हो।

निचौंहें—अव्य० [हिं० निचौंहाँ] नीचे की ओर।

निच्छंद—वि० [स० निश्छद] स्वच्छद।

निच्छवि—स्त्री० [स० नि-छवि, व० स०] तिरहुत।

पु० एक प्रकार के व्रात्य क्षत्रिय।

निच्छह*—अव्य० [?] १ पूरी तरह से। २. एक-दम से। विलकुल।

निच्छिवि—पु० [स०] एक वर्ण-सकर जाति।

निछक्का—पु० [स० निस्+चक्र=मडली] १. ऐसी स्थिति जिसमे परम आत्मीय के सिवा और कोई पास न हो। २ एकात या निर्जन स्थान।

निछत्र—वि०[स० निश्छत्र]१ जिसके सिर पर छत्र न हो। छत्र-हीन। बिना छत्र का। २ जिसके पास राज्य अथवा उसका कोई चिह्न न हो या न रह गया हो।
वि०[स० नि क्षत्र] जिसमे या जहाँ क्षत्रिय न रह गये हो। क्षत्रियो से रहित।
निछद्म†—पु० दे० 'निछक्का'।
निछनियाँ*—क्रि० वि०=निच्छत।
निछल†—वि०=निश्छल।
निछला†—वि०=निछल (निश्छल)।
वि०[?]निरा। खालिस।
निछावर—स्त्री० [स० न्यास+अवर्त्त=न्यासावर्त, मि० अ० निसार] १ किसी के गुण, रूप, सुख-समृद्धि आदि को सुरक्षित रखने की कामना से तथा उसे नजर आदि के दूषित प्रभावो से बचाने के लिए उसके ऊपर से कोई चीज घुमाकर उत्सर्ग करना। २. इस प्रकार उत्सर्ग की हुई वस्तु।
विशेष—वस्तु के सिवा ऐसे प्रसगो मे स्वय अपने आप को अथवा अपने प्राण को निछावर करने के भी प्रयोग होते हैं।
निछावरि†—स्त्री०=निछावर।
निछोह—वि०=निछोही।
निछोही—वि०[हिं० नि+छोह]१ जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम न हो। निर्मम। २ निर्दय। निष्ठुर।
निज—वि०[स० नि √जन् (उत्पत्ति)+ड]१. किसी की दृष्टि से स्वय उसका।
पद—निज का=निजी।
२ प्रधान। मुख्य। ३. ठीक। यथार्थ।
अव्य० १ निश्चित रूप से। २ पूरी तरह से। ३ विशेप रूप से। ४ अत मे। उदा०—आई उघरि कनक कलई सी, दे निज गए दगाई। —सूर।
निजकाना—अ०[फा० नजदीक] नजदीक या निकट पहुँचना।
निजकारी—स्त्री०[हिं० निज+कर]१ ऐसी फसल जिसका कुछ अश दूसरो को बाँटना भी पडता हो। २ वह जमीन जिसमे उत्पन्न वस्तु का कुछ अश लगान के रूप मे लिया या दिया जाता था।
निजता—स्त्री०[स० निज+तल—टाप्]'निज' का भाव। निजत्व।
निजन†—वि०=निर्जन (जन-रहित)।
निजरि†—स्त्री०=नजर।
निजा—पु०[अ० निजाअ] झगडा। विवाद।
निजाई—वि०[अ०] जिसके विषय मे दो पक्षो मे कोई झगडा या विवाद चल रहा हो। जैसे—निजाई-जमीन, निजाई-जायदाद।
निजात—स्त्री०=नजात (छुटकारा या मोक्ष)।
निजाम—पु०[अ० निजाम] १ प्रबध। व्यवस्था। २ प्रबध या व्यवस्था का क्रम। ३ किसी प्रकार का चक्र या मडल। ४ ब्रिटिश तथा मराठा शासन-काल मे हैदराबाद (दक्षिण) के शासको की उपाधि।
निजामशाही—पु० [अ+फ़ा०] १ निजाम का शासन। २ मध्ययुग मे, निजामाबाद आध्र मे बननेवाला एक प्रकार का बढिया कागज।
निजी—वि०[स० निज]१.किसी की दृष्टि से स्वय उससे सबध रखनेवाला। निज का। जैसे—निजी बात। २ किसी विशिष्ट वर्ग के लोगो से ही सबधित। जिससे औरो का कोई सबंध न हो। जैसे—वह दोनो भाइयो का निजी झगडा है। ३. अपने अधिकार मे होनेवाला। व्यक्तिगत (सार्वजनिक से भिन्न)।
निजी सहायक—पु०[स०] वह सहायक जो किसी उच्च अधिकारी या बडे आदमी के व्यक्तिगत कार्यो मे हाथ बँटाता हो। (पर्सनल असिस्टेन्ट)
निजु—अव्य०[?] निश्चित रूप से। निश्चयपूर्वक। उदा०—निजु ये अविकारी, सब सुखकारी।—केशव।
निजू†—वि०=निजी।
निजूठा—वि०[हिं० नि+जूठा] [स्त्री० निजूठी]१. (खाद्य पदार्थ) जिसे किसी ने जूठा न किया हो। २ (उक्ति, भावना या विचार) जो पहले किसी को न सूझा हो या जो पहले किसी के मुख से न निकला हो। उदा०—कवि की निजूठी कल्पना सी कोमल।
निजोर†—वि० [हिं० नि+फा० जोर] जिसमे जोर या शक्ति न हो। अशक्त। दुर्बल।
निज्ज—*वि०=निज (निजी)।
निझरना—अ० [हिं० नि+झरना] १ अच्छी तरह झड जाना। जैसे—पेड से फलो का निझरना। २. (किसी अवलब या आश्रय का) अगो के झड़ जाने के कारण रहित और शोभा रहित होना। जैसे—फलो के झड जाने के कारण पेड का निझरना। ३ सार-भाग से वचित या रहित होना। ४. अच्छी और सुखद बातो या वस्तुओ के निकल जाने के कारण उनसे रहित हो जाना। ५ पल्ला या हाथ झाडकर इस प्रकार अलग हो जाना कि मानो कोई अपराध या दोष किया ही न हो।
सयो० क्रि०—जाना।
निझाटना†—स० [हिं० नि+झपटना ?] झपटकर कोई चीज किसी से ले लेना।
निझोटना†—स०=निझाटना।
निझोल†—पु०[हिं० नि+झोल] हाथी का एक नाम।
पु०[हिं० नि+झूल] वह जिस पर झूल पडी हो अर्थात् हाथी।
निटर—वि०[देश०]१ (भूमि) जो उपजाऊ न हो। २ अशक्त। बेदम। ३ मृत।
निटल—पु० [स० नि√टल् (बेचैन होना)+अच्] मस्तक। माथा।
निटलाक्ष—पु०[स० निटल-अक्षि, ब०स०] महादेव। शकर।
निटिया†—पु०[हिं० नाटा?] एक तरह का छोटे कद का बैल।
निटिलाक्ष—पु०=निटलाक्ष।
निटोल—वि०[हिं० नि+टोल] जो अपने टोल (जत्थे या झुड) से अलग हो गया हो।
†पु०=टोला (महल्ला)।
निट्ठ, निट्ठि*—अव्य०[हिं० नीठि] ज्यो-त्यो करके। कठिनाई से।
निठ, निठि—अव्य०=निट्ठ।
निठल्ला—वि०[हिं० उप० नि=नही+टहल=काम या हिं० ठाला?] १ (व्यक्ति) जिसके हाथ मे कोई काम-धधा या रोजगार न हो। प्राय खाली बैठा रहनेवाला। २ समय बिताने के लिए जिसके पास कोई काम या साधन न हो।
क्रि० प्र०—बैठना।

निठल्लू†—वि०=निठल्ला।

निठाला†—पु०=ठाला।

निठुर—वि०[स० निष्ठुर] [भाव० निठुरई, निठुरता] जिसके हृदय मे दया, प्रेम, सहानुभूति आदि कोमल या मधुर भाव बिलकुल न हो। जिसे दूसरो के कष्ट, पीडा आदि की अनुभूति न होती हो। कठोर-हृदय। निष्ठुर।

निठुरई†—स्त्री०=निठुरता (निष्ठुरता)।

निठुरता†—स्त्री० [हिं० निठुर+स० ता (प्रत्य०), असिद्ध रूप] निठुर अर्थात् कठोर हृदय होने की अवस्था या भाव। निष्ठुरता।

निठुराई—स्त्री०=निठुरई (निष्ठुरता)।

निठुराव†—पु०=निठुरई (निष्ठुरता)।

निठौर—वि०[हिं० नि+ठौर] जिसका कोई ठौर या ठिकाना न हो।
पु० १ अनुचित या बुरा स्थान। २. जोखिम या सकट का स्थान।

निडर—वि०[हिं० नि+डर] [भाव० निडरपन]१ जो डरता या भय-भीत न होता हो। जिसे किसी आदमी या बात से कुछ भी डर न लगता हो। निर्भय। २ साहसी। ३ जो बडो के समक्ष धृष्टतापूर्ण आचरण करता हो। ढीठ।
पु० निर्भयता।

निडरपन(ा)—पु०[हिं० निडर+पन (प्रत्य०)] निडर होने की अवस्था या भाव।

निडीन—पु० [स० नि√डी (उडना)+क्त] ऊपर से नीचे की ओर आना।

निडै—अव्य०[हिं० नियर] निकट। समीप।

निढाल—वि०[हिं० नि+ढाल=गिरा हुआ] १ अधिक चलने या परिश्रम करने के फलस्वरूप जिसके अग चूर-चूर हो गये हो। बहुत अधिक थका हुआ। २. जो विफल मनोरथ होने पर उत्साह-हीन हो गया हो।

निढिल—वि०[हिं० नि+ढीला]१. चुस्त। जो ढीला न हो। कसा या तना हुआ। २. जो ढिलाई न करता हो। चुस्त। ३ कडा। कठोर।

नितंत—वि०[स० निद्रित] १. सोया हुआ। २ बसा हुआ। ३ उपस्थित। वर्तमान। उदा०—सबकर करम गोसाईं जानइ जो घट घट महँ नितत।—जायसी।
अव्य०=नितात।

नितंब—पु०[स० नि√तम्ब् (पीडित करना)+अच्] १. कूल्हे (टाँग और कमर का जोड) के ऊपर का वह उभरा हुआ पिछला मासल और प्राय गोलाकार भाग जिसे टेककर जमीन आदि पर आदमी बैठते हैं। चूतड। २. कंधा। ३. तट। तीर। ४ पर्वत का ढालुवाँ किनारा।

नितंबिनी—स्त्री०[स० नितम्ब+इनि—ङीप्] सुन्दर नितबोवाली स्त्री। सुन्दरी।

नितंबी (बिन्)—वि०[स० नितम्ब+इनि][स्त्री० नितबिनी] बडे तथा भारी नितबोवाला।

नित*—अव्य०=निमित्त। उदा०—नित सेवा नित धावै, कै परनाम।—नूर मोहम्मद।
†अव्य०=नित्य।

नितराम्—अव्य०[स० नि+तरप्, अमु]१. सदा। हमेशा। निरतर। २. अवश्य।

नितल—पु०[स० नि+तल, ब०स०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोको मे पहला लोक।

नितात—वि०[म० नि√तम् (चाहना)+क्त, दीर्घ]१. बहुत अधिक। २ हद दर्जे का। असाधारण। ३. बिलकुल।

निति*—अव्य०=नित्य।

नित्तह*—अव्य०=नित्य।

नित्य—वि०[स० नि+त्यप्] [भाव० नित्यता] जो निरतर या सदा बना रहे। अविनाशी। शाश्वत।
अव्य० १. प्रतिदिन। हर रोज। २ हर समय। सदा। हमेशा।

नित्य-कर्म (न्)—पु०[कर्म०स०]१ वह काम जो प्रतिदिन करना पड़ता हो। रोज का काम। २ वे धार्मिक कृत्य जो प्रतिदिन आवश्यक रूप से किये जाते हो। जैसे—तर्पण, पूजन, सध्या, वदन आदि।

नित्य-क्रिया—स्त्री० दे० 'नित्य-कर्म'।

नित्य-गति—वि०[ब०स०] जो सदा गतिशील रहता हो।
पु० वायु। हवा।

नित्यता—स्त्री०[सं० नित्य+तल्—टाप्] नित्य अर्थात् शाश्वत होने या सदा वर्तमान रहने की अवस्था या भाव।

नित्यत्व—पुं०[स० नित्य+त्व] दे० 'नित्यता'।

नित्यदा—अव्य०[सं० नित्य+दाच्] सदा से।

नित्य-नर्त—पु० [ब० स०] महादेव। शकर।

नित्य-नियम—पु०[कर्म०स०] ऐसा निश्चित या नियत नियम जिसका पालन प्रतिदिन करना पडता हो या किया जाता हो।

नित्य-नैमित्तिक-कर्म (न्)—पु०[कर्म०स०] नित्य अर्थात् नियमित रूप से तथा किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त किये जानेवाले सब कर्म।

नित्य-प्रति—अव्य० [स० अव्य०स०] प्रतिदिन। हररोज।

नित्य-प्रलय—पु०[कर्म०स०] वेदात के अनुसार जीवो की नित्य होती रहनेवाली मृत्यु।

नित्य-बुद्धि—वि०[ब०स०] (व्यक्ति) जो यह समझता हो कि हर चीज नित्य या शाश्वत है।

नित्य-भाव—पु०[ष०त०] दे० 'नित्यता'।

नित्य-मित्र—पु०[कर्म०स०] नि स्वार्थ-भाव से सदा मित्र बना रहनेवाला व्यक्ति। शाश्वत मित्र।

नित्य-मुक्त—पु०[कर्म०स०] परमात्मा।

नित्य-यज्ञ—पु०[मध्य०स०] प्रतिदिन का कर्तव्य यज्ञ। जैसे—अग्निहोत्र।

नित्य-यौवना—वि० स्त्री०[स०] (स्त्री) जिसका यौवन सदा बना रहे। चिरयौवना।
स्त्री० द्रौपदी।

नित्यर्तु—वि०[नित्य-ऋतु, ब०स०]१. जो सब मौसमो मे और सदा बना रहे। २. निरतर अपनी ऋतु मे होनेवाला।

नित्यश (शस्)—अव्य० [स०नित्य+शस्] १ प्रतिदिन। रोज। नित्य। २ सदा। सर्वदा।

नित्य-संबंध—पु० [कर्म०स०]१ दो वस्तुओं मे परस्पर होनेवाला नित्य

या स्थायी सबध। २ व्याकरण मे, दो शब्दो का वह पारस्परिक सबध जिससे वाक्याशो मे दोनो शब्दो का आगे-पीछे आना अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। जैसे—'जब मैं कहूँ तब तुम वहाँ जाना। मे 'जब' और 'तब' मे नित्य-सबध है।

नित्य-संबंधी (धिन्)—वि० [स० नित्यसबध+इनि] (व्याकरण मे ऐसे शब्द) जिनमे परस्पर नित्य-सबध हो।

नित्यसम—पु० [तृ०त०] तर्क या न्याय मे, यह दूषित सिद्धात कि सभी चीजें वैसी ही या वही बनी रहती हैं। (इसकी गणना २४ जातियो अर्थात् दूषित तर्कों मे की गई है।)

नित्या—स्त्री०[स० नित्य+टाप्] १. पार्वती। २ मनसादेवी। ३. एक शक्ति का नाम ।

नित्याचार—पु०[नित्य-आचार, कर्म०स०] ऐसा आचार या सदाचार जिसके निर्वाह या पालन मे कभी त्रुटि न हुई हो।

नित्यानंद—पु०[स० नित्य-आनन्द, कर्म०स०] मन मे निरन्तर या सदा बना रहनेवाला आनद, जो सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

नित्यानध्याय—पु० [नित्य-अनध्याय, कर्म० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ऐसी स्थिति जिसके उपस्थित होने पर सदा अनध्याय रखना आवश्यक है। मनु के अनुसार—पानी बरसते समय, बादल के गरजने के समय अथवा ऐसे ही अन्य अवसरो पर सदा अनध्याय रखना चाहिए।

नित्यानित्य—वि० [नित्य-अनित्य, द्व०स०] नित्य और अनित्य। नश्वर और अनश्वर।

नित्यानित्य वस्तु-विवेक—पु०[सं०] ऐसा विवेक जिसके फल-स्वरूप ब्रह्म, सत्य और जगत् मिथ्या भासित होता है।

नित्याभियुक्त—वि०[नित्य-अभियुक्त, कर्म०स०] (योगी) जो देह की रक्षा के निमित्त हलका और थोडा भोजन करता हो।

नित्योद्युत—पु०[स०] एक बोधिसत्व।

नियंब (थंभ)†—पु०=स्तभ (खभा)।

नियरना—अ०[स० निस्तरण] तरल पदार्थ का ऐसी स्थिति मे रहना या होना कि उसमे घुली या मिली हुई चीज अपने भारीपन के कारण उसके नीचे या तल मे बैठ जाय।

नियरवाना—स० [हिं० नियारना का प्रे०] किसी को कुछ नियारने मे प्रवृत्त करना।

नियार—पु०[हिं० नियारना] १. नियरने की क्रिया या भाव। तरल पदार्थ मे घुली या मिली हुई वस्तु का नीचे बैठना। २. इस प्रकार नीचे या तल मे बैठी हुई कोई वस्तु। ३. वह तरल पदार्थ जिसमे घुली या मिली हुई चीज नीचे तल मे बैठ गई हो।

नियारना—स०[हिं० निस्तारण] कोई तरल पदार्थ इस प्रकार स्थिर करना कि उसमे घुली या मिली हुई कोई वस्तु उसके तल मे बैठ जाय। (डिकैन्टेशन)

नियालना†—स०=नियारना।

निद—वि०[सं०√निद (निंदा करना)+क, नलोप] निंदा करनेवाला।
पु०[स०] विष।

निदई†—वि०=निर्दय।

निदद्रु—वि०[सं० नि-दद्रु, ब०स०] जिसे दद्रु रोग न हुआ हो।

निदय—वि०[सं० निर्दय]१. जिसमे दया न हो। दयाहीन। २. निष्ठुर। निर्दय। उदा०—निदय हृदय मे हूक उठी क्या।—प्रसाद।

निदरना—स० [हिं० निरादर] १. अनादर या तिरस्कार करना। २. तुच्छ या हेय ठहराना या सिद्ध करना।
स०[हिं० नि+दलन] १. दलन करना। २. पराजित करना।

निदरसना—अ० [हिं० नि+दरसना] अच्छी तरह दिखलाई देना या पड़ना।
स० अच्छी तरह देखना।

निदर्शक—वि०[स० नि√दृश् (देखना)+णिच्+ण्वुल्—अक] निदर्शन करने अर्थात् दिखाने या प्रदर्शित करनेवाला।

निदर्शन—पु० [स० नि√दृश+ल्युट्—अन्]१. दिखाने या प्रदर्शित करने की क्रिया या भाव। २. किसी कथन या सिद्धान्त की पुष्टि के लिए उदाहरण-स्वरूप कही जानेवाली ऐसी बात जो बहुधा कल्पित या स्वरचित परन्तु सादृश्य के तत्त्व या भाव से युक्त होती है। ३. भौतिक विज्ञान, रेखागणित आदि मे किसी मूल कथन को सिद्ध करने के लिए खीची या बनाई जानेवाली आकृतियाँ। (इलस्ट्रेशन, उक्त दोनो अर्थों मे)

निदर्शना—स्त्री० [स० नि√दृश+णिच्+ल्यु—अन, टाप्] साहित्य मे एक अलकार जिसमे उपमान और उपमेय मे सादृश्य का आरोप करके इस प्रकार सबध स्थापित किया जाता है कि दोनो मे बिंब-प्रतिबिंब का भाव प्रकट होता है। जैसे—यह मुख चद्रमा की शोभा धारण कर रहा है।

निदलन—पु०=निर्दलन।

निदहना—स०[स० निदहन]जलाना।
अ० जलना।

निदाघ—पु०[स० नि√दह् (जलाना)+घञ्]१ गरमी। ताप। २ धूप। ३. रोग का निदान।

निदान—पु०[सं० नि√दा (देना)वा√ दो (छेदन)+ल्युट्—अन]१ किसी क्रिया का कारण विशेषत कोई मूल और प्रमुख कारण। २ चिकित्सा-शास्त्र मे, यह निश्चय करना कि (क) रोगी को कौन रोग है और (ख) इस रोग का मूल और प्रमुख कारण क्या है। (डायग्नोसिस) ३ उक्त विषय की विद्या या शास्त्र। निदानशास्त्र। (इटियॉलाजी) ४. अंत। अवसान। ५. घर। ६. स्थान। जगह।
अव्य० १. अत मे। २. इसलिए।

निदान-गृह—पु०[प०त०] वह चिकित्सालय, जहाँ रोगियो के रोगो का निदान होता या पहचान की जाती है। (क्लीनिक)

निदानज्ञ—पु०[सं० निदान√ज्ञा (जानना)+क]वह चिकित्सक जो निदान-शास्त्र का ज्ञाता हो; और फलत रोगो का ठीक निदान करता हो। (पैथालोजिस्ट)

निदान-शास्त्र—पुं० [प० त०] वह शास्त्र जिसमे रोगो के निदान या पहचान का विवेचन होता है। (इटियॉलोजी)

निदारा*—वि०[सं० निर्दार]जिसकी दारा अर्थात् पत्नी न हो। बिन-ब्याहा हुआ या रँडुवा।

निदारुण—वि० [स० नि-दारुण, प्रा० स०]१. घोर और भयानक या भीषण। २. दुसह। ३. निर्दय। निष्ठुर।

निदाह—पु०=निदाघ।

निदिग्ध—वि०[सं० नि√दिह् (उपचय)+क्त] छोपा या लीपा हुआ।

निदिग्धा—स्त्री०[सं० निदिग्ध+टाप्] इलायची।

निदिग्धिका—स्त्री०[सं० निदिग्धा+कन्, इत्व]=निदिग्धा।

निदिध्यास—पु०[सं० नि√ध्यै (चिन्तन)+सन्+घञ्]=निदिध्यासन।

निदिध्यासन—पु०[सं०नि√ध्यै+सन+ल्युट्—अन्]१. अनवरत चिंतन। २. निरतर या सदा किसी का स्मरण करना।

निदिया†—स्त्री०=निंदिया (नीद)।

निदिष्ट—वि०=निर्दिष्ट।

निदेश—पु० [सं० नि√दिश् (बताना)+घञ्]१. दे० 'निर्देश'। २. शासन। ३ किसी आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के सबध मे लगाई हुई कोई शर्त या बधन। (प्रॉविजन) ४ उक्ति। कथन। ५. बात-चीत। ६ पडोस। ७ सान्निध्य।

निदेशक—पु० [सं०] वह जो दूसरो को कोई काम कैसे, कहाँ और कब करने के सबंध मे सूचनाएँ या आदेश देता हो। (डाइरेक्टर)

निदेशालय—पु० [स] निदेशक का कार्यालय।

निदेशिनी—स्त्री०[सं० नि√दिश्+ल्युट्—अन, ङीप्] दिशा।

निदेशी (शिन्)—वि०[सं० नि√दिश्+णिनि]निर्देशक। (दे०)

निदेष्टा (ष्टृ)—पु०[सं० नि√दिश्+तृच]निर्देशक। (दे०)

निदेस—पु०=निर्देश।

निदोष—वि०=निर्दोष।

निद्धि†—स्त्री०=निधि।

निद्र—पु०[सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिसे चलाने पर शत्रुओ को नीद आ जाती थी।

निद्रा—स्त्री०[सं०√निंद+रक्, नलोप टाप्] प्राणियों की वह स्थिति जिसमे वे सुस्ताने तथा आरोग्य लाभ करने के निमित्त प्रकृतिश कुछ समय तक चुपचाप निश्चेष्ट होकर पडे रहते है। नीद। (साहित्य मे यह एक सचारी भाव माना गया है।)

निद्रा-गति—स्त्री०[सं०त०] एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी निद्रा की अवस्था मे ही उठकर चलने-फिरने या कोई काम करने लगता है। (स्लीप वाकिंग) २. वनस्पतियो आदि का निद्रित अवस्था मे भी बराबर बढते या इधर-उधर होते रहना। (स्लीपिंग मूवमेन्ट)

निद्राण—वि०[सं० नि√द्रा (सोना)+क्त, तस्य न, णत्व]१ जो सो रहा हो। २. मुदा हुआ। मीलित।

निद्रायमान—वि०[सं० नि√द्रा+यक्+शानच्, मुक्] जो निद्रित अवस्था मे हो। सोया हुआ।

निद्रालस—वि०[निद्रा-अलस, तृ० त०] १ जो नीद आने के कारण शिथिल हो रहा हो। २ गहरी नीद मे सोया हुआ।

निद्रालु—वि०[सं० नि√द्रा+आलुच्]१. जो निद्रा मे हो या सो रहा हो। २. जिसे बहुत नीद आ रही हो। ३. जिससे नीद आने का परिचय मिल रहा हो। जैसे—निद्रालु आँखें।
स्त्री० १. वन-तुलसी। २. बैंगन। ३ नली नामक गध-द्रव्य।

निद्रासंजन—पु०[सं० निद्रा-समुजन् (उत्पत्ति)+णिच्+ल्यु ट्—अन्] कफ निकलने का रोग (जिसके कारण बहुत नीद आती है)।

निद्रित—भू० कृ० [सं० निद्र+क्त] जो सोया या निद्रा मे भरा हो।

निधड़क—क्रि० वि०[हिं० नि+धडक]=बेधडक।

निधन—पु०[सं० नि√धा (धारण)+क्यु—अन] १ नाश। २. मरण।
मृत्यु। (प्राय बडे आदमियो के सबध मे प्रयुक्त) जैसे—महामना मालवीय जी का निधन। ३ जन्म-कुण्डली मे लग्न से आठवाँ स्थान। (फलित ज्यो०) ४. जन्म-नक्षत्र से सातवाँ, सोलहवाँ और तेइसवाँ नक्षत्र। ५. कुल। वश। ६. कुल का अधिपति। ७ विष्णु।
वि०[सं०] निर्धन। (दे०)

निधनक्रिया—स्त्री०[प०त०]१ शवदाह। २ अन्त्येष्टि।

निधनपति—पु०[प० त०] प्रलय करनेवाले, शिव।

निधनी—वि०[हिं० नि+धनी] जिसके पास धन न हो। निर्धन। उदा०—धन मुझ निधनी का लोचनों का उजाला।—हरिऔध।

निधरक—क्रि० वि०=निधडक (बेधडक)। उदा०—निधरक तूने ठुकराया तब, मेरी टूटी मृदु प्याली।—प्रसाद।

निधातव्य—वि०[सं० नि√धा+तव्यत्] जिसका निधान किया जा सके।

निधान—पु०[सं० नि√धा +ल्युट्—अन]१ रखने या स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन। २ सुरक्षित रखना। ३ वह पात्र या स्थान जिसमे कुछ स्थापित या स्थित हो। आधार। आश्रय। जैसे—दया-निधान। ४ भडार। ५ निधि। ६. वह स्थान, जहाँ कोई पहुँचकर नष्ट या समाप्त होता हो।

निधि—स्त्री०[सं० नि√धा+कि]१ वह आधार, पात्र या स्थान जिसमे कोई गुण या पदार्थ व्याप्त अथवा स्थित हो। आश्रय-स्थान। जैसे—दयानिधि, गुणनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि। २ जमीन मे गडी हुई धनराशि। ३ किसी विशेष कार्य के लिए अलग रखा या जमा किया हुआ धन। जैसे—नागर-निधि। ४ कुबेर के नौ रत्न, यथा—पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप, मुकुद, कुद, नील और वर्च्च। ५ उक्त के आधार पर नौ की सख्या। ६. विष्णु। ७ शिव। ८ जीवक नामक ओषधि। ८ नली नामक गधद्रव्य।

निधिनाथ—पु०[प०त०]१ निधियो (जो गिनती मे नौ है) के स्वामी, कुबेर। २ वह व्यक्ति जिसकी देख-रेख मे कोई निधि, सपत्ति या कुछ वस्तुएँ रखी गई हों।

निधिप—पु०[सं० निधि √पा (रक्षा)+क] निधिनाथ। (दे०)

निधि-पति—पु०[प०त०] निधिनाथ। (दे०)

निधिपाल—पु०[निधि √पाल् (रक्षा)+णिच्+अच्] निधिनाथ। (दे०)

निधिवन—पु०[सं०] वृन्दावन के पास का एक कुज। उदा०—निधिवन करि दडौत, विहारी को मुख जोवैं।—भगवत रसिक।

निधीश, निधीश्वर—पु०[सं० निधि-ईश, प०त०, निधि-ईश्वर, प०त०] निधिनाथ। (दे०)

निधुवन—पु० [सं० नि-धुवन, ब०स०]१ मैथुन। २ केलि-कर्म। ३. हसी-ठट्ठा। परिहास। ४ कप।

निधेय—वि०[सं० नि√धा+यत्] १ निधान अर्थात् रखे या स्थापित किये जाने के योग्य। २ (धन या पदार्थ) जो निधान (या धरोहर) रूप मे कही रखा जा सके या रखा जाने के योग्य हो। ३. स्थापित किये जाने के योग्य।

निध्यात—भू० कृ० [सं० नि√ध्या(चिन्तन)+क्त] जिस पर मनन या विचार किया गया हो।

निध्यान—पु० [स० नि√ध्या+ल्युट्—अन्] १. ध्यान करना। २. देखना। ३ दृश्य। ४ निदर्शन।

निध्रुव—पुं० [स०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

निध्वान—पु० [स० नि√ध्वन् (शब्द)+घञ्] ध्वनि। शब्द।

निनद*—पु० [स० नि√नद् (शब्द)+अप्]=निनाद (शब्द)।

निनर्दी—वि०=निनादी।

निनयन—पु० [स० नि√नी (ले जाना)+ल्युट्—अन] १. सपादित करना। २. जल छिडकना। ३ अभिषेक करना।

निनरा*—वि० [स्त्री० निनरी]=न्यारा।

निनर्द—पु० [स० नि√नर्द् (शब्द)+घञ्] वेद के मत्रो का विशेष प्रकार का उच्चारण।

निनाद—पु० [स० नि√नद्+घञ्] शब्द, विशेषत' उच्च या घोर शब्द।

निनादना— स० [स० निनाद] उच्च या घोर शब्द करना।

निनादित—वि० [स० निनाद+इतच्] १. शब्द से भरा हुआ। गुजायमान। २. शब्द करता हुआ। शब्दित।

पु० शब्द।

निनादी (दिन्)—वि० [स० निनाद+इनि] [स्त्री० निनादिनी] १. जिसमे से शब्द निकल रहा हो। २ जो शब्द उत्पन्न कर रहा हो।

निनान*—पु०, अव्य०=निदान।

निनानवे—वि०, पु०=निन्यानवे।

निनाया†—पु० [?] खटमल।

निनार—वि०=निनारा (न्यारा)।

निनारना†—स०=निकालना (अलग करना)।

निनारा†—वि० [हिं० निनारना=निकालना] [स्त्री० निनारी] १. अलग किया या निकाला हुआ। २. न्यारा।

निनावाँ—पु० [?] एक रोग जिसमे जीभ, तालू आदि मे छोटे छोटे-दाने निकल आते है तथा जिनमे फरफराहट और पीडा होती है।

वि० [हिं० नि+नाँव (नाम)] १ जिसका कोई नाम न हो। बेनाम। २ जिसका नाम अमागलिक या अशुभ होने के कारण न लिया जाता हो या न लिया जाय। (स्त्रियो मे प्रचलित भूत-प्रेत, साँप आदि के लिए साकेतिक शब्द।)

निनौना†—स०=नवाना (झुकाना)।

निनौरा†—पु०=ननिहाल।

निन्यानवे—वि० [स० नवनवति] जो गिनती मे नव्वे से नौ अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९९।

मुहा०—निन्यानवे के फेर मे आना या पडना=धन या रुपया कमाने, जमा करने या बढाने की धुन मे होना। धन बढाने की चिंता मे पडना।

विशेष—एक कहानी है कि किसी अपव्ययी को मितव्ययी बनाने के उद्देश्य से किसी ने निन्यानवे रुपए दे दिये थे। उसने सोचा कि इसमे एक और रुपया मिलाकर इसे पूरा सौ रुपया कर लेना चाहिए। तब से उसे धन एकत्र करने का चस्का लग गया और वह धनी हो गया। इसी कहानी के आधार पर यह मुहा० बना है।

निन्यारा†—वि०=न्यारा।

निन्हियाना†—अ० [अनु० ना ना] बहुत अधिक दीनता प्रकट करना। गिड़गिड़ाना।

निपंग—वि० [स० नि-पगु] १. पगु। २. निकम्मा।

निप—पु० [स० नि√पा (पीना)+क] १. कलस। २. [नीप पृषो० सिद्धि] कदम (वृक्ष)।

निपज—स्त्री० [हिं० उपज का अनु०] वह सारा माल जो किसी कारखाने मे कुछ निश्चित समय के अदर बनकर बिक्री के लिए तैयार होता है। (आउट-पुट)

निपजना—अ० [स० निष्पद्यते, प्रा० निपज्जइ] १. उत्पन्न होना। उपजना। २. पुष्ट होते हुए बढना। ३. बनकर तैयार होना।

निपजी—स्त्री० [हिं० निपजना] १ लाभ। मुनाफा। २. दे० 'उपज'।

निपट—स्त्री० [हिं० निपटना] निपटने की अवस्था, क्रिया या भाव।

अव्य० [हिं० नि+पट] १. जिसमे किसी एक साधारण तत्त्व या अस्तित्व के सिवा और कुछ भी गुण या विशेषता न हो। निरा। जैसे—निपट गँवार या देहाती। २ एकदम से। सरासर। बिलकुल। जैसे—निपट झूठ बोलना। ३. बहुत। अधिक नितात।

निपटना—अ० [स० निवर्त्तन, प्रा० निवट्टना, पु० हिं० निवटना] १. कार्य आदि के सबध मे, पूर्ण और सपन्न होना। २ (व्यक्ति का) कोई काम पूर्ण या सपन्न करने के उपरात निवृत्त होना। ३ शौच, स्नान आदि नित्य के आवश्यक कार्यों से निवृत्त होना। (बाजारू) ४ झगड़े, विवाद आदि का निपटारा होना। ५ निपटारा करने के लिए किसी से भिडना, जूझना या लडना। जैसे—तुम रहने दो, हम उनसे निपट लेंगे। ६. किसी चीज का खतम या समाप्त होना। जैसे—दीए का तेल निपटना।

पद—निपटी रकम=ऐसा व्यक्ति जो विशेष समर्थ या काम का न रह गया हो।

७ ऋण, देन आदि का चुकता होना।

निपटाना—स० [हिं० निपटना का स०] १. कार्य आदि पूर्ण या सपादित करना। २ दो व्यक्तियो का अथवा परस्पर का झगडा तै या खतम करना। ३. ऋण, देन आदि चुकाना।

निपटारा—पु० [हिं० निपटना] १ निपटने या निपटाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ झगड़े, विवाद आदि का ऐसा अत जिससे दोनो पक्ष सतुष्ट रहें। ३ अत। समाप्ति। ४. निर्णय। फैसला।

निपटावा†—पु०=निपटारा।

निपटेरा—पु०=निपटाना।

निपठ—पु० [स० नि√पठ् (पढना)+अप्] पाठ। अध्ययन।

निपठन—पु० [स० नि√पठ्+ल्युट्—अन] १ पढना। २ किसी की कविता या पद कठस्थ करके सुदर रूप मे पढकर लोगो को, उनके मनोविनोद के लिए सुनाना। (रेसिटेशन)

निपतन—पु० [स० नि√पत् (गिरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निपतित] नीचे की ओर गिरना। निपात। पतन।

निपतित—भू० कृ० [स० नि√पत्+क्त] जिसका निपतन हुआ हो। गिरा हुआ।

निपत्र—वि० [स० निष्पत्र] (पौधा या वृक्ष) जिसमे पत्ते न हो। पत्रहीन।

निपना†—अ० [स० निष्पन्न] पूरा या सपन्न होना।

†अ०=निपजना।

वि० [स० निपुण] १ चतुर। चालाक। होशियार। २ भोला-भाला। सीधा-सादा।

निपत्ता†—वि० [स० नि+हिं० पता] जिसका पता-ठिकाना न हो।
†वि० [स० निष्पत्र] पत्र-हीन।

निपत्या—स्त्री० [स० नि√पत्+क्यप्—टाप्] १ रण-क्षेत्र। युद्ध की भूमि। २ गीली, चिकनी जमीन। ३ फिसलन।

निपाँगुर—वि० [हिं० नि+पगु] १ लँगड़ा। २ अपाहिज। पगु।

निपाक—पु० [स० नि√पच् (पकाना)+घञ्] १ परिपक्व होना। २. पकना या पकाया जाना। ३. पसीना । ४ किसी बुरे काम का परिणाम।

निपात—पु० [स० नि√पत्+घञ्] [वि० नैपातिक] १ नीचे गिरने की अवस्था, क्रिया या भाव। पतन। २ अव पतन। ३ विनाश। ४ मरण। मृत्यु। ५ नहाने का स्थान। स्नानागार। (कौ०) ६. भाषा-विज्ञान और व्याकरण में, ऐसा शब्द जो व्याकरण के नियमों के अनुसार न बने होने पर भी प्राय शुद्ध माना जाता हो। ७ अव्यय (शब्द)।
†वि०=निपत्र (पत्र-हीन)।

निपातक—पु० [स० नि-पातक प्रा० म०] दूषित या बुरा कर्म। पाप।

निपातन—पु० [स० नि√पत्+णिच्+ल्युट्—अन] १ गिराने की क्रिया या भाव। २. ध्वस। विनाश। ३ मार डालने या वध करने की क्रिया या भाव। हत्या।

निपातना—स० [स० निपातन] १. काट या मारकर अथवा और किसी प्रकार नीचे गिराना। २ ध्वस्त या नष्ट करना।

निपातित—भू० कृ० [स० नि√पत्+णिच्+क्त] १ गिराया हुआ। २ नष्ट या वध किया हुआ। ३ अनियमित रूप से बना हुआ।

निपाती (तिन्)—वि० [स० निपात+इनि] १ गिराने या फेंकनेवाला। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ३ मार गिरानेवाला।
पु० महादेव। शिव।
†वि०=निपत्र (विना पत्रों का)।

निपान—पु० [स० नि√पा+ल्युट्—अन] १ जल पीना। २ ऐसा गड्ढा जिसमे पानी जमा हो या जमा होता हो। ३ कूआँ। ४. दोहनी। ५. आश्रय-स्थान।

निपीड़क—वि० [स० नि√पीड् (दु ख देना)+ण्वुल्—अक] १. पीडा देनेवाला। दु खदायक। २ दवाने या मलने-दलनेवाला। ३ निचोडने वाला। ४. पेरनेवाला।

निपीड़न—पु० [स० नि√पीड्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निपीडित] १ कष्ट पहुँचाने या पीडित करने की क्रिया या भाव। पीडित करना। कष्ट या तकलीफ देना। २ खूब मलना-दलना। ३ निचोडना। ४ पसेव निकालना। पसाना। ५. पेरना।

निपीडना†—स० [स० निपीडन] १ खूब अच्छी तरह दवाना या मलना-दलना। २. बहुत कष्ट या तकलीफ देना। ३ निचोडना। ४ पेरना।

निपीड़ित†—भू० कृ० [स० नि√पीड्+क्त] १ जिसका निपीड़न हुआ हो। २ जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो। पीडित। ३ जिस पर आक्रमण हुआ हो। आक्रांत। ४ कुचल या दवाकर, जिसका रस निकाला गया हो। पेरा हुआ। ५ निचोडा हुआ।

निपीत—भू० कृ० [स० नि√पा (पीना)+क्त] १ पीया हुआ। २. सोखा हुआ। शोषित।

निपीति—स्त्री० [स० नि√पा+क्तिन्] पीने की क्रिया या भाव। पान।

निपुड़ना†—अ० [स० निष्पुट, प्रा० निप्पुड] १ खुलना। २ उघरा होना।
स० १. खोलना। २ उघरा करना।

निपुण—वि० [स० नि√पुण् (अच्छा कार्य करना)+क] [भाव० निपुणता] (कला, विद्या आदि मे) अनुभव, अभ्यास आदि के कारण जो कोई काम विशेष अच्छी तरह से करता हो। दक्ष। प्रवीण।

निपुणता—स्त्री० [स० निपुण+तल्—टाप्] निपुण होने की अवस्था, गुण या भाव।

निपुणाई†—स्त्री०=निपुणता।

निपुत्र†—वि० [स्त्री० निपुत्री] दे० 'निपूता'।

निपुन†—वि०=निपुण।

निपुनई†—स्त्री०=निपुणाई (निपुणता)।

निपुनता†—स्त्री०=निपुणता।

निपुनाई—स्त्री०=निपुणता।

निपूत—वि० [स्त्री० निपूती]=निपूता।

निपूता—वि० [हिं० नि+पूत] [स्त्री० निपूती] जिसके आगे पुत्र न हो या न हुआ हो। नि सतान। (प्राय गाली के रूप मे प्रयुक्त)

निपेटा†—वि० [हिं० नि+पेट] [स्त्री० निपेटी] १ जिसका पेट खाली हो अर्थात् जिसने कुछ खाया न हो। २ भुक्खड।

निपोड़ना—स०=निपोरना।

निपोरना—स० [म०] खोलना।

निफन—वि० [स० निष्पन्न, प्रा० निष्फन्न] १ पूरा या समाप्त किया हुआ। २. पूरा। सव। सारा।
क्रि० वि० पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

निफरना—अ० [हिं०=निफारना का अ०] चुभकर या धँसकर इस पार से उस पार होना। छिद कर आरपार होना।
अ० [स० नि+स्फुट] १ खुलना। २ खुल कर उघारा या स्पष्ट होना।

निफल†—वि०=निष्फल।

निफला—स्त्री० [स० नि-फल, व० स०, टाप्] ज्योतिषमती लता।

निफाक—पु० [अ० निफाक] १ एकता का अभाव। २. द्वेषपूर्ण या विरोधजन्य स्थिति। वैमनस्य। फूट।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।—होना।

निफारना†—स० [हिं० न+फारना] १ इस पार से उस पार तक छेद करना। आरपार करना। वेधना। २ इस पार से उस पार निकालना या ले जाना। ३ उद्घाटित या प्रकट करना। खोलना। ४ स्पष्ट या साफ करना।

निफालन—पु० [स०] देखने की क्रिया या भाव। देखना।

निफोट—वि० [स० नि+स्फट] व्यक्त। स्पष्ट।

निवध—पु० [स० नि√वन्ध् (बाँधना)+घञ्] १ कोई चीज किसी के साथ जोडने, बाँधने या लगाने की क्रिया या भाव। २ अच्छी तरह गठा या बँधा हुआ पदार्थ। ३. वह जिसमे कोई चीज किसी के साथ

जोडी, बाँधी या लगाई जाय। बधन। ४ प्राचीन भारत में, राज्य या शासन की ओर से निकलनेवाली आज्ञा या आदेश। (कौ०) ५. किसी के साथ बाँधकर रखनेवाला अनुराग या सपर्क। ६ ग्रथ, लेख आदि लिखने की क्रिया या भाव। ७ आज-कल साहित्यिक क्षेत्र मे, वह विचारपूर्ण विवरणात्मक और विस्तृत लेख जिसमे किसी विषय के सब अगों का मौलिक और स्वतत्र रूप से विवेचन किया गया हो। (एसे)

विशेष—हमारे यहाँ के प्राचीन साहित्यिक ऐसी व्याख्या को निबध कहते थे, जिसमे सब प्रकार के मतों का उल्लेख और गुण-दोष आदि की आलोचना या विवेचन होता था। आज-कल पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के आधार पर उसकी व्याख्या और स्वरूप का कुछ परिमार्जन हुआ है। ८ गीत। ९ ऐसी चीज जिसे किसी दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो। १० आनाह नामक रोग जिसमे पेशाब बद हो जाता है। ११ नीम का पेड।

निबंधक—पु० [स० नि√बध्+ण्वुल्—अक] १ निबधन करनेवाला व्यक्ति। २ वह अधिकारी जो लेख आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उन्हें राजकीय पजी मे प्रतिलिपि के रूप मे निबधित करता या लिखता है। (रजिस्ट्रार, न्याय और शासन विभाग का) ३ इसी से मिलता-जुलता वह अधिकारी जो किसी विभाग या सस्था के सब प्रकार के लेख रखता या निबधित करता है। जैसे—विश्वविद्यालय या सहयोग-समितियों का निबधक।

निबधन—पु० [स० नि√बध्+ल्युट्—अन] [वि० निबद्ध] १. निबध के रूप मे लाने की क्रिया या भाव। २ बाँधने की क्रिया या भाव। ३ वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। बधन। ४. नियमों आदि मे बाँध कर रखना। व्यवस्था। ५ कर्तव्य आदि के रूप मे होनेवाला बधन। ६ कारण। हेतु। ७ लेखों आदि के प्रामाणिक होने के लिए किसी राजकीय पजी मे लिखा या चढाया जाना। (रजिस्ट्रेशन) ८. वीणा, सारगी, सितार आदि की खूटियाँ जिनमे तार बँधे होते है। उपनाह। कान।

निबंधनी—स्त्री० [स० निबधन+ङीप्] १ बाँधने की वस्तु। २. बेडी।

निबंधी (धिन्)—वि० [स० निबध+इनि] १ बाँधनेवाला। २. किसी के साथ जुडा हुआ। सबद्ध। ३ कारण के रूप मे रहकर कुछ करने या बनानेवाला।

पु०=निबधक।

निब—स्त्री० [अ०] लोहे आदि का वह छोटा तथा चोच के आकार का उपकरण जो कलम के अगले भाग मे लगा रहता है और जिसे स्याही मे डुबोकर लोग लिखते हैं।

निबकौरी—स्त्री०=निमकौडी।

निबटना—अ०=निपटना।

निबटाना†—स०=निपटाना।

निबटारा—पु०=निपटारा।

निबटाव—पु०=निपटारा।

निबटेरा—पु०=निपटारा।

निबडना—अ०=निपटना।

निबड़ा—पुं० [?] एक तरह का घड़ा।

निबद्ध—भू० कृ० [स० नि√बध्+क्त] १. बँधा हुआ। २. रुका हुआ। निरुद्ध। ३. गुथा हुआ। गुफित। ४. कही जडा, बैठाया या किसी मे लगाया हुआ। ५. किसी पर अच्छी तरह ठहरा या लगा हुआ। जैसे—भगवान पर दृष्टि निबद्ध होना। ६. (आज-कल लेख या लेख्य) जो प्रामाणिक या यथार्थ सिद्ध करने के लिए सरकारी पजी मे विधिवत् चढवा या लिखवा दिया गया हो। जिसका निबधन हो चुका हो। (रजिस्टर्ड)

पु० ऐसा गीत जो सगीत-शास्त्र के नियमों के अनुसार हर तरह से ठीक हो और जिसमे ताल, पद, राग, समय आदि के विधानों का पूरा पालन हुआ हो।

निबर—वि०=निर्बल।

निबरना—अ० [स० निवृत, प्रा० निविड्ड] १. बँधी, फँसी या लगी हुई वस्तु का अलग होना। छूटना। २. एक मे मिली हुई वस्तुओ का अलग होना। ३. कष्ट, बधन आदि मे मुक्त होना। उबरना। ४. समाप्त होना। ५ दूर होना। न रह जाना। ६ दे० 'निपटना'।

सयो० क्रि०—जाना।

निबर्हण—पु० [स० नि√बर्ह् (हिंसा)] १. नष्ट करने की क्रिया या भाव। २. मारना। बध।

निबल—वि० [स० निर्बल] [भाव० निबलाई] १ निर्बल। दुर्बल। २. दूसरो की तुलना मे घटिया और कम मूल्य या योग्यता का।

निबह*—पु० [?] समूह। झुड। उदा०—मनहु उडगन निबह आए मिलत तम तजि द्वेपु।—तुलसी।

†पु० १ =निर्वह। २.=निबाह।

निबहना†—अ०=निभना।

निबहुर†—पु० [हि० नि+बहुरना=लौटना] ऐसा स्थान जहाँ से कोई लौटकर न आता हो। यम-द्वार।

निबहुरा—वि० [हि० नि+बहुरना] १. जो जाकर लौटा न हो। २ ऐसा, जिसका लौटकर आना अभीष्ट न हो। (गाली)

निबारना—स० [स० निवारण] निवारण करना। छोडना।

निबाह—पुं० [स० निर्वाह] १. निभने या निभाने की अवस्था, क्रिया या भाव। निर्वाह। २ ऐसी स्थिति मे काम चलाना या दिन बिताना जिसमे साधारणत निश्चितता से और सुख-पूर्वक काम न चलता हो या दिन न बीतते हों। कठिनता से, परतु सहनशीलता-पूर्वक किया जानेवाला निर्वाह। ३ किसी चले आए हुए क्रम या परपरा का अथवा अपनी प्रतिज्ञा, वचन आदि का जैसे-तैसे परतु बराबर किया जानेवाला पालन। जैसे—प्रीति या बडों की चलाई हुई रीति का निबाह।

विशेष—यद्यपि आज-कल 'निबहना' और 'निबाहना' की जगह 'निभना' और 'निभाना' रूप ही अधिक प्रशस्त तथा शिष्ट-सम्मत माने जाते हैं, फिर भी इन क्रियाओ का भाव-वाचक रूप 'निबह' ही अधिक प्रचलित है, 'निभाव' नही।

निबाहक—वि० [स० निर्वाहक] निबाहने या निभानेवाला। निबाह करनेवाला।

निबाहना—स० [स० निर्वहण] १ निर्वाह या निबाह करना।

*२ निस्तार करना। छुडाना। उदा०—आजु स्वामि सांकरे निवाही।—जायसी। ३. दे० 'निभाना'।

निबिड़†—वि०=निविड।

निबुआ†—पु०=नीवू।

निबुकना†—अ०=निपटना।

निबेड़ना—स० [स० निवृत्त, प्रा० निविड्ड] १. वँधी, फँसी या लगी हुई वस्तु को अलग करना। मुक्त करना। छुडाना। २ आपस मे मिली हुई चीजे अलग-अलग करना। छाँटना। ३ अलग या दूर करना। हटाना। ४ छोडना। त्यागना। ५. (काम या झगडा) निपटाना। ६ उलझन दूर करना। सुलझाना। ७ निर्णय या फैसला करना। झगडा निपटाना।

निबेडा—पु० [हिं० निबेडना] १. निबेडने की क्रिया या भाव। २. कष्ट, विपत्ति आदि से होनेवाला उद्धार। ३. एक मे मिली हुई चीजे चुन या छाँटकर अलग-अलग करना। ४ छोड़ देना। त्याग। ५ झगडे का निर्णय या फैसला। ६ दे० 'निपटारा'।

निबेरना—स० १=निबेडना। २. =निपटाना।

निबेरा—पु०=निबेडा (निपटारा)।

निबेहना†—स० १=निबेडना (निपटारा करना)। २=निवाहना।

निबेही*—वि० [स० निर्वेध] १ जिसका वेधन न किया जा सके। वेधरहित। २ छल-कपट आदि से रहित। उदा०—कोउ न मान मद तजेउ निवेही।—तुलसी।

निबोधन—पु० [स० नि√बुध् (जानना)+ल्युट्—अन] १. कोई काम समझने और सीखने की अवस्था या भाव। २ [नि√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन] कोई काम सिखलाने और समझाने की क्रिया या भाव।

निबौरी (बौली)—स्त्री०=निमकौडी (नीम का फल)।

निभ—वि० [स० नि√भा (दीप्ति)+क] अनुरूप, तुल्य या समान प्रतीत होनेवाला। (समस्त पदो के अत मे)

पु० १ प्रकाश। २. अभिव्यक्ति। ३ धूर्ततापूर्ण चाल।

निभना—अ० [हिं० निवहना का पश्चिमी रूप] १ कार्य के सवध मे, किसी तरह पूरा या सपादित होना। २ आज्ञा, आदेश, प्रतिज्ञा, वचन आदि के सवध मे, चरितार्थ और फलित होना। ३ व्यक्ति के सवध मे, पारस्परिक सवध न बिगडते हुए वरताव, व्यवहार या सौहार्द वना रहना। जैसे—दोनो भाइयो मे नही निभेगी। ४ स्थिति के मवध मे, उसके अनुरूप अपने को वनाते हुए रहना या समय विताना।

क्रि० प्र०—जाना।

५ व्यक्ति का अपने कार्य, व्यवहार आदि मे खरा और पूरा उतरना। उदा०—निभे युधिष्ठिर से नर-रत्न, एक साथ है तीन प्रयत्न।—मैथिलीशरण गुप्त। ६ छुट्टी या छुटकारा पाना।

विशेष—यद्यपि यह शब्द मूलत 'निर्वहण' से ही व्युत्पन्न है, अत इसका रूप 'निवहना' ही अधिक सगत है, फिर भी पश्चिमी हिन्दी मे इसका 'निभना' रूप ही प्रचलित है और वही प्रशस्त तथा शिष्ट-सम्मत है।

निभरम—वि० [स० निर्भ्रम] जिसे या जिसमे किसी प्रकार का भ्रम या शका न हो।

क्रि० वि० विना किसी खटके, डर या शका के। वेधडक।

निभरमा—वि०[स० निर्भ्रम]१ जिसका रहस्य खुल या प्रकट हो गया हो। २. जिसका विश्वास उठ गया हो।

निभरोस (सी)—वि०[हिं० नि+भरोसा] [भाव० निभरोसा] १ जिसे किसी का भरोसा न हो। असहाय। निराश्रय। २ जिस पर भरोसा या विश्वास न किया जा सके।

निभाउ†—वि०[हिं० नि+भाव] १. जिसमे कोई भाव न हो। भाव-रहित। २ अच्छे भावो या गुणो से रहित।—उदा० असरन सरन नाम तुम्हारौ हौ कामी कुटिल निभाउ।—सूर।

पु०=निवाह।

निभागा—वि०=अभागा।

निभाना—स०[हिं० निभना का स० रूप] १ उत्तरदायित्व, कार्य आदि का निर्वाह करना। २ आज्ञा, आदेश, प्रतिज्ञा, वचन आदि चरितार्थ या पालित करना। ३. थोडा-वहुत कष्ट सहते या त्याग करते हुए भी इस प्रकार आचरण, वरताव या व्यवहार करते चलना जिससे परस्पर सवध वना रहे और कटुता न उत्पन्न होने पावे। ४ किसी दशा या स्थिति के अनुरूप अपने आपको ढाल या वनाकर समय विताना।

निभालन—पु०[स० नि√भल (देखना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. देखना। दर्शन। २ ज्ञान प्राप्त करना। परिचित होना। मालूम करना।

निभाव—पु०[हिं० निभना] निभने या निभाने की क्रिया या भाव। निर्वाह। निवाह। (देखें)

निभूत—वि०[स० नि-भूत प्रा०स०] वीता हुआ। गत।

निभृत—वि०[स० नि√भृ (धारण)+क्त] १ धरा या रखा हुआ। २. छिपा हुआ। गुप्त। ३ अटल। निश्चित। ४ निश्चित। स्थिर। ५ वद किया हुआ। ६ विनीत। नत। ७ धीर। शात। ८. एकात। निर्जन। सूना। ९ भरा हुआ। पूर्ण। १० अस्त होने के समय या स्थिति के पास पहुँचा हुआ। ११. विश्वसनीय और सच्चा।

निभृतात्मा (त्मन्)—वि०[स० निभृत-आत्मन्, व०स०] १ धीर। २. दृढ।

निभ्रांत†—वि०=निर्भ्रान्त।

निमत्रण—पु०[स० नि√ मत्र (वुलाना)+ल्युट्—अन] [वि० निमत्रित] १ किसी को किसी काम के लिए आदरपूर्वक वुलाने की क्रिया या भाव। आग्रहपूर्वक यह कहना कि आप अमुक कार्य के लिए अमुक समय पर हमारे यहाँ पधारे। २ ब्राह्मणो को भोजन कराने के लिए अपने यहाँ वुलाने की क्रिया या भाव। ३. विवाह आदि शुभ अवसरो पर लोगो को आदरपूर्वक अपने यहाँ वुलाने की क्रिया या भाव। न्योता।

क्रि० प्र०—देना।—भेजना।—मानना।

निमंत्रण-पत्र—पु०[प०त०] वह पत्र जिसमे यह लिखा रहता है कि आप अमुक समय पर हमारे यहाँ आने की कृपा करे।

निमत्रना—स०[स० निमत्रण]निमत्रण देना। समादर वुलाना।

निमत्रित—भू० कृ०[स० नि√मत्र+क्त] जिसे किसी काम या वात के लिए निमत्रण दिया गया हो या मिला हो। वुलाया हुआ। आहूत।

निम—पु०[स०] शलाका। शकु।

†स्त्री०=नीम (पेड)।

निमक†—पु०=नमक।

निमकी—स्त्री०[फा० नमक]१. नीवू का अचार। २ छोटी टिकिया के आकार का एक प्रकार का नमकीन मोयनदार पकवान।
†वि०=नमकीन।

निमकौड़ी—स्त्री०[हिं० नीम+कौडी] नीम का फल जिसमे उसका बीज रहता है और जो देखने मे प्राय कौडी की तरह का होता है।

निमग्न—वि०[स० नि √मग्न् (डूवना)+क्त] [स्त्री० निमग्ना]१ डूवा हुआ। मग्न। २ कार्य, विचार आदि मे पूर्ण रूप से तन्मय। लीन।

निमछड़ा—पु०[हिं० छाँडना]१ ऐसा समय जिसमे कोई काम न हो। २ छुट्टी।

निमज्जक—वि०[स० नि√मज्ज्+ण्वुल्—अक] गोता या डुवकी लगाकर स्नान करनेवाला।

निमज्जन—पु० [स० नि√मज्ज्+ल्युट्—अन]१ गोता लगाकर किया जानेवाला स्नान। २. किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ मे डुवाने की क्रिया या भाव। (इम्मर्शन)३ किसी वात या विपय मे अच्छी तरह मग्न या लीन होना।

निमज्जना—अ०[स० निमज्जन] गोता लगाकर स्नान करना।

निमज्जित—भू० कृ०[स० नि√मज्ज्+क्त]१. जो नहा चुका हो; विशेषत गोता लगाकर नहाया हुआ। २ डूवा हुआ। ३. डुवाया हुआ।

निमटना†—अ०=निपटना।

निमटाना†—स०=निवटाना।

निमटेरा†—पु०=निपटारा।

निमत—वि०[हिं० नि+सं० मत्त] १ जो मत्त न हो। २. जिसका होश ठिकाने हो।

निमता—वि० [हिं० नि+स० मत्त] १. जो मत्त न हो। २. जो उन्मत्त न हो। फलत. धीर और शात।

निमद—पु० [स० नि√मद् (हर्ष)+अप्]स्पष्ट किन्तु मद उच्चारण।

निमय—पु०[स० नि√मि (फेंकना)+अच्]१.अदला-वदली। २. विनिमय।

निमरी—स्त्री०[देश०] मध्यभारत मे होनेवाली एक तरह की कपास।

निमाज—स्त्री०=नमाज (देखें)।
पु०=नवाज।

निमाजी—वि०=नमाजी। (देखे)

निमान—वि०[स० निम्न=गड्ढा]१ नीचा। २ ढालुआँ।
पु० १ नीचा या ढालुआँ स्थान। २ जलाशय।
†वि०[स०] निमग्न।

निमाना—वि०[स० निम्न] [स्त्री० निमानी]१ जो नीचे की ओर हो। नीचा। २ जिसकी नति या प्रवृत्ति नीचे की ओर हो। ३ ढालुआँ। ४. नम्र और विनीत स्वभाववाला। ५. सवसे डर और दवकर रहनेवाला। दव्वू।
†स०=नवाना।
स०[स० निर्माण] निर्माण करना। वनाना। रचना। उदा०—माझ खीनिम निमाइ।—विद्यापति।

निमानिया—वि०[हिं० न मानना] [भाव० निमानी] १. न माननेवाला। २ जो नियम, मर्यादा, विनय आदि का पालन न करता हो। मनमानी करनेवाला। निरकुश।

निमानी—वि०[हिं० नि+मानना]निमानिया। (दे०)
स्त्री० मनमाना आचरण या व्यवहार। स्वेच्छाचार।

निमाल—वि०, पु०=निर्माल्य।

निमि—पु०[स०]१ आँखो की पलके झपकाने की क्रिया या भाव। निमेष। २. महाभारत के अनुसार एक ऋपि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। ३. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनसे मिथिला का विदेह-वश चला था।

निमिख—पुं०=निमिप।

निमित्त—पु० [स० नि√मिद् (स्नेह)+क्त] [वि० नैमित्तिक] १ वह कार्य या वात जिससे किसी दूसरे कार्य या वात का साधन हो। २. व्यक्ति, जो नाम-मात्र के लिए कोई काम कर रहा हो, जब कि वह कार्य करवाने या प्रेरणाशक्ति देनेवाला और कोई होता है। ३. हेतु। ४ चिह्न। लक्षण। ५ शकुन। ६ उद्देश्य। लक्ष्य। ७. वहाना। मिस।
अव्य० किसी काम या वात के उद्देश्य या विचार से। लिए। वास्ते। जैसे—पितरो के निमित्त दान देना।

निमित्तक—वि०[स० निमित्त+कन्] जो निमित्त मात्र हो।
पु०=चुवन।

निमित्त-कारण—पु०[स० कर्म०स०] न्याय मे, वह चीज, वात या व्यक्ति जो किसी के घटित होने, वनने आदि का आधार या मूल कारण हो।

निमि-राज—पु०[स०प०त०] निमिवशीय राजा जनक।

निमिष—पु०[स० नि√मिष् (आँख खोलना)+क] १. पलको का गिरना या वद होना। आँखें मिचना। निमेप। २. काल या समय का उतना मान जितना एक वार पलक गिरने या झपकने मे लगता है। ३. सुश्रुत के अनुसार पलको मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ४. खिले हुए फूलो का मुँह वन्द होना। ५ विष्णु।

निमिष-क्षेत्र—पु०[स० मध्य० स० या प० त०] नैमिषारण्य।

निमिषातर—पु० [सं० निमिप-अतर, ष०त०] पलक गिरने या मारने का समय।

निमिषित—भू० कृ०[स० नि√मिष्+क्त]निमीलित। मिचा या मुँदा हुआ।

निमीलन—पु०[स० नि√मील् (बन्द करना)+ल्युट्—अन] १ पलक गिराना या झपकाना। २ उतना समय जितना एक वार पलक गिरने मे लगता है। निमिष। ३ मनुष्य की आँखे सदा के लिए वद होना। अर्थात् मरना। मौत।

निमीला—स्त्री० [स० नि√मील्+अ—टाप्] निमीलिका। (दे०)

निमीलिका—स्त्री०[स० निमीला+कन्, टाप्, ह्रस्व, इत्व] १ आँख झपकने या वद करने की क्रिया या भाव। २ [नि√मील् +णिच्+वुल् अक, टाप्, इत्व।] छल। व्याज।

निमीलित—भू० कृ० [स० नि√मील्+क्त]१ झपका, झपकाया या वद किया हुआ। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३. मरा हुआ। मृत।

निमुंहा†—वि०[हिं० नि+मुँह] [स्त्री० निमुँही] १ जिसका या जिसे मुँह न हो। विना मुँह का। २ जो कुछ कहने या वोलने के समय भी चुप रहता हो। ३ लज्जा आदि के कारण जिसे कुछ कहने का साहस न होता हो। ४. जो विना कुछ कहे-सुने अत्याचार, कष्ट आदि सह लेता हो। उदा०—निमुँही जानके वो मुझको मार लेते हैं।—जान साहव।

निर्मूंद—वि० [हिं० नि+मुँदना] १. जो मुँदा या बंद किया हुआ न हो। २ मुदित। बंद। उदा०—कौडा आँसू मूँदि कसि, साँकर बरुनी सजल। कीने वदन निर्मूंद, दृग-मलिग डारे रहत।—विहारी।

निमूल†—वि०=निर्मूल।

निमूहा†—वि०[स्त्री० निमुँही]=निमुँहा।

निमेख—पु०=निमेष।

निमेखना—स०[स० निमेष] पलकें गिराना, झपकाना या मूँदना।

निमेट*—वि०[हिं० नि+मिटना] जिसे मिटाया न जा सके। न मिटनेवाला। अमिट। उदा०—काहु कहौं हौं ओहि सो जेई दुख कीन्ह निमेट।—जायसी।

निमेष—पु०[स० नि√मिष्+घञ्]१ आँख की पलक का गिरना या झपकना। २ उतना समय जितना एक बार पलक गिराने या झपकाने मे लगता है। ३ आँख की पलकें फडकने का रोग। ४ एक प्रकार का चना।

निमेषक—पु०[स० निमेष+कन्]१ पलक। २ जुगनूँ।

निमेषकृत—स्त्री०[स० निमेष√कृ (करना)+क्विप्, तुक्]विजली। विद्युत्।

निमेषण—पु०[स० नि√मिष्+ल्युट्—अन] पलकें गिरना या गिराना।

निमोना—पुं०[सं० नवान्न] हरे चने या मटर को पीसकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सालन या रसेदार तरकारी।

निमोनिया—पु० [अ०] अत्यधिक सरदी लगने के कारण होनेवाला एक प्रसिद्ध रोग, जिसमे फेफडे मे सूजन आ जाती है।

निमौनी—स्त्री०[स० नवान्न] ऊख की फसल की कटाई आरभ करने का दिन।

निम्न—वि० [स० नि√म्ना (अभ्यास)+क] १. जो प्रसम, धरातल या स्तर से नीचा हो। २. जो अपेक्षाकृत कम ऊँचे स्तर पर हो। ३ जिसमे तीव्रता, वेग आदि साधारण से कम हो। जैसे—निम्न रक्त-चाप।

पु० चित्र-कला मे दिखाया जानेवाला ऐसा स्थान, जो आसपास के स्थानों से नीचा या गहरा हो।

निम्नग—वि०[स० निम्न√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० निम्नगा] जो नीचे की ओर जाता हो। जिसकी प्रवृत्ति नीचे की ओर हो।

निम्नगा—स्त्री०[स० निम्नगा+टाप्] १. नदी। २ रहस्य सप्रदाय मे, नाडी।

निम्नयोधी (धिन्)—वि०[स० निम्न√युध् (लडना)+णिनि] किले के नीचे से या नीची जमीन पर से लडनेवाला। वि० दे० 'स्थल योधी'।

निम्नांकित—वि०[स० निम्न-अकित, स०त०] १ जिसका अकन नीचे हुआ हो। २ निम्नलिखित।

निम्नारण्य—पु० [स० निम्न-अरण्य, कर्म०स०] पहाड की घाटी। (कौ०)

निम्नोन्नत—वि० [स० निम्न-उन्नत, द्व०स०] (स्थल आदि) जो कहीं से नीचा और कहीं से ऊँचा हो। ऊबड-खाबड।

पु० चित्र-कला मे आवश्यकतानुसार दिखाई जानेवाली ऊँचाई और निचाई। नतोन्नत। उच्चित्र (रिलीफ)

निम्मन†—वि० [देश०] बढिया।

निम्लुक्ति—स्त्री०[स० नि√म्लुच् (गति)+क्तिन्] सूर्यास्त।

निम्लोच—पु०[स० नि√म्लुच्+घञ्] सूर्य का अस्त होना।

निम्लोचनी—स्त्री० [स०] मानसरोवर के पश्चिम मे स्थित वरुण की नगरी।

निम्लोचा—स्त्री०[स०] एक अप्सरा का नाम।

नियंतव्य—वि०[स० नि√यम् (नियत्रण)+व्यत्] जिसे नियंत्रित या नियमित किया जा सके अथवा करना हो।

नियंता (तृ)—वि० [स० नि√यम्+तृच्] [स्त्री० नियत्री]१. नियत्रण करने या रखनेवाला। दूसरो को दबाकर और वश मे रखनेवाला। २. किसी कार्य का उचित रूप मे प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला। प्रबंधक और शासक।

पु० १ विष्णु। २. वह जो घोडे फेरने या निकालने अर्थात् उन्हे चलना आदि सिखाने का काम करता हो। चाबुक-सवार।

नियंत्रक—पु०[सं० नि√यत्र्(निग्रह)+ण्वुल्—अक]=नियता।

नियंत्रण—पु० [स० नि√यंत्र्+ल्युट्—अन]१ किसी प्रकार के नियम या बंधन मे बाँधना। २. किसी को मनमाने क्रिया-कलाप आदि करने से रोकने के लिए उस पर कडे बंधन लगाना। ३ व्यापारिक क्षेत्र मे, शासन की किसी वस्तु का मूल्य स्वय निश्चित करना और वह वस्तु समान मान या मात्रा मे सब को अथवा किसी की आवश्यकता के अनुसार उसे देने का प्रबंध करना। (कट्रोल, उक्त सभी अर्थों मे)

नियंत्रित—भू० कृ०[स० नि√यत्र्+क्त]१. जिस पर नियत्रण किया गया हो या हुआ हो। २ जिसे नियम आदि से बाँधकर ठीक रास्ते पर चलाया या लाया गया हो। ३ अधिकार या वश मे किया या लाया हुआ। वश और शासन मे रखा हुआ।

निय*—वि०[स० निज] अपना। निजी। उदा०—तिय निय हिय जु लगी चलत ..।—विहारी।

नियत—वि० [स० नि√यम्+क्त]१ जो बाँध या रोककर रखा गया हो। बँधा हुआ। पाबद। २ जो नियत्रण या वश मे किया या रखा गया हो। ३. ठीक किया या ठहराया हुआ। निश्चित। जैसे—किसी काम के लिए समय नियत करना। ४ आज्ञा, विधान आदि के द्वारा स्थित किया हुआ। (प्रेस्क्राइब्ड)५ (व्यक्ति) जिसे किसी कार्य या पद पर नियुक्त या मुकर्रर किया गया हो। काम पर लगाया हुआ। (पोस्टेड) जैसे—किसी काम की देख-रेख के लिए अधिकारी नियत करना।

पु० महादेव। शिव।

नियत-श्रावा—पु०[तृ०त०] नाटक मे किसी पात्र का ऐसा कथन, जो सब लोगों को सुनाने के लिए न हो, बल्कि कुछ विशिष्ट पात्रो को सुनाने के लिए ही हो।

नियतांश—पु०[नियत-अश, कर्म०स०] किसी बडी राशि मे से कुछ लोगों के लिए अलग-अलग नियत या निश्चित किया हुआ अश। (कोटा) जैसे—सब लोगों के लिए कपडे या खाद्य पदार्थों का नियतांश स्थिर करना।

नियतात्मा (त्मन्)—वि०[नियत-आत्मन्, ब०स०]अपने आपको वश मे रखनेवाला। जितेंद्रिय। सयमी।

नियताप्ति—स्त्री०[नियता-आप्ति, कर्म०स०] नाटक मे वह स्थिति जिसमे अन्य उपायो को छोड़कर एक ही उपाय से कार्य सिद्ध होने पर विश्वास

प्रकट किया या रखा जाता है। जैसे—अब तो ईश्वर ही हमारा उद्धार कर सकता है।

नियति—स्त्री०[स० नि√यम्+क्तिन्] १ नियत होने की अवस्था या भाव। २ बद्ध होने की अवस्था या भाव। ३. कोई ऐसा बँधा हुआ नियम जिसमे कुछ या कोई भी परिवर्तन न होता या न हो सकता हो। ४ ईश्वर या प्रकृति का विधान जो पहले से नियत होता है और जिसके अनुसार सब कार्य अपने समय पर बिना किसी व्यतिक्रम के और अवश्य-म्भावी रूप से आप से आप होते चलते है। दैव। (डेस्टिनी) ५. प्रारब्ध या भाग्य जो उक्त का अथवा पूर्वकाल मे अपने किये हुए कर्मो का परिणाम या फल माना जाता है और जिस पर मनुष्य का कोई वश नही चलता। अदृष्ट। ६. निश्चित या स्थिर होने की अवस्था या भाव। मुकर्ररी। ७ दुर्गा या भगवती का एक नाम।

नियतिवाद—पु०[प०त०] वह सिद्धात जिससे यह माना जाता है कि (क) ससार मे जो कुछ होता है, वह सब परपरागत कारणो के अवश्य-भावी परिणाम या फल के रूप मे होता है, और (ख) लौकिक कार्यों मे मनुष्य का पुरुषार्थ गौण तथा ईश्वर की इच्छा या प्रकृति की प्रेरणा और विधान ही सबसे अधिक प्रबल होता है। (डिटरमिनिज्म)

विशेष—प्राचीन काल मे इसकी गणना नास्तिक मतो मे की जाती थी।

नियतिवादी (दिन्)—वि०[स० नियति√वद्(बोलना)+णिनि]नियति-वाद-सबधी।

पु० वह जो नियतिवाद का सिद्धात मानता हो अथवा उसका अनुयायी हो। (डिटरमिनिस्ट)

नियतेंद्रिय—वि०[स० नियत-इंद्रिय, ब०स०] जितेंद्रिय।

नियम—पु०[स० नि√यम्+अप्] १. ठीक तरह से चलाने के लिए बाँध या रोक कर रखना। २. प्रतिबध। रुकावट। रोक। ३. आचार-व्यवहार, रीति-नीति आदि के सबध मे प्रणाली या प्रथा के रूप में निश्चित की हुई वे बातें, जिनका पालन आवश्यक कर्तव्य के रूप मे होता है। कायदा। (रूल) जैसे—सस्था या समाज का नियम; राज्यशासन के नियम। ४ ऐसा निश्चित सिद्धान्त जो परम्परा से चला आ रहा हो और जिसका पालन किसी काम या बात मे सदा एक-सा होता रहता हो। दस्तूर। परपरा। जैसे—प्रकृति का नियम। ५ अनुशासन। नियत्रण। ६ कोई काम या बात नियमित रूप से अथवा किसी विशेष ढंग से करने या करते रहने का क्रम। जैसे—उनका नियम है कि वे रोज सबेरे उठकर टहलने जाते हैं। ७. योग के आठ अंगो मे से एक जिसके अन्तर्गत तपस्या, दान, शुचिता, सतोष, स्वाध्याय आदि बातें आती हैं।(योग के यम नामक अग की तुलना मे नियम नामक अग का पालन उतनी कठोरता या दृढ़ता से करना आवश्यक नही होता।) ८. मीमासा मे वह विधि जिससे अप्राप्त अश की पूर्ति होती है। ९. साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालकार, जिसमे किसी काम या बात के एक ही व्यक्ति मे या स्थान पर स्थित होने का उल्लेख होता है। जैसे—अब तो इस विषय के आप ही एक-मात्र ज्ञाता (या पडित) हैं। १०. किसी प्रकार की लगाई हुई शर्त। ११. विष्णु। १२. शिव।

नियम-तंत्र—वि०[प०त०] जो किसी नियम के द्वारा चलता या चलाया जाता हो।

नियमत- (तस्)—अव्य० [सं० नियम+तस्] नियम के अनुसार।

नियमन—पु०[स० नि√यम्+ल्युट्—अन] [वि० नियमित, नियम्य] १ कोई काम ठीक तरह से चलाने अथवा लोगो को ठीक तरह से रखने के लिए नियम आदि बनाने और उनकी व्यवस्था करने की क्रिया या भाव। ठीक तरह से काम चलाने के लिए कायदे-कानून बनाना। (रेगुलेटिंग) २. नियम, बधन आदि के द्वारा रोकना। निरोध।(रेस्ट्रि-क्शन) ३. नियत्रण। ४. शासन। ५. दमन। निग्रह।

नियम-पत्र—पु०[प०त०] प्रतिज्ञा-पत्र। शर्त-नामा।

नियम-पर—वि०[स०त०] नियम के अनुसार चलने, चलाया जाने या होनेवाला।

नियम-बद्ध—वि०[तृ० त०]१. नियम या नियमो से बँधा हुआ। २. दे० 'नियमित'।

नियम-स्थिति—स्त्री०[ब०स०] तपस्या।

नियमापत्ति—स्त्री०[नियम-आपत्ति, स०त०] आधुनिक राजनीति मे किसी सभा-समिति मे बने हुए नियमों या विधानो अथवा परपराओं या रूढियो के विरुद्ध कोई आचरण, कार्य या व्यवहार होने पर उसके सबध मे की जानेवाली आपत्ति जिसके सबध मे अतिम निर्णय करने का अधिकार सभापति को होता है। (प्वाइट ऑफ आर्डर)

नियमावली—स्त्री०[नियम-आवली, प० त०] १. किसी संस्था आदि से संबध रखनेवाले नियमो की विवरण पुस्तिका। २. किसी कार्य-क्षेत्र या विभाग के कार्य-संचालन अथवा कार्यकर्ताओं का पथ-प्रदर्शन करने-वाले नियमो आदि की पुस्तिका। (मैनुअल)

नियमित—भू० कृ० [सं० नियम+णिच्+क्त]१. नियमो के अनुसार बँधा या स्थिर किया हुआ। नियम-बद्ध। २ जो नियम, विधान आदि के अनुकूल हो। ३ जो बराबर या सदा किसी नियम के रूप मे होता आ रहा हो। (रेगुलर) जैसे—नियमित रूप से अपने समय पर कार्यालय मे उपस्थित होना।

नियमी (मिन्)—वि०[स० नियम+इनि] १.नियम के अनुसार होनेवाला। २. नियम-सबधी। ३. (व्यक्ति) जो नियम या नियमो का पालन करता हो।

नियम्य—वि०[स० नि√यम्+यत्]१. जिसके सबध मे नियम बनाया जा सकता हो। जो नियम बनाकर बाँधा जा सकता हो या बाँधा जाने को हो। नियमो के क्षेत्र में आने या लाये जाने के योग्य। २. जो नियत्रण या शासन मे रखा जा सकता हो या रखा जाने को हो।

नियर—अव्य०[स० निकट, प्रा० निअड]समीप। पास। नजदीक।

नियराई—स्त्री०[हि० नियर=निकट+आई (प्रत्य०)]निकटता। सामीप्य।

नियराना—अ०[हि० नियर+आना]पास या समीप आना या पहुँचना। स० पास या समीप पहुँचाना।

नियरे—अव्य०=नियर (नजदीक)।

नियाज—स्त्री०[फा०नियाज़]१ प्रार्थना। २. इच्छा। ३. जान-पहचान। परिचय। ४ आज्ञा। ५ मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जाने-वाला भोजन। (मुसल०)

नियाजमंद—वि०[फा०] [भाव० नियाज़मदी] १. प्रार्थना करने-वाला। २ इच्छुक। ३. परिचित। ४. आज्ञाकारी।

नियान—अव्य०, पु०=निदान।

नियाम—पुं०[सं० नि√यम्+घञ्] नियम।
पुं०[फा०] तलवार का कोश। मियान।

नियामक—वि०[सं० नि√यम्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० नियामिका] १ नियम या विधान बनानेवाला। २. नियमों के क्षेत्र या बंधन में रखने या लानेवाला। ३ प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला।
पुं० मल्लाह। माँझी।

नियामक-गण—पुं०[ष०त०] पारे को मारनेवाली औषधियों का समूह। (रसायन)

नियामत—स्त्री०[अ०] १ ईश्वर का दिया हुआ धन या वैभव। २ धन। संपत्ति। ३. अलभ्य या दुर्लभ पदार्थ। ऐसी बहुत बढ़िया चीज जो जल्दी न मिलती हो।

नियार—पुं०[हिं० न्यारा?]जौहरियों, सुनारों आदि की दुकान का वह कूड़ा-करकट जो न्यारिये लोग ले जाकर साफ करते है और जिसमें से कभी-कभी बहुमूल्य धातुओं, रत्नों आदि के कण निकालते हैं।

नियारना*—स० [हिं० नियार]जौहरियों, सुनारों आदि का कूड़ा-करकट साफ करके उसमें से बहुमूल्य धातुओं, रत्नों आदि के कण अलग करना।

नियारा†—वि०=न्यारा।
पुं०=नियार।

नियारिया—पुं०=न्यारिया।

नियारे†—अव्य०=न्यारे।

नियाव†—पुं०=न्याय।

नियुक्त—भू० कृ० [सं० नि√युज्(जोड़ना)+क्त]१ जिसका नियोग या नियोजन किया गया हो अथवा हुआ हो। २ जो किसी काम या पद पर नियत किया या लगाया गया हो। तैनात या मुकर्रर किया हुआ। ३ जो किसी काम के लिए उद्यत, तत्पर या प्रेरित किया गया हो। ४ ठहराया या निश्चित किया हुआ। स्थिर। जैसे—समय नियुक्त करना।

नियुक्ति—स्त्री०[सं० नि√युज्+क्तिन्] १. नियुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी व्यक्ति को किसी काम या पद पर लगाने की क्रिया या भाव। तैनाती। मुकर्ररी। (एप्वाइंटमेंट)

नियुत—वि०[सं० नि√यु (मिलाना)+क्त] दस लाख।
पुं० १. दस लाख की संख्या। २. पुराणानुसार वायु के घोड़े का नाम।

नियुत्वत्—पुं०[सं० नियुत+मतुप्, मस्य व] वायु। हवा।

नियुद्ध—पुं०[सं० नि√युध् (लड़ना)+क्त]१. हाथा-बाँही। २. कुश्ती।

नियोक्तव्य—वि० [सं०नि√युज्+तव्यत्] जिसका नियोजन किया जाने को हो या किया जा सकता हो ।

नियोक्ता (क्तृ)—वि०[सं० नि√युज+तृच्]१ नियुक्त या नियोजित करनेवाला। २. लोगों को अपने यहाँ काम पर नियुक्त करनेवाला। (एम्पलायर)

नियोग—पुं०[सं० नि√युज्+घञ्] १ नियुक्त या नियोजित करने की अवस्था, क्रिया या भाव। नियत या मुकर्रर करना। २. किसी पदार्थ का उपयोग या व्यवहार। काम में लाना। ३ आज्ञा। आदेश। ४. निश्चय। ५. प्रेरणा। ६ अवधारण। ७ आयास। प्रयत्न। ८ प्राचीन भारतीय राजनीति में, कोई आपत्ति टालने या दूर करने का कोई विशिष्ट उपाय। ९. प्राचीन भारतीय आर्यों में प्रचलित एक प्रथा जिसके अनुसार किसी निःसंतान विधवा से संतान उत्पन्न कराने के लिए उसके देवर या पति के किसी उपयुक्त सगोत्री को उस विधवा के साथ संभोग करने के लिए नियत या नियुक्त किया जाता था। (धर्मशास्त्रों ने बाद में यह प्रथा वर्जित कर दी थी)

नियोगस्थ—वि० [सं० नियोग√स्था (ठहरना)+क] जिसका नियोग हुआ हो।

नियोगी (गिन्)—वि० [सं० नियोग+इनि] १. नियुक्त। २ (किसी स्त्री के साथ) नियोग करनेवाला।

नियोग्य—वि०[सं० नि√युज्+ण्यत्](पुरुष या स्त्री) जिसका या जिससे नियोग हो सकता हो।
पुं० प्रभु। मालिक। स्वामी।

नियोजक—पुं० [सं० नि√युज्+णिच्+ण्वुल्—अक] वह जो दूसरों को किसी काम पर लगाता हो।

नियोजन—पुं०[सं० नि√युज्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० नियोजित, नियोज्य, नियुक्त] १. दूसरों को किसी काम में लगाने या नियुक्त करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'आयोग'।

नियोजना*—स० [सं० नियोजन] किसी को काम पर नियुक्त करना या लगाना। नियोजन करना।

नियोजनालय—पुं०[सं० नियोजन-आलय, ष०त०] वह कार्यालय जो बेकारों को नौकरी आदि पर लगाने की व्यवस्था करता है। (एम्प्लायमेंट एक्सचेंज)

नियोजित—भू० कृ०[सं० नि√युज्+णिच्+क्त] जिसका कहीं नियोजन हुआ हो। काम पर लगाया हुआ।

नियोज्य—वि०[सं० नि√युज्+णिच्+यत्] जिसका नियोजन होने को हो या किया जाने को हो।

नियोद्धा (द्धृ)—पुं०[सं० नि√युध+तृच्]कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान।

निर्—अव्य०[सं०√नृ(ले जाना)+क्विप्, इत्व] एक अव्यय जो स्वरों या कोमल व्यंजनों से आरम्भ होनेवाले शब्दों से पहले (निस् के स्थान पर) लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—अलग, दूर, बाहर, रहित, हीन आदि।
जैसे—निरंकुश, निरंतर, निरक्ष, निरर्थक, निराहार, निरुत्तर, निरुपाय आदि।

निरंक—वि० [सं० निर्—अंक, ब० स०] (कागज) जिस पर कोई अंक (अक्षर या चिह्न) न हो। कोरा। (ब्लैंक)

निरंकार—वि०, पुं०=निराकार।

निरंकुश—वि० [सं० निर्—अंकुश, ब० स०] [भाव० निरंकुशता] १. जिस पर किसी प्रकार का अंकुश या नियंत्रण न हो। २. (व्यक्ति) जो स्वेच्छापूर्वक मनमाना आचरण या व्यवहार करता हो। ३. (शासक) जो मनमाना और अत्याचारपूर्ण शासन करता हो। (डेस्पाट)

निरंकुशता—स्त्री० [सं० निरंकुश+तल्—टाप्] १. निरंकुश होने की अवस्था या भाव। २. मनमाना और अत्याचारपूर्ण आचरण या व्यवहार।

निरंकुश-शासन—पुं० [
किसी एक व्यक्ति (
निवियों का कोई

निरंग—वि० [स० निर्–अग, व० स०] जिसका या जिसमे कोई अग न हो। अग-हीन।
पु० रूपक अलकार का एक भेद। (साहित्य)
वि० [हिं० नि+रग] १ जिसका कोई एक रग न हो। २. बेमेल। ३ खालिस। विशुद्ध।
अव्य० निपट। निरा।

निरजन—वि० [स० निर्–अजन व० स०] १. (व्यक्ति) जिसने अजन न लगाया हो। २. (नेत्र) जिसमे अंजन न लगा हो। ३ सब प्रकार के दुर्गुणो और दोषो से रहित। ३ माया, मोह आदि से निर्लिप्त या रहित।
पु० १ निर्गुण ब्रह्म। परमात्मा। २ महादेव। शिव। ३. वह परम शक्ति जो सृष्टि, स्थिति और प्रलय करती है। (कबीर पथी)

निरजना—स्त्री० [स० निरजन+टाप्] १. पूर्णिमा। २ दुर्गा।

निरंजनी—वि० [स० निरजन] १ निरजन सबधी। २ निरजनी सप्रदायवालो का।
पु० १ निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला एक प्रसिद्ध धार्मिक सप्रदाय जिसके प्रवर्तक स्वामी निरंजन भगवान थे। २. उक्त संप्रदाय का अनुयायी साधु।

निरंतर—वि० [स० निर्–अतर, व० स०] १ अंतर रहित। जिसमे या जिसके बीच अतर या दूरी न हो। २. जिसका क्रम बराबर चला गया हो। जिसकी परपरा बीच मे कही टूटी न हो। ३. घना। निबिड। ४ सदा एक-सा बना रहनेवाला। स्थायी। जैसे—निरतर नियम। ५ जिसमे कोई अतर या भेद न हो। तुल्य। समान। ६ जो अतर्धान या आँखो से ओझल न हो।
क्रि० वि० १ बराबर। लगातार। २. सदा। हमेशा।

निरंतराभ्यास—पु० [स० निरतर–अभ्यास, कर्म० स०] १. किसी काम या बात का निरतर (नित्य या बराबर) किया जानेवाला अभ्यास। २. स्वाध्याय। (देखें)

निरंतराल—वि० [स० निर्–अतराल, व० स०] जिसमे अतराल (अवकाश) न हो।

निरंध—वि० [स० निर्–अध, प्रा० स०] १. बहुत अधिक या पूरा अन्धा। निरा अधा। २. ज्ञान, बुद्धि आदि से बिलकुल रहित। ३ बहुत अधिक या घोर अधकार से युक्त। उदा०—जाका गुरु भी अधला, चेला खरा निरधा।—कबीर।
वि० [स० निरधस्] बिना अन्न का। निरन्न।

निरंबर—वि० [स० निर्–अंबर, ब० स०]=दिगबर (नगा)।

निरबु—वि० [स० निर्–अबु, व० स०] १ जिसमे जल या उसका कोई अश न हो। निर्जल। २. जो बिना जल पीये रहता हो। ३. जिसमे जल का उपयोग या सपर्क न हो सकता हो। निर्जल। जैसे—निरबु व्रत।

निरंभ—वि० [स० निरभस्] १. निर्जल। २. जो बिना पानी पीये रहता या रह सकता हो।

निरंश—वि० [स० निर्–अश, व० स०] (व्यक्ति) जिसे अपना प्राप्य अश न मिला हो या न मिल सकता हो।

निरकार*—वि०, पु०=निराकार।

निरकेवल—वि० [स० निस्+और केवल] १. जिसमे किसी तरह का मेल न हो। खालिस। विशुद्ध। २. साफ। स्वच्छ।
अव्य०=केवल।

निरक्ष—वि० [स० निर्–अक्ष, व० स०] १. बिना पासे का। २. जो पृथ्वी के मध्य भाग मे हो।
पु० पृथ्वी की भूमध्य रेखा। (ईक्वेटर)

निरक्ष-देश—पु० [प० त०] भूमध्य रेखा के आसपास के प्रदेश जिनमे रात-दिन का मान प्राय बराबर रहता है।

निरक्षन†—पु०=निरीक्षण।

निरक्षर—वि० [स० निर्–अक्षर व० स०] १. जिसमे अक्षर का प्रयोग न हो। २. जिसका अक्षर से कोई सबध न हो, अर्थात् जो कुछ भी पढा-लिखा न हो। ३. जो एक अक्षर भी न बोल रहा हो। अर्थात् बिलकुल चुप।

निरक्ष-रेखा—स्त्री० [प० त०] नाडी-मंडल।

निरखना—स० [स० निरीक्षण] १. ध्यानपूर्वक देखना। २ निरीक्षण करने के लिए देखना।

निरग—पु०=नृग।

निरगुन†—वि०=निर्गुण।

निरगुनिया†—वि०=निरगुनी।

निरगुनी—†वि० [स० निर्गुण] १. जिसमे कोई गुण या विशेषता न हो। २. दे० 'निर्गुण'।

निरग्नि—वि० [सं० निर्–अग्नि, व० स०] अग्निहोत्र न करनेवाला।

निरघ—वि० [स० निर्–अघ, व० स०] जिसने अघ या पाप न किया हो निष्पाप।

निरचू—वि० [स० निश्चित] १. जिसे अपने काम से अवकाश या छुट्टी मिल गई हो। २. जो हाथ में काम न होने के कारण खाली हो। ३. निश्चित।

निरच्छ—वि० [स० निरक्षि] १. जिसे आँखें न हो। २. जिसे दिखाई न दे। अधा।

निरजर*—वि०, पु०=निर्जर।

निरजल—वि०=निर्जल।

निरजी—स्त्री० [देश०] सगमर्मर तराशने की सगतराशो की एक तरह की टाँकी।

निरजोस—पु० [स० निर्यास] १ निचोड। २ निर्णय। ३ दे० 'निर्यास'।

निरजोसी—वि० [हिं० निरजोस] १. निचोड निकालनेवाला। २ निर्णय करनेवाला।

निरझर†—पु०=निर्झर।

निरझरनी—स्त्री०=निर्झरणी।

निरझरी—स्त्री०=निर्झरी।

निरणै†—पु०=निर्णय।

निरत—वि० [स० नि√रम् (रमना)+क्त] किसी काम मे लगा हुआ। रत। लीन।
†पु० [स० नृत्य] नाच।

निरतना—स० [स० नर्तन] नाचना।

निरति—स्त्री० [सं० नि√रम्+क्तिन्] १ अच्छी तरह किसी काम या बात में रत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। अत्यंत रति। २. किसी काम में लिप्त या लीन होने की अवस्था या भाव।
†स्त्री० [?] सुख।

निरतिशय—वि० [सं० निर्-अतिशय, प्रा० स०] जिससे बढ़कर या अतिशय और कुछ न हो सके। हद दरजे का।
पुं० परमात्मा।

निरत्यय—वि० [सं० निर्-अत्यय, ब० स०] १ जो खतरे, भय आदि से अलग, दूर या परे हो। २ दोषरहित।

निरदई†—वि०=निर्दय।

निरदोषी—वि०=निर्दोष।

निरधण*—वि० [सं० नि+धन्या] स्त्री-रहित। उदा०—नैरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर।—प्रिथीराज।
†वि०=निर्धन।

निरधातु—वि० [सं० निर्धातु] १. जो या जिसमें धातु न हो। २ जिसके शरीर में धातु (वीर्य या शक्ति) न हो। बहुत ही कमजोर या दुर्बल।

निरधार—क्रि० वि० [सं० निर्धारण] निश्चित रूप से। उदा०—पाती पीछे-पीछे हम आवत हैं निरधार।—सेनापति।
वि०=निराधार।
पुं०=निर्धारण।

निरधारना—स० [सं०निर्धारण] १. निश्चित या स्थिर करना। ठहराना। २. मन में धारण करना या समझना।

निरधिष्ठान—वि० [सं० निर्-अधिष्ठान, ब० स०] १ जिसका अधिष्ठान न हुआ हो। २ जिसका कोई आधार या आश्रय न हो। निराधार।

निरध्व (न्)—वि० [सं० निर्-अध्वन्, ब० स०] १ जो रास्ता भूल गया हो। २. भटकनेवाला।

निरनउ (य)†—पुं०=निर्णय।

निरना—वि०=निरन्ना।

निरनुग—वि० [सं० निर्-अनुग, ब० स०] जिसका कोई अनुग या अनुयायी न हो।

निरनुनासिक—वि० [सं० निर्-अनुनासिक, ब० स०] (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय नाक से ध्वनि निकलती हो। अनुनासिक का विपर्याय।

निरनुबंध—पुं० [सं० निर्-अनुबंध, प० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, ऐसी कार्रवाई जिसके द्वारा निःस्वार्थ भाव से किसी दूसरे राजा या राष्ट्र का कोई उद्देश्य या कार्य सिद्ध कराया जाय। यह अर्थनीति का एक भेद कहा गया है।

निरनुरोध—वि० [सं० निर्-अनुरोध, ब० स०] १ अनुरोध से रहित। २ सद्भावशून्य। अमैत्रीपूर्ण।

निरनै†—पुं० =निर्णय।

निरन्न—वि० [सं० निर्-अन्न, ब० स०] १. अन्न-रहित। बिना अन्न का। २ जिसने अभी तक अन्न न खाया हो। निराहार।

निरन्ना—वि० [सं० निरन्न] जिसने अभी तक अन्न न खाया हो। निराहार।
पद—निरन्ने मुँह=बिना कुछ खाये हुए। जैसे—यह दवा निरन्ने मुँह खाइयेगा।

निरन्वय—वि० [सं० निर्-अन्वय, ब० स०] १ जिसके आगे संतान न हो। २. जिसका किसी से लगाव या संबंध न हो। ३ जिसका ठीक या पूरा पता न चला हो।

निरपत्रप—वि० [सं० निर्-अपत्रप, ब० स०] १ निर्लज्ज। २ धृष्ट।

निरपना—वि० [हिं० निर+अपना] जो अपना न हो अर्थात् पराया या बेगाना।

निरपराध—वि० [सं० निर्-अपराध, ब० स०] जिसने कोई अपराध न किया हो। निर्दोष।
क्रि० वि० बिना किसी अपराध के। बिना अपराध किये।

निरपराधी†—वि०=निरपराध।

निरपवर्त्त—पुं० [सं० निर्-अपवर्त्त ब० स०] पीछे न मुड़नेवाला।

निरपवाद—वि० [सं० निर्-अपवाद, ब० स०] १. जिसमें कोई अपवाद न हो। बिना अपवाद का। २. जिसमें अपवाद, अर्थात् निंदा या बुराई की कोई बात न हो। अच्छा। भला। ३ निरपराध। निर्दोष।

निरपाय—वि० [सं० निर्-अपाय, ब० स०] १ जिसमें दोष या बुराई न हो। अच्छा। भला। २. जो नश्वर न हो। अविनश्वर।

निरपेक्ष—वि० [सं० निर्-अपेक्षा, ब० स०] [भाव० निरपेक्षी] १ जिसे किसी चीज की अपेक्षा न हो। २ जिसे किसी की चिंता या परवाह न हो। बे-परवाह। ३. जो किसी के अवलंब, आधार या आश्रय पर न हो। ४. जो किसी से कुछ लगाव या संपर्क न रखता हो। तटस्थ। ५ किसी से बचकर या अलग रहनेवाला। जैसे—भागवत-निरपेक्ष=वैष्णव भागवतों से दूर या बचकर रहनेवाला। ६ दे० 'निष्पक्ष'।
पुं० १. अनादर। २. अवज्ञा। अवहेला।

निरपेक्षा—स्त्री० [सं० निर्-अपेक्षा, प्रा० स०] १ वह स्थिति जिसमें किसी चीज या बात की अपेक्षा न हो। २ लगाव या संपर्क का अभाव। ३. अवज्ञा। ४ ला-परवाही। ५. निराशा।

निरपेक्षित—वि० [सं० निर्-अपेक्षित, प्रा० स०] १ जिसको किसी की अपेक्षा न हो। २ जिससे कोई लगाव असंपर्क न रखा गया हो।

निरपेक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० निर्-अप√ईक्ष् (देखना)+णिनि] निरपेक्ष। (दे०)

निरफल—वि०=निष्फल।

निरबंध—वि० = निर्बंध।

निरबसिया—वि० = निरबसी।

निरबसी—वि० [सं० निर्वंश] जिसके आगे वंश चलानेवाली संतान न हो। (गाली या शाप)

निरबर्ती—पुं० [सं० निवृत्ति] १ त्यागी। २ विरक्त।

निरबल—वि०=निर्बल।

निरबहना—अ०=निबहना (निभना)।

निरबान—पुं०=निर्वाण।

निरबाहना—स०=निबाहना (निभाना)।

निरबिसी—स्त्री०=निर्विषी (ओषधि)।

निरखेरा—पु०=निबेड़ा (निपटारा)।
निरभय—वि०=निर्भय।
निरभर—वि०=निर्भर।
निरभिमान—वि० [स० निर्–अभिमान, ब० स०] जिसमें या जिसे अभिमान या घमंड न हो। अहंकार-रहित।
निरभिलाष—वि० [स० निर्–अभिलाप, ब० स०] जिसे किसी काम या बात की अभिलाषा या इच्छा न हो।
निरभेद—वि० [स० निर्+भेद] जो किसी प्रकार का भेद-भाव न रखता हो। भेद-भावशून्य।
निरभ्र—वि० [स० निर्–अभ्र, ब० स०] (आकाश) जिसमें अभ्र या बादल न हो।
निरमना—स० [स० निर्माण] निर्मित करना। बनाना।
निरमर—वि० [हिं० निर+मरना] १ जो कभी मरे नहीं। अमर। २ जो जल्दी नष्ट न हो।
वि०=निर्मल।
निरमल—वि०=निर्मल।
निरमली—स्त्री०=निर्मली। (देखे)
निरम सोर—पु० [निरम ?+मोर=जड] एक प्रकार की जडी जिससे अफीम का मादक प्रभाव दूर हो जाता है। (पजाब)
निरमान†—पु०=निर्माण।
निरमाना—स० [स० निर्माण] निर्मित करना। बनाना। रचना।
निरमायल†—पु०=निर्माल्य।
निरमित्र—वि० [स० निर्–अमित्र, ब० स०] जिसका कोई अमित्र अर्थात् शत्रु न हो।
पु० १. त्रिगर्तराज का एक पुत्र जिसने कुरुक्षेत्र मे वीरगति प्राप्त की थी। २. नकुल (पाडव) का एक पुत्र।
निरमूल†—वि०=निर्मूल।
निरमूलना—स० [स० निर्मूलन] १ निर्मूल करना। जड़ से उखाड़ना। २ इस प्रकार पूरी तरह से नष्ट करना कि फिर से पनपने या बढने की संभावना न रह जाय। समूल नष्ट करना।
निरमोल—वि०=अनमोल।
निरमोलिक—वि०=निरमोल (अनमोल)।
निरमोही—वि०=निर्मोही।
निरय—पु० [स० निर्√इ (गति)+अच्] नरक।
निरयण—वि०[स०निर्–अयन, ब०स०] १. अयन-रहित। २. (ज्योतिष मे काल-गणना) जो अयन अर्थात् राशि-चक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित न हो।
पुं० भारतीय ज्योतिष मे काल-गणना और पंचाग बनाने की वह विधि (सायन से भिन्न) जो अयन अर्थात् राशि-चक्र की गति पर अवलबित या आश्रित नहीं होती, बल्कि जिसमे किसी स्थिर तारे या बिंदु से सूर्य के भ्रमण का आरभ स्थान माना जाता है।
विशेष—सूर्य राशि-चक्र मे बराबर घूमता या चक्कर लगाता रहता है। प्राचीन ज्योतिषी रेवती नक्षत्र को सूर्य के चक्कर का आरभ स्थान मानकर काल-गणना करते थे, और वहीं से वर्ष का आरंभ मानते थे। पर आगे चलकर पता चला कि इस प्रकार की गणना मे एक दूसरी दृष्टि से त्रुटि है। बसत सपात और शारद सपात के समय दिन और रात दोनों बराबर होते हैं, इसलिए बसंत-सपात के दिन से गणना करने पर जो वर्ष-मान स्थिर होता था, वह उक्त पुरानी विधि के वर्ष-मान से ८ ६ पल बडा होता था। यह नई गणना-विधि अयन अर्थात् राशि-चक्र की गति पर आश्रित थी; इसलिए इसे सायन गणना कहने लगे, और इसके विपरीत पुरानी गणना-विधि निरयण कही जाने लगी। फिर भी बहुत दिनों से प्राय. सारे भारत मे ग्रहलाघव आदि ग्रथों के आधार पर पचागों मे काल-गणना उसी पुरानी निरयण विधि से होती आई है, परन्तु और आगे चलने पर पता चला कि सायन गणना-विधि मे भी कुछ वैसी ही त्रुटि है, जैसी निरयण गणना-विधि मे है, क्योंकि दोनों मे दृश्य या प्रत्यक्ष गणित मे कुछ न कुछ अतर पड़ता है; इसलिए अनेक आधुनिक विचारशील ज्योतिषियो का आग्रह है कि किसी प्रकार दोनों विधियो की त्रुटियाँ दूर करके पचाग दृश्य अर्थात् नक्षत्रों, राशियों आदि की ठीक और वास्तविक स्थिति के आधार पर और उसी प्रकार बनने चाहिएँ, जिस प्रकार उन्नत पाश्चात्य देशों मे नॉटिकएक, मेनक आदि बनते हैं।
निरर्गल—वि० [स० निर्–अर्गल, ब० स०] १. जिसमे अर्गल न हो। २. जिसमे या जिसके मार्ग मे कोई बाधा या रुकावट न हो।
निरर्थ—वि० [स० निर्–अर्थ, ब० स०]=निरर्थक।
निरर्थक—वि० [स० निर्–अर्थ, ब० स०, कप्] १. (पद या शब्द) जिसका कोई अर्थ न हो। अर्थरहित। २. (कार्य या प्रयत्न) जिससे प्रयोजन सिद्ध न होता हो। ३ व्यर्थ। निष्फल।
पु० न्याय के २२ निग्रह-स्थानों मे से एक जो उस दशा मे माना जाता है, जब वादी के कथन का उत्तर इतना उलटा-पुलटा होता है कि उसका कुछ अर्थ ही न निकले।
निरवृद्धि—पु० [स०] एक नरक का नाम।
निरलस—वि० [स० निरालस्य] जिसमें आलस्य न हो। आलस्य से रहित। उदा०—निरलसरवे स्वय, अहर्निशि रहते जाग्रत।—पन्त।
निरवकाश—वि० [स० निर्–अवकाश ब० स०] १. (स्थान) जिसमें अवकाश या खाली जगह न हो। २. (व्यक्ति) जिसे अवकाश या फुरसत न हो।
निरवग्रह—वि० [सं० निर्–अवग्रह, ब० स०] १ प्रतिबध से रहित। स्वतंत्र। स्वच्छंद। २. जो किसी दूसरे की इच्छा पर अवलंबित या आश्रित न हो। ३ जिसमे कोई बाधा या विघ्न न हो। निर्विघ्न।
निरवच्छिन्न—वि० [स० निर्–अवच्छिन्न, प्रा० स०] १. जिसका क्रम या सिलसिला न टूटा हो। अनवच्छिन्न। २ निर्मल। विशुद्ध।
क्रि० वि० १. निरतर। लगातार। २. निपट। निरा।
निरवद्य—वि० [स० निर्–अवद्य, प्रा० स०] [स्त्री० निरवद्या] जिसमें कोई ऐब या दोष न हो और इसी लिए जिसे कोई बुरा न कह सके। अनिंद्य।
निरवधि—वि० [स० निर्–अवधि, ब० स०] १ जिसकी अवधि नियत न हो। २. सीमा-रहित।
क्रि० वि० निरतर। लगातार।

निरवलब—वि० [सं० निर्-अवलव, व० स०] १. जिसका कोई अवलव, आश्रय या सहारा न हो। २ जिसका कोई ठौर-ठिकाना या रहने का स्थान न हो।

निरवशेष—वि० [स० निर्-अवशेष, व० स०] सपूर्ण। समग्र।

निरवसाद—वि० [स० निर्-अवसाद, व० स०] अवसाद से रहित।

निरवसित—वि० [म० निर्-अवसित, प्रा० स०] १ (व्यक्ति) जिसके स्पर्श से खाने-पीने की चीजें और उनके पात्र अपवित्र या अशुद्ध हो जायें अर्थात् छोटी जाति का। २ जाति से निकाला हुआ। जैसे—चाडाल।

निरवस्कृत—वि० [स० निर्-अवस्कृत, प्रा० स०] साफ किया हुआ। परिष्कृत।

निरवहलिका—स्त्री० [स० निर्-अव√हल् (जोतना)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ चहारदीवारी। प्राचीर। २ चहारदीवारी से घिरा हुआ स्थान। वाडा।

निरवाना—स० [हिं० निराना का प्रे०] निराने का काम दूसरे से कराना। †पु०=निवारना।

निरवार—पु० [हिं० निरवारना] १ निरवारने की क्रिया या भाव। २ छुटकारा। निस्तार।

निरवारना—स० [स० निवारण] १ निवारण करना। २ झझट, बखेडा अथवा बाधक तत्त्व या बात दूर करना या हटाना। ३. बधन आदि से मुक्त या रहित करना। ४ कष्ट या सकट दूर करना। ५ छोडना। त्यागना। ६ सुलझाना। ७ झगडा या विवाद निपटाना।

निरवाह†—पु०=निर्वाह।

निरवाहना—स० [स० निर्वाह] निर्वाह करना।

निरवेद—पु०=निर्वेद।

निरव्यय—वि० [स० निर्-अव्यय, प्रा० स०] नित्य। शाश्वत।

निरशन—वि० [स० निर्-अशन, व० स०] १ जिसने खाया न हो या जो न खाय। २ जिसमे भोजन करना मना हो।
पु० भोजन न करने अर्थात् निराहार रहने की अवस्था या भाव। उपवास।

निरसक†—वि०=निःशक।

निरस—वि० [हिं० नि+रस] १ जिसमे रस न हो। रस से रहित। २ जिसमे कोई स्वाद न हो। फीका। ३ किसी की तुलना मे घटकर या हीन। ४ रूखा। सूखा। ५ विरक्त।
*पु०=निरसन।

निरसन—पु० [स० निर्√अस् (फेकना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निरसित, निरस्त, वि० निरस्य] १ दूर करना। हटाना। २ साधिकार पहले का निश्चय या आज्ञा आदि रद करना। (कैन्सिलेशन, रिपील, रिसाईडिंग)। ३ रद करने का अधिकार या शक्ति। ४ निराकरण। परिहार। ५ नाश। ६ वध। ७ बाहर करना। निकालना। (डिसचार्ज)

निरसा—स्त्री० [स० नि-रस, ब० स०, टाप्] एक प्रकार की घास जो कोकण देश मे होती है।
†वि०=निरस।

निरसित—भू० कृ०=निरस्त।

निरस्त—भू० कृ० [स० निर्√अस्+क्त] जिसका निरसन हुआ हो। (सभी अर्थो मे)

निरस्त्र—वि० [स० निर्-अस्त्र, व० स०] १ जिसके पास अस्त्र न हो। अस्त्ररहित। उदा०—प्रेम शक्ति से चिर निरस्त्र हो जावेगी पागवता।—पत। २ जिससे अस्त्र छीन या ले लिया गया हो। (अन-आर्मड)

निरस्त्रीकरण—पु० [स० निरस्त्र+च्वि, इत्व, दीर्घ√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निरस्त्रीकृत] १ अस्त्रो से रहित करना। २ आधुनिक राजनीति मे, परस्पर युद्ध की सभावना कम करने के लिए आविष्कृत एक उपाय जिसके अनुसार देश की सेना या सैनिक बल कम किया जाता है जिससे उसमे युद्ध करने की समर्थता घट जाय। (डिस-आर्मामेंट)

निरस्त्रीकृत—भू० कृ० [स० निरस्त्र+च्वि,√कृ+क्त] (देश या सैनिक) जो अस्त्रहीन कर दिया गया हो।

निरस्थि—वि० [स० निर्-अस्थि, व० स०] जिसमे हड्डी न हो अथवा जिसमे से हड्डी निकाल दी गई हो।

निरस्य—वि० [स० निर्√अस्+यत्] जिसका निरसन होने को हो या किया जा सके।

निरहकार—वि० [स० निर्-अहकार, व० स०] जिसमे या जिसे अहकार न हो।

निरहंकृत—वि० [स० निर्-अहकृत, प्रा० स०] अहकार-शून्य।

निरहम्—वि० [स० निर्-अहम्, व० स०] जिसमे अह, भाव न हो।

निरहेतु—वि०=निर्हेतु।

निरहेल—वि० [स० हेय] अधम। तुच्छ।

निरा—वि० [स०निरालय, पु०हिं०निराल] [स्त्री०निरी] १. (व्यक्ति) जिसमे कोई एक ही (उल्लिखित) गुण या अवगुण हो। जैसे—निरा पाजी, निरा मूर्ख। २ (पदार्थ) जिसमे कोई ऐसा तत्त्व न मिलाया गया हो, जिससे उसकी उपयोगिता या महत्त्व घटता हो। विशुद्ध। ३ केवल। सिर्फ। जैसे—निरी दाल के साथ रोटी खाना।

निराई—स्त्री० [हिं० निराना] निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

निराक—पु० [स० निर्√अक् (वक्र गति)+घञ्] १ पाचन क्रिया। २ पसीना। ३ बुरे कर्म का विपाक।

निराकरण—पु० [स० निर्-आ√कृ+ल्युट्—अन] [वि० निराकरणीय, निराकृत] १ अलग या पृथक् करना। २ निकालना, दूर करना या हटाना। ३. निर्वासन। ४ अस्वीकृत या निरस्त करना। ५ उठाये या किए हुए प्रश्न, आपत्ति आदि का तर्कपूर्वक खडन, निवारण या परिहार करना। ६ दे० 'निरसन'।

निराकाक्ष—वि० [स० निर्-आकाक्षा, व० स०] जिसे कोई आकाक्षा या इच्छा न हो।

निराकाक्षी (क्षिन्)—वि० [स० निर्-आ√काक्ष् (चाहना)+णिनि] [स्त्री० निराकाक्षिणी]=निराकाक्ष।

निराकार—वि० [स० निर्-आकार, व० स०] १ जिसका कोई आकार न हो। आकार-रहित। २ कुरूप। बेडौल। भद्दा।
पु० १ ब्रह्म। २ विष्णु। ३ शिव। ४ आकाश।

निराकाश—वि० [स० निर्-आकाश, व० स०] जिसमे आकाश अर्थात् कुछ भी खाली स्थान न हो या गुजाइश न हो।

निराकुल—वि० [स० निर्-आकुल, प्रा० स०] १ जो आकुल या विकल न हो। २ किसी के अदर भरा हुआ या व्याप्त। ३ वहुत अधिक आकुल या विकल।

निराकृत—वि० [स० निर्-आ√कृ+क्त] [भाव० निराकृति] १ जिसका निराकरण हो चुका हो। २. रद्द या व्यर्थ किया हुआ। ३ जिसका खडन हो चुका हो। ४. जो घवराया न हो।

निराकृति—वि० [स० निर्-आकृति, ब० स०] १. आकृति-रहित। निराकार। २ जो वेद-पाठ या स्वाध्याय न करता हो। ३. जो पच महायज्ञ न करता हो।

पु० १. रोहित मनु के एक पुत्र का नाम। २ [निर-आ√कृ+क्तिन्] निराकरण।

निराकृती (तिन्)—वि० [स० निराकृत+इनि] निराकरण करने-वाला।

निराक्रद—वि० [स० निर्-आक्रद, ब० स०] १ जो चिल्लाता या शिकायत न करता हो। २ (ऐसा स्थान) जहाँ किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पडता हो।

निराखर†—वि०=निरक्षर।

निराग—वि० [स० नि-राग, ब० स०] १. रागहीन। २. विरक्त।

निरागस्—वि० [स० निर्-आगस्, ब० स०] पाप-रहित। निष्पाप।

निराचार—वि०[स० निर्-आचार, ब० स०] १ (व्यक्ति) जो आचार-हीन हो। २. (चाल या रीति) जिसे समाज से मान्यता या स्वीकृति न मिली हो।

निराजी—स्त्री० [?] करघे मे, हत्थे और तरौछी के सिरों को मिलानेवाली लकडी। (जुलाहे)

निराट—वि० [हिं० निराल] १. दे० 'निराला'। २ दे० 'निरा'।

निराटा—वि० [स्त्री० निराटी]=निराला। उदा०—सोच है यहै कै सग ताके रग भौन माहिँ कौन धौं अनोखो ढग रचत निटारी है।—रत्नाकर।

निराडंबर—वि० [स० निर्-आडवर, ब० स०] आडबरहीन।

निरातक—वि० [स० निर्-आतक, ब० स०] १ जो आतकित न हो। २. जो आतक न उत्पन्न करे। ३. रोग-रहित। नीरोग।

निरातप—वि० [स० निर्-आतप, ब० स०] १ जो तपता न हो। २ छायादार। ३ जो ताप से सुरक्षित हो।

निरातपा—वि० स्त्री० [स० निरातप+टाप्] जो तपती न हो।

स्त्री० रात।

निरात्म—वि० [स० निर्-आत्मन्, ब० स०] [भाव० नैरात्य] आत्मा से रहित या हीन।

निरादर—पु० [स० निर्-आदर, प्रा० स०] १. आदर का अभाव। २ अपमान।

निरादान—वि० [स० निर्-आदान, ब० स०] जो कुछ भी प्राप्त न कर रहा हो।

पु० [प्रा० स०] १ आदान या लेने का अभाव। २ (ब० स०) एक बुद्ध का नाम।

निरादेश—पु० [स० निर्-आ√दिश्+घञ्] चुकता करना। भुगताना॥

निराधार—वि० [स० निर्-आधार, ब० स०] १ जिसका कोई आधार (अवलव या आश्रय) न हो। २. जिसकी कोई जड या वुनियाद न हो। निर्मूल। ३. (कथन) जिसका कोई प्रमाण न हो और इसी लिए जो ठीक या वास्तविक न हो, फलत अमान्य। ४ जिसे अभी तक कुछ या कोई सहारा न मिला हो।

निराधि—वि० [सं० निर्-आधि, ब० स०] आधि अर्थात् रोग, चिंताओं आदि से मुक्त या रहित।

निरानंद—वि० [स० निर्-आनद, ब० स०] १. (व्यक्ति) जिसके मन मे या जिसे आनद अथवा प्रसन्नता न हो। २ (काम या वात) जिसमें कुछ भी आनद न मिल सकता हो।

पु० १. आनद का अभाव। २ दुःख।

निराना—स० [स० निराकरण] [भाव० निराई] खेत मे फसल के साथ आप से आप उगे हुए और फसल को हानि पहुँचानेवाले निरर्थक पौधों तथा वनस्पतियों को उखाडना या खोदकर निकालना।

निरापद—वि० [स० निर्-आपदा, ब० स०] १ जिसके लिए कोई आपदा या सकट न हो। २ जिसमे कोई आपदा या संकट न हो। ३ जिससे किसी प्रकार की आपदा या सकट की सभावना न हो।

क्रि० वि० विना किसी प्रकार की आपत्ति या सकट के।

निरापन—वि० [हिं० निर+मरा० आपन] १ जो अपना न हो। २ पराया। वेगाना।

निरापुन—वि०=निरापन।

निरावाध—वि० [स० नि्-आवाधा, ब० स०] जिसके साथ छेड-छाड न हो। वाधा-रहित।

निरामय—वि० [स० निर्-आमय, ब० स०] १ जिसे रोग न हो, फलत नीरोग और स्वस्थ। २. कुशल।

पु० १. जंगली बकरा। २. सूअर।

निरामिष—वि० [स० निर्-आमिष, ब० स०] १ (खाद्य पदार्थ या भोजन) जिसमे आमिष अर्थात् मास या उसका कोई अश अथवा रूप (अडा या मछली) न मिला हो। २ (व्यक्ति) जो मास (अडा, मछली आदि) न खाता हो।

निरामिष भोजी (जिन्)—वि० [स० निरामिष√भुज् (खाना) +णिनि] जो मास न खाता हो, फलत शाकाहारी। (वेजि-टेरियन)

निराय—वि० [स० निर्-आय, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसे आय न हो रही हो। २ (व्यापार) जिससे आय न हो रही हो।

निरायत—वि० [स० निर्-आयत, प्रा० स०] जो फैलाया या बढाया हुआ न हो, फलत सिकोडा हुआ।

निरायास—वि० [स० निर्-आयास, ब० स०] विना आयास या परिश्रम के होनेवाला।

क्रि० वि० विना आयास या परिश्रम किये।

निरायुध—वि० [स० निर्-आयुध, ब० स०] निरस्त्र।

निरार (ा)—वि० [स्त्री० निरारी] १.=निराला। २ =न्यारा।

निरालंब—वि० [स० निर्-आलव, ब० स०] १ जिसका कोई आलव या सहारा न हो। २ जिसे कोई आश्रय या सहायता देनेवाला न हो। ३ आधार-हीन।

निरालंबा—स्त्री० [स० निरालव+टाप्] छोटी जटामासी

निराल—वि० [हिं० निराला] १ निराला। २. निपट। निरा। ३. विशुद्ध।
निरालक—पु० [स०] एक तरह की समुद्री मछली।
निरालभ*—वि०=निरालव।
निरालय—वि० [?] अपवित्र। उदा०—ऐसन देह निरालय वौरे मुए छुवै नहि कोई हो।—कवीर।
निरालस—वि०, पु०=निरालस्य।
निरालस्य—वि० [स० निर्-आलस्य, व० म०] जिसे आलस्य न हो, फलत. फुर्तीला।
पु० आलस्य का अभाव।
निराला—वि० [स० निरालय] [स्त्री० निराली] १ (स्थान) जहाँ कोई आदमी या वस्ती न हो। २ एकात और निर्जन। ३ (वात, वस्तु या व्यक्ति) जो अपनी वनावट, रूप, विशिष्टताओं आदि के कारण सवसे अलग तरह का और अनोखा हो। अनूठा।
पु० ऐसा स्थान जहाँ लोगो की भीड-भाड़ या आना-जाना न हो। एकात और निर्जन स्थान।
निरालोक—वि० [स० निर्-आलोक, व० स०] १ आलोक अर्थात् प्रकाश मे रहित। २ अवकारपूर्ण। अँवेरा।
पु० शिव।
निरावना†—स०=निराना।
निरावरण—वि० [स० निर्-आवरण, व० स०] जिसके आगे या सामने कोई परदा न पडा हो। आवरण-रहित। खुला हुआ।
पु० [भू० कृ० निरावृत] १ आगे या सामने का परदा हटाने की क्रिया या भाव। २ दे० 'अनावरण'।
निराvलव—वि० [स० निरवलव] जिसका कोई अवलव या सहारा न हो। अवलव-रहित।
निरावृत—भू० कृ० [स० निर्-आवृत, प्रा० स०] जिस पर से आवरण हटाया गया हो।
निराश—वि० [स० निर्-आशा, व० स०] [भाव० निराशा] जिसे आशा न रह गई हो, अथवा जिसकी आशा नष्ट हो चुकी हो। हताश।
निराशक—वि० दे० 'निराश'।
निराशा—स्त्री० [स० निर्-आशा, प्रा० स०] १. आशा का अभाव। २ निराश होने की अवस्था या भाव।
निराशावाद—पु० [प०त०] वह लौकिक सिद्धात जिसमे यह माना जाता है कि ससार दु.खो से भरा है और इसलिए अच्छी वातो की ओर से मनुष्य को निराश रहना चाहिए, उनकी आशा नही करनी चाहिए। (पेसिमिज्म)
निराशावादी (दिन्)—वि० [स० निराशावाद+इनि] निराशावाद-सवधी।
पु० वह जो निराशावाद के सिद्धात को ठीक मानता हो। (पेसिमिस्ट)
निराशिष्—वि० [स० निर्-आशिष्, व० स०] १ आशीर्वाद शून्य। २ तृष्णा, वासना आदि से रहित।
निराशी—वि०=निराश।
निराश्रय—वि० [स० निर्-आश्रय, व० स०] १ जिसे कहीं कोई आश्रय या सहारा न मिल रहा हो। आश्रय-रहित। आधारहीन। विना सहारे का। २ जिसका कोई सगी-साथी न हो।
निरास—पु० [सं०] निरसन। (देखें)
†वि०=निराश।
निरासन—वि० [सं० निर्-आसन, व० स०] आसन-रहित।
पु०=निरसन।
निरासा—स्त्री०=निराशा।
निरासी—वि०=निराश।
निरास्वाद—वि० [स० निर्-आस्वाद, व० स०] जिसका या जिसमे स्वाद न हो। स्वाद-रहित।
निराहार—वि० [निर्-आहार, व० स०] १ (व्यक्ति) जिसने भोजन का समय वीत जाने पर भी अभी तक खाया न हो। जिसने अभी तक भोजन न किया हो। २ (कर्म या व्रत) जिसके अनुष्ठान मे भोजन न करने का विधान हो।
क्रि० वि० विना भोजन किये। भूखे रह कर।
पु० कुछ न खाने-पीने अर्थात् भूखे रहने की अवस्था या भाव।
निरिंग—वि० [स० निर्-इग, व० स०] निश्चल। अचल।
निरिंगिणी—स्त्री० [स० निर्√इग् (गति)+इनि—ङीप्] चिक। झिलमिली। परदा।
निरिंद्रिय—वि० [स० निर्-इद्रिय, व० स०] १. जिसे कोई इद्रिय न हो। इन्द्रियो से रहित। २ जिसकी इंद्रियाँ ठीक तरह से काम न देती हों।
निरिच्छ—वि० [स० निर्-इच्छा, व० स०] जिसे कोई इच्छा न हो। इच्छा रहित।
निरिच्छन*—पु० निरीक्षण।
निरिच्छना—स० [स० निरीक्षण] निरीक्षण करना।
निरीक्षक—वि० [स० निर्√ईक्ष् (देखना)+ण्वुल्—अक] १ देखने-वाला। २. निरीक्षण करनेवाला।
पु० वह अधिकारी जो किसी काम का निरीक्षण या देख-भाल करने के लिए नियुक्त हो। (इन्सपेक्टर)
निरीक्षण—पु० [स० निर्√ईक्ष्+ल्युट्—अन] [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य] १ देखना। दर्शन। २ वह देखना कि सव काम ठीक तरह से हुए है या नही अथवा सव वातें ठीक है या नही। (इन्सपेक्शन)। ३ देखने की मुद्रा। ४ नेत्र। आँख।
निरीक्षा—स्त्री० [स० निर्√ईक्ष्+अ—टाप्] १ देखना। दर्शन। २ निरीक्षण।
निरीक्षित—भू० कृ० [सं० निर्√ईक्ष्+क्त] १. देखा हुआ। २ जिसका निरीक्षण हुआ हो।
निरीक्ष्य—वि० [स० निर्√ईक्ष्+ण्यत्] १ जो देखा जा सके। जो दिखाई दे सके। २. जिसका निरीक्षण करना उचित हो। ३ जिसका निरीक्षण होने को हो।
निरीक्ष्यमाण—वि० [स० निर्√ईक्ष्+यक्+शानच्] जो देखा जाता हो।
निरीति—वि० [स० निर्-ईति, व० स०] ईति अर्थात् अति-वृष्टि से रहित।
निरीश—वि० [स० निर्-ईश, व० स०] १ जिसका कोई ईश या स्वामी न हो। विना मालिक का। २ जो ईश्वर को न मानता हो। निरीश्वर-वादी। नास्तिक।
पु० हल का फाल।

निरीश्वर—वि० [स० निर्-ईश्वर, ब० स०] १. (मत या सिद्धांत) जिसमें ईश्वर का अस्तित्व न माना जाता हो। २ (व्यक्ति) जो ईश्वर का अस्तित्व न मानता हो। नास्तिक।

निरीश्वरवाद—पु० [ष० त०] यह विचारधारा या सिद्धांत कि विश्व का नियामक या स्रष्टा कोई ईश्वर नहीं है। ईश्वर को न माननेवाला मत या सिद्धांत।

निरीश्वरवादी (दिन्)—वि० [स० निरीश्वरवाद+इनि] निरीश्वरवाद-संबंधी। पु० निरीश्वरवाद का अनुयायी।

निरीष—पु० [स० निर्-ईषा, ब० स०] हल का फाल।

निरीह—वि० [स० निर्-ईहा, ब० स०] [भाव० निरीहता, निरीहत्व] १ जिसे किसी काम या बात की ईहा (अर्थात् इच्छा या कामना) न हो। जिसे किसी तरह की चाह या वासना न हो। २. जो कुछ भी करना न चाहता हो और इसी लिए कुछ भी न करता हो। ३. उदासीन। विरक्त। ४ जो इतना नम्र और शात हो कि किसी का अपकार या अहित न करता हो या न कर सकता हो। ५ सुकुमार। सुकोमल। जैसे—निरीह रूप।

निरीहा—स्त्री० [स० निर्-ईहा, प्रा० स०] १. ईहा या चाह का अभाव। २. ईहा के अभाव के कारण होनेवाली निश्चेष्टता।

निरुआर—पु०=निरुवार (छुटकारा)।

निरुआरना†—स०=निरुवारना।

निरुक्त—भू० कृ० [स० निर्√वच् (कहना)+क्त] [भाव० निरुक्ति] १. ठीक, निश्चित और स्पष्ट रूप से कहा, बतलाया या समझाया हुआ। जिसका उच्चारण, कथन या निरूपण उचित और यथेष्ट रूप से हुआ हो। सन्देह-रहित और स्पष्ट। २. जिसका निर्देश या विधान स्पष्ट रूप से हुआ हो। ३. चिल्लाकर या जोर से कहा हुआ। उद्घोषित।

पु० १ शब्द का ऐसा अर्थ या विश्लेषण जिससे उसके मूल या व्युत्पत्ति का भी पता चलता हो। २ वह ग्रन्थ या शास्त्र जिसमें शब्दों के अर्थ, पर्याय और व्युत्पत्तियाँ बतलाई गई हों। शब्दों की व्युत्पत्ति और विकारी रूपों के तत्त्व या सिद्धांत बतलानेवाला ग्रंथ या शास्त्र। शब्द-शास्त्र। (एटिमॉलोजी)

विशेष—हमारे यहाँ इस शास्त्र का आरंभ ऐसे वैदिक शब्दों के विवेचन से हुआ था, जो पुराने पड़ चुके थे और जिनके अर्थों के संबंध में मत-भेद या संदेह होता था। शब्दों के ठीक अर्थ और आशय समझने-समझाने के लिए उनके व्युत्पत्तिक आधार का निरूपण या विवेचन करना आवश्यक होता था। यह काम वैदिक साहित्य के ही सम्बन्ध में हुआ था, अत. इसे छ वेदागों में चौथा स्थान मिला था।

३. उक्त विषय का यास्काचार्य कृत वह ग्रंथ जो वैदिक निघंटु की व्याख्या के रूप में है और जिसमें यह बतलाया गया है कि शब्दों में वर्ण-लोप, वर्ण-विपर्यय, वर्णागम आदि किस प्रकार के और कैसे होते हैं।

विशेष—यास्काचार्य का स्थान उस समय के निरुक्तकारों में चौदहवाँ था। इसी से पता चल जाता है कि हमारे यहाँ इस विषय का विवेचन कितने प्राचीन काल से आरंभ हुआ था।

निरुक्ति—स्त्री० [स० निर्√वच्+क्तिन्] १ निरुक्त होने की अवस्था या भाव। २. शब्दों का ऐसा निरूपण या विवेचन जो यह बतलाता हो कि शब्द किस प्रकार और किन मूलों से बने हैं और उनके रूपों में किस प्रकार परिवर्तन या विकार होते हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति और विकारी रूपों के तत्त्व या सिद्धान्त बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। शब्द-शास्त्र। (एटिमॉलाजी) ३ किसी शब्द का मूल रूप। व्युत्पत्ति। (डेरिवेशन) ४ साहित्य मे, एक प्रकार का गौण अर्थालंकार जिसमें किसी शब्द के व्युत्पत्तिक विश्लेषण के आधार पर कोई अनूठी और कौशलपूर्ण बात कही जाती है; अथवा किसी नाम या सज्ञा का साधारण से भिन्न कोई विलक्षण व्युत्पत्तिक अर्थ निकालकर उक्ति में चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। यथा—(क) ताप करन अबलान को, दया न चित कछु आनु। तुम इन चरितन साँच हो दोषाकर विख्यानु। यहाँ 'दोषाकर' शब्द के कारण निरुक्ति अलकार हुआ है। चद्रमा को दोषाकर इसलिए कहते हैं कि वह दोषा (रात) करता है। पर यहाँ दोषाकर का प्रयोग दोषों का आकार या भडार के अर्थ में किया गया है। (ख) रूप आदि गुण सों भरी तजिकैं ब्रज-बनितान। उद्धव कुब्जा बस भये निर्गुण वहै निदान। यहाँ 'निर्गुण' शब्द की दो प्रकार की निरुक्तियों या व्युत्पत्तियों का आधार लेकर चमत्कार उत्पन्न किया गया है। आशय यह झलकाया गया है कि जो कृष्ण निर्गुण (अर्थात् सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे या रहित) कहे जाते है, वे कुब्जा जैसी निर्गुण (अर्थात् सब प्रकार के अच्छे गुणों या बातों से रहित या हीन) स्त्री के फेर में पड़कर अपना 'निर्गुण' वाला विशेषण चरितार्थ या सार्थक कर रहे हैं। इसी प्रकार के कथनों की गिनती निरुक्ति अलकार में होती है।

निरुच्छ्वास—वि० [स० निर्-उच्छ्वास, ब० स०] १ (स्थान) जहाँ बहुत से लोग इस प्रकार भरे हों कि उन्हे साँस तक लेने में बहुत कठिनता हो। २. (स्थान) जहाँ बैठने से दम घुटता हो।

निरुज—वि०=नीरुज (नीरोग)।

निरुत्तर—वि० [स० निर्-उत्तर, ब० स०] १. (व्यक्ति) जो किसी प्रश्न का उत्तर न दे सकने के कारण मौन हो गया हो। २ (प्रश्न) जिसका उत्तर न दिया गया हो या न दिया जा सके।

निरुत्साह—वि० [स० निर्-उत्साह, ब० स०] १ जिसमे उत्साह न हो। २ जिसका उत्साह न रह गया हो।

पु० [प्रा० स०] उत्साह का न होना।

निरुत्साहित—भू० कृ० [स० निरुत्साह+इतच्] जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो या नष्ट कर दिया गया हो।

निरुत्सुक—वि० [स० निर्-उत्सुक, प्रा० स०] [भाव० निरुत्सुकता] जो (किसी काम या बात के लिए) उत्सुक न हो।

निरुदक—वि० [स० निर्-उदक, ब० स०] १ बिना जल का। २ (स्थान) जिसमें या जहाँ जल न हो।

निरुदन—पु० [स०] [भू० कृ० निरुदित]=निर्जलीकरण।

निरुद्देश्य—वि० [स० निर्-उद्देश्य, ब० स०] जिसका कोई उद्देश्य न हो। अव्य० बिना किसी उद्देश्य के। यों ही।

निरुद्ध—वि० [स० नि√रुध् (रोकना)+क्त] [भाव० निरोध] १. जिसका निरोध किया गया हो। २ रुका या रोका हुआ। ३. बन्धन में डाला या पड़ा हुआ।

पु० योग मे वर्णित पाँच प्रकार की मनोवृत्तियो मे से एक, जिसमे चित्त अपनी कारणीभूत प्रकृति मे मिलकर निश्चेप्ट हो जाता है।

निरुद्धकंठ—वि०[ब०स०]१ जिसका दम घुट गया हो। २ जिसका गला (आवेश, मनोवेग आदि के कारण) रुँध गया हो और इसी लिए जिससे स्पप्ट उच्चारण न निकलता हो।

निरुद्धगुद—पु० [ब०स०] पेट मे मल जमा होने या रुकने का एक रोग।

निरुद्ध-प्रकाश—पु०[ब०स०] एक प्रकार का रोग, जिसमे मूत्रद्वार वद-सा हो जाता है और पेशाव वहुत रुक-रुककर होता है।

निरुद्यम—वि० [स० निर्-उद्यम, ब०स०] [भाव० निरुद्यमता] १ जो उद्यम या उद्योग न करता हो। २ जिसके पास कोई उद्यम या उद्योग न हो।

निरुद्यमी (मिन्)—वि०[स० निरुद्यम+इनि] (व्यक्ति) जो उद्यम न करता हो, फलत आलसी और कामचोर।

निरुद्योग—वि०[स० निर्-उद्योग, ब०स०]१ जो उद्योग या प्रयत्न न करता हो। २ जिसके हाथ मे कोई उद्योग या काम न हो।

निरुद्योगी—वि०=निरुद्योग।

निरुद्वेग—वि०[निर्-उद्वेग, ब०स०] जिसमे उद्वेग न हो। उत्तेजना और क्षोभ से रहित, फलत धीर और शात।

निरुपकार-आधि—स्त्री० [स०] वह पूंजी, जो किसी आमदनी वाले काम मे न लगी हो, वल्कि यों ही व्यर्थ पडी हो।

निरुपजीव्य भूमि—स्त्री० [स० निर्-उपजीव्या, प्रा० स०] ऐसी भूमि जिस पर किसी का गुजर या निर्वाह न हो सकता हो। (कौ०)

निरुपद्रव—वि० [स० निर्-उपद्रव, ब०स०] [भाव० निरुपद्रवता] १ (स्थान) जहाँ उपद्रव न होता हो। २ (व्यक्ति) जो उपद्रवी न हो।

निरुपद्रवता—स्त्री० [स० निरुपद्रव+तल्—टाप्] निरुपद्रव होने की अवस्था या भाव।

निरुपद्रवी (विन्)—वि० [स० निर्-उपद्रविन्, प्रा०स०] जो कुछ भी उपद्रव न करे, फलत धीर और शात।

निरुपपत्ति—वि०[सं० निर्-उपपत्ति, ब०स०] १ जिसकी कोई उपपत्ति न हो। २ जो उपयुक्त या युक्त न हो।

निरुपभोग—वि०[स० निर् उपभोग, ब०स०] १ (पदार्थ) जिसका किसी ने उपभोग न किया हो। २. (व्यक्ति) जिसने किसी विशिप्ट वस्तु का भोग या उपभोग कर आनद प्राप्त न किया हो।

पु०[प्रा० स०] उपभोग का अभाव।

निरुपम—वि० [स० निर्-उपमा, ब०स०] जिसकी कोई उपमा न हो, अर्थात् वहुत वढिया और वेजोड।

पु० राष्ट्रकूट-वश के एक राजा का नाम।

निरुपमा—स्त्री०[स० निरुपम+टाप्] गायत्री का एक नाम।

निरुपमित—वि० [स० निर्-उपमित, प्रा०स०] [स्त्री० निरुपमिता] जिसकी उपमा किसी से न दी जा सकती हो। निरुपम। उदा०—वह खडी शीर्ण प्रिय-भाव-मग्न निरुपमिता।—निराला।

निरुपयोग—वि० [स० निर्-उपयोग, ब०स०] (पदार्थ) जिसका कोई उपयोग न हो अथवा जो अभी तक उपयोग मे न लाया गया हो।

निरुपयोगी (गिन्)—वि०[स० निर्-उपयोगिन्, प्रा०स०] जो उपयोग मे आने के योग्य न हो। निकम्मा।

निरुपस्कृत—वि०[स० निर्-उपस्कृत, प्रा०स०] १ जो उपस्कृत न हो। अलाछित। २ जो वदला न गया हो। ३ जिसमे मिलावट न हुई हो। वेमेल। विशुद्ध।

निरुपहत—वि० [स० निर्+उपहत, प्रा० स०] १ जो उपहत या आहत न हुआ हो। २ शुभ।

निरुपाख्य—वि०[स० निर-उपाख्या, ब०स०] १. जिसकी व्याख्या न हो सके। २ जो कभी हीन हो सकता हो। असभव और मिथ्या।

पु० ब्रह्म।

निरुपाधि—वि०[स० निर्-उपाधि, ब०स०]१ जिसमे किसी प्रकार की उपाधि न हो। २ जो कुछ भी उपद्रव न करता हो। धीर और शात। ३ जिसमे वधन, वाधा, रुकावट या विघ्न न हो। ३ माया, मोह आदि से रहित।

पु० ब्रह्म की एक सज्ञा।

निरुपाधिक—वि०=निरुपाधि।

निरुपाय—वि०[स० निर्-उपाय, ब०स०] १ (व्यक्ति) जो कोई उपाय न कर रहा हो या न कर सकता हो। २ (कार्य या विपय) जिसका या जिसके लिए कोई उपाय न हो सके।

अव्य० उपाय न रहने की दशा मे। लाचारी की हालत मे।

निरुपेक्ष—वि० [स० निर्-उपेक्षा, ब० स०] जिसकी उपेक्षा न की जा सकती हो।

निरुवरना—अ०[स० निवारण] निवारण या निवारित होना। दूर होना। स०=निरुवारना।

निरुवार—पु०[स० निवारण]१ निवारण करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ छुटकारा। वचाव। ३ निपटारा। निराकरण। ४ निर्णय। फैसला। ५ निश्चय।

निरुवारना—स०[हिं० निरुवार]१ निवारण करना। २ वधन आदि से मुक्त करना। छुडाना। ३ उलझी हुई चीज को सुलझाना। ४ निपटारा करना। ५. निर्णय या निश्चय करना।

निरूढ़—वि०[स० निर्√रुह् (उत्पत्ति)+क्त] [स्त्री० निरूढा] १ उत्पन्न। २ प्रसिद्ध। विख्यात। ३ अविवाहित। कुँआरा। ४ (शव्द का अर्थ) जो उसके व्युत्पत्तिक अर्थ से भिन्न होता है और परम्परा से स्वीकृत होता है।

पु० एक प्रकार का पशु यज्ञ।

निरूढ-लक्षणा—स्त्री० [स० कर्म०स०] लक्षणा का एक भेद, जो उस अवस्था मे माना जाता है, जव किसी शव्द का गृहीत अर्थ (व्युत्पत्तिक अर्थ से भिन्न) प्रचलित और रूढ हो जाता हे।

निरूढ़वस्ति—स्त्री०[स० कर्म०स०]पिचकारी के आकार का एक प्रकार का उपकरण जिसके द्वारा रोगी के गुदा-मार्ग से ओपधि पहुँचाई जाती है। (वैद्यक)

निरूढ़ा—स्त्री०[स निरूढ+टाप्] निरूढ-लक्षणा। (दे०)

निरूढ़ि—स्त्री०[स० नि√रुह्+क्तिन्]१ ख्याति। प्रसिद्धि। २ दे० 'निरूढ-लक्षणा'।

निरूप—वि० [हि० नि+स० रूप] १. जिसका कोई रूप न हो। २ कुरूप। वद-शकल। भद्दा।

पु०[स०]१ वायु। हवा। २ देवता। ३ आकाश।

निरूपक—वि० [सं० नि√रूप् (विचार करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] किसी बात या विषय का निरूपण करनेवाला।

निरूपण—पुं० [सं० नि√रूप्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निरूपित, वि० निरूप्य] १. छान-बीन तथा सोच-विचार कर किसी बात या विषय का विवेचन करना। २ अपना मत दूसरों को समझाते हुए उनके सम्मुख रखना। ३ निर्णय। ४ निदर्शन।

निरूपना—अ० [सं० निरूपण] १. निरूपण करना। २ निर्णय या निश्चय करना।

निरूपम—वि०=निरुपम।

निरूपित—भू०कृ० [सं० नि√रूप्+णिच्+क्त] (बात या विषय) जिसका निरूपण हो चुका हो।

निरूपिति—स्त्री० [सं० नि√रूप+णिच्+क्तिन्] निरूपण।

निरूप्य—वि० [सं० नि√रूप्+णिच्+यत्] जिसका निरूपण होने को हो या किया जाना चाहिए।

निरूह—पुं० [सं० निर्√ऊह (वितर्क)+घञ्] १ वस्ति का एक भेद। २ तर्क। ३. निश्चय। ४. पूर्ण वाक्य।

निरूहण—पुं० [सं० निर् ऊह+ल्युट्—अन] १. वस्ति का प्रयोग। २ तर्क करना। ३. निश्चय करना।

निरूह-वस्ति—स्त्री० [सं० मयू०स०] निरूढवस्ति। (दे०)

निरेखना—स०=निरखना।

नि-रेभ—वि० [सं० ब०स०] शब्द-हीन। नि शब्द।

निरै—पुं० [सं० निरय] नरक।

निरैठा—पुं० [सं० निर्+ईहा या इष्ट] [स्त्री० निरैठी] मनमौजी। मस्त। उदा०—रूप गुन ऐंठी सु अमैंठी, उर पैंठी वैठी ताइनि निरैठी मति वोलनि हरैं हरी।—घनानद।

निरोग(गी)—वि०=नीरोग।

निरोठा—वि० [?] कुरूप। बद-सूरत।

निरोद्धव्य—वि० [सं० नि√रुध् (रोकना)+तव्यत्] जिसका निरोध किया जा सकता हो या किया जाने को हो।

निरोध—पुं० [सं० नि√रुध् +घञ्] [भू० कृ० निरुद्ध] १ रोकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. अवरोध। रुकावट। रोक। ३ किसी के चारों ओर डाला जानेवाला घेरा। ४ आज-कल, किसी उपद्रवी या सदिग्ध व्यक्ति को (उसे उपद्रव करने से रोकने के लिए) किसी घिरे हुए स्थान मे शासन द्वारा रोक रखने की क्रिया या भाव। (डिटेंशन) ५ योग मे, चित्त की वृत्तियों को रोकना। ६. नाश।

निरोधक—वि० [सं०नि√रुध्+ण्वुल्—अक] निरोध करने या रोकनेवाला।

निरोधन—पुं० [सं० नि√रुध्+ल्युट्—अन] १ निरोध करने की क्रिया या भाव। बधन या रोक मे रखना। २ रुकावट। रोक। ३ वैद्यक में पारे का एक सस्कार, जो उसका शोधन करने के समय किया जाता है।

निरोधना—स० [सं०] १. निरोध या निरोधन करना। २ अपने अधिकार या वश मे करना।

निरोध-परिणाम—पुं० [सं० मयू०स०] योग मे, चित्तवृत्ति की एक विशेष अवस्था जो व्युत्थान और निरोध के मध्य मे होती है।

निरोधा—स्त्री० [सं०] किसी ऐसे स्थान से जहाँ सक्रामक रोग फैला हो, आये हुए व्यक्तियों आदि को नये प्रदेश के लोगों मे मिश्रित होने से रोकना जिससे रोग उस प्रदेश मे फैलने और बढने न पाये। २ वह स्थान जहाँ उक्त उद्देश्य से रोके हुए व्यक्तियों को अस्थायी रूप मे रोक रखा जाता है। (क्वारैनटीन)

निरोधाचार—पुं० [सं० निरोध-आचार, ष०त०] सब कामों मे होने या डाली जानेवाली रुकावट।

निरोधाज्ञा—स्त्री० [सं० निरोध-आज्ञा, ष०त०] ऐसी आज्ञा जिसे किसी को कोई कार्य करने से रोका जाता है।

निरोधी (धिन्)—वि० [सं० नि√रुध्+णिनि] निरोधक। (दे०)

निर्ऋत—भू० कृ० [सं० निर्√ऋ (क्षयकरना)+क्त] जिसका क्षय हुआ हो।

निर्ऋति—स्त्री० [सं० निर् (निर्गत) ऋति=अशुभ, ब०स०] १ नैऋत्य कोण की देवी। २ पृथ्वी के नीचे का तल। ३ [निर्√ऋ+क्तिन्] क्षय। नाश। ४ मृत्यु। मौत। ५. दरिद्रता। निर्धनता। ६ विपत्ति। सकट।

निर्ख—पुं० [फा०] वह भाव जिस पर कोई चीज बिकती हो। दर। भाव।

निर्ख-दरोगा—पुं० [फा०] मध्ययुग मे वह अधिकारी, जो चीजों के भावों पर निगरानी रखता था।

निर्ख-नामा—पुं० [फा०] मध्ययुग मे वह सूची, जिसमे वस्तुओं के बाजार-भाव लिखे होते थे।

निर्ख-बंदी—स्त्री० [फा०] वस्तुओं के बाजार भाव निश्चित करने या बाँधने की क्रिया या भाव।

निर्गंध—वि० [सं० निर्-गध, ब०स०] [भाव० निर्गंधता] गधहीन।

निर्गंध-पुष्पी—स्त्री० [सं० ब०स०, ङीप्] सेमर का पेड।

निर्ग—पुं० [सं० निर्√गम् (जाना)+ड] प्रदेश। स्थल।

निर्गत—भू० कृ० [सं० निर√गम्+क्त] १ बाहर निकला या आया हुआ। २ दूर गया हुआ। ३ हटाया हुआ।

निर्गम—पुं० [सं० निर्√गम्+अप्] [वि० निर्गमित] १ बाहर निकलने की अवस्था, क्रिया या भाव। निकासी। २ वह मार्ग जिससे बाहर कोई चीज निकलती हो। निकाल। ३ आज्ञा, आदेश आदि का निकलना या प्रकाशित होना। ४. किसी वस्तु विशेषत धन आदि का किसी स्थान या देश से बहुत अधिक मात्रा मे बाहर जाना। (ड्रेन) ५ विधिक क्षेत्र मे, किसी व्यवहार या दीवानी मुकदमे की वह विचारणीय बात जिसका एक पक्ष स्थापन करता हो और जिसे दूसरा पक्ष न मानता हो और फलत जिसके आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे का निर्णय होने को हो। वादपद। साध्या। (इश्यू)

विशेष—यह दो प्रकार का होता है—(क) विधिक या कानूनी प्रश्नों से सबध रखनेवाला निर्गम (इश्यू ऑफ ला) और (ख) वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से सबध रखनेवाला अर्थात् तथ्यक निर्गम (इश्यू ऑफ फैक्ट्स)।

निर्गमन—पुं० [सं० निर्√गम्+ल्युट्—अन] १ बाहर आने या निकलने की क्रिया या भाव। निकासी। २ वह द्वार जिससे होकर कुछ या कोई बाहर निकले। ३. प्रतिहार।

निर्गमना—अ० [सं० निर्गमन] बाहर निकलना।

निर्गम-मूल्य—पु०[स० मध्य०स०] (वास्तविक मूल्य से भिन्न) वह मूल्य जो कुछ विशेष अवसरो पर किसी चीज की निकासी के समय कुछ घटाकर निश्चित किया जाता है। (इश्यू प्राइस)

निर्गमित पूँजी—स्त्री०[स० निर्गमित+हिं० पूँजी] वह पूँजी या रकम जो कारखाने, व्यापार आदि की दैनिक आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए बाहर निकाली गई हो। (इश्यू कैपिटल)

निर्गर्व—वि०[स० निर्-गर्व, ब०स०] जिसे गर्व न हो। निरभिमान।

निर्गवाक्ष—वि०[स० निर्-गवाक्ष, ब०स०] (कमरा या घर) जिसमे खिड़की न हो।

निर्गुंठी—स्त्री०=निर्गुडी।

निर्गुंडी—स्त्री०[स० निर्-गुड=वेष्टन, ब० स०, डीप्] एक प्रकार का क्षुप जिसके प्रत्येक सीके मे अरहर की पत्तियो के समान पाँच-पाँच पत्तियाँ होती है। इसका उपयोग औषधो आदि मे होता है।

निर्गुण—वि०[स० निर्-गुण, ब०स०] [भाव० निर्गुणता] १ जिसमे कोई गुण न हो। सत्त्व, रज और तम इन तीनो प्रकार के गुणो से रहित। २ जिसमे कोई अच्छा गुण या खूबी न हो। गुणरहित।
पु० परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनो गुणो से परे तथा रहित माना जाता है।

निर्गुणता—स्त्री० [स० निर्गुण+तल्—टाप्] निर्गुण होने की अवस्था या भाव।

निर्गुण-धारा—स्त्री० [स० ष०त०] हिन्दी साहित्य की वह ज्ञानाश्रयी धारा या शाखा जिसमे मुख्यत निर्गुण ब्रह्म की उपासना आदि के काव्य और पद है।

निर्गुण-भूमि—स्त्री० [स० कर्म०स०] वह भूमि जिसमे कुछ भी पैदा न होता हो। ऊसर या बजर जमीन। (कौ०)

निर्गुण-सप्रदाय—पु०[स०ष०त०] भारतीय धार्मिक क्षेत्र मे, ऐसे एकेश्वर-वादी सतो और साधुओ का सप्रदाय, जो निर्गुण ब्रह्म मे विश्वास रखते और उसकी उपासना करते है। (कहते हैं कि मूलत इस्लाम धर्म की देखा-देखी जाति-पाँति का भेद मिटाने और लोगो को सगुणोपासना से हटाकर एकेश्वरवाद की ओर लाने के लिए स्वामी रामानद, कबीर आदि ने इसका समर्थन किया था।)

निर्गुणिया—वि०=निर्गुणी।

निर्गुणी—वि० [स० निर्गुण] (व्यक्ति) जिसमे कोई गुण या खूबी न हो।

निर्गुन—पु०[स० निर्गुण] पूर्वी हिन्दी के एक प्रकार के लोक-गीत, जिनमे मुख्यत निर्गुण ब्रह्म की भक्ति और रहस्यवादी भावनाओ की चर्चा रहती है।
वि०=निर्गुण।

निर्गूढ़—वि० [स० निर्√गुह् (छिपना)+क्त] जो बहुत ही गूढ हो।
पु० वृक्ष का कोटर।

निर्ग्रंथ—वि०[स० निर्-ग्रथ, प्रा० स०]१ निर्धन। गरीब। २ मूर्ख। बेवकूफ। ३ असहाय। ४ दिगबर। नगा।
पु०१ वह जो किसी धार्मिक ग्रथ का अनुयायी न हो, अथवा जिसके पथ मे कोई सर्वमान्य धार्मिक ग्रथ न हो। २ बौद्ध क्षपणक या भिक्षु। ३ एक प्राचीन मुनि।

निर्ग्रंथक—वि०[सं० निर्ग्रथ+कन्]१. चतुर। २ एकाकी। ३ परित्यक्त। ४ फलहीन।
पु०[स्त्री० निर्ग्रथिका]१ बौद्ध क्षपणक या सन्यासी। २ जुआरी।

निर्ग्रंथिन—पु०[स० निर्√ग्रथ (कौटिल्य)+ल्युट्—अन] वध करना। मारना।

निर्ग्रंथिक—वि०[स० निर्-ग्रथि, ब०स०, कप्] क्षपणक।
वि०, पु०[स०] निर्ग्रंथक।

निर्ग्राह्य—वि०[स० निर्-√ग्रह् (ग्रहण)+ण्यत्] १ देखने योग्य। २. ग्रहण करने योग्य।

निर्घंट—पु०[स० निर्√घट् (दीप्ति)+घञ् १. शब्द-सग्रह। शब्द-सपद। २. दे० 'निघटु'।

निर्घट—पु० [स० निर्-घट, ब०स०] वह हाट या बाजार जहाँ कोई राज-कर न लगता हो।

निर्घात—पु०[स० निर्√हन् (हिंसा)+घञ्]१ तेज हवा के चलने मे होनेवाला शब्द। २ बिजली की कड़क। ३ बहुत जोर का शब्द। ४ आघात। प्रहार। ५ उत्पात। उपद्रव। ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

निर्घातन—पु० [स० निर्√हन्+णिच्+ल्युट्—अन] शल्य-चिकित्सा मे, अस्त्रो से किया जानेवाला एक प्रकार का उपचार। (सुश्रुत)

निर्घृण—वि०[स० निर्-घृणा, ब०स०]१ जिसे घृणा न हो। घृणा से रहित। २ जिसे गदी चीजो से घृणा न होती हो। ३ जिसे बुरे काम करने से घृणा न हो, अर्थात् बहुत ही नीच। ४ जिसमे करुणा या दया न हो। निर्दय। ५ बेहया।

निर्घृणा—स्त्री० [स० निर्-घृणा, प्रा०स०] १ निष्ठुरता। २. धृष्टता।

निर्घोष—वि०[स० निर्√घुष् (शब्द)+घञ्] जिसमे घोष या शब्द न हो अथवा न होता हो। घोष-रहित।
पु०१ शब्द। आवाज। २ घोर शब्द।

निर्चा—पु०[स०] चचु (साग)।

निर्छल—वि०=निश्छल।

निर्जन—वि०[स० निर्-जन, ब०स०] (स्थान) जहाँ जन या मनुष्य न हो। एकात।

निर्जय—स्त्री०[स० निर्-जय, प्रा० स०] पूर्ण विजय।

निर्जर—वि०[स० निर्-जरा, ब०स०] [स्त्री० निर्जरा] जरा अर्थात् वृद्धावस्था से रहित। जो कभी बुड्ढा न हो।
पु० १ देवता। २ अमृत।

निर्जरा—स्त्री०[स० निर्जर+टाप्]१ तपस्या करके सचित कर्मो का क्षय या नाश करने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ तालपर्णी। ३ गिलोय। गुडूची।

निर्जल—वि०[स० निर-जल, ब०स०] [स्त्री० निर्जला] १ (आधान या पात्र) जिसमे जल न हो। २. (व्यक्ति) जिसने जल न पीया हो। ३ (नियम या व्रत) जिसमे जल तक पीने का निषेध हो। ४ (क्रिया या प्रयोग) जिसमे जल की अपेक्षा न होती हो, बल्कि उसका काम रासायनिक पदार्थो से किया जाता हो। (ड्राई) जैसे—निर्जल खेती, निर्जल धुलाई।

पु० १ वह स्थान, जहाँ जल बिलकुल न हो। २. ऐसा उपवास या व्रत जिसमे जल न पीया जाता हो।

निर्जल खेती—स्त्री०[स०+हिं०]ऐसी खेती जिसमे वर्षा के जल की अपेक्षा न हो, बल्कि वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से फसल तैयार कर ली जाय। (ड्राई फारमिंग)

निर्जल धुलाई—स्त्री० [स०+हिं०]कपडों आदि की ऐसी धुलाई, जिसमे बिना जल का उपयोग किये वे वैज्ञानिक प्रक्रियाओ से साफ किये जाते है। (ड्राई वाशिंग)

निर्जल प्रतिसारण—पु०[स० कर्म०स०]घावों आदि के धोने की वह प्रक्रिया जिसमे उन्हे साफ करके उनमे केवल रुई भरी जाती है, तरल औषधों का प्रयोग नही होता। (ड्राई ड्रेसिंग)

निर्जला एकादशी—स्त्री०[स० व्यस्त पद] जेठ सुदी एकादशी, जिस दिन निर्जल व्रत रखने का विधान है।

निर्जलित—भू०कृ०[स० निर्√जल् (ढकना)+क्त] जिसके अदर का जल निकाल या सुखा दिया गया हो। (डिहाइड्रेटेड)

निर्जलीकरण—पु० [स० निर्जल+च्वि, ईत्व√कृ+ल्युट—अन] रासायनिक प्रक्रिया द्वारा किसी वस्तु मे से उसका जलीय अश निकाल लेना या उसे सुखा देना। (डिहाइड्रेशन) जैसे—तरकारियो या फलो का निर्जलीकरण।

निर्जात—वि० [स० निर्√जन (उत्पत्ति)+क्त] जो आविर्भूत या प्रकट हुआ हो।

निर्जित—भू० कृ०[स० निर्√जि (जीतना)+क्त] [भाव० निर्जिति] १ पूरी तरह से जीता हुआ। २ वश मे किया हुआ।

निर्जिति—स्त्री०[स० निर्√जि+क्तिन्] पूर्ण विजय।

निर्जीव—वि०[स० निर्-जीव, ब०स०]१ जिसमे जीवन या प्राण न हो। २ मरा हुआ। मृत। ३ जिसमे जीवनी-शक्ति का अभाव या कमी हो। ४ जिसमे ओज, दम या सजीवता न हो। जैसे—निर्जीव कहानी। ५ उत्साहहीन।

निर्झर—पु०[स० निर्√झृ(झरना)+अप्] झरना।

निर्झरिणी, निर्झरी—स्त्री०[स० निर्झर+इनि—ङीप्, निर्झर+ङीप्] झरने से निकलनेवाली नदी।

निर्णय—पु० [स० निर्√नी (ले जाना)+अच्] १. कही से कुछ ले जाना या हटाना। २ किसी बात या विषय की ठीक और पूरी जानकारी प्राप्त करके अथवा किसी सिद्धान्त पर विचार करके कोई मत स्थिर करना। निष्कर्ष या परिणाम निकालना। ३ उक्त प्रकार से स्थिर किया हुआ मत या निकाला हुआ निष्कर्ष। ४ किसी प्रकार के मतभेद, विवाद आदि के सबध मे दोनो पक्षो की सब बातो पर विचार करके यह निश्चय करना कि कौन-सा पक्ष या मत ठीक है। ५ विधिक क्षेत्र मे, वादी और प्रतिवादी के सब आरोपों, उत्तरो, प्रमाणो आदि पर अच्छी तरह विचार करते हुए न्यायाधिकारी या न्यायालय का यह निश्चित या स्थिर करना कि किस पक्ष की बातें ठीक है, अथवा इस विषय का उचित रूप क्या होना चाहिए। ६ न्यायाधिकारी का लिखा हुआ वह लेख्य जिसमे उक्त विषय की सब बातो का विवेचन करते हुए अपना अतिम निष्कर्ष या मत प्रकट करता है। फैसला। (डिसीजन)

निर्णयन—पु०[स० निर्√नी+ल्युट्—अन] निर्णय करने की क्रिया या भाव।

निर्णयात्मक—वि०[स० निर्णय-आत्मन्, ब०स०, कप्]१ निर्णय-सबधी। २. निर्णय के रूप मे होनेवाला। ३ (तत्त्व या बात) जिससे किसी विवादास्पद बात का निर्णय होता हो। (दे० 'निर्णायक')

निर्णयोपमा—स्त्री० [स० निर्णय-उपमा, मध्य० स०] एक अर्थालकार जिसमे उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों का विवेचन करते हुए कुछ निष्कर्ष निकाला या निर्णय किया जाता है।

निर्णर—पु०[स०] सूर्य का एक घोडा।

निर्णायक—वि०[स० निर्√नी+ण्वुल्—अक] १ निर्णय करनेवाला। २. (घटना या बात) जिससे किसी झगडे या विषय का निर्णय होता हो। (डिसाइसिव)

पु० १. वह व्यक्ति जो किसी प्रकार के विवाद का निर्णय करता हो। २ खेल मे, वह व्यक्ति जो खेलाडियो को खेल के नियमो के अनुसार खिलाता है और जिसका निर्णय अतिम होता है। (अम्पायर)

निर्णायक-मत—पु० [स० ष०त०] सभा-समितियों आदि मे किसी विवादात्मक प्रश्न के सबध मे होनेवाले मत-दान के समय उस प्रश्न के पक्ष और विपक्ष मे बराबर-बराबर मत आने पर सभापति का वह अतिम मत जिसके आधार पर उस प्रश्न का निर्णय होता है। (कास्टिंग वोट)

निर्णिक्त—वि० [स० निर्√निज् (शुद्धि)+क्त] [भाव० निर्णिक्ति] १ धुला हुआ। २ शोधित। ३. जिसके लिए प्रायश्चित्त किया गया हो।

निर्णिक्ति—स्त्री० [स० निर्√निज्+क्तिन्] १ धोना। २ शोधन। ३ प्रायश्चित्त।

निर्णीत—भू० कृ० [स० निर्√नी+क्त] १. जिसका निर्णय हो चुका हो या किया जा चुका हो। २ (विवाद) जिसके सबध मे निर्णय हो चुका हो। ३ (खेल) जिसमे हार-जीत का फैसला हुआ हो।

निर्णेक—पु० [स० निर्√निज्+घञ्] १ धोना। साफ करना। २ स्नान। ३. प्रायश्चित्त।

निर्णेजक—वि० [स० निर्√निज्+ण्वुल्—अक] १. धोने या साफ करनेवाला। २ प्रायश्चित्त करनेवाला।

पु० धोबी। रजक।

निर्णेजन—पु० [स० निर्√निज्+ल्युट्—अन]=निर्णेक।

निर्णेता (तृ)—वि०, पु० [स० निर्√नी+तृच्] निर्णायक।

निर्त†—पु०=नृत्य।

निर्त्तक†—पु०=नर्तक।

निर्तना†—अ०=नाचना।

निर्तास†—पु०=निर्यास।

निर्दंड—वि० [स० निर्-दड, ब० स०] जिसे सब प्रकार के दण्ड दिए जा सके।

पु० शूद्र, जिसे सब प्रकार के दड दिये जाते थे या दिये जा सकते थे।

निर्दंत—वि० [स० निर्-दत, ब० स०] (मुँह या व्यक्ति) जिसमे या जिसे दाँत न हो।

निर्दंभ—वि० [स० निर्-दभ, ब० स०] दभ-हीन।

निर्दई— वि०=निर्दय।

निर्दग्ध—वि० [स० निर्√दह् (जलाना)+क्त] जो जला हुआ न हो।

निर्दय—वि० [स० निर्-दया, ब० स०] [भाव० निर्दयता] १ दया-हीन। २. (व्यक्ति) जो बहुत ही कठोर होकर अत्याचारपूर्ण काम करता हो और इस प्रकार दूसरो को सताता हो।

निर्दयता—स्त्री० [स० निर्दय+तल्—टाप्] निर्दय होने की अवस्था या भाव।

निर्दयी†—वि०=निर्दय।

निर्दर—वि० [स० निर्-दर=छिद्र, ब० स०] १ कठिन। कठोर। २ निर्दय।

पु० [स० निर्√दृ (विदारण)+अप्] १. निर्झर। २ गुफा। ३ सार।

निर्दल—वि० [स० निर्-दल, ब० स०] १. जिसमे दल न हो। दल-रहित। २. जो किसी दल (पक्ष या वर्ग) मे न हो। सब दलो से अलग।

निर्दलन—पु० [स० निर्√दल् (फाडना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ नाश करना। २ भग करना।

वि० दलन करनेवाला।

निर्दहन—पु० [स० निर्√दह्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह जलाना। २ भिलावाँ।

निर्दहना*—स० [स० दहन] दहन करना। जलाना।

निर्दहनी—स्त्री० [स० निर्दहन+ङीप्] मरोडफली। मूर्वा लता।

निर्दाता (तृ)—पु० [स० निर्√दा (देना)+तृच्] १ खेत निराने या निराई का काम करनेवाला व्यक्ति। २ कृषक। किसान। ३ दाता।

निर्दारण—पु० [स०] [भू० कृ० निर्दारित]=विदारण।

निर्दिष्ट—भू० कृ० [स० निर्√दिश (बताना)+क्त] १ जिसके प्रति या जिसकी ओर निर्देश हुआ हो। २ कहा, बतलाया या समझाया हुआ। वर्णित। ३ नियत या निश्चित किया हुआ। ठहराया हुआ। जैसे—निर्दिष्ट समय पर काम करना। ४ निर्णीत। ५ (बात या नियम) जिसके लिए कोई व्यवस्था की गुजाइश निकाली गई या शर्त लगाई गई हो। (प्रोवाइडेड)

निर्दूषण—वि०=निर्दोष।

निर्देश—पु० [स० निर्√दिश्+घञ्] १ स्पष्ट रूप से कहकर कुछ बतलाना या समझाना। (इन्स्ट्रक्शन) २. किसी चीज या बात की ओर ध्यान दिलाते या सकेत करते हुए यह बतलाना कि यही अभीष्ट अथवा अमुक है। इस प्रकार का उल्लेख या कथन कि यही वह है अथवा वही यह है। (रेफरेन्स)

पद—निर्देश-ग्रथ। (देखे)

३ यह कहना, बतलाना या समझाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार अथवा इस रूप मे होनी चाहिए। (डाइरेक्शन) ४ निश्चित करना। ठहराना। ५ आज्ञा। आदेश। ६ उल्लेख। चर्चा। जिक्र। ७. नाम। सज्ञा। ८. आस-पास का स्थान। पडोस।

निर्देशक—वि० [स० निर्√दिश्+ण्वुल्—अक] निर्देश या निर्देशन करनेवाला।

पु० वह व्यक्ति जिसका काम किसी प्रकार का निर्देश करना हो। (डाइरेक्टर)

निर्देश-ग्रथ—पु० [ष० त०] वह ग्रथ या पुस्तक जो सामान्यत. अध्ययन के लिए न लिखी गई हो, वरन् जिसका उपयोग विशेप अवसरो पर कुछ बातो की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता हो। (रेफरेन्सबुक)

निर्देशन—पु० [स० निर्√दिश्+ल्युट्—अन] १ निर्देश करने की क्रिया या भाव। २ यह कहना या बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार या इस रूप मे होना चाहिए। ३ वह स्थिति जिसमे कोई कार्य किसी की पूर्ण देख-रेख मे और उसके निर्देशानुसार हुआ हो। (डाइरेक्शन) ४ कोई ग्रथ लिखने के समय उसमे आये हुए उद्धरणो, प्रसगो आदि के सबध मे यह बतलाना कि इनकी विशेप जानकारी अमुक ग्रथ मे अमुक स्थान पर मिलेगी। (रेफरेस)

निर्देष्टा—वि० पु०, [स० निर्-√दिश्+तृच्]=निर्देशक।

निर्दैन्य—वि० [स० निर्-दैन्य, ब० स०] दैन्य या दीनता से रहित अर्थात् निश्चित और सुखी रहने की अवस्था या भाव।

निर्दोष—वि० [स० निर्-दोप, ब० स०] [भाव० निर्दोपता] १ जिसमे कोई अवगुण, दोप या बुराई न हो। बेएब। २ (व्यक्ति) जिसने कोई दोप या अपराध न किया हो। निरपराध। ३ (कार्य) जो दोप से युक्त न हो।

निर्दोषता—स्त्री० [स० निर्दोप+तल्—टाप्] निर्दोप होने की अवस्था या भाव।

निर्दोषी†—वि०=निर्दोप।

निर्द्रव्य—वि० [स०]=निर्धन।

निर्द्वंद्व—वि० [स० निर्+द्वद्व, ब० स०] १ जो सब प्रकार के द्वद्वो से परे या रहित हो। द्वन्द्व-हीन। २. जो सुख-दु ख, राग-द्वेप आदि से रहित हो। ३ जिसका कोई प्रतिद्वद्वी या विरोधी न हो। ४. सब प्रकार से स्वच्छद।

क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के द्वद्व या विघ्न-बाधा के। २ बिलकुल मनमाने ढग से और स्वच्छदतापूर्वक।

निर्धन—वि० [स० निर्-धन] १. (व्यक्ति) जिसके पास धन न हो। धन-हीन। २ जिसने कोई अमूल्य वस्तु खो दी हो।

निर्धनता—स्त्री० [स० निर्धन+तल्—टाप्] धनहीनता। गरीबी।

निर्धर्म्य—वि० [स० निर्-धर्म्य, ब० स०] १ जो धर्म से रहित हो। २ (व्यक्ति) जिसका कोई धर्म न हो।

निर्धातु—वि० [स० निर्-धातु, ब० स०] १ (पदार्थ) जो धातु के योग से न बना हो। २ (व्यक्ति) जिसकी धातु या वीर्य क्षीण हो गया हो।

निर्धार—पु०=निर्धारण।

निर्धारण—पु० [स० निर्√धृ (धारण)+णिच्+ल्युट्—अन] १. किसी विचार को कार्य का रूप देने से पहले मन मे उसे करने की दृढ धारणा बनाना। तै या निश्चित करना। २. निश्चय के रूप मे सभा, समितियो आदि का कोई प्रस्ताव पारित करना। ३ अर्थ-शास्त्र मे, निर्मित वस्तुओ के विक्रय-मूल्य निश्चित करना अथवा माँग और पूर्ति के आधार पर स्वय मूल्य निश्चित होना। ४ यह निश्चय करना कि अमुक काम से कितनी आय या कितना व्यय होना चाहिए। (एसेस्मेट) ५ न्याय मे, किसी एक जाति के पदार्थो मे से गुण, कर्म आदि के विचार से कुछ को अलग करना। जैसे—यदि कहा जाय कि 'अमुक जाति के आम बहुत अच्छे होते है' तो यह उस जाति के आमो का निर्धारण होगा

निर्धारना—स० [स० निर्धारण] निर्धारित या निश्चित करना। ठहराना।

निर्धारित—भू० कृ० [सं० निर्√धृ+णिच्+क्त] १. (बात) जिसे कार्य का रूप देने के लिए निश्चय कर लिया गया हो। २. (वस्तु) जिसका मूल्य निश्चित हो चुका हो। ३. (व्यापार या संपत्ति) जिसकी आय तथा व्यय आँका जा चुका हो।

निर्धारिती—पु० [सं०] वह जिसके संबंध में यह निर्धारित किया जाय कि इसे इतना कर आदि देना चाहिए। (एसेसी)

निर्धार्य—वि० [सं० निर्√धृ+ण्यत्] १. जिसके संबंध में निर्धारण होने को हो अथवा हो सकता हो। २. दृढ़। पक्का। ३. उत्साही। ४ निर्भीक।

निर्धूत—भू० कृ० [सं० निर्√धू (काँपना)+क्त] १. निकाला या हटाया हुआ। २. त्यक्त। ३. नष्ट किया हुआ। ४. टूटा हुआ। वि०=धौत (धोया हुआ)।

निर्धूम—वि० [सं० निर्-धूम, ब० स०] १. (स्थान) जिसमें धूआँ न हो। २ (उपकरण) जो धूआँ न छोड़ता हो। जैसे—निर्धूम गाड़ी।

निर्धौत—वि० [सं० निर्√धाव् (शुद्धि)+क्त] १. जो धुल चुका हो। २. चमकाया हुआ।

निर्नर—वि० [सं० निर्-नर, ब० स०] १. जिसमें नर या मनुष्य न हो। मनुष्यों से रहित। २. मनुष्यों द्वारा छोड़ा या त्यागा हुआ।

निर्नाथ—वि० [सं० निर्-नाथ, ब० स०] [भाव० निर्नाथता] जिसका कोई नाथ अर्थात् स्वामी न हो। अनाथ।

निर्निमित्त—वि० [सं० निर्-निमित्त, ब० स०] जिसका कोई निमित्त या कारण न हो।
अव्य० बिना किसी निमित्त या कारण के।

निर्निमित्तक—वि०=निर्निमित्त।

निर्निमेष—अव्य० [सं० निर्-निमेष, ब० स०] बिना पलक झपकाये। टक लगाकर। एकटक।
वि० १ जिसकी पलक न गिरे। २ जिसमें पलक न गिरे। जैसे—निर्निमेष दृष्टि।

निर्पक्ष—वि०=निष्पक्ष।

निर्फल—वि०=निष्फल।

निर्बंध—वि० [सं० निर्-बंध, ब० स०] जो बंधन या बंधनों से रहित हो।
पु० १. अड़चन। बाधा। २. रुकावट। रोक। ३. जिद। हठ। ४. आग्रह। ५ काव्य का वह प्रकार या भेद, जिसमें कोई क्रमबद्ध कथा न हो, बल्कि स्वच्छंद रूप से किसी तथ्य, भाव या रस का विवेचन हो।

निर्बंधन—पु० १.=निर्बंध। २.=निबंधन।

निर्बद्ध—भू० कृ० [सं० निर्√बंध् (बाँधना)+क्त] जिसके संबंध में किसी प्रकार का निबंध लगा या हुआ हो। (रेस्ट्रिक्टेड)

निर्बल—वि० [सं० निर्-बल, ब० स०] [भाव० निर्बलता] १. (व्यक्ति) जिसमें बल न हो। २ जिसमें सहनशक्ति का अभाव हो। जैसे—निर्बल हृदय। ३. जिसमें यथेष्ट ओज या सजीवता न हो। जैसे—निर्बल विचारधारा।

निर्बलता—स्त्री० [सं० निर्बल+तल्—टाप्] निर्बल होने की अवस्था या भाव। कमजोरी।

निर्बहण—पु०=निर्वहण।

निर्बहना—अ० [सं० निर्वहन] १. निर्वाह होना। निभना। २. अलग या दूर होना।
स० १. निर्वाह करना। निभाना। २. अलग या दूर करना।

निर्बाध—वि० [सं० निर्-बाधा, ब० स०] जिसमें कोई बाधा न हो या न लगाई गई हो।
अव्य० १. बिना किसी बाधा के। २. निरन्तर। लगातार।

निर्बाधित—वि०=निर्बाध।

निर्बान*—पु०=निर्वाण।

निर्बीज—वि० [सं० निर्-बीज, ब० स०] जिसका बीज या जनन-शक्ति बिलकुल नष्ट हो गई हो या नष्ट कर दी गई हो।

निर्बीजन—पु० [सं०] [भू० कृ० निर्बीजित] १. निर्बीज करना। २. ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु या प्राणी अपनी वंश-वृद्धि करने में असमर्थ हो जाय।

निर्बीर—वि०=निर्वीर्य।

निर्बुद्धि—वि० [सं० निर्-बुद्धि, ब० स०] १. (व्यक्ति) जिसे बुद्धि न हो। २. मूर्ख।

निर्बोध—वि० [सं० निर्-बोध, ब० स०] जिसे बोध या ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।

निर्भग्न—वि० [सं० निर्-भग्न, प्रा० स०] १. अच्छी तरह टूटा या तोड़ा हुआ। २. झुकाया हुआ।

निर्भट—वि० [सं० निर्√भट् (पोषण)+अच्] दृढ़। पक्का।

निर्भय—वि० [सं० निर्-भय, ब० स०] [भाव० निर्भयता] जिसे भय न हो।
पु० १ बढ़िया घोड़ा, जो जल्दी डरता न हो। २. रौच्य मनु का एक पुत्र।

निर्भयता—स्त्री० [सं० निर्भय+तल्—टाप्] निर्भय होने की अवस्था या भाव। निर्भीकता।

निर्भर—वि० [सं० निर्-भर, ब० स०] १. अच्छी या पूरी तरह से भरा हुआ। २. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। युक्त। ३ आज-कल बँगला के आधार पर (कार्य, बात या व्यक्ति) जो किसी दूसरे पर अवलंबित या आश्रित हो। किसी पर ठहरा हुआ।
पु० ऐसा सेवक जिसे वेतन न दिया जाता हो।

निर्भर्त्सन—पु० [सं० निर्√भर्त्स (दुतकारना)+ल्युट्—अन] १ भर्त्सन। डाँट-डपट। २. निंदा।

निर्भर्त्सना—स्त्री० [सं० निर्√भर्त्स्+णिच्+युच्—अन, टाप्]=भर्त्सना।

निर्भाग्य—वि० [सं० निर्-भाग्य, ब० स०] अभागा।
पु०=दुर्भाग्य।

निर्भास—पु० [सं०] प्रकट या भासित होना।

निर्भिन्न—वि० [सं० निर्√भिद् (विदारण)+क्त] १ छिदा हुआ। २. फाड़ा हुआ।

निर्भीक—वि० [सं० निर्-भी, ब० स०, कप्] [भाव० निर्भीकता] (व्यक्ति) जो बिना डरे या बिना किसी के दबाव में आये और बहादुरी से कोई काम करता हो।

निर्भीकता—स्त्री० [सं० निर्भीक+तल्—टाप्] निर्भीक होने की अवस्था या भाव।

निर्भीत—वि०=निर्भीक।

निर्भूति—स्त्री० [स० निर्√भू (होना)+क्तिन्] ओझल या लुप्त होना। अतर्धान होना।

निर्भृति—वि० [स० निर्-भृति, ब० स०] जो बेगार मे या अपेक्षया बहुत कम पारिश्रमिक पर किसी की सेवा करता हो।

निर्भेद—पु० [स० निर्√भिद् (विदारण)+घञ्] १ छेदना। २. फाडना। ३ भेद या रहस्य खोलना।
वि० [निर्-भेद, ब० स०] भेद-रहित।

निर्भ्रम—वि० [स० निर्-भ्रम, ब० स०]१ (व्यक्ति) जिसे भ्रम न हो। २ (बात या विषय) जिसमे भ्रम के लिए अवकाश न हो।
क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के भ्रम के। २ बेखटके। बेधडक।

निर्भ्रांत—वि० [स० निर्√भ्रम (घूमना)+क्त] १. (व्यक्ति) जिसे भ्राति न हो। २ (बात या विषय) जिसमे किसी प्रकार की भ्राति के लिए अवकाश न हो।

निर्मक्षिक—वि० [स० निर्-मक्षिका, अव्य० स०] १. (स्थान) जहाँ मक्खियाँ न हों। मक्खियों से रहित। २ जिसमे कोई विघ्न-बाधा न हो। निर्विघ्न।

निर्मत्सर—वि० [स० निर्-मत्सर, ब० स०] दूसरो से द्वेष न करनेवाला। मत्सर-रहित।

निर्मथ—पु० [स० निर्√मथ् (रगडना)+घञ्] १. रगडना। २. वह लकडी जिसे रगडने पर आग निकले।

निर्मथ्या—स्त्री० [स० निर्√मथ्+ण्यत्, टाप्] नालिका या नली नामक गध-द्रव्य।

निर्मद—वि० [स० निर्-मद, ब० स०] १. मद से रहित। २. अभिमान-रहित।
पु० सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

निर्मना—स० [स० निर्माण] निर्माण करना। बनाना। रचना।

निर्मनुज—वि० [स० निर्-मनुज, ब० स०] (स्थान) जिसमे मनुष्य वास न करते हों।

निर्मनुष्य—वि० [स० निर्-मनुष्य, ब० स०] निर्मनुज।

निर्मम—वि० [स० निर्-मम, ब० स०] [भाव० निर्ममता] १. जिसमे ममत्व की भावना न हो। २. जो अपने मन की कोमल भावनाओ को नष्ट कर कोई कठोर आचरण करता हो। ३. (काम) जो निर्दयता-पूर्वक किया जाय। जैसे—निर्मम हत्या।

निर्मल—वि० [स० निर्-मल, ब० स०] [भाव० निर्मलता] १. (वस्तु) जिसमे मल या मलिनता न हो। साफ। स्वच्छ। २. (व्यक्ति) जिसके चरित्र पर कोई बब्बा न लगा हो। ३. (हृदय) जिसमे दूषित या बुरी भावनाएँ न हो। शुद्ध।
पु० १ अभ्रक। अबरक। २. दे० 'निर्मली'।

निर्मलता—स्त्री० [स० निर्मल+तल्—टाप्] निर्मल होने की अवस्था या भाव।

निर्मलांगी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

निर्मला—पु० [स० निर्मल] १ एक नानकपथी त्यागी सप्रदाय, जिसके प्रवर्त्तक गुरु रामदास थे। इस सप्रदाय के लोग गेरुए वस्त्र पहनते और साधु-सन्यासियो की तरह रहते है। २ उक्त सप्रदाय का अनुयायी साधु।

निर्मली—स्त्री० [स० निर्मल] १. एक प्रकार का मझोला सदाबहार पेड जिसकी लकडी इमारत और खेती के औजार बनाने के काम मे आती है। २ रीठे का वृक्ष और उसका फल।

निर्मलोत्पल—पु० [स० निर्मल-उत्पल, कर्म० स०] स्फटिक।

निर्मलोपल—पु० [स० निर्मल-उपल, कर्म० स०] स्फटिक।

निर्मल्या—स्त्री० [स० निर्मल+यत्—टाप्] असबरग। स्पृक्का।

निर्मास—वि० [स० निर्-मास, ब० स०] १ जिसमे मास न हो। मास-रहित। २ (व्यक्ति) जो भोजन आदि के अभाव या रोग आदि के कारण बहुत दुबला हो गया हो और जिसके शरीर का अधिकतर मास गल-पच गया हो।

निर्माण—पु० [स० निर्√मा (मापना)+ल्युट्—अन] १. गढ या ढालकर अथवा किसी चीज के सब अगो, उपागो, उपादानो आदि के योग से कोई नई चीज तैयार करना या बनाना। रचना। जैसे—भवन या सेतु का निर्माण; कपडे, कागज आदि का निर्माण; ग्रथ या पुस्तक का निर्माण। २ उक्त प्रकार से बनकर तैयार होनेवाली चीज। ३. किसी चीज को उच्चतम या उत्कृष्टतम रूप देना। जैसे—चरित्र का निर्माण करना। ४ नापना। मापन। ५ रूप। शकल। ६. अश। हिस्सा। ७ सार-भाग। ८ मज्जा।

निर्माण-विद्या—स्त्री० [ष० त०] इमारत, नहर, पुल आदि बनाने की विद्या। वास्तु-विद्या। वास्तु-कला।

निर्माता (तृ)—वि० [स०निर्√मा+तृच्] जो किसी चीज का निर्माण करता हो। बनाने या रचनेवाला।

निर्मात्रिक—वि० [स० निर्-मात्रिक, प्रा०स०] बिना मात्रा का। जिसमे मात्रा न हो। जैसे—निर्मात्रिक पद्य-रचना।

निर्मान*—वि० [सं० निर्+मान] १ जिसका मान या परिमाण न हो। बेहद। अपार। उदा०—नित्य निर्मय नित्य युक्त निर्मान हरि ज्ञान घन सच्चिदानद मूल।—तुलसी। २. जिसका मान या प्रतिष्ठा न हो।
†पु०=निर्माण।

निर्माना—स० [स० निर्माण] निर्माण करना। बनाना। रचना।

निर्मायक—वि० [स० निर्√मा+ण्वुल्—अक] निर्माण करनेवाला। निर्माता।

निर्मार्जन—पु० [स० निर्√मार्ज् (शुद्धि)+ल्युट्—अन] १. साफ करना। २. धोना।

निर्माल्य—वि० [सु० निर् √मल् (ग्रहण)+ण्यत्] निर्मल। शुद्ध।
पु० १ निर्मलता। २ देवता पर चढे या चढाये हुए पदार्थ।

निर्माल्या—स्त्री०=निर्माल्य।

निर्मित—भू० कृ० [स० निर्+मा+क्त] [भाव० निर्मिति] जिसका निर्माण हुआ हो या किया गया हो। बनाया या रचा हुआ।

निर्मिति—स्त्री०[स० निर्√मा+क्तिन्] १. निर्माण करने की क्रिया या भाव। २ निर्माण करके तैयार की हुई चीज।

निर्मुक्त—वि०[स० निर्+मुच् (छोडना)+क्त] [भाव० निर्मुक्ति] १ जो मुक्त हुआ हो या जिसे निर्मुक्ति मिली हो। २ जो सब प्रकार

के बधनो से रहित हो। ३ (साँप) जो अभी निर्मोक या केंचुली छोडकर अलग हुआ हो।

निर्मुक्ति—स्त्री०[स० निर्+मुच्+क्तिन्] १ मुक्ति। छुटकारा। २ मोक्ष। ३ बदियो विशेषत राजनैतिक बदियो को एक साथ क्षमा करके छोड देना। (एम्नेस्टी)

निर्मूल—वि०[स० निर्-मूल, ब० स०] १ जिसमे जड न हो। बिना जड का। २ जड के पूर्ण रूप से नष्ट हो जाने के कारण जो न बच रहा हो। पूरी तरह से विनष्ट। जैसे—रोग निर्मूल करना। ३ जिसका कोई मूल अर्थात् आधार या बुनियाद न हो। बेसिर-पैर का। जैसे—निर्मूल दोषारोपण।

निर्मूलक—वि० [स० ब० स०, कप्] निर्मूल।

निर्मूलन—पु०[स० निर्मूल+णिच्=ल्युट्-अन] १ जड से उखाडना। निर्मूल करना। २ पूर्ण रूप से नष्ट करने की क्रिया या भाव। पूर्ण विनाश। ३ निराधार या बेबुनियाद सिद्ध करना।

निर्मृष्ट—भू० कृ० [स० निर्√मृज् (शुद्धि)+क्त] १. धुला या साफ किया हुआ। २ मिटाया हुआ।

निर्मेघ—वि०[स० निर्-मेघ, ब० स०] मेघ या बादलो से रहित। निरभ्र।

निर्मेध—वि० [स० निर्-मेधा, ब० स०] मेधाशक्ति से रहित। मूर्ख।

निर्मोक—पु०[स० निर्+मुच्+(छोडना) घञ्] १ स्वतत्र या स्वाधीन करना। २. साँप की केंचुली। ३ शरीर के ऊपर की पतली खा या झिल्ली। ४ आकाश। ५ सावर्णि मनु के एक पुत्र। ६ तेरहवें मनु के सप्तर्षियो मे से एक।

निर्मोक्ष—पु०[स० निर्-मोक्ष, प्रा० स०] १ त्याग। २ धर्मशास्त्रो के अनुसार ऐसा मोक्ष या मुक्ति जिसमे आत्मा के साथ कोई सस्कार लगा न रह जाय। पूर्ण मोक्ष।

निर्मोचन—पु०[स० निर्√मुच्+ल्युट्-अन] छुटकारा। मुक्ति।

निर्मोल—वि०=अमूल्य।

निर्मोह—वि०[स० निर्-मोह, ब० स०] १ जिसे या जिसमे मोह न हो। मोह-रहित। २ दे० 'निर्मोही'। ३ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम। ४ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

निर्मोही—वि० [स० निर्मोह] [स्त्री० निर्मोहिनी] जिसे या जिसमे मोह या ममत्व न हो। किसी के प्रति अनुराग स्नेह न रखनेवाला।

निर्यत्रण—पु०[स० निर्√यत्र् (निग्रह)+ल्युट्-अन] यत्रण से रहित करने की क्रिया या भाव।

निर्याण—पु०[स० निर्√या (जाना)+ल्युट्—अन] १ बाहर निकलना या जाना। प्रयाण। प्रस्थान। २ सेना का युद्ध-क्षेत्र की ओर होनेवाला प्रस्थान। ३ नगर या बस्ती से बाहर की ओर जानेवाला मार्ग या सडक। ४ अदृश्य या गायब होना। अतर्धान। ५ शरीर का आत्मा से बाहर निकलना। ६ मुक्ति। मोक्ष। ७ गति मे लाना। ८. जहाज आदि का ठीक ढग से सचालन करना। (पाइलॉटिंग) ९ पशुओ के पैरो मे बाँधी जानेवाली रस्सी। १० हाथी की आँख का बाहरी कोना।

निर्यात—पु०[स० निर्√या+क्त] १. माल बाहर भेजने की क्रिया या भाव। २ किसी देश की दृष्टि मे उसका वह माल जो विदेशो मे बिक्री के लिए भेजा जाय। (एक्सपोर्ट)

निर्यातक—वि०[स० निर्यात+णिच्+ण्वुल्-अक] जो वस्तुओ का निर्यात करता हो। बिक्री के लिए माल विदेश भेजनेवाला। (एक्सपोर्टर)

निर्यात-कर—पु०[प० त०] निर्यात शुल्क। (दे०)

निर्यातन—पु० [स० निर्√यत (प्रयत्न)+णिच्+ल्युट्—अन] १ निर्यात करने की क्रिया या भाव। २ प्रतिकार करना। बदला चुकाना। ३. ऋण चुकाना। ४ मार डालना। वध।

निर्यात-शुल्क—पु०[स० प० त०] वह शुल्क जो देश से वस्तुओ का निर्यात करने के समय चुकाना पडता हो। (एक्सपोर्ट ड्यूटी)

निर्याति—स्त्री०[स० निर्√या+क्तिन्] १ बाहर जाने या निकलने की क्रिया या भाव। २. मृत्यु।

निर्यामक—पु०[स निर्√यम्(नियत्रण) +णिच्√ण्वुल्-अक] १ नाविक। मल्लाह। २ हवाई जहाज आदि चलानेवाला। (पाइलॉट)

निर्यास—पु०[स० निर्√यस् (प्रयत्न)+घञ्] १ निकलना या बहना। २ वह तरल पदार्थ जो पौधे, वृक्ष आदि के तने, शाखा, पत्ते आदि मे से निकले। ३ गोद। ४ जडी-बूटियो, वनस्पतियो को उबालकर निकाला हुआ रस। काढा। क्वाथ।

निर्युक्तिक—वि०[स० निर्-युक्ति, ब० स०, कप्] जिसमे कोई युक्ति न हो। युक्ति-रहित।

निर्यूथ—वि०[स० निर्-यूथ, ब० स०] जो अपने यूथ या दल से अलग हो गया हो।

निर्यूष—पु०[स० निर्-यूप, प्रा०स०] निर्यास। (दे०)

निर्यूह—पु०[स० निर्√ऊह् (तर्क)+क, पृषो० सिद्धि] १ ओषधियो का काढा। क्वाथ। २ दरवाजा। द्वार। ३. सिर पर पहनने की कोई चीज। जैसे—टोपी, पगडी, मुकुट आदि। ४ दीवार मे लगा हुआ वह तख्ता जिस पर चीजे रखी जाती है।

निर्लज्ज—वि० [स० निर्-लज्जा, ब० स०] [भाव० निर्लज्जता] १. (व्यक्ति) जिसे किसी बात मे लज्जा न आती हो। बेशरम। २ (कार्य) जो निर्लज्ज होकर किया गया हो।

निर्लज्जता—स्त्री०[स० निर्लज्ज+तल्-टाप्] निर्लज्ज होने की अवस्था या भाव। बेशरमी। बेहयाई।

निर्लिंग—वि०[स० निर्-लिंग, ब० स०] जिसमे कोई लिंग अर्थात् परिचायक चिह्न न हो।

निर्लिप्त—वि०[स० निर्√लिप् (लीपना)√क्त] [भाव० निर्लिप्ता] १ जो किसी के साथ या किसी मे लिप्त न हो। जो किसी से लगाव या सबध न रखता हो। २ सासारिक माया-मोह, राग-द्वेष आदि से परे और रहित।

निर्लुंचन—पु०[स० निर्-√लुञ्च् (फाडना)√ल्युट्-अन] १ फाडना। २. छिलके या भूसी अलग करना।

निर्लुंठन—पु०[स० निर्√लुठ् (स्तेय) +ल्युट्-अन] १ लूटना। २ फाडकर अलग करना।

निर्लेखन—पु०[स० निर्√लिख् (लिखना)+ल्युट्—अन] १ किसी चीज पर जमी हुई मैल आदि खुरचना। २. वह चीज जिससे मैल खुरची जाय। खुरचने का उपकरण।

निर्लेप—वि० [स० निर्-लेप, ब० स०] १ जिस पर किसी प्रकार का लेप न हो। २ दोष आदि से रहित। ३ दे० 'निर्लिप्त'।

निर्लोभ—वि० [सं० निर्-लोभ, ब० स०] [भाव० निर्लोभता] जिसे किसी प्रकार का लोभ न हो। लोभ-रहित।

निर्लोभी—वि०=निर्लोभ।

निर्वंश—वि०[सं० निर्-वंश, ब० स०] [भाव० निर्वंशता] १ जिसके वंश में और कोई न बच रहा हो। २ (व्यक्ति) जिसे संतान न हो और इसी लिए जिसके वंश की वृद्धि न हो सके।

निर्वक्तव्य—वि० [सं० निर्√वच् (कहना)+तव्यत्] जो कहा न जा सके।

निर्वचन—वि० [सं० निर्-वचन, ब० स०] जो कुछ बोल न रहा हो। चुप। मौन।

पुं० [निर्-√वच्+ल्युट्-अन] १ उच्चारण करना। कहना। बोलना। २ समझाकर और निश्चित रूप से कोई बात कहना या बतलाना। ३ अपने दृष्टि-कोण से किसी शब्द, पद या वाक्य की विवेचना या व्याख्या करना। (इंटरप्रेटेशन)

निर्वचनीय—वि० [सं० निर्√वच्+अनीयर] (शब्द, पद या वाक्य) जिसका निर्वचन किया जाने या होने को हो।

निर्वपण—पुं० [सं० निर्√वप्-(बोना)√ल्युट्-अन] १. पितृ-तर्पण। २ दान।

निर्वयणी—स्त्री०[सं० निर्√वे (बुनना)+ल्युट्-अन, ङीप्] साँप की केंचुली।

निर्वर—वि० [सं० निर्-वर, ब० स०] १ निर्लज्ज। बेशरम। २ निडर। निर्भीक।

निर्वर्णन—पुं० [सं० निर्√वर्ण (वर्णन)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह या ध्यान से देखना।

निर्वर्तन—पुं०[सं० निर्√वृत् (बरतना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० निर्वर्तित] निष्पत्ति। (दे०)

निर्वर्तित—वि० [सं० निर्वृत्त] निष्पन्न। (दे०)

निर्वसन—वि० [सं० निर्-वसन, ब० स०] [स्त्री० निर्वसना] जिसने वस्त्र धारण न किये हों। नंगा।

निर्वसु—वि० [सं० निर्-वसु, ब० स०] दरिद्र। गरीब।

निर्वहण—पुं०[निर्√वह (ढोना)+ल्युट्-अन] १ निबाह। निर्वाह। गुजर। २ अन्त। समाप्ति।

निर्वहण-संधि—स्त्री०[सं० ष० त०] नाटक में पाँच संधियों में से एक जो उस स्थिति की सूचक होती है जहाँ प्रमुख प्रयोजन में कार्य और फलागम के साथ अन्यान्य अर्थों का भी पर्यवसान होता है।

निर्वहना—अ०[सं० निर्वहन] निभना।

स० निभाना।

निर्वाक (च्)—वि० [सं० निर्-वाच्, ब० स०] १ जिसकी वाक्शक्ति अवरुद्ध हो। २ जो बोल न रहा हो। चुप। मौन।

निर्वाक्य—वि० [सं० निर्-वाक्य, ब० स०] निर्वाक्।

निर्वाचक—पुं० [सं० निर्√वच्+णिच्+ण्वुल्—अक] निर्वाचन करनेवाला।

पुं० निर्वाचन में खड़े हुए उम्मीदवारों को मत देनेवाला व्यक्ति। (एलेक्टरेट)

निर्वाचक-मंडल—पुं० [सं० ष० त०] जो अप्रत्यक्ष रूप से जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए विशिष्ट अधिकारी या अधिकारियों का चुनाव करता है। (एलेक्टोरल कालेज)

निर्वाचक-सूची—स्त्री० [सं० ष० त०] वह सूची जिसमें किसी क्षेत्र के मतदाताओं के नाम, उम्र, पेशे आदि लिखे होते हैं।

निर्वाचन—पुं० [सं० निर्√वच्+णिच्+ल्युट्—अन] १ बहुत-सी चीजों में से अपने काम की या अपने पसन्द से कुछ चीजें चुनना या छाँटना। २. आज-कल लोकतंत्र प्रणाली में, विशिष्ट अधिकार-प्राप्त मतदाताओं का कुछ लोगों को इसलिए अपना प्रतिनिधि चुनना कि वे उस संस्था के सदस्य बनकर उसका सारा प्रबंध, व्यवस्था या शासन करें। चुनाव। (इलेक्शन)

निर्वाचन-अधिकारी (रिन्)—पुं० [सं० ष० त०] वह अधिकारी जिसकी देख-रेख में किसी संस्था के लिए सदस्यों का निर्वाचन होता है। (रिटर्निंग आफिसर)

निर्वाचन-क्षेत्र—पुं० [सं० ष० त०] वह क्षेत्र या भू-भाग जिसके निवासी या नागरिक किसी विशिष्ट चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं। (कान्स्टीच्यूएन्सी)

निर्वाचित—भू० कृ० [सं० निर्√वच्+णिच्+क्त] १ जिसका निर्वाचन हुआ हो। २ (उम्मीदवार) जो निर्वाचन में सबसे अधिक मत प्राप्त करने के कारण सफल घोषित हो। (इलेक्टेड)

निर्वाच्य—वि० [सं० निर्√वच्+ण्यत्] १ (कथन या शब्द) जो कहा न जा सके, अथवा जिसका उच्चारण करना ठीक न हो। २ जिसमें कोई दोष न निकाला जा सके। ३ (व्यक्ति) जिसका निर्वाचन होने को हो अथवा हो सकता हो।

निर्वाण—भू० कृ० [सं० निर्√वा (गति)+क्त] १ (आग या दीया) बुझा हुआ। २ (ग्रह या नक्षत्र) डूबा हुआ। अस्त। ३ धीमा या मंद पड़ा हुआ। ४ मरा हुआ। मृत। ५ निश्चल। शांत। ६ शून्य स्थिति में पहुँचा हुआ।

वि० बिना बाण का। जिसमें बाण न हो।

पुं०√[निर् वा+ल्युट्—अन] १. आग या दीए का बुझना। २. नष्ट या समाप्त होना। न रह जाना। ३ अंत। समाप्ति। ४ अस्त होना। डूबना। ५ शांति। ६ मुक्ति। मोक्ष। ७. शरीर से जीवन या प्राण निकल जाना। मृत्यु। ८ धार्मिक क्षेत्रों में, वह अवस्था जिसमें जीव परमपद तक पहुँचता या उसे प्राप्त करता है। विशेष—यद्यपि प्राचीन भारतीय साहित्य में 'निर्वाण' का प्रयोग मुक्ति या मोक्ष के अर्थ में ही हुआ है, परन्तु बौद्ध-दर्शन में यह एक स्वतंत्र पारिभाषिक शब्द हो गया था, और उस परमपद की प्राप्ति का वाचक हो गया था, जिसके लिए साधक लोग साधना करते थे, परवर्ती संत सम्प्रदायों में भी इसकी यही अथवा बहुत कुछ इसी प्रकार की व्याख्या गृहीत हुई है। यह वही अवस्था है जिसमें जीव सब प्रकार के संस्कारों से रहित या शून्य हो जाता है और जन्म-मरण के बंधन से छूट जाता है।

निर्वाणी—वि० [सं० निर्वाण] निर्वाण-संबंधी। निर्वाण का। जैसे—निर्वाणी अखाड़ा।

पुं० जैनों के एक देवता।

निर्वात—वि० [सं० निर्-वात, ब० स०] १ (अवकाश या स्थान)

जिसमे वात या वायु न रह गई हो। (वक्यूम) वातरहित। २. शात। स्थिर।

निर्वाद—पु० [स० निर्√वद् (बोलना)+घञ्] १. अपवाद। निंदा। २. अवज्ञा। ला-परवाही।

निर्वाप—पु० [स० निर्√वप्+घञ्] १ दान। २ पितरो के उद्देश्य से किया हुआ दान।

निर्वापण—पु० [स० निर्√वा+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] १. बुझाना। २. मारना। वध करना। ३ (अधिकार या स्वत्व) अन्त या समाप्त करना। (एक्स्टॅक्शन)

निर्वापित—भू० कृ० [स० निर्√वा+णिच्, पुक+क्त] १. बुझाया हुआ। २. हत। ३ अन्त या समाप्त किया हुआ। ४. विनष्ट। बरबाद।

निर्वार†—पु०=निवारण। उदा०—प्रभु, उसका निर्वार करो है।—निराला।

निर्वार्य—वि० [स० निर्√व (वारण)+ण्यत्] १. जो निःशक होकर परिश्रमपूर्वक कर्म करे। २ जिसका वारण या निवारण न हो सके। जो रोका न जा सके।

निर्वास—वि० [स० निर्-वास, व० स०] १. वास अर्थात् गध से रहित। २. वास-स्थान से रहित। जिसके रहने के लिए कोई जगह न हो।
पु० १. निर्वासन। २ विदेश-यात्रा। प्रवास।

निर्वासक—वि० [सं० निर्√वस (वासना)+णिच+ण्वुल्—अक] निर्वासन या देश-निकाले का दड देनेवाला।

निर्वासन—पु० [स०निर्√वस्+णिच+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निर्वासित] १. बलपूर्वक किसी को किसी राज्य या भू-भाग से निकालना। २. देश-निकाले का दड। ३. मार डालना।

निर्वासित—भू० कृ० [स० निर्√वस्+णिच्+क्त] १. जो किसी राज्य या भू-भाग से निकाल दिया गया हो। २. जिसे देश-निकाले का दड मिला हो।

निर्वास्य—वि० [स० निर्√वस्+णिच्+यत्] जो निर्वासित किये जाने के योग्य हो या किया जाने को हो।

निर्वाह—पु० [स० निर्√वह् (वहन)+घञ्] १. अच्छी तरह वहन करना। २. इस प्रकार आचरण या प्रयत्न करना जिससे कोई क्रम, परम्परा या सबध बराबर बना रहे। ३. अधिकारो, कर्त्तव्यो आदि का किया जानेवाला पालन। ४. अन्त। समाप्ति।

निर्वाहक—वि० [स० निर्√वह्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. निर्वाह करनेवाला। निभानेवाला। २. आज्ञा, निश्चय आदि का निर्वाहण या पालन करनेवाला। (एक्जिक्यूटर)

निर्वाहण—पु० [स० निर्√वह्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० निर्वाहणिक, निर्वाहणीय] १. निर्वाह करना। निभाना। २ किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक तरह से काम करना। ३. कुछ समय के लिए किसी का काम या भार अपने ऊपर लेना।

निर्वाहणिक—वि० [स० नैर्वाहणिक] १. निर्वाह-सबधी। २. निर्वाह करनेवाला। ३. किसी के पद पर अस्थायी रूप से रहकर उसके कार्य का निर्वाहण करनेवाला। स्थानापन्न। (आफिशिएटिंग)
†—अ० [स० निर्वाह] निर्वाह करना। निभाना।

निर्वाह-निधि—स्त्री० [स० मध्य० स०] दे० 'सभरण-निधि'।

निर्वाह-भृति—स्त्री० [स० मध्य० स०] उतना वेतन जितने मे किसी परिवार का भरण-पोषण अच्छी तरह हो सके। (लिविंग वेज)

निर्विकल्प—वि० [स० निर्-विकल्प, व० स०] १. जिसमे विकल्प, परिवर्तन या भेद न हो। सदा एक-रस और एक-रूप रहनेवाला। २ निश्चल। स्थिर।
पु०=निर्विकल्प समाधि।

निर्विकल्पक—पु० [सं० व० स०, कप्] १. वेदात के अनुसार वह अवस्था, जिसमे ज्ञाता और ज्ञेय मे भेद नही रह जाता। दोनो मिलकर एक हो जाते है। २. न्याय मे, वह अलौकिक और प्राकृतिक ज्ञान जो इद्रियजन्य ज्ञान से भिन्न होता और वास्तविक माना जाता है। (बौद्ध-दर्शन मे इसी प्रकार का ज्ञान प्रमाण माना जाता है।)

निर्विकल्प-समाधि—स्त्री० [स० कर्म० स०] समाधि का वह भेद या रूप जिसमे ज्ञेय और ज्ञाता आदि का कोई भेद नही रह जाता।

निर्विकार—वि० [स० निर्-विकार, व० स०] जिसमे विकार न हो या न होता हो। अविकारी।

निर्विकास—वि० [स० निर्-विकास, व० स०] १. विकास से रहित। २ अविकसित।

निर्विघ्न—वि० [स० निर्-विघ्न, व० स०] जिसमे कोई विघ्न न हो। विघ्न या बाधा से रहित।
अव्य० बिना किसी प्रकार के विघ्न या बाधा के।

निर्विचार—वि० [स० निर्-विचार, व० स०] विचार-शून्य।
पु० योग मे, समाधि का एक भेद।

निर्विण्ण—वि० [स० निर्√विद् (ज्ञान)+क्त] १. जिसके मन मे निर्वेद उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २. खिन्न या दुखी। ३. नम्र। ४. शात। ५. निश्चित। स्थिर।

निर्वितर्क—वि० [स० निर्-वितर्क, व० स०] जिसके सबंध मे तर्क-वितर्क न किया जा सके या न किया जाता हो।

निर्वितर्क समाधि—स्त्री० [स० कर्म० स०] योग मे, समाधि की वह स्थिति जिसमे योगी स्थूल आलबन मे तन्मय हो जाता है।

निर्विद्य—वि० [स० निर्-विद्या, व० स०] विद्याहीन। अपढ़।

निर्विधायन—पु० [?] यह निश्चय करना कि जो अमुक बात हुई है वह वस्तुत. निर्विध या विधान-विरुद्ध है। (नलिफिकेशन) जैसे—विवाह या सविदा का निर्विधायन।

निर्विधायित—भू० कृ० [स०] जिसका निर्विधायन हुआ हो। निर्विध। हटाया हुआ। (नलिफाइड)

निर्विधि—वि० [स० निर्-विधि, व० स०] [भाव० निर्विधिता] जिसे विधि या कानून का आधार या बल प्राप्त न हो। विधिक दृष्टि से अमान्य। (नल)

निर्विधिता—स्त्री० [स० निर्विधि+तल्—टाप्] निर्विधि होने की अवस्था या भाव। (नलिटी)

निर्विरोध—वि० [स० निर्-विरोध, व० स०] १. जिसका कोई विरोध न करे; अथवा कोई विरोध न हो। २. जिसमे किसी प्रकार की बाधा या रुकावट न हो।
अव्य० बिना किसी प्रकार के विरोध के।

निर्विवाद—वि० [स० निर्-विवाद, ब० स०] (बात या सिद्धान्त) जिसके सही होने के सबध मे कोई विवाद न हो।
अव्य० बिना किसी प्रकार का विवाद किये।

निर्विवेक—वि० [स० निर्-विवेक, ब० स०] [भाव० निर्विवेकता] विवेक-रहित।

निर्विशेष—वि० [स० निर्-विशेष, ब० स०] १. तुल्य। समान। २. सदा एक रूप रहनेवाला।
पु० परब्रह्म।

निर्विष—वि० [स० निर्-विष, ब० स०] विष-हीन।

निर्विषा—स्त्री० [स० निर्विष+टाप्] निर्विषी। (दे०)

निर्विषी—स्त्री० [स० निर्विष+ङीप्] एक तरह की घास या बूटी जो विष का प्रभाव नष्ट करनेवाली मानी गई है।

निर्विष्ट—वि० [स० निर्√विश् (प्रवेश)+क्त] १ जो भोग कर चुका हो। २ जो विवाह कर चुका हो। विवाहित। ३ जो अग्नि-होत्र कर चुका हो। ४. जो मुक्त हो चुका हो।

निर्वीज—वि० [स० निर्-बीज, ब० स०] १. जिसमे बीज न हो। बीज-रहित। २. जिसका बीज या मूल न रह गया हो ; अर्थात पूर्ण-रूप से विनष्ट। ३. जिसका कोई मूल या कारण न हो। कारण-रहित।

निर्वीज-समाधि—स्त्री० [स० कर्म० स०] योग मे, समाधि की वह अवस्था, जिसमे चित्त का निरोध करते-करते उसका अवलबन या बीज विलीन हो जाता है।

निर्वीजा—स्त्री० [स० निर्वीज+टाप्] किशमिश।

निर्वीर—वि० [स० निर-वीर, ब० स०] वीर-विहीन।

निर्वीरा—वि० स्त्री० [स० निर्वीर+टाप] पति और पुत्र से विहीन (स्त्री)।

निर्वीर्य्य—वि० [स० निर-वीर्य, ब० स०] १. (व्यक्ति) जिसमे वीर्य न हो, फलत. नपुसक। २. बल, तेज आदि से रहित, फलत. अशक्त। ३. (भूमि) जिसमे उर्वरा-शक्ति न हो।

निवृत्त—वि० [स० निर्√वत् (बरतना)+क्त] [भाव० निर्वृत्ति] १. वापस आया या लौटा हुआ। २. निष्पन्न।

निर्वृत्ति—स्त्री० [स० निर√वृत्+क्तिन] वापस आना। लौटना।

निर्वेक्ष—पु० [स०] भृत्ति। वेतन।

निर्वेग—वि० [स० निर्-वेग, ब० स०] वेग-हीन।

निर्वेद—पु० [स० निर्√विद्+घञ्] १ ग्लानि। घृणा। २ मन मे स्वय अपने सबध मे होनेवाली खेदपूर्ण ग्लानि और निराशा। ३. उक्त के फलस्वरूप सासारिक बातो से होनेवाली विरक्ति। वैराग्य। ४ उक्त के आधार पर साहित्य मे, तैंतीस सचारी भावो मे से पहला भाव जिसकी गणना कुछ आचार्यो ने स्थायी भावो मे भी की है।
विशेष—कहा गया है कि कष्ट, दरिद्रता, प्रियजनो के विरोध, रोग आदि के कारण मन मे जो खेद तथा ग्लानि होती है, वही साहित्य का निर्वेद है। प्राय इसके मूल मे आध्यात्मिक और तात्त्विक विचार होते है; इसलिए कुछ आचार्य इसे शात रस का स्थायी भाव मानते है। पर अधिकतर लोग इसे भरत के आधार पर सचारी भाव ही कहते है। यह वही मनोवृत्ति है जो मनुष्य को सांसारिक विषयो की ओर से उदासीन करके परमात्म-चिंतन मे प्रवृत्त करती है, और इस दृष्टि मे रति या शृगार रस के बिलकुल विपरीत है।

निर्वेश—पु० [स० निर्√विश्+घञ्] १. भोग। २ वेतन। तनख्वाह। ३ विवाह। ४. मोक्ष। ५ मूर्च्छा। बेहोशी। ६ बदला लेना।

निर्वेष्टन—पु० [स० निर्-वेष्टन, ब० स०] जुलाहों की सूत लपेटने की ढरकी।

निर्वैर—वि० [स० निर्-वैर, ब० स०] वैर, द्वेष आदि से रहित।
पु० वैर का अभाव।

निर्व्यथन—पु० [स० निर्√व्यथ् (पीडा)+ल्युट्—अन] १. तीव्र पीडा या वेदना। २. पीडा से होनेवाला छुटकारा।

निर्व्यलीक—वि० [स० निर्-व्यलीक, ब० स०] १. छल आदि से रहित। निष्कपट। २ जो किसी को कष्ट न पहुँचाये। निरीह। ३ प्रसन्न। ४ सुखी।

निर्व्याज—वि० [स० निर्-व्याज, ब० स०] १ व्याज अर्थात् कपट या छल से रहित। २. बाधा या विघ्न से रहित। निर्विघ्न।

निर्व्याधि—वि० [स० निर्-व्याधि, ब० स०] व्याधि या रोग से मुक्त या रहित।

निर्व्यापार—वि० [स० निर्-व्यापार, ब० स०] व्यापार-हीन।

निर्व्यूढ—वि० [स० निर्-वि√वह्+क्त] [भाव० निर्व्यूढि] १ पूरा बनाया हुआ। २. बढा हुआ। विकसित। ३ त्यक्त। ४. भाग्य-वान्। ५. सफल। ६. अकेला या निकाला हुआ।

निर्व्यूढ़ि—स्त्री० [स० निर्-वि√वह्+क्तिन्] १ अन्त। समाप्ति। २ कलगी। ३. चोटी। ४ खूँटी। ५. काढा।

निर्व्रण—वि० [स० निर्-व्रण, ब० स०] जिसे व्रण, या घाव न हो या न लगा हो।

निर्हरण—पु० [स० निर्√हृ (हरण)+ल्युट्—अन] १. जलाने के लिए शव को अर्थी पर ले जाना। २. शव जलाना। ३. नष्ट करना।

निर्हार—पु० [सं० निर्√हृ+घञ्] १. गाड़ी या धँसी हुई चीज को निकालना। २. मल-मूत्र आदि का त्याग करना। 'आहार' का विपर्याय। ३ धन, सपत्ति आदि जोडना।

निर्हारक—वि० [स० निर्√हृ+ण्वुल्—अक] मुरदे उठाने या ढोने-वाला।

निर्हारी (रिन्)—वि० [स० निर्√हृ+णिनि] १ वहन करनेवाला। २. फैलानेवाला।
पु०=निर्हारक।

निर्हेतु—वि० [स० निर्-हेतु, ब० स०] हेतु-रहित।
क्रि० वि० बिना किसी हेतु के।

निलंबन—पु०=अनुलंबन।

निल—पु० [स०] विभीषण का एक मत्री जो माली राक्षस का पुत्र था।

निलज†—वि०=निर्लज्ज।

निलजई, निलजता †—स्त्री०=निर्लज्जता।

निलज्ज—वि०=निर्लज्ज।

निलय—पु० [स० नि√ली (छिपना)+अच्] १. छिपने का स्थान।

जैसे—पशुओं की माँद या पक्षियों का घोंसला। २. अपने को छिपाने की क्रिया या भाव। ३. रहने का स्थान। घर। ४ शरीर-शास्त्र में हृदय के उन दोनों अवकाशों में से हर एक जिनके द्वारा सारे शरीर में रक्त का संचार होता है। (वेन्ट्रिकल)

निलयन—पु० [सं० नि√ली+ल्युट्—अन] १ छिपना। २ वास करना। रहना। ३. =निलय।

निल्हा—वि० [हिं० नीला+हा (प्रत्य०)] १ नीले रंगवाला। २ नीले रंग में रँगा हुआ। ३ नील-संबंधी। नीलवाला। जैसे—निल्हा साहब=वह अंगरेज जो नील की खेती करता और व्यापार करता था।

निलाज†—वि०=निर्लज्ज।

निलाट—पु०=ललाट।

निलाम†—पु०=नीलाम।

निलिंप—पु० [सं० नि√लिप्—श, मुम्] देवता।

निलिंप-निर्झरी—स्त्री० [सं० ष० त०] आकाश-गंगा।

निलिंपा—स्त्री० [सं० निलिम्प+टाप्] गाय।

निलीन—वि० [सं० नि√ली+क्त, तस्य न.] १. छिपा हुआ। २ विनष्ट। ३ गला या पिघला हुआ।

निलोह—वि० [हिं० नि+लोह?] १ जिसमें मिलावट न हो। विशुद्ध। २. जिस पर किसी प्रकार की आँच न आई हो।

निवछरा*—वि० [सं० निवृत्त] (ऐसा समय) जिसमें करने के लिए कोई काम-काज न हो।

निवछावर†—स्त्री०=निछावर।

निवड़िया—स्त्री० [हिं० नावर] छोटा नवाड़ा (नाव)।

निवत्त†—वि०=निवृत्त।

निवना†—अ०=नवना (झुकना)।

निवपन—पु० [सं०] १. पितरों आदि के उद्देश्य से दान करना। २ वह पदार्थ जो पितरों के उद्देश्य से दान किया जाय।

निवर—वि० [सं० नि√वृ (रोकना)+अच्] १ निवारण करनेवाला। २ रोकनेवाला।

पु० आवरण। परदा।

निवरा—वि० स्त्री० [सं० नि√वृ (वरण)+अप्—टाप्] जिसका वर या पति न हो, अर्थात् कुँआरी।

निवर्तक—वि० [सं० नि√वृत् (वरतना)+णिच्+ण्वुल्—अक] निवर्तन करनेवाला।

निवर्तन—पु० [सं० नि√वृत्+णिच्—ल्युट्—अन] १. घूम-फिरकर अपने पहले स्थान पर आना। वापस आना। लौटना। २. फिर घटित न होना। अन्त या समाप्ति न होना। ३ किसी काम या बात से अलग या दूर रहना। बचना। ४. कार्य अथवा क्रिया से रहित या शून्य होना। ५ आगे न बढ़ने देना। रोक रखना। ६. आज-कल न्यायालय की वह प्रक्रिया जो किसी बने हुए विधान को रद या समाप्त करने के लिए होती है। कानून या विधान रद करना। (रिपील) ७ अन्दर की ओर घूमना या मुड़ना। ८ वह अंग या पदार्थ जो अन्दर की ओर घूम या मुड़कर बना हो। ९ कोई ऐसी क्रिया, जो अन्त या ह्रास की ओर ले जाती हो। अन्त या समाप्ति निकट लानेवाली क्रिया। १० अरविंद-दर्शन में, चेतना का क्रमशः अन्तर्निहित या तिरोभूत होना जिसके द्वारा अनन्त भागवत चेतना का अन्त होता है। 'विवर्तन' का विपर्याय। (इन्वोल्यूशन, अंतिम चारों अर्थों के लिए) ११. जमीन की एक पुरानी नाप जो २० लट्ठों की होती थी।

निवर्तित—भू० कृ० [सं० नि√वृत्+णिच्+क्त] १. लौटा या लौटाया हुआ। २. जिसका निवर्तन हुआ हो। रद।

निवर्ती (तिन्)—पु० [सं० नि√वृत्+णिनि] १. वह जो पीछे की ओर हट आया हो। २ वह जो युद्ध क्षेत्र से भाग आया हो।

वि०=निर्लिप्त।

निवसति—स्त्री० [सं० नि√वस् (बसना)+अतिच्] रहने का स्थान। घर।

निवसथ—पु० [सं० नि√वस्+अथच्] १. गाँव। २ सीमा। हद।

निवसन—पु० [सं० नि√वस्+ल्युट्—अन] १ निवास करने की क्रिया या भाव। २ निवास के योग्य अथवा निवास का स्थान। जैसे—गाँव का घर। ३ वसन। वस्त्र। कपड़ा। ४ स्त्रियों के पहनने का अधोवस्त्र।

निवसना—अ० [सं० निवास] निवास करना। रहना।

निवह—पु० [सं० नि√वह्+अच्] १ समूह। यूथ। २. सात वायुओं में से एक वायु।

निवाई—वि० [सं० नव] १. नवीन। नया। २. अनोखा। विलक्षण।

†स्त्री० नयापन। नवीनता।

†स्त्री० [?] १ गरमी। ताप। २ ज्वर। बुखार।

निवाकु—वि० [सं०नि√वच् (बोलना)+घुण्] चुप। मौन।

निवाज—वि०=नवाज। (देखें)

†स्त्री०=नमाज।

निवाजना—स० [फा० निवाज] अनुग्रह या प्रार्थना करना।

निवाजिश—स्त्री० [फा०] १ अनुग्रह। कृपा। २. दया। मेहरबानी।

निवाड़†—स्त्री०=निवार।

निवाड़ा—पु० १. =नवाड़ा। २. =नावर (नावों की क्रीडा)।

निवाड़ी—स्त्री०=निवारी।

निवाण—स्त्री० [सं० निम्न] नीची या ढालुई जमीन।

निवात—पु० [सं० नि√वा (गति)+क्त] १. रहने का स्थान। घर। २ ऐसा कवच या वर्म जो शस्त्रों से छेदा न जा सके। ३ सुरक्षित स्थान। ४. शांति।

वि०=निर्वात।

निवान—पु० [सं० निम्न] १. नीची जमीन जहाँ सीड़, कीचड़ या पानी भरा रहता हो। २. झील या तालाब।

†पु०=नवान्न।

निवाना—वि० [स्त्री० निवानी] =निमाना। उदा०—हरीचन्द नित रहत दिवाने, सूरज अजब निवानी के।—भारतेन्दु।

स०=नवाना (झुकाना)।

निवान्या—स्त्री० [सं० नि√वा+क=निव (पीनेवाला)—अन्य ब० स०, टाप्] वह मृतवत्सा गौ जो दूसरी गाय के बछड़े को लगाकर दूही जाय।

निवार—स्त्री० [फा० नवार] मोटे सूत की बनी हुई तीन-चार अगुल चौडी वह पट्टी जिससे पलग बुने जाते है।
स्त्री० [स० नेमि+आर] पहिए की तरह का लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कूएँ की नीव मे धँसाया जाता है और जिसके ऊपर कोठी की जोडाई होती है। जमवट।
पु० [स० नीवार] तिन्नी का धान।
स्त्री० [?] एक प्रकार की बडी और मोटी मूली।

निवारक—वि० [स० नि√वृ (रोकना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ निवारण करनेवाला। २. दूर करने, रोकने या हटानेवाला।

निवारण—पु० [स० नि√वृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी को बढने या फैलने से रोकना। २ दूर करना। हटाना। ३ आनेवाली बाधा या सकट को बीच मे ही रोकने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। रोक-थाम। (प्रिवेन्शन) ४ निषेध। मनाही। ५ छुटकारा। निवृत्ति।

निवारन†—पु०=निवारण।

निवारना—स० [स० निवारण] १ निवारण करना। २ सकट आदि दूर करना, रोकना या हटाना। ३ सकट आदि से किसी को बचाना या उसकी रक्षा करना। ४ कोई काम या बात टालते या रोकते हुए समय बिताना। ५ निषेध करना। मना करना।

निवार-बाफ—पु० [फा० नवार+बाफ=बुननेवाला] [भाव० निवार-बाफी] निवार अर्थात् पलग बुनने की सूत की पट्टी बुननेवाला जुलाहा।

निवारी—स्त्री० [स० नेपाली या नेमाली] १. चैत मे फूलनेवाला जूही की जाति का सुगधित फूलोवाला एक पौधा। २. इस पौधे के फूल जो सफेद और सुगधित होते है।
वि० [हिं० निवार] १ निवार-सबधी। निवार का। २ निवार से बुना हुआ। जैसे—निवारी पलग।

निवाला—पु० [फा० निवाल] कौर। ग्रास।

निवास—पु० [स० नि√वस+घञ्] १ किसी स्थान को अपना घर बनाकर वहाँ बसने या रहने की क्रिया या भाव। वास। जैसे—आज-कल आप प्रयाग मे निवास करते है। २. उक्त प्रकार से बसकर रहने का स्थान। ३ विश्राम करने का स्थान। ४ घर। मकान। ५ भौगोलिक दृष्टि से ऐसा स्थान, जहाँ किसी जाति के जीव रहते या कोई वनस्पति होती हो। ६. पहनने के वस्त्र। पोशाक।

निवासन—पु० [स० निवसन] १. किसी स्थान पर निवास करना या बसकर रहना। २ घर। मकान। ३. समय बिताने की क्रिया या भाव।

निवास-स्थान—पु० [स० प० त०] १. वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति निवास करता या रहता हो। रहने की जगह। २ घर। मकान।

निवासित—भू० कृ० [स० नि√वस्+णिच+क्त] १. (स्थान) जो आबाद किया गया हो। बसाया हुआ। २. बसा हुआ।

निवासी (सिन्)—वि० [स० नि√वस्+णिनि] (स्थान-विशेष मे) रहने या निवास करनेवाला। जैसे—भारत निवासी या लका निवासी।

निवास्य—वि० [स० नि√वस्+ण्यत] (स्थान) जहाँ निवास किया जा सकता हो या किया जाने को हो। रहने के योग्य। निवास-स्थान के रूप मे काम आने के योग्य।

निविड़—वि० [स० नि√विड् (सघात)+क] [भाव० निविडता] १. जिसमे अवकाश या स्थान न हो। २. घना। सघन। ३. गभीर। ४. भारी डील-डौलवाला। ५ चिपटी, टेढ़ी या दबी हुई नाकवाला।

निविड़ता—स्त्री० [स० निविड+तल—टाप्] १ निविड होने की अवस्था या भाव। घनापन। २. गभीरता। ३ वशी के पाँच गुणो मे से एक जो उसके स्वर की गभीरता पर आश्रित होता है।

निविद्धान—पु० [स० निविद√धा (धारण)+ल्युट—अन] एक दिन मे समाप्त होनेवाला यज्ञ।

निविरीश—वि० [स० नि+विरीसच्] १. घना। २ गहरा। ३. भद्दा।
स्त्री० १. घनता। २ गहराई। ३. भद्दापन।

निविल—वि०=निविड।

निविशमान—वि० [स०] जिसने कही निवास किया हो या जो कही निवास कर रहा हो।
पुं० वह लोग जो किसी उपनिवेश मे बसाये गये हों।

निविशेष—वि० [स० निर्विशेष] १ जिसमे दूसरो से कोई विशेषता न हो। साधारण। सामान्य। २ तुल्य। समान।
पु० १. समानता। २. एक-रूपता।

निविष†—वि०=निर्विष (विषहीन)।

निविष्ट—वि० [स० नि√विश् (प्रवेश)+क्त] [भाव० निविष्टता] १ बैठा हुआ। आसीन। २ जो कही निवेश बनाकर या डेरा डालकर ठहरा हो। ३. किसी काम या बात के लिए तत्पर या तुला हुआ। ४ (मन) एकाग्र करके नियत्रित किया हुआ। ५ क्रम या व्यवस्था से लगाया हुआ। ६. जिसका प्रवेश हुआ हो। प्रविष्ट। ७ कही लिखा, दर्ज किया या चढाया हुआ। (एन्टर्ड) ८ बाँधा या लपेटा हुआ। ९ ठहरा या ठहराया हुआ। स्थित। १०. किसी के अन्दर भरा या रखा हुआ।

निविष्टि—स्त्री० [स० नि√विश्+क्तिन्] १ मैथुन या सभोग करना। २. विश्राम करना। ३ खाते आदि मे लिखने, दर्ज करने या चढाने की क्रिया या भाव। ४. इस प्रकार चढी, चढाई या लिखी हुई बात या रकम। (एन्ट्री)

निवीत—पु० [स० नि√व्ये (आच्छादन)+क्त] १ यज्ञोपवीत, जो गले मे पहना हुआ हो। २. ओढने का कपडा। चादर। ओढनी।

निवीती (तिन्)—वि० [स० निवीत+इनि] १ जो यज्ञोपवीत पहने हो। २ जो चादर ओढे हो।

निवीर्य—वि०=निर्वीर्य।

निवृत्त—भू० कृ० [स० नि√वृत+क्त्] १ वापस आया या लौटाया हुआ। २. जिसकी सासारिक विषयो मे प्रवृत्ति न रह गई हो। ३ जो कोई काम करके उससे छुट्टी पा चुका हो। जो अपना काम कर चुका हो। ४ (कार्य) जो पूरा हो चुका हो। मुक्त।
पु० १ आवरण। २ परदा। ३ लपेटने का कपडा। वेठन।

निवृत्ति—स्त्री० [स० नि√वृत्+क्तिन्] १ निवृत्त होने की क्रिया या भाव। २. वापस आना या लौटना। ३. किसी काम की प्रवृत्ति का अभाव होना। ४. सासारिक विषयो का किया जानेवाला त्याग। ५ 'प्रवृत्ति' का विपर्याय। ६. छुटकारा। मुक्ति। ७ अपने कार्य

या पद से अवकाश पाकर अथवा अवधि पूरी हो जाने पर सदा के लिए हट जाना। (रिटायरमेंट) ८. एक प्राचीन तीर्थ।

निवृत्तिक—वि० [स०] निवृत्ति-संबंधी। जैसे—निवृत्तिक मार्ग या भावना।

निवेद†—पु० [स० नैवेद्य] देवता को चढ़ाया हुआ पदार्थ।

निवेदक—वि० [स० नि√विद् (जानना)+णिच्+ण्वुल्—अक] (व्यक्ति) जो नम्रतापूर्वक किसी से कोई बात कहे। निवेदन करनेवाला।

निवेदन—पु० [स० नि√विद्+णिच+ल्युट्—अन] १. नम्रतापूर्वक किसी से कोई बात कहना। २. उस प्रकार कही हुई कोई बात जो प्रायः सुझाव के रूप में होती है। ३. समर्पण। ४. आहुति।

निवेदन-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र जिसमें किसी एक या कई व्यक्तियों ने निवेदन लिखा हो। (लेटर आफ रिक्वेस्ट)

निवेदना—स० [स० निवेदन] १. विनती, निवेदन या प्रार्थना करना। २. सेवा में भेंट आदि के रूप में उपस्थित करना।

निवेदित—भू० कृ० [स० नि√विद्+णिच्+क्त] १. (बात) जो निवेदन या प्रार्थना के रूप में कही गई हो। २. (पदार्थ) जो भेंट आदि के रूप में अर्पित या समर्पित किया गया हो।

निवेद्य—पु० [स० नि√विद्+ण्यत्] नैवेद्य। (दे०)

निवेरना—स०=निबेड़ना (निपटाना)।

निवेरा—वि० [हि० नि+स० वरण] [स्त्री० निवेरी] १. चुना या छाँटा हुआ।

वि० [स० नवल] १. नवेला। २. अनोखा।

पु०=निबेड़ा।

निवेश—पु० [सं० नि√विश्+घञ्] [वि० नैवेशिक, भू० कृ० निवेशित, निविष्ट] १. डेरा। शिविर। २. प्रवेश। पैठ। ३. घर। मकान। ४. विवाह। ५. ठहराया या रखा जाना। स्थापन। ६. किसी निश्चय, विधि आदि में पड़नेवाली कठिनता या होनेवाली बाधा से बचने के लिए निकाला हुआ मार्ग या निश्चित किया हुआ विधान। (प्रॉविजन)

निवेशन—पु० [स० नि√विश्+ल्युट्—अन] १. डेरा। २. घर। ३. नगर।

निवेशनी—स्त्री० [स० निवेशन+ङीप्] पृथ्वी।

निवेष्ट—पु० [स० नि√वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] १. वह कपड़ा जिसमें कोई चीज ढकी या लपेटी जाय। वेठन। २. सामवेद का एक प्रकार का मंत्र।

निवेष्टन—पु० [सं० नि√वेष्ट्+ल्युट्—अन] १. ढकने या लपेटने की क्रिया या भाव। २. ढकने या लपेटनेवाली चीज। वेठन।

निवेष्य—पु० [स० नि√विष् (व्याप्ति)+ण्यत्] १. व्याप्ति। २. बरफ का पानी। ३. जल-स्तंभ। (देखें)

निव्याधी (धिन्)—पुं० [स० नि√व्यध् (मारना)+णिनि] एक रुद्र का नाम।

निव्यूढ़—पु० [स० नि-वि√ऊह् (वितर्क)+क्त] १ अध्यवसाय। २. शक्ति। ३. उत्साह।

निशंक—वि०=निःशंक।

निशग—पु०=निषग।

निश—स्त्री०=निशा (रात्रि)।

निशचर—वि०, पु०=निशाचर।

निशठ—पु० [स०] बलदेव के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

निशतर—पु० [फा०] वह उपकरण जिससे चीर-फाड़ की जाय। नश्तर। (शल्य-चिकित्सा)

निशब्द—वि० [सं० निःशब्द] १. (स्थान) जो शब्द से रहित हो। २. (व्यक्ति) जो चुप या मौन हो।

निशब्दक—वि० [स० निःशब्दक] शब्द न करनेवाला। (साइलेंसर)

निशमन—पु० [स० नि√शम् (शान्ति)+णिच्+ल्युट्—अन] १. दर्शन। देखना। २. श्रवण। सुनना।

निशरण—पु० [स० नि√शॄ (हिंसा)+ल्युट्—अन] मारण। वध।

निशल्या—स्त्री० [स०] दती (वृक्ष)।

निशांत—वि० [स० नि-शात, प्रा० स०] १. (व्यक्ति) पूर्ण रूप से या बहुत अधिक शांत। २. (वातावरण या स्थान) जिसमें शांति न हो।

पु० १. निशा अर्थात् रात्रि का अंत। पिछली रात। रात का चौथा प्रहर। २. तड़का। प्रभात। ३. घर। मकान।

निशांध—वि० [स० निशा-अन्ध, स० त०] जिसे रात को दिखाई न दे। जिसे रतौंधी हो।

निशांधा—स्त्री० [स० निशा√अन्ध् (दृष्टि-विघात)+अच—टाप्] जतुका लता।

निशांधी—स्त्री० [सं० निशा√अन्ध्+अच्—ङीप्] १. जतुका या पहाड़ी नामक लता। २. राजकुमारी।

निशा—स्त्री० [स० नि√शो (क्षीण करना)+क—टाप्] १. रात्रि। रजनी। रात। २ हलदी। ३. दारु हलदी। ४ फलित ज्योतिष में, इन छः राशियों का समूह—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर।

निशाकर—वि० [स० निशा√कृ (करना)+ट] निशा करनेवाला।

पु० १. चन्द्रमा। २. महादेव। शिव। ३. कुक्कुट। मुरगा। ४ कपूर।

निशा-केतु—पु० [स० ष० त०] चन्द्रमा।

निशाखातिर—स्त्री०[फा० निशा+अ० खातिर] किसी काम या बात के संबंध में मन में होनेवाला वह पूरा विश्वास जो किसी दूसरे के समझाने पर उत्पन्न होता है।

निशाख्या—स्त्री०[स० निशा-आख्या, ब०स०] हलदी।

निशा-गृह—पु०[स० मध्य० स०] शयनागार।

निशाचर—वि० [स० निशा√चर्(गति)+ट]रात के समय चलने या विचरण करनेवाला।

पु०१. राक्षस। २. गीदड़। ३ उल्लू। ४. साँप। ५ चकवा-पक्षी। चक्रवाक। ६ भूत, प्रेत आदि। ७ चोर। ८. महादेव। शिव। ९. चनेर नामक गंध-द्रव्य। १०. बिल्ली। ११ एक प्रकार की ग्रंथिपर्णी या गठिवन।

निशाचर-पति—पु० [स० ष० त०] १. रावण। २ शिव।

निशाचरी—वि० [स० निशाचर+ङीप्] १. निशाचर-संबंधी। निशाचर का। जैसे—निशाचरी माया। २. निशाचरों की तरह का।

स्त्री० १. राक्षसी। २ कुलटा या व्यभिचारिणी। ३ अभिसारिका नायिका। ४ केशिनी नामक गंध-द्रव्य।

निशा-चर्म—पु० [स० स०त०] अंधकार। अंधेरा।

निशा-जल—पु० [सं० मध्य०स०] १ हिम। पाला। २ ओस।

निशाट—पु० [स० निशा√अट् (भ्रमण)+अच्] १ उल्लू। २ निशाचर।

निशाटक—पु० [स० निशा√अट्+ण्वुल्—अक] गूगल।

निशाटन—वि० [स० निशा√अट्+ल्यु—अन] रात्रि को चलनेवाला। निशाचर।

पु० उल्लू।

निशात—वि० [स० नि√शो (तेज करना)+क्त] १ सान पर चढाकर तेज किया हुआ। २ ओप आदि लगाकर चमकाया हुआ।

वि० [फा० नशात] १ आनद। सुख। २. सुखभोग।

निशातिक्रम, निशात्यय—पु० [स० निशा-अतिक्रम, निशा-अत्यय, ष०त०] १ रात का बीतना। २. प्रात काल।

निशाद—वि० [स० निशा√अद् (खाना)+अच्] रात को खानेवाला।

पु० निषाद। (दे०)

निशादि—पु० [स० निशा-आदि, ब०स० या ष०त०] साय। सध्या।

निशान—पु० [फा०] १ चिह्न। लक्षण। २ ऐसा प्राकृत या आकस्मिक चिह्न या लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय या जिससे किसी घटना या बात का परिचय, प्रमाण या सूत्र मिले। ३ मोहर आदि की छाप। ४ झंडा या पताका जिससे किसी सम्प्रदाय, राज्य आदि की पहचान होती है। ५. प्राचीन काल मे वह झडा जो राजाओ की सवारियों के आगे चलता था। ६. कलक। धब्बा। ७. वह चिह्न जो लेख्यों आदि पर अशिक्षित लोग अपने हस्ताक्षर के बदले बनाते हैं। जैसे—अगूंठे का निशान। ८ पता। ठिकाना।

मुहा०—निशान देना=सम्मन आदि तामील करने के लिए यह बताना कि यही असामी है।

९ निशाना। १० दे० 'निशानी'।

निशान-कोना—पु० [स० ईशान+हिं० कोना] उत्तर और पूर्व का कोण।

निशानची—वि० [फा०] १ बढिया निशाना लगानेवाला।

पु० जलूस या राजा आदि की सवारी के आगे-आगे झडा लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

निशान-देही—स्त्री० [फा० निशाँ देही] १. किसी का पता-ठिकाना बतलाना। २. न्यायालय के सम्मन आदि की तामील के लिए चपरासी के साथ जाकर यह बतलाना कि यही वह आदमी है जिसे सम्मन दिया जाना चाहिए। प्रतिवादी की पहचान कराना।

निशान-पट्टी—स्त्री० [फा० निशान+हिं०पट्टी] १ चेहरे की गठन और रूप रग का वर्णन। हुलिया।

निशान-बरदार—पु० [फा०] झडा हाथ मे लेकर जुलूस, सवारी आदि के आगे चलनेवाला व्यक्ति।

निशाना—पु० [फा० निशान.] १. वह वस्तु या बिंदु जिस पर शस्त्र से आघात किया जाय।

क्रि० प्र०—करना।—बनाना।

२. किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करने की क्रिया। वार।

मुहा०—**निशाना बाँधना**=निशाना साधना। (देखें नीचे) **निशाना मारना या लगाना**=ताक कर अस्त्र-शस्त्र आदि का वार करना। **निशाना साधना**=(क) ठीक लक्ष्य पर वार करना। (ख) ठीक लक्ष्य पर वार करने का अभ्यास करना।

३ मिट्टी आदि का वह ढेर या और कोई पदार्थ, जिस पर निशाना साधा जाय। ४. वह जिसे लक्ष्य बनाकर कोई उग्र या विकट आघात या क्रिया की जाय। जैसे—किसी की नजर का निशाना, किसी के ताने या व्यग्य का निशाना।

निशा-नाथ—पु० [स० ष०त०] १ चद्रमा। ३ कपूर।

निशानी—स्त्री० [फा०] १ वह चीज जो किसी घटना या व्यक्ति का स्मरण करनेवाली हो। स्मृति-चिह्न। यादगार। जैसे—(क) यही लडका भाई साहब की निशानी है। (ख) विधवा के पास यही अँगूठी उसके पति की निशानी बच रही है।

क्रि० प्र०—देना।—रखना।

२. पहचान का चिह्न। निशान।

निशा-पति—पु० [ष०त०] १. चद्रमा। २. कपूर।

निशा-पुत्र—पु० [ष०त०] नक्षत्र आदि आकाशीय पिंड।

निशापुष्प—पु० [स० निशा√पुष्प् (खिलना)+अच्] कुमुदनी। कोई।

निशा-बल—पु० [ब० स०] मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर ये छ राशियाँ जो रात के समय अधिक बलवती मानी जाती है। (फलित ज्योतिष)

निशा-भगा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] दुग्धपुच्छी नामक पौधा।

निशा-मणि—पु० [ष० त०] १ चद्रमा। २. कपूर।

निशामन—पु० [स० नि√शम् (शाति)+णिच्+ल्युट्—अन] १. दर्शन। देखना। २ आलोचना। ३. श्रवण। सुनना।

निशा-मुख—पु० [ष० त०] सध्या काल।

निशा-मृग—पु० [मध्य०स०] गीदड। शृगाल।

निशा-रत्न—पु० [ष०त०] १ चद्रमा। २. कपूर।

निशा-रुक—पु० दे० 'निशासक'।

निशा-वन—पु० [ब० स०] सन का पौधा।

निशावसान—पु० [निशा-अवसान, ष०त०] निशा के समाप्त होने का समय। प्रभात का समय।

निशा-विहार—पु० [ब०स०] राक्षस।

निशासक—पु० [स०] सगीत मे एक प्रकार का रूपक ताल जिसमे दो लघु और दो गुरु मात्राएँ होती हैं।

निशास्ता—पु० [फा० नशास्त] १ गेहूँ का सार। २. कपडो मे लगाया जानेवाला कलफ या माड़ी।

निशाहस—पु० [स० निशा√हस् (हँसना)+अच्] कुमुदनी।

निशा-हासा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] शेफालिका।

निशाह्वा—स्त्री० [स० निशा-आह्वा, ब० स०, टाप्] १. हलदी। २ जतुका नामक लता।

निशि—स्त्री० [स० नि√शो+इन्?] १ रात्रि। रात। २ स्वप्न।

३ हलदी। ४. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और एक लघु होता है।

निशिकर—पु० [सं० निशि√कृ+ट] १ चद्रमा। शशि।

निशिचर—पु० [सं० निशि√चर् (गति)+ट]· निशाचर।

निशिचर-राज—पु० [सं० प०त०] राक्षसो का राजा, विभीषण।

निशित—वि० [सं० नि√शो (तीक्ष्ण करना)+क्त] जो सानपर चढ़ा हो अर्थात् चोखा या तेज।
पु० लोहा।

निशिता—स्त्री० [सं० निशित+टाप्] रात्रि। निशा। रात।

निशिदिन—अव्य० [सं० निशि+दिन] १. रात-दिन। २. सदा। सर्वदा।

निशिनाथ—पु०=निशानाथ।

निशि-नायक—पु० =निशिनाथ (चद्रमा)।

निशि-पति—पु० [प० त०] चद्रमा।

निशिपाल—पु० [सं० निशि√पाल् (बचाना)+णिच्+अच्] १. चद्रमा। २ एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः भगण, जगण, नगण और रगण होते है।

निशि-पुष्पा—स्त्री० [ब० स०] शेफालिका।

निशिपुष्पिका, निशिपुष्पी—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व; ब०स०, ङीप्] शेफालिका।

निशि-वासर—अव्य० [द्व०स०] १. रात-दिन। २. सदा। सर्वदा।

निशीत—पु०=निशीथ।

निशीथ—पु० [सं० नि√शी (सोना)+थक्] १. रात। २ आधी रात। ३. पुराणानुसार रात्रि का एक कल्पित पुत्र। ४ छाल या रेशे से बना हुआ कपड़ा।

निशीथ-नाथ—पु० [प० त०] १. चद्रमा। २. कपूर।

निशीथ्या—स्त्री० [सं०] रात्रि।

निशुंभ—पु० [सं० नि√शुम्भ् (हिंसा)+घञ्] १ वध। २. हिंसा। दनु का पुत्र एक राक्षस जिसका वध दुर्गा ने किया था। (पुराण)

निशुंभन—पु० [सं० नि√शुम्भ्+ल्युट्—अन] मार डालना। वध करना।

निशुंभ-मर्दिनी —स्त्री० [सं० प० त०] दुर्गा

निशुंभी (मिन्)—पु० [सं० निशुभ=मोहनाम+इनि] एक बुद्ध का नाम।

निशेश—पु० [सं० निशा-ईश, प०त०] निशा के पति, चद्रमा।
†वि०=नि शेष।

निशैत—पु० [सं० निशा-एत=(गमन), ब०स०] बगुला।

निशोत्सर्ग—पु० [सं० निशा-उत्सर्ग, प० त०] प्रभात।

निश्कुल—वि० दे० 'निष्कुल'।

निश्चक्रिक—वि० [सं०] छल-छद्म से रहित, फलत ईमानदार या सच्चा।

निश्चक्षु—वि० [सं० निर्-चक्षुस्, ब० स०] नेत्रहीन। अधा।

निश्चंद्र—वि० [सं० निर्-चद्र, ब० स०] १ चद्रमा रहित। २ जिसमे आभा या चमक न हो। फीका।

निश्चय—पु० [सं० निर्√चि (चयन)+अप्] १ कोई कार्य करने का अतिम निर्णय या सकल्प करना। २ इस प्रकार ठीक की हुई बात या प्रस्ताव। (रिजोल्यूशन) ३ निर्णय। ४ एक अर्थालकार जिसमे एक बात का निषेध करके प्रकृत या यथार्थ बात के स्थापन का उल्लेख होता है। (सर्टेन्टी) ५ विश्वास।
अव्य० निश्चित रूप से। अवश्य।

निश्चयात्मक—वि० [सं० निश्चय-आत्मन्, ब० स०, कप्] [भाव० निश्चयात्मकता] निश्चय के रूप मे होने वाला।

निश्चर—पु० [सं०] एकादश मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक।
†पु० निशाचर।

निश्चयेन—अव्य० [सं० निश्चय का विभक्त्यन्त रूप] निश्चित रूप से। निश्चयपूर्वक।

निश्चल—वि० [सं० निर्√चल् (गति)+अच्] [भाव० निश्चलता] १ जो अपने स्थान से जरा भी इधर-उधर चलता या हिलता-डोलता न हो। अचल। स्थिर। २. अपरिवर्तनशील।

निश्चलता—स्त्री० [सं० निश्चल+तल्+टाप्] निश्चल होने की अवस्था या भाव।

निश्चलांग—वि० [सं० निश्चल-अंग, ब० स०] जिसके अंग हिलते-डुलते न हों। सदा अचल या स्थिर रहनेवाला।
पु० १ पर्वत २ बगुला।

निश्चायक—वि० [सं० निर्√चि+ण्वुल्—अक] १. निश्चय या प्रतीति करानेवाला २ जिसके द्वारा या द्वारा किसी बात का निश्चित ज्ञान होता हो। जैसे—निश्चायक प्रमाण।

निश्चारक—पु० [सं० निर्√चर् (गति)+ण्वुल्—अक] १. एक रोग जिसमे बहुत दस्त आते है। २ वायु। हवा।

निश्चित—वि० [सं० निर्-चिन्ता, ब० स०] [भाव० निश्चितता] (व्यक्ति) जिसे कोई चिंता न हो। बेफिक्र।

निश्चितता—स्त्री० [सं० निश्चिन्त+तल्+टाप्] निश्चिन्त होने की अवस्था या भाव। बे-फिक्री।

निश्चित—भू० कृ० [सं० निर्√चि+क्त] १. (बात या प्रस्ताव) जिसके संबंध मे निश्चय हो चुका हो। २. जो अटल या स्थिर हो। ३. जो यथार्थ या सत्य हो। ४. जिसमे कोई परिवर्तन न हो सके।

निश्चितई—स्त्री०=निश्चितता।

निश्चिति—स्त्री० [सं० निर्√चि+क्तिन्] १ निश्चित करने की क्रिया या भाव। २. निश्चय।

निश्चिरा—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

निश्चिला—स्त्री० [सं०] १ शालपर्णी। २. पृथ्वी। ३. पुराणानुसार एक नदी।

निश्चिक्कण—पु० [सं० निर्-चुक्कण, ब० स०] मिस्सी।

निश्चेतन—वि० [सं० निर्-चेतन, ब० स०] चेतना या संज्ञा रहित।
पु० चेतना से रहित करना।

निश्चेष्ट—वि० [सं० निर्-चेष्टा, ब० स०] जो चेष्टा न करता हो या न कर रहा हो।

निश्चेष्ट-करण—पु० [प०त०] १. निश्चेष्ट करने की क्रिया या भाव। २. कामदेव का एक बाण। ३ वैद्यक मे, एक प्रकार का औषध।

निश्चेष्टीकरण—पु० [सं० निश्चेष्ट+च्वि, ईत्व √कृ+ल्युट्—अन]= निश्चेष्ट-करण।

निश्चै—पु०, अव्य०=निश्चय।

निश्च्यवन—पु० [सं०] १. वैवस्वत मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि का नाम (पुराण)। २. एक प्रकार की अग्नि। (महाभारत)

निश्छंद (स्)—वि०[स० निर्-छदस्, ब० स०] जिसने वेद न पढा हो।
निश्छल—वि०[स० निर्-छल, ब०स०] १. (व्यक्ति) छल-कपट से रहित। २. (हृदय) जिसमे छल-कपट न भरा हो।
निश्छाय—वि०[स० निर्-छाया, ब०स०] छाया रहित।
निश्छेद—पु०[स० निर्-छेद, ब० स०] गणित मे वह राशि, जिसका किसी गुणक के द्वारा भाग न दिया जा सके। अविभाज्य।
निश्रम—पु०[स० नि श्रम] न थकना।
निश्रयणी—स्त्री०[स० नि श्रयणी] सीढी।
निश्रीक—पु०[स० नि श्रीक] सीढी।
निश्रेणिका तृण—पु०[स० नि श्रेणिकातृण] एक तरह की घास, जिसके खाने से पशु निर्बल हो जाते है।
निश्रेणी—स्त्री०[स० नि श्रेणी] १. सीढी। जीना। २ वह साधन जिसके द्वारा एक विन्दु से दूसरे विन्दु तक पहुँचा जाय। ३ मुक्ति। ४ खजूर का पेड।
निश्रेयस—पु०[स० नि श्रेयस्]१. दु ख का अत्यन्त अभाव। २ मोक्ष। ३ कल्याण। मगल।
निश्वास—पु० [स० नि श्वास]१ अन्दर खीचा हुआ साँस बाहर निकालना या छोडना। २ नाक या मुँह से बाहर निकलनेवाला श्वास। ३ गहरी या ठढा साँस।
निश्शक—वि०=नि शक।
निश्शक्त—वि०=नि शक्त।
निश्शर—वि०[स० नि शर] शर या वाण से रहित।
निश्शील—वि०[स० नि शील] [भाव० निश्शीलता] १ जिसका शील या स्वभाव अच्छा न हो। २ जिसमे शील या सकोच न हो। बे-मुरौवत।
निश्शेष—वि०=नि शेष।
निषंग—पु० [स० नि√सञ्ज् (लगाव)+घञ्] १ विशेप रूप से होनेवाला आसग या आसक्ति। लगाव। २ तरकश। ३ खड्ग। तलवार। ४ पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।
निषंगथि—वि० [स० नि√सञ्ज्+घथिन्] १. आलिंगन करने या गले लगानेवाला। २. धनुष धारण करनेवाला।
पु० १ आलिंगन। २ रथ। ३ सारथी। ४ कधा।
निषगी (गिन्)—वि०[स० निषग+इनि]१ जो किसी पर आसक्त हो। २ धनुषधारी। तीर चलानेवाला। ३ खड्गधारी।
पु० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
निष†—अव्य०=तनिक।
निषक-पुत्र—पु०[स०] असुर। राक्षस।
निषकर्श—पु०[स०] सगीत मे स्वर साधन की एक प्रणाली, जिसमे प्रत्येक स्वर का आलाप दो-दो बार करना पड़ता है।
निषक्त—वि०[स० नि√सञ्ज्+क्त]जो किसी पर विशेष रूप से आसक्त हो।
निषण्ण—वि० [स० नि√सद् (बैठना)+क्त] १. बैठा हुआ। २. आश्रित।
निषण्णक—पु०[स० निषण्ण+कन्]१ बैठने की जगह। २ आसन।
निषत्र—पु०=नक्षत्र।
निषद्—स्त्री०[स० नि√सद्+क्विप्] यज्ञ की दीक्षा।
निषद—पु०=निषाद (स्वर)।
निषद्या—स्त्री० [स० नि√सद्+कप्+टाप्] १ बैठने की छोटी चौकी या खाट। २ व्यापारी की दूकान की गद्दी। ३ बाजार। हाट।
निषद्यापरीषत्—पु० [स०] जैन भिक्षुओ का एक आचार जिसमे ऐसे स्थान पर रहना वर्जित है, जहाँ स्त्रियाँ और हिजडे आते-जाते हो, और यदि वहाँ रहना ही पडे, तो चित्त को चचल न होने देना।
निषद्वर—पु०[स० नि√सद्+ष्वरच्] १ कीचड। २ कामदेव।
निषद्वरी—स्त्री०[स० निषद्वर+ङीप्]रात्रि।
निषध—वि०[स०]१ पुराणानुसार एक पर्वत। २ कुश के एक पौत्र का नाम। ३ जनमेजय का एक पुत्र। ४ कुरु का एक पुत्र। ५ ५ विन्ध्य की पहाडियो पर का एक प्राचीन देश, जहाँ राजा नल राज करते थे। ६ निषाद (स्वर)।
निषधाभास—पु०[स०] 'आक्षेप' अलकार के ५ भेदो मे से एक।
निषधावती—स्त्री०[स०] विंध्य पर्वत से निकलनेवाली एक प्राचीन नदी। (मारकण्डेय पुराण)
निषधाश्व—पु०[स०] कुरु का एक पुत्र।
निषाद—पु०[स० नि √सद्+घञ्]१ एक प्राचीन अनार्य जगली जाति, अथवा उक्त जाति का कोई व्यक्ति। २ शृंगवेरपुर के पास का एक प्राचीन देश।
विशेष—निषाद जाति के लोग मूलत इसी प्रदेश के निवासी माने गये है और इनकी भाषा की गिनती मुडा भाषाओ के वर्ग मे होती है।
३ नीच जाति का व्यक्ति। ४ ऐसा व्यक्ति जो शूद्रा माता और ब्राह्मण पिता से उत्पन्न हुआ हो। ५ सगीत मे, सरगम का सातवाँ स्वर, जो अन्य सब स्वरो से ऊँचा होता है। इसका सक्षिप्त रूप 'नि' है।
विशेष—यह हाथी के स्वर के समान गभीर और ललाट से उच्चरित होनेवाला स्वर माना गया है। यह वैश्य जाति, विचित्र वर्ण का और गणेश के स्वरूपवाला कहा गया है। इसका देवता सूर्य और छद जगती है। यह उग्रा और क्षोभिणी नाम की दो श्रुतियो के योग से बना है।
निषादकर्षु—पु० [स०] एक प्राचीन देश।
निषाद-प्रिय—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
निषादित—भू०कृ०[स० नि √सद्+णिच् +क्त]१ बैठाया हुआ। २ पीडित।
निषादी (दिन्)—वि०[स० नि√सद्+णिनि] १ बैठनेवाला। २. जो आराम कर रहा या सुस्ता रहा हो।
पु० महावत। हाथीवान।
निषिक्त—भू० कृ०[स० नि√सिच् (छिडकना)+क्त]१. (स्थान) जिस पर जल छिडका गया हो। २ (खेत) जो सीचा गया हो। ३ भीतर पहुँचाया हुआ। ४ जिसके अदर या गर्भ मे कोई चीज पहुँचाई गई हो।
पु० वीर्य से उत्पन्न गर्भ।
निषिद्ध—भू०कृ०[स० नि√सिध् (गति)+क्त] [भाव० निषिद्ध] १. जिसे उपयोग, प्रयोग, या व्यवहार मे लाने का निषेध किया गया हो। २ रोका हुआ। २ बहुत ही बुरा और परम त्याज्य।

निषिद्धि—स्त्री० [स० नि√सिध्+क्तिन्] १. निषिद्ध होने की अवस्था या भाव। २. निषेध।

निषूदन—वि० [स० नि√सूद् (वध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] समस्त पदों के अत मे, मारने या वध करनेवाला। जैसे—अरिनिषूदन।

निषेक—पु० [स० नि√सिच् (सींचना)+घञ्] [वि० निषिक्त] १. जल छिडकने या जल से सिंचाई करने की क्रिया या भाव। २. चूने, टपकने या रसने की क्रिया या भाव। ३ वीर्य। ४. गर्भ धारण कराना। ५ किसी के अदर कोई चीज या शक्ति भरना। ६ इस प्रकार भरी हुई वस्तु या शक्ति। (इम्प्रेगनेशन)

निषेचन—पु० [स० नि√सिच्+णिच्+ल्युट्—अन] १. छिडकना। सीचना।

निषेध—पु० [स० नि√सिध्+घञ्] १. अधिकारपूर्वक और कारणवश यह कहना कि ऐसा मत करो। मना करने की क्रिया या भाव। मनाही। (फारबिडिंग) २. वह कथन या आज्ञा, जिसमे कोई बात न मानी गई हो या न किये जाने का विधान हो। (नेगेशन) ३ अपवाद। ४ अडचन। बाधा। रुकावट। ५ अस्वीकृति। इन्कार।

निषेधक—वि० [स० नि√सिध्+ण्वुल्—अक] १. (व्यक्ति) निषेध या मनाही करनेवाला। २ (आज्ञा या कथन) जिसके द्वारा निषेध या मनाही की जाय। ३ बाधक।

निषेधन—पु० [स० नि√सिध्+ल्युट्—अन] निषेध करने की क्रिया या भाव।

निषेध-पत्र—पु० [ष०त०] वह पत्र जिसमे किसी को कोई काम न करने के लिए आदेश दिया गया हो।

निषेध-विधि—स्त्री० [स० स०त०] वह आज्ञा, कथन या बात, जिससे किसी काम का निषेध किया जाय। जैसे—यह काम नही करना चाहिए। यह निषेध-विधि है।

निषेधाक्षेप—पु० [स०निषेध-आक्षेप, ब० स०] साहित्य मे आक्षेप अलकार के तीन भेदों मे से एक, जिसमे कोई बात इस ढग से मना की जाती है कि ध्वनि मे उसे करने का विधान सूचित होता है।

निषेधात्मक—वि० [स० निषेध-आत्मन्, ब०स०+कप्] १. (कथन या विधान) जो निषेध के रूप मे हो। २. दे० 'नहिक'।

निषेधाधिकार—पु० [स० निषेध-अधिकार, ष० त०] १ ऐसा अधिकार जिसमे किसी को कोई काम करने से रोका जा सके। २ राज्य, सस्था आदि के प्रधान के हाथ मे होनेवाला वह अधिकार, जिससे वह विधायिका सभा द्वारा पारित प्रस्ताव को कानून या विधि बनने से रोक सकता है। ३. किसी सस्था के सदस्यों के हाथ मे रहनेवाला उक्त प्रकार का वह अधिकार, जिससे कोई स्वीकृत प्रस्ताव व्यवहार मे आने से रोका जा सकता है (वीटो)

निषेधित—भू० कृ० [स० नि√सिध्+णिच्+क्त] जिसके या जिसके लिए निषेध किया गया हो। मना किया हुआ।

निषेवण—पु० [स० नि√सेव् (सेवा)+ल्युट्—अन, णत्व] १. सेवा करना। २ आराधन या पूजा करना। ३. अनुष्ठान। ४ प्रयोग या व्यवहार मे लाना। ५. बसना। रहना।

निषेवा—स्त्री० [स० नि√सेव्+अ—टाप्,षत्व] =सेवा।

निषेवित—भू० कृ० [स० नि√सेव्+क्त, षत्व] जिसका निषेवण हुआ हो।

निषेवी (विन्)—वि० [स० नि√सेव्+णिनि] [स्त्री० निषेविनी] १. निषेवण करनेवाला। २. सेवक। ३. आराधक।

निषेव्य—वि० [स० नि√सेव्+ण्यत्] जिसका निषेवण या सेवन करना उचित हो या किया जाने को हो। सेवनीय।

निष्कंटक—वि० [स० निर्-कटक, ब० स०] १ जिसमे काँटे न हों। २. जिसमे कोई बाधा या बखेडा न हो। ३ (राज्य) जिसमे शासक का कोई वैरी शत्रु न हो।

अव्य० १. बिना किसी प्रकार की बाधा या रुकावट के। २. बिना किसी प्रकार के वैर या शत्रुता की सभावना के। बेखटके।

निष्कंठ—पु० [स० निर्-कठ, ब० स०] वरुण (पेड)।

निष्कंप—वि० [स० निर्-कप, ब० स०] जिसमे कपन न हो रहा हो। जो काँप न रहा हो ; फलत स्थिर।

निष्कभ—पु० [स०] गरुड के एक पुत्र।

निष्कंभु—पु० [स०] देवताओं के एक सेनापति। (पुराण)

निष्क—पु० [स० निस्√कै (शोभा)+क] १. वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का जिसका मान समय-समय पर घटता-बढता रहता था। फिर भी साधारणत यह १६ माशे का माना जाता था। २ उक्त सिक्के के बराबर की तौल। ३ सोना। ४ सोने का पात्र या बरतन। ६. चाडाल।

निष्कपट—वि० [स० निर्—कपट, ब० स०] [भाव० निष्कपटता] कपट-रहित।

निष्कपटी—वि० [स० निष्कपट] कपट-रहित।

निष्कर—वि० [स० निर्—कर, ब० स०] जिस पर कर या शुल्क न लगता हो।

स्त्री० भूमि जिस पर कर न लगता हो। माफी।

निष्करुण—वि० [स० निर्—करुण, ब० स०] जिसके हृदय मे या जिसमे करुणा न हो। करुणा-रहित।

निष्कर्तन—पु० [स० निर्√कृत् (काटना)+ल्युट्—अन] काट या फाड कर अलग करना।

निष्कर्म—वि० [सं० निर्—कर्मन्, ब०स०] १ जो कोई कर्म न करता हो। २ जो कर्म करने पर भी उसमे आसक्ति न रखता या लिप्त न होता हो। अकर्मा।

निष्कर्मण्य—वि० [स० निर्—कर्मण्य, प्रा० स०] अकर्मण्य। निकम्मा।

निष्कर्मा (र्मन्)—वि० [स० निर्—कर्मन्, ब० स०] १. जो कर्मो मे लिप्त न हो। २. जो किसी काम का न हो। निकम्मा।

निष्कर्ष—पु० [स० निस्√कृष् (खीचना)+घञ्] १. खीचकर निकालना या बाहर करना। २ खीच या निकालकर बाहर की हुई चीज या तत्त्व। ३ विचार-विमर्श, सोच-विचार आदि के उपरात निकलनेवाला परिणाम या स्थिर होनेवाला सिद्धात। (कन्क्लूजन) ४ निश्चय। ५ इस बात का विचार कि कोई चीज कितनी या कैसी है। ६ राजा या शासन का प्रजा को कष्ट देते हुए उससे धन खीचना या लेना।

निष्कर्षक—वि० [स० निस्√कृष्+ण्वुल्-अक] निष्कर्ष या निष्कर्षण करनेवाला।

निष्कर्षण—पु० [स० निस्√कृष्+ल्युट्-अन] १. खीचकर निकालना या बाहर करना। २ दूर करना। ३ मिटाना। ४. घटाना।

निष्कर्षी (र्षिन्)—पु० [सं० निस्√कृष्+णिनि] एक प्रकार का मरुत्।
वि०=निष्कर्ष।

निष्कलंक—वि० [सं० निर्-कलंक, ब० स०] जिस पर या जिसमें कलंक न हो।
पु० पुराणानुसार एक तीर्थ जिसमें स्नान करने से कलंक या दोष नष्ट हो जाते हैं।

निष्कलंकित—वि०=निष्कलंक।

निष्कलंकी—वि०=निष्कलंक।

निष्कल—वि० [सं० निर्-कला, ब० स०] [स्त्री० निष्कला] १ (व्यक्ति) जो कोई कला या हुनर न जानता हो। २ (कार्य) जो कलापूर्ण ढंग से न किया गया हो। ३ अंगहीन। ४. जिसका वीर्य नष्ट हो चुका हो। जैसे—नपुंसक या वृद्ध। ४ पूरा। समूचा।
पु० ब्रह्म।

निष्कला—स्त्री० [सं० निष्कल+टाप्] ऐसी स्त्री जिसे मासिक-धर्म होना बंद हो गया हो।

निष्कली—स्त्री० [सं० निष्कल+ङीप्] =निष्कला।

निष्कलुष—वि० [सं० निर्-कलुष, ब० स०] कलुष-रहित। निर्मल या पवित्र।

निष्कषाय—वि० [सं० निर्-कषाय, ब० स०] १ विशुद्ध चित्तवाला। २ मुमुक्षु।
पु० एक जिन देव।

निष्काम—वि० [सं० निर्-काम, ब० स०] [भाव० निष्कामता] १ (व्यक्ति) जिसके मन में कामनाएँ या वासनाएँ न हों, फलतः जो सब बातों से निर्लिप्त रहता हो। २ (कार्य) जो बिना किसी प्रकार की कामना के किया जाय।

निष्कामी—वि०=निष्काम (व्यक्ति)।

निष्कारण—वि० [सं० निर्-कारण, ब० स०] जिसका कोई कारण या सबब न हो।
अव्य० १ बिना किसी कारण या वजह के। २ व्यर्थ।
पु० १ कहीं ले जाना या हटाना। २ मारण। वध।

निष्कालक—वि० [सं०निर्√कल् (गति)+णिच्+ण्वुल्-अक] जिसके बाल, रोएँ आदि मूँडे गए हों।

निष्कालन—पु० [सं० निर्√कल्+णिच्+ल्युट्-अन] १ चलाने की क्रिया या भाव। २ पशुओं आदि को निकालना या भगाना। ३ मार डालना। वध।

निष्कालिक—वि० [सं० निर्-कालिक, प्रा० स०] १ जो कुछ ही दिन और जीने को हो। २ जिसका अंत निकट हो। ३ अजेय।

निष्काश—पु० [सं० निर्√काश् (शोभित होना)+अच्] १. किसी पदार्थ का बाहर निकला हुआ भाग। (प्रोजेक्शन) जैसे—मकान का बरामदा।

निष्काशन—पु० निष्कासन। (दे०)

निष्काशित—भू० कृ०=निष्कासित।

निष्काष—पु० [सं० निर्√कष् (खरोचना)+घञ्] दूध का वह भाग जो उसके अधिक औटाये जाने के कारण बरतन में ही लगकर रह गया हो और खुरचकर निकाला जाय।

निष्कास—पु० [सं० निर्√कास् (खाँसना)+घञ्] १. बाहर निकालने की क्रिया या भाव। २. किसी पदार्थ का आगे या बाहर निकला हुआ भाग। ३. वह अंश या स्थान जहाँ से कोई चीज बाहर निकलकर आगे जाती हो। (आउट-फॉल)

निष्कासन—पुं० [सं० निर्√कास्+ल्युट्-अन] १ किसी क्षेत्र या स्थान में निवास करनेवाले व्यक्ति को वहाँ से स्थायी रूप से और अधिकार या बल-पूर्वक बाहर करना। २ किसी कर्मचारी को उसके पद से हटाना और उसे नौकरी से छुटाना। ३ देश से बाहर निकाले जाने का दंड।

निष्कासित—भू० कृ० [सं० निर्√कास्+क्त] जिसका निष्कासन हुआ हो। किसी क्षेत्र, पद, स्थान आदि से निकाला या हटाया हुआ।

निष्कासिनी—स्त्री० [सं० निर्√कास्+णिनि+ङीप्] वह दासी जिस पर स्वामी ने कोई प्रतिबंध न लगाया हो।

निष्किंचन—वि० [सं०निर्-किञ्चन, ब० स०] जिसके पास कुछ भी न हो। अकिंचन। दरिद्र।

निष्किल्विष—वि० [सं० निर्-किल्विष, ब० स०] किल्विष (दोष या पाप) से रहित।

निष्कीटक—वि० [सं० निर्-कीट, ब० स०] १. कीटाणुओं आदि से रहित। २ कीटाणुओं का नाश करनेवाला।
पु० वह प्रक्रिया या यंत्र जिसकी सहायता से कीटाणु नष्ट किये जाते हों। (स्टर्लाईज़र)

निष्कीटन—पु० [सं० निष्कीट+णिच्+ल्युट्-अन] १ किसी वस्तु को तपाकर अथवा रासायनिक प्रक्रियाओं से कीटों या कीटाणुओं से रहित करना। २ उत्पादन करनेवाले कीटाणु नष्ट करके अनुर्वर, नपुंसक या बाँझ करना। (स्टर्लाइज़ेशन)

निष्कीटित—भू० कृ० [सं० निष्कीट+णिच्+क्त] जो कीटाणुओं से रहित किया गया हो। (स्टर्लाइज्ड)

निष्कुंभ—वि० [सं० निर्-कुंभ, ब० स०] कुंभ रहित।
पु० [निस्√कुभ् (ढाँकना)+अच्] दंती वृक्ष।

निष्कुट—पु० [सं० निस्√कुट् (टेढ़ा होना)+क] १. घर के पास का उद्यान। नजर-बाग। २. खेत। ३ किवाड़ा। दरवाजा। ४. अंतःपुर। जनानखाना। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ खोखला वृक्ष।

निष्कुटि—स्त्री० [सं० निस्√कुट्+इन्] बड़ी इलायची।

निष्कुटिका—स्त्री० [सं०] कुमार की अनुचरी एक मातृका। (पुराण)

निष्कुटी—स्त्री० [सं० निष्कुटि+ङीप्] बड़ी इलायची।

निष्कुल—वि० [सं० निर्-कुल, ब० स०] [स्त्री० निष्कुला] १ जिसके कुल में कोई न रह गया हो। २ जो अपने किसी दोष या पाप के कारण अपने कुल या परिवार से अलग कर दिया या निकाल दिया गया हो।

निष्कुलीन—वि० [सं० निर्-कुलीन, प्रा० स०] अ-कुलीन।

निष्कुषित—भू० कृ० [सं० निस्√कुष् (खींचना)+क्त] १. छीला हुआ। २. जिसकी खाल उतार ली गई हो। ३ जहाँ-तहाँ काटा या खाया हुआ। (जैसे—कीटनिष्कुषित) खुरचकर निकाला हुआ। ४. निष्कासित।

निष्कुह—पु० [सं० निर्√कुह् (विस्मित करना)+अच्] पेड़ का खोखला अंश। कोटर। खोड़रा।

निष्कूज—वि० [स० निर्-कूज, ब० स०] ध्वनि या शब्द से रहित।

निष्कूट—वि० [स० निर्-कूट, ब० स०] कूट या छल-कपट से रहित।

निष्कृत—भू० कृ० [स० निर्√कृप् (खीचना)+क्त] [भाव० निष्कृति] १ हटाया हुआ। २ मुक्त। ३ उपेक्षित। तिरस्कृत। ४. जिसे क्षमा मिली हो।

पु० १. मिलन-स्थान। २ प्रायश्चित्त।

निष्कृति—स्त्री० [स० निर्√कृष्+क्तिन्] १ हटाने की क्रिया या भाव। २. छुटकारा। मुक्ति। ३. उपेक्षा। तिरस्कार। ४ क्षमा। ५ प्रायश्चित्त।

निष्कृति-धन—पु० [स० मध्य० स०] वह धन जो किसी को अपने वश मे से निकालकर मुक्त करने के बदले मे अथवा किसी को किसी के वश से मुक्त कराने के बदले मे लिया या दिया जाय। (रैन्सम)

निष्कृप—वि० [स० निर्-कृपा, ब० स०] १ दूसरो पर कृपा न करनेवाला। २ तेज। धारदार।

निष्कृष्ट—वि० [स० निर्√कृष्+क्त] १ निचोडकर निकाला हुआ। २ सारभूत

निष्कैतव—वि० [स०] निश्छल।

निष्कैवल्य—वि० [स० निर्-कैवल्य, ब० स०] १ विशुद्ध। २. पूर्ण। ३. मोक्ष-रहित।

निष्कोषण—पु० [स० निर्√कुष् (छीलना)+ल्युट्-अन] १ छीलना। २ शरीर पर से खाल उतारना। ३ काट या फाडकर छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट करना। ४ खुरचना। ५ निष्कासन।

निष्क्रम—वि० [स० निर्-क्रम, ब० स०] क्रम-हीन। बे-तरतीब।

पु० १. मन की तृप्ति। किसी को जाति से बाहर निकालना। ३ दे० 'निष्क्रमण'।

निष्क्रमण—पु० [स० निर्√क्रम् (गति)+ल्युट्-अन] [वि० निष्क्रात] १. बाहर निकालना। २. हिन्दुओ मे एक सस्कार जिसमे चार महीने के शिशुओ को पहले-पहल घर से बाहर निकालकर सूर्य के दर्शन कराते है।

निष्क्रमणार्थी(र्थिन्)—पु० [सं० निष्क्रमण-अर्थिन्, ष० त०] १. कही से निकलने की इच्छा रखनेवाला। २. दे० 'निष्क्रमिती'।

निष्क्रमणिका—स्त्री० [स०] हिन्दुओ का निष्क्रमण नामक सस्कार।

निष्क्रमिती—पु० [स० निष्क्रमी] वह जो किसी सकट आदि से बचने के लिए अपना निवास स्थान छोडकर दूसरी जगह जाय या जाना चाहे। (इवैकुई)

निष्क्रय—पु० [स० निर्√क्री (विनिमय)+अच्] १ वह धन जो किसी को कोई काम या सेवा करने के बदले या किसी वस्तु का उपयोग करने के बदले मे दिया जाय। जैसे—भाडा, मजदूरी, वेतन आदि। २. इनाम। पुरस्कार। ३ किसी चीज का दाम। मूल्य। ४. चीजो की अदला-बदली। विनिमय। ५ बेचने की क्रिया या भाव। बिक्री। ६ किसी काम या बात से छुटकारा पाने के लिए उसके बदले मे दिया जानेवाला धन। जैसे—(क) यदि गौ दान न कर सके, तो उसका कुछ निष्क्रय दे दो। (ख) ओल मे रखा हुआ व्यक्ति प्राय निष्क्रय देकर छुडाया जाता है। ७ शक्ति। सामर्थ्य। ८. उचित धन देकर दूसरे के हाथ मे पडी हुई चीज अपने हाथ मे करना या लेना। (रिडेम्प्शन)

निष्क्रयण—पु० [स० निर्√क्री+ल्युट्-अन] १ निष्क्रय करने की क्रिया या भाव। २. निष्क्रय के रूप मे दिया जानेवाला धन या रकम।

निष्क्रांत—भू० कृ० [स० निर्√क्रम्+क्त] १ निकला या निकाला हुआ। २. जिसका निष्क्रमण हो चुका हो। ३ (सपत्ति) जिसका स्वामी जिसे छोडकर दूसरे देश मे चला गया हो।

निष्क्रामित—वि०=निष्क्रात।

निष्क्राम्य—वि० [स० निर्√क्रम्+ण्यत्] (माल) जो बाहर भेजा जाने को हो या भेजा जाता हो। चलानी (माल)।

निष्क्रिय—वि० [स० निर्-क्रिया, ब० स०] [भाव० निष्क्रियता] १ जिसमे किसी किसी प्रकार की क्रिया या व्यापार न हो। निश्चेष्ट। जैसे—निष्क्रिय प्रतिरोध। २ जो किसी किसी प्रकार की क्रिया या चेष्टा न करता हो अथवा जिसकी क्रिया या गति बीच मे कुछ समय के लिए ठहर या रुक गई हो। ३ जो विहित कर्म न करता हो।

पु० ब्रह्म जो सब प्रकार की क्रियाओ, चेष्टाओ और व्यापारो से रहित माना जाता है।

निष्क्रियता—स्त्री० [स० निष्क्रय+तल्+टाप्] निष्क्रिय होने की अवस्था या भाव।

निष्क्रिय-प्रतिरोध—पु० [स० कर्म० स०] किसी अनुचित आज्ञा या आदेश का किया जानेवाला ऐसा प्रतिरोध या विरोध जिसमे मिलनेवाले दड, या होनेवाली हानि की परवाह नही की जाती। (पैसिव रेजिस्टेन्स)

निष्क्रीत—वि० [स० निर्√क्री+क्त] १ जिससे या जिसके लिए निष्क्रय दिया गया हो। (कम्पेन्सेटेड) २ (ऋण या देन) जो चुका दिया गया हो। (रिडीम्ड)

निष्क्लेश—वि० [स० निर्+क्लेश, ब० स०] १. जिसे किसी प्रकार का क्लेश न हो। सब प्रकार के क्लेशो से मुक्त या रहित। २. बौद्धधर्म मे, दस प्रकार के क्लेशो से मुक्त।

निष्क्वाथ—पु० [स० निर्-क्वाथ, ब० स०] मास आदि का रसा। शोरबा।

निष्टानक—पु० [स० निर्-तानक, प्रा० स०, षत्व, ष्टुत्व] १. गर्जन। २. कलरव।

निष्टि—स्त्री० [स०√निश् (एकाग्र होना)+क्तिच्] दिति का एक नाम।

निष्टिग्री—स्त्री० [स०] अदिति का एक नाम।

निष्ट्य—वि० [स० निस्+त्यप्, षत्व, ष्टुत्व] परकीय। बाहरी।

पु० १ चाडाल। २ वैदिक काल मे एक प्रकार के म्लेच्छ।

निष्ठ—वि० [स० नि√स्था (ठहरना)+क] १ ठहरा हुआ। स्थित। २ किसी काम या बात मे पूरी तरह से लगा रहनेवाला। जैसे—कर्म-निष्ठ। ३ किसी के प्रति निष्ठा (भक्ति और श्रद्धा) रखनेवाला। ४ विश्वास रखनेवाला। जैसे—धर्म-निष्ठ। ५ किसी कार्य या विषय मे बराबर मन से लगा रहनेवाला। जैसे—कर्तव्य-निष्ठ। (प्राय. यौगिक पदो के अत मे प्रयुक्त)

निष्ठांत—वि० [स० निष्ठा (नाश)+अन्त, ब० स०] नश्वर।

निष्ठा—स्त्री० [स० नि√स्था+अङ+टाप्] १. अवस्था। दशा। स्थिति। २ आधार। नीव। ३. दृढता-पूर्वक टिके या ठहरे रहने की अवस्था या भाव। ४. मन मे होनेवाला दृढ निश्चय या विश्वास ५. किसी बात, या व्यक्ति के सबध मे होनेवाली वह भावुकतापूर्ण

मनोवृत्ति जो हमारी आतरिक पूज्य बुद्धि, विश्वास, श्रद्धा आदि से उत्पन्न होती है और जो हमे उस (बात, विषय या व्यक्ति) के प्रति विशिष्ट रूप से आसक्त, प्रवृत्त तथा सलग्न रखती है। किसी के प्रति होनेवाली मन की ऐसी एकात अनुरक्ति या प्रवृत्ति जो बहुत-कुछ भक्ति की सीमा तक पहुँचती हुई होती है। जैसे—अपने कर्त्तव्य, गुरु, धर्म या नेता के प्रति होनेवाली निष्ठा। ६ धार्मिक क्षेत्र मे, ज्ञान की वह अतिम या चरम अवस्था, जिसमे आत्मा पूर्ण रूप से ब्रह्म मे लीन हो जाती है। ७ विष्णु जिनमे प्रलय के समय समस्त भूतो का विलय हो जाता है। ८ किसी चीज या बात का नियत समय पर होनेवाला अत या समाप्ति। ९ विनाश। १० दक्षता। प्रवीणता। ११. विपत्ति। सकट।

निष्ठान—पु० [स० नि√स्था+ल्युट्—अन] चटनी आदि चटपटी चीजे।

निष्ठानक—पु० [स० निष्ठान+कन्] =निष्ठान।

निष्ठावान् (वत्)—वि० [स० निष्ठा+मतुप्] जिसकी किसी के प्रति निष्ठा हो। निष्ठा रखनेवाला।

निष्ठित—भू० कृ० [स० नि√स्था+क्त] १. अच्छी तरह टिका या ठहरा हुआ। जमकर लगा हुआ। दृढ रूप से स्थिति। २ (व्यक्ति) जिसमे निष्ठा हो। निष्ठावान्।

निष्ठीव—पु० [स० नि√ष्ठिव् (थूकना)+घञ्, दीर्घ] =निष्ठीवन (थूक)।

निष्ठीवन—पु० [स० नि√ष्ठिव्+ल्युट्—अन, दीर्घ] १ मुँह से थूक या कफ निकालकर बाहर फेंकना। २ खखार। थूक। ३ वैद्यक मे, एक औषध, जिसका व्यवहार गले या फेफडे से कफ निकालने मे किया जाता है।

निष्ठुर—वि० [स० नि√स्था+उरच्] [स्त्री० निष्ठुरा] [भाव० निष्ठुरता] १ कठिन। कडा। सख्त। २ उग्र। तेज। ३ जिसके हृदय मे दया, ममता, मोह आदि न हो। दूसरो के कष्टो की परवाह न करनेवाला।

निष्ठुरता—स्त्री० [स० निष्ठुर+तल्—टाप्] १ निष्ठुर होने की अवस्था या भाव। २ आचरण व्यवहार आदि की निर्दयता-पूर्ण कठोरता।

निष्ठुरिक—पु० [स०] एक नाग जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

निष्ठेवन—पु०=निष्ठीवन (थूक)।

निष्ठ्यूत—वि० [स० नि√ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] १ थूका हुआ। २ उगला हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ। ४ कहा हुआ। उक्त।

निष्ण—वि० [स० नि√स्ना (नहाना)+क, षत्व, णत्व] =निष्णात। वि० [स०] (काम) जो सपन्न या पूरा किया जा चुका हो। (एक्-सिक्यूटेड)

निष्णात—वि० [स० नि√स्ना+क्त, षत्व, णत्व] १ किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता या जानकार। २ किसी बात मे बहुत अधिक-निपुण। ३ ठीक तरह से पूरा या समाप्त किया हुआ। ४ उत्तम। श्रेष्ठ।

निष्पंक—वि० [स० निर्—पंक, ब० स०] १ (भूमि) जिसमे कीचड न हो। २ (वस्तु) जिसे कीचड न लगा हो। ३ साफ-सुथरा। स्वच्छ।

निष्पंद—वि० [स० नि-स्पन्द, ब० स०] जिसमे स्पदन न हो या न होता हो। स्पदन-हीन।

निष्पक्व—वि० [स० निस्-पक्व, प्रा० स०] [भाव० निष्पक्वता] अच्छी तरह पका या पकाया हुआ।

निष्पक्ष—वि० [स० निर्—पक्ष, ब० स०] [भाव० निष्पक्षता] १ (व्यक्ति) जो किसी पक्ष या दल मे सम्मिलित न हो। २. जिसकी किसी पक्ष से विशेष सहानुभूति न हो। तटस्थ। ३ बिना पक्षपात के होने-वाला। पक्षपात-रहित। जैसे—निष्पक्ष न्याय।

निष्पक्षता—स्त्री० [स० निष्पक्ष+तल्+टाप्] १ निष्पक्ष होने की अवस्था या भाव। २ निष्पक्ष होकर किया जानेवाला आचरण।

निष्पताक—वि० [सं० निर्-पताक, ब० स०] बिना पताका का। पताका-रहित।

निष्पत्ति—स्त्री० [स० निर्√पद् (गति)+क्तिन्] १ आविर्भाव। उत्पत्ति। जन्म। २ परिपाक या पूर्णता। ३ आज्ञा, आदेश, निश्चय आदि के अनुसार किसी कार्य का किया जाना। (एक्जिक्यूशन) ४ उद्देश्य, कार्य आदि की सिद्धि। ५ निर्वाह। ६ मीमासा। ८ निश्चय। ९ हठयोग मे, नाद की चार अवस्थाओ मे से अतिम अवस्था।

निष्पत्ति लेख—पु० [ष० त०] इस बात का सूचक लेख कि अमुक कार्य या व्यवहार से हमारा कोई सबध नही रह गया। फारखती।

निष्पत्ति-विधि—स्त्री० [ष० त०] दे० 'प्रत्ययवृत्ति'।

निष्पत्र—वि० [स० निर्—पत्र, ब० स०] १ जिसमे पत्ते न हो। पत्र-हीन। २ जिसे पख न हो।

निष्पत्रिका—स्त्री० [स० निष्पत्र+क+टाप्, इत्व] करील (पेड)।

निष्पद—वि० [स० निर्—पद, ब० स०] १ जिसके पद या पैर न हो। पु० बिना पहियोवाला यान या सवारी।

निष्पन्न—वि० [स० निर्√पद+क्त] १ जन्मा हुआ। उत्पन्न। २ भली-भाँति पूरा किया हुआ। ३ जो आज्ञा, आदेश, निश्चय आदि के अनुसार पूरा किया गया हो। (एक्जिक्यूटेड)

निष्पराक्रम—वि० [स० निर्—पराक्रम, ब० स०] पराक्रमहीन।

निष्परिकर—वि० [स० निर्-परिकर, ब० स०] जिसने कोई तैयारी न की हो।

निष्परिग्रह—वि० [स० निर्—परिग्रह, ब० स०] १ जिसके पास कुछ न हो। २ जो दान आदि न ले। ३ जिसकी पत्नी न हो, अर्थात् कुँवारा या रडुआ। ४ विषय-वासना आदि से अलग रहनेवाला। पु० १ यह प्रतिज्ञा या व्रत कि हम किसी से दान न लेगे। २ यह प्रतिज्ञा या व्रत कि हम विवाह न करेंगे। या गृहस्थी बनाकर न रहेगे।

निष्परुष—वि० [स० निर्—परुष, ब० स०] जो सुनने मे परुष अर्थात् कर्कश न हो। कोमल। और मधुर।

निष्पर्यन्त—वि० [स० निर्—पर्यंत, ब० स०] पर्यंत या सीमा से रहित। अपार। असीम।

निष्पलक—अव्य० [स० निर्+हिं० पलक] बिना पलक गिराये या झपकाये।

निष्पवन—पु० [स० निस्√पू (पवित्र करना)+ल्युट्—अन] धान आदि की भूसी निकालना। कूटना। दाँना।

निष्पात—पु० [स० निस्√पत् (गिरना)+घञ्] १. न गिरना। २. पूरी तरह से गिरना।

निष्पाद—पु० [स० निर्√पद्+घञ्] १ अनाज की भूसी निकालने का काम। दाँना । २ मटर । ३ सेम । ४ बोडा। लोबिया ।

निष्पादक—वि० [स० निर्√पद्+णिच्+ण्वुल्—अक] निष्पत्ति या निष्पादन करनेवाला।
पु० १ आज्ञा, आदेश, निश्चय आदि के अनुसार कोई काम करनेवाला व्यक्ति। २ वह जो किसी की वसीयत मे उल्लखित बातो का पालन या व्यवस्था करने का अधिकारी बनाया गया हो। (एकजिक्यूटर)।

निष्पादन—पु० [स० निर्√पद्+णिच्+ल्युट्—अन] आज्ञा, आदेश, नियम, निश्चय आदि के अनुसार कोई काम ठीक तरह से पूरा करना। तामील। (एकजिक्यूशन)

निष्पादित—भू० कृ० [स० निर्√पद्+णिच्+क्त] जिसकी निष्पत्ति या निष्पादन हो चुका हो। निष्पन्न।

निष्पाप—वि० [स० निर्–पाप, ब० स०] १. (व्यक्ति) जिसने पाप न किया हो। २ (कार्य) जिसके करने से पाप न लगता हो।

निष्पार—वि० [स०] =अपार।

निष्पाव—पु० [स० निर्√पू+घञ्] १. अनाज के दानो आदि की भूसी निकालना। २ उक्त काम के लिए सूप से की जानेवाली हवा। ३ सेम।

निष्पीडन—पु० [स० निस्√पीड् (दबाव)+ल्युट्—अन] निचोडने की क्रिया या भाव।

निष्पुत्र—वि० [स० निर्-पुत्र, ब० स०] पुत्र-हीन।

निष्पुरुष—वि० [स० निर्-पुरुप, ब० स०] १ पुरुपहीन। २ जहाँ आबादी न हो।

निष्पुलाक—वि० [स० निर्-पुलाक, ब० स०] (अन्न) जिसमे से सारहीन दाने निकाल दिए गए हो। २ भूसी निकाला हुआ।
पु० आगामी उत्सर्पिणी के १४ वे अर्हत् का नाम।

निष्पेषण—पु० [स० निर्√पिप् (पीसना)+ल्युट्—अन] १ पेरना। २ पीसना। ३ रगडना।

निष्पेषित—भू० कृ० [स० निर्√पिप्+णिच्+क्त] १ पेरा हुआ। २ पीसा हुआ।

निष्पौरुष—वि० [स० निर्-पौरुप, ब० स०] पौरुप-हीन।

निष्प्रकंप—पु० [स० निर्–प्रकप, ब० स०] तेरहवे मन्वतर के सप्तर्पियो मे से एक।

निष्प्रकारक—वि० [स० निर्–प्रकार, ब० स०, कप्] जो किसी विशिष्ट प्रकार का न हो, अर्थात् साधारण या सामान्य। जैसे—निष्प्रकारक ज्ञान।

निष्प्रकाश—वि० [स० निर्–प्रकाश, ब० स०] अधकार-पूर्ण।

निष्प्रचार—वि० [स० निर्–प्रचार, ब० स०] जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके। जिसमे गति न हो। न चल सकने योग्य।
पु० गति न होने की अवस्था या भाव।

निष्प्रताप—वि० [स० निर्-प्रताप, ब० स०] प्रताप-रहित।

निष्प्रतिघ—वि० [स० निर्–प्रतिघ, ब० स०] जिसमे कोई बाधा या रुकावट न हो। अबाध।

निष्प्रतिभ—वि० [स० निर्-प्रतिभा, ब० स०] जिसमे प्रतिभा न हो या न रह गई हो।

निष्प्रतीकार—वि० [स० निर्-प्रतीकार, ब० स०] जिसका प्रतिकार न किया जा सके या न हो सके।

निष्प्रभ—वि० [स० निर्-प्रभा, ब० स०] प्रभा-हीन।

निष्प्रयोजन—वि० [स० निर्-प्रयोजन, ब० स०] १ जिसमे कोई प्रयोजन या मतलब न हो। जैसे—निष्प्रयोजन प्रीति। २. जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध न होता हो। व्यर्थ का। निरर्थक। फजूल।
अव्य० बिना किसी प्रयोजन या मतलब के।

निष्प्राण—वि० [स० निर्-प्राण, ब० स०] १ जिसमे प्राण न हो। निर्जीव। २ मरा हुआ। मृत। ३ जिसमे कोई महत्त्वपूर्ण गुण न हो। जैसे—निष्प्राण साहित्य।

निष्प्रेही—वि०=निष्पृह।

निष्फल—वि० [स० निर्-फल, ब० स०] १ (कार्य या बात) जिससे किसी फल की प्राप्ति या सिद्धि न हो। जैसे—निष्फल प्रयत्न। २ (पौधा या वृक्ष) जिसमे फल न लगता हो या न लगा हो। ३ (व्यक्ति) जिसे अड-कोश न हो या जिसका अड-कोश निकाल लिया गया हो।
पु० धान का पयाल।

निष्फला—वि० [स० निष्फल+टाप्] (स्त्री) जिसका रजोधर्म होना बद हो गया हो।

निष्फलि—पु० [स०] अस्त्रो को काटने या निष्फल करनेवाला अस्त्र।

निष्यंद—पु० =निस्यद।

निसंक—वि०=नि शक।

निसंकी—वि० [स० नि शक] १. नि शक। २ नि शक हो कर बुरे काम करनेवाला। उदा०—नीच, निसील, निरीस निसकी।—तुलसी।

निसंग*—वि०=निस्सग।

निसँठ†—वि० [हि० नि+सँठ=पूँजी] जिसके पास धन या पूँजी न हो। निर्धन। गरीब।

निसँस†—वि० [हि० नि+साँस] जो साँस न ले रहा हो, अर्थात् मरा हुआ या मरे हुए के समान।

निसस†—वि०=नृशस (क्रूर)।

निसंसना—अ० [स० नि.श्वास] १. नि श्वास लेना। २ हाँफना।

निस†—स्त्री०=निशा (रात्रि)।

निसक†—वि० [स० नि+शक्त] अशक्त। कमजोर। दुर्बल।

निसकर†—पु०=निशाकर (चद्रमा)।

निसचय*—पु०=निश्चय।

निसत—वि० [हि० नि+स० सत्य] असत्य। मिथ्या।
वि० [हि० नि+सत] जिसमे कुछ भी सत्त्व या सार न हो। नि सत्व।

निसतरना—अ० [स० निस्तार] निस्तार अर्थात् छुटकारा पाना।
स० निस्तार या उद्धार करना।

निसतार—पु०=निस्तार।

निसतारना*—स० [स० निस्तार+ना (प्रत्य०)] निस्तार करना। छुटकारा देना।

निसद्द†—वि०=नि शब्द।

निस-द्योस—अव्य० [स० निरी+दिवस] रात-दिन। नित्य। सदा।

निसनेही—स्त्री०=नि. स्नेहा (अलसी)।

निसबत—स्त्री० [अ० निस्बत] १ सबध। लगाव। ताल्लुक।

२. वैवाहिक संबंध की ठहरौनी या पक्की बात-चीत। मँगनी। मगाई।
३ तुलना। मुकाबला।
क्रि० प्र०—देना।
निसबती—वि० [अ०] १ 'निसबत' का। २ जिससे निसबत (रिश्ता या संबंध) हो।
पद—निसबती भाई=बहनोई या साला।
निसयाना†—वि० [हिं० नि+सयाना?] १ जिसकी सुध-बुध खो गई हो। २ अनजान।
निसरना†—अ०=निकलना।
निसराना†—स० १ =निकालना। २ =निकलवाना।
निसर्ग—पु० [सं० नि√सृज् (छोड़ना)+घञ्] [वि० नैसर्गिक] १ उपहार, भेंट, दान, दक्षिणा आदि के रूप में किसी को कुछ देना। २. छोड़ना या त्यागना। उत्सर्ग करना। ३. बाहर निकालना। ४ मल त्याग करना। ५ आकृति या रूप। ६ विनिमय। ७ सृष्टि। ८ वह तत्त्व या शक्ति जिससे सृष्टि के समस्त कार्य या व्यापार संपन्न होते हैं। प्रकृति। ९ स्वभाव। प्रकृति। (नेचर, अंतिम दोनों अर्थों में)
निसर्गज—वि० [सं० निसर्ग√जन् (उत्पत्ति)+ड] निसर्ग से उत्पन्न। नैसर्गिक। प्राकृतिक।
निसर्गत. (तस्)—अव्य० [सं० निसर्ग+तस्] निसर्ग या प्रकृति के अनुसार, अथवा उसकी प्रेरणा से। प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से। प्रकृतित । स्वभावत ।
निसर्गवाद—पु०=प्रकृतिवाद।
निसर्गवादी—पु०=प्रकृतिवादी।
निसर्ग-विज्ञान—पु०=प्रकृति-विज्ञान।
निसर्गविद्—पु०=प्रकृतिवेत्ता।
निसर्गवेत्ता—पु०=प्रकृतिवेत्ता।
निसर्ग-सिद्ध—वि० [सं० प० त०] १ प्राकृतिक। २ स्वभाव-सिद्ध। स्वाभाविक।
निसर्गायु (स्)—स्त्री० [सं० निसर्ग-आयुस्, मध्य०स०] फलित ज्योतिष में आयु निकालने की एक गणना।
नि-सवाद—वि० [सं० नि. स्वाद] जिसमें कोई स्वाद न हो। स्वाद-रहित। बे-सवादी।
निसवासर—पु० [सं० निशिवासर] रात और दिन।
अव्य० नित्य। सदा।
निसस—वि०=निर्मम (क्रूर)।
निसहाय—वि०=निस्सहाय (असहाय)।
निसाँक—अव्य०, वि०=निश्शंक।
निसाँस—पु० [सं० नि श्वास] ठंढा साँस। लंबा साँस।
वि०=निसाँसा।
निसाँसा—वि० [हिं० नि+साँस] [स्त्री० निसाँसी] जो साँस न ले रहा हो या न ले सकता हो, अर्थात् मरा हुआ या मरे हुए के समान।
उदा०—अब हौं मरौं निसाँसी, हिए न आवै साँस।—जायसी।
निसाँसी—वि०=निसाँसा।
निसा—स्त्री० [हिं० निशाख़ातिर] १ तृप्ति। तुष्टि।
पद—निसा भर=जी भर के। खूब अच्छी तरह।
२ संतोष।
†पु०=नशा।
†स्त्री०=निशा (रात)।
निसाकर*—पु०=निशाकर (चंद्रमा)।
निसाचर†—वि०, पु०=निशाचर।
निसाथ†—वि० [हिं० नि+साथ] जिसके साथ और कोई न हो। अकेला।
निसाद—पु० [सं० निषाद] १ भंगी। मेहतर। २ दे० 'निषाद'।
निसान—पु० [फा० निशान] १ निशान। चिह्न। २. धौंसा। नगाड़ा।
निसानन—पु० [सं० निशानन] संध्या का समय। प्रदोष काल।
निसाना†—पु०=निशाना।
निसानाथ—पु०=निशानाथ (चंद्रमा)।
निसानी—स्त्री०=निशानी।
निसापति—पु०=निशापति (चंद्रमा)।
निसाफ†—पु०=इंसाफ (न्याय)।
निसार—पु० [सं० नि√सृ (गति)+घञ्] १ समूह। २ सोनापाढ़ा।
पु० [अ०] १ कुरबान। बलि। २ निछावर। सदका। ३. मुगल शासन काल का एक सिक्का जो रुपये के चौथाई मूल्य का होता था।
†वि०=निस्सार।
निसारक—पु० [सं०] शालक राग का एक भेद।
†वि० [हिं० निसारना=निकालना] निकालनेवाला।
निसारना—स० [सं० नि सरण] निकालना। बाहर करना।
स० [अ० निसार] निछावर करना।
निसारा—स्त्री० [सं० नि सारा] केले का पेड़।
पु० [अ०] ईसाई। मसीही।
निसावारा—पु० [देश०] कबूतरों की एक जाति।
निसास—पु०=निसाँस (नि श्वास)।
वि०=निसाँसा (बेदम)।
निसासी—वि०=निसाँसा।
निसिंध—पु० [सं०] सँभालू नामक पेड़।
निसि—स्त्री०=निशि।
निसिकर—पु०=निशाकर (चंद्रमा)।
निसिचर—वि०, पु०=निशाचर।
निसिचारी—वि०, पु०=निशाचर।
निसिदिन—अव्य० [सं० निशिदिन] १. रात-दिन। आठों पहर। २ हर समय। सदा।
पु० रात और दिन।
निसिनाथ—पु०=निशिनाथ (चंद्रमा)।
निसिनाह—पु०=निशिनाथ (चंद्रमा)।
निसि-निसि—स्त्री० [सं० निशि निशि] अर्ध-रात्रि। निशीथ। आधी रात।
निसिपति—पु०=निशिपति (चंद्रमा)।
निसिपाल—पु०=निशिपाल (चंद्रमा)।
निसिमणि—पु०=निशामणि (चंद्रमा)।

निसियर—पु०=निशिकर (चद्रमा)।

निसिवासर—पु०=निसिदिन (रात-दिन)।

निसीठा—वि० [स० नि+हिं० सीठी] [स्त्री० निसीठी] १. जिसमे कुछ तत्त्व न हो। नि सार। २. नीरस।

निसीथ—पु०=निशीथ (अर्द्ध रात्रि)।

निसधु—पु० [स०] प्रह्लाद के भाई ह्लाद के पुत्र का नाम।

निसुंभ†—पु०=निशुभ।

निसु†—स्त्री०=निशा (रात्रि)।

निसुका*—वि० [स० नि स्वक] १ निर्धन। दरिद्र। गरीब। २. गुण, विशेषता आदि से रहित। उदा०—हौं कपु कैं रिस के करें ये निसु के हसि देत।—विहारी।

निसुग्गा†—वि०=निसोग।

निसुर—वि० [स० नि स्वर] १ शब्द-रहित। २. चुप। मौन।

निसूदक—वि० [स० नि√सूद् (हिंसा)+णिच्+ण्वुल्—अक] मारने या वध करनेवाला।

निसूदन—पु० [स० नि√सूद्+णिच्+ल्युट्—अन] १. वध करना। २. नष्ट करना।

निसृत—भू० कृ० [नि सृत] निकाला हुआ।

निसृता—स्त्री० [स० नि√सृ (गति)+क्त+टाप्] निसोथ।

निसृष्ट—भू०, कृ० [स० नि√सृज् (छोडना)+क्त] १ उपहार, भेंट, दान, दक्षिणा आदि के रूप में दिया हुआ। २ त्यागा या छोडा हुआ। ३ भेजा हुआ। प्रेषित। ४ जिसे स्वीकृति दी गई हो। ५ जलाया हुआ।

वि० मध्यस्थ।

पु० प्रतिदिन के हिसाब से दी जानेवाली मजदूरी या वेतन। दैनिक भृति। (कौ०)

निसृष्टार्थ—पु० [स० निसृष्ट-अर्थ, ब० स०] १. वह धीर और बुद्धिमान् व्यक्ति जिसे किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रबध या व्यवस्था का भार सौंपा जाय या सौंपा जा सके। २ सन्देशवाहक। दूत। ३. साहित्य मे, तीन प्रकार के दूतों (या दूतियों) मे से एक जो प्रेमिका और प्रेमी का पारस्परिक स्नेह देखकर स्वय उनके मिलन या सयोग की व्यवस्था करे।

निसेनी,—स्त्री० [स० नि श्रेणी] सीढी। जीना। सोपान।

निसेष—वि०=नि शेष।

निसेस—पु० [स० निशेश] चद्रमा।

निसैनी—स्त्री०=निसेनी (सीढी)।

निसोग—वि० [स० नि शोक] १. जिसे कोई शोक या चिंता न हो। २ जिसे किसी बात की चिंता या फिक्र न हो। लापरवाह।

निसोच—वि० [स० नि शोच] जिसे सोच या चिंता न हो।

निसोत (1)—वि० [स० नि सयुक्त] [वि० स्त्री० निसोती] जिसमे और किसी चीज का मेल न हो। शुद्ध। निरा।

स्त्री०=निसोथ।

निसोत्तर—पु०=निसोत।

निसोथ—स्त्री० [स० निसृता] १ एक प्रकार की लता जिसके पत्ते गोल और नुकीले होते है और जिससे गोल फल लगते हैं। २. उक्त लता का फल।

निसोधु—स्त्री० [हिं० सोध या सुध] १. सुध। खबर। २ सन्देश। सँदेसा।

निस्की—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

निसँकियल†—वि०=निष्कियल।

निस्तंतु—वि० [स० निर्-तंतु, ब० स०] १ तंतुओं से रहित। २ जिसके आगे कोई संतान न हो।

निस्तंद्र—वि० [सं० निर्-तंद्रा, ब० स०] १. जिसे तंद्रा न हो। २ जिसमें आलस्य न हो। निरालस्य। ३. बलवान। शक्तिशाली।

निस्तत्त्व—वि० [स० निर्-तत्त्व, ब०स०] जिसमें तत्त्व न हो। तत्त्व-हीन।

निस्तनी—स्त्री० [स० निस्तन, ब० स०, ङीप्] औषध की वटिका। गोली।

निस्तब्ध—वि० [स० नि√स्तम्भ् (रोकना)+क्त] [भाव० निस्तब्धता] १ जो हिलता-डोलता न हो। जिसमें गति या व्यापार न हो। २ निश्चेष्ट।

निस्तमस्क—वि० [स० निर्-तमस्, ब० स०, कप्] जिसमें अँधेरा न हो।

निस्तरंग—वि० [स० निर्-तरंग, ब० स०] जिसमें तरंगें न उठ रही हों, फलतः शांत और स्थिर। उदा०—उड़ गया मुक्त नभ निस्तरंग। —निराला।

निस्तर†—पु०=निस्तार। उदा०—निस्तर पाउ जाउँ इस बार। —जायसी।

निस्तरण—पु० [निर्√तॄ (पार होना)+ल्युट्—अन] १. पार उतरना या होना। २. झगड़ों-बखेड़ों, भव-बंधनों आदि से छुटकारा मिलना या पाना।

निस्तरना—अ० [सं० निस्तरण] १ पार होना। २ मुक्त होना। छुटकारा पाना।

स० १ पार उतराना। २ मुक्त करना। उदा०—अजहूँ सूर पतित पदतज तौ जौ औरहु निस्तरतो।—सूर।

निस्तरी—स्त्री० [देश०] रेशम के कीड़ों की एक जाति जिनका रेशम कुछ कम चमकदार और कुछ कम मुलायम होता है। इसकी तीन उपजातियाँ—मदरासी, सोनामुखी और क्रमि हैं।

निस्तर्क्य—वि० =अतर्क्य।

निस्तल—वि० [स० निर्-तल, ब० स०] [भाव० निस्तलता] १ बिना तल का। जिसका तल न हो। २. जिसके तले का पता न हो। बहुत गहरा। अतहीन। उदा०—प्रेयसी के, प्रणय के, निस्तल विभ्रम के। —निराला।

निस्तला—स्त्री० [स० निस्तल+टाप्] वटिका। गोली।

निस्तार—पु० [स० निर्√तॄ+घञ्] १. तर या तैर कर पार होने की क्रिया या भाव। २ बंधन, सकट आदि से बचकर निकलने की क्रिया या भाव। उद्धार। छुटकारा। ३. काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना। ४ अभीष्ट की प्राप्ति या सिद्धि।

निस्तारक—वि० [स० निर्√तॄ+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० निस्तारिका] १. पार उतारनेवाला। २ झझटो, बधनो आदि से छुडानेवाला।

निस्तारण—पु० [स० निर्√तॄ+णिच्+ल्युट्—अन] १ नदी आदि के पार करना या ले जाना। २. बधनों आदि से छुडाना। मुक्त करना। ३. जीतना। ४ सामने आये हुए कार्य, व्यवहार आदि को नियमित

रूप से पूरा करना अथवा उसका निराकरण करना। (डिस्पोजल) ५ रसायनशास्त्र मे, निथारने की क्रिया या भाव।

निस्तारन—पु०=निस्तारण।

निस्तारना—स० [स० निस्तर+ना (प्रत्य०)] १ पार उतारना। २ उद्धार करना। छुडाना।

निस्तार-बीज—पु० [स० ष० त०] वह बीज या तत्त्व जिसकी सहायता से मनुष्य भव-सागर से पार उतरता हो। (पुराण)

निस्तारा†—पु०=निस्तार।

निस्तिमिर—वि० [स० निर्-तिमिर, ब० स०] तिमिर या अधकार से रहित।

निस्तीर्ण—भू० कृ० [स० निर्√तृ+क्त] १ जो पार उतर चुका हो। २ जिसका निस्तार या छुटकारा हो चुका हो। मुक्त। ३ पूरा किया हुआ। निष्पन्न।

निस्तुष—वि० [स० निर्-तुष, ब० स०] १ जिसमे भूसी न हो या जिसकी भूसी निकाल ली गई हो। विना भूसी का। २ निर्मल। साफ।

निस्तुष-क्षीर—पु० [स० ब० स०] गेहूँ।

निस्तुष-रत्न—पु० [स० कर्म० स०] स्फटिक मणि।

निस्तुषित—भू० कृ० [स० निस्तुष+णिच्+क्त] १ जिसका छिलका या भूसी अलग कर दी गई हो। २ छीला हुआ। ३. त्यागा हुआ। त्यक्त। ४ छोटा या पतला किया हुआ।

निस्तेज—वि० [स० निर्-तेज, ब० स०] जिसमे तेज न हो। तेज-हीन।

निस्तैल—वि० [स० निर्-तैल, ब० स०] जिसमे तेल न हो अथवा जिस पर तेल न लगा हो।

निस्तोद—पु० [स० निस्√तुद् (व्यथित करना)+घञ्] १ चुभाने की क्रिया या भाव। २ डक मारना।

निस्त्रप—वि० [स० निर्-त्रपा, ब० स०] निर्लज्ज। वेशर्म।

निस्त्रिंश—वि० [सं० नृशस] जिसमे दया न हो। निर्दय।

पु० [स० निर्-त्रिंशत्, प्रा० स०] १ खड्ग। २ एक प्रकार का तात्रिक मत्र।

निस्त्रिंश-पत्रिका—स्त्री० [स० ब० स०,+कप्,+टाप्, इत्व] थूहर।

निस्त्रुटी—स्त्री० [स०] बडी इलायची।

निस्त्रैगुण्य—वि० [स० निर्-त्रैगुण्य, ब० स०]जो तीनो गुणो से रहित या हीन हो।

पु० सत्त्व, रज और तम तीनो गुणो से परे या रहित होने की अवस्था या भाव।

निस्त्रैणपुष्पिक—पु० [?] धतूरा।

निस्नेह—वि० [स० निर्-स्नेह, ब० स०] १ जिसमे स्नेह या प्रेम न हो। २ जिसमे स्नेह या तेल न हो।

पु० एक प्रकार का तात्रिक मत्र।

निस्नेह-फला—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] भटकटैया। कटेरी।

निस्पंद—वि० [स० निर्-स्पद, ब० स०] जिसमे स्पदन न हो। स्पदनरहित।

पु०=स्पदन।

निस्पृह—वि० [स० निर्-स्पृह, ब० स०,] जिसे किसी प्रकार की स्पृहा या इच्छा न हो। इच्छा या स्पृहा से रहित।

निस्पृहता—स्त्री० [स० निस्पृह+तल्+टाप्] निस्पृह होने की अवस्था या भाव।

निस्पृहा—स्त्री० [स० निस्पृह+टाप्] अग्निशिखा या कलिहारी नामक पेड।

निस्पृही—वि०=निस्पृह।

निस्प्रेही*—वि०=निस्पृह।

निस्फ—वि० [फा० निस्फ] अर्द्ध। आधा।

निस्फल†—वि०=निष्फल।

निस्फी—वि० [फा० निस्फ] निस्फ या आधे के रूप मे होनेवाला। जैसे—निस्फी बँटाई=ऐसी बँटाई जो दो बराबर भागो मे अर्थात् आधी आधी हो।

निस्वत—स्त्री० [अ०] निसबत। (दे०)

स्त्री० दे० 'दो-सखुना'।

निस्वती—वि०=निसबती।

निस्यंद—पु० [सं० नि√स्यन्द् (चूना)+घञ्] १ चूना या रिसना। क्षरण। २ परिणाम। ३. प्रकट करना।

निस्यंदी (दिन्)—वि० [स० नि√स्यन्द्+णिनि] बहने या रसनेवाला।

निस्यो*—वि० [स० निश्चित] निश्चिन्त। बे-फिक्र।

पद*—निस्यो करि=निश्चिन्त होकर।

निस्राव—पु० [स० नि√स्रु (बहना)+घञ्] १. वह जो चू, बह या रसकर निकला हो। २ भात की पीच। माँड़।

निस्व—वि० [स० नि स्व] जिसके पास 'स्व' अर्थात् अपना कुछ भी न हो; अर्थात् दरिद्र।

निस्वन—पु० [स० नि√स्वन् (शब्द)+अप्] शब्द। ध्वनि।

निस्वान—पु० [स० नि√स्वन्+घञ्] १ शब्द। ध्वनि। निस्वन। २ तीर के चलने से होनेवाली हवा मे सुरसुराहट।

†पु०=निश्वास।

निस्सकोच—वि० [स० निर्-सकोच, ब० स०] जिसमे सकोच या लज्जा न हो। सकोचरहित।

अव्य० विना किसी सकोच के। बे-धड़क।

निस्संग—वि० [स० निर्-सग, ब० स०] १. जिसका किसी से सग या साथ न हो। २. अकेला। ३. विषय वासनाओ से रहित। ४. एकात। निर्जन।

निस्संतान—वि० [स० निर्-सतान, ब० स०] जिसे कोई सन्तान न हो।

निस्संदेह—वि० [स० निर्-सदेह, ब० स०] जिसमे कोई या कुछ भी सदेह न हो। असदिग्ध।

अव्य० १ विना किसी प्रकार के सन्देह के। २. निश्चित रूप से। अवश्य।

निस्सत्त्व—वि० [स० निर्-सत्त्व, ब० स०] सत्त्वहीन।

निस्सरण—पु० [स० निर्-सरण, ब० स०] निकलने की क्रिया या भाव। २ निकलने का मार्ग या स्थान।

निस्सहाय—वि० [स० निर्-सहाय, ब० स०] जिसकी सहायता करनेवाला कोई न हो। असहाय।

निस्सार—वि० [स० निर्-सार, ब० स०] सारहीन।

निस्मारक—वि० [सं० निर्√सृ (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक] निकालनेवाला।

निस्सारण—पु० [सं० निर्√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] निकालने की क्रिया या भाव।

निस्सारित—भू० कृ० [सं० निर्√सृ+णिच्+क्त] निकाला हुआ। बाहर किया हुआ।

निस्सीम—वि० [सं० निर्-सीम, ब० स०] १ जिसकी कोई सीमा न हो। असीम। २. बहुत अधिक।

निस्सृत—भू० कृ० [सं० निर्√सृ+क्त] बाहर निकला हुआ।
पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

निस्स्नेह—वि० [सं० निर्-स्नेह, ब० स०] स्नेहरहित।

निस्स्नेह-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] सफेद भटकटैया।

निस्स्पंद—वि० =निस्पंद।

निस्स्वक—वि० [सं० निर्-स्व, ब० स०, कप्] दरिद्र। धनहीन।

निस्स्वादु—वि० [सं० निर्-स्वादु, ब० स०] १ जिसका या जिसमें कोई स्वाद न हो। २ जिसका स्वाद अच्छा न हो।

निस्स्वार्थ—वि० [सं० निर्-स्वार्थ, ब० स०] (कार्य) जो बिना किसी निजी स्वार्थ के और विशेषत परमार्थ की भावना से किया गया हो। जैसे—निस्स्वार्थ सेवा।
अव्य० बिना किसी स्वार्थ या मतलब के।

निहंग—वि० [सं० निःसंग] १ एकाकी। अकेला। २ जो घर-गृहस्थी की झंझटों में न पड़ा हो; अर्थात् अविवाहित और परिवार-हीन। ३ नंगा। ४ निर्लज्ज। बेशरम।
पु० १. एक प्रकार के वैष्णव साधु। २. अकेला रहनेवाला विरक्त या साधु। ३. सिक्खों का एक संप्रदाय, जो 'कूका' भी कहलाता है।

निहंगम—वि०=निहंग।

निहंग-लाडला—वि० [हिं० निहंग+लाडला] जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।

निहंता (तृ)—वि० [सं० नि√हन् (मारना)+तृच्] [स्त्री० निहंत्री] १. विनाशक। नाश करनेवाला। २ मार डालने या हत्या करने-वाला।

निह*—उप० [सं० निस्] नहिक भाव का सूचक एक उपसर्ग या पूर्व प्रत्यय। जैसे—निहकर्मा, निहकलंक, निहपाप आदि।

निहकर्मा—वि० [सं० निष्कर्म] कर्म न करनेवाला।

निहकलंक—वि०=निष्कलंक।

निहकाम—वि०=निष्काम।

निहकामी—वि०=निष्काम।

निहचक—पु० [सं० नेमि+चक्र] पहिए के आकार का काठ का वह गोल चक्कर जिसके ऊपर कूएँ की कोठी खड़ी की जाती है। निवार। जमवट। जाम्मि।

निहचय—पु०=निश्चय।

निहचल—वि०=निश्चल।

निहचिंत†—वि०=निश्चिंत।

निहठ, निहठा—स्त्री० [सं० निष्ठा] लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर रखकर बढ़ई गढ़ने की चीजें बसूले से गढ़ते हैं।

निहत—भू० कृ० [सं० नि√हन्+क्त] १. चलाया या फेंका हुआ। २. नष्ट किया हुआ। विनष्ट। ३. जो मार डाला गया हो।

निहतार्थ—पु० [सं० निहत-अर्थ, ब० स०] काव्य में एक प्रकार का दोष।

निहत्था—वि० [हिं० नि+हाथ] १. जिसके हाथ में कोई अस्त्र न हो। शस्त्रहीन। २ जिसके हाथ में कुछ या कोई साधन न हो।

निहनन—पु० [सं० नि√हन्+ल्युट्—अन] वध। मारण।

निहनना—स० [सं० निहनन] मारना। मार डालना।

निहपाप†—वि०=निष्पाप।

निहफल†—वि०=निष्फल।

निहला†—पु० दे० 'गंग-बरार'।

निहव—पु० [सं० नि√ह्वे (बुलाना)+अप्] पुकारना। बुलाना।

निहसरना—अ० [सं० नि+सरण] बाहर आना या निकलना। (राज०) उदा०—निहसरना नरवरै नर।—प्रिथीराज।

निहस—पु० [?] चोट। प्रहार। (डि०) उदा०—नीसाने पडी निहस।—पृथीराज।

निहसना—स० [सं० निर्घोषण] शब्द करना।
अ० शब्द होना।
अ० [सं० विलसन] सुशोभित होना। लसना। उदा०—नासा अग्रि मुताहल निहसंति।—प्रिथीराज।

निहाई—स्त्री० [सं० निघाति, मि० फा० निहाली] लोहारों और सुनारों का जमीन में गड़ा या लकड़ी आदि में जड़ा हुआ लोहे का वह टुकड़ा जिस पर वे धातु के टुकड़ों को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते है।

निहाउ—पु० [सं० निघाति] लोहे का घन।

निहाका—स्त्री० [सं०] १. गोह नामक जंतु। २ घड़ियाल।

निहाना—स० [सं० नि+घात] १. नष्ट करना। मारना। २. दबाना।

निहानी—स्त्री० [सं० निस्तनित्री] नक्काशी करने का एक उपकरण।

निहाय†—पुं०=निहाई।

निहायत—अव्य० [अ०] बहुत अधिक। अत्यन्त।

निहार—स्त्री० [हिं० निहारना] निहारने की क्रिया या भाव।
पु० [सं० निस्सरण] निकलने का मार्ग। निकास।
पु० [?] लट्टू।
पुं०=नीहार। (देखें)
वि०=निहाल।

निहारना—स० [सं० निभालन=देखना] १. अच्छी तरह और ध्यान-पूर्वक अथवा टक लगाकर देखना। २. ताकना।

निहारनि—स्त्री० [हिं० निहारना] निहारने की क्रिया या भाव। निहार।

निहारिका—स्त्री०=नीहारिका।

निहारुआ—पु०=नहरुआ (रोग)।

निहाल—वि० [फा०] १. जिस पर किसी की बहुत अधिक या विशेष कृपा हुई हो और इसी लिए जो प्रफुल्लित तथा संतुष्ट हो। २. धन, दौलत आदि मिलने पर जो मालामाल या समृद्ध हुआ हो। पूर्ण-काम। सफल-मनोरथ।

पु० पौधा।
निहालचा—पु० [फा० निहालच] बच्चों के सोने की छोटी गद्दी।
निहालना*— स०=निहारना।
निहाल लोचन—पु० दे० 'निहालचा'।
निहाली—स्त्री [फा०] बिस्तर पर बिछाने का गद्दा।
स्त्री०=निहाई।
निहाव—पु० [स० निघाति] निहाई।
निहिसन—पु० [स० नि√हिस् (मारना)+ल्युट्—अन] मार डालना। वध करना।
निहि—उप० स० 'निस्' उपसर्ग का एक विकृत रूप। जैसे—निहिचय, निहिचित।
निहिचय†—पु०=निश्चय।
निहिचित†—वि०=निश्चित।
निहित—वि० [स० नि√धा (धारण)+क्त, हि आदेश] १ (चीज) जो किसी दूसरी चीज के अन्दर स्थित हो और बाहर से न दिखाई देती हो। अन्दर छिपा या दबा हुआ। (लेटेन्ट) २ स्थापित किया हुआ। ३ दिया या सौपा हुआ।
निहीन—वि० [स० नि-हीन, प्रा० स०] परमहीन। बहुत क्षुद्र या तुच्छ।
निहुँकना—अ०=निहुरना (झुकना)।
निहुडना—अ०=निहुरना (झुकना)।
स०=निहुराना (झुकाना)।
निहुरना—अ० [हि० नि+होडन] १ झुकना। नवना। २ नम्र होना।
निहुराई—स्त्री० [हिं० निहुरना] झुकने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०=निठुराई (निष्ठुरता)।
निहुराना—स० [हिं० निहुरना का प्रे०] १ झुकाना। नवाना। २ नम्र होने के लिए विवश करना।
निहोर†— पु०=निहोरा।
निहोरना—अ० [हिं० निहोरा] प्रार्थना या विनती करना।
स० किसी पर अनुग्रह करके उसे उपकृत या कृतज्ञ करना। उदा०—सोइ कृपालु केवटहि निहोरे।—तुलसी।
निहोरा—पु० [स० मनोहार, हि० मनुहार] १ किसी के किए हुए अनुग्रह या उपकार के बदले मे प्रकट की या मानी जानेवाली कृतज्ञता। एहसान।
क्रि० प्र०—मानना।
मुहा०—**(किसी का) निहोरा लेना**=ऐसी स्थिति मे होना कि कोई उपकार करे और इसके लिए उसका कृतज्ञ होना पडे।
२ निवेदन। प्रार्थना। ३ विनती। विनय। ४ आसरा। भरोसा।
क्रि० प्र०—लगना।
अव्य० के लिए। वास्ते। दे० 'निहोरे'।
निहोरे—अव्य० [हि० निहोरा] किसी के किये हुए अनुग्रह या उपकार के आधार पर अथवा उसके कारण। जैसे—हम किस निहोरे उनके यहाँ जायँ, अर्थात् उन्होने हमारी कौन सी भलाई या कौन-सा सद्-व्यवहार किया है, जिसके लिए हम उनके यहाँ जायँ। उदा०—धरहुँ देह नहि आन निहोरे।—तुलसी।

निह्नव—पु० [स० नि√ह्नु (छिपाना)+अप्] १ निहित अर्थात् छिपे हुए होने की अवस्था या भाव। २ अविश्वास। ३. शुद्धता। पवित्रता। ४ एक प्रकार का साम-गान।
निह्नुवन—पु० [स० नि√ह्नु+ल्युट्—अन] १ इनकार। २ बहाना।
निह्नवोत्तर—पु० [म० निह्नव-उत्तर-मध्य० स०] टाल, मटोलवाला उत्तर। बहानेबाजी।
निह्नुत—भू० कृ० [म० नि√ह्नु+क्त] [भाव० निह्नुति] १ अस्वीकृत किया हुआ। २ छिपाया हुआ।
निह्नुति—स्त्री० [स० नि√ह्नु+क्तिन्] अस्वीकार। इन्कार। २ छिपाव। दुराव। गोपन।
निह्लाद—पु० [स० नि√ह्लद् (शब्द)+घञ्] ध्वनि। शब्द।
नींद—स्त्री० [स० निद्रा] १ प्राणियों की वह प्राकृतिक स्थिति जिसमे वे थोडे-थोडे समय पर और प्राय नियमित रूप से अपनी बाह्य चेतना और ज्ञान से रहित होकर पडे रहते है और जिसमे उनके मन, मस्तिष्क तथा शरीर को पूर्ण विश्राम मिलता है। जागते रहने के विपरीत की अर्थात् सोने की अवस्था, क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—आना।—टूटना।—लगना।
मुहा०—**नींद उचटना या उचाट होना**=किसी विघ्न या बाधा के कारण नीद मे भग पडना। **नींद करना**=(क) सोना। (ख) उदासीन, निश्चित या लापरवाह होना। उदा०—सतो जागत नीद न कीजै।—कबीर। **नींद खुलना या टूटना**=ठीक समय पर नीद पूरी हो जाने पर उसका अन्त होना। **नीद पड़ना**=कष्ट, चिंता आदि की दशा मे किसी प्रकार नीद आना। **नींद भर सोना**—जितनी इच्छा हो, उतना सोना। इच्छा भर सोना। **नींद लेना**=निद्रा की अवस्था मे होना। सोना। **नींद सचरना**=नीद आना। **नींद हराम होना**=ऐसे कष्ट या चिंता की स्थिति मे होना कि नीद बिलकुल न आवे या बहुत कम आवे।
नीदड़ा (ड़ी)—स्त्री०=नीद।
नींदना—अ०=सोना (नीद लेना)।
स०=निराना।
नींदर†—स्त्री०=नीद। (पश्चिम)
नीदाला—वि० [स० निद्रालु] [स्त्री० नीदाली] १ जिसे नीद आ रही हो। २ सोया हुआ।
नींन†—स्त्री०=नीद।
नींब †—स्त्री०=नीम (पेड)।
नींबू—पु० [स० निम्बुक, अ० लेमूँ] १ एक पौधा जिसके गोलाकार या लबोतरे छोटे फल खट्टे रस से भरे होते है। २ उक्त पौधे का फल।
नींबू-निचोड—वि० [हिं० नीबू+निचोडना] १ (व्यक्ति) जो किसी का सारा तत्त्व उसी प्रकार निकाल लेता हो जिस प्रकार नीबू का रस निकाला जाता है। २ (व्यक्ति) जो थोडा-सा परिश्रम या सहायता करके उसी प्रकार यथेष्ठ लाभ उठाता हो जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी तरकारी या दाल मे अपनी तरफ से नीबू का थोडा-सा रस डालकर उसमे साझेदार बन बैठता है।
नींव—स्त्री० [म० निमि; प्रा० नेह] १ मकान, महल, आदि की दीवार का वह निचला हिस्सा जो जमीन के अन्दर रहता है।

२ उक्त अंग बनाने से पहले जमीन मे खोदा जानेवाला गड्ढा। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह आरभिक तथा मौलिक कार्य जिसे आगे चलकर बहुत अधिक उत्कृष्ट या उन्नत रूप मिला हो।

पद—नींव का पत्थर=वह तत्त्व, बात या व्यक्ति जो किसी बहुत बडे कार्य का आधार या मूल हो।

नीअर†—अ० दे० 'निकट'।

नीक†—पु० [स० निक्त] १ अच्छापन। उत्तमता। २ कल्याण। भलाई। उदा०—आपन, मोर नीक जौ चहहू।—तुलसी।

वि०=नीका।

नीका—वि० [स० निक्त=साफ, स्वच्छ] १ उत्तम। बढिया। २. अच्छा। भला। उदा०—काकपच्छ सिर सोहत नीके।—तुलसी।

क्रि० प्र०—लगना।

नीके—अव्य० [हि० नीक] अच्छी तरह।

नीको—वि०=नीका।

नीखर†—वि० [स० नि+क्षरण] १. निखरा हुआ। २. स्वच्छ। साफ।

नीगना†—वि० [हि० न+गिनना]=अनगिनत (अगणित)।

नीग्रो—पु०=दे० 'हबशी'।

नीच—वि० [स० भाव० नीचता] १ आचार, व्यवहार, गुण-कर्म, जाति-पाँति आदि के विचार मे बहुत ही छोटा, और फलत. तुच्छ या हीन।

पद—नीच ऊँच=(क) बुराई और अच्छाई। (ख) हानि और लाभ। (ग) दु ख और सुख।

२ नैतिक, धार्मिक आदि दृष्टियों से बहुत ही निंदनीय, बुरा या हीन।

पद—नीच कमाई=अनुचित या दूषित ढग से प्राप्त किया जानेवाला धन।

पु० १ चोरनामक गध द्रव्य। २ दशार्ण देश का एक पर्वत। ३ फलित ज्योतिष मे, किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवे घर मे होने की स्थिति। नीच-ग्रह। ४. किसी ग्रह के भ्रमण मार्ग मे वह स्थान जो पृथ्वी से सबसे अधिक दूर हो।

नीचक—वि० [स० नीच+कन्] १ बहुत ही छोटे कदवाला। ठिगना। २. धीमा। मद। ३. क्षुद्र। कमीना। नीच।

नीच-कदंब—पु० [स० ब० स०] गोरखमुडी।

नीचका—स्त्री० [स० नि-ई√चक् (प्रतिघात)+अच्—टाप्] अच्छी और बढिया गौ।

नीचकी (किन्)—वि० [स० नि-ई√चक्+इनि] [स्त्री० नीचकिनी] १ उच्च। ऊँचा। २ उन्नत। श्रेष्ठ।

पु० १ ऊपरी भाग। २ वह जिसके पास अच्छी गौएं हो।

नीचग—वि० [स० नीच√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० नीचगा] १. नीचे की ओर जानेवाला। २ ओछा। तुच्छ। नीच। ३. नीच कुल की स्त्री के साथ सभोग करनेवाला।

पु० १. जल। पानी। २ फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो अपने उच्च स्थान से सातवें पड़ा हो।

नीचगा—स्त्री० [स० नीचग+टाप्] १. नदी। २ नीच कुल के पुरुष के साथ सभोग करनेवाली स्त्री।

नीचगामी (मिन्)—वि० [स० नीच√गम्+णिनि] [स्त्री० नीच-गामिनी] १ नीचे की ओर जानेवाला। २ ओछा। तुच्छ।

पु० जल। पानी।

नीच-गृह—पु० [स० ब० स०] कुडली मे वह ग्रह जो अपने घर से सातवे घर मे स्थित हो।

नीचट—वि० [स० निश्चय] दृढ। पक्का।

नीचता—स्त्री० [स० नीच+तल्+टाप्] १ नीच होने की अवस्था या भाव। २ बहुत ही हेय आचरण या व्यवहार।

नीचत्व—पु० [स० नीच+त्व] नीचता।

नीच-वज्र—पु० [स० कर्म० स०] वैक्रात मणि।

नीचा—वि० [स० नीच] [स्त्री० नीची, भाव० नीचाई] १ जो किसी प्रसम धरातल या स्तर से निम्न स्तर पर स्थित हो। जैसे—नीची जमीन, नीची सडक।

पद—नीचा-ऊँचा=कही से नीचा और कही से ऊँचा। ऊबड-खाबड।

२. जो किसी की तुलना मे कम ऊँचा हो अथवा जिसका विस्तार ऊपर की ओर कम हो। जैसे—नीची दीवार, नीची टोपी। ३ झुका हुआ। नत। जैसे—नीचा सिर। ४. जिसका झुकाव या विस्तार नीचे की ओर हो। जैसे—नीची धोती, नीचा पाजामा।

मुहा०—नीचा देना=पक्षी का झोके या तेजी से सीधे नीचे की ओर आना। गोतना। उदा०—उठि ऊँचै नीचौ दयो मनु कलिंग झपि झौर।—बिहारी।

†५ अधिकार, पद, मर्यादा आदि के विचार से जो औरो से घटकर हो। छोटा। जैसे—नीची अदालते, नीची जाति।

मुहा०—नीचा दिखाना=(क) तुच्छ ठहराना। (ख) परास्त करना। (ग) लज्जित करना। नीचा देखना=(क) तुच्छ ठहरना। (ख) परास्त होना। (ग) लज्जित होना।

६. स्वर आदि के सबध मे, धीमा या मद्धिम।

नीचाई—स्त्री० [हि० नीचा] अपेक्षाकृत नीचे होने की अवस्था या भाव। निचान।

नीचान—स्त्री०=नीचाई।

नीचाशय—वि० [स० नीच-आशय, ब० स०] तुच्छ विचार का। क्षुद्र। ओछा।

नीचू—वि० [हि० नि+चूना] जो चूता न हो। न चूनेवाला।

वि०=नीचा।

क्रि० वि०=नीचे।

नीचे—क्रि० वि० [हि० नीचा] १. किसी की तुलना मे, निम्न धरातल पर या मे। जसे—ऊपर मकान मालिक और नीचे किरायेदार रहता है। २ ऐसी स्थिति मे जिसमे उसके ठीक ऊपर भी कुछ हो। जैसे—(क) कुरते के नीचे गजी पहन लो। (ख) मोटी किताब के नीचे पतली किताब रखना।

पद—नीचे ऊपर=उलट-पलट। अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित। जैसे—सब चीजें ज्यो की त्यो रहने दो, नीचे-ऊपर मत करो। नीचे से ऊपर तक=(क) एक सिरे से दूसरे सिरे तक। (ख) सब अगो या भागो मे। सर्वत्र।

मुहा०—नीचे उतारना=मरते हुए व्यक्ति को खाट, पलग आदि पर से हटाकर नीचे जमीन पर लिटाना। (हिंदू) नीचे गिरना=आचार-विचार, मान-मर्यादा आदि की दृष्टि से पतित या हीन होना। जैसे—हम नही जानते थे कि तुम इतना नीचे गिरोगे। नीचे लाना=

(क) जमीन पर गिराना और पछाडना। (ख) नीचे उतारना। (ऊपर देखे)

३ किसी की अधीनता या वश मे। जैसे—उसके नीचे पाँच कर्मचारी काम करते है।

नीज—पु० [?] रस्सी।

नीजन—वि०, पु०=निर्जन।

नीजू—स्त्री० [?] रस्सी।

नीझर†—पुं०=निर्झर।

नीठ—वि०=नीठा।

अव्य०=नीठि।

नीठा*—वि० [स० अनिष्ट, प्रा० अनिट्ठ] [भाव० नीठि] १. जो अच्छा न लगे। अरुचिकर। २ अनिष्टकारक। बुरा।

नीठि—स्त्री० [हिं० नीठ] अरुचि। अनिच्छा।

अव्य० बहुत कठिनता या मुश्किल से। ज्यो-त्यो करके। जैसे-तैसे।

पद—**नीठि नीठि**=ज्यो-त्यो करके। बहुत कठिनता से। किसी न किसी प्रकार। जैसे-तैसे। उदा०—नीठि नीठि भीतर गई, डीठि डीठि सो जोरि।—बिहारी।

नीड—पु० [स० नि√ईड् (स्तुति)+घञ्] १. बैठने या ठहरने का स्थान। २. चिडियों का घोसला। ३ रथ मे रथी के बैठने का स्थान।

नीड़क—पु० [स० नीड√कै (शोभित होना)+क] १ पक्षी। चिडिया। २ घोसला।

नीड़ज—पु० [स० नीड√जन् (उत्पत्ति)+ड] पक्षी।

नीडोद्भव—पु० [स० नीड-उद्भव, ब० स०] पक्षी। चिडिया।

नीत—भू० कृ० [स०√नी (ले जाना)+क्त] १. कही पहुँचाया या लाया हुआ। २. ग्रहण किया हुआ। गृहीत। ३ पाया या मिला हुआ। प्राप्त। ४. स्थापित।

नीति—स्त्री० [स०√नी+क्तिन्] [वि० नैतिक] १ ले जाने या ले चलने की क्रिया, ढग या भाव। २ उचित या ठीक रास्ते पर ले चलने की क्रिया या भाव। ३ आचार, व्यवहार आदि का ढग, पद्धति या रीति। ४ आचार, व्यवहार आदि का वह प्रकार या रूप जो बिना किसी का उपकार किये या किसी को कष्ट पहुँचाये अपने लिए भी और दूसरो के लिए भी मगलकारी, शुभ तथा सम्मानजनक हो। ५ ऐसा आचार-व्यवहार जो सबकी दृष्टि मे लोक या समाज के कल्याण के लिए आवश्यक और उचित ठहराया गया हो या माना जाता हो। सदाचार, सद्व्यवहार आदि के नियम और रीतियाँ। ६ राज्य या शासन की रक्षा और व्यवस्था के लिए अथवा शासक और शासित का सबध ठीक तरह से बनाये रखने के लिए स्थिर किये हुए तत्त्व या सिद्धान्त। ७ अपना उद्देश्य सिद्ध करने या काम निकालने के लिए कौशल तथा चतुरता से किया जानेवाला आचरण या व्यवहार। तरकीब। युक्ति। हिम्मत। (पॉलिसी) ८ किसी काम या बात की उपलब्धि, प्राप्ति या सिद्धि। ९ दे० 'नीति-शास्त्र'। १०. दे० 'राजनीति'।

नीति-कुंतली—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नीतिज्ञ—वि० [स० नीति√ज्ञा (जानना)+क] नीति का जाननेवाला। नीतिकुशल।

नीतिमान् (मत्)—वि० [स० नीति+मतुप्] [स्त्री० नीतिमती] १ नीति परायण। २ सदाचारी।

नीतिवाद—पु० [स० मध्य० स०] वह वाद या सिद्धान्त जिसमे व्यवहार और आचार सबधी नीति की प्रधानता हो।

नीतिवादी (दिन्)—वि० [स० नीतिवाद+इनि] १ नीतिवाद—सबधी। २ नीतिवाद का अनुयायी। ३ जो नीति-शास्त्र के सिद्धातो के अनुसार सब काम करता हो।

नीति-शास्त्र—पु० [स० प० त०] वह शास्त्र जिसमे देश, काल और पात्र के अनुसार समाज के कल्याण के लिए उचित और ठीक आचार-व्यवहार करने के नियमो, सिद्धातो आदि का विवेचन होता है। (इथिक्स) २ उक्त विषय पर लिखा हुआ कोई प्रामाणिक और मान्य ग्रथ।

नीदना—अ०=नीदना।

नीधना†—वि०=निर्धन।

नीध्र—पु० [स० नि√धृ (धारण)+क, पूर्वदीर्घ] १. छाजन की ओलती। वलीक। २ जगल। वन। ३ पहिए का धुरा। नेमि। ४. चद्रमा। ५ रेवती नक्षत्र।

नीप—पु० [स०√नी+प] १ कदब। २. भू-कदब। ३ गुलदुपहरिया। बन्धूक। ४ नीला अशोक। ५ पहाड के नीचे का तल या भाग। ६ एक प्राचीन देश।

पु० [अ० निपर] कोई चीज बाँधने के लिए लगाया जानेवाला डोरी या रस्सी का फदा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।—लेना।

नीपजना†—अ०=निपजना।

नीपना†—स०=लीपना।

नीपर—पु० [अ० निपर] १ लगर मे बँधी हुई रस्सियो मे से एक। २. वह डडा जिससे उक्त रस्सी कसी जाती है।

नीपातिथि—पु० [स०] एक वैदिक ऋषि।

नीपाना—स० [स० निष्पन्न ?] १ पूरा करना। २ उत्पन्न करना। उदा०—गिरि नीपायौ तदि निकुटी ए।—पृथीराज।

नीव†—स्त्री०=नीम।

नीवर—वि०=निर्बल (कमजोर)।

नीबी†—स्त्री०=नीवि।

नीबू—पु०=नींबू।

नीम—स्त्री० [स० निंब] छोटी-छोटी पत्तियोवाला एक प्रसिद्ध पेड जिसकी पतली शाखाओ की दतुअन बनती है। इस पेड की पत्तियाँ और छाल अनेक प्रकार के कृमियो की नाशक मानी गई है।

मुहा०—**नीम की टहनी हिलाना**=उपदश या गरमी की बीमारी से युक्त होना।

विशेष—उक्त रोग के रोगी प्राय नीम की टहनी से पीडित अग पर हवा करते है। इसी से यह मुहावरा बना है।

वि० [फा०] १. आधा। अर्द्ध। २ आधे के लगभग या थोडा-बहुत। जैसे—नीम पागल, नीम राजी, नीम हकीम। ३ रग के सबध मे, जो साधारण से हलका हो। जैसे—नीम प्याजी।

नीम गिर्दा—पु० [?] वढइयो का एक उपकरण।

नीमच—पु० [हिं० नदी+मच्छ] एक तरह की मछली।

नीमचा—पु० [फा० नीमच] खाँडा।

नीमजाँ—वि० [फा०] अध-मुआ। मृतप्राय।

नीम-टर—वि० [फा० नीम+हिं० टरटर] अर्द्धशिक्षित। (परिहास और व्यग्य)

नीमन—वि० [स० निर्मल] १ उत्तम। वढिया। २ रोगरहित। तन्दुरुस्त। नीरोग। ३ हर तरह से ठीक और काम मे आने योग्य।

नीमर—वि०=निर्वल।

नीम-रजा—वि० [फा० नीम+अ० रजा] जो किसी काम या वातके लिए आधा अर्थात् थोडा-वहुत राजी या सहमत हो गया हो।

नीमवर—पु० [फा०] कुश्ती का एक पेच जिससे पीछे खडे हुए जोड को चित गिराया जाता है।

नीमषारण, नीमवारन—पु०=नैमिपारण्य।

नीमस्तीन—स्त्री० दे० 'नीमास्तीन।'

नीमा—पु०, वि० [हिं० नीव] नीचा।

वि० [फा० नीम] अर्ध। आधा।

पु० एक तरह का पाजामा।

नीमावत—पु० [हिं० निंव] निंवार्काचार्य का अनुयायी एक वैष्णव सप्रदाय

नीमास्तीन—स्त्री० [फा० नीम+आस्तीन] एक प्रकार की कुरती या फतुही जिसकी आस्तीन आधी अर्थात् कोहनी तक होती है।

नीयत—स्त्री० [अ०] कोई काम करने या कोई चीज पाने के सवध मे मन। मे वनी रहनेवाली स्वभावजन्य वृत्ति अथवा होनेवाला विचार। आतरिक आशय, उद्देश्य या लक्ष्य। भावना। मनशा। (इन्टेन्शन)

मुहा०—**नीयत डिगना**=अच्छा या उचित सकल्प दृढ न रहना। मन मे विकारपूर्ण भावना या विचार उत्पन्न होना। वुरा सकल्प होना। **नीयत वदल जाना**= अच्छे विचार या सकल्प के स्थान पर दूषित या वुरा विचार अथवा सकल्प होना। **नीयत वाँधना**=मन मे दृढ विचार या मकल्प करना। **नीयत विगडना**=नीयत डिगना। (दे० ऊपर) **नीयत भरना**=मन तृप्त होना। इच्छा पूरी होना। जी भरना। जैसे—अभी इस लडके की नीयत भरी नही हे, इसे थोडी मिठाई और दो। **नीयत मे फरक आना**=नीयत डिगना या विगडना। **(किसी काम, चीज या वात में) नीयत लगी रहना**= किसी काम की सिद्धि या वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान लगा रहना।

नीर—पु० [स०√नी +रक्] १ जल। पानी। २ जल की तरह का कोई तरल पदार्थ। जैसे—नयनो का नीर=आँसू, शीतला का नीर=चेचक के फफोलो मे से निकलनेवाला चेप या रस।

मुहा०— **(किसी की आँखो का) नीर ढल जाना**= आँखो मे लज्जा या शील-संकोच न रह जाना। **(आँखों से) नीर ढलना**=मरने के समय आँखो से जल निकलना या वहना।

३. आव। काति। चमक। उदा०—आड हू भुलावँ नख-सिख भरी नीर की।—सेनापति। ४ नीम के पेड से निकलनेवाला स्राव। ५ सुगधवाला। ६. रहस्य सप्रदाय मे, सहस्रार चक्र से झरनेवाला वह रस जो परम आवश्यक कहा गया है। उदा०—आगामी सरुभरिआ

नीर-क्षीर-विवेक—पु० [स० नीर-क्षीर, द्व० स०, नीरक्षीर-विवेक, प०त०] ऐसा विवेक या ज्ञान जो भले-वुरे, न्याय-अन्याय आदि मे ठीक, पूरा और स्पष्ट भेद या विभाग कर सके।

विशेष—कहा जाता है कि हस मे इतना ज्ञान होता है कि वह पानी मिले हुए दूध मे से दूध तो पी लेता है और पानी छोड देता है। इसी आधार पर यह पद वना है।

नीरछ*—पु०=नीरद (मेघ)।

नीरज—वि० [स० नीर√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो जल या जल से उत्पन्न हुआ हो। जलीय।

पु० १. कमल। २ मोती। ३ कुट नामक ओपधि। ४ एक प्रकार का तृण।

नीरण—पु० [स० नीर से] १. जल देना या पहुँचाना। २ नल आदि की सहायता से जल या कोई तरल पदार्थ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना। (पाइपिंग)

नीरत—वि० [स० निर्-रत, प्रा० स०] विरत।

नीरद—वि० [स० नीर√दा (देना)+क] नीर अर्थात् जल देनेवाला।

पु० १ वादल। मेघ। २ उत्तराधिकारी या वशज जो अपने पितरो या पूर्वजो को जल देता अर्थात् उनका तर्पण करता हो।

वि० [स० नि +रद] जिसे दाँत न हो। विना दाँतोवाला। दतहीन।

नीरधर—वि० [स० नीर√धृ (धारण)+अच्] जल धारण करनेवाला।

पु० मेघ।

नीरधि—पु० [स० नीर√धा+कि] समुद्र। सागर।

नीरना—स० [हिं० नीर] १ जल छिडकना। २ सीचना। ३ पोषक द्रव्य, भोजन आदि देकर जीवित रखना। पालना-पोसना।

स० [?] छितराना। विखेरना।

नीर-निधि—पु० [स० प०त०] समुद्र।

नीर-पति—पु० [स० प०त०] वरुण देवता।

नीर-प्रिय—पु० [स० व०स०] जल-वेत।

नीरम—पु० [देश०] वह वोझ जो जहाज पर केवल उसका सतुलन ठीक रखने के लिए रखा जाता है।

नीरव—वि० [स० निर्-रव, व० स०] १ जिसमे से रव अर्थात् ध्वनि या शब्द न निकलता हो। २ जिसमे रव या शब्द न होता हो। ३ जो वोल न रहा हो। चुप। मौन।

नीरस—वि० [स० निर्-रस, व०स०] [भाव० नीरसता] १ जिसमे रस न हो। रस-हीन। २ जिसके स्वाद मे मिठास न हो। फीका। ३ जिससे या जिसमे मन को रस अर्थात् आनन्द न मिलता हो। ४ जिसमे कोई आकर्षक, मनोरजक या रुचिकर तत्त्व या वात न हो। ५ सूखा हुआ। शुष्क।

नीराँजन—पु० दे० 'नीराजन'।

नीराँजनी—स्त्री० [स० नीराजन] वह आधार या पात्र जिसमे आरती के लिए दीप जलाये जाते है। आरती।

नीरा—स्त्री० [स० नीर] खजूर या ताड के वृक्ष का वह रस जो प्रातकाल उतारा जाता है और जो पीने मे वहुत स्वादिष्ट और गुणकारी होता है।

अव्य० [हि० नियर] समीप। पास। उदा०—दूरि वात खत पाया नीरा।—कवीर।

नीराखु—पु०[स० नीर-आखु, प०त०] ऊदविलाव।

नीराजन—पु०[स० निर्√राज (शोभित होना)+ल्युट्—अन]१ देवता को दीपक दिखाने की क्रिया। आरती। दीप-दान।

क्रि० प्र०—उतारना।—वारना।

२ हथियारो को साफ करके चमकाने की क्रिया या भाव। ३ मध्य युग मे, वर्षाकाल वीतने पर और प्राय आश्विन मास मे राजाओ के यहाँ होनेवाला एक पर्व जिसमे युद्ध से पहले सव हथियार साफ करके चमकाये जाते थे।

नीराजना—स०[स० नीराजन]१ नीराजन मे दीप जलाकर किसी देवी या देवता की आरती करना। २ हथियार माँजकर साफ करना और चमकाना।

नीराशय—पु०=जलाशय।

नीरिंदु—पु०[स० नि√ईर्+क्विप्, नीर√इन्द्+उण्] सिहोर (वृक्ष)।

नीरुज—वि०[स० निर्-रुज, व०स०, रलोप, दीर्घ] रोग-रहित।

पु० कुट नामक ओपधि।

नीरे†—अव्य०=नियरे (निकट)।

नीरोग—वि०[स० निर्-रोग, व०स०, रलोप, दीर्घ] १ (व्यक्ति) जिसे कोई रोग न हो। स्वस्थ। २ जिसमे दोप, विकार आदि न हो। जैसे—नीरोग वातावरण।

नीरोवर—पु०[स०नीरवर]समुद्र। (मरोवर के अनुकरण पर) उदा०—नीरोवरि प्रवसति नई।—पृथीराज।

नीलंगु—पु०[स० नि√लग् (गति)+कु, नि० पूर्वदीर्घ]१ एक तरह का कीडा। २ गीदड। शृगाल। ३ भौरा। भ्रमर। ४ फूल।

नील—वि०[स०√नील् (रग होना)+अच्]गहरे आसमानी रग का।

पु० १ नीला रग। २ एक प्रसिद्ध पौवा जो २½/३ हाथ लवा होता तथा जिसमे नीले रग के छोटे छोटे फूल लगते हैं, जिनसे नीला रग तैयार किया जाता है।

विशेष—यह पौवा मूलत भारतीय है और इसकी लगभग ३०० जातियाँ हैं। वहुत प्राचीन काल से इस पौधे का रग भारत से विदेशो को जाता रहा है। ईस्ट इडिया कपनी ने इसके पौधो की खेती की व्यापारिक दृष्टि से विस्तृत व्यवस्था की थी। अव भी इसके रग का उपयोग अनेक औद्योगिक कार्यो मे होता हे। अपने रग के नीलेपन के कारण यह शब्द कलक या लाछन का भी वाचक हो गया है।

पद—**नील का खेत**=ऐसा स्थान जहाँ जाने पर कलक या लाछन लगना निश्चित हो।

३ उक्त पौधे से निकाला हुआ नीला रग जो प्राय धुलाई, रगाई आदि के कार्यो मे आता है। (इडिगो)

पद—**नील का टीका**=कलक या लाछन का काम या वात।

मुहा०—(किसी की आँखो मे) **नील की सलाई फिरवा देना**=अधा कर देना।(यह प्राचीन काल का एक प्रकार का दड था, जिसमे नील गरम करके सलाई से आँखो मे लगा दिया जाता था।) **नील घोटना**=व्यर्थ का ऐसा झगडा या वखेडा वढाना जिससे कलक या लाछन लगने के सिवा और कोई प्राप्ति या सिद्धि न हो। **नील जलाना**=पानी वरमने के लिए नील जलाने का टोटका करना। **नील विगड़ना**=(क) आचरण, चाल-चलन या रग-ढग खराव होना। (ख) किसी काम, चीज या वात का वुरी तरह से खराव होना या विगडना। (ग) खरावी या दुर्दशा के दिन या समय आना। (घ) वहुत वडी खरावी या हानि होना। (नील के पौधो से नील (रग) निकालने के लिए उन्हे पानी मे भिगोकर सड़ाया और मथा जाता था। यदि इस प्रक्रिया मे कोई त्रुटि होती थी तो नील (रग) तैयार नही होता था। इसी आधार पर उक्त मुहावरा वना है, और उसमे कई प्रकार के अर्थ लग गए है।)

४ शरीर पर चोट लगने या मार पडने के कारण होनेवाला दाग जो वहुत-कुछ नीले रग का होता है।

क्रि० प्र०—पडना।

मुहा०—**नील डालना**=इतना पीटना या मारना कि शरीर पर नीले रग का दाग पड जाय।

५ राम की सेना का एक वदर। ६ एक नाग का नाम। ७ राजा अजमीढ का एक पुत्र जो नीलनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ८ महाभारत के अनुमार माहिष्मती का एक राजा जिसकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या थी। उस पर मोहित होकर अग्नि देवता ब्राह्मण के वेश मे राजा से कन्या माँगने आये। कन्या पाकर अग्नि देवता ने राजा को वर दिया था कि तुम पर जो चढाई करेगा वह भस्म हो जायगा। जव राजसूद के ममय सहदेव ने महिष्मती पर चढाई की थी, तव उमकी सेना भस्म होने लगी थी, पर सहदेव के प्रार्थना करने पर अग्निदेव ने प्रकट होकर वीच-वचाव किया और दोनो को सतुप्ट करके युद्ध वद कराया था। ९ यम का एक नाम। १० मजुश्री का एक नाम। ११ इद्रनील मणि। नीलम। १२ मागलिक घोप या शब्द। १३ वटवृक्ष। वरगद। १४ तालीशपत्र। १५ जहर। विप। १६ एक प्रकार का विजय साल। १७ काच लवण। १८ नृत्य मे एक प्रकार का करण। १९ पुराणानुसार इलावृत्त खड का एक पर्वत जो रम्यक वर्प की सीमा पर है। २० पुराणानुसार नौ निधियो मे से एक। २१ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे २१ वर्ण होते हैं। २२. दस हजार अरव या सौ खरव की मख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००००००००००००।

नील-कंठ—वि०[स० व०स०] जिसका कठ या गला नीला हो।

पु० १. शिव का एक नाम जो इसलिए पडा था कि ममुद्र-मथन मे निकला हुआ विप उन्होने अपने गले मे रख लिया था, जिससे उनका गला नीला हो गया था। २ मयूर। मोर। ३ एक प्रकार की छोटी चिडिया जिसका गला और डैने नीले होते है। ४ गौरा पक्षी। चटक। ५ मूली। ६ पिया-साल।

नीलकठाक्ष—पु० [स० नीलकठ-अक्ष, व०स०] रुद्राक्ष (वृक्ष)।

नीलकंठी—स्त्री०[म०] १ एक प्रकार की पहाडी छोटी चिडिया, जिमकी वोली वहुत ही मधुर और सुरीली होती है। २ एक प्रकार का मुन्दर छोटा पौवा जो वगीचो मे शोभा के लिए लगाया जाता है।

नीलकठोर*—पु०=नील-कठ।

नील-कद—पु०[स० व०स०] भैंसा कद। महिप्कद। शुभ्रालु।

नीलक—पु०[स० नील+कन्]१ काच लवण। २ वीदरी लोहा।

३. बीजगणित में, एक प्रकार की अव्यक्त राशि। ४ मटर। ५ भ्रमर। भौंरा। ६ पिया-साल। ७. काला घोड़ा।

नील-कण—पु०[स० प०त०] १ नीलम का कण या टुकड़ा। २. गोदे हुए गोदने का छोटा चिह्न या बिंदु।

नीलकणा—स्त्री०[स० ब०स०, टाप्] काला जीरा।

नील-कांत—पु०[ब०स०]१. विष्णु। २. इन्द्रनील मणि। नीलम। ३. एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया जिसका सिर, पैर और कंठ के नीचे का भाग काला होता है और पूँछ नीली होती है। दिगदल।

नील-केशी—स्त्री०[ब०स०, ङीप्] नील का पौधा।

नील-क्रांता—स्त्री०[तृ०त०] कृष्णा पराजिता (लता)।

नील-क्रौंच—पु०[कर्म०स०] काले रंग का बगला।

नील-गंगा—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी।

नील-गाय—स्त्री०[हिं० नील+गाय] गाय के आकार का एक तरह का नीलापन लिये भूरे रंग का वन्य-पशु। गवय। रोझ।

नीलगिरि—पु०[स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

नील-ग्रीव—पु०=नील कंठ (शिव)।

नील-चक्र—पु०[कर्म०स०] १ जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर स्थित एक चक्र। २. दंडक वृत्त का एक भेद।

नील-चर्मा (र्मन)—वि० [ब०स०] जिसका चमड़ा नीले रंग का हो। पु० फालसा।

नीलच्छद—वि०[नील-छद, ब०स०] जिसके ऊपर नीले रंग का आवरण हो।

पु० १. गरुड़। २ खजूर।

नीलज—वि०[स० नील√जन् (उत्पत्ति)+ड] नील से उत्पन्न।

पु० एक तरह का लोहा। वर्मलोह।

नीलजा—स्त्री०[स० नीलज+टाप्] नील पर्वत से उत्पन्न वितस्ता (झेलम) नदी।

नीलज्ज†—वि०=निर्लज्ज।

नील-झिंटी—स्त्री०[कर्म०स०] नीली कठसरैया।

नील तरा—स्त्री०[स०] गावार देश की एक प्राचीन नदी जो उरुवेलारण्य से होकर बहती थी। यहीं पहुँचकर बुद्धदेव ने उरुवेल काश्यप, गया काश्यप और नदी काश्यप नामक तीन भाइयों का अभिमान दूर किया था। (बौद्ध)

नील-तरु—पु०[कर्म०स०] नारियल।

नीलता—स्त्री० [स० नील+तल्+टाप्] १. रंग के विचार से नीले होने की अवस्था या भाव। नीलापन। नीलिमा। २ कालापन। स्याही।

नील-ताल—पु०[कर्म०स०]१. स्याम तमाल। हिंताल। २ तमाल वृक्ष।

नील दूर्वा—स्त्री०[कर्म०स०] हरी दूब।

नील-द्रुम—पु०[कर्म०स०] असन वृक्ष।

नील-ध्वज—पु०[उपमि०स०] १. तमाल वृक्ष। २. [ब०स०] एक राजा।

नील-निर्यासक—पु०[ब०स०, कप्] पियासाल का पेड़।

नील-निलय—पु०[प०त०] आकाश।

नील-पंक—पु० [उपमि०स०]१. काला कीचड़। २ अंधकार। अंधेरा।

नील-पत्र—पु०[ब०स०] १. नील कमल। २. गोनरा नामक घास, जिसकी जड़ में कसेरू होता है। ३ अनार। ४. विजयसाल। (वृक्ष)

नीलपत्रिका, नीलपत्री—स्त्री० [ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व, ब०स०, ङीप्] १ नील का पौधा। २. कृष्णतालमूली।

नील-पद्म—पु०[कर्म०स०] नीले रंग का कमल।

नील-पर्ण—पु०[ब०स०] बृंदार वृक्ष।

नील-पिच्छ—पु०[ब०स०] बाज (पक्षी)।

नील-पुष्प—पु०[कर्म०स०]१. नीला फूल। २. [ब०स०] नीली भँगरैया। ३. काला कोराठा। ४. गठिवन।

नील-पुष्पा—स्त्री०[ब०स०, टाप्]१. नील का पौधा। २ अलसी। तीसी।

नील-पुष्पिका—स्त्री०=नील-पुष्पा।

नील-पृष्ठ—पु०[ब०स०] अग्नि।

नील-फला—स्त्री० [ब०स०, टाप्]१. जामुन। २. बैंगन। भटा।

नीलबरी—स्त्री० [स० नील+हिं० बरी]कच्चे नील की बट्टी।

नील बिरई—स्त्री०[हिं० नील+ बिरई]सनाय का पौधा।

नील-भृंगराज—पु०[कर्म०स०] नीला भँगरा।

नीलम—पु०[फा०, मिलाओ स० नीलमणि] १. नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। (सैफायर) २. एक प्रकार का बढ़िया आम।

स्त्री० पुरानी चाल की एक तरह की तलवार।

नील-मणि—पु०[कर्म०स०] नीलम (रत्न)।

नील-माष—पु०[कर्म०स०] काला उड़द।

नील-मीलिका—स्त्री० [स० नील-मील, मध्य० स०,+ठन्—इक, टाप्] जुगनूँ।

नील-मृत्तिका—स्त्री०[कर्म०स०] काली मिट्टी।

नीलमोर—पु०[हिं० नील+मोर]कुरही (पक्षी)।

नील-लोह—पु०[कर्म०स०] बीदरी लोहा।

नील-लोहित—वि०[कर्म०स०] नीलापन लिये लाल। बैंगनी।

पु० महादेव। शिव।

नील-लोहिता—स्त्री०[कर्म०स०]१. जामुन की एक जाति। २ पार्वती।

नील-वर्ण—वि० [ब०स०] नीले रंग का।

नील-वल्ली—स्त्री०[कर्म० स०] बंदाक। बाँदा। परगाछा।

नील-वसन—वि० [ब० स०] जिसने नीले रंग के वस्त्र पहने हों।

पु० १ [कर्म० स०] नीला कपड़ा। २. [ब० स०] शनिग्रह। ३ बलराम।

नील-वानर—पु०[कर्म०स०] दक्षिण भारत के पश्चिमी तट पर रहनेवाले एक तरह के बंदर जिनके चेहरे पर चारों ओर लंबे और घने बाल होते हैं।

नीलवासा (सस्)—वि०=नील वसन।

पु० शनिग्रह।

नील-बीज—पु०[ब०स०] पिया-साल।

नील-वृंत—पु०[ब०स०]तूल। रूई।

नील-वृष—पु०[कर्म०स०] लाल रंग का ऐसा साँड़ जिसका मुँह, सिर, पूँछ और खुर सफेद हो।

विशेष—ऐसा साँड़ श्राद्ध में उत्सर्ग करने के लिए प्रशस्त माना गया है।

नील-वृषा—स्त्री०[स० नील√वृष् (उत्पादन)+क+टाप्]बैंगन।

नील-वेणी—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नील-शिखंड—पु०[व०स०] रुद्र का भेद।

नील-शिग्रु—पु०[कर्म०स०] सहिजन का पेड। शोभाजन।

नील-संध्या—स्त्री०[उपमि०स०] कृष्णा पराजिता।

नील-सार—पु०[व०स०] तेंदू का पेड।

नील-सिर—स्त्री०[हिं० नील+सिर]एक तरह की बत्तख जिसके सिर का रग नीला होता है।

नील-स्वरूप (क)—पु० [व०स०, कप्] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. तीन तीन भगण और दो दो गुरु अक्षर होते हैं।

नीलांग—वि०[नील-अंग, व०स०] जिसके अग नीले रग के हो। नीले अगोवाला।

पु० सारस (पक्षी)।

नीलांजन—पु०[नील-अजन, कर्म०स०]१. नीला सुरमा। २ तूतिया।

नीलांजना—स्त्री० [स० नील√अज् (मिलाना)+णिच्+ल्यु—अन, टाप्]१ विजली। नीलाजनी। २ काली कपास।

नीलाजनी—स्त्री०[स० नीलाजन+ङीप्]=नीलाजना।

नीलाजसा—स्त्री० [स०] १ विजली। विद्युत्। २. एक अप्सरा का नाम। ३ एक प्राचीन नदी।

नीलावर—वि०[सं० नील-अवर, व०स०] नीले कपड़ेवाला। नीला वस्त्र धारण करनेवाला।

पु०१ नीले रग का कपडा। २ वलदेव। ३ शनैश्चर। ४ राक्षस। ५ तालीशपत्र।

नीलांवरी—स्त्री० [सं० नीलावर+ङीप्] सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी।

नीलाबुज—पु०[नील-अवुज्, कर्म० स०] नील कमल।

नीला—वि०[स० नील][स्त्री० नीली] आकाश या नील की तरह के रग का। नील वर्ण का। आसमानी। (ब्ल्यू)

विशेष—राजस्थान मे प्राय. हरा (रग) ही नीला कहलाता है।

मुहा०—**(किसी को नीला करना)**=मारते मारते शरीर पर नीले दाग डालना। वहुत मार मारना। **(किसी का) नीला-पीला होना**= सहसा किसी वडे मानसिक आघात या रोग के कारण सारे शरीर का रग इस प्रकार वदल जाना कि मानो मृत्यु वहुत पास आ गई है। **(किसी पर) नीले-पीले होना**=वहुत अधिक क्रोध या रोष प्रगट करना। खूव विगडना। **चेहरा नीला पड़ जाना**=भय आदि के कारण चेहरे का रग उतर जाना। **चेहरा या हाथ पैर नीले पड़ना**=चेहरे या शरीर का रग इस प्रकार वदल जाना कि मानो शरीर मे रक्त ही न रह गया हो।

पु०१ इद्र नील मणि। नीलम। २ एक प्रकार का कबूतर।

स्त्री०१ नीली मक्खी। २ नीली पुनर्नवा। ३ नील का पौधा। ४ एक प्रकार की लता। ५ एक प्राचीन नदी। ६ सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी जो मल्लार राग की भार्या कही गई है।

नीलाक्ष—वि०[नील-अक्षि, व०स०] नीली आँखोवाला। जिसकी आँखे नीले रग की हो।

पु० राजहस।

नीलाचल—पु०[नील-अचल, कर्म०स०]१ नील गिरि पर्वत। २ जगन्नाथ पुरी के पास की एक छोटी पहाडी।

नीलाणी—स्त्री०[हिं० नीला=हरा]हरियाली। (डिं०)

नीला थोथा—पु०[स० नील तुत्थ] ताँबे की एक उपधातु जो कृत्रिम और खनिज दो प्रकार की होती है। तूतिया।

नीलाम—पु०[पुर्त० लेलम् या लेइलम्]१ वस्तुओं की होनेवाली वह सार्वजनिक विक्री जिसमे सवसे अधिक या वढकर दाम लगानेवाले के हाथ वस्तुएँ वेची जाती है। २ इस प्रकार चीजें वेचने की क्रिया, ढग या भाव।

विशेष—हमारे यहाँ इस प्रकार की विक्रय-प्रथा को 'प्रतिक्रोश' कहते थे।

मुहा०—**(किसी चीज का) नीलाम पर चढ़ना**=किसी चीज का ऐसी स्थिति मे आना कि उसकी विक्री नीलाम के रूप मे हो। जैसे—अदालत की आज्ञा से उसका मकान नीलाम पर चढा है।

नीलामघर—पु०[हिं० नीलाम+घर] वह स्थान जहाँ चीजें नीलाम की जाती हो।

नीलामी—वि० [हिं० नीलाम] नीलाम के रूप मे विकनेवाला या विका हुआ। जैसे—नीलामी घडी।

स्त्री० दे० 'नीलाम'।

नीलाम्ला—स्त्री०[नीला-अम्ला, कर्म०स०?] नीली कठसरैया।

नीलाम्लान—पु०[नील-आम्लान, कर्म०स०] १. एक प्रकार का पौधा जिसमे सुन्दर फूल लगते है। काला कोराठा। २ उक्त पौधे का फूल।

नीलारुण—पु०[नील-अरुण, कर्म०स०] ऊषा।

नीलालक—वि०[स० नील-अलक, व०स०][स्त्री० नीलालका] नीले या काले वालोवाला। उदा०—घन नीलालका दामिनी जित ललना वह। —निराला।

नीलालु—पु०[नील-आलु, कर्म०स०] एक तरह का कद।

नीलालेप—पु०[स०] वालो मे लगाया जानेवाला खिजाव।

नीलावती—स्त्री०[स० नीलवती] एक तरह का चावल।

नीलाशी—स्त्री०[स० नील√अश् (व्याप्ति)+अण्+ङीप्] नीला सिंदुवार।

नीलाश्म (न्)—पु०[नील-अश्मन्, कर्म०स०] नीलम।

नीलाश्व—पु०[स०] एक प्राचीन देश।

नीलासन—पु० [नील-असन, कर्म०स०]१ पियासाल का पेड। २. काम-शास्त्र मे, एक प्रकार का आसन या रति-वध।

नीलाहट†—स्त्री०[हिं० नीला+आहट (प्रत्य०)] किसी चीज मे दिखाई पडनेवाली हलके नीले रग की झलक।

नीलि—स्त्री०[स०√नील् +इन्]१ नील का पौधा। २ नीलिका रोग। ३ एक प्रकार का जल-जतु। ४ नीलिका अर्थात् आँखे तिलमिलाने का रोग।

वि०=नीला।

नीलिका—स्त्री०[स० नीली+कन्+टाप्, ह्रस्व] १ नीलवरी। २ नीला सभालू। नीली निर्गुंडी। ३ आँखे तिलमिलाने का रोग। लिंग-नाश। ४ आघात, चोट आदि लगने पर शरीर पर पड़ा हुआ नीला दाग। नील।

नीलिका-मुद्रण—पु० [मध्य०स०] १. एक प्रकार की छपाई जिसमे नीली जमीन पर सफेद अक्षर और सफेद रेखाएँ अंकित होती हैं। (ब्ल्यू प्रिंटिंग) २. उक्त प्रकार से छापा हुआ कागज। (ब्ल्यू प्रिन्ट) *विशेष—प्राय जमीनो, मकानो आदि के नक्शे आज-कल इसी रूप मे छपते या बनते है।*

नीलिनी—स्त्री० [स० नील+इनि+ङीप्] १ नील का पौधा। २. नील।

नीलिमा—स्त्री० [स० नील+इमनिच्] १ नीले होने की अवस्था, गुण या भाव। नीलापन। २ कालापन। श्यामलता। स्याही।

नीली—स्त्री० दे० 'नीलि' और 'नीलिका'।

वि० हिं० 'नीला' का स्त्री०।

नीली-कर्म—पु० [स०] सिर के बाल रँगने की क्रिया। खिजाब लगाना।

नीली घोड़ी—स्त्री० [हिं० नीली+घोडी] एक प्रकार का स्वाँग जिसमे जामे के साथ सिली हुई कागज की ऐसी घोडी होती है जिसे पहन लेने से जान पडता है कि आदमी घोड़े पर सवार है। पहले डफाली इसे पहन कर गीत गाते हुए भीख माँगने निकलते थे।

नीली चकरी—स्त्री० [हिं० नीली+चकरी] एक तरह का पौधा।

नीली चाय—स्त्री० [हिं० नीली+चाय] अगिया घास या यज्ञकुश।

नीली-राग—पु० [स० नील+अच्+ङीप्, नीली-राग उपमि० स० ?] १ प्रगाढ़ प्रेम। २. [व० स०] घनिष्ठ मित्र।

नीली-सधान—पु० [प० त०] नील का खमीर।

नीलू—स्त्री० [हिं० नील] एक तरह की घास। पलवान।

नीलोत्पल—पु० [नील-उत्पल, कर्म० स०] नील कमल।

नीलोत्पलो (लिन्)—पु० [स० नीलोत्पल+इनि] १ शिव का एक अंश। २. बौद्ध महात्मा मजुश्री का एक नाम।

नीलोफर—पु० [स० नीलोत्पल से फा०] १. नील कमल। २ कुमुदनी। कोई।

नीवँ—स्त्री०=नीव।

नीवर—पु० [?] १. परिव्राजक। सन्यासी। २. बौद्ध भिक्षु। ३. रोजगार। वाणिज्य। ४. रोजगारी। वणिक। ५. कीचड़। ६ जल। पानी।

नीवाक—पु० [स० नि√वच् (बोलना)+घञ्, कुत्व, दीर्घ] १. अकाल के समय किसी चीज की होनेवाली अत्यधिक माँग। २. अकाल। दुर्भिक्ष।

नीवानास—वि० [हिं० नीव+स० नाश] चौपट। बरबाद। विनष्ट। पु० जड-मूल से होनेवाला नाश। बरबादी।

नीवार—पु०[स० नि√वृ (स्वीकार)+घञ्, दीर्घ] जलीय भूमि मे आप से आप होनेवाला धान। तीनी।

स्त्री०=निवार।

नीवि (वी)—स्त्री० [स० नि√व्ये (आच्छादन करना)+इञ्, यलोप, उपसर्ग-दीर्घ] १. कमर मे लपेटी हुई धोती में की वह गाँठ जो स्त्रियाँ यो ही अथवा उसके ऊपर डोरी से बाँधती है। २. वह डोरी जिसे स्त्रियाँ कमर मे धोती के ऊपर लपेट कर बाँधती हैं। फुबती। ३ लहँगे के नेफे मे पडी हुई डोरी। इजारबद। नाला। ४. जनानी धोती या साडी। (क्व०)। ५ लँगोटी। ६ मूलधन। पूँजी। ७. वह जमा किया हुआ मूलधन जिसका केवल व्याज दूसरे कामो मे लगता हो। (कौ०)

नीवी-ग्राहक—पु० [स० प० त०] वह व्यक्ति जिसके पास चन्दे का अथवा और किसी प्रकार का धन जमा हो और जो उस धन का प्रबंध करता हो। (कौ०)

नीव्र—पु० [स० नि√वृ+क, पूर्वदीर्घ] दे० 'नीध्र'।

नीशार—पु० [सं० नि√शॄ (नष्ट करना)+घञ्, दीर्घ] १ सरदी, हवा आदि के बचाव के लिए टाँगा जानेवाला परदा या कनात। २ मसहरी। ३. सरदी से बचने के लिए ओढा जानेवाला कपडा। जैसे—कबल, लोई आदि।

नीस†—पु० [?] सफेद धतूरा।

नीसक†—वि०=नि.शक्त।

अव्य०=निश्शक।

नीसरणी†—स्त्री०=निसेनी (सीढी)।

नीसाण†—पु०=निशान।

नीसानी—स्त्री० [?] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २३ मात्राएँ होती हैं और १३वी और १०वी मात्रा पर विराम होता है।

†स्त्री०=निशानी।

नीसार*—पु०=नीशार।

नीसू—पु० [?] जमीन मे गडा हुआ लकडी का ठीहा जिस पर रखकर गन्ना, चारा आदि काटा जाता है।

नीहँ†—स्त्री०=नीव। (पश्चिम)

नीहार—पु० [स० नि√हृ (हरण)+घञ्, दीर्घ] १. कोहरा। २ तुषार। पाला।

नीहार-जल—पु० [स० प० त०] ओस।

नीहारिका—स्त्री० [स० नीहार+कन्+टाप्, इत्व] रात के समय आकाश मे दिखाई पडनेवाले घने कोहरे की तरह के प्रकाश-पुज। (नेब्युला)

नुकता—पु० [अ० नुक्त] १. लेखन मे अक्षरो के साथ लगाई जानेवाली बिंदी। २ शून्य का सूचक चिह्न। ३ किसी प्रकार की बिंदी या बिंदु। पु० १. ऐसी छिपी हुई या रहस्यपूर्ण बात जो सहसा सब की समझ मे न आ सके। २. ऐब। दोष।

क्रि० प्र०—निकालना।

पद—नुकता-चीनी। (देखें)

३ चटपटी और मजेदार बात। चुटकुला।

क्रि० प्र०—छोडना।

४ वह झालर जो घोडो की आँखो पर उन्हे मक्खियो से बचाने के लिए बाँधी जाती है। तिल्हरी।

नुकता-चीन—वि० [अ० नुक्त+फा० चीन] [भाव० नुकताचीनी] दूसरे के दोष या बुराइयाँ ढूँढनेवाला। छिद्रान्वेषी।

नुकता चीनी—स्त्री० [अ० नुक्त+फा० चीनी] १ दूसरे के दोष या बुराइयाँ ढूँढना। छिद्रान्वेषण। २ दूसरो के दोषो की ओर इंगित करना। दोष दरशाना।

नुकती—स्त्री० [फा० नखुदी] महीन और मीठी बुँदिया जिसके प्राय. लड्डू बनाये जाते हैं।

नुकना†—अ०=लुकना (छिपना)।

नुकरा—पु० [फा० नुक्र.] १ चाँदी। २ घोड़ों का सफेद रंग। ३. सफेद रंग का घोड़ा।
वि० (घोड़ा) जिसका रंग सफेद हो।

नुकरी—स्त्री० [अ० नुक़्र] जलाशयों के किनारे रहनेवाली एक छोटी चिड़िया जिसके पैर सफेद और चोंच काली होती है।

नुकसान—पु० [फा० नुकसान] १ कमी। छीज। २. किसी काम या व्यापार में होनेवाला घाटा। हानि।
क्रि० प्र०—उठाना।
३ ऐसी क्षति जिससे किसी काम, बात या व्यवहार में कमी पड़ती या बाधा होती है। जैसे—भूकंप से कई मकानों का नुकसान हुआ है।
क्रि० प्र०—पहुँचना।—पहुँचाना।
मुहा०—(किसी का) नुकसान भरना=किसी की क्षति या हानि होने पर उसकी पूर्ति करना।
४ किसी प्रकार होनेवाली खराबी या विकार। जैसे—बुखार में नहाना नुकसान करता है।

नुकसानी—स्त्री० [फा० नुकसान] १ नुकसान। हानि। २ हानि पूरी करने के लिए दिया जानेवाला धन। क्षति-पूर्ति।
†वि० (पदार्थ) जिसका कुछ अंश टूट-फूट या बिगड़ गया हो। जैसे—नुकसानी माल।

नुकाई—स्त्री० [हिं० नुकाना] खुरपी से निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नुकाना†—स० [देश०] खुरपी से निराना।
स०=लुकाना (छिपाना)।

नुकीला—वि० [हिं० नोक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १ जिसमें नोक हो। २ तेज नोकवाला। ३. नोक-झोंक अर्थात् सज-धजवाला। बाँका तिरछा। जैसे—नुकीला जवान।

नुक्कड़—पु० [हिं० नोक] १ नोक की तरह आगे निकला हुआ कोना या सिरा। २ कोना। ३ मकान, गली या रास्ते का वह अंत या सिरा जहाँ कोई मोड़ पड़ता हो।

नुक्का—पु० [हिं० नोक] १ नोक। २ गेंडी खेलने की छोटी लकड़ी या डंडा।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

नुक्का टोपी—स्त्री० [हिं० नोक+टोपी] एक तरह की पतली दुपलिया नोकदार टोपी।

नुक्स—पु० [अ० नुक्स] १ किसी चीज में होनेवाली कोई ऐसी कमी या त्रुटि जिससे उस वस्तु में अपूर्णता रहती हो। २ चारित्रिक दोष।

नुखरना—अ० [देश०] भालू का चित लेटना। (कलंदर)

नुखार—स्त्री० [देश०] छड़ी से भालू के मुँह पर किया जानेवाला आघात। (कलंदर)
†पु०=लकुचा (लकुच का पेड़ और फल)।

नुगदी†—स्त्री० १=नुकती। २=कुगदी।

नुचना—अ० [हिं० 'नोचना' का अ०] नोचा जाना। (दे० 'नोचना')
†पु०=नोचना (बाल नोचने की चिमटी)।

नुचवाना—स० [हिं० नोचना का प्रे०] नोचने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ नोचने में प्रवृत्त करना।

नुचित*—वि० [सं० लुंचित] १ नोचा हुआ। २ जिसके सिर के बाल नुचे हुए हों। (जैन साधु)

नुजट—पु० [?] संगीत में, २४ शोभाओं में से एक।

नुजूम—पु० [अ०] ज्योतिष।

नुजूमी—वि० [अ०] नुजूम-संबंधी।
पु० ज्योतिषी।

नुत—भू० कृ० [सं०√नु (स्तुति)+क्त] १. प्रशंसित। २ स्तुत। ३ पूजित।

नुति—स्त्री० [सं०√नु+क्तिन्] १. वंदना। २. स्तुति। ३ पूजन।

नुत्त—भू० कृ० [सं०√नुद् (प्रेरणा)+क्त] १ चलाया या फेंका हुआ। क्षिप्त। २ हटाया हुआ। ३. प्रेरित।

नुत्फा—पु० [अ० नुत्फ] १ पुरुष का वीर्य। शुक्र।
मुहा०—नुत्फा ठहरना=स्त्री संभोग के फलस्वरूप गर्भ रहना।
२ औलाद। संतान।

नुत्फा हराम—वि० [अ०] जिसका जन्म व्यभिचार से हुआ हो।

नुनखरा—वि० [हि० नून+खारा] जिसमें कुछ कुछ खारापन हो।

नुनना—स० [सं० लवण, लून] खेत काटना। लुनना।
वि०=नुनखरा।

नुनाई*—स्त्री० १=लुनाई (लावण्य)। २=लुनाई। (लुनने की क्रिया या भाव)।

नुनी—स्त्री० [देश०] शहतूत की जाति का एक पेड़।

नुनेरा—पु० [हिं० नून+एरा] १ नमक बनानेवाला, विशेषतः नोना मिट्टी में से नमक निकालनेवाला। २ असलानी या नोनी नामक साग। नोनिया।

नुमा—प्रत्य० [फा०] १. दूसरों को कुछ दिखाने या प्रदर्शित करने-वाला। जैसे—राहनुमा=मार्ग प्रदर्शक। २ दिखाई देने या प्रकट होनेवाला। जैसे—खुशनुमा। ३ देखने में किसी के अनुरूप या सदृश्य या समान जान पड़ने या होनेवाला। जैसे—गुंबद-नुमा मकान। ४ किसी की ओर संकेत करनेवाला। जैसे—कुतुबनुमा=दिग्दर्शक यंत्र। (समस्त पदों के अंत में प्रयुक्त)।

नुमाइंदगी—स्त्री० [फा०] नुमाइंदा अर्थात् प्रतिनिधि होने की अवस्था या भाव। प्रतिनिधित्व।

नुमाइंदा—पु० [फा० नुमाइंद:] वह जो दूसरों का प्रतिनिधित्व करता हो।

नुमाइश—स्त्री० [फा०] [वि० नुमाइशी] १ ऊपर या बाहर से सब लोगों को दिखाने की क्रिया या भाव। दिखावट। प्रदर्शन। २ ऊपरी ठाट-बाट या तड़क-भड़क। सज-धज। ३ अनोखी, उपयोगी, नई या इसी प्रकार की बहुत-सी चीजें इस प्रकार एक स्थान रखना कि सब लोग उन्हें देख सकें और उनका परिचय प्राप्त कर सकें। ४ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार से बहुत-सी चीजें इकट्ठी करके लोगों को दिखाने के लिए रखी जाती हैं। प्रदर्शनी (एग्जिबिशन)
क्रि० प्र०—करना।—लगना।

नुमाइशगाह—स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार की सुंदर और अद्भुत वस्तुएँ इकट्ठी करके दिखाई जाती हैं। प्रदर्शनी-स्थल।

नुमाइशी—वि० [फा० नुमाइश] १ नुमाइश-संबंधी। २ (वस्तु) जो

नुमाइश मे रखी गई हो या रखी जाने को हो। ३ सुदर। ४ जिसके अदर या नीचे विशेष तत्त्व न हो। दिखावटी। दिखौआ।

नुमाई—स्त्री० [फा०] ऊपर से दिखाने की किया या भाव। प्रदर्शन। (समस्त पदो के अत मे प्रयुक्त) जैसे—खुद-नुमाई=आत्म-प्रदर्शन या अभिमानपूर्वक यह दिखलाना कि हम ऐसे है।

नुमाया—वि० [फा०] जो साफ दिखाई देता हो। जाहिर प्रकट।

नुसखा—पु० [अ० नुस्ख.] १. कागज का ऐसा टुकडा जिस पर कुछ लिखा हो। २ छपी अथवा हाथ की लिखी हुई पुस्तक की प्रति। ३. वह कागज जिस पर रोगी के लिए औषध और उसका सेवन विधि लिखी हो।

मुहा०—नुसखा बाँधना=वैद्य या हकीम के लिखे अनुसार औषधियों की पुडिया बाँधकर रोगियो को देना।

४. व्यय का अवसर या योग। जैसे—वहाँ जाना भी ५) का नुसखा है।

नुहरना†—अ०=निहुरना (झुकना)।

नू—विभ० व्रज, पजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं मे कर्मकारक की विभक्ति, को।

नूका—पु० [?] कज्जल नामक छद।

नूत†—वि० नूतन।

नूतन—वि० [स० नव+तनप्, नू-आदेश] [भाव० नूतनता, नूतनत्व] १. नया। नवीन। २. तुरत या हाल का। ताजा। ३. अनूठा। अनोखा।

नूतन-चंद्रिक—पु० [स०] सगति मे, कर्नाटकी पद्धति का एक रोग।

नूतनता—स्त्री० [स० नूतन+तल्+टाप्] नूतन होने की अवस्था या भाव।

नूतनत्व—पु० [स० नूतन+त्व] नूतनता।

नूत्न—वि० [स० नव+त्नप्, नू आदेश]=नूतन।

नूद—पु० [स०√तुद्+क, पृषो० दीर्घ] शहतूत।

नूधा—पु० [देश०] एक तरह का देशी तवाकू।

नून—पु० [?] १ आल। २ आल की जाति की एक प्रकार की लता।

पु० [स० लवण] नमक।

पद—नून-तेल=घर-गृहस्थी के निर्वाह के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ और शेष सामग्री।

नून ताई— स्त्री०=न्यूनता।

नूनी—स्त्री० [स० न्यून हिं० नूनी] लिंगेंद्रिय, विशेषत. वच्चों की।

नूपुर—पु० [स०√नू (प्रशसा)+क्विप् नू√पुर् (आगे जाना)+क] १ स्त्रियों के पैर का एक आभूषण। पैजनी। २ घुंघरू। ३. नगण का पहला भेद। ४ इक्ष्वाकु वश के एक राजा।

नूर—पु० [अ०] १. ज्योति। प्रकाश।

पद—नूर का तड़का=(क) प्रभात का समय। (ख) आभा। चमक। (ग) शोभा। श्री।

खुदा का नूर=दाढी पर के वढाये हुए वाल। (मुसल०) उदा०—और तो मे क्या कहूँ, वन आये हो लगूर-से। दाढी मुडवाओ, मैं वाज आई खुदा के नूर से।—जान साहव।

मुहा०—नूर वरसना=वहुत अधिक शोभा या श्री चारो ओर फैलना।

४ सूफी सप्रदाय मे, ईश्वर का एक नाम। ५ फारसी सगीत मे, वारह मुकामो या गायन-प्रकारो मे से एक।

नूरबाफ—पु० [अ० नूर+फा० वाफ] जुलाहा। ताँती।

नूरा—पु० [अ० नूर] १. ऐसी कुश्ती जिसमे दोनों पहलवानो मे पहले से तै होता है कि एक दूसरे को चित नहीं गिरायेंगे। २. दवाओं का वह चूर्ण जो स्त्रियाँ अपने गुप्त अग के बाल साफ करने के लिए लगाती है। (मुसल० स्त्रियाँ)

वि० १. चमकता हुआ। प्रकाशमान। २. तेजस्वी।

नूरानी—वि० [अ०] १ जिसमे नूर या प्रकाश हो। २ चमक-दमक-वाला।

नूरी—वि० [अ०] नूर-सवधी।

पु० [फा०] लाल रग की एक तरह की चिडिया।

नूह—पु० [अ०] शामी या इवरानी मतो के अनुसार एक पैगवर जिनके समय मे भयकर तूफान आया था और जिसके फलस्वरूप सारी सृष्टि जलमग्न हो गई थी। कहते है कि उस समय जो थोडे से लोग वचे थे उन्ही की सतान इस समय है। (यह तूफान भारतीय खड प्रलय के समान माना गया है।)

नृ—पु० [स०√नी (ले जाना)+ऋन्, डित्] १ नर। मनुष्य। २ शतरज का मोहरा।

नृ-कपाल—पु० [प० त०] मनुष्य की खोपड़ी।

नृ-केशरी (रिन्)—पु० [कर्म० स०] १ ऐसा व्यक्ति जो सिंह या शेर के समान पराक्रमी और श्रेष्ठ हो। २. नृसिंह अवतार।

नृग—पु० [स०] १ मनु के एक पुत्र का नाम। २ उशीनर का पुत्र जो यौधेय वश का मूल पुरुष था।

नृगा—स्त्री० [स०] राजा उशीनर की पत्नी का नाम।

नृघ्न—वि० [स० नृ√हन् (हिंसा)+टक्] मनुष्य घातक।

नृतक—पु०=नर्त्तक।

नृतना—अ० [स० नृत] नृत्य करना। नाचना।

नृति—स्त्री० [स०√नृत् (नाचना)+इन्] नाच। नृत्य।

नृतु (तू)—पु० [स०√नृत्+कु] नर्त्तक।

नृत्त—पु० [स०√नृत्+क्त] वह नाच जिसमे अगो का विक्षेप भी किया जाता है।

नृतांग—पु० [स०] नृत्य के अग।

नृत्य—पु० [स०√नृत्+क्यप्] ताल, लय आदि के अनुसार मन-बहलाव के लिए शरीर के अगो का किया जानेवाला सचालन। विशेष दे० 'नाच'।

नृत्यकी†—स्त्री०=नर्त्तकी।

नृत्य-गीत—पु० [स०] धार्मिक, सामाजिक आदि अवसरो पर होनेवाला ऐसा नृत्य जिसमे नर्त्तक साथ ही साथ गाते भी है। जैसे—गुजरात का गरवा प्रसिद्ध नृत्य-गीत है।

नृत्य-नाट्य—पु० [स०] ऐसा अभिनय या नाट्य जिसमे नृत्यों की अधिकता हो।

नृत्य-प्रिय—पु० [व० स०] १ महादेव। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

नृत्य-शाला—स्त्री० [प० त०] नाचघर।

नृ-दुर्ग—पु० [स० मध्य० स०] वह दुर्ग जिसके चारो ओर मनुष्यों विशेषत सैनिको का घेरा हो।

नृ-देव—पु० [स० स० त०] १. राजा। २ ब्राह्मण।

नृ-धर्मा (र्मन्)—पुं० [सं० ब० स०, अनिच्] कुबेर।

नृपंजय—पुं० [सं० नृप√जि (जीतना)+खच्, मुम्] एक पुरुवंशी नरेश।

नृप—वि० [सं० नृ√पा (रक्षा)+क] [भाव० नृपता] मनुष्यों की रक्षा करनेवाला।

पुं० राजा।

नृप-कंद—पुं० [मध्य० स०] लाल प्याज।

नृप-जय—पुं० [सं०] एक पुरुवंशीय राजा।

नृपता—स्त्री० [सं० नृप+तल्+टाप्] नृप अर्थात् राजा होने की अवस्था, गुण या भाव। राजत्व।

नृ-पति—पुं० [सं० ष० त०] १ राजा। २. कुबेर।

नृप-द्रुम—पुं० [मध्य० स०] १. अमलतास। २ खिरनी का पेड़।

नृप-द्रोही (हिन्)—पुं० [सं० नृप√द्रुह् (द्रोह करना)+णिनि] परशुराम।

नृप-प्रिय—पुं० [ष० त०] १. लाल प्याज। २ राम शर। सरकंडा। ३. एक प्रकार का बाँस। ४ जड़हन धान। ५ आम का पेड़। ६ पहाड़ी तोता।

नृप-प्रिय-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बैंगन।

नृप-प्रिया—स्त्री० [सं० नृपप्रिय+टाप्] १. केतकी। २ पिंडखजूर।

नृपमागत्य (क)—पुं० [ब० स०, कप्] तरवट का पेड़। आहुल।

नृप-मान—पुं० [ष० त०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जो राजाओं के भोजन के समय बजाया जाता था।

नृप-वल्लभ—पुं० [ष० त०] १ आम। २ राजा का सखा।

नृप-वल्लभा—स्त्री० [ष० त०] १. रानी। २ केतकी।

नृप-वृक्ष—पुं० [मध्य० स०] सोनालु का पेड़।

नृप-शासन—पुं० [ष० त]० राजा की आज्ञा।

नृ-पशु—पुं० [उपमि० स०] वह जो मनुष्य होने पर भी पशुओं का-सा आचरण करता हो।

नृप-सुत—पुं० [ष० त०] [स्त्री० नृप-सुता] राजकुमार।

नृप-सुता—स्त्री० [ष० त०] १. राजकन्या। राजकुमारी। २. छछूँदर।

नृपांश—पुं० [नृप-अंश, ष० त०] आय, उपज आदि का वह अंश जो राजा को दिया जाता हो।

नृपात्मज—पुं० [नृप-आत्मज, ष० त०] [स्त्री० नृपात्मजा] राजकुमार।

नृपाध्वर—पुं० [नृप-अध्वर, मध्य० स०] राजसूय यज्ञ।

नृपान्न—पुं० [नृप-अन्न, ष० त०] १ राजा का अन्न। २ राजभोग धान।

नृपाभीर—पुं० [सं० अभि√ईर् (सूचना)+क, नृप-अभीर, ष० त०] एक तरह का बाजा। विशेष० दे० 'नृपमान'।

नृपामय—पुं० [आमय-नृप, ष० त०, पूर्वनिपात] यक्ष्मा राजरोग।

नृपाल—पुं० [सं० नृ√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] राजा।

नृपावर्त्त—पुं० [सं० नृप+आ√वृत् (बरतना)+अच्] एक तरह का रत्न। राजावर्त।

नृपासन—पुं० [नृप-आसन, ष० त०] राजसिंहासन। तख्त।

नृपाह्व—पुं० [नृप-आह्वा, ब० स०] लाल प्याज।

नृपोद्रव—वि० [सं० नृप-आ√द्रु (गति)+अच्] राजा तक जानेवाला। राजा आश्रयी।

नृपोचित—वि० [नृप-उचित, ष० त०] राजाओं के लिए उचित या उपयुक्त। राजाओं के योग्य। जैसे—नृपोचित व्यवहार।

पुं० एक प्रकार का बड़ा उड़द। राज-माष। २ लोबिया।

नृमणा—स्त्री० [सं० नृ-मन, ब० स०, टाप्, णत्व] प्लक्षद्वीप की एक महानदी। (भागवत)

नृमणि—पुं० [सं०] एक पिशाच जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि यह बच्चों को तंग किया करता है।

नृ-मर—वि० [सं० ष० त०] मनुष्यों को मारनेवाला।

पुं० राक्षस।

नृमल—वि०=निर्मल।

नृ-मिथुन—पुं० [सं० ष० त०] १ स्त्री-पुरुष का जोड़ा। २ मिथुन राशि।

नृ-मेध—[सं० ष० त०] नरमेध। (दे०)

नृ-यज्ञ—पुं० [सं० मध्य० स०] गृहस्थ के लिए आवश्यक माने हुए पंच यज्ञों में से एक जिसमें अतिथि का सत्कार उचित ढंग से करने को कहा गया है।

नृ-लोक—पुं० [सं० ष० त०] मनुष्यों का लोक। मर्त्यलोक।

नृ-वराह—पुं० [सं० कर्म० स०] वाराह रूपधारी विष्णु भगवान्।

नृ-वाहन—पुं० [सं० ब० स०] कुबेर।

नृ-वेष्टन—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

नृशंस—वि० [सं० नृ√शंस् (हिंसा)+अण्] [भाव० नृशंसता] १. क्रूर। निर्दय। २ अत्याचारी। ३ बहुत बड़ा अनिष्ट या अपकार करनेवाला।

नृशंसता—स्त्री० [सं० नृशंस+तल्+टाप्] नृशंस होने की अवस्था, गुण या भाव।

नृ-शृंग—पुं० [सं० ष० त०] मनुष्य के सींग के समान अस्तित्वहीन और कल्पित वस्तु।

नृ-सिंह—पुं० [सं० कर्म० स०] वह जो मनुष्यों में उसी प्रकार प्रधान और श्रेष्ठ हो, जिस प्रकार पशुओं में सिंह होता है। सिंह जैसे पराक्रम वाला व्यक्ति। २. पुराणानुसार विष्णु का चौथा अवतार जो आधे मनुष्य और आधे सिंह के रूप में हुआ था।

विशेष—विष्णु का यह रूप भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए हुआ था, और इसी अवतार में उन्होंने राक्षसों के राजा हिरण्यकशिपु को मारा था।

३ कामशास्त्र में, एक प्रकार का आसन या रति बंध।

नृसिंह-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, इसी दिन को भगवान नृसिंह अवतरित हुए थे।

नृसिंह-पुराण—पुं० [मध्य० स०] एक उपपुराण।

नृसिंह-पुरी—पुं० [सं०] मुलतान (पश्चिमी पाकिस्तान) में स्थित एक प्राचीन तीर्थ-स्थान।

नृसिंह-वन—पुं० [सं०] एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)

नृ-सोम—पुं० [उपमि० स०] ऐसा मनुष्य जो चंद्रमा के समान प्रकाशमान हो। बहुत बड़ा आदमी।

नृ-हरि—पुं० [कर्म० स०] नृसिंह। (दे०)

नै—विभ० [सं० कृत] १ हिन्दी में, सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता के साथ लगनेवाली एक विभक्ति। जैसे—राम ने खाया, [illegible]

नुमाइश मे रखी गई हो या रखी जाने को हो। ३ सुंदर। ४ जिसके अंदर या नीचे विशेष तत्त्व न हो। दिखावटी। दिखौआ।

नुमाई—स्त्री० [फा०] ऊपर से दिखाने की क्रिया या भाव। प्रदर्शन। (समस्त पदो के अंत मे प्रयुक्त) जैसे—खुद-नुमाई=आत्म-प्रदर्शन या अभिमानपूर्वक यह दिखलाना कि हम ऐसे है।

नुमाया—वि० [फा०] जो साफ दिखाई देता हो। जाहिर प्रकट।

नुसखा—पु० [अ० नुस्ख] १ कागज का ऐसा टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा हो। २ छपी अथवा हाथ की लिखी हुई पुस्तक की प्रति। ३. वह कागज जिस पर रोगी के लिए औषध और उसका सेवन विधि लिखी हो।

मुहा०—नुसखा बाँधना=वैद्य या हकीम के लिखे अनुसार औषधियो की पुड़िया बाँधकर रोगियो को देना।

४. व्यय का अवसर या योग। जैसे—वहाँ जाना भी ५) का नुसखा है।

नुहरना†—अ०=निहुरना (झुकना)।

नू—विभ० व्रज, पंजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओ मे कर्मकारक की विभक्ति, को।

नूका—पु० [?] कज्जल नामक छद।

नूत†—वि० नूतन।

नूतन—वि० [स० नव+तनप्, नू-आदेश] [भाव० नूतनता, नूतनत्व] १. नया। नवीन। २. तुरंत या हाल का। ताजा। ३. अनूठा। अनोखा।

नूतन-चद्रिक—पु० [स०] सगति मे, कर्नाटकी पद्धति का एक रोग।

नूतनता—स्त्री० [स० नूतन+तल्+टाप्] नूतन होने की अवस्था या भाव।

नूतनत्व—पु० [स० नूतन+त्व] नूतनता।

नूत्न—वि० [स० नव+त्नप्, नू आदेश]=नूतन।

नूद—पु० [स०√नुद्+क, पृषो० दीर्घ] शहतूत।

नूवा—पु० [देश०] एक तरह का देशी तवाकू।

नून—पु० [?] १. आल। २. आल की जाति की एक प्रकार की लता।

पु० [स० लवण] नमक।

पद—नून-तेल=घर-गृहस्थी के निर्वाह के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ और शेष सामग्री।

नून ताई— स्त्री०=न्यूनता।

नूनी—स्त्री० [स० न्यून हि० नूनी] लिंगेद्रिय, विशेषत बच्चो की।

नूपुर—पु० [स०√नू (प्रशसा)+क्विप् नू√पुर् (आगे जाना)+क] १ स्त्रियो के पैर का एक आभूषण। पैंजनी। २ घुँघरू। ३ नगण का पहला भेद। ४. इक्ष्वाकु वश के एक राजा।

नूर—पु० [अ०] १ ज्योति। प्रकाश।

पद—नूर का तड़का=(क) प्रभात का समय। (ख) आभा। चमक। (ग) शोभा। श्री।

खुदा का नूर=दाढ़ी पर के बढाये हुए बाल। (मुसल०)

उदा०—और तो मे क्या कहूँ, बन आये हो लगूर-से। दाढ़ी मुड़वाओ, मै बाज आई खुदा के नूर से।—जान साहब।

मुहा०—नूर बरसना=बहुत अधिक शोभा या श्री चारो ओर फैलना।

४. सूफी सप्रदाय मे, ईश्वर का एक नाम। ५ फारसी संगीत मे, बारह मुकामो या गायन-प्रकारो मे से एक।

नूरबाफ—पु० [अ० नूर+फा० बाफ] जुलाहा। ताँती।

नूरा—पु० [अ० नूर] १ ऐसी कुश्ती जिसमे दोनो पहलवानो मे पहले से तै होता है कि एक दूसरे को चित नही गिरायेंगे। २. दवाओ का वह चूर्ण जो स्त्रियाँ अपने गुप्त अग के बाल साफ करने के लिए लगाती है। (मुसल० स्त्रियाँ)

वि० १. चमकता हुआ। प्रकाशमान। २. तेजस्वी।

नूरानी—वि० [अ०] १. जिसमे नूर या प्रकाश हो। २ चमक-दमक-वाला।

नूरी—वि० [अ०] नूर-सबधी।

पु० [फा०] लाल रग की एक तरह की चिड़िया।

नूह—पु० [अ०] शामी या इबरानी मतो के अनुसार एक पैगबर जिनके समय मे भयकर तूफान आया था और जिसके फलस्वरूप सारी सृष्टि जलमग्न हो गई थी। कहते है कि उस समय जो थोड़े से लोग बचे थे उन्ही की संतान इस समय है। (यह तूफान भारतीय खड प्रलय के समान माना गया है।)

नृ—पु० [स०√नी (ले जाना)+ऋन्, डित्] १. नर। मनुष्य। २ शतरज का मोहरा।

नृ-कपाल—पु० [ष० त०] मनुष्य की खोपड़ी।

नृ-केशरी (रिन्)—पु० [कर्म० स०] १. ऐसा व्यक्ति जो सिंह या शेर के समान पराक्रमी और श्रेष्ठ हो। २ नृसिंह अवतार।

नृग—पु० [स०] १ मनु के एक पुत्र का नाम। २ उशीनर का पुत्र जो यौधेय वश का मूल पुरुष था।

नृगा—स्त्री० [सं०] राजा उशीनर की पत्नी का नाम।

नृघ्न—वि० [स० नृ√हन् (हिंसा)+टक्] मनुष्य घातक।

नृतक—पु०=नर्त्तक।

नृतना—अ० [स० नृत] नृत्य करना। नाचना।

नृति—स्त्री० [स०√नृत् (नाचना)+इन्] नाच। नृत्य।

नृतु (तू)—पु० [स०√नृत्+कु] नर्त्तक।

नृत्त—पु० [स०√नृत्+क्त] वह नाच जिसमे अगो का विक्षेप भी किया जाता है।

नृत्तांग—पु० [स०] नृत्य के अग।

नृत्य—पु० [स०√नृत्+क्यप्] ताल, लय आदि के अनुसार मन-बहलाव के लिए शरीर के अगो का किया जानेवाला सचालन। विशेष दे० 'नाच'।

नृत्यकी†—स्त्री०=नर्त्तकी।

नृत्य-गीत—पु० [स०] धार्मिक, सामाजिक आदि अवसरो पर होनेवाला ऐसा नृत्य जिसमे नर्त्तक साथ ही साथ गाते भी है। जैसे—गुजरात का गरबा प्रसिद्ध नृत्य-गीत है।

नृत्य-नाट्य—पु० [स०] ऐसा अभिनय या नाट्य जिसमे नृत्यो की अधिकता हो।

नृत्य-प्रिय—पु० [ब० स०] १. महादेव। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।

नृत्य-शाला—स्त्री० [ष० त०] नाचघर।

नृ-दुर्ग—पु० [स० मध्य० स०] वह दुर्ग जिसके चारो ओर मनुष्यो विशेषत सैनिको का घेरा हो।

नृ-देव—पु० [स० स० त०] १. राजा। २. ब्राह्मण।

नृ-धर्मा (र्मन्)—पु० [स० व० स०, अनिच्] कुबेर।

नृपजय—पु० [स० नृप√जि (जीतना)+खश्, मुम्] एक पुरुवशी नरेश।

नृप—वि० [स० नृ√पा (रक्षा)+क] [भाव० नृपता] मनुष्यो की रक्षा करनेवाला।
पु० राजा।

नृप-कंद—पु० [मध्य० स०] लाल प्याज।

नृप-जय—पु० [स०] एक पुरुवशीय राजा।

नृपता—स्त्री० [स० नृप+तल्+टाप्] नृप अर्थात् राजा होने की अवस्था, गुण या भाव। राजत्व।

नृ-पति—पु० [स० प० त०] १. राजा। २ कुबेर।

नृप-द्रुम—पु० [मध्य० स०] १ अमलतास। २ खिरनी का पेड।

नृप-द्रोही (हिन्)—पु० [स० नृप√द्रुह् (द्रोह करना)+णिनि] परशुराम।

नृप-प्रिय—पु० [प० त०] १. लाल प्याज। २ राम शर। सरकडा। ३ एक प्रकार का बाँस। ४ जडहन धान। ५ आम का पेड। ६ पहाडी तोता।

नृप-प्रिय-फला—स्त्री० [व० स०, टाप्] बैंगन।

नृप-प्रिया—स्त्री० [स० नृपप्रिय+टाप्] १ केतकी। २ पिंडखजूर।

नृपमांगल्य (क)—पु० [ब० स०, कप्] तरवट का पेड। आहुल।

नृप-मान—पु० [प० त०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जो राजाओ के भोजन के समय बजाया जाता था।

नृप-वल्लभ—पु० [प० त०] १ आम। २ राजा का सखा।

नृप-वल्लभा—स्त्री० [प० त०] १ रानी। २ केतकी।

नृप-वृक्ष—पु० [मध्य० स०] सोनालु का पेड।

नृप-शासन—पु० [प० त]० राजा की आज्ञा।

नृ-पशु—पु० [उपमि० स०] वह जो मनुष्य होने पर भी पशुओ का-सा आचरण करता हो।

नृप-सुत—पु० [प० त०] [स्त्री० नृप-सुता] राजकुमार।

नृप-सुता—स्त्री० [प० त०] १ राजकन्या। राजकुमारी। २ छुछूंदर।

नृपाश—पु० [नृप-अश, प० त०] आय, उपज आदि का वह अश जो राजा को दिया जाता हो।

नृपात्मज—पु० [नृप-आत्मज, प० त०] [स्त्री० नृपात्मजा] राजकुमार।

नृपाध्वर—पु० [नृप-अध्वर, मध्य० स०] राजसूय यज्ञ।

नृपान्न—पु० [नृप-अन्न, प० त०] १ राजा का अन्न। २ राजभोग धान।

नृपाभीर—पु० [स० अभि√ईर् (सूचना)+क, नृप-अभीर, प० त०] एक तरह का बाजा। विशेष० दे० 'नृपमान'।

नृपामय—पु० [आमय-नृप, प० त०, पूर्वनिपात] यक्ष्मा राजरोग।

नृपाल—पु० [स० नृ√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] राजा।

नृपावर्त्त—पु० [स० नृप+आ√वृत् (बरतना)+अच्] एक तरह का रत्न। राजावर्त्त।

नृपासन—पु० [नृप-आसन, प० त०] राजसिंहासन। तख्त।

नृपाह्व—पु० [नृप-आह्वा, ब० स०] लाल प्याज।

नृपाह्वय—वि० [स० नृप-आ√ह्वे (स्पर्धा)+अच्] राजा कहलानेवाला। राजा नामधारी।

नृपोचित—वि० [नृप-उचित, प० त०] राजाओ के लिए उचित या उपयुक्त। राजाओ के योग्य। जैसे—नृपोचित व्यवहार।
पु० एक प्रकार का काला बडा उरद। राज-माप। २ लोबिया।

नृमणा—स्त्री० [स० नृ-मन, ब० स०, टाप्, णत्व] प्लक्षद्वीप की एक महानदी। (भागवत)

नृमणि—पु० [स०] एक पिशाच जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि वह बच्चो को तग किया करता है।

नृ-मर—वि० [स० प० त०] मनुष्यो को मारनेवाला।
पु० राक्षस।

नृमल—वि०=निर्मल।

नृ-मिथुन—पु० [स० प० त०] १ स्त्री-पुरुष का जोडा। २ मिथुन राशि।

नृ-मेध—[स० प० त०] नरमेध। (दे०)

नृ-यज्ञ—पु० [स० मध्य० स०] गृहस्थ के लिए आवश्यक माने हुए पचयज्ञो मे से एक जिसमे अतिथि का सत्कार उचित ढग से करने को कहा गया है।

नृ-लोक—पु० [स० प० त०] मनुष्यो का लोक। मर्त्यलोक।

नृ-वराह—पु० [स० कर्म० स०] वाराह रूपीधारी विष्णु भगवान्।

नृ-वाहन—पु० [स० ब० स०] कुबेर।

नृ-वेष्टन—पु० [स० ब० स०] शिव।

नृशंस—वि० [स० नृ√शस् (हिसा)+अण्] [भाव० नृशसता] १. क्रूर। निर्दय। २ अत्याचारी। ३ बहुत बडा अनिष्ट या अपकार करनेवाला।

नृशंसता—स्त्री० [स० नृशस+तल्+टाप्] नृशस होने की अवस्था, गुण या भाव।

नृ-शृंग—पु० [स० प० त०] मनुष्य के सीग के समान अस्तित्वहीन और कल्पित वस्तु।

नृ-सिंह—पु० [स० कर्म० स०] वह जो मनुष्यो मे उसी प्रकार प्रधान और श्रेष्ठ हो, जिस प्रकार पशुओ मे सिंह होता है। सिंह-जैसे पराक्रम वाला व्यक्ति। २. पुराणानुसार विष्णु का चौथा अवतार जो आधे मनुष्य और आधे सिंह के रूप मे हुआ था।
विशेष—विष्णु का यह रूप भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए हुआ था, और इसी अवतार मे उन्होने राक्षसो के राजा हिरण्यकश्यप को मारा था।
३ कामशास्त्र मे, एक प्रकार का आसन या रति बध।

नृसिंह-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, इसी तिथि को भगवान नृसिंह अवतरित हुए थे।

नृसिंह-पुराण—पु० [मध्य० स०] एक उपपुराण।

नृसिंह-पुरी—पु० [स०] मुलतान (पश्चिमी पाकिस्तान) मे स्थित एक प्राचीन तीर्थ-स्थान।

नृसिंह-वन—पु० [स०] एक प्राचीन देश। (बृहत्सहिता)

नृ-सोम—पु० [उपमि० स०] ऐसा मनुष्य जो चद्रमा के समान प्रकाशमान हो। बहुत बडा आदमी।

नृ-हरि—पु० [कर्म० स०] नृसिंह। (दे०)

ने—विभ० [स० एन] १ हिन्दी मे, सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता के साथ लगनेवाली एक विभक्ति। जैसे—राम ने खाया, कृष्ण ने

मारा। २. गुजराती तथा राजस्थानी में कर्म तथा सम्प्रदान कारकों की विभक्ति। 'को' के स्थान पर प्रयुक्त।

नेअमत—स्त्री० [अ०]=नियामत (दे०)।

नेईं, नेई— स्त्री०=नींव।

नेउछाउरि†—स्त्री०=निछावर।

नेउतना— स० [हिं० न्योता] निमंत्रण देना। बुलाना।

नेउतहरि (री)—वि० [हिं० न्योता] १ जिसे न्योता (निमंत्रण) दिया गया हो। निमंत्रित। २ (वह) जो निमंत्रण पर आया हो।

नेउता†—पु०१.=न्योता (निमंत्रण)। २ नौन्ता (त्योहार)।

नेउर—पु०[सं० नूपुर] १ पैंजनी । २ घुंघरू। उदा०—गूँथा याग ऊनै नेउर गद।—प्रिथीराज।

नेउला—पु०=नेवला।

नेक—वि०[सं० निगन (=नीका, अच्छा) से फा०] १. अच्छा। भला। २ उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे—नेक-चलन। ३ शिष्ट। सज्जन। सदाचारी। जैसे—नेक आदमी। ४ मांगलिक। शुभ। जैसे—नेक सायत। ५ जिसमें केवल उपकार या भलाई हो। सद्। जैसे—नेक सलाह।
वि० [हिं० न+एक] जरा-सा। थोड़ा-सा।
अव्य० किंचित्। कुछ। जरा। उदा०—नेकु हँसौंही बानि तजि, लखी परत मुख नीठि।—बिहारी।

नेक-चलन—वि०[फा० नेक+हिं० चलन] [भाव० नेक-चलनी] जिसका आचरण उत्तम हो।

नेकचलनी—स्त्री०[हिं० नेक चलन+ई (प्रत्य०)] अच्छा आचरण।

नेक-नाम—वि०[फा०] [भाव० नेकनामी] जिसकी किसी अच्छे काम या बात के लिए प्रसिद्धि हो। सुख्यात।

नेकनामी—स्त्री०[फा०] नेकनाम होने की अवस्था या भाव। सुख्याति।

नेक-नीयत—वि०[फा० नेक+अ० नीयत] [भाव० नेकनीयता] १. जिसकी नीयत (उद्देश्य, विचार या संकल्प) अच्छी हो। सदाशय। २. ईमानदार और सच्चा।

नेक-नीयती—स्त्री०[फा०+अ०]१ नेक-नीयत होने की अवस्था या भाव। सदाशयता। २ ईमानदारी और सचाई।

नेक-बख्त—वि०[फा०] [भाव० नेक-बख्ती]१. भाग्यवान। सौभाग्य-शाली। २. सुशील। ३ भोला-भाला।

नेक-बख्ती—स्त्री०[फा०]१. अच्छा भाग्य। सौभाग्य। २. सुशीलता। ३. भलमंसत।

नेकरी—स्त्री०[?] समुद्र की लहर का थपेड़ा। झोंक। (लश०)

नेकी—स्त्री० [फा०] १ नेक होने की अवस्था या भाव। २ अच्छाई, भलाई। ३ शिष्टता और सौजन्य। सदाशयता। ४. दूसरे के साथ किया जानेवाला नेक कार्य अर्थात् किसी के उपकार या हित का काम। परोपकार।
पद—नेकी और पूछ पूछ=किसी का उपकार करने के लिए उससे पूछने की क्या आवश्यकता है? किसी का उपकार उसके कुछ कहे बिना ही करना चाहिए। नेकी बदी=(क) भलाई और बुराई। (ख) पाप-पुण्य। (ग) शुभ और अशुभ घटनाएँ।

नेकु†—अव्य० [हिं० न+एक] जरा। थोड़ा-सा। उदा०—जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।—घनानन्द।

नेग†—पु० [?] शस्त्र। हथियार।

नेग—पु० [सं० नैयमिक ?] १ मांगलिक और शुभ अवसरों पर संबंधियों, नौकरों-चाकरों तथा अन्य आश्रितों (जैसे—नाई, धोबी, कहार आदि) को कुछ धन आदि देने की प्रथा। २. इस प्रकार दिया जानेवाला धन या वस्तु। ३. इस के आधार पर किसी प्रकार का परम्परागत अधिकार या स्वत्व। दस्तूर। ४. कोई शुभ काम। जैसे—तो तुमने अभी तक मुझसे कोई नेग भी लिया नहीं। ५. अनुग्रह। कृपा।
*पुं० [सं० निकट ?] १. निकटता। सामीप्य। २. मदद। सहारा।
मुहा०—किसी के नेग लगना (क) सहारे या सम्पर्क में आना। (ख) किसी में लीन होना। समाना। (किसी चीज या बात का) नेग लगना सार्थक या सफल होना। जैसे—आपके रुपए तो नेग लगे, अर्थात् उनका व्यय सफल हुआ।

नेग-चार—पु० [हिं० नेग+सं० चार] १. मांगलिक अवसरों पर होनेवाले सामाजिक व्यवहार, रीतियाँ, विधान आदि। २ उक्त अवसरों पर नेग के रूप में, लोगों को थोड़ा-थोड़ा धन देने की क्रिया या भाव। ३. दे० 'नेग-जोग'।

नेग-जोग—पु० [हिं० नेग+सं० योग] १ शुभ अवसरों पर संबंधियों तथा काम करनेवालों को कुछ धन दिये जाने की प्रथा। २ ऐसा मांगलिक या शुभ अवसर जिस पर लोगों को नेग देने की प्रथा हो।

नेगटी—पु० [हिं० नेग+टी (प्रत्य०)] नेग या परम्परागत रीति का पालन करनेवाला। दस्तूर पर चलनेवाला।

नेगी—पु० [हिं० नेग] १. शुभ अवसरों पर नेग पाने का अधिकारी। जैसे—धोबी, नाई, भाट, आदि। २. किसी की उदारता, दया आदि से लाभ उठाकर बराबर उससे आकांक्षा और आशा रखनेवाला व्यक्ति। उदा०—सरस्वामृत सिंच अनुराग बलबिन्ह सकल नेगी।—निराला।

नेगी-जोगी—पु० [हिं० नेग जोग]=नेगी।

नेचर—पुं० [अं०] निसर्ग। प्रकृति।

नेचरिया—वि० [अं० नेचर+इया (प्रत्य०)] जो केवल प्रकृति को सृष्टि का कर्ता मानता हो, ईश्वर को न मानता हो। प्रकृतिवादी। नास्तिक।

नेचवा†—पु० [देश०] पलंग का पाया।

नेछावर†—स्त्री०=निछावर।

नेजा†—पुं०=नेजा (भाला)। उ०—हयी नेज नामद, वीर दो महन लरे मर।—चंदवरदाई।

नेजक—पु [सं०√निज् (साफ करना)+ण्वुल्—अक] रजक। धोबी।

नेजन—पु० [सं०√निज्+ल्युट्—अन] १. कपड़े धोने की क्रिया या भाव। २. सफाई करना।

नेजा—पु० [फा० नेज] १ भाला। बरछा। २ साँग।
पुं० [देश०] चिलगोजा नाम का सूखा मेवा। (पश्चिम)

नेजा-बरदार—वि० [फा० नेज. बरदार] भाला लेकर चलनेवाला।

नेजाल†—पु० [फा० नेज.] भाला। बरछा।

नेजोछना†—स०=अँगोछना या अंग पोछना। (मिथिला)

नेटा†—पु० [हिं० नाक+टा] नाक से निकलनेवाला कफ या वलगम। क्रि० प्र०—निकलना।—वहना।

नेठना—अ०, स०=नाठना (नष्ट होना या करना)।

नेड़उ—अव्य० [स० निकट, प० नेडे] समीप। नजदीक। उदा०—दिन नेडउ आइयो दुरी।—प्रिथीराज।

नेडी†—स्त्री० =लेडी।

नेड़े— अव्य० [स० निकट, प्रा० निअड] नजदीक। निकट। पास। (पश्चिम)

नेत—पु० [स० नेत्रम्] १ वह रस्सी जिससे मथानी चलाई जाती है। नेती। २ एक तरह का वढिया रेशमी कपड़ा। ३ झडे मे लगा हुआ फहरानेवाला कपडा। पताका। ४ विछाने की चादर। उदा०—पुनि गज हस्ति चढावा, नेत, विछावा वाट।—जायसी।

पु० [स० नियति=ठहराव] १. किसी वात का स्थिर होना। ठहराव। निर्धारण। २. दृढ निश्चय या सकल्प। ३. प्रवध। व्यवस्था।

†स्त्री० दे० 'नीयत'।

नेतली—स्त्री० [स० नेत्रम्] १ मथानी चलाने की डोरी। २ एक प्रकार की पतली डोरी। (लश०)

नेता (तृ)—पु० [स०√नी (ले जाना)+तृच्] [स्त्री० नेत्री] १ वह पशु जो अपने झुड के आगे आगे चलता हो। २. मनुष्यो मे, वह जो लोगो को मार्ग दिखलाता हुआ आगे चलता हो और दूसरो को अपने साथ ले जाता हो। अगुआ। नायक। ३. आज-कल किसी धार्मिक सप्रदाय अथवा किसी राजनैतिक या सामाजिक दल का वह व्यक्ति जो आवश्यक वातो मे लोगो का मार्ग-प्रदर्शन करता हो और लोगो को अपना अनुयायी वनाकर रखता हो। (लीडर) ४. प्रभु। मालिक। स्वामी। ५. कार्य का निर्वाह या सचालन करनेवाला अधिकारी। ६. नीम का पेड। ७ वह जो दूसरो को दड आदि देता हो। ८ नाटक का नायक। ९. विष्णु का एक नाम।

पु० [हिं० नेत] मथानी की रस्सी। नेती।

नेतागिरी—स्त्री० [हिं० नेता+फा० गीरी] नेता वनकर दूसरो का मार्ग-प्रदर्शन करने का काम।

नेति—अव्य० [स० न+इति, व्यस्तपद] इसका कही अन्त नही है। यह अनन्त है। (प्राय ईश्वर, व्रह्म आदि की महिमा मे प्रयुक्त) स्त्री०=नेती।

नेती—स्त्री० [स० नेत्रम्] १ मथानी चलाने की रस्सी। २ दे० 'नेती धोती'।

नेती धोती—स्त्री० [स० नेत्र, हिं० नेता+स० धौति] आँतो और पेट का मल साफ करने की हठयोग की एक क्रिया, जिसमे कपडे की लवी पट्टी मुँह के रास्ते पेट मे उतारी जाती है और तव इसे वाहर खीचने पर इसके साथ मल वाहर निकलता है।

नेतुल्ली—पु० [हिं० नेता+उल्ली (प्रत्य०)] छोटा या तुच्छ नेता। (उपहास और व्यग्य)

नेतृत्व—पु० [स० नेतृ+त्व] नेता वनाकर किसी सम्प्रदाय या दल का मार्ग-दर्शन तथा उसके कार्यो का सचालन करना।

नेत्र—पु० [स०√नी+ष्ट्रन्] १ आँख। २ दोनो आँखो के आधार पर दो की सख्या। ३. मथानी की रस्सी। ४. पेड़ की जड। ५. जटा। ६ रथ। ७ नाडी। ८ एक तरह का रेशमी कपडा। ९ वैद्यक मे, वस्ति-कर्म मे काम आनेवाली सलाई। १०. दे० 'नेता'।

नेत्र-कनीनिका—स्त्री० [प० त०] आँख की पुतली।

नेत्रच्छद—पु० [स० नेत्र√छद् (ढँकना)+णिच्+क, ह्रस्व] पलक।

नेत्रज—पु० [स० नेत्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] आँसू।

नेत्र-जल—पु० [प० त०] आँसू।

नेत्रण—पु० [स० नेत्र से] किसी को ठीक मार्ग दिखलाते हुए ले चलना।

नेत्र-पर्यंत—पु० [प० त०] आँख का कोना।

नेत्र-पाक—पु० [प० त०] आँख का एक रोग।

नेत्र-पिंड—पु० [प० त०] १ आँख का डेला। २ [व०स०] विल्ली।

नेत्र-पुष्करा—स्त्री० [व० स०, टाप्] रुद्र जटा नामक लता।

नेत्र-वंध—पु० [व० स०] आँख-मिचौली का खेल। (महाभारत)

नेत्र-वाला—स्त्री० [स०] सुगधवाला नामक वनौपधि।

नेत्र-भाव—पु० [प० त०] नृत्य और सगीत मे वे भाव जो केवल आँखो की मुद्रा से प्रकट किये जाते है।

नेत्र-मडल—पु० [प० त०] आँख का डेला।

नेत्र-मल—पु० [प० त०] आँख मे से निकलनेवाला कीचड या मल। गिद्द।

नेत्र-मार्ग—पु० [प० त०] हठयोग मे माना जानेवाला अन्त करण के पास का वह नेत्र-गोलक जिसका एक सूत्र के द्वारा मस्तिष्क तक सवध होता है।

नेत्र-मीला—स्त्री० [व० स०, पृपो० ल—न] यवतिक्ता लता।

नेत्र-योनि—पु० [व० स०] १ इद्र (गौतम के शाप से इनके शरीर पर योनि के आकार के चिह्न निकल आये थे)। २ चन्द्रमा।

नेत्र-रंजन—पु० [प० त०] कज्जल। काजल।

नेत्र-रोग—पु० [प० त०] आँखो मे होनेवाले रोग।

नेत्ररोगहा (हन्)—पु० [स० नेत्ररोग√हन् (हिंसा)+क्विप्] वृश्चिकाली (वृक्ष)।

नेत्र-रोम (न्)—पु० [प० त०] वरौनी।

नेत्रवस्ति—स्त्री० [प० त०] एक प्रकार की छोटी पिचकारी।

नेत्र-वारि—पु० [प० त०] आँसू।

नेत्रविद् (प्)—पु० [प० त०] आँख का कीचड।

नेत्र-विष—पु० [व० स०] एक प्रकार का साँप जिसकी आँखो मे विष होना माना जाता है। कहते है कि इसके देखने मात्र से प्राणियो पर विप का प्रभाव पड़ता है।

नेत्रा-संधि—स्त्री० [प० त०]आँख का कोना।

नेत्र-स्तंभ—पु० [प० त०] वह स्थिति जिसमे आँखो की पलको का उठना और गिरना वन्द हो जाता है।

नेत्र-स्राव—पु० [प० त०] आँखो से पानी वहना।

नेत्रहा (हन्)—पु० [स० नेत्र√हन्+क्विप्] वृश्चिकाली (वृक्ष)।

नेत्रात—पु० [प० त०] आँख का वाहरी कोना।

नेत्रांबु—पु० [नेत्र-अवु, प० त०] आँसू।

नेत्राभ (स्)—पु० [नेत्र-अभस्, प० त०] आँसू।

नेत्राभिष्यंद—पु० [नेत्र-अभिष्यद, प० त०] छूत से फैलनेवाला एक नेत्र-रोग।
नेत्रामय—पु० [नेत्र-आमय, प० त०] आँख का रोग।
नेत्रारि—पु० [नेत्र-अरि, प० त०] थूहर। सेहुड।
नेत्रिक—पु० [स० नेत्र+ठन्—इक] १ एक प्रकार की छोटी पिचकारी। (सुश्रुत) २ कलछी।
नेत्री—स्त्री० [स० नेतृ+ङीप्] १ स० 'नेता' का स्त्री०। स्त्री नेता। २ लक्ष्मी। ३. नाडी। ४ नदी।
नेत्रोत्सव—पु० [नेत्र-उत्सव, प० त०] १. नेत्रो का आनन्द। देखने का मजा। २. दर्शनीय और सुन्दर वस्तु।
नेत्रोपमफल—पु० [नेत्र-उपमा, ब० स०, नेत्रोपम-फल, कर्म०स०] बादाम। (भाव प्रकाश)
नेत्रौषध—पु० [नेत्र-औषध, प० त०] १. आँख की दवा। २ पुष्प कसीस।
नेत्रौषधि (धी)—स्त्री० [नेत्र-औषधि, प० त०] मेढासिगी (पौधा)।
नेत्र्य—वि० [स०] १ नेत्र-सबधी। २. नेत्रो को सुख देनेवाला।
नेत्र्य-गण—पु० [स० नेत्र+यत्, नेत्र्य-गण, कर्म० स०] रसौत, त्रिफला, लोध, ग्वालपाठा, वनकुलथी आदि ओषधियो का वर्ग।
नेदिष्ठ—वि० [स० अन्तिक+इष्ठन्, नेद-आदेश] १ निकट का। पास का। २ दक्ष। निपुण।
पु० १ अकोट या ढेरे का वृक्ष।
नेदिष्ठी (ठिन्)—वि० [स० नेदिष्ठ+इनि] समीप का। निकटस्थ।
पु० सगा या सहोदर भाई।
नेनुआ†—पु० [देश०] १ एक प्रसिद्ध लता। २. उक्त का लबोतरा फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है। वैद्यक मे यह वात तथा पित्त नाशक माना गया है। घिया-तरोई।
नेप—पु० [स०√नी+प] १ पुरोहित। २. जल।
नेपचून—पु० [फ्रांसीसी]सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक नक्षत्र। एक ग्रह जिसका पता कुछ ही दिन पहले लगा है। वरुण।
नेपथ्य—पु० [स०√नी+विच्, ने(नेता)+पथ्य;प० त०] १ सजावट। सज्जा। २ पहनने के कपडे। पोशाक। (विशेपत अभिनेताओ की) ३ वेप-भूषा। ४ रग-मच का वह भाग जो दर्शको की दृष्टि से ओझल रहता है और जिसमे अभिनेता या नट उपयुक्त वेश-भूषा आदि से सज्जित होते हैं। ५. रग-भूमि। रगशाला।
नेपाल—पु० [देश०] उत्तर प्रदेश के उत्तर और हिमालय के तल मे स्थित एक पहाडी देश तथा राज्य।
नेपालक—पु० [स० नेपाल+कन्] ताँबा।
नेपालजा—स्त्री० [स० नेपाल√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] मन-शिला। मैनसिल।
नेपाल-निंब—पु० [मध्य० स०] एक तरह का चिरायता।
नेपाल-मूलक—पु० [स०] हस्तिकद (कद)।
नेपालिका—स्त्री० [स० नेपालक+टाप्, इत्व] मन शिला। मैनसिल।
नेपाली—वि० [हिं० नेपाल] १ नेपाल राज्य से सबध रखनेवाला। २ नेपाल मे बसने, होने या रहनेवाला।
पु० नेपाल देश का नागरिक या निवासी।
स्त्री० नेपाल देश की भाषा।
†स्त्री०=निवारी (पौधा और उसका फूल)।
नेपुर†—पु०=नूपुर।
नेफा—पु० [फा० नेफ] पायजामे, लहँगे आदि का नेफा जिसमे नाला डाला जाता है।
पु० [अ० नार्थ, ईस्ट फटियर एजेंसी के आरभिक अक्षरो का समूह] वे पहाडी प्रदेश जो भारत के उत्तर पूर्व मे पडते है।
नेब†—पु०=नायब।
नेबू†—पु०=नीबू।
नेम—वि० [स०√नी+मन्] १. अर्ध। आधा। २. अन्य। दूसरा।
पु० [स०] १. काल। समय। २. अवधि। ३ खड। टुकडा। ४ दीवार। ५. धोखेबाजी। छल। ६. गड्ढा। गर्त। ७. सध्या का समय। ८. जड। मूल।
पु० [म० नियम] १. नियम। कायदा। २ नियमित रूप से या बराबर होती रहनेवाली बात।
पद—नेम-धरम=पूजा-पाठ, देव-दर्शन आदि धार्मिक-कृत्य।
३ प्रथा। रीति।
नेमत—स्त्री०=नियामत।
नेमता—स्त्री० [स०] नाचने-गाने का व्यवसाय करनेवाली स्त्री। नर्तकी।
नेमि—स्त्री० [स०√नी+मि] १ पहिए का चक्कर या घेरा। चक्र-परिधि। २ किसी प्रकार का चक्कर या घेरा। ३ कूएँ के ऊपर का चबूतरा। जगत। ४. कूएँ की जमवट। ५ किनारा। तट। ६ तिनिश वृक्ष। ७ वज्र। ८ पुराणानुसार एक दैत्य। ९ दे० 'नेमि नाथ'।
नेमिचक्र—पु० [स०] एक राजा जो परीक्षित के वशजो मे से था।
नेमी (मिन्)—पु० [स० नेम+इनि] तिनिश वृक्ष।
स्त्री०=नेमि।
वि० [स० नियम] किसी प्रकार के नियम, विशेपत धार्मिक कृत्य-सबधी नियम का दृढतापूर्वक और सदा पालन करनेवाला। जैसे—गगा-स्नान या देव-दर्शन का नेमी।
पद—नेमी-धरमी।
नेमी-धरमी—वि० [स० नियम-धर्मी] १ धार्मिक नियमो और सिद्धातो का दृढतापूर्वक पालन करनेवाला। २ नित्य पाठ-पूजा, देव-दर्शन आदि धार्मिक कृत्य करनेवाला।
नेयार्थ—पु० [स० नेय-अर्थ, कर्म० स०] एक पद-दोप जो उस समय माना जाता है जब किसी शब्द से उसके ऐसे लाक्षणिक अर्थ का बोध कराया जाता है जो साधारणत उससे अभिव्यजित नही होता।
नेयार्थता—स्त्री० [स० नेयार्थ+तल्+टाप्] नेयार्थ दोप होने की अवस्था या भाव।
नेर†—क्रि० वि० दे० 'नियर'।
नेरता—स्त्री० [स० नैर्ऋत] नैर्ऋत्य दिशा। पश्चिम-दक्षिण का कोना।
नेरवाती—स्त्री० [देश०] एक तरह की नीले रग की पहाडी भेड।
नेरा†—वि० [हिं० नेक?] [स्त्री० नेरी] जरा-सा। थोडा-सा।
उदा०—अब ऐसी अनेरी पत्याति न नेरी।—घनानन्द।

नेराना—अ०, स०=नियराना।
नेरुवा†—पु० [म० नल,हि नाली, नारी] वह नाली जिसमे से कोल्हू मे का तेल वाहर निकलता है।
नेरे†—अव्य० [हि० नियर] निकट। पास। समीप।
नेव†*—वि०=नायव।
†स्त्री०=नींव।
नेवग†—पु०=नेग। (डि०)
नेवगी—पु०=नेगी । (डि०)
नेवछावर†—स्त्री०=निछावर।
नेवज†—पु०=नैवेद्य।
नेवजा—पु०=नेजा (चिलगोजा)।
नेवर्जा†—स्त्री०=नेवारी (पौधा और फूल)।
नेवता—पु०=न्यौता। (निमत्रण)।
नेवतना†—स० [हि० न्योता] न्योता या निमत्रण देना।
नेवतहरी—पु० [हि० न्योता] वह व्यक्ति जिसे किसी मागलिक अवसर पर न्योता दिया गया हो या जो न्योता देने पर आया हो।
नेवला†—पु०=न्योता।
नेवती†—पु० दे० 'नेवतहरी'। उदा०—नेवती भएउँ विरह की आगी। —जायसी।
नेवना*—अ० [स० नमन] १ झुकना। २ नम्र होना।
स० झुकाना।
नेवर—पु० [स० नूपुर] १. पैरों मे पहनने का नूपुर नाम का गहना। पैंजनी। २ घुंघरू। ३ घोडो के पैर मे होनेवाला वह घाव जो दूसरे पैर की रगड या ठोकर लगने मे होता है।
क्रि० प्र०—लगना।
†वि० [स० निर्वल] १ कमजोर। २. खराब। बुरा।
नेवरना*—अ० [स० निवारण] निवारण होना। दूर होना।
स० १ निवारण करना। २ निपटाना। भुगताना।
नेवरा—पु० [देश०] लाल कपडे की वह खोली जो झारी पर चढाई जाती है।
†पु०=नेवला।
नेवल—पु० १. =नेवर। २ =नेवला।
नेवला—पु० [स० नकुल,प्रा० नउल] चूहे के आकार का भूरे रग का चार पैरोवाला एक प्रसिद्ध जतु जो साँप को मार डालता है।
नेवा—पु० [सं० नियम] १. प्रथा। दस्तूर। रवाज़। २ कहावत। लोकोक्ति।
वि० [?] चुप। मौन।
†पु०=लेवा।
†अव्य०=नाई (तरह या समान)।
नेवाज—वि०=निवाज (दयालु)।
नेवाजना—स० निवाजना (दया करना)।
नेवाड़ा†—पु०=निवाडा।
नेवाडी†—स्त्री०=नेवारी।
नेवाना*†—स०=नवाना। (झुकाना)।
नेवार—पु० [देश०] नेपाल की एक आदिम जाति।
स्त्री०=निवार।
नेवारना* †—स० [स० निवारण] निवारण करना। हटाना। दूर करना।
नेवारी—स्त्री० [स० नेपाली] १ चमेली की जाति का सुगधित फूलो का एक प्रसिद्ध पौधा जो चैत मे फूलता है। २ उक्त पौधे का फूल।
नेष्टा (ष्टृ)—पु० [स०√नी+तृन्, नि० सिद्धि] १. एक ऋत्विक्। २. त्वष्टा देवता।
नेष्टु—पु० [स० निश् (एकाग्रता)+तुन्] मिट्टी का ढेला।
नेस—पु० [फा० नेश] १. जगली सूअर के आगे निकला हुआ दाँत। सींग। २. दश। डक।
नेसकुन—पु० [देश०] वदरों का जोडा। (कलदर)
नेसुक†—अव्य०, वि०=नेक या नेकु। (जरा या थोडा)
नेसुहा†—पु० दे० 'ठीहा'।
नेस्त—वि० [फा०] [भाव० नेस्ती] १ जो न हो। २. नष्ट। वरबाद।
नेस्त-नावूद—वि० [फा०] जड-मूल से नष्ट। समूल नष्ट।
नेस्ती—स्त्री० [स० नास्ति से फा०] १ न होने की अवस्था या भाव। अनस्तित्व। २ आलस्य। सुस्ती। ३ नाश। वरवादी।
वि० चौपट या सर्वनाश करनेवाला।
नेह—पु० [स० स्नेह] १ स्नेह। प्रीति। प्यार। मुहव्वत। २. घी, तेल या ऐसा ही कोई चिकना और तरल पदार्थ।
नेहाल—वि०=निहाल।
नेही*—वि०=स्नेही।
नै—स्त्री० [स० नदी, प्रा० णई] नदी।
स्त्री० [फा०] १ नरकट। नरसल। २ वाँस की नली। ३ हुक्के की निगाली। ४ वाँसुरी।
*विभ०=ने (कर्मकारक की विभक्ति)। (व्रज०)
नैऋत— वि०=नैर्ऋत्य।
नैक—वि० [स० न-एक, सहसुपा स०] १ जो एक नही, वल्कि उससे कुछ अधिक हो। अनेक। २ जो अकेला न हो।
पु० विष्णु।
वि०, अव्य०=नेक (जरा या थोडा)।
नैकचर—वि० [स० नैक√चर् (गति)+ट] जो अकेला न चलता हो। फलत झुडो मे रहनेवाला। जैसे—भेड, हाथी, हिरन आदि।
नैकटिक—वि० [स० निकट+ठक्—इक] निकटवर्ती। पास का।
नैकट्य—पु० [स० निकट+ष्यञ्] निकटता। नजदीकी।
नैकधा—अव्य० [स० नैक+धाच्] अनेक प्रकारो से। अनेक रूपो मे।
नैक-भेद—वि० [स० व० स०] विभिन्न प्रकार का। अलग तरह का।
नैक-शृंग—पु० [स० व० स०] विष्णु।
नैकषेय—पु० [स० निकषा+ढक्—एय] रावण की माता, निकषा के वशज।
नैकृतिक—वि० [स० निकृति+ठक्—इक] दूसरो की हानि करके

निष्ठुरतापूर्वक जीविका चलानेवाला। २ कटु बातें कहनेवाला। कटु-भाषी।

नैगम—वि० [स० निगम+अण्] १ निगम-सबधी। निगम का। २ वेदो अथवा अन्य धर्म ग्रन्थों मे लिखा हुआ। ३. जिसमे ब्रह्म के स्वरूप आदि का प्रतिपादन हो। आध्यात्मिक।
पु० १ उपनिषद्। २ नय। नीति।

नैगम-नय—पु० [स० कर्म० स०] जैन दर्शन का यह तर्क या सिद्धान्त कि सामान्य के बिना विशेष और विशेष के बिना सामान्य नही रह सकता।

नैगमिक—वि० [स० निगम+ठक्—इक] १ जिसका सबध वेदों मे हो। २ वेदों से निकला हुआ।

नैगमेय—पु० [स०] १ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २. दे० 'नैगमेष।'

नैगमेष—पु० [स०] बालकों का एक ग्रह जिसका प्रकोप होने पर बच्चे रोते हैं, उनके मुँह से फेन गिरता है तथा ज्वर आदि विकार भी होते है।

नैघटुक—पु० [स० निघटु+ठक्—क] वैदिक शब्दों की वह शब्दावली, जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त मे की है।

नैचा—पु० [फा० नैच] नरकट की नलियों का वह ढाँचा जो हुक्के मे लगा होता है और जिसके द्वारा तमाखू का धूआँ खींचा जाता है।

नैचाबंद—पु० [फा० नैच., बन्द] हुक्कों के नैचे बनानेवाला।

नैचाबदी—स्त्री० [फा० नैच बन्दी] नैचा बनाने का काम और पारिश्रमिक।

नैचिक—पु० [स० नीचा+ठक्—इक] बैल का माथा।

नैचिकी—स्त्री० [स० नीचि=गोशिरोभाग+कन्+अण्+ङीप्] अच्छी गाय।

नैची—स्त्री० [हिं० नीचा] कूएँ के पास की वह ढालुई जमीन जिस पर से बैल मोट खीचते समय नीचे आते-जाते रहते है।

नैचुल—वि० [स० निचुल+अण्] निचुल-सबधी। हिज्जल वृक्ष-सबधी।
पु० निचुल या हिज्जल का बीज या फल।

नैज—वि० [स० निज+अण्] निज का। निजी।

नैटी†—स्त्री० [देश०] दुद्धी या दुधिया घास।

नैड़ो*—क्रि० वि०=नेडे (नजदीक)।

नैड़ो*—क्रि० वि०=नेटे।

नैतल—पु० [स० नितल+अण्] नीचे का लोक।

नैतल-सद्म (न्)—पु० [स० ब० स०] नैतल मे रहनेवाले यम।

नैतिक—वि० [स० नीति+ठक्—इक] [भाव० नैतिकता] १ नीति का। नीति-सबधी। जैसे—नैतिक विचार। २ नीति के अनुसार होनेवाला। जैसे—नैतिक उत्तरदायित्व। ३ नीति युक्त आचरण या व्यवहार से सबध रखनेवाला। जैसे—नैतिक पतन।

नैतिकता—स्त्री० [स० नैतिक+तल्—टाप्] नीति शास्त्र के सिद्धान्तों का होनेवाला ज्ञान और उनके अनुसार किया जानेवाला अच्छा आचरण।

नैत्य—वि० [स० नित्य+अण्] १ नित्य-संबंधी। नित्य का। २ नित्य या रोज होनेवाला। दैनिक।
पु० नियमित रूप से और नित्य किये जानेवाले काम। नित्य-कर्म।

नैत्यक—वि० [स० नैत्य+कन्] नित्य होने या किया जानेवाला। नैत्य।
पु० व्यापारिक अथवा कार्यालय सबधी कार्यो का नित्य का बँधा हुआ क्रम। (रुटीन)

नैत्र—वि० [स०] नेत्रों या आँखों से सबध रखनेवाला।

नैत्रिकी—स्त्री० [स० नेत्र से] आधुनिक चिकित्सा की वह शाखा जिसमे नेत्र-सबधी रोगों और उनकी चिकित्सा-प्रणाली की विवेचना होती है। (आप्थेलमॉलोजी)

नैदाघ—वि० [स० निदाघ+अण्] १. निदाघ-सबधी। निदाघ का। २. गरमी या ग्रीष्म ऋतु मे होनेवाला।
पु० गरमी का मौसम। ग्रीष्म ऋतु।

नैदाघिक—वि० [स० निदाघ+ठञ्—इक] नैदाघ।

नैदाघीय—वि० [स० निदाघ+छण्—ईय] निदाघ-सबधी। नैदाघ।

नैदानिक—वि० [स० निदान+ठक्—इक] निदान सबधी। रोगों के निदान से सबध रखनेवाला। (क्लिनिकल)
पु० वह जो विशिष्ट रूप से रोगों का निदान करता हो।

नैदानिकी—स्त्री० [स० नैदानिक से] रोगों का निदान करने की विद्या या शास्त्र।

नैदेशिक—वि० [स० निदेश+ठक्—इक] १ निदेश-सबधी। २ निदेश का पालन करनेवाला।
पु० नौकर। सेवक।

नैद्र—वि० [स० निद्रा+अण्] निद्रालु।

नैधन—वि० [स० निधन+अण्] जिसका निधन या नाश होने को हो। नश्वर।
पु० जन्मकुडली मे लग्न से आठवाँ घर जिसके आधार पर मृत्यु का विचार होता है। (ज्यो०)

नैधानी—स्त्री० [स० निधान+अण्+ङीप्] भू-भाग अलग अलग दरसाने के लिए बनाई जानेवाली ऐसी सीमा जिसमे कोयले, भूसी आदि से भरे हुए घडे गडे हों। (स्मृति)

नैधेय—वि० [स० निधि+ढक्—एय] निधि-सबधी। निधि का।

नैन†—पु० [स० नयन] १ आँख। नयन। २ दीवार मे से धूआँ निकलने का छेद। धूम-नेत्र। धमाला।
*पु० [स० नवनीत] मक्खन।
*पु० अन्याय।

नैन-पटी—स्त्री० [स० नयन+पट] आँख या आँखों पर बाँधी जानेवाली पट्टी।

नैनसुख—पु० [स० नयन+सुख] एक प्रकार का सफेद चिकना सूती कपडा।

नैना*—पु०[स० नयन] आँख। नेत्र।
†अ०=नवना।
†स०=नवाना।

नैनू—पु०[हिं० नैन=आँख] पुरानी चाल की एक प्रकार की बूटीदार मलमल।
†पु०[स० नवनीत] मक्खन।

नैपातिक—वि०[स० निपात+ठक्—इक] निपात-सबधी।

नैपाल—वि०[स० नेपाल+अण्] नेपाल देश-सबधी। नेपाल का।
पु०१. नेपाल निंव। २. एक प्रकार की ईख। ३ नेपाल देश।
नैपालिक—वि० [स० नेपाल+ठक्—इक] नेपाल मे बनने, होने या रहने वाला।
पु० ताँबा।
नैपाली—वि०[हिं० नैपाल] नैपाल देश का।
पु०१ नेपाल देश का निवासी।
स्त्री० [स०] १ नव-मल्लिका। निवारी। २ मैनसिल। ३ नील का पौधा। ४ एक प्रकार की निर्गुडी।
स्त्री०[हिं० नैपाल] नैपाल देश की बोली या भाषा।
नैपुण्य—पु०[स०निपुण+ष्यञ्]१ निपुणता। २ ऐसा कार्य या विषय जिसके लिए निपुणता आवश्यक हो।
नैभृत्य—पु० [स० निभृत+ष्यञ्] १. नम्रता। विनय। २. छिपाव। दुराव। ३ स्थिरता।
नैमंत्रणक—पु०[स० निमत्रण+वुञ्—अक] बहुत से लोगो को बुलाकर कराया जानेवाला भोजन। भोज। दावत।
नैमय—पु०[स०] व्यवसायी। रोजगारी।
नैमित्त—वि०[स० निमित्त+अण्]१ निमित्त-सबधी। २. निमित्त से उत्पन्न। ३. चिह्न-सबधी।
नैमित्तिक—वि०[स० निमित्त+ठक्—इक]१ जो किसी निमित्त से किया जाय। २ जो किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए हो। जैसे—नैमित्तिक कर्म। ३ आकस्मिक। अप्रायिक।
पु० ज्योतिषी।
नैमित्तिक प्रलय—पु०[स०] वेदात के अनुसार प्रत्येक कल्प के अत मे होनेवाला तीनो लोको का क्षय या पूर्ण विनाश। ब्राह्म प्रलय।
नैमित्तिक लय—पु०[स०कर्म०स०] एक प्रकार का प्रलय जिसमे बारहो सूर्य उदित होते हैं और १०० वर्ष अनावृष्टि होती है। (गरुड पुराण)
नैमिश—पु०=नैमिष।
नैमिष—वि०[स० निमिष+अण्]१ निमिष-सबधी। २ क्षणिक।
पु०१ नैमिषारण्य तीर्थ। २ एक प्राचीन जाति जो महाभारत के समय यमुना के किनारे बसी थी।
नैमिषारण्य—पु०[स० नैमिष-अरण्य, कर्म०स०] एक प्राचीन वन जो आजकल के सीतापुर जिले मे पडता है और एक प्रसिद्ध तीर्थ है। नीमखार।
नैमिषि—पु० [स० नि√मिष्+क, निमिष+इञ्] नैमिषारण्य का निवासी।
नैमिषीय—वि०[स० निमिष+छण्—ईय] निमिष-सबधी। निमिष का।
नैमिषेय—वि० [निमिष+ढक्—एय] १ नैमिष-सबधी। २. नैमिषारण्य का।
नैमेय—पु०[स० नि√मि (लेनदेन)+यत्+अण्]१ वस्तुओ का अदला-बदला। विनिमय। २ रोजगार। वाणिज्य।
नैयग्रोध—पु०[स० न्यग्रोध+अण्, ऐं—आगम] वट वृक्ष का फल।
नैयत्य—वि०[स० नियत+ष्यञ्] नियत, प्रतिष्ठित या स्थिर होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
नैयमिक—वि०[स० नियम+ठक्—इक]१ नियम-सबधी। २ नियम के अनुसार होने या किया जानेवाला।
नैया†—स्त्री०=नाव।
नैयायिक—पु०[स० न्याय+ठक्—इक]न्याय दर्शन का ज्ञाता। न्याय-वेत्ता।
नैरग—पु०[फा०]१ अद्भुत या विलक्षण चीज या बात। २ इद्रजाल। जादू। ३ कपट। छल। धोखा।
नैरंगबाज—वि०[फा०] [भाव० नैरगबाजी]१. मायावी। जादूगर। २ कपटी। छली।
नैरंगी—स्त्री० [फा०] १ दे० 'नैरंग।' २. चालबाजी। धूर्तता। ३. चित्र की चंचलता।
नैरंजना—स्त्री० [सं०] फल्गु नदी का प्राचीन नाम।
नैरंतर्य—पुं० [स० निरतर+ष्यञ्] निरतरता।
नैरंति—स्त्री०[स०नैऋत्य]दक्षिण-पश्चिम के बीच की दिशा। नैऋत्य कोण।
नैर*—पुं० [स० नगर]१ नगर। शहर। २ जनपद। देश।
नैरपेक्ष्य—पु०[स० निरपेक्ष+ष्यञ्]१ निरपेक्षता। २. उपेक्षा।
नैरयिक—वि०[स० निरय+ठक्—इक] नरक-सबधी। २ नरक मे रहने या होनेवाला।
नैरर्थ्य—पु०[स० निरर्थ+ष्यञ्] निरर्थकता।
नैरात्म्य—पु०[स० निरात्मन्+ष्यञ्] १ निरात्म होने की अवस्था या भाव। २ एक दार्शनिक सिद्धात जिसमे यह प्रतिपादित किया जाता है कि वास्तव मे आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है। (निहिलिज्म)
नैरात्म्यवाद—पु०=अनात्मवाद।
नैराश्य—पु०[स० निराश+ष्यञ्]१ निराश होने की अवस्था या भाव। ऐसी स्थिति जिसमे मनुष्य निराश हो जाता हो। ना-उम्मेदी। २. निराश होने के फलस्वरूप होनेवाली उदासी।
नैरास्य—पु०[स०] बाण चलाने का एक मत्र।
नैरिक—वि०[स० नीर+ठक्—इक]नीर या जल सबधी। जैसे—नैरिक चिह्न, नैरिक रेखा।
नैरिकेय—पु०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे जल विशेषत भूतल के नीचे के जल के गुणो, नियमो, प्रवाहो विभाजनो आदि का विचार होता है। (हाइड्रॉलाजी)
नैरुक्त—वि०[स० निरुक्त+अण्]१. शब्दो की निरुक्ति या व्युत्पत्ति से सबध रखनेवाला। २ निरुक्त शास्त्र से सबध रखनेवाला।
पु०१ वह व्यक्ति जो शब्दो की निरुक्ति या व्युत्पत्ति जानता हो। २ वह ग्रथ जिसमे शब्दो की निरुक्ति या व्युत्पत्ति बतलाई गई हो।
नैरुक्तिक—वि०, पु० [स० निरुक्त+ठक—इक]=नैरुक्त।
नैरुज्य—पु०[स० निरुज+ष्यञ्]निरुज या निरोग होने की अवस्था या भाव। आरोग्य। तदुरुस्ती। स्वस्थता।
नैरुहिक—पु०[स० निरुह+ठक्—इक] एक तरह की वस्ति। (सुश्रुत)
नैर्ऋत—वि०[स० निर्ऋति+अण्] निर्ऋति-सबधी।
पु०१ निर्ऋति की सतान अर्थात् राक्षस। २ नैर्ऋत्य अर्थात् पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी राहु। ३. मूल नक्षत्र।
नैर्ऋती—स्त्री० [स० नैर्ऋत+ङीप्]१ दक्षिण-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण। २. दुर्गा।
नैर्ऋतेय—वि०[स० निर्ऋति+ढक्—एय] निर्ऋति सबधी।
पु० निर्ऋति देवता के वंशज।

नैर्ऋत्य—वि० [स०] निर्ऋति सबधी।
पु० १ निर्ऋति का वशज। निशाचर। २ दक्षिण पश्चिम की दशा। ३ मूल नक्षत्र।
नैर्गुण्य—पु०[स० निर्गुण+ष्यञ्] १ निर्गुणता। २ कला-कौशल आदि के ज्ञान का अभाव। ३ सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से रहित होने की अवस्था या भाव।
नैर्देशिक—वि०[स० निर्देश+ठक्—इक]१ निर्देश-सबधी। २ निर्देश के रूप मे होनेवाला। ३ निर्देश का पालन करनेवाला।
पु० नौकर। भृत्य।
नैर्मल्य—पु०[स० निर्मल+ष्यञ्] १ निर्मलता। २ विषय-वासना आदि से रहित होना।
नैर्लज्य—पु०[स० निर्लज्ज+ष्यञ्] निर्लज्जता। बेहयाई।
नैर्वाहिक—वि०[स० निर्वाह+ठक्—इक] १. निर्वाह-सबंधी। २ जो निर्वाह के लिए हो। ३ जिसका या जिससे निर्वाह हो सके।
नैल्य—पु०[स० नील+ष्यञ्] नीले होने की अवस्था या भाव। नीलापन।
नैवासिक—वि० [स० निवास+ठक्—इक] १ निवास-सबधी। २ निवास के अनुकूल या योग्य (स्थान)।
नैवेद्य—पु०[स० निवेद+ष्यञ्] देवता या मूर्ति को भेंट की या चढाई हुई खाद्य वस्तु। भोग।
क्रि० प्र०—लगाना।
नैवेशिक—वि०[स० निवेश+ठक्—इक] निवेश-सबधी।
पु०१. गृहस्थी के उपकरण या पात्र। २ ब्राह्मण को दी जानेवाली भेट।
नैश—वि०[स० निशा+अण] १. निशा-सबधी। निशा का। २ रात मे किया जाने या होनेवाला। ३ अवकाश-पूर्ण।
नैशिक—वि०[सं० निशा+ठञ्—इक]=नैश।
नैश्चल्य—पु०[स० निश्चल+ष्यञ्] निश्चल होने की अवस्था या भाव। निश्चलता। स्थिरता।
नैश्चित्य—पु०[स० निश्चित+ष्यञ्]१ निश्चित होने की अवस्था या भाव। निश्चिति। २ निश्चय।
नैश्श्रेयस (सिक)—वि०[स० निश्श्रेयस्+अण, निश्श्रेयस्+ठक्—इक]१. कल्याणकारक। २ मोक्ष दायक।
नैषध—वि०[स० निषध+अण्] निषध-देश सबधी। निषध देश का।
पु० १ निषध देश का राजा। २. राजा नल। ३ निषध देश का निवासी। ४. श्री हर्षकृत एक प्रसिद्ध सस्कृत काव्य जिसमे निषध देश के राजा नल की कथा है।
नैषधीय—वि० [स० नैषध+छ–ईय] १ नैषध-सबधी। २. राजा नल के सबध का।
नैषध्य—पु०[स० निषध+ण्य]राजा नल का वशज।
नैषाद, नैषादि—पु० [स० निषाद+अण्, निषाद+इञ्] निषाद का वशज।
नैषेचनिक—पु०[स० निषेचन+ठक्–इक] राज्याभिषेक के अवसर पर दिया जानेवाला उपहार। (कौ०)
नैष्कर्म्य—पु०[स० निष्कर्मन्+ष्यञ्]१ निष्कर्म होने की अवस्था या भाव। २ कर्मो का परित्याग। निष्क्रियता। ३ आसक्ति और फल की कामना छोडकर कार्य करना। ४ अकर्मण्यता और आलस्य। ५ आत्मज्ञान।
नैष्किक—वि०[स० निष्क+ठक्—इक]१. निष्क-सबधी। निष्क का। २ निष्क देकर खरीदा या मोल लिया हुआ।
पु० टकसाल या टकसाल का प्रधान अधिकारी।
नैष्कृतिक—वि०[स० निष्कृति+ठक्—इक] दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करनेवाला। स्वार्थी।
नैष्क्रमण—पु०[स० निष्क्रमण+अण्]निष्क्रमण नामक कृत्य या सस्कार।
नैष्ठिक—वि० [स० निष्ठा+ठक्—इक] [स्त्री० नैष्ठिकी]१. निष्ठावान्। निष्ठायुक्त। २ अतिम और निश्चित रूप मे किया जानेवाला। (डेफिनिट)३. निश्चित। ४. दृढ। पक्का। ५. सर्वोत्तम। ६ परिपूर्ण।
पु० ऐसा ब्रह्मचारी जो उपनयन सस्कार होने पर आजीवन गुरु के आश्रम मे रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करे।
नैष्ठुर्य—पु०[स० निष्ठुर+ष्यञ्]=निष्ठुरता।
नैष्ठ्य—वि०[स० निष्ठा+ण्य] निष्ठायुक्त। आचरणशील।
नैसर्गिक—वि०[स० निसर्ग+ठक्—इक] [स्त्री० नैसर्गिकी]१ निसर्ग या प्रकृति से सबध रखने या उससे होनेवाला। प्राकृतिक। २ निसर्ग से उत्पन्न। ३. स्वाभाविक।
नैसर्गिकी—स्त्री० [स० नैसर्गिक से]१. वे बातें या विचार जो निसर्ग से सबध रखती या उससे उत्पन्न होती हो। २ दार्शनिक क्षेत्र मे, यह धारणा या विश्वास कि सारी सृष्टि वास्तविक है और इसमें कोई अलौकिक या दैवी तत्त्व अथवा भाव नही है। ३ कला-पक्ष और साहित्य मे यह सिद्धात कि ससार मे नैसर्गिक या प्राकृतिक रूप मे जो कुछ वस्तुत होता हुआ दिखाई देता है उसका अकन या चित्रण ज्यो का त्यों उसी रूप मे होना चाहिए, और उसमे आदर्शो, नैतिक विचारों आदि का आरोप नही किया जाना चाहिए। ४. आधुनिक धार्मिक क्षेत्र मे, यह धारणा या विश्वास कि मनुष्यों मे धर्म तत्त्व का आविर्भाव किसी अलौकिक या दैवी शक्ति की प्रेरणा से नही हुआ है, और मनुष्य ने धर्मसबधी सभी भावनाएँ तथा विचार नैसर्गिक या प्राकृतिक जगत मे ही लिये है। (नैचुरलिज्म, उक्त सभी अर्थो मे)
नैसर्गिकी दशा—स्त्री०[स० व्यस्त पद] फलित ज्योतिष मे ग्रहों की एक प्रकार की दशा।
नैसना†—स० [स० नाशन]नष्ट करना।
नैसा†—वि०[स० अनिष्ट] [स्त्री० नैसी] अनैसा। बुरा। खराब।
नैसुक†—वि०=नेसुक (थोडा)।
नैहर—पु०[स० ज्ञाति, प्रा० णाति, णाई=पिता+हिं० घर] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पिता का घर। माँ-बाप का घर। पीहर। मायका। 'ससुराल' का विपर्याय।
नोआ†—पु०[हिं० नोवना][स्त्री० अल्पा० नोइनी, नोई]दूध दूहते समय गाय के पिछले पैरो मे बाँधी जानेवाली रस्सी। बधी।
नोइनी, नोई†—स्त्री० हिं० 'नोआ' का स्त्री० रूप।
नोक—स्त्री० [फा०] [वि० नुकीला] १ किसी कडी चीज का वह सिरा जो बराबर पतला होता हुआ इतना सूक्ष्म हो गया हो कि सहज मे दूसरी चीज के तल मे गड या धँस सके। चाकू की

तरह का अगला सिरा। अनी। जैसे—छुरी, पेंसिल या सूई की नोक।

मुहा०—नोक दुम भागना=(क) बहुत तेजी से सीधे भागना। (ख) बेतहाशा भागना।

२ किसी चीज का आगेवाला वह सिरा जो शेष अशों की तुलना मे पतला हो। जैसे— पानी मे निकली हुई जमीन की नोक। ३ कोण बनानेवाली दो रेखाओं के मिलने का स्थान या बिंदु। जैसे—चबूतरे या दीवार की नोक।

मुहा०—नोक बनाना=(क) ऐसा रूप देना कि सुन्दर और सुडौल जान पड़े। (ख) बनाव-सिंगार करना।

४ मान-मर्यादा। इज्जत। प्रतिष्ठा। ५ ऐसी टेक या प्रतिज्ञा जिसका निर्वाह या पालन आवश्यक समझा जाता हो। आन। जैसे—चलिए, किसी तरह आपकी नोक तो रह गई।

मुहा०—नोक की लेना=बहुत बढ-बढकर बातें बघारना। शेखी हाँकना। उदा०—फकीर होके न ले नोक की अमीरो से। ये तुझको करती है ऐ जान आन-बान खराब। —जान-साहब।

नोक-झोक—स्त्री०[फा० नोक+हिं० झोक]१ बनाव-सिंगार। सजावट। २ ठाठ-बाट। शान। जैसे—उनका हर काम नोक-झोक से होता है। ३ तपाक। तेज। दर्प। जैसे—उस दिन तो वह बहुत नोक-झोक से बाते करते थे। ४ खटकने या चुभनेवाली व्यग्यपूर्ण बात। ताना। ५ आपस मे होनेवाली ऐसी कहा-सुनी या वाद-विवाद जिसमे कटुता की मात्रा कम और आक्षेप तथा व्यग्य की मात्रा अधिक हो। जैसे—आज-कल उन लोगों मे खूब नोक-झोक चल रही है।

क्रि० प्र०—चलना।

नोक-दम—अव्य० [हिं० नोक+फा० दम] ठीक सामने की ओर। बिल्कुल सीधे। जैसे—नोक-दम भागना।

नोकदार—वि०[फा०]१ जिसमे नोक हो। नोकवाला। २ मन मे चुभने या भला लगनेवाला। ३ तडक-भडकवाला। सजीला।

नोकना—अ०[हिं० नोक] अनुराग, लोभ आदि के कारण आगे की ओर प्रवृत्त होना या बढना। उदा०—रीझि रहे उत हरि इति राधा, अरस-परस दोउ नोकत।—सूर।

नोक-पलक—स्त्री०[हिं० नोक+पलक]१ चेहरे की गठन या बनावट। २ बनावट या रचना के विचार से किसी चीज के भिन्न-भिन्न अग या अवयव। जैसे—यह जूता नोक पलक से ठीक है। उदा०—इस सस्करण मे मैंने 'मधुशाला' की नोक-पलक सुधार दी है।—बच्चन। ३ पहनावे आदि के विचार से व्यक्ति का रूप-रग। (व्यग्य) जैसे—वकील साहब नोक-पलक से दुरुस्त थे।

नोक-पान—पु०[हिं०] १ पान के आकार का वह चमडा जो जूते की नोक और ऐंडी पर लगा रहता है। २. देशी जूतो की बनावट मे काट-छाँट, सुन्दरता या मजबूती।

नोका-झोकी—स्त्री०=नोक-झोक।

नोकीला—वि०=नुकीला।

नोखा†—वि०[स्त्री० नोखी]=अनोखा।

नोच—स्त्री० [हिं० नोचना] १ नोचने की क्रिया या भाव। २ झपटकर जबरदस्ती छीन लेने या छीनकर भागने की क्रिया या भाव।

पद—नोच-खसोट। (देखें)

नोच-खसोट—स्त्री०[हिं० नोचना+अनु० खसोटना] १ दो जीवों का परस्पर लडते समय अपने-अपने दाँतों, नाखूनों आदि से दूसरे के अगो मे से बाल, मास आदि नोचना। २ दे० 'छीना-झपटी'।

नोचना—स०[स० लुचन ?]१ किसी जमी या लगी हुई वस्तु को निर्दयता-पूर्वक झटके से खींचकर अलग करना। जैसे—पेड के पत्ते या सिर के बाल नोचना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

२ नाखून, दाँत, पजे आदि से पकडकर झटके से कुछ अग निकालना। जैसे—गीदड ने बच्चे को जगह-जगह से नोच डाला था। ३ किसी के हाथ मे पकडी हुई वस्तु बलात् उससे छीनने का प्रयत्न करना।

सयो० क्रि०—लेना।

४ किसी को किसी काम या बात के लिए इस प्रकार बार-बार तग या परेशान करना कि ऐसा जान पडे कि उसका अग नोचा जा रहा है। जैसे—(क) नालायक लडके रुपए-पैसे के लिए माँ-बाप को नोचते रहते है। (ख) दिवालिए को तगादा करनेवाले नोचते हैं।

पु० वह छोटी चिमटी जिससे शरीर के फालतू बाल आदि खींचकर उखाडे जाते है। मोचना।

नोचा-नोची†—स्त्री०=नोच-खसोट।

नोचू—वि० [हिं० नोचना]१ नोचनेवाला। २ छीना-झपटी करने-वाला। ३ किसी काम या बात के लिए बार-बार बहुत तग करनेवाला।

नोट—पु०[अ०]१ वह छोटा लेख जो किसी बात का ध्यान रखने-रखाने के लिए उसके सबध मे कहीं टाँक या लिख लिया गया हो। २ लिखी हुई सक्षिप्त चिट्ठी या परचा। ३. अभिप्राय, आशय, विचार आदि प्रकट करनेवाला छोटा लेख। टिप्पणी। ४. राज्य या शासन की ओर से निकाला या प्रचलित किया हुआ कागज का वह टुकडा जिस पर धन की सख्या या अकित मूल्य लिखा रहता है, और यह भी लिखा रहता है कि इसे लानेवाले को राज्य या शासन इतना धन देगा। इसका प्रचलन सिक्को की ही तरह और उनके स्थान पर होता है। जैसे—एक रुपये, पाँच रुपये, दस रुपये और सौ रुपये के नोट आज-कल चलते है।

नोट-बुक—स्त्री०[अ०] वह छोटी कापी अथवा बही जिस पर कुछ बातें स्मरण रखने के लिए लिखी जाती हैं।

नोटिस—स्त्री०[अ०] १ विज्ञप्ति। सूचना। २. इश्तहार। विज्ञापन।

नोदन—पु०[स० √नुद्(प्रेरणा)+णिच्+ल्युट्—अन]१ पशुओं को चलाने या हाँकने की क्रिया या भाव। २ वह कोडा या छडी जिससे पशु चलाये या हाँके जाते हैं। औंगी। पैना। प्रतोदन। ३. खडन।

नोदना—स्त्री०[स०√नुद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] प्रेरणा।

नोदयिता (तृ)—वि०[स०√ नुद्+णिच्+तृच्] प्रेरित करने या आगे बढानेवाला।

नोन—पु०[स० लवण, हिं० लोन] नमक।

नोनचा—पु०[हिं० नोन+फा० अचार]१ नमकीन अचार। २ आम की फाँको का वह अचार जो केवल नमक डालकर बनाया गया हो। ३. नमक मिली हुई बादाम की गिरी। ४ ऐसी भूमि जिसमे नोना अधिक हो।

नोनछी—स्त्री०[हिं० नोन+छार]लोनी मिट्टी।
नोनहरा—पु०[हिं० नोन] पैसा। (गवर्वों की बोली)
नोनहरामी†—वि०=नमक-हराम।
नोना†—वि० [हिं० नोन=नमक] [स्त्री० नोनी, भाव० नोनाई]१. खार या नमक के स्वादवाला। खारा। जैसे—इस कूएँ का पानी नोना है। नमकीन। २ अच्छा। बढ़िया। ४ सलोना। सुन्दर।
पु०१ वह खारा या नमकीन अश या क्षार जो मिट्टी की पुरानी दीवारों या सीडवाली जमीन मे प्राकृतिक रूप से निकलकर ऊपर आता है।
क्रि० प्र०—लगना।
२ नोनी मिट्टी। ३ शरीफा। सीताफल। ४. प्राय. नावो आदि के पेंदे मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा। उधई।
†स० दे० 'नोवना'।
नोना चमारी—स्त्री०[हिं०] एक प्रसिद्ध कल्पित जादूगरनी जिसकी दोहाई मत्रो मे रहती है।
नोनिया—पु०[हिं० नोना] लोनी मिट्टी से नमक निकालने का काम करनेवाली एक जाति।
स्त्री० अमलोनी या लोनिया नामक पौधा जिसके पत्तो का साग बनता है।
नोनी†—स्त्री०[स० लवण] १. खारी या लोनी मिट्टी। नोना। २. अमलोनी या लोनिया नाम का पौधा।
वि० हिं० 'नोना' का स्त्री०।
नोबुल पुरस्कार—पु० [नोबुल (व्यक्ति का नाम)+स० पुरस्कार] एक जगत् प्रसिद्ध बहुत बडा और सम्मानास्पद पुरस्कार जो प्रति वर्ष नीचे लिखे पाँच विषयो मे काम करनेवाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियो को दिया जाता है—भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, साहित्य और शाति-रक्षा।
विशेष—यह पुरस्कार एक लाख रुपयो से कुछ ऊपर का होता है, और स्वीडन के सुप्रसिद्ध व्यापारी, धनकुबेर और दानशील एल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबुल (सन् १८३३-१८९६ई०) द्वारा स्थापित एक बहुत बडे दान-खाते से दिया जाता है।
नोर'—वि०[स० नवल] नवीन। नया।
नोल—वि०=नोर (नवल)।
स्त्री० [देश०] चिडिया की चोच।
नोवना—स० [स० नद्ध, हिं० नढना,नहना] (गाय के पिछले पैरो मे)नोआ बाँधना। बधी बाँधना।
नोहर†—वि०[स० नोपलभ्य, प्रा० नोल्लह, या मनोहर] १ जल्दी न मिलनेवाला। अलभ्य। दुर्लभ। २ अद्भुत। अनोखा।
नौं-धरई†—स्त्री०=नाम-धराई।
नौं-धराई†—स्त्री०=नाम-धराई।
नौं-धरी†—स्त्री०=नाम-धराई।
नौ—वि०[स० नव] जो गिनती मे आठ मे एक अधिक हो। जैसे—नौखडा महल।
मुहा०—नौ दो ग्यारह होना=चुपचाप या धीरे से खिसक जाना या चल देना। निकल या हट जाना।
वि०[स० नव (नया) से फा०] हाल का। नया। (प्राय यौगिक पदो के आरंभ मे प्रयुक्त) जैसे—नौ-जवान, नौ-सिखुआ।
पु० [स०√नुद+डौ] १. समुद्र मे चलनेवाला जहाज। जल-यान। २. उक्त पर चलनेवाला आदमी। ३. नाविक। मल्लाह।
स्त्री०[अ० नौअ]१ ऐसी जाति या वर्ग जिसमे एक ही तरह की चीजें या जीव सम्मिलित हो। २. तरह। प्रकार।
नौकड़ा†—वि०[हिं० नौ=नव या नया+कडा (प्रत्य०)] [स्त्री० नौकडी] १ अभी हाल का। ताजा। २ नव-युवक। नौ-जवान।
पद—नौकड़ा वीर=हनुमान जी।
पु०[हिं० नौ+कौडी] एक प्रकार का जूआ जो तीन आदमी हाथ मे तीन-तीन कौडियाँ लेकर खेलते है।
नौकर—पु०[तु०] [स्त्री० नौकरानी, भाव० नौकरी] १. वह जो घर-गृहस्थी के दौड-धूप के छोटे-मोटे काम या सेवाएँ करने के लिए वेतन देकर नियुक्त किया जाता है। भृत्य। सेवक। जैसे—नौकर भेजकर बाजार से सब चीजें मँगा लो। २ वह जो लिखा-पढी, व्यवस्था आदि के कामो मे सहायता देने या उन्हे सपन्न करने के लिए वेतन पर नियुक्त किया जाता या होता है। कर्मचारी। (सर्वेन्ट) जैसे—अब कार्यालय मे कई नए लिपिक नौकर रखे गए है।
क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।
नौकरशाह—पु०[तु०+फा०] वह कर्मचारी जिसके हाथ मे पूर्ण शासन की सत्ता हो। जो नौकर होते हुए भी अपने को मालिक या शाह समझता हो।
नौकरशाही—स्त्री० [तु० नौकर+फा० शाही=शासन]१ शासन द्वारा नियुक्त कर्मचारी-वृन्द। २. एक आधुनिक शासन-प्रणाली जिसमे यह माना जाता है कि देश का वास्तविक शासन राजा या निर्वाचित प्रतिनिधियो के द्वारा नही हो रहा है, बल्कि उनके सहायको तथा अन्य बडे-बडे सरकारी कर्मचारियो के द्वारा हो रहा है। (ब्यूरोक्रेसी)
नौकराना—पु०[तु० नौकर+हिं० आना (प्रत्य०)] वह धन जो नौकर को उसके वेतन के अतिरिक्त और किसी रूप मे दिया जाता या मिलता हो। जैसे—बाजार से सौदा लाने की दस्तूरी, विशिष्ट अवसरो पर दिया जानेवाला पुरस्कार।
नौकरानी—स्त्री०[तु० नौकर+हिं० आनी (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी के काम करनेवाली दासी।
नौकरी—स्त्री० [तु० नौकर+हिं० ई० (प्रत्य०)] १. नौकर बनकर किसी की सेवा करने अथवा उसके निर्देशानुसार काम करते रहने की अवस्था या भाव। २ वह पद या काम जिसके लिए वेतन मिलता हो। ३ किसी के कृपा-पात्र बने रहने के लिए किये जानेवाले कार्य।
मुहा०—(किसी को) नौकरी बजाना=(क) किसी की तरह-तरह की सेवाएँ करना। (ख) आदेश पालन करना। (किसी काम या बात के लिए) नौकरी लिखाना= किसी प्रकार की सेवा या भार अपने ऊपर लेना। जैसे—हमने तुम्हारे सब काम करने की नौकरी नही लिखाई है।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।
नौकरी-पेशा—पु०[हिं० नौकरी+पेशा] वह जो नौकरी करके जीविका चलाता हो।
नौ-कर्ण—पु०[स० प० त०] जहाज या नाव की पतवार।

नौ-कर्णी—स्त्री० [स० व० स०, ङीप्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।
नौ-कर्म (र्मन्)—पु० [स० प० त०] जहाज या नाव चलाने का पेशा या वृत्ति। मल्लाही।
नौका—स्त्री० [स० नौ+कन्+टाप्] १. नाव। २ जहाज।
नौकाधिकरण—पु० =नावाधिकरण।
नौका-विहार—पु० [स० तृ० त०] नौका पर बैठकर नदी आदि की की जानेवाली सैर।
नौ-क्रम—पु० [म० प० त०] नावो का पुल।
नौ-खडा—वि० [हिं० नौ+सं० खड] [स्त्री० नौखडी] नौ खडो या मजिलोवाला (मकान)।
नौगमन—पु० दे० 'नौतरण'।
नौगरही—स्त्री०=नौग्रही।
नौगरी—स्त्री०=नौग्रही।
नौग्रही—स्त्री० [स० नवग्रह] १ एक प्रकार का हार जिसमे नौग्रहो की शाति के लिए नौ प्रकार के रत्न या नग जडे रहते हैं। २ उक्त प्रकार का कगन।
नौचर—वि० [स० नौ√चर् (गति)+ट] जहाज पर जानेवाला। पु० मल्लाह। माँझी।
नौचा—पु० [फा० नौच] [स्त्री० नौची] नवयुवक।
नौची—स्त्री० [फा०] १. नवयुवती। २ पेशा कमाने के उद्देश्य से कुटनी या वेश्या द्वारा पाली हुई लडकी या युवती स्त्री।
नौज—अव्य० [म० नव द्य, प्रा० नवज्ज] १ ईश्वर न करे कि कभी ऐसा हो। (शुभाकाक्षा के रूप मे) २ न हो तो न सही। (उपेक्षा सूचक) ३ ऐसा कभी न हो। (कामना-सूचक)
नौ-जवान—वि० [फा०] [भाव० नौजवानी] १ जिसमे युवावस्था का आरभ हुआ हो। २ जवान। युवक।
नौजवानी—स्त्री० [फा०] नौजवान होने की अवस्था या भाव। युवावस्था।
नौजा—पु० [अ० लौज] १ बादाम। २ चिलगोजा। ३ गले के अदर का कौआ या घटी।
नौजी—स्त्री० [फा० लौज ?] लीची।
नौजीवक—पु० =नौजीविक।
नौ-जीविक—पु० [स० व० स०] मल्लाह। माँझी।
नौटका—वि० [हिं० नौ+टक (तौल)] [स्त्री० नौटकी] १ तौल मे बहुत ही हलका। २ बहुत ही कोमल तथा सुकुमार अगोवाला।
नौटंकी—स्त्री० [हिं० नौटका (तौल मे बहुत हलका) स्त्री०] साधारण जनता मे अभिनीत होनेवाला एक प्रकार का लोक-नाट्य जिसका कथानक प्राय. शृगार और वीर रस से युक्त होता है। और जिसके सवाद प्राय प्रश्नोत्तरात्मक तथा पद्य प्रधान होते है। इसमे सगीत की प्रधानता होती है और दुक्कड या नगाडे पर विशेष रूप से चौबोले गाये जाते हैं।
नौड़ी†—स्त्री०=लौंडी।
नौढ़ा*—स्त्री०=नवोढा।
नौतन†—वि०=नूतन।
नौतना—स०=न्योतना (न्योता या निमत्रण देना)।
नौतनी—स्त्री० [हिं० न्योतना] वर-वधू को उनके सबधियो द्वारा अपने-अपने घर बुलाकर उन्हे भोजन कराने तथा धन, वस्त्र आदि देने की एक प्रथा।
नौतम—वि० [स० नवतम] १. अत्यत नवीन। बिलकुल नया। २ हाल का। ताजा।
†पु० [हिं० नवना] नम्रता।
नौ-तरण—पु० [म० तृ० त०] [वि० नौतरणीय, भू० कृ० नवतरित] जल-मार्ग से यात्रा करना।
नौ-तरणीय—वि० [स० तृ० त०] (नदी, समुद्र) जिसमे नौका, जहाज आदि चल सकते हो। (नैविगेबुल)
नौ-तल—पु० [स० प० त०] वह लबा शहतीर या लोहे की पटरी जो नाव या जहाज के सबसे नीचे रहती है और जिस पर उसका सारा ढाँचा खडा होता है। (कील)
नौता†—वि० [स० नव या नूतन] हाल का। ताजा। नया।
*स्त्री० [स० नौ] नम्रता।
स्त्री०=नवत्ता (नवीनता)।
†पु० [?] जादूगर।
पु०=न्योता (निमत्रण)।
नौ-तेरही—स्त्री० [हिं० नौ+तेरह] १ पुरानी चाल की वह छोटी ईट जो नौ जौ चौडी और तेरह जौ लबी होती थी। ककई या लखौरी ईट। २ पासे से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ।
पु०=न्योतहरी (निमत्रित पुरुष)।
नौतोड़—वि० [हिं० नौ=नया+तोड़ना] नया तोडा हुआ। जो पहले-पहल जोता गया हो। जैसे—नौतोड जमीन।
नौदर†—पु० [हिं० नौ+दर=दाँत] वह बैल जिसके नौ दाँत हो।
नौदसी—स्त्री० [हिं० नौ+दस] महाजनी व्यवहार मे, ऋण चुकाने की वह रीति जिसमे हर नौ रुपए के बदले दस रुपए देने पडते है।
नौधा†—प० [हिं० नौ (नया)+पौधा] १. बीजो या पौधो मे निकलने-वाला नया कल्ला। २ वर्षारभ मे बोई जानेवाली नील की फसल। ३ नया बाग।
वि०=नवधा।
नौन*—पु० [स० लवण] नमक।
नौनगा—वि० [हिं० नौ+नग] जिसमे नौ नग या रत्न हो। जैसे—नौ-नगा हार।
पु० एक प्रकार का हार जिसमे नौ नग जडे रहते है।
नौना—अ० [स० नमक] १ नवना। झुकना। २ किसी के आगे नम्र या विनीत होना।
†पु०=नोना।
नौ-निहाल—पु० [फा०] १. नया पौधा। २ बालक। बच्चा।
वि० नया परतु होनहार शिशु।
नौनी†—स्त्री०=नवनीत (मक्खन)।
†स्त्री०=नोई।
नौ-नेता (तृ)—पु० [स० प० त०] जहाज की पतवार पकड़नेवाला। पतवरिया।

नौप्रभार—पु० [स० मध्य० स०] अधिक से अधिक भार का वह मान जो किसी जहाज पर लादा जा सकता हो। (टनेज)
विशेष—आज-कल जहाज की पात्रता या भार ढोने का सामर्थ्य पहले से नाप-जोखकर स्थिर कर लिया जाता है, और निश्चित हो जाता है कि इसमें इतने टन (१ टन=लगभग २७½ मन) से अधिक भार नहीं लदेगा।

नौ-बंधन—पु० [स० ष० त०] हिमालय का वह सर्वोच्च शृंग जिस पर मनु ने प्रलय के समय अपनी नाव बाँधी थी।

नौ-बढ़—वि० [हिं० नौ+बढ़ना] जो अभी हाल में आगे बढ़ा अर्थात् हीन से उच्च अवस्था में पहुँचा हो।

नौबत—स्त्री० [अ०] [वि० नौबती] १ किसी काम या बात की पारी। बारी। २. किसी अनिष्ट या अवाञ्छनीय घटना के घटित होने की पारी या स्थिति। जैसे—सँभलकर रहो, नहीं तो भूखों मरने (या मार खाने) की नौबत आवेगी।
क्रि० प्र०—आना।—पहुँचना।
३ दुर्गति। दुर्दशा। जैसे—(क) इसी लिए तो तुम्हारी यह नौबत हो रही है। (ख) सीधी तरह से रहो, नहीं तो कोई नौबत बाकी न रखूँगा। ४. नगाड़ा, शहनाई आदि मांगलिक बाजे जो मंदिरों, महलों आदि में नित्य कुछ नियमित अवसरों या समयों पर बजा करते हैं।
क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।
पद—नौबत-खाना। (दे०) नौबत बजाकर=डंके की चोट। खुले आम।
मुहा०—नौबत झड़ना=नियत समय पर नौबत या मांगलिक बाजे बजना। (किसी के यहाँ) नौबत बजना=(क) खूब आनंद-मंगल होना। (ख) प्रताप और वैभव की खूब वृद्धि होना। नौबत बजाना=ऐश्वर्य, प्रभुत्व या शान दिखलाना।

नौबत-खाना—पु० [अ० नौबत+फा० खान] द्वार या फाटक के ऊपर का वह स्थान जहाँ नौबत बजती है। नक्कार-खाना।

नौबती—वि० [अ०] १ बारी से होनेवाला। जैसे—नौबती बुखार। २ जिसके घटित होने की संभावना हो।
पु० १ नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २ महलों के फाटक पर का पहरेदार। ३ बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। कोतल घोड़ा। ४ बहुत बड़ा तंबू। शामियाना।

नौबतीदार—पु० [अ० नौबत+फा० दार] राजा-महाराजाओं के महलों और शामियानों का पहरेदार।

नौबलाध्यक्ष—पु०=नौसेनाध्यक्ष।

नौबहार—स्त्री० [फा०] वसंत ऋतु।

नौमासा—वि० [स० नवमास] नौ महीने का।
पुं० १ स्त्री के गर्भ का नवाँ महीना। २. उक्त अवसर पर होनेवाली रसम या संस्कार।

नौमि*—अव्य० [स० नमामि का अपभ्रंश] मैं प्रणाम करता हूँ।
स्त्री० =नवमी या नौमी (तिथि)।

नौरंग—पु० [स० नव-रंग] एक प्रकार की चिड़िया।
पु० औरंग (औरंगजेब बादशाह) का अपभ्रष्ट रूप।

नौरंगा—पु० [हिं नौरंग] वह स्थान जहाँ नये पौधे उगाये, रोपे या लगाये जाते हैं। केटबारी। (नर्सरी)

नौरंगी†—स्त्री०=नारंगी।

नौ-रतन—पु० [स० नव-रत्न] १. नौ प्रकार के रत्नों का समूह। २ नौ-नगा नाम का गले में पहनने का गहना। ३ एक प्रकार की बढ़िया मीठी चटनी जिसमें नौ तरह की चीजें पड़ती हैं।

नौरता—पु० [स० नवरात्र] १ नवरात्र। २. बुंदेलखंड, व्रज आदि में मनाया जानेवाला एक प्रकार का त्योहार जिसमें कुमारी लड़कियाँ गौरी या दुर्गा की पूजा करती हैं।

नौरमा—पु० [देश०] एक तरह का साग।

नौरस—वि० [स० नव=नया+रस] १ (फलों, फूलों आदि के संबंध में) जिसमें नया रस आया हो अर्थात् हाल का। ताजा। २ नई उमर का। नौ-जवान। युवा।

नौरातर—पु०=नवरात्र।

नौरूप—पु० [हिं० नौ+रोपना] नील की फसल की पहली कटाई।

नौरोज—पु० [फा० नौरोज] १. नया दिन। २ साल का नया दिन विशेषत. ईरानियों में फर्वरदीन मास का पहला दिन।
विशेष—ईरानी लोग इस दिन बहुत बड़ा उत्सव मनाते हैं।

नौल—पु० [अ० नॅवेल] जहाज पर माल लादने का भाड़ा।
†वि०=नवल।

नौ-लखा—वि० [स्त्री० नौ-लखी] १. जिसका मूल्य नौ-लाख रुपयों के बराबर हो। २. जड़ाऊ और बहुमूल्य।

नौलखी—स्त्री० [?] करघे में ताने को दबाने के लिए उस पर रखी जाने-वाली वह लकड़ी जिसमें भारी पत्थर बँधे रहते हैं। (जुलाहे)

नौला†—पु० =नेवला।

नौलासी—वि० [स० नवल] कोमल। नरम। मुलायम।

नौलेवा—पु० [हिं० नौ=नया+लेवा=मिट्टी] वह मिट्टी जो बाढ़ आने पर नदी के किनारों पर जमा हो जाती है।

नौवाब—पु० [भाव० नौवाबी]=नवाब।

नौ-विज्ञान—पु० [स० ष० त०] वह विज्ञान जिसमें समुद्र में जहाज आदि चलाने की कला या विद्या का विवेचन होता है। (नॉटिकल सायन्स)

नौशा—पु० [फा० नौश] [स्त्री० नौशी] दूल्हा। वर।

नौशी—स्त्री० [फा०] नववधू। दुलहिन।

नौशेरवाँ—पु० [फा०] ईरान देश का एक सम्राट जो अपनी न्यायप्रियता के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। (५३१-५७९ ई०)

नौसत—वि० [हिं० नौ+सात] सोलह।
पु० सोलहो शृंगार। उदा०—नौसत साजे चली गोपिका गिरवर पूजा हेत।—सूर।

नौ-सफर—वि० [फा०+अ०] जो पहले-पहल सफर या यात्रा कर रहा हो।

नौसर—वि० [हिं० नौ+सर=लड़ी] नौ-लड़ों या लड़ियोंवाला। उदा०—यों तो म्हाँरे नौसर हार।—मीराँ।
पु० [हिं०नौ+सर=बाजी] १ ताश के कुछ विशिष्ट खेलों में ऐसे पत्ते या सर जिसके आने पर नौ-गुना दाँव दिया या लिया जाता है। २ बहुत बड़ी चालबाजी, धूर्तता और धोखेबाजी।

नौसरा—पु० [हिं० नौ+सर] नौ लड़ियोंवाला बड़ा हार।

नौसरिया—वि० [हि० नौसर] १ बहुत बडा धूर्त और धोखेबाज। २ जालसाज। जालिया।

नौसादर—पु० [फा० नौशादर] एक प्रकार का तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक, जिसका उपयोग औषधों मे होता है।

नौसार—स्त्री० [हि० नोन+सार, स० लवणशाला] वह स्थान जहाँ नोनी मिट्टी से नमक बनाया जाता हो।

नौसिख†—वि०=नौसिखिया।

नौसिखिया—वि० [स० नवशिक्षित प्रा० नवसिक्खिअ] जिसने अभी हाल मे कोई काम सीखा हो और फलत जो अभी तक उस काम मे कुशल या निपुण न हुआ हो।

नौसिखुआ†—वि०=नौसिखिया।

नौ-सेना—स्त्री० [मध्य० स०] वह सेना जो जहाजो पर रहती और समुद्र मे रहकर शत्रुओ से युद्ध करती है। (नैवी)

नौसेनाध्यक्ष—पु० [स० नौसेना-अध्यक्ष, ष०त०] नौ सेना का सबसे बडा अधिकारी। (एडमिरल)

नौसेनापति—पु०=नौसेनाध्यक्ष।

नौ-सेवा—स्त्री० [स० मध्य० स०] १. नौ सेना मे की जानेवाली सेवा या नौकरी। २ नौसेना मे काम करनेवालो का समूह। (नॉवल सर्विस)

नौसैनिक—वि० [स० नौसेना+ठक—इक्] नौसेना सबधी।

नौहँड़—पु० [स० नव=नया+हि० हाँडी] मिट्टी की नई हाँडी। कोरी हँडिया।

नौहँडा—पु० [स० नव+भाँड] पितृपक्ष जिसमे मिट्टी के पुराने बरतन फेककर उनके स्थान पर नये बरतन रखे जाते है।

नौहर—स्त्री० [?] अँगडाई।

न्यक—पु० [स०] रथ का एक अग।

न्यंकु—वि० [स०] बहुत तेज चलने या दौडनेवाला।

पु० १ एक प्रकार का बारहसिंघा या हिरन। २ वह शिष्य जो गुरु के पास रहकर विद्यार्जन करता हो।

न्यंकु-भूरुह—पु० [स० उपमि० स०] श्योनाक नामक वृक्ष। सोनापाठा।

न्यंकुसारिणी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वैदिक छद।

न्यंग—पु० [स० नि√अज् (स्पष्ट होना)+घञ्] १ चिह्न। निशान। २ जाति। प्रकार।

न्यचन—पु० [स० नि०+अचन, प्रा० स०] १. नीचे की ओर मुडे हुए होने की अवस्था या भाव। २ नीचे फेकना। ३ छिपने का स्थान। ४ विवर। बिल।

न्यंचनी—स्त्री० [स० न्यचन+ङीप्] गोद।

न्यचित—भू० कृ० [स० नि√अच्+णिच्+क्त] १ नीचे की ओर झुकाया हुआ। २ नीचे फेंका हुआ।

न्यजलिका—स्त्री० [स० नि-अजलिका, प्रा० स०] नीचे झुकाई हुई अजली।

न्यक्करण—पु० [स० न्यक्√कृ (करना)+ल्युट्-अन] (किसी को) नीचा दिखाना।

न्यक्कार—पु० [स० न्यक्√कृ+घञ्] तिरस्कार।

न्यक्ष—वि० [स० नि-अक्षि, ब० स०, षच्] १ अधम। निकृष्ट। २ समग्र।

पु० १ भैसा। २ परशुराम।

न्यग्भाव—पु० [स० न्यक्-भाव, ष० त०] [भू० कृ० न्यग्भावित] नीची अवस्था मे लाये जाने अथवा तिरस्कृत किये जाने का भाव।

न्यग्रोध—पु० [स० न्यक्√रुध् (रोकना)+अच्] १. बट का पेड। बरगद। २ शमी वृक्ष। ३. मोहनौषधि। ४ मूसाकानी। मूषिकर्णी। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ बाँह। ८ लबाई की एक नाप जो उतने विस्तार की होती है जितना विस्तार पूरी तरह से दोनो हाथ फैलाने पर एक हाथ की उँगलियो के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियो के सिरे तक होता है।

न्यग्रोध-परिमंडल—पु० [स० ब० स०] वह जिसकी लबाई-चौडाई एक व्याम या पुरसा हो। (मत्स्यपुराण)

न्यग्रोध-परिमंडला—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] कठोर स्तनो, विशाल नितबो और क्षीण कटिवाली फलत सुदरी स्त्री। (स्त्रियो का एक प्रकार या भेद)

न्यग्रोधा—स्त्री० [स० न्यग्रोध+टाप्]=न्यग्रोधी।

न्यग्रोधादिगण—पु० [स० न्यग्रोध-आदि, ब० स०, न्यग्रोधादि-गण, ष० त०] वैद्यक मे वृक्षो का एक गण जिसके अन्तर्गत बरगद, पीपल, गूलर आदि कई वृक्ष सम्मिलित है।

न्यग्रोधिक—वि० [स० न्यग्रोध+ठन्—इक] (स्थान) जहाँ बहुत से बट-वृक्ष हो।

न्यग्रोधिका—स्त्री० [स० न्यग्रोधी+कन्—टाप्, ह्रस्व] विषपर्णी।

न्यग्रोधी—स्त्री० [स० न्यग्रोध+ङीप्] विषपर्णी।

न्यच्छ—पु० [स० नि-अच्छ, प्रा० स०] एक प्रकार का चर्मरोग जिसमे शरीर पर सफेद रग के चकत्ते पड जाते है।

न्यय—पु० [स० नि√इ (गति)+अच्] क्षय। नाश।

न्यर्बुद—वि० [स० नि+अर्बुद, प्रा० स०] दस अरब।

न्यर्बुदि—पु० [स० नि-अर्बुदि, ब० स०] एक रुद्र का नाम।

न्यसन—पु० [स० नि√अस् (फेंकना)+ल्युट्—अन] १ किसी के पास कोई चीज जमा करना। २ अपने अधिकार से जाने देना। ३ उल्लेख करना।

न्यस्त—भू० कृ० [स० नि√अस्+क्त] १ किसी स्थान पर विशेषत नीचे धरा या रखा हुआ। २ जमाया, बैठाया या स्थापित किया हुआ। ३ चुनकर रखा या सजाया हुआ। ४ चलाया या फेंका हुआ। (अस्त्र) ५ छोडा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६ न्यास के रूप मे या अमानत रखा हुआ। जमा किया हुआ। ७. (धन) जो किसी विशिष्ट कार्य की सिद्धि के लिए अलग किया या निकाला गया हो। ८ छिपा या दबा हुआ। निहित।

न्यस्तलिंग—पु० दे० 'लिंग' (न्याय-शास्त्रवाला विवेचन)।

न्यस्त-शस्त्र—वि० [स० ब० स०] १. जिसने डर या हारकर हथियार रख दिये हो। २ जिसने हथियार न चलाने की प्रतिज्ञा कर ली हो। पु० पितृ लोक।

न्यस्य—वि० [स० नि√अस्+यत् बा०] १. न्यास के रूप मे रखे जाने के योग्य। २ चलाये या छोडे जाने के योग्य। ३. छिपा या दबाकर रखे जाने के योग्य।

न्यांकव—वि० [स० न्यंकु+अण्] रकु या बारहसिंगे से सबध रखने या उससे होनेवाला।

पु० रुरु या बारहसिंघे की खाल।
न्याइ† —पु० न्याय।
† अव्य०=नाईं (तरह)।
न्याउ† —पु०=न्याय।
न्याग्य—पु० [स० नि√अक् (टेढ़ी चाल)+ण्यत्] भूना हुआ चावल। फरुही।
न्यात—पु० [हिं० न्याति] जाति के लोग। नातेदार। संबंधी। उदा० —न्यात कहै कुल नासी रे।—मीराँ।
न्याति* —स्त्री० [स० ज्ञाति, प्रा० णाति] जाति।
न्याद—पु० [सं० नि√अद् (खाना)+ण] १. भक्षण करना। खाना। २ आहार। भोजन।
न्यान—स्त्री० [?] लद्दाख, सिक्किम, तिब्बत आदि मे होनेवाली भूरे रग की एक तरह की भेड।
न्याना† —वि० [स० अज्ञान] १ जो कुछ न जानता हो। अनजान। निर्बोध। २. छोटी उमर का। अल्प-वयस्क। (पश्चिम)
न्याय—पु० [स० नि√इ (गति)+घञ्] १. कोई काम ठीक तरह से पूरा करने का ढग, नियम या योजना। २ उचित, उपयुक्त या ठीक होने की अवस्था या भाव। ३ ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे नैतिक दृष्टि से किसी प्रकार का अनौचित्य, पक्षपात या बेईमानी न हो। ४ प्रमाणो द्वारा विषयों का किया जानेवाला परीक्षण। ५. विवाद आदि के प्रसगो मे, आधिकारिक अथवा प्रामाणिक रूप से निष्पक्ष होकर यह निर्णय या निश्चय करना कि कौन-सा पक्ष उचित और कौन-सा अनुचित है, अथवा भविष्य मे कार्य का निर्वाह किस प्रकार होना चाहिए और किसे कौन-सी वस्तु अथवा क्या दड मिलना चाहिए। ६. उक्त के सबंध मे आधिकारिक रूप से होनेवाला निर्णय या निश्चय। ७ व्याकरण मे, ऐसा नियम या सिद्धात जिसका पालन सब जगह समान रूप से होता हो। ८ तुल्यता। समानता। ९ प्राय. कहावत या लोकोक्ति के रूप मे प्रचलित वह दृष्टात वाक्य जो किसी ऐसे तथ्य का सूचक हो जो प्रस्तुत घटना या प्रसग मे ठीक बैठता या लगता हो। जैसे—आपकी यह बात तो देहली-दीपक न्याय से दोनो तरफ ठीक बैठती है।
विशेष—हमारे यहाँ सस्कृत मे इस प्रकार के बहुत से न्याय या दृष्टात-वाक्य प्रचलित थे जिनमे से कुछ का अब भी उपयुक्त अवसरो पर प्रयोग होता है। जैसे—अध-गज न्याय, अरण्य-रोदन न्याय, कपित्थ न्याय, घुणाक्षर न्याय, पिष्ट पेषण न्याय, बीजाकुर न्याय आदि। इस प्रकार के न्याय या तो कुछ प्रसिद्ध तथ्यो पर आश्रित होते हैं या प्रचलित लोक-कथाओ पर, और सस्कृत साहित्य मे प्राय प्रयुक्त होते हुए दिखाई देते है। इनमे से कुछ प्रसिद्ध न्यायो के आशय यथा-स्थान देखे जा सकते है।
१० हमारे यहाँ के छ मुख्य आस्तिक दर्शनो मे से एक प्रसिद्ध दर्शन-या शास्त्र जिसके कर्ता गौतम मुनि है और जिसमे इस बात का विवेचन है कि किस प्रकार किसी पदार्थ या विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके सब अगो या पक्षो के विकारो का निरूपण या योजना होनी चाहिए।
विशेष—उक्त दर्शन मे, तर्क-वितर्क के नियमो के निरूपण के सिवा आत्मा, इद्रिय, पुनर्जन्म, सुख-दु ख आदि के स्वरूपो का भी विवेचन है, और कहा जाता है कि इन बातो का यथार्थ ज्ञान होने पर ही मनुष्य को अपवर्ग या मोक्ष मिल सकता है।
११. तर्कशास्त्र। १२. तर्कशास्त्र मे, वह सम्यक् तर्क जो प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, अनय और निगमन नामक पाँचो अवयवो मे युक्त हो। १३ विष्णु का एक नाम।
* वि० १. उचित। ठीक। वाजिब। २ तुल्य। समान।
अव्य० की तरह। के समान।
न्यायकर्ता(र्तृ)—वि० [स० ष० त०] (विवाद आदि का) न्याय करनेवाला। पु० न्यायालय का वह अधिकारी जो विवादो का न्याय या फैसला करता है।
न्यायज्ञ—पु० [स० न्याय√ज्ञा (जानना)+क] न्याय-शास्त्र का ज्ञाता।
न्यायतः (तस्)—अव्य० [स० न्याय+तस्] न्याय की दृष्टि या विचार से। अर्थात् उचित और सगत रूप से। न्यायपूर्वक।
न्याय-पथ—पु० [स० ष० त०] न्याय का मार्ग।
न्याय-पर—वि० [स० ब० स०] [भाव० न्यायपरता] १. न्यायपूर्ण आचरण करनेवाला। २. न्याय के अनुसार ठीक।
न्याय-परता—स्त्री० [स० न्यायपर+तल्+टाप्] न्याय पर या न्याय-परायण होने की अवस्था या भाव। न्याय-परायणता।
न्याय-परायण—वि० [स० स० त०] [भाव० न्याय-परायणता] न्याय-पूर्ण आचरण करनेवाला।
न्याय-प्रिय—वि० [स० ब० स०] [भाव० न्याय-प्रियता] जिसे न्याय प्रिय हो। न्यायपूर्ण पक्ष का समर्थन करनेवाला।
न्याय-मूर्ति—पु० [स० ष० त०] राज्य के मुख्य न्यायालय के न्यायज्ञ की उपाधि। (जस्टिस)
न्यायवान् (वत्)—पु० [स० न्याय+मतुप्, वत्व] न्यायपूर्ण आचरण करनेवाला।
न्याय-शास्त्र—पु० [स० कर्म० स०] भारतीय आर्यों के दर्शनो मे से एक दर्शन या शास्त्र जिसमे किसी तथ्य या बात का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके विवेचन के नियम और सिद्धात निरूपित हैं। (इसके कर्ता गौतम ऋषि है)
न्याय-शुल्क—पुं० [स० मध्य० स०] वह शुल्क जो न्यायालय मे कोई प्रार्थना-पत्र उपस्थित करने के समय अकपत्र (स्टाम्प) के रूप मे देना पड़ता है। (कोर्ट फी)
न्याय-संगत—वि० [स० तृ० त०] १. (आचरण) जो न्याय की दृष्टि मे ठीक हो। २ (निर्णय) जिसमे पूरा पूरा न्याय हो। (जस्ट)
न्याय-सभा—स्त्री० [ष० त०] अदालत। वह सभा जहाँ न्याय होता हो अर्थात् कचहरी।
न्याय-सभ्य—पु० [स०मध्य० स०] फौजदारी के कुछ खास-खास मुकदमो का विचार करते समय दौरा जज की सहायता करने के लिए नियुक्त सभ्यगण, जिनकी सख्या प्राय ३ से ७ तक होती है। इनमे न्याया-धीश का मत-भेद होने पर मामला उच्च न्यायालय मे भेज दिया जाता है। (जूरी)
न्यायाधिकरण—पु० [स० न्याय-अधिकरण, ष० त०] विवाद-ग्रस्त विषयो पर निर्णय देनेवाला न्यायालय या अधिकारी वर्ग। (ट्रिब्यूनल)
न्यायाधिपति—पु० [स० न्याय-अधिपति ष०त०] दे० 'न्यायमूर्ति'।
न्यायाधीश—पु० [स० न्याय-अधीश, ष०त०] न्यायालय का वह अधिकारी जो विवादग्रस्त विषयो पर अपना निर्णय देता है।

न्यायालय—पु०[सं०न्याय-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ पर न्यायाधीश न्याय करता हो। अदालत। कचहरी। (कोर्ट)

न्यायिक-अधिकारी—पु० [सं० न्याय से] न्याय विभाग का प्राधिकारी। (जूडिशियल अथॉरिटी)

न्यायिक-निर्णय—पु० [सं० न्याय से]१. न्यायासन पर बैठकर किसी मामले के सबंध मे निर्णय देना। २ इस तरह दिया हुआ निर्णय। (एडजुडिकेशन)

न्यायी (यिन्)—पु० [सं० न्याय+इनि]वह जो न्याय करता हो। बिना पक्षपात के निर्णय करनेवाला।
वि०=न्यायशील।

न्यायोचित्—वि०[सं० तृ०त०] जो न्यायत उचित हो। न्याय-सगत।

न्याय्य—वि०[सं० न्याय+यत्] न्यायोचित। न्याय-सगत।

न्यार—पु०[हि० निवार] पसही धान। मुन्यन्न।
पु०=नियार। (देखें)
वि०=न्यारा।

न्यारा—वि०[सं० निर्निकट, प्रा० निन्निअड, पु० हिं० निन्यार] [स्त्री० न्यारी]१ जो पास न हो। २ अलग। जुदा। पृथक्। ३. अन्य। दूसरा। भिन्न। जैसे—यह बात न्यारी है। ४ जो अपने किसी विलक्षण गुण या विशेषता के कारण औरो से भिन्न और श्रेष्ठ हो। निराला। जैसे—मथुरा तीन लोक मे न्यारी। (कहा०)

न्यारिया—पु०[हिं० नियार]वह व्यक्ति जो जौहरियो, सुनारो आदि की दुकानो मे से निकाला हुआ नियार (कूडा-करकट) साफ करके उसमे से रत्नो, सोने-चाँदी आदि के कण निकालने का काम करता हो।

न्यारे—क्रि० वि०[हि० न्यारा]१ अलग। पृथक्। २ दूर।

न्याव—पु० [सं० न्याय] १ न्याय। इन्साफ। २. विवेक। ३ उचित और कर्तव्य का पक्ष।
मुहा०—न्याव चुकाना=दो पक्षो के विवाद का न्याय करना।

न्यास—पु०[सं० नि√अस् (फेकना)+घञ्] [वि० न्यस्त]१. कोई चीज कही जमा या बैठाकर रखना। स्थापित करना। २ चीजे चुन या सजाकर यथा-स्थान रखना। ३ किसी चीज के कही रखे जाने के फल-स्वरूप उस स्थान पर बननेवाला चिह्न या निशान। जैसे—चरण-न्यास, नख-न्यास, शस्त्र-न्यास । ४ वह द्रव्य या धन जो किसी के पास धरोहर के रूप मे रखा जाय। अमानत। थाती। धरोहर। ५. कोई चीज किसी को देना या सौंपना। अर्पण। भेट। ६ अकित या चित्रित करना। ७ सामने लाकर उपस्थित करना या रखना। ८ छोडना। त्यागना। ९ पूजन, वंदन आदि मे धार्मिक विधि के अनुसार भिन्न भिन्न देवताओ का ध्यान करते हुए इस प्रकार अपने शरीर के भिन्न भिन्न अगो का स्पर्श करना कि मानो उन अगो मे देवता स्थापित किये जा रहे हो। १० रोगी का रोग आदि शात करने के लिए मत्र पढते हुए उक्त प्रकार से रोगी के भिन्न-भिन्न अगो पर हाथ रखना या उन्हे स्पर्श करना। ११. चढा हुआ स्वर उतारना या मद करना। १२ सन्यास। १३. आज-कल किसी विशिष्ट कार्य के लिए अलग किया या निकाला हुआ वह धन या सपत्ति जो कुछ विश्वस्त व्यक्तियो को इस दृष्टि से सौपी गई हो कि वे दाता की इच्छानुसार उसका उचित उपयोग और व्यवस्था करेगे। (ट्रस्ट)१४. उक्त प्रकार के धन की व्यवस्था करनेवाले लोगो की समिति।

न्यास-भंग—पु०[ष० त०] किसी के द्वारा स्थापित किये हुए न्यास का उसके प्रबध करनेवालो द्वारा किया जानेवाला कुप्रबध और दुरुपयोग। (ब्रीच आफ ट्रस्ट)

न्यास-स्वर—पु०[ष०त०] उतारा या मन्द किया हुआ वह स्वर जिस पर गीत या राग-रागिनियो का अत या समाप्ति होती है।

न्यासिक—वि०[सं० न्यास+ठन्—इक]=न्यासी।

न्यासी (सिन्)—पु०[सं० न्यास+इनि]वह जिसे किसी विशेष कार्य के लिए कुछ धन या सपत्ति सौंपी गई हो। (ट्रस्टी)

न्युब्ज—वि० [सं० नि√उब्ज (झुकना)+अच्]१. अधोमुख। औंधा। २ कुब्ज। कुबडा। ३. रोग आदि के कारण जिसकी कमर झुक गई हो।
पु०१ वट वृक्ष। बरगद। २ कुश। कुशा। ३ कुश की बनी हुई स्रुवा। ४ कमरख (वृक्ष और फल)। ५ माला।

न्यून—वि०[सं०नि√ऊन्(घटाना)+अच्] [भाव० न्यूनता]१ आवश्यक या उचित से कम। थोडा। २ किसी की तुलना मे घटकर या हलका। ३ क्षुद्र। नीच। ४ जिसमे कुछ विकार आ गया हो। विकृत।

न्यून-कोण—पु०[कर्म०स०] ज्यामिति मे, वह कोण जो समकोण से छोटा होता है। (एक्यूट ऐंगिल)

न्यून-तम—वि०[न्यून+तमप्]जो सबसे कम, थोडा घटकर या सक्षिप्त हो।

न्यूनता—स्त्री० [सं० न्यून+तल्+टाप्] १ न्यून होने की अवस्था या भाव। २ अल्पता। कमी। ३ हीनता। ३ साहित्य मे अर्थालकारो का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब वर्णन मे उपमेय से उपमान मे कोई जातिगत, धर्मगत या प्रमाणगत कमी या त्रुटि दिखाई देती है।

न्यूनन—पु०[सं० नि√ऊन्+ल्युट्—अन]कम, थोडा या सक्षिप्त करना। घटाना।

न्यून-पद—पु०[सं०ब०स०] साहित्य मे ऐसा कथन जिसमे कोई आवश्यक शब्द या पद अज्ञान या भूल से छूट गया हो।

न्यूनाग—वि०[सं० न्यून-अग, ब०स०] जिसमे कोई अग कम हो।

न्यूनाधिक—वि०[सं० न्यून-अधिक, द्व० स०] [भाव० न्यूनाधिक्य]१. जो कुछ बातो मे कही कुछ कम और कुछ बातो मे कही कुछ अधिक हो। २. उक्त प्रकार से कम या अधिक हो सकनेवाला। (मार्जिनल)

न्यूनी*—पु०[सं० नवनीत] मक्खन।

न्यों—अव्य०=यों (इस तरह)।

न्योछावर—स्त्री०=निछावर।

न्योजी—स्त्री०[?] लीची नामक फल। उदा०—कोई नारग कोई झाड चिरौंजी। कोई कटहर बडहर कोई न्योजी।—जायसी।
स्त्री०=नेजा (निलगोजा)।

न्योतना—स०[हिं० न्योता+ना (प्रत्य०)]१. न्योता या निमत्रण देना। २. जान-बूझकर अपने पास बुलाना।

न्योतनी—स्त्री०[हिं० न्योतना]मगल अवसरो पर दिया जानेवाला भोज।

न्योतहरी—पु०[हिं० न्योता]वह व्यक्ति जिसे निमत्रण दिया गया हो। न्योता मिलने पर आया हुआ अतिथि।

न्योता—पु० [सं० निमंत्रण] १. घर में होनेवाले किसी मांगलिक उत्सव और विशेषतः भोज में सम्मिलित होने के लिए किसी से कहना। निमंत्रण। २. वह धन जो शुभ अवसर पर इष्ट-मित्रों के यहाँ से न्योता आने पर भेजा जाता है।

न्योजी|—स्त्री० —लीची।

न्योरता|—पु० नौरता (त्योहार)।

न्योरा|—पु० १. दे० 'नेवला'। २. दे० 'नूपुर'।

न्योला—पु० नेवला।

न्योली—स्त्री० [सं० नली] नेती, धोती की तरह हठयोग की एक क्रिया।

[illegible]—वि० [illegible]।

[illegible]—वि० [illegible]।

[illegible]—स्त्री० दे० '[illegible]'।

[illegible]—पु० [illegible]।

न्हाना†—अ० [illegible]।

वि० दे० '[illegible]'।

न्हवाना†—स० नहलाना।

[illegible]—पु० [illegible]।

[illegible]—स०[वि० [illegible]] [illegible] [illegible]—[illegible]

[illegible]

प

प—देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का पहला वर्ण, जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के विचार से ओष्ठ्य, स्पर्शी, अघोष, अल्पप्राण व्यंजन है। पु० संगीत में यह पंचम स्वर का संक्षिप्त रूप माना जाता है। प्रत्य० कुछ शब्दों के अंत में लगकर यह निम्नलिखित अर्थ देता है—(क) पीनेवाला। जैसे—मधुप, द्विप। (ख) पालन, रक्षा या शासन करनेवाला। जैसे—गोप, नृप।

प०—सं० 'पश्चिम' का संक्षिप्त रूप।

पंक—पु० [सं०√पच् (विस्तार)+घञ्, कुत्व] १. मिट्टी मिला हुआ गंदला पानी। कीचड़। कर्दम। २. लेप आदि के काम में आनेवाला उक्त प्रकार का और कोई गाढ़ा गीला पदार्थ। जैसे—चंदन-पंक। ३. बहुत बड़ी राशि। ४. कलुषित या गन्दा करनेवाली कोई चीज। जैसे—पाप-पंक।

पंक-कीर—पु० [मध्य० स०] टिटिहरी नाम की चिड़िया।

पंक-क्रीड़—वि० [ब०स०] कीचड़ में क्रीड़ा करने या खेलनेवाला।
पु० सूअर।

पंक-क्रीड़नक—पु० [ब० स०] सूअर।

पंक-गडक—पु० [मध्य०स०] एक प्रकार की छोटी मछली।

पंक-ग्राह—पु० [सं० सप्त० त० मध्य०स०] मगर।

पंकच्छिद—पु० [सं० पंक√छिद् (काटना)+क] निर्मली।

पंकज—वि० [सं० पंक√जन् (पैदा होना)+ड] कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला
पु० कमल।

पंक-जन्मा (न्मन्)—पु० [ब०स०] १. कमल। २. सारस पक्षी।

पंकज-नाभ—पु० [ब०स०] विष्णु।

पंकज-योनि—पु० [ब०स०] ब्रह्मा।

पंकज-राग—पु० [ब०स०] पद्मराग-मणि।

पंकज-वाटिका—स्त्री० [स०] तेरह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक भगण, एक नगण, दो जगण और अंत में एक लघु होता है। इसे 'एकावली' और 'कंजावली' भी कहते हैं।

पंक-जात—पु० [प० त०] कमल।

पंकजासन—पु० [पंकज-आसन, ब० स०] ब्रह्मा।

पंकजित्—पु० [सं० पंक√जि (जीतना)+क्विप्] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पंकजिनी—स्त्री० [सं० पंकज+इनि—ङीप्] १. कमलों से भरा हुआ स्थान। पद्माकर। २. कमलिनी।

पंकण—पु० [सं० पक्वण, पृषो० सिद्धि] चांडाल का घर।

पंक-दिग्ध—वि० [तृ० त०] (शरीर) जिस पर मिट्टी या कीचड़ लगा हो।

पंकदिग्ध शरीर—पु० [ब०स०] एक दानव का नाम।

पंकदिग्धांग—पु० [पंकदिग्ध अंग, ब० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

पंक-धूम—पु० [ब०स०] जैनों के अनुसार एक नरक का नाम।

पंक-पर्पटी—स्त्री० [ष०त०] सौराष्ट्र-मृत्तिका। गोपीचंदन।

पंक-प्रभा—पु० [ब०स०] एक नरक का नाम जो कीचड़ से भरा हुआ माना गया है।

पंक-भारक—वि० [ब०स०, कप्] १. कीचड़ से भरा हुआ। २. मिट्टी से पुता हुआ।

पंक-मंडूक—पु० [मध्य०स०] १. घोंघा। २. सीपी।

पंक-रज—पु० [सं० पंकज-रज] पराग। उदा०—[illegible] गाँस।—[illegible]।

पंकरुह—पु० [सं० पंक√रुह (उत्पन्न होना)+क] कमल।

पंक-वारि—स्त्री० [ब०स०] कांजी।

पंक-वास—पु० [ब०स०] केकड़ा।

पंक-शुक्ति—स्त्री० [मध्य०स०] १. ताल में होनेवाली सीपी। २. घोंघा।

पंकार—पु० [सं० पंक√ऋ (गति)+अण्] १. कीचड़ और पानी में होनेवाली कुकुरमुत्ते की जाति की एक वनस्पति। २. सिवार। ३. जल-कुब्जक। ४. [illegible]। ५. नदी का बाँध। ६. नदी का पुल।

पंकिल—वि० [सं० पंक+इलच्] [भाव० पंकिलता] १. जिसमें कीचड़ हो। कीचड़ से युक्त। जैसे—पंकिल जल, पंकिल ताल। २. गन्दा। मैला।

पंकिलता—स्त्री० [सं० पंकिल+तल्—टाप्] १. पंकिल होने की अवस्था या भाव। २. गन्दगी। मैल। ३. कलुष। कालिमा।

पंकेज—पु०[सं० पंके√जन् (उत्पत्ति)+ड, अलुक् स०] कमल।

पंकेरुह—पु०[सं० पंके√रुह (उत्पत्ति)+क, अलुक् स०] कमल।

पंकेशय—वि०[सं० पंके√शी (सोना)+अच्, अलुक् स०] [स्त्री० पंकेशया] कीचड़ में रहनेवाला।

पंकेशया—स्त्री० [सं० पंकेशय+टाप्] जोंक।

पंक्ति—स्त्री०[सं० √पच्+क्तिन्] १ एक ही वर्ग की बहुत-सी चीजों का एक सीध में एक दूसरी से सटकर अथवा कुछ अंतर पर स्थित होने का क्रम या शृंखला। जैसे—पेड़ों या मकानों की पंक्ति। २. आज-कल किसी काम या बात की प्रतीक्षा में एकत्र होनेवाले लोगों की वह परंपरा या शृंखला, जो चढ़ा-ऊपरी, धक्कम-धक्का आदि रोकने के लिए दूर तक एक सीध में बनाई जाती है। (क्यू) ३. बिरादरी आदि के विचार से एक साथ बैठकर भोजन करनेवालों का समूह। ४. उक्त आधार पर कुलीन और सम्मानित ब्राह्मणों का वर्ग या श्रेणी। ५. एक ही वर्ग के जंतुओं, पशुओं आदि का समूह। जैसे—च्यूँटियों या बंदरों की पंक्ति। ६ एक ही सीध में दूर तक बनी हुई रेखा। लकीर। ७ पुस्तकों, पत्रों आदि में लिखे या छपे हुए अक्षरों की एक सीध में पढ़ने के क्रम से लगी हुई शृंखला। ८ प्राचीन भारत में दस-दस सैनिकों का एक वर्ग। ९. छंदशास्त्र में दस अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा। १० उक्त के आधार पर दस की सूचक संख्या। ११ जीवों या प्राणियों की वर्तमान पीढ़ी। १२ पृथ्वी। १३ गौरवपूर्ण ख्याति या प्रसिद्धि। १४ परिपक्व, पुष्ट या पूर्ण होना।

पंक्ति-कंटक—वि०[पं० त०]=पंक्ति-दूषक।

पंक्तिका—स्त्री०[सं० पंक्ति+कन्—टाप्]=पंक्ति।

पंक्ति-कृत—वि०[सं० त०] श्रेणीबद्ध।

पंक्ति-ग्रीव—पु०[ब०स०] रावण।

पंक्तिचर—पु०[सं० पंक्ति√चर् (गति)+ट] कुरर पक्षी।

पंक्ति-च्युत—वि०[पं०त०] [भाव० पंक्ति-च्युति] (व्यक्ति) जिसे उसकी बिरादरी के लोग अपने साथ बैठाकर भोजन न करते हों। बिरादरी से बहिष्कृत।

पंक्ति-दूषक—वि०[पं०त०] १. जिसके साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन न कर सकते हों, अर्थात् जाति-च्युत या नीच। २. (ब्राह्मण) जिसे भोजन के लिए निमंत्रित करना या दान देना निषिद्ध हो।

पंक्ति-पावन—पु०[सं०त०] १ ऐसा ब्राह्मण, जिसे स्मृतियों के अनुसार यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया हो। २ अग्निहोत्र करनेवाला गृहस्थ।

पंक्ति-बद्ध—वि०[तृ०त०] जो पंक्ति अर्थात् एक सीध में खड़े या लगे हों अथवा खड़े किये या लगाये गये हों।

पंक्ति-बाह्य—वि० [पं०त०] जाति से निकाला हुआ। बिरादरी से बहिष्कृत।

पंक्ति-रथ—पु०[ब०स०] राजा दशरथ।

पंख—पु०[सं० पक्ष, प्रा० पक्ख] १ मनुष्य के हाथ के अनुरूप पक्षियों का तथा कुछ जंतुओं का वह अंग, जिसके द्वारा वे हवा में उड़ते है। पर। मुहा०—पंख जमना या निकलना=(क) बंधन में से निकलकर इधर-उधर घूमने की इच्छा उत्पन्न होना। बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई देना। जैसे—इस लड़के को भी अब पंख जम रहे है। (ख) अंत या मृत्यु के लक्षण प्रकट होना या समय पास आना हुआ दिखाई देना।

विशेष—बरसात के अंत में कुछ कीड़ों के पंख निकल आते हैं और वे प्रायः अग्नि या दीपक के प्रकाश के पास मँडराते हुए उसी में जल मरते हैं। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है।

मुहा०—(किसी को) पंख लगना=बहुत वेगपूर्वक दौड़ना।

२ बिजली के पंखे का हाथ के आकार का वह अंग जिसके घूमने से हवा आती है।

पंखड़ी—स्त्री०[सं० पक्ष्म] फूल के अंग के रूप में रहनेवाले और पत्तियों के आकार-प्रकारवाले वे कोमल दल (या उनमें से प्रत्येक) जिनके संयोग से उसका ऊपरी और मुख्य रूप बनता है। पुष्प-दल।

पंखा—पु०[हिं० पंख] [स्त्री० अल्पा० पंखी] १. पक्षियों के पंखों या परों के आकार का ताड़ आदि का वह उपकरण जिसे हवा में उसका वेग बढ़ाने के लिए डुलाया जाता है।

क्रि० प्र०—झलना।

२ उक्त के आधार पर कोई ऐसा उपकरण, जिससे हवा का वेग बढ़ाया जाता हो। जैसे—बिजली का पंखा।

क्रि० प्र०—खींचना।—चलाना।—झलना।—डुलाना।

विशेष—आरंभ में पंखे ताड़ की पत्तियों, बाँस की पट्टियों आदि से बनते थे, जिन्हें हाथ में बार-बार हिलाकर लोग या तो गरमी के समय शरीर में हवा लगाने के अथवा आग सुलगाने के काम में लाते थे, और अब तक इनका प्रायः व्यवहार होता है। बड़े आदमी प्रायः काठ के चौखटों पर कपड़ा मढ़वाकर उसे छत में टाँगते थे, और किसी आदमी के बार-बार खींचते और ढीलते रहने पर उस पंखे से हवा निकलती थी, जिससे उसके नीचे बैठे हुए लोगों को हवा लगती थी। आज-कल प्रायः बिजली की सहायता से चलनेवाले अनेक प्रकार के पंखे बनने लगे हैं।

३ किसी चीज में लगा हुआ कोई ऐसा चिपटा लंबा टुकड़ा, जो पानी या हवा की सहायता से अथवा किसी यांत्रिक क्रिया से बार-बार हिलता या चक्कर लगाता रहता हो। जैसे—जहाज या पनचक्की के चक्कर में का पंखा।

पंखा-कुली—पु० [हिं० पंखा+तु० कुली] वह कुली या नौकर जो विशेषतः छत में लगा हुआ पंखा खींचने के लिए नियत हो।

पंखाज—पु० =पखावज।

पंखा-पोश—पु० [हिं० पंखा+फा० पोश] पंखे के ऊपर लगाया जानेवाला गिलाफ।

पंखि—पु०=पक्षी।

स्त्री०=पंखी।

पंखिया*—स्त्री० [हिं० पंख] १. भूसी के महीन टुकड़े। २ पंखड़ी। पंखी।

पंखी—पु० [हिं० पंख] चिड़िया। पक्षी।

स्त्री० १ उड़नेवाला कोई छोटा कीड़ा या फतिंगा। २ कन्ने में कबूतर के पंख या पर में बँधी सूत की वह डोरी जो टरकी के छेद में फँसाकर लगाई जाती है। ३. गढ़वाल, शिमले आदि की पहाड़ी भेड़ों पर से उतरनेवाला एक प्रकार का बढ़िया मुलायम और हलका ऊन। ४ उक्त प्रकार के ऊन से बनी हुई चादर। ५ वह पतली हलकी पत्तियाँ जो साखू के फल के सिरे पर होती हैं।

स्त्री० हि० 'पखा' का स्त्री० अल्पा० रूप।
स्त्री०=पखडी।

पंगुड़ा—पु० [स० पक्ष, हि० पख] कधे और बाँह का जोड। पँखौरा।

पखुड़ी—स्त्री०=पखडी।

पखुरा†—पु०=पँखुड़ा।

पंसेरू—पु०=पखेरु (पक्षी)।

पग—वि० [स० पगु] १. लँगडा। २. गति-हीन। निश्चल। ३ परम चकित और स्तब्ध। उदा०—सूर हरि की निरखि सोभा, भई मनसा पग।—सूर।
पु० [?] एक प्रकार का विलायती नमक, जो पहले लिवरपूल से आता था।

पगत, पगति—स्त्री० [स० पक्ति] १. पक्ति। पाँति। २ बहुत-से लोगों का साथ बैठकर भोजन करना। भोज। ३ भोज के समय भोजन करने के लिए एक साथ बैठनेवालो की पक्ति या समूह। जैसे—सध्या मे दो पगते तो बैठ चुकी है अभी दो पगतें और बैठेंगी।
क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—लगना।—लगाना।
४. एक ही जाति या प्रकार के बहुत-से लोगों का समाज या समूह। ५ जुलाहों का एक औजार जो दो सरकडो को एक मे बाँधकर बनाया जाता है।

पगला—वि०=पगुल।

पंगा—वि०=पगु।

पगायत†—स्त्री० [हि० पग] पैताना। (देखे)

पगी—स्त्री० [स० पक, हि० पाँक] धान के खेत मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।
स्त्री० [?] कीर्ति। यश। उदा०—पूगी समदाँ पार, पगी राण प्रतापसी।—दुरसाजी।

पगु—वि० [स०√खज् (लँगडा होना)-कु-पगदेश, नुक्] [भाव० पगुता, पगुत्व] १ जो पैर या पैरो के टूटे हुए होने के कारण चल न सकता हो। लँगडा। उदा०—जौ सग राखत ही बनै तौ करि डारहु पगु।—रहीम। २ लाक्षणिक अर्थ मे, (व्यक्ति) जो ऐसी स्थिति या स्थान मे लाया गया हो, जिसमे या जहाँ वह कुछ काम न कर सके।
पु० १. एक प्रकार का वात रोग जिसमे घुटने जकड जाते है और आदमी चल-फिर नहीं सकता। २ मध्य युग मे एक प्रकार के साधु, जो केवल मल-मूत्र का त्याग करने या भिक्षा माँगने के लिए कुछ दूर तक जाते थे, और शेष सारा समय अपनी जगह पर बैठे-बैठे बिताते थे। ३ शनि ग्रह, जिसकी गति अपेक्षया बहुत मद होती है।

पगुक—वि०=पगु या पगुल।

पगु-गति—स्त्री० [कर्म० स०] वार्णिक छदो का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब किसी छद मे लघु के स्थान मे गुरु अथवा गुरु के स्थान मे लघु आ जाता है। जैसे—'फूटि गये श्रुति ज्ञान के केशव आखि अनेक विवेक की फूटी।' मे 'के' और 'की' को लघु होना चाहिए।

पगु-ग्राह—पु० [कर्म० स०] १ मगर। २ मकर राशि।

पगु-पीठ—पु० [ब० स०] वह सवारी जिसपर किसी पगु व्यक्ति को बैठाकर कहीं ले जाया जाता है।

पगुल—वि० [स० पगु+लच्] १ जिसके हाथ-पैर टूटे हुए हो और इसी लिए जो कही आ-जा न सकता हो या काम-धधा न कर सकता हो। २ बहुत बडा अकर्मण्य और आलसी।
पु० १ अडी या रेड का पेड। २ सफेद रग का घोडा।

पगो—स्त्री० [हि० पाँक] बरसाती नदी द्वारा किनारो पर छोडी हुई मिट्टी।

पँच—वि० [हि० पाँच] हि० पाँच का वह सक्षिप्त रूप, जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पँच-तोलिया, पच-लडी आदि।

पच—पु० [स०] १ पाँच या अधिक मनुष्यो का समाज या समुदाय। जनता। लोक। जैसे—पच कहै सो कीजै काज। (कहा०)
पद—पंच की दुहाई=सब लोगो से अन्याय दूर करने या सहायता पाने के लिए की जानेवाली पुकार। **पच की भीख**=सब लोगो का अनुग्रह। सब का आर्शीवाद। **पच-परमेश्वर**=लोक या समाज जो ईश्वर या देवता के समान पवित्र और पूज्य माना जाता है।
२ वह व्यक्ति या कुछ लोगो का वर्ग जो आपस के झगडो आदि का निर्णय करने के लिए चुना या नियत किया गया हो। (आर्बीट्रेटर)
विशेष—प्राचीन भारतीय समाज मे ऐसे लोगों की सख्या प्राय पाँच होती थी। जब बहुत-सी जातियाँ या बिरादरियाँ बनने लगी, तब प्राय हर बिरादरी या समाज मे कुछ लोग पच बना दिये जाते थे, जो सब प्रकार के सामाजिक विवादो का निर्णय करते थे।
३ वह व्यक्ति जो फौजदारी के दौरे के मुकदमे मे दौरा जज की अदालत मे मुकदमे के फैसले मे जज की सहायता के लिए नियत हो। (ज्यूरी या असेसर) ४. एक सज्ञा जो दलाल लोग प्राय (मैं या हम के स्थान पर) स्वय अपना व्यक्तित्व सूचित करने के लिए प्रयुक्त करते है। ५. खेल, विवाद आदि मे हार-जीत, औचित्य-अनौचित्य आदि का निर्णय करने के लिए नियत किया हुआ व्यक्ति। ६ वह व्यक्ति जिसने किसी विषय मे मुख्यता प्राप्त की हो। ७ रहस्य-सप्रदाय मे, वह व्यक्ति जिसने पूरा आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो। सिद्ध। ८. हास्य और व्यग्य की बातो से सबध रखनेवाला सामयिक पत्र। जैसे—अवध-पच, गुजराती-पच, हिन्दू-पच आदि। इस अर्थ मे यह अँगरेजी के 'पच' का समध्वनिक है।

पचक—वि० [स० पचन्+कन्] जिसके पाँच अग अवयव या भाग हों।
पु० १ एक ही तरह की पाँच वस्तुओं का वर्ग, सग्रह या समूह। जैसे—इद्रिय-पचक, पद्य-पचक। २ पाँच रुपये प्रति सैकडे के हिसाब से दिया या लिया जानेवाला व्याज या सूद। ३ फलित ज्योतिष मे धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पाँचो नक्षत्र जिनमे किसी नये या शुभ कार्य का आरभ निषिद्ध है तथा कोई दुर्घटना होना बहुत ही अशुभ माना जाता है। पचखा।
विशेष—साधारण लोक मे इस अर्थ मे 'पचक' का प्रयोग स्त्री० मे होता है।
४ शकुन शास्त्र। ५ पाशुपत दर्शन मे गिनाई हुई ये ८ वस्तुएं जिनमे से प्रत्येक के पाँच-पाँच भेद किये गये है। यथा—लाभ, मल, उपाय, देश, अवस्था, विशुद्धि, दीक्षा कारिक और बल।

पच कन्या—स्त्री० [द्विगु स०] पुराणानुसार ये पाँच स्त्रियाँ जो विवाहिता

होने पर भी कन्याओं के समान ही पवित्र मानी गई है—अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी।

पंच-कपाल—पुं० [द्विगु स०+अण्-लुक्] यज्ञ का वह पुरोडाश जो पाँच कपालों में पृथक्-पृथक् पकाया जाता था।

पंच-कर्पट—पुं० [ब० स०] महाभारत के अनुसार एक पश्चिमी देश जिसे नकुल ने राजसूय यज्ञ के समय जीता था।

पंच-कर्म (न्)—पुं० [द्विगु स०] १ वैशेषिक दर्शन के अनुसार ये पाँच प्रकार के कर्म—उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन प्रसारण और गमन। २. चिकित्सा की ये पाँच क्रियाएँ—वमन, विरेचन, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासन।

पंच-कल्याण—पुं० [ब० स०] वह घोड़ा, जिसका सिर (माथा) और चारों पैर सफेद हों और शेष शरीर लाल, काला या किसी और रंग का हो।

पंच-कवल—पुं० [द्विगु स०] पाँच ग्रास जो स्मृति के अनुसार भोजन आरंभ करने के पहले कुत्ते, पतित, कोढ़ी, रोगी, कौए आदि के लिए अलग निकाल दिये जाते हैं। अग्रासन।

पंच-कषाय—पुं० [ष० त०] जामुन, सेमर, खिरैटी, मौलसिरी और बेर इन पाँचों वृक्षों का कषाय (कसैला) रस।

पंच-काम—पुं० [मध्य० स०] तंत्रसार के अनुसार पाँच कामदेव जिनके नाम ये हैं—काम, मन्मथ, कन्दर्प, मकरध्वज और मीनकेतु।

पंच-कारण—पुं० [स० द्विगु स०] जैन-शास्त्र के अनुसार वे पाँच कारण, जिनमें किसी कार्य की उत्पत्ति होती है। यथा—काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म।

पँचकुर—स्त्री० [हि० पाँच+कूरा] एक प्रकार की बँटाई, जिसमें खेत की उपज के पाँच भागों में से एक भाग जमींदार लेता था।

पंच-कृत्य—पुं० [द्विगु स०] १ ईश्वर या शिव के ये पाँच प्रकार के कर्म—सृष्टि, स्थिति, ध्वंस, विधान और अनुग्रह। (सर्व-दर्शन) २ पखौते का पेड़।

पंच-कृष्ण—पुं० [ष० त०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा।

पंच-कोण—वि० [द्विगु स०] पाँच कोनोंवाला।
पुं० जन्म-कुंडली में लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

पंच-कोल—पुं० [द्विगु स०] पीपल, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, और सोंठ इन पाँचों का वर्ग या समूह।

पंच-कोश—पुं० [द्विगु० स०] उपनिषद् और वेदान्त के अनुसार शरीर संघटित करनेवाले पाँच कोश—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश।

पंच-कोष—पुं० दे० 'पंच-कोश'।

पंच-कोस†—पुं०=पंच-क्रोश (काशी)।

पंच-कोसी—स्त्री०=पंच-क्रोशी।

पंच-क्रोश—पुं० [स० पंच-क्रोश] काशी नगरी जो पहले पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई में बसी हुई थी।

पंच-क्रोशी—स्त्री० [पंच-क्रोश, ब० स०—ङीप्] १ पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई में बसी हुई काशी। २ उसकी परिक्रमा जो साधारणत पाँच या छ दिनों में पूरी की जाती है। ३. इसी प्रकार की प्रयाग तीर्थ की होनेवाली परिक्रमा।

पंच-क्लेश—पुं० [द्विगु स०] योगशास्त्रानुसार अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश।

पंचक्षार-गण—पुं० [पंच-क्षार, द्विगु स०, पंचक्षार-गण, ष० त०] वैद्यक के अनुसार ये पाँच मुख्य क्षार या लवण—काच, सैंधव, सामुद्र, विट् और सौवर्चल।

पंच-गंगा—स्त्री० [समा० द्वि०] १. पाँच नदियों का समूह—गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा। २ काशी का एक प्रसिद्ध घाट जहाँ पहले गंगा में किरणा और धूतपापा नदियाँ मिलती थीं और जो एक तीर्थ के रूप में माना जाता है। (किरणा और धूतपापा दोनों अब लुप्त हो गई हैं।)

पंच-गण—पुं० [ष० त०] विदारी गंधा, बृहती, पृश्निपर्णी, निदिग्धिका और भूकूष्मांड इन पाँच ओषधियों का गण या समूह। (वैद्यक)

पंच-गत—वि० [ब० स०] (राशि) जिसमें पाँच वर्ण हों। (बीजगणित)

पंच-गव्य—पुं० [द्विगु० स०] गौ से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध दही, घी, गोबर और गोमूत्र जो बहुत पवित्र माने जाते हैं।

पंचगव्य-घृत—पुं० [मध्य० स०] आयुर्वेद के अनुसार बनाया हुआ एक प्रकार का घृत जो अपस्मार (मृगी) और उन्माद में दिया जाता है।

पंच-गीत—पुं० [द्विगु स०] श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के अन्तर्गत पाँच प्रसिद्ध प्रकरण—वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषीगीत।

पंच-गुटिया—स्त्री०=लिंगिनी (लता)।

पंच-गुण—वि० [द्विगु स०] पाँच गुना।
पुं० शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये पाँच गुण।

पंचगुणी—स्त्री० [ब० स०+ङीप्] पृथ्वी।

पंचगुना—वि० [स० पंचगुण] जो अनुपात, मान या मात्रा में किसी जैसे पाँच के बराबर हो। पाँच गुना।

पंच-गुप्त—पुं० [ब० स०] १ चार्वाक दर्शन, जिसमें पंचेन्द्रिय का गोपन प्रधान माना गया है। २ कछुआ, जो अपना सिर और चारों पैर सिकोड़कर अन्दर कर लेता या छिपा लेता है।

पंच-गोटिया—स्त्री० [हि० पाँच+गोट] एक प्रकार का खेल जो जमीन पर रेखाएँ खींचकर पाँच गोटियों से खेला जाता है।

पंच-गौड़—पुं० [ष० त०] सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड, मैथिल और उत्कल इन पाँच देशों के ब्राह्मणों का वर्ग।

पंच-ग्रह—पुं० [द्विगु स०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पाँच ग्रहों का समूह।

पंच-घात—पुं० [ब० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

पंच-चक्र—पुं० [द्विगु० स०] तंत्रशास्त्रानुसार ये पाँच प्रकार के चक्र—राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र।

पंच-चक्षु—पुं० [ब० स०] गौतम बुद्ध।

पंच-चत्वारिंश—वि० [स० पंचचत्वारिंशत्+डट्] पैंतालीसवाँ।

पंच-चत्वारिंशत—स्त्री० [मध्य० स०] पैंतालीस की संख्या।

पंच-चामर—पुं० [द्विगु स०] नाराच नामक छन्द का दूसरा नाम।

पंच-चोर—पुं० [ब० स०] एक बुद्ध का नाम।

पंच-चूड—वि० [ब० स०] [स्त्री० पंचचूडा] पाँच शिखाओंवाला।

पंच-चूडा—स्त्री० [ब० स०] एक अप्सरा। (रामायण)

पंच-चोल—पु० [ब० स०] हिमालय पर्वत-श्रेणी का एक भाग।

पंच-जन—पु० [द्विगु स०] १ पाँच या पाँच प्रकार के जनों या लोगों का समूह। २ गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस इन पाँचों का समूह। ३ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद इन पाँचों वर्गों का समूह। ४. जन-समुदाय। ५ प्राण। ६. एक प्रजापति। ७ पाताल में रहनेवाला एक राक्षस, जिसकी हड्डी से श्रीकृष्ण का पांचजन्य नामक शंख बना था। ८ राजा सगर का एक पुत्र।

पंचजनी—स्त्री० [सं० पंचजन+ङीप्] पाँच मनुष्यों की मंडली। पंचायत।

पंचजनीन—पु० [सं० पंचजन+ख—ईन] वे लोग जो अभिनय, परिहास, आदि के द्वारा लोगों का मनोविनोद करते हैं। जैसे—नट, भाँड, विदूषक आदि।

पंचजन्य—पु० [सं० पांचजन्य] श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध शंख, जो पंचजन नामक राक्षस की हड्डी से बना था।

पंच-तंत्र—पु० [ब० स०] संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें नीतिशास्त्र के उपदेश दिये गये हैं।

पंच-तंत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] पाँच तारों की बनी वीणा।
स्त्री० एक प्रकार की वीणा, जिसमें पंच तार होते हैं।

पंच-तत्त्व—पु० [द्विगु स०] १ पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँचों तत्त्व या भूत। २ मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन इन पाँचों का समुदाय। (वाममार्ग) ३ गुरुतत्त्व, मंत्रतत्त्व, मनस्तत्त्व, देवतत्त्व और ध्यानतत्त्व। (तंत्र)

पंच-तन्मात्र—पु०[मध्य० स०]शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध—ये पाँच तत्त्व, जिनसे पंच महाभूतों की उत्पत्ति होती है।

पंच-तप—वि०=पंचतपा।

पंच-तपा (पस्)—वि० [सं० पंचन्√तप् (तपना)+असुन्] पंचाग्नि तापनेवाला।

पंच-तरु—पु० [द्विगु स०] मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन, इन पाँचों वृक्षों का वर्ग।

पंचता—स्त्री०=पंचत्व।

पंच-ताल—पु० [द्विगु स०] संगीत में अष्टताल का एक भेद।

पंचतालेश्वर—पु० [पंचताल-ईश्वर, ष० त०] शुद्ध जाति का एक राग।

पंच-तिक्त—पु० [द्विगु स०] गुरुच, भटकटैया, सोंठ, कुट और चिरायता इन पाँच कड़वी ओषधियों का वर्ग।

पंच-तीर्थ—पु० [द्विगु स०] पाँच तीर्थों का समूह। पंचतीर्थी।

पंच-तीर्थी—स्त्री०[सं० पंचतीर्थ+ङीप्] विश्रांति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर (वराह) ये पाँच तीर्थ।

पंच-तृण—पु० [द्विगु स०] कुश, कास, डाभ और ईख ये पाँच तृण।

पंचतोरिया—स्त्री०=पंचतोलिया।

पंचतोलिया—स्त्री० [हिं० पाँच+तोला] पाँच तोले का बाटखरा।
वि० जो तौल में पाँच तोले का हो।
पु० [हिं० पाँच+तार ?] पुरानी चाल का एक प्रकार का बहुत झीना कपड़ा।

पंचत्रिंश—वि०, [सं० पंचत्रिंशत्+डट्] पैंतीसवाँ।

पंचत्रिंशत—वि० [मध्य० स०] पैंतीस।

पंचत्व—पु० [सं० पंचन्+त्व] १ 'पंच' होने की अवस्था या भाव। पाता। २ शरीर की वह स्थिति जिसमें उसका निर्माण करनेवाले पाँचों तत्त्व या भूत एक दूसरे से बिलकुल अलग हो जाते हैं, अर्थात् मृत्यु।
क्रि० प्र०—प्राप्त करना। —प्राप्त होना।

पंच-दश (शन्)—वि० [सं० मध्य० स०] पंद्रह।
पु० पंद्रह की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१५।

पंच-दशाह—पु० [पंचदशन्-अहन्, कर्म० स०] पंद्रह दिनों का समय।

पंचदशी—स्त्री० [सं० पंचदशन् डट्-ङीप्] १. पूर्णमासी। २. अमावस्या। ३ वेदान्त का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

पंच-दीर्घ—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसके बाहु, नेत्र, कुक्षि, नासिका और वक्षस्थल दीर्घ हों।
पु० उक्त पाँचों अंग।

पंच-देव—पु० [द्विगु स०] स्मार्त हिंदुओं के अनुसार ये पाँच देव—विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा।

पंच-द्रविड़—पु०[द्विगु स०] विन्ध्याचल के दक्षिण में बसनेवाले ब्राह्मणों के ये पाँच भेद—महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़।

पंच-धा—अव्य० [सं० पंचन्+धा] पाँच तरह से।

पंच-नख—वि० [ब० स०] पाँच नखोंवाला।
पु० १. हाथी। २ कछुआ। ३ शेर। ४ बंदर।

पंच-नद—पु० [द्विगु स०] १ पंजाब की ये पाँच प्रधान नदियाँ, जो सिन्धु में मिलती हैं—सतलज, ब्यास, रावी, चनाब और झेलम। २. (ब० स०) पंजाब देश जिसमें से होकर ये पाँचों नदियाँ बहती हैं। ३ काशी का पंचगंगा नामक घाट और तीर्थ।

पंच-नवत—वि० [सं० पंचनवति+डट्] पंचानवेवाँ।

पंच-नवति—स्त्री० [मध्य० स०] पंचानवे की संख्या

पंच-नाथ—पु० [द्विगु स०] ये पाँच देवता, जिनके नाम के अन्त में 'नाथ' पद है—बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

पंच-नामा—पु० [हि० पंच+फा० नाम] १. पत्र, जिसके अनुसार दो विरोधी पक्षों ने अपना निर्णय कराने के लिए किसी को पंच चुना हो। २ वह पत्र जिस पर पंचों का निर्णय लिखा हो।

पंच-निंब—पु० [द्विगु स०] पत्ती, छाल, फूल, फल और मूल, नीम के उक्त पाँचों अंग।

पंच-निर्णय—पु० [सं० ष० त०] पंचों द्वारा किया हुआ निर्णय।

पंचनी—स्त्री० [सं०√पच्+ल्युट्—अन, ङीप्] चौपड़, शतरंज आदि की बिसात।

पंच-नीराजन—पु० [मध्य० स०] दीपक, कमल, आम, वस्त्र और पान से की जानेवाली आरती।

पंच-पक्षी (क्षिन्)—पु० [ब० स०] एक प्रकार का शकुन शास्त्र, जिसमें अ, इ, उ, ए और ओ इन पाँच वर्णों को पक्षी मानकर शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है।

पंच-पत्र—पु० [ब० स०] एक पेड़। चंडाल कंद।

पंच-पदी—स्त्री० [पंच-पाद, ब० स० ङीप् पद्भाव] १. एक प्रकार की ऋचा। २ चलने में पाँच कदम या डग। ३ पाँच पदों का समूह।

४ ऐसा सबध जिसमे वैसी ही साधारण जान-पहचान हो, जैसी दस-पाँच कदम साथ चलने पर होती है।

पंच-पनड़ी—स्त्री० 'दे० पँचौली' (पौधा)।

पच-पर्णिका—स्त्री० [ब० स०, कप्,—टाप् इत्व] गोरक्षी नाम का पौधा।

पच-पर्व (न्)—पु० [द्विगु स०] अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या और रवि सक्रान्ति—ये पाँचो पर्व।

पंच-पल्लव—पु० [द्विगु स०] पीपल, गूलर, पाकड और वड अथवा आम, जामुन, कैथ, वेल और विजौरा के पत्ते, जिनका उपयोग शुभकर्मो मे पूजन के समय होता है।

पच-पात—पु० [स० पचपत्र] पँचौली नाम का पौधा। पँचपनडी।

पच-पात्र—पु० [समा०] १ पाँच पात्रो का समाहार। २ एक तरह का श्राद्ध, जिसमे पाँच पात्र रखे जाते है। ३ गिलास की तरह का एक पात्र जिसमे पूजन आदि के लिए जल रखा जाता है।

पंच-पाद—वि० [ब० स०, अन्तलोप] पाँच पैरोवाला।

पु० एक सवत्सर।

पचपिता (तृ)—पु० [द्विगु० स०] पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता और भयत्राता इन पाँचो का समाहार।

पच-पित्त—पु० [द्विगु स०] सूअर, वकरे, भैसे, मछली और मोर इन पाँचो जीवो का पित्ता, जो वैद्यक मे काम आता है।

पच-पीरिया—वि० [हि० पाँच+फा० पीर] (व्यक्ति) जो पाँच पीरो की पूजा करता हो।

पंच-पुष्प—पु० [द्विगु स०] चपा, आम, शमी, कमल और कनेर—इन पाँचो वृक्षो के फूलो का समाहार।

पच-प्राण—पु० [द्विगु स०] शारीरिक वात के इन पाँच भेदो का समाहार—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।

पच-प्यारे—पु०=पज-प्यारे।

पच-प्रासाद—पु० [ब० स०] वह मदिर जिसके चारो कोणो पर एक एक शृग और बीच मे एक गुवद हो।

पच-वटी—स्त्री० दे० 'पचवटी'।

पच-बला—स्त्री० [द्विगु स०] बला, अतिबला, नागवला, राजवला और महाबला नामक ओषधियो का समाहार। (वैद्यक)

पच-बाण—पु०=पचबाण।

पंच-बाहु—पु० [ब० स०] शिव।

पंच-भद्र—वि० [ब० स०] १ पाँच गुणो वाला (खाद्य पदार्थ या व्यजन)। २ दुष्ट।

पु० [द्विगु स०] १ वैद्यक मे ओषधियो का एक गण, जिसमे गिलोय, पित्तपापडा, मोथा, चिरायता और सोठ है। २. दे० 'पच-कल्याण'।

पच-भर्तारी—वि० [हि० पच+भर्तार+ई (प्रत्य०)] जिसके पाँच पति हो।

स्त्री० द्रौपदी।

पंच-भुज—वि० [ब० स०] जिसकी पाँच भुजाएँ हो।

पु० ज्यामिति मे पाँच भुजाओवाले क्षेत्र की सज्ञा। (पेन्टागन)

पच-भूत—पु० [द्विगु स०] भारतीय दर्शन के अनुसार आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पाँच भूत या मूलतत्त्व जिनसे सृष्टि की रचना हुई है।

पचम—वि० [स० पचन्+डट्, मट्] १ पाँचवाँ। २ मनोहर। सुंदर। ३ दक्ष। निपुण।

पु० [स०] १ सगीतशास्त्र मे, सरगम का पाँचवाँ स्वर, जिसका सक्षिप्त रूप 'प' है।

विशेष—कहा गया है कि इसके उच्चारण मे प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँचो प्राणो या वायुओ का उपयोग होता है; इसी लिए इसे 'पचम' कहते है। यह ठीक कोकिल के स्वर के समान होता है और इसके उच्चारण मे क्षिति, रक्ता, सदीपनी और आलापिनी नाम की चार श्रुतियाँ लगती है।

२ छ प्रधान रागो मे तीसरा राग, जिसे कुछ लोग हिडोल और कुछ लोग भैरव का पुत्र मानते है। ३ व्यजनो मे प्रत्येक वर्ग का अतिम वर्ण। जैसे—ङ, ञ, ण आदि। ४ चमार, डोम आदि जातियाँ। अन्त्यज। हरिजन। ५ मैथुन, जो तत्रिको के अनुसार पाँचवाँ मकार है।

पच-मकार—पु० [ब० स०] 'म' अक्षर से आरभ होनेवाली ये पाँच वस्तुएँ—मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पच-महापातक—पु० [द्विगु स०] ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी से गमन और उक्त पातक करनेवालो से किया जानेवाला मेल-जोल या ससर्ग—ये पाँच बहुत बडे पाप।

पच-महायज्ञ—पु० [द्विगु स०] गृहस्थ के लिए अनिवार्य ये पाँच यज्ञ—ब्रह्मयज्ञ (स्वाध्याय), देवयज्ञ (होम), भूतयज्ञ (बलि वैश्वदेव), पितृयज्ञ (पिंडक्रिया) और नृयज्ञ (अतिथिसत्कार)।

पंच-महाव्याधि—स्त्री० [द्विगु स०] अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद—ये पाँच कठिन और दु साध्य व्याधियाँ। (वैद्यक)

पंच-महाव्रत—पु० [द्विगु स०] योगशास्त्र के अनुसार इन पाँच आचरणो की प्रतिज्ञा या व्रत—अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हे 'यम' भी कहते है।

पच-महाशब्द—पु० [द्विगु स०] शृग (सीग), तम्मट (खँजडी), शख, भेरी और जया घटा—इन पाँच बाजो का समाहार।

पचमांग—पु० [स० पचम-अग, कर्म० स०] १ किसी काम चीज या बात का पाँचवाँ अग। २ आधुनिक राजतत्र मे राज्य या शासन का वह पाँचवाँ अग या विभाग जो गुप्त रूप से दूसरे देशो के देश-द्रोहियों से मिलकर और उन्हे अपनी ओर मिलाकर उन देशो को हानि पहुँचाता है। राज्य या शासन के शेष चार अग ये है—स्थल-सेना, जल-सेना, वायु सेना और समाचार-प्रकाशन विभाग। (फिफ्थ कालम)

पंचमांगी (गिन्)—वि० [स० पचमाग+इनि] पचमाग-सबधी। पचमाग का।

पु० किसी देश या राज्य का वह निवासी जो दूसरे देशो के साथ गुप्त सबध स्थापित करके अपने देश को हानि पहुँचाता हो। शत्रुओ के साथ मिला हुआ देश-द्रोही। (फिफ्थ कालमिस्ट)

पचमाक्षर—पु० [स० पचम-अक्षर, कर्म० स०] वर्णमाला मे किसी वर्ग का पाँचवाँ व्यजन। जैसे—ङ, ञ, ण आदि।

पचमास्य—वि० [स० पच-मास, कर्म० स०+यत्] हर पाँच महीने होने वाला।

पु० [पचम-आस्य, ब० स०] कोकिल या कोयल, जो पचम स्वर मे बोलती है।

पचमी—स्त्री० [स० पंचम+ङीप्] १ चाद्र मास के प्रत्येक पक्ष की

पाँचवीं तिथि। २ द्रौपदी, जिसके पांच पति थे। ३ संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ४ व्याकरण में अपादान कारक और उसकी विभक्ति। ५ वैदिक युग में एक प्रकार की ईंट, जो एक पुरुष की लंबाई के पाँचवें भाग के बराबर होती थी और यज्ञ में वेदी बनाने के काम आती थी। ६ तंत्र में एक प्रकार की मंत्र-विधि।

पंच-मुख—वि० [सं० ब० स०] पाँच मुँहोंवाला। जैसे—पंचमुख गणेश। पंचमुख शिव।
पुं० १ शिव। २ सिंह। शेर। ३ एक प्रकार का रुद्राक्ष, जिस पर पाँच लकीरें होती है।

पंचमुखी—वि० [सं० पंचमुख] जिसके पांच मुख हों। पंच-मुख।
स्त्री० [पंचमुख+ङीप्] १ पार्वती। २ मादा सिंह। शेरनी। ३ अड़ूसा। ४ गुड़हल। जपा या जवा।

पंच-मुद्रा—पुं० [मध्य० स०] तंत्र के अनुसार पूजनविधि की ये पाँच प्रकार की मुद्राएँ—आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, संबोधनी और सम्मुखीकरणी।

पंच-मूत्र—पुं० [द्विगु स०] गाय, बकरी, भेड़, भैंस और गधी इन पाँचों पशुओं के मूत्रों का मिश्रण।

पंच-मूर्ति—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पंच-मूल—पुं० [ब० स०] वैद्यक में एक पाचन औषध जो पाँच प्रकार की वनस्पतियों की जड़ या मूल से बनती है।

पँच-मेल—वि० [हिं० पाँच+मेल] १ जिसमें पाँच तरह की चीजें मिली हों। जैसे—पँचमेल मिठाई। २. जिसमें कई या सब तरह की चीजें मिली-जुली हों।

पँच-मेवा—पुं० [हिं० पाँच+मेवा] किशमिश, गरी, चिरौंजी, छुहारा और बादाम ये पाँच प्रकार के मेवे, अथवा इन सब का मिश्रण।

पंचमेश—पुं० [पंचम-ईश, ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म-कुंडली में पाँचवें घर का स्वामी।

पंच-यज्ञ—पुं० =पंच-महायज्ञ।

पंच-याम—पुं० [ब० स०] दिन।

पंच-रंग—पुं० [हिं० पाँच+रंग] मेंहदी का चूरा, अबीर, बुक्का, हल्दी और सुरवाली के बीज, जिन्हें मिलाकर शुभ कार्यों के समय चौक पूरते हैं।
वि०=पँच-रंगा।

पँच रंगा—वि० [हिं० पाँच+रंग] [स्त्री० पँच रंगी] १. जिसमें पाँच भिन्न रंग हों। पाँच रंग का या पाँच रंगोंवाला। २ पाँच प्रकार के रंगों से बना हुआ। ३ जिसमें बहुत-से रंग मिले हों।
पुं० पंच-रंग से पूरा या बनाया हुआ चौक।

पंच-रक्षक—पुं० [ब० स०] पलीता वृक्ष।

पंच-रत्न—पुं० [द्विगु स०] नीलम, पद्मराग मणि, मूंगा, मोती और हीरा—ये पाँच प्रकार के रत्न।

पंच रश्मि—पुं० [ब० स०] सूर्य।

पंच-रसा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] आँवला।

पंच-रात्र—वि० [द्विगु स०, अच्] पाँच रातों में होनेवाला।
पुं० १ पाँच रातों का समूह। २ एक प्रकार का यज्ञ, जो पाँच दिनों में पूरा होता था।

पंच-राशिक—पुं० [ब० स०, कप्] गणित में एक प्रकार की प्रक्रिया, जिसमें चार ज्ञात राशियों की सहायता से पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पंच-रीक—पुं० [ब० स०, कप्] संगीत में एक प्रकार का ताल।

पंचल—पुं० [सं०√पच्+अलच्] शकरकंद।

पंच-लक्षण—पुं० [द्विगु स०] ये पाँच बातें, जिनके समुचित विवेचन से किसी ग्रन्थ को पुराण की संज्ञा प्राप्त होती थी—सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय, देवताओं की उत्पत्ति और वंश-परम्परा, मन्वन्तर तथा मनु के वंश का विस्तार।

पँचलड़ा—वि० [हिं० पाँच+लड़] [स्त्री० पँचलड़ी] पाँच लड़ों-वाला। जैसे—पँचलड़ा हार।
पुं० [स्त्री० अल्पा० पँचलड़ी] गले में पहनने का पाँच लड़ोंवाला हार।

पंच-लवण—पुं० [मध्य० स०] दे० 'पंच क्षारगण'।

पँच-लोना—वि० [हिं० पाँच+लोन (लवण)] जिसमें पाँच प्रकार के नमक पड़े या मिले हों।
पुं०=पंच-लवण।

पंच-लोह—पुं० [द्विगु स०] १ कांची, पांडि, क्रांत, कालिंग और वज्रक, लोहे के उक्त पाँच भेद। २ सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा और राँगा इन पाँच धातुओं के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु।

पंचवई†—स्त्री०=पँचवाई (एक तरह की देशी शराब)।

पंच-वक्त्र—पुं० [ब० स०] दे० 'पँचमुख'।

पंचवक्त्रा—स्त्री० [पंचवक्त्र+टाप्] दुर्गा।

पंच-वट—पुं० [कर्म० स०] यज्ञोपवीत।

पंच-वटी—स्त्री० [पंच-वट, द्विगु स०+ङीप्] १ पीपल, बेल, वट, हड़ और अशोक—ये पाँच वृक्ष। २ दंडकारण्य में गोदावरी के तट का एक प्रसिद्ध स्थान (आधुनिक नासिक से दो मील दूर स्थित) जहाँ श्रीरामचन्द्र ने वन-वास के समय कुछ दिनों तक निवास किया था।

पंच-वदन—पुं० [ब० स०] शिव।

पंचवर्ग—पुं० [द्विगु स०] एक ही प्रकार की पाँच वस्तुओं का समूह।

पंच-वर्ण—पुं० [द्विगु स०] १. प्रणव के ये पाँच वर्ण—अ, उ, म, नाद और बिंदु। २ एक प्राचीन वन। ३. उक्त वन के पास का एक प्राचीन पर्वत।

पंच-वल्कल—पुं० [द्विगु स०] वट, गूलर, पीपल, पाकर और बेंत इन पाँच वृक्षों की छालें।

पँचवाँसा—पुं० [हिं० पाँच+मास] गर्भवती स्त्री के गर्भ के पाँचवें महीने होनेवाला एक संस्कार।

पँचवाई—स्त्री० [हिं० पाँच+वाई (प्रत्य०)] चावल, जौ आदि से बनाई जानेवाली एक प्रकार की देशी शराब।

पंच-वाण—पुं० [द्विगु स०] १ कामदेव के ये पाँच वाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्मादन। २ कामदेव के ये पाँच पुष्प-वाण—कमल, अशोक, आम, नवमल्लिका और नीलोत्पल। ३ [ब० स०] कामदेव। मदन।

पंचवातीय—पुं० [सं० पंच-वात, द्विगु स०+छ—ईय] राजसूय के अन्तर्गत एक प्रकार का होम।

पंच-वाद्य—पु० [द्विगु स०] युद्धक्षेत्र मे, बजनेवाले ये पाँच प्रकार के वाद्य—तत्र, आनद्ध, सुषिर और घन के शब्द तथा वीरो का गर्जन।

पंच-वार्षिक—वि० [स० पचवर्ष+ठक्—इक] हर पाँचवें वर्ष होने-वाला।

पँचवाह (हिन्)—वि० [स० पचवाह+इनि] पुरानी चाल की एक सवारी जिसमे पाँच घोडे जोते जाते थे।

पंचविंश—वि० [स० पचविंशति+डट्] पचीसवाँ।

पंचविंशति—वि० [मध्य० स०] पचीस।

पंच-वृक्ष—पु० [द्विगु स०] मदार, पारिजात, सतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन—ये पाँच वृक्ष।

पंच-शब्द—पु० [द्विगु स०] १ तत्री, ताल, झाँझ, नगाडा और तुरही—ये पाँच प्रकार के बाजे और इनसे निकलनेवाला स्वर। २ पाँच प्रकार की ध्वनियाँ। ३ व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियो के प्रयोग—जो प्रामाणिक माने जाते है।

पंच-शर—पु० दे० 'पच-बाण'।

पच-शस्य—पु० [द्विगु स०] धान, मूँग, तिल, उडद और जौ—इन पाँच प्रकार के अन्नों की सामूहिक सज्ञा।

पंच-शाख—पु० [ब० स०] १ हाथ, जिसमे उगलियो के रूप मे पाँच शाखाएँ होती है। २ दे० 'पजशाखा'। ३ हाथी।

पँच-शाखा—स्त्री०=पज-शाखा।

पंच-शारदीय—पु० [पचशरद+छण्—ईय] एक प्रकार का यज्ञ।

पंच-शिख—पु० [ब० स०] १ कपिल मुनि की शिष्य-परपरा मे से एक आचार्य, जो साख्य-शास्त्र के बहुत बडे पडित थे। २ सिंह। ३ नरसिंहा (बाजा)।

पंचशीर्ष—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साँप।

पंचशील—पु० [मध्य० स०] १ बौद्धधर्म मे शील या सदाचार की ये पाँच मुख्य बातें, जिनका आचरण तथा पालन प्रत्येक सत्पुरुष के लिए आवश्यक कहा गया है—अस्तेय (चोरी न करना), अहिंसा (हिंसा न करना), ब्रह्मचर्य (व्यभिचार न करना), सत्य (झूठ न बोलना) और मादक पदार्थों का परित्याग (नशा न करना)। २. एशिया और अफ्रीका के प्रमुख देशों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी कम करने तथा शाति बनाये रखने के उद्देश्य से बाँदुग सम्मेलन (१९५४) मे उक्त के आधार पर स्थिर किये हुए ये पाँच राजनीतिक सिद्धान्त—पारस्परिक सम्मान (एक दूसरे को सम्मान की दृष्टि से देखना), अनाक्रमण (एक दूसरे की सीमा का उल्लघन न करना), अ-हस्तक्षेप (एक दूसरे की आतरिक बातो मे दखल न देना), समानता (किसी को अपने से बडा या छोटा न समझना) और सह-अस्तित्व (अपना अस्तित्व भी बनाये रखना और दूसरो का अस्तित्व भी बना रहने देना)।

पंच-शूरण—पु० [मध्य० स०] सूरन के ये पाँच प्रकार—अत्यम्ल पर्णी मालकद, सूरन, सफेद सूरन और काटबेल।

पचशैल—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

पंच-षष्टि—वि० [मध्य० स०] जो सख्या मे साठ से पाँच अधिक हो। पैंसठ।

स्त्री० पैंसठ की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६५।

पंच-संधि—स्त्री० [द्विगु स०] व्याकरण मे ये पाँच सधियाँ—स्वर-सधि, व्यंजन-सधि, विसर्ग-सधि, स्वादि-सधि और प्रकृति भाव।

पंच-सप्तति—वि० [मध्य० स०] पचहत्तर।

स्त्री० पचहत्तर की सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—७५।

पँचसर(ा)—पु०=पचशर (कामदेव)।

पंचसिद्धौषधि—स्त्री० [सिद्ध-ओषधि, कर्म० स०, पच-सिद्धौषधि, द्विगु स०] वैद्यक की ये पाँच ओषधियाँ—सालिब मिश्री, बराही कन्द, रोदमी, सर्पाक्षी और सरहटी।

पंच-सुगंधक—पु० [ब० स०, कप्] वैद्यक की ये पाँच सुगधित ओष-धियाँ—लौंग, शीतल चीनी, अगर, जायफल और कपूर। कुछ लोग अगर के स्थान पर सुपारी भी मानते ह।

पंच-सूना—स्त्री० [मध्य०] गृहस्थी की ये पाँच वस्तुएँ जिनके द्वारा अनजान मे जीव-हत्याएँ होती है—चूल्हा, चक्की, सिलबट्टा, झाडू, ओखली और कुभ (घडा)।

पच-स्कंध—पु० [ब० स०] बौद्ध दर्शन मे ये पाँच स्कध या गुणो की समष्टियाँ—रूपस्कध, वेदनास्कध, सज्ञास्कध, सस्कारस्कध और विज्ञानस्कध।

पंच-स्नेह—पु० [द्विगु स०] घी, तेल, मज्जा, चरबी और मोम—ये पाँचों चिकने या स्निग्ध पदार्थ।

पच-स्रोत (स्)—पु० [ब० स०] १ एक प्रकार का यज्ञ। २ एक प्राचीन तीर्थ। ३ हठयोग मे इडा, पिंगला, वज्जा, चित्रिणी और ब्रह्म नाडी नामक पाँचो नाडियाँ।

पंच-स्वेद—पु० [द्विगु स०] वैद्यक मे ये पाँच प्रकार के स्वेद—लोष्ट स्वेद, वालुका स्वेद, वाष्प स्वेद, घट स्वेद और ज्वाला स्वेद।

पँचहजारी—पु०=पज-हजारी।

पँचहरा—वि० [हिं० पाँच+हरा(प्रत्य०)] १ पाँच परतों या तहोंवाला। पाँच बार मोडा हुआ। जैसे—पँचहरा कपडा या कागज। २. पाँच बार किया हुआ। जैसे—पँचहरा काम।

पंचांग—वि० [पचन्-अग, ब० स०] पाँच अगोवाला।

पु० १ किसी चीज के पाँच अग। २ पाँच अगोवाली चीज या वस्तु। ३ वह पत्रा या पुस्तिका जिसमे आकाशस्थ ग्रह-नक्षत्रो की दैनिक स्थिति बतलाई गई हो। ४ वह पत्री या पुस्तिका जिसमे प्रत्येक मास या वर्ष के वारो, तिथियो, नक्षत्रों, योगो और करणो का समुचित निरूपण या विवेचन होता हो। जत्री। पत्रा। ५ प्रणाम करने का वह प्रकार, जिसमे दोनों घुटने, दोनो हाथ और मस्तक पृथ्वी पर टेककर प्रणम्य की ओर देखते हुए मुँह से प्रणाम-सूचक शब्द कहा जाता है। ६ वनस्पतियों, वृक्षो आदि के पाँच अग—जड, छाल, पत्ती, फूल और फल। ७ तत्र मे जप, होम, तर्पण, अभि-षेक और ब्राह्मण-भोजन जो पुरश्चरण के समय आवश्यक होते हैं। ८ तान्त्रिक उपासना मे किसी इष्टदेव का कवच, स्तोत्र, पद्धति, पटल और सहस्रनाम। ९ राजनीति-शास्त्र के अन्तर्गत सहाय, साधन, उपाय, देश, काल, भेद और विपद् प्रतीकार—ये पाँच मुख्य कार्य। १० पच-कल्याण। घोडा। ११. कच्छप या कछुआ जो अपने चारो पैर और सिर खीचकर अन्दर छिपा लेता है।

पंचांग-मास—पु० [मध्य० स०] पहली से अन्तिम तिथि या तारीख

तक का वह पूरा महीना जो पचाग मे प्रत्येक महीने के अन्तर्गत दिखलाया जाता है। (केलेंडर मन्थ)

पंचांग-वर्प—पु० [मध्य स०] किसी पचाग मे दिखाया हुआ आदि से अन्त तक कोई सम्पूर्ण या पूरा वर्प (सवत् या सन्)। (केलेंडर ईयर)

पंचाग-शुद्धि—स्त्री० [प० त०] पचाग के पाँचो अगो (तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण) का शुद्ध निरूपण।

पंचांगिक—वि० [स० पचाग+ठन्—इक] जिसके या जिसमे पाँच अग हो।

पंचांगी—वि० [स० पचाग] पाँच अगोवाला।

स्त्री० [पचाग+ङीप्] हाथी की कमर मे बाँधने का रस्सा।

पंचांगुल—वि० [पच-अगुलि, ब० स०, अच्] १. (हाथ या पैर) जिसमे पाँच उँगलियाँ हो। २ जो पाँच अगुल लम्बा हो।

पु० १ अडी या रेंड का वृक्ष। २ तेज-पत्ता। ३ भूमा बटोरने का पाँचा नामक उपकरण।

पंचांगुलि—वि० [ब० म०] जिसे पाँच उँगलियाँ हो।

पंचांतरीय—पु० [स० पचन्-अतर, द्विगु म०,+छ—ईय] बौद्धमत के अनुसार ये पाँच प्रकार के घातक—माता, पिता, अर्हत (ज्ञानी पुरुप) और बुद्ध का घात तथा यज्ञ करनेवालो से विवाद।

पंचांश—पु० [पचन्-अश, कर्म० स०] किसी वस्तु के पाँच बराबर भागो मे से कोई एक भाग। पचमाश।

पंचाइत†—स्त्री० [वि० पचाइती]=पचायत।

पंचाक्षर—वि० [पच-अक्षर, ब० स०] जिसमे पाँच अक्षर हो। पाँच अक्षरोवाला। जैसे—पचाक्षर मत्र, पचाक्षर शब्द।

पु० १ प्रतिष्ठा नामक वृत्ति जिसमे पाँच अक्षर होते है। २ शिव का 'नम. शिवाय' मत्र जिसमे पाँच अक्षर होते है।

पंचाग्नि—वि० [पचन्-अग्नि, ब० म०] पाँच प्रकार की अग्नियो का आधान करनेवाला।

स्त्री० [द्विगु म०] १ अन्वाहार्यपचन या दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, आवमथ्य और सभ्य अग्नि के उक्त पाँच प्रकार। २ छादोग्य उपनिपद् के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुप और योपित्—जो अग्नि के रूप माने गये हैं। ३. आयुर्वेद के अनुसार चीता, चिचिडी, भिलावाँ, गधक और मदार नामक ओपधियाँ जो बहुत गरम होती हैं। ४, एक प्रकार की तपस्या जिसमे तपस्वी अपने चारो ओर आग जलाकर दिन-भर धूप मे बैठता और ऊपर से सूर्य का जलता हुआ ताप भी सहता है।

क्रि० प्र०—तापना।

५. सब ओर से पहुँचनेवाला कप्ट, दुःख या सन्ताप। उदा०—पलता या पचाग्नि बीच व्याकुल आदर्श हमारा।—मैथिलीशरण गुप्त।

पंचाग्नि-विद्या—स्त्री० [स०] छादोग्य उपनिपद् मे सूर्य, बादल, पृथ्वी, पुरुप और स्त्री-सबधी तात्त्विक ज्ञान या विज्ञान।

पंचाज—पु० [पचन्-आज, द्विगु स०] अजा अर्थात् बकरी से प्राप्त होनेवाले ये पाँच पदार्थ—दूध, दही, घी, लेंडी और मूत्र।

पंचाट—पु० [स० पंच से] विवाद के सबध मे पचो का किया हुआ निर्णय या फैसला। परिनिर्णय। (अवार्ड)

पंचातप—पु० [स० पचन्-आ√तप् (तपना)+अच्] पचाग्नि तापने की क्रिया या भाव। चारो ओर आग जलाकर तथा धूप मे बैठकर की जानेवाली तपस्या।

पंचात्मा (त्मन्)—स्त्री० [पचन्-आत्मन्, द्विगु० स०] शरीर मे रहनेवाले ये पाँच प्राण—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान।

पंचानन—वि० [पचन्-आनन, ब० स०] जिसके पाँच आनन या मुँह हो। पचमुखी।

पु० १. शिव। २ शेर। सिंह। ३ किसी विपय का बहुत बडा पडित या विद्वान्। जैसे—तर्क पचानन। ४ सगीत मे स्वर-साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार की होती है, आरोही—सा रे ग म प। रे ग म प ध। ग म प ध नि। म प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प म। नि ध प म ग। ध प म ग रे। प म ग रे सा।

पंचाननी—स्त्री० [स० पचानन+ङीप्] १. दुर्गा। २ शेर की मादा। शेरनी।

पंचानबे—वि० [स० पचनवति, पा० पचनवइ] जो गिनती मे नब्बे से पाँच अधिक हो। पाँच कम सौ।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९५।

पंचाप्सर—पु०=पपानर। (देखें)

पंचामरा—स्त्री० [पचन्-अमरा, द्विगु स०+टाप्] दूर्वा, विजया, बिल्वपत्र, निर्गुंडी और काली तुलसी—इन पाँच पौधो का वर्ग।

पंचामृत—पु० [पचन्-अमृत, द्विगु स०] १ दूध, दही, घी, मधु और चीनी के मिश्रण से बना हुआ घोल जिसे हिंदू लोग देवताओ को चढाते हैं तथा स्वय प्रसाद के रूप मे पीते हैं। २ वैद्यक मे ये पाँच परम गुणकारी ओपधियाँ—गिलोय, गोखरू, मुसली, गोरखमुडी और शतावरी।

पंचाम्ल—पु० [पचन्-अम्ल, द्विगु स०] ये पाँच खट्टे फल—बेर, अनार, अमलबेत, चूक और बिजौरा।

पंचायत—स्त्री० [स० पचायतन] १ पचो की सभा। २. प्राचीन भारतीय समाज मे चुने हुए थोडे-से (प्राय. पाँच) आदमियो का वह दल जो आपस के सामाजिक अर्थात् जाति-बिरादरी के झगड़ों या विवादो का निर्णय करता था और जिसका निर्णय बिरादरी या समाज को मान्य होता था। ३ बिरादरी या समाज के लोगो की वह सभा जिसमे पच लोग बैठकर उक्त प्रकार के झगडो का विचार और निर्णय करते थे। जैसे—अग्रवालो या खत्रियो की पचायत।

विशेष—'पचायत' और 'मध्यस्थता' के अतर के लिए दे० 'मध्यस्थता' का विशेप।

पद—पंचायत-घर। (देखें)

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

मुहा०—पंचायत बटोरना=अपने किसी विवाद का निर्णय कराने के लिए पचो और बिरादरी या समाज के सब लोगो को बुलाकर इकट्ठा करना।

४ उक्त प्रकार के समाज या समुदाय मे होनेवाला पारस्परिक वाद-विवाद। ५ आज-कल, दो दलो मे होनेवाले आर्थिक विवाद के सबध मे दोनो दलो या पक्षो के चुने हुए लोगो का वह वर्ग या समूह जो दोनो पक्षो की बातें सुनकर उनका निर्णय करता है। ६ कुछ लोगो का वह समाज जिसमे वे बैठकर तरह-तरह के और प्राय व्यर्थ के झगडे-बखेडो की बातें करते हैं। ७ झगडा। विवाद।

पंचायत-घर—पु० [हिं०] वह स्थान जहाँ गाँव, बिरादरी या समाज के लोग बैठकर पचायत या वाद-विवाद करते और पचो से उनका निर्णय कराते है।

पंचायतन—पु० [पचन्-आयतन, द्विगु स०] किसी देवता और उसके साथ रहनेवाले चार व्यक्तियो का वर्ग या समूह। जैसे—शिव-पचायतन, राम-पचायतन आदि।

पचायत-बोर्ड—पु० [हिं० + अ०] वर्तमान भारत मे ग्रामीण लोगो की वह विचार-सभा जिसमे गाँव के प्रतिनिधि आपसी विवादो आदि का निर्णय करते है। ग्राम-पचायत।

पंचायती—वि० [हिं० पचायत] १ पंचायत-सबधी। पचायत का। २ पचायत द्वारा किया या दिया हुआ। जैसे—पचायती निर्णय, पचायती हुकुम। ३. (वस्तु) जिस पर पचायत या सारे समाज का अधिकार या नियत्रण हो। जैसे—पचाग्नी धर्मशाला, पचायती मदिर। ४ जिसे सब लोग समान रूप से प्रामाणिक मानते हो। जैसे—पचायती तौल। ५ दोगला। वर्णसकर। (बाजारू)

पंचायती राज्य—पु०=गणतत्र।

पंचायुध—पु० [पचन्-आयुध, ब० स०] विष्णु, जिनके पाँच आयुध माने जाते हैं।

पंचारी—स्त्री० [स० पच√ऋ (जाना)+अण्-ङीप्, उप० स०] चौसर, शतरज आदि की बिसात।

पचार्चि (स्)—पु० [पचन्-आर्चिस्, ब० स०] बुध ग्रह।

पचाल—पु० [स०√पच+कालन्] [वि० पाचाल] १ पचमुख महादेव। २ पाँचो ज्ञानेद्रियो के पाँच विषय। ३ क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा। ४ उक्त शाखा के क्षत्रियो का देश जो हिमालय और चवल के बीच मे गगा के दोनो ओर स्थित था। ५ उक्त देश का निवासी। ६ वाभ्रव्य गोत्र के एक ऋषि। ७ शिव। ८ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण (ऽऽ।) होता है। ९ दक्षिण भारत की एक जाति जो लकडी और लोहे का काम करती है। १० एक प्रकार का जहरीला कीडा।

पचालिका—स्त्री० [स० पच=प्रपच+अल् (शोभा)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ गुडिया। २ साहित्य मे पाचाली रीति का दूसरा नाम।

पचालिस†—वि०, पु=पैंतालीस।

पंचाली—वि० [स० पचाल+इन्] १ पचाल देश मे रहनेवाला। २ पचाल का।

स्त्री० १ द्रौपदी। २ गुडिया। ३ चौपड या चौसर की बिसात। ४ एक प्रकार का गीत जिसे पाचाली भी कहते है। दे० 'पाचाली'।

पंचावयव—वि० [पचन्-अवयव, ब० स०] जिसके पाँच अवयव या अग हो। पचागी।

पु० १ प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन—इन पाँच अवयवोवाला न्याय-वाक्य। २ न्याय के पाँच अवयव।

पंचावस्थ—वि० [पचन्-अवस्था, ब० स०] पाँचवी अवस्था मे पहुँचा हुआ अर्थात् मरा हुआ। मृत।

पु० लाश। शव।

पंचाविक—पु० [पचन्-आविक, द्विगु स०] भेड का दूध, दही, घी, लेंडी और मूत्र ये पाँचो पदार्थ।

पंचाश—वि० [स० पचाशत्+डट्] पचासवाँ।

पंचाशत्—वि० [स० पचदशन्, नि० सिद्धि] जो गिनती मे चालीस से दस अधिक हो। पचास।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५०।

पंचाशिका—स्त्री० [स० पचाशत्+डिनि+क—टाप्] पचास श्लोको या कवित्तो का सग्रह या समूह।

पंचाशीत—वि० [स० पचाशीति+डट्, टिलोप] क्रम या गिनती मे पचासी के स्थान पर पडनेवाला। पचासीवाँ।

पंचाशीति—स्त्री० [पचन्-अशीति, मध्य०स०] पचासी की सूचक सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—८५।

पंचास्य—वि०, पु० [पचन्-आस्य, ब० स०]=पचानन। (दे०)

पंचाह—पु० [पचन्-अहन्, द्विगु स०] १ पाँच दिनो का समूह। २. पाँच दिनो मे होनेवाला एक तरह का यज्ञ। ३ सोमयाग के अन्तर्गत वह कृत्य जो सुत्या के पाँच दिनो मे किया जाता था।

पंचिका—स्त्री० [स० पचन+ठन्—इक, टाप्] १ वह पुस्तक, जिसमे पाँच अध्याय हो। २ पाँच गोटियो से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ।

पंचीकरण—पु० [स० पचन्+च्वि, नलोप, ईत्व√कृ+ल्युट्—अन] १ वेदात मे एक पद जो उस क्रिया का सूचक होता है जिसमे से पचभूतो के द्वारा किसी चीज का सघटन होता है। (किसी चीज के सघटन मे आधा अश एक तत्त्व से बना होता है और शेष आधे अश मे बाकी चारो तत्त्वो का समान रूप से अस्तित्व माना जाता है।) २ हठयोग की एक सिद्धि, जिसके सबध मे यह माना जाता है कि इससे साधक जब चाहे तब अपने पचभौतिक शरीर को पाँचो भूतो मे विलीन करके अदृश्य या तिरोहित हो सकता है और फिर जब चाहे तब अपना पहले वाला शरीर धारण कर सकता है।

पचीकृत—भू० कृ० [स० पचन्+च्वि, नलोप, ईत्व√कृ+क्त√कृ (करना)—कर्मणि क्त] (तत्त्व या भूत) जिसका पचीकरण हुआ हो या किया गया हो।

पंचूरा—पु० [हिं० पानी+चूना] बच्चो के खेलने का एक प्रकार का मिट्टी का खिलौना जिसके पेंदे मे बहुत से छेद होते है और जिसमे पानी भरने से बूँदें टपकती है।

पचेंद्रिय—स्त्री० [पचन्-इद्रिय, द्विगु स०] १ पाँच ज्ञानेद्रियाँ। २. पाँच कर्मेद्रियाँ।

पंचेषु—पु० [पचन्-इषु, ब० स०] पचशर। कामदेव।

पँचैया†—स्त्री० [स० पचमी]=नागपचमी।

पचो—पु० [देश०] गुल्ली-डडे के खेल मे, बाएँ हाथ से गुल्ली को उछाल कर दाहिने हाथ मे पकडे हुए डडे से उस पर किया जानेवाला आघात।

पँचोतर सौ—पु० [स० पचोत्तर शत] सौ और पाँच की सख्या या अक। एक सौ पाँच की सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—१०५।

पँचोतरा—पु० [स० पञ्चोत्तर] कन्या-पक्ष के पुरोहित का एक नेग जिसमे उसे दायज मे विशेषकर तिलक के समय वर-पक्ष को मिलनेवाले रुपयो आदि मे से सैकडे पीछे पाँच मिलते है।

पंचोपचार—पु० [पचन्-उपचार, द्विगु स०] हिंदुओं मे देव-पूजन के अवसर पर षोडशोपचार के साधन मे किसी कारणवश असमर्थ होने पर केवल गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य (इन पाँच उपचारों) से किया जानेवाला पूजन।

पंचोपविष—पु० [पचन्-उपविष, द्विगु स०] थूहड़, मदार, कनेर, जलपीपल और कुचला—ये पाँच प्रकार के उपविष।

पंचोपसिना—स्त्री०=पचोपचार।

पंचोली—स्त्री० [स० पच-आवलि] एक पौधा जो पश्चिमी और मध्य भारत मे होता है। इसकी पत्तियों और डठलों से सुगन्धित तेल निकलता है।

पु० [स० पचकुल, पचकुली] कुछ जातियों मे वश-परम्परा से चली आती हुई एक उपाधि।

पंचोषण—पु० [पचन्-उषण, द्विगु स०] पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, मिर्च और चित्रक ये पाँच ओषधियाँ।

पंचोष्मा (ष्मन्)—पु० [पचन्-ऊष्मन्, द्विगु स०] शरीर के अन्दर की वे पाँच प्रकार की अग्नियाँ जो भोजन पचाती है।

पंचौदन—पु० [पचन्-ओदन, ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

पंचौली—स्त्री०=पचोली।

पँचौवर†—वि० [हि० पाच+स० आवर्त ?] जिसकी पाँच तहें की गई हों। पाँच पर्त्तो का। पँचहरा।

पंछा—पु० [हि० पछाला] १. शरीर पर होनेवाले छाले या फुन्सी के फूटने पर उसमे से निकलनेवाला सफेद स्राव। २. वनस्पतियों, पौधों, वृक्षों आदि का कोई अग छिलने पर उसमे से निकलनेवाला पानी की तरह का स्राव।

क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

पंछाला—पु० [हि० पानी+छाला] १ फफोला। छाला। २. =पछा।

†पु० दे० 'पुछल्ला'।

पंछी—पु० [स० पक्षी] चिड़िया। पक्षी।

पंज—वि० [स० पच से फा०] पंच की तरह का पाँच का सक्षिप्त रूप। जैसे—पज-प्यारे। पज-हजारी।

पंजक—पु० [हि० पजा] १. पजे का निशान। २. मागलिक अवसरो पर दीवारो पर लगाई जानेवाली हाथ के पजे से किसी रग की छाप। ३ चित्रकला मे, वह अकन जिसमे पाँच-पाँच दल या शाखाएँ (हाथ की उँगलियो की तरह) दिखाई गई हों। (पामेट)

पंज-कल्यान†—पु०=पच कल्यान।

पँजड़ी—स्त्री० [हि० पज+ड़ी (प्रत्य०)] चौसर के खेल मे एक दाँव।

पंज-तन—पु० [फा०] हजरत मुहम्मद, हजरत अली, फातिमा और उनके दोनों पुत्र हसन तथा हुसैन ये पाँच व्यक्ति जिन्हें मुसलमान परम-पूज्य मानते है।

पँजना—अ० [स० पज=दृढ होना, रुकना] बरतनों में जोड़ या टाँका लगाना।

पंज-प्यारे—पु० [हि० पंज+प्यारा] गुरु गोविन्दसिंह के वे पाँच प्रिय भक्त जिन्हें उन्होंने खालसा-पथ की स्थापना के समय परीक्षा के रूप मे मार डालने के लिए बुलाया था, पर जिन्हें मारा नही था।

पंजर—पु० [स०√पज् (रोकना)+अरन्] १. शरीर। देह। २ हड्डियों आदि का वह ढाँचा जिस पर मास, त्वचा आदि होते है और जिनके आधार पर शरीर ठहरा रहता है। कंकाल। ठठरी। ३ किसी चीज का वह भीतरी ढाँचा, जिस पर कुछ आवरण रहते है और जिनसे उसका अस्तित्व बना रहता है।

मुहा०—अंजर-पंजर ढीला होना=आघात, प्रहार, भार आदि के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि कार्यो या शरीर का ठीक तरह निर्वाह न हो सके।

४. पिंजड़ा। ५. कलियुग। ६. कोल नामक कन्द। ७ गाय या गौ का एक सस्कार।

पंजरक—पु० [स० पजर+कन्] टहनों आदि का बुना हुआ बड़ा टोकरा। खाँचा। झावा।

पजरना—अ०=पजरना।

पँजरी—स्त्री० [स० स्त्रीत्वात्-ङीष्, पजर=ठठरी] अर्थी। टिकठी। वि० [स० पजर] जो पजर के रूप मे या पजर मात्र हो।

पंज-रोजा—वि० [फा० पंजरोज] १. पाँच दिनों का। २ पाँच दिनों में पूरा या समाप्त होनेवाला। ३. अस्थायी और नश्वर।

पंज-हजारी—पु० [फा०] १ पाँच हजार सैनिकों का सेनापति। २ मुगल शासनकाल मे एक प्रकार का सैनिक पद जो बड़े-बड़े अमीरों, दर-बारियों और सरदारो को उनके सम्मान के लिए प्रदान किया जाता था।

पंजा—पु० [स० पचक से फा० पज] १. एक ही तरह की पाँच चीजों का वर्ग या समूह। गाही। जैसे—चार पजे आम। २ हाथ (या पैर) का वह अगला भाग जिसमे हथेली (या तलवा) और पाँचों उँग-लियाँ होती है। ३ उँगलियों और हथेली का सपुट जिसमे चीजे उठाई, पकड़ी या ली जाती हैं, अथवा जिनसे पशु-पक्षी आदि प्रहार या वार करते है। चगुल।

पद—पंजे में=अधिकार या वश मे। चगुल मे। जैसे—उनके पजे मे फँसकर निकलना सहज नही है।

मुहा०—**पंजा फैलाना या बढ़ाना**=(क) कुछ लेने के लिए हाथ आगे करना। हाथ पसारना या बढ़ाना। (ख) अपने अधिकार या वश में करने के लिए उद्यत या तत्पर होना। हथियाने का प्रयत्न करना। **पंजा मारना**=(क) झपट कर आघात या प्रहार करना। (ख) लेने के लिए झपटकर आगे बढ़ना या लपकना। **पंजे झाड़कर (किसी से) चिमटना या (किसी के) पीछे पड़ना**=जी-जान से या सारी शक्ति लगाकर किसी से कुछ लेने, उसे तग करने या हानि पहुँचाने पर उतारू होना। **पंजों के बल चलना**=बहुत अधिक अभिमान या मद के कारण इस प्रकार उछलते हुए चलना कि पूरे पैर जमीन पर न पड़ने पाये।

४. जूते का वह अगला भाग जिसमे पैर का पजा रहता है। जैसे—इस जूते का पजा कुछ ज्यादा चौड़ा है। ५. एक प्रकार की शारीरिक बल-परीक्षा जिसमे दो व्यक्ति अपने दाहिने हाथ की उँगलियाँ आपस मे फँसाकर एक-दूसरे का हाथ उमेठने या मरोड़ने का प्रयत्न करते हैं।

क्रि० प्र०—लड़ाना।—लेना।

मुहा०—(किसी से) **पंजा लड़ाना**=सामने आकर बल-परीक्षा करना। उदा०—मृत्यु लड़ाएगी तुमसे पजा।—दिनकर।

६ कुछ ऐसे यंत्र जिनका अगला भाग या तो हाथ के पजे के आकार का

होता है या बहुत-कुछ वही काम करता है जो साधारणत पजे से लिया जाता है। जैसे—पीठ खुजलाने का पजा, मल आदि उठाने या हटाने का भगियो और मेहतरो का पजा, भट्ठी मे की आग हटाने-बढाने का लोहारो या हलवाइयो का पजा। ७ धातु का वह खड जिसका अगला भाग हाथ के पजे और हथेली के आकार का होता है और जो ताजिए आदि के साथ झडे या निशान के रूप मे चलता है। ८ ताश का वह पत्ता अथवा पासे का वह पार्श्व जिस पर पाँच बिंदियाँ या बूटियाँ होती हैं। ९. जूए का वह दाँव जिसकी जीत-हार पाँच की सख्या पर आश्रित होती है। (जुआरी) जैसे—दो पजे तो मार चुके, अब एक पजा और मारो तो सब लोग ठढे हो जायँ।

पद—छक्का-पंजा=छल-कपट, दाँव-पेच।

१० कोई ऐसी चीज जिसमे उँगलियो की तरह के बहुत से अग या अश इधर-उधर निकले हो। जैसे—केले के इस पजे मे तो दस ही केले है, दो केले और ले लो तो पूरे एक दरजन हो जायँ। ११. पुट्ठे के ऊपर का मास जो हाथ के पजे की तरह विस्तृत होता है। (कसाई या बूचड)

पंजा-तोड़—पु० [हि०] कुश्ती का एक प्रकार का पेच, जिसमे विपक्षी से हाथ मिलाकर उसका पजा पकडकर उमेठते हुए अपनी कोहनी उसके पेट मे लगाकर उसे अपनी पीठ पर ले आते हैं और तब झटके से उसे जमीन पर चित गिरा देते हैं।

पजाब—पु० [फा०] १ अविभाजित भारत का उत्तर-पश्चिम का एक प्रसिद्ध प्रदेश जिसमे सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम—ये पाँच नदियाँ बहती है। २ उक्त प्रदेश का वह अश, जो पाकिस्तान बनने के बाद अब भी भारत का एक राज्य है।

पजा-बल—पु० [हि० पजा+बल] पालकी ढोनेवाले कहारो की बोली मे, यह सूचित करने का पद कि आगे की भूमि ऊँची है। (अगला कहार पिछले कहार को इसी के द्वारा सचेत करता है।)

पजाबी—वि० [हि० पजाब] १ पजाब-सबधी। पजाब का। २. पजाब मे बनने, होने या रहनेवाला। ३. गुरुमुखी भाषा-सबधी। जैसे—पजाबी सूबा।

पु० १ पजाब का नागरिक। २ ढीली बाँह का कुरता जिसका प्रचलन पजाब मे हुआ था।

स्त्री० पजाब की भाषा जो गुरुमुखी लिपि मे लिखी जाती है।

पंजारा†—पु०=पिंजारा (धुनिया)।

पजिका—स्त्री० [स०√पज्+इन्+कन्—टाप्] १ वह टीका जिसमे प्रत्येक शब्द का अर्थ स्पष्ट किया गया हो। २ यमराज की वह लेखा-बही, जिसमे मनुष्यो के शुभाशुभ कर्मो का लेखा लिखा जाता है। ३ हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। (रजिस्टर)

पंजियाड†—पु०=पजीकार।

पजी—स्त्री० [स०√पज्+इन्—ङीप्] हिसाब, विवरण आदि लिखने की पुस्तिका। रजिस्टर। बही।

पजीकरण—पु० [स० पजी+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १ किसी लेख या लेखे का पजी मे लिखा जाना। २ नाम-सूची मे नाम लिखा या चढाया जाना।

पंजीकार—पु० [स० पजी√कृ+अण्] १ वह जो पजी या बही-खाता लिखने का काम करता हो। आय-व्यय आदि का लेखक। मुनीम। २. वह ज्योतिषी जो पचाग बनाने का काम करता हो। ३ मिथिला मे वह पडित जिसके पास भिन्न-भिन्न गोत्रो के लोगो की वशावलियाँ रहती है, और जो यह व्यवस्था देता है कि अमुक-अमुक परिवारो मे वैवाहिक सबध स्थापित हो सकता है या नही।

पंजीकृत—भू० कृ० [स० पजी√कृ+क्त] (लेख) जिसका पजीकरण हुआ हो।

पजी-बधन—पु० [स० त० त०]=पजीयन।

पंजीबद्ध—भू० कृ० [स० स० त०]=पजीकृत।

पंजीयक—पु० [स० पजीकार] १ वह जो पजी पर लेख, विवरण आदि लिखता हो। २ किसी सस्था अथवा विभाग के अभिलेख सुरक्षित रखनेवाला प्रधान अधिकारी। (रजिस्ट्रार)

पंजीयन—स्त्री० [स० पजीकरण] किसी लेख या लेखे का किसी कार्यालय की पजी मे (विशेषत राजकीय पजी मे) लिखा जाना। (रजिस्ट्रेशन)

पंजीरी—स्त्री० [हि० पाँच+ईरी (प्रत्य०)] कई तरह की चीजो और मसालो को भूनकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का मीठा चूर्ण जो खाने के काम मे आता है। कसार। जैसे—सत्यनारायण की पूजा के लिए बननेवाली पँजीरी, प्रसूता अथवा दुर्बलो को खिलाने के लिए बनाई जानेवाली पौष्टिक पँजीरी।

स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके कुछ अगो का उपयोग औषध के रूप मे होता है। अज-पाद। इन्दुपर्णी।

पंजेरा—पु० [हि० पाँजना] १ बरतन झालने का काम करनेवाला। बरतन मे टाँके आदि देकर जोड लगानेवाला। २ दे० 'पिजारा'।

पंड—वि० [स०√पड् (जाना)+अच्] फल-रहित। निष्फल।

पु० १ नपुसक। हिजडा। २. (वृक्ष) जो कभी फलता न हो।

स्त्री० [स० पिंड] बडी और भारी गठरी। (पश्चिम)

पंडग—पु० [स० पड√गम् (जाना)+ड?] १ नपुसक। हिजडा। २ खोजा।

पंडत†—वि०, पु०=पडित। (पश्चिम)

पंडत-खाना—पु० [हि०] १ जेलखाना। बदीगृह। २. जूआखाना। (पश्चिम)

पंडरा†—पु० [हि० पानी+ढरना (ढरा)] पनाला। नाबदान।

पु०=पडवा (भैंस का बच्चा)।

पँडरी—स्त्री० [हि० पड़ना] वह परती भूमि जिसमे ऊख बोया जाने को हो।

क्रि० प्र०—छोडना।—रखना।

पँडरू—पु०=पडवा।

पडल—वि० [स० पाडुर] पाडु वर्ण का। पीला।

पु० [स० पिंड] बदन। शरीर।

†पु०=पाडव।

पँड़वा—पु० [?] भैंस का बच्चा। पडवा।

पडवा†—पु०=पाडव।

पंडा—पु० [स० पडित] [स्त्री० पडाइन] १ वह ब्राह्मण जो तीर्थ यात्रियो को मदिरो आदि के दर्शन कराता तथा उनसे प्राप्त होनेवाले

धन से अपनी जीविका चलाता हो। २ रसोई बनानेवाला ब्राह्मण। ३. रहस्य सम्प्रदाय मे, बुद्धि।

पँडाइन—स्त्री० हिं० 'पाँडे' का स्त्री०।

पंडाइन—स्त्री० हिं० 'पंडा' का स्त्री०।

पडापूर्व—पु० [स० पड-अपूर्व, सुप्सुपा० स०] धर्म और अधर्म से उत्पन्न वह अदृष्ट जो कर्म के अनुसार फल न दे सकता हो अथवा ऐसे फल की प्राप्ति मे बाधक हो। (मीमासा)

पंडाल—पु० [तमिल पेंडल] कनातो आदि से घिरा और तंबुओं से छाया हुआ वह बहुत बडा मडप, जिसके नीचे सस्थाओं, सभाओं आदि के अधिवेशन होते है।

पडित—वि० [स० पडा+इतच्] [स्त्री० पडिता, पडिताइन, पडितानी] कुशल। दक्ष। निपुण।

पु० १ वह जो किसी विद्या या शास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञाता हो। विद्वान्। २ शास्त्रो आदि का ज्ञाता ब्राह्मण। ३ ब्राह्मणो के नाम के पहले लगनेवाली आदरसूचक उपाधि। ४. सार्वराष्ट्रीय सांकेतिकी मे वह बहुत चमकीला और तेज प्रकाश जो समुद्री और हवाई जहाजो को उनका मार्ग और ठहरने का स्थान बतलाता है।

पडितक—पु० [स० पडित+कन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

पंडित-जातीय—वि० [स० पडित-जाति, प० त०+छ—ईय] १ जो पडित न होने पर भी किसी रूप मे पडितो के वर्ग मे आ सकता हो। २ साधारण या सामान्य रूप से कुशल या दक्ष।

पडितमानिक—वि०=पडितमानी।

पडितमानी (निन्)—वि० [स० पडित√मन (मानना)+णिनि] ऐसा दभी जो पडित न होने पर भी अपने आप को पडित समझता हो।

पंडितम्मन्य—वि० [स० पडित√मन् खश्, मुम्, श्यन्]=पडितमानी।

पडितराज—पु० [प० त०] १ बहुत बडा पडित या विद्वान्। २ सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् जगन्नाथ की उपाधि।

पडितवादी (दिन्)—वि० [स० पडित√वद् (बोलना)+णिनि] =पडितमानी।

पंडिता—वि० स्त्री० [स० पडित+टाप्] पडित (स्त्री)। विदुषी।

पंडिताइन†—स्त्री०=पडितानी।

पंडिताई—स्त्री० [हिं० पडित+आई (प्रत्य०)] १. पाडित्य। विद्वत्ता।

मुहा०—पंडिताई छाँटना=अनावश्यक रूप से कुअवसर पर अपने पाडित्य का व्यर्थ परिचय देना। २ पडितो की वृत्ति या व्यवसाय।

पंडिताऊ—वि० [स० पडित] १ पडितो जैसा। पडितो की तरह का। २ विद्वत्तापूर्ण। ३ पडितो मे प्रचलित और मान्य। ४ आडम्बरपूर्ण।

पडितानी—स्त्री० [स० पडित] १ पडित की स्त्री। २ ब्राह्मणी।

पडितिमा (मन्)—स्त्री० [स० पडित+इमनिच्] पाडित्य। विद्वत्ता।

पंडु—वि० [स०√पड् (गति)+कु] १ पीलापन लिये हुए मटमैला। २ पीला। ३ सफेद।

पंडुक—पुं० [स० पाडु] [स्त्री० पडुकी] फाख्ता नामक पक्षी। पेंडकी।

पंडुर—पु० [सं० पडु √ रा (देना)+क] पानी मे रहनेवाला साँप। वि०=पाडुर।

पंडोह†—पु० [हिं० पानी+दह] पनाला।

पंढी*—पु०=पाढव।

पंढ्रक—वि० [स०] १ पगु। २ नपुंसक।

पंत—पु०=पथ।

पु० [?] पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे रहनेवाले पहाडी ब्राह्मणो की एक जाति।

पंति*—स्त्री०=पक्ति।

पंती*—स्त्री०=पक्ति।

पँतीजना†—स०=पींजना (रूई आदि ओटना)।

पँतीजी—स्त्री० [हिं० पँतीजना] रूई पींजने का उपकरण। धुनकी।

पँत्यारी*—स्त्री०=पक्ति।

स्त्री० [सं० पक्ति] पक्ति। कतार। उदा०—धूप-दीप फल-फूल द्रव्य की लगी पँत्यारी।—रत्ना०।

पंथ—पु० [स० पथ] १ मार्ग। रास्ता। उदा०—पथ रहने दो अपरिचित।—महादेवी।

क्रि० प्र०—गहना।—दिखाना।—पकडना।—लगना।—लगाना।

मुहा०—(किसी का) पंथ जोहना, निहारना या सेना=रास्ता देखना। प्रतीक्षा करना।

२ आचार-व्यवहार या रहन-सहन का ढग या प्रणाली।

मुहा०—पंथ पर या पंथ मे पाँव देना=(क) चलने मे प्रवृत्त होना। चलना आरम्भ करना। (ख) कोई आचार, व्यवहार ग्रहण करना। **(किसी के) पथ लगना**=(क) किसी का अनुयायी बनना। (ख) किसी को दग या परेशान करने के लिए उसके कार्य या मार्ग मे बाधक होना। **(किसी को) पंथ पर लगाना या लाना**=अच्छे और ठीक रास्ते पर लगाना या लाना।

३ कोई ऐसा धार्मिक मत या सम्प्रदाय जिसमे किसी विशिष्ट प्रकार की उपासना या साधना-पद्धति प्रचलित हो। (कल्ट) जैसे—कबीर या नानक पथ। ४ सिक्खो का एक सम्प्रदाय।

पथक—वि० [स० पथिन्+कन्, पथ आदेश] मार्ग मे उत्पन्न होनेवाला।

पंथकी† —वि०=पथिक।

पंथाई*—पु०=पथी।

पंथान*—पु०=पथ।

पंथिका†—वि०=पथिक।

पंथी—पु० [स० पथिन्] १ पंथ या पथ पर चलनेवाला। पथिक। बटोही। राही। २ किसी पथ या सम्प्रदाय का अनुयायी। जैसे—कबीर-पथी। ३ सिक्खो के पथ नामक दल का सदस्य।

स्त्री० [हिं० पथ] १ पथ होने की अवस्था या भाव। २. एक पद जो कुछ शब्दो के अन्त मे लगकर भाववाचक प्रत्यय 'ता' या 'पन' का अर्थ देता है। जैसे—अवारापथी, गवापथी।

पंद—स्त्री० [फा०] [कर्त्ता पदगर] १. सदुपदेश। नसीहत। २ परामर्श।

पंद्रह—वि० [स० पचदश, पा० पण्णरस, प्रा० पण्णरस, पण्णरह] जो गिनती मे दस से पाँच अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१५।

पद्रहवाँ—वि० [हिं० पद्रह] [स्त्री० पद्रहवीं] क्रम या गिनती मे पद्रह के स्थान पर पडने या होनेवाला।

पंद्रहियो—अव्य० [हिं० पद्रह] लगभग पन्द्रह या इनसे भी कुछ अधिक दिनो का समय। जैसे—जरा से काम मे तुमने पन्द्रहियों लगा दिये।

पप—पु० [अ०] १ पानी का नल, विशेषत ऐसा नल जिसमे हवा के जोर से पानी किसी नीचे स्तर से ऊँचे स्थान पर चढाया जाता हो। २ पिचकारी। ३ साइकलो आदि की ट्यूबो मे हवा भरने का उपकरण। ४. एक प्रकार का जूता।

पंपा—स्त्री० [स०√पा (रक्षा)+मुट्, नि० सिद्धि] १ दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी। २ इस नदी के किनारे का एक नगर। ३ उक्त नगर के पास का एक तालाव या सर। यही शातकर्णि मुनि तप करते थे।

पपाल†—वि०=पापी।

वि० [स० पाप] १ पाप करनेवाला। २. दुष्ट। उदा०—बुरो पेट पपाल है .।—गग।

पवकी—वि० [हिं पवा] मूली। (पश्चिम)

पंवा—पु० [फा० पुव.] १ कपास। २ रुई।

पु० [देश०] एक प्रकार का पीला रग जिससे ऊन रँगा जाता है।

पँवर†—स्त्री०=पँवरी।

पँवरना†—अ० [स० प्लवन] १ पौडना या तैरना। २ गहराई की थाह लेना या पता लगाना।

अ० [हिं० पँवारना का अ०] पँवारा या फेका जाना।

पँवरि†—स्त्री०=पँवरी।

पँवरिया—पु० [हिं० पँवाडा] पुत्र-जन्म आदि अवसरो पर मगल गीत गानेवाला याचक।

†पु०=पौरिया (द्वारपाल)।

पँवरी—स्त्री० [हिं० पाँव] पाँवो मे पहनने का खडाऊँ नामक उपकरण। पाँवरी।

†स्त्री० [स० प्रतोली, प्रा० पओली, पवरी] १ ड्योढी। पौरी। २. दरवाजा। द्वार।

पँवाडा—पु० दे० 'पवाडा'।

पँवार—पु०=परमार (क्षत्रियो का एक वर्ग)।

पँवारना—स० [स० प्रवारण] १ कोई काम करने से रोकना। २ उपेक्षापूर्वक दूर करना या हटाना। ३ फेकना।

पँवारी—स्त्री० [?] एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे लोहार लोहे मे छेद करते हैं।

पंशाखा†—पु०=पनसाखा।

पँसरहट्टा—पु० [हिं० पसारी+हट्ट, हाट] पसारियो का बाजार। पसरहट्टा।

पँसरहट्टी—स्त्री० [हिं० पँसरहट्टा] पसारी की दुकान।

पंसारी—पुं० [स० प्रसार या प्रसारी ?] वह बनिया जो मुख्यत जीरा, धनियाँ, मिर्च, लौग, हल्दी आदि मसाले और साधारण जडी-बूटियाँ आदि बेचता हो।

पंसा-सार—पु० [हिं० पासा+स० सारि=गोटी] पाँसे का खेल। चौसर।

पँसियाना†—स० [हिं० पाँसा] १ पाँसा या पासा फेंकना। २ पासे से मारना।

पँसुरी†—स्त्री०=पसली।

पँसुली†—स्त्री०=पसली।

पँसेरा†—पु० १. =पसारी। २ =पनरहट्टा।

पु० [हिं० पाँच सेर] [स्त्री० अल्पा० पँसेरी] पाँच सेर का बटखरा। पसेरी।

पँहा—अव्य० [स० पार्श्व] १ निकट। समीप। २ से।

पइ*—विभ०=पै (पर)।

पइग†—पु०=पग (डग)।

पइज†—स्त्री०=पैंज (१. टेक। २. होड़)।

पइठ†—स्त्री०=पैठ (पहुँच)।

पइठना†—अ०=पैठना (बैठना)।

पइत—पु०=पाइता (छन्द)।

पइना†—वि०=पैना।

पइलइ†—वि०=परला। उदा०—सरवर पइलइ तीर=सरोवर का परला तट।

पइला†—पु० [?] अनाज नापने का एक तरह का पुरानी चाल का पाँच सेर की तौल का बडा बरतन।

† वि०=परला।

पइसना†—अ०=पैठना।

पइसार—पु० [हिं० पइसना] पैठ। पहुँच।

पई—स्त्री० [?] पौधो मे से डोडे, फूल आदि चुनने या तोड़ने का काम। जैसे—कपास या कुसुम की पई।

पउआ—पु०=पौआ।

पउनार†—स्त्री०=पौनार।

पउला†—पु०=पौला।

पकठोस—वि० [हिं० पक्का+ठोस] १ पक्का और ठोस। २ (व्यक्ति) जो जवानी की उमर पार कर चुका हो।

पकड—स्त्री० [हिं० पकडना] १ पकडने की क्रिया या भाव। २. पकड़ने का ढग या तरीका। ३ पकड या रोककर रखने की शक्ति। उदा०—मैं एक पकड हूँ जो कहती ठहरो कुछ सोच-विचार करो।—प्रसाद। ४ किसी काम या बात का वह अग या पक्ष जिसमे उसकी त्रुटि या दोष का पता चल सकता हो। ५ प्राप्ति या लाभ का डौल या सुभीता। जैसे—कचहरी के मामूली चपरासियों की भी रोज दो-चार रुपयो की पकड हो जाती है। ६ दो व्यक्तियों मे होनेवाला, कोई ऐसा काम जिसमे दोनो एक दूसरे को पकडकर गिराने, दबाने आदि का प्रयत्न करते हो। भिडत। जैसे— (क) आओ, एक पकड कुश्ती और हो जाय। (ख) इस विषय मे दोनों में कई पकड कहा-सुनी (या थुक्का-फजीहत) हो चुकी है।

पकड-धकड†—स्त्री०=धर-पकड।

पकडना—स० [स० प्रक्रमण या पर्क (मधुपर्क की तरह)?] १ कोई चीज इस प्रकार दृढतापूर्वक हाथ मे थामना कि वह गिरने, छूटने

या इधर-उधर न होने पावे। थामना। धरना। २. वेगपूर्वक आती हुई चीज को आगे बढने से रोकना। जैसे—(क) गेंद पकडना। (ख) मारनेवाले का हाथ पकडना। ३ जो छिपा या भागा हुआ हो, छिप या भाग सकता हो अथवा छिपने या भागने को हो, उसे इस प्रकार अधिकार या वश मे करना कि वह छिप, बच, भाग न सके। गिरफ्तार करना। जैसे—चोर या डाकू को पकडना, नादिहन्द आसामी को पकडना। ४. जो छिपा हुआ हो या सबके सामने न हो, उसे ढूँढ़कर इस प्रकार निकालना कि वह सबके सामने आ जाय। जैसे—किसी की चोरी या भूल पकडना। ५ किसी प्रकार के जाल या फदे मे फँसाकर पशु-पक्षियों आदि को अपने अधिकार या वश मे करना। जैसे—चिडिया, मछली या हिरन पकडना। ६ जो आगे चलता या बढता जा रहा हो, अथवा आगे निकल जाने को हो, उसकी बराबरी या साथ करने के लिए ठीक समय पर उसके पास तक पहुँचना। जैसे—(क) घुड-दौड मे एक घोडे का दूसरे घोडे को पकडना। (ख) स्टेशन पर पहुँचकर रेलगाडी पकडना। ७ अनुचित अथवा अवैध काम करते हुए किसी व्यक्ति को ढूँढ निकालना। जैसे—किसी को जूआ खेलते या शराब पीते हुए पकडना। ८ किसी को कोई काम करने से रोकना। जैसे—बोलनेवाले की जबान पकडना। ९ ठीक तरह से किसी चीज को जानना और पहचानना। जैसे—अक्षर पकडना, स्वर पकड़ना। १० एक वस्तु का दूसरी वस्तु से चिपक जाना। जैसे—दफ्ती का कागज को पकडना। ११ रोग या विकार का ऐसा उग्र रूप धारण करना कि शरीर अथवा उसका कोई अग ठीक तरह से काम न कर सके। जैसे—(क) महीनों से उसे बुखार ने पकड रखा है। (ख) गठिया ने उसका घुटना पकड लिया है। (ग) जुकाम मे कफ बढकर कलेजा (या सिर) पकड लेता है। १२ किसी फैलनेवाली वस्तु के सम्पर्क मे आकर उसके प्रभाव से युक्त होना। जैसे—(क) पत्थर का कोयला देर मे आँच पकडता है। (ख) रसोई बनाते समय उसकी साडी के आँचल ने आग पकड ली। (ग) कोरा और खुरदुरा कपडा जल्दी रग नही पकडता। १३ किसी का आचार-विचार, रग-ढग, रीति-नृत्ति आदि ग्रहण करके उसके अनुरूप बनना या होना। जैसे—(क) बाजारू लडकों के साथ रहकर तुमने यह नई चाल पकडी है। (ख) खरबूजे को देखकर खरबूजा रग पकड़ता है।

अ० अच्छी तरह या ठीक रूप मे स्थायी या स्थिर होना। जैसे—(क) हवा करने से किसी चीज मे आग जल्दी पकडती है। (ख) यह पौधा इस जमीन मे जड नहीं पकडेगा।

पकडवाना—स० [हिं० पकडना का प्रे०] १ किसी को कुछ पकडने मे प्रवृत्त करना। किसी के पकडे जाने मे सहायक होना। २ दे० 'पकडाना'।

सयो० क्रि०—देना।—लेना।

पकड़ाना—स० [हिं० पकडना का प्रे० रूप] १ किसी के हाथ या अधिकार मे कोई चीज देना। २ दे० 'पकडवाना'।

अ० पकड लिया जाना। पकड़ा जाना।

पकना—अ० [स० पक्व, हिं० पक्का, पका+ना (प्रत्य०)] १ पक्का या परिपक्व होना। २ अनाज आदि का आँच पर रखे जाने से उबल या तपकर इस प्रकार कोमल होना या गलना कि वह खाया जा सके या खाने पर सहज मे पच सके। जैसे—कढी या खीर पकना। ३. कच्ची मिट्टी से बनी हुई चीजों के सबध मे, आँच से तपकर इस प्रकार कडा होना कि सहज मे टूट न सकें। जैसे—ईंटें या मटके पकना। ४. फलों आदि के सबध मे, वृक्षों मे लगे रहने की दशा मे अथवा उनसे तोड लिए जाने पर किसी विशिष्ट क्रिया मे इस प्रकार कोमल, पुष्ट और स्वादिष्ट होना कि वे खाये जाने के योग्य हो सकें। जैसे—अमरूद या बेल पकना। ५ घाव, फोडे आदि का ऐसी स्थिति मे आना या होना कि उनमे मवाद आ जाय या भर जाय। जैसे—पुलटिस बाँधने से फोडा पक जाता है। ६ शरीर के किसी अग का छोटे-छोटे घावों, फुँसियों आदि से इस प्रकार भरना कि उनमे कोई विपाक्त तरल पदार्थ भर जाय। जैसे—कान पकना, जीभ या मुँह पकना।

मुहा०—कलेजा पकना=कष्ट या दुःख सहते-सहते किसी ऐसी स्थिति मे पहुँचना कि प्राय मानसिक व्यथा बनी रहे।

७ लेन-देन या व्यवहार आदि मे, कोई बात निश्चित या स्थिर होना। पक्का होना। जैसे—(क) सलाह पकना। (ख) यह सौदा पक जाय तो सौ रुपये मिलेंगे। ८ चौसर की गोट के सबध मे चलते-चलते सब घर पार करके ऐसी स्थिति मे पहुँचना जहाँ वह मर न सके। ९ बालों के सबध मे वृद्धावस्था अथवा किसी प्रकार के रोग के कारण सफेद होना। १० ऐसी अवस्था मे पहुँचना जहाँ से पतन, ह्रास आदि आरभ होता है। जैसे—दादा जी अब अधिक पक चले हैं। ११ (बात) अच्छी तरह से स्मरण या याद हो जाना। जैसे—कविता कहानी या पहाडा पकना। (पश्चिम)

पकरना†—अ०, स०=पकड़ना।

पकरिया†—स्त्री० हिं० 'पाकर' का स्त्री० अल्पा०।

पकला†—पु० [हिं० पकना] फोडा।

पकली—स्त्री० [हिं० पकडना] चारा बाँधने का एक प्रकार का जाल।

पकवान—पु० [स० पक्वान्न] घी मे तला या घी से पकाया हुआ खाद्य पदार्थ। जैसे—कचौरी, समोसा आदि।

पकवाना—स० [हिं० पकाना का प्रे०] पकाने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ पकाने मे प्रवृत्त करना।

पकसना†—अ० [अनु०] ऊमस या गर्मी की अधिकता के कारण किसी चीज का सडने लगना। बजब जाना। जैसे—पके हुए आम दो दिन मे पकसने लगते है।

पकसालू—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस।

पकाई—स्त्री० [हिं० पकाना] १ पकाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २. पक्कापन। दृढता। ३ किसी काम या बात का कौशल या निपुणता।

†स्त्री० दे० 'पक्कापन'।

पकाना—स० [हिं० पकना का स०] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ पके। पकने मे प्रवृत्त करना। २ अन्न आदि आँच पर चढाकर उन्हें इस प्रकार उबालना, गरमाना या तपाना कि वे गलकर मुलायम हो जायँ और खाये जाने के योग्य हो जायँ। पाक करना। राँधना। जैसे—तरकारी, दाल या रोटी पकाना। ३ कच्चे फलों आदि के सबध मे, ऐसी क्रिया करना कि वे मीठे और मुलायम होकर खाये जाने

के योग्य हो जायँ। जैसे—आम या केला पकाना। ४ कच्ची मिट्टी से वनाये हुए वरतनो तथा दूसरी चीजो के सवध मे, उन्हे आग पर चढाकर इस प्रकार कडा और मजवूत करना कि वे सहज मे टूट या पानी मे गल न सके। जैसे—ईंटे, खपडे, घडे आदि पकाना। ५ फोडो आदि के सम्बन्ध मे, उन पर पुलटिस आदि वाँधकर इस प्रकार मुलायम करना कि उनके अन्दर का मवाद या विषाक्त अग ऊपर का चमडा फाड़कर वाहर निकल सके।

मुहा०—(किसी का) कलेजा पकना=किसी को इतना अधिक कष्ट या दु ख पहुँचाना कि उसके हृदय मे वहुत अधिक मानसिक व्यथा होने लगे।

६ पाठ आदि रटकर याद करना। ७ कार्यो आदि के सवध मे, अभ्यास करके पक्का करना। ८ कोई वात या विषय इस प्रकार निश्चित, दृढ या पक्का करना कि उसमे सहज मे उलट-फेर न हो। जैसे—लेन-देन की वात या सौदा पकाना। ९ सिर के वालो के सवध मे, किसी प्रकार की क्रिया अथवा कालयापन के द्वारा उन्हे ऐसी स्थिति मे लाना कि उनका रग भूरा पड जाय। जैसे—(क) वाजारू तेल वहुत जल्दी वाल पका देते है। (ख) हमने धूप मे ही वाल नही पकाये है, अर्थात् विना अनुभव प्राप्त किये इतना जीवन नही विताया है। सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

१० चौसर की गोट सव घरो मे आगे वढाते हुए ऐसी स्थिति मे पहुँचाना कि वह मारी न जा सके।

पकार—पु० [स० प+कार] 'प' अक्षर।

पकारांत—वि० [स० पकार-अत, व० स०] (शब्द) जिसके अन्त मे 'प' अक्षर हो।

पकाव—पु० [हिं० पकना] १ पके हुए होने की अवस्था या भाव। परिपाक। २ पीव या मवाद जो फोडा पक जाने पर उसमे से निकलता है।

पकावन*—पु०=पकवान।

पकौडा—पु० [हिं० पाक+वरी, वडी] [स्त्री० अल्पा० पकौडी] घी, तेल आदि मे तलकर फुलाई हुई वेसन या पीठी की ऐसी वडी जिसके अन्दर प्राय कोई और चीज भी भरी रहती है। जैसे—आलू, गोभी या साग का पकौडा।

पकौड़ी—स्त्री०='पकौडा' का स्त्री० अल्पा०।

पक्कटी—स्त्री० [स० पक्=√पच् (पकाना)+क्विप्, कटी=√कट् आवरण)+अच्—ङीप्, पक्-करी, द्व० स०] पाकर का पेड।

पक्कण—पु० [स० पक्,√पच्+क्विप्, कण=√कण् (सकुचित करना) +अच्, पक्-कण, कर्म० स०] १ चाडाल का घर। २ चाडालो की वस्ती।

पक्का—वि० [स० पक्व] [स्त्री० पक्की, भाव० पक्कापन] १ जो अच्छी तरह से और पूरा पक चुका हो या पकाया जा चुका हो। २ (खाद्य पदार्थ या भोजन) जो आँच पर उवाल, गला, भून या सेककर खाने के योग्य वना लिया गया हो। पका या पकाया हुआ।

पद—पक्का खाना या पक्की रसोई=सनातनी हिंदुओ मे अन्न का वना हुआ ऐसा भोजन जो घी मे तला या पकाया हुआ हो, और फलत जिसे ग्रहण करने मे छूत-छात का विशेष विचार न किया जाता हो। 'कच्ची रसोई' मे भिन्न और उसका विपर्याय। सखरा। जैसे—हमारे यहाँ दिन मे कच्ची रसोई वनती है और रात मे पक्की। पक्का पानी=(क) आग पर औटाया हुआ पानी। (ख) शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक पानी।

३ फलो आदि के सवध मे, जो या तो पेड पर रहकर अच्छी तरह पुष्ट, मधुर और स्वादिष्ट हो चुका हो अथवा पेड से अलग करके कुछ विशिष्ट क्रियाओ के द्वारा पुष्ट, मधुर तथा स्वादिष्ट कर लिया गया हो। जैसे—पक्का आम, पक्का केला, पक्का पान। ४ जो अच्छी तरह विकसित होकर पुष्ट तथा पूर्ण हो चुका हो अथवा पूरी वाढ पर पहुँच चुका हो। जैसे—पक्की उमर, पक्की वुद्धि, पक्की लकडी। ५ जो आँच पर पकाकर या और किसी क्रिया से खूव कडा और मजवूत कर लिया गया हो और फलत जल्दी टूट-फूट या नष्ट न हो सकता हो। जैसे—पक्की ईंट, मिट्टी का पक्का घडा, पक्का रग।

पद—पक्का घर या मकान=पकाई हुई ईंटो, गारे, चूने, पत्थरो आदि से वना मजवूत मकान।

६ हर तरह से निश्चित और पूरा। जैसे—पक्के वारह (चौपड का एक दाँव)। ७ जिनमे किसी प्रकार की खोट या मिलावट न हो और इसी लिए जिसका महत्त्व या मूल्य सहसा घट न सकता हो अथवा जिसके रूप-रग मे जल्दी किसी प्रकार का विकार न हो सकता हो। जैसे—पक्की जरी का काम, पक्के सोने का गहना। ८ जो पककर किसी विशिष्ट क्रिया के लिए उपयुक्त अथवा योग्य हो गया हो। जैसे—पक्का फोडा=जो चीरे जाने के योग्य हो गया हो अथवा पूरी तरह से मवाद से भर जाने के कारण फूटकर वह निकलने को हो। ९ जो पूरी तरह से इतना निश्चित और स्थिर हो चुका हो कि उसमे सहसा कोई परिवर्तन या हेर-फेर न हो सकता हो। जैसे—पक्की नौकरी, पक्का भरोसा, पक्का मत या विचार, पक्की सलाह।

१० जिसमे किसी प्रकार का दोष या त्रुटि न हो। जसे—पक्का चिट्ठा=आय-व्यय आदि वतलाने वाला वह कागज जिसकी सव मदे अच्छी तरह जाँच ली गई हो और जिसमे कोई भूल न रह गई हो। पक्की वही=वह वही जिस पर अच्छी तरह जँचा हुआ और विलकुल ठीक हिसाव लिखा जाता है। ११ जो साधारणत सव जगह समान रूप से प्रामाणिक और मानक माना जाता हो। जैसे—पक्की तौल। १२ जिसका अच्छी तरह सशोधन और सस्कार हो चुका हो। जैसे—पक्की चीनी, पक्का शोरा। १३ (क) यथेष्ट अभ्यास आदि के कारण जिसमे निपुणता या प्रौढता आ गई हो अथवा (ख) जिसमे कोई कोर-कसर या त्रुटि न रह गई हो। जैसे—(क) पक्का चोर, पक्का धूर्त। (ख) पक्के अक्षर या पक्की लिखावट। १४ चतुर, दक्ष या प्रवीण। जैसे—अव वह अपने काम मे पक्का हो गया है। १५ सिर के वाल के सवध मे, जो वृद्धावस्था के कारण भूरा या सफेद हो गया हो। जैसे—मूँछो के पक्के वाल निकाल दो। १६ जो वढते-वढते अपने अन्त या विनाश के वहुत पास पहुँच चुका हो। जैसे—वृद्ध लोग तो पक्के आम (या पक्के पान) होते है अर्थात् अधिक दिनो तक जी या ठहर नहीं सकते।

पक्काइत†—स्त्री०=पक्कापन।

पक्का कागज—पु० [हिं०] १ ऐसा कागज या लेख्य जो विधिक दृष्टि से निश्चित और प्रामाणिक माना जाता हो।

मुहा०—पक्के कागज पर लिखना=कोई ऐसा दस्तावेज या पत्र लिखना जो विधिक दृष्टि से मान्य हो।

२ कुछ निश्चित और विशिष्ट मूल्य का वह सरकारी कागज जिस पर विधिक दृष्टि से अनुबंध आदि लिखे जाते हैं। (स्टाम्प पेपर)

पक्का गवैया—पु० [हिं०] पक्के गाने अर्थात् शास्त्रीय संगीत या राग-रागिनियाँ आदि गानेवाला गवैया।

पक्का गाना—पु० [हिं०] शास्त्रीय गाना जो राग-रागिनियों के रूप में बँधा हुआ होता है।

पक्का चिट्ठा—पु० [हिं०] तलपट। तुलनपत्र। (बैलेन्स शीट)

पक्का पानी—पु० [हिं०] १ पकाया अर्थात् औटाया हुआ पानी। २ स्वास्थ्यकर जल।

पक्की गोट—स्त्री० [हिं०] चौसर के खेल में, वह गोट जो सब घरों में होती हुई अन्त में पुगकर कोठे में पहुँच गई हो।

पक्की निकासी—स्त्री० [हिं०] किसी संपत्ति में से होनेवाली ऐसी आय जिसमें से व्यय आदि निकाला जा चुका हो। कुल आय में से होनेवाली बचत। (नेट एसेट्स)

पक्की रसोई—स्त्री० [हिं०] घी में तले या पकाये हुए खाद्य पदार्थ। (कच्ची रसोई से भिन्न)

पक्के बारह—पु० दे० 'पौ बारह'।

पक्खर†—वि०=पक्का।

*स्त्री०=पाखर (युद्ध के समय हाथी को पहनाई जानेवाली लोहे की झूल)।

पक्खा†—पु०=पाखर।

†पु० [स्त्री० अल्पा० पक्खी]=पखा। (पश्चिम)

पक्ता (क्तृ)—वि० [सं०√पच्+तृच्] [भाव० पक्ति] १ पकाने-वाला। २. पचानेवाला।

पु० १ रसोइया। २ जठराग्नि।

पक्ति—स्त्री० [सं०√पच्+क्तिन्] १ पकने की क्रिया या भाव। २ शरीर के अन्दर के वे अंग जिनमें भोजन पकता है। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। ४ कीर्ति। यश।

पक्ति-शूल—पु० [मध्य० स०] अजीर्ण के कारण पेट में होनेवाला दर्द।

पक्व—वि० [सं०√पच्+क्त, तस्य वः] [भाव० पक्वता, पक्वत्व] १ पका हुआ। २ पक्का। ३ दृढ़। पुष्ट। ४ वयस्कता तक पहुँचा हुआ। जैसे—पक्व वय।

पक्व-केश—वि० [ब० स०] जिसके बाल पककर सफेद हो गये हों।

पक्वता—स्त्री० [सं० पक्व+तल्—टाप्] पक्व होने का भाव। पक्का-पन।

पक्वत्व—पु० [सं० पक्व+त्व] पक्वता।

पक्व-रस—पु० [कर्म० ब० स०] पकाया हुआ रस अर्थात् मदिरा।

पक्व-वारि—पु० [सं० ब० स० त०] काँजी।

पक्वश—पु० [सं० पुक्वश, पृषो० सिद्धि] १. एक असभ्य और अंत्यज जाति। २. चांडाल।

पक्वातीसार—पुं० [पक्व-अतीसार, कर्म० स०] अतिसार के पाँच भेदों में से एक।

पक्वाधान—पु० [पक्व-आधान, ष० त०] पक्वाशय।

पक्वान—पु० [पक्व-अन्न, कर्म० स०] १. पका हुआ अन्न। २. दे० पकवान।

पक्वाशय—पु० [पक्व-आशय, ष० त०] पेट का वह भीतरी भाग जहाँ पहुँचकर खाया हुआ अन्न पचता है।

पक्ष—पु० [सं०√पक्ष् (ग्रहण)+अच्] १. पक्षियों का डैना और उस पर के पंख या पर जिनके कारण वे 'पक्षी' कहलाते हैं। २ वे पर जो तीर के सिरे पर उसकी गति ठीक रखने या बढ़ाने के लिए बाँधे या लगाये जाते हैं। ३ जीव-जन्तुओं और मनुष्यों की दाहिनी या बाईं ओर का पार्श्व। ४. किसी वस्तु का वह किनारा या पार्श्व या सिरा जो उसके आगे, पीछे, ऊपर और नीचेवाले भागों से भिन्न हो और किसी बगल में पड़ता हो। पार्श्व। जैसे—सेना का दाहिना पक्ष कुछ दुर्बल पड़ता था। ५ किसी चीज या बात के दो भागों में से प्रत्येक भाग। जैसे—वाम पक्ष और दक्षिण पक्ष। ६. चन्द्रमास के दो बराबर भागों में से प्रत्येक भाग जो प्रायः १५ दिनों का होता है।

विशेष—पूर्णिमा से अमावस तक के दिन 'कृष्ण पक्ष' और अमावस से पूर्णिमा तक के दिन 'शुक्ल पक्ष' में गिने जाते हैं।

७. किसी बात या विषय के ऐसे दो या अधिक अंग या पहलू जो आमने-सामने या अगल-बगल पड़ते हों और इसी लिए जिनमें किसी प्रकार का विभेद या विरोध हो। जैसे—(क) पहले आप दोनों पक्षों की बातें सुन लें, तब कुछ निर्णय करें। (ख) इस प्रश्न के कई पक्ष हैं, जिन पर अच्छी तरह विचार होना चाहिए।

मुहा०—पक्ष गिरना=वाद-विवाद, परीक्षण आदि में युक्तिसंगत सिद्ध न होने पर किसी पक्ष का अप्रामाणिक और अमान्य सिद्ध होना।

८ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, विरोध, विवाद आदि में सम्मिलित होनेवाले दलों या व्यक्तियों में से प्रत्येक दल या व्यक्ति।

मुहा०—(किसी का) पक्ष करना=औचित्य, न्याय सत्य आदि का विचार किये बिना ही इस प्रकार का आग्रह करना कि अमुक व्यक्ति जो कहता है, वही ठीक है या वही होना चाहिए। पक्षपात करना। (किसी का) पक्ष लेना=वाद-विवाद या वैर-विरोध में किसी एक दल या पक्ष की ओर होकर उसके कथन या मत का समर्थन करना।

९ तर्कशास्त्र में वह कथन, बात या विचार जो प्रमाणों, युक्तियों आदि के द्वारा ठीक सिद्ध किया जाने को हो। ऐसी बात जिसे सिद्ध करना अपेक्षित हो। जैसे—पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष। १०. किसी चीज या बात का कोई विशिष्ट अंग, पार्श्व या स्थिति। ११ किसी मत या सिद्धांत के अनुयायियों और समर्थकों का दल, वर्ग या समुदाय। १२ किसी चीज या बात का कोई ऐसा अंग, तल या पार्श्व जो विशिष्ट रूप से सामने हो अथवा आया हो अथवा जिस पर विचार होता हो। १३ समर्थक, सहायक और साथी। १४. घर। मकान। १५ चूल्हे का वह गड्ढा या मुँह जिसमें राख इकट्ठी होती है। १६. राजा की सवारी का हाथी। १७ हाथ में पहनने का कड़ा। वलय। १८ महाकाल। १९ अवस्था। दशा। २० शरीर का कोई अंग। २१. फौज। सेना। २२ दीवार। २३ उत्तर। जवाब। २४ पड़ोस। २५ चिड़िया। पक्षी। २६ परस्पर विरोधी तत्त्वों के आधार पर,

'दो' की सूचक सज्ञा। २७ 'वाल' या उसके पर्यायो के साथ प्रयुक्त होने पर, राशि या समूह। जैसे—केश-पक्ष।

पक्षक—पु० [स० पक्ष+कन्] किसी पक्ष या पार्श्व मे पड़नेवाली खिडकी या दरवाजा।

पक्षका—स्त्री० [स० पक्षक+टाप्] किसी पक्ष या पार्श्व मे की दीवार। वगल की दीवार।

पक्षकार—पु० [स०] १ कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी काम या वात मे सम्मिलित रहता हो या हुआ हो। जैसे—मै इस निश्चय मे पक्षकार नही वन सकता। २ झगडा करने या मुकदमा लडनेवाले दलो या पक्षों मे से प्रत्येक। (पार्टी) जैसे—यह भी उस मुकदमे मे एक पक्ष-कार थे।

पक्षगम—वि० [स० पक्ष√गम् (जाना)+अच्] पखो की सहायता से जानेवाला। उडनेवाला।

पक्ष-ग्रहण—पु० [प० त०] किसी पक्ष मे मिलना अथवा उसका समर्थन करना।

पक्षघात—पु०=पक्षाघात।

पक्षचर—पु० [स० पक्ष√चर् (गति)+ट] १. चद्रमा। २. यूथ से वहका हुआ हाथी। ३ सेवक।

पक्षच्छिद्—पु० [स० पक्ष√छिद् (काटना) क्विप्] इन्द्र।

पक्षज, जन्मा (न्मन्)—पु० [स० पक्ष√जन् (उत्पत्ति)+ड] [व० स०] चन्द्रमा।

पक्षति—स्त्री० [स० पक्ष+ति] १ पख की जड। २ शुक्ल पक्ष की पहली तिथि।

पक्ष-द्वार—पु० [सप्त० त०] चोर दरवाजा।

पक्ष-धर—वि० [प० त०] विवाद आदि मे किसी का पक्ष लेनेवाला। पक्षपाती।

पु० चिडिया। पक्षी।

पक्ष-नाडी—स्त्री० [प० त०] पक्ष का मोटा पर जिसकी कलम वनाई जाती है।

पक्षपात—पु० [सप्त० त०] [भाव० पक्षपातिता, पक्षपातित्व] न्याय के ममय, राग, सवध आदि के कारण अनुचित रूप से किसी पक्ष के प्रति होनेवाली अनुकूल प्रवृत्ति।

पक्ष-पाती (तिन्)—वि० [स० पक्षपात+इनि] पक्षपात करनेवाला।

पक्षपालि—पु० [प० त०] खिडकी।

पक्ष-पुट—पु० [प० त०] चिडियों का पख। डैना।

पक्ष-प्रद्योत—पु० [व० स०] नृत्य मे हाथ की एक प्रकार की मुद्रा।

पक्ष-विंदु—पु० [व० स०] कक पक्षी।

पक्ष-भाग—पु० [प० त०] हाथी का पार्श्व।

पक्ष-भुक्ति—स्त्री० [प० त०] एक पक्ष भर मे सूर्य द्वारा तै की जानेवाली दूरी।

पक्ष-मूल—पु० [प० त०] १ डैना। पर। २ प्रतिपदा तिथि जो चन्द्रमास के पक्ष के आरभ मे पडती है।

पक्ष-रचना—स्त्री० [प० त०] १ पक्ष साधन के लिए किया हुआ आयोजन। २. षड्यत्र। चक्र।

पक्ष-रूप—पु० [व० स०] महादेव।

पक्ष-वध—पु० दे० 'पक्षाघात'।

पक्ष-वर्द्धिनी—स्त्री० [प० त०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक रहनेवाली द्वादशी तिथि।

पक्ष-वाद—पु० [प० त०] किसी एक पक्ष की कही हुई वात या दिया हुआ वयान।

पक्षवान् (वत्)—वि० [स० पक्ष+मतुप, वत्व] [स्त्री० पक्षवती] १ जिसके पक्ष या पर हों। परोवाला। २ उच्च कुल मे उत्पन्न। कुलीन।

पु० पर्वत, जो पुराणानुसार पहले पख या पर से युक्त होते और उडते थे।

पक्ष-वाहन—पु० [व० स०] पक्षी।

पक्ष-विंदु—पु० [व० स०] कक पक्षी।

पक्ष-सुन्दर—पु० [स० त०] लोध्र। लोध।

पक्ष-हत—वि० [व० स०] जिसका एक पार्श्व टूट-फूट या वेकाम हो गया हो।

पक्ष-होम—पु० [मध्य० स०] एक पक्ष या १५ दिनो तक चलता रहनेवाला यज्ञ।

पक्षांत—पु० [पक्ष-अन्त, प० त०] १ अमावस्या। २. पूर्णिमा।

पक्षांतर—पु० [पक्ष-अन्तर, मयू० स०] दूसरा पक्ष।

पक्षाघात—पु० [पक्ष-आघात, व० स०] एक प्रसिद्ध वात रोग जिसमे शरीर का वायाँ या दाहिना पार्श्व पूर्णत वेकाम और शिथिल हो जाता है। लकवा।

पक्षाभास—पु० [पक्ष-आभास, प० त०] सिद्धाताभास।

पक्षालिका—स्त्री० [स०] कुमार की अनुचरी मातृका।

पक्षालु—पु० [स० पक्ष+आलुच] पक्षी।

पक्षावसर—पु० [पक्ष-अवसर, व० स०] पूर्णिमा।

पक्षाहार—पु० [पक्ष-आहार, स० त०] पक्ष मे केवल एक वार भोजन करने का नियम या व्रत।

पक्षिणी—स्त्री० [स० पक्षिन्+ङीप्] १ मादा चिडिया। मादा पक्षी। २ पूर्णिमा तिथि। ३ दो दिनो और एक रात का समय।

स्त्री० स० 'पक्षी' का स्त्री०।

पक्षि-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन (आधुनिक तिरुक्कडुकुनरम) तीर्थ।

पक्षि-राज—पु० [प० त०] गरुड।

पक्षिल—पु० [स० पक्ष+इलच्] गौतम के न्याय-सूत्र का भाष्य लिखनेवाले वात्स्यायन मुनि का एक नाम।

पक्षी (क्षिन्)—वि० [स० पक्ष+इनि] १ पर या परो से युक्त। परोवाला। २ किसी का पक्ष लेनेवाला। तरफदार। ३ पक्षपात करनेवाला।

पु० १. चिडिया। २. वाण। ३ शिव।

पक्षी-पति—पु० [स० पक्षि-पति] जटायु का भाई, सपाति।

पक्षी-पालन—पु० [स०] व्यापारिक दृष्टि से चिडियो के पालने और उनका वश वढाने का धधा या पेशा। (एवीकल्चर) जैसे—अडे वेचने के लिए वत्तखें या मुरगियाँ पालना।

पक्षी-पुंगव—पु० [स० पक्षि-पुगव] जटायु।

पक्षी-प्रवर—पु० [स० पक्षि-प्रवर] गरुड।

पक्षीय—वि० [स० पक्ष+छ+ईय,] समस्त पदो के अन्त मे, किसी पक्ष, दल आदि से सबध रखनेवाला। जैसे—कुरुपक्षीय।

पक्षी-राज—पु० [स० पक्षि-राज] पक्षियो के राजा, गरुड।

पक्षी-विज्ञान—पु० [स० पक्षि-विज्ञान] वह विज्ञान जिसमे पक्षियो के प्रकारो, उनकी जातियो, रहन-सहन के ढगो, प्रकृति, स्वभाव आदि का विवेचन होता है। (आर्निकालोजी)

पक्षी-शाला—स्त्री० [स० पक्षि-शाला] पक्षियो के रहने का स्थान। जैसे—घोसला, पिंजरा, चिडिया-घर आदि।

पक्षेष्टि—वि० [स० पक्ष-इष्टि, व० स०] पाक्षिक।
पु० [मध्य० स०] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष मे किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

पक्ष्म (न्)—पु० [स०√पक्ष् (ग्रहण)+मनिन्] १ आँख की वरौनी। २ फूल का केसर। ३ फूल की पखडी। ४. पख। पर। ५ वाल।

पक्ष्मकोप—पु० [स० प० त०] आँख की पलको का एक रोग।

पक्ष्मल—वि० [स० पक्ष्मन्+लच्] १. (व्यक्ति अथवा उसकी आँख) जिसकी सुन्दर वरौनी हो। २ बालोवाला।

पक्ष्य—वि० [स० पक्ष+यत्] १. पक्ष या पखवारे मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। २ किसी पक्ष या दल का तरफदार। पक्षपाती।

पखड—पु०=पाखड।

पखडी—वि०=पाखडी।
† पु० कठपुतलियाँ नचानेवाला व्यक्ति।

पख—पु० [स० पक्ष] पक्ष। पखवारा।
स्त्री० १ अलग या ऊपर से जोडी या लगाई हुई ऐसी वात या शर्त जो या तो विलकुल व्यर्थ हो या जिससे कोई अडचन या बाधा खडी होती हो। अडगा।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
२ व्यर्थ ही तग या परेशान करनेवाला काम या वात। झझट। वखेडा।
३ व्यर्थ का छिद्रान्वेषण या दोप-दर्शन। जैसे—तुम तो यो ही हर वात मे एक पख निकाला करते हो।
क्रि० प्र०—निकालना।

पखड़ी†—स्त्री०=पखड़ी।

पखनारी†—स्त्री० [स० पक्ष+नाल] चिडियो के पखो की डठी जो ढरकी के छेद मे तिल्ली रोकने के लिए रखी जाती है।

पख-पान—पु०=पाँवदान।

पखरना—अ० [हिं० पखारना का अ० रूप] पखारा या धोया जाना।
†स०=पखारना।

पखराना—स० [हिं० पखारना का प्रे०] किसी को पखारने मे प्रवृत्त करना।

पखरिया—पु० [हिं० पखारना] वह जो पखारने का काम करता हो
†स्त्री०=पखरी।

पखरी—स्त्री० [हिं० पख+री (प्रत्य०)] गद्दी, कुरसी आदि आसनो मे दोनो तरफ के वे स्थान जो वगल मे पडते है। उदा०—गाधी पखरी पीठि लगे लोने लचकीले।—रत्ना०।
†स्त्री०=पखडी।

पु० [हिं० पाखर] १ वह घोडा या हाथी जिस पर पाखर पडी हो। २. ऐसे घोडे या हाथी का सवार योद्धा।

पखरैत—पु० [हिं० पाखर+ऐत (प्रत्य०)] वह घोडा, वैल या हाथी जिस पर पाखर अर्थात् लोहे की झूल पडी हो।

पखरौटा†—पु०[हिं० पखडी+औटा (प्रत्य०)]पान का वीडा जिस पर सोने या चाँदी का वरक लगा हो।

पखवाड़ा†—पु०[स० पक्ष=आधा चाद्रमास+हि० वाडा (प्रत्य०)] १ चाद्रमास का कोई पक्ष। २ पूरे १५ दिनो का समय। जैसे—तुमने जरा-से काम मे एक पखवाडा लगा दिया।

पखवारा†—पु०=पखवाडा।

पखा*—पु० [?] दाढी।
पु० १. =पक्ष। २ =पख (जैसे —मोर-पखा)।

पखाउज†—पु०=पखावज।

पखाटा—पु० [स० पक्ष] धनुप का कोना।

पखान*—पु०=पापाण (पत्थर)।
*पु०[स० उपाख्यान] किसी घटना या वात का लम्बा-चौडा व्यौरा।
मुहा०—पखान वखानना=वहुत ही विस्तार-पूर्वक किसी की त्रुटियो, दोपो आदि का उल्लेख करना। (पश्चिम)

पखाना—पु० [स० उपाख्यान] कहावत। लोकोक्ति।
†पु०=पाखाना।

पखा-पखी—स्त्री० [स० पक्ष] कई पक्षो की आपस मे होनेवाली खीचा-तानी या विरोध। उदा०—पपा-पपी के पेपणै सव जगत भुलाना।—कवीर।

पखारना—स० [स० प्रक्षालन, प्रा० पक्खाडन] किसी चीज पर पानी डालकर उस पर की धूल, मैल आदि छुडाना। धोकर साफ करना। धोना। जैसे—पाँव या वरतन पखारना।

पखाल—स्त्री० [स० पक्ष+खल्ल] १ वैल आदि के चमडे की वनी हुई पानी भरने की मशक। २ धौकनी।

पखाल-पेटिया—वि० [हिं० पखाल+पेट+ईया (प्रत्य०)] १ पखाल अर्थात् मशक की तरह बहुत वडे पेटवाला। २ वहुत खानेवाला। पेटू।

पखाली—वि० [हिं० पखाल] पखाल अर्थात् मशक-सवधी।
पु० मशक से पानी भरनेवाला। भिश्ती।

पखावज—स्त्री० [स० पक्षावाद्य, प्रा० पक्खाउज्ज] मृदग के आकार-प्रकार का परन्तु उससे कुछ छोटा एक प्रकार का वाजा।

पखावजी—वि० [हिं० पखावज+ई (प्रत्य०)] पखावज-सवधी।
पु० वह जो पखावज वजाकर अपनी जीविका चलाता हो अथवा पखावज वजाने मे निपुण हो।

पखिया—वि० [हिं० पख] १ हर वात मे पख या व्यर्थ का दोप निकालनेवाला। २ व्यर्थ का झगडा-वखेडा खडा करनेवाला झगडालू। वखेडिया।

पखी†—वि०=पखिया।
†पु०=पक्षी।

पखीरा†—पु० [स्त्री० पखीरी]=पक्षी (चिडिया)।

पखुआ†—पु०=पखुरा।

पखड़ी†—स्त्री०=पखडी।

पखुरा†—पु० [स० पक्ष] १ बाँह का कंधे और कोहनी के बीच का अंग या अवयव। (पूरब) २ पाखा।

पखुरी—स्त्री०=पखड़ी।

पखेरु*—पु० [स० पक्षालु, प्रा० पक्खाड़ु] पक्षी। चिड़िया।

पखेज—पु० [देश०] उडद, गुड, सोठ आदि का वह मिश्रण जो गायों-भैंसो को प्रसव के बाद ६ दिनो तक खिलाया जाता है।

पखोड़ा—पु०=पखुरा (वृक्ष)।

पखौआ†—पु० [स० पक्ष] किसी पक्षी विशेषत मोर का पर जो टोपी या सिर के बालो मे शोभा आदि के लिए लगाया जाता था। उदा०—क्रीट-मुकुट सिर जांडि पखौआ मोरन कौ क्यों धार्यौ।—भारतेन्दु।

पखौटा—पु० [हि० पख] १ डैना। पर। २ मछली का पक्ष या पर।

पखौडा—पु०=पखुरा।

पखौरा—पु०=पखुरा।

पख्तून—पु० [फा० पुख्तोन] पुख्तो अर्थात् पश्तो भाषा बोलनेवाला व्यक्ति।

पख्तूनिस्तान—पु० [फा० पुख्तोनिस्तान] अविभाजित भारत का और अब पाकिस्तान की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित अफगानिस्तान से सटा हुआ वह प्रदेश, जहाँ की भाषा पुख्तो अर्थात् पश्तो है।

पख्तो—स्त्री० [फा० पुख्तो] पश्तो भाषा जो पख्तूनिस्तान मे बोली जाती है।

पग—पु० [स० पदक, प्रा० पऊक, पक] १ पैर। पाँव।

मुहा०—पग रोपना=कोई प्रतिज्ञा करके किसी जगह दृढता पूर्वक पैर जमाना।

२ उतना अन्तर या दूरी जितनी चलने मे एक पैर से दूसरे पैर तक होती है। फाल। ३ चलने के समय हर बार पैर उठाकर आगे रखने की क्रिया। डग।

पद—पग-पग पर=(क) बहुत ही थोडी-थोडी दूरी पर। (ख) बराबर। लगातार।

पगडडी—स्त्री० [हि० पग+डडा] १ खेतो आदि के बीच का पतला या सकीर्ण मार्ग। २ जगल या मैदान की सकीर्ण राह जो आने-जाने के कारण बन गयी हो।

पगडी—स्त्री० [स० पटक, हि० पाग+डी (प्रत्य०)] १ सिर पर लपेटकर बाँधा जानेवाला लबा कपडा। उष्णीष। पाग। साफा।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

विशेष—मध्ययुग मे पगडी प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा की सूचक होती थी, इसी से इसके कई अर्थो और मुहावरो का विकास हुआ है।

मुहा०—(किसी की) पगडी उतारना या उतार लेना=छीन या ठगकर किसी से बहुत-कुछ धन ले लेना। (किसी के सिर) पगडी बँधना=(क) महत्त्वपूर्ण या शीर्ष स्थान प्राप्त होना। (ख) किसी का उत्तराधिकारी या स्थानापन्न बनाया जाना। (किसी से) पगडी बदलना=किसी से भाई-चारे और घनिष्ठ मित्रता का सबध स्थापित करना।

विशेष—मध्ययुग मे जब किसी से बहुत अधिक या घनिष्ठ मित्रता का सबध हो जाता था, तब उस मित्रता को स्थायी बनाये रखने के प्रतीक के रूप मे अपनी पगड़ी उसके सिर पर रख दी जाती थी और उसकी पगडी आप पहन ली जाती थी।

२ पगडी बाँधनेवाले अर्थात् वयस्क पुरुष का वाचक शब्द या सज्ञा। जैसे—गाँव भर से पगडी पीछे एक रुपया ले लो; अर्थात् प्रत्येक वयस्क पुरुष से एक रुपया ले लो। ३ व्यक्ति की प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा।

मुहा०—(किसी से) पगड़ी अटकना=किसी के साथ ऐसा मुकाबला, विरोध या स्पर्धा होना कि उसकी हार-जीत पर प्रतिष्ठा की हानि या रक्षा अवलबित हो। (आपस मे) पगडी उछलना=एक के हाथों दूसरे की दुर्दशा और बेइज्जती होना। जैसे—आज-कल उन दोनो मे खूब पगडी उछल रही है। (किसी की) पगडी उछालना=किसी को अपमानित करके उपहासास्पद बनाना। दुर्दशा करना। (किसी की) पगड़ी उतारना=अपमानित या दुर्दशा-ग्रस्त करना। (किसी के सिर किसी बात की) पगडी बँधना=किसी काम या बात का यश या श्रेय प्राप्त होना। जैसे—इस काम के लिए प्रयत्न चाहे जिसने किया हो, पर इसकी पगड़ी तो तुम्हारे ही सिर बँधी है। (किसी की) पगड़ी रखना=प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा की रक्षा करना। (किसी के आगे) पगड़ी रखना या रख देना=किसी से दीनता और नम्रतापूर्वक यह कहना कि हमारी प्रतिष्ठा या लाज की रक्षा आप ही कर सकते हे।

४ आज-कल, दुकान, मकान आदि किराये पर लेने के समय उसके मालिक को अनुकूल तथा सतुष्ट करने के लिए अवैध रूप से पेशगी दिया जानेवाला धन। जैसे—इस दुकान का किराया तो ५०) महीना ही है, पर दुकान का मालिक हजार रुपये पगडी माँगता हे।

पगतरा—पु० [हि० पग+तरा (निचला भाग)] [स्त्री० अल्पा० पगतरी] जूता।

पग-तल—पु० [हि० पग+स० तल] पैर का नीचेवाला भाग। पैर का तलवा।

पगदासी—स्त्री० [हि० पग+दासी] १ जूता। २ खडाऊँ। (साधुओं की परिभाषा)

पगना—अ० [स० पाक, हि० पाग] १ हि० पागना का अ०। पागा जाना। २ शरबत, शीरे आदि के पाग मे किसी खाद्य पदार्थ का पडकर उसके रस मे भीगना। मीठे रस से ओत-प्रोत होना। जैसे—मुरब्बा बनाने के समय आँवले या आम का शीरे मे पगना। ३ किसी प्रकार के गाढे तरल पदार्थ या रस से ओत-प्रोत होना। ४ लाक्षणिक रूप मे, बात के रस मे अथवा किसी व्यक्ति के प्रेम मे पूर्णत. डूबना या मग्न होना।

सयो० क्रि०—जाना।

पगनियाँ†—स्त्री०=पगनी (जूती)।

पगनी†—स्त्री० [स० पग] १. जूता। २ खडाऊँ।

स्त्री० [हि० पगना] पगने या पागने की क्रिया या भाव।

पग-पान—पु० [हि० पग+पान] पैर मे पहनने का एक आभूषण। पलानी। गोडसकर।

पगरना†—पु० [देश०] सोने, चाँदी आदि के आभूषणो, बरतनो आदि पर नक्काशी करनेवालो का एक उपकरण।

पगरा—पु० [हि० पग+रा (प्रत्य०)] पग। डग। कदम।

पु० [फ़ा० पगाह=सवेरा] प्रभात या प्रातःकाल जो यात्रा आरंभ करने के लिए सबसे अच्छा समय माना गया है।
*वि०=पागल।

पगरी—स्त्री०=पगड़ी।

पगला†—वि०=पागल।

पगहा—पु० [सं० प्रग्रह, प्रा० पग्गह] [स्त्री० पगही] पशुओं के गले मे बाँधी जानेवाली वह रस्सी जिसमें उन्हे खूँटे से बाँधा जाता है। पघा।

पगा†—पु० १.=पाग (पगड़ी)। २. =पघा (पगहा)। ३ =पगरा।

पगाना—स० [हिं० पगना] १. पागने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को पागने मे प्रवृत्त करना। २ (पदार्थ) ऐसी स्थिति मे रखना कि वह पगे। ३. किसी को किसी ओर या किसी काम मे अनुरक्त या पूर्ण रूप से प्रवृत्त करना।

पगार—पु० [सं० प्राकार] १. चहारदीवारी। परकोटा। २. घेरा। ३ दीवार।
पु० [हिं० पग+गारना] १ पैरों से कुचलकर जोड़ाई के काम के लिए तैयार किया हुआ गारा। २. कीचड़।
पु० [फा० पायाब] वह नाला या नदी जिसे पैदल चलकर पार किया जा सके। उदा०—जल कै पगार, निज दल के सिंगार आदि . । —केशव।
स्त्री० [पुर्त० पागा से मराठी] वेतन।

पगारना†—स०=फैलाना।
स० [हिं० पग+गारना] १ पैरो से मिट्टी को रौंदकर गारा बनाना। २. फैलाना।

पगाह—पु० [फ़ा०] १. यात्रा आरंभ करने का उपयुक्त समय अर्थात् तड़का या प्रभात। २ प्रातःकाल। सवेरा।

पगिआना—स०=पगियाना।

पगिया†—स्त्री०=पगड़ी।

पगियाना†—स० [हिं० पाग=पगड़ी] पगड़ी बाँधना।
स०=पगाना।

पगु*—पु०=पग।

पगुराना†—अ० [हिं० पागुर] १ चौपायों का पागुर करना। जुगाली करना। २ पचा जाना। हजम कर लेना।

पगोडा—पु० [बर्मी०] बुद्ध भगवान का मन्दिर।

पग्ग—पुं०=पग।

पग्गड़—पुं० [हिं० पाग=पगड़ी] बहुत बड़ी और भारी पगड़ी।

पग्गा†—पु० [हिं० पागना या पकाना] पीतल, ताँबा आदि गलाने की घरिया। पागा।

पघरना—अ०=पिघलना। (पश्चिम) उदा०—मैन तुरग चढे पावक बिच, नाहीं पघरि परेंगे।—नागरीदास।

पघराना—स०=पिघलाना।

पघा—पु० [सं० प्रग्राह] वह रस्सी जिससे पशु खूँटे पर बाँधे जाते हैं। पगहा।

पघिलना†—अ०=पिघलना।

पघिलाना—स०=पिघला

पघैया—वि० [हिं० पग+ऐया (प्रत्य०)] पैदल चलनेवाला।
पु० वह व्यापारी जो गाँवों आदि मे घूम-घूमकर चीजे बेचता हो।

पच—वि०=पँच (पाँच का संक्षिप्त रूप)। (पच के यौ० के लिए दे० 'पँच' और 'पंच' के यौ०)

पचक—पु० [सं०] कट नामक गुल्म।
स्त्री० [हिं० पचकना] १. पिचकने की अवस्था या भाव। २ पिचकने के कारण पड़ा हुआ गड्ढा या निशान।
†पु०=पाचक (रसोइया)।

पचकना—अ०=पिचकना।

पचकल्यान—पु०=पचकल्याण।

पचकाना—स०=पिचकाना।

पचखना—वि० [हिं० पाँच+सं० खंड] (मकान) जिसमे पाँच खंड या मंजिलें हों।
अ०=पिचकना।

पचखा†—पु० दे० 'पचक' (पाँच अशुभ तिथियाँ)।

पचड़ा—पु० [हिं० पाँच (प्रपंच)+डा (प्रत्य०)] १ व्यर्थ की झंझट। बखेड़े का काम या बात।
क्रि० प्र०—निकालना।—फैलाना।
२. खयाल या लावनी की तरह का एक प्रकार का लोक-गीत जिसमे पाँच चरण या पद होते हैं। ३ एक प्रकार का गीत जो ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं।

पचतावा—पु०=पछतावा (पश्चात्ताप)।

पचतूरा—पु० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

पचतोरिया—पु०=पँच-तोरिया (कपड़ा)।

पचतोलिया—पु०, वि०=पँच-तोलिया।

पचन—वि० [सं०√पच् (पाक) ल्युट—अन] पकानेवाला।
पु० १ भोजन आदि पकने या पकाने की क्रिया या भाव। २ पेट मे पहुँचने पर भोजन आदि पचने की क्रिया या भाव। पाचन। ३ अग्नि। आग। ४ जठराग्नि।

पचन-संस्थान—पुं० [ष० त०] शरीर के अन्दर के वे सब अंग और यंत्र जो भोजन पचाते है। (एलिमेन्टरी सिस्टम)

पचना—अ० [सं० पचन] १. खाने पर पेट मे पहुँचे हुए खाद्य-पदार्थ का जठराग्नि की सहायता से गलकर रस आदि मे परिणति होना।
विशेष—जो चीज पच जाती है उसका फोक या सीठी गुदा मार्ग से मल के रूप मे बाहर निकल जाती है और जो चीज ठीक तरह से नही पचती, वह प्रायः उसी रूप मे गुदा मार्ग से या मुँह के रास्ते बाहर निकल जाती है और यदि पेट मे रहती भी है, तो कई प्रकार के विकार उत्पन्न करती है।
२ किसी दूसरे का धन आदि इस प्रकार अधिकार मे आना या भोगा जाना कि उसके पहले स्वामी के हाथ मे न जाय और उसका कोई दुष्परिणाम भी न भोगना पड़े। जैसे—हराम की कमाई किसी को नही पचती (अर्थात् उसे उसका दुष्परिणाम भोगना पड़ता है)। ३ किसी चीज या बात का कही इस प्रकार छिपा या दबा रहना कि औरों को उसका पता न लगने पाये। जैसे—तुम्हारे पेट मे तो कोई बात पचती ही नही। ४ किसी चीज या बात का इस प्रकार अंत या

समाप्त होना कि उसके फिर से उभरने की सभावना न रह जाय। जैसे—रोग या विकार पचना, घमड या शेखी पचना।
सयो० क्रि०—जाना।
५ किसी व्यक्ति का परिश्रम, प्रयत्न आदि करते-करते थककर चूर या परम शिथिल हो जाना। मेहनत करते-करते हार जाना या वहुत हैरान होना।
पद—पच-पचकर=वहुत अधिक परिश्रम या प्रयत्न करके। उदा०—काँचो दूध पियावत पचि-पचि देत न माखन रोटी।—सूर।
मुहा०—पच मरना या पच हारना=कोई काम करते-करते थककर वैठ या हार जाना। उदा०—पचि हारी कछु काम न आई, उलटि सवै विधि दीन्ही।—भारतेन्दु।
६ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ मे पूर्ण रूप से लीन होना। खप या समा जाना। जैसे—सेर भर खीर मे पाव भर घी तो सहज मे पच जाता है।

पचनागार—पु० [पचन-आगार, प० त०] पाकशाला। रसोईघर।

पचनाग्नि—पु० [पचन-अग्नि, मध्य० स०, प० त०] पेट की आग जिससे खाया हुआ पदार्थ पचता है। जठराग्नि।

पचनिका—स्त्री० [स० पचनी+कन्, टाप्, ह्रस्व] कडाही।

पचनी—स्त्री० [स० पचन+ङीप्] विहारी नीवू।

पचनीय—वि० [स०√पच्+अनी, यर्] जो पच सकता हो या पचाया जा सकता हो। पचने के योग्य।

पचंपच—पु० [स०√पच्+अच्, द्वित्व] शिव का एक नाम।

पचपचा—वि० [हिं० पचपच] (अध-पका खाद्य पदार्थ) जिसमे डाला हुआ पानी अभी सूखा न हो।

पचपचाना—अ० [हिं० पचपच] १ किसी पदार्थ का आवश्यकता से अधिक इतना गीला होना कि उसे हिलाने-डुलाने से पच-पच शब्द निकले। २ जमीन का कीचड से युक्त होना।
स० ऐसी क्रिया करना जिससे किसी गाढे तरल पदार्थ मे से पच-पच शब्द निकलने लगे।

पचपन—वि० [स० पचपचाश, पा० पचपण्णासा] जो गिनती मे पचास और पाँच हो, पाँच कम साठ।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५५।

पचपनवाँ—वि० [हिं० पचपन] पचपन के स्थान पर आने, पडने या होनेवाला।

पचपल्लव†—पु०=पचपल्लव।

पचमेल—वि०=पँच-मेल।

पचरा—पु०=पचडा।

पचलडी—स्त्री० [हि० पाँच+लडी]=पँच-लडी।

पच-लोना—वि०, पु०=पंच-लोना।

पचवना*—स०=पचाना।

पचहत्तर—वि० [स० पञ्चसप्तति, प्रा० पचहत्तरि] गिनती या सख्या मे जो सत्तर से पाँच अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७५।

पचहत्तरवाँ—वि० [हिं० पचहत्तर+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे पचहत्तर के स्थान पर आने, पडने या होनेवाला।

पचानक—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

पचाना—स० [हिं० पचना का स० रूप] १ खाई हुई वस्तु को पक्वाशय की जठराग्नि से रस मे परिणत करना। २ दूसरो का माल हजम करना। ३ परिश्रम करा के या कष्ट देकर किसी के शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ४. अच्छी तरह अन्त या समाप्त कर देना। जैसे—किसी की मोटाई पचाना। ५ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने मे विलीन कर या समा लेना।

पचारना—स० [स० प्रचारण] कोई काम करने के पहले उन लोगो के सामने उसकी घोषणा करना जिनके विरुद्ध वह काम किया जाने को हो। ललकारना। जैसे—हाँक-पचारकर लडाई छेडना।

पचाव—पु० [हिं० पचना+आव (प्रत्य०)] पचने या पचाने की क्रिया या भाव। पाचन।

पचास—वि० [स० पचाशत, प्रा० पचासा] जो गिनती या सख्या मे चालीस से दस अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५०।

पचासवाँ—वि० [हिं० पचास+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे पचास के स्थान मे आने, पडने या होनेवाला।

पचासा—पु० [हिं० पचास] १. एक ही जाति की पचास वस्तुओं का कुलक या समूह। २ पचास रुपये। जैसे—सैर करने मे पचासा लगेगा। ३ वह वटखरा या वाट जो तौल मे पचास रुपयो या पचास भरी के वरावर हो। ४ सकटसूचक वह घड़ियाल जो लगातार कुछ समय तक वरावर टन-टन करते हुए वजाया जाता है और जिसका उद्देश्य आस-पास के सिपाहियो को केन्द्र मे वुलाना होता है।

पचासी—वि० [स० पचाशीति, प्रा० पचासाई, पच्चासी] जो गिनती या सख्या मे अस्सी से पाँच अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८५।

पचासीवाँ—वि० [हिं० पचासी+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे पचासी के स्थान पर आने, पडने या होनेवाला।

पचासों—वि० [हिं० पचास] वहुत अधिक विशेषत पचास से अधिक। जैसे—लडकी के घर त्यौहारो पर पचासो रुपये नकद या मिठाइयो के रूप मे भेजने पडते है।

पचि—स्त्री० [स०√पच्+इन्] १ पकाने की क्रिया या भाव। पाचन। २ अग्नि। आग।

पचित—भू० कृ० [स०] १ अच्छी तरह पचा हुआ। २ अच्छी तरह घुला या मिला हुआ।
वि० [हिं० पच्ची] जिस पर पच्चीकारी का काम किया हुआ हो। (क्व०)

पची†—स्त्री०=पच्ची।

पचीस—वि० [स० पचविंशति, पा० पचवीसति, अपभ्रंश, प्रा० पच्चीस] क्रम या गिनती मे वीस से पाँच अधिक।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२५।

पचीसवाँ—वि० [हिं० पचीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती मे पचीस के स्थान पर आने, पडने या होनेवाला।

पचीसी—स्त्री० [हिं० पचीस] १ एक ही प्रकार की पचीस वस्तुओ का समूह। जैसे—वैताल पचीसी (पचीस कहानियो का सग्रह)। २ व्यक्ति की आयु के आरभिक २५ वर्षो का समय, जिसे व्यग्य से 'गदह-

पचीसी' भी कहते हैं। ३. गणना का वह प्रकार जिसमें पचीस चीजों की एक इकाई मानी जाती है। जैसे—अमरूद, आम आदि की गिनती पचीसी गाही (१२५ फलों) की होती है। ४. चौसर का वह खेल जो पासों के स्थान पर सात कौड़ियाँ फेंककर खेला जाता है और जिसमें दाँवों का संकेत चिह्न और पट्ट पड़नेवाली कौड़ियों की संख्या के विचार से होता है। ५. चौसर खेलने की बिसात।

पचूका†—पु०=पिचकारी।

पचेलिम—वि०[सं०√पच्+केलिमर्]आसानी से और जल्दी पचनेवाला।
पु० १. अग्नि। २. सूर्य।

पचेलुक—पु०[सं०√पच्+एलुक] रसोइया।

पचोतर—वि०[सं० पञ्चोत्तर] (किसी संख्या से) पाँच अधिक। पाँच ऊपर। जैसे—पचोतर सौ।

पचोतर सौ—पु०=पचोतर सौ।

पचोतरा†—पु०=पँचोतरा।

पचोजा—पु०[हिं० पचना] कपड़े पर छींट की छपाई करने के बाद उसे १०-१२ दिनों तक धूप में रखने की क्रिया, जिससे छपाई के समय कपड़े पर पड़े हुए दाग या धब्बे छूट जाते हैं।

पचौनी—स्त्री०[सं० पाचन]१. पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २. अँतड़ी। आँत।

पचौर—पु०[हिं० पंच या पचौली] गाँव का मुखिया। सरदार।

पचौली—पु०[हिं० पंच+कुली]१. गाँव का मुखिया। सरदार। पंच। २. दे० 'पचौली'।
पु०[?] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियों से सुगंधित तेल निकलता है।

पचौवर—वि०=पचौवर (पचहरा)।

पच्चट—पु०=पच्चर।

पच्चर—पु०[सं० पचित या पच्ची]१. बाँस, लकड़ी आदि का वह छोटा तथा पतला टुकड़ा जो काठ की चीजों के जोड़ कसने के लिए उनकी दरारों या संधियों में जड़ा, ठोंका या लगाया जाता है।
क्रि० प्र०—जड़ना।—ठोंकना।—लगाना।
२. लाक्षणिक रूप में व्यर्थ खड़ी की जानेवाली अड़चन, बाधा या रुकावट।
क्रि० प्र०—अड़ाना।—लगाना।
मुहा०—पच्चर ठोंकना या मारना—तंग या परेशान करने के लिए बहुत बड़ी अड़चन या बाधा खड़ी करना। ऐसा उपाय करना कि काम किसी तरह आगे बढ़ ही न सके।

पच्ची—स्त्री०[सं० पचित]१. पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २. खपाने की क्रिया या भाव। जैसे—माथा पच्ची, सिर पच्ची। ३. धातुओं, पत्थरों आदि पर नगीने या धातु, पत्थर, आदि के छोटे-छोटे टुकड़े जड़ने की वह क्रिया या प्रकार, जिसमें जड़ी जानेवाली चीज गड्ढों में इस प्रकार जमाकर जड़ी या बैठाई जाती है कि उसका ऊपरी तल उभरा हुआ नहीं रह जाता। जैसे—सोने के कंगन में हीरों की पच्ची, ताँबे के लोटे पर चाँदी के पत्तरों की पच्ची, संगमरमर की पटिया पर रंग-बिरंगे पत्थरों के टुकड़ों की पच्ची।
पद—पच्चीकारी। (देखें)
मुहा०—(किसी में) पच्ची हो जाना=किसी से बिलकुल मिल जाना या उसी के रूप का हो जाना। लीन हो जाना। जैसे—यह कबूतर जब उड़ता है, तब आसमान में पच्ची हो जाता है।
वि०[हिं० पक्ष] किसी का पक्ष लेकर उसकी ओर से झगड़ा या विवाद करनेवाला।

पच्चीकारी—स्त्री०[हिं० पच्ची+फा० कारी=करना]१. पच्ची की जड़ाई करने की क्रिया या भाव। २. पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

पच्छताई*—स्त्री०[सं० पक्ष]१. किसी का पक्ष ग्रहण करने का भाव। २. पक्षपात। तरफदारी।

पच्छम—वि०, पु० =पश्चिम।

पच्छाघात—पु० =पक्षाघात।

पच्छि*—पु० =पक्षी।

पच्छिनी—स्त्री० =पक्षिणी (चिड़िया)।

पच्छिम—पु० =पश्चिम (दिशा)।
†वि०=पिछला।

पच्छिराज*—पु०=पक्षिराज (गरुड़)।

पच्छिवँ†—पु० =पश्चिम।

पच्छी—पु० =पक्षी।

पछँहा—वि० [सं० पश्चिम] पश्चिम में होने या रहनेवाला।

पछ†—वि० हिं० पाछे (पीछे) का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पछलगा (पिछलगा)।
पु०=पक्ष।

पछइ—अव्य० =पीछे।

पछटी—स्त्री०[देश०] तलवार। (डिं०)

पछड़ना—अ०[हिं० 'पछाड़ना' का अ०] १. कुश्ती आदि लड़ने में पछाड़ा या पटका जाना। २. प्रतियोगिता आदि में बुरी तरह से परास्त होना या हराया जाना।
†अ०=पिछड़ना।

पछताना—अ०[हिं० पछताव] पश्चात्ताप करना।

पछतानि—स्त्री० =पछतावा (पश्चात्ताप)।

पछताव—पु०=पछतावा।

पछतावना†—अ० =पछताना।

पछतावा—पु० [सं० पश्चात्ताप]पछताने की क्रिया या भाव। मन में होनेवाला उस बात का दुःखजन्य विचार कि मैंने ऐसा अनुपयुक्त या अनुचित काम क्यों किया अथवा अमुक उचित या उपयुक्त काम क्यों न किया। पश्चात्ताप।

पछना—अ० [हिं० पाछना का अ० रूप] पाछा अर्थात् छुरे के आघात से हलका चीरा लगाया जाना।

पछमन†—अव्य०=पीछे।

पछरना†—अ० १ =पछड़ना। २ =पिछड़ना।

पछरा†—पु०=पछाड़।

पछलगा—पु०=पिछलगा।

पछलत्त†—स्त्री०=पिछलत्ती।

पछ-लागा—पु०=पिछलगा।

पछवत—स्त्री०[हिं० पीछे+वत]ऐसी फसल जिसकी बोआई उपयुक्त ऋतु के अंत में या ठीक समय के बाद हुई हो।

पछवाँ—वि०[स० पश्चिम]१. पश्चिम-दिशा सबधी। २ पश्चिम की ओर से आनेवाला। जैसे—पछवाँ हवा।
स्त्री० पश्चिम की ओर से आनेवाली हवा।
पु०[हिं० पीछे] अँगिया, कुरती आदि का वह भाग जो पीछे की ओर रहता है।
पु० दे० 'पछुआ'।
अव्य०=पीछे।
पछवारा†—पु०[हिं० पीछा]१ पिछला भाग। २ पीठ। पृष्ठ। ३ दे० 'पिछवाड़ा'।
†वि०=पिछल्ला।
पछाँह—पु०[स० पश्चात्, प्रा० पच्छ] किसी प्रदेश की दृष्टि से, उसके पश्चिम विशेषत सुदूर पश्चिम मे स्थित प्रदेश।
पछाँहिया—वि०=पछाँही।
पछाँहीं—वि० [हिं० पछाँह+ई (प्रत्य०)] १ पछाँह-सबधी। २ जो पछाँह मे रहता या होता हो।
पछाड़—स्त्री०[हिं० पछाडना]१ पछाडना की क्रिया या भाव। २. पछाडे जाने की अवस्था या भाव। ३ वह अवस्था जिसमे मनुष्य बहुत बडे शोक का आघात होने पर खडा-खडा एक दम से जमीन पर गिर जाता और प्राय बेसुध-सा हो जाता है।
मुहा०—पछाड खाकर गिरना= बहुत अधिक शोकाकुल होने के कारण खडे-खडे बेसुध होकर गिरना।
पछाड़ना—स०[स० प्रक्षालन]धोकर साफ करने के लिए कपडो को जोर जोर से जमीन या पत्थर पर पटकना।
स० [हिं० पीछे+ढकेलना]१. कुश्ती आदि मे किसी को जमीन पर चित गिराना और उसे जीतना। २ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, वादविवाद आदि मे किसी को बुरी तरह से नीचा दिखाना, परास्त करना या हराना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
पछाड़ी†—स्त्री०=पिछाडी (पिछला भाग)।
पछानना†—स०=पहचानना। (पश्चिम)
पछाया—पु० दे० 'पिछाडी'।
पछार—स्त्री०=पछाड।
अव्य०=पछवाँ (पीछे)।
पछारना—स०=पछाडना।
पछावर (रि)—स्त्री० [हिं० पीछे?] छाछ आदि का बना हुआ एक प्रकार का पेय जो भोजन के अत मे पिया जाता है।
पछाहँ†—पु०=पछाँह।
पछाहाँ†—वि०, पु०=पछाँही।
†स्त्री०=परछाईं।
पछिआना—स० [हिं० पाछे+आना]१ किसी भागते हुए व्यक्ति को पकडने या पाने के लिए उसके पीछे-पीछे तेजी से बढना। पीछा करना। २ किसी के पीछे-पीछे अनुगामी बनकर चलना। अनुकरण करना।
पछिउँ†—पु०=पश्चिम।
पछिताना—अ०=पछताना।
पछितानि—स्त्री०=पछतावा।
पछितावा†—पु०[देश०] पशुओ का एक प्रकार का रोग।
पु०=पछतावा।
पछियाँव†—स्त्री०[सं० पश्चिम+वायु] पश्चिम दिशा मे आनेवाली हवा।
क्रि० प्र०—चलना।—बहना।
पछियाना—स०=पछिआना (पीछा करते हुए दौडाना)।
पछियाव—स्त्री० [हिं० पच्छिम+वायु] पश्चिम की हवा।
पु०=पीछा (पिछला भाग)।
पछियावर—स्त्री०=पछावर।
पछिलना†—अ०१.=पिछडना। २ =फिसलना।
पछिला—वि०[स्त्री० पछिली]=पिछला।
पछिवाँ—वि०, स्त्री०=पछवाँ।
पछिवाई†—स्त्री०[स० पश्चिम+वायु]पश्चिम दिशा से आनेवाली हवा।
पछीत—स्त्री०[स० पश्चात्, प्रा० पच्छा]१. घर का पिछवाडा। मकान के पीछे का भाग। २ घर या मकान के पीछेवाली दीवार।
†अव्य०=पीछे।
पछुआँ†—वि०, पु०, स्त्री०=पछवाँ।
पछुआ—पु० [हिं० पीछा] पैरो मे पहनने का कडे के आकार का एक गहना।
पछेड़ा†—पु०[हिं० पीछे] किसी को तग करने के लिए उसके पीछे पडने की क्रिया या भाव। उदा०—पतवार पुरानी, पवन प्रलय का कैसा किये पछेडा है।—प्रसाद।
पछेलना—स० [हिं० पीछे+एलना (प्रत्य०)] १. चलते, दौडते अथवा कोई काम करते समय किसी को पीछे छोड या डालकर स्वय उससे आगे निकलना या बढ़ना। २ पीछे की ओर ढकेलना या हटाना।
पछेला—वि०[स्त्री० पछेली]=पिछला।
पु०=पिछेला (गहना)।
पछेलिया†—स्त्री०=पिछेली (गहना)।
पछेली†—स्त्री०=पिछेली (गहना)।
पछोड़न—स्त्री० [हिं० पछोडना] अनाज पछोडने पर निकलनेवाला कूडा-करकट।
पछोड़ना—स०[स० प्रक्षालन. प्रा० पच्छाडना] अन्न आदि सूप मे रखकर इस प्रकार उछालना और हिलाना कि उसमे का कूडा-करकट निकलकर अलग हो जाय। (अनाज) फटकना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
पद—फटकना-पछोड़ना=उलट-पुलटकर परीक्षा करना। अच्छी तरह देखना-भालना। उदा०—सूर जहाँ लौ स्याम गत हैं देखे फटकि पछोरी।—सूर।
पछोरना—स०=पछोडना।
पछोरा†—पु०=पिछौरा (दुपट्टा)।
पछ्यावर—स्त्री०[देश०]=पछावर।
पजर—पु०[स० प्रक्षरण]१ चूने या टपकने की क्रिया या भाव। २. पानी का झरना या सोता।
स्त्री०[हिं० पजरना] पजरने अर्थात् जलने का भाव।

पजरना—अ० [स० प्रज्वलन] १ प्रज्वलित होना। २. जलना। ३. तपना।
स०=पजारना।

पजरे†—क्रि० वि०=पास (निकट)।

पजहर—पु०[फा०] पीलापन या हरापन लिए हुए सफेद रंग का एक तरह का बढिया पत्थर जिस पर नक्काशी की जाती है।

पजाना—स०[हिं० पजा?] चोखा या तेज करना। उदा०—तो भी पजा पजा रहा है, साइबेरिया का भालू।—दिनकर।

पजामा†—पु०=पाजामा। (पश्चिम)

पजारना—स०[हिं० पजरना] १. प्रज्वलित करना। २. जलाना। ३. तपाना। ४. पीडित या सतप्त करना।

पजावा—पु०[फा० पजाव] ईंटें, चूना, आदि पकाने का भट्ठा। आँवाँ।

पजूसण—पु०[स०] जैनों का एक व्रत।

पजोला—पु० [?] किसी के मरने पर उसके सबधियों के सामने किया जानेवाला शोक-प्रकाश। मातम-पुरसी।

पजोड़ा†—वि०=पाजी (दुष्ट)।

पज्ज—पु० [स० पद्√जन् (उत्पत्ति)+ड] शूद्र।

पज्जर—पु०=पांजर।

पज्झटिका—स्त्री० [स० पद्धटिका] १ छोटी घटी। २ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती है तथा आठवीं और छठी मात्रा पर एक एक गुरु होता है। इसमे जगण का निषेध है।

पटंतर†—पु०=पटतर।

पटवर—पु० [स० पट-अवर] रेशमी कपडा। कौषेय।

पट—पु० [स० पट् (लपेटना)+क] १. पहनने के कपडे। पोशाक। २ कपडा। वस्त्र। ३ आवरण। परदा। जैसे—चित्र-पट। ४. उक्त के आधार पर दरवाजा। द्वार। जैसे—पालकी का पट, दरवाजे का पट।
मुहा०—(मंदिर का) पट उघड़ना या खुलना=नियत समय पर मदिर का दरवाजा इसलिए खुलना (या उसके आगे पडा हुआ परदा इसलिए हटना) कि दर्शनार्थी लोग देव-मूर्ति के दर्शन कर सकें।
५ कोई ऐसी चीज जो खूब, अच्छी तरह और सुन्दर बनी हो।
पु० [स० पटम्] फूस, सरकडे आदि से छाया हुआ छप्पर। छानी। जैसे—नाव या बैलगाड़ी के ऊपर का पट।
पु० [स० चित्र-पट मे का पट] १. कपडे, कागज, धातु आदि का वह टुकडा, जिस पर हाथ से कोई चित्र अकित किया हुआ हो। चित्र-पट। २ जगन्नाथपुरी, बदरिकाश्रम आदि तीर्थों मे दर्शनार्थियों को प्रसाद के रूप मे मिलनेवाला उक्त देवताओं का चित्रपट।
वि० [स० चित्र-पट मे का पट अर्थात् नीचे वाला भाग] १ जिसका मुँह नीचे की ओर तथा पीठ ऊपर की ओर हो। उलटा पडा हुआ। औंधा। 'चित' का विपर्याय। जैसे—(क) कुश्ती में, पट पडे हुए पहलवान को चित करने से ही जीत होती है। (ख) तलवार उस पर पट पडी थी, इसलिए उसे अधिक चोट नही आई।
विशेष—प्राचीन काल मे कपडे पर अंकित किये जानेवाले चित्र को चित्र-पट कहते थे। उसका चित्रवाला ऊपरी भाग तो 'चित्र' होता ही था, जिससे हिन्दी का 'चित' विशेषण बना है, नीचेवाला कपडा 'पट' होता था, जिससे हिन्दी का उक्त अर्थवाला 'पट' विशेषण बना है। यहाँ इसके (विशेषण रूप मे) जो और अर्थ दिये जाते है, वे सब उक्त पहले अर्थ के विकसित रूप है।
२. बिलकुल खाली पडा हुआ। जिसमें या जिसपर कुछ भी न हो। जैसे—खेत (या रास्ता) बिलकुल पट पडा था। ३ धीमा या मन्द। मद्धिम या सुस्त। जैसे—आज-कल कारोबार या बाजार बिलकुल पट है। ४ चौपट। बरबाद। जैसे—तुमने तो सारा काम ही पट कर दिया।
पद—चौपट। (देखें)
पु० १. किसी वस्तु का चिपटा और चौरस तल। २. चौरस जमीन।
पु० [?] सिरोंजी का पेड़। पयाल। २. कपास। ३ सन-सूत।
४. टाँग। पैर। ५. कुश्ती का एक पेच।
पु० [स० पट्ट] राज-सिंहासन।
पद—पट-रानी। (देखें)
पु० [अनु०] छोटी चीज के धीरे से गिरने पर होनेवाला 'पट' शब्द।
अव्य० [हिं० चट का अनु०] तत्काल। तुरन्त। जैसे—चटपट यह काम खतम करो।

पटइन—स्त्री० [हिं० पटना] पटवा जाति की स्त्री जो गहने गूँथने का काम करती है।

पटई†—स्त्री० दे० 'चहेंगी'।

पटक—पु० [स० पट+कन्] १. सूती कपडा। २. [पट√कै+क] खेमा। तबू।
स्त्री० [हिं० पटकना] पटकने की क्रिया या भाव। पटकान। जैसे—दोनो मे उठा-पटक होने लगी।

पटकन†—स्त्री०=पटकान।

पटकना—स० [स० पतन+करण] १. किसी को या कोई चीज उठाकर या हाथ मे लेकर जोर से जमीन पर डालना या गिराना। जोर के साथ ऊँचाई से भूमि की ओर फेंकना। जैसे—(क) किसी लडके को जमीन पर पटकना। (ख) गिलास या थाली पटकना।
सयो० क्रि०—देना।
मुहा०—(कोई काम) किसी के सिर पटकना=किंचित उग्र रूप से या जबरदस्ती किसी के जिम्मे लगाना। मढना। जैसे—तुम तो सब काम यों ही मेरे सिर पटक देते हो।
२ अपना कोई अग जोर से किसी तल पर गिराना या रखना। जैसे—जमीन पर सिर या हाथ पटकना। ३ किसी खडे या बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर जोर से नीचे गिराना। दे मारना। ४ कुश्ती मे प्रतिद्वन्द्वी को जमीन पर गिराना या पछाडना।
अ० १ ऊपरी तल का दबकर कुछ नीचे हो जाना। पचकना। २ (अनाज आदि का) सूखकर सिकुडना। ३. (सूजन आदि का) दबकर कम होना। ४ 'पट' शब्द करते हुए किसी चीज का चटक, टूट या फूट जाना। जैसे—मिट्टी का बरतन पटकना।

पटकनिया—स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने का ढग, भाव अथवा युक्ति। २ दे० 'पछाड'।

पटकनी—स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने की क्रिया या भाव। पटकान।

क्रि० प्र०—देना।

२ पटके जाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

३ पछाड खाकर जमीन पर गिरने और लोटने की क्रिया या भाव।

पटकरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की वेल।

पटकर्म (मन्)—पु० [प० त०] कपडे बुनने का काम, धधा या पेशा। वयन।

पटका—पु० [स० पट्टक] १ कमर मे बाँधने का दुपट्टा या वडा रूमाल। कमरवन्द।

मुहा०—(किसी का) पटका पकडना=(क) किसी काम या बात के लिए किसी को उत्तरदायी ठहराना। (ख) किसी से कुछ पाने या लेने के लिए आग्रह करना। (किसी काम के लिए) पटका बाँधना=किसी काम के लिए तैयार होना। कमर कसना।

२ गले मे डालने का दुपट्टा। ३. एक प्रकार का चारखाना या धारीदार कपडा। ४ दीवार के ऊपर की वह पट्टी जो शोभा के लिए कमरे मे अन्दर की ओर वनाई जाती है। कँगनी। कारनिस।

पटकान—स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

२ झटके या झोके से किसी के द्वारा नीचे गिराये जाने का भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

३. पटके जाने के कारण होनेवाली पीडा। ४ छडी। डडा।

पटकार—पु० [स० पट√कृ (करना)+अण्] १ कपडा बुननेवाला। जुलाहा। २ चित्रपट वनानेवाला। चित्रकार।

स्त्री० [हिं० पटकना] १ वह लवी रस्सी, जिसे जमीन पर पटककर किसान लोग खेत की चिडियाँ उडाते हैं। २ उक्त रस्सी के पटके जाने पर होनेवाला शब्द।

पटकी†—स्त्री०=पटकान।

पट-कुटी—स्त्री० [मध्य० स०] रावटी। खेमा। (डिं०)

पट-कूल—पु० [स०] कपडा। वस्त्र।

पट-चित्र—पु० [सप्त० त०] १ कपडे पर वना हुआ वह चित्र, जो लपेटकर रखा जा सके। २. दे० 'चित्र-पट'।

पटच्चर—पु० [स० पटत्√पट्+अति, पटच्चर पटत्√चर् (गति)+अच्] १. फटा-पुराना कपडा। चीथडा। २ चोर। ३ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

पटझोल*—पु० [स० पट=कपडा+झोल] १ पहने हुए कपडे मे पडनेवाला झोल। २ आँचल। पल्ला।

पटडा†—पु० [स्त्री० पटडी]=पटरा।

पटण*—पु०=पत्तन (नगर)।

पटतर—पु० [स० पट्ट-तल] १. तुल्यता। वरावरी। समानता। २. उपमा जो तुल्यता या सादृश्य के आधार पर दी जाती है। ३ तुलना। उदा०—सुरपति-सदन न पटतर पावा।—तुलसी।

क्रि० प्र०—देना।— *लहना।

†वि० चौरस। समतल।

क्रि० वि० तुल्य। वरावर। समान। उदा०—राम नाम पटतरै देवै को कछु नाहि।—कवीर।

पटतरना—स० [हिं० पटतर] १ किसी को किसी दूसरे के तुल्य या वरावर ठहराना। २ किसी के साथ उपमा देना। ३. तुलना करना। ४ (जमीन आदि को) पटतर या समतल वनाना।

अ० १ तुल्य या वरावर ठहराया जाना। २ उपमित किया जाना। ३ तुलना किया जाना। ४ पटतर या समतल वनाया जाना।

पटतारना—स० [हिं० पटा+तारना=अदाजना] खड्ग, भाला आदि इस-रूप मे पकडना कि उससे वार किया जा सके।

स० [हिं० पटतर] ऊँची-नीची भूमि चौरस या वरावर करना।

पटताल—पु० [स० पट्ट-ताल] मृदग का एक ताल जो एक दीर्घ या दो ह्रस्व मात्राओ का होता है।

पटद—पु० [स० पट√दा (देना)+क] कपास जिससे पट या कपडा वनता या मिलता है।

पट-दीप—पु० [स०] एक प्रकार का राग।

पटधारी (रिन्)—वि० [स० पट√धृ (धारण करना)+णिनि] जो कपडा पहने हो।

पु० राजाओ के तोशाखाने का प्रधान अधिकारी।

पटन—पु० दे० 'पट्टन'।

पटना—अ० [हिं० पाटना का अनु०] १ पाटा जाना। २ गड्ढे आदि का भरे जाने के कारण आस-पास के तल के वरावर होना। ३ किसी स्थान का किसी चीज से वहुत अधिक भर जाना। जैसे—आजकल वाजार आम (या खरवूजो) से पट गया है। ४ दीवारो के ऊपर इस प्रकार छत या छाजन वनना कि उनके वीच की भूमि पर छाया हो जाय। पाटन पडना या वनना। ५. खेतो आदि का पानी से सीचा जाना। ६ रुचि, विचार, स्वभाव आदि मे समानता होने के कारण आपस मे एक-रसता, निर्वाह या सौजन्यपूर्ण सवध होना। जैसे—दोनो भाइयो मे अव फिर पटने लगी है। ७ उक्त प्रकार की अवस्था मे किसी पर विश्वास होना। उदा०—मीराँ कहै प्रभु हरि अविनासी तन-मन ताहि पटै रे।—मीराँ। ८ लेन-देन, व्यवहार आदि मे दोनो पक्षो में व्यौरे की वातो मे सहमति होना। खरीद-विक्री आदि के सवध की सव वाते तय या निश्चित होना। जैसे—सौदा पटना। ९ ऋण, देन आदि का चुकता हो जाना। जैसे—अव उनका सारा ऋण पट गया।

पु० [स० पट्टन] भारत की प्राचीन प्रसिद्ध नगरी पाटलिपुत्र का आधुनिक नाम जो आधुनिक विहार राज की राजधानी है।

पटनिया†—वि० [हिं० पटना+इया (प्रत्य०)] पटना नगर का। पटना नगर से सवध रखनेवाला।

पटनिहा—वि०=पटनिया।

पटनी—स्त्री० [हिं० पटना=तै होना] १ पटने की अवस्था या भाव। २ पाटने की क्रिया या भाव। ३ छत। ४ वह कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा भी हो। ५ चीजे आदि रखने के लिए दीवार मे लगा हुआ तख्ता या पटरी। ६ जमीन या जमीदारी का वह अग जो किसी को निश्चित लगान पर सदा के लिए दे दिया गया हो। ६ मध्य-युग की वह पद्धति, जिसके अनुसार जमीनो का वदोवस्त उपर्युक्त रूप से सदा के लिए कर दिया जाता था।

पट-पट—स्त्री० [अनु०] प्राय हलकी वस्तुओं के गिरने से उत्पन्न होनेवाला 'पट' शब्द।
पद—पट-पट की नाव=बैलगाड़ी।
क्रि० वि० पट-पट शब्द करते हुए।

पटपटाना—अ० [हिं० पटकना] १ किसी चीज से पट-पट शब्द होना। २ भूख-प्यास, सरदी-गरमी आदि के कारण बहुत कष्ट पाना। ३. दुःख या शोक करना।
स० १ पट-पट शब्द उत्पन्न करना। २. ऐसा काम करना, जिससे कोई भूख-प्यास, सरदी-गरमी, आदि के कारण बहुत कष्ट पावे और तड़पे।

पटपर—वि० [हिं० पट+अनु० पर] १ चौरस। सम-तल। २. पूरी तरह से नष्ट या बरबाद। जिसमें कहीं कुछ भी न हो। बिलकुल खाली। जैसे—सारा घर पटपर पड़ा है।
पु० १ बिलकुल उजाड़ और सुनसान जगह। २. नदी के किनारे की वह भूमि जो वर्षा ऋतु में प्राय डूबी रहती है। ऐसी जमीन मे केवल रबी की फसल होती है।

पट-परिवर्तन—पु० [स० प० त०] १ रग-मच का परदा बदलना। २ एक दृश्य या स्थिति के स्थान पर दूसरा दृश्य या स्थिति उत्पन्न होना।

पट-बंधक—पु० [हिं० पटना+स० बधक] कोई सपत्ति बधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमे सपत्ति की सारी आय महाजन ले लेता है, और उस आय मे से सूद निकाल लेने के बाद जो धन बच रहता है, वह मूल ऋण मे जमा करता चलता है। सारा ऋण पट जाने पर सपत्ति महाजन के हाथ से निकलकर उसके वास्तविक स्वामी के हाथ मे चली जाती है।
वि० (मकान या स्थान) जो उक्त प्रकार से रेहन रखा गया हो।

पट-बीजना—पु० [हिं० पट=बराबर+बिज्जु=बिजली ?] जुगनूँ। खद्योत।

पट-भाक्ष—पु० [स० पट√भा (दीप्ति)+क, पटभ√अक्ष् (व्याप्ति)+अच्] प्राचीन काल का एक यत्र जिससे आँख को देखने मे सहायता मिलती थी। एक तरह का प्रकाश-यत्र।

पट-मजरी—पु० [म०] सगीत मे, सपूर्ण जाति की एक प्रकार की रागिनी जो हिंडोल राग की भार्या कही गई है और जो वसत ऋतु मे आधी रात के समय गाई जाती है।

पट-मंडप—पु० [मध्य० स०] कपडे का मडप अर्थात् तबू।

पटम—वि० [हिं० पटपटाना] १. जिसकी आँखें भूख से पटपटा या बैठ गई हो। जो भूख के मारे अधा हो गया हो। २ (आँख) जिससे दिखाई न दे।

पटमय—वि० [स० पट+मयट्] कपडे का बना हुआ।
पु० खेमा। तबू।

पटरक—पु० [स०√पट्+अरन्+कन्] पटेर। गोंद पटेर।

पटरा—पु० [म० पट्ट+हिं० रा (प्रत्य०) अथवा स० पटल] [स्त्री० अल्पा० पटरी] १ काठ का लम्बा, चौकोर और चौरस चीरा हुआ टुकडा। तख्ता। पल्ला।
मुहा०—(कोई चीज) **पटरा कर देना**=(क) कोई चीज काटकर इस प्रकार गिरा देना कि वह जमीन पर पड़े हुए पटरे के समान हो जाय। (ख) बिलकुल नष्ट या बरबाद कर देना। (किसी व्यक्ति को) **पटरा कर देना**=मार डालकर या अध-मरा करके जमीन पर गिरा देना।
२ धोबी का पाट। ३. बैठने के लिए बना हुआ काठ का पीढ़ा। पाटा। ४. खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।
मुहा०—(किसी चीज पर) **पटरा फेरना**=पूरी तरह से नष्ट या बरबाद कर देना।

पट-रानी—स्त्री० [स० पट्ट+रानी] वह स्त्री जिसके साथ किसी राजा का पहला विवाह होता था।
विशेष—पट-रानी को ही राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार होता था; शेष रानियों को नहीं।

पटरी—स्त्री० [हिं० पटरा का स्त्री० अल्पा०] १ काठ का छोटा पतला और लबोतरा टुकडा। छोटा पटरा। २ वह तख्ती या पट्टी जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं। ३ वह चौड़ा खपड़ा जिसकी सधियों पर नरिया औंधी करके रखी जाती है। थपुआ। ४ सडक के दोनों किनारों का वह कुछ ऊँचा और कम चौड़ा पथ जो पैदल चलनेवालों के लिए सुरक्षित रहता है। ५ उक्त प्रकार के वे दोनों छोटे रास्ते जो नहरों आदि के दोनों किनारों पर बने रहते हैं। ६ उक्त के आधार पर लोहे के वे लबे छड या टुकड़े जो समानान्तर लगे रहते है और जिनके ऊपर से रेल-गाड़ी चलती है। जैसे—रेल-गाड़ी के दो डब्बे पटरी से उतर गये। ७. बगीचे मे क्यारियों के इधर-उधर के पतले रास्ते जिनके दोनों ओर सुन्दरता के लिए घास लगा दी जाती है और जिन पर से होकर लोग आते-जाते हैं। ८ हाथ मे पहनने की एक तरह की नक्काशीदार चौड़ी चूड़ी। ९ गले मे पहनने की चौकी, जतर या ताबीज। १०. लाक्षणिक रूप मे, पारस्परिक व्यवहार मे वह स्थिति जिसमे परस्पर सौहार्दपूर्वक निर्वाह होता है।
मुहा०—(किसी से) **पटरी बैठना**=प्रकृति, रुचि आदि की समानता होने के कारण सहज मे और सुगमतापूर्वक निर्वाह होना। जैसे—दोनों बहुत दुष्ट है, इसी लिए उनमे खूब पटरी बैठती है।
११. घोड़े की सवारी मे वह स्थिति जिसमे सवार की दोनों जाँघें घोड़े की पीठ या जीन पर ठीक तरह से और उपयुक्त स्थान पर बैठती या रहती है।
मुहा०—**पटरी जमाना या बैठाना**=घुड़सवारी मे सवार का अपनी रानों को इस प्रकार जीन पर चिपकाना कि घोड़े के बहुत तेज चलने या शरारत करने पर भी उसका आसन स्थिर रहे।

पटल—पुं० [स०√पट्+कलच्] १ छप्पर। २ छत। ३ आड करने का आवरण। परदा। ४ तह। परत। ५ पक्ष। पहल। पार्श्व। ६ आँख का मोतियाबिन्द नामक रोग। ७ लकड़ी का तख्ता या पटरा। ८. पुस्तक का विशिष्ट खड या भाग। परिच्छेद। ९. टीका। तिलक। १० ढेर। राशि। ११ बड़े आदमियों के साथ रहनेवाले बहुत-से लोग। परिच्छद। लवाजमा।

पटलक—पु० [स० पटल+कन्] १ आवरण। परदा। २ वह कपडा जिसपर इत्र या सुगधित द्रव्य लगा हो। ३ झाबा। डलिया। ४ पिटारी या सन्दूक। ५. ढेर। राशि।

पटलता—स्त्री० [स० पटल+तल्—टाप्] अधिकता।

पटल-प्रांत—पु० [प० त०] छप्पर का सिरा या किनारा।

पटली—स्त्री० [स० पटल+ङीप्] १. छप्पर। २ छत।
† स्त्री०=पटरी।

पटवा—पु० [हिं० पाट+वाह (प्रत्य०)] [स्त्री० पटइन] वह जो दानो, मनको आदि को सूत या रेशम की डोरी मे गूँथने या पिरोने का काम करता हो। पटहार।
पु० [?] १ पीले रग का एक प्रकार का बैल जो खेती के लिए अच्छा समझा जाता है। २ पटसन। पाट।

पटवाद्य—पु० [स० तृ० त०] झाँझ के आकार का एक प्राचीन बाजा जिससे ताल दिया जाता था।

पटवाना—स० [हिं० पाटना का प्रे०] पाटने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ पाटने मे प्रवृत्त करना। जैसे—खेत, गड्ढा या छत पटवाना ; करज या देन पटवाना।
स० [हिं० 'पटाना' का प्रे०] किसी को पटाने (कम होने, दबने, बैठने आदि) मे प्रवृत्त करना। जैसे—दरद या सूजन पटवाना। वि० दे० 'पटाना'।

पट-वाप—पु० [व० स०] खेमा। तबू।

पटवारगिरी—स्त्री० [हिं० पटवारी+फा० गरी] पटवारी का काम, पद या भाव।

पटवारी—पु० [स० पट्ट+हिं० वारी (प्रत्य०)] खेती-बारी की जमीनो तथा उसकी उपज, मालगुजारी आदि का लेखा रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी। लेख-पाल।
स्त्री० [स० पट=कपडा+हिं० वारी (प्रत्य०)] मध्ययुग मे, वह दासी जो रानियो अथवा अन्य बडे घरो की स्त्रियो को कपडे, गहने आदि पहनाती थी।

पट-वास—पु० [मध्य० स०] १ कपडे का बना हुआ घर अर्थात् खेमा या तबू। २ छावनी। शिविर। ३ लँहगा।
पु० [स० पट√वास् (सुगधित करना)+णिच्+अण्] वह सुगधित वस्तु जिससे कपडे बसाये या सुगधित किये जाते हो।

पटवासक—पु० [स० पटवास+कन्] सुगधित वस्तुओं का वह चूर्ण जिससे वस्त्र आदि बसाये या सुगधित किये जाते थे।

पट-विहाग—पु० [स० पट+विहाग] सगीत मे, बिलावल ठाठ का एक सकर राग।

पट-वेश्म(न्)—पु० [मध्य० स०] तबू। खेमा।

पटसन—पु० [स० पाट+हिं० सन] १ सन या सनई नामक प्रसिद्ध पौधा जिसके डठलों के रेशो को बट या बुनकर रस्सियाँ, बोरे आदि बनाये जाते हैं। २ उक्त रेशे। जूट। पटुआ। पाट।

पटसार†—स्त्री० [स० पटशाला] खेमा। तबू।

पटसाली—पु० [स० पट्टशाली] वस्त्र बुननेवालो की एक जाति। (मध्यप्रदेश)

पटहसिका—स्त्री० [म० प० त०] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

पटह—पु० [स० पट√हन् (चोट करना)+ड] १ डुगडुगी। २. ढोल। ३ नगाडा। ४. क्षति या हानि पहुँचाना। ५. हिंसा। ६. किसी काम मे हाथ डालना या लगाना।

पटह-घोषक—पु० [प० त०] डुगडुगी, ढोल या नगाडा बजानेवाला व्यक्ति।

पटह-भ्रमण—पु० [ब० स०] १ लोगो को इकट्ठा करने के लिए घूम-घूमकर ढिंढोरा या ढोल पीटनेवाला व्यक्ति। २ [तृ० त०] डुगडुगी, ढोल आदि बजाते हुए चलना।

पटहार (ा)—पु० [स० पाट+हिं० हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पटहारिन, पटहारी] सूत, रेशम आदि के तागो मे गहनो के दाने, मनके आदि गूँथनेवाला व्यक्ति। पटवा।

पटा—पु० [स० पट] १. प्राय दो हाथ लोहे की वह पट्टी जिसमे तलवार से वार करने और दूसरो के वार रोकने की कला का अभ्यास किया जाता है।
विशेष—इसका अभ्यास प्राय बनेठी के साथ होता है; और प्राय लोग अपना कौशल दिखलाने के लिए खेल के रूप मे इसका प्रदर्शन भी करते है।
२. लबी धारी या लकीर। ३ लगाम की मोहरी। ४ चटाई।
पु० [स० पट्ट] १ पीढा। पटरा।
पद—पटा-फेर=विवाह की एक रसम जिसमे कन्यादान हो चुकने पर वर और वधू के आसन परस्पर बदल दिये जाते है।
विशेष—जब तक कन्यादान नही होता, तब तक वधू को वर की दाहिनी ओर बैठना पडता है। कन्यादान हो चुकने पर वधू को वर के बाएँ बैठाते हैं। उस समय परस्पर आसन का जो परिवर्तन होता है, वही पटाफेर कहलाता है।
मुहा०—(राजा का किसी रानी को) पटा बाँधना=पट-रानी या प्रधान महिषी बनाना। उदा०—चौदह सहस तिया में तो को पटा बँधाऊँ आज।—सूर।
२. अधिकार-पत्र। सनद। पट्टा। (देखे)
पु० [स० पट] १ कपड़ा। वस्त्र। २ दुपट्टा। ३ पगडी।
पु० [स० पटना=तै होना] क्रय-विक्रय, विनिमय आदि के रूप मे होनेवाला पारस्परिक लेन-देन या व्यवहार। सौदा।
*वि० [हिं० पट=औंधा] १. औंधाया हुआ। २ मारकर गिराया हुआ। उदा०—कीजै कहा विधि की विधि को दियो दारुन लोट पटा करिबे को।—पद्माकर।

पटाई—स्त्री० [हिं० पाटना] १ पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटने का पारिश्रमिक या मजदूरी।
स्त्री० [हिं० पटाना] १. ऋण, देन आदि पटाने या चुकता करने की क्रिया या भाव। २. क्रय-विक्रय, लेन-देन अथवा समझौता आदि के लिए किसी को राजी करने की क्रिया या भाव। ३ सौदा आदि पटाने पर मिलनेवाला पुरस्कार।

पटाक—स्त्री० [अनु०] किसी भारी चीज के गिरने, अथवा किसी चीज पर कठोर आघात लगने या लगाने से होनेवाला शब्द। जैसे—किसी के मुँह पर जोर से चपत लगाने से होनेवाला शब्द।
पद—पटाक-पटाक=निरतर पटाक शब्द करते हुए।

पटाका—पु० [हिं० पटाक] १. पट या पटाक से होनेवाला जोर का शब्द। २. तमाचा। थप्पड।
क्रि० प्र०—जड़ना। —देना। —लगाना।

३ आतिशबाजी की एक प्रकार की गोली जिसे जमीन पर पटकने से जोर का शब्द होता है।

क्रि० प्र०—छूटना। —छोडना।

४ किसी प्रकार की आतिशबाजी मे होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द।

५ युवा तथा सुन्दर स्त्री। (बाजारू)

स्त्री० [स०√पट् (गति)+आक नि०, टाप्] झडा। ध्वजा। पताका।

पटाक्षेप—पु० [स० पट-आक्षेप, ष०त०] १ परदा गिरना या गिराना। २ रगमच पर अभिनय के समय नाटक का एक अग पूरा हो जाने पर कुछ समय के लिए परदा गिरना, जो थोड़ी देर के अवकाश का सूचक होता है। ३ लाक्षणिक अर्थ मे किसी घटना या बात की होनेवाली समाप्ति। जैसे—चार वर्ष बाद युद्ध का पटाक्षेप हुआ।

पटाखा†—पु०=पटाका।

पटान—स्त्री० [हिं० पाटना] १ पाटने की क्रिया या भाव। २ =पाटन।

स्त्री० [हिं० पटाना] (ऋण, देन आदि) पटाने अर्थात् चुकता करने की क्रिया या भाव। पटाई।

पटाना—स० [हिं० पाटना का प्रे०] [भाव० पटाई] १. गड्ढा आदि पाटने मे किसी को प्रवृत्त करना। २ किसी से छाजन आदि डलवाना।

†अ० १ पाटा जाना। पटना। २ कम होना। घटना। जैसे—रोग या सूजन पटाना। ३. शात और स्थिर होना। (पूरब)

स० [हिं० पटना का स०] १ ऐसा काम करना जिससे कोई क्रिया सपन्न होती हो अथवा कोई बात तय या हल होती हो। जैसे—(क) ऋण पटाना। (ख) सौदा पटाना। २ बात-चीत के द्वारा किसी को अपने अनुकूल करके क्रय-विक्रय, लेन-देन, समझौता आदि करने के लिए राजी करना। जैसे—ग्राहक या यजमान पटाना।

पटापट—अव्य० [अनु० पट] १ लगातार पट-पट शब्द करते हुए। जैसे—पटापट थप्पड पडना। २ बहुत जल्दी-जल्दी। चट-पट। तुरन्त। जैसे—पटापट दूकानें बन्द होने लगी।

स्त्री० निरंतर 'पटपट' होनेवाली ध्वनि या शब्द।

पटापटी—स्त्री० [अनु०] वह वस्तु जिस पर कई रगो की आकृतियाँ, बेल-बूटे, फूल-पत्तियाँ आदि बनी हो। उदा०—बाँधी बँदनवार विविध बहु पटापटी की।—रत्नाकर।

पटार†—पु० [स० पिटक] १. पिटारा। मजूषा। २ पिंजड़ा।

पु० [स० पट] १ रेशम की डोरी या रस्सी।

† पु०=कनखजूरा।

पटालुका—स्त्री० [स० पट√अल् (पर्याप्ति)+उक-टाप्] जोक। जलौका।

पटाव—पु० [हिं० पाटना] १ पाटने की क्रिया, ढग या भाव। २. वह कूडा-करकट, मिट्टी आदि जिससे गड्ढे आदि पाटे गये हो। पाटकर बराबर किया हुआ स्थान। ३. पाटकर बनाई गई छत। पाटन। ४. दरवाजे मे चौखट के ऊपर रखी जानेवाली वह लकड़ी, जिस पर दीवार की चुनाई की जाती है। भरेठा।

पटास—स्त्री० [हिं० पाटना+आस (प्रत्य०)] पटाने या पाटने की क्रिया या भाव।

पटासन—पु० [स० पट-आसन, मध्य० स०] कपडे आदि का बना हुआ आसन।

पटि—स्त्री० [स०√पट्+इन] १. रगीन कपडा या वस्त्र। २. जलकुभी। ३. रगमच का परदा। यवनिका। ४ कनात।

पटिआ†—स्त्री०=पटिया।

पटिका—स्त्री० [स० पटि+कन्—टाप्] १. कपडा। वस्त्र। २ कपड़े का टुकडा। वस्त्र खड।

पटि-क्षेप—पु०=पटाक्षेप।

पटिमा (मन्)—स्त्री० [स० पटु+इमनिच्] १. पटुता। दक्षता। २. कर्कशता। ३. रूखापन। ४. तेजी। उग्रता। ५. अम्लता।

पटिया—स्त्री० [स० पट्टिका] १ पत्थर का आयताकार, चौरस या लबा टुकडा जो साधारणत. डेढ-दो इच से मोटा नही होता।

विशेष—यह फरश बनाने के लिए जमीन पर बिछाई जाती है और इससे छतें भी पाटी जाती है।

२. लकडी का आयताकार चौरस छोटा टुकडा जिस पर बच्चे आदि लिखने का अभ्यास करते है। तख्ती। पाटी। ३ छोटा हेगा। ४. लबा किंतु कम चौडा खेत का टुकडा। ५ सीधी लबी रेखा या विभाग। उदा०—आठ हाथ की बनी चुनरिया पँच रग पटिया पारी।—कबीर।

स्त्री० १. माँग या सीमन्त निकालकर झाडे हुए बाल। पाटी।

क्रि० प्र०—सँवरना।

२ दे० 'पाटी'।

पटी—स्त्री० [स० पटि+ङीप्] १. कपडे का पतला लबा टुकडा। पट्टी। २. पगडी। साफा। ३. कमरबन्द। पटका। ४ आवरण। परदा। ५ नाटक या रग-मच का परदा।

पटीमा—पु० [हिं० पट्टी] पटिया के आकार का अधिक लबा और कम चौडा छीपियो का तख्ता जिस पर रखकर वे कपडे आदि छापते है।

पटीर—पु० [स०√पट्+ईरन्] १ एक प्रकार का चन्दन। २. कत्था। खैर। ३. कत्थे या खैर का पेड। खदिर वृक्ष। ४ मूली। ५. बड का पेड। वटवृक्ष। ६. क्यारी। ७ उदर। पेट। ८. क्षेत्र। मैदान। ९. जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग। १०. चलनी। छाननी। ११ बादल। मेघ।

पटीलना—स० [हिं० पटाना] १ किसी को फुसलाकर किसी काम के लिए राजी कर लेना। किसी को समझा-बुझाकर अपने अर्थ-साधन के अनुकूल करना। २ छलना। ठगना। ३ सफलतापूर्वक कोई काम पूरा उतारना। ४ परास्त करना। हराना। ५. पीटना। मारना। (बाजारू)

पटु—वि० [स०√पट्+उन्] [भाव० पटुता] १. किसी काम या बात मे कुशल अथवा दक्ष। निपुण। प्रवीण। २ चतुर। चालाक। ३. धूर्त्त। मक्कार। ४. कठोर हृदयवाला। निष्ठुर। ५ नीरोग। स्वस्थ। ६ तीक्ष्ण। तेज। ७. उग्र। प्रचड। ८. जो स्पष्ट रूप से सामने आया हुआ हो। प्रकाशित। व्यक्त। ९ मनोहर। सुन्दर। १०. कर्कश (स्वर)। ११. विकसित।

पु० १. नमक। २ पांशु लवण। पाँगा नमक। ३. चीनी कपूर। ४ नक-छिकनी। ५ परवल (लता और फल)। ६. करेला। ७ चिरमिटा नामक लता। ८ जीरा। ९. वच।

पटुआ—पु० [स० पाट] १. पाट या सन का पौधा। जूट। पटसन। २ करेमू। ३ वह डडा जिसके सिरे पर गून या डोरी बँधी रहती है और जिसे पकडकर मल्लाह लोग नाव खीचते है।

†पु० [?] तोता (पक्षी)।

पटुक—पु० [स० पटु+कन्] परवल।

पु० [स० पट] कपडा। वस्त्र।

पटुका—पु०=पटका।

पटुता—स्त्री० [स० पटु+तल्—टाप्] पटु होने की अवस्था या भाव। प्रवीणता। निपुणता। होशियारी।

पटु-तूलक—पु०=पटुतृणक।

पटु-तृणक—पु० [स० पटु-तृण, मध्य० स०,+कन्] लवणतृण (घास)।

पटु-त्रय—पु० [स० प० त०] काला, विड और सेधा इन तीन प्रकार के लवणो का समाहार।

पटुत्व—पु० [स० पटु+त्व] पटुता।

पटु-पत्रिका—स्त्री० [स० पटु-पत्र, ब० स०, कप्—टाप्, इत्व] चेंच नामक साग।

पटु-पर्णिका—स्त्री० [स० पटु-पर्ण, ब० स०,+कप्—टाप्, इत्व] मकोय।

पटु-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] मकोय।

पटु-रूप—वि० [स० पटु+रूपप्] जो किसी काम मे बहुत अधिक पटु हो।

पटुली—स्त्री० [सं० पट्ट] १. काठ की वह पटरी जो झूले के रस्सो पर रक्खी जाती है। पाटा। २ चौकी। ३. छकडे या बैल-गाडी के बगल मे जडी हुई लबी पटरी।

पटुवा†—पु० १. =पटुआ। २ =पटवा।

पटूका†—पु०=पटका।

पटे—वि० [हिं० पटना] (ऋण, देन आदि) जो पट या पटाया जा चुका हो।

पद—वर पटे=पूरी तरह से या बिलकुल चुकता।

पटेबाज—पु० [हिं० पटा+फा० बाज] [भाव० पटेबाजी] १. वह जो पटा-बनेठी आदि खेलता या पटा हाथ मे लेकर लडता हो। पटैत। २. मनुष्य के आकार का एक प्रकार का खिलौना जो डोरी खीचने से दोनो हाथो से पटा खेलता है। ३. उक्त प्रकार की एक आतिश-बाजी।

वि० १ दुश्चरित्रा और पुश्चली। छिनाल (स्त्री)। २ बहुत चालाक या धूर्त्त (पुरुष या स्त्री)।

पटेबाजी—स्त्री० [हिं० पटेबाज] १ पटेबाज का कार्य और कौशल। २. व्यभिचार। छिनाला। ३. धूर्तता।

पटेर—स्त्री० [स० पटेरक] जलाशयो मे होनेवाला सरकडे की जाति का एक पौधा जिसके पत्तो की चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनाई जाती है।

पटेरा†—पु०१ =पटेला। २ =पटरा।

पटेल—पु०[स० पट्ट+हिं० वाल (प्रत्य०)]१ गाँव का नबरदार। (म० प्र०) २ गाँव का चौधरी या मुखिया।

पटेलना—स०=पटीलना।

पटेला—पु०=पटैला।

पटैत—पु० [हिं० पटा+ऐत(प्रत्य०)] पटा खेलने या लड़नेवाला खिलाडी। पटेबाज।

पु०[हिं० पट्टा+ऐत (प्रत्य०)]१ वह जिसके नाम किसी जमीन या जायदाद का पट्टा लिखा गया हो। २ गाँव भर का पुरोहित जिसे पौरोहित्य का पट्टा मिला करता था।

पु०[हिं० पटाना]वह जिसे सहज मे पटाया अथवा अपने अनुकूल बनाया जा सकता हो, फलत मूर्ख या सीधा-सादा।

पटैला—पु० [हिं० पाटना] [स्त्री० अल्पा० पटैली]१ एक प्रकार की बडी नाव जिसका बीचवाला भाग ऊपर से पटा या छाया हुआ रहता है।

मुहा०—किसी के पटैले के साथ अपनी पनसुइया बाँधना=किसी बहुत बडे कार्य या व्यक्तित्व के साथ अपना तुच्छ कार्य या व्यक्तित्व सबद्ध करना।

२ पटेर नाम का पौधा जिससे चटाइयाँ आदि बनती है। ३. हेंगा। ४ पत्थर की पटिया। ५ कुश्ती का एक प्रकार का पेच।

पु०[हिं० पाटा] दरवाजा बद करते समय अदर से लगाया जानेवाला डडा। व्योडा। अर्गल।

पटैली—स्त्री०[हिं० पटेला] छोटी पटेला नाव।

पटोटज—पु०[स० पट-उटज, मध्य० स०] १ खेमा। २ [पट-उट प०त०, पटोट √ जन् (उत्पत्ति)+ड] कुकुरमुत्ता। ३ छत्रक।

पटोर—पु० [स०पटोल] १ पटोल। परवल। २. रेशमी कपडा। उदा०—मैं कोरी सँग पहिरि पटोरा।—जायसी। ३ स्त्रियो के पहनने की अगिया या चोली।

पद—लहरा पटोर। (देखें)

पटोरी—स्त्री०[स० पाट्+ओरी (प्रत्य०)]१ रेशमी धोती या साडी २ रेशमी किनारे की धोती या साडी।

पटोल—पु०[स०√पट्+ओलच्]१ गुजरात मे बननेवाला एक तरह का रेशमी कपडा। २ परवल की लता और उसका फल।

पटोलक—पु०[स० पटोल√कै (चमकना)+क] सीपी। शुक्ति।

पटोल-पत्र—पु०[ब०स०] एक तरह की पोई।

पटोला—पु०[हिं० पटोल]१ एक तरह का रेशमी कपडा। २ कपडे का वह छोटा टुकडा जिससे बच्चे खेलते है और विशेषत जिसे गुडिया को पहनाते है। (पश्चिम)

पटोलिका—स्त्री०[स० पटोल+कन्—टाप्, इत्व]१ एक तरह का पट्टा। २ कोई लिखित विधिक मत। ३ पेटी। मजूषा। उदा०—पटोलिका मे अलाक्तक (महावर) मन शिला, हरिताल, हिंगुल और राजावर्त्त का चूर्ण रखा हुआ था।—हजारीप्रसाद द्विवेदी। ४ एक तरह की तरोई।

पटोली*—स्त्री० पटोलिका।

पटोसिर†—पु०[हिं० पट+सिर] पगडी। साफा।

पटौंधन—पु०[हिं० पटाना] रेहन रखी हुई चीज का रुपया किसी प्रकार या रूप मे चुकाकर वह चीज फिर से अपने हाथ मे कर लेने की क्रिया या भाव।

पटौतन—पु०=पटौनी।
पटौनी—पु०[देश०] मांझी। मल्लाह।
स्त्री०[हिं० पटाना]१. ऋण आदि चुकाने या पटाने की क्रिया या भाव। २. दे० 'पटौवन'।
पटौहाँ—वि०[हिं० पाटना] १. पाटकर बनाया हुआ। २. पाटा हुआ।
पु०१ पटा हुआ स्थान। २ पाटन। छत। ३. ऐसा कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा भी हो। ४. पटबंधक।
वि०[हिं० पटाना] (ऋण) जो पटाकर पूरा किया जा सकता हो।
पट्ट—पु०[स०√पट्+क्त]१ बैठने की चौकी या पीढा। पाटा। २. लिखने का अभ्यास करने की तख्ती। पटिया। ३. लकड़ी का वह बड़ा टुकड़ा, जिस पर नाम आदि लिखा अथवा सूचनाएँ आदि लगाई जाती है। जैसे—नाम-पट्ट, सूचना-पट्ट। ४ पट्टा। (दे०) ५ पत्थर, लकड़ी, लोहे आदि का चौकोर या बड़ा टुकड़ा। ६. ताँबे आदि धातुओं का पत्तर, जिस पर राजकीय आज्ञाएँ, दान-पत्र आदि उकेरे या खोदे जाते थे। ७ घाव पर बाँधने की कपड़े की पट्टी। ८. ढाल । ९ पगड़ी। १० दुपट्टा। ११ नगर। शहर। १२. चौमुँहानी। चौराहा। १३ राजसिंहासन।
पद—पट्ट-महिषी। (देखें)
१४. रेशम। १५ पटसन। पाट। १६ टसर का बना हुआ कपड़ा।
वि०[अनु०]=पट (चित्त का विपर्याय)।
पु० दे० 'पट्टा' (ठीके आदि का लेख्य)।
पट्टक—पु०[स० पट्ट+कन्]१ लिखने की तख्ती या पट्टी। २ घाव, चोट, सूजन आदि पर बाँधने की पट्टी। ३ एक प्रकार का रेशमी लाल कपड़ा, जिसकी पगड़ियाँ बनती थीं। ४. ताँबे आदि का वह पत्तर जिस पर राजकीय आज्ञाएँ, दान-लेख आदि उकेरे या खोदे जाते थे।
पट्टकीट—पु०[ष०त०] रेशम का कीड़ा।
पट्टज—पु०[पट्ट√जन्(उत्पन्न होना)+ड] रेशम के कीड़ों की एक जाति।
पट्ट-देवी—स्त्री०[मध्य०स०] प्राचीन काल मे राजा की वह प्रथम व्याही हुई स्त्री, जो उसके साथ सिंहासन पर बैठती थी।
पट्टदोल—स्त्री० [मध्य०स०] एक तरह का झूला जो कपड़े का बना होता था।
पट्टन—पु०[स०√पट्ट+तनप्] नगर। शहर।
पट्टनी—स्त्री०[स० पट्टन्+ङीप्]१. छोटा नगर। नगरी। २. रेशमी कपड़ा।
पट्ट-महिषी—स्त्री०[मध्य०स०] पट-रानी। (दे०)
पट्ट-रंग—पु०[ष०त०] पतंग या बक्कम जिसकी लकड़ी से रंग निकलता है।
पट्ट-रंजक, पट्ट-रंजन—पु०=पट्ट-रंग।
पट्ट-राज—पु०[मध्य०स०] पुजारी। (महाराष्ट्र)
पट्ट-राज्ञी—स्त्री०[मध्य०स०] पट-रानी।
पट्टला—स्त्री०[स० पट्ट √ ला (लेना)+क—टाप्]१. आधुनिक जिले की तरह की एक प्राचीन शासनिक इकाई। २ उक्त इकाई मे रहनेवाला जन-समूह। (कम्यूनिटी)
पट्ट-लेख्य—पु०[ष०त०] वह लेख्य जिसमें पट्टे की शर्तें आदि लिखी हों। (लीज़ डीड)
पट्ट-वस्त्र, पट्ट-वासा (सस्)—वि० [ब०स०] जो रंगीन या रेशमी वस्त्र पहनता हो।
पट्टशाक—पुं०[कर्म०स०] पटुआ
पट्टह घोषक—पु०[ष० पटहघोषक] ढिंढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला व्यक्ति।
पट्टांशुक—पु०[स० पट्ट-अंशुक, कर्म०स०] १. रेशमी कपड़ा। २. शरीर के ऊपरी भाग मे पहनने या ओढने का कपड़ा।
पट्टा—पुं०[स० पट्ट] १. वह अधिकार-पत्र जो भूमि या स्थावर संपत्ति का स्वामी किसी असामी, किरायेदार या ठेकेदार को इसलिए लिखकर देता है कि वह उस भूमि या स्थावर संपत्ति का कुछ समय के लिए उचित उपयोग कर सके; उससे होनेवाली आय वसूल कर सके अथवा उसकी पैदावार बेच सके; और उसका कुछ अंश भूमि या संपत्ति के स्वामी को भी देता रहे।
क्रि० प्र०—देना।—लिखना।
२ वह पत्र या लेख्य जो मध्ययुग में असामी या काश्तकार किसी जमींदार की जमीन जोतने-बोने के लिए लेते समय उसे इसलिए लिखकर देता था कि नियत समय के उपरांत जमींदार को उस जमीन का फिर से मनमाना उपयोग करने का अधिकार हो जायगा।
विशेष—इसकी स्वीकृति का सूचक जो लेख्य जमींदार लिख देता था, उसे 'कबूलियत' कहते थे।
क्रि० प्र०—लिखना।—लिखाना।
३. कुछ स्थानों में वे नियम, जो लगान वसूल करनेवाले कर्मचारियों के लिए बनाये जाते थे। ४ उक्त के आधार पर कहार, धोबी, नाई, भाट आदि का वह नेग, जो उन्हें वर-पक्ष से दिलवाया जाता था।
क्रि० प्र०—चुकवाना।—चुकाना।—दिलाना।—देना।
५. चमड़े आदि का वह तस्मा या पट्टी जो कुछ पशुओं के गले में उन्हें बाँधकर रखने के लिए पहनाई जाती है। जैसे—कुत्ते, बंदर या बिल्ली के गले का पट्टा। ६. उक्त के आधार पर, कमर मे बाँधने का चमड़े आदि का वह तस्मा, जिसमे चपरास टँगी रहती या तलवार लटकाई जाती है। ७. उक्त के आधार पर, दक्षिण भारत या महाराष्ट्र देश की एक प्रकार की तलवार, जो कमर मे लटकाई जाती थी। ८ किसी चीज का कोई कम चौड़ा और अधिक लंबा टुकड़ा, जिससे कोई विशेष काम लिया जाता हो। जैसे—कामदार जूते या टोपी का पट्टा=मखमल आदि का वह लंबा टुकड़ा जिसपर सलमे-सितारे का काम बना हो। ९ कुछ चौड़ी पटरी के आकार का, कलाई पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना। १०. कोई ऐसा चिह्न या निशान जो कुछ कम चौड़ा और अधिक लंबा हो। जैसे—घोड़े या बैल के माथे का पट्टा। ११. एक प्रकार का लंबोतरा गहना जो घोड़ों के माथे पर लटकाया जाता है। १२. पुरुषों के सिर के दोनों ओर के बाल जो मध्ययुग मे बड़ी पट्टी के रूप मे, सँवारकर दोनों ओर लटकाये जाते थे।
विशेष—स्त्रियों के इस प्रकार सँवारकर बाँधे हुए बाल 'पट्टी' कहलाते हैं।
१३. बैठने के लिए बना हुआ काठ का पटरा। पीढ़ा।

पुं०[?]कोई ऐसा अनाज, फली या दानों की वाल जो अभी पूरी तरह से पककर तैयार न हुई हो। (पूरब)

पुं०[सं० पट्टी] [स्त्री० अल्पा० पट्टी]१. एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र। २. लडाई-भिडाई के समय का पैंतरा।

पट्टाधारी—पुं०[हिं० सं०] वह व्यक्ति जिसने किसी निश्चित अवधि के लिए कुछ शर्तों पर किसी से कोई जमीन या संपत्ति भोग्यार्थ प्राप्त की हो। पट्टे पर जमीन आदि लेनेवाला। (लीज-होल्डर)

पट्टा-पछाड़—पुं०=पट्टे-पछाड।

पट्टा-बैठक—स्त्री०=पट्टे-बैठक।

पट्टाभिषेक—पुं०[सं० पट्ट-अभिषेक, स० त०] १ राज्याभिषेक। २. वे विशिष्ट कृत्य जो जैन विद्वानों को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने के समय होते है। ३ वह साहित्यिक रचना, जिसमे उक्त कृत्यो का वर्णन होता है।

पट्टार—पुं०[सं० पट्ट√ऋ (गति)+अण्] [वि० पट्टारक] एक प्राचीन देश।

पट्टारक—वि०[सं० पट्टार+वुन् —अक] पट्टार देश का।

पट्टाही—स्त्री०[पट्ट-अही, स० त०] पटरानी।

पट्टिका—स्त्री०[सं० पट्ट+कन्—टाप्, इत्व]१ छोटी तख्ती। पटिया। २ छोटा चित्र-पट या ताम्र-पट। ३ कपडे की छोटी पट्टी। ४. रेशमी फीता। ५ पठानी लोध। ६ दस्तावेज। पट्टा।

पट्टिकाख्य—पुं०[सं० पट्टिका-आख्या, ब०स०]पठानी-लोध। रक्त-लोध्र।

पट्टिका-बैठक—स्त्री०=पट्टे-बैठक।

पट्टिकार—पुं०[सं० पट्टिका √ऋ+अण्] रेशमी वस्त्र बनानेवाला कारीगर।

पट्टिका-लोध्र—पुं०[मयू०स०] पठानी लोध।

पट्टिका-वायक—पुं०[प०त०]=पट्टिकार।

पट्टिय*—स्त्री०[सं० पट्टिका]केश-विन्यास।

पट्टिल—पुं०[सं० पट्ट+इलच्] पूतिकरज। पलग।

पट्टिलोध्र (क)—पुं०=पट्टिका-लोध्र।

पट्टिश—पुं०[सं० √पट (गति)+टिशच्] आधुनिक पटा नामक अस्त्र के आकार का एक प्राचीन अस्त्र।

पट्टिशी (शिन्)—वि०[सं० पट्टिश+इनि]१ पट्टिश बाँधनेवाला। २ पट्टिश हाथ मे लेकर लडनेवाला। पटेबाज।

पट्टिस—पुं०[सं० पट्टिश] पटा नामक शस्त्र।

पट्टी—स्त्री०[सं० पट्टिका]१ लकडी की वह लबोत्तरी, चौरस और चिपटी पटरी जिस पर बच्चों को अक्षर लिखने का अभ्यास कराया जाता है। तख्ती। पटिया। पाटी। २ अभ्यास आदि के लिए पट्टी पर दिया जानेवाला पाठ। सवक। ३ आदेश। शिक्षा। ४. उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसी उलटी-सीधी बात जो किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए अथवा किसी अन्य दुष्ट उद्देश्य से अच्छी तरह समझा-बुझाकर किसी के मन मे बैठा दी गई हो। बुरी नियत से दी जानेवाली सलाह।

मुहा०—(किसी को) पट्टी पढ़ाना=किसी को उलटी-सीधी बाते समझा-बुझा या सिखा-पढाकर अपने अनुकूल करना अथवा गलत रास्ते पर लगाना या बहकाना। उदा०—मीत सुजान अनीति की पाटी इतै पै न जानिये कौन पढाई।—घनानद। (किसी की) पट्टी मे आना=किसी के द्वारा सिखलाई उलटी-सीधी अथवा अनुचित बात सही मानकर उसके अनुसार आचरण या कार्य करना।

४. कपडे, काठ, धातु आदि का वह लवा किंतु कम चौड़ा और पतला टुकडा, जो किसी बडे अश से काट, चीर या फाड़ कर अलग किया या निकाला गया हो। ५. कपडे का उक्त अकार का ऐसा टुकडा, जो घाव, चोट आदि पर बाँधा जाता है। ६. बुना हुआ ऐसा कपडा जिसकी चौडाई सामान्य माप के अन्य कपडो से अपेक्षाकृत कम या बहुत कम होती है। जैसे—(क) घुटने और टखने के बीचवाले अश मे बाँधी जानेवाली पट्टी। (ख) इस साडी पर कला बत्तू की पट्टी लग जाय तो अच्छा हो। ७. उक्त आकार का टाट का वह टुकडा जो वैसी ही और टुकडो के साथ जोड या सीकर जमीन पर बिछाया जाता है। ८. ऊन का बुना हुआ देशी गरम कपडा, जिसकी चौडाई अन्य सूती कपडो की चौडाई से कम होती। जैसे—इस कोट मे पट्टू की एक पूरी पट्टी लग जायगी। ९ कपडे की बुनावट मे उसकी लबाई के बल मे कुछ मोटे सूतो से बना हुआ किनारा। १० लकडी के वे लबे टुकड़े, जो खाट या चारपाई के ढाँचे मे लबाई के बल लगे रहते हैं। पाटी। ११. उक्त आकार-प्रकार की वह लकडी, जो छत या छाजन के नीचे लगाई जाती है। बल्ली। १२ छाजन मे लगी हुई कडियों की पक्ति। १३ नाव के बीचो-बीच का तख्ता। १४. पत्थर का लबा, कम चौडा और पतला आयताकार टुकडा। पटिया। १५ किसी रचना का ऐसा विभाग, जो एक सीध मे दूर तक चला गया हो। जैसे—खेमों, झोपडियो या दुकानो की पट्टी। १६ स्त्रियो के सिर के बालो की वह रचना जो कघी की सहायता से बना-सँवारकर माँग के दोनो ओर प्रस्तुत की जाती है। पाटी।

पद—माँग-पट्टी। (देखें)

मुहा०—पट्टी जमाना=माँग के दोनो ओर के बालो को गोंद या चिपचिपे पदार्थ की सहायता से इस प्रकार बैठाना कि ये सिर के साथ बिलकुल चिपक जायँ और जमी हुई पट्टी की तरह मालूम होने लगे।

१७ मध्ययुग मे, किसी सपत्ति अथवा उससे होनेवाली आय का वह अश जो उसके किसी हिस्सेदार को मिलता था। पत्ती।

पद—पट्टी का गाँव=मध्ययुग मे, ऐसा गाँव जिसके बहुत से मालिक होते थे और इसी कारण जहाँ प्राय अव्यवस्था या कुप्रबध रहता था।

१८ वह अतिरिक्त कर जो जमीदार किसी विशिष्ट कार्य के लिए धन एकत्र करने के उद्देश्य से अपने असामियों या खेतिहरो पर लगाता था। अबवाब। नेग। १९ एक प्रकार की मिठाई जो चाशनी मे चने की दाल, तिल आदि पागकर पतली तह के रूप मे जमाकर बनाई जाती है। जैसे—तिल-पट्टी, दाल-पट्टी। २० घोडे की दौड का वह प्रकार जिसमे वह एक सीध मे दूर तक सरपट दौडता हुआ चला जाता है।

स्त्री० [सं०]१ पठानी-लोध। २. पगडी मे लगाई जानेवाली कलगी या तुर्रा। ३ घोडो आदि के मुँह पर बाँधा जानेवाला तोबडा। ४ घोड़े की पीठ और पेट मे बाँधा जानेवाला तस्मा। तग।

पट्टीदार—पुं०[हिं० पट्टी=पत्ती+फा० दार] [भाव० पट्टीदारी]१. वह व्यक्ति जिसका किसी जमीन, सपत्ति आदि मे हिस्सेदारी हो।

हिस्सेदार। २. एक हिस्सेदार के संबंध के विचार से दूसरा हिस्सेदार। ३. बराबर का अधिकारी।

†वि० [हिं० पट्टी+फा० दार] (वस्त्र) जिसमें पट्टी आदि टँगी या लगी हुई हो।

पट्टीदारी—स्त्री० [हिं० पट्टीदार] १. पट्टीदार होने की अवस्था या भाव। २. दो या कई पट्टीदारों में होनेवाला पारस्परिक संबंध।

मुहा०—(किसी से) पट्टीदारी अटकना=ऐसा झगड़ा उपस्थित होना, जिसका कारण पट्टी या हिस्सेदारी हो। पट्टीदारी के कारण विरोध होना।

३. किसी के साथ किया जानेवाला बराबरी का दावा। यह कहना कि हम भी अमुक काम या बात में तुम्हारे बराबर या बराबरी के हिस्सेदार हैं। ४. मध्ययुग में वह जमींदारी, जिसके पट्टीदार या मालिक कई आदमी संयुक्त रूप से होते थे।

पट्टीवार—अव्य० [हिं० पट्टी+फा० वार] हर पट्टी या हिस्से के विचार से। अलग-अलग। जैसे—यह हिसाब पट्टीवार बना है।

वि० (ऐसी बही या लिखा-पढ़ी) जिसमें पट्टियों का हिसाब अलग-अलग रखा जाता हो। जैसे—पट्टीवार जमाबंदी।

पट्टू—पुं० [हिं० पट्टी] १. एक प्रकार मोटा ऊनी देशी कपड़ा, जो साधारण सूती कपड़ों की अपेक्षा कम चौड़ा और प्रायः लम्बी पट्टी के रूप में बुना हुआ होता है। २. एक प्रकार का चारखानेदार कपड़ा।

†पुं० [?] तोता (पक्षी)।

पट्टे-पछाड़—पुं० [हिं० पट+पछाड़ना] कुश्ती का एक पेंच।

पट्टे-बैठक—स्त्री० [हिं० पट+बैठक] कुश्ती का एक पेंच।

पट्टैत—पुं० [हिं० पट्टा+ऐत (प्रत्य०)] काले, नीले या लाल रंग का वह कबूतर जिसके गले में सफेद कंठी हो।

†पुं०=पटैत (पटेबाज)।

पट्टोल—पुं० [सं० पट्टकूल] १. रेशमी वस्त्र। २. कपड़े की वह कतरन या धज्जी जिससे बच्चे खेलते हैं। (पश्चिम)

पट्टोलिका—स्त्री० [सं०=पट्टालिका, पृषो० सिद्धि] १. पट्टा। अधिकार-पत्र। २. दे० 'पटोलिका'।

पठ्यमान—वि० [सं० पठ्यमान्] (ग्रंथ) जिसे पढ़ना उचित हो या जो पढ़ा जाने को हो।

पट्ठा—वि० [सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [स्त्री० पट्ठी, पठिया] १. (व्यक्ति) जो हृष्ट-पुष्ट तथा नौजवान हो। २. जीवों या प्राणियों का ऐसा बच्चा जिसमें यौवन का आगमन हो चुका हो, पर पूर्णता न आई हो। नवयुवक।

पद—उल्लू का पट्ठा=बहुत बड़ा मूर्ख। (गाली)

पुं० १. कुश्ती लड़नेवाला या पहलवान। २. किसी प्रकार का दलदार, मोटा और लंबा पत्ता। जैसे—घी-कुआर या मुरती का पट्ठा। ३. शरीर के अंदर के वे तन्तु या नसें, जो मांस-पेशियों को हड्डियों के साथ बाँधे रखती हैं।

मुहा०—पट्ठा चढ़ना=किसी नस का तन कर दूसरी नस पर चढ़ जाना जो एक आकस्मिक और कष्टकर शारीरिक विकार है। (किसी के) पट्ठों में घुसना=किसी से गहरी दोस्ती या मेल-जोल पैदा करना।

४. एक प्रकार का चौड़ा गोटा, जो रुपहला और सुनहला दोनों प्रकार का होता है। ५. उक्त के आकार-प्रकार की वह गोट जो अतलस आदि पर बुनकर बनाई जाती है। ६. पेड़ू के नीचे कमर और जाँघ के जोड़ का वह स्थान, जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती हैं।

पट्ठा-पछाड़—वि० स्त्री० [हिं० पट्ठा+पछाड़ना] (स्त्री) जो पुरुष को पछाड़ सकती हो; अर्थात् खूब हृष्ट-पुष्ट और बलवती।

पठी†—स्त्री० [हिं० पट्ठा] वह जवान बकरी जो ब्यायी न हो। पाठ।

पठक—वि० [सं०] पढ़नेवाला।

पढ़त—स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. पढ़ने की क्रिया, ढंग या भाव।

पद—लिखत-पढ़त। (देखें)

२. दे० 'वाचन'।

पठन—पुं० [सं० √पठ् (पढ़ना)+ल्युट्—अन] पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ना।

पद—पठन-पाठन=पढ़ना और पढ़ाना।

पठनीय—वि० [सं० √पठ्+अनीयर्] (ग्रंथ या पाठ) जो पढ़ने के योग्य हो या पढ़ा जाने को हो। पाठ्य।

पठनेटा—पुं० [हिं० पठान+एटा=बेटा (प्रत्य०)] पठान का बेटा। पठान जाति का पुरुष।

पठवना†—स०=पठाना (भेजना)।

पठवाना—स० [हिं० पठाना का प्रे०] पठाने या भेजने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को पठाने या भेजने में प्रवृत्त करना। भेजवाना।

पठान—पुं० [फा० पुश्तान] [स्त्री० पठानिन, पठानी] १. पुश्तो या पश्तो भाषा बोलनेवाला व्यक्ति। २. उक्त भाषा बोलनेवाली एक प्रसिद्ध जाति जो अफगानिस्तान-पख्तूनिस्तान प्रदेश में रहती है। ३. पख्तूनिस्तान का नागरिक या निवासी।

पठाना—स० [सं० प्रस्थान, प्रा० पट्ठान] रवाना करना। भेजना।

पठानिन—स्त्री० हिं० 'पठान' का स्त्री०।

पठानी—वि० [हिं० पठान] १. पठानों का। पठान-संबंधी। जैसे—पठानी राज्य।

स्त्री० पठान होने की अवस्था या भाव।

स्त्री० 'हिं० 'पठान' का स्त्री०।

पठानी लोध—स्त्री० [सं० पट्टिका लोध्र] कुमाऊँ, गढ़वाल आदि प्रदेश में होनेवाला एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल औषध और पत्तियाँ तथा छाल रंग बनने के काम में आती हैं।

पठार—पुं० [देश०] एक पहाड़ी जाति।

पुं० [सं० पृष्ट+धार] भूगोल में, वह ऊँचा विस्तृत मैदान जो समीपवर्ती निचले प्रदेशों में ढालुएँ अंग से मिला रहता है तथा जिसका ऊपरी भाग बहुत अधिक चौड़ा तथा चपटा होता है। (प्लेटो)

पठावन—पुं० [हिं० पठाना] १. पठाने अर्थात् भेजने की क्रिया या भाव। २. व्यक्ति, जो इस प्रकार भेजा जाय। ३. संदेशवाहक। दूत।

पठावनी—स्त्री० [हिं० पठाना] १. किसी को कहीं पठाने अर्थात् भेजने की क्रिया या भाव। किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिए भेजना।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।

पठावर—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

पठित—भू० कृ० [सं० √पठ्+क्त] १. (ग्रंथ या पाठ) जो पढ़ा जा चुका हो। २. (व्यक्ति) जो पढ़ा-लिखा हो। शिक्षित। (असिद्ध प्रयोग)

पठिग्ररां—स्त्री०[हिं० पाटी] वह बल्ली या पटिया जो कूएँ के मुँह पर बीचोबीच या किसी एक ओर इसलिए रख दी जाती है कि पानी खींचनेवाला उसी पर पैर रखकर पानी खींचे।

पठिया—स्त्री०[हिं० पट्ठा+इया (प्रत्य०)] १ हिं० पट्ठा का स्त्री०। २ हृष्ट-पुष्ट तथा नौजवान स्त्री। (बाजारू)

पठोर—स्त्री०[हिं० पट्ठा+ओर (प्रत्यं)] १. जवान परन्तु बिना ब्याई हुई बकरी। २ मुरगी, जो जवान तो हो गई हो, पर जो अभी अडे न देती हो।

पठौनां—स०=पठाना (भेजना)।

पठौनी—स्त्री०=पठावनी।

पठ्यमान*—वि० [स०√पठ्+लट् (कर्म मे), यक्+शानच्, मुक्] (ग्रथ या पाठ) जो पढ़ा जाने को हो या पढा जा सके।

पड़—पुं०[स० पट=चित्रपट] वह चित्रपट जिसमे किसी व्यक्ति से सबध रखनेवाली घटनाएँ अकित हो। (राज०)

पड़की—स्त्री०=पडुक।

पड़कुलियां—स्त्री०[स० पंडुक] एक प्रकार की चिड़िया।

पड़छत्तीं—स्त्री०=परछत्ती।

पड़त—स्त्री०=पडता।

पड़ता—पु०[हिं० पडना]१. व्यापारिक क्षेत्र मे, खरीदी हुई और बेची जानेवाली चीज या माल की वह आर्थिक स्थिति, जो इस बात की सूचक होती है कि वह चीज या माल कितने दाम पर खरीदा गया है अथवा उन पर कितनी लागत आई है और उसके सबध मे कितने अनिवार्य तथा आवश्यक व्यय करने पड़ते हैं या करने पडेंगे।

विशेष—व्यापारी लोग जब कोई माल कही से मँगाते या अपने यहाँ तैयार कराते या बनवाते है, तब पहले हिसाब लगाकर यह समझ लेते हैं कि इस पर वास्तविक रूप से हमारा इतना धन लगा है, और तब उस पर अपना मुनाफा रखकर उसे बेचते है।

मुहा०—पडता खाना= ऐसी स्थिति होना कि उचित मूल्य या लागत निकालने के बाद कुछ मुनाफा या लाभ हो सके। जैसे—(क) आज-कल देहात से गेहूँ मँगाकर बाजार मे बेचने से हमारा पडता नही खाता। (ख) बारह रुपए जोड़े पर यह धोती बेचने मे हमारा पड़ता नही खाता। पड़ता निकालना, फैलाना या बैठाना=भाडे, मूल्य, लागत, सूद आदि का हिसाब लगाकर यह देखना कि किसी चीज पर सब मिलाकर वस्तुत हमारा कितना व्यय हुआ है।

२. आर्थिक दृष्टि से आय-व्यय आदि का औसत या माध्यम। जैसे—इस दूकान से उन्हे दस रुपए रोज मुनाफे का पडता पड जाता है।

क्रि० प्र०—पड़ना।—बैठना।

३ भू-कर की दर। लगान की शरह।

पड़ताल—स्त्री०[स० परितोलन]१. कोई काम या चीज आदि से अंत तक अच्छी तरह जांचते हुए यह देखना कि उसमे कही कोई कसर या भूल तो नही है। अच्छी तरह की जानेवाली छान-बीन या देख-भाल। २ पटवारियों (आधुनिक लेखपालों) के द्वारा अपने खातो या पत्रियो की वह जाँच, जो यह जानने के लिए की जाती है कि खेतो को जोतने-वालो के नापो और उसमे होनेवाली फसलो का ब्योरा कही गलत तो नही लिखा गया है। ३ उक्त के फलस्वरूप किया जानेवाला संशोधन या सुधार। ४. तुलना। बराबरी। मुकाबला। (क्व०)

पड़तालना—स०[हिं० पडताल+ना (प्रत्य०)] आदि से अत तक सब बातें देखते हुए पडताल अर्थात् अनुसधान या जाँच करना।

पड़ती—स्त्री०[हिं० पड़ना] वह खेत जो जमीन की उर्वरा-शक्ति बढ़ाने के लिए किसी विशिष्ट ऋतु मे जोता-बोया न गया हो।

क्रि० प्र०—छोडना।—पड़ना।—रखना।

मुहा०—पड़ती उठना=(क) पड़ती का जोता जाना। पडती पर खेती होना। पड़ती उठाना= पड़ती पडी हुई जमीन किसी खेतिहर को जोतने-बोने के लिए लगान पर देना।

पड़-दादा—पुं०=परदादा।

पड़ना—अ०[सं० पतन, प्रा० पड़न]१. किसी चीज का किसी आधान या पात्र मे छोडा, डाला या पहुँचाया जाना। अन्दर प्रविष्ट किया जाना या होना। जैसे—(क) कान मे दवा पड़ना, (ख) तरकारी (या दाल मे) नमक पड़ना, (ग) पेट मे भोजन पड़ना, (घ) पेटी मे मत-पत्र पड़ना। २ किसी चीज का ऊपर से गिरकर या बाहर से आकर किसी दूसरी चीज पर (या मे) विद्यमान या स्थित होना। जैसे—आँख मे कंकड़ी या दूध मे मक्खी पड़ना। ३ इधर-उधर या ऊपर से आकर किसी प्रकार का आघात या प्रहार या वार होना। जैसे—(क) किसी पर घूँसा, थप्पड़ या लात पडना। (ख) गरदन पर तलवार या सिर पर लाठी पडना। ४ एक चीज का किसी दूसरी चीज पर ठीक ढग या तरह से डाला, फैलाया, बिछाया या रखा जाना। जैसे—(क) आँगन मे (या छत पर) पलग पडना। (ख) खभो (या दीवारो) पर छत पडना। (ग) जूएखाने मे जूए का फ़ड पडना। ५ किसी आपा-तिक रूप मे आकर उपस्थित, प्राप्त या प्रत्यक्ष होना। जैसे—(क) इस साल बहुत गरमी (या सरदी) पडी है। (ख) आज चार दिन से बराबर पानी (या ओला) पड (बरस) रहा है। (ग) अंत मे यही बदनामी हमारे पल्ले पडी है। ६ कोई अनिष्ट, अवांछित या कष्टदायक घटना घटित होना अथवा ऐसी ही कोई विकट परिस्थिति या बात सामने आना। जैसे—(क) सिर पर आफत या बला पडना। (ख) किसी के घर डाका पडना।

विशेष—विपत्ति, सकट आदि के प्रसगो मे इस क्रिया का प्रयोग बिना किसी सज्ञा के भी होता है। जैसे—जब तुम पर पडेगी, तब तुम्हें मालूम होगा।

७ आकस्मिक रूप अथवा सयोग से उपस्थित होना या सामने आना अथवा पहुँचना। जैसे—(क) एक दिन घूमता-फिरता मैं भी वहाँ जा पडा। (ख) बात (या मौका) पडने पर तुम भी मारा हाल साफ-साफ कह देना। (ग) अब की विजया दशमी (या होली) रविवार को पडेगी। ८ आलस्य, थकावट, रोग आदि के कारण अथवा विश्राम करने के लिए चुपचाप लेटे रहने की स्थिति मे होना। जैसे—(क) नीद खुल जाने पर भी वे घटों बिस्तर पर पडे रहते हैं। (ख) इधर महीनों से वे बिस्तर पर पड़े है। (अर्थात् बीमार हैं)। (ग) थोडी देर यो ही पडे रहो; तबियत ठीक हो जायेगी। ९ बिना किसी उद्देश्य, कार्य या प्रयोजन के कही रहकर दिन काटना। यो ही या व्यर्थ रहकर दिन काटना। यो ही या व्यर्थ रहकर समय गुजारना या बिताना। जैसे—(क) दिन भर सब लोग धर्मशाले मे पडे रहे। (ख) महीनों

से वह अपने मैके में पड़ी है। १० कुछ काम-धंधा न करते हुए हीन अवस्था में कहीं रहकर दिन बिताना। जैसे—आजकल तो वह कलकत्ते में अपने भाई के यहाँ पड़े हैं।

मुहा०—पड़ रहना = जैसे-तैसे हीन अवस्था में लेटकर सोना। 'शयन' के लिए उपेक्षासूचक पद। उदा०—मसजिद में पड़े रहेंगे जो मैखाना बंद है।—कोई शायर। पड़े रहना = (क) लेटे रहना। (ख) हीन अवस्था में कहीं रहकर दिन बिताना। जैसे—अभी दो-चार दिन तुम यहीं पड़े रहो। (ग) रोगी होने की दशा में लेटे रहना। जैसे—आज दिन भर चुपचाप पड़े रहो। संध्या तक तबियत ठीक हो जायगी।

११ किसी के किसी काम या बात के बीच में इस प्रकार सम्मिलित होना कि उसमें कोई विशिष्ट संबंध सूचित हो अथवा किसी प्रकार अथवा किसी प्रकार का हस्तक्षेप होता हुआ जान पड़े। जैसे—मैं इस मामले में पड़ना नहीं चाहता हूँ। १२ किसी काम, चीज या बात का ऐसी स्थिति में रहना या होना कि आवश्यक या उचित उपयोग अथवा कार्य न हो रहा हो। जैसे—(क) सारा मकान खाली पड़ा है। (ख) आधे से ज्यादा काम बाकी पड़ा है। (ग) मुकदमा वर्षों से हाईकोर्ट में पड़ा है। (घ) ये पुस्तकें यहाँ यों ही पड़ी हैं। १३ किसी विशिष्ट प्रकार की परिस्थिति या स्थिति में अवस्थित या वर्तमान रहना या होना। जैसे—(क) आजकल वह धन कमाने के फेर में पड़े हैं। (ख) उनका मकान अभी तक बंधक पड़ा है। (ग) चार दिन में इसका रंग काला पड़ जायगा। (घ) दो कौड़ियाँ चित और तीन कौड़ियाँ पट पड़ी हैं। १४ टिकने ठहरने आदि के लिए कुछ समय तक कहीं अवस्थान होना। कुछ समय तक रहने के लिए डेरा या पड़ाव डाला जाना। जैसे—चार दिन से तो वे हमारे यहाँ पड़े हैं। १५ डेरे, पड़ाव आदि के संबंध में, नियत या स्थित किया जाना। बनाया जाना। जैसे—आज संध्या को रामनगर में डेरा (या पड़ाव) पड़ेगा। १६ यात्रा आदि के मार्ग में प्रत्यक्ष या विद्यमान होना। ऐसी स्थिति में होना कि रास्ते में दिखाई दे या सामने आवे। जैसे—उनके मकान के रास्ते में एक पुल (या मंदिर) भी पड़ता है। १७ किसी प्रकार अथवा रूप में उत्पन्न होकर या यों ही उपस्थित, प्रस्तुत या विद्यमान होना। जैसे—(क) फल में कीड़े पड़ना। (ख) घाव में मवाद पड़ना। (ग) मन में कल (या चैन) पड़ना। १८ किसी प्रकार की विशेष आवश्यकता या प्रयोजन होना। गरज या जरूरत होना। जैसे—जब उसे गरज (या जरूरत) पड़ेगी, तब वह आप ही आवेगा।

विशेष—कभी-कभी इस अर्थ में बिना संज्ञा के भी इसका प्रयोग होता है। जैसे—हमें क्या पड़ी है, जो हम उनके बीच में बोलने जाते हों। १९ बहुत अधिक या उत्कट अभिलाषा, चिंता अथवा प्रवृत्ति होना। किसी काम या बात के लिए छटपटी, बेचैनी या विकलता होना। (प्रायः बिना संज्ञा के ही प्रयुक्त) जैसे—तुम्हें तो बस तमाशे (या बरात) में जाने की पड़ी है। २०. तारतम्य, तुलना आदि के विचार से अपेक्षया कुछ घटी या बढ़ी हुई अथवा किसी विशिष्ट स्थिति में आना, रहना या सिद्ध होना। जैसे—(क) यह कपड़ा कुछ उससे अच्छा पड़ता है। (ख) अब तो वह पहले से कुछ नरम पड़ रहा है। (ग) यह लड़का दरजे (या पढ़ने) में कमजोर पड़ता है। (घ) पाव भर आटा उसके खाने के लिए कम पड़ता है। २१ तौल, दूरी, नाप आदि के प्रसंग में, किसी विशिष्ट परिमाण या मान का ठहरना या सिद्ध होना। जैसे—(क) उनका मकान यहाँ से कोस भर पड़ता है। (ख) यह धोती नापने पर नौ हाथ ही पड़ती है। २२ आर्थिक प्रसंगों में, किसी काम, चीज या बात का हानि-लाभ की दृष्टि या विचार से किसी विशिष्ट स्थिति में आना, रहना या होना। जैसे—(क) इकट्ठा लिया हुआ सौदा सस्ता पड़ता है। (ख) शहरों में रहने पर खर्च अधिक पड़ता है। (ग) आजकल यहाँ के मिस्त्रियों को चार-पाँच रुपए रोज पड़ जाता है। (घ) इस काम में इतना खरच (या घाटा) पड़ता है। २३ व्यापारिक क्षेत्रों में, किसी चीज की दर, भाव, मूल्य, लागत आदि के विचार से किसी स्थिति में आना, रहना या होना। जैसे—यह थान घर आकर २० का पड़ता है। २४ किसी काम, चीज या बात का अनुकूल, उपयुक्त या बराबरी का ठहरना या सिद्ध होना। जैसे—तुम्हें तो दस रुपया रोज भी पूरा नहीं पड़ेगा। २५ बही-खाते, लेन-देन, हिसाब-किताब आदि में किसी खाते या विभाग में अथवा किसी व्यक्ति के नाम लिखा जाना। जैसे—(क) यह खरच प्रकाशन खाते में पड़ेगा। (ख) महीनों से १००) तुम्हारे नाम पड़े हैं। २६ आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि में शिशु या संतान का किसी के अनुरूप या अनुसार होना। जैसे—लड़का तो अपने बाप पर पड़ा है और लड़की माँ पर। २७. अनुभूत या ज्ञात होना। लगना। जैसे—जान पड़ना, दिखाई पड़ना। २८. कुछ विशिष्ट पशुओं के संबंध में, नर या मादा के साथ मैथुन या संभोग करना। जैसे—जब यह घोड़ा (या साँड़) किसी घोड़ी (या गाय) पर पड़ता है, तब-तब कुछ न कुछ बीमार हो जाता है।

विशेष—इस क्रिया में मुख्य तीन भाव वही हैं, जो ऊपर आरंभ (संख्या १, २ और ३) में बतलाये गये हैं। अधिकतर शेष अर्थ इन्हीं तीनों भावों में से किसी-न-किसी भाव के परिवर्तित, विकसित या विकृत रूप हैं। सैद्धांतिक दृष्टि से यह हिंदी की स० क्रिया 'डालना' का अकर्मक रूप है। अनेक अकर्मक क्रियाओं के साथ इसका प्रयोग संयो० क्रि० के रूप में भी होता है। कहीं तो वह किसी क्रिया का आकस्मिक आरंभ सूचित करती है; जैसे—चल पड़ना, चौंक पड़ना, जाग पड़ना, हँस पड़ना आदि और कहीं इससे किसी क्रिया या व्यापार का घटित, पूर्ण या समाप्त होना सूचित होता है। जैसे—कूद पड़ना, गिर पड़ना, घुस पड़ना, घूम पड़ना आदि। क्रियार्थक संज्ञाओं के साधारण रूप के साथ लगकर यह कहीं-कहीं किसी प्रकार की बाध्यता या विवशता भी सूचित करती है। जैसे—(क) मुझे रोज उनके यहाँ जाकर घंटों बैठना पड़ता था। (ख) तुम्हें भी उनके साथ जाना पड़ेगा। अवधारण बोधक क्रियाओं के साथ लगकर यह बहुत कुछ 'जाना' या 'होना' की तरह का अर्थ देती और उन सकर्मक क्रियाओं को अकर्मक का-सा रूप देती है। जैसे—जान पड़ना, दिखाई (या देख) पड़ना। कुछ संज्ञाओं के साथ लगकर यह बहुत कुछ 'आना' या 'होना' की तरह का भी अर्थ देती है। जैसे—खयाल पड़ना, याद पड़ना, समझ पड़ना। कभी-कभी इसके योग से कुछ पदों में मुहावरे का तत्त्व भी आ लगता है। जैसे—(क) ऐसी समझ पर पत्थर पड़े। (ख) आजकल रुपया तो मानो उनके घर फटा पड़ता है। (ग) बहुत बोलने (या सरदी लगने) से गला पड़ (अर्थात् बैठ) जाना। (घ) यह अकेला ही दो

आदमियो पर भारी पडता है। (ड) इस तरह हाथ धोकर किसी के पीछे पडना ठीक नही है। कुछ अवस्थाओं मे यह शक्यता, सभावना, सामर्थ्य आदि की भी सूचक होती है। जैसे—वन पडा तो मैं भी किसी दिन आऊँगा। कभी-कभी यह तुल्यता या समकक्षता की भी सूचक होती है। जैसे—(क) तुम तो आदमी के ऊपर गिर पड़ते हो। (ख) उसकी आँखो मे आँसू उमडे पडते थे।

पड़-नाना—पु०=पर-नाना।

पड़-पड़—स्त्री० [अनु०] १ निरतर पड-पड होनेवाला शब्द।
क्रि० वि० पड-पड शब्द करते हुए।
पु० [?] मूल धन। पूँजी। (डि०)

पड़पडाना—स० [अनु०] [भाव० पडपडाहट] पड़-पड शब्द होना।
स० पड-पड शब्द उत्पन्न करना।
†अ०=परपराना।

पड़पड़ाहट—स्त्री० [हिं० पडपडाना] पड-पड शब्द करने या होने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०=परपराहट।

पड-पोता—पु०=पर-पोता।

पड़म—पु० [देश०] एक प्रकार का मोटा सूती कपडा, जो प्राय कनातें, खेमे आदि बनाने मे काम आता है।

पड़या†—पु० [?] वह ब्राह्मण जो शनिवार के दिन तेल आदि काले पदार्थ शनि के दान के रूप मे लेता है।

पड़रू†—पु०=पडवा।

पड़वा—स्त्री० [स० प्रतिपदा, प्रा० पडिवआ] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि। परिवा।
पु० [?] [स्त्री० पडिया] भैंस का नर बच्चा।

पड़वाना—स० [हिं० 'पडना' का प्रे०] पडने का काम किसी से कराना। किसी को पडने मे प्रवृत्त करना।

पड़वी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की ईख।

पडह—पु० [स० पटह] ढोल। दुदुभी।

पड़ा—पु०=पडवा (भैंस का बच्चा)।

पड़ाइन—स्त्री०=पँडाइन।

पडाका—पु०=पटाका।

पड़ाना—स०=पडवाना।

पड़ापड़—क्रि० वि०, स्त्री०=पटापट।

पड़ाव—पु० [हिं० पडना+आव (प्रत्य०)] १ मार्ग मे पड़नेवाला वह स्थान जहाँ यात्री रात विताने, विश्राम आदि करने के लिए ठहरते या रुकते है।
मुहा०—पडाव मारना=(क) पडाव पर ठहरे हुए यात्रियो को लूटना। (ख) बहुत अधिक वीरता या साहस का काम करना। (व्यग्य)
२ वह स्थान जहाँ यात्रा करनेवाला सैनिक तबू-कनातें आदि लगाकर कुछ समय के लिए ठहरा हो।
विशेष—यह स्थान प्राय शहरो से दूर और जगलो मे होता था।

पड़िया—स्त्री० हिं० पड़वा का स्त्री० रूप।
वि० पु० दे० 'परिया'। (जाति)

पड़ियाना—अ० [हिं० पडिया+आना (प्रत्य०)] भैंस का भैंसे से सयोग हो जाना। भैंसाना।
स० भैंस का भैंसे से सभोग कराना।

पड़िवा—स्त्री०=पडवा (प्रतिपदा)।

पड़ी†—स्त्री० [हिं० पडना=लेटना] चुपचाप पडे या सोये रहने की अवस्था या भाव। (बाजारू)
मुहा०—पडी साधना=सो जाना।

पड़ेरू†—पु०=पड़रू (पडवा)।

पड़ोस—पु० [स० प्रतिवेश या प्रतिवास, प्रा० पडिवेम पडिवास] १. वह स्थान जो किसी के निवास-स्थान के बगल या समीप मे हो।
मुहा०—(किसी का) पड़ोस करना=किसी के पडोस मे जाकर बसना।
२ किसी प्रदेश, स्थान आदि से सटा हुआ अथवा उसके आस-पास का स्थान।
पद—पास-पड़ोस=समीपवर्ती स्थान।

पड़ोसी—पु० [हिं० पडोस+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० पडोसिन] वह जिसका घर पड़ोस मे हो। एक मकान के पासवाले दूसरे मकान मे रहनेवाला। प्रतिवासी। प्रतिवेशी। हमसाया।

पड्डा†—पु० [?] ढोलक, तवले आदि पर लगाई जानेवाली चाँटी।

पढंत—स्त्री० [हिं० पढना+अत (प्रत्य०)] १. पढने की क्रिया या भाव। जैसे—लिखत-पढत होना। २ पढा हुआ पाठ। ३ जादू या टोने-टोटके के लिए मत्र पढने की क्रिया या भाव। ४ उक्त प्रकार से पढ़ा जानेवाला मत्र।
वि० (समाज) जिसमे दूसरो की कृतियाँ पढकर सुनाई जाती हो। जैसे—पढ़त कवि-सम्मेलन।

पढ़त—स्त्री० [हिं० पढना] पढने की क्रिया, ढग या भाव। पठन। वाचन। (रीडिंग) जैसे—विधेयक की तीसरी पढत।
पद—लिखत-पढत-लिखा-पढी।

पढ़ना—स० [स० पठन] [भाव० पढाई] १ (क) किसी लिपि या वर्णमाला के अक्षरो या वर्णो के उच्चारण, रूप आदि का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। (ख) उक्त के आधार पर किसी भाषा के शब्दों, पदो आदि के अर्थ का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। जैसे—अँगरेजी या हिन्दी पढना। २ अकित, मुद्रित या लिखित चिह्नो, वर्णो आदि को देखते हुए मन-ही-मन उनका अभिप्राय, अर्थ या आशय जानना और समझना। यह जानना कि जो कुछ छपा या लिखा हुआ है, उसका मतलब क्या है। जैसे—अखबार या पुस्तक पढना।
क्रि० प्र०—जानना। —डालना। —लेना।
३ छपे या लिखे हुए शब्दो, पदो, वाक्यो आदि का कुछ ऊँचे स्वर से उच्चारण करते चलना। जैसे—(क) किसी को सुनाने-समझाने आदि के लिए चिट्ठी या दस्तावेज पढना। (ख) सभा या समिति के सामने उसका कार्य-विवरण पढना। (ग) कवि-सम्मेलन मे कविता पढना।
सयो० क्रि०—जाना।—डालना।—देना।
४ कोई चीज या बात स्थायी रूप से स्मरण रखने के लिए उसके पदो, शब्दो आदि का बार बार उच्चारण करते हुए अभ्यास करना। जैसे—गिनती, पहाडा या पाठ पढ़ना। ५. किसी कला, विद्या, विषय या शास्त्र

की सब बातें जानने के लिए उसका विधिवत् अध्ययन करना। जैसे—(क) आज-कल वह इतिहास (दर्शन शास्त्र या व्याकरण) पढ़ रहा है। (ख) व्याह की अभी क्या चिंता है, लड़का तो अभी पढ़ ही रहा है। ६ ग्रंथ, लेख आदि का ठीक-ठीक अभिप्राय या आशय जानने और समझने के लिए उनका अध्ययन और मनन करना। जैसे—(क) यह पुस्तक लिखने के लिए आपको सैकड़ों बड़े बड़े ग्रंथ पढ़ने पड़े थे। (ख) किसी विषय पर प्रामाणिक पुस्तक लिखने से पहले उस विषय का सारा साहित्य पढ़ना पड़ता है।
क्रि०प्र०—जाना। —डालना। —लेना।
७. कोई याद की हुई चीज (पद या बात) गुनगुनाते हुए या बहुत धीमे स्वर से उच्चरित करना। जैसे—(क) जप, पूजन, सध्या-वदन आदि के समय मंत्र या श्लोक पढ़ना। (ख) टोना-टोटका करने के समय किसी पर जादू या मंतर पढ़ना। ८ उक्त के आधार पर किसी प्रकार का जादू या टोना-टोटका करना। मंत्र फूँकना। जैसे—ऐसा जान पड़ता है कि मानो इस लड़के पर किसी ने कुछ पढ़ दिया है।
सयो० क्रि०—देना।
मुहा०—(किसी पर) कुछ पढ़कर मारना=मंत्र पढ़कर प्रभावित करने के लिए किसी पर कोई चीज फेंकना। जैसे—मूँग पढ़कर मारना।
९ किसी प्रकार के अंकन, चिह्न, लक्षण आदि देखते हुए उनका आशय, परिणाम या फल इस प्रकार जानना और समझना मानो कोई पुस्तक या लेख पढ़ रहे हों। जैसे—सामुद्रिक शास्त्र की सहायता से किसी की हस्तरेखाएँ पढ़ना। १० मनुष्यों की बोली की नकल करनेवाले पक्षियों का ऐसे पद या शब्द बोलना जिनका उच्चारण उन्हे सिखाया गया हो। जैसे—यह तोता 'राम राम' पढ़ता है।
† पु०=पढ़िना (मछली)।

पढ़नी—पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

पढ़नीउड़ी—स्त्री० [हि० पढ़नी (?)+उड़ी=उड़ाना] कसरत मे एक प्रकार का अभ्यास जिसमे कोई ऊँची चीज उड़ अर्थात् उछलकर लाँघी जाती है।

पढ़वाना—स० [हि० पढ़ना तथा पढ़ाना का प्रे०] १. किसी को पढ़ने मे प्रवृत्त करना। बँचवाना। २. किसी से (पाठ आदि) पढ़ाने की क्रिया कराना। किसी को पढ़ाने मे प्रवृत्त करना।

पढ़वैया—वि० [हि० पढ़ना+ऐया (प्रत्य०)] १. पढ़नेवाला। २. पढ़ानेवाला।

पढ़ाई—स्त्री० [हि० पढ़ना+आई (प्रत्य०)] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। २ वह विषय जिसका कक्षा, विद्यालय आदि मे विद्यार्थी अध्ययन करते हो। ३. पढ़ने के बदले में दिया जानेवाला पारिश्रमिक।
स्त्री० [हि० पढ़ाना] १. पढ़ाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ कक्षा, विद्यालय आदि मे पढ़ाया जानेवाला विषय या सिखलाई जानेवाली कला। ३ पढ़ाने का ढंग, प्रकार या शैली। ४. पढ़ाने के बदले मे मिलनेवाला धन।

पढ़ाना—स० [स० पाठन] १. हि० 'पढ़ना' क्रिया का प्रे०। ऐसा काम करना जिससे कोई पढ़े। किसी को पढ़ने मे प्रवृत्त करना। २. (क) वर्णमाला या लिपि के अक्षरों के उच्चारणों और रूपों का परिचय कराना। (ख) किसी भाषा के शब्दों या पदों के अर्थ, आशय आदि का ज्ञान या बोध कराना; अथवा तत्सबधी अध्ययन, अभ्यास आदि कराना। जैसे—अरबी, फारसी, बँगला या मराठी पढ़ाना। ३. अंकित, मुद्रित या लिखित बातों का ज्ञान प्राप्त करने या आशय समझने के लिए किसी से उनका पाठ या वाचन कराना। जैसे—किसी से चिट्ठी पढ़ाना। ४. किसी को भाषा, विषय, शास्त्र आदि का ज्ञान कराने के लिए सम्यक् रूप से शिक्षा देना। जैसे—पंडित जी संस्कृत तो पढ़ाते ही हैं, साथ ही दर्शन (या साहित्य) भी पढ़ाते हैं। ५. कोई काम या बात अच्छी तरह बतलाना, समझाना या सिखाना। अच्छी तरह किसी के ध्यान मे बैठाना। जैसे—मालूम होता है कि किसी ने तुम्हे ये सब बातें पढ़ाकर यहाँ भेजा है। ६ किसी विशिष्ट क्रिया, संस्कार आदि से संबंध रखनेवाले मंत्रों, वाक्यों आदि का विधिपूर्वक उच्चारण सम्पन्न कराना। जैसे—(क) ब्राह्मण ने मंत्र पढ़ाकर दान (या संकल्प) कराना। (ख) काजी (या मुल्ला) को बुलाकर निकाह पढ़ाना। ७ मनुष्य की बोली का अनुकरण या नकल करनेवाले पक्षियों के सामने किसी पद या शब्द का इस उद्देश्य से उच्चारण करते रहना कि वे भी इसी तरह बोलना सीख जायँ। जैसे—तुम भी बुड्ढे तोते को पढ़ाने चले हो।
सयो० क्रि०—देना।

पढ़िना—पु० [सं० पाठीन] एक प्रकार की बिना सेहरे की मछली। पढ़ना। पहिना।

पढ़ैया—वि० [हि० पढ़ना+ऐया (प्रत्य०)] पढ़नेवाला।
स्त्री० पढ़ने या पढ़े जाने की क्रिया या भाव। जैसे—कुल-पढ़ैया=ऐसी नमाज जो बस्ती के सब मुसलमान एक साथ मिलकर पढ़ते हों।

पण—पु० [सं०√पण् (व्यवहार)+अप्] १. वह खेल जो पासों से खेला जाता हो। २ वह खेल जिसकी हार-जीत मे दाँव पर कुछ धन लगाया जाता हो। जूआ। द्यूत। ३ किसी काम या बात के लिए लगाई जानेवाली बाजी। शर्त। ४. वह धन जो जूए के दाँव अथवा बाजी या शर्त बदने के समय लगाया जाता हो। ५ दो व्यक्तियों मे पारस्परिक होनेवाला निश्चय या प्रतिज्ञा। कौल। करार। ६ ६ वह धन जो उक्त प्रकार के निश्चय, प्रतिज्ञा आदि के फलस्वरूप दिया या लिया जाता हो। जैसे—पारिश्रमिक, भाड़ा, सूद आदि। ७. किसी चीज का दाम। कीमत। मूल्य। ८. फीस। शुल्क। ९. धन-दौलत। सम्पत्ति। १०. वह चीज जो खरीदी और बेची जाती हो। माल। सौदा। ११. रोजगार। व्यापार। १२. प्रशंसा। स्तुति। १३ प्राचीन काल की एक नाप जो एक मुट्ठी अनाज के बराबर होती थी। १४ किसी के मत से ११ और किसी के मत से २० माशे के बराबर ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति होता था।

पण-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] दाँव, बाजी या शर्त लगाने का काम।

पण-ग्रंथि—स्त्री० [ब० स०] बाजार। हाट।

पणता—स्त्री०, पु० [सं० पण+तल्—टाप्, पण+त्वल्] मूल्य।

पणत्व—पुं० [सं० पण+त्व]=पणता।

पण-दंड—पु० [ष० त०] अर्थ-दंड।

पण-धर—वि० [ष० त०] प्रण रखनेवाला। उदा०—कोडी दै नह काढ़, पणधर राण प्रताप सी।—दुरसाजी।

पणन—पु० [स०√पण्+ल्युट्—अन] १. खरीदने की क्रिया या भाव। क्रय करना। मोल लेना। २. वेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। ३. बाजी या शर्त लगाने की क्रिया या भाव। ४. व्यवहार, व्यापार आदि करने की क्रिया या भाव।

पणनीय—वि० [स०√पण्+अनीयर्] १ जो खरीदा या वेचा जा सके। पणन के योग्य। २ जिससे धन के लोभ से कोई काम कराया जा सके। भाडे का टट्टू।

पण-बंध—पुं० [ष० त०] बाजी बदना। शर्त लगाना।

पणव—पु० [स० पण√वा (गति)+क] १ छोटा ढोल या नगाडा। २ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. एक मगण, एक नगण, एक भगण और अन्त मे एक गुरु होता है।

पणवा—स्त्री०=पणव।

पणवानक—पु० [पणव-आनक, कर्म० स०] नगाडा।

पणवी (विन्)—पु० [स० पणव+इनि] शिव।

पणस—पु० [स०√पण्+असच्] वस्तु, विशेषत वेची जानेवाली वस्तु।

पण-सुन्दरी—स्त्री० [मध्य० स०] वेश्या। रडी।

पण-स्त्री—स्त्री० [मध्य० स०] रडी। वेश्या।

पणांगना—स्त्री० [पण-अगना, मध्य० स०] रडी। वेश्या।

पणाया—स्त्री० [स०√पण्+आय+अ—टाप्] १ व्यापारियो का एक माल किसी को देकर उसके वदले मे दूसरा माल लेना। विनिमय। २. चीजे ले या देकर उनका दाम चुकाना या वसूल करना। आर्थिक क्षेत्र मे लेन-देन आदि करना। (ट्रैन्जैक्शन) ३ रोजगार। व्यापार। ४. रोजगार या व्यापार मे होनेवाला लाभ। ५. बाजार। ६ जूआ। ७ स्तुति।

पणायित—भू० कृ० [स०√पण्+आय+क्त] १. (पदार्थ) जो खरीदा या वेचा जा चुका हो। २. जिसकी स्तुति की गई हो।

पणार्पण—पु० [पण-अर्पण, ष० त०] क्रय-विक्रय के लिए दो पक्षो मे होनेवाला निश्चय या पक्की बात।

पणाशी*—वि०=प्रनाशी (नाश करनेवाला)।

पणास्थि—स्त्री० [पण०अस्थि, ष० त०] कौडी। कपर्दक।

पणि—स्त्री० [स०√पण्+इन्] बाजार। हाट।

पु० १ पणन अर्थात् क्रय-विक्रय करनेवाला व्यक्ति। २. कजूस। ३ पापी।

पणित—भू० कृ० [स०√पण्+क्त] १ (पदार्थ) जिसका पणन अर्थात् क्रय-विक्रय हो चुका हो। २. जिसके सवध मे बाजी लगाई गई हो। ३ जिसके सवध मे कोई प्रतिवध या शर्त लगा हो। (कन्डिशन्ड) ४. प्रशसित। स्तुत।

पु० १ बाजी। शर्त। २ जूआ। ३ जुआरी। ४. अग्रिम या पेशगी दिया जानेवाला धन। बयाना।

पणितव्य—वि० [स०√पण्+तव्यत्] १ जिसका क्रय-विक्रय हो सके। २. जिसका लेन-देन या व्यवहार हो सके। ३ जिसके साथ लेन-देन या व्यवहार किया जा सके। ४. जिसकी प्रशसा या स्तुति की जा सके।

पणिता (तृ)—पु० [सं०√पण्+तृच्] पणन अर्थात् क्रय-विक्रय करनेवाला व्यक्ति।

पणिहारा*—पु० [स्त्री० पणिहारी]=पनिहारा।

पणी (णिन्)—पु० [सं० पण+इनि] क्रय-विक्रय करनेवाला रोजगारी।

पण्य—वि० [सं० पण्+यत्]=पणितव्य।

पु० १. वह चीज जो खरीदी और वेची जाती हो। माल। सौदा। २. रोजगार। व्यापार। ३ बाजार। हाट। ४ दूकान।

पण्य-क्षेत्र—पु० [ष० त०]=पण्य-भूमि।

पण्य-चरित्र—पु० [ष० त०] किसी मडी या हाट के वँधे हुए नियम या प्रथाएँ।

पण्य-चिह्न—पु० [ष० त०] दे० 'वाणिज्य चिह्न'।

पण्य-दास—पु० [कर्म० स०] [स्त्री० पण्यदासी] वह दास जो धन लेकर उसके वदले मे दास्यवृत्ति करता हो।

पण्य-निचय—पु० [ष० त०] वेचने के लिए माल इकट्ठा करके रखना।

पण्य-निर्वाहण—पु० [ष० त०] चुगी या महसूल दिये विना ही चोरी से माल निकाल ले जाना। (कौ०)

पण्य-पति—पु० [ष० त०] १ बहुत बडा रोजगारी या व्यापारी। २. बहुत बडा साहूकार। नगर-सेठ।

पण्य-पत्तन—पु० [ष० त०] १ वह नगर जिसमे अनेक मडियाँ हों। २ मडी। ३. बाजार। हाट।

पण्य-परिणीता—स्त्री० [कर्म० स०] रखेली स्त्री।

पण्य-फल—पु० [ष० त०] व्यापार करने से प्राप्त होनेवाली आय या लाभ।

पण्य-भूमि—स्त्री० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ वस्तुओं का व्यापार होता हो। २ मडी। हाट। ३ गोदाम।

पण्य-योषित—स्त्री० [मध्य० स०] रडी। वेश्या।

पण्य-वस्तु—स्त्री० [कर्म० स०] वे पदार्थ या वस्तुएँ जो बाजारो मे वेंचने के उद्देश्य से बनाई जाती हैं। खरीद और विक्री का माल। पण्य-द्रव्य। (कमोडिटी, मर्चेन्डाइज) जैसे—कपडा, कागज, गेहूँ, जौ आदि।

पण्य-विलासिनी—स्त्री० [कर्म० स०] वेश्या।

पण्य-वीथि (का)—स्त्री० [ष० त०] १ बाजार। २ छोटी दुकान।

पण्य-शाला—स्त्री० [ष० त०]=पण्य-वीथि (का)।

पण्य-समवाय—पु० [ष० त०] व्यापारिक वस्तुओं का सग्रह।

पण्य-स्त्री—स्त्री० [कर्म० स०] वेश्या।

पण्यांगना—स्त्री० [पण्या-अगना कर्म० स०] वेश्या।

पण्यांधा—स्त्री० [स० पण्य√अध् (अधा करना)+अच्—टाप्] कँगनी नाम का कदन्न।

पण्या—स्त्री० [स० पण्य+टाप्] मालकगनी।

पण्याजीव—पु० [स० पण्य-आ√जीव् (जीना)+क] १ ऐसा व्यक्ति जिसकी जीविका पण्य अर्थात् रोजगार से चलती हो। रोजगारी। व्यापारी।

पण्याजीवक—पुं० [स० पण्याजीव+कन्] १ =पण्याजीव। २ [पण्याजीव√कै (चमकना)+क] बाजार।

पण्यावर्त्त—पु० [सं०] क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि का व्यवहार।

(ट्रैन्जैक्शन)
पतंखा†—पु०=पतोखा।
पतंग—वि० [सं०√पत् (गिरना)+अगच्] १. जो गिरता हुआ जाता हो। २. उडनेवाला।
पु० १ सूर्य। २. मकडी। ३ पतिंगा। शलभ। ४. चिडिया। पक्षी। ५ कदुक। गेंद। ६ एक गधर्व का नाम। ७. एक प्राचीन पर्वत। ८ वदन। शरीर। ९ नाव। नौका। १०. जैनों के एक देवता जो वाणव्यतर नामक देवगण के अन्तर्गत हैं। ११ चिनगारी। १२ जड़हन धान। १३ जलमहुआ। १४. एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी रक्त चन्दन की लकडी जैसी परन्तु निर्गन्ध होती है।
स्त्री० [सं० पतग=उडनेवाला] कागज की वह बहुत बडी गुड्डी जो डोर की सहायता से हवा मे उडाई जाती है। कन-कौआ। चग। तुक्कल।
क्रि० प्र०—उडाना।—लडाना।
मुहा०—पतग काटना=पेंच लडाकर किसी की पतग की डोरी काट देना। पतग बढाना=डोर ढीलते हुए पतग और अधिक ऊँचाई या दूरी पर पहुँचाना।
पु० [सं० पत्रग] एक तरह का बड़ा वृक्ष जिसकी लकडी से बढिया लाल रग निकाला जाता है। (सपन)
पु० [फा०] १. रोशनदान। २. खिडकी।
पतंग-छुरी—वि० [सं० पतग=उडानेवाला अथवा चिनगारी+हिं० छुरी] पीठ पीछे बुराई करनेवाला। चुगलखोर।
पतंगबाज—पु० [हिं० पतग+फा० बाज] [भाव० पतगबाजी] वह जिसको पतग उड़ाने का शौक या व्यसन हो।
पतगबाजी—स्त्री० [हिं० पतगबाज+ई (प्रत्य०)] पतग उडाने की क्रिया, भाव या शौक।
पतगम—पु० [सं० पतद्√गम्+खच्, नि० सिद्धि] १. पक्षी। चिडिया। २ पतिंगा। शलभ।
पतगा—पु० [सं० पतग] १. परोंवाला वह कीडा जो हवा मे उडता हो। २. एक तरह का साधारण कीड़ों से बडा कीडा जो पेडों की पत्तियाँ, फसलें आदि खाता तथा नष्ट-भ्रष्ट करता है। ३ दीये का फूल। ४ चिनगारी।
पतगिका—स्त्री० [सं० पतग+कन्—टाप्, इत्व] १. छोटा पक्षी। २ एक तरह की मधुमक्खी।
पतंगी (गिन्)—पु० [सं० पतग+इनि] पक्षी।
पतगेंद्र—पु० [सं० पतग-इद्र, ष० त०] पक्षियो के स्वामी, गरुड।
पतचल—पु० [सं०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।
पतंचिका—स्त्री० [सं० पतम्+चिक्क् (पीडा) पृषो० सिद्धि] धनुष का चिल्ला। प्रत्यचा।
पतजलि—पु० [सं० पतत्-अजलि, ब० स०, शक० पर रूप] पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य नामक टीका लिखनेवाले एक प्रसिद्ध ऋषि जो योगदर्शन के प्रतिपादक भी कहे जाते हैं।
पत—स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा?] प्रतिष्ठा। आबरू। इज्जत। लाज।
क्रि० प्र०—जाना।—रखना।—रहना।
मुहा०—(किसी की) पत उतारना=किसी को अपमानित करना। (किसी की) पत रखना=अपमानित होनेवाले की अथवा अपमानित होते हुए की इज्जत बचाना। लाज रखना। पत लेना=पत उतारना।
पु० [सं० पति] १. पति। २ स्वामी।
पु० [हिं० पत्ता] 'पत्ता' का सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पत-झड।
पतई—स्त्री० १. =पत्ती। २. =पताई।
पतउड़—पु० [सं० पति+उडु] चन्द्रमा। (डिं०)
पत-खोवन—वि० [हिं० पत+खोवन=खोनेवाला] अपनी अथवा दूसरो की प्रतिष्ठा नष्ट करनेवाला।
पतग—पु० [सं० पत√गम् (गति)+ड] पक्षी। चिडिया। पखेरू।
पतगेंद्र—पु० [सं० पतग-इन्द्र ष० त०] पक्षिराज। गरुड़।
पतचौली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा।
पत-झड़—पु० [हिं० पत्ता+झडना] १ पेडो के पत्तो का झडना। २ शिशिर ऋतु जिसमे अधिकाश पेडो के पत्ते झड जाते हैं। ३ उन्नति के उपरात होनेवाला ह्रास। विशेषत ऐसी स्थिति जिसमे वैभव, सपत्ति आदि नष्ट हो चुकी होती है।
पतझर—पु०=पत-झड।
पतझल—स्त्री०=पत-झड।
पतझाड़—स्त्री०=पत-झड।
पतझार—स्त्री० =पत-झड।
पतता—स्त्री० [सं० पतिता]=पतित्व। उदा०—परी है विपत्ति पति लागि पतता नही।—सेनापति।
पतत्—वि०[सं०√पत्+शतृ] १ नीचे की ओर आता, उतरता या गिरता हुआ। २. उड़ता हुआ।
पु० चिडिया।
पतत्पतंग—पु० [सं० पतत्-पतग, कर्म० स०] अस्त होता हुआ सूर्य।
पतत्प्रकर्ष—वि० [सं० पतत्-प्रकर्ष, ब० स०] जो प्रकर्ष से गिर चुका हो।
पुं० साहित्यिक रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब कोई बात आरंभ मे तो उत्कृष्ट रूप मे कही जाती है परन्तु आगे चलकर वह उत्कृष्टता कुछ घट या नष्टप्राय हो जाती है। जैसे—पहले तो किसी को चन्द्रमा कहना और बाद मे जुगनूं कहना। (एन्टीक्लाइमैक्स)
पतत्र—पुं० [√पत्+अत्रन्] १ पक्ष। डैना। २ पख। पर। ३. वाहन। सवारी।
पतत्रि—पुं० [सं०√पत्+अत्रिन्] पक्षी। चिड़िया।
पतत्रि-केतन—पु० [ब० स०] विष्णु।
पतत्रि-राज—पु० [ष० त०] गरुड।
पतत्रि-वर—पु० [स० त०] गरुड।
पतत्री (त्रिन्)—पुं० [सं० पतत्र+इनि] १ पक्षी। २ बाण। ३ घोडा।
पतद्ग्रह—पु० [सं० पतद्√ग्रह् (पकडना)+अच्] १. उगालदान। पीकदान। २ भिक्षा-पात्र। ३ सरक्षित सेना।
पतद्-भीरु—पु० [सं० ब० स०] बाज पक्षी।
पतन—पु० [सं०√पत्+ल्युट्—अन] १ ऊपर से नीचे आने या

गिरने की क्रिया या भाव। २ नीचे धँसने या बैठने की क्रिया या भाव। ३ व्यक्ति का, उच्च आदर्श, स्तुत्य आचरण आदि छोडकर निन्दनीय और हीन आचरण या कार्य करने मे प्रवृत्त होना। ४ जाति, राष्ट्र आदि का ऐसी स्थिति मे आना कि उसकी प्रभुता और महत्ता नष्ट प्राय हो जाय। ५ मृत्यु। ६ पाप। पातक। ७ उडने की क्रिया या भाव। उडान। ८. किसी नक्षत्र का अक्षाश।

वि० [√पत्+ल्यु-अन] १ गिरता हुआ या गिरनेवाला। २. उडता हुआ या उडनेवाला।

पतन-शील—वि० [स० ब० स०] [भाव० पतनशीलता] जिसका पतन हो रहा हो, अथवा जिसकी प्रवृत्ति पतन की ओर हो। गिरता हुआ या गिरनेवाला।

पतना—पु० [?] योनि का किनारा।

†अ० [स० पतन] १ गिरना। २ पतन होना।

†स०=पाथना।

पतनारा—पु० [?] नाबदान। पनाला। मोरी।

पतनीय—वि० [स०√पत्+अनीयर्] जिसका पतन होने को हो अथवा जिसका पतन होना संभावित या स्वाभाविक हो।

पतनोन्मुख—वि० [म० स० त० पतन उन्मुख] जो पतन की ओर उन्मुख हो।

पत-पानी—पु० [हि० पत+पानी] प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। आबरू।

पतम—पु० [स०√पत्+अम] १. चन्द्रमा। २ चिडिया। पक्षी। ३ पतिगा। शलभ।

पतयालु—वि० [स०√पत्+णिच्+आलु] पतनशील।

पतयिष्णु—वि० [स०√पत्+णिच्+इष्णुच्] पतनशील।

पतर—वि०=पातर (पतला)।

पु०=पत्र।

स्त्री०=पत्तल।

पतरा—पु० [स० पत्र] १ वह पत्तल जो तँबोली लोग पान रखने के टोकरे या डलिये मे बिछाते हैं। २. सरसों का साग या पत्ता।

†पु०=पत्रा (पचाग)।

†वि० [स्त्री० पतरी]=पतला।

पतराई—स्त्री०=पतलाई।

पतरिंगा—पु० [?] गोरैया के आकार का लबी चोंच तथा लबी पूँछ-वाला एक पक्षी जिसका रग सुनहलापन लिये हरे रग का होता है तथा आँखें लाल रग की तथा नुकीली चोंच काले रग की होती है।

पतरी†—स्त्री०=पत्तल।

पतरेंगा—पु०=पतरिंगा (पक्षी)।

पतरोल—पु० [अ० पेट्रोल] गश्त लगानेवाला सैनिक।

पतला—वि० [स० पत्राल] [स्त्री० पतली, भाव० पतलापन] १ तीन विमाओंवाली ठोस वस्तु के सबध मे, जिसमे मोटाई या गहराई उसकी लबाई तथा चौडाई की अपेक्षा कम हो। जैसे—पतला डडा, पतली बाँह। २ व्यक्ति, जिसका शरीर हृष्ट-पुष्ट न हो, बल्कि कृश या क्षीण हो।

पद—दुबला-पतला।

३ कपड़े, कागज आदि के सबध मे, जो तल की मोटाई के विचार से झीना या महीन हो। ४ जिसका घेरा अपेक्षया बहुत कम हो। जैसे—पतली कमर। ५ जिसकी चौडाई बहुत कम हो। जैसे—पतली गली। ६ तरल पदार्थ के सबध मे, जिसमे गाढ़ापन न हो। जिसमे तरलता अधिक हो। जैसे—पतला दूध, पतला रसा। ७. लाक्षणिक अर्थ मे, जिसमे शक्ति या समर्थता न हो अथवा जिस रूप मे या जितनी होनी चाहिए, उस रूप मे अथवा उतनी न हो।

पद-पतला हाल=निर्धनता और विपत्ति की अवस्था। **पतली फसल**=ऐसी फसल जिसमे अन्न बहुत कम हुआ हो। **पतले कान**=ऐसे कान (फलत उन कानो से युक्त व्यक्ति) जिनमे सुनी-सुनाई बातें बिना विचार किये मान लेने की विशेष प्रवृत्ति हो। जैसे—उनके कान पतले है, उनसे जो कुछ कहा जाय, उसे वे सच मान लेते है।

पतलाई—स्त्री०=पतलापन।

पतलापन—पु० [हि० पतला+पन (प्रत्य०)] 'पतला' होने की अवस्था या भाव।

पतली—स्त्री० [लश०] जूआ। द्यूत।

वि० स्त्री० हि० पतला का स्त्री० रूप।

पतलून—पु० [अ० पैंटलून] खुली मोहरियो, सीधे पायँचो तथा जेबो-वाला एक तरह का विदेशी पायजामा जिसमे मियानी नही होती।

पतलूननुमा—वि० [हि० पतलून+फा० नुमा=दर्शक] जो देखने मे पतलून की तरह हो।

पु० वह पाजामा जो देखने मे पतलून से मिलता-जुलता हो।

पतलो—स्त्री० [देश०] १ सरकडे या सरपत की पताई। २ सरकडा। सरपत।

पतवर—क्रि० वि० [स० हि० पाँती+वार (प्रत्य०)] १ पक्तिक्रम से। २ बराबर-बराबर।

पतवा—पु० [हि० पत्ता+वा (प्रत्य०)] जगली जानवरो का शिकार करने के लिए बनाई हुई एक तरह की ऊँची मचान।

†पु० १=पत्ता। २ =पता।

पतवार—स्त्री० [स० पत्रवाल, पात्रपाल, प्रा० पात्तवाड] १ बडी नावो और विशेषत पुराने देशी समुद्री जहाजों का वह तिकोना पिछला अग या उपकरण जो आधा जल मे और आधा जल के बाहर रहता है और जिसके सचालन से नाव का रुख दूसरी ओर घुमाया जाता है। कर्ण। २ ऐसा सहारा या साधन जो कठिन समय मे भवसागर से पार उतारे।

पु० [हि० पत्ता] १ पौधों विशेषत सरकडों आदि की सूखी पत्तियाँ। २ कूडा-करकट। जैसे—खर-पतवार।

पतवारी—स्त्री० [हि० पता, पत्ता] ऊख का खेत।

†स्त्री०=पतवार।

पतवाल†—स्त्री०=पतवार।

पतवास—स्त्री० [स० पतत्=चिडिया+वास] पक्षियो का अड्डा। चिक्कस।

पतस—पु० [स०√ पत्+असच्] १. पक्षी। चिडिया। २ पतिगा। शलभ। ३ चद्रमा।

पतस्वाहा—पु० [हि०] अग्नि।

पता—पु० [स० प्रत्यय, प्रा० पत्तय=ख्याति] १ किसी काम, चीज, जगह या बात का परिचायक वह विवरण जिसकी सहायता से उसके पास तक

पहुँचा जा सके या उसके रूप, स्थिति आदि का ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

पद—पता-ठिकाना (दे०)।

२. चिट्ठी आदि के ऊपर का वह विवरणात्मक लेख जो सूचित करता है कि यह पत्र किस स्थान के निवासी किस व्यक्ति का है अथवा किसके पास पहुँचना चाहिए। ३ किसी अज्ञात विषय, व्यक्ति आदि के संबंध की ऐसी जानकारी जो अभी तक प्राप्त न हुई हो और जिसे प्राप्त करना अभीष्ट या आवश्यक हो। जैसे—चोर (या मुजरिम) का अभी तक पता नही है।

क्रि० प्र०—चलना।—बताना।—लगना।—लगाना।

पद—पते का=वास्तव मे उस स्थान का जिसका सब को परिचय न हो।

४. किसी बात या विषय के गूढ तत्त्व या रहस्य की ऐसी जानकारी जो प्राप्त की जाने को हो। जैसे—यह पता लगाना चाहिए कि उसके पास रुपया कहाँ से आता है।

पद—पते की बात=ऐसी बात जिससे कोई भेद खुल जाता या रहस्य स्पष्ट हो जाता है। जैसे—वाह! तुमने भी क्या पते की बात कही है।

विशेष—इस अर्थ मे इसका प्रयोग केवल 'पते की' के रूप मे भी होता है।

स्त्री० [लता का अनु०] लता या उसी तरह की और चीज। लता के साथ प्रयुक्त। जैसे—लता-पता।

पताई—स्त्री० [हिं० पत्ता (वृक्ष का)] १ वृक्ष या पौधे की ऐसी पत्तियाँ जो सूखकर झड गई हों।

मुहा०—पताई लगाना=चूल्हे, भट्ठी आदि मे सूखी पत्तियाँ झोंकना। (किसी के मुँह मे) पताई लगाना=मुँह फूँकना। (स्त्रियों की गाली) २ कूडा-करकट।

स्त्री० [हिं० पत्ता (कान का)] गहना। जेवर। जैसे—गहना-पताई कुछ नहीं मिला।

पताकरा—पु० [देश०] एक पकार का वृक्ष जो बगाल, आसाम और पश्चिमी घाट मे होता है। इसके फल खाए जाते हैं।

पताकांक—पु० [स० पताका-अक प०त०, ब०स०] दे० 'पताका स्थान'।

पताकांशु—पु० [स० पताका-अशु, प०त०] झडा। झडी। पताका।

पताका—स्त्री० [स०√पत्+आकन्—टाप्] १ लकडी आदि के डडे के सिरे पर पहनाया हुआ वह तिकोना या चौकोना कपडा जिस पर कभी कभी किसी राजा या सस्था का विशिष्ट चिह्न भी अकित रहता है। झडा। झडी। फरहरा। २. झडा। ध्वजा। (मुहा० के लिए दे० 'झडा' के मुहा०)

पद—विजय की पताका=युद्ध आदि मे किसी स्थान पर विजयी पक्ष की वह पताका जो विजित पक्ष की पताका गिराकर उसके स्थान पर उडाई जाती है। विजय-सूचक पताका।

३ वह डडा जिसमे पताका पहनाई हुई होती है। ध्वज। ४. सौभाग्य। ५ तीर चलाने मे उँगलियो की एक विशिष्ट प्रकार की स्थिति। ६ दस खर्व की सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जायगी—१०००००००००००० । ७. पिंगल के नौ प्रत्ययो मे से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु, लघु वर्ण के छद अथवा छदो का स्थान जाना जाय। ८ साहित्य मे, नाटक की प्रासगिक कथा के दो भेदों में से एक। वह कथा जो रूपक (या नाटक की) आधिकारिक कथा की सहायतार्थ आती और दूर तक चलती है। इसका नायक अलग होता है और पताका नायक कहलाता है। जैसे—प्रसाद के स्कंद गुप्त नाटक मे मालव की कथा 'पताका' है और उसका नायक बन्धुवर्मा पताका नायक है। (दूसरा भेद प्रकरी कहलाता है।)

पताका-दंड—पु० [सं०ष०त०] बाँस आदि जिसमें पताका लगी होती है।

पताका वेश्या—स्त्री० [सं०] बहुत ही निम्न कोटि की वेश्या। टकाही रंडी।

पताका स्थानक—पु० [सं०मध्य०स०] साहित्य में, नाटक के अंतर्गत वह स्थिति जिसमें किसी प्रसंग के द्वारा आगे की बात तो अन्योक्ति पद्धति पर या समासोक्ति पद्धति पर सूचित की जाती है।

पताकिक—पुं० [सं० पताका+ठन्—इक] वह जो आगे आगे झंडा या पताका लेकर चलता हो।

पताकित—वि० [सं० पताका+इतच्] (स्थान) जिस पर पताका लगाई गई हो।

पताकिनी—स्त्री० [सं० पताका+इनि—ङीप्] १. सेना। फौज। २. एक देवी का नाम।

पताकी (किन्)—वि० [सं० पताका+इनि] [स्त्री० पताकिनी] झंडा लेकर चलनेवाला।

पुं० १. रथ। २. फलित ज्योतिष में, राशियों का एक विशेष वेध जिससे जातक के अरिष्ट काल की अवधि जानी जाती है।

पतामी—स्त्री० [देश०] एक तरह की नाव।

पतार—पु० [स० पाताल] १. घना जगल। सघन वन। २ नीची भूमि। ३. दे० 'पाताल'।

पतारी—स्त्री० [देश०] जलाशयों के किनारे रहनेवाली एक तरह की चिड़िया जिसका शिकार किया जाता है।

पताल†—पुं०=पाताल।

पताल-आँवला—पु० [स० पाताल-आमलकी] औषध के काम में आनेवाला एक पौधा।

पताल-कुम्हड़ा—पु० [स० पाताल-कुष्माड] एक तरह का जगली पौधा।

पताल-दंती†—पु०=पातालदती।

पतावर—पु० [हिं० पत्ता] पेड़ के सूखे झड़े हुए पत्ते।

पतासा†—पु०=पताशा।

पतासी—स्त्री० [देश०] एक तरह की छोटी रुखानी (बढ़ई)।

पतिंग—पु०=पतगा।

पतिंगा—पु०=पतंगा।

पतिंवरा—वि० [स० पति√वृ (वरण करना)+खच्, मुम्] १. (स्त्री) जो अपना पति स्वय चुने। स्वेच्छा से पति का वरण करनेवाली (स्त्री)। स्वयवरा।

स्त्री० काला जीरा।

पति—पु० [स०√पा (रक्षा)+डति] [स्त्री० पत्नी] १ किसी वस्तु का मालिक या स्वामी। अधिपति। प्रभु। जैसे—गृहपति। २. स्त्री की दृष्टि से वह पुरुष जिसके साथ उसका विधिवत् विवाह हुआ हो। खाविंद। दूल्हा। शौहर।

विशेष—साहित्य मे शृगार रस का आलम्बन वह नायक 'पति' माना जाता है, जिसने नायिका का विधिवत् पाणि-ग्रहण किया हो।
३ पाशुपत दर्शन के अनुसार सृष्टि, स्थिति और सहार का वह कारण जिसमे निरतिशय, ज्ञान-शक्ति और क्रियाशक्ति होती है और ऐश्वर्य से जिसका नित्य सवध होता है। ईश्वर। ४ जड। मूल।
†स्त्री०[हिं० पत=प्रतिष्ठा]१. प्रतिष्ठा। सम्मान। २. लज्जा। शर्म। उदा०—जो पति सपति हूँ बिना, जदुपति राखे जाह।—बिहारी।

पतिआना†—स०=पतियाना।

पतिआर—वि०[हिं० पतियाना] जिस पर विश्वास किया जा सके।
पु०=विश्वास।

पतिक—पु०[स० प्रतिक] कार्षापण नाम का पुराना सिक्का।

पति-कामा—वि०[स० ब०स०, टाप्] (स्त्री) जिसके मन मे किसी पुरुष से विधिवत् विवाह करने की इच्छा हो।

पतिघातिनी—स्त्री० [स० पति√हन् (हिंसा)+णिनि—ङीप्]१. पति की हत्या करनेवाली स्त्री। पति को मार डालनेवाली स्त्री। २ फलित ज्योतिष मे, ऐसी स्त्री जिसका ग्रहो के प्रभाव के कारण विधवा हो जाना अवश्यम्भावी या निश्चित हो। ३ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार स्त्रियो के हाथ मे होनेवाली एक रेखा जिसके प्रभाव से उनका विधवा हो जाना निश्चित माना जाता है।

पतिघ्न—वि०[स० पति √ हन्+ठक्]पति को मार डालनेवाला या वाली।
पु० स्त्रियो मे होनेवाला वह अशुभ चिह्न या लक्षण जिससे उसके पति के शीघ्र ही मर जाने की सभावना सूचित होती है।

पतिघ्नी—स्त्री०[स० पतिघ्न+ङीप्]=पतिघातिनी।

पतिजिया—स्त्री०[स० पुत्रजीवा] जीया पोता नामक वृक्ष।

पतित—भू० कृ० [स०√पत्+(गिरना)+क्त] [स्त्री० पतिता, भाव० पतितता] १ ऊपर से नीचे आया या गिरा हुआ। २ नीचे की ओर झुका हुआ। नत। ३ (व्यक्ति) जिसका नैतिक दृष्टि से पतन हो चुका हो। ४. ऊपरी जाति या वर्ग के धर्म या धार्मिक प्रथाओ, विश्वासो आदि को न माननेवाला, उनका उल्लघन करनेवाला अथवा उन्हे हेय समझनेवाला। ५. बहुत बडा अधम, नीच या पापी। ६ जो अपनी जाति, धर्म या समाज से किसी हीन आचरण के कारण निकाला या बहिष्कृत किया गया हो। ७ जो युद्ध आदि मे गिरा, दबा या हरा दिया गया हो। ८ अपवित्र। मलिन। ९ गिराया या फेंका हुआ।

पतित-उधारन—वि० [स० पतित+हिं० उधारना (स० उद्धरण)] पतितो का उद्धार करनेवाला तथा उन्हे सद्गति देनेवाला।
पु० ईश्वर।

पतितता—स्त्री०[स० पतित+तल्—टाप्] १. पतित होने की अवस्था या भाव। २ जाति या धर्म से च्युत होने का भाव। ३ अपवित्रता। ४. अधमता। नीचता।

पतित-पावन—वि० [पतित√पाव+ल्युट्—अन] [स्त्री० पतितपावनी] पतित को भी पवित्र करनेवाला। पतितो को शुद्ध करनेवाला।
पु० परमेश्वर।

पतित-वृक्ष—वि० [कर्म० स०] पतित दशा मे रहनेवाला। जातिच्युत होकर जीवन बितानेवाला।

पतितव्य—वि०[स० √पत्+तव्यत्] जो पतित होने को हो या पतित होने के योग्य हो।

पतित-सावित्रीक—वि० [ब०स० कप्] (ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा शूद्र) जिसका यज्ञोपवीत विधिवत् न हुआ हो अथवा हुआ ही न हो।

पतित्व—पु०[स० पति+त्व]१. प्रभुत्व। स्वामित्व। २. पति या पाणि-ग्राहक होने की अवस्था, भाव या समर्थता।

पति-देवा—वि०[ब०स०] (ऐसी स्त्री) जो अपने पति या स्वामी को ही सबसे बडा देवता मानती हो; अर्थात् पतिव्रता।

पति-धर्म—पु० [ष०त०]१. पति या स्वामी का कर्तव्य और धर्म। २. पति के प्रति पत्नी का कर्तव्य और धर्म।

पतिधर्मवती—वि० [स० पतिधर्म+मतुप्, वत्व, ङीप्] (स्त्री) जो पति के प्रति अपने कर्तव्य करने के लिए सचेत हो।

पतिनी†—स्त्री०=पत्नी।

पतिपारना—स०[स० प्रतिपालन]१. प्रतिपालन करना। पूरा करना। २ पालन-पोषण करना।

पति-प्राणा—स्त्री०[स० ब०स०, टाप्] पति को प्राणो के समान समझने-वाली अर्थात् पतिव्रता स्त्री।

पतिया*—स्त्री० =पाती (चिट्ठी या पत्री)।

पतियाना—स०[स० प्रत्यय+हिं० आना (प्रत्य०)]१ किसी की कही हुई बात आदि पर विश्वास करना। सच समझना। २. किसी व्यक्ति को विश्वसनीय या सच्चा समझना।

पतियार (ा)†—वि०[हिं० पतियाना] विश्वसनीय।
पु० प्रत्यय। विश्वास।

पति-रिपु—वि०[स० ब०स०] पति से द्वेष या शत्रुता करनेवाली। पति से वैर रखनेवाली (स्त्री)।

पति-लघन—पु०[स० ष०त०] स्त्री का दूसरे पति से विवाह करके पहले मृत-पति का तिरस्कार करना।

पति-लोक—पु०[सं० ष०त०]पुराणानुसार वह लोक जिसमे स्त्री का मृत पति रहता है और जहाँ अच्छी स्त्री भी मरने पर भेजी जाती है।

पतिवंती—वि०[स० पति-मती] (स्त्री) जिसका पति जीवित या वर्तमान हो। सधवा।

पतिवती—वि०=पतिवती।

पतिवत्नी—वि० स्त्री०[सं० पति+मतुप्, वत्व, ङीप्, नुक्]=पतिवती।

पतिवर्त्ता—स्त्री०=पतिव्रता।

पतिवाह—पु०[?] उत्तर प्रदेश के कुछ पूर्वी जिलो मे रहनेवाली अहीरो की एक जाति।

पति-वेदन—वि०[स० ष०त०] जो पति प्राप्त करावे। पति प्राप्त कराने-वाला।
पु० महादेव। शिव।

पति-वेदना—स्त्री०[स० ष०त०] तत्र-मंत्र या और किसी उपचार से पति को प्राप्त करनेवाली स्त्री।

पति-व्रत—पु०[सं० ष०त०] विवाहिता स्त्री का यह व्रत कि मैं सदा पति

मे अनन्य भक्ति रखूँगी, आज्ञाकारिणी बनकर सेवा करूँगी और पर-पुरुष की ओर कभी कुदृष्टि से नही देखूँगी। पातिव्रत्य।

पतिव्रता—वि० [स० ब०स०, टाप्] पति-धर्म ही जिसका व्रत हो। अर्थात् पति मे पूर्ण निष्ठा रखनेवाली तथा उसका अनुसरण करनेवाली सच्चरित्रा (स्त्री)।

पतिष्ठ—वि० [स० पतितृ+इष्ठन् 'तृ' का लोप] पूरी तरह से पतन की ओर प्रवृत्त रहने या होनेवाला। अत्यन्त पतन-शील।

पती†—पु०=पति।

पतीआ*—स्त्री०=प्रतिज्ञा।

पतीजना—अ० [हि० प्रतीत+ना (प्रत्य०)] प्रतीति या एतबार करना। भरोसा या विश्वास करना। उदा०—इहौ राहु भा भानहि, राघौ मनहि पतीजु।—जायसी।

पतीणना—स०=पतीतना।

पतीतना—स०=पतीजना (विश्वास करना)।

पतीना*—स०=पतीतना (विश्वास करना)।

पतीर—स्त्री० [स० पक्ति] कतार। पक्ति।

†वि०=पतला।

पतीरी—स्त्री० [हि० पात=पत्ता] एक प्रकार की चटाई।

पतील†—वि०=पतला।

पतीला—पु० [स० पतिली] [स्त्री० अल्पा० पतीली] ताँबे, पीतल आदि का ऊँचे तथा खडे किनारेवाला और गोल घेरेवाला एक प्रसिद्ध बरतन।

†वि०=पतील (पतला)।

पतीली—स्त्री० हि० पतीला का स्त्री० अल्पा० रूप।

पतुका†—पु० [स० पात्र] [स्त्री० अल्पा० पतुकी] १ बडी हाँडी। मटका। उदा०—पतुकी धरी श्याम खिसाई रहे उत ग्वारि हसी मुख आँचल कै।—केशव। २. पतीला। (बुदे०)

पतुरिया—स्त्री० [स० पतिली=स्त्री विशेष] १ वेश्या, विशेषत. नाचने, गाने का पेशा करनेवाली वेश्या। पातुरी। २. दुश्चरित्रा और व्यभिचारिणी स्त्री। पुश्चली। (दे० पातुरी)

पतुली†—स्त्री० [देश०] कलाई मे पहनने का एक गहना। (अवध)

पतुही†—स्त्री० [हि० पत्ता] मटर की वह हरी फली जिसमे पूरे तथा पुष्ट दाने न हो।

पतूखी†—स्त्री०=पतोखी (पतोखा का स्त्री० रूप)।

पतेना†—स्त्री० [?] हरे सुनहले रग की एक चिडिया जिसकी गरदन और पेट नीला होता है। इसकी चोच नीचे की ओर झुकी हुई, नुकीली और लबी होती है।

पतोई—स्त्री० [देश०] ईख का रस खौलाते समय उसमे से निकलनेवाली मैली झाग।

पतोखर†—स्त्री० [स० हि० पत्ता] वह ओषधि जो किसी वृक्ष, पौधे, तृण, पत्ते, फूल आदि के रूप मे हो। खर-बिरई।

पु० [स० ओषधिपति] चद्रमा।

पतोखरी—स्त्री०=पतोखा।

पतोखा—पु० [हि० पत्ता] [स्त्री० अल्पा० पतोखी] १ पत्ते अथवा पत्तो का बना हुआ अजुली या कटोरे के आकार का पात्र। २. पत्तो का बना हुआ छाता। ३ एक प्रकार का बगला पक्षी। पतखा।

पतोखी—स्त्री० [हि० पतोखा] १ एक पत्ते का बना हुआ छोटा दोना। २ पत्तो का बना हुआ छोटा छाता।

पतोरा—पु०=पत्योरा (एक तरह का पकवान)।

पतोह (हू)—स्त्री० [स० पुत्रवधू, प्रा० पुत्रवहू] पुत्र की स्त्री। पुत्रवधू।

पतौआ†—पु०=पत्ता।

पतौखा (पा)—पु० [स्त्री० अल्पा० पतौखी (पी)]=पतोखा।

पत्तंग—पु० [स० पत्राग, पृषो० सिद्धि] पतंग नामक लकडी। बक्कम।

पत्त†—पु०=पत्र।

पत्तन—पु० [स० √पत्+तनन्] १ छोटा नगर। कस्बा। २ मृदग।

पत्तन-आयुध—पु० [स० ष० त०] वे आयुध जिनसे नगर की रक्षा की जाती हो।

पत्तन-क्षेत्र—पु० [स० ष०त०] वह पत्तन या कस्बा जिसका शासन तथा व्यवस्था वहाँ के निर्वाचित लोग करते हो। (टाउन-एरिया)

पत्तन-पाल—पु० [स० पत्तन√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] पत्तन या कस्बे का प्रधान शासक।

पत्तर—पु० [स० पत्र] धातु आदि का कागज के समान लचीला तथा पतला टुकडा।

†स्त्री०=पत्तल।

पत्तल—स्त्री० [स० पत्र, हि० पत्ता] १. पलाश, महुए आदि के पत्तो को छोटी-छोटी सीको की सहायता से जोडकर थाली के सदृश बनाया हुआ गोलाकार आधार।

कहा०—जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना=अपने उपकारक, पालक, सरक्षक आदि का भी अपकार करना।

पद—एक पत्तल के खानेवाले=परस्पर घनिष्ठ सामाजिक सबध रखनेवाले। परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करनेवाले। सजातीय। **जूठी पत्तल**=किसी की जूठी की हुई भोजन सामग्री। उच्छिष्ट।

मुहा०—पत्तल खोलना=जिस काम की प्रतिज्ञा की या शर्त रखी गई हो, उसके पूरे होने पर ही भोजन करना। (दे० नीचे 'पत्तल बाँधना') **पत्तल पडना**=भोजन के समय खानेवालो के लिए पत्तले क्रम से बिछाई या रखी जाना। **पत्तल परसना**= (क) खानेवालो के सामने पत्तलें रखना। (ख) उक्त पत्तलो पर भोजन की सामग्री रखना। **पत्तल बाँधना**=यह प्रतिज्ञा करना या लगाना कि जब तक अमुक काम न हो जायगा, तब तक भोजन नही किया जायगा। **(किसी की) पत्तल मे खाना**=(किसी के साथ) खान-पान का सबध करना या रखना। **पत्तल लगाना**=पत्तल परसना (दे० ऊपर)।

२ पत्तल पर परोसे हुए खाद्य पदार्थ।

क्रि० प्र०—लगाना।

३ उतना भोजन जितना एक साधारण आदमी करता हो। जैसे—जो खाने के लिए न आवे, उसके घर पत्तल भेज देना।

पत्ता—पु० [स० पत्र] [स्त्री० पत्ती] १ पेड-पौधो आदि के तनो, शाखाओ आदि मे लगनेवाले प्राय हरे रग के चिपटे लचीले अवयवो मे से हर एक जो हवा मे लहराता या हिलता-डुलता रहता है। पर्ण।

मुहा०—पत्ता खडकना=(क) किसी प्रकार की गति आदि की आहट मिलना। (ख) किसी प्रकार की आशका या खटका होना। **पत्ता तक न हिलना**=हवा का इतना बद रहना या बिलकुल न चलना कि वृक्षो

के पत्ते तक न हिल रहे हों। पत्तातोड़ भागना=जान बचाने या मुँह छिपाने के लिए बहुत तेजी से भागकर दूर निकल जाना। (फल आदि मे) पत्ता लगना=पत्ते से सटे रहने के कारण फल मे दाग पड जाना या उसके कुछ अश सड़ जाना। पत्ता हो जाना=बहुत तेजी से भागकर अदृश्य या गायब हो जाना।

२ उक्त के आधार पर, चाट आदि वे वस्तुएँ जो पत्तो पर रखकर बेची जाती हैं। जैसे—एक पत्ता दही बड़ा इन्हे भी दो।

मुहा०—पत्ते चाटना=बाजारी चीजें खाना।

३ पत्ते के आकार का वह चिह्न जो कपडे, कागज आदि पर छापा, बनाया या काढा जाता है। ४. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना जो बालियो मे लटकाया जाता है। ५ ताश की गड्डी मे का कोई एक कागज का खड। ६ सरकारी चलनसार नोट। जैसे—दस रुपए का पत्ता, सौ रुपए का पत्ता।

वि० पत्ते की तरह का बहुत पतला और हलका।

पत्ता-फेर—पु०=पटा-फेर।

पत्ति—पु०[स० √पद् (जाना)+क्तिन्] १. पैदल चलनेवाला व्यक्ति। २ पैदल सिपाही। प्यादा। ३ योद्धा। वीर। ४. नायक।

स्त्री० प्राचीन भारतीय सेना की एक इकाई जो सेनामुख की एक तिहाई होती थी।

पत्तिक—वि०[स० पत्ति+कन्] पैदल चलनेवाला।

पत्ति-काय—पु०[प०त०] १. पैदल सेना। २ पैदल चलनेवाला सिपाही।

पत्तिगण—पु०=पत्ति-गणक।

पत्ति-गणक—पु०[प०त०] प्राचीन भारत मे, वह सैनिक अधिकारी जो पत्ति अर्थात् पैदल सेना की गणना करता था।

पत्तिपाल—पु० [स० पत्ति √पाल् (रक्षा)+णिच्=अण्, प० त०] पत्ति का नायक।

पत्ति-व्यूह—पु०[प०त०] वह सैनिक व्यूह-रचना जिसमे आगे कवचधारी सैनिक हो और पीछे धनुर्धर।

पत्ति-सैन्य—पु०[कर्म०म०] दे० 'पत्ति-काय'।

पत्ती—स्त्री०[हिं० पत्ता+ई (प्रत्य०)] १ पेड-पौधो का बहुत छोटा पत्ता। जैसे—गेंदे, नीम या बेले की पत्ती। *२. भाँग नामक पौधे मे लगनेवाले छोटे-छोटे पत्ते जो नशीले होते हैं। (पूरब) *३ तमाकू के बडे-बड़े पत्तो का विशेष प्रक्रिया से बनाया हुआ चूरा जिसे लोग पान आदि के साथ खाते हैं। (पूरब) ४. फूल की पखडी। ५. लकड़ी, धातु आदि का छोटा टुकडा। ६ लोहे का तेज धार वाला वह छोटा पतला टुकड़ा जिसकी सहायता से दाढी बनाई जाती है। (ब्लेड) ७ ताश का कोई पत्ता। ८ रोजगार, व्यवसाय आदि मे होनेवाला साझे का अश। जैसे—इस व्यापार मे इनकी भी दो आना पत्ती है।

पत्तीदार—वि० [हिं० पत्ती+फा० दार=रखनेवाला] १. (पौधा या वृक्ष) जिसमे पत्तियाँ हो। २. (व्यक्ति) जिसकी किसी व्यापार या सम्पत्ति मे पत्ती (भाग या हिस्सा हो)।

पत्तूर—पु० [सं०√पत्+ऊर, नि० सिद्धि] १. शाति या शालिच नामक शाक। २. जल-पीपल। ३. पाकर का पेड। ४. शमी का पेड़। ५. पतग या बक्कम नामक वृक्ष की लकड़ी।

पत्य—पु० १.=पथ्य। २=पय।

पत्थर—पु० [स० प्रस्तर, प्रा० पत्थर] [वि० पथरीला, क्रि० पथराना] १. धातुओ से भिन्न वह कड़ा, ठोस और भारी भू-द्रव्य जो खानो के नीचे बनता है। भू-कम्प आदि के कारण यही भू-द्रव्य ऊपर उठकर पर्वतो का रूप धारण करता है। २ खानो मे से खोदकर या पर्वतो मे से काटकर निकाला हुआ उक्त भू-द्रव्य का कोई खड या पिंड।

पद—पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=अत्यन्त कठोर हृदय। किसी के कष्ट से न पसीजनेवाला दिल या हृदय। पत्थर का छापा=पुस्तको आदि की एक प्रकार की छपाई जिसमे छापे जानेवाले लेख की एक प्रतिलिपि पत्थर पर उतारी जाती है और उसी पत्थर पर कागज रखकर छापते हैं। लीथो की छपाई। पत्थर की छाती=(क) ऐसा हृदय जो बहुत बडे-बडे कष्ट भी सहज मे और चुपचाप सह लेता हो। (ख) 'दे० ऊपर पत्थर का कलेजा'। पत्थर की लकीर=ऐसी प्रतिज्ञा या बात, जो उसी प्रकार दृढ और स्थायी हो, जैसी पत्थर के ऊपर छेनी आदि से खीची हुई लकीर होती है।

मुहा०—पत्थर को (या मे) जोंक लगाना=बिलकुल अनहोनी या असभव बात करना। ऐसा काम करना जो औरो के लिए असभव या बहुत अधिक कठिन हो। (शस्त्र आदि को) पत्थर चटाना=छुरी, कटार आदि की धार पत्थर पर घिसकर तेज करना। पत्थर तले हाथ आना या दबना=ऐसे सकट मे पडना या फँसना जिससे छूटने का कोई उपाय न सूझता हो। बुरी तरह फँस जाना। पत्थर तले से हाथ निकालना=बहुत बडे संकट या विकट स्थिति मे से किसी प्रकार बचकर निकलना। पत्थर निचोड़ना=(क) अनहोनी बात या असभव काम कर दिखाना। (ख) ऐसे व्यक्ति से कुछ प्राप्त कर लेना जिससे प्राप्त करना औरो के लिए बिलकुल असभव हो। पत्थर पिघलना या पसीजना=(क) बिलकुल अनहोनी या असंभव बात होना। (ख) परम कठोर हृदय का भी द्रवित होना। पत्थर सा खींच या फेंक मारना=बहुत ही रुखाई से उत्तर देना या बात करना। पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=असभव काम या बात के लिए प्रयत्न करना। व्यर्थ सिर खपाना।

३ सडको पर लगा हुआ वह पत्थर जिस पर वहाँ से विशिष्ट स्थान की दूरी अकित होती है। ४ ओला। बिनौला।

क्रि० प्र०—गिरना। पडना।

पद—पत्थर पड़े=चौपट हो जाय। नष्ट हो जाय, मारा जाय। ईश्वर का कोप पडे। (अभिशाप या गाली) जैसे—पत्थर पडे तुम्हारी इस करनी (या बुद्धि) पर।

मुहा०—(किसी चीज या बात पर) पत्थर पड़ना=बुरी तरह से चौपट या नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। जैसे—तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड गया है। पत्थर-पानी पड़ना=बहुत जोरो की वर्षा होना और उसके साथ ओले गिरना।

५. नीलम, पन्ना, लाल, हीरा आदि रत्न जो वस्तुत बहुमूल्य पत्थर ही होते हैं। जवाहिर। ६ ऐसी चीज जो पत्थर की ही तरह कठोर, जड, ठोस या भारी हो। जैसे—(क) यह गठरी क्या है, पत्थर है। (ख) तुम्हारा कलेजा क्या है, पत्थर है। ७ ऐसा अन्न आदि जो जल्दी गलता या पचता न हो।

अव्य० नाम को भी कुछ नही। बिलकुल नही। जैसे—वहाँ क्या रखा है, पत्थर!

पत्थर-कला—स्त्री० [हिं० पत्थर+कल] एक तरह की पुरानी चाल की बन्दूक जिसमे लगे हुए चकमक पत्थर की सहायता से बारूद दागा जाता था।

पत्थर-चटा—पु० [हिं० पत्थर+अनु० चट चट] एक प्रकार की घास जिसकी टहनियाँ नरम और पतली होती है।

पु० [हिं० पत्थर+चाटना] १. एक प्रकार का साँप जो प्राय पत्थर चाटता हुआ दिखाई देता है। २. एक प्रकार की समुद्री मछली जो प्राय. चट्टानो से चिपटी रहती है। ३ वह जो प्राय घर के अन्दर रहता हो और जल्दी घर से बाहर न निकलता हो। ४. वह जो बहुत बडा कजूस या मक्खीचूस हो।

पत्थर-चूर—पु० [हिं० पत्थर+चूर] एक तरह का पौधा।

पत्थर-फूल—पु० [हिं०पत्थर+फूल] दवा तथा मसाले के काम मे आनेवाला एक तरह का पौधा जो प्राय. पथरीली भूमि मे होता है। छरीला। शिलापुष्प।

पत्थर-फोड़—पु० [हिं० पत्थर+फोड़ना] १. पत्थर तोडने का पेशा करनेवाला। सगतराश। २. छरीला या शैलाख्य नामक पौधा जो पत्थरो की सधियो मे उत्पन्न होता है। ३. दे० 'हुदहुद पक्षी'।

पत्थरबाज—वि० [हिं० पत्थर+फा० बाज] [भाव० पत्थरबाजी] पत्थर फेक-फेककर लोगो को मारनेवाला।

पु० वह जिसे ढेलवाँस से ककड-पत्थर फेकने का अभ्यास हो। ढेलबाह।

पत्थरबाजी—स्त्री० [हिं० पत्थरबाज] दूसरो पर पत्थर फेकने की क्रिया या भाव। ढेलेबाजी।

पत्थल†—पु०=पत्थर।

पत्नी—स्त्री० [स० पति+डीप्, नुक्] किसी पुरुप के सवध के विचार से वह स्त्री जिसके साथ उस पुरुष का विधिवत् पाणि-ग्रहण या विवाह हुआ हो। भार्या। जोरू।

पत्नी-व्रत—पु० [स० ष० त०] पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से गमन न करने का व्रत या सकल्प।

पत्नीव्रती (तिन्)—वि० [स० पत्नीव्रत+इनि] जिसने पत्नी-व्रत धारण किया हो, अथवा जो पत्नी-व्रत का पालन करता हो।

पत्नी-शाला—स्त्री० [स० ष०त०] यज्ञ मे वह गृह जो पत्नी के लिए बनाया जाता था। यह यज्ञशाला के पश्चिम की ओर होता था।

पत्य—पु० [स० पति+यत्] पति होने की अवस्था, धर्म या भाव। जैसे—पातिव्रत्य।

पत्याना—स०=पतियाना।

पत्यारा वि०, पु०=पतियारा।

पत्यारी—स्त्री० [स० पक्ति] पक्ति। कतार।

पत्योरा—पु० [हिं० पत्ता+ओर (प्रत्य०)] अन्चू के पत्ते का रिकवँछ।

पत्रंग—पु० [स० पत्र-अग, ष० त०, शक० पररूप] पतग नाम की लकड़ी या पेड़। वक्कम।

पत्र—पु० [स०√पत् (गिरना)+ष्ट्रन्] १. वृक्ष का पत्ता। पत्ती। पर्ण। २. वह कागज जिस पर किसी को भेजने के लिए कोई सदेश या समाचार लिखा हो। खत। चिट्ठी।

विशेष—प्राचीन काल मे, जब कागज नही होता था, सदेश, समाचार आदि प्रायः वृक्षो के बडे पत्तो पर ही लिखकर भेजे जाते थे; इसीलिए यह शब्द अब खत या चिट्ठी का वाचक हो गया है।

३. वह कागज या धातु-पट जिस पर विशेष व्यवहार के प्रमाण-स्वरूप कुछ लिखा गया हो। जैसे—दान-पत्र, प्रतिज्ञा-पत्र आदि। ४. वह लेख जो किसी व्यवहार या घटना के प्रमाण-स्वरूप लिखा गया हो। कोई पट्टा या दस्तावेज। ५ समाचार-पत्र। अखबार। ६ समाचार-पत्रो या सामयिक पत्रो का वर्ग या समूह। (प्रेस) ७ पुस्तक आदि का पष्ठ। पन्ना। ८. धातु आदि का पत्तर। जैसे—स्वर्ण-पत्र। ९. पक्षियो का वह पर जो तीर मे बाँधा या लगाया जाता है। पख। १०. सौंदर्य-वृद्धि के लिए रगो, सुगधित द्रव्यो आदि से बनाई जानेवाली आकृतियाँ या अकन। ११. तेजपात। १२. पक्षी। चिडिया। १३ वाहन। सवारी। १४. छुरी, तलवार आदि का फल।

†पुं० [स० पात्र] बरतन। उदा०—ऊँधा पत्र बुदबुद जल आकृति।—प्रिथीराज।

पत्रक—पु० [स० पत्र+कन्] १. पत्ता। २. पत्तियो की शृखला। पत्रावली। ३. शालि नामक साग। ४. तेजपत्ता। ५. वह पत्र जिस पर स्मृति के लिए सूचना आदि के रूप मे कोई बात लिखी हो। स्मृति-पत्र। (मेमो, नोट)

वि० १. पत्र-सबधी। २. पत्र या कागज का बना हुआ या पत्र के रूप मे होनेवाला। जैसे—पत्रक-धन।

पत्रक-धन—पुं० [स० मध्य० स०] निश्चित मान का वह धन जो छपे हुए कागज या पत्र अर्थात् धन-पत्र के रूप मे हो। (पेपर मनी)

पत्र-कर्तक—पु० [स० ष० त०] उपकरण जिससे कागज काटे जाते हैं। (पेपर कटर)

पत्रकार—पुं० [स० पत्र√कृ (करना)+अण्] वह व्यक्ति जो समाचार पत्रो को नित्य नये समाचारो की सूचना देता, उन पर टीका-टिप्पणी करता अथवा दूसरो द्वारा भेजे हुए समाचारो को सम्पादित करता हो। (जरनलिस्ट)

पत्रकारिता—स्त्री० [स० पत्र√कृ+णिनि+तल्+टाप्] १. पत्रकार होने की अवस्था या भाव। २. पत्रकार का काम। ३. वह विद्या जिसमे पत्रकारो के कार्यो, कर्तव्यो, उद्देश्यो आदि का विवेचन होता है। (जरनलिज्म)

पत्र-कारी†—स्त्री०=पत्रकारिता।

पत्र-काहला—स्त्री० [स० ष० त०] पक्षी के परो के फडफडाने अथवा पत्तो के हिलने से होनेवाला शब्द।

पत्र-कृच्छ्र—पु० [मध्य० स०] एक व्रत जिसमे पत्तो का काढा पीकर रहना पडता है।

पत्र-गुप्त—पु० [स० ब० स०] तिधारा। थूहर। त्रिकटक।

पत्र-घना—स्त्री० [ब० स०, टाप्] सातला नाम का पौधा।

पत्रघ्न [स्त्री० [स० पत्र√हन् (हिंसा)+टक्] सेंहुँड। थूहर।

पत्रज—पु० [स० पत्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड] तेजपत्ता।

पत्र-जात—पुं० [ष० त०] १. किसी सस्था, सभा अथवा किसी विषय

से संबंध रखनेवाले सभी आवश्यक कागज। कागज-पत्तर। (पेपर्स) २. इस प्रकार के पत्रों की नत्थी। (फाइल)

पत्रणा—स्त्री० [स० पत्र√नम् (झुकना)+ड, णत्व, टाप्] १. पत्र-रचना। २. बाण मे पख लगाना।

पत्र-तंडुली—स्त्री० [स० पत्रतडुल, ब० स०, ङीप्] यवतिक्ता लता।

पत्र-तरु—पु० [मध्य० स०] दुर्गन्ध खैर।

पत्र-दारक—पु० [स०√दृ (विदारण)+णिच्+ण्वुल्—अक, पत्र-दारक, ष० त०] लकड़ी चीरने का आरा।

पत्र-द्रुम—पु० [मध्य० स०] ताड का पेड।

पत्र-नाड़िका—स्त्री० [ष० त०] पत्ते की नस।

पत्र-पंजी—स्त्री० [ष० त०] वह पजी या रजिस्टर जिसमे आनेवाले पत्रो और उनके दिये जानेवाले उत्तरों का विवरण रखा जाता है। (लेटरबुक)

पत्र-परशु—पु० [स० त०] सुनारो की छेनी।

पत्र-पाल—पुं० [ब० स०] १. बडी छुरी। २. दे० 'डाकपाल'।

पत्रपाली—स्त्री० [स० पत्रपाल+ङीप्] १. बाण का पिछला भाग। २. कैंची।

पत्र-पाश्या—स्त्री० [ष० त०] पुरानी चाल का एक तरह का आभूषण जो स्त्रियाँ माथे पर बाँधती थी।

पत्र-पिशाचिका—स्त्री० [सुप्सुपा समास] पत्तियो की बनी हुई छतरी।

पत्र-पुट—पु० [ष० त०] पत्ते का बना हुआ पात्र। दोना।

पत्र-पुरा—स्त्री० [स०] पुरानी चाल की एक तरह की नाव जिसकी लम्बाई ९६ हाथ और चौड़ाई तथा ऊँचाई ४८-४८ हाथ होती थी।

पत्र-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. लाल तुलसी। २. एक विशेष प्रकार की तुलसी जिसकी पत्तियाँ छोटी-छोटी होती है। ३. सत्कार या पूजा की बहुत ही साधारण सामग्री। ४. सामान्य या तुच्छ उपहार।

पत्र-पुष्पक—पु० [स० पत्रपुष्प+कन्] भोजपत्र।

पत्र-पुष्पा—स्त्री० [स० पत्रपुष्प+टाप्] १. तुलसी। २. छोटी पत्तियो वाली तुलसी।

पत्रपेटिका—स्त्री०=पत्र-पेटी।

पत्र-पेटी—स्त्री० [ष० त०] १ पत्र रखने की पेटी। २. डाक-विभाग द्वारा विभिन्न स्थानो पर स्थापित किया हुआ वह बडा डिब्बा जिसमे बाहर भेजे जानेवाले पत्र छोडे जाते है। ३. उक्त के आधार पर वह डिब्बा जो किसी के घर पर लगा होता अथवा जिस पर किसी का नाम लिखा होता है और जिसमे डाकिये आदि उस विशिष्ट व्यक्ति की डाक डाल जाते है। (लेटरबाक्स, उक्त तीनो अर्थो मे)

पत्र-बंध—पु० [ब० स०] १ फूलो से बाँधना अथवा सजाना। २ फूलो से किया जानेवाला एक तरह का शृंगार।

पत्र-भंग—पु० [ब० स०] पत्तियाँ, फूलो आदि के आकार का वह रेखा-कन जो विशिष्ट अवसरो पर स्त्रियो के मुख की शोभा बढाने के लिए कस्तूरी, केसर आदि के लेप से किया जाता है।

पत्र-भंगी—स्त्री० [स० पत्रभग+ङीप्] दे० 'पत्रभग'।

पत्र-भद्र—पु० [ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

पत्र-मंजरी—स्त्री० [ष० त०] पत्रयुक्त मजरी के आकार का एक तरह का तिलक।

पत्र-माल—पु० [ब० स०] बेत।

पत्र-मित्र—पु० [मध्य० स०] एक दूसरे से दूर रहनेवाले ऐसे व्यक्ति जिनका कभी साक्षात्कार तो न हुआ हो, फिर भी जो केवल पत्र-व्यवहार के द्वारा आपस मे मित्र बन गये हो। (पेन फ्रेंड)

पत्र-यौवन—पु० [ब० स०] नया और कोमल पत्ता। किसलय।

पत्र-रचना—स्त्री० पत्रभंग। (दे०)

पत्र-रथ—पु० [ब० स०] पक्षी।

पत्र-रेखा—स्त्री० पत्रभग। (दे०)

पत्र-लता—स्त्री० [मध्य० स०] १. सजावट के लिए बनाई जाने-वाली फूल-पत्तियाँ या बेल-बूटे। पत्रावली। २. पत्रभग। साटी।

पत्र-लवण—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का नमक जो एरड, मोरवा, अडूसा, कुंज, अमिलतास और चीते के हरे पत्तो से निकाला जाता है।

पत्र-लेखा—स्त्री० [सं०] १. =पत्रभग। २. चित्रो मे सजावट के लिए फूल-पत्तियाँ या बेल-बूटे आदि अंकित करना।

पत्र-वल्लरी—स्त्री० [मध्य० स०] पत्रभग। (दे०)

पत्र-वल्ली—स्त्री० [ष० त० या मध्य० स०] १. शकरजटा। २ ताबूल। पान। ३. पलाशी नाम की लता। ४. पर्ण-लता।

पत्र-वाज—पु० [ब० स०] १. पक्षी। चिड़िया। २. तीर। बाण।

पत्रवाह—पुं० [स० पत्र√वह् (ढोना)+अण्] १ वह जो पत्र लेकर कही जाय। पत्रवाहक। २. वह सरकारी कर्मचारी जिसका काम पत्र आदि लोगो के यहाँ पहुँचाना होता है। चिट्ठीरसाँ। डाकिया। ३. चिड़िया। पक्षी। ४. तीर। बाण।

पत्र-वाहक—वि० [ष० त०] पत्र ले जानेवाला।

पु० वह व्यक्ति जिसके हाथ कोई पत्र किसी के पास भेजा जाय।

पत्रवाह-पंजी—स्त्री० [ष० त०] वह पजी जिसमे पत्रवाहक द्वारा भेजे हुए पत्रो का विवरण होता है और जिस पर पत्र पानेवाले व्यक्ति के हस्ताक्षर भी कराये जाते है। (पियन बुक)

पत्र-विशेषक—पु० [ब० स०, कप्] १ तिलक। २ पत्रभग। साटी।

पत्र-विष—पु० [मध्य० स०] पत्तो से निकलनेवाला विष।

पत्र-वृश्चिक—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का उडनेवाला छोटा कीड़ा जिसके काटने से बडी जलन होती हैं। पतबिछिया। पनबिछिया।

पत्र-वेष्ट—स्त्री० [ब० स०] एक तरह का करनफूल।

पत्र-व्यवहार—पु० [ष० त०] पत्राचार। (दे०)

पत्र-शबर—पु० [मध्य० स०] प्राचीन काल की एक अनार्य जाति।

पत्र-शाक—पु० [मध्य० स०] वह पौधा जिसके पत्तो का साग बनाया जाता हो। जैसे—चौलाई, पालक आदि।

पत्र-शिरा—स्त्री० [ष० त०] पत्ते की नस।

पत्र-शृंगी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] मूसाकानी लता।

पत्र-श्रेणी—स्त्री० [ष० त०] १ पत्तो की श्रेणी। पत्रावली। २. मूसाकानी।

पत्र-श्रेष्ठ—पु० [स० त०] बेल का पत्ता। बिल्वपत्र।

[ब० स०] बिल्ववृक्ष।

पत्र-साहित्य—पु० [स०] ऐसा साहित्य जिसमे किसी बडे आदमी के लिखे हुए पत्रो (चिट्ठियो आदि) का सग्रह हो।

पत्र-सूची—स्त्री० [ष० त०] १ काँटा। कटक। २ बाहर भेजे जाने-वाले अथवा बाहर से आये हुए पत्रो की सूची।

पत्रांग—पुं० [पत्र-अग, ब० स०] १. लाल चन्दन। २. पतग या वक्कम नाम का वृक्ष। ३. भोजपत्र। ४. कमलगट्टा।

पत्रांगुलि—स्त्री० [पत्र-अगुलि, ब० स०] केसर, चन्दन आदि के लेप से किसी के ललाट, मुख, कंठ आदि पर बनाये जानेवाले चिह्न या अलकरण।

पत्रांजन—पु० [पत्र-अजन, ष० त०] स्याही।

पत्रा—पु० [स० पत्र] १ तिथिपत्र। २. पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ।

पत्राख्य—पु० [पत्र-आख्या, ब० स०] १. तेजपात। २. तालीशपत्र।

पत्राचार—पु० [पत्र-आचार, ष० त०] १ परस्पर एक दूसरे को पत्र लिखना; अथवा आये हुए पत्रो के उत्तर देना। २. इस प्रकार लिखे हुए पत्र।

पत्राढ्य—पु० [पत्र-आढ्य, तृ० त०] १. पीपलामूल। २ पर्वत नामक तृण। ३ लाल चन्दन। ४. पतग। वक्कम। ५. नरसल। ६. तालीशपत्र।

पत्रान्य—पु० [स० पत्रग, पृषो० सिद्धि] १ पतग। वक्कम। २. लाल चन्दन।

पत्रालय—पु० [पत्र-आलय, ष० त०] डाकखाना। डाकघर।

पत्रालाप—पु० [पत्र-आलाप, तृ० त०] पत्राचार (दे०)।

पत्राली—स्त्री० [पत्र-आली, ष० त०] १. पत्रो की शृखला। २. एक आकार के कटे हुए कोरे या निरक कागज की वह गड्डी जिसके पत्रो पर चिट्ठियाँ लिखी जाती हैं। (पैड)

पत्रालु—पु० [स० पत्र+आलुच्] १. कासालु। २. इक्षुदर्भ।

पत्रावली—स्त्री० [पत्र-आवली, ष० त०] १. सजावट के लिए बनाई जानेवाली फूल-पत्तियाँ या वेल-बूटे आदि। पत्र-लता। २. सुगधित द्रव्यो और रगो से चेहरे पर की जानेवाली पत्र-रचना। (देखें) ३. गेरू।

पत्राहार—पु० [पत्र-आहार, ष०त०] पत्तो का किया जानेवाला भोजन।

पत्राहारी (रिन्)—वि० [स० पत्राहार+इनि] वृक्षो के पत्ते खाकर ही रहनेवाला।

पत्रिका—स्त्री० [स० पत्री+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. चिट्ठी। खत। पत्र। २. कोई छोटा लेख। जैसे—लग्न-पत्रिका। ३ जन्मपत्री। ४. प्राय. नियमित रूप से निकलनेवाली ऐसी पुस्तिका जिसमे विभिन्न विषयो पर लेख, कहानियाँ, कविताएँ आदि होती है। जैसे—सम्मेलन पत्रिका।

पत्रिकाख्य—पु० [स० पत्रिका-आख्या, ब० स०] एक प्रकार का कपूर। पानकपूर।

पत्रिणी—स्त्री० [स० पत्र+इनि, ङीप्] वडा पत्ता।

पत्री (त्रिन्)—वि० [स० पत्र+इनि] जिसमे पत्ते हो। पत्रयुक्त। पत्तोवाला।

पु० १. बाण। तीर। २. चिडिया। पक्षी। ३. वाज पक्षी। ४. पेड़। वृक्ष। ५. पर्वत। पहाड। ६ ताड का पेड़। ७ रथ का सवार। रथी।

स्त्री० [स० पत्र+ङीप्] १. चिट्ठी। खत। २. कोई छोटा लेख। पत्रिका। जैसे—जन्मपत्री, लग्नपत्री। ३. पत्तो का बना हुआ दोना। ४. धमासा। ५ खैर का पेड। ६. ताड का पेड। ७. महातेज पत्र।

स्त्री० [हिं० पत्तर] हाथ मे पहनने का जहाँगीरी नाम का गहना।

पत्रोपस्कर—पु० [स० पत्र-उपस्कर, ब० स०] कसौंदी। कासमर्द।

पत्रोर्ण—पु० [स० पत्र-ऊर्ण मध्य० स०,+अच्] १. रेशमी वस्त्र। २. सोनापाठा।

पत्रोल्लास—पु० [स० पत्र-उल्लास, ष० त०] अँखुआ। कोपल।

पथ—पु० [स०√पथ् (गति)+क] १. मार्ग। रास्ता। राह। २. कार्य-सम्पादन, आचार, व्यवहार आदि का निश्चित और प्रकाशित रीति। ३. ऐसा द्वार या साधन जिसमे होकर कुछ आगे बढता हो। जैसे—कर्ण-पथ, दृष्टि-पथ।

†पु०=पथ्य।

पथक—वि० [स० पथ+कन्] पथ या मार्ग बतलानेवाला। पथ-दर्शक।

पु० प्रात। देश।

पु०=पथिक।

पथ-कर—पु० [ष० त०] =मार्ग-कर।

पथ-कल्पना—पु० [ब० स०] जादू के खेल। बाजीगरी।

पथगामी (मिन्)—पु० [स० पथ√गम् (जाना)+णिनि] पथ या रास्ते पर चलनेवाला।

पथचारी (रिन्)—पु० [सं० पथ√चर् (गति)+णिनि] पथिक।

पथ-दर्शक—पु० [ष० त०] रास्ता दिखानेवाला। मार्ग-दर्शक।

पथ-दर्शन—पु० दे० 'मार्ग-दर्शन'।

पथना—अ० [हिं० पाथना का अ० रूप] पाथा जाना।

स० १. खूब मारना-पीटना। २. दे० 'पाथना'।

वि०=पथेरा (पाथनेवाला)।

पथ-प्रदर्शक—पु० [ष० त०] दे० 'मार्गदर्शक'।

पथर—पु० [हिं० पत्थर] 'पत्थर' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पथरकला, पथरचटा।

पथर-कला—स्त्री० [?] पुरानी चाल की एक तरह की बदूक जिसमे लगे हुए चकमक पत्थर की सहायता से रगड उत्पन्न कर उसमे का बारूद जलाया जाता था।

पथर-चटा—पु० [?] पखान भेद-नाम की वनस्पति।

पथरना—स० [हिं० पत्थर+ना (प्रत्य०)] औजारो को पत्थर पर रगडकर तेज करना।

†अ० पत्थर की तरह कठोर तथा ठोस होना।

पथराना—अ० [हिं० पत्थर+आना (प्रत्य०)] १. सूखकर पत्थर की तरह कडा हो जाना। पत्थर की तरह कठोर तथा ठोस होना। २. सूखकर निष्प्रभ या शुष्क हो जाना। ३. पत्थर की तरह स्तब्ध और स्थिर हो जाना। जैसे—आँखे पथराना।

स० १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज पत्थर की तरह कठोर, जड या नीरस हो जाय। २ किसी को आघात पहुँचाने के लिए उस पर पत्थर के टुकडे आदि फेकना।

पथराव—पु० [हिं० पथराव=पत्थर की तरह होना] पत्थर की तरह कठोर और स्तब्ध होने की क्रिया, दशा या भाव। जैसे—आँखो का पथराव।

पु० [हिं० पथराना=पत्थरो से मारना] किसी पर बार-बार पत्थर के टुकडे फेंकते रहने की क्रिया। जैसे—वह उसकी कामनाओ के शीश-महल पर इसी प्रकार पथराव करती रही।

पथरी—स्त्री० [हिं० पत्थर+ई (प्रत्य०)] १. पत्थर का बना हुआ कटोरी या कटोरे के आकार का पात्र। २. पत्थर का वह टुकडा जिस पर रगड़कर छुरे आदि की धार तेज करते है। सिल्ली। ३. कुरंड पत्थर जिसके चूर्ण को लाख आदि मे मिलाकर औजार तेज करने की सान बनाते हैं। ४. चकमक पत्थर। ५. एक प्रकार का रोग जिसमे मत्राशय मे पत्थर के टुकडो के समान कोई चीज उत्पन्न हो जाती है, जिसके फलस्वरूप पेशाव रुक-रुककर और वहुत कष्ट से होता है और कभी कभी बन्द भी हो जाता है। ६. पक्षियो के पेट का वह पिछला भाग जिसमे अनाज आदि के बहुत कडे दाने जाकर पचते है। ७ एक प्रकार की मछली। ८ जायफल की जाति का एक वृक्ष जो कोंकण आदि के जगलो मे होता है।

पथरीला—वि० [हिं० पत्थर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] १. जिस जमीन मे पत्थर के कण मिले हों। २. जिसमे पत्थर हो, अथवा जो पत्थर या पत्थरो से बना हो। जैसे—पथरीला रास्ता। ३. पत्थर के समान कठोर, ठोस अथवा शुष्क।

पथरौटा—पु० [हिं० पत्थर+औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० पथरौटी] पत्थर का बना हुआ कटोरे की तरह का एक प्रकार का बडा पात्र। बडी पथरी।

पथरौड़ा—पु० [हिं० पाथना] वह स्थान जहाँ पर गोवर (अथवा कडे) पाथे जाते हों।

पथ-शुल्क—पु० पथ-कर (दे०)।

पथ-सुन्दर—पु० [स० स० त०] एक प्रकार का पौधा।

पथस्थ—वि० [स० पथ√स्था (ठहरना)+क] जो पथ या मार्ग मे स्थित हो। मार्गस्थ।

पथारना†—स० [स० प्रस्तार]=पसारना।

†अ०=पथराना।

पथिआ†—स्त्री० [?] टोकरी।

पथिक—पुं० [स० पथिन्+कन्] १ वह जो पथ पर चल रहा हो। बटोही। राही। २. वह जो किसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हो।

पथिक-चत्वर—पु० [च० त०] पथिको के बैठकर सुस्ताने के लिए रास्ते मे बना हुआ चबूतरा।

पथिका—स्त्री० [स० पथिक+टाप्] १. मुनक्का। २ एक प्रकार की शराब जो पहले मुनक्के या अगूर से बनाई जाती थी।

पथिकाश्रय—पु० [स० पथिक-आश्रय, प० त०] १. विशेष रूप से निर्मित पथिको के लिए आश्रय-स्थान। २ धर्मशाला।

पथिकृत्—पु० [स० पथिन्√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] मार्गदर्शक।

पथिचक्र—पु० [स० √पथ्+इन्, पथि-चक्र, कर्म० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिससे यात्रा का शुभ और अशुभ फल जाना जाता है।

पथि-देय—पु० [स० अलुक् स०] पथ-कर (दे०)।

पथिद्रुम—पु० [स० पथि,√पथ्,+इन, पथिद्रुम, कर्म०स०] खैर का पेड़।

पथि-प्रिय—पु० [स० अलुक् स०] साथ यात्रा करनेवाला मित्र। हमराही। हमसफर।

पथिया—स्त्री० [?] टोकरी।

पथिल—पु० [स०√पथ्+इलच्] पथिक।

पथि-वाहक—वि० [स० अलुक् स०] निष्ठुर। निर्दय।

पु० १. शिकारी। बहेलिया। २ बोझ ढोनेवाला मजदूर। मोटिया।

पथिस्थ—वि० [स० पथि√स्था+क] जो पथ पर चल रहा हो। जाता हुआ।

पथी (थिन्)—पु० [स० पथ+इनि] १ रास्ता चलनेवाला मुसाफिर। यात्री। पथिक। २. मार्ग। रास्ता। ३ यात्रा। ४ मत। सम्प्रदाय। ५ एक नरक का नाम।

पथीय—वि० [स० पथ+छ—ईय] १. पथ-सम्बन्धी। पथ या मार्ग का। २. किसी मत या सम्प्रदाय से सबध रखनेवाला। पथी।

पथु*—पु०=पथ।

पथेय*—पु०=पाथेय।

पथेरा—वि० [हिं० पाथना+एरा (प्रत्य०)] पाथनेवाला।

पु० १. गोबर को पाथकर कडे बनानेवाला व्यक्ति। २. वह व्यक्ति जो भट्ठे मे पकाने के लिए कच्ची ईंटें ढालता हो। ३. कुम्हार।

पथौड़ा—पु०=पथौरा।

पथौरा†—पु०=पथौड़ा।

†पु० महाराज पृथ्वीराज चौहान का एक नाम जो उर्दू-फारसी के ग्रथो मे मिलता है।

पत्यार†—पु०=विस्तार।

पथ्य—वि० [स० पथिन्+यत्] १. पथ-सबधी। पथ का। २ (आहार, व्यवहार) जो स्वास्थ्य विशेषत. रोगी की स्वास्थ्य-रक्षा के विचार से आवश्यक या उचित हो। ३ गुणकारी। लाभदायक। हितकर। उदा० —पूत पथ्य गुरु आयसु अहई। —तुलसी। ४ अनुकूल। मुआफिक।

पु० १ वह हलका भोजन जो रोगी अथवा अस्वस्थ व्यक्ति को दिया जाय। २. स्वास्थ्य के लिए हितकर खान-पान और रहन-सहन। मुहा०—पथ्य से रहना=सयम से रहना। परहेज से रहना। ३ सेंधा नमक। ४. छोटी हर्रे। ५ कल्याण। मगल।

पथ्यका—स्त्री० [स० पथ्य+कन्+टाप्] मेथी।

पथ्य-शाक—पु० [स० कर्म० स०] चौलाई का साग।

पथ्या—स्त्री० [स० पथ्य+टाप्] १. हरीतकी। हड। २. वन-ककोडा। ३. सैंधनी। ४. चिरमिटा। ५. गगा। ६ आर्या छन्द का एक भेद जिसके कई उपभेद हैं।

पथ्यादिक्वाथ—पु० [स० पथ्या-आदि ब०, स० पथ्यादिक्वाथ कर्म० स०] त्रिफला, गुड़ुच, हलदी, चिरायते, नीम आदि का काढा जो पाचक माना जाता है।

पथ्यापंक्ति—पु० [स० ब० स०] पाँच चरणोंवाला वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ वर्ण होते हैं।

पथ्यापथ्य—पु० [स० पथ्य-अपथ्य, द्व० स०] पथ्य और अपथ्य। रोग की अवस्था मे हितकर और अहितकर चीज। जैसे—तुम्हे पथ्यापथ्य का सदा ध्यान रखना चाहिए।

पथ्याशन—पु० [स० पथ्य-अशन, कर्म० स०] पाथेय। सबल।

पथ्याशी (शिन्)—वि० [स० पथ्य√अश् (खाना)+णिनि] जो पथ्य (रोग के अनुकूल भोजन) खाकर रहता हो।

[पद—पु० [स०√पद् (गति)+अच्] १. कदम। पाँव पैर। मुहा०—पद टेकना=किसी जगह पैर जमाकर रखना। (किसी के आगे) पद टेकना=दीनतापूर्वक घुटने टेककर बैठना। उदा०—भरद्वाज राखे पद टेकी।—तुलसी।

२ चलते समय दो पैरो के बीच मे होनेवाली दूरी। डग। पग। ३. चलने के समय पैरो से बननेवाले चिह्न। ४. चिह्न। निशान। ५. जगह। स्थान। ६ प्रदेश। जैसे—जन-पद। ७ त्राण। रक्षा। ८ निर्वाण। मोक्ष। ९ चीज। वस्तु। १०. आवाज। शब्द। ११. किसी चीज का चौथाई अश या भाग। पाद। १२. छद, श्लोक आदि का चतुर्थाश। चरण। १३ एक प्रकार की पुरानी नाप। १४. शतरज आदि की बिसात मे बना हुआ चौकोर खाना। १५. व्याकरण मे, किसी वाक्य मे आया हुआ वह शब्द या शब्द-वर्ग जिसका कुछ अर्थ हो। वाक्य का अग या खड। १६. वह स्थान जिस पर रहकर कोई विशिष्ट कार्य करता हो। ओहदा। जगह। जैसे—उन्हे भी कार्यालय मे एक पद मिल गया। १७. सम्मानजनक उपाधि या स्थान। १८ ऐसा गीत या भजन जिसमे ईश्वर की महिमा आदि वर्णित हो। जैसे—तुलसी या सूर के पद। १८. पुराणानुसार दान के लिए जूते, छाते, कपडे, अँगूठी, आसन, बरतन और भोजन का समूह। जैसे—विवाह के समय ब्राह्मणो को तीन पद दिये जाते है।

पद-कज—पु० [उपमि० स०] ऐसे चरण जो कमल के समान सुन्दर अथवा कमल के रूप मे हो।

पदक—पु० [स० पद+वुन्—अक] १ गहने के रूप मे पहना जानेवाला वह धातु-खड जिस पर किसी देवता के चरण-चिह्न अकित हो। २. पूजन आदि के लिए बनाया हुआ किसी देवता का चरण-चिह्न। ३ वह जो वेदो के पद-पाठ का ज्ञाता हो। ४. एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। ५ आजकल, सोने-चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ वह गोल या चौकोर टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा समाज को कोई विशिष्ट योग्यतापूर्ण कार्य करने पर उसका सम्मान करने के लिए दिया जाता है। तमगा। (मेडल)

पदकधारी (रिन्) प० [स० पदक√धृ (धारण)+णिनि] वह जिसे पदक मिला हो।

पद-कमल—पु०=पद-कज।

पद-क्रम—पु० [प० त०] १. चलना। डग भरना। २. वेद-मत्रो के पदो को एक दूसरे से अलग करने का कार्य।

पदग—वि० [स० पद√गम् (जाना)+ड] पैदल चलनेवाला।

पु० पैदल चलनेवाला सिपाही। प्यादा।

पद-गति—स्त्री० [प० त०] चलने का ढग।

पद-ग्रहीता (तृ)—वि० [प० त०] (वह) जो किसी का पद ग्रहण करे और इस प्रकार उसे अपने पद से कुछ समय के लिए हटने का अवसर दे। (रिलीविंग) जैसे—पद-ग्रहीता अधिकारी।

पद-चतुरूर्ध्व—पु० [स० ?] एक तरह का विषम वर्णवृत्त जिसके पहले चरण मे ८, दूसरे मे १२, तीसरे मे १६ और चौथे मे २० वर्ण होते है। इसमे गुरु, लघु का नियम नही होता।

पद-चर—वि० [स० पद√चर् (गति)+ट] १. पैरो से चलनेवाला। २. पैदल चलनेवाला।

पु० पैदल। प्यादा।

पद-चार (णि)—पु० [तृ० त०] १. पैदल चलना। २. घूमना-फिरना। टहलना।

पदचारी (रिन्)—वि० [सं० पद√चर्+णिनि] [स्त्री० पदचारिणी] पैदल चलनेवाला।

पद-चिह्न—पुं० [प० त०] १. जमीन पर पड़नेवाली पैर की छाप। २ दूसरो विशेषतः बड़ो द्वारा बतलाये हुए आदर्श अथवा कार्य करने के ढग। जैसे—भारत को गाधी जी के पद-चिह्नो का अनुसरण करना चाहिए।

पदच्छेद—पु० [प० त०] व्याकरण मे प्रत्येक पद को नियमो के अनुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

पद-च्युत—वि० [प० त०] [भाव० पद-च्युति] १. जो अपने पद से हट चुका हो अथवा हटा दिया गया हो। २. नौकरी से बरखास्त किया हुआ। (डिस्मिस्ड)

पद-च्युति—स्त्री० [प० त०] अपने पद से हटने या गिरने की अवस्था या भाव। पदच्युत होना। (डिस्मिसल)

पदज—वि० [स० पद√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो पैर से उत्पन्न हुआ हो।

पु० १. शूद्र। २ पैर की उँगली या उँगलियाँ।

पद-जात—वि० [प० त०] पैरो से उत्पन्न।

पु० परस्पर सबद्ध पदो और वाक्यो का समूह।

पद-तल—पु० [प० त०] पैर का तलवा।

पद-त्याग—पु० [प० त०] अपने पद से त्याग-पत्र देकर हट जाना।

पदत्र—पु० [स० पद√त्रा (रक्षा)+क] १ ढालुआँ स्थान। २. किले आदि की ऐसी दीवार जो नीचे अधिक चौडी या मोटी और ऊपर कम चौड़ी या पतली हो। (टैलस)

पद-त्राण—पु०[व०स०] पैरो की रक्षा करनेवाला अर्थात् जूता।

पद-त्रान—पुं०=पद-त्राण।

पद-त्वरा—स्त्री०[व०स०] जूता।

पद-दलित—वि०[तृ० त०] १ पैरो से कुचला या रौदा हुआ। २. (व्यक्ति या जाति) जिसे समाज ने दबाकर बहुत हीन अवस्था मे रखा हो और उन्नति का अवसर न दिया हो। (डीप्रेस्ड)

पद-दारिका—स्त्री० [प० त०] बिवाई (पैर फटने का एक रोग)।

पदधारी (रिन्)—पु०[स० पद√धृ (धारण करना)+णिनि] १. वह जो कोई पद धारण करता हो। २. किसी पद पर रहकर काम करनेवाला अधिकारी।

पद-नाम—पुं०[प० त०] १. किसी पदाधिकारी के पद का सूचक नाम। जैसे—कुलपति, तहसीलदार, मजिस्ट्रेट आदि। २. किसी कार्य, व्यवहार, सस्था आदि का वह मुख्य नाम जिससे वह प्रसिद्ध हो। (डेजिग्नेशन)

पद-न्यस्त—वि०[स० न्यस्तपद] (वह अधिकारी) जो अपना अधिकार किसी दूसरे (पदग्रहीता) को सौंपकर किसी कारणवश कुछ समय के

लिए अपने पद से हटा हो। (रिलीव्ड) जैसे—पदन्यस्त अधिकारी।

पदन्यास—पु०[प० त०] १. पैर रखना । गमन करना। चलना। २. चलने मे पैर रखने की एक विशिष्ट प्रकार की मुद्रा। ३. चलने का ढग। ४. पदो को यथास्थान रखने या पद बनाने का काम। ५ गोखरू। ६. कुछ समय के लिए किसी कारणवश अपने पद से किसी का हटना।

पद-पंक्ति—पु०[प० त०] १. पद-चिह्न। पद-श्रेणी। २ पाँच चरणों-वाला एक प्रकार का छद जिससे प्रत्येक चरण मे पाँच-पाँच वर्ण होते है।

पद-पद्धति—स्त्री०[प०त०] पद-चिह्नो की पक्ति या श्रेणी ।

पद-पलटी—स्त्री०[स० पद+हि० पलटना] एक प्रकार का नाच।

पद-पाठ—पु० [प० त०] १ वेद-मत्रो आदि का इस प्रकार लिखा जाना कि उनका प्रत्येक पद अपने मूल रूप मे रहे। (सहिता-पाठ से भिन्न) २. वह ग्रथ जिसका सपादन उक्त दृष्टिकोण से हुआ हो।

पद-पूरण—पु०[प० त०]१. किसी वाक्य मे छूटे अथवा विशेष रूप से छोडे हुए शब्दों की पूर्ति करना। (फिल-इन-ब्लैक्स)

पद-प्रवर—पु०[स० त०] किसी कार्यालय का सबसे बडा अधिकारी।

पद-बंध—पु०[प० त०] पग। डग।

पद-भजन—पु०[प०त०] व्याकरण मे, समस्त-पदो के पूर्व और उत्तर पद आदि अलग-अलग करने की क्रिया या भाव।

पद-भंजिका—स्त्री०[प० त०] टिप्पणी, टीका या व्याख्या।

पद-भार—पु० [प०त०] वह उत्तरदायित्व या भार जिसका निर्वहण करना किसी पद पर रहने के नाते आवश्यक और कर्तव्य होता है। (चार्ज)

पद-भ्रश—पु०[प० त०] पद-च्युति। (दे०)

पदम—पु० [स० पद्मकाष्ठ] १. बादाम की जाति का एक जगली पेड जो कही-कही लगाया भी जाता है। इसका फल शराब बनाने के लिए विदेशो मे जाता है। अमलगुच्छ। पद्माख। २. उक्त वृक्ष का फल। †पु०=पद्म।

पदमकाठ—पु०[हि०] पदम वृक्ष की लकडी। पद्मकाष्ठ।

पदमचल—पु०[देश०] रेवद चीनी।

पदमणि—स्त्री० =पद्मिनी।

पदमनाभ—पु०[स० पद्मनाभ] १. विष्णु। २. सूर्य। (डिं०) ३. दे० 'पद्म-नाभ'।

पदमाकर†—पु०=पद्माकर।

पद-माला—स्त्री० [प० त०] १. पद-श्रेणी। २ मोहिनी विद्या ।

पद-मुद्रा—स्त्री० [प० त०]१. वह मुद्रा या मोहर जो कोई उच्च अधिकारी महत्वपूर्ण मानपत्रो पर अपने हस्ताक्षर के साथ यह सूचित करने के लिए अकित करता है कि यह लेख आधिकारिक और प्रामाणिक है। २ उक्त मुद्रा या मोहर की छाप। (सील ऑफ ऑफिस)

पद-मूल—पु०[प० त०] १. पैर का तलवा। २. आश्रय। ३ शरण।

पद-मैत्री—स्त्री०[स० त०]किसी चरण, वाक्य आदि के पदो मे होनेवाला वर्णों का साम्य। अनुप्रास।

पदम्मी—पु०[स० पद्मी]हाथी। (डिं०)

पद-योजना—स्त्री०[प० त०] किसी चरण, पद, वाक्य आदि मे शब्दो का बैठाया जाना।

पदर—पु०[देश०[१. एक प्रकार का पेड़। २. महल के फाटक के पास का वह स्थान जहाँ द्वारपाल बैठते हैं। पौर। (डिं०)

पद-रिपु—पु० [प० त०] पैर का शत्रु अर्थात् कांटा।

पद-रोगी (गिन्)—वि०[स० त०] जिसे प्राय छोटे-छोटे रोग होते रहते हो।

पद-वाद्य—पु०[तृ० त०] एक प्रकार का पुरानी चाल का ढोल।

पदवाना—स०[हि० पदाना का प्रे०] पदाने का काम किसी दूसरे से कराना।

पद-विक्षेप—पु०[प० त०] डग भरना।

पद-विच्छेद—पु०[प०त०] पदच्छेद। (दे०)

पद-विज्ञान—पु० [सं०] दे० 'रूप-विधान' के अतर्गत।

पद-विन्यास—पु०[प० त०] पदो या शब्दो को वाक्य मे ठीक स्थान पर बैठाने या रखने की क्रिया या भाव।

पद-विराम—पुं०[स० त०] पदो या चरणो के अत मे लगाया जानेवाला विराम-चिह्न।

पदवी—स्त्री०[स०√पद्+अवि+ङीप्]१ पथ। रास्ता। २. पद्धति। प्रणाली। ३ राजकीय, सैनिक आदि सेवाओ मे कोई ऊँचा पद। (रैंक) ४. किसी बहुत बडी सस्था अथवा राज्य द्वारा प्रदत्त किसी को सम्मानित उपाधि। (टाइटिल)

पदवी-पत्र—पु०[प० त०] वह पत्र जिस पर यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को अमुक काम करने अथवा अमुक विषय मे योग्यता प्राप्त करने के उपलक्ष्य मे अमुक पदवी या उपाधि दी जाती है। (डिप्लोमा)

पद-वृद्धि—स्त्री०[प० त०] ऊँचे पद पर जाना या पहुँचना। पद, स्थिति आदि के विचार से होनेवाली उन्नति।

पद-वेदी (दिन्)—पु० [स० पद√विद् (जानना)+णिनि]शब्दो का ज्ञाता। शब्द-शास्त्री।

पद-शब्द—पु०[प० त०] किसी के चलने पर उसके पैरो की धमक से होने-वाला शब्द। पग-ध्वनि।

पद-संघात—पु० [प० त०]१ सहिता मे वियुक्त पदो को जोडने या मिलाने का कार्य। २ लेखक। ३ सकलनकर्ता।

पद-समय—पु०[प० त०] दे० 'पद-पाठ'।

पदस्थ—वि० [स० पद√स्था (ठहरना)+क] १ पैदल चलमेवाला। २. जो अपने पैरो के बल खडा हो या चल रहा हो। ३ जो किसी पद या ओहदे पर स्थित हो।

पद-स्थान—पु०[प० त०] १ वह स्थान जहाँ पैर रखा गया हो। २. उक्त स्थान पर बननेवाला चिह्न।

पदांक—पु०[पद-अक, प०त०] पैर का अक अर्थात् चिह्न या छाप। पद-चिह्न।

पदांगी—स्त्री०[पद-अग, ब०स०, ङीप्] हसपदी लता।

पदांत—पु०[पद-अत, प० त०]१ किसी पद का अतिम अश। २ श्लोक आदि का अतिम भाग।

पदांतर—पु०[पद-अतर, मयू० स०]१. दो पैरो के बीच की दूरी । २. दूसरा पैर। ३. दूसरा स्थान।

पदांभोज—पु० [पद-अभोज, कर्म० स०] कमलरूपी या कमलवत् चरण।

पदाक्रांत—भू० कृ० [पद-आक्रात, तृ० त०] १. जो पैरों से कुचला, दवाया या रौंदा गया हो। २ दे० 'पद-दलित'।

पदाघात—पु० [पद-आघात, तृ० त०] पैर से लगाई जानेवाली ठोकर। (किक)

पदाजि—पु० [स० पद√अज् (गति)+इण्] पैदल सिपाही।

पदात—पु० [स० पद√ अत् (गति)+अच्] पदाति। (दे०)

पदाति—पु० [स० पद√अत्+इण्] १ वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। २. पैदल सिपाही। ३. नौकर। सेवक। ४ जनमेजय के एक पुत्र का नाम।

पदातिक—पुं० [स० पदाति+कन्] पदाति। (दे०)

पदादपि—अव्य० [स० पदात् अपि] १. पद से भी। २. पद की तुलना मे भी। उदा०—ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी।—तुलसी।

पदादि—पु० [पद-आदि, ष० त०] १ पद का आरभिक अश (पदात का विपर्याय)। २. छद के चरण का आरभिक भाग।

पदादिका—स्त्री० [स० पदातिक] पैदल सेना।

पदाधिकार—पु० [पद-अधिकार, ष० त०] किसी पद पर काम करनेवाले को प्राप्त होनेवाला अधिकार।

पदाधिकारी (रिन्)—पु० [पद-अधिकारिन्, ष० त०] किसी पद पर रहकर अधिकारपूर्वक काम करनेवाला अधिकारी। ओहदेदार।

पदाध्ययन—पु० [पद-अध्ययन, ष०त०] वेदो का वह अध्ययन जो पद-पाठ की दृष्टि से किया जाय।

पदाना—स० [हि० पादना का प्रे०] १. किसी दूसरे को पादने मे प्रवृत्त करना। २ बहुत अधिक दौडाना तथा तग या परेशान करना। ३. खेल मे, एक दल के खेलाडियो का दूसरे दल के (हारे हुए) खेलाड़ियो को बहुत अधिक दौडाना-धुपाना। (पश्चिम)

पदानुग—वि० [पद-अनुग, ष० त०] किसी का अनुसरण करनेवाला। पु० अनुयायी।

पदानुराग—पु० [पद-अनुराग, ष० त०] १ किसी के चरणो मे होनेवाला अनुराग। २ नौकर। सेवक। ३ सेना।

पदानुशासन—पु० [पद-अनुशासन, ष० त०] शब्दानुशासन। व्याकरण।

पदानुस्वार—पु० [पद-अनुस्वार, ब० स०] एक प्रकार का सामगान।

पदाब्ज—पु० [पद-अब्ज, कर्म० स०] चरण-कमल।

पदायता—स्त्री० [मध्य०स०] जूता।

पदार—पु० [स० पद√ऋ (गति)+अण्] १ पैर की धूल। चरण-रज। २ पैर का ऊपरी भाग।

पदारथ†—पु०=पदार्थ।

पदारविंद—पु० [पद-अरविंद, उपमि० स०] चरण-कमल।

पदार्घ्य—पु० [पद-अर्घ्य, मध्य० स०] वह जल जिससे पूज्य व्यक्तियो के चरण धोये जाते है।

पदार्थ—पु० [सं० पद-अर्थ, ष० त०] १ वाक्यो आदि मे आनेवाले पद (या शब्द) का अर्थ। (वर्ड-मीनिंग) २. वह वस्तु जिसका ज्ञान या बोध किसी विशिष्ट पद (या शब्द) मे होता है। अभिधेय वस्तु। जैसे—'चावल' शब्द से चावल नामक पदार्थ का बोध होता है। ३ जिसका कोई दृश्य अथवा कोई बाह्य आकार या रूप हो अथवा जो पिंड, शरीर आदि के रूप मे मूर्त हो। चीज। वस्तु। (मेटीरियल आब्जेक्ट) जैसे—किताब, घडी, पखा आदि। ४ वह आधारिक, तात्त्विक या मौलिक अश या वस्तु जिससे कोई दूसरी वस्तु बनी हो। (मेटीरियल) जैसे—धातु और मिट्टी वे पदार्थ है, जिनसे बरतन बनते हैं। ५. वह जिसका कुछ नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके, भले ही वह अमूर्त हो। ज्ञान या बोध का विषय।

विशेष—इसी व्याख्या के आधार पर न्यायसूत्र मे प्रमाण, प्रमेय, सशय, सिद्धात आदि की गणना सोलह पदार्थों मे की गई है।

६ प्राचीन भारतीय दार्शनिक क्षेत्रो मे वे आधारिक और मौलिक बातें या विषय जिनका सम्यक् ज्ञान मोक्ष की प्राप्ति के लिए आवश्यक कहा गया है।

विशेष—वैशेषिक दर्शन मे द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय नाम के छ: पदार्थ माने है। न्याय-सूत्र मे प्रमाण, प्रमेय, सशय, प्रयोजन, दृष्टात, सिद्धात, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितडा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रह-स्थान ये सोलह पदार्थ माने गये हैं। साख्य दर्शन मे पुरुष, प्रकृति, महत् आदि और इनके विकारो के आधार पर २५ पदार्थ माने गये है। परन्तु वेदात दर्शन मे आत्मा और अनात्मा यही दो पदार्थ माने गये है। जैन दर्शनो मे भी पदार्थ माने तो गये है, पर उनकी सख्या आदि मे बहुत मतभेद है। प्राचीन दार्शनिको ने मोक्ष-प्राप्ति के लिए पदार्थों का ज्ञान आवश्यक माना था, इसलिए पौराणिको ने अपने दृष्टिकोण से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पदार्थ माने थे। इसी परपरा के अनुसार वैद्यक मे रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पाँच पदार्थ माने गये हैं।

पदार्थवाद—पु० [स० ष०त०] १. वह वाद या सिद्धात जिसमे भौतिक पदार्थों को ही वास्तविक तथा सब-कुछ माना जाता है और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व नही माना जाता। (अध्यात्मवाद से भिन्न) २ आज-कल अधिक प्रचलित अर्थ मे, यह सिद्धांत कि धन-सपत्ति के भोग मे ही मनुष्य को आनन्द या सुख मिलता है, आत्म-चिंतन आदि व्यर्थ की बातें है। (मेटीरियलिज्म)

पदार्थवादी—वि० [स० पदार्थ√वद् (बोलना)+णिनि] पदार्थवाद सबधी।

पु० पदार्थवाद का अनुयायी या समर्थक। (मेटीरियलिस्ट)

पदार्थ-विज्ञान—पु० [ष० त०] भौतिक-विज्ञान। (दे०)

पदार्थ-विद्या—स्त्री० [ष० त०] १. वह विद्या जिसमे विशिष्ट सज्ञाओ द्वारा सूचित पदार्थों का तत्त्व बतलाया गया हो। जैसे—वैशेषिक। २. दे० 'भौतिक विज्ञान'।

पदार्पण—पु० [पद-अर्पण, ष० त०] किसी स्थान मे होनेवाला प्रवेश। आना। (बहुत बडे लोगो के सबध मे आदरसूचक पद) जैसे—महाराज का यहाँ पदार्पण ही हम लोगो के लिए विशेष सम्मानजनक है।

पदालिक—पु० [पद-अलिक, ष० त०] पैर का ऊपरी भाग।

पदावधि—स्त्री० [पद-अवधि, ष० त०] किसी पद पर किसी व्यक्ति के काम करते रहने की अवधि। (टेन्योर)

पदावनत—वि० [पद-अवनत, स० त०] १. जो पैरो पर झुका हो। २. जो झुककर प्रणाम कर रहा हो। ३. नम्र। विनीत। ४. जो अपने पद से अवनत कर दिया गया हो या निम्न पद पर नियुक्त कर दिया गया हो।

पदावली—स्त्री० [पद-आवली, ष० त०] १ पदों की अवली, क्रम, शृंखला या समूह। २. लेख या साहित्यिक रचना में प्रयुक्त होनेवाले सब शब्दों और पदों का (उनके रूप और विन्यास दोनों के विचार से) वर्ग या समूह। ३. शब्द-योजना का ढग या प्रकार। ४. किसी विशिष्ट विषय के पारिभाषिक पदो और शब्दों का सग्रह या सूची। (फ्रेजियॉलोज़ी) ५. गाये जानेवाले गीतों, पदों या भजनो का सग्रह। जैसे—सूर-पदावली।

पदावास—पु० [पद-आवास, मध्य० स०] राज्य की ओर से मिला हुआ निवासस्थान। पदाधिकारी के रहने का निवासस्थान। (आफिशल-रेसिडेंस)

पदाश्रित—वि० [पद-आश्रित, स० त०] १ जिसने पैरो मे आश्रय लिया हो। शरण मे आया हुआ। शरणागत। २ जो किसी के आश्रय मे रहता हो।

पदास—स्त्री० [हिं० पादना+आस (प्रत्य०)] पादने की क्रिया, भाव या प्रवृत्ति।

पदासन—पु० [पद-आसन, ष० त०] वह आसन या चौकी जिसपर पैर रखे जाते हैं।

पदासा—वि० [हिं० पदास] १ जिसकी पादने की इच्छा या प्रवृत्ति हो। २. बहुत अधिक पादनेवाला।

पदाहत—भू० कृ० [पद-आहत, तृ० त०] पैर से ठुकराया हुआ।

पदिक—पु० [स० पद+ष्ठन्—इक, पद् आदेश] पैदल सेना।

पु० [स० पदक] १ गले मे पहनने का वह गहना जिस पर किसी देवता आदि के चरण-चिह्न अकित हो। २ गले मे पहनने का जुगनूँ नाम का गहना। ३. हीरा। ४. जवाहर। रत्न।

पद—पदिक हार=मणिमाला।

†पु०=पदक।

पदी (दिन्)—वि० [स० पद+इनि] १ जिसमे पैर हो। पदवाला। जैसे—एक पदी, बहु-पदी। २ (रचना) जिसमे पद हो।

पु० पैदल। प्यादा।

पदु*—पु०=पद।

पदुम—पु० [स० पद्म] १ घोडो का एक चिह्न या लक्षण जो भारत मे शुभ, परन्तु ईरान मे अशुभ माना जाता है। २. दे० 'पद्म'।

पदुमिनी*—स्त्री०=पद्मिनी।

पदेक—पु० [पद-एक, ब०स०] बाज।

पदेन—अव्य० [स० तृ० विभक्ति का रूप] किसी पद पर आरूढ होने के अधिकार से। पद पर रहने के नाते से। (एक्स-ऑफीशियो, बाइ वर्चू ऑफ आफिस)

पदोड़ा—वि० [हिं० पाद+ओडा (प्रत्य०)] १. जो बहुत पादता हो। अधिक पादनेवाला। २. कायर। डरपोक। (क्व०)

पदोत्तार—पु० [पद-उत्तार, मध्य०स०] वह छोटा पुल जिसे पैदल चलकर ही पार करना पडता हो।

पदोदक—पु० [पद-उदक, मध्य०स०] १. वह जल जिसमे (प्राय पूज्य व्यक्तियों के) चरण धोये जायँ। २. चरणामृत।

पदोन्नति—स्त्री० [पद-उन्नति, ष०त०] किसी पद पर काम करनेवाले को उससे ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाना। तरक्की। (प्रमोशन)

पदौक—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो बरमा मे अधिकता से होता है। इसकी लकडी मजबूत और कुछ ल्लाली लिये सफेद रग की होती है।

पद्ग—पु० [स० पद√ गम् (जाना)+ड] पैदल सिपाही।

पद्दू—वि० [हिं० पादना] बहुत अधिक पादनेवाला। पदोडा।

पद्धटिका—स्त्री० [स०] एक मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे १६-१६ मात्राएँ होती है और अत मे जगण होता है।

पद्धडी—स्त्री०=पद्धटिका।

पद्धति—स्त्री० [स० पद √ हन् (गति)+क्तिन्, पद् आदेश] १. पथ। मार्ग। रास्ता। २ कोई काम करने का विशिष्ट प्रकार, प्रणाली या विधि। ३ परिपाटी। रवाज। रीति।

विशेष—परिपाटी, पद्धति और प्रथा का अतर जानने के लिए दे० 'प्रथा' का विशेष।

४. ढग। तरीका। ५ पंक्ति। श्रेणी। ५. वह पुस्तक जिसमे किसी प्रकार की प्रथा या कार्य-प्रणाली लिखी हो। कर्म या सस्कार विधि की पोथी। जैसे—विवाह-पद्धति। ६ वह पुस्तक जिसमे किसी दूसरी पुस्तक का आशय, तात्पर्य या भाव समझाया गया हो।

पद्धती—स्त्री०=पद्धति।

वि० पद्धति के अनुसार कार्य करनेवाला।

पद्धरि—स्त्री०=पद्धटिका।

पद्धिम—पु० [पाद-हिम, पद् आदेश, ष०त०] पैर का ठढापन।

पद्धो—स्त्री० [देश०] खेल मे किसी लड़के का जीतने पर, दाँव लेने के लिए हारनेवाले लडके की पीठ पर चढना।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

पद्म—पु० [स०√पद् (गति)+मन्] १ कमल का पौधा और फूल। २. सामुद्रिक के अनुसार कमल के आकार का एक प्रकार का चिह्न जो किसी के पैर के तलुओं मे होता और शुभ तथा सौभाग्य-सूचक माना जाता है। ३. विष्णु का एक आयुध जो कमल के आकार का है। ४. तत्र और हठयोग के अनुसार शरीर के अदर के षट् चक्रो मे से हर एक जो कमल के आकार का और बहुत ही चमकीले सुनहले रग का कहा गया है। ५ गणित की इकाई, दहाईवाली गिनती मे सोलहवें स्थान पर पडनेवाली सख्या की सज्ञा जो १०० नील होती है। ६ कुबेर की नौ निधियों मे एक निधि की सज्ञा। ७ वास्तु-कला मे, खभे या स्तम्भ के सातवें भाग की सज्ञा। ८ वास्तु-कला मे, आठ हाथ लबा और इतना ही चौडा वह घर जो एक ही कुरसी पर बना हो और जिसके ऊपर एक ही शिखर हो। ९ गले मे पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का गहना या हार। १०. शरीर पर होनेवाला श्वेत कुष्ठ या सफेद दाग। ११. वह चित्रकारी जो हाथी के मस्तक और सूँड पर तरह-तरह के रगों से की जाती है। १२ साँप के फन पर बने हुए तरह-तरह के चिह्न। १३ काम शास्त्र मे, १६ प्रकार के रतिबंधों मे से एक। १४. पुराणानुसार जबूद्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश। १५. पुराणानुसार एक नरक का नाम। १६. पुराणानुसार एक कल्प का नाम। १७ बौद्धो के अनुसार एक नक्षत्र का नाम। १८ जैनों के अनुसार भारत के नवें चक्रवर्ती का नाम। १९. बलदेव का एक नाम। २०. एक नाग का नाम। २१ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २२ कश्मीर का एक प्राचीन राजा जिसने पद्मपुर नामक नगर बसाया था। २३.

पद्मा नदी का एक नाम। २४ सीसा। २५. पद्माख वृक्ष। २६ *पुष्करमूल। २७. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः* एक नगण, एक सगण, और अत मे लघु गुरु होते है। २८. दे० 'पद्मपुराण'। २९. दे० 'पद्मव्यूह'। ३०. दे० 'पद्मासन'।

पद्मकंद—पु० [प०त०] कमल की जड। भसीड।

पद्मक—पु० [स० पद्म√ (चमकना)+क] १. पदम या पदमकाठ नाम का पेड़। २ हाथी की सूँड पर का चिह्न या दाग। ३. सेना का पद्मव्यूह। ४. सफेद कोढ। ५. कुट नाम की ओषधि। ६. पद्मासन।

पद्म-कर—वि० [ब०स०] जिसके हाथ मे कमल हो।

पु० १. विष्णु। २. सूर्य। ३ [उपमि०स०] हाथ जो पद्मवत् हो।

पद्म-करा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] लक्ष्मी।

पद्म-कर्णिका—स्त्री० [प०त०] १. कमल का बीजकोश। २. पद्म-व्यूह के *मध्य मे स्थित सेना।*

पद्म-कांति—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पद्म-काष्ठ—पु० [ब०स०] १ पद्म काठ (वृक्ष)। २. उक्त वृक्ष की सुगधित लकडी जो ओषधि के काम आती है।

पद्म-काह्वय—पु० [पद्मक-आह्वय, ब०स०] पद्माख या पदम नाम का वृक्ष।

पद्म-किंजल्क—पु० [प०त०] कमल का केसर।

पद्मकी (किन्)—पु० [स० पद्मक+इनि] १ हाथी। २ भुर्ज नाम का वृक्ष जिसके पत्ते भोज-पत्र नाम से प्रसिद्ध है।

पद्म-कीट—पु० [स० उपमि०स०] एक जहरीला कीडा।

पद्म-केतन—पु० [ब०स०] गरुड का एक पुत्र।

पद्म-केतु—पु० [उपमि०स०] एक तरह का पुच्छलतारा। (बृहत्संहिता)

पद्म-केशर—पु० [प०त०] *कमल का केसर।*

पद्म-कोश—पु० [प०त०] १ कमल का सपुट। २ कमल का वह छत्ता या बीज-कोश जिसमे उसके बीज (कमल-गट्टा) रहते है। ३. उँगलियो की एक मुद्रा जो कमल के सपुट के आकार की होती है।

पद्म-क्षेत्र—पु० [प०त०] उत्कल राज्य का एक तीर्थ।

पद्म-गंध—स्त्री० [प०त०] कमल के फूल मे से निकलनेवाली गंध।

पद्म-गंधि—पु० [ब०स०, इत्व] पद्माख या पदम नाम का वृक्ष।

पद्म-गर्भ—पु० [प०त०] १. कमल का वह अश जिसमे बीज होते है। २. ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४. गौतम बुद्ध। ५. एक बोधिसत्त्व।

पद्मगुणा—स्त्री० [स० पद्म√गुण् (मत्रणा)+क+टाप्] १. लक्ष्मी। २ लौंग।

पद्म-गुरु—पु० [मध्य०स०] रहस्य सप्रदाय मे, शरीर के अदर के कमलो या चक्रो मे विद्यमान माना जानेवाला सत्-गुरु या परमात्मा का अश।

पद्म-गृहा—स्त्री० [ब०स०, +टाप्] १ लक्ष्मी। २. लौंग।

पद्मचारिणी—स्त्री० [स० पद्म√चर् (गति)+णिनि+ङीप्] १. गेंदा। २. शमी वृक्ष। ३. हलदी। ४. लाक्षा। लाख।

पद्मज—वि० [स० पद्म√जन्+ड] कमल मे से उत्पन्न।

पु० ब्रह्मा।

पद्मजात—वि०, पु०=पद्मज।

पद्म-तंतु—पु० [प० त०] कमल की नाल। मृणाल।

पद्म-दर्शन—पु० [ब० स०] लोहबान।

पद्म-नाभ—पु० [ब० स०, अच्] १. विष्णु। २. जैनो के अनुसार भावी उत्सर्पिणी के पहले अर्हत् का नाम। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। *४. एक नाग। ५ शत्रु के चलाये हुए अस्त्र को निष्फल करने के उद्देश्य* से पढ़ा जानेवाला एक मत्र।

पद्म-नाभि—पु० [ब० स०] विष्णु।

पद्म-नाल—स्त्री० [प० त०] कमल की नाल। मृणाल।

पद्म-निधि—स्त्री० [प० त०] कुबेर की नौ निधियो मे से एक निधि।

पद्म-नेत्र—वि० [ब० स०] जिसके नेत्र कमलवत् हो।

पु० १. एक बुद्ध का नाम। २ एक प्रकार का पक्षी।

पद्म-पत्र, पद्म-पर्ण—पुं० [प० त०] १. कमल की पँखडी। २ पुष्कर-मूल।

पद्म-पाणि—वि० [ब० स०] जिसके हाथ में कमल का फूल हो।

पु० १ ब्रह्मा। २. सूर्य। ३. गौतम बुद्ध की एक विशिष्ट प्रकार *की मूर्ति। ४. एक बोधिसत्व जो अमिताभ बुद्ध के पुत्र थे।*

पद्म-पुराण—पु० [सं० ब० स०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण।

पद्म-पुष्प—पु० [म० ब० स०] १ कनेर का पेड। २. एक प्रकार की चिडिया।

पद्म-प्रभ—पु० [ब० स०] एक बुद्ध जिनका अवतार अभी होने को है।

पद्म-प्रिया—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] वासुकि नाग की बहन मनसा।

पद्म-बंध—पु० [ब० स०] चित्र काव्य का एक प्रकार जिसमे अक्षरो को इस प्रकार सजाया जाता है कि पद्म या कमल का आकार बन जाता है।

पद्म-बीज—पुं० [प० त०] कमलगट्टा।

पद्म-भवानी—स्त्री० [सं०] *सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।*

पद्म-भास—पु० [ब० स०] शिव।

पद्मभू—पुं० [स० पद्म√भू (होना)+क्विप्] ब्रह्मा।

पद्म-भूषण—पु० [मध्य० स०] स्वतत्र भारत में सुयोग्य देश-सेवियो, राजकर्मचारियो, विद्वानो आदि को भारत सरकार की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाला एक प्रकार का अलकरण जो तृतीय श्रेणी का माना गया है।

पद्ममालिनी—स्त्री० [स० पद्म-माला, प० त०,+इनि+ङीप्] लक्ष्मी।

पद्ममाली (लिन्)—पु० [स० पद्ममाला+इनि] एक राक्षस का नाम।

पद्म-मुखी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] १. दूब। २. सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पद्म-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तान्त्रिक उपासना और पूजन मे एक मुद्रा जिसमे दोनो हथेलियो को सामने करके उँगलियाँ नीचे रखते हैं और अँगूठे मिला देते हैं।

पद्म-योनि—पु० [ब० स०] १. ब्रह्मा। २. गौतम बुद्ध का एक नाम।

पद्म-राग—पु० [ब० स०] १. मानिक या लाल नामक प्रसिद्ध रत्न। २. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पद्म-रेखा—स्त्री० [मध्य० स०] सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हाथ की हथेली मे होनेवाली कमल के आकार की एक रेखा, जो धनवान होने का लक्षण मानी जाती है।

पद्म-लांछन—पु० [ब० स०] १. ब्रह्मा। २. कुबेर। ३ सूर्य।

पद्म-लांछना—स्त्री० [व० स०,+टाप्] १ सरस्वती का एक नाम। २ तारा देवी का एक नाम।

पद्म-लोचन—वि० [व० स०] जिसके नेत्र कमल के समान बड़े और सुन्दर हो।

पद्म-वर्ण—पु० [व० स०] १ यदु के एक पुत्र। २ पुष्करमूल।

पद्मवर्णक—पु० [व० स०, कप्] पुष्करमूल।

पद्मवासा—स्त्री० [व० स०+टाप्] लक्ष्मी।

पद्म-विभूषण—पु० [मध्य० स०] स्वतत्र भारत मे, सुयोग्य देश-सेवियो, राजकर्मचारियो, विद्वानो आदि को भारत सरकार की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाला एक प्रकार का अलकरण जो द्वितीय श्रेणी का माना गया है।

पद्म-बीज—पु० [प० त०] कमल गट्टा।

पद्म-बीजाभ—पु० [पद्मबीज-आभा, व० स०] मखाना।

पद्म-वृक्ष—पु० [मध्य० स०] पद्मकाठ नामक वृक्ष।

पद्म-व्याकोश—पु० [प० त०] सपुटित कमल के आकार की (दीवारो मे लगाई जानेवाली) सेंध।

पद्म-व्यूह—पु० [मध्य० स०] १ प्राचीन भारत मे एक तरह की सैनिक व्यूह-रचना जिसमे सैनिक इस प्रकार खडे किये जाते थे कि कमल की आकृति वन जाती थी। २. एक तरह की समाधि।

पद्म-श्री—पु० [व० स०] १. एक बोधिसत्त्व का नाम। २. स्वतत्र भारत मे सुयोग्य देश-सेवियों, राजकर्मचारियो, विद्वानो आदि को भारत सरकार की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाला एक प्रकार का अलकरण जो चतुर्थ श्रेणी का माना गया है।

पद्म-संभव—पुं० [व० स०] ब्रह्मा।

पद्म-सद्मा (द्मन्)—पु० [व० स०] ब्रह्मा।

पद्म-सूत्र—पु० [प० त०] कमल के फूलो की माला।

पद्म-स्नुषा—स्त्री० [प० त०] १ गगा का एक नाम। २. दुर्गा का एक नाम।

पद्म-स्वस्तिक—पु० [मध्य० स०] वह स्वस्तिक चिह्न जिसमे कमल भी बना हो।

पद्म-हस्त—वि०, पु०=पद्म-कर।

पद्महास—पु० [व० स०] विष्णु।

पद्मांतर—पु० [पद्म-अतर, मयू० स०] कमल-दल।

पद्मा—स्त्री० [स० पद्म+टाप्] १. लक्ष्मी। २. मनसा देवी का एक नाम। ३ वगाल मे होनेवाली गगा की दो शाखाओ मे से पूर्वी शाखा की सज्ञा। ४ गेंदे का पौधा। ५ कुसुम का फूल। ६ लौंग। ७ पद्मचारिणी लता।

पद्माक—पुं० दे० 'पद्माख'।

पद्माकर—पु० [पद्म-आकर, प० त०] वह जलाशय जिसमे कमल खिले हो।

पद्माक्ष—पु० [पद्म-अक्षि, प० त०] १ कमल-गट्टा। कमल के बीज। २ विष्णु का एक नाम।

पद्माख—पु० [स० पद्मकम्] पर्वतीय प्रदेश मे होनेवाला एक तरह का ऊँचा पेड जिसके पत्ते लकुच के पत्तो की तरह और फूल कदम के फूलो जैसे होते हैं।

पद्माचल—पु० [पद्म-अचल, मध्य० स०] एक पर्वत। (पुराण)

पद्माट—पु० [स० पद्म√अट् (गति)+अच्] चकवँड।

पद्माधीश—पु० [पद्म-अधीश, प० त०] विष्णु।

पद्मालय—पु० [पद्म-आलय, व० स०] ब्रह्मा।

पद्मालया—स्त्री० [स० पद्मालय+टाप्] १ लक्ष्मी। २. लौंग।

पद्मावती—स्त्री० [सं० पद्म+मतुप्, वत्व, दीर्घ] १ पटना नगर का प्राचीन नाम। २. पन्ना नगर का पुराना नाम। ३. उज्जयिनी का पुराना नाम। ४. जरत्कारु ऋषि की पत्नी लक्ष्मी का दूसरा नाम। ५. मनसा देवी का एक नाम। ६ पुराणानुसार एक अप्सरा। ७. युधिष्ठिर की एक रानी। ८. एक प्राचीन नदी। ९ लोक-कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिसे चित्तौड के राजा रत्नसेन व्याह कर लाये थे। १०. एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ १०,८ और १४ की यति पर होती हैं।

पद्मासन—पु० [पद्म-आसन, उपमि० स०] १. कमल का आसन। २ योग-साधना के समय पलथी मारकर तथा तनकर बैठने की एक विशेष मुद्रा। ३ वह जो उक्त आसन लगाकर बैठा हो। ४. कामशास्त्र के अनुसार स्त्री के साथ सभोग करने का एक आसन या रतिबध। ५. ब्रह्मा। ६. शिव। ७ सूर्य।

पद्माह्वा—स्त्री० [पद्म-आह्व, व० स०,+टाप्] १ गेंदा। २. लौंग।

पद्मिनी—स्त्री० [स० पद्म+इनि—ङीप्] १ कमल का पौधा। २ कमल की नाल। ३ कमलो का समूह। ४ ऐसा तालाब जिसमे बहुत से कमल खिले हो। ५ मादाहाथी। हथिनी। ६ काम शास्त्र मे रूप, शील और स्वभाव की दृष्टि से नायिकाओ के चार वर्गो में से पहला और सर्वश्रेष्ठ वर्ग। ७ उक्त वर्ग की नायिका जिसका शरीर चम्पा की तरह गौर वर्ण होता है, कमल-दल की तरह कोमल होता है और जिसके अग अग से सुरभित गध निकलती है। यह अत्यन्त लज्जाशीला किंतु बहुत मानिनी भी होती है।

पद्मिनी-कटक—पु० [प० त०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जो कुष्ठ के अन्तर्गत माना जाता है।

पद्मिनी-कांत—पु० [प० त०] सूर्य।

पद्मिनी-खंड—पु० [प० त०] वह प्रदेश जहाँ कमलो की प्रचुरता हो।

पद्मिनी-वल्लभ—पु० [प० त०] सूर्य।

पद्मिनी-षंड—पु० [प० त०] पद्मिनी-खड।

पद्मी (द्मिन्)—वि० [स० पद्म+इनि] १. जिसमे कमल होता हो। २. कमल से युक्त।

पु० १. वह प्रदेश जहाँ पद्म या कमल बहुत होते हों। २ पद्मो या कमलो का समूह। ३. विष्णु। ४. बौद्धो के अनुसार एक लोक का नाम। ५. उक्त लोक मे रहनेवाले एक बुद्ध जिनका अवतार आगे चलकर होगा।

पद्मेशय—पु० [स० पद्मे√शी (सोना)+अच्, अलुक् स०] पद्मो पर सोनेवाले, विष्णु।

पद्मोत्तर—पु० [स० पद्म-उत्तर, प० त०] १. कुसुम। बर्रे। २. एक बुद्ध का नाम।

पद्मोद्भव—पुं० [स० पद्म-उद्भव, व० स०] ब्रह्मा।

पद्मोद्भवा—स्त्री० [स० पद्मोद्भव+टाप्] वासुकि नाग की बहन, मनसा।

पद्य—वि० [स० पद्+यत्] १ पद (पैर अथवा चरण) सबधी। २. जो पदो अर्थात् काव्य के रूप मे हों।

पु० १ पद अर्थात् गण, मात्रा आदि के नियमो के अनुसार होनेवाली साहित्यिक रचना। छदो-बद्ध रचना ।(वर्स) २. काव्य। ३. शूद्र जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के चरणो से मानी जाती है। ४. शठता।

पद्या—स्त्री० [स० पद्य+टाप्] १ पैदल चलने से बननेवाला रास्ता। पगडडी। २ पटरी। ३ शर्करा।

पद्यात्मक—वि० [पद्य-आत्मन्, ब० स०+कप्] पद्य के रूप मे होनेवाला। छदोबद्ध।

पद्र—पु० [स०√पद्+रक्] गाँव।

पद्रथ—पु० [स० पद्-रथ, ब० स०] प्यादा। पैदल सिपाही।

पद्व—पु० [स०] १ मनुष्य-जगत्। २ पृथ्वी। ३ मार्ग। सडक। ४ रथ।

पद्वा (द्वन्)—पु० [स०√पद्+वनिप्] मार्ग।

पधरना†—अ०=पधारना।

पधराना—स० [हि०, पधारना] १ अपने यहाँ आये हुए व्यक्ति का सत्कार करना और आदरपूर्वक आसन देना। २. प्रतिष्ठित या स्थापित करना।

पधरावनी—स्त्री० [हिं० पधराना] १. पधारने की क्रिया या भाव। २. किसी देवता की स्थापना।

पधारना—अ० [हिं० पग+धारना] १ किसी की दृष्टि मे उसके यहाँ किसी पूज्य व्यक्ति का आना। २ किसी बडे आदमी का किसी उत्सव, समारोह आदि मे सम्मिलित होने के लिए पहुँचना। ३ आ पहुँचना। आना। ४. गमन करना। चलना। (परिहास और व्यग्य)

स० आदरपूर्वक बैठाना। पधराना। प्रतिष्ठित करना। उदा०—तिल पिंडिन मे हरिहि पधारै। विविध भाँति पूजा अनुसारै।—रघुनाथ।

पनंग—पु० [स० पन्नग] सर्प। साँप। (डिं)

पन—पु० [स० पर्वन्] आयु अथवा जीवन-काल की कोई अवस्था या स्थिति। जैसे—उन्हे चौथे पन मे कुछ आराम मिला।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ सज्ञाओं और गुणवाचक विशेषणो के अन्त मे लगकर उनका भाववाचक रूप बनाता है। जैसे—बचपन, लडकपन, पीलापन, हरापन आदि।

पु० [हि० पान] पान का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पनवाडी।

पु० [हिं० पानी] पानी का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पन-चक्की, पन-डुब्बी, पन-बिजली, पन-भरा आदि।

†पु०=प्रण।

क्रि० प्र०—रोपना। —लेना।

†पु०=पण्य (मूल्य)।

पन-कटा—पु० [हिं० पानी+काटना] वह मनष्य जो खेतो मे नालियाँ काटकर इधर-उधर पानी ले जाता या सीचता हो।

पन-कपडा—पु० [हि० पानी+कपड़ा] चोट, घाव आदि पर बाँधा जानेवाला गीला कपडा।

पन-काल—पु० [हिं० पानी+काल या अकाल] १. पानी का अकाल। २. अत्यधिक वर्षा तथा उसके फल-स्वरूप खेती आदि नष्ट होने के कारण पडनेवाला अकाल।

पन-कुकडी—स्त्री०=पनकौआ।

पन-कुट्टी—स्त्री० [हिं० पान+कूटना] पान कूटने का छोटा खरल।

पन-कौआ—पु० [हिं० पानी+कौआ] एक प्रकार का जल-पक्षी। जल-कौआ।

पनखउ—पु० [हिं० पनहा+काठ] जुलाहों की वह लचीली धुनकी जिस पर उनके सामने बुना कपडा फैला रहता है।

पनग*—पु० [स्त्री० पनगनि] पन्नग (साँप)।

पनगाचा—पु० [हि० पानी+गाछी (बाग)] वह खेत जिसमे पानी भरा या सीचा गया हो।

पनगोटी—स्त्री० [हिं० पानी+गोटी] मोतिया शीतला।

पनघट—पु० [हि० पानी+घाट] १ वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हो। २. कोई ऐसा स्थान जहाँ से पानी घडे आदि मे भरकर ले जाया जाता हो। जैसे—कूआँ।

पनच—स्त्री० [स० पतनिका] प्रत्यचा।

पन-चक्की—स्त्री० [हिं० पानी+चक्की] आटा आदि पीसने की ऐसी चक्की जो पानी के बहाव के जोर से चलती हो।

पनची—स्त्री० [देश०] गेडी के खेल मे खेलने के लिए पतली लकडी या गेडी।

पनचोरा—पु० [हिं० पानी+चोर] जल भरने का एक तरह का बरतन जिसका पेट चौडा और मुँह सँकरा हो।

पनडब्बा—पु० [हिं० पान+डब्बा] [स्त्री० अल्पा० पनडब्बी] पान-दान।

पनडब्बी—स्त्री० [हि० पन+डब्बी] पानो के लगे हुए बीडे रखने की छोटी डिबिया।

पनडुब्बा—पु० [हिं० पानी+डूबना] १. पानी मे गोता लगानेवाला। गोताखोर। २ [स्त्री० पनडुब्बी] काले रग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो जलाशय मे गोता लगाकर मछलियाँ पकडता हो। ३. मुरगाबी। ४ एक प्रकार का कल्पित भूत जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि वह जलाशय मे नहानेवालो को डुबा देता है।

पनडुब्बी—स्त्री० [हिं० पानी+डूबना] १. जलाशयो मे डुबकी लगाकर मछलियाँ पकडनेवाली एक चिडिया। २. पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की आधुनिक नाव। (सब-मेरीन)

पनदनियाँ†—स्त्री० [हिं० पानदान का स्त्री० अल्पा०] पानो के लगे हुए बीडे रखने की छोटी डिब्बी। पन-डब्बी।

पनपना—अ० [स० पर्ण+पर्ण=पत्ता, या पर्णय=हरा होना] १. पेड-पौधो के सम्बन्ध मे, उनका भली-भाँति विकास और वृद्धि होना। २. रोजगार आदि के सबध मे, उसका उन्नति पर होना। चमकना। ३ व्यक्ति के सबध मे, उसका नये सिरे से या फिर से तन्दुरुस्त, सम्पन्न अथवा सशक्त होने लगना। अच्छी स्थिति मे आने लगना।

पनपनाहट—स्त्री० [अनु०] बार-बार होनेवाले पन-पन शब्द का भाव।

पनपाना—स० [हिं० पनपना का स० रूप] किसी को पनपने में प्रवृत्त करना या सहायता करना।

पनपिआइ†—स्त्री० [हिं० पानी+पिलाना] नाश्ता।

पन-बट्टा—पु० [हिं० पान+बट्टा (डिब्बा)] वह छोटा डिब्बा जिसमें लगे हुए पानों के बीड़े रखे जाते हैं।

पन-बदरा—पुं० [हिं० पानी+बादल] ऐसी वातावरणिक स्थिति जिसमें पानी और बादल के साथ धूप भी निकली होती है।

पनबिच्छी—स्त्री० [हिं० पानी+बीछी] बिच्छी की तरह का डंक मारनेवाला एक जल-जंतु।

पन-बिछिया—स्त्री०=पनबिच्छी।

पन-बिजली—स्त्री० [हिं० पानी+बिजली] झरनों और नदियों के बहाववाले पानी से तैयार की जानेवाली बिजली।

पनबिजली-शक्ति—स्त्री० दे० 'जलविद्युत्-शक्ति'।

पनबुडवा—पु०=पनडुब्बा।

पनबुड़िया—स्त्री०=पनडुब्बी।

पनभता†—पु० [हिं० पानी+भात] केवल पानी में उबाले हुए चावल। साधारण भात।

पन-भरा—पु० [हिं० पानी+भरना] वह जो घरों में पानी भरकर पहुँचाने या ले जाने का काम करता हो। पनहरा।

पन-मँड़िया—स्त्री० [हिं० पानी+माँडी] एक तरह की पतली माँड जिससे जुलाहे बुनाई के समय टूटे हुए तागों को जोड़ते हैं।

पनरंगा—वि० [हिं० पानी+रंग] [स्त्री० पनरंगी] पानी के रंग जैसा अर्थात् मटमैलापन लिये सफेद। उदा०—कटि धोती पनरंगी धरे गमछा-कल काँधे।—रत्ना०।

पनलगवा, पनलगा—पु० [हिं० पानी+लगाना] खेतों में पानी लगाने या सींचनेवाला व्यक्ति। पनकटा।

पनलोहा—पु० [हिं० पानी+लोहा] एक प्रकार का जल-पक्षी जो हर ऋतु में रंग बदलता है।

पनव—पु०=प्रणव।

पनवाँ—पु० [हिं० पान+वाँ (प्रत्य०)] हुमेल आदि में लगी हुई बीचवाली चौकी जो पान के आकार की होती है। टिकड़ा। पान।

पनवाड़ी—स्त्री० [हिं० पान+बाटी] वह खेत या भूमि जिसमें पान पैदा होता है।

पु० दे० 'तमोली'।

पनवार—स्त्री० [स० पर्ण] पत्तों की बनी हुई पत्तल।

पनवारा—पु० [हिं० पान=पत्ता+वार (प्रत्य०)] १. पत्तों की बनी हुई पत्तल जिस पर रखकर लोग भोजन करते हैं।

मुहा०—पनवारा लगाना=पत्तल पर भोजन परोसना।

२. पत्तल पर परोसा हुआ उतना भोजन जितना एक आदमी खा सके। (दे० 'पत्तल')

पु० [?] एक प्रकार का साँप।

पनवारी—स्त्री०=पनवाड़ी।

पु०=तमोली।

पनस—पु० [स०√पन् (स्तुति)+असच्] १. कटहल का वृक्ष। २. कटहल का फल। ३. राम की सेना का एक बंदर। ४. विभीषण का एक मंत्री।

पन-सखिया—स्त्री० [हिं० पाँच+शाखा] १. एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे का फूल।

पनसतालिका—स्त्री० [स० पनस-ताल, कर्म०स०,+ठन्—इक,+टाप्] कटहल।

पनसनालिका—पु० [सं०] कटहल।

पनसल्ला†—पु०=पनसाल (प्याऊ)।

पनसाखा—पु० [हिं० पाँच+शाखा] एक प्रकार की मशाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ साथ जलती हैं।

पनसार—पु० [हिं० पानी+स० आसार=धार बाँधकर पानी गिरना] पानी से किसी स्थान को तर करने या सींचने की क्रिया या भाव। भरपूर सिंचाई।

पनसारी—पुं०=पंसारी।

पनसाल—स्त्री० [हिं० पानी+स० शाला] १. वह स्थान जहाँ सर्वसाधारण को पानी पिलाया जाता है। पौसरा। प्याऊ। २. नदी आदि में नावों के चलने के समय पानी की गहराई नापने की क्रिया। ३. वह उपकरण जिससे उक्त अवसरों पर पानी की गहराई नापी जाती है।

पनसिगा—पु० [देश०] जलपीपल।

पनसिका—स्त्री० [स० पनस+ठन्—इक,+टाप्] कान में होनेवाली एक तरह की फुंसी जो कटहल के काँटों की तरह नोकदार होती है।

पनसी—स्त्री० [स० पनस+ङीप्] १. कटहल का फल। २. पनसिका।

पनसुइया—स्त्री० [हिं० पानी+सूई] एक तरह की पतली तथा छोटी नाव।

पनसूर—पु० [देश०] एक तरह का बाजा।

पनसेरी—स्त्री०=पसेरी।

पनसोई—स्त्री०=पनसुइया।

पनसोह—वि० [हिं० पानी+सुहाना] १. जिसका स्वाद जल जैसा हो। २. फीका। ३. नीरस।

पनस्यु—वि० [स० पन+क्यच्, सुगागम,+उ] प्रशंसा या तारीफ सुनने का इच्छुक। जिसे प्रशंसित होने की लालसा हो।

पनह†—स्त्री०=पनाह (शरण)।

पनहड़ा—पु० [हिं० पान+हाँडी] वह पात्र जिसमें तमोली पान आदि धोने के लिए पानी रखते हैं।

पनहरा—पु० [हिं० पानी+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० पनहारन, पनहारिन] १. वह व्यक्ति जो दूसरों के यहाँ पानी भरता हो और इस प्रकार प्राप्त होनेवाले पारिश्रमिक से अपनी जीविका चलाता हो। पन-भरा। २. वह पात्र जिसमें सोनार गहने धोने आदि के लिए पानी रखते हैं।

पनहा—पु० [स० परिणाह=विस्तार, चौड़ाई] १. कपड़े, दीवार आदि की चौड़ाई। अरज। २. गूढ़ आशय। तात्पर्य। मर्म। भेद।

पु० [स० पण=रुपया-पैसा+हार] १. चोरी का पता लगानेवाला। २. वह पुरस्कार जो चुराई हुई वस्तु लौटा या दिला देने के लिए दिया जाय।

†स्त्री०=पनाह।

पनहारा—पु०=पनहरा।

पनहिया†—स्त्री०=पनही।
पनहिया-भद्र†—पु० [हिं० पनही+भद्र=मुंडन] सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ। जूतों की मार।
पनही—स्त्री० [सं० उपानह] जूता।
पना—पु० [सं० प्रपानक या पानीय] भुने हुए आम, इमली आदि का बनाया जानेवाला एक तरह का खट-मीठा शरबत। पन्ना।
प्रत्य०=पन। जैसे—पाजीपना।
पनाती—पु० [सं० प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पुत्र अथवा कन्या का नाती। पोते अथवा नाती का पुत्र। परनाती।
पनार(रा)†—पु०=पनारा।
पनारि—स्त्री० [हिं०प=पर+नारि] पराई स्त्री। उदा०—जौ पनारि की रसिक...। मतिराम।
पनाला†—पु०[स्त्री० अल्पा० पनाली]=परनाला।
पनालिया†—वि० [हिं० पनाला=परनाला] पनाले या परनाले के समान गंदा और त्याज्य। जैसे—पनालिया पग।
पनालिया-पत्र—पु० [हिं० पनालिया+सं० पत्र] वह समाचार-पत्र (या समाचार-पत्रों का वर्ग) जिसमे अधिकतर बातें अशिष्टतापूर्ण और अश्लील ढंग से कही जाती हैं और दूषित भाव से लोगों पर कीचड़ उछाला जाता है। (गटर प्रेस)
पनास—पु० [हिं० पनासना] १ पालन-पोषण। २. दे० 'पोस'।
पनासना—स० [सं० पानाशन] पोषण करना। पालना-पोसना।
पनाह—स्त्री० [फा०] १. शत्रु के उपद्रव या दूसरे संकटों से प्राण-रक्षा या अपना बचाव करने की क्रिया या भाव। त्राण। २ उक्त आशय से किसी की रक्षा या शरण में जाने की क्रिया या भाव।
मुहा०—(किसी काम, बात या व्यक्ति से) पनाह माँगना=किसी बहुत ही अप्रिय या अनिष्ट वस्तु अथवा विकट व्यक्ति से दूर रहने की कामना करना। किसी से बहुत बचने की इच्छा करना। जैसे—मैं आप से पनाह मांगता हूँ।
३. ऐसा स्थान जहाँ छिप या रहकर कोई शत्रु, संकट आदि से बचता हो। बचाव या रक्षा की जगह।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मांगना।
मुहा०—पनाह लेना=विपत्ति मे बचने के लिए रक्षित स्थान में पहुँचना। शरण लेना।
पनिक—पु० [देश०] दो बाँसों की कैंचीनुमा रचना। (जुलाहे)
विशेष—ऐसी ही दो रचनाओं के बीच में पाई करने के उद्देश्य से ताना फैलाया जाता है।
पनिग†—पु०=पनिक।
पनिगर†—वि०=पानीदार।
पनिघट†—पु०=पनघट।
पनिच*—स्त्री०=पनच (प्रत्यंचा)।
पनिड़ो—स्त्री०=पुंडरीक (ईख का एक भेद)।
पनियाँ†—वि० [हिं० पानी+इया (प्रत्य०)] १. जल-संबंधी। पानी का। २ पानी में रहने या होनेवाला। जैसे—पनियाँ साँप। ३. जिसमें पानी हो या मिला हो। जैसे—पनियाँ दूध। ४. पानी के रंग का।
†पु० दे० 'पनुआ'।
पनियाना—स० [हिं० पानी+आना (प्रत्य०)] खेत आदि को पानी से सींचना।
स०=पनिहाना।
पनियार—पु० [हिं० पानी+यार (प्रत्य०)] १. वह स्थान जहाँ पानी ठहरता या रुकता हो। २. वह दिशा जिधर ढाल होने के कारण पानी बहता हो।
पनियारा†—पु० [हिं० पानी] १. पानी की बाढ़।
वि०, पु०=पनियाला।
पनियाला—पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल।
वि०=पनियाँ।
पनियाव†—पु० [हिं० पानी+इयाव (प्रत्य०)] कूआँ खोदते समय मिलनेवाला वह स्थान जहाँ पानी यथेष्ट होता है।
पनिया-सोत—वि० [हिं० पानी+सोता] (तालाब या खाई) जिसके तल मे से पानी का प्राकृतिक सोता निकला हो। अर्थात् बहुत गहरा। जैसे—पनिया-सोत खाई।
पनिवा—पु०=पनुआँ।
पनिसिगा†—पु० दे० 'जल पीपल'।
पनिहरा †पु=पनहरा।
पनिहा—पु० [?] चोर पकड़ने अथवा उनका पता बतलानेवाले तांत्रिक।
पु० दे० 'पनुआ'।
†वि०=पनियाँ।
पनिहाना†—स० [हिं० पनही=जूता] १. जूतों से मारना।
२. बहुत अधिक मारना-पीटना।
पनिहार†—पु० [स्त्री० पनिहारिन] =पनहरा।
पनिहारिन—स्त्री० [हिं० पनिहरा=पानी भरनेवाला] १. वह स्त्री जो लोगों के घर पानी भर कर पहुँचाने का काम करती हो। २. गाँव-देहातों मे कहरवा की तरह के एक प्रकार के गीत जो उक्त अथवा कहार जाति की स्त्रियाँ पानी भरने और लोगों के घर पानी पहुँचाने के समय गाती है।
पनी—वि० [सं० पण] जिसने प्रण या व्रत धारण किया हो।
†स्त्री०=पन्नी।
पनीर—पुं० [फा०] १. दही का वह घन अंश जो उसमें से पानी निकाल देने पर बच रहे। २. फटे या फाड़े हुए दूध का घन अंश। छेना।
मुहा०—(किसी को) पनीर चटाना=काम निकालने के उद्देश्य से किसी को कुछ खिलाना-पिलाना और खुशामद करना। पनीर जमाना=ऐसी बात करना जिससे आगे चलकर कोई बहुत बड़ा उद्देश्य या स्वार्थ सिद्ध हो।
पनीरी—वि० [फा०] १. पनीर-संबंधी। २. पनीर का बना हुआ। जैसे—पनीरी मिठाई।
स्त्री० [देश०] १. फूल-पत्तोंवाले वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह रोपने के लिए उगाये गये हों। फूल-पत्तो के बेहन।
क्रि० प्र०—जमाना।
२. वह क्यारी जिसमे उक्त प्रकार के पौधे उगाये जाते हैं। ३. गलगल नींबू की फाँक का गूदा।

पनीला†—वि०=पनियाँ।
पु० [?] एक तरह का सन।
पनु*—पु०=प्रण।
पनुआँ—पु० [हिं० पानी+उआँ (प्रत्य०)] १. वह शरबत जो गुड के कड़ाहे से पाग निकाल लेने के बाद उसे धोकर तैयार किया जाता है। पनियाँ। २ तरबूज। (पूरब)
पनेथी†—स्त्री० [हिं० पानी+पोथी] वह रोटी जिसमे पलेथन के स्थान पर पानी लगाया गया हो।
पनेरी—स्त्री०=पनीरी।
पु०=पनवाडी (तँबोली)।
पनेवा†—पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।
पनेहड़ी†—स्त्री० दे० 'पनहड़ी'।
पु०=पनहरा।
पनेहरा—पु०=पनहरा।
पनैला—वि०=पनियाँ।
पु०=पनीला।
पनौआ—पु० [हिं० पान+औआ (प्रत्य०)] पान के पत्तो का पकौडा या पकौड़ी।
पनौटी—स्त्री० [हिं० पान+औटी (प्रत्य०)] पान रखने की पुरानी चाल की पिटारी।
पन्न—वि० [स०√पद्+क्त] १. गिरा या पडा हुआ। जैसे—शरणा-पन्न। २. जो नष्ट या समाप्त हो चुका हो।
पु० खिसकते या सरकते हुए चलना। रेंगना।
†पु०=पर्ण (पत्ता)।
पन्नई†—वि० [हिं० पन्ना+ई (प्रत्य०)] पन्ने के रग का। फिरोजी या गहरे हरे रग का।
पन्नग—पु० [स० पन्न√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० पन्नगी] १ सर्प। साँप। २ एक प्रकार की जडी या बूटी। ३. सीसा।
†पु०=पन्ना (मरकत)।
पन्नग-केसर—पु० [व० स०] नागकेसर।
पन्नगारि—पु० [पन्नग-अरि, प० त०] गरुड।
पन्नगाशन—पु० [पन्नग-अशन, व० स०] गरुड।
पन्नगिनि*—स्त्री०=पन्नगी।
पन्नगी—स्त्री० [स० पन्नग+ङीप्] १ सर्पिणी। साँपिन। २. सर्पिणी नाम की जडी या बूटी।
पन्नद्धा, पन्नध्री—स्त्री० [स० पद्-नद्धा, स० त०, पद्-नध्री, प० त०] जूता।
पन्ना—पु० [स० पर्ण] एक तरह का गहरे हरे या फिरोजी रग का बहु-मूल्य रत्न।
पु० [हिं० पान] १. पृष्ठ। वरक। २ भेड़ो के कान का वह भाग जहाँ का ऊन काटा जाता है। ३. पान के आकार का जूते का वह अग जिसे 'पान' कहते है।
पन्निक†—पु०=पनिक।
पन्नी—स्त्री० [हिं० पन्ना] १ राँगे, पीतल आदि का पत्तर जिसे सौंदर्य और शोभा के लिए छोटे-छोटे टुकडो मे काटकर अन्य वस्तुओं पर चिपकाया जाता है। २ एक तरह का रगीन चमकीला कागज। ३. सुनहला या रुपहला कागज।
स्त्री० [हिं० पना] इमली, कच्चे आम आदि से बनने वाला एक पेय।
स्त्री० [?] १. बारूद की एक तौल जो आध सेर के बराबर होती है। २. एक तरह की घास जो छप्पर छाने के काम आती है।
पन्नीसाज—पु० [हिं० पन्नी+फा० साज=बनानेवाला] [भाव० पन्नी-साजी] पन्नी बनानेवाले कारीगर।
पन्नीसाजी—स्त्री० [हिं० पन्नीसाज] पन्नी बनाने का काम या व्यव-साय।
पन्नू—पु० [देश०] १ एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे का फूल।
पन्यारी—स्त्री० [देश०] एक तरह का जगली वृक्ष, जिसकी लकडी चमकदार तथा मजबूत होती है।
पन्हाना†—स० १=पहनाना। २=पनिहाना।
अ०=पेन्हाना (थन मे दूध उतरना)।
पन्हारा—पु० [हिं० पानी+हारा] एक प्रकार का तृण धान्य जो गेहूँ के खेतो मे आप से आप होता है। अँकरा।
पन्हीं—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास। गाँडरा। बीरन।
पन्हैया—स्त्री०=पनही।
पपटा—पु० [?] छिपकली।
†पु०=पपडा।
पपड़ा—पु० [स० पर्पट] [स्त्री० अल्पा० पपडी] १. लकडी का रूखा, करकरा और पतला छिलका। चिप्पड। २ किसी चीज के ऊपर का पतला किंतु कडा और सूखा छिलका। जैसे—रोटी का पपडा।
पपड़िया—वि० उभय० [हिं० पपडी+इया (प्रत्य०)] जो आकार, रूप आदि मे पपडी की तरह का हो। जैसे—पपडिया कत्था, पपड़िया लाख आदि।
पपडिया कत्था—पु० [हिं० पपडी+कत्था] सफेद कत्था। श्वेतसार।
पपड़ियाना—अ० [हिं० पपडी+आना (प्रत्य०)] १ किसी चीज पर पपडी जमना। २. पपडी की तरह सूखकर कडा हो जाना।
स० ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज सूखकर पपडी के रूप मे हो जाय।
पपड़ी—स्त्री० [हिं० पपडा] १ प्राय किसी गीली वस्तु के सूखने पर उसकी ऊपरी परत की वह स्थिति जब वह सूखकर कुछ चिटक, सिकुड़ और ऐंठ जाती है। जैसे—होठो पर की पपडी।
क्रि० प्र०—जमना। —पडना।
मुहा०—(किसी चीज का) पपडी छोड़ना=मिट्टी की तह का सूख और सिकुडकर चिटक जाना। पपड़ी पडना। (किसी व्यक्ति का) पपडी छोडना=बहुत सूखकर बिल्कुल दुबला और क्षीण हो जाना।
२. घाव का खुरड।
क्रि० प्र०—जमना। —पडना।
३ मोहन-पपडी या अन्य कोई मिठाई जिसकी तह जमाई गई हो।
४ पापड की तरह का कोई छोटा पकवान। ५. वृक्ष की छाल पर सूखने के कारण बनी दरारें।

पपड़ीला—वि० [हिं० पपड़ी+ईला (प्रत्य०)] जिसमे पपड़ी की तरह की तह या परत हो। पपड़ीदार।

पपनी—स्त्री० [देश०] पलक के बाल। बरौनी।

पपरी—स्त्री० [स० पर्पट] १. एक प्रकार का पौधा, जिसकी जड़ दवा के काम मे आती है। २. दे० 'पपड़ी'।

पपहा—पु० [देश०] १ धान की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा। २ गेहूँ, जौ आदि मे लगनेवाला एक प्रकार का घुन।

पपि—पु० [स०√पा (पीना)+कि, द्वित्व] चन्द्रमा।

पपिहा†—पु०=पपीहा।

पपी—पुं० [स०√पा+ईक्, द्वित्व] १ सूर्य। २. चन्द्रमा।

पपीता—पुं० [मला० पपाया] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे बड़े मीठे लबोतरे फल लगते है। २ उक्त पौधे का फल जो मीठा तथा रेचक होता है।

पपीतिया—पु० [हिं० पपीता] १. एक तरह का पौधा। २. उक्त पौधे का बीज जो प्लेग से रक्षा के लिए किसी अग मे बाँधा जाता है। (इग्नेटियसबीन)

पपीती—स्त्री० [हिं० पपीता] मादा पपीता (पौधा) जिसमे फल नही लगते।

पपीलि—स्त्री०=पिपीलिका (च्यूँटी)।

पपीहरा†—पु०=पपीहा।

पपीहा—पु० [देश०] १ एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी आँखें, चोच तथा टाँगें पीली होती हैं और डैने सिलेटी रग के होते हैं तथा जो वसत और वर्षा मे बहुत ही मधुर स्वर मे 'पी-कहाँ' 'पी-कहाँ' की तरह का शब्द बोलता है। २. सितार के छ' तारो मे से एक जो लोहे का होता है। ३ आल्हा के पिता के घोड़े का नाम। ४. दे० 'पपैया'।

पपु—वि० [स०√पा+कु, द्वित्व] १. पालन करनेवाला। २. रक्षक। स्त्री० दाई। धाय।

पपैया—पु० [अनु०] आम की गुठली को घिसकर बनाई जानेवाली सीटी।

पपोटन—स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसके पत्ते फोड़े पर उसे पकाने के उद्देश्य से बाँधे जाते है।

पपोटा—पु० [स० प्र+पट] पलक। दृगचल।

पपोरना—स० [देश०] अपनी बाहों को हिलाना-डुलाना और उनकी पुष्टता देखना।

पपोलना—अ० [हिं० पोपला] पोपले का चुभलाना।

पप्पील*—स्त्री० [स० पिपीलिका] च्यूँटी।

पबई—स्त्री० [देश०] मैना की जाति की मधुर स्वर मे बोलनेवाली एक चिड़िया।

पबना*—स०=पाना।

पबलिक—स्त्री० [अ० पब्लिक] जन-साधारण। जनता। वि० जन-साधारण-सबधी।

पबारना†—स०=पँवारना (फेंकना)।

पबि*—पु०=पवि (वज्र)।

पब्बय*—पु० [स० पर्वत] १. पहाड़। पर्वत। २ पत्थर। †पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।

पब्बि—पुं०=पवि (वज्र)।

पब्लिक—स्त्री०, वि० [अ०]=पबलिक।

पमरा—स्त्री० [देश०] शल्लुकी नामक सुगधित पदार्थ।

पमाना*—अ० [?] डींग मारना। उदा०—कायर बहुत पमावही बड़क न बोलै सूर।—कबीर।

पमार—पु० [स० पामारि] चकवँड। चक्रमर्दक।

पमूँकना—स० [स० प्र+मुक्त] छोड़ना। त्यागना।

पम्मन—पु० [देश०] बड़े दानोंवाला एक प्रकार का गेहूँ। कठिया गेहूँ।

पय.कंदा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] क्षीरविदारी। भुइँकुम्हड़ा।

पयः पयोष्णी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक प्राचीन नदी।

पयःपुर—पुं० [स० ष० त०] छोटा तालाब। पुष्करिणी।

पयःपेटी—स्त्री० [सं० ष० त०] नारियल।

पयःफेनी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] दुग्धफेनी।

पय (स्)—पुं० [स०√पय् (पीना)+असुन्] १. दूध। दुग्ध। २. जल। पानी। ३. अनाज। अन्न। †पु०=पद।

पयज—वि० [स०] पय या दूध से उत्पन्न अथवा बना हुआ। †स्त्री०=पैज।

पयट्ठ†—स्त्री०=पैठ।

पयद—पु० [स० पयोद] १. बादल। मेघ। २. छाती। स्तन।

पयधि—पु०=पयोधि।

पयना†—वि०, पु०=पैना।

पयनिधि*—पु०=पयोनिधि।

पयपूर—पु० [स० पय] समुद्र। उदा०—तप्यो तपनीय पयपूर ज्यों बहत है।—सेनापति।

पयम्मर†—पुं०=पैगंबर।

पयल्ल†—वि०=पहला। (राज०)

पयश्चय—पु० [स० पयस्-चय, ष० स०] जलाशय।

पयस्य—वि० [सं० पयस्+यत्] १. जल-सबधी। २. दूध-सबधी। पुं० दूध से बनी हुई चीजें। जैसे—घी, दही, मक्खन आदि।

पयस्या—स्त्री० [स० पयस्य+टाप्] १. दुग्धिका या दुधिया नाम की घास। २. अर्क-पुष्पी। क्षीर-काकोली।

पयस्वती—स्त्री० [स० पयस्+मतुप्, वत्व, ङीप्] नदी।

पयस्वल—वि० [स० पयस्+वलच्] १. जलयुक्त। पनीला। २. जिसमे दूध हो। दूध से युक्त। पुं० [स्त्री० पयस्वली] बकरा।

पयस्वान् (स्वत्)—वि० [स० पयस्+मतुप्, वत्व] [स्त्री० पयस्वती] १. जल से युक्त। २ दूध से युक्त।

पयस्विनी—स्त्री० [स० पयस्+विनि+ङीप्] १ ऐसी गौ जो प्रस्तुत समय मे दूध दिया करती हो। दुधारी गाय। २ गाय। गौ। ३. बकरी। ४. नदी। ५ चित्रकूट की एक विशिष्ट नदी। ६ क्षीर-काकोली। ७. दूध-विदारी। ८ दूध-फेनी।

पयस्वी (स्विन्)—वि० [स० पयस्+विनि] [स्त्री० पयस्विनी] १. जिसमे जल हो। २. दूध से युक्त।

पयहारी—पु०[स० पयोहारी] केवल जल या दूध पीकर रहनेवाला साधु।

पया—पु० [देश०] दस सेर अनाज की तौल का एक बरतन। उदा०—अपने यहाँ पया से तौल नही की जाती।—वृन्दावन लाल वर्मा।

पयाण†—पु०=प्रयाण।

पयादा†—वि०, पु०=प्यादा।

पयान—पु०[स० प्रयाण] कही जाने या पहुँचने के लिए यात्रा आरम्भ करना। प्रस्थान। रवानगी।

पयाम—पु०[फा०] सन्देश। सदेसा।

पयामवर—पु०[फा०] सन्देश ले जानेवाला व्यक्ति। सन्देशवाहक।

पयार—पु०=पयाल।

पयाल—पु०[स० पलाल] १. धान, कोदो आदि के सूखे हुए ऐसे डठल जिनमे से दाने झाड लिये गये हो। पुराल। पुआल। पियरा।

मुहा०—पयाल गाहना या झाड़ना=(क) ऐसा श्रम करना जिसका कुछ फल न हो। व्यर्थ मेहनत करना। उदा०—फिरि फिरि कहा पयारहि गाहे।—सूर। (ख) ऐसे व्यक्ति की सेवा करना जिससे कुछ लाभ न हो सकता हो।

२ एक तरह का वृक्ष जिसके फल खट-मीठे होते है। ३. उक्त वृक्ष का फल।

पु०[स० प्रियाल] चिरौजी का पेड।

†वि०=प्यारा।

पयूख†—पु०=पीयूप(अमृत)।

पयोगड़—पु०=पयोगल।

पयोगल—पु०[स० पयस्√गल् (गलना)+क] १. ओला। २ टापू। द्वीप।

पयोग्रह—पु०[स० पयस्√ग्रह् (ग्रहण करना)+अच्] एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

पयोघन—पु [स० पयस्-घन, तृ० त०] ओला।

पयोज—पु०[स० पयस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] कमल।

पयोजन्मा (न्मन्)—पु०[स० पयस्-जन्मन्, ब०स०] १. मेघ। बादल। २. नागरमोथा।

पयोद—पुं०[सं० पयस्√दा (देना)+क] १ बादल। मेघ। २. मुस्तक। मोथा।

पयोदन—पु०[स० पयस्-ओदन] १. दूध मे मिलाया हुआ भात। २. खीर।

पयोदा—स्त्री०[स० पयोद+टाप्] कुमार की अनुचरी एक मातृका।

पयोदानिल—पु०[स०] बरसाती हवा।

पयोदेव—पु०[स० पयस्-देव, ष० त०] वरुण।

पयोधर—पु० [स० पयस्-धर, ष० त०] १. जल धारण करनेवाला—(क) बादल, (ख) तालाव, (ग) समुद्र। २ दूध धारण करनेवाला अर्थात् स्तन। ३. गौ का थन। ४. नारियल। ५ नागरमोथा। ६ कसेरू। ७. आक। मदार। ८ एक प्रकार की ईख। ९ पर्वत। पहाड। १० ऐसा पौधा या वृक्ष जिसके तने, पत्रो आदि से दूध की तरह का सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। ११. दोहा छद का ११वाँ भेद। १२. छप्पय छन्द का २७ वाँ भेद।

पयोधा (धस्)—पु० [स० पयस्√धा (धारण करना)+असुन्] १ जलाधार। २ समुद्र।

पयोधार†—पु०=पयोधर।

पयोधारागृह—पु०[स० पयस्-धारा-गृह, ष० त०] वह स्नानागार जिसमे जल धारा के रूप मे गिरता हो।

पयोधि—पु०[सं० पयस्√धा+कि] समुद्र।

पयोधिक—पु०[स० पयोधि√कै (चमकना)+क] समुद्रफेन।

पयोनिधि—पु०[स० पयस् निधि, ष० त०] समुद्र।

पयोमुख—वि०[स० पयस्-मुख, ब० स०] दुधमुँहा (बच्चा)।

पयोमुच्—पु०[स० पयस्√मुच् (छोडना)+क्विप्] १ बादल। मेघ। २. नागरमोथा।

पयोर—पु०[स० पयस्√रा (दान)+क] खैर का पेड।

पयोराशि—पु०[स० पयस्-राशि, ष० त०] समुद्र।

पयोलता—स्त्री०[स० पयस्-लता, मध्य० स०] दूधविदारी कद।

पयोवाह—पु०[स० पयस्√वह् (ढोना)+अण्] १ मेघ। बादल। २ मोथा।

पयोव्रत—पु०[स० पयस्-व्रत, मध्य० स०] १. मत्स्य पुराण के अनुसार एक प्रकार का व्रत जिसमे एक दिन रात या तीन रात केवल जल पीकर रहना पडता है। २ भागवत के अनुसार कृष्ण का एक व्रत जिसमे बारह दिन दूध पीकर रहने और कृष्ण का स्मरण और पूजन करने का विधान है।

पयोष्णी—स्त्री० [स० पयस्-उष्ण, ब० स०,+ङीप] विंध्य प्रदेश की एक प्राचीन नदी।

पयोष्णी-जाता—स्त्री०[ब० स०] सरस्वती नदी।

पयोहर*—पु०=पयोधर।

परंच—अव्य०[स० द्व० स०] १. और भी। २. तो भी। ३ परतु। लेकिन।

परंज—पु०[स० पर √जि (जीतना)+ड, मुम्] १. तेल पेरने का कोल्हू। २. छुरी आदि का फल। ३ फेन।

परंजन—पु०[स० पर√जन्+अच्, मुम्] (पश्चिमी दिशा के स्वामी) वरुण।

परंजय—वि०[स० पर√जि (जीतना)+अच्, मुम्] शत्रु को जीतनेवाला। पु० वरुण देवता।

परंजा—स्त्री०[स० परज+टाप्] उत्सव आदि मे होनेवाली अस्त्रो, उपकरणो आदि की ध्वनि।

परंतप—वि०[स० पर√तप् (तपना)+णिच्+खच्, मुम्] १. तपस्या द्वारा इद्रियो को वश मे करनेवाला। २.अपने ताप या तेज से शत्रुओ को कष्ट देनेवाला।

प० १. चितामणि। २. तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

परंतु—अव्य०[स० द्व० स०] १ इतना होने पर भी। जैसे—जी तो नही चाहता है परतु जाना पडा। २. इसके विरुद्ध। जैसे—वह गरीब है परतु अभिमानी है।

परदा—पु०[फा० परद=चिडिया] १ एक प्रकार की हवादार नाव जो काश्मीर की झीलो मे चलती है। २ चिडिया। पक्षी।

परंपद—पु०[स० परमपद] १. वैकुठ। २. मोक्ष। ३ उच्च पद।*

परंपर—पुं० [स० परम्परा+अच्] १ एक के पीछे दूसरा चलनेवाला क्रम। चला आता हुआ सिलसिला। अनुक्रम। २. पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि के रूप मे चलनेवाला क्रम या परपरा। ३. वशज। ४. कस्तूरी।

परपरया—अव्य० [स० परम्परा शब्द के तृ० का रूप] परपरा के अनुसार। परपरा से।

परपरा—स्त्री० [स० परम्√पृ (पूर्ण करना)+अच्+टाप्] १. वह व्यवहार जिसमे पुत्र पिता की, वशज पूर्वजो की और नई पीढीवाले पुरानी पीढीवालो की देखा-देखी उनके रीति-रिवाजों का अनुकरण करते है। २. वह रीति-रिवाज जो बडो, पूर्वजो या पुरानी पीढीवालों की देखा-देखी किया जाय। ३. नियम या विधान से भिन्न अथवा अनुल्लिखित वह कार्य जो बहुत दिनो से एक ही रूप मे होता चला आ रहा हो और इसी लिए जो सर्व-मान्य हो। (ट्रैडिशन) ४ सतति। ५. हिंसा।

परंपराक—पु० [स० परम्परा√अक् (कुटिल गति)+घञ्] यज्ञ के लिए पशुओ का वध, जो पहले परपरा से होता आ रहा था।

परंपरागत—वि० [स० परम्परा-आगत, तृ० त०] (कार्य रीति या रिवाज) जो बडो, पूर्वजो या पुरानी पीढीवालो की देखादेखी किया जाय। परपरा से प्राप्त होनेवाला। (ट्रैडिशनल)

परंपरावाद—पु० [स०] वह मत आ सिद्धान्त कि जो चीजें या वातें परपरा से चली आ रही है, वही ठीक या सत्य है; और नई वातें ठीक या सत्य नही हैं। (ट्रैडिशनिलिज्म)

परंपरावादी—वि० [स०] परपरावाद-सबधी। परंपरावाद का।
पु० वह जो परपरावाद का अनुयायी और समर्थक हो।

परंपरित—भू० कृ० [स० परम्परा+इतच्] जो परपरा के रूप मे हो अथवा जो किसी प्रकार की परपरा से युक्त हो। जैसे—परपरित रूपक।

परंपरित-रूपक—पु० [कर्म०स०] साहित्य मे रूपक अलकार का एक भेद जिसमे एक आरोप किसी दूसरे आरोप का कारण वनकर आरोपो की परपरा वनाता है। यह परपरा शब्दो के साधारण अर्थ के द्वारा भी स्थापित हो सकती है, और श्लिष्ट शब्दो के द्वारा भी। साधारण अर्थ के आधार पर स्थित परपरित रूपक का उदाहरण है—वाडव ज्वाला सोती इस प्रणय-सिंधु के तल मे। प्यासी मछली सी आँखे थी विकल रूप के जल मे।—प्रसाद।

परंपरीण—वि० [स० परम्परा+ख–ईन] १ वशक्रम से प्राप्त। २. परपरा-गत।

परःपुंसा—स्त्री० [स०सह सुपा स०,सुट् का आगम] अपने पति से असतुष्ट होने पर, पर-पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री।

परःपुरुष—वि० [स० सहसुपा स०, सुट् का आगम] जो साधारण मनुष्यो से वढकर या श्रेष्ठ हो।

परःशत—वि० [स० सहसुपा स०, सुट् का आगम] सौ से अधिक। शताधिक।

परःश्व (स्)—अव्य० [स० प० त०] परसो।

परई—स्त्री० [स० पार=कटोरा, प्याला] सिकोरे की तरह का मिट्टी का कुछ वडा पात्र।

परक—प्रत्य० [स० समास मे] एक प्रत्यय जो शब्दो के अत मे लगाकर निम्नलिखित अर्थ देता है, (क) पीछे या अत मे लगा हुआ। जैसे—विष्णु-परक नामावली=अर्थात् ऐसी नामावली जिसके अत मे विष्णु या उसका वाचक और कोई शब्द हो। (ख) सबध रखनेवाला। जैसे—अध्यात्म-परक, प्रशसा-परक।

पर—वि० [स०] १ अपने से भिन्न। अन्य। दूसरा। जैसे—पर-देश। २. दूसरे का। पराया। जैसे—पर-पुरुष, पर-स्त्री। ३. किसी के पीछे या वाद मे आने या होनेवाला। जैसे—परवर्ती। ४. इस ओर या सिरे के विपरीत। उस ओर का। जैसे—पर-लोक, पर-पार। ५. वर्तमान से ठीक पहले या ठीक वाद का। जैसे—पर-सर्ग, पर-साल। ६. विरुद्ध पडनेवाला। ७. आगे वढा हुआ। वाकी वचा हुआ। ९. अवशिष्ट।
अव्य० [स० परम] १. उपरान्त। वाद। जैसे—इत. पर। २. परन्तु। लेकिन। जैसे—मैं जाता तो सही पर तुमने मुझे रोक दिया। ३. निरतर। लगातार। जैसे—तीर पर तीर चलाओ, तुम्हे डर किसका है।
प्रत्य० [स०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अन्त मे लगाकर उद्यत, रत, नली लगा हुआ आदि अर्थ सूचित करता है। जैसे—तत्पर, स्वार्थपर, आहारपर।
उप० [हिं०] एक उपसर्ग जो ऊपर या नीचे की कुछ पीढियो का सम्बन्ध बतलानेवाले शब्दो के पहले लगता है। जैसे—पर-दादा, पर-नाना, पर-पोता।
विभ० १. सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। जैसे—इस पर।
विशेष—'ऊपर' और 'पर' का अतर जानने के लिए देखें 'ऊपर' का विशेष।
२ के वदले मे। जैसे—१०० रु० महीने पर नया नौकर रख लो।
पु० [फा०] १. कीडे-मकोडो, पक्षियो आदि के दोनो ओर के वे अग जिनकी सहायता से हवा मे उडते है। डैना। पख। जैसे—कवूतर के पर, मक्खी के पर।
मुहा०—पर जमना=किसी मे कोई नई आनष्टकारक वृत्ति उत्पन्न होना। जैसे—तुम्हे भी पर जमने लगे है, तुम आवारा लडको के साथ घूमने लगे हो। पर न मार सकना=किसी जगह या किसी के पास न आ सकना। जैसे—वहाँ फरिश्ते भी पर नही मार सकते थे। वे-पर की उड़ाना=विलकुल वेसिर-पैर की और मन-गढन्त वात कहना।
२ वे विशिष्ट उपाग जो ऐसे लम्वे सींके के रूप मे होते है जिसके दोनो ओर आपस मे जुडे हुए वहुत से वाल होते है। जैसे—मोर या सुरखाव का पर।

पर-कटा—वि० [फा० पर+हिं० कटना] [स्त्री० पर-कटी] १ (पक्षी) जिसके पर काट दिये गये हो। जैसे—पर-कटा सुग्गा। २. लाक्षणिक अर्थ मे, (ऐसा व्यक्ति) जिससे अधिकार छीन लिये गये हो या जिसकी शक्ति नष्ट कर दी गई हो।

परकना—अ० [?] न रह जाना या दूर हो जाना। उदा०—ढोग जात्यो ढरकि परकि उर सोग जात्यो जोग जात्यो सरकि सकप कखियान तै।—रत्नाकर।
अ०=परचना।

परकलत्र—पु० [स० प० त०] दूसरे व्यक्ति की विवाहिता स्त्री। पर-स्त्री।

परकसना—अ० [हिं० परकासना] १ प्रकाशित होना। जगमगाना। २ प्रकट या जाहिर होना।

पर-काजी—वि० [हिं० पर+काज] १ जो दूसरो का काम करता रहता हो। २. परोपकारी।

परकान—पु० [हिं० पर+कान] तोप का वह भाग जहाँ वत्ती दी जाती है (लश०)

परकाना—स० [हिं० परकाना] किसी को परकने मे प्रवृत्त करना। परचाना।

परकाय-प्रवेश—पु० [स० परकाय, प०त०, परकाय प्रवेश, स०त०] अपनी आत्मा को दूसरे के शरीर मे प्रविष्ट करने की क्रिया जो योग की एक सिद्धि मानी जाती है।

परकार—पु० [फा०] वृत्त या गोलाई वनाने का एक प्रसिद्ध औजार जो पिछले सिरो पर परस्पर जुडी हुई दो शलाकाओं के रूप मे होता है। इसकी एक शलाका केन्द्र मे रखकर दूसरी शलाका चारो ओर घुमाने से पूर्ण वृत्त वन जाता है।

†पु०=प्रकार।

परकारना†—स० [फा० परकार+हिं० ना (प्रत्य०)] परकार से वृत्त वनाना।

†स०=परकाना।

परकाल—पु०=परकार।

परकाला—पु० [स० प्राकार या प्रकोष्ठ] १ सीढी। जीना। २. चौखट। ३ दहलीज।

पु० [फा० परगाल] १. शीशे का टुकडा। २ चिनगारी।

पद—आफत का परकाला=वह जो वडे-वडे विकट काम कर सकता हो।

परकास†—पु०=प्रकाश।

परकासना—स० [स० प्रकाशन] १. प्रकाशित करना। २ प्रकाशमान करना। चमकाना। ३ प्रकट करना। सामने लाना।

अ० १ प्रकाशित होना। २ चमकना। ३ प्रकट होना। सामने आना।

परकिति—स्त्री०=प्रकृति।

परकीकरण—पु० [स० परकीयकरण] किसी चीज को परकीय वनाने की क्रिया। (असिद्ध रूप)

परकीय—वि० [स० पर+छ–ईय, कुक्–आगम] [स्त्री० परकीया] १. जिसका सवध दूसरे से हो। २. दूसरे का। पराया।

परकीया—स्त्री० [स० परकीय+टाप्] साहित्य मे, वह नायिका जो पर-पुरुष से प्रेम करती और अपने पति की अवहेलना करती हो।

परकीरति†—स्त्री०=प्रकृति।

पर-कृति—स्त्री० [स० प०त०] १. दूसरे की कृति। दूसरे का किया हुआ काम। २. दूसरे के काम या वृत्ति का वर्णन। ३. कर्मकाड मे दो परस्पर विरुद्ध वाक्यो की स्थिति।

†स्त्री०=प्रकृति।

परकोटा—पु० [स० परकोटि] १. किसी गढ या स्थान की रक्षा के लिए चारो ओर उठाई हुई ऊँची और वडी दीवार। कोट। २ किसी प्रकार की वहुत ऊँची और वडी चहारदीवारी। ३. पानी की वाढ रोकने के लिए वनाया हुआ वाँध।

परकोसला†—पु०=ढकोसला (अन-मिल कविता)।

पर-क्षेत्र—पु० [स० प०त०] १ पराया खेत। २. पराया शरीर। ३. पराई स्त्री।

परख—स्त्री० [हिं० परखना] १. परखने की क्रिया या भाव। २ गुण-दोप, भलाई-वुराई, आदि परखने की क्रिया या भाव। ३. वह दृष्टि या मानसिक शक्ति जिससे आदमी गुण-दोप, भलाई-वुराई आदि पहचानने और समझने मे समर्थ होता है। ठीक-ठीक पता लगाने या वस्तु-स्थिति जानने की योग्यता या सामर्थ्य।

परखचा—पु० [?] टुकडा। खड।

मुहा०—परखचे उड़ाना=टुकडा-टुकडा कर देना। छिन्न-भिन्न करना।

परखना—स० [स० परीक्षण, प्रा० परीक्खण] १ ठोक-वजाकर तथा अन्य परीक्षणो द्वारा किसी चीज का गुण, दोप, महत्त्व, मान आदि जानना। २. अच्छे वुरे की पहचान करना। ३. कार्य-व्यवहार आदि देखकर समझना कि यह क्या अथवा कैसा है।

सयो० क्रि०—लेना।

अ० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना। उदा०—जेवत परखि लियौ नहिं हम कौ तुम अति करी चँडाई।—सूर।

परखनी†—स्त्री०=परखी।

परखवाना—स०=परखाना।

परखवैया—पु० [हिं० परख+वैया (प्रत्य०)] १ परखनेवाला व्यक्ति। २. दे० 'परखैया'।

परखाई—स्त्री० [हिं० परख] १. परखने की क्रिया या भाव। परखाव। २ परखने की मजदूरी या पारिश्रमिक।

परखाना—स० [हिं० 'परखना' का प्रे०] १. परखने का काम दूसरे से कराना। जाँच या परीक्षा करवाना। २ कोई चीज देने के समय अच्छी तरह ध्यान दिलाते हुए उसकी पहचान कराना। सहेजना।

परखी—स्त्री० [हिं० परखना] लोहे का एक तरह का नुकीला लवोतरा उपकरण जिसकी सहायता से अन्न के वद वोरो मे से नमूने के तौर पर उसके कण या वीज निकाले जाते है।

पु० दे० 'पारखी'।

परखुरी†—स्त्री०=पखडी।

परखैया—पु० [स०] परखने या जाँचनेवाला व्यक्ति।

परग—पु० [स० पदक] पग। डग। कदम।

परगट—वि०=प्रकट।

परगटना—अ० [हिं० प्रकट] प्रकट या जाहिर होना।

स० प्रकट या जाहिर करना।

पर-गत—वि० [स० द्वि० त०] १ दूसरे या पराये मे गया या मिला हुआ अथवा उससे सवध रखनेवाला। २ दे० 'वस्तुनिष्ठ'।

†स्त्री० [स० प्रकृति] मनुष्य की प्रकृति और स्वभाव।

मुहा०—पर-गत मिलना=प्रकृति या स्वभाव अनकूल होने के कारण मेल-जोल होना। जैसे—उससे उनकी खूव पर-गत मिली।

परगन†—पु०=परगना।

परगना—पु० [फा० मि० स० परिगण=घर] किसी जिले का वह भू-भाग जिसके अतर्गत वहुत से ग्राम हो।

परगनी—स्त्री०=परगहनी।

परगसना†—अ० [सं० प्रकाशन] प्रकाशित होना। प्रकट होना।

परगह—पु०=पगहा (पघा)।

परगहनी—स्त्री० [सं० प्रग्रहण] सुनारों का नली के आकार का एक औजार जिसमें करछी की-सी डाँड़ी लगी होती है। परगनी।

परगहा†—पु० [सं० प्रग्रहण] वास्तु-कला में एक प्रकार का अलंकरण या साज जो खंभों पर बनाया जाता है।

परगाछा—पु० [हिं० पर+गाछा=पेड़] १. एक प्रकार की परजीवी वनस्पति जो प्रायः गरम देशों में दूसरे पेड़ों पर उग आती है और उन्हीं पेड़ों के रस से अपना पोषण करती है। बदाक। बाँदा। २. परजीवी पौधों का वर्ग।

परगाछी—स्त्री० [हिं० परगाछा] अमरबेल। आकाशबौर।

परगाढ़†—वि०=प्रगाढ़।

परगास†—पु०=प्रकाश।

परगासना†—अ० [हिं० परगसना] प्रकाशित होना।
स० प्रकाशित करना।

पर-गुण—वि० [सं० ब०स०] जो दूसरों के लिए हितकर हो।

पर-ग्रंथि—स्त्री० [सं० ब०स०] (उँगली की) पोर।

परघट†—वि०=प्रकट।

परघनी†—स्त्री०=परगहनी।

परचंड†—वि०=प्रचंड।

परचई†—स्त्री० [सं० परिचय] १. परिचय। २. ऐसी पुस्तक जो किसी विषय का सामान्य ज्ञान कराती हो। ३. परिचय-पत्र।

पर-चक—स्त्री० [?] हलकी मारपीट या धौल-धप्पड़। जैसे—आज उन्होंने नौकर की अच्छी परचक की।
क्रि० प्र०—लेना।

पर-चक्र—पुं० [सं० ष०त०] १. शत्रुओं का दल या वर्ग। २. शत्रु-दल का क्षेत्र। ३. शत्रु की सेना और उसके द्वारा होनेवाला आक्रमण या उपद्रव।

परचत†—स्त्री०]=परिचय।

परचना—अ० [सं० परिचयन] १. किसी से इतना अधिक परिचित होना या हिल-मिल जाना कि उससे व्यवहार करने में कोई संकोच या खटका न रहे। जैसे—यह कुत्ता अभी घर के लोगों से परचा नहीं है।
मुहा०—मन परचना=मन का इस प्रकार किसी ओर प्रवृत्त होना कि उसे दुःख, शोक आदि का ध्यान न आये।
२. जो बात एक या अनेक बार अपने अनुकूल हो चुकी हो; जिसमें कोई बाधा या रोक-टोक न हुई हो, उसकी ओर फिर किसी आशा से उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—दो-तीन बार इस भिखमंगे को यहाँ से रोटी मिल चुकी है, अतः यह यहाँ आने के लिए परच गया है।
संयो० क्रि०—जाना।
†अ० १=सुलगना (आग का)। २. =जलाना (दीपक आदि का)।

परचर—पु० [देश०] बैलों की एक जाति जो अवध के खीरी जिले के आस-पास पाई जाती है।

पुं० [फा० पर्चः] १. कागज का टुकड़ा। चिट। २. कागज के पर लिखी हुई छोटी चिट्ठी या सूचना।
मुहा०—(किसी बड़े की सेवा में) परचा गुजरना=निवेदन-पत्र या सूचना-पत्र उपस्थित किया जाना।
३. विद्यार्थियों की परीक्षा में आनेवाला प्रश्न-पत्र। जैसे—हिंदी का परचा बिगड़ गया है। ४ अखबार। समाचार-पत्र। ५. कोई ऐसा सूचना-पत्र जो छापकर या लिखकर लोगों में बाँटा जाता हो। (हैंड-बिल)
†पु० [सं० परिचय] १. जानकारी। परिचय।
मुहा०—परचा देना=ऐसा लक्षण या चिह्न बताना जिससे लोग जान जायँ। नाम-धाम बताना। परचा माँगना=किसी देवी-देवता से अपना प्रभाव या शक्ति दिखाने के लिए आग्रहपूर्ण प्रार्थना करना।
२. प्रमाण। सबूत। ३. जाँच। परख। ४. सूफी संप्रदाय में, किसी बात का निश्चित प्रत्यय या पहचान। प्रत्यभिज्ञान। उदा०—साईं के परचै बिना अंतर रह गई रेख।—कबीर।
पु० [फा० पर्चः] जगन्नाथजी के मंदिर का वह प्रधान पुजारी जो मंदिर की आमदनी और खर्च का प्रबंध करता और पूजा-सेवा आदि की देख-रेख करता है।

परचाना—स० [हिं० परचना का स०] १. किसी को परचने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई परच जाय। २. किसी से हेल-मेल बढ़ाकर या लोभ दिखाकर उससे घनिष्ठता स्थापित करना। उसके मन का खटका या भय दूर करना। जैसे—किसी को दो-चार बार कुछ खिला या देकर परचाना।
संयो० क्रि०—लेना।
स० १.=जलाना। २.=सुलगाना।

परचार†—पुं०=प्रचार।

परचारना—पु०=प्रचारना।

परची—स्त्री० [हिं० परचा] १. कागज का छोटा टुकड़ा। छोटा परचा। २. कागज का ऐसा छोटा टुकड़ा जिसमें कोई सूचना या ज्ञातव्य बात लिखी गई हो।

परचून—पु० [सं० पर=अन्य,+चूर्ण=आटा] आटा, चावल, दाल, नमक, मसाला आदि भोजन का फुटकर सामान। जैसे—परचून की दूकान।
वि०, पुं० दे० 'फुटकर'।

परचूनिया—वि० [हिं० परचून] परचून-संबंधी।
पु०=परचूनी।

परचूनी—पु० [हिं० परचून] आटा, दाल, नमक आदि बेचनेवाला बनिया। मोदी।
स्त्री० परचून बेचने का काम या रोजगार।

परचै†—पु०=परिचय।

परच्छंद—वि० [ब० स०] जो दूसरे के छंद अर्थात् शासन में हो। परतंत्र।

परछती—स्त्री० [सं० परि=अधिक, ऊपर+हिं० छत=पटाव] १. कमरे में सामान आदि रखने के लिए, छत के नीचे छाई हुई छोटी पाटन या टाँड़। मियानी। २. वह हलका छप्पर जो दीवारों पर यों ही अटका, बाँध या रख दिया जाता है। फूस आदि की छाजन।

परछन—स्त्री० [सं० परि+अर्चन] द्वार पर वर के पहुँचने पर होनेवाली

एक रीति जिसमे स्त्रियाँ दही और अक्षत का टीका लगातीं, उसकी आरती करती तथा उसके ऊपर से मूसल, वट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना—स० [हिं० परछन] द्वार पर बरात लगने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियो का वर की आरती आदि करना। परछन करना।

परछाँवाँ—पुं० [स० प्रतिच्छाय] १. छाया। परछाईं। २. किसी व्यक्ति की पड़नेवाली ऐसी छाया या परछाईं जो कुछ स्त्रियो की दृष्टि मे अनिष्टकर या अशुभ होती है।

मुहा०—(किसी का) परछाँवाँ पड़ना=उक्त प्रकार की छाया के कारण कोई बुरा प्रभाव पडना।

३. किसी व्यक्ति की ऐसी छाया या परछाईं जो स्त्रियो के विश्वास के अनुसार गर्भवती स्त्री पर पडने से गर्भ के शिशु को उस पुरुष के अनुरूप आकार-प्रकार, स्वभाव आदि बनानेवाली मानी जाती है।

परछाँही—स्त्री०=परछाईं।

परछा—पु० [स० प्रणिच्छद] १. वह कपडा जिससे तेली कोल्हू के बैल की आँखो मे अँधोटी बाँधते हैं। २. जुलाहो की वह नली या फिरकी जिस पर बाने का सूत लपेटा रहता है। घिरनी।

पु० [स० परिच्छेद] १. बहुत सी घनी वस्तुओ के घने समूह मे से कुछ के निकल जाने से पडा हुआ अवकाश। विरलता। २. मनुष्यो की वह विरलता जो किसी स्थान की भीड छँट जाने पर होती है। ३. अत। समाप्ति। ४. निपटारा। ५. निर्माण।

पु० [?] [स्त्री० अल्पा० परछी] १. बडी बटलोई। देगची। २ कडाही। ३ मँझोले आकार का मिट्टी का एक बरतन।

परछाईं—स्त्री० [स० प्रतिच्छाया] १. प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर अथवा पीछे की ओर प्रकाश होने पर आगे की ओर बननेवाली किसी वस्तु की छायामय आकृति।

मुहा०—(किसी की) परछाईं से डरना या भागना=किसी से इतना अधिक डरना कि उसके सामने जाने की हिम्मत न पड़े।

२ दे० 'परछावाँ'।

क्रि० प्र०—पडना।

३. दे० 'प्रतिबिंब'।

परछ्याँ—स्त्री०=परीक्षा।

परजंक*—पु०= पर्यंक।

परज—वि० [स० पर√जन् (उत्पत्ति)+ड] दूसरे या पराये से उत्पन्न। परजात।

पु० कोकिल। कोयल।

पु० [स० पराजिका] ओड़व-सपूर्ण या पाडव-सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के अतिम पहर मे गाया जाता है।

परजन—पु०=परिजन।

परजन्म (न्)—पु० [स० कर्म०स०] [वि० पारजन्मिक] इस जीवन के बाद होनेवाला दूसरा जन्म।

परजन्य—पु०=पर्जन्य।

परजरना†—अ० [स० प्रज्वलन] १ प्रज्वलित होना। जलना। दहकना। सुलगना। २ बहुत क्रुद्ध होना। बिगडना। ३ मन ही मन कुढना या जलना।

स० १. प्रज्वलित करना। दहकाना। सुलगाना। २. क्रुद्ध करना। ३. सतप्त करना। जलाना।

परजलना—अ० [स० प्रज्वलन] जलना।

परजवट†—पु०=परजौट।

परजा†—स्त्री० [स० प्रजा] १. प्रजा। रैयत। २. देहातो मे गृहस्थो के अनेक प्रकार के काम तथा सेवाएँ करनेवाले लोग। जैसे—कुम्हार, चमार, धोबी, नाई आदि। ३ ब्रिटिश शासन के समय, वे खेतिहर जो जमीदार की जमीन लगान पर लेकर खेती-बारी करते थे। असामी। काश्तकार।

परजात—वि० [प० त०] दूसरे से उत्पन्न।

पु० कोयल।

पुं० [स० पर+जाति] दूसरी या भिन्न जाति का व्यक्ति। दूसरी बिरादरी का आदमी।

वि० दूसरी जाति से सबध रखनेवाला।

परजाता—पु० [सं० परिजात] १ मझोले आकार का एक पेड जिसमे शरद् ऋतु मे छोटे-छोटे सुगधित फूल लगते है। हर-सिंगार। २. उक्त पेड़ का फूल।

पर-जाति—स्त्री० [कर्म० स०] दूसरी जाति।

परजाय—पु०=पर्याय।

परजित—वि० [तृ० त०] १ दूसरे के द्वारा पाला-पोसा हुआ। २. जिसे किसी ने जीत लिया हो। विजित।

पुं० कोयल।

परजीवी (विन्)—वि० [स० पर√जीव् (जीना)+णिनि] जिसका जीवित रहना दूसरो पर अवलबित हो। दूसरो पर आश्रित रहनेवाला।

पु० वे वनस्पतियाँ या कीडे-मकोड़े जो दूसरे वृक्षो या जीव-जतुओ के शरीर पर रहकर और उनका रस या खून चूसकर जीते तथा पलते हैं। (पैराजाइट)

परजौट—पु० [हिं० परजा (प्रजा) +औट (प्रत्य०)] घर आदि बनाने के निमित्त किसी से वार्षिक कर या देन पर जमीन लेने की प्रथा या रीति।

परजौटी—वि० [हिं० परजौट] १. परजौट-सबधी। २. जो परजौट पर दिया या लिया गया हो। जैसे—परजौटी जमीन।

परज्वलना*—अ० [स० प्रज्वलन] प्रज्वलित होना।

परट्ठना*—स०=पठाना (भेजना)।

परठना—स० [स० प्र+स्था] १ स्थापित करना। उदा०—परठि द्रविड सोखण सर पच।—प्रिथीराज। २ दे० 'पाना'।

परठित—भू० कृ० [स० प्र+स्थित] १ प्रतिष्ठित। २ सुशोभित।

परणना—स० [स० परिणयन] व्याह करना। विवाह करना। उदा०—पर दल पिण जीवि पदमणी परणे।—प्रिथीराज।

अ० विवाहित होना। व्याहा जाना।

परणाना†—स० =परणना।

परणी—स्त्री० [स० परिणीता] वह स्त्री जिसका परिणय या विवाह हो चुका हो।

परतंगण—पु० [स०] एक प्राचीन देश। (महाभारत)

परतंगा†—स्त्री० [स० प्रतिज्ञा] १. प्रसिद्धि। २. प्रतिष्ठा। मान। ३ पातिव्रत्य। सतीत्व।

परतचा*—स्त्री०=प्रत्यचा (धनुप की डोरी)।
परतंत्र—वि० [व० स०] १. जो दूसरे के तत्र या शासन मे हो। २. पराधीन। परवश।
पु० १. उत्तम शास्त्र। २ उत्तम वस्त्र।
परतः (तस्)—अव्य० [स० पर+तस्]१. दूसरे से। अन्य से। २. पीछे। बाद मे। ३. आगे। परे। ४. पहले या मुख्य के बाद। दूसरे स्थान पर। (सेकन्डरिली)
परतः प्रमाण—पु० [व० स०] जो स्वत: प्रमाण न हो, बल्कि दूसरे प्रमाणो के आधार पर ही प्रमाण के रूप मे दिखाया या माना जा सके।
परत—स्त्री० [स० परिवर्त्त=दोहराया जाना]१. किसी प्रकार के तल या स्तर का ऐसा विस्तार जो किसी दूसरी चीज के तल या स्तर पर कुछ मोटे रूप मे चढा, पडा या फैला हुआ हो। तह। जैसे—सफाई न होने के कारण पुस्तकों पर धूल की एक परत चढ चुकी थी।
क्रि० प्र०—चढना। —पड़ना।
२. किसी लचीली वस्तु को दोहरा, चौहरा आदि करने पर, उसके बनने-वाले खडो या विभागो मे से हर-एक।
क्रि० प्र०—लगाना।
३. ऐसा कोई तल या विस्तार जो उसी तरह के कोई और तलो या विस्तारो के ऊपर या नीचे फैला हुआ हो। जैसे—(क) हर युग मे बालू, मिट्टी आदि की एक नई परत चढते-चढते कुछ दिनो मे ऊँची चट्टानें बन जाती है। (ख) खानो मे से कोयले की एक परत निकाल लेने पर उसके नीचे दूसरी परत निकल आती है।
स्त्री० [हिं० परतना] परतने की क्रिया या भाव।
परतख*—वि०=प्रत्यक्ष।
परतच्छ*—वि०=प्रत्यक्ष।
परतछ्छ—वि०=प्रत्यक्ष।
परतना—अ० [स० परावर्तन] १ कही जाकर वहाँ से वापस आना। लौटना। २. पीछे की ओर घूमना। जैसे—परतकर देखना।
मुहा०—परतकर कोई काम न करना=भूल कर भी कोई काम न करना। उदा०—मोती मानिक परत न पहरूँ।—मीराँ।
३ किसी ओर घूमना। मुडना। जैसे—दाहिनी ओर परत जाना। ४. उलटना।
स० [हिं० परत] परत के रूप मे करना, रखना या लगाना।
परतर—वि० [स० पर-तरप्] [भाव० परतरता] क्रम के विचार से जो ठीक किसी के बाद हुआ हो।
परतरा—वि०=परतर।
परतल—पु० [स० पट=वस्त्र+तल=नीचे] घोडे की पीठ पर रखा जानेवाला वह बोरा जिसमे सामान भरा या लादा जाता है। गून।
परतला—पु० [स० परितन=चारो ओर खीचा हुआ] कपडे या चमडे की वह चौडी पट्टी जो कधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है तथा जिसमें तलवार लटकाई जाती है।
परतवि*—वि०=प्रत्यक्ष।
परता†—पु०=पडता।
परताजना—पु० [देश०] सुनारो का एक औजार जिससे वे गहनो पर मछली के सेहरे की तरह की नक्काशी करते है।

परताना—स० [हिं० परतना] १. वापस भेजना। लौटाना। २. २. घुमाना। मोडना।
परताप†—पु०=प्रताप।
परतारना†—स० [स० प्रतारण] ठगना।
स्त्री०=प्रतारणा।
परताल†—स्त्री०=पड़ताल।
परतिचा†—स्त्री०=प्रत्यंचा (धनुप की डोरी)।
परतिज्ञा†—स्त्री०=प्रतिज्ञा।
परती—स्त्री० [?] वह चादर जिससे हवा करके अनाज के दानो का भूसा उडाते हैं।
मुहा०—परती लेना=चादर से हवा करके भूसा उड़ाना। बरसाना। ओसाना।
† स्त्री०=पडती (भूमि)।
परतीछा*—स्त्री०=प्रतीक्षा।
परतीति—स्त्री०=प्रतीति।
परतेजना*—स० [स० परित्यजन] परित्याग करना। छोडना।
परतेला—वि० [हिं० पडना] उबाले हुए रग का घोल। (रगरेज)
परतो—पु० [फा०] १. प्रकाश। रोशनी। २. किरण। रश्मि। ३ किसी पदार्थ या व्यक्ति की पडनेवाली छाया। परछाई। ४. प्रतिच्छाया। प्रतिबिम्ब।
परतोली—स्त्री० [सं० प्रतोली] गली।
परत्त—अव्य० [स० पर+त्रल्] १. अन्य या भिन्न स्थान पर दूसरी जगह। २. परकाल मे। दूसरे समय। ३ परलोक मे। मरने पर।
परत्र-भीरु—वि० [स० स० त०] जिसे परलोक का भय हो।
परत्व—पु० [स० पर+त्व] १. पर अर्थात् अन्य या गैर होने का भाव। २. पहले या पूर्व मे होने का भाव।
परथन—स्त्री० दे०='पलेथन'।
परथाव†—पु०=प्रस्ताव। (पूरब) उदा०—की दहु हो इति एहि परथाव।—विद्यापति।
परद†—पु०=परद (पारा)।
परदच्छिना†—स्त्री०=प्रदक्षिणा।
परदा—पु० [फा० पर्द.] १. कोई ऐसा कपडा या इसी तरह की और चीज जो आड़ या बचाव करने के लिए बीच मे फैलाकर टाँगी या लटकायी जाय। पट। (कर्टेन) जैसे—खिडकी या दरवाजे का परदा।
क्रि० प्र०—उठाना। —खोलना। —डालना। —हटाना।
पद—ढका परदा=ऐसी स्थिति जिसमे अन्दर की त्रुटियाँ, दोप आदि बाहरवालो की जानकारी या दृष्टि से बचे रहे। ढके परदे=बिना औरो पर भेद प्रकट हुए।
मुहा०—(किसी का) परदा खोलना=किसी की छिपी बात, भेद या रहस्य प्रकट करना। परदा डालना=ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि दोप या भेद औरो पर प्रकट न होने पावे। (किसी चीज पर) परदा पडना=ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि औरो की दृष्टि न पड सके। (किसी का) परदा रहना=(क) प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा बनी रहना। (ख) भेद या रहस्य छिपा रहना।

२. अभिनय, खेल-तमाशों आदि मे, वह लवा-चौड़ा कपड़ा जो दर्शकों के सामने लटका रहता और जिस पर या तो कुछ दृश्य अकित होते है या प्रतिविवित होते है। यवनिका। पट। (कर्टेन) जैसे—रग-मच का परदा, चल-चित्र या सिनेमा का परदा। ३ वीच मे पड़कर आड़ खड़ा करनेवाली कोई चीज या वात। ओट। व्यवधान। ४. कोई ऐसी चीज या वात जो गति, दृष्टि आदि के मार्ग मे वाधक हो। जैसे—उस समय हमारी वुद्धि पर न जाने कैसा परदा पड़ गया था कि मैंने तुम्हारी वात नही मानी। ५. मुसलमानो और उनकी देखा-देखी हिंदुओ मे भी प्रचलित वह प्रथा जिसके अनुसार भले घर की स्त्रियाँ आड मे रहती हैं और पर-पुरुषो के सामने नही होती।

पद—परदा-नशीन। (दे०)

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

मुहा०—परदा लगाना=स्त्रियो का ऐसी स्थिति मे आना या होना कि पर-पुरुषो की दृष्टि उन पर न पड सके। जैसे—जब से वह व्याही गई है, तब से हमसे भी परदा करने लगी है। **परदे में वैठना**=किसी स्त्री का पर-पुरुषों की दृष्टि से ओझल होकर घर के अन्दर रहना। जैसे—पहले तो वह वेश्या थी पर वाद मे एक नवाव के यहाँ परदे मे वैठ गई। **परदे में रहना**=घर के अन्दर सव लोगों की दृष्टि से वचकर रहना।

६ मकान आदि की कोई दीवार। जैसे—इस मकान का पूरववाला परदा वहुत कमजोर है या गिरने को है। ७ किसी प्रकार का तल। या परत। तह। जैसे—(क) आसमान के सात परदे कहे गये है। (ख) मैंने दुनिया के परदे पर ऐसी वात नही देखी। ८ शरीर के किसी अग की कोई ऐसी झिल्ली या परत जो किसी तरह की आड़ या व्यवधान करती हो। जैसे—आँख का परदा, कान का परदा। ९ अँगरखे कोट, शेरवानी आदि की वह परत जो आगे की ओर और छाती पर रहती है। १० वीन, सितार, हारमोनियम आदि वाजो मे स्वरो के विभाजक स्थानों की सूचक किसी प्रकार की रचना। ११. फारसी सगीत मे वारह प्रकार के रागो मे से हर राग। १२ नाव की पतवार।

परदाख्त—स्त्री० [फ़ा० पर्दाख्त] १ देख-भाल। २. सरक्षण। ३. पालन-पोषण।

परदाज—पु० [फ़ा० पर्दाज] १. शौर्य। वीरता। २ ढंग। तरीका ३ सजावट। ४. कामो मे लगे रहने का भाव। ५. चित्र मे अकित की जानेवाली महीन रेखाएँ।

पर-दादा—पु० [हिं० पर+ दादा] [स्त्री० परदादी] सवधी के विचार से पिता का दादा।

परदा-दार—वि०=परदेदार।

परदा-नशीन—वि० स्त्री० [फ़ा० पर्दनशीं] १. (स्त्री) जो वडो तथा पर-पुरुषो से परदा करती हो। २ लाक्षणिक अर्थ मे, जो घर मे ही रहे, वाहर न निकले।

परदापोश—वि० [फ़ा० पर्दपोश] [भाव० परदापोशी] दूसरो के अव-गुणों, दोषो आदि को छिपानेवाला।

परदा-प्रथा—स्त्री० [हिं०+स०] कुछ एशियाई देशों और समाजों मे प्रचलित वह प्रथा जिसके अनुसार स्त्रियो को घर के अन्दर, परदे मे रखा जाता है और पर-पुरुषों के सामने नही होने दिया जाता।

परदुम्न*—पु०=प्रद्युम्न।

परदेदार—वि०[हिं० परदा+फ़ा० दार] १ जिसके आगे, जिसमे या जिसपर किसी प्रकार का परदा लगा हो। जैसे—परदेदार एक्का या वहली। २. जो घर के अन्दर परदे मे रहती हो, और पर-पुरुषों के सामने न होती हो।

परदेदारी—स्त्री०[फ़ा० पर्द:दारी] १. परदेदार होने की अवस्था या भाव। २. स्त्रियो के घर के अन्दर रहने और पर-पुरुषो के सामने न आने की अवस्था या भाव। ३. वह स्थिति जिसमे किसी से कोई वात छिपाई जाती हो। उदा०—कुछ तो है जिसकी परदेदारी है।—कोई शायर।

परदेश—पुं० [प० त०] १. अपने देश से भिन्न दूसरा देश। २. वह देश जहाँ कोई व्यक्ति अपना देश छोड़कर आया हो। विदेश।

परदेशी (शिन्)—वि०[सं० परदेश+इनि] परदेश-सवधी।

पु० वह व्यक्ति जो अपना देश छोड़कर किसी दूसरे देश मे आया या रहता हो।

परदेस—पु०=परदेश।

परदेसिया—पु०[हिं० परदेसी] पूरव मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जिनमे परदेस गये हुए पति के सवध मे उसकी प्रियतमा के उद्गारो का उल्लेख होता है और जिनके प्रत्येक चरण के अत मे 'परदेसिया' शब्द होता है। (विदेसिया के अनुकरण पर) जैसे—घरी राति गइसी पहर राति गइसी, ते दुअरा करेला ठाढ मोर परदेसिया।

परदेसी—वि०, पु०=परदेशी।

परदोस*—पु०=प्रदोष।

परद्दा—पु०=परदा।

परधान—वि०=प्रधान।

पु०=परिधान।

पर-धाम—पु० [कर्म० स०] १ परलोक। वैकुंठ-धाम। २. ईश्वर।

परन—पु०[स० पर्ण?] मृदग आदि वाजो को वजाते समय मुख्य वोलो के वीच-वीच मे वजाये जानेवाले वोलो के खड।

†पुं०=प्रण (प्रतिज्ञा)।

*पु०=पर्ण।

*स्त्री०=परनि (आदत)।

परना—पु०[स० उपरना] अँगोछा। गमछा।

*अ०=पड़ना।

पर-नाद—पु०[कर्म० स०] वेदात मे, नाद का दूसरा नाम।

पर-नाना—पु० [हिं० पर+नाना] [स्त्री० पर-नानी] नाना का पिता।

पर-नाती—पु०[हिं० पर+नाती] [स्त्री० पर-नातिनी] नाती का लडका।

परनाम†—पु० = प्रणाम।

परनाल—पु० [स्त्री० अल्पा० परनाली]=पनाला (वड़ा नाला)।

परनाली—स्त्री० [?] अच्छे घोडो की पीठ के मध्य भाग का (पुट्ठों और कधो की अपेक्षा) नीचापन जो उनके तेज और वढिया होने का सूचक होता है।

क्रि० प्र०—पड़ना।

†स्त्री०=प्रणाली।

स्त्री० हिं० 'परनाला' (पनाला) का स्त्री० अल्पा०।

परनि, परनी—स्त्री०[हिं० पडना] पडी हुई आदत। अभ्यास। टेव। वान।

त०] कपडो की कढाई, छपाई मे वह नीचेवाली पहली तह जिसके ऊपर रग के सूतो से अथवा रग से आकृतियाँ बनाकर सौदर्य लाया जाता है। ३ चित्र-कला मे, चित्र की भूमिका या पृष्ठ भाग का दृश्य। (बैक-ग्राउड)

पु०[कर्म० स०] १ पश्चिमी भाग। २ अवशिष्ट या बचा हुआ भाग। ३ उत्तम सपदा। ४ उत्तम या श्रेष्ठ गुण अथवा उसका उत्कर्ष।

परभाग्योपजीवी (विन्)—वि० [स० पर-भाग्य, ष० त०, परभाग्य+उप√जीव् (जीना)+णिनि] दूसरे की कमाई खाकर रहनेवाला।

परभात—पु०=प्रभात।

परभाती—स्त्री०=प्रभाती।

परभारा—वि०[?] [स्त्री० परभारी] १ ऊपरी या बाहरी। २. तटस्थ या पराया (व्यक्ति)।

परभारे—अव्य० [?] १ ठीक मार्ग या साधन छोडकर। २. अलग, दूसरे या बाहरी रास्ते से। (बुदेल०) जैसे—तुम बिना हमसे पूछे परभारे उनसे रुपए माँग लाये, यह तुमने ठीक नही किया।

परभाव—†पु०=प्रभाव।

पर-भुक्त—वि०[स० तृ० त०] [स्त्री० पर-भुक्ता] जिसका भोग कोई और कर चुका हो। दूसरे का भोगा हुआ।

परभुक्ता—स्त्री० [स० परभुक्त+टाप्] ऐसी स्त्री जिसके साथ पहले कोई और समागम कर चुका हो।

पर-भृत—वि०[तृ० त०] जिसका पालन किसी दूसरे ने किया हो। स्त्री० कोयल।

पु० कार्तिकेय।

परम—वि०[स० पर√मा (मान)+क] १ जो किसी क्षेत्र या वर्ग मे सबसे अधिक उन्नत, महत्त्वपूर्ण या योग्य हो। २ किसी दिशा या सीमा मे सबसे आगे बढा हुआ। अत्यत। ३ जिसके हाथ मे कुल या सब अधिकार या शक्तियाँ निहित हो। (एब्सोल्यूट) ४ मुख्य। प्रधान। ५ आरभिक या आदिम।

पु० १. शिव। २ विष्णु।

परम-आज्ञा—स्त्री० [स० कर्म० स०] ऐसी आज्ञा जो अतिम हो और जिसमे किसी प्रकार का परिवर्तन न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट आर्डर)

परमक—वि० [स० परम+कन्] १. सर्वोच्च। सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ। २ चरम सीमा का। परले सिरे का।

परम-गति—स्त्री०[स० कर्म०स०] वह उत्तम गति जो मरने पर सत्पुरुषो को प्राप्त होती है। मोक्ष।

परमजा—स्त्री०[स० परम√जन् (उत्पन्न होना)+ड+टाप्] प्रकृति।

परमट—पु०[देश०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

†पु०=परमिट।

परमटा—पु०[?]एक प्रकार का चिकना रगीन कपडा जो प्राय कोट के अस्तर के काम आता है। पनैला।

परमत—स्त्री०[स० परमता?] १ साख। २. ख्याति। प्रसिद्धि।

परम-तत्त्व—पु० [कर्म० स०] १. दर्शन-शास्त्र और विज्ञान के अनुसार, वह मूलतत्त्व जो सृष्टि की समस्त वस्तुओ का सृष्टिकर्त्ता माना गया है। पदार्थ। २ ब्रह्म।

पर-मतिया—वि० [हिं० पर +मत] जो अपनी समझ से नही बल्कि दूसरो के सिखाने पर सब काम करता हो। दूसरो की मत से चलनेवाला।

पर-मद—पु०[स० ब० स०]बहुत अधिक मद्य पीने से होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर भारी हो जाता है और बहुत अधिक प्यास लगती है।

परम-धाम—पु०[कर्म० स०] वैकुठ। स्वर्ग।

परमन†—पु०=परिमाण।

परमन्न—पु० [स० परम+अन्न] खाने-पीने की बहुत बढिया बढिया चीजे।

परमन्यु—पु०[ब० स०] यदुवशी कक्षेयु के एक पुत्र का नाम।

परम-पद—पु०[स० कर्म स०] १ सबसे श्रेष्ठ पद या स्थान। २ सासारिक बधनो से मिलनेवाला मोक्ष।

परम-पिता—पु०[स० कर्म० स०] ईश्वर। परमेश्वर।

परम-पुरुष—पु०[स० कर्म० स०] १ परमात्मा। २ विष्णु।

परम-फल—पु० [कर्म० स०] १ सबसे उत्तम फल या परिणाम। २ मुक्ति। मोक्ष।

परम-ब्रह्म (न्)—पु०[कर्म० स०]=परब्रह्म।

परम-ब्रह्मचारिणी—स्त्री०[कर्म० स०] दुर्गा।

परम-भट्टारक—पु० [कर्म० स०] [स्त्री० परम भट्टारिका] प्राचीन भारत मे एक-छत्र राजाओ की एक उपाधि।

परम-भट्टारिका—स्त्री०[स० कर्म० स०] प्राचीन भारत मे परम भट्टारक की रानी की उपाधि।

परम-रस—पु०[कर्म० स०] पानी मिला हुआ मट्ठा।

परमर्द्धिदेव—पु०[स० परम-ऋद्धि, ब० स०, परमर्द्धि-देव, कर्म० स०] महोबे के एक चदेलवशी राजा जो परमाल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

परमर्षि—पु०[स० परम-ऋषि, कर्म० स०] वह जो ऋषियो मे परम हो। सर्वश्रेष्ठ ऋषि।

परमल—पु०[स० परिमल=कूटा य मला हुआ] ज्वार या गेहूँ का हरा या भिगोकर भुनाया हुआ चबेना।

†पु०=परिमल।

परमवीर-चक्र—पु०[स० परमवीर, कर्म० स०, परमवीरचक्र, ष० त०] विशिष्ट सैनिक अधिकारियो को असाधारण वीरता प्रदर्शित करने पर भारत सरकार द्वारा प्रदान किया जानेवाला एक अलकरण।

परम-सत्ता—स्त्री०[स० कर्म० स०] वह सत्ता जो सबसे बढकर हो और जिसके ऊपर कोई और सत्ता न हो। (एब्सोल्यूट पावर)

परमसत्ताधारी (रिन्)—पु०[स० परमसत्ता√धृ (धारण)+णिनि] वह जिसे परम सत्ता प्राप्त हो।

परम-हस—पु० [कर्म० स०] १ परमात्मा। परमेश्वर। २. ज्ञान मार्ग मे बहुत आगे बढ़ा हुआ सन्यासी। ३. सन्यासियो का एक भेद जिन्हें दड, शिखा, सूत्र आदि धारण करना आवश्यक नही होता।

परमागना—स्त्री० [स० परमा-अगना, कर्म० स०] अच्छी और सुदरी स्त्री।

परमा—स्त्री०[स० परम+टाप्] बहुत बढी-चढी हुई छवि या शोभा।

†स्त्री०=प्रमा (यथार्थ ज्ञान)।

परमीन—वि०=पराया। (पूरब) उदा०—कर कुटुम्ब सब मेलह परमीन। —मैथिली लोकगीत।

पर-मुख—वि० [ब० स०] १ जिसका मुंह दूसरी ओर या फिरा हुआ हो। विमुख। २ जो उपेक्षा कर रहा हो और ध्यान न दे रहा हो। †वि०=प्रमुख।

पर-मृत्यु—पु० [ब० स०] कौआ, जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि आप से आप नही मरता।

परमेव†=प्रमेह (रोग)।

परमेश—पु० [स० परम-ईश, कर्म० स०] परमेश्वर।

परमेश्वर—पु० [स० परम-ईश्वर, कर्म० स०] १ सगुण ब्रह्म जो सारी सृष्टि का रचयिता और सचालक है। २. विष्णु। ३ शिव।

परमेश्वरी—वि० [स० परमा-ईश्वरी, कर्म० स० ङीप्] परमेश्वर-सबधी। स्त्री० दुर्गा।

परमेष्ट—वि० [स० परम-इष्ट, कर्म० स०] [भाव० परमेष्टि] परम इष्ट।

परमेष्टि—स्त्री० [स० परम-इष्टि, कर्म० स०] १ अतिम अभिलाषा। २ मुक्ति। मोक्ष।

परमेष्ठ—पु० [स० परमे√स्था (ठहरना)+क, अलुक् स०] चतुर्मुख ब्रह्म। प्रजापति। (यजु०)

परमेष्ठिनी—स्त्री० [स० परमेष्ठिन्+ङीप्] १ परमेष्ठी की शक्ति। देवी। २. श्री। ३ वाग्देवी। सरस्वती। ४. ब्राह्मी नाम की वनस्पति।

परमेष्ठी (ष्ठिन्)—पु० [स० परमे√स्था+इनि, अलुक् स०] १. ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २. तत्त्व। भूत। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञ। ४ शालिग्राम की एक विशिष्ट प्रकार की मूर्ति। ५ विराट् पुरुष जो परम-ब्रह्म का एक रूप है। ६ चाक्षुष मनु का एक नाम। ७ गरुड। ८ जैनो के एक जिन देव। परमेसर।

परमेसुर—पु०=परमेश्वर।

परमेसरी—वि०, स्त्री०=परमेश्वरी।

परमोक*—पु० [स० परिमोक्ष]=मोक्ष।

परमोद†—पु०=प्रमोद।

परमोदना†—स०=परमोधना।

परमोधना—स० [स० प्रबोधन] १ प्रबोधन करना। परबोधना। २ मीठी-मीठी बातें करके किसी को अपनी ओर मिलाना।

परयक†—पु०=पर्यक।

परयस्तापह्नुति—स्त्री० दे० 'पर्यस्तापह्नुति'।

परयाग†—पु०=प्रयाग।

पर-राष्ट्र—पु० [स० कर्म० स०] एक राष्ट्र की दृष्टि मे दूसरा राष्ट्र। अपने राष्ट्र से भिन्न दूसरा राष्ट्र। अन्य राष्ट्र।

परराष्ट्र-नीति—स्त्री० [ष० त०] अन्य राष्ट्रो के प्रति किये जानेवाले व्यवहार के समय बरती जानेवाली नीति। (फारेन पालिसी)

परराष्ट्र-मत्रालय—पु० [ष० त०] पर-राष्ट्र मत्री का मत्रालय।

परराष्ट्र-मत्री (त्रिन्)—पु० [स० ष० त०] किसी राष्ट्र के मत्री-मडल का वह सदस्य जिस पर विभिन्न राष्ट्रो से होनेवाले व्यवहारो, सबधो आदि के निर्वाह का भार रहता है। (फारेन मिनिस्टर)

परराष्ट्रीय—वि० [स० परराष्ट्र+छ—ईय] जिसका सबध परराष्ट्र से हो।

पररु—पु० [स०√पृ (पूर्ण करना)+अरु] नीली भँगरैया।

परलउ—पु० [?] पत्थर।

परलय†—स्त्री०=प्रलय।

परला—वि० [स० पर=उधर का, दूसरा+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० परली] १ उधर का या उस ओरवाला। २ बहुत ही बढा-चढा। जैसे—परले सिरे का।

पद—परले सिरे का=अतिम सीमा तक पहुँचा हुआ।

मुहा०—परले पार होना=(क) बहुत दूर तक जाना। (ख) समाप्त होना।

परलै†—स्त्री०=प्रलय।

पर-लोक—पु० [स० कर्म० स०] १ इस लोक से भिन्न दूसरा लोक। २. वह सर्वश्रेष्ठ लोक, जहाँ मृत्यु के उपरान्त पवित्र आत्माएँ निवास करती हैं। (हिंदू)

पद—परलोक-वास=मृत्यु।

मुहा०—परलोक सिधारना=परलोक जाना। स्वर्ग मे जाना।

३ मृत्यु के उपरान्त आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति।

परलोक-गमन—पु० [स० त०] १. परलोक जाना। २ स्वर्ग सिधारना। मरना।

परलोक-प्राप्ति—स्त्री० [ष० त०] परलोक की प्राप्ति अर्थात् मृत्यु।

पर-वचक—वि० [स० ष० त०] [भाव० परवचकता] दूसरो को ठगने या धोखा देनेवाला।

परवर†—पु०=परवल।

†पु०=परवाल (आँख का रोग)।

†पु०=प्रवर।

वि० [फा० पर्वर] परवरिश या पालन-पोषण करनेवाला। जैसे—गरीब परवर।

परवर-दिगार—वि० [फा० पर्वरदिगार] सबका पालन करनेवाला। पु० परमेश्वर।

परवरना†—अ० [स० प्रवर्तन] चलना-फिरना।

परवरिश—स्त्री० [फा० पर्वरिश] पालन-पोषण।

परवर्त्त*—वि०=प्रवर्तित। उदा०—विष्णु की भक्ति परवर्त्त जग में करी।—सूर

परवर्ती (तिन्)—वि० [स० पर √वृत् (रहना) +णिनि] १. काल-क्रम या घटना-क्रम की दृष्टि से बाद मे या पीछे होनेवाला। (लेटर) २ बाद के समय का। (सबसीक्वेन्ट) ३. जो पहले एक बार या एक रूप मे हो चुकने पर बाद मे कुछ और रूप मे हो। (सेकेन्डरी) जैसे—पौधो की परवर्ती वृद्धि।

परवल—पु० [स० पटोल] १. एक प्रसिद्ध लता। २. उक्त लता का फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है। ३ चिचडा जिसके फलो की तरकारी होती है।

पर-वश—वि० [स० ब० स०] [भाव० परवशता] १ जो दूसरे के वश मे हो और इसी लिए जो स्वतत्रतापूर्वक आचरण न कर सकता हो। २. जो दूसरे पर निर्भर करता हो।

पर-वश्य—वि० [ष० त०] [भाव० परवश्यता] =परवश।

परवस्ती†—स्त्री० दे० 'परवरिश'।

परवा†—पु०=पुरवा।

†स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।

स्त्री०=प्रतिपदा (तिथि)।

†स्त्री०=परवाह।

परवाई†—स्त्री०=परवाह।

पर-वाच्य—वि०[तृ० त०] दूसरों द्वारा निंदित।

परवाज—वि०[फा० पर्वाज़] [भाव० परवाजी] समस्त पदों के अंत में; उड़नेवाला। जैसे—बलंदपरवाज=ऊँचा उड़नेवाला।

स्त्री० उड़ने की क्रिया या भाव। उड़ान।

परवाणि—पु० [स० पर√वण् (शब्द करना)+णिच्+इन्] १. धर्माध्यक्ष। २. कार्तिकेय का वाहन, मोर। ३ वत्सर। वर्ष।

परवान् (वत्) [स० पर+मतुप्, वत्व] १. पराश्रयी। २. पराधीन। ३ असहाय।

परवान—पु० [स० प्रमाण] १. प्रमाण। सबूत। २. ठीक, वास्तविक या सत्य बात। ३ सीमा। हद।

वि० १. उचित। ठीक। वाजिब। २. प्रमाणिक और विश्वसनीय।

पु० [फा० परवाल] १. उड़ान।

मुहा०—परवान चढ़ना=(क) बहुत अधिक उन्नति करते हुए परम सुखी और सौभाग्यशाली होना। (स्त्रियाँ) (ख) पूर्णता तक पहुँचना। (ग) सफल होना।

२. जहाजों के ठहरने की जगह। बन्दरगाह।

†पु०=प्रमाण।

परवानगी—स्त्री० [फा० पर्वानगी] आज्ञा। अनुमति।

परवानना†—स०[स० प्रमाण] किसी बात को ठीक और प्रामाणिक मानना या समझना।

परवाना—पु०[फा० पर्वानः] १ प्राचीन काल मे वह लिखित आज्ञा जो राजा की ओर से किसी को भेजी जाती थी। २. किसी प्रकार के अधिकार या अनुमति का सूचक पत्र। जैसे—तलाशी का परवाना, राहदारी का परवाना। ३ पतिंगा, विशेषत वह पतिंगा जो दीपक की लौ के चारो ओर मँडराता हो और अंत मे उसी से जल मरता हो। शलभ। ४. लाक्षणिक अर्थ मे, वह व्यक्ति जो किसी पर अत्यन्त मुग्ध हो और उसके प्रेम मे अपने आप को बलिदान कर दे अथवा आत्म-बलिदान के लिए प्रस्तुत रहे। जैसे—देश का परवाना। ५ प्रेमिका के रूप-सौंदर्य पर अत्यधिक मुग्ध व्यक्ति। ६. लोमड़ी के आकार का एक वन्य पशु जो शेर के आगे-आगे चलता है।

परवाना राहदारी—पु० दूसरे क्षेत्र या दूसरे देश मे जाने अथवा कोई चीज ले आने के लिए अधिकारी की ओर से मिलनेवाला स्वीकृति-पत्र।

परवाया—पु०[हिं० पैर+पाया] ईंट, पत्थर या लकड़ी का वह टुकड़ा जो चारपाई के पाये के नीचे रखा जाय।

परवाल—पु० १=परवाल। २=प्रवाल।

परवास*—पु०[स० प्रवास] १ प्रवास। २. आच्छादन।

पर-वासिका, पर-वासिनी—स्त्री०[स० त०] बाँदा। बदाक। परगाछा।

परवाह—स्त्री०[फा० पर्वा] १ कोई काम (विशेषत अनुपयुक्त या अनुचित काम) करते समय मन को होनेवाला यह औचित्यपूर्ण विचार कि इस काम मे बड़ों के मान को ठेस तो न लगेगी।

विशेष—यह शब्द इस अर्थ मे प्राय: नहिक रूप मे ही प्रयुक्त होता है। जैसे—हमे इस बात की परवाह नही है।

२ आसरा। भरोसा। उदा०—जग मे गति जाहि जगत्पति की परवाह सो ताहि कहा नर की।—तुलसी। ३. चिंता। फिक्र।

†पु०=प्रवाह।

परवाहना—स०[स० प्रवाह+हिं० ना (प्रत्य०)] प्रवाहित करना।

पर-विंदु—पु०[कर्म० स०] वेदात मे विंदु का दूसरा नाम।

परवी—स्त्री०[स० पर्व] पर्व-काल।

परवीन†—वि०=प्रवीण।

परवेख†—पु०=परिवेश।

परवेज—पु०[फा० पर्वेज] १. विजयी। २. नौशेरवाँ का पोता जो शीरी का आशिक था।

परवेश†—पु०=प्रवेश।

पर-वेश्म (श्मन)—पु०[ब० स०?] स्वर्ग।

पर-व्रत—पु०[ब० स०] धृतराष्ट्र का एक नाम।

परश—पु०[स० स्पर्श, पृषो० सिद्धि] स्पर्शमणि। पारस पत्थर।

पु०=स्पर्श।

परशु—पु०[स० पर√शृ (हिंसा)+कु, डित्व] कुल्हाड़ी की तरह का पर उससे बड़ा एक अस्त्र जिससे प्राचीन काल मे योद्धा लोग एक दूसरे पर प्रहार करते थे।

परशु-धर—वि०[ष० त०] परशु नामक अस्त्र धारण करनेवाला।

पु० परशुराम।

परशु-मुद्रा—पु०[मध्य० स०] तंत्र मे एक प्रकार की मुद्रा।

परशु-राम—पु०[ब० स०] रेणुका के गर्भ से उत्पन्न जमदग्नि ऋषि के पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रिय वंश का नाश किया था।

विशेष—ये विष्णु के छठवें अवतार कहे गये हैं। इनका यह नाम 'परशु' धारण करने के कारण पड़ा था।

परशु-वन—पु० [स० मध्य० स०] एक नरक का नाम।

परश्वध—पु० [स० पर√श्वि (वृद्धि)+ड=परश्व, ष० त०,√धे (पान)+क] परशु नामक अस्त्र।

परसंग†—पु०=प्रसंग।

परसंसा†—स्त्री०=प्रशंसा।

परस†—पु० [स० स्पर्श] परसने की क्रिया या भाव। स्पर्श।

पु० [स० परश] पारस पत्थर।

परसन—पु० [स० स्पर्शन] परसने की क्रिया या भाव। छूना। स्पर्श। जैसे—दरसन-परसन।

परसना—स० [स० स्पर्शन] १. स्पर्श करना। छूना। २. अनुभूत करना। उदा०—कछु भेदियाँ पीर हिये परसो।—घनानन्द। ३ भोजन करनेवालो की थालियों, पत्तलो आदि मे खाद्य पदार्थ रखना। ५ भोजन कराना। परोसना।

अ० खाद्य पदार्थों का पत्तलो आदि मे रखा या लगाया जाना।

परसन्न—वि० [भाव० परसन्नता]=प्रसन्न।

परसमनि—पु०=स्पर्शमणि (पारस पत्थर)।

परसर्ग—पु० [स० ब० स०] आधुनिक भाषा-विज्ञान मे, ने, को, के, से, मे आदि संज्ञा-विभक्तियाँ जिनके संबंध मे यह कहा जाता है कि ये

प्रकृति के साथ सटाकर नही वल्कि प्रकृति से हटाकर लिखी जानी चाहिए।

पर-सवर्ण—पु० [स० समान-वर्ण, कर्म० स०, स—आदेश, पर-सवर्ण, तृ० त०] पर या उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।

परसा—पु०=परशु। २ =फरसा।
† पु०=परोसा।

परसाद—पु०=प्रसाद।
†अव्य० [स० प्रसादात्] १. प्रसाद या कृपा से। २. वजह से। कारण।

परसादी—स्त्री०=परसाद (प्रसाद)।

परसाना—स० [हिं० परसना] १. स्पर्श कराना। छुआना। २ भोजन परसने या परोसने का काम किसी से कराना।

पर-साल—अव्य० [स० पर+फा० साल] १ गत वर्ष। पिछले साल। २ आगामी वर्ष। अगले साल।
†स्त्री० पास सारी नामक घास।

परसिद्ध†—वि०=प्रसिद्ध।

परसिया—पु० [देश०] एक तरह का पेड जिसकी लकडी मेज, कुरसियाँ आदि वनाने के काम आती है।
स्त्री० [स० परशु, हिं० परसा] १. छोटा परशु। २. हँसिया।

परसी—स्त्री० [देश०] एक तरह की छोटी मछली।

परसु†—पु०=परशु।

पर-सूक्ष्म—पु० [स० कर्म० स०]आठ परमाणुओ के वरावर की एक तौल।

परसूत†—वि०=प्रसूत।

परसेद†—पु०=प्रस्वेद।

परसों—अव्य० [स० परश्व] १. वीते हुए दिन से ठीक पहलेवाला दिन। २ आगामी कल के वादवाला दूसरा दिन।

परसोतम†—पु०=पुरुषोत्तम।

परसोर†—पु० [देश०] एक तरह का अगहनी धान।

परसौहाँ*—वि० [हिं० परसना+औहाँ (प्रत्य०)]स्पर्श करने या छूनेवाला।

पर-स्त्री—स्त्री० [ष० त०] दूसरे की स्त्री। विशेपत अपनी पत्नी से भिन्न दूसरे की पत्नी।

परस्त्री-गमन—पु० [स० परस्त्रीगमन, स० त०] पराई स्त्री के साथ सभोग करना जो विधिक दृष्टि से अपराध और धार्मिक दृष्टि से पाप है।

परस्पर—अव्य० [स० पर, द्वित्व, सकार का आगम] १. एक दूसरे के साथ। जैसे—दोनो रेखाओ को परस्पर मिलाओ। २. दो या दो से अधिक पक्षो मे। जैसे—वच्चे परस्पर मिठाई वाँट लेगे। ३. एक दूसरे के प्रति। जैसे—इन लोगो मे परस्पर वैर है।

परस्पर-व्यापी—वि० [स०] (चीजे, वातें या स्थितियाँ) जो आपस मे आशिक रूप मे एक दूसरे के क्षेत्र का अतिक्रमण करके उनमे व्याप्त हो। अतिच्छादित। (ओवरलैपिंग)

परस्परोपमा—स्त्री० [स० परस्पर-उपमा, प० त०] उपमेयोपमा। (दे०)

परस्मैपद—पु० [स० अलुक स०] सस्कृत धातुओ का एक वर्ग जिनसे वननेवाली क्रियाएँ कर्त्ता की अनुसारी होती है। 'आत्मनेपद' से भिन्न।

परस्व—पु० [स०] १. दूसरे की सपत्ति। २. पराधीनता।

पर-हथ—अव्य० [हिं० पर+हाथ] दूसरे के हाथ मे। दूसरे की अधीनता मे।

परहरना*—स० [स० परिहास] छोडना। तजना।

परहार†—पु०=प्रहार।
†पु०=परिहार।

परहारी—पु० [स० प्रहरी] जगन्नाथ जी के मदिर के वे पुजारी जो मदिर ही मे रहते है।

परहेज—पु० [फा० पर्हेज] १. ऐसी वस्तुओ का सेवन न करना अथवा ऐसे कार्य न करना जिनसे स्वास्थ्य विगडता हो अथवा सुधरती हुई शारीरिक स्थिति मे वाधा पहुँचती हो। २ सयमपूर्वक रहना। ३ वुरी वातो से दूर रहना या वचना।

परहेजगार—पु० [फा० पर्हेज्रगार] [भाव० परहेजगारी] १ परहेज करनेवाला। २ इद्रियो को वश मे रखनेवाला। सयमी। ३ धार्मिक दृष्टि से दोपो, पापो आदि से वचकर रहनेवाला। धर्म-निष्ठ।

परहेजगारी—स्त्री० [फा०] परहेजगार होने की अवस्था या भाव।

परहेलना—स० [स० अवहेलना] अवहेलना या उपेक्षा करना। उदा०—तेहि रिस हो परहेलिउँ।—जायसी।

परांग—पु० [स० पर-अग, प० त०] १. दूसरे का अग। [कर्म० स०] २ श्रेष्ठ अग।

परागद—पु० [स० पराग√दा (देना)+क] शिव।

परागभक्षी (क्षिन्)—वि० [स० पराग√भक्ष् (खाना)+णिनि] १ वह जो दूसरो के अग खाता हो। २ परजीवी।

परांगव—पु० [स० पराग√वा (गति)+क] समुद्र।

परांचा—पु० [फा० प्राच] १. तख्ता। २ तख्तो की पाटन। ३ नावो का वेडा।

परांज—पु० [स० पर√अञ्ज् (चिकना करना)+अच्] १ तेल निकालने का यत्र। कोल्हू। २ फेन। ३ छुरी, तलवार आदि का फल।

पराजन—पु०=पराज।

परांठा—पु० [हिं० पलटना] [स्त्री० अल्पा० परांठी] तवे पर घी लगाकर सेकी हुई रोटी।

परात—पु० [स० पर-अत, कर्म० स०] मृत्यु।

परांतक—पु० [स० पर-अतक, कर्म० स०] शिव।

परात-काल—पु० [प० त०] १ मृत्यु का समय। २ वह समय जव कोई आवागमन के चक्र से छूटने के लिए अतिम वार शरीर छोड रहा हो।

परांदा†—पु० [फा० परद] [स्त्री० अल्पा० परांदी] स्त्रियो के वाल गूँथने की चोटी।

परा—उप० एक सस्कृत उपसर्ग जो निम्नलिखित अर्थो मे प्रयुक्त होता है—(क) दूरी पर। परे। जैसे—पराकरण। (ख) आगे की ओर। जैसे—पराक्रमण। (ग) विपरीतता। जैसे—पराजय, पराभव।
वि० [स० पर का स्त्री०] १ जो सव से परे हो। २. उत्तम। श्रेष्ठ।
स्त्री० [स०√पृ (पूर्ति)+अच्+टाप्] १ चार प्रकार की वाणियो मे पहली जो नाद स्वरूपा और मूलाधार से निकली हुई मानी गई है।

२. वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। ३ एक प्रकार का साम-गान। ४. एक प्राचीन नदी। ५ गगा। ६ बाँझ-ककोडा।

पु० [हि० पारना] रेशम फेरनेवाला का लकडी का एक औजार।

†पु० [?] कतार। पक्ति। जैसे—फौजे परा बाँधकर खडी थी। क्रि० प्र०—बाँधना।

पराई*—वि० हि० 'पराया' का स्त्री०।

पराक—पु० [स० पर-आक, ब० स०] १. दे० 'कृच्छ्रपराक'। २ खड्ग। ३ एक प्रकार का रोग। ४ एक प्रकार का छोटा कीडा या जतु।

परा-करण—पु० [स० परा√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. दूर करना या परे हटाना। २ अस्वीकृत कराना। ३ तिरस्कृत करना।

पराकाश—पु० [स० परा√काश (चमकना) +घञ्] १ शतपथ ब्राह्मण के अनुसार दूर-दर्शिता। दूर की सूझ। २ दूरवर्ती आशा। ३. दूर का दृश्य।

पराकाष्ठा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] १. चरम सीमा। सीमात। हद। अन्त। २ लाक्षणिक अर्थ मे किसी कार्य या बात की ऐसी स्थिति जहाँ से और आगे ले जाने की कल्पना असभव हो। जैसे—झूठ की पराकाष्ठा। ३ ब्रह्मा की आधी आयु की सख्या। ४ गायत्री का एक भेद।

पराकोटि—स्त्री०=पराकाष्ठा।

पराक्पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] आपामार्ग। चिचडी।

पराक्रम—पु० [स० परा√क्रम् (गति)+घञ्] [वि० पराक्रमी] १ आगे की ओर अथवा किसी के विरुद्ध गमन करना या चलना। २ आगे बढकर किसी पर आक्रमण करना। ३ वह गुण या शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य कठिनाइयो को पार करता हुआ आगे बढता है और उत्साह, वीरता आदि के अच्छे और बडे काम करता है। ४ उद्योग। पुरुषार्थ।

मुहा०—पराक्रम चलना=शारीरिक सामर्थ्य के आधार पर पुरुषार्थ या उद्योग हो सकना। जैसे—जब तक हमारा पराक्रम चलता है, तब तक हम कुछ न कुछ काम करते ही रहेगे।

पराक्रमण—पु० [स० परा√क्रम्+ल्युट्—अन] आगे की ओर अथवा किसी के विरुद्ध बढना।

पराक्रमी (मिन्)—वि० [स० पराक्रम+इनि] १ जिसमे यथेष्ठ पराक्रम हो। २ पराक्रम करने या दिखानेवाला अर्थात् बलवान या वीर। ३. पुरुषार्थी।

पराक्रात—वि० [स० परा√क्रम्+क्त] १ पीछे की ओर मोडा हुआ। २. जिसमे उत्साह और वीरता हो। ३ आक्रांत।

पराग—पु० [स० परा√गम् (जाना)+ड] १. वह रज या धूल जो फूलो के बीच लम्बे केसरो पर जमा रहती है। पुष्पराज। (पोलेन) २ धूलि। रज। ६ चन्दन। ४. कपूर के छोटे कण। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६. उपराग। स्वच्छन्द रूप मे होनेवाली गति। ८ प्राचीन भारत मे नहाने से पहले शरीर पर लगाने का एक सुगधित चूर्ण।

पराग-केसर—पु० [मध्य० स०] फूलो के बीच का वह केसर (गर्भ केसर से भिन्न) या सीगा जो उसका पुलिंग अंग माना जाता है। (स्टैमेन)

परागजज्वर—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जो कुछ घासो और वृक्षो का पराग शरीर मे पहुँचने से उत्पन्न होता है। इसमे आँखे और ऊपरी स्वास सस्थान मे सूजन होती है जिससे छीके आने लगती है और कभी-कभी ज्वर तथा दमा भी हो जाता है।

परागण—पु० [स० परागकरण] पेड-पौधो का पराग या पुष्परज से युक्त होना या किया जाना। (पोलिनेशन)

परागत—भू० कृ० [स० परा√गम् (जाना)+क्त] १ दूर गया हुआ। २. मरा हुआ। मृत। ३. घिरा हुआ। ४. फैला हुआ। विस्तृत।

परागति—स्त्री० [स० परा√गम्+क्तिन्] गायत्री।

परागना—अ० [स० उपराग=विषयाशक्ति] आसक्त होना।

अ० [स० पराग+हि० ना (प्रत्य०)] पराग से युक्त होना।

स० पराग से युक्त करना।

पराङमुख—वि० [स० ब० स०] १. जो पीछे की ओर मुँह फेरे हुए हो। विमुख। २. जो किसी की ओर ध्यान न देकर उसकी ओर से मुँह फेर ले। ४. उदासीन। ४ विपरीत। विरुद्ध।

पराच्—वि० [स० परा√अञ्च् (गति)+क्विप्] १ प्रतिलोमगामी। उलटा चलने या जानेवाला। ऊर्ध्वगामी। ३ परोक्ष मे जानेवाला। ३. जिसका मुँह बाहर की ओर हो।

पराचीन—वि० [स० पराच्+ ख—ईन] १ पराङमुख। २ दूसरी ओर स्थित।

†वि०=प्राचीन।

पराछित*—पु०=प्रायश्चित। उदा०—मारयाँ परछित लागसी म्हाँने दीजो पीहर मेल।—मीराँ।

पराजय—स्त्री० [स० परा√जि (जीतना)+अच्] प्रतियोगिता, युद्ध आदि मे होनेवाली हार। शिकस्त। 'जय' का विपर्याय।

पराजिका—स्त्री० [स० उपराजिका या हि० परज] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

पराजित—भू० कृ० [स० परा√जि+क्त] हराया या हारा हुआ।

पराणसा—स्त्री० [स० परा√अन् (जीना)+अस+टाप्] चिकित्सा। औषधोपचार। इलाज।

परात—स्त्री० [स० पात, मि० पुर्त्त० प्राट] थाली के आकार का ऊँचे किनारोवाला एक बडा बरतन।

परात्पर—वि० [स० अलुक् स०] जिसके परे या जिससे बढकर कोई दूसरा न हो। सर्वश्रेष्ठ।

पु० १. परमात्मा। २ विष्णु।

परात्प्रिय—पु० [स० अलुक् स०] कुश की तरह की एक प्रकार की घास जिसमे जौ या गेहूँ के से दाने पडते है। उलपतृण।

परात्मा (त्मन्)—पु० [स० पर-आत्मन्, कर्म० स०] परमात्मा। परब्रह्म।

परादन—पु० [स० पर-अदन, ब० स०] अरब या फारस देश का एक प्रकार का घोडा।

पराधि—स्त्री० [स० पर-आधि, कर्म० स०] तीव्र मानसिक व्यथा।

पराधीन—वि० [सं० पर-अधीन, ष० त०] [भाव० पराधीनता] जो दूसरे या दूसरों के अधीन हो। जिसपर किसी दूसरे का अंकुश या शासन हो।

पराधीनता—स्त्री० [सं० पराधीन+तल्+टाप्] पराधीन होने की अवस्था या भाव।

परान†—पुं०=प्राण।

पराना—अ० [सं० पलायन] १. भागना। २. दूर होना।
स० १. भगाना। २. दूर करना।
*वि० [स्त्री० परानी]=पुराना।
†स०=पिराना।

परानी†—पु०=प्राणी।

परान्न—पु० [सं० पर-अन्न, ष० त०] दूसरे का दिया हुआ अन्न या भोजन। पराया धान्य।

परान्नभोजी (जिन्)—वि० [सं० परान्न√भुज् (खाना)+णिनि] जो दूसरों का दिया हुआ अन्न खाकर पलता हो।

परापति†—स्त्री०=प्राप्ति।

परापर—वि० [सं० पर+अपर] १ पर और अपर। २. जिसमे परत्व और अपरत्व दोनों गुण हो। (वैशेषिक) ३ अच्छा और बुरा
पु० फालसा।

परापरज्ञ—वि० [सं०] १. पर और अपर का ध्यान रखनेवाला। २. ऊँच-नीच या भला-बुरा समझनेवाला।

पराभक्ति—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] मनुष्य के मन मे ईश्वर के प्रति होनेवाली वह विशुद्ध भक्ति जिसमे अपने स्वार्थ या हित की कुछ भी कामना नही होती। साध्या भक्ति।

पराभव—पु० [सं० परा√भू (होना)+अप्] १. व्यक्ति, जाति देश आदि का होनेवाला पतनोन्मुखी तथा ह्रासमय अंत। २. नाश। विनाश। ३ पराजय। हार। ४. अपमान। बेइज्जती।

पराभिक्ष—पु० [सं० पर-आ√भिक्ष् (माँगना)+अण्] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो थोडी सी भिक्षा से निर्वाह करता हो।

पराभूत—भू० कृ० [सं० परा√भू+क्त] १. जिसका पराभव किया गया हो, या हुआ हो। हराया या हारा हुआ। पराजित। परास्त। २ ध्वस्त। विनष्ट।

पराभूति—स्त्री० [सं० परा√भू+क्तिन्] दे० 'पराभव'।

परा-मनोविज्ञान—पु० [सं०] आधुनिक खोजो और प्रयोगो के आधार पर स्थित एक नया विज्ञान जिसमे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य मे अथवा उसकी आत्मा या मन मे कुछ ऐसी आध्यात्मिक और मानसिक शक्तियाँ है जो काल, देश तथा शरीर की सीमाओ मे बद्ध नही है और जो ऐसे अद्भुत कार्य करती है जिनका साधारण बुद्धि या विज्ञान से किसी प्रकार का समाधान नही होता। (पैरा-साइकोलाजी)

परा-मनोवैज्ञानिक—वि० [सं०] परा-मनोविज्ञान-संबंधी।
पु० परा-मनोविज्ञान का ज्ञाता या पडित।

परामर्श—पु० [सं० परा√मृश् (छूना)+घञ्] १ पकडना। खीचना। जैसे—केश-परामर्श। २. विवेचन। विचार। ३ विवेचन या विचार के लिए आपस मे होनेवाली सलाह। ४. किसी विषय मे दूसरे से ली जानेवाली सलाह। ५ निर्णय।
क्रि० प्र०—करना। देना।—माँगना।—लेना।
६. अनुमान। अन्दाज। अटकल। ७ याद। स्मृति। ८ तरकीब युक्ति।

परामर्श-दाता (तृ)—पुं० [सं० ष० त०] [स्त्री० परामर्शदात्री] दूसरो को परामर्श या सलाह देनेवाला।

परामर्शदात्री-परिषद्—स्त्री० [सं० व्यस्तपद]=परामर्श-समिति।

परामर्शन—पुं० [सं० परा√मृश्+ल्युट्—अन] १. खीचना। २. परामर्श अथवा सलाह करने की क्रिया या भाव। ३ चिन्तन, ध्यान या स्मरण।

परामर्श-समिति—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] वह समिति जो किसी विषय के संबंध मे अपनी राय देने के लिए नियुक्त की जाती है।

परामृत—वि० [सं० पर-अमृत, कर्म० स०] जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।

परामृष्ट—भू० कृ० [सं० परा√मृश्+क्त] १. पकड़कर खीचा हुआ। २. पीड़ित। ३ जिसके संबंध मे परामर्श हो चुका हो। ४. जिसके विषय मे विचार के उपरांत निर्णय या निश्चय हो चुका हो।

परायचा—पु० [फा० पार्चः] १. कपड़ो के कटे टुकडो की टोपियाँ आदि बनाकर बेचनेवाला। २ सिले-सिलाये कपडे बेचनेवाला रोजगारी।

परायण—वि० [सं० पर-अयन, ब० स०] [स्त्री० परायणा] १. गया या बीता हुआ। गत। २ किसी काम या बात मे अच्छी तरह लगा हुआ। निरत। जैसे—कर्त्तव्यपरायण। ३ किसी के प्रति पूर्ण निष्ठा या भक्ति रखनेवाला। जैसे—धर्मपरायण स्त्री।
पु० १ वह स्थान जहाँ शरण मिली हो। शरण का स्थान। २. विष्णु।

परायत्त—वि० [सं० पर-आयत्त, ष० त०] पराधीन।

पराया—वि० पु० [सं० पर+हिं० आया (प्रत्य०) [स्त्री० पराई] १. जिसका संबंध दूसरे से हो। अपने से भिन्न। 'अपना' का विपर्याय। २ आत्मीय या स्वजन से भिन्न।
पद—पराया समझकर=आत्मीयता के भाव से रहित या विमुख होकर।

परायु (युस्)—पु० [सं० पर-आयुस्, ब० स०] ब्रह्मा, जिनकी आयु सब से अधिक कही गई है।

परार†—वि०=पराया।

परारध†—पु०=परार्द्ध।

परारब्ध†—पु०=प्रारब्ध।

परारि—अव्य० [सं० पूर्वतर+अरि, नि० पर—आदेश] पूर्वतर वर्ष मे। परियार साल।

परारु—पु० [सं० परा√ऋ (गति)+उण्] करेला।

परारुक—पु० [सं० परा√ऋ+उक] १ चट्टान। २. पत्थर।

परार्थ—वि० [illegible], नित्य स०] [भाव० परार्थता] जो दूसरे के निमित्त [illegible]
पु० १ [illegible] म जो उपकार की दृष्टि से किया जाता हो।
२ दे० [illegible]

परार्थवाद [illegible] ०] यह सिद्धांत कि जहाँ तक हो [illegible] दूसरो [illegible] रहना चाहिए। (एल्ट्रूइज्म)

परार्थवादी (दिन्)—वि० [स० परार्थ√वद् (बोलना)+णिनि] परार्थवाद-सबधी।
पु० १. परार्थवाद का अनुयायी। २. वह जो सदा दूसरों का उपकार करता हो।

परार्द्ध—पु० [स० अर्ध,√ऋधे (वृद्धि)+अच्, पर-अर्ध, कर्म० स०] १. बादवाला आधा अश। उत्तरार्द्ध। २. वह सख्या जिसे लिखने मे अठारह अक होते है। एक शख। १००००००००००००००००००। ३. ब्रह्मा की आयु का परवर्ती आधा अश।

परार्द्धि—पु० [स० परा-ऋद्धि, ब० स०] विष्णु।

परार्ध्य—वि० [स० परार्ध+यत्] १. श्रेष्ठ। २. उत्तम।
पु० १. असीम सख्या। २. सबसे बड़ी वस्तु।

परालब्ध†—पु०=प्रारब्ध।

पराव—पु०=परायापन।
† वि०=पराया।
पु० [हिं० पराना] भागने की क्रिया या भाव।

परावत—पु० [स० परा√अव् (रक्षण आदि)+अतच्] फालसा।

परावन—पु० [स० पलायन, हिं० पराना] १. एक साथ बहुत से लोगो का भागना। भगदड। पलायन।
वि० भागनेवाला। भगू।
पु० [हिं० पटना, पडाव] गाँववालो का गाँव के बाहर डेरा डालकर उत्सव मनाना।

परावर—वि० [स० पर-अवर, कर्म० स०] [स्त्री० परावरा] १. पहले और पीछे का। २. निकट और दूर का। ३. सर्वश्रेष्ठ।
पु० १ कारण और कार्य। २ विश्व। ३. अखिलता।

परावर्त—पु० [स० परा√वृत् (बरतना)+घञ्] १. लौटकर पीछे आना। प्रत्यावर्तन। २. अदला-बदली। विनिमय। ३. दे० 'प्रति-वर्तन'।

परावर्तक—वि० [स० परा√वृत्+ण्वुल्—अक] १. लौटकर पीछे आने या जानेवाला। २. अदल-बदल जानेवाला।

परावर्तन—पु० [स०परा√वृत्+ल्युट्—अन] १. लौटकर पीछे आना। प्रत्यावर्तन। २. उलटने पर फिर ज्यो का त्यो हो जाना। ३. उल-टाया जाना। ४ दे० 'अतरण'। ५ धार्मिक ग्रथो का पुनर्पठन। (जैन)

परावर्त-व्यवहार—पु० [स० ष० त०] किसी निर्णय पर होनेवाला पुनर्विचार।

परावर्तित—भू० कृ० [स० परा√वृत्+णिच्+क्त] पलटाया हुआ। पीछे फेरा हुआ। पीछे की ओर लौटाया हुआ।

परावर्ती (र्तिन्)—वि० [स० परा√वृत्+णिनि] १ लौटकर पुन. अपने स्थान पर आने या पहुँचनेवाला। २ फिर से पहलेवाली स्थिति मे आनेवाला।

परा-वसु—पु० [स० प्रा० ब० स०] १. असुरो का पुरोहित। २. रैभ्य मनु के एक पुत्र का नाम। ३. विश्वामित्र के एक पौत्र का नाम।

परावह—पु० [स० परा√वह् (ढोना)+अच्] वायु के सात भेदो मे से एक।
विशेष—अन्य छः भेद आवह, उदह, परिवह, प्रवह, विवह और सवह है।

परावा†—वि०=पराया।

पराविद्ध—पु० [स० परा√व्यध् (ताड़न करना) +क्त] कुबेर।

परावृत्त—वि० [स० परा√वृत्+क्त] [भाव० परावृत्ति] १. पलटा या पलटाया हुआ। फेरा हुआ। परावर्तित। २. बदला हुआ।

परावृत्ति—स्त्री० [स० परा√वृत्+क्तिन्] १. पलटने या पलटाने का भाव। पलटाव। परावर्तन। २. व्यवहार या मुकदमे पर फिर से होनेवाला विचार।

परावेदी (दिन्)—स्त्री० [स० परा-आ√विद्+णिनि] भटकटैया।

पराव्याध—पु० [स० परा√व्यध्+घञ्] परास।

पराशय—वि० [स० परा√शी (सोना)+अच्] बहुत अधिक।

पराशर—पु० [स० पर-आ√शृ (हिंसा)+अच्] १. वशिष्ठ के पौत्र और कृष्ण द्वैपायन व्यास के पिता जो पराशर स्मृति के रचयिता माने जाते है। २. एक ज्योतिष ग्रथ (पराशरी सहिता) के रचयिता। ३ आयुर्वेद के एक प्रधान आचार्य।

पराशरी (रिन्)—पु० [स० पाराशर्य+णिनि, यलोप, पृषो० ह्रस्व] १. भिक्षुक। २. सन्यासी।

पराश्रय—पु० [स० पर-आश्रय, ष० त०] १. दूसरे का अवलब या आश्रय। २. परवशता। पराधीनता।

पराश्रया—स्त्री० [स० पर-आश्रय, ब० स०+टाप्] बाँदा। परगाछा।

पराश्रयी (यिन्)—वि० [स० पराश्रय+इनि] १. दूसरे के आश्रय और सहारे पर रहनेवाला। २. दे० 'पर-जीवी'।
पु० ऐसे कीटाणुओ, वनस्पतियो आदि का वर्ग जो दूसरे जतुओ, वन-स्पतियो आदि के अगो पर रहकर जीवन-निर्वाह करते हो। (पैरे-साइट)

पराश्रित—वि० [स० पर-आश्रित, ष० त०] १. जो किसी दूसरे के आश्रय मे रहता हो। २. जो दूसरे के आसरे पर या भरोसे चलता या रहता हो।

परास—पु० [स० परा√अस् (फेंकना)+घञ्] १. उतना अवकाश या दूरी जितनी कोई चलाई या फेंकी जानेवाली चीज उडते-उडते पार करती हो। जैसे—बदूक की गोली या तीर का परास। २ उतना क्षेत्र जहाँ तक किसी क्रिया का प्रभाव या फल होता हो। ३. उतना प्रदेश जितने मे कोई चीज पाई जाती हो। (रेंज)

परासन—पु० [स० परा√अस्+ल्युट्—अन] १. जान से मारना। २ वध करना।

परासी—स्त्री० [स० परास+ङीप्] पलाश्री नाम की रागिनी।

परासु—वि० [स० परा-असु, ब० स०] [भाव० परासुता] मरा हुआ। मृत।

परास्कंदी (दिन्)—पु० [स० पर-आ√स्कन्द् (गति, शोषण)+णिनि] चोर।

परास्त—वि० [स० परा√अस्+क्त] १ द्वद्व, प्रतियोगिता आदि मे हारा या हराया हुआ। पराजित। २ किसी के सामने झुका या दबा हुआ। ३. ध्वस्त। विनष्ट।

पराह—पु० [स० पर-अहन्, कर्म० स०, टच्] अन्य या दूसरा दिन।

पराहत—वि० [सं० परा-आ√हन् (हिंसा)+क्त] १. जो आघात के द्वारा गिराया या पीछे हटाया गया हो। २. आक्रात। ३. नष्ट किया या मिटाया हुआ। ध्वस्त। ४. जिसका खडन हुआ हो। खडित। ५. जोता हुआ।

पराहति—स्त्री० [स० परा-आ√हन्+क्तिन्] १ खडन। २ विरोध।

पराह्न—पु० [स० पराह्न] दोपहर के बाद का समय। अपराह्न।

पराहृत—भू० कृ० [सं० परा-आ√हृ (हरण करना)+क्त] हटाया हुआ।

परिंदगी—स्त्री० [फा०] १. पक्षियो का जीवन। २. परिन्दो की उडान।

परिंदा—पु० [फा० परिंद] चिड़िया। पक्षी।

परि—उप० [स० √पृ (पूर्ति) +इन्] एक सस्कृत उपसर्ग जो प्राय. क्रियाओ से बनी हुई सज्ञाओ के पहले लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है। १ आस-पास या चारो ओर। जैसे—परिक्रमण, परिभ्रमण आदि। २ अच्छी या पूरी तरह अथवा हर तरह। जैसे—परिकल्पन, परिवर्द्धन, परिरक्षण आदि। ३ अतिरिक्त रूप से, बहुत अधिक या बहुत जोरो से। जैसे—परिकप, परिताप, परित्याग, परिश्रम आदि। ४. दोष दिखलाते या निंदनीय ठहराते हुए। जैसे—परिवाद, परिहास आदि। ५. किसी विशिष्ट क्रम या नियम से। जैसे—परिच्छेद। विशेष—(क) कुछ अवस्थाओ मे यह विशेषणो और अन्य प्रकार की सज्ञाओ तथा प्रत्ययो के पहले भी लगता और बहुत-कुछ उक्त प्रकार के अर्थ देता है। जैसे—परिपूर्ण=अच्छी तरह भरा हुआ, परिलघु=बहुत ही छोटा, परित =चारो ओर, परिधि=चारो ओर का घेरा; पर्यग्नि=चारो ओर जानेवाली अग्नि से घिरा हुआ; पर्यश्रु=उमडते हुए आँसुओवाला। (ख) जुए के दाँव, पासे, सख्या आदि के प्रसग मे यह कुछ शब्दो के अन्त मे लगकर 'हारा हुआ' का भी अर्थ देता है। जैसे—अक्षपरि=पासे के खेल मे हारा हुआ। (ग) कहीं-कही इसके रूप 'परी' भी हो जाता है, परन्तु अर्थ ज्यो का त्यो रहता है। जैसे—परिवाह और परीवाह, परिहास और परीहास आदि।

अव्य० [?] १ तरह या प्रकार से। उदा०—पिडि पहिर तैं नवी परि।—प्रिथीराज। २. के तुल्य। के बराबर। समान। उदा०—पेखि कली पदमिणी परी।—प्रिथीराज।

विशेष—उक्त अर्थो मे यह शब्द राजस्थानी के अतिरिक्त गुजराती और मराठी मे भी इसी रूप मे प्रचलित है।

परि-कंप—पु० [स० परि√कम्प् (काँपना)+घञ्] बहुत जोरो का कपन।

परिक—स्त्री० [देश०] बहुत अधिक खोटी या मिलावटवाली चाँदी।

परि-कथा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ बौद्धो के अनुसार, कोई धार्मिक कथा या विवरण। २. कहानी।

परि-कर—पु० [स० परि√कृ (विक्षेप)+अप्] १ पर्यंक। पलग। २. घर या परिवार के लोग। ३ किसी के आस-पास या सग-साथ रहनेवाले लोग। जैसे—राजाओ का परिकर। ४. वृन्द। समूह। ५. तैयारी। समारंभ। ६ कमरबन्द। पटका। ७. विवेक। ८. एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे किसी विशेष्य से पहले किसी विशिष्ट अभिप्राय से विशेषण लगाये जाते हैं। जैसे—हिमकर वदनी (ताप हरण करनेवाली नायिका)।

परिकरमा†—स्त्री०=परिक्रमा।

परिकरांकुर—पु० [स० परिकर-अंकुर, ष० त०] वह अर्थालकार जिसमे विशेष्य का कथन किसी विशिष्ट अभिप्राय से किया जाता है।

परिकर्तन—पु० [स० परि√कृत् (काटना)+ल्युट्—अन्] १. चारो ओर से काटना। २. गोलाकार काटना। ३. शूल।

परिकर्तिका—स्त्री० [स० परि√कृत्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] शूल।

परिकर्म (कर्मन्)—पु० [सं० परि√कृ (करना)+मनिन्] १. देह को सजाने का काम। २ शरीर का श्रृंगार या सजावट।

परिकर्मा (कर्मन्)—पु० [स० प्रा० ब० स०] नौकर। सेवक।

परिकर्षण—पु० [स०] खेती-बारी के काम के लिए जमीन जोतना, बोना आदि।

परिकलक—पु० [सं० परि√कल् (गिनना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. परिकलन करने अर्थात् हिसाब लगाने या लेखा करनेवाला व्यक्ति। २. एक तरह का आधुनिक यत्र जो कई प्रकार का काम जल्दी और सहज मे करता है। ३. वह पुस्तक जिसमे अनेक प्रकार के लगे हुए हिसाबो के बहुत से कोष्ठक होते हैं। (कैलकुलेटर, उक्त दोनो अर्थो मे)

परिकलन—पु० [स० परि√कल्+णिच्+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० परिकलित] १ गणित मे वह गणना जो कुछ जटिल होती है तथा जिसमे कुछ विशिष्ट तथा निश्चित क्रियाओ की सहायता लेनी पड़ती है। (कैलकुलेशन)

परिकलित—भू० कृ० [स० परि√कल्+णिच्+क्त] जिसका परिकलन हो चुका हो।

परिकल्पन—पु० [स० परि√कृप् (सामर्थ्य)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिकल्पित] १ परिकल्पना करने की क्रिया या भाव। २. किसी विषय पर होनेवाला चिंतन या मनन। ३ बनावट। रचना। ४ विभाजन। ५ दे० 'परिकल्पना'।

परिकल्पना—स्त्री० [स० परि√कृप्+णिच्+युच्—अन+टाप्] १. जिस बात की बहुत-कुछ सभावना हो उसे पहले ही मान लेना या उसके नाम, रूप आदि की कल्पना कर लेना। २ केवल तर्क के लिए कोई बात मान लेना। ३ कुछ विशिष्ट आधारो पर कोई बात ठीक या सही मान लेना। ४ गणित मे कोई विशिष्ट मान या राशि निकलने से पहले उसके लिए कोई निश्चित मान राशि या चिह्न अवधारित करना। (प्रिजम्पशन)

परिकल्पित—भू० कृ० [स० परि√कृप्+क्त] १. (बात या विषय) जिसकी परिकल्पना की गई हो। २ (पदार्थ या रूप) जो परिकल्पना के फल-स्वरूप बना या प्रस्तुत हुआ हो। ३ जो केवल तर्क के लिए मान लिया गया हो। ४ जो कुछ विशिष्ट आधारो पर ठीक या सही मान लिया गया हो। ५ कल्पित। मन-गढ़न्त। ६ ठहराया या ठीक किया हुआ। निश्चित। ७ बनाया हुआ। रचित।

परिकांक्षित—पु० [स० परि√काङ्क्ष् (चाहना)+क्त] १ भक्त। २ तपस्वी।

परिकीर्ण—भू० कृ० [स० परि√कृ+क्त, इत्व, नत्व] १ फैला या फैलाया हुआ विस्तृत। २ छितरा या छिटकाया हुआ। ३ समर्पित।

परिकीर्तन—पु० [स० परि√कृत् (जोर से शब्द करना)+ल्युट्—अन] १ खूब ऊँचे स्वर से कीर्तन करना। २. किसी के गुणों के वहुत अधिक और विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन।

परिकीर्तित—भू० कृ० [स० परि√कृत्+क्त] जिसका परिकीर्तन हुआ हो या किया गया हो।

परि-कूट—पु० [स० मध्य० स०] १ नगर या दुर्ग के फाटक को घेरनेवाली खाईं। २ एक नागराज का नाम।

परिकूल—पु० [स० प्रा० स०] कूल अर्थात् किनारे के पास का स्थान।

परिकेंद्र—पु० [स० प्रा० स०] ज्यामिति मे परिवृत्त (देखें) का केन्द्र।

परिकोप—पु० [स० प्रा० स०] वहुत अधिक या प्रचड क्रोध।

परिक्रम—पु० [स० परि√क्रम् (गति)+घञ्] १. चारो ओर घूमना। २. घूमना। ३. सैर करने के लिए घूमना। टहलना। ४ किसी काम की जाँच या निरीक्षण के लिए जगह-जगह जाना या घूमना। (टूर) ५ प्रवेश। ६ दे० 'क्रम'। ७ दे० 'परिक्रमा'।

परिक्रमण—पु० [स० परि√क्रम्+ल्युट्—अन्] १. चारो ओर चलने अथवा घूमने, टहलने या सैर करने की क्रिया या भाव। २. किसी काम की देख-रेख के लिए जगह-जगह जाना। दौरा करना। ३. परिक्रमा करना।

परिक्रम-सह्—पु० [स० परिक्रम√सह् (सहना)+अच्] वकरा।

परिक्रमा—स्त्री० [स० परि√क्रम्+अ+टाप्] १. चारो ओर चक्कर लगाना या घूमना। २. किसी तीर्थ, देवता या मदिर के चारो ओर भक्ति और श्रद्धा से तथा पुण्य की भावना से चक्कर लगाने की क्रिया। प्रदक्षिणा। ३. इस प्रकार लगाया जानेवाला चक्कर या फेरा। प्रदक्षिणा। ४ उक्त प्रकार का चक्कर लगाने के लिए नियत किया या वना हुआ मार्ग।

परिक्रय—पु० [स० परि√क्री (खरीदना)+अच्] १. खरीदने की क्रिया या भाव। खरीद। २ भाडा। ३ मजदूरी। ४. पारिश्रमिक या मजदूरी तै करके किसी को किसी कार्य पर लगाना। ५. व्यापारिक कार्यों के लिए माल आदि का होनेवाला विनिमय। ६ इस प्रकार दिया या लिया हुआ माल।

परिक्रांत—वि० [स० परि√क्रम्+क्त] जिसके चारो ओर चला या चक्कर लगाया जा सके।

परिक्रामी—वि० [स०] १ परिक्रमा करने अर्थात् चारो ओर घूमनेवाला। २. वरावर एक स्थान से दूसरे पर जाता या घूमता रहनेवाला।

परिक्रिया—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ किसी चीज को चारो ओर से दीवार, ख[illegible] आदि से घेरने की क्रिया या भाव। २. स्वर्ग की कामना से किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ। ३. आनन्द, मोह आदि के लिए की जानेवाली कोई क्रिया या आयोजन।

परिक्लात—वि० [स० परि√क्लम् (थकना)+क्त] जो थककर चूर हो गया हो।

परिक्लिष्ट—वि० [सं० परि√क्लिश् (कष्ट सहना)+क्त] १. वहुत अधिक क्लिष्ट। २ तोडा-फोडा और नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

परिक्लेद—पुं० [स० परि√क्लिद् (गीला होना)+घञ्] आर्द्रता। नमी।

परिक्वणन—वि० [स० परि√क्वण् (शब्द करना)+ल्युट्+अन] वहुत ऊँचा (स्वर)।
पु० वादल जो वहुत ऊँचा स्वर करता है।

परिक्षत—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० परिक्षति] १. जिसे वहुत अधिक क्षति पहुँची हो। २ जिसे बहुत अधिक चोट लगी हो। आहत। ३ नष्ट-भ्रष्ट।

परिक्षय—पु० [स० प्रा० स०] पूरा और सामूहिक विनाश।

परिक्षव—पु० [स० परि+क्षु (शब्द करना)+अप्] अशुभ सगुनवाली छींक।

परिक्षा—स्त्री० [स० प्रा० स०] कीचड़।
†स्त्री०=परीक्षा।

परिक्षाम—वि० [स० प्रा० स०] वहुत अधिक क्षीण या दुर्वल।

परिक्षालन—पु० [स० √क्षल् (धोना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ वस्त्र आदि धोने की क्रिया या भाव। २. धोने का काम।

परिक्षित्—पु० [स० परि√क्षि (नाश)+क्विप्, तुक्-आगम] १ एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जो अभिमन्यु के पुत्र और जनमेजय के पिता थे। २ अग्नि।

परिक्षिप्त—भू० कृ० [स० परि√क्षिप् (प्रेरणा)+क्त] १. जो चारो ओर से घिरा या घेरा गया हो। २. फेंका और त्यागा हुआ।

परिक्षीण—वि० [स० प्रा० स०] १. वहुत अधिक दुर्वल। २ निर्धन। ३. दे० 'शोषाक्षय'।

परिक्षेत्रिक—वि० [स०] दे० 'परिनागर'।

परिक्षेप—पु० [स० परि√क्षिप्+घञ्] १. गदा को चारो ओर घुमाते हुए प्रहार करना। २. अच्छी तरह से चलना-फिरना या घूमना टहलना। ३ वह पट्टी या सीमा जिससे कोई चीज घिरी हुई हो। ४. फेंकना। ५ परित्याग करना।

परिखन—वि० [हिं० परिखना] १ परखनेवाला। २. प्रतीक्षा करनेवाला।
†स्त्री०=परख।

परिखना—अ० १.=परखना। २.=परेखना (प्रतीक्षा करना)।

परिखा—स्त्री० [स० परि√खन् (खोदना)+ड+टाप्] १ दुर्ग, नगरी आदि के चारो ओर वनी हुई गहरी खाईं। २ गहराई।

परिखात—पु० [स० प्रा० स०] १. किसी चीज के चारो ओर वना हुआ गड्ढा। २. खाईं। परिखा।

परिखान—स्त्री० [स० परिखात] कच्ची सडक या जमीन पर वना हुआ गाडी के पहिए का चिह्न।

परिखिन्न—वि० [स० प्रा० स०] वहुत अधिक खिन्न या दुखी।

परिखेद—पु० [स० प्रा० स०] वहुत अधिक थकावट।

परिख्यात—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० परिख्याति] जिसकी यथेष्ट ख्याति हो।

परिख्याति—स्त्री० [प्रा० स०] चारो ओर फैली हुई यथेष्ट ख्याति।

परिगंतव्य—वि० [स० परि√गम् (जाना)+तव्यत्] १. जिसे प्राप्त

किया जा सके। २ जिसे जाना जा सके। ३ जिस तक पहुँचा जा सके।

परिगणक—पुं० [स० परि√गण्+ण्वुल-अक] परिगणन करनेवाला अधिकारी या कर्मचारी। (इन्युमेरेटर)

परिगणन—पुं० [स० परि√गण् (गिनना)+ल्युट—अन] १ अच्छी तरह गिनना। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी स्थान पर होनेवाली वस्तुओं आदि को एक-एक करके गिनना। (इन्युमेरेशन) जैसे—जन-सख्या का परिगणन, पुतस्कालय की पुस्तकों का परिगणन।

परिगणना—स्त्री० [स० प्रा० स०] =परिगणन।

परिगणनीय—वि० [स० परि√गण्+अनीयर्] परिगणन किये जाने के योग्य। २. जिसका परिगणन होने को हो या हो सके।

परिगणित—वि० [स० परि√गण्+क्त] १ जिसका परिगणन हो चुका हो। २ जिसका उल्लेख या गणन किसी अनुसूची मे हुआ हो। अनुसूचित। जैसे—परिगणित जन-जतियाँ। (शेड्यूल्ड)

परिगण्य—वि० [स० परि√गण्+यत्] परिगणनीय।

परिगत—भू०कृ० [स०प्रा०स०] १ चारो ओर से घिरा हुआ। (सर्कमस्क्राइब्ड) २ गुजरा या बीता हुआ। गत। ३ मरा हुआ। मृत। ४. भूला हुआ। विस्तृत। ५ जाना हुआ। ज्ञात। मिला हुआ। प्राप्त।

परिगमन—पुं० [सं० प्रा० स०] १ किसी के चारो ओर जाना। २ जानना। ३. प्राप्त करना।

परिगर्भिक—पुं० [सं० परिगर्भ, प्रा०स०, +ठन्—इक] गर्भवती माता का दूध पीने से बच्चों को होनेवाला एक प्रकार का रोग।

परिगर्वित—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक गर्व या घमड करनेवाला। बहुत बडा अभिमानी।

परिगर्हण—पुं० [स० प्रा० स०] अतिनिंदा।

परिगलित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ गिरा हुआ। च्युत। २ अच्छी तरह गला हुआ। ३ पिघला हुआ। तरल। ४. गायब। लुप्त। ५. डूबा हुआ।

परिगह—पुं० [स० परिग्रह] घर या परिवार के अथवा आपसदारी के लोग। आत्मीय और कुटुबी।

परिगहन—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक गहन।

परिगहना*—स० [स० परिग्रहण] ग्रहण करना। अगीकार या स्वीकार करना।

परिगीत—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसका बहुत अधिक गुण-कीर्तन हुआ या किया गया हो।

परिगीति—स्त्री० [स० प्रा० स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

परिगुंठन—पुं० [स०प्रा०स०] [भू० कृ० परिगुंठित] अच्छी तरह ढकना।

परिगुण—पुं० [स० प्रा० स०] [वि० परिगुणी] शिक्षा, प्रशिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ वह गुण या योग्यता जिससे मनुष्य ज्ञान आदि के किसी नियत और मान्य मानक तक पहुँच जाता है। और प्राय उसका प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लेता है। (क्वालिफिकेशन)

परिगुणन—पुं० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० परिगुणित] किसी चीज को बढाकर या सख्या को गुणा करके कई गुना अधिक बढाना। (मल्टीप्लिकेशन)

परिगुणित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसका परिगुणन हुआ हो।

परिगुणी (णिन्) वि० [स० परिगुण]+इनि] जिसने कोई परिगुण अर्जित या प्राप्त किया हो। (क्वालिफायड)

परिगूढ़—वि० [स० प्रा० स०] परिगहन। (दे०)

परिगृद्ध—वि० [स० प्रा० स०] बहुत बडा लालची। अतिलोभी।

परिगृहीत—भू० कृ० [स० परि√ग्रह् (स्वीकार)+क्त] १ अगीकार ग्रहण या स्वीकार किया हुआ। गृहीत। स्वीकृत। २ प्राप्त। ३. किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। सम्मिलित।

परिगृह्या—स्त्री० [स० प्रा० स०] वह जिसे ग्रहण किया गया हो अर्थात् पत्नी।

परिग्रह—पुं० [स० परि√ग्रह्+अप्] १. दान लेना। प्रतिग्रह। २ प्राप्ति ३. धन आदि का सग्रह। ४ मजूरी। स्वीकृति। ५ अनुग्रह। दया। मेहरबानी। ६ किसी स्त्री को पत्नी के रूप मे ग्रहण करना। पाणि-ग्रहण। ७. पत्नी। भार्या। ८ परिवार के लोग। परिजन। ९ उपहार, भेंट आदि के रूप मे ग्रहण की जानेवाली वस्तु। १० सेना का पिछला भाग। ११ सूर्य या चद्र का ग्रहण। १२ कद। मूल। १३. शाप। १४ कुमुम। शपथ। १५ विष्णु का एक नाम। १६ कुछ विशिष्ट वस्तुएँ सग्रह करने का व्रत। १७ जैन शास्त्रों के अनुसार तीन प्रकार के प्रगति निबधन कर्म—द्रव्य परिग्रह, भाव परिग्रह और द्रव्यभाव परिग्रह।

परिग्रहण—पुं० [स० प्रा० स०] १ पूरी तरह से ग्रहण करना। २. कपडे पहनना।

परिग्रहीता (तृ)—पुं० [स० परी√ग्रह्+तृच्] १ वह जिसने किसी को अगीकार या ग्रहण किया हो। २ पति। ३ किसी को दत्तक बनाने या गोद लेनेवाला व्यक्ति।

परिग्राम—पुं० [स० अव्य० स०] गाँव के चारो ओर या सामने का भाग।

परिग्राह—पुं० [स० प्रा० स०] १ एक विशेष प्रकार की यज्ञ वेदी। २ बलि चढाने के स्थान पर बना हुआ चारो ओर का घेरा।

परिग्राह्य—वि० [स० प्रा० स०] जो आदरपूर्वक ग्रहण किये जाने के योग्य हो।

परिघ—पुं० [स०परि√हन् (हिंसा)+अप्, घ—आदेश] १ लकड़ी, लोहे आदि का ब्योडा। अर्गल। २ आड या रुकावट के लिए खडी की हुई कोई चीज। ३ कोई ऐसा तत्त्व या बात जो किसी काम को यथा-साध्य पूरी तरह से रोकने मे समर्थ हो। (बेरियर) ४ वह दडा जिसके सिरे पर लोहा जडा हुआ हो। लोहाँगी। ५ बरछा। भाला। ६ मुद्गर। ७. कलश। घडा। ८ गोपुर। फाटक। ९ घर। मकान। १० तीर। बाण। ११ पर्वत। पहाड। १२ वज्र। १३ जल का घडा। १४ चद्रमा। १५ सूर्य। १६. नदी। १७. स्थल। १८ एक प्रकार का मूढ गर्भ। १९ कार्तिकेय का एक अनुचर। २०. ज्योतिष के २७ योगो मे से १९वाँ योग। २१ शेषनाग। २२ अविद्या जो मनुष्य को आनद और सुख से दूर रखती है। २३ वे बादल जो सूर्य के उदय या अस्त होने के समय उसके सामने आ जायँ।

परिघट्टन—पुं० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० परिघट्टित] तरल पदार्थ को चलाना।

परिघ-मूढ़-गर्भ—पुं० [स० मूढ-गर्भ कर्म० स०, परिघ-मूढा—गर्भ, उपमि०

परिचालकता—स्त्री०[सं० परिचालक+तल्–टाप्] परिचालक होने की अवस्था, गुण या भाव।

परिचालन—पु० [स० परि√चल्+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० परिचालित] १ ठीक तरह से गति मे लाना। चलाना। जैसे—नौका या रथ का परिचालन। २. उचित रूप मे किसी कार्य का निर्वाह करना। सचालन। जैसे—किसी सस्था या सभा अथवा उसके कार्यो का परिचालन करना। ३ हिलाना।

परिचालित—भू० कृ० [स० परि√चल्+णिच्+क्त] जिसका परिचालन किया गया हो। जो चलाया गया हो।

परिचिंतन—पु०[स० परि√चिन्त् (स्मरण करना)+ल्युट्–अन] अच्छी तरह से चिंतन करना।

परिचित—वि० [स० पर√चि० (चयन करना)+क्त] [भाव० परिचिति] १. जिसका या जिसके साथ परिचय हो चुका हो। जिसे जान लिया गया हो या जिसकी जानकारी हो चुकी हो। जाना-बूझा या समझा हुआ। ज्ञात। जैसे—वे मेरे परिचित है। २. जिसे परिचय मिल चुका हो या जानकारी हो चुकी हो। जैसे—मैं उनसे भली-भाँति परिचित हूँ। ३ जिससे जान-पहचान और मेल-जोल हो। जैसे—वहाँ हमारे कई परिचित है। ४. इकट्ठा किया हुआ। सचित।

पु० जैन दर्शन के अनुसार वह स्वर्गीय आत्मा जो दोबारा किसी चक्र मे आ चुकी हो।

परिचिति—स्त्री०[स० परि√चि+क्तिन्] १. परिचित होने की अवस्था या भाव।

†वि०=परिचित। (पूरब)

परिचित्र—पु०[स० परि+चित्र] दे० 'चार्ट'।

परिचिन्त्रित—भू० कृ०[स० प्रा० स०] १ जिसे अच्छी तरह से चिह्नित किया गया हो। २ जिस पर हस्ताक्षर किये जा चुके हो। (स्मृति)

परिचेय—वि०[स० परि√चि+यत्] १ जिसका परिचय प्राप्त किया जा सके, या किया जाने को हो। २ जिसका परिचय प्राप्त करना उचित या कर्त्तव्य हो। ३. जिसका चयन (सग्रह या सचय) किया जा सके या किया जाने को हो। सग्राह्य।

परिचौ*—पु० [स० परिचय]=परिचय।

परिच्छद—पु०[स० परि√छद् (ढाँकना)+णिच्+ घ, ह्रस्व] १ किसी चीज को चारो ओर से ढकनेवाला कपडा। जैसे—तकिये की खोली या गिलाफ। २ शरीर पर पहने जानेवाले कपडे। पहनावा। पोशाक। (ड्रेस) ३ वह विशिष्ट पहनावा जो किसी दल, वर्ग या सेवा विशेष के लोगो के लिए नियत या निर्धारित होता है। (यूनिफार्म) ४. राज-चिह्न। ५ राजा-महाराजाओ के साथ रहनेवाले लोग। परिचर। ६ कुटुब या परिवार के लोग। ६. असबाब। सामान।

परिच्छन्न—भू० कृ०[स० परि√छद्+क्त] १ जो चारो ओर से अथवा अच्छी तरह ढका हुआ हो। २. छिपा या छिपाया हुआ। ३ जो परिच्छद तथा वस्त्र पहने हुए हो। ४. साफ या स्वच्छ किया हुआ।

परिच्छा†—स्त्री०=परीक्षा।

परिच्छित्ति—स्त्री०[स० परि√छिद् (काटना) +क्तिन्] १ सीमा। हद। २ विभाग करने के लिए सीमा का निर्धारण। ३ किसी प्रकार का पृथक्करण या विभाजन।

परिच्छिन्न—भू० कृ० [स० परि√छिद्+क्त] १ जिसका परिछेद (अलगाव या विभाजन) किया गया हो। २. जो ठीक प्रकार से मर्यादित या सीमित किया गया हो। ३. घिरा हुआ। ४. छिपा या ढका हुआ।

परिच्छेद—पु० [स० परि√छिद्+घञ्] १ कोई चीज या बात इस प्रकार अलग-अलग या विभक्त करना कि उसका अच्छापन एक तरफ आ जाय और बुराई दूसरी तरफ। २ बँटवारा। ३. खड। भाग। ४ ग्रन्थो आदि का ऐसा विभाग जिसमे किसी विषय या उसके किसी अग का स्वतत्र रूप से प्रतिपादन, वर्णन या विवेचन किया गया हो। ५ अध्याय। प्रकरण। ६. सीमा। हद। ७ निर्णय।

परिच्छेदक—वि० [स० परि√छिद्+ण्वुल्—अक] १ सीमा निर्धारित करनेवाला। हद बतलाने या मुकर्रर करनेवाला।

पुं० १ सीमा। हद। २, नाप, परिमाण आदि।

परिच्छेदकर—पु० [स० ष० त०] एक प्रकार की समाधि।

परिच्छेदन—पु० [स० परि√छिद्+ल्युट्—अन] १. परिच्छेद अर्थात् खड या विभाग करना। २. अच्छाई और बुराई अलग अलग कर दिखलाना। ३. अध्याय। प्रकरण। ४ निर्णय।

परिच्छेद्य—वि० [स० परि√छिद्+ण्यत्] १ जिसे गिन, तौल या नाप सके। परिमेय। २ जिसे काटकर या और किसी प्रकार अलग कर सकें। ३. जिसका बँटवारा या विभाजन हो सके। विभाज्य। ४. जिसकी परिभाषा ठीक प्रकार से की जा सके।

परिच्युत—वि० [स० परि√च्यु (गति)+क्त] [भाव० परिच्युति] १. सब प्रकार से गिरा हुआ। २ पतित और भ्रष्ट। ३. जाति या बिरादरी से निकाला हुआ। जातिबहिष्कार।

परिच्युति—स्त्री० [स० परि√च्यु+क्तिन्] परिच्युत होने की अवस्था या भाव।

परिछत्र—पु० [स० प्रा० स०] एक तरह की बहुत बडी छतरी जिसकी सहायता से हवाबाज उडते हुए जहाजो से कूदकर नीचे उतरते हैं। (पैराशूट)

परिछत्रक—वि० [स० परिछत्र] परिछत्र की सहायता से उतरनेवाला। जैसे—परिछत्रक सेना।

परिछन†—पु०=परछन।

परिछाही—स्त्री०=परछाईं।

परिछिन्न—वि०=परिच्छिन्न।

परिजटन—पु०=पर्यटन।

परिजन—पु० [स० प्रा० स०] [भाव० परिजनता] १. चारो ओर के लोग विशेषत. परिवार के सदस्य। २ अनुगामी और अनुचर वर्ग।

परजनता—स्त्री० [स० परिजन+तल्+टाप्] १. परिजन होने की अवस्था या भाव। २ अधीनता।

परिजन्मा (न्मन्)—पु० [स० परि√जन् (उत्पत्ति)+मन्, नि०] १. चद्रमा। २. अग्नि।

परिजप्त—वि० [स० परि√जप् (जपना)+क्त] मद स्वर मे कहा हुआ।

परिजय्य—वि० [स० परि√जि (जीतना)+यत् नि० या आदेश] जो चारो ओर जय करने मे समर्थ हो। सब ओर जीत सकनेवाला।

विशेष—यह अलकार अभेद और सादृश्य पर आश्रित होता है, फिर भी इसमे आरोपण का तत्त्व प्रधान है। परवर्ती साहित्यकारो ने इस अलकार का लक्षण या स्वरूप बहुत-कुछ बदल दिया है। 'चद्रालोक' के मत से जहाँ उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना वर्णित होता है अथवा उपमान का उपमेय के साथ एक रूप होकर कोई काम करने का उल्लेख होता है, वहाँ परिणाम अलकार होता है। जैसे—यदि कहा जाय—राष्ट्रपति जी ने अपने कर-कमलो से प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।' तो यहाँ इसलिए परिणाम अलकार हो जायगा कि उन्होंने अपने करो से नही, बल्कि कर रूपी कमलो से उद्घाटन किया। रूपक अलकार से इसमे यह अतर है कि रूपक मे तो उपमेय पर उपमान का आरोप मात्र कर दिया जाता है, परतु परिणाम अलकार मे यह विशेषता होती है कि उपमेय का काम उपमान से कराकर अर्थ मे चमत्कार लाया जाता है।

१० नाट्य-शास्त्र मे कथावस्तु, की वह अतिम स्थिति जिसमे सघर्ष की समाप्ति होने पर उसका फल दिखलाया जाता है। जैसे—हरिश्चद्र नाटक के अंत मे रोहिताश्व का जी उठना और राजा हरिश्चद्र का अपनी पत्नी को पाकर फिर से परम सुखी और वैभवशाली होना 'परिणाम' कहा जायगा। इसी 'परिणाम' के आधार पर नाटको के दुःखात और सुखांत नामक दो भेद हुए है।

परिणामक—वि० [स० परि√नम्+णिच्+ण्वुल्—अक] जिसके कारण कोई परिणाम हो।

परिणामदर्शी (शिन्)—वि० [स० परिणाम√दृश् (देखना) +णिनि] १. जिसे होनेवाले परिणाम का पहले से भान हो। २ जो परिणाम या फल का ध्यान रखकर काम करता हो।

परिणाम-दृष्टि—स्त्री० [स० स० त०] वह दृष्टि या शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम या बात का परिणाम अथवा फल पहले से जान या समझ लेता है।

परिणामन—पु० [स० परि√नम्+णिच्+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह पुष्ट करना और बढाना। २ जातीय या सघीय वस्तुओ का किया जाने-वाला व्यक्तिगत उपभोग। (बौद्ध)

परिणामवाद—पु० [स० प० त०] साख्य का यह मत या सिद्धान्त कि जगत् की उत्पत्ति और विनाश दोनो सदा नित्य परिणाम के रूप मे होते रहते हैं।

परिणामवादी (दिन्)—वि० [स० परिणामवाद—इनि] परिणामवाद-सबधी।

पु० वह जिसका परिणामवाद मे विश्वास हो।

परिणाम-शूल—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे भोजन करने के उपरात पेट मे पीडा होने लगती है।

परिणामिक—वि० [स० पारिणामिक] १ परिणाम के रूप मे होनेवाला। जैसे—दुष्कर्मो का परिणामिक भोग। २ (भोजन) जो शीघ्र या सहज मे पच जाय।

परिणामित्र—पु० [स०] आधुनिक यत्र-विज्ञान मे एक प्रकार का यत्र जो एक प्रकार की विद्युत्-धारा को दूसरे प्रकार की विद्युत-धारा (अर्थात् निम्न को उच्च अथवा उच्च को निम्न) के रूप मे परिवर्तित करता है। (ट्रान्सफार्मर)

परिणामित्व—पु० [सं० परिणामिन्+त्व] परिणामी अर्थात् परिवर्तनशील होने की अवस्था या भाव।

परिणामि-नित्य—वि० [स० कर्म० स०] जो नित्य होने पर भी बदलता रहे। जिसकी सत्ता तो स्थिर रहे, पर रूप बराबर बदलता रहे। जो एक रस न होकर भी अविनाशी हो।

परिणामी (मिन्)—वि० [स० परिणाम+इनि] [स्त्री० परिणामिनी] १. परिणाम के रूप मे होनेवाला। २ परिणाम-सबधी। ३. जो बराबर बदलता रहे। रूपातरित होता रहनेवाला। परिवर्तनशील। ४. जो परिवर्तन मान या सह ले। ५ परिणाम-दर्शी।

परिणाय—पु० [स० परि√नी (ले जाना)+घञ्] १. किसी वस्तु को जिस दिशा मे चाहे उस दिशा मे चलाना। सब ओर चलाना। २. चौसर, शतरज आदि की गोटियाँ एक घर से दूसरे घर मे ले जाना या ले चलना। ३ व्याह। विवाह।

परिणायक—पु० [स० परि√नी+ण्वुल्—अक] १. परिणय या विवाह करनेवाला, अर्थात् पति। २. पथप्रदर्शक। अगुआ। नेता। ३ सेनापति।

परिणायक-रत्न—पु० [सं० कर्म० स०] बौद्ध चक्रवर्ती राजाओ के सप्तधन अथवा सात कोषों मे से एक।

परिणाह—पु० [सं० परि√नह् (बाँधना)+घञ्] १. विस्तार। फैलाव। २. घेरा। परिधि। ३. दीर्घ निश्वास।

परिणाहवान (वत्)—वि० [स० परिणाह+मतुप्, वत्व] फैला हुआ। प्रशस्त। विस्तृत।

परिणाही (हिन्)—वि० [स० परिणाह+इनि] फैला हुआ। प्रशस्त। विस्तृत।

परिंणिसक—वि० [स० परि√निंस् (चूमना)+ण्वुल्—अक] १. खाने या भक्षण करनेवाला। २ चुबन करनेवाला।

परिंणिसा—स्त्री० [स० परि√निंस्+अ+टाप्] १ भक्षण। खाना। २. चुबन।

परिणीत—भू० कृ० [सं० परि√नी+क्त] [स्त्री० परिणीता] १. जिसका परिणय हो चुका हो। व्याहा हुआ। विवाहित। २. उक्त के आधार पर, जिसका किसी के साथ घनिष्ठ सबध स्थापित हो चुका हो। उदा०—तुम परिणीत नही इन थोथे विश्वासो से।—पत। ३ (कार्य) जो पूरा या सपन्न हो चुका हो। सपादित।

परिणीत-रत्न—पु० [सं० कर्म० स०]=परिणायकरत्न। (दे०)

परिणीता—वि० [स० परिणीत+टाप्] (स्त्री) जिसका किसी के साथ विधिवत् परिणय या विवाह हो चुका हो। विवाहिता।

स्त्री० विवाहिता स्त्री या पत्नी।

परिणेता (तृ)—पु० [स० परि√नी+तृच्] परिणय या विवाह करनेवाला व्यक्ति। पति।

परिणेया—[illegible] परि√नी+अच्+टाप्] (स्त्री) जो पत्नी या भार्या [illegible] उपयुक्त हो। २ जिसका परिणय या विवाह होने [illegible] सकता हो।

परितः [illegible] रि+तस्] १. सब ओर। चारो ओर। २ पूरी [illegible] से।

[illegible] स।

परितप्त—भू० कृ० [सं० परि√तप् (तपना)+क्त] १ अच्छी तरह तपा या तपाया हुआ। बहुत गरम। २ जिसे बहुत अधिक परिताप या दुःख हुआ हो। बहुत अधिक दुःखी और संतप्त।

परितप्ति—स्त्री० [सं० परि√तप्+क्तिन्] १. परितप्त होने की अवस्था या भाव। परिताप। २ जलन। डाह। ३. बहुत विकट। मानसिक व्यथा। मनस्ताप।

परितर्कण—पु० [सं० परि√तर्क (दीप्ति, विचार)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह तर्क या विचार करना।

परितर्पण—पु० [सं० परि√तृप् (संतुष्ट करना)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह प्रसन्न या संतुष्ट करना।

परिताप—पु० [सं० परि√तप्+घञ्] १ बहुत अधिक ताप जिससे चीजें जलने या झुलसने लगें। २. घोर व्यथा। संताप। ३ पछतावा। पश्चात्ताप। ४ डर। भय। ५ कँप-कँपी। कंप। ६. एक नरक का नाम।

परितापी (पिन्)—वि० [सं० परि√तप्+णिनि] १ परिताप-संबंधी। २ परिताप उत्पन्न करनेवाला। ३ दे० 'परितप्त'।

परितिक्त—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक तीता।
पु० निंब। नीम।

परितुलन—पु० [सं० परि√तुल् (तुलना करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परितुलित] साहित्य में किसी ग्रंथ की लिखित और मुद्रित प्रतियों और उनके भिन्न भिन्न संस्करणों आदि का यह जानने के लिए मिलान करना कि उनका ठीक और मूल रूप क्या है अथवा क्या होना चाहिए। (कोल्लेशन) जैसे—सूर सागर का सम्पादन करते समय रत्नाकर जी ने उसकी पचीसों हस्त-लिखित प्रतियों का परितुलन किया था।

परितुष्ट—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० परितुष्टि] १ जिसका परितोष हो चुका हो या किया जा चुका हो। अच्छी तरह से तथा सब प्रकार से तुष्ट। २ जो बहुत खुश या प्रसन्न हो।

परितुष्टि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १. पूरी तरह से की जानेवाली तुष्टि। परितोष। २ खुशी। प्रसन्नता।

परितृप्ति—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० परितृप्ति] जो अच्छी तरह तृप्त हो चुका हो। पूर्ण रूप से तृप्त।

परितृप्त—स्त्री० [सं० प्रा०स०] परितृप्त करने या होने की अवस्था या भाव।

परितृप्ति—पु०=परितोष।

परितोलन—पु० [सं०] [भू० कृ० परितौलित] दे० 'परितुलन'।

परितोष—पु० [सं० परि√तुष् (प्रीति)+घञ्] १. निश्चिन्तता युक्त सुख जो कामना या साध पूरी होने पर होता है। अच्छी तरह होनेवाला तोष। पूर्ण तृप्ति। २. खुशी। प्रसन्नता।

परितोषक—वि० [सं० परि√तुष्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ परितोष करनेवाला। संतुष्ट करनेवाला। २. प्रसन्न या खुश करनेवाला।

परितोषण—पु० [सं० परि√तुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १ परितुष्ट करने की क्रिया या भाव। ऐसा काम करना जिससे किसी का परितोष हो। २ वह धन जो किसी को परितुष्ट करने के लिए दिया गया हो।

परितोषवान् (वत्)—वि० [सं० परितोष+मतुप्, वत्व] जो सहज में परितोष प्राप्त कर लेता है।

परितोषी (षिन्)—वि० [सं० परितोष+इनि] १ जिसे परितोष हो। २ जल्दी या सहज में परितुष्ट होनेवाला।

परितोस†—पु०=परितोष।

परित्यक्त—भू० कृ० [सं० परि√त्यज् (छोड़ना)+क्त] जिसे पूर्ण रूप से अथवा उपेक्षापूर्वक छोड़ दिया गया हो। (एबन्डन्ड)

परित्यक्ता—पु० [सं० परित्यक्त+टाप्] त्यागने या छोड़नेवाला।
वि० सं० 'परित्यक्त' का स्त्री०।
स्त्री० वह स्त्री जिसे उसके पति ने त्याग या छोड़ दिया हो।

परित्यजन—पु० [सं० परि√त्यज्+ल्युट्—अन] परित्याग करने की क्रिया या भाव। त्यागना। छोड़ना।

परित्यज्य—वि० [सं० परित्याज्य] =परित्याज्य।

परित्याग—पु० [सं० परि√त्यज्+घञ्] अधिकार स्वामित्व, संबंध, आधिकृत वस्तु, निजी संपत्ति, संबंधी आदि का पूर्ण रूप से तथा सदा के लिए किया जानेवाला त्याग। पूरी तरह से छोड़ देना। (एब्रन्डनिंग)

परित्यागना—स० [सं० परित्याग] पूरी तरह से या सदा के लिए परित्याग करना।

परित्यागी (गिन्)—वि० [सं० परि√त्यज्+घिनुण्] परित्याग करने अर्थात् पूरी तरह से या सदा के लिए छोड़नेवाला।

परित्याजन—पु० [सं० परि√त्यज्+णिच्+ल्युट्—अन] परित्याग।

परित्याज्य—वि० [सं० परि√त्याज्+ण्यत्] जिसका परित्याग करना उचित हो या किया जाने को हो। जो पूरी तरह से या सदा के लिए छोड़े जाने के योग्य हो।

परित्रस्त—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक त्रस्त या डरा हुआ।

परित्राण—पु० [सं० परि√त्रै (बचाना)+ल्युट्—अन] १. कष्ट, विपत्ति आदि से की जानेवाली पूर्ण रक्षा। २ शरीर पर के बाल या रोएँ। रोम।

परित्रात—भू० कृ० [सं० परि√त्रै+क्त] जिसका परित्राण या रक्षा की गई हो। रक्षा-प्राप्त।

परित्राता (तृ)—वि० [सं० परि√त्रै+तृच्] जो दूसरों का परित्राण करता हो। पूरी रक्षा करनेवाला।

परित्रायक—वि० [सं० परि√त्रै+ण्वुल्—अक] =परित्राता।

परित्रास—पु० [सं० परि√त्रस् (डरना)+घञ्] अत्यधिक त्रास।

परिदंशित—भू० कृ० [सं० परिदंश, प्रा० स०],+इतच्] जो पूर्ण रूप से अस्त्रों से सुसज्जित हो या किया गया हो।

परिदत्त—भू० कृ० [सं० परि√दा (देना)+क्त] १ (व्यक्ति) जिसे परिदान मिला हो। २ (धन) जो परिदान के रूप में दिया गया हो।

परिदर—पु० [सं० परि√दॄ (फाड़ना)+अप्] मसूड़ों में से खून और मवाद निकलने या बहने का एक रोग। (पायरिया)

परिदर्शन—पु० [सं० प्रा० स०] १ बहुत अच्छी तरह से किया जानेवाला या होनेवाला दर्शन। पूर्ण दर्शन। २ निरीक्षण। ३ न्यायालय में किसी मुकद्दमे की होनेवाली सुनवाई। (ट्रायल)

परिदष्ट—भू० कृ० [सं० परि√दंश+क्त] १ जो काटकर टुकड़े-टुकड़े

कर दिया गया हो। २ जिसे डक या दाँत लगा हो। डका या दाँत से काटा हुआ। दगित।

परिदहन—पु०[स० परि√दह् (जलाना)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह या पूर्ण रूप से जलाना।

परिदान—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० परिदत्त] १ लौटा देना। वापस कर देना। फेर देना। २. अदला-बदली। ३ अमानत लौटाना। ४ आज-कल वह आर्थिक सहायता जो राज्य सरकार व्यक्तियो, सस्थाओ आदि को उद्योगीकरण मे प्रोत्साहित करने के लिए देती है। (सब्सिडी)

परिदाय—पु०[स० परि√दा (देना)+घञ्] सुगधि। खुशबू।

परिदायी (यिन्)—वि०[स० परि√दा+णिनि] जो ऐसे वर से अपनी कन्या का विवाह करता हो जिसका बडा भाई अभी तक कुँआरा हो।

परिदाह—पु०[स० प्रा० स०] १ अत्यत जलन या दाह। २ मानसिक कष्ट। दु ख या सताप।

परिदिग्ध—वि०[स० प्रा० स०] जिस पर कोई वस्तु बहुत अधिक मात्रा मे लगी या पुती हो।

परिदीन—वि०[स० प्रा० स०] बहुत अधिक दीन या दु खी।

परिदृढ़—वि०[स० प्रा० स०] बहुत दृढ।

परिदृष्टि—स्त्री०[स०] किसी वस्तु का ऐसा दृश्य या रूप जिसमे दूर से देखने पर उसके सब अग अपने ठीक अनुपात मे और एक दूसरे से उचित दूरी पर दिखाई दें। सदर्श। (परस्पेक्टिव)

परिदेव—पुं०[स० परि√दिव् (गति)+घञ्] रोना-धोना। विलाप।

परिदेवन—पु०[स० परि√दिव्+ल्युट्—अन] १ कष्ट पहुँचने या हानि होने पर की जानेवाली चीख-पुकार। २ उक्त स्थिति मे की जानेवाली फरियाद या शिकायत। परिवाद। (कम्प्लेन्ट)

परिदेवना—स्त्री०=परिदेवन।

परिद्रष्टा (ष्टृ)—वि०[स०परि√दृश् (देखना)+तृच्] परिदर्शन करनेवाला।

परिद्वीप—पु०[स० ब० स०] गरुड का एक पुत्र।

परिध—स्त्री०=परिधि।

परिधन—पु०[स० परिधान]कमर और उससे निचला भाग ढकने के लिए पहना जानेवाला कपडा। अधोवस्त्र।

परिधर्षण—पु० [स० परि√धृष् (झिडकना)+ल्युट्—अन] १ आक्रमण। २ अपमान। तिरस्कार। ३ दूषित या बुरा व्यवहार।

परिधान—पु०[स० परि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. शरीर पर वस्त्र आदि धारण करना। कपडे ओढना या पहनना। २ वे कपडे जो शरीर पर धारण किये या पहने जायँ। पोशाक। ३ कमर के नीचे पहनने या बाँधने का कपडा। जैसे—धोती, लुगी आदि। ४ प्रार्थना स्तुति आदि का अत या समाप्ति।

परिधानीय—वि०[स० परि√धा+अनीयर्] [स्त्री० परिधानीया] जो परिधान के रूप मे धारण किया जा सके। पहने जाने के योग्य (वस्त्र)।

परिधाय—पु० [स० परि√धा+घञ्] १ कपडा। वस्त्र। २. पहनने के कपडे । परिधान। पोशाक। ३ वह स्थान जहाँ जल हो।

परिधायक—वि०[स० परि√धा+ण्वुल्—अक] १ ढकने, लपटने या चारो ओर से घेरनेवाला।

पु० १ घेरा। २ चहारदीवारी। प्राचीर।

परिधायन—पु० [स० परि√धा+णिच्+ल्युट्—अन] १ पहनना। २ पोशाक।

परिधारण—पु०[स० प्रा० स०] [वि० परिधार्य, परिधृत] १ अच्छी तरह किया जानेवाला धारण। २. अपने ऊपर उठाना, लेना या सहना। ३ बचाकर या रक्षित रूप मे रखना।

परिधावन—पु०[स० प्रा० स०] बहुत अधिक या बहुत तेज दौडना।

पिधावी (विन्)—वि० [स० परि√धाव् (गति)+णिनि] बहुत अधिक या बहुत तेज दौडनेवाला।

पु० ज्योतिष मे साठ सवत्सरो मे से छियालीसवाँ सवत्सर।

परिधि—स्त्री०[स०परि√धा+कि]१. वृत्त की रेखा। २ किसी गोलाकार वस्तु के चारो ओर खिची हुई वृत्ताकार रेखा। (सरकम्फरेन्स) ३. वह गोलाकार मार्ग जिस पर कोई चीज चलती,घूमती या चक्कर लगाती हो। ४ प्राय गोलाकार माना जानेवाला कोई ऐसा वास्तविक या कल्पित घेरा, जो दूसरे बाहरी क्षेत्रो से अलग हो। कुछ विशेष लोगो या कार्यो का स्वतत्र क्षेत्र। वृत्त। (सर्किल) ५ सूर्य या चन्द्रमा के आस-पास दिखाई पडनेवाला घेरा। परिवेश। मडल। ६ किसी वस्तु की रक्षा के लिए बनाया हुआ घेरा। बाडा। चहारदीवारी। नियत या नियमित मार्ग। ८ वे तीन खूँटे जो यज्ञ-मडप के आस-पास गाडे जाते थे। ९ क्षितिज। १० परिधान। ११ दे० 'परिवेश'।

परिधिक—वि०[स०] १. परिधि-सबधी। २ जिसका कार्य-क्षेत्र किसी विशेष परिधि मे हो। जैसे—परिधिक निरीक्षक। (सर्किल इस्पेक्टर)

परिधिस्थ—वि०[स० परिधि√स्था (ठहरना)+क] जो किसी परिधि मे स्थित हो।

पु०१. नौकर। सेवक। २ वह सेना जो रथ और रथी की रक्षा के लिए नियुक्त रहती थी।

परिधीर—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक धीरजवाला। परम वीर।

परिधूपित—भू०कृ० [स० प्रा० स०] धूप से अच्छी तरह बसाया या सुगधित किया हुआ।

परिधूमन—पु०[स० परिधूम, प्रा० स०,+क्विप्+ल्युट्—अन] १ डकार। २. सुश्रुत के अनुसार तृष्णा रोग का एक उपद्रव जिसमे एक विशेष प्रकार की कै होती है।

परिधूसर—वि०[स० प्रा० स०] १ धूल से भरा हुआ। जिसमे खूब धूल लगी हो। २ धूल के रग का। मटमैला।

परिधेय—वि०[स०परि√धा (धारण)+यत्] जो परिधान के रूप मे काम आ सके। जो पहना जा सके या पहने जाने के योग्य हो।

पु० १ पहनने के कपडे। परिधान। पोशाक। २ अदर या नीचे पहनने का कपडा। जैसे—गजी, लहँगा या साया।

परिध्वंस—पु०[स० प्रा० स०] १. पूरी तरह से होनेवाला ध्वस या नाश। सर्व-नाश। २ ध्वस। नाश।

परिध्वस्त—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसका पूरी तरह से ध्वस या नाश हो चुका हो या किया जा चुका हो।

परिनगर—पु०[स० प्रा० स०] नगर से कुछ हटकर बनी हुई बस्ती जो शासकीय दृष्टि से उसकी सीमा के अतर्गत मानी जाती हो। (सबर्ब)
परिनय†—पु०=परिणय।
परिनागर—वि०[स० पारिनगर] परिनगर-सबधी। (सबर्बन)
परिनाम*—पु०=परिणाम।
परिनामी†—वि० =परिणामी।
परिनिर्णय—पु०[स० प्रा० स०] १. किसी विवाद के सबध मे दिया हुआ पचो का निर्णय। २ वह पत्र जिसमे पचो का निर्णय लिखा हुआ हो। पचाट। (अवार्ड)
परिनिर्वाण—पु०[स० प्रा० स०] पूर्ण निर्वाण। पूर्ण मोक्ष।
परिनिर्वाति—स्त्री०[स०परि-निर्√वा (गति)+क्तिन्]=परिनिर्वाण।
परिनिर्वृत्त—वि० [स०प्रा० स०] [भाव० परिनिर्वृत्ति] १ जो मुक्त हो चुका हो। छूटा हुआ। २. जिसे मोक्ष मिल चुका हो।
परिनिर्वृत्ति—स्त्री०[स० प्रा० स०] १. मोक्ष। २. छुटकारा। मुक्ति।
परिनिष्ठा—स्त्री०[स० प्रा० स०] १. चरमसीमा या अवस्था। अतिम सीमा। पराकाष्ठा। २ पूर्णता। ३. अभ्यास या ज्ञान की पूर्णता।
परिनिष्ठित—वि० [स० परि–नि√स्था+क्त] १. (कार्य) जो पूरा या सम्पन्न किया जा चुका हो। निपटाया हुआ। २. जो किसी काम मे पूरी तरह से कुशल या दक्ष हो।
परिनिष्पन्न—वि० [स० प्रा० स०] १. (काम) जो अच्छी तरह पूरा हो चुका हो। २. जो भाव-अभाव और सुख-दु ख की कल्पना से बिलकुल दूर या परे हो। (बौद्ध)
परिनैष्ठिक—वि०[स० प्रा० स०] सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्कृष्ट।
परिन्यास—पु० [स० प्रा०स०] १. किसी पद, वाक्य आदि के भाव मे पूर्णता लाना जो साहित्य मे एक विशिष्ट गुण माना गया है। २ साहित्यिक रचना मे उक्त प्रकार का स्थल। ३. नाटक मे आख्यान बीज अर्थात् मुख्य कथा की मूलभूत घटना का सकेत करना।
परिपंच†—पु०=प्रपच।
परिपंथ—वि०[स० परि√पथ् (गति)+अच्] जो रास्ता रोके हुए हो।
परिपंथक—वि०[स० परि√पथ्+ण्वुल्—अक] मार्ग या रास्ता रोकने वाला।
पु० १ वह जो प्रतिकूल या विरुद्ध आचरण या व्यवहार करता हो। २ दुश्मन। शत्रु। उदा०—पार भई परिपथि गजिमय।—गोरखनाथ। ३. लुटेरा। डाकू।
परिपंथिक—वि०,पु०=परिपथक।
परिपथी (न्थिन्)—वि०,पु०[स० परि√पथ्+णिनि]=परिपथक।
परिपक्व—वि०[स० प्रा० स०] [भाव० परिपक्वता] १. जो अभिवृद्धि, विकास आदि की दृष्टि से पूर्णता तक पहुँच चुका हो। जैसे—परिपक्व अन्न, फल आदि। २. अच्छी तरह पचा हुआ (भोजन)। ३. जिसका उपयुक्त या नियत समय आ गया हो। (मैच्योर) ४ अच्छा अनुभवी, ज्ञाता और बहुदर्शी।५ कुशल। दक्ष। निपुण।
परिपक्वता—स्त्री०[स०परिपक्व+तल्+टाप्]परिपक्व होने की अवस्था या भाव।
परिपण—पु०[स० परि√पण् (व्यवहार करना)+घ] मूलधन। पूंजी।
परिपणन—पु० [स० परि√पण्+ल्युट्—अन] १ बाजी या शर्त लगाना। २ प्रतिज्ञा या वादा करना।
परिपणित—भू० कृ०[स० परि√पण्+क्त] १ (कार्य या बात) जिस पर शर्त लगी या लगाई गई हो। २. (धन) जो बाजी या शर्त मे लगाया गया हो। ३ (बात) जिसके सबध मे वादा किया गया हो।
परिपणित-काल-संधि—स्त्री०[स० काल-सधि, प० त० परिपणित-काल सधि, कर्म० स०] प्राचीन भारत मे मित्र देशो मे होनेवाली एक तरह की सधि, जिसमे यह नियत किया जाता था कि कितने-कितने समय तक कौन-कौन सदस्य लडेगा।
परिपणित-देश-संधि—स्त्री०[स० देश-सधि, प० त०, परिपणित-देशसधि, कर्म० स०] प्राचीन भारत मे मित्र देशो मे होनेवाली वह सधि, जिसमे यह नियत होता था कि कौन किस देश पर आक्रमण करेगा।
परिपणित-सधि—स्त्री०[स० कर्म० स०] वह सधि जिसमें कुछ शर्तें स्वीकार की गई हों।
परिपणितार्थ-संधि—स्त्री०[स० अर्थ-सधि, प० त० परिपणितअर्थसधि, कर्म० स०] ऐसी सधि जिसके अनुसार किसी को पूर्व निश्चय के अनुसार कुछ काम करना पडता हो।
परिपतन—पु०[स० प्रा० स०]किसी के चारो ओर उडना, चक्कर लगाना या मँडराना।
परिपति—वि०[स० परि√पत् (गिरना)+डन्] जो सब का स्वामी हो।
पु० परमात्मा।
परिपत्र—पु०[स० प्रा० स०]१. वह आधिकारिक पत्र जो विशिष्ट या सबद्ध पदाधिकारियों, सदस्यों आदि को सूचनार्थ भेजा जाता है। गश्ती चिट्ठी। (सरक्यूलर) २. वह पत्र जिसमे किसी को कुछ स्मरण करने के लिए कुछ लिखा गया हो। स्मृतिपत्र। (मैमोरैण्डम)
परिपथ—पु० [स०] १. किसी वृत्ताकार वस्तु के किनारे-किनारे बना हुआ पथ। २. अनेक नगरो, देशो, स्थलो आदि मे पारी-पारी से होते हुए जाने के लिए पहले से नियत किया हुआ मार्ग। (सरकिट)
परिपर—पु०[स० परि√पृ (पूर्ति)+अप्]=परिपथ।
परिपवन—पु० [स० परि√पू (पवित्र करना)+ल्युट—अन] १ अनाज ओसाना या बरसाना। २. अन्न ओसाने का सूप।
परिपाडिमा (मन्)—स्त्री० [स० पाडिमन, पाडु+इमनिच्, परिपाडिमन्, प्रा० स०] बहुत अधिक सफेदी या पीलापन।
परिपांडु—वि०[स० प्रा० स०] १. बहुत हलका पीला। सफेदी लिए हुए पीला। २ दुबला-पतला। कृश और क्षीण।
परिपाक—पु०[स० परि√पच् (पकाना)+घञ्] १ अच्छी तरह या ठीक पकना या पकाया जाना। २ पेट मे भोजन अच्छी तरह पचना। ३. किसी विषय या बात की ऐसी पूर्ण अवस्था तक पहुँचना जिसमे कुछ भी त्रुटि न रह जाय। ४. परिणाम। फल। ५. निपुणता। दक्षता।
परिपाकिनी—स्त्री०[स० परिपाक+इनि+ङीप्] निसोथ।
परिपाचन—पु०[स० परि√पच्+णिच्+ल्युट्–अन]अच्छी तरह पचाना। भली भाँति पचाना।
परिपाचित—भू० कृ०[स० परि√पच्+णिच्+क्त] अच्छी तरह पकाया हुआ।

परिपाटल—वि०[सं० प्रा० स०] पीलापन लिए लाल रंगवाला।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।

परिपाटलित—भू० कृ०[सं० परिपाटल+क्विप्+क्त] परिपाटल रंग में रँगा हुआ।

परिपाटि—स्त्री० [सं० परि√पट् (गति)+णिच्+इन्] =परिपाटी।

परिपाटी—स्त्री० [सं० परिपाटि+ङीप्] १. किसी जाति, समाज आदि में कोई काम करने का कोई विशिष्ट बँधा हुआ ढंग अथवा शैली। २ विशिष्ट अवसर पर कोई विशिष्ट काम करने की प्रथा। ३ उक्त प्रकार से काम करने का ढंग या प्रथा।
विशेष—परिपाटी, पद्धति और प्रथा का अन्तर जानने के लिए देखें 'प्रथा' का विशेष।

परिपाठ—पुं०[सं० परि√पठ्(पढ़ना)+घञ्] १ वेदों का पुनर्पठन। २ विस्तार के साथ उल्लेख या पाठ करना।

परिपार (रि)†—स्त्री०[सं० पाली=मर्यादा] मर्यादा। उदा०—किहि नर किहि सर राखियैं खैर वढैं परिपारि।—विहारी।

परिपार्श्व—वि०[सं० प्रा० स०] पार्श्व या बगल का। बहुत पास का।
पुं० १ पार्श्व। २ सामीप्य।

परिपालक—वि०[सं०परि√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] परिपालन करनेवाला।

परिपालन—पुं०[सं० परि+पाल+णिच्+ल्युट्—अन] १ रक्षा। बचाव २ बहुत ही सावधानी से किया जानेवाला पालन-पोषण या लालन-पालन।

परिपालना—स्त्री०[सं० परि√पाल्+णिच्+युच्—अन] रक्षण। बचाव।
स०[सं० परिपालन] परिपालन करना।

परिपालनीय—वि०[सं० परि√पाल्+णिच्+अनीयर्] जिसका परि-पालन करना या होना चाहिए।

परिपालयिता (तृ)—वि०[सं० परि√पाल्+णिच्+ तृच्] परिपालन करनेवाला व्यक्ति। परिपालक।

परिपाल्य—वि० [सं० परि√पाल्+ण्यत्] जिसका परिपालन करना उचित हो या किया जाने को हो।

परिपिंजर—वि०[सं० प्रा० स०] हलके लाल रंग का।

परिपिच्छ—पुं०[सं० प्रा० स०] एक प्रकार का आभूषण, जो मोर की पूँछ के परों का बना होता था।

परिपिष्टक—पुं०[सं० परि√पिष् (चूर्ण करना)+क्त+कन्] सीसा।

परिपीडन—पुं०[सं० प्रा० स०] १ अत्यंत पीडा पहुँचाना। बहुत कष्ट देना। २ अच्छी तरह दबाना या पीसना। ३ अनिष्ट, अपकार या हानि करना।

परिपीड़ित—भू० कृ०[सं० प्रा० स०] जो बहुत अधिक पीडित किया गया हो या हुआ हो।

परिपीवर—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत अधिक मोटा या स्थूल।

परिपुष्करा—स्त्री०[सं० प्रा० ब० स०] गोडुंब ककडी। गोडुंबा।

परिपुष्ट—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] १ जिसका पोषण भली भाँति हुआ हो। पूर्ण रूप से पुष्ट।

परिपुष्टि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] परिपुष्ट होने की अवस्था या भाव।

परिपूजन—पुं०[सं० प्रा० स०] सम्यक् प्रकार से किया जानेवाला पूजन या उपासना।

परिपूत—वि०[सं० प्रा० स०] अति पवित्र।
पुं० ऐसा अन्न जिसमें से कूड़ा-करकट, भूसी आदि निकाल दी गई हो। साफ किया हुआ अन्न।

परिपूरक—वि०[सं० प्रा० स०] १ परिपूर्ण करनेवाला। भर देनेवाला। २. धन-धान्य आदि से युक्त या संपन्न करनेवाला। ३ पूरा। संपूर्ण। सारा।

परिपूरणीय—वि०[सं० प्रा० स०] परिपूर्ण किये जाने के योग्य।

परिपूरन†—वि०=परिपूर्ण।

परिपूरित—भू० कृ०[सं० प्रा० स०] १. अच्छी तरह या पूरा-पूरा भरा हुआ। लबालब। २ पूरा या समाप्त किया हुआ।

परिपूर्ण—वि०[सं० प्रा० स०] १ जो सब प्रकार से पूर्ण हो। २ अच्छी तरह तृप्त किया हुआ। ३ जो पूरा या समाप्त हो चुका हो या किया जा चुका हो।

परिपूर्णेन्दु—पुं०[सं०परिपूर्ण-इंदु, कर्म० स०] सोलहों कलाओं से युक्त चंद्रमा। पूर्णिमा का पूरा चाँद।

परिपूर्ति—स्त्री०[सं० प्रा० स०]परिपूर्ण होने की अवस्था, क्रिया या भाव। परिपूर्णता।

परिपृच्छक—वि०[सं० परिप्रच्छक] जिज्ञासा या प्रश्न करनेवाला। पूछनेवाला।

परिपृच्छनिका—स्त्री०[सं० प्रा० स०] वह बात जिसके संबंध में वाद-विवाद किया जाय। वाद का विषय।

परिपृच्छा—स्त्री०[सं० प्रा० स०] १ पूछने की क्रिया या भाव। पूछ-ताछ। २ जिज्ञासा।

परिपेल—पुं० [सं० परि√पेल् (कंपन)+अच्] केवटी मोथा। कैवर्त मुस्तक।

परिपेलव—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर तथा सुकुमार।
पुं० केवटी मोथा।

परिपोट(क)—पुं० [सं० परि√पुट् (फोड़ना)+घञ्] [परिपोट+कन्] कान का एक रोग जिसमें उसकी त्वचा गल या छिल जाती है।

परिपोटन—पुं०[सं० परि√पुट्+ल्युट्—अन] किसी चीज का छिलका अथवा ऊपरी आवरण हटाना।

परिपोषण—पुं० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० परिपोषित] अच्छी तरह किया जानेवाला पोषण। भली भाँति पुष्ट करना।

परिप्रश्न—पुं०[सं० प्रा० स०] कोई बात जानने के लिए किया जाने-वाला प्रश्न। (एन्क्वायरी)

परि-प्रश्नक—पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विशेष रूप से किसी विशिष्ट विभाग या विषय से संबंध रखनेवाली बातों की पूछ-ताछ की जाती है। (एन्क्वायरी आफिस)

परिप्रेक्ष्य—पुं०[सं०] चित्रकला में, दृश्यों, पदार्थों, व्यक्तियों का ऐसा अंकन या चित्रण जिसमें उनका पारस्परिक अन्तर ठीक उसी रूप में दिखाई देता हो, जिस रूप में वह साधारणत आँखों से देखने पर दिखाई देता है। (पर्स्पेक्टिव)

परिप्रेषण—पुं०[सं० प्रा० स०] [भू० कृ० परिप्रेषित] १ चारों ओर

भेजना। २. किसी को दूत या हरकारा बनाकर कहीं भेजना। २ देश-निकाला। निर्वासन। ३ परित्याग।

परिप्रेषित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १. भेजा हुआ। प्रेषित। २ निकाला हुआ। निष्कापित। ३ छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त।

परिप्रेष्टा (ष्टृ)—वि०[स० प्रा० स०] जो भेजा जाने को हो या भेजे जाने के योग्य हो।

पु० नौकर। सेवक।

परिप्लव—वि० [स० परि√प्लु (गति)+अच्] १ तैरता या बहता हुआ। २ जो गति मे हो। ३ हिलता-काँपता हुआ।

पु० १ तैरना। २ पानी की बाढ़। ३ अत्याचार। ४ नाव। नौका।

परिप्लावित—भू० कृ० [स०] (स्थान) जो बाढ़ के कारण जलमग्न हो चुका हो।

परिप्लुत—वि० [स० परि√ प्लु+क्त] १ जिसके चारो ओर जल ही जल हो। २ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। तर। ३ काँपता या हिलता हुआ।

पु० कही पहुँचने के लिए उछलकर आगे बढ़ने की क्रिया। छलाँग।

परिप्लुता—स्त्री०[स० परिप्लुत+टाप्] १. मदिरा। शराब। २. ऐसी योनि जिसमे मैथुन या मासिक रजःस्राव के समय पीड़ा होती हो। (वैद्यक)

परिप्लुष्ट—वि०[स० परि√प्लुष् (दाह)+क्त) १. जला या जलाया हुआ। २ झुलसा हुआ।

परिप्लोष—पु० [स० परि√प्लुष्+घञ्] १ तपना। ताप। २ जलन। दाह। ३ शरीर के अन्दर का ताप।

परिफुल्ल—वि०[स० प्रा० स०] १ अच्छी तरह खिला हुआ। खूब खिला हुआ। २ अच्छी तरह खुला हुआ। ३ बहुत अधिक प्रसन्न। ४. जिसके रोएँ खड़े हो गये हो। जिसे रोमाच हुआ हो।

परिबधन—पु०[स० प्रा० स०] [वि० परिबद्ध] ऐसा बधन जिसमे चारो ओर से किसी को जकड़ा जाय।

परिबर्ह—पु०[स० परि√बर्ह् (दान)+घञ्] १ राजाओ के हाथी-घोड़ो पर डाली जानेवाली झूल। २. राजा के छत्र, चँवर आदि राज-चिह्न। राजा का साज-सामान। ३ घर-गृहस्थी मे नित्य काम आनेवाली चीजें। घर का सामान। ४ धन-सम्पत्ति। दौलत।

परिबर्हण—पु०[स० परि√बर्ह्+ल्युट्—अन] १. पूजा। उपासना। २ सब प्रकार से होनेवाली वृद्धि। ३ सम्पन्नता। समृद्धि।

परिबल—पु०[स० प्रा० स०] यत्रो आदि का वह बल या शक्ति जिसकी प्रेरणा से उसका कोई अग या पहिया किसी अक्ष या बिन्दु पर घूमता या चक्कर लगाता है। (मोमेन्टम)

परिबाधा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. बहुत बड़ी या विकट बाधा। २ कष्ट। पीड़ा। ३ परिश्रम। ४ थकावट। श्राति।

परिबृंहण—पु० [स० परि√बृह् (वृद्धि)+ल्युट्—अन] [भू०कृ० परिबृंहित] १ चारो ओर या हर तरफ से बढ़ना। वर्धन। २. पूरक ग्रथ जो किसी मुख्य ग्रथ मे प्रतिपादित विचारो की पुष्टि और समर्थन करता हो।

परिबेस†—पु०=परिवेष।

परिबेठना—स० [स० प्रतिवेष्ठन] आच्छादित करना। लपेटना। ढाकना। उदा०—ग्रीष्म द्वैपहरी सिस जोन्ह मह्या विष ज्वालन सों परिबेठी।—देव

परिबोध—पु०[स० प्रा० स०] १. ज्ञान। २. तर्क। ३ वे प्रतिबध या विघ्न जो दुर्बल चित्तवाले साधको को समाधिस्थ नही होने देते।

परिबोधन—पु०[स० परि√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० परिबोधनीय] १ ठीक प्रकार से बोध कराना। २ दड की धमकी देकर कोई विशेष कार्य करने से रोकना। चेतावनी देना। ३ चेतावनी।

परिबोधना—स्त्री०[स० परि√बुध्+णिच्+युच्—अन, टाप्] चेतावनी।

परिभग—पु०[स० प्रा० स०] टुकड़े-टुकड़े करना।

परिभक्ष—वि०[स० परि√भक्ष् (खाना)+अच्] परिभक्षण करनेवाला।

परिभक्षण—पु०[स० परि√भक्ष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिभक्षित] १ पूरी तरह से खाना। २. खूब खाना।

परिभक्षा—स्त्री०[स० परि√भक्ष्+अ+टाप्] आपस्तंब सूत्र के अनुसार एक प्रकार का विधान।

परिभर्त्सन—पु०[स० प्रा० स०] चारो ओर से होनेवाली भर्त्सना।

परिभव—पु०[स० परि√भू (होना)+अप्] अनादर। अपमान। तिरस्कार। उदा०—चिर परिभव से श्रेष्ठ है मरण।—पत।

परिभवनीय—वि०[स० परि√भू+अनीयर्] १. जो अनादर या अपमान का पात्र हो। २ जिसकी पराजय निश्चित-प्राय हो।

परिभवी (विन्)—वि० [स० परि√भू+इनि] दूसरो का अनादर या अपमान करनेवाला।

परिभाव—पु०[स० परि√भू+घञ्] १. अनादर। अपमान। परिभव। २. मात करना। हराना। पराभव।

परिभावन—पु०[स० परि√भू+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिभावित] १. मिलाप। सयोग। मिलन। २ चिता। फिक्र।

परिभावना—स्त्री०[स० परि√भू+णिच्+युच्—अन+टाप्] १ चिन्तन। विचार। २. चिता। फिक्र। ३ साहित्य मे ऐसा वाक्य या पद जिससे अतिशय उत्सुकता उत्पन्न हो।

परिभावित—भू० कृ०[स० परि√भू+णिच्+क्त] १. मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। २. व्याप्त। ३. जिस पर विचार किया जा चुका हो। विचारित।

परिभावी (विन्)—वि०[स० परि√भू+णिच्+णिनि] अनादर, अपमान या तिरस्कार करनेवाला।

परिभावुक—वि०=परिभावी।

परिभाषक—वि०[स० परि√भाष् (बोलना)+ण्वुल—अक] १ निंदा के द्वारा किसी का अपमान करनेवाला। २. निंदक।

परिभाषण—पु०[स० परि√भाष्+ल्युट्—अन] १ बात-चीत। वार्तालाप। २. दोषारोपण तथा निंदा करना। ३ नियम।

परिभाषा—स्त्री०[स० परि√भाष्+अ+टाप्] १. बात-चीत। २ निंदा। ३. व्याकरण मे वह व्याख्यापक सूत्र जो पाणिनी के सूत्रों के साथ रहता और उनके प्रयोग की रीति बतलाता है। ४ किसी वाक्य मे आये हुए पद या शब्द का अर्थ अथवा आशय निश्चित रूप से स्पष्ट करने की

क्रिया या प्रकार। ५ ऐसा कथन या वाक्य जो किसी पद या शब्द का अर्थ या आशय स्पष्ट रूप से बतलाता या व्यक्त करता हो। व्याख्या से युक्त अर्थापन। (डेफिनेशन) ६ ऐसा शब्द जो किसी विज्ञान या शास्त्र मे किसी विशिष्ट अर्थ मे चलता या प्रयुक्त होता हो। परिभाषिक शब्द। (टेक्निकल टर्म)

परिभाषित—भू० कृ०[स० परि√भाष्+क्त] (शब्द या पद) जिसकी परिभाषा की गई या हो चुकी हो। (डिफाइन्ड)

परिभाषी (षिन्)—वि० [स० परि√भाष्+णिनि] बोलने या भाषण करनेवाला।

परिभाष्य—वि०[स० परि√भाष्+ण्यत्] १ जो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता हो या कहा जाने को हो। २ जिसकी परिभाषा की जा रही हो या की जाने को हो।

परिभिन्न—वि०[स० प्रा० स०] १. टूटा-फूटा या फटा हुआ। २ विकृत।

परिभुक्त—भू०कृ०[स० परि√भुज् (भोगना)+क्त] जिसका परिभोग किया गया हो या हो चुका हो।

परिभुग्न—वि०[स० परि√भुज् (चूर्ण करना)+क्त] टेढा।

परिभू—वि०[स० परि√भू+क्विप्] १. जो चारो ओर से घेरे या आच्छादित किये हुए हो। २ नियम, बधन आदि मे रहनेवाला। ३ नियामक। परिचालक।

परिभूत—भू०कृ०[स० परि√भू+क्त] [भाव० परिभूति] १. जिसका परिभव हुआ हो। २ अनादृत। तिरस्कृत। ३ हारा हुआ। परास्त।

परिभूति—स्त्री०[स० परि+भू+क्तिन्] अपमानित होने या हारने की अवस्था या भाव।

परिभूषण—पु०[स० परि√भूष् (सजाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिभूषित] १ अच्छी तरह से भूषित करना। अलकृत करना। २ प्राचीन भारत मे, वह सधि जो आक्रमक को अपने देश का राजस्व देकर की जाती थी।

परिभूषित—भू०कृ०[स० परि√भूष्+क्त] जिसका परिभूषण किया गया हो या हुआ हो।

परिभेद—पु०[स० परि√भिद् (फाडना)+घञ्] १ अच्छी तरह से भेदन करना। २ शस्त्रो आदि से किया जानेवाला आघात। ३ उक्त प्रकार के आघात से होनेवाला क्षत। घाव। जखम।

परिभेदक—वि०[स० परि√भिद्+ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह भेदन करने अर्थात् काटने या फाडनेवाला। २ गहरा घाव करनेवाला। पु० यथेष्ट क्षत या घात करनेवाला शस्त्र।

परिभोक्ता (क्तृ)—वि०[स०परि√भुज्+तृच्] १ परिभोग करनेवाला। २ दूसरे के धन का उपभोग करनेवाला। पु० गुरु के धन का उपभोग करनेवाला व्यक्ति।

परिभोग—पु०[स० प्रा०स०] [वि० परिभोग्य] १ बहुत अधिक किया जानेवाला भोग। २. स्त्री के साथ किया जानेवाला मैथुन। सभोग।

परिभ्रंश—पु०[स० परि√ भ्रंश् (अध पतन)+घञ्] १ गिरना या गिराना। पतन। स्खलन। २ पलायन। भगदड़।

परिभ्रम—पु०[स० परि√भ्रम् (घूमना)+घञ्] १. चारो ओर घूमना। पर्यटन। २ भ्रम। ३ सीधी तरह से कोई बात न कहकर उसे घुमा-फिराकर चक्करदार ढग या साकेतिक रूप से कहना। जैसे—'नाक पर मक्खी न बैठने देना।' के बदले मे कहना—सूँघने की इन्द्रिय पर घर मे उडते फिरने वाले कीडे या पतगे को आसन न लगाने देना।

परिभ्रमण—पु०[स० परि√भ्रम्+ल्युट्—अन] १ चारो ओर घूमना। २ विज्ञान मे, किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु को केन्द्र मानकर उसके चारो ओर घूमना या चक्कर लगाना। (रोटेशन) जैसे—चद्रमा पृथ्वी का और पृथ्वी सूर्य का परिभ्रमण करता है। ३ घेरा। परिधि।

परिभ्रष्ट—भू० कृ०[स० परि√ भ्रश् +क्त] १ गिरा हुआ। च्युत। पतित। २ स्खलित। भागा हुआ।

परिभ्रामी (मिन्)—वि० [स० परि √भ्रम्+णिनि] परिभ्रमण करनेवाला।

परिमंडल—वि०[स० प्रा०स०] [भाव० परिमंडलता] १. गोल। वर्तुलाकार। २ जो तौल मे एक परमाणु के बराबर हो।
पु० १ चक्कर। २. घेरा। विशेषत वृत्ताकार घेरा। परिधि। ३ एक तरह का जहरीला कीडा। ३ चद्रमा अथवा सूर्य के चारो ओर की प्रकाशमान वृत्ताकार रेखा। ४ चद्रमा या सूर्य का प्रभामडल। (कारोना)

परिमडल कुष्ठ—पु०[स० कर्म०स०] कुष्ठ का एक भेद।

परिमडलता—स्त्री०[स० परिमडल+तल्+टाप्] गोलाई।

परिमडलित—भू० कृ० [स० परिमडल+इतच्] चारो ओर से गोल किया हुआ। गोलाकृति बनाया हुआ।

परिमथर—वि०[स० प्रा०स०] बहुत अधिक मथर।

परिमंद—वि० [स० प्रा० स०] १ अत्यधिक मद बुद्धि। २ बहुत ही शिथिल या सुस्त।

परिमन्यु—वि०[स० अत्या० स०] जिसे बहुत अधिक क्रोध आता हो। क्रोधी स्वभाव का। गुस्सेवर।

परिमर—पु० [स० परि√मृ (मरना)+अप्] १ पूर्ण नाश। २ किसी के पूर्ण नाश के लिए किया जानेवाला एक तात्रिक प्रयोग। ३ वायु।

परिमर्द—पु०[स० परि√मृद् (मर्दन)+घञ्] बहुत अधिक या अच्छी तरह से किया जानेवाला मर्दन।

परिमर्श—पु०[स० परि√मृश् (छूना, विचारना)+घञ्] १ छू जाना। लग जाना। २ लगाव होना। ३ अच्छी तरह किया जानेवाला विचार। परामर्श।

परिमर्ष—पु०[स० परि√मृष् (सहना)+घञ्] १ ईर्ष्या। २ कुढन। ३ क्रोध।

परिमल—पु०[स० परि √ मल् (धारण)+अच्] १. अच्छी तरह मलना। २ शरीर मे सुगधित द्रव्य मलना या लगाना। ३ उक्त प्रकार से शरीर मे मले या लगाये हुए पदार्थो से निकलनेवाली सुगध। ४ खुशबू। सुगध। सुवास। ५ पुष्पो आदि से निकलनेवाली वह सुगध जो चारो ओर दूर तक फैलती हो। ६ मैथुन। सभोग। ७ पडितो या विद्वानो की मडली या समुदाय।

परिमलज—वि०[स० परिमल√जन् (उत्पन्न होना)+ड] परिमल अर्थात् मैथुन से प्राप्त होनेवाला (सुख)।

परिमलित—भू० कृ० [स० परिमल+इतच्] फूलो आदि की सुगध से सुगधित किया हुआ।

परिमा—स्त्री० [सं० परि√मा (मापना)+अङ्+टाप्] १ सीमा। हद। २. ज्यामिति में, किसी क्षेत्र की सीमा सूचित करनेवाली रेखा। (बाउंड)

परिमाण—पुं० [सं० परि √मा+ल्युट्—अन] १. गिनने, तौलने, मापने आदि पर प्राप्त होनेवाला फल। २ नाप, जोख तौल आदि की दृष्टि से किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, भार, घनत्व विस्तार आदि। मान। (क्वान्टिटी) ३ चारों ओर का विस्तार। घेरा।

परिमाणक—पुं० [सं० परिमाण+कन्] १. परिमाण। २. तौल। भार।

परिमाण-मंडल—पुं० [सं०] भूगर्भ-शास्त्र में पृथ्वी के तीन मुख्य पटलों या विभागों में बीच का पटल या विभाग जो अनेक प्रकार की धातु-मिश्रित चट्टानों का बना हुआ बहुत गरम और ठोस है और जिसके ऊपरी पटल पर मनुष्य बसते और वनस्पतियाँ उगती हैं। (बैरिस्फीयर)

परिमाणी (णिन्)—वि० [सं० परिमाण+इनि] परिमाण युक्त। परिमाण विशिष्ट।

परिमाता (तृ)—वि० [सं० परि√मा+तृच्] परिमाण का पता लगानेवाला। परिमाण स्थिर करनेवाला।

परिमाथी (थिन्)—वि० [सं० परि√ मथ् (मथना)+णिनि] कष्ट देनेवाला।

परिमान—पुं० =परिमाण।

परिमाप—पुं० [सं० परि√ मा+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] १. मापने या नापने की क्रिया या भाव। २. लंबाई, चौड़ाई आदि की नाप या लेखा। (डाइमेंशन) ३ वह उपकरण जिससे कोई चीज मापी या नापी जाय। (स्केल) ४ ज्यामिति में किसी आकृति, क्षेत्र या तल को चारों ओर से घेरनेवाली बाहरी रेखा अथवा ऐसी रेखा की लंबाई या विस्तार। (पेरिमीटर)

परिमार्ग—पुं० [सं० प्रा०स०] किसी चीज के चारों ओर बना हुआ पथ या मार्ग। परिपथ।

परिमार्गन—पुं० [सं० परि √ मार्ग (खोजना)+ल्युट्—अन] १ टोह या पता लगाने के लिए चारों ओर जाना। २. अन्वेषण। ३ मन-बहलाव या सैर-सपाटे के लिए घूमना। (एक्सकर्शन)

परिमार्गी (र्गिन्)—वि० [सं० परि√मार्ग+णिनि] टोह या पता लगाने वाला।

परिमार्जक—वि० [सं० परि√मृज् (शुद्धि करना)+ण्वुल्—अक] परि-मार्जन करनेवाला।

परिमार्जन—पुं० [सं० परि√मृज्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिमार्जित] १ साफ करने के लिए अच्छी तरह धोना। २ अच्छी तरह साफ करना। ३. साहित्य में, उनकी त्रुटियाँ, कमियाँ आदि को दूर करना और इस प्रकार उन्हें उज्ज्वल बनाना। ४. भूलें आदि सुधारना। ५. प्राचीन भारत में एक प्रकार की मिठाई जो शहद में पागकर बनाई जाती थी।

परिमार्जित—भू० कृ० [सं० परि√ मृज्+णिच्+क्त] जिसका परिमार्जन किया गया हो या हुआ हो। स्वच्छ किया या सुधारा हुआ।

परिमित—वि० [सं० परि√मा+क्त] [भाव० परिमिति] १ जो मापा जा चुका हो। २. परिमाण या मात्रा में जो किसी विशिष्ट बिंदु, संख्या आदि से कम हो, कम किया गया हो अथवा उससे अधिक न बढ़ सकता हो। (लिमिटेड)

परिमितकथी (थिन्)—वि० [सं० परिमित √ कथ् (कहना)+णिनि] कम बोलनेवाला। नपे-तुले शब्द या बातें कहनेवाला। अल्प-भाषी।

परिमितायु (स्)—वि० [सं० परिमित-आयुस्, ब०स०] जिसकी आयु परिमित अर्थात् थोड़ी हो।

परिमिताहार—पुं० [सं० परिमित-आहार, ब० स] अल्प भोजन। कम खाना।

वि० कम भोजन करनेवाला। अल्पाहारी।

परिमिति—स्त्री० [सं० परि√मा+क्तिन्] १. परिमित होने की अवस्था या भाव। २. परिमाण। ३. सीमा। हद। ४. क्षितिज। ५ प्रतिष्ठा। मर्यादा।

परिमिलन—पुं० [सं० परि√ मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिमिलित] १. मिलन। २. संपर्क। ३. स्पर्श। ४. संयोग।

परिमीढ—भू० कृ० [सं० परि√ मिह् (सींचना)+क्त] मूत्र से सिक्त।

परिमुक्त—वि० [सं० परि√ मुच् (छोड़ना)+क्त] [भाव० परिमुक्ति] बिलकुल स्वतन्त्र।

परिमृज्य—वि० [सं० परि √मृज् +क्विप्] १. परिमार्जित किये जाने के योग्य। २. जिसका परिमार्जन होने को हो।

परिमृष्ट—भू० कृ० [सं० परि √ मृज् (शुद्ध करना)+क्त] १. धोया हुआ। २. साफ किया हुआ। ३. अविकार में किया या लिया हुआ। अधिकृत। ४. (व्यक्ति) जिससे परामर्श किया गया हो। ५ (विषय) जिसके संबंध में परामर्श हो चुका हो। ६ आलिंगित।

परिमृष्टि—स्त्री० [सं० परिमृज्+क्तिन्] परिमृष्ट होने की अवस्था या भाव।

परिमेय—वि० [सं० परि√ मा+यत्] १. जिसका परिमाण जाना जा सके अथवा जाना जाने को हो। २ घनत्व, मान, विस्तार, संख्या आदि में कम।

परिमोक्ष—पुं० [सं० प्रा० स०] १. पूर्ण मोक्ष। निर्वाण। २ परित्याग। छोड़ना। ३. सब को मोक्ष देनेवाले, विष्णु। ४ मल-त्याग करना। हगना।

परिमोक्षण—पुं० [सं० परि√मोक्ष (छोड़ना)+ल्युट्—अन] १ मुक्त करना या होना। २. मुक्ति या मोक्ष देना। ३ परित्याग करना। छोड़ना। ४. मल-त्याग करना। हगना। ५. हठयोग की धौति क्रिया में आँतें साफ करना।

परिमोष—पुं० [सं० परि√मुष् (चोरी करना)+घञ्] १. चोरी। २ डाका।

परिमोषक—पुं० [सं० परि √मुष्+ण्वुल्—अक] १. चोर। डाकू।

परिमोषण—पुं० [सं० परि√ मुष्+ल्युट्—अन] चुराने या डाका डालने का काम। किसी को मूसना; अर्थात् उसका सब-कुछ ले लेना।

परिमोषी (षिन्)—पुं० [सं० परि√मुष्+णिनि] १. चोर। २ डाकू।

परिमोहन—पुं० [सं० प्रा०स०] सम्मोहन। (दे०)

परिम्लान—वि० [सं० प्रा०स०] १ कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। २. निस्तेज। हतप्रभ।

परियंक†—पुं० =पर्यंक।

परियंत†—अव्य० =पर्यंत।

परियज्ञ—पु०[स०व०स०] किसी वडे यज्ञ के पहले या पीछे किया जानेवाला छोटा यज्ञ।

परियत्त—भू० कृ० [स० परि √ यत् (प्रयत्न)+क्त] चारो ओर से घिरा हुआ।

परियष्टा (ष्टृ)—पु०[स० परि√ यज् (देवपूजन)+तृच्] अपने वडे भाई से पहले सोम-याग करनेवाला व्यक्ति।

परिया—पु०[तामिल परेयान] दक्षिण भारत की एक प्राचीन अछूत या अस्पृश्य जाति।
वि० १ अछूत। अस्पृश्य। २ क्षुद्र। तुच्छ।
स्त्री०[देश०] वे लकडियाँ जिससे ताना ताना जाता है।

परियाण—पु०[स० परि √ या (जाना)+ल्युट्—अन]१ चारो ओर घूमना। २ पर्यटन।

परियाणिक—पु०[स० परियाण+ठन्—इक्]१ वह जो परियाण या पर्यटन कर रहा हो। २ वह गाडी जिस पर वैठकर घूमा-फिरा जाता हो।

परियात—वि०[स० परि√या +क्त]१ जो घूम-फिरकर लौट आया हो।

परियाना—अ०[स० प्र-याति] जाना। उदा०—केन कार्य परियासि कुत्र।—प्रिथीराज।
स०[?] अलग अलग करना। छाँटना।

परियार—पु०[देश०] विहारी शाकद्वीपीय ब्राह्मणो की एक उपजाति। २ मदराम मे वसनेवाली एक छोटी जाति।

परियुक्ति—स्त्री०[स० परि√युज्(लगाना)+क्तिन्] १ काम, वात, समय आदि निश्चित या नियत करने अथवा इनके लिए किसी व्यक्ति को नियत या नियुक्त करने की क्रिया या भाव। २. वह स्थिति जिसमे किसी काम या वात के लिए कोई किमी से वचन-वद्ध हो। ठहराव। (एगेजमेंट)

परियुद्धक—पु०[स०] युद्ध-काल मे वह देश जो अपने हितो के रक्षार्थ दूसरे देश या देशो से लड रहा हो। (वेलीगरेन्ट)

परियोजना—स्त्री०[स०] कार्य-रूप मे लायी जानेवाली योजना के सवध मे नियमित और व्यवस्थित रूप से स्थिर किया हुआ विचार और स्वरूप। (स्कीम)

परिरभ, परिरंभण—पु०[स० परि√ रभ् (मलना)+घञ्, मुम्] [स० परि√ रम्+ल्युट्—अन] [वि० परिरभित, परिरभी] अच्छी तरह से गले लगाना। कसकर गले मिलना। गाढ आलिंगन।

परिरंभना—स०[स० परिरभ+ना(प्रत्य०)] किसी को गले से लगाना। आलिगन करना।

परिरक्षक—वि०[स० परि√रक्ष् (वचाना)+ण्वुल्—अक] जो सव ओर से रक्षा करता हो। हर तरफ से वचानेवाला।

परिरक्षण—पु०[स० परि√ रक्ष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिरक्षित] हर तरह से रक्षा करना।

परिरथ्या—स्त्री० [स० प्रा०स०] चौडा रास्ता जिस पर रथ चलते थे।

परिरब्ध—वि० [स० परि √रभ्+क्त] १ घिरा हुआ। गले लगाया हुआ।

परिरमित—वि०[स० परिरत] (काम, क्रीडा आदि मे) लीन।

परिराटी (टिन्)—वि०[स० परि√ रट् (रटना)+घिनुण्] १ चीखने-चिल्लानेवाला। २ कर्कश ध्वनि करनेवाला।

परिरूप—पु०[स० प्रा०स०]१ कला, शिल्प आदि के क्षेत्र मे, वह कलापूर्ण रेखा-चित्र जिसे आधार मानकर तथा जिसके अनुकरण पर कोई काम किया या रचना खडी की जाय। भाँत। २ उक्त के अनुकरण पर वनी हुई चीज। (डिजाइन, उक्त दोनो अर्थो मे) जैसे—शहरो मे कपडो और मकानो के नये-नये परिरूप देखने मे आते है।

परिरूपक—पु०[स० परि√रूप् (रूपान्वित करना)+णिच्+ण्वुल्—अक]वह शिल्पी जो विभिन्न वस्तुओ के नये-नये परिरूप वनाता हो। (डिजाइनर)

परिरेखा—स्त्री०[स० प्रा०स०] किसी तिकोने, चौकोर अथवा वहुभुजी क्षेत्र के सव ओर पडनेवाली रेखा। (पेरिफेरी) जैसे—किसी टापू या पहाड की परिरेखा।

परिरोध†—पु०[स० परि √ रुध् (रोकना)+घञ्] चारो ओर से छेकना।

परिलंघन—पु० [स० परि√लङ्घ् (लाँघना) +ल्युट्—अन] लाँघना।

परिलघु—वि० [स० अत्या० स०] १. वहुत छोटा। २ वहुत जल्दी पचनेवाला। लघुपाक।

परिलिखन—पु०[स० परि√लिख् (लिखना)+ल्युट्—अन][भू० कृ० परिलिखित] घिस या रगड कर किसी चीज को चिकना वनाना।

परिलिखित—भू० कृ० [स० परि√लिख्+क्त] घिस या रगडकर चिकना किया हुआ।

परिलीढ—भू० कृ० [स० परि√ लिह् (चाटना) +क्त] अच्छी तरह चाटा हुआ।

परिलुप्त—भू० कृ० [स० परि√लुप् (काटना)+क्त]१ जो लुप्त हो चुका हो। खोया हुआ। २ क्षतिग्रस्त।

परिलुप्त-सज्ञ—वि० [स० व० स०] जिसकी सज्ञा न रह गई हो। वेहोश।

परिलून—भू० कृ० [स० परि√ लू+क्त] कटा अथवा काटकर अलग किया हुआ।

परिलेख—पु०[स० परि√लिख्+घञ्]१ चित्र का ढाँचा। रेखा-चित्र। खाका। २ चित्र। तसवीर। ३ चित्र अकित करने की कूँची या कलम। ४ उल्लेख। वर्णन। ५ वडे अधिकारियो के पास भेजा जानेवाला विवरण। (रिटर्न)

परिलेखन—पु०[स० परि√ लिख्+ल्युट्—अन]१ किसी वस्तु के चारो ओर रेखाएँ वनाना। २ लिखना। ३ चित्र अकित करना।

परिलेखना*—स० [स० परिलेख] कुछ महत्त्व का मानना या समझना। किसी लेखे मे गिनना।

परिलेही (हिन्)—पु०[स० परि√लिह्+णिनि] एक रोग जिसमे कान की लोलक पर फुसियाँ निकल आती है।

परिलोप—पु०[स० परि√लुप् (छेदन)+घञ्]१ लुप्त हो जाना। २ क्षति। हानि। ३ विनाश। विलोप।

परिवचन—पु०[स० परि√ वञ्च् (ठगना)+ल्युट्—अन] धोखा देना ठगना।

परिवक्रा—स्त्री०[स० प्रा० स०] वृत्ताकार गड्ढा।

परिवत्सर—पु०[स० प्रा० स०] १. आदि से अत तक का पूरा वर्ष या

गाल। २. ज्योतिष के पाँच विशेष सवत्सरों में से एक जिसका अधिपति सूर्य होता है।

परिवत्सरीय—वि० [स० परिवत्सर+छ—ईय] परिवत्सर-सबधी।

परिवदन—पु० [स० परि√ वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] दूसरे की की जानेवाली निंदा या बुराई।

परिवपन—पु० [स० परि√वप् (काटना)+ल्युट्—अन] १ कतरना। २. मूँडना।

परिवर्जन—पु० [स० परि√वृज् (निषेध)+ल्युट्—अन] [वि० परिवर्जनीय, भू० कृ० परिवर्जित] परित्याग करना। त्यागना। छोड़ना। तजना। २. मार डालना। वध या हत्या करना।

परिवर्जनीय—वि० [स० परिवृज+अनीयर्] परित्याज्य।

परिवर्जित—भू० कृ० [स० परि√वृज्+णिच्+क्त] जिसका परिवर्जन हुआ हो। त्यागा हुआ।

परिवर्णी—वि० [स० परिवर्ण+हि० ई (प्रत्य०)] (शब्द) जो कई शब्दो के आरभिक वर्णों या अक्षरों के योग से अथवा कुछ शब्दों के आरभिक तथा कुछ शब्दों के अतिम वर्णों या अक्षरों के योग से बना हो। (ऐक्रास्टिक) जैसे—भारतीय+युरोपीय के योग मे 'भारोपीय' अथवा चानव और जेहलम (झेलम) नदियों के बीचवाले प्रदेश का नाम 'चज' परिवर्णीशब्द है। इसी प्रकार चाद्रमास के पक्षों के 'बदी' (देखें) और 'सुदी' (देखें) भी परिवर्णी शब्द हैं।

परिवर्त—पु० [स० परि√वृत् (बरतना)+घञ्] १ घुमाव। चक्कर। फेरा। २. अदला-बदली। विनिमय। ३. वह चीज जो किसी दूसरी चीज के बदले मे दी या ली जाय। ४. किसी काल या युग का अत होना या बीतना। ५. ग्रंथ का अध्याय या परिच्छेद। ६ सगीत मे स्वर-साधन की एक प्रणाली।

परिवर्तक—वि० [स० परि√वृत+ण्वुल्—अक] घूमनेवाला। चक्कर खानेवाला।

वि० [परि√वृत्+णिच्+ण्वुल्] १. घुमानेवाला। फिरानेवाला। चक्कर देनेवाला। २. अदला-बदली या विनिमय करनेवाला। ३. किसी प्रकार का परिवर्तन करनेवाला। ४ युग का अत करनेवाला। पु० मृत्यु के पुत्र दुस्सह का एक पुत्र।

परिवर्तन—पु० [स० परि√ वृत्+ल्युट्—अन] [वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १ इधर-उधर घूमना-फिरना। २ चक्कर या फेरा लगाना। ३. घुमाव। चक्कर। फेरा। ४ किसी काल या युग का अत या समाप्ति। ५. एक चीज के बदले में दूसरी चीज देना। विशेषत किसी की पसद या सुभीते की चीज उसे देकर उसके बदले मे अपनी पसद या सुभीते की चीज लेना। (कम्यूटेशन) जैसे—नोटों का रुपये मे और रुपये का रेजगी मे परिवर्तन। ६ वह चीज जो इस प्रकार बदले मे दी या ली जाय। ७ किसी की आकृति, गुण, रूप, स्थिति आदि मे होनेवाला फेर-फार, सुधार, ह्रास आदि। जैसे—रग, स्वास्थ्य या हृदय का परिवर्तन। ८. वह क्रिया जो किसी चीज या बात का रूप बदलने अथवा उसे नया रूप देने के लिए की जाय। (चेंज) ९. एक के स्थान पर दूसरे के आने का भाव। जैसे—ऋतु का परिवर्तन, पहनावे का परिवर्तन। १० भारतीय युद्ध-कला मे शत्रु पर प्रहार करने के लिए उसके चारों ओर घूमना।

परिवर्तनीय—वि० [स० परि√ वृत्+अनीयर्] जिसमे परिवर्तन किया जाने को हो।

परिवर्तिका—स्त्री० [स० परि√वृत्+ण्वुल्—अक+टाप्,इत्व] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे अधिक खुजलाने, दबाने या चोट लगने के कारण लिंगचर्म उलट कर सूज आता है।

परिवर्तित—भू० कृ० [सं० परि√वृत्+णिच्+क्त] १ जिसमे परिवर्तन किया गया हो या हुआ हो। जिसका आकार या रूप बदला गया हो। बदला हुआ। रूपातरित। २ जो किसी के परिवर्तन या बदले मे मिला हो।

परिवर्तिनी—स्त्री० [स० परिवर्तिन्+ङीप्] भादों के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

परिवर्ती (तिन्)—वि० [स० परि√वृत्+णिनि] १ बराबर घूमता रहनेवाला। २. जिसमे परिवर्तन या फेर-बदल होता रहता हो। बराबर बदलता रहनेवाला। परिवर्तनशील। ३ परिवर्तन या विनिमय करनेवाला।

परिवर्तुल—वि० [सं० प्रा० स०] ठीक और पूरा गोल या वर्तुल।

परिवर्त्यता—स्त्री० [स०] परिवर्त्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

परिवर्द्धन—पु० [स० परि√ वृध् (बढ़ना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिवर्द्धित] १ आकार-प्रकार, विषय-वस्तु आदि मे की जानेवाली वृद्धि। (एनलार्जमेंट) जैसे—पुस्तक का परिवर्द्धन। २ इस प्रकार बढाया हुआ अश। ३ जोड़।

परिवर्द्धित—भू० कृ० [स० परि√ वर्ध्+णिच्+क्त] जिसका परिवर्द्धन किया गया हो या हुआ हो। बढा या बढाया हुआ। (एनलार्ज्ड)

परिवर्म (र्मन्)—वि० [स० ब० स०] वर्म से ढका हुआ। बख्तर से ढका हुआ। जिरहपोश।

परिवर्ष—पु० [स०] उतना समय जितना किसी एक ग्रह को रवि-वीथि से चलकर फिर दोबारा वहाँ तक पहुँचने मे लगता है। (अनोमेलस्टिक ईयर)

परिवर्ह—पु० [सं० परि√वर्ह् (उत्कर्ष)+घञ्] १ चँवर, छत्र आदि राजत्व की सूचक वस्तुएँ। २ राजाओं के दास आदि। ३ घर, कमरे आदि को सजाने के लिए उसमे रखी जानेवाली वस्तुएँ। सजावट की चीजें। ४. गृहस्थी मे काम आनेवाली वस्तुएँ। ५ सम्पत्ति।

परिवर्हण—पु० [सं० परि√वर्ह्+ल्युट्—अन] १ अनुचर वर्ग। २. वेश-भूषा। पोशाक। ३ वृद्धि। ४. पूजा।

परिवसथ—पु० [स० परि√वस् (बसना)+अथच्] गाँव। ग्राम।

परिवह—पु० [स० परि√वह् (बहना)+अच्] १ सात पवनों में से छठा पवन; जो आकाश गगा, सप्तर्षियों आदि को वहन करता है। २ अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक जिह्वा की सज्ञा।

परिवहन—पु० [स० परि√वह्+ल्युट्—अन] माल, यात्रियों आदि को एक स्थान से ढोकर दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य, जो आज-कल रेलों, मोटरों, जहाजों, नावों आदि अनेक साधनों द्वारा किया जाता है। (ट्रान्सपोर्ट)

परिवहन तंत्र—पु० [स०] दे० 'रक्तवह-तत्र'।

परिवाण†—पु०=प्रमाण।

परिवा†—स्त्री०=प्रतिपदा।

परिवाद—पुं० [स० परि√वद् (बोलना)+घञ्] १ निंदा । बुराई। शिकायत । २ बदनामी। ३. झूठी निन्दा या शिकायत। मिथ्या दोपारोपण। ४ कोई असुविधा या कष्ट होने पर अधिकारियो के सामने की जानेवाली किसी काम, बात, व्यक्ति आदि की शिकायत। (कम्प्लेन्ट) ५ लोहे के तारो का वह छल्ला जिसे उँगली पर पहनकर वीणा, सितार आदि बजाई जाती है। मिजराब।

परिवादक—वि० [स० परि√ वद्+ण्वुल्—अक] १ परिवाद या निंदा करनेवाला। निंदक। २ शिकायत करनेवाला।

पु० वह जो वीणा, सितार या इसी तरह का और कोई बाजा बजाता हो।

परिवादिनी—स्त्री० [स० परिवादिन्+ङीप्] एक तरह की वीणा जिसमे सात तार होते हैं।

परिवादी (दिन्)—वि० [स० परि√वद् + णिनि] =परिवादक।

परिवान*—पु०=प्रमाण।

परिवानना—स० [स० प्रमाण] प्रमाण के रूप मे या ठीक मानना।

परिवाप—पु० [स० परि√वप् (काटना)+घञ्] १ बाल आदि मूँडना। २ बोना। ३ जलाशय। ४ घर का उपयोगी सामान। ५ अनुचरवर्ग। ६ भूना हुआ चावल। लावा। फरुही। ७ छेना।

परिवापित—भू० कृ०[स० परि√वप्+णिच्+क्त] मूँडा हुआ। मुडित।

परिवार—पु० [स० परि√वृ (ढकना)+घञ्] १ एक ही पूर्व पुरुष के वशज। २ एक घर मे और विशेषत एक कर्ता के अधीन या सरक्षण मे रहनेवाले लोग। ३ किसी विशिष्ट गुण, सबध आदि के विचार से चीजों का बननेवाला वर्ग। जैसे—आर्य-भाषाओं का परिवार। (फेमिली) ४ किसी राजा, रईस आदि के आगे-पीछे चलने या साथ रहनेवाले लोग।

परिवारण—पु० [स० परि√वृ+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० परिवारित] १ ढकने या छिपाने की क्रिया। २ आवरण। आच्छादन। ३ तलवार की म्यान। कोष।

परिवार नियोजन—पु० [स०] आज-कल देश अथवा ससार की दिन पर दिन बढ़ती हुई जन-सख्या को नियन्त्रित करने या सीमित रखने के उद्देश्य से गार्हस्थ्य जीवन के सबध मे की जानेवाली वह योजना जिससे लोग आवश्यकता अथवा औचित्य से अधिक सतान उत्पन्न न करें। (फैमिली प्लानिंग)

परिवारित—भू० कृ०[स० परि√वृ+णिच्+क्त] घिरा या घेरा हुआ। आवेष्टित।

परिवारी—पु० [स० परिवार] १ परिवार के लोग। २ नाते-रिश्ते के लोग।

वि० पारिवारिक।

परिवार्षिक—वि० [स० प्रा० स०] १ जो पूरे वर्ष भर चलता या होता रहे। जैसे—परिवार्षिक नाला—ऐसा नाला जो बराबर बहता रहे, गरमियों मे सूख न जाय, परिवार्षिक वृक्ष=ऐसा वृक्ष जो बराबर हरा रहता हो, और जिसके पत्ते किसी ऋतु मे झडते न हों। २ बराबर या बहुत दिन तक स्थायी रूप से बना रहनेवाला। (पेरीनियल)

परिवास—पु० [स० परि√वस्+घञ्] १ टिकना। ठहरना। २ घर। मकान। ३ खुशबू। सुगन्ध। ४ सघ से किसी भिक्षु का होनेवाला बहिष्करण। (बौद्ध)

परिवासन—पु० [स० परि√वस्+णिच्+ल्युट्—अन] खड। टुकडा।

परिवाह—पु० [स० परि√वह् (बहना)+घञ्] १. ऐसा बहाव जिसके कारण पानी ताल, तालाब आदि की समाई से अधिक हो जाता हो। पानी का खूब भर जाने के कारण बाँध, मेड आदि के ऊपर से होकर बहना। २ वह नाली जिसके द्वारा आवश्यकता से अधिक पानी बाहर निकलता या निकाला जाता हो। जल की निकासी का मार्ग। ३ किसी प्रदेश की ऐसी नदियों की व्यवस्था जिनमे नावों आदि से माल भेजे जाते हो।

परिवाही (हिन्)—वि० [स० परि√वह+णिनि] [स्त्री० परिवाहिनी] (तरल पदार्थ) जो आधान या पात्र मे या किनारो पर से इधर-उधर भर जाने पर ऊपर से बहता हो।

परिविंदक—पु० [स० परि√विद् (प्राप्त करना)+ण्वुल्—अक, नुम्] वह व्यक्ति जो बडे भाई का विवाह होने से पहले अपना विवाह कर ले। परवेत्ता।

परिविंदत्—पु० [परि√विन्द्+शतृ, नुम्] परिविंदक। (दे०)

परिविण्ण (न्न)—पु० [स० परि√विद् (लाभ)+क्त]=परिवित्त।

परिवितर्क—पु० [स० प्रा० स०] १ विचार। २ परीक्षा। (बौद्ध)

परिवित्त—पु० [स० परि√विद्+क्त] परिविदक। (दे०)

परिवित्ति—पु० [स० परि√विद्+क्तिन्] परिवित्त। परिविंदक।

परिविद्ध—वि० [स० परि√व्यध् (वेधना)+क्त] भली भाँति या चारो ओर से विधा हुआ।

पु० कुबेर।

परिविविदान—पु० [स० परि√विद्+लिट्+कानच्] परिविंदक। (दे०)

परिविष्ट—भू० कृ० [स० परि√विष् (व्याप्ति)+क्त] [भाव० परिविष्टि] १ घिरा अथवा घेरा हुआ। २ परोसा हुआ (भोजन)।

परिविष्टि—स्त्री० [स० परि√विष्+क्तिन्] घेरा। वेष्टन। २. सेवा। टहल। ३ भोजन परोसना।

परिविहार—पु० [स० प्रा० स०] जी भरकर या भली-भाँति किया जानेवाला विहार।

परिवीक्षण—पु० [स० परि-वि√ईक्ष् (देखना)—ल्युट्—अन] १ भली भाँति देखना। २ चारो ओर ध्यानपूर्वक देखना।

परिवीजित—वि० [सं० परि√वीज् (पखा झलना)+क्त] जिस पर पखे से हवा की गई हो।

परिवीत—भू० कृ० [स० परि√व्य (बुनना)+क्त] १ घिरा हुआ। लपेटा हुआ। २ छिपाया हुआ। ३ ढका हुआ। आच्छादित।

परिवृत्त—वि० [स० परि√ वृ+क्त] १. घेरा, छिपाया या ढका हुआ। २ उलटा-पलटा हुआ।

पु० कार्य, घटना आदि के सबध मे, दूसरो की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया जानेवाला सक्षिप्त विवरण। (स्टेटमेंट)

परिवृत्ति—स्त्री० [स० परि√वृ+क्तिन्] १ ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु। घेरा। वेष्टन। २ घुमाव। चक्कर। ३ विनिमय। ४ अत। समाप्ति। ५ दोबारा कोई काम करने की क्रिया या भाव। ६ किसी के किये हुए काम को देखकर वैसा ही और कोई काम

करना। ७. व्याकरण में, एक शब्द या पद को दूसरे ऐसे शब्द या पद से बदलना जिससे अर्थ वही बना रहे। जैसे—'कमललोचन' के 'कमल' के स्थान पर 'पद्म' अथवा 'लोचन' के स्थान पर 'नयन' रखना। ८. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें किसी को अनुपात से कम या सस्ती वस्तु देकर अधिक या महँगी वस्तु लेने का वर्णन होता है।

परिवृद्ध—वि० [सं० परि√वृध् (बढ़ना)+क्त] [भाव० परिवृद्धि] १. जिसका परिवर्द्धन हुआ हो। २. चारों ओर से बढ़ा हुआ।

परिवृद्धि—स्त्री० [सं० परि√वृध्+क्तिन्] परिवृद्ध होने की अवस्था या भाव।

परिवेत्ता (तृ)—पु० [सं० परि√विद्+तृच्] परिविन्दक। (दे०)

परिवेद—पु० [सं० परि√विद्+घञ्] १. पूर्ण ज्ञान। २. अनेक विषयों की होनेवाली जानकारी। ३. परिवेदन।

परिवेदन—पु० [सं० परि√विद्+ल्युट्—अन] १. पूर्ण ज्ञान। परिवेद। २. बड़े भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का होनेवाला विवाह। ३. विवाह। शादी। ४. उपस्थिति। विद्यमानता। ५. प्राप्ति। लाभ। ६. वाद-विवाद। बहस। ७. कष्ट। विपत्ति।

परिवेदना—स्त्री० [सं० परि√विद् (ज्ञान)+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की विवेक-शक्ति। २. चतुराई।

परिवेदनीया—स्त्री० [सं० परि√विद्+अनीयर्+टाप्] परिवित्ति की पत्नी। अविवाहित व्यक्ति की अनुज वधू।

परिवेदिनी—स्त्री० [सं० परिवेद+इनि—ङीप्] =परिवेदनीया।

परिवेध—पु० [सं० परि√विध्+घञ्] १. प्रायः दो चीजों को जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला ऐसा छेद जिसमें कील, पेंच आदि लगाये अथवा चूल कसी जाती है। २. इस प्रकार का बनाया जानेवाला छेद। (बोर)

परिवेधन—पु० [परि√विध्+ल्युट्] परिवेध करने की क्रिया या भाव। (बोरिंग)

परिवेश—पु० [सं० परि√विश् (प्रवेश)+घञ्] १. वेष्टन। परिधि। घेरा। २. बदली के समय सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर दिखाई देनेवाला घेरा। ३. प्रकाशमान पिंडों के चारों ओर कुछ दूरी तक दिखाई देनेवाला प्रकाश जो मंडलाकार होता है। ४. तेजस्वी पुरुषों, देवताओं आदि के चित्रों में उनके मुखमंडल के चारों ओर दिखलाया जानेवाला प्रकाशमान घेरा। प्रभा-मंडल। भा-मंडल। (हैलो)

परिवेष—पु० [सं० परि√विष् (व्याप्ति)+घञ्] १. भोजन परसना या परोसना। २. चारों ओर से घेरकर रक्षा करनेवाली रचना या वस्तु। ३. परकोटा। प्राचीर। ४. दे० 'परिवेश'। ५. दे० 'प्रभावमंडल'।

परिवेषक—पु० [सं० परि√विष्+ण्वुल्—अक] वह व्यक्ति जो भोजन आदि परसता या परोसता हो।

परिवेषण—पु० [सं० परि√विष+ल्युट्—अन] १. भोजन आदि परसने या परोसने का काम। २. घेरा। परिधि। ३. दे० 'परिवेष'।

परिवेष्टन—पु० [सं० परि√वेष्ट् (घेरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिवेष्टित] १. किसी चीज को घेरना अथवा उसके चारों ओर घेरा बनाना। २. घेरा। परिधि। ३. छिपाने या ढकनेवाली चीज। आच्छादन। आवरण।

परिवेष्टा (ष्टृ)—पु० [सं० परि√विष्+तृच्] परिवेषक। (दे०)

परिवेष्टित—भू० कृ० [सं० परि√वेष्ट्+क्त] १. जो चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ हो। २. ढका हुआ। आच्छादित।

परिव्यक्त—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] जो अच्छी तरह से व्यक्त हो चुका हो।

परिव्यय—पु० [सं० प्रा० स०] १. किसी चीज के निर्माण में होनेवाला व्यय। २. वह मूल्य जिस पर बिक्री के लिए उत्पादित की हुई अथवा मँगाई हुई वस्तु का घर पर पड़ता बैठता हो। (कॉस्ट) ३. मूल्य। ४. किसी चीज की मरम्मत आदि करने पर बदले में दिया जानेवाला धन। पारिश्रमिक। ५. कुल्क।

परिव्ययनीय—वि० [सं० परि√व्यय् (खर्च करना)+अनीयर्] जो परिव्यय के रूप में किसी से लिया या किसी को दिया जा सके। जिस पर परिव्यय जोड़ा या लगाया जा सके। (चार्जेबुल)

परिव्याध—वि० [सं० परि√व्यध् (ताड़ना)+ण] चारों ओर से वेधने या छेदनेवाला।

पु० १. जलबेत। २. कनेर। ३. एक प्राचीन ऋषि।

परिव्याप्त—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] अच्छी तरह और सब अंगों या स्थानों में फैला या समाया हुआ।

परिव्रज्या—स्त्री० [सं० परि√व्रज् (जाना)+क्यप्, टाप्] १. इधर-उधर घूमना-फिरना। भ्रमण। २. तपस्या। ३. सदा घूमते-फिरते रहकर और भिक्षा माँग कर जीवन बिताने का नियम, वृत्ति या व्रत।

परिव्राज (क)—पु० [सं० परि√व्रज्+क्विप् (नाम में), परि√व्रज्+ण्वुल्—अक] १. वह संन्यासी जो परिव्रज्या का व्रत ग्रहण करके सदा इधर-उधर भ्रमण करता रहे। २. संन्यासी। ३. बहुत बड़ा यती और परमहंस।

परिव्राजी—स्त्री० [सं० परि√व्रज्+णिच्+इन्, ङीप्] गोरखमुंडी। मुंडी।

परिव्राट (ज्)—पु० [सं० परि√व्रज्+क्विप्] परिव्राजक। (दे०)

परिशंकी (किन्)—वि० [सं० परि√शङ्क् (आशंका करना)+णिनि] अत्यधिक आशंका करने या सशंकित रहनेवाला।

परिशयन—पु० [सं० प्रा० स०] १. बहुत अधिक सोना। २. कुछ पशुओं और जीव-जंतुओं की वह निद्रा या तंद्रा वाली निष्क्रिय अवस्था जिसमें वे जाड़े के दिनों में शीत के प्रभाव से बचने के लिए बिना कुछ खाये-पीये चुप-चाप एक जगह दबे-दबाये रहते हैं। (हाइबरनेशन)

परिशिष्ट—वि० [सं० परि√शिष् (बचना)+क्त] छूटा या बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट।

पु० १. पुस्तकों आदि के अंत में दी जानेवाली वे बातें जो मूल में आने से रह गई हों, अथवा जो मूल में आई हुई बातों के स्पष्टीकरण के लिए हों। (एपेंडिक्स) २. अनुसूची। (दे०)

परिशीलन—पु० [सं० परि√शील् (अभ्यास)+ल्युट्—अन] १. मननपूर्वक किया जानेवाला गंभीर अध्ययन। २. स्पर्श।

परिशीलित—भू० कृ० [सं० परि√शील्+क्त] (ग्रंथ या विषय) जिसका परिशीलन किया गया हो।

परिशुद्ध—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० परिशुद्धता, परिशुद्धि] १. बिलकुल शुद्ध। विशेषतः जिसमें किसी दूसरी चीज का कुछ भी मेल न

हो। खरा। २. जिसमे कुछ भी कमी-वेशी या भूल-चूक न हो। विलकुल ठीक। (एक्योरेट) ३ चुकता किया हुआ। ४ छोडा या वरी किया हुआ ।

परिशुद्धता—स्त्री० [स० परिशुद्ध+तल्+टाप्]=परिशुद्ध ।

परिशुद्धि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ पूर्ण शुद्धि। सम्यक् शुद्धि। २. किसी वात या विपय की वह स्थिति जिसमे किसी प्रकार की कमी-वेशी या कोई भूल-चूक न हो । (एक्योरेसी)। ३. छुटकारा। मुक्ति।

परिशुष्क—वि० [स० प्रा० स०] १. विलकुल सूखा हुआ। २. अत्यत रसहीन। ३ रसिकता आदि से विलकुल रहित ।

पु० तला हुआ मास ।

परिशून्य—वि० [स० प्रा० स०] जो विलकुल शून्य हो ।

पु० विज्ञान मे, वह स्थान जिममे वायु आदि कुछ भी न हो या जिसमे वायु निकाल ली गई हो। (वायड)

परिशेष—वि० [स० परि√शिष्+घञ्] [भाव० परिशेषण] जो अव भी शेप हो। जो पूर्णत अव भी नष्ट या समाप्त न हुआ हो।

पुं० १. वह अश या तत्त्व जो वाकी वच रहा हो। २ अत। समाप्ति। ३ दे० 'परिशिष्ट' ।

परिशोध—पु० [स० परि√शुध् (शुद्ध करना)+घञ्] १. अच्छी तरह शुद्ध करना या वनाना । २ ऋण, देन आदि का चुकाया जाना । (रिपेमेट) ३ किसी से चुकाया जानेवाला वदला। उपकार के वदले मे किया जानेवाला अपकार। प्रतिशोध।

परिशोधन—पु० [स० परि√शुध्+ल्युट्—अन] [वि० परिशोधनीय, भू० कृ० परिशोधित] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज अच्छी तरह शुद्ध हो कर श्रेष्ठ अवस्था मे आजा वे। (रेक्टिफिकेशन) २. ऋण देन आदि चुकता करने की क्रिया या भाव। ३ प्रतिशोधन ।

परिशोप—पु० [स० परि√शुप् (सूखना)+घञ्] १ किसी चीज को अच्छी तरह से सुखाना। २ पूरी तरह से सूखे हुए होने की अवस्था या भाव ।

परिश्रम—पु० [स० परि√श्रम् (आयास करना)+घञ्] कोई कठिन, वडा या दुस्साध्य काम करने के लिए विशेप रूप से तथा मन लगाकर किया जानेवाला मानसिक या शारीरिक श्रम । मेहनत ।

परिश्रमी (मिन्)—वि० [स० परिश्रम+इनि] १ जो परिश्रमपूर्वक कोई काम करता हो। २ हर काम अपनी पूरी शक्ति लगाकर करनेवाला । मेहनती ।

परिश्रय—पु० [स० परि√श्रि (सेवन)+अच्] १ परिपद् । सभा। २ आश्रय या शरण-स्थल ।

परिश्रात—वि० [स० परि√श्रम्+क्त] [भाव० परिश्राति] वहुत अधिक थका हुआ। थका-मांदा।

परिश्रांति—स्त्री० [स० परि√श्रम्+क्तिन्] परिश्रात होने की अवस्था या भाव । वहुत अधिक थकावट ।

परिश्रित्—वि० [स० परि√श्रि+क्विप्] आश्रय देनेवाला ।

पु० यज्ञ मे काम आनेवाला पत्थर का एक विशिष्ट टुकडा ।

परिश्रुत—वि० [स० प्रा० स०] १ (वात आदि) जो ठीक प्रकार से या भली-भाँति सुनी गई हो। २. ख्यात। प्रसिद्ध।

परिश्लेप—पु० [स० परि√श्लिप् (आलिंगन करना)+घञ्] आलिंगन। गले लगाना।

परिपन्त—स्त्री०=परिषद् ।

परिषत्त्व—पु० [स० परिषद्+त्व] परिपद् का भाव या धर्म ।

परिषद्—स्त्री० [स० परि√सद् (गति)+क्विप्] १ चारो ओर से घेर कर या घेरा बनाकर बैठना। २ वैदिक युग मे विद्वानो की वह सभा जो राजा किसी विपय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था। ३ वौद्ध-काल मे वह निर्वाचित राजकीय सस्था या सभा जो राज्य या शासन से सवध रखनेवाली सव वातो पर विचार तथा निर्णय करती थी। **विशेष**—प्राचीन काल मे परिषदें तीन प्रकार की होती थी —(क) शिक्षा-सवधी । (ख) सामाजिक गोष्ठी-सम्बन्धी। और (ग) राज-शासन-सम्बन्धी ।

४. आधुनिक राजनीति विज्ञान मे, निर्वाचित या मनोनीत विधायको की वह सभा जो स्थायी या वहुत-कुछ स्थायी होती है। (काउंसिल) ५ सभा । जैसे—सगीत परिपद् ।

परिषद—पु० [स० परि√सद्+अच्] १ सवारी या जुलूस मे चलनेवाले वे अनुचर जो स्वामी को घेर कर चलते है। परिपद । २ दरवारी। मुसाहव। ३ सदस्य । सभासद ।

स्त्री०=परिपद् ।

परिषद्य—पु० [स० परिपद्+यत्] १ परिपद् का सदस्य । २ सभासद। सदस्य । ३ दर्शक। प्रेक्षक ।

परिषद्वल—पु०[स० परिपद्+वलच्] सभासद। सदस्य ।

परिषिक्त—भू० कृ० [स० परि√सिच् (सीचना)+क्त] १ जो अच्छी तरह से सीचा गया हो। २ जिस पर छिडकाव हुआ हो।

परिषीवण—पु० [स० परि√सिव् (सीना)+ल्युट्—अन] १ चारो ओर से सीना। २ गाँठ लगाना। बाँधना।

परिषेक—पु०[स० परि√सिच्+घञ्] १ पानी से तर करने की क्रिया। सिंचाई। २. छिडकाव । ३ स्नान ।

परिषेचक—वि० [स० परि√सिच्+ण्वुल्—अक] १ सीचनेवाला। २. छिडकनेवाला ।

परिषेचन—पु० [स० परि√सिच्+ल्युट्—अन] [वि० परिपिक्त] सीचना । छिडकना ।

परिष्कद—पु०[स० परि√स्कन्द् (गति)+घञ्] वह जिसका पालन-पोपण माता-पिता द्वारा नही वल्कि किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा हुआ हो ।

परिष्कर—पु० [स० परि√कृ (करना)+अप्, सुट्] सजावट। सज्जा ।

परिष्करण—पु० [स०] [भू० कृ० परिष्कृत] परिष्कार करने अर्थात् साफ और सुदर बनाने की क्रिया या भाव । (एम्बेलिशमेन्ट)

परिष्करण शाला—स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ खनिज, तैल, धातुएँ आदि परिष्कृत या साफ की जाती है। (रिफाइनरी)

परिष्करणी—स्त्री० [स० परि√कृ+ल्युट्—अन, सुट्] वह कारखाना या स्थान जहाँ यत्रो आदि की सहायता से तेलो, धातुओं आदि मे की मैल निकालकर उन्हे परिष्कृत या साफ किया जाता हो। (रिफाइनरी)

परिष्कार—पु० [स० परि√कृ+घञ्, सुट्] [भू० कृ० परिष्कृत] १ अच्छी तरह ठीक और साफ करने की क्रिया या भाव। गदगी,

मिलावट, मैल आदि निकालकर किसी चीज को स्वच्छ बनाना। (रिफाइनिंग) २ त्रुटियाँ, दोष आदि दूर करके सुंदर, सुरुचिपूर्ण और स्वच्छ बनाना। (एम्बेलिशमेंट) ३. निर्मलता। स्वच्छता। ४. अलंकार। गहना। ५ शोभा। श्री। ६. बनाव-सिंगार। सजावट। ७. सजाने की सामग्री। उपस्कर। (फरनीचर) ८ संयम। (बौद्ध दर्शन)

परिष्कृति—स्त्री० [सं० परि√कृ+क्तिन्, सुट्] १. परिष्कृत होने की अवस्था, गुण या भाव। २. परिष्कार। ३ आचार-व्यवहार की वह उन्नत स्थिति जिसमें अशिष्ट, उद्धत, ग्राम्य, परुष, रूक्ष आदि बातों का अभाव और कोमल, नागर, विनम्र, शिष्ट तथा स्निग्ध तत्त्वों की अधिकता और प्रबलता होती है। (रिफाइनमेंट)

परिष्क्रिया—स्त्री० [सं० परि√कृ+सुट्,+टाप्] परिष्कार। (दे०)

परिष्कृत—भू० कृ० [सं० परि√कृ+क्त, सुट्] [भाव० परिष्कृति] १ जिसका परिष्कार किया गया हो। अच्छी तरह ठीक और साफ किया हुआ। २ सँवारा या सजाया हुआ। अलंकृत। ४. सुधारा हुआ।

परिष्कृति—स्त्री० [सं० परि√कृ+क्तिन्, सुट्] परिष्कृत होने की अवस्था या भाव। परिष्कार।

परिष्टवन—पु० [सं० प्रा० स०] प्रशंसा। स्तुति।

परिष्टोम—पु० [सं० अत्या० स०] १. एक प्रकार का सामगान जिसमें ईश्वर की स्तुति होती है। २ घोड़े, हाथी आदि की झूल।

परिष्ठल—पु० [सं० परि-स्थल, प्रा० स०] आस-पास की भूमि।

परिष्यंद—पु० [सं० परि√स्यंद् (बहना)+घञ्, षत्व]=परिस्यंद।

परिष्यंदी (दिन्)—वि० [सं० परिष्यंद+इनि] बहानेवाला।

परिष्वंग—पु० [सं० परि√स्वञ्ज् (आलिंगन)+घञ्] गले लगाना। आलिंगन।

परिष्वंजन—पु० [सं० परि√स्वञ्ज् (चिपकना)+ल्युट्—अन] [वि० परिष्वक्त] गले लगाना। आलिंगन।

परिष्वक्त—भू० कृ० [सं० परि√स्वञ्ज्+क्त] जिसे गले लगाया गया हो। आलिंगित।

परिसंख्या—स्त्री० [सं० परि–सम्√ख्या (प्रसिद्ध करना)+अङ्+टाप्] १. गणना। गिनती। २. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें किसी स्थान में होनेवाली बात या वस्तु का प्रश्न या व्यंग्यपूर्वक निषेध करके अन्य स्थान पर प्रतिष्ठापन करने का वर्णन होता है। ३ कुछ स्थानों पर होनेवाली वस्तुओं के संबंध में यह कहना कि अब वे वहाँ नहीं रह गईं केवल अमुक जगह में रह गई हैं। जैसे—रामराज्य की प्रशंसा करते हुए यह कहना कि उसमें स्त्रियों के नेत्रों को छोड़कर कुटिलता और कहीं नहीं दिखाई देती थी।

परिसंख्यान—पु० [सं० परि—सम्√ख्या+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिसंख्यात] अनुसूची। (दे०)

परिसंघ—पु० [सं० प्रा० स०] पारस्परिक तथा सामूहिक हितों के रक्षार्थ बननेवाला वह अंतरराष्ट्रीय संगठन जिसके सदस्य स्वतंत्र राष्ट्र होते हैं। (कनफेडरेशन)

परिसंचर—पु० [सं० परि-सम्√चर् (गति)+अच्] प्रलय-काल।

परिसंचित—भू० कृ० [सं० परि—सम्√चि (इकट्ठा करना)+क्त] इकट्ठा या संचित किया हुआ।

परिसंतान—पु० [सं० अत्या० स०] १. तार। २ तंत्री।

परिसंपद्—स्त्री० [सं० प्रा० स०] व्यक्ति, संघटन, संस्था आदि का वह निजी या अधिकृत धन तथा संपत्ति जिसमें से उसका ऋण, देय आदि चुकाया जाता हो या चुकाया जा सके। (असेट्स)

परिसंवाद—पु० [सं० परि-सम्√वद् (बोलना)+घञ्] १ दो या अधिक व्यक्तियों में किसी बात, विषय आदि के संबंध में होनेवाला तर्कसंगत या विचारपूर्ण वादविवाद। (डिस्कशन) २. दे० परिचर्चा।

परिसंहत—वि० [सं०] १ अच्छी तरह उठा हुआ। २ (कथन या लेख) जिसमें फालतू या व्यर्थ की बातें अथवा शब्द न हों। (टर्स)

परिसंहित—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] बहुत अच्छी तरह गठा या गोंठा हुआ। २ (साहित्य में ऐसी गठी हुई तथा संक्षिप्त रचना) जिसमें ओज, प्रसाद आदि गुण भी यथेष्ट मात्रा में हों।

परिसभ्य—पु० [सं० प्रा० स] सभासद।। सदस्य।

परिसमंत—पु० [सं० प्रा० स०] वृत्त के चारों ओर की रेखा या सीमा।

परिसमापक—पु० [परि-सम्√आप् (व्याप्ति)+ण्वुल्—अक] परिसमापन करनेवाला अधिकारी। (लिक्वीडेटर)

परिसमापन—पु० [परि-सम्√आप्+ल्युट्—अन्] १ समाप्त करना। २. किसी चलते हुए काम का समाप्त होना। (टर्मिनेशन) ३ किसी ऋणग्रस्त संस्था का कार-बार बंद करते समय किसी सरकारी अधिकारी या अदालत द्वारा उसकी परिसंपद लहनेदारों में किसी विशिष्ट अनुपात से बाँटा जाना। (लिक्वीडेशन) ३. दे० 'अपाकरण'।

परिसमाप्त—भू० कृ० [सं० परि-सम्√आप+क्त] १. जो पूरी तरह से समाप्त हो चुका हो। २. (संस्था) जिसका परिसमापन हो चुका हो।

परिसमाप्ति—स्त्री० [सं० परि-सम्√आप्+क्तिन्] परिसमापन।

परिसमूहन—पु० [सं० परि-सम्√ऊह् (वितर्क)+ल्युट्–अन] १. एकत्र करना। २ यज्ञ की अग्नि में समिधा डालना। ३ तृण आदि आग में डालना। ४ यज्ञाग्नि के चारों ओर जल छिड़कने की क्रिया।

परिसर—वि० [सं० परि√सृ (गति)+अप्] [स्त्री० परिसरा] १ किसी के चारों ओर बहने (अथवा चलने) वाला। २ किसी के साथ जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। ३ फैला हुआ। विस्तृत। उदा०—खुली रूप कलियों में परभर स्तर स्तर सु-परिसरा। —निराला।

पु० १. किसी स्थान के आस-पास की भूमि या खुला मैदान। २ प्रांत भूमि। ३. मृत्यु। ४ ढंग। तरीका। विधि। ५ शरीर की नाड़ी या शिरा।

परिसरण—पु० [सं० परि√सृ+ल्युट्–अन] [भू० कृ० परिसृत] १ किसी के चारों ओर बहना (या चलना)। २. पर्यटन। ३. पराजय। हार। ४ मृत्यु। मौत। ५ दे० रसाकर्षण।

परिसर्प—पु० [सं० परि√सृप् (गति)+घञ्] १. किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रिया। परिक्रमण। २ घूमना-फिरना या टहलना। ३ ढूँढने या तलाश करने के लिए निकलना। ४. चारों ओर से घेरना। ५ साहित्य दर्पण के अनुसार नाटक में किसी का किसी की

खोज और केवल मार्गचिह्नों आदि के सहारे उसका पता लगाने का प्रयत्न करना। जैसे—सीता-हरण के उपरान्त, राम का सीता को वन मे ढूँढ़ते फिरना। ६ सुश्रुत के अनुसार ११ प्रकार के क्षुद्र कुष्ठो मे से एक जिसमे छोटी-छोटी फुसियाँ निकलती है और उन फुसियों से पछा या मवाद निकलता है। ७. एक प्रकार का साँप।

परिसर्पण—पु० [स० परि√सृप्+ल्युट्—अन] १. घूमना-फिरना। टहलना। २ साँप की तरह टेढे-तिरछे चलना या रेगना।

परिसर्पा—स्त्री० [स० परि√सृ (गति)+क्यप्+टाप्] १ मृत्यु। २ हार।

परिसांत्वन—पु० [स० परि√सान्त्व् (ढाढस देना)+ल्युट्—अन] १ वहुत अधिक सात्वना देना। २ उक्त प्रकार से दी हुई सान्त्वना।

परिसाम (मन्)—पु० [स० प्रा० स०] एक विशेष साम।

परिसार—पु० [स० परि√सृ+घञ्]=परिसरण।

परिसारक—वि० [स० परि√सृ+ण्वुल्—अक] जो परिसरण करे। चारो ओर चलने, जाने या वहनेवाला।

परिसारी (रिन्)—वि० [स० परि√सृ+णिनि] १. परिसरण-सवधी। २ परिसारक। (दे०)

परिसिद्धिका—स्त्री० [स० प्रा० स०] वैद्यक मे, चावल की एक प्रकार की लपसी।

परिसीमन—पु० [स० परिसीमा से] [भू० कृ० परिसीमित] किसी क्षेत्र, विपय आदि की सीमाएँ निर्धारित करना। (डिलिमिटेशन)

परिसीमा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ अतिम या चरम सीमा। २ वह मर्यादा या रेखा जहाँ आगे किसी विपय का विस्तार न हो।

परिसीमित—भू० कृ० [स० परिसीमा+इतच्] जिसका परिसीमन हुआ या किया जा चुका हो। २ (सस्था) जिसकी पूँजी, हिस्सेदारी आदि कुछ विशिष्ट नियमो या सीमाओ के अन्दर रखी गई हो। (लिमिटेड)

परिसून—पु० [स० अत्या० स०] विना अधिकार के और वूचडखाने से वाहर मारा हुआ पशु।

परिसेवन—पु० [स० प्रा० स०] वहुत अधिक सेवा करना।

परिसेवित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ जिसकी वहुत अच्छी तरह सेवा की गई हो। २ जिसका वहुत अच्छी तरह सेवन किया गया हो।

परिस्कद—पु०=परिष्कद।

परिस्तरण—पु० [स० परि√स्तृ (आच्छादन)+ल्युट्—अन] १ इधर-उधर फेंकना या डालना। छितराना। २. फैलाना। ३ ढकना या लपेटना।

परिस्तान—पु० [फ़ा०] १. परियो अर्थात् अप्सराओ का जगत् या देश। २ ऐसा स्थान जहाँ वहुत-सी सुन्दर स्त्रियो का जमघट या निवास हो।

परिस्तोम—पु० [स० प्रा० व० स०] चित्रित या अनेक रगोवाली (हाथी की पीठ पर डाली जानेवाली) झूल।

परिस्थान—पु० [स० प्रा० स०] १. वासस्थान। २ दृढता।

परिस्थिति—स्त्री० [स० प्रा० स०] [वि० परिस्थितिक] किसी व्यक्ति के चारो ओर होनेवाली वे सब वातें या उनमे से कोई एक जिससे वाध्य या प्रेरित होकर वह कोई कार्य करता हो। (सर्कम्स्टैंसेज)

परिस्थिति विज्ञान—पु० [स०] आधुनिक जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमे इस वात का विवेचन होता है कि देश, काल आदि की परिस्थितियो का जीव-जतुओ पर क्या प्रभाव पडता है। (इकालोजी)

परिस्पंद—पु० [स० परि√स्पद् (हिलना)+घञ्] १ काँपने की क्रिया या भाव। कप। कँपकँपी। २ दवाना या मलना। ३ ठाट-वाट। तडक-भड़क। ४. फूलो आदि से सिर के वाल सजाना। ५ निर्वाह का साधन। ६ परिवार। ७ धारा। प्रवाह। ८ नदी। ९ द्वीप। टापू।

परिस्पंदन—पु० [स० परि√स्पद्+ल्युट्—अन] ८ वहुत अधिक हिलना। खूब काँपना। २ काँपना।

परिस्पर्द्धा—स्त्री० [स० प्रा० स०]=प्रतिस्पर्धा।

परिस्पर्द्धी (र्द्धिन्)—पु० [स० परि√स्पर्ध् (जीतने की इच्छा)+णिनि] =प्रतिस्पर्धी।

परिस्फुट—वि० [स० प्रा० स०] १ भली-भाँति व्यक्त। सव प्रकार से प्रकट या खुला हुआ। २ अच्छी तरह खिला हुआ। पूर्ण विकसित।

परिस्फुरण—पु० [स० परि√स्फुर् (गति)+ल्युट्—अन] १. कपन। २ कलियो, कल्लो आदि का निकलना या फूटना।

परिस्मापन—पु० [स० परि√स्मि (विस्मय करना)+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] वहुत अधिक चकित या विस्मित करना।

परिस्यद—पु० [स० परिष्यद] चूना। रसना।

परिस्यदी (दिन्)—वि० [स० 'परिष्यदी] जिसमे प्रवाह हो। वहता हुआ।

परिस्रव—पु [स० परि√स्रु (वहना)+अप्] वहुत अधिक या चारो ओर से चूना या रसना।

परिस्राव—पु० [स० परि√स्रु+घञ्] १ चू या रसकर अधिक परिमाण मे निकलनेवाला तरल पदार्थ। २ एक रोग जिसमे रोगी को ऐसे वहुत अधिक दस्त होते है जिनमे कफ और पित्त मिला होता है।

परिस्रावण—पु० [स० परि√स्रु+णिच्+ल्युट्—अन] वह पात्र जिसमे कोई चीज चुआ या रसाकर इकट्ठी की जाय।

परिस्रावी (विन्)—वि० [स० परि√स्रु+णिनि] चूने, रसने या वहनेवाला।
पु० ऐसा भगदर रोग जिसमे फोडे मे से वरावर गाढा मवाद निकलता रहता है।

परिस्रुत—वि० [स० परि√स्रु+क्त] १. जिससे कुछ टपक या चू रहा हो। स्रावयुक्त। २ चुआया या टपकाया हुआ।
पु० फूलो का सुगधित सार। (वैदिक)
स्त्री० मदिरा। शराव।

परिस्रुत-दधि—पु० [स० कर्म० स०] ऐसा दही जिसे निचोडकर उसमे का जल निकाल दिया गया हो।

परिस्रुता—स्त्री० [स० परिस्रुत+टाप्] १ चुआई या टपकाई हुई तरल वस्तु। २ मद्य। शराव। ३ अगूरी शराव।

परिहँस*—पु० [स० परिहास] १ हँसी-दिल्लगी। परिहास। २ लोग मे होनेवाली हँसी। उपहास। उदा०—परहँसि मरसि कि कौनिहु लाजा—जायसी। ३ खेद। दुःख। रज। (मुख्यत लोक-निंदा, उपहास आदि के भय से होनेवाला) उदा०—कठ वचन न वोलि आवै हृदय परिहँस करि, नैन जल भरि रोई दीन्हो, ग्रसति आपद दीन।—सूर।

परिहत—भू० कृ० [स० परि√हन् (हिंसा)+क्त] १ जो मार डाला गया

हो। २ मरा हुआ। मृत। ३ पूरी तरह से नष्ट किया हुआ। ४ ढीला किया हुआ।

स्त्री० हल की वह लकडी जो चौभी मे ठुकी रहती है, तथा जिसके ऊपरी भाग मे लगी हुई मुठिया को पकडकर हलवाहा हल चलाता है।

परिहरण—पु०[स० परि√हृ (हरण करना)+ल्युट्–अन] [वि० परिहरणीय] १.किसी की चीज पर बिना उसके पूछे और बलपूर्वक किया जानेवाला अधिकार। २ परित्याग। ३ दोष आदि दूर करने का उपचार या प्रयत्न। निवारण।

परिहरणीय—वि० [स० परि√हृ+अनीयर्] १ जो छीना जा सके या छीने जाने के योग्य हो। २ त्याज्य। ३ जिसका उपचार या निवारण हो सके। निवार्य।

परिहरना—स०[स० परिहरण] १ छीनना। २ त्यागना। छोडना।

परिहस*—पु०=परिहँस।

परिहस्त—पु०[स०अव्य०स०] हाथ मे बाँधा जानेवाला एक तरह का तावीज या यत्र।

परिहाण—पु०[स० परि√हा(त्याग)+क्त] नुकसान या हानि उठाना।

परिहाणि, परिहानि—स्त्री०[स० परि√हा+क्तिन्] नुकसान। हानि।

परिहार—पु०[स० परि√हृ+घञ्] १ बलपूर्वक छीनने की क्रिया या भाव। २ युद्ध मे जीतकर प्राप्त किया हुआ धन या पदार्थ। ३. छोडने, त्यागने या दूर करने की क्रिया या भाव। ४ त्रुटियो, दोषो, विकारो आदि का किया जानेवाला अत या निराकरण। ५. पशुओ के चरने के लिए खाली छोडी हुई जमीन। चरागाह। ६ प्राचीन भारत मे, कष्ट या सकट के समय राज्य की ओर से प्रजा के साथ की जानेवाली आर्थिक रिआयत। ७. कर या लगान की छूट। माफी। ८ खडन। ९ अवज्ञा। तिरस्कार। १०. उपेक्षा। ११. मनु के अनुसार एक प्राचीन देश। १२ नाटक मे किसी अनुचित या अविवेय कर्म का प्रायश्चित्त करना। (साहित्य दर्पण)

पु०[?] अवध, बुदेलखड आदि मे बसे हुए राजपूतो की एक जाति जिनके पूर्वज तीसरी शताब्दी मे कालिजर के शासक थे।

परिहारक—वि०[स० परि√हृ+ण्वुल्–अक] परिहार करनेवाला।

परिहारना*—स० [स० परिहार] १ परिहरण करना। २ परिहार करना।

परिहारी (रिन्)—वि०[स० परि√हृ+णिनि] परिहरण करनेवाला।

परिहार्य—वि० [स० परि√हृ+ण्यत्] जिसका परिहरण होने को हो या हो सकता हो।

परिहास—वि० [सं० परि√हस् (हँसना)+घञ्] १ बहुत जोरो की हँसी। २ हँसी-मजाक।

परिहासापह्नुति—स्त्री० [स० परिहास-अपह्नुति, मध्य० स०] साहित्य मे, अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे पूर्वपद तो किसी अश्लील भाव का द्योतक होता है परतु उत्तर-पद से उस अश्लीलत्व का परिहार हो जाता है और श्रोता हँस पडता है। उदा०—तुमको लाजिम है पकडो अब मेरा। हाथ मे हाथ वामुहब्बतो प्यार।-कोई शायर।

परिहास्य—वि०[स० परि√हस्+ण्यत्] १ जिसके सबंध मे परिहास किया जा सके या हो सके। २ हास्यास्पद।

परिहित—भू० कृ०[स० परि√धा (धारण करना)+क्त, हि–आदेश] १. चारों ओर से छिपाया या ढका हुआ। आवृत्त। आच्छादित। २. ओढा या पहना हुआ। (कपडा)

परिहीण—वि० [स० प्रा० स०] १. सब प्रकार से दीन-हीन। अत्यत हीन। २ छोटा, निकाला या फेंका हुआ।

परिहृति—स्त्री०[स० परि√हृ+क्तिन्] ध्वस। नाश।

परिहेलना—स० [स० प्रा० स०] अनादर या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। उदा०—जौ ममता करु राम-पद कै ममता परिहेलु।—तुलसी।

परी—स्त्री०[फा०] १ वह कल्पित रूपवती स्त्री जो अपने परो की सहायता से आकाश मे उडती है। अप्सरा।

विशेष—फारसी साहित्य मे उसका वास-स्थान काफ या काकेशस पर्वत माना गया है।

परीक्षक—पु० [स० परि√ईक्ष् (देखना)+ण्वुल्–अक] [स्त्री० परीक्षिका] १. वह जो किसी की परीक्षा करता या लेता हो। २ किसी के गुण, योग्यता आदि का परीक्षण करनेवाला अधिकारी, विशेषत परीक्षार्थियो के लिए प्रश्न-पत्र बनाने तथा उनकी उत्तर-पुस्तिकाएँ जाचनेवाला अधिकारी। (एग्जामिनर) ३. जाँच-पड़ताल करनेवाला व्यक्ति। निरीक्षक।

परीक्षण—पु० [स० परि√ईक्ष्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० परीक्षित, वि० परीक्ष्य] १ परीक्षा करने या लेने की क्रिया या भाव। २ वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, किसी विशिष्ट पद्धति, प्रक्रिया या रीति से किसी चीज के वास्तविक गुण, योग्यता, शक्ति, स्थिति आदि जानने का काम। ३ न्यायालय मे इस प्रकार किसी से प्रश्न करना जिससे वस्तु-स्थिति पर प्रकाश पडता हो। (इग्जामिनेशन) ४. उपयोग, व्यवहार आदि मे लाकर किसी चीज के गुण-दोष जानना या परखना। ५ व्यक्ति को किसी काम या पद पर स्थायी रूप से नियुक्त करने से पहले, कुछ समय तक उससे वह काम करवा कर देखना कि उसमे यथेष्ट योग्यता या सामर्थ्य है या नही। (प्रोबेशन)

परीक्षण-काल—पु०[प० त०] उतना समय जितने मे यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति किसी काम पर लगाया जाने को है, उसमे वह काम करने की पूरी योग्यता या समर्थता भी है या नही। (प्रोबेशन पीरियड)

परीक्षण-नलिका—स्त्री०[प० त०] वैज्ञानिक क्षेत्रो मे शीशे की वह नली जिसमे कोई द्रव पदार्थ किसी प्रकार के परीक्षण के लिए भरा जाता है। परख-नली। (टेस्ट ट्यूब)

परीक्षण-शलाका—स्त्री०[प० त०] किसी धातु का वह छड जो इस बात के परीक्षण के काम मे आता है कि इस धातु मे भार आदि सहने की कितनी शक्ति है। (टेस्ट पीस)

परीक्षणिक—वि०[स० पारीक्षणिक] १. परीक्षण-सबधी। २ नियुक्त किये जाने से पहले जिसकी समर्थता की परीक्षा ली जा रही हो। अस्थायी रूप से और केवल परीक्षण के लिए रखा हुआ कर्मचारी। (प्रोबेशनरी)

परीक्षना*—स० [स० परीक्षण] किसी की परीक्षा करना या लेना। परखना।

परीक्षा—स्त्री०[स० परि√ईक्ष्+अ+टाप्] १ किसी के गुण, धैर्य, योग्यता, सामर्थ्य आदि की ठीक-ठीक स्थिति जानने या पता लगाने की क्रिया या भाव। (एग्जामिनेशन) २. वह समुचित उपाय, विधि

या साधन जिससे किसी के गुणो आदि का पता लगाया जाता है। ३ वस्तुओ के सबध मे, उनकी उपयोगिता, टिकाऊपन आदि जानने के लिए उनका उपयोग या व्यवहार किया जाना। जैसे—हमारे यहाँ अमुक वस्तुएँ मिलती है, परीक्षा प्रार्थित है। ४. वह प्रक्रिया जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का पता लगाते थे। विशेष दे० 'दिव्य'। ५ जाँच—पडताल। ६ देख-भाल।

परीक्षार्थ—अव्य०[स० परीक्षा-अर्थ, नित्य स०] परीक्षा के उद्देश्य से।

परीक्षार्थी(र्थिन्)—पु०[स० परीक्षा√अर्थ (चाहना)+णिनि] १ वह जो किसी प्रकार की परीक्षा देना चाहता हो। २ वह जिसकी परीक्षा ली जा रही हो अथवा जो परीक्षा दे रहा हो। (एग्जामिनी)

परीक्षित्—पु०[स० परि√क्षि (क्षय)+क्विप्, तुक्] १ हस्तिनापुर के एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा जो अभिमन्यु के पुत्र और जनमेजय के पिता थे। कहा जाता है कि इन्ही के राज्य-काल मे द्वापर का अत और कलियुग का आरभ हुआ था। तक्षक नामक साँप के काटने पर इनकी मृत्यु हुई थी। २ कस का एक पुत्र।

परीक्षित—भू० कृ०[परि√ईक्ष्+क्त] १ (व्यक्ति) जिसका परीक्षण किया जा चुका हो। जो परीक्षा मे सफल उतरा हो। ३ (वस्तु) जिसे उपयोग, व्यवहार आदि मे लाकर उसके गुण-दोष आदि देखे जा चुके हो। (इग्जैमिन्ड)

पु०=परीक्षित्।

परीक्षितव्य—वि०[स० परि√ईक्ष्+तव्यत्] १ जिसकी परीक्षा, आजमाइश या जाँच की जा सके या की जाने को हो। २ जिसे जाँच या परख सके। ३ जिसकी परीक्षा (जाँच या परख) करना आवश्यक या उचित हो।

परीक्षिती—पु०[स०]=परीक्षार्थी।

परीक्ष्य—वि०[स० परि√ईक्ष्+ण्यत्] परीक्षितव्य। (दे०)

परीक्ष्यमाण—वि०[स०परि√ईक्ष्+यक्, शानच्, मुक्] परीक्षणिक।(दे०)

परीख†—स्त्री०=परख।

परीखना†—स०=परखना।

परीछत—भू० कृ०=परीक्षित।

पु०=परिक्षित्।

परीछम†—पु० [हि० परी+छमछम(अनु०)] पैर मे पहनने का एक तरह का चाँदी का गहना।

परीछा†—स्त्री०=परीक्षा।

परीछित—भू० कृ०=परीक्षित।

पु०=परीक्षित्।

परीजाद (1)—वि० [फा० परीजाद] १ जो परी की सतान हो। २ लाक्षणिक रूप मे, परम सुन्दर व्यक्ति।

परीणाह—पु०[स०परि√नह् (बधन)+घञ्, दीर्घ] १ दे० 'परिणाह'। २ शिव। ३ गाँव के आस-पास तथा चारो ओर की वह भूमि जो सार्वजनिक सपत्ति के अन्तर्गत हो, अथवा जिसका उपयोग सब लोग कर सकते हो।

परीत†—स्त्री०=प्रीति।

†पुं०=प्रेत।

परीताप—पु०=परिताप।

परीति (ती)—स्त्री०=प्रीति।

परीतोष†—पुं०=परितोष।

परीदाह†—पु=परिदाह।

परीधान†—पु०=परिधान।

परीप्सा—स्त्री०[स० परि√आप् (व्याप्ति)+सन्+अ+टाप्] १ किसी चीज को प्राप्त करने अथवा उसे अधिकार मे किये रखने की इच्छा या लालसा। २ जल्दी। शीघ्रता।

परीबद—पु०[फा०] कलाई पर पहनने का एक आभूषण। बाजूबद। २ बच्चो के पैरो का एक घुँघरूदार गहना। ३ कुश्ती का एक पेंच।

परीभव—पु०=परिभव।

परीभाव—पु०=परिभाव।

परीमाण—पु०=परिमाण।

परीरंभ—पु०=परिरभ।

परीर—पु०[स०√पृ (पूर्ति करना)+ईरन्] वृक्ष का फल।

परीरू—वि०[फा०] परी की तरह सुन्दर आकृतिवाला। परम रूपवान या अति सुन्दर।

परीवर्तन—पु०=परिवर्तन।

परीवाद—पु०=परिवाद।

परीवार—पु०=परिवार।

परीवाह—पु०=परिवाह।

परीशान—वि०[फा० परीशाँ] [भाव० परीशानी] =परेशान। (देखें)

परीशेष—पु०=परिशेष।

परीषह—पु०[स० परि√सह् (सहना)+अच्, दीर्घ] जैन शास्त्रो के अनुसार त्याग या सहन।

परीष्ट—वि०[स० परि√ईष् (चाहना)+क्त] [भाव० परीष्टि] चाहने योग्य।

परीष्टि—स्त्री०[स०] १ इच्छा। २ खोज। छान-बीन। ३ सेवा।

परीसयर्पा—स्त्री०=परिसयर्पा।

परीसार—पु०=परिसार।

परीहन†—पु०=परिधान।

परीहार—पु०=परिहार।

परीहास—पु०=परिहास।

परु—पु०[स०√पृ+उन्] १ गाँठ। जोड। २ अवयव। ३ समुद्र। ४ स्वर्ग। ५ पर्वत। पहाड।

अव्य०[हिं० पर] १ बीता हुआ वर्ष। पर साल। २ आनेवाला वर्ष।

परुआ†—पु०=पडवा(भैस का बच्चा)।

वि० १ (बैल) जो काम करने के समय बैठ जाय या पडा रहे। २ काम-चोर।

स्त्री०[?] एक तरह की जमीन।

परुई—स्त्री०[देश०] वह नाँद जिसमे भडभूँजे अनाज के दाने भूँजते हैं।

परुख†—वि०[भाव० परुखता] परुष।

परुत्—अव्य०[स०परस्मिन्, नि० सिद्धि] बीता हुआ वर्ष। गत वर्ष।

परुष—वि० [स०√पृ+उषन्] [भाव० परुषता] १ (वचन, वस्तु या

व्यक्ति) जो गुण, प्रकृति, स्वभाव आदि की दृष्टि से कड़ा, रूखा तथा मृदुता-हीन हो। कठोर और कर्कश। २. उग्रतापूर्ण। तीव्र। ३ हृदयहीन। कठोर हृदयवाला। ४ रसहीन। नीरस। ५. गुरुतर। पु० १ नीली कटसरैया। २. फालसा। ३. तीर। बाण। ४. सरकंडा। सरपत। ५ खर-दूषण का एक सेनापति। ६ अप्रिय और कठोर बात या वचन।

परुषता—स्त्री०[सं० परुष+तल्+टाप्] १ परुष होने की अवस्था या भाव। २ कठोरता। कड़ापन। सख्ती। ३ (वचन या व्यवहार की) कर्कशता। ४ निर्दयता। निष्ठुरता।

परुषत्व—पु०[सं० परुष+त्व] =परुषता।

परुषा—स्त्री०[सं० परुष+टाप्] साहित्य में शब्द-योजना की एक विशिष्ट प्रणाली जिसमें टवर्गीय, द्वित्व, संयुक्त, रेफ, श, ष आदि वर्णों तथा लंबे समासों की अधिकता होती है। २ रावी नदी। ३. फालसा।

परुसना†—स०=परोसना।

परेंगा—पु०[देश०] एक प्रकार का बबूल (वृक्ष)।

परूष, परूषक—पु०[सं०√पृ+ऊषन्] [परुष+कन्] फालसा।

परेंद्रिय ज्ञान—पु० [सं०] कुछ विशिष्ट मनुष्यों में माना जानेवाला वह अतींद्रिय ज्ञान जिसकी सहायता से वे बहुत दूर के लोगों के साथ भी मानसिक संपर्क स्थापित करके विचार-विनिमय आदि कर सकते हैं। (टेलिपैथी)

परे—अव्य० [सं० पर] १ वक्ता अथवा किसी विशिष्ट व्यक्ति से कुछ दूर हटकर या दूर रहकर। जैसे—परे हटकर खड़े होना।

मुहा०—परे परे करना=उपेक्षा, घृणा आदि के कारण यह कहना कि दूर रहो या दूर हट जाओ।

२ किसी क्षेत्र की सीमा से बाहर या दूर। जैसे—गाँव से परे पहाड़ है। ३ पहुँच, पैठ आदि से दूर या बाहर। जैसे— ईश्वर बुद्धि से परे है। ४ अलग, असंबद्ध या वियुक्त स्थिति में। जैसे यह गो जाति से परे है। ५ तुलना आदि के विचार से ऊँची स्थिति में या बढ़कर। आगे, ऊपर या बढ़कर। जैसे—इससे परे और क्या बात हो सकती है।

मुहा०—परे बैठाना=अपनी तुलना में तुच्छ ठहराना। अयोग्य या हीन सिद्ध करना। जैसे—यह घोड़ा तो तुम्हारे घोड़े को परे बैठा देगा।

६ पीछे। बाद। (क्व०)

परेई—स्त्री०[हि० परेवा] १ पंडुकी। फाख्ता। २ मादा कबूतर। कबूतरी।

परेखना—स०[सं० परीक्षण] १. परीक्षा करना। २. दे० 'परखना'।
अ०[सं० प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करना। राह देखना।
अ०[?] पश्चात्ताप करना। पछताना।

परेखा—पु०[सं० परीक्षा] १. परीक्षा। जाँच। २. परखने की योग्यता या शक्ति। परख। ३ प्रतीति। विश्वास।
पु०[?] १ मन में होनेवाला खेद या विषाद। २. चिंता। फिक्र। ३. पश्चात्ताप।
पुं०=प्रतीक्षा।

परेग—स्त्री०[अं० पेग] लोहे की छोटी कील।

परेड—स्त्री०[अं०] १ वह मैदान जहाँ सैनिकों को सैनिक शिक्षा दी जाती है। २ सिपाहियों या सैनिकों को दी जानेवाली सैनिक शिक्षा और उनका साथ साथ चलने आदि का सामूहिक अभ्यास। सैनिकों की कवायद।

परेत—पु०[सं० प्रेत] १. दे० 'प्रेत'। २. मृत शरीर। लाश। शव।

परेता—पु०[सं० परितः आवेष्टन] १ बाँस की तीलियों आदि का बना हुआ बेलन के आकार का एक उपकरण जिसके दोनों ओर पकड़ने के लिए दो डंडियाँ होती हैं और जिस पर जुलाहे लोग सूत या रेशम लपेट कर रखते हैं। २. इसी तरह का वह उपकरण जिस पर पतंग उड़ाने की डोर लपेटी जाती है।

परेर*—पु०[सं० पर=दूर, ऊँचा+हि० एर] आकाश। आसमान।

परेरा†—वि०[हि० परना] १ जैसे की मानी पड़ने पर या मेह आना हो। २. निकम्मा और सुस्त।

परेली—स्त्री०[?] नाटक, नृत्य का एक भेद जिसमें अंग-संचालन अधिक और अभिनय या भाव-प्रदर्शन कम होता है। इसे 'पेली' भी कहते हैं।

परेव—पु०=परेवा।

परेवा¹—पु०[सं० पारावत] [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। फाख्ता। २. कबूतर। ३ कोई तेज उड़नेवाला पक्षी।
²पु० दे० 'परवाना'।

परेश—पु०[सं०पर-ईश, कर्म० स०] १. वह जो सब का और सबसे बढ़कर मालिक या स्वामी हो। २ परमेश्वर। ३ विष्णु।

परेशान—वि०[फा०] [भा० परेशानी] १ छितराया हुआ। तितर-बितर। २. मानसिक, चिंता, दुःख आदि के भार से जो बहुत अधिक व्यग्र अथवा विकल और बदहवास हो। ३. दूसरों द्वारा तंग किया अथवा सताया हुआ। जैसे—लड़कों ने उसे परेशान कर रखा था।

परेशानी—स्त्री०[फा०] १ परेशान होने की अवस्था या भाव। उद्वेग-पूर्ण विकलता। हैरानी। २. वह बात या विषय जिससे कोई परेशान हो। काम में होनेवाला कष्ट या झंझट।
क्रि० प्र०—उठाना।

परेषणी—पु०[सं० प्रेषणी] वह व्यक्ति जिसके नाम रेल-पार्सल अथवा उसकी बिल्टी भेजी जाय। (कनसाइनी)

परेषित—भू० कृ०[सं० प्रेषित] (माल या सामग्री) जो रेल पार्सल द्वारा किसी के नाम भेजी जा चुकी हो। (कनसाइन्ड)

परेष्टुका—स्त्री०[सं० पर√इष्+तुन्+कन्+टाप्]ऐसी गाय जो प्रायः बच्चे देती हो।

परेसा†—पु०=परेश (परमेश्वर)।

परेह—पु०[?] बेसन आदि का पकाया हुआ वह घोल जिसमें पकौड़ियाँ डालने पर कढ़ी बनती है।

परेहा†—पु०[देश०] जोती और सींची हुई भूमि।

परैधित—वि०[सं० पर-एधित, तृ० त०] अन्य द्वारा पालित।
पु० कोकिल।

परैना†—पु०[हि० पैना] बैल आदि हाँकने की छड़ी या डंडा।

परो†—अव्य०=परसों।

परोक्त-दोष—पु० [सं० पर-उक्त, तृ० त०, परोक्त-दोष, कर्म० स०?] न्यायालय में ऊट-पटाँग या गलत बयान देने का अपराध।

परोक्ष—वि०[सं० अक्षि-पर अव्य० स०, टच्] [भाव० परोक्षत्व] १.

जो दृष्टि के क्षेत्र या पथ से वाहर हो और इसी लिए दिखाई न देता हो। आँखों से ओझल। २ जो सामने उपस्थिति या मौजूद न हो। अनुपस्थित। गैर-हाजिर। ३ छिपा हुआ। गुप्त। 'प्रत्यक्ष' का विपर्याय। ४ किसी काम या वात से अनभिज्ञ। अनजान। अपरिचित। ५ जिसका किसी से प्रत्यक्ष या सीधा सवव न हो, वल्कि किसी दूसरे के द्वारा हो। ६ जो उचित और सीधी या स्पष्ट रीति मे न होकर किसी प्रकार के घुमाव-फिराव या हेर-फेर से हो। जो सरल या स्पष्ट रास्ते से न होकर किसी और या दूर के रास्ते से हो। (इनडाइरेक्ट) जैसे—परोक्ष रूप से आग्रह या सकेत करना।

पु० १ आँखो के सामने न होने की अवस्था या भाव। अनुपस्थिति। २ वीता हुआ समय या भूतकाल जो इस समय सामने न हो। 'प्रत्यक्ष' का विपर्याय । ३. व्याकरण मे पूर्ण भूतकाल। ४ वह जो तीनो कालो की वाते जानता हो, अर्थात् त्रिकालज्ञ या परम ज्ञानी। ५. ऐसी दशा, स्थान या स्थिति जो आँखों के सामने न हो, वल्कि दृष्टि-पथ के वाहर या इवर-उधर छिपी हुई हो। जैसे—परोक्ष से किसी के रोने का शब्द सुनाई पडा।

अव्य० किसी की अनुपस्थिति या गैर हाजिरी मे। पीठ-पीछे। जैसे—परोक्ष मे किसी की निंदा करना।

परोक्ष-कर—पु०[कर्म०स०] अर्थशास्त्र मे, दो प्रकार के करो मे से एक (प्रत्यक्ष कर से भिन्न) जो लिया तो किसी और व्यक्ति (उत्पादक, आयातक आदि) से जाता है परतु जिसका भार दूसरो (अर्थात् उपभोक्ताओं) पर पडता है। (इनडाइरेक्ट टैक्स) जैसे—उत्पादनकर, आयात-निर्यात कर।

परोक्षत्व—पु०[स०परोक्ष+त्वन्]परोक्ष या अदृश्य होने की दशा या भाव।

परोक्ष-दर्शन—पु०[ष० त०] विशिष्ट प्रकार की आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसी घटनाओ, वस्तुओ, व्यक्तियो आदि के दृश्य या रूप दिखाई देना जो वहुत दूरी पर हो और साधारण मनुष्यो के दृश्य के वाहर हों। अतीन्द्रिय दृष्टि। (क्लेरवायस)

परोक्ष-निर्वाचन—पु०[स० त०] निर्वाचन की वह पद्धति जिसमे उच्चपदो के लिए अधिकारी या प्रतिनिधि सीधे जनता द्वारा नही चुने जाते है, वल्कि जनता के प्रतिनिधियो , निर्वाचन मडलो आदि के द्वारा चुने जाते हैं। (इनडाइरेक्ट इलेक्शन)

परोक्ष-श्रवण—पु०[प० त०] विशिष्ट प्रकार की आत्मिक शक्ति की महायता से ऐसे शब्द सुनाई देना या ऐसे कथनो का परिज्ञान होना जो वहुत दूर पर हो रहे हों और साधारण मनुष्यो के श्रवण-क्षेत्र के वाहर हों। अतींद्रिय-श्रवण। (क्लेअर ऑडिएन्स)

परोजन†—पु०[स० प्रयोजन] १ प्रयोजन। २. कोई ऐसा पारिवारिक उत्सव या कृत्य जिसमे इष्ट-मित्रो, सवधियो आदि की उपस्थिति आवश्यक हो।

परोढा—स्त्री०[स० पर-ऊढा, तृ०त०]=ऊढा (नायिका)।

परोता—पु०[देश०] [स्त्री० परोती] गेहूँ के पयाल से वनाया जानेवाला एक तरह का टोकरा। (पजाव)

पु०[?] आटा, गुड, हल्दी, पान आदि जो किसी शुभ कार्य मे हज्जाम, भाँट आदि को दिये जाते है।

†पु०=पर-पोता।

परोद्वह—वि०[सं० पर-उद्वह, व० स०] अन्य द्वारा पालित।

पु० कोयल।

परोना† स०=पिरोना।

परोपकार—पु०[सं० पर-उपकार, प० त०] [भाव० परोपकारिता] ऐसा काम जिससे दूसरो का उपकार या भलाई होती हो। दूसरों के हित का काम।

परोपकारक—पु०[स० पर-उपकारक, ष० त०] परोपकारी।

परोपकारिता—पु०[स० परोपकारिन्+तल्+टाप्] १ परोपकार करने की क्रिया या भाव। २ परोपकार।

परोपकारी (रिन्)—पु०[स० परोपकार+इनि] [स्त्री० परोपकारिणी] वह जो दूसरो का उपकार या हित करता हो। दूसरो की भलाई या हित का काम करने अथवा ऐसी वातें वतलानेवाला जिनसे दूसरो का हित हो सकता हो।

परोपकृत—भू०कृ०[स० पर-उपकृत, तृ० त०] जिसका दूसरों ने उपकार किया हो। जिसके साथ परोपकार हुआ हो।

परोपजीवी (विन्)—वि०[स०]दूसरो के भरोसे जीवन निर्वाह करनेवाला। पु० ऐसे कीडे-मकोडे या वनस्पतियाँ जो दूसरे जीव-जतुओं या वृक्षो के अगो पर रहकर जीवन निर्वाह करते हो। (पैरीसाइट)

परोपदेश—पु० [स० पर-उपदेश, प० त०] दूसरो को दिया जानेवाला उपदेश।

परोपसर्पण—पु०[स० पर-उपसर्पण, प० त०] भीख माँगना।

परोरजा (जस्)—वि० [स० रजस्-पर प० त०, सुट् नि०] जो राग, द्वेप आदि भावों से परे हो। विरक्त। विमुक्त।

परोरना—स०[?]मत्र पढकर फूँकना। अभिमत्रित करना। जैसे—रोगी को परोरकर पानी पिलाना।

परोल—पु० दे० 'पैरोल'।

परोष्णी—स्त्री० [स० पर-उष्ण, व० स०, ङीप्] १ तेल चाटनेवाला एक कीडा। तेल-चटा। २ पुराणानुसार कश्मीर की एक नदी।

परोस†—स्त्री०[हिं० परोसना] परोसने की क्रिया या भाव।

†पु०=पड़ोस।

परोसना—स०[स० परिवेपण] खानेवाले की थाली या पत्तल मे खाद्य पदार्थ रखना। जैसे—दाल, पूरी और मिठाई परोसना।

परोसा—पु०[हिं० परोसना] प्रायः एक आदमी के खाने भर का वह भोजन जो उसे अपने साथ ले जाने के लिए दिया अथवा उसके यहाँ भेजा जाता है।

परोसी—पु०[स्त्री० परोसिन]=पडोसी।

परोसैया—पु०[हिं० परोसना+ऐया (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो पगत आदि मे वैठे हुए लोगों के लिए भोजन परोसता हो।

परोहन—पु०[स० प्ररोहण] वह पशु जिस पर चढकर सवारी की जाय या जिस पर वोझ लादा जाय।

परोहा†—पु०[स० प्ररोहण] १. खेतों की सिंचाई का वह प्रकार जिसमे कम गहरे जलाशय मे वाँस आदि से झूलती हुई दौरी की सहायता से पानी उठाकर खेतो मे डाला जाता है। २ उक्त दौरी जिसमे पानी निकाला जाता है। ३ कूएँ से पानी निकालने का चरसा। मोट।

परौं†—अव्य०=परसों।

परीका†—स्त्री०[देश०] बाँझ भेड़।
परीठा†—पु०=पराँठा।
परीता—स्त्री०[देश०] वह चादर जिससे हवा करके अनाज ओसाया जाता है। परती।
परीती†—स्त्री०=पड़ती।
पर्कट—पु०[देश०] बगला।
पर्कटी—स्त्री० [स०√पृच् (जोड़ना)+अटि, कुत्व, ङीप्] १. पाकर वृक्ष। २ नई सुपारी।
स्त्री० हिं० पर्कट (बगला) का स्त्री०।
पर्कार—पु०[फा०] परकार। (दे०)
प्रर्काला†—पु०=परकाला।
पर्गना†—पु०=परगना।
पर्गार—पु०[फा०] परकारा। (दे०)
पर्चा—पु०=परचा।
पर्चाना—स०=परचाना।
पर्चून—पु०=परचून।
पर्छा—पु०=परछा।
पर्जंक†—पु०=पर्यंक।
पर्ज—स्त्री०=परज।
पर्जनी—स्त्री०[स०√पृज् (स्पर्श करना)+अन्, ङीप्] दारु हल्दी।
पर्जन्य—पु० [स०√पृष् (सींचना)+अन्य, ष—ज] १ गरजता तथा बरसता हुआ बादल। मेघ। २ इंद्र। ३ विष्णु। ४ कश्यप ऋषि के एक पुत्र जिसकी गिनती गंधर्वों मे होती है।
पर्जन्या—स्त्री०[स० पर्जन्य+टाप्] दारु हल्दी।
पर्ण—पु०[स०√पृ+न] १ पेड़ का पत्ता। पत्र। जैसे—पर्ण-कुटी=पत्तों से छाकर बनाई हुई कुटी। २ पान का पत्ता। ताम्बूल। ३ ३. पलाश। ढाक। ४. पुस्तक, पंजी आदि का पृष्ठ। (लीफ) ५ कागज का वह टुकड़ा या परत जिसमे से वैसा ही दूसरा टुकड़ा या परत प्रतिलिपि के रूप मे काटकर अलग करते है। (फायल)
पर्णक—पु०[स० पर्ण+कन्] पार्णकि गोत्र के प्रवर्तक एक ऋषि।
पर्णकार—पु०[स० पर्ण√कृ (करना+)अण्] १ पान बेचनेवाला व्यक्ति तमोली। २ पान बेचनेवालो की एक पुरानी जाति।
पर्ण-कुटी—स्त्री०[मध्य० स०] वह झोपडी जिसकी छाजन पत्तो की बनी हो।
पर्ण-कूर्च—पु०[ब० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे तीन दिन तक ढाक, गूलर, कमल और बेल के पत्तों का काढा पीया जाता है।
पर्ण-कृच्छ्र—पु०[ब० स०] एक प्रकार का पाँच दिनो का व्रत जिसमे पहले दिन ढाक के पत्तो का, दूसरे दिन गूलर के पत्तो का, तीसरे दिन कमल के पत्तो का, चौथे दिन बेल के पत्तो का पीकर पाँचवे दिन कुश का काढा पीया जाता था।
पर्ण-खंड—पु०[ब० स०] वह वृक्ष जिसमे फूल, पत्ते आदि न लगते हो।
पर्ण-ग्रंथि—स्त्री०[ष० त०] वनस्पति विज्ञान मे, पेड़-पौधो के तने या स्तभ का वह स्थान जहाँ से पत्ते निकलते है। (नोड)
पर्ण-चोरक—पु०[ष० त०] चोरक नाम का गध द्रव्य।
पर्ण-नर—पु०[मध्य० स०] किसी अज्ञात स्थान मे मरनेवाले व्यक्ति का घास-फूस आदि का बनाया हुआ वह पुतला जो उसका शव न मिलने की दशा मे उसका शव मानकर जलाया जाता है।
पर्णभेदिनी—स्त्री०[स० पर्ण√भिद् (फाड़ना) +णिनि+ङीप्] प्रियगु लता।
पर्ण-भोजन—पु०[ब० स०] १. वह जिसका पत्ता ही भोजन हो। वह जो केवल पत्ते खाकर जीता हो। २. बकरी।
पर्णभोजनी—स्त्री०[स० पर्णभोजन+ङीप्] बकरी।
पर्ण-मणि—स्त्री०[मध्य० स०] १ पन्ना या मरकत नामक रत्न। २ एक प्रकार का अस्त्र।
पर्णमाचल—पु०[स० पर्ण-आ√चल्+णिच्+अण्, मुम्] कमरख का पेड़।
पर्णमुक (च्)—पु०[स० पर्ण√मुच् (छोड़ना)+क्विप्] पतझड़।
पर्ण-मृग—पु० [मध्य० स०] पेड़ो पर रहनेवाले जगली जीव-जतु। जैसे—गिलहरी, बंदर आदि।
पर्णय—पु०[सं०] एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था।
पर्णरुह—पु०[स० पर्ण√रुह् (जनमना)+क] वसत (ऋतु)।
पर्णल—वि०[स० पर्ण+लच्] १ (वृक्ष) जिसमे बहुत अधिक पत्ते लगे हो। २. पत्तो से बनाया हुआ। पत्तो से युक्त।
पर्ण-लता—स्त्री०[मध्य० स०] पान की बेल या लता।
पर्णवल्क—पु०[स०] एक प्राचीन ऋषि।
पर्ण-वल्ली—स्त्री०[मध्य० स०] पालाशी नामक लता।
पर्ण-वाद्य—पु०[मध्य० स०] १ पत्ते का बना हुआ बाजा। २ उक्त बाजे को बजाने से होनेवाला शब्द।
पर्ण-वीटिका—स्त्री० [ष० त०] पान का बीड़ा।
पर्ण-शब्द—पुं०[ष० त०] पत्तों के खड़खड़ाने का शब्द।
पर्ण-शय्या—स्त्री०[मध्य० स०] पत्तो का बिछावन या बिस्तर।
पर्ण-शबर—पु० [ब० स०] १ पुराणानुसार एक देश का नाम। २ उक्त देश मे रहनेवाली आदिम अनार्य जाति जो सभवत अब नष्ट हो गई है।
पर्ण-शाला—स्त्री०[मध्य० स०] पर्णकुटी।
पर्णशालाग्र—पु०[पर्णशाला-अग्र, ब० स०] पुराणानुसार भद्राश्व वर्ष का एक पर्वत।
पर्ण-संपुट—पु०[ष० त०] पत्ते या पत्तो का बना हुआ दोना।
पर्ण-सस्तर—वि०[ब० स०] पर्णशय्या पर सोनेवाला।
पर्णसि—पु०[स० √पृ+असि, नुक्] १ कमल। २ साग। ३ पानी मे बनाया हुआ घर या मकान।
पर्णांग—पु०[पर्ण-अंग, ब० स०] एक विशिष्ट प्रकार के पौधो का वर्ग जिसमे केवल बड़े-बड़े सुदर पत्ते होते है, फूल नही लगते। (फर्न)
पर्णाटक—पु०[स०] एक प्राचीन ऋषि।
पर्णाद—पु०[स० पर्ण√अद् (खाना)+अण्] १ वह जो पत्तो का भक्षण करता हो। २ एक प्राचीन ऋषि।
पर्णाशन—पु०[स० पर्ण+अश् (खाना)+ल्यु—अन] १ वह जो केवल पत्ते खाकर रहता हो। २ बादल। मेघ।
पर्णास—पु०[स० पर्ण√अस् (फेकना)+अच्] तुलसी।
पर्णाहार—पु०—पर्णाशन। (दे०)

पर्णिक—पु०[स० पर्ण+ठन-इक] पत्तो का व्यवसाय करनेवाला। पत्ते वेचनेवाला।

पर्णिका—स्त्री० [स० पर्णिक+टाप्] १ मानकद। शालपजी। सरिवन। २ पिठवन। पृश्णिपर्णी। ३ अग्निमथ। अरणी। ४. कागज का वह छोटा कटा या काटा हुआ टुकडा जो कही दिखलाने पर कुछ निश्चित धन या पदार्थ मिलता है, कोई काम होता है अथवा कोई सहायता या सेवा प्राप्त होती है। (कूपन)

पर्णिनी—स्त्री० [स० पर्ण+इनि-ङीप्]१ मापपर्णी। २ एक अप्सरा।

पर्णिल—वि०[स० पर्ण+इलच] पत्तो से युक्त।

पर्णी (र्णिन्)—पु०[स० पर्ण+इनि] १ वृक्ष। पेड। २. शालपर्णी। सरिवन। ३ पिठवन। ४ तेजपत्ता। ५ एक प्रकार की अप्सराएँ, कदाचित् परियाँ।

पर्णीर—पु०[स० पर्ण+ईरच्] सुगधवाला।

पर्णोटज—पु०[स० पर्ण-उटज, मध्य० स०] पर्ण-कुटी।

पर्त†—स्त्री०=परत।

पर्द—पु० [स०√पृ (पूर्ति करना)+द]। १ सिर के वालो का समूह। २ गुदामार्ग से निकलनेवाली वायु। पाद।

पर्दन—पु०[स०√पर्द्+ल्युट्-अन] पादने की क्रिया। पादना।

पर्दनी—स्त्री०[स० परिधानी] धोती।

पर्दा† —पु०=परदा।

पर्धा—वि०[हिं० आधा का अनु०] आधे से कुछ कम या अधिक। आधे के लगभग। उदा०—वह पूरा कभी वसूल नही हो पाता था—कभी आधा कभी पर्धा।—वृन्दावन लाल वर्मा।

पर्ना—पु०[फा०] एक तरह का वूटीदार रेशमी कपडा।
पु०=परना।

पर्प—पु०[स० पृ+प] १ हरी घास। २ वह पहियेदार छोटी गाडी जिस पर पगुओ को वैठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है। ३. घर। मकान।

पर्पट—पु० [स०√पर्प् (गति)+अटन्] १ पित-पापड़ा। २ दाल आदि का वना हुआ पापड।

पर्पट-द्रुम—पु०[स० उपमि० स०] कुभी वृक्ष।

पर्पटी—स्त्री० [स० पर्पट+ङीप्] १ सौराष्ट्र आदि प्रदेशो मे होनेवाली एक तरह की मिट्टी जो सुगधित होती है। २ उक्त मिट्टी मे से निकलनेवाली गध। ३ गध। महक। ४ पानडी। ५ पापडी। ६ वैद्यक की स्वर्ण-पर्पटी नाम की रसौषधि।
† स्त्री०=कनपटी। उदा०—माथे पर और पर्पटी पर मल दिया। —अज्ञेय।

पर्परी—स्त्री०[स०पर्प√रा (देना)+क+ङीप्]स्त्रियो की कवरी। जूडा।
स्त्री०[स० पर्पट] १ पापड के छोटे छोटे टुकडे। २ कचरी।

पर्परीक—पु०[स०√पृ+ईकन्, द्वित्व, रुक्] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ जलाशय।

पर्परीण—पु०[स०√पृ+यङ्, लुक्,+इनन्] पत्ते की नस।

पर्पिक—पु०[स० पर्प+ठन्-इक] पर्प मे वैठनेवाला पगु व्यक्ति।

पर्फरीक—पु०[स०√स्फुट् (सचलन)+ईकन्, नि० सिद्धि] नया और कोमल पत्ता।

पर्व†—पु०[स० पर्व] १=पर्व। २ वह शुभ दिन जिस दिन सिक्ख लोग उत्सव मनाते हैं। जैसे—गुरुपर्व=नानक के जन्म लेने का दिन।

पर्वत† —पु०=पर्वत।

पर्वती—वि०[हिं० पर्वत] पर्वत-सवधी। पहाड़ी।

पर्यंक—पु०[स० परि-अक, प्रा० स०] १ पलग। २ योग मे एक प्रकार का आसन। ३ वीरो के वैठने का एक प्रकार का आसन या ढग। ४ नर्मदा नदी के उत्तर ओर मे स्थित पर्वत जो विन्ध्य पर्वत का पुत्र माना गया है।

पर्यंक-पदिका—स्त्री०[स० पर्यंक-पाद, व०स०, ठन्—इक, टाप्] एक तरह का सेम जिसकी फलियाँ काले रग की होती है।

पर्यंत—भू० कृ०[स० परि-अत, प्रा० स०] घिरा हुआ।
स्त्री० किसी क्षेत्र के विस्तार की समाप्ति सूचित करनेवाली रेखा। चौहद्दी। सीमा। (वाउण्डरी)
अव्य० तक। लौं।

पर्यंतिका—स्त्री०[स० परि-अतिका, प्रा०स०] नैतिकता तथा सद्गुणो का होनेवाला नाश।

पर्यग्नि—पु० [स० परि-अग्नि, प्रा०स०] १ हाथ मे अग्नि लेकर यज्ञ के लिए छोडे हुए पशु की परिक्रमा करना। २. वह अग्नि जो उक्त अवसर पर हाथ मे ली जाती थी।

पर्यटक—पु०[स० परि√अट् (गति)+ण्वुल्—अक] पर्यटन करनेवाला। दूसरे देशो मे घूमने-फिरनेवाला।

पर्यटन—पु० [स० परि√ अट्+ल्युट्—अन] अनेक महत्त्वपूर्ण स्थल देखने तथा मन-वहलाव के लिए अधिक विस्तृत भूभाग मे किया जानेवाला भ्रमण।

पर्यनुयोग—पु० [स० परि-अनुयोग, प्रा० स०] १ कोई वात मिथ्या सिद्ध करने अथवा किसी तथ्य का खण्डन करने के उद्देश्य से की जानेवाली पूछ-ताछ। २ निंदा।

पर्यन्य†—पु०=पर्जन्य।

पर्यय—पु०[स० परि√इ (जाना)+अच्]१ चारो ओर चक्कर लगाना। २ समय का वीतना। ३ समय का अपव्यय। ४ किसी लौकिक या शास्त्रीय वन्धन, मर्यादा आदि का उल्लघन।

पर्ययण—पु०[स०परि√इ+ल्युट्—अन]१ किसी के चारो ओर चक्कर लगाना। २. घोडे की जीन। काठी।

पर्यवदात—वि०[स० परि-अवदात, प्रा० स०] १ पूर्ण रूप से निर्मल और शुद्ध। २ निपुण। ३ ज्ञात और परिचित।

पर्यवरोध—पु०[स० परि-अवरोध, प्रा०स०]चारो ओर से होनेवाली वाधा।

पर्यवलोकन—पु०[स० परि-अवलोकन, प्रा० स०] १ चारो ओर देखना। २ चारो ओर इस तरह निरीक्षणात्मक दृष्टि से देखना कि समूचे क्षेत्र या उसमे होनेवाली चीजो का चित्र मस्तिष्क मे उतर आये। (सर्वे)

पर्यवसान—पु०[स० परि-अव √सो (समाप्ति)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० पर्यवसित] १ अत। समाप्ति। २ अतर्भाव। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ अर्थ, आशय आदि के सवध मे होनेवाला ठीक ज्ञान या निश्चय।

पर्यवस्था—स्त्री० [स० परि-अव√स्था (ठहरना)+अङ्—टाप्] १ विरोध। २. खडन।

पर्यवस्थान—पु०[स० परि-अव√स्था+ल्युट्—अन] १. विरोध करना। २ खंडन करना।

पर्यवेक्षक—वि०[परि-अव√ईक्ष्+ण्वुल्—अक] पर्यवेक्षण करनेवाला। वह अधिकारी जो किसी काम के ठीक तरह से होते रहने की देख-रेख करने पर नियुक्त हो। (सुपरवाइजर)

पर्यवेक्षण—पु० [परि—अव√ईक्ष्+ल्युट्—अन] बराबर यह देखते रहना कि कोई काम ठीक तरह से चल रहा है या नही। (सुपरवाईजिंग)

पर्यश्रु—वि०[स० परि—अश्रु, ब० स०] १. आँसुओ से नहाया या भीगा हुआ। २. जिसकी आँखो मे आँसू भरे हो।

पर्यसन—पु०[स० परि√अस् (फेंकना) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० पर्यस्त]१ दूर करना। बाहर करना। निकालना। २ भेजना। ३ नष्ट करना। ४. रद्द करना।

पर्यस्त—भू० कृ० [स० परि√ अस्+क्त] जिसका पर्यसन हुआ हो।

पर्यस्तापह्नुति—स्त्री० [स० पर्यस्ता-अपह्नुति, कर्म० स०] अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे किसी उपमान के धर्म का निषेध करके उस धर्म की स्थापना उपमेय मे की जाती है।

पर्यस्ति—स्त्री०[स० परि√ अस्+क्तिन्] १ दूर करना। २ वीरासन लगाकर बैठना।

पर्यस्तिका—स्त्री० [स० पर्यस्ति+कन्+टाप्] १. वीरासन। २. पलग।

पर्याकुल—वि०[स० परि-आकुल, प्रा०स०] गदला, क्षुब्ध (पानी)। २. डरा और घबराया हुआ। ३ अस्त-व्यस्त। ४ उत्तेजित। ५. मरा हुआ।

पर्यागत—वि०[स० परि-आ√ गम्(जाना)+क्त] १. जो पूरा चक्कर लगा चुका हो। २ जो अपने सांसारिक जीवन का अंत कर चुका हो।

पर्याचांत—पु०[स० परि-आ√चम् (खाना)+क्त] आचमन करने के बाद छोड़ा जानेवाला परोसा हुआ भोजन। (धार्मिक दृष्टि से ऐसा भोजन जूठा माना जाता है)

पर्याण—पु०[स० परि√ या (गति)+ल्युट्, पृषो०सिद्धि] घोडे की जीन। काठी।

पर्याप्त—वि०[स० परि√ आप् (व्याप्ति)+क्त] [भाव० पर्याप्ति] १ जितना आवश्यक हो उतना सब। पूरा। यथेष्ट। काफी। (सफिशिएन्ट) २ मिला हुआ। प्राप्त।

विशेष—यथेष्ट की तरह इसका प्रयोग भी केवल ऐसी चीजो या बातो के सबध मे होना चाहिए जो आवश्यक हो या जिनसे हमे तृप्ति या सतोष प्राप्त होता हो। जैसे—पर्याप्त धन, पर्याप्त सुख। यह कहना ठीक न होगा—मुझे वहाँ पर्याप्त कष्ट मिला था।

३ जोड़, तुल्यता आदि की दृष्टि से उपयुक्त, अधिक बलवान या सशक्त। ४. परिमित। सीमित।

पु० १. पर्याप्त या यथेष्ट होने की अवस्था या भाव। २ तृप्ति। ३ शक्ति। ४ सामर्थ्य। ५ योग्यता।

पर्याप्ति—स्त्री०[स० परि√ आप्+क्तिन्]१. पर्याप्त होने की अवस्था या भाव। यथेष्टता। २ प्राप्ति। मिलना। ३ अन्त। समाप्ति। ४. योग्यता या सामर्थ्य। ५ तृप्ति। सतुष्टि। ६ निवारण। ७ रक्षा करना। रक्षण।

पर्याप्लाव—पु०[स० परि-आ√प्लु (गति)+घञ्] १. चक्कर। फेरा। २ घेरा।

पर्याप्लुत—भू० कृ० [स० परि-आ√ प्लु+क्त] घिरा या घेरा हुआ।

पर्याय—पु०[स०परि√ई (गति)+घञ्] १ पारस्परिक संबंध की दृष्टि से वे शब्द जो सामान्यत किसी एक ही चीज, बात या भाव का बोध कराते हो। साधारणत पर्यायो के अभिधेयार्थ समान होते है, लक्ष्यार्थो मे भिन्नता हो सकती है। (सिनानिम) २. क्रम। सिलसिला। ३. एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे अनेक आश्रय ग्रहण करने का वर्णन होता है। ४. प्रकार। भेद। ५ अवसर। मौका। ६ बनाने या रचने की क्रिया। निर्माण। ७ द्रव्य का गुण या धर्म। ८. समय का व्यतीत होना। ९ दो व्यक्तियो मे होनेवाला ऐसा नाता या सबध जो एक ही कुल मे जन्म लेने के कारण माना जाता या होता है।

पर्यायकी—स्त्री० [स०] भाषा विज्ञान का एक अग, जिसमे पर्याय शब्दो के पारस्परिक सूक्ष्म अतरो और भेद-प्रभेदो का अध्ययन किया जाता है। (सिनॉनिमी)

पर्याय-कोश—पु० [प० त०] वह शब्द-कोश जिसमे शब्दो के पर्याय बतलाये गये हो तथा उनमे होनेवाली परस्पर आर्थी अतरो का विवेचन किया गया हो।

पर्याय-क्रम—पु०[प०त०]१ पद, मान आदि के विचार से स्थिर किया जानेवाला क्रम। बडाई-छोटाई आदि के विचार से लगाया हुआ क्रम। २ उत्तरोत्तर होती रहनेवाली वृद्धि।

पर्यायज्ञ—पु० [स० पर्याय √ ज्ञा (जानना)+क] पर्यायो के सूक्ष्म अतर जानने वाला विद्वान् व्यक्ति। (सिनानिमिस्ट)

पर्यायवाचक—वि० [स०] १. पर्याय के रूप मे होनेवाला। २ जो सबध के विचार से पर्याय हो।

पर्यायवाची(चिन्)—वि० [स०]=पर्यायवाचक।

पर्याय-वृत्ति—स्त्री० [स० प० त०] ऐसा स्वभाव जिसके कारण एक छोडकर दूसरे को, फिर उसे छोड़कर किसी और को अपनाते चलने का क्रम चलता रहता है।

पर्याय-शयन—पु० [तृ० त०] एक के बाद दूसरे का या पारी पारी से सोना।

पर्यायिक—वि० [स० पर्याय+ठन्—इक] १ पर्याय-सबधी। पर्याय का। २ पर्याय के रूप मे होनेवाला।

पु० नृत्य और सगीत का एक अग।

पर्यायी—वि०[स०] पर्यायवाचक।

पर्यायोक्ति—स्त्री०[स० पर्याय-उक्ति, तृ०त०] एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे (क) कोई बात सीधी तरह मे न कहकर चमत्कारिक और विलक्षण ढग से कही जाती है। जैसे—नायक के बिछुडने के समय रोती हुई नायिका का अपने आँसुओ से यह कहना कि जरा ठहरो, और मेरे प्राण भी अपने साथ लेते जाओ। (ख) किसी बहाने या युक्ति से कोई काम करने का उल्लेख होता है। जैसे—पक्षियो और हिरनो को देखने के बहाने सीता जो बार-बार श्रीराम की ओर देखती थी।

पर्यालोचन—पु० [सं० परि-आ√लोच् (देखना)+ल्युट्—अन] १

अच्छी तरह की जानेवाली देख-भाल। २. दुबारा या फिर से की जानेवाली देख-भाल। ३ दे० 'पुनरीक्षण'।

पर्यालोचना—स्त्री०[स० परि-आ√लोच्+णिच्+युच्—अन,+टाप्]= पर्यालोचन।

पर्यावरण—पु०[स० परि + आवरण] किसी व्यक्ति या विषय की परिस्थिति। वातावरण। उदा०—कवि पर किसी एक समाज के पर्यावरण का विशेष प्रभाव पडता है।—डा० सम्पूर्णानन्द।

पर्यावर्त्त—पु०[स० परि-आ√वृत् (वरतना)+घञ्] १ वापस आना। लौटना। २ मृत आत्मा का फिर से इस ससार मे आकर जन्म लेना या शरीर धारण करना।

पर्यावर्तन—पु०[स० परि+आ√वृत्+ल्युट्—अन] १ वापस आना। लौटना। २. अदला-वदली। विनिमय।

पर्याविल—वि०[स० परि-आविल, प्रा० स०] गँदला (जल)।

पर्यास—पु०[स० परि√अस् (फेकना)+घञ्] १ पतन। गिरना। २. वध। हत्या। ३ नाश।

†पु०=प्रयास।

पर्यासन—पु०[स० परि√अस् (वैठना)+ल्युट्—अन] १ किसी को घेर कर वैठना। किसी के चारो ओर वैठना। २ परिक्रमा करना।

पर्याहार—पु०[स० परि-आ √ हृ (हरण करना)+घञ्] १ जूआ। २ ढोने की क्रिया। ३ वोझ। ४ घडा। ५ अन्न जमा करना।

पर्युक्षण—पु० [स० परि√ उक्ष् (सीचना)+ल्युट्—अन] श्राद्ध, होम, पूजा आदि के विना मत्र पढे छिडका जानेवाला जल।

पर्युक्षणी—स्त्री०[स० पर्युक्षण+ङीप्] पर्युक्षण के लिए जल से भरा पात्र।

पर्युत्थान—पु०[स० परि-उद्√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] उठ खडा होना।

पर्युत्सुक—वि०[स० परि-उत्सुक, प्रा० स०] १ वहुत अधिक उत्सुक। २ उदास। खिन्न। ३ विकल। खिन्न।

पर्युदय—पु० [स० अत्या ० स०] सूर्योदय से कुछ पहले का समय। तडका।

पर्युदस्त—वि०[स० परि-उद्√अस्+क्त] १ निषिद्ध। २. जिसके सवध मे या जिस पर आपत्ति की गई हो।

पर्युदास—पु०[स० परि-उद्√अस्+घञ्] नियम आदि के विरुद्ध अपवाद के रूप मे कही जानेवाली वात।

पर्युपस्थान—पु०[स० परि-उप√स्था+ल्युट्—अन] सेवा।

पर्युपासक—पु०[स० परि-उपासक, प्रा० स०] १ उपासक। २. सेवक।

पर्युपासन—पु०[स० परि-उपासन, प्रा० स०] १ उपासना। २ सेवा।

पर्युपासिता (तृ), पर्युपासी (सिन्)—पु०[स० परि-उप√ आस+तृच्, स० परि-उप√ अस्+णिनि] पर्युपासक। (दे०)

पर्युप्त—भू० कृ०[स० परि√वप् (वोना)+क्त] [भाव० पर्युप्ति] जो वोया गया हो।

पर्युप्ति—स्त्री०[स० परि√वप्+क्तिन्] वीज वोने की क्रिया या भाव। वोआई।

पर्युषण—पु०[स० परि√उप्+ल्युट् —अन] १. जैनियो के अनुसार तीर्थंकरो की पूजा या सेवा। २ जैनो का एक विशिष्ट पर्व जिसमे कई प्रकार के व्रतो का पालन किया जाता है।

पर्युषित—वि०[स० परि√वस्+क्त] १. जो ताजा न हो। एक दिन पहले का। वासी। (फूल या भोजन के लिए प्रयुक्त) २ मूर्ख।

पर्यूहण—पु०[स० परि√ ऊह्+ल्युट्—अन] अग्नि के चारो ओर जल छिडकना।

पर्येषणा—स्त्री०[स० परि-एषणा, प्रा० स०] १ तर्कपूर्वक की जानेवाली पूछ-ताछ। २. छान-वीन। जाँच-पडताल। ३. पूजा।

पर्येष्टि—स्त्री०[स० परि-आ√ इष्+क्तिन्]। पर्येषणा (दे०)

पर्व (र्वन्)—पु०[स०√ पृ (पूर्ण करना)+वनिप्] १ दो चीजो के जुडने का सधि-स्थान। जोड। गाँठ। जैसे—उँगली या गन्ने का पर्व (पोर)। २ शरीर का ऐसा अग जो किसी जोड़ के आगे हो और घुमाया फिराया या मोडा जा सकता हो। ३ अश। खड। भाग। ४ ग्रथ का कोई विशिष्ट अश, खड या विभाग। जैसे—महाभारत मे अठारह पर्व है। ५. सीढी का डडा। ६ कोई निश्चित या सीमित काल। अवधि, विशेपत. अमावास्या, पूर्णिमा और दोनो पक्षो की अष्टमियाँ। ७. वे यज्ञ जो उक्त तिथियो मे किये जाते थे। ८ आनन्द और उत्सव का दिन या समय। ९ वह दिन जव विशिष्ट रूप से कोई धार्मिक या पुण्य-कार्य किया जाता हो। १० कोई विशिष्ट अच्छा अवसर या समय। आनन्द या त्योहार मनाने का दिन। ११ उत्सव। १२. चद्रमा या सूर्य का ग्रहण। १३ सूर्य का किसी राशि मे सक्रमण काल। सक्राति। १४ चातुर्मास्य।

पर्वक—पु०[स० पर्वन्√ कै (प्रकाशित होना)+क]घुटना।

पर्वकार—पु०[स० पर्वन्√ कृ (करना)+अण्] वह ब्राह्मण जो धन के लोभ से पर्व के दिन का काम छोड दे, और फिर सुभीते से किसी दूसरे दिन करे।

पर्व-काल—पु०[स० ष०त०] १ वह समय जव कोई पर्व हो। पुण्य-काल। २ चद्रमा के क्षय के दिन, अर्थात् पूर्णमासी से अमावास्या तक का समय।

पर्वगामी (मिन्)—पु०[स० पर्वन्√गम् (जाना)+णिनि] शास्त्रो द्वारा वर्जित तिथि या पर्व पर स्त्री-गमन करनेवाला व्यक्ति।

पर्वण—पु०[स० √ पर्व् (पूर्ति)+ल्युट्—अन]१ कोई काम पूरा करने की क्रिया या भाव। २. एक राक्षस का नाम।

पर्वणिका—स्त्री० [स० पर्वणी+कन्+टाप्, ह्रस्व] पर्वणी नाम का आँख का रोग।

पर्वणी—स्त्री०[स० पर्वण+ङीप्]१ सुश्रुत के अनुसार आँख की सधि मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे जलन और सूजन होती है। २ पूर्णिमा। ३ दे० 'पर्विणी'।

पर्वत—पु०[स०√पर्व+अतच्]१ पत्थरो आदि का वना हुआ, मालाओ या श्रेणियो के रूप मे फैला हुआ तथा ऊँची चोटियोवाला वह भूखड जो आस-पास की भूमि से सैकडो-हजारो फुट ऊँचा होता है तथा जो भूगर्भ की प्राकृतिक शक्तियो से निकलनेवाले मल से वनता है। पहाड।

विशेष—पर्वत प्राय ढालुएँ होते है और उनके ऊपरी भाग निचले भागों की अपेक्षा वहुत कम विस्तृत होते हैं और उनके ऊपरी भाग चौडे तथा चिपटे होते है।

२ वहुत-सी चीजो का वना हुआ वहुत ऊँचा ढेर। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, अत्यधिक मात्रा मे होने की अवस्था या भाव। जैसे—वातो का पहाड।

४ पुराणानुसार एक देवर्षि जो नारद मुनि के बहुत बडे मित्र थे। ५ एक प्रकार की मछली। ६ पेड। वृक्ष। ७ एक प्रकार का साग। ८ दसनामी सप्रदाय के सन्यासियो का एक भेद या वर्ग, और उनके नाम के साथ लगनेवाली एक उपाधि। ९ मरीचि का एक पुत्र। १० एक गधर्व का नाम। ११ रहस्य-सप्रदाय मे (क) पाप, (ख) प्रेम, (ग) मन या ध्यान की ऊँची अवस्था, (घ) परमात्मा।

पर्वतक—पु०[स० पर्वत+कन्] छोटा पहाड।

पर्वत-काक—पु०[मध्य०स०] डोम कौआ।

पर्वत-कीला—स्त्री०[ब०स०, टाप्] पृथ्वी।

पर्वतखंड—पु० [स०] १ पर्वत का टुकडा। २ पर्वतीय प्रदेश। ३ तटवर्ती प्रदेश मे ऊँची तथा अति तीव्र ढालवाली चट्टान की दीवार।

पर्वतज—वि०[स० पर्वत√जन् (उत्पन्न होना)+ड] जो पर्वत मे उत्पन्न हुआ हो। पहाड से पैदा होने या निकलनेवाला।

पर्वतजा—स्त्री०[स० पर्वतज+टाप्]१ नदी। २ पार्वती।

पर्वत-जाल—पु०[ष०त०] पर्वत-माला।

पर्वत-तृण—पु०[स० मध्य०स०] एक तरह की घास जिसे पशु खाते हैं।

पर्वत-दुर्ग—पु०[मध्य०स०] पहाड पर बना हुआ किला।

पर्वत-नंदिनी—स्त्री०[ष०त०] पार्वती।

पर्वत-पति—पु०[ष०त०] पर्वतो का राजा, हिमालय।

पर्वत-प्रदेश—पु०[स०] ऐसा प्रदेश जिसमे प्राय पर्वत ही पर्वत हो।

पर्वत-माला—स्त्री०[ष०त०] भूगोल शास्त्र मे, पहाडो की ऐसी श्रृखला जो दूर तक समानातर चली गई हो। (चेन)

पर्वत-मोचा—स्त्री०[मध्य०स०] एक तरह के पहाडी केले का पौधा और उसका फल।

पर्वत-राज—पु०[ष० त०]१ बहुत बडा पहाड। २ हिमालय पर्वत।

पर्वतवासिनी—स्त्री० [स० पर्वत√ वस् (बसना)+णिनि +ङीप्] १. काली देवी। २ गायत्री। ३ छोटी जटामासी।

पर्वतवासी(सिन्)—पु०[स० पर्वत√वस्+णिनि] [स्त्री० पर्वतवासिनी] पहाड़ पर वास करनेवाला प्राणी।

पर्वतस्थ—वि०[स० पर्वत√स्था (ठहरना)+क] पर्वत पर स्थित।

पर्वतात्मज—पु०[स० पर्वत-आत्मज, ष० त०] मैनाक (पर्वत)।

पर्वतात्मजा—स्त्री० [पर्वत-आत्मजा, ष० त०] पार्वती।

पर्वताधारा—स्त्री०[पर्वत-आधार, ब०स०, टाप्] पृथ्वी।

पर्वतारि—पु०[पर्वत्-अरि, ष० त०] इद्र।

पर्वताशय—पु०[स० पर्वत-आ √शी (सोना)+अच्] मेघ। बादल।

पर्वताश्रय—पुं०[स० पर्वत-आश्रय, ब० स०]१ शरभ। २. पर्वतवासी।

पर्वताश्रयी (यिन्)—पु० [स० पर्वत-आ√ श्रि (सेवा)+णिनि] पर्वत-वासी।

पर्वतासन—पु०[स० पर्वत-आसन, मध्य०स०]हठ योग मे एक प्रकार का आसन।

पर्वतास्त्र—पु०[स० पर्वत-अस्त्र, मध्य०स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का कल्पित अस्त्र जिसके सबध मे कहा जाता है कि इनके फेकते ही शत्रु की सेना पर बडे बड़े पत्थर बरसने लगते थे अथवा अपनी सेना के चारो ओर पहाड खडे हो जाते थे, जिनसे शत्रु के प्रभजनास्त्र विफल हो जाते थे।

पर्वतिया—पु० [स० पर्वत+इया (प्रत्य०)] १ नैपालियो की एक जाति। २ एक प्रकार का कद्दू। ३ एक प्रकार का तिल।
वि०=पर्वतीय (पहाडी)।

पर्वती—वि०=पर्वतीय।

पर्वतीय—वि०[स० पर्वत√छ—ईय]१ पर्वत-सबधी। पहाड का' पहाडी। २ पहाड़ पर रहने या होनेवाला। पहाडी। जैसे—पर्वतीय पावस।

पर्वतेश्वर—पु०[पर्वत-ईश्वर, ष०त०] हिमालय।

पर्वतोद्भव—पु० [पर्वत-उद्भव, ब०स०]१ पारा। २ शिगरफ।

पर्वतोद्भूत—पु० [पर्वत्-उद्भूत, ष० त०] अबरक।

पर्वतोर्मि—पु० [पर्वत-उर्मि, ब०स०] एक तरह की मछली।

पर्वधि—पु०[स० पर्वन्√धा (धारण करना)+कि] चद्रमा।

पर्वपुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्]१ नागदती नामक क्षुप। २. रामदूती नाम की तुलसी।

पर्व-भाग—पु०[ष०त०] हाथ की कलाई।

पर्व-भेद—पु०[स० ब०स०] सधिभग नामक रोग का एक भेद।

पर्व-मूल—पु०[ष० त०] किसी पक्ष की चतुर्दशी और अमावस्या (अथवा पूर्णिमा) के सधिकाल का समय।

पर्व-मूला—स्त्री० [ब०स०+टाप्] सफेद दूब।

पर्व-योनि—पु०[ब० स०] ऐसी वनस्पति जिसमे जगह जगह पर्व अर्थात् गाँठे या पोर हो। जैसे— ऊख, बास आदि।

पर्वर—प्रत्य०[फा०] पालन करनेवाला। परवर।
पु०=परवल (पौधा और उसका फल)।

पर्वाना—पु०[फा० पर्वान] परवाना। (दे०)

पर्वानगी—स्त्री०[फा०] आज्ञा। अनुमति।

पर्वरुट(रुह्)—पु०[स० पर्वन्√ रुह् (उत्पत्ति)+क्विप्]अनार।

पर्वरिश—स्त्री०=परवरिश।

पर्वरीण—पु०[स० =पर्परीण, पृषो० सिद्धि०]१ पर्व। २ मृत शरीर। लाश। ३ अभिमान। घमड।

पर्व-वल्ली—स्त्री०[मध्य०स०] एक तरह की दूब। माला दूर्वा।

पर्व-संधि—पु०[ष० त०],१. पूर्णिमा (या अमावास्या) और प्रतिपदा का सधिकाल। २. चद्रमा अथवा सूर्य के ग्रहण का समय। ३ घुटनो का जोड। ४. दो अवस्थाओ के बीच मे पडनेवाला समय या स्थान।

पर्वा—स्त्री०= परवाह।
स्त्री०=प्रतिपदा।

पर्वानगी—स्त्री०=परवानगी।

पर्वाना—पु०=परवाना।

पर्वावधि—स्त्री० [स० पर्वन्-अवधि, ष० त०] गाँठ। जोड।

पर्वास्फोट—पु० [स०पर्वन्-आस्फोट, ष० त०] १. उँगलियाँ चटकाने की क्रिया या भाव। २ उँगलिया चटकाने पर होनेवाला शब्द।

पर्वाह—पु० [पर्वन्-अहन्, ष० त०, टच्] वह दिन जिसमे उत्सव मनाया जाय। पर्व का दिन।
स्त्री० [फा० पर्वा] परवाह। (दे०)

पर्विणी—स्त्री० [स०] १ छोटा और कम महत्त्वपूर्ण पर्व। २ पर्व का समय।

पर्वित—पु० [स०√पर्व् (पूर्ति)+क्त] एक प्रकार की मछली।

पर्वेश—पु० [सं० पर्वन्-ईश, ष० त०] फलित ज्योतिष मे ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्र, कुबेर, वरुण अग्नि और यम देवता जो ग्रहण के अधिपति माने जाते है। इन सभी का भोगकाल छः छः महीने का होता है।

पर्श—पु० [सं०] एक प्राचीन योद्धा जाति जिसके वंशज अफगानिस्तान के एक प्रदेश मे रहते थे।
†पु०=स्पर्श।

पर्शनीय—वि० [सं० स्पर्शनीय] स्पर्श किये जाने के योग्य। स्पृश्य।

पर्शु—पु० [सं०√स्पृश् (छूना)+शुन्—पृ, आदेश] १. आयुध। अस्त्र। २. परशु। फरसा। ३. पसली।

पर्शुका—स्त्री० [सं० पर्शु√कै (चमकना)+क+टाप्] पसली।

पर्शु-पाणी—पु० [ब० स०] १. गणेश। २. परशुराम।

पर्शुराम—पु० [मध्य० स०] परशुराम।

पर्शु-स्थान—पु० [ष० त०] अफगानिस्तान का एक प्रदेश जिसमे पर्शु जाति के लोग रहते थे।

पर्श्वध—पु० [सं०=परश्वध, पृषो० सिद्धि] कुठार।

पर्षद्—स्त्री०=परिषद्।

पर्षद्वल—पु० [सं० पर्षद्+वलच्] परिषद् का सदस्य।

पर्हेज—पु०=परहेज।

पर्हेजगार—वि०=परहेजगार।

पलंकट—वि० [सं० पल√कट् (छिपाना)+खच्, मुम्] डरपोक। भीरु।

पलंकर—पु० [सं० पल√कृ (करना)+खच्, मुम्,] पित्त।

पलंकष—पु० [सं० पल√कष् (मारना)+खच्, मुम्] १ गुग्गुल। गूगल। २. राक्षस। ३ पलाश।

पलंकषा—स्त्री० [सं० पलकष+टाप्]=पलंकषी।

पलंकषी—स्त्री० [सं० पलकष+ङीष्] १ गोखरू। रास्ना। २ टेसू। पलास। ३. गुग्गुल। ४. लाख। ५ गोरखमुडी।

पलंका—स्त्री० [हिं० पर+लका] लका से भी और आगे का अर्थात् बहुत दूर का स्थान। अति दूरवर्ती देश। जैसे—लका छोड़ पलका जाय। (कहा०)

पलंग—पु० [सं० पल्यक से फा०] [स्त्री० अल्पा० पलंगडी] एक तरह की बडी तथा मजबूत चारपाई जो प्राय निवार से बुनी होती है।
क्रि० प्र०—बिछाना।
मुहा०—(स्त्री का) पलग को लात मार खड़ा होना=छठी, बरही आदि के उपरात सौरी से किसी स्त्री का भली-चगी बाहर आना। सौरी के दिन पूरे करके बाहर निकलना। (बोल-चाल) (व्यक्ति का) पलंग को लात मारकर खडा होना=बहुत बडी बीमारी झेलकर अच्छा होना। कडी बीमारी से उठना। पलंग तोड़ना=बिना कोई काम किये यो ही पडे या सोये रहना। निठल्ला रहना। पलग लगाना=किसी के सोने के लिए पलग पर बिछौना बिछाना। बिस्तर ठीक करना।

पलग-कस—पु० [हिं० पलग+कसना] एक प्रकार की ओषधि जिसे खाने से स्त्रियो की सभोग शक्ति का बढना माना जाता है। (पलगतोड के जोडपर)

पलंगडी—स्त्री० [हिं० पलग+डी (प्रत्य०)] छोटा पलग।

पलंग-तोड़—वि० [हिं०] १ वह जो प्राय पलग पर पडे-पडे समय बिताता हो अर्थात् आलसी तथा निकम्मा। २. एक प्रकार का ओषध जिसे खाने से पुरुष की सभोग शक्ति का बढना माना जाता है। (पलग-कस के जोडपर)

पलंग-दंत—पु० [फा० पलग=चीता+हिं० दांत] जिसके दात चीते के दातो की तरह कुछ कुछ टेढे हो।

पलंगपोश—पु० [हिं० पलग+फा० पोश] पलग पर बिछाई जानेवाली चादर।

पलँगरी†—स्त्री०=पलँगडी।

पलंगिया—स्त्री० [हिं० पलग+इया (प्रत्य०)] छोटा पलग। पलगडी।

पलंजी—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

पलडी—स्त्री० [देश०] मल्लाहो का वह बाँस जिससे वे पाल खडा करते हैं।

पल—पु० [सं०√पल् (गति, रक्षा)+अच्] १ समय का एक बहुत प्राचीन विभाग जो ६० विपल अर्थात् २४ सेकेंड के बराबर होता है। घडी या दड का ६० वाँ भाग।
पद—पल के पल में=बहुत थोडे समय मे। क्षण भर मे। तुरत।
२. एक प्रकार की पुरानी तौल जो ४ कर्ष के बराबर होती थी। ३ चलने की क्रिया। गति। ४ धोखेबाजी। प्रतारणा। ५ तराजू। तुला। ६ गोश्त। मास। ७ धान का पयाल। ८ मूर्ख व्यक्ति। ९ लाश। शव।
†पु० [सं० पलक] पलक। दृगचल।
मुहा०—पल मारते या पल भर में=बहुत ही थोडे समय मे। तुरत। जैसे—पल मारते वह अदृश्य हो गया।

पलई†—स्त्री० [सं० पल्लव] १ पेड की पतली और नरम डाली। २. पेड का ऊपरी सिरा।
†स्त्री० [हिं० पसली] बच्चो को होनेवाला एक रोग जिसमे उनकी पसलियाँ जोर जोर से फडकने या ऊपर-नीचे होने लगती हैं।

पलक—स्त्री० [फा०] १ आँख के ऊपर का वह पतला आवरण जिसके अगले भाग मे बालो की पर्त या बरौनी होती है और जिसके गिरने से आँख बद होती और उठने से आँख खुलती है।
क्रि० प्र०—उठना।—गिरना।
मुहा०—पलक झपकना=पलक का क्षण भर के लिए या एक बार नीचे की ओर गिरना। पलक (या पलकों) पर पानी फिरना=आँखों मे जल भर आना। उदा०—रोपिहि रोप भरे दृग तरै फिरै पलक भर पानी।—सूर। पलक पसीजना=(क) आँखो मे आँसू आना। (ख) किसी के प्रति करुणा या दया उत्पन्न होना। पलक भाँजना=(क) पलक गिराना या हिलाना। (ख) पलकें हिलाकर इशारा या सकेत करना। पलक मारना=(क) पलक झपकाना या गिराना। (ख) पलक हिलाकर इशारा या सकेत करना। पलक लगना=हलकी-सी नीद आना या निद्रा का आरभ होना। झपकी आना। जैसे—दो दिन से रोगी की पलक नही लगी है। पलक से पलक न लगना=नाम को भी कुछ नीद न आना। पलक से पलक न लगाना=देखने के लिए टकटकी लगाना या आँख बद न होने देना। (किसी के रास्ते मे या किसी के लिए) पलकें बिछाना=किसी का अत्यत आदर और प्रेम से स्वागत तथा सत्कार

करना। पलकें मुंदना=मृत्यु होना। मरना। पलकों से जमीन झाड़ना या तिनके चुनना=(क) अत्यत श्रद्धा तथा भक्ति से किसी की सेवा करना। (ख) किसी को सतुष्ट और सुखी करने के लिए पूर्ण मनोयोग से प्रयत्न करना। जैसे—मैं आप के लिए पलकों से तिनके चुनूंगा।
विशेष—इस मुहावरे का मुख्य आशय यह है कि चलने-फिरने, उठने-बैठने की जगह या रास्ते मे कुछ भी कष्ट न होने पावे।
पद—पलक झपकते या मारते=अत्यत अल्प समय मे। निमेष मात्र मे। जैसे—पलक झपकते ही कुछ दूसरा दृश्य दिखाई पडा।
पु० [हिं० पल+एक] १. एक ही पल या क्षण भर का समय। उदा०—कोटि करम फिरे पलक मे, जो रचक आये नाँव।—कबीर।

पलक-दरिया—वि० [हिं० पलक+दरिया] बहुत बडा दानी। अति उदार।

पलक-दरियाव—वि० =पलक-दरिया।

पलकनेवाज†—वि० [हिं० पलक+फा० निवाज़] क्षण भर मे निहाल कर देनेवाला। बहुत बडा दानी। पलक-दरिया।

पलक-पीटा—पु० [हिं० पलक+पीटना] १. बरौनिया झडने का एक रोग। २ वह जिसे उक्त रोग हो।

पलकर्ण—पु० [स०] धूपघडी के शकु की उस समय की छाया की लबाई जब मेष संक्राति के मध्याह्नकाल मे सूर्य ठीक विषुवत् रेखा पर होता है।

पलका†—पु० [स्त्री० अल्पा० पलकी]=पलग।

पलकिया—स्त्री० [हिं० पलकी] १. पालकी। २. हाथी पर रखने का एक प्रकार का छोटा हौदा। उदा०—पलकिया मे बहुत मुलायम गद्दी तकिए लगा दिए गए है और हाथी बहुत धीमे चलाया जायगा।—वृंदावनलाल वर्मा।

पलक्या—स्त्री० [स० पलक+यत्+टाप्] पालक।

पलक्ष—वि० [स०=वलक्ष, पृषो० सिद्धि] श्वेत। सफेद।
पु० सफेद रग।

पल-क्षार—पु० [ष० त०] रक्त। खून। लहू।

पलखन—पु० [स० पलक्ष] पाकर का पेड।

पलगंड—पु० [स० पल√गण्ड् (लीपना)+अण्] कच्ची दीवार मे मिट्टी का लेप करनेवाला लेपक। मजदूर।

पलटन—स्त्री० [अ० प्लैटून] १. सैनिकों का बहुत बडा ऐसा दस्ता जिसका नायक लेफ्टीनेंट होता है। २. किसी प्रकार के प्राणियों का बहुत बडा झुड। जैसे—चीटियों, वदरों या बच्चों की पलटन।
†स्त्री० [हिं० पलटना] पलटने की क्रिया या भाव।

पलटना—अ० [स० प्रलोटन] १. ऐसी स्थिति मे आना या होना कि ऊपरी अश या तल नीचे हो जाय और निचला अश या तल ऊपर हो जाय। उलटा या औधा होना। २. दशा, परिस्थिति आदि मे होनेवाला इस प्रकार का बहुत बडा परिवर्तन कि उसका प्रवाह, रुख या रूप बिलकुल उलट जाय। अच्छी से बुरी या बुरी से अच्छी स्थिति को प्राप्त होना। ३ अपेक्षाकृत अधिक अवनत स्थिति को प्राप्त होना। ४ राज्य की सत्ता का एक के हाथ से निकलकर दूसरे के हाथ मे जाना। जैसे—शासन पलटना। ५ पीछे या विपरीत दिशा की ओर जाना, घूमना या मुडना। ६ जहाँ से कोई चला हो, उसका उसी स्थान की ओर लौटना। वापस आना। ७ कही हुई या मानी हुई बाते मानने से पीछे हटना। मुकरना। जैसे—उन्हे पलटते देर नही लगती।
सयो० क्रि०—जाना।
स० १. उलटा या औंधा करना। २ आकार, रूप, दशा, स्थिति आदि को प्रयत्नपूर्वक बदल देना। बदलना। ३. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। ४. किसी को लौटने मे प्रवृत्त करना। फेरना। ५. अदल-बदल करना।
विशेष—यह उलटना के साथ उसका अनुकरण-वाचक रूप बनकर भी प्रयुक्त होता है। जैसे—उलटना-पलटना।

पलटनिया—वि० [हिं० पलटन] पलटन-सबधी।
पु० सैनिक।

पलटा—पु० [हिं० पलटना] १. पलटने की क्रिया या भाव। २ चक्कर के रूप मे अथवा यों ही उलटकर पीछे की ओर आने अथवा किसी ओर घूमने या प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव।
मुहा०—पलटा खाना=(क) पीछे अथवा किसी और दिशा मे प्रवृत्त होना या मुडना। जैसे—भागते हुए चीते ने पलटा खाया और वह शिकारी पर झपटा। (ख) एक दशा से दूसरी, मुख्यत अच्छी दशा की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—दस बरस बाद उसके भाग्य ने फिर पलटा खाया और उसने व्यापार मे लाखों रुपये कमाये। पलटा देना=(क) उलटना। (ख) किसी दूसरी दशा या दिशा मे प्रवृत्त करना या ले जाना।
३. किसी काम या बात के बदले किया जाने या होनेवाला काम या बात। बदला। जैसे—उसे उसकी करनी का पलटा मिल गया। ४. सगीत मे वह स्थिति जिसमे बडी और लबी तानें लेते समय ऊँचे स्वरों से पलटकर नीचे स्वरो पर आते है। जैसे—गवैये ने ऐसी-ऐसी तानें पलटीं कि सब लोग प्रसन्न हो गये।
क्रि० प्र०—लेना।
५. लोहे या पीतल की बडी खुरचनी जिसका फल चौकोर न होकर गोलाकार होता है। ६. नाव की वह पटरी जिस पर उसे खेनेवाला मल्लाह बैठता है। ७ कुश्ती का दाँव या पेच।

पलटाना†—स० [हिं० पलटना] १. पलटने मे प्रवृत्त करना। २ लौटाना। ३. बदलना। विशेष दे० 'पलटना' स०।

पलटाव—पु० [हिं० पलटा] पलटे जाने की क्रिया या भाव।

पलटावना—स० [हिं० पलटना का प्रे०] पलटने का काम किसी दूसरे से कराना।

पलटी†—स्त्री०=पलटा।

पलटे—अव्य० [हिं० पलटा] बदले मे। एवज मे। प्रतिफल स्वरूप।

पलड़ा—पु० [स० पटल] १. तराजू के दोनो लटकते हुए भागों मे से एक। २ शक्ति, समर्थता आदि की दृष्टि से दो पक्षों, दलों आदि मे से कोई एक। जैसे—समाज-वादियों की अपेक्षा काँग्रेसियों का पलडा भारी है।
मुहा०—(किसी का) पलड़ा भारी होना=अपने विरोधी की अपेक्षा शक्ति का सतुलन अधिक होना।
†पु०=पल्ला (धोती आदि का आँचल)।

पलया—पु० [हिं० पलटना] १ कलाबाजी, विशेषत पानी मे कलैया मारने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—मारना।

२ दे० 'पलथी'।

पलथी—स्त्री० [स० पर्यस्त, प्रा० पल्लत्थ] दाहिने पैर का पजा बाएँ पट्ठे के नीचे और बाएँ पैर का पजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठने का एक आसन।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

पलद—वि० [सं० पल√दा (देना)+क] जिसके सेवन से मास बढे।

पलना—अ० [हि० पालना] १ विशिष्ट परिस्थितियो मे रहकर बड़े होना। जैसे—प्रकृति की गोद मे पलना। २ खा-पीकर खूब हृष्ट पुष्ट होना। ३ कर्त्तव्य, धर्म आदि के निर्वाह के रूप मे पूरा उतरना। पालित होना। उदा०—पर भूलो तुम निज धर्म भले, मुझसे मेरा अधिकार पले।—मैथलीशरण।

†स०=देना। (दलाल)

†पु०=पालना।

पलनाना—स० [हि० पलान=जीन,+ना (प्रत्य०)]=पलानना।

पल-प्रिय—वि० [व० स०] मास खाकर प्रसन्न होनेवाला। जिसे मास अच्छा लगता हो।

पु० डोम कौआ। दोण काक।

पलभक्षी(क्षिन्)—वि० [सं० पल√भक्ष् (खाना)+णिनि] [स्त्री० पलभक्षिणी] मासाहारी। मास-भक्षी।

पल-भरता—स्त्री० [हि० पल+भर+ता (प्रत्य०)] पल भर या बहुत थोडी देर तक अस्तित्व बने रहने या होने की अवस्था या भाव। क्षण-भगुरता।

पलभा—स्त्री० [व० स०] धूप-घडी के शकु की उस समय की छाया की चौडाई जब मेष सक्राति के मध्याह्न मे सूर्य ठीक विपुवत रेखा पर होता है, पलविभा। विपुवत् प्रभा।

पलरा†—पु०=पलडा।

पलल—वि० [स०√पल् (गति)+कलच्] बहुत मुलायम। पिलपिला।

पु० १. मास। गोश्त। २ शव। लाश। ३ राक्षस। ४ पत्थर। ५ बल। शक्ति। ६. दूध। ७ कीचड ८ तिल का चूर्ण। ९ वह मीठा पकवान या मिठाई जो तिल के चूर्ण से बनी हो। १० मल। गन्दगी। ११. सेवार। शैवाल।

पलल-ज्वर—पु० [प० त०] पित्त (धातु)।

पलल-प्रिय—वि० [व० स०] जिसे मास खाना अच्छा लगता हो।

पु० १ राक्षस। २ डोम कौआ। द्रोण काक।

पललाशय—पु० [स० पलल-आ√शी (सोना)+अच्] गलगड या घेघा नामक रोग।

पलव—पु० [स०√पल्+अच्, पल√वा (हिंसा)+क] १ मछलियाँ फँसाने का एक तरह का बाँस की खपाचियो का बना हुआ झाबा। २ मछलियाँ पकडने का जाल।

पलवल†—स्त्री० [?] १ पारस्परिक आत्मीयता या घनिष्ठता। २ सामजस्य।

मुहा०—**पलवल मिलाना**=किसी प्रकार की सगति या सामजस्य स्थापित करना।

†पु०=परवल।

पलवा†—पु० [स० पल्लव] १ ऊख के पौधे की ऊपरी कुछ पोरें जो प्राय कम मीठी या फीकी होती हैं। अगौरा। कौंचा। २ पजाब के कुछ प्रदेशो मे होनेवाली एक घास जिसे भैंसे चाव से खाती हैं। ३. अजलि। चुल्लू।

पलवान—पु०=पलवा (घास)।

पलवाना—स० [हि० पालना] १ किसी को पालने मे प्रवृत्त करना। २ किसी से पालन कराना। पालन करने के लिए प्रवृत्त करना।

पलवार—पु० [हि० पल्लव] कुछ विशिष्ट जातियो के ऊख के गडो मे अँखुएँ निकलने पर उन्हे बबूल के काँटो, अरहर के डठलो आदि से ढकने की एक रीति।

पु० [हि० पाल+वार (प्रत्य०)] पाल आदि की सहायता से चलनेवाली एक प्रकार की बडी नाव जिस पर माल लादा जाता है।- पटैला।

पलवारी—पु० [हि० पलवार] नाविक। मल्लाह।

पलवाल—वि० [स० पल=मास+वाल (प्रत्य०)] १ मास-भक्षी। २ हृष्ट-पुष्ट।

पलवैया†—वि० [हि० पालन+वैया (प्रत्य०)] पालन-पोषण करनेवाला।

वि० [हि० पलवाना] पालन-पोषण करनेवाला।

पलस्तर—पु० [स० प्लास्टर] १ मजबूती तथा सुरक्षा के लिए दीवारो, छतो आदि पर किया जानेवाला बरी, बालू, सीमेंट अथवा मिट्टी का मोटा लेप। मुहा०—**(किसी का) पलस्तर ढीला होना या बिगडना**=कष्ट, रोग आदि के कारण बहुत-कुछ जर्जर या शिथिल होना।

२. किसी चीज के ऊपर लगाया जानेवाला कोई मोटा लेप। जैसे—शरीर के रुग्ण अग पर लगाया जानेवाला औषध या पलस्तर।

पलस्तरकारी—स्त्री० [हि० पलस्तर+फा० कारी] १ दीवारो, छतो आदि पर पलस्तर करने की क्रिया या भाव।

पलहना*—अ०=पलुहना (पल्लवित होना)।

स० पल्लवित करना।

पलहा*—पु० [स० पल्लव] नया हरा पत्ता। कोपल।

पलाँग—स्त्री०=फलाँग (छलाँग)।

पलाग—पु० [स० पल-अग, ब० स०] सूंस। शिशुमार।

पलाडु—पु० [स० पल-अण्ड, प० त०, पलाण्ड+क्विप्+कु] प्याज।

पला—स्त्री० [स० पल] पल। निमिष।

†पु० [हि० 'पली' का पु०] बडी पली।

†पु०=पल्ला।

पलाग्नि—पु० [स० पल-अग्नि, प० त०] पित्त।

पलाण—पु०=पलान।

पलातक—वि० [स० पलायन] भगोडा।

पु० १. वह किसान जो अपना खेत छोड़कर भाग गया हो। २ वह जो अपना उत्तरदायित्व, कार्य, पद आदि छोडकर भाग गया हो।

पलाद, पलादन—पु० [स० पल√अद् (खाना)+अण्] [स० पल-अदन, ब० स०] राक्षस।

पलान—पु० [फा० पालान] १ सवारी करने से पहले घोडे, टट्टू आदि की पीठ पर डाला जानेवाला टाट या कोई और मोटा कपडा जिसे रस्सी आदि से कस दिया जाता है। २ काठी। जीन।

†पु०=पलान।

पलानना—स०[हिं० पलान+ना (प्रत्य०)] १. घोड़े आदि पर पलान कसना या बाँधना। २ किसी पर चढ़ाई या धावा करने की तैयारी करना।

पलाना—अ०[स० पलायन] पलायन करना। भागना।
स० [हिं० पलान] घोड़े की पीठ पर काठी या पलान रखना।

पलानि*—स्त्री० =पलान।

पलानी—स्त्री०[हिं० पलान] १. पान के आकार का पैर के पंजों मे पहनने का एक गहना। २. छप्पर।
स्त्री०=पलाव।

पलान्न—पु० [स० पल-अन्न, मध्य० स०] वह पुलाव जिसमे मास की बोटियाँ मिली हों।

पलाप—पु० [स० पल√ आप् (प्राप्ति)+घञ्] हाथी का गडस्थल।
†पु० दे० 'पगहा'।

पलायक—पु०[स० परा√अय् (गति)+ण्वुल्—अक, लत्व] १. वह जो पकड़े जाने या दडित होने के भय से भागकर कही चला गया या छिप गया हो। २ भागा हुआ वह व्यक्ति जिसे शासन पकडना चाहता हो। भगोडा। (एब्सकाडर) ३. वह जो वाद-विवाद, तर्क-वितर्क मे बराबर पीछे हट जाता हो।

पलायन—पु०[स० परा√अय्+ल्युट्—अन, लत्व] १.भागने की क्रिया या भाव। भागना। २. आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्रों मे, यह तत्त्व कि सृष्टि का प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक वनस्पति अपने वर्तमान रूप से असतुष्ट होकर प्राकृतिक रूप से अथवा स्वभावत किसी न किसी प्रकार की उत्क्रान्ति या उन्नति अथवा विकास की ओर प्रवृत्त होती है। दार्शनिक दृष्टि से इसे सब प्रकार के बन्धनों और सीमाओं मे मुक्त होकर अनत और असीम ब्रह्म की ओर अग्रसर होने की प्रवृत्ति कह सकते है। कला, साहित्य आदि के क्षेत्रों मे प्राचीन के प्रति असताप और नवीन के प्रति उत्साह या उमग की भावना इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप होती है।

पलायनवाद—पु० [प०त०] आजकल का यह वाद या सिद्धात कि ससार की सभी चीजें और बातें अपने प्रस्तुत रूप और स्थिति से विरक्त होकर किसी न किसी प्रकार की नवीनता और विशिष्टता की ओर प्रवृत्त होती रहती है। (एस्केपिज्म)
विशेष—इस वाद का मुख्य आशय यह है कि जो कुछ है, उससे ऊबकर हर एक चीज उसकी ओर बढ़ती है, जो नही है—यदास्ति से यन्नास्ति की ओर प्रवृत्त होती है। आधुनिक हिंदी क्षेत्र मे छायावाद, निराशावाद आदि की जो प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है, वे भी इसी पलायनवाद के फल के रूप मे मानी जाती है। कुछ लोग इसे एक प्रकार की विकृति भी मानते है।

पलायनवादी(दिन्)—वि०[स०पलायनवाद+इनि]पलायनवाद-सबधी।
पु० वह जो पलायनवाद का सिद्धात मानता हो या उसका अनुयायी हो।

पलायमान—वि०[स० परा√अय्+शानच्, मुक्, लत्व] जो भाग रहा हो। भागता हुआ।

पलायित—भू० कृ० [स० परा√ अय्+क्त, लत्व] जो कही भागकर चला गया हो।

पलायी (यिन्)—पु०[स० परा√अय्+णिनि, लत्व] पलायक। (दे०)

पलाल—पु०[स०√ पल् (रक्षा)+कालन्] १. धान का सूखा डठल। पयाल। २. किसी पौधे या वनस्पति का सूखा डंठल।

पलाल-दोहद—पु०[ब०स०] आम का पेड़।

पलाला—स्त्री० [स० पल+आ √ला (लेना)+क+टाप्] उन सात राक्षसियो मे से एक जो छोटे बच्चो को रुग्ण कर देती है।

पलालि, पलाली—स्त्री० [स० पल-आलि, ष० त०] गोश्त या मास की ढेरी।

पलाव—पु०[स० पल√अव् (हिंसा)+अच्] वह काँटा जिसमे मछलियाँ फँसाई जाती है। बसी।

पलाश—पु०[स०√ पल् (गति)+क, पल√अश् (व्याप्ति)+अण्] १. ऊँचे स्थानों विशेषतः ऊसर तथा बालुका मिश्रित भूमि मे होनेवाला एक पेड़ जिसमे वसत काल मे लाल रंग के फूल लगते है। उसके पत्तों की पत्तलें बनाई जाती है। ढाक। टेसू। २. उक्त वृक्ष का फूल। ३. पत्ता। पर्ण। ४. मगध देश का पुराना नाम। ५ हरा रग। ६ कचूर। ७. शासन। ८. परिभाषण। ९ विदारी कद।
वि०[स० पल√अश् (खाना) +अण्]१. मासाहारी। २. कठोर-हृदय। निर्दय।
पु० १ राक्षस। २. एक प्रकार का मासाहारी पक्षी।

पलाशक—पु०[स० पलाश+कन्]१. पलास का पेड और फूल। ढाक। टेसू। २. कपूर। ३ लाख। लाक्षा।

पलाशगंधजा—स्त्री०[सं० पलाश-गंध, ष०त०, √जन् (उत्पन्न होना)+ड+टाप्] एक प्रकार का वंशलोचन।

पलाशच्छदन—पु०[स० ब०स०] तमालपत्र।

पलाशतरुज—पु०[स० पलाश-तरु, ष०त०, √जन्+ड]पलाश की कोंपल।

पलाशन—पु०[स० पल-अशन, ब०स०] मैना। सारिका।

पलाशपर्णी—स्त्री०[स० पलाश-पर्ण, ब०स०, ङीप्] अश्वगधा। असगध।

पलाशांता—स्त्री०[स० पलाश-अत, ब० स०, टाप्] वनकचूर।

पलाशाख्य—पु० [स० पलाश-आख्या, ब०स०] नाडी हीग।

पलाशिका—स्त्री० [स० पलाश+कन्+टाप्, इत्व] एक लता जो वृक्षों पर भी चढती है।

पलाशी (शिन्)—वि० [स० पलाश+इनि] १. मास खानेवाला। मासाहारी। २ पत्तो से युक्त। जिसमे पत्ते हों।
पु०[पल√अश् (खाना)+णिनि] राक्षस ।

पलाशी—स्त्री०[स० पलाश+ङीप्] १. क्षीरिका। खिरनी। २. कचूर। ३ कचरी। ४ लाख।

पलाशीय—वि०[स० पलाश+छ—ईय] (वृक्ष) जिसमे पत्ते लगे हों। पत्तोवाला।

पलास—पु०[स० पलाश]१ एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसमे गहरे लाल रंग के अर्द्धचद्राकार फूल लगते है, इसके सूखे लचीले पत्तो के दोने, पत्तले, बीडियाँ आदि और रेशो से रस्सियाँ, दरियाँ आदि बनाई जाती है। इसकी फलियाँ औषध के काम आती हैं। टेसू। ढाक। २ उक्त वृक्ष का फूल। ३. गिद्ध की जाति का एक मासाहारी पक्षी।

पलासना—स०[देश०] नये बनाये हुए जूतों मे फालतू बढे हुए चमडे के अशो को काटना और इस प्रकार जूता सुडौल बनाना। (मोची)

पलास पापड़ा—पु० [हिं० पलास+पापडा] [स्त्री० अल्पा० पलास पपडी] पलास की फलियाँ जिसका उपयोग दवा के रूप मे किया जाता है।

पलिंजी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जिसके दाने पक्षी तथा निर्धन लोग खाते हैं।

पलिक—वि० [सं० पल+ठन्—इक] १. पल-संबंधी। २. जो तौल मे एक पल हो।

पलिका—पु०=पलका।

स्त्री० [?] एक तरह का ऊनी कालीन।

पु०=पलका (पलग)।

पलिक्नी—स्त्री० [स० पलित+क्न, ङीप्] १. वह बूढी स्त्री जिसके बाल पक गये हो। सफेद या पके हुए बालोंवाली स्त्री। २ ऐसी गौ जो पहली बार गाभिन हुई हो। बाल-गर्भिणी।

पलिघ—स्त्री० [स०=परिघ, लत्व] १ काँच का घड़ा। करावा। २. उक्त के आधार पर, शीशे आदि की वह बोतल जो चमड़े, टीन आदि से मढी रहती है तथा जिसमे यात्रा के समय लोग पानी, शराब आदि रखकर चलते हैं। (थर्मस) ३ घडा। मटका। ४. चहार-दीवारी। प्राचीर। ५ गाय बाँधने का घर। गो-गृह। ६ फाटक। ७. अर्गल। अगरी।

पलितंकरण—वि० [स०पलित+च्वि, √ कृ (करना)+ख्युन्—अन, मुम्] (बाल आदि) पकाने या सफेद करनेवाला।

पलित—वि० [स० √ पल्+क्त] [स्त्री० पलिता] १ वृद्ध। बुड्ढा। २ पका हुआ या सफेद (बाल)।

पु० १ सिर के बालों का पकना या सफेद होना। २ असमय मे बाल पकने का एक रोग। ३ गरमी। ताप। ४ छरीला नामक वनस्पति। ५ कीचड। ६. गुग्गल। ७ मिर्च।

पलिती (तिन्)—पु० [स० पलित+इनि] पलित रोग से पीडित व्यक्ति। वह जिसके बाल पक गये हों।

पलिया—पु० [देश०] एक रोग जिसमे पशुओं का गला सूज आता है।

पलिहर—पु० [स० परिहर=छोड देना] ऐसा खेत जिसमे भदई और अगहनी फसलो की बोआई न की गई हो और इस प्रकार उन्हे परती छोड दिया गया हो। ऐसे खेत मे चैती फसल की बोआई होती है।

पली—स्त्री० [स० पलिघ] १. तेल नापने की एक तरह की एक छोटी गहरी कटोरी।

मुहा०—**पली पली जोड़ना**=थोडा-थोडा करके सगृहीत करना।

२. उक्त मे भरे हुए तेल या किसी और पदार्थ की मात्रा।

पलीत—वि०, पु०=पलीद।

पलीता—पु० [फा० फतील या फलीता (अशुद्ध किंतु उर्दू मे प्रचलित रूप)] [स्त्री० अल्पा० पलीती] १ चिराग की बत्ती। २. बत्ती के आकार का बारूद लगा हुआ एक छोटा डोरा जो पटाखो आदि मे लगा रहता है, और जिसके सुलगाये जाने पर पटाखा चलता है।

मुहा०—**पलीता लगाना**=ऐसी बात कहना जिससे लोग परस्पर झगडने या लडने-भिडने लग जायें।

३ नारियल, वट आदि की छाल या रेशों को कूट और बटकर बनाई हुई वह बत्ती जिससे बदूक या तोप के रजक मे आग लगाई जाती है।

क्रि० प्र०—दागना।—देना।—लगाना।

मुहा०—**पलीता चटाना**=तोप या बदूक मे उक्त प्रकार का पलीता रखकर जलाना।

४ बत्ती के आकार मे लपेटा हुआ वह कागज जिस पर कोई मत्र लिखा हो। यह प्राय भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए टोने के रूप मे जलाया जाता है।

क्रि० प्र०—जलाना।

पलीती—स्त्री० [हिं० पलीता] छोटा पलीता।

पलीद—वि० [फा० मि० स० प्रेत [भाव० पलीदी] १ अपवित्र। अशुचि। २ गदा। ३. घृणास्पद। ४ दुष्ट। नीच। ५ बहुत ही घृणित आचरण तथा विचारवाला।

पु० प्रेत। भूत।

पलुआ—पु० [देश०] सन की जाति का एक पौधा।

†वि० [हिं० पालना] पाला हुआ।

पलुटाना—स० [हिं० पलोटना का प्रे०] (पैर) पलोटने का काम दूसरे से कराना। (पैर) दबवाना।

पलुवा†—पु०, वि०=पलुआ।

पलुहना—अ० [स० पल्लव] १ पौधे, वृक्ष आदि का पल्लवित होना। २. हरा होना। ३ व्यक्ति के सबध मे फूलना-फलना और उन्नति करना।

पलुहाना—स० [हिं० पलुहना] पल्लवित करना।

अ०= पलुहना।

पलूचना—स०=पलना।

पलेट—स्त्री० [अ० प्लेट] १. तश्तरी। रकाबी। २ कपडे की वह लबी पट्टी जो प्राय जनाने और बच्चो के पहनने के कपडो मे सुन्दरता लाने या कुछ विशिष्ट अशो को कडा करने के लिए लगाई जाती है। पट्टी।

पलेटन—पु० [अ० प्लेटेन] छापे के यत्र मे लोहे का वह चिपटा या वर्तुलाकार भाग जिसके दबाव से कागज आदि पर अक्षर छपते हैं।

पलेटना—स०=लपेटना।

पलेड़ना—स० [स० प्रेरण] धक्का देना। ढकेलना।

पलेथन—पु० [स० परिस्तरण=लपेटना] १ वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय पाटे या बेलन पर इसलिए बिखेरते हैं कि गीला आटा हाथ मे या बेलन आदि मे चिपकने न पावे। परथन।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—**(किसी का) पलेथन निकालना**=(क) बहुत अधिक मार-पीटकर अधमरा करना। (ख) बहुत अधिक परेशान करना।

२ किसी बडे व्यय या हानि के बाद तथा उसके फलस्वरूप होनेवाला अतिरिक्त व्यय। जैसे—तुम्हारे फेर मे पचासो रुपयों की हानि तो हुई ही, आने-जाने मे पाँच रुपया और पलेथन लग गया।

क्रि० प्र०—लगना।

पलेनर—पु० [अ० प्लेन] काठ का वह छोटा चिपटा टुकडा जिससे दबाकर किसी चीज का ऊपरी स्तर चौरस या बराबर किया जाता है। जैसे—छापेखाने मे सीसे के अक्षर बराबर करने या दीवार के पलस्तर पर फेरने का पलेनर।

पलेना—स० [?] बोने के पूर्व खेत सीचना।

†पु०=पलेनर।

पलेव—पु०[देश०] १. पलिहर खेत मे चैती की फसल बोने से पहले की जानेवाली सिंचाई। २. जूस। रसा। शोरबा।

पलेंड़ा—पु०[हि० पानी+आला=स्थान] १. पानी के घड़े आदि रखने का चबूतरा या चौखटा। २. पानी का घड़ा या मटका।

पलोटना—स०[स० प्रलोठन] १ सेवा-भाव से किसी के पैर दबाना। २. सेवा करना।
अ०=लोटना।
अ०=पलटना।

पलोथन†—पु०=पलेथन।

पलोवना†—स०[स० प्रलोठन]१. सेवा-भाव से किसी के पैर दबाना। २. किसी को प्रसन्न करने के लिए मीठी-मीठी बातें कहना या तरह तरह के उपाय करना।

पलोसना—स० [स० स्पर्श ? हि० परसना]१. धोना। २. अपना काम निकालने के लिए मीठी-मीठी बातें करके किसी को अपने अनुकूल करना।

पलौ*—पु०=पल्लव।

पलौठा†—वि०=पहलौठा।

पल्टन—स्त्री०=पलटन।

पल्टा†—पु०=पलटा।

पल्थी†—स्त्री०=पलथी।

पल्यक—पु०=पर्यंक (पलग)।

पल्ययन—पु० [स० परि√ अय् (गति)+ल्युट्—अन, लत्व] घोड़े के पीठ पर बिछाई जानेवाली गद्दी। पलान।

पल्ल—पु० [स० पाद्√ ला (लेना)+क, पद्—आदेश] १ वह आगार जिसमे अन्न सचित करके रखा जाता है। बखार। २. फल आदि पकाने के लिए विशिष्ट प्रकार से उन्हे रखने का ढग या युक्ति। पाल।

पल्लड़—पु०[हि० पल्ला?] झुड। समूह। उदा०—पूर्व की ओर से अधकार के पल्लड के पल्लड नदी के स्वर्णरेखा पर मानो आवरण डालने-वाले थे। —वृंदावनलाल वर्मा।

पल्लव—पु० [स०√पल्+क्विप्,√लू+अप्, पल्—लव, कर्म० स०] १ पौधे, वृक्ष आदि का कोमल, छोटा तथा नया पत्ता पत्ते की तरह की आगे की ओर निकली हुई। चिपटी गोलाकार चीज। जैसे—कर पल्लव। ३. गले मे पहनने का एक तरह का कोई आभूषण जो पत्ते के आकार का होता है। ४ एक तरह का कगन। ५ नृत्य मे हाथ का एक विशिष्ट प्रकार की मुद्रा। ६. बल। शक्ति। ७ चचलता। ८. आल का रग। ९. पहने जानेवाले वस्त्र का पल्ला। १०. विस्तार। ११. पल्लव देश। १२ पल्लव देश का निवासी। १३. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवश जिसका राज्य किसी समय उडीसा से तुंगभद्रा नदी तक था। वराहमिहिर के अनुसार इस वश के लोग पहिले दक्षिण-पश्चिम बसते थे। अशोक के समय मे गुजरात मे इनका राज्य था।

पल्लवक—पु० [स० पल्लव√कै (चमकना)+क]१. वेश्यागामी २ किसी वेश्या का प्रेमी। ३ अशोक (वृक्ष)। ४. नया हरा पत्ता। पल्लव। ५ एक तरह की मछली।

पल्लव ग्राहिता—स्त्री० [स० पल्लवग्राहिन्+तल्+टाप्] पल्लवग्राही होने की अवस्था या भाव।

पल्लवग्राही (हिन्)—पु० [सं० पल्लव√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] वह जिसने किसी विषय को ऊपरी या बाहरी छोटी-मोटी बातो का ही सामान्य ज्ञान प्राप्त किया हो। किसी विषय को स्थूल रूप से जानने-वाला।

पल्लव-द्रु—पु०[स० मध्य०स०] अशोक (वृक्ष)।

पल्लवना—अ० [स० पल्लव+हि०ना (प्रत्य०)] १. पौधों, वृक्षो आदि में नये नये पत्ते निकलना। पल्लवित होना। २. व्यक्तियों का फलना-फूलना और उन्नत अवस्था को प्राप्त होना।
स० पल्लवित करना। पनपाना।

पल्लवाद—पु० [स० पल्लव√अद् (खाना)+अण्] हिरन।

पल्लवाधार—पु०[स० पल्लव-आधार, ष० त०] डाली या शाखा जिसमे पत्ते लगते है।

पल्लवास्त्र—पु०[स० पल्लव-अस्त्र, ब० स०] कामदेव।

पल्लविक—पु०=पल्लवक।

पल्लवित—भू०कृ०[स० पल्लव+इतच्] १. (पेड़ या पौधा) जो नये नये पत्तो से युक्त हुआ हो अथवा जिसमे नये-नये पत्ते निकल रहे हो। २. हरा-भरा तथा लहलहाता हुआ। ३. जिसे नई-नई चीजो, रचनाओ आदि से युक्त किया गया हो और इस प्रकार उसका अभिवर्द्धन तथा विकास हुआ हो। जैसे— लेखक अपनी रचनाओ से साहित्य को पल्लवित करते है। ३. लाख के रग मे रगा हुआ। ४ जिसे रोमाच हुआ हो। रोमाचित।

पल्लवी (विन्)—वि०[स० पल्लव+इनि] जिसमे पल्लव हो। पत्तो से युक्त।
पु० पेड़। वृक्ष।

पल्ला—पु० [स० पल्लव=कपडे का छोर] १. ओढे या पहने हुए कपडे का अतिम विस्तार। आंचल। छोर। जैसे—धोती या चादर का पल्ला। मुहा०—(किसी से) पल्ला छूटना=पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। जैसे—चलो, किसी तरह इस दुष्ट से पल्ला छूटा। पल्ला छुडाना=बचाव या रक्षा करने के लिए किसी की पकड या बधन से निकलना। जैसे—तुम तो पल्ला छुडाकर भागे, पर पकड गए हम। (किसी का) पल्ला पकडना= रक्षा, सहायता, स्वार्थ-साधन आदि के लिए किसी को पकडना या उसके साथ होना। जैसे—उसने एक भले आदमी का पल्ला पकड लिया था, इसी लिए उसकी जिंदगी अच्छी तरह बीत गई। (किसी का) पल्ला पकडना= किसी को किसी की अधीनता, सरक्षण आदि मे रखना। (किसी के आगे या सामने) पल्ला पसारना या फैलाना=अनुग्रह, भिक्षा आदि के रूप मे किसी से प्रार्थी होना। पल्ले पड़ना=(प्राय. तुच्छ, हेय या भार स्वरूप वस्तु का) प्राप्त होना या मिलना। जैसे—यह बदनामी हमारे पल्ले पडी। (लड़की या स्त्री का किसी के) पल्ले बंधना=विवाह आदि के द्वारा किसी की पत्नी बनकर उसके साथ रहना या होना, किसी के जिम्मे होना। (अपने) पल्ले बांधना=अधिकार सरक्षण आदि मे लेना। (किसी के) पल्ले बांधना=(क) किसी के अधिकार, सरक्षण आदि मे देना। जिम्मे करना। सौपना। (ख) लडकियो, स्त्रियों आदि के सबध मे, किसी के साथ विवाह कर देना। (बात को) पल्ले बांधना=बहुत अच्छी तरह से उसे स्मरण रखना तथा उसके अनुसार आचरण करना।

२ स्त्रियों की ओढनी चादर, साडी आदि का वह अश जो उनके सिर पर रहता है और जिसे खीचकर वे घूँघट करती हैं।

मुहा०—(किसी से) पल्ला करना=पर-पुरुष के सामने स्त्री का घूंघट करना। **पल्ला लेना**= मुँह पर घूंघट करके और सिर झुकाकर किसी मृतक के शोक मे रोना।

३. अनाज आदि बाँधने का कपड़ा या चादर। ४. अपेक्षया अधिक दूरी या विस्तार। जैसे—(क) कोसो के पल्ले तक मैदान ही मैदान दिखाई देता था। (ख) उनका मकान यहाँ से मील भर के पल्ले पर है।

पु० [फा० पल्ल] १. तराजू की डडी के दोनो सिरो पर रस्सियो, श्रृंखलाओ आदि की सहायता से लटकनेवाली दोनो आधारो या पात्रो मे से हर एक जिसमे से एक पर बटखरे रखे जाते है और दूसरी पर तौली जानेवाली वस्तु। २. कुछ विशिष्ट वस्तुओं के दो विभिन्न परन्तु प्राय. समान आकार-प्रकारवाले अवयवो या खडो मे से हर एक। जैसे—(क) दरवाजे का पल्ला। (ख) कैंची का पल्ला। (ग) दुपलिया टोपी का पल्ला। ३ बराबर के दो प्रतियोगी या विरोधी पक्षो मे से हर एक।

मुहा०—पल्ला दबना=पक्ष कमजोर या हलका पडना। **पल्ला भारी होना**= पक्ष प्रबल या बलवान होना।

४. ओर। तरफ। दिशा। ५. पहल। पार्श्व।

पु० [स० पल?] तीन मन का बोझ।

पद—पल्लेदार । (दे०)

†वि०=परला (उस ओर का)।

पल्लि—स्त्री०=पल्ली।

पल्लिका—स्त्री० [सं० पल्लि+कन्+टाप्] छोटा गाँव। छोटी बस्ती।

पल्लिवाह—पु० [स० पल्लि√वह् (ढोना) +अण्] लाल रग की एक प्रकार की घास।

पल्ली—स्त्री० [स० पल्लि+ङीप्] १. छोटा गाँव। पुरवा। खेडा। २ कुटी। झोपडी। ३. छिपकली।

पल्लू—पु० [हिं० पल्ला] १. आँचल। छोर। २. स्त्रियों का घूंघट। ३. चौडी गोट या पट्टी।

पल्ले—अव्य० [हिं० पल्ला] प्राप्ति, स्थिति आदि के विचार से अधिकार, वश या स्वत्व मे। पास या हाथ मे। जैसे—उसके पल्ले क्या रखा है ! अर्थात् उसके पास कुछ भी नही है।

†पु०=प्रलय।

पल्लेदार—वि० [हिं० पल्ला+फा० दार] १. जिसमे पल्ले लगे हुए हों। २ (आवाज या स्वर) जो अपेक्षाकृत अधिक ऊँचा, अधिक विस्तृत या अधिक जोरदार हो।

पद—पल्लेदार आवाज=ऐसी ऊँची आवाज जो दूर तक पहुँचती हो।

पु० [हिं० पल्ला+फा० दार] [भाव० पल्लेदारी] १ वह जो गल्ले के बाजार मे दूकानो पर अनाज तौलने का काम करता है। बया। २ अनाज ढोनेवाला मजदूर।

पल्लेदारी—स्त्री० [हिं० पल्लेदार+ई (प्रत्य०)] पल्लेदार का काम, पद, भाव या मजदूरी।

पल्लौ†—पु० १ =पल्लव। २.=पल्ला।

पल्वल—पु० [सं० √ पल्+वल्] छोटा जलाशय।

पल्वलावास—पु० [स० पल्वल-आवास, ब० स०] कछुआ।

पल्हवना—अ०स०=पलुहना।

पवग—पु० [स० प्लवग] १ बदर। २. हिरन। ३. घोड़ा। (डिं०)

पवँरि (री)—स्त्री० =पँवरी (ड्योढी)।

पव—पु० [स०√ पू (पवित्र करना)+अप्] १. गोबर। २ वायु। हवा। ३ अनाज की भूसी अलग करना। अनाज ओसाना या बरसाना।

†पु०=पौ।

पवई—स्त्री० [देश०] खाकी रग की एक चिडिया जिसका निचला भाग खैरे रग का और चोच पीली होती है।

पवन—पु० [स०√पू (पवित्र करना)+ युच्—अन] १. वायु। हवा। २. विशेषत वायु की वह हलकी धारा जो पृथ्वी के प्राणियो के आस-पास रहकर कभी कुछ तेज और कभी कुछ धीमी चलती है और जिसका ज्ञान हमारी त्वगिंद्रिय को होता है। (विंड)

विशेष—हमारे यहाँ पुराणो मे ४९ प्रकार के पवन कहे गये है। परन्तु लोक मे पवन उसी अर्थ मे प्रचलित है जो ऊपर बतलाया गया है।

३ हवा की सहायता से अनाज के दाने मे से भूसा अलग करना। ओसाना। बरसाना। ४. श्वास। साँस।

मुहा०—पवन का भूसा होना=उसी प्रकार अदृश्य या नष्ट हो जाना जिस प्रकार हवा मे भूसा उड जाता है। ५. प्राण-वायु। ६. जल। पानी। ७ कुम्हार का आँवा । ८ विष्णु। ९ पुराणानुसार उत्तम मनु के एक पुत्र का नाम। १०. रहस्य सप्रदाय मे, प्राणायाम। उदा०—आसनु पवनु दूरि कर बवरे।—कबीर।

पवन-अस्त्र—पुं०=पवनास्त्र।

पवन-कुमार—पु० [प०त०] १ हनुमान। २. भीमसेन।

पवनचक्की—स्त्री० [स० पवन+हिं० चक्की] पवन के वेग से चलनेवाली चक्की। (विंडमिल)

विशेष—ऐसी चक्की मे ऊपर के ढाँचे मे बडा सा पखेदार चक्कर लगा रहता है। यह चक्कर हवा के जोर से घूमता है जिससे नीचे की चक्की का यत्र चलने लगता है।

पवन-चक्र—पु० [प०त०] चक्कर खाती हुई चलनेवाली जोर की हवा। चक्रवात। बवडर।

पवनज—वि० [स० पवन√ जन्+ड] जो पवन से उत्पन्न हुआ हो। पु० १. हनुमान। २. भीमसेन।

पवन-तनय—पु० [प०त०] १ हनुमान। २ भीमसेन।

पवन-नन्द—पु० [प० त०] पवन-पुत्र । (दे०)

पवन-नन्दन—पु० [स० प०त०]=पवन-तनय।

पवन-परीक्षा—स्त्री० [प०त०] १ अषाढ शुक्ल पूर्णिमा को होनेवाली ज्योतिषियो की एक क्रिया जिसमे वायु की गति आदि की जाँच करके ऋतु-सबधी विशेषत वर्षा सबधी भविष्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। (कुछ स्थानो मे देहातो मे इस दिन मेले लगते है।) २ वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वायु की गति किस दिशा की ओर है। हवा देखना।

पवन-पुत्र—पु० [प०त०] १. हनुमान। २ भीमसेन।

पवन-पूत—पुं०=पवन-पुत्र।

पवन-प्रचार—पु०[सं०] एक प्रकार का यंत्र जो यह सूचित करता है कि वायु का प्रवाह किस दिशा में हो रहा है।

पवन-भट्ठी—स्त्री० [सं० पवन+हि० भट्ठी] धातुएँ आदि गलाने की एक विशेष प्रकार की आधुनिक यांत्रिक भट्ठी जिसमें नीचे से हवा पहुँचाकर आँच तेज की जाती है। (विंड फर्नेस)

पवन-बाण—पु०[मध्य०स०]वह बाण जिसके चलाये जाने पर पवन का वेग बहुत अधिक बढ़ जाता था। (पुराण)

पवन-वाहन—पु०[ब०स०] अग्नि।

पवन-व्याधि—स्त्री०[ष०त०] वायु रोग।

पु०[ब०स०] श्रीकृष्ण के सखा उद्धव।

पवन-संघात—पु०[ष०त०] किसी विशिष्ट स्थान पर दो विभिन्न दिशाओं से पवनों का एक साथ आना तथा परस्पर टकराना जो पुराणानुसार अकाल, शत्रुओं के आक्रमण आदि अशुभ लक्षणों का सूचक माना गया है।

पवन-सुत—पु०[ष०त०]१. हनुमान। २. भीमसेन।

पवना—पु०[स्त्री० पवनी] पौना (झरना)।

पवनात्मज—पु० [सं० पवन-आत्मज, ष०त०] १ हनुमान। २. भीमसेन। ३. अग्नि।

पवनाश—पु०[सं० पवन√ अश् (खाना) +अण्] साँप।

पवनाशन—पु०[सं० पवन-अशन, ब० स०] साँप।

पवनाशनाश—पु०[सं० पवनाशन√ अश्+अण्]१. गरुड़। २. मोर।

पवनाशी(शिन्)—वि० [सं० पवन√अश्+णिनि] जो वायु पीकर जीता हो।

पु० साँप।

पवनास्त्र—पु० [सं० पवन-अस्त्र, मध्य०स०] एक प्राचीन अस्त्र जिसके द्वारा वायु का वेग तीव्रतम किया जाता था। (पुराण)

पवनी—स्त्री०[सं०√पू (पवित्र करना)+ल्युट्—अन, ङीप्] झाड़ू।

स्त्री०[हि० पाना=प्राप्त करना] गाँव में रहनेवाली वह प्रजा या कुछ जातियाँ जो अपने निर्वाह के लिए क्षत्रियों ब्राह्मणों अथवा गाँव के दूसरे रहनेवालों से नियमित रूप से कुछ नेग, पारिश्रमिक, पुरस्कार आदि के रूप में अन्न-धन पाती हैं। जैसे—कुम्हार, चमार, नाऊ, बारी, धोबी आदि।

स्त्री० हि० 'पौना' का स्त्री० अल्पा०।

पवनेष्ट—पु० [सं० पवन-इष्ट, ष० त०] बकायन।

पवनांबुज—पु० [सं० पवन-अंबुज उपमि० स०, पृषो० सिद्धि] फालसा।

पवमान—पु० [सं०√पू+शानच्, मुक्—आगम]१. पवन। वायु। हवा। २. गार्हपत्य अग्नि। ३. चंद्रमा। ४ अग्नि की पत्नी स्वाहा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम। ५. एक प्रकार का स्तोत्र।

पवर—स्त्री०=पँवरी (ड्योढ़ी)।

पवरिया†—पु०=पौरिया (१. द्वारपाल। २. मंगल-गीत गानेवाला याचक)।

पवरी—स्त्री०=पंवरी (ड्योढ़ी)।

पवर्ग—पु० [सं० ष०त०] व्याकरण में प, फ, ब, भ और म इन पाँच अक्षरों या वर्णों की सामूहिक संज्ञा। ये सभी ओष्ठ्य तथा स्पर्श हैं, किन्तु प, फ अघोष और ब, भ, म घोष हैं तथा प, ब, म अल्पप्राण और फ, भ महाप्राण हैं।

पवाँड़ा†—पु० पँवाड़ा।

पवाँर—पु०[देश०] पमार। चकवँड़।

†पु० पमार।

पवाँरना—स०=पँवारना (फेंकना)।

पवाँरी—स्त्री[?] लोहा छेदने का सोनारों का एक औजार।

पवाई—स्त्री०[हि० पाँव] १. जूतों की जोड़ी में से प्रत्येक जूता। २. चक्की के दोनों पाटों में से प्रत्येक पाट।

पवाका—स्त्री०[सं०√पू+आक—टाप्] चक्रवात। बवंडर।

पवाड़—पु०[देश०] पवाँर।

पवाड़ा—पु० [मरा० पवाड़ (कीर्ति, स्तवन), अथवा सं० प्रवाद?] १ मराठी भाषा का एक प्रसिद्ध लोक छंद जिसमें प्रायः किसी बहुत बड़े या वीर पुरुष की कीर्ति, गुण, पराक्रम आदि का प्रशंसात्मक वर्णन होता था। २. मध्य-युगीन राजस्थान में वह लोकगीत जिसे पहले चारणों ने डिंगल की शैली के मनगढ़ंत तत्त्वों से युक्त करके प्रचलित किया था और जो प्रायः लोकगीत के रूप में गाया जाता था। ब्रज में इसी को 'पमारा' और बाकी में 'पँवारा' कहते हैं। ३. किसी बात या बात का ऐसा व्यर्थ विस्तार जिसमें झगड़े-झमेले की बहुत-सी बातें हों, और इसी-लिए जिसके सुनने से जी ऊब जाय।

पवाना—स०[हि० पाना का प्रे० रूप] १. प्राप्त कराना। २ खिलाना।

पवार†—पु०=पमार (राजपूतों की एक जाति)।

पवि—पु०[सं०√पू+इ] १. वज्र। २. बाण अथवा बाण की नोक। ३ वाणी। ४. वाक्य। ५ अग्नि। ६ थूहर। सेहुँड़। ७. मार्ग। रास्ता। (डिं०)

पवित†—वि०[सं०] पवित्र।

पु० मिर्च।

पवितई†—स्त्री०=पवित्रता।

पवितर†—वि०=पवित्र।

पवित्र—वि०[सं०√ पू +इत्र] [भाव० पवित्रता]१. (पदार्थ) जो धार्मिक उपचारों से इस प्रकार शुद्ध किया गया हो अथवा स्वतः अपने गुणों के कारण इतना अधिक शुद्ध माना जाता हो कि पूजा-पाठ, यज्ञ-होम आदि में काम में लाया या बरता जा सके। जैसे—पवित्र अग्नि, पवित्र जल। २ (व्यक्ति) जो निर्दोष, धार्मिक तथा सद्वृत्तिवाला होने के कारण पूज्य, मान्य तथा श्रद्धा का पात्र हो। जैसे—पवित्रात्मा। ३. (विचार) जो शुद्ध अंत करण से सोचा गया हो और जिसमें किसी प्रकार का मल या विकार न हो। ४. साफ। स्वच्छ। निर्मल। ५ दोष, पाप आदि से रहित।

पु०१. वह वस्तु या साधन जिससे कोई चीज निर्दोष, निर्मल या स्वच्छ की जाय। २ कुश या कुशा जिससे घी, जल आदि छिड़ककर चीजें पवित्र की जाती हैं। ३. कुश का वह छल्ला जो तर्पण, श्राद्ध आदि के समय उँगलियों में पहना जाता है। पवित्री। पैंती। ४. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ५. ताँबा। ६. मेह। वर्षा। ७ जल। पानी। ८ दूध। ९. घी। १० अर्घ्य देने का पात्र। ११. अरघा। १२ मधु।

शहद। १३ विष्णु। १४. शिव। १५. कार्तिकेय। १६ तिल का पौधा। १७ पुत्र-जीवी नामक वृक्ष। १७. घर्षण। रगड।

पवित्रक—पु०[स० पवित्र√कै+क] १. कुशा। २. दौना (पौधा)। ३ गूलर का पेड। ४ पीपल। ५. क्षत्रियों का यज्ञोपवीत।

पवित्रता—स्त्री०[स० पवित्र+तल्+टाप्] पवित्र होने की अवस्था या भाव।

पवित्र-धान्य—पु०[कर्म०स०] जौ।

पवित्र-पाणि—वि०[ब०स०] जिसके हाथ मे कुश हो।

पवित्रवति—स्त्री०[स०] क्रौंच द्वीप मे होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति। (पुराण)

पवित्रा—स्त्री०[स० पवित्र+टाप्]१ तुलसी। २. हलदी। ३ पीपल। ४ श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी। ५ एक प्राचीन नदी। ६ रेशमी धागों से बने हुए मनको की एक तरह की माला।

पवित्रात्मा (त्मन्)—वि०[स० पवित्र-आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध तथा स्तुत्य आचरण और विचारवाला।

पवित्रारोपण—पु० [स० पवित्र-आरोपण, प० त०] १ यज्ञोपवीत धारण करना। २ [ब० स०] श्रावण शुक्ला द्वादशी को भगवान श्रीकृष्ण को सोने, चाँदी, ताँबे या सूत आदि का यज्ञोपवीत पहनाने की एक रीति या उत्सव।

पवित्रारोहण—पु०। पवित्रारोपण। (दे०)

पवित्राश—पु०[स० पवित्र√ अश् (व्याप्ति)+अण्] सन का बना हुआ डोरा, जो प्राचीन भारत मे बहुत पवित्र माना जाता था।

पवित्रित—भू० कृ० [स० पवित्र+णिच्+क्त] पवित्र या शुद्ध किया हुआ।

पवित्री—वि०[स० पवित्र+ङीप्] पवित्र करने या बनानेवाला।

स्त्री० १ कुश का बना हुआ एक प्रकार का छल्ला जो कर्मकाड के समय अनामिका मे पहना जाता है। पैंती। २. सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पविद—पु०[स०] एक प्राचीन ऋषि।

पवि-धर—वि०[स० प०त०] वज्र धारण करनेवाला।

पु० इद्र।

पवीनद—पु०[स०] अथर्ववेद के अनुसार एक प्रकार के असुर जो स्त्रियों का गर्भ गिरा देते हैं।

पवीर—पु०[स०]१ हल की फाल। २. शस्त्र। हथियार। ३. वज्र। ४ हथियार।

पवेरना—स० [हिं० पँवारना=फेकना] [भाव० पवेरा] जोते हुए खेतो मे बीज छिडकना।

पवेरा—पु० [हिं० पवेरना] खेतो मे बीज छिडकने की क्रिया, ढग या भाव।

पव्य—पु० [स०√पू+यत्] यज्ञ-पात्र।

पशम—स्त्री० [फा० पश्म] १. ऊन, विशेषत बढिया ऊन जिसके दुशाले, पशमीने आदि बनाये जाते है। २. पुरुष या स्त्री की मूत्रेंद्रिय पर के बाल।

मुहा०—पशम उखाड़ना=(क) झूठ-मूठ का काम करके व्यर्थ समय नष्ट करना। (व्यग्य और हास्य) **पशम तक न उखड़ना**=(क) कुछ भी काम न हो सकना। (ख) बहुत प्रयत्न करने पर भी कोई कष्ट या हानि न पहुँचा सकना। **पशम पर मारना या समझना**=बिलकुल तुच्छ या हीन समझना।

पशमीना—पु० [फा० पश्मीन.] १. पशम। २ पशम का बना हुआ बहुत बढिया या मुलायम कपडा।

पशव्य—वि० [स० पशु+यत्] १. पशु-सबधी। पशुओं का। २. पशुओं की तरह का। जानवरो का-सा। पाशव।

पु० पशुओ का झुड।

पशु—पु० [स०√दृश् (देखना)+कु, पशादेश] [भाव० पशुता, पशुत्व] १ चार पैरों से चलनेवाला कोई दुमदार जतु। जानवर। जतु। जैसे—ऊँट, घोडा, बैल, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, आदि। २. प्राणधारी जीव। जतु। ३ वह जिसे कुछ भी ज्ञान या बुद्धि न हो, अथवा जिसमे सहृदयता का पूरा अभाव हो। ४. वह जिसका कोई धार्मिक सस्कार न हुआ हो। ५ परमात्मा। ६ ऐसा धार्मिक कृत्य जिसमे जानवर की बलि चढाई जाती हो। ७ वह पशु जिसे बलि चढाते हो। ८ अग्नि। ९. शिव के अनुचर या गण।

पशुकर्म (कर्मन्)—पु० [प० त०] १ यज्ञ आदि मे पशुओ का होनेवाला बलिदान। २ मैथुन।

पशुका—स्त्री० [स० पशु+कन्+टाप्] कोई छोटा पशु।

पशु-क्रिया—स्त्री० [प० त०]=पशुकर्म।

पशु-गायत्री—स्त्री० [मध्य० स०] तत्र की रीति से बलिदान करने के समय बलि पशु के कान मे कहा जानेवाला एक प्रकार का मत्र।

पशुचर—पु० [स० पशु√चर्+ट] वह स्थान जो पशुओं के चरने-चराने के लिए सुरक्षित हो। गोचर भूमि। (पास्च्योर)

पशु-चर्या—स्त्री० [प० त०] १ पशुओं के समान विवेकहीन आचरण। जानवरो की-सी चाल या व्यवहार। २ मैथुन।

पशु-चिकित्सक—पु० [स०] वह जो रोगी पशु, पक्षियो आदि की चिकित्सा करता हो। (वेटेरिनरी सर्जन)

पशु-चिकित्सा—स्त्री० [स०] चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमे पशु-पक्षियो आदि के रोगो के निदान और चिकित्सा का विवेचन होता है। (वेटेरिनरी)

पशुजीवी (विन्)—वि० [स० पशु√जीव् (जीना)+णिनि] १. पशुओ का मास खाकर जीनेवाला। २ वह जो पशुओं का पालन करके उनसे प्राप्त होनेवाली वस्तुओं से अपनी जीविका चलाता हो।

पशुता—स्त्री० [स० पशु+तल्+टाप्] १ पशु होने की अवस्था या भाव। २ पशुओं का-सा व्यवहार या स्वभाव। ३ वह गुण जिसके कारण किसी व्यक्ति की गिनती पशुओ मे की जाती हो।

पशुत्व—पु० [स० पशु+त्वल्] पशुता। (दे०)

पशुदा—स्त्री० [स० पशु√दा (देना)+क+टाप्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका देवी।

पशु-देवता—स्त्री० [मध्य० स०] वह देवता जिसके उद्देश्य से किसी पशु को बलि चढाया जाय।

पशु-धन—पु० [मयू० स०] वे पालतू पशु जो किसी व्यक्ति, समाज या राज्य के आर्थिक उत्पादन, सुरक्षा आदि मे योग देते हो। (लिवस्टाक)

पशु-धर्म—पुं० [ष० त०] पशुओं का-सा आचरण या व्यवहार अर्थात् मनुष्यों के लिए निंद्य व्यवहार।

पशु-नाथ—पुं० [ष० त०] १. शिव। २. सिंह। शेर।

पशुनिरोधिका—स्त्री० [ष० त०] वह सरकारी या अर्ध सरकारी स्थान जहाँ पर लोगों के खुले तथा छूटे हुए पालतू पशु पकड़कर रखे जाते हैं। कांजीहाउस। (कैटिलपाउंड)

पशुप—वि० [स० पशु√पा (रक्षा करना)+क] पशुओं का पालन करनेवाला या स्वामी।

पशुपतास्त्र—पुं० [स० पाशुपतास्त्र] महादेव का शूलास्त्र।

पशु-पति—पुं० [ष० त०] १. पशुओं का स्वामी। २. जीवात्मा का स्वामी अर्थात् ईश्वर या परमात्मा। ३. महादेव। शिव। ४. अग्नि। ५. ओषधि। दवा।

पशु-पल्वल—पुं० [ब० स०] कैवर्तमुस्तक। केवटी मोथा।

पशुपाल—वि० [स० पशु√पाल् (पोषण)+णिच्+अण्] पशुओं को पालनेवाला।

पुं० १. अहीर। ग्वाला। २. ईशान कोण का एक प्राचीन देश।

पशु-पालक—वि० [ष० त०] [स्त्री० पशुपालिका] पशुओं को पालने-वाला।

पशु-पालन—पुं० [ष० त०] जीविका-निर्वाह के लिए पशुओं को पालने की क्रिया या भाव। (एनिमल हस्बैंडरी)

पशु-पाश—पुं० [ष० त०] १. वह फंदा या रस्सी जिसमें पशु विशेषतः यज्ञ-पशु बाँधा जाता था। २. शैवदर्शन के अनुसार चार प्रकार के वे बंधन जिनमें सब जीव बँधे रहते हैं।

पशुपाशक—पुं० [स० पशुपाश √कै+क] एक प्रकार का रतिबंध। (काम-शास्त्र)

पशु-भाव—पुं० [ष० त०] १. पशुता। जानवरपन। २. तंत्र में, मंत्रों आदि के तीन प्रकार के साधन-भेदों में से एक।

पशु-यज्ञ—पुं० [मध्य० स०] ऐसा यज्ञ जिसमें पशु या पशुओं की बलि चढ़ाया जाय।

पशु-याग—पुं० [मध्य० स०] पशु-यज्ञ। (दे०)

पशु-रक्षण—पुं० [ष० त०] पशुपालन। (दे०)

पशु-रति—स्त्री० [स०] १. पशुओं की तरह की जानेवाली वह रति जो विशुद्ध काम-वासना की तृप्ति के लिए की जाती हो। २. पशु-वर्ग के किसी प्राणी के साथ मनुष्य द्वारा की जानेवाली रति। जैसे—पुरुष पक्ष में, गौ या बकरी के साथ की जानेवाली रति, अथवा स्त्री पक्ष में, कुत्ते के साथ की जानेवाली रति।

पशु-राज—पुं० [ष० त०] पशुओं के स्वामी, सिंह। शेर।

पशुलब—पुं० [स०] एक देश का प्राचीन नाम।

पशु-हरीतकी—स्त्री० [ष० त०] अम्रातक फल। आमड़े का फल।

पशू—पुं०=पशु।

पश्च—वि० [स० पश्चात्, पृषो० सिद्धि] [भाव० पश्चता] १. प्रस्तुत या वर्तमान से पहले का। पिछला। (बैक) जैसे—सामयिक पत्र का पश्च अंक। (बैक नम्बर) २. 'अग्र' का विपर्याय। जैसे—पश्चस्वर (बैक वावेल) आदि। ३. बाद का। परवर्त्ती। ४. पश्चिम का। पश्चिमी।

विशेष—'पश्च' और 'पश्चा' शब्द का प्रयोग वेद में ही होता है। लौकिक संस्कृत में इसका प्रयोग विरल है। फिर भी हिंदी में इसके प्रयोग के चल पड़ने के कारण यहाँ इससे कुछ यौगिक शब्द दिये जा रहे हैं।

पश्च-गमन—पुं० [स० स० त०] १. पीछे की ओर चलना या हटना। 'अग्र-गमन' का विपर्याय। (रिग्रेशन) २. अवनति, दुरवस्था, ह्रास आदि की ओर प्रवृत्त होना। 'पुरोगमन' का विपर्याय। (रिट्रोग्रेशन)

पश्च-गामी (मिन्)—वि० [स० पश्च√गम् (जाना)+णिनि] १. पीछे की ओर चलने या हटने वाला। २. अवनति। दुरवस्था, ह्रास आदि की ओर प्रवृत्त करनेवाला। 'पुरोगामी' का विपर्याय। (रिग्रेसिव)

पश्च-ज्ञान—पुं० [स० ष० त०] विशिष्ट आत्मिक शक्ति की सहायता से इस जन्म या किसी पूर्व जन्म की ऐसी बीती हुई घटनाओं या बातों का होनेवाला ज्ञान जो कभी पहले सुनी, देखी, पढ़ी या सुनी न हों। 'पूर्व-ज्ञान' का विपर्याय।

पश्च-दर्शन—पुं० [स० स० त०] १. पीछे की ओर मुड़कर देखना। २. पिछली या बीती हुई बातें याद करके उन पर विचार करना। (रिट्रोस्पेक्शन) ३. विशिष्ट आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसी पुरानी घटनाएँ, बातें, व्यक्तियों की आकृतियाँ आदि आँखों के सामने देखना जो कभी देखी न हों। 'पूर्व-दर्शन' का विपर्याय। (रिट्रो-कॉग्निशन)

पश्चदर्शिक—वि० [स०] १. जिसका संबंध पश्च-दर्शन से हो। पश्च-दर्शन का। २. जिसका परिणाम या प्रभाव पिछली या बीती हुई बातों पर भी पड़ता हो। पूर्व-व्यापी। (रिट्रोस्पेक्टिव) जैसे—इस निर्णय का प्रभाव पश्च-दर्शिक होगा, अर्थात् पिछली या बीती हुई घटनाओं या बातों पर भी पड़ेगा।

पश्च-दर्शी (र्शिन्)—वि० [स० पश्च √दृश् (देखना)+णिनि] पश्च-दर्शन करनेवाला।

पश्च-परिणाम—पुं०=पश्च-प्रभाव।

पश्च-प्रभाव—पुं० [स० मध्य० स०] किसी कार्य या वस्तु का वह परिणाम या प्रभाव जो कुछ समय बीतने पर दिखाई देता हो। (आफ्टरएफेक्ट)

पश्च-लेख—पुं० [स०] कोई पत्र, लेख आदि लिखे जाने के उपरान्त बाद में याद आने पर उसके अंत में बढ़ाकर लिखी जानेवाली कोई और बात या विचार। (पोस्टस्क्रिप्ट)

पश्चात्—अव्य० [स० अपर+आति, पश्च-आदेश] किसी अवधि, समय, घटना आदि के बीतने अथवा कुछ समय व्यतीत होने पर। उपरांत। पीछे। बाद।

पुं० १. पश्चिम दिशा। २. अंत। समाप्ति। ३. अधिकार।

पश्चात् कर्म (र्मन्)—पुं० [स० मध्य० स०] वैद्यक के अनुसार वह कर्म जिससे किसी रोगी के स्वस्थ होने के उपरान्त उसके शरीर के बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि होती हो। भिन्न-भिन्न रोगों से मुक्त होने पर भिन्न-भिन्न पश्चात् कर्म बतलाये गये हैं।

पश्चात्ताप—पुं० [स० मध्य०स०] अपने किसी कर्म के अनौचित्य का भान होने पर मन में होनेवाला दुःख जो यह सोचने को विवश करता है कि मैंने यह काम क्यों किया। २. किसी किये हुए अनुचित कर्म के पाप से मुक्त होने के लिए अथवा अपनी आत्मा को शांति देने के लिए किया जानेवाला तप।

पश्चात्तापी (पिन्)—वि० [स० पश्चात्ताप+इनि] जो पश्चात्ताप करता हो।

पश्चाद्भाग—पु०[स०प०त०]१ पीछे का हिस्सा। २. पश्चिमी भाग।

पश्चाद्वर्ती (र्तिन्)—वि० [स० पश्चात् √वृ (वरतना)+णिनि] १. पीछे रहनेवाला। २ अनुसरण करनेवाला।

पश्चानुताप—पु०[स० पश्च-अनुताप, स०त०] पश्चाताप।

पश्चापी (पिन्)—पु०[स० पश्चा√ आप् (लाभ)+ णिनि] नौकर। सेवक।

पश्चारुज—पु०[स० कर्म०स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जो कदन्न खानेवाली स्त्रियो का दूध पीनेवाले बालकों को होता है। इसमे बालकों को हरे-पीले रग के दस्त आने लगते हैं और तेज ज्वर होता है।

पश्चिम—वि०[स० पश्चात्+डिमच्] १ जो पीछे से या बाद मे उत्पन्न हुआ हो। २ अतिम। पिछला।

पु०[वि० पश्चिमी] वह दिशा जिसमे सूर्य अस्त होता है। पूर्व दिशा के सामनेवाली दिशा। प्रतीची। वारुणी। पश्चिम।

पश्चिम-घाट—पु०=पश्चिमी घाट।

पश्चिम-प्लव—पु०[व० स०] वह भूमि जो पश्चिम की ओर झुकी हो।

पश्चिम-याम-कृत्य—पु० [स० पश्चिम-याम, कर्म०स०, पश्चिम परम-कृत्य, प० त०] बौद्धो के अनुसार रात के पिछले पहर मे किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

पश्चिम-वाहिनी—वि०स्त्री०[कर्म०स०] जो पश्चिम दिशा की ओर बहती हो।

पश्चिम-सागर—पु०[कर्म०स०] आयरलैंड और अमेरिका के बीच का समुद्र। एटलाटिक या अतलातक महासागर।

पश्चिमाचल—पु०[पश्चिम-अचल, कर्म० स०] अस्ताचल। (दे०)

पश्चिमा—स्त्री०[स० पश्चिम+टाप्] पश्चिम दिशा।

पश्चिमार्द्ध—प०[पश्चिम-अर्द्ध, कर्म० स०] पीछेवाला आधा भाग। अपरार्द्ध।

पश्चिमी—वि०[स० पश्चिम]१. पश्चिम दिशा सबधी। २ पश्चिम की ओर अर्थात् पश्चिमी देशो मे होनेवाला। ३ पश्चिम से आनेवाला। पछवाँ।

पश्चिमी-घाट—पु०[हिं० पश्चिमी+घाट] केरल और आधुनिक महाराष्ट्र राज्य के बीच मे समुद्र के किनारे-किनारे गई हुई पर्वतमाला।

पश्चिमी हिंदी—स्त्री० [हिं०] भापा-विद् ग्रियर्सन के मत से, पश्चिमी भारत मे बोली जानेवावी खडी बोली, बाँगड़, ब्रजभापा, कन्नौजी और बुदेली बोलियों का एक वर्ग (पूर्वी हिन्दी से भिन्न) जो सभवत शौरसेनी अपभ्रश से विकसित हुआ था।

पश्चिमोत्तर—वि० [स० पश्चिम-उत्तर, व० स०] पश्चिम और उत्तर दिशाओं के बीच मे स्थित।

पु० वायव्य कोण।

पश्चिमोत्तरा—स्त्री०[स० पश्चिमोत्तर+टाप्] उत्तर और पश्चिम के बीच की विदिशा। वायव्य कोण।

पश्त—पु०[लश०] खभा।

पश्ता—पु०[फा० पुश्त]१ बाँध। २ किनारा। तट। (लश०)

पश्तो—स्त्री०[फा० पुश्तो] आधुनिक पाकिस्तान के उत्तर पश्चिमी प्रदेशो तथा अफगानिस्तान की भापा जिसकी गिनती आर्यभापाओं मे होती है।

पु०[देश०] ३॥ मात्राओ का एक ताल जिसमे दो आघात होते है।

पश्म—पु०[फा०] बकरी, भेड़ आदि का रोयाँ। ऊन। पशम। (देखें)

पश्मीना—पु०=पशमीना।

पश्यती—स्त्री०[स०√दृश् (देखना)+शतृ+ङीप्] हठ योग मे, वह सूक्ष्म ध्वनियाँ नाद जो वाक् को उत्पन्न करनेवाली वायु के मूलाधार से हटकर नाभि मे पहुँचने पर होता है।

पश्यतोहर—वि० [स० पश्यत √हृ (हरण करना)+अच्, अलुक् स०] जो दूसरो को देखते रहने पर भी चतुरता से उनकी चीजें चुरा लेता हो।

पु० सुनार।

पश्ववदान—पु०[स० पशु-अवदान, प०त०] बलि-पशु के अग विशेप का छेदन।

पश्वाचार—पु०[स० पशु-आचार,प० त०] तत्र मे,वैदिक रीति से तथा कामना और सकल्पपूर्वक किया जानेवाला देवी का पूजन।

पश्वाचारी (रिन्)—वि०[स० पश्वाचार+इनि] पश्वाचार-सबधी।

पु० वह जो पश्वाचार की रीति से पूजन करता हो।

पष—पु०[स० पक्ष]१ पख। डैना। २ ओर। तरफ। ३ चाद्र मास का आधा भाग। पक्ष।

पषा†—पु०=पखा।

पषाण(न्)†—पु०=पापाण (पत्थर)।

पषारना†—स०=पखारना (धोना)।

पष्य†—पु०=पक्ष।

पष्वान†—पु०=पापाण।

पसंग (१)†—पु०=पासग।

पसंघ (१)†—पु०=पासग।

पसती—स्त्री०=पश्यती।

पसद—वि०[फा०] आकार-प्रकार, गुण, रूप आदि के विचार से जो मन को भला तथा रुचिकर प्रतीत हुआ हो और इसलिए जिसे अनेको या बहुतो मे से वरण किया या उसे वरीयता दी गई हो।

प्रत्य० उत्तर पद के रूप मे प्रत्यय की तरह प्रयुक्त—(क) पसद आनेवाला। जैसे—दिल-पसद=दिल को पसद आनेवाला। (ख) पसद करनेवाला। जैसे—हक़-पसद।

स्त्री० १ मन को भला तथा रुचिकर प्रतीत होनेवाला कार्य, वस्तु या व्यक्ति। २. वरण करने, चुनने या वरीयता देने की क्रिया, प्रवृत्ति या भाव। ३ इस प्रकार चुनी या वरण की हुई वस्तु।

पसदा—पु०[फा० पसन्द] १ मास के एक प्रकार के कुचले हुए टुकडे का गोश्त। २ उक्त प्रकार के मास से बननेवाला एक प्रकार का कबाब।

पसदीदा—वि० [फा०] [भाव० पसददीदगी] पसद आनेवाला या पसद किया हुआ।

पसंदेश—वि० [फा०] [भाव० पसदेशी] १ जो बीती हुई बातों के विषय मे विचार करता रहता हो। २ फलत सकुचित बुद्धि।

पस—पु०[अ०] घाव, फोडे आदि मे से निकलनेवाला लसीला तरल पदार्थ। मवाद।

अव्य० [फा०] १ अत या बाद मे। पीछे। २ पुन। फिर। ३ निस्संदेह। बेशक। ४ अत। इसलिए।

पसई—स्त्री०[देश०] तराई मे होनेवाली एक तरह की राई और उसका पौधा।

स्त्री०=पसही (तिन्नी)।
पसकरण—वि०[स० पश्च-करण] कायर। डरपोक। (डिं०)
पस-गैंवत—क्रि० वि०[फा० पस+अ० गैवत] किसी के पीठ पीछे। अनु-पस्थिति मे।
पसघ—पु० दे० 'पासग'।
पसताल—पु०[देश०] जलाशयो के किनारे होनेवाली एक तरह की घास जिसे पशु और जिसके दाने गरीब लोग भी खाते है।
पसनी†—स्त्री० दे० 'अन्न-प्राशन'।
पसपा—वि०[फा०] पराजित।
पसम*—स्त्री०=पशम।
पस-माँदा—वि०[फा० पसमाद] [भाव० पसमादगी]१ बचा हुआ। शेष। २ (काफिले या जत्थे का वह व्यक्ति) जो यात्रा करते समय पीछे छूट या रह गया हो।
पसमीना—पु०=पशमीना।
पसर—पु०[स० प्रसर]१ हथेली का कटोरी या दोने के आकार का बनाया हुआ वह रूप जिसमे कोई चीज भर कर किसी को दी जाती है। २ उक्त मे भरी हुई वस्तु या उसकी मात्रा। ३ मुट्ठी।
पु० [देश०] १ रात के समय पशुओं को चराने का काम। उदा०—वह रात को कभी कभी पसर भी चराता था।—वृन्दावनलाल वर्मा। २ पशुओं के चरने की भूमि। चरागाह। ३ पशु चराते समय एक तरह के गाये जानेवाले गीत। ४ आक्रमण। चढाई। धावा।
†पु०=प्रसार।
पसर-कटाली—स्त्री०[स० प्रसर कटाली] भटकटैया। कटाई।
पसरन—स्त्री०[स० प्रसारिणी] वृक्षों पर चढनेवाली एक जगली लता। स्त्री० [हि० पसरना] पसरने की क्रिया, दशा या भाव।
पसरना—अ०[स० प्रसरण]१ आगे की ओर बढना। फैलना। २ हाथ-पैर फैलाकर तथा अधिक जगह घेरते हुए बैठना या लेटना। ३. अपना आग्रह या इच्छा पूरी कराने के लिए तरह-तरह की बाते करना। सयो० क्रि०—जाना।
पसरहट्टा—पु०[हिं० पसारी+हाट]वह बाजार या हाट जिसमे पसारियो की बहुत-सी दूकाने होती है।
पसरहा—पु०=पसरहट्टा।
पसराना—स० [हिं० पसराना का प्रे०] किसी को पसरने मे प्रवृत्त करना।
पसरी—स्त्री०=पसली।
पसरौहाँ†—वि०[हिं० पसरना+औहाँ (प्रत्य०)]१ पसरनेवाला। २ जिसमे अधिक पसरने की प्रवृत्ति हो।
पसली—स्त्री० [स० पर्शका] स्तनपायी जीवो की छाती के दोनो ओर की गोलाकार हड्डियो मे से हर एक।
पद—पसली का रोग=एक रोग जिसमे बच्चो का साँस जोरो से चलने लगता है।
मुहा०—पसली फड़कना या फड़क उठना=मन मे उत्साह या उमग उत्पन्न होना। जोश आना। **पसली ढीली करना या तोडना**=बहुत अधिक मारना।

पसवपेश†—पु०=पशोपेश।
पसवा†—वि०[देश०] हलके गुलाबी रग का।
पुं० हलका गुलाबी रग।
पसवाड़ा†—पु०=पिछवाडा (पृष्ठ-भाग)।
पसही—स्त्री०[देश०] तिन्नी नाम का धान या उसका चावल।
पसा†—पु०=पसर। (दे०)
पसाइ—पु०=पसाउ (प्रसाद)।
पसाई—स्त्री० [स० प्रसातिका, प्रा० पसाइआ] पसताल नाम की घास जो तालो मे होती है।
†पु०=पसही (तिन्नी)।
स्त्री०[हिं० पसाना] (मॉड आदि) पसाने की क्रिया या भाव।
†स्त्री० पिसाई।
पसाउ—पु०[स० प्रसाद, प्रा० पसाव] १ प्रसाद। २ कृपा। अनुग्रह। ३. प्रसन्नता।
पसाना—स०[स० प्रस्रवण, हिं० पसावना] [भाव० पसाई] १ पकाये हुए चावलो मे से माँड निकालना। २ किसी वस्तु मे से उसका जलीय अश निकालना।
अ[स० प्रसादन] अनुग्रह आदि करने के लिए किसी पर प्रसन्न होना।
पसार—पु०[स० प्रसार]१ पसरने की क्रिया या भाव। २ प्रसार। फैलाव। विस्तार। ३ दालान। (पश्चिम)
पु०[स० प्रसाद] प्राप्त होने पर मिलनेवाली चीज। उदा०—दुहुँ कुल अपजस पहिल पसार।—विद्यापति।
पसारना—स०[स० प्रसारण, हि० पसारना का स०] १ अधिक विस्तृत करना। २ फैलाना। जैसे—झोली पसारना। ३ आगे बढाना। जैसे—हाथ पसारना।
पसारा†—पु०=पसार।
पसारी—पु०[देश०]१ तिन्नी का धान। पसवन। पसही।
†पु०=पसारी।
पसाव—पु०[हि० पसाना+आव (प्रत्य०)]१. मॉड आदि पसाने की क्रिया या भाव। २. पसाने पर निकलनेवाला गाढा तरल पदार्थ। पीच।
†पु०=पसाउ (प्रसाद)।
पसावन†—पु०=पसाव।
पसिंजर—पु०[अ० पैसेजर]१ यात्री, विशेषत रेल या जहाज का यात्री। २ यात्रियो की वह रेल-गाडी जो कुछ धीमी चाल से चलती और प्राय सभी स्टेशनो पर ठहरती है।
पसित†—वि०[स० पायश] बँधा या बाँधा हुआ।
पसीजना—अ०[स० प्र√स्विद्, प्रस्विद्यति, प्रा० पसिज्ज]१ अधिक गरमी या ताप के प्रभाव के कारण किसी घन या ठोस पदार्थ मे से जल-कण निकलना। २ दूसरे के घोर कष्ट, दुख आदि को देखने पर चित्त मे (प्राय कठोर चित्त मे) दया की भावना उमडना। ३ पसीने से तर होना।
पसीना—पु०[स० प्रस्वेदन, हि० पसीजना]ताप, परिश्रम आदि के कारण शरीर या उसके अग मे से निकलनेवाले जल-कण। स्वेद।
क्रि० प्र०—आना।—छूटना।—निकलना।

पद—पसीने की कमाई=वह धन जो परिश्रमपूर्वक अर्जित किया गया हो, योंही अथवा मुफ्त मे न मिला हो।

मुहा०—किसी का पसीना छूटना=कोई काम करते-करते बहुत अधिक परेशान हो जाना। पसीने पसीने होना=पसीने से बिलकुल भीग जाना।

पसु†—पु०=पशु।

पसुरी, पसुली—स्त्री०=पसली।

पसू†—पु०=पशु।

पसूज—स्त्री०[?] कपडो की सिलाई मे सूई-डोरे से भरे या लगाये जाने-वाले एक प्रकार के सीधे टाँके।

पसूजना—स०[?] कपडो की सिलाई मे एक विशेष प्रकार के टाँके लगाना।

पसूता†—स्त्री०=प्रसूता।

पसूस—वि०[हिं०] कठोर।

पसेउ (ऊ)*—पु०=पसेव।

पसेरी—स्त्री०[हिं० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)]१ पाँच सेर का बाट। पसेरी। २. उक्त बाट से तौली हुई वस्तु की मात्रा या मान। जैसे—चार पसेरी गेहूँ।

पसेव—पु०[स० प्रस्राव] १ वह तरल पदार्थ जो कच्ची अफीम को सुखाने के समय उसमे से निकलता है। इस अश के निकल जाने पर अफीम सूख जाती है और खराब नही होती।

†पु०[स० प्रस्वेद]पसीना।

पसोपेश—पु०[फा० पसवपेश]१ कोई काम करने के समय मन मे होने-वाला यह भाव कि आगे बढे या पीछे हटें। असमजस। आगा-पीछा। सोच-विचार। २ इस बात का विचार कि यह काम करने पर क्या लाभ अथवा क्या हानि होगी। ऊँच-नीच।

पसो†—पु०=पशु।

पस्त—वि०[फा०] [भाव० पस्ती]१ हारा हुआ। २ थका हुआ। शिथिल। ३ किसी की तुलना मे झुका या दबा हुआ। जैसे—हिम्मत पस्त होना। ४ छोटे आकार का। छोटा। (यौ० के आरभ मे) जैसे—पस्तकद। ५ कमीना। नीच। ६ तुच्छ। हीन। जैसे—पस्त खयाल। ७ पिछडा या हारा हुआ। जैसे—पस्त-हिम्मत। ८ मद। जैसे—पस्त - किस्मत।

पस्त-कद—वि०[फा०] ठिगना। नाटा।

पस्त-हिम्मत—वि०[फा०] [भाव० पस्तहिम्मती]१. जो विफल होकर के हिम्मत हार चुका हो। जिसका साहस छूट गया हो। हतोत्साह। २ कमहौसला। भीरु।

पस्तहौसला—वि०[फा०] पस्त-हिम्मत।

पस्ताना†—अ०=पछताना।

पस्तावा—पु०=पछतावा।

पस्ती—स्त्री०[फा०]१ पस्त होने की अवस्था या भाव। २ निचाई। ३ विचारों, व्यवहारो आदि की नीचता। कमीनापन।

पस्तो†—स्त्री०=पश्तो।

पस्त्य—पु०[स०√ पस् (बाधा)+क्तिन्+यत्]१ घर। वास-स्थान। २ कुल। परिवार।

पस्सर—पु०[अ० परसर] जहाज पर खलासियो आदि को वर्तन, रसद आदि बाँटनेवाला कर्मचारी।

†पु०=पसर।

पस्सी बबूल—पु०[हिं० पस्सी ?+हिं० बबूल] एक प्रकार का बढिया कलमी बबूल का वृक्ष जिसके फूलो मे कई प्रकार के सुगधित द्रव्य बनाये जाते है।

पहँ—अव्य०[स० पार्श्व] निकट। पास।

विभ० से।

पहँसुल—स्त्री०[स० प्रह्व=झुका हुआ+शूल] हँसिया की तरह का तरकारी काटने का एक छोटा उपकरण।

पह*—स्त्री०=पौ (प्रात काल का प्रकाश)।

†पु०=प्याऊ।

पहचनवाना—स० [हिं० पहचानना का०] किसी से पहचानने का काम कराना।

पहचान—स्त्री०[स० प्रत्यभिज्ञान या परिचयन] १ पहचानने की क्रिया, भाव या शक्ति। २ कोई ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे पता चले कि यह अमुक व्यक्ति या वस्तु है। जैसे—अपने कपडे (या लडके) की कोई पहचान बतलाओ। ३ किसी वस्तु की अच्छाई, बुराई, टिकाऊ-पन, स्वाद आदि देख-भाल कर जान लेने की शक्ति। जैसे—आम, कपडे, घी आदि की पहचान। ४ जीव या व्यक्ति के सबध मे, उसके आकार, चेष्टाओ, बातो आदि मे उसका वास्तविक रूप अनुमानित करने की समर्थता। जैसे—आदमी या घोडे की पहचान। ४ दे० 'जानपहचान'।

पहचानना—स०[हिं० पहचान]१. किसी वस्तु या व्यक्ति को देखते ही उसके चिह्नो, लक्षणो, रूप-रग के आधार पर यह जान या समझ लेना कि यह अमुक व्यक्ति या वस्तु है। यह समझना कि वह यही वस्तु या व्यक्ति है जिसे मै पहले से जानता हूँ। जैसे—मैं उसके कपडे पहचानता हूँ।

सयो० क्रि०—जानना।—लेना।

२ एक वस्तु का दूसरी वस्तु या वस्तुओ से भेद करना। अतर समझना या जानना। बिलगाना। जैसे—असल या नकल को पहचानना सहज नही है। ३ किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण-दोषो, योग्यताओं आदि से भली-भाँति परिचित रहना। जैसे—तुम भले ही उनकी बातो मे आ जाओ, पर मैं उन्हे अच्छी तरह पहचानता हूँ।

पहटना†—स०=पहेटना।

पहटा—पु० १ दे० 'पाटा'। २ दे० 'पेठा'।

पहड़िया—वि०=पहाडी।

पु०[हिं० पहाड] सथाल परगने मे रहनेवाली एक जाति।

पहन—पु०[फा०] वह दूध जो बच्चे को देखकर वात्सल्य भाव के कारण माँ की छातियों मे भर आवे और टपकने लगे या टपकने को हो।

पु०= पाहन (पाषाण)।

पहनना—स०[स० परिधान] (कपडे, गहने आदि) शरीर पर धारण करना। परिधान करना। जैसे—कुरता या धोती पहनना, अँगूठी या हार पहनना, खडाऊँ, चप्पल या जूता पहनना।

पहनवाना—स०[हिं० 'पहनना' का प्रे०]१ किसी को कुछ पहनाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—नौकर से लडके को कपडे पहनवाना। २ किसी को कुछ पहनने के लिए विवश करना। (पहनाना से भिन्न)। जैसे—माता ने बच्चे को कुरता पहनवाकर छोडा।

पहना—पु०[फा० पहन] वह दूध जो बच्चे को देखकर वात्सल्य भाव के कारण माँ के स्तनो मे भर आया हो और टपकता-सा जान पडे।
†पु०=पनहा।

पहनाई—स्त्री०[हिं० पहनाना]१. पहनने की क्रिया, ढग या भाव। जैसे—जरा आपकी पहनाई देखिये। २ पहनने या पहनाने के बदले मे दिया या लिया जानेवाला पारिश्रमिक।
*स्त्री०[हिं० पाहन=पत्थर]१ पाहन या पत्थर होने की अवस्था या भाव। २ पाहन या पत्थर की-सी कठोरता, गुरुता या और कोई गुण। उदा०—पाहन ते न कठिन पहनाई।—तुलसी।

पहनाना—स०[हिं० पहनना]१ दूसरे को अपने हाथों से कपड़े, गहने आदि धारण कराना। जैसे—कोट या जूता पहनाना। २ मारना-पीटना। (बाजारू)

पहनाव†—पु०=पहनावा।

पहनावा—पु०[हिं० पहनना]१ पहनने के कपडे। पोशाक। २. किसी जाति, देश आदि के लोगो द्वारा सामान्यत· तन ढकने के उद्देश्य से पहने जानेवाले कपडे। जैसे—अँगरेजो का पहनावा पैंट, कोट, कमीज तथा हैट है और भारतीयो का धोती, कुरता और टोपी है। ३ विशिष्ट आकार, प्रकार या रग के वे कपडे जो किसी विद्यालय, सस्था आदि के कर्मचारियो, विद्यार्थियो, सदस्यो आदि को पहनने पडते हो। जैसे—स्कूली पहनावा।

पहपट—पु०[देश०]१. स्त्रियो द्वारा गाये जानेवाले एक तरह के गीत। २. शोर-गुल। हल्ला। ३ चारो ओर फैलनेवाली निन्दात्मक चर्चा या बदनामी। ४ छल। धोखा। बदनामी। (क्व०)

पहपटबाज—पु०[हिं० पहपट+फा० बाज] [भाव० पहपटबाजी] १. शोर-गुल करने या हल्ला मचानेवाला। २ उपद्रवी। फसादी। शरारती। झगडालू। ३ चारो ओर लोगो की निदा फैलानेवाला। ४ छलिया। धोखेबाज।

पहपटहाया—वि०[स्त्री० पहपटहाई]=पहपटबाज।

पहमिनि†—स्त्री०=पद्मिनी। उदा०—कवल करी तूं पहमिनी मैं निसि भएउ विहान।—जायसी।

पहर—पु०[स० प्रहर]१ समय के विचार से दिन-रात के किये हुए आठ समान भागो मे से हर एक जो तीन-तीन घटो का होता है। २ समय। ३ युग।

पहरना—स० [स० प्र+हरण] नष्ट करना। उदा०—जिडि पहरतै नवी परि।—प्रिथीराज।
†स०=पहनना।

पहरा—पु०[हिं० पहर]१ ऐसी अवस्था या स्थिति जिसमे किसी आदमी, चीज या जगह की रखवाली करने अथवा अपघात, हानि आदि रोकने के लिए एक या अधिक आदमी नियुक्त किये जाते हैं। इस बात का ध्यान रखने का प्रबध कि कही कोई अनुचित रूप से आ-जा न सके अथवा आज्ञा, नियम, विधान आदि के विरुद्ध कोई काम न करने पावे। चौकी। रखवाली।
विशेष—(क) पहले प्राय इस प्रकार की देख-रेख करनेवाले लोग एक एक पहर के लिए नियुक्त किये जाते थे; इसी से उक्त अर्थ मे 'पहरा' शब्द प्रचलित हुआ था। (ख) पहरे का काम प्राय एक स्थान पर खडे होकर, थोडी-सी दूरी मे इधर-उधर आ-जाकर अथवा किसी विशिष्ट क्षेत्र मे चारो ओर घूम-घूमकर किया जाता है।
मुहा०—**पहरा देना**=घूम-घूमकर बराबर यह देखते रहना कि कही कोई अनुचित रूप से आ तो नही रहा है या कोई अनुचित काम तो नहीं कर रहा है। **पहरा पडना**=ऐसी व्यवस्था होना कि कही कुछ लोग पहरा देते रहे। जैसे—रात के समय शहरो मे जगह-जगह पहरा पडता है। **पहरा बदलना**=एक पहरेदार के पहरे का समय बीत जाने पर उसके स्थान पर दूसरे पहरेदार का आना। **पहरा बैठना**=किसी वस्तु या व्यक्ति के पास पहरेदार या रक्षक बैठाया जाना। चौकीदार को पहरे के काम पर लगाना। **पहरा बैठाना**—पहरा देने के काम पर किसी को लगाना। **(किसी को) पहरे मे देना**=किसी को इस उद्देश्य से पहरेदारो की देख-रेख मे रखना कि वह कही भागने, किसी से मिलने-जुलने या कोई अनुचित काम न करने पावे।
२ उतना समय जितने मे एक रक्षक अथवा रक्षक-दल को रक्षा-कार्य करना पडता है। जैसे—तुम्हारे पहरे मे तो कोई यहाँ नही आया था। ३ कोई पहरेदार या पहरेदारो का कोई दल। जैसे—जब तक नया पहरा न आवे, तब तक तुम (या तुम लोग) यही रहना। ४ वह जोर की आवाज जो पहरेदार लोगो को सावधान करने या रहने के लिए रह-रहकर देता या लगाता रहता है। जैसे—कल रात को इस महल्ले मे पहरा नही सुनाई पडा। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार का काल या समय। जमाना। युग। जैसे—अभी क्या है! अभी तो इससे भी बुरा पहरा आवेगा।
†पु० [हिं० पौरा का विकृत रूप] किसी विशेष व्यक्ति के अस्तित्व, आगमन, सत्ता आदि का काल या समय। पौरा। जैसे—जब से इस लडकी का पहरा (पौरा) इस घर मे आया है, तब से इस घर मे लहर-बहर दिखाई देने लगी है।

पहराइत†—पु०=पहरेदार। उदा०—पीला भमर किया पहराइत।—प्रिथीराज।

पहराना†—स०=पहनाना।

पहरावनी—स्त्री०[हिं० पहरावना] १ पहनावा। २ वे कपडे जो किसी शुभ अवसर पर प्रसन्नतापूर्वक छोटो को दिये या पहनाये जाते है।

पहरावा†—पु०=पहनावा।

पहरी—पु०=प्रहरी (पहरेदार)।

पहरुआ—पु०=पहरेदार।

पहरू†—पु०=पहरेदार।

पहरेदार—पु०[हिं० पहरा+फा० दार] [भाव० पहरेदारी] १ वह जिसका काम कही खडे-खडे या घूम-घूमकर पहरा देना हो। चौकीदार। सतरी। २ वह जो किसी की रक्षा के लिए कटिबद्ध तथा प्रस्तुत हो। जैसे—हम देश के पहरेदार है।

पहरेदारी—स्त्री०[हिं० पहरा+फा० दारी]१ पहरा देने का काम या भाव। २ पहरेदार का पद।

पहल—पु०[फा० पहलू, मि० स० पटल]१ किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोनो अथवा कोरो के बीच का तल या पार्श्व। २ बगल। पहलू। जैसे—(क) पासे मे छ पहल होते है। (ख) इस नगीने मे बारह पहल कटे है।

क्रि० प्र०—काटना।—तराशना।—बनाना।

मुहा०—पहल निकालना= किसी पदार्थ के पृष्ठ देश या बाहरी सतह को तराश या छीलकर उसमे त्रिकोण, चतुष्कोण, पट्कोण आदि पहल बनाना।

२ ऊन, रूई आदि की कुछ कडी और मोटी तह या परत। गाला। उदा०—तूल के पहल किधौं पवन अधार के।—सेनापति। ३ किसी तरह की तह या परत।

स्त्री०[हिं० पहला]१. किसी नये कार्य का पहली बार होनेवाला आरभ। २ किसी कार्य, बात आदि का किसी एक पक्ष की ओर होने-वाला आरभ जिसके पश्चप्रभाव का उत्तरदायित्व उसी पक्ष पर माना जाता है। छेड। (इनीशिएटिव) जैसे—झगडे मे पहले तो उसने पहल की थी।

मुहा०—पहल करना= किसी काम या अपनी ओर से या आगे बढ़कर आरभ करना।

पहलदार—वि०[हिं० पहल+फा० दार] जिसमे पहल कटे या बने हों। जिसमे चारो ओर अलग-अलग तल या सतहें हों।

पहलनी—स्त्री०[हिं० पहल] सुनारो का एक औजार जिससे कोंढा या घुडी गोल करते है।

पहलवान—पु०[फा० पहलवान] [भाव० पहलवानी] १ वह व्यक्ति जो स्वय दूसरो से कुश्ती लडता हो अथवा दूसरो को कुश्ती लडना सिखलाता हो। २ मोटा-ताजा। तगडा। हट्टा-कट्टा।

वि० खूब बलवान और मोटा-ताजा।

पहलवानी—वि०[फा० पहलवानी]१ पहलवानो से सबध रखनेवाला। २. पहलवानो की तरह का।

स्त्री०१ पहलवान होने की अवस्था या भाव। २ पहलवान का पेशा, वृत्ति या शौक। ३ बलवान और सशक्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—वह तुम्हारी सारी पहलवानी निकालकर रख देगा।

पहलवी—पु०, स्त्री०[फा०]=पह्लवी।

पहला—वि०[स० प्रथम, प्रा० पहिले] [स्त्री० पहली]१ समय के विचार से जो और सब से आदि मे हुआ हो। जैसे—यह उनका पहला लड़का है। २ किसी चीज विशेषत किसी वर्गीकृत चीज के आरभिक या प्रारभिक अग या वर्ग से सबध रखनेवाला। जैसे—पुस्तक का पहला अध्याय, विद्यालय का पहला दरजा। ३ तुलना, प्रतियोगिता आदि मे जो सब से आगे निकल पहुँच या बढ गया हो। जैसे—दौड, परीक्षा आदि मे पहला आना। ४. वर्तमान से पूर्व का। विगत। जैसे—पहला जमाना कुछ और ही तरह का था। ५ जो अत्यधिक उपयोगी, महत्त्व-पूर्ण या मूल्यवान हो।

पहलाम†—स्त्री०[हिं०पहला+म(प्रत्य०)] लडाई-झगडे के सबध मे की जानेवाली छेड। पहल। जैसे—इस बार तो तुम्ही ने पहलाम की थी।

पहलू—पु०[फा० पहलू]१ किसी वस्तु का कोई विशिष्ट पार्श्व या किसी दिशा मे पडनेवाला अग या विस्तार। २ व्यक्ति के शरीर का दाहिना या बायाँ अग। पार्श्व। बगल। जैसे—जो जल उठता है यह पहलू तो वह पहलू बदलते है।—कोई कवि।

मुहा०—(किसी का) पहलू गरम करना=किसी के शरीर से विशेषत प्रेयसी या प्रेमपात्र का प्रेमी के शरीर से सटकर बैठना। किसी के पास या साथ बैठकर उसे सुखी करना। (किसी से) पहलू गरम करना= किसी को विशेषत. प्रेयसी या प्रेमपात्र को शरीर से सटाकर बैठाना। मुहब्बत मे बैठाना। (किसी के) पहलू मे रहना=किसी के बहुत पास या बिलकुल साथ मे रहना।

३ करवट। बल। जैसे—किसी पहलू से चैन नही मिलता। ४ पडोस।

मुहा०—पहलू बसाना= किसी के पडोस मे जाकर रहना।

५ किसी समूह का कोई पार्श्व या भाग। जैसे—फौज का दाहिना पहलू ज्यादा मजबूत था।

मुहा०—पहलू दबना=किसी अग या पार्श्व का दुर्बल होने या हारने के कारण पीछे हटना। (किसी के) पहलू पर होना=विकट अवसर पर सहायता करने के लिए प्रस्तुत रहना।

६ किसी बात या विषय का अच्छाई-बुराई, गुण-दोष आदि की दृष्टि से कोई पक्ष। जैसे—मुकदमे के सब पहलू पहले से सोच रखो।

मुहा०—(किसी बात का) पहलू बचाना=इस बात का ध्यान रखना या युक्ति करना कि किसी अग, पक्ष या पार्श्व से किसी प्रकार का अनिष्ट अथवा कोई अप्रिय घटना या बात न होने पावे। (अपना) पहलू बचाना= कोई काम करने से जी चुराना या टाल-मटोल करके पीछे हटना।

७ अगल-बगल या आस-पास का स्थान। पार्श्व। जैसे—पहाड के पहलू मे एक घना जगल था।

पद—पहलूनशी= (क) पास बैठनेवाला। (ख) पास बैठा हुआ।

मुहा०—(किसी का) पहलू बसाना= किसी के पडोस या समीप मे जा रहना। पडोस आबाद करना।

८ किसी पदार्थ के किसी पार्श्व का कोई समतल पृष्ठ-देश। पहल। जैसे—इस नगीने का कोई पहलू चौकोर नही है। ९ गूढ अर्थ। १० युक्ति। ११ बहाना। १२ रुख।

पहलूदार—वि०[फा०] जिसके कई पहलू (पक्ष या पहल) हों।

पहले—अव्य०[हिं० पहला]१ आदि आरभ या शुरू मे। सर्वप्रथम। जैसे—पहले यहाँ कोई दूकान नही थी। २ काल, घटना, स्थिति आदि के क्रम के विचार से आगे या पूर्व। जैसे—उनके मकान के पहले एक पुल पडता है। ३. बीते हुए समय मे। पूर्वकाल मे। अगले जमाने मे। जैसे—पहले की-सी सस्ती अब फिर क्यों होने लगी।

पहलेज—पु० [देश०] एक प्रकार का लबोतरा खरबूजा।

पहले-पहल—अव्य० [हिं० पहले] १ आदि या आरभ मे। सर्वप्रथम। सबसे पहले। २ जीवन मे पहली बार। जैसे—वह पहले-पहल दिल्ली गया है।

पहलौठा—वि० [हिं० पहल+औठा (प्रत्य०)] [स्त्री० पहलौठी] (माता-पिता का वह पुत्र) जिसे (उन्होंने) सबसे पहले जन्म दिया हो। अथवा जो सबसे पहले जन्मा हो। प्रथम प्रसव।

पहाड़—पु० [स० पाषाण] [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १ पृथ्वी तल के ऊपर प्राकृतिक रूप से उठा या उभरा हुआ वह बहुत बडा अग जो प्राय चूने, पत्थर, मिट्टी आदि की बडी-बडी चट्टानो से बना होता है और जिसका तल प्राय असम या ऊबड-खाबड रहता है। पर्वत।

मुहा०—पहाड़ खोदकर चूहा निकालना=बहुत अधिक परिश्रम करके बहुत ही तुच्छ परिणाम तक पहुँचना।

२. किसी वस्तु का बहुत बडा और भारी ढेर। बहुत ऊँची राशि या ढेर। जैसे—पहले बाजारो मे अनाज के बोरो के पहाड लगे रहते थे। ३ पत्थरो की ढेर की तरह की कोई बहुत बडी या भारी चीज या बात अथवा कोई बहुत ही विकट काम या स्थिति। जैसे—(क) मुझे पत्र लिखना तो पहाड हो जाता है। (ख) तुम्हे तो मामूली काम भी पहाड मालूम होता है।

मुहा०—**पहाड उठाना**=कोई बहुत बडा, भारी या विकट काम अपने ऊपर लेना या पूरा कर दिखाना। **पहाड़ काटना**=(क) बहुत ही कठिन या विकट काम कर डालना। (ख) किसी प्रकार कोई बहुत बडी विपत्ति या सकट दूर करना। **(किसी पर) पहाड़ टूटना या टूट पडना**=अचानक कोई बहुत बडी विपत्ति आना। जैसे—उस पर तो आफत का पहाड टूट पडा है। **पहाड़ से टक्कर लेना**=अपने से बहुत अधिक बलवान व्यक्ति या शक्तिशाली से प्रतियोगिता करना या बैर उठाना। बहुत जबरदस्त या बहुत बडे से भिडना।

४ कोई ऐसा कठिन या विकट कार्य, वस्तु या स्थिति जिसका निर्वाह बहुत ही कठिन हो अथवा सहज मे जिससे छुटकारा या निस्तार न हो सके। जैसे—पहाड को तरह विवाह के योग्य चार-चार लडकियाँ उसके सामने बैठी थी।

पहाड़ा—पु० [स० प्रस्तार या क्रमात् पहाड की तरह ऊँचे होते जाने का क्रम] १ किसी अक के गुणनफलो के क्रमात् आगे बढती चलनेवाली सख्याओ की स्थिति। जैसे—तीन एकम तीन, तीन दूने छ., तीन तियाँ नौ, तीन चौके बारह आदि। २ उक्त प्रकार की क्रमात् बढती रहनेवाली सख्याओ की सूची। गुणन-सारणी। (मल्टिप्लिकेशन टेबुल) जैसे—पहाडे की पुस्तक।

क्रि० प्र०—पढना।—पढाना।—लिखना।— लिखाना।

पहाड़िया†—वि०=पहाडी।

पहाड़ी—वि० [हि० पहाड+ई (प्रत्य०)] १ पहाड-सबधी। जैसे—पहाडी रास्ता। २ पहाड पर मिलने, रहने या होनेवाला। जैसे—पहाडी वृक्ष, पहाडी व्यक्ति। ३ जिसमे पहाड हो। जैसे—पहाडी देश। ४ पहाड पर रहनेवाले लोगो से सबध रखनेवाला। जैसे—पहाडी पहनावा, पहाडी बोली।

पु० १. पहाड पर रहनेवाले व्यक्ति। जैसे—आज-कल शहर मे बहुत से पहाड़ी आये हुए हैं। २ एक प्रकार का बडा खीरा।

स्त्री० १ छोटा पहाड। २ काँगडे, कुमाऊँ, गढवाल आदि पहाडी प्रदेशो की बोलियो का वर्ग या समूह। ३ भारत के उत्तर-पश्चिमी पहाडो मे गाई जानेवाली एक प्रकार की धुन या सगीत-प्रणाली। ४ सगीत मे, सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो साधारणत रात के पहले या दूसरे पहर मे गाई जाती है। ५ एक सुगधित वनस्पति।

पहान†—पु०=पाषाण (पत्थर)।

पहार—पु० [स्त्री० अल्पा० पहारी]=पहाड।

पहारना—स०=प्रहारना (प्रहार करना)।

पहारी†—स्त्री०=पहाड़ी।

पहारू†—पु०=पहरेदार।

पहासरा—पु० [?] १ पौ फटने का समय। तडका। २ प्रकाश। रोशनी। उदा०—चद के पहासरे मे आँगन मे ठाढी भई, आली तेरी जोति किधौ चाँदनी छिपाई है।—गग।

पहि—अव्य० [स० पर] पर। परतु। उदा०—पहि किम पूजै पागुली।—प्रिथीराज।

पहिआ†—पु० [हि० पाह=पथ] १ रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही। २ अतिथि। अभ्यागत। मेहमान। उदा०—आवत पहिआ खूधे जाहि।—कबीर। ३ जामाता। दामाद।

पु०=पहिया।

पहिचान—स्त्री०=पहचान।

पहिचानना—स०=पहचानना।

पहिती†—स्त्री० [स० प्रहति=सालन] पकाई हुई दाल।

पहिनना—स०=पहनना।

पहिना—स्त्री० [स० पाठीन] एक प्रकार की मछली।

पहिनाना† स०=पहनाना।

पहिनावा—पु०=पहनावा।

पहिप†—पु०=पथिक।

पहियाँ†—अव्य०='पहँ' (पास)।

पहिया—पु० [स० पथ्य, प्रा० पद्य से पहिय] १ गाडी, यान आदि का वह नीचेवाला मुख्य आधार जो गोलाकार होता और धुरी पर घूमता है तथा जिसके धुरी पर घूमने पर गाडी या यान आगे बढता है। २ यत्रो आदि मे लगा हुआ उक्त प्रकार का गोलाकार चक्कर जिसके घूमने से उस यत्र को कोई क्रिया सम्पन्न होती है। चक्कर। (ह्वील)

पु० पहिआ (पथिक)।

पहिरना†—स०=पहनना।

पहिराना†—स०=पहनाना।

पहिरावना†—स०=पहनाना।

पहिरावनी—स्त्री०=पहरावनी।

पहिल†—वि०=पहला।

क्रि० वि०=पहले।

स्त्री०=पहल।

पहिला†—वि०=पहला।

पहिले—अव्य०=पहले।

पहिलौठा—वि० [स्त्री० पहिलौठी]=पहलौठा।

पहीत—स्त्री०=पहिती।

पहुँ—पु० [स० पिय ?] १ पति। २ प्रियतम।

पहुँच—स्त्री० [हि० पहुँचना] १ पहुँचने की क्रिया या भाव। २ किसी के कही पहुँचने की भेजी जानेवाली सूचना। जैसे—अपनी पहुँच तुरत भेजना। ३ ऐसा स्थान जहाँ तक किसी की गति हो सकती हो या कोई पहुँच सकता हो। जैसे—यह तसवीर बहुत ऊँची टँगी है, तुम्हारे हाथ की पहुँच उस तक नही होगी (या न हो सकेगी)। ४ किसी स्थान तक पहुँचने की योग्यता, शक्ति या सामर्थ्य। पकड। जैसे—वह स्थान बडे बडो की पहुँच के बाहर है। ५ किसी विषय का होनेवाला ज्ञान या परिचय। ६ अभिज्ञता की सीमा। ज्ञान की सीमा।

पहुँचना—अ० [स० प्रभूत, प्रा० पहुँच्च] १. (वस्तु अथवा व्यक्ति का) एक विंदु से चलकर अथवा और किसी प्रकार दूसरे विन्दु पर (बीच का

अवकाश पार करके) उपस्थित, प्रस्तुत या प्राप्त होना। जैसे—(क) रेलगाडी का दिल्ली पहुँचना। (ख) घडी की छोटी सूई का १२ पर पहुँचना। (ग) आदमी का घर या स्वर्ग पहुँचना। २ किसी से भेट आदि करने के लिए उसके यहाँ जाकर उपस्थित होना।

पहुँचा-पहुँचा हुआ=(क) जिसके संबंध मे यह माना जाता हो कि वह सिद्धि प्राप्त करके ईश्वर तक पहुँच गया है। (ख) किसी काम या बात मे पूर्ण रूप से दक्ष या पारगत। किसी बात के गूढ रहस्यो या मूल तत्त्वो तक का पूरा ज्ञान रखनेवाला।

३ किसी के द्वारा भेजी हुई चीज का किसी व्यक्ति को मिलना या प्राप्त होना। जैसे—पत्र या सदेश पहुँचना। ४ (किसी चीज का) किसी रूप मे मिलना या प्राप्त होना। जैसे—आघात या दु ख पहुँचना, फायदा पहुँचना। ५ फैलने या फैलाये जाने पर किसी चीज का किसी सीमा तक जाना या किसी दूसरी चीज को छूना-अथवा पकड लेना। जैसे—(क) आग का जगल की एक सीमा से दूसरी सीमा तक पहुँचना। (ख) हाथ का छीके तक पहुँचना। ६ मान, मात्रा, सख्या आदि मे बढते-बढते या घटते-घटते किसी विशिष्ट स्थिति को प्राप्त होना। जैसे—(क) हमारे यहाँ गेहूँ की उपज ५० मन प्रति बीघे तक जा पहुँची है। (ख) लडका आठवें दरजे मे पहुँच गया है। (ग) ताप मान अभी ११० तक हो पहुँचा है। ७ बढकर किसी के तुल्य या बराबर होना। जैसे—अब तुम भी उनके बराबर पहुँचने लगे हो। ८ एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप को प्राप्त होना। जैसे—जान जोखिम मे पहुँचना। ९ प्रविष्ट होना। घुसना। जैसे—वह भी किसी न किसी तरह अदर पहुँच गया। १० किसी चीज का किसी दूसरी चीज से प्रभावित होना। जैसे—कपडो मे सील पहुँचना। ११. लाक्षणिक अर्थ मे, किसी प्रकार के तत्त्व, भाव, मन स्थिति, रहस्य आदि को ठीक-ठीक जानने मे समर्थ होना। जैसे—यह बहुत गभीर विषय है, इस तक पहुँचना सहज नही है।

पहुँचा—पु० [स० प्रकोष्ठ अथवा हिं० पहुँचना] १ हाथ की कुहनी के नीचे और हथेली के बीच का भाग। कलाई। गट्टा। मणिबध।

मुहा०—(किसी का) पहुँचा पकडना=बलपूर्वक किसी को कोई काम करने के लिए उसे रोक रखने के लिए उसकी कलाई पकडना। जैसे—वह तो राह-चलते लोगो से पहुँचा पकडकर माँगने (या लडने) लगता है।

कहा०—उँगली पकडते, पहुँचा पकडना=किसी को जरा-सा अनुकूल या प्रसन्न देखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उसके पीछे पड जाना।

२ टखने के कुछ ऊपर तथा पिंडली से कुछ नीचे का भाग। ३ पाजामे आदि की मोहरी का विस्तार। (पश्चिम)

पहुँचाना—स० [हि० पहुँचा का स०] १ किसी चीज को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—(क) उनके यहाँ मिठाई (या पत्र) पहुँचा दो। (ख) यह ताँगा हमे स्टेशन तक पहुँचायेगा। २ किसी व्यक्ति के सग चलकर उसे कही तक छोडने जाना। जैसे—नौकर का बच्चे को स्कूल पहुँचाना। ३ किसी को किसी विशिष्ट स्थिति मे प्राप्त कराना। किसी विशेष अवस्था या दशा तक ले जाना। जैसे—उन्हे इस उच्च पद तक पहुँचानेवाले आप ही है। ४ किसी रूप मे उपस्थित, प्राप्त या विद्यमान कराना। जैसे—किसी को कष्ट या लाभ पहुँचाना; आँखो मे ठडक पहुँचाना, कही कोई खबर पहुँचाना। ५ प्रविष्ट करना।

पहुँची—स्त्री० [हि० पहुँचा] १ कलाई पर पहनने का एक तरह का गहना। जिसमे बहुत से गोल या कँगूरेदार दाने कई पक्तियो मे गूँथे हुए होते है। २ प्राचीन काल मे युद्ध के समय कलाई पर पहना जानेवाला एक तरह का आवरण। ३ पायल। पाजेब। (पश्चिम)

पहु†—पु०=प्रभु।

स्त्री०=पौ (प्रात काल का हलका प्रकाश)।

पहुड़ना†—अ० १.=पौडना (तैरना)। २=पौढना (लेटना)।

पहुतना—अ०=पहुँचना। (राज०)

पहुनई—स्त्री०=पहुनाई।

पहुना†—पु०=पाहुना।

पहुनाई—स्त्री० [हिं० पाहुना+आई (प्रत्य०)] १ पाहुने के रूप मे कही ठहरने तथा सेवा-सत्कार आदि कराने की क्रिया या भाव।

मुहा०—पहुनाई करना=बराबर दूसरो के यहाँ पाहुन या अतिथि बनकर खाते और रहते फिरना। दूसरो के आतिथ्य पर चैन मे दिन बिताना।

२ अतिथि का भोजन आदि से किया जानेवाला सत्कार। आतिथ्य-सत्कार।

पहुनी—स्त्री० [हिं० पाहुना का स्त्री०] १ रखेली स्त्री। २ समधी की स्त्री। समधिन। ३ दे० 'पहुनाई'।

पहुन्नी—स्त्री० [देश०] वह पच्चर जो लकडी चीरते समय चिरे हुए अग के बीच मे इसलिए लगाया जाता है कि आरा चलाने के लिए बीच मे यथेष्ट अवकाश रहे।

पहुप†—पु०=पुष्प।

पहुमि (मी)*—स्त्री०=पुहमी (पृथ्वी)।

पहुरना—पु० [स्त्री० पहुरनी]=पाहुना।

पहुरी†—स्त्री० [देश०] सगतराशो की एक तरह की चिपटी टाँकी जिससे वे गढे हुए पत्थर चिकने करते है। मठरनी।

पहुला†—पु० [स० प्रफुल] १ कुमुद। कोई। उदा०—पहुला हारु हियै लसै मन की बेंदी भाल।—बिहारी। २ गुलाब का फूल।

पहुवी*=पुहमी (पृथ्वी)। (राज०)

पहेटना—स० [स० प्रखेट, प्रा० पहेट=शिकार] १ किसी को पकडने के लिए उसका पीछा करना। २ कोई कठिन काम परिश्रम-पूर्वक समाप्त करना। ३ औजारो की धार तेज करने के लिए उन्हे पत्थर या सान पर रगडना। ४ अच्छी तरह या डटकर खाना। खूब भर-पेट भोजना करना। ५ अनुचित रूप से ले लेना।

पहेरी†—स्त्री०=पहेली।

पु०=प्रहरी।

पहेली—स्त्री० [स० प्रहेलिका] १ प्रस्ताव के रूप मे होनेवाली एक प्रकार की प्रश्नात्मक उक्ति या कथन जिसमे किसी चीज या बात के लक्षण बतलाते हुए अथवा घुमाव-फिराव से किसी प्रसिद्ध बात या वस्तु का स्वरूप मात्र बतलाते हुए यह कहा जाता है कि बतलाओ कि वह कौन सी बात या वस्तु है। (रिडल)

क्रि० प्र०—बुझाना।—बूझना।

विशेष—पहेलियाँ प्राय दूसरो के ज्ञान या बुद्धि की परीक्षा के लिए होती है, और सभी जातियों तथा देशों मे प्रचलित होती है। यह आर्थी और शाब्दी दो प्रकार की होती है। यथा—'फाट्यो पेट, दरिद्री नाम। उत्तम घर मे वाको ठाम।' शख की आर्थी पहेली है, और 'उस आधा आधा रफि होई। आधा-साधा समझै सोई।' अशरफी की शाब्दी पहेली है। हमारे यहाँ वैदिक युग मे पहेली को 'ब्रह्मोदय' कहते थे; और अश्वमेध आदि यज्ञों मे बलि कर्म से पहले ब्राह्मण तथा होता लोगों से ब्रह्मोदय के उत्तर पूछते अर्थात् पहेलियाँ बुझाते थे। भारत की कई (आदिम) जातियों मे अब भी विवाह के समय पहेलियाँ बुझाने की प्रथा प्रचलित है।

२ कोई ऐसी कठिन या गूढ बात अथवा समस्या जिसका अभिप्राय, आशय, तत्त्व या निराकरण सहज मे न होता हो और जिसे सुनकर लोगो की बुद्धि चकरा जाती हो। दुर्ज्ञेय और विकट प्रश्न या बात। (रिड्ल, उक्त दोनों अर्थों मे) ३. अधिक विस्तार मे घुमा-फिराकर तथा अस्पष्ट रूप मे कही हुई कोई बात।

मुहा०—**पहेली बुझाना**=बहुत घुमाव-फिराव मे ऐसी बात कहना जो लोगो को चक्कर मे डाल दे। जैसे—अब पहेलियाँ बुझाना छोडो, और साफ-साफ बतलाओ कि तुम क्या चाहते हो (या वहाँ क्या हुआ)।

पह्लव—पु० [स०] १ ईरान या फारस देश का प्राचीन निवासी। २ ईरान या फारस मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति। ३ ईरान या फारस देश।

पह्लवी—स्त्री० [फा०] आर्य-परिवार की एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचलन ईरान या फारस देश मे ईसवी तीसरी, चौथी और पाँचवी शताब्दियो मे था।

पह्लिका—स्त्री० [स० अप√ह्लु+ड+कन्, इत्व, अकार-लोप] जल-कुभी।

पाँ†—पु०=पाँव।

पाँइ—पु०=पाँव।

मुहा०*—**पाँइ पारना**=दे० 'पाँव' के अतर्गत 'पाँव पारना' मुहा०।

पाँइता†—पु०=पायँता (पैताना, चारपाई का)।

पाँउ*—पु०=पाँव।

पाँउरी—*स्त्री०=पाँवडी।

पाँओ†—पु०=पाँव।

पाँक (१)†—पु०=पक (कीचड)।

पांक्त—वि० [स० पक्ति+अञ्] १ पक्ति-सबधी। पक्ति का। २ पक्ति के रूप मे होनेवाला।

पांक्तेय—वि० [स० पक्ति+ढक्—एय] [पक्ति+ष्यञ्] (व्यक्ति) जो अपने अथवा किसी विशिष्ट वर्ग के लोगो के साथ एक पक्ति मे बैठकर भोजन कर सकता हो।

पांक्त्य—वि० [स० पक्ति+ष्यञ्]=पांक्तेय।

पाँख (डा)†—पु०=पख (पक्षियों के)।

†पु०=पख (पखवाडा)।

पाँखडी†—स्त्री०=पखडी।

पाँखी—वि० [हिं० पख] पख या पखोवाला।

स्त्री० १. पक्षी। २. फतिगा। ३. काठ का एक उपकरण जिससे खेतो मे क्यारियाँ बनाई जाती है। ४. दे० 'पाँखा'।

पाँखुरी—स्त्री०=पखडी।

पाँग—पु० [स० पक] वह नई जमीन जो किसी नदी के पीछे हट जाने से उसके किनारे पर निकलती है। कछार। खादर। गग-बरार।

†पु० [?] जुलाहों के करघे का ढाँचा।

पाँगल—पु० [स० पागुल्य] ऊँट। (डिं०)

पाँगा—पु०=पाँगा नमक।

पाँगा नमक—पु० [स० पक, हिं० पाँग+नोन]=समुद्री नमक।

पाँगा नोन—पु०=पाँगा नमक।

पाँगुर—स्त्री० [हिं० पाँव+उँगली] पैर की कोई उँगली।

†वि०=पगुल।

पाँगुरना—अ० [?] पनपना।

पाँगुरा—वि०=पागुर (पगुल)।

पाँगुल—वि०=पगुल।

पागुल्य—पुं० [स० पगुल+ष्यञ्] पगुल होने की अवस्था या भाव। लगडापन।

पाँच—वि० [स० पच] जो गिनती मे चार से एक अधिक अथवा छ: से एक कम हो।

मुहा०—(**किसी की**) **पाँचो उँगलियाँ घी मे होना**=हर काम मे किसी को सफलता मिलना या लाभ होना। **पाँचों सवारों मे नाम लिखाना या पाँचवें सवार बनना**=जबरदस्ती अपने को अपने से श्रेष्ठ मनुष्यो की पक्ति या श्रेणी मे गिनना या समझना। औरों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनना। बडा बतलाने या समझने लगना।

पद—**पाँच जने की जमात**=घर-गृहस्थी और परिवार।

पु० [स० पच] १. पाँच का सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५। २ जात-बिरादरी या समाज के अच्छे या मुख्य लोग। ३. सब अच्छे आदमी। उदा०—जो पाँचहि मत लागै नीका।—तुलसी।

वि० बहुत अधिक चालाक या होशियार। उदा०—मेरे फदे मे एक भी न फँसा। पाँच बनो थी जिससे चार उलझे।—जान साहब।

पाँचक—पु०, स्त्री०=पचक।

पांचकपाल—वि० [स० पचकपाल+अण्] पचकपाल सबधी।

पांचजनी—स्त्री० [स० पचजन+अण्—ङीप्] भागवत के अनुसार पचजन नामक प्रजापति की असिकी नामक कन्या का दूसरा नाम।

पांचजन्य—पु० [स० पचजन+ण्य] १. पचजन राक्षस का वह शख जो भगवान कृष्ण उठाकर ले गये थे और स्वय बजाया करते थे। २ विष्णु के शख का नाम। ३ जम्बू द्वीप का एक नाम।

पांचदश्य—पु० [स० पचदशन्+ण्य] पद्रह की सख्या।

पांचनद—वि० [स० पचनद+अण्] पचनद या पजाब-सबधी।

पु० १ पजाब का निवासी। २ पजाब।

पाँचपच—पु० बहु० [हिं०] सब या मुख्य मुख्य लोग। जैसे—पाँच पच जो कुछ कहे, वह हम मानने को तैयार है।

पांच-भौतिक—वि० [स० पचभूत+ठक्—इक] १ जिसका सबध

पचभूतों से हो। २. पच-भूतो से मिलकर बना हुआ। जैसे—पाच भौतिक शरीर।

पांचयज्ञिक—वि० [स० पचयज्ञ+ठक्—इक] पच यज्ञ-सबधी।
पु० पाँच प्रकार के यज्ञो मे से प्रत्येक।

पाँचर—पु० [स० पजर] कोल्हू के बीच मे जडे हुए लकडी के वे छोटे टुकडे जो गन्ने के टुकडो को दबाने के लिए लगाये जाते है।
पु०=पच्चर।

पाचरात्र—पु० [स० पचरात्रि+अण्] आधुनिक वैष्णव मत का एक प्राचीन रूप जिसमे परम, तत्त्व मुक्ति, मुक्ति योग और विषय (ससार) इन पाँच रात्रो (ज्ञानो) का निरूपण होता था। यह भागवत धर्म की दो प्रधान शाखाओ मे से एक था।

पाचवर्षिक—वि० [स० पचवर्ष+ठञ्—इक] पाँच वर्षों मे होनेवाला। पचवर्षीय।

पाँचवाँ—वि० [हिं० पाँच+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० पाँचवी] क्रम या गिनती मे पाँच के स्थान पर पडनेवाला।

पाचशाब्दिक—पु० [स० पचशब्द+ठक्—इक] करताल, ढोल, बीन, घटा और भेरी ये पाँच प्रकार के बाजे।

पाँचा—पु० [हिं० पाँच] खेत का एक उपकरण जिसमे एक डडे के साथ छोटी छोटी फूलकडिया लगी रहती है। यह प्राय कटी हुई फसल या घास-भूसा इकट्ठा करने के काम आता है।

पांचार्थिक—पु० [स० पचार्थ+ठन्—इक, वृद्धि (वा०)] शैव।

पाचाल—वि० [स० पचाल+अण्] १ पचाल देश से सबध रखनेवाला। पचाल का। २ पचाल देश मे होनेवाला।
पु० १. पचाल जाति के लोगो का देश जो भारत के पश्चिमोत्तर खड मे था। २ पचाल जाति के लोग। ३. प्राचीन भारत मे, बढइयो, नाइयो, जुलाहो, धोबियो और चमारो के पाँचो वर्गो का समूह।

पांचालक—वि० [स० पाचाल+कन्] पचालवासियो के सबध का।
पु० पचाल देश का राजा।

पाचाल-मध्यमा—स्त्री० [स०] भारतीय नाट्य कला मे, एक प्रकार की प्रवृत्ति या बात-चीत, वेश-भूषा आदि का ढग, प्रकार या रूप जो पाचाल शूरसेन, कश्मीर, वाह्लीक, मद्र आदि जनपदो की रहन-सहन आदि के अनुकरण पर होता था।

पांचालिका—स्त्री० [स० पाचाली+कन्+टाप्, ह्रस्व] =पचालिका।

पांचाली—स्त्री० [स० पचाल+अण्—ङीप्] १ पचाल देश की स्त्री। २. पाँचो पाडवो की पत्नी द्रौपदी जो पाचाल देश की राजकुमारी थी। ३ साहित्यिक रचनाओ की एक विशिष्ट रीति या शैली जो मुख्यत माधुर्य, सुकुमारता आदि गुणो से युक्त होती है। इसमे प्राय छोटे-छोटे समास और कर्ण-मधुर पदावलियाँ होती है। किसी किसी के मत से गौडी और वैदर्भी वृत्तियो के सम्मिश्रण को भी पाचाली कहते हैं। ४ सगीत मे (क) स्वर-साधन की एक प्रणाली, और (ख) इन्द्र ताल के छ भेदो मे से एक। ५ छोटी पीपल।

पांचो†—स्त्री० [हिं० पच्ची का पुराना रूप] रत्नो आदि के जडाव का काम। पच्चीकारी। उदा०—जाग्रत सपनु रहत ऊपर मनि, ज्यो कचन सग पाची।—हित हरिवश।
स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

पाँचेक†—वि० [हिं० पाँच+एक] १ पाँच के लगभग। २ थोडे-से। जैसे—वहाँ पाँचेक आदमी आये थे।

पाँचैं—स्त्री० [हिं० पचमी] किसी पक्ष की पाँचवी तिथि। पचमी।

पाँछना—स० १=पाछना। २ पोछना का अनु०।

पाँज†—स्त्री० [स० पाश] बाहु-पाश।
वि० [हिं० पाँव] (जलाशय या नदी) जिसमे इतना कम पानी हो कि यो ही पाँव पाँव चलकर पार किया जा सके।
स्त्री० छिछला जलाशय या नदी।
पु० पुल। सेतु। उदा०—जनक-सुता हितु हत्यो लक-पति, बाँध्यो सागर पाँज।—सूर।
पु० [हिं० पाँजना] पाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पाँजना—स० [स० प्रण द्रध, प्रा० पणज्झ पँज्झ] धातुओ के टुकडो को जोडने के लिए उनमे टाँका लगाना। झालना।

पाँजर—अव्य० [स० पजा] पास। समीप।
पु० १. निकटता। सामीप्य। २ दे० 'पजर'।

पाजी†—स्त्री० १ =पाँज। २ =पजी।

पाँझ—स्त्री०=पाँज।

पाँडक—पु०=पडुक (पेडुकी)।

पाडर—पु० [स०√पण्ड् (गति)+अर, दीर्घ] १ कुद का वृक्ष और फूल। २ सफेद रग। ३ सफेद रग की कोई चीज। ४ मरुआ। ५ पानडी। ६ एक प्रकार का पक्षी। ७ महाभारत के अनुसार ऐरावत के कुल मे उत्पन्न एक हाथी। ८ पुराणानुसार एक पर्वत जो मेरु पर्वत के पश्चिम मे स्थित कहा गया है।

पाडर-पुष्पिका—स्त्री० [स० ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] सातला वृक्ष।

पाँडरा—पु० [देश०] एक प्रकार की ईख।

पाडव—वि० [स० पाडु+अण्] पाडु सबधी। पाडु का।
पु० १ कुती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पाडु के ये पाँचो पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। २ प्राचीन काल मे पजाब का एक प्रदेश जो वितस्ता (झेलम) नदी के किनारे था। ३ उक्त प्रदेश का निवासी। ४ रहस्य सप्रदाय मे, पाँचो इद्रियाँ।

पाडव-नगर—पु० [स० ष० त०] हस्तिनापुर।

पांडवाभील—पु० [स० पाडव-अभी, ष० त०,√ला (लेना) +क] श्रीकृष्ण।

पाडवायन—पु० [स० पाडव-अयन, ब० स०] श्रीकृष्ण।

पांडविक—पु० [स० पाडु+ठञ्—इक] एक तरह की गौरैया।

पाडवीय—वि० [स० पाडव+छ—ईय] पाडु के पुत्रो से सबध रखनेवाला। पाडवो का।

पांडवेय—पु० [स० पाडु+अण्+ङीप्+ढक्—एय] १ पाँडव। २ राजा परीक्षित का एक नाम।

पाडित्य—पु० [स० पडित+ष्यञ्] १ पडित होने की अवस्था या भाव। २ पडित या विद्वान् को होनेवाला ज्ञान। विद्वत्ता।

पाडीस—स्त्री० [?] तलवार। (डिं०)

पाडु—वि० [स०√पड् (गति)+कु, नि० दीर्घ] [भाव० पाडुता] हलके पीले रग का।
पु० १ पाडु फली। २ सफेद रग। ३ कुछ लाली

लिये पीला रग । ४ त्वचा के पीले पडने का एक रोग। पीलिया। ५ हस्तिनापुर के प्रसिद्ध राजा जिनके युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ये पाँच पुत्र थे। ६ सफेद हाथी। ७ एक नाग का नाम। ८ परवल ।

पाँडुआ†—पु० [स०] वह जमीन जिसकी मिट्टी में बालू भी मिला हो। दोमट जमीन ।

पाडु-कंटक—पु० [ब० स०] अपामार्ग । चिचडा।

पांडु-कंबल—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का सफेद रग का पत्थर।

पांडुकवली (लिन्)—स्त्री० [स० पाडुकबल+इनि] ऊनी कवल से आच्छादित गाडी ।

पाँडुक†—पु०=पडुक (पेडकी) ।

पांडुक†—पु० [स० पाण्डु+कन्] १. पीला रग। २ पीलिया रोग । ३ पाडुराजा ।

पाडु-कर्म (र्मन्)—पु० [प० त०] सुश्रुत के अनुसार व्रण-चिकित्सा का एक अग जिसमे फोडे के अच्छे हो जाने पर उसके काले वर्ण को औपधि के प्रयोग से पीला बनाते है।

पांडु-क्षमा—स्त्री० [ब० स० ?] हस्तिनापुर का एक नाम।

पांडु-चित्र—पु० [स०] आलेख।

पाडु-तरु—पु० [कर्म० स०] धौ का पेड।

पाडुता—स्त्री० [स० पाडु+तल्+टाप] पाडु होने की अवस्था या भाव। पीलापन ।

पांडु-तीर्थ—पु० [प० त०] पुराणानुसार एक तीर्थ ।

पाडु-नाग—पु० [उपमि० स०] १. पुन्नाग वृक्ष। २. [कर्म० स०] सफेद हाथी । ३ सफेद साँप ।

पाडु-पत्री—स्त्री० [ब० स०, डीप्] रेणुका नामक गध-द्रव्य ।

पाडु-पुत्र—पु० [प० त०] राजा पाडु का पुत्र। पाँचो पाडवो मे से प्रत्येक ।

पाडु-पृष्ठ—वि० [ब० स०] १ जिसकी पीठ सफेद हो। २ लाक्षणिक अर्थ मे, (वह व्यक्ति) जिसके शरीर पर कोई शुभ लक्षण न हो। ३. अकर्मण्य। निकम्मा ।

पाडु-फला—पु० [ब० स०, टाप्] परवल।

पाडु-फली—स्त्री० [ब० स०, डीप्] एक तरह का छोटा क्षुप ।

पांडु-मृत्तिका—स्त्री० [कर्म० स०] १. खडिया। दुधिया मिट्टी। २. राम-रज नाम की पीली मिट्टी ।

पांडु-रंग—पु० [स० पाडुर-अग, ब० स०, शक०, पररूप] १. एक प्रकार का साग जो वैद्यक के अनुसार स्वाद मे तिक्त और कृमि, श्लेष्मा, कफ आदि का नाश करनेवाला माना जाता है। २ पुराणानुसार विष्णु के एक अवतार।

पाडुर—वि० [स० पाडु+र] १ पीला। जर्द । २ सफेद। श्वेत। पु० १. धौ का पेड। २ सफेद ज्वार । ३ कबूतर । ४. बगला । ५ सफेद खडिया। ६ कामला रोग । ७ सफेद कोढ। ८ कार्तिकेय के एक गण का नाम। ९ सर्प। साँप। १० साधु-सतो की आध्यात्मिक परिभाषा मे, अज्ञान ।

पांडुरक—वि० [स० पाण्डुर+कन्] पाडु रग का। पीला । पु० १. पीला रग। २ पीलिया ।

पाडुर-द्रुम—पु० [स० कर्म० स०] कुटज। कुटा। कुरैया ।

पाडु-पृष्ठ—पु०=पादुपृष्ठ।

पांडुर-फली—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] एक प्रकार का छोटा क्षुप ।

पांडुरा—स्त्री० [स० पाडुर+टाप्] १ मपवन। मापपर्णी। २. ककटी। ३ बौद्धो की एक देवी या शक्ति ।

पाडु-राग—पु० [ब० स०] दौना नाम का पौधा। पु० [कर्म० स०] सफेद रग। सफेदी ।

पांडुरिमा—स्त्री० [स० पाडुर+इमनिच्] हलका पीलापन ।

पाडुरेक्षु—पु० [स० पाडुर-इक्षु, कर्म० स०] हलके पीले रग की ईख।

पाडुलिपि—स्त्री० [स०] १ पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी हुई वह प्रति जो छपने को हो। (मैनस्क्रिप्ट) २. दे० 'पाडुलेख'।

पाडु-लेख—पु० [कर्म० स०] १ हाथ से लिखा हुआ वह आरभिक लेख जिसमे काँट-छाँट, परिवर्तन आदि होने को हो। २. उक्त का काट-छाँट कर तैयार किया हुआ वह रूप जो प्रकाशित किये या छापा जाने को हो। (ड्राफ्ट) ३ पाडुलिपि।

पांडु-लेखक—पु० [प० त० ?] वह जो लेख आदि की पाडु-लिपि लिखकर तैयार करता हो। (ड्राफ्ट्समन)

पाडु-लेखन—पु० [प० त० ?] लेख आदि की पाडुलिपि तैयार करने का काम। (ड्राफ्टिंग)

पांडु-लेख्य—पु० [कर्म० स०] १ =पाडुलिपि। २ =पाडुलेख।

पाडु-लोमश—वि० [कर्म० स०,+श] [स्त्री० पाडुलोमशा] सफेद रोएँ-वाला। जिसके रोये या बाल सफेद हो ।

पाडु-लोमशा—स्त्री० [स० पाडुलोमश्+टाप्] मपवन । मापपर्णी ।

पाडु-लोमा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] पाडु-लोमशा। (दे०)

पांडु-शर्करा—स्त्री० [ब० स०] प्रमेह रोग का एक भेद ।

पांडुशर्मिला—स्त्री० [स०] द्रौपदी ।

पाडू—स्त्री० [स० पाडु=पीला] १ हलके पीले रग की मिट्टी। २. ऐसा कीचड जिसमे बालू भी मिला हो। ३ ऐसी भूमि जिसमे वर्षा के जल से ही उपज होती हो। बारानी ।

पाँडे—पु० [स० पडा या पडित] १ दे० 'पाण्डेय'। २ अध्यापक । शिक्षक । ३. भोजन बनानेवाला ब्राह्मण। रसोइया। ४. पडित। विद्वान्। (क्व०)

पांडेय—पु० [स० पडा या पडित] १ कान्यकुब्ज और सरयूपारी ब्राह्मणो की शाखाओ का अल्ल या उपाधि । २ कायस्थो की एक शाखा। ३ दे० 'पाँडे'।

पाँत†—स्त्री०=पक्ति ।

पाँतरना—अ० [स० पीत्रल] १. गलती या भूल करना। २ मूर्खता करना। उदा०—प्रमणै पित मात पूत मत पातरि।—प्रिथीराज।

पाँतरिया—वि० [स० पत्रल] जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। उदा०—पातरिया माता इ पिता।—प्रिथीराज ।

पाति—स्त्री० [स० पक्ति] १ अवली। कतार। पगत। २ विरादरी के वे लोग जो साथ बैठकर भोजन कर सकते हो।

पांथ—वि० [स० पथिन् +अण्, पन्थ-आदेश] १ पथिक। २ वियोगी। विरही । पु० सूर्य ।

*पु०=पथ (रास्ता)।

पाथ-निवास—पु० [ष० त०] =पाथ-शाला।

पांथ-शाला—स्त्री० [ष० त०] पथिको और यात्रियो के ठहरने के लिए रास्ते मे बनी हुई जगह (इमारत या घर)। जैसे—धर्मशाला, सराय, होटल आदि।

पाँपणि†—स्त्री० [हिं० पश्चिमी हिं० पपनी] पलक। उदा०—पाँपणि पख सँवारि नवी परि।—प्रिथीराज।

पाँय—पु०=पाँव।

पाँयचा—पु० [फा०] १. पाखानो आदि मे बना हुआ पैर रखने के वे ईंटे या पत्थर जिन पर पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिए बैठते है। २. पाजामे की मोहरी का वह अग जो घुटनो के नीचे तक रहता है।

पाँयता†—पुं०=पैताना।

पाँव—पु० [स० पाद, प्रा० पाय, पाव] १ जीव-जतुओ, पशुओ और विशेषत मनुष्य के नीचेवाले वे अग जिनकी सहायता से वे चलते-फिरते अथवा जिनके आधार पर वे खडे होते है। पैर।

पद-पाँव का खटका=दे० 'पैर' मे 'पैर की आहट।' **पाँव की जूती**=बहुत ही तुच्छ या हीन वस्तु या व्यक्ति। **पाँव की बेडी**=ऐसा बधन जो किसी की स्वच्छद गति या रहन-सहन मे बाधक हो।

मुहा०—(किसी काम या बात मे) पाँव अडाना=दे० 'टाँग' के अतर्गत 'टाँग अडाना।' **पाँव उखड जाना**=दे० 'पैर' के अतर्गत 'पैर उखडना या उखड जाना'। **पाँव उखाड़ना**=दे० 'पैर' के अतर्गत। **पाँव उठाना**=दे० 'पैर' के अतर्गत। **पाँव खींचना**=व्यर्थ इधर-उधर आना-जाना या घूमना-फिरना छोड देना। **पाँव गाड़ना**=दे० नीचे 'पाँव रोपना'। **पाँव घिसना**=(क) बार-बार कही बहुत अधिक आना-जाना। (ख) दे० नीचे 'पाँव रगडना'। **(किसी स्त्री के) पाँव छुडाना**=उपचार, औषध आदि की सहायता से ऐसा उपाय करना कि रुका हुआ मासिक रज-स्राव फिर से होने लगे। **(किसी स्त्री के) पाँव छूटना**=(क) स्त्री का मासिकधर्म से या रजस्वला होना। (ख) रोग आदि के कारण असाधारण रूप से और अपेक्षया अधिक समय तक रज-स्राव होता रहना। **(किसी के) पाँव छूना**=किसी बडे का आदर या सम्मान करने के लिए उसके पैरो पर हाथ रखकर नमस्कार या प्रणाम करना। **पाँव ठहरना**=दृढतापूर्वक या स्थिर भाव से कही खडे होना। ठहरना या रुकना। **पाँव तोड़कर बैठना**=स्थायी रूप और स्थिर भाव से एक जगह पर रहना और व्यर्थ इधर-उधर आना-जाना बद कर देना **(किसी के) पाँव दबाना या दाबना**=थकावट दूर करने या आराम पहुँचाने के लिए टाँगे दबाना। **(किसी काम या बात मे) पाँव धरना**= किसी काम मे अग्रसर या प्रवृत्त होना। **(किसी के) पाँव धरना या पकडना**=किसी प्रकार का आग्रह, विनती आदि कहते मनाने के लिये किसी के पाँव पर हाथ रखना। उदा०—अब यह बात यहाँ जानि ऊधौ, पकरति पाँव तिहारे।—सूर। **(किसी जगह) पाँव धरना या रखना**=कही जाना या जाकर पहुँचना। पैर रखना। जैसे—अब कभी उन के यहाँ पाँव न रखना। **(किसी जगह) पाँव धारना**=कृतज्ञतापूर्वक पदार्पण करना। उदा०—धन्य भूमि वन पथ पहारा। जँह जँह नाथ पाँव तुम धारा।।—तुलसी। **(किसी के) पाँव धोकर पीना**=(क) चरणामृत लेना। (ख) बहुत अधिक पूज्य तथा मान्य समझकर परम आदर, भक्ति और श्रद्धा के भाव प्रकट करना। **पाँव निकालना**=(क) कही चलने या जाने के लिए पैर उठाना या बढाना। (ख) नियत्रण आदि की उपेक्षा करते हुए कोई नई प्रवृत्ति विशेषत अनिष्ट या अवाछित प्रवृत्ति के लक्षण दिखलाना। जैसे—तुम तो अभी से पाँव निकालने लगे। **(किसी का) पाँव पडना**=आगमन होना। आना। जैसे—आपके पाँव पडने से यह घर पवित्र हो गया। **(किसी के) पाँव पड़ना**=(क) झुककर या पैर छूकर नमस्कार करना। (ख) अपनी प्रार्थना या विनती मनवाने के लिए बहुत ही दीनतापूर्वक आग्रह करना। **(किसी के) पाँव पर गिरना**=दे० ऊपर '(किसी के) पाँव पडना'। **पाँव पर पाँव रखकर बैठना**=काम-धधा छोड बैठना या पडे रहना। निठल्ले की तरह बैठना। **(किसी के) पाँव पर पाँव रखना**=दूसरे के चरण चिह्नो का अनुकरण करना। किसी का अनुगामी या अनुयायी बनना। **(किसी के) पाँव पर सिर रखना**=दे० ऊपर '(किसी के) पाँव पडना'। **पाँव पलोटना**=दे० 'पैर' के अतर्गत 'पैर दबाना'। **पाँव पसारना**=दे० 'पैर' के अतर्गत 'पैर फैलाना'। **पाँव-पाँव चलना**=पैदल चलना। जैसे—अब कुछ दूर पाँव-पाँव भी चलो। **(किसी को) पाँव पारना**=पैरो पडने के लिए विवश करना। उदा०—कहाँ तौ ताकौ तृन गहाइ कै, जीवत पाइनि पारो।—सूर। **पाँव पीटना**=(क) बेचैनी या यत्रणा से पैर पटकना। छटपटाना। (ख) बहुत अधिक दौड-धूप या प्रयत्न करना। **(किसी के) पाँव पूजना**=बहुत अधिक भक्ति या श्रद्धा दिखाते हुए आदर-सत्कार करना। **(वर के) पाँव पूजना**=विवाह मे कन्या कुल के लोगो का वर का पूजन करना और कन्यादान मे योग देना। **(किसी के) पाँव फूलना**=भय, शका आदि से ऐसी मनोदशा होना कि आगे बढने का साहस न हो। **(प्रसूता का) पाँव फेरने जाना**=बच्चा हो जाने पर शुभ शकुन मे प्रसूता का अपने मायके मे कुछ दिनो तक रहने के लिए जाना। **(वधू का) पाँव फेरने जाना**=विवाह होने पर ससुराल आने के बाद वधू का पहले-पहल कुछ दिनो तक अपने मायके मे रहने के लिए जाना। **पाँव फैलाना**=दे० 'पैर' के अतर्गत। **पाँव बढाना**=दे० 'पैर' के अतर्गत। **पाँव बाहर निकालना**=पाँव निकालना। **पाँव रगडना**=(क) बहुत दौड-धूप करना। (ख) कष्ट या पीडा से छटपटाना। **(किसी काम या बात के लिए) पाँव रोपना**=(क) दृढतापूर्वक प्रण या प्रतिज्ञा करना। (ख) हठ करना। अडना। **(किसी के) पाँव लगना**=पैरो पर सिर रखकर नमस्कार या प्रणाम करना। **(किसी स्थान का) पाँव लगा होना**=किसी स्थान से इस रूप मे ज्ञात या परिचित होना कि उस पर चल-फिर चुके हो। जैसे—वहाँ का रास्ता हमारे पाँव लगा है, आप से आप ठीक जगह पहुँच जाता हूँ। **(किसी काम या बात से) पाँव समेटना**=अलग, किनारे या दूर हो जाना। सबध न रखना। छोड देना। जैसे—अब काम से हमने पाँव समेट लिये।

विशेष—यो 'पाँव' और 'पैर' एक दूसरे के पर्याय या समानक ही है, फिर भी 'पाँव' पुराना और पूर्वी शब्द है, तथा 'पैर' अपेक्षया आधुनिक और पश्चिमी शब्द है। अधिकतर पुराने प्रयोग या मुहावरे 'पैर' से सबद्ध है, और 'पाँव' की तुलना मे 'पैर' अधिक प्रचलित तथा शिष्ट-सम्मत हो गया है। फिर भी बोल-चाल मे लोग यह अतर न जानने या न समझने के कारण दोनो शब्दो के मिले-जुले प्रयोग करते है जिससे

दोनों के मुहावरे भी बहुत कुछ मिल-जुल गये हैं। यहाँ दोनों के कुछ विशिष्ट प्रयोगों और मुहावरों में कुछ अंतर रखा गया है। अतः पाँव के शेष प्रयोगों और मुहावरों के लिए 'पैर' के मुहावरे देखने चाहिए। २. कोई ऐसा आधार जिस पर कोई चीज या बात टिकी या ठहरी रहे। मुहा०—पाँव उठ जाना=आधार या आश्रय नष्ट हो जाना। (किसी के) पाँव न होना=(क) ऐसा कोई आधार या आश्रय न होना जिस पर कोई टिक या ठहर सके। जैसे—इस बात का न कोई सिर है न पाँव। (ख) खड़े रहने या ठहरने की शक्ति न होना। जैसे—चोर के पाँव नहीं होते, अर्थात् उसमें ठहरने या सामने आने का साहस नहीं होता।

पाँव-चप्पी—स्त्री० [हिं० पाँव+चापना=दबाना] पैर दबाने की क्रिया या भाव।

पाँवचा—पुं०=पाँयचा।

पाँवड़ा—पुं० [हिं० पाँव+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० पाँवड़ी] १. वह कपड़ा जो किसी बड़े और पूज्य व्यक्ति के मार्ग में इस उद्देश्य से बिछाया जाता है कि वह इस पर से हो कर चले। २. वह कपड़ा या ऐसी ही और कोई चीज जो पैर पोंछने के लिए कहीं पड़ा या बिछा रहता हो। पाँवदान। ३. दे० 'पाँवड़ी'।

पाँवड़ी—स्त्री० [हिं० पाँव+ड़ी (प्रत्य०)] १. खड़ाऊँ। २. जूता। ३. सीढ़ी। सोपान। ४. ऐसी चीज या जगह जिस पर प्रायः पैर रखे जाते या पड़ते हों। ५. गोटा-पट्ठा बिननेवालों का एक औजार जो बुनते समय पैरों से दबाकर रखा जाता है और जिससे ताने के तार ऊपर उठते और नीचे गिरते रहते हैं।

स्त्री० [हिं० पौरि, पौरी] १. वह कोठरी जो किसी घर के भीतर घुसते ही रास्ते में पड़ती हो। ड्योढ़ी। पौरी। २. बैठने का ऊपरी कमरा। बैठक। ३. दे० 'पौरी'।

पाँवर—वि०=पामर।

पुं०=पाँवड़ा।

स्त्री०=पाँवड़ी।

पाँवरी—स्त्री०=पाँवड़ी।

पांशन—वि० [सं०√पश् (नाश करना)+ल्यु—अन, दीर्घ, पृषो०] १ कलंकित करनेवाला। भ्रष्ट करनेवाला। २ दुष्ट। ३ हेय। (प्रायः समास में व्यवहृत) जैसे—पौलस्त्य-कुल-पांशन।

पुं० १. अपमान। २ तिरस्कार।

पांशव—पुं० [सं० पांशु+अण्] रेह का नमक।

पांशु—स्त्री० [सं०√पश् (श्)+उ, दीर्घ] १ धूलि। रज। २ बालू। ३ गोबर की खाद। पाँस। ४ पित्त पापड़ा। ५ एक प्रकार का कपूर। ६. भू-संपत्ति। जमीन। जायदाद।

पांशु-कासीस—पुं० [उपमि० स०] कसीस।

पांशुका—स्त्री० [सं० पांशु√कै (चमकना)+क+टाप्] केवड़े का पौधा।

पांशुकुली—स्त्री० [सं० पांशु√कुल् (इकट्ठा होना)+क+ङीप्] राजमार्ग।

पांशु-कूल—पुं० [ष० त०] १. धूल का ढेर। २. चीथड़ों आदि को सीकर बनाया हुआ बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का वस्त्र। ३ गुदड़ी। ४ वह दस्तावेज या लेख्य जो किसी विशिष्ट व्यक्ति के नाम न लिखा गया हो।

पांशु-कृत—वि० [तृ० त०] १ धूल से ढका हुआ। २. पीला पड़ा हुआ। ३. मैला-कुचैला।

पांशु-क्षार—पुं० [उपमि० स०] पाँगा नमक।

पांशु-चंदन—पुं० [ब० स०] शिव।

पांशु-चत्वर—पुं० [तृ० त०] ओला।

पांशुज—पुं० [सं० पांशु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

पांशु-धान—पुं० [ष० त०] धूल का ढेर।

पांशु-पटल—पुं० [ष० त०] किसी चीज पर जमी हुई धूल की तह या परत।

पांशु-पत्र—पुं० [ब० स०] बथुआ (साग)।

पांशु-मर्दन—पुं० [ब० स०] १ थाला। २ क्यारी।

पांशुर—पुं० [सं० पांशु√रा (देना)+क] १ डाँस। २ खज। ३ पंगु व्यक्ति।

पांशु-रागिनी—स्त्री० [सं० पांशु√रञ्ज् (रंगना)+घिनुण्+ङीप्] महामेदा।

पांशु-राष्ट्र—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्राचीन देश। (महाभारत)

पांशुल—वि० [सं० पांशु+लच्] [स्त्री० पांशुला] १ जिस पर गर्द या धूल पड़ी हो। मैला-कुचैला। २ पर-स्त्री-गामी। व्यभिचारी।

पुं० १. पूतिकरंज। २. शिव।

पांशुला—स्त्री० [सं० पांशुल+टाप्] १ कुलटा या व्यभिचारिणी स्त्री। २. रजस्वला स्त्री। ३. जमीन। भूमि। ४. केतकी।

पाँस—स्त्री० [सं० पांशु] १ राख, गोबर, मल, मूत्र आदि, सड़ी-गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ बनाने के लिए उसमें डाली जाती हैं। खाद। क्रि० प्र०—डालना।—देना।

२. कोई चीज सड़ाकर उठाया जानेवाला खमीर। ३. विशेषतः मधु आदि का वह खमीर जो शराब बनाने के लिए उठाया जाता है। क्रि० प्र०—उठाना।

पाँसना—स० [हिं० पाँस+ना (प्रत्य०)] खेत में पाँस या खाद डालना।

पाँसा—पुं०=पासा।

पाँसी—स्त्री० [सं० पाश] घास, भूसा आदि बाँधने के लिए रस्सियों की बनी हुई बड़ी जाली। जाला।

पांसु—स्त्री० [√पंस्+उ, दीर्घ]=पांशु।

पांसु-क्षार—पुं० [उपमि० स०] पाँगा नमक।

पांसु-खुर—पुं० [ब० स०] घोड़ों के खुरों का एक रोग।

पांसु गुंठित—वि० [तृ० त०] धूल से ढका हुआ।

पांसु-चंदन—पुं० [ब० स०] शिव। महादेव।

पांसु-चत्वर—पुं० [तृ० त०] ओला।

पांसु-चामर—पुं० [ब० स०] १. बड़ा खेमा। तंबू। २ नदी का ऐसा किनारा जिस पर दूब जमी हो। ३. धूल। ४ प्रशंसा।

पांसुज—वि० [सं० पांसु√जन्+ड] पाँगा नमक।

पांसु-पत्र—पुं० [ब० स०] बथुए का साग।

पांसु-भव—पुं० [ब० स०] पाँगा नमक।

पांसु-भिक्षा—स्त्री० [सं० पांसु √भिक्ष् (याचना)+अङ्—टाप्] धौ का पेड़।

पांसु-मर्दन—पु० [व० स०] १ थाला। २ क्यारी।
पासुर—पु० [स० पासु√रा (देना)+क] १. एक प्रकार का वडा मच्छड़। दश। डांस। २ लूला-लँगडा जीव या प्राणी।
पांसुरागिणी—स्त्री० [स० दे० 'पाशुरागिनी'] महामेदा।
पाँसुरी—स्त्री०=पसली।
पासुल—वि० [स० पासु+लच्] १ धूल से लथ-पथ। २ मलिन। मैला। ३. पापी। ४ पर-स्त्रीगामी।
पु० शिव।
पासुला—वि० [स० पासुल+टाप्] १ व्यभिचारिणी (स्त्री)। २ रजस्वला (स्त्री)।
स्त्री० १. पृथ्वी। २. केतकी।
पाँसू—पु० [हिं० पाँस+ऊ (प्रत्य०)] कुम्हारो का एक उपकरण जिससे वे गीली मिट्टी चलाते और सानते है।
पाँही—अव्य० [हिं० पँह] १ निकट। पास। समीप। २. प्रति।
पा—पु० [स० पाद से फा०] पैर। पाँव।
वि० १. दृढ पैरोवाला। २ अधिक समय तक टिकने या ठहरनेवाला। टिकाऊ। (यौ० के अत मे) जैसे—देर-पा=देर तक ठहरनेवाला।
पा-अंदाज—पु० [फा० पाअदाज] वह छोटा विछावन जो कमरो के दरवाजो पर पैर पोछने के लिए रखा जाता है। पावदान। उदा०—दृग-पग पोछन कौ कियो भूपण पायन्दाज (पा-अदाज)।—विहारी।
पाइ†—पु०=पा (पैर)।
मुहा०—पाइ न पारना=पाँव पारना। (दे०)
*स्त्री० [?] किरण।
पाइक—वि०, पु०=पायक।
स्त्री०=पताका।
पाइका—पु० [अ०] आकार के विचार से टाइपो का एक भेद जिसका मुद्रित रूप १।६ इच के वरावर होता है।
पाइट—स्त्री० [अ० फ्लाइट] वाँसो, तख्तो आदि को रस्सियो से वाँधकर खडा किया हुआ वह ढाँचा जिस पर खडे होकर राज-मजदूर दीवारे आदि वनाते तथा उन पर पलस्तर, चूना, रग आदि करते है।
पाइतरी—स्त्री०=पायँता (खाट या विस्तर का)।
पाइदेल—वि०, पु०=पैदल।
पाइप—पु० [अ०] १ नल या नली। २ किसी प्रकार का नल जिसके अदर से होकर कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह जाती हो। जैसे—पानी का पाइप, गैस का पाइप। ३ तमाकू पीने की एक प्रकार की पाश्चात्य नली। ४ वासुरी की तरह का एक प्रकार का पाश्चात्य वाजा।
पाइपोस—पु०=पापोश (जूता)।
पाइमाल—वि०=पायमाल।
पाइरा—पु० [हिं० पाँव+रा (प्रत्य०)] घोडे की जीन-सवारी के साज मे की रकाव।
पाइरिल्ला—पु० [स०] भूरे रग का एक तरह का थूथनदार कीडा जो गन्ने के पौधो की पत्तियाँ खाता है।
पाइल—स्त्री०=पायल।
पाइलट—पु० [अ०] वायुयान चालक।
पाइँ—वि० [फा० पाईन] १. सामनेवाला। २. नीचेवाला। ३ अतिम।
पाइँवाग—पु० [फा०+अ०] घर के साथ लगा हुआ वाग। नजरवाग।
पाई—स्त्री० [स० पाद, पु० हिं० पाय] १. खडी या सीधी लकीर। २ वह छोटी खडी रेखा जो वाक्य के अत मे पूर्णविराम सूचित करने के लिए लगाई जाती है। लेखो आदि मे पूर्णविराम का सूचक चिह्न। ३ पाँव। पैर। ४ घेरा वाँध कर चलने या नाचने की क्रिया या भाव। ५ पतली छडियो या वेतो का वना हुआ। जुलाहो का एक ढाँचा जिस पर ताने का सूत फैलाकर उन्हे माजते है। टिकटी। अट्ठा।
मुहा०—ताना-पाई करना=वार-वार इधर से उधर और उधर से इधर आते-जाते रहना।
६ ताने का सूत माँजने की क्रिया। ७ घोडो के पैर सूजने का एक रोग। ८ ताँवे का एक पुराना छोटा सिक्का जो एक पैसे के तिहाई मूल्य का होता था और जिसका चलन अव उठ गया है। ९ ताँवे का पैसा। (पूरव) १० वह पिटारी जिसमे देहाती स्त्रियाँ साधारण गहने-कपडे रखती है।
स्त्री० [हिं० पाना=प्राप्त करना] प्राप्त करने अर्थात् पाने की क्रिया या भाव। जैसे—भर-पाई की रसीद।
स्त्री० [हिं० पाया=पाई कीडा] एक प्रकार का छोटा लवा कीडा जो घुन की तरह अन्न मे लगकर उसे खा जाता है और उसे अकुरित होने के योग्य नही रहने देता।
क्रि० प्र०—लगना।
स्त्री० [अ०] १ ढेर के रूप मे मिले हुए छापे के टाइप। २ छापेखाने मे सीसे के वे अक्षर या टाइप जो घिस-पिस अथवा टूट-फूट जाने के कारण निकम्मे या रद्दी हो गये हो, और ढेर के रूप मे अलग रख दिये गये हो। ३ छापेखाने मे सीसे के अक्षरो या टाइपो का वह ढेर जो अव्यवस्थित रूप से कही पडा हो।
पाईगाह†—स्त्री० [फा० पाएगाह] १. अश्वशाला। तवेला। २ किसी वडे आदमी के प्रासाद या महल की ड्योढी।
पाईता—पु० [देश०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक मगण, एक भगण और एक सगण होता है।
पाउँ†—पु०=पाँव।
पाउंड—पु० [अ०] १ सोने का एक अगरेजी सिक्का। २. सात या साढ़े सात छटाँक के लग-भग की एक तौल।
पाउंड पावना—पु० [अ० पाउँड+हिं० पावना] पाउडो के रूप मे प्राप्त विदेशी मुद्रा। विशेषत ब्रिटेन से किसी देश के पावने की वह रकम जो वैंक आफ इग्लैंड मे जमा रहती है और उसके साथ हुए समझौते की शर्तो के अनुसार क्रमश चुकाई जाती है। (स्टर्लिंग वैलेन्स)
पाउ—पु०=पाँव।
†पु०=पाव।
पाउडर—पु० [अ०] १ कोई ऐसी चीज जो पीसकर वहुत महीन कर दी गई हो। चूर्ण। वुकनी। २ वह सुगधित चूर्ण या वुकनी जो स्त्रियाँ अपने चेहरे तथा अन्य अगो पर उन की रगत चमकाने और सुन्दर वनाने के लिए लगाती है।

पाकारि—पु० [पाक-अरि, ष० त०] १ इद्र। २ सफेद कचनार।
पाकिट—पु० १. =पाकेट। २ =पैकेट।
वि०=पाकठ।
पाकिस्तान—पु० [फा०] भारत का विभाजन करके बनाया हुआ वह मुसलमानी राज्य जिसका कुछ अश भारत के पश्चिम मे और कुछ पूर्व मे है। पश्चिमी पाकिस्तान मे सिंध, पश्चिमी पजाब, पश्चिमोत्तर सीमाप्रात तथा पूर्वी पाकिस्तान मे पूर्वी बगाल नामक प्रदेश है।
पाकिस्तानी—वि० [फा०] १ पाकिस्तान देश सबधी। पाकिस्तान का। २ पाकिस्तान मे होनेवाला।
पु० पाकिस्तान मे रहनेवाला व्यक्ति।
पाकी—स्त्री० [फा०] १. पाक होने की अवस्था या भाव। २ निर्मलता। शुद्धता। ३ पवित्रता। पावनता।
मुहा०—पाकी लेना=उपस्थ पर के बाल साफ करना।
पाकीजा—वि० [फा० पाकीज] [भाव० पाकीजगी] १. पाक। पवित्र। शुद्ध। २ सब प्रकार के दोषो, विकारो आदि से रहित। जैसे—पाकीजा सूरत।
पाकु—वि० [स०√पच्+उण्] १ पकानेवाला। २. [√पच्+उकन्] पचानेवाला। पाचकी।
पु० बावरची। रसोइया।
पाकेट—पु० [अ० पाकेट] जेब। खीसा।
मुहा०—पाकेट गरम होना=(क) पास मे धन होना। (ख) अनुचित या अवैध रूप से किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ होना।
†पु०=पैकेट।
पु० [?] ऊँट। (डिं०)
पाक्य—वि० [स०√पच्+ण्यत्] १ जो पकाया जाने को हो। २ पचने योग्य।
पु० १ काला नमक। २ साँभर नमक। ३ जवाखार। ४. ४ शोरा।
पाक्य-क्षार—पु० [कर्म० स०] १ जवाखार नमक। २ शोरा।
पाक्यज—पु० [सं० पाक्य√जन्+ड] कचिया नमक।
पाक्या—स्त्री० [स० पाक्य+टाप्] १ सज्जी। २ शोरा।
पाक्ष—वि०=पाक्षिक।
†पु०=पक्ष।
पाक्षपातिक—वि० [स० पक्षपात+ठक्—इक] १ पक्षपात करनेवाला। फूट डालनेवाला। २. पक्षपात के रूप मे होनेवाला।
पाक्षायण—वि० [स० पक्ष+फक्—आयन] १ जो पक्ष (१५ दिन) मे एक बार हो या किया जाय। पाक्षिक। २ पक्ष (१५ दिन) का।
पाक्षिक—वि० [स० पक्ष+ठञ्—इक] १. चाद्र मास के पक्ष से सबध रखनेवाला। २. जो एक पक्ष (१५ दिन) मे एक बार होता हो। जैसे—पाक्षिक अधिवेशन, पाक्षिक पत्र या पत्रिका। (फोर्टनाइटली)। ३ किसी प्रकार का पक्षपात करनेवाला। पक्षपाती। तरफदार। ४ (पिंगल मे छद) जिसमे (पक्ष के रूप मे) दो मात्राएँ हो। ५ वैकल्पित।
पु० १ पक्षियो को फँसा या मारकर जीविका चलानेवाला व्यक्ति। बहेलिया। २ व्याध। शिकारी। ३ विकल्प।

पाखड—पु० [स०√पा (रक्षा करना)+क्विप् पा√खड (खडन करना)+अण्] [वि० पाखडी] १ वेदो की आज्ञा, मत या सिद्धांत के विरुद्ध किया जानेवाला आचरण। २ धार्मिक क्षेत्र मे, अपने धर्म पर सच्ची निष्ठा और भक्ति रखते हुए केवल लोगो को दिखलाने के लिए झूठ-मूठ बढा-चढाकर किया जानेवाला पाठ-पूजन तथा अन्य धार्मिक आचार-व्यवहार। ३ लौकिक क्षेत्र मे, वे सभी आचार-व्यवहार जो झूठ-मूठ अपने आपको धर्म-परायण, नीति-परायण और सत्यनिष्ठ सिद्ध करने के लिए किये जाते है। अपना छल-कपट, धूर्तता, स्वार्थ-परता आदि छिपाने के लिए किया जानेवाला आचार-व्यवहार। आडबर। ढकोसला। ढोग (हिपोक्रिसी)
मुहा०—पाखड फैलाना=दूसरो को ठगने और धोखे मे रखने के लिए आडबरपूर्ण थोथे उपाय रचना। दुष्ट उद्देश्य से ऐसा दिखावटी काम करना जो अच्छे इरादे से किया हुआ जान पडे। ढकोसला खडा करना। जैसे—बाबाजी ने गाँव मे खूब पाखड फैला रखा था। ४ वह व्यय जो किसी को धोखा देने के लिए किया जाय। ५. दुष्टता। पाजीपन। शरारत। ६ नीचता।
वि०=पाखडी।
पाखडी (डिन्)—वि० [स० पाखड+इनि] १ वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला। २ वेदाचार का खडन या निंदा करनेवाला। ३ बनावटी धार्मिकता, सदाचार आदि दिखलानेवाला। ४. दूसरो को ठगने या धोखा देने के लिए आडबर या ढोग रचनेवाला।
पाख—पु० [स० पक्ष] १ चाद्रमास का कोई पक्ष। २ महीने का आधा समय। पद्रह दिन का समय। पखवाडा। ३ कच्चे मकानो की दीवारो के वे ऊँचे भाग जिन पर बँडेर रहती है। ४ पख। पर।
पाखर—स्त्री० [सं० पक्षर, प्रक्खर] १. युद्धकाल मे, घोडो या हाथियो पर डाली जानेवाली एक तरह की लोहे की झूल। २. उक्त झूल के वे भाग जो दोनो ओर झूलते रहते है। ३ जीन। ४ ऐसा टाट या और कोई मोटा कपडा जिस पर मोम, राल आदि का लेप किया हुआ हो। (ऐसा कपडा जल्दी भीगता या सडता-गलता नही है।)
†पु०=पाकर।
पाखरी—स्त्री० [हिं० पाखर=झूल] टाट का बिछावन जिसे गाडी मे बिछाते है तब उसमे अनाज भरते है।
पाखा—पु० [स० पक्ष, प्रा० पक्ख] १ कोना। छोर। २ कुछ दीवारो मे, ऊपर की ओर की वह रचना जो बीच मे सबसे ऊँची और दोनो ओर ढालुई होती है। (ऐसी रचना इसलिए होती है कि उसके ऊपर ढालुई छत या छाजन डाली जा सके।) ३. दरवाजो के दोनो ओर के वे स्थान जिनके साथ, दरवाजे के खुले होने की अवस्था मे किवाड लगे या सटे रहते है। ४. पाख।
पाखान†—पु०=पाषाण (पाथर)।
पाखान भेद—पु०=पाषाण भेद।
पाखाना—पु० [फा० पाखान] १. विशिष्ट रूप से बनाया हुआ वह स्थान जहाँ मलत्याग किया जाय। शौचालय। २. शरीर का वह मल जो भोजन आदि पचने के उपरात गुदा के रास्ते बाहर निकलता है। गुह। पुरीष।
मुहा०—पाखाने जाना=मलत्याग के लिए पाखाने मे या और कही

जाना। (मारे डर के) पाखाना निकलना=मारे भय के बुरा हाल होना। बहुत अधिक भयभीत होना। पाखाना फिरना=मलत्याग करना। पाखाना फिर देना=डर से बहुत अधिक घबरा जाना। भय से अत्यंत विकल हो जाना। पाखाना लगना=मल-त्याग करने की आवश्यकता होना। यह प्रवृत्ति होना कि अब मल त्याग करना चाहिए।

पाग—पुं० [सं० पाक] १ वह खाद्य पदार्थ जो चाशनी या शीरे में पकाकर तैयार किया गया हो। जैसे—कोहड़ा-पाग, बादाम-पाग। २. वह शीरा जिसमें रसगुल्ला, गुलाबजामुन आदि मिठाइयाँ भीगी पड़ी रहती हैं। ३ पागी हुई कोई ओषधि या फूल। पाक।

पागड़ा†—पुं०=पावड़ा (रकाब)।

पागना—स० [सं० पाक] १ खाने की किसी चीज को चाशनी या शीरे में कुछ समय तक डुबाकर रखना। २. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज पर शीरे का लेप चढ़े।

†अ०=पगना।

पागर†—स्त्री० [देश०] वह लंबी रस्सी जिसका एक सिरा नाव के मस्तूल में बँधा रहता है और दूसरा सिरा किनारे पर खड़ा आदमी, खींचते हुए किसी दिशा में नाव को ले जाता है।

पागल—वि० [सं०√पा (रक्षा)+क्विप्, पा√गल् (स्खलित होना)+अच्] [स्त्री० पगली] [भाव० पागलपन] १. जिसका मस्तिष्क उन्माद रोग के कारण इतना विकृत हो गया हो कि ठीक तरह से कोई काम या बात न कर सके। जिसके मस्तिष्क का संतुलन नष्ट हो चुका या बिगड़ गया हो। बावला। विक्षिप्त। २. जो कष्ट, क्रोध, प्रेम या ऐसे ही किसी तीव्र मनोविकार से अभिभूत होने के कारण सब प्रकार का ज्ञान या विवेक खो बैठा हो। जैसे—वह क्रोध (या प्रेम) में पागल हो रहा था। ३ जो किसी काम में इतना अनुरक्त, आसक्त या लीन हो रहा हो कि उसे और कामों या बातों की सुध-बुध न रह गई हो। जैसे—आज-कल तो वह चुनाव के फेर में पागल हो रहा है। ४. जो इतना ना-समझ या मूर्ख हो कि प्रायः पागलों या विक्षिप्तों का-सा आचरण या उन जैसी बातें करता हो। जैसे—यह लड़का भी निरा पागल है।

पागलखाना—पुं० [हिं० पागल+फा० खाना] वह स्थान जहाँ विक्षिप्त व्यक्तियों को रखकर उनकी चिकित्सा की जाती है तथा जहाँ पर उनके रहने का भी प्रबंध रहता है।

पागलपन—पुं० [हिं० पागल+पन (प्रत्य०)] १ पागल होने की अवस्था या भाव। २. वह आचरण, कार्य या बात जो पागल लोग साधारणतया करते हों। जैसे—बच्चे को रह-रहकर मारने लगना उनका पागलपन है। ३ बेवकूफी।

पागलिनी—स्त्री०=पागल (स्त्री)।

पागली—स्त्री०=पगली।

पागुर†—पुं० दे० 'जुगाली'।

पाघ†—स्त्री०=पाग (पगड़ी)।

पाचक—वि० [सं० √पच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पाचिका] किसी प्रकार का पाचन करने (पकाने या पचाने) वाला। पाचन की क्रिया करनेवाला।

पुं० १ वह जो भोजन पकाता या बनाता हो। बावर्ची। रसोइया। २. वह दवा जो खाई हुई चीज पचाती या पाचन शक्ति बढ़ाती हो। ३. कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से बनाया हुआ वह अवलेह या चूर्ण जो प्रायः क्षारीय ओषधियों से बनाया जाता है और जिसका स्वाद खट-मीठा, नमकीन या मीठा होता है। ४. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर रहनेवाले पाँच प्रकार के पित्तों में से एक जिसकी सहायता से भोजन पचता है। ५. वह अग्नि जिसका उक्त पित्त में अधिष्ठान माना जाता है।

पाचन—पुं० [सं०√पच्+णिच्+ल्युट्—अन] १. आग पर चढ़ाकर खाने-पीने की सामग्री पकाना। भोजन बनाना। २. पेट में पहुँचने पर खाये हुए पदार्थों के पचने या हजम होने की क्रिया। खाद्य पदार्थों के पेट में पहुँचने पर शारीरिक धातुओं के रूप में होनेवाला परिवर्तन। ३. पेट के अंदर की वह शक्ति जो एक प्रकार की अग्नि के रूप में मानी गई है और जिसकी सहायता से खाई हुई चीज पचती या हजम होती है। जठराग्नि। हाजमा। ४. कोई ऐसा अम्ल या खट्टा रस जो भोजन के पचने में सहायक होता हो अथवा जिससे पेट के अंदर का मल या अपक्व दोष दूर करता हो। ५ कोई पाचक ओषध। ६ लाक्षणिक रूप में, किसी प्रकार के दोष या विकार का धीरे-धीरे कम होकर नष्ट या शमित होना। जैसे—पाप या रोग का पाचन। ७ प्रायश्चित्त, जिससे पापों का शमन होता है। ८. आग या अग्नि जिसकी सहायता से खाने-पीने की चीजें पकाई जाती हैं। ९. लाल रेंड।

वि० १. खाई हुई चीजें पचाने या हजम करनेवाला। हाजिम। २ किसी प्रकार के अजीर्ण या आधिक्य का नाश या शमन करनेवाला।

पाचनक—पुं० [सं०√पच्+णिच्+ल्यु—अन+कन्] सुहागा।

पाचन-गण—पुं० [ष० त०] पाचन ओषधियों का वर्ग।

पाचन-शक्ति—स्त्री० [ष० त०] १. खाये हुए पदार्थों को पचाने की शक्ति या सामर्थ्य। २. हाजमा।

पाचना—स० १.=पकाना। २. पचाना।

पाचनी—स्त्री० [सं० पाचन+ङीप्] हड़।

पाचनीय—वि० [सं०√पच्+णिच्+अनीयर्] १. जो पकाया जा सके। २. जो पचाया जा सके।

पाचयिता (तृ)—वि० [सं०√पच्+णिच्+तृच्] १. पाक करनेवाला। २. पचानेवाला।

पाचर—पुं०=पच्चर।

पाचल—वि० [सं०√पच्+णिच्+कलन्] १. पकानेवाला। २. पचानेवाला।

पुं० १. रसोइया। २. अग्नि। ३ वायु। ४ पकाई जानेवाली वस्तु। ५ पचानेवाली वस्तु।

पाचा—पुं० [सं० पाक] १. भोजन पकने या पकाने की क्रिया। पाक। २. भोजन पचने या पचाने की क्रिया। पाचन।

पाचा-पाड़—पुं० [हिं० पाँच+पाड़=किनारा] जनानी धोतियों का वह प्रकार जिसमें लम्बाई के बल ऊपर और नीचे जैसे दो किनारे बुने हुए होते हैं, वैसे ही तीन किनारे बीच में भी बुने रहते हैं।

स्त्री० वह जनानी धोती या साड़ी जिसमें उक्त प्रकार के पाँच (तीन) किनारे बुने हुए हों।

पाचिका—स्त्री० [सं० पाचक+टाप्, इत्व] रसोई बनानेवाली स्त्री।

पाची—वि० [स०√पच्+णिच्+इन्+ङीप्] पाचन करनेवाला।
स्त्री० पच्ची या मर्कतपत्री नाम की लता।

पाच्छा, पाच्छाह†—पु०=बादशाह।

पाच्य-वि० [स०√पच्+ण्यत्, कुत्वाभाव] १ जो पच या पक सकता हो। २ पकाने या पचाने योग्य।

पाछ—स्त्री० [हि० पाछना] १. पाछने अर्थात् जतु या पौधे के शरीर पर छुरी की तीखी धार लगाकर उसका रक्त या रस निकालने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
२ उक्त कार्य के लिए लगाया हुआ क्षत या किया हुआ घाव। ३ पोस्ते के डोडे पर छुरी से किया जानेवाला वह क्षत जिसमे से गोंद के रूप मे अफीम बाहर निकलती है।
पु० [स० पश्चात्,प्रा० पच्छा] किसी चीज का पिछला भाग। पीछा।
अव्य०=पीछे।

पाछना—स० [हि० पछा] किसी जीव या पौधे की त्वचा या खाल पर इस प्रकार हलका घाव करना जिससे उसका रक्त या रस थोडा थोडा करके बाहर निकलने लगे।

पाछल, पाछुल†—वि०=पिछला।
अव्य०=पीछे।

पाछा†—पु० १. दे० 'पाछ'। २ दे० पीछा'।

पाछिल—वि०=पिछला।

पाछी—अव्य० [हि० पाछ] पीछे की ओर। पीछे।

पाछू†—अव्य०=पीछे।

पाछें, पाछे—अव्य०=पीछे।

पाज—पु० [स० पाजस्य] १ पार्श्व। पार्श्वभाग। २. पजर।
पु० १ सेतु। पुल। २. आधार। ३ जड। ४ ढेर। राशि। ५ वज्र।

पाजरा—पु० [देश०] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी पत्तियों से एक प्रकार का रस निकाला जाता है।

पाजस्य—पु० [स०√पा+असुन्, जुट्+यत्] पार्श्व। बगल।

पाजा†—पु०=पायजा।

पाजामा—पु०[फा० पाजाम या पाएजाम]एक तरह का सिला हुआ वस्त्र जो कमर से एडी तक का भाग ढकने के लिए पहना जाता है और जो ऊपरी भाग के नेफे मे नाला डालकर कमर मे बाँधा जाता है।

पाजी—पु० [स० पत्ति, प्रा० पडित से फा०] १. पैदल चलनेवाला व्यक्ति। २ पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। ३ चौकीदार। पहरेदार। ४ साथ चलने या रहनेवाला व्यक्ति। साथी। ५ तुच्छ सेवाएँ करनेवाला नौकर। खिदमतगार। टहलुआ।
वि० [फा०] [भाव० पाजीपन] जो प्राय अपने दुष्ट आचरण या व्यवहार से सबको तग या परेशान करता रहता हो। दुष्ट। लुच्चा।

पाजीपन—पु० [हि० पाजी+पन (प्रत्य०)] पाजी या दुष्ट होने की अवस्था या भाव।

पाजेब—स्त्री० [फा० पाजेब] पैरों मे पहनने का स्त्रियों का एक प्रसिद्ध आभूषण। मजीर। नूपुर।

पाटंबर—पु० [स० पट्ट+अम्बर] रेशमी वस्त्र। रेशमी कपडा।

पाट—पु० [स० पट्ट,पाट] १ रेशम। २. रेशम का बटा हुआ महीन डोरा। नख। ३ एक प्रकार का रेशम का कीडा। ४. पटसन। ५. कपडा। वस्त्र।
पद—पाट पटंबर=अच्छे अच्छे और कई तरह के कपडे।
६ बैठने का पाटा या पीढा। ७ राज-सिंहासन। ८ चौडाई के बल का विस्तार। जैसे—नदी का पाट। ९ किसी प्रकार का तख्ता, पटिया या शिला। १० पत्थर की वह पटिया जिस पर धोबी कपड़े धोते है। ११ चक्की के दोनो पल्लो मे से हर एक। १२. लकडी के वे तख्ते जो छत पाटने के काम आते है। १३ वह चिपटा शहतीर जिस पर कोल्हू हाँकनेवाला बैठता है। १४ वह शहतीर जो कूएँ के मुँह पर पानी निकालनेवाले के खडे होने के लिए रखा जाता है। १५. बैलो का एक रोग जिसमे उनके रोमकूपो मे से रक्त निकलता है।
क्रि० प्र०—फूटना।
१६. मृदग के चार वर्णो मे से एक।

पाटक—पु० [स०√पट्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ एक तरह का बाजा। २ गाँव या बस्ती का आधा भाग। ३ तट। किनारा। ४ पासा। ५. एक तरह की बडी कलछी।

पाट-करण—पु० [स० ब० स०] शुद्ध जाति के रागो का एक भेद।

पाटच्चर—वि० [स० पटच्चर+अण्] चुरानेवाला।

पाटदार—वि०=पल्लेदार (आवाज)।

पाटन—पु० [स०√पट्+णिच्+ल्युट्—अन] चीरने-फाड़ने अथवा तोडने-फोडने की क्रिया या भाव।
स्त्री० [हि० पाटना] १ पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २. वह छत जो दीवारो को पाटकर बनाई गई हो। ३. घर के ऊपर का दूसरा खंड या मजिल। ४ साँप का जहर झाड़ने का एक प्रकार का मत्र।
पु० [स० पत्तन]नगर या बस्ती के नाम के अत मे लगनेवाली 'पत्तन' सूचक सज्ञा। जैसे—झालरापाटन।
स्त्री० [अ० पैटर्न] पुस्तक की जिल्द के रूप मे बँधी हुई वे दफ्तियाँ जिन पर ग्राहको या व्यापारियो को दिखाने के लिए कपडो आदि के नमूने के टुकड़े चिपकाये रहते हैं।

पाटना—स० [सं० पाट] १. खाई, गड्ढे आदि मे इतना भराव भरना जिससे वह आस-पास की जमीन के बराबर और समतल हो जाय। २ कमरे के सबध मे उसकी चारो ओर की दीवारो के ऊपरी भाग के खुले अवकाश को बद करने के लिए उस पर छत या पाटन बनाना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी स्थान पर किसी चीज की बहुतायत या भरमार करना। जैसे—माल से बाजार पाटना। ४ लाक्षणिक रूप मे, (क) ऋण आदि चुकाना, (ख)पारस्परिक दूरी, मत-भेद, विरोध आदि का अत या समाप्ति करना। ५ दे० 'पटाना'।

पाटनि—स्त्री०[स० पट्ट] १. सिर के बालो की पट्टी। २ दे० 'पाटना'।

पाटनीय—वि० [सं०√पट्+णिच्+अनीयर्] चीरे-फाडे या तोडे-फोडे जाने के योग्य।

पाटपा†—वि० [हि० पाट] सबसे बडा। उत्तम। श्रेष्ठ। (राज०)

पाट-महिषी—स्त्री० [स० पट्ट=सिंहासन,+महिषी=रानी] किसी राजा की वह विवाहिता और बडी रानी जो उसके साथ सिंहासन पर बैठती अथवा उस पर बैठने की अधिकारिणी हो। पटरानी।

पाटरानी—स्त्री०=पटरानी।

पाटल—पुं० [सं०√पट्+णिच्+कलच्] १. पाडर या पाढर नामक पेड़, जिसके पत्ते आकार-प्रकार में बेल वृक्ष के पत्तों के समान होते हैं। २. गुलाब।
वि० १ गुलाब-संबंधी। २. गुलाब के रंग का। उदा०—कर के प्यौं पाटल बिमल प्यारी।—बिहारी।

पाटलक—वि० [सं० पाटल+कन्] पाटल के रंग का। गुलाबी रंग का।
पुं० गुलाबी रंग।

पाटलकीट—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कीड़ा।

पाटल-द्रुम—पुं० [सं० उपमि० स०] पुन्नाग वृक्ष। नाग-केसर।

पाटला—स्त्री० [सं० पाटल+टाप्] १. पाडर का वृक्ष। २. लाल लोध। ३ जलकुंभी। ४. दुर्गा का एक रूप।
पुं० [सं० पटल] एक प्रकार का बढ़िया और साफ सोना।

पाटलावती—स्त्री० [सं० पाटला+मतुप्, वत्व,+ङीप्] १ दुर्गा। २ एक प्राचीन नदी।

पाटलि—स्त्री० [सं०√पट्+णिच्+अलि] १ पाडर का वृक्ष। २ पाडुफली।

पाटलिक—वि० [सं० पाटलि+कन्] १. जो दूसरों के भेद या रहस्य जानता हो। २ जिसे देश और काल का ज्ञान हो।
पुं० १. चेला। शिष्य। २. पाटलिपुत्र नगर।

पाटलित—भू० कृ० [सं० पाटल+णिच्+क्त] गुलाबी रंग में रँगा हुआ।

पाटलि-पुत्र—पुं० [सं० ष० त० ?] अजातशत्रु द्वारा बसाई हुई प्राचीन मगध की एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी जो आधुनिक पटना नगर के पास थी। पुष्पपुर। कुसुमपुर।
विशेष—कुछ लोग वर्तमान पटने को ही पाटलिपुत्र समझते हैं परन्तु पटना शेरशाह सूरी का बनाया हुआ है।

पाटलिमा (मन्)—स्त्री० [सं० पाटल+इमनिच्] १ गुलाबी रंग। २ गुलाबी रंगत। ३ गुलाबी होने की अवस्था या भाव। गुलाबीपन।

पाटली—स्त्री० [सं० पाटलि+ङीप्]=पाटलि।

पाटली-तैल—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार का औषध तैल जिसके लगाने से जले हुए स्थान की जलन, पीड़ा और चेप बहना दूर होता है।

पाटलीपुत्र—पुं०=पाटलिपुत्र।

पाटव—पुं० [सं० पटु+अण्] १ पटुता। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. जल्दी। शीघ्रता। ४ आरोग्य। ५. शक्ति।

पाटविक—वि० [सं० पाटव+ठन्—इक] १. पटु। कुशल। २. चालाक। धूर्त।

पाटवी—वि० [हिं० पाट+वी (प्रत्य०)] १. रेशम का बना हुआ। रेशमी। २ पटरानी संबंधी। पटरानी का। ३. पटरानी से उत्पन्न ४. सर्वश्रेष्ठ।
पुं० पटरानी का पुत्र।

पाटसन—पुं०=पटसन।

पाटहिका—पुं० [सं० पटह+ठञ्—इक] नगाड़ा बजानेवाला व्यक्ति।

पाटलिका—स्त्री० [सं० पटल+अण्, पाटल+ठन्—इक+टाप्] गुंजा। घुँघची।

पाटा—पुं० [हिं० पाट] [स्त्री० अल्पा० पाटी] १. बैठने का काठ का पीढ़ा।
मुहा०—पाटा फेरना=विवाह में कन्यादान के उपरान्त वर के पीढ़े पर कन्या को और कन्या के पीढ़े पर वर को बैठाना।
२. राज-सिंहासन। ३ लकड़ी पत्थर की तरह की वह आयताकार लकड़ी जिसकी सहायता से जोते हुए खेत की मिट्टी के ढेले तोड़कर उसे समतल करते हैं। ४. उक्त प्रकार का काम करने का वह छोटा हेंगा जिसके द्वारा खेत ... बराबर या समतल करते हैं।
क्रि० प्र०—चलाना।—फेरना।
५. दो दीवारों के बीच में लकड़ी, पटिया आदि लगाकर बनाया हुआ आधार स्थान।

पाटि—स्त्री० १. पाट। २. पाटी।

पाटिका—स्त्री० [सं० पाट+टाप्, इत्व] १. एक दिन की मजदूरी। २. एक पौधा। ३ छाल। छिलका।

पाटित—भू० कृ० [सं०√पट्+णिच्+क्त] जो चीरा-फाड़ा अथवा तोड़-फोड़ा गया हो।

पाटी—स्त्री० [सं०√पट्+इन्+ङीप्] १ परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २ गणित-शास्त्र। हिसाब। ३ श्रेणी। पंक्ति। ४. बला नामक क्षुप। खरैटी।
स्त्री० [हिं० पाटा का स्त्री० रूप] १ लकड़ी की वह तख्ती या पट्टी जिस पर विद्यारंभ करनेवाले बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है। २. बच्चों को पढ़ाया जानेवाला पाठ। सबक।
मुहा०—पाटी पढ़ना—(क) पाठ पढ़ना। सबक लेना। (ख) किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करना; विशेषतः ऐसी शिक्षा प्राप्त करना जो दुष्ट उद्देश्य से दी गई हो और जिससे शिक्षा प्राप्त करनेवाले ने अपनी बुद्धि या विवेक का उपयोग न किया हो।
३. माँग के दोनों ओर गोंद, जल, तेल आदि की सहायता से कंघी द्वारा बैठाये हुए बाल जो देखने में पटरी की तरह बराबर मालूम हों। पट्टी। पटिया।
मुहा०—पाटी पारना या बैठाना=कंघी फेरकर सिर के बालों को समतल करके बैठाना। उदा०—पाटी पारि अपने हाथ बेनी गुंथि बनावे।—भारतेंदु।
४ खाट, पलंग आदि के चौखटे की लंबाई के बल की लकड़ी। ५. चौड़ाई। ६ चट्टान। शिला। ७ मछली पकड़ने के लिए एक विशिष्ट प्रकार की क्रिया जिसमें बहते हुए पानी को मिट्टी के बाँध या वृक्षों की टहनियों आदि से रोक कर एक पतले मार्ग से निकलने के लिए बाध्य करते हैं, और उसी मार्ग पर उन्हें पकड़ते हैं। ८ खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग। ९ जती।

पाटीगणित—पुं० [सं०] गणित की वह शाखा जिसमें ज्ञात अंकों या संख्याओं की सहायता से अज्ञात अंक या संख्याएँ जानी जाती हैं। (एरिथमेटिक)

पाटीर—पुं० [सं० पटीर+अण्] १. चंदन का वृक्ष और उसकी लकड़ी। २. खेत जोतने का हल। ३ खेत।

पाटूनी—पु० [देश०] वह मल्लाह जो किसी घाट का ठीकेदार भी हो घटवार।

पाट्य—पु० [स०√पट्+णिच्+यत्] पटसन।

पाठ—पु० [स०√पठ् (पढना)+घञ्] १. पढने की क्रिया या भाव। पढाई। २. वह विषय जो पढा जाय। ३. किसी ग्रथ का उतना अंश जितना एक दिन या एक बार में गुरु या शिक्षक से पढा जाय। सबक। (लेंसन)

मुहा०—(किसी को) पाठ पढ़ाना=दुष्ट उद्देश्य से किसी को कोई बात अच्छी तरह समझना। पट्टी पढाना। (व्यग्य)। पाठ फेरना=बार-बार दोहराना। उद्धरणी करना। उलटा पाठ पढाना=कुछ का कुछ समझा देना। उलटी-पुलटी बाते कहकर बहका देना।

४ नियमपूर्वक अथवा श्रद्धा-भक्ति से और पुण्य-फल प्राप्त करने के उद्देश्य से कोई धर्मग्रथ पढने की क्रिया या भाव। जैसे—गीता या रामायण का पाठ। ५ किसी पुस्तक के वे अध्याय जो प्राय: एक दिन मे या एक साथ पढाये जाते है; और जिनमे एक ही विषय रहता है। ६ किसी ग्रथ या लेख के किसी स्थल पर शब्दो या वाक्यो का विशिष्ट क्रम या योजना। (टैक्स्ट) जैसे—अमुक पुस्तक मे इस पद का पाठ कुछ और ही है।

†पु०=पाठा।

†वि०=पठ्ठा।

पाठक—वि० [स०√पठ्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पाठिका] १. पाठ पढनेवाला। २ पाठ करनेवाला। ३. पाठ पढानेवाला।

पु० १. विद्यार्थी। २ अध्यापक। ३ धर्मोपदेशक। ४ ब्राह्मणो की एक जाति। ५ आज-कल समाचार-पत्रो, पत्रिकाओ आदि की दृष्टि मे वे लोग जो समाचार-पत्र आदि पढते हो।

पाठच्छेद—पु० [प० त०] एक पाठ की समाप्ति होने पर और अगले पाठ के आरभ किये जाने से पहले होनेवाला विराम।

पाठ-दोष—पु० [प० त०] किसी ग्रथ के शब्दो के वर्णो तथा वाक्यो के शब्दो की अशुद्ध या भ्रामक योजना।

पाठन—पु० [स०√पठ्+णिच्+ल्युट्—अन] १ पाठ पढाना। २. पढकर सुनाना। ३ वक्तृता देना।

पाठना—स० [स० पाठन] पढाना।

पाठ-निश्चय—पु० [प० त०] किसी ग्रथ के पाठ के अनेक रूप मिलने पर विशिष्ट आधारो पर उसके शुद्ध पाठ का किया जानेवाला निश्चय।

पाठ-पद्धति—स्त्री० [प० त०] पढने की रीति या ढंग।

पाठ-प्रणाली—स्त्री० [प० त०] पढने की रीति या ढग।

पाठ-भू—स्त्री० [प०त०] १. वह स्थान जहाँ वेदादि ग्रंथो का पाठ होता या किया जाता हो। २ ब्रह्मण्य।

पाठ-भेद—पु० [प० त०] वह भेद या अतर जो एक ही ग्रथ की दो प्रतियो के पाठ मे कही-कही मिलता हो। पाठातर।

पाठ-मजरी—स्त्री० [प० त०] मैना। सारिका।

पाठ-शाला—स्त्री० [प० त०] वह स्थान जहाँ विद्यार्थियो को पढना-लिखना सिखाया जाता है।

पाठशालिनी—स्त्री० [स० पाठ√शल् (गति)+णिनि+ङीप्] मैना। सारिका।

पाठशाली (लिन्)—वि० [स० पाठशाला+इनि] पाठ पढनेवाला। पु० विद्यार्थी।

पाठशालीय—वि० [स० पाठशाला+छ—ईय] पाठशाला-सबधी। पाठशाला का।

पाठांतर—पु० [स० पाठ-अतर, मयू० स०] किसी एक ही पुस्तक की विचित्र हस्तलिखित प्रतियो मे अथवा विभिन्न सपादको द्वारा सपादित प्रतियो मे होनेवाला शब्दो अथवा उनके वर्णो के क्रम मे होनेवाला भेद।

पाठा—स्त्री० [स०√पठ्+घञ्+टाप्] पाढा नाम की लता।

वि० [स० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] १ हृष्ट-पुष्ट। २ पट्ठा। जवान। पु० जवान बकरा, बैल या भैंसा। २ गाय-बैलो की एक जाति। (बुदेलखड)

पाठागार—पु० स० [पाठ-आगार, ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर किसी विषय का अध्ययन, या ग्रथो का पाठ किया जाता हो। (स्टडी रूम)

पाठालय—पु० [पाठ—आलय, प० त०] पाठशाला।

पाठालोचन—पु० [स० पाठ—आलोचन, प० त०] आज-कल साहित्यिक क्षेत्र मे, इस बात का वैज्ञानिक अनुसधान या विवेचन कि किसी साहित्यिक कृति के सदिग्ध अश का मूलपाठ वास्तव मे कैसा और क्या रहा होगा। किसी ग्रथ के मूल और वास्तविक पाठ का ऐसा निर्धारण जो पूरी छान-बीन करके किया जाय। (टेक्सचुअल क्रिटिसिज्म)

विशेष—इस प्रकार का पाठालोचन मुख्यत प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो की अनेक प्रतिलिपियो अथवा ऐसी साहित्यिक कृतियो के सबध मे होता है जिनका प्रकाशन तथा मुद्रण स्वय लेखक की देख-रेख मे न हुआ हो।

पाठिक—वि० [सं० पाठ+ठन्—इक] जो मूल पाठ के अनुसार हो।

पाठिका—वि० [स० पाठक+टाप्, इत्व] पाठक का स्त्रीलिंग रूप। स्त्री० पाठा। पाढा।

पाठित—भू० कृ० [स०√पठ्+णिच्+क्त] (पाठ) जो पढाया जा चुका हो।

पाठी (ठिन्)—वि० [स० पाठ+इनि] समस्त पदो के अत मे, पाठ करनेवाला या पाठक। जैसे—वेद-पाठी, सह-पाठी।

पु० [पाठा+इनि] चीते का पेड। चित्रक वृक्ष।

पाठीकुट—पुं० [स० पाठा√कुट् (टेढा होना)+क, पृपो० सिद्धि] चीते का पेड।

पाठीन—वि० [स० पाठि√नम् (झुकना)+ड, दीर्घ] पढानेवाला। पु० १ पहिना (मछली)। २ गूगल का पेड।

पाठ्य—वि० [स०√पठ्+ण्यत् या√पठ्+णिच्+यत्] १ जो पढा या पढाया जाने को हो। २. पढने या पढाये जाने के योग्य।

पाठ्य-क्रम—पु० [प०त०] वे सब विषय तथा उनकी पुस्तके जो किसी विशिष्ट परीक्षा मे बैठनेवाले परीक्षार्थियो के लिए निर्धारित हो। (कोर्स)

पाठ्य-ग्रंथ—पु० [सं०] पाठ्य-पुस्तक। (दे०)

पाठ्य-चर्या—स्त्री० [स०] वह पुस्तिका जिसमे विभिन्न परीक्षाओ के लिए निर्धारित विषयो तथा तत्सबधी पाठ्य-क्रमो का उल्लेख होता है। (करिक्यूलम)

पाठ्य-पुस्तक—स्त्री० [कर्म० स०] वह पुस्तक जो पाठशालाओ मे

विद्यार्थियो को नियमित रूप से पढाई जाती हो। पढाई की पुस्तक। (टेक्स्ट बुक)

पाड़—पु० [हिं०पाठ] १ धोती, साडी आदि का किनारा। २ मचान। ३. लकडी की वह जाली या ठठरी जो कूएँ के मुँह पर रखी रहती है। कटकर। चह। ४ पानी आदि रोकने का पुश्ता या बाँध। ५. वह तख्ता जिस पर अपराधी को फाँसी देने के समय खडा करते है। टिकठी। ६ इमारत बनाने के लिए खडा किया जानेवाला बाँसो का ढाँचा। पाडट। उदा०—बोसे की गर हविस हो तो गिर्द उसके पाड बाँध।—कोई शायर। ७ दो दीवारों के बीच पटिया देकर या पाटकर बनाया हुआ आधार। पाटा। दामा।

पाडल†—पु०=पाटल।

पाडलीपुर—पुं०=पाटलीपुत्र।

पाडसाली—पु० [देश०] १ दक्षिण भारत के जुलाहों की एक जाति। २. उक्त जाति का जुलाहा।

पाड़ा—पु० [सं० पट्टन] १ किसी बस्ती मे कुछ घरो का अलग विभाग या समूह। टोला। मुहल्ला। जैसे—धोबी पाडा, मोची पाडा। २. खेत की सीमा या हद।

पु० [हिं० पाठा] [स्त्री० पडिया, पाडी] भैंस का बच्चा। पँड़वा।

पु० [देश०] एक तरह की बडी समुद्री मछली।

पाडिनी—स्त्री० [सं०√पड् (इकट्ठा होना)+णिनि+ङीप्] हाँडी। हँडिया।

पाढ—पु० [सं० पाट, हिं० पाटा] १. पीढ़ा। २ पाटा। ३ गहनों पर नक्काशी करने का सुनारों का एक उपकरण। ४. लकडी की एक प्रकार की सीढी। ५. मचान।

†पु०=पाड।

पाढ़त—स्त्री० [हिं० पढना] १ पढने की क्रिया या भाव। पढत। २. वह जो पढा जाय। वह जिसका पाठ किया जाय। ३ मत्र जो पढकर फूँका जाता है। ४ कोई पवित्र पद या वाक्य जिसका जप किया जाता हो। उदा०—स्वाय जात जब आवत, पाढत जाय।—नूर मुहम्मद।

पाढर—पु० [स० पाटल] १. पाडर का पेड। २. एक प्रकार का टोना।

पाढल—पु०=पाटल।

पाढा—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा बारहसिंघा जिसकी खाल भूरे या हलके बादामी रग की होती है और जिस पर सफेद चित्तियाँ होती हैं। चित्रमृग।

†पु०=पाठा।

पाढित†—वि० [हिं० पढना] १ पढा हुआ। २ जिसे पढा जाय।

पाढी—स्त्री० [देश०] १ सूत की लच्छी। २. यात्रियों को नदी के पार पहुँचानेवाली नाव।

पाण—पु० [स०√पण् (व्यवहार)+घञ्] १ व्यापार। व्यवसाय। २ व्यापारी। ३ दाँव। बाजी। ४ सधि। समझौता। ५ हाथ। ६ प्रशसा।

पाणही—स्त्री०=पनही (जूता)।

पाणि—पु० [स०√पण्+इण] हाथ। कर।

पाणिक—वि० [स० पण+ठञ्—इक] १ व्यापार या व्यापारी-सबधी। २. दाँव या बाजी लगाकर जीता हुआ।

पु० १. व्यापारी। २. सौदा। ३ हाथ। ४ कार्तिकेय का एक गण।

पाणि-कच्छपिका—स्त्री० [मध्य० स०] कूर्ममुद्रा।

पाणि-कर्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०] १. शिव। २. वह जो हाथ से कोई बाजा बजाता हो; या ऐसा ही और कोई काम करता हो। ३ हाथ का कारीगर,। दस्तकार।

पाणिकर्ण—पु०=पाणिकर्मा (शिव)।

पाणिका—स्त्री० [स० पाणि+कन्+टाप्] एक प्रकार का गीत।

पाणि-गृहीता—वि० [ब० स०, टाप्] (स्त्री) जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। विवाहिता (पत्नी)।

पाणि-गृहीती—वि० [ब० स०, ङीप्] (स्त्री) जिसका पाणिग्रहण सस्कार हो चुका हो। विवाहिता।

पाणि-ग्रह—पुं० [स०√ग्रह् (पकडना)+अप्, ष० त०] पाणिग्रहण। (दे०)

पाणि-ग्रहण—पु० [ष० त०] १. किसी स्त्री को पत्नी रूप मे रखने और उसका निर्वाह करने के लिए उसका हाथ पकडना। २ हिंदुओं मे विवाह की एक रसम जिसमे वर उक्त उद्देश्य से अपनी भावी पत्नी का हाथ पकडता है।

पाणिग्रहणिक—वि० [स० पाणिग्रहण+ठञ्—इक] पाणिग्रहण या विवाह-सबधी। विवाह के समय का। जैसे—पाणिग्रहणिक उपहार, पाणिग्रहणिक मत्र।

पाणिग्रहणीय—वि० [स० पाणिग्रहण+छ—ईय] =पाणिग्रहणिक।

पाणिग्राह, पाणि-ग्राहक—वि० [स० पाणि√ग्रह्+अण्] [ष० त०] किसी का हाथ पकडनेवाला। पाणिग्रहण करनेवाला।

पु० वर जो विवाह के समय कन्या का हाथ पकडता है।

पाणि-ग्राह्य— वि० [तृ० त०] १ जो मुट्ठी मे आ सके या प्राप्त किया जा सके। २. जिसका पाणिग्रहण किया जा सके। जिसके साथ विवाह किया जा सके।

पाणिघ—पु० [स० पाणि√हन् (हिंसा)+ट] १. हाथ से बजाये जानेवाले बाजे। जैसे—ढोल, मृदग आदि। २ हाथ का कारीगर। दस्तकार। शिल्पी। ३. हाथ से बाजा बजानेवाला।

पाणि-घात—पुं० [तृ० त०] १. हाथ से किया जानेवाला आघात। २ थप्पड।

पाणिघ्न—पु० [सं०पाणि√हन्+टक्] १ हाथ से आघात करनेवाला। २. ताली बजानेवाला। ३ शिल्पी।

पाणिज—वि० [स० पाणि√जन्+ड] जो हाथ से उत्पन्न हुआ हो।

पुं० १. उँगली। २ नाखून। ३ नखी।

पाणि-तल—पु० [ष० त०] १ हाथ की हथेली। २ वैद्यक मे लगभग दो तोले की एक तौल या परिमाण।

पाणिताल—पु० [मध्य० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

पाणि-धर्म—पु० [मध्य० स०] विवाह सस्कार।

पाणिन—पु० [पणिन्+अण्]=पाणिनि।

पाणिनि—पु० [सं० पणिन्+अण्+इञ्] सस्कृत भाषा के व्याकरण को

चार हजार सूत्रो मे बाँधनेवाले एक प्रसिद्ध प्राचीन मुनि। (ई० पू० चौथी शताब्दी)

पाणिनीय—वि० [स० पाणिनि+छ—ईय] १ पाणिनि-सबधी। पाणिनि का। जैसे—पाणिनीय व्याकरण या सूत्र। २ पाणिनि का अनुयायी या भक्त। ३. पाणिनि का व्याकरण पढनेवाला।

पाणि-पल्लव—पु० [प० त०] हाथ की उँगलियाँ।

पाणि-पात्र—वि० [व० स०] १ हाथ मे लेकर अर्थात् अजलि से पानी पीनेवाला। २ जो अजलि से पात्र या वरतन का काम लेता हो।

पाणि-पीड़न—पु० [व० स०] १. पाणिग्रहण। विवाह। २ [प० त०] पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना। पछताना।

पाणि पुट (क)—पुं० [मध्य० स०] चुल्लू।

पाणि-प्रणयिनी—स्त्री० [प० त०] विवाहिता स्त्री। धर्मपत्नी।

पाणिबंध—पु० [व० स०] पाणिग्रहण। विवाह।

पाणिभुक् (ज्)—पु० [स० पाणि√भुज् (खाना)+क्विप्] [पाणि√भुज्+क] गूलर वृक्ष।

पाणिमर्द्द—पु० [स० पाणि√मृद् (मलना)+अण्] करमर्द्द। करौदा।

पाणिमुक्त—वि० [तृ० त०] हाथ से फेककर चलाया जानेवाला (अस्त्र)। पु० भाला।

पाणि-मुख—वि० [व० स०] हाथ से खानेवाला।
पु० बहु० मृतपूर्वज। पितर।

पाणि-मूल—पु० [प० त०] कलाई।

पाणिरुह—पु० [स० पाणि√रुह (उगना, निकलना)+क] १ उँगली। २ नाखून।

पाणि-रेखा—स्त्री० [प० त०] हथेली की रेखा। हस्त-रेखा।

पाणिवाद—वि० [स० पाणि√वद् (बोलना)+णिच्+अच्] १. मृदग, ढोल आदि बजानेवाला। २ ताली बजानेवाला।
पु० १ ढोल, मृदग आदि बाजे २ ताली बजाने की क्रिया। ताली पीटना।

पाणि-वादक—वि० [स० पाणि√वद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. हाथ से मृदग आदि बजानेवाला। २. ताली बजानेवाला।

पाणि-हता—स्त्री० [तृ० त०] ललित विस्तार के अनुसार एक छोटा तालाब जो देवताओ ने बुद्ध भगवान के लिए तैयार किया था।

पाणी—पु०=पाणि (हाथ)।

पाणीकरण—पु० [स० अलुक् स०] विवाह। पाणिग्रहण।

पाण्य—वि० [स०√पण् (स्तुति)+ण्यत्] प्रशसा और स्तुति के योग्य।

पाण्याश—वि० [स० पाणि√अश् (खाना)+अण्] हाथ से खानेवाला।
पु० मृत पूर्वज या पितर जो अपने वशजो के हाथ का दिया हुआ अन्न ही खाते है।

पातंग—वि० [स० पतग+अण्] १ फतिगे या फतिगो से सबध रखनेवाला। २ फतिगो के रग का। भूरा।

पातगि—पु० [स० पतग+इञ्] १ शनिग्रह। २ यम। २ कर्ण। ४ सुग्रीव।

पातजल—वि० [स० पतजलि+अण्] १ पतजलि-सबधी। २ पतजलिकृत।
पु० १ पतजलिकृत योगसूत्र। २ वह जो उक्त योग-सूत्र के अनुसार योगसाधन करता हो। ३ पतजलिकृत महाभाष्य।

पातजल-दर्शन—पु० [कर्म० स०] योगदर्शन।

पातंजल-भाष्य—पु० [कर्म० स०] महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रथ।

पातजल-सूत्र—पु० [कर्म० स०] योगसूत्र।

पातंजलीय—वि० [स० पातजल] १ पतजलि-सबधी। २ पतजलिकृत।

पात—पु० [स०√पत् (गिरना)+घञ्] १ अपने स्थान से हटकर, टूटकर या और किसी प्रकार गिरने या नीचे आने की क्रिया या भाव। पतन। जैसे—उल्का-पात। [√पत्+णिच्+घञ्] २ गिराने की क्रिया या भाव। पतन। जैसे—रक्तपात। ३ अपने उचित या पूर्व स्थान से नीचे आने की क्रिया या भाव। जैसे—अध पात। ४. ध्वस्त, नष्ट या समाप्त होकर गिरने की क्रिया या भाव। जैसे—शरीर-पात। ५ किसी वस्तु की वह स्थिति जिसमे वह सारी शक्ति प्राय नष्ट हो जाने के कारण सहसा गिर, ढह या विनष्ट हो जाती है। सहसा किसी चीज का गिरकर बेकाम हो जाना। (कोलैप्स) ६. किसी प्रकार जाकर कही गिरने, पडने या लगने की क्रिया या भाव। जैसे—दृष्टि-पात। ७ आघात। चोट। उदा०—चलै फटि पात गदा सिर चीर, मनो तरबूज हनेकर कीर।—कविराजा सूर्यमल। ८. गणित ज्योतिष मे, वह बिंदु या स्थान जिस पर किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा क्रातिवृत्त को काटती है। ९ वह बिंदु या स्थान जहाँ एक वृत्त दूसरे वृत्त को काटता हो। १०. ज्यामिति मे वह बिंदु जहाँ कोई वक्र रेखा मुडकर अपने किसी अश को काटती हो। (नोड)
११. ज्योतिष मे, (क) वह बिंदु जहाँ कोई ग्रह सूर्य की कक्षा को पार करता हुआ आगे बढता है, अथवा कोई उपग्रह अपने ग्रह की कक्षा को पार करता हुआ आगे बढता है। (नोड)
विशेष—साधारणत ग्रहो, नक्षत्रो की कक्षाएँ जहाँ क्रातिवृत्त को काटती हुई ऊपर चढती या नीचे उतरती है, उन्हे पात कहते है। ये स्थान क्रमात् आरोह-पात और अवरोह-पात कहलाते है। चद्रमा के कक्ष मे जो आरोह-पात और अवरोहपात पडते है वे क्रमात् राहु और केतु कहलाते है। इसी आधार पर पुराणो और परवर्ती भारतीय ज्योतिष मे राहु और केतु दो स्वतत्र ग्रह माने गये है।
पु० [√पत्+णिच्+अच्] राहु।
पु० [स० पत्र] १ वृक्ष का पत्ता। पत्र।
मुहा०—पातो आ लगना=पतझड होना या उसका समय आना।
२ वृक्ष के पत्ते के आकार का एक गहना जो कान मे पहना जाता है। पत्ता। ३ चाशनी। शीरा।
पु० [स० पात्र] कवि। (डि०)

पातक—वि० [स० √पत्+णिच्+ण्वुल्—अक] पात करने अर्थात् गिरानेवाला।
पु० ऐसा बडा पाप जो उसके कर्ता को नरक मे गिरानेवाला हो। ऐसा पाप जिसका फल भोगने के लिए नरक मे जाना पडता हो।
विशेष—हमारे यहाँ के धर्मशास्त्रो मे अति-पातक, उप-पातक, महा-पातक आदि अनेक भेद किये गये है। साधारण पातको के लिए उनमे प्रायश्चित्त का भी विधान है।

पातकी (किन्)—वि० [सं० पातक+इनि] पातक माने जानेवाले कर्मों के फल भोग के लिए नरक मे जानेवाला, अर्थात् बहुत बडा पापी।

पातघबरा—वि० [हिं० पात+घबराना] १ पत्तों की आहट तक से भयभीत और विकल होनेवाला। २. बहुत जल्दी घबरा जानेवाला। ३ बहुत बडा कायर या डरपोक।

पातन—पु० [सं०√पत्+णिच्+ल्युट्—अन] १ गिराने या नीचे ढकेलने की क्रिया या भाव। २. फेंकने की क्रिया या भाव। ३ वैद्यक मे, पारा शोधने के आठ सस्कारो मे से पाँचवाँ सस्कार।

पातनीय—वि० [सं०√पत्+णिच्+अनीयर्] १ जिसका पात हो सके या किया जाने को हो। २ जो गिराया जा सके या गिराया जाने को हो।

पातबंदी—स्त्री० [सं० पात या हिं० पाँति ?+बदी] वह विवरण जिसमे किसी की सपत्ति और देय तथा प्राप्य धन का उल्लेख हो।

पातयिता (तृ)—वि० [सं०√पत्+णिच्+तृच्] १. गिरानेवाला। २. फेकनेवाला।

पातर—वि० [सं० पात्रट, हिंदी पतला का पुराना रूप] १. जिसका दल मोटा न हो। पतला। २ क्षीणकाय। ३ बहुत ही सकीर्ण और तुच्छ स्वभाववाला। ४ नीच कुल का। अप्रतिष्ठित। उदा०—मयला अकलै मूल पातर खाँड खाँड करै भूखा।—सूर।

स्त्री०=पत्तल।

स्त्री० [सं० पातिली=एक विशेष जाति की स्त्री] १. वेश्या। २ तितली।

पातरा†—वि० [स्त्री० पातरी]=पतला।

पातराज—पु० [देश०] एक तरह का साँप।

पातरि (री)—स्त्री०=पातर (वेश्या)।

पातल†—वि०=पतला।

†स्त्री०=पत्तल।

†स्त्री०=पातर (वेश्या)।

पातला†—वि० [स्त्री० पातली] =पतला।

पातव्य—वि० [सं०√पा (रक्षा करना)+तव्यत्] १. जिसकी रक्षा की जानी चाहिए। २. पीये जाने योग्य।

पातशाह—पु० [फा० बादशाह] [भाव०पातशाही] बादशाह। महाराज।

पाता (तृ)—वि० [सं०√पा+तृच्] १. रक्षा करनेवाला। २. पीनेवाला।

†पु०=पत्ता।

पाताखत—पु० [सं० पत्र+अक्षत] १ पत्र और अक्षत। २. देव पूजने की साधारण या स्वल्प सामग्री। ३. तुच्छ भेंट।

पातावा—पु० [फा०पाताव.] १ मोजे या जुराव के ऊपर पहना जानेवाला एक प्रकार का जूते का खोल। २ बूट, सैंडल आदि कुछ विशिष्ट जूतों के तलों के ऊपरी भाग मे उसी नाप या आकार-प्रकार का लगाया जानेवाला चमडे का टुकडा। ३ जुराव। मोजा।

पातार†—पु०=पाताल।

पाताल—पु० [सं०√पत्+आलञ्] १ पृथ्वी के नीचे के कल्पित सात लोकों मे से एक जो सबसे नीचे है और जिसमे नाग लोग वास करते हुए माने गये हैं। नाग लोक। अन्य ६ लोक ये है—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल और महातल। २. पृथ्वी के नीचे के सातों लोकों मे से प्रत्येक लोक। ३ बहुत अधिक गहरा और नीचा स्थान। ४ गुफा। ५. बिल। विवर। ६. बडवानल। ७. जन्म-कुडली मे जन्म के लग्न से चौथा स्थान। ८ पाताल यत्र। (दे०)

पाताल-केतु—पु० [ब० स०] पाताल मे रहनेवाला एक दैत्य।

पाताल-खंड—पु० [ष० त०] पाताल (लोक)।

पाताल-गंगा—स्त्री० [मध्य० स०] १. पाताल लोक की एक नदी का नाम। २. भूगर्भ के अदर बहनेवाली कोई नदी।

पाताल-गारुड़ी—स्त्री० [ष० त०] छिरिहटा नामक लता।

पाताल-तुंबी—स्त्री० [ष० त०] एक तरह की लता। पातालतौंबी।

पाताल-तौंबी—स्त्री०=पाताल-तुंबी।

पाताल-निलय—वि० [ब० स०] जिसका घर पाताल मे हो। पाताल मे रहनेवाला।

पुं० १. नाग जाति का व्यक्ति। २. साँप। ३. दैत्य। राक्षस।

पाताल-निवास—पु० =पाताल-निलय।

पाताल-यंत्र—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा धातुएं गलाई, ओषधियाँ पिघलाई तथा अर्क, तेल आदि तैयार किये जाते है।

पाताल-वासिनी—स्त्री० [सं० पाताल√वस् (बसना)+णिनि+ङीप्] नागवल्ली लता। पान की लता।

पाताली—स्त्री० [देश०] ताड के फल के गूदे की बनाई तथा सुखाकर खाई जानेवाली टिकिया।

†वि० [सं० पाताल] १. पाताल-सबंधी। २. पाताल मे रहने या होनेवाला। ३. पृथ्वी के नीचे होनेवाला। (अडर ग्राउड) जैसे—वृक्ष के पाताली तने।

पाताली पत्ती—स्त्री० [हिं०] वनस्पति विज्ञान मे, उत्पत्ति-भेद से पत्तियो के चार प्रकारो मे से एक। प्राय भूमि पर अपने तने फैलानेवाले पौधों की पत्तियाँ जो प्राय बहुत छोटी होती है। (स्केल लीफ) जैसे—आलू की पाताली पत्ती।

पातालीय—वि० [सं०] १. पाताल-सबधी। २ पाताल का। २ पाताल मे अर्थात् पृथ्वी-तल के नीचे या भूगर्भ मे रहने या होनेवाला।

पातालौका (कस्)—वि० [सं० पाताल-ओकस् ब० स०] पाताल लोक मे रहनेवाला।

पुं० १ नाग जाति का व्यक्ति। २. साँप।

पाति—स्त्री० १=पाती (चिट्ठी)। २=पत्ती।

पु० [सं०√पा+अति] १ स्वामी। २ पति। २ पक्षी।

पातिक—वि० [सं० पात+ठन्—इक्] १. फेंका हुआ। २. नीचे गिराया या ढकेला हुआ।

पु० सूँस नामक जल-जतु।

पातिग†—पु०=पातक। उदा०—अनेक जनम नां पातिग छूटै।—गोरखनाथ।

पातित—भू० कृ० वि० [सं०√पत्+णिच+क्त] १. गिराया हुआ। २. फेका हुआ। ३ झुकाया हुआ।

पातित्य—पु० [सं० पतित+ष्यञ्] १. पतित होने की अवस्था या भाव। गिरावट। २ अध. पतन।

पातिल—स्त्री० [सं० पातिली] एक तरह की मिट्टी की हँडिया जिसमें विवाह आदि के समय दीया जलाया जाता है तथा हँड़िया का आवा मुँह ढक्कन से ढक दिया जाता है।
वि०=पतला।

पातिली—स्त्री० [सं० पाति√ली (लीन होना) +ड+अण्+ङीप्] १. जाल। फंदा। २ मिट्टी की पातिल नामक हँडिया। ३ किसी विशिष्ट जाति की स्त्री।

पातिव्रत—पु०=पातिव्रत्य।

पातिव्रत्य—पु० [सं० पतिव्रता+ष्यञ्] पतिव्रता होने की अवस्था, गुण और भाव। पति के प्रति होनेवाली पूर्ण निष्ठा की भावना।

पातिसाह*—पु०=पातशाह (बादशाह)।

पाती—स्त्री० [सं० पत्री, प्रा० पत्ती] १ चिट्ठी। पत्री। पत्र। २ निशान। पता। ३ वृक्ष का पत्ता या पत्ती।
स्त्री० [हिं० पति] १ प्रतिष्ठा। सम्मान। २. लोक-लज्जा।

पातुक—वि० [सं०√पत्+उकञ्] १. गिरनेवाला। २ पतनोन्मुख।
पु० १ झरना। २ पहाड की ढाल। ३ एक स्तनपायी दीर्घाकार जल-जतु। जल-हस्ती।

पातुर—स्त्री० [सं० पातिली=स्त्री विशेष] वेश्या।

पातुरनी†—स्त्री०=पातुर (वेश्या)।

पात्य—वि० [सं०√पत्+णिच्+यत्] १. जो गिराया जा सकता हो। २ दंडित किये जाने के योग्य। ३ प्रहार करने योग्य। ४. [√पत्+ण्यत्] गिरने योग्य।
पु० [पति+यक] पति होने का भाव। पतित्व।

पात्र—पु० [सं०√पा (पीना, रक्षा करना)+ष्ट्रन्] [स्त्री० पात्री] [भाव० पात्रता] १ वह आधान जिसमे कुछ रखा जा सके। बरतन। भाजन। २ ऐसा बरतन जिसमे पानी पीया या रखा जाता हो। ३ यज्ञ मे काम आनेवाले उपकरण या बरतन। यज्ञ-पात्र। ४ जल का कुड या तालाब। ५ नदी की चौडाई। पाट। ६ ऐसा व्यक्ति जो किसी काम या बात के लिए सब प्रकार से उपयुक्त या योग्य समझा जाता हो। अधिकारी। जैसे—किसी को कुछ देने से पहले यह देख लेना चाहिए कि वह उसे पाने या रखने का पात्र है या नही। ७ उपन्यास, कहानी, काव्य, नाटक आदि मे वे व्यक्ति जो कथा-वस्तु की घटनाओ के घटक होते है और जिनके क्रिया-कलाप या चरित्र से कथा-वस्तु की सृष्टि और परिपाक होता है। ८ नाटक मे, वे अभिनेता या नट जो उक्त व्यक्तियो की वेष-भूषा आदि धारण कर के उनके चरित्रो का अभिनय करते है। अभिनेता। जैसे—इस नाटक मे दस पुरुष और छ स्त्रियाँ पात्र है। ९ राज्य का प्रधान मत्री। १० वृक्ष का पत्ता। पत्र। ११ वैद्यक मे, चार सेर की एक तौल। आढक। १२ आज्ञा। आदेश।
वि० [स्त्री० पात्री] जो किसी कार्य या पद के लिए उपयुक्त होने के कारण चुना या नियुक्त किया जा सकता हो। (एलिजिबुल)

पात्रक—पु० [सं० पात्र+कन्] १. प्याली, हाँडी आदि पात्र। २ भिखमगों का भिक्षापात्र।

पात्रट—पु० [सं० पात्र√अट्+अच्] १. पात्र। प्याला। २. फटा-पुराना कपडा। चियडा।

पात्रटीर—पु० [सं० पात्र√अट्+ईरन्] १. योग्य मत्री या सचिव। २. चाँदी। ३ किसी धातु का बना हुआ बरतन। ४ अग्नि। ५ कौआ। ६. कक (पक्षी)। ७ लोहे मे लगनेवाला जग या मोरचा। ८ नाक से बहनेवाला मल।

पात्रता—स्त्री० [सं० पात्र+तल्+टाप] पात्र (अर्थात् किसी कार्य, पद, दान-दक्षिणा आदि का योग्य अधिकारी) होने की अवस्था, गुण और भाव।

पात्रत्व—पु० [सं० पात्र+त्व] पात्रता।

पात्र-दुष्ट-रस—पु० [सं० दुष्ट-रस, कर्म० स०, पात्र-दुष्ट-रस, स० त०] कविता मे परस्पर विरोधी बातें कहने का एक दोष। (कवि केशवदास)

पात्र-पाल—पु० [सं० पात्र√पाल्+णिच्+अण] १ तराजू की डडी। २ पतवार।

पात्रभृत्—पु० [सं० पात्र√भृ (धारण करना)+क्विप्] बरतन माँजने-धोनेवाला नौकर।

पात्र-वर्ग—पु० [ष० त०] १ किसी साहित्यिक रचना के कुल पात्र। २ अभिनय करनेवालों का समूह।

पात्र-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] बरतन माँजने-धोने की क्रिया, भाव और पारिश्रमिक।

पात्र-शेष—पु० [स० त०] बरतनो मे छोडा जानेवाला उच्छिष्ट या जूठा भोजन। जूठन।

पात्रासादन—पु० [सं० पात्र-आसादन, ष० त०] यज्ञपात्रों को यथास्थान या यथाक्रम रखना।

पात्रिक—वि० [सं० पात्र+ष्ठन्—इक] जो पात्र (आढक नामक तौल) से तौला या मापा गया हो
पु० [स्त्री० अल्पा० पात्रिका] छोटा पात्र या बरतन।

पात्रिका—स्त्री० [सं० पात्रिक+ङीष्] १. छोटा पात्र। २ थाली।

पात्रिय—वि० [सं० पात्र+घ—इय] [पात्र+यत्] जिसके साथ बैठकर एक ही पात्र मे भोजन किया जाय या किया जा सके। सह-भोजी।

पात्री (त्रिन्)—वि०, पु० [सं० पात्र+इनि] १ जिसके पास बरतन हो। पात्रवाला। २. जिसके पास सुयोग्य पात्र या अधिकारी व्यक्ति हो।
स्त्री० १ पात्र का स्त्री रूप। (दे० 'पात्र') २. छोटा पात्र या बर-तन। ३. एक प्रकार की अँगीठी या छोटी भट्ठी। ४ साहित्यिक रचना का कोई स्त्री पात्र। ५ नाटक आदि मे अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।

पात्रीय—वि० [सं० पात्र+छ—ईय] पात्र-सबधी। पात्र का।
पु० एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

पात्रीर—पु० [सं० पात्री√रा (देना)+क] वह पदार्थ जिसकी यज्ञ आदि मे आहुति दी जाती हो।

पात्रे-बहुल—वि० [सं० अलुक् स०] दूसरों का दिया हुआ भोजन करनेवाला। परान्न-भोजी।

पात्रे-समित—वि० [सं० अलुक् स०] पात्रेबहुल। (दे०)

पात्रोपकरण—पु० [सं० पात्र-उपकरण, ष० त०] अलकरण के छोटे-मोटे साधन।

पात्र्य—वि० [स० पात्र+यत्] जिसके साथ बैठकर एक ही पात्र मे भोजन किया जाय या किया जा सके।

पाथ—पु० [स०√पा (पीना, रक्षा)+थ] १. जल। २. सूर्य। ३ अग्नि। ४. अन्न। ५ आकाश। ६ वायु।

†पु०=पथ (मार्ग)।

पाथना—स० [स० प्रथन या थापना का वर्ण-विपर्यय] १. गीली मिट्टी, ताजे गोबर आदि को थपथपाते हुए या साँचो मे ढालकर छोटे छोटे पिंड बनाना। २. मारना-पीटना।

पाथ-नाथ—पु० [ष० त०] समुद्र।

पाथ-निधि—पु० [ष० त०] दे० 'पाथोनिधि'।

पाथर†—पु०=पत्थर।

पाथरण†—पु० [स० प्रस्तरण, प्रा० पत्थरण] बिछौना। (राज०)

पाथ-राशि—पु० [ष० त०] समुद्र।

पाथस्—पु० [स०√पा (पीना या रक्षा)+असुन्, युक्] १. जल। २ अन्न। ३ आकाश।

पाथस्पति—पु० [स० ष० त०] वरुण।

पाथा—पु० [स० प्रस्थ] १. एक तौल जो कच्चे चार सेर की होती है। २ उतनी भूमि जितनी मे उक्त मान का अन्न बोया जा सके। ३. अनाज नापने का एक प्रकार का बडा टोकरा। ४. हल की खोपी जिसमे फाल जडा रहता है।

पु० [?] १ कोल्हू हाँकनेवाला व्यक्ति। २. अनाज मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।

†पुं० दे० 'पाटा'।

पाथी† (थिस्)—पुं० [स०√पा (पीना)+इसिन्, थुक्] १ समुद्र। २ आँख। ३. घाव पर का खुरड या पपडी। ४. दूध, मट्ठे का वह मिश्रण जिसमे प्राचीन काल मे पितृ-तर्पण किया जाता था।

पाथी†—पु० [हिं० पथ] पथिक। बटोही।

मुहा०—पाथी होना=कही से चुपचाप चल देना। चलते बनना। उदा०—साथी पाथी भये जाग अजहूँ निसि बीती।—दीन दयाल गिरि।

पाथेय—वि० [स० पथिन्+ढञ्—एय] पथ-संबंधी। पथ का।

पु० १. वे खाद्य पदार्थ जो यात्रा के समय यात्री रास्ते मे खाने-पीने के लिए ले जाते है। रास्ते का भोजन। २ वह धन जो रास्ते के खर्च के लिए पास रखा जाता है। ३ वह साधन या सामग्री जिसकी आवश्यकता कोई काम करने के समय पडती हो और जिससे उस काम मे सहायता या सहारा मिलता हो। सबल। ४ कन्या राशि।

पाथोज—पु० [स० पाथस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] कमल।

पाथोद—पु० [स० पाथस्√दा (देना)+क] बादल। मेघ।

पाथोधर—पु० [स० पाथस्√धृ (धारण करना)+अच] बादल। मेघ।

पाथोधि—पु० [स० पाथस्√धा+कि] समुद्र।

पाथोन—पु० [यू० पथेनस] कन्या राशि।

पाथोनिधि—पु० [स० पाथस्-निधि, ष० त०] समुद्र।

पाथ्य—वि० [स० पाथस्+ड्यन्] १ आकाश मे रहनेवाला। २ हृदयाकाश मे रहनेवाला। ३ वायु या हवा मे रहनेवाला।

पाद—पु० [स०√पद् (गति)+घञ्] १. चरण। पैर। पाँव। २. किसी चीज का चौथाई भाग। चतुर्थांश। जैसे—चिकित्सा के चार पाद है। ३. छद, श्लोक, आदि का चौथाई भाग जो एक चरण या पद के रूप मे होता है। ४ ज्यामिति मे, किसी क्षेत्र या वृत्त का चौथाई अंश। (क्वाड्रेन्ट) ५ कोई ऐसी चीज जिसके आधार पर कोई दूसरी चीज खडी या ठहरी हो। ६ किसी वस्तु का नीचेवाला भाग। तल। जैसे—पर्वत या वृक्ष का पाद भाग। ७. ग्रथ या पुस्तक का कोई विशिष्ट अंश। खड या भाग। ८ किसी बडे पर्वत के पास का कोई छोटा पर्वत। ९. किरण। रश्मि। १०. चलने की क्रिया या भाव। गति। गमन। ११. शिव।

पु० [स० पर्द] मलद्वार से निकलनेवाली वायु। अपानवायु।

पादक—वि० [स०√पद्+ण्वुल्—अक] १. जो खूब चलता हो। चलनेवाला। २. किसी चीज का चौथाई अंश।

पु० छोटा पैर।

पाद-कटक—पु० [ष० त०] नूपुर।

पाद-कमल—पु० [कर्म० स०] चरण-कमल।

पाद-कीलिका—स्त्री० [ष० त०] नूपुर।

पाद-कृच्छ्—पु० [ष० त०] प्रायश्चित्त करने के लिए चार दिन तक रखा जानेवाला एक तरह का व्रत।

पादक्रमिक—वि० [स० पद-क्रम, ष० त०,+ठक्—इक] वेदो का पद-क्रम जानने या पढनेवाला।

पाद-क्षेप—पु० [ष० त०] चलने के समय पैर रखना। चलना।

पाद-गंडीर—पु० [स० पाद-गण्डि+ई, ष० त०,+र] फीलपाँव या श्लीपद नामक रोग।

पाद-ग्रंथि—स्त्री० [ष० त०] टखना।

पाद-ग्रहण—पु० [ष० त०] पैर छूकर प्रणाम करने का एक प्रकार।

पाद-चतुर—वि० [स० त०] निंदा करनेवाला।

पु० १. बकरा। २ पीपल का पेड। ३ बालू का भीटा। ४ ओला।

पादचत्वर—वि०, पु० [स०] पाद-चतुर।

पादचारी(रिन्)—वि० [स० पाद√चर् (गति)+णिनि] १ पैरो से चलनेवाला। २ पैदल चलनेवाला।

पुं० प्यादा।

पादज—वि० [स० पाद√जन्+ड] जो पैरो से उत्पन्न हुआ हो।

पु० शूद्र।

पाद-जल—पु० [स० मध्य० स०] १. वह जल जिसमे किसी के पैर धोए गये हो। चरणोदक। २ मट्ठा जिसमे चौथाई अंश पानी मिला हो।

पादजाह—पु० [स० पाद+जाहच] १. पैर की एडी। २. पैर का तलवा। ३ टखना। ४ वह भूमि जहाँ पहाड शुरू होता हो। ५. चरणो का सान्निध्य।

पाद-टिप्पणी—स्त्री० [मध्य० स०] वह टिप्पणी जो किसी ग्रथ में पृष्ठ के निचले भाग मे सूचना, निर्देश आदि के लिए लिखी गई हो। तल-टीप। (फुटनोट)

पाद-टीका—स्त्री०=पाद-टिप्पणी। (दे०)

पाद-तल—पु० [प० त०] पैर का तलवा।

पादत्र—पु० [स० पाद√त्रा (रक्षा)+क] पाद-त्राण।

पाद-त्राण—वि० [ब० स०] पैरो की रक्षा करनेवाला।

पु० पैरो की रक्षा के लिए पहनी जानेवाली चीज। जैसे—खडाऊँ, चप्पल, जूता आदि।

पाद-त्रान+—पु०=पाद-त्राण।

पाद-दलित—वि० [तृ० त०] पद-दलित।

पाद-दारिका—स्त्री० [प० त०] बिवाई (रोग)।

पाद-दाह—पु० [स० पाद√दह् (जलाना)+अण्] १ वात रोग के कारण पैर मे होनेवाली जलन। २ उक्त जलन पैदा करनेवाला वात रोग।

पाद-धावन—पु० [प० त०] १ पैर धोने की क्रिया। २ वह बालू या मिट्टी जिससे मलकर पैर धोते है।

पाद-धावनिका—स्त्री० [प० त०] वह बालू जिसमे पैर रगडकर धोये जाते है।

पाद-नख—पु० [प० त०] पैरो की उँगलियो के नाखून।

पादना—अ० [हिं० पाद] १ मलद्वार से वायु विशेषत शब्द करती हुई वायु निकालना। २. खेल मे, विपक्षी द्वारा अधिक दौडाया, भगाया तथा परेशान किया जाना।

पाद-नालिका—स्त्री० [प० त०] नूपुर।

पाद-निकेत—पुं० [प० त०] पैर रखने की छोटी चौकी। पाद-पीठि।

पाद-न्यास—पु० [प० त०] १ बराबर पैर रखते हुए चलना। २ नाचना।

पाद-पंकज—पु० [उपमि० स०] चरण-कमल।

पादप—पु०[स० पाद√पा (पीना)+क] १ वृक्ष। पेड। २ पाद निकेत। पाद पीठ।

पादप-खड—पुं० [प० त०] १ वृक्षो का समूह। २ जगल। वन।

पाद-पथ—पु० [प० त०] पैदल चलने का छोटा और सँकरा मार्ग। पैदल का रास्ता, जिस पर सवारी न जा सकती हो। (फुटपाथ)

पाद-पद्धति—स्त्री० [प० त०] १ रास्ता। २ पगडडी।

पादपा—स्त्री० [स० पाद√पा (रक्षा करना)+क+टाप्] १ खडाऊँ। २ जूता।

पाद-पालिका—स्त्री० [प० त०] नूपुर।

पाद-पाश—पु० [प० त०] १ वह रस्सी जिससे घोडो के पिछले दोनो पैर बाँधे जाते हैं। पिछाडी। २ नूपुर।

पादपाशी—स्त्री० [स० पादपाश+ङीष] १ पैर मे बाँधने की जजीर या सिकडी। २ बेडी। ३ एक लता।

पाद-पीठि—पु० [प० त०] वह पीढा या छोटी चौकी जिस पर ऊँचे आसन पर बैठनेवाले पैर रखकर बैठते है। (पेडेस्टल)

पाद-पीठिका—स्त्री० [प० त०] १ नाई का पेशा। २ सफेद पत्थर।

पाद-पूरण—पु० [प० त०] १ किसी श्लोक या पद के किसी चरण को पूरा करना। पादपूर्ति। २ वह अक्षर या शब्द जिससे किसी श्लोक या पद की पूर्ति होती हो।

पाद-पूर्ति—स्त्री० [प० त०] कविता मे, छद का चरण पूरा करने के लिए उसमे कोई अक्षर या शब्द जोडना या बढाना। चरणपूर्ति।

पाद-प्रक्षालन—पु० [प० त०] पैर धोना।

पाद-प्रणाम—पु० [स० त०] साष्टाग दडवत्। पाँव पडना।

पाद-प्रतिष्ठान—पु० [प० त०] पाद-पीठ। (दे०)

पाद-प्रवारण—पु० [ब० स०] १ खडाऊँ। २ जूता।

पाद-प्रसारण—पु० [प० त०] पैर फैलाने की क्रिया या भाव।

पाद-प्रहार—पु० [तृ० त०] पैर से किया जानेवाला आघात या प्रहार। लात मारना। ठोकर मारना।

पाद-बध—पु० [प० त०] १ कैदियो, पशुओ आदि के पैरो मे बाँधी जानेवाली जजीर। २ बेडी।

पाद-बधन—पु० [प० त०] पाद-बध।

पाद-भट—पु० [मध्य० स०] पैदल सिपाही। प्यादा।

पाद-भाग—पु० [प० त०] १. पैर का निचला भाग। २ चौथा हिस्सा। चौथाई।

पाद-मुद्रा—स्त्री० [प० त०] चरण-चिह्न।

पाद-मूल—स्त्री० [प० त०] १ पैर का निचला भाग। २ पर्वत की तराई।

पादरक्ष (क)—पु० [स० पाद√रक्ष् (रक्षा करना)+अण्, पाद-रक्षक, प० त०] वह जिससे पैरो की रक्षा की जाय। जैसे—जूता, खडाऊँ आदि।

पाद-रज (जस्)—स्त्री० [प० त०] चरण-धूलि।

पाद-रज्जु—स्त्री० [प० त०] वह रस्सी या सिक्कड जिससे पर, विशेषत हाथी के पैर बाँधे जाते है।

पादरथी—स्त्री० [स० रथ+ङीप्, पाद-रथी, प० त०] खडाऊँ।

पादरी—पु० [पुर्त्त० पैड्रे] मसीही धर्मावलबियो का धर्मगुरु या पुरोहित।

पादरोह, पादरोहण—पु० [स० पाद√रुह् (उत्पत्ति)+अच्] [स० पाद√रुह्+ल्यु—अन] बड का पेड।

पाद-लग्न—वि० [स० त०] जो पैरो से आ लगा हो, अर्थात् शरण मे आया हुआ।

पाद-लेप—पु० [प० त०] पैरो मे किया जानेवाला आलते, महावर आदि का लेप।

पाद-वंदन—पु० [प० त०] १ पैर पकडकर प्रणाम करना। २ चरणो की पूजा, सेवा या स्तुति।

पाद-वल्मीक—पु० [स० त०] फीलपाँव (रोग)।

पादविदु—पु० [स०]=अध स्वस्तिक।

पादविक—पु० [स० पदवी+ठक्—इक] पथिक।

पाद-वेष्टनिक—पु० [प० त०] पाताबा। मोजा।

पाद-शब्द—पु० [प० त०] किसी के चलने से होनेवाला शब्द। पैर की आहट।

पाद-शाखा—स्त्री० [प० त०] १ पैर की उँगली। २ पैर की नोक।

पादशाह—पु० [फा०] [भाव० पादशाही] बादशाह। सम्राट्।

पादशाहजादा—पु० [फा०] बादशाहजादा। महाराजकुमार।

पादशाही—वि० [फा०] बादशाह का।

स्त्री० १. राज्य। २. शासन।

पादशिष्ट-जल—पु० [स० पाद-शिष्ट, तृ० त०; पादशिष्ट-जल, कर्म० स०] ऐसा जल जो औटाकर चौथाई कर लिया गया हो। (वैद्यक)

पादशुश्रूषा—स्त्री० [ष० त०] चरण-सेवा। पैर दबाना।

पाद-शैल—पुं० [मध्य० स०] बड़े पहाड़ के नीचे या पास का कोई छोटा पहाड़।

पाद-शोथ—पुं० [ष० त०] १ पैर में होनेवाली सूजन। २. पैरों में सूजन होने का रोग। फीलपाँव।

पाद-शौच—पुं० [ष० त०] पैर धोना।

पाद-शलाका—स्त्री० [ष० त०] पैर की नली।

पाद-सेवन—पुं०=पाद-सेवा।

पाद-सेवा—स्त्री० [ष० त०] चरण दबाना।

पाद-स्तंभ—पुं० [ष० त०] वह लकड़ी जो किसी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाई जाती है।

पाद-स्फोट—पुं० [ष० त०] वैद्यक के अनुसार ग्यारह प्रकार के क्षुद्र कुष्ठों में से एक।

पाद-स्वेदन—पुं० [ष० त०] पैरों विशेषत पैरों के तलवों में पसीना आना।

पाद-हत—भू० कृ० [तृ० त०] जिस पर पैर का आघात किया गया हो। जिसे पैर से मारा गया हो।

पाद-हर्ष—पुं० [ष० त०] एक वात रोग जिसमें पैरों में झुनझुनी होती है।

पाद-हीन—वि० [तृ० त०] १ पाद या पैर से रहित। २. जिसका चौथा चरण न हो।

पादांक—पुं० [सं० पाद-अंक, ष० त०] पद-चिह्न।

पादांकुलक—पुं० दे० 'पादाकुलक'।

पादांगद—पुं० [सं० पाद-अंगद, ष० त०] नूपुर।

पादांगुलि (ली)—स्त्री० [पाद-अंगुलि, ष० त०] पैर की उँगली।

पादांगुष्ठ—पुं० [सं० पाद-अंगुष्ठ, ष० त०] पैर का अँगूठा।

पादांत—पुं० [सं० पाद-अंत, ष० त०] पद का अंतिम भाग।

पादांतस्थित—वि० [सं० पादांत-स्थित स० त०] पद के अन्त में होनेवाला।

पादांबु—पुं० [सं० पाद-अंबु, मध्य० स०] १ पैरों के धोने पर निकला हुआ जल। २ [ब० स०] मट्ठा।

पादांभ (स्)—पुं० [सं० पाद-अंभस्, मध्य० स०] पैर धोने का जल।

पादाकुल—पुं०=पादाकुलक।

पादाकुलक—पुं० [सं० पाद-आकुल, तृ० त०,+कन्] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं।

विशेष—भानु कवि के मत से वह छंद पादाकुलक कहलाता है जिसके प्रत्येक चरण में चार चौकल हों। यथा—गुरु-पद मृदु रज मंजुल अंजन नयन अमिय दृग दोष विभंजन।—तुलसी। परन्तु अन्य आचार्यों के मत से १६ मात्राओंवाले सभी छंद पादाकुलक कहलाते हैं। परन्तु उनके आरंभ में द्विकल अवश्य होना चाहिए, पर त्रिकल कभी नहीं होना चाहिए। इस दृष्टि से अरिल्ल, डिल्ला और पद्धति या छंद भी पादाकुलक वर्ग में आ जाते हैं। ऐसे छंदों की चाल त्रोटक वृत्त की चाल से मिलती-जुलती होती है।

पादाक्रांत—वि० [सं० पाद-आक्रांत, तृ० त०] पैरों से कुचला या रौंदा हुआ। पद-दलित।

पादाग्र—पुं० [सं० पाद -अग्र, ष० त०] पैर का अगला भाग।

पादाघात—पुं० [पाद-आघात, ष० त०] पैर से किया जानेवाला प्रहार। पाद-प्रहार।

पादात—पुं० [सं० पदाति+अण्] १ पैदल सिपाही। २. पैदल सेना।

पादाति (क)—पुं० [सं० पाद√अत् (गमन)+इण्] [पादाति+कन्] पैदल सिपाही।

पादानत—भू० कृ० [पाद-आनत, स० त०] पैरों पर झुका या पड़ा हुआ।

पादा-नोन—पुं० [देश०] काला नमक।

पादाभ्यंजन—पुं० [पाद-अभ्यंजन, ष० त०] १ पैरों में कोई स्निग्ध पदार्थ मलने या लगाने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार लगाया जानेवाला स्निग्ध पदार्थ।

पादायन—पुं० [सं० पाद+फक्—आयन] पाद ऋषि का वंशज।

पादारक—पुं० [सं० पाद√ऋ (गति)+ण्वुल्—अक] १ नाव के पार्श्वों में लंबाई के बल लगी हुई दोनों पटरियों में से हर एक जिस पर आरोही बैठते हैं। २ मस्तूल।

पादारघ*—पुं०=पावड़ी।

पादारविंद—पुं० [सं० पाद-अरविन्द, उपमि० स०] चरण रूपी कमल। चरण-कमल।

पादार्पण—पुं० [सं० ष० त०] =पदार्पण।

पादालिंद—पुं० [सं० पाद-अलिंद, ब० स०] [स्त्री० अल्पा० पादालिंदा, पादालिंदी] नाव। नौका।

पादावर्त—पुं० [सं० पाद-आ√वृत् (बरतना)+अन्] पैरों से चलाया जानेवाला एक तरह का पुराना चक्र या यंत्र जिसके द्वारा कुएँ में से सिंचाई के लिए पानी निकाला जाता था।

पादावसेचन—पुं० [सं० पाद-अवसेचन, ष० त०] १. चरण धोना। २. पैर धोने का पानी।

पादाविक—पुं० [सं०=पादातिक, पृषो० साधु] पैदल सिपाही। प्यादा।

पादावृत्ति—स्त्री० [सं०] साहित्य में, यमक अलंकार का एक भेद जिसमें पूरे पाद की आवृत्ति होती है। यथा—नगन जड़ाती थे वे नगन जड़ाती हैं।—भूषण।

पादाष्ठील—पुं० [सं०] पैर का टखना।

पादासन—पुं० [सं० पाद-आसन, ष० त०] वह आसन जिस पर पैर रखे जायँ। पाद-पीठ।

पादाहत—भू० कृ० [सं० पाद-आहत, तृ० त०] [भाव० पादाहति] जिसे पैर से ठोकर लगाई गई हो।

पादाहति—स्त्री० [तृ० त०] पैर से लगाई जानेवाली ठोकर।

पादिक—वि० [सं० पाद+ठक्—इक] जो किसी पूरी वस्तु या एक इकाई के चौथाई अंश के बराबर हो।

पुं० १ किसी पूरी वस्तु या एक इकाई का चतुर्थांश। २ पादकृच्छ्र नामक व्रत।

पादी (दिन्)—वि० [सं० पाद+इनि] १ जिसे पाद या पैर हो। पैरोंवाला। २ चार चरणोंवाला। ३. चौथाई अंश का हिस्सेदार। पुं० पैरोंवाला कोई जीव। विशेषत बछुआ, घड़ियाल मगर आदि जल-जन्तु। २ चौथाई अंश का स्वामी या मालिक।

पादीय—वि० [सं० पाद+छ—ईय] १ पद या मर्यादावाला। २ किसी विशिष्ट पद या स्थान पर रहनेवाला। जैसे—कुमार-पादीय= कुमार पद पर प्रतिष्ठित।

पादुक—वि० [स०√पद् (गति)+उकञ्] १ पैरो से चलनेवाला। २ पैदल चलनेवाला।

पादुका—स्त्री० [स० पादु+क+टाप्, ह्रस्व] १ खड़ाऊँ। २ जूता। ३ पैरो मे पहनने का कोई उपकरण। पदत्राण। (फूट वियर) जैसे—खडाऊँ, चप्पल, जूता आदि।

पादू—स्त्री० [स० पद+ऊ, णित्व—चि वृद्धि] जूता।
वि० [हिं० पादना] बहुत पादनेवाला। पदोड़ा।

पादोदक—पु० [पाद-उदक, मध्य० स०] १ वह जल जिसमे पैर धोया गया हो। चरणोदक। २ चरणामृत।

पादोदर—वि० [स० पाद-उदर, ब० स०] जिसके पैर उदर मे अर्थात् अदर हो।
पु० सर्प। साँप।

पाद्म—वि० [स० पद्म] पद्म-सम्बन्धी। पद्म का।

पाद्म-कल्प—पु० [कर्म० स०] पुराणानुसार वह महाकल्प जिसमे भगवान की नाभि से वह पद्म या कमल निकला था, जिस पर ब्रह्मा अधिष्ठित् थे।

पाद्य—वि० [स० पाद+यत्] १ पाद (पैर, चरण आदि) से सबंध रखनेवाला। पाद का। २ पाद्य सबधी। पाद्यात्मक।
पु० वह जल जिससे किसी आये हुए पूज्य व्यक्ति या देवता के पैर धोते है अथवा जिसे पैर धोने के लिए आदर-पूर्वक उनके आगे रखते है।

पाद्य-दान—पु० [स० प० त०] १ पैर धोने के लिए जल देना। २ पूज्य या बड़े व्यक्तियो का कही पधारना। कही पदार्पण करना या जाना। (आदर-सूचक) जैसे—गुरु का शिष्यो के घर पाद्य-दान।

पाद्यार्घ—पु० [स०पाद्य-अर्घ, कर्म० स०] १ पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २ देव-पूजन की सामग्री। ३ पूजन, सत्कार आदि के अवसर पर दिया जानेवाला धन या सामग्री। नजर। भेंट। ४. प्राचीन काल मे ब्राह्मण को दान रूप मे दी हुई वह भूमि जिस पर राजकर नही लगता था। माफी।

पाधर†—वि०=पाधरा।

पाधरा—वि० [?] १ अच्छा। बढ़िया। उदा०—घर वाँकी दिन पाधरा, मरद न मूकै माण।—प्रिथीराज। २ अनुकूल। ३ सम, सरल या सीधा।

पाधा—पु० [स० उपाध्याय] १ आचार्य। उपाध्याय। २ पुरोहित। ३ पडित। ४ कर्म-काड करानेवाला पडित। ५ छोटे बच्चों को आरभिक शिक्षा देनेवाला गुरु या पडित। (पश्चिम)

पान—पु० [स०√पा (पीना, रक्षा करना)+ल्युट्—अन्] १ तरल पदार्थ को चुस्की भरते हुए,चूसते हुए अथवा घूँट-घूँट करके पीने की क्रिया या भाव। जैसे—जल-पान, दुग्धपान, रक्त-पान, स्तन-पान आदि। २ मद्य या शराब पीना। ३ मद्य या शराब बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति। कलवार। ४. पीने का कोई तरल पदार्थ। ५ जल। पानी। ६ पौसरा। प्याऊ। ७ आव। चमक। ८ कटोरा, गिलास आदि पात्र जिसमे रखकर कोई तरल पदार्थ पीया जाता हो। ९ नहर। १० रक्षण। रक्षा। ११ निश्वास। १२ जीत। विजय।
पु० [स० पर्ण, प्रा० पण्ण, फा० पान] १ वृक्ष का पत्ता। उदा०—उपजे एकही खेत मे, बोये एक किसान। होनहार बिरवान के होत चीकने पान। २. एक प्रसिद्ध पौधा या लता जिसके पत्तो पर कत्था, चूना आदि लगाकर मुँह का स्वाद बदलने और उसे सुगधित रखने के लिए गिलौरी या बीडा बनाकर खाते है। ताम्बूल। नागबेल। ३. लगा हुआ पान का पत्ता। गिलौरी। बीडा।
पद—**पान-इलायची**=किसी सामाजिक आयोजन या समारोह मे आमत्रित व्यक्तियो का पान-इलायची आदि से किया जानेवाला सत्कार। **पान-पत्ता**=(क) लगा या बना हुआ पान। (ख) तुच्छ उपहार या भेट। **पान-फूल**=(क) सामान्य उपहार या भेंट। (ख) पान और फूलो की तरह बहुत ही कोमल या सुकुमार वस्तु। **पान-सुपाडी (री)**= दे० ऊपर 'पान-इलायची'।
मुहा०—**पान उठाना**=दे० 'बीडा' के अन्तर्गत 'बीडा उठाना'। **पान कमाना**=पान के पत्तो को पाल मे रखकर पकाना, और बीच-बीच मे उन्हे उलट-पलटकर देखते रहना और उनके सड़े-गले अश काटते या निकालते रहना। **(किसी को कुछ धन) पान खाने को देना**=(क) घूस या रिश्वत देना। (ख) इनाम, पुरस्कार आदि के रूप मे धन देना। **पान खिलाना**=कन्या पक्षवालो का विवाह के विषय मे वर पक्षवालो को वचन देना। **पान चीरना**=व्यर्थ का काम करना। ऐसा काम करना जिससे कोई लाभ न हो। **पान देना**=दे० 'बीडा' के अन्तर्गत 'बीडा देना'। **पान फेरना**=पाल मे अथवा यो ही रखे हुए पानो को उलट-पलटकर देखना और उनके सड़े-गले अश काट या निकालकर अलग करना। **पान बनाना**=(क) पान मे चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीडा तैयार करना। गिलौरी बनाना। पान लगाना। (ख) दे० ऊपर 'पान कमाना'। **पान लगाना**=दे० ऊपर 'पान बनाना'। **पान लेना**=बीडा उठाना। (दे० 'बीडा' के अन्तर्गत)
४ पान नामक लता के पत्ते के आकार की कोई रचना जो प्राय कई तरह के गहनो मे शोभा के लिए जडी या लगी रहती है। ५ जूते मे पान के आकार का चमडे का वह टुकडा जडी के पीछे लगता है।
पद—**नोक-पान**=(देखे 'नोक' के अन्तर्गत स्वतत्र पद)
६ ताश के पत्तो पर बनी हुई पान के आकार की लाल रग की बूटियाँ। ७. उक्त आकार तथा रग की बनी हुई बूटियोवाले पत्तो की सामूहिक सज्ञा। जैसे—उन्होने पान रग बोला है। ८ स्त्रियों की भग। योनि।
पु० [?] नाव खीचने की गून या रस्सी। (लश०)
पु० [?] सूत को माँडी से तर करके ताना कसने की क्रिया। (जुलाहे)
*पु० १ =प्राण। २.=पाणि (हाथ)।

पानक—पु० [स० पान+कन्] आम, इमली आदि के कच्चे फलो को भूनकर बनाया जानेवाला कुछ खट-मीठा पेय पदार्थ। पना। पन्ना।

पान-गोष्ठी—स्त्री० [च० त०] मित्रो की वह मडली जो शराब पीने के लिए एकत्र हुई हो। (कॉकटेल पार्टी)

पानड़ी—स्त्री० [हिं० पान+ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार की लता जिसकी

सुगंधित पत्तियाँ प्रायः मीठे पेय पदार्थों तथा तेल और उबटन आदि में उन्हें सुगंधित करने के लिए डाली जाती हैं।

पानदान—पुं० [हिं० पान+फा० दान (प्रत्य०)] वह डिब्बा जिसमें पान की सामग्री—कत्था, सुपारी आदि रखी जाती है। पनडब्बा।
पद—पानदान का खर्च=वह रकम जो बड़े घरों की स्त्रियों को पान तथा दूसरी निजी आवश्यकताओं के लिए दी जाती है। स्त्रियों का हाथ-खरच।

पान-दोष—पुं० [ष० त०] शराब पीने की लत या व्यसन।

पानन—पुं० [हिं० पान] मँझोले आकार का एक प्रकार का पेड़ जो हिमालय की तराई और उत्तर भारत में होता है।

पानप—पुं० [सं० पान√पा (पीना)+क] जिसे शराब पीने का व्यसन हो। मद्यप। शराबी।

पान-पर—वि० [स० त०] पानप। शराबी।

पान-पात्र—पुं० [ष० त०] १. वह पात्र जिसमें मद्यपान किया जाता हो। २ कटोरा या गिलास जिसमें पानी पीते हैं।

पान-वणिक (ज्)—पुं० [ष० त०] मद्य बेचनेवाला व्यक्ति। कलवार।

पानभाड—पुं० [ष० त०] पान-पात्र।

पान-भोजन—पुं० [ष० त०] पान-पात्र।

पान-भूमि—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग शराब पीते हैं। मद्यशाला।

पान-भोजन—पुं० [द्व० स०] १ खाना-पीना। २. पीना-खाना।

पान-मंडल—पुं०=पान-गोष्ठी।

पान-मत्त—वि०[तृ० त०] जो शराब पीकर नशे में चूर हो।

पान-मद—पुं०[ष०त०] शराब का नशा।

पानरा—पुं०=पनारा (पनाला)।

पान-विभ्रम—पुं०[तृ० त०]शराब का अत्यधिक सेवन करने के फलस्वरूप होनेवाला एक रोग जिसमें सिर में पीड़ा होती रहती है, कै और मतली आती है, और रोगी बीच-बीच में मूर्छित हो जाता है।

पान-शौंड—वि०[स० त०] बहुत अधिक शराब पीनेवाला।

पानस—वि०[सं० पनस+अण्] पनस अर्थात् कटहल से सम्बन्ध रखनेवाला।
पुं० वह शराब जो कटहल को सड़ाकर बनाई जाती थी।

पानही—स्त्री०[सं० उपानह]=पनही।

पाना—स०[सं० प्रापण, प्रा० पावण, पु० हिं० पावना] १ ऐसी स्थिति में आना या होना कि कोई चीज अपने अधिकार, वश या हाथ में आवे या हो जाय। कोई चीज या बात प्राप्त करना। हासिल करना। जैसे—(क) तुमने ईश्वर के घर से अच्छा भाग्य पाया है। (ख) उन्होंने अपने पूर्वजों से अच्छी सम्पत्ति पाई थी। २ ऐसी स्थिति में आना या होना कि किसी की दी या भेजी हुई चीज या और कुछ अपने तक पहुँच या मिल जाय। जैसे—(क) किसी का पत्र, संदेश या समाचार पाना। (ख) पदक या पुरस्कार पाना। ३ आकस्मिक रूप से या अपने प्रयत्न के फलस्वरूप कुछ प्राप्त या हस्तगत करना। जैसे—(क) कल मैंने सड़क पर पड़ा हुआ एक बटुआ पाया था। (ख) यह पुस्तक मैंने बहुत कठिनता से पायी थी। ४. ऐसी स्थिति में आना या होना कि किसी चीज तक हाथ पहुँच सके। उदा०—मैं बालक बहियन को छोटो छीका केहि विधि पायो।—सूर। ५. किसी प्रकार के ज्ञान, परिचय आदि की मानसिक उपलब्धि करना। जैसे—(क) मैंने उन्हें बहुत ही चतुर और योग्य पाया। (ख) विदेश में रहकर उन्होंने अच्छी शिक्षा पाई थी। ६ गूढ़ तत्त्व, भेद, रहस्य आदि की गहनता, विस्तार, सीमा आदि का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। जानकारी हासिल करना। जैसे—(क) किसी के पांडित्य की थाह पाना। (ख) चोरी या चोरों का पता पाना। ७. अचानक सामना होने या सामने पहुँचने पर किसी को किसी विशिष्ट स्थिति में देखना। जैसे—(क) मैंने लड़कों को गली में खेलते हुए पाया। (ख) उसने अपना खेत (या घर) उजड़ा हुआ पाया। ८ किसी प्रकार के परिणाम या फल के रूप में अधिकारी या भोक्ता बनना या बनने की स्थिति में होना। जैसे—(क) दुःख या सुख पाना। (ख) छुट्टी या सजा पाना। ९ ईश्वर अथवा देवता के प्रसाद के रूप में कोई खाद्य या पेय पदार्थ ग्रहण या प्राप्त करना। आदर-पूर्वक शिरोधार्य करके कुछ खाना या पीना। (भक्तों की परिभाषा) जैसे—मैं उनके यहाँ से भोजन पाकर आया हूँ। १०. कोई काम या बात ठीक तरह से पूरी करने में समर्थ होना। कर सकना। जैसे—तुम उसे नहीं जीत पाओगे। ११ प्रतियोगिता आदि में किसी के तुल्य या समान हो सकना। जैसे—बराबरी कर सकना। जैसे—चालाकी (या दौड़) में तुम उसे नहीं पाओगे।

पानागार—पुं०[सं० पान-आगार, ष०त०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हों। शराब पीने की जगह।

पानात्यय—पुं० [सं० पान-अत्यय, तृ०त०] पान-विभ्रम। (दे०)

पानि†—पुं०=पानी।

पानिक—पुं०[सं० पान+ठक्—इक] वह जो शराब बनाता और बेचता हो। शौंडिक। कलवार।

पानिग्रहण—पुं०=पाणिग्रहण।

पानिप—पुं० [हिं० पानी+प (प्रत्य०)] १. ओप। द्युति। कांति। चमक। आब। २ शोभा। ३ पानी।

पानि-पतंग*—पुं०[हिं० पानी+पतंगा] जल-भौंरा या भौंतुआ नाम का कीड़ा।

पानिय—पुं० =पानी। उदा०—प्यासी तजौ तनु रूप सुधा बिनु, पानिय पी को पपीहे पिआओ।—भारतेन्दु।
†वि०=पानीय।
वि०[?] रक्षित होने के योग्य। (क्व०)

पानिल—पुं०[सं० पान+इलच्] पानपात्र।

पानी—पुं०[सं० पानीय] १. वह प्रसिद्ध निर्गंध पारदर्शी और वर्ण-हीन तरल या द्रव पदार्थ जो झील, नदियों, समुद्रों आदि में भरा रहता है। तथा बादलों से वर्षा के रूप में पृथ्वी पर बरसता है और जो नहाने-धोने, पीने, खेत सींचने आदि के काम में आता है। जल।
विशेष—वायु के उपरांत जल या पानी जीव-जंतुओं वनस्पतियों आदि के पालन-पोषण तथा वर्धन के लिए सबसे अधिक आवश्यक है; इसलिए संस्कृत में उसे 'जीवन' भी कहते हैं। भारतीय दर्शन में इसकी गणना पंच महाभूतों में होती है; परन्तु आधुनिक रासायनिक अनुसंधान के अनुसार यह दो तिहाई हाइड्रोजन तथा एक तिहाई आक्सिजन का मिश्रण

है। अधिक सरदी पडने पर यह जमकर बरफ बन जाता है। और अधिक ताप पाकर उबलने या खौलने लगता है अथवा भाप बनकर उड जाता है। वर्षा के प्रसग मे इसके साथ आना, गिरना, पडना, बरसना आदि जलाशयो के तल के विचार से उतरना,चढना आदि और कूएँ के मूल सोते के विचार से आना, टूटना,निकलना आदि क्रियाओं का प्रयोग होता है। किसी तल के छोटे छोटे छिद्रो से आने या निकलने के प्रसग मे इसके साथ आना, चूना, छूटना, टपकना, निकलना, रसना आदि क्रियाएँ लगती है। किसी आधान मे या स्थल पर एकत्र राशि के सबंध मे प्रसग के अनुसार ठहरना, बहना, रुकना आदि क्रियाओ का भी प्रयोग होता है। कुछ अवस्थाओं मे इसकी कोमलता, तरलता, शीतलता, सरसता आदि गुणो के आधार पर भी इसके कई मुहावरे बनते है।

पद—**पानी का आसरा**=नाव की बारी पर लगा हुआ कुछ झुका हुआ वह तख्ता जिस पर छाजन की ओलती का पानी गिरता है। बारी। (लश०) **पानी का बतासा**=(क) बुलबुला। बुदबुद,। (ख) दे० नीचे 'पानी का बुलबुला'। **पानी का बुलबुला**=बुलबुले की तरह क्षण भर मे नष्ट हो जानेवाला। क्षण-भगुर। नाशवान्। विनाशशील। **पानी की तरह पतला**=(क) अत्यन्त तुच्छ या हीन। (ख) बहुत कम महत्त्व का। **पानी की पोट**=ऐसा पदार्थ जिसमे अधिकतर पानी ही पानी हो। जिसमे पानी के सिवा और तत्त्व बहुत कम हो। (ख) ऐसी तरकारियाँ, साग आदि जिनमे जलीय अश बहुत अधिक हो। **पानी के मोल**=प्राय उतना ही सस्ता जितना पीने का पानी होता है। बहुत अधिक सस्ता। **पानी देवा**=वशज जो पितरों को पानी देता अर्थात् उनका तर्पण करता है। **पानी भरी खाल**=मनुष्य का क्षणभगुर और सारहीन शरीर। **पानी से पतला**=(क) बहुत ही तुच्छ या हीन। (ख) बहुत ही सहज या सुगम। **कच्चा पानी**=ऐसा पानी जो औटाया या पकाया हुआ न हो। **नरम पानी**=(क) ऐसा पानी जिसके बहाव मे अधिक वेग न हो। (ख) ऐसा पानी जिसमे खनिज तत्त्व अपेक्षया कम हो। **पक्का पानी**=औटाया, गरम किया या पकाया हुआ पानी। **भारी पानी**=वह पानी जिसमे खनिज पदार्थ अधिक मात्रा मे मिले हो। **हलका पानी**=ऐसा पानी जिसमे खनिज पदार्थ बहुत थोडे हो। नरम पानी।

मुहा०—**पानी काटना**=(क) पानी की नाली या बाँध काट देना। एक नाली मे से दूसरी मे पानी ले जाना। (ख) तैरते समय हाथो से आगे का पानी हटाना। पानी चीरना। **पानी की तरह बहाना**=बहुत ही लापरवाही से और बहुत अधिक मात्रा या मान मे व्यय करना।—जैसे (क) उन्होने लाखो रुपए पानी की तरह बहाँ दिए। (ख) युद्ध क्षेत्र मे सैनिको ने पानी की तरह खून बहाया। **पानी के रेले में बहाना**=दे० ऊपर 'पानी की तरह बहाना'। **पानी चढाना**=सिंचाई के काम के लिए खेत तक पानी पहुँचाना। **(किसी चीज पर) पानी चलाना**=चौपट या नष्ट करना। (दे० 'पानी फेरना') **पानी छानना**=बच्चे को पहले-पहल माता निकलने के बाद तथा उसका जोर कम होने पर किया जानवाला एक प्रकार का मागलिक उपचार या टोटका जिसमे माता उस बच्चे को इस प्रकार गोद मे लेकर बैठती है कि भिगोये हुए चने का पानी जब बच्चे के सिर पर टाला जाता है,तब वह गिरकर माता की गोद मे पडता है। (कहते है कि यह उपचार माता की गोद सदा भरी-पूरी रखने के लिए किया जाता है)। **पानी छूना**=मल-त्याग के उपरान्त जल से गुदा को धोना। आबदस्त लेना। (ग्राम्य) **पानी टूटना**=कूएँ, ताल आदि मे इतना कम पानी रह जाना कि काम मे लाया या निकाला न जा सके। **पानी तोडना**=नाव खेने के समय डाँड या बल्ली से पानी चीरना या हटाना। पानी काटना। (मल्लाह)। **पानी थामना**=धार या प्रवाह के विरुद्ध नाव ले जाना। धार पर चढाना। (लश०) **(पशुओ को) पानी दिखाना**=घोडे, बैल आदि को पानी पिलाने के लिए उनके सामने पानी भरा बरतन रखना या उन्हे जलाशय तक ले जाना। **पानी देना**=(क) सीचने के लिए क्यारियो, खेतो आदि मे पानी डालना। (ख) पितरो का तर्पण करना। **पानी न माँगना**=भीषण आघात लगने पर ऐसी स्थिति मे आना या होना कि पीने के लिए पानी तक माँगने की शक्ति न रह जाय। **पानी पढ़ना**=मत्र पढकर पानी फूँकना। जल अभिमन्त्रित करना। **पानी पर नींव (या बुनियाद) होना**=बहुत ही अनिश्चित या दुर्बल आधार होना। **पानी परोरना**=दे० ऊपर 'पानी छानना'। **पानी पी पीकर**=बार बार शक्ति सचित करके। जैसे—पानी पी पीकर किसी को कोसना।

विशेष—बहुत अधिक बोलने से गला सूखने लगता है, जिसे तर करने के लिए बोलनेवाले को रह-रहकर पानी का घूंट पीना पडता है। इसी आधार पर यह मुहा० बना है।

(किसी चीज या बात पर) पानी फिरना या फिर जाना=पूरी तरह से चौपट, नष्ट या निरर्थक हो जाना। बिलकुल तत्वहीन या नि सार हो जाना। **पानी फूँकना**=खौलते हुए पानी मे उबाल आना। **(किसी चीज या बात पर) पानी फेरना या फेर देना**=(क) पूरी तरह से नष्ट या चौपट करना। (ख) सारा किया-धरा विफल या व्यर्थ कर देना। जैसे—जरा सी भूल से तुमने मेरे सारे परिश्रम पर पानी फेर दिया। **पानी बराना**=(क) छोटी नालियाँ बनाकर और क्यारियाँ काटकर खेत सीचना। (ख) ऐसी व्यवस्था करना जिसमे नालियो का पानी इधर-उधर बहने न पावे। **(किसी का किसी के सामने) पानी भरना**=किसी की तुलना मे बहुत ही तुच्छ या हीन सिद्ध होना। उदा०—फूले शफक तो जर्द हो गालो के सामने। पानी भरे घटा तेरे बालो के सामने। —कोई शायर। **(कहीं) पानी मरना**=किसी स्थान पर पानी का एकत्र होकर सोखा जाना या किसी सधि मे प्रविष्ट होकर वास्तु-रचना को हानि पहुँचाना। जैसे—इस दरज से छत (या दीवार) मे पानी भरता है। **(किसी के सिर) पानी मरना**=किसी का ऐसी स्थिति मे आना या होना कि उस पर किसी प्रकार का आक्षेप, आरोप या कलक हो या लग सके या उसे किसी बात से लज्जित होना पडे। **पानी मे आग लगाना**=(क) असभव बात सभव कर दिखलाना। (ख) जहाँ लडाई-झगडे की कोई सभावना न हो, वहाँ भी लडाई-झगडा खडा कर देना। **पानी मे फेंकना या बहाना**=व्यर्थ नष्ट या बरबाद करना। **(कहीं) पानी लगना**=किसी स्थान पर पानी इकट्ठा होना। पानी जमा होना। **(दाँतो मे) पानी लगना**=पानी की ठढक से दाँतो मे टीस होना। **पानी लेना**=दे० ऊपर 'पानी छूना'। **पानी सिर से (या पैर से) गुजरना**=दे० 'सिर' के अतर्ग०। **पानी से पहले पाड़, पुल या बाँध बाँधना**=किसी प्रकार के अनिष्ट की सभावना न होने पर भी केवल आशकावश बचाव का प्रयत्न या प्रयास करना। **गले गले पानी मे**=लाख कठिनाइयाँ होने पर भी। जैसे—तुम्हारा रुपया तो हम गले गले पानी मे भी चुका देगे।

विशेष—बाढ़ आने पर आदमी का धड़ डूबता है और गले तक पानी आता है तब मृत्यु या विनाश समीप दिखाई देता है। इसी आधार पर यह मुहा० बना है।

२. उक्त तत्त्व का कोई ऐसा रूप जो किसी दूसरे पदार्थ में से आपसे आप या उबालने आदि पर निकला हो या उस पदार्थ के अंश से युक्त हो। जैसे—दही या नारियल का पानी, चूने या नमक का पानी, दाल या नीम का पानी।

क्रि० प्र०—आना।—निकलना।—रसना।

मुहा०—(किसी वस्तु का) पानी छोड़ना=किसी चीज में से थोड़ा-थोड़ा पानी या और कोई तरल पदार्थ रस-रसकर निकलना। जैसे—पकाने पर किसी तरकारी का पानी छोड़ना।

३. किसी विशिष्ट प्रकार के गुण या तत्त्व से युक्त किया हुआ कोई ऐसा तरल पदार्थ जिसके योग से किसी दूसरी चीज में कोई गुण या तत्त्व सम्मिलित किया जाता है अथवा किसी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। जैसे—जहर का पानी, मुलम्मे का पानी।

पद—खारा पानी=सोडा मिला हुआ वह पानी जो बंद बोतलों में पीने के लिए बिकता है। मीठा पानी=उक्त प्रकार का वह पानी जिसमें नीबू आदि का सत्त मिला रहता है। विलायती पानी=यंत्र की सहायता से और वाष्प के जोर से बोतलों में भरा हुआ पानी जो सम्मिश्रण, स्वाद आदि के विचार से अनेक प्रकार का होता है।

मुहा०—(किसी चीज पर) पानी चढ़ाना, देना या फेरना=किसी तरल पदार्थ या घोल के योग से किसी वस्तु में चमक लाना। ओप लाना। जिला करना। जैसे—चाँदी की अँगूठी पर सोने का पानी चढ़ाना। (किसी चीज से) पानी बुझाना=ईंट, धातु-खंड या ऐसी ही और कोई चीज आग में अच्छी तरह तपाकर और लाल करके इसलिए तुरंत पानी में डालना कि उसका कुछ गुण या प्रभाव पानी में आ जाय। (चिकित्सा आदि के प्रसंग में ऐसे पानी का उपयोग होता है।) (कोई चीज किसी) पानी में बुझाना=किसी विशिष्ट क्रिया से तैयार किये हुए पानी में कोई चीज गरम करके इसलिए डालना कि उस चीज में उस पानी का कोई विशिष्ट गुण या प्रभाव आ जाय। जैसे—जहर के पानी से तलवार बुझाना।

४. उक्त के आधार पर काट करनेवाली चमकदार और बढ़िया तलवार या ऐसा ही और कोई बड़ा अस्त्र। ५. किसी प्रकार की प्रक्रिया में हरबार होनेवाला पानी का उपयोग या प्रयोग। जैसे—(क) तीन पानी का गेहूँ अर्थात् ऐसा गेहूँ जिसकी फसल तीन बार सींची गई हो। (ख) कपड़ों की दो पानी की धुलाई; अर्थात् दो बार धोया जाना।

६. आकाश से जल की होनेवाली वृष्टि। वर्षा। मेह।

क्रि० प्र०—आना।—गिरना।—पड़ना।—बरसना।

मुहा०—पानी उठना=आकाश में घटाओं या बादलों का आकर छाना जो वर्षा का सूचक होता है। पानी टूटना=लगातार होनेवाली वर्षा बन्द होना या रुकना। पानी बाँधना=जादू या टोना-टोटका करके बरसते या बहते हुए पानी की धार रोकना।

७. प्रतिवर्ष होनेवाली वर्षा के विचार से, पूरे एक वर्ष का समय। जैसे—अभी तो यह पेड़ तीन ही पानी का है; अर्थात् इसने तीन ही बरसातें देखी हैं, या यह तीन ही वर्ष का पुराना है। ८. उक्त के आधार पर कोई काम एक बार या हर बार होने की क्रिया या भाव। दफा। जैसे—(क) वहाँ मुसलमानों और राजपूतों में कई पानी भिड़ंत हुई थी। (ख) दोनों में एक पानी कुश्ती हो तो अभी फैसला हो जाय। ९. शरीर के किसी अंग के क्षत में से विकार आदि के रूप में निकलने या रसनेवाला तरल अंश या पदार्थ। जैसे—आँख या नाक से पानी जाना।

मुहा०—पानी उतरना=आँतों या पेट का पानी उतर कर नीचे अंडकोश में आना और एकत्र होना जो एक प्रकार का रोग है।

१०. किसी स्थान का जल-वायु अथवा प्राकृतिक या सामाजिक परिस्थिति जिसका प्रभाव प्राणियों के शारीरिक स्वास्थ्य अथवा आचार-विचार, रहन-सहन आदि पर पड़ता है। जैसे—अच्छे पानी का घोड़ा।

पद—कड़ा पानी=ऐसा जलवायु जिसमें उत्पन्न या पले हुए प्राणी ढीले और निर्बल होते हैं।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को कहीं का) पानी लगना=(क) किसी स्थान के जलवायु का शरीर पर दूषित या हानिकारक परिणाम या प्रभाव होना। जैसे—(क) जब से उन्हें पहाड़ का पानी लगा है, तब से वे बराबर बीमार ही रहते हैं। (ख) कहीं के दूषित वातावरण या परिस्थितियों का प्रभाव पड़ना। जैसे—देहात से आते ही तुम्हें शहर का पानी लगा।

११. वह जो पानी की तरह कोमल, गीला, ठंडा, नरम या सरस हो। जैसे—तुमने आटा क्या गूँधा है, बिल्कुल पानी कर दिया है।

मुहा०—(काम को) पानी करना=बहुत ही सरल, सहज, साध्य या सुगम कर डालना। जैसे—मैंने इस काम को पानी कर दिया। (किसी व्यक्ति को) पानी करना या कर देना=कठोरता, क्रोध आदि दूर करके शांत या सरस कर देना। (किसी व्यक्ति को) पानी पानी करना=अत्यन्त लज्जित करना। (किसी का) पानी पानी होना=(क) मन की कठोर वृत्ति का सहसा बदलकर बहुत ही कोमल हो जाना। (ख) किसी घटना या बात के प्रभाव या फल से बहुत ही लज्जित होना। (किसी का) पानी होना या हो जाना=उग्रता, क्रोध आदि का पूरी तरह से शमन होना; और उनके स्थान पर दया, नम्रता आदि का आविर्भाव होना।

१२. पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ। जैसे—दूध क्या है, निरा पानी है। १३. मद्य। शराब। (बोल-चाल)

पद—गरम पानी=शराब।

१४. पुरुष का वीर्य या शुक्र।

मुहा०—पानी गिराना=स्त्री के साथ उदासीनता या उपेक्षापूर्वक अथवा विशिष्ट सुख का बिना अनुभव किये यों ही मैथुन या संभोग करना। (बाजारू)

१५. पुरुषत्व, मान-प्रतिष्ठा आदि के विचार से मनुष्य में होनेवाला अभिमान, वीरता या ऐसा ही और कोई तत्त्व या भावना। जैसे—ऐसा आदमी किस काम का जिसमें कुछ भी पानी न हो।

१६. मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू।

क्रि० प्र०—जाना।—बचना।—बचाना।—रखना।—रहना।

पद—पत-पानी=प्रतिष्ठा और सम्मान। इज्जत-आबरू।

मुहा०—(किसी का) पानी उतारना या उतार लेना=अपमानित करना।

इज्जत उतारना। (किसी को) वे-पानी करना=अपमानित या अप्रतिष्ठित करना।

१७ किसी पदार्थ का वह गुण या तत्त्व जिसके फल-स्वरूप उसमे किसी तरह की आभा, चमक या पारदर्शकता आती हो। जैसे—मोती या हीरे का पानी।

वि०[?] वहुत सरल और सुगम। उदा०—गुलिस्ताँ के वाद फारसी की और किताबे पानी हो गई थी।—मिरजा रुसवा (उमराव जान मे)

पानी आँवला—पु०[स० पानीयामलक] आँवले की तरह का एक क्षुप जो जलाशयो के किनारे होता है।

पानी आलू—पु०[स० पानीयालु] जलाशय के किनारे होनेवाला एक प्रकार का कद। जलालु।

पानी-फल—पु०=जल-फल।

पानी-तराश—पु०[हिं० पानी+तराशना] जहाज या नाव के पेंदे मे वह वडी लकडी जिससे वह पानी को चीरता हुआ आगे वढता है।

पानीदार—वि०[हिं० पानी+फा० दार (प्रत्य०)] १. जिसमे पानी अर्थात् आभा या चमक हो। जैसे—पानीदार हीरा। २. (धातु का कोई उपकरण) जिस पर किसी रासायनिक प्रक्रिया से चमक लाने के लिए किसी तरह का पानी चढाया गया हो। जैसे—पानीदार तलवार। ३ (व्यक्ति) जिसे अपने गौरव, प्रतिष्ठा, मान आदि का पूरा-पूरा ध्यान हो। अपने गौरव, प्रतिष्ठा, मान आदि पर आँच न आने देनेवाला। स्वाभिमानी।

पानी-देवा—वि०[हिं० पानी+देवा=देनेवाला] पितरो को पानी देने अर्थात् उनका तर्पण, पिंडदान, श्राद्ध आदि करनेवाला, फलत वशज या सतान।

पु०१ पुत्र। वेटा। २ अपने कुल या वश का व्यक्ति।

पानीपत—पु०[हिं०]१ दिल्ली से ५५ मील उत्तर की ओर स्थित एक प्रसिद्ध नगर। २ उक्त नगर के समीप स्थित एक प्रसिद्ध क्षेत्र या वहुत वडा मैदान जहाँ अनेक वडे-वडे युद्ध हो चुके है।

पानीफल—पु०[हिं० पानी+फल] सिंघाडा (फल)।

पानीवेल—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की लता जो प्राय साल के जगलो मे पाई जाती और गरमी मे फूलती तथा वरसात मे फलती है। इसके फल खाये जाते है और जड दवा के काम आती है।

पानीय—वि०[स०√पा (पीना, रक्षा करना)+अनीयर्] १ जो पीया जा सके अथवा जो पीये जाने के योग्य हो। २ जिसकी रक्षा की जा सके या जिसकी रक्षा करना आवश्यक अथवा उचित हो।

पु० कोई ऐसा तरल स्वादिष्ठ पदार्थ जो पीने के काम मे आता हो। (ड्रिंक, वीवरेज)

पानीय-चूर्णिका—स्त्री०[प० त०] वालू। रेत।

पानीय-नकुल—पु०[स० त०] पानी मे रहनेवाला नेवला अर्थात् ऊदविलाव।

पानीय-पृष्ठज—पु०[स० पानीय-पृष्ठ, प०त०,√ जन् +ड] जलकुम्भी नामक पौधा।

पानीय-फल—पु०[प०त०] मखाना।

पानीय-मूलक—पु०[व०स०, कप्] वकुची।

पानीय-शाला—स्त्री०[प०त०] १ वह स्थान जहाँ सार्वजनिक रूप से राह-चलनेवालो को पानी पिलाने की व्यवस्था हो। पौसरा। प्याऊ।

पानीय शालिका—स्त्री०[प०त०] पानीय-शाला।

पानीयामलक—पु०[स० पानीय-आमलक, मध्य०स०] पानी आँवला।

पानीयालु—पु०[सं० पानीय-आलु, मध्य०स०] पानी आलू नामक कद। जलालु।

पानीयाश्ना—स्त्री०[स० पानीय√अश् (खाना)+न+टाप्] एक प्रकार की घास। वल्वजा।

पानूस†—पु०=फानूस।

पानौरा—पु०[हिं० पान+वरा] [स्त्री० अल्पा० पानौरी] पीठी, वेसन आदि से लपेटकर तला हुआ पान के पत्ते का पकौडा।

पान्यो*—पु०=पानी।

पान्हर—पु०[देश०] एक प्रकार का सरपत।

पाप—पु० [स०√पा (रक्षा करना)+प] [वि० पापी]१. धर्म और नीति के विरुद्ध किया जानेवाला ऐसा निंदनीय आचरण या काम जो इस लोक मे भी और पर-लोक मे भी सव तरह से वुरा और हानिकारक हो और जिसके फलस्वरूप मनुष्य को नरक भोगना पडता हो। 'पुण्य' का विपर्याय। गुनाह।

विशेष—हमारे यहाँ पाप का क्षेत्र दुष्कर्मों की तुलना मे वहुत विस्तृत माना गया है। धर्म-शास्त्रो के अनुसार दुष्कर्म करना तो पाप है ही, उचित और कर्त्तव्य कर्म न करना भी पाप माना गया है। साधारणत दुष्कर्मों का फल तो इसी लोक मे मिलता है, पर पाप के फलस्वरूप मनुष्य को मरने के वाद भी नरक मे रहकर उसका दड भोगना पडता है। यह कायिक, मानसिक और वाचिक तीनो प्रकार का माना गया है। पापो के फल-भोग से वचने के लिए शास्त्रो मे प्रायश्चित्त का विधान है।

पद—पाप की गठरी या मोट=किसी व्यक्ति के जन्म भर के सव पाप।

मुहा०—पाप कटना= पापो के दुष्परिणामो या प्रभाव का प्रायश्चित्त या दड-भोग से क्षीण या नष्ट होना। **पाप कमाना**= ऐसे दुष्कर्म करना जो पाप समझे जाते हो और जिनका फल भोगने के लिए नरक मे जाना पडे। **पाप काटना**=किसी प्रकार पापो के दुष्परिणामो का अत या नाश करना। **पाप बटोरना**= दे० ऊपर' 'पाप कमाना'।

२. पूर्व जन्म मे किये हुए पापो के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाली वह वुरी अवस्था जिसमे उन पापो का दड या वहुत अधिक कष्ट भोगने पडते हो। जैसे—ईश्वर करे, हमारे पाप शात हो।

मुहा०—पाप उदय होना=ऐसी वुरी अवस्था या समय आना जव अनेक प्रकार के कष्ट ही कष्ट मिलते हो। दुर्दशा के अथवा वुरे दिन आना। जैसे—न जाने हमारे कव के पापो का उदय हुआ था कि ऐसा नालायक लडका मिला। **पाप पड़ना**= ऐसी वुरी स्थिति उत्पन्न होना जिससे वहुत अधिक कष्ट या दुख भोगना पडे। उदा०—सीरैं जतननु सिसिर रितु, सहि विरहिनि तनु-ताप। वसिवैं की ग्रीपम दिननु पर्यो परोसिनि पापु।—विहारी।

३. ऐसी अवस्था, जिसमे किसी काम का वैसा ही दुष्परिणाम भोगना पडता हो जैसा पापपूर्ण कर्म का। जैसे—मैं देखता हूँ कि यहाँ तो सच वोलना भी पाप है।

मुहा०--पाप लगना=ऐसी स्थिति आना या होना कि जिसमे मनुष्य पापो के फलभोग का भागी बनता हो। जैसे—पापी के ससर्ग से भी मनुष्य को पाप लगता है।

४ कोई ऐसा काम या बात जिससे मनुष्य को बहुत कष्ट भोगना अथवा दु खी होना पडता हो। जैसे—तुमने तो जान-बूझकर यह मुकदमेबाजी का पाप अपने साथ लगा रखा है।

मुहा०--पाप काटना=बहुत बडी झझट या बखेडा दूर करना।

५. अपराध। कसूर। ६ बुरी बुद्धि या बुरा विचार। ७ अनिष्ट। अहित। खराबी। ८ दे० 'पापग्रह'।

वि० १ पाप करनेवाला। पापी। २ दुराचारी। ३ कमीना। नीच। ४ दुष्ट। पाजी। ५ अमागलिक। अशुभ। जैसे—पाप-ग्रह।

पापक—वि० [स० पाप+कन्] १ पाप-युक्त। २. पाप करनेवाला। पापी।

पाप-कर—वि० [ष०त०]=पापी।

पाप-कर्म (न्)—पु० [कर्म०स०] धार्मिक दृष्टि से ऐसा बुरा और निंदनीय काम जिसे करने से पाप लगता हो।

वि० पाप करनेवाला। पापी।

पापकर्मी (र्मिन्)—वि० [स० पापकर्म] [स्त्री० पापकर्मिणी] पाप करनेवाला। पापी।

पाप-कल्प—वि० [स० पाप-कल्पप्] पापी।

पु० खोटा और नीच व्यक्ति।

पाप-क्षय—पु० [ष०त०] १ ऐसी स्थिति जिसमे किये हुए पापो का फल नही भोगना पडता। पापो का होनेवाला अत या क्षय। २ तीर्थ, जहाँ जाने से पापो का क्षय या नाश होता है।

पाप-गति—वि० [ब०स०] १ जो किये हुए पापो का फल भोग रहा हो। २ अभागा।

पाप-ग्रह—पु० [कर्म०स०] मगल, शनि, केतु, राहु आदि अशुभ ग्रह जिनकी दशा लगने पर लोग दु ख पाते है।

पापघ्न—वि० [स० पाप√हन् (हिसा)+टक्] पापो का नाश करनेवाला।

पु० तिल (जिसके दान करने से पापो का क्षय होना माना जाता है)।

पापघ्नी—स्त्री० [स० पापघ्न+ङीप्] तुलसी।

पाप-चंद्रमा—पु० [स० कर्म० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार विशाखा और अनुराधा नक्षत्रो के दक्षिण भाग मे स्थित चन्द्रमा।

पापचर—वि० [स० पाप√चर् (गति)+ट] [स्त्री० पापचरा] पापपूर्ण आचरण करनेवाला। पापी।

पाप-चर्य—पु० [ब०स०] १ पापी (व्यक्ति)। २ राक्षस।

पापचारी (रिन्)—वि० [स० पाप√चर्+णिनि] [स्त्री० पापचारिणी] =पाप-चर्य।

पाप-चेता (तस्)—वि० [ब०स०] जो स्वभावत. पापपूर्ण आचरण करने की बाते सोचता हो।

पापचेली—स्त्री० [स० पाप√चेल्+अच्+ङीप्] पाठा लता।

पापचैल—पु० [कर्म०स०] अशुभ या अमगल सूचक वस्त्र।

वि० [ब०स०] जो उक्त प्रकार के वस्त्र पहने हो।

पाप-जीव—वि० [कर्म०स०] पापी।

पु० पुराणानुसार स्त्री, शूद्र, हूण और शबर आदि जीव जिनका ससर्ग कष्टदायक कहा गया है।

पापड़—पु० [स० पर्पट, प्रा० पप्पड] उर्द, मूँग आदि दालो, मैदे, चौरेठे आदि अन्नो अथवा आलू की बनी हुई एक तरह की मसालेदार पतली चपाती जिसे तल या भूनकर भोजन आदि के साथ खाया जाता है।

मुहा०—पापड़ बेलना=(क) कोई काम इस रूप मे करना कि वह बिगड जाय। (ख) किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए तरह-तरह के और कष्टसाध्य काम करना। (प्राय ऐसे कामो से सिद्धि नही होती)। जैसे—आप सब पापड बेल कर बैठे है।

वि० १. पापड की तरह पतला या महीन। २ पापड की तरह सूखा और भुरभुरा।

पापड़ा—पु० [स० पर्पट] १. छोटे आकार का एक पेड जो मध्य-प्रदेश बगाल, मद्रास आदि मे उत्पन्न होता है। इसकी लकडी से कघियाँ और खराद की चीजे बनाई जाती है। २. दे० 'पित्त-पापडा'।

पापड़ा-खार—पु० [स० पर्पटक्षार] केले के पेड को जलाकर तैयार किया हुआ क्षार।

पापड़ी—स्त्री० [हिं० पापडा] एक प्रकार का पेड़ जो मध्यप्रदेश, पजाब और मदरास मे बहुत होता है।

पापदर्शी (शिन्)—वि० [स० पाप√दृश् (देखना)+णिनि] पापपूर्ण दृष्टि से देखनेवाला। बुरी निगाहवाला।

पाप-दृष्टि—वि० [ब०स०] १ जिसकी दृष्टि पापमय हो। २. अमगलकारिणी या अशुभ दृष्टिवाला।

स्त्री० पाप-पूर्ण दृष्टि।

पाप-धी—वि० [ब०स०] जिसकी बुद्धि पापमय या पापासक्त हो। पापकर्मो मे मन लगानेवाला। पापमति। पापचेता।

पाप-नक्षत्र—पु० [कर्म०स०] फलित ज्योतिष मे, ज्येष्ठा आदि कुछ नक्षत्र जो अनिष्टकारक या बुरे माने गये है।

पाप-नामा (मन्)—वि० [ब०स०] १ अशुभ नामवाला। २ जिसकी सब जगह निंदा या बदनामी होती हो। बदनाम।

पाप-नाशक—वि० [ष०त०] पापो का नाश करनेवाला।

पाप-नाशन—वि० [प०त०] पाप का नाश करनेवाला। पापनाशी।

पु० १ प्रायश्चित्त जिससे पाप नष्ट होते हे। २. विष्णु। ३. शिव।

पाप-नाशिनी—स्त्री० [स० पापनाशिन्+ङीप्] १ शमी वृक्ष। २. काली तुलसी।

पापनाशी (शिन्)—वि० [स० पाप√ नश् (नष्ट होना) +णिच्+णिनि] [स्त्री० पापनाशिनी] पापो का नाश करनेवाला।

पाप-निश्चय—वि० [ब०स०] जिसने पाप करने का निश्चय कर लिया हो। खोटा काम करने को तैयार। पाप करने को कृतसकल्प।

पाप-पति—पु० [कर्म०स०] स्त्री का उपपति या यार।

पाप-पुरुष—पु० [कर्म०स० या मध्य०स०] १. पापी प्रकृतिवाला पुरुष। दुष्ट। २ तत्र मे कल्पित पुरुष जिसका सारा शरीर पाप या पापो से ही बना हुआ माना जाता है। ३. पद्म पुराण के अनुसार ईश्वर द्वारा सारे ससार के दमन के उद्देश्य से रचा हुआ पापमय पुरुष।

पाप-फल—वि० [ब०स०] (कर्म) जिसका परिणाम बुरा हो और जिसे करने पर पाप लगता हो।

पाप-बुद्धि—वि० [ब०स०] जिसकी बुद्धि सदा पापकर्मों की ओर रहती हो।
पाप-भक्षण—पु० [ब० स०] काल-भैरव।
पापभाक् (ज्)—वि० [स० पाप√भज् (भजना)+ण्वि] पापी।
पाप-भाव—वि० [ब० स०]=पाप-मति।
पाप-मति—वि० [ब० स०] जो स्वभावत पाप-कर्म करता हो। पाप-बुद्धि। पापचेता।
पाप-मना (नस्)—वि० [ब० स०] जिसके मन मे पापपूर्ण विचारो का निवास हो।
पाप-मित्र—पु० [कर्म० स०] बुरे कामो मे लगाने या बुरी सलाह देने-वाला मित्र।
पाप-मोचन—पु० [ष० त०] पापो को दूर या नष्ट करना।
पाप-मोचनी—स्त्री० [ष० त०] चैत्र कृष्णपक्ष की एकादशी।
पाप-यक्ष्मा (क्ष्मन्)—पु० [कर्म० स०] राजयक्ष्मा या क्षय नामक रोग। तपेदिक।
पाप-योनि—वि० [कर्म० स०] बुरी या हीन योनि मे उत्पन्न होनेवाला। जैसे—कीट, पतग आदि।
स्त्री० बुरी या हीन योनि।
पापर—पु०=पापड।
पु० [अ० पॉपर] १ कगाल। २ ऐसा व्यक्ति जिसे अपनी निर्धनता प्रमाणित करने पर दीवानी मे बिना रसूम दिये मुकदमा चलाने की अनुमति मिली हो।
पाप-रोग—पु० [मध्य० स०] १. वैद्यक मे कुछ विशिष्ट भीषण या विकट रोग जो पूर्व जन्मो के पापो के फल-स्वरूप होनेवाले माने गये है। जैसे—कोढ, क्षयरोग, लकवा आदि। २ मसूरिका या वसन्त नामक रोग। छोटी माता।
पापरोगी (गिन्)—वि० [पाप रोग+इनि] [स्त्री० पापरोगिणी] जिसे कोई पाप-रोग हुआ हो।
पापर्द्धि—स्त्री० [स० पाप-ऋद्धि, ब० स०] आखेट। मृगया। शिकार।
पापल—वि० [स० पाप√ला (लेना)+क] जो पाप का कारण हो। पाप उत्पन्न करनेवाला।
पु० एक प्रकार की पुरानी नाप या परिमाण।
पापलेन—पु० [अ० पॉपलिन] मारकीन की तरह का परन्तु उससे कुछ बढिया सूती कपडा।
पाप-लोक—पु० [ष० त०] [वि० पापलोक्य] १ ऐसा लोक जिसमे पापकर्मों की अधिकता हो। २ नरक, जिसमे पापी लोग पापो का फल भोगने के लिए भेजे जाते है।
पाप-वाद—पु० [ष० त०] अशुभ या अमागलिक शब्द।
पाप-विनाशन—पु० [ष० त०] पाप-मोचन।
पाप-शमनी—वि०, स्त्री० [ष० त०] पापो का शमन या नाश करने-वाली।
स्त्री० शमी वृक्ष।
पाप-शील—वि० [ब० स०] [भाव० पापशीलता] जो स्वभावत पाप-कर्मों की ओर प्रवृत्त रहता हो।
पाप-शोधन—पु० [ष० त०] १. पाप से शुद्ध होने की क्रिया या भाव। पापनिवारण। २ तीर्थ-स्थान।
पाप-संकल्प—वि० [ब० स०] जिसने पाप करने का पक्का इरादा या सकल्प कर लिया हो।
पाप-सूदन—पु० [स० पाप√सूद् (नष्ट करना)+णिच्+ल्यु—अन] एक प्राचीन तीर्थ।
पाप-हर—वि० [ष० त०] पापनाशक। पापहारक।
पापहा (हन्)—वि० [स० पाप√हन्+क्विप्] पापनाशक।
पापाकुशा—स्त्री० [पाप-अकुश, च० त०,+टाप्] आश्विन शुक्ला एका-दशी।
पापात—प० [पाप-अत, ब० स०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।
पापा—स्त्री० [स० पाप+टाप्] १ बुधग्रह की उस समय की गति जब वह हस्त, अनुराधा अथवा ज्येष्ठा नक्षत्र मे रहता है।
पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा कीडा जो ज्वार, बाजरे आदि की फसल मे प्राय अधिक वर्षा के कारण लगता है।
पु० [अनु०] १ पाश्चात्य देशो मे बच्चो की एक बोली मे एक शब्द जिससे वे बाप को सबोधित करते है। बाबा। बाबू। २ प्राचीन काल मे बिशप पादरियो और आज-कल केवल यूनानी पादरियो के एक विशेष वर्ग की सम्मान-सूचक उपाधि।
पापाख्या—स्त्री० [स० पाप+आ√ख्या (कहना)+क+टाप्] दे० 'पापा' (बुद्ध की गति)।
पापाचार—वि० [पाप-आचार, ब० स०] पाप कर्म करनेवाला। पापी।
पु० [ष० त०] पापपूर्ण आचरण।
पापाचारी (रिन्)—वि० [स० पापाचार+इनि] पापपूर्ण आचरण या कर्म करनेवाला। पापी।
पापात्मा (त्मन्)—वि० [पाप-आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा या मन सदा पापकर्मों की ओर रहता हो, अर्थात् बहुत बडा पापी। बडे बडे पाप करनेवाला।
पापाधम—पु० [पाप-अधम, स० त०] पापियो मे भी अधम अर्थात् महापापी।
पापानुबंध—पु० [पाप-अनुबन्ध, ष० त०] पाप का कुफल या दुष्परिणाम।
पापानुवसित—वि० [पाप-अनुवसित, तृ० त०] १ पापी। २ पाप-पूर्ण।
पापापनुत्ति—स्त्री० [पाप-अपनुत्ति, ष० त०] प्रायश्चित्त।
पापारंभ—वि० [पाप-आरभ, ब० स०] दुष्कर्म करनेवाला। पापी।
पापारभक—वि० [पाप-आरभक, ष० त०] जो पापकर्म करना चाहता हो।
पापार्त्त—वि० [पाप-आर्त्त, तृ० त०] जो अपने पाप-कर्मो के फल से बहुत ही दुःखी हो।
पापाशय—वि० [पाप-आशय ब० स०] जिसके मन मे पाप हो।
पापाह—पु० [पाप-अहन्, कर्म० स०, टच्] १ अशौच या सूतक के दिन का समय। २ अशुभ या बुरा दिन।
पापिष्ठ—वि० [स० पाप+इष्ठन्] बहुत बडा पापी।
पापी (पिन्)—वि० [स० पाप+इनि] [स्त्री० पापिनी] १ पाप मे रत या अनुरक्त। पाप करनेवाला। पातकी। अघी। २ लाक्षणिक और व्यग्य के रूप मे, क्रूर, निर्मोही या निर्दय। जैसे—पिया पापी न जागे, जगाय हारी।—लोकगीत।

पु० वह जो पाप करता हो या जिसने कोई पाप किया हो।

पापीयस्—वि० [स० पाप+ईयसुन्] [स्त्री० पापीयसी] पापी।

पापोश—स्त्री० [फा०] जूता। उपानह।

पापोशकार—पु० [फा०] [भाव० पापोशकारी] जूते बनानेवाला व्यक्ति। मोची।

पाप्मा (प्मन्)—वि० [स०√आप् (व्याप्त करना)+मनिन्, नि० सिद्धि] पापी।

पु० पाप।

पा-प्यादा—क्रि० वि० [फा०] विना किसी सवारी के। पैदल।

पाबद—वि० [फा०] [भाव० पाबदी] १ जिसके पैर बँधे हुए हो। २ किसी प्रकार के बधन मे पडा हुआ। बद्ध। जैसे—नौकरी या मालिक का पाबद। ३ पूर्ण रूप से किसी नियम, वचन, सिद्धात आदि का ठीक समय पर पालन करनेवाला। जैसे—वक्त का पाबद, हुकुम का पाबद। ४ जो उक्त के आधार पर कोई काम करने के लिए बाध्य या विवश हो।

पु० १ घोडे का पिछाडी, जिससे उसके पैर बाँधे जाते हैं। २ नौकर। सेवक।

पाबदी—स्त्री० [फा०] १ पाबद होने की अवस्था, क्रिया या भाव। बद्धता। २ वचन, समय, सिद्धान्त आदि के पालन करने की जिम्मेदारी। ३ उक्त के फल-स्वरूप होनेवाली लाचारी या विवशता।

पाम (मन्)—पु० [स०√पा (पीना)+मनिन्] १. दानेदार चकत्ते या फुसियाँ। २. खाज। खुजली।

स्त्री० [देश०] १ वह डोरी जो गोटे, किनारी आदि बुनने के समय दोनो तरफ बाँधी जाती है। २. डोरी। रस्सी। (लश०)

पाम—पु० [अ०] ताड का पौधा या वृक्ष।

पामघ्न—वि० [स० पामन्√हन् (नष्ट करना)+टक्] पामा रोग का नाश करनेवाला।

पु० गधक।

पामघ्नी—स्त्री० [स० पामघ्न+ङीप्] कुटकी।

पामड़ा†—पु०=पाँवडा।

पामड़ी†—स्त्री०=पानडी।

पामन—वि० [स०√पा+मनिन्, पामन्+न, नलोप] १ जिसे या जिसमे पामा रोग हुआ हो। २ खल। दुष्ट।

पु०=पामा (रोग)।

पामना†—स०=पावना (पाना)।

पु०=पावना (प्राप्य धन)।

पामर—वि० [स०√पा (रक्षा करना)+क्विप्, पा√मृ (मरना)+घ] १. बहुत बडा दुष्ट और नीच। अधम। २ पापी। ३ जिसका जन्म नीच कुल मे हुआ हो। ४. निर्बुद्धि। मूर्ख।

पामर-योग—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का निकृष्ट योग। (फलित ज्योतिष)

पामरी—स्त्री० [स० प्रावार] उपरना। दुपट्टा।

स्त्री० स० 'पामर' का स्त्री०।

†स्त्री०=पाँवडी।

†स्त्री०=पानडी।

पामा—पु० [स० पामन्+डाप्] १ एक प्रकार का चर्म रोग जिसमे शरीर पर चकत्ते निकल आते और उनमे की छोटी छोटी फुसियो मे से पानी बहता है। (एग्जिमा) २. खाज या खुजली नामक रोग।

पामारि—पु० [पामा-अरि, ष० त०] गधक।

पामाल—वि० [फा०] [भाव० पामाली] १ पैर से कुचला या पाँव-तले रौंदा हुआ। पद-दलित। २ बुरी तरह से तबाह या बरबाद।

पामाली—स्त्री० [फा०] १ पामाल होने की अवस्था या भाव। २ तबाही। बरबादी।

पामोज—पु० [?] १ एक प्रकार का कबूतर। २ ऐसा घोडा जो सवारी क समय सवार की पिंडली को अपने मुँह से पकडता हो।

पायँ†—पु०=पाँव।

पायँचा—पु० [हिं० पाँव] पायजामे की टाँग।

पाँयजेहरि—स्त्री० [हिं० पाँय+जेहरी] पायजेब।

पायँत†—स्त्री०=पायँता।

पायँता—पु० [हिं० पायँ+स० स्थान, हिं० थान] १ पलग या चारपाई का वह भाग जिस पर पैर रहते है। पैताना। २ वह दिशा जिधर पैर फैलाकर कोई सोया हो।

पायँती—स्त्री० [हिं० पाँयता] पाँयता। पैताना।

पायदाज—पु० [फा० पाअदाज] पैर पोछने का बिछावन। पावदान।

पायँपसारी—स्त्री० [हिं० पाँव+पसारना] निर्मली का पौधा और फल।

पाय—पु० [स०√पा+घञ्, युक्] जल। पानी।

पु० [फा० पाय] फारसी 'पा' (=पैर) का वह सबधकारक रूप जो उसे यौ० शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पायखाना, पायजेब आदि।

पायक—वि० [स०√पा (पीना)+ण्वुल्—अक, युक्] पान करनेवाला। पीनेवाला।

पु० [फा०] १ दूत। २ सेवक। दास। ३. पैदल सिपाही। ४ वह छोटा कर्मचारी जो प्राय दौड-धूपवाले कामो के लिए नियुक्त हो। ५ झडा। पताका।

पु० [?] १ पहलवान। मल्ल। २ पटेबाज।

पायकार—पु० दे० 'पैकार'।

पायखाना†—पु०=पाखाना।

पायगाह—स्त्री० [स०] १. पैर रखने की जगह। २ कचहरी। ३. अस्तबल। तबेला।

पायज†—पु० [?] पेशाब। मूत्र। उदा०— ..... निज पायज ज्यो जल अक लगावै।—केशव।

पायजामा—पु०=पाजामा।

पायजेब—स्त्री०=पाजेब।

पाय-जेहरि†—स्त्री०=पाजेब।

पायठ—स्त्री०=पाइट।

पायड़ा—पु० दे० 'पैडा'।

पायतन—पु०=पायँता।

पायताबा—पु० [फा०]=पाताबा (मोजा)।

पायदान—पु०=पावदान।

पायदार—वि० [फ़ा० पाय दार] [भाव० पायदारी] टिकाऊ और मजबूत।

पायदारी—स्त्री० [फा०] दृढता और मजबूती।

पायन—पु० [स०√पा+णिच्+ल्युट्—अन] किसी को कुछ पिलाने की क्रिया या भाव।

पायना—स्त्री० [स०√पा+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १ सीचना। २ गीला या तर करना। ३ सान धरना। धार तेज करना।

पायनिक—वि० [स० पायन+ठक्—इक] सिंचाई के काम मे आनेवाला।

पायपोश—पु०=पापोश।

पायबोसी—स्त्री०=पाबोसी।

पायमाल—वि० [भाव० पायमाली]=पामाल।

पायरा—पु० [हिं० पाय+रा (=रखना)] घोडे की जीन।
पु० [स० पारावत] एक प्रकार का कबूतर।

पायल—स्त्री० [हिं० पाय+ल (प्रत्य०)] १. पैर मे पहनने का स्त्रियो का एक गहना। २ तेज चलनेवाली हथनी। ३ बाँस की सीढ़ी।
वि० [बच्चा] जन्म के समय जिसके पैर पहले बाहर निकले हो।

पायस—पु० [स० पायस्+अण्] १. खीर। २. सरल का गोद। निर्यास। ३ रसायन शास्त्र मे, दूधिया रग का वह तरल पदार्थ जिसमे तेल, सर्जरस आदि के कण सब जगह समान रूप से तैरते रहते हो। (एमलशन) ४ दे० 'वसापायस'।

पायसा—पु० [स० पार्श्व, हिं० पास] पडोस। आस-पास का स्थान।

पायसीकरण—पु० [स० पायस√कृ (करना)+च्वि, ईत्व+ल्युट्—अन] किसी तरल औषध या घोल को ऐसा रूप देना कि उसमे कुछ पदार्थों के कण तैरते रहे, नीचे बैठ न जायँ। (एमल्सिफिकेशन)

पायसोपवास—पु० [स० पायस-उपवास] अच्छी-अच्छी चीजें खाकर भी यह कहते चलना कि हमने तो कुछ भी नही खाया। उपहास करने का झूठा बहाना।

पाया—पु० [फा० पाय] १ पलग, कुरसी, चौकी आदि का पावा या पैर। २ खभा। स्तभ। ३. नीव। बुनियाद। ४ दरजा। पद।
मुहा०—**पाया बुलन्द होना**=पदोन्नति होना।
५ घोडो के पैर मे होनेवाला एक रोग।

पायिक—पु० [स० पादविक, पृषो० साधु 'पादातिक' का प्रा० रूप] १. पादातिक। पैदल सिपाही। २ चर। दूत।

पायी (यिन्)—वि० [स०√पा (पीना)+णिनि] समस्त पदो के अन्त मे, पीनेवाला। जैसे—स्तनपायी।
†स्त्री०=पाई।

पायु—पु० [स०√पा (रक्षा)+उण्, युक् आगम] १ मलद्वार। गुदा। २. भरद्वाज के पुत्र।

पाय्य—वि० [स०√मा (मापना)+ण्यत्, नि० पादेश] १ जो पान किया जा सके। पीये जाने के योग्य। २ जो पीया जाता हो। पेय।
पु० १ जल। पानी। २. रक्षण।

पारंगत—वि० [सं० पारगत] १ जो पार जा या पहुँच चुका हो। २ जिसने किसी विद्या या शास्त्र का बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

पारंपरीण—वि० [स० परपरा+खञ्—ईन] परपरागत।

पारंपर्य—पु० [स० परपरा+ष्यञ्] १ परपरा का भाव। २ परपरा से चली आई हुई प्रथा या रीति। आम्नाय। ३ परपरा का क्रम। ४ वश परपरा।

पारंपर्योपदेश—पु० [पारपर्य-उपदेश ष० त०] १ परपरागत उपदेश। २. ऐतिह्य नामक प्रमाण।

पार—पु० [स० पर+अण्,√पृ (पूर्ति करना)+घञ्] १ (क) झील, नदी, समुद्र आदि के पूरे विस्तार का वह दूसरा किनारा या सिरा जो वक्ता के पासवाले किनारे या सिरे की विपरीत दिशा मे और उस विस्तार के अतिम सिरे पर पडता हो। उस ओर का और दूर पडनेवाला किनारा या सिरा। ऊपर का तट या सीमा। (ख) उक्त या इस ओर अर्थात् इधर या पास का किनारा या सिरा। जैसे—(क) वह नाव पर बैठकर नदी के पार चला गया। (ख) गगा के इस पार से उस पार तक तैर के जाने मे एक घटा लगता है।
क्रि० प्र०—करना।—जाना।—होना।
पद—आर-पार, वार-पार। (देखें)
मुहा०—**पार उतरना**=नदी आदि के तल पर से होते हुए दूसरे किनारे तक पहुँचना। **पार उतारना**=नाव आदि की सहायता से जलाशय के उस पार पहुँचाना या ले जाना। **पार लगना**=उस पार तक पहुँचना। **पार लगाना**=उस पार तक पहुँचाना।
२. (क) किसी तल या पृष्ठ के किसी विंदु के विचार मे उसके विपरीत या सामनेवाली दिशा के तल या पृष्ठ का कोई विंदु या स्थान। (ख) उक्त के आमने-सामने वाले अथवा एक सिरे से दूसरे सिरे तक के दोनो विंदुओ मे से प्रत्येक विंदु। जैसे—(क) तख्ते मे काँटा ठोककर उसकी नोक उस पार निकाल दो। (ख) गोली उसके पेट के इस पार से उस पार निकल गई। ३ किसी काम या बात का अतिम छोर या सिरा। विस्तार या व्याप्ति की चरम सीमा या हद।
पद—**इस पार**=इस लोक मे। उदा०—इस पार प्रिये तुम हो उस पार न जाने क्या होगा।—बच्चन। **उस पार**=परलोक मे।
मुहा०—**(किसी का) पार पाना**=किसी की चरम सीमा, गभीरता, गहनता आदि का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। जैसे—इस विद्या का पार पाना कठिन है। **(किसी से) पार पाना**=किसी के विरुद्ध या सामने रहने पर उसकी तुलना या मुकाबले मे विजयी या सफल होना, अथवा बढा हुआ सिद्ध होना। जैसे—चालाकी मे तुम उनसे पार नही पा सकते। **(किसी काम या बात का) पार लगना**=ठीक तरह से अन्त या समाप्ति तक पहुँचना। पूरा होना। जैसे—तुम से यह काम पार नही लगेगा। **(किसी को) पार लगाना**=(क) कष्ट, सकट आदि से उद्धार करना। उबारना। (ख) जीवन-काल तक किसी का निर्वाह करना।
विशेष—यह मुहा० वस्तुत 'किसी का बेडा पार लगाना' का सक्षिप्त रूप है।
४ किसी काम, चीज या बात का सारा अथवा समूचा विस्तार।

अव्य० अलग और दूर। परे और पृथक्। जैसे—तुम तो बात कहकर पार हो गये, सारा काम हमारे सिर पर आ पड़ा।

पु० [?] खेत की पहली जोताई।

पारई†—स्त्री०=परई।

पारक—वि० [स०√पृ+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पारकी] १. पार करने या लगानेवाला। २ उद्धार करने या बचानेवाला। ३ पालन करनेवाला। पालक। ४ प्रीति या प्रेम करनेवाला। प्रेमी। ५. पूर्ति करनेवाला।

पु० १ सोना। स्वर्ण। २ वह पत्र जो परीक्षा आदि मे उत्तीर्ण होने का सूचक हो। ३ वह पत्र जिसे दिखलाकर कोई कही आ-जा सके या इसी प्रकार का और कोई काम करने का अधिकार प्राप्त करे। पार-पत्र। (पास)

पार-काम—वि० [स० पार√कम् (चाहना)+अण्] जो पार उतरने अर्थात् उस पार जाने को इच्छुक हो।

पारकी—वि०=परकीय।

पारक्य—वि० [स० पर+ष्यञ्, कुक्] परकीय। पराया।

पु० पवित्र आचरण या पुण्य कार्य जो परलोक मे उत्तम गति प्राप्त कराता है।

पारख—पु०=पारखी।

स्त्री०=परख।

पारखद*—पु०=पार्षद् (सभासद्)।

पारखी—पु० [हिं० परख+ई (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जिसमे किसी चीज की अच्छाई-बुराई, गुण-दोष आदि जानने और परखने की पूर्ण योग्यता हो। जैसे—आप कविता के अच्छे पारखी हैं।

पारखू*—पु०=पारखी।

पारग—वि० [स० पार√गम्+ड] १ पार जानेवाला। २. काम पूरा करनेवाला। ३. किसी विषय का पूरा जानकार।

पार-गत—वि० [स० द्वि० त०] [भाव० पारगति] १ जो पार चला गया हो। २ जो किसी विषय का पूरा ज्ञान प्राप्त कर चुका हो। पारगत। ३ समर्थ।

पु० जिन देव।

पारगति—स्त्री० [सं० स० त०] पारगत होने के लिए अध्ययन करना।

पार-गमन—पु० [स०] एक स्थान या स्थिति से दूसरे स्थान या स्थिति मे जाने की क्रिया, भाव या स्थिति। (ट्रान्ज़िट)

पारगामी(मिन्)—वि० [स० पार√गम्+णिनि] पार करने या जानेवाला।

पारचा—पु० [फा० पार्चः] १ टुकडा। खड। धज्जी। २ कपडा। वस्त्र। ३ एक प्रकार का रेशमी कपडा। ४ पहनावा। पोशाक। ५ कच्चे कूओ मे, दो खडी लकडियों के ऊपर रखी हुई वह बेडी लकडी जिस पर से रस्सी कूएँ मे लटकाई जाती है। ६ पानी का छोटा हौज।

पारज—पु० [स०√पार (कर्म समाप्त करना)+अजिन्] सोना। सुवर्ण।

पारजन्मिक—वि० [सं० पर-जन्मन्, कर्म० स०,+ठक्—इक] पर-जन्म अर्थात् दूसरे जन्म से सबध रखनेवाला।

पारजात†—पु०=परजाता (पारिजात)।

पारजायिक—पु० [स० पर जाया, ष० त०,+ठक्—इक] पराई जाया अर्थात् पर-स्त्री से गमन करनेवाला। व्यभिचारी।

पारटीट (टीन)—पु० [स०] १. पत्थर। २. शिला। चट्टान।

पारण—पु० [स०√पार्+ल्युट्—अन] १. पार करने, जाने या होने की क्रिया या भाव। २ किसी को पार ले जाने की क्रिया या भाव। ३. किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला तत्सम्बन्धी कृत्य; और उसके बाद किया जानेवाला भोजन। ४ तृप्त करने की क्रिया या भाव। ५ आज-कल, किसी प्रस्तावित विधान अथवा विधेयक के सबध मे उसे विचारपूर्वक निश्चित और स्वीकृत करने की क्रिया या भाव। ६ परीक्षा या जाँच मे पूरा उतरना। उत्तीर्ण होना। (पासिंग) ७ रुकावट या बधन की जगह पार करके आगे बढ़ना। (पासिंग) ८ पूरा करने की क्रिया या भाव। ९ बादल। मेघ।

पारणक—वि० [सं०] पारण करनेवाला।

पारण-पत्र—पु० [स०] १. किसी प्रकार के पारण का सूचक पत्र। २. वह पत्र जिसके आधार पर या जिसे दिखलाने पर किसी को कहीं आ-जा सकने या इसी प्रकार का और कोई काम कर सकने का अधिकार प्राप्त होता हो। (पास)

पारणा—स्त्री० [स०√पार्+णिच्+युच्—अन, टाप्]=पारण।

पारणीय—वि० [स०√पार्+अनीयर्] १. जिसे पार किया जा सके। २ जिसे पूरा या समाप्त किया जा सके।

पारतंत्र्य—पु० [स० परतत्र+ष्यञ्] परतत्रता।

पारत—पु० [स० पार√तन् (विस्तार)+ड] एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। पारद (जाति और देश)।

पारतल्पिक—पु० [सं० परतल्प+ठक्—इक] पर-स्त्री गामी। व्यभिचारी।

पारत्रिक—वि० [सं० परत्र+ठक्—इक] १ परलोक-संबंधी। पारलौकिक। २. (कर्म या काम) जिससे पर-लोक मे उत्तम गति प्राप्त हो।

पारत्र्य—पु० [सं० परत्र+ष्यञ्] परलोक मे मिलनेवाला फल।

पारथ†—पु०=पार्थ (अर्जुन)।

पारथिया†—वि० [स० प्रार्थित] माँगा हुआ। याचित।

पारथिव†—वि०, पु०=पार्थिव।

पारधी—पु० [स० पापर्द्धिक=बहेलिया।] १ बहेलिया २ शिकारी। ३ हत्यारा।

पारद—पु० [स०√पृ+णिच्+तन्, पृषो० त—द] १.पारा। २ एक प्राचीन जाति जो पारस के उस प्रदेश मे निवास करती थी जो कैस्पियन सागर के दक्षिण के पहाड़ो को पार करके पडता था। ३ उक्त जाति के रहने का देश।

पारदर्शक—वि० [स० ष० त०] [भाव० पारदर्शकता] प्रकाश की किरणें जिसे पार करके दूसरी ओर जा सकती हों और इसी लिए जिसके इस पार से उस पार की वस्तुएँ दिखाई देती हों। (ट्रान्सपेएरेन्ट) जैसे—साधारण शीशे पारदर्शक होते है।

पारदर्शकता—स्त्री० [सं० पारदर्शक+तल्+टाप्] पारदर्शक होने की अवस्था, गुण या भाव।

पारदर्शी (शिन्)—वि० [स० पार√दृश्+णिनि] [भाव० पार-

दर्शिता] १. आर-पार अर्थात् बहुत दूर तक की बात देखने और समझनेवाला। दूरदर्शी। २ पारदर्शक। (दे०)

पारदारिक—वि०, पु० [सं० पर-दारा, ष० त०,+ठक्—इक] पराई स्त्रियो से अनुचित सबध रखनेवाला। पर-स्त्रीगामी।

पारदार्य—पु० [सं० परदारा+ष्यञ्] पराई स्त्री के साथ गमन। पर-स्त्री-गमन।

पारदिक—वि० [सं० पारद+ठक्—इक] १. पारद या पारे से सबध रखनेवाला। २. जिसमे पारे का भी कुछ अंश हो। (मर्क्यूरिक)

पारदेशिक—वि० [सं० परदेश+ठक्—इक] दूसरे देश का। विदेशी। पु० १ दूसरे देश का निवासी। २ यात्री।

पारदेश्य—वि०, पु० [सं० परदेश+ष्यञ्]=पारदेशिक।

पारद्रष्टा—वि० [सं०] जो उस पार अर्थात् इस लोक के परे की बातें भी देख या जान सकता हो।

पारधि—पु०=पारधी।

पारधी—पु० [सं० परिधान=आच्छादन] १. बहेलिया। व्याध। २. शिकारी। ३ वधिक। ४ काल। मृत्यु।

स्त्री० आड। ओट।

मुहा०—(किसी के) **पारधी पड़ना**—आड मे छिपकर कोई व्यापार देखना या किसी की बात सुनना।

पारन†—पु०=पारण।

वि०=पारक (पार करने या लगानेवाला)।

पारना—स० [सं० पारण] १ गिराना। २ डालना। ३ लेटाना। ४ कुश्ती या लडाई मे पटकना। पछाडना। ५ प्रस्थापित या स्थापित करना। रखना। उदा०—प्यारे परदेश तें कबैं धौं पग पारि है।—रत्नाकर।

मुहा०—**पिंडा पारना**=मृतक के उद्देश्य से पिंडदान करना।

६ किसी के हाथ मे देना। किसी को सौंपना। ७ किसी के अन्तर्गत करना। किसी मे सम्मिलित करना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनना। ९ किसी विशिष्ट क्रिया से किसी के ऊपर जमाना या लगाना। जैसे—कजलौटे पर काजल पारना। १० कोई अनुचित या अवांछित घटना या बात घटित करना। उदा०—तन जारत, पारति विपति अपति उजारत लाज।—पद्माकर। ११ कोई काम स्वय करना अथवा दूसरे से करा देना। उदा० . . .बरनि न पारौं अत।—जायसी। १२ कोई काम करने की समर्थता होना। कर सकना। उदा०—बूझि लेहु जौ बूझै पारहु।—जायसी। †१३ मचाना। जैसे—हल्ला पारना। १४ नियत या स्थिर करना। उदा०—अवही ते हद पारो।—सूर।

अ० [सं० पारण=योग्य, का हिं० पार, जैसे—पार लगना=हो सकना] कोई काम करने मे समर्थ होना। सकना।

†स०=पालना। (पालन करना) उदा०—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी।—सूर।

पार-पत्र—पु० [सं० ष० त०] वह राजकीय अधिकार-पत्र जो किसी राज्य की प्रजा को विदेश यात्रा के समय प्राप्त करना पड़ता है, और जिसे दिखाकर लोग उसमे उल्लिखित देशों मे भ्रमण कर सकते हैं। (पास-पोर्ट)

विशेष—ऐसे पार-पत्र से यात्री को अपने मूल देश के शासन का भी सरक्षण प्राप्त होता है, और उन देशों के शासन का भी सरक्षण प्राप्त होता है जिनमे यात्रा करने का उन्हें अधिकार मिला होता है।

पारबती—स्त्री०=पार्वती।

पार-ब्रह्म—पु०=पर-ब्रह्म।

पारभृत—पु०=प्राभृत (भेंट)।

पारमहंस—पु०=पारमहंस्य।

पारमहंस्य—वि० [सं० परमहंस+ष्यञ्] जिसका सबध परमहंस से हो। परमहंस-सबधी।

पारमाणविक—वि० [सं०] परमाणु-सबधी। परमाणु का। (एटमिक)

पारमार्थिक—वि० [सं० परमार्थ+ठक्—इक] परमार्थ-सबधी। परमार्थ का। जैसे—पारमार्थिक ज्ञान। २ परमार्थ सिद्ध करनेवाला। परमार्थ का शुभ फल दिलानेवाला। जैसे—पारमार्थिक कृत्य। ३. सत्यप्रिय। ४ सदा एक-रस और एक रूप बना रहनेवाला। ५ उत्तम। श्रेष्ठ।

पारमार्थ्य—पुं० [सं० परमार्थ+ष्यञ्] १ 'परमार्थ' का गुण या भाव। २ परम सत्य।

पारमिक—वि० [सं० परम+ठक्—इक] १ मुख्य। प्रधान। २. उत्तम। सर्वश्रेष्ठ। ३ परम।

पारमित—वि० [सं० पारम् इत, व्यस्तपद] [स्त्री० पारमिता] १ जो उस पार पहुँच गया हो। २ पारगत। ३ अतिश्रेष्ठ।

पारमिता—स्त्री० [सं० पारम् इता, व्यस्तपद] सीमा। हद।

पारमेश्वर—वि० [सं० परमेश्वर+अण्] परमेश्वर सबधी।

पारमेष्ठ्य—पु० [सं० परमेष्ठिन्+ष्यञ्] १ प्रधानता। २ सर्वोच्च पद। ३ प्रभुत्व। ४. राजचिह्न।

पारयिष्णु—वि० [सं०√पार्+णिच्+इष्णुच्] १ जो पार जाने मे समर्थ हो। २ विजयी। ३ सफल। ४ रुचिकर और तृप्तिकारक।

पारयुगीन—वि० [सं० परयुग+खञ्—ईन] परवर्ती युग से सबध रखनेवाला अथवा उसमे पाया जाने या होनेवाला।

पारलौक्य—वि० [सं० परलोक+ष्यञ्] पारलौकिक।

पारलौकिक—वि० [सं० परलोक+ठक्—इक] १ परलोक-सबधी। परलोक का। २. (कर्म) जिससे परलोक मे शुभ फल की प्राप्ति हो। परलोक सुधारनेवाला।

पु० अत्येष्टि क्रिया।

पारवत—पु० [सं०] पारावत। (दे०)

पारवर्ग्य—वि० [सं० परवर्ग+ष्यञ्] १ अन्य या दूसरे वर्ग से सबध रखने अथवा उसमे होनेवाला। २ प्रतिकूल।

पु० वैरी। शत्रु।

पारवश्य—पु० [सं० परवश+ष्यञ्]=परवशता।

पार-वहन—पु० [सं०] चीजें आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया, भाव या स्थिति। (ट्रान्जिट्)

पारविषयिक—वि० [सं० पर विषय+ठक्—इक] दूसरे के विषयों से सबध रखनेवाला।

पारशव—पु० [सं० परशु+अण्] १. लोहा। २ [उपमि० स०] ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न व्यक्ति। ३. पराई स्त्री के गर्भ

से उत्पन्न करके प्राप्त किया हुआ पुत्र। ४ एक प्रकार की गाली जिससे यह व्यक्त किया जाता है कि अमुक के पिता का कोई पता नहीं वह तो हरामी का है। ५. एक प्राचीन देश, जिसके सबध मे कहा जाता है कि वहाँ मोती निकलते थे।

वि० लौह-सबधी।

पारशवी—स्त्री० [स० पारशव+ङीप्] वह कन्या या स्त्री जिसका जन्म शूद्रा माता और ब्राह्मण पिता से हुआ हो।

पारश्व—पु०=पारश्वधिक।

पारश्वधिक—पु० [स० परश्वध+ठञ्—इक] परशु या फरसे से सज्जित योद्धा।

पारस—पुं० [स० स्पर्श, हिं० परस] १. एक कल्पित पत्थर जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि लोहा इसके स्पर्श से सोना हो जाता है। स्पर्श-मणि। २ पारस पत्थर के समान उत्तम, लाभदायक या स्वच्छ अथवा आदरणीय और बहुमूल्य पदार्थ या वस्तु। जैसे—(क) यदि उनके साथ रहोगे तो कुछ दिनो मे पारस हो जाओगे। (ख) यह दवा खाने से शरीर पारस हो जायगा।

पु० [हिं० परसना] १ परोसा हुआ भोजन। २ परोसा।

अव्य० [स० पार्श्व] समीप। नजदीक। पास। उदा०—पारस प्रामाद सेन सपेखे।—प्रिथीराज।

पु० [स० पलाश] पहाडो पर होनेवाला बादाम या खूबानी की जाति का एक मझोले कद का पेड। गीदड-ढाक। जापन।

पु० [फा०] आधुनिक फारस देश का एक पुराना नाम।

पारसनाथ—पु०=पार्श्वनाथ (जैनो के तीर्थंकर)।

पारसल—पु० [अ०] डाक, रेल आदि द्वारा किसी के नाम भेजी जानेवाली गठरी या पोटली।

पारसव—पु०=पारशव।

पारसा—वि० [फा०] [भाव० पारसाई] पवित्र और शुद्ध चरित्र तथा विचारोंवाला। बहुत बडा धर्मात्मा और सदाचारी।

पारसाई—स्त्री० [फा०] 'पारसा' होने की अवस्था या भाव। धार्मिकता और सदाचार।

पारसाल—पु० [फा०] १. गत वर्ष। २ आगामी वर्ष।

पारसिक—पु० [स० पारसीक, पृषो० सिद्धि] पारसीक। (दे०)

पारसी—पु० [स० पारसीक से फा० पार्सी] १ पारस अर्थात् फारस (आधुनिक ईरान) का रहनेवाला आदमी। २. आज-कल मुख्य रूप से पारस के वे प्राचीन निवासी जो मुसलमानी आक्रमण के समय अपना धर्म बचाने के लिए वहाँ से भारत चले आये थे। इनके वशज अब तक बम्बई और गुजरात मे बसे है। ये लोग अग्निपूजक है, और कमर मे एक प्रकार का यज्ञोपवीत पहने रहते हे।

वि० पारस या फारस-सबधी। पारस का।

पारसीक—पु० [स०] १ आधुनिक ईरान देश का प्राचीन नाम। फारस। २. उक्त देश का निवासी। ३ उक्त देश का घोडा।

वि०, पु०=पारसी।

पारसीकयमानी—स्त्री० [स०] खुरासानी वच।

पारसीकवचा—स्त्री० [स०] खुरासानी वच।

पारसीकेय—वि० [स०] ईरान, पारस या फारस देश सबधी।

पु० कुकुम।

पारस्कर—पु० [स० पार√कृ०+ट, सुट्] १. एक प्राचीन देश। २ एक गृह्य-सूत्रकार मुनि।

पारस्त्रैणेय—पु० [सं० पर-स्त्री, प० त०,+ढक्—एय, इनङ्—आदेश] पराई स्त्री से संबंध रखनेवाले व्यक्ति से उत्पन्न पुत्र। जारज पुत्र।

पारस्परिक—वि० [स० परस्पर+ठक्—इक] आपस मे एक दूसरे के प्रति या साथ होनेवाला। परस्पर होनेवाला। आपस का। आपसी। (म्यूचुअल)

पारस्परिकता—स्त्री० [स० पारस्परिक+तल्+टाप्] पारस्परिक होने की अवस्था या भाव।

पारस्य—पु० [स०] पारस देश।

पारस्सं—पु० १ =पार्श्व। २.=पार्श्वचर। ३ =पारस्य।

पारहंस्य—वि० [स० परहंस+ष्यञ्]=पारमहंस्य।

पारा—पुं० [स० पारद] एक प्रसिद्ध बहुत चमकीली और सफेद धातु जो साधारण गरमी या सरदी मे द्रव अवस्था मे रहती है और अनुपातिक दृष्टि से बहुत भारी या वजनी होती है। पारद। (मर्करी)

मुहा०—(किसी का) पारा चढ़ना=गुस्से से बेहाल होना। पारा पिलाना=(क) किसी वस्तु के अदर पारा भरना। (ख) किसी वस्तु को इतना अधिक भारी कर देना कि मानो उसके अदर पारा भर दिया गया हो।

पुं० [सं० पारि=प्याला] दीये के आकार का, पर उससे बडा मिट्टी का बरतन। परई।

पुं० [फा० पारः] खड या टुकड़ा।

पाराती—स्त्री० [सं० प्रात] एक प्रकार के धार्मिक गीत जो देहाती स्त्रियाँ पर्वो आदि पर किसी तीर्थ या पवित्र नदी मे स्नान करने के लिए आते-जाते समय रास्ते में गाती चलती है।

पारापत—पु० [स० पार-आ√पत् (गिरना)+अच्] कबूतर।

पारापार—पु० [स० पार-अपार, द्व० स०+अच्] १ यह पार और वह पार। २ इधर और उधर का किनारा। ३ समुद्र।

पारायण—पु० [स० पार-अयन, स० त०] [वि० पारायणिक] १ किसी अनुष्ठान या कार्य की होनेवाली समाप्ति। २ नियमित रूप से किसी धार्मिक ग्रंथ का किया जानेवाला पाठ। † ३ किसी चीज का बार-बार पढा जाना।

पारायणी—स्त्री० [स० पारायण+ङीप्] १ चितन या मनन करते हुए पारायण करने की क्रिया। २ सरस्वती। ३. कर्म। ४. प्रकाश।

पारावत—पु० [स० पर√अव (रक्षा)+शतृ+अण्] १. कबूतर। २ पेंडकी। ३ बदर। ४ पहाड। पर्वत।

पारावतघ्नी—स्त्री० [स०पारावत√हन् (हिंसा)+टक्+ङीप्] सरस्वती नदी।

पारावत पदी—स्त्री० [ब०स०, ङीप्] १. मालकगनी। २ काकजघा।

पारावताश्व—पु० [स० पारावत-अश्व, ब० स०] धृष्टद्युम्न।

पारावती—स्त्री० [स० पारावत+अच्+ङीप्] १ अहीरो के एक तरह के गीत। २ कबूतरी।

पारावारीण—वि० [स० पार-अवार, द्व० स०,+ख—ईन] १. जो दोनो किनारो पर जाता या पहुँचता हो। २. पारगत।

पाराशर—वि० [स० पराशर+अण्] १ पराशर-सबधी। २. पराशर द्वारा रचित।
पु० पराशर मुनि के पुत्र, वेदव्यास।
पाराशरि—पु० [स० पराशर+इञ्] १ शुकदेव। २ वेदव्यास।
पाराशरी (रिन्)—पु० [स० पाराशर्य+णिनि, य लोप] १. सन्यासी। २ वह सन्यासी जो व्यास द्वारा रचित शारीरिक सूत्रो का अध्ययन करता हो।
पाराशर्य—पु० [स० पराशर+यञ्]=पराशर।
पारिंद्र—पु० [स० पारीन्द्र, पृषो० सिद्धि] सिह । शेर।
पारि†—स्त्री० [हि० पार] १. नदी, समुद्र आदि का किनारा। २ ओर। दिशा। ३ बाँध या मेड। ४ मर्यादा। सीमा।
पारिकांक्षी (क्षिन्)—पु० [स० पारि=ब्रह्मज्ञान√काङ्क्ष (चाहना)+णिनि] तपस्वी।
पारिख†—पु०=पारखी।
स्त्री०=परख।
पारिखेय—वि० [स० परिखा+ढक्—एय] १. परिखा या खाईं से संबध रखनेवाला। २ परिखा या खाईं से घिरा हुआ।
पारिगर्भिक—पु० [स० परिगर्भ+ठक्—इक] बच्चो को होनेवाला एक रोग ।
पारिग्रामिक—वि० [स० परिग्राम+ठञ्—इक] किसी गाँव के चारो ओर का ।
पारिजात—पु० [स० प० त०] १ स्वर्ग के पाँच वृक्षो मे से एक वृक्ष, जो समुद्र-मथन के समय निकला था, तथा जिसके सबध मे कहा गया है कि इसे इद्र नदनवन मे ले गये थे। २ परजाता या हरसिंगार नामक पेड । ३ कचनार। ४ फरहद। ५ सुगध ।
पारिणामिक—वि० [स० परिणाम+ठञ्—इक] १. परिणाम-सबधी। २ जिसका कोई परिणाम या रूपातरण हो सके। जो विकसित हो सके। ३ जो पच सके या पचाया जा सके ।
पारिणाय्य—वि० [स० परिणय+ष्यञ्] परिणय-सबधी ।
पु० १ वह धन जो कन्या को विवाह के अवसर पर दिया जाता है। दहेज । २ परिणय।
पारिणाह्य—पु० [स० परिणाह+ष्यञ्] घर-गृहस्थी के उपयोग मे आने-वाली वस्तुएँ या सामग्री ।
पारित—वि० [स०√पार्+णिच्+क्त] १ जिसका पारण हुआ हो। २ जो परीक्षा आदि मे उत्तीर्ण हो चुका हो। ३. (प्रस्ताव या विधेयक) जो विधिपूर्वक किसी सस्था के द्वारा स्वीकृत किया जा चुका हो। (पास्ड)
पारितोषिक—पु० [स० परितोष+ठक्—इक] १ वह धन जो किसी को देकर परितुष्ट किया जाता है। २ वह धन जो प्रतियोगिता मे विजयी या श्रेष्ठ सिद्ध होने पर अथवा कोई असाधारण योग्यता दिखलाने पर उत्साह बढाने के लिए दिया जाता हे। (प्राइज)
पारिद†—पु०=पारद।
पारिध्वंजिक—पु० [स० परिध्वज, प्रा० स०,+ठञ्—इक] वह जो हाथ मे झडा लेकर चलता हो।
पारिपाट्य—पु० [स० परिपाटी+ष्यञ्]=परिपाटी।
पारिपात्र—पु० [स०] सात मुख्य पर्वत-मालाओ मे से एक। पारियात्र।
पारिपात्रिक—वि० [स० पारिपात्र+ठक्—इक] १ पारिपात्र-सबधी। २ पारिपात्र पर बसने, रहने या होनेवाला।
पारिपार्श्व—पु० [स० परिपार्श्व+अण्] वह जो साथ-साथ चलता हो। अनुचर। सेवक।
पारिपार्श्विक—पु० [स० परिपार्श्व+ठक्—इक] [स्त्री० पारिपार्श्विका] १ सेवक। २. नाटक मे, स्थापक का सहायक।
पारिप्लव—वि० [स० परि√प्लु (गति)+अच्+अण्] १. अस्थिर रहने, हिलने-डुलने या लहरानेवाला। २ तैरनेवाला। ३ विकल। ४ क्षुब्ध।
पु० १. अस्थिरता। २ नाव। ३ विकलता।
पारिप्लाव्य—पु० [स० पारिप्लव+ष्यञ्] १ अस्थिरता। चचलता। २. कपन। ३ आकुलता। ४ हस।
पारिभाव्य—पु० [स० परिभू+ष्यञ्] जमानत करने या जामिन होने का भाव।
पारिभाव्य-धन—पु० [स० ष० त०] वह धन जो किसी की कोई चीज व्यवहृत करने के बदले मे उसके यहाँ अग्रिम जमा किया जाता है और जो उसकी चीज लौटाने पर वापस मिल जाता है।
पारिभाषिक—वि० [स० परिभाषा+ठञ्—इक] १ परिभाषा-सबधी। २ (शब्द) जो किसी शास्त्र या विषय मे अपना साधारण से भिन्न कोई विशिष्ट अर्थ रखता हो। (टेकनिकल)
पारिभाषिकी—स्त्री० [स० पारिभाषिक+ङीप्] पारिभाषिक शब्दो की माला या सूची। (टरमिनॉलॉजी)
पारिमाण्य—पु० [स० परिमाण+ष्यञ्] घेरा। मडल।
पारिमिता—स्त्री० [परिमित+अण्+टाप्]=सीमा।
पारिमित्य—पु० [स० परिमित+ष्यञ्] सीमा।
पारिमुखिक—वि० [स० परिमुख+ठक्—इक] [भाव० पारिमुख्य] १. जो मुख के समक्ष या सामने हो। २ जो पास मे हो या उपस्थित हो।
पारियात्र—पु० [स०] सात पर्वत-श्रेणियो मे से एक, जो किसी समय आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा के रूप मे मानी जाती थी। पारिपात्र।
पारियात्रिक—वि० [स० परियात्रा प्रा० स०, +अण्+ठक्—इक]= पारिपात्रिक (परिपात्र-सबधी)।
पारियानिक—पु० [स० परियान प्रा० स०,+ठक्—इक] ऐसा यान जिस पर यात्रा की जाती हो।
पारिरक्षक—पु० [स० परि√रक्ष्+ण्वुल्—अक+अण्] सन्यासी।
पारिव्राज्य—पु० [स० परिव्राज्+ष्यञ्] सन्यास।
पारिश्रमिक—पु० [स० परिश्रम+ठक्—इक] किये हुए परिश्रम के बदले मे मिलनेवाला धन। कोई कार्य करने की मजदूरी। (रिम्यूनरेशन)
पारिख*—स्त्री०=परख।
पारिषद—पु० [स० परिषद्+अण्] परिषद् मे बैठनेवाला व्यक्ति। परिषद् का सदस्य। (काउसिलर)
पारिषद्य—पु० [स० परिषद्+ण्य] अभिनय आदि का दर्शक। सामाजिक।
पारिस्थितिक—वि० [स० परिस्थिति+ठक्—इक] १ परिस्थिति सबधी। २. जो परिस्थितियों का ध्यान रखकर या उनके विचार से किया गया हो। (सर्कस्टैन्शल)

पारिहारिकी—स्त्री० [सं० परिहार+ठक्—इक+ङीप्] एक तरह की पहेली।
पारिहास्य—पु० [सं० परिहास+ष्यञ्]=परिहास।
पारी—स्त्री० [सं०] १. वह रस्सी जिससे हाथी के पैर बाँधे जाते है। २. जल-पात्र। ३. केसर।
स्त्री० [हि० बार, बारी] १. कोई कार्य करने का क्रमानुसार आने या मिलनेवाला अवसर। बारी। २. गेंद-बल्ले के खेल मे, प्रत्येक दल को बल्लेबाजी करने का मिलनेवाला अवसर। पाली।
पारीक्षणिक—पु० [सं० परीक्षण+ठक्—इक] वह कर्मचारी जो इस बात की परीक्षा या जाँच के लिए रखा गया हो कि यह अपने काम या पद के लिए उपयुक्त है या नही। (प्रोबेशनर)
वि० परीक्षण सबधी। परीक्षण का।
पारीक्षित—पु० [सं० परीक्षित्+अण्] परीक्षित् के पुत्र, जनमेजय।
पारीछत—भू० कृ०=परीक्षित।
पारीण—वि० [सं० पार+ख—ईन] १ उस पार पहुँचा हुआ। २ पारगत।
पारीय—वि० [सं० पार+छ—ईय] समस्त पदो के अत मे, किसी विषय मे दक्ष।
पारुष्ण—पु० [सं० परुष्ण+अण्] एक तरह का पक्षी।
पारुष्य—पु० [सं० परुष+ष्यञ्] परुष होने की अवस्था, गुण या भाव। परुषता।
पारेरक—पु० [सं० पार√ईर् (गति)+ण्वुल्—अक] तलवार।
पारेवा—पु० [सं० पारावत] कबूतर। परेवा।
पारेषक—वि० [सं० पार√इष् (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रेषण करने या भेजनेवाला।
पु० विद्युत् से समाचार भेजने या बात करने के यत्रों का वह अग जिससे समाचार या सदेश भेजे जाते है। 'प्रतिग्राहक' का विपर्याय। (ट्रासमीटर)
पारोकना[1]—अ०[सं० परोक्ष] १ परोक्ष या आड मे होना। २ अतर्धान या अदृश्य होना।
पारोक्ष—वि० [सं० परोक्ष+अण्] [भाव० पारोक्ष्य] १ रहस्यमय। २. गुप्त। ३ अस्पष्ट।
पार्क—पु० [अ०] शहरो मे, ऐसा उद्यान जिसमे घास उगी हुई हो तथा जहाँ छोटे-मोटे फूल-पौधे भी हों।
पार्जन्य—वि० [सं० पर्जन्य+अण्] मेघ या वर्षा-सबधी।
पार्ट—पु० [अं०] १. अश। भाग। हिस्सा। २ किसी अभिनय, विषय आदि मे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जानेवाला अपने कर्तव्य का निर्वाह।
पार्टी—स्त्री० [अं०] १ दल। २. वह समारोह जिसमे आमत्रित लोगो को भोजन, जलपान आदि कराया जाता है।
पार्ण—वि० [सं० पर्ण+अण्] १ पर्ण-सबधी। पत्तो का। २ पत्तो के द्वारा प्राप्त होनेवाला। जैसे—पार्णकर।
पार्थ—पु० [सं० पृथा+अण्] १. पृथा के पुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन या भीम (विशेषत अर्जुन)। २ अर्जुन नाम का पेड। ३. राजा।
पार्थक्य—पु० [सं० पृथक्+ष्यञ्] १ पृथक् होने की अवस्था या भाव। २ वह गुण जिससे चीजों का पृथक्-पृथक् होना सूचित होता हो। ३ अतर। ४. जुदाई।
पार्थ-सारथि—पु० [ष० त०] १. कृष्ण। २ मीमासा के एक प्राचीन आचार्य।
पार्थिव—वि० [सं० पृथिवी+अञ्] १. पृथ्वी-सबधी। २ पृथ्वी से उत्पन्न। ३. पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ। ४. पृथ्वी पर शासन करनेवाला। ५. राजकीय।
पुं० १ मिट्टी का बरतन। २. काया। देह। शरीर। ३ राजा। ४. पृथ्वी पर या पृथ्वी से उत्पन्न होनेवाला पदार्थ।
पार्थिव-आय—स्त्री० [ष० त०] मालगुजारी। लगान।
पार्थिव-नन्दन—पु० [ष० त०] [स्त्री० पार्थिव-नंदिनी] राजकुमारी।
पार्थिव-पूजन—पुं० [ष० त०] कच्ची मिट्टी का शिव-लिंग बनाकर उसका किया जानेवाला पूजन।
पार्थिव-लिंग—पु० [ष० त०] १ राजचिह्न। [कर्म० स०] २ कच्ची मिट्टी का बनाया हुआ शिव-लिंग जिसके पूजन का कुछ विशिष्ट विधान है।
पार्थिवी—स्त्री० [सं० पार्थिव+ङीप्] १. सीता। २. लक्ष्मी।
पार्थी—पु०[सं०पार्थिव=पृथ्वी-सबधी] मिट्टी का बनाया हुआ शिवलिंग।
पार्पर—पु० [सं० पर्परी+अण्] १. मुट्ठी भर चावल। २ क्षय। (रोग)। ३ भस्म। राख। ४ यम।
पार्यतिक—वि० [सं० पर्यत+ठक्—इक] पर्यत का, अर्थात् अतिम।
पार्य—वि० [सं० पार+ष्यञ्] जो पार अर्थात् दूसरे किनारे पर स्थित हो। पु० अत।
पार्याप्तिक—वि० [सं० पर्याप्त+ठक्—इक] १ पर्याप्त। यथेष्ट। २. सपूर्ण।
पार्लमेंट—स्त्री० [अं०] ससद्। (दे०)
पार्वण—वि० [सं० पर्वन्+अण्] पर्व या अमावस्या के दिन किया जाने या होनेवाला।
पु० उक्त अवसर पर किया जानेवाला श्राद्ध।
पार्वतिक—पु० [सं० पर्वत+ठक्—इक] पर्वतमाला। पर्वत-श्रेणी।
पार्वती—स्त्री० [सं० पर्वत+अण्+ङीप्] पुराणानुसार हिमालय पर्वत की पुत्री, जिसका विवाह शिवजी से हुआ था। गिरिजा। भवानी।
पार्वती-कुमार—पु० [ष० त०] १ कार्तिकेय। २ गणेश।
पार्वती-नन्दन—पु० [ष० त०]=पार्वती-कुमार।
पार्वती-नेत्र—पुं० [ष० त०]=पार्वती-लोचन।
पार्वती-लोचन—पु० [ष० त०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।
पार्श्व—पु० [सं०√स्पृश् (छूना)+श्वण्, पृ—आदेश] १ कधो और कोखों के नीचे के उन दोनों भागो मे से प्रत्येक जिनमे पसलियाँ होती है। छाती के दाहिने और बाएँ भागो मे से प्रत्येक भाग। बगल। २ पसली की हड्डियों का समुदाय। पजर। ३ किसी पदार्थ, प्राणी की लबाई वाले विस्तार मे इधर अथवा उधर पडनेवाला अग या अश। बगलवाला छोर या सिरा। ४ किसी क्षेत्र या विस्तार का वह अग या अश जो किसी एक ओर या दिशा की सीमा पर पडता हो और कुछ दूर तक सीधा चला गया हो। जैसे—इस चौकोर क्षेत्र के चारो पार्श्व बराबर है। ५. किसी चीज के अगल-बगल या दाहिने-बाएँ अशो के पास पड़नेवाला विस्तार। जैसे—गढ के दाहिने पार्श्व मे वन था।

६. लिखते समय कागज की दाहिनी (अथवा बाईं) ओर छोडा जानेवाला स्थान। हाशिया। ८ कपट या छल से भरा हुआ उपाय या साधन। ७ दे० 'पार्श्वनाथ'।

पार्श्वक—पु० [स०] वह चित्र जिसमे किसी आकृति का एक ही पार्श्व दिखलाया गया हो।

पार्श्वग—वि० [स० पार्श्व√गम् (जाना)+ड] साथ मे चलने या रहनेवाला।

पु० नौकर। सेवक।

पार्श्व-गत—वि०[स० द्वि० त०] १ पार्श्व या बगल मे आया या ठहरा हुआ। २ (चित्र) जिसमे किसी आकृति का एक ही पार्श्व दिखाया गया हो, दूसरा पार्श्व सामने न हो। (प्रोफाइल) जैसे—दाहिनी ओर जाते हुए व्यक्ति के चित्र मे उसकी पार्श्व-गत आकृति ही दिखाई देती है।

पु० वह जिसे अपने यहाँ रखकर आश्रय दिया गया हो या जिसकी रक्षा की गई हो।

पार्श्वगायन—पु० [स०] आज-कल वह गायन जो नेपथ्य से किसी पात्र या पात्री के गाने के बदले मे होता है।

विशेष—जो अभिनेता या अभिनेत्री गान-विद्या मे पटु नही होती, उसके बदले मे नेपथ्य से कोई दूसरा अच्छा गायक या गायिका गाती है। यही गाना पार्श्वगायन कहलाता है।

पार्श्वचर—वि० [स० पार्श्व√चर् (गति)+ट] पास मे रहकर साथ चलनेवाला।

पार्श्वचित्र—पु० [स०] पार्श्वक। (दे०)

पार्श्व-टिप्पणी—स्त्री० [मध्य० स०] पार्श्व अर्थात् हाशिये मे लिखी गई टिप्पणी। (मार्जिनल नोट)

पार्श्वद—पु० [स० पार्श्व√दा (देना)+क] नौकर। सेवक।

पार्श्वनाथ—पु० [स०] जैनो के तेइसवे तीर्थंकर।

पार्श्व-परिवर्त्तन—पु० [प० त०] लेटे या सोये रहने की दशा मे करवट बदलना।

पार्श्ववर्ती—वि० [स० पार्श्व√वृत (रहना)+णिनि] [स्त्री० पार्श्ववर्त्तिनी] १ किसी के पास या साथ रहनेवाला। जैसे—राजा के पार्श्ववर्ती। २ किसी के पार्श्व मे, आस-पास या इधर-उधर रहने या होनेवाला। जैसे—नगर का पार्श्ववर्ती वन।

पु० १ सहचर। साथी। २ नौकर। सेवक।

पार्श्व-शीर्षक—पु० [मध्य० स०] पार्श्व अर्थात् हाशियेवाले भाग मे लगाया या लिखा हुआ शीर्षक। (मार्जिनल हेडिंग)

पार्श्व-शूल—पु० [मध्य० स०] बगल या पसलियों मे होनेवाला शूल या जोर का दर्द।

पार्श्व-सगीत—पु० [मध्य० स०] १. आधुनिक अभिनयो, चल-चित्रो आदि मे वह सगीत जो अभिनय होने के समय परोक्ष मे होता रहता है। २ आधुनिक चल-चित्रो मे किसी पात्र का ऐसा गाना जो वास्तव मे वह स्वय नही गाता, बल्कि उसका गानेवाला परोक्ष या परदे की आड मे रहकर उसके बदले मे गाता है। (प्लेबैक)

पार्श्वस्थ—वि० [स० पार्श्व√स्था (ठहरना)+क] जो पास या बगल मे स्थित हो।

पार्श्वानुचर—पु० [पार्श्व-अनुचर, मध्य० स०] सेवक।

पार्श्वायात—वि० [पार्श्व-आयात, स० त०] जो पास आया हो,

पार्श्वासन्न, पार्श्वासीन—वि० [स० स० त०] पार्श्व अर्थात् बगल मे बैठा हुआ।

पार्श्विक—वि० [स० पार्श्व+ठक्—इक] १. पार्श्व-सबधी। २ किसी एक पार्श्व या अग मे होनेवाला। ३ किसी एक पार्श्व या अग की ओर से आने या चलनेवाला। (लेटरल)

पार्षद्—स्त्री० [स०=परिषद्, पृषो० सिद्धि] परिषद्। सभा।

पार्ष्णि—स्त्री० [स०√पृष् (सीचना)+नि, नि० वृद्धि] १. पैर की एडी। २. सेना का पिछला भाग। ३. किसी चीज का पिछला भाग। ४. पैर से किया जानेवाला आघात। ठोकर। ५. जीतने या विजय प्राप्त करने की इच्छा। जिगीषा। ६. जाँच-पडताल। छान-बीन।

पार्ष्णि-क्षेम—पु० [स०] एक विश्वेदेव।

पार्ष्णि-ग्रहण—पु० [ष० त०] किसी पर, विशेषत शत्रु की सेना पर पीछे से किया जानेवाला आक्रमण या आघात।

पार्ष्णि-ग्राह—पु० [स० पार्ष्णि√ग्रह् (ग्रहण)+अण्] १ वह जो किसी के पीठ पर या पीछे रहकर उसकी सहायता करता हो। २ सेना के पिछले भाग का प्रधान अधिकारी या नायक।

पार्ष्णि-घात—पु० [तृ० त०] पैर से किया जानेवाला आघात। ठोकर।

पार्सल—पु०=पारसल।

पालक—पु० [स०√पाल् (रक्षण)+क्विप्=पाल् अक, तृ० त०] १. पालक नाम का साग। २ बाज पक्षी। ३ एक प्रकार का रत्न जो काले, लाल या हरे रग का होता है।

पालकी—स्त्री० [स० पालक+ङीप्] १ पालकी नाम का साग। २ कुदुरू नाम का गध द्रव्य।

पालक्य—पु० [सं० पालक+ष्यञ्] पालक (साग)।

पालक्या—स्त्री० [स० पालक्य+टाप्] कुदुरू नामक पौधा और उसका फल।

पालगं—पु०=पलग।

पाल—वि० [स०√पाल्+णिच्+अच्] १. पालन करनेवाला। पालक। २ आज-कल कुछ सज्ञाओ के अत मे लगनेवाला एक शब्द जिसका अर्थ होता है—काम, प्रबध या व्यवस्था करने अथवा सब प्रकार से रक्षित रखनेवाला। जैसे—कोटपाल, राज्यपाल, लेखपाल आदि।

पु० १ पीकदान। उगालदान। २ चीते का पेड। चित्रक वृक्ष। ३ बगाल का एक प्रसिद्ध राजवश जिसने वग और मगध पर साढे तीन सौ वर्षो तक राज्य किया था।

पु०[हिं० पालना] १ फलो को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिए पत्तो आदि से ढककर या और किसी युक्ति से रखने की विधि।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

२ ऐसा स्थान जहाँ फल आदि रखकर उक्त प्रकार से पकाये जाते हो।

पु०[स० पट या पाट] १. वह लबा-चौडा कपडा जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिए तानते हैं कि उसमे हवा भरे और उसके जोर से नाव बिना डाँड चलाये और जल्दी-जल्दी चले।

क्रि० प्र०—उतारना।—चढाना।—तानना।

२ उक्त प्रकार का वह लंबा-चौड़ा और मोटा कपड़ा जो धूप, वर्षा आदि से बचने के लिए खुले स्थान के ऊपर टाँगा या फैलाया जाता है। ३ खेमा। तंबू। शामियाना। ४ गाड़ी, पालकी आदि को ऊपर से ढकने का कपड़ा। ओहार।

स्त्री०[सं० पालि]१. पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा। मेंड़। २ नदी आदि का ऊँचा किनारा या टीला। ३. नदी आदि के घाट पर के नीचे का ऐसा खोखला स्थान, जो नीव से कंकड़-पत्थर आदि बह जाने के कारण बन जाता है।

पु०[सं० पालि] कबूतरों का जोड़ा खाना। कपोत-मैथुन।

क्रि० प्र०—खाना।

पु०[?] वह जमीन जो सरकार की निजी संपत्ति होती है।

पालउ†—पु०=पल्लव।

पालक—वि०[सं०√पाल्+णिच्+ण्वुल्—अक][स्त्री० पालिका]पालन करनेवाला।

पु०१. पालकर अपने पास रखा हुआ लड़का। २. प्रधान शासक या राजा। ३ घोड़े का साईस। ४ चीते का पेड़। चित्रक।

पुं०[सं० पालक्य] एक प्रकार का प्रसिद्ध साग।

†पु०=पलंग। उदा०—खंड खंड साजी पालक पीढ़ी।—जायसी।

पालकजूही—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा जो दवा के काम मे आता है।

पालकरी—स्त्री०[हिं० पलंग] लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा जो पलंग, चारपाई, चौकीआदि के पायों को ऊँचा करने के लिए उसके नीचे रखा जाता है।

पालकाप्य—पु०[सं०]१. एक प्राचीन मुनि जो अश्व, गज आदि से संबंध रखनेवाली विद्या के प्रथम आचार्य माने गये है। २. वह विद्या या शास्त्र जिसमे हाथी घोड़े आदि के लक्षणो, गुणो आदि का निरूपण हो। शालिहोत्र।

पालकी—स्त्री० [सं० पल्यंक;प्रा० पल्लंक] एक प्रसिद्ध सवारी जिसमे सवार बैठता या लेटता है और जिसे कहार या मजदूर लोग कंधे पर उठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है।

स्त्री०[सं० पालक] पालक का शाक।

पालकी गाड़ी—स्त्री० [हिं० पालकी+गाड़ी] एक तरह की घोड़ा-गाड़ी जिसका ऊपरी ढाँचा पालकी के आकार का तथा छायादार होता है।

पालगाड़ी—स्त्री०=पालकी गाड़ी।

पालघ्न—पु०[सं० पाल√हन् (हिंसा)+क] कुकुरमुत्ता।

पालट—पु०[सं० पालन]१. पाला हुआ लड़का। २. गोद लिया हुआ लड़का। दत्तकपुत्र।

पु०[सं० पर्यस्त, प्रा० पलट्ट]१. पलटने की क्रिया या भाव। पलट। २ परिवर्तन। ३ पटेबाजी मे एक प्रकार का प्रहार या वार।

पालटना*—स०=१.पलटना। २.=पलटाना।

पालड़ा—पु०=पलड़ा।

पालतू—वि०[सं० पालना] (पशु-पक्षियो के संबंध मे) जो पकड़कर घर मे रखा तथा पाला गया हो (जंगली से भिन्न)। जैसे—पालतू तोता पालतू बंदर।

पालथी—स्त्री० [सं० पर्यस्त=फैला हुआ]दोनों टाँगों को मोड़कर बैठने की वह मुद्रा, जिसमें पैर दूसरी टाँग की रान के नीचे पड़ते है। पद्मासन। कमलासन। पलथी।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

पालन—पु० [सं०√पाल्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि०पालनीय, पाल्य, भू० कृ० पालित]१ अपनी देख-रेख मे और अपने पास रखकर किसी का भरण-पोषण करने की क्रिया या भाव। (मेन्टेनेन्स)२ आज्ञा, आदेश, कर्तव्य आदि कार्यों का निर्वाह। (डिसचार्ज, परफॉर्मेन्स) ३. अनुकूल आचरण द्वारा किसी निश्चय वचन आदि का होनेवाला निर्वाह। (एबाइड) ४. जीव-जतुओं के संबंध मे उन्हें अपने पास रख-कर उनका वंश,सामर्थ्य या उनसे होनेवाली उपज आदि बढ़ाने का काम। जैसे—मधुमक्षिका पालन, पशु-पालन आदि। ५. तत्काल ब्याई हुई गाय का दूध। पेवस।

पालना—स०[सं० पालन]१. व्यक्ति के संबंध मे, उसे भोजन, वस्त्र आदि देकर उसका भरण-पोषण करना। पालन करना। २ आज्ञा, आदेश, प्रतिज्ञा, वचन आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करना। पालन करना। ३. पशु-पक्षियों को मनोविनोद के लिए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना। पोसना। ४. (दुर्व्यसन या रोग) जान-बूझकर अपने साथ लगा रखना और उसे दूर करने का प्रयत्न न करना। ५. कष्ट या विपत्ति से बचाकर सुरक्षित रखना। रक्षा करना। उदा०—आनन सुखाने कहै, क्यौहूँ कोउ पालि है।—तुलसी।

पु०[सं० पल्यंक] एक तरह का छोटा झूला, जिसमे छोटे बच्चों को लेटाकर झुलाया या सुलाया जाता है।

पालनीय—वि० [सं० √ पाल्+णिच्+अनीयर] जिसका पालन किया जाना चाहिए अथवा किया जाने को हो।

पालयिता (तृ)—पु०[सं०√पाल्+णिच्+तृच्] वह जो दूसरो का पालन अर्थात् भरण-पोषण करता हो। पालन-पोषण करनेवाला।

पाल-वंश—पुं० [सं०] दे० 'पाल' के अंतर्गत।

पालव—पु०]सं० पल्लव] १. पल्लव। पत्ता। २ कोमल, छोटा और नया पौधा।

पाला—पु०[सं० प्रालेय]१. बादलो मे रहनेवाले पानी या भाप के वे जमे हुए सफेद कण, जो अधिक सरदी पड़ने पर आकाश से पेड़-पौधो आदि पर पतली तह की तरह फैल जाते है और इस प्रकार उन्हे हानि पहुँचाते हैं।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

मुहा०—(किसी चीज पर) पाला पड़ना=(क) बुरी तरह से नष्ट होना। (ख) इतना दब जाना कि फिर जल्दी उठ न सके। जैसे—आशाओ पर पाला पड़ना। (फसल आदि को) पाला मार जाना=आकाश से पाला गिरने के कारण फसल की पैदावार खराब या नष्ट हो जाना।

२. बहुत अधिक ठंढ या सरदी जो उक्त प्रकार के पात के कारण होती है। जैसे—इस साल तो यहाँ बहुत अधिक पाला है।

पु०[सं० पट्ट, हिं० पाड़ा]१ प्रधान स्थान। पीठ। २. वह धुस या भीटा अथवा बनाई हुई मेंड़ जिससे किसी क्षेत्र की सीमा सूचित होती हो। ३. कबड्डी आदि के खेलो मे दोनो पक्षो के लिए अलग-अलग

निर्वारित क्षेत्र मे जिसकी सीमा प्राय जमीन पर गहरी लकीर खीचकर स्थिर की जाती है।

पु०[हिं०]१. पल्ला। २ लाक्षणिक रूप मे, कोई ऐसा काम या वात जिसमे किसी प्रतिपक्षी को दवाना अथवा उसके साथ समानता के भाव से रहकर निर्वाह करना पडता है।

मुहा०—(किसी से) पाला पड़ना=ऐसा अवसर या स्थिति आना जिसमे किसी विकट व्यक्ति का सामना करना पडे, या उससे सपर्क स्थापित हो। जैसे—ईश्वर न करे, ऐसे दुष्ट से किसी का पाला पडे। (किसी के) पाले पड़ना=ऐसी स्थिति मे आना या होना कि जिससे काम पडे, वह वहुत ही भीषण या विकट व्यक्ति सिद्ध हो। जैसे—तुम भी याद करोगे कि किसी के पाले पडे थे।

३ वह जगह जहाँ दस-वीस आदमी मिलकर वैठा करते हो। ४ अखाडा। ५.कच्ची मिट्टी का वह गोलाकार ऊँचा पात्र, जिसमें अनाज भरकर रखते हैं। कोठला।

पु०[स० पल्लव, हिं० पालो] जगली वेर के वृक्ष की पत्तियाँ जो चारे के काम आती हैं।

†पु०=पाडा (टोला या महल्ला)।

पालागन—स्त्री० [हिं० पावँ+पर+लगना] आदर-पूर्वक किसी पूज्य व्यक्ति के पैर छूने की क्रिया या भाव। प्रणाम।

पालागल—पु०[स०]१ प्राचीन भारत मे, समाचार लाने और ले जानेवाला व्यक्ति। सदेशवाहक। सवादवाहक। हरकारा। २ दूत।

पालागली—स्त्री० [स० पालागल+ङीप्] प्राचीन भारत मे, राजा की चौथी और सवसे कम आदर पानेवाली रानी जो शूद्र जाति की होती थी।

पालाश—वि०[स० पलाश+अण्] १. पलाश-सवधी। २ पलाश का वना हुआ। ३. हरा।

पु० १ तेज पत्ता। २ हरा रग।

पालाशखंड—पु०[व०स०] मगध देश।

पालाशि—पु०[स० पलाश+इञ्] पलाश गोत्र के प्रवर्तक ऋषि।

पालिंद—पु०[स० पलिंद+अण्]कुदुरू नामक गध-द्रव्य।

पालिंदी—स्त्री०[स० पालिंद+ङीप्] १. श्यामा लता। २ त्रिवृत्ता।

पालि—स्त्री०[स०√ पल् (रक्षा करना)+इण्]१ कान के नीचे लटकनेवाला कोमल मास-खड जिसमे छेद करके वालियाँ आदि पहनी जाती हैं। कान की लौ। २ किसी चीज का किनारा या कोना। ३ कतार। पक्ति। श्रेणी। ४ सीमा। हद। ५ पुल। सेतु। ६ वाँध। मेंड़। ७ घेरा। परिधि। ८. अक। क्रोड। गोद। ९. अडाकार तालाव या सरोवर। १०. वह भोजन जो परदेशी विद्यार्थी को गुरुकुल से मिलता था। ११ ऐसी स्त्री जिसकी ठोढी पर वाल तथा मूँछें हो। १२ चिह्न। निशान। १३ जूँ नाम का कीडा। १४. एक तौल जो एक प्रस्थ के वरावर होती थी। १५ दे० 'पाली'।

पालिक—पु०[स० पल्यक]१. पलग। २ पालकी।

पालिका—स्त्री० [स० पालक+टाप्, इत्व]१ पालन करनेवाली। २. समस्तपदो के अत मे, वह जो पालन-पोषण तथा सुरक्षा का पूरा प्रवध करती हो। जैसे—नगर पालिका, महानगर पालिका।

पालित—वि०[स०√पाल्+णिच्+क्त] [स्त्री० पालिता] जिसे पाला गया हो। पाला हुआ।

पु० सिहोर का पेड।

पालित्य—पु०[स० पलित+ष्यञ्] वृद्धावस्था मे वालो का कुछ पीलापन लिये सफेद होना।

पालिधी—स्त्री०[स०] फरहद का पेड।

पालिनी—वि० स्त्री० [स०√ पाल्+णिनि+ङीप्] जो दूसरो को पालती हो। दूसरो का भरण-पोषण करनेवाली।

पालिश—स्त्री०[अ०]१ वह लेप या रोगन जो किसी चीज को चमकाने के लिए उस पर लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—चढाना।

२ उक्त प्रकार के लेप से होनेवाली चमक। ओप।

पालिसी—स्त्री०[अ०]१ नयी रीति। २. वीमा-सवधी वह प्रतिज्ञा-पत्र जो वीमा करनेवाली सस्था की ओर से अपना वीमा करानेवाले को मिलता है।

पाली (लिन्)—वि० [स०√पाल्+णिनि] [स्त्री० पालिनी]१ पालन या पोषण करनेवाला। २ रक्षा करनेवाला। रक्षक।

पाली—स्त्री० [?] १ देग। वटलोई। २. वरतन का ढक्कन। ३ ऊपरी तल या पार्श्व। जैसे—कपोलपाली=गाल का ऊपरी तल। ४ प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध भाषा जो गौतम वुद्ध के समय सारे भारत के सिवा वाह्लीक, वरमा, श्याम, सिंहल आदि देशो मे वोली और समझी जाती थी।

विशेष—गौतम वुद्ध ने इसी भाषा मे धर्मोपदेश किया था, और वौद्ध धर्म के सभी प्रमुख तथा प्राचीन ग्रथ इसी भाषा मे है। विद्वानो का मत है कि यह मुख्यत और मूलत भारत के मूल देश की भाषा थी जिसमे मागधी का भी कुछ अश सम्मिलित था, इस भाषा का साहित्य वहुत विशाल है।

५ पक्ति। श्रेणी। ६ तीतर, वटेर, वुलवुल आदि का वह वर्ग जो प्राय प्रतियोगिता के रूप मे लडाया जाता है। ७ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के पक्षी लडाये जाते हैं। ८ आज-कल कारखानो आदि मे, श्रमिको के उन अलग-अलग दलो के काम करने का समय जो पारी पारी से आता है। (शिफ्ट) ९ आज-कल गेंद-वल्ले, चौगान आदि खेलो मे खिलाडियो के प्रतियोगी दलो को खेलने के लिए होनेवाली पारी। (इनिंग)

†वि०=पैदल। उदा०—धणपाली, पिव पाखरयो, विहूँ भला भड़ जुध्ध।—ढोलामारू।

†पु०[?] चरवाहा। (राज०)

पालीवत—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड।

पालीवाल—पु०[?] गौड ब्राह्मणो के एक वर्ग की उपाधि।

पालीशोष—पु०[स०] कान का एक रोग।

पालू—वि० [हिं० पालना] पाला हुआ। पालतू।

पाले—अव्य०[हिं० पाला] अधिकार या वश मे।

मुहा० दे० 'पाला' के अतर्गत।

पालो—पु०[स० पालि?] ५ रुपए भर का वाट या तौल। (सुनार)

†पु०=पल्लव।

पाल्य—वि०[स०√ पाल्+ण्यत्] जिसका पालन होने को हो या किया जाने को हो।

पाल्लवा—स्त्री०[सं० पल्लव+अण्+टाप्] प्राचीन भारत में, एक तरह का खेल जो पेड़ों की छोटी-छोटी टहनियों से खेला जाता था।
पाल्लविक—वि०[सं० पल्लव+ठक्—इक] फैलनेवाला। प्रसरणशील।
पाल्वल—वि०[सं० पल्वल+अण्]१ पल्वल (तालाब) संबंधी। २. पल्वल (तालाब) में होनेवाला।
पु० छोटे ताल या तालाब का पानी।
पावँ—पु०=पाँव।
पाव—पु०[सं० पाद—चतुर्थांश]१ किसी पदार्थ का चौथाई अंश या भाग। २ वह जो तौल या मान में एक सेर का चौथाई भाग अर्थात् चार छटाँक हो। ३ उक्त तौल का बटखरा। ४ नौ गिरह का माप जो एक गज का चतुर्थांश होता है।
पद—पाव भर=(क) तौल में चार छटाँक। (ख) माप में नौ-गिरह।
†स्त्री० दे० 'पौ' (पासे का दाँव)।
पावक—वि०[सं०√पू (पवित्र करना)+ण्वुल्—अक] पवित्र करने-वाला।
पु०१. अग्नि। आग। २ अग्निमंथ या अगियारी नामक वृक्ष। ३ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ४. भिलावाँ। ५. वाय-विडंग। ६ कुसुम। बर्रे। ७ वरुण वृक्ष। ८. सूर्य। ९. सदाचार।
पावक-मणि—पु० [सं० कर्म० स०] सूर्यकान्त मणि। आतशी शीशा।
पावका—स्त्री०[सं० पाव√कै+क+टाप्] सरस्वती। (वेद)
पावकात्मज—पु० [सं० पावक-आत्मज, ष०त०] कार्तिकेय।
पावकि—पु०[सं० पावक+इञ्]१. पावक का पुत्र। कार्तिकेय। २. इक्ष्वाकुवंशीय दुर्योधन की कन्या सुदर्शना का पुत्र सुदर्शन।
पावकी—स्त्री० [सं० पावक+ङीप्]१ अग्नि की स्त्री। २. सरस्वती। (वेद)
पाव-कुलक—पु०=पादाकुलक।
पावचार*—वि०[सं० पावन-आचार] पवित्र और श्रेष्ठ आचरण करने-वाला। उदा०—तब देखि दुहूँ तिह पावचार।—गुरुगोविंदसिंह।
पु० पवित्र और श्रेष्ठ आचरण।
पावड़ा†—पु०=पाँवड़ा।
पावडी—स्त्री०=पाँवरी (खड़ाऊँ या जूता)।
पावती—स्त्री०[हिं० पावना]१. किसी चीज के पहुँचने की लिखित सूचना या प्राप्ति की स्वीकृति। जैसे—पत्र की पावती भेजना। २ किसी से रुपए लेने पर उसकी दी जानेवाली पक्की रसीद।
पावतीपत्र—पु०=पावती।
पावदान—पु०[फा० पाएदान या हिं० पाँव+फा० दान (प्रत्य०)]१. ऊँचे यानों या सवारियों में वह अंग या स्थान जिस पर पाँव रखकर उन पर सवार हुआ जाता है। जैसे—घोड़ागाड़ी या रेलगाड़ी का पावदान। २ मेज के नीचे रखी जानेवाली वह चौकी या लकड़ी की कोई रचना जिस पर कुरसी पर बैठनेवाले पैर रखते है। ३ जटा, मूंज, सन आदि अथवा धातु के तारों का बना हुआ वह चौकोर टुकड़ा जो कमरों के दरवाजे के पास पैर पोंछने के लिए रखा जाता है।
पावन—वि० [सं०√पू+णिच्+ल्यु—अन] [स्त्री० पावनी, भाव० पावनता]१ धार्मिक दृष्टि से, (वह चीज) जो पवित्र समझी जाती हो और दूसरों को भी पवित्र करती या बनाती हो। जैसे—पावन-जल। २ समस्त पदों के अंत में, पवित्र करने या बनानेवाला। जैसे—पतित-पावन। उदा०—गुन [illegible]—तुलसी।
पु० १. पावकाग्नि। २. सिद्ध पुरुष। ३. प्रायश्चित्त। ४ जल। पानी। ५. गोबर। ६ रुद्राक्ष। ७ चंदन। ८ सिलारस। ९. गोबर। १०. कुट नामक ओषधि। ११. पीली भंगरैया। १२ चित्रक। चीता। १३. विष्णु। १४ व्यासदेव का एक नाम।
पावनता—स्त्री० [सं० पावन+तल्—टाप्] पावन होने की अवस्था या भाव। पवित्रता।
पावनताई†—स्त्री० =पावनता।
पावनत्व—पु०[सं० पावन+त्व] =पावनता।
पावन-ध्वनि—पु०[सं० ब०स०]१ शंख-नाद। २ शंख।
पावना—पु०[सं० प्रापण, प्रा० पावण] वह जो अधिकार, न्याय आदि की दृष्टि से किसी से प्राप्त किया जाने को हो या किया जा सकता हो। प्राप्य धन या वस्तु। जैसे—बाजार में उनका हजारों रुपये का पावना पड़ा (या बाकी) है। लहना। (ड्यूज)
स० १. प्राप्त करना। पाना। २. प्रसाद, भोजन आदि के रूप में मिली हुई वस्तु खाना या पीना। जैसे—हम यहीं प्रसाद पावेंगे। ३. किसी चीज या बात का ज्ञान, परिचय आदि प्राप्त करना। ४. दे० 'पाना'।
पावनि—पु०[सं० पवन+इञ्] पवन के पुत्र हनुमान आदि।
पावनी—वि० स्त्री०[सं० पावन+ङीप्] पावन का स्त्रीलिंग रूप।
स्त्री०१. हड़। हर्रे। २. तुलसी। ३. गाय। गौ। ४. गंगा नदी। ५. पुराणानुसार शाक द्वीप की एक नदी।
पावनेदार—पु०[हिं० पावना+फा० दार] वह जिसका किसी की ओर पावना निकलता हो। दूसरे से प्राप्य धन लेने का अधिकारी। लहन-दार।
पावन्†—वि०=पावन।
पावमान—वि०[सं० पवमान+अण्] (सूक्त) जिसमें पवमान अग्नि की स्तुति की गयी हो। (वेद)
पावमानी—स्त्री०[सं० पावमान+ङीप्] वेद की एक ऋचा।
पाव-मुहर—स्त्री०[हिं० पाव=चौथाई+मुहर] शाहजहाँ के समय का सोने का एक सिक्का जिसका मूल्य एक अशरफी या एक मुहर का चौथाई होता था।
पावर—पु० [सं०] १. वह पासा जिस पर दो बिंदियाँ बनी हों। २ पासा फेंकने का एक प्रकार का ढंग या हाथ।
पु०[अं०] १. वह शक्ति जिससे मशीनें चलाई जाती हैं। यंत्र चलानेवाली शक्ति (जैसे—विद्युत्)। २ अधिकार। शक्ति। ३. सैन्यबल। ४. शासनिक शक्ति।
*पु०=पामर।
पाव-रोटी—स्त्री०[पुर्त० पाव=रोटी+हिं० रोटी] मैंदे, सूजी आदि का खमीर उठाकर बनाई जानेवाली एक तरह की मोटी और फूली हुई रोटी। डबलरोटी।
पावल†—स्त्री०=पायल।

पावली—स्त्री० [हि० पाव=चौथाई+ला (प्रत्य०)] एक रुपए के चौथाई भाग का सिक्का। चवन्नी।

पावस—स्त्री० [स० प्रावृष, प्रा० पाउस] १. वर्षाकाल। बरसात। २ वर्षा। वृष्टि। ३. वर्षाऋतु मे समुद्र की ओर से आनेवाली वे हवाएँ जो घटाओ के रूप मे होती हैं और जल बरसाती है। (मानसून)

पावा†—पु०=पाया।

पावी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मैना (पक्षी)।

पाश—पु० [स०√ पश् (बाँधना)+घञ्] १. वह चीज जिससे किसी को फँसाया या बाँधा जाय। जैसे—जजीर, रस्सी आदि। २ रस्सी से बनाया जानेवाला वह घेरा जिसमे गागर आदि को फँसाकर कूएँ मे लटकाया जाता है। ३ पशु-पक्षियों को फँसाकर पकड़ने का जाल। ४ बधन। ५ समस्त पदो के अत मे (क) सुन्दरता और सजावट के लिए अच्छी तरह बाँधकर तैयार किया हुआ रूप। जैसे—कर्ण-पाश। (ख) अधिकता और बाहुल्य। जैसे—केश-पाश। ५ वरुण देवता का अस्त्र जो फदे के रूप मे माना गया है। ६ दे० 'फाँस'।

प्रत्य० [फा०] छिडकनेवाला। जैसे—गुलाब पाश।

पु० किसी चीज का अश या खड। टुकडा।

पद—पाश-पाश। (देखें)

पाश-कंठ—वि० [स० ब०स०] जिसके गले मे फाँस या बधन पडा हो।

पाशक—पु० [स० √पश+णिच्+ण्वुल्—अक] १. जाल। फदा। २ चौपड खेलने का पासा।

पाश-क्रीड़ा—स्त्री० [तृ० त०] जूआ। द्यूत।

पाशधर—पुं० [ष०त०] वरुण देवता (जिनका अस्त्र पाश है)।

पाशन—पु० [स०√पश+णिच्+ल्युट्—अन] १ रस्सी। २. बधन।

पाश-पाश—अव्य० [फा०] टुकडे टुकडे। चूर-चूर।

पाश-पीठ—पु० [ष०त०] बिसात (चौसर खेलने की)।

पाश-बंध—पु० [स०त०] फदा।

पाश-बंधक—पु० [स०] बहेलिया। चिडीमार।

पाश-बंधन—पु० [स० त०] १ जाल। २ फदा।

पाश-बद्ध—भू०कृ० [स०त०] जाल या फदे मे फँसा हुआ।

पाश-भृत्—पु० [स०पाश√भृ (धारण)+क्विप्, तुक्] वरुण (देवता)।

पाश-मुद्रा—स्त्री० [मध्य०स०] हाथ की तर्जनी और अगूठे के सिरो को सटाकर बनाई जानेवाली एक तरह की मुद्रा। (तत्र)

पाशव—वि० [स० पशु+अण्] १ पशु-सबधी। पशुओ का। २ पशुओ की तरह का। पशुओ का-सा। जैसे—पाशव आचरण।

पु० पशुओं का झुड।

पाशवता—स्त्री०=पशुता। उदा०—प्रेम शक्ति मे चिर निरस्त्र हो जावेगी पाशवता।—पत।

पाशवान् (वत्)—वि० [स० पाश+मतुप्, वत्व] [स्त्री० पाशवती] जिसके पास पाश या फदा हो। पाशवाला। पशधारी।

पु० वरुण (देवता)।

पाशवासन—पु० स० पाशव-आसन कर्म०स०] एक प्रकार का आसन या बैठने की मुद्रा।

पाशविक—वि० [पशु+ठञ्—इक] १ पशुओ की तरह का ३ (आचरण) जो पशुओं के आचरण जैसा हो।

पाश-हस्त—पु० [ब० स०] १ वरुण। २ यम।

पाशात—पु० [स०=पार्श्व-अन्त, पृषो० सिद्धि] सिले हुए कपड़े का पीठ की ओर पडनेवाला अश।

पाशा—पु० [तु०] तुर्किस्तान मे बडे बडे अधिकारियो और सरदारों को दी जानेवाली उपाधि।

पाशिक—पु० [स० पाश+ठक्—इक] चिडीमार। बहेलिया।

पाशित—भू० कृ० [स० पाश+णिच्+क्त] पाश मे या पाश मे बँधा हुआ। पाशबद्ध।

पाशी (शिन्)—वि० [सं० पाश+इनि] १ जो अपने पास पाश या फदा रखता हो। पाशवाला।

पु० १. वरुण देवता। २. यम। ३ बहेलिया। ४ अपराधियो के गले मे फँदा या फाँसी लगाकर उन्हे प्राण-दड देनेवाला व्यक्ति, जो पहले प्राय. चाडाल हुआ करता था।

स्त्री० [फा०] १ जल या तरल पदार्थ छिडकने की क्रिया या भाव। जैसे—गुलाब-पाशी। २ खेत आदि को जल से सींचने की क्रिया। जैसे—आब-पाशी।

पाशुपत—वि० [स० पशुपति+अण्] १ पशुपति-सबधी। पशुपति या शिव का।

पु० १ पशुपति या शिव के उपासक एक प्रकार के शैव। २. एक तत्र शास्त्र जो शिव का कहा हुआ माना जाता है। ३ अथर्ववेद का एक उपनिषद्। ४ अगस्त का फूल।

पाशुपत-दर्शन—पु० [कर्म० स०] एक प्राचीन दर्शन जिसमे पशुपति, पाशु और पशु इन तीन सत्ताओं को मुख्य माना गया था और जिसमे पशु के पाश से मुक्त होने के उपाय बतलाये गये है।

पाशुपत-रस—पु० [कर्म० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध।

पाशुपतास्त्र—पु० [पाशुपत-अस्त्र, कर्म० स०] शिव का एक भीषण शूलास्त्र जिसे अर्जुन ने तपस्या करके प्राप्त किया था।

पाशुपाल्य—पु० [स० पशुपाल+ष्यञ्] पशुपालन।

पाशु-बंधक—पु० [स० पशुबध+ठक्—क] यज्ञ मे वह स्थान जहाँ बलि पशु बाँधा जाता था।

पाश्चात्य—वि० [स० पश्चात्+त्यक्] १ पीछे का। पिछला। २ पीछे होनेवाला। ३ पश्चिम दिशा का। ४. पश्चिमी महादेश मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। पौरस्य का विपर्याय। जैसे—पाश्चात्य दर्शन, पाश्चात्य साहित्य।

पाश्चात्यीकरण—पु० [स० पाश्चात्य+च्वि, ईत्व√कृ+ल्युट्—अन] किसी देश या जाति को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे मे ढालना या पाश्चात्य ढग का बनाना। (वेस्टर्नाइजेशन)

पाश्या—स्त्री० [स० पाश+यत्+टाप्] पाश। जाल।

पाषड—पु० [स०√पा (रक्षा)+क्विप्=वेदधर्म,√षड् (खडन)+अच्] १ वे सब आचरण और कार्य जो वैदिक धर्म या रीति के हों। २ वैदिक रीतियों का खडन करनेवाले कार्य और विचार। ३. दूसरो को धोखा देने आदि के उद्देश्य से झूठ-मूठ किये जानेवाले धार्मिक कृत्य। ढोंग।

पाखंडी (डिन्)—वि० [स० पा√षड्+णिच्+इनि] १. जो वेदों के सिद्धान्तों के विरुद्ध चलता हो और किसी दूसरे झूठे मत का अनुयायी

पास-बंद—पु० [हिं० पास+फा० बंद] दरी बुनने के करघे की वह लकडी जिससे वे बँधी रहती है और जो ऊपर-नीचे जाया करती है।

पास-बान—पु० [फा०] [भाव० पासबानी] पहरा देनेवाला व्यक्ति। द्वारपाल।

स्त्री० रखेली स्त्री। (राज०)

पासबानी—स्त्री० [फा०] १ द्वारपाल का काम और पद। २ पहरेदारी।

पास-बुक—स्त्री० [अ०]=लेखा पुस्तिका।

पासमान—पु० [हिं० पास+मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास।

पु०=पासवान।

पासवर्ती—वि०=पार्श्ववर्ती।

पाससार†—पु०=पासासारि।

पासह†—अव्य०=पास।

पासा—पु० [स० पाशक, प्रा० पासा] १ हड्डी, हाथी दाँत आदि के छ पहले टुकडे जिनके पहलो पर एक से छ तक बिंदियाँ अकित होती है और जिन्हे चौसर आदि के खेलो मे खेलाडी बारी-बारी से फेंककर अपना दाँव निश्चित करते है। (डाइस)

मुहा०—(किसी का) **पासा पड़ना**=(क) पासे के पहल का किसी की इच्छा के अनुसार ठीक गिरना। जीत का दाँव पडना। (ख) ऐसी स्थिति होना कि उद्देश्य, युक्ति आदि सफल हो। **पासा पलटना**=(क) पासे का विपरीत प्रकार या रूप मे गिरने लगना। (ख) ऐसी स्थिति आना या होना कि जो क्रम चला आ रहा हो, वह उलट जाय, मुख्यत बुरी से अच्छी दशा या दिशा की ओर प्रवृत्त होना। **पासा फेंकना**=भाग्य के भरोसे रहकर और सफलता प्राप्त करने की आशा से किसी प्रकार का उपाय, प्रयत्न या युक्ति करना।

२ चौपड या चौसर का खेल, अथवा और कोई ऐसा खेल जो पासो से खेला जाता हो। ३ मोटी छ पहली वत्ती के आकार मे लाई हुई वस्तु। गुल्ली। जैसे—चाँदी या सोने का पासा (अर्थात् उक्त आकार मे ढाला हुआ खड)। ४ सुनारो का एक उपकरण जो काँसे या पीतल का चौकोर ढला हुआ खड होता है और जिसके हर पहल पर छोटे-वडे गोलाकार गड्ढे वने होते है। (इन्ही गड्ढो की सहायता से गहनो मे गोलाई लाई जाती है।) ५ कोई चीज ढालने का साँचा। (राज०)

पासार†—पु० [फा० पासदार] [भाव० पासारी] १ तरफदार। पक्षपाती। २ शरणदाता। रक्षक।

पासासारि—पु० [हिं० पासा+सारि=गोटी] १ पासो की सहायता से खेला जानेवाला खेल। जैसे—चौसर। २. चौसर आदि की गोट जो पासा फेंककर उसके अनुसार चलाते है।

पासिक—पु० [स० पाश] १ फदा। २ वधन।

पासिका—स्त्री० [स० पाश] १ जाल। २ वधन।

पासी—पु० [स० पाशिन्, पाशी] १. जाल या फदा डालकर चिडियाँ पकडनेवाला। बहेलिया। २ एक जाति जो ताड के पेडो से ताडी उतारने का काम करती है।

स्त्री० [स० पाश] १ घोडो के पिछले पैर मे बाँधने की रस्सी। पिछाडी। २ घास बाँधने की जाली या रस्सी।

†स्त्री०=पाश (फदा)।

पासु*—पु०=पाश।

अव्य०=पास।

पासुरी†—स्त्री०=पसली।

पाहँ—अव्य० [स० पार्श्व, प्रा० पास, पाह] १ निकट। पास। समीप। २ प्रति। से। उदा०—जाइ कहहु उन पास सँदेसू।—जायसी।

पाह—स्त्री० [हिं० पाहन] एक तरह का पत्थर जिससे लौग, फिटकरी, अफीम आदि घिसकर आँख पर लगाने का लेप वनाते हैं।

पु० [स० पथ] पथ। मार्ग।

पाहत—पु० [स० नि० सिद्धि० पररूप] शहतूत का पेड।

पाहन—पु० [स० पाषाण, प्रा० पाहाण] १ पत्थर। उदा०—पाहन ते न कठिन कठिनाई।—तुलसी। २ कसौटी का पत्थर। ३. पारस पत्थर। स्पर्शमणि। उदा०—इतर धातु पाहनहि परसि कचन ह्वै सोहै।—नन्ददास।

वि० पत्थर की तरह कठोर हृदय का।

पाहरू—पु० [हिं० पहर, पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार।

पाहल—स्त्री० [हिं० पहला] किसी को सिक्ख धर्म की दीक्षा देने के समय होनेवाला धार्मिक कृत्य या समारोह।

पाहा—पु० [स० पथ] १. पथ। मार्ग। २ मेड।

पाहात—पु० [स० नि० सिद्धि] शहतूत का पेड।

पाहार†—पु० [स० पयोधर, प्रा० पयोहर] बादल। मेघ।

†पु० पहाड।

पाहि—अव्य० [स० पार्श्व; प्रा० पास, पाह] १ पास। निकट। २ किसी की ओर या प्रति। ३ किसी के उद्देश्य से अथवा उसके पास जाकर।

पाहि—अव्य० [स०√पा+लोट्+सिप्—हि] रक्षा करो। बचाओ।

पाहिमाम्—अव्य० [स० पाहि और माम् व्यस्त पद] त्राहिमाम्।

पाहीं†—अव्य०=पाहि।

पाही—स्त्री० [हिं० पाह=पथ] किसी किसान की वह खेती जो उसके गाँव या निवास स्थान से कुछ अधिक दूरी पर हो। उदा०—तहाँ नरायन पाही कीन्हा, पल आवै पल जाई हो।—नारायणदास सन्त।

पाहुँच†—स्त्री०=पहुँच।

पाहुना—पु० [स० प्राघूर्ण, प्राघुण=अतिथि] [स्त्री० पाहुनी] १ अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २ जामाता। दामाद। (पूरब)

पाहुनी—स्त्री० [हिं० पाहुना] १. आतिथ्य। मेहमानदारी। पहुनई। २. रखेली स्त्री।

पाहुर—पु० [स० प्राभृत, प्रा० पाहुड=भेंट] १ उपहार। भेंट। नजर। २ शुभ अवसरो पर सबधियो और इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजे जानेवाले फल, मिठाइयाँ आदि। वैना। वायन।

पाहू—पु० [स० पथ, पु० हिं० पाह] १ पथिक। वटोही। २ पाहुना। मेहमान। ३ दामाद। उदा०—पाहू घर आवे मुकलाऊ आये।—गुरु ग्रथसाहब।

पु० [?] दोनो ओर से थोडा मुडा हुआ वह मोटा लोहा जिसमे इमारत मे अगल-बगल रखे हुए पत्थर जकडकर स्थित किये जाते है।

पु० [स० पाहि] १ घृणा या तुच्छतापूर्वक किसी को पुकारने या संबोधित करने का शब्द। २ तुच्छ व्यक्ति।

पिंग—वि० [सं०√पिञ्ज् (वर्ण)+अच्, कुत्व] १. पीलापन लिये हुए भूरा। सुँघनी के रंग का। २. भूरापन लिये हुए लाल। तामड़ा।
पु० १ भैंसा। २. चूहा। ३. हरताल।

पिंग-कपिशा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] गुबरैले के आकार का एक कीड़ा जिसका रंग काला या तामड़ा होता है। तेलपायी। तेलचटा।

पिंग-चक्षु (स्)—वि० [ब० स०] जिसकी आँखें भूरे या तामड़े रंग की हों।
पु० नक्र या नाक नामक जल-जंतु।

पिंगल—वि० [सं० पिंग+कलच्] १ पीला। २. भूरापन लिये हुए पीला या लाल। तामड़ा
पु० १. एक प्राचीन मुनि या आचार्य जिन्होंने छंद सूत्र की रचना की थी। नागमुनि। २ उक्त मुनि का बनाया हुआ छंद शास्त्र। ३. किसी प्रकार का भाषा या छन्द शास्त्र। (प्रयोगार्थ)
मुहा०—(किसी को) पिंगल पढ़ाना अपना दाम छिपाने या मतलब निकालने के लिए उलटी-सीधी बातें समझाना। पिंगल सामना (क) टालमटोल करना। (ख) नखरा करना। इतराना।
४ साठ संवत्सरों में से ५१वाँ संवत्सर। ५ संगीत में, सबेरे के समय गाया जानेवाला एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है। ६. सूर्य का एक गण या पारिपार्श्वक। ७. एक यक्ष का नाम। ८ नौ निधियों में से एक। ९. अग्नि। [illegible]। १० नकुल। नेवला। ११. बन्दर। १२ एक प्रकार का यक्ष। १३ एक प्राचीन पर्वत। १४. पुराणानुसार भारत के उत्तर-पश्चिम का देश। १५ हरताल। १६. उल्लू। १७ पीपल। १८ उशीर। खस। १९ रास्ना। २०. एक प्रकार का फनदार साँप। २१ एक प्रकार का स्थावर विष। † २२ ब्रजभाषा।
विशेष—किसी समय ब्रजभाषा में ही अधिकतर काव्य की रचना होती थी, और वही काव्य की मुख्य भाषा मानी जाती थी, इसी से उसका यह नाम पड़ा था।
†पु०=पंगुल।

पिंगला—स्त्री० [सं० पिंगल+टाप्] १. हठयोग में, सुषुम्ना नाड़ी के बाईं ओर स्थित एक नाड़ी जिसमें दक्षिण नासा-पुट का श्वास चलता है। इसमें सूर्य का वास माना गया है। इसलिए इसे सूर्यनाड़ी भी कहते हैं। यह स्वभाव से उष्ण है। इसके अधिष्ठाता देवता विष्णु माने जाते हैं। २ लक्ष्मी। ३. दक्षिण दिशा के दिग्गज की पत्नी। ४. गोरोचन। ५ एक प्रकार की चिड़िया। ६. शीशम का पेड़। ७ राजनीति। ८ भागवत के अनुसार एक प्रसिद्ध भगवद् भक्त वेश्या।

पिंगलाक्ष—पु० [सं० पिंगल+अक्षि, ब० स०, षच्] शिव।

पिंगलिका—स्त्री० [सं० पिंगल+कन्+टाप्, इत्व] १ एक प्रकार का बगला। २ एक प्रकार का उल्लू। ३ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की मक्खी जिसके काटने से जलन और सूजन होती है।

पिंगलित—वि० [सं० पिंगल+इतच्] ललाई लिये हुए भूरे रंग का।

पिंग-सार—पु० [ब० स०] हरताल।

पिंग स्फटिक—पु० [कर्म० स०] गोमेदक मणि।

पिंगा—स्त्री० [सं० पिंग+टाप्] १ गोरोचन। २. हल्दी। ३. वंशलोचन। ४. हींग। ५ एक [illegible]-वाहिनी नाड़ी। ६. चंडिका देवी।
वि० १. [illegible]। [illegible]। २ [illegible]। दुर्बल। ३ [illegible]। ४. [illegible]।
पु० [illegible]।

पिंगाक्ष—वि० [पिंग-अक्षि, ब० स०, षच्] [स्त्री० पिंगाक्षी] जिसकी आँखें कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंग की हों।
पु० १ शिव। २. नाक या कुंभीर नामक जल-जन्तु। ३ बिडाल। बिल्ला।

पिंगाक्षी—स्त्री० [सं० पिंगाक्ष+ङीष्] कुमार की अनुचरी एक मातृका।

पिंगाश—पु० [सं० पिंग√अश् (व्याप्ति)+अण्] १ एक प्रकार की मछली जिसे बंगाल में पांगास कहते हैं। २ गाँव का प्रधान या मुखिया। ३. खरा या शुद्ध सोना।

पिंगाशी—स्त्री० [सं० पिंगाश+ङीष्] नील का पौधा।

पिंगिमा(मन्)—स्त्री० [सं० पिंग+इमनिच्] ऐसा भूरापन जिसमें कुछ लाली भी हो।

पिंगी—स्त्री० [सं० पिंग+ङीष्] १ शमी का पेड़। २ [illegible]।

पिंगुरा—पु० [हिं० पेंग] छोटा पालना।

पिंगेक्षण—वि० [पिंग-ईक्षण, ब० स०] पिंगाक्ष।
पु० शिव।

पिंगेश—पु० [पिंग-ईश, कर्म० स०] अग्नि का एक नाम।

पिंछ—पु० पिच्छ।

पिंज—वि० [सं०√पिञ्ज्+घञ्+अच्] विकल। व्याकुल।
पु० [√पिञ्ज्+घञ्] १. बल। शक्ति। २ वध। हत्या। ३ एक प्रकार का कपूर। ४ चन्द्रमा। ५ समूह।

पिंजक—पु० [सं०√पिञ्ज्+ण्वुल्—अक] [illegible]।

पिंजट—पु० [सं०√पिञ्ज्+अटन्] आँख में से निकलनेवाला एक तरह का गाढ़ा सफेद मल या कीचड़।

पिंजड़ा—पु० पिंजरा।

पिंजन—पु० [सं०√पिञ्ज्+ल्युट्—अन] १. रुई धुनने की धुनकी। २ रुई धुनने की क्रिया, ढंग या भाव।

पिंजना—स० [सं० पिंजन] धुनकी से रुई धुनना।

पिंजर—वि० [सं०√पिञ्ज्+अर्] १ ललाई लिये हुए पीले रंग का। २ पीला। ३ सुनहला।
पु० १ पिंजरा। २ हड्डियों की ठठरी। पंजर। ३ हरताल। ४ सोना। ५. नागकेसर। ६ लाल रंग का वह घोड़ा जिसमें कुछ भूरापन भी हो।

पिंजरक—पु० [सं० पिञ्जर+कन्] हरताल।

पिंजरा—पु० [सं० पंजर] १ धातु, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ बक्स की तरह का वह आधान जिसमें पक्षी, पशु आदि बंद करके रखे जाते हैं। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा स्थान जहाँ से किसी का बाहर निकलना प्रायः असंभव या दुष्कर हो।

पिंजरापोल—पु० [हिं० पिंजरा+पोल=फाटक] १. पशुशाला। २. गोशाला।

पिंजरिक—पु० [सं०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

पिंजरित—भू० कृ० [स० पिंजर+इतच्] पीले रग का या पीले रग मे रगा हुआ।

पिंजल—वि० [स०√पिञ्ज्+कलच्] १. दुख, भय सकट आदि के कारण जिसका वर्ण पीला पड़ गया हो। २. दुखी। ३. व्याकुल। ४ बहुत अधिक आतकित।

पु० १. कुशा। २. हरताल। ३. जाल-बेंत।

पिंजली—स्त्री० [स० पिंजल+ङीप्] एक मे बँधी हुई कुश घास की दो नुकीली पत्तियाँ जिनका उपयोग यज्ञ मे होता था।

पिंजा—स्त्री० [स० पिंज+टाप्] १. हलदी। २ रुई।

†पु०=पिंजारा (धुनिया)।

पिंजारा—पु० [स० पिंजन] रुई धुननेवाला कारीगर। धुनिया।

पिंजारी—स्त्री० [देश०] त्रायमाणा नाम की लता। गुरवियानी।

पिंजाल—पु० [स०√पिञ्ज्+आलच्] सोना। स्वर्ण।

पिंजिका—स्त्री० [स०√पिञ्ज्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] धुनी हुई रुई की पूनी जो सूत कातने के काम आती है।

पिंजियारा—पु० [स० पिंजिका=रुई की वत्ती] १. रुई ओटनेवाला। २ रुई धुननेवाला। धुनिया।

पिंजूष—पु० [स०√पिञ्ज्+ऊपन्] कान की मैल। खूँट।

पिंड—वि० [स०√पिण्ड् (ढेर लगाना)+अच्] [स्त्री० पिंडी] १. घन। ठोस। २ गुथा हुआ। ३. घना।

पु० १. घनी या ठोस चीज का छोटा और प्राय गोलाकार खड या टुकडा। ढेला या लोंदा। जैसे—गुड, धातु या मिट्टी का पिंड। २ कोई गोलाकार पदार्थ। जैसे—नेत्र-पिंड। ३ भोजन का वह अश जो प्राय गोलाकार रूप मे लाकर मुँह मे डाला जाय। कौर। ग्रास। ४ जौ के आटे, भात आदि का बनाया हुआ वह गोलाकार खड जो श्राद्ध मे पितरो के उद्देश्य से वेदी आदि पर रखा जाता है।

पद—पिंड-दान। (देखें)

मुहा०—(किसी को) पिंड देना=कर्मकाड की विधि के अनुसार किसी मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसका श्राद्ध करना।

५. ढेर। राशि। ६. खाद्य पदार्थ। आहार। भोजन। ७ जीविका या उसके निर्वाह का साधन। ८ भिक्षुको को दिया जानेवाला दान। खैरात। ९. मास। गोश्त। १०. गर्भ की आरभिक अवस्था। भ्रूण। ११ मनुष्य की काया। देह। बदन। शरीर।

पद—पिंड-रोग। (देखें)

मुहा०—(किसी का) पिंड छोड़ना=जिसके पीछे पडे हो, उसका पीछा छोडना। तग या परेशान करने से बाज आना। जैसे—(क) वह जब तक उनका सर्वस्व नष्ट न कर देगा, तब तक उनका पिंड नहीं छोडेगा। (ख) आज महीने भर बाद बुखार ने पिंड छोडा है। (किसी के) पिंड पड़ना=किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किसी के पीछे पडना। (स्त्री के उदर में) पिंड पडना=स्त्री का गर्भधारण करना। उदा०—पिंड परै तउ प्रीति न तोरउ।—कबीर।

१२ जीव। प्राणी। १३ पैर की पिंडली। १४ तबले आदि के मुँह पर का चमडा। १५ पदार्थ। वस्तु। १६ घर का वह विशिष्ट भाग जो वास्तु-शास्त्र के नियमो के अनुसार उसे चौकोर बनाने के लिए बीच मे स्थिर किया जाता है। १७ मकान के दरवाजे के सामने का छायादार स्थान। १८ जलाने का कोई सुगधित पदार्थ। जैसे—धूप, राल आदि। १९. भूमिति मे, किसी घन पदार्थ की घनता या मोटाई अथवा उसका परिमाण। २० गणित मे त्रिज्या का चौबीसवाँ अश या भाग। २१. बल। शक्ति।

पुं० [स० पाडु] पांडु नामक रोग जिसमे सारा शरीर पीला हो जाता है। पीलिया। उदा०—पायाँ ज्यूँ पीली पडी रे, लोग कहैं पिंड रोग।—मीराँ।

पिंडक—पु० [स० पिण्ड√कै (चमकना)+क] १ गोलाकार पिंड। गोला। २. पिंडालू। ३. लोबान। ४. बोल। मुरमक्की। ५ गिलट। ६. शिला रस। ७. गाजर।

पिंड-कंद—पुं० [मध्य० स०] पिंडालू नामक कद।

पिंडकर—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, ऐसा कर जिसकी राशि एक बार निश्चित कर दी जाती थी और जिसके मान मे सहसा कोई परिवर्तन नही होता था।

पिंड-कर्कटी—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पेठा।

पिंडका—स्त्री० [स० पिंडक+टाप्] छोटी माता या चेचक नाम का रोग।

पिंडकी—†स्त्री०=पडुक।

पिंडखजूर—स्त्री० [स० पिंडखर्जूर] १ खजूर की जाति का एक वृक्ष जिसके फल बहुत मीठे होते है। २. उक्त पेड के फल।

पिंड-खर्जूर—पु० [मध्य० स०]=पिंड खजूर।

पिंड-खर्जूरी (रिका)—स्त्री० [स० पिंडखजूर+ङीप्]=पिंड खजूर।

पिंडगोस—पु० [स० गो√सन् (अलग करना)+ड, पिण्ड-गोस, कर्म० स०] १ गधरस। २. बोल।

पिंडज—पु० [सं० पिंड√जन् (उत्पन्न होना)+ड] प्राणी के पिंड या शरीर अर्थात् गर्भ से उत्पन्न होनेवाला जीव। जैसे—मनुष्य, घोड़ा, गाय आदि। (अडज और स्वेदज से भिन्न)

पिंडता—पु०=पडित। उदा०—छाडि छाडि पिंडता पोथी।—गोरख-नाथ।

पिंड-तैल (क)—पु० [ब० स०, कप्] १ कुछ वृक्षो से निकलनेवाला एक तरह का गध-द्रव्य जिसे लोबान कहते है। २ शिलारस।

पिंडद—पु० [स० पिंड√दा (देना)+क] पिंडा देने अर्थात् मृतक का श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति। वशज। सन्तान।

पिंड-दान—पु० [प० त०] कर्मकाण्ड के अनुसार पितरो को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध मे किया जाता है।

पिंडन—पु० [स०√पिण्ड्+ल्युट्—अन] १. पिण्ड अर्थात् गोलाकार वस्तुएँ बनाना। २ बाँध। ३ टीला।

पिंड-पात—पु० [प० त०] १. पिंड-दान। २ भीख माँगने के लिए इधर-उधर घूमना। ३. भिक्षापात्र मे मिली हुई भिक्षा।

पिंडपातिक—पु० [स० पिंडपात+ठन्—इक] भिखमगा। भिक्षुक।

पिंड-पाद—पु० [ब० स०] हाथी।

पिंड-पुष्प—पु० [ब० स०] १. अशोक का पेड और उसका फूल। २ अनार का पौधा। ३. जपा का फूल। ४. तगर का पुष्प। ५ कमल।

पिंड-पुष्पक—पु० [स० पिंडपुष्प+कन्] बथुआ (साग)।

पिंड-फल—पु० [ब० स०] कद्दू।

पिंड-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] तितलौकी।

पिंड-बीजक—पुं० [ब० स०, कप्] कनेर का पेड़।

पिंडभाक् (ज्)—पुं० [पिंड√भज् (प्राप्त करना)+ण्वि] पिंड पाने का अधिकारी अर्थात् पितर।

पिंडभृति—स्त्री० [ष० त०] जीवन निर्वाह के साधन। जीविका।

पिंड-मुस्ता—स्त्री० [कर्म० स०] नागरमोथा।

पिंड-मूल—पुं० [ब० स०] १ गाजर। २ शलजम।

पिंडरी—स्त्री०=पिंडली।

पिंड-रोग—पुं० [कर्म० स०] १ ऐसा रोग जिसने शरीर पर घर लिया हो और जो जल्दी छूट न सकता हो। २. कोढ़।

पिंडरोगी (गिन्)—वि० [सं० पिंड रोग+इनि] जो प्रायः सदा रोगी रहता हो और जल्दी अच्छा न हो सकता हो।

पिंडली—स्त्री० [सं० पिंड] घुटने और एड़ी के बीच का वह मांसल स्थान जो पैर में पीछे की ओर होता है।

मुहा०—पिंडली हिलना—(क) पैर काँपना या थर्राना। (ख) भय से कँपकँपी होना।

पिंड-लेप—पुं० [ष० त०] पिंड का वह अंश जो पिंड-दान के [illegible] हाथों में चिपक जाता है तथा जिसके वृद्ध प्रपितामह आदि तीन अधिकारी होते हैं।

पिंड-लोप—पुं० [ष० त०] १. पिंडदान का न किया जान[illegible] पिंड देनेवाले वंशजों का लोप। निर्वंश होना।

पिंडवाही—स्त्री० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा

पिंड-वेणु—पुं० [कर्म० स०] एक तरह का बाँस।

पिंड-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] ज्वार से बनी हुई चीनी या शर्करा।

पिंड-संबंध—पुं० [तृ० त०] १ जन्य या जनक का सम्बन्ध। २. पिंड-दाता या पिंड-भोक्ता होने का संबंध।

पिंडस—पुं० [सं० पिंड√सन् (देना)+ड] भिखमंगा।

पिंडस्थ—वि० [सं० पिंड√स्था (ठहरना)+क] १ जो पिंड या शरीर में स्थित हो। गर्भ में स्थित। २. जो पिंड या लौंदे के रूप में आया या लाया गया हो। ३. किसी में मिलाया हुआ। मिश्रित।

पिंड-स्वेद—पुं० [मध्य० स०] औषध का वह लेप जो गरम करके फोड़े आदि पर लगाया जाता है। पुल्टिस।

पिंडा—पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पिंडी] १ ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। पिंड। २. गोल-मटोल टुकड़ा। लोंदा। जैसे—जौ के आटे, भात आदि का पिंडा जो श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से वेदी पर रखा जाता है।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—पिंडा-पानी देना=मृतक के उद्देश्य से श्राद्ध और तर्पण करना। पिंडा पारना=मृतक के उद्देश्य से पिंड-दान करना।

४. देह। शरीर।

मुहा०—पिंडा धोना=स्नान करना। नहाना। पिंडा फीका होना=जी अच्छा न होना। तबियत खराब होना।

५ स्त्रियों की भग। योनि।

मुहा०—(किसी को) पिंडा दिखाना या देना=स्त्री का पर-पुरुष से संभोग कराना।

स्त्री० [सं० पिंड-टाप्] १. एक प्रकार की कस्तूरी। २. वंशपत्री। ३. इस्पात। ४. हल्दी।

पिंडाकार—वि० [पिंड-आकार, ब० स०] पिंड अर्थात् गोल, गोलाकार बँधे लोंदे के आकार का। गोलाकार।

पिंडात—पुं० [सं० पिंड√अत् (गति)+अच्] शिलारस।

पिंडाभ—पुं० [सं० पिंड-आ√भा (दीप्ति)+क] लोबान।

पिंडाभ्र—पुं० [सं० अभ्र, अभ्र+अच्, पिंड-अभ्र, उपमि० स०] सफेद और चमकीला पिंड अर्थात् ओला।

पिंडायस—पुं० [पिंड-आयस, कर्म० स०] इस्पात।

पिंडार—पुं० [सं० पिंड√ऋ (गति)+अण्] १. एक प्रकार का क्षपणक। २. [illegible]। ३. भैंस का चरवाहा। ग्वाल। ४ विकंकत का पेड़।

पिंडारक—पुं० [सं० पिंडार+कन्] १. एक नाग का नाम। २ वसुदेव और रोहिणी का एक पुत्र। ३. एक वणिक् जन। ४ गुजरात देश में समुद्र-तट का एक प्राचीन तीर्थ।

पिंडारा—पुं० [सं० पिंडार] एक प्रकार का साग जो वैद्यक में शीतल [illegible] माना गया है।

[illegible]।

[illegible] [देश०] दक्षिण भारत की एक जाति जो पहले कर्नाट, [illegible] में बनजार खेती-बारी करती थी, पर पीछे मध्यदेश [illegible] स्थानों में लूटमार करने लगी और मुसलमान [illegible]

पिंडालक्तक—पुं० [पिंड-अलक्तक, कर्म० स०] महावर।

पिंडालु—पुं० [पिंड-आलु, उपमि० स०] =पिंडालू।

पिंडालू—पुं० [सं० पिंड+हिं० आलू] १. एक प्रकार का कंद या शकरकंद जिसके ऊपर कड़े सूत की तरह के रेशे होते हैं। सुथनी। पिंडिया। २. एक प्रकार का रतालू या शकरालू।

पिंडाशक—पुं० [पिंड-आशक, ष० त०] भिक्षुक।

पिंडाशी (शिन्)—पुं० [सं० पिंड√अश्+णिनि] =पिंडाशक।

पिंडाह्वा—स्त्री० [सं० पिंड-आ√ह्वे (स्पर्धा करना)+क+टाप्] नाड़ी हींग।

पिंडि—स्त्री० [सं०√पिंड्+इन्] =पिंडी।

पिंडिका—स्त्री० [सं० पिंड+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. छोटा पिंड। पिंडी। २ किसी चीज का छोटा ढेला या डोंका। ३. पहिए के बीच का वह गोल भाग जिसमें धुरी पहिनाई रहती है। चक्रनाभि। ४. पिंडली। ५ इमली। ६. छोटा शिव-लिंग। ७. वह छोटी गोलाकार वेदी जिस पर देव-मूर्ति स्थापित की जाती है।

पिंडित—भू० कृ० [सं०√पिंड+क्त] १. पिंड के रूप में बँधा या बनाया हुआ। २ सूत की पिंडी की तरह लपेटा हुआ। ३ गुणा किया हुआ। गुणित।

पुं० १. शिलारस। २. काँसा। ३. गणित या उसकी क्रिया।

पिंडितार्थ—पुं० [पिंडित-अर्थ, कर्म० स०] कथन आदि का सारांश।

पिंडिनी—स्त्री० [सं०√पिंड्+णिनि+ङीप्] अपराजिता लता।

पिंडिया—स्त्री०=पिंडी (गुड़, रस्सी आदि की)।

पिंडिल—पुं० [सं० पिंड+इलच्] १. सेतु। पुल। २. गणक।

वि० वडी-वडी पिंडलियोंवाला ।
पिंडिला—स्त्री० [स० पिंडिल+नप्] ककड़ी ।
पिंडी—स्त्री० [स० पिंड+अच्+ङीप्] १ ठोस या गीली वस्तु का छोटा गोल-मटोल टुकडा। लुगदी। जैसे—आटे या गुड की पिंडी । २ डोरी या सूत जो उक्त आकार या रूप मे लपेटा हुआ हो । जैसे—रस्सी की पिंडी ।
क्रि० प्र०—वनाना।—बाँधना ।
३ कद्दू। घीया। ४ पिंडखजूर। ५ एक प्रकार का तगर। ६ वलि चढाने की वेदी । ७ दे० 'पिंडिका'।
पिंडीकरण—पु० [स० पिंड+च्वि, ईत्व,पिंडी,√कृ (करना)+ल्युट्—अन] किसी वस्तु को पिंड का रूप देना। पिंड अर्थात् गोलाकार वस्तुएँ वनाने की क्रिया ।
पिंडीतक—पु० [स० पिंडी√तक् (अनुकरण करता)+अच्] १ मैनफल। २. एक प्रकार का तगर जिसे हजारा तगर भी कहते है ।
पिंडीपुष्प—पु० [व० स०] अशोक वृक्ष ।
पिंडीर—पु० [स० पिंड√ईर् (प्रेरित करना)+अण्] १. अनार। २. समुद्रफेन।
पिंडी-लेप—पु० [प० त०] एक तरह का उवटन ।
पिंडी-शूर—पु० [स० त०] १ घर ही मे वैठे-वैठे वहादुरी दिखलानेवाला। २. वहुत अधिक खानेवाला। पेटू।
पिंडुरी (लो)स्त्री०=पिंडली।
पिंडूक—पु० [?] १ पडुक। २ उल्लू।
पिंडोदक क्रिया—स्त्री० [स० पिंड-उदक, द्व० स०], पिंडोदकक्रिया, ष० त०] पूर्वजो के उद्देश्यो से किया जानेवाला पिंडदान और तर्पण ।
पिंडोपजीवी (विन्)—पु० [स० पिंड-उप√जीव् (जीना)+णिनि] भिखमगा।
पिंडोल—स्त्री० [स० पाडु] पीले रग की मिट्टी। पोतनी मिट्टी।
पिंडोलि—स्त्री० [स०] १ मुँह से गिरे हुए अन्न के छोटे-छोटे टुकडे। २. जूठन।
पिंभ†—पु०=प्रेम।
पिंशन—स्त्री०=पेनशन ।
पिंसी—स्त्री०= पीनस (रोग) ।
पिअ†—पु० [स० प्रिय] १ स्त्री का पति। २. प्रेमी।
वि०=प्रिय ।
पिअना†—स०=पीना।
पिअर†—वि०=पीला।
पु०=पीहर।
पिअरवा—वि०=प्यारा।
†पु०=पिअ (पति या प्रेमी)।
पिअरा†—वि०=पीला।
पिअराई†—स्त्री० [हिं० पिअरा=पीला] पीलापन।
पिअरिया—पु० [हिं० पिअर=पीला+इया (प्रत्य०)] पीले रग का वैल जो वहुत मजवूत और तेज चलनेवाला होता है।
स्त्री०=पिअरी (धोती या साडी)।
वि०=प्यारी (प्रिय)।
पिअरी†—स्त्री० [हिं० पीअर=पीला] १ हल्दी के रग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह आदि शुभ अवसरो पर वर या वधू को पहनाई जाती है। २ उक्त प्रकार की वह धोती जो प्राय गगा या किसी देवी को चढाई जाती है।
क्रि० प्र०—चढाना।
वि० हिं० 'पिअरा' (पीला) का स्त्री० ।
पिआज†—पु०=प्याज ।
पिआना†—स०=पिलाना।
पिआनो—पु०=पियानो (वाजा)।
पिआर†—पु०=प्यार।
पिआरा†—वि०=प्यारा।
पिआस—स्त्री०=प्यास।
पिआसा—वि०=प्यासा।
पिउ†—पु० [स० प्रिय] १ प्रियतम। २ पति। ३ ईश्वर।
पिउनी†—स्त्री०=पूनी (रूई की)।
पिक—पु० [स० अपि√कै (शव्द करना)+क, अकार-लोप] [स्त्री० पिकी] कोयल। कोकिला ।
पिक-प्रिया—स्त्री० [प० त०] वडा जामुन ।
पिक-वंधु—पु० [प० त०] आम का वृक्ष ।
पिक-भक्ष्या—स्त्री० [प० त०] भूमि जवू। भू-जामुन ।
पिक-राग—पु० [व० स०] आम का वृक्ष ।
पिक-वल्लभ—पु० [प० त०] आम का वृक्ष ।
पिकांग—पु० [पिक-अग, व० स०] चातक (पक्षी) ।
पिकाक्ष—पु० [व० स०, अच्] १ रोचनी वृक्ष। २ तालमखाना।
वि० कोयल जैसी आँखोंवाला।
पिकानद—पु० [स० पिक-आ√नन्द् (प्रसन्न होना)+अण्] वसन्त ऋतु ।
पिकी—स्त्री० [स० पिक+ङीप्] मादा कोयल ।
पिकेक्षणा—स्त्री० [पिक-ईक्षण, व० स०,+अच्+टाप्] तालमखाना।
पिक्क—पु० [स० पिक√कै+क, पृषो० सिद्धि] १ हाथी का वच्चा। २ ऐसा हाथी जो अवस्था मे वीस वर्ष का हो। ३ मोती की एक तौल।
पिघरना†—अ०=पिघलना।
पिघलना—अ० [स० प्र०+गलन] १. ताप पाकर किसी घन या ठोस पदार्थ का द्रव रूप मे आना या होना। जैसे—घी या मोम पिघलना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, कठोर चित्त का किसी प्रकार के प्रभाव के कारण कोमल या द्रवित होना। पसीजना। जैसे—तुम लाख रोओ, पर वह जल्दी पिघलनेवाला नही है।
पिघलाना—स० [हिं० पिघलना का स०] १ किसी घन या ठोस पदार्थ को पिघलने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के हृदय की कठोरता दूर करके उसे कोमल या द्रवित करना।
पिचंड—पु० [स० अपि√चम् (खाना)+ड, अकार-लोप] १ पेट। २ किसी जानवर का कोई अग।
वि० १ उदर या पेट-सवधी। २ वहुत अधिक खानेवाला।
पिचंडिल—वि० [स० पिचंड+इलच्] वड़ी तोदवाला। तोदल।

पिच| —स्त्री० =पीच।

पिचक—स्त्री० [हिं० पिचकना] १ पिचकने की क्रिया या भाव। २. पिचके हुए होने की अवस्था।
 स्त्री० ३ —पिचकारी।

पिचकना—अ० [सं० पिच्च=दबाना] उभरे या फूले हुए अंग के उभार या फूलन का कम होना। जैसे—गिरने के कारण लोटे का पिचकना, बीमारी के कारण गाल पिचकना।

पिचकवाना—स० [हिं० पिचकाना का प्रे०] पिचकाने का काम दूसरे से कराना।

पिचका—पु० [हिं० पिचकना] बड़ी पिचकारी।

पिचकाना—स० [हिं० पिचकना का प्रे०] ऐसा काम करना जिससे उभरी या फूली हुई चीज का तल दबता या पिचकता हो। पिचकने में प्रवृत्त करना।

पिचकारी—स्त्री० [हिं० पिचकना] १. नली के आकार का धातु का बना हुआ एक उपकरण जिसके मुँह पर एक या अनेक ऐसे छोटे-छोटे छेद होते है, जिनके मार्ग से नली मे भरा हुआ तरल पदार्थ दबाव से धार या फुहार के रूप मे दूसरा पर या दूर तक छिड़का या फेंका जाता है।
 मुहा०—पिचकारी चलाना, छोड़ना या मारना पिचकारी मे रंग, गुलाब-जल आदि भरकर दूसरो पर छोड़ना। पिचकारी भरना पिचकारी की नली या डाट इस प्रकार ऊपर खीचना कि उसमे रंग या और कोई तरल पदार्थ भर जाय।
 २. पिचकारी मे से निकलनेवाली तरल पदार्थ की धार। ३ किसी चीज मे से जोर से निकलनेवाली तरल पदार्थ की धार।
 मुहा०—(किसी चीज मे से) पिचकारी छूटना या निकलना किसी चीज या जगह मे से किसी तरल पदार्थ का बहुत वेग से बाहर निकलना। जैसे—सिर से लहू की पिचकारी छूटने लगी।
 ४ चिकित्सा-क्षेत्र मे, एक तरह की छोटी पिचकारी जिसके अगले भाग मे खोखली सूई लगी रहती है और जिसे सूचीकार शरीर की नसों या रक्त मे दवाएँ पहुँचाई जाती है। सूई। वस्ति। (सीरिंज)

पिचकी|—स्त्री०=पिचकारी।

पिचपिचा| —वि० [हिं० पिचकना] १ जो पिचकता रहता हो। २. दबा हुआ और गुलगुला।
 | वि०=चिपचिपा।

पिचपिचाना—अ० [अनु०] [भाव० पिचपिचाहट] किसी छेद से तरल पदार्थ का पिचपिच शब्द करते हुए रसना या निकलना। जैसे—फोड़े का चिपचिपाना।
 अ०=पिचपिचाना।

पिचरिया—स्त्री० [हिं० पिचलना] छोटी कोठीवाला एक तरह का कोल्हू।

पिचलना—स०=कुचलना।

पिचव्य—पु० [सं० पिचव्य] १ कपास का पौधा। २. वटवृक्ष। (डिं०)

पिचास|—पु०=पिशाच।
 वि०=पचास।

पिचु—पु० [सं० √पिच्+उ] १. रूई। २ एक प्रकार का कोढ़। ३ एक पुरानी तौल जो दो तोले के बराबर होती थी। ४. एक असुर का नाम। ५ एक तरह का अनाज।

पिचुक—पुं० [सं० पिचु+कन्] मैनफल का वृक्ष।

पिचुकिया|—स्त्री० [हिं० पिचकना] १. छोटी पिचकारी। २. वह गुझिया (पकवान) जिसमें केवल गुड़ और गरी भरी जाती है।

पिचुका|—पु० [हिं० पिचकना] १ पिचकारी। २ गोलगप्पा।

पिचु-तूल—पु० [सं०] कपास की रूई।

पिचुमंद—पु० पिचुमर्द।

पिचुमर्द—पु० [सं० पिचु√मृद् (चूर्ण करना)+अण्] नीम का पेड़।

पिचुल—पु० [सं० पिचु√ला (लेना)+क] १. कपास की रूई। २ झाऊ का पेड़। (डिं०) ३. समुद्रफल। ४. जलवायस।

पिचू—पुं० [सं० पिचु] १६ माशे की एक पुरानी तौल।

पिचूका|—पु० पिचुका।

पिचोंस|—पु० [?] [illegible]।

पिचोतरसौ—पु० [सं० पंचोत्तर शत] एक सौ पाँच की संख्या।
 वि० जो गिनती में सौ से पाँच ऊपर हो।

पिच्चट—वि० [सं०√पिच्च् (काटना)+अटन्] दबाकर चिपटा किया हुआ। चिपटा हुआ।
 पु० १ सीसा। २ रांगा। ३. आँख का एक रोग।

पिच्चार—पु० पिच्चट।

पिच्चा—स्त्री० [सं०√पिच्च्+अच्+टाप्] एक निश्चित तौल में १६ मोतियों की माला।
 वि० [हिं० पिचकना] [स्त्री० पिच्ची] पिचका हुआ। दबे हुए गलवाला।

पिच्चिट—पु० [सं०] एक तरह का विषैला कीड़ा।

पिच्चित—पु० पिच्चिट।
 वि० [हिं० पिचकना] दबका हुआ।

पिच्ची—स्त्री०=पच्ची।
 वि० पिच्चित।

पिच्छ—पु० [सं०√पिच्छ् (बाधा डालना)+अच्] किसी पशु की ऐसी दुम या पूँछ जिस पर बाल हों। लांगूल। २ मोर की दुम या पूँछ। ३ मोर की चोटी। ४. बाण मे लगाया जानेवाला मोर आदि का पंख। ५. सेमल का गोंद। मोचरस।

पिच्छक—पु० [सं० पिच्छ+कन्] १. पूँछ। २ पूँछ पर का पंख। ३. सेमल का गोंद। मोचरस।

पिच्छन—पु० [सं०√पिच्छ्+ल्युट्—अन] १. किसी वस्तु को दबाकर चिपटा करने की क्रिया। २. अत्यन्त पीडन।

पिच्छ-पाद—पु० [ब० स०] घोड़े के पैर मे होनेवाला एक तरह का रोग।

पिच्छपादी (दिन्)—वि० [सं० पिच्छपाद+इनि] १ पिच्छपाद रोग-संबंधी। २ पिच्छपाद रोग से पीडित।

पिच्छ-बाण—पु० [ब० स०] बाज (पक्षी)।

पिच्छ-भार—पु० [ब० स०] मोर की पूँछ।

पिच्छल—वि० [सं०] जिस पर पैर फिसलता हो। फिसलनेवाला।

पु० [स०√पिच्छ्+कलच्] १ मोचरस। २. आकाशवेल। ३ शीशम का पेड। ४ वासुकि के वश का एक सर्प।

वि० [हिं० पिछला] १. पिछला। २ दौड, प्रतियोगिता, होड आदि मे जो पीछे रह गया हो ।

पिच्छलपाई—स्त्री०[हिं० पीछा+पाई=पैरवाली]१ चुडैल या डाइन। **विशेष**—लोगो की धारणा है कि चुडैलो के पैरो मे एडी आगे और पजे पीछे की ओर होते है।

२ टोना-टोटका करनेवाली स्त्री ।

पिच्छा—स्त्री० [स० पिच्छ+टाप्] १ सेमल का गोंद। मोचरस। २ सुपारी का पेड। ३ शीशम। ४. नारगी का पेड। ५. निर्मली का पेड। ६. आकाशवेल। ७ पिच्छतलापाद नामक रोग। ८ पकाये हुए चावलो का माँड। ९ पिंडली।

पिच्छिका—स्त्री० [स० पिच्छ+कन्—टाप्, इत्व] १. चँवर। चामर। मोरछल। २ ऊन की वह चँवर जो जैन साधु अपने साथ रखते है।

पिच्छितिका—स्त्री० [स० पृषो०] शीशम का पेड।

पिच्छिल—वि० [स० पिच्छा+इलच्] [स्त्री० पिच्छिल] १. सरस और स्निग्ध। गीला और चिकना। २ इतना या ऐसा चिकना जिस पर पैर फिसलता हो या फिसल सकता हो। ३ (पक्षी) जिसके सिर पर चूड़ा या चोटी हो। ४ (वैद्यक मे, पदार्थ) जो खट्टा, कोमल फूला हुआ और कफकारी हो ।

पु० १ लिसोड़ा। २. सरस और स्निग्ध व्यजन। सालन। जैसे—कढी, दाल, रसेदार तरकारी आदि ।

पिच्छिलक—पु० [स० पिच्छिल+कन्] १. मोचरस। २ धामिन वृक्ष।

पिच्छिलच्छदा—स्त्री० [व० स०] १ वैर वृक्ष। २ पोई का साग ।

पिच्छिल-त्वक्—स्त्री० [व० स०] १. नारगी का पेड। २ धामिन-वृक्ष ।

पिच्छिल-दला—स्त्री० [व० स०]=पिच्छिलच्छदा ।

पिच्छिल-वस्ति—स्त्री० [स० कर्म० स०] वैद्यक मे, निरूढवस्ति का एक भेद।

पिच्छिल-सार—पु० [व० स०] सेमल का गोंद। मोचरस ।

पिच्छिला—स्त्री० [स० पिच्छिल+टाप्] १ पोई। २ शीशम। ३ सेमल। ४ तालमखाना। ५ वृश्चिकाली (जड़ी)। ६ शूलीं घास। ७ अगर। ८ अलसी। ९ अरवी।

वि० दे० 'पिच्छिल'।

पिछ—पु० [हिं० पीछा] 'पीछा' का वह लघु रूप जो यौगिक पदो के आरभ मे लगता है। जैसे—पिछलगा, पिछलग्गू, पिछवाडा।

पिछडना—अ० [हिं० पीछे] १ गति, दौड, प्रतियोगिता आदि मे दूसरो के आगे निकल या वढ जाने के कारण अथवा और किसी कारण से पीछे रह जाना। २ वर्ग, श्रेणी आदि मे आगे न वढ सकने या उन्नति न कर सकने के कारण पीछे रह जाना।

सयो० क्रि०—जाना।

पिछ-लगा—वि० [हिं० पीछे+लगना] [भाव० स्त्री० पिछलगी] १ दीन भाव से किसी के पीछे-पीछे लगा रहनेवाला। २ शक्ति, सामर्थ्य आदि के अभाव मे, स्वतत्र न रह सकने के कारण किसी का अनुगमन या अनुसरण करनेवाला। ३. आश्रित।

पु० सेवक। दास।

पिछलगी—स्त्री० [हिं० पिछलगा] पिछलगा होने की अवस्था या भाव। २. अनुगमन। अनुवर्तन। अनुसरण।

पिछ-लग्गू (ग्गू)—वि०, पु०=पिछ-लगा।

पिछ-लत्ती—स्त्री० [हिं० पिछ+लात] १. पशुओं का पिछले पैरों से आघात करने की क्रिया या भाव। २ उक्त प्रकार मे होनेवाला आघात।

पिछलना—अ० [हिं० पीछा] पीछे की ओर हटना या मुड़ना। (क्व०) †अ०=फिसलना।

पिछलपाई—स्त्री०=पिच्छलपाई।

पिछला—वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १ जो किसी वस्तु के पीछे अर्थात् पीठ की ओर पडता हो। पीछे का ओर को। 'अगला' का विपर्याय। जैसे—(क) इस मकान का पिछला हिस्सा गिर गया है। (ख) इस घोडे की पिछली टाँगें टेढी है। २ काल, घटना, स्थिति आदि के क्रम के विचार से किसी के पीछे अर्थात् पूर्व मे या पहले पडने या होनेवाला। जैसे—(क) इधर का हिसाव तो साफ हो गया है, पर पिछला हिसाव बाकी है। (ख) जब मैं पिछली वार आप के यहाँ आया था । (ग) पिछला साल रोजगारियो के लिए अच्छा नही था। ३ पूर्वकाल मे होने अथवा उससे सवध रखनेवाला। जैसे—पिछला जमाना, पिछले लोग। ४ जो क्रम के विचार मे किसी के पीछे या वाद मे पडता हो। जैसे—इस पुस्तक के कई पिछले पृष्ठ फट गये है।

पद—**पिछला पहर**=दो पहर अथवा आधी रात के वाद का अर्थात् सध्या या प्रभात से पहले का पहर या समय। दिन अथवा रात का उत्तर काल। **पिछली रात**=रात मे आधी रात के वाद का और प्रभात या उसके कुछ पहले का समय।

५ गुजरा या वीता हुआ। गत। जैसे—पिछली वातो को भूल जाना ही अच्छा है।

पद—**पिछला दिन**=वह दिन जो वर्तमान से एक दिन पहले वीता हो। **पिछली रात**=आज से एक दिन पहले वीती हुई रात। कल की रात। गत रात्रि। **पिछले दिन**=वीते हुए दिन। भूतकाल।

पु० वह भोजन जो रोजे के दिनों मे मुसलमान लोग कुछ रात रहते खाते है। सहरी।

पिछवई (वाई)—स्त्री० [हिं० पीछे] मूर्तियो या उनके सिंहासनों के पीछे लटकाया जानेवाला वेल-वूटेदार परदा।

पिछवाडा—पु० [हिं० पीछा+वाडा] १ किसी वस्तु विशेषत घर आदि के पीछेवाला भाग। घर का पृष्ठ भाग। २ घर के पीछे वाले भाग के पास की जमीन या मकान।

पिछवारा†—पु०=पिछवाडा।

पिछाड़—वि०[हिं० पीछा] पीछे या वाद मे रहने या होनेवाला।

पुं०[हिं० पिछडना] पिछडने की क्रिया या भाव।

पु०=पिछाडी।

पिछाड़ी—स्त्री०[हिं० पीछा]१ किसी काम, चीज या वात का पिछला

भाग। पीछे का हिस्सा। पृष्ठ भाग। २. घोड़े के पिछले दोनों पैर बाँधने की रस्सी।
क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।
पद—अगाड़ी-पिछाड़ी (दे०)।
पिछान†—स्त्री०=पहचान। उदा०—मैं पिय लियो पिछान।—पद्माकर।
पिछानना†—स०=पहचानना।
पिछानी—पु०[हिं० पहचान] १. पहचाननेवाला। उदा०—ऐसा वेद मिलै कोइ भेदी देस-बिदेस पिछानी।—मीरां। २. जान-पहचान-वाला। परिचित।
†स्त्री०=पहचान।
पिछारी†—स्त्री०=पिछाड़ी।
पिछुआर†—पु०=पिछवाड़ा।
पिछेलना—स०[हिं० पीछे] १. गति, दौड, प्रतियोगिता आदि मे किसी से आगे निकलना और उसे पीछे छोड देना। २. धक्का देकर पीछे हटाना।
पिछोकड—पु०[हिं० पीछा] पिछवाड़ा। (राज०) उदा०—म्हारे आँगण आम, पिछोकड मखो। (राज०)
पिछौंता—अव्य० [हिं० पीछा+औता] १. पीछे की ओर। २. पीछे से। बाद मे। (पूरब)
†वि०=पिछला।
पिछौंहा—वि०[स० पश्चिम] [स्त्री० पिछौंही] पश्चिम दिशा मे रहने या होनेवाला।
पिछौंही—स्त्री०=पिछौरी।
पिछौंहें—अव्य० [हिं० पीछा] १ पीछे की ओर। २ पीछे की ओर से।
वि० १ पीछे होनेवाला। २ (फसल, फल आदि) जो अपनी ऋतु या समय बीत जाने पर हो।
पिछौड़ा†—वि० [हिं० पीछे+औड (प्रत्य०)] जिसने अपना मुँह पीछे कर लिया हो। किसी के मुँह की ओर जिसकी पीठ पडती हो।
अव्य० पीछे की ओर।
पिछौड़ा—अव्य०[हिं० पीछा+औडा (प्रत्य०)] पीछे की ओर।
†पु०=पिछवाडा।
पिछौरा—पु०[स० पक्ष या पश्च+पट; प्रा० पच्छवड; हिं० पछेवडा] [स्त्री० अल्पा० पिछौरी] पुरुषो के ओढने की चादर। मरदाना दुपट्टा।
पिछौरी—स्त्री०[हिं० पिछौरा] १. ओढने की छोटी चादर। २ स्त्रियो की ओढनी या चादर।
पिटंकाकी—स्त्री०=पिटकोकी।
पिटंकोकी—स्त्री०[स० पिट्√कु शब्द)+ख, मुम्,+कन्+ङीप्] इद्रायन नामक लता।
पिटत—स्त्री०[हिं० पीटना+अत (प्रत्य०)] १. पीटने की क्रिया या भाव। २ पीटे जाने की अवस्था या भाव। ३. पडनेवाली मार।
पिटक—पु०[स०√पिट (इकट्ठा होना)+क्वुन्—अक] १ पिटारा। २ धान्यागार। कोठार। ३. छोटा फोडा। फुसी। ४. इद्र की पताका मे लगाया जानेवाला एक प्रकार का अलकरण। ५. ग्रथ का कोई खड या विभाग।

पिटका—स्त्री० [स० पिटक+टाप्] १ छोटा पिटारा। पिटारी। २. छोटा फोड़ा। फुसी।
पिटना—अ०[हिं० पीटना] १. पीटा जाना। २ प्रतियोगिता आदि मे हारना। जैसे—इस बाजी मे तो वह बुरा पिटा। ३ कुछ खेलो मे गोटी, मोहरे आदि का मारा जाना। जैसे—शतरज में घोडा या वजीर का पिटना। ४. मार खाना। ५. 'पीटना' के सभी अर्थो का अ० रूप।
पु० वह उपकरण जिससे कोई चीज पीटी जाय। जैसे—कपडे धोने का पिटना, छत पीटने का पिटना।
पिटपिट—स्त्री०[अनु०] थापी, पिटने आदि से बराबर आघात करते रहने पर होनेवाला शब्द।
पिटपिटाना—अ०[अनु०] १. बहुत दु:खी और लाचार होकर यो ही रह जाना। २ बहुत कष्ट मे पडकर छटपटाना।
पिटरिया†—स्त्री०=पिटारी।
पिटरी†—स्त्री०=पिटारी।
पिटवाँ†—वि०[हिं० पीटना] जो पीटकर बनाया या तैयार किया गया हो। जैसे—पिटवाँ पत्तर।
पिटवाना—स०[हिं० पीटना] १ ऐसा काम करना जिससे कोई या कुछ पीटा जाय। पीटने का काम किसी दूसरे से कराना। २ ऐसा उपाय करना जिससे कोई पीटा जाय या किसी पर मार पडे। ३ मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)
पिटाई—स्त्री० [हिं० पीटना] १ पीटने की क्रिया या भाव। जैसे—छत की पिटाई। २ पीटने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी। ३. किसी पर अच्छी तरह पडनेवाली मार। पिटत।
पिटाक—पु०[स०√पिट्+काक] पिटारा।
पिटाना—स० [हिं० पीटना] १. पिटवाना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई अत्यत दु:खी तथा विकल हो।
पिटापिट—स्त्री० [हिं० पीटना] बार बार पिटने, पीटने आदि की क्रिया या भाव। जैसे—वहाँ खूब पिटापिट मची थी।
पिटारा—पु०[स० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का ढक्कनदार बडा पात्र।
पिटारी—स्त्री० [हिं० पिटारा का स्त्री० और अल्पा०] छोटा पिटारा।
पद—पिटारी का खर्च=(क) वह धन जो स्त्रियों को पान के खर्च के लिए दिया जाय। पानदान खर्च। (ख) व्यभिचार कराने पर दुश्चरित्रा स्त्री को मिलनेवाला थोडा धन।
पिटावना—स०[हिं० पीटना] किसी को किसी व्यक्ति के द्वारा मार खिलवाना।
पिट्टक—पु०[स०√पिट्+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] दाँतो की जडो मे जमनेवाली मैल।
पिट्टस—स्त्री०[हिं० पिटना+स (प्रत्य०)] १ शोक या दु:ख से छाती पीटने की क्रिया या भाव। २ पिटने की अवस्था या भाव। पिटत।
क्रि० प्र०—पडना।—मचना।
पिट्टू—वि०[हिं० पीटना] १. जो बराबर मार खाता रहता हो। २. जो मार खाकर ही कोई काम करता या सीधे रास्ते पर आता हो।
पिट्ठी†—स्त्री०=पीठी।
पिट्ठू—पु०[हिं० पीठ+ऊ (प्रत्य०)] १. किसी की पीठ के साथ लगा

रहनेवाला अर्थात् पीछे चलनेवाला। पिछलगा। अनुयायी।२. छिपे-छिपे किसी के साथ रहकर उसकी सहायता करनेवाला। ३. कुछ विशिष्ट खेलो मे किसी खिलाडी का वह कल्पित साथी जिसकी पारी आने पर उक्त खिलाडी को अपनी पारी खेल चुकने के उपरात, पुन खेलने का अवसर मिलता है। ४. किसी पक्ष के खिलाडी का साथी।

पिठमिल्ला—पु०[हिं० पीठ+मिलना]अँगरखे का पीठ की तरफ का भाग।

पिठर—पु०[स० √ पिठ् (क्लेश देना)+करन्]१ मोथा। मुश्तक। २. मथानी। ३. थाली। ४. एक तरह का घर। ५ एक अग्नि का नाम।

पिठरक—पु० [स० पिठर+कन्]१ थाली। २. एक नाग। ३ कड़ाही।

पिठरक-कपाल—पु०[प० त०] वरतन का टुकडा।

पिठर-पाक—पु० [प० त०] भिन्न-भिन्न परमाणुओ के गुणो मे तेज के सयोग से होनेवाला फेर-फार। जैसे घडे का पककर लाल होना।

पिठरिका—स्त्री० [स० पिठर+कन्+टाप, इत्व] १ वटलोई। २ हाँडी।

पिठरी—स्त्री०=पिठरिका।

पिठवन—स्त्री०[स० पृष्ठपर्णी] जमीन पर फैलनेवाला तथा दो-ढाई फुट ऊँचा एक प्रसिद्ध क्षुप् जिसके गोल पत्ते तथा वीज दवा के काम आते हैं। ये रक्त-अतिसार, तृषा और वमननाशक तथा वीर्यवर्द्धक होते हैं। पिठौनी। पिथिवन।

पिठी†—स्त्री०=पीठी।

पिठीनस—पु०[स०] एक प्राचीन ऋषि।

पिठौनी—स्त्री०=पिठवन (क्षुप और उसके वीज)।

पिठौरी—स्त्री० [हिं० पीठी+औरी (प्रत्य०)]१ पीठी की पकौडी। २ पीठी की वरी।

पिडक—पु०[स०√पीड् (कष्ट देना)+ण्वुल्, नि० सिद्धि] छोटा फोडा। फुसी।

पिडका—स्त्री०[स० पिडक+टाप्]=पिडक।

पिड़काना—स०[स० पीडा] ऐसा काम करना जिससे कोई झुझलाता और दुखी होता हो।

पिड़की—स्त्री०[स० पिडक] छोटा फोडा। फुसी।
स्त्री०=पेंडुकी।

पिड़िया—स्त्री०[स० पिंड] चौरेठे को गूँधकर वनाया जानेवाला लोदा जो उवालकर खाया जाता है।

पिड़ी—स्त्री०[स० पिंड] १ पिंड। २ वृक्ष का तना। (राज०)

पिढ़ई†—स्त्री०[हिं० पीढा+अई (प्रत्य०)]१. छोटा पीढा या पाटा। २ काठ का वह टुकडा जिस पर कोई यत्र रखा रहता हो।

पिढी—स्त्री०=पीढी।

पिण—अव्य० [?] भी। (डिं०) उदा०—परदल पिण जीणि पदमणी परणे।—प्रिथीराज।

पिण्या—स्त्री०[स० पण् (स्तुति करना)+यत्, पृपो०, इत्व] मालकगनी।

पिण्याक—पु०[स०√पण्+अकन्, नि० सिद्ध] १ तिल या सरसो की खली। २ हीग। ३ शिलाजीत। ४ शिलारस। ५ केसर।

पितंवर†—पु०=पीताम्वर।

पित-पापडा—पु०[स० पर्पट]गेहूँ की फसल मे होनेवाला छोटे तथा वारीक पत्तोवाला एक तरह का पौधा जिसमे लाल अथवा नीले रग के फूल लगते है। यह ओपधि के काम मे आता है तथा पिपासानाशक माना जाता है। दमनपापड।

पितर—पु०[स० पितृ, पितर] किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसके वे पूर्वज जो स्वर्ग सिधार गये हो। परलोकवासी पूर्वज। कर्मकाण्ड के अनुसार इनके नाम पर श्राद्ध, तर्पण, आदि कृत्य किये जाते हैं।

पितरपख—पु०=पितृपक्ष।

पितरपति—पु०[स० पितृपति] यमराज।

पितराई—स्त्री०=पितरायँध।

पितरायँध—स्त्री० [हिं० पीतल+गध] पीतल के वरतन मे किसी पदार्थ विशेपत किसी खट्टे पदार्थ के पड़े रहने तथा विकारयुक्त होने पर निकलनेवाली गध जो अप्रिय होती है।

पितरिहा—वि०[हिं० पीतल+हा] १ पीतल-सवधी। पीतल का। २ पीतल का वना हुआ।
†पु० पीतल का घडा।

पितलाना—अ०[हिं० पीतल+आना (प्रत्य०)] किसी पदार्थ के पीतल के वरतन मे पडे रहने पर पीतल के कसाव से युक्त होना।

पित-ससुर—पु० दे० 'पितिया-ससुर'।

पिता (तृ)—पु०[स०√पा (रक्षा करना)+तृच्] सवध के विचार से वह पुरुप जिसने किसी को जन्म दिया और उसका पालन-पोषण किया हो। जनक। वाप।

पितामह—पु०[स० पितृ+डामह] [स्त्री० पितामही]१ पिता का पिता। दादा। २ ब्रह्मा। ३. शिव। ४ भीष्म। ५. एक धर्म-शास्त्रकार ऋषि।

पितिजिया—पु०[?] महाराष्ट्र के कुछ प्रदेशो मे होनेवाला एक ऊँचा तथा छायादार वृक्ष जिसके पत्ते तथा वीज कफ तथा वातविनाशक और वीर्यवर्द्धक होते है। पितौजिया। जियापोता।

पितिया—पु०[स० पितृव्य] [स्त्री० पितियानी] वाप का भाई। चाचा।

पितियानी—स्त्री० [हिं० पितिया+नी (प्रत्य०)] चाचा की स्त्री। चाची।

पितिया-ससुर—पु०[हिं० पितिया+ससुर] १ किसी पुरुप की दृष्टि से चाचा। २ किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति का चाचा। चचिया ससुर।

पितियासास—स्त्री०[हिं० पितिया+सास] सवध के विचार से ससुर के भाई की पत्नी। चचिया सास।

पितु—पु०=पिता।

पितृ—पु०[स०√पा (रक्षा करना)+तृच्]१ किसी व्यक्ति के वाप, दादा, परदादा आदि मृत पूर्वज। २ ऐसा मृत व्यक्ति जो प्रेतत्व से मुक्त हो चुका हो। ३ एक प्रकार के देवता जो सब जीवो के आदि पूर्वज माने गये है। ४. पिता।

पितृ-ऋण—पु०[प०त०] धर्म-शास्त्रो के अनुसार, मनुष्य के तीन ऋणो मे से एक जिसे लेकर वह जन्म ग्रहण करता है। कहा गया है कि पुत्र उत्पन्न करने से उस ऋण से मुक्ति होती है।

पितृक—वि०[स० पैतृक, पृपो० सिद्धि]१ पितृ-सवधी। पितरो का। पैतृक। २ पिता का दिया हुआ। पिता के द्वारा प्राप्त। पैतृक। ३

(उत्तराधिकार, व्यवहार आदि की प्रथा) जिसमे गृहपति या पिता का पक्ष प्रधान माना जाता है, गृहस्वामिनी या माता के पक्ष का कोई विचार नही होता। (पेट्रिआर्कल)

पितृ-कर्म (न्)—पु० [मध्य०स०] पितरो के उद्देश्य से किये जानेवाले श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म।

पितृ-कल्प—पु० [मध्य०स०] श्राद्धादि कर्म।

पितृ-कानन—पु० [प०त०] श्मशान। मरघट।

पितृ-कार्य—पु० [मध्य०स०] =पितृ-कर्म।

पितृ-कुल—पु० [प० त०] बाप-दादा, परदादा या उनके भाई, बधुओ आदि का कुल।

पितृ-कुल्या—स्त्री० [मध्य०स०] एक तीर्थस्थान। (महाभारत)

पितृ-कृत्य—पु० [मध्य० स०] श्राद्ध, तर्पण आदि कार्य जो पितरो के उद्देश्य से किये जाते है।

पितृ-गण—पु० [प० त०] १. पितर। २. मरीचि आदि ऋषियो के पुत्र।

पितृ-गाथा—स्त्री० [मध्य०स०] पितरो द्वारा पढे जानेवाले कुछ विशेष श्लोक या गाथाएँ।

पितृगामी (मिन्)—वि० [स० पितृ√गम् (जाना)+णिनि] पिता-सबधी।

पितृ-गृह—पु० [प०त०] १ बाप का घर। विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। मायका। २ श्मशान।

पितृ-ग्रह—पु० [प०त०] स्कद आदि नौ बाल ग्रहो मे से एक।

पितृघात—पु० [स० पितृ√हन् (हिंसा)+अण्,] [वि० पितृघातक, पितृघाती] पिता की की जानेवाली हत्या।

पितृ-तर्पण—पु० [प०त०] १. पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला जल-दान। विशेष दे० तर्पण। २. तिल जिससे पितरो का तर्पण किया जाता है। ३. गया नामक तीर्थ, जहाँ श्राद्ध करने से पितरो का प्रेतयोनि से मुक्त होना माना जाता है।

पितृता—स्त्री० [स० पितृ+तल्+टाप्] =पितृत्व।

पितृ-तिथि—स्त्री० [मध्य०स०] अमावस्या।

पितृतीर्थ—पु० [मध्य०स०] १ गया नामक तीर्थ। २ मत्स्य पुराण के अनुसार गया, वाराणसी, प्रयाग, विमलेश्वर आदि २२२ तीर्थ। ३ अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग जिसमे से तर्पण का जल गिराया या छोडा जाता है।

पितृत्व—पु० [स० पितृ+त्व] पिता होने का भाव।

पितृ-दान—पु० [च०त०] पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला दान।

पितृ-दान—पु० [स० प० त०] उत्तराधिकार मे पिता से मिलनेवाली सपत्ति। बपौती।

पितृ-दिन—पु० [प०त०] अमावस्या।

पितृ-देव—पु० [प०त०] पितरो के अधिष्ठाता देवता। अग्निष्वातादि पितरगण।

पितृ-देश—पु० [प०त०] किसी की दृष्टि से, उसके पितरो या पूर्वजो के रहने का देश। वह देश जिसमे कोई अपने पूर्वजो के समय से रहता आया हो। (फादरलैंड)

पितृ-दैवत—वि० [स० पितृदेवता+अण्] पितृदेवता-सबधी। पितरो की प्रसन्नता के लिए किया जानेवाला (यज्ञ आदि)।
पु० मघा नक्षत्र।

पितृदैवत्य—वि० [स० पितृदेवता+ष्यञ्] पितृदैवत।
पु० (कुछ विशिष्ट मासो की) अष्टमी के दिन किया जानेवाला एक पितृ-कृत्य।

पितृ-नाथ—पु० [प०त०] १. यमराज। २ अर्यमा नाम के पितर जो सब पितरो मे श्रेष्ठ हैं।

पितृ-पक्ष—पु० [प०त०] १ कुआर या आश्विन का कृष्णपक्ष। २ पितृकुल।

पितृ-पति—पु० [प०त०] यम।

पितृ-पद—पु० [प०त०] १. पितरो का देश या लोक। २ पितृ या पितर होने का पद या स्थिति।

पितृ-पिता (तृ)—पु० [प०त०] पितामह।

पितृपैतामह—वि० [स० पितृपितामह+अण्] जिसका सबध पिता-पितामह आदि से हो। बाप-दादा का।

पितृ-प्रसू—स्त्री० [प०त०] १ पिता की माता। दादी। २ सायकाल। सध्या।

पितृ-प्राप्त—वि० [प० त०] जो पिता से मिला हो।

पितृ-प्रिय—पु० [प० त०] १ भँगरा। भँगरैया। भृगराज। २ अगस्त का पेड।

पितृ-बंधु—पु० [प०त०] वह व्यक्ति जिससे सबध पिता-पितामह आदि के विचार से हो। 'मातृबधु' का विपर्याय।

पितृ-भक्त—वि० [प०त०] [भाव० पितृभक्ति] अपने पिता की सेवा करने तथा उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करनेवाला।

पितृ-भक्ति—स्त्री० [प०त०] पितृभक्त होने की अवस्था या भाव। पिता के प्रति होनेवाली भक्ति।

पितृ-भोजन—पु० [प०त०] १ पितरो को अर्पित किया जानेवाला भोजन। २. उडद। माष।

पितृ-मंदिर—पु० [प०त०] १ पिता का घर। पितृ-गृह। २. श्मशान या मरघट जो पितरो का वास-स्थान माना गया है।

पितृ-मेध—पु० [मध्य०स०] वैदिक काल का एक अत्येष्टि कर्म जिसमे अग्निदान और दस पिंडदान आदि कृत्य होते थे। (श्राद्ध से भिन्न)

पितृ-यज्ञ—पु० [मध्य०स०] =पितृ-तर्पण।

पितृ-याण—पु० [प०त०] १ मृत्यु के अनतर जीव के पर-लोक जाने का वह मार्ग जिससे वह चद्रमा मे पहुँचता है। कहते है कि इस मार्ग से जानेवाले मृत व्यक्ति की आत्मा को निश्चित काल तक स्वर्ग आदि मे सुख भोगकर फिर ससार मे आना पडता है। २ वह मार्ग जिस पर पितर चलते हैं और अपने लिए नियत लोको मे जाते है।

पितृ-राज—पुं० [प०त०] यम।

पितृ-रिष्ट—पुं० [ब० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जिसमे जन्म लेनेवाला बालक पिता के लिए घातक समझा जाता है।

पितृरूप—पु० [स० पितृ+रूपम्] शिव।

पितृ-लोक—पु० [प०त०] वह लोक जिसमे पितरो का निवास माना जाता है।

पितृ-वंश—पु० [प०त०] पिता का कुल।

पितृ-वन—पु० [प०त०] मरघट। श्मशान।

पितृवनेचर—पु० [स० अलुक् स०] १ पितृ-वन अर्थात् श्मशान मे बसनेवाले जीव। भूत-प्रेत। २ शिव।

पितृ-वसति—स्त्री० [ष०त०] श्मशान।

पितृ-वित्त—पु०[ष० त०] बाप-दादो द्वारा छोड़ी हुई संपत्ति। पैतृक या मौरूसी जायदाद।

पितृ-वेश्म (न्)—पु०[ष०त०] स्त्री के पिता का घर। नैहर। मायका।

पितृव्य—पु०[स० पितृ+व्यत्] १ पिता के तुल्य आदरणीय व्यक्ति। २ चाचा।

पितृ-व्रत—पु०[मध्य० स०] पितृ-कर्म।
वि० पितरो की पूजा करनेवाला।

पितृषद्—पु०[स० पितृ√ सद्+क्विप्]=पितृ-गृह। (स्त्रियों के लिए)

पितृषदन—पु०[स० ष०त०] कुश।

पितृष्वसा (सृ)—स्त्री० [सं० ष०त०] पिता की बहन। बूआ। फूफी।

पितृष्वस्रीय—पु०[सं० पितृष्वसृ+छ—ईय] बूआ का पुत्र। फुफेरा भाई।

पितृ-सद्म (न्)—पु०[ष०त०] स्त्री के पिता का घर। मायका।

पितृसू—स्त्री० [स० पितृ√ सू (प्रसव करना)+क्विप्] १ दादी। २ सायकाल।

पितृ-स्थान—पु०[ष०त०] पिता का स्थान या पद।

पितृस्थानीय—वि०[स० पितृस्थान+छ—ईय] १ पिता के स्थान पर होनेवाला या उसका समकक्ष। २ अभिभावक।

पितृ-हता (तृ)—वि०[ष०त०]=पितृहा।

पितृहा (हन्)—वि०[स० पितृ √ (हन् (हिंसा)+क्विप्] जिसने पिता की हत्या की हो।

पितृहू—पु०[स० पितृ√ ह्वे (बुलाना)+क्विप्] दाहिना कान।

पितृहूय—पु०[स० पितृ √ ह्वे+क्यप्?] श्राद्ध आदि कार्यों के समय पितरो का आह्वान करना। पितरो को बुलाना।

पितौंजिया—पु०=पितिजिया।

पित्त—पु०[स० अपि√ दो (काटना)+क्त, तादेश, अकार-लोप] १ वैद्यक के अनुसार शरीर के तीन मुख्य तत्त्वो मे से एक (अन्य दो वात और कफ है) जो नीलापन लिये तरल होता है और यकृत मे बनता है। (बाइल) २ उक्त का प्रमुख गुण, ताप या शक्ति जो भोजन पचाती है। मुहा०—**पित्त उबलना**=दे० 'पित्ता' के अतर्गत 'पित्ता खौलना'। **पित्त उभरना**= पित्त का प्रकोप या विकार उत्पन्न होना। **(किसी का) पित्त गरम होना**=स्वभावत क्रोधी होना। मिजाज मे गरमी होना। जैसे—अभी तुम जवान हो इसी से तुम्हारा पित्त इतना गरम है। **पित्त डालना**=कै करना।

पित्त-कर—वि०[ष०त०] पित्त को बढानेवाला (पदार्थ)।

पित्त-कास—पु०[मध्य०स०] पित्त विगडने के फलस्वरूप होनेवाली एक तरह की खाँसी।

पित्त-कोष—पु०[ष०त०] पित्ताशय। (दे०)

पित्त-क्षोभ—पु०[ष०त०] पित्त के विगडने से होनेवाले विकार।

पित्तगदी (दिन्)—वि०[स० पित्त-गद, ष०त०, +इनि] जिसका पित्त विगडा हुआ हो।

पित्त-गुल्म—पु०[स०] पित्त की अधिकता के कारण होनेवाला पेट फूलने का एक रोग।

पित्तघ्न—वि०[स० पित्त√ हन्+टक्] पित्त का नाश अथवा उसके विकारो को दूर करनेवाला।
पु० घी। घृत।

पित्तघ्नी—स्त्री० [सं० पित्तघ्न+ङीप्] गुरुच।

पित्तज—वि०[म०पित्त√जन् (उत्पत्ति)+ड] पित्त अथवा उसके प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—पित्तज ज्वर, पित्तज शोथ आदि।

पित्त-ज्वर—पु०[मध्य०स०] पित्त विगड़ने से होनेवाला ज्वर।

पित्तदाह—पु० [स०] पित्त-ज्वर। (दे०)

पित्तद्रावी (विन्)—वि० [स० पित्त√द्रु (गति)+ णिच्+णिनि] पित्त को द्रवित करने अर्थात् पिघलानेवाला।
पु० मीठा नीबू

पित्त-धरा—स्त्री०[ष०त०] पित्त को धारण करनेवाली एक कला या झिल्ली। ग्रहणी।

पित्त-नाडी—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का नाडी-व्रण जो पित्त के प्रकोप से होता है। (वैद्यक)

पित्त-नाशक—वि०[ष०त०] १ पित्त का नाश करनेवाला। २ पित्त का प्रकोप दूर करनेवाला।

पित्त-निर्वहण—वि०[ष०त०] =पित्त-नाशक।

पित्त-पथरी—स्त्री०[स० पित्त+हिं० पथरी] एक प्रकार का रोग जिसमे पित्ताशय अथवा पित्तवाहक नालियो मे पित्त की ककडियाँ बन जाती हैं। यद्यपि ये पित्ताशय मे ही बनती है, पर यकृत और पित्त-प्रणालियो मे भी पाई जाती है।

पित्त-पांडु—पु०[ब०स०] पित्त के प्रकोप के कारण होनेनाला एक रोग जिसमे रोगी के मूत्र, विष्ठा, और नेत्र के सिवा सारा शरीर पीला हो जाता है।

पित्त-पापड़ा—पु०=पितपापडा (दे०)।

पित्त-प्रकृति—वि०[ब०स०] जिसके शरीर मे वात और कफ की अपेक्षा पित्त की प्रधानता या अधिकता हो।

पित्त-प्रकोप—पु०[ष०त०] पित्त के अधिक बढ जाने अथवा उसमे विकार होने के फलस्वरूप उसका उग्र रूप धारण करना (जिसके फलस्वरूप अनेक रोग होते है)।

पित्त-प्रकोपी (पिन्)—वि०[स० पित्त-प्रकोप, ष० त०, +इनि] पित्त को बढाने या कुपित करनेवाला (द्रव्य)। जिसे खाने से पित्त की वृद्धि हो।

पित्त-भेषज—पु०[ष० त०] मसूर की दाल।

पित्त-रंजक—पु०[स०]=पित्तारुण।

पित्त-रक्त—पु०[मध्य० स०] रक्तपित्त नामक रोग।

पित्तल—वि०[स० पित्त+ लच्] १ जिसमे पित्त की बहुलता हो। २. जिससे पित्त का प्रकोप या दोष बढे। पित्तकारी (द्रव्य)।
पु०१ पीतल। २ हरताल। ३ भोजपत्र।

पित्तला—स्त्री०[स० पित्तल+टाप्] १ जल-पीपल। २ वैद्यक के अनुसार योनि का एक रोग जो दूषित पित्त के कारण होता है। इसके कारण योनि मे अत्यन्त दाह, पाक तथा शरीर मे ज्वर होता है।

पित्त-वर्ग—पु०[ष०त०] मछली, गाय, घोडे, रुरु और मोर के पित्तो का समूह। पचविधपित्त।

पित्त-वल्लभा—स्त्री० [ष०त०] काला अतीस।

पित्त-वायु—स्त्री०[मध्य०स०] पित्त के प्रकोप से पेट मे उत्पन्न होनेवाली वायु।

पित्त-विदग्ध—वि० [तृ० त०] जिसका पित्त कुपित हो।
पित्त-विदग्ध-दृष्टि—पु० [ब० स०] आँख का एक रोग जो दूषित पित्त के दृष्टि-स्थान मे आ जाने के कारण होता है। इसके कारण रोगी दिन मे नही देख सकता केवल रात मे देखता है।
पित्त-विसर्प—पु० [मध्य०स०] विसर्प रोग का एक भेद।
पित्त-व्याधि—स्त्री० [मध्य०स०] पित्त के कुपित होने से होनेवाला रोग।
पित्त-शमन—वि० [प० त०] पित्त का प्रकोप दूर करनेवाला।
पित्त-शूल—पु० [मध्य०स०] पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाला शूल।
पित्त-शोथ—पु० [मध्य०स०] पित्त के प्रकोप के कारण शरीर मे होनेवाला शोथ या सूजन।
पित्त-श्लेष्म ज्वर—पु० [स० पित्त-श्लेष्मन्, द्व० स०, पित्तश्लेष्म-ज्वर, मध्य०स०] पित्त और कफ दोनो के प्रकोप से होनेवाला एक तरह का ज्वर।
पित्त-श्लेष्मोल्वण—पु० [स० पित्तश्लेष्म-उल्वण, मध्य०स०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिसमे पतला मल निकलता है और सारे शरीर मे पीडा होती है।
पित्त-सशमन—पु० [प०त०] आयुर्वेदोक्त ओषधियो का एक वर्ग। इस वर्ग की ओषधियाँ प्रकुपित पित्त को शात करनेवाली मानी जाती है। चन्दन, लालचदन, खस, सतावर, नीलकमल, केला, कमलगट्टा आदि इस वर्ग मे माने गये है।
पित्त-स्थान—पु० [प० त०] १ पित्ताशय। २. शरीर के अदर के वे पाँच स्थान जिनमे वैद्यक के अनुसार पाचक, रजक आदि ५ प्रकार के पित्त रहते है। ये स्थान आमाशय-पक्वाशय, यकृत, प्लीहा, हृदय, दोनो नेत्र और त्वचा है।
पित्त-स्यंदन—पु० [मध्य०स०] पित्त के विकार से उत्पन्न एक नेत्र रोग।
पित्त-स्राव—पु० [प०त०] सुश्रुत के अनुसार, एक प्रकार का नेत्ररोग जिसमे आँखो से पीला (या नीला) और गरम पानी वहता है।
पित्त-हर—पु० [प०त०] खस। उशीर।
पित्तहा (हन्)—पु० [स० पित्त√हन्+क्विप्] पित्त पापडा।
वि० पित्त का प्रकोप शात करनेवाला।
पित्ताड—पु० [पित्त-अड, ब० स०] घोडो के अडकोश मे होनेवाला एक रोग।
पित्ता—पु० [स० पित्त] १ वह थैली जिसमे पित्त रहता है। पित्ताशय। (देखे) २. शरीर के अदर का पित्त, जिसका मनुष्य के मनोभावो पर विशेष प्रभाव पडता है।
पद—पित्तामार काम=ऐसा कठिन काम जो वहुत देर मे पूरा होता हो और जिसमे वहुत अधिक तल्लीनता अथवा सहिष्णुता की आवश्यकता हो।
मुहा०—पित्ता उवलना या खौलना=किसी कारणवश मन मे वहुत अधिक क्रोध उत्पन्न होना। पित्ता निकलना=वहुत अधिक कष्ट, परिश्रम आदि के कारण शरीर की दुर्दशा होना। पित्ता पानी करना=किसी काम को पूरा करने के लिए वहुत अधिक परिश्रम करना। पित्ता मरना=शरीर मे उत्साह, उमग आदि का वहुत-कुछ अत या अभाव हो जाना। पित्ता मारना=(क) मन के दूषित भाव या वुरी बातें उमडने न देना। (ख) मन के उत्साह, उमग आदि को दवा या रोककर रखना। जैसे—पित्ता मारकर काम करना सीखो।
३ हिम्मत। साहस। हौसला। जैसे—उसका क्या पित्ता है जो तुम्हारे सामने ठहरे। ४ कुछ पशुओ के शरीर से निकला हुआ पित्त नामक पदार्थ जिसका उपयोग ओषध के रूप मे होता है। जैसे—बैल का पित्ता।
पित्तातिसार—पु० [पित्त-अतिसार, मध्य० स०] वह अतिसार रोग जो पित्त के प्रकोप या दोष से होता है।
पित्ताभिष्यद—पु० [पित्त-अभिष्यद, मध्य०स०] पित्त कोप से आँख आने का रोग।
पित्तारि—पु० [पित्त-अरि, प० त०] १. पित्त पापडा। २. लाख। ३. पीला चदन।
पित्तारुण—पु० [स० पित्त-अरुण] आधुनिक विज्ञान मे, शरीर के रक्त-रस मे रहनेवाला एक रगीन तत्त्व जिसकी अधिकता से आदमियो को कामला या पीलिया नामक रोग हो जाता है। (विलीरुविन)
पित्ताशय—पुं० [पित्त-आशय, प०त०] शरीर के अदर यकृत के पीछे की ओर रहनेवाली थैली के आकार का वह अग जिसमे पित्त रहता है। (गालब्लैडर)
पित्तिका—स्त्री० [स० पित्त+कन्+टाप्, इत्व] एक प्रकार की शतपदी (ओषधि)।
पित्ती—स्त्री० [हिं० पित्त+ई] १. एक रोग जो पित्त के प्रकोप से रक्त मे वहुत अधिक उष्णता होने के कारण होता है तथा जिसमे शरीर के विभिन्न अगो में छोटे-छोटे ददोरे निकल आते हैं और जिन्हे खुजलाते-खुजलाते रोगी विकल हो जाता है।
क्रि० प्र०—उछलना।
२. वे लाल महीन दाने जो गरमी के दिनो मे पसीना मरने से शरीर पर निकल आते हैं। अभौरी।
क्रि० प्र०—निकलना।
पु० [स० पितृव्य] पिता का भाई। चाचा।
पित्तोत्क्लिष्ट—पु० [पित्त-उत्क्लिष्ट, व०स०] आँख का एक रोग जिसमे पलको मे दाह, क्लेद और पीडा होती है तथा ज्योति कम हो जाती है। (वैद्यक)
पित्तोदर—पु० [पित्त-उदर, मध्य०स०] पित्त-गुल्म। (देखे)
पित्तोन्माद—पु० [पित्त-उमाद, मध्य०स०] [वि० पित्तोन्मादिक] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का उन्माद, रोग जिसमे साधारणत. विना किसी कारण के रोगी वहुत ही खिन्न, चिन्तित और दुखी रहता है और जो पित्ताशय के ठीक काम न करने से उत्पन्न होता है। (हाइपोकान्ड्रिया)
पित्तोपहत—वि० [पित्त-उपहत, तृ० त०] जिसे पित्त का प्रकोप हुआ हो।
पित्तोल्वण सन्निपात—पु० [पित्त-उल्वण, तृ० त०, पित्तोल्वण—सन्निपात, कर्म० स०] एक प्रकारका सन्निपातिक ज्वर। भ्रम, मूर्छा, मुँह और शरीर मे लाल दाने निकलना आदि इसके लक्षण है। (वैद्यक)
पित्र्य—वि० [स० पितृ+यत्] पिता-सवधी।
पु० १. वडा भाई। २ पितृतीर्थ। ३ तर्जनी और अँगूठे का अतिम भाग। ४. शहद। ५ उडद।

पित्र्या—स्त्री०[स० पित्र्य+टाप्]१ मघा नक्षत्र। २. पूर्णिमा। पूर्णमासी। ३ अमावस्या। अमावस।

पिय†—पु०=पृथ्वीराज।

पियौरा†—पु०=पृथ्वीराज (दिल्ली के अतिम हिन्दू सम्राट्)।

पिदड़ी†—स्त्री०=पिद्दी।

पिदारा*—पु०=पिद्दा।

पिद्दा—पु०[हिं० पिद्दी]१ पिद्दी का नर। विशेष दे० 'पिद्दी'। २ गुलेले की ताँत मे लगी हुई निवाड आदि की वह गद्दी जिस पर फेंकने के समय गोली रखते है। फटकना।

पिद्दी—स्त्री०[हिं० पिद्दा]१ बया की तरह की एक सुन्दर छोटी चिडिया जो अनेक रगो की होती है। इसे 'फुदकी' भी कहते है। २. अत्यन्त तुच्छ या नगण्य जीव।

पिधना†—स०[स० परिधारण] शरीर पर धारण करना, पहनना। उदा०—पीत वसन हे जुवति पिधिलेह।—विद्यापति।

पिधान—पु०[स० अपि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन, अकार-लोप] १ आच्छादन। आवरण। २ पर्दा। गिलाफ। ३ ढक्कन। ४ तलवार का कोष। म्यान। ५ किवाडा। दरवाजा।

पिधानक—पु०[स० पिधान+कन्]१ ढक्कन। २ कोष। म्यान।

पिधायक—वि०[स० अपि√धा+ण्वुल्—अक, अकार-लोप] १ ढकनेवाला। २ छिपानेवाला।

पिन—स्त्री०[अ०] धातु की तरह की पतली, नुकीली कील जिससे कागज नत्थी किये जाते है। आलपीन।

पिनक—स्त्री०[हिं० पिनकना]१ पिनकने की क्रिया या भाव। २ अफीमची की वह अवस्था जिसमे वह नशे की अधिकता के कारण सिर झुकाकर बैठे रहने की दशा मे बेसुध या सोया हुआ-सा रहता है।

क्रि० प्र०—लेना।

पिनकना—अ० [हिं० पीनक] १ अफीमची का नशे की हालत मे रह-रहकर ऊँघते हुए आगे की ओर झुकना। पीनक लेना। २ अधिक नीद आने के कारण सिर का रह-रहकर झुक पडना।

पिनकी—पु०[हिं० पीनक] वह जो अफीमचियो की तरह बैठे-बैठे सोता हो और नीचे की ओर सिर रह-रहकर झुकाता हो।

पिनद्ध—भू० कृ० [स० अपि√नह् (बाधना)+क्त, अकार-लोप]१ कसा या बाधा हुआ। २ पहना या धारण किया हुआ। ३ छाया, ढका या लपेटा हुआ।

पिनपिन—स्त्री०[अनु०]१. बच्चो के रह-रहकर रोने पर होनेवाला अनुनासिक और अस्पष्ट शब्द। २. रोगी या दुबले पतले बच्चे के रोने का शब्द।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

पिनपिनहा—वि०[हिं० पिनपिन+हा (प्रत्य०)]१. पिनपिन करनेवाला (बच्चा)। जो हर समय रोया करे। २ प्राय रोगी रहनेवाला दुबला-पतला (बच्चा)।

पिनपिनाना—अ०[हिं० पिनपिन]१ रोते समय नाक से पिनपिन का-सा स्वर निकालना। २ धीरे-धीरे, रुक-रुककर या हिचकियाँ लेते हुए रोना।

पिनपिनाहट—स्त्री०[हिं० पिनपिनाना] पिनपिन करने की क्रिया, भाव या शब्द।

पिनसन†—स्त्री०=पेंशन।

पिनाक—पु०[स०√ पा (रक्षा करना)+आकन्, नुट्, ह्रस्व] १. शिव का वह धनुष जो श्रीरामचद्र ने सीता स्वयवर मे तोडा था। अजगव। २. धनुष। ३ त्रिशूल। ४ नीला अभ्रक।

पिनाक-गोप्ता (प्तृ)—पु०[ष०त०] शिव।

पिनाक-धृत्—पु० [स० पिनाक√धृ (धारण करना)+क्विप्] शिव।

पिनाक-पाणि—पु०[ब०स०] शिव।

पिनाक-हस्त—पु०[ब०स०] शिव।

पिनाकी (किन्)—पु०[स० पिनाक+इनि]१ पिनाक धारण करनेवाले, महादेव। शिव। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगा रहता था।

पिन्नस†—स्त्री०=पीनस (रोग)।

पिन्ना—वि०[हिं० पिनपिनाना] प्राय पिनपिन करने अर्थात् रोता रहनेवाला।

पु०[हिं० पीजना] धुनिया।

पु०[हिं० पिन्नी का पु०] बडी पिन्नी।

पिन्नी—स्त्री०[स० पिंडी]१ एक प्रकार का लड्डू जो आटे आदि मे कई तरह के मसाले और चीनी या गुड मिलाकर बनाया जाता है। २ सूत, धागे आदि को लपेटकर गोलाकार बनाया हुआ छोटा पिंड। जैसे—डोर या नग की पिन्नी।

पिन्यास—पु०[स० अपि-न्यास, ब०स०, अकार-लोप] हीग।

पिन्हाना†—स०=पहनाना।

पिपर†—पु०=पीपल।

पिपरमिंट—पु०[अ० पेपरमिंट]१ पुदीने की जाति का परन्तु उससे भिन्न एक प्रकार का पौधा जो यूरोप और अमेरिका मे होता है। इसकी पत्तियो मे एक विशेष प्रकार की गध और ठढक होती है। २ उक्त पत्तियो का निकाला हुआ सत्त या सार भाग जो छोटे सफेद रवे के रूप मे होता और पाचक माना जाता है।

पिपरामूल—पु०[हिं० पीपल+स० मूल] पीपल की जड।

पिपराही—पु० [हिं० पिपर+आही (प्रत्य०)] पीपल का जंगल या वन।

पिपरिहा†—पु०[पिपरहा (स्थान)] राजपूतो की एक शाखा या अल्ल।

पिपली—स्त्री० [देश०] नैपाल, दार्जिलिंग आदि पहाडी इलाको मे होनेवाला एक तरह का वृक्ष जिसकी लकडी इमारती कामो मे आती है।

पिपही†—स्त्री०= पिपीली।

पिपास—स्त्री०=पिपासा (प्यास)।

पिपासा—स्त्री० [स० √ पा (पीना)+सन्+अ—टाप] १. पानी या और कोई तरल पदार्थ पीने की इच्छा। तृष्णा। तृषा। प्यास। २. कोई चीज पाने की इच्छा या लोभ।

पिपासित—वि० [स० पिपासा+इतच्] जिसे प्यास लगी हो। प्यासा।

पिपासी (सिन्)—वि०[स० पिपासा+इनि] प्यासा।

पिपासु—वि०[स०√ पा+सन्+उ]१ जिसे पिपासा या प्यास लगी हो।

तृपित। प्यासा। २ पीने का इच्छुक। ३. जिसके मन मे किसी प्रकार की उग्र कामना या लोभ हो। जैसे—रक्तपिपासु।

पिपियाना—अ०[हिं० पीप=मवाद] फोडे आदि मे पीप पैदा होना। स० फोडे आदि मे मवाद उत्पन्न करना। फोडा पकाना।

पपिली—स्त्री०=पिपीली।

पिपीतकी—स्त्री०[स० पिपीतक+अच्+ङीप्] वैशाख शुक्ल द्वादशी जो व्रत का दिन माना गया है। पहले-पहल कहते हैं कि पिपीतक नाम के एक ब्राह्मण ने किया था। इसी से उसका यह नाम पडा है।

पिपीलक—पु०[स० अपि√पील् (रोकना)+ण्वुल्—अक, अकार-लोप] [स्त्री० अल्पा० पिपीलिका] १. बडा चीटा। २. एक तरह का सोना।

पिपीलिक—पु०=पिपीलक।

पिपीलिका—स्त्री० [स० पिपीलक+टाप्, इत्व] १ च्यूँटी या चींटी नाम का छोटा कीडा। २ च्यूँटियो की तरह एक के पीछे एक चलने की प्रवृत्ति।

पिपीलिकाभक्षी (क्षिण्)—पुं०[स० पिपीलिका√भक्ष् (खाना)+णिनि] दक्षिण अफ्रीका का एक जतु जिसका बहुत लबा थूथन और बहुत बडी जीभ होती है। उसे दांत नही होते यह अपने पजो से चीटियो के बिल खोदता है और उन्हे खाता है।

पिपीलिका-मार्ग—पु०[प०त०] योग की साधना मे दो मार्गो मे से एक जिसके द्वारा साधक क्रमश' धीरे-धीरे आगे बढता और षट् चक्रो को वेधता हुआ अपने प्राण ब्रह्माण्ड तक पहुँचाता है। उसकी तुलना मे दूसरा अर्थात् विहगम मार्ग (देखें) श्रेष्ठ समझा जाता है।

पिपीलिकोद्वाप—पु०[पिपीलिका-उद्वाप, प०त०] वल्मीक।

पिपीली—स्त्री०[स० अपि√पील्+अच्+ङीप् अलोप] चीटी। च्यूँटी।

पिप्पटा—स्त्री०[स०]१. पुरानी चाल की एक तरह की मिठाई। २. चीनी।

पिप्पल—पु०[स०√पा+अलच्, पृषो० सिद्धि] १ पीपल का पेड। अश्वत्थ। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ रेवती मे उत्पन्न मित्र का एक पुत्र। (भागवत) ४ नगा आदमी। ५ जल। पानी। ६. वस्त्र-खड। कपडे का टुकडा। ७ अगे आदि की बाँह या आस्तीन।

पिप्पलक—पु०[स० पिप्पल+कन्] स्तनमुख।

पिप्पलयाग—पु० [स०] चीन और जापान मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जो अब भारतवर्ष में भी गढवाल, कुमाऊँ और काँगडे की पहाडियो मे पाया जाता है। इसके फलो के बीज के ऊपर चरबी की तरह का चिकना पदार्थ होता है जिसे चीनी मोम कहते हैं। मोमचीना।

पिप्पला—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी।

पिप्पलाद—पु० [स० पिप्पल√अद् (खाना)+अण्] पुराणानुसार एक ऋषि जो अथर्ववेद की एक शाखा के प्रवर्तक माने गये हैं।

पिप्पलाशन—वि०[पिप्पल-अशन, ब०स०] जो पीपल का फल या गूदा खाता हो।

पिप्पलि—स्त्री०[स० पिप्पल+इन्] पीपल नामक लता और उसकी कली जो दवा के काम आती है।

पिप्पली—स्त्री०[स० पिप्पलि+ङीप्] पीपल (लता)।

पिप्पली-खट—पु० [प०त०] वैद्यक के अनुसार एक औषध जो पीपल के चूर्ण, घी, शतमूली के रस, चीनी आदि को दूध मे पकाकर बनाई जाती है।

पिप्पलीमूल—पु०[प०त०] पीपल की जड। पिपरामूल।

पिप्पल्यादिगण—पु०[स० पिप्पली-आदि, ब०स०,पिप्पल्यादि-गण, प०त०] सुश्रुत के अनुसार ओषधियो का एक वर्ग जिसके अतर्गत पिप्पली, चीता, अदरख, मिर्च, इलायची, अजवायन, इन्द्रजव, जीरा, सरसो, बकायन, हीग, भारगी, अतिविषा, वच, विडग और कुटकी हैं।

पिप्पिका—स्त्री०[स०] दाँतों की मैल।

पिप्पीक—पु०[स०] एक प्रकार का पक्षी।

पिप्लु—पु०[स० अपि√प्लु (गति)+डु, अकार-लोप] १. मसा। २ तिल।

पिय—पु०[सं० प्रिय] १. स्त्री की दृष्टि मे वह व्यक्ति जिससे वह प्रेम करती हो। प्रियतम। २. पति।

पियर†—वि०[भाव० पियरई]=पियरा (पीला)।

पियरई†—स्त्री०[हिं० पियर=पीला] पीलापन।

पियरवा†—पु०=प्यारा।
†वि०=पीला।

पियरा†—वि०[स्त्री० पियरी]=पीला।

पियराई†—स्त्री०=पियरई (पीलापन)।

पियराना—अ० [हिं० पियरय] १. पीला पडना। २ पीले रग का होना।

पियरी†—स्त्री० [हिं० पियरा] १ पीलापन। २. पीली रगी हुई वह धोती जो प्राय देवियों, नदियों आदि को चढाई जाती है। उदा०—कोउ थाननि के थान तानि पियरी पहिरावै'।—रत्ना०। ३. उक्त प्रकार की वह धोती जो वर और वधू को विवाह के समय पहनाई जाती है। ४. एक प्रकार की चिडिया।

पियरोला—पुं०[हिं० पीयर] मैना से कुछ छोटी तथा पीले रग की मधुर स्वरवाली एक चिडिया।

पियली—स्त्री०[हिं० प्याली] नारियल की खोपरी का वह टुकडा जिसे बढई आदि बरमे के ऊपरी सिरे के काटे पर इसलिए रख लेते हैं कि छेद करने के लिए बरमा सहज मे घूम सके।

पियल्ला—पु०[हिं० पीना] दूध पीनेवाला बच्चा।
पु०=पियरोला।

पियवास†—पु०=पियाबाँसा (कटसरैया)।

पिया†—पु०=पिय।

पियाज†—=प्याज।

पियाजी†—वि०=प्याजी।

पियादा†—पुं०=प्यादा।

पियाना†—स०=पिलाना। (पूरब)

पियानो—पु०[अं०] हारमोनियम की तरह का एक प्रकार का बडा अगरेजी बाजा जो मेज के आकार का होता है।

पियाबाँसा—पु० [हिं० पिय+बाँस] कटसरैया। कुरवक।

पियामन—पु०[?] राजजामुन। (वृक्ष)

पियार—पु०[स० पियाल] मझोले आकार का एक पेड जो देखने मे महुए की तरह का होता है। इसका फल फालसे के बराबर और गोल होता

है। बीज की गिरी बादाम और पिस्ते की तरह मीठी होती है और चिरौंजी कहलाती है।

वि०=प्यारा।

पु०=प्यार।

पियारा†—वि०, पुं०=प्यारा।

पियाल—पु०[स०√पी (पीना)+कालन्, इयङ्] १. चिरौंजी का पेड़। पयार। २ उक्त पेड़ का बीज।

पु०[स० पाताल]१. पाताल। २ गहराई। उदा०—पैसि पियाल काली नाग नाथ्यो।—मीराँ।

†पुं०=पयाल।

पियाला†—पु०=प्याला।

पियाव-बड़ा—पु०[पियाव ?+वडा] एक तरह की मिठाई।

पियास†—स्त्री०=प्यास।

पियासा†—वि०=प्यासा।

पिया-साल—पु०[स० पीतसाल,प्रियसालक] बहेड़े या अर्जुन की जाति का एक प्रकार का बड़ा पेड़ जो भारतवर्ष के जंगलो मे प्राय सब जगह होता है। इसके पत्ते, छाल तथा लकडी कई तरह के कामो मे आती है।

पियासी*—स्त्री०[?] एक प्रकार की मछली।

पियूख(ष)†—पु०=पियूष (अमृत)।

पियौसार†—स्त्री०[पिय + शाला] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति का घर अर्थात् ससुराल।

पिरकी†—स्त्री०[स० पिड़क, पिडका] छोटा फोडा। फुंसी। (पूरब)

पिरता—पु०[स०पट्ट] काठ या पत्थर का वह टुकडा जिस पर रूई की पूनी रखकर दबाते हैं।

पिरथी†—स्त्री०=पृथ्वी।

पिरथीनाथ†—पु०=पृथ्वीनाथ।

पिरन†—पु०[देश०] चौपायों का लगडापन।

पिराई†—स्त्री०=पियरई।

पिराक—पु० [स० पिष्टक, प्रा० पिट्ठक; पिडक] [स्त्री० अल्पा० पिराकडी] गुझिया या गोझा नामक पकवान, जो मैदे की पतली लोई के अदर सूजी, खोआ, मेवे आदि भरकर और उसे अर्द्धचन्द्राकार मोडकर घी मे तलकर बनाया जाता है।

पिराग†—पु०=प्रयाग।

पिराना—अ०[स० पीडा+हिं० आना (प्रत्य०)]१ (किसी अग का) दर्द करना। पीडा होना। २ पीडा या दुःख अनुभव करना। ३ किसी को दुःखी देखकर स्वय दुखी होना।

पिरारा†—पु० १=पिंडारा (साग)। २=पिंडारी (डाकू)।

पिरिच—स्त्री० [देश०] तश्तरी विशेषत चीनी मिट्टी की।

पिरिया—पु०[देश०]१ कूएँ से पानी निकालने का रहँट। २ एक तरह का बाजा।

पिरीतना—अ०[स० प्रीति]१ प्रीति या प्रेम करना। २ प्रसन्न होना। उदा०—समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते।—तुलसी।

पिरीतम†—पु०=प्रियतम।

पिरीता—वि०[स० प्रीत=प्रसन्न] प्रिय।

पिरीती†—स्त्री०=प्रीति।

पिरोज—पु०[?] १ कटोरा। २. तश्तरी।

पिरोजन—पु०[स०प्रयोजन] १ बालक के कान छेदने की रीति। कनछेदन। २. दे० 'प्रयोजन'।

पिरोजा†—पु०=फीरोजा।

पिरोजी†—वि०=फीरोजी।

पिरोड़ा—स्त्री०[देश०] पीली, कड़ी मिट्टीवाली भूमि।

पिरोना—स०[स० प्रोत; प्रा० पोअ, प्रोअ+ना (प्रत्य०)]१ किसी छेदवाली वस्तु मे धागा डालना। जैसे—सूई मे धागा पिरोना। २ छेदवाली बहुत-सी वस्तुओं को एक साथ धागे में नत्थी करना। जैसे—माला पिरोना।

पिरोला—पु०[हिं० पीला]पियरोला नामक पक्षी।

पिरोहना†—स०=पिरोना।

पिरोहाँ†—वि० [स० पीड़ा] [स्त्री० पिरोहीं] मन मे पीड़ा उत्पन्न करनेवाला। कष्टदायक। उदा०—नव लगिमिनि दून पुँउ पिरोहीं।—जायसी।

पिलई—स्त्री०[स० प्लीहा]१ शरीर के अदर का तिल्ली नामक अग। २ ताप-तिल्ली या प्लीहा नामक रोग।

पिलक—पु० [हिं० पीला]१ पीले रग की एक चिड़िया जो मैना से कुछ छोटी होती है और जिसका स्वर बहुत मधुर होता है। पियरोला। जर्दक। २ अबलक कबूतर।

पिलकना—स०[स० पिच्छिल]१ गिरना। २ ढकेलना। ३ झुकना। लटकना।

अ०१ गिरना। २ लुढकना।

पिलकिया—पु० [देश०] पीलापन लिये खाकी रग की एक तरह की छोटी चिड़िया जो पजाब से आसाम तक दिखाई देती है।

पिलखन—पु०[स० प्लक्ष] पाकर वृक्ष।

पिलचना—अ० [स० पिल=प्रेरणा] १ दो आदमियों का आपस मे भिड़ना। गुथना। लिपटना। २ किसी काम मे तत्पर या लीन होना।

पिलड़ी—स्त्री०[देश०] पकाया हुआ मसालेदार कीमा।

पिलद्दा—पु०[फा० पलीद (गदा) या पहलवी पलीदीह] [स्त्री० अल्पा० पिलद्दी]१ गू। मल। विष्ठा। २. बहुत ही गन्दी या मैली चीज। ३. गदगी। ४ वह रूप जो किसी चीज को बहुत बुरी तरह से कूटने-पीटने पर प्राप्त होता है। कचूमर।

पिलना—अ०[स० पिल=प्रेरणा]१. वेगपूर्वक अन्दर की ओर घुसना या पढना। जैसे—सब लोग घर के अन्दर पिल पडे। २ पूरी शक्ति से किसी काम मे जुटना या लगना। ३ भिड जाना।

संयो० क्रि०—पडना।

४ ऊख, तिल आदि का पेरा जाना।

सयो० क्रि०—जाना।

पिलपिल—स्त्री०[हिं० पिलपिलाना] पिलपिल करने या होने की अवस्था या भाव।

वि०=पिलपिला।

पिलपिला—वि०[अनु०] [भाव० पिलपिलापन, स्त्री० पिलपिली] (पदार्थ) जो इतना अधिक कोमल हो कि हाथ से दबाने मात्र से

पिशिक—पु०[स०] एक प्राचीन देश। (वृहत्सहिता)

पिशित—पु०[स०√ पिश्+क्त] १. मास। गोश्त। २. मास का टुकड़ा या बोटी।

पिशिता—स्त्री०[स० पिशित+टाप्] जटामासी।

पिशिताशन—पु०[स० पिशित-अशन, ब०स०] १ वह जो मनुष्यो को खाता हो। २. राक्षस। ३. भेडिया।

पिशिनी—स्त्री० दे० 'पिशी'।

पिशी—स्त्री०[सं०√ पिश्+क+ङीप्] जटामासी।

पिशील—पु०[स० √ पिश्+ईल] मिट्टी का प्याला या कटोरा। (शतपथ ब्रा०)

पिशुन—वि०[सं०√ पिश् +उनन्] [भाव० पिशुनता] १. नीच। २. क्रूर। ३. चुगलखोर।

पु० १ वह प्रेत जो गर्भिणी स्त्रियो को बाधा पहुँचाता हो। २ एक की दूसरे से बुराई करके दो पक्षो मे लडाई करानेवाला व्यक्ति। ३. केसर। ४ तगर। ५. कपास। ६. नारद। ७ कौआ।

पिशुनता—स्त्री०[स० पिशुन+तल्+टाप्] १ पिशुन होने की अवस्था या भाव। २ चुगलखोरी। ३ असवर्ग।

पिशुन-वचन—पुं०[ष०त०] चुगली।

पिशुना—स्त्री०[स० पिशुन+टाप्] चुगलखोरी।

पिशोन्माद—पु०[ब०स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का उन्माद या पागलपन जिसमे रोगी प्राय ऊपर को हाथ उठाये रहता, अधिक बकता और रोता तथा गन्दा या मैला-कुचैला बना रहता है।

पिशोर—पु०[देश०] हिमालय मे होनेवाली एक प्रकार की झाडी जिसकी पतली, लचीली टहनियाँ बोझ बाँधने तथा टोकरे आदि बनाने के काम आती हैं।

पिष्ट—वि०[स०√ पिष् (पीसना)+क्त] १ पिसा या पीसा हुआ। चूर्ण किया हुआ। २ निचोड़ा हुआ।

पु०१. पानी के साथ पिसा हुआ अन्न, विशेषत दाल। पीठी। २. कोई ऐसा पकवान जिसके अन्दर पीठी भरी हो। ३ सीसा।

पिष्टक—पु०[स० पिष्ठ+कन] १ पिष्ट अर्थात् पीठी का बना हुआ खाद्य पदार्थ। २ तिल का चूर्ण। ३. फूली नामक नेत्र रोग।

पिष्ट-पचन—पुं०[ष० त०] १. कड़ाही। २ तवा।

पिष्ट-पशु—पु० [ष० त०] बलि चढाने के काम के लिए गुँधे हुए आटे का बनाया हुआ पशु।

पिष्ट-पाचक—पु०[ष०त०] कड़ाही या तवा जिसपर पीसी हुई चीजें पकाई जाती हैं।

पिष्ट-पिंड—पु०[ष० त०] बाटी नामक पकवान। लिट्टी।

पिष्ट-पूर—पु०[स० पिष्ट√पूर् (पूर्णकरना)+णिच्+अच्] =घृतपूर।

पिष्ट-पेषण—पु०[ष० त०] १. पीसी हुई चीज को फिर से पीसना। २. उक्त के आधार पर ठीक तरह से पूरे किये हुए कार्य को फिर उसी तरह दोहराकर व्यर्थ परिश्रम करना जिस प्रकार पीसी हुई चीज को फिर से पीसने का व्यर्थ परिश्रम किया जाता है।

पिष्ट-प्रमेह—पु०[ष० त०] वैद्यक मे, एक प्रकार का प्रमेह जिसमे मूत्र के साथ चावल के पानी के समान तरल पदार्थ गिरता है।

पिष्ट-मेह—पु०[ष० त०]=पिष्ट प्रमेह।

पिष्टवर्ति—स्त्री०[सं० पिष्ट√वृत् (बरतना)+इन्] किसी अन्न-चूर्ण का बना हुआ पिंड।

पिष्ट-सौरभ—पुं० [ब०स०] पीसे जाने पर सुगध छोडनेवाला चंदन।

पिष्टात—पु०[स० पिष्ट√अत् (गति)+अच्] अबीर। बुक्का।

पिष्टातक—पु०[स० पिष्टात+कन्] अबीर। बुक्का।

पिष्टाद—वि०[स० पिष्ट√अद् (खाना)+अण्] जो अन्न-चूर्ण खाता हो।

पिष्टान्न—पुं०[पिष्ट-अन्न, कर्म० स०] पीसे हुए अन्न से बना हुआ पकवान।

पिष्टि—स्त्री०[स०√ पिष्+क्तिन्] १. पीसा हुआ अन्न। अन्न-चूर्ण। २. पीठी।

पिष्टिक—पु०[स० पिष्ट +ठन्—इक] चावल की पीठी।

पिष्टोदक—पु०[पिष्ट-उदक, मध्य० स०] ऐसा जल जिसमे पीसा हुआ अन्न मिला या मिलाया गया हो।

पिष्यना*—स०=पेखना।

पिसग—वि०, पु०=पिशग।

पिसनहारा—पु०[हिं० पीसना+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पिसनहारी] वह व्यक्ति जो अन्न पीसकर अपनी जीविका चलाता हो।

पिसना—अ०[हिं० पीसना का अ०] १. पीसा जाना। २. बहुत बुरी तरह से इस प्रकार कुचला या दबाया जाना कि बहुत छोटे-छोटे खड हो जायँ। ३ किसी प्रकार के कष्ट, सकट आदि मे पडने के कारण अथवा बहुत अधिक परिश्रम आदि के कारण थककर चूर या परम शिथिल हो जाना। जैसे—दिन भर कार्यालय मे काम करते करते वह पिसा जाता था।

सयो० क्रि०—जाना।

४. शोषित किया जाना। शोषित होना।

पिसर—पु०[फा०] पुत्र। बेटा। लड़का।

पिसरे मुतवन्ना—पु० [फा०] दत्तक पुत्र।

पिसवाज†—स्त्री०=पेशवाज।

स्त्री०[फा० पिश्वाज] नर्तकियो के पहनने का लँहगा।

पिसवाना—स०[हिं० पीसना का प्रे०] किसी को कुछ पीसने मे लगाना या प्रवृत्त करना।

पिसाई—स्त्री०[हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. चक्की पीसने का व्यवसाय। ३ चक्की पीसने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक। ४ वह अवस्था जिसमे आदमी को बहुत अधिक परिश्रम करते-करते थककर चूर हो जाना पडता है। जैसे—दिन भर कार्यालय मे पिसाई करने पर सध्या को थका-मांदा घर आता था।

पिसाच†—पु०=पिशाच।

पिसान—पु०[हिं० पिसना+अन्न] पीसा हुआ अन्न, विशेषत गेहूँ या जौ का आटा।

पिसाना†—स०=पिसवाना।

†अ०=पिसना।

पिसानी†—स्त्री०=पेशानी (ललाट)।

पिसिया—पु०[हिं० पिसना] एक तरह का लाल रग का गेहूँ।

स्त्री० आटा पीसकर अर्थात् चक्की चलाकर जीविका चलाने का काम।

पिसी†—स्त्री०[हिं० पिसना] एक तरह का सफेद रग का गेहूँ।

पिसुन†—वि०, पुं०=पिशुन।

पिसुराई—स्त्री०[देश०] सरकडे का वह छोटा टुकडा जिस पर रूई लपेट-कर पूनियाँ वनाते है।

पिसूरी—पु०[?]भूरे रग का एक प्रकार का बहुत छोटा हिरन जो मध्य-प्रदेश, उडीसा, लका और दक्षिणी भारत के जगलो मे अधिकता से पाया जाता है। इसके बाल घने, पतले और मुलायम होते है।

पिसेरा†—पु०=पिसूरी (हिरन)।

पिसौनी*—स्त्री०[हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया या भाव। २ दे० 'पिसाई'।

पिस्टल—स्त्री०[अ०] पिस्तौल।

पिस्तई—वि०[हिं० पिस्ता] पिस्ते के रंग का। पीलापन लिए हरे रंग का। जैसे—पिस्तई धोती।
पु० उक्त प्रकार का रग।

पिस्ताँ—पु०[स० पयस्तन से फा०] स्त्री का स्तन। छाती।

पिस्ता—पु०[फा० पिस्त]१ एक प्रकार का छोटा पेड जो इराक और अफगानिस्तान आदि देशों मे होता है और जिसके फल की गिरी मेवों में गिनी जाती है। २ उक्त के फलो की गिरी जो बहुत स्वादिष्ट होती है।

पिस्तौल—स्त्री० [अ० पिस्टल] गोली चलाने की एक प्रकार की छोटी जेवी वदूक। तमचा।

पिस्सी—स्त्री०=पिसी। (दे०)

पिस्सू—पु०[फा० पश्श]१. एक प्रकार का छोटा उडनेवाला कीडा जो मच्छर की तरह शरीर का रक्त चूसता है। २. मच्छर।

पिहकना—अ०[अनु०] कोयल, पपीहे, मोर आदि का पी पी या पिट्ट पिट्ट करके चहकना या बोलना।

पिहान—पुं०[स० पिधान] [स्त्री० अल्पा० पिहानी] ढक्कन। ढकना।

पिहानी—स्त्री०[हिं० पिहान] १. छोटा ढक्कन। २. ऐसी गुप्त बात जो दूसरो से छिपाई जाय।

पिहित—वि०[स० अपि√धा (धारण करना)+क्त, अकार—लोप] १. ढका हुआ। २. छिपा हुआ। गुप्त।
पु० साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे ऐसी क्रिया का वर्णन होता है जिसके द्वारा यह जतलाया जाता है कि हमने आपके मन का गुप्त भाव ताड लिया है।

पिहुआ†—पु०[देश०] एक प्रकार का पक्षी।

पिहोली—पुं०[देश०] एक प्रकार का पौधा जो मध्यप्रदेश मे और वरार से ववई तक होता है। इसकी पत्तियाँ सुगधित होती हैं। जिनसे इत्र बनता है। इसे पिचौली भी कहते है।

पींग—स्त्री०[हिं० पेग] १. पेड की डाल मे रस्सा लटकाकर वनाया जाने-वाला झूला। (पश्चिम) २. दे० 'पेंग'।

पींजन—पु०[स० पिजन] भेड़ो के वाल धुनने की धुनकी।

पींजना—स०[स० पिंजन=धुनकी] रूई धुनना। पिंजना।
पु०†=धुनिया।

पींजर—पु०१. दे० 'पिंजडा'। २ दे० 'पजर'।

पींजरा—पु०=पिंजरा।

पींड—पु०[स० पिंड]१ वृक्ष का धड। तना। पेडी। २ कटहल के पुराने पेडों की जड और तने के बीच का वह अश जो जमीन मे रहता है तथा जिसमे फल लगते है जो खोदकर निकाले जाते है। ३. कोल्हू के चारो ओर गीली मिट्टी का बनाया हुआ घेरा जिससे ईख की अगरियाँ या छोटे टुकडे छटककर बाहर नही निकल सकते। ४. चरखे का मध्य-भाग। बेलन। ४. दे० 'पिंड'। ५. दे० 'पिंड खजूर।'

पींडी†—स्त्री० १=पिंडी। २. पिंडली।

पींडुरी†—स्त्री०=पिंडली।

पी†—पुं० दे० 'पिय'।
पु०[अनु०] पपीहे के बोलने का शब्द।

पीऊ—पु०=पिय (प्रियतम)।
वि० =परमप्रिय।

पीक—स्त्री०[सं० पिच्च]१ चबाये हुए पान का वह रस जो थूका जाता है। पान की थूक। २ वह रग जो कपडे को पहली वार रग मे डुवाने से चढता है। (रगरेज)
वि०[?] ऊँचा-नीचा। ऊवड-खावड। (लश०)

पीकदान—पु० [हिं० पीक+फा० दान= पात्र] वह पात्र जिसमे पीक थूकी जाती है। उगालदान।

पीकना—अ०[पी-पी से अनु०]पीपी शब्द करना। जैसे—पपीहे का पीकना।

पीका—पु०[?] वृक्ष का नया कोमल पत्ता। कल्ला। कोंपल।
क्रि० प्र०—पनपना।—फूटना।

पीच—स्त्री०[स० पिच्च] वह लसीला तरल पदार्थ जो चावल उबालने पर बच रहता है। माँड।
पुं० [अ० पिच] अलकतरा।
स्त्री०=पीक (पान की)।

पीचना†—अ०[स० पिच्च] पैरो से कुचलना या रौंदना।

पीचू—पु०[देश०] १. चीलू या जरदालू का पेड। २. करील का पका हुआ फूल। कचरा टेंटी।

पीछ—स्त्री०[हिं० पीछे या पिछला] पक्षी की दुम। पूंछ।
†स्त्री०=पीच (माँड)।

पीछा—पु०[स० पश्चात्; फा० पच्छा]१. किसी व्यक्ति के शरीर का वह भाग जो उसकी छाती, पेट, मुँह आदि की विपरीत दिशा मे पडता है। पीठ की ओर का भाग। पृष्ठ भाग। 'आगा' का विपर्याय। २. किसी चीज के पीछे की ओर का विस्तार।
मुहा०—(किसी का) पीछा करना=(क) किसी को पकडने, भागने, मारने-पीटने आदि के लिए अथवा उसका पता लगाने या भेद लेने के लिए उसके पीछे-पीछे तेजी से चलना या दौडना। जैसे—अपराधी, चोर या शिकार का पीछा करना। (ख) किसी का भेद या रहस्य जानने के लिए छिपकर उसके पीछे-पीछे चलना। जैसे—वह जहाँ जाता था, वही पुलिस उसका पीछा करती थी। (ग) दे० नीचे 'पीछा पकडना'। **(किसी काम या बात से) पीछा छुड़ाना**=अपने साथ होनेवाली किसी अनिष्ट या अप्रिय बात से अपना सम्बन्ध छुडाना। पिंड छुडाना। जैसे—अफीम या शराब की लत से पीछा छुडाना। **(किसी व्यक्ति से) पीछा छुडाना**=जो व्यक्ति किसी काम या बात के लिए पीछे पडकर बहुत तग कर रहा हो, उससे किसी प्रकार छुटकारा पाना। **पीछा छूटना**=(क) पीछा करनेवाले या पीछे पडे हुए व्यक्ति से छुटकारा मिलना। पिंड छूटना। जान छूटना। (ख) अनिष्ट अथवा अप्रिय काम या बात

से छुटकारा मिलना (ग)। किसी प्रकार का या किसी रूप मे छुटकारा मिलना। बचाव या रक्षा होना। जैसे—महीनो बाद बुखार से पीछा छूटा है। **(किसी व्यक्ति का) पीछा छूटना**=किसी का पीछा करने का काम बद करना। किसी आशा या प्रयोजन से किसी के साथ लगे फिरने या उसके पीछे-पीछे दौडने या उसे तग करने का काम बद करना। **(किसी काम या बात का) पीछा छोड़ना**=जिस काम या बात मे बहुत अधिक उत्साह या तन्मयता से लगे रहे हो, उससे विरत होना अथवा उसका आसग या ध्यान छोडना। **पीछा दिखाना**=(क) सम्मुख या साथ न रहकर अलग या दूर हो जाना। पीठ दिखाना। जैसे—सकट के समय सगी-साथियो ने भी पीछा दिखाया। (ख) प्रतियोगिता, लडाई-झगडे आदि मे डर या हारकर भाग जाना। पीठ दिखाना। **पीछा देना**=दे० ऊपर 'पीछा दिखाना'। **(किसी का) पीछा पकडना**=किसी आशा से या अपने कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी का अनुचर या साथी बनना। किसी के आश्रय या सहायता का आकाक्षी बनकर प्राय. उसके साथ लगे रहना। जैसे—किसी रईस का पीछा पकडना। **(किसी काम या बात का) पीछा भारी होना**= (क) पीछे की ओर शत्रु या सकट की आशका या भय होना। (ख) अधिक उपयोगी या सहायक अश का पीछे की ओर आधिक्य होना। (ग) किसी काम के अतिम या शेष अश का अधिक कठिन या अधिक कष्टसाध्य होना। पिछला अश ऐसा होना कि सँभलना कठिन हो।

३ पीछे-पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहने की क्रिया या भाव। जैसे—बडे का पीछा है, कुछ न कुछ दे ही जायगा। उदा०—प्रभु मैं पीछौ लियो तुम्हारौ।—सूर। ४. पहनने के वस्त्रो आदि का वह भाग जो पीछे अथवा पीठ की ओर रहता है। जैसे—इस कोट का पीछा ठीक नही सिला है।

पीछू†—अव्य०=पीछे।

पीछे—अव्य० [हिं० पीछा] १. जिस ओर या जिस दिशा मे किसी का पीछा या पीठ हो, उस ओर या उस दिशा मे। किसी के मुख या सामनेवाली दिशा की विपरीत दिशा मे। 'आगे' और 'सामने' का विपर्याय। जैसे—(क) हम लोग सभापति के पीछे बैठे थे। (ख) मकान के पीछे बहुत बडा मैदान था।

विशेष—इस अर्थ मे उक्त ओर या दिशा मे होनेवाले विस्तार का भाव भी निहित है, और इसके अधिकतर मुहा० इसी आधार पर बने है।

मुहा०—**(किसी के) पीछे चलना**=किसी का अनुगामी या अनुयायी बनना। अनुकरण करना। जैसे—आज-कल तो जो नेता बन सके, उसी के पीछे हजारो आदमी चलने लगते है। **(किसी चीज या व्यक्ति का) पीछे छूटना**=किसी की तुलना मे या किसी के विचार से पीछे की ओर रह जाना। जैसे—(क) यात्रियो मे से कुछ लोग पीछे छूट गये थे। (ख) हम लोग बाते करते हुए आगे बढ गए, और उनका मकान पीछे छूट गया। **(किसी काम या बात में, किसी के) पीछे छूटना या रह जाना**=उन्नति गति, दौड प्रतियोगिता आदि मे किसी से घटकर या कम योग्यता का सिद्ध होना। किसी की तुलना मे पिछडा हुआ सिद्ध होना। जैसे—आणविक आविष्कारो के क्षेत्र मे बहुत मे देश अमेरिका और रूस से पीछे छूट गये है। (इस मुहा० मे 'छूटना' के साथ सयो० क्रि० 'जाना' का प्रयोग प्राय अनिवार्य रूप से होता है। **(किसी का किसी व्यक्ति के) पीछे छूटना या लगना**=किसी भागे हुए आदमी को पकडने के लिए या किसी का भेद, रहस्य आदि जानने के लिए किसी का नियुक्त किया जाना या होना। जैसे—डाकुओ का पता लगाने के लिए बीसियो जासूस (या सिपाही, उनके पीछे छूटे (या लगे) थे। **(किसी काम या बात मे किसी को) पीछे छोड़ना**=किसी विषय मे औरो से बढकर इस प्रकार आगे हो जाना कि और लोग उसकी तुलना मे न आ सकें या बराबरी न कर सके। कौशल, योग्यता सामर्थ्य आदि मे औरो से आगे बढ जाना। जैसे—अपने काम मे वह बहुतो को पीछे छोड गया है। **(किसी को किसी के) पीछे छोड़ना, भेजना या लगाना**= (क) जासूस या भेदिया बनाकर किसी को किसी के साथ लगाना। भेदिया नियुक्त करना या साथ लगाना। (ख) भागे हुए व्यक्ति को पकडकर लाने के लिए कुछ लोगो को नियुक्त करना। **(किसी को किसी के) पीछे डालना**= दे० ऊपर (किसी के) 'पीछे छोडना, भेजना या लगाना'। **(धन) पीछे डालना**=भविष्यत् की आवश्यकता के लिए खर्च से बचाकर कुछ धन एकत्र करके रखना। आगे के लिए सचय करना। जैसे—हर महीने दस-पाँच रुपए बचाकर पीछे भी डालते चलना चाहिए। **(किसी काम या व्यक्ति के) पीछे दौड़ना या दौड़ पड़ना**=बिना सोचे-समझे किसी काम या बात मे लग जाना या किसी का अनुगामी अथवा अनुयायी बनना। **(किसी को किसी के) पीछे दौडाना**=गये या जाते हुए आदमी को बुला या लौटा लाने या उसे कोई सदेशा पहुँचाने के लिए किसी को उसके पीछे भेजना। **(किसी काम या बात के) पीछे पडना या पड़ जाना** = किसी काम को कर डालने पर तुल जाना। किसी कार्य के लिए बहुत परिश्रमपूर्वक निरतर उद्योग करते रहना। (कुछ कुत्सित या हीन भाव का सूचक) जैसे—तुम्हारी यह बहुत बुरी आदत है कि तुम हर काम या बात) के पीछे पड जाते हो। **(किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना**=(क) कोई काम करने के लिए किसी से बहुत आग्रहपूर्वक और बार बार कहना। (ख) किसी को बहुत अधिक तग, दुखी या परेशान करने के लिए अथवा किसी का बहुत अधिक अपकार, अहित या हानि करने के लिए कटिबद्ध होना। **(किसी के) पीछे लगना**= (क) किसी का अनुगामी या अनुयायी बनना। किसी का अनुकरण करना। (ख) दे० ऊपर (किसी काम, बात या व्यक्ति के) 'पीछे पड़ना'। **(किसी व्यक्ति को अपने) पीछे लगाना**= किसी को अपना अनुगामी या अनुयायी बनाना। **(कोई काम या बात अपने) पीछे लगाना**= कोई काम या बात इस प्रकार घनिष्ठ रूप मे अपने साथ सम्बद्ध करना कि सहसा उससे बचाव, रक्षा या विरक्ति न हो सके। जान-बूझकर ऐसे काम या बात से सम्बद्ध होना जिससे तग, दुखी या परेशान होना पडे। जैसे—तुमने यह व्यर्थ का झगडा अपने पीछे लगा लिया है। **(किसी व्यक्ति को किसी के) पीछे लगाना**= किसी का भेद या रहस्य जानने अथवा किसी को तग, दुखी या परेशान करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को उत्साहित या नियत करना। जैसे—वे तो चुपचाप घर बैठे हैं, पर अपने आदमियो को उन्होने हमारे पीछे लगा दिया है। **(कोई काम या बात किसी के) पीछे लगाना** = कोई काम या बात इस प्रकार किसी के साथ सम्बद्ध करना कि वह उससे तग, दुखी या परेशान हो, अथवा सहज मे अपना बचाव या रक्षा न कर सके। जैसे—बीडी पीने की लत तुम्ही ने उसके पीछे लगा दी है।

२. अनुपस्थित या अविद्यमान होने की अवस्था में। किसी के सामने न रहने की दशा में। जैसे—किसी के पीछे उसकी बुराई करना बहुत अनुचित है।
पद—पीठ पीछे = दे० 'पीठ' के अन्तर्गत यह पद।
३. किसी के इस लोक में न रह जाने की दशा में। मर जाने पर। मरणोपरांत। जैसे—आदमी के पीछे उसका नाम ही रह जाता है। ४. कोई काम, घटना या बात हो चुकने पर, उसके बाद। उपरांत। फिर। जैसे—पहले तो उन्होंने बहुत धन गँवाया था, पर पीछे वे सँभल गये थे।
विशेष—इस अर्थ में कभी कभी यह 'पीछे को' या 'पीछे से' के रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे—पीछे को (या पीछे से) हमें दोष मत देना। ५ कालक्रम, देश आदि के विचार से किसी के पश्चात् या उपरांत। घटना या स्थिति के विचार से किसी के अनंतर, कुछ दूर या कुछ देर बाद। उपरांत। पश्चात्। जैसे—सब लोग एक पंक्ति में एक दूसरे के पीछे चल रहे थे। ६. किसी के अर्थ में, कारण या खातिर। निमित्त। लिए। वास्ते। जैसे—तुम्हारे पीछे ही मैं ये सब कष्ट सह रहा हूँ। ७ प्रति इकाई के विचार या हिसाब से। जैसे—अब आदमी पीछे पाव भर आटा पड़ता या मिलता है।
पीटनां—पुं० =पिटना।
पीटना—स० [सं० पीडन] १. किसी जीव पर, उसे चोट पहुँचाने अथवा सजा देने के उद्देश्य से किसी चीज से जोर से आघात करना। जैसे—लड़के को छड़ी से पीटना। २. किसी पदार्थ पर इस प्रकार किसी भारी चीज से निरंतर आघात करना कि उसमें कुछ विशिष्ट विकार आ जाय। जैसे—(क) दुरमुस से कंकड़ पीटना। (ख) पिटने से कपड़ा पीटना। (ग) हथौड़ी से पत्तर पीटना। ३ घोर दुःख, व्यथा या शोक प्रदर्शित करने के लिए दोनों हाथों की हथेलियों से अपने किसी अंग पर जोरों से आघात करना। जैसे—छाती, मुँह या सिर पीटना। ४ चौसर, शतरंज आदि के खेलों में, विपक्षी की गोट या मोहरा मारना। जैसे—हाथी, घोड़ा या प्यादा पीटना ५. जैसे-तैसे किसी से कुछ प्राप्त या वसूल करना। ६. जैसे-तैसे कोई काम पूरा करना।
पुं०१ मृत्यु-शोक। मातम। विलाप। जैसे—यहाँ यह कैसा पीटना पड़ा हुआ है! २. आपद। मुसीबत।
पीठ—पुं० [सं० पा√ (पीना)+ठक्, पृषो०दीर्घ] १ लकड़ी, पत्थर या धातु का बना हुआ बैठने का आधार या आसन। जैसे—चौकी, पीढ़ा, सिंहासन आदि। २ विद्यार्थियों, व्रतधारियों आदि के बैठने के लिए बना हुआ कुश का आसन। ३. नीचे वाला वह आधार जिस पर मूर्ति रखी या स्थापित की जाती है। ४. वह स्थान जहाँ बैठकर किसी प्रकार का उपदेश, शिक्षा आदि दी जाती हो। जैसे—धर्म-पीठ, विद्या-पीठ, व्यासपीठ आदि। ५ किसी बड़े अधिकारी या सम्मानित व्यक्ति के बैठने का स्थान, आसन और पद। (चेयर) जैसे—(क) अमुक विद्यालय में हिन्दी की उच्च शिक्षा के लिए एक पीठ स्थापित हुआ है। (ख) आपको जो कुछ कहना हो वह पीठ को संबोधित कर कहें। ६ न्यायाधीश अथवा न्यायाधीशों का वर्ग। (बेंच) ७ बैठने का एक विशिष्ट प्रकार का आसन, ढंग या मुद्रा। ८ राजसिंहासन। ९. वेदी। १०. प्रदेश। प्रान्त। ११. उन अनेक तीर्थों या पवित्र स्थानों में से प्रत्येक जहाँ पुराणानुसार दक्ष-कन्या सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा था।
विशेष—भिन्न-भिन्न पुराणों में ऐसे स्थानों की संख्या ५१, ५३, ७७ या १०८ कही गई है। उनमें से कुछ को उपपीठ और कुछ को महापीठ कहा गया है। तांत्रिकों का विश्वास है कि ऐसे स्थानों पर साधना करने से सिद्धि बहुत शीघ्र प्राप्त होती है। प्रत्येक पीठ में एक-एक शक्ति और एक-एक भैरव का निवास माना जाता है।
१२. कंस का एक मंत्री। १३. एक असुर। १४. गणित में वृत्त के किसी अंग का पूरक।
स्त्री० [सं० पृष्ठ] प्राणियों के शरीर का वह भाग जो उनके सामनेवाले अंगों अर्थात् छाती, पेट आदि की विपरीत दिशा में या पीछे की ओर पड़ता है और जिसमें लंबाई के बल रीढ़ होती है। पृष्ठ। पुश्त।
विशेष—यह भाग गरदन के नीचेवाले भाग से कमर तक (अर्थात् रीढ़ की अंतिम गुरिया तक) विस्तृत होता है। मनुष्यों में यह भाग सदा पीछे की ओर रहता है; और गाय-भैंसों, चौपायों आदि में ऊपर या आकाश की ओर। पशुओं के इसी भाग पर सवारी की जाती और भार लादा जाता है, इसलिए इससे कुछ पद और मुहावरे इस तत्त्व के आधार पर भी बने हैं। यह भाग पीछे की ओर होता है। इसलिए इससे कुछ पदों और मुहा० में परवर्ती पिछले या बादवाले होने का तत्त्व या भाव भी निहित है। इसके सिवा इससे सहायक, साथी आदि के भाव भी इसलिए सम्मिलित हैं कि वे प्रायः पीछे की ओर ही रहते हैं।
पद—पीठ का—दे० नीचे 'पीठ पर का'। पीठ का कच्चा=(घोड़ा) जो देखने में हृष्ट-पुष्ट और सजीला हो, पर सवारी का काम ठीक तरह से न देता हो। पीठ का सच्चा=(घोड़ा) जो सवारी का ठीक और पूरा काम देता हो। पीठ पर=एक ही माता द्वारा जन्मे, क्रम में किसी के तुरन्त बाद या पीछे। जैसे—इस लड़के के पीठ पर यही लड़की हुई था। पीठ पर का=जन्म-क्रम में अपने सहोदर या सहोदरा के तुरन्त बाद का। ठीक उपरान्त का। जैसे—इस लड़की की पीठ पर का यही लड़का है। (किसी के) पीठ पीछे=किसी की अनुपस्थिति, अविद्यमानता या परोक्ष में। किसी के सामने न रहने की दशा में। किसी के पीछे। जैसे—किसी के पीठ-पीछे उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिए।
मुहा०—(किसी की) पीठ खाली होना=पोषक या सहायक से रहित अथवा हीन होना। कोई सहारा देनेवाला या हिमायती न होना। जैसे—उसकी पीठ खाली है, इसी लिए उस पर इतने अत्याचार होते हैं। (किसी की) पीठ ठोंकना=(क) कोई अच्छा काम करने पर कर्ता की पीठ थप-थपाते हुए या यों ही उसका अभिनन्दन या प्रशंसा करना, (ख) किसी को किसी काम में प्रवृत्त करने के लिए उत्साहित करना, (ग) दे० नीचे 'पीठ थपथपाना'। पीठ थपथपाना=पशुओं आदि के विशेष परिश्रम करने पर उन्हें उत्साहित करने तथा धैर्य दिलाने के लिए अथवा क्रुद्ध होने अथवा बिगड़ने पर शांत करने के लिए उनकी पीठ पर हथेली से धीरे धीरे थपकी देना। (किसी को) पीठ दिखाकर जाना=ममता, स्नेह आदि का विचार छोड़कर कहीं दूर चले जाना। जैसे—प्रेमी का

प्रेमिका को पीठ दिखाकर जाना, या मित्र का अपने वधुओं और स्नेहियो को पीठ दिखाकर जाना। **पीठ दिखाना**=प्रतियोगिता, लड़ाई-झगड़े आदि के समय सामने न ठहर सकने के कारण पीछे हटना या भाग जाना। दबने के कारण मैदान छोडकर सामने से हट जाना। जैसे—दो ही दिन की लडाई मे शत्रु पीठ दिखाकर भाग खडे हुए। **पीठ देना**=(क) चारपाई या बिस्तर पर पीठ रखना। लेट कर आराम करना। जैसे—लडके की बीमारी के कारण इन दिनों पीठ देना मुश्किल हो गया है। (ख) दे० नीचे 'पीठ फेरना'। **(किसी की ओर) पीठ देना**=किसी की ओर पीठ करके बैठना। **पीठ पर खाना**=भागते हुए मार खाना। भागने की दशा मे पिटना। (कायरता का सूचक) जैसे—पीठ पर खाना मरदो का काम नही है। **पीठ पर हाथ फेरना**=दे० ऊपर 'पीठ ठोकना'। **(किसी का किसी की) पीठ पर होना**=जन्म-क्रम मे अपने किसी भाई या बहन के पीछे होना। अपने सहोदरो मे से किसी के ठीक पीछे जन्म ग्रहण करना। **(किसी का) पीठ पर होना**=सहायक होना। सहायता के लिए तैयार होना। मदद या हिमायत पर होना। जैसे—आज मेरी पीठ पर कोई नही है, इसी लिए न तुम इतना रोब जमाते हो। **पीठ फेरना**=(क) कही से प्रस्थान करना। विदा होना। (ख) ममता, स्नेह आदि का ध्यान छोड़कर अलग या दूर होना। (ग) अरुचि, उदासीनता आदि प्रकट करते हुए विमुख या विरत होना। अलग, किनारे या दूर होना। (घ) सामने से भाग या हट जाना। **पीठ मींजना**=दे० ऊपर 'पीठ ठोकना'। **(चारपाई से) पीठ लग जाना**=बीमारी के कारण उठने-बैठने मे असमर्थ हो जाना। जैसे—अब तो चारपाई से पीठ लग गई है, वे उठ-बैठ भी नही सकते। **(किसी व्यक्ति की) पीठ लगना**=कुश्ती मे हारकर चित्त होना। पटका जाना। पछाडा जाना। **(किसी पशु की) पीठ लगना**=काठी, चारजामे, जीन आदि की रगड के कारण पीठ पर घाव होना। जैसे—जिस घोडे की पीठ लगी हो, उस पर सवारी नही करनी चाहिए। **(चारपाई से) पीठ लगना**=आराम करने के लिए लेटने की स्थिति मे होना। **(किसी व्यक्ति को) पीठ लगाना**=कुश्ती मे गिरा, पछाड या पटक कर चित्त करना है।

२. पहनने के कपडो का वह भाग जो पीठ की ओर रहता या पीठ पर पडता है। ३ आसन आदि मे वह भाग जो पीठ के सहारे के लिए बना रहता है। जैसे—कुरसी की पीठ खराब हो गई है, उसे बदलवा दो। ४ किसी वस्तु की रचना मे, उसके अगले, ऊपरी या सामनेवाले भाग का विपरीत भाग। साधारणत काम मे आने या सामनेवाले भाग से भिन्न और पीछेवाला भाग। जैसे—(क) पत्र की पीठ पर पता भी लिख दो। (ख) पदक की पीठ पर उसके दाता का नाम भी खुदा हुआ था। ५ पुस्तक का वह भाग जिसमे अन्दर के पृष्ठो की सिलाई रहती है और जो उसे अलमारी मे खड़ी करके रखने पर सामने की ओर रहता है। पुट्ठा। जैसे—पुस्तक की पीठ पर सुनहले अक्षरो मे उसका नाम छपा था।

पीठक—पु०[स० पीठ+कन्]१. वह चीज जिसपर बैठा जाय। जैसे—कुरसी, चौकी, पीढ़ा आदि। २. एक तरह की पालकी।

पीठ-केलि—पु०[ब० स०] १ विश्वसनीय व्यक्ति। २. वह जो दूसरो का पोषण करता हो।

पीठ-गर्भ—पु०[ष०त०] वह गड्ढा जिसमे मूर्ति के पैर या निचला अश जमाकर उसे खडा किया जाता है।

पीठ-चक्र—पु०[ब० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का रथ।

पीठ-देवता—पु० [मध्य० स०] आदि शक्ति जो सारी सृष्टि का मूल आधार है।

पीठ-नायिका—स्त्री०[ष० त०]१. पुराणानुसार किसी पीठस्थान की अधिष्ठात्री देवी। २. दुर्गा। ३. लोक मे, वह कुमारी जिसकी पूजा दुर्गा-पूजा के दिनो मे की जाती है।

पीठ-न्यास—पुं०[स० त०] तत्र मे एक मुख्य न्यास जो प्राय सभी तात्रिक पूजाओ मे आवश्यक है।

पीठ-भू—पु०[मध्य० स०] प्राचीर के आसपास का भू-भाग। चहार-दीवारी के आसपास की जमीन।

पीठ-मर्द—वि०[स० त०] बहुत अधिक ढीठ और निर्लज्ज।

पु० १ साहित्य मे नायक के चार प्रकार के सखाओ मे से वह जो रुष्ट नायिका को मनाने और उसका मान हरण करने मे सहायक होता है। २. किसी साहित्यिक रचना के मुख्य पात्र का वह सखा जो गुणो मे उससे कुछ घटकर होता है। जैसे—रामायण मे राम का सखा सुग्रीव। ३. वेश्याओ को नाच-गाना सिखलानेवाला व्यक्ति। उस्ताद।

पीठ-मर्दिका—स्त्री०[ष०त०]नायिका की वह सखी जो नायक को रिझाने मे नायिका की सहायता करती है।

पीठ-विवर—पु०[ष० त०] पीठगर्भ। (दे०)

पीठ-सर्प—वि०[स० पीठ√सृप् (गति)+अच्] लगडा।

पीठसर्पी (पिन्)—वि०[स० पीठ√सृप्+णिनि] लगडा।

पीठ-स्थान—पु०[ष०त०] १. वे स्थान जो दक्ष की कन्या सती के अग या आभूषण गिरने के कारण पवित्र माने जाते है। (दे० 'पीठ' १.) २. प्रतिष्ठान (आधुनिक झूसी का एक पुराना नाम)।

पीठा—पु०[स० पिष्टक, प्रा० पिट्ठक] आटे की लोई मे पीठी भरकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।

†पु०=पीढा।

पीठासीन—वि०[पीठ-आसीन; स० त०] जो पीठ अर्थात् अध्यक्ष के स्थान पर आसीन हो। (प्रेसाइडिंग)

पीठासीन-अधिकारी—पु०[कर्म० स०] वह अधकारी जो अध्यक्ष-पद पर रहकर अपनी देख-रेख मे कोई काम कराता हो। (प्रेसाइडिंग आफिसर)

पीठि—स्त्री०=पीठ।

पीठिका—स्त्री०[स० पीठ+कन्+टाप्, इत्व] १ छोटा पीढा। पीढी। २ वह आधार जिस पर कोई चीज विशेषत देवमूर्ति रखी, लगाई या स्थापित की गई हो। ३ ग्रथ के विशिष्ट विभागो मे से कोई एक। जैसे—पूर्वपीठिका, उत्तर-पीठिका।

पीठी—स्त्री०[स० पिष्ट या पिष्टक; प्रा० पिट्ठा] १ भीगी हुई दाल को पीसने पर तैयार होनेवाला रूप। जैसे—उड़द या मूंग की पीठी। क्रि० प्र०—पीसना।—भरना।

विशेष—पीठी की टिकिया तलकर बडे, सुखाकर वरियाँ और लोई भरकर कचौडियाँ आदि वनाई जाती है।

पीड़—पु०[सं० पिंड] मिट्टी का वह आवार जिसे घडे को पीटकर वढाते समय उसके अन्दर रख लेते है ।

†पु०=आपीड।

†स्त्री०=पीडा।

पीडक—वि०[स०√ पीड+ण्वुल्—अक] पीडक । (दे०)

पीड़क—वि०[स० पीडक से]१ जो दूसरो को शारीरिक कष्ट पहुँचाता हो। पीडा देनेवाला। २ अधिक व्यापक अर्थ मे, वहुत वडा अत्याचारी या जुल्मी। ३ दवाने या पीसनेवाला। जैसे—पीडक-चक्र=वह पहिया जो दवाता या पीसता हो।

पीडन—पु०[स०√पीड+ल्युट्—अन] पीडन। (दे०)

पीड़न—पु०[स० पीडन से] [कर्ता पीडक, वि० पीडनीय, भू० कृ० पीडित]१ व्यक्तियो के सम्वन्ध मे, किसी को शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचाना। तकलीफ देना। २. चीजो के सवध मे, जोर से कसना, दवाना या पीसना। ३ पेरना। ४. अच्छी तरह से या मजवूती से पकडना। ५ नष्ट करना। ६. ग्रहण। जैसे—ग्रह-पीडन। ७ स्वरो के उच्चारण करने मे होनेवाला एक तरह का दोप।

पीडनीय—वि०[स०√पीड्+अनीयर] पीडनीय । (दे०)

पीड़नीय—वि० [स० पीडनीय से] १. जिसका पीडन हो सके या किया जाने को हो। २ जिसे कष्ट पहुँचाया जा सके या पहुँचाया जाने को हो।

पुं० याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार ऐसा राजा या राज्य जो अच्छे मत्री और उपयुक्त सेना से रहित हो और इसी लिए जिसे सहज मे दवाकर अपने अधिकार मे किया जा सकता हो।

पीड़-पखा—पु०[स० अपीड+पक्ष=पख] [स्त्री० अल्पा० पीड-पखी] १ सिर पर की चोटी या वालो की पट्टी। २. सिर पर पहना जानेवाला एक प्रकार का आभूपण। उदा०—कै मयूर की पीड-पखी री।—सूर।

पीडा—स्त्री० [स०√ पीड्+अङ्+टाप्] पीडा। (दे०)

पीड़ा—स्त्री०[स० पीडा से]१ प्राणियो को दु खित या व्यथित करनेवाली वह अप्रिय अनुभूति जो किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक आघात लगने, कष्ट पहुँचने या हानि होने पर उत्पन्न होती है और उसे वहुत ही खिन्न, चिंतित तथा विकल रखती है। तकलीफ। वेदना। व्यथा। (पेन) जैसे—धन-नाश, पुत्र-शोक, प्रिय के वियोग या विरह के कारण होने-वाली पीडा। २ सामान्य अर्थ मे, शरीर के किसी अग पर चोट लगने या उसमे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न होने पर अथवा शारीरिक क्रियाओ को अव्यवस्थित होने पर उत्पन्न होनेवाली उक्त प्रकार की वह अनुभूति जिसका ज्ञान सारे शरीर को स्नायविक तन्त्र के द्वारा होता है। दरद। (पेन) जैसे—अपच के कारण पेट मे, ज्वर के कारण सिर मे अथवा ऊँचाई से गिर पडने के कारण हाथ-पैरो मे होनेवाली पीडा। ३ कोई ऐसी खरावी या गडवड़ी जिससे किसी प्रकार की व्यवस्था मे वाधा होती हो और वह ठीक तरह से न चलने पाती हो। कष्टदायक अव्यवस्था। जैसे—(क) राक्षसो के उपद्रव से ऋपि-मुनियो के आश्रम मे पीडा होती थी। (ख) दरिद्रता की पीडा से सारा परिवार छिन्न-भिन्न हो गया। (ग) काम वासना की पीडा से वह विकल हो रहा था। ४. वीमारी। रोग। व्याधि। ५ प्रतिवंध। रुकावट। ६. विनाश। ७. क्षति। नुकसान। हानि। ८. करुणा। दया। ९. चद्रमा या सूर्य का ग्रहण। उपराग। १०. सिर पर लपेटकर वाँधी जानेवाली माला। शिरोमाला। ११ धूप-सरल या सरल नामक वृक्ष।

पीडाकर—वि०[स० पीडा√कृ (करना)+ट] पीडा या कष्ट देनेवाला।

पीडा-गृह—पु०[प० त०] वह स्थान जहाँ किसी को कष्ट पहुँचाया जाता हो।

पीडा-स्थान—पुं०[स० स० त०] फलित ज्योतिप के अनुसार जन्मकुण्डली मे उपचय अर्थात् लग्न से तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान के अतिरिक्त शेप स्थान जो अशुभ ग्रहो के स्थान माने गये हैं।

पीडिका—स्त्री०[स० पीडा+कन्—टाप्, इत्व] फुडिया। फुसी।

पीडित—वि०[स०√ पीड्+क्त] पीडित। (दे०)

पीड़ित—वि०[स० पीडित] १. जो किसी प्रकार की पीडा से ग्रस्त हो। जैसे—रोग से पीडित। २. जो दूसरो के अत्याचार, जुल्म आदि से आक्रात और फलतः कष्ट मे हो। जैसे—पीडित जन-समाज। ३. जिसे दवाया या पीसा गया हो। ४. जो नष्ट कर दिया गया हो। ५. जो किसी चीज के प्रभाव या फल से अपने को दुःखी समझता हो। सताया हुआ। जैसे—जग पीडित रे अति सुख से।—पत।

पीड़ी—स्त्री०[स० पीठ]१ देव-स्थान। देवपीठ। २ वेदी।

पीडुरी†—स्त्री०=पिंडली।

पीढ़ा—पु०[स० पीठ अथवा पीढक] [स्त्री० अल्पा० पीढी]१. प्राय. लकडी का वना हुआ चौकी के आकार का वह छोटा आसन जिसके पाये वहुत कम ऊँचे होते हैं और जिस पर हिन्दू लोग भोजन करते समय वैठते है। २. विस्तृत अर्थ मे, वैठने का कोई आसन।

मुहा०—(किसी को) ऊँचा पीढ़ा देना=विशेप आदर-सम्मान प्रकट करते हुए अच्छे या ऊँचे आसन पर वैठाना।

३. सिंहासन।

पीढ़ी—स्त्री०[हिं० पीढा का स्त्री० अल्पा०] वैठने के लिए एक विशेप प्रकार की छोटी चौकी। छोटा पीढा।

स्त्री०[स० पीठिका]१. किसी कुल या वश की परम्परा मे, क्रम क्रम से आगे वढनेवाली संतान की प्रत्येक कडी या स्थिति। जैसे—(क) वाप, दादा और परदादा ये तीन पीढियाँ, अथवा वाप, वेटे और पोते की तीन पीढियाँ। (ख) हमारे पास अपने पूर्वजो के वीस पीढियो के वश-वृक्ष हैं। २ उक्त कडी या स्थिति के वे सव लोग जो रिश्ते या सवध मे आपस मे प्राय. वरावरी के हो। वश-क्रम मे प्रत्येक शृखला के क्षेत्र के सव लोग। जैसे—(क) उनकी दूसरी पीढी मे तो दस ही आदमियो का परिवार था; पर चौथी पीढी मे परिवारवालो की सख्या वढकर साठ तक पहुँची थी। (ख) हमारी सात पीढियो मे से किसी पीढी ने कभी ऐसा अनाचार न किया होगा। ३. किसी जाति, देश या समाज के वे सव लोग जो किसी विशिष्ट काल मे प्राय कुछ आगे-पीछे जन्म लेकर साथ ही साथ रहते हो। किसी विशिष्ट समय का वह सारा जनसमुदाय जिनकी अवस्था या वय मे अधिक छोटाई-वडाई न हो। जैसे—ये नई पीढी के लोग ठहरे, इनमे पुरानी पीढी के लोगो का-सा आचार-विचार नही रह गया है। ४ किसी प्रकार की परम्परागत

स्थिति। उदा०—सदा समर्थन करती उसका तर्क-शास्त्र की पीढी।—प्रसाद।

पीत—वि० [स०√प+क्त+अच्] [स्त्री० पीता] १. पीले रग का। पीला। २ भूरा। (क्व०)

पु० [√पा+क्त] १. पीला रग। भूरा रग। ३. हरताल। ४ हरिचंदन। ५. कुसुम। वरें। ६ अकोल का वृक्ष। ढेरा। ७ सिहोर का पेड। ८ धूप-सरल। ९ वेंत। १०. पुखराज। ११. तुन। नदिवृक्ष। १२. एक प्रकार की सोमलता। १३. पीली कटसरैया। १४. पद्मकाष्ठ। पदमाख। १५. पीला खस। १६ मूंगा।

भू० कृ० [स०√ पा (पीना)+क्त] जो पान किया गया हो। पीया हुआ।

पीतकद—पु० [व०स०] गाजर।

पीतक—पुं० [स० पीत+क] १ हरताल। २ केसर। ३ अगर। ४. पदमाख। ५. सोनामाखी। ६ तुन। ७. विजयसार। ८. सोनापाठा। ९. हल्दी। हरिद्रा। १०. किंकिरात। ११ पीतल। १२ पीला चदन। १३. एक प्रकार का बबूल। १४. शहद। १५. गाजर। १६ सफेद जीरा। १७ पीली लोध। १८. चिरायता। १९ अडे के अंदर का पीला अश। अडे की जरदी।

वि० पीले रग का। पीला।

पीत-कदली—स्त्री० [कर्म० स०] सोन केला।

पीतक-द्रुम—पु० [कर्म० स०] हलदुआ। हरिद्रवृक्ष।

पीत-करवीरक—पु० [कर्म० स० +क] पीले फूलोंवाला कनेर।

पीतका—स्त्री० [स० पीतक+टाप्] १. कटसरैया। २ हलदी।

पीत-कावेर—पु० [स० कु-वेर=शरीर, प्रा० स०, पीत-कावेर, व० स०] १ केसर। २. पीतल के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु जिसके घटे आदि बनाये जाते है।

पीत-काष्ठ—पु० [कर्म० स०] १. पीला चदन। २. पीला अगरु।

पीत-कीला—स्त्री० [कर्म०स०] अवर्तकी लता। भागवत वल्ली।

पीत-कुरवक—पु० [कर्म० स०] पीली कटसरैया।

पीत-कुरंट—पु० [कर्म० स०] पीली कटसरैया।

पीतकुष्ठ—पुं० [कर्म० स०] पीले रग का कोढ।

पीत-कूष्माड—पु० [कर्म० स०] पीले रग का कुम्हड़ा।

पीत-कुसुम—पु० [कर्म० स०] पीली कटसरैया।

पीत-केदार—पु० [व० स०] एक तरह का धान।

पीत-गंध—पु० [द्व० स०] पीला चंदन। हरिचंदन।

पीत-गन्धक—पु० [कर्म० स०] गधक।

पीत-घोषा—स्त्री० [कर्म० स०] पीले फूलोंवाली एक तरह की लता।

पीत-चदन—पु० [कर्म० स०] पीले रग का चदन जो पहले द्रविड देशों से आता था। हरिचदन।

पीत-चंपक—पु० [कर्म० स०] १ पीली चपा। २ दीपक। चिराग।

पीत-चोप—पु० [स०] पलास का फूल। टेसू।

पीत-झिंटी—स्त्री० [कर्म० स०] १. पीले फूलवाली कटसरैया। २ एक तरह की कटाई।

पीत-तंडुल—पु० [व० स०] कँगनी नामक कदन्न।

पीतता—स्त्री० [स० पीत+तल्+टाप्] पीलापन। जर्दी।

पीत-तुंड—पु० [व०स०] बत्तख या हंस की जाति का एक तरह का पक्षी। कारडव। बया।

पीत-तैल—स्त्री० [व० स०] मालकँगनी।

पीतत्व—पु० [सं० पीत+त्व] पीतता। पीलापन।

पीतदंतता—स्त्री० [स० पीत-दंत, कर्म० स० +तल्+टाप्] दाँतो का एक पित्तज रोग जिसमे दाँत पीले हो जाते हैं।

पीत-दारु—पु० [कर्म० स०] १. देवदारु। २. धूपसरल। ३. हलदुआ। ४. हलदी। ५. चिरायता। ६ कायकरज।

पीत-दीप्ता—स्त्री० [द्व० स०, टाप्] बौद्धो की एक देवी।

पीत-दुग्धा—स्त्री० [व० स०, टाप्] १. दूध देनेवाली गाय। २. वह गाय जिसका दूध महाजन को ऋण के बदले मे दिया जाता हो। ३. कटेहरी। ४. ऊँटकटारा। भडभाँड़। ५. सातला। थूहर।

पीतद्रु—पु० [कर्म० स०] १. दारु-हलदी। २ धूप-सरल ३ देव-दारु।

पीत-धातु—पु० [कर्म० स०] १. रामरज। २. गोपीचदन।

पीतन, पीतनक—पु० [स० पीत√नी+ड] [स० पीतन+कन्] १. केसर २ हरताल। ३. धूपसरल। ४ अमडा। ५. पाकर।

पीत-निद्र—वि० [व० स०] गहरी नींद मे सोया हुआ।

पीतनी—स्त्री० [स० पीतन+ङीप्] सरिवन। शालपर्णी।

पीत-नील—पु० [कर्म० स०] नीले और पीले रग के सयोग से बना हुआ रग। हरा रग।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

पीत-पराग—पु० [कर्म० स०] कमल का केसर।

पीत-पर्णी—स्त्री० [व० स०, ङीप्] वृश्चिकाली (क्षुप)।

पीत-पादप—पुं० [कर्म० स०] १ श्योनाक वृक्ष। सोना-पाढा। २. लोध।

पीत-पादा—स्त्री० [व० स०. टाप्] मैना। सारिका।

पीत-पुष्प, पीत-पुष्पक—पु० [व० स०] १ कनेर। २. घीया तरोई। ३ पीली कटसरैया। ४. चपा। ५ पेठा। ६. तगर। ७. हिंगोट। ८. लाल कचनार।

पीत-पुष्पका—स्त्री० [व० स०,+कप्+टाप्] जगली ककड़ी।

पीत-पुष्पा—स्त्री० [व० स,+टाप्] १. झिझरीटा। २. सहदेई। ३. अरहर। ४. तरोई। तोरी। ५. पीली कटसरैया। ६ पीला कनेर। ७. सोन-जूही।

पीत-पुष्पी—स्त्री० [व० स०+ङीप्] १. शखाहुली। २. सहदेई बूटी। ३. बडी तरोई। ४. खीरा। ५ इन्द्रायण। ६. सोन-जूही।

पीत-पृष्ठा—स्त्री० [व० स०+टाप्] वह कौडी जिसकी पीठ पीली हो।

पीत-प्रसव—पुं० [व० स०] १. हिंगपुत्री। २. पीला कनेर।

पीत-फल—पु० [व० स०] १. सिहोर। २. कमरख। ३. धव का पेड़।

पीत-फलक—पुं० [व० स०,+कप्] १. सिहोर। २ रीठा। ३. कमरख। ४. धव वृक्ष।

पीत-फेन—पु० [व० स०] रीठा। अरिष्टक वृक्ष।

पीत-बालुका—स्त्री० [व० स०] हलदी।

पीत-बीजा—स्त्री० [व० स०, टाप्] मेथी।

पीत-भद्रक—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का बबूल। देवबब्बुर।

पीत-भृंगराज—पु०[कर्म० स०] पीला भगरा।
पीतम†—वि०=प्रियतम।
पीत-मणि—पु०[कर्म० स०] पुखराज। पुष्पराज मणि।
पीत-मस्तक—पु०[ब० स०] पीले मस्तकवाला एक तरह का पक्षी।
पीत-माक्षिक—पु०[कर्म० स०] सोनामाखी।
पीत-मारुत—पु०[ब० स०] एक प्रकार का साँप।
पीतमुंड—पु०[ब० स०] एक प्रकार का हिरन।
पीत-मुग्द—पु०[कर्म० स०] एक प्रकार का मूँग।
पीत-मूलक—पु०[ब० स०, + कप्] गाजर।
पीत-मूली—स्त्री०[ब० स०, + ङीप्] रेवद चीनी।
पीत-यूथी—स्त्री०[कर्म० स०] सोनजूही। स्वर्णयूथिका।
पीतर†—पु०=पीतल।
पीत रक्त—पु०[कर्म० स०]१. पुखराज। २. पीलापन लिये लाल रग।
वि० पीलापन लिये लाल रग का।
पीत-रत्न—पु०[कर्म० स०] पुखराज। पीतमणि।
पीत-रस—पु०[ब० स०] कसेरू।
पीत-राग—पु०[ब० स०]१. पद्मकेसर। २. मोम। ३. पीला रग।
वि० पीले रग का।
पीत-रोहिणी—स्त्री० [स० पीत√ रुह् (उगना)+ णिनि + ङीप्] १. जबीरी नीबू। २ पीली कुटकी। कुभेर।
पीतल—पु०[स० पित्तल]१. एक प्रसिद्ध मिश्र धातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है और जिसके प्राय. बरतन बनते हैं। (ब्रास) २. पीला रग।
वि० पीले रग का।
पीतलक—पु०[स० पीतल√कै (भासित होना) +क] पीतल।
पीत-लोह—पु०[कर्म०स०] पीतल (धातु)।
पीत-वर्ण—पु०[ब० स०]१ पीला मेढक। स्वर्ण मडूक। २. ताड का पेड। ३. कदब। ४. हलदुआ। ५. लाल कचनार। ६ मैनसिल। ७. पीला चदन। ८. केसर।
पीत-वल्ली—स्त्री०[कर्म० स०] आकाश बेल।
पीतवान—पु०[?] हाथी की दोनो आँखो के बीच का स्थान।
पीत-वालुका—स्त्री०[ब०स०] हलदी।
पीत-वास (स्)—पु०[ब०स०] श्रीकृष्ण।
पीत-विंदु—पु०[कर्म०स०] विष्णु के चरण-चिह्नो मे से एक।
पीत-वृक्ष—पु०[कर्म०स०] सोनापाठा।
पीतशाल—पु०[स० पीत√ शल् (जाना) + अण्] विजयसार नामक वृक्ष।
पीतशालक—पु०[स० पीतशाल+कन्]=पीतशाल।
पीत-शेष—वि०[स० सहसुपा स०] पीने के उपरात बचा हुआ (तरल पदार्थ)।
पीत-शोणित—वि०[ब० स०]१. जिसने किसी का रक्त पिया हो। २ खूनी। हत्यारा।
पीतसरा†—पु० [स० पितृव्य, हिं० पितिया+ससुर] चचिया ससुर। ससुर का भाई।
पीत-सार—पु०[ब० स०]१. पीत चदन। हरिचदन। २. सफेद चदन। ३ गोमेद। ४. अकोल। ५ विजयसार। ६. शिलारस।
पीतसारक—पु०[स० पीतसार+कन्]१. नीम का पेड। २. ढेरे का पेड।
पीतसारिका—स्त्री०[स० पीत √सृ (गति) + णिच् + ण्वुल् + कन् + टाप्] काला सुरमा।
पीत-साल(क)—पुं० =पीतशाल।
पीत-स्कध—पुं०[ब० स०]१. सूअर। शूकर। २. एक वृक्ष।
पीत-स्फटिक—पु०[कर्म०स०] पुखराज।
पीत-स्फोट—पु०[कर्म०स०]१. खुजली। २. खसरा नामक रोग।
पीत-हरित—वि०[कर्म० स०] पीलापन लिये हरे रग का।
पु० पीलापन लिये हरा रग।
पीताग—वि०[पीत-अग, ब०स०] पीले अगोवाला।
पु०१. एक तरह का मेढक जिसका रग पीला होता है। २. सोनपाठा (वृक्ष)
पीताबर—पुं० [पीत-अबर, ब०स०]१ पीले रग का वस्त्र। पीला कपडा। २. एक प्रकार की रेशमी धोती जो हिन्दू लोग प्राय. पूजा-पाठ के समय पहनते हैं। ३. पीले वस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति। जैसे—कृष्ण, नट, सन्यासी विष्णु आदि।
वि० जो पीले कपड़े पहने हुए हो।
पीता—स्त्री०[स० पीत +टाप्]१. हल्दी। २. दारुहल्दी। ३. बडी मालकंगनी। ४. भूरा शीशम। ५. प्रियगु फल। ६. गोरोचन। ७ अतीस। ८ पीला केला। ९ जंगली बिजौरा नीबू। १० जर्द चमेली। ११. देव दारु। १२. राल। १३ असगध। १४ शालिपर्णी। १५. आकाश बेल।
वि० पीले रगवाली।
पीताब्धि—पु०[पीत-अब्धि, ब०स०] समुद्र पान करनेवाले, अगस्त्य मुनि।
पीताभ—वि०[पीत-आभा, ब०स०] जिसमे से पीली आभा निकलती हो। जिसमे मे पीला रग झलक रहा हो।
पु० पीला चन्दन।
पीताभ्र—पु०[पीत-अभ्र, कर्म०स०] पीले रग का एक तरह का अभ्रक।
पीताम्लान—पु०[पीत-अम्लान कर्म०स०] पीली कटसरैया।
पीतारुण—पु०[पीत-अरुण, कर्म० स०] पीलापन लिये हुए लाल रंग।
वि०[कर्म०स०] उक्त प्रकार के रग का। पीलापन लिए लाल।
पीतावशेष—वि० [सं० पीत-अवशेष, सहसुपा स०] पीत-शेष।
पीताश्म (न्)—पु०[पीत-अश्मन, कर्म०स०] पुखराज। पुष्परागमणि।
पीताह्व—पु० [पीता-आह्वा] राल।
पीति—स्त्री० [स०√ पा (पीना)+क्तिन्]१. पीने की क्रिया या भाव। २ गति। ३. सूंड।
वि० घोडा।
पीतिका—स्त्री०[स० पीत+क+टाप्, इत्व] १ हल्दी। २. दारु हल्दी। ३ सोनजूही।
पीती (तिन्)—पु०[स० पीत+इनि] घोडा।
†स्त्री०=प्रीति।
पीतु—पु०[स० √ पा (पीना या रक्षा करना)+तुन्, कित्व] १. सूर्य २. अग्नि। ३ झुड का प्रधान हाथी। यूथपति। ४. सेना मे हाथियो के दल का नायक।

पीतुदारु—पु० [ब०स०] १. गूलर। २. देवदार।

पीतोदक—पु० [पीत-उदक, ब०स०] नारियल (जिसके अन्दर जल या रस रहता है)।

पीथ—पु० [स०√पा (पीना) +थक्] १. पानी। २. पेय पदार्थ। ३ घी। ४ अग्नि। ५. सूर्य। ६. काल। ७. समय।

पीथि—पु० [स० पीति, पृषो० सिद्धि] घोडा।

पीदडी—स्त्री०=पिद्दी।

पीन—वि० [स०√प्याय्(बढाना)+क्त, सम्प्रसारण, नत्व, दीर्घ] [भाव० पीनता] १. आकार-प्रकार की दृष्टि से भारी-भरकम। दीर्घकाय। बहुत बडा और मोटा। २. पुष्ट। ३. भरा-पूरा। सपन्न।

पु० मोटाई। स्थूलता।

पीनक—स्त्री०=पिनक।

पीनता—स्त्री० [स० पीन+तल्+टाप्] १. पीन होने की अवस्था या भाव। २. मोटाई। स्थूलता।

पीनना†—स०=पीजना।

पीनस—पु० [स० पीन√सो (नष्ट करना)+क] १. सर्दी या जुकाम। २. एक रोग जिसमे नाक से दुर्गंधमय गाढा पानी निकलता है।

स्त्री० [फा० फीनस] १. पालकी नाम की सवारी। २. एक प्रकार की नाव।

पीनसा—स्त्री० [स० पीनस+टाप] ककडी।

पीनसित, पीनसी (सिन्)—वि० [स० पीनस+इतच्] [पीनस+इनि] जिसे पीनस रोग हुआ हो। पीनस रोग से ग्रस्त।

पीना—स० [स० पान] १. जीवों के मुँह के द्वारा या वनस्पतियों का जडों के द्वारा स्वाभाविक क्रिया से तरल पदार्थ विशेषत जल आत्मसात् करना। २. किसी तरह पदार्थ मे मुँह लगाकर उसे धीरे-धीरे चूसते हुए गले के रास्ते पेट मे उतारना। जैसे—यहाँ रात भर मच्छर हमारा खून पीते है। ३. गाजे, तमाकू आदि का धूँआ नशे के लिए बार-बार मुँह मे लेकर बाहर निकालना। धूम्रपान करना। जैसे—चिलम, बीडी, सिगरेट या हुक्का पीना। ४. एक पदार्थ का किसी दूसरे तरल पदार्थ को अपने अन्दर खीचना या सोखना। जैसे—इतना ही आटा (या चावल) पाव भर घी पी गया। ५. लाक्षणिक अर्थ मे धन आत्मसात् करना या ले लेना। जैसे—(क) यह मकान मरम्मत मे ५०० रुपए पी गया। (ख) लडका बुढिया का सारा धन पी गया।

सयो० क्रि०—जाना।—डालना।—लेना।

६. मन मे कोई उग्र या तीव्र मनोविकार होने पर भी उसे अन्दर ही अन्दर दबा लेना और ऊपर या बाहर प्रकट न होने देना। चुपचाप सहकर रह जाना। जैसे—किसी के अपमान करने या गाली देने पर भी क्रोध या गुस्सा पीकर रह जाना। ७ कोई अप्रिय या निंदनीय घटना या बात हो जाने पर उसे चुपचाप दबा देना और उसके सबध मे कोई कार्रवाई न करना या लोगो मे उसकी चर्चा न होने देना। जैसे—ऐसा जान पडता है कि सरकार इस मामले को पी गई।

सयो० क्रि०—जाना।

मुहा०— (कोई गुण या भाव) **घोलकर पी जाना**= इस बुरी तरह से आत्मसात् करना या दबा डालना कि मानो उसका कभी कोई अस्तित्व ही नही था। जैसे—लज्जा (या शरम) तो तुम घोलकर पी गये हो।

पु० १. पीने की क्रिया या भाव। २ शराब पीने की क्रिया या भाव। जैसे—उनके यहाँ पीना-खाना सब चलता है।

पु० [स० पीडन=पेरना] १. तिल, तीसी आदि की खली। २ किसी चीज के मुँह पर लगाई जानेवाली डाट। (लश०)

पीनी—स्त्री० [स० पिंड या पीडन ?] तिल, तीसी या पोस्ते की खली।

पीनोरु—वि० [स० पीन-ऊरु, ब०स०] जिसकी जाँघे भारी और मोटी हों।

पीनोध्नी—स्त्री० [स० पीन-ऊधस्, ब०स०, ङीप्, अनङ्+आदेश] बडे और भारी थनवाली गाय।

पीप—स्त्री० [स० पूय] पके हुए घाव या फोडे के अन्दर से निकलनेवाला वह सफेद लसदार पदार्थ जो दूषित रक्त का रूपान्तर और विषाक्त होता है। पीव। मवाद।

विशेष—रक्त मे श्वेत कणो की अधिकता होने से ही इसका रग सफेद हो जाता है।

क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

पीपर†—पु०=पीपल।

पीपर-पर्न—पु० [हिं० पीपल+स० पर्ण=पत्ता] १. पीपल का पत्ता। २. कान मे पहनने का एक आभूषण।

पीपरा-मूल—पु० [स० पिप्पलीमूल] पीपल नामक लता की जड।

पीपरि—पु० [स० अपि√पृ (बचाना)+इन्, अकार-लोप, दीर्घ] छोटा पाकर वृक्ष।

†पु०=पीपल।

स्त्री० [स० पिप्पली] एक लता जिसके फल और जड़ें ओषध के काम आती है। इस लता के पत्ते पान के पत्तो की तरह परन्तु कुछ छोटे, अधिक नुकीले तथा अधिक चिकने होते है।

पीपल—पु० [स० पिप्पल] बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो भारत मे प्राय सभी स्थानो मे अधिकता से पाया जाता है। पर इसमें जटाएँ नही फूटती। इसका गोदा (फल) पकने पर मीठा होता है। हिन्दू इसे बहुत पवित्र मानते और पूजते है। चलदल। चलपत्र। बोधि-द्रुम।

स्त्री० [स० पिप्पली] एक प्रकार की लता जिसकी कलियाँ ओषधि के रूप मे काम मे आती है। कलियाँ तीन-चार अगुल लबी शहतूत (फल) के आकार की और स्वाद मे तीखी होती है। पिप्पली। मागधी।

पीपलामूल—पु० [स० पिप्पलीमूल] एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल नामक लता की जड है। यह चरपरा, तीखा, गरम, रूखा, दस्तावर, पाचक, रेचक तथा कफ, वात, आदि को दूर करनेवाला माना जाता है।

पीपा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० पीपी] १ लकडी, लोहे आदि का बना हुआ तेल आदि रखने का एक प्रकार का बडा आधान। २. राजस्थान के एक प्रसिद्ध राजा जो अपना राज्य छोडकर साधु और रामानद के शिष्य बन गये थे।

पीब†—पुं०=पीप।

पीय†—पु० =पिय (प्रियतम)।

पीयर†—वि०=पीला।

पीया—पु०=पिय (प्रियतम)।

पीयु—पु०[स०√ पा (पीना)+कु,नि० सिद्धि] १. काल। २. सूर्य। ३. थूक। ४. कौआ। ५. उल्लू।

वि० १. हिंसक। २. प्रतिकूल।

पीयूक्षा—स्त्री०[स० पीयु√उक्ष् (सीचना)+अ+टाप्] पाकर की एक जाति।

पीयूख|—पु० =पीयूष।

पीयूष—पु०[स०√ पीय् (संतुष्ट करना)+ऊषन्] १. अमृत। सुधा। २. दूध। ३. गाय आदि के प्रसव के उपरात, पहले सात दिनो का दूध जो अग्राह्य माना जाता है। पेऊस।

पीयूष-ग्रंथि—स्त्री०[मध्य०स०] शरीर के अदर मस्तिष्क के निचले भाग की एक ग्रंथि जो कफ उत्पन्न करती है। (पिट्यूटरी ग्लैड)

पीयूष-पाणि—वि०[ब०स०] १. जिसके हाथ मे अमृत हो। २. जिसके हाथ की दी हुई चीज मे अमृत का-सा गुण हो। जैसे—वे पीयूष-पाणि वैद्य थे।

पीयूष-भानु—पु०[ब०स०] चद्रमा।

पीयूष-रुचि—पु०[ब०स०] चद्रमा।

पीयूष-वर्ष—पु०[स० पीयूष√ वृष् (बरसाना)+अण] १. अमृत की वर्षा करनेवाला, चद्रमा। २ सस्कृत के जयदेव नामक कवि।३. कपूर। ४. एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण में १० और ९ के विश्राम से १९ मात्राएँ और अत मे गुरु-लघु होता है। इसे आनन्दवर्द्धक भी कहते है।

पीर—स्त्री०[स०पीड़ा]१. कष्ट। तकलीफ। दु:ख। २. दर्द। वेदना। ३. दूसरे का कष्ट या पीडा देखकर उसके प्रति मन मे होनेवाली करुणा-पूर्ण भावना या सहानुभूति। दूसरे के दु:ख से कातर होने की अवस्था या भाव। ४. प्रसव-काल के समय स्त्रियो को होनेवाली पीडा या दर्द। क्रि० प्र०—आना।—उठना।

मुहा०—(किसी की) पीर जानना या पाना=सहानुभूतिपूर्वक किसी का कष्ट या दु:ख समझना।

वि०[फा०] [भाव० पीरी]१. वृद्ध। बुड्ढा। २. बडा और पूज्य। बुजुर्ग। ३. चालाक। धूर्त।

पु० १. परलोक का मार्ग-दर्शक। धर्म-गुरु। २. महात्मा और सिद्ध पुरुष। ३. मुसलमानो का धर्मगुरु। ४ सोमवार का दिन। चद्रवार।

पीरजादा—पु०[फा० पीरजादा] [स्त्री० पीरजादी] किसी पीर या धर्म-गुरु का पुत्र।

पीरतन|—पु०[हिं० पियरा+तन(प्रत्य०)] पीलापन। उदा०—कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनुन रहाइ।—कबीर।

पीरना*—स०=पेरना। उदा०—तेली ह्वै तन कोल्हू करिहौं पाप पुन्नि दोऊ पीरौ। —कबीर।

पीर-नाबालिग—पु०[फा० पीर+अ० नाबालिग] ऐसा वृद्ध जो बच्चो के से आचरण, काम या बातें करे। सठियाया हुआ बुड्ढा। बुद्धिभ्रष्ट बूढा।

पीर-भुचड़ी—पु० [फा+अनु०] जनखो या हिजडो के सम्प्रदाय के एक कल्पित पीर।

पीरमान—पु०[लश०] मस्तूल के ऊपर बँधे हुए वे डडे जिनके दोनो सिरो पर लट्टू लगे रहते हैं और जिन पर पाल चढाई जाती है। अडडडा।

पीर-मुर्शिद—पु०[फा०] गुरु, महात्मा, और पूजनीय व्यक्ति। प्राय राजाओं, बादशाहों और बड़ों के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

पीरा|—स्त्री०=पीड़ा।

वि०[स्त्री० पीरी] पीला।

पीराई—पु०[फा० पीर+आई (प्रत्य०)] १. डफालियों की तरह की एक जाति जिसकी जीविका पीरो के गीत गाने से चलती है। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

|स्त्री० =पीरी ('पीर' का भाव०)।

पीरानी—स्त्री० [फा०] पीर अर्थात् मुसलमानी धर्मगुरु की पत्नी।

पीरी—स्त्री० [फा०]१. वृद्ध होने की अवस्था, या भाव। वृद्धावस्था। २. किसी इस्लामी धर्म-स्थान के पीर (महन्त) होने की अवस्था या भाव। ३. दूसरो को अपना अनुयायी या शिष्य बनाने का धन्धा या पेशा। ४. बहुत बडी चालाकी या बहादुरी। जैसे—इतना-सा काम करके तुमने कौन-सी पीरी दिखला दी। ५. किसी प्रकार का विशेषाधिकार। इजारा। ठेका। (व्यग्य) जैसे—यहाँ क्या तुम्हारे बाबा की पीरी है। ६. कोई अलौकिक या चमत्कारपूर्ण कृत्य करने की शक्ति।

वि० हिं० 'पीरा' (पीला) का स्त्री०।

पीरू—पु०[फा० पील मुर्ग] एक प्रकार का मुरगा।

पीरोजा—पु० दे०=फीरोजा।

पील—पु०[स० पीलु (हाथी) से फा०]१. हाथी। गज। हस्ति। २. शतरज के खेल का हाथी नामक मोहरा।

पु०=पीलू (पिल्लू नामक कीडा)।

पु०=पीलु।

पीलक—पु०[देश०] पीले रग का एक प्रकार का पक्षी जिसके डैने काले और चोच लाल होती है।

पीलखा—पु०[देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

पील-पाँव|—पु०=फील पाँव।

पीलपाया—पु०[फा० पीलपाय:]१ आधार या आश्रय के लिए किसी चीज के नीचे लगाई जानेवाली टेक या थूनी। २. किले आदि की दीवारो के नीचे या साथ सहारे के लिए बनी हुई बहुत मोटी दीवार।

पीलपाल—पु०=फीलवान।

पीलवान—पु०=फीलवान।

पीलसोज—पु० [फा० फतीलसोज] दीयट। चिरागदान।

पीला—वि० [स० पीत] [स्त्री० पीली, भाव० पीलापन] १. (पदार्थ) जो केसर, सोने या हलदी के रग का हो। पीत। जर्द। २. (शरीर का वर्ण) जो रक्त की कमी के कारण हल्का सफेद हो गया हो और जिसमे स्वास्थ्य की सूचक चमक या लाली न रह गई हो। जैसे—बीमारी के कारण उनका सारा शरीर पीला पड गया है।

क्रि० प्र०—पडना।

३. (शरीर का वर्ण) जो भय, लज्जा आदि के कारण उक्त प्रकार का हो गया हो। जैसे—मुझे देखते ही उसका चेहरा पीला पड गया।

क्रि० प्र०—पडना।

पु०[?] एक प्रकार का रग जो हलदी या सोने के रग से मिलता-जुलता होता है।

पुं०[स० पीलु, फा० पील] शतरज का पील, फील या हाथी नामक मोहरा

पीला कनेर—पु० [हिं० पीला+कनेर] एक तरह का कनेर जिसमे पीले रग के फूल लगते है।

पीला धतूरा—पु० [हिं० पीला+धतूरा] ऊँटकटारा। घमोय। भँड-भाँड। सत्यानासी।

पीलापन—पुं० [हिं० पीला+पन (प्रत्य०)] १. पीले होने की अवस्था, गुण या भाव। पीतता। जर्दी। २. खून की कमी अथवा भय आदि के कारण होनेवाली शरीर की रगत।

पीला बरेला—पु० [देश०] बनमेथी। वरियारा।

पीला बाला—पु०=लामज (तृण)।

पीला शेर—पु० [हिं० पीला+फा० शेर] अफ्रीका के जगलो मे रहनेवाले शेरो की एक जाति जिसका रग पीला होता है।

पीलित—भू० कृ० [स०] जिसमे बल डाले गये हो या पडे हो। ऐठा या मरोडा हुआ।

पीलिमा—स्त्री० [हिं० पीला] पीलापन।। ('कालिमा' के अनुकरण पर, असिद्ध रूप)

पीलिया—पु० [हिं० पीला+इया (प्रत्य०)] कमल नामक रोग जिसमे मनुष्य की आँखे और शरीर पीला पड जाता है।

पीली—स्त्री० [हिं० पीला=पीत] तडके या प्रभात के समय आकाश मे दिखाई देनेवाली लाली जो कुछ पीलापन लिये होती है।

मुहा०—**पीली फटना**= तडका या प्रभात होना। पौ फटना।

पीली चमेली—स्त्री० [हिं०] चमेली के पौधो की एक जाति।

पीली चिट्ठी—स्त्री० [हिं० पीला+चिट्ठी] विवाह आदि शुभ कृत्यो का निमत्रण-पत्र जो प्राय पीले रग के कागज पर छपा या लिखा रहता है अथवा जिस पर केसर आदि छिडका रहता है।

पीली जुही—स्त्री० =सोन जुही।

पीली मिट्टी—स्त्री० [हिं० पीला+मिट्टी] १. पीले रग की मिट्टी। २. पटिया आदि पर पोतने की पीले रग की जमी हुई कडी चिकनी मिट्टी।

पीलु—प० [स०√पील् (रोकना)+ड] १. दो-तीन हाथ ऊँचा एक तरह का क्षुप जिसमे पीले रग के गुच्छाकार फूल तथा कालापन लिये लाल रग के छोटे-छोटे गोल फल लगते है। ३. उक्त क्षुप का फल। ४. पुष्प। फूल। ५. हाथी। ६. परमाणु। ७. ताल वृक्ष का तना। ८. हड्डी का टुकडा। ९. तीर। वाण। १०. कृमि। कीडा। ११. चने का साग। १२. सरकडे या मरपत का फूल। १३. लाल कटसरैया। १४. अखरोट का पेड। १५. हाथ की हथेली।

पीलुआ†—पु० [देश०] मछली पकडने का बहुत वडा जाल।

पीलुक—पु० [स० पीलु√कै+क] च्यूँटा।

पीलुनी—स्त्री० [स०√ पील+उन+ङीप्] १. चुरनहार। मूर्वा। २ चने का साग।

पीलु-पत्र—पु० [व०स०] मोरट नाम की लता।

पीलु-पर्णी—स्त्री० [व०स०,+ङीप्] १ चुरनहार। मूर्वा। २. कुँदुरू।

पीलु-पाक—पु० [प०त०] वैशेपिक का यह सिद्धान्त कि तेज के प्रभाव से पदार्थो के परमाणु पहले अलग-अलग होते और फिर मिलकर एक हो जाते है। जसे—कच्ची मिट्टी के घडे का जव अग्नि या ताप से सयोग होता है तव पहले तो उसके परमाणु अलग-अलग होते है और फिर लाल होने पर मिलकर एक हो जाते है।

पीलुपाक-वाद—पु० [ष०त०] वैशेपिको का पीलुपाक-सवधी मत या सिद्धान्त।

पीलुपाकवादी (दिन्)—वि० [पीलुपाकवाद+इनि, (वोलना)+णिनि] पीलुपाकवाद-सवधी।

पु० १. पीलुपाक का सिद्धान्त माननेवाला व्यक्ति। २. वैशेपिक दर्शन का अनुयायी या पडित।

पीलु-मूल—पु० [ष०त०] १. पीलु वृक्ष की जड। २. सतावर। ३. शाल-पर्णी।

पीलु-मला—स्त्री० [व०स०,+टाप्] जवान गाय।

पीलू—पु० [स० पीलु] १. एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जो दक्षिण भारत मे अधिकता से होता है। इसकी पत्तियाँ ओपधि के काम आती हैं। २. पिल्लू नाम का कीड़ा। ३. सगीत मे एक प्रकार का राग जिसके गाने का समय दिन के तीसरे पहर कहा गया है।

पीव—वि० [स० पीवन] १. मोटा। स्थूल। २. हृष्ट-पुष्ट।

†पु०=पीप (मवाद)।

†पु० १. =पिय (प्रियतम)। २. साधको की परिभाषा मे, परमेश्वर।

पीवट—स्त्री० [?] युक्ति। उपाय। तरकीव। उदा०—न मालूम कौन सी पीवट लगाए होगा।—वृंदावनलाल वर्मा।

पीवना†—स०=पीना।

पीवर—वि० [स०√प्यै (वृद्धि)+ष्वरच्, सप्रसारण, दीर्घ] [स्त्री० पीवरा] [भाव० पीवरता, पीवरत्व] पीन (दे० सभी अर्थो मे)।

पु० १ कछुआ। २. जटा। ३. तापस मन्वन्तर के सप्तर्पियो मे से एक।

पीवरा—स्त्री० [स० पीवर+टाप्] १. असगध। २. सतावर।

पीवरी—स्त्री० [स० पीवर+ङीष्] १. सतावर। २. शालिपर्णी। ३. वर्हिषद् नामक पिता की मानसी कन्याओ मे से एक। ४. युवती स्त्री। ५. गाय। गौ।

पीवा—स्त्री० [स० √पी (पीना)+व+टाप्] जल। पानी।

वि०=पीवर।

पीविष्ठ—वि० [स० पीवन्+इष्ठन्] अतिशय स्थूल। वहुत मोटा।

पीसना—स० [स० पेषण] १. कोई पदार्थ दो कठोर या कडे तलो के बीच मे डाल या रखकर वार वार इस प्रकार रगडते हुए दवाना कि उसके वहुत छोटे-छोटे खड या कण हो जायँ। घन पदार्थ को चूर्ण के रूप मे लाना। जैसे—चक्की मे आटा पीसना, सिल पर चटनी, भाँग या मसाला पीसना।

सयो० क्रि० —डालना।—देना।

२. वहुत ही कठोरता, निर्दयता या हृदयहीनतापूर्वक किसी को वुरी तरह से कुचलना, दवाना या पीड़ित करना। जैसे—(क) मुझसे पाजीपन करोगे तो पीसकर रख दूँगा। (ख) सन् १९५७ के उपद्रवो के वाद अगरेजो ने सारे देश को एक तरह से पीस डाला था। ३ खूब दवाते हुए रगड़ना। जैसे—दाँत पीसना। ४. इस प्रकार कष्ट भोगते हुए कठोर परिश्रम का काम करना कि मानो चक्की मे डालकर पीसे जा रहे हो। ५. वहुत परिश्रम का काम करना। जैसे—दोनो भाइयो को दिन भर दफ्तर मे पीसना पडता है।

पु० १ पीसने की क्रिया या भाव। २. वह या उतनी वस्तु जो

स० पूरा करना।

पुनपुना—स्त्री०[स० पुन पुना] बिहार राज्य की एक छोटी नदी जो गया से होकर बहती है और पवित्र मानी जाती है। इसके किनारे लोग पिंड-दान करते हैं।

पुनरपगम—पुं०[स० पुनर्-अपगम, मध्य०स०] पुनः जाना।

पुनरपि—अव्य०[स० पुनर्-अपि, द्व० स०]१. फिर भी। २. फिर से। दोबारा।

पुनरवसु—पुं०=पुनर्वसु।

पुनरभिधान—पुं०[स० पुनर्-अभिधान, मध्य०स०] दूसरी बार फिर से या पुनः कहना।

पुनरवलोकन—पुं० [स० पुनर्-अवलोकन, मध्य० स०] फिर से या दोबारा देखना।

पुनरस्त्रीकरण—पुं०[स० पुनर्-अस्त्रीकरण, मध्य०स०] [वि० पुनरस्त्रीकृत] जिस देश, राष्ट्र या सेना के अस्त्र, शस्त्र आदि पहले छीन लिए गए हों, उसे फिर से अस्त्र, शस्त्रों आदि से युक्त और सज्जित करना। (री-आर्मामेन्ट)

पुनरागत—वि० [स० पुनर्-आगत, मध्य०स०] १. पुनः आया हुआ। २. लौटा हुआ।

पुनरागम—पुं०[स० पुनर्-आगम, मध्य०स०] फिर से या लौटकर आना। पुनरागमन।

पुनरागमन—पुं०[स० पुनर्-आगमन, मध्य० स०]१. एक बार आ चुकने के बाद दोबारा या फिर से आना। २. मृत्यु होने पर फिर शरीर धारण करके इस संसार में आना। पुनर्जन्म।

पुनरागामी (मिन्)—वि०[स० पुनर्-आगामिन्, मध्य०स०] फिर से आनेवाला।

पुनरादि—वि०[स० पुनर्-आदि, ब०स०] फिर से आरम्भ या शुरू करनेवाला।

पुनराधान—पुं०[स० पुनर्-आधान, मध्य०स०] श्रौत या स्मार्त अग्नि का एक बार छूट या बुझ जाने पर फिर से किया जानेवाला ग्रहण। अग्निस्थापन।

पुनराधेय—वि०[स० पुनर्-आधेय, मध्य० स०] फिर से स्थापित की जानेवाली (अग्नि)।

पुं० दे० 'पुनराधान'।

पुनरानयन—पुं०[स० पुनर्-आनयन, मध्य०स०] लौटा लाना।

पुनरारंभ—पुं० [स० पुनर्-आरंभ, मध्य० स०] छोड़ा या स्थगित किया हुआ काम पुनः या फिर से आरंभ करना। (रिजम्पशन)

पुनरावर्त—पुं०[स० पुनर्-आवर्त, मध्य०स०]१ लौटना। २. बार-बार जन्म लेना।

पुनरावर्तक—वि०[स० पुनर्-आवर्तक, मध्य०स०] पुनः पुनः आनेवाला ज्वर।

पुनरावर्तन—पुं०[स० पुनर्-आवर्तन, मध्य० स०] १ फिर से या दोबारा होनेवाला आवर्तन। फिर से लौटकर आना। २. किसी रोग के बहुत-कुछ अच्छे हो जाने पर भी फिर से होनेवाला उसका प्रकोप। (रिलैप्स)

पुनरावर्ती (तिन्)—वि० [स० पुनर्-आवर्तिन्, मध्य० स०] बार-बार जन्म लेनेवाला।

[illegible]

[illegible]

पुनरावृत्ति—स्त्री०[स० पुनर्-आवृत्ति, मध्य० स०] १. फिर से पुनः [illegible] पाठ की पुनरावृत्ति।

पुनरीक्षण—पुं०[स० पुनर्-ईक्षण, मध्य० स०] [भू० कृ० पुनरीक्षित] [illegible]

पुनरीक्षित—भू० कृ० [स० पुनर्-ईक्षित, मध्य० स०] जिसका पुनरीक्षण किया गया हो या जो फिर से देखा गया हो। (रिवाइज़्ड)

पुनरुक्त—वि० [स० पुनर्-उक्त, मध्य० स०] एक बार कहने के उपरान्त दोबारा या फिर से कहा हुआ।

पुं० साहित्य में एक प्रकार का दोष जो उस दशा में माना जाता है जब कोई बात एक बार कही जाकर फिर से दोबारा या कई बार कही जाती है।

पुनरुक्तवदाभास—पुं० [स० पुनरुक्त वत्, पुनरुक्तवत्-आभास, मध्य० स०] एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जो सुनने में पुनरुक्त से जान पड़ें पर वास्तव में प्रसंगतः भिन्न-भिन्न अर्थ रखते हैं।

पुनरुक्ति—स्त्री० [स० पुनर्-उक्ति, मध्य० स०] १ एक बार कही हुई बात फिर से कहना। २ इस प्रकार दोबारा कही हुई बात। (रिपिटीशन)

पुनरुज्जीवन—पुं० [स० पुनर्-उज्जीवन, मध्य० स०] [वि० पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना। (रिवाइवल)

पुनरुज्जीवित—वि० [स० पुनर्-उज्जीवित, मध्य० स०] जिसे फिर से जीवित किया गया हो अथवा जिसने फिर से जीवन प्राप्त किया हो। (रिवाइव्ड)

पुनरुत्थान—पुं० [स० पुनर्-उत्थान, मध्य० स०] [भू० कृ० पुनरुत्थित] १. गिरे हुए का फिर से उठना। २. जिसका एक बार पतन या ह्रास हो चुका हो, उसका फिर से उठकर उन्नति करना। (रिनेसान्स)

पुनरुत्थित—भू० कृ० [स० पुनर्-उत्थित, मध्य० स०] जिसका पुनरुत्थान किया गया हो। अथवा हुआ हो।

पुनरुद्धार—पुं० [स० पुनर्-उद्धार, मध्य० स०] टूटी-फूटी या नष्ट हुई चीज को फिर से ठीक करके उसे यथावत् या उसका उद्धार करना। (रिस्टोरेशन, रिनोवेशन)

पुनरुपगम—पु० [स० पुनर्-उपगम, मध्य० स०] वापस आना। लौटना।

पुनरूपोढा—वि० स्त्री० [स० पुनर्-उपोढ, मध्य० स०] जो दोवारा या फिर से किसी के साथ व्याही गई हो।

पुनरूढा—स्त्री० [स० पुनर्-ऊढा, मध्य० स०] जो फिर से व्याही गई हो।

पुनर्गमन—पु० [स० मध्य० स०] दोवारा जाना।

पुनर्गेय—वि० [स० मध्य० स०] जो फिर से गाया जाय।
पु० पुनरुक्ति।

पुनर्ग्रहण—पु०[स० मध्य० स०] कोई कार्य, पद, भार आदि एक वार छोड चुकने के वाद फिर से ग्रहण करना। (रिजम्पशन)

पुनर्जन्म (न्)—पु० [स० मध्य० स०] जीवात्मा का एक शरीर त्यागने के उपरात दूसरा शरीर धारण करते हुए जन्म लेना। पुन होनेवाला जन्म। (ट्रान्समाइग्रेशन)

पुनर्जन्मा (न्मन्)—पु० [स० व० स०] ब्राह्मण।

पुनर्जागरण—पुं० [स०] १ सोये हुए का फिर से जागना। २ युरोप के इतिहास मे १४वी,१५वी और १६वी शताब्दियो की वह स्थिति जिसमे कला, विद्या और साहित्य का नये सिरे से अनुसधान और प्रचार होने लगा था, और जिसके कारण मध्य युग का अत तथा आधुनिक युग का आरभ हुआ था। (रिनेसन्स)

पुनर्जात—भू० कृ० [स० मध्य० स०] जिसने पुन जन्म लिया हो।

पुनर्जीवन—पुं० [स० मध्य० स०] फिर से प्राप्त होनेवाला जीवन। पुनर्जन्म।
† पुं०=पुनरुज्जीवन।

पुनर्डीन—पु० [सं० मध्य० स०] पक्षियो के उडने का एक प्रकार।

पुनर्णव—पु० [स० मध्य० स०] नख। नाखून।

पुनर्नव—वि० [स० मध्य० स०] [भाव० पुनर्नवता, स्त्री० पुनर्नवा] जो पुराना हो जाने पर फिर से नया हो गया हो या नया कर दिया गया हो।

पुनर्नवा—स्त्री० [स० मध्य० स०] गदह-पूरना नाम की वनस्पति जिसके सेवन से आँखो की ज्योति का फिर से वहुत वढ जाना माना जाता है।

पुनर्निर्माण—पु० [स० मध्य० स०] किसी टूटी-फूटी वस्तु का फिर से होनेवाला निर्माण। (री-कन्स्ट्रक्शन)

पुनर्परीक्षण—पु० [स० पुन परीक्षण] [भू० कृ० पुनर्परीरक्षित] फिर से या पुन परीक्षण करना। दूसरी वार या दोवारा जाँचना। (रीएक्जामिनेशन)

पुनर्भव—पुं० [स० पुनर्√भू (होना)+अप्] १ पुन होनेवाला जन्म। २. नख। नाखून। ३ रक्त पुनर्नवा।
वि० जो फिर हुआ हो। फिर से उत्पन्न।

पुनर्भाव—पु० [स० मध्य० स०] पुनर्जन्म।

पुनर्भू—स्त्री० [स० पुनर्√भू+क्विप्] वह स्त्री जिसने पति के मरने पर दूसरे पुरुष से विवाह कर लिया हो।

पुनर्भोग—पु० [स० मध्य० स०] धार्मिक दृष्टि से पूर्व कर्मो का प्राप्त होनेवाला फल-भोग।

पुनर्मुद्रण—पु० [स० मध्य० स०] १. एक हुई चीज का से उसी रूप मे छपना। २ पुस्तकों आदि का इस प्रकार छपकर तैयार होनेवाला सस्करण। (री-प्रिन्ट)

पुनर्वचन—पु० [स० मध्य० स०] १ पुनरुक्ति। २ शास्त्र द्वारा किसी वात का वार-वार विदित होना।

पुनर्वसु—पु० [स० पुनर्√वस् (निवास, आच्छादन)+उ] १. सत्ताईस नक्षत्रो मे से सातवाँ नक्षत्र। २ विष्णु। ३ कात्यायन मुनि। ५. एक लोक।

पुनर्वाद—पु० [स० मध्य० स०] १ कोई वात पुन ज्यो की त्यो अथवा कुछ उलट-पुलट कर कहना। २ छोटे न्यायालय के निर्णय के असतोष-जनक प्रतीत होने पर वडे न्यायालय से उस पर फिर से विचार करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। (अपील)

पुनर्वादी (दिन्)—पु० [स० पुनर्वाद+इनि] वह जो वडे न्यायालयो से किसी छोटे न्यायालय द्वारा किये हुए निर्णय पर फिर से विचार करने के लिए कहे। (एपेलेन्ट)

पुनर्वास—पु० [स० मध्य० स०] १ पुन वसना। २ घर-वार न रह जाने पर अथवा छीन लिये जाने पर फिर से नया घर आदि वनाकर रहना। ३ उजडे हुए लोगो को फिर से वसाना या आवाद करना। (री-हैविलिटेशन)

पुनर्वासन—पु० [स० मध्य० स०] उजडे हुए लोगो को फिर से वसाने की क्रिया या भाव।

पुनर्विधान—पु० [स० मध्य० स०] फिर से विधान करना या वनाना।

पुनर्विधायन—पु० [स० मध्य० स०] [भू० कृ० पुनर्विहित] किसी वने हुए विधान को घटा या वढाकर नये सिरे से विधान का रूप देना। (री-एनैक्टमेन्ट)

पुनर्विधायित—भू० कृ० [स० मध्य० स०]=पुनर्विहित।

पुनर्विभाजन—पु० [स० मध्य० स०] एक वार जिसका विभाजन हो चुका हो, उसका फिर से विभाजन करना। (री-डिस्ट्रीब्यूशन)

पुनर्विलोकन—पुं० [स० मध्य० स०] एक वार देखी हुई वस्तु, वात आदि को फिर से अच्छी तरह से देखना। (रिव्यू)

पुनर्विवाह—पु० [स० मध्य० स०] एक वार विवाह हो चुकने पर (पति या पत्नी के मर जाने पर) दोवारा होनेवाला विवाह। दूसरा व्याह।

पुनर्विवाहित—भू० कृ० [स० मध्य० स०] जिसका एक वार विवाह हो चुकने के उपरान्त किसी कारण-वश फिर से विवाह हुआ है।

पुनर्विहित—भू० कृ० [स० मध्य० स०] १ जिसका फिर से विधान हुआ या किया गया हो। २ (पहले से वना हुआ विधान) जो फिर से घटा-वढाकर ठीक किया गया और नये विधान के रूप मे लाया गया हो। (री-एनैक्टेड)

पुनर्व्यंजन—पु० [स० मध्य०स०] पहले से वनी हुई चीज जो अव अस्तित्व मे न रह गयी हो, उसे फिर से ज्यो की त्यो या उसी तरह वनाकर सवके सामने रखना। (री-प्रोडक्शन)

पुनर्व्यक्त—भू० कृ० [स० मध्य० स०] जिसका पुनर्व्यंजन हुआ हो। दोवारा वनाकर अस्तित्व में लाया हुआ।

[illegible]र्सारण—पु० [स० पुन सारण] [भू० कृ० पुनर्सारित] किसी एक

पुनरुपगम—प॰
पुनरुपोत—[स॰√पुर् (आगे जाना)+क] भरा हुआ।
पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ पुरी] १ वह बडी बस्ती जिसमे बडी बडी इमारते भी हो। गाँव से बड़ी परन्तु नगर से छोटी बस्ती।
विशेष—प्राचीन काल मे पुर का क्षेत्रफल एक कोस से अधिक होता था और उसके चारो ओर खाईं होती थी।
२. घर। मकान। ३ अटारी। कोठा। ४ भुवन। लोक। ५. नक्षत्रो का पुज। राशि। ६ देह। शरीर। ७. कुएँ से पानी खीचने का मोट।—चरसा। ८ मोथा। ९ पीली कसरैया। १०. गुग्गुल। ११ किला। गढ। दुर्ग। १२ चोगे की तरह का एक प्रकार का पुराना पहनावा।
अव्य॰ [स॰ पुर] आगे। सामने। उदा॰—स्वान। निशक कही पुर मेरे।—केशव।
पु॰=पुरवट। (लखनऊ)
मुहा॰—पुर लेना=पानी से भरा हुआ पुरवट खीचकर उसका पानी नाली मे गिराना।
पुरइन—स्त्री॰ [स॰ पुटकिनी, प्रा॰ पुडइनी=कमलिनी, पु॰ हिं॰ पुरइनि] १ कमल का पत्ता। २. कमल। ३. जरायु।
पुरउना*—स॰=पुरवना।
पुरउवि*—स॰ [स॰ पूर्ण] पूरा कीजिएगा।
पुर-कायस्थ—पु॰ [स॰ प॰ त॰] प्राचीन भारत मे पुर (या नगर) का वह अधिकारी जिसके पास मुख्य लेखो, दस्तावेजो आदि की नकलें रहती थी। (इसका पद प्राय: आज-कल के रजिस्ट्रार के पद के समान होता था।)
पुर कोट्ट—पु॰ [प॰ त॰] नगर की रक्षा के लिए बनाया हुआ दुर्ग।
पुरखा—पु॰ [स॰ पुरुष] [स्त्री॰ पुराविन] १ पूर्वज।
मुहा॰—पुरखे तर जाना=पूर्व पुरुषो को (पुत्र आदि के कृत्यों से) परलोक मे उत्तम गति प्राप्त होना। बहुत बड़ा पुण्य या उसका फल होना। कृत्य कृत्य होना। जैसे—उनके आने से तुम क्या, तुम्हारे पुरखे भी तर जायँगे।
२ सयाना और वृद्ध व्यक्ति।
पुरग—वि॰ [पुर√गम् (जाना)+ड] १ नगरगामी। २ जिसकी मनोवृत्ति अनकूल हो।
पुरगुर—पु॰ [देश॰] एक प्रकार का पेड जिसकी लकडी खिलौने, हल आदि बनाने के काम आती है।
पुरचक—स्त्री॰ [हिं॰ पुचकार] १ चुमकार। पुचकार। २. बढावा। प्रेरणा।
क्रि॰ प्र॰—देना।
३ पृष्टपेषण। ४. समर्थन। हिमायत।
क्रि॰ प्र॰—देना।—पाना।—लेना।
५ बुरा अभ्यास या परिपाटी। (पश्चिम)
पुर-जन—पु॰ [प॰ त॰] पुर या नगर के रहनेवाले लोग। पुरवासी।
पुरजा—पु॰ [फा॰ पुर्ज] १ टुकडा। खड।
मुहा॰—पुरजे पुरजे उडाना या करना=कागज, पत्र आदि को फाडकर उसके अनेक छोटे छोटे टुकडे कर देना।
२. काटकर निकाला हुआ टुकडा। कतरन। धज्जी। ३ कागज के टुकडे पर लिखी हुई बात या सूचना। ४ किसी के हस्ते भेजी जाने वाली चिट्ठी। ५ किसी बडे यत्र का कोई अग, अश या खड। जैसे—घडी के कई पुरजे खराब हो गये है।
पद—चलता पुरजा=बहुत बड़ा चालाक।
मुहा॰—(किसी के दिमाग का) पुरजा ढीला होना=कुछ खबती, झक्की या सनकी होना।
पुरजित्—पु॰ [स॰ पुर√जि (जीतना)+क्विप्] १ शिव। २ कृष्ण का एक पुत्र जो जाबवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
पुरट—पु॰ [स॰√पुर्+अटन] सुवर्ण। सोना।
पुरण—पु॰ [स॰√पृ+क्यु—अन] समुद्र।
पुरतः (तस्)—अव्य॰ [स॰ पुर+तस्] आगे। सामने। उदा॰—पुरतो मे प्रेषितम् पत्र।—प्रिथीराज।
पुर-तटी—स्त्री॰ [मध्य॰ स॰] छोटा बाजार। हाट।
पुर-तोरण—पु॰ [प॰ त॰] नगर का बाहरी दरवाजा या मुख्य-द्वार।
पुर-त्राण—वि॰ [ब॰ स॰] पुर की रक्षा करनेवाला।
पु॰ परकोटा।
पुर-देव—पुं॰=नगर-देवता।
पुर-द्वार—पु॰ [प॰ त॰] पुर का मुख्य द्वार। नगर का मुख्य फाटक।
पुरद्विट्(ष्)—पु॰ [प॰ त॰] शिव।
पुरना—अ॰ [हिं॰ पूरा] १ पूरा या पूर्ण होना। २ यथेष्ट मात्रा या मान मे प्राप्त होना। उदा॰—पुरती न जो पै मोर-चद्रिका किरीट-काज, जुरती कहा न काँच किरचैं कुमाय की।—रत्नाकर। ३ समाप्त होना।
पुर-नारी—स्त्री॰ [प॰ त॰] नगर-नारी। रडी। वेश्या।
पुरनियाँ—वि॰ [हिं॰ पुरान] बुड्ढा (या बुड्ढी)। वृद्ध (या वृद्धा)।
पुर-निवेश—पु॰ [प॰ त॰] पुर या नगर बनाना और बसाना।
पुर-निवेशन—पु॰ [प॰ त॰] पुर या नगर बसाने का कार्य।
पुरनी—स्त्री॰ [हिं॰ पूरना=भरना] १. अँगूठे मे पहनने का छल्ला। २ तुरही। ३ बदूक की नली साफ करने का कागज।
पुर-पक्षी (क्षिन्)—पु॰ [प॰त॰] १ पुर या नगर मे रहनेवाला पक्षी। २ पालतू पक्षी।
पुरपाल—पु॰ [स॰ पुर√पाल् (रक्षा)+णिच+अच्] १ पुर या नगर का प्रधान अधिकारी। २. कोतवाल। ३ आत्मा। जीव।
पुरबला—वि॰ [स॰ पूर्व+हिला (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ पुरबली] १. पूर्व का। पहले का। २ पूर्व जन्म का। पिछले जन्म का।
पुरबा†—वि॰=पुरवा।
पुरबिया—वि॰ [हिं॰ पूरब] [स्त्री॰ पुरबिनी] १. पूर्व देश मे उत्पन्न या रहनेवाला। परब का। २ पूर्व दिशा से आनेवाला। जैसे—पुरबिया हवा।
पु॰ पूर्वी देश का निवासी।
पुरबिहा†—वि॰, पु॰=पुरबिया।
पुरबी—वि॰=पूरबी।
पुरभिद्—पु॰ [स॰ पुर√भिद् (विदीर्ण करना)+क्विप्] पुर (त्रिपुर) का भेदन करनेवाले, शिव।
पुरमथन—पु॰ [प॰ त॰] शिव।

पुर-मथिता (तृ)—पु०[स०] शिव।
पुर-मार्ग—पु०[प० त०] १. पुर या नगर की ओर जानेवाला रास्ता। २ शहर की सडक।
पुर-रक्षी—पु०=पुर-रक्षक।
पुर-रक्षक—पु० [प०त०] नगर की रक्षा करनेवाला कर्मचारी।
पुर-रक्षा (क्षिन्)—पु०[प०त०]=पुर-रक्षक।
पुर-रोध—पु०[प० त०] शत्रु के नगर को घेरा डालना। चारो ओर से घेरना।
पुरला—स्त्री०[स०√ पुर्+कलच्+टाप्] दुर्गा।
पुर-लोक—पु०[प० त०]=पुरजन।
पुरवइया†—स्त्री०=पुरवाई।
पुरवट—पु०[स० पूर] चमडे का एक तरह का वडा उपकरण या डोल जिससे सिंचाई के लिए कुओ से पानी निकालते हैं। चरसा। मोट।
क्रि० प्र०—खीचना।—चलना।—चलाना।
मुहा०—पुरवट नाधना=पुरवट चलाने के लिए उसमे बैल जोतना।
पुर-वधू—स्त्री०[प० त०] वेश्या।
पुरवना—स०[हि० पूरना का प्रेर०]१ पूर्ण या पूरा करना। जैसे—मनोरथ पुरवना।
मुहा०—साथ पुरवना=अन्त तक या पूरी तरह से साथ देना।
२. इच्छा, कामना, प्रतिज्ञा आदि पूरी करना। उदा०—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पुरई सखा विप्र दरिद्र हयो।—सूर।
अ०१. पूरा या पूर्ण होना। २. पूरा पडना। यथेष्ट होना। ३ पूर्ति होना। कमी दूर होना।
पुर-वर—पु०[स० त०]१. अच्छा और वढिया या श्रेष्ठ नगर। २. राजनगर। राजधानी।
पुरवा—पु०[स० पुर] छोटा गाँव। पुरा। खेडा।
वि०[स० पूव] पूर्व दिशा का।
पु०[स० पूर्व+वात] १. पूर्व की ओर से आने या चलनेवाली हवा। पुरवाई। २ उक्त वायु के चलने पर पशुओ को होनेवाला एक रोग, जिसमे उनका गला और पेट फूल जाता है।
पु०[स० पुटक] मिट्टी का एक प्रकार का छोटा वरतन जिसमे पानी, दूध, शराव आदि पीते है। कुल्हड।
पुरवाई—स्त्री०[स० पूर्व+वायु, हि० पूरव+वाई] पूर्व की वायु। वह वायु जो पूर्व दिशा से आती हो।
पुरवाना—स०[हि० पुरवना का प्रे०] पूरा कराना।
पुरवासी (सिन्)—पु०[स० पुर√वस् (वसना)+णिनि] पुर या नगर का रहनेवाला। नागरिक।
पुर-वास्तु—पु०[प० त०] वह भूमि या स्थान जहाँ नगर अच्छी तरह वनाया या वसाया जा सकता हो।
पुरवैया—स्त्री०=पुरवाई।
पुर-शासन—पुं०[स० पुर√शास् (शासन करना)+ल्यु—अन] १. दैत्यो के त्रिपुर का ध्वंस करनेवाले, शिव। २. विष्णु।
पुरश्चरण—पु०[स० पुरस्√चर् (गति)+ल्युट्—अन] १. किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोचना और उसका अनुष्ठान करना। किसी काम की पहले से की जानेवाली तैयारी। २. किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियम और विधान पूर्वक कुछ निश्चित समय तक किया जानेवाला तांत्रिक पूजा-पाठ। तांत्रिक प्रयोग।
पुरश्चर्या—स्त्री०[स० पुरस्√ चर्+क्यप्+टाप्] पुरश्चरण।
पुरश्छद—पु०[स० पुरस्√छद (ढंकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] कुश या डाभ की तरह की एक घास।
पुरस†—पुं०=पुरसा (पूर्व पुरुष)।
पुरस—पु०[सं० पुरीष] खाद।
पुरसाँ—वि०[फा० पुर्सां] पूछने या खोज-खबर लेनेवाला।
पुरसा—पु०[स० पुरुष] ऊँचाई या गहराई नापने की एक नाप जो उतनी ऊँची होती है, जितना ऊँचा हाथ ऊपर उठाकर खडा हुआ साधारण मनुष्य होता है। लगभग साढ़े चार या पाँच हाथ की एक माप। जैसे—यह कुआँ या नदी चार पुरसा गहरी है।
पुरसी—स्त्री०[फा०] समस्त पदो के अत मे, जानने के लिए कुछ पूछने की क्रिया या भाव। जैसे—मातम-पुरसी, मिजाज-पुरसी आदि।
पुरस्कार—पु०[स० पुरस्√कृ(करना)+घञ्] [भू० कृ० पुरस्कृत] १. आगे करने की क्रिया। २. आदर। पूजा। ३. प्रधानता। ४ स्वीकार। ५ अच्छी तरह कोई बडा और कठिन काम करने पर उसके कर्ता को आदर या सत्कार के रूप मे दिया जानेवाला धन या पदार्थ। इनाम (प्राइज)।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।
पुरस्कृत—भू० कृ०[स० पुरस्√कृ+क्त] १. आगे किया हुआ। २ पूजित। ३ स्वीकृत। ४. जिसे पुरस्कार मिला हो।
पुरस्तात्—अव्य०[सं० पूर्व+अस्ताति, पुर—आदेश] १. आगे। सामने। २. पूर्व दिशा मे। ३ पूर्व काल मे। ४. आरभ मे।
पुरस्सर—वि०=पुर सर।
पुरहँड†—पु०[स० पुरोघट या पूर्णघट] मगलकलश।
पुरहत—पुं०[स० पुर-अक्षत] वह अन्न और द्रव्य जो विवाह आदि मगल कार्यो मे पुरोहित और नेगियो को कृत्य करने के प्रारभ मे दिया जाता है। आखत।
पुरहन्—पु०[स० पुर√हन् (हिंसा)+क्विप्] १. विष्णु। २. शिव।
पुरहर†—पु०[सं०पूर्ण-भर] मागलिक पात्र। मगलघट। उदा०—धवल कमल फुल पुरहर भेल।—विद्यापति।
वि०=पूरा।
पुरहा—पु०[स०] १ शिव। २. विष्णु।
†पु०[हि० पुर] वह व्यक्ति जो खेतों की नालियो मे पुरवट का पानी गिराता हो। (पूरब)
पुरही—स्त्री०[?] एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियाँ और जडे औषध के काम आती हैं। हर-जेवडी।
पुरहूत—वि०, पुं०=पुरुहूत।
पुरांगना—स्त्री०[स० पुर-अगना, प०त०] नगर मे रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।
पुरातक—पु०[स० पुर-अतक प०त०] शिव।
पुरा—अव्य०[स० √ पुर (अग्रगति)+का]१ पुराने समय मे। पूर्व या प्राचीन काल मे। २. अब तक। ३ थोडे समय मे।

वि० समस्त पदों के आरंभ मे विशेषण के रूप मे लगकर यह पुराना या प्राचीन का अर्थ देता है। जैसे—पुराकल्प, पुरावृत्त।

स्त्री० १. पूर्व दिशा। पूरब। २ मुरा नामक गंध द्रव्य। ३ छोटी वस्ती। गाँव।

पुराई—स्त्री० [हिं० पूरना-भरना] १. पूरा करने की क्रिया या भाव। २. पुरवट आदि के द्वारा खेतो मे पानी देने की क्रिया। सिंचाई।

क्रि० प्र०—चलना।

३. उक्त का पारिश्रमिक या मजदूरी।

पुरा-कथा—स्त्री० [कर्म० स०] १ प्राचीन काल की वाते। २. इतिहास।

पुराकल्प—पु० [कर्म० स०] १ पूर्व कल्प। पहले का कल्प। २. प्राचीन इतिहास युग। ३ एक प्रकार का अर्थवाद जिसमे प्राचीन काल का कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाय। जैसे—ब्राह्मणो ने इससे हवि पवमान सामस्तोम की स्तुति की थी। ४. आधुनिक भू० विज्ञान के अनुसार उत्तर पाँच कल्पो मे से तीसरा कल्प, जिसमे पृथ्वी तल पर जगह-जगह छिछले समुद्र बनने लगे थे, खूब बाढें आती थी, मछलियाँ, सरीसृप और कीडे-मकोडे उत्पन्न होने लगे थे, और कुछ विशिष्ट प्रकार के बहुत बडे-बड़े वृक्ष होते थे। यह कल्प प्राय वीस से पचास करोड वर्ष पहले हुआ था। पुराजीवकाल। (पेलियो जोइक एरा)

विशेष—शेप चार कल्प ये हैं—आदि कल्प, उत्तर कल्प, मध्य कल्प और नवकल्प।

पुराकालीन—वि० [स० पुरा—काल, कर्म० स०,+ख—ईन] १. प्राचीन काल का। बहुत पुराना। २ इतना अधिक पुराना कि जिसका प्रचलन, प्रयोग या व्यवहार बहुत दिन पहले से उठ गया हो। बहुत पुराने जमाने का। (एन्टीक)

पुराकृत—भू० कृ० [स० स० त०] १. पूर्व काल मे किया हुआ। २ पूर्वजन्म मे किया हुआ।

पु० पूर्वजन्म मे किये हुए वे भले और बुरे काम जिनका फल दूसरे जन्म मे भोगना पड़ता है।

पुरा-कोश—पुं० [स० कर्म० स०] ऐसा शब्दकोश जिसमे प्राचीन भाषाओं के अथवा बहुत पुराने शब्दो का विवेचन होता है। निघण्टु। (लेक्सिकन)

पुराग—वि० [स० पुरा√गम् (जाना)+ड] पूर्वगामी।

पुराचीन—वि० १ =पुराकालीन। २.=प्राचीन।

पुराजीव—पुं०=जीवाश्म। (देखें)

पुराजीवकाल—पु०=पुराकाल।

पुराजैविकी—स्त्री०=जीवाश्म विज्ञान। (देखें)

पुराण—वि० [स० पुरा√ट्यु—अन] [भाव० पुराणता] १ बहुत प्राचीन काल का। बहुत पुराना। पुरातन। जैसे—पुराण पुरुष। २ बहुत अधिक वस्या या वय वाला। वृद्ध। बुड्ढा। ३ जो पुराना होने के कारण जीर्ण-शीर्ण हो गया हो।

पु० १ बहुत पुरानी घटना या उसका वृत्तात। २. प्राय सभी प्राचीन जातियों, देशो और धर्मो मे प्रचलित उन पुरानी और परम्परागत कथा-कहानियो का समूह जिनका थोडा-बहुत ऐतिहासिक आधार होता है, पर जिनके रचयिता अज्ञात कवि होते है। (मिथ) जैसे—चीन, यूनान या रोम के पुराण, जैन या बौद्ध पुराण।

विशेष—ऐसी कथाओ मे प्राय प्राकृतिक घटनाओ, मानव जाति की उत्पत्ति, सृष्टि की रचना, प्राचीन धार्मिक कृत्यों और सामाजिक रीति-रिवाजो के कुछ अत्युक्तिपूर्ण विवरण होते है, तथा देवी-देवताओं और वीर पुरुषो के जीवन-वृत्त होते हैं।

३. भारतीय धार्मिक क्षेत्र मे, उक्त प्रकार के वे विशिष्ट बहुत बडे-बड़े काव्य-ग्रथ, जिनमें प्राचीन इतिहास की बहुत-सी घटनाओ के साथ-साथ सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय, देवी-देवताओ, दानवो, ऋषि-महर्षियो, महाराजाओ, महापुरुषो आदि के गुणो तथा पराक्रमो की बहुत-सी बातें, और अनेक राजवशो की वशावलियाँ आदि भी दी गई हैं, और धार्मिक दृष्टि से जिनकी गणना पाँचवे वेद के रूप मे होती है।

विशेष—हिंदू धर्म मे कुल १८ पुराण माने गये है। प्राय सभी पुराणो मे शेप सभी पुराणो के नाम और श्लोक-सख्याएँ थोडे-बहुत अन्तर से दी हैं। पुराणो के नाम प्राय ये हैं—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु अथवा शिव, लिंग अथवा नृसिंह, गरुड, नारद, स्कद, अग्नि, श्रीमद्भागवत अथवा देवी भागवत, मार्कण्डेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, वामन, वाराह, मत्स्य, कूर्म और ब्रह्माण्ड पुराण। साहित्यकारो के अनुसार पुराणों में पाँच बातें होती हैं— सर्ग अर्थात् सृष्टि, प्रतिसर्ग अर्थात् प्रलय और उसके उपरात फिर से होनेवाली सृष्टि, वशो, मन्वन्तरो और वशानुचरित की बातो का वर्णन, परन्तु कुछ पुराणो मे इस प्रकार की बातो के सिवा राजनीति राजधर्म, प्रजा-धर्म, आयुर्वेद, व्याकरण, शस्त्र-विद्या, साहित्य, अवतारो देवी-देवताओ आदि की कथाएँ तथा इसी प्रकार की और भी बहुत-सी बातें मिलती हैं। धार्मिक हिंदू प्राय विशेष भक्ति और श्रद्धा से इन पुराणों की कथाएँ सुनते है। साधारणत वेद-मत्रो के सग्रहकर्ता वेद-व्यास ही इन सब पुराणो के भी रचयिता माने जाते हैं। इन १८ पुराणो के सिवा १८ उप-पुराण भी माने गये हैं। और जैन तथा बौद्ध-धर्मों मे भी इस प्रकार के कुछ पुराण बने है। आधुनिक विद्वानो का मत है कि भिन्न-भिन्न पुराण भिन्न-भिन्न समयो मे बने हैं। कुछ प्राचीन पुराणो के नष्ट हो जाने पर उनके स्थान पर उन्ही के नाम से कुछ नये पुराण भी बने हैं। और इनमे बहुत-सी बातें समय-समय पर घटती-बढती रही हैं।

४. उक्त ग्रन्थों के आधार पर १८ की सख्या का वाचक शब्द। ५. शिव। ६ कार्षापण नाम का पुराना सिक्का।

पुराण-कल्प—पु० =पुराकल्प। (दे०)

पुराणग—पुं० [स० पुराण√ गम् (जाना)+ड] १ पुराणो की कथाएँ पढने अथवा पढकर दूसरो को सुनानेवाला पंडित या व्यास। २ ब्रह्मा।

पुराणता—स्त्री० [स० पुराण+तल्+टाप्] १ पुराण का भाव। २ बहुत ही प्राचीन होने की अवस्था या भाव। (एन्टिक्विटी)

पुराण-दृष्ट—भू० कृ० [तृ० त०] जो पुराने लोगो द्वारा देखा और माना गया हो।

पुराण-पुरुष—पु० [कर्म० स०] १ विष्णु। २. वृद्ध व्यक्ति।

पुरातत्त्व—पु० [कर्म० स०] वह विद्या जिसमे मुख्यत इतिहास पूर्व-काल की वस्तुओं के आधार पर पुराने अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। प्रत्न विज्ञान। (आर्कियॉलोजी)

पुरातत्वज्ञ—पु० [सं० पुरातत्त्व√ ज्ञा (जानना)+क] वह जो पुरातत्त्व विद्या का ज्ञाता हो। (आर्कियालाजिस्ट)

पुरातन—वि० [स० पुरा+ट्यु—अन, तुट्] १. सब से पहले का। आद्य। २. पुराना। प्राचीन।

पु० विष्णु।

पुरा-तल—पु० [कर्म० स०] तलातल। (दे०)

पुराधिप—पु० [स० पुर-अधिप, ष० त०] पुर अर्थात् नगर का प्रधान शासनिक अधिकारी।

पुराध्यक्ष—पु० [स० पुर-अध्यक्ष, ष० त०] पुराधिप।

पुरान†—वि०=पुराना।

पु०=पुराण।

पुराना—वि० [स० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १. जो प्रस्तुत समय से बहुत पहले का हो। बहुत पूर्व या प्राचीन काल का। जैसे—पुराना जमाना, पुरानी सभ्यता। २. जिसे अस्तित्व मे आये या जीवन धारण किये हुए बहुत समय हो चुका हो। जैसे—पुराना पेड, पुराना बुखार, पुराना मकान आदि। ३. जो बहुत दिनों का हो जाने के कारण अच्छी दशा मे न रह गया हो या ठीक तरह से और पूरा काम न दे सकता हो। जीर्ण-शीर्ण। जैसे—पुराना कपडा, पुरानी चौकी। ४. जिसे किसी काम या बात का बहुत दिनो से अनुभव होता आया हो, अथवा जो बहुत दिनों से अभ्यस्त हो रहा हो। यथेष्ट रूप मे परिपक्व। जैसे—पुराना कारीगर, पुराने पडित या विद्वान्।

पद—**पुराना खुर्राट**=बहुत बडा अनुभवी। **पुराना घाघ**=बहुत बडा चालाक।

५. जो किसी निश्चित या विशिष्ट काल अथवा समय से चला आ रहा हो। जैसे—(क) पाँच सौ वर्ष का पुराना चावल, सौ वर्ष का पुराना पेड। ६ जो उक्त प्रकार का होने पर भी अब प्रचलित न हो। जिसका चलन अब उठ गया हो, या उठता जा रहा हो। जैसे—पुराना पहनावा, पुरानी परिपाटी या प्रथा।

स० [हिं० पूरना का प्रे०] १. पूरने का काम किसी और से कराना। पूरा कराना। २ आज्ञा, निर्देश वचन आदि का निर्वाह या पालन कराना। ३ अवकाश, गड्ढे आदि के प्रसग मे, समतल कराना। भरवाना।

स० [हिं० पूरना] १. पूरा करना। २. निर्वाह या पालन करना। =†अ०=पूरना (पूरा होना)।

पुराराति—पुं० [स० पुर-अराति, ष० त०] शिव।

पुरारि—पु० [स० पुर-अरि, ष० त०] शिव।

पुराल†—पु० [हिं०]=पयाल (धान के डठल)। धान के ऐसे डठल, जिसमे से बीज झाड लिये गये हो। पद।

पुरा-लेख—पु० [कर्म० स०] किसी प्राचीन भवन या स्मृति-चिह्न पर अकित किया हुआ कोई ऐसा लेख, जो किसी प्राचीन लिपि मे अकित हो। (एपिग्राफ)

पुरालेखशास्त्र—पु० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमे प्राचीन काल की लिपियाँ पढने का विवेचन होता है। (एपिग्राफी)

पुरावती—स्त्री० [स० पुर+मतु, वत्व,+ङीप्, दीर्घ] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

पुरावशेष—पु० [स० पुरा-अवशेष, कर्म० स०] बहुत प्राचीन काल की चीजो के टूटे-फूटे या बचे-खुचे अश या अवशेष जिनके आधार पर उस काल की सभ्यता, इतिहास आदि के संबंध मे जानकारी प्राप्त की जाती है। (एन्टिक्विटीज)

पुरावसु—पु० [कर्म० स०] भीष्म।

पुराविद्—वि० [सं० पुरा√विद् (जानना)+क्विप्] पुरानी अर्थात् प्राचीन काल की ऐतिहासिक, सामाजिक आदि बातों को जाननेवाला। पुरातत्त्वज्ञ। (आर्कियालोजिस्ट)

पुरा-वृत्त—पु० [कर्म० स०] प्राचीन काल का कोई वृत्तात।

पुरासाह्—पुं० [स० पुरा√ सह् (सहन करना)+ण्वि] इन्द्र।

पुरासिनी—स्त्री० [स० पुर√ अस् (फेकना)+णिनि+ङीप्] सहदेवी नाम की बूटी।

पुरि—स्त्री० [स०√ पृ+इ] १. पुरी। २ शरीर। ३ नदी।

पुं० १. राजा। २. दशनामी सन्यासियों मे से एक।

पुरिखा†—पु०=पुरखा।

पुरिया—स्त्री० [हि० पूरना] १. बाना फैलाने की नरी। २. ताना।

†स्त्री०=पुडिया।

पुरिश—पु० [स० पुरि√शी सोना+ड, अलुक्स] जीव।

पुरिष—पु०=पुरीष (विष्ठा)।

पुरी—स्त्री० [सं० पुरि+ङीप्] १. छोटा पुर। नगरी। २. जगन्नाथ-पुरी। ३. गढ। दुर्ग। ४. देह। शरीर।

पुरीतत्—स्त्री० [स० पुरी√ तन् (विस्तार)+क्विप्, तुक्] १. हृदय के पास की एक नाडी। २. आँत।

पुरीमोह—पु० [स० पुरी√ मुह् (मुग्ध होना)+णिच्+अण्] धतूरा।

पुरीष—पुं० [स०√पृ+ईषन्, कित्] १. वि[illegible]। मल। गू। २. जल। पानी।

पुरीषण—पु० [सं० पुरी√ईष् (त्याग)+ल्युट्—अन] विष्ठा।

पुरीषम—पु० [स० पुरीष √मा (शब्द)+क] १. मल। विष्ठा। २. गदगी। कूडा।

पुरीष-स्थान—पु० [ष० त०] मल त्याग करने का स्थान। जैसे—खुड्डी पाखाना, सडास आदि।

पुरीषाधान—पु० [स० पुरीष-आधान, ष० त०] मलाशय।

पुरीषोत्सर्ग—पु० [स० पुरीष-उत्सर्ग, ष० त०] मल-त्याग।

पुरु—वि० [स०√पृ (पालन, पोषण)+कु, उत्व] बहुत अधिक। विपुल।

पु० १. देवलोक। स्वर्ग। २ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४. फूलो का पराग। ५ देह। शरीर। ६. पुराणानुसार एक देश का नाम। ७. छठवे चन्द्रवशी राजा, जो नहुष के पोते तथा ययाति के पुत्र थे। अपने पाँचो भाइयो मे से इन्होने अपने पिता ययाति के माँगने पर उन्हे अपना यौवन और रूप दे दिया, जिन्हे हजार वर्षों तक भोगने के बाद ययाति ने फिर इन्हे लौटा दिया था और अपने राज-सिहासन का अधिकारी बनाया था। इन्ही के वश मे दुष्यन्त और भरत हुए थे। जिनके वशज आगे चलकर कौरव लोग हुए। ८. पजाब का एक प्रसिद्ध राजा जो ई० पू० ३२७ मे सिकन्दर से लडा था।

पुरुकुत्स—पु० [स०] एक राजा जो मांधाता का पुत्र और मुचुकुद का भाई

था और जो नर्मदा नदी के आस-पास के प्रदेश पर राज्य करता था। इसने नाग कन्या नर्मदा के साथ विवाह किया था।
पुरुखा—पु०=पुरुष।
पुरुजित्—पु० [सं० पुरु√जि (जीतना)+क्विप्] १. कुतिभोज का पुत्र जो अर्जुन का मामा था। २. विष्णु।
पुरुदशक—पु० [स० ब० स०, कप्] हस।
पुरुदंशा (शस)—पु० [स० पुरु√दश् (काटना)+असुन्] इद्र।
पुरुदस्म—पु० [स० पुरु√दस् (काटना)+मन्] विष्णु।
पुरुव—पु०=पूर्व (दिशा या देश)।
पुरुभोजा (जस्)—पु० [सं० पुरु√भुज् (खाना)+असुन्] वादल।
पुरुमित्र—पु० [स०] १ एक प्राचीन राजा जिसका नाम ऋग्वेद मे आया है। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
पुरुमीढ़—पु० [स०] अजमीढ का छोटा भाई।
पुरुष—पु० [स०√पुर् (आगे जाना)+कुषण्] १ मानव जाति का नर प्राणी। आदमी। मर्द। (स्त्री से भिन्न) २ उक्त प्रकार का वह व्यक्ति जिसमे विशिष्ट शक्ति या सामर्थ्य हो और जो वीरता तथा साहस के काम कर सकता हो, जैसे—तुम्हे पुरुषो की तरह मैदान मे आना चाहिए। ३. राज्य की ओर से सार्वजनिक कार्यों के लिए नियुक्त किया हुआ कोई अधिकारी। राज-पुरुष। ४ ऊँचाई की एक नाप जो किसी सामान्य वयस्क मनुष्य की ऊँचाई के बराबर होती है। पुरसा। ५. शरीर मे रहनेवाली आत्मा या जीव। ६ वह प्रधान सत्ता, जो सारे विश्व मे आत्मा के रूप मे वर्तमान है। विश्वात्मा।
विशेष—साख्यकार ने इसे प्रकृति से भिन्न एक ऐसा चेतन मूल तत्त्व या पदार्थ माना है, जिसमे कभी कोई परिणाम या विकार नही होता, और जो स्वय कुछ भी न करने और सबसे अलग रहने पर भी प्रकृति के सान्निध्य से ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है।
७ किसी व्यक्ति की ऊपरवाली पीढी या पीढियाँ। पूर्व पुरुष। पूर्वज। उदा०—सो सठ कोटिक पुरुष समेता। वसहिं कलप सत नरक-निकेता।—तुलसी।
८. स्त्री का, पति या स्वामी। ९ व्याकरण मे, वक्ता की दृष्टि से किया जानेवाला सर्वनामो का वर्गीकरण।
विशेष—इसके उत्तम पुरुष, प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष, ये तीन विभाग है। वक्ता अपने सबध मे जिस सर्वनाम का उपयोग करता है, वह उत्तम पुरुष कहलाता है। जैसे—मैं या हम। वह जिससे कोई बात-चीत करता है, उसके सबध में प्रयुक्त होनेवाले विशेषण मध्यम पुरुष कहलाते है। जैसे—तू, तुम या आप। किसी तीसरे अनुपस्थित या दूरस्थ व्यक्ति या पदार्थ के लिए प्रयुक्त होनेवाले सर्वनामों की गणना प्रथम पुरुष मे होती है। जैसे—वह या वे। कुछ वैयाकरण अँगरेजी व्याकरण के अनुकरण पर इन्हे क्रमात प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष और तृतीय पुरुष भी कहते है। हमारी भाषा मे इन पुरुषो का परिणाम या प्रभाव क्रिया-पदों पर भी होता है। जैसे—मै जाता हूँ, तुम जाते हो, वह जाता है आदि।
१०. विष्णु। ११ सूर्य। १२ शिव। १३. पारा। १४ गुग्गुल। १५ पुन्नाग। १६ घोड़े का अपने पिछले दोनो पैरों पर खड़ा होना। पुरुषक। (देखे)
वि० [स०] १. तीखा। तेज। जैसे—पुरुष पवन। २. नर। 'स्त्री' का विपर्याय। जैसे—पुरुष मकर। ३ जोरदार। बलवान।
पुरुषक—पु० [स० पुरुष√कै (भासित होना)+क] घोड़े की वह स्थिति जिसमे वह अपने दोनों अगले पैर ऊपर उठाकर दोनो पिछले पैरो पर खड़ा हो जाता है। अलफ। सीख-पाँव।
विशेष—लोक मे इसे 'घोड़े का जमना' कहते हैं।
पुरुष-कार—पुं० [ष० त०] १. पुरुषार्थ। पौरुष। २ उद्योग।
पुरुष-केशरी—पु० [उपमि० स०] १. सिंह के समान वीर पुरुष। बहुत वडा वीर। २ नृसिंह अवतार।
पुरुष-गति—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्रकार का साम।
पुरुष-ग्रह—पुं० [सं० ष० त०] ज्योतिष के अनुसार मगल, सूर्य और बृहस्पति, ये तीन ग्रह।
पुरुषघ्नी—स्त्री० [स० पुरुष√हन् (हिंसा)+टक्+ङीप्] पति की हत्या करनेवाली स्त्री।
पुरुषत्व—पुं० [सं० पुरुष+त्व] पुरुष होने की अवस्था, गुण या भाव।
पुरुष-दतिका—स्त्री० [स० ब० स०, कप्+टाप, इत्व] मेदा नामक जडी।
पुरुषदघ्न—पु० [स० पुरुष+दघ्नच्]=पुरुषद्वयस्।
पुरुषद्वयस्—पुं० [सं० पुरुष+द्वयसच्] ऊँचाई मे पुरुष के बराबर।
पुरुष-द्विष्—पुं० [स० पुरुष√द्विष् (शत्रुता करना)+क्विप्] विष्णु का शत्रु।
पुरुषद्वेषिणी—स्त्री० [स० पुरुष-द्विष्+णिनि+ङीप्] अपने पति से द्वेष करनेवाली स्त्री।
पुरुष-नक्षत्र—पुं० [ष० त०] हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य, ये नक्षत्र। (ज्यो०)
पुरुषनाय—पु० [स० पुरुष√नी (ले जाना) +अण्] १. सेनापति। २ राजा।
पुरुष-पशु—पु० [उपमि० स०] पशुओ जैसा आचरण करनेवाला व्यक्ति।
पुरुष-पुंगव—पु० [उपमि० स०] श्रेष्ठ पुरुष।
पुरुष-पुडरीक—पु० [उपमि० स०] १ श्रेष्ठ पुरुष। २ जैनियो के मतानुसार नौ वासुदेवो मे सातवे वासुदेव।
पुरुष-पुर—पु० [ष० त०] आधुनिक पेशावर का पुराना नाम। किसी समय यह गाधार की राजधानी थी।
पुरुष-प्रेक्षा—स्त्री० [ष० त०] वह खेल या तमाशा जो केवल पुरुषो के देखने योग्य हो, और जिसे देखना स्त्रियो के लिए वर्जित हो।
पुरुषमात्र—वि० [स० पुरुष+मात्रच्] मनुष्य की ऊँचाई के बराबर का।
पुरुषमानी (नित्)—वि० [स० पुरुष√मन् (समझना)+णिनि] अपने को वीर समझनेवाला।
पुरुष-मुख—वि० [ब० स०] [स्त्री० पुरुषमुखी] पुरुष के समान मुख वाला।
पुरुष-मेध—पु० [मध्य० स०] एक वैदिक यज्ञ, जिसमे पुरुष अर्थात् मनुष्य की बलि दी जाती थी। यह यज्ञ करने का अधिकार केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय को था।
पुरुष-राशि—स्त्री० [ष० त०] मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुभ नामक विषम राशियो मे से हर एक। (ज्यो०)

पुरुष-वर—पु० [स० त०] १. श्रेष्ठ पुरुष। २ विष्णु।

पुरुषवाद—पु० [स०] प्राचीन भारत मे एक नास्तिक दार्शनिक मत, जो ईश्वर को नही, बल्कि पुरुष और उसके पौरुष को ही सर्वप्रधान मानता था।

पुरुषवादी—वि० [स०] पुरुषवाद-सबधी।
पु० पुरुषवाद का अनुयायी व्यक्ति।

पुरुष-वार—पु० [ष० त०] रवि, मगल, बृहस्पति और शनि इन चार वारो मे हर एक। (ज्यो०)

पुरुषवाह—पु० [स० पुरुष√वह् (ढोना)+अण्] गरुड।
पु० [ब० स०] कुबेर।

पुरुष-व्याघ्र—पु० [उपमि० स०] सिंह के समान बलवाला व्यक्ति। शेर के समान पराक्रमवाला। पुरुष-सिंह।

पुरुष-शार्दूल—पु० [उपमि० स०] पुरुष-व्याघ्र। (दे०)

पुरुष-शीर्ष(क)—पु० [ष० त०] काठ का बना हुआ मनुष्य का सिर, जिसे चोर सेंध मे यह देखने को डालते थे कि वह प्रवेश योग्य है या नही।

पुरुष-सिंह—पु० [उपमि० स०] ऐसा व्यक्ति जो पराक्रम या वीरता के विचार से पुरुषो मे सिंह के समान हो। परम वीर पुरुष।

पुरुष-सूक्त—पु० [मध्य० स०] ऋग्वेद का एक अति पवित्र तथा प्रसिद्ध माना जानेवाला सूक्त जो 'सहस्रशीर्षा' से आरभ होता है।

पुरुषाग—पु० [पुरुष-अग, ष० त०] पुरुष की लिंगेंद्रिय। शिश्न।

पुरुषातर—पु० [पुरुष-अतर, मयू० स०] अन्य व्यक्ति।

पुरुषाद—पु० [स० पुरुष√अद् (खाना)+अण्] १. मनुष्यो को खाने वाला, अर्थात् राक्षस। २ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य के अधिकार मे माना गया है।

पुरुषादक—पु० [स० पुरुषाद+कन्] १ मनुष्यो को खानेवाला अर्थात् राक्षस। २ कल्मापपाद का एक नाम।

पुरुषाद्य—पु० [पुरुष-आद्य, ष० त०] १. जिनो के प्रथम आदिनाथ। (जैन) २. विष्णु। ३ राक्षस।

पुरुषाधम—पु० [पुरुष-अधम, स० त०] अधम पुरुष। हेय व्यक्ति।

पुरुषानुक्रम—पु० [पुरुष-अनुक्रम, ष० त०] [वि० पुरुषानुक्रमिक] १. पुरखो की अनेक पीढियो से चली आई हुई परपरा। २. एक के बाद एक पीढी का क्रम।

पुरुषानुक्रमिक—वि० [पुरुष-आनुक्रमिक, ष० त०] जो पुरुषानुक्रम से चला आया हो, या चला आ रहा हो। जो पूर्वजो के समय से हर पीढी मे होता आया हो। वशानुक्रमिक। (हेरिडेटरी)

पुरुषायित—क्रि० वि० [स० पुरुष+क्यड०+क्त] पुरुषो या मर्दो की तरह। वीरतापूर्वक। बहादुरी से।
पु० १. वीर अथवा सुयोग्य पुरुषो का-सा आचरण। २. दे० 'पुरुषायित-बध।'

पुरुषायित-बध—पुं० [कर्म० स०] कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार की सभोग-मुद्रा, जिसमे स्त्री ऊपर और पुरुष नीचे रहता है। साहित्य मे इसे विपरीत रति कहते हैं।

पुरुषायण—पु० [पुरुष-अयन, ब० स०] प्राणादि षोडश कला। (प्रश्नोपनिषद्)

पुरुषायुष—पुं० [पुरुष-आयुस्, ष० त०, अच्] पुरुष की आयु जो सामान्यत १०० वर्षों की मानी जाती है।

पुरुषारथ—पु०=पुरुषार्थ।

पुरुषार्थ—पुं० [पुरुष-अर्थ, ष० त०] १. वह मुख्य अर्थ उद्देश्य या प्रयोजन, जिसकी प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना पुरुष या मनुष्य के लिए आवश्यक और कर्त्तव्य हो। पुरुष के उद्देश्य और लक्ष्य का विषय। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति की दृष्टि से ये चार प्रकार के होते है।

विशेष—सांख्य-दर्शन मे सब प्रकार के दुःखो से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करना ही परम पुरुषार्थ है। परवर्ती पौराणिको ने धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना ही पुरुषार्थ माना है, और इसी लिए उक्त चारो बातो की गिनती उन मुख्य पदार्थो मे की जाती है जिनकी ओर सदा मनुष्य का ध्यान या लक्ष्य रहना चाहिए।

२. वे सब विशिष्ट उद्योग तथा प्रयत्न, जो अच्छा और सशक्त मनुष्य करता है अथवा करना अपना कर्त्तव्य समझता है। पुरुषकार। ३. पुरुष मे होनेवाली शक्ति या सामर्थ्य। मनुष्योचित बल। पौरुष।

पुरुषार्थी (र्थिन्)—वि० [सं० पुरुषार्थ+इनि] १. पुरुषार्थ करनेवाला। २ उद्योगी। ३ परिश्रमी। ४. बली।
पु० पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए हिंदू और सिक्ख शरणार्थियो के लिए सम्मान-सूचक शब्द।

पुरुषावतार—पु० [पुरुष-अवतार, ष० त०] व्यापक ब्रह्म का पुरुष या मनुष्य के रूप में होनेवाला वह अवतार, जिसमे वह शुद्ध सत्त्व को आधार बनाकर परमधाम से इस लोक मे आविर्भूत होता है।

पुरुषाशी (शिन्)—पु० [स० पुरुष√अश् (खाना)+णिनि] [स्त्री० पुरुषाशिनी] मनुष्य (खानेवाला) राक्षस।

पुरुषी—स्त्री० [स० पुरुष+ङीप्] स्त्री।

पुरुषोत्तम—[स० पुरुष-उत्तम, स० त०] जो पुरुषो मे सब से उत्तम या सर्वश्रेष्ठ हो।
पु० १. वह जो पुरुषो मे सब से उत्तम या सर्व-श्रेष्ठ हो। श्रेष्ठ पुरुष। २ धर्मशास्त्र के अनुसार ऐसा निष्पाप व्यक्ति, जो शत्रु और मित्र सब से उदासीन रहे। ३ विष्णु। ४. जगन्नाथ की मूर्ति। ५. जगन्नाथ का मन्दिर। ६ जैनियो के एक वासुदेव का नाम। ७. श्रीकृष्ण। ८. ईश्वर। ९. चान्द्र गणना के अनुसार होनेवाला अधिक मास। मलमास।

पुरुषोत्तम-क्षेत्र—पु० [ष० त०] जगन्नाथपुरी।

पुरुषोत्तम-मास—पु० [ष०त०] चान्द्र गणना के अनुसार होनेवाला अधिक मास। मलमास।

पुरुहूत—वि० [स० ब० स०] १. जिसका आह्वान बहुतों ने किया हो। २. जिसकी बहुत से लोगों ने स्तुति की हो।
पु० इद्र।

पुरु-हूति—स्त्री० [सं० ब० स०] दाक्षायणी।
पु० विष्णु।

पुरूरवा (वस्)—पु० [स० पुरु√रु (शब्द करना)+अस, दीर्घ] १ एक प्राचीन राजा, जिसे ऋग्वेद मे इला का पुत्र कहा गया है। ये चंद्र-

वश के प्रतिष्ठाता थे। राजा पुरुरवा और उर्वशी अप्सरा की प्रेम-कथा प्रसिद्ध है। २. विश्वदेव। ३. एक देवता, जिनका पूजन पार्वण श्राद्ध मे होता है।
वि० अनेक प्रकार के रव या ध्वनियाँ प्रकट करनेवाला।
पुरेया—पु० [हिं० पूरा+हथा] हल की मूठ।
पुरेन—स्त्री० [स० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २ कमल।
पुरेभा=स्त्री०=कुरेभा (ऐसी गाय जो वर्ष मे दो बार बच्चा देती है)।
पुरैन—स्त्री०=पुरेन।
पुरैना*—स० [हिं० पूरा] पूरा करना। उदा०—जब पूरैंवो ठानि विज्ञ दैवज्ञ बुलाए। रत्नाकर।
अ०=पूरा होना।
स्त्री०=पुरइन (कमल)।
पुरोगंता (तृ)—वि०, पु० [स०पुरस्√गम् (जाना)+तृच्]=पुरोगामी।
पुरोगत—वि० [स० पुरस्√गम्+क्त] [भाव० पुरोगति] १. जो सामने हो। २. जो पहले गया हो। पुराना।
पुरोगति—स्त्री० [स० पुरस्√गम्+क्तिन्] १. पुरोगत होने की अवस्था या भाव। २ अग्रगामिता।
पु० [व० स०] कुत्ता।
वि० आगे-आगे चलनेवाला।
पुरोगमन—पु० [स० पुरस्√गम्+ल्युट्—अन] १ आगे की ओर चलना या बढना। २. उन्नति, वृद्धि आदि की ओर अग्रसर या प्रवृत्त होना। (प्रोग्रेशन)
पुरोगामी (मिन्)—वि० [स० पुरस्√गम्+णिनि] १ आगे आगे चलनेवाला। अगुआ। अग्रगामी। (पायोनियर) २. बराबर उन्नति करता और आगे बढता हुआ। ३ किसी विषय मे उदार विचार रखने और अग्रसर रहनेवाला। (प्रोग्रेसिव)
पुं० १. नायक। २. अग्रदूत। ३. कुत्ता।
पुरोचन—पु० [स०] दुर्योधन का एक मित्र, जो पांडवो को लाक्षागृह में जलाने के लिए नियुक्त किया गया था।
पुरोजव—वि० [स० पुरस्-जव, ब० स०] १. जिसके सामनेवाले भाग मे वेग हो। २ आगे बढनेवाला।
पु० पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खडो मे से एक खड।
पुरोडा—पु० [स० पुरस्√दाश् (दान)+घञ्, डत्व] १. जौ के आटे की बनी हुई वह टिकिया, जो कपाल मे पकाई जाती थी। यज्ञो में इसमें से टुकडा काटकर देवताओं के लिए मंत्र पढकर आहुति दी जाती थी। २ उक्त आहुति देने के समय पढा जानेवाला मत्र। ३. उक्त का वह अश जो हवि देने के बाद बच रहता था। ४. यज्ञ मे दी जानेवाली आहुति या हवि। ५. सोमरस।
पुरोत्सव—पु० [स० पुर-उत्सव, मध्य० स०] पूरे पुर या नगर में सामूहिक रूप से मनाया जानेवाला उत्सव।
पुरोदर्शन—पु० [स० पुरस्-दर्शन, ब० स०] १ सामने की ओर से दिखाई देनेवाला रूप। २. वास्तु-रचना का वह चित्र, जो उसके सामनेवाले भाग के स्वरूप का परिचायक हो। (फ्रन्ट एलिवेशन)
पुरोद्भवा—स्त्री० [स० पुर√उद्√भू (उत्पन्न होना)+अच्+टाप्] महामेदा।
पुरोद्यान—पु० [स० पुर-उद्यान, ष० त०] पुर या नगर का मुख्य उद्यान या बाग।
पुरोध—पु० =पुरोधा।
पुरोधा (धस्)—पु० [सं० पुरस्√धा (धारण)+असि] पुरोहित।
पुरोधानीय—पु० [सं० पुरस्√धा+अनीयर्] पुरोहित।
पुरोनुवाक्या—स्त्री० [स० पुरस्-अनुवाक्या, स० त०] १. यज्ञो की तीन प्रकार की आहुतियो मे से एक। २ उक्त आहुति के समय पढी जानेवाली ऋचा।
पुरोभाग—पुं० [सं० पुरस्-√भज्+घञ्] १ अग्रभाग। अगला हिस्सा। २. दोष निकालने या बतलाने की क्रिया।
पुरोभागी (गिन्)—वि० [स० पुरस्√भज्+णिनि] [स्त्री० पुरोभागिनी] १. आगे की ओर रहने या होनेवाला। अग्र भाग का। २ जो गुणो को छोडकर केवल दोष देखता हो। छिद्रान्वेषी। दोषदर्शी।
पुरोरवस्—पुं० [स०=पुरुरवस्, पृषो० सिद्धि]=पुरुरवा।
पुरोवात—पुं० [स० पुरस्-वात, मध्य० स०] पूर्व दिशा से आनेवाली हवा। पुरवा।
पुरोवाद—पु० [स० पुरस्-वाद, कर्म० स०] पूर्व कथन।
पुरोहित—वि० [स० पुरस्√धा+क्त, हि—आदेश] १ आगे या सामने रखा हुआ। २ किसी काम या बात के लिए नियुक्त किया हुआ।
पु० [स्त्री० पुरोहितानी] १ प्राचीन भारत मे वह प्रधान याजक, जो अन्य याजको का नेता बनकर यजमान से गृह-कर्म, श्रौत-कर्म तथा धार्मिक सस्कार आदि कराता था। २. आज-कल कर्मकाड आदि जाननेवाला वह ब्राह्मण, जो अपने यजमान के यहाँ मुडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सस्कार कराता तथा अन्य अवसरो पर उनसे दान, दक्षिणा आदि लेता है। ३ साधारण लोक-व्यवहार मे, किसी जाति या धर्म का वह व्यक्ति, जो दूसरो से धार्मिक कृत्य, संस्कार आदि कराता हो। (प्रीस्ट)
पुरोहित-तत्र—पु० [ष० त०] ऐसा तत्र या शासन-प्रणाली, जिसमे पुरोहितो के मत का ही प्राधान्य हो। (हायरार्की)
पुरोहिताई—स्त्री० [स० पुरोहित+आई (प्रत्य०)] पुरोहित का काम, पद या भाव। यजमानो को धार्मिक कृत्य आदि कराने का काम या वृत्ति।
पुरोहितानी—स्त्री० [स० पुरोहित] पुरोहित की स्त्री।
पुरोहिती—वि० [हिं० पुरोहित] पुरोहित-सम्बन्धी। पुरोहित का
स्त्री०=पुरोहिताई।
पुरौ*—पु०=पुरवट।
पुरौती†—स्त्री० [हिं० पुरवना=पूरा करना] कमी पूरी करना। पूर्ति।
पुरौनी—स्त्री० [हिं० पूरना=पूरा करना] १ पूरा करना। २ समाप्ति।

पुर्बला—वि० [हिं० पुरबला] १ पहले का। २. पूर्व जन्म का।
पुर्मा—पु०=पुरमा।
पुर्मी—स्त्री० [फा०] पुरमी। (दे०)
पुर्लंदा—पु०=पुलिंदा।
पुल—पु० [फा०] १. पानी, नदी-नालों, रेलपथों आदि के ऊपर आर-पार पाटकर बनाई हुई वह वास्तु रचना, जिस पर से होकर गाड़ियाँ और आदमी उधर से इधर आते जाते हैं। सेतु।
विशेष—मूलतः पुल प्रायः नदियाँ पार करने के लिए नावों की शृंखला से बनते थे। बाद में पीपों आदि के आधार पर अथवा बड़े-बड़े ऊँचे खंभों पर भी बनने लगे।
२. लाक्षणिक रूप में, किसी चीज या बात का कोई बहुत लंबा क्रम या सिलसिला। झड़ी। तांता। जैसे—किसी की तारीफ का पुल बाँधना; बातों का पुल बाँधना।
क्रि० प्र०—बाँधना।
मुहा०—(किसी चीज या बात का) पुल टूटना—इतनी अधिकता या भरमार होना कि मानों उसकी गति को रोक रखनेवाला बंधन टूट गया हो। जैसे—मेला देखने के लिए आदमियों का पुल टूट पड़ा था।
३. लाक्षणिक अर्थ में, कोई ऐसी चीज, जो दो या कई पक्षों के बीच में रहकर उन्हें मिलाये रखती हो। माध्यम।
पु० [सं०√पुल् (ऊँचा होना)+क] १. पुलक। रोमांच। २. शिव का एक अनुचर।
वि० १. बहुत अधिक। विपुल। २. बहुत बड़ा, विशाल या विस्तृत।
पुलक—पु० [सं० पुल+कन्] १. प्रेम, भय, हर्ष आदि मनोविकारों की प्रबलता के समय शरीर में होनेवाला रोमांच। त्वककंप।
विशेष—पुलक और रोमांच के अंतर के लिए दे० 'रोमांच' का विशेष।
२. मन में होनेवाली वह कामना या वासना, जो कोई काम करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करती हो। (अर्ज) जैसे—समांग-पुलक। ३. एक प्रकार का मोटा अन्न। ४. एक प्रकार का नगीना या रत्न, जिसे चुन्नी, महताब और याकूत भी कहते हैं। ५. एक प्रकार का कीड़ा जो शरीर के गले हुए अंगों में उत्पन्न होता है। ६. जवाहिरात या रत्नों का एक प्रकार का दोष। ७. हाथी का खाद्य। ८. हरताल। ९. प्राचीन काल का एक प्रकार का मद्यपात्र। १०. एक प्रकार की राई। ११. एक प्रकार का कंदा १२. एक गंधर्व का नाम।
पुलकना—अ० [सं० पुलक+ना (प्रत्य०)] प्रेम, हर्ष आदि से पुलकित होना।
पुलक-बंध—पु० [सं० ब० स०] चुनरी। चुंदरी।
पुलकांग—पुं० [सं० पुलक-अंग, ब० स०] वरुण का पाश।
पुलकाई*—स्त्री०=[सं० पुलक] पुलकित होने की अवस्था या भाव। पुलक।
पुलकालय—पु० [सं० पुलक-आलय, ब० स०] कुबेर का एक नाम।
पुलकालि—[सं० पुलक-आलि, ष० त०]=पुलकावलि।
पुलकावलि—स्त्री० [सं० पुलक-आवलि, ष० त०] हर्ष से प्रफुल्ल रोम। हर्षजन्य रोमांच।
पुलकित—भू० कृ० [सं० पुलक+इतच्] प्रेम, हर्ष आदि के कारण जिसे पुलक हुआ हो, या जिसके रोएँ खड़े हो गये हों। प्रेम या हर्ष से गद्गद। रोमांचित।

पुलकी (किन्)—वि० [सं० पुलक+इनि] १. जिसे पुलक हुआ हो। पुलकित। २. जो प्रेम, हर्ष आदि में गद्गद और रोमांचित हुआ हो।
पुं० १. कदंब। २. धारा कदंब।
पुलकोद्गम, पुलकोद्भेद—पुं० [सं० पुलक-उद्गम, पुलक-उद्भेद, ष० त०] रोम खड़े होना। रोमहर्षण।
पुलट—स्त्री०=पलट।
पुलटिस—स्त्री० [अं० पोल्टिस] फोड़ों आदि को पकाने या बहाने के लिए उस पर चढ़ाया जानेवाला अलसी, रेंड़ी आदि का मोटा लेप।
क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँधना।
पुलना—अ० [देश०] चलना। उदा०—जैसी जड़ मनमाँहि, पैंजर जड़ तैसी, पुलइ।—ढो० मा०।
पुलपुल—स्त्री० [अनु०] किसी फूली हुई चीज के बार-बार या रह-रहकर थोड़ा पिचकने और फिर उभरने या फूलने की क्रिया या भाव।
वि०=पुलपुला।
पुलपुला—वि० [अनु०] १. जो अन्दर से इतना ढीला और मुलायम हो कि जरा-सा दबाने से उसका तल सहज में कुछ दब या धँस जाय। जैसे—ये आम पककर पुलपुले हो गये हैं। २. दे० 'पोला'।
पुलपुलाना—स० [हिं० पुलपुलाना] [भाव० पुलपुलाहट] १ किसी मुलायम चीज को मुँह में लेकर या हाथ में दबाकर पुलपुला करना। जैसे—आम पुल-पुलाना।
अ० पुलपुला होना। जैसे—आम पुलपुला गया है। (पूरब)
पुलपुलाहट—स्त्री० [हिं० पुलपुला+हट (प्रत्य०)] पुलपुले होने की अवस्था, गुण या भाव। पुलपुलापन।
पुलस्त—पु०=पुलस्त्य।
पुलस्ति—पुं० [सं० पुल√अस् (जाना)+ति, शक० पररूप]=पुलस्त्य।
पुलस्त्य—पु० [सं० पुलस्ति+यत्] १. ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में होती है। २. शिव का एक नाम।
पुलह—पु० [सं०] १ सप्तर्षियों में से एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्रों और प्रजापतियों में थे। २. शिव का एक नाम।
पुल्हना*—अ०=पलुहना।
पुलाक—पुं० [सं०√पुल्+क्लाक, नि० सिद्धि] १ एक प्रकार का कदन्न। अँकरा २. भात। ३. माँड। ४. पुलाव। ५ अल्पता। ६. क्षिप्रता। जल्दी।
पुलाकी (किन्)—पु० [सं० पुलाक+इनि] वृक्ष।
पुलायित—पु० [सं० पुल+क्यङ्+क्त] घोड़े का सरपट दौड़ना।
पुलाव—पुं० [सं० पुलाक, मि० फा० पलाव] एक प्रकार का व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है। मांसोदन। २ पकाये हुए मीठे चावल।
पुलिंद—पुं० [सं०√पुल्+किन्दच्] १ भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति। २ उक्त जाति के बसने का देश। ३. उक्त जाति का व्यक्ति।
पुलिंदा—स्त्री० [सं०] एक छोटी नदी, जो ताप्ती में मिलती है। महाभारत में इसका उल्लेख है।
पुं० [सं० पुल=ढेर; या हिं० पूला] कागज, कपड़े आदि से बँधी बड़ी गठरी।

आदि छपवाकर वेचने तथा प्रचारित करने का व्यवसाय। ४ प्रकाशित की जानेवाली कोई पुस्तक। (पब्लिकेशन, अतिम दोनो अर्थो के लिए) ५ विष्णु।

प्रकाश-परावर्तक—पु० [प० त०] शीशे आदि का वह टुकडा या उससे युक्त वह उपकरण जो कही से प्रकाश-ग्रहण कर उसे अन्य दिशा मे ले जाकर फेकता हो। (रिफ्लेक्टर)

प्रकाशमान—वि० [स० प्र√काश्+शानच्] १ चमकता हुआ। चमकीला। प्रकाशयुक्त। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

प्रकाश-रसायन—पु० [प० त०] रसायनशास्त्र का वह अग या शाखा जिसमे प्रकाश की किरणों का विश्लेषण और विवेचन होता है। (फोटो कैमिस्ट्री)

प्रकाश-वर्ष—पुं० [सं० मध्य० स० ?] वहुत अधिक दूर के आकाशस्थ पिंडो या तारो की दूरी मापने का एक मान जो प्रकाश की गति के विचार से स्थिर किया गया है और जो उतनी दूरी का सूचक है जितना प्रकाश एक वर्ष मे पार करता है। (लाइट ईयार) जैसे—अमुक तारा पृथ्वी से दस प्रकाश वर्षो की दूरी पर है।

विशेष—प्रकाश की गति प्रति सेकेंड १८६००० मील होती है। अत प्रकाश वर्ष की दूरी लगभग ६० खरब ६००००००००००० मील होती है।

प्रकाश-वियोग—पु० [स० मध्य० स०] केशव के अनुसार वियोग के दो भेदो मे से एक। प्रेमी और प्रेमिका का ऐसा वियोग जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाश-संयोग—पु० [स० मध्य० स०] केशव के अनुसार सयोग के दो भेदो मे से एक। प्रेमी और प्रेमिका का ऐसा सयोग जो सब पर प्रकट हो।

प्रकाश-सश्लेषण—पु० [प० त०] इस वात का सश्लेषण या विवेचन कि प्रकाश पडने पर जल, वायु आदि किस प्रकार विकृत होकर दूसरे तत्त्वो मे रासायनिक परिवर्तन उत्पन्न करते है। (फोटो-सिन्थेसिस)

प्रकाश-स्तंभ—पु० [प० त० या मध्य० स०] वह ऊँची इमारत विशेषत समुद्र मे वना हुआ वह स्तभ जहाँ से वहुत प्रवल प्रकाश निकलकर चारो ओर फैलता तथा जिससे जलयानो, वायुयानो आदि का रात के समय पथ-प्रदर्शन होता है। (लाइट हाउस)

प्रकाशात्मा (त्मन्)—पु० [स० प्रकाश-आत्मन्, व० स०] १ सूर्य। २. विष्णु।

प्रकाशित—भू० कृ० [स० प्र√काश्+क्त] १ प्रकाश से युक्त किया अथवा प्रकाश मे लाया हुआ। २ (ग्रन्थ या लेख) जो छापकर सबके सामने लाया गया हो। ३ जो प्रकाश निकलने या पडने से चमक रहा हो। चमकता हुआ।

प्रकाशी (शिन्)—वि० [स० प्रकाश+इनि] [स्त्री० प्रकाशिनी] १. जिसमे प्रकाश हो। चमकता हुआ। २ प्रकाश करनेवाला। जैसे—आत्म-प्रकाशी।

प्रकाश्य—वि० [स० प्र√काश्+ण्यत्] प्रकाश मे आने या लाये जाने के योग्य।

अव्य० १ प्रकट या स्पष्ट रूप मे। २ (नाटक मे कथन) जोर से वोलते और सबको सुनाते हुए। 'स्वगत' का विपर्य्याय।

प्रकास†—पु०=प्रकाश

प्रकासना—स० [स० प्रकाश] प्रकाश से युक्त करना। चमकाना। अ० प्रकाशित होना।

प्रकिरण—पु० [स०प्र√कृ (विक्षेप)+ल्युट्—अन] १ फैलाना। विखेरना। २ मिश्रण। मिलाना।

प्रकीर्ण—वि० [स० प्र√कृ+क्त] १. फैला हुआ। विस्तृत। २ इधर-उधर यो ही छितराया या विखरा हुआ। ३ मिला हुआ। मिश्रित। ४ जिसमे अनेक प्रकार की चीजे मिली हो। (विशेषत ऐसा आय-व्यय जो किसी एक निश्चित मद मे न हो, वल्कि इधर-उधर की फुटकर मदों का हो। (मिस्लेनिअस) ५ पागल। विक्षिप्त। ६ उच्छृखल। उद्दड। ७ क्षुब्ध।

पु० [स०] १ पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। २ फुटकर कविताओ का सग्रह। ३ चँवर। ४ ऐसा करज जिसमे से दुर्गंध निकलती हो। पूति। करज।

प्रकीर्णक—पु० [स० प्रकीर्ण+कन्] १ चँवर। २ ग्रन्थ का अध्याय या प्रकरण। ३ फैलाव। विस्तार। ४ ऐसा वर्ग या सग्रह जिसमे अनेक प्रकार की ऐसी वस्तुओ का मेल हो जो किसी विशिष्ट वर्ग या शीर्पक मे न रखी जा सकती हो। फुटकर। ५ वह छोटा-मोटा पाप जिसके प्रायश्चित का उल्लेख किसी धर्म-ग्रन्थ मे न हो।

प्रकीर्णकेशी—स्त्री० [स० व० स० +ङीप्] दुर्गा।

प्रकीर्णन—पु० [स०][भू० कृ० प्रकीर्णत] चीजें इधर-उधर छितराना या विखेरना (स्कैटरिंग)

प्रकीर्तन—पु० [स० प्र√कृत् (जोर से शब्द करना) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रकीर्तित] १ जोर जोर से कीर्तन करना। २ घोषणा।

प्रकीर्ति—स्त्री० [स० प्र√कृत्+क्तिन्] १ घोषणा २ ख्याति।

प्रकीर्तित—भू० कृ० [स० प्र√कृत्+क्त] १ जिसका यश गाया गया हो। प्रशसित। २. जिसकी घोषणा की गई हो।

प्रकुपित—वि० [स० प्रा० स०] जिसका प्रकोप वहुत वढा हो या वढाया गया हो।

प्रकृत—वि० [स० प्र√कृ (करना)+क्त] [भाव० प्रकृतता, प्रकृति] १ जो प्रकृति अर्थात् निसर्ग से उत्पन्न या प्राप्त हुआ हो अथवा उसका वनाया हुआ हो। प्रकृतिजन्य। जैसे—प्रकृत झीलें-प्रकृत वनस्पतियाँ। २. जो ठीक उसी रूप मे हो, जिस रूप मे प्रकृति उसे उत्पन्न करती हो। जिसमे कोई कृत्रिमता, वनावट, मेल या विकार न हो अथवा न हुआ हो। 'विकृत' इसी का विपर्याय है। ३ जो शरीर की प्रकृति अर्थात् स्वभाव के आधार पर हो या उससे सवध रखता हो। स्वाभाविक। (नैचुरल, उक्त सभी अर्थो मे) जैसे—प्रकृत क्रोध, प्रकृत वल। ४ जो अपनी ठीक वास्तविक या साधारण स्थिति मे हो। जिसमे कुछ घटाया-वढाया या अदला-वदला न गया हो। प्रसम। सहज। साधारण। (नार्मल) ५ जो प्रस्तुत प्रकरण या प्रसग के विचार से उपयुक्त, यथेष्ट या वाछनीय हो। सगत। (रेलेवेन्ट) उदा०—यहाँ इतना ही प्रकृत है कि कवीरदास का 'पडित' वहुत अपना आदमी है।—हजारीप्रसाद द्विवेदी।

पु० श्लेष अलकार का एक प्रकार या भेद।

प्रकृतता—स्त्री० [स० प्रकृत+तल्+टाप्] १ प्रकृत होने की अवस्था या भाव। २ असलियत। यथार्थता वास्तविकता।

प्रकृतत्व—पु० [स० प्रकृत+त्व]=प्रकृतता।

प्रकृतवाद—पु० [स०] आज-कल साहित्य मे यथार्थवाद (देखें) का वह बहुत आगे बढ़ा हुआ रूप जिसमें समाज के प्राय नग्न चित्र उपस्थित करना ही ठीक समझा जाता है। इसमे प्राय समाज के अश्लील, कुरुचिपूर्ण और हेय अंगों के ही चित्र होते हैं।

प्रकृतवादी—वि० [स०] प्रकृतवाद-संबंधी। प्रकृतवाद का।
पु० प्रकृतवाद का अनुयायी।

प्रकृतार्थ—वि० [स० प्रकृत-अर्थ, कर्म० स०] असल। वास्तविक।
पु० प्रकृत अर्थात् यथार्थ और वास्तविक अर्थ, आशय या अभिप्राय।

प्रकृति—स्त्री० [स० प्र√कृ+क्तिन्] १. किसी पदार्थ या प्राणी का वह विशिष्ट भौतिक सारभूत तथा सहज और स्वाभाविक गुण या तत्त्व जो उसके स्वरूप के मूल मे होता है और जिसमें कभी कोई परिवर्तन या विकार नही होता। 'विकृति' इसी का विपर्याय है। जैसे—(क) जन्म लेना और मरना प्राणी मात्र की प्रकृति है। (ख) ताप उत्पन्न करना और जलाना अग्नि की प्रकृति है। (ग) जानवरों का शिकार करके पेट भरना चीतो और शेरो की प्रकृति है। २. विश्व मे रचना या सृष्टि करनेवाली वह मूल नियामक तथा संचालक शक्ति जो सभी कारणों और कार्यों का उद्गम है और जिससे सभी जीव तथा पदार्थ बनते, विकसित होते तथा अंत मे नष्ट या समाप्त होते रहते है। निसर्ग। विशेष—अधिकतर दार्शनिक, 'प्रकृति' को ही सारी सृष्टि का एक मात्र उपादान कारण मानते हैं। पर सांख्यकार ने कहा है कि इसके साथ एक दूसरा तत्त्व 'पुरुष' नाम का भी होता है। जिसके सहयोग से प्रकृति सब प्रकार की सृष्टियाँ करती है। भौतिक जगत् मे हमे जो कुछ दिखाई देता है, वह सब इसी का परिणाम या विकार माना जाता है। इसी में सत्त्व, रज और तम नामक तीनों गुणो का अधिष्ठान कहा गया है। आध्यात्मिक क्षेत्रों और विशेषत वेदांत मे इसे परमात्मा या विश्वात्मा की मूर्तिमती इच्छा-शक्ति के रूप मे माना गया है, और इसे 'माया' का रूपान्तर कहा गया है। कभी-कभी इसका प्रयोग ईश्वर के समानक के रूप मे भी होता है।
३. वह सारा दृश्य जगत् जिसमे हमें पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ आदि अपने मौलिक या स्वाभाविक रूप मे दिखाई देती हैं। जैसे—वहाँ प्रकृति की छटा देखने ही योग्य थी। ४. मनुष्यों का वह चारित्रिक मूल-भूत गुण, तत्त्व या विशेषता जो बहुत-कुछ जन्म-जात तथा प्राय अविकारी होती है। जैसे—वह प्रकृति से ही उदार तथा दयालु (अथवा क्रोधी और लोभी) था।
विशेष—इसमें उन सभी आकांक्षाओं, प्रवृत्तियों, वासनाओं आदि का अंतर्भाव होता है जिनके वश मे रहकर मनुष्य सब प्रकार के काम करते हैं और जिनके फल-स्वरूप उनका चरित्र अथवा जीवन बनता-बिगड़ता है।
५. जीवन-यापन का वह सरल और सहज प्रकार जिस पर आधुनिक सभ्यता का प्रभाव न पड़ा हो और जो निरोधक प्रतिबन्धों से बहुत-कुछ मुक्त या रहित हो। जैसे—जंगली जातियाँ सदा प्रकृति की गोद में ही खेलती और पलती हैं। (अर्थात् खुले मैदानों मे, झगड़े-बखेड़ो और भीड़-भाड़ से दूर रहते हैं)। ६. प्राणियों की जीवन-दायिनी और स्वास्थ्य प्रद प्रवृत्ति या स्थिति। जैसे—आज-कल उन्होंने अपने रोग की दवा करना बन्द कर दिया है और उसे प्रकृति पर छोड़ दिया है। ७ वैद्यक मे, शारीरिक रचना और प्रवृत्ति के आधार पर मनुष्य की मूल स्थितियो के ये सात विभाग—वातज, पित्तज, कफज, वात-पित्तज, वात कफज, कफ-पित्तज और सम-धातु। ८. व्याकरण मे, किसी शब्द का वह आधार-भूत, मूल या धातु रूप जिसमें उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगने अथवा और प्रकार के विकार होने पर उसके अनेक दूसरे रूप बनते है। ९. प्राचीन भारतीय राजनीति मे राजा, अमात्य या मंत्री, सुहृद, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, बल और प्रजा इन आठों का समूह। १०. परवर्ती दार्शनिक क्षेत्र मे, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार इन आठो का समूह। ११. कर्मकाड में वह प्रतिमान या मानक रूप जिसे देखकर उसी तरह की और रचनाएँ प्रस्तुत की जाती हो। १२. आकृति। रूप। १३ प्रजा। रिआया। १४. नारी। स्त्री।

प्रकृतिज—वि० [सं० प्रकृति√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। प्राकृतिक। २. जो स्वभाव से ही होता हो। प्रकृति जन्य

प्रकृति-देववाद—पु० [स०प०त०] एक दार्शनिक मतवाद जिसमें यह माना जाता है कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना तो अवश्य की परंतु उसके बाद उसने उस पर से अपना सारा नियंत्रण हटा लिया, आगे के सब काम प्रकृति पर छोड़ दिये। (डीइज्म)

प्रकृति-पुरुष—पु० [प० त०] राजमंत्री।

प्रकृति-भाव—पुं० [प० त०] १. स्वभाव। २ अविकृति और मूल रूप अथवा स्थिति। ३. व्याकरण में शब्दों की सन्धि की वह अवस्था जिसमें नियमत शब्दों के रूपो में कोई विकार नही होता।

प्रकृति-मंडल—पु० [प० त०] १ राज्य के अधिपति, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और बल इन सातों अंगो का समूह। २ प्रजा का वर्ग या समूह।

प्रकृति-लय—पुं० [स० त०] प्रलय। (सांख्य)

प्रकृति-वाद—पुं० [प० त०] १. यह मत या सिद्धान्त कि मनुष्य के सभी आचरण, कार्य, विचार, आदि प्रकृति अर्थात् निसर्ग से उत्पन्न होनेवाली कामनाओं तथा प्रवृत्तियों पर आश्रित होते है। २ दार्शनिक क्षेत्र की दो मुख्य धाराएँ (क) यह मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि प्रकृति से ही उत्पन्न है और इसके मूल मे कोई अलौकिक तत्त्व या दैवी शक्ति काम नहीं करती। (ख) यह मत या सिद्धान्त कि मनुष्यो मे धर्म तत्त्व का आविर्भाव किसी अलौकिक या दैवी शक्ति की प्रेरणा से नहीं हुआ है, बल्कि मनुष्यों ने धर्म-संबंधी सभी भावनाएँ और विचार प्राकृतिक जगत् से ही प्राप्त किये हैं। ३ कला और साहित्य के क्षेत्र मे, यह मत या सिद्धात कि ससार में प्राकृतिक तथा वास्तविक रूप मे जो कुछ होता हुआ दिखाई देता है, उसका अकन या चित्रण ज्यो का त्यों और ठीक उसी रूप मे होना चाहिए और उसमे नैतिक आदर्शों या भावनाओं का अतिरिक्त आरोप या मिश्रण नही किया जाना चाहिए। (नैचुरलिज्म, उक्त सभी अर्थों मे)
विशेष—वस्तुत उक्त अंतिम मत यथार्थवाद का वह आगे बढ़ा हुआ रूप है जिसमे अशिष्ट, अश्लील, कुरुचिपूर्ण और हेय पक्षो का भी अकन या चित्रण होने लगा है। इसका आरम्भ युरोप में १९ वीं शती मे हुआ था।

प्रकृतिवादी (दिन्)—पु० [सं० प्रकृतिवादी+इनि] वह जो प्रकृतिवाद का सिद्धान्त मानता हो या उसका अनुयायी हो। (नैचुरलिस्ट)
वि० प्रकृतिवाद-संबंधी। प्रकृतिवाद का।

प्रकृति-विज्ञान—पु० [प० त०] १. वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे प्राकृतिक बातो अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, विकास, लय आदि का निरूपण होता है। २. पारिभाषिक और वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे प्राकृतिक या भौतिक जगत् के भिन्न-भिन्न अगो, क्षेत्रों, रूपो स्थितियों आदि का विचार या विवेचन होता है । (नैचुरल सायन्स) विशेष—जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक और रसायन विज्ञान, भूगर्भशास्त्र आदि इसी के अन्तर्गत या इसकी शाखाओ के रूप मे है। ३ उक्त के आधार पर साधारण लौकिक व्यवहार मे, वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे पशु-पक्षियो, वनस्पतियो, वृक्षों, खनिज पदार्थों और भूगर्भ की बातो का अध्ययन और विवेचन अ-पारिभाषिक रूप मे होता है। (नैचुरल हिस्टरी)

प्रकृतिविद्—पु० [स० प्रकृति√विद्+क्विप्] प्रकृतिवेत्ता ।

प्रकृतिवेत्ता (तृ)—पु० [प० त०] वह जो प्रकृति विज्ञान का ज्ञाता या पडित हो। (नैचुरलिस्ट)

प्रकृतिशास्त्र—पु० दे० 'प्रकृति विज्ञान' ।

प्रकृतिसिद्ध—वि० [स० तृ० त०] १ जो प्रकृति के विषयो के अनुसार हुआ हो या होता हो। २ प्राकृतिक । नैसर्गिक । ३. स्वाभाविक ।

प्रकृतिस्थ—वि० [स० प्रकृति√स्था (ठहरना)+क] १ जो अपनी प्राकृतिक अवस्था मे स्थित या वर्तमान हो और जिसमे किसी प्रकार का क्षोभ या विकार न हुआ हो। जो अपनी मामूली हालत में हो। २ जिसका चित्त या मन ठिकाने हो अर्थात् उद्विग्न या विचलित न हो। ठहरा हुआ और शान्त ।

प्रकृतिस्थ-सूर्य—पुं० [स० कर्म० स०] उस समय का सूर्य जब वह उत्तरायण को पार करके अर्थात् दक्षिणायन होता है ।

प्रकृतीश—पु० [स० प्रकृति-ईश, प० त०] राजा ।

प्रकृत्या—अव्य० [स० तृतीया विभक्ति का रूप] प्रकृति की दृष्टि या विचार से । प्रकृतिश । स्वभावत ।

प्रकृष्ट—भू० कृ० [स० प्र√कृष् (खीचना)+क्त] १ खीचा या निकाला हुआ । २ उत्तम । श्रेष्ठ । ३ मुख्य । प्रधान । ४ तीव्र। तेज ।

प्रकृष्टता—स्त्री ० [स० प्रकृष्ट+तल्+टाप्] प्रकृष्ट होने की अवस्था या भाव । उत्तमता । श्रेष्ठता ।

प्रकोथ—पु० [स० प्र√कुथ् (पतित होना)+घञ्] १ सडने की अवस्था या भाव । २ दूषित होना । ३. सूखना । शोष।

प्रकोप—पु० [स० प्रा० स०] १ बहुत अधिक या बढा हुआ कोप । २ क्षोभ। ३ चचलता । ४ शरीर के वात, पित्त अथवा कफ के बढने अथवा उसमे किसी प्रकार का विकार होने के फलस्वरूप उसका उग्र रूप धारण करना जिससे रोग उत्पन्न होता है। ५ सार्वजनिक रूप से होनेवाली किसी रोग की अधिकता या प्रबलता । जैसे—आज-कल नगर मे हैजे का प्रकोप है ।

प्रकोपन—पु० [स० प्र√कुप् (क्रोध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ प्रकुपित करना या होना । २ शोभा ।

प्रकोष्ठ—पु० [स० प्रा० स०] १. कोहनी के आगे का भाग । २ मुख्य द्वार या सदर दरवाजे के पास का कमरा । ३ वह बडा आँगन जिसके चारो ओर कमरे और बरामदे हो। ४ आज-कल ससद्, विधान-सभा आदि के बाहर का वह कमरा, बरामदा या प्रागण जहाँ बैठकर सदस्य व्यक्तिगत रूप से बातचीत करते तथा पत्रकारों आदि से मिलते हो। (लॉबी)

प्रकोष्ठक—पु० [स० प्रकोष्ठ+कन्] प्राचीन भारत मे प्रासाद के मुख्य द्वार के पास का कमरा ।

प्रक्रम—पु० [स० प्र√क्रम् (गति)+घञ्] १ क्रम । सिलसिला । २ अतिक्रमण। उल्लंघन। ३ वह उपाय या योजना जो कोई कार्य आरम्भ करने से पहले की जाय। उपक्रम । ४ अवसर । मौका । ५ किसी प्रकार की प्रगति के क्रम या मार्ग मे बीच-बीच मे पड़नेवाली वे स्थितियाँ जो अलग-अलग अगो या विभागो के रूप मे होती हैं, और जिनके उपरात कोई नया क्रम आरम्भ होता है । मजिल । (स्टेज) ६ किसी कार्य की सिद्धि मे आदि से अत तक होनेवाली वे आवश्यक बाते जिनसे वह काम आगे बढता है। ७. कोई चीज बनाने या माल तैयार करने की सारी क्रियाएँ । प्रक्रिया । (प्रोसेस)

प्रक्रमण—पु० [स० प्र√क्रम्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह घूमना । खूब भ्रमण करना । २ आगे बढना । ३. पार करना । ४ आरम्भ करना ।

प्रक्रम-भग—पु० [स० प० त०] साहित्य मे, पहले कुछ बाते एक क्रम से कहना और तब उनसे संबद्ध कुछ दूसरी बातें किसी दूसरे क्रम से कहना जो एक दोष माना गया है ।

प्रक्रात—वि० [स० प्र√क्रम्+क्त] १ जिसका प्रकरण चल रहा हो। जिसका उल्लेख या वर्णन हो रहा हो। २ प्रकरण मे आया हुआ।

प्रक्रिया—स्त्री० [स० प्र√कृ+श+टाप्, इयङ] १. कोई काम करने या चीज बनाने की वह निश्चित और विशिष्ट क्रिया, ढग या प्रकार जिसके बिना वह ठीक तरह से सम्पन्न या प्रस्तुत न हो सके। जैसे—धातु-मल से धातुएँ निकालने की प्रक्रिया । २ कोई ऐसा प्रक्रम या विकास जिसमे बीच बीच मे कुछ परिवर्तन या विकार होते चले। जैसे—पेट मे भोजन के पाचन की प्रक्रिया । ३. किसी काम या बात मे क्रम-क्रम से आगे बढने की क्रिया या भाव। (प्रासेस, उक्त सभी अर्थों मे) ४. किसी कृत्य विशेषत अभियोग आदि की सुनवाई मे होने वाले आदि से अन्त तक के सब काम या उनका क्रम। (प्रोसीजर) ५ वह कार्रवाई जो अब तक किसी कार्य की सिद्धि के लिए की जा चुकी हो। (प्रोसीडिंग) ६ ऊँचा स्थान या स्थिति । ७ पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। ८ प्रस्तावना। भूमिका । ९ राजाओ का चंवर, छत्र आदि राज-चिह्न धारण करना । १० व्याकरण मे, शब्द अथवा उसके प्रयोग का सिद्ध किया जानेवाला साधन ।

प्रक्लिन्न—वि० [स० प्र√क्लिद् (गीला)+क्त] १. आर्द्र। गीला। २ दयार्द्र।

प्रक्लेद—पु० [सं० प्र√क्लिद् (गीला होना) +घञ्] १. आर्द्रता। तरी। नमी। २ दयार्द्रता।

प्रक्लेदन—पु०[स० प्र√क्लिद्+णिच्+ल्युट्—अन] गीला या तर करना। भिगोना।

वि० तर या गीला करनेवाला। प्रक्लेदी।

प्रक्वण—पु०[स० प्र√क्वण् (शब्द करना)+अप्] बांसुरी से निकलने-वाली मधुर ध्वनि।

प्रक्वाण—पु०=प्रक्वण।

प्रक्वाथ—पु०[सं० प्र√क्वथ् (उवलना)+घञ्] १ उवालने की क्रिया या भाव। २. उवाल।

प्रक्ष—वि० [सं० प्रच्छक] प्रश्न करनेवाला। पूछनेवाला।

प्रक्षय—पु० [सं० प्र√क्षि (नाश)+अच्]=क्षय।

प्रक्षयण—पु० [सं० प्र√क्षि+ल्युट्—अन] नष्ट या वरवाद करना।

प्रक्षर—पु० [सं० प्र√क्षर् (झरना)+अच्] घोडो आदि की पक्खर या पाखर।

प्रक्षरण—पु०[सं० प्र√क्षर्+ल्युट्—अन] १ चूना। रिसना। २ वहना।

प्रक्षालन—पु०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+ल्युट्—अन] १. कोई चीज जल से साफ करने की क्रिया। धोना। २ वैज्ञानिक क्षेत्र मे जल के सयोग से या विशिष्ट प्रक्रिया से किसी वस्तु मे की मैल या अवाछित अश अलग करना। (व्लीचिंग) ३ स्वच्छ या निर्मल करना। ४ नहाना। ५ नहाने, कपडे धोने आदि का जल।

प्रक्षालन-गृह—पु०[ष० त०] हाथ-मुँह आदि धोने का कमरा या प्रकोष्ठ।

प्रक्षालयिता (तृ)—पु०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+तृच्] १. धोनेवाला। २. अतिथियों के चरण धोनेवाला।

प्रक्षालित—भू० कृ०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+क्त] १. जिसका प्रक्षालन हुआ हो। २. धोया हुआ।

प्रक्षाल्य—वि०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+यत्] धोये जाने के योग्य।

प्रक्षिप्त—भू० कृ०[सं० प्र√क्षिप् (फेंकना)+क्त] १ फेका हुआ। २ अलग, ऊपर या वाहर से लाकर वढाया या मिलाया हुआ। जैसे—तुलसी-कृत रामायण का प्रक्षिप्त अश। ३ आगे की ओर वढ़ा या निकला हुआ। (प्रॉजेक्टेड)

प्रक्षीण—वि०[सं० प्रा० स०] जो पूरी तरह से क्षीण, नष्ट या लुप्त हो चुका हो। विनष्ट।

पु० वह स्थल या स्थिति जहाँ पहुँचकर पूर्ण विनाश होता हो।

प्रक्षीवित—वि० [सं० प्र√क्षीव् (नशे मे होना)+क्त] जो नशे मे हो।

प्रक्षुण्ण—वि०[सं० प्र√क्षुद् (पीसना) +क्त] १ कूटा या पीसा हुआ २ चूर्ण किया हुआ। ३ उत्तेजित किया हुआ।

प्रक्षेप—पु०[सं० प्र√क्षिप्+घञ्] १ आगे की ओर जोर से फेकना। २ युद्ध मे दूरवर्ती शत्रु पर कोई अस्त्र फेकना। ३ छितराना। विखेरना। वह जो फेका या छितराया गया हो। ५ वढाने के लिए इधर-उधर से लाकर कुछ मिलाना। ६ वह अश जो उक्त प्रकार से मिलाया जाय। ७ वह पदार्थ जो औपध आदि मे ऊपर से डाला या मिलाया जाय। ८ किसी कारोवार या व्यापार मे लगा हुआ किसी हिस्सेदार का मूल धन।

प्रक्षेपक—वि०[सं० प्र०√क्षिप्+ण्वुल्—अक] प्रक्षेपण करनेवाला।

पु० १ वह यत्र जिसके द्वारा किसी आकृति या चित्र का प्रतिविम्व सामनेवाले परदे पर डाला जाता है। (प्रोजेक्टर) २ लिखाई मे वह चिह्न जो इस वात का सूचक होता है कि इसके आगे का अश मूल मे नही है, वल्कि वाद मे किसी ने क्षेपक के रूप मे वढाया है।

प्रक्षेपण—पु०[सं० प्र०√क्षिप्+ल्युट्—अन] १. सामने की ओर कोई चीज फेकने की क्रिया या भाव। २. ऊपर से मिलाना। ३ जहाज आदि चलाना। ४. निश्चित करना। ५. साधारण सीमा या नियमित रेखा से आगे निकालना या वढाना। ६ उक्त प्रकार से आगे निकला या वढा हुआ अश। (प्रोजेक्शन)

प्रक्षेपणीय—वि०[सं० प्र√क्षिप्+अनीयर्] प्रक्षेपण के योग्य।

प्रक्षोभण—पु० [सं० प्र√क्षुभ् (विचलित होना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. क्षोभ उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. घवराहट। वेचैनी।

प्रखंड—पु०[सं० प्रा० स०] किसी खंड या विभाग का कोई छोटा खंड या विभाग। (डिवीजन)

प्रखर—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० प्रखरता] १ जिसमे वहुत अधिक उग्रता, ताप या तेजी हो। २ चोखा। पैना।

पु० १. खच्चर। २ कुत्ता। ३ घोडे की पाखर।

प्रखरता—स्त्री०[सं० प्रखर+तल्+टाप्] प्रखर होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रखल—वि०[सं० प्रा० स०] वहुत वडा खल या दुष्ट।

प्रखोलना—स०[सं० प्रक्षालन] १ धोना। पखारना। २ छिडकना। ३. सुवासित करना।

प्रख्या—स्त्री०[सं० प्र√ख्या (कहना)+अङ्+टाप्] १ दिखलाई देना। २ प्रकट या प्रकाश रूप मे उपस्थित होना। ३. विख्याति। प्रसिद्धि। ४. वरावरी। समता। ५ उपमा। तुलना।

प्रख्यात—वि०[सं० प्र√ख्या+क्त] जिसे सव या वहुत से लोग जानते हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।

पु० नाटक की कथा-वस्तु के स्वरूप की दृष्टि से किये गये तीन भेदो मे से एक, जिसमे कथा-वस्तु का आधार मुख्य रूप से इतिहास, पुराण आदि की प्रसिद्ध कहानियाँ होती है और नाटककार द्वारा कल्पना से जोडे गये प्रक्षिप्त अगो से उसमे विकृति नही आती। हिन्दी के चन्द्रगुप्त, स्कदगुप्त, रक्षावन्धन, वितस्वा की लहरे आदि नाटको की कथा-वस्तु इसी भेद के अन्तर्गत है। (शेष दो भेद उत्पाद्य और मिश्र कहलाते हैं।)

प्रख्याति—स्त्री० [सं० प्र√ख्या+क्तिन्] प्रख्यात होने की अवस्था या भाव। प्रसिद्धि। विख्याति।

प्रख्यान—पु०[सं० प्र√ख्या+ल्युट—अन] १. खवर देना। सूचित करना। २ दी हुई खवर या सूचना। ३ अनुभूति।

प्रख्यापन—पु० [सं० प्र+ख्या√णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रख्यापित] १ लोगो को जतलाने के लिए कोई वात औपचारिक, निश्चित और स्पष्ट रूप से कहना। (प्रोमलोगेशन) २ इस प्रकार का कोई ऐसा कथन लेख या वक्तव्य जो किसी अधिकारी के सामने सारा उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हुए उपस्थित किया जाता है। (डिक्लेरेशन)

प्रख्यापित—भू० कृ०[प्र√ख्या+णिच्, पुक्+क्त] जिसका प्रख्यापन हुआ हो। जो प्रख्यापन के रूप मे उपस्थित किया गया हो।

प्रगंध—पु०[सं० व० स०] दवन पापडा।

प्रगट—वि०=प्रकट।

प्रगटन—पु०=प्रकटन।

प्रगटना—अ० [सं० प्रकटन] प्रकट होना। सामने आना। जाहिर होना।

स०=प्रगटाना।

प्रगटाना—स०[सं० प्रकटन, हिं० प्रगटना का स० रूप] प्रकट या जाहिर करना। सामने लाना।

प्रगत—वि० [स० प्रा० स०] १ जिसने प्रस्थान किया हो। जो चल पड़ा हो। २ आगे गया हुआ या बढा हुआ। जो अलग या अधिक दूरी पर हो। ३ छूटा हुआ। मुक्त। ४ मरा हुआ। मृत।

प्रगत-जानुक—वि० [स० ब० स०, +कप्] (जीव या प्राणी) जिसके घुटने एक दूसरे से अधिक अलग या कुछ दूरी पर हो। ऐसे जीवो की टाँगे प्राय धनुषाकार होती हैं।

प्रगति—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ आगे की ओर बढना। २ विशेषत किसी कार्य को पूर्णता की ओर बढाते चलना। ३ सामूहिक रूप से विभिन्न कार्यों मे होनेवाली क्रमिक उन्नति। (प्रोग्रेस) जैसे—देश प्रगति के पथ पर है।

प्रगति-वाद—पु० [स० प० त०] एक प्रकार का आधुनिक साहित्यिक वाद या सिद्धात जिसका मुख्य उद्देश्य जनवादी शक्तियो को सघटित करके मार्क्सवाद और भौतिक यथार्थवाद के लक्षित उद्देश्यो की सिद्धि करना है। सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठित करने के कारण ही इसे प्रगति-वाद कहा जाता है।

प्रगतिवादी (दिन्)—वि० [स० प्रगतिवाद+इनि] प्रगतिवाद-सम्बन्धी। प्रगतिवाद का।

पु० वह जो प्रगतिवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

प्रगति-शील—वि० [सं० ब० स०] [भाव० प्रगतिशीलता] जो प्रगति कर रहा हो। जो आगे बढ रहा या उन्नति कर रहा हो। (प्रोग्रेसिव)

प्रगम—पु० [स० प्र√गम् (जाना)+अप्] १ प्रेम मे अग्रसर होना। २ ऐसे लक्षण जिनसे पहले-पहल प्रेम होना सूचित हो।

प्रगमन—पु० [स० प्र√गम्+ल्युट्—अन] [वि० प्रगमनीय] १ आगे बढना। २ उन्नति। तरक्की। ३ लडाई-झगडा। ४. ऐसा भाषण या उक्ति जिसमे किसी बात का उचित, उपयुक्त और पूरा उत्तर निहित हो।

प्रगल्भ—वि० [स० प्र√गल्भ् (धृष्टता करना)+अच्] [स्त्री० प्रगल्भा] १ चतुर। होशियार। २ प्रतिभाशाली। ३ उत्साही। हिम्मती। ४ हाजिर-जवाब। ५ निडर। निर्भर। ६ बोलने मे सकोच न करने-वाला। प्राय बढ-बढकर बोलनेवाला। वाचाल। ७ गभीर। ८ मुख्य। ९ निर्लज्ज। १० जिसमे नम्रता न हो। उद्धत। ११ अभिमानी। अहकारी। १२ पुष्ट। प्रौढ।

प्रगल्भता—स्त्री० [स० प्रगल्भ+तल्+टाप्] १ प्रगल्भ होने की अवस्था या भाव। २ बुद्धिमत्ता। समझदारी। होशियारी। ३ प्रतिभा। ४ उत्साह। ५ वाक्-चातुरी। ६ वाचालता। ७. निर्भयता। निर्भीकता। ८ गभीरता। गहनता। ९ प्रधानता। मुख्यता। १०. ढिठाई। धृष्टता। ११. निर्लज्जता। बेहयाई। १२. उच्छृखलता। उद्दडता। १३ अभिमान। घमड। १४ पुष्टता। मजबूती। १५ व्यर्थ की बात-चीत। बकवाद। १५ शक्ति। सामर्थ्य। १७ साहित्य मे, नायिका के सात प्रकार के अयत्नज और स्वाभाविक अलकारों मे से एक। प्राय प्रौढा, सामान्या आदि नायिकाओ के वे आचरण या हाव-भाव जो वे प्राय नि शक या नि सकोच होकर करती है। यथा—,फूलत फूल गुलावन के, चटकाहट चौंकि चली चपला सी। कान्ह के काननि आँगुरि नाइ रही लपटाइ लवग लता सी।—पद्माकर।

प्रगल्भ-वचना—स्त्री० [स० ब० स०] साहित्य मे मध्या नायिका के चार भेदों मे से एक। वह नायिका जो बातो ही बातो मे अपना दुख और क्रोध भी प्रकट करे और उलाहना भी दे।

प्रगल्भा—स्त्री० [सं० प्रगल्भ+टाप्] १ प्रौढा (नायिका)। २ धृष्ट स्त्री। ३. दुर्गा।

प्रगल्भित—वि० [स० प्र+गल्भ्√क्त] प्रगल्भता मे युक्त।

प्रगसना—अ० [सं० प्रकाश] १. प्रकट होना। २ प्रकाशित होना। चमकना।

स०=प्रगासना।

प्रगाढ—वि० [सं० प्र√गाह् (हलचल पैदा करना)+क्त] [भाव० प्रगाढता] १ तर किया या भिगोया हुआ। २ बहुत अधिक। ३. बहुत गाढा या गहरा। ४ घना। ५ कठिन।

प्रगाता (तृ)—वि० [स० प्र√गै (गाना)+तृच्] गानेवाला।

पु० बहुत बडा गवैया।

प्रगामी (मिन्)—वि० [स० प्र√गम् (जाना)+णिनि] गमन करने-वाला। जानेवाला।

प्रगायी (यिन्)—पु [स० प्र√गै+णिनि] गानेवाला।

प्रगासना—स० [स० प्रकाशन] १ प्रकट करना। २ प्रकाश से युक्त करना। चमकाना।

प्रगीत—पु० [स० प्र√गै+क्त] १ गीत। गाना। २ आज-कल मुख्य रूप से ऐसा गीत जिसमे गीतकार की निजी अनुभूतियो का प्रतिबिम्ब हो और जो उसका विशिष्ट व्यक्तित्व प्रकट करता हो। (लिरिक) जैसे—श्रीमती महादेवी वर्मा के प्रगीत। ३ दे० 'प्रगीत'।

प्रगीति—पु० [स० प्रा० स०] १ एक प्रकार का छद। २ दे० 'गीति-काव्य'।

प्रगुण—वि० [स० ब० स०] १ गुणवान्। गुणी। २ चतुर। होशियार। ३ अच्छा और लाभदायक। ४ शुभ।

पु० कोई ऐसा गुण या विशिष्टता जो परिश्रम तथा प्रयत्नपूर्वक अर्जित या प्राप्त की गई हो। दक्षता। निपुणता। (एफिशिएन्सी)

प्रगुणता—स्त्री० [स० प्रगुण+तल्—टाप्] किसी प्रगुण से युक्त होने की अवस्था या भाव। दक्षता। निपुणता (एफीशिएन्सी)

प्रगुणी (णिन्)—वि० [स० प्रा० स०] १ गुणवान्। २. चालाक। होशियार।

प्रगृहीत—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ जो अच्छी तरह ग्रहण किया गया हो। २ (व्याकरण मे शब्द या पद) जिसका उच्चारण सन्धि के नियमो का ध्यान रखे बिना किया गया हो। ३ आज-कल किसी सभा-समिति का वह सदस्य जिसे दूसरे सदस्यों ने अपनी सहायता के लिए चुनकर अपने साथ सम्मिलित किया हो। सहयोजित। (कोऑप्टेड)

प्रगृह्य—वि० [स० प्र√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्यप्] १ जो ग्रहण किए जाने के योग्य हो। ग्राह्य। २ जो पकडा जा सके। ३ (शब्द) जिसका उच्चारण सधि के नियमो का ध्यान रखे बिना किया जा सकता या किया जाता हो।

पु० १ स्मरण-शक्ति। २. वाक्य।

प्रग्रह—पु० [स० प्र√ग्रह्+अप्] १ अच्छी तरह पकडने की क्रिया, ढग या भाव। २ ग्रहण या धारण करने की क्रिया या भाव। ३. कुश्ती आदि लड़ने का एक ढग या प्रकार। ४. सूर्य या चद्र के ग्रहण

प्रचायक—वि० [स० प्र√चि+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रचायिका] १ चयन करने या चुननेवाला। २ सग्रह करनेवाला। ३ ढेर लगानेवाला।

प्रचार—पु० [स० प्र√चर्+घञ्] १. किसी वस्तु या वात का वरावर व्यवहार मे आना या चलता रहना। २ वह प्रयास जो किसी वात, सिद्धात आदि को जनता या लोक मे फैलाने के लिए विशेष रूप से किया जाता है और जिसका प्रमुख उद्देश्य किसी चीज को लोकप्रिय वनाना अथवा किसी लोक-प्रिय वस्तु को हेय सिद्ध करना होता है। ३ उक्त के आधार पर प्रचारित की हुई कोई वात। ४ प्रसिद्धि। ५ आकाश। ६ गोचर-भूमि। ७ घोडो की आँख का एक रोग जिसमे आँखो के आस-पास का मांस वढकर दृष्टि रोक लेता है।

प्रचारक—वि० [स० प्र√चर्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रचारिणी] किसी वात, विषय, सिद्धात आदि का प्रचार करनेवाला। जैसे—हिन्दी प्रचारक।

प्रचारण—पु० [स० प्र√चर्+णिच्+ल्युट्—अन] प्रचार करने की क्रिया या भाव।

प्रचारना—स० [स० प्रचारण] १ प्रचारित करना। फैलाना। २ ललकारना।

प्रचारित—भू० कृ० [स० प्र+चर्+णिच्√क्त] १ (वात, वस्तु या सिद्धात) जिसका प्रचार हुआ या किया गया हो। २ (नियम, विधान आदि) जिसे काम मे लाने या जिसके अनुसार काम करने की आज्ञा दी जा चुकी हो। (प्रोमल्गेटेड)। ३ जिसे लडाई आदि के लिए ललकारा गया हो। जिसके प्रति प्रचारणा की गई हो।

प्रचारी (रिन)—वि० [स० प्र√चर्+णिनि] १ घूमने-फिरनेवाला। २ प्रकट होनेवाला। ३ प्रचार करनेवाला। दे० 'प्रचारक'।

प्रचालन—पु० [स०] [भू० कृ० प्रचालित] १ अच्छी तरह चलाने की क्रिया या भाव। २ प्रचलन मे लाने की क्रिया या भाव। ३. दे० 'सचालन'।

प्रचालित—भू० कृ० [स० प्र√चल्+णिच्+क्त] १ जिसे प्रचलन मे लाया गया हो। २. परिचालित या सचालित किया हुआ।

प्रचित—वि० [स० प्र√चि+क्त] १ सग्रहीत। २ चयन किया हुआ। ३. (स्वर) जो अनुदात हो।

पु० दडकवृत्त का एक भेद। (पिंगल)

प्रचुर—वि० [स० प्र√चुर् (चुराना)+क] [भाव० प्रचुरता] १ (किसी वस्तु का उतना मान या मात्रा) जिससे आवश्यकता, अपेक्षा, न्यूनता आदि की पूर्ति अच्छी तरह हो जाती या हो सकती हो। २ वहुत अधिक। विपुल। ३ भरा-पूरा। पूर्ण।

पु० चोर।

प्रचुरता—स्त्री० [स० प्रचुर+तल्—टाप्] प्रचुर होने की अवस्था या भाव। अधिकता।

प्रचूषण—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रचूषित] १ अच्छी तरह चूसना। २ शोषण करना। सोखना। अवशोषण। (एब्जार्पशन)

प्रचेता (तस्)—पु० [स० प्र√चित्+असुन्] १ वरुण का एक नाम। २. वारहवे प्रजापति का एक नाम। ३ एक प्राचीन ऋषि जो अनेक विधि-विधानो के निर्माता माने जाते है। ४ पृथु के परपोते और प्राचीन वर्हि के दस पुत्र जिन्होने दस हजार वर्ष तक समुद्र के अन्दर रह कर कठिन तपस्या की थी।

वि० १. चतुर। होशियार। २. वुद्धिमान। समझदार।

प्रचेय—वि० [स० प्र√चि+यत्] १ (फूल या ऐसी ही और कोई चीज) जिसका चयन होने को हो या किया जाना उचित हो। २ चुने जाने या सग्रह करने के योग्य। ३ ग्रहण किये जाने के योग्य। ग्राह्य।

प्रचोदक—वि० [स० प्र√चुद्+ण्वुल्—अक] १ प्रचोदन या प्रेरणा करनेवाला। २ उत्तेजित करनेवाला। उत्तेजक।

प्रचोदन—पु० [स० प्र√चुद्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रचोदित] १ कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला वढावा। उत्तेजना। २. प्रेरणा करना। उकसाना। ३ आज्ञा, नियम या सिद्धात। ४ प्रेषण। भेजना। ५. घोषणा।

प्रचोदित—भू० कृ० [स० प्र√चुद्+णिच्+क्त] १ जिसे वढावा दिया गया हो। २ उत्तेजित किया हुआ। जिसे प्रेरणा की गई हो। प्रेरित किया हुआ। ३ जिसे आज्ञा, आदेश आदि मिला हो। ४ भेजा हुआ। ५ घोषित किया हुआ।

प्रच्छक—वि० [स०√प्रच्छ् (पूछना)+ण्वुल्—अक] प्रश्न करने या पूछनेवाला।

प्रच्छद—पु० [स० प्र√छद् (ढकना)+णिच्+घ) १ वह जिसमे कोई चीज ढकी या लपेटी जाय। २ विस्तर पर विछाई जानेवाली चादर। ३. चाँदनी। ४ कवल। ५ चोगा।

प्रच्छना†—स० [स० पृच्छन] प्रश्न करना। पूछना।

प्रच्छन्न—वि० [स० प्र√छद्+क्त] १ किसी आच्छादन, आवरण, वस्त्र आदि से ढका हुआ। जैसे—प्रच्छन्न शरीर। २ जो जान-बूझकर दूसरो से छिपाया गया हो। (हिडिन) जैसे—प्रच्छन्न धन। ३ जो अपना वास्तविक रूप औरो से छिपाकर रखता हो। जैसे—प्रच्छन्न वौद्ध।

पु० १. चोर दरवाजा। २ खिडकी।

प्रच्छर्दक—वि० [स० प्र√छर्द् (वमने)+ण्वुल्—अक] १ वाहर निकालनेवाला। २. (ऐसी ओषधि) जिसके सेवन से कै या वमन होता हो। ३ कै या वमन करनेवाला।

प्रच्छर्दन—पु० [स० प्र√छर्द् (वमन करना)+ल्युट्—अन] १ वाहर निकालना। २ नाक के रास्ते प्राण-वायु वाहर निकालना। रेचन। ३ उल्टी, कै या वमन करना।

प्रच्छर्दिका—स्त्री० [स० प्र√छर्द्+ण्वुल्,—अक+टाप्, इत्व] १ ऐसी ओषधि जिसके सेवन से कै होती हो। २ वरावर कै या वमन करते रहने का एक रोग।

प्रच्छादक—वि० [स० प्र√छद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह से ढकने या आच्छादित करनेवाला। २. छिपानेवाला।

प्रच्छादन—पु० [स० प्र√छद्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रच्छादित] १ कोई चीज ढकने की क्रिया या भाव। २ वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज ढकी जाय। ३. उत्तरीय वस्त्र। ४ दूसरो से चुराने, छिपाने या दवाने की क्रिया या भाव। ५ आँख की पलक।

प्रच्छादित—भू० कृ० [स० प्र√छद्+णिच्+क्त] १ ढका हुआ। आवृत। २ छिपाया हुआ। (कन्सील्ड)

प्रच्छाय—पु० [स० ब० स०] १ वह स्थान जहाँ घनी छाया हो। २. घनी छाया। ३ अन्धकार। अँधेरा।

प्रच्छाया—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ किसी ग्रह या उपग्रह की वह छाया जो सूर्य की विपरीत दिशा मे कोण के रूप मे पडती है। २ गहरी छाया। ३ ग्रहण के समय चन्द्रमा या सूर्य पर पडनेवाली छाया। ४ भौतिक विज्ञान मे, वह गहरी छाया जिसमे प्रकाश के उद्‌गम से कुछ भी प्रकाश प्रत्यक्ष रूप से या सीधा न आता हो। (अम्ब्रा)

प्रच्छालना*—स० [स० प्रक्षालन] धोना।

प्रच्छिल—वि० [स०√प्रच्छ्+इलच्] १. शुष्क। सूखा। २ जिसमे जलीय तत्त्व न हो। जल-रहित।

प्रच्छेदन—पु० [स० प्र√छिद्+ल्युट्—अन] १. कोई चीज इस प्रकार काटना कि उसके छोटे-छोटे टुकडे हो जायँ। टुकडे-टुकड़े करना। २. भेद न करना। छेदना।

प्रच्युत—वि० [स० प्र√च्यु+क्त] [भाव० प्रच्युति] १. अपने स्थान से हटा या हटाया हुआ। २ विशेषत किसी उच्च पद से हट या हटाकर निम्न पद पर आया या लाया हुआ। ३ झरा या बहा हुआ।

प्रच्युति—स्त्री० [स० प्र√च्यु+क्तिन्] अपने स्थान से गिरने या हटने की अवस्था क्रिया या भाव। च्युति।

प्रछन्न†—वि०=प्रच्छन्न।
पु०=प्रश्न।

प्रजक†—पु०=पर्यंक।

प्रजत†—अव्य०=पर्यंत (तक)।

प्रज—पु० [स० √जन् (उत्पन्न होना)+ड] स्त्री का पति। स्वामी।
स्त्री०=प्रजा।

प्रजन—पु० [स० √जन्+घञ्] १ गर्भधारण करने के लिए (पशुओ का) मैथुन। जोडा खाना। २ पशुओ के गर्भधारण का समय। ३ नर या पुरुष की जननेन्द्रिय। लिंग। ४ दे० 'प्रजनन'।
वि० जन्म देनेवाला। जनक।

प्रजनक—वि० [स० प्र√जन्+णिच्+ ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रजनिका] जन्म देने या उत्पन्न करनेवाला।
पु० जनक। पिता।

प्रजनन—पु० [स० प्र√जन्+णिच्+ल्युट्—अन] १ अपने ही जैसे नये जीवो को जन्म देकर अपने वश या वर्ग की वृद्धि करना। सतान उत्पन्न करना। (रिप्रोडक्शन)। २. जीवो का होनेवाला जन्म। ३ दाई या धात्री का काम। ४. पशुओ आदि को पाल-पोसकर उनकी उन्नति और वृद्धि करना। (ब्रीडिंग)

प्रजनिका—स्त्री० [स० प्र√जन्+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] माता। जननी।

प्रजनिष्णु—वि० [सं० प्र√जन्+णिच्+इष्णुच्] प्रजनन करने या जन्म देनेवाला।

प्रजरत†—वि०=प्रज्वलित।

प्रजरना—अ० [स० प्र+हिं० जरना] अच्छी तरह जलना। प्रज्वलित होना। उदा०—प्रजरयो आग वियोग की बह्यो विलोचन नीर।—बिहारी।
स०=प्रजारना।

प्रजल्प—पु० [स० प्र√जल्प् (बोलना)+घञ्] १ इधर-उधर की या व्यर्थ की बातचीत। बकवाद। २. प्रिय को प्रसन्न करने के लिए कही जानेवाली बात या हाँकी जानेवाली गप्प।

प्रजल्पित—भू० कृ० [स० प्र√जल्प्+क्त] बकवाद के रूप मे कहा हुआ।
पु० बकवाद।

प्रजवी (विन्)—पु० [स० प्र√जु+इनि+] १. दूत। २. हरकारा।

प्रजांतक—पु० [स० प्रजा-अन्तक, ष० त०] यम।

प्रजा—स्त्री० [स० प्र√जन्+ड+टाप्] १ सतान। औलाद। २ किसी विशिष्ट राज्य या शासन मे रहनेवाले वे सब लोग जो उसके द्वारा शासित होते है। रिआया। (सब्जेक्ट) ३. भारतीय देहाती समाज मे छोटी जातियो के वे लोग जो बिना वेतन लिये काम करते हैं, और जिन्हे नियमित रूप से समय-समय पर अन्न, धन, वस्त्र, आदि मिलते रहते है। जैसे—नाऊ, बारी, भाट, नट, लोहार, कुम्हार, चमार, धोबी आदि। ४. सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा।

प्रजाकाम—वि० [स० प्रजा√कम् (चाहना)+णिङ+अण्] जिसे पुत्र की कामना हो।

प्रजाकार—पु० [स०प्र√जा+कृ (करना)+अण्] सृष्टि के रचयिता। ब्रह्मा।

प्रजागर—वि० [स० प्र√जागृ (जागना)+अच्] १. जागता रहनेवाला। २. पहरा देने या चौकसी करनेवाला।
पु० १. जागरण। २ निद्रा न आने का रोग। उन्निद्र। ३. विष्णु। ४. प्राण।

प्रजागरण—पु० [स० प्र√जागृ+ल्युट्—अन] १. जागते रहने का भाव। जागरण। २ पहरा देना। चौकसी करना।

प्रजा-तंतु—पु० [स० ष० त०] १ संतान। सतति। २ कुल। वंश। ३. किसी वश की विभिन्न पीढियो की शृखला। वश-परम्परा।

प्रजातंत्र—पु०[स० ष० त०] दे० 'लोकतत्र'।

प्रजात—भू० कृ० [स० प्र√जन् (उत्पन्न होना)+क्त] जिसे जन्म दिया गया हो। उत्पन्न किया हुआ।

प्रजाता—स्त्री० [स० प्रजात+टाप्] वह स्त्री जिसने बच्चे को जन्म दिया हो। जच्चा। प्रसूतिका।

प्रजाति—स्त्री० [स० प्र√जन्+क्तिन्] १ प्रजा। २ सतान। ३ सतान उत्पन्न करना। ३ प्रजनन। जन्म देने या उत्पन्न करने की शक्ति। ५. बच्चे को जन्म देना।

प्रजाद—वि० [स० प्रजा√दा+क] १ जन्म देने या उत्पन्न करनेवाला। २ बाँझपन दूर करनेवाला।

प्रजादा—स्त्री० [स० प्रजा√दा (देना)+क+टाप्] बाँझपन दूर करनेवाली ओषधि।

प्रजा-द्वार—पु० [ष० त०] १ प्रजा या सतान उत्पन्न करने का उपाय या साधन। २. सूर्य का एक नाम।

प्रजाध्यक्ष—पु० [प्रजा-अध्यक्ष, ष० त०] १ प्रजापति। २ सूर्य।

प्रजानाथ—पु० [ष० त०] १. ब्रह्मा। २ मनु। ३ दक्ष। ४ राजा।

प्रजापति—पु० [ष० त०] १. सृष्टि का रचयिता। सृष्टि कर्ता। ब्रह्मा। २ वे दस लोककर्ता जिन्हे ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भ में प्रजा-वृद्धि

के लिए उत्पन्न किया था। ३ मनु। ४ राजा। ५ सूर्य। ६. अग्नि। ७ विश्वकर्मा। ८ पिता। ९ तितली। १०. घर का मालिक या स्वामी। ११. एक नक्षत्र का नाम। १२. एक प्रकार का यत्र। १३ जामाता। दामाद। १४. कुम्हकार। कुम्हार। १५. साठ संवत्सरों मे से पाँचवा संवत्सर। १६. प्राजापत्य (देखें) नामक विवाह-प्रकार।

प्रजापती—स्त्री० [स०, प्रजापति] गौतम-बुद्ध को पालने वाली गोमती का नाम।

†पुं० = प्रजापति।

प्रजा-पालक—पु० [स० प० त०, णिच्+अच्] प्रजा का पालन-पोषण करनेवाला अर्थात् राजा।

प्रजा-पालन—पु० [प० त०] प्रजा का पालन और भरण-पोषण तथा रक्षा।

प्रजायी (यिन्)—वि० [स० प्र√जन्+णिनि] [स्त्री० प्रजायिनी] उत्पन्न करने या जन्म देनेवाला। जैसे—वीरप्रजायी।

प्रजारना—स० [सं० प्र (उप०) + हिं० जारना] अच्छी तरह जलाना। प्रज्वलित करना।

प्रजालना*—स० प्रजारना।

प्रजावती—स्त्री० [स० प्रजा+मतुप्, वत्व, +ङीप्] १. ऐसी स्त्री जिसके बहुत से बच्चे या सताने हो। २. गर्भवती स्त्री। ३. भाई की स्त्री। ४ बडे भाई की स्त्री। भाभी। भौजाई। ५ राजा प्रियव्रत की पत्नी का नाम।

प्रजा-वृद्धि—स्त्री० [ष० त०] १ सतान की बढती। २. जनता या जन-सख्या की वृद्धि।

प्रजा-सत्ता—स्त्री० [प० त०]=प्रजातत्र।

प्रजा-सत्ताक—वि० [ब० स०, +कप्] १. (शासन प्रणाली) जिसमे शासन सूत्र प्रजा अथवा उसके चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ मे होता है। २. (राज्य) जिसका शासन सूत्र प्रजा या उसके चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ मे होता है।

प्रजित्—वि० [स० प्र√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] जीतनेवाला। विजेता। विजयी।

प्रजिन—पु० [स० प्र√ज्या (जीर्ण होना)+नक्, सम्प्रसारण] वायु। हवा।

प्रजीवन—पु० [स० प्रा० स०] जीविका। रोजी।

प्रजुरित, प्रजुलित†—वि०=प्रज्वलित।

प्रजेप्सु—वि० [स० प्रजा—ईप्सु, प० त०] प्रजा या सतान की कामना करनेवाला।

प्रजेश—पु० [स० प्रजा+ईश, प० त०]=प्रजापति।

प्रजोग†—पु०=प्रयोग।

प्रज्ञ—वि० [स० प्र√ज्ञा (जानना)+क] [स्त्री० प्रज्ञा, भाव० प्रज्ञता] १. जाननेवाला। जानकार। २ जिसमें प्रज्ञा-शक्ति यथेष्ट हो। बहुत चतुर और बुद्धिमान।

पु० १. किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता, पडित या विद्वान। २ बुद्धिमान्।

प्रज्ञता—स्त्री० [स० प्रज्ञ√तल्+टाप्] १ प्रज्ञ होने की अवस्था या भाव। २. पाडित्य। विद्वता। ३. अच्छी जानकारी।

प्रज्ञप्त—भू० कृ० [स० प्र√ज्ञप्+क्त] १ जतलाया, बतलाया या सूचित किया हुआ। २ जिसके सम्बन्ध मे कोई प्रज्ञप्ति निकली या हुई हो।

प्रज्ञप्ति—स्त्री० [स० प्र√ज्ञप् (जताना)+क्तिन्] १ जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २ सूचना।

प्रज्ञा—स्त्री० [स० प्र√ज्ञा+अङ+टाप्] १ बुद्धि। समझ। २. बुद्धि का वह परिष्कृत, विकसित तथा सस्कृत रूप जो उसे अध्ययन, अभ्यास, निरीक्षण आदि के द्वारा प्राप्त होता है और जिससे मनुष्य सब बातों का आगा-पीछा या वास्तविक रूप जल्दी और सहज मे समझ लेता है। न्याय-बुद्धि। (इन्टलेक्ट)

विशेष—यह मुख्यत अनुभव, पाडित्य और विचारशीलता का प्रकाशमान् सम्मिश्रण और साधारण बुद्धि का खरादा, गढा और तराशा हुआ रूप है।

३ सरस्वती का एक नाम। ४ विदुषी और सभ्य स्त्री।

प्रज्ञा-चक्षु (स्)—वि० [ब० स०] जिसके लिए उसकी बुद्धि ही आँखों का काम देती हो।

पु० १. ऐसा अन्धा व्यक्ति जो अपनी बुद्धि से ही सब बातें जान या समझ लेता हो। २ अन्धा व्यक्ति। (परिहास और व्यग्य) ३ धृतराष्ट्र। ४. ज्ञानी पुरुष।

प्रज्ञात—भू० कृ० [स० प्र√ज्ञा+क्त] १ जिसका प्रज्ञान हुआ हो या किया गया हो। २ अच्छी तरह से जाना और समझा हुआ। ३ स्पष्ट। ४ विवेचित। ५ प्रसिद्ध। विख्यात।

प्रज्ञाता—वि० [स०] प्रज्ञान करनेवाला (कॉग्निजेन्ट)

प्रज्ञा-दृष्टि—पु०=प्रज्ञा-चक्षु।

प्रज्ञान—पु० [स० प्र√ज्ञा+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रज्ञात, वि० प्रज्ञेय] १ किसी बात या विषय का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान। २ विधिक क्षेत्र मे किसी कार्य विशेषत आपराधिक कार्य की ओर आधिकारिक रूप से किया जानेवाला ध्यान। (कॉग्निजेन्स) ३ विवेक। बुद्धि। ४ चिह्न। निशान। ५ चैतन्य। विद्वान्।

प्रज्ञापक—वि० [स० प्र√ज्ञा+णिच्+ण्वुल्—अक, पुक् आगम] प्रज्ञापन करने या जतानेवाला। सूचित करनेवाला।

पु० बडे बडे या मोटे मोटे अक्षरो मे लिखा या छपा हुआ विज्ञापन। (पोस्टर)

प्रज्ञापन—पु० [स० प्र√ज्ञा+णिच्, पुक्, +ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रज्ञापित] किसी को विशेष रूप से किसी घटना, बात या विषय का ज्ञान कराना।

प्रज्ञा-पारमिता—स्त्री० [स० ष० त०] पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने की स्थिति जो बौद्धो के अनुसार दस (या छ) गुणो (पारमिताओं) मे से एक है।

प्रज्ञापित—भू० कृ० [स० प्र√ज्ञा+णिच्, पुक्+क्त] १. (विषय) जिसका प्रज्ञापन हुआ हो। २ (व्यक्ति) जिसे सूचना दी गई हो।

प्रज्ञामय—पु० [स० प्रज्ञा+मयट्] प्रज्ञाशील। पडित। विद्वान्।

प्रज्ञाल—वि० [स० प्रज्ञा+लच्] बुद्धिमान्।

प्रज्ञावाद—पु० [स० ष०त०] [वि० प्रज्ञावादी] यह मत या सिद्धात कि मनुष्य को सदा सब काम अपनी प्रज्ञा के अनुसार सद समझ-बूझकर करने चाहिए। (इन्टलेक्चुअलिज्म)

प्रज्ञावान् (वत्)—वि० [स० प्रज्ञा+मतुप्, वत्व] जो खूब सोच-समझ कर काम करता हो।

प्रज्ञा-शील—वि० [स० व० स०] जो हर काम सोच-समझकर करता हो। जिसमे न्याय-बुद्धि हो।

प्रज्ञेय—वि० [स०] जिसका प्रज्ञान हो सकता हो या होने को हो। (काग्निजेबुल)

प्रज्वलन—पु० [स० प्र√ज्वल् (दीप्ति)+ल्युट्—अन] [वि० प्रज्वलनीय, भू० कृ० प्रज्वलित] ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के लिए कोई चीज जलाना।

प्रज्वलित—भू० कृ०[स० प्र√ज्वल्+क्त] १. ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के उद्देश्य से जलाया हुआ। २. चमकता हुआ। ३ व्यक्त और सुस्पष्ट।

प्रज्वलिया—पु० [?] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती हैं।

प्रज्वार—पु० [स० प्र√ज्वर् (दाह)+घञ्] ज्वर से पीडित होने पर शरीर मे से निकलनेवाला ताप।

प्रज्वालन—स० [स० प्र√ज्वल्+णिच्+ल्युट्—अन] प्रज्वलित करना।

प्रडीन—पु० [स० प्र√डी (उडना)+क्त] पक्षियो की १०१ तरह की उडानो मे से एक उडान।
वि० जो डैनो या परो की सहायता से उड गया हो या उड रहा हो।

प्रण—वि० [स० पुराण+न, प्र—आदेश] पुराना। प्राचीन।
पु० [स० पण] कोई काम विशेषत कोई कठिन और वीरतापूर्ण काम करने का अटल या दृढ निश्चय। दृढ प्रतिज्ञा।

प्रणख—पु० [स० प्र-नख, प्रा० स०, णत्व] नाखून का अगला नुकीला भाग।

प्रणत—वि० [स० प्र√नम् (झुकना)+क्त] १. बहुत झुका हुआ। २ जो झुककर किसी को प्रणाम कर रहा हो। ३ नम्र। विनीत। दीन।
पु० १. दास। २ नौकर। सेवक। ३ उपासक या भक्त।

प्रणतपाल—वि० [प० त०]=प्रणतपालक।

प्रणतपालक—वि० [स० प्रणत√पाल् (पालना)+णिच्+अच्] [स्त्री० प्रणतिपालिका] शरण मे आये हुए दीन-दुखियो की रक्षा करनेवाला।

प्रणति—स्त्री० [स० प्र√नम् (झुकना)+क्तिन्] १. झुकने की क्रिया या भाव। २. प्रणाम। प्रणिपात। दडवत्। ३. नम्रता। ४ विनती।

प्रणदन—पु० [स० प्र√नद् (शब्द करना)+ल्युट्—अन] जोर से नाद या आवाज करना। गरजना या चिल्लाना।

प्रणपति—स्त्री० [स० प्रणिपत्] १. प्रणति। २ प्रणाम। उदा०—करि प्रणपति लागी कहण।—प्रिथीराज।

प्रणमन—पु० [स० प्र√नम्+ल्युट्—अन] १ झुकना। २ प्रणाम करना।

प्रणम्य—वि० [स० प्र√नम्+यत्] १ जिसके आगे झुकना उचित हो। २ जिसके सामने झुककर प्रणाम करना उचित हो। पूज्य और वन्दनीय।

प्रणय—पु० [स० प्र√नी (पहुँचना)+अच्] १ प्रेमपूर्वक की जानेवाली प्रार्थना। २. प्रेम विशेषत. ऐसा शृगारिक प्रेम जो साधारण अनुराग या स्नेह से बहुत आगे बढा हुआ होता है। ३ भरोसा। विश्वास। ४. मोक्ष। निर्वाण। ५ श्रद्धा। ६ प्रसव।

प्रणय-कोप—पु० [सं० सुप्सुपा स०] प्रेमियो का एक दूसरे पर बिगडना या रोष प्रकट करना।

प्रणयन—पु० [स० प्र√नी+ल्युट्—अन] १. कोई चीज कही से ले आना या ले जाकर कही पहुँचाना। २ कोई काम पूरा करना। ३ कोई नई चीज बनाकर तैयार करना। रचना। ४ साहित्यिक काव्य, ग्रन्थ, लेख आदि प्रस्तुत करना या लिखना। ५ उपस्थित करना। सामने लाना। ६. होम आदि के समय किया जानेवाला अग्नि का एक सस्कार।

प्रणयमान—पु० [स० सुप्सुपा स०] प्रेम मे किया जानेवाला मान। रूठना।

प्रणयिता—स्त्री० [सं० प्रणयिता+तल्,+टाप्] प्रणय-युक्त होने की अवस्था या भाव। अनुरक्ति।

प्रणयिनी—स्त्री० [सं० प्रणयिन्+ङीप्] पुरुष की दृष्टि मे वह स्त्री जिससे वह प्रणय या बहुत अधिक प्रेम करता हो।

प्रणयी (यिन्)—पु० [सं० प्रणय+इनि] [स्त्री० प्रणयिनी] वह पुरुष जो किसी स्त्री से प्रेम करता हो। स्त्री का प्रेमी।

प्रणव—पु० [स० प्र√नु (स्तुति)+अप्] १ ॐकार। ब्रह्म बीज। ओकार मत्र। २. (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) त्रिदेव। ३ परमेश्वर।

प्रणवना—स० [स० प्रणमन] १. प्रणाम करना। नमस्कार करना। २ प्रणाम करने के उद्देश्य से किसी के आगे झुकना। ३ किसी के आगे झुकना। हार मानना।

प्रनष्ट—वि० [स० प्र√नश् (नष्ट होना+क्त] १ जो लुप्त हो गया हो। विनष्ट। २ मृत। मरा हुआ।

प्रणस—पु० [स० प्र-नासिका, ब० स०, नस—आदेश] वह व्यक्ति जिसकी नाक बडी और मोटी हो। (ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।)

प्रणाद—पु० [स० प्र√नद् (शब्द करना)+घञ्] १ बहुत जोर से होनेवाला शब्द। २. आनन्द या प्रसन्नता के समय मुँह से निकलनेवाला शब्द। ३. झकार। जैसे—आभूषणो या नूपुरो का प्रणाद। ४ घोडों के हिनहिनाने का शब्द। ५ कर्ण-नाद नाम का रोग जिसमे कानो में गूँज या साँयँ साँयँ सुनाई पडती है।

प्रणाम—पु० [स० प्र√नम् (झुकना)+घञ्] बडो के आगे नत मस्तक होकर उनका अभिवादन करने का एक ढग या प्रकार।

प्रणामांजलि—स्त्री० [स० प्रणाम-अजलि, च० त०] हाथ जोडकर किया जानेवाला प्रणाम। करबद्ध प्रणाम।

प्रणामी (मिन्)—पु० [स० प्रणाम+इनि] प्रणाम करनेवाला।
स्त्री० [सं० प्रणाम] वह दक्षिणा या धन जो बडो को प्रणाम करते समय उनके चरणो पर आदरपूर्वक रखा जाता है।

प्रणायक—पु० [स० प्र√नी+ण्वुल्—अक] १. वह जो मार्ग दिखलाता हो। पथप्रदर्शक। २ नेता। ३. सेनापति।

प्रणाल—पु० [स० प्र√नल् (बाँधना)+घञ्] १ बडा जल-मार्ग। २ पनाला।

प्रणालिका—पु० [स० प्रणाली+कन्,+टाप्, ह्रस्व] १ परनाली। नाली। २. बदूक की नली।

प्रणाली—स्त्री० [सं० प्रणाल+ङीप्] १ वह मार्ग जिसमे से होकर जल बहता हो। २ विशेषत ऐसा जल-मार्ग जो दो जल-राशियो को मिलाता हो। ३ कोई काम करने का उचित, उपयुक्त, नियत या विधि विहित ढग, प्रकार या साधन। (चैनल, उक्त सभी अर्थों मे) ४. वह सारी व्यवस्था और उसके सब अग जिनमे कोई निश्चित या विशिष्ट कार्य होता हो। तरीका। ५ द्वार। ६ परम्परा।

प्रणाश—पु० [स० प्र√नश्+घञ्] १ पूर्णरूप से होनेवाला विनाश। २. मृत्यु। ३ पलायन। भागना।

प्रणाशी (शिन्)—वि० [स० प्र√नश्+णिच्+णिनि] [स्त्री० प्रणाशिनी] नाश करनेवाला।

प्रणिधान—पु० [स० प्र-नि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन्] १ देखा जाना। २ प्रयत्न। ३. योग-साधन मे, समाधि। ३ पूरी भक्ति और श्रद्धा मे की जानेवाली उपासना। ४ मन को एकाग्र करके लगाया जानेवाला ध्यान। ५ किये जानेवाले कर्म के फल का त्याग। ६ अर्पण। ७ भक्ति। ८ किसी बात या विषय मे होनेवाली गति, पहुँच या प्रवेश। ९ भावी-जन्म के सबध मे की जानेवाली कोई प्रार्थना।

प्रणिधि—पु० [स० प्र-नि√धा+कि] दूत या भेदिया जो किसी विशेष कार्य के लिए कही भेजा गया हो।

स्त्री० १. प्रार्थना। २ मन की एकाग्रता। ३ तत्परता।

प्रणिधेय—पु० [स० प्र-नि√धा+यत्] १ गुप्तचर भेजना। २ नियुक्ति। ३. प्रयोग।

प्रणिनाद—पु०=प्रणाद।

प्रणिपात—पु० [स० प्र-नि√पत्+घञ्] प्रणाम।

प्रणिहित—भू० कृ० [स० प्र-नि√धा (रखना)+क्त, हि—आदेश] १ जिसकी स्थापना की गई हो। स्थापित। २ मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। ३ पाया हुआ। प्राप्त। ४ किसी के पास रखा या किसी को सौपा हुआ। ५ जिसका ध्यान किसी चीज या बात पर एकाग्रतापूर्वक लगा हो।

प्रणी—पु० [स० प्र√नी+क्विप्] ईश्वर।

वि० [स० प्रण] प्रण या दृढ प्रतिज्ञा करनेवाला।

प्रणीत—भू० कृ० [स० प्र√नी+क्त] १ जिसका प्रणयन किया गया हो या हुआ हो। बना या तैयार किया हुआ। निर्मित। रचित। २ जिसका सशोधन या सस्कार हुआ हो। सस्कृत। ३ भेजा हुआ। ४ लाया हुआ।

पु० १. वह जल जिसका मत्र से सस्कार किया गया हो। २ यज्ञ के लिए मत्रो द्वारा सस्कृत की हुई अग्नि। ३. अच्छी तरह पकाया हुआ भोजन।

प्रणीता—स्त्री० [स० प्रणीत+टाप्] १ वह जल जो यज्ञ के कार्य के लिए वेद मत्र पढते हुए कुँए से निकाला और छानकर रखा जाता है। २ वह पात्र जिसमे उक्त जल रखा जाता है।

प्रणीय—वि० [स० प्र√नी+क्यप्] १. ले जाने योग्य। २ जिसका सस्कार होने को हो।

प्रणेता (तृ)—वि० [स० प्र√नी+तृच्] १ ले जानेवाला। २. प्रणयन करने अर्थात् निर्मित करने या बनानेवाला। जैसे—ग्रन्थ का प्रणेता।

प्रणेय—वि० [स० प्र√नी+यत्] १ ले जाने योग्य। २ अधीन। वशवर्ती। ३ जिसका सस्कार किया जाने को हो या होने को हो।

प्रणोदन—पु० [सं० प्र√नुद्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रणोदित] १. किसी को कही भेजाना। प्रेषण। २ प्रेरित करना।

प्रतंचा†—स्त्री०=प्रत्यचा।

प्रतच्छ†—वि०=प्रत्यक्ष।

प्रतत—भू० कृ० [स० प्र√तन् (फैलना)+क्त] १ फैलाया हुआ। २. कोई चीज ढकने के लिए उस पर फैलाया हुआ।

प्रतति—स्त्री० [स० प्र√तन्+क्तिन्] १ फैले हुए होने की अवस्था या भाव। २. फैलाव। विस्तार।

प्रतन—वि० [स० प्र√तन्+ट्यु—अन, तुट्—आगम] [वि० स्त्री० प्रतनी] प्राचीन। पुराना।

प्रतना—स्त्री०=पृतना (सेना का एक विभाग)।

प्रतनु—वि० [स० प्र-तनु, प्रा० स०] १. क्षीण-काय। दुबला-पतला। २ बहुत ही कोमल या सुकुमार। ३ सूक्ष्म। बहुत छोटा। ४. तुच्छ। हीन।

प्रतपन—पु० [स० प्र√तप् (तपना)+ल्युट्—अन] १ गरम करना। गरमाहट पहुँचाना। २. तप्त करना। तपाना।

वि० १. गरम करने या गरमाहट पहुँचानेवाला। २ तपानेवाला।

प्रतप्त—भू० कृ० [स० प्र√तप्+क्त] १ तपाया या बहुत गरम किया हुआ।

पु० ऐसा साधु जिसने तपस्या के द्वारा अपना शरीर सुखा डाला हो।

प्रतमाली—स्त्री० [?] कटारी। (डिं०)

प्रतरण—पु० [स० प्र√तृ (तैरना)+ल्युट्—अन] १ तैरना। २. तैरकर पार करना।

प्रतर्क—पु० [स० प्र√तर्क् (बहस या ऊह करना)+घञ्] १ वाद-विवाद। तर्क-वितर्क। २ अनुमान। ३ कल्पना।

प्रतर्कण—पु० [स० प्र√तर्क्+ल्युट्—अन] १ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद करना। २. अनुमान या कल्पना करना। ३ सशय।

प्रतर्क्य—वि० [स० प्र√तर्क्+ण्यत्] १. जिसके सबध मे तर्क किया जा सके या किया जाने को हो। २ जिसके सबध मे अनुमान या कल्पना की जा सके या की जाने को हो।

प्रतर्दन—पु० [स० प्र√तर्द् (अनादर करना)+ल्युट्—अन] १. वेदो मे उल्लिखित काशी के प्रथम राजा दिवोदास के एक पुत्र का नाम जिसका विवाह मदालसा के साथ हुआ था। २ एक प्राचीन ऋषि जो इन्द्र के शिष्य थे। ३ विष्णु। ४ ताडना।

वि० ताडना करनेवाला।

प्रतल—पु० [स० प्र-तल, ब० स०] १ हाथ की हथेली। २ [प्रा० स०] पृथ्वी के नीचेवाले सात लोको मे से अतिम जिसमे नाग जाति के लोग बसते हैं। पाताल।

प्रता—स्त्री० [स० प्रतति] छोटी लता। उदा०—लता प्रता से मडित-कुसुमित पर्ण-कुटी मे।—पन्त।

प्रतान—पु० [स० प्र√तन् (फैलना)+घञ्] १ पेड़-पौधे का नया कल्ला। २. झाड़ या लता विशेषतः ऐसा झाड या लता जो जमीन

पर फैलती हो। ३ लता तंतु। रेशा। ४. विस्तार। फैलाव। ५ एक रोग जिसमे प्राय मूर्च्छा आती है।

वि० १ फैला हुआ। विस्तृत। २ रेशेदार।

प्रतानिनी—स्त्री० [स० प्रतानिन्+ङीप्] शाखाओं-प्रशाखाओं की सहायता से दूर तक फैलनेवाली लता।

प्रतानी (निन्)—वि० [स० प्रतान+इनि] १ झाड, लता आदि जो दूर तक फैली हुई हो। २ फैलनेवाला। ३. रेशेदार।

प्रताप—पु० [स० प्र√तप्+घञ्] १ बहुत अधिक गरमी या ताप। २ ऐसा ताप जिसमे खूब चमक हो। तेज। ३. किसी बहुत बडे आदमी की कर्मठता, योग्यता, नाम, यश आदि पर आश्रित ऐसा तेज, बल या महत्त्व जिसके प्रभाव से अनेक बडे-बडे काम अनायास या सहज मे हो जाते हो। इकबाल। जैसे—आप वहाँ नही गये तो क्या हुआ, आपके प्रताप से ही वहाँ का सारा काम हो गया।

पद—पुण्य प्रताप=सत्कर्मों और तेज का प्रभाव। जैसे—बडों के पुण्य-प्रताप से सब काम बहुत अच्छी तरह हो गये।

४ पौरुष। मरदानगी। ५. बहादुरी। वीरता। ६ साहस। हिम्मत। ७ प्राचीन भारत मे वह छत्र जो युवराज के सिर पर लगाया जाता था। ८ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग। ९. आक या मदार का पौधा।

प्रतापन—पु० [स० प्र√तप्+णिच्+ल्युट्—अन] १. खूब गरम करना। तपाना। २ ताप अर्थात् कष्ट या पीड़ा पहुँचाना। ३ एक नरक का नाम। ४ कुभी-पाक नरक। ५ विष्णु।

वि० १. ताप पहुँचानेवाला। २ कष्ट या पीडा देनेवाला।

प्रतापवान् (वत्)—वि० [स० प्रताप+मतुप्] [स्त्री० प्रतापवती] (व्यक्ति) जिसका यथेष्ट प्रताप हो। प्रतापशाली। इकबालमद।

प्रताप-सारग—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

प्रताप-हंसी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

प्रतापी (पिन्)—वि० [स० प्रताप+इनि] १ प्रताप-सबधी। २ जिसका चारो ओर प्रताप फैला हो। ३ जिसके प्रताप से सब काम होते हो। प्रतापशाली। ४ दुख देने या सतानेवाला।

प्रतारक—वि० [स० प्र√तॄ (तैरना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रतारण करने अर्थात् ठगनेवाला। २ चालाक। धूर्त। ३ धोखेबाज।

प्रतारण—पु० [स० प्र√तॄ+णिच्+ल्युट्—अन] १. धोखा देना या ठगना। २ धूर्तता। धोखेबाजी।

प्रतारणा—स्त्री० [स० प्र√तॄ+णिच्+युच्—अन,+टाप्] धोखा देने या ठगने का कोई क्रिया, ढग या युक्ति।

प्रतारित—भू० कृ० [स० प्र०√तॄ+णिच्+क्त] (व्यक्ति) जिसे धोखा दिया या ठगा गया हो। छला हुआ।

प्रतिंचा—स्त्री०=प्रत्यचा (धनुष का डोरा)।

प्रति—अव्य० [स०] १ एक सस्कृत अव्यय जो क्रियाओ और सज्ञाओ से पहले उपसर्ग के रूप मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) किसी काम या बात के आधार, परिणाम या फल-स्वरूप होनेवाला। जैसे—प्रतिक्रिया, प्रतिध्वनि, प्रतिफल। (ख) विपरीत, विरोधी या समानान्तर पक्ष या स्थिति मे होनेवाला। जैसे—प्रतिकूल, प्रतिद्वद्वी, प्रतिवाद, प्रतिक्रिया। (ग) किसी के अनुकरण पर अथवा अनुरूप बनने या होनेवाला। जैसे—प्रतिकृति, प्रतिच्छाया, प्रतिमान, प्रतिमूर्ति, प्रतिलिपि। (घ) आगे या सामने। जैसे—प्रत्यक्ष। (च) अच्छी तरह। भली भाँति। जैसे—प्रतिपादन, प्रति-बोध। (छ) चारों ओर अथवा चारों ओर से। जैसे—प्रतिमडल, प्रतिरक्षा। (ज) पहले या पूर्व से। जैसे—प्रति -नियत। (झ) साधारण या सामान्य। जैसे—प्रति-नियम। (ट) पुन या फिर। जैसे—प्रतिनिर्देश। (ठ) किसी के अधीन, सहायक अथवा स्थानापन्न रूप में काम करनेवाला। जैसे—प्रति-अधीक्षक, प्रति निर्देशन, प्रति-निधि। (ड) समान। जैसे—प्रतिबल। २. विशुद्ध अव्यय की तरह और स्वतत्र रूप मे प्रयुक्त होने पर यह नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) किसी की ओर या दिशा मे। (ख) किसी को उद्दिष्ट या लक्षित करते हुए। जैसे—देवता (या पति) के प्रति उनमे यथेष्ट श्रद्धा थी। (ग) कइयों या बहुतो मे से हर एक और अलग-अलग। जैसे—प्रति-व्यक्ति एक रुपया कर लगा था।

स्त्री० १. चित्र, पुस्तक, लेख, सामयिक-पत्र आदि की बहुत सी छपी अथवा लिखी हुई नकलो या प्रतिकृतियो मे से हर एक। नकल। (कापी) जैसे—(क) इस पुस्तक के पहले सस्करण की दो हजार प्रतियाँ छपी थी। (ख) इस चित्र (अथवा लेख) की एक प्रति हमारे लिए भी तैयार करा लेना। २. किसी चीज की कोई अनुकृति या नकल। ३. प्रतिबिंब। परछाईं। ४. कोटि। वर्ग। जैसे—उच्च प्रति के लोग।

प्रतिक—वि० [स० कार्षापण+टिठन्—इक, प्रति—आदेश] १ जो एक कार्षापण मे खरीदा गया हो। २. पुस्तको आदि की प्रति से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—पुस्तक का प्रतिक स्वत्व।

प्रतिकर—पु० [स० प्रति√कृ (फेंकना)+अप्] अपकार, क्षति, हानि आदि के बदले मे दिया जानेवाला धन। मुआवजा। (कम्पेन्सेशन)

प्रतिकरण—पु० [स० प्रति√कृ+ल्युट्—अन] किसी कार्य, उत्तर, प्रतिकार या विरोध मे किया जानेवाला कार्य। (काउन्टर एक्शन)

प्रतिकर्त्ता (र्तृ)—वि० [स० प्रति√कृ+तृच्] प्रतिकरण या प्रतिकार करनेवाला।

प्रतिकर्म (न्)—पु० [स० मध्य० स०] १. वेश। भेस। २ किसी के कर्म के उत्तर मे या उसका बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला कर्म। प्रतिकार। बदला। ३ शरीर को सजाने-सँवारने के लिए किये जानेवाले अग-कर्म। शृगार।

प्रतिकर्मक—वि० [स०] प्रतिकर्म करनेवाला।

प्रतिकर्मक—पु० [स०] रसायन शास्त्र मे किसी द्रव्य के अस्तित्व या विद्यमानता की जाँच करने के लिए उसमे मिलाया जानेवाला वह द्रव्य जो पहलेवाले परीक्ष्य द्रव्य मे प्रतिक्रिया उत्पन्न करता हो। (रि-एजेन्ट)

प्रतिकर्ष—पु० [स० प्रति√कृष् (खीचना)+घञ्] १. एकत्र करना। २ सयोग।

प्रतिकश—वि० [स० प्रति√कश् (गति और शासन)+अच्] चाबुक की परवाह न करनेवाला (घोडा)।

प्रतिकष—पु० [स० प्रति√कष् (गति)+अच्] १ नेता। २ सहायक। ३ दूत।

प्रतिक स्वत्व—पु० [स०] किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की कृति की प्रतियाँ छापने अथवा और किसी प्रकार प्रस्तुत करने का वह स्वत्व जो उसके कर्ता की अनुमति के बिना और किसी को प्राप्त नही होता। (कॉपी राइट)

प्रति-कामिनी—स्त्री० [स० प्रा० स०] सौत। सपत्नी।

प्रतिकाय—पु० [स० प्रति√चि (चयन करना)+घञ्, कुत्व] १ किसी की काया के अनुरूप बनाई हुई काया। प्रतिमूर्ति। पुतला। २ दुश्मन। शत्रु। ३ लक्ष्य।

प्रतिकार—पु० [स० प्रति√कृ (करना)+घञ्] १ किसी काम, चीज या बात के बदले मे या क्षतिपूर्ति के निमित्त दिया जानेवाला धन। २ किसी काम या बात का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला कार्य। बदला। ३ किसी काम या बात को दबाने, रोकने आदि के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। (काउन्टर-एक्शन) जैसे—उन्होने जो यह व्यर्थ का उपद्रव खडा कर रखा है, इसका कुछ प्रतिकार होना चाहिए। ४ रोग की चिकित्सा। इलाज।

प्रतिकारक—वि० [स० प्रति√कृ+ण्वुल्—अक] १ किसी प्रकार की क्रिया का प्रतिकार या विरोध करनेवाला। २ किसी क्रिया के गुण या प्रभाव को नष्ट करनेवाला। मारक। (एन्टीडोट)

प्रतिकारिक—वि० [स० प्रतिकार से] १ प्रतिकार के रूप मे होने या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। २ किसी गुण, परिणाम, प्रभाव आदि के विपरीत होकर उसे निष्फल या व्यर्थ करनेवाला। (काउन्टर-एक्टिव)

प्रतिकार्य—वि० [स० प्रति√कृ+ण्यत्] जिसका प्रतिकार किया जा सके या किया जाना चाहिए।

प्रति-कितव—पु० [स० प्रा० स०] १ वह जुआरी जो किसी दूसरे जुआरी के मुकाबले मे जुआ खेलता हो। २ जोडीदार।

प्रतिकुंचित—वि० [स० प्रति√कुच् (टेढा होना)+क्त] झुका हुआ। टेढा।

प्रतिकूप—पु० [स० प्रा० स०] परिखा। खाईं।

प्रतिकूल—पु० [स० ब० स०] नदी का सामनेवाला अर्थात् उस ओर का कूल अर्थात् किनारा या तट।

वि० [भाव० प्रतिकूलता] १ जो इस ओर या हमारे पक्ष मे नही, बल्कि उस, दूरवर्ती या सामनेवाले पक्ष मे हो। 'अनुकूल' का विपर्याय। २ (व्यक्ति) जो हमसे अलग या दूर रहकर हमारे कामो मे बाधक होता हो। ३. (कार्य, वस्तु या स्थिति) जो किसी अन्य कार्य, वस्तु या स्थिति के मार्ग में बाधक होती हो। (एडवर्स) ४ रुचि, वृत्ति, स्वभाव आदि के विरुद्ध पडने या होनेवाला। जैसे—यहाँ का जलवायु हमारे लिए प्रतिकूल है। 'अनुकूल' का विपर्याय, उक्त सभी अर्थों मे।

प्रतिकूलता—स्त्री० [स० प्रतिकूल+तल्+टाप्] १ प्रतिकूल होने की अवस्था, गुण या भाव। विपरीतता। २ विरोध।

प्रतिकूलत्व—पु० [स० प्रतिकूल+त्व] प्रतिकूलता।

प्रतिकूला—स्त्री० [सं० प्रतिकूल+टाप्] सौत। सपत्नी।

प्रतिकूलाक्षर—पु० [स० प्रतिकूल-अक्षर, ब० स०] साहित्य मे प्रसग के वर्णन मे ऐसे खटकनेवाले अक्षरो या वर्णो का प्रयोग जो उसके प्रतिकूल प्रसंगो मे प्रयुक्त होना चाहिए। जैसे—शृगार रस के प्रसग मे ट वर्ग के वर्णों का प्रयोग, या रौद्र रस के वर्णन मे कोमलावृत्ति का प्रयोग। (साहित्य मे यह एक दोष माना गया है।)

प्रतिकृत—वि० [स० प्रति√कृ (करना)+क्त] १ जिसका प्रतिकार हो चुका हो। २ जिसका उत्तर दिया अथवा बदला चुकाया जा चुका हो। ३ जिसके अन्त या विनाश का उपाय किया जा चुका हो।

प्रतिकृति—स्त्री० [स० प्रति√कृ+क्तिन्] १. किसी चीज के आकार-प्रकार आदि के अनुरूप बनी या बनाई हुई वैसी ही दूसरी चीज। जैसे—यह लडका अपने पिता की प्रतिकृति है। २ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। ३. चित्र। तसवीर। ४ छाया। प्रतिबिंब। ५ प्रतिकार। बदला। ६ पूजा। ७ प्रतिनिधि।

प्रतिकृत्य—वि० [सं० प्रति√कृ+क्यप्] १ जिसका प्रतिकार किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २ जिसका प्रतिकार करना उचित हो।

पु० ऐसा कार्य जो किसी के विरोध मे किया गया हो। प्रतिकार।

प्रतिकृष्ट—वि० [स० प्रति√कृष्+क्त] १ दोबारा जोता हुआ (खेत)। २ जिसका निवारण किया गया हो। ३ छिपा हुआ। ४ तुच्छ। हेय।

प्रतिक्रम—पु० [स० प्रा० स०] १ उलटा या विपरीत क्रम। २ प्रतिकूल अथवा विपरीत आचरण या कार्य।

वि० जो किसी नियत या मानक क्रम के अनुसार न होकर विपरीत क्रम से बना या लगा हुआ हो।

प्रतिक्रमात्—अव्य० [स० प्रतिक्रम का पञ्चम्यन्त] उल्लिखित, निर्दिष्ट या बताये हुए क्रम के उलटे या विपरीत क्रम से। (वाइस-वर्सा)

प्रतिक्रांति—स्त्री० [स०] किसी क्रांति के बल या वेग के बहुत बढने पर उसे दबाने या रोकने के लिए होनेवाली क्रांति। (काउन्टर रिवोल्यूशन)

प्रतिक्रिय—वि० [स० प्रतिक्रिया से] १ (पदार्थ) जिसमे कोई रसायनिक क्रिया हो चुकने पर उसके विपरीत कोई क्रिया उत्पन्न हो। २ कोई क्रिया होने पर उसके फलस्वरूप या विपरीत क्रिया उत्पन्न या सम्पन्न करनेवाला। (रि-एक्टिव)

प्रतिक्रियक—वि० दे० 'प्रतिक्रियावादी'।

प्रतिक्रिया—स्त्री० [स० प्रति√कृ+श, इयङ्—आदेश, +टाप्] १ किसी के किये हुए काम या बात का होनेवाला प्रतिकार। बदला। (रिएक्शन) २ कोई क्रिया या घटना होने पर उसके विपक्ष या विरोध मे अथवा उसकी पुनरावृत्ति रोकने के लिए होनेवाली क्रिया या घटना। जैसे—वह दमन की प्रतिक्रिया ही थी, जिसने आदोलन का रूप और भी उग्र कर दिया था। ३ कोई क्रिया होने पर उसकी विपरीत दिशा मे आप से आप प्राकृतिक नियमो के अनुसार या स्वाभाविक रूप मे होनेवाली क्रिया। जैसे—फेंका हुआ पत्थर जहाँ गिरता है, वहा से इसी लिए उछल [illegible] पडता है कि उस पर आघात की प्रतिक्रिया होती है। ४ [illegible] चीज या बात के बहुत आगे बढ चुकने पर पीछे की ओर [illegible] विपरीत दिशा मे होनेवाली उसकी गति या प्रवृत्ति। जै[illegible] ट (या शिथिलता) को परिश्रम की प्रतिक्रिया

समझना चाहिए ५ रसायन शास्त्र मे, दो या अधिक द्रव्यो का मिश्रण या सयोग होने पर उनमे से किसी पर दूसरे द्रव्य का पडनेवाला प्रभाव या होनेवाला परिणाम। ६. भौतिक शास्त्र मे, एक अवस्था का अन्त होने पर स्वाभाविक रूप से दूसरी विपरीत अवस्था का आविर्भाव या सचार। जैसे—बहुत अधिक गरमी के बाद होनेवाली ठढक, या ज्वर उतर जाने पर शरीर का बिलकुल ठढा हो जाना। ६ प्राचीन सस्कृत साहित्य मे (क) परिष्करण या सस्कार। (ख) शृगार या सजावट।

प्रतिक्रियात्मक—वि० [स० प्रतिक्रिया-आत्मन्, ब० स०, + कप्] १. जिसके साथ कोई प्रतिक्रिया लगी हो या लगी रहती हो। प्रतिक्रिया से युक्त। २. दे० 'प्रतिक्रियक'।

प्रतिक्रियावाद—पु० [स० प० त०] [वि० प्रतिक्रियावादी] यह मत या सिद्धात कि जो बाते पहले से चली आ रही है, उनमे परिवर्तन या सुधार करनेवालो का विरोध करना चाहिए। (रिएक्शनिज्म)

प्रतिक्रियावादी (दिन्)—वि० [स० प्रतिक्रियावाद+इनि] प्रतिक्रियावाद-सबधी।

पु० वह जो प्राचीन मान्यताओ, सिद्धान्तो आदि को माननेवाला तथा नवीन मान्यताओ, सिद्धान्तो आदि का विरोधी हो।

प्रतिक्रोश—पु० [स० प्रति√क्रुश् (आह्वान)+घञ्] बिक्री का वह प्रकार जिसमे प्रतिस्पर्धी ग्राहको मे से किसी चीज का बढ-चढकर और सबसे अधिक मूल्य लगानेवाले ग्राहक के हाथ चीज बेची जाती है। नीलामी। (ऑक्शन)

प्रतिक्षय—पु० [स० प्रति√क्षि (ऐश्वर्य)+अच्] अगरक्षक।

प्रतिक्षिप्त—भू० कृ० [स० प्रति√क्षिप् (प्रेरणा करना)+क्त] १ किसी के प्रति फेका हुआ। २ जो अमान्य किया गया हो। ४ बलपूर्वक पीछे की ओर ढकेला या हटाया हुआ। (रिपल्सड)

प्रतिक्षेप—पु० [स० प्रति√क्षिप् (प्रेरित करना)+घञ्] १ बलपूर्वक पीछे की ओर फेकना या हटाना। जैसे—आक्रमण करनेवाले शत्रु का प्रतिक्षेप। २ गृहीत, मान्य या स्वीकृत न करना। अग्राह्य, अमान्य या अस्वीकृत करना। ३ अपने अनुकूल न समझकर या अरुचिकर होने पर अलग या दूर करना अथवा हटाना। ४ किसी प्रकार के गुण, प्रकृति आदि का उत्कट विरोध होने के कारण एक तत्त्व या पदार्थ का दूसरे तत्त्व या पदार्थ को दूर हटाना। (रिपल्सन, उक्त सभी अर्थों मे)। ५ रोकना। ६ तिरस्कार।

प्रतिक्षेपण—पु० [स० प्रति√क्षिप्+ल्युट्—अन] प्रतिक्षेप करने की क्रिया या भाव।

प्रतिखुर—पु० [स० प्रा० स०] गर्भ मे मरा हुआ बच्चा, जिसके कारण योनिमार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

प्रतिख्यात—वि० [स० प्रति√ख्या (कहना)+क्त] [भाव० प्रतिख्याति] जिसकी चारो ओर प्रसिद्धि हो।

प्रतिगत—भू० कृ० [स० प्रति√गम् (जाना)+क्त] १ जो कही जाकर लौट या वापस आ गया हो। २ जो पुन प्राप्त हुआ हो। ३ भूला हुआ। विस्मृत।

पु० पक्षियो की एक प्रकार की उडान।

प्रतिगमन—पु० [स० प्रति√गम्+ल्युट्—अन] वापस आना। लौटना।

प्रतिगामी (मिन्)—पु० [स० प्रति√गम् (जाना)+णिनि] [भाव० प्रतिगामिता] दे० 'प्रतिक्रियावादी'।

प्रतिगिरि—पु० [स० प्रा० स०] १ एक पहाड के सामनेवाला दूसरा पहाड। २. वह जो देखने मे पहाड़ के समान हो।

प्रतिगृहीत—भू० कृ० [स० प्रति√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्त] १. जिसका प्रतिग्रहण हुआ हो। गृहीत या स्वीकृत किया हुआ। २ ब्याहा हुआ। विवाहित।

प्रतिगृहीता—स्त्री० [प्रतिगृहीत+टाप्] १ वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। विवाहिता स्त्री। २ धर्मपत्नी।

प्रतिगृह्य—वि० [स० प्रति√ग्रह्+क्यप्]=प्रतिग्राह्य।

प्रतिग्या†—स्त्री०=प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह—पु० [स० प्रति√ग्रह्+अप्] १. किसी की दी हुई चीज ग्रहण करना। लेना। २. अधिकार या वश मे करना। ३ मंजूरी। स्वीकृति। ४ ब्राह्मण का ऐसा दान लेना जो उसे विधिपूर्वक दिया जाय। ५. दान आदि ग्रहण करने का अधिकार। ६. ग्रहण किया हुआ उपहार या भेंट। ७. अभ्यर्थना। ८. सूर्य, चन्द्रमा आदि को लगनेवाला ग्रहण। उपराग। ९ किसी बात का किया जानेवाला प्रतिकार या विरोध। १०. किसी बात का दिया जानेवाला उत्तर। जवाब। ११. सेना का पिछला भाग। १२. रक्षापूर्वक रखने के लिए मिली हुई सपत्ति। धरोहर। १३. अभियुक्त या सदिग्ध व्यक्ति का अधिकारियों के हाथ में जाँच या विचार के लिए लिया जाना। (कस्टडी) १४. सिलाई के समय उँगली मे पहनने का अगुश्ताना। १५. उगालदान। पीकदान।

प्रतिग्रहण—पु० [स० प्रति√ग्रह्+ल्युट्—अन] १ विधिपूर्वक दी हुई चीज ग्रहण करना या लेना। प्रतिग्रह। २ दे० 'प्रतिग्रह'।

प्रतिग्रही (हिन्)—वि० [सं० प्रतिग्रह+इनि] प्रतिग्रहण करने या प्रतिग्रह लेनेवाला।

प्रतिग्रहीता (तृ)—पु० [स० प्रति√ग्रह्+तृच्]=प्रतिग्रही।

प्रतिग्राह—पु० [स० प्रति√ग्रह्+ण] १ प्रतिग्रहण। २. दे० 'प्रतिग्रह'। ३ उगालदान। पीकदान।

प्रतिग्राहक—वि० [स० प्रति√ग्रह्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रतिग्राहिका] प्रतिग्रह या दान लेनेवाला। दी हुई चीज लेनेवाला।

पु० १ दे० 'आदाता'। २ आज-कल न्यायालय द्वारा नियुक्त वह अधिकारी जो किसी विवादास्पद या ऋण-ग्रस्त सपत्ति आदि की व्यवस्था के लिए नियुक्त किया जाता है। ३ बिजली की सहायता से आई हुई ध्वनियाँ आदि ग्रहण करनेवाले यत्रो का वह अग जो उन ध्वनियो को ग्रहण कर उपयोग के लिए सुरक्षित रखता है। (रिसीवर, उक्त दोनो अर्थों के लिए)

प्रतिग्राह्य—वि० [स० प्रति√ग्रह्+ण्यत्] १ जो प्रतिग्रह या दान के रूप मे लिया जा सके। २ जो ठीक मानकर गृहीत किया जा सके। स्वीकार्य।

प्रतिघ—पु० [स० प्रति√हन् (हिंसा)+ड, कुत्व] १ विरोध। २ द्वयु। लडाई। ३ शत्रु। ४ क्रोध। गुस्सा। ५ मूर्च्छा।

प्रतिघात—स्त्री० [स० प्रति√हन्+णिच्+अप्] १. वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय। २. आघात लगने पर

उसके फलस्वरूप आप से आप होनेवाला दूसरा आघात। टक्कर। ३ बाधा। रुकावट।

प्रतिघातक—वि० [सं० प्रति√हन्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिघात करनेवाला।

प्रतिघातन—पु० [सं० प्रति√हन्+णिच्√ल्युट्—अन] १ प्रतिघात करने की क्रिया या भाव। २ जान से मार डालना। प्राणघात। हत्या। ३. रुकावट। बाधा।

प्रतिघाती (तिन्)—वि० [सं० प्रति√हन्+णिच्+णिनि] १ प्रति-घात करनेवाला। २ टक्कर मारने या लेनेवाला। ३ सामने आकर मुकाबला या विरोध करनेवाला। प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिघ्न—पु० [सं० प्रति√ हन्+क] काया। शरीर।

प्रतिचार—पु० [सं० प्रति√चर् (गति)+घञ्] सजावट करना। अपने आपको सजाना।

प्रतिचिंतन—पु० [सं० प्रति √चित् (स्मरण करना)+ल्युट्—अन] पुन या फिर से चिंतन या विचार करना।

प्रतिचिकीर्षा—स्त्री० [सं० प्रति√कृ+सन्+अ, +टाप्] बदला लेने की भावना।

प्रतिच्छन्न—भू० कृ० [सं० प्रति√छद् (ढकना)+क्त] १. छाया या ढका हुआ। २. छिपा हुआ।

प्रतिच्छवि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ प्रतिबिंब। परछाईं। २. चित्र। तसवीर।

प्रतिच्छा†—स्त्री०=प्रतीक्षा।

प्रतिच्छाया—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ परछाईं। प्रतिबिंब। २. पत्थर, मिट्टी आदि की बनी हुई मूर्ति। प्रतिकृति। ३ चित्र। तसवीर।

प्रतिछाँई†—स्त्री०=परछाईं।

प्रतिछाँहरी—स्त्री०=परछाईं।

प्रतिछाया—स्त्री०=प्रतिच्छाया (परछाईं)।

प्रतिजन्म—पु० [सं० प्रा० स०] दुबारा होनेवाला जन्म। पुनर्जन्म।

प्रतिजल्प—पु० [सं० प्रति√जल्प् (बोलना)+घञ्] १ किसी के उत्तर मे कही हुई बात। २ विपरीत या विरुद्ध बात।

प्रतिजल्पक—पु० [सं० प्रति√जल्प्+ण्वुल्—अक] टाल-मटोल करने के लिए दिया जानेवाला उत्तर।

वि० किसी के विरुद्ध बोलनेवाला।

प्रतिजागर—पु० [सं० प्रति√जागृ+घञ्] किसी चीज की खूब सचेत होकर देख-रेख करना।

प्रति-जिह्वा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] गले के अन्दर की घंटी। छोटी जीभ। कौआ।

प्रति-जिह्विका—स्त्री० [सं०]=प्रतिजिह्वा।

प्रतिजीवन—पु० [सं० प्रति√जीव् (जीना)+ल्युट्—अन] पुन या फिर से मिलने या प्राप्त होनेवाला जीवन। पुनर्जन्म।

प्रतिज्ञांतर—पु० [सं० प्रतिज्ञा-अंतर, मयू० स०] तर्क मे एक प्रकार का निग्रह-स्थान, जिसमे अपनी की हुई प्रतिज्ञा का खंडन होने पर वादी अपने मन से कोई और दृष्टान्त देता हुआ अपनी प्रतिज्ञा मे किसी नये धर्म का आरोप करता है। जैसे—यदि कहा जाय, 'शब्द अनित्य है, क्योंकि वह घट के समान इंद्रियों का विषय है।' तो उसके उत्तर मे यह कहना प्रतिज्ञांतर होगा—शब्द नित्य है, क्योंकि वह जाति के समान इन्द्रियो का विषय है।

प्रतिज्ञा—स्त्री० [सं० प्रति√ज्ञा (जानना)+अङ्, +टाप्] १. किसी बात की जानकारी की दी जानेवाली स्वीकृति। २ कोई बात कह चुकने के बाद अथवा कोई काम कर चुकने के बाद इस बात का किया जानेवाला दृढ निश्चय कि भविष्य मे पुन ऐसा काम नही करेंगे। ३ कुछ करने या न करने के संबंध मे किया जानेवाला दृढ निश्चय।

मुहा०—प्रतिज्ञा पारना=प्रतिज्ञा पूरी करना। उदा०—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी।—सूर।

४ किसी प्रकार का कथन या वक्तव्य। ५ किसी के विरुद्ध उपस्थित किया जानेवाला अभियोग। ६. शपथ। सौगंध। ७ न्याय मे किसी पक्ष से कही जानेवाली वह बात या उपस्थित किया जानेवाला वह मत जिसे आगे चलकर उसे प्रमाण, युक्ति आदि की सहायता से ठीक सिद्ध करना पड़ता हो। (प्रॉपोजीशन)

विशेष—यह अनुमान के पाँच अवयवो मे से एक माना गया है।

प्रतिज्ञात—वि० [सं० प्रति√ज्ञा+क्त] १ घोषित किया हुआ। कहा हुआ। २. जिसके संबंध मे प्रतिज्ञा की गई हो। जो प्रतिज्ञा का विषय बन चुका हो। ३. जो किया जा सकता या हो सकता हो। संभव। साध्य।

प्रतिज्ञान—पु० [सं० प्रति√ज्ञा+ल्युट्—अन] १ प्रतिज्ञा। २. किसी बात के संबंध मे शपथ या सौगन्ध न खाकर सत्य-निष्ठापूर्वक कोई बात कहना।

प्रतिज्ञा-पत्र—पु० [ष० त०] १ ऐसा पत्र जिस पर कोई की हुई प्रतिज्ञा लिखी हो। २ इकरारनामा।

प्रतिज्ञापन—पु० [सं०] विशेष रूप से जोर देकर कोई बात कहना। (एफरमेशन)

प्रतिज्ञा-पालन—पु० [ष० त०] की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार काम करना या चलना।

प्रतिज्ञा-भंग—पु० [ष० त०] प्रतिज्ञा का भंग होना। प्रतिज्ञा के विरुद्ध कार्य कर बैठना, जिससे उस प्रतिज्ञा का महत्त्व समाप्त हो जाता है।

प्रतिज्ञेय—वि० [सं० प्रति√ज्ञा+यत्] १. (कार्य या बात) जिसके करने या न करने की प्रतिज्ञा की गई हो या की जाने को हो। २ प्रशंसा या स्तुति करनेवाला। प्रशंसक।

प्रतितंत्र—पु० [सं० प्रा० स०] १ वह शासन या शासन-प्रणाली जो किसी दूसरे प्रकार के शासन या शासन-प्रणाली के बिलकुल विपरीत हो। २. प्रतिकूल शास्त्र।

प्रतितंत्र-सिद्धान्त—पु० [सं० ष० त०] ऐसा सिद्धान्त जो कुछ शास्त्रो मे तो हो और कुछ मे न हो। जैसे—मीमांसा मे 'शब्द' को नित्य माना जाता है परन्तु न्याय मे वह अनित्य माना जाता है, इसलिए यह प्रति-तंत्र सिद्धान्त है।

प्रति तर—पु० [सं० प्रति√तृ (तैरना)+अप्] वह जो उस पार ले जाता हो। मल्लाह। माँझी।

प्रतिताल—पु० [सं० प्रा० स०] संगीत मे ताल का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत कातार, समराव्य, वैकुंठ और वांछित ये चारो ताल है।

प्रतितुलन—पु० [सं० प्रति√तुल्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतितुलित]

१ किसी ओर पडे या बढे हुए भार की तुलना मे दूसरी ओर का भार बढाकर दोनो को समान करना। (काउन्टर-बैलेन्स) २. लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्षो की शक्ति बराबर-बराबर हो। सतुलन।

प्रतिदत्त—भू० कृ० [स० प्रति√दा (देना)+क्त] १ प्रतिदान के रूप मे अर्थात् किसी चीज के बदले मे दिया हुआ। २. लौटाया या वापस किया हुआ।

प्रतिदान—पु० [स० प्रति√दा+ल्युट्—अन] १. किसी से पाई या ली हुई चीज उसे वापस करना या लौटाना। वापस करना। २. एक चीज लेकर उसके बदले मे दूसरी चीज देना। विनिमय। ३. वह चीज जो किसी को किसी दूसरी चीज के बदले मे दी गई हो। (रिटर्न)

प्रतिदूत—पु० [स० प्रा० स०] किसी के यहाँ से दूत आने पर उसके बदले मे भेजा जानेवाला दूत।

प्रतिदेय—वि० [स० प्रति√दा+यत्] १ जो लौटाया या वापस किया जाने को हो। २. जिसके बदले मे कुछ दिया जाने को हो।

प्रति-दृष्टात सम—पु० [स० प्रति-दृष्टात, प्रा० स०, प्रतिदृष्टात-सम तृ० त०] न्याय मे एक प्रकार की जाति।

प्रतिद्वद्व—पु० [स० प्रा० स०] दो समान व्यक्तियो या शक्तियो का पारस्परिक विरोध। बराबरवालो का झगडा या मुकाबला।

प्रतिद्वद्विता—स्त्री० [स० प्रतिद्वद्विन्+तल्+टाप्] प्रतिद्वद्वी होने की अवस्था या भाव।

प्रतिद्वद्वी(द्विन्)—पु० [स० प्रतिद्वद्व+इनि] [भाव० प्रतिद्वद्विता] १ वह व्यक्ति या वस्तु जो किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के मुकाबले की हो अथवा जिससे उसका मुकाबला हो। २. एक व्यक्ति की दृष्टि से वह दूसरा व्यक्ति जो उसी की तरह किसी एक-ही पद का उम्मीदवार हो अथवा किसी एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो।

प्रतिधान—पु० [स० प्रति√धा (धारण)+ल्युट्—अन] १ कही धरना या रखना। २ लौटाना। ३ निराकरण।

प्रतिध्रुव—पु० [स०] भूगोल मे किसी देश या स्थान के विचार से वह देश या स्थान जो उससे १८०° देशान्तर पर स्थित हो।

प्रतिध्वनि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ किसी तल या रचना से परावर्तित होकर सुनाई पडनेवाली ध्वनि-तरगें। गूँज। प्रति-शब्द। २. उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे दूसरे के विचारो आदि का कुछ परिवर्तित रूप मे इस प्रकार दोहराया जाना कि उनमे से मूल विचारो की ध्वनि या छाया निकलती हो। (ईको, उक्त दोनों अर्थो मे)

प्रतिध्वनिक—वि० [स० प्रतिध्वनि से] प्रतिध्वनि-सम्बन्धी। प्रतिध्वनि का।

प्रतिध्वनिक शब्द—पु० [स० प्रतिध्वनि से] भाषा विज्ञान मे, कोई ऐसा निरर्थक शब्द जो प्राय बोल-चाल मे किसी शब्द के अनुकरण पर ठीक उसके अनुरूप बना लिया जाता है। (ईको वर्ड) जैसे—कुछ काम करो तो पैसा-वैसा मिले। मे 'वैसा' निरर्थक शब्द 'पैसा' का प्रतिध्वनिक शब्द है।

प्रतिध्वनित—भू० कृ० [स० प्रति√ध्वन् (शब्द)+क्त] जो प्रतिध्वनि के रूप मे शब्द करता हो। गूँजा हुआ।

प्रतिध्वान—पु० [स० प्रति√ध्वन्+घञ्]=प्रतिध्वनि।

प्रतिनंदन—पु० [स० प्रति√नन्द् (प्रसन्न करना)+ल्युट्—अन] वह अभिनन्दन जो आशीर्वाद देते हुए किया जाय। बधाई देनेवाले के प्रति प्रकट की जानेवाली शुभ कामना।

प्रतिनप्ता (प्तृ)—पु० [स० प्रा० स०] प्रपौत्र। परपोता।

प्रतिना—स्त्री०=पृतना।

प्रतिनाद—पु० [स० प्रति√नद्+घञ्]=प्रतिध्वनि।

प्रतिनायक—पु० [स० प्रा० स०] नाटकों, काव्यों आदि मे वह पात्र जो नायक का प्रतिद्वन्द्वी हो या जिसकी नायक से प्रतिद्वद्विता होती हो।

प्रतिनाह—पु० [स० प्रति√नह् (बाँधना)+घञ्] एक प्रकार का रोग जिसमे नाक के नथनो मे कफ रुकने से श्वास चलना बन्द हो जाता है।

प्रति-निचयन—पु० [स० प्रति-नि√चि+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिनिचित] कही से आया या किसी का दिया हुआ देय। शुल्क आदि उचित से अधिक या अनियमित होने पर उसे दाता को लौटाना या उसके खाते मे जमा करना। (रिफन्ड)

प्रतिनिधान—पु० [सं० प्रति-नि√धा+ल्युट्—अन] १. दे० 'शिष्ट-मण्डल'। २. वह व्यक्ति या व्यक्तियो का दल जो इस प्रकार प्रतिनिधि बनकर कही भेजा जाय। प्रतिनिधि मण्डल। (डेपुटेशन)

प्रतिनिधि—पु० [सं० प्रति-नि√धा (धारण)+कि] १. प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २ वह व्यक्ति जो दूसरो की ओर से कही भेजा जाय अथवा उनकी तरफ से कार्य करता हो। अभिकर्ता। ३ संसद, विधान-सभा आदि का वह सदस्य जो किसी निर्वाचन-क्षेत्र से चुना गया हो, और जिसे उस क्षेत्र के लोगों की ओर से बोलने तथा काम करने का अधिकार होता है। ४. वह जिसे देखकर उसी के वर्ग, जाति आदि के औरो के स्वरूप रग-ढग, आचार-विचार आदि का अनुमान या कल्पना की जा सके। ५. वह जो अपने वर्ग के औरो की जगह काम आ सके। (रिप्रेजेंटेटिव; उक्त चारो अर्थो के लिए) ६. दे० 'प्रतिनिधि द्रव्य'

प्रतिनिधित्व—पु० [स० प्रतिनिधि+त्व] प्रतिनिधि होने की अवस्था या भाव। प्रतिनिधि होने का काम। (रिप्रेजेंटेशन)

प्रतिनिधि-द्रव्य—पु० [स० मध्य० स०] वैद्यक मे, वह औषध जो किसी अन्य औषध के अभाव मे दी जाती हो। जैसे—चित्रक के अभाव मे दती, तगर के अभाव मे कुठ, नसी के अभाव मे लौग दिया जाना।

प्रतिनिधि-शासन—पु० [स० ष० त०] वह शासन जिसमे विधान आदि बनाने और शासन की नीति आदि स्थिर करने के प्राय सभी अधिकार जनता के चुने हुए प्रतिनिधियो के हाथ मे रहते हैं। (रिप्रेजेंटेटिव गवर्नमेंट)

प्रतिनियम—पु० [स० प्रति-नि√यम्+अप्] सामान्य नियम या व्यवस्था।

प्रतिनियुक्त—वि० [स० प्रति-नि√युज् (जोडना)+क्त] प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप मे बनकर कही भेजा हुआ। (डेप्यूटेड)

प्रतिनियोजन—पु० [स० प्रति-नि√युज्+ल्युट्—अन] किसी को कही भेजने के लिए अधीनस्थ कर्मचारी के रूप मे नियुक्त करना। (डिप्यूटेशन)

प्रतिनिर्देश—पु० [स० प्रति-निर्√दिश् (बताना)+घञ्] पुन: उल्लेख या कथन करना।

प्रतिनिर्देश्य—वि० [स० प्रति-निर्√दिश्+ण्यत्] जिसका पुन कथन या निर्देशन करना आवश्यक या उचित हो अथवा किया जाने को हो।

प्रति-निर्वतन—पु० [स० प्रति-निर् √यत् (प्रयत्न)+णिच्+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० प्रतिनिर्वतित] १ लौटाना। २ बदला लेना।

प्रतिनिविष्ट—वि० [स० प्रति-नि√विश् (घुसना)+क्त] जो दृढ हो गया हो।

प्रतिपक्ष—पु० [प्रा० स०] १. मुकाबले का या विरोधी पक्ष। अन्य या दूसरा पक्ष। २ दूसरे या विरोधी पक्ष की कही हुई बात या उसके द्वारा उपस्थित किया हुआ मत या विचार। ३ [ष० स०] प्रतिवादी। ४ शत्रु। वैरी। ५ [प्रा० स०] बराबरी। समानता।

प्रतिपक्षता—स्त्री० [स० प्रतिपक्ष+तल्—टाप्] १ प्रतिपक्षी होने की अवस्था या भाव। २ विरोध।

प्रतिपक्षी (क्षिन्)—वि० [स० प्रतिपक्ष+इनि] १ दूसरे या विरोधी पक्ष मे रहनेवाला। २ वह जो विरोधी पक्ष मे रहकर सदा हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता हो। (हॉस्टाइल)

प्रतिपक्षीय—वि०=प्रतिपक्षी।

प्रतिपच्छ†—पु०=प्रतिपक्ष।

प्रतिपच्छी†—पु० प्रतिपक्षी।

प्रतिपत्—स्त्री०=प्रतिपद्।

प्रतिपत्ति—स्त्री० [स० प्रति√पद् (गति)+क्तिन्] १ प्राप्ति। पाना। २ ज्ञान। ३ अनुमान। ४ दान देना। ५ कार्य के रूप मे लाना। कार्यान्वित करना। ६ किसी बात या विषय का होनेवाला निरूपण, निर्धारण या प्रतिपादन। ७ कोई बात अच्छी तरह और प्रमाणपूर्वक कहते हुए किसी के मन मे बैठाना। ८ उक्त प्रकार से कही हुई बात मान लेना। ग्रहण। स्वीकार। ९ मान-मर्यादा। गौरव। प्रतिष्ठा। १० शक्तिमत्ता आदि की धाक या साख। ११ आदर-सत्कार। १२. प्रवृत्ति। १३ दृढ निश्चय या विचार। १५. परिणाम। नतीजा।

प्रतिपत्ति-कर्म(न्)—पु० [ष० त०] १. श्राद्ध आदि मे, वह कर्म जो सब के अन्त मे किया जाय। २ अन्त या समाप्ति के समय किया जाने-वाला काम।

प्रतिपत्तिमान् (मत्)—वि० [स० प्रतिपत्ति+मतुप्] १ [स्त्री० प्रतिपत्ति-मती] २ बुद्धिमान। ३ प्रसिद्ध। ४ कार्यकुशल।

प्रतिपत्ति-मूढ—वि०=किंकर्तव्य-विमूढ।

प्रतिपत्र-फला—स्त्री० [स० ब०स०] करेली।

प्रतिपद्—स्त्री० [स० प्रति√पद् (गति)+क्विप्] १ मार्ग। रास्ता। २. आरम्भ। ३ बुद्धि। समझ। ४ पंक्ति। श्रेणी। ५ पुरानी चाल का एक प्रकार का ढोल। ६ चाद्रमास के प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

प्रतिपदा†—स्त्री० [स०] एकम।

प्रतिपन्न—वि० [स० प्रति√पद्+क्त] १ अवगत। जाना हुआ। २ अंगीकृत। स्वीकृत। ३ प्रचंड। ४ प्रमाणित। निरूपित। ५ भरा-पूरा। ६ शरणागत। ७ सम्मानित। ८ प्राप्त।

प्रतिपन्नक—पु० [स० प्रतिपन्न+कन्] बौद्ध शास्त्रो के अनुसार श्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी, और अर्हत् ये चार पद।

प्रतिपन्नत्व—पु० [स० प्रतिपन्न+त्व] प्रतिपन्न होने की अवस्था या भाव।

प्रति-परीक्षण—पु० [स० प्रा० स०] न्यायालय आदि मे, किसी के कुछ कह चुकने पर उससे दबी-दबाई बातो का पता लगाने के लिए उससे कुछ और प्रश्न करना। (क्रास-इग्जामिनेशन)

प्रतिपर्ण—पु० [स० प्रा० स०] दो टुकडोवाली पावती या रसीद, प्रमाण-पत्र आदि मे का वह टुकडा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिस पर किसी को दिये हुए दूसरे टुकडे की प्रतिलिपि रहती है। (काउन्टर फॉयल)

प्रतिपाण—पु० [स० प्रति√पण् (शर्त रखना)+घञ्] वह धन जो दाँव पर प्रतिपक्षी ने लगाया हो।

प्रतिपादक—वि० [स० प्रति√पद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रतिपादन करनेवाला। २ प्रतिपन्न करनेवाला। ३. उत्पादन करनेवाला। ४ निर्वाह करनेवाला।

प्रतिपादन—पु० [स० प्रति√पद्+णिच्+ल्युट्—अन] १ भली भाँति ज्ञान कराना। अच्छी तरह समझाना। प्रतिपत्ति। २ प्रमाण देते हुए कोई बात कहना या सिद्ध करना। निरूपण। निष्पादन। ३ प्रमाण। सबूत। ४ उत्पत्ति। जन्म। ५ दान। ६ इनाम। पुरस्कार।

प्रतिपादयिता (तृ)—वि० [स० प्रति√पद्+णिच्+तृच्] प्रतिपादन करने अर्थात् अच्छी तरह बतलाने-समझानेवाला।
पु० १ शिक्षक। २ व्याख्याकार।

प्रतिपादित—भू० कृ० [स० प्रति√पद्+णिच्+क्त] १ जिसका प्रति-पादन हो चुका हो। २ निर्धारित। निश्चित। ३ जो दिया जा चुका हो। दत्त।

प्रतिपाद्य—वि० [स० प्रति√पद्+णिच्+यत्] १ जिसका प्रतिपादन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २. जो दिया जा सकता हो या दिया जाने को हो।

प्रति-पाप—पु० [स० प्रा० स०] वह कठोर और पाप-रूप व्यवहार जो किसी पापी के साथ किया जाय।

प्रतिपार—वि०, पु०=प्रतिपाल।

प्रतिपारना—स० =प्रतिपालना।

प्रतिपाल—वि० [स० प्रति√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] १ प्रति-पालन करनेवाला। प्रतिपालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक।
पु० १. रक्षा। २. सहायता।

प्रतिपालक—वि० [स० प्रति√पाल्×णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रतिपालिका] १ पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। २ रक्षक।
पु० राजा।

प्रतिपालक-अधिकरण—पु० [स० कर्म० स०] वह राजकीय अधिकरण या विभाग जो ऐसे लोगो की सपत्ति की व्यवस्था करता है जो अल्प-वयस्क, बौद्धिक दृष्टि से अयोग्य अथवा शारीरिक दृष्टि से असमर्थ हो। (कोर्ट ऑफ वार्ड्स्)

प्रतिपालन—पु० [स० प्रति√पाल्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिपालित] १ दूसरो से रक्षित रखते हुए किसी का किया जानेवाला

पालन। २. आज्ञा, आदेश आदि का कर्तव्यपूर्वक किया जानेवाला पालन। ३ देख-रेख। निगरानी। रक्षण।

प्रतिपालना—स० [सं० प्रतिपालन] १ प्रतिपालन करना। २. भरण-पोषण और रक्षा करना। ३ आज्ञा, आदेश आदि का निर्वाह करना।

प्रतिपालनीय—वि० [सं० प्रति√पाल्+णिच्+अनीयर्] जिसका प्रतिपालन करना आवश्यक या उचित हो।

प्रतिपालित—भू० कृ० [सं० प्रति√पाल्+णिच्+क्त] [स्त्री० प्रतिपालिता] १ जिसका प्रतिपालन किया गया हो या हुआ हो। २ अपनी देख-रेख मे पाला-पोसा हुआ। ३ (आज्ञा, आदेश आदि) जिसके अनुसार आचरण किया गया हो।

प्रतिपाल्य—वि० [सं० प्रति√पाल्+णिच्+यत्] १ प्रतिपालन किये जाने के योग्य। २ जिसका प्रतिपालन किया जा सकता हो। ३. जिसका पालन और रक्षा करना उचित हो। रक्षणीय।

प्रतिपीडन—पु० [सं० प्रति√पीड् (कष्ट पहुँचाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिपीडित] पीडित करनेवाले को पीडा पहुँचाना। (रिप्राइजल)

प्रतिपुरुष—पु० [सं० प्रा० स०] १ वह पुरुष जो किसी दूसरे पुरुष के स्थान पर उसका प्रतिनिधि या स्थानापन्न होकर काम करता हो। प्रतिनिधि। २ बराबर या जोड का व्यक्ति। ३ वह पुतला जिसे चोर किसी घर मे घुसने से पहले यह जानने के लिए अदर फेंकते थे कि लोग सोये है या जागते।

प्रतिपुरुष-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी के बदले कुछ काम करने, मत देने आदि का अधिकार दिया जाता है। (प्रॉक्सी)

प्रतिपूजक—वि० [सं० प्रति√पूज् (पूजा करना)णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिपूजन अर्थात् अभिवादन करनेवाला। अभिवादक।

प्रतिपूजन—पु० [सं० प्रति√पूज्+णिच्+ल्युट्—अन] १ अभिवादन। साहब-सलामत। २ पारस्परिक किया जानेवाला अभिवादन। अभिवादन का आदान-प्रदान।

प्रतिपूजा—स्त्री० [सं० प्रति√पूज्+अ+टाप्] प्रतिपूजन। (दे०)

प्रतिपूजित—भू० कृ० [सं० प्रति√पूज् णिच्+क्त] १. जिसका प्रतिपूजन या अभिवादन किया गया हो। अभिवादित। २ (व्यक्ति) जिसके साथ आदरपूर्वक व्यवहार किया गया हो। सम्मानित।

प्रतिपूज्य—वि० [सं० प्रति√पूज्+ण्यत्] जिसका प्रतिपूजन या अभिवादन करना आवश्यक या उचित हो। अभिवाद्य।

प्रतिपूर्ति—स्त्री० [सं० प्रति√पृ+क्तिन्] किसी व्यक्ति या मद से लिया हुआ या लेकर व्यय किया हुआ धन उसे देकर या उसमे जमाकर उस की पूर्ति करना। (रि-इम्वर्समेन्ट)

प्रतिपोषक—वि० [सं० प्रति√पुष् (पुष्ट करना)+ण्वुल्+अक] प्रतिपोषण या सहायता करनेवाला। मदद करनेवाला। सहायक।

प्रतिपोषण—पु० [सं० प्रति√पुष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिपोषित] सहायता। मदद।

प्रति-पौतिक—वि० [सं० प्रा० स०] जो पूति (सडायंध आदि) का नाश करनेवाला हो। पूतिका-मारक। (एन्टिसेप्टिक)

प्रतिप्रभा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १. प्रतिबिंब। २ परछाईं। छाया।

प्रतिप्रसव—पु० [सं० प्रति-प्र√सू (उत्पन्न करना)+अप्] ऐसा तथ्य या बात जो किसी सामान्य नियम के अपवाद का भी अपवाद हो। (काउन्टर-एक्सेप्शन)

प्रति-प्रसूत—वि० [सं० प्रति-प्र√सू+क्त] १ प्रतिप्रसव-सबधी। २ प्रतिप्रसव के रूप मे होनेवाला।

प्रति-प्राकार—पु० [सं० प्रा० स०] दुर्ग के बाहर की ओर का प्राकार। बाहरी परकोटा।

प्रति-प्राप्ति—स्त्री० [सं०] [भू० कृ० प्रतिप्राप्त] १. पुन प्राप्त करने या होने की अवस्था या भाव। २ किसी के हाथ में गई हुई अथवा अधिकार से निकली हुई चीज फिर से प्राप्त करना। (रिकवरी)

प्रतिफल—पु० [सं० प्रति√फल् (फलना)+अच्] १ चीज या फल के रूप में होनेवाली वह प्राप्ति जो किसी को कोई काम करने के बदले में, अथवा कोई काम करने के परिणामस्वरूप होती है। किसी काम या बात के बदले मे या परिणाम के रूप मे प्राप्त होनेवाला फल। २. परिणाम। नतीजा। ३. प्रतिबिंब।

प्रतिफलक—पु० [सं० प्रतिफल+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वह फलक जिसकी सहायता से किसी चीज की पडनेवाली परछाईं दूसरी ओर या दूसरी चीज पर परावर्तित की जाती है।

प्रतिफलित—भू० कृ० [सं० प्रति√फल्+क्त] १ जो प्रतिफल के रूप मे हो। २ जो प्रतिफल दे रहा हो। ३ जिसका प्रतिफल मिल रहा हो। ४ प्रतिबिंबित।

प्रतिबंध—पु० [सं० प्रति√बन्ध् (बाँधना)+घञ्] १ वह बंधन या रोक जो किसी काम बात या व्यक्ति पर लगाई गई हो। २. विशेषत ऐसी आज्ञा, आदेश या सूचना जो किसी बात को कोई प्रायिक, स्वाभाविक या अविकृत आचरण, व्यवहार आदि करने से पहले ही रोकने के लिए दी गई हो। मनाही। (रेस्ट्रिक्शन) ३ किसी काम या बात मे लगाई हुई शर्त। पण। (कन्डिशन) ४. नियम, विधि आदि मे पडनेवाली कठिनता से बचने के लिए निकाला हुआ ऐसा मार्ग या निश्चित किया हुआ विधान जिसके साथ कोई शर्त भी लगी हो। उपबंध। (प्राविजो) जैसे—परन्तु प्रतिबंध यह है कि .।

प्रतिबंधक—वि० [सं० प्रति√बन्ध्+ण्वुल्—अक] १ प्रतिबंध लगानेवाला। मनाही करनेवाला। २. रुकावट डालनेवाला। बाधक।
पु० पेड। वृक्ष।

प्रतिबंधकता—स्त्री० [सं० प्रतिबंधक+तल्+टाप्] १ प्रतिबंधक होने की अवस्था या भाव। २ प्रतिबंध। रुकावट। बाधा। विघ्न।

प्रतिबंधि—स्त्री० [सं० प्रति√बन्ध्+इन्] १ ऐसा तर्क या दलील जो दोनों पक्षों पर समान रूप से घटती या लागू होती हो। २ आपत्ति।

प्रतिबंधु—पु० [सं० प्रा० स०] वह जो समान पद या पदवीवाला हो।

प्रतिबद्ध—भू० कृ० [सं० प्रति√बन्ध्+क्त] १ बँधा हुआ। २ जिसके सम्बन्ध मे कोई प्रतिबंध या रुकावट लगी हो। ३ जिसके मार्ग मे बाधा खडी की गई हो। ४. नियंत्रित। ५ जो इस प्रकार किसी से संबद्ध हो कि उससे अलग न किया जा सके।

प्रति-वल—वि० [स० व० स०] १. समर्थ। सशक्त। २ वल या शक्ति मे वरावरी का। सम-वल।

प्रतिबाधक—वि० [स० प्रति√वाध् (रोकना)+ण्वुल्—अक] १ वाधा खडी करनेवाला। वाधक। २ रोकने या रुकावट खड़ी करनेवाला। ३ कष्ट पहुँचाने या पीडा देनेवाला।

प्रतिबाधन—पु० [स० प्रति√वाध्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिवाधित] १ विघ्न। वाधा। २ कष्ट। पीडा।

प्रतिवाधित—भू० कृ० [स० प्रति√वाध्+क्त] १ जिसके लिए किसी प्रकार की वाधा या रुकावट खडी की गई हो। २ हटाया हुआ। निवारित। ३ पीडित।

प्रतिवाधी (धिन्)—वि० [स० प्रति√वाध्+णिनि] १ रोकनेवाला २ वाधा डालनेवाला। ३ कष्ट पहुँचानेवाला। ४ विरोध करनेवाला। पु० वैरी। शत्रु।

प्रतिवाहु—पु० [स० अत्या० स०] १ वाँह का अगला भाग। २ ज्यामिति मे, वर्गिक क्षेत्र मे किसी एक वाहु की दृष्टि से उसकी सामनेवाली वाहु। ३ पुराणानुसार श्वफल्क के एक पुत्र और अक्रूर के भाई का नाम।

प्रतिविंव—पु० [स० प्रा० स०] १ किसी पारदर्शक तल मे किसी वस्तु की दिखलाई पडनेवाली आकृति। परछाईं। प्रतिच्छाया। जैसे—जल मे दिखाई देनेवाला चद्रमा का प्रतिविंव, शीशे मे दिखाई पडनेवाला मुख का प्रतिविम्व। २ छाया। ३ मूर्ति। ४ चित्र। ५ शीशा। ६ झलक।

प्रतिविंवक—वि० [स० प्रतिविंव+कन्] परछाईं के समान पीछे-पीछे चलनेवाला।
पु० अनुगामी। अनुचर।

प्रतिविंवन—पु० [स० प्रतिविंव+क्विप्+ल्युट्—अन] १ छाया या परछाईं डालना या पडना। २ अनुकरण। ३ तुलना।

प्रतिविंवना—अ० [स० प्रतिविंवन] प्रतिविंवित होना।
स० प्रतिविंवित करना।

प्रतिविंववाद—पु० [स० प० त०] वेदात का एक सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि जीव वास्तव मे ईश्वर का प्रतिविंव मात्र है।

प्रतिविंववादी (दिन्)—पु० [स० प्रतिविंववाद+इनि] प्रतिविंववाद का अनुयायी या समर्थक।

प्रतिविंवित—भू० कृ० [स० प्रतिविंव+इतच्] १ जिसका प्रतिविंव पडता हो। जिसकी परछाईं पडती हो। २ जो परछाईं के कारण दिखाई देता या होता हो। कुछ-कुछ या अस्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। झलकता हुआ।

प्रतिवीज—वि० [स० व० स०] १ जिसका वीज नष्ट हो गया हो। २ जिसकी उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो। निर्वीज।
पु० मरा या सडा हुआ वीज।

प्रतिवुद्ध—वि० [स० प्रति√वुध् (जानना)+क्त] १ जिसे प्रतिवोध मिला हो या हुआ हो। २ जागा हुआ। ३ चतुर। होशियार। ४ प्रसिद्ध। मशहूर। ५ उन्नत।

प्रतिवुद्धि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ प्रतिवुद्ध होने की अवस्था या भाव। २ विपरीत वुद्धि।

प्रतिवोध—पु० [स० प्रति√वुध्+घञ्] १ जागरण। जागना। २ ज्ञान। ३ चातुर्य। होशियारी।

प्रतिवोधक—वि० [स० प्रति√वुध्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रतिवोध करानेवाला। २. जगानेवाला। ३ ज्ञान उत्पन्न करनेवाला। ४. शिक्षा देनेवाला। ५ तिरस्कार करनेवाला।
पु० अध्यापक। शिक्षक।

प्रतिवोधन—पु० [स० प्रति√वुध्+णिच्+ल्युट्—अन] १ जगाना। २ ज्ञान उत्पन्न करना।

प्रतिवोधित—भू० कृ० [स० प्रति√वुध्+णिच्+क्त] १ जगाया हुआ। २ जिसे किसी वात का ज्ञान या प्रतिवोध कराया गया हो।

प्रतिवोधी (धिन्)—वि० [स० प्रति√वुध्+णिनि] १ जागता हुआ। २ जो शीघ्र ही ज्ञान प्राप्त करने को हो।

प्रतिभट—पु० [स० प्रा० स०] [भाव० प्रतिभटता] १ वरावर का योद्धा। समान शक्तिवाला योद्धा। २. वह जिससे मुकावला या लडाई होती हो। प्रतिद्वन्द्वी। ३ वैरी। शत्रु। ४ विपक्षी दल का सैनिक।

प्रतिभय—वि० [व० स०] भयकर।
पु० [प्रा० स०] भय। डर।

प्रतिभा—स्त्री० [स० प्रति√भा (दीप्ति)+अङ्+टाप्] १. ऊपर या सामने दिखाई देनेवाली आकृति या रूप। २ प्रकाश। ३ चमक। ४ ऐसी प्राकृतिक वुद्धि या मानसिक शक्ति जिसमे असाधारण तीव्रता या प्रखरता हो, और जिसके फल-स्वरूप मनुष्य अपनी कल्पना के द्वारा कला, विज्ञान, साहित्य, आदि के क्षेत्रो मे उच्च कोटि की विलकुल नई या मौलिक तथा रचनात्मक कृतियो को प्रस्तुत करने मे समर्थ होता है। असाधारण वुद्धि-वल। (जीनियस)

प्रतिभाग—पु० [स० प्रा० स०] [वि० प्रातिभागिक] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का राजकर। २ आज-कल वह शुल्क जो राज्य मे वनानेवाले कुछ विशिष्ट पदार्थों (यथा—नमक, मादक, द्रव्य, दीया-सलाई कपडो आदि) पर उनके वनते ही और वाजार मे विक्री के लिए जाने से पहले ही ले लिया जाता है। उत्पादनकर। (एक्साइज ड्यूटी)

प्रतिभागिक—वि०=प्रातिभागिक।

प्रतिभात—वि० [स० प्रति√भा+क्त] १ प्रभायुक्त। चमकदार। २ जाना हुआ। ज्ञात। ३ सामने आया हुआ। ४. प्रतीत।

प्रतिभान—पु० [स० प्रति√भा+ल्युट्—अन] १ प्रभा। चमक। २ वुद्धि। समझ। ३ उपस्थित वुद्धि। ४ विश्वास। ५ प्रगल्भता।

प्रतिभान्वित—वि० [स० प्रतिभा-अन्वित, तृ० त०] जिसमे प्रतिभा हो। असाधारण वुद्धिवाला। प्रतिभाशाली।

प्रतिभाव—पु० [स०] १ किसी भाव के प्रतिकूल या विरुद्ध पडनेवाला भाव। २ प्रतिच्छाया। परछाईं।

प्रतिभावान् (वत्)—वि० [स० प्रतिभा+मतुप्] १ प्रतिभाशाली। २ दीप्तिमान्। चमकीला।

प्रतिभाव्य—वि० [स० प्रति√भू (होना)+णिच्+यत्] (अपराधी या अभियुक्त) जो निर्णय काल तक के लिए छुडाया जा सकता हो। जिसकी जमानत हो सकती हो। (वेलेवुल)

प्रतिभाशाली (लिन्)—वि० [सं० प्रतिभा√शाल्+णिनि] [स्त्री० प्रतिभाशालिनी] १. जिसमें प्रतिभा हो। २ प्रभावशाली।

प्रतिभाषा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ उत्तर। जवाब। २ उत्तर मिलने पर दिया जानेवाला उसका दूसरा उत्तर। प्रत्युत्तर।

प्रतिभास—पु० [सं० प्रति√भास् (चमकना)+घञ्] १. आकस्मिक रूप से या एकाएक होनेवाला ज्ञान या बोध। २. यों ही या ऊपर से देखने पर होनेवाला भ्रम। ३ भ्रम। ४. आकृति।

प्रतिभासन—पु० [सं० प्रति√भास्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिभासित] १. चमकना। २ दिखाई देना। ३. भासित होना। जान पड़ना।

प्रतिभिन्न—भू० कृ० [सं० प्रति√भिद् (फाड़ना)+क्त] १. जिसका भेदन किया गया हो। २ जो अलग हो गया हो। विभक्त।

प्रतिभू—पु०[सं० प्रति√भू+क्विप्] १ वह व्यक्ति जो ऋण देनेवाले (उत्तमर्ण) के सामने ऋण लेनेवाले (अधमर्ण) की जमानत करता हो। जामिन। २ वह जो किसी की किसी तरह की जमानत दे। जमानतदार। जामिन। ३. प्रतिभूति। (दे०)

प्रतिभूत—भू० कृ० [सं० प्रति√भू+क्त] १. (व्यक्ति) जिसकी जमानत की गई हो। २ (धन) जो जमानत के रूप में जमा किया गया हो। ३. (संपत्ति) जो जमानत या रेहन के रूप में किसी को दी या सौंपी गई हो। (प्लेज्ड)

प्रतिभूति—स्त्री० [सं० प्रति√भू+क्तिन्] १. कोई काम या वचन पूरा करने आदि के लिए दिया गया निश्चित आश्वासन या उसके बदले जमा की गई वस्तु या धन। मुचलका। (सिक्योरिटी) २. ऋण आदि के प्रमाण-स्वरूप जारी किया गया सरकारी कागज। साख-पत्र। ३. प्रतिभू के द्वारा दी हुई जमानत। (बेल)

प्रतिभू-पत्र—पु० [सं० ष० त०] वह पत्र जिसमें कोई प्रतिभू या जमानतदार अपने उत्तरदायित्व की स्वीकृति लिखकर देता है। (बांड आफ ग्यारंटी)

प्रतिभेद—पु० [सं० प्रति√भिद्+घञ्] १. प्रभेद। अन्तर। फरक। २. विभाग। ३. भेद या रहस्य प्रकट करना या खोलना।

प्रतिभेदन—पु० [सं० प्रति√भिद्+ल्युट्—अन] १. प्रतिभेद या अन्तर उत्पन्न करना। २. विभाग करना। विभाजन। ३. बंद करना।

प्रतिभोग—पु० [सं० प्रति√भुज् (भोगना)+घञ्] उपभोग।

प्रतिभोजन—पु० [सं० प्रा० स०] चिकित्साशास्त्र में, किसी के लिए या कुछ विशिष्ट स्थितियों के विचार से नियत या निर्दिष्ट किया हुआ भोजन। (प्रेस्क्राइब्ड डायट)

प्रतिभौ*—पु० [सं० दे०प्रति+भाव] शरीर का तेज और बल। उदा०—हा जदुनाथ, जरा तनु ग्रास्यौ। प्रतिभौ उतरि गयो।—सूर।

प्रतिमंडल—पु० [सं० प्रा० स०] ग्रह, नक्षत्र आदि के चारों ओर का घेरा। परिवेश। भा-मंडल।

प्रतिमंडित—भू० कृ० [सं० प्रति√मंड् (अलंकृत करना)+क्त] सजाया हुआ। अलंकृत।

प्रतिमंत्रण—पु० [सं० प्रति√मंत्र् (गुप्त भाषण करना) +ल्युट्—अन] १. अभिमन्त्रण। २ उत्तर। जवाब।

प्रतिमंत्रित—भू० कृ० [सं० प्रति√मंत्र्+क्त] १ मन्त्र द्वारा पवित्र किया हुआ। अभिमंत्रित। २. जिसका जवाब दिया जा चुका हो। उत्तरित।

प्रतिमर्श—पु० [सं० प्रति√मृश् (छूना)+घञ्] एक तरह का चूर्ण।

प्रतिमा—स्त्री० [सं० प्रति√मा (मापना)+अङ्+टाप्] १. किसी की वास्तविक अथवा कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र। अनुकृति। २ आराधन, पूजन आदि के लिए धातु, पत्थर मिट्टी आदि की बनाई हुई देवता या देवी की मूर्ति। देव-मूर्ति। ३. प्रतिबिंब। परछाईं। ४. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के न होने की दशा में उसी के समान किसी दूसरे पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का उल्लेख होता है। ५. हाथियों के दाँतों पर जड़ा-जानेवाला पीतल, ताँबे आदि का छल्ला या मंडल। ६. तौलने का बट-खरा। बाट।

प्रतिमान—पु० [सं० प्रति√मा+ल्युट्—अन] १. समान मानवाली मुकाबले की दूसरी वस्तु। २. वह वस्तु या रचना जिसे आदर्श मानकर उसके अनुरूप और वस्तुएँ बनाई जाती हों। (मॉडल) ३ वह अच्छी और बढ़िया चीज जो पहले एक बार नमूने के तौर पर बनाकर रख ली जाती है और तब उसी के अनुरूप या वैसी ही चीजें बनाकर तैयार की जाती है। (पैटर्न) ४. उदाहरण। दृष्टांत।

प्रतिमानीकरण—पु० [सं०] १. प्रतिमान के रूप में लाने की प्रक्रिया या भाव। २. दे० 'मानकीकरण'।

प्रतिमाला—स्त्री० [सं० प्रा० स०] स्मरणशक्ति का परिचय देने के लिए दो आदमियों का एक दूसरे के बाद लगातार एक ही तरह के अथवा एक दूसरे के जोड़ के श्लोक या पद पढ़ना।

प्रतिमावली—स्त्री० [सं०] दे० 'मूर्तिविधान'।

प्रतिमित—भू० कृ० [सं० प्रति√मा+क्त] १ जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो। प्रतिबिंबित। २. अनुकृत। ३. जिसकी तुलना की गई हो।

प्रतिमुक्त—वि० [सं० प्रति√मुच् (छोड़ना)+क्त] १ पहना हुआ (कपड़ा या गहना)। २. छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ३ खुला हुआ। मुक्त।

प्रतिमुख—वि० [सं० प्रा० स०] मुकाबले या सामने का। जैसे—प्रतिमुख वायु।

पु० १ मुख के पीछेवाला भाग। पीठ। २ दे० 'प्रतिमुख सन्धि'।

प्रतिमुख सन्धि—स्त्री० [सं० मयू० स०] साहित्य में, रूपक (नाटक) की पाँच प्रकार की सन्धियों में से दूसरी सन्धि जिसमें 'बिन्दु' नामक अर्थ-प्रकृति और 'प्रयत्न' नामक अवस्था का मिश्रण होता है। मुख-सन्धि में जो बीज बोया जाता है, उसके विकास का आरंभ उसी में दिखाई देता है। विलास, परिसर्प, विधुत्, तपन, नर्म नर्मद्युति, प्रगमन, विरोध, पर्युपासन, पुष्प, वज्र, उपन्यास और वर्ण-संहार इसके १३ अंग कहे गये है जो प्रायः प्रयोग में नहीं लाये जाते।

प्रतिमुद्रण—पु० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रति-मुद्रित] १. खुदी या लिखी हुई आकृति, लेख आदि पर से उसकी यथा-तथ्य प्रतिलिपि उतारने या छापने की क्रिया या भाव। २. उक्त प्रकार से ज्यों की त्यों उतारी या छापी हुई प्रति। जैसे—शिलालेख या हस्तरेखा का प्रति-मुद्रण।

प्रतिमुद्रांकन—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रतिमुद्रांकित] १. जिस पर पहले किसी अधीनस्थ अधिकारी का मुद्रांकन हो चुका हो या मुहर लग चुकी हो उस पर किसी बड़े अधिकारी का अपनी स्वीकृति या सहमति सूचित करने के लिए अपनी मोहर भी लगाना। २ उक्त प्रकार से किया हुआ मुद्रांकन या लगाई हुई मोहर। (काउन्टर-सील)

प्रतिमुद्रा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. मुद्रण से ली जानेवाली छाप। २. मुद्रा (अँगूठी या मोहर) से ली जानेवाली छाप।

प्रतिमूर्ति—स्त्री० [स० प्रा० स०] किसी की आकृति को देखकर उसके अनुरूप बनाई हुई मूर्ति या चित्र आदि। प्रतिमा।

प्रतिमूल्य—पु० [स०] किसी काम, चीज या बात के बदले मे दिया जाने-वाला धन। मुआवजा। (कम्पेन्सेशन)

प्रतिमोक्ष—पु० [स० प्रा० स०] मोक्ष की प्राप्ति।

प्रतिमोचन—पु० [स० प्रति√मुच् (खोलना)+ल्युट्—अन] बंधन से मुक्त करना। छुडाना। मोचन।

प्रतियत्न—पु० [स० प्रा० स०] १ लालच। प्राप्ति या लाभ की इच्छा। २ उपग्रह। ३ कैदी। ४ सस्कार।

प्रतियाग—पुं० [स० प्रा० स०] विशेष उद्देश्य से किया जानेवाला यज्ञ।

प्रतियातन—पु० [स० प्रति√यत्+णिच्+ल्युट्—अन] १. प्रतिकार। २ प्रतिशोध। बदला।

प्रतियातना—स्त्री० [स० प्रति√यत्+णिच्+युच्—अन, टाप्] प्रतिमा। मूर्ति।

प्रतियान—पु० [स० प्रति√या (जाना)+ल्युट्—अन] वापस आना। लौटना।

प्रतियुत—भू० कृ० [स० प्रति√यु (मिश्रित होना)+क्त] बँधा हुआ।

प्रतियुद्ध—पु० [स० प्रा० स०] बराबरवालो का या बराबरी का युद्ध।

प्रतियोग—पु० [स० प्रति√युज् (जोडना)+घञ्] [वि० प्रतियोगिक] १ किसी चीज का विरोध पक्ष बनाना या तैयार करना। २ दो विरोधी तत्त्वो, पदार्थो आदि का होनेवाला मिश्रण या सयोग। ३ विरोधी तत्त्व या भाव। ४. किसी बात या मत का खण्डन। ५ किसी व्यक्ति का विरोधी। ६ वैर। शत्रुता। ७ किसी चीज, बात का परिणाम या प्रभाव नष्ट करनेवाला कार्य या तत्त्व। मारक। ८ एक बार विफल होने पर फिर से किया जानेवाला उद्योग या प्रयत्न।

प्रतियोगिता—स्त्री० [स० प्रतियोगिन्+तल्-टाप्] १. वह स्थिति जिसमे कोई व्यक्ति किसी चीज को ठीक समय से प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो। जिसकी प्राप्ति के लिए अन्य लोग भी उसी समय प्रयत्नशील हो। २ दुश्मनी। शत्रुता। ३ किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि या फल की प्राप्ति के लिए कुछ लोगो मे आपस मे होनेवाली चढा-ऊपरी या होड। मुकाबला। (कम्पीटीशन)

प्रतियोगी (गिन्)—पु० [स० प्रति√युज्+घिनुण्] १ उन कई व्यक्तियो मे से हर एक जो किसी एक ही चीज को पाने के लिए किसी एक समय मे समान रूप से प्रयत्नशील हो। प्रतियोगिता करनेवाला व्यक्ति। २. साझेदार। हिस्सेदार। ३ वह जो मुकाबला या सामना कर रहा हो। वैरी शत्रु। ४. विरोधी। ५. मददगार। सहायक। ६. सगी। साथी। ७. वह जो तुलना आदि के विचार से बराबरी का हो। जोडीदार।

प्रतियोद्धा (द्धृ)—पु० [स० प्रति√युध् (लडाई करना)+तृच्] १ बराबरी का या मुकाबले मे रहकर युद्ध करनेवाला। २ विरोधी। ३ शत्रु। दुश्मन।

परिक्षण—पु० =प्रतिरक्षा।

प्रतिरक्षा—स्त्री० [स० प्रति√रक्ष्+अ—टाप्] १. रक्षण। हिफाजत। २ आज-कल, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रो मे किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा करने का कार्य या व्यवस्था। ३ विधिक क्षेत्र मे, अपने ऊपर लगे हुए अभियोग से अपना बचाव करने या अपनी निर्दोषिता दिखाने का प्रयत्न। सफाई। (डिफेन्स)

प्रतिरथ—पु० [स० ब० स०] १. बराबरी का लडनेवाला योद्धा या रथी। २ वह जो मुकाबला करे। प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिरव—पु० [स० प्रति√रु (शब्द)+अप्] १ विवाद। झगड़ा। २ प्रतिध्वनि। गूंज।

प्रतिरुद्ध—वि० [स० प्रति√रुध् (रुकना)+क्त] १. जिसका प्रतिरोध हुआ हो। २ रुका हुआ। अवरुद्ध। ३ अटका या फँसा हुआ।

प्रतिरूप—पुं० [स० प्रा० स०] १ प्रतिमा। मूर्ति। २. चित्र। तस्वीर। ३ प्रतिनिधि। ४. एकदानव (महाभारत)।
वि० नकली। जाली। (काउन्टरफीट)

प्रतिरूपक—पु० [स० प्रतिरूप+कन्] वह जो नकली या बनावटी चीजे विशेषत सिक्के, नोट आदि बनाता हो। (काउन्टरफीटर)

प्रतिरोद्धा (द्धृ)—वि० [स० प्रति√रुध्+तृच्] १ प्रतिरोध करनेवाला। विरोधी। २ बाधा डालनेवाला। बाधक। ३ शत्रुता करनेवाला।

प्रतिरोध—पु० [स० प्रति√रुध्+घञ्] १ अडचन। बाधा। रुकावट। २ शत्रु के गढ, सेना आदि के चारो ओर डाला जानेवाला घेरा। ३. आवेग, आक्रमण आदि को रोकने के लिए किया जानेवाला कार्य। ४. छिपाव। दुराव। ५ विरोध। ६ चोरी, डाका आदि दुष्कृत्य। ७ तिरस्कार। ८ प्रतिबिंब। परछाईं।

प्रतिरोधक—वि० [स० प्रति√रुध्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रतिरोधिका] प्रतिरोध करनेवाला। रोकने या बाधा डालनेवाला।
पु० चोर, ठग, डाकू आदि जो शान्तिपूर्वक जीवन बिताने मे बाधक होते हैं।

प्रतिरोधन—पु० [स० प्रति√रुध्+ल्युट्—अन] प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिरोधित—भू० कृ० [स० प्रति√रुध्+णिच्+क्त] १ जो रोका गया हो। २ जिसमे बाधा डाली गई हो।

प्रतिलभ—पु० [स० प्रति√लभ् (प्राप्ति)+अप्, मुम्] १. बुरी चाल। कुरीति। २ किसी पर लगाया जानेवाला अभियोग, कलक या दोष। ३. निंदा। बुराई। ४ प्राप्ति। लाभ।

प्रतिलब्धि—स्त्री० [स० प्रति√लभ्+क्तिन्] प्रतिप्राप्ति। (दे०)

प्रतिलाभ—पु० [स० प्रति√लभ्+घञ्] १ प्रति-प्राप्ति। (दे०) २ शालक राग का एक भेद।

प्रतिलिपि—स्त्री० [स० प्रा० स०] मूल लेख, पत्र आदि की ज्यो का त्यो और अक्षरश तैयार की हुई नकल। (कॉपी)

प्रतिलिपिक—पु० [सं० प्रा० स०] वह जो मूल लेखो, पत्रो आदि की प्रतिलिपियाँ तैयार करने का काम करता हो। (कापीइस्ट)
प्रतिलिपित—भू० कृ० [सं० प्रतिलिपि+णिच्+क्त] (पत्र-लेख आदि) जिसकी प्रतिलिपि तैयार हो चुकी हो।
प्रतिलिप्त—वि० =प्रतिलिपित।
प्रतिलेखक—पु० [सं० प्रति√लिख्+ण्वुल्—अक] प्रतिलेखन का काम करनेवाला लेखक।
प्रतिलेखन—पु० [सं० प्रति√लिख्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिलिखित] १ किसी लिखी हुई चीज की ज्यो की त्यो नकल उतारने या उसी तरह लिखने की क्रिया या भाव। २ भाषण, सकेत-लिपि आदि की टिप्पणियो के आधार पर पढने योग्य लिखित प्रति तैयार करना। (ट्रान्सक्रिप्शन)
प्रतिलोम—वि० [सं० प्रा० स०] १ जो प्राकृतिक या प्रसम क्रम के ठीक विपरीत हो। उलटा। विपरीत। 'अनुलोम' का विपर्याय। जैसे—१, २, ३, ४ आदि का क्रम अनुलोम और ४, ३, २, १ का क्रम प्रतिलोम कहलायेगा। (कानवर्स) २ तुच्छ और नीच।
प्रतिलोमक—पु० [सं० प्रतिलोम+कन्] उलटा या विपरीत क्रम। वि० =प्रतिलोम।
प्रतिलोमज—पु० [सं० प्रतिलोम√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १. वह जिसकी उत्पत्ति प्रतिलोम-विवाह (देखे) के फलस्वरूप हुई हो। २. वर्ण-सकर।
प्रतिलोमत—अव्य० [सं० प्रतिलोम+तस्] प्रतिलोम अर्थात् उलटे क्रम से।
प्रतिलोम विवाह—पु० [सं० कर्म० स०] वह विवाह जिसमे पुरुष छोटे वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।
विशेष—शास्त्रो मे उच्च वर्ण के पुरुष को तो छोटे या नीचे वर्ण की स्त्री के साथ विवाह करना विहित माना गया है, पर इसके विपरीत रूप का विवाह वर्जित है।
प्रतिवक्ता (क्तृ)—पु० [सं० प्रा० स०] १ वह जो किसी की वात का उत्तर दे। २. कानून या विधान की व्याख्या करनेवाला व्यक्ति।
प्रतिवचन—पु० [सं० प्रा० स०] १ उत्तर। जवाब। २ प्रतिध्वनि। गूँज।
प्रतिवर्णिक—वि० [सं० प्रति-वर्ण, प्रा० स०,+ठन्—इक] १ एक ही जैसे रगवाला। २ समान। सदृश।
प्रतिवर्तन—पु० [सं० प्रति√वृत् (वरतना)+ल्युट्—अन] १ वापस आना या होना। लौटना। २ वापस करना। लौटाना। ३. किसी प्रकार के आचरण या व्यवहार के वदले मे किया जानेवाला वैसा ही दूसरा आचरण या व्यवहार। उदा०—दोनो का समुचित प्रतिवर्तन जीवन मे शुद्ध विकास हुआ।—प्रसाद। ४ पिछली या पुरानी घटनाओ, तथ्यो आदि को फिर से देखना या विचार करना। अनुदर्शन। सिंहावलोकन। (रिट्रास्पेक्शन)
प्रतिवर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० प्रति√वृत्+णिनि] [स्त्री० प्रतिवर्तिनी] १ पीछे की ओर घूमने, मुडने या लौटनेवाला। २ वापस होने या लौटनेवाला। ३ जो किसी के प्रति उसके द्वारा किये हुए आचरण के अनुसार व्यवहार करता हो। ४. जिसका सवध पिछली या वीती हुई घटनाओ या भूत काल से भी हो। (रिट्रास्पेक्टिव) जैसे—वेतन-वृद्धि के इस निश्चय का प्रभाव इस वर्ष के लिए प्रतिवर्ती भी होगा (अर्थात् इस वर्ष के जो महीने वीत चुके हैं, उनके वेतन मे भी इसी प्रकार की वृद्धि होगी।)
प्रतिवस्तु—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ वह जो रूप आदि मे किसी वस्तु के तुल्य हो। दूसरी सदृश्य वस्तु। २. किसी वस्तु के वदले मे दी जानेवाली वस्तु। ३. उपमान।
प्रतिवस्तूपमा—स्त्री० [सं० प्रतिवस्तु-उपमा, प० त०] साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जिसे कुछ लोग 'उपमा' अलकार के अतर्गत और कुछ लोग उससे पृथक् तथा स्वतत्र अलकार मानते है। इस काव्यालकार के प्रत्येक वाक्यार्थ मे उपमा अर्थात् साधर्म्य का उल्लेख होता है अथवा एक ही सावारण धर्म का उपमान-वाक्य मे भी और उपमेय-वाक्य मे भी समान रूप से कथन होता है। जैसे—मैं तुम्हारे मुख पर अनुरक्त हूँ, चकोर चद्रमा पर ही अनुरक्त होता है।
विशेष—दृष्टांत और प्रतिवस्तूपमा अलकारो का अन्तर जानने के लिए। दे० 'दृष्टात (अलाकर) का विशेष।
प्रतिवहन—पु० [सं० प्रति√वह् (ढोना)+ल्युट्—अन] पीछे की ओर या विपरीत दिशा मे ले जाने की क्रिया या भाव।
प्रतिवाक्य—पु० [सं० प्रा० स०] प्रतिवचन। (दे०)
प्रतिवाणी—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १. कोई शब्द सुनकर उसके उत्तर मे कही जानेवाली उसी तरह की दूसरी वात। २. जवाव का जवाव। प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद—पु० [सं० प्रति√वद् (वोलना)+घञ्] १. किसी वात के विरुद्ध कही जानेवाली वात। २ विशेषत ऐसा कथन या वक्तव्य जो किसी के द्वारा उपस्थित किये हुए तर्क, लगाये गये अभियोग आदि का खण्डन करने तथा उसे मिथ्या सिद्ध करने के लिए दिया जाता है। ३ विवाद। वहस। ४ उत्तर। जवाव।
प्रतिवादक—वि० [सं० प्रति√वद्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिवाद करनेवाला। जो प्रतिवाद करे।
प्रतिवादिता—स्त्री० [सं० प्रतिवादिन्+तल्—टाप्] १ प्रतिवाद करने की क्रिया या भाव। २ प्रतिवादी होने की अवस्था, धर्म या भाव।
प्रतिवादी (दिन्)—वि० [सं० प्रति√वद्+णिनि] १ प्रतिवाद-सवधी। प्रतिवादक। २. (व्यक्ति या वस्तु) जो किसी का प्रतिवाद करता हो अथवा जिससे प्रतिवाद होता हो। ३ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद करनेवाला। ४ प्रतिपक्षी।
पु० १. वह जो दूसरो द्वारा लगाये गये अभियोगो आदि का उत्तर दे। २. विधिक क्षेत्र मे, वह जिसके सवंध मे वादी ने न्यायालय मे कोई अभियोग या वाद उपस्थित किया हो और जिसका उत्तर देने के लिए वह न्यायत वाध्य हो। मुद्दालेह।
प्रतिवाप—पु० [सं० प्रति√वप् (काटना)+घञ्] १ ओषधियो का वह चूर्ण जो किसी काढे आदि मे डाला जाय। २. चूर्ण। वुकनी। ३. वैद्यक मे धातुओं को भस्म करने की क्रिया या भाव।
प्रतिवारण—पु० [सं० प्रति√वृ (रोकना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिवारित] १ मना करना। रोकना। २ चेतावनी।

प्रतिवारित—भू० कृ० [स० प्रति√वृ+णिच् +क्त] १ रोका हुआ। २. जिसे चेतावनी दी गई हो।

प्रतिवार्ता—स्त्री० [स० प्रा० स०] किसी की बात का दिया जानेवाला उत्तर।

प्रतिवास—पु० [स० प्रति√वास् (सुगधित करना)+घञ्] १ सुगधि। सुवास। खुशबू। २ समीप रहना। पास या बगल मे रहना। ३. प्रतिवेश। पडोस।

प्रतिवासिता—स्त्री० [स० प्रतिवासिन्+तल्-टाप्] प्रतिवासी अर्थात् पडोसी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

प्रतिवासी (सिन्)—पु० [स० प्रति√वस्+णिनि] प्रतिवास अर्थात् पडोस मे रहनेवाला व्यक्ति। पड़ोसी।

प्रति-वासुदेव—पु० [सं० प्रा० स०] जैनों के अनुसार विष्णु या वासुदेव के ये नौ विरोधी या शत्रु जो नरक मे गये थे—अश्वग्रीव, तारक, मोदक, मधु, निशुभ, वलि, प्रह्लाद, रावण और जरासध।

प्रतिविधान—पु० [स० प्रति-वि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. प्रतिकार। २ धर्म-शास्त्र मे वह कृत्य जो किसी अन्य कृत्य के बदले मे किया जाता है।

प्रतिविधि—स्त्री० [स० प्रति-वि√धा+कि] १. प्रतिकार। २ ऐसा काम या वात जिससे किसी प्रकार की क्षति, दोष आदि का प्रतिमार्जन हो। (रेमेडी)

प्रतिविधिक—वि० [स० प्रतिविधि] प्रतिविधि (उपचार या प्रतिकार) के रूप मे किया हुआ अथवा होनेवाला। (रेमीडिएल)

प्रतिविष—पु० [स० व० स०] विप का प्रभाव नष्ट करनेवाला पदार्थ। वि०विप का मारक।

प्रतिवीर्य—पु० [स० व० स०] वह जिसमे प्रतिरोध करने का यथेष्ट वल या शक्ति हो।

प्रतिवेदन—पु० [स० प्रति√विद् (जानना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिवेदित] १ प्रार्थना। २ किसी कार्य, घटना, तथ्य, योजना आदि के सवध मे छान-बीन, पूछ-ताछ आदि करने के उपरात तैयार किया हुआ विवरण जो किसी वडे अधिकारी के पास भेजा जाता है। (रिपोर्ट)

प्रतिवेदित—भू० कृ० [स० प्रति√विद्+णिच्+क्त] १ प्रार्थित। २ जिसके सवध मे प्रतिवेदन तैयार करके वडे अधिकारी के पास भेजा जा चुका हो। (रिपोर्टेड)

प्रतिवेदी (दिन्)—पु० [स० प्रति√विद्+णिच्+णिनि] १ वह जो प्रतिवेदन तैयार करता हो। २ वह जो समाचार-पत्रो मे छपने के लिए समाचार लिखकर भेजता हो। (रिपोर्टर)
वि० प्रतिवेदन-सवधी।

प्रतिवेश—पु० [स० प्रति√विश्+घञ्] १ अपने घर के अगल-वगल या आस-पास का स्थान। पडोस। २ घर के आस-पास या सामने के मकान। पडोस। ३ किसी के अगल-वगल या आस-पास मे रहने की अवस्था या भाव।

प्रतिवेशी (शिन्)—पु० [स० प्रतिवेश+इनि] प्रतिवेश अर्थात् पडोस मे रहनेवाला व्यक्ति। पडोसी।

प्रतिवेश्म—पु० [स० प्रा० स०] पडोस या पड़ोसी का घर।

प्रतिवेश्य—पु० [स० प्रतिवेश+यत्] पडोसी।

प्रतिवैर—पु० [स० प्रा० स०] १. वैर के वदले मे किया जानेवाला वैर। २ वैर का प्रतिकार।

प्रतिव्यूह—पु० [स० प्रा० स०] शत्रु के विरुद्ध की जानेवाली व्यूह-रचना या मोर्चेवदी।

प्रतिशंका—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ किसी शंका के उत्तर मे की जानेवाली दूसरी शका। २ ऐसी शंका जो वरावर वनी रहे।

प्रतिशत—अव्य० [स० अव्य० स०] हर सैकड़े के हिसाव से। हर सौ पर। फी सदी। (पर सेन्ट)

प्रतिशतक—पु० [स०] वह अनुपात जो प्रति सैकडे के हिसाव से ठीक किया गया हो। सौ के हिसाव से लगाया जानेवाला लेखा या वैठाया जानेवाला पड़ता। (परसेन्टेज)

प्रतिशब्द—पु० [स० प्रा० स०] १. पर्याय। २ प्रतिध्वनि। गूंज।

प्रतिशयन—पु० [स० प्रति√शी (सोना)+ल्युट्—अन्] किसी मनोरथ की सिद्धि के लिए किसी देवता के समक्ष निराहार पडे रहने की अवस्था या भाव। धरना।

प्रतिशयित—भू० कृ० [स० प्रति√शी (सोना)+क्त] जो प्रतिशयन कर रहा हो या धरना दे रहा हो।

प्रतिशासन—पु० [स० प्रति√शास् (शासन करना)+ल्युट्—अन] १ किसी को वुलाकर किसी काम के लिए कही भेजना। २. ऐसा शासन जिसमे शासक कोई वैरी या शत्रु हो।

प्रतिशिष्य—पु० [स० अव्या० स०] शिष्य का शिष्य।

प्रतिशीत—वि० [स० प्रति√श्या (गति)+क्त] १ पिघला हुआ। २. तरल। चूता हुआ।

प्रतिशोध—पु० [स० प्रा० स०] किसी के द्वारा कोई अनिष्ट होने पर उसके वदले मे उसके साथ किया जानेवाला वैसा ही अनिष्ट व्यवहार। वदला। प्रतिकार। (रिवेंज)

प्रतिश्या—स्त्री० [स० प्रति√श्यै+अङ्—टाप्] प्रतिश्याय।

प्रतिश्यान—पु० [स० प्रति√श्यै+अन]=प्रतिश्याय।

प्रतिश्याय—पु० [स० प्रति√श्यै+घञ्] १. जुकाम या सरदी नामक रोग। २. पीनस नामक रोग।

प्रतिश्रम—पु० [स० प्रति√श्रम् (आयास करना)+घञ्) परिश्रम। मेहनत।

प्रतिश्रय—पु० [स० प्रति√श्रि+अच्] १ आश्रम। २ सभा। ३ जगह। स्थान। ४ निवास-स्थान। ५ यज्ञशाला।

प्रतिश्रव—पु० [सं० प्रति√श्रु (सुनना)+अप्] १ प्रतिज्ञा। २ प्रतिध्वनि। गूंज।

प्रतिश्रवण—पु० [स० प्रति√श्रु+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह से सुनना। २ प्रतिज्ञा करना।

प्रतिश्रित—पु० [स० प्रति√श्रि+क्त] आश्रय-स्थान।

प्रतिश्रुत्—स्त्री० [स० प्रति√श्रु+क्विप्, तुक्] प्रतिशब्द। प्रतिध्वनि।

प्रतिश्रुत—भू० कृ० [स० प्रति√श्रु+क्त] १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ माना या स्वीकृत किया हुआ। ३ (विषय) जिसके सम्बन्ध मे कोई प्रतिज्ञा की गई हो या वचन दिया गया हो। ४ (व्यक्ति) जिसने किसी वात की कोई प्रतिज्ञा की हो अथवा किसी वात की जिम्मेदारी ली हो।

प्रतिश्रुति—स्त्री० [सं० प्रति√श्रु+क्तिन्] १ प्रतिध्वनि। २ किसी बात के लिए दिया जानेवाला वचन। (प्रामिस) ३ इस बात की जिम्मेदारी कि कोई चीज या बात ऐसी ही है इससे भिन्न, विपरीत या अन्यथा नही है। (गारन्टी)

प्रतिश्रोता (तृ)—वि० पु० [स० प्रति√श्रु+तृच्] १ अनुमति देनेवाला। २ मजूर करनेवाला। ३ किसी बात या विषय की प्रतिश्रुति करनेवाला।

प्रतिषिद्ध—भू० कृ० [स० प्रति√सिध् (गति)+क्त] (कार्य या बात) जिसे करने से किसी को रोका गया हो।

प्रतिषेद्धा (द्धृ)—पु० [प्रति√सिध्+तृच्] =प्रतिषेधक।

प्रतिषेध—पु० [स० प्रति√सिध्+घञ्] १. निषेध। मनाही। २ खडन। ३ साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे चमत्कार-पूर्ण ढग से प्रसिद्ध अर्थ का निषेध किया जाता है। उदा०—मोहन कर मुरली नही है कछु वडी वलाय। यहाँ मुरली का निषेध किया गया है।

प्रतिषेधक—वि० [स० प्रति√सिध्+णिच्+ण्वुल्—अक] (आज्ञा, कथन आदि) जिसमे या जिसके द्वारा किसी प्रकार का प्रतिषेध हो। (प्राहिविटरी)

पु० वह जो प्रतिषेध करे। (प्राहिविटर)

प्रतिषेधन—पु० [स० प्रति√सिध्+णिच्+ल्युट्—अन] प्रतिषेध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिषेध-लेख—पु० [प० त०] आज-कल विधिक क्षेत्र मे किसी उच्च न्यायालय की वह लिखित आज्ञा जो किसी को अन्तरिम काल मे या अन्तिम निर्णय होने तक कोई काम करने से रोकने के लिए दी जाती है। (रिट आफ प्रोहिविशन)

प्रतिषेधाधिकार—पु० [प्रतिषेध-अधिकार, प० त०] किसी शासक, ससद आदि को प्राप्त वह सवैधानिक अधिकार जिससे वह शासन के किसी अन्य अग की आज्ञा, निर्णय, प्रस्ताव आदि अमान्य या रद्द कर सकता है। निषेधाधिकार। (वीटो)

प्रतिषेधोपमा—स्त्री० [स० प्रतिषेध-उपमा, प० त०] उपमालकार का एक भेद जिसमे कुछ प्रतिषेधक तत्त्व होता है।

प्रतिष्टंभ—पु० [स० प्रति√स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] [भू० कृ० प्रतिष्टब्ध] १ स्तब्ध या निश्चेष्ट होने या करने की क्रिया या भाव। २. वाधा।

प्रतिष्ठ—वि० [स० प्रति √स्था (ठहरना)+क] प्रसिद्ध। प्रख्यात। मशहूर।

प्रतिष्ठा—स्त्री० [स० प्रति√स्था+अङ्+टाप्] १. किसी चीज का कही अच्छी तरह रखा या स्थापित किया जाना। स्थापन। जैसे—मन्दिर मे मूर्ति की प्रतिष्ठा; देव-मूर्त्ति मे की जानेवाली प्राण-प्रतिष्ठा। २. ठहराव। स्थिति। ३ जगह। स्थान। ४. मान-मर्यादा। इज्जत। ५ आदर। सत्कार। ६ प्रख्याति। प्रसिद्धि। ७ कीर्ति। यश। ८ यश की प्राप्ति। ९ देह। शरीर। १०. पृथ्वी। ११. व्रत का उद्यापन। १२ चार वर्णों के वृत्तो की सज्ञा। १३. एक प्रकार का छन्द।

प्रतिष्ठान—पु० [स० प्रति√स्था+ल्युट्—अन] १ प्रतिष्ठित या स्थापित करने की क्रिया या भाव। बैठाना। स्थापन। २. मन्दिर आदि मे देव-मूर्ति की स्थापना। ३. उपाधि। पदवी। ४. जड। मूल। ५. जगह। स्थान। ६ व्रत आदि की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। ७. दे० 'प्रतिष्ठानपुर'। ८. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जिसका आधुनिक नाम पैठण है।

प्रतिष्ठानपुर—पु० [स० ष० त०] १ गगा और यमुना के सगम पर वसी हुई झूसी नामक वस्ती का पुराना नाम। २. गोदावरी के तट पर महाराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर जहाँ राजा शालिवाहन की राजधानी थी।

प्रतिष्ठापन—पु० [सं० प्रति+स्था√णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] प्रतिष्ठित अर्थात् स्थापित करने की क्रिया या भाव।

प्रतिष्ठापयिता (तृ)—पु० [स०, प्रति√स्था+णिच्, पुक्,+तृच्] प्रतिष्ठापन करनेवाला।

प्रतिष्ठापित—भू० कृ० [स० प्रति+स्था√णिच्, पुक्+क्त] जिसका प्रतिष्ठापन किया गया हो या हुआ हो।

प्रतिष्ठित—भू० कृ० [सं० प्रति√स्था+क्त] १. जिसकी प्रतिष्ठा या इज्जत की गई हो या हुई हो। आदर-प्राप्त। २. जिसकी स्थापना की गई हो। स्थापित। जैसे—मन्दिर मे मूर्ति प्रतिष्ठित करना। ३. जो किसी स्थान पर बैठा या बैठाया गया हो। जैसे—आसन पर प्रतिष्ठित।

पु० विष्णु।

प्रतिष्ठिति—स्त्री० [स० प्रति√स्था+क्तिन्] स्थापित करने या होने की क्रिया या भाव। प्रतिष्ठान।

प्रतिसंख्या—स्त्री० [स० प्रति-सम्√ख्या (कहना)+अङ्—टाप्] १. चेतना। २. साख्य के अनुसार ज्ञान की एक अवस्था या रूप।

प्रतिसंचर—पु० [स० प्रति-सम्√चर् (गति)+अप्] पुराणानुसार प्रलय का एक भेद।

प्रतिसंदेश—पु० [सं० प्रा० स०] सदेश के जवाव मे भेजा हुआ सदेश।

प्रतिसंधान—पु०=अनुसधान।

प्रतिसंधि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. वियोग। विछोह। २. अनुसधान। खोज। तलाश। ३. अन्त। समाप्ति। ४. दो युगो का सधि-काल। ५ भाग्य की प्रतिकूलता। ६. पुनर्जन्म।

प्रतिसंविद्—स्त्री० [स० प्रा० स०] किसी विषय का सागोपाग ज्ञान।

प्रतिसंवेदक—वि० [स० प्रति-सम्√विद् (जानना)+णिच्+ण्वुल्—अक] जिससे किसी के सवध मे विस्तृत जानकारी प्राप्त होती हो।

प्रतिसंस्कार—पु० [स०] [भू० कृ० प्रतिसंस्कृत] १ फिर से किया जानेवाला सस्कार। २. मरम्मत।

प्रतिसंहरण—पु० [स०] किसी की दी हुई आज्ञा या किये हुए कार्य या निश्चय को नई आज्ञा या निर्णय से रद्द अथवा नही के समान करना। रद्द करना। (रिवोकेशन)

प्रतिसहार—पु० [सं० प्रति-सम्√हृ+घञ्] १. समेट लेना। २. त्यागना। ३. किसी वस्तु से दूर रहना। ४ निरर्थक या रद्द करना। मिटाना।

प्रतिसम—वि० [स० प्रा० स०] १. जो समान हो। २. जो वरावरी या मुकावले का हो।

प्रतिसमाधान—पु० [सं० प्रति-सम्-आ√धा+ल्युट्-अन] १ प्रतिकार। बदला। २. इलाज।

प्रतिसर—पु० [स० प्रति√सृ (गति)+अच्] १. सेवक। नौकर। २ सेना का पिछला भाग। ३ विवाह के समय पहना जानेवाला कगन। ४. कगन नाम का गहना। ५ जादू-टोना करने का मत्र। ६ घाव का भराव। ७ प्रात काल। सवेरा। ८ माला। हार।

प्रतिसरण—पु० [स० प्रति√सृ+ल्युट्—अन] किसी के सहारे उठँघने की क्रिया।

प्रतिसर्ग—पु० [स० प्रा० स०] १ पुराणानुसार वे सब सृष्टियाँ जो ब्रह्मा के मानस-पुत्रो रुद्र, विराट पुरुष, मनु, यक्ष, मारीचि आदि ने उत्पन्न की थी। २ प्रलय। ३ पुराणो का वह अश जिसमे सृष्टि के प्रलय का वर्णन है।

प्रतिसव्य—वि०[स०प्रा०स०] १ विरुद्ध आचरण करनेवाला। विरुद्धाचारी। २ प्रतिकूल। विपरीत।

प्रतिसारक—वि० [स० प्रति√सृ+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिसरण करनेवाला।

प्रतिसारण—पु० [स० प्रति√सृ+णिच् +ल्युट्—अन] १. अलग या दूर करना। हटाना। २ मसूडे साफ करने के लिए किया जानेवाला मजन। ३ किसी अग पर कोई दवा या मरहम लगाकर मलना। ४ वैद्यक मे एक प्राचीन प्रक्रिया जिसमे किसी रुग्ण अग की चिकित्सा के लिए उसे जलाने के लिए घी या तेल से दागा जाता था। ५ आजकल, घावो और फोडे-फुन्सियो को धोकर और उन पर दवा लगाकर पट्टी आदि बाँधने की क्रिया। मरहम-पट्टी। (ड्रेसिंग)

प्रतिसारण-शाला—स्त्री० [स० प० त०] वह स्थान या कमरा जहाँ रोगियो के घावो आदि का प्रतिसारण या मरहम-पट्टी होती है। (ड्रेसिंग रूम)

प्रतिसारणीय—वि० [स० प्रति√सृ+णिच् +अनीयर्] १. हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाने के योग्य। प्रतिसारण के योग्य। २ (घाव) जिस पर मरहम-पट्टी की जाने को हो या की जानी चाहिए।
पुं० सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की क्षार-पाक-विधि जो कुष्ठ, भकदर, दाह, कुष्ठ-व्रण, झाँई, मुँहासे और बवासीर आदि मे अधिक उपयोगी होती है।

प्रतिसारी (रिन्)—वि० [स० प्रति√सृ (गति)+णिनि] उलटी दिशा मे जानेवाला।

प्रतिसूर्य—पु० [स० प्रा० स०] १ सूर्य का मंडल या घेरा। २. गिरगिट। ३ आकाश मे होनेवाला एक प्रकार का उत्पात जिसमे सूर्य के सामने एक और सूर्य निकलता हुआ दिखाई देता है।

प्रतिसृष्ट—भू० कृ० [स० प्रति√सृज् (भेजना, त्यागना)+क्त] १ भेजा हुआ। प्रेषित। २ जिसका अस्वीकरण या निराकरण हुआ या किया गया हो। ३. मत्त। मतवाला।

प्रतिसेना—स्त्री० [स० प्रा० स०] विपक्षी की सेना।

प्रतिस्त्री—स्त्री० [स० प्रा० स०] पराई स्त्री।

प्रतिस्थापन—पु० [स० प्रति√स्था+णिच्, पुक्+ ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिस्थापित] १ किसी चीज के न रह जाने, नष्ट हो जाने अथवा हट जाने पर उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी चीज रखना। २. किसी व्यक्ति के हट जाने पर उसका काम चलाने के लिए उसके स्थान पर दूसरा व्यक्ति रखना। (सब्स्टिट्यूशन)

प्रतिस्थापित—भू० कृ० [स० प्रति√स्था+णिच्, पुक्+क्त] काम चलाने के लिए किसी के स्थान पर बैठाया या रखा हुआ। (सब्स्टिट्यूट)

प्रतिस्पर्धा—स्त्री० [स० प्रति√स्पर्ध् (होड लगाना)+अ—टाप्] वह स्थिति जिसमे दो या अधिक व्यक्ति एक दूसरे से किसी काम मे आगे निकलने के लिए प्रयत्नशील तथा कटिबद्ध होते हैं। (राइवल्री)

प्रतिस्पर्धी (र्धिन्)—पु० [प्रति+स्पर्ध्√णिनि] वह जो किसी से प्रतिस्पर्धा करता हो। प्रतिद्वद्वी। (राइवल)

प्रतिस्राव—पु० [स० प्रति√स्रु (बहना)+घञ्] १. एक रोग जिसमे नाक में से पीला या सफेद रग का बहुत गाढ़ा कफ निकलता है। २. पीले या सफेद रग का उक्त कफ।

प्रतिस्वन—पु० [स० प्रा० स०] प्रतिशब्द। ध्वनि।

प्रतिस्वर—पु० [सं० प्रा० स०] प्रतिशब्द।

प्रतिहंता (तृ)—वि० [स० प्रति√हन् (हिंसा)+तृच्] १ रोकनेवाला। बाधक। २ मुकाबले मे खडा होनेवाला।

प्रतिहत—भू० कृ० [स० प्रति√हन्+क्त] १ जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। २ जिसके सामने कोई बाधा या विघ्न हो। ३. हटाया हुआ। ४ फेका हुआ। ५ गिरा हुआ। ६ निराश।

प्रतिहति—स्त्री० [स० प्रति√हन् +क्तिन्]=प्रतिहनन।

प्रतिहनन—पुं० [स० प्रति√हन्+ल्युट्—अन] १ किसी हनन करनेवाले को मार डालना। २ आघात के बदले मे आघात करना। प्रतिघात।

प्रतिहरण—पु० [प्रति√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. विनाश। बरबादी। २ निवारण।

प्रतिहर्ता (र्तृ)—वि० [सं० प्रति√हृ+तृच्] प्रतिहरण या विनाश करनेवाला।
पु० यज्ञ के १६ ऋत्विजो मे से बारहवाँ ऋत्विज।

प्रतिहस्त—पु० [स० ब० स०] १ वह जो किसी के न होने की दशा मे उसके स्थान पर हो या रखा गया हो। २ प्रतिनिधि।

प्रतिहस्ताक्षरण—पु० [स० प्रतिहस्ताक्षर+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिहस्ताक्षरित] किसी के हस्ताक्षर का अनुमोदन या समर्थन करने के लिए किसी बडे अधिकारी का भी उसके साथ हस्ताक्षर करना। (काउन्टर-साइनिंग)

प्रतिहस्ताक्षरित—भू० कृ० [स० प्रतिहस्ताक्षर, प्रा० स०,+इतच्] जिस पर किसी के हस्ताक्षर को साक्षीकृत करने के लिए किसी बडे अधिकारी ने हस्ताक्षर किये हो। (काउन्टरसाइन्ड)

प्रतिहार—पु०[स० प्रति√हृ+अण्] [भाव० प्रतिहारत्व, स्त्री० प्रतिहारी] १ प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो सदा राजाओ के पास रहा करता था और राजाओ के सदेश लोगो तक पहुँचाता था। २ द्वारपाल। दरबान। ३ चोबदार। ४ ऐंद्रजालिक। जादूगर। ५ सामवेद गान का एक अग। ६. दो दलो या व्यक्तियों मे होनेवाली वह सन्धि या समझौता जिसमे यह निश्चय होता है कि पहले हम तुम्हारा अमुक काम कर देते हैं, पर इसके उपरान्त तुम्हें भी हमारा अमुक काम करना पडेगा।

प्रतिहारक—पु०[सं० प्रति√हृ+ण्वुल्—अक] १ इंद्रजाल दिखानेवाला। बाजीगर। २. वह जो प्रतिहार नामक सामक गान करता हो।

प्रतिहारण—पु०[प्रति√हृ+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिहारित] १. द्वार। दरवाजा। २. द्वार मे प्रवेश करने की अनुमति। ३ द्वार पर पहुँचकर किया जानेवाला स्वागत।

प्रतिहारत्व—पु०[सं० प्रतिहार+त्व] ड्योढीदारी। प्रतिहार या द्वारपाल का काम या पद।

प्रतिहारित—भू० कृ० [सं० प्रति√हृ+णिच्+क्त] जिसका स्वागत किया गया हो।

प्रतिहारी (रिन्)—पु० [स० प्रति√हृ+णिनि] [स्त्री० प्रतिहारिणी] द्वारपाल। दरबान।

स्त्री० वह स्त्री जो प्राचीनकाल मे राजाओ के यहाँ प्रतिहार का काम करती थी।

प्रतिहार्य—पु०[स० प्रति√हृ+ण्यत्] इंद्रजाल। बाजीगरी।

प्रतिहिंसा—स्त्री०[स० प्रा० स०] हिंसा के बदले मे की जानेवाली हिंसा।

प्रतिहित—भू० कृ०[सं० प्रति√धा (रहना)+क्त, हि-आदेश] १. रखा हुआ। २ जमाया या स्थापित किया हुआ।

प्रतीक—वि०[स० प्रति+कन्, नि० दीर्घ] १. जो किसी ओर अग्रसर या प्रवृत्त किया गया हो। किसी तरफ बढाया हुआ। २. उलटा या विपरीत रूप मे लाया हुआ। ३. जो अनुकूल न हो। प्रतिकूल। विरुद्ध। ४. जो उलटे क्रम मे चल रहा हो। प्रतिलोम। विलोम।

पुं० १. अग। अवयव। २. अंश। भाग। ३. मुख। मुँह। ४ आगे या सामने का भाग। सामना। ५ आकृति। रूप। सूरत। ६ किसी वस्तु के अनुरूप बनाई हुई वैसी ही दूसरी वस्तु। प्रतिरूप। ७. प्रतिमा। मूर्ति। ८ वह गोचर या दृश्य तथ्य या वस्तु जो किसी अगोचर, अदृश्य या अप्रस्तुत तथ्य या वस्तु के ठीक या बहुत-कुछ अनुरूप होने के कारण उसके गुण-रूप का परिचय कराने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करती हो। (सिम्बल) जैसे—देव-मूर्त्ति ईश्वर का प्रतीक है। ९. साहित्य मे वह बात या वस्तु जो अपने आकस्मिक सादृश्य, अभिसमय अथवा तर्क-सगत सबध के आधार पर किसी दूसरी बात या वस्तु या स्थान ग्रहण करती हो। (सिम्बल) १० कविता या उसके किसी चरण अथवा किसी वाक्य का वह पहला शब्द जिसका उपयोग किसी को उस कविता, चरण या वाक्य का स्मरण कराने के लिए किया जाता है। ११ वसु के पुत्र और ओघवान् के पिता का नाम। १२. मरु के पुत्र का नाम। १३. परवल।

प्रतीक-कथा—स्त्री०[सं०] कथा का वह प्रकार या भेद जिसमे गुण, प्रवृत्ति, भाव आदि अमूर्त तत्त्वो को पात्र मानकर और उन्हें शरीरधारी मानव का रूप देकर उनसे आचरण या व्यवहार कराये जाते हैं। (एलिगोरी) जैसे 'प्रसाद' कृत 'कामना' और 'एक घूँट'।

प्रतीक-भाषा—स्त्री०[स० ष० त०] ऐसी भाषा जिसमे कुछ शब्द दूसरी संज्ञाओं के प्रतीक रूप में (उनके स्थान पर) प्रयुक्त होते हैं। जैसे—हठ-योग की प्रतीक भाषा मे 'सखी' का अर्थ 'सुरति' होता है।

प्रतीक-वाद—पु०[स० ष० त०] आज-कल कला और साहित्य के क्षेत्र मे अभिव्यंजना की वह विशिष्ट प्रणाली अथवा उस प्रणाली से सबध रखनेवाला मूल तथा स्थूल सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रतीको के आधार पर भावो, वस्तुओं, विषयो आदि का बोध कराया जाता है। (सिम्बलिज्म)

प्रतीक-वादी (दिन्)—वि० [स० प्रतीक-वाद+इनि] प्रतीक-वाद सम्बन्धी। प्रतीक-वाद का।

पु० प्रतीकवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक।

प्रतीकात्मक—वि० [स० प्रतीक-आत्मन्, ब० स०, कप्] १. जो प्रतीक या प्रतीको से सबद्ध हो। २. (साहित्यिक रचना) जिसमे प्रतीकों की सहायता से भावो, वस्तुओं, विषयो आदि का बोध कराया गया हो।

प्रतीकानुक्रमणिका—स्त्री० [स० प्रतीक-अनुक्रमणिका, ष० त०] किसी व्यक्ति, ग्रन्थ या काव्य-संग्रह मे आये हुए छन्दो या पद्यो के प्रतीको की अक्षर-क्रम से लगी हुई सूची।

प्रतीकार—पु०[सं० प्रति√कृ+घञ्, दीर्घ] बदला। प्रतिकार।

प्रतीकार्य—वि० [स० प्रति√कृ+ण्यत्, दीर्घ] जिसका प्रतिकार हो सकता हो या किया जाने को हो।

प्रतीकोपासना—स्त्री०[स० प्रतीक-उपासना, ष० त०] प्रतीकों के आधार पर ईश्वर या ब्रह्म की की जानेवाली उपासना।

प्रतीक्षक—वि०[स० प्रति√ईक्ष् (देखना)+ण्वुल्—अक] १. प्रतीक्षा करने या आसरा देखने वाला। किसी का रास्ता देखने या बाट जोहनेवाला। २. पूजा करनेवाला। पूजक।

प्रतीक्षण—पु०[स०] [भू० कृ० प्रतीक्षित] प्रतीक्षा करने की क्रिया या भाव। बाट जोहना। आसरा देखना।

प्रतीक्षा—स्त्री०[स० प्रति√ईक्ष्+अ+टाप्] १ वह स्थिति जिसमे कोई उत्सुकतापूर्वक किसी आनेवाले व्यक्ति या वस्तु की बाट जोहता या रास्ता देख रहा होता है। इतजार। इतजारी। जैसे—वे डाकिये की प्रतीक्षा मे हैं। २ किसी का भरण-पोषण करना। ३ पूजा।

प्रतीक्षागृह—पु०=प्रतीक्षालय।

प्रतीक्षालय—पु० [स० प्रतीक्षा-आलय, ष० त०] १ वह स्थान जहाँ पर यात्री लोग देर से आनेवाले यानो की प्रतीक्षा मे ठहरते या रुकते हैं। २ किसी अधिकारी, बडे आदमी आदि से मिलनेवालो के लिए बैठकर, प्रतीक्षा करने का कमरा या घर। (वेटिंग रूम)

प्रतीक्षित—भू० कृ०[स० प्रति√ईक्ष्+क्त] १ जिसकी प्रतीक्षा की गई हो अथवा की जा रही हो। २ जिसका यथेष्ट ध्यान रखा गया हो। ३. पूजित।

प्रतीक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० प्रति √ईक्ष्+णिनि]=प्रतीक्षक।

प्रतीक्ष्य—वि०[स० प्रति√ईक्ष्+ण्यत्] जिसकी प्रतीक्षा की जाय या की जा सके।

प्रतीची—स्त्री०[स० प्रत्यच्+ङीप्] पश्चिम (दिशा)।

प्रतीचीन—वि०[स० प्रत्यच्+ख—ईन] १ पश्चिम सबधी। पश्चिम का। २ जो अभी या भविष्य मे होने को हो। ३. जिसने मुँह फेरकर दूसरी ओर कर लिया हो। पराङ्मुख। ४. पीछे से आनेवाला।

प्रतीचीश—पु०[सं० प्रतीची-ईश, ष० त०] १ पश्चिम दिशा के स्वामी, वरुण। २ समुद्र। सागर।

प्रतीच्छक—पु०[स० प्रति-इच्छा, ब० स०, कप्] ग्राहक। (मनु०)

वि०=प्रतीक्षक।

प्रतीच्य—वि०[स० प्रतीची+यत्] १. पश्चिम-सबधी। २. पश्चिम मे होने या रहनेवाला।

प्रतीच्या—स्त्री०[स० प्रतीच्य+टाप्] पुलस्त्य की माता।

प्रतीत—वि०[स० प्रति√इ (गति) +क्त] [भाव० प्रतीति] अटकल, अनुमान, विश्वास आदि के आधार पर जान पडनेवाला या जान पडा हुआ। जैसे—ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी तक हमारे अनुकूल ही होगा। २ प्रसिद्ध। विख्यात। ३ प्रसन्न और सन्तुष्ट।

प्रतीति—स्त्री०[स० प्रति√इ+क्तिन्] १ प्रतीत होने की क्रिया या भाव। २ जानकारी। ज्ञान। ३ किसी बात या विषय के सम्बन्ध मे होनेवाला दृढ निश्चय या विश्वास। यकीन। ४ प्रसन्नता। हर्ष। ५ आदर। सम्मान।

प्रतीत्य—पु०[स० प्रति√इ+क्यप्] सात्वना।

प्रतीत्य-समुत्पाद—पु०[स० प० त०] बौद्धो के अनुसार अविद्या, सस्कार विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भय, जाति और दु ख ये बारहो पदार्थ जो उत्तरोत्तर सबद्ध है और क्रमात् एक दूसरे से उत्पन्न होते है।

प्रतीनाह—पु०[स० प्रति√नह् (बाँधना)+घञ्] झडा।

प्रतीप—वि०[स० प्रति-आप्, ब० स०,+अ, ईत्व] १. क्रम के विचार से उलटा। विलोम। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। ३ पिछडा हुआ। ४ पीछे की ओर चलने या होने वाला। जैसे—प्रतीप गति। ५ रुचि के विरुद्ध। अप्रिय। ६ हठी। ७ बाधक। ८ विरोधी। ९ उद्दड। उद्धत।

क्रि० वि० विपरीत अवस्था मे। उलटे। उदा०—फाड सुनहली साडी उसकी तू हँसती क्यो अरी प्रतीप।—प्रसाद।

पु० १ एक प्रसिद्ध राजा जो शान्तनु के पिता और भीष्म के प्रपिता थे। २ साहित्य मे एक प्रसिद्ध अलंकार जिसमे प्रसिद्ध उपमान का अपकर्ष दिखलाने के लिए उसे उपमेय रूप मे वर्णित किया जाता और इस प्रकार वर्णनीय उपमेय का निरादर किया जाता है। इसके पाँच भेद माने गये है जो प्रथम, द्वितीय आदि विशेषणो से युक्त होते है।

प्रतीपक—वि०[स० प्रतीप√कन्] विरुद्ध । प्रतिकूल।

प्रतीप-गमन—पु०[स० कर्म० स०] पीछे की ओर जाना।

प्रतीप-गामी (मिन्)—वि० [सं० प्रतीप√गम्+णिनि] पीछे की ओर जानेवाला।

प्रतीप-दर्शनी—स्त्री० [स० प्रतीप√दृश् (देखना) + णिनि] औरत। स्त्री।

प्रतीपादन—पु०[स०] १ लौटकर फिर पहले स्थान पर आना। प्रतिगमन। २ मनोविज्ञान मे, वह स्थिति जिसमे किसी अप्रिय या कष्टदायक मनोदशा से छूटकर मन फिर अपनी पहलेवाली स्वाभाविक स्थिति मे आता है। (रिग्रेशन)

प्रतीपी (पिन्)—वि० [स० प्रतीप+इनि] प्रतिकूल। विरुद्ध।

प्रतीपोक्ति—स्त्री०[स० प्रतीप-उक्ति, कर्म० स०] किसी के कथन के विरुद्ध कही जानेवाली बात। खडन।

प्रतीयमान—वि० [स० प्रति√इ (गति) + शानच्] १ जिसकी प्रतीति हो रही हो। २ जो ध्यान या समझ मे आ रहा हो। ३ (रूप) जो ऊपर से दिखाई देता या प्रतीत होता हो। ४ (रूप) जो वास्तविक से भिन्न होने पर भी देखने मे बहुत-कुछ वास्तविक-सा जान पडता हो। (एपेरेन्ट) ५ (अर्थ) जो ध्वनि, व्यग्य आदि के रूप मे निकलता हो। ६ अभिप्राय या आशय के रूप मे जान पडनेवाला। उद्देश्य के रूप मे जान पडनेवाला। (पर्पर्टेड)

प्रतीयमानतः—अव्य० [स० प्रतीयमान+तस्] (ज्ञान या प्रतीति के सबध में) प्रतीयमान के रूप मे। ऊपर या बाहर से देखने पर। (एपेरेन्टली)

प्रतीर—पु० [स० प्र√तीर् (पार जाना) +क] किनारा। तट। तीर।

प्रतीवाप—पु०[स० प्रति√वप् (बोना)+घञ्, दीर्घ] १. वह दवा जो पीने के लिए काढे आदि मे मिलाई जाय। २. दैवी उत्पात या उपद्रव। ३ फेकना। क्षेपण। ४. किसी चीज का रूप बदलने के लिए उसे किसी दूसरी चीज मे मिलाना।

प्रतीवेश—पु०[स० प्रति√विश् (घुसना) +घञ्, दीर्घ]=प्रतिवेश।

प्रतीवेशी (शिन्)—पु०[स० प्रति√विश्+णिनि, दीर्घ] =प्रतिवेशी।

प्रतीहार—पु०[स० प्रति√हृ (हरण करना)+अण्, दीर्घ]=प्रतिहार।

प्रतीहारी (रिन्)—पु०[स० प्रति√हृ+णिनि, दीर्घ]=प्रतिहारी।

प्रतुद्—पु०[स० प्र√तुद् (व्यथित होना)+क] चोच से तोडकर अपना भक्ष्य खानेवाले पक्षियो की सज्ञा।

प्रतूर्ण—वि०[सं० प्र√त्वर् (वेग)+क्त] वेगवान।

प्रतूलिका—स्त्री०[स० प्र-तूल, ब० स०, कप्] तोशक। गद्दा।

प्रतोद—पु०[स० प्र√तुद्+घञ्] १. पशु हाँकने की छडी। औगी। पैना। २ कोडा। चाबुक। ३ एक प्रकार का साम गान।

प्रतोली—स्त्री०[स० प्र√तुल् (तोलना)+अच्+ङीप्] १. वह चौडा रास्ता जो नगर के मध्य से होकर निकला हो। चौडी सडक। राजमार्ग। २ गली। बीथी। ३ वह दुर्ग या द्वार जो नगर की ओर हो। ४ नगर के प्राकार मे बना हुआ फाटक। ५ फोडो पर बाँधी जानेवाली एक विशिष्ट प्रकार की पट्टी।

प्रतोष—पु०[स० प्र√तुष् (प्रीति)+घञ्] १ स्वायमू—मनु के एक पुत्र। २. परितोष।

प्रतोषना*—स०[स० परितोषण] १. सतुष्ट करना। २ समझाना-बुझाना।

प्रत्त—वि०[स० प्र√दा (देना)+क्त,दा=त]=प्रदत्त।

प्रत्न—वि०[स० प्र+त्नप्] १ प्राचीन। पुराना। २ पहले का। ३ परपरा से चला आया हुआ।

प्रत्न-जीव-विज्ञान—पु०[स० प्रत्न-जीव, कर्म० स०, प्रत्न-जीव-विज्ञान, प० त०] वह विज्ञान जिसमे बहुत प्राचीन काल के ऐसे जीव-जतुओ की जातियो, आकृतियो आदि का विवेचन होता है, जो अब कही नही मिलते। (पेलियन्टॉलोजी)

प्रत्नतत्व—पु०=पुरातत्व।

प्रत्यंकन—पु०[स० प्रति√अक् (चिह्नित करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यकित] दे० 'अनुरेखन'।

प्रत्यग—पु०[स० प्रति-अग, प्रा० स०] १. शरीर का कोई गौण या छोटा अग। जैसे—अग-प्रत्यग मे पीडा होना। २ किसी चीज के गौण या छोटे अग या अश। जैसे—इस विषय के सभी अग-प्रत्यग उन्होंने देख डाले है। ३. ग्रन्थ का अध्याय या परिच्छेद। ४ अस्त्र। ५ एक प्रकार की पुरानी तौल।

प्रत्यगिरा (रस्)—पु० [स०] १. पुराणानुसार, चाक्षुष मन्वतर के अगि-

रस के पुत्र एक ऋषि का नाम। २. सिरस का पेड। ३ विसखोपडा नामक जन्तु।

स्त्री० तांत्रिको की एक देवी।

प्रत्यंचा—स्त्री०[प्रति√अंच् (गति)+क्विप् या विच्,—टाप्] धनुष की डोरी जिसकी सहायता से बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।

प्रत्यंचित—भू० कृ०[स० प्रति√अच्+क्त] पूजित। सम्मानित।

प्रत्यंत—पु०[स० प्रति-अंत, अव्या० स०] म्लेच्छो के रहने का देश।

प्रत्यंत-पर्वत—पु०[स० कर्म० स०] वह छोटा पहाड जो किसी वडे पहाड के पास हो।

प्रत्यंतर—पु०[स० प्रति+अन्तर] १. किसी अतर के अदर होनेवाले कोई दूसरा छोटा या विभागीय अतर। २. उक्त प्रकार के अतर की अवधि या काल। जैसे—आज-कल वुध की दशा मे राहु का प्रत्यंतर चल रहा है। (फलित ज्योतिष)

प्रत्यक्—क्रि० वि०[स० प्रति√अच् (गति)+क्विन्] पीछे।

प्रत्यक्-चेतन—पु०[स० कर्म० स०] १ योग के अनुसार वह निर्मल चित्त-वृत्तिवाला व्यक्ति जिसने आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। २ अतरात्मा। ३ परमेश्वर।

प्रत्यक्-पर्णी, प्रत्यक्-पुष्पी—स्त्री० [स० व० स०,+ङीप्] दती वृक्ष। मूसाकानी। २ अपामार्ग। चिचड़ा।

प्रत्यक्ष—वि० [स० प्रति-अक्षि, अव्य० स०,+अच्] १ जो आँखो के सामने उपस्थित हो तथा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा हो। २ जिसका ज्ञान इद्रिय या इन्द्रियो से स्पष्ट रूप मे हो रहा हो। जैसे—प्रत्यक्ष झूठा। ३ जिसमे कोई घुमाव-फिराव या पेचीलापन न हो। नियम, परिपाटी आदि के विचार से सीधा। जैसे—प्रत्यक्ष कर। ४ जिसमे किसी वाहरी आधार या साधन का उपयोग न हुआ हो। जैसे—प्रत्यक्ष प्रमाण। ५ सीधे जनता के मतो के आधार पर या अनुसार होनेवाला। जैसे—प्रत्यक्ष निर्वाचन। (डाइरेक्ट, उक्त तीनो अर्थो मे)

पु० चार प्रकार के प्रमाणों मे से एक जिसके स्पष्ट होने के कारण किसी प्रकार का आपत्ति या सन्देह न किया जा सके। यह सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। जैसे—नित्य ज्वर आना ही उसके रोगी होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

क्रि० वि० आँखो के आगे। सामने।

प्रत्यक्ष कर—पु०[स० कर्म० स०] वह कर जो उपभोक्ताओं तथा कर-दाताओ से प्रत्यक्ष रूप से लिया जाता हो, किसी माध्यम से नही। (डाइरेक्ट टैक्स)

प्रत्यक्ष ज्ञान—पुं०[स०] इन्द्रियों के द्वारा होनेवाला किसी वस्तु या विषय का ज्ञान या जानकारी। (पर्सेप्शन)

प्रत्यक्षता—स्त्री०[स० प्रत्यक्ष+तल्+टाप्] प्रत्यक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रत्यक्षदर्शी (र्शिन्)—वि०[सं० प्रत्यक्ष√दृश्+णिनि] [स्त्री० प्रत्यक्ष-दर्शिनी] जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना या वात होती हुई देखी हो। साक्षी। (आई-विटनेस)

प्रत्यक्षर—अव्य०[स० प्रति-अक्षर, अव्य० स०] प्रत्येक अक्षर के विचार से।

प्रत्यक्षरी—स्त्री० [सं०प्रत्यक्षर+अच्+ङीप्] लेखों आदि की अक्षरश: की हुई नकल। प्रतिलिपि।

प्रत्यक्ष-लवण—पु०[स० कर्म० स०] वह नमक जो भोजन परोसने के समय किसी चीज मे डालने के लिए अतिरिक्त रूप मे और अलग दिया जाता है।

प्रत्यक्ष-वाद—पु०[स० ष० त०] दार्शनिक क्षेत्र मे, यह मत या सिद्धान्त कि जो कुछ इन्द्रियो से प्रत्यक्ष दिखाई देता हो, या जो अनुभूत होता हो, वही ठीक है, उसके सिवा और सव वाते अथवा अज्ञात और अदृश्य कारण आदि मिथ्या या व्यर्थ है। (एम्परिसिज्म)

प्रत्यक्ष-वादी (दिन्)—वि०[स० प्रत्यक्ष-वाद+इनि] प्रत्यक्ष-वाद सम्बन्धी। प्रत्यक्ष-वाद का।

पुं० वह जो प्रत्यक्ष-वाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो। वह जो केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानता हो।

प्रत्यक्षी (क्षिन्)—वि० [स० प्रत्यक्ष+इनि] प्रत्यक्षदर्शी।

प्रत्यक्षीकरण—पु०[स० प्रत्यक्ष+च्वि, ईत्व,√कृ (करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यक्षीकृत] १. किसी वस्तु या विषय को ऐसा रूप देना कि वह प्रत्यक्ष हो जाय। २ कोई वात या विषय प्रत्यक्ष रूप से सामने लाना।

प्रत्यगात्मा (त्मन्)—पु० [सं० प्रत्यक्-आत्मन्, कर्म० स०] व्यापक ब्रह्म। परमेश्वर।

प्रत्यग्र—वि०[स० प्रति-अग्र, व० स०] १ हाल का। ताजा। नया। २ शुद्ध किया हुआ। शोधित।

पु० पुराणानुसार उपरिचर वसु का एक पुत्र।

प्रत्यग्रथ—पु०[सं०] गगा और रामगगा के वीच का प्राचीन जनपद जो 'पचाल' भी कहलाता था।

प्रत्यनंतर—वि०[स० प्रति-अनतर, अव्या० स०] किसी के उपरान्त या उसके स्थान अथवा पद पर वैठनेवाला।

पु० उत्तराधिकारी।

प्रत्यनीक—पु०[स० प्रति-अनीक, अव्य० स०] १. प्रतिपक्षी। विरोधी। २ प्रतिवादी। ३. वाधा। विघ्न। ४. वैरी। दुश्मन। ५ साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जिसमे शत्रु का प्रतिकार या नाश न कर सकने पर उसके पक्षवालो के किये जानेवाले तिरस्कार का उल्लेख होता है। ६ साहित्य मे रस सवधी एक दोष जो उस समय माना जाता है जब एक ही छंद या प्रसग मे श्रृंगार और वीभत्स अथवा रौद्र और करुण सरीखे परस्पर विरोधी रस एक साथ लाये जाते हैं।

प्रत्यनुमान—पुं०[स० प्रति-अनुमान, प्रा० स०] तर्क मे किया जानेवाला वह अनुमान जिसका उद्देश्य दूसरे के अनुमान को खडित करना होता है।

प्रत्यपकार—पु०[स० प्रति-अपकार, प्रा० स०] अपकार करनेवाले के साथ किया जानेवाला अपकार।

प्रत्यब्द—अव्य०[स० प्रति-अब्द, अव्य० स०] प्रति वर्ष। हर साल।

प्रत्यभिज्ञा—स्त्री०[स० प्रति-अभिज्ञा, अव्य० स०] १ ज्ञान प्राप्त करना। जानना। २ पहले से देखे हुए को पहचानना। ३. पहले से देखी हुई चीज की तरह की कोई दूसरी चीज देखकर उसका ज्ञान प्राप्त करना। ४ वह अभेद ज्ञान जिसमे ईश्वर और जीवात्मा दोनो एक माने जाते है। ५. दे० 'प्रत्यभिज्ञादर्शन'।

प्रत्यभिज्ञात—भू० कृ०[स० प्रति-अभि√ज्ञा (जानना)+क्त] जाना या पहचाना हुआ।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन—पु०[स० ष० त०] माहेश्वर या शैव सम्प्रदाय का एक दर्शन जिसमे उसके सब सिद्धान्तो का तर्क-बद्ध निरूपण है और जिसके अनुसार भक्त-वत्सल महेश्वर ही परमेश्वर माने गये है।

प्रत्यभिज्ञान—पु०[स० प्रति-अभि√ज्ञा+ल्युट्-अन] १. प्रत्यभिज्ञा। २ स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।

प्रत्यभिदेश—पु०[सं० प्रति-अभिदेश, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रत्यभिदिष्ट] जिससे अभिदेश लेना या कुछ जानना चाहे उसका किसी और को अभिदिष्ट करना या किसी दूसरे की ओर सकेत करना। अन्योन्य सदर्भ। (क्रास रेफरेंस) जैसे—कोश मे किसी शब्द का अर्थ जानने के लिए उसके आगे किया हुआ किसी दूसरे शब्द का अभिदेश।

प्रत्यभिभूत—वि०[स० प्रति-अभि√भू (होना)+क्त]=पराभूत।

प्रत्यभियुक्त—भू० कृ०[स० प्रति-अभि√युज् (जोडना)+क्त] जिस पर *प्रत्यभियोग लगाया गया हो।*

प्रत्यभियोग—पु०[स० प्रति-अभि√युज्+घञ्] वह दूसरा अभियोग जो अभियुक्त अपने वादी अथवा अभियोग लगानेवाले पर लगावे।

प्रत्यभिवाद—पु०=प्रत्यभिवादन।

प्रत्यभिवादन—पु०[स० प्रति-अभि√वद्+णिच्+ल्युट्—अन] अभिवादन करनेवाले को उत्तर के रूप मे किया जानेवाला अभिवादन।

प्रत्यय—पु०[स० प्रति√इ (गति)+अच्] १ किसी के सबध मे होनेवाली विश्वासमय दृढ धारणा। (आइडिया) २ प्रमाण। ३. विचार। ख्याल। ४ ज्ञान। ५ आवश्यकता। ६ व्याख्यान। ७ कारण। हेतु। ८ प्रसिद्धि। ९ लक्षण। चिह्न। १० निर्णय। फैसला। ११ सम्मति। राय। १२ स्वाद। १३ सहायक। मददगार। १४ विष्णु का एक नाम। १५. छदशास्त्र या पिंगल का वह अग जिसके द्वारा छदो के भेद या विस्तार और उनकी सख्याएँ जानी जाती है। इसके प्रस्तार, सूची, उद्दिष्ट, नष्ट, पाताल, मेरु, खडमेरु, पताका और मर्कटी ये नौ भेद माने गये है। १६ व्याकरण मे वह अक्षर या अक्षर-समूह जो धातुओं अथवा विकारी शब्दो के अत मे लगाकर उनके अर्थो का विकास करता अथवा उनमे कोई विशेषता उत्पन्न करता है। जैसे—ना, ता, पन आदि।

प्रत्यय-पत्र—पु०[स० ष० त०] किसी राज्य अथवा उसके सर्व-प्रधान अधिकारी के हस्ताक्षर और मुद्रा से युक्त वह प्रमाण-पत्र जो इस बात का परिचायक होता है कि अमुक व्यक्ति को आधिकारिक रूप से अमुक पद पर नियुक्त किया गया है। (क्रिडेन्शल्स) जैसे—अमेरिका के राजदूत ने आज राष्ट्रपति महोदय की सेवा मे अपना प्रत्यय-पत्र उपस्थित किया। किसी व्यक्ति को दिया हुआ वह पत्र या प्रमाण पत्र जो इस बात का परिचायक होता है कि उसे अमुक पद पर काम करने का अधिकार दिया गया है।

प्रत्ययवाद—पु०[स० ष० त०]दार्शनिक क्षेत्र मे, यह मान्यता या सिद्धान्त कि यह दृश्य जगत् किसी चेतन सत्ता की सृष्टि है, इसलिए मनुष्य को बौद्धिक विचारो का आधार छोडकर चिरन्तन तथा शाश्वत विचारो का आश्रय लेना चाहिए। आदर्शवाद (आइडियलिज्म)

विशेष—यह मत बौद्धो के विज्ञानवाद मे बहुत-कुछ मिलता-जुलता और भौतिकवाद का प्राय विपर्याय-सा है।

प्रत्ययवादी (दिन्)—वि०[स० प्रत्ययवाद+इनि] प्रत्ययवाद-सम्बन्धी। प्रत्ययवाद का।

पु० वह जो प्रत्ययवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

प्रत्यय-वृत्ति—स्त्री०[स० ष० त०] भाषा विज्ञान मे, वह वृत्ति या विधि जिससे शब्दो के अन्त में प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाये जाते है। निष्पत्ति विधि। जैसे—परिवार से पारिवारिक, राज्य से राजकीय आदि शब्द इसी वृत्ति से बने है।

प्रत्ययात—वि०[स० प्रत्यय-अत, ब० स०] (शब्द) जिसके अन्त मे कोई प्रत्यय लगा हो। प्रत्यय मे युक्त शब्द। जैसे—दूकानदार, मिलनसार, लिखावट आदि शब्द प्रत्यात है।

प्रत्ययिक—वि० [स० प्रात्ययिक] १ प्रत्यय-सम्बन्धी। प्रत्यय का। २. (बात या विषय) जो किसी को इस प्रत्यय या विश्वास पर बतलाया जाय कि वह इसे किसी और पर प्रकट न करेगा। विश्रभी। विश्वस्त। (कान्फिडेन्शल)

प्रत्ययित—वि० [स० प्रत्यय+इतच्] १ (व्यक्ति) जिसका प्रत्यय या विश्वास किया गया हो याकिया जा सकता हो। २ (विषय) जिस पर प्रत्यय या विश्वास किया गया हो। ३ (शब्द) जिसमे प्रत्यय लगा या लगाया गया हो। ४ दे० 'प्रत्ययिक'।

प्रत्ययी (यिन्)—वि०[स० प्रत्यय+इनि] १. प्रत्यय या विश्वास करनेवाला। २ 'प्रत्ययिक'।

प्रत्यर्क—पु०[स० प्रति-अर्क, प्रा० स०] सूर्य के पास कभी-कभी दिखाई पडनेवाला सूर्य-मडल की तरह का एक प्रकाश। प्रतिसूर्य।

प्रत्यर्थ—वि०[स० प्रति-अर्थ, प्रा० स०] उपयोगी।

पु० १ उत्तर। जवाब। २ विरोध।

प्रत्यर्थक—पु०[स० प्रत्यर्थ+कन्] १ उत्तर। जवाब। ३. विरोध।

प्रत्यर्थिक—पु०[स० प्रत्यर्थिन्+कन्]=प्रत्यर्थक।

प्रत्यर्थी (र्थिन्)—पु०[सं० प्रति√अर्थ, (पीडित करना)+णिनि] [स्त्री० प्रत्यर्थिनी] १ प्रतिवादी। मुद्दालेह। २ प्रतिस्पर्धा करनेवाला व्यक्ति। प्रतिद्वद्वी। ३ शत्रु।

प्रत्यर्पण—पु०[स० प्रति√ऋ (गति)+णिच्, पुक्,+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यर्पित] १ वापस करना। लौटाना। २ लिया हुआ अधिक धन उसके मालिक को लौटाना। ३ जिसकी कोई चीज किसी तरह अपने पास आ गई हो उसे वापस करना या उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी चीज देना। लौटाना। ४ किसी देश या राज्य के द्वारा दूसरे देश के अपराधी, कैदी या भगोडे को अपने यहाँ से पकडकर उस देश या राज्य को लौटाने की क्रिया। (एक्स्ट्राडिशन)

प्रत्यर्पित—भू० कृ०[स० प्रति√ऋ+णिच्, पुक्,+क्त] लौटाया या वापस किया हुआ।

प्रत्यवरोध—पु०[स० प्रति-अव√रुध्+घञ्] बाधा। रुकावट।

प्रत्यवरोधन—पु०[स० प्रति-अव√रुध् (रोकना)+ल्युट्—अन] प्रत्यवरोध उत्पन्न करना। बाधा डालना।

प्रत्यवरोह—पु०[स० प्रति-अव√रुह्+घञ्] १ अवरोह। उतार। २. सीढी।

प्रत्यवरोहण—पु० [स० प्रति—अव√रुह्+ल्युट्—अन] नीचे की ओर आना। उतरना।

प्रत्यवलोकन—पु०[स० प्रति-अव√लोक् (देखना)+ल्युट्—अन] पीछे की ओर देखना।

प्रत्यवसान—पुं०[सं० प्रति-अव√सो (समाप्त करना)+ल्युट्—अन] [स्त्री० प्रत्यवसित] १ भोजन करना। खाना। २. भोजन।

प्रत्यवस्कंद—पुं०[सं० प्रति-अव√स्कन्द् (गति)+घञ्] किसी के द्वारा लगाया हुआ अभियोग इस ढंग से स्वीकार करना कि उसकी गिनती अभियोग में न होने पावे।

प्रत्यवस्थाता (तृ)—पुं०[सं० प्रति-अव√स्था+तृच्] १. प्रतिवादी। २. शत्रु।

प्रत्यवस्थान—पुं०[सं० प्रति-अव√स्था+ल्युट्—अन] १. किसी स्थान से हटाना। २. विरोध। ३ शत्रुता। ४ दे० 'यथापूर्व स्थिति'।

प्रत्यवहार—पुं० [सं० प्रति-अव√हृ (हरण करना)+घञ्] १. वापस लेना। २. संहार। ४. लड़ते हुए सैनिकों को लड़ने से रोकना। युद्ध स्थगित करना।

प्रत्यवाय—पुं०[सं० प्रति-अव√इ+अच्] १. कम होना। घटना। ह्रास। २. दैनिक विहित कर्मों के न करने से लगनेवाला पाप। ३ बहुत बड़ा उलट-फेर या परिवर्तन। ४ बुरा काम। दुष्कर्म। ५. जो न हो, उसका आविर्भाव न होना। ६ जो हो, उसका न रह जाना। विनाश। नाश।

प्रत्यवेक्षण—पुं०[सं० प्रति-अव√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्—अन] १. देख-रेख करना। चौकसी करना। २. ध्यान रखना। ३. किसी काम, चीज या बात का किसी की देख-रेख में रहना या होना। अवधान।

प्रत्यवेक्षा—स्त्री०[सं० प्रति-अव√ईक्ष्+अ+टाप्] =प्रत्यवेक्षण।

प्रत्यष्ठीला—पुं०[सं० प्रति-अष्ठीला, प्रा० स०] सुश्रुत के अनुसार, एक प्रकार का वात रोग जिसमें नाभि के नीचे पेड़ू में एक गुठली-सी हो जाती है, और जिसके फलस्वरूप मल-मूत्र बंद हो जाते हैं।

प्रत्यस्थ—वि०[सं०] जो खींचने या तानने पर बढ़ जाय या लंबा हो जाय परन्तु खिंचाव या तनाव हटने पर फिर ज्यों का त्यों हो जाय। तन्यक। (इलैस्टिक)

प्रत्यस्थता—स्त्री०[सं०] प्रत्यस्थ होने की अवस्था या भाव। तन्यता। (इलैस्टिसिटी)

प्रत्याक्रमण—पुं० [सं० प्रति-आक्रमण, प्रा० स०] आक्रमण होने पर उसके उत्तर या बदले में किया जानेवाला आक्रमण। जवाबी हमला। (काउन्टर अटैक)

प्रत्याख्यात—भू० कृ० [सं० प्रति-आ√ख्या (कहना)+क्त] जिसका प्रत्याख्यान हुआ हो या किया गया हो।

प्रत्याख्यान—पुं०[सं० प्रति-आ√ख्या+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्याख्यात] १ किसी कही हुई बात के विरोध में कुछ कहना। २ अस्वीकृत करना। न मानना। ३. किसी कार्य, निश्चय आदि के सम्बन्ध में की जानेवाली आपत्ति या विरोध। (प्रोटेस्ट) ४ निर्णय आदि को सर्वांश या आंशिक रूप से अग्राह्य या अमान्य करना। ५. अनादर या अवज्ञापूर्वक कोई चीज लेने से इनकार करना या लौटाना। ५ दे० 'अपाकरण'।

प्रत्यागत—वि०[सं० प्रति-आ√गम् (जाना)+क्त] १. जो कहीं जाकर लौट आया हो। वापस आया हुआ। २. जो पुनः प्राप्त या हस्तगत हुआ हो।

पुं० १. कुश्ती में, एक प्रकार का दाँव या पेच। २ तलवार, लाठी आदि की लड़ाई में एक प्रकार का पैंतरा।

प्रत्यागति—स्त्री०[सं० प्रति-आ√गम्+क्तिन्] वापस आने या होने का भाव। वापसी।

प्रत्यागम—पुं०[सं० प्रति-आ√गम्+अप्] १ वापस आना या लौटना। २. दोबारा या फिर से आना। ३ किसी काम या व्यापार में लगी हुई पूँजी के बदले में मिलनेवाला धन। मुनाफा। लाभ।

प्रत्यागमन—पुं०[सं० प्रति-आ√गम्+ल्युट्—अन] प्रतिगमन।

प्रत्याघात—पुं० [सं० प्रति-आघात, प्रा० स०] १. आघात के बदले में किया जानेवाला आघात। २ टक्कर। ३ आधुनिक राज-नीति में (युद्ध से भिन्न) वह कड़ी आर्थिक या राजनीतिक कार्रवाई जो किसी राज्य के साथ अपनी शिकायतें दूर कराने अथवा अपनी किसी क्षति का बदला चुकाने के उद्देश्य से की जाती है। (रेप्रिजल)

प्रत्याचार—पुं० [सं० प्रति-आचार, प्रा० स०] १. किसी प्रकार के आचरण के बदले में किया जानेवाला वैसा ही आचरण या व्यवहार। २ अनुकूल व्यवहार।

प्रत्यातप—पुं० [सं० प्रति-आतप, प्रा० स०] छाया। परछाईं।

प्रत्यादान—पुं० [सं० प्रति-आदान, प्रा० स०] पुनः या दोबारा किसी से कोई चीज लेना।

प्रत्यादित्य—पुं० [प्रति-आदित्य, प्रा० स०] दे० 'प्रतिसूर्य'।

प्रत्यादेश—पुं० [सं० प्रति-आ√दिश्+घञ्] [भू० कृ० प्रत्यादिष्ट] १ आदेश। आज्ञा। २ घोषणा। ३. अस्वीकरण। इनकार। ४ खंडन। ५ ऐसी आकाशवाणी जो चेतावनी के रूप में हो। ६ किसी को मात करने या हराने की क्रिया या भाव।

प्रत्याधान—पुं० [सं० प्रति-आ√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. मस्तक। (वेद) २. ऐसा स्थान जहाँ चीजें जमा की जाती हों।

प्रत्यानयन—पुं० [सं० प्रति-आनयन, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रत्यानीत] १. किसी को वापस लाना। २ दे० 'प्रत्यर्पण'।

प्रत्यानीत—भू० कृ० [सं० प्रति-आनीत, प्रा० स०] वापस लाया या लौटाया हुआ।

प्रत्यापत्ति—स्त्री० [सं० प्रति-आपत्ति, प्रा० स०] १. पुनरागमन। २ वैराग्य। ३. उत्तराधिकारी के न रहने पर किसी संपत्ति का राज्य के अधिकार में आना। ४. उक्त प्रकार से राज्य को प्राप्त होनेवाली अचल सम्पत्ति। नजूल।

प्रत्यापन्न—वि० [सं० प्रति-आ√पद्+क्त] लौटा या लौटकर आया हुआ।

प्रत्याभास—पुं० [सं० प्रति+आभास] किसी प्रकार के तेज या शक्ति की प्रतिक्रिया के रूप में अथवा फलस्वरूप होनेवाला आभास। जैसे—(क) मन में आत्मा का प्रत्याभास निहित रहता (अथवा लक्षित होता) है। (ख) सूर्य के प्रत्याभास से ही चंद्रमा प्रकाशमान् होता है।

प्रत्याभूति—स्त्री० [सं० प्रति-आ√भू (होना)+क्तिन्] किसी चीज या बात के संबंध में दृढ़ता और निश्चयपूर्वक यह कहना या विश्वास दिलाना कि यह ऐसी ही है या ऐसी ही होगी। (गारंटी)

विशेष—यह कई प्रकार की होती और कई रूपो मे की जाती है। यथा—(क) यदि अमुक वस्तु वैसी न होगी जैसी कही या दिखाई गई है तो वदल दी जायगी या ठीक कर दी जायगी। (ख) अमुक काम अमुक प्रकार से ही किया जायगा अथवा होगा, और किसी प्रकार से नही। आदि आदि।

प्रत्याभोग—पु० [स० प्रति-आभोग, प्रा० स०] १ धन या सम्पत्ति का ऐसा भोग जो उस पर अधिकार प्राप्त होने से पहले ही, केवल उसकी प्राप्ति की आशा या निश्चय होने पर ही आरभ कर दिया जाय।

प्रत्याम्नाय—पु० [स० प्रति-आ√म्ना (अभ्यास)+घञ्] १ तर्क मे, वाक्य का पाँचवाँ अवयव। २ प्रतिनिधि या स्थानापन्न।

प्रत्याय—स्त्री० [स० प्रति-आय, प्रा० स०] १ राजस्व। कर। २ आय, विशेषत. ऐसी आय या लाभ जो किसी काम मे कुछ धन लगाने या व्यवस्था आदि करने के वदले मे मिलता या प्राप्त होता हो। प्रत्यागम (रिटर्न)

प्रत्यायक—वि० [स० प्रति√इ+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रत्यय करने या विश्वास दिलानेवाला। २ जिससे विश्वास उत्पन्न होता है। ३ व्याख्यापित या सिद्ध करनेवाला।

पु० १ वह पत्र जो इस वात का सूचक होता है कि दूसरा धारक या वाहक अमुक वात के लिए विश्वसनीय है। २ वह परिचायक-पत्र या प्रमाण-पत्र जिसे दिखलाकर राज-प्रतिनिधि विदेशो मे अपना अधिकार और पद प्राप्त करते है। (क्रिडेन्शल)

प्रत्यायन—पु० [स० प्रति√इ+णिच्+ल्युट्—अन] १ विश्वास दिलाने की क्रिया या भाव। २ (वधू को) लिवा ले जाना। ३ विवाह करना। ४ सूर्य का अस्त होना।

प्रत्यायोजन—पु० [स० प्रति-आ√युज् (जुटना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यायोजित] १ पुन आयोजन करना। २ दे० 'प्रति-निधायन'।

प्रत्यारंभ—पुं० [स० प्रति-आरभ, प्रा० स०] १ फिर से या दोवारा आरभ होना। २ पुनरारभ।

प्रत्यारोप—पु० [स० प्रति-आरोप, प्रा० स०] वह आरोप जो किसी आरोप के उत्तर या वदले मे किया या लगाया जाय। (काउटर-चार्ज)

प्रत्यालीढ़—पु० [स० प्रति-आलीढ, प्रा० स०] धनुप चलाने के समय वायाँ पैर आगे की ओर और दाहिना पैर पीछे की ओर ले जाकर वैठने की एक मुद्रा।

वि० खाया हुआ।

प्रत्यालोचन—पु० [स० प्रति-आलोचन, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रत्या-लोचित] १ किसी के किए हुए निर्णय या निर्णीत व्यवहार को फिर से देखना कि वह ठीक है या नही। (रिव्यू) २ प्रत्यालोचना। (दे०)

प्रत्यालोचना—स्त्री० [स० प्रति-आलोचना, प्रा० स०] किसी वात या विषय की आलोचना की भी की जानेवाली आलोचना। आलोचना की समीक्षा।

प्रत्यावर्तन—पु० [स० प्रति-आ√वृत् (वरतना) + णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यावर्तित] १ वापस आना। लौटाना।

प्रत्यावर्तित—भू० कृ० [स० प्रति-आ√वृत्+णिच्+क्त] जिसका प्रत्यावर्तन हुआ हो या किया गया हो।

प्रत्याशा—स्त्री० [स० प्रति-आ√अश् (व्याप्ति)+अच्,+टाप्] १. आशा। उम्मीद। भरोसा। २ आज-कल किसी वात के सम्वन्ध मे पहले से की जानेवाली ऐसी आशा या उसके सम्वन्ध की कल्पना जिसके घटित होने की वहुत कुछ सभावना हो। प्रवेक्षा। (एन्टिसिपेशन)

विशेष—आशा तो साधारणत इसी वात की सूचक होती है कि हमारे मन मे किसी वात की इच्छा या कामना है, परन्तु प्रत्याशा से यह सूचित होता है कि हमे इस वात का वहुत-कुछ विश्वास है कि हमारी इच्छा या कामना पूरी हो जायगी।

प्रत्याशित—वि० [स० प्रति-आ√अश्+क्त] जिसकी आशा या अपेक्षा पहले की गई हो। जिसका पहले से अनुमान किया गया हो। (एन्टि-सिपेटेड)

प्रत्याशी (शिन्)—वि० [स० प्रति-आ√अश्+णिनि] प्रत्याशा अर्थात् आशा करनेवाला।

पु० १. वह जो किसी पद की प्राप्ति के लिए इच्छुक हो। २ उम्मीद-वार। (कैन्डिडेट)

प्रत्याश्रय—पु० [स० प्रति-आश्रय, प्रा० स०] वह स्थान जहाँ आश्रय लिया जाय। पनाह लेने की जगह। आश्रय-स्थल।

प्रत्याश्वासन—पु० [स० प्रति-आ√श्वस्+णिच्+ल्युट्—अन] आश्वा-सन के वदले मे दिया जानेवाला आश्वासन।

प्रत्यासत्ति—स्त्री० [स० प्रति आ√सद् (गति)+क्तिन्] १. निकटता। सामीप्य। नजदीकी। २ दे० 'आसक्ति'।

प्रत्यासन्न—वि० [सं० प्रति-आ√सद्+क्त] [भाव० प्रत्यासन्नता] निकट या पास आया हुआ।

प्रत्यासर—पु० [स० प्रति-आ√सृ (गति)+अप्] १. सेना का पिछला भाग। सैनिक व्यूह।

प्रत्याहत—भू० कृ० [स० प्रति-आ√हन् (हिंसा)+क्त] १ हटाया हुआ। २ अस्वीकृत किया हुआ।

प्रत्याहरण—पु० [सं० प्रति-आ√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ पुन या वापस लेना। २. हटाना। ३ निग्रह करना। ४. इद्रियो को विषयो मे निवृत्त करना।

प्रत्याहार—पु० [स० प्रति-आ√हृ+घञ्] [भू० कृ० प्रत्याहृत] १. पीछे की ओर खीचना या ले जाना। २ आज्ञा, निश्चय वचन आदि का वापस लिया जाना। ३ पाणिनि व्याकरण के अनुसार, वह सक्षिप्त रूप जो किसी सूत्र के प्रथम और अन्तिम वर्णो को जोडकर वनाया जाता है। जैसे—अइउण् सूत्र का प्रत्याहार अण्। ४ योग के आठ अगो मे से एक जिसमे इद्रियो को सव विषयो से हटाकर एकाग्र किया जाता है।

प्रत्याहूत—वि० [स० प्रति-आ√ह्वे (वुलाना)+क्त] (व्यक्ति) जिसे वापस वुलाया गया हो।

प्रत्याहृत—भू० कृ० [स० प्रति-आ√हृ+क्त] १ पीछे खीचा या हटाया हुआ। २. (इद्रिय) जिसे सयम मे रखा गया हो।

प्रत्याह्वान—पु० [स० प्रति-आ√ह्वे+ल्युट्—अन] १ किसी दूसरे स्थान पर भेजे हुए व्यक्ति को वापस वुलाना। २ वापस वुलाने के लिए दी जानेवाली आज्ञा। (रिकाल)

हुआ। २ बताया हुआ। ३. नियत किया हुआ। ठहराया हुआ। ४. जिसके विषय मे प्रदेशन हुआ हो। आदिष्ट। (प्रेसक्राइब्ड) ५ सुभीते के लिए खड या भाग के रूप मे लोगो मे बाँटा या उन्हें दिया हुआ। नियत। (एलॉटेड)

प्रदीप—वि०[स०प्र√दीप् (चमकना)+अच्] प्रकाश करने या देनेवाला। पु० १. दीपक। दीया। २ प्रकाश। रोशनी। ३. सपूर्ण जाति का एक राग जिसके गाने का समय तीसरा प्रहर है। किसी किसी ने इसे दीपक राग का पुत्र माना।

प्रदीपक—वि० [स० प्र√दीप्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रदीपिका] १ प्रदीपन करनेवाला। २ प्रकाश या रोशनी करनेवाला। पु० वैद्यक के अनुसार नौ प्रकार के विषो मे से एक प्रकार का भयकर स्थावर विष। कहते है कि इसके सूँघने मात्र से मनुष्य मर जाता है।

प्रदीपकी—स्त्री० [स० प्रदीपक+ङीप्] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

प्रदीपति†—स्त्री०=प्रदीप्ति।

प्रदीपन—पु० [स० प्र√दीप्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रदीप्त] १ प्रकाश करने का काम। उजाला करना। २ उज्ज्वल करना। चमकाना। ३ उत्तेजित करना। भडकाना। ४ तीव्र या तेज करना। ५ [प्र√दीप्+णिच्+ल्यु—अन] वह जिससे पेट की अग्नि तीव्र हो, भूख लगे तथा भोजन पचे। ६ प्रदीपक नाम का स्थावर विष।

प्रदीप-न्याय—पु० [ष० त०] साख्य का यह मत या सिद्धान्त कि जिस प्रकार आग, तेल और बत्ती के सयोग से प्रदीप या दीया जलता है, उसी प्रकार सत्त्व, रज और तम के सहयोग के शरीर मे सब काम होते है।

प्रदीपिका—स्त्री० [स० प्रदीपक+टाप्, इत्व] १. छोटी लालटेन। २ सगीत मे एक रागिनी जो किसी किसी के मत से दीपक राग की स्त्री है। ३. आज-कल टीका, व्याख्या आदि के रूप मे कोई ऐसी पुस्तक जिससे कोई दूसरी कठिन पुस्तक पढने या समझने मे सहायता मिलती हो।

प्रदीप्त—वि० [स० प्र√दीप्+क्त] [भाव० प्रदीप्ति] १ जलता हुआ। २ चमकता या जगमगाता हुआ। प्रकाशित। ३ उज्ज्वल। चमकीला।

प्रदीप्ति—स्त्री०[स० प्र√दीप्+क्तिन्] १ रोशनी। प्रकाश। २ चमक।

प्रदुमन†—पु०=प्रद्युम्न।

प्रदुष्ट—वि० [स० प्र√दुष् (बिगडना)+क्त] १. बिगडा हुआ। दोषयुक्त। २ बुरे स्वभाववाला। दुष्ट। ३ लपट। व्यभिचारी। ४ लोभ, स्वार्थ आदि के कारण नैतिक दृष्टि से गिरा हुआ। (कोरप्ट)

प्रदूषक—वि० [स० प्र√दूष् (नष्ट करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ नष्ट करनेवाला। २ अपवित्र करनेवाला।

प्रदूषण—पु० [स० प्र√दूष्+णिच्+ल्युट्—अन] १ नष्ट करना। चौपट या बरबाद करना। २ अपवित्र करना।

प्रदूषित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ नष्ट किया हुआ। २ अपवित्र किया हुआ। दूषित। ३ प्रदुष्ट (व्यक्ति)।

प्रदेय—वि० [स० प्र√दा (देना)+यत्] १ जो प्रदान किये जाने के योग्य हो। जो दिया जा सके। २ (कन्या) जो विवाह करके किसी को देने के योग्य हो। पु० ऐसी अच्छी चीज जो उपहार या भेंट के रूप मे दी जा सके।

प्रदेयक—पु० [स० प्रदेय+कन्] इनाम। पुरस्कार।

प्रदेश—पु० [स० प्रा० स०] [वि० प्रादेशिक] १. भू-भाग का कोई खड, विशेषत कोई बडा खड। २. किसी सघ राज्य की कोई इकाई। जैसे—उत्तर या मध्यप्रदेश। ३. प्रात। (दे०) ४ अग। अवयव। ५ दीवार। ६ नाम। सज्ञा। ७. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की तत्र-युक्ति। ८ अँगूठे के अगले सिरे से होकर तर्जनी के अगले सिरे तक की दूरी। छोटा बित्ता या बालिश्त।

प्रदेशकारी (रिन्)—पु० [स० प्रदेश√कृ (करना)+णिनि] योगियो का एक सम्प्रदाय।

प्रदेशन—पु० [स० प्र√दिश्+ल्युट्—अन] १. उपहार। भेंट। २. आज्ञा, आदेश, नियम आदि के रूप मे यह बतलाना कि यह काम इस प्रकार होना चाहिए। (प्रेसक्रिप्शन) ३. कार्य, वस्तु आदि के छोटे-छोटे भाग करके सुभीते के लिए उन्हे अलग-अलग लोगो को देना या उनमे बाँटना। नियतन। (एलॉटमेन्ट)

प्रदेशनी—स्त्री० [स० प्र√दिश्+ल्युट्—अन,+ङीप्] अँगूठे के पास की उँगली। तर्जनी।

प्रदेशित—भू० कृ० [स० प्र√दिश्+णिच्+क्त] १. दिखलाया या बतलाया हुआ। २ जिसका प्रदेशन हुआ हो। प्रदिष्ट।

प्रदेशी (शिन्)—वि० [स० प्रदेश+इनि] प्रदेश-सबधी। प्रदेश का।

प्रदेशीय—वि० [सं० प्रदेश+छ—ईय] किसी प्रदेश मे होनेवाला अथवा उससे सम्बन्ध रखनेवाला।

प्रदेष्टा (ष्टृ)—पु० [स० प्र√दिश्+तृच्] १. प्रधान विचारपति। २ वह जो प्रदेशन करता हो। (प्रेसक्राइबर)

प्रदेह—पु० [सं० प्र√दिह्+घञ्] १ वह औषध या लेप जो फोडे पर, उसे दबाने या बैठाने के लिए लगाया जाय। २ एक तरह का व्यजन।

प्रदोष—पु० [सं० प्रा० स०] १. सूर्य के अस्त होने का समय। सन्ध्या। २. एक प्रकार का उपवास या व्रत जो प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को होता है और जिसमे सूर्यास्त से कुछ पहले ही शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है। ३. बहुत बडा दोष। ४. पक्षपात, आर्थिक लाभ, स्वार्थ आदि से अभिभूत होने के फलस्वरूप होनेवाला नैतिक पतन। (कोरप्शन)

प्रदोषक—वि० [स० प्रदोष+वुन्—अक] १. प्रदोषकाल सम्बन्धी। २ जो प्रदोषकाल मे उत्पन्न हुआ हो। ३. दे० 'प्रदुष्ट'।

प्रद्धटिका—स्त्री०=पज्झटिका।

प्रद्युम्न—पु० [स० ब० स०] १. कामदेव। कदर्प। २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. मनु के एक पुत्र का नाम। ४. वैष्णवो मे, चतुर्व्यूहात्मक विष्णु के एक अश का नाम। ५ बहुत बडा बहादुर या वीर पुरुष।

प्रद्योत—पु० [स० प्र√द्युत्+घञ्] १ किरण। रश्मि। २ दीप्ति। आभा। चमक। ३ एक यक्ष।

प्रद्योतन—पु० [स० प्र√द्युत्+युच्—अन] १ दीप्ति से युक्त करना। चमकाना। २. चमक। दीप्ति। ३. सूर्य।

प्रद्वार—पु० [स० प्रा० स०] १ मुख्य द्वार के अगल-बगल या आस-पास का भाग। २ बडा या मुख्य द्वार।

प्रद्वेषी (षिन्)—स्त्री० [स० प्र√द्विष्+णिनि] दीर्घतमा ऋषि की पत्नी। (महा०)

वि० मन मे द्वेष रखनेवाला। द्वेषी।

प्रधन—पु० [स० ब० स०] १ धनवान्। २ [प्र√धा+क्यु—अन] युद्ध।

प्रधमन—पु० [स० प्र√धम् (शब्द)+ल्युट्—अन] १ नाक के रास्ते सूँघकर ओपधि ग्रहण करने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार सूँघी जानेवाली ओषधि। ३ वैद्यक मे एक प्रकार की सुँघनी।

प्रधर्ष—पु० [स० प्र√धृष् (डाँटना, बलात्कार करना)+घञ्] १ अपमान। २ पराभव। ३ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। बलात्कार। ४ आक्रमण।

प्रधर्षक—वि० [स० प्र√धृष्+ण्वुल्—अक] प्रधर्ष करनेवाला।

प्रधर्षण—पु० [स० प्र√धृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रधर्षित] १ अपमान। बेइज्जती। २ आक्रमण। चढाई। ३ स्त्री का बल-पूर्वक किया जानेवाला सतीत्व हरण।

प्रधर्षित—भू० कृ० [स० प्र√धृष्+क्त] १ जिस पर आक्रमण किया गया हो। २ अपमानित। ३ (स्त्री) जिसका बलपूर्वक सतीत्व हरण किया गया हो। जिसके साथ बलात्कार हुआ हो।

प्रधा—स्त्री० [स० प्र√धा+अङ्+टाप्] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जिसका विवाह कश्यप ऋषि से हुआ था।

प्रधान—वि० [स० प्र√धा+ल्युट्—अन] [भाव० प्रधानता] अधिकार, पद, महत्त्व आदि की दृष्टि से जो सबसे बडा या बढकर हो। पु० १ नेता। मुखिया। सरदार। २. मत्री। सचिव। ३ आज-कल किसी सस्था या सभा का वह सबसे बडा अधिकारी जो कुछ नियत काल के लिए चुना जाता और सभापति के रूप मे उसके सब कामो का निरीक्षण तथा सचालन करता है। ४ ससार का उपादान कारण। ५ बुद्धि। समझ। ६ ईश्वर। ७ सेनापति।

प्रधानक—पु० [स० प्रधान+कन्] साख्य के अनुसार बुद्धि-तत्त्व।

प्रधान-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार तीन प्रकार के कर्मो मे से एक कर्म जो रोग की उत्पत्ति हो जाने पर किया जाता है।

प्रधान-कार्यालय—पु० [कर्म० स०] व्यापारिक अथवा अन्य सस्थाओ का मुख्य और सबसे बडा कार्यालय जिसके अधीन कई छोटे छोटे कार्यालय हो और जहाँ से सब कार्यों तथा शाखाओ का सचालन होता हो। (हेड आफिस)

प्रधानता—स्त्री० [स० प्रधान+तल्+टाप्] प्रधान होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रधान-धातु—पु० [स० कर्म० स०] शरीर की सब धातुओ मे से प्रधान शुक्र या वीर्य।

प्रधान-मत्री (त्रिन्)—पु० [कर्म० स०] १ सस्था आदि का वह सबसे बडा मत्री जिसके अधीन और भी कई विभागीय मत्री हो। (जनरल सेक्रेटरी) २ किसी देश या राज्य का सबसे बडा मत्री। (प्राइम मिनिस्टर)

प्रधानाचार्य—पु० [स०] आज-कल किसी महाविद्यालय (कालेज) का प्रधान अधिकारी और सर्वप्रमुख अध्यापक। (प्रिंसिपल)

प्रधानाध्यापक—पु० [प्रधान अध्यापक, कर्म० स०] किसी विद्यालय का सबसे बड़ा अध्यापक। (हेड मास्टर)

प्रधानामात्य—पु० [प्रधान-अमात्य, कर्म० स०] प्रधान मत्री।

प्रधानिक—वि०=प्राधानिक।

प्रधानी—स्त्री० [स० प्रधान+हि० ई (प्रत्य०)]=प्रधानता।

प्रधारणा—स्त्री० [स० प्रा० स०] किसी विषय पर एकाग्र होकर ध्यान जमाये रखना।

प्रधि—पु० [स० प्र√धा+कि] गाडी का धुरा। अक्ष।

प्रधी—वि० [स० ब० स०] बहुत अधिक चतुर या बुद्धिमान।

स्त्री० उत्तम और प्रखर बुद्धि।

प्रधूपित—भू० कृ० [स० प्र√धूप् (तपाना)+क्त] १ तप्त। तपाया हुआ। २ चमकता हुआ। ३ सतप्त।

प्रधूपिता—स्त्री० [स० प्रधूपित+टाप्] वह दिशा जिधर सूर्य बढ रहा हो।

प्रधूमित—भू० कृ० [स० प्र-धूम, प्रा० स०,+इतच्] १ जो धुआँ उत्पन्न करने के लिए जलाया गया हो। २ जिसमे से धुआँ निकल रहा हो। ३ जो अन्दर ही अन्दर धधक या सुलग रहा हो।

प्रधृष्ट—वि० [स० प्र√धृष्+क्त] १ जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया हो। अपमानित। २ घमडी। ३ उद्धत। उद्दड।

प्रध्मापन—पु० [स० प्र√ध्मा (शब्द)+णिच्, युक्+ल्युट्—अन] वैद्यक मे, वह उपचार या क्रिया जो स्वर-नलिका मे का अवरोध दूर करने और श्वास-प्रश्वास की क्रिया ठीक करने के लिए की जाती है।

प्रध्वस—पु० [स० प्र√ध्वस् (नाश करना)+घञ्] [भू० कृ० प्रध्व-सित] १ नष्ट हो जाना। ध्वस। नाश। विनाश। २ साख्य के मत से, किसी वस्तु की अतीत अवस्था।

प्रध्वसक—वि० [स० प्र√ध्वस्+णिच्+ण्वुल्—अक] ध्वस या नाश करनेवाला।

प्रध्वसाभाव—पु० [स० प्रध्वस-अभाव, स० त० या मध्य० स०] ऐसा अभाव जो किसी वस्तु के नष्ट होने से हुआ हो। (न्याय)

प्रध्वसी (सिन्)—वि० [स० प्र√ध्वस्+णिच्+णिनि] विनाश करने-वाला।

प्रध्वस्त—भू० कृ० [स० प्र√ध्वस्+क्त] जिसका विनाश हो चुका हो। पु० एक प्रकार का तात्रिक मत्र।

प्रन†—पु०=प्रण।

प्रनत†—वि०=प्रणत।

प्रनति†—स्त्री०=प्रणति।

प्रनना[१]—अ० [स० प्रणत] १ प्रणाम करना। २ झुकना। ३ शरण मे जाना। उदा०—प्रनत जन कुमुद बन इदु कर जालिका।—तुलसी।

प्रनप्ता (प्तृ)—पु० [स० प्रा० स०] परनाती। नाती का लडका।

प्रनमन†—पु०=प्रणमन।

प्रनमना—अ०=प्रनना (प्रणाम करना)।

प्रनय†—पु०=प्रणय।

प्रनर्तित—भू० कृ० [स० प्र√नृत् (नाचना)+णिच्+क्त] १. जो नचाया गया हो या नाच रहा हो। २ काँपता या हिलता हुआ।

प्रनव†—पु०=प्रणव।
प्रनवना—अ०=प्रनना (प्रणाम करना)।
प्रनष्ट—वि० [स० प्रा० स०] १. विनष्ट। २. लुप्त। ३. भागा हुआ।
प्रनाम†—पु०=प्रणाम।
प्रनामी—स्त्री०=प्रणामी। (दे०)
वि० प्रणाम करनेवाला।
प्रनायक—वि० [स० ब० स०] जिसका नायक साथ न हो। नायक-हीन।
पु० बडा या श्रेष्ठ नायक।
प्रनासना†—स० [स० प्रणाश] पूरी तरह से नष्ट करना।
प्रनिपात—पु० =प्रणिपात (प्रणाम)।
प्रनियम—पु० [स० प्रा० स०] किसी बडे नियम के अन्तर्गत उसके अगो के रूप मे बने हुए छोटे नियम या विभाग।
प्रन्यास—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रन्यस्त] किसी विशेष कार्य के लिए किसी को या कुछ विशिष्ट लोगो को सौंपा हुआ धन या सपत्ति। (ट्रस्ट)
प्रपंच—पु० [स० प्र√पञ्च् (विस्तार)+घञ्] १ फैलाव। विस्तार। २. फैला हुआ यह दृश्य जगत् जो मायावी और मिथ्या कहा गया है, तथा जिसमे परस्पर विरोधी तथा विभिन्न कार्य होते रहते हैं। ३. कोई ऐसा कार्य जिसमें कई तरह की परस्पर विरोधी बाते होती है, और सार कुछ भी नही होता या बहुत कम होता है। ४. विशेषत कोई ऐसा कार्य जो छल-कपट या झगडे-झझट से भरा हो और जो तुच्छ अथवा हीन उद्देश्य से किया जा रहा हो। ५. झझट। बखेडा।
प्रपंचन—पु० [स० प्र√पञ्च्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपचित] १ विस्तार बढाना। २ प्रपच खडा करना।
प्रपंची (चिन्)—वि० [स० प्रपच+इनि] १ प्रपच रचनेवाला। २. कपटी। छली।
प्रपंजी—स्त्री० [स० प्रा० स०] किसी बैंक, व्यापारिक सस्था आदि की वह मुख्य पजी या रजिस्टर जिसमे रुपयो का लेन-देन करनेवालो आदि का पूरा विवरण लिखा रहता है। खाता। बही। (लेजर)
प्रपक्ष—पु० [स० अत्या० स०] सेना के किसी पक्ष का अग्र भाग।
प्रपठन—पु० [स० प्र√पठ् (पढना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपठित] १ लेख आदि का ज्यो का त्यो पढा जाना। पाठ। (रिसाइटेशन) जैसे—कवि-सम्मेलन मे दूसरे कवियो की कविताओ का प्रपठन भी होगा। २ उद्धरणी।
प्रपत्ति—स्त्री० [स० प्र√पद्+क्तिन्] १. किसी के प्रति होनेवाली अनन्य भक्ति। २ भक्ति का वह प्रकार या भेद जिसमे भक्त अपने आप को भगवान की शरण मे सौपकर यह विश्वास रखता है कि वह मुझ पर अवश्य दया करेगा। शरणागति।
प्रपत्र—पु० [स० प्रा० स०] वह छपा हुआ पत्र जिसमे के रिक्त स्थलो मे पूछी गई बातो के विवरण लिखे जाते हे। जैसे—विद्यालय मे भरती होने के लिए भरा जानेवाला प्रपत्र। (फॉर्म)
प्रपथ—वि० [स० ब० स०] शिथिल। थका-माँदा।
पु० बहुत दूर जानेवाला कोई बडा तथा चौडा मार्ग।
प्रपद—पु० [स० प्रा० स०] १ पैर का अगला भाग। पजा। २. पैर के अँगूठे का सिरा।
प्रपन्न—भू० कृ० [स० प्र√पद्+क्त] १. प्राप्त। आया हुआ। पहुँचा हुआ। २. शरणागत।
प्रपर्ण—पु० [स० प्रा० स०] गिरा हुआ पत्ता।
प्रपलायन—पु० [स०] कोई अनुचित काम कर चुकने पर उसके दड से बचने के लिए भाग जाना। फरार होना। (एस्कांड)
प्रपलायी—पु० [स० प्रपलायिन्] वह जो कोई अनुचित काम करके उसके दड-भोग मे बचने के लिए भाग गया हो। फरार। भगोडा। (एस्कांडर)
प्रपा—पु० [स० प्र√पा (पीना)+क+टाप्] १ प्यासो, विशेषत प्यासे यात्रियो आदि को जल अथवा कोई पेय पिलाने का सार्वजनिक स्थान। प्याऊ। २. यज्ञशाला।
प्रपाक—पु० [स० प्रा० स०] १ घाव, फोडे आदि का पकना। २ उक्त के पकने से होनेवाली सूजन।
प्रपाठ—पु० [स० प्रा० स०] १. पुस्तक मे का पाठ। २ पुस्तक का अध्याय। ३ दे० 'प्रपठन'।
प्रपाणि—पु० [स० प्रा० स०] १. हाथ का अगला भाग। २ हथेली।
प्रपात—पु० [स० प्र√पत् (गिरना)+घञ्] १ एकबारगी और बहुत तेजी से ऊपर से नीचे आना या गिरना। २ वह बहुत ऊँचा स्थान जहाँ से कोई चीज नीचे गिरती हो। ३. जल की वह धारा जो किसी पहाडी प्रदेश मे बहुत ऊँचे स्थान से नीचे गिरती हो। (वाटर फाल)
प्रपातन—पु० [स० प्र√पत्+णिच्+ल्युट्—अन] जोर से नीचे गिराना या फेकना।
प्रपाती (तिन्)—पु० [स० प्रपात+इनि] वह चट्टान या पहाड जिसका किनारा खडा हो।
स्त्री० [स० प्रपात] नदियो के प्रवाह मे कुछ ऊंची-नीची चट्टाने पडने के कारण बननेवाला प्रपात। (कैस्केड)
प्रपादिक—पु० [स० प्रपद+ठक्—इक] मयूर। मोर।
प्रपान—पु० [स० प्र√पा+ल्युट्—अन] १ पीने की क्रिया या भाव। २ प्रपा। पौसला।
प्रपानक—पु० [स० प्रपान, ब० स०,+कप्] आम अथवा किसी अन्य फल के गूदे का बना हुआ एक तरह का खट-मीठा शरबत। पना। पन्ना।
प्रपाली (लिन्)—पु० [स० प्र√पाल् (पालन करना)+णिच्+णिनि] कृष्ण के भाई, बलराम।
प्रपितामह—पु० [स० अत्या० स०] [स्त्री० प्रपितामही] १. पितामह का पिता। बाप का दादा। परदादा। २ परब्रह्म।
प्रपितृव्य—पु० [सं० अत्या० स०] परदादा का भाई।
प्रपीडक—वि० [सं० प्र√पीड् (कष्ट देना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. दबाने या पेरनेवाला। २ बहुत अधिक कष्ट देने या सतानेवाला।
प्रपीडन—पु० [स० प्र√पीड्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपीडित] १ इस प्रकार किसी चीज को दबाना कि उसका रस निकल आये। पेरना। २. बहुत अधिक सताना या कष्ट देना।
प्रपील†—स्त्री०=पिपीलिका (चींटी)।
प्रपुंज—पु० [स० प्रा० स०] बहुत बडा ढेर या राशि।
प्रपुत्र—पु० [स० अत्या० स०] [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र। पोता।

प्रपूरक—वि० [स० प्र√पूर् (पूर्ण करना) +णिच्+ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह पूरा करने या भरनेवाला। २ तृप्त करनेवाला।

प्रपूरण—पु० [स० प्र√पूर्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपूरित] १ अच्छी तरह पूरा करना या भरना। २ तृप्त करना। ३. मिलाना।

प्रपूरित—भू० कृ० [स० प्र√पूर्+णिच्+क्त] १ अच्छी तरह पूरा किया या भरा हुआ। २ अच्छी तरह तृप्त किया हुआ।

प्रपौत्र—पु० [स० अत्या० स०] [स्त्री० प्रपौत्री] पुत्र का पोता। पोते का पुत्र। परपोता।

प्रफुलना†—अ० [स० प्रफुल्ल] फूलो से युक्त होना। फूलना।

प्रफुल्ल—वि० [स० प्र√फुल्ल् (विकसित होना)+अच्] १. (फूल) जो खिला हुआ हो। २ (पौधा या वृक्ष) जिसमे फूल खिले हुए हो। ३ (व्यक्ति) जो अत्यधिक प्रसन्न हो। ४ (पदार्थ) जो खुला हुआ हो।

प्रफुल्ल-वदन—वि० [ब० स०] जिसका मुख प्रसन्न दीखता हो।

प्रफुल्ला—स्त्री० [स० प्रफुल्ल=खिला हुआ] १ कुमुदिनी। कोई। २ कमलिनी।

प्रफुल्लित—भू० कृ० [स० प्रफुल्ल] १ खिला हुआ। कुसुमित। २ फूल की तरह खिला हुआ अर्थात् प्रसन्न तथा हँसता हुआ।

प्रबध—पु० [स० प्र√बध् (बाँधना)+घञ्] १ वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज बाँधी जाय। बधन। जैसे—डोरी, रस्सी आदि। २ अच्छा, पक्का और श्रेष्ठ बधन। ३ ठीक तरह से निरतर चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—प्रबन्ध वर्षा अर्थात् लगातार होती रहनेवाली वर्षा। ४ ऐसी रचना जिसमे सभी अग, बाते या विषय उपयुक्त स्थानो पर रखकर और ठीक तरह से बाँध या सजाकर रखे गये हो। अच्छी और ठीक तरह से तैयार की हुई चीज। ५ प्राचीन भारतीय साहित्य मे काव्य के दो भेदो मे से एक (दूसरा भेद निर्बध कहलाता था) जिसमे कोई कथा या घटना क्रमबद्ध रूप मे कही गई हो। खडकाव्य और महाकाव्य इसी के उपभेद है। ६ भारतीय सगीत मे, शास्त्रीय नियमो के अनुसार राग-रागिनियाँ गाने की वह प्रथा (खयाल, ध्रुपद आदि के गाने की प्रथा से भिन्न) जो मध्य युग के साधु-सतो मे प्रचलित थी। ७ आज-कल उच्च श्रेणी के विचारशील विद्यार्थियो की वह कृति या रचना जो किसी विशिष्ट विषय या उसके किसी अग-उपाग के सबध मे यथेष्ट अनुसधान और छानबीन करके और उसके सबध मे अपना नया तथा स्वतत्र मत प्रतिपादित करते हुए प्रस्तुत की गई हो। (थीसिस) ८ आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रो मे घर-गृहस्थी, निर्माणशालाओ या सस्थाओ के विभिन्न कार्यो तथा आयोजनो का अच्छी तरह से तथा कुशलतापूर्वक किया जानेवाला सचालन। (मैनेजमेट)। ९ किसी तरह के काम के लिए की जानेवाली कोई योजना। जैसे—कपट-प्रबध अर्थात् किसी को फँसाने के लिए बिछाया जानेवाला जाल।

प्रबध-अभिकर्ता—पु० [ष० त०] किसी व्यावसायिक सस्था के किसी अभिकरण का मुख्य प्रबधकर्ता। (मैनेजिग एजेट)

प्रबधक—वि० [स० प्र√बन्ध्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रबन्ध या व्यवस्था करनेवाला।

पु० वह जो किसी कार्य, कार्यालय या विभाग के कार्यों का सचालन करता हो। व्यवस्थापक। (मैनेजर)

प्रबंधकल्पना—स्त्री० [स० ष० त०] १ साहित्यिक प्रबन्ध की रचना। २. वह साहित्यिक रचना जो मूलत किसी घटना या तथ्य पर आश्रित हो और जिसमे कवि या लेखक ने अपनी कल्पना-शक्ति से भी बहुत सी बाते बढाई हो।

प्रबंधन—पु० [स० प्र√बन्ध्+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी काम या बात का प्रबन्ध अर्थात् व्यवस्था करने की क्रिया या भाव। २. साहित्यिक रचना का ढग, प्रकार या शैली। जैसे—कबीर या तुलसी की रचनाओ का प्रबन्धन।

प्रबध-परिव्यय—पु० [ष० त०] वह परिव्यय या खर्च जो किसी काम का प्रबन्ध करने के बदले मे किसी को दिया जाय। (मैनेजमेन्ट चार्जेज)

प्रबंध-परिषद्—स्त्री० [ष० त०] वह परिषद् या सभा-समिति जो किसी बडे कार्य या सस्था का परिचालन और व्यवस्था करती हो। (गवर्निंग बॉडी)

प्रबंध-व्यय—पु० [ष० त०] वह व्यय या खर्च जो किसी काम या बात का प्रबन्ध करने मे लगे। (कॉस्ट ऑफ मैनेजमेन्ट)

प्रबध-संपादक—पु० [ष० त०] पत्र, पत्रिकाओ के सपादकीय विभाग का प्रबध करनेवाला सपादक। (मैनेजिग एडिटर)

प्रबध-समिति—स्त्री० [ष० त०] किसी बडी सस्था, सभा आदि के चुने हुए लोगो की वह समिति जो उसकी सब बातो का प्रबन्ध या व्यवस्था करती हो। (मैनेजिग कमिटी)

प्रबंधार्थ—पु० [प्रबध-अर्थ, ष० त०] वह विषय जिसका उल्लेख या विचार किसी साहित्यिक रचना मे हुआ हो।

प्रबंधी (धिन्)—वि० [स० प्रबध+इनि]=प्रबधक। जैसे—प्रबधी सचालक।

प्रबधी सचालक—पु० [स० व्यस्त पद] किसी बहुत बडी सस्था के विभिन्न सचालको मे से वह व्यक्ति जिस पर उसके प्रबध आदि का भी सब भार हो। (मैनेजिंग डाइरेक्टर)

प्रब†—पु०=पर्व।

प्रबरष (स) न†—पु०=प्रवर्षण।

प्रबल—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० प्रबला] १ जिसमे बहुत अधिक बल या शक्ति हो। बलवान। २ जो बल मे किसी से बीस पडता हो। अपेक्षाकृत अधिक बलवाला। ३ उग्र। तेज। प्रचड। ४ बहुत जोरो का। घोर या भारी।

प्रबल झझा—स्त्री० =चडवात।

प्रबलन—पु० [स० प्र√बल्+ल्युट्—अन] १ बल या शक्ति बढाने की क्रिया या भाव। प्रबल करना। २ किसी दुर्बल को अधिक बलवान बनाने के लिए किया जानेवाला उपाय या दी जानेवाली सहायता।

प्रबला—स्त्री० [स० प्रबल+टाप्] प्रसारिणी नाम की ओषधि।
वि० स० 'प्रबल' का स्त्री०।

प्रबाधित—भू० कृ० [स० प्र√बाध् (बाधा देना)+क्त] १ सताया हुआ। २ दबाया या धकेला हुआ।

प्रबाल—पु०=प्रवाल।

प्रबास—पु०=प्रवास।

प्रबाह—पु०=प्रवाह।

प्रबाहु—पु० [स० अत्या० स०] हाथ का आगेवाला अश। पहुँचा।

प्रबिसना†—अ०=प्रविसना (प्रवेश करना)।

प्रवीन†—वि०=प्रवीण।

प्रवुद्ध—वि० [स० प्र√वुध् (जानना)+क्त] १ जागा हुआ। जाग्रत। २ जिसकी वुद्धि ठिकाने हो और अच्छी तरह काम कर रही हो। ३ जो होश मे हो। चैतन्य। सचेत। ४. जिसे प्रवोध हो या हुआ हो। यथार्थ ज्ञान से परिचित। ५ खिला हुआ। विकसित।
पु० १ नौ योगेश्वरो मे से एक योगेश्वर। २. ज्ञानी। ३ पडित। विद्वान्।

प्रवोध—पु० [स० प्र√वुध्+घञ्] [वि० प्रवुद्ध] १. सोकर उठना। जागना। २ किसी वात या विषय का ठीक और पूरा ज्ञान। यथार्थ ज्ञान। ३ किसी को समझा-वुझाकर शात या स्थिर करना। ढारस। दिलासा। सात्वना। ४ साहित्य मे, दूत या दूती का नायिका या नायक को कोई वात अच्छी तरह और युक्तिपूर्वक समझाकर उत्साहित या शात करना या सात्वना देना। ५ चेतावनी। ६. विकास। ७ महावुद्ध की एक अवस्था। (वौद्ध)

प्रवोधक—वि० [स० प्र√वुध्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. जगानेवाला। २. चेताने या सचेत करनेवाला। ३. समझाने-वुझानेवाला। ४ यथार्थ ज्ञान कराने या वतलानेवाला। ५ ढारस या सात्वना देनेवाला।

प्रवोधन—पु० [स० प्र√वुध्+ल्युट्—अन, या णिच्+ल्युट्] १ जागरण। जागना। २ नीद से उठाना। जगाना। ३ यथार्थ ज्ञान। वोध। ४. वोध कराना। जताना। ५ सचेत या सावधान करना। ६ ढारस, तसल्ली या सान्त्वना देना। ७ विकसित करना।

प्रवोधना—स० [स० प्रवोधन] १ सोये हुए को उठाना। जगाना। २. सचेत या सजग करना। ३ अच्छी तरह समझाना-वुझाना। ४ ढारस या सान्त्वना देना। उदा०—मत्रिहि राम उठाइ प्रवोधा।—तुलसी। ५ अपने अनुकूल करने के लिए सिखाना-पढाना। ६ आध्यात्मिक ज्ञान से युक्त करना।

प्रवोधनी—स्त्री० [स० प्र√वुध्+णिच्+ल्युट्—अन, ङीप्]=प्रवोधिनी।

प्रवोधित—भू० कृ० [स० प्र√वुध्+णिच्+क्त] १ जो जगाया गया हो। २. जिसे उपयुक्त ज्ञान दिया गया हो। ३ जिसे समझाया-वुझाया गया हो। ४ जिसे ढारस या सान्त्वना दी गई हो।

प्रवोधिता—स्त्री० [स० प्रवोधित+टाप्] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, जगण, सगण, जगण और अत मे गुरु (सजसजग) होता है। दे० 'मजुभाषिणी'।

प्रवोधिनी—स्त्री० [स० प्र√वुध्+णिच्+णिनि+ङीप्] १ कार्तिक शुक्ला एकादशी। २ जवासा। धमासा।

प्रवोधी (धिन्)—वि० [स० प्र√वुध्+णिच्+णिनि] [स्त्री० प्रवो-धिनी] १ जगानेवाला। २ प्रवोधन करनेवाला। प्रवोधक।

प्रव्वं†—पु०=पर्व।

प्रभजन—पु० [स० प्र√भज् (भग करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रभग्न] १ अच्छी या पूरी तरह से तोड-फोडने और नष्ट करने की क्रिया या भाव। २ रोकना या निवारण करना। ३ हराना। पराजित करना। ४. वैज्ञानिक क्षेत्र मे, मुख्यत वह वहुत तेज हवा जो ७५ से १०० मील प्रति घटे के हिसाव से चलती हो। (ह्युरिकेन) ५ वायु। हवा। ६ वायु का वह देव रूप जिससे हनुमान उत्पन्न हुए थे।

प्रभंजन-जाया*—पु०=हनुमान (प्रभजन के पुत्र)।

प्रभग्न—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १. तोड-फोडकर नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ। २. हराया हुआ।

प्रभणना—स० [स० प्रभणन] कहना। उदा०—प्रभणति पुत्र इम मात पिता प्रति।—प्रिथीराज।

प्रभणाना—स० [हि० प्रभणना का प्रे०] कहलाना। उदा०—पयरावि त्रिया वामै प्रभणावै।—प्रिथीराज।

प्रभत*—स्त्री० [स० प्रभुता] वडप्पन। वडाई।

प्रभद्र—पु० [स० प्र–भद्र, व० स०] नीम।

प्रभद्रक—पु० [स० प्रभद्र+कन्] प्रभद्रिका (वर्ण वृत्ति)।

प्रभद्रिका—स्त्री० [स० प्रभद्र+कन्+टाप्, इत्व] पद्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, भगण फिर जगण और अत मे एक रगण होता है। जैसे—निजजुग राघवेन्द्र दससीस ढाइहै।

प्रभव—पु० [स० प्र√भू (होना)+अप्] १. उत्पत्ति या सृष्टि का मूल कारण। २ उत्पत्ति। जन्म। ३ उत्पत्ति का स्थान। ४ सृष्टि। ५ जगत्। ससार। ६ नदी का उद्गम या मूल स्थान। ७. पराक्रम।

प्रभवन—पु० [स० प्र√भू+ल्युट्—अन] १ उत्पत्ति। २ आकार। ३ मूल। ४. अधिष्ठान।

प्रभविता (तृ)—पु० [स० प्र√भू+तृच्] १. शासक। २ प्रभु। स्वामी।

प्रभविष्णु—वि० [स० प्र√भू+इष्णुच्] [भाव० प्रभविष्णुता] १ दूसरो पर प्रभाव डालनेवाला। प्रभावशील। २ वलवान।
पु० १ प्रभु। २ विष्णु।

प्रभविष्णुता—स्त्री० [स० प्रभविष्णु+तल्+टाप्] १ औरो की तुलना मे होनेवाली प्रधानता या श्रेष्ठता। २ किसी वस्तु मे निहित वह स्थायी गुण या तत्त्व जिससे दूसरी वस्तुओ पर कुछ परिणाम होता या प्रभाव पडता हो। (पोटेन्सी)। जैसे—वरसात आने पर इस औषधि की प्रभविष्णुता कुछ कम हो जाती है।

प्रभा—स्त्री० [स० प्र√भा (दीप्ति)+अड्+टाप्] १ प्रकाश। दीप्ति। २. सूर्य का विंव या मडल। ३ सूर्य की एक पत्नी। ४ दुर्गा की एक मूर्ति या रूप। ५ कुवेर की नगरी। ६ वारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति जिसे मन्दाकिनी भी कहते हैं।

प्रभाउ†—पु०=प्रभाव।

प्रभाकर—पु० [स० प्रभा√कृ (करना)+ट] १ सूर्य। २ चद्रमा। ३ अग्नि। ४ आक। मदार। ५ समुद्र। ६ शिव। ७ मार्कंडेय पुराण के अनुसार आठवे मवतर के देवगण के एक देवता। ८ एक प्रसिद्ध मीमासक जो मीमासा-दर्शन की एक शाखा के प्रवर्तक थे। ९ कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम।

प्रभाकरी—स्त्री० [स० प्रभाकर+ङीप्] वोधि सत्त्वो की तृतीय अवस्था जो प्रमुदिता और विमला के उपरात प्राप्त होती है।

प्रभाकीट—पु० [स० मध्य० स०] खद्योत। जुगुनू।

प्रभाग—पु० [स० अत्या० स०] १ किसी वडे विभाग के अतर्गत कोई छोटा भाग या विभाग। (सेक्शन) २ गणित मे भिन्न का भिन्न। जैसे—$\frac{1}{2}$ का $\frac{1}{3}$।

प्रभात—पु० [स० प्र√भा (दीप्ति)+क्त] १ सूर्य निकलने से कुछ

पहले का समय। तड़का। २ प्रभा (सूर्य की पत्नी) के एक पुत्र। ३. संगीत में, एक राग।

वि० जो कुछ-कुछ स्पष्ट रूप में सामने आने लगा हो।

प्रभात-फेरी—स्त्री० [स० + हिं०] प्रचार आदि के लिए बहुत तड़के दल बाँधकर गाते-बजाते और नारे लगाते हुए बस्तियों में चक्कर लगाना।

प्रभाती—स्त्री० [सं० प्रभात + ङीप्] १ प्रत्यूष और प्रभास नामक वसुओं की माता। (महाभारत) २ प्रभात के समय गाये जानेवाले गीत। ३ दातुन।

वि० प्रभात-संबंधी।

प्रभान—पु० [स० प्र√भा + ल्युट्—अन] १ ज्योति। प्रकाश। २ चमक। दीप्ति।

प्रभापन—पु० [स० प्र√भा + णिच्, पुक्, + ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रभापित] दीप्तिमान् करना।

प्रभापूर्य—वि० [स० प्रभा-आपूर्य, तृ० त०] १ प्रकाश से युक्त। २ प्रकाश करनेवाला। ३. प्रकाशित करनेवाला। उदा०—भारत के नभ का प्रभापूर्य।—निराला।

प्रभा-मंडल—पु० [स० प० त०] दिव्य पुरुषों, देवताओं आदि के मुख के चारों ओर का वह आभायुक्त मंडल जो चित्रों, मूर्तियों आदि में दिखाया जाता है। परिवेश। भा-मंडल। (हैलो)

प्रभाव—पु० [स० प्र√भू (होना) + घञ्] १. अस्तित्व में आना। उद्भव। २ वह दबाव जो किसी के बुद्धि-बल, चारित्रिक विशेषता, उच्च पद आदि के फल-स्वरूप दूसरों पर पड़ता है। (इन्फ्लुएन्स) ३ वह अच्छा या बुरा परिणाम जो किसी चीज के गुणों के फलस्वरूप लक्षित होता है। (एफेक्ट) जैसे—शिक्षा या सिनेमा का प्रभाव, औषध या पुस्तक का प्रभाव। ४ ज्योतिष में, ग्रह या ग्रहों की विशिष्ट स्थिति के फल-स्वरूप किसी में सामान्य से भिन्न दिखलाई पड़नेवाले विकार। ५ दूसरों को किसी विशिष्ट विचारधारा का अनुयायी, समर्थक आदि बनाने अथवा किसी ओर ले चलने का सामर्थ्य। जैसे—वे अपने प्रभाव से ही बहुत से काम करा लेते हैं। ६ उक्त सामर्थ्य के फलस्वरूप चारों ओर छाया हुआ आतंक। जैसे—यहाँ भी उनका प्रभाव काम कर रहा है। ७ स्वारोचिष् मनु के एक पुत्र जो कलावती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। (मार्कंडेय पुराण)। ८. सूर्य के एक पुत्र। ९ सुग्रीव के एक मंत्री।

प्रभावक—वि० [स० प्र√भू + णिच् + ण्वुल्—अक] प्रभाव उत्पन्न करने या डालनेवाला। प्रभावशाली। उदा०—नवयुग का वाहक हो, नेता, लोक प्रभावक।—पंत।

प्रभाव-क्षेत्र—पु० [सं० प० त०] आधुनिक राज-तंत्र में, वह क्षेत्र या प्रदेश जो किसी प्रबल और बड़े राज्य के प्रभाव या दबाव में रहता हो और जिस पर किसी दूसरे राज्य या राष्ट्र का प्रभाव अथवा हस्तक्षेप सहन न किया जाता हो। (स्फीयर ऑफ इन्फ्लुएन्स)

प्रभावज—वि० [स० प्रभाव√जन् (उत्पन्न होना) + ड] १. प्रभाव से उत्पन्न। प्रभावजात।

पु० १. राज्य की वह शक्ति जो उसके कोप, सेना आदि के मान पर आश्रित होती है। २ एक प्रकार का रोग जिसके सम्बन्ध में यह माना जाता है कि यह देवताओं, महात्माओं आदि के शाप अथवा ग्रहों के प्रकोप से उत्पन्न होता है।

प्रभावती—स्त्री० [सं० प्रभा + मतुप्, वत्व, + ङीप्] १ महाभारत के अनुसार सूर्य की पत्नी का नाम। २ कार्तिकेय की एक मातृका। ३. शिव के एक गण की वीणा। ४ प्रभाती नामक गीत। ५ रुचि नामक छन्द का एक नाम।

प्रभावना—स्त्री० [स० प्र√भू + णिच् + युच्—अन, + टाप्] १. उद्भावना। २. प्रकाश।

प्रभाववान् (वत्)—वि० [स० प्रभाव + मतुप्, वत्व] = प्रभावशाली।

प्रभावशाली (लिन्)—वि० [स० प्रभाव√शाल् + णिनि] जिसमें यथेष्ट प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति हो। जो अच्छा या बहुत प्रभाव डाल सकता हो।

प्रभावान्वित—भू० कृ० [सं० प्रभाव-अन्वित, तृ० त०] किसी से प्रभावित।

प्रभावित—भू० कृ० [स० प्र√भू + णिच् + क्त] जिस पर किसी का प्रभाव पड़ा हो। किसी के प्रभाव से दबा हुआ।

प्रभाषण—पु० [स० प्र√भाष् + ल्युट्—अन] कठिन पदों, वाक्यों, शब्दों आदि की व्याख्या।

प्रभास—वि० [स० प्र√भास् + अच्, प्र√भास् + घञ्] १ जिसमें बहुत अधिक या यथेष्ट प्रभा हो। प्रभापूर्ण। २. बहुत चमकीला।

पु० १ ज्योति। २ दीप्ति। चमक। ३ एक वसु का नाम। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर। ५ आठवें मन्वतर के एक देव-गण। ६ एक प्राचीन तीर्थ जिसे सोमतीर्थ भी कहते थे। ७ एक जैन गणाधिप।

प्रभासन—पु० [स० प्र√भास् + ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रभासित] १ प्रभास या दीप्ति उत्पन्न करना। २. दीप्ति। ज्योति।

प्रभासना—अ० [स० प्रभासन] १ प्रकाशित होना। चमकना। २. भासित होना। कुछ कुछ दिखाई पड़ना। आभास होना।

स० १. प्रकाशित करना। २ चमकाना।

प्रभीत—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक डरा हुआ। भयभीत।

प्रभु—वि० [स० प्र√भू + डु] [भाव० प्रभुता, प्रभुत्व] जो बहुत अधिक बलवान हो।

पु० १ स्वामी। मालिक। २ ईश्वर। ३ बड़ों के लिए प्रयुक्त होनेवाला संबोधन।

प्रभुता—स्त्री० [सं० प्रभु + तल् + टाप्] १ प्रभु होने की अवस्था या भाव। प्रभुत्व। २ अधिकार, शक्ति आदि से युक्त बड़प्पन। महत्त्व। ३ शासन आदि का अधिकार। हुकूमत। ४ वैभव। ५ दे० 'प्रभु-सत्ता'।

प्रभुताई*—स्त्री० = प्रभुता।

प्रभुत्व—पु० [स० प्रभु + त्व] प्रभुता।

प्रभु-राज्य—पु० [स० कर्म० स०] ऐसा राज्य जिसकी प्रभु-सत्ता उसकी वैधानिक सरकार या जन-साधारण में निहित हो। (सावरेन स्टेट)

प्रभु-सत्ता—स्त्री० [सं० कर्म० स०] [वि० प्रभु-सत्ताक] दे० 'सम्प्रभुता'।

प्रभु-सत्ताक—वि० [स० ब० स०, + कप्] १ प्रभु-सत्ता से युक्त। जिसे

प्रभुसत्ता प्राप्त हो। २ (देश या राज्य) जिस पर दूसरों का कोई नियंत्रण प्रभाव या शासन न हो। परम स्वतंत्र। (सॉवरेन)

प्रभू*—पुं०=प्रभु।

प्रभूत—वि०[सं० प्र√भू+क्त] १ जो अच्छी तरह हुआ हो। २. जो उत्पन्न हुआ या निकला हो। उद्भूत। ३ बहुत अधिक। प्रचुर। ४. उन्नत। ५ पूर्ण। पूरा। ६ पका हुआ। पक्व।
पुं०=पंच-भूत।

प्रभूति—स्त्री०[सं० प्र√भू+क्तिन्] १ प्रभूत होने की अवस्था या भाव। २. उत्पत्ति। ३ अधिकता। प्रचुरता।

प्रभृति—अव्य०[सं० प्र√भृ (धारण-पोषण)+क्तिच्] इत्यादि। आदि। वगैरह।

प्रभेद—पुं०[सं० प्र√भिद् (विदारण)+घञ्] १ किसी बड़े भेद, वर्ग या विभाग के अन्तर्गत कोई छोटा भेद, वर्ग या विभाग। २. अन्तर। भेद।

प्रभेदक—वि०[सं० प्र√भिद्+ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह भेदन करने या तोड़ने-फोड़नेवाला। २. भेद या प्रभेद उत्पन्न करनेवाला।

प्रभेदन—पुं० [सं० प्र√भिद्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह भेदन अर्थात् तोड़ने-फोड़ने की क्रिया या भाव। २ भेद या प्रभेद उत्पन्न करना।
वि०=प्रभेदक।

प्रभेव*—पुं०=प्रभेद।

प्रभ्रष्ट—भू० कृ०[सं० प्र√भ्रंश्+क्त] १ गिरा हुआ। २ टूटा हुआ। ३ भ्रष्ट।

प्रभ्रष्टक—पुं०[सं० प्रभ्रष्ट+कन्] सिर से लटकती हुई माला।

प्रमंडल—पुं०[सं० अत्या० स०]१. पहिये के बाहरी हिस्से का खंड। चक्के का खंड। २ प्रदेश का वह विभाग जिसमें अनेक मंडल या जिले हों। (कमिश्नरी)

प्रमग्न—वि०[सं० प्र√मस्ज् (स्नान)+क्त]=निमग्न।

प्रमत्त—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० प्रमत्तता] १ जो बहुत अधिक मत्त हो। नशे में चूर। मतवाला। २. पागल। बावला। ३. अधिकार, पद आदि का जिसे बहुत अधिक अभिमान हो। ४ लापरवाही के कारण धार्मिक कृत्य न करनेवाला।

प्रमत्तता—स्त्री० [सं० प्रमत्त+तल्+टाप्] प्रमत्त होने की अवस्था या भाव।

प्रमथ—वि०[सं० प्र √मथ् (मथना)+अच्] १. मथन करनेवाला। २. कष्ट देने या पीड़ित करनेवाला।
पुं० १. शिव के एक प्रकार के गण या परिषद् जिनकी संख्या ३६ करोड़ कही गई है। २ घोड़ा। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

प्रमथन—पुं०[सं० प्र√मथ्+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह मथना। २. कष्ट देना। पीड़ित करना। ३ वध करना। मार डालना। ४ चौपट, नष्ट या बरबाद करना।

प्रमथ-नाथ—पुं०[ष०त०] महादेव। शिव।

प्रमथ-पति—पुं०[ष० त०] महादेव। शिव।

प्रमथा—स्त्री०[सं० प्रमथ+टाप्] १. हरीतकी। हर्रे। २ पीड़ा।

प्रमथाधिप—पुं० [सं० प्रमथ-अधिप, ष० त०] शिव।

प्रमथालय—पुं०[सं० प्रमथ-आलय, ष० त०] दुःख या यंत्रणा का स्थान, नरक।

प्रमथित—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] १. अच्छी तरह मथा हुआ। २ सताया हुआ।
पुं० दही मथने पर निकला हुआ शुद्ध मठा जिसमें पानी न मिलाया गया हो।

प्रमद—पुं० [सं० प्र√मद्(हर्ष)+अप्] १ मतवालापन। २ धतूरे का फल। ३. आनंद। हर्ष। ४ एक प्रकार का दान। ५ वशिष्ठ के एक पुत्र।
वि० १. नशे में चूर। २. असावधान।

प्रमदक—वि० [सं० प्र√मद्+अच्,+कन्] १. परलोक को न माननेवाला, अर्थात् नास्तिक। २. मन-माना आचरण करनेवाला। ३ कामुक।

प्रमदवन—पुं०[सं० ष० त०] राजमहल के पास का वह उद्यान जिसमें रानियाँ सैर करती थीं।

प्रमदा—स्त्री०[सं० प्रमद+टाप्] १ सुंदर तथा युवती स्त्री। २ स्त्री। ३. पत्नी। ४. प्रियंगु। मालकँगनी। ५ एक प्रकार का छंद।

प्रमद्वर—वि० [सं० प्र√मद्+वरच्] १ ध्यान देनेवाला। २ असावधान। लापरवाह।

प्रमन (स्)—वि०[सं० ब० स०] प्रसन्न। सुखी। उदा०—भूले ये अब तक बंधु प्रमन।—निराला।

प्रमना—वि०=प्रमन।

प्रमन्यु—वि०[सं० ब० स०] १ क्रुद्ध। २ दुःखी। संतप्त।
पुं० १ बहुत अधिक क्रोध। २ दुःख। संताप।

प्रमर्दन—पुं०[सं० प्रा० स०] १. अच्छी तरह मर्दन करना। अच्छी तरह मलना-दलना। मसल, रगड़ या रौंदकर नष्ट-भ्रष्ट करना। २ दमन करना। ३. विष्णु।
वि० नष्ट करने या रौंदनेवाला।

प्रमस्तिष्क—पुं० [सं०] [वि० प्रमस्तिष्क] रीढ़वाले पशुओं और मनुष्यों की खोपड़ी के अंदर का वह ऊपरी भाग जहाँ से शारीरिक क्रियाओं, व्यापारों आदि का प्रवर्तन और संचालन होता है। (सेरिब्रम)

प्रमा—स्त्री० [सं० प्र√मा (मापना)+अङ+टाप्] १ तर्क और प्रमाणों आदि के आधार पर प्राप्त होनेवाला यथार्थ ज्ञान। २ वह ज्ञान जो बिना बुद्धि की सहायता के या बिना सोचे-विचारे आप से आप तत्काल उत्पन्न हो। (इन्ट्यूशन)।३. नींव। ४. नाप। माप।

प्रमाण—पुं० [सं० प्र√मा+ल्युट्—अन] १ लंबाई, चौड़ाई आदि नापने या भार आदि तौलने का मान। नाप या तौल। जैसे—गज, बटखरे आदि। २. नाप, तौल आदि की नियत इकाई या इयत्ता। जैसे—इस धोती का प्रमाण दस हाथ है, अर्थात् यह इससे न कम होती है और न अधिक। ३. लंबाई-चौड़ाई। विस्तार। ४. सीमा। हद। ५ ऐसा कथन, तथ्य या बात जिससे किसी अन्य कथन, तथ्य या बात के सत्यपूर्ण होने की प्रतीति होती है। सबूत। (प्रूफ) जैसे—धुआँ इस बात का प्रमाण है कि कहीं आग जल रही है। ६ वह चीज या बात जिससे विवादास्पद दूसरी बात के किसी एक पक्ष या मत का ठीक होने का निश्चय होता हो।
पद—प्रमाणपत्र। (देखें)

७ वह चीज या बात जो किसी कथन को ठीक सिद्ध करने के लिए औरो के सामने रखी जाती हो। साक्षी। (एविडेन्स) ८ ऐसा कथन, तथ्य या बात जिसे सब लोग ठीक, प्रामाणिक या यथार्थ मानते हो। ९ किसी चीज या बात के ठीक या यथार्थ होने की अवस्था या भाव। सचाई। सत्यता। उदा०—कान्ह जू कैसे दया के निधान हौ, जानौ न काहू के प्रेम प्रमानहिं।—दास। १० किसी की सत्यता आदि पर किया जानेवाला विश्वास। प्रतीति। ११ ऐसी चीज या बात जो बिलकुल ठीक होने के कारण सबके लिए आदरणीय या मान्य हो। उदा०—अति ब्रह्म-शास्त्र प्रमाण मानि सो वश्य मो मन युद्ध कै। —केशव। १२. साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी बात का कोई प्रमाण मिलने पर उस बात के प्रत्यक्ष या सिद्ध होने का उल्लेख होता है।

विशेष—न्यायशास्त्र मे प्रमाण के जो आठ भेद कहे गये है, उन्ही के अनुसार इस अलकार के भी आठ भेद माने गये हैं।

१३ किसी बात का ठीक, पूरा और सच्चा ज्ञान। १४ चित्रकला मे, अकित पदार्थों, व्यक्तियो आदि के सब अगो का पारस्परिक ठीक अनुपात। (प्रोपोर्शन) १५ शास्त्र, जो प्रमाण के रूप मे माने जाते है। १६ मूल-धन। पूँजी। १७ एकता। १८ कारण। सबब। १९. गणित मे त्रैराशिक की पहली राशि या सख्या। २० विष्णु का एक रूप। २१ शिव।

वि० १ जो ठीक या सत्य सिद्ध हो चुका हो अथवा माना जाता हो। २ जो सबके लिए मान्य हो। ३. जो यह जानता हो कि क्या ठीक है, और क्या ठीक नही है।

अव्य० १. अवधि या सीमा सूचक शब्द। पर्यन्त। तक। उदा०—सत जोजन प्रमान लै धावै।—तुलसी। २. किसी के तुल्य, सदृश या समान।

प्रमाणक—वि०[स० प्रमाण+कन् या प्रमाण+णिच्+ण्वुल्—अक] १ समस्त पदो के अत मे, परिमाण या विस्तार-सबधी। २ प्रमाणित करनेवाला।

पु० १. वह पत्र जिस पर लिखी हुई बाते प्रामाणिक और सही मानी जाती हैं। (सर्टिफिकेट) २ किसी रकम के आय-व्यय के खाते मे चढाये जाने की सपुष्टि या प्रमाण के रूप मे साथ मे नत्थी किये जानेवाले हिसाब के ब्योरे का पुरजा। (वाउचर)

प्रमाणकर्ता (तृ)—पु० [प० त०] वह व्यक्ति जो कोई बात प्रमाणित करता हो। (सर्टिफायर)

प्रमाण-कुशल—वि० [स० त०] अच्छा तर्क करने और उपयुक्त प्रमाण देनेवाला।

प्रमाणकोटि—स्त्री० [प० त०] प्रमाण मानी जानेवाली बातो या वस्तुओ का वर्ग।

प्रमाणत' (तस्)—अव्य० [स० प्रमाण+तस्] प्रमाण के अनुसार या आधार पर।

प्रमाणन—पुं० [स० प्रमाण+णिच्+ल्युट्—अन] १ कथन, लेख आदि के सम्बन्ध मे यह कहना या सिद्ध करना कि यह ठीक और प्रामाणिक है। (सर्टिफिकेशन) २ प्रमाण उपस्थित करके किसी तथ्य या बात को सही सिद्ध करना।

प्रमाणना—स०=प्रमानना।

प्रमाण-पत्र—पु०[प० त०] वह पत्र जिसमे कोई सबधित अधिकारी यह कहता है कि किसी के सबध की अमुक-अमुक बातें सत्य हैं। प्रमाणक। (सर्टिफिकेट)

प्रमाण-पुरुष—पु० [मध्य० स०] वह जिसके निर्णय मानने के लिए दोनो पक्षो के लोग तैयार हों। पंच।

प्रमाण-शास्त्र—पु०=तर्क-शास्त्र। (न्याय)

प्रमाणिक—वि०[स० प्रमाण+ठन्—इक] प्रामाणिक।

प्रमाणिका—स्त्री० [स० प्रमाणिक+टाप्] प्रमाणी।(दे०)

प्रमाणित—भू० कृ०[स० प्रमाण+णिच्+इतच्] १ जो प्रमाण द्वारा ठीक सिद्ध किया जा चुका हो। २ जिसके सबध मे किसी आधिकारिक व्यक्ति ने यह लिखा हो कि यह प्रामाणिक, सत्यपूर्ण या सही है।

प्रमाणी—स्त्री०[स० प्रमाण+ङीप्] चार चरणो का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से जगण, रगण, लघु और गुरु (ज, र, ल, ग) होते है। नाग स्वरूपिणी।

प्रमाणीकरण—पु० [स० प्रमाण+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] प्रमाणन।

प्रमाणीकृत—भू० कृ०[स० प्रमाण+च्वि√कृ+क्त] जो प्रमाण के रूप मे मान लिया गया हो। या प्रमाण के द्वारा सत्य या सिद्ध हो चुका हो।

प्रमातव्य—वि०[स० प्र√मा+तव्यत्] मारे जाने के योग्य।

प्रमाता (तृ)—पु० [स० प्र√मा+तृच्] १ प्रमाणो को मानने अर्थात् उनके आधार पर न्याय करनेवाला अधिकारी। २. न्यायाधीश। ३. आत्मा या चेतन पुरुष जिसे या जिसने ज्ञान होता है। ४. वह जो विषय से भिन्न और द्रष्टा या साक्षी हो।

प्रमातामह—पु० [स० अल्या० स०] [स्त्री० प्रमातामही] परनाना।

प्रमात्रा—स्त्री०[स० प्रा० स०] उतनी मात्रा जितनी आवश्यक, इष्ट या निर्दिष्ट हो। (क्वैन्टम)

प्रमाथ—पु०[स० प्र√मथ्+घञ्] १. मथन। २ कष्ट देना। पीडन। ३ नष्ट करना। न रहने देना। ४ मार डालना। ५. बलात् किया जानेवाला सभोग। बलात्कार। ६ बलपूर्वक किसी से कुछ छीन लेना। ७ प्रतिद्वद्वी को जमीन पर पटककर उस पर चढ बैठना और उसे घस्सा देना। ८ शिव का एक गण। ९ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। १० कार्तिकेय का एक अनुचर।

प्रमाथी (थिन्)—वि० [स० प्र√मथ्+णिनि] [स्त्री० प्रमाथिनी] १ प्रमथन करने या मथनेवाला। २ कष्ट देने या पीडित करनेवाला। ३ नष्ट करनेवाला। नाशक। ४ मार डालनेवाला। ५ घातक। ६. काटनेवाला।

पु० १ बृहत्सहिता के अनुसार बृहस्पति के ऐंद्र नामक तीसरे युग का दूसरा सवत्सर जो निकृष्ट माना गया है। २ वह ओषध जो मुँह, आँख, कान आदि मे जमा हुआ कफ बाहर निकाल दे। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

प्रमाद—पु० [स० प्र√मद्+घञ्] १. किसी प्रकार के मद या नशे मे होने की अवस्था या भाव। २ वह मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य अभिमान, असावधानता, उपेक्षा, प्रभुत्व, भ्रम आदि के कारण बिना कुपरिणाम का विचार किये कोई अनुचित काम, बात या भूल कर बैठता है। ३. उक्त प्रकार की मानसिक अवस्था मे की जानेवाली कोई बहुत बडी भूल। ४.

दुर्घटना। ५ वेहोशी। मूर्च्छा। ६. अत करण की दुर्वलता। ७. उन्माद। पागलपन। ८. योग-शास्त्र मे समाधि के साधनो की ठीक तरह से भावना न करना या उन्हे ठीक न समझना।

प्रमादतः—अव्य०[स० प्रमाद+तस्] प्रमाद के कारण।

प्रमादवान् (वत्)—वि० [स० प्रमाद+तुप्, वत्व] (व्यक्ति) जो प्रमाद करता हो अर्थात् विना कुपरिणाम का विचार किये अनुचित या गलत काम करता हो।

प्रमादिक—वि०[स० प्रमाद+ठन्—इक] १ प्रमाद-सम्बन्धी। प्रमाद का। २. प्रमाद करनेवाला। प्रमादशील।

प्रमादिका—स्त्री० [स० प्रमादिक+टाप्] ऐसी कन्या जिसके साथ किसी ने वलात्कार किया हो।

प्रमादिनी—स्त्री० [स० प्रमादिन्+ङीप्] सगीत मे एक रागिनी जो हिंडोल राग की सहचरी कही गई है।

प्रमादी (दिन्)—वि० [स० प्रमाद+इनि] [स्त्री० प्रमादिनी] १. (व्यक्ति) जो प्रमाद करता हो। प्रमादवान्। २. पागल।

प्रमान—वि०[स० प्रमाण या प्रामाणिक] १. प्रामाणिक। २. निश्चित। पक्का। उदा०—यह प्रमान मन मोरे।—तुलसी।
अव्य० की तरह। की भाँति। के समान।

प्रमानना—स०[स० प्रमाण+ना (प्रत्य०)] १ प्रमाण के रूप मे या विलकुल सत्य मानना। ठीक समझना। २ प्रमाणित या सिद्ध करना। सावित करना। ३ निश्चित या स्थिर करना। ठहराना।

प्रमानी†—वि०=प्रामाणिक।

प्रमापक—वि०[स० प्र√मा+णिच्, पुक्, +ण्वुल्—अक] प्रमाणित करनेवाला।
पु० प्रमाण।

प्रमापन—पु०[स० प्र√मा+णिच्, पुक्, +ल्युट्—अन] १. मार डालना। मारण। २ नाश। ३ आकृति। रूप।

प्रमापयिता (तृ)—वि० [स० प्र√मा+णिच्, पुक्, +तृच्] [स्त्री० प्रमापयित्री] १. घातक। २ नाशक। ३ अनिष्टकारक। हानिकारक।

प्रमापित—भू० कृ०[स० प्र√मा+णिच्, पुक्, +तृच्] १ जो मार डाला गया हो। हत। २ ध्वस्त। विनष्ट।

प्रमापी (पिन्)—वि० [स० प्र√मा+णिच्, पुक्, +णिनि] १. वध करने-वाला। २ नष्ट करनेवाला।

प्रमायुक—वि०[सं० प्र√मी (हिंसा)+उकञ्] जो ध्वस्त या नष्ट हो सकता है।

प्रमार्जक—वि० [स० प्र√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. पोछने या साफ करनेवाला। २ दूर करने या हटानेवाला।

प्रमार्जन—पु०[स० प्र√मृज+णिच्+ल्युट्—अन]१ झाड-पोछ या धोकर साफ करना। २ मरम्मत या सुधार करना। ३. दूर करना। हटाना।

प्रमावाद—पु० [स० प० त०] [वि० प्रमावादी] १ मनोविज्ञान का यह मत या सिद्धान्त कि कोई सार्विक शब्द या सज्ञा सुनकर उसके अनुरूप आकृति प्रस्तुत करने की शक्ति मन मे होती है। (कन्सेप्चुअलिज्म)

प्रमास्तिष्क—वि०[स०] प्रमस्तिष्क से सवध रखने या उसमे होनेवाला। (सेरिब्रल)

प्रमित—भू० कृ०[स० प्र√मन्+क्त] १ नापा या मापा हुआ। २. परिमित (अल्प या सीमित)। ३ जाना हुआ। ज्ञात। ४ निश्चित। ५. जिसके सम्बन्ध मे प्रमा (अर्थात् प्रमाणो के द्वारा यथार्थ ज्ञान) की प्राप्ति हुई हो। ६. प्रमाणित।

प्रमिताक्षरा—स्त्री०[स० प्रमित-अक्षर, व०स०, टाप्] बारह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, जगण, सगण और सगण (स, ज, स, स) होते हैं।

प्रमिति—स्त्री०[स० प्र√मि+क्तिन्]। १. नापने की क्रिया या भाव। २. नाप। ३ प्रमाणो के आधार पर प्राप्त किया जाने या होनेवाला यथार्थ ज्ञान।

प्रमीढ़—वि०[स० प्र√मिह् (सींचना)+क्त] १ गाढा। २. घना। ३ जो मूत्र वनकर या मूत्र के रूप मे शरीर के बाहर निकला हो।

प्रमीत—भू० कृ०[स० प्र√मी+क्त] १ प्रकृत या स्वाभाविक रूप से मरा हुआ। मृत (डिसीज्ड) ३. वैदिक युग मे, (पशु) जो यज्ञ मे बलि चढाने के लिए मारा गया हो। ३ नष्ट। वरवाद।
पु० वलि चढाया हुआ पशु।

प्रमीति—स्त्री०[स० प्र√मी+क्तिन्] १. हनन। वध। २ मनुष्य का प्रकृत या स्वाभाविक रूप से मरना। साधारण रूप से होनेवाली मृत्यु। (डीसीज) ३. नाश। वरवादी।

प्रमीलन—पु०[स० प्र√मील् (मूँदना)+ल्युट्—अन] निमीलन। मूँदना।

प्रमीला—स्त्री०[सं० प्र√मील्+अ+टाप्] १ तन्द्रा। २ थकावट। शिथिलता। ३ मूँदना। ४ एक स्त्री जिसने अर्जुन से युद्ध किया था और पराजित होने पर उससे विवाह करना स्वीकार किया था।

प्रमीलित—भू० कृ०[स० प्र√मील्+क्त] मुँदा या मूँदा हुआ।

प्रमीली (लिन्)—वि०[सं० प्र√मील्+णिनि] [स्त्री० प्रमीलिनी] निमीलित करनेवाला। आँखे मूँदनेवाला।

प्रमुख—वि०[स० प्रा० स०] [भाव० प्रमुखता] १ जो दूसरो के प्रति मुँह करके खडा हो। २. सवसे आगे या पहलेवाला। प्रथम। ३. जो सव वातो मे औरो से वढकर या श्रेष्ठ हो। प्रधान। मुख्य। ४ समस्त पदो के अत मे, जो प्रधान के पद पर हो। जैसे—राज-प्रमुख।
पु० १. प्रधान। २ प्रधान शासक। ३. विधान-सभा या ससद् का अध्यक्ष। (स्पीकर)
अव्य० १. आगे। सामने। २ उसी समय। तत्काल। ३ इससे आरम्भ करके और भी अनेक। आदि। प्रभृति।

प्रमुखता—स्त्री०[स० प्रमुख+तल्+टाप्] प्रमुख होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रमुग्ध—वि०[स प्रा० स०] १ मूर्च्छित। अचेत। २ हत वुद्धि। ३. वहुत सुदर।

प्रमुद—वि०[सं० प्र√मुद्+क]=प्रमुदित।
*पु०=प्रमोद।

प्रमुदित—भू० कृ०[स० प्र√मुद्+क्त] जिसे प्रमोद हुआ हो। प्रसन्न तथा हर्षित।

प्रमुदित-वदना—स्त्री०[स० व० स०,+टाप्] वारह अक्षरो की मदाकिनी नामक एक प्रकार की वर्णवृत्ति।

प्रमुषित—भू० कृ० [स० प्र√मुष् (चुराना)+क्त] १ चुराया या छीना हुआ। २. हतवुद्धि।

प्रमुषिता—स्त्री०[स० प्रमुषित+टाप्] एक प्रकार की पहेली।

प्रमूढ—वि०[स० प्र√मुह् (अविवेक)+क्त] १ घबराया हुआ। २ मोहित ३ मूर्ख। मूढ।

प्रमृत—भू० कृ०[स० प्र√मृ (मरना)+क्त] १ मरा हुआ। २ ढका हुआ। ३. दृष्टि से दूर गया हुआ।
पु० १ मृत्यु। २ कृषि। खेती।

प्रमृष्ट—भू० कृ० [स० प्र√मृष (सहना)+क्त] १ साफ या स्वच्छ किया हुआ। २ ओप, मसाले आदि से चमकाया हुआ।

प्रमेय—वि० [स० प्र√मा (मापना)+यत्] १ नापने योग्य । २ जिसका मान अर्थात तौल या नाप जान सकें। ३ जिसका अवधारण हो सके। जो समझ मे आ सके। ४ जो प्रमाणो से सिद्ध किया जा सके।
पु० १ कोई ऐसी बात, मत या विचार जो स्वय सिद्ध न हो, बल्कि जिसे तर्क, प्रमाण आदि के द्वारा प्रमाणित या सिद्ध करना अपेक्षित अथवा आवश्यक हो। (थियोरम) २ गणित और ज्यामिति मे कोई ऐसी बात जो प्रमाणित या सिद्ध की जानेवाली हो। (थियोरम) ३ ग्रन्थ का अध्ययन या परिच्छेद।

प्रमेह—पु०[स० प्र√मिह् (सीचना)+घञ्] एक रोग जिसमे थोडी-थोडी देर पर पेशाब होने लगता है और उसके साथ शरीर की शुक्र आदि धातुएँ निकलने लगती है।

प्रमेही (हिन्)—वि० [स० प्रमेह+इनि] प्रमेह रोग से ग्रस्त या पीडित।

प्रमोक्ष—पुं०[स० प्रा० स०] मोक्ष।

प्रमोद—पु०[स० प्र√मुद् (हर्ष)+घञ्] १ बहुत अधिक बढा हुआ मोद, प्रसन्नता या हर्ष। आमोद या मोद का बहुत बढा हुआ रूप। (मेरिमेन्ट) २ आराम। सुख। ३ बृहस्पति के पहले युग के चौथे वर्ष का नाम। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर। ५ प्रमोदा (देखे) नामक सिद्धि। ६ कडी सुगधि।

प्रमोदक—पु० [सं० प्र√मुद्+णिच्+ण्वुल—अक] एक प्रकार का जडहन।
वि० प्रमोद अर्थात् आनन्द उत्पन्न करनेवाला।

प्रमोदकर—पु०[प० त०] दे० 'मनोरजन-कर'।

प्रमोदन—पु० [स० प्र√मुद्+णिच्+ल्युट्—अन] १. प्रमुदित करना। आनदित करना। २ [प्र√मुद्+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु।

प्रमोदा—स्त्री०[स० प्रमोद+टाप्] साख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक जिसकी प्राप्ति से आध्यात्मिक दु खो का नाश हो जाता है और साधक परम प्रसन्न होता है।

प्रमोदित—भू०कृ० [स० प्रमोद+इतच्] जो प्रमोद या आनन्द से युक्त किया गया हो।
पु० कुबेर।

प्रमोदिनी—स्त्री०[स० प्रमोदिन्+ङीप्] जिगिनी।

प्रमोदी (दिन्)—वि० [स० प्र√मुद्+णिच्+णिनि] १. प्रमोद-सबधी। २ प्रमुदित रहनेवाला।

प्रमोधना*—स०=प्रबोधना।

प्रमोह—पु०[स० प्र√मुह+घञ्] १ मोह। २ मूर्च्छा। ३ मूर्खता।

प्रमोहन—पु० [स० प्र√मुह्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रमोहित] १ मोहित करने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार का अस्त्र जिसके विषय मे कहा जाता है कि इसे चलाने से शत्रु के सैनिक मोह के वश मे हो जाते थे।

प्रमोहित—भू० कृ० [स० प्र√मुह+णिच्+क्त] १. मोहित। २ प्रमोह अस्त्र के चलने के फलस्वरूप जो मोह मे पड गया हो।

प्रमोही (हिन्)—वि० [स० प्र√मुह+णिच्+णिनि] १ प्रमोह या मोह-सबधी। २ मोहित करनेवाला।

प्रयंक†—पु०=पर्यंक।

प्रयंत†—अव्य०=पर्यन्त।

प्रयत—वि०[स० प्र√यम्(नियत्रण)+क्त] १ पवित्र। २ सयत। ३. दीन। नम्र। ४ प्रयत्नशील।

प्रयतात्मा (त्मन्)—वि०[स० प्रयत-आत्मन्, ब० स०] जितेद्रिय। सयमी।

प्रयति—स्त्री०[स०√स प्र√यम्+क्तिन्] सयम।

प्रयत्न—पु०[स० प्र√यत्+नङ्] १ वह शारीरिक या मानसिक चेष्टा जो कोई उद्देश्य या कार्य पूरा करने के लिए की जाती है। २ किसी कठिन कार्य की सिद्धि अथवा किसी चीज की प्राप्ति के लिए आदि से अत तक अध्यवसायपूर्वक किये जानेवाले सभी उद्योग, कृत्य या चेष्टाएँ। कोशिश। चेष्टा। प्रयास। (एफर्ट) ३ न्याय दर्शन के अनुसार जीव या प्राणी के छ गुणो मे से एक जो उसकी सक्रिय चेष्टा का सूचक होता है। यह प्रकृति, निवृत्ति और जीवन-कारण या जीवन योनि के भेद से तीन प्रकार का माना गया है। ४ क्रियाशीलता। सक्रियता। ५ सतर्कता। सावधानी। ६ भाषाविज्ञान और व्याकरण मे, गले और मुख के अन्दर की वह क्रिया या चेष्टा जो ध्वनियो के उच्चारण के लिए होती है और जिसमे जीभ आस-पास के किसी भीतरी अवयव को छूकर तथा श्वास को रोक या विकृत करके ध्वनियो का उच्चारण कराती है। इसके आभ्यतर और बाह्य ये दो भेद कहे गये है।

प्रयत्नवान् (वत्)—वि०[स० प्रयत्न+मतुप्, वत्व] [स्त्री० प्रयत्नवती] किसी प्रकार के प्रयत्न या उद्योग मे लगा हुआ।

प्रयत्न-शील—वि०[स० ब० स०]=प्रयत्नवान्।

प्रयस्त—भू० कृ०[स० प्र√यस् (प्रयत्न)+क्त] १ प्रयत्न मे लगा हुआ। २ छौका, तडका या बघारा हुआ।

प्रयाग—पु०[स० ब० स०] १. वह स्थान जहाँ बहुत से यज्ञ हुए हो। २ यज्ञ। याग। ३ गगा और यमुना के सगम पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ जो आज-कल इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध है। ४ इन्द्र। ५ घोडा।

प्रयागवाल—पु० [हिं० प्रयाग+वाला (प्रत्य०)] प्रयागतीर्थ का पडा।

प्रयाचन—पु०[स० प्र√याच् (माँगना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रयाचित] गिड़गिडाकर माँगना।

प्रयाज—पु०[स० प्र√यज् (देवपूजन)+घञ्] दर्शपौर्ण मास यज्ञ के अतर्गत एक अग-यज्ञ।

प्रयाण—पु०[सं० प्र√या (गति)+ल्युट्—अन] १ कही जाने के लिए यात्रा आरंभ करना। कूच। प्रस्थान। २ यात्रा। सफर। ३. विशेषत सैनिक यात्रा। अभियान। चढाई। ४. उक्त अवसर पर बजाया जानेवाला नगाडा। ५ मर कर किसी अन्य लोक मे जाना। ६ कार्य का अनुष्ठान या आरम।

प्रयाणक—पु०[स० प्रयाण+कन्] १. यात्रा। २ प्रस्थान। ३ गति।

प्रयाण-काल—पु०[स० प० त०] १ प्रयाण करने अर्थात् चलने या जाने

का समय। यात्रा का समय। २ इस लोक से पर-लोक जाने अर्थात् मरने का समय।

प्रयाण-गीत—पु० [सं० ष० त०] १ सैनिक अभियान के समय गाये जानेवाले गीत। २ आधुनिक हिंदी साहित्य में वीर-गाथावाले गीतों का वह अंग जिसमें योद्धाओं के वे उल्लासपूर्ण गीत होते हैं, जो वे युद्ध-भूमि की ओर प्रस्थान के समय या किसी प्रकार के संघर्ष के लिए आगे बढ़ने के समय मिलकर गाते चलते हैं। (मार्चिंग साँग) जैसे—'प्रसाद' का 'हिमाद्रि तुंग-शृंग से...' वाला गीत।

प्रयात—भू० कृ० [सं० प्र√या (जाना)+क्त] १ गया हुआ। गत। २ मरा हुआ। मृत। ३ सोया हुआ। ४. बहुत चलनेवाला।
पु० बहुत ऊँचा किनारा जिस पर से गिरने से कोई चीज एकदम नीचे चली जाय। कगार। भृगु।

प्रयाना—पु०=प्रयाण।

प्रयापण—पु० [सं० प्र√या+णिच्, पुक्, + ल्युट्—अन] [वि० प्रयापणीय, प्रयाप्य, भू० कृ० प्रयापित] १ प्रस्थान कराना। २ चलता करना। भगाना या हटाना। ३ किसी से आगे निकलना या बढ़ना।

प्रयास—पु० [सं० प्र√यस् (प्रयत्न)+घञ्] १ किसी नये अथवा कठिन काम को आरम्भ करने के लिए किया जानेवाला उद्योग या प्रयत्न। परिश्रम। मेहनत। २ वह कार्य या पदार्थ जो इस प्रकार किया या बनाया गया हो। जैसे—यह पुस्तक प्रशंसनीय प्रयास है। ३ इच्छा।

प्रयुक्त—भू० कृ० [सं० प्र√युज् (जोड़ना)+क्त] [भाव० प्रयुक्ति] १ जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। २ जिसे प्रयोग या व्यवहार में लाया गया हो अथवा लाया जा रहा हो। ३ जो किसी काम में लगाया गया हो। ४ दे० 'व्यावहारिक'।

प्रयुक्ति—स्त्री० [सं० प्र√युज्+क्तिन्] १ प्रयुक्त होने की अवस्था या भाव। २. प्रयोग। ३ प्रयोजन।

प्रयोक्ता (क्तृ)—वि० [सं० प्र√युज्+तृच्] १ प्रयुक्त करने अर्थात् किसी चीज को प्रयोग में लानेवाला। २ काम में लगाने या नियुक्त करनेवाला।
पु० १ ऋण देनेवाला। उत्तमर्ण। महाजन। २ नाटक का सूत्रधार।

प्रयुत—भू० कृ० [सं० प्र√यु (मिलना)+क्त] १ खूब मिला हुआ। २ अस्पष्ट। गड़बड़। ३. समेत। सहित। ४ दस लाख।
पु० दस लाख की संख्या।

प्रयोग—पु० [सं० प्र√युज्+घञ्] १. किसी चीज या बात को आवश्यकता अथवा अभ्यासवश काम में लाना। इस्तेमाल। व्यवहार। (यूज) जैसे—(क) वाक्य में शब्दों का किया जानेवाला प्रयोग। (ख) जाड़े में गरम कपड़ों का किया जानेवाला प्रयोग। (ग) किसी काम या बात के लिए अधिकार या बल का किया जानेवाला प्रयोग। २. आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्रों में, किसी प्रकार का अनुसंधान करने या कोई नई बात ढूँढ़ निकालने के लिए की जानेवाली कोई परीक्षणात्मक क्रिया अथवा उसका साधन। ३ जो तथ्य उक्त प्रकार के अनुसंधान से सिद्ध हो चुका हो, उसे दूसरों को समझाने के लिए की जानेवाली वह क्रिया जिसमें वह तथ्य ठीक और मान्य सिद्ध होता है। प्रत्यक्ष रूप से कोई काम या बात प्रमाणित या सिद्ध करने की क्रिया। ४ वह क्रिया जो यह जानने के लिए की जाती है कि कोई काम, चीज या बात ठीक तरह से पूरी उतर सकेगी या नहीं। जाँच। परीक्षण। (एक्सपेरिमेन्ट, उक्त तीनों अर्थों के लिए) ५ किसी प्रकार की क्रिया का प्रत्यक्ष रूप से होनेवाला साधन। ६. ठीक तरह से काम करने का ढंग या विधि। ७ प्राचीन भारतीय राजनीति में साम, दाम, दंड और भेद की नीति का किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। ८ तंत्रशास्त्र में, वह पूजा-पाठ जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियमित रूप से कुछ समय तक विधिपूर्वक किया जाता है। उच्चाटन, मारण, मोहन आदि के लिए किये जानेवाले तांत्रिक उपचार। ९ वैद्यक में, रोगी का ऐसा उपचार या चिकित्सा जो उसके देश, काल, शारीरिक स्थिति आदि का ध्यान रखते हुए की जाती है। १० व्याकरण में, कर्ता, कर्म अथवा क्रियार्थक संज्ञा के लिंग, वचन आदि के अनुसार प्रयुक्त होनेवाला क्रिया-पद की संज्ञा जो कर्ता के अनुसार होने पर कर्तृ प्रयोग, कर्म के अनुसार होने पर कर्माणि प्रयोग और भाव के अनुसार होने पर भावे प्रयोग कहलाता है। ११ साहित्य में, रूपकों आदि का अभिनय। १२ तर्क-शास्त्र में अनुमान के पाँचों अवयवों का कथन या प्रतिपादन। १५ वह उपकरण जिससे कोई काम होता हो। १६ वैदिक युग में यज्ञ आदि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। १७ धार्मिक ग्रन्थ या शास्त्र। १८ प्राचीन भारतीय लोक-व्यवहार में अपनी आय बढ़ाने के लिए लोगों को सूद पर ऋण देने का व्यवसाय। १९ कार्य का अनुष्ठान या आरम्भ। २० तरकीब। युक्ति। २१ उदाहरण। दृष्टांत। २२ परिणाम। फल। २३. उपहार। भेंट। २४. इंद्रजाल। २५ घोड़ा।

प्रयोगतः (तस्)—अव्य० [सं० प्रयोग+तस्] प्रयोग द्वारा। परिणाम-रूप में। अनुसार। कार्यतः।

प्रयोग-वाद—पु० [सं० ष० त०] यह आधुनिक साहित्यिक मत या सिद्धांत कि अब तक जो साहित्यिक परम्पराएँ चली आ रही हैं, उन्हें प्रयोगात्मक परीक्षण के द्वारा जाँच लेना चाहिए, और उनमें से जो अनावश्यक या निरर्थक हों, उनके स्थान पर नई परम्पराएँ चलाने के लिए नये प्रयोग करके देखना चाहिए। (एक्सपेरिमेंटलिज्म)
विशेष—इस वाद के अनुयायी कवि या लेखक संसार में छाये हुए अन्धकार, अनाचार और विषाद में अपने आपको नये उचित मार्ग का अन्वेषक तथा अपनी कृतियों या रचनाओं को प्रयोग मात्र मानते हैं।

प्रयोगवादी (दिन्)—वि० [सं० प्रयोगवाद+इनि] प्रयोगवाद-सम्बन्धी। प्रयोगवाद का।
पु० वह जो प्रयोगवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

प्रयोग-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पदार्थ-विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि-विषयक तथ्यों को समझने, जानने या नई बातों का पता लगाने की दृष्टि से विविध प्रयोग किये जाते हों। (लेबोरेटरी)

प्रयोगातिशय—पु० [सं० प्रयोग-अतिशय, ष० त०] साहित्य में, रूपक की पाँच प्रकार की प्रस्तावनाओं में से एक जिसमें सूत्रधार प्रस्तावना की समाप्ति होते होते किसी नट या पात्र को मंच की ओर आते हुए देखकर यह कहता हुआ प्रस्थान करता है—अरे... वह तो आ रहा है या आ पहुँचा।

प्रयोगार्थ—पु० [सं० प्रयोग-अर्थ, ष० त०] मुख्य कार्य की सिद्धि के लिए किया जानेवाला गौण कार्य।

प्रयोगार्ह—वि० [स० प्रयोग√अर्ह(योग्य होना)+अच्] जिसका प्रयोग किया जा सके। प्रयोग के योग्य ।

प्रयोगी (गिन्)—वि० [स० प्रयोग+इनि] १ प्रयोग करनेवाला। प्रयोगकर्ता। २ प्रेरक। ३ जिमके मामने कोई उद्देश्य हो।

प्रयोग्य—पु० [स० प्र√युज्+ण्यत्] (गाडी मे जोता जानेवाला) घोडा।

वि० प्रयोग मे आने या लाये जाने के योग्य ।

प्रयोजन—पु० [स० प्र√युज्+ल्युट्—अन] [वि० प्रयोजनीय, प्रयोज्य, मू० कृ० प्रयुक्त] १ किसी काम, चीज या वात का प्रयोग करने अर्थात् उसे व्यवहार मे लाने की क्रिया या भाव। उपयोग। प्रयोग। व्यवहार। २ वह उद्देश्य जिसमे प्रेरित होकर मनुष्य कोई काम करने मे प्रवृत्त होता और उमे पूरा करता है। अभिप्राय। मतलव। (पर्पज) जैसे—इन वातो से हमारा प्रयोजन सिद्ध नही होगा।-३. हिन्दुओ मे, कोई अच्छा, धार्मिक, वडा या शुभ काम या उत्सव। जैसे—जव उनके यहाँ कोई प्रयोजन होता है, तव वे हमे अवश्य वुलाते हैं।

प्रयोजनवती लक्षणा—स्त्री० [स० प्रयोजन+मतुप्, वत्व,+ङीप्, प्रयोजनवती लक्षणा, व्यस्तपद] साहित्य मे, लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमे मुख्य अर्थ का वाध होने पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए मुख्य अर्थ मे सवद्ध किसी दूसरे अर्थ का ज्ञान कराया जाता है। जैसे—'वह गाँव पानी मे वसा है।' इसलिए कहा जाता है कि वह गाँव किसी जलाशय के किनारे पर या कई ओर पानी से घिरा हुआ होता है। यह लक्षणा दो प्रकार की होती है—गौणी और शुद्धा।

प्रयोजनीय—वि० [स० प्र√युज्+अनीयर्] १ प्रयोग मे लाने योग्य। उपयोगी। २ काम या मतलव का।

प्रयोज्य—वि० [म० प्र√युज्+ण्यत्] १. जो प्रयोग मे लाया जाने को हो अथवा लाया जा सके। (एप्लिकेवुल) २. जो अधिकार के रूप मे काम मे लाये जाने के योग्य हो अथवा लाया जा सके। ३ आचरित होने के योग्य। जिसका आचरण हो सके।

पु० १ नौकर। भृत्य। २. वह धन जो किसी काम मे लगाया जाने को हो।

प्ररक्षण—पु० [स० प्र√रक्ष् (रक्षा करना)+ल्युट्—अन] [मू० कृ० प्ररक्षित]=रक्षण।

प्ररुह—वि० [स० प्र√रुह्+क] ऊपर की ओर जाने या वढनेवाला।

प्ररूढ—मू० कृ० [स० प्र√रूह्+क्त] [भाव० प्ररूढि] १ उगा हुआ। २. आगे या ऊपर वढा हुआ।

प्ररूप—पु० [स० प्रा० स०] [वि० प्रारूपिका] किसी वर्ग की वस्तुओ, व्यक्तियो आदि मे से कोई एक ऐसी वस्तु या व्यक्ति जिससे उस वर्ग के सामान्य गुणो, विशेषताओ आदि का वोध हो जाता हो। (टाइप)

प्ररूपण—पु० [स० प्र√रूप्+णिच्+ल्युट्—अन] १. व्याख्या करना। २. समझाना ।

प्ररूपी (पिन्)—वि० [स० प्ररूप+इनि] प्ररूप के रूप मे माना या स्वीकार किया जानेवाला। प्रारूपिक। (टिपिकल्)

प्ररोचन—पु० [म० प्र√रुच् (दीप्ति)+णिच्+ल्युट्—अन] [मू० कृ० प्ररोचित] १ किसी काम या वात के प्रति रुचि उत्पन्न करना। शौक पैदा करना। २ अनुरक्त या मोहित करना। ३. उत्तेजित करना। उत्तेजन।

प्ररोचना—स्त्री० [स० प्र√रुच्+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १ नाटक के अभिनय मे प्रस्तावना के समय सूत्रधार नट नटी आदि का नाटक और नाटककार की प्रशसा मे कुछ ऐसी वातें कहना जिससे दर्शकों मे अभिनय के प्रति रुचि उत्पन्न हो। २ अभिनय के अन्तर्गत कही जानेवाली ऐसी वात जिससे किसी भाव, घटना या दृश्य के प्रति लोगो मे रुचि उत्पन्न हो। ३ दे० 'प्ररोचन'।

प्ररोधन—पु० [स० प्र√रुध् (रोकना)+णिच्+ल्युट्—अन] ऊपर उठाना या चढ़ाना ।

प्ररोह—पु० [स० प्र√रुह्+अच्] १ आरोह। चढाव। २. पौधो आदि का उगकर ऊपर की ओर वढना। ३ अकुर। ४. कल्ला। कोपल। ५ सतान। ६ किस्सा। ७ तुन का पेड। नदी वृक्ष। ८. अर्वुद।

प्ररोहण—पु० [स० प्र√रुह्+ल्युट्—अन] १ ऊपर की ओर जाने या वढने की क्रिया या भाव। २ अकुर, कल्ले आदि का निकलना। उत्पन्न होना।

प्ररोह-भूमि—स्त्री० [स० ष० त०] उर्वरा भूमि। उपजाऊ जमीन।

प्ररोहशाखी (खिन्)—पु० [स० प्ररोह-शाखा, मध्य० स०, प्ररोहशाखा-इनि] ऐसा वृक्ष जिसकी कलम लगाने से लग जाती हो और नये वृक्ष का रूप धारण कर लेती हो।

प्ररोही (हिन्)—वि० [स० प्ररोह+इनि] [स्त्री० प्ररोहिणी] १. ऊपर की ओर जाने या वढनेवाला। २ उगनेवाला। ३ उत्पन्न होनेवाला ।

प्रलंब—वि० [स० प्र√लव्+अच्] १. जो ऊपर से नीचे की ओर लटक रहा हो। २ टाँगा या लटकाया हुआ। ३ लम्बा। ४ किसी ओर निकला या वढा हुआ। ५ काम करने मे ढीला। सुस्त।

पु० १ लटकने की क्रिया या भाव। २ काम मे होनेवाला व्यर्थ का विलव। ३ पेड की टहनी। डाल। शाखा। ४. वीज आदि का अकुर। ५ खीरा। ६ राँगा। ७ स्त्री या मादा की छाती। स्तन। ८ गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। ९ एक दानव जिसे वलराम ने मारा था ।

प्रलंबक—पु० [स० प्रलव+कन्] एक सुगध-तृण। रोहिप।

प्रलंबन—पु० [स० प्र√लव्+ल्युट्—अन] [मू० कृ० प्रलवित] १ प्रलव की स्थिति मे किसी को लाना। २ लवा करना। ३ देर लगाना। ४ अवलवन। सहारा लेना ।

प्रलंबित—मू० कृ० [स० प्र√लव्+क्त] १ प्रलव के रूप मे लाया हुआ। २ (कर्मचारी) जिसका प्रलवन हुआ हो।

प्रलंबी (बिन्)—वि० [स० प्र√लव्+णिनि] [स्त्री० प्रलविनी] १ नीचे की ओर दूर तक लटकनेवाला। २ लंवा। ३. अवलव। या सहारा लेनेवाला। ४ काम मे व्यर्थ देर लगानेवाला। ५ दे० 'प्रलव'।

प्रलभन—पु० [स० प्र√लभ्+ल्युट्—अन, मुम्] [वि० प्रलव्ध] १ लाभ होना। प्राप्ति होना। २ धोखा देना।

प्रलपन—पु० [सं० प्र√लप् (कहना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रलपित] १ बात-चीत या वार्तालाप करना। २ प्रलाप या बकवाद करना।

प्रलब्ध—भू० कृ० [सं० प्र√लभ्+क्त] १ जो छला गया हो। २. धोखा खाया हुआ। ३ ग्रहण किया गया हो। ग्रहीत।

प्रलब्धा (ब्धृ)—वि० [सं० प्र√लभ्+तृच्] धोखा देने या छलनेवाला।

प्रलयंकर—वि० [सं० प्रलय√कृ (करना)+खच्, मुम्] [स्त्री० प्रलयकरी] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।

प्रलय—पु० [सं० प्र√ली (विलीन होना)+अच्] १ पूरी तरह से होनेवाला लय अर्थात् नाश या विलीनता। २ अधिकतर प्राचीन जातियो और देशो मे प्रचलित प्रवादो के अनुसार सारी सृष्टि का वह विनाश जो बहुत प्राचीन काल मे किसी बहुत बडी और जगत्व्यापी बाढ के फल-स्वरूप हुआ था। (डिल्यूज)

विशेष—भारतीय पुराणों के अनुसार प्रत्येक कल्प का अन्त होने पर अर्थात् ४३,२०,००,००० वर्ष बीतने पर सारी सृष्टि का प्रलय होता है, और सृष्टि अपने मूल कारण अर्थात् प्रकृति मे लीन हो जाती है, और इसके उपरात नये सिरे से सृष्टि की रचना होती है। पिछली बार वैवस्वत मनु, के समय ऐसा प्रलय हुआ था। ईसाइयो, मुसलमानो आदि मे प्रचलित प्रवादो के अनुसार पिछली बार हजरत नूह के समय ऐसा प्रलय हुआ था। वेदात मे प्रलय के ये चार प्रकार या भेद कहे गये है—नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत और आत्यतिक।

३ बहुत ही उत्कट या तीव्र रूप मे और विस्तृत भू-भाग मे होनेवाला भयकर नाश या बरबादी। जैसे—दोनो महायुद्धो के समय सारे युरोप मे प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया था। ४ मृत्यु। ५ बेहोशी। मूर्च्छा। ६. साहित्य मे नौ सात्विक अनुभावो मे से एक जिसमे प्रिय के वियोग के कारण मूर्च्छा, निद्रा, चेतनहीनता, निश्चेष्टता, श्वासावरोध, स्तब्धता आदि बाते होती है और फलत प्रिया की प्राण-हीनता दीख पडने लगती है। ७ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

प्रलव—पु० [सं० प्र√लू+अप्] किसी चीज का छोटा टुकडा।

प्रलाप—पु० [सं० प्र√लप् (कहना)+घञ्] [कर्त्ता प्रलापी] १ बात-चीत करना। वार्तालाप। २ मानसिक विकार या शारीरिक कष्ट के कारण पागलो की तरह या बे-सिर-पैर की बाते करना। ३ रो-रोकर किसी को अपना कष्ट या व्यथा सुनाना। ४ साहित्य मे, शृगार रस के प्रसग मे विरह से व्याकुल होकर इस रूप मे बाते करना कि मानो वे सामने बैठे हुए प्रेमी या प्रेमिका से ही कही जा रही हो। ५ कुछ विकट रोगो मे वह अवस्था जिसमे रोगी बहुत ही विकल होकर पागलों की तरह अडबड बाते बकता है। (डिलीरियम)

प्रलापक—पु० [सं० प्र√लप्+णिच्+ण्वुल्—अक] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे रोगी प्रलाप करता अर्थात् अनाप-शनाप बकता है, और उसका चित्त ठिकाने नही रहता।

वि० १. प्रलाप करनेवाला। २ व्यर्थ या अड-बड बकनेवाला।

प्रलापी (पिन्)—वि० [सं० प्र√लप्+घिनुण्] [स्त्री० प्रलापिनी] १ प्रलाप करनेवाला। २ व्यर्थ बकवाद करने या अड-बड बकनेवाला।

प्रलाभ—पु० [सं० प्रा० स०] यथेष्ठ या विशिष्ट रूप मे होनेवाला लाभ।

प्रलाभी (भिन्)—वि० [प्रलाभ+इनि] १ (काम, पद या व्यवस्था) जिससे या जिसमे यथेष्ठ आर्थिक लाभ होता हो। २ (व्यक्ति) जो प्राय. या सदा बहुत अधिक आर्थिक लाभ के लिए उत्सुक तथा प्रयत्नशील रहता हो। (ल्यूक्रेटिव, उक्त दोनो अर्थो मे)

प्रलीन—भू० कृ० [सं० प्र√ली+क्त] [भाव० प्रलीनता] १ गला या घुला हुआ। २. (स्थान) जहाँ प्रलय हुई हो फलत ध्वस्त और नष्ट भ्रष्ट। ३. जड के समान निश्चेष्ट। ४ मरा हुआ। ५ छिपा हुआ। तिरोहित।

प्रलीनता—स्त्री० [सं० प्रलीन+तल्+टाप्] १ प्रलीन होने की अवस्था या भाव। २ जडत्व। जडता। ३ विनाश।

प्रलीनेंद्रिय—वि० [सं० प्रलीन-इन्द्रिय, ब० स०] जिसकी इन्द्रियाँ शिथिल या नष्ट हो गई हो।

प्रलुब्ध—वि० [सं० प्र√लुभ् (चाहना)+क्त] [स्त्री० प्रलुब्धा] १ लोभ मे पडा हुआ। २. किसी पर अनुरक्त या लुभाया हुआ। मोहित। ३ दूसरों को धोखा देनेवाला। वचक।

प्रलेख—पु० [सं० प्र√लिख् (लिखना)+घञ्] १ विधिक क्षेत्र मे काम आ सकने योग्य कोई लिखा हुआ कागज या लेख। लेख्य। दस्तावेज। (डॉक्यूमेन्ट) २ ऐसा अनुबध-पत्र जो निष्पादक या लिखनेवाला अपने हस्ताक्षर करके दूसरे पक्ष को देता है। (डीड)

प्रलेखक—पु० [सं० प्र√लिख्+ण्वुल्—अक] लेख्य लिखनेवाला कर्मचारी। अर्जीनवीस। कातिब।

प्रलेखन—पु० [सं०] लेख्य आदि लिखने का काम।

प्रलेख-पोषण—पु० [सं०] आवश्यकता के अनुसार प्रलेखो या उद्दिष्ट निर्देशो का यथास्थान अकन या उल्लेख करना। (डाक्यूमेन्टेशन)

प्रलेप—पुं० [सं० प्र √लिप्+घञ्] १ किसी अग विशेषत त्वचा पर किसी ओषधि का किया जानेवाला लेप। २ किसी गाढी चीज का किसी दूसरी चीज पर किया जानेवाला लेप। ३ वह चीज जो उक्त रूप मे लगाई जाय।

प्रलेपक—वि० [सं० प्र √लिप्+ण्वुल्—अक] प्रलेप या लेप करनेवाला। पु० वह ज्वर जो क्षय आदि रोगो के साथ होता है और जिसमे शरीर का चमड़ा रूखा या शुष्क होने लगता है। (हेक्टिक फीवर)

प्रलेपन—पु० [सं० प्र √लिप्+ल्युट्—अन] १ लेप करने या लगाने की क्रिया या भाव। २ पोताई।

प्रलेप्य—वि० [सं० प्र √लिप्+ण्यत्] १ जो लेप के रूप मे लगाया जा सके। २. जिस पर लेप लगाया जा सके या लगाया जाने को हो। पु० घुँघराले बाल।

प्रलेह—पु० [सं० प्र √लिह् (आस्वादन करना)+घञ्] मास के कूटे या पीसे हुए अशो को तलकर बनाया जानेवाला एक व्यजन। कोरमा।

प्रलेहन—पु० [सं० प्र √लिह्+ल्युट्—अन] चाटना।

प्रलोप—पु० [सं० प्र √लुप् (काटना)+घञ्] लोप।

प्रलोभ—पु० [सं० प्र √लुभ् (लालच करना)+घञ्] १ बहुत अधिक लालच या लोभ। २ प्रलोभन।

प्रलोभक—वि० [सं० प्र√लुभ्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रलोभन देनेवाला। लालच देनेवाला। २ लुभानेवाला।

प्रलोभन—पु० [सं० प्र√लुभ्+णिच्+ल्युट्—अन] १. किसी के मन

मे लोभ उत्पन्न करना। किसी को लोभी बनाना। २ वह चीज या बात जो किसी के मन मे लोभ या लालच उत्पन्न करती हो। (टेम्पटेशन) ३. कोई कार्य विशेषत बुरा कार्य करने के लिए होनेवाली वृत्ति। लोभ। ४ किसी के मन मे अपने प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न करना। लुभाना।

प्रलोभित—भू० कृ० [स० प्र√लुभ्+णिच्√क्त] १ जिसके मन मे लोभ उत्पन्न किया गया हो या हुआ हो। ललचाया हुआ। २ लुभाया हुआ।

प्रलोभी (भिन्)—वि० [स० प्र√लुभ्+णिनि] प्रलोभ मे फंसनेवाला। लोभ या लालच करनेवाला।

प्रलोल—वि० [स० प्रा० स०] १ लटकता और हिलता हुआ। २ क्षुब्ध।

प्रवंचक—पु० [स० प्र√वञ्च्+णिच+ण्वुल्—अक] १ वचन करनेवाला। ठग। २ धोखेबाज। धूर्त।

प्रवचन—पु० [स० प्र√वञ्च्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवचित] धोखा देने, छलने या ठगने का काम। धोखेबाजी। ठगी।

प्रवचना—स्त्री० [स० प्र√वञ्च्+णिच्+युच्—अन, टाप्] छलने, धोखा देने अथवा ठगने का कोई कार्य। छलपूर्ण कार्य।

प्रवचित—भू० कृ० [स० प्र√वञ्च्+णिच्+क्त] जो अथवा जिसे छला, या ठगा गया हो। धोखा दिया या खाया हुआ।

प्रवक्ता (क्तृ)—वि० [स० प्रा० स०] १ प्रवचन करनेवाला। २ अच्छी तरह समझानेवाला।

पु० १ प्राचीन भारत मे वह विद्वान् जो प्रोक्त साहित्य का प्रवचन करता या शिक्षा देता था। २ आज-कल वह जो किसी शासक-मडल, सस्था आदि की ओर से आधिकारिक रूप से कोई बात कहता या मत प्रकट करता हो। (स्पोक्समैन)

प्रवचन—पु० [स० प्र√वच् (बोलना)+ल्युट्—अन] [वि० प्रवचनीय] १ कोई बात या विषय अच्छी तरह और पाडित्यपूर्वक बतलाना या समझाना। २ धार्मिक, नैतिक आदि गभीर विषयो मे परोपकार की दृष्टि से कही जानेवाली अच्छी तथा विचारपूर्ण बाते। ३. उक्त प्रकार से होनेवाला उपदेशपूर्ण भाषण।

प्रवट—पु० [स०√प्रु (सरकना)+अट] गेहूँ।

प्रवण—वि० [स०√प्रु+ल्युट् (अधिकरण)—अन] [भाव० प्रवणता] १ जो नीचे की ओर झुका चला गया हो। ढालुआँ। २ झुका हुआ। नत। ३. किसी काम या बात की ओर ढला हुआ। प्रवृत्त। ४ नम्र। विनीत। ५ सच्चा और साफ व्यवहार करनेवाला। खरा। ६ उदार और सहृदय। ७ अनुकूल। मुआफिक। ८ चिकना। स्निग्ध। ९ लवा। १० कुशल। दक्ष। निपुण।

पु० १ ढलान। २. चौराहा। ३ उदर। ४ क्षण। ५ आहुति।

प्रवणता—स्त्री० [स० प्रवण+तल्+टाप्] १ प्रवण होने की अवस्था, गुण या भाव। २ ढलान। ३ प्रवृत्ति।

प्रवत्स्थ—वि० [स०] जो विदेश यात्रा को उद्यत हो।

प्रवत्स्यत्पतिका—स्त्री० [स० ब० स०,+कप्+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

प्रवत्स्यद्भर्तृका—स्त्री० [स० प्रवत्स्यत्-भर्तृ, ब० स०,+कप्+टाप्]=प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवदन—पु० [स० प्र√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवदत] घोषणा।

प्रवर—वि० [स० प्रा० स०] १ सबमे अच्छा, बढकर या श्रेष्ठ। २ अवस्था या वय मे सबमे बडा। (सीनियर) ३ अधिकार, योग्यता आदि मे सबसे बडा माना जानेवाला। (सुपीरियर)

पु० १ अग्नि का एक विशिष्ट प्रकार का आवाहन या आहुति। २ पूर्व पुरुषो का क्रम या शृखला। ३ कुल। वश। ४ ऐसे ऋषि या मुनि की वश-परम्परा या शिष्य-परम्परा जो किसी गोत्र का प्रवर्तक या सस्थापक रहा हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्रवरो के एक-प्रवर द्विप्रवर, त्रिप्रवर और पचप्रवर भेद या प्रकार कहे गये हैं।

५ वशज। सतान। ६ हिन्दुओं के ४२ गोत्रो मे से एक। ६ उत्तरीय वस्त्र। चादर। ८ अगर की लकडी।

प्रवर-गिरि—पु० [स० कर्म० स०] मगध देश के एक पर्वत का प्राचीन नाम।

प्रवरण—पु० [स० प्र√वृ+ल्युट्—अन] १ देवताओं का आवाहन। २. बौद्धो का एक उत्सव जो वर्षा ऋतु के अन्त मे होता था।

प्रवर समिति—स्त्री० [कर्म० स०] किसी विषय की छानबीन करने और विचार-विमर्श के बाद निश्चित मत प्रकट करने के लिए बनाई जानेवाली वह समिति जिसमे उस विषय के चुने हुए विशेषज्ञ रखे जाते है। (सिलेक्ट कमेटी)

प्रवरा—स्त्री० [स० प्रवर+टाप्] १. अगुरु या अगर की लकडी। २ दक्षिण भारत की एक छोटी नदी जो गोदावरी मे मिलती है।

प्रवर्ग—पु० [स० प्र√वृज् (छोडना)+घञ्] १. हवन करने की अग्नि। होमाग्नि। २ किसी वर्ग के अन्तर्गत किया हुआ कोई छोटा विभाग। ३ विष्णु।

प्रवर्त—पु० [स० प्र√वृत् (बरतना)+घञ्] १ कोई कार्य आरम्भ करना। अनुष्ठान। प्रवर्तन। ठानना। २ एक प्रकार के मेघ या बादल। ३ वैदिक काल का एक प्रकार का गोलाकार आभूषण या गहना।

प्रवर्तक—वि० [स० प्र√वृत्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रवर्तन (देखे) करनेवाला। २ किसी काम या बात का आरभ अथवा प्रचलन करनेवाला। प्रतिष्ठाता। ३ काम मे लगाने या प्रवृत्त करनेवाला। प्रेरित करनेवाला। ४ उभारने या उसकानेवाला। ५. गति देने या चलानेवाला। ६. नया आविष्कार करनेवाला। ७ न्याय या विचार करनेवाला।

पु० साहित्य मे, रूपको की प्रस्तावना का वह प्रकार या भेद जिसमे प्रस्तुत कार्य ने सबद्ध कृत्य का परित्याग करके कोई और काम कर बैठने का दृश्य उपस्थित किया जाता है। जैसे—सस्कृत के 'महावीर चरित' मे राम की वीरता से प्रसन्न होकर परशुराम उनसे लडने का विचार छोडकर प्रेमपूर्वक उनका आलिंगन करने लगते है।

प्रवर्तन—पु० [स० प्र√वृत्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवर्तित, वि० प्रवर्तनीय, प्रवर्त्य] १. नया काम या नई बात का आरंभ

करना। श्रीगणेश करना। ठानना। २ नये सिरे से प्रचलित करना। ३ जारी करना। जैसे—अव्यादेश का प्रवर्तन। ४ प्रवृत्त करना। ५ उत्तेजित करना। ६. दुरुत्साहन।

प्रवर्तना—स० [स० प्रवर्त्तन] प्रवर्तित या प्रवृत्त करना। स्त्री० [स०प्र√वृत्+णिच्+युन्—अन,+टाप्]=प्रवर्तन।

प्रवर्तित—भू० कृ० [स० प्र√वृत्+णिच्+क्त] १. ठाना हुआ। आरब्ध। २. चलाया हुआ। ३ निकाला हुआ। ४ उत्पन्न। ५ उभरा हुआ। ६ उत्तेजित।

प्रवर्द्धन—पु० [स० प्र√वृध्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवर्द्धित] १ अच्छी तरह बढाना। २ बढती। वृद्धि।

प्रवर्षण—पु० [स० प्र√वृष् (बरसना)+ल्युट्—अन] १. वर्षा ऋतु की पहली वर्षा। २ वर्षा। ३ किष्किंधा का एक पर्वत जहाँ राम-लक्ष्मण ने कुछ समय तक निवास किया था।

प्रवर्ह—वि० [स० प्र√वृह् (बढना)+अच्] प्रधान। श्रेष्ठ।

प्रवलाकी (किन्)—पु० [स०] १ मोर। मयूर। २. साँप।

प्रवल्हिका—स्त्री० [स०]=प्रहेलिका (पहेली)।

प्रवसथ—पु० [स० प्र√वस् (बसना)+अथच्] १ प्रस्थान। २. प्रवास।

प्रवसन—पु० [स० प्र√वस्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवसित] अपना मूल निवास स्थान छोडकर किसी दूसरी जगह जा रहना या जा बसना।

प्रवस्तु—स्त्री० [स० प्रा० स०] वह वस्तु जो वस्तुओं के किसी बडे वर्ग या विभाग के अन्तर्गत या उसके अग के रूप मे हो। (आर्टिकिल) जैसे—कपडे बनाने के उपकरण या सामग्री मे कपास के सिवा ऊन भी एक प्रमुख प्रवस्तु है।

प्रवह—पु० [स० प्र√वह् (बहना)+अच्] १ बहुत अधिक या तेज बहाव। २ ऐसा कुड या तालाब जिसमे नाली से पानी पहुँचता हो। ३ सात वायुओ मे से एक वायु। ४ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा। ५ घर या बस्ती से बाहर निकलना।

प्रवहण—पु० [स० प्र√वह्+ल्युट्—अन] १ ले जाना। २. छकडा, डोली, नाव, पालकी, रथ आदि सवारियाँ विशेषत छाई हुई सवारियाँ। ३. एक प्रकार का छोटा परदेदार रथ। बहली। ४. कन्या का विवाह करके उसे वर के हाथ सौंपना।

प्रवहमान—वि० [स० प्र√वह्+शानच्, मुक्] जो बह रहा हो।

प्रवाक् (च्)—वि० [स० ब० स०] १ घोषणा करनेवाला। २. बकवादी। ३ शेखी बघारनेवाला।

प्रवाचक—पु० [स० प्रा० स०] अच्छा प्रवचन करनेवाला व्यक्ति या महापुरुष।

प्रवाण—पु० [स० प्र√वे (बुनना)+ल्युट्—अन] कपडे का छोर या अचल बनाना।

प्रवात—पु० [सं० प्रा० स०; ब० स०] १. स्वच्छ वायु। साफ हवा। २ जोर की या तेज हवा। ३ ऐसा स्थान जहाँ प्राय तेज हवा चलती हो। ४ ढालुई जमीन या स्तर। उतार। प्रवण। ५. दे० 'प्रभजन'। वि० जो तेज हवा के कारण झोके खा रहा या इधर-उधर हिल रहा हो। हिलता हुआ।

प्रवाद—पु० [सं० प्र√वद् (बोलना)+घञ्] १ परस्पर होनेवाली बातचीत। वार्तालाप। २ जनरव। जन-श्रुति। ३. झूठी बदनामी।

प्रवादक—वि० [स० प्र√वद्+णिच्+ण्वुल्—अक] बाजा बजानेवाला।

प्रवादी (दिन्)—वि० [स० प्रवाद+इनि] १. प्रवाद-सबधी। २. प्रवाद करनेवाला।

प्रवान*—वि० [स० प्रमाण] १. प्रामाणिक। २ समान। पुं० प्रमाण।

प्रवार—पु० [सं० प्र√वृ (ढकना)+घञ्] १ प्रवर। २. वस्त्र। ३. चादर या दुपट्टा।

प्रवारण—पुं० [स० प्र√वृ+णिच्+ल्युट्—अन] १. वारण करना। मनाही। २ किसी कामना से किया जानेवाला दान। ३. बौद्धों का एक उत्सव जो वर्षा ऋतु बीत जाने पर होता था।

प्रवाल—पुं० [स० प्र√वल् (काँपना)+ण] १. मूँगा। विद्रुम। २. नया और मुलायम पत्ता। कल्ला। कोंपल। ३ बीन, सितार आदि का बीचवाला लबा दड।

प्रवाल-द्वीप—पु० [स० ष० त०] प्रवाल या मूँगे के वे बडे और लबे-चौडे ढूह जो समुद्रो मे अनेक स्थानो मे पाये जाते है और जिनमे मूँगे के जन्तुओ के उपनिवेश होते है। दे० 'मूँगा'। (कॉरल आइलैंड)

प्रवाल श्रेणी—पु० [सं०] समुद्र की सतह पर प्रकट होनेवाली मूँगे के कीडो से बनी हुई चट्टानो की शृखला।

प्रवाली (लिन्)—वि० [स० प्रवाल+इनि] १ मूँगे के रंग का। मूँगिया। २. मूँगे का।
स्त्री० समुद्र मे मूँगे की चट्टानों का वृत्ताकार घेरा। (एटॉल)

प्रवास—पु० [सं० प्र√वस् (बसना)+घञ्] १ अपनी जन्म-भूमि छोड़कर विदेश में जाकर किया जानेवाला वास। २ यात्रा। सफर। ३ विदेश। परदेश।

प्रवासन—पु० [स० प्र√वस्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रवासित, प्रवास्य] १. विदेश मे रहना। २. देश-निकाला। ३ वध।

प्रवास-पत्र—पुं० [स०] राजकीय अधिकारियों से मिलनेवाला वह अधिकारपत्र, जिससे किसी को अपना देश छोडकर दूसरे देश मे बसने या रहने की अनुमति मिलती है।

प्रवासित—भू० कृ० [सं० प्र√वस्+णिच्+क्त] १ देश से निकाला हुआ। जिसे देश-निकाले का दड मिला हो। २. मारा हुआ।

प्रवासी (सिन्)—वि० [स० प्रवास+इनि] [स्त्री० प्रवासिनी] जो प्रवास मे हो।

प्रवास्य—वि० [सं० प्र√वस्+णिच्+यत्] १ विदेश भेजने के योग्य। २ जिसे देशनिकाला देना उचित हो।

प्रवाह—पु० [स० प्र√वह् (बहना)+घञ्] १ किसी तरल पदार्थ के किसी ओर वेगपूर्वक निरन्तर चलते या बहते रहने की क्रिया या भाव। २. जल की वह धारा या राशि जो किसी दिशा मे वेगपूर्वक बढ रही हो। बहाव। ३ किसी काम या बात का ऐसा क्रम जो बराबर चलता हो और बीच मे कही से टूटता न हो। जैसे—आज-कल सारे संसार मे जन-मत का प्रवाह स्वतत्रता की ओर है। ४. विद्युत्

की गति जो जल की धारा के सदृश प्रवाहमान होती है। ५ कोई अच्छा वाहन या सवारी।

प्रवाहक—वि० [स० प्र√वह्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह वहन करनेवाला। २ अच्छी तरह प्रवाहित करने या बहानेवाला। पु० राक्षस।

प्रवाहण—पु० [स० प्र√वह्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रवाहित] १ अच्छी तरह से वहन करना। २ बहाना।

प्रवाहणी—स्त्री० [स० प्रवाहण+ङीप्] मलद्वार मे सबसे ऊपर की कुडली जो आँतो मे का मल बाहर निकालती है।

प्रवाह-मार्ग—पु० [स० ष० त०] दार्शनिक क्षेत्र मे, सब प्रकार के साधना-मार्गो (अर्थात् पुष्टि-मार्ग और मर्यादा-मार्ग) से भिन्न सासारिक सुख-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने की प्रथा या मार्ग जिस पर चलनेवाला जीव सदा जन्म-मरण के बन्धन मे पडा रहता है।

प्रवाहिका—स्त्री० [स० प्र√वह्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] आँतो के विकार के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे पेट मे दर्द या मरोड़ होता और पतले दस्त आते है। पेचिश। (डिसेन्ट्री)

प्रवाहित—भू० कृ० [स० प्र√वह्+णिच्+क्त] १ वहन किया या ढोया हुआ। २ जो नदी की धारा मे बह जाने के लिए छोड़ा गया हो। ३. बहता हुआ या बहाया हुआ।

प्रवाहिनी—स्त्री० [स० प्र√वह्+णिनि+ङीप्] नदी।

प्रवाही (हिन्)—वि० [स० प्र√वह्+णिनि] [स्त्री० प्रवाहिनी] १. वहन करनेवाला। २ बहानेवाला। ३ जो बह रहा हो। ४. प्रवाह से युक्त। ५ तरल। द्रव।

स्त्री० [स० प्र√वह्+णिच्+अच्+ङीप्] बालू। रेत।

प्रविग्रह—पु० [स० प्रा० स०] राजाओ, राज्यो आदि मे, पुरानी सन्धि की बातो का पालन न होना या उनके विरुद्ध व्यवहार होना। सधि-भग। (कौटिल्य)

प्रविचय—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रविचित] १. अनुसधान। खोज। २. परीक्षा। जाँच।

प्रवितत—भू० कृ० [स० प्र-वि√तन्+क्त] १ फैला हुआ। २. बिखरा हुआ।

प्रविद्ध—भू० कृ० [स० प्र√व्यध् (वेधना)+क्त] १ फेका हुआ। २. विद्ध।

प्रविधान—पु० [स० प्र-वि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] [वि० प्राविधानिक] १ किसी विषय पर विचार करना। २ कार्य रूप देना। ३ वे उपाय जिनके अनुसार काम किया जाता हो। ४ दे० सविधि।

प्रविधि—स्त्री० [स० प्रा० स०] [वि० प्राविधिक] १ कला, विज्ञान, यत्र-निर्माण आदि के क्षेत्रो मे, कोई काम करने या कोई चीज तैयार करने की वह विशिष्ट क्रियात्मक पारिभाषिक विधि जो अनुभव, प्रयोग आदि के आधार पर स्थिर होती है। २ उक्त विधि के आधार पर अर्जित कौशलपूर्ण दक्षता या प्रवीणता। (टेकनीक) ३ किसी विशिष्ट विषय का विधान या कानून। प्रविधान।

प्रविधिज्ञ—पु० [स०] वह जो कला, विज्ञान, यत्रो आदि की विधियो का अच्छा ज्ञाता हो। (टेक्नीशियन)

प्रविपल—पु० [स० अत्या० स०] विपल (पल का साठवा भाग) का एक अश-मान।

प्रविरत—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसने अपने को किसी के साथ से अथवा कही से अलग कर लिया हो। विरत।

प्रविषा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] अतीस।

प्रविष्ट—भू० कृ० [स० प्र√विश् (घुसना)+क्त] १ जिसका कही या किसी के अन्दर प्रवेश हो चुका हो। २. अन्दर पहुँचा, घुसा या पैठा हुआ। ३ जिसकी प्रविष्टि हुई हो।

प्रविष्टि—स्त्री० [प्र√विश्+क्तिन्] १ प्रवेश। २. रोकड, वही खाते आदि मे लेखे, विवरण आदि लिखना। ३ इस प्रकार लिखी जानेवाली कोई बात, रकम या विवरण। (एट्री, उक्त दोनो अर्थो मे)

प्रविसना*—अ० [स० प्रविश] प्रविष्ट होना। घुसना। पैठना।

प्रवीण—वि० [स० प्र-वीणा, प्रा० स०, प्र√वीण+णिच्+अच्] [भाव० प्रवीणता] १ अच्छा गाने-बजाने या बोलनेवाला। २ किसी काम के सभी अंगो-उपागों का पूरा ज्ञाता। (एक्सपर्ट) ३ कुशल। दक्ष। पु० वह जो वीणा बजाने मे दक्ष हो।

प्रवीणता—स्त्री० [स० प्रवीण+तल्+टाप्] प्रवीण होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रवीन*—पु०=प्रवीण।

प्रवीर—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० प्रवीरता] बहुत बडा वीर या योद्धा। २. उत्तम।

प्रवृत—भू० कृ० [सं० प्र√वृ (चुनना)+क्त] १ चुना हुआ। २ (दत्तक के रूप मे) ग्रहण किया हुआ।

प्रवृत्त—भू० कृ० [स० प्र√वृत् (बरतना)+क्त] १ जिसकी प्रवृत्ति या मन का झुकाव किसी काम या बात की ओर हो और इसी लिए जो उसके संपादन मे लगा हो या लगना चाहता हो। २ किसी की ओर घुमा या मुडा हुआ। ३ उद्यत। प्रस्तुत। ४ उत्पन्न। जात।

प्रवृत्ति—स्त्री० [स० प्र√वृत्+क्तिन्] १ निरतर घटते रहने की क्रिया या भाव। २ किसी काम, विषय या बात की ओर अथवा किसी विशिष्ट दिशा मे प्रवृत्त होने या बढने की क्रिया या भाव। ३. मनुष्य के व्यक्तित्व का वह अग जो इस बात का सूचक होता है कि वह अपने उद्देश्यो या कार्यो की सिद्धि के लिए किस प्रकार या किस रूप मे सचेष्ट रहता है। ४ मन की वह स्थिति जिसमे वह किसी ऐसे काम या बात की ओर अग्रसर होता है जो उसे प्रिय तथा रुचिकर होती है। (टेन्डेन्सी) ५ दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रो मे जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमे मनुष्य घर-गृहस्थी सासारिक कार्यों, सुख-भोगो आदि मे प्रवृत्त रहता है। 'निवृत्ति' का विपर्याय। ६ मनुष्यो का साधारण आचरण व्यवहार या रहन-सहन। ७ साहित्य मे, नाटको आदि का वह तत्त्व या पद्धति जो भिन्न-भिन्न देशो के आचार-व्यवहार, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि प्रकट या सूचित करती है। देश-भेद के विचार से ये चार प्रवृत्तियाँ मानी गई है—आवन्ती, दक्षिणात्य, पाचाली और मागधी।
विशेष—वृत्ति और प्रवृत्ति मे यह अन्तर है कि वृत्ति का मुख्य सबंध आन्तर व्यापारो मे और प्रवृत्ति का बाह्य व्यापारो मे होता है। वृत्ति तो केवल शब्दो के द्वारा काम करती है, पर प्रवृत्ति आचार-व्यवहार के माध्यम से व्यक्त होती है। इसलिए वृत्ति तो काव्य, नाटक आदि सभी

प्रकार की साहित्यिक कृतियों में होती है, परन्तु प्रवृत्ति केवल अभिनय या नाटक में होती है।

८ वर्णन। वृत्तान्त। ९. उत्पत्ति। जन्म। १०. कार्य का अनुष्ठान या आरम्भ। ११. यज्ञ आदि धार्मिक कृत्य। १२. हाथी का मद।

प्रवृत्ति-मार्ग—पुं० [सं० ष० त०] जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमें मनुष्य सांसारिक कार्यों और बंधनों में पड़ा रहकर दिन बिताता है। 'निवृत्ति-मार्ग' का विपर्याय।

प्रवृत्ति-विज्ञान—पुं० [सं० ष० त०] बाह्य पदार्थों से प्राप्त होनेवाला ज्ञान।

प्रवृद्ध—वि० [सं० प्र√वृध् (बढ़ना)+क्त] १ बहुत अधिक बढ़ा हुआ। २. खूब पक्का। प्रौढ़। ३. फैला हुआ। विस्तृत।

पुं० १. अयोध्या के राजा रघु का एक पुत्र जो गुरु के शाप से १२ वर्षों के लिए राक्षस हो गया था। २ तलवार चलाने के ३२ ढंगों या हाथों में से एक जिसे प्रसृत भी कहते हैं।

प्रवेक्षण—पुं०= प्रवेक्षा।

प्रवेक्षा—स्त्री० [सं० प्रवीक्षा] [भू० कृ० प्रवेक्षित] ऐसा अनुमान या आशा कि आगे चलकर अमुक बात होगी। प्रत्याशा। (एन्टिसिपेशन)

प्रवेक्षित—वि० [सं० प्रवीक्षित] जिसकी प्रवेक्षा की गई हो या की जा रही हो। प्रत्याशित। (एन्टिसिपेटेड)

प्रवेग—पुं० [सं० प्रा० स०] [वि० प्रावेगिक] १. तीव्र या प्रबल वेग। २. वैज्ञानिक क्षेत्र में गति या वेग का वह मान जिसमें कोई चीज आगे बढ़ रही हो अथवा कोई क्रिया हो रही हो। ३. दे० 'संवेग'।

प्रवेणी—स्त्री० [सं० प्र√वेण्+इन्+ङीप्] १. सिर के बालों की चोटी कबरी। वेणी। २ हाथी की पीठ पर डाली जानेवाली रंग-बिरंगी झूल। ३. महाभारत-काल की एक नदी।

प्रवेता (तृ)—पुं० [सं० प्र√वी (गति)+तृच्] सारथी। रथवान।

प्रवेदन—पुं० [सं० प्र√विद् (जानना) णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवेदित] प्रकट करना। जाहिर करना।

प्रवेपन—पुं० [प्र√विप्+ल्युट्—अन] १ हिलना-डुलना। २. काँपना।

प्रवेश—पुं० [सं० प्र√विश् (पैठना)+घञ्] १. किसी निश्चित या विशिष्ट सीमा को लाँघकर उसके अन्दर जाने की क्रिया या भाव। अन्दर जाना। जैसे—गृह-प्रवेश, जल-प्रवेश। २ किसी विशिष्ट संस्था आदि में भरती होना। (एडमिशन) ३. गति। पहुँच। रसाई। ४. किसी विषय की होनेवाली साधारण जानकारी। (एडमिशन)

प्रवेशक—वि० [सं० प्र√विश्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रवेश करनेवाला।

पुं० नाटक में एक प्रकार का अर्थोपक्षेपक जो दो अंकों के बीच में होता है, और जिसमें नीच पात्रों के द्वारा किसी भावी या भूत कथांश की सूचना मात्र होती है।

प्रवेश-द्वार—पुं० [सं० ष० त०] वह द्वार या दरवाजा जिसमें से होकर अन्दर जाना पड़ता है।

प्रवेशन—पुं० [सं० प्र√विश्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रविष्ट, प्रवेशनीय, प्रवेश्य] १. प्रवेश करना या अन्दर जाना। घुसना। पैठना। २ सिंहद्वार।

प्रवेशना*—अ० [सं० प्रवेश] प्रवेश करना।

स० प्रविष्ट करना। प्रवेश कराना।

प्रवेश-पत्र—पुं० [ष० त०] १. वह पत्र जिसमें किसी को कहीं प्रवेश करने के लिए अनुमति दी गई हो। पास। २. टिकट।

प्रवेश-शुल्क—पुं० [ष० त०] वह शुल्क जो किसी संस्था को उसमें प्रवेश करते समय दिया जाता है।

प्रवेशार्थी—पुं० [सं० प्रवेश+अर्थी] वह जो कहीं प्रवेश करना या पाना चाहता हो। प्रविष्ट होने के लिए उत्सुक या उद्यत व्यक्ति।

प्रवेशिका—स्त्री० [सं० प्र√विश्+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १. प्रवेश-पत्र। २. उक्त के बदले में दिया जानेवाला धन या शुल्क। ३ आज-कल कुछ संस्थाओं में एक प्रकार की परीक्षा जो आरम्भिक शिक्षा के उपरान्त ली जाती है और जिसमें उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी होता है।

प्रवेशित—भू० कृ० [सं० प्र√विश्+णिच्+क्त] १ जिसे प्रविष्ट किया या कराया गया हो। २ अन्दर पहुँचाया हुआ।

प्रवेश्य—वि० [सं० प्र√विश्+ण्यत्] १. (स्थान) जिसमें प्रवेश हो सके। २ (व्यक्ति) जिसका कहीं प्रवेश हो सके। ३. (बाजा) जो बजाया जाता हो।

पुं० प्राचीन भारत में वह माल जो विदेशों से आता था। आयात।

प्रवेष—पुं० [प्र√विष् +घञ्]=परिवेश।

प्रवेष्ट—पुं० [सं० प्र√वेष्ट् (लपेटना)+अच्] १. बाहु। बाँह। २ कलाई पर का भाग। पहुँचा। ३ हाथी का मसूड़ा। ४ हाथी की पीठ, जिस पर बैठकर सवारी की जाती है।

प्रवेष्टक—पुं० [सं० प्र√वेष्ट्+णिच्+ण्वुल्—अक] दाहिना हाथ।

प्रवेष्टा (ष्टृ)—वि० [सं० प्र√विश्+तृच्] प्रवेश करनेवाला। प्रवेशक।

प्रवेसना—अ० [सं० प्रवेश] प्रवेश करना।

प्रव्याहार—पुं० [सं० प्रा० स०] वार्तालाप। वाद-विवाद आदि का चलता रहना।

प्रव्रजन—पुं० [सं० प्र√व्रज् (गति)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रव्रजित] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाना। २ आज-कल मुख्य रूप से (क) लोगों का अपना निवास-स्थान छोड़कर दूसरे देश या स्थान में बसने के लिए जाना। (ख) पक्षियों आदि का कुछ विशिष्ट ऋतुओं में एक स्थान से उड़कर दूसरे स्थान पर कुछ समय तक रहने के लिए जाना। (माइग्रेशन)

प्रव्रजित—भू० कृ० [सं० प्र√व्रज्+क्त] [स्त्री० प्रव्रजिता] १ (व्यक्ति) जिसने सन्यास ग्रहण किया हो। २ जीविका के लिए विदेश जाकर बसा हुआ।

प्रव्रज्या—स्त्री० [सं० प्र√व्रज्+क्यप्+टाप्] १ चलकर कहीं दूर जाना। २. घर-बार छोड़कर दूर के किसी एकान्त स्थान में जा रहना। ३ सांसारिक बंधनों को छोड़कर सन्यास ग्रहण करना। ४. आज-कल, जीविका, निवास आदि के सुभीते के विचार से अपना देश या स्थान छोड़कर किसी दूसरे देश या स्थान में जा बसना। (माइग्रेशन) ५ देश-निकाला।

प्रव्रज्या-व्रत—पुं० [सं० ष० त०] नेपाली बौद्धों का एक संस्कार जो हिन्दुओं के यज्ञोपवीत की तरह का होता है।

प्रव्राज—पुं० [सं० प्र√व्रज्+घञ्] १. बहुत नीची जमीन। २. सन्यास।

प्रव्राजक—पु० [स० प्र√व्रज्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रव्राजिका] १ परिव्राजक। २ सन्यासी।

प्रशंस*—स्त्री०=प्रशंसा।
वि०=प्रशस्य (प्रशसनीय)।

प्रशंसक—वि० [स० प्र√शंस् (स्तुति करना)+ण्वुल्—अक] १. प्रशसा करनेवाला। २ किसी के अच्छे गुणो या बातो को आदर की दृष्टि से देखनेवाला। (एडमायरर)

प्रशसन—पु० [स० प्र√शंस्+ल्युट्—अन] [वि० प्रशंसनीय, प्रशंस्य, भू० कृ० प्रशसित] प्रशसा या तारीफ करना। सराहना।

प्रशसना*—स० [स० प्रशसन] किसी की प्रशसा या तारीफ करना। गुणानुवाद करना। सराहना।

प्रशंसनीय—वि० [स० प्र√शस्+अनीयर्] जिसकी प्रशसा की जा सकती हो। प्रशसा का अधिकारी या पात्र।

प्रशंसा—स्त्री० [स० प्र√शस्+अ+टाप्] [भू० कृ० प्रशसित] १. प्रसन्नतापूर्वक किसी के अच्छे गुणो या कार्यो का किया जानेवाला ऐसा उल्लेख जिससे समाज मे उसका आदर तथा प्रतिष्ठा बढती हो। २ प्रसन्न होकर यह कहना कि कोई चीज बहुत अच्छी है, तथा गुण-सपन्न है। (प्रेज़)

प्रशसित—भू० कृ० [स० प्रशसा+इतच्] जिसकी प्रशसा की गई हो या हुई हो। सराहा हुआ।

प्रशसोपमा—स्त्री० [स० प्रशसा-उपमा, मध्य० स०] उपमालकार का एक भेद जिसमे उपमेय की प्रशसा करके उपमान को प्रशसनीय सिद्ध किया जाता है।

प्रशंस्य—वि०=प्रशसनीय।

प्रशक्य—वि० [स० प्र√शक् (सकना)+यत्] अपनी शक्ति के अनुसार ठीक और पूरा काम करनेवाला।

प्रशत्वरी—स्त्री० [स० प्रशत्वन्+ङीप्, र-आदेश] नदी।

प्रशत्वा (त्वन्)—पु० [स० प्र√शद्‌क्व+निप्, तुट्] समुद्र।

प्रशम—पु० [स० प्र√शम् (शात होना)+घञ्] १. शमन। उपशम। शाति। २ निवृत्ति। ३. ध्वस। नाश।

प्रशमन—पु० [स० प्र√शम्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रशमित] १ शात करना। २ कोप, रोग आदि को दबाना। ३ नाशन। ध्वसन। ४ मारण। वध।
वि० शमन या शात करनेवाला।

प्रशमित—भू० कृ० [स० प्र√शम्+णिच्+क्त] १. शात किया हुआ। २. दबाया हुआ।

प्रशम्य—वि० [स० प्र√शम्+यत्] जिसका शमन हो सकता हो या होने को हो।

प्रशस्त—भू० कृ० [स० प्र√शस्+क्त] १ जिसकी प्रशसा हुई हो या की गई हो। २ जो उत्तम प्रकार का हो तथा जिसमे दोष, विकार विघ्न आदि न हो।

प्रशस्त-पाद—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन आचार्य जिनका वैशेषिक दर्शन पर 'पदार्थ-धर्म-सग्रह' नामक ग्रन्थ है।

प्रशस्त-वचन—पु० [कर्म० स०] स्तुति।

प्रशस्ति—स्त्री० [स० प्र√शस्+क्तिन्] १ प्रशसा। स्तुति। २. विवरण। ३. किसी के विशेषत. अपने पालक या सरक्षक के गुणो, विशेषताओ आदि की कुछ बढा-चढ़ाकर की जानेवाली विशद और विस्तृत प्रशसा। (ग्लोरिफ़िकेशन)। ४. प्राचीन भारत मे, वह ईश्वर-प्रार्थना जो किसी नये राजा के सिहासन पर बैठने के समय राज्य और लोक की मगल-कामना से की जाती थी। ५ परवर्ती भारत मे (क) राजाओं के एक प्रकार के प्रख्यापन जो चट्टानो, ताम्रपत्रो आदि पर अकित किये जाते थे। (ख) ग्रथो के आदि या अत का वह अश जिसमे उनके कर्ता, रचना-काल, विषय आदि का उल्लेख रहता था। पुष्पिका। और (ग) वे प्रशसा-सूचक पद या वाक्य जो पत्रो आदि के आरभ मे सबोधन के रूप मे लिखे जाते थे।

प्रशस्य—वि० [सं० प्र√शंस्+क्यप्] प्रशसनीय।

प्रशांत—वि० [सं० प्र√शम्+क्त] [भाव० प्रशांति] १. बहुत अधिक शान्त या स्थिर। २ (व्यक्ति) जिसकी वृत्ति निश्चल और शान्त हो।

प्रशांत-महासागर—पु० [स० कर्म० स०] विश्व का सबसे बड़ा महासागर जो अमेरिका के पश्चिमी तट मे एशिया के पूर्वी तटो तक फैला हुआ है और जिसका क्षेत्रफल ६ करोड ८० लाख वर्ग मील है। (पैसिफिक ओशन)

प्रशांति—स्त्री० [प्र√शम्+क्तिन्] १ प्रशात होने की अवस्था या भाव। २ देश, राज्य आदि मे होनेवाली वह स्थिति जिसमे किसी प्रकार का असतोष या क्षोभ न हो और सब लोग शातिपूर्वक जीवन-यापन कर रहे हो। (ट्रैंक्विलटी)

प्रशाख—वि० [सं० प्रशाखा, ब० स०] जिसमे या जिसकी अनेक शाखाएँ हो।
पु० गर्भ मे भ्रूण की पाँचवी अवस्था जिसमे उसकी शाखाएँ निकलने लगती है अर्थात् हाथ-पैर बनने लगते हैं।

प्रशाखा—स्त्री० [स० अत्या० स०] किसी बडी शाखा या डाली मे निकली हुई छोटी शाखा या डाल।

प्रशालिका—स्त्री० [सं०] खेल के मैदान मे बनी हुई वह इमारत जिसमे लोग बैठकर खेल देखते हैं। २. छाया हुआ मडप। (पैविलियन)

प्रशासक—पु० [सं० प्र√शास्+ण्वुल्—अक] १ शासन करनेवाला अधिकारी। २ किसी नगर, सस्था आदि का वह प्रधान अधिकारी जिस पर वहाँ के शासन का पूरा उत्तरदायित्व तथा भार रहता है। (एडमिनिस्ट्रेटर)

प्रशासन—पु० [सं० प्र√शास्+ल्युट्—अन] १ किसी नगर, सस्था आदि के अधिकारो, कर्तव्यों आदि को कार्य का रूप देना। जैसे—विद्यालय का प्रशासन। २. अधिक विस्तृत क्षेत्र मे, राज्य के सार्वजनिक अधिकारो विशेषत कार्यकारी अधिकारो की सुव्यवस्था की दृष्टि से किया जानेवाला निष्पादन। (एडमिनिस्ट्रेशन)

प्रशासनिक—वि० [स० प्राशासनिक] प्रशासन-सम्बन्धी। प्रशासन का। (एडमिनिस्ट्रेटिव्)

प्रशासनीय—वि० [स० प्रशासन+छ—ईय]=प्रशासनिक।

प्रशासित—भू० कृ० [स० प्र√शास्+णिच्+क्त] १ जिसका प्रशासन हो रहा हो। २ अच्छी तरह से शासित किया हुआ।

प्रशास्ता (स्तृ)—पु० [स० प्र√शास्+तृच्] १. एक ऋत्विक जो होता का सहकारी होता था और जिसे मैत्रावरुण भी कहते थे।

ऋत्विक्। ३. मित्र। ४ शासक। ५ प्रासक।

प्रशास्त्र—पु० [स० प्रशास्तृ+अण्] १ एक प्रकार का याग। २. प्रशास्ता नामक ऋत्विक् का कर्म। ३ वह पात्र जिसमे प्रशास्ता सोमपान-करता था।

प्रशिक्षण—पु० [स० प्र√शिक्ष् (सीखना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रशिक्षित] १ किसी व्यावहारिक या प्रायौगिक शिक्षा पद्धति से या नियमित रूप मे दी जाने या प्राप्त की जानेवाली शिक्षा। २. उक्त पद्धति से शिक्षा प्राप्त करने या देने की अवस्था, क्रिया या भाव। (ट्रेनिंग)

प्रशिक्षण-महाविद्यालय—पु० [स० प० त०] वह महाविद्यालय जिसमे ऊँची कक्षाओ के शिक्षक तैयार करने के उद्देश्य मे लोगो को शिक्षण के सिद्धान्त बतलाये और शिक्षा देने की पद्धति सिखाई जाती है। (ट्रेनिंग कालेज)

प्रशिक्षण-विद्यालय—पु० [स० प० त०] वह विद्यालय जिसमे भारतीय भाषाओ के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान की शिक्षा दी जाती और शिक्षा-पद्धति सिखाई जाती है। (ट्रेनिंग स्कूल)

प्रशिक्षा—स्त्री०=प्रशिक्षण।

प्रशिक्षित—भू० कृ० [स० प्र√शिक्ष्+क्त] (व्यक्ति) जिसे किसी प्रकार का प्रशिक्षण मिला हो। विशेष रूप से सिखाकर तैयार किया हुआ। (ट्रेन्ड)

प्रशिष्टि—स्त्री० [स० प्र√शास्+क्तिन्] १ अनुशासन। २. शिक्षा। ३ आदेश।

प्रशिष्य—पु० [स० अत्या० स०] १ शिष्य का शिष्य। २. परपरागत शिष्य।

प्रशीत—वि० [स० प्रा० स०] १ बहुत अधिक ठढा। २. ठढ से जमा हुआ।

प्रशीतक—वि० [स० प्रशीत+णिच्+ण्वुल्—अक] बहुत ठढा करने या रखनेवाला।

पुं० आज-कल, लोहे की एक विशिष्ट प्रकार की अलमारी जिसमे औषध, खाद्य पदार्थ आदि ठढे रखने और सडने-गलने या विकृत होने से बचाने के लिए रखे जाते हैं। हिमीकर। (रेफ्रिजरेटर)

प्रशीतन—पु० [स० प्रशीत+णिच्+ल्युट्—अन] १ बहुत अधिक ठढा करना या रखना। २ प्राकृतिक कारणो से पृथ्वी का भीतरी ताप कुछ कम होना। ३. शरीर का तापमान कम होना। शरीर ठढा होना। ४ खाद्य पदार्थों, औषधो आदि को इस प्रकार ठढा रखना कि वे सडने-गलने या विकृत होने से बची रहे। (रेफ्रिजरेशन)

प्रशीताद—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे मसूडे गलने लगते हैं, मुँह से दुर्गंध आती है, हाथ-पैरो मे पीडा होती है और रोगी दिन-पर-दिन दुबला होता जाता है। (स्कर्वी)

प्रशोभन—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक शोभा देने या भला लगने-वाला। फबनेवाला।

पु० [भू० कृ० प्रशोभित] बहुत अधिक शोभा से युक्त करना।

प्रशोभित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जो बहुत अधिक शोभा से युक्त हो या किया गया हो।

प्रशोभी—वि०=प्रशोभन।

प्रशोषण—पु० [स० प्र√शुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह सोखना। २ एक कल्पित राक्षस जिसके सम्बन्ध मे यह माना जाता है कि वह बच्चो को सुखडी रोग से पीडित करता है।

प्रश्न—पु० [स०√प्रच्छ् (पूछना)+नङ्] १ वह बात जिसका उत्तर अभीष्ट हो या दिया जाता हो। जैसे—गणित का प्रश्न। २. वह बात जिसका उत्तर किसी से माँगा गया हो। ३ किसी के पूछी जानेवाली ऐसी गभीर या गूढ बात जिसका स्पष्टीकरण सब लोग सहज मे न कर सकते हो। सवाल। ४ कोई ऐसा विषय जिस पर अच्छी तरह अनुसधान, मनन, विचार अथवा निर्णय करने की आवश्यकता हो। समस्या। सवाल। (क्वेश्चन, उक्त सभी अर्थो मे) ५ न्यायालय मे, उपस्थित वाद के सबध की विचारणीय बात या बातें। ६. न्यायालय आदि के द्वारा होनेवाला अनुसधान या जाँच-पडताल। ७ एक उप-निषद् का नाम।

प्रश्नचिह्न—पु० [स० प० त०] १. छपाई, लेखन आदि मे, प्रश्नात्मक वाक्यो के अन्त मे लगाया जानेवाला विराम चिह्न। इसका रूप यह है—(नोट ऑफ इन्टेरोगेशन) जैसे—'क्या वह चला गया ? २ लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी विकट समस्या जिसके निदान के सबध मे कुछ सूझ न रहा हो।

प्रश्न-विवाक—पु० [स० प० त०] १ वैदिक काल के विद्वानों का एक भेद जो भावी घटनाओ के विषय मे प्रश्नो का उत्तर दिया करते थे। २. सरपच। पच।

प्रश्नावली—स्त्री० [सं० प्रश्न—आवली, प० त०] १ प्रश्नो की सूची। २ किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नो की वह सूची जो आधि-कारिक रूप से किसी बात की जाच करने, आँकडे प्राप्त करने अथवा कुछ अभिमत प्राप्त करने के लिए सबद्ध लोगो के पास भेजी जाती है। (क्वेश्चनेयर)

प्रश्नी (श्नि्)—वि० [स० प्रश्न+इनि] प्रश्न-कर्ता।

प्रश्नोतर—पु० [सं० प्रश्न-उत्तर, द्व० स०] १ प्रश्न और उसका उत्तर। सवाल और जवाब। २ पूछ-ताछ। ३ साहित्य मे उत्तर नामक अर्थालकार का एक भेद जिसमे कुछ प्रश्न और उनके उत्तर रहते हैं।

प्रश्नोत्तरी—स्त्री० [स० प्रश्नोत्तर+अच्+ङीप्] किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नो और उनके उत्तरो का सग्रह। विशेषत ऐसा संग्रह जिसमे कुछ प्रश्न और उनके उत्तर देकर उस विषय का स्वरूप स्पष्ट किया जाता है। (कैटेकिज्म)

प्रश्नोपनिषद्—स्त्री० [स० प्रश्न-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेद की एक उपनिषद्।

प्रश्रब्धि—स्त्री० [सं० प्र√श्रम्भ् (विश्वास)+क्तिन्] =विश्रब्धि।

प्रश्रय—पु० [सं० प्र√श्रि+अच्] १ आश्रयस्थान। २. आधार। टेक। सहारा। ३. नम्रता। विनय।

प्रश्रयण—पु० [स० प्र√श्रि+ल्युट्—अन] १ विनय। नम्रता। २. शिष्टाचार। ३ सौजन्य।

प्रश्रयी (यिन्)—वि० [स० प्रश्रय+इनि] १. शिष्ट। सुजन। भला-मानुस। २ नम्र। विनयी। ३. धीर। शान्त। ४. शिष्ट। सज्जन।

प्रश्रित—भू० कृ० [स० प्र√श्रि+क्त] विनीत।

प्रश्लिष्ट—भू० कृ० [स० प्र√श्लिष् (चिपटना)+क्त] १ जुड़ा हुआ। युक्त। २. युक्तियुक्त।

प्रश्लेष—पु० [स० प्र√श्लिष्+घञ्] १ घनिष्ठ संबंध। २ व्याकरण मे, स्वरो की संधि होने पर उनका परस्पर मिलकर एक होना।

प्रश्वास—पु० [स० प्र√श्वस् (साँस लेना)] १ वह वायु जो साँस लेने के समय नथने से बाहर निकलती है। बाहर आता हुआ साँस। २ उक्त प्रकार से वायु बाहर निकलने की क्रिया या भाव।

प्रष्टव्य—वि० [स०√प्रच्छ्+तव्यत्] प्रश्न के रूप मे पूछे जाने के योग्य।

प्रष्टा (ष्टृ)—वि० [सं०√प्रच्छ्+तृच्] पूछनेवाला। प्रश्नकर्ता।

प्रष्टि—पु० [स०√प्रच्छ्+ति (बा०)] १ वह घोड़ा या बैल जो तीन घोड़ो के रथ या तीन बैलो की गाड़ी मे सब से आगे जुता रहता है। २ जोड़ी मे दाहिनी ओर जोता जानेवाला घोड़ा या बैल। ३ तिपाई।

प्रष्ठ—वि० [स० प्र√स्था (ठहरना)+क, पत्व] १ आगे-आगे चलने-वाला। अग्रगामी। अगुआ। २ प्रधान। मुख्य। ३. श्रेष्ठ।

प्रसंख्या—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ दो या अनेक संख्याओ को जोड़ने से प्राप्त होनेवाला फल। जोड़। योग।

प्रसंख्यान—पु० [स० प्र-सम्√ख्या+ल्युट्-अन] १. जोड़ करना या लगाना। २ सम्यक् ज्ञान। सत्य ज्ञान। ३ आत्मानुसंधान। ध्यान।

प्रसंग—पु० [स० प्र√सञ्ज् (मिलना)+घञ्] १ संबंध। लगाव। २ अनुराग। आसक्ति। ३ मैथुन। संभोग। ४ विवेचित विषय अथवा बातचीत का वह पहलेवाला अंश जिसके संबंध मे अब कुछ और कहा जा रहा हो। (कानटेक्स्ट) ५ प्रकरण। ६. हेतु। ७ फैलाव।

प्रसंग-विध्वंस—पु० [स० ष० त०] साहित्य मे, मान-मोचन के छ प्रकारो मे से एक जिसमे मानिनी का मान उसे भय दिखलाकर दूर किया जाता है।

प्रसंगविभ्रंश—पु०=प्रसंग-विध्वंस।

प्रसंग-सम—पु० [स० तृ० त०] न्याय मे, यह कथन कि प्रमाण को भी प्रमाणित सिद्ध करके दिखलाओ। (एक प्रकार का दोष)

प्रसंगी (गिन्)—वि० [स० प्रसंग+इनि] १ प्रसंगयुक्त। २. प्रसंग या मैथुन करनेवाला। ३ अनुरक्त।

प्रसंधान—पु० [स० प्र-सम्√धा (धारण) + ल्युट्—अन] संधि। योग।

प्रसंविदा—स्त्री० [स०] वह पत्र जिसमे कोई बात करने या न करने के संबंध मे लिखित रूप मे वचन दिया गया हो। (कावनेन्ट)

प्रसंसना*—स०=प्रशंसना (प्रशंसा करना)।

प्रसक्त—भू० कृ० [स० प्र√सञ्ज् (मिलना)+क्त] १ किसी के साथ लगा हुआ। संश्लिष्ट। २ बराबर या सदा साथ लगा रहनेवाला। ३. संबद्ध। ४ आसक्त। ५ प्रस्तावित।

प्रसक्ति—स्त्री० [स० प्र√सञ्ज्+क्तिन्] १ प्रसंग। संपर्क। २ अनुमिति। ३ आपत्ति। ४ व्याप्ति।

प्रसज्य—वि० [स० प्र√सञ्ज्+ण्यत्] १ जो संबद्ध किया जाय। २ जो प्रयोग मे लाया जाय। ३ संभव।

प्रसज्य प्रतिषेध—पु० [स० सुप्सुपा स०] ऐसा निषेध जिसमे वर्जन का भाव ही प्रधान होता है और अनुमति, आज्ञा या विधि अल्प तथा गौण रहती है। 'पर्युदास' का विपर्याय।

प्रसणां†—पु० [?] धनु। उदा०—प्रसणा मोण अहोनसपातल यग सावरत रहै पूमाण।—प्रिथीराज।

प्रसत्ति—स्त्री० [स० प्र√सद्+क्तिन्] १ प्रसन्नता। २ शुद्धि।

प्रसत्वा (त्वन्)—पु० [स० प्र√सद्+क्वनिप्] १ धर्म। २ प्रजापति।

प्रसद्द*—पु० [स० प्र-शब्द] जोर का शब्द।

प्रसन—पु० [स० प्रस्रवण] गिरना, झरना या बहना। उदा०—पेखि रुपमणी जल प्रसन।—प्रिथीराज।

†पु०=प्रश्न।

†वि०=प्रसन्न।

प्रसन्न—वि० [सं० प्र√सद्+क्त] [भाव० प्रसन्नता] १ जो अनुकूल परिस्थितियो से संतुष्ट और प्रफुल्लित रहता हो। २ जो किसी कार्य या बात के गुणो या फलो को देखकर संतुष्ट तथा प्रफुल्लित हुआ हो। पु० महादेव। शिव।

†स्त्री०=पसंद।

प्रसन्नता—स्त्री० [स० प्रसन्न+तल्+टाप्] १ प्रसन्न होने या रहने की अवस्था या भाव। खुशी। हर्ष। २ अनुग्रह। ३ निर्मलता। स्वच्छता।

प्रसन्न-मुख—वि० [स० ब० स०] जिसके चेहरे मे ही उसका प्रसन्न होना प्रकट हो रहा हो।

प्रसन्ना—स्त्री० [स० प्रसन्न+टाप्] १ प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। २ चावल से बनाई हुई एक तरह की शराब।

प्रसन्नात्मा (त्मन्)—वि० [स० प्रसन्न-आत्मन्, ब० स०] सदा प्रसन्न रहनेवाला।

पु० विष्णु।

प्रसन्नित*—वि०=प्रसन्न।

प्रसभ—पु० [स० प्रा० स०] १ बल। शक्ति। २ बल-प्रयोग। दमन। ४ बलात्कार।

क्रि० वि० १ बलपूर्वक। २ दमन करते हुए। ३ बहुत अधिक।

प्रसम—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० प्रसमता] जो किसी अपनाये हुए, प्रचलित, मानक अथवा मान्य आदर्श, मान, सिद्धांत आदि के अनुरूप या अनुसार हो। प्रसामान्य। (नार्मल)

प्रसमत—क्रि० वि० [स० प्रश+तस्] दे० 'सामान्यत'।

प्रसमता—स्त्री० [स० प्रस+तल्+टाप्] प्रसम होने की अवस्था या भाव। (नार्मेल्टी)

प्रसमा—स्त्री० [हिं० प्रसम से] उन्नति, सफलता आदि की दृष्टि से माना हुआ वह मानक जो प्राय किसी समूह की औसत उन्नति, सफलता आदि का सूचक होता है। प्रसामान्यक। (नार्म) जैसे—यदि कुछ स्थानो पर जाँच करके यह स्थिर कर लिया जाय कि १० या १२ वर्ष की अवस्था के लड़के इतनी बातें जान या सीख सकते है तो यही मानक साधारणत उक्त अवस्था के सभी लड़को की योग्यता की प्रसमा के रूप मे मान लिया जायगा।

प्रसर—पु० [स० प्र√सृ+अप्] १ आगे बढ़ना। २ ऐसी गति जिसमे कोई बाधा न हो। ३ फैलाव। विस्तार। व्याप्ति। ४ वेग। तेजी। ५ वात, पित्त आदि प्रकृतियो का संचार या घटाव-बढ़ाव। (वैद्यक) ६ राशि। समूह। ७ प्रधानता। प्रवर्ष। ८ युद्ध। ९ न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमे किसी व्यक्ति को न्यायालय मे उपस्थित होने

अथवा कोई चीज उपस्थित करने का आदेश होता है। आदेशिका। (प्रोसेस)

प्रसरण—पु० [स० प्र√सृ+ल्युट्—अन] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १ आगे की ओर खिसकना, फैलना या बढ़ना। २. व्याप्ति। ३. विस्तार। ४ उत्पत्ति। ५ अपने काम मे लगना। ६ सेना का लूट-पाट के लिए इधर-उधर घूमना।

प्रसरणी—स्त्री० [स० प्र√सृ+अनि+ङीप्] १ प्रसरण। २ सेना का वह घेरा जो विपक्षी सेना के चारो ओर बनाया जाता है।

प्रसर-शुल्क—पु० [स० ष० त०] वह शुल्क जो न्यायालय से कोई प्रसर (देखें) निकलवाने के लिए देना पड़ता है। (प्रोसेस फी)

प्रसरा—स्त्री० [स० प्रसर+टाप्] प्रसारणीय (लता)।

प्रसरित—भू० कृ० [स० प्रसृत] १ पसरा या फैला हुआ। २ आगे की ओर निकला या बढ़ा हुआ। ३ विस्तृत।

प्रसर्ग—पु० [स० प्र√सृज् (त्यागना)+घञ्] १ गिराना। २ फेंकना। ३. अलग करना। ४ बरसाना।

प्रसर्जन—पु० [स० प्र√सृज्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रसर्जित] १ गिराना। २ फेंकना।

प्रसर्प—पु० [स० प्र√सृप् (गति)+घञ्] १. आगे की ओर चलना। गमन। २ एक प्रकार का सामगान।

प्रसर्पक—वि० [स० प्र√सृप्+ण्वुल्—अक]=प्रसर्पी।

प्रसर्पण—पु० [स० प्र√सृप्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रसर्पित] १. आगे की ओर चलना या बढ़ना। २ घुसना। पैठना। ३. चारो ओर से घेरना या छाना। ४ शत्रु-सेना को घेरने के उद्देश्य से सेना का चारो ओर फैलना। ५ शरण या रक्षा का स्थान। ६. गति। चाल।

प्रसर्पी (पिन्)—वि० [स० प्र√सृप्+णिनि] १ रेंगनेवाला। २ आगे की ओर बढ़नेवाला। गतिशील। ३ बिना बुलाये कही जा पहुँचने या घुस आनेवाला।

प्रसव—पु० [स० प्र√सू (बच्चा)+अप्] १. स्त्री का अपने गर्भ से बच्चा जनने की क्रिया या भाव। जनना। प्रसूति। (डेलिवरी) २. इस प्रकार बच्चे का होनेवाला जन्म। उत्पत्ति। ३. जन्मा हुआ बच्चा। अपत्य। सतान। ४. फल। ५ फूल। ६. बढ़ती। वृद्धि। ७ विकास।

प्रसवक—पु० [स० प्रसव√कै (प्रतीत होना)+क] चिरौंजी का पेड़।

प्रसवन—पु० [स० प्र√सू+ल्युट्—अन] [वि० प्रसवनीय] स्त्री का अपने गर्भ से बच्चा जनना। प्रसव करना।

प्रसवना*—स० [स० प्रसवन] प्रसव करना।

अ० प्रसव होना।

प्रसव-बंधन—पु० [स० ब० स०] वनस्पतियो मे वह पतला सीका जिसके सिरे पर पत्ता या फूल लगता है। नाल।

प्रसवावकाश—पु० [स० प्रसव-अवकाश, च० त०] वह अवकाश या रियायती छुट्टी जो कही नौकरी करनेवाली गर्भवती स्त्रियो को प्रसव के दिनो मे दी जाती है। (मैटर्निटी लीव)

प्रसविता (तृ)—वि० [स० प्र√सू+तृच्] [स्त्री० प्रसवित्री] १ जन्म देनेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला।

पु० जनक। पिता। बाप।

प्रसवित्री—वि० [स० प्रसवितृ+ङीप्] १. जन्म देनेवाली। स्त्री० माता। माँ।

प्रसविनी—वि० स्त्री० [स० प्र√सू+इनि+ङीप्] अपने गर्भ से सतान उत्पन्न करनेवाली। जननेवाली।

प्रसवी (विन्)—वि० [स० प्र√सू+इनि] [स्त्री० प्रसविनी] प्रसव करने या जन्म देनेवाला।

प्रसह—पु० [सं० प्र√सह् (सहना)+अच्] १ शिकारी चिड़िया। २ अमलतास।

प्रसहन—पुं० [स० प्र√सह्+ल्युट्—अन] १ हिंसक पशु। २. आलिंगन। ३ सहनशीलता। क्षमा।

वि० हिंसक। २ सहनशील।

प्रसह्य-हरण—पु० [स० सुप्सुपा स०] किसी से जबरदस्ती कोई चीज छीनना।

प्रसाद—पु० [स० प्र√सद्+घञ्] १. प्रसन्नता। २. किसी पर की जानेवाली ऐसी कृपा जिससे उसका बहुत बड़ा उपकार होता हो। ३ ईश्वरीय कृपा। ४. देवी-देवता को भोग लगाई हुई वह वस्तु जो सब जनो मे बाँटी जाती है।

क्रि० प्र०—बँटना।—बाँटना।

५. उक्त का वह अश जो किसी भक्त जन को प्राप्त होता है। ६ साधु-सतो की परिभाषा में, भोजन जिसका पहले देवता को भोग लगाया जाता है और जो बाद मे उसके प्रसाद के रूप मे ग्रहण किया जाता है।

मुहा०—प्रसाद पाना=यह समझकर भोजन करना कि यह देवता के अनुग्रह का फल और उसकी प्रसन्नता का सूचक है।

७. भोजन। (पश्चिम)

क्रि० प्र०—छकना।—पाना।

८. देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम मे लाई जाय। ९ ऐसी चीज जो किसी गुरुजन से उसके अनुग्रह के फल-स्वरूप मिली हो। १०. साहित्य मे, काव्य का एक गुण जो उस अवस्था मे माना जाता है जब काव्य-रचना बहुत ही सरल, सहज और स्वच्छ होती है और जिसमे पाठक या श्रोता को उसका आशय समझने मे कुछ भी कठिनता नही होती; तथा उसके हृदय मे उद्दिष्ट भावो का सचार या परिपाक अनायास हो जाता है। ११ शब्दालकार के अतर्गत कोमला वृत्ति जो काव्य मे उक्त गुण उत्पन्न करनेवाली होती है। १२ धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र। १३. निर्मलता। स्वच्छता। १४. स्वास्थ्य।

†पु० दे० 'प्रासाद'।

प्रसादक—वि० [स० प्र√सद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ बहुत बड़ी कृपा करनेवाला। २ आनन्द बढ़ाने या प्रसन्न करनेवाला। ३ प्रीतिकर। ४. निर्मल। स्वच्छ।

पु० १ प्रसाद। २ देवधन। ३. बथुए का साग।

प्रसाद-दान—पु० [स० ष० त०] वह चीज जो प्रसन्न होकर या प्रेम-भाव से किसी को दी जाय। (एफेक्शनेट गिफ्ट)

प्रसादन—पु० [स० प्र√सद्+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी को अपने अनुकूल रखने के लिए प्रसन्न करना। २ अन्न।

वि० १. प्रसन्न करनेवाला। २ आनन्द या सुख देनेवाला।

प्रसादना—स्त्री०[सं० प्र√सद्+णिच्+युच्—अन+टाप्] सेवा। परिचर्या।
†स०[सं० प्रसादन] प्रसन्न करना।
†अ० प्रसन्न होना।

प्रसादनीय—वि०[सं० प्र√सद्+णिच्+अनीयर्] जिसे प्रसन्न किया जा सके या प्रसन्न करना उचित हो।

प्रसादित—भू० कृ०[सं० प्र√सद्+णिच्+क्त] १ जो प्रसन्न किया गया हो। २ आराधित। ३ साफ या स्वच्छ किया हुआ।

प्रसादी (दिन्)—वि०[सं० प्र√सद्+णिच्+णिनि] १ प्रसन्न करनेवाला। २ प्रीति या प्रेम उत्पन्न करनेवाला। प्रीतिकर। ३ शात। ४ अनुग्रह या कृपा करनेवाला। ५ निर्मल। स्वच्छ।
स्त्री०[सं० प्रसाद] १ देवताओ को चढाया हुआ पदार्थ। नैवेद्य। प्रसाद। २. उक्त का वह अंश जो प्रसाद के रूप मे लोगो को दिया जाता है। ३. वह चीज जो बडे लोग प्रसन्न होकर छोटो को देते हैं।

प्रसाद्य—वि०[सं० प्र√सद्+णिच्+यत्] [स्त्री० प्रसाद्या] १. जिसे प्रसन्न करना या रखना उचित हो। २. जिसे प्रसन्न किया या रखा जा सके।

प्रसाधक—वि० [सं० प्र√साध्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रसाधिका] १ प्रसाधन करनेवाला। २ कार्य का निर्वाह या सम्पादन करनेवाला। ३. अलकृत करने या सजानेवाला। सजावट करनेवाला। ४ किसी के शरीर या अगो का शृगार करनेवाला।
पु० प्राचीन भारत मे, वह भृत्य जो राजाओ को वस्त्र, आभूषण आदि पहनाता था।

प्रसाधन—पुं० [सं० प्र√साध्+णिच्+युच्-अन] १ किसी (व्यक्ति) को सजाने के लिए वस्त्र, अलकार आदि पहनाना। शृगार करना। सजाना। २. कघी से सिर के वाल झाडना। ३ वे कार्य जो शरीर सजाने अथवा उसका रूप या सौदर्य वढाने के लिए किये जाते है। ४ उक्त प्रकार के कार्यो के लिए उपयोगी आवश्यक सामग्री। (टॉयलेट) ५ वेप-भूषा। ६. ठीक तरह से कोई काम पूरा करना। कार्य का सम्पादन। ७ किसी चीज को अच्छी तरह काट-छाँटकर अथवा परिष्कृत करके काम मे आने के योग्य वनाना। (ड्रेसिंग) ८ वे पदार्थ या सामग्री जो किसी काम के लिए आवश्यक और उपयोगी होते है। उपस्कर। सज्जा। (इक्विपमेन्ट)

प्रसाधनी—स्त्री०[सं० प्रसाधन+ङीप्] कघी।

प्रसाधिका—स्त्री० [सं० प्रसाधक+टाप्, इत्व] १ प्राचीन भारत मे वह दासी जो रानी-महारानियो की कघी-चोटी करती और उनको गहने-कपडे आदि पहनाती थी। २ निवार नामक धान।

प्रसाधित—भू० कृ० [सं० प्र√साध्+णिच्+क्त] १ जिसे आभूषण, वस्त्र आदि पहनाकर सजाया गया हो। सजाया हुआ। २ सुसपादित।

प्रसामान्य—वि० [सं०] =प्रसम।

प्रसार—पु०[सं० प्र√सृ (गति)+णिच्+घञ्] १. दीर्घ अवकाश मे अथवा दीर्घ समय तक फैले रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सचार। ३ गमन। ४ निकास। ५ इधर-उधर जाना। ६. वह सीमा जहाँ तक कोई चीज फैली हो या पहुँचती हो। (एक्सटेंट)

प्रसारण—पु०[सं० प्र√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] [भू०कृ० प्रसारित, वि० प्रसारणीय, प्रसार्य] १ दीर्घ अवकाश या काल मे किसी चीज को फैलाना। २. सस्था आदि का कारोवार अथवा अधिक्षेत्र विस्तृत प्रदेश मे विशेषत नये प्रदेशो तक वढाना। ३ रेडियो के द्वारा अथवा ऐसे ही किसी और साधन द्वारा कविता, गीत, समाचार आदि दूर-दूर के लोगो को सुनाने के लिए आकाशवाणी द्वारा चारो ओर फैलाना। (ब्राडकास्टिंग)

प्रसारणीय—वि०[सं० प्र√सृ+णिच्+अनीयर्] १ जो फैलाया जा सके। २ जो प्रसारित किये जाने को हो अथवा उसके योग्य हो।

प्रसारना*—स० [सं० प्रसारण] १ प्रसारण करना। रेडियो आदि के द्वारा गीत, समाचार आदि प्रसारित करना। २ पसारना। फैलाना।

प्रसारिणी—स्त्री०[सं० प्रसारिन्+ङीप्] १ गधप्रसारिणी नामक लता। गध प्रसारी। २. लज्जावती या लजालू नाम की लता। ३. देव-धान्य। ४ वह सेना जो चारों ओर लूट पाट करने के लिए निकली हो। ५ सगीत मे, मध्यम स्वर की चार श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति।

प्रसारित—भू० कृ०[सं० प्र√सृ+णिच्+क्त] १ पसारा या फैलाया हुआ। २ रेडियो आदि के द्वारा जिसका प्रसारण किया गया हो।

प्रसारी (रिन्)—वि०[सं० प्र√सृ+णिनि] [स्त्री० प्रसारिणी] १ प्रसारण करनेवाला। २ फैलाने या फैलनेवाला।

प्रसार्य—वि०[सं० प्र√सृ+णिच्+यत्]=प्रसारणीय।

प्रसाव*—पु०[सं० प्रसाद] १. अनुग्रह। प्रसाद। उदा०. सपने भी मुझ पर सही, यदि हरि-गौरि प्रसाव।—निराला।
†पु०=प्रस्ताव।

प्रसावक—वि०[सं० प्र√सू+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० प्रसाविका] प्रसव करानेवाला।

प्रसाविका—स्त्री० [सं० प्रसावक+टाप्, इत्व] वह स्त्री जो गर्भवती स्त्रियो के सन्तान प्रसव करने के समय उनकी देख-भाल और सेवा-शुश्रूषा करने का पेशा करती हो। प्रसव करानेवाली दाई। धात्री। (मिड-वाइफ)

प्रसाह—पु०[सं० प्र+सह्√घञ्] १ आत्मशासन। सयम। २ किसी पर विजय प्राप्त करना। किसी को हराना।

प्रसित—भू०कृ०[सं० प्र√सि (बधन)+क्त] [भाव० प्रसिति] १ कसा या बँधा हुआ। २ लक्षित और स्पष्ट।
पु० पीव। मवाद।

प्रसिति—स्त्री०[सं० प्र√सि+क्तिन्] १. कसे या वँधे होने की अवस्था या भाव। २. वह चीज जिससे किसी को कसा या बांधा गया हो। जैसे—रस्सी। ३. जाल। ४ रश्मि। ५. ज्वाला। लपट।

प्रसिद्ध—वि० [सं० प्र√सिध्+क्त] [भाव० प्रसिद्धि] १. (व्यक्ति) जो अपने कार्यो, गुणो आदि के फलस्वरूप ऐसी स्थिति मे हो कि उसे किसी विशिष्ट क्षेत्र के लोग अच्छी तरह जानते हो। ख्यात। मशहूर। २ (वस्तु या व्यवहार) जो विशेष रूप से प्रचलन मे हो और इसी लिए जिसे वहुत से लोग जानते हो। ३ अलकृत। भूपित।
क्रि० वि० स्पष्ट शब्दो मे। साफ-साफ। उदा०—दै वरदान प्रसिद्ध सिद्ध कीन्हों रण रुद्रहि।—केशव।

प्रसिद्धता—स्त्री०[सं० प्रसिद्ध+तल्+टाप्]=प्रसिद्धि।

प्रसिद्धि—स्त्री०[सं० प्र√सिध्+क्तिन्] १. प्रसिद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव। ख्याति। मशहूरी। २. वनाव-सिंगार। भूषा।

प्रसीदिका—स्त्री० [स० अत्या० स०] छोटा उद्यान। वाटिका।

प्रसुत—भू० कृ०[स० प्र√सु (निचोडना)+क्त] दवा या निचोडकर निकाला हुआ।

पु० एक सख्या का नाम।

प्रसुप्त—भू० कृ० [स० प्र√स्वप् (सोना)+क्त] [भाव० प्रसुप्ति] १. अच्छी तरह या गहरी नीद मे सोया हुआ। २ इस प्रकार अन्दर छिपा या दवा हुआ कि वाहर मे अस्तित्व का कोई लक्षण दिखाई न दे या अपना कार्य न कर रहा हो। सुपुप्त। जैसे—शरीर के अन्दर रोग के प्रसुप्त कीटाणु या विप।

प्रसुप्ति—स्त्री० [स० प्र√स्वप्+क्तिन्] गहरी या गाढी नीद। सुपुप्ति।

प्रसू—वि०[स० प्र√सू (जनना)+क्विप्] १ जननेवाली। जन्म-दात्री। २ उत्पन्न करनेवाली। जैसे—रत्न-प्रसू भूमि।

स्त्री० १ माता। जननी। २. घोडी। ३ मुलायम घास। ४. कुआ। ५ केला।

प्रसूत—भू० कृ०[स० प्र√सू+क्त] [स्त्री० प्रसूता] १. (वह) जो प्रसव के रूप मे हुआ हो। उत्पन्न। पैदा।

पु० १ प्रसव-काल के समय होनेवाला एक रोग। २ फूल। ३ चाक्षुप मन्वतर के एक देवगण।

प्रसूता—स्त्री०[स० प्रसूत+टाप्] १ वह स्त्री जिसने प्रसव किया अर्थात् वच्चा जना हो। नवजात शिशु की माता। २ घोडी।

प्रसूतालय—पु०[स० प्रसूता-आलय, प० त०]=प्रसूति-भवन।

प्रसूति—स्त्री०[स० प्र√सू+क्तिन्] १ स्त्री का प्रसव करना। वच्चे को जन्म देना। २. जीवो का वच्चे या अडे देना। ४ उद्भव। उत्पत्ति स्थान। ५ सतति। ६ प्रसूता। जिसने प्रसव किया हो। ७ दक्ष प्रजापति की स्त्री सती की माता। ८ कारण।

प्रसूतिका—स्त्री०[स० प्रसूत+ठन्—इक,+टाप्] प्रसूता स्त्री।

प्रसूतिज—पु०[स० प्रसूति√जन् (उत्पन्न होना)+ड] गर्भवती को प्रसव के समय होनेवाली पीडा।

प्रसूतिज्वर—पु० [प० त०] प्रसव के कुछ दिन वाद होनेवाला ज्वर।

प्रसूति-भवन—पु०[प० त०] १ अस्पतालो आदि का वह कमरा जिसमे रह कर स्त्रियां प्रसव करती अर्थात् वच्चा जनती है। (लेवर-रूम) २ वह घर या स्थान जहाँ स्त्रियो को वच्चे जनाने का काम होता हो।

प्रसूति-विज्ञान—पु०[स०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे गर्भवती स्त्रियो को सतान प्रसव कराने की कला या विद्या का विवेचन होता है। (अव्स्टेट्रिक्स)

प्रसूत्यवकाश—पु०[प्रसूति-अवकाश, च० त०] दे० 'प्रसवावकाश'।

प्रसून—वि०[स० प्र√सू+क्त] १ जन्मा हुआ। प्रसूत। २. उत्पन्न पैदा।

पु० १ पुष्प। फूल। २ कली।

प्रसूनक—पु० [स० प्रसून+कन्] १ फूल। २ कली। ३ एक तरह का कदव।

प्रसून-शर—पु०[व० स०] कामदेव।

प्रसृत—भू० कृ० [स० प्र√सृ (गति)+क्त) १ फैला हुआ। २ वढा हुआ। ३ विनीत। ४. भेजा हुआ। ५ तत्पर। लगा हुआ। ६ प्रचलित। ७. इन्द्रियलोलुप।

पु० १ हथेली भर का मान। २ अर्द्धांजलि। ३. दो पलों का मान।

प्रसृतज—पु० [स० प्रसृत√जन्+ड] महाभारत के अनुसार वह पुत्र जो व्यभिचार से उत्पन्न हुआ हो। जारज पुत्र।

प्रसृति—स्त्री०[स० प्र√सृ+क्तिन्] १ फैले हुए होने की अवस्था या भाव। प्रसार। फैलाव। २ संतति। सतान। ३. गहरी की हुई अजलि या हथेली। ४ सोलह तोले की एक पुरानी तौल। पसर। ५ जल्दी। शीघ्रता।

प्रसृष्ट—भू० कृ०[स० प्र√सृज (सर्जन करना)+क्त] त्यागा हुआ। परित्यक्त।

प्रसेक—पु०[स० प्र√सिच् (सींचना)+घञ्] १ सेचन। सींचना। २. निचुडने या निचोडने की क्रिया या भाव। ३ निचुडने या निचोडने पर निकलनेवाला जल या और कोई तरल पदार्थ। ४ छिडकाव। ५ ५. थोडा-थोडा वहना। रसना। ६. वाहर निकलना। ७ जुकाम या सरदी मे नाक से पतला पानी निकलने का रोग। ८. वीर्य के पतले होकर, धीरे-धीरे निकलते रहने का रोग। जिरियान।

प्रसेकी (किन्)—वि० [सं० प्र√सिच्+घिणुन्] १. वहनेवाला। २. जिससे मवाद निकलता रहे। ३ ऐसे व्रणवाला। ४ सींचता हुआ।

पु० एक प्रकार का असाध्य व्रण या घाव।

प्रसेद†—पु०=प्रस्वेद (पसीना)।

प्रसेदिका—स्त्री०= प्रसीदिका (वाटिका)।

प्रसेन—पु०=प्रसेनजित्।

प्रसेनजित्—पु० [स०] भागवत के अनुसार, इसी के पास वह स्यमतक मणि थी जिसे चुराने का कलक श्रीकृष्ण पर लगा था।

प्रसेव—पु०[स० प्र√सिव् (सीना)+घञ्] १ बीन की तूँबी। २. थैली।

प्रसेवक—पु० [स० प्र√सिव्+ण्वुल्—अक] १ वह जो थैलियाँ वनाता हो। २ दे० 'प्रसेव'।

प्रसोपा—स्त्री० [अ० प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के आरभिक अक्षर प्र+सो+पा] भारत का एक राजनीतिक दल और जिसका पूरा नाम प्रजा सोशलिस्ट पार्टी था और अव जिसका सयुक्त समाजवादी दल मे विलयन हो गया है।

प्रस्कदन—पु० [स० प्र√स्कन्द् (गति)+ल्युट—अन] १ कूदकर कोई चीज लाँघना। २ इस प्रकार भरी जानेवाली छलाँग। ३ महादेव। शिव। ४. जुलाव। विरेचन। ५ अतिसार।

प्रस्कन्न—वि० [स० प्र√स्कद+क्त] १ गिरा हुआ। २ समाज का नियम भग करनेवाला। ३ जो समाज का नियम तोडने के कारण पतित समझा जाता हो। ४ जिस पर आक्रमण किया गया हो।

पु० घोडो का एक प्रकार का रोग।

प्रस्खलन—पु०[स० प्र√स्खल् (पतन)+ल्युट-अन] =स्खलन।

प्रस्तर—पु०[स० प्र√स्तृ (फैलाना)+अच्] १ पत्थर। २ सम-तल स्थान। ३. कुश या डाभ का पूला। ४ पत्तो आदि का आसन या विछावन। ५ विछौना। विस्तर। ६ चमडे की थैली। ८ सगीत मे, एक प्रकार का ताल। ८ दे० 'प्रस्तर'।

प्रस्तर कला—स्त्री०[प० त०] पत्थरो को काट-छाँट या गढकर उनकी

विशिष्ट आकृतियो आदि वनाने और उन पर ओप आदि लाने की कला या विद्या।

प्रस्तरण—पु०[स० प्र√स्तृ+ल्युट—अन] १ विछाना। फैलाना। २ विछावन।

प्रस्तरणी—स्त्री०[स० प्रस्तरण +ङीप्] १ श्वेत दूर्वा। २ गोजिह्वा।

प्रस्तरभेद—पु०[प० त०] पाषाण भेद।

प्रस्तर मुद्रण—पु०[तृ० त०] छापे या मुद्रण का वह प्रकार जिसमे छापे जानेवाले लेख आदि पहले एक विशेप प्रकार से तैयार किये हुए कागज पर लिखकर तव एक विशेप प्रकार के पत्थर पर उतारे और तव छापे जाते है। (लीथोग्राफ)

प्रस्तरोपल—पु०[स० प्रस्तर-उपल, मयू० स०] चद्रकात मणि।

प्रस्तार—पु०[स० प्र√स्तृ+घञ्] १ फैलाव। विस्तार। २ अधिकता। ३ तह। परत। ४ सीढी। ५ समतल स्थान। ६ ऐसा मैदान जिसमे दूर तक घास ही घास हो। (लॉन)७ घास-फूस, पत्तियों आदि का बिछौना। ८ छद. शास्त्र मे नौ प्रत्ययो मे से पहला प्रत्यय जिसकी सहायता से यह जाना जाता है कि किसी मात्रिक या वर्णिक छद के कितने भेद या रूप हो सकते है। इसी आधार पर इसके ये दो भेद होते है—मात्रिक प्रस्तार और वर्णिक प्रस्तार। ९ अको, वस्तुओ आदि के पक्ति-वद्ध समूहो या वर्गो के क्रम या विन्यास मे सगत और सभव परिवर्तन करना। (परम्युटेशन)

प्रस्तार-पक्ति—स्त्री०[मयू० स०] एक प्रकार का वैदिक छद जो पक्ति छद का एक भेद है।

प्रस्तारी (रिन्)—वि० [सं० प्र√स्तृ+णिनि] फैलने या फैलानेवाला (समास मे)।

पु० एक नेत्र रोग।

प्रस्ताव—पु०[स० प्र√स्तु (स्तुति)+घञ्] १ आरभ। शुरू। २ विपय के आरभ मे परिचय देने के लिए कही जानेवाली वात। प्रस्तावना। प्राक्कथन। ३. किसी प्रसग या विपय की छिडी हुई वात। चर्चा। ४ प्रकरण। विपय। ५ उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ६ सामवेद का एक अश जो प्रस्तोता नामक ऋत्विक् द्वारा गाया जाता था। ७ पहली भेंट या मुलाकात। ८ आज-कल मुख्य रूप से (क) वह नई वात जो किसी के सामने इस उद्देश्य से विचारार्थ रखी जाय कि यदि वह उसे उपयुक्त समझे तो मान ले और उसके अनुसार कार्य करे। (ऑफर, प्रोपोजल) जैसे—मेरा तो यही प्रस्ताव है कि आप लोग न्यायालय मे न जाकर पचायत से ही इसका निर्णय करा ले। (ख) उक्त का वह रूप जो किसी सस्था या सभा के सदस्यो के सामने इसलिए विचारार्थ रखा जाता है कि यदि अधिकतर सदस्य उसे मान ले तो उसी के अनुसार भविष्य मे काम हुआ करे। (मोशन) जैसे—कर घटाने या वढाने का प्रस्ताव।

प्रस्तावक—वि० [स० प्र√स्तु+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रस्ताव करनेवाला।

प्रस्तावन—पु० [स० प्र√स्तु+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्तावित] प्रस्ताव करने की क्रिया या भाव।

प्रस्तावना—स्त्री०[स० प्र√स्तु+णिच्+युच्-अन, +टाप्] १ आरभ। २ प्रस्ताव। ३ वह आरभिक कथन या वक्तव्य जो किसी विपय का विस्तारपूर्वक वर्णन करने से पहले उसके सम्वन्ध की कुछ मुख्य वाते वतलाने के लिए हो। उपोद्‌घात। प्राक्कथन। भूमिका। (इन्ट्रोडक्शन)

प्रस्तावित—भू० कृ०[स० प्र√स्तु+णिच्+क्त] जिसके लिए या जिसके विपय मे प्रस्ताव हुआ हो या किया गया हो।

प्रस्तावितो—पु०[स० प्रस्तावित से] वह जिमके सामने कोई झगडा निपटाने या समझौता करने के लिए कोई नया प्रस्ताव रखा जाय। (ऑफरी)

प्रस्ताव्य—वि० [स० प्र√स्तु+णिच्+यत्] १ जो प्रस्ताव के रूप मे उपस्थित किया जाने को हो अथवा किये जाने के योग्य हो। २ जिसके सवध मे प्रस्ताव किया जा सके या करना उचित हो।

प्रस्तुत—वि०[स० प्र√स्तु+क्त] १. जिसकी स्तुति या प्रशसा की गई हो। २. जिसका आरभ हुआ हो या किया गया हो। आरब्ध। ३ जो कार्य रूप मे किया गया अथवा घटित हुआ हो। ४ जिसकी अभिलाषा और आशा की गई हो। ५ जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ६ जो किसी उपयोग या काम मे आने के लिए ठीक और पूरा हो चुका हो। तैयार। जैसे—(क) भोजन प्रस्तुत है। (ख) मैं चलने को प्रस्तुत हूँ। ७. (वात या विपय) जो प्रस्ताव के रूप मे किसी के सामने निर्णय, विचार आदि के लिए रखा गया हो। (प्रेजेन्टेड) ८ जो इस समय उपस्थित या वर्तमान हो। मौजूद। (प्रेजेन्ट) ९ वनाकर या और किसी प्रकार तैयार किया हुआ। तैयार। (प्रोड्यूस्ड)

पु० १. साहित्य मे, वह वात, वस्तु या विपय जिसकी चर्चा या वर्णन प्रत्यक्ष रूप से हो रहा हो, और प्रसगवश जिसके साथ दूसरी वात, वस्तु या विपय का भी (उपमा, तुलना आदि के विचार से) उल्लेख या चर्चा हो जाती हो। (इसका विपर्याय 'अ-प्रस्तुत' है।)

विशेष—अलकार शास्त्र मे, इस प्रकार के वर्णनीय विपय को उपमा के चार मुख्य उपादानो मे से एक उपादान माना है और 'उपमेय' को ही 'प्रस्तुत' कहा है। जैसे—'उसका मुख चद्रमा के समान है।' मे 'मुख' ही वर्ण्य विपय होने के कारण 'प्रस्तुत' है जिसकी उपमा चद्रमा से दी गई है।

प्रस्तुतांकुर—पु०[स० प्रस्तुत-अकुर, प० त०] साहित्य मे, अप्रस्तुत प्रशसा की तरह का एक अलकार जिसमे एक प्रस्तुत अर्थ मे से एक दूसरा अर्थ भी अकुर के रूप मे निकलता है। जैसे—यदि नायिका भ्रमर से कहे कि तुम मालती को छोडकर कंटीली केतकी के पास क्यो जाते हो। तो इसमे से एक दूसरा अर्थ यह निकलेगा कि तुम कुलीन वधू के रहते हुए पर-स्त्री या वेश्या के पास क्यो जाते हो? अथवा यदि कहा जाय—'तुम उनकी क्या निंदा करते हो। उनके सामने तो वडे वडे लोग सिर झुकाते है।' तो यहाँ एक की निंदा के साथ दूसरे की प्रशसा भी अकुर के रूप मे लगी रहेगी।

प्रस्तुतार्थ—पु०[स० प्रस्तुत-अर्थ, प० त०] पद, वाक्य, या शब्द का वह अर्थ जो प्रस्तुत प्रसग या विपय के विचार से ठीक निकलता या वैठता हो (सकेतार्थ से भिन्न)।

प्रस्तुति—स्त्री०[स० प्र√स्तु+क्तिन्] १ प्रस्तुत होने की अवस्था या भाव। २ प्रशसा। स्तुति। ३ प्रस्तावना। भूमिका। ४ उपस्थिति। ५ तैयारी।

प्रस्तुतीकरण—पु० [स०प्रस्तुत+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ(करना)+ल्युट्-अन] प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।

प्रस्तोक—पुं०[सं० प्र√स्तुच् (प्रसन्न होना)+घञ्] १ एक प्रकार का सामगान। २ सृजय का एक पुत्र।

प्रस्तोता (तृ०)—पुं०[सं० प्र√स्तु+तृच्] एक सामवेदी ऋत्विक् जो यज्ञ में पहले सामगान का प्रारंभ करता है।

पुं० प्रस्ताव करनेवाला व्यक्ति। प्रस्तावक।

प्रस्तोभ—पुं० [सं० प्र√स्तुभ् (स्तम्भन)+घञ्] एक प्रकार का साम।

प्रस्थ—वि० [सं० प्र√स्था (ठहरना)+क] १. प्रस्थान करनेवाला। २ कहीं पहुँचकर वहाँ रहनेवाला। जैसे—वानप्रस्थ।

पुं० १ पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि। (टेबुल लैंड) २. समतल भूमि। चौरस मैदान। ३ पहाड़ का ऊँचा किनारा। ४. किसी चीज का बहुत ऊपर उठा हुआ भाग। ५ फैलाव। विस्तार। ६ प्राचीन काल का एक मान जो दो प्रकार का होता था—एक तौलने का और दूसरा मापने का।

प्रस्थ-पुष्प—पुं० [ब० स०] १ छोटे पत्तोंवाली तुलसी। २. मरुआ। ३. जँबीरी। नीबू।

प्रस्थल—पुं०[सं० प्रस्थ√ला (लेना)+क] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

प्रस्थान—पुं०[सं० प्र√स्था+ल्युट्—अन] १ एक स्थान से दूसरे किसी दूसरे स्थान की ओर चलना। यात्रा आरंभ करना। रवानगी। (डिपार्चर) २. सेना का युद्ध-क्षेत्र की ओर जाना। कूच। ३ आस्तिक हिंदुओं की एक प्रथा जिसमें वे शुभ मुहूर्त में यात्रा आरंभ न कर सकने पर उसके प्रतीक के रूप में अपने ओढ़ने-पहनने का कोई कपड़ा उस दिशा के किसी समीपस्थ गृहस्थ के घर रख देते हैं जिस दिशा में उन्हें जाना होता है।

क्रि० प्र०—रखना।

४. मरण। मरना। ५ मार्ग। रास्ता। ६ ढंग। तरीका। ७ वैखरी वाणी के ये अठारह अंग-चारों वेद, चारों उपवेद, ६ वेदांग, धर्मशास्त्र न्याय, मीमांसा और पुराण।

प्रस्थान-त्रयी—स्त्री०[सं० ष० त०] उपनिषदों, वेदांत सूत्रों और भगवद्गीता का सामूहिक नाम जिनमें प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का तात्त्विक विवेचन है।

प्रस्थानी (निन्)—वि० [सं० प्रस्थान+इनि] प्रस्थान अर्थात् यात्रा आरंभ करनेवाला। प्रस्थानकर्ता।

पुं० दे० प्रस्थान '३'।

प्रस्थानीय—वि०[सं० प्र√स्था+अनीयर्] जहाँ या जिसके लिए प्रस्थान किया जा सके।

प्रस्थापक—वि०[सं० प्र√स्था+णिच्, पुक् √ण्वुल्—अक] १. प्रस्थापन करनेवाला। २. प्रस्ताव करनेवाला। प्रस्तावक। प्रस्तोता।

प्रस्थापन—पुं० [सं० प्र√स्था+णिच्, पुक्,√ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्थापित, वि० प्रस्थापी, प्रस्थाप्य] १ प्रस्थान करना। भेजना। २. प्रेरणा। ३. कोई बात या विषय प्रमाणों आदि से सिद्ध करते हुए किसी के सामने उपस्थित करना या रखना। स्थापना। ४ उपयोग या व्यवहार करना। ५. मशीनों, यंत्रों आदि को किसी स्थान पर लगाना। प्रतिष्ठित करना। ६ उक्त रूप में बैठाये या लगाये हुए यंत्रों की सामूहिक संज्ञा। संस्थापन। (इन्स्टालेशन, अंतिम दोनों अर्थों में)

प्रस्थापना—स्त्री०=प्रस्थापन।

प्रस्थापित—भू० कृ०[सं० प्र√स्था+णिच, पुक्,+क्त] १ जिसका प्रस्थापन हुआ हो या किया गया हो। २. भेजा हुआ। प्रेषित।

प्रस्थापी (पिन्)—वि०[सं० प्र√स्था+णिनि] १ प्रस्थान करनेवाला। २. जो कहीं भेजा जाने को हो। ३. स्थायी। चिरस्थायी।

प्रस्थिका—स्त्री०[सं० प्रस्थ+ठन्—इक,+टाप्] १ आमड़ा। २. पुदीना।

प्रस्थित—भू०कृ०[सं० प्र√स्था+क्त] [भाव० प्रस्थिति] १ जिसने प्रस्थान किया हो। २ जिसे कहीं भेजा गया हो। ३ जो अच्छी तरह या दृढ़तापूर्वक स्थित हो।

प्रस्थिति—स्त्री०[सं० प्र√स्था+क्तिन्] १. प्रस्थित होने की अवस्था या भाव। २ प्रस्थान। गमन।

प्रस्न—पुं०[सं० प्र√स्ना (नहाना)+क] नहाते समय शरीर पर जल उलीचने का पात्र।

†पुं०=प्रश्न।

प्रस्नव—पुं० [सं० प्र√स्नु (बहना)+अप] १ धारा के रूप में बहने का भाव। २ धारा। ३ मूत्र की धार।

प्रस्नुत—वि०[सं० प्र√स्नु+क्त] टपकाने या बहानेवाला।

प्रस्नुत-स्तनी—स्त्री०[ब० स०,+ङीप्] वह स्त्री जिसके स्तनों से वात्सल्य के कारण दूध की धारें, बह रही हो।

प्रस्नुषा—स्त्री०[सं० प्रा० स०, पृषो० सिद्धि] पोते की स्त्री। पौत्र-वधू।

प्रस्नेय—वि०[सं० प्र√स्ना+यत्] (जल) जिससे स्नान किया जा सके। स्नान के काम आने योग्य।

प्रस्फुट—वि०[सं० प्र√स्फुट् (विकसित होना)+क] १ खिला हुआ विकसित।

भू० कृ० १ (फूल) जो खिला हुआ हो। २ (बात या विषय) जो बिलकुल स्पष्ट हो। ३ प्रकट। व्यक्त।

प्रस्फुटन—पुं०[सं० प्र√स्फुट् (फुरना, गति आदि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्फुटित] १. (फूलों का) खिलना। फूटना। निकलना। २ व्यक्त होना। ३. प्रकाशित होना। ४ स्फूर्ति होना।

प्रस्फुरण—पुं० [सं० प्र√स्फुर्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्फुरित] १. काँपना। २. फैलना। ३ चमकना। ४ स्पष्ट होना।

प्रस्फोट—पुं० [सं०] अन्दर से फूटकर बाहर निकलने की क्रिया या भाव। (दे० 'प्रस्फोटन')

प्रस्फोटक—वि० [सं०] प्रस्फोट करने या फोड़नेवाला।

पुं० किसी यंत्र का वह अंग या कोई ऐसा उपकरण जो स्फोटन करता हो। (डिटोनेटर)

प्रस्फोटन—पुं० [सं० प्र√स्फुट् (फूटना)+ल्युट्—अन] १ प्रस्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु का इस प्रकार एक बारगी खुलना या फूटना कि उसके अन्दर के पदार्थ वेग से ऊपर या बाहर निकल पड़ें। ३. तोड़-फोड़कर अन्दर की चीज निकालना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज (जैसे—गैस या बारूद) जोर का शब्द करती हुई जलकर उड़े। (डिटोनेशन) ४ खिलना या खिलाना ५. विकसित करना। ६ अन्न आदि फटकना। ७ अन्न फटकने का सूप।

प्रस्मृत—भू० कृ०=विस्मृत

प्रस्मृति—स्त्री० [सं० प्र√स्मृ+क्तिन्]=विस्मृति (भूलना)।

प्रस्यद—पु० [सं० प्र√स्यद् (बहना)+घञ्] १. बहना। २ चूना। टपकना।

प्रस्रसन—पुं० [सं० प्र√स्रंस्+ल्युट्—अन] १. गिरना। २ गर्भ-पात होना। ३ बहनेवाला पदार्थ।

प्रस्रसी (सिन्)—वि० [सं० प्र√स्रस्+णिनि] [स्त्री० प्रस्रसिनी] १ पतनशील। गिरनेवाला। २. असमय ही गिर जानेवाला (गर्भ)।

प्रस्रव—पु० [सं० प्र√स्रु (गति)+अप्] १. धारा के रूप मे बहना या चूना। २ इस प्रकार बहने या चूनेवाली धारा। ३. स्तन या थन मे से वात्सल्य या दूध की अधिकता के कारण बहनेवाली दूध की धारा। ४ मूत्र। पेशाब। ५ चावल की माँड़। ५ आँसू।

प्रस्रवण—पु० [सं० प्र√स्रु+ल्युट्—अन] १. तरल पदार्थ के चूने या बहने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ पानी का झरना। सोता। ३ दूध। ४ पसीना। प्रस्वेद। ५ माल्यवान पर्वत।

प्रस्रवणी—स्त्री० [सं० प्रस्रवण+ङीप्] वैद्यक के अनुसार बीस प्रकार की योनियो मे से एक।

प्रस्राव—पु० =प्रस्रव।

प्रस्रुत—भू० कृ० [सं० प्र√स्रु+क्त] १ प्रस्रव के रूप मे होनेवाला। २ गिरा, झड़ा या बहा हुआ।

प्रस्वन—पु० [सं० प्रा० स०] जोरो का शब्द। ऊँचा स्वर।

प्रस्वाप—पुं० [सं० प्र√स्वप् (सोना)+णिच्+घञ्] १ वह वस्तु जिसके प्रयोग से निद्रा आए। नीद लानेवाली चीज या दवा। २ नीद। ३ एक प्रकार का अस्त्र जिसके सबंध मे यह प्रसिद्ध है कि इसे चलाने पर शत्रु-पक्षवालो को नीद आ जाती थी। ४ स्वप्न।

प्रस्वापक—वि० [सं० प्र√स्वप्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ नीद लाने या सुलानेवाला। २ मारक।

प्रस्वापन—पु० [सं० प्र+स्वप्√णिच्√ल्युट्—अन] ऐसा काम करना जिससे कोई सो जाय। सुलाना।

प्रस्विन्न—वि० [सं० प्र√स्विद्+क्त] पसीने मे लथ-पथ।

प्रस्वेद—पु० [सं० प्र√स्विद्+घञ्] त्वचा में से निकलनेवाले जलकण।

प्रस्वेदक—वि० [सं० प्र√स्विद्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रस्वेद या पसीना लानेवाला।

पु० ऐसी दवा जो पसीना लाकर शरीर के अन्दर का विष पसीने के रूप मे बाहर निकाल दे। (डायोफोरेटिक)

प्रस्वेदन—पु० [सं० प्र√स्विद्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्वेदित] १ पसीना निकालने या लाने की क्रिया या भाव। २ रसायन-शास्त्र मे, किसी चीज पर की जानेवाली वह प्रक्रिया जिससे वह चीज हवा की नमी के कारण पसीजने या गलने लगती है। (डिलीक्विसेन्स)

प्रस्वेदित—वि० [सं० प्रस्वेद+इतच्] १. पसीने से भीगा हुआ। २. पसीना लानेवाला। ३ गरम।

प्रस्वेदी (दिन्)—वि० [सं० प्रस्वेद+इनि] पसीने से भीगा हुआ।

प्रस्वेद्य—वि० [सं० प्र√स्विद्+णिच्+यत्] जिस पर या जिसमे प्रस्वेद या प्रस्वेदन की क्रिया होती या हो सकती हो अथवा की जा सकती हो या की जाने को हो। (डिलीक्वेसेन्ट)

प्रह—पु० [सं० प्रभा] १ चमक। २ प्रकाश।

प्रहणन—पुं०=हनन।

प्रहत—भू० कृ० [सं० प्र√हन्+क्त] [भाव० प्रहति] १ मारा हुआ। हत। २. जिस पर आघात हुआ हो। ३ पराजित। ४. प्रसारित। पु० १ आघात। प्रहार। २. पासा आदि फेंकने की क्रिया।

प्रहति—स्त्री० [सं० प्र√हन्+क्तिन्] १. प्रहत होने की अवस्था या भाव। २ आघात। प्रहार।

प्रहर—पु० [सं० प्र√हृ (हरण करना)+अप्] काल-मापन की दृष्टि से दिन के किये हुए आठ भागो मे से प्रत्येक जिनकी अवधि ३-३ घटे की होती है।

प्रहरक—पुं०=प्रहरी।

प्रहरखना*—अ० [सं० प्रहर्षण] हर्षित या प्रसन्न होना। आनदित होना।

प्रहरण—पुं० [सं० प्र√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ बलपूर्वक किसी से कुछ ले लेना। छीनना। २ अस्त्र। ३ युद्ध। ४. आघात। प्रहार। वार। ५ फेकना। ६ परित्याग। ७ चित्त की एकाग्रता। ८. एक तरह की पालकी। ९ पालकी मे बैठने का स्थान। १०. मृदग का एक प्रबंध।

प्रहरणीय—वि० [सं० प्र√हृ+ल्युट्—अन] १ जिसे छीना जा सके। २ जिसपर आक्रमण किया जा सके। ३ जिससे युद्ध किया जा सके। ४ नष्ट किये जाने के योग्य।

पु० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

प्रहरी (रिन्)—पु० [सं० प्रहार+इनि] १ पहर-पहर पर घंटा बजाने-वाला कर्मचारी। घडियाली। २ पहरेदार।

प्रहर्ता (र्तृ)—पु० [सं० प्र√हृ+तृच्] [स्त्री० प्रहर्त्री] १. वह जो किसी पर प्रहार करे। २ योद्धा।

प्रहर्ष—पु० [सं० प्रा० स०] हर्ष का वह तीव्र रूप जिसमे हृदय उमडने लगता है।

प्रहर्षण—पु० [सं० प्र√हृष्+णिच्+ल्युट्—अन] १. हर्षित या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। २ आनन्द। प्रसन्नता। ३ [प्र√हृष्+णिच्+ल्युट्—अन] बुध नामक ग्रह। ४ परवर्ती साहित्य मे एक प्रकार का गौण अर्थालंकार जिसमे अनायास या सहज मे किसी उद्देश्य की आशा से अधिक सिद्धि या आशातीत फलप्राप्ति की स्थिति का उल्लेख होता है। (यह 'विषादन' अलंकार के विपरीत भाव का सूचक है।)

प्रहर्षणी—स्त्री० [सं० प्रहर्षण+ङीप्] १ हरिद्रा। हल्दी। २ तेरह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश म, न, ज, र, ग होता है।

प्रहर्षित—भू० कृ० [सं० प्रहर्ष+इतच्] १ जिसे प्रहर्ष हुआ हो। २ जिसके मन मे प्रहर्ष हुआ हो। ३ जिसके मन मे प्रहर्ष उत्पन्न किया गया हो।

प्रहसन—पु० [सं० प्र√हस्+ल्युट्+अन] १. प्रसन्नतापूर्वक हँसना। विशेषत जोरो से हँसना। २ किसी को उपहासास्पद ठहराना या बनाना। ३ एक प्रकार का रूपक जो भाण की तरह हास्य-रस-प्रधान होता है। इसमे एक या दो अंक तथा अनेक पात्र होते है, इसका विषय प्राय कवि-कल्पित होता है, और इसमें दूषित तथा हेय आचार-विचार की दिल्लगी उड़ाई जाती है।

प्रहसित—पु० [सं० प्र√हस्+क्त] १ खूब जोर से होनेवाली हँसी। ठहाका। २ एक बुद्ध का नाम।
भू० कृ० हँसता हुआ।

प्रहस्त—पु० [सं० ब० स०] १ हथेली की वह स्थिति जिसमे उँगलियाँ खुली तथा अकडी हुई हों। पजा। २. चपत। थप्पड। ३. रावण का एक सेनापति। (रामायण)

प्रहाण—पु० [सं० प्र√हा (त्याग)+ल्युट्-अन] १ छोडना। त्यागना। २ अनुमान करना। ३ उद्योग। चेष्टा।

प्रहान*—पु०=प्रहाण।

प्रहानि—स्त्री० [स०] १ बहुत बडी हानि। २. कमी। ३ त्रुटि।

प्रहार—पु० [सं० प्र√हृ+घञ्] १ आहत या हत करने के लिए किसी पर किया जानेवाला आघात। वार। जैसे—लाठी या तलवार से किया जानेवाला प्रहार। २ आघात। चोट।

प्रहारक—वि० [सं० प्र√हृ+ण्वुल्—अक] प्रहार करनेवाला।

प्रहारण—पु० [सं० प्र√हृ+णिच्+ल्युट्—अन] १. प्रहार करना। २. काम्यदान। मनचाहा दान।

प्रहारना*—स० [सं० प्रहार] आघात या प्रहार करना। मारना।

प्रहारार्त—वि० [सं० प्रहार-आर्त, तृ० त०] जिस पर प्रहार किया गया हो, फलत आहत या हत।
पु० १ प्रहार लगने से होनेवाला घाव। २ उक्त घाव से होनेवाली पीडा।

प्रहारित*— भू० कृ० [सं० प्रहृत] जिस पर आघात या प्रहार हुआ हो जिसे चोट लगी या मार पडी हो।

प्रहारी (रिन्)—वि० [सं० प्र√हृ+णिनि] [स्त्री० प्रहारिणी] १. प्रहार करने या मारनेवाला। २ दूर करने या हटानेवाला। ३. नष्ट करनेवाला। नाशक। ४ (अस्त्र, शस्त्र आदि) चलाने या छोडनेवाला।

प्रहारुक—वि० [सं० प्र√हृ+उकञ्] १. छीननेवाला। २ प्रहार करनेवाला।

प्रहार्य—वि० [सं० प्र√हृ+ण्यत्] १ जो हरण किया या छीना जा सके। २ जिस पर प्रहार या आघात किया जा सके।

प्रहास—पु० [सं० प्र√हस् (हँसना)+घञ्] १. प्रहसन। हँसी। २ अट्टहास। ३ नट। ४. शिव। ५ कार्तिकेय का एक अनुचर। ६ सोमतीर्थ का एक नाम।

प्रहासी (सिन्)—वि० [सं० प्र√हस्+णिनि] जोर से हँसने या हँसानेवाला।

प्रहित—भू० कृ० [सं० प्र√धा (धारण)+क्त, धा=हि] १. भेजा हुआ। प्रेरित। २ फेंका हुआ। ३ फटका हुआ। ४. निष्कासित।
पु० १ सूप। २ दाल। ३ सालन।

प्रहुत—पु० [सं० प्र√हु (होम करना)+क्त] बलिवैश्वदेव। भूतयज्ञ।

प्रहुति—स्त्री० [सं० प्र√हु+क्तिन्] आहुति।

प्रहृत—भू० कृ० [सं० प्र√हृ (हरण)+क्त] १ फेंका हुआ। २ चलाया हुआ। ३ मारा हुआ। ४ फैलाया हुआ। ५ ठोंका या पीटा हुआ।
पु० १ प्रहार। मार। २ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

प्रहृष्ट—भू० कृ० [सं० प्र√हृष् (प्रसन्न होना)+क्त] अत्यन्त प्रसन्न। आह्लादित।

प्रहेलक—पु० [सं० प्र√हिल् (हाव-भाव करना)+अच्√कन्] लपसी।

प्रहेला—स्त्री० [सं० प्रा० स०] स्वच्छन्द रूप से की जानेवाली क्रीडा।

प्रहेलि—स्त्री०=प्रहेलिका।

प्रहेलिका—स्त्री० [सं० प्र√हिल्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] पहेली। (दे०)

प्रह्लाद—पु०=प्रह्राद।

प्रह्लाद—पु० [सं० प्र√ह्लाद्+णिच्+अच्] १ आह्लाद। आनन्द। २ एक प्राचीन देश। ३ दैत्यराज हिरण्यकशिपु का एक पुत्र जो बहुत बडा ईश्वर-भक्त था। कहा जाता है कि इसी की रक्षा करने के लिए भगवान ने नृसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु को मारा था।

प्रह्लादक—वि० [सं० प्र√ह्लाद+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रह्लादिका] प्रसन्न करनेवाला। हर्षकारक।

प्रह्लादन—पु० [सं० प्र√ह्लाद+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रह्लादित] आह्लादित या प्रसन्न करना।

प्रह्लादी (दिन्)— वि० [सं० प्रह्लाद+इनि] प्रसन्न होनेवाला।

प्रांकुर—पु० [सं०] वनस्पतियो मे बीज का वह अगला भाग जिससे पत्तियों, शाखाओं आदि का अकुरण आरम्भ होता है। (प्लुम्यूल)

प्राग—वि० [सं० प्र-अग, ब० स०] लबे डीलडौल का।
पु० एक तरह का छोटा ढोल। पणव।

प्रांगण—पु० [सं० प्र-अगन, ब० स०] १ मकान के आगे का खुला छोटा हुआ स्थान। २ मकान के अन्दर का वह स्थान जो चारो ओर से घिरा परन्तु ऊपर से खुला होता है। ३ एक तरह का ढोल।

प्रांगन†—पु०=प्रागण।

प्राजन—पु० [सं० प्र-अजन, प्रा० स०] आँखो मे अजन लगाना। २. आँख मे लगाने का अजन। ३ रग। ४ प्राचीन भारत मे तीर या बाण पर लगाया जानेवाला एक प्रकार का रग या लेप।

प्राजल—वि० [सं० प्र√अञ्ज् (चिकना करना)+अलच्] [भाव० प्राजलता] १. (भाव या भाषा) जो सरल तथा स्पष्ट हो और जिसमे जटिलता न हो। निर्मल। २ सच्चा। ३ समान। बराबर। ४ साफ। स्वच्छ।

प्रांजलि—वि० [सं० प्र-अजलि, ब० स०] जो अजलि बाँधे हो। अजलिबद्ध।
स्त्री० १ वह मुद्रा जिसमे दोनो हाथ जुडे हुए हो। २. अजलि।

प्रांत—पु० [सं० प्र-अत, प्रा० स०] [वि० प्रातिक] १ अत। शेष। सीमा। २ किनारा। छोर। सिरा। ३ ओर। तरफ। दिशा। ४ भारत मे, अगरेजी शासन मे वह शासनिक इकाई जिसमे कई प्रमडल होते थे, तथा जिसका प्रधान शासक राज्यपाल होता था। प्रदेश। (प्राविन्स) ५ एक प्राचीन ऋषि। ६ उक्त ऋषि के गोत्र के लोग।

प्रांतग—वि० [सं० प्रात√गम् (जाना)+ड] सीमा पर का निवासी।

प्रांतदुर्ग—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे, वह दुर्ग जो नगर के

किनारे प्राचीर के बाहर होता था। २ दुर्ग के आस-पास की बाहर की बस्ती।

प्रांत पुष्पा—स्त्री० [ब० स०] १ एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे का फूल।

प्रातभूमि—स्त्री० [प० त०] १ किसी पदार्थ का अतिम भाग। किनारा। सिरा। २ योग मे सिद्धि की अतिम सीमा; समाधि। ३. सीढी।

प्रातर—पु० [स० प्र-अन्तर, ब० स०] १ छाया आदि से रहित विस्तृत निर्जन पथ। २ दो गाँवो के बीच की जमीन। ३ दो प्रदेशो के बीच का स्थान। ४ जगल। वन। ५ पेड के तने का खोखला अश। खोडर।

प्रांतायन—पु० [स० प्रात+फक्—आयन्] प्रात नामक ऋषि के गोत्रज।

प्रातिक—वि० [स० प्रात+ठक—इक]=प्रातीय।

प्रातीय—वि० [स० प्रात+छ—ईय] [भाव० प्रातीयता] १ प्रात मे सबध रखनेवाला। प्रात मे होनेवाला। २ प्रात की सरकार के अधि-क्षेत्र का (अर्थात जिस पर केन्द्रिय सरकार का अधिकार न हो)।

प्रातीयता—स्त्री० [स० प्रातीय+तल—टाप्] १ प्रातीय होने की अवस्था या भाव। २ अपने प्रातवासियो के प्रति होनेवाली ऐसी मोहजन्य तथा पक्षपातपूर्ण भावना जिसके कारण अन्य प्रातो के वासियो के प्रति उदासीनता या उपेक्षा दिखाई जाती है। (प्राविन्शलिज्म)

प्राशु—वि० [स० प्र-अशु, ब० स०] [भाव० प्राशुता] १ ऊँचा। उच्च। २. लवा।

प्राइमर—स्त्री० [अ०] १. किसी भाषा की वर्ण-माला आदि सिखाने-वाली प्रारभिक पुस्तक जिसके द्वारा बच्चो को लिखना-पढना सिख-लाया जाता है। २ किसी विषय की आरभिक मोटी-मोटी बाते बतलानेवाली पुस्तक। पहली पुस्तक।

प्राइमरी—वि० [अ०] १ प्राइमर-सबधी। २ आरभिक। ३ प्राथ-मिक।

प्राइवेट—वि० [अ०] १. जिसका सबध केवल किसी व्यक्ति से हो। निज का। जैसे—प्राइवेट सेक्रेटरी=वह सहायक जो किसी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि का काम करता हो। निजी सचिव। २. (बात या रहस्य) जिसका सबध अपने से अथवा किसी विशिष्ट व्यक्ति से हो और इसी लिए जिसे लोगो पर प्रकट न किया जा सकता हो।

प्राक्—अव्य० [स० प्र√अञ्च् (गति)+क्विप्] १ सम्मुख। सामने। २ आगे। पहले। ३ पिछले प्रकरण या भाग मे।

वि० पुराना।

पु० पूर्व दिशा। पूरब।

प्राकट्य—पु० [स० प्रकट+ष्यञ्] प्रकट होने की अवस्था या भाव। प्रकटता।

प्राकर्ष—पु० [स० प्रकर्ष+अण्] एक प्रकार का साम।

प्राकर्षिक—वि० [स० प्रकर्ष+ठञ्—इक] जो औरो से अच्छा समझा जा सके और इसी लिए ग्राह्य हो। वरेण्य।

पु० [स० प्र+आ√कर्ष (हिंसा)+किकन्] १ स्त्रियो के साथ नाचने-वाला पुरुष। २ स्त्रियो का दलाल। कुटना।

प्राकाम्य—पु० [स० प्रकाम+ष्यञ्] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियों मे से एक जिसकी प्राप्ति से सब प्रकार की कामनाएँ बहुत सहज मे और तुरन्त पूरी की जा सकती है।

प्राकार—पु० [स० प्र√कृ (विक्षेप)+घञ्] १ किसी स्थान या इमा-रत के चारो ओर की दीवार। चहारदीवारी। २ घेरा।

प्राकारीय—वि० [स० प्राकार+छ—ईय] १ प्राकार-सबधी। २. प्राकार या परकोटे से घिरा हुआ।

प्राकाश—पु०=प्रकाश।

प्राकाशिकी—स्त्री० [स० प्रकाश से] दे० 'प्रकाशिकी'।

प्राकाश्य—पु० [स० प्रकाश+ष्यञ्] १ प्रकाशित होने की अवस्था या भाव। २ प्रकटता। प्राकट्य। ३ कीर्ति। यश।

प्राकृत—वि० [स० प्रकृति+अण्] [भाव० प्राकृतत्व] १ प्रकृति सबधी। प्रकृति का। २ प्रकृति से उत्पन्न। नैसर्गिक। ३. जो अपने उसी मूल रूप मे हो, जिसमे प्रकृति ने उसे उत्पन्न किया हो। ४. भौतिक। ५ लौकिक। सासारिक। ६ स्वाभाविक। ७ साधारण। मामूली। ८ प्रातीय। ९ अशिक्षित। १० क्षुद्र, तुच्छ या नीच।

स्त्री० १ किसी विशिष्ट क्षेत्र या प्रात के लोगो की बोल-चाल की भाषा जो छोटे-बडे, शिक्षित-अशिक्षित सभी प्रकार के लोग सामान्य रूप से आपस के नित्य के व्यवहारो मे बोलते हो। यह उच्च और शिक्षित समाज की परिष्कृत या सस्कृत भाषा से भिन्न होती है। २ उक्त प्रकार की वह विशिष्ट भाषा जो भारत के प्राचीन आर्य लोग बोलते थे और जिसका सस्कार करके शिक्षित समाज तथा साहित्यिक रचनाओ के लिए बाद मे सस्कृत भाषा बनाई गई थी।

विशेष—(क) यो तो वैदिक युग मे भी अपने समय की प्राकृत भाषा ही बोलते थे, परन्तु स्वतत्र भाषा के रूप मे 'प्राकृत' का नामकरण सस्कृत भाषा बन जाने पर ही और उससे पार्थक्य दिखलाने के लिए हुआ था। (ख) आज-कल सकुचित अर्थ मे पालि, प्राकृत और अपभ्रश को क्रमश प्राकृत के आरभिक, मध्यकालीन और उत्तरकालीन रूप माना जाने लगा है। मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि इसी के बाद के साहित्यिक रूप है। इन भाषाओ मे भी किसी समय प्रचुर साहित्य प्रस्तुत होता था, जिसका बहुत-सा अश अब भी अनेक स्थानो मे मिलता है।

४ पराशर मुनि के मत से बुधग्रह की सात प्रकार की गतियो मे पहली और उस समय की गति जब वह स्वाती, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रो मे रहता है। यह गति चालीस दिनो तक रहती है।

प्राकृत ज्वर—पु० [कर्म० स०] वैद्यक के अनुसार वह ज्वर जो ऋतु के प्रभाव से वर्षा, शरद और वसन्त ऋतुओ मे होता है, और जिसमे क्रमात वात, पित्त और कफ का प्रकोप होता है।

प्राकृतत्व—पु० [स० प्राकृत+त्व] प्राकृत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

प्राकृत-प्रलय—पु० [कर्म० स०] वेदात के अनुसार प्रलय का वह उग्र रूप जिसमे तीनो लोको के सिवा महतत्त्व अर्थात प्रकृति के पहले और मूल विकार तक का क्षय या विनाश हो जाता है, और प्रकृति भी ब्रह्म मे लीन हो जाती है।

प्राकृतिक—वि० [स० प्रकृति+ठञ्—इक] १. प्रकृति से उद्भूत। नैसर्गिक। २. प्रकृति मे होनेवाले किसी विकार के फलस्वरूप होनेवाला। ३ मनुष्य की प्रकृति या स्वभाव से सबध रखनेवाला। ४ मानुषिक भावो, गुणो, स्वभावो आदि के अनुसार होनेवाला, फलत. जो कृत्रिम अथवा क्रूर न हो। जैसे—(क) स्त्री पुरुष मे होनेवाला प्रेम का प्राकृतिक बन्धन। (ख) प्राकृतिक, हास। ५. प्रकृति। आवश्यकता आदि के फलस्वरूप स्वाभाविक रूप से जो आदिकाल से उपयोग मे चला आ रहा हो। जैसे—हिंसक जीवो के लिए आमिष प्राकृतिक भोजन है। ६. साधारण। मामूली। ७ भौतिक। ८ सासारिक। ९ नीच।

प्राकृतिक चिकित्सा—स्त्री० [स० कर्म० स०] चिकित्सा का एक प्रकार जिसमे रोगो का निदान प्राकृतिक उपायो से किया जाता है। (नेचर क्योर)

प्राकृतिक भूगोल—पु० [स० कर्म० स०] भूगोल विद्या का वह अग जिसमे प्राकृतिक तत्त्वो का तुलनात्मक दृष्टि से विचार होता है। इसमे पृथ्वी-तल की वर्तमान तथा भिन्न-भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओ का विचार होता है।

प्राक्कथन—पु० [स० कर्म० स०] १. पहले कही हुई बात। २ पुस्तक के विषय आदि के सबध मे पहले कही जानेवाली बात। प्रस्तावना।

प्राक्कर्म (र्मन्)—पु० [स० कर्म० स०] १. आरभ मे या पहले किया जानेवाला काम। २ पूर्व जन्म के किये हुए कर्म। ३. अदृष्ट। भाग्य।

प्राक्कलन—पु० [स० कर्म० स०] अनुमान, कल्पना या समावना के आधार पर पहले से किया जानेवाला आकलन या गणना। कूत। तख-मीना। (एस्टिमेशन)

प्राक्कल्प—पु०=पुराकल्प।

प्राक्चरण—पु० [स० ब० स०] योनि। भग।

प्राक्छाय—पु० [स० ब० स०] वह समय जब छाया पूर्व ओर पडती हो। अर्थात् अपराह्णकाल या तीसरा प्रहर।

प्राक्तन—वि० [स० प्राच्+ट्यु—अन, तुट्] १ पहले का। २ पूर्व जन्म का। ३ पुराना। प्राचीन।

पु० भाग्य। प्रारब्ध।

प्राक्फाल्गुन—पु० [स० प्राक्फाल्गुनी+अण्] बृहस्पति ग्रह।

प्राक्फाल्गुनी—स्त्री०=पूर्वा फाल्गुनी।

प्राक्संध्या—स्त्री० [स० कर्म० स०] सूर्योदय के समय की सध्या अर्थात् सवेरा।

प्रॉक्सी—स्त्री० दे० 'प्रतिपुरुषपत्र'।

प्राखर्य—पु० [स० प्रखर+ष्यञ्]=प्रखरता।

प्राग—वि० [स० प्राक्] १ पहले का। पहलेवाला। २ पहला माना या समझा जानेवाला, अर्थात् मुख्य।

प्रागल्भ—पु० [स० प्रगल्भ+ष्यञ्] =प्रगल्भता।

प्रागभाव—पु० [स० प्राग्—अभाव, मध्य० स०] १ पहले से अथवा पूर्वकाल से वर्तमान रहने या होने की अवस्था। (प्रि-एग्जिस्टेन्स) २ वैशेषिक दर्शन के अनुसार, पाँच प्रकार के अभावो मे से पहला। ऐसा अभाव जिसकी पूर्ति पीछे या बाद मे हो गई हो। जैसे—बनकर तैयार होने से पहले घर या वस्त्र का प्रागभाव होता है। ३ ऐसा पदार्थ जिसका आदि तो न हो, परन्तु अत होता हो। अनादि परन्तु सात।

प्रागार—पु० [स० प्र-आगार, प्रा० स०] १. घर। मकान। २. प्रासाद। महल।

प्रागुक्ति—स्त्री० [स० प्राची-उक्ति, कर्म० स०] पहले कही हुई बात। पूर्व-कथन।

प्रागुत्तर—वि० [स० प्राच्-उत्तर, कर्म० स०] पूर्वोत्तर।

प्रागुत्तर—स्त्री० [स० प्राची-उत्तरा, कर्म० स०] ईशान कोण।

प्रागुदीची—स्त्री० [स० प्राची-उदीची, कर्म० स०] ईशान कोण।

प्रागैतिहासिक—वि० [स० प्राक्-ऐतिहासिक, कर्म० स०] क्रम-बद्ध रूप मे प्राप्त होनेवाला लिखित इतिहास से पूर्व काल का। इतिहास मे वर्णित और निश्चित काल से पहले का। (प्री-हिस्टारिक)

प्राग्ज्योतिष—पु० [स० ब० स०] महाभारत आदि के अनुसार असम राज्य। कामरूप देश।

प्राग्ज्योतिषपुर—पु० [स०] प्राग्ज्योतिष की राजधानी जिसे अब गोहाटी कहते हैं। कहते हैं कि यह नगर कुश के पुत्र अमूर्तरज ने बसाया था और परवर्ती काल मे नरकासुर की राजधानी यही थी।

प्राग्दक्षिणा—स्त्री० [स० प्राची-दक्षिण, कर्म० स०] अग्निकोण।

प्राग्द्वार—पु० [स० कर्म० स०] पूर्वीद्वार।

प्राग्भक्त—पु० [स० कर्म०स०] १. वैद्यक मे, भोजन करने से कुछ पहले का समय जिसमे ओषधि खाई जाती है। २ उक्त समय मे ओषधि खाना।

प्राग्भव—पु० [स० कर्म० स०] पूर्व-जन्म।

प्राग्भाग—पु० [स० कर्म० स०] अगला या आगे का भाग।

प्राग्र—पु० [स० प्र-अग्र, प्रा० स०] चरम या शीर्षबिंदु।

प्राग्वंश—पु० [स० कर्म० स०] १ पहले का वश। २ [ब० स०] यज्ञशाला मे हविर्गृह के पूर्व स्थित स्थान। ३ विष्णु।

प्राग्वचन—पु० [स० कर्म० स०] १ प्राक्कथन। २ मन्वादि मह-र्षियो के वचन। (महा०) ३. पहले से किसी को दिया हुआ वचन।

प्राग्वर्ण—पु० [स०कर्म० स०] वर्णमाला का प्रारम्भिक अक्षर या वर्ण। उदा०—ये नयन डूबे अनेको बार है, काव्य के प्राग्वर्ण पर भी है रुके।—पन्त।

प्राघात—पु० [स० प्र+आ√हन् (हिंसा)+घञ्] १ भारी आघात। कडी चोट। २ युद्ध।

प्राघार—पु० [स० प्र+आ√घृ (चूना)+घञ्] चूना। रसना।

प्राघुण—पु० [स० प्र+आ√घुर्ण् (भ्रमण)+क] अतिथि।

प्राघुर्णिक—पु० [स० प्र+आ√घूर्ण्+घञ्, प्राघूर्ण+ठञ्—इक] अतिथि। मेहमान।

प्राङ्न्याय—वि० [स० ब० स०] जिसका न्याय पहले हो चुका हो। पु० न्याय मे, किसी दोबारा चलाये हुए अभियोग के सबध मे प्रतिवादी का यह कहना कि इसका न्याय पहले ही (वादी के विरुद्ध) हो चुका है।

प्रांङमुख—वि० [स० ब० स०] जो पूर्व दिशा की ओर मुख किये हुए हो। पूर्व दिशा की ओर देखता हुआ।

क्रि० वि० पूर्व की ओर मुख किये हुए।

प्राचड्य—पु० [स० प्रचड+ष्यञ्]=प्रचडता।

प्राचार्य—पुं० [स० प्र+आचार्य प्रा० स०] दे० 'प्रधानाचार्य'।

प्राची—स्त्री० [सं० प्राच्+ङीष्] १. पूर्व दिशा। पूरब। २ अपने अथवा देवता के सामने की दिशा। ३. जल-ऑवला।

प्राचीन—वि० [स० प्राच्+ख—ईन] [भाव० प्राचीनता] १ पूर्व दिशा मे होनेवाला अथवा उससे सबध रखनेवाला। २ जो पूर्व अर्थात् पहलेवाले समय मे बना, रहा या हुआ हो। बहुत दिनो का। (एन्शेन्ट) ३. पुराना।

पु०=प्राचीर ।

प्राचीनता—स्त्री० [स० प्राचीन+तल्+टाप्] प्राचीन होने की अवस्था, गुण या भाव। पुरानापन।

प्राचीनत्व—पु०=प्राचीनता।

प्राचीन-पनस—पु० [स० कर्म० स०] बेल (पेड)।

प्राचीनबर्हि (स्)—पु० [स०] इद्र।

प्राचीन-योग—पु० [स० ब० स०] एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

प्राचीना—स्त्री० [स० प्राचीन+टाप्] १ पाठा। २ रास्ता। ३ दे० 'नित्यप्रिया' (गोपियाँ)।

वि० स्त्री० प्राचीन का स्त्री० रूप।

प्राची-पति—पु० [स० ष० त०] इन्द्र।

प्राचीर—पु० [स० प्र+आ√चि+क्रन्, दीर्घ] ऐसी ऊँची तथा पक्की दीवार जो किले, नगर आदि के रक्षार्थ उसके चारो ओर बनाई गई हो। चहारदीवारी। परकोटा।

प्राचुर्य—पु० [स० प्रचुर+ष्यञ्]=प्रचुरता।

प्राचेतस—पु० [स० प्रचेतस्+अण्] १. प्रचेता के अपत्य या वशज। २ प्रचेतागण जो प्राचीनबर्हि के पुत्र थे और जिनकी सख्या दस थी। ३. विष्णु। ४. दक्ष प्रजापति। ५ वरुण के एक पुत्र। ६ वाल्मीकि मुनि का एक नाम।

प्राच्छित†—पु०=प्रायश्चित्त ।

प्राच्य—वि० [स० प्राच्+यत्] १ जो पूरब अर्थात् पूर्वी भू-भाग मे बना, रहता या होता हो। पूरबी। २ पूर्वीय देशो अर्थात् एशिया महाद्वीप के देश और उनके निवासियो से सबध रखनेवाला। पूर्वीय। जैसे—प्राच्य सभ्यता। ३ पुराना। प्राचीन।

पु० १ पूर्वी भूभाग। २. पूर्वी देश। ३. कोशल, काशी, विदेह और अंग देश की प्राचीन सामूहिक सज्ञा।

प्राच्यक—वि० [स० प्राच्य+कन्]=प्राच्य।

प्राच्यविद्—पु० [स०]=प्राच्यवेत्ता।

प्राच्य-विद्या—स्त्री० [सं०] पुरातत्व की वह शाखा जिसमे प्राच्य देशो अर्थात्, तुर्की, ईरान, भारत, बरमा, चीन, स्याम, मलाया आदि पूर्वीय देशो के इतिहास, धर्म, भाषा, सस्कृत, साहित्य आदि का अनुसंधानात्मक विचार और विवेचन होता है। (ओरियन्टलिज्म)

प्राच्य-वृत्ति—स्त्री० [स०कर्म०स०] साहित्य मे वैताली वृत्ति का एक भेद जिनके समपादो मे चौथी और पाँचवी मात्राएँ मिलकर गुरु हो जाती है।

प्राच्यवेत्ता—प० [स०] वह जो प्राच्य-विद्या का अच्छा ज्ञाता हो। (ओरिएण्टलिस्ट)

प्राच्य-व्रण—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का व्रण या घाव जो उष्ण कटिबन्ध के देशो मे चेहरे या हाथ-पैर पर होता है। (ओरिएन्टल सोर)

प्राच्या—स्त्री० [स० प्राच्य+टाप्] प्राच्य (कोशल, काशी, विदेह और अग) के निवासियो की भाषा। अर्द्ध-मागधी और मागधी इसी के विकसित रूप है।

प्राजक—पु० [स० प्र√अज् (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक] रथ चलानेवाला। सारथी।

प्राजन—पु० [स० प्र√अज्+ल्युट्—अन] कोडा। चाबुक।

प्राजापत—पु० [स० प्रजापति+अण्] प्रजापति का कार्य, पद या भाव।

प्राजापत्य—वि० [स० प्रजापति+ण्य] १ प्रजापति-सबधी। प्रजापति का। २ प्रजापति से उत्पन्न।

पु० १ हिंदू धर्म-शास्त्रो के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से वह विवाह जिसमे कन्या का पिता वर से बिना कुछ लिए उसे अपनी कन्या दे देता है।

विशेष—ऐसे विवाह में वर और कन्या को प्रतिज्ञा करनी पडती है कि हम दोनो मिलकर गार्हस्थ्य धर्म का पालन करेंगे, और एक दूसरे के प्रति निष्ठ रहेगे।

२ एक प्रकार का व्रत जो बारह दिनो का होता है। इसमे पहले तीन दिन तक सायकाल २२ ग्रास, फिर तीन दिन तक प्रात काल २६ ग्रास, फिर तीन दिन तक अयाचित अन्न २४ ग्रास खाकर अन्त मे तीन दिन उपवास करना पडता है। ३ रोहिणी नक्षत्र। ४ यज्ञ। ५. प्रयाग तीर्थ का एक नाक।

प्राजापत्या—स्त्री० [सं० प्राजापत्य+टाप्] १ सन्यास ग्रहण करने से पूर्व अपनी सपत्ति दान करने की क्रिया या भाव। २. वैदिक छदो के आठ भेदो मे से एक।

प्राजिता (तृ)—पु० [स० प्र√अज्+तृच्]=प्राजक (सारथी)।

प्राजी (जिन्)—पु० [स० प्र√अज्+णिनि] बाज (पक्षी)।

प्राजेश—पु० [स० प्रजेश+अण्] १ रोहिणी नक्षत्र। २ यज्ञ मे प्रजापति देवता के उद्देश्य से रखा जानेवाला पदार्थ।

प्राज्ञ—वि० [स० प्र√ज्ञा (जानना)+क+अण्] [स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी, भाव० प्राज्ञता, प्राज्ञत्व] १ बुद्धिमान। समझदार। २ चतुर। होशियार । ३ (ऐसा व्यक्ति) जिसने अध्ययन द्वारा बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त किया हो।

पु० १. चतुर व्यक्ति। २. विद्वान् व्यक्ति। ३ जीवात्मा।

प्राज्ञत्व—पु० [स० प्राज्ञ+त्व] १ प्राज्ञ होने की अवस्था या भाव। पाडित्य। विद्वत्ता। २ कौशल। चातुर्य। ३ बुद्धिमत्ता। ४ मूर्खता। बेवकूफी। (व्यग्य)

प्राज्ञमानी (निन्)—पु० [स० प्राज्ञ+मन्+णिनि] वह जिसे अपने पाडित्य का विशेष अभिमान हो।

प्राज्ञी—स्त्री० [स० प्राज्ञ+ङीप्] १ ऐसी स्त्री जिसने अध्ययन द्वारा बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त किया हो। २. सूर्य की भार्या का नाम।

प्राज्य—वि० [स० प्र√अज्+ण्यत्] १ प्रचुर। अधिक। २ ऊँचा। विशाल। ३ जिसमे बहुत घी पडा हो।

प्राड्विवाक—पु० [स०√प्रच्छ् (पूछना)+क्विप्=प्राट्-विवाक, कर्म० स०] १ वह जो व्यवहार-शास्त्र का ज्ञाता हो और विवाद आदि का निर्णय करता हो। न्यायाधीश २ प्राचीन काल मे वह अधिकारी जिसे राजा न्याय करने के लिए नियुक्त करता था। ३. वकील।

प्राण—पुं० [सं० प्र√अन्+घञ्] १ श्वास। साँस। २. वह वायु या हवा जो साँस के साथ अन्दर जाती और बाहर निकलती है। ३ वह शक्ति जो जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों आदि में रहकर उन्हें जीवित रखती और उन्हें अपने सब व्यापार चलाने में समर्थ करती है। जीवनी-शक्ति। जान। (लाइफ)

विशेष—हमारे यहाँ शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में रहनेवाले ये पाँच प्रकार के प्राण माने गये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। इसी आधार पर 'प्राण' का प्रयोग प्रायः बहुवचन में होता है। इसके सिवा शरीर की कुछ विशिष्ट क्रियाएँ करानेवाले और भी पाँच प्राण कहे गये हैं जो वायु रूप में हैं और जिन्हें नाग, कूर्म, कृकिल, देवदत्त तथा धनंजय कहते हैं। छांदोग्य ब्राह्मण में जीवनी शक्ति, वाक्, चक्षु, श्रोत्र और मन को 'प्राण' कहा गया है। कुछ ग्रंथों में मूलाधार में रहनेवाली वायु को ही मुख्य रूप से 'प्राण' कहा गया है। जैन शास्त्रों में पाँचों इंद्रियाँ, त्रिविध बलों (मनोबल, वाक्बल और काय-बल) तथा उच्छ्वास और आयु के समूह को प्राण कहा गया है। कुछ अवसरों पर और विशेषतः कुछ मुहावरों में यह शारीरिक बल या शक्ति का भी वाचक होता है।

मुहा०—प्राण उड़ जाना=दुःख, भय आदि के कारण होश-हवाश जाता रहना। बहुत घबराहट या विकलता होना। (किसी के) प्राण खाना=बहुत तंग या परेशान करना। प्राण गले (या मुँह) तक आना=रोग, संकट आदि के कारण मृत्यु के समीप तक पहुँचना। मरणासन्न होना। प्राण छूटना=मृत्यु होना। मरना। प्राण छोड़ना, तजना या त्यागना=यह शरीर छोड़कर परलोक जाना। मरना। प्राण जाना या निकलना=मृत्यु होना। (किसी में) प्राण डालना=(क) किसी में जीवन का संचार करना। (ख) किसी मरते हुए को जीवन प्रदान करना। (अपने) प्राण देना=मर जाना। मरना। (किसी के लिए) प्राण देना=किसी के किसी काम में बहुत दुःखी या रुष्ट होकर मरना। (किसी पर) प्राण देना=किसी से इतना अधिक प्रेम करना कि उसके बिना रहा न जा सके। प्राणों के समान प्रिय समझना। (किसी काम या बात से) प्राण निकलने लगना=कोई काम या बात करते हुए इतनी आशंका या भय होना कि मानो प्राण निकल जायँगे। भय, शंका आदि के कारण अथवा और किसी प्रकार अपने आप को बचाने के लिए बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। प्राण (या प्राणों) पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमें जान जाने का भय हो। प्राणों को संकट में डालना। प्राण या (प्राणों) पर बीतना=(क) जीवन संकट में पड़ना। जान जोखिम होना। (ख) मृत्यु होना। मर जाना। (किसी के) प्राण बचाना=जीवन की रक्षा करना। जान बचाना। (अपने) प्राण बचाना=(क) किसी प्रकार अपने जीवन की रक्षा करना। (ख) कोई काम करने से बचना या भागना। जान या पीछा छुड़ाना। प्राण मुट्ठी या हथेली में लिये फिरना=जीवन को कुछ न समझना। प्राण देने पर हर समय तैयार रहना। किसी के प्राण रखना=जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। (किसी के) प्राण लेना या हरना=जीवन का अन्त कर देना। मार डालना। प्राण हारना=(क) मर जाना। (ख) साहस या हिम्मत छोड़ देना। हतोत्साह होना। प्राणों पर आ पड़ना या आ बनना=जीवन संकट में पड़ना। जान जोखिम में होना। प्राणों में प्राण आना=घबराहट या भय कम होना। चित्त कुछ ठिकाने या शांत होना।

३ वह जो प्राणों के समान परम प्रिय हो। ४ ब्रह्म। ५. ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ अग्नि। आग। ८ वैवस्वत मंवतर के सप्तर्षियों में से एक। ९. धाता के एक पुत्र का नाम। १० एक साम का नाम। ११ यवर्ण। यकार। १२ वाराहमिहिर आर्यभट्ट के अनुसार उतना काल जितने में दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण होता है। यह विनाडिका का छठा भाग है। १३. पुराणानुसार एक कल्प जो ब्रह्मा के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को होता है।

प्राण-अधार*—पुं०=प्राणाधार।

प्राणक—पुं० [सं० प्राण√कै (प्रकाशित होना)+क] १ जीवक वृक्ष। २. जीव। प्राणी। ३ गोंद।

प्राण-कर—वि० [सं० प्राण√कृ (करना)+ट] जिससे शरीर का बल बढ़ता हो। शक्ति-वर्द्धक। पौष्टिक।

प्राण-कष्ट—पुं० [ष० त० या मध्य० स०] वह कष्ट जो प्राण निकलने या मरने के समय होता है। मरण-काल की यातना या वेदना।

प्राण-कृच्छ्र—पुं०=प्राण-कष्ट।

प्राण-ग्रह—पुं० [ष० त०] नासिका। नाक।

प्राण-घातक—वि० [सं० ष० त०] १ प्राण लेने या मार डालनेवाला। २. (विष या और कोई पदार्थ) जिसके व्यवहार से प्राण निकल जायँ।

प्राणघ्न—वि० [सं० प्राण√हन्+टक्]=प्राण-घातक।

प्राणच्छेद—पुं० [ष० त०] हत्या। वध।

प्राण-जीवन—पुं० [ष० त०] १ वह जो प्राणों का आधार हो। प्राणाधार। २ परम प्रिय व्यक्ति। ३ विष्णु।

प्राण-त्याग—पुं० [ष० त०] प्राण का शरीर से निकल जाना। मर जाना।

प्राणथ—पुं० [सं० प्र√अन् (जीना)+अथ] १ वायु। हवा। २ प्रजापति। ३. पवित्र स्थान। तीर्थ। ४ जैन शास्त्रानुसार एक देवता जो कल्पभव नामक वैमानिक देवताओं के अंतर्गत है।

वि० बलवान। सशक्त।

प्राण-दंड—पुं० [ष० त०] हत्या या ऐसे ही किसी दूसरे गंभीर अपराध के लिए किसी को दी जानेवाली मौत की सजा। मृत्यु-दंड। (कैपिटल पनिशमेन्ट)

प्राणद—वि० [सं० प्राण√दा+क] १. प्राणों की प्रतिष्ठा या संचार करनेवाला। प्राण-दाता। २ प्राणों की रक्षा करनेवाला। प्राण-रक्षक। ३ शरीर की प्राण-शक्ति बढ़ानेवाला।

पुं० १ जल। २. खून। ३. जीवक वृक्ष। ४ विष्णु।

प्राणदा—स्त्री० [सं० प्राणद+टाप्] १ हरीतकी। हर्रे। २ ऋद्धि नामक ओषधि।

प्राण-दाता (तृ)—वि० [ष० त०] प्राणों की प्रतिष्ठा या संचार करनेवाला। प्राणद।

प्राण-दान—पुं० [ष० त०] १ किसी में प्राण डालना या उसे प्राणों से युक्त करना। २ जिसे मार डालना चाहते हों, उसे दया करके यों ही छोड़ देना। किसी के प्राणों की रक्षा करना। ३ अपने प्राणों का किसी शुभ काम के निमित्त किया जानेवाला बलिदान। जीवन-दान।

प्राणद्यूत—पु० [प० त०] अपने को ऐसी स्थिति मे डालना जिसमे प्राण तक जाने का भय हो। जान जोखिम मे डालना। जान की बाजी लगाना।

प्राण-द्रोह—पु० [प० त०] किसी के प्राण लेने के लिए किया जानेवाला दुस्साहस जो विधिक दृष्टि मे अपराध होता है।

प्राण-धन—पु० [प० त०] १ वह जो किसी को प्राणो के समान प्रिय हो। २ पति या प्रियतम।

प्राणधार—वि० [सं० प्राण√धृ (धारण करना)+अण्] जो प्राण धारण किये हुए हो। जीता हुआ।
पु० प्राणी। जीव।

प्राण-धारण—पु० [प० त०] १ प्राणो की रक्षा तथा उन्हे पोषित करते रहने का भाव। २. उक्त का कोई साधन। ३ शिव।

प्राणधारी (रिन्)—वि० [स० प्राण√धृ+णिनि] जो साँस लेता हो। साँस लेकर जीवित रहने वाला।
पु० जीव। प्राणी।

प्राण-ध्वनि—स्त्री० [स०] १ भाषा विज्ञान और व्याकरण मे, शब्दो के उच्चारण के समय मुँह से निकलनेवाली ऐसी ध्वनि जिसमे किसी स्वर के उच्चारण से पहले उस पर श्वास का कुछ अधिक जोर पडता या झटका लगता है। जैसे—'ए' (सबोधन) के उच्चारण मे प्राण-ध्वनि लगने पर 'हे' और होठ मे के 'ओ' के उच्चारण मे लगने पर 'हो' (होठ) का उच्चारण होता है। २ वर्ण-माला मे का 'ह' वर्ण।

प्राणन—पु० [स० प्र√अन्+ल्युट्—अन] १ किसी मे प्राण डालने की क्रिया या भाव। प्राण-प्रतिष्ठा करना। २. जीवन। ३ इस प्रकार हिलना-डुलना कि जीवित होने का प्रमाण मिले। ४ जल। पानी।

प्राण-नाथ—पु० [प० त०] [स्त्री० प्राणनाथा] १ वह जो प्राणो फलत. शरीर का स्वामी हो। २ स्त्री की दृष्टि से उसका पति। ३. प्रियतम। प्रेमी। ४ यम। ५ औरगजेब के शासन-काल मे एक क्षत्रिय आचार्य जो प्राण-नाथी धार्मिक सप्रदाय के प्रवर्तक थे।

प्राण-नाथी (थिन्)—पु० [स० प्राण-नाथ+इनि] १ प्राण-नाथ का चलाया हुआ एक धार्मिक सप्रदाय। २ उक्त सप्रदाय का अनुयायी।

प्राण-नाश—पु० [प० त०] १ प्राणो का नष्ट हो जाना। मृत्यु। २. जान से मार डालना। हत्या।

प्राण-नाशक—वि० [प० त०] प्राण नष्ट करने या मार डालनेवाला।

प्राण-निग्रह—पु० [प० त०] प्राणायाम।

प्राण-पति—पु० [प० त०] १ प्राण-नाथ। २ आत्मा। ३ वैद्य।

प्राण-परिक्रय—पु० [प० त०] प्राणो की बाजी लगाना।

प्राण-परिग्रह—पु० [प० त०] प्राण धारण करना। जन्म लेना।

प्राण-प्यारा—वि०, पु०=प्राण-प्रिय।

प्राण-प्रतिष्ठा—स्त्री० [प० त०] १ किसी मे प्राण डालकर उसे प्राण-युक्त अर्थात् सजीव बनाना। २ देवालय स्थापित करते समय किसी विशिष्ट मूर्ति मे वास करने के लिए उसके देवता का किया जानेवाला आवाहन तथा स्थापन जो कर्म-काड का धार्मिक कृत्य है।

प्राणप्रद—वि० [सं० प्राण+प्र√दा (देना)+क] १ प्राणद। (दे०) २ शरीर का स्वास्थ्य ठीक करने और बढानेवाला।

प्राण-प्रदायक—वि० [प० त०] प्राणद। प्राणदाता।

प्राण-प्रिय—वि० [स्त्री० प्राण-प्रिया] प्राणो के समान प्रिय।
पु० १ परम प्रिय व्यक्ति। २ प्रियतम।

प्राणभृत्—वि० [स० प्राण√भृ (धारण करना)+क्विप्] १ प्राण धारण करनेवाला। २ प्राण-पोषक।
पु० १ जीव। २. विष्णु।

प्राणमय—वि० [स० प्राण+मयट्] [स्त्री० प्राणमयी] जिसमे प्राण या जीवनी-शक्ति हो। जानदार। सजीव।

प्राणमय-कोश—पु० [सं० कम० स०] आत्मा को आवृत करनेवाले पाँच कोशो मे से दूसरा जो पाँचो प्राणो (प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान) तथा पाँचो कर्मेन्द्रियो का समूह कहा गया है। (वेदान्त)

प्राण-यात्रा—स्त्री० [स० प० त०] १ श्वास-प्रश्वास के आने-जाने की क्रिया। साँस का आना-जाना। २. भोजन, स्नान आदि के दैनिक कृत्य जिनसे मनुष्य या प्राणियो का जीवन चलता है। ३. जीविका।

प्राण-योनि—पु० [स० प० त०] १ परमेश्वर। २ वायु।
स्त्री० प्राणो का स्रोत।

प्राणरंध्र—पु० [स० प० त०] शरीर के छिद्र या रन्ध्र। मुख्यत नाक और मुँह जिनसे मनुष्य साँस लेता है।

प्राणरोध (न्)—पु० [स० प० त०] १ साँस रोकना। २ प्राणायाम।

प्राण-वध—पु० [स० प० त०] जान से मार डालना। वध। हत्या।

प्राण-वल्लभ—पु० [स० उपमित स०] [स्त्री० प्राणवल्लभा] १ वह जो बहुत प्यारा हो। अत्यत प्रिय। २. पति। स्वामी। ३. प्रियतम।

प्राणवान् (वत्)—वि० [स० प्राण+मतुप्, वत्व] जिसमे प्राण हो। प्राणो से युक्त।

प्राण-वायु—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ प्राण। २ जीव। ३ आज-कल वातावरण मे रहनेवाला एक प्रसिद्ध गैस जिसमे कोई गन्ध, वर्ण या स्वाद नही होता और जो प्राणियो, वनस्पतियो आदि को जीवित रखने के लिए परम आवश्यक तत्त्व है। (ऑक्सिजन)

प्राण-विद्या—स्त्री० [स० प० त०] उपनिषदो का वह प्रकरण जिसमे प्राणो का वर्णन है।

प्राण-वृत्ति—स्त्री० [स० प० त०] प्राण, अपान, उदान आदि पच प्राणो के कार्य।

प्राण-व्यय—पु० [स० प० त०] प्राणनाश। मृत्यु।

प्राण-शरीर—पु० [स० प० त०] १ उपनिषदो के अनुसार वह सूक्ष्म शरीर जो मनोमय विज्ञान और क्रिया का हेतु माना गया है। २ परमेश्वर।

प्राण-शोषण—पु० [स० प० त०] बाण। तीर।

प्राण-सकट—पु० [स० प० त०] १ ऐसी स्थिति जिसमे प्राण जाने का भय हो। २ ऐसी बात जिसके कारण जान जोखिम मे पड़ी हो।

प्राण-सदेह—पु० [प० त०] वह अवस्था जिसमे जान जाने का डर हो। प्राणान्त होने की आशका।

प्राण-संन्यास—पु० [प० त०] मृत्यु। मौत।

प्राण-संयम—पु० [म० ब० स०] प्राणायाम।

प्राण-शय—पु० [प० त०] १ जीवन के नष्ट होने की आशका। २. मरणासन्नता। ३ प्राण-सकट।

प्राण-हर—वि० [सं० प्राण√हृ (हरण करना)+अच्] १ जान से मार डालनेवाला। प्राण लेनेवाला। २ बलनाशक।
पु० विष आदि ऐसे पदार्थ जिनके सेवन से प्राण निकल जाते हैं।

प्राण-हानि—स्त्री० [स० प० त०] प्राणो का नाश। मृत्यु।

प्राण-हारक—वि० [स० प० त०]=प्राण-हर।
पु० वत्सनाभ। बछनाग।

प्राणहारी (रिन्)—वि० [स० प्राण√हृ+णिनि] प्राण लेनेवाला। प्राण-नाशक।

प्राणांत—पु० [सं० प्राण-अंत, प० त०] प्राणो का होनेवाला अंत या नाश। मृत्यु।

प्राणांतक—वि० [स० प्राण-अंतक, प० त०] १. प्राण या जान लेनेवाला। घातक। २ मरने का-सा कष्ट देनेवाला। जैसे—प्राणांतक परिश्रम।

प्राणांतिक—पु० [सं० प्राणांत+ठक्—इक] १ वध। हत्या। २. वधिक।
वि०=प्राणांतक।

प्राणाग्नि-होत्र—पु० [सं०प्राण-अग्नि, कर्म० स०, प्राणाग्नि-होत्र, स० त०] भोजन के समय पहले किया जानेवाला वह कृत्य जिसमे 'प्राणाय स्वाहा', 'अपानाय स्वाहा', 'व्यानाय, स्वाहा' 'उदानाय स्वाहा' और 'समानाय स्वाहा' कहते हुए पाँच ग्रास निकालकर अलग रखते है।

प्राणाघात—पु० [सं० प्राण-आघात, स०त०] १ वह आघात जो किसी के प्राण लेने के उद्देश्य से किया गया हो। २ मार डालना। वध। हत्या।

प्राणाचार्य—पु० [सं० प्राण-आचार्य, प० त०] वैद्य विशेषत राजवैद्य।

प्राणातिपात—पु० [स० प्राण-अतिपात, प० त०] जान से मार डालना। हत्या।

प्राणातिपात-विरमण—पु० [स० प० त०] जैन मतानुसार अहिंसा व्रत। यह दो प्रकार का कहा गया है—द्रव्य-प्राणातिपात-विरमण और भाव-प्राणातिपात-विरमण।

प्राणात्मा (त्मन्)—पु०=जीवात्मा।

प्राणात्यय—पु० [सं० प्राण-अत्यय, प० त०] १ प्राण-नाश। २. मरने का समय। मृत्यु-काल। ३. वह बात जिसके कारण मारे जाने का भय हो।

प्राणाद—वि० [सं० प्राण√अद् (खाना)+अण्] प्राणनाशक।

प्राणाधार—वि० [स० प्राण-आधार, प० त०] जिसके कारण प्राण टिके या बने हुए हो। अत्यंत प्रिय। प्यारा।
पु० १ प्रेम-पात्र। २ स्त्री का पति। स्वामी।

प्राणाधिक—वि० [सं० प्राण-अधिक, प०त०] [स्त्री० प्राणाधिका] प्राणो से भी अधिक प्रिय। बहुत प्यारा।
पु० स्त्री का पति। स्वामी।

प्राणाधिप—पु० [स० प्राण—अधिप, प० त०] आत्मा।

प्राणाबाध—पु० [सं० प्राण-आबाध, प० त०] प्राण जाने की आशंका या संभावना।

प्राणायतन—पु० [सं० प्राण—आयतन, प० त०] शरीर से प्राणो के निकलने के नौ मार्ग—दो कान, नाक के दोनो छेद, दोनो आँखें, मुख, गुदा और उपस्थ।

प्राणायाम—पु० [सं० प्राण-आयाम, प०त०] १. प्राणो को अपने वश मे रखने की क्रिया या भाव। २. योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगो मे चौथा जिसमे मन को शांत और स्थिर करने के लिए श्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित और नियमित रूप से अंदर खीचा और बाहर निकाला जाता है। प्राण-निरोध।

प्राणायामी (मिन्)— वि० [स० प्राणायाम+इनि] १. प्राणायाम संबंधी। २. प्राणायाम करनेवाला।

प्राणावरोध—पु० [स० प्राण-अवरोध, प० त०] श्वास को अंदर खीचकर रोक रखना।

प्राणाशय—पु० [स० प्राण-आशय, प० त०] प्राण-शक्ति। उदा०—अपनी असीमता मे अवसित प्राणाशय।—निराला।

प्राणासन—पु० [स० प्राण-आसन, मध्य० स०] तान्त्रिक साधना मे एक प्रकार का आसन।

प्राणाहुति—स्त्री० [सं० प्राण-आहुति, प० त०] पाँचो प्राणो को पाँच ग्रासों के रूप मे दी जानेवाली आहुति।

प्राणि—पु०=प्राणी।

प्राणिक—वि० [स० प्राण+ठन्—इक] १ प्राण-संबंधी। प्राणो का। २ बिना शोर मचाये बोलनेवाला।
वि० [सं० प्राणी से] प्राणियो या जीव-धारियों से सम्बन्ध रखनेवाला। प्राणियो का।

प्राणित—भू० कृ० [स० प्र√अन्+णिच्+क्त] १. प्राणो या जीवनी-शक्ति से युक्त किया हुआ। उदा०—शशि मुख प्राणित नील गगन था, भीतर से आलोकित मन था।—पंत। २ जीता हुआ।

प्राणि-द्यूत—पु० [स० प० त०] वह बाजी जो भेंडे, तीतर, घोडे आदि जीवों की लडाई, दौड आदि मे लगाई जाय। (धर्म-शास्त्र)

प्राणि-भूगोल—पु० [स० प० त०] भूगोल की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी पर कहाँ की जल-वायु के प्रभाव के कारण कैसे-कैसे प्राणी और वनस्पतियाँ होती हैं। (बायोजियाग्रैफी)

प्राणि-मंडल—पु० [स० प० त०] वैज्ञानिक क्षेत्रो मे जल, स्थल और आकाश का उतना अंश जिसमे कीडे, मकोडे, जीव-जंतु, वनस्पतियाँ आदि रहती तथा होती है। जीव-मंडल। (बायोस्फीयर)

प्राणि-विज्ञ—पु० [स० प० त०] वह जो प्राणि-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। (जूलाजिस्ट)

प्राणि-विज्ञान—पु० [स० प० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे प्राणियों की जातियो, वर्गों, विभेदो आदि का अध्ययन होता है। (ज़ूलॉजी)

प्राणिशास्त्र—पु०=प्राणि-विज्ञान।

प्राणी (णिन्)—वि० [स० प्राण+इनि] जिसमे पाँचो प्राणो का निवास हो। जीव-धारी। प्राण-धारी।
पु० १ प्राणो से युक्त शरीर। २ मनुष्य। ३ व्यक्ति। ४ स्त्री की दृष्टि से उसका पति। ५. पति की दृष्टि से उसकी पत्नी।
पद—दोनों प्राणी=पति और पत्नी। पुरुष और स्त्री। दंपति।

प्राणेश—पु० [सं० प्राण-ईश, प० त०] [स्त्री० प्राणेशा] १ प्राणो का स्वामी। २ स्त्री की दृष्टि से उसका पति। ३ परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणेश्वर—पु० [सं० प्राण—ईश्वर प० त०] [स्त्री० प्राणेश्वरी] १ पति। स्वामी। २ परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणोत्सर्ग—पु० [स० प्राण-उत्सर्ग, प० त०] मृत्यु।

प्राणोपेत—वि० [सं० प्राण-उपेता पु० त०] प्राणो से युक्त। जीवित।

प्रात.कर्म—पु० [स० प० त० वा स० त०] कर्म जो नित्य प्रात काल किये जाते है।

प्रातःकार्य—पु०=प्रात कर्म।

प्रातःकाल—पु० [स० कर्म० स० या प० त०] १ पौ फटने का समय। तडका। रात का अतिम एक दड और दिन का पहला एक दड। २ सूर्य निकलने से कुछ पहले और वाद का समय। ३ कार्यालयो, निर्माण-शालाओ तथा विद्यालयो मे जाने तथा काम करने का सवेरे ६-७ वजे से लेकर ११-१२ वजे दोपहर तक का समय। 'दिन' से भिन्न। जैसे—कल से कार्यालय प्रात काल हो गया है।

प्रातःकालिक—वि० [स० प्रात काल+ठञ्—इक] प्रात काल-सवधी। प्रात काल का।

प्रातःकालीन—वि० [स० प्रात काल+ख—ईन]=प्रात कालिक।

प्रात.संध्या—स्त्री० [स० सप्त० स०] प्रात काल की जानेवाली सध्या (ईश्वरोपासना)।

प्रातःसवन—पु० [स० मध्य० स०] तीन प्रधान सवनो (सोम-यागो) में से पहला सवन जो प्रात काल किया जाता है।

प्रात.स्नान—पु० [स० प० त० वा स० त०] प्रात काल या सवेरे का स्नान।

प्रात.स्नायी (यिन्)—वि०[स० प्रात √स्ना+णिनि] प्रात काल स्नान करनेवाला। सवेरे नहानेवाला।

प्रातःस्मरण—पु० [स० स० त०] सवेरे के समय ईश्वर, देवतादि का किया जानेवाला जप, पाठ या भजन।

प्रात.स्मरणीय—वि० [स० स० त०] जिसे प्रात काल स्मरण करना उचित हो, अर्थात् परम पूज्य और श्रेष्ठ।

प्रात—अव्य० [स० प्रात] प्रभात के समय। बहुत सवेरे। तडके। पु० प्रात काल। सवेरा।

प्रातकाली—स्त्री० दे० 'पाराती' (गीत)।

प्रात-कृत—पु०=प्रात कृत्य।

प्रातनाथ—पु० [स० प्रातर्नाथ] सूर्य।

प्रातर्—अव्य० [स० प्र√अत्+अरन्] प्रभात के समय। सवेरे। पु० पुष्पार्ण के पुत्र एक देवता जो प्रभा के गर्भ से उत्पन्न हुए।

प्रातरनुवाक—पु० [स० मध्य० स०] ऋग्वेद के अंतर्गत वह अनुवाक जो प्रात सवन नामक कर्म के समय पढा जाता है।

प्रातरभिवादन—पु० [स० प० त०] बड़ो का वह अभिवादन जो प्रात काल सोकर उठने के समय किया जाय।

प्रातराश—पु० [स० प० त०] प्रात.काल किया जानेवाला हलका भोजन। जलपान। कलेवा।

प्रातर्दन—पुं० [स० प्रतर्दन+अण्] प्रतर्दन के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष। प्रतर्दन का अपत्य।
वि० प्रतर्दन-सवधी। प्रतर्दन का।

प्राति—स्त्री० [स०√प्रा (पूर्ति)+क्तिन्] १ अँगूठे और तर्जनी के वीच का स्थान। पितृ-तीर्थ। २ लाभ। ३ पूर्ति।

प्रातिकूलिक—वि० [स० प्रतिकूल+ठक्—इक] विरुद्ध।

प्रातिकूल्य—पु० [स० प्रतिकूल+ष्यञ्] १ प्रतिकूल या विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। २ हिन्दू धर्म-शास्त्रो के अनुसार इस वात का विचार कि परस्पर प्रतिकूल अवस्थाओ मे कोई काम कब और कैसे करना चाहिए। जैसे—घर मे अशौच होने पर मागलिक और शुभ कार्य करने के समय आदि का विचार।

प्रातिज्ञ—पु० [स० प्रतिज्ञा+अण्] तर्क या विवाद का विषय।

प्रातिदैवासिक—वि० [सं० प्रतिदिवस+ठञ्—इक] प्रति दिवस अर्थात् नित्य होनेवाला। दैनिक।

प्रातिनिधिक—वि० [स० प्रतिनिधि√ठक्—इक] १ प्रतिनिधि सम्बन्धी। प्रतिनिधि का। २. प्रतिनिधि के रूप मे होनेवाला।
पु० १. प्रतिनिधि। २. स्थानापन्न।

प्रातिपक्ष—वि० [सं० प्रतिपक्ष+अण्] १ विरुद्ध। प्रतिकूल। २. प्रतिपक्षवाला।

प्रातिपथिक—वि० [स० प्रतिपथ+ठक्—इक] यात्रा करनेवाला।
पु० यात्री।

प्रातिपद—वि० [स० प्रतिपद्+अण्] १ प्रतिपदा-सवधी। २ प्रतिपदा के दिन होनेवाला। ३. आरभिक।

प्रातिपदिक—पु० [स० प्रतिपद्+ठञ्—इक] १ अग्नि। २ धातु। ३ सस्कृत व्याकरण मे धातु और प्रत्यय से भिन्न कोई सार्थक शब्द। ४. कोई कृदन्त, तद्धित और समस्त पद।
वि०=प्रातिपद।

प्रातिभ—वि०[स० प्रतिभा√अण्] १ प्रतिभा-सवधी। प्रतिभा का। २. प्रतिभा से उद्‌भूत। प्रतिभाजन्य। ३ मानसिक।
पु० १ प्रतिभा से युक्त या सपन्न व्यक्ति। प्रतिभाशाली मनुष्य। २. योग साधन मे होनेवाले पाँच प्रकार के उपसर्गो या विघ्नो मे से एक जो साधक की प्रतिभा के कारण उत्पन्न होता है, और जिसमे वेद-शास्त्रो, कलाओ, विद्याओ आदि से सबध रखनेवाले विचार मन मे उत्पन्न होकर उसे एकाग्र नही होने देते।

प्रातिभाज्य—वि० [स० प्रति√भज्+णिच्+यत्] (पदार्थ) जिस पर प्रति-भाग नामक शुल्क लगता या लग सकता हो।

प्रातिभाव्य—पु० [स० प्रतिभू+ष्यञ्] १ प्रतिभू होने की अवस्था या भाव। २ जमानत।

प्रातिभासिक—वि० [स० प्रतिभास+ठक्—इक] १ प्रतिभास-सवधी। अनुरूपक। २. जो अस्तित्व मे न हो, या जिसका अस्तित्व भ्रममूलक हो। ३. जो व्यवहारिक न हो।

प्रातिलोमिक—वि० [स० प्रतिलोम+ठक्—इक] प्रतिलोम-सवधी; या प्रतिलोम के रूप मे होनेवाला। 'अनुलोमिक' का विपर्याय। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. अप्रिय। अरुचिकर।

प्रातिलोम्य—पु० [स० प्रतिलोम+ष्यञ्] प्रतिलोम होने की अवस्था या भाव।

प्रातिवेशिक—पु० [स० प्रतिवेश+ठक्—इक]=प्रतिवेशी (पडोसी)।

प्रातिवेश्य—पु० [सं० प्रतिवेश+ष्यञ्] प्रतिवेश मे रहने की अवस्था या भाव। पडोस।

प्रातिवेश्यक—पु० [स० प्रातिवेश्य+कन्] पड़ोसी।

प्रातिशाख्य—पु० [स० प्रतिशाख+ञ्य] ऐसा ग्रथ जिसमे वेदो के किसी शाखा के स्वर, पद, सहिता, सयुक्त वर्णो के उच्चारण आदि का निर्णय या विचार किया गया हो।

प्रातिहत—पु० [सं० प्रतिहत+अण्] स्वर्गित।
प्रातिहर्त्र—पु० [सं० प्रतिहर्तृ+अण्] प्रतिहर्ता का काम, पद या भाव।
प्रातिहार—पु० [सं० प्रतिहार+अण्] १ जादूगर। बाजीगर। २ दरबान। द्वार-पाल।
प्रातिहारक—पु०=प्रातिहार।
प्रातिहारिक—वि० [सं० प्रतिहार+ठञ्—इक] प्रतिहार-संबंधी।
पु० प्रातिहार।
प्रातिहार्य—पु० [सं० प्रतिहार+ष्यञ्] १ इंद्रजाल। बाजीगरी। २. कोई चमत्कारी खेल। करामात। ३ द्वारपाल का काम, पद या भाव।
प्रातीतिक—वि० [सं० प्रतीति+ठञ्—इक] १ जिससे प्रतीति होती हो या जो प्रतीति कराता हो। २ मन या कल्पना में होनेवाला। काल्पनिक या मानसिक।
प्रातीप—पु० [सं० प्रतीप+अण्] १ प्रतीप का अपत्य या वंशज। २ प्रतीप के पुत्र शांतनु।
प्रातीपिक—वि० [सं० प्रतीप+ठञ्—इक] १. प्रतीप-संबंधी। प्रतीप का। २ प्रतिकूल आचरण करनेवाला। विरुद्धाचारी। ३. उलटा। विपरीत।
प्रात्यंतिक—पु० [सं० प्रत्यंत+ठञ्—इक] १. सीमा पर स्थित राज्य। २. सीमा की रक्षा करनेवाला अधिकारी।
प्रात्यक्ष—वि० [सं० प्रत्यक्ष+अण्] १ प्रत्यक्ष नामक प्रमाण के रूप में होनेवाला। २ उक्त प्रमाण-संबंधी।
प्रात्यक्षिक—वि० [प्रत्यक्ष+ठक्—इक] =प्रात्यक्ष।
प्रात्ययिक—पु० [सं० प्रत्यय+ठक्—इक] मिताक्षरा के अनुसार तीन प्रकार के प्रतिभुओं में से दूसरा। वह जो किसी को पहचान कर के उसका प्रतिभू बने।
वि० १ प्रत्यय के रूप में होनेवाला। २. प्रत्यय-संबंधी।
प्रात्यह्निक—वि० [सं० प्रत्यह+ठक्—इक] प्रतिदिन का। दैनिक।
प्राथमकल्पिक—पु० [सं० प्रथमकल्प+ठक्—इक] वह विद्यार्थी जिसने वेद का अध्ययन अथवा योग साधन का आरंभ कर दिया हो।
वि० प्रथम कल्प का।
प्राथमिक—वि० [सं० प्रथम+ठञ्—इक] [भाव० प्राथमिकता] १ क्रम, गिनती आदि के विचार से आरंभ में आने या पड़नेवाला। २. जो उक्त विचार के आधार पर आरंभ में या पहले होता हो। (प्राइमरी)। जैसे—प्राथमिक विद्यालय ३. जिससे किसी चीज या बात का आरम्भ सूचित होता है। जैसे—कमल रोग के यह प्राथमिक लक्षण है।
प्राथमिक उपचार—पु० [सं० (कर्म० स०)] अचानक किसी के बीमार पड़ने, घायल होने, जल जाने आदि की अवस्था में, योग्य चिकित्सक के पहुँचने से पहले किया जानेवाला वह उपचार जो पीड़ित या रोगी की पीड़ा या रोग अधिक बढ़ने न दे। प्राथमिक चिकित्सा। (फर्स्ट एड)
प्राथमिक चिकित्सा—स्त्री० [सं० कर्म० स०]=प्रथमोपचार। (देखें)
प्राथमिकता—स्त्री० [सं० प्राथमिक+तल्—टाप्] १ प्रथम स्थान में होने अथवा रखे जाने की अवस्था या भाव। २. किसी काम, बात या व्यक्ति को औरों से पहले दिया जाने अथवा मिलनेवाला अवसर या स्थान। प्रथमता। (प्रायोरिटी)
प्राथमिक शिक्षा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] वह शिक्षा जो नये विद्यार्थियों को आरंभ में दी जाती है। विशेषत. छोटे बालकों को बिलकुल आरंभिक कक्षाओं में दी जानेवाली शिक्षा जिसमें उन्हें लिखना-पढ़ना सिखलाया जाता है। (प्राइमरी एजुकेशन)
विशेष—आज-कल विद्यालयों की आरंभिक ४ या ५ कक्षाओं तक की शिक्षा इसी के अंतर्गत मानी जाती है।
प्राथम्य—पु० [सं० प्रथम+ष्यञ्] १ 'प्रथम' होने की अवस्था या भाव। प्रथमता। पहलापन। २ दे० 'प्राथमिकता'।
प्रादक्षिण्य—वि० [सं० प्रदक्षिण+ष्यञ्] प्रदक्षिण-संबंधी।
प्रादर्शनिक—वि० [सं० प्रदर्शन+ठक्—इक] १. प्रदर्शन-संबंधी। २. (काम या बात) जो प्रदर्शन के रूप में अथवा प्रदर्शन के लिए हो। प्रदर्शनात्मक। (डिमान्स्ट्रेटिव)
प्रादानिक—वि० [सं० प्रदान+ठक्—इक] १ प्रदान-संबंधी । २. जो दान या प्रदान करने के योग्य हो।
प्रादीपिक—पु० [सं० प्रदीप+ठक्—इक] घर-खेत आदि में आग लगानेवाला व्यक्ति।
वि० प्रदीप संबंधी। प्रदीप का।
प्रादुर्भवन—पु० [सं०] दे० 'प्रोद्भवन'।
प्रादुर्भाव—पु० [सं० प्रादुर्√भू (होना)+घञ्] [भू० कृ० प्रादुर्भूत] १ जन्म धारण कर अस्तित्व में आने का भाव। २ पुनः, दोबारा या नये सिरे से अस्तित्व में आना या पनपना। ३. विकास।
प्रादुर्भूत—भू० कृ० [सं० प्रादुर्√भू+क्त] १. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। २. विकसित। ३ उत्पन्न। ४. दे० प्रोद्भूत।
प्रादुर्भूत-मनोभवा—स्त्री० [ब० स०] केशव के अनुसार मध्या नायिका के चार भेदों में से एक। ऐसी नायिका जिसके मन में काम का पूरा प्रादुर्भाव होता हो और कामकला के समस्त चिह्न प्रकट होते हों। साहित्य दर्पण में इसे प्ररूढ़-स्मर-यौवना लिखा है।
प्रादेश—पु० [सं० प्र+दिश (बताना)+घञ्, दीर्घ] १. अधिकारिक रूप से दिया हुआ कोई आदेश, विशेषत. लिखित आदेश। २. वह आदेशात्मक अधिकार जो प्रथम महायुद्ध के बाद राष्ट्र-संघ (लीग आफ नेशन्स) की ओर से कुछ बड़े-बड़े राष्ट्रों को विजित उपनिवेशों, प्रदेशों आदि की शासनिक व्यवस्था के लिए दिया गया था। (मैनडेट) ३. तर्जनी और अँगूठे के सिरों के बीच की अधिकतम दूरी जो नाप में १२ उँगलियों के बराबर होती है। ४ तर्जनी और अँगूठे का बीच का भाग। ५. प्रदेश। ६ जगह। स्थान।
प्रादेशात्मक—वि० [सं० प्रदेशात्मक+अण्] (व्यवस्था) जो किसी प्रादेश के अनुसार हो। (मैनडेटरी)
प्रादेशिक—वि० [सं० प्रदेश+ठक्—इक] [भाव० प्रादेशिकता] १. प्रदेश-संबंधी। किसी एक प्रदेश का। जैसे—प्रादेशिक परिषद्, प्रादेशिक भाषा। २. प्रदेश के भीतरी कामों या भागों से संबंध रखनेवाला अथवा उनमें रहने या होनेवाला। (टेरिटोरियल) जैसे—प्रादेशिक सेना। ३. किसी प्रसंग या प्रस्तुत विषय के अनुसार या उससे संबद्ध। प्रसंग-गत।
पु० १. सरदार। सामंत। २ किसी प्रदेश का प्रधान अधिकारी। सूबेदार।

प्रादेशिकता—स्त्री० [स० प्रादेशिक+तल्—टाप्] प्रातीयता।

प्रादेशिक समुद्र—पु० [स०] किसी देश या प्रदेश के समुद्री तट के सामने के समुद्र का कुछ विशिष्ट भाग जिसमे दूसरे देशो के जहाजो को विना अनुमति प्राप्त किये आने का अधिकार नही होता।

विशेष—पहले इसका विस्तार समुद्री तट से तीन मील की दूरी तक माना जाता था, परन्तु अव वडी-वडी दूरमार तोपो के वन जाने के कारण यह विस्तार वढ़ाकर वारह मील कर दिया गया है।

प्रादेशिक सेना—स्त्री० [स० कर्म० स०] किसी देश या प्रदेश के भीतरी भागो या सीमाओ के अन्दर रहकर स्थानिक सुरक्षा, शाति आदि की व्यवस्था करनेवाली सेना। (टेरिटोरियल आर्मी)

प्रादेशी (शिन्)—वि० [स० प्रादेश+इनि] जो लवाई मे एक प्रादेश हो।

प्रादोष—वि० [स० प्रदोप+अण्]=प्रादोपिक।

प्रादोषिक—वि० [स० प्रदोप+ठक्—इक्] १ प्रदोप-सवधी। प्रदोष का।

प्राधनिक—वि० [स० प्रधन+ठक्—इक] १ विध्वसक या विनाशकारी अस्त्र। २ लडाई मे काम आनेवाला अस्त्र-शस्त्र।

प्राधा—स्त्री० [स० प्रधा+ण—टाप्] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को व्याही थी। पुराणो मे इसे गन्धर्वो और अप्सराओ की माता वतलाया है।

प्राधानिक—वि० [स० प्रधान+ठक्—इक] १ प्रधान (अध्यक्ष या मुखिया) से सवध रखनेवाला। जैसे—प्राधानिक शासन। २ उच्च कोटि का। उत्तम।

प्राधानिक शासन—पु० [स० कर्म० स०] वह शासन प्रणाली जिसमे प्रधान अर्थात् अध्यक्ष राज्य का मुख्य तथा सर्वोपरि शासक होता है। मन्त्रि-मडलीय शासन-प्रणाली से भिन्न। (प्रेजीडेंशियल गवर्नमेंट)

प्राधान्य—पु० [स० प्रधान+ष्यञ्] १ प्रधान होने की अवस्था या भाव। २ वह स्थान या स्थिति जिसमे किसी चीज की अधिकता होती है। श्रेष्ठता।

प्राधिकरण—पु० [स० प्र-अधिकरण, प्रा० स०] १ प्राधिकार देना। (अथारिजेशन) २ प्राधिकारी का विशिष्ट अधिकार, कार्यालय या पद।

प्राधिकार—पु० [स० प्र+अधिकार] १ वह विशिष्ट अधिकार या शक्ति जिसके अनुसार औरो को कुछ करने की आज्ञा या आदेश दिया जा सकता हो, उसका पालन कराया जा सकता हो और महत्त्व की वातो का अतिम निर्णय किया जा सकता हो (ऑथारिटी) २. वह अधिकार जिससे अनेक प्रकार की ऐसी सुविधाएँ प्राप्त होती है, जिनसे कठिनाइयो, वाधाओ आदि से सहज मे वचा जा सकता हो। (प्रिविलेज)

प्राधिकारिक—वि० [स० प्राधिकार+ठक्—इक] १ प्राधिकार से सवध रखने या प्राधिकार के रूप मे होनेवाला। २ प्राधिकारी से सवध रखने-वाला।

प्राधिकारी (रिन्)—पु० [स० प्र-अधिकारिन्, प्रा० स०] १ राज्य, शासन आदि का वह अधिकारी जिसे किसी क्षेत्र या विभाग मे अधिकार प्राप्त हो। २ कोई ऐसा व्यक्ति जिसे किसी कार्य या विषय का वहुत अच्छा अनुभव या ज्ञान हो, और इसी लिए जिसका मत साधारणत सवके लिए मान्य होता हो। (अथॉरिटी, उक्त दोनो अर्थो के लिए)

प्राधिकृत—भू० कृ० [स० प्र-अधिकृत, प्रा० स०] १ जिसे कोई प्राधिकार या सुभीता दिया गया हो या मिला हो। जैसे—प्राधिकृत अभिकर्ता। २ जिसके लिए या जिसके सवध मे प्राधिकार मिला हो। (आथोराइज्ड) जैसे—प्राधिकृत पूंजी।

प्राध्यापक—पुं० [स० प्र-अध्यापक, प्रा० स०] १ उच्च अथवा महाविद्यालय मे किसी विषय की शिक्षा देनेवाला सवसे वडा अध्यापक। (प्रोफेसर) २ दे० 'प्रधानाध्यापक'।

प्राध्यापन—पु० [स० प्र-अध्यापन प्रा० स०] उच्च श्रेणियो के विद्यार्थियो का पढाना।

प्राध्व—पु० [सं० प्र-अध्वन् प्रा० स०] १ वहुत वड़ा या लम्वा रास्ता। २. यात्रा के काम मे आनेवाली सवारी। ३ रथ।
वि० अधिक अतर पर स्थित। दूर।

प्रान†—पु०=प्राण।

प्रानी†—पु०=प्राणी।

प्रानेस†—पु०=प्राणेश।

प्राप—पु० [स० प्र√ आप् (पाना)+घञ्] १ प्राप्ति। २ पहुँचना। जैसे—दुष्प्राप। ३ जल का प्रचुर होना।
वि० १ =प्राप्त। २ =प्राप्य।

प्रापक—वि० [स० प्र√ आप्+ण्वुल्—अक] १ प्राप्ति-सवधी। २ प्राप्त करने या कराने वाला। (रिसीवर) ३ प्राप्त होने या मिलने-वाला।
पु० दे० 'आदायक'।

प्रापण—पु० [स० प्र√आप्+ल्युट्—अन] [वि० प्रापणीय, प्राप्य] १ प्राप्त करना या कराना। २ पहुँचाना।

प्रापणिक—पु० [स० प्रापण√ठक्—इक] व्यापारी।

प्रापणीय—वि० [स० प्र√आय+अनीयर] १ जो प्राप्त किया जा सके। प्राप्य। २ पहुँचाने योग्य।

प्रापत†—वि०=प्राप्त।

प्रापति†—स्त्री०=प्राप्ति।

प्रापना—अ० [स० प्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
स० प्राप्त करना। पाना।

प्रापयिता (तृ)—वि० [स० प्र√आप्+णिच्+तृच्] प्राप्त करनेवाला।

प्रापी (पिन्)—वि० [स० प्र√आप्+णिनि] १ प्राप्त करनेवाला। २ पहुँचनेवाला। (समासात मे)

प्राप्त—भू० कृ० [प्र√आप्+क्त] [भाव० प्राप्ति] १ (अधिकार) गुण, धन, वस्तु आदि जिसे प्रयत्न करके अधिकार मे लाया गया हो अथवा जो यो ही या किसी अभिकरण के द्वारा हस्तगत हुआ हो। २ सामने आया हुआ। उपस्थित। जैसे—मृत्यु प्राप्त करना। ३ जो अनुभूत हुआ हो। जैसे—सुख प्राप्त होना।

प्राप्तकाल—पु० [व० स०] १ कोई काम करने का उपयुक्त समय। २ मरने का समय। अतिम समय।
वि० (काम या वात) जिसका काल या समय आ गया हो।

प्राप्त-जीवन†—वि० [व० स०] जिसे जीवन मिला हो।

प्राप्त-दोष—वि० [व०स०] १ जिसमे कोई दोप आ गया हो। २ जिसने कोई दोष किया हो।

प्राप्त-पचत्व—वि० [व०स०] जो पचतत्वो को प्राप्त हुआ हो, अर्थात् मरा हुआ।

प्राप्त-प्रसवा—वि० स्त्री० [स० ब० स०] जो बच्चे को देनेवाली हो। जो प्रसव करने को हो।

प्राप्त बुद्धि—वि० [स० ब० स०] १ जिसने फिर से चेतना या सज्ञा प्राप्त की हो। २ चतुर। ३. बुद्धिमान।

प्राप्त-यौवन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० प्राप्त-यौवना] जिसमे जवानी आ गई हो।

प्राप्त रूप—वि० [स० ब० स०] १. जिसे रूप की प्राप्ति हुई हो, अर्थात् सुन्दर। २ आकर्षक। मनोहर। ३ बुद्धिमान। ४ विद्वान।

प्राप्तव्य—वि० [स० प्र०√आप्+तव्यत्] जो प्राप्त किया जा सके अथवा हो सके।

प्राप्तार्थ—वि० [स० प्राप्त-अर्थ, ब०स०] १ जिसे अर्थ की प्राप्ति हुई हो। २ सफल।

पु० मिला हुआ धन या वस्तु।

प्राप्ति—स्त्री० [स० प्र√ आप्+क्तिन्] १ प्राप्त होने अर्थात अपने अधिकार या हाथ मे आने या मिलने की क्रिया, अवस्था या भाव। हासिल होना। पाया जाना। मिलना। उपलब्धि। जैसे—धन या पुत्र की प्राप्ति। २ कोई अवस्था या स्थिति आकर पहुँचना या प्रत्यक्ष होना। जैसे—दु ख या सुख की प्राप्ति। ३. इस रूप मे कोई चीज मिलना या हाथ मे आना कि उससे अपना आर्थिक या और किसी प्रकार का लाभ या हित हो। फायदा। लाभ। (गेन, उक्त सभी अर्थो मे) जैसे—(क) आज-कल उन्हे व्यापार मे अच्छी प्राप्ति हो रही है। (ख) जहाँ उन्हे कुछ प्राप्ति की आशा होती है, वही वे जाते है। ४ किसी चीज या बात के आकर उपस्थित होने या पास पहुँचने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) पत्र या उसके उत्तर की प्राप्ति। (ख) यौवनावस्था की प्राप्ति। ५ कही से आनेवाली किसी चीज या बात को ग्रहण करना। (रिसेप्शन) जैसे—ध्वनियो की प्राप्ति हमारे कानो को होती है। ६ योगशास्त्र मे, आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक जो सभी अभीप्ट उद्देश्य या कामनाएँ पूरी करनेवाली कही गई है। ७ नाट्यशास्त्र मे, अभिनय का शुभ और सुखद अत या उपसहार। ८ किसी गुण, तत्त्व या बात का अधिगम या अर्जन। ९. फलित ज्योतिष मे, चद्रमा का ग्यारहवाँ स्थान जो किसी चीज या बात की प्राप्ति या लाभ के लिए शुभ माना गया है। १० भाग्य। ११. उदय। १२ मेल। सगति। १३ समिति या सघ। १४ प्रवृत्ति। १५ व्याप्ति। १६ कामदेव की एक पत्नी। १७ जरासध की एक पुत्री जो कस को व्याही थी।

प्राप्तिका—स्त्री० [स० प्राप्ति+कन्—टाप्] वह पत्र जिसमे किसी वस्तु की प्राप्ति या पहुँच का नियमित रूप से उल्लेख हो। पावती। रसीद। (रिसीट)

प्राप्तिसम—पु० [स० ष० त०] तर्क या न्याय मे एक प्रकार की जाति। ऐसी आपत्ति जो प्रस्तुत हेतु और साध्य अवशिष्ट बतलाकर की जाय।

प्राप्त्याशा—स्त्री० [स० प्राप्ति-आशा ष० त०] १. प्राप्ति की आशा। मिलने की आशा। २ नाट्यशास्त्र मे आरब्ध कार्य की वह अवस्था या स्थिति जिसमे उद्देश्य के सिद्ध होने की आशा होने लगती है।

प्राप्य—वि० [स० प्र√आप+ण्यत्] १ जो कही से या किसी से प्राप्त हो सकता हो या प्राप्त होने को हो। मिल सकने के योग्य। (एवेलेबुल) २. (बाकी धन या वस्तु) जो किसी की ओर निकलता हो और इसी लिए उससे आधिकारिक और आवश्यक रूप मे प्राप्त किया जाने को हो या किया जा सकता हो। (ड्यू) ३ जिस तक पहुँच हो सके। गम्य।

प्राप्यक—पु० [स०] वह पत्र जिसमे किसी प्राप्य धन का ब्योरा होता है। विपत्र। (बिल)

प्राप्यक-समाहर्ता (र्तृ)—पु० [ष०त०] वह अधिकारी जो प्राप्यक का बाकी धन उगाहने का काम करता है। (बिल कलक्टर)

प्राबल्य—पु० [स० प्रबल+ष्यञ्] १ प्रबलता। २ प्रधानता।

प्राबोधक—पु० [स० प्रबोधक+अण्] प्रात काल राजाओ को उनकी स्तुति सुनाकर जगाने के लिए नियुक्त किया हुआ कर्मचारी। बदी।

प्राबोधिक—पु० [स० प्रबोध√ठक्—इक] = प्रबोधक।

प्राभजन—वि० [स० प्रभजन√अण्] १ प्रभजन या वायुदेवता-सबंधी। २. वायु देवता द्वारा अधिष्ठित।

पु० स्वाति (नक्षत्र)।

प्राभव—पु० [स० प्रभु+अण्] प्रभुता। प्रभुत्व।

प्राभवत्य—पु० [स० प्रभवत्+ष्यञ्] प्रभुता। प्रभुत्व।

प्राभातिक—वि० [स० प्रभात√ठक्—इक] १. प्रभात मे होनेवाला। २ प्रभात-सबधी।

पु० प्रभात मे गाये जानेवाले एक तरह के गीत।

प्राभाविक—वि० [स० प्रभाव√ठक्—इक] प्रभाव उत्पन्न करने या दिखलानेवाला। (एफेक्टिव)

प्राभासिक—वि० [स० प्रभास+ठक्—इक] १ प्रभास देश-सबधी। २ प्रभास देश मे बनने, रहने या होनेवाला।

प्राभियोजक—वि० = अभियोजक।

प्राभियोजन—पु० = अभियोजन।

प्राभृत—पु० [स० प्र-आ+भृ (धारण)√क्त] १ उपहार। भेट। २. राजाओ, सम्राटो आदि को दिया जानेवाला नजराना।

प्रामडलिक—वि० [स० प्रमडल+ठक्—इक] १. प्रमडल-सबधी। २. दे० 'प्राखडिक'।

प्रामाणिक—वि० [स० प्रमाण+ठक्—इक्] [भाव० प्रामाणिकता] १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणो के द्वारा सिद्ध हो। २. जो प्रमाण के रूप मे माना जाता हो या माना जा सकता हो। (ऑथारिटेटिव) ३. ठीक या सत्य। ४. जिसके अच्छे या सच्चे होने मे किसी को सदेह न हो। जिसकी साख जमी या बनी हो। सब जगह ठीक माना जानेवाला। ५ जो शास्त्रो आदि से प्रमाणित या सिद्ध हो। ६ (व्यक्ति) जो अच्छे प्रमाण मानता हो।

पु० १ शास्त्रज्ञ। २ व्यापारियो का चौधरी या मुखिया।

प्रामाण्य—पु० [स० प्रमाण+ष्यञ्] १ प्रमाण। २ प्रमाणो के ज्ञाता होने की अवस्था या भाव। ३ मर्यादा। ४ विश्वसनीयता।

प्रामादिक—वि० [स० प्रमाद+ठक्-इक] १ प्रमाद-सबधी। प्रमाद का। २ प्रमाद के कारण होनेवाला। ३ जिसमे कोई दोष या भूल हो।

प्रामिसरी—वि० [अ०] १ जो प्रतिज्ञा, वचन आदि के रूप मे हो। २ जिसमे किसी बात की प्रतिज्ञा की गई हो। जैसे—प्रामिसरी नोट। (दे०)

प्रामिसरी नोट—पु० [अ०] १ वह पत्र जिसमे आधिकारिक रूप से यह

लिखा होता है कि अमुक मिति को माँगने पर मैं इतना धन इसके वदले मे दूँगा। २. वह राजकीय ऋणपत्र जिसमे शासन द्वारा अपनी प्रजा से लिये हुए ऋण का उल्लेख तथा यह प्रतिज्ञा लिखी रहती है; कि मूल तथा सूद अमुक समय पर चुका दिया जायगा।

प्रामोदिक—वि० [स० प्रमोद+ठक्—इक] १ प्रमोदजनक। आनद-दायक। २ सुदर।

प्रायः—अव्य० [स० प्र√अय् (गति)+असुन्] १ अधिकतर अवसरो, अवस्थाओ आदि मे। अक्सर। २ करीब-करीब। लगभग। ३. बीच बीच मे। जल्दी जल्दी। जैसे—मुझे प्राय: उनके यहाँ जाना पडता है।

प्राय—वि० [स० प्र√अय् (गति)+घञ्] १. रूप,स्थिति आदि के विचार से किसी के वहुत-कुछ अनुरूप या समान। कुछ वातो मे किसी से मिलता-जुलता या उस तक पहुँचता हुआ। (प्राय यौ० के अत में) जैसे—नष्ट प्राय, मृतप्राय आदि। (और कभी कभी यौ० के आरभ मे भी) जैसे—प्राय-द्वीप। २ किसी तत्त्व या वात से वहुत अधिक युक्त या भरा हुआ। जैसे—कष्ट-प्राय शरीर, जल-प्राय देश।
पु० १ अनशनादि जिनसे मनुष्य शक्तिहीन होकर मृतक के तुल्य हो जाता या मर जाता है। २ मृत्यु। मौत। ३ अवस्था। उमर। वय।

प्रायगत—वि० [स० द्वि० त०] जिसके मरने मे अधिक विलव न हो। मरणासन्न।

प्रायण—पु० [स० प्र√अय्+ल्युट्—अन+] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। प्रयाण। २. एक शरीर छोडकर दूसरा शरीर धारण करना। ३. दूसरा जन्म। जन्मान्तर। ४. अनशन करते हुए अर्थात् खाना-पीना छोडकर प्राणदेना या मरना। ५ अनशन, व्रत आदि की समाप्ति पर किया जानेवाला जलपान या भोजन। ६ एक तरह का दूध से वनाया हुआ व्यजन। ७ प्रदेश। ८ आरभ। ९ शरण।

प्रायणीय—पु० [स० प्रयण+छ—ईय] १ सोमयाग मे पहली सुत्या के दिन का कर्म। २ आरभिक कृत्य।
वि० आरभ या शुरू मे होनेवाला। आरंभिक। जैसे—प्रायणीय कर्म, प्रायणीय याग।

प्रायद्वीप—पु० [स० प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो, तीन ओर से समुद्र से घिरा हो और जिसके केवल एक ओर स्थल मिला हो। (पेनिन्सुला)

प्रायद्वीप खंड—पु० [स०] भूगोल मे स्थल खड का वह छोटा सकरा भाग जिसके तीन ओर जल रहता हो और जो जल मे नुकीली चोच के रूप मे वढा हुआ होता है।

प्रायशः—अव्य० [स० प्राय०+शस्] प्राय। अक्सर।

प्रायश्चित—पु० [सं० प्राय-चित् प० त०, सुट् आगम] १ किये हुए दुष्कर्म या पाप के फल-भोग से वचने के लिए किये जानेवाला शास्त्र विहित कर्म जो वहुधा दड के रूप मे होते है। जैसे—दान, व्रत आदि। जैनो के अनुसार आलोचना, प्रतिक्रण, आलोचना प्रतिक्रमण, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहर और उपस्थान ये नौ प्रकार के प्रायश्चित माने गये हैं। २. अपने प्रति किया जानेवाला वह कठोर आचरण जो अपने किसी कार्य अथवा उसके परिणाम से क्षुव्ध होकर या ग्लानिवश किया जाता है। ३. साधारण वोल-चाल मे, अपने किसी दोष, प्रमाद, भूल आदि के फलस्वरूप होनेवाला किसी प्रकार का कष्ट या हानि।

प्रायश्चित्तिक—वि० [स० प्रायश्चित+ठक्—इक] १ प्रायश्चित-सवधी। प्रायश्चित्त का। २. (दूषित कार्य) जिसके लिए प्रायश्चित करना आवश्यक या उचित हो।

प्रायश्चित्ती (त्तिन्)—वि० [स० प्रायश्चित्त+इनि] १ (व्यक्ति) जिसे प्रायश्चित्त करना आवश्यक या उचित हो। २ प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रायश्चित्तीय—वि० –[स० प्रायश्चित्त+छ—ईय] प्रायश्चित-सवधी। प्रायश्चित् का।

प्रायाणिक—वि० [स० प्रयाण+ठक्—इक] प्रयाण-सवधी। प्रयाण या यात्रा का।
पु० यात्रा के समय शुभ माने जानेवाले शख, चवँर, दही आदि मागलिक द्रव्य।

प्रायिक—वि० [स० प्राय+ठक्—इक] [भाव० प्रायिकता] १ जो नियमित रूप से या सदा तो नही फिर भी वीच-वीच मे प्राय होता रहता हो।(यूजुअल) जैसे—सावन-भादो मे वर्षा प्रायिक होती है। २ अनुमान, सभावना आदि के विचार से वहुत-कुछ ठीक तथा सभव।

प्रायोगिक—वि० [स० प्रयोग+ठक्—इक] १ प्रयोग-सवधी। प्रयोग का। २ उपयोगी, ठीक या मान्य सिद्ध करने के लिए अभी जिसका प्रयोग या परीक्षा मात्र हो रही हो। (एक्सपेरिमेन्टल) ३ प्रयोग के रूप मे किया या काम मे लाया जानेवाला। (एप्लाएड) ४ क्रिया-त्मक। व्यावहारिक।

प्रायोगिक-कला—स्त्री० [स० कर्म० स०] व्यवहारिक कला।

प्रायोगिका-विज्ञान—पु० [स० कर्म स०] व्यावहारिक विज्ञान।

प्रायोज्य—वि० [सं० प्र-आ√युज् (जोडना)+णिच् ण्यत्] जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध होता हो। उपयोग या प्रयोग मे आनेवाला।
पु० ऐसी वस्तु या वस्तुएँ जिनका काम किसी को नित्य पडता हो।

प्रायोपगमन—पु० [स० प्राय–उपगमन, प० त०] आमरण अनशन।

प्रायोपविष्ट—वि० [स० प्राय-उपविष्ट, सुप्सुपा स०] जो आमरण अनशन कर रहा हो।

प्रायोपवेश—पु० [स० प्राय-उपवेश, सुप्सुपा स०] प्रायोपगमन। आमरण अनशन।

प्रायोपवेशन—पु०=प्रायोपमन।

प्रायोपवेशी (शिन्)—वि० [स० प्रायोपवेश+इनि] [स्त्री० प्रायोप-वेशिनी] आमरण अनशन करनेवाला।

प्रायोभावी (विन्)—वि० [स० प्रायस्√भू (होना)+णिनि] जो प्राय या सव जगह हो अर्थात् साधारण या सामान्य।

प्रायौगिक—वि०=प्रायोगिक।

प्रारभ—पु० [स० प्र-आ√रम्+घञ्, मुम्] १ किसी काम या वात का चलने लगना या जारी होना। २ किसी कार्य या वात का पहले या शुरूवाला अश। जैसे—प्रारभ मे तो आपने कुछ और ही कहा था।

प्रारंभण—पु० [सं० प्र—आ√रभ्+ल्युट्—अन, मुम्] [भू० कृ० प्रारब्ध] प्रारंभ या शुरू करना।

प्रारंभिक—वि० [सं० प्रारंभ] +ठक्—इक] १. प्रारंभ में होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला। २. दे० 'प्राथमिक'।

प्रारक्षण—पु० [सं० प्र०√रक्ष्+ल्युट्—अन अण्] [भू० कृ० प्रारक्षित] कोई ऐसी क्रिया करना जिसके द्वारा कोई पद, वस्तु, व्यक्ति या स्थान मुख्य रूप से या किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए अलग करके रक्षित रखा जाता हो। किसी काम या बात के लिए निश्चित रूप से पृथक् करने अथवा रखने की क्रिया या भाव। (रिज़र्वेशन) जैसे—रंग-मंच पर संसद् के सदस्यों (अथवा स्त्रियों) के लिए होनेवाला आसनों या स्थानों का प्रारक्षण।

प्रारक्षित—भू० कृ० [सं० प्र—अ√रक्ष+क्त] जिसका या जिसके संबंध में प्रारक्षण हुआ हो। किसी विशिष्ट उद्देश्य से या विशिष्ट व्यक्ति के लिए अलग किया या रखा हुआ। (रिज़र्वड) जैसे—इस विभाग में प्रारक्षित १० पद हरिजनों (या पिछड़ी हुई जातियों के लोगों) के लिए है।

प्रारब्ध—वि० [सं० प्र—आ√रभ्+क्त] (काम) आरंभ किया हुआ। जो शुरू किया गया हो।

पु० १. पूर्व जन्म अथवा पूर्वकाल में किये हुए अच्छे और बुरे वे कर्म जिनका वर्तमान में फल भोगा जा रहा हो।२ उक्त कर्मों का फलभोग। विशेष—इसके दो मुख्य भेद हैं—(क) संचित प्रारब्ध जो पूर्व जन्मों के कर्मों के फल-स्वरूप होता है, और (ख) क्रियमान प्रारब्ध जो इस जन्म में किये हुए कर्मों के फलस्वरूप होता है। इसके सिवा अनिच्छा प्रारब्ध, परेच्छा प्रारब्ध और स्वेच्छा प्रारब्ध नाम के तीन गौण भेद भी हैं।

३. किस्मत। तकदीर। भाग्य।

प्रारब्धि—स्त्री० [सं० प्र-आ√रभ्+क्तिन्] १ आरंभ। २ हाथी बाँधने का रस्सा।

प्रारब्धी (ब्धिन्)—वि० [सं० प्रारब्ध+इनि] भाग्यवाला। भाग्यवान्।

प्रारूप—पु०=प्रालेख। 'प्रारूप' व्याकरण से असिद्ध है।

प्रारूपिक—वि० [सं० प्रारूप+ठक् इक।] गुण, रूप आदि के विचार से जो अपने वर्ग की सब विशेषताओं से युक्त हो और अपने वर्ग के प्रतिनिधि या प्रतीक का काम देता हो। प्ररूपी। (टिपिकल)

प्रार्ज्जुन—पु० [सं०] एक प्राचीन देश।

प्रार्थक—वि० =प्रार्थी।

प्रार्थन—पुं० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+ल्युट्—अन] प्रार्थना करने की क्रिया या भाव।

प्रार्थना—स्त्री० [सं० प्र√अर्थ+णिच् युच्-अन, टाप्] १. नम्रतापूर्वक निवेदित की जानेवाली बात। निवेदन। (रिक्वेस्ट) २. भक्ति और श्रद्धापूर्वक ईश्वर, देवता आदि से अपने किसी के अथवा सबके कल्याण के लिए कही जानेवाली बात। ३ विशिष्ट संप्रदायों आदि के वे गेय पद जिनमें मंगल-कामना के भाव होते है। ४. तंत्र में, प्रार्थना के समय की एक विशिष्ट मुद्रा। ५. मुकदमे के आरंभ के लिए न्यायालय से किया जानेवाला लिखित निवेदन। अरजी-दावा। ६. इच्छा। †स० प्रार्थना करना।

प्रार्थना-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी। जैसे—अमुक बालक का छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र आया था।

प्रार्थना-भंग—पुं० [ष० त०] प्रार्थना अस्वीकृत करना।

प्रार्थना-समाज—पु० [सं० ष० त०] एक आधुनिक संप्रदाय जिसके अनुयायी महाराष्ट्र की ओर अधिक है।

प्रार्थनीय—वि० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+अनीयर] जिसके संबंध में प्रार्थना की गई हो या की जाने को हो।

पु० द्वापर युग।

प्रार्थयितव्य—वि० [सं० प्र√अर्थ्+णिच्√तव्यत्] जिसके लिए या जिससे प्रार्थना की जा सके या की जाने को हो।

प्रार्थयिता (तृ)—वि० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+तृच्]=प्रार्थी।

प्रार्थित—भू० कृ० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+क्त] जिसके लिए प्रार्थना की गई हो। माँगा हुआ। याचित।

प्रार्थी (थिन्)—वि० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+णिनि] [स्त्री प्रार्थिनी] १ प्रार्थना करनेवाला। याचक। २ प्रार्थना-पत्र देनेवाला। ३. इच्छुक। ४. उम्मीदवार।

प्रार्थ्य—वि०=प्रार्थनीय।

प्रालंब—पु० [सं० प्र-आ लम्ब् (लटकना)+अच्] १ रस्सी या ऐसी ही कोई चीज जो किसी ऊँची वस्तु में टँगी और लटकती हो। २ ऐसी माला या हार जो पहना जाने पर छाती तक लटकता हो।

प्रालंबक—पु० [सं० प्रालंब+कन्] [स्त्री० प्रालंबिका] छाती तक लटकने-वाली माला या हार।

प्राल†—पु०=पराल।

प्रालब्ध—पु०=प्रारब्ध।

प्रालेख—पु० [सं० प्र-अ√लिख् (लिखना)+घञ्] लेख, लेख्य, विधान आदि का वह टंकित-मुद्रित या हस्तलिखित आरंभिक रूप जो काट-छाँट, संशोधन आदि के लिए तैयार किया जाता है। खाका। मसौदा। (ड्राफ्ट)

प्रालेय—वि० [सं० प्रलय+अण् नि० एत्व, अथवा प्र-आ√ली (मिल जाना) +यत्] प्रलय-संबंधी। उदा०—व्यस्त बरसने लगा अश्रुमय यह प्रालेय हलाहल नीर। —प्रसाद।

पु० १ तुषार। २. बरफ। हिम। ३. भूगर्भशास्त्रानुसार वह समय जब बहुत अधिक हिम पड़ने के कारण उत्तरीय ध्रुव पर सब पदार्थ नष्ट हो जाते हैं और शीत की अधिकता के कारण कोई जंतु या वनस्पति वहाँ नही रह सकती।

प्रालेय-रश्मि—पु० [ब० स०] चंद्रमा।

प्रालेयांशु—पु० [सं० प्रालेय-अंशु, ब० स०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

प्रालेयाद्रि—पु० [सं० प्रालेय-अद्रि, ष० त०] हिमालय।

प्रावट—पु० [सं० प्र√अव् (रक्षण, गति आदि) +अट] जौ। यव।

प्रावर—पु० [सं० प्रआ√वृ (घेरना)+अप्] प्राचीर। चहार-दीवारी।

प्रावरण—पु० [सं० प्र—आ√वृ+ल्युट्—अन] १. ढाँकने का कपड़ा। आवरण। २ ढकना। ढक्कन। ३. उत्तरीय या ओढ़ने का कपड़ा। चादर।

प्रावरणीय—पु० [स० प्र—आ√वृ+अनीयर] ओढने का वस्त्र। उपरना या दुपट्टा।
वि० जिससे कुछ ढका जाय या ढाका जा सके।

प्रावर्तन—पु० [स० प्र—आ√वृत् (वरतना)+ल्युट्—अन] दे० 'परावर्तन'।

प्रावसादन—पु० [स० प्र+अवसादन] १ वह स्थिति जिसमे मनुष्य थक या हारकर अकर्मण्य अक्रिय या उत्साहहीन हो। २ किसी तत्व या पदार्थ की वह स्थिति जिसमे वह अपनी क्रियाशीलता, शक्ति आदि से रहित होकर कुठित हो रहा हो। ३ बाजार, रोजगार आदि मे बेकारी या मदी की स्थिति। ४ आकाश मे वातावरण के दवाव का कम होना जिससे तापमापक आदि का पारा गिर जाता है। (डिप्रेशन, उक्त सभी अर्थो मे)

प्रावार—पु० [स० प्र-आ√वृ+घञ्] [वि० प्रावारिक] १ एक प्रकार का प्राचीनकाल का बहुमूल्य कपड़ा। २ उत्तरीय वस्त्र।

प्रावारक—पु० [स० प्रावार+कन्] ओढने का वस्त्र। उत्तरीय।

प्रावारिक—वि० [स० प्रावार+ठक्—इक] प्रावार-सबधी।
पु० प्रवार बनानेवाला कारीगर।

प्रावालिक—पु० [स० प्रवाल+ठक्-इक] प्रवाल या मूँगे का व्यापार करनेवाला व्यापारी।

प्रावास—वि०=प्रावासिक।

प्रावासिक—वि० [स० प्रवास+ठक्—इक्] १ प्रवास-संबधी। प्रवास का। २. जो प्रवास या यात्रा के लिए उपयुक्त हो।

प्राविट—स्त्री० [स० प्रावृट्] पावस। वर्षा ऋतु।

प्राविधानिक—वि० [स० प्रविधान+ठक्—इक] १ प्रविधान-सबधी। २ प्रविधान के रूप मे होनेवाला।

प्राविधिक—वि० [स० प्रविधि+ठक्—इक्] १ प्रविधि-सबधी। प्रविधि का। कला, शिल्प, यत्र आदि से सबधित। (टेकनिकल) २. किसी कार्य की विशिष्ट प्रायौगिक तथा व्यावहारिक प्रक्रियाओ से सबध रखनेवाला। तकनीकी। (टेकनिकल)

प्राविधिकता—स्त्री० [स० प्राविधिक+तल्—टाप्] १ प्राविधिक होने की अवस्था या भाव। २. प्राविधिज्ञ को होनेवाली जानकारी। ३. ऐसी बात जिसका सबध किसी प्राविधिज्ञ से हो और जिसका वही जानकार हो। (टेक्नीकेलिटी)

प्राविधिज्ञ—पु० [स० प्रविधिज्ञ] दे० 'प्रविधिज्ञ'।

प्राविष्ट्य—पु० [स०] क्रौचद्वीप के एक खड का नाम। (केशव)

प्रावीण्य—पु० [स० प्रवीण+ष्यञ्] प्रवीणता।

प्रावृट्—पु० [स० प्र√वृष् (वरसना)+क्विप्, दीर्घ] वर्षा ऋतु।

प्रावृत—पु० [स० प्र—आ√वृ (आच्छादित करना)+क्त] १ ओढने का कपडा। चादर। २ ढकने का कपडा। आच्छादन।
वि० १ घिरा हुआ। २ ढका हुआ। आवृत।

प्रावृति—स्त्री० [स० प्र—आ√वृ+क्तिन्] १ प्राचीर। चहारदीवारी। २ जैनो के अनुसार आत्मा की शक्ति को आच्छादित करनेवाला मल। ३ आध्यात्मिक अज्ञान।

प्रावृत्तिक—पु० [स० प्रवृत्ति+ठक्—इक] [स्त्री० प्रावृत्तिका] संदेशवाहक दूत।
वि० १. प्रवृत्ति-सबधी। २. गौण। ३ विशेष जानकारी रखनेवाला।

प्रावृष्—स्त्री० [स० प्र√वृष्+क्विप्, दीर्घ] वर्षा ऋतु।

प्रावृषा—स्त्री० [स० प्रावृष्+टाप्] वर्षा ऋतु।

प्रावृषिक—वि० [स० प्रावृषि√कै+क, अलुक् स०] १. वर्षा ऋतु-सबधी। २ वर्षा ऋतु मे होनेवाला।
पु० मयूर। मोर।

प्रावृषिज—पु० [स० प्रावृषि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] वरसाती तेज हवा।
वि० वर्षा ऋतु मे होनेवाला।

प्रावृषीण—वि० [स० प्रावृष्+ख—ईन] =प्रावृषिज।

प्रावृषेय—वि० [स० प्रावृष्+ढक्—एय] वर्षा ऋतु मे होनेवाला।
पु० एक प्राचीन देश का नाम।

प्रावृष्य—वि० [स० प्रावृष्+यत्] जो वर्षा काल मे हो।
पु० १ वैदूर्य मणि। २ कुटज। कुटैया। ३ धारा कदव। ४ विकटक।

प्रावेण्य—पु० [स०] प्राचीन काल की एक तरह की बढिया ऊनी चादर।

प्रावेशन—वि० [स० प्रवेशन+अण्] १ प्रवेश-सबधी। २ कही प्रवेश करने के समय किया या दिया जाने वाला।
पु० निमार्णशाला।

प्रावेशिक—वि० [स० प्रवेश+ठञ्—इक] [स्त्री० प्रावेशिकी] १ प्रवेश-सबधी। २. जिसके कारण या द्वारा प्रवेश हो। ३ प्रवेश करने के लिए शुभ।

प्राव्राज्य—वि० [स० प्रव्रज्या+अण्] प्रव्रज्या अर्थात् संन्यास संबधी।
पु० १ सन्यासियों का जीवन। २. घूमते रहने की प्रवृत्ति। घुमक्कडपन।

प्राश—पु० [स० प्र√अश् (खाना)√घञ्] १ भोजन करना। २ स्वाद लेना। चखना। आहार। भोजन।

प्राशक—वि० [स० प्र√अश्+ण्वुल्—अक] १ खाने या भोजन करनेवाला। २. चखने या चाटने वाला।

प्राशन—पु० [स० प्र√अश्+ल्युट्—अन] १. भोजन करना। खाना। २ चखना या चाटना। ३ अन्न-प्राशन।

प्राशनीय—वि० [स० प्र√अश्+अनीयर्] १ प्राशन अर्थात् खाने या चखने के योग्य। २. जो खाया या चखा जाने को हो।

प्राशस्त्य—पु० [स० प्रशस्त+ष्यञ्] प्रशस्तता।

प्राशास्त्र—पु० [स० प्रशास्तृ+अण्] १. प्रशास्ता नामक ऋत्विक का कर्म या पद। २ शासन। ३ राज्य।

प्राशित—भू० कृ० [स० प्र√अश्+क्त] १. खाया या चखा हुआ। २ जिसका उपभोग किया गया हो।
पु० [प्र-अशित, ब० स०] १ पितृ-यज्ञ। तर्पण। २ भक्षण। खाना।

प्राशित्र—पु० [स०] यज्ञो मे पुरोडाश आदि मे से काटकर निकाला हुआ वह छोटा टुकडा जो ब्राह्मण के लिए एक पात्र मे अलग रखा जाता था। २. गाय के कान की तरह का एक पात्र जिसमे उक्त पदार्थ रखा जाता था। ३. कोई खाद्य पदार्थ।

प्राशी (शिन्)—वि० [स० प्र√अश्+णिनि] [स्त्री० प्राशिनी] प्राशन करने अर्थात् खाने या चखनेवाला। प्राशक।

प्राश्निक—वि० [सं० प्रश्न+ठक्—इक] १ प्रश्न करने या पूछनेवाला। २. प्रश्न से संबंध रखने या प्रश्न के रूप में होनेवाला। ३. (पत्र आदि) जिसमें बहुत से प्रश्न लिखे हुए हों। ४. (व्यक्ति) जो अनेक प्रश्न करता हो। (क्वेश्चनर)
पु० १ प्रश्न-कर्त्ता। २ वह जो प्रश्न-पत्र (परीक्षार्थियों के लिए) तैयार करता या बनाता हो। (एग्जामिनर) ३. सभासद। ४. पंच। मध्यस्थ।

प्राश्य—वि० [सं० प्र√अश्+ण्यत्] प्राशन के योग्य। जो खाया जा सके।

प्रासंग—पु० [सं०√सन्ज् (सटना)+घञ्] १. हल का जूआ या जुआठ, जिसमें नये बैल निकाले जाते हैं। २ तराजू की डंडी। ३ तराजू। तुला।

प्रासंगिक—वि० [सं० प्रसंग+ठञ्—इक] १ प्रसंग-संबंधी। प्रसंग का। २ प्रस्तुत प्रसंग से संबंध रखनेवाला। ३. किसी अवसर, विषय आदि के अनुकूल और प्रसंग-प्राप्त। (रेलेवेन्ट, उक्त दोनों अर्थों में)
पु० दृश्य काव्य में कथा-वस्तु के दो अंगों में से वह दूसरा अंग जो मूल या आधिकारिक अंश में प्रसंगात् सहायक होता है। दे० 'आधिकारिक' (दृश्य काव्य का)।

प्रास—पु० [सं० प्र√अस् (फेंकना)+घञ्] १. फेंकना। २. पुरानी चाल का एक तरह का भाला जो फेंककर चलाया जाता था। ३. आजकल, उतनी क्षैतिज दूरी जितनी कोई चलाई या फेंकी जानेवाली चीज पार करती है। मार। ४ वह पूरी दूरी या विस्तार जिसमें कोई चीज होती, रहती, सुनी जाती या कार्यकारी होती हो। (रेंज, अंतिम दोनों अर्थों में)

प्रासक—पु० [सं० प्रास+कन्] १ प्रास नामक अस्त्र। २ जूआ खेलने का पासा। पासक।

प्रासन—पु० [सं० प्र√अस्+ल्युट्—अन] फेंकना।
पु० दे० 'प्रासायन'।
†पु०=प्राशन।

प्रासना—स० [सं० प्राशन] खाना या चाटना। उदा०—प्रासै जो बीजी पग्ग।—प्रिथीराज।

प्रासमिक—वि० [सं० प्रसम+ठञ्—इक] १ प्रसम-संबंधी। प्रसम का। २ प्रसम।

प्रासविक—वि० [सं० प्रसव+ठक्-इक] १ प्रसव-संबंधी। २ प्रासविक-विज्ञान-संबंधी। (आब्स्टेट्रिकल)

प्रासविक-विज्ञान—पु० [सं० कर्म० स०] दे० 'प्रसूति-विज्ञान'।

प्रासविकी—स्त्री०=प्रासविक विज्ञान।

प्रासाद—पु० [सं० प्र√सद्+घञ्–दीर्घ] १. वह विशाल इमारत जिसमें अनेक खंड, शृंखलाएँ, अंटकादि हों। २ राज-भवन। राज-महल। ३ बौद्धों के संघाराम में वह बड़ी शाला जिसमें साधु लोग एकत्र होते थे। ४ देवमंदिर। देवालय।

प्रासादिक—वि० [सं० प्रसाद+ठञ्-इक] १. सहज में प्रसन्न होकर कृपा करने या दया दिखानेवाला। २ प्रसाद के रूप में दिया जाने या मिलनेवाला। ३ सुंदर। ४. प्रासाद-संबंधी।

प्रासादीय—वि० [सं० प्रासाद+छ-ईय] १ प्रासाद अर्थात् राजमहल संबंधी। २ विशाल। ३ भव्य तथा सुसज्जित।

प्रासायन—पु० [सं० प्रास-अयन उपमित स०] १. आयुध शास्त्र में, वह अर्ध चक्राकार मार्ग जिससे होकर तोप या बंदूक का गोला या गोली नाल में से निकलकर निशाने तक पहुँचती है। (ट्रैजेक्टरी) २. दे० 'प्रक्षेप-वक्र'।

प्रासिक—वि० [सं० प्रास+ठक्–इक] १ जिसके पास प्रास अर्थात् भाला हो। २ प्रास-संबंधी। प्रास का। प्रासीय।

प्रासूतिक—वि० [सं० प्रसूति+ठञ्–इक्] प्रसूति संबंधी।

प्रास्तारिक—वि० [सं० प्रस्तार+ठञ्–इक] १. प्रस्तार-संबंधी। २ जिसका व्यवहार प्रस्तार में हो। प्रस्तार में काम आनेवाला।

प्रास्ताविक—वि० [सं० प्रस्ताव+ठञ्–इक] १. प्रस्ताव के रूप में होनेवाला। २ प्रस्तावना के रूप में होनेवाला। ३. प्रासंगिक। प्रसंग-प्राप्त।

प्रास्थानिक—पु० [सं०प्रस्थान+ठञ्–इक] वह पदार्थ जो प्रस्थान के समय मंगलकारक माना जाता हो। जैसे शंख की ध्वनि, दही, मछली आदि।
वि० १ प्रस्थान-संबंधी। २ (समय आदि) जो प्रस्थान करने के लिए शुभ हो।

प्रास्थिक—वि० [सं० प्रस्थ+ठञ्–इक] १ प्रस्थ-संबंधी। २. प्रस्थ (तौल या मान) के हिसाब से दिया या लिया जानेवाला। ३. पाचन करानेवाला। पाचक।

प्राहरिक—पु० [सं० प्रहर+ठक्—इक] १. चौकीदार। पहरुआ। २. प्रहरियों का प्रधान अधिकारी।

प्राहुण—पु० [सं० प्रहुण+अण्] अतिथि। पाहुन।

प्राहुणक—पु० [सं० प्राहुण+कन्] प्राहुण।

प्राह्ण—पु० [सं० प्र-अहन् प्रा० स०, टच्]=पूर्वाह्न।

प्राह्लाद—पु० [सं० प्रह्लाद+अण्] प्रह्लाद का वंशज।

प्रिथिमी†—स्त्री०=पृथ्वी।

प्रियंकर—वि० [सं० प्रिय√कृ+खच्, मुम्] प्रसन्न करनेवाला।

प्रियंकरी—स्त्री० [सं० प्रियंकर+ङीप्] १. सफेद कटेरी। २ बड़ी जीवती। ३ असगंध।

प्रियंगु—स्त्री० [सं० प्रिय√गम् (जाना)+कु, मुम्] १ कँगनी नाम का अन्न। २ राजिका। राई। ३ पिप्पली। ४. कुटकी।

प्रियंवद—वि० [सं० प्रिय√वद् (बोलना)+खच्, मुम्] [स्त्री० प्रियंवदा] प्रिय या मधुर बोलनेवाला। प्रिय-भाषी।
पु० चिड़िया। पक्षी।

प्रियंवदा—स्त्री० [सं० प्रियंवद+टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक एक नगण, भगण, जगण और रगण होता है और ४-४ पर यति होती है।

प्रिय—वि० [सं०√प्री (तृप्त करना)+क] [भाव० प्रियता, प्रियत्व,] [स्त्री० प्रिया] १ जिसके प्रति बहुत अधिक प्रेम हो। बहुत प्यारा। २. पत्र लेखन में, सौजन्यपूर्वक किसी का आदर, महत्त्व आदि सूचित करने के लिए प्रयुक्त होनेवाला संबोधक विशेषण। जैसे—प्रिय महोदय। ३ मनोहर या सुंदर।
पु० १. पति या प्रेमी। २ जामाता। दामाद। ३ ईश्वर। ४ कार्तिकेय। ५. भलाई। हित। ६ ऋद्धि नामक ओषधि। ६ जीवक नामक ओषधि। ७. कँगनी नामक कदन्न। ८ हरताल। ९. बेंत। १०. धारा कदंब। ११ एक प्रकार का हिरन।

प्रियक—पु० [स० प्रिय+ककन् वा] १ पीत शालक। पीत साल। २ कदम का पेड। ३. कँगनी नाम का अन्न। ४ केसर। ५ धारा कदव। ६. चितकवरा हिरन। ७. शहद की मक्खी। ८ एक प्रकार का पक्षी।

प्रियकांक्षी (क्षिन्)—वि० [स० प्रिय√काङक्ष्, (चाहना)+णिनि] शुभा-मिलापी। हितैपी।

प्रिय-काम— वि० [स० व० स०]=प्रियकांक्षी।

प्रियकृत्—पु० [स० प्रिय√कृ+क्विप् तुक्] विष्णु।

प्रिय-जन—पु० [स० कर्म० स०] १ स्नेहपात्र व्यक्ति। २. सगा-सवधी। ३ सौजन्यपूर्वक श्रोताओ को सवोधित करने के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

प्रियतम—वि० [स० प्रिय√तमप्] [स्त्री० प्रियतमा] जो सबसे अधिक प्रिय हो। परम प्रिय। उदा०—प्रियतम सुअन सँदेश सुनाओ।—तुलसी।

पु० १. स्त्री का पति। स्वामी। २ प्रेमी। ३. मोर-शिखा नामक वृक्ष।

प्रियतमा—स्त्री० [स० प्रियतम+टाप्] १ पत्नी। २ प्रेमिका। माशूका।

वि० प्रियतम का स्त्री० रूप।

प्रियता—स्त्री० [स० प्रिय+तल्-टाप्] प्रिय होने की अवस्था, गुण या भाव। (प्राय समस्त पदो के अत मे प्रयुक्त) जैसे—जन-प्रियता, लोक-प्रियता।

प्रिय-तोषण—पु० [स० प्रिय√तुष् (प्रीति)+णिच्+ल्युट्-अन] एक प्रकार का रतिवध। (काम-शास्त्र)

प्रियत्व—पु० [स० प्रिय+त्व]=प्रियता।

प्रियद—वि० [स० प्रिय√दा (देना)+क] प्रिय वस्तु देनेवाला।

प्रिय-दत्ता—स्त्री० [स० तृ० त० वा च० त० ?] भूमि, विशेपत. दान की जानेवाली भूमि।

प्रिय-दर्शन—वि० [स० व० स०] [स्त्री० प्रियदर्शना] १ जो देखने मे भला और सुखद प्रतीत होता हो। २ मनोहर। सुदर।

पु० १ तोता। शुक। २ खिरनी का पेड। ३ एक गधर्व राजा।

प्रिय-दर्शी (र्शिन्)—वि० [स० प्रिय√दृश् (देखना)+णिनि] [स्त्री० प्रियदर्शिनी] प्रेमपूर्वक किसी को या दूसरो को देखनेवाला।

पु० अशोक वृक्ष।

प्रिय-पात्र—वि० [स० कर्म० स०] प्रेम-पात्र। प्यारा।

प्रियभाषी (षिन्)—वि० [स० प्रिय√भाष् (वोलना)+णिनि] [स्त्री० प्रियभाषिणी] मधुर वचन बोलनेवाला। मीठी बात कहनेवाला।

प्रिय-रूप—वि० [स० व० स०] मनोहर। सुदर।

प्रिय-वक्ता (क्तृ)—वि० [स० प० त० स०]=प्रियभाषी।

प्रिय-वर—वि० [स० स० त०] प्रिय या प्यारो मे श्रेष्ठ। वहुत प्रिय। (इसका व्यवहार प्राय पत्रो आदि मे सवोधन के रूप मे होता है।)

प्रियवादी (दिन्)—पु० [स० प्रिय√वद् (वोलना)+णिनि) [स्त्री० प्रियवादिनी] प्रिय वचन कहनेवाला। मधुर-भाषी।

प्रिय-व्रत—पु० [स० व० स०] १. स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम जो उत्तानपाद का भाई था।

वि० जिसे व्रत प्रिय हो।

प्रिय-श्रवा (वस्)—पु० [स० व० स०] १ भगवान कृष्ण। २ विष्णु।

प्रिय-संगमन—पु० [स० व० स०] वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका अभिसार करते हो। सकेत-स्थल।

प्रिय-संदेश—पु० [स० प्रिय-सम्√दिश् (बताना)+अण, उप० स० भावे घञ्, ष० त०] चपा का पेड।

प्रिय-सख—पु० [स० कर्म० स०प० त० वा] खैर का पेड।

प्रियांबु—पु० [स० प्रिय-अम्बु व० स०] १ आम का पेड या उसका फल।

वि० जिसे जल बहुत प्रिय हो।

प्रिया—स्त्री० [स० प्रिय+टाप्] १. नारी। स्त्री। २ पत्नी। भार्या। ३. प्रेमिका। ४ इलायची। ५ चमेली। मल्लिका। ६ मद्य। शराव। ७. कँगनी नामक अन्न। ७ एक प्रकार का वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे रगण (ऽ।ऽ) होता है, इसका दूसरा नाम मृगी है। ८. चौदह मात्राओ का एक छद।

प्रियाख्य—वि० [स० प्रिय-आख्या व० स०] प्रिय। प्यारा।

प्रियात्मा (त्मन्)—पु० [स० प्रिय-आत्मन् व० स०] जिसका चित्त उदार और सरल हो।

प्रियाल—पु० [स० प्रिय√अल् (पर्याप्त होना)+अच्] चिरौंजी का पेड।

प्रियाला—स्त्री० [स० प्रियाल+टाप्] दाख।

प्रियोक्ति—स्त्री० [स० प्रिया-उक्ति, कर्म० स०] १ मधुर कथन। २. चापलूसी। खुशामद।

प्री—स्त्री० [स०√प्री (तृप्त करना)+क्विप्] १ प्रेम। प्रीति। २. काति। चमक। ३ इच्छा। ४. तृप्ति। ५. तर्पण।

वि०=प्रिय।

प्रीअंक—पु०=प्रियक (कदव)।

प्रीणन—पु० [स०√प्री+णिच्, नुक् ल्युट्-अन] किसी को प्रसन्न तथा सतुष्ट करना।

वि० प्रसन्न तथा सतुष्ट करनेवाला।

प्रीणित—भू० कृ० [स०√प्री+णिच्, नुक्+क्त] प्रसन्न तथा सतुष्ट किया हुआ।

प्रीत—वि० [स०√प्री+क्त] १ जिसके मन मे प्रीति उत्पन्न हुई हो। २ जो किसी पर प्रसन्न हुआ हो। ३ प्यारा। प्रिय।

† स्त्री०=प्रीति।

मुहा०—प्रीत मानना*=प्रीति करनेवाले की प्रीति से प्रसन्न होकर उससे प्रीति करना।

प्रीतम—वि०, पु=प्रियतम।

प्रीतात्मा (त्मन्)—पु० [स० प्रीत-आत्मन् व० स०] शिव।

प्रीति—स्त्री० [स०√प्री+क्तिन्] १ किसी के हृदय मे होनेवाला वह सद्-भाव जो वरवस किसी दूसरे के प्रति ध्यान ले जाता है और उसके प्रति ममत्व की भावना उत्पन्न करता है। २ प्रेम। प्यार। ३ आनद। हर्ष। ४. कामदेव की एक पत्नी। ५ सगीत मे, मध्यम स्वर की चार श्रुतियो मे से अतिम श्रुति। ६ फलित ज्योतिप के २७ योगो मे से दूसरा योग जिसमे शुभ कर्म करने का विधान है।

प्रीति-कर—वि० [स० प० त०] प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। प्रेमजनक।

प्रीतिकारक, प्रीतिकारी—वि०=प्रीति-कर।

प्रीतिद—वि० [स० प्रीति√दा+क] सुख या प्रेम उत्पन्न करनेवाला।

पु० १. विदूपक। २ भाँड़।

प्रीति-दान—पुं० [सं० तृ० त०] १ प्रेमपूर्वक दी जानेवाली कोई वस्तु। २. विशेषतः वह वस्तु जो सास अथवा ससुर अपने जामाता या पुत्र-वधू को, या पति अपनी पत्नी को प्रेम-पूर्वक भोग के लिए दे।

प्रीति पात्र—पुं० [सं० ष० त०] वह जिससे प्रीति या प्रेम किया जाय। प्रेम-भाजन।

प्रीति-भोज—पुं० [सं० तृ० त० स०] किसी मांगलिक या सुखद अवसर पर इष्ट-मित्रों तथा बंधु-बांधवों को अपने यहाँ बुलाकर कराया जानेवाला भोजन। दावत।

प्रीतिमान् (मत्)—वि० [सं० प्रीति+मतुप्] प्रेम रखनेवाला। जिसमें प्रेम-भाव हो।

प्रीति-रीति—स्त्री० [सं० ष० त०] वे कार्य जो प्रीति निभाने के लिए आवश्यक माने जाते हों।

प्रीति-विवाह—पुं० [सं० तृ० त०] पारस्परिक प्रेम संबंध के फलस्वरूप होनेवाला विवाह। (माता-पिता की इच्छा से किये जानेवाले विवाह से भिन्न।)

प्रीत्यर्थ—अव्य० [सं० ष० त०] १. प्रीति के कारण। २. किसी को प्रसन्न करने के लिए। जैसे—विष्णु के प्रीत्यर्थ दान करना।

प्रूफ—पुं० [अं०] १ दे० 'प्रमाण'। २ छपाई में किसी छपनेवाली चीज का वह आरंभिक नमूना जो छपाई संबंधी भूलें ठीक करने के उद्देश्य से छापा जाता है।

प्रूफ-रीडर—पुं० [अं०] वह जो छपनेवाली चीज या प्रूफ देखकर छापेवाली भूलें ठीक करता हो।

प्रूम—पुं० [?] नदी, समुद्र आदि की गहराई जानने का एक छोटा यंत्र जो सीसे का बना हुआ और लट्टू के आकार का होता है और जो डोरी के सहारे नीचे तल तक लटकाया जाता है।

प्रेंख—पुं० [सं० प्र√इङ्ख्+घञ्] १. झूलना। पेंग लेना। २. एक प्रकार का साम-गान।

वि० जो काँप, झूल या हिल रहा हो।

प्रेंखण—पुं० [सं० प्र√इङ्ख्+ल्युट्—अन] अच्छी तरह हिलना या झूलना। २. अठारह प्रकार के रूपकों में से एक प्रकार का रूपक जिसमें वीर रस की प्रधानता रहती है।

प्रेंखा—स्त्री० [सं० प्र√इङ्ख्√अ—टाप्] १ हिलना। २. झूलना। ३. यात्रा। ४. नाच। नृत्य। ५. घोड़े की चाल।

प्रेंखोलन—पुं० [सं०+प्रेङ्खोल् (चलना) ल्युट्—अन] १ झूलना। २. काँपना।

प्रेक्षक—पुं० [सं० प्र√ ईक्ष्+ण्वुल्—अक] १. वह जो खेल-तमाशा या ऐसा ही और काम या बात चाव से या ध्यानपूर्वक देखता हो। दर्शक। २ वह जो किसी काम, चीज या बात को किसी विशिष्ट उद्देश्य से बहुत ध्यानपूर्वक देखता रहता हो। (अबसर्वर)

प्रेक्षण—पुं० [सं० प्र√ईक्ष्+ल्युट्—अन] १. किसी काम, चीज या बात को किसी विशेष उद्देश्य से ध्यानपूर्वक देखते रहने का भाव (अब्सर्वेन्स) २. आँख।

प्रेक्षण-कूट—पुं० [सं० ष० त०] आँख का ढेला।

प्रेक्षणीय—वि० [सं० प्र√ईक्ष्+अनीयर्] जो देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय।

प्रेक्षा—स्त्री० [सं० प्र√ईक्ष्+अ—टाप्] १ देखना। २ दृष्टि। निगाह। ३. नाच-तमाशा, नाटक आदि देखना। ४ प्रज्ञा। बुद्धि। ५. नाच, तमाशा, अभिनय आदि। ६ किसी विषय की अच्छी और बुरी बातों का विचार करना। ७. वृक्ष की शाखा। डाल। ८. शोभा।

प्रेक्षाकारी (रिन्)—वि० [सं० प्रेक्षा√कृ+णिनि] सोचसमझ कर काम करनेवाला।

प्रेक्षागार—पुं०=प्रेक्षा-गृह।

प्रेक्षा-गृह—पुं० [सं० ष० त०] १ प्राचीन काल में राज-महल का वह कमरा जहाँ राजा मंत्रियों से मंत्रणा करते थे। २. नाटकों के अभिनय आदि के लिए बनी हुई रंग-शाला।

प्रेक्षावान् (वत्)—वि० [सं० प्रेक्षा+मतुप्] सोच-समझ कर काम करनेवाला।

प्रेक्षा-समाज—पुं० [सं०] दर्शकों का समूह। दर्शक-वृंद।

प्रेक्षित—भू० कृ० [सं० प्र√ईक्ष्+क्त] अच्छी तरह और ध्यानपूर्वक देखा हुआ।

प्रेक्षिता (तृ)—पुं० [सं० प्र√ईक्ष्+तृच्]=प्रेक्षक।

प्रेक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं० प्रेक्षा+इनि] १. प्रेक्षक। २ बुद्धिमान। समझदार।

प्रेक्ष्य—वि० [सं० प्र√ईक्ष्+ण्यत्] १ अच्छी तरह देखे जाने के योग्य। २. जो देखा जाने को हो।

प्रेत—वि० [सं० प्र√इ (गति)+क्त] जो यह संसार छोड़कर चला गया हो, अर्थात् मरा हुआ या मृत।

पुं० [स्त्री० प्रेता, प्रेतनी] १ आत्मा जो शरीर से निकलकर और यह संसार छोड़कर चली जाती है। २ पुराणों के अनुसार वह सूक्ष्म शरीर जो आत्मा भौतिक शरीर छोड़ने पर धारण करती है।

विशेष—कहते हैं कि आत्मा को दुष्कर्मों के फल-भोग के लिए यह रूप धारण करना पड़ता है और गंदे स्थानों में रहकर बहुत ही घृणित कर्म करने पड़ते हैं। लोगों का विश्वास है कि यह कभी-कभी छाया रूप धारण करके अनेक प्रकार के अलौकिक, भयावने तथा विकट कार्य करता हुआ दिखाई देता है। पुराणों में भूतों को देवयोनियों के वर्ग में रखा गया है, और इनका रंग काला तथा आकार-प्रकार विकराल बतलाया गया है।

३. मृत व्यक्ति का शरीर। लाश। शव। ४. प्रेत-शरीर। (देखें) ५. पितर। ६ नरक में रहनेवाले प्राणी। ७ लाक्षणिक रूप में, बहुत बड़ा कंजूस या धूर्त व्यक्ति।

प्रेत-कर्म (र्मन्)—पुं० [सं० ष० त०] हिंदुओं में दाह आदि से लेकर सपिंडी तक के वे कृत्य जो मृतक को प्रेत शरीर से मुक्त कराने के उद्देश्य से किये जाते हों। प्रेत-कार्य।

प्रेत-कार्य, प्रेत-कृत्य—पुं०=प्रेतकर्म।

प्रेत-गृह—पुं० [सं० ष० त०] ऐसा स्थान जहाँ मृत शरीर गाड़े, जलाये या रखे जाते हों।

प्रेत-तर्पण—पुं० [सं० ष० त०] १. किसी मृतक के निमित्त उसके मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक किया जानेवाला तर्पण। २. किसी प्रेत के निमित्त वर्ष भर किया जानेवाला तर्पण।

प्रेतता—स्त्री० [सं० प्रेत+तल्—टाप्]=प्रेतत्व।

प्रेतत्व—पु०[स० प्रेत+त्व] प्रेत होने की अवस्था, धर्म या भाव। प्रेतता।

प्रेत-दाह—पु०[स० प० त०] मृत व्यक्ति के शरीर को जलाना।

प्रेत-देह—पु०=प्रेत-शरीर। (देखे)

प्रेत-नदी—स्त्री०[स० मध्य० स०] वैतरणी नामक पैशाचिक नदी।

प्रेतनी—स्त्री०[स० प्रेत+हि० नी (प्रत्य०)] १ स्त्री प्रेत। भूतनी। २ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत बडी धूर्त या अर्ध-पिशाच स्त्री।

प्रेत-पक्ष—पु०[स० मध्य० स०] पितृ-पक्ष।

प्रेत-पटह—पु०[स० मध्य० स०] पुरानी चाल का एक बाजा जिसके बजने पर यह जाना जाता था कि कोई मर गया है।

प्रेत-पति—पु०[स० प० त०] प्रेतो के स्वामी, यम।

प्रेत-पर्वत—पु०[स० मध्य० स०] गया तीर्थ के अन्तर्गत एक पर्वत।

प्रेत-पावक—पु०[स० प० त०] वह प्रकाश जो प्राय दलदलो, जगलो, कब्रिस्तानों आदि मे रात के समय जलता हुआ दिखाई पडता है। और जिसे लोग प्रेतों की लीला समझते है। लुक।

प्रेत-पिंड—पु०[स० च० त०] कर्मकाड मे अन्न आदि का बना वह पिंड जो किसी के मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक उसके नाम पर नित्य पारा जाता है।

प्रेत-पुर—पु०[स० प० त०] यमपुर।

प्रेत-भाव—पु०[स० प० त०] मृत्यु।

प्रेत-भूमि—स्त्री०[स० प० त०] =श्मशान।

प्रेत-मेध—पु०[स० प० त०] मृतक के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।

प्रेत-यज्ञ—पु०[स० मध्य० स०]एक प्रकार का यज्ञ जो कुछ लोग प्रेत-योनि प्राप्त करने के लिए करते थे।

प्रेत-राक्षसी—स्त्री०[स० प० त०] तुलसी (पौधा)। (ऐसा माना जाता है कि जहाँ तुलसी रहती है, वहाँ भूत-प्रेत नही आते)

प्रेतराज—पु०[स० प० त०] १ यमराज। २ शिव।

प्रेत-लोक—पु०[स० प० त०] यमपुर। यम-लोक।

प्रेत-वन—पु०[स० प० त०] श्मशान। मरघट।

प्रेत-वाहित—भू० कृ०[स० तृ० त०] जिस पर प्रेत या भूत का आवेश हो।

प्रेत-विधि—स्त्री०[स० प० त०] मृतक-सस्कार।

प्रेत-विमाना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] भगवती का एक रूप। (कहते है कि यह पाँच-प्रेतशरीरो पर सवार होकर आकाश मे विचरण करती है।)

प्रेत-शरीर—पु० [स० प० त०] पुराणो के अनुसार मृत व्यक्ति की जीवात्मा की वह अवस्था जिसमे वह तब तक लिंग-रूप मे, या सूक्ष्म शरीर धारण करके रहती है, जब तक उसका सपिंडी नामक श्राद्ध नही हो जाता। भोग-शरीर।

विशेष—कहते है कि सपिंडी हो जाने पर उसका प्रेतत्व नष्ट हो जाता है और वह अपने कर्मों का फल भोगने के लिए नरक या स्वर्ग मे चला जाता है।

प्रेत-शिला—स्त्री०[स० प० त०] गया तीर्थ की एक पहाडी। (कहते है कि जब तक यहाँ मृतक के उद्देश्य से पिंड दान न किया जाय, तब तक प्रेतत्व से उसकी मुक्ति नही होती।)

प्रेत-श्राद्ध—पु०[स० मध्य० स०] किसी के मरने की तिथि से एक वर्ष के अदर होनेवाले सोलह श्राद्धो मे से हर एक।

प्रेतहार—पु०[स० प्रेत√हृ+अण्] वह जो मृत शरीर उठाकर श्मशान तक ले जाने का व्यवसाय करता हो। मुरदा-फरोश।

प्रेता—स्त्री०[स० प्रेत+टाप्] १ स्त्री प्रेत। प्रेतनी। २. कात्यायनी देवी।

प्रेतात्मक—वि०[स० प्रेतात्मन् से] प्रेतात्मा-सबधी। प्रेतात्मा का। (स्पिरिचुअल)

प्रेतात्म-वाद—पु० [स० प० त०] यह विश्वास कि प्रेतात्माएँ जीवित व्यक्तियो से कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे अथवा कुछ विशिष्ट माध्यमो के द्वारा सबध स्थापित करती और वार्तालाप करती है। (स्पिरिचुअलिज्म)

प्रेतात्मवादिक—वि०[स० प्रेतात्मवाद+ठक्—इक] प्रेतात्म-वाद से सबध रखनेवाला। (स्पिरिचुअलिस्टिक)

प्रेतात्मवादी (दिन्)—पु० [स० प्रेतात्मवद्+णिनि] वह व्यक्ति, जिसका इस बात मे विश्वास हो कि प्रेतात्माएँ जीवित व्यक्तियो से सबध स्थापित करती और वार्तालाप करती है।

वि०=प्रेतात्मवादिक।

प्रेतात्मविद्या—स्त्री०[स० प० त०] वह विद्या जिसके द्वारा प्रेतात्माओ से सपर्क स्थापित करके वार्तालाप किया जाता है। (नाक्रोमैन्सी)

प्रेतात्मा (त्मन्)—स्त्री० [स० प्रेत-आत्मन्, मयू० स०] प्राणी, विशेषत मनुष्य की आत्मा की वह अवस्था या रूप जो उसे मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होता है और जो हिंदू शास्त्रकारो के अनुसार लिंग-शरीर (देखें) से युक्त होता है। (स्पिरिट)

प्रेतात्मिक—वि० [स० प्रेतात्मन्+ठक्—इक] १. प्रेतात्मा-सबधी। २ प्रेतात्माओ द्वारा किया जाने या होनेवाला।

प्रेताधिप—पु०[स० प्रेत-अधिप, प० त०] यमराज।

प्रेतान्न—पु०[स० प्रेत-अन्न मध्य० स०] १ पिंड जो प्रेतो के उद्देश्य से दिया जाता है। २ बिना घी के योग से पकाया जानेवाला भोजन।

प्रेतावास—पु०[स० प्रेत-आवास, प०त०] प्रेतो के रहने का स्थान। श्मशान।

प्रेताशी (शिन्)—वि० [स० प्रेत√अश् (खाना)+णिनि] [स्त्री० प्रेताशिनी] प्रेत अर्थात् मृत शरीर खानेवाला।

प्रेताशौच—पु०[स० प्रेत-अशौच, मध्य० स०] किसी सबधी के मरने पर होनेवाला अशौच। सूतक।

प्रेति—पु०[स० प्र√इ+क्तिन्] १ मरण। मृत्यु। २ अन्न। अनाज।

प्रेतिनी—स्त्री०=प्रेतनी।

प्रेती—पु०[स० प्रेत+हि० ई (प्रत्य०)] प्रेतात्माओ की पूजा करनेवाला तथा उन्हे प्रसन्न करके उनके द्वारा कुछ विशिष्ट काम करानेवाला व्यक्ति।

प्रेतेश—पु०[स० प्रेत-ईश, प० त०] यमराज।

प्रेतोन्माद—पु०[स० प्रेत-उन्माद मध्य० स०] प्रेत-बाधा अर्थात् प्रेतात्मा के प्रकोप से होनेवाला उन्माद।

प्रेम—पु०[स० प्रिय+इमनिच्, प्र आदेश][वि० प्रेमी] १ किसी के मन मे होनेवाला कोमल भाव जो किसी ऐसे काम, चीज, बात या व्यक्ति के प्रति होता है जिसे वह बहुत अच्छा, प्रशसनीय तथा सुदर समझता है अथवा जिसके साथ वह अपना घनिष्ठ सबध बनाये रखना चाहता है। प्रीति। मुहब्बत। जैसे—(क) काव्य, चित्रकला जाति, देश आदि के प्रति होनेवाला प्रेम। (ख) माता-पुत्र अथवा भाई-बहन मे होनेवाला प्रेम।

विशेष—अपने विशुद्ध और विस्तृत रूप मे यह ईश्वरीय तत्त्व या ईश्वरता का व्यक्त रूप माना जाता है और सदा स्वार्थ-रहित तथा दूसरो के सर्वतोमुखी कल्याण के भावो से ओतप्रोत होता है। इसमे दया, सहानुभूति आदि प्रचुर मात्रा मे होती है।

२ शृगारिक तथा साहित्यिक क्षेत्रो मे, वह मनोभाव जिसमे स्त्री और पुरुष दोनो एक दूसरे के गुण, रूप, व्यवहार स्वभाव आदि पर रीझकर सदा पास या साथ रहना और एक दूसरे को अपना बनाकर प्रसन्न तथा सतुष्ट रखना चाहते है। प्रीति। मुहब्बत।

विशेष—यह अनुराग तथा स्नेह का बहुत आगे बढा हुआ रूप है, और प्राय इसके मूल मे या तो काम-वासना या तृप्ति से प्राप्त होनेवाला सुख होता है, या काम-वासना की तप्ति करना इसका उद्देश्य होता है। अनुराग या स्नेह तो मुख्यत लैंगिक सम्बन्ध होने से पहले होते है, परन्तु प्रेम प्राय किसी न किसी प्रकार के शारीरिक सवध का परिचायक होता है। स्त्री-और पुरुष जाति के जीव-जतुओ मे यह मुख्यत कामज ही होता है।

३ केशव के अनुसार एक प्रकार का अलकार। ४ सासारिक बातो के प्रति होनेवाली माया या लोभ। ५ आनन्द। प्रसन्नता।

प्रेम-कलह—पु० [स० सुप्सुपा स०] प्रेम के प्रसग मे किया जानेवाला या होनेवाला झगडा।

प्रेम-गर्विता—स्त्री० [स० तृ० त०] साहित्य मे वह नायिका जो इस बात का गर्व या अभिमान करती है कि मेरा पति या प्रेमी मुझसे अधिक प्रेम करता है।

प्रेम-जल—पु० [स० ष० त० या मध्य० स०] प्रेमाश्रु।

प्रेमजा—स्त्री० [स०] मरीचि (ऋषि) की पत्नी का नाम।

प्रेम-नीर—पु० = प्रेमाश्रु।

प्रेमपात्र—पु० [स० ष० त०] [स्त्री० प्रेम-पात्री] १ वह व्यक्ति जिससे प्रेम किया जाय। २ वह जिस पर किसी की विशेष कृपा-दृष्टि हो।

प्रेम-पाश—स्त्री० [म०ष०त०] १ प्रेम का फदा या जाल। २ आलिगन।

प्रेम-पुलक—स्त्री० [स० तृ० स०] आवेग के कारण होनेवाला रोमाच।

प्रेम-भक्ति—स्त्री० [म० मध्य० स०]=प्रेम-लक्षणा।

प्रेम-मार्ग—पु० [स० ष० त०] वह मार्ग जो मनुष्य को सासारिक विषयो मे फसाता है। अविद्या-मार्ग।

प्रेम-लक्षणा—स्त्री० [स०ब०स०] भक्ति का वह प्रकार जिसकी साधना पुष्टमार्ग (देखे) मे होती है। उदा०—श्रवण, कीर्तन, पाद-रत, अरचन, वदन, दास, सख्य अरु आत्मनिवेदन प्रेम-लक्षणा जास।—सूर।

प्रेम-लेश्या—स्त्री० [स०] जैनों के अनुसार वह वृत्ति जिसके अनुसार मनुष्य विद्वान्, दयालु, विवेकी होता तथा निस्वार्थ भाव से सबसे प्रेम करता है।

प्रेमवती—स्त्री० [स० प्रेमन्+मतुप्] १ पत्नी। २ प्रेमिका।

प्रेम-वारि—पु०=प्रेमाश्रु।

प्रेमा—पु० [स० प्रेमन्] १ प्रेम। २ प्रेमी। ३ इद्र। ४ वायु। ५ उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद जिसके पहले, दूसरे और चौथे चरणो मे क्रमश जतजगण और दो गुरु और तीसरे चरण मे क्रमश ततज और दो गुरु होते हैं।

प्रेमाक्षेप—पु० [स० प्रेमन्-आक्षेप, ब०स०] केशव के अनुसार आक्षेप अलकार का एक भेद जिसमें प्रेम का निवेदन करते समय किसी प्रेम-जन्य कार्य मे ही उसमे बाधा होने का वर्णन होता है।

प्रेमालाप—पु० [स० प्रेमन्-आलाप मध्य०स०] १. आपस मे प्रेमपूर्वक होनेवाली बातचीत। २ दो प्रेमियो मे होनेवाली बातचीत।

प्रेमालिगन—पु० [स० मध्य० स०] १ किसी को प्रेमपूर्वक गले लगाना। २ कामशास्त्र के अनुसार नायक और नायिका का एक विशेष प्रकार का आलिगन।

प्रेमाश्रु—पु० [प्रेमन्-अश्रु, मध्य० स०] वे आँसू जो प्रेम के आधिक्य के समय आप से आप आँखो से निकलने लगते है।

प्रेमिक—वि० [स०] [स्त्री० प्रेमिका]=प्रेमी।

प्रेमी (मिन्)—वि० [स० प्रेमन्+इनि] किसी से प्रेम करनेवाला। जैसे—देश-प्रेमी, साहित्य-प्रेमी।

पु० १ वह व्यक्ति जो किसी स्त्री विशेषत प्रेमिका से प्यार करता हो। २ किसी स्त्री के साथ अनुचित रूप से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति। यार।

प्रेय (स्)—वि० [स० प्रिय+इयसुन् प्रादेश] [स्त्री० प्रेयसी] बहुत प्यारा। विशेष प्रिय।

पु० १ परम प्रिय व्यक्ति। २ स्त्री का पति या स्वामी। ३ स्त्री का प्रेमी। ४ धार्मिक क्षेत्र मे यह कामना कि हम स्वर्ग प्राप्त करके अनेक प्रकार के सुख भोगे (मोक्ष-प्राप्ति की कामना से भिन्न)। ५. कल्याण। मगल। ६ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे एक भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी का अग होता है। जैसे—प्रभु-पद सीह करें कहत, वाहि तुच्छ एक तीर। लखत इद्रजित् की हनहु ती तुम लछमन बीर। इस प्रसग मे व्यभिचारी भाव 'गर्व' कुछ गौण होकर स्थायी भाव 'क्रोध' का अग हो गया है।

प्रेयसी—स्त्री० [स० प्रेयस्+ङीप्] १. वह स्त्री जिसके साथ कोई पुरुष बहुत अधिक प्रेम करता हो। प्रेमिका। २ पत्नी। भार्या।

प्रेरक—वि० [स० प्र√ईर्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ किसी को प्रेरित करनेवाला। जो प्रेरणा करता हो। २ भेजनेवाला।

प्रेरण—पु० [स० प्र√ईर्+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी को कोई काम करने के लिए बहुत अधिक उत्साहित करना। २. कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करना।

प्रेरणा—स्त्री० [सं० प्र√ईर्+णिच्+युच्—अन्, टाप्] १. किसी को किसी कार्य मे लगाने अथवा प्रवृत्त करने की क्रिया या भाव। २. मन मे उत्पन्न होनेवाला वह भाव या विचार जिसके सबध मे यह कहा जा सकता हो कि वह दैवी साधन या कृपा से उत्पन्न हुआ है। ३ किसी प्रभावशाली व्यक्ति या क्षेत्र की ओर से कुछ करने या कहने के लिए होनेवाला सकेत। (इन्स्पिरेशन, उक्त दो अर्थो मे) ४ दबाव। ५ झटका। धक्का।

प्रेरणार्थक—वि० [स० प्रेरणा-अर्थ, ब० स०, कप्] १. प्रेरणा-सबधी। २ प्रेरणा के रूप मे होनेवाला।

प्रेरणार्थक क्रिया—स्त्री० [स० कर्म० स०] व्याकरण मे, क्रिया का वह रूप जिसमे क्रिया के व्यापार के सबध मे यह सूचित होता है कि यह क्रिया स्वय नही की जा रही है बल्कि किसी दूसरे को प्रेरित करके या किसी दूसरे से कराई जा रही है। जैसे—खाना से खिलाना, चलना से चलाना, भागना से भगाना आदि बननेवाले रूप प्रेरणार्थक क्रिया कहलाते है।

प्रेरणीय—वि०[स० प्र√ईर्+अनीयर्] प्रेरणा किये जाने के योग्य। किसी के लिए प्रवृत्त या नियुक्त किये जाने या होने के योग्य।

प्रेरना*—स०[स० प्रेरणा]१ प्रेरणा करना। २ फेकना। चलाना। ३ भेजना।

प्रेरयिता (तृ)—वि० [स० प्र√ईर्+णिच्+तृच्] [स्त्री० प्रेरयित्री] १ प्रेरक। २ आज्ञा देनेवाला।

प्रेरित—भू० कृ०[सं० प्र√ईर्+क्त]१ (व्यक्ति) जिसे दूसरे व्यक्ति से किसी बात की प्रेरणा मिली हो। २ किसी प्रकार की प्रेरणा से होनेवाला (कार्य)। ३ भेजा हुआ। प्रेषित। ४ ढकेला हुआ।

प्रेषक—वि०[स० प्र√ईष् (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक][स्त्री० प्रेषिका] भेजनेवाला।

प्रेषण—पु०[स० प्र √ईष्+णिच्+ल्युट्—अन]१ प्रेरणा करना। २ रवाना करना। भेजना।

प्रेषण-पुस्तक—स्त्री०[स० ष०त०] वह पुस्तक या वही जिसमे बाहर भेजी जानेवाली चिट्ठियो, पारसलो आदि की तिथि, विवरण, डाक-व्यय आदि लिखा जाता है। (डिस्पैच बुक)

प्रेषणीय—वि०[स० प्र√ईष्+णिच्+अनीयर्]१ प्रेरणा पाने योग्य। २ भेजे जाने के योग्य।

प्रेषणीयता—स्त्री०[स० प्रेषणीय+तल्—टाप्] १ प्रेषणीय होने की अवस्था या भाव। २ किसी पदार्थ या बात का वह गुण या तत्त्व जिसके द्वारा कुछ कही से कही पहुँचता हो। (कम्यूनिकेशन) जैसे—साहित्यिक कृतियो मे जब तक भावो की प्रेषणीयता तत्त्व न हो, तब तक उनका कोई महत्त्व नही होता। (अर्थात् उनमे यह गुण होना चाहिए कि वे कवि या लेखक के भाव पाठको तक पहुँचा सके।)

प्रेषित—भू० कृ०[स० प्र√ईष्+णिच्+क्त] रवाना किया हुआ। भेजा हुआ।

पु० सगीत मे स्वर-भावना की एक प्रणाली जिसका रूप है—सारे, रेग, गम, मप, पव, धनि, निसा। सानि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा। (सगीत)

प्रेषितव्य—वि०[स० प्र√ईष्+णिच्+तव्यत्] जो भेजा जाने को हो या भेजा जा सके।

प्रेष्ठ—भू० कृ० [स० प्रिय+इष्ठन्, प्रआदेश] [स्त्री० प्रेष्ठा] सबसे अधिक प्रिय। परम प्रिय। प्रियतम।

प्रेष्य—वि०[स० प्र√ ईष्+णिच्+यत्] जो भेजा जाने को हो या भेजा जा सकता हो।

पु०[स्त्री० प्रेष्या] १ नौकर। सेवक। २ दूत। हरकारा।

प्रेष्यता—स्त्री० [स० प्रेष्य+तल्—टाप्] प्रेष्य होने की अवस्था या भाव।

प्रेस—पु०[अ०]१ रूई आदि चीजे दबाने की कल। २ पुस्तके, समाचार-पत्र आदि छापने की कल या यत्र। ३ छापाखाना। मुद्रणालय।

मुहा०—(किसी चीज का) **प्रेस में होना**=(किसी चीज की) छपाई का काम जारी रहना। जैसे—अभी वह पुस्तक प्रेस मे है। (अर्थात् छप रही हे।)

४ समाचार पत्रो का सामूहिक वर्ग। सभी अखबार।

पद—प्रेस ऐक्ट।

प्रेस ऐक्ट—पु० [अ०] वह कानून जिसमे छापेखानेवालो तथा समाचार-पत्रो के अधिकारो की सीमाओ का उल्लेख होता है।

प्रेसमैन—पु०[अ०] छापे खाने या मुद्रणालय का कर्मचारी।

प्रेसिडेंट—पु०[अ०]१ सभापति। २ अध्यक्ष। ३ राष्ट्रपति।

प्रेसिडेंसी—स्त्री०[अ०] १ प्रेसीडेंट का पद या कार्य। २. ब्रिटिश भारत मे शासन के सुभीते के लिए कुछ निश्चित प्रदेशो या प्रातो का किया हुआ विभाग जो एक गवर्नर या लाट की अधीनता मे होता था।

प्रोचिया†—स्त्री०=पहुँची (कलाई पर पहनने की)। उदा०—गजरा नवग्रही प्रोचिया प्रोचे।—प्रिथीराज।

प्रोछन—पु०[स० प्र√उञ्छ्+ल्युट्—अन] १ पोछने की क्रिया। २ पोछने का कपडा। ३ बचे हुए खडो को चुनना।

प्रोक्त—भू० कृ०[स० प्र√वच्(कहना)+क्त] कथित या कहा हुआ। उक्त।

पु० कही हुई बात या वचन। उक्ति।

प्रोक्षण—पु०[स० प्र√उक्ष् (सीचना)+ल्युट्—अन]१ जल छिडकना। छिडकाव करना। २ यज्ञ मे, बलि देने से पहले पशु पर पानी छिडकना। ३ पानी का छीटा। ४. बध। हत्या। ५ विवाह का परिछन नामक कृत्य। ६ श्राद्ध आदि मे होनेवाला एक कृत्य।

प्रोक्षणी—स्त्री० [स० प्रोक्षण+ङीप्] १ यज्ञ आदि मे छिड़का जानेवाला जल। २ वह पात्र जिसमे उक्त जल रखा जाता था। ३ कुश की मुद्रिका जो हो मादि के समय अनामिका मे पहनी जाती है।

प्रोक्षित—भू० कृ० [स० प्र√उक्ष्+क्त]१ सीचा हुआ। २ जिस पर जल छिडका गया हो। ३ जिसका वध या हत्या की गई हो। ४ (पशु) जो बलि चढाया गया हो।

पु० वह मास जो यज्ञ के लिए सस्कृत किया गया हो। (ऐसा मास खाने मे कोई दोष नही माना जाता।)

प्रोक्षितव्य—वि०[स० प्र+उक्ष्√तव्यत्] जिसका प्रोक्षण होने को हो या हो सकता हो।

प्रोग्राम—पु०[अ०]१ दे० 'कार्यक्रम'। २. वह पत्र जिसमे कार्यक्रम छपा या लिखा हो।

प्रोज्ज्वल—वि०[स० प्र-उज्ज्वल, प्रा० स०]विशेप रूप से या बहुत उज्ज्वल।

प्रोज्झन—पु०[स० प्र√उज्झ् (त्याग)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रोज्झित] परित्याग।

प्रोटीन—पु०[अ०]खाद्य पदार्थो मे पाया जानेवाला वह तत्त्व जिसमे कारबन, नाइट्रोजन, आक्सीजन, गधक आदि मिले होते है, और जो प्राणियो और वनस्पतियो के जीवन-धारण के लिए आवश्यक और उपयोगी होता है।

प्रोटेस्टेंट—पु०[अ०]१ ईसाइयो का एक सम्प्रदाय। २ उक्त सप्रदाय का अनुयायी।

प्रोढ़*—वि०=प्रौढ।

प्रोढा*—स्त्री०=प्रौढा।

प्रोत—भू० कृ०[स० प्र√वे—(बुझना)+क्त, सम्प्रसारण] १ किसी के साथ या किसी मे अच्छी तरह मिला हुआ।

पद—ओतप्रोत।

२ गाँठ लगाकर बाँधा हुआ। ३ सीया हुआ। ४ छिपा हुआ। गुप्त।

पु० कपड़ा। वस्त्र।

प्रोत्कंठ—वि०[सं०प्र-उत्कंठा, ब० स०] =उत्कंठित।

प्रोत्कट—वि०[सं०प्र-उत्कट, प्रा० स०] [भाव० प्रोत्कटता]१ उत्कट। २. विशेष रूप से बहुत बड़ा।

प्रोत्तुंग—वि०[सं० प्र-उत्तुंग, प्रा० स०] बहुत ऊँचा।

प्रोत्तेजन—पु० [सं० प्र-उत्तेजन, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रोत्तेजित] बहुत बढ़े हुए रूप में उत्तेजना उत्पन्न करना। २ बहुत उत्कट या तीव्र उत्तेजन।

प्रोत्थित—भू० कृ०[सं० प्र-उत्थित, प्रा० स०]१ आधार पर रखा हुआ। किसी पर टिका या ठहरा हुआ। २ ऊपर उठाया हुआ। ३. बहुत ऊपर निकला या बढ़ा हुआ।

प्रोत्फुल्ल—वि०[सं० प्र-उत्√फुल्ल्+अच्]१ अच्छी तरह खिला हुआ। २ विशेष रूप से प्रसन्न या हर्षित।

प्रोत्सारण—पु०[सं० प्र-उत्√सृ (गति)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रोत्सारित] १ हटाना। २ निकालना। ३ पिंड या पीछा छुड़ाना।

प्रोत्साह—पु०[सं० प्र-उत√सह्+णिच्+घञ्] बहुत अधिक बढ़ा हुआ उत्साह या उमंग।

प्रोत्साहक—वि० [सं० प्र-उत्√सह्+णिच्+ण्वुल्—अक] उत्साह बढ़ानेवाला। हिम्मत बँधानेवाला।

प्रोत्साहन—पु० [सं० प्र-उत्√सह्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रोत्साहित] १ बहुत अधिक उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना। २ प्रोत्साहित करने के लिए कही जानेवाली बात। ३ उत्तेजित करना।

प्रोत्साहित—भू० कृ०[सं० प्र-उत्√सह्+णिच्+क्त] जिसे विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया गया हो। अच्छी तरह उत्साहित किया हुआ।

प्रोथ—पु०[सं० प्रु+थक]१ घोड़े के नाक के आगे का भाग। २ सूअर का थूथन। ३ कमर। ४ पेड़ू। ५ स्त्री का गर्भाशय।

प्रोद्भवन—पु० [सं० प्र+उद्भवन] १. प्रादुर्भाव होने की क्रिया या भाव। २ आय, फल, लाभ आदि के रूप में होनेवाली प्राप्ति। (एक्रूअल)

प्रोद्भूत—भू० कृ०[सं०] १ जिसका प्रोद्भवन हुआ हो। जो आय, फल, लाभ आदि के रूप में प्राप्त हुआ हो। (एक्रूड)

प्रोनोट—पु०[अं०]=हैंडनोट।

प्रोपगेंडा—पु०[अं०]=प्रचार। (दे०)

प्रोफेसर—पु०[अं०]१ किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता। भारी पंडित या विद्वान। २. प्राध्यापक। (देखें)

प्रोल—पु०=पोल (दरवाजा)।

प्रोलि—स्त्री०[सं० प्रतोली] द्वार। फाटक। (राज०) उदा०—प्रोलि प्रोलि मैं मारग।—प्रिथीराज।

प्रोष—पु० [सं०√प्रुष् (दाह)+घञ्]१. जलना। २ बहुत अधिक दुःख या कष्ट। संताप।

वि० १ जलता हुआ। २ दुखी। संतप्त।

प्रोषित—पु०[सं० प्र-उषित, प्रा० स०]साहित्य में शृंगार-रस का आलंबन वह नायक जो प्रिया को छोड़कर विदेश चला गया हो।

भू० कृ०१ प्रवासी। २. बीता हुआ। जैसे—प्रोषित यौवन।

प्रोषित-नायक—पु०[सं० कर्म० स०]= प्रोषित।

प्रोषित-नायिका—स्त्री०[सं० ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] वह स्त्री जो अपने पति (या नायक) के विदेश चले जाने के कारण उसके विरह में दुःखी या विकल हो। प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रोषित-प्रेयसी—स्त्री०=प्रोषितपतिका।

प्रोषित-भर्तृका—स्त्री०=प्रोषितपतिका।

प्रोषित-भार्य—पु०[सं० ब० स०] वह पुरुष जो अपनी पत्नी के विदेश चले जाने के कारण उसके विरह में दुःखी या विकल हो।

प्रोषित-यौवन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० प्रोषित-यौवना] जिसका यौवन समाप्त हो चुका हो। जिसकी जवानी बीत चुकी हो।

प्रोष्ठ—पु०[सं० प्र-ओष्ठ, ब० स०]१. सौरी मछली। २ गाय। ३. एक प्राचीन देश।

प्रोष्ठ-पद—पु०[सं०ब०स०, अच्, पदादेश] भाद्रपद। भादों (महीना)।

प्रोष्ठ-पदा—स्त्री० [सं० प्रोष्ठपद+टाप्] पूर्व भाद्रपद और उत्तर भाद्रपद नक्षत्र।

प्रोष्ठपदी—स्त्री० [सं० प्रोष्ठपदा+अण्—ङीप्] भादों की पूर्णिमा।

प्रोष्ण—वि०[सं० प्र-उष्ण, प्रा० स०] अत्यन्त उष्ण। बहुत गरम।

प्रोह—पु०[सं० प्र√ऊह् (वितर्क)+घञ्]१. हाथी का पैर। २ तर्क। ३. पर्व।

वि०१. चतुर। २. बुद्धिमान।

प्रोहित—पु०=पुरोहित।

प्रौढ़—वि०[सं० प्र√वह्+क्त, सम्प्रसारण, वृद्धि] [स्त्री० प्रौढ़ा] [भाव० प्रौढ़ता]१ जो अच्छी तरह बढ़कर या विकसित होकर अपनी पूरी बाढ़ तक पहुँच चुका हो। अच्छी या पूरी तरह से बढ़ा हुआ। जैसे—प्रौढ़ बुद्धि, प्रौढ़ वृक्ष। २ (व्यक्ति) जो अपनी आरंभिक अवस्था पार करके मध्य अवस्था तक पहुँच चुका हो। ३ बलवान। शक्तिशाली। ४ दृढ़। पक्का। मजबूत। ५ अच्छी तरह भरा हुआ। ६ गंभीर। गूढ़। ७. चतुर। चालाक। निपुण। ९ जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित। ९ पुराना। १०. घना। जैसे—प्रौढ़ घन (बादल)।

पु० तांत्रिकों का चौबीस अक्षरों का एक मंत्र।

प्रौढ़ता—स्त्री०[सं० प्रौढ़+तल्—टाप्]१ प्रौढ़ होने की अवस्था, गुण या भाव। २ प्रौढ़ अवस्था या वयस। ३ विश्वास। ४. क्रोध। गुस्सा।

प्रौढ़त्व—पु०[सं० प्रौढ़+त्व]=प्रौढ़ता।

प्रौढ़-पाद—पु०[सं०ब० स०] पैर के दोनों तलुए जमीन पर रखकर बैठना। उकड़ूँ बैठना। (शास्त्रों में इस प्रकार बैठकर भोजन, स्नान, तर्पण आदि करने का निषेध है)।

प्रौढ़ा—स्त्री०[सं० प्रौढ़+टाप्] १ अधिक या प्रौढ़ वयसवाली स्त्री। २ साहित्य में प्रौढ़ वयसवाली नायिका जिसमें लज्जा कम और काम-वासना अधिक होती है और जो बातचीत में चतुर तथा काम-केलि में प्रवीण होती है। उसके रति-प्रीता, आनन्द-सम्मोहिता, विचित्र-विभ्रमा, आक्रान्ता आदि अनेक भेद कहे गये है।

प्रौढ़ा-अधीरा—स्त्री०[सं० व्यस्तपद] साहित्य में वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक में विलास-सूचक चिह्न देखने पर प्रत्यक्ष प्रकोप करे।

प्रौढ़ाधीरा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] व्यग्यपूर्ण वाते कहकर अपना कोप प्रकट करनेवाली प्रौढा नायिका।

प्रौढ़ाधीराधीरा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] साहित्य से वह नायिका जो अपने नायक मे पर-स्त्री-गमन के चिह्न देखकर कुछ तो प्रत्यक्ष और कुछ व्यग्य-पूर्वक कोप प्रकट करे।

प्रौढि—स्त्री० [स०प्र√वह्+क्तिन्] १ प्रौढता। २ सामर्थ्य। शक्ति। ३ धृष्टता। ढिठाई। ४ तर्क-वितर्क। वाद-विवाद।

प्रौढ़ोक्ति—स्त्री० [स० प्रौढा-उक्ति, कर्म० स०] १ ऐसी उक्ति या कथन जिसमे कोई गूढ रहस्य हो। २ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी कल्पित अथवा वास्तविक उत्कर्प का आविर्भाव ऐसी चीज या वात से वतलाया जाता है जो वस्तुत उस उत्कर्प का हेतु नही होता अथवा नही हो सकता। जैसे—यदि कहा जाय कि यमुना के किनारे पर उगने के कारण ही सरल वृक्ष नीले रग का हो गया है तो यहाँ प्रौढोक्ति अलकार होगा, क्योकि वास्तव मे यमुना के जल मे आसपास के वृक्षो को नीला करने का गुण या शक्ति नही है।

प्रौष्ठ-पदी—स्त्री० [स० व० स०,+अण्—ङीप्] भाद्र मास की पूर्णिमा।

प्लक्ष—पु० [सं० √प्लक्ष् (खाना)+घञ्] १ पुराणानुसार सात द्वीपो मे एक द्वीप। २ अश्वत्थ। पीपल। ३ पाकर या पिलखा नाम का वृक्ष। ४ वडी खिडकी या छोटा दरवाजा। ५ दरवाजे के पास की जमीन। ६ एक प्राचीन तीर्थ।

प्लक्षजाता—स्त्री० [स० प० त०] सरस्वती (नदी)।

प्लक्षराज—पु० [स० प० त०] सरस्वती नदी का उद्गम।

प्लक्षा—स्त्री० [स०√प्लक्ष्+अ—टाप्] सरस्वती (नदी)।

प्लक्षावतरण—पु० [स० प्लक्षा-अवतरण, ष० त०]=प्लक्षराज।

प्लवग—पु० [स० प्लव√गम्+खच्, टिलोप, मुम्] १ वदर। २ साठ सवत्सरो मे से इकतालीसवाँ सवत्सर। ३ हिरण। ४ वानर। वन्दर। ५ प्लक्ष या पाकर का वृक्ष।

प्लवंगम—पु० [स० प्लव्√गम्+खच्, मुम्] १ २१-२१ मात्राओ के चरणो वाला एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण का पहला वर्ण गुरु और अत मे १ जगण और १ गुरु होता हे। २ वन्दर। ३. मेढक।

प्लव—पु० [स०√प्लु+अच्] १ साठ सवत्सरो मे से पैंतीसवाँ सवत्सर। २. कुक्कुट। मुरगा। ३. उछल-कूद कर चलनेवाला पक्षी। ४ कारडव पक्षी। ५. मेढक। ६ वदर। ७ भेड। ८ चाडाल। ९ वैरी। शत्रु। १० नागरमोथा। ११ मछलियाँ फसाने का टापा या दौरा। १२ नदी की वाढ। १३ नहाना। १४ तैरना। १५ जल-पक्षी। १६ एक प्रकार का वगला। १७ आवाज। शव्द। १८ अनाज। अन्न।
वि० १ तैरता हुआ। २. झुकता हुआ। ३ क्षण-भगुर।

प्लवक—वि० [स० प्लावक] तैरनेवाला। तैराक।
पु० १ [स० प्लव+कन्] १ तलवार, रस्सी आदि पर नाचनेवाला पुरुष। २ मेढक। ३ प्लक्ष या पाकर का वृक्ष।

प्लवग—वि० [स० प्लव√गम्+ड] १ कूदने या उछलनेवाला। २ तैरनेवाला।
पु० १ वदर। २. हिरन। ३. मेढक। ४ जल-पक्षी। ५ सिरस का पेड। ६ सूर्य के सारथी का नाम।

प्लवन—पु० [स० √प्लु (गति)+ल्युट्—अन] १ उछलना। कूदना। २ तैरना। ३. =प्लावन।
वि० ढालुआँ।

प्लविक—पु० [स०प्लव+ठन्—इक] माँझी। मल्लाह।

प्लांचट—पु० [अ०] तीन पायोवाली एक तरह की छोटी चौकी जिसकी सहायता से प्रेतात्माओ से सवध स्थापित करके वार्तालाप किया जाता है।

प्लाक्ष—वि० [स० प्लक्ष्+अण्] प्लक्ष सवधी। प्लक्ष का।
पु० १ प्लक्ष होने की अवस्था या भाव। २ प्लक्ष या पाखर वृक्ष का फल।

प्लाक्षायन—पु० [स० प्लाक्षि+फक्—आयन] प्लाक्षि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

प्लाट—पु० [अ०] १ इमारत वनाने या खेती आदि करने के लिए जमीन का टुकडा। २ उपन्यास, नाटक आदि की कथा-वस्तु। ३ पडयत्र।

प्लान—पु० [अ०] दे० 'आयोजना'।

प्लाव—पु० [स० √प्लु+घञ्] १ पीपे की तरह की कोई खोखली चीज जो किसी जलाशय मे लगर आदि के सहारे ठहरी और तैरती रहती है, और जो प्राय इस वात की सूचक होती है कि यहाँ नीचे चट्टान है अत जहाजो, नावो आदि के टकराने का डर है। २ रवर आदि का वह गोलाकार खोखला पट्टा जिसके अन्दर हवा भरी रहती है और जिसका सहारा लेकर आदमी डूवने से वचकर तैरता रहता है। (वोई) ३. गोता। डुवकी। ४ परिपूर्णता।

प्लावन—पु० [स०√प्लु +णिच्+ल्युट्—अन] १ चारो ओर जल का उमडकर वहना। २ जल की वहुत वडी वाढ जिसमे सारी पृथ्वी या उसका वहुत वडा अग डूव जाता है। ३ अच्छी तरह डुवाने या धोने की क्रिया। ४ ऊपर फेकना। उछालना। ५ तैरना।

प्लावित—भू० कृ० [स०√प्लु+णिच्+क्त] १ वाढ के पानी से भरा हुआ। २ जो जल मे डूव अथवा वह गया हो।

प्लाव्य—वि० [स०√प्लु +णिच्+यत्] जल मे डुवाये जाने के योग्य।

प्लास्टर—पु०=पलस्तर।

प्लीहा (हन्)—स्त्री० [स०√प्लिह्+कनिन्, नि-दीर्घ] १ पेट के अदर का तिल्ली नामक अग जो पेट के ऊपरी वाएँ भाग मे होता है और जो शरीर का रक्त वनाने मे सहायक होता है। (स्प्लीन) २ उक्त अग के सूजकर वढने का रोग।

प्लीहाविद्रधि—पु० [स०व०स०] तिल्ली का एक रोग जिसमे साँस रुक-रुक कर आने लगता है।

प्लीहोदर—पु० [स० प्लीहा-उदर, व० स०] प्लीहा के वटने का रोग। तिल्ली।

प्लीहोदरी (रिन्)—वि० [स० प्लीहोदर+इनि] [स्त्री० प्लीहोदरिणी] जिसे प्लीहा रोग हुआ हो।

प्लुत—वि० [स० √प्लु+क्त] जो काँपता हुआ चलता हो। २ डूवा हुआ। प्लावित। ३ वहुत गीला या तर। ४. (ताल, स्वर आदि मात्राओ से युक्त। तीन मात्राओवाला।
पु० १ टेढी और उछालवाली चाल। २ घोडे की एक प्रकार की चाल जिसे पोइया या पोई कहते है। ३ (व्याकरण मे किसी स्वर-वर्ण के

उच्चरित होने की वह अवस्था) जिसमे साधारण की अपेक्षा तिगुना समय लगा हो। इसका चिह्न ऽ है। जैसे—ओऽम्।

प्लुति—स्त्री०[सं० √प्लु+क्तिन्]१ उछल-कूद की चाल। २ पोई नामक साग। ३ तीन मात्राओं से युक्त वर्ण।

प्लेग—पु०[अं०]१ कोई ऐसा भयंकर संक्रामक रोग जिसके फैलने पर बहुत अधिक लोग मरते है। महामारी। २ एक विशिष्ट प्रकार का घातक संक्रामक रोग जिसमे रोगी को ज्वर होता है और जाँघ या बगल मे गिलटी निकलती है।

प्लेट—पु० [अं०] १ धातु के पत्तर, मिट्टी आदि की एक तरह की छोटी थाली। तश्तरी। २ उक्त प्रकार का गोल पत्तर जिसपर कोई लेख अंकित या उत्कीर्ण हो। ३ तश्तरी। रिकाबी। ४ कपड़े की वह पट्टी जो पहने जानेवाले वस्त्रों मे कहीं तो मजबूती के लिए और कहीं शोभा के लिए लगाई जाती है।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

५ फोटो लेने का वह शीशा जो प्रकाश मे पहुँचते ही अपने ऊपर पड़ने वाली छाया को स्थायी रूप से ग्रहण कर लेता है।

प्लेटफार्म—पु०[अं०] जमीन से कुछ ऊँचा, चौकोर तथा समतल चबूतरा। जैसे—रेलवे स्टेशन का प्लेटफार्म।

प्लैचेट—पु०=प्लानचट।

प्लैटिनम—पु०[अं०] स्वर्ण से भी अधिक बहुमूल्य, अधिक भारी तथा अधिक कड़ी सफेद रंग की एक धातु।

२ किसी पौधे का छोटा और नरम कल्ला। अकुर। जैसे—ईख की पोई।
क्रि० प्र०—निकलना।—फूटना।
३. गेहूँ, जौ मटर आदि का छोटा नया पौधा। ४. दे० 'पोर'।
पोकल—वि० [देश०] १. पुलपुला २. कोमल। नाजुक। ३. दुबला। कमजोर। ४. खोखला। पोला। ५. तत्व हीन। नि. सार।
पोका†—पु०=पोका।
पोकार†—स्त्री०=पुकार।
पोख—पु० [सं० पोषण] १. पालने-पोसने की क्रिया या भाव। २ पालन, पोपण आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली पारस्पसिक ममता। ३. दे० 'पोस'।
पोख-नरी—स्त्री० [हिं०] ढरकी के बीच का गड्ढा जिसमें नरी लगाकर कपडा बुना जाता है।
पोखना—स० [स० पोषण] पालना। पोसना।
†स०=पोकना।
†अ०=पोखाना।
पोखर—पु०=पोखरा।
पोखरा—पु० [स० पुष्कर] [स्त्री० पोखरी] वह गहरा तथा अधिक विस्तृत गड्ढा जिसमे बरसाती पानी जमा होता हो। छोटा ताल।
†पु० [?] वह आधान जिसमे पाखाना किया जाता है और पानी डालने से वहकर नाले मे चला जाता है।
पोखराज†—पु०=पुखराज।
पोखरी—स्त्री० हिं० 'पोखरा' का स्त्री अल्पा० रूप।
पोगड—पु० [स०√पू (पवित्र करना)+विच् पो,+गंड ब० स०] १ पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. वह जिसके शरीर मे कोई अग अधिक, कम या विकृत हो।
पोगर †—पु०=पोखरा।
पोच—वि० [फा०] १ निकृष्ट। खराब। बुरा। २. क्षुद्र। तुच्छ। ३. सब प्रकार के गुणो शक्तियो आदि से रहित या हीन। ४ नि सार। ५. अकुलीन। ६. आवारा।
पोचाई†—स्त्री० [?] बिहारी आदिवासियो और कोल-भीलों के पीने की एक प्रकार की देशी शराब जो भात और माड मे कोई जगली जडी-बूटी डालकर बनाई जाती है।
पोचारा†—पु०=पुचारा।
पोची—स्त्री० [हिं० पोच] पोच अर्थात् व्यर्थ, निकम्मा अथवा अकुलीन होने की अवस्था या भाव। पोचपन।
पोछना—स० १.=पोछना। २. =पोतना।
†अ०=पहुँचना।
पोट—पु० [स०√पुट् (मिलना)+घञ्] १. घर की नीव। २ मेल। मिलान।
स्त्री० [स० पोट=ढेर, हिं० पोटली] १. ऐसी पोटली या गठरी जो चारो ओर से कपडे, कागज, टाट आदि से बँधी हुई हो। २ ढेर। राशि।
स्त्री० [स० पृष्ठ] पुस्तको की सिलाई में उसका पुट्ठा।
स्त्री० [सं० पोत=वस्त्र] शव पर डाली जानेवाली चादर। कफन के ऊपर का कपडा।
पोटक—पु० [स०√पुट्+अच्,+कन्] सेवक। नौकर।
पोटगल—पु० [स० पोट√गल् (चुआना, खाना)+अच्] १ नरसल। नरकट। २ काँस। ३ मछली। ४ एक प्रकार का साँप।
पोटडाक—स्त्री० [हिं० पोट+डाक] १ डाक से चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमें चीजें आदि चारो ओर से कपड़े, टाट आदि से सीकर या बक्सो मे बद करके भेजी जाती है। (पारसल पोस्ट) २ इस प्रकार भेजी हुई कोई चीज।
पोटना—स० [हिं० पुट] १ इकट्ठा करना। समेटना। २. अपने अधिकार या हाथ मे करना। ३ फुसला या बहकाकर अपने पक्ष मे करना।
पोटरी†—स्त्री०=पोटली।
पोटलक—पु० [स० पोट√ली (समाना)+ड,+क] [स्त्री० अल्पा० पोटलिका] पोटली।
पोटला—पु० [हिं० पोटलक] [स्त्री० अल्पा० पोटली] बडी पोटली।
पोटली—स्त्री० [स० पोटलिका] १ बहुत छोटी गठरी जिसमे आवश्यक वस्तुएं रखकर लोग साथ लेकर विशेषत. बगल मे रखकर चलते है। २ छोटी थैली।
पोटा—पु० [सं० पुट=थैली] [स्त्री० अल्पा० पोटी] १. पेट की थैली। उदराशय। जैसे—चिडिया या बकरी का पोटा।
मुहा०—पोटा तर होना=पास मे धन-सपत्ति होने से प्रसन्नता और निश्चितता होना।
२ हृदय मे होनेवाला उत्साह, बल और साहस। जैसे—किसका पोटा है जो तुम्हारे सामने आकर खडा हो। ३. समाई। सामर्थ्य। जैसे—जितना जिसका पोटा होगा उतना ही वह खरच करेगा। ४ आँख की पलक। ५ उँगली का अगला भाग या सिरा। ६ चिडिया का वह छोटा बच्चा जिसके अभी पर न निकले हो। ७ नाक का मल। सीड।
क्रि० प्र०—बहना।
स्त्री० [स०√पुट्+अच्+टाप्] १ वह स्त्री जिसमे पुरुषो के से लक्षण हो। जैसे—दाढी या मूँछ के स्थान पर बाल। २ दासी। सेविका।
पु० घडियाल।
पोटास—पु० [अ०] एक प्रकार का क्षार जो वनस्पतियो और लकडियो की राख, कई प्रकार के खनिज पदार्थो और कल-कारखानो की कोई तरह की फालतू चीजो मे से निकलता और खाद, साबुन आदि बनाने के काम आता है।
पोटिक—पु० [स०] फोडा।
पोटिक—पु० [हिं० पोट] पोट अर्थात् बोझा ढोनेवाला मजदूर। पोटिया।
पोट्टली—स्त्री० [स०=पोटलिका, पृषो० सिद्धि]=पोटली।
पोठी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।
पोढ़ (ा)—वि० [स० प्रौढ] [स्त्री० प्रोढी] १ जो यथेष्ट रूप से वयस्क हो चुका हो। २ हृष्ट-पुष्ट। ३ कठोर। ४. दृढ। पक्का।
पोढ़ना—अ० [हिं० पोढ] १ दृढ होना। मजबूत होना। २. निश्चित

या पक्का होना। ३. उपयुक्त अथवा यथेष्ट पद को प्राप्त होना। स० १ दृढ या पुष्ट करना। पक्का या मजबूत करना।

पोत—पु० [स०√पू+तन्] १ किसी पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। २ दस वर्ष की अवस्थावाला हाथी। ३ छोटा पौधा या उसमे से निकला हुआ नया कल्ला। ४ वह गर्भस्थ पिंड जिस पर अभी झिल्ली न चढी हो। ५ पहनने के वस्त्र। पोशाक। ६ सूत के प्रकार, बुनावट आदि के विचार से कपडे के तल की चिकनई और मोटाई। (टेक्सचर) ७ पानी पर चलने वाला यान। जैसे—जहाज, नाव आदि।
पु० [हिं० पोतना] पोतने की क्रिया या भाव। पुताई।
पु० [स० प्रवृत्ति, प्रा० पउत्ति] १ प्रकृति। स्वभाव। २ ढब। ढग। तरीका। ३ कोई काम करने का क्रमागत अवसर। दाँव। वारी।
पु० [फा० पोत] जमीन का लगान। भू-कर।
मुहा०—पोत पूरा करना=उसी प्रकार जैसे-तैसे कोई काम या त्रुटि पूरी करना जिस प्रकार चुकाने के लिए भू-कर या लगान इकट्ठा करते है।
†पु० १. =पुत्र। २ =पौत्र।
स्त्री० [स० प्रोता, प्रा० पोता] १ माला की गुरिया या दाना। २ काच आदि की गुरिया जो माला के रूप मे पिरोई जाती है। उदा०—मानो मनि मोतिन लाल माल आगे पोति है।—सेनापति।

पोतक—पु० [स० पोत√कै (शब्द करना)+क] १ छोटा बच्चा। २ छोटा पौधा या कल्ला। ३ वह स्थान जहाँ घर बनाया जाने को हो।

पोतकी—स्त्री०[स० पोतक+ङीष्] पोई नाम की लता।

पोत-घाट—पु० [स० पोत+हिं० घाट] समुद्र आदि के किनारे बना हुआ वह पक्का घाट या घेरा जिसके अदर आकर यात्रियो आदि को उतारने-चढाने के लिए जहाज ठहरते है। (पिअर)

पोतड़ा—पु० [हिं० पोतना+डा (प्रत्य०)] वह कपडा जो नन्हे बच्चो के नीचे इसलिए बिछाया जाता है कि उसका गुह-मूत उसी पर गिरे या लगे, नीचेवाला बिस्तर खराब न करे।
पद—पोतडों के अमीर=सम्पन्न घराने मे उत्पन्न होनेवाला।

पोतदार—पु० [हिं० पोत=भूकर+फा० दार] १ वह जो लगान या कर का रुपया जमा करके रखता हो। २ खजानची। ३. वह जो खजाने मे रुपए, रेजगी आदि परखकर थैलियो मे रखने का काम करता हो।

पोत-धारी (रिन्)—पु० [स० पोत√धृ (धारण करना)+णिनि] जहाज का अधिकारी या मालिक।

पोत-ध्वज—पु० [स० प० त०] जहाज, बडी नाव आदि पर का वह झडा जो उसके राष्ट्र का सूचक होता है। (एन्साइन)

पोतन—वि० [स०√पू+तन] १ पवित्र या शुद्ध करनेवाला। २ पवित्र। शुद्ध।
†स्त्री० [हिं० पोतना] पोतने की क्रिया, ढग या भाव।

पोतनहर—स्त्री० [हिं० पोतना+हर (प्रत्य०)] १ वह बरतन जिसमे आँगन, चौका आदि पोतने के लिए मिट्टी घोलकर रखी जाती है। २ वह स्त्री जो आँगन, चौका आदि पोतने का काम करती है।
†स्त्री० [?] अँतडी। आँत।

पोतना—स० [स० प्लुत, प्रा० पुत+ना] १ किसी विशिष्ट तरल पदार्थ मे तर किये हुए कपड़े के टुकडे को इस प्रकार किसी चीज पर फेरना कि उस पर तरल पदार्थ की तह चढ जाय। लेप करना। लीपना। जैसे—किवाडो पर रंग पोतना। २ किसी गीले या सूखे पदार्थ को किसी वस्तु पर इस प्रकार लगाना कि वह उस पर बैठ जाय या जम जाय। जैसे—किसी के मुँह पर गुलाल पोतना। ३ आँगन, चौके आदि को पवित्र करने के उद्देश्य से उस पर गोबर, मिट्टी आदि का लेप करना। ४ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी चीज या बात के ऊपर ऐसी क्रिया करना कि वह छिप या ढक जाय।
पु० वह कपडा जिससे कोई चीज पोती जाय। पोतने का कपडा।

पोत-प्लव—पु० [स० पोत√प्लु+अच्] मल्लाह। माँझी।

पोत-भग—पु० [स० ष० त०] जहाज का चट्टानो आदि से टकराकर टूट-फूट जाना।

पोत-भार—पु० [स० मध्य० स०] पोत या जलयान पर लादा जानेवाला या लदा हुआ माल। (कारगो)

पोत-भारक—पु० [स०] वह पोत या जलयान जो माल ढोता हो। (कारगोशिप)

पोतला—पु० [हिं० पोतना] तवे पर घी पोतकर सेकी हुई चपाती। पराँठा।
†पु०=पुतला।

पोत-वणिक् (ज्)—पु० [स० सुप्सुपा स०] वह व्यापारी जो जहाजो पर लादकर माल भेजता या मँगाता हो।

पोतवाह—पु० [स० पोत√वह्+अण्] मल्लाह। माँझी।

पोत-संतरण—पु० [ष० त०] कारखाने से बनकर निकले हुए जहाज को पहली बार समुद्र मे उतारना या तैराना।

पोता—पु० [स० पौत्र, प्रा० पोत] [स्त्री० पोती] बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र।
पु० [हिं० पोतना] १ वह कपडा या कूची जिससे घरो मे चूना पोता या फेरा जाता है। २ घुली हुई मिट्टी जो आँगन, चौका, दीवार आदि पोतने के काम आती है।
क्रि० प्र०—फेरना।—लगाना।
मुहा०—पोता फेरना=पूरी तरह से चौपट या बरबाद करना। चौका लगाना।
पुं० [फा० फोत] १ भूमिकर। लगान। पोत। २ अड-कोश।
पु० [स० पोत] १५ या १६ अंगुल लबी एक प्रकार की मछली जो भारत की प्राय सभी नदियो मे मिलती है।
पु० [स०√पू+तृच्] १. यज्ञ मे सोलह प्रधान ऋत्विजो मे से एक। २ वायु। हवा। ३. विष्णु।
†पु०=पोटा।

पोताई—स्त्री० [हिं० पोतना] पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पोताच्छादन—पु० [स० पोत+आ√छद्+णिच्+ल्यु—अन] तबू। छोलदारी। डेरा।

पोताधान—पु० [स० पोत-आधान, ष० त०] मछलियो के बच्चो का गोल या समूह। छाँवर।

पोतारा†—पु०=पुतारा।